Mantramahārṇava. Mādhava

॥ * ॥ अथ मन्त्रमहार्णवप्रारंभः ॥ * ॥



॥ सर्वमंत्रप्रणेत्रे श्रीपार्वतीपतये नमः ॥

भूमिका।

उस परब्रह्म परमात्माको अनेक धन्यवाद हैं कि जिसकी कृपासे हम सब कोई अपने कार्य्यको निर्विघ्नपूर्वक समाप्त करनेमें समर्थ होते हैं। इसके उपरांत हम अपने सहृदय पाठकोंको भी धन्यवाद दिये विना नहीं रह सकते कि जिनकी कृपाका अवलबन ही हमारे उत्साहको द्विगुणित करता रहा। तीसरे सर्वशक्तिमान् शिवजी महाराजको धन्यवाद देना ही योग्य है क्योंकि जिनकी कृपा रूपी दृष्टिके कारण ही मंत्रशास्त्र रचा गया। जिस मंत्रशास्त्रके प्रभावसे ही प्राचीन मनुष्योंने देवताओंसे भी जय पायी और देवताओंको वशीभूत करके उन देवताओंसे अपने किंकरवत् कार्य्य कराया करते थे। इस मंत्रशास्त्रके द्वारा रावणादिक राक्षस श्रीरामचन्द्रादिकसे युद्ध करनेमें समर्थ हुए। जिस मंत्रशास्त्रके द्वारा संपूर्णोंकी दृष्टिके आगेसे लोप हो जाते थे। जिस मंत्रशास्त्रके द्वारा दूसरेके शरीरमें आप प्रवेश हो सकते थे। जिस मंत्रशास्त्रके द्वारा नानाप्रकारके रूप धारण करलेते थे। जिस मंत्रशास्त्रके द्वारा जलके भीतर ही भीतर सहस्रों योजनतक जानेकी सामर्थ्य रखते थे। जिस मंत्रशास्त्रके द्वारा आकाशमार्ग होकर देवलोकको जाते थे। जिस मंत्रशास्त्रके द्वारा भूत भविष्य वर्तमान तीनों कालकी वार्ताओंक जाननेमें समर्थ होते थे। जिस मंत्रशास्त्रके द्वारा देवताओंकाभी आकर्षण कर लेते थे। जिस मंत्रशास्त्रके द्वारा अजित शत्रुसे भी जय पाते थे। जिस मंत्रशास्त्रके द्वारा मनोवांछित पदार्थ अपने आप ही मँगा लेते थे। जिस मंत्रशास्त्रके द्वारा अष्टसिद्धि नवनिधि सम्मुख हाथ बांधे खडी रहती थीं। इस मंत्रशास्त्रके प्रभावकरके ही ब्राह्मणोंसे रघु इत्यादि राजा भयभीत होते थे। ऐसी अनेक सिद्धियां इच्छानुसार प्राप्त करना यह मंत्रशास्त्रहीका काम था। आज अत्यंत खेदका समय है कि ऐसा अमूल्य

रत्न मंत्रशास्त्र इच्छाके पूर्ण करनेवाला इस लोकसे लुप्त हो जाता है। कारण कि प्रथम तो आजकल ऐसे पदार्थोंका मिलना ही कठिन है वह यदि किसीके पास यत्किंचित् है भी तो गोपनीयवचनोंके कारण किसीको दर्शन भी नहीं कराता यदि थोडा बहोत मिलता भी है तो अशुद्ध मिलता है किसीका पूजन नहीं किसीकी पीठशक्तिका पता नहीं किसीमें आवरणका ठिकाना नहीं कहीं केवल मंत्र ही मिलता है आप कहो कि ऐसे विधानोंसे सिद्धि किस प्रकार हो सकती है इसी कारण अबके मनुष्योंके अनुष्ठान करनेपर सिद्धि नहीं प्राप्त होनेके कारण मंत्रशास्त्रको झूठा मानने लगे हैं। ऐसा मानना विद्वज्जनोंकी भूल है। कारण कि प्रथम तो शिवजी महाराजके वाक्य को मिथ्या मानना ही अज्ञानताका कारण होता है। दूसरे कुछ दिनों पहेले ही मंत्रशास्त्रका चमत्कार आपलोगोंके दृष्टिगोचर होता ही था। इससे मंत्रशास्त्रको मिथ्या किस प्रकार वना सकते हो। किंतु ठीक ठीक विधानोंका न मिलना और मिलनेपर आप लोगोंके चित्तकी कातरता ही सिद्धिके अवरोधका कारण होता है मंत्रशास्त्रको मिथ्या बताना प्रत्यक्षमें भूल है। आशा है कि आप लोग विश्वास रक्खोगे कि मंत्रशास्त्र झूठा नहीं है। किन्तु इसकी क्रिया गुप्त हो रही थी और कुछ साधनको साहस कम होनेके कारण मंत्रशास्त्रको झूठा मानना पडा था। ऐसे ऐसे भ्रमोंको दूर करनेके निमित्त ही मंत्रशास्त्रमें शिरोमणि इस मंत्रमहार्णवका जन्म हुआ है। किंतु वैष्णव शैव और शाक्तोंके मनको प्रफुल्लित करनेके निमित्त ही अनेक प्राचीन मंत्रशास्त्रोंकी सहायतापूर्वक इस मंत्रमहार्णवको पंडित मंत्रशास्त्री माधवराय वैद्य प्रयागराजनिवासीने संग्रह किया है। इसको अवलोकन करनेसे इष्टदेवताको प्रसन्न करनेके निमित्त सम्पूर्ण विधान आपलोगोंको एक ही स्थानमें मिलजायगा। न तो सम्पूर्ण ग्रंथको उलट पुलट करना होगा न तो मूल श्लोकोंको लगाकर आधी बातें समझना पडेगा न मंत्रशास्त्रियोंके पीछे २ भटकना पडेगा मंत्रमहार्णवको हाथमें लेते ही आपको इष्टदेवताका मंत्रोद्धार, न्यास, ध्यान, पीठपूजा, पीठशक्ति, यंत्रोद्धार, देवासन, प्रतिष्ठा, आवरणपजा षोडशोपचारपूजा, स्तोत्रादि सम्पूर्ण पञ्चांग ही पद्धतिकी रीतिपर एक ही स्थानमें मिलजावेंगे

सिर्फ पत्रोंको हाथमें लेकर कार्य्य स्वयं वा यजमानको कराते चले जावो क्रमपूर्वक मिलेगा प्रसंग कहीं खण्डित नहीं होगा जिसके द्वारा आपके मंत्रकी सिद्धि होकर प्रयोगोंके करनेमें समर्थ हो सकते हैं। इस मंत्रमहार्णवमें कोई भी मंत्र ऐसा आपको नहीं मिलेगा जिसका सम्पूर्ण विधान आपको उसी स्थानमें न मिलजावे किन्तु अवश्य ही मिलेगा। और ऐसा कोई देवता, दैत्य, यक्ष, गंधर्व, किन्नर, योगिनी, अप्सरा, देवकन्या, नागकन्या, राक्षस,प्रेतादिक नहीं होगा जिसका पूर्णविधान आपको मंत्रमहार्णवमें न मिल जावे किंतु सभी मिलैंगे। और लोपाञ्जन, निधिग्रहणाञ्जन, रासायनिक क्रिया, कल्पादिक,मशमेरेजम,स्वप्नसिद्धि,कर्णपिशाचिनी,पुत्रोत्पत्ति, मोहनादि षट् प्रयोग, नाना चेटकादि अनेक प्रकारके आपको इस मंत्रमहार्णवमें मिलैंगे मंत्रमहार्णवमें एक विचित्रता यह है कि प्रत्येक देवताओं और प्रत्येक कार्योंकी सिद्धिके पृथक्पृथक् अर्थतरंग किये गये हैं जिसमें किसी विषयके देखने वालोंको सम्पूर्ण ग्रंथ उलट पुलट न करना पडे. ऐसा कोई भी कार्य्य नहीं होगा जिसके सिद्ध करनेके निमित्त अनुष्ठान आपको मंत्रमहार्णवमें न मिले नहीं सम्पूर्ण ही मिलेगा। जहांतक मेरी दृष्टिमें आया है सभी विषय एकत्रित कर दिये गये हैं। मेरी बुद्धिमें तो इस समय मंत्रशास्त्र जितने प्रचलित हो रहे हैं सब मंत्रमहार्णवके उदरस्थ होगये हैं और जो बिलकुल लुप्त होगये हैं उनके उद्धार करनेमें पुस्तकोंके न मिलनेके कारण मैं समर्थ नहीं हुआ कृपापूर्वक इतनेमें ही संतोष करैं और भी मंत्रमहार्णवमें ऐसी सुगम रीतियां दीगई हैं कि बडे २ विद्वज्जनोंके समान न्यून विद्यावाले भी सुगमतापूर्वक विचारांश करके अनुष्ठानोंके द्वारा अपने कार्योंकी सिद्धि करनेमें समर्थ होते हैं और कहते हैं कि आप लोग मन्त्रशास्त्रसे क्यों अश्रद्धा करते हैं आनंदपूर्वक रीत्यनुसार अनुष्ठान करैं कृतकार्य्य होवोगे ब्राह्मण पूर्वकालमें मंत्रशास्त्रकी ही सिद्धिके कारण महत्त्वको प्राप्त थे उसको आपलोग क्यों नहीं अंगीकार करते जिसमें नाना क्लेशोंसे मुक्त होकर अंतकालमें देवलोक प्राप्ति होवे. विशेष लिखना वृथा है एक वार मंत्रमहार्णवको अवलोकन करनेसे

स्वयं ही ग्रंथका गुणदोष प्रगट हो जावेगा यदि आप लोग अपनी दयालुताके कारण मंत्रमहार्णवको अपने कोमल हृदयरूपी मानस सरमें हंसवत् इस ग्रंथको स्थान देंगे तो थोडे ही दिनमें और भी कई विषयोंके ग्रंथ संग्रह करके आप लोगोंकी भेट करूंगा इस मेरे संगृहीत मंत्रमहार्णव ग्रंथके मुद्रणादि अधिकार मैंने मुंबईके "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेसके मालिक शेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजीको दिये हैं इसमेंसे किसी भागको छापनेका कोई भी साहस नहीं करना।

इत्यलं बहुनोल्लिखितेन-

विदुषां कृपाभिलाषिवरः-

ग्रंथसंग्रहीता.

श्रीवैकुण्ठविहारिणे नमः।

अथ श्रीमन्त्रमहार्णव-विषयानुक्रमणिकाप्रारम्भः।

समाप्तेयं मंत्रमहार्णवग्रंथस्थविषयानुक्रमणिका शिवचरणयोरर्पितास्तु ।

इति मन्त्रमहार्णव-विषयानुक्रमणिका समाप्ता ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ सरस्वत्यै नमः ॥ ॥ श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः ॥ ॥ गणपतिं प्रणमामि सुसिद्धिदं हरसुतं कुचमध्य मुखं विभुम् । गिरिसुतां गणराजसुवंदितां शिवमिहेप्सितदं शिवदं नृणाम् ॥ १ ॥ श्रीसूर्यप्रभृतीन्सुरांश्च सततं ये साक्षिणः कर्मणां राधा कृष्णपदारविन्दयुगलं ध्येयं सदा योगिभिः ॥ सावित्र्या सुविभूषितं सुरवरं ब्रह्माणमीडेऽत्र ते ग्रंथे मंत्रमहार्णवे प्रतिदिनं कुर्वन्तु सन्मंगलम् ॥ २ ॥ दृष्ट्वा तंत्राण्यनेकानि माधवाख्येन धीमता ॥ वक्ष्यते कलिसिद्धोऽयं ग्रंथो मंत्रमहार्णवः ॥ ३ ॥ सर्वतंत्रैकमुकुटं सर्वसारमयं ध्रुवम् ॥ वक्ष्यामि परमप्रीत्या रहस्यं सर्वमंत्रिणाम् ॥ ४ ॥ नामूलं लिख्यते किंचिदिह विज्ञेयमादरात् ॥ नैवात्र संशयः कार्यो नानाभेद विधानके ॥ ५ ॥ तंत्रांतरेष्वनेकानि विधानानि मुनीश्वरैः ॥ उक्तान्यनेकदेवानां प्रसिद्धानि च संति वै ॥ ६ ॥ देशदेशाच्च तेषां वै संग्रहः क्रियते मया ॥ साधकानां हितार्थाय श्रीदुर्गायाः प्रसादतः ॥७॥ त्रीणि खण्डानि ग्रंथेऽस्मिन्पूर्वं मध्यं तथोत्तरम् ॥ पुंदेवानां पूर्वखण्डे स्त्रीदेवीनां च मध्यमे ॥ यक्षिणीप्रभृतीनां तु तथैवोत्तरखण्डके ॥८॥ अनुष्ठानं मया प्रोक्तं तरंगैस्तु पृथक्पृथक् ॥९॥ संगृहीतमिमं ग्रन्थं मया च लघुबुद्धिना ॥ अंगीकुर्वंतु शास्त्रज्ञा दयां कृत्वा ममोपरि ॥१०॥ यदि दोषो भवेत्कुत्रचिन्मदज्ञानकारणात् ॥ प्रार्थये सुजनास्तद्वै क्षमध्वं मे ऽपराधकम् ॥ ११ ॥ यदत्र वाक्यमधिकं न्यूनं यत्र च कुत्रचित् ॥ रोषमुत्सृज्य तत्सर्वं निर्दोषं कुरुत द्विजाः ॥ १२ ॥ (तत्रादौ तंत्र-संज्ञाः) सिद्धीश्वरं महातंत्रं कालीतंत्रं कुलार्णवम् ॥ ज्ञानार्णवं नीलतंत्रं फेत्कारीतंत्रमुत्तमम् ॥ १३ ॥ देव्यागमं चोत्तराख्यं श्रीक्रमं सिद्धियामलम् ॥ मत्स्यसूक्तं सिद्धिसारं सिद्धिसारस्वतं तथा ॥ १४ ॥ वाराहीतंत्रं देवेशि योगिनीतंत्रमुत्तमम् ॥ गणेशमर्षिणीतंत्रं नित्यतंत्रं शिवागमम् ॥ १५ ॥ चामुंडाख्यं महेशानि मुंडमालाख्यतंत्रकम् ॥ हंसमाहेश्वरं तंत्रं निरुत्तरमनुत्तमम् ॥ १६ ॥ कुलप्रकाशकं देवि कल्पं गांधर्वकं शिवे ॥ क्रियासारं निबंधाख्यं स्वतंत्रं तंत्रमुत्तमम् ॥ १७ ॥ सम्मोहनं तंत्रराजं ललिताख्यं तथा शिवे ॥ राधाख्यं मालिनीतंत्रं रुद्रयामलमुत्तमम् ॥ १८ ॥ बृहच्च श्रीक्रमं तंत्रं गवाक्षं कुसुमादिनि ॥ विशुद्धेश्वरतंत्रं च मलिनीविजयं तथा ॥ १९ ॥ समयाचारतंत्रं च भैरवीतंत्रमुत्तमम् ॥ योगिनीहृदयं तंत्रं भैरवं परमेश्वरि ॥२०॥ सनत्कुमारकं तंत्रं योनितंत्रं प्रकीर्तितम् ॥ तंत्रांतरं च

देवोशि नवरत्नेश्वरं तथा ॥ २१॥ कुलचूडामणिं तंत्रं भावचूडामणीयकम् ॥ तंत्रदेवप्रकाशं च कामाख्यानामकं तथा ॥ २२ ॥ कामधेनुं कुमारीं च भूतडामरसंज्ञकम् ॥ २२ ॥ नलिनीविजयं तंत्रं यामलं ब्रह्मयामलम् ॥२३॥ विश्वसारं महातंत्रं महाकुलकुलांतकम् ॥कुलोड्डीशं कुब्जकाख्यं यंत्रचिंतामणीयकम् ॥ २४ ॥ एतानि तंत्ररत्नानि सफलानि युगे युगे ॥ कालीविलासकादीनि तंत्राणि परमेश्वरि ॥ २५ ॥ कलिकाले प्रसिद्धानि अश्वाक्रांतासु भूमिषु ॥ महानीचानि तंत्राणि अविकल्पे महेश्वरि ॥ २६ ॥ अथ साध्यजन्मनक्षत्रवृक्षा यथा (शारदातिलके) कारस्करोऽथ धात्री स्यादुदुंबरतरुः पुनः ॥ जंबूः खदिरकृष्णाख्यौ वंशपिप्पलसंज्ञकौ ॥ २७ ॥ नागरोहिणी नामानौ पलाशप्लक्षसंज्ञकौ ॥ अंबष्ठबिल्वार्जुनाख्यविकंकतमहीरुहाः ॥ २८ ॥ बकुलः सरलः सर्ज्जो वंजुलः पनसार्ककौ ॥ शमीकदम्ब निंबाम्रमधूका वृक्षशाखिनः ॥ २९ ॥ इत्यश्विन्यादिक्रमेण योजयेत् ॥ अथ युगभेदेन देवताभेदः । (पूजास्कंधे) ब्रह्मा कृतयुगे देवस्त्रेतायां भगवान् रविः ॥ द्वापरे भगवान् विष्णुः कलौ देवो महेश्वरः ॥३०॥ अथ पुरश्चरणकरणार्थमादावावश्यकज्ञातव्यपदार्थानाह (कुलार्णवे) विधिं मंत्रं च करणीं योनिमाद्यं च पक्षजम् ॥ दीपार्थं कूर्मचक्राणि ज्ञात्वा कर्माणि साधयेत् ॥ ३१ ॥ ऋषिच्छंदो देवतांगन्यासध्यानार्चनादिकम् ॥ बीजशक्ती कालवेधौ ज्ञात्वा मंत्राणि साधयेत् ॥ ३२ ॥ पंचशुद्धासनं प्राणायामन्यासाक्षमालिकाः॥ दोषसंस्कारशुद्धादीन् ज्ञात्वा कर्माणि साधयेत् ॥३३॥ साध्यसाधककर्माणि लेखन्या द्रव्यपंचकम् ॥ स्थानं यंत्रप्रमाणं च ज्ञात्वा कर्माणि साधयेत् ॥ ३४॥ अथवासमादिदिग्वर्णनाडीतत्त्वानुसंगतिम् ॥ देवताकालमुद्रां च ज्ञात्वा कर्माणि साधयेत् ॥ ३५ ॥ उत्पत्तिरसनावर्णान्मूर्तिसंस्कारसंस्थितिम् ॥ कुंडद्रव्यप्रमाणादीन् ज्ञात्वा होमं समाचरेत् ॥ ३६ ॥ अग्निप्रभां धूम्रवर्णं ध्यानगंधशिखाकृतीः॥ दूतचेष्टादिकं ज्ञात्वा कल्पयेत्तु शुभाशुभम् ॥ ३७ ॥ मंत्रतत्त्वानुसंधानं देहावेशादिलक्षणम् ॥ मंत्रोच्चारणभेदे च ज्ञात्वा कर्माणि साधयेत् ॥ ३८ ॥ मंडलं कलशं दिव्य शुद्धगंधाष्टकादिकम् ॥ दीक्षां वामप्रदायीं च ज्ञात्वा दीक्षां समाचरेत् ॥३९॥ नित्यं नैमित्तिकं काम्यं नियमं नाम वासनाम् ॥ पुजाधारणयंत्राणि ज्ञात्वा कर्माणि साधयेत् ॥ ४० ॥ पूजागृहप्रवेशादि कुलपूजनलक्षणम् ॥ कुलद्रव्यादिशुद्धिं च ज्ञात्वा

पूजां समाचरेत् ॥ ४१ ॥ अथ गुरुशिष्यपरीक्षणम् ॥ ज्ञानेन क्रियया वापि गुरुः शिष्यं परीक्षयेत् ॥ संवत्सरं तदर्द्धं वा तदर्द्धं वा प्रयत्नतः ॥४२॥ शिष्योऽपि लक्षणैरेतैः कर्याद्गुरुपरीक्षणम् ॥ आनंदाद्यैर्जपैःस्तोत्रैर्ध्यानहोमार्चनादिषु ॥ ४३ ॥ ज्ञानोपदेशसामर्थ्यं मं[illegible]मभी[illegible] बोधकत्वं च विज्ञाय शिष्यो भूयान्न चान्यथा ॥ ४४ ॥ (कुलार्णवतंत्रे) श्रीगुरुः परमेशानि शुद्धवेशो मनोहरः ॥ सर्वलक्षणसंपन्नः सर्वावयवशोभितः ॥ ४५ ॥ अग्रगण्यो गभीरश्च पात्रापात्रविशेषवित् ॥ शिवविष्णुसमः साधुर्न च दर्शनदूषकः ॥ ४६ ॥ नित्यनैमित्तिके काम्ये रतः कर्मण्यनिन्दिते ॥ यदृच्छालाभसंतुष्टो गुणदोषविभेदकः ॥ इत्यादिलक्षणोपेतः श्रीगुरुः कथितः प्रिये ॥ ४७ ॥ अथ गुरुमाहात्म्यम् ॥ अत्रिनेत्रः शिवः साक्षादचतुर्बाहुरच्युतः ॥ अचतुर्वदनो ब्रह्मा श्रीगुरुः कथितः प्रिये ॥४८॥ अथ त्याज्यगुरुः ॥ निन्दितस्तु पितुर्मंत्रस्तथा मातामहस्य च ॥ सोदरस्य कनिष्ठस्य वैरिपक्षाश्रितस्य च ॥ ४९ ॥ शूद्राणां च तथा स्त्रीणां गुरुत्वं न कदाचन ॥ योग्यमाद्यं गुरुं त्यक्त्वा शिष्यः शूद्रं क्रियाविदम् ॥ गुरुं समाश्रयेदन्यं यः प्रयाति स दुर्गतिम् ॥ ५० ॥ अथ त्याज्यशिष्यः ॥ न देयमर्थलुब्धाय पिशुनायास्थिराय च ॥ भक्तिश्रद्धाविहीनाय शुश्रूषाविमुखाय च ॥ ५१ ॥ दीक्षामुहूर्तनिर्णयः ॥ वैशाखे श्रावणे वापि आश्विने कार्तिकेऽथवा ॥ फाल्गुने मार्गशीर्षे वा कुर्यान्मंत्रस्य दीक्षणम् ॥ ५२ ॥ (सिद्धांतशेखरे) ॥ शरत्काले च मंत्रस्य दीक्षा श्रेष्ठफलप्रदा ॥ फाल्गुने मार्गशीर्षे च ज्येष्ठे दीक्षा तु मध्यमा ॥ ५३ ॥ आषाढे श्रावणे माघे कनिष्ठा सद्भिरादृता ॥ निन्दितश्चाधिमासस्तु पौषो भाद्रपदस्तथा ॥ ५४ ॥ मुक्तिकामैः कृष्णपक्षे भूतिकामैः सिते सदा ॥ पूर्णिमा पंचमी चैव द्वितीया सप्तमी तथा ॥ ५५ ॥ त्रयोदशी च दशमी प्रशस्ताः सर्वकामदाः ॥ रवौ गुरौ विधौ दीक्षा कर्तव्या बुधशुक्रयोः ॥ ५६ ॥ अश्विनीरोहिणीस्वातीविशाखाहस्तभेषु च ॥ ज्येष्ठोत्तरात्रये चैव कुर्यान्मंत्राभिषेचनम् ॥ ५७ ॥ श्रवणार्द्राधनिष्ठाश्च पुष्यः शतभिषा तथा ॥ दीक्षानक्षत्रजातानीत्याहुस्तंत्रार्थकोविदाः ॥ ५८ ॥ मेषकर्कटकन्यासु तुलायां वृश्चिके तथा ॥ मकरे कुम्भके चैव दीक्षा सर्वशुभावहा ॥ ५९ ॥ षष्ठी भाद्रपदे मास्याश्विने कृष्णा त्रयोदशी ॥ कार्तिके नवमी शुक्ला श्रावणे कृष्णपंचमी ॥

॥ ६० ॥ एतानि देवपर्वाणि तीर्थकोटिफलानि च ॥ निन्दितेष्वपि मासेषु दीक्षोक्ता ग्रहणे शुभा ॥ ६१ ॥ न मासतिथिवारादिशोधनं सूर्यपर्वाणि ॥ सिद्धिर्भवति मंत्रस्य विनाभ्यासेन वेगतः ॥ ६२ ॥ (रुद्रयामले) सतीर्थेऽर्कविधुग्रासे महापर्वाणि चैव हि ॥ मंत्रदीक्षां प्रकुर्वाणो मासर्क्षादीन्न शोधयेत् ॥ ६३ ॥ (संहितायाम्) विषुवेऽप्ययनद्वंद्वे संक्रांत्यां दमनोत्सवे ॥ दीक्षा कार्यान्यकालेऽपि पवित्रे गुरुपर्वणि ॥ ६४ ॥ (शैवागमे च) ॥ सतीर्थेऽर्कविधुग्रासे पुण्यारण्ये वनेषु च ॥ पुण्यक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे देवीपीठे चतुष्टये ॥ प्रयागे श्रीगिरौ कश्यां कालाकालं न शोधयेत् ॥ ६५ ॥ (उपदेशसुधातंत्रे) ॥ चन्द्रसूर्यग्रहे चैव सिद्धक्षेत्रे शिवालये ॥ मंत्रमात्रप्रकथनमुपदेशः स उच्यते ॥६६॥ (सारसंहितायाम्) तिथिं विनापि दीक्षायां विशिष्टं वासरं शृणु ॥ दुर्लभे सद्गुरूणां च सकृत्संग उपस्थिते ॥ ६७ ॥ तदनुज्ञा यदा लब्धा स दीक्षावसरो महान् ॥ ग्रामे वा यदि वारण्ये क्षेत्रे वा यदि वा निशि ॥ आगच्छति गुरुर्देवो यदा दीक्षा तदा भवेत् ॥ ६८ ॥ (तत्त्वसारे) यदेवेच्छा तदा दीक्षा गुरोराज्ञानुरूपतः ॥ न तिथिर्न व्रतो होमो न स्नानं न जपक्रिया ॥ दीक्षायाः कारणं किंतु स्वेच्छा वाज्ञा गुरोरिह ॥ ६९ ॥ (वैशंपायनसंहितायाम्) ॥ संध्यागर्जितनिर्घोषभूकंपोल्कानिपातनम् ॥ एतानन्यांश्च दिवसान् स्मृत्युक्तांश्च परित्यजेत् ॥ ७० ॥ (नारदीये) आचार्यादनभिप्राप्तमंत्रश्चादत्तदक्षिणः ॥ अभ्यस्तोऽपि सदा मंत्रः श्रेयसे नावकल्पते ॥ ७१ ॥ अथानुष्ठानारंभे मुहूर्तनिर्णयः (रुद्रयामले) कार्तिकाश्विनवैशाखमाघेऽथ मार्गशीर्षके ॥ फाल्गुने श्रावणे मंत्रपुरश्चर्या प्रशस्यते ॥ ७२ ॥ (वैशंपायनसंहितायाम्) ॥ मंत्रस्यारंभणं मेषे धनधान्यप्रदं भवेत् ॥ वृषे मरणमाप्नोति मिथुनेऽपत्यनाशनम् ॥ ७३ ॥ कर्कटे सर्व्वसिद्धिः स्यात् सिंहे मेधाविनाशनम् ॥ कन्या लक्ष्मीप्रदा नित्यं तुलायां सर्वसिद्धयः ॥ ७४ ॥ वृश्चिके स्वर्णलाभः स्याद्धनुर्मानविनाशनम् ॥ मकरः पुण्यदः प्रोक्तः कुंभो धनसमृद्धिदः ॥ मीनो दुःखप्रदो नित्यमेवं मासाविधिक्रमः ॥ ७५ ॥ (तंत्रसारे) चन्द्रतारानुकूले च शुक्लपक्षे शुभे दिने ॥ आरंभे तु पुरश्चर्य्यां हरौ सुप्ते न चाचरेत् ॥ ७६ ॥ (स्मृतितत्त्वे) ॥पूर्णिमा पंचमी चैव द्वितीया सप्तमी तथा ॥ त्रयोदशी च दशमी

प्रशस्ता सर्वकामदा ॥ या तिथिर्यस्य देवस्य तस्यां वा शुभदः स्मृतः ॥ ७७ ॥ (पुरश्चरणदीपिकायाम्) मंत्रारंभो रवौ शुक्रे बुधे जीवे विशेषतः ॥ शनौ मृत्युः क्षयो भौमे सोमे मध्यफलं स्मृतम् ॥ ७८ ॥ (मुहूर्तगणपतौ) पुनर्वसुद्वये हस्ते त्र्युत्तरे श्रवणत्रये ॥ रेवतीद्वितये हस्तेऽनुराधारोहिणीद्वये ॥ शांतिकं पौष्टिकं कर्म्म पुण्याहे कीर्तितं बुधैः ॥ ७९ ॥ (पुरश्चरणदीपिकायाम्) अश्विनीरोहिणी स्वातीविशाखाहस्तभेषु च ॥ ज्येष्ठोत्तरात्रयेष्वेव कुर्यान्मंत्राभिषेचनम् ॥ ८० ॥ (शब्दकल्पद्रुमे) आर्द्रायां कृत्तिकायां च मंत्रारंभः प्रशस्यते ॥ यदीशस्य कृशानोर्वा मंत्रारंभं यथाक्रमम् ॥ ८१ ॥ स्थिरलग्नं विष्णुमंत्रे शिवमंत्रे चरं ध्रुवम् ॥ द्विस्वभावगतं लग्नं शक्तिमंत्रे प्रशस्यते ॥ ८२ ॥ अथ भक्ष्याभक्ष्यनिर्णयः ॥ (शारदातिलके) ॥ भक्ष्यं हविष्यं शाकानि विहितानि फलं पयः ॥ मूलं सक्तुर्यवोत्पन्नो भक्ष्याण्येतानि मंत्रिणाम् ॥ ८३ ॥ (पुरश्चरणदीपिकायाम्) चरुमूलफलक्षीरदधिभिक्षान्नसक्तवः ॥ शाकाश्चाष्टविधं चान्नं साधकस्योच्यते बुधैः ॥ ८४ ॥ (नारदीये) ॥ पयोव्रतस्य सिद्धिः स्याल्लक्षेणैव न संशयः ॥ शाकभक्ष्यहविष्याशी कलौ लक्षत्रयं जपेत् ॥ ८५ ॥ (देवीभागवते) भिक्षान्नं शुद्धमानीय कृत्वा भागचतुष्टयम् ॥ एको भागो द्विजे भक्तो गोग्रासे च द्वितीयकः ॥ ८६ ॥ आतिथिभ्यस्तृतीयस्तु तदूर्ध्वं शिशुभार्ययोः ॥ आश्रमस्य यथा यस्य कृत्वा ग्रासविधिं क्रमात् ॥ ८७ ॥ तदूर्ध्वं संख्यया स्याद्वा वानप्रस्थगृहस्थयोः ॥ कुक्कुटांडप्रमाणं तु ग्रासमानं विधीयते ॥ ८८ ॥ अष्टौ ग्रासान्गृहस्थश्च वानप्रस्थस्तदर्धकम् ॥ ब्रह्मचारी यथेष्टं च गोमूत्रविधिपूर्वकम् ॥ ८९ ॥ ब्रह्मपत्रे तु भुंजीत मध्यपत्रविवर्जिते । दक्षं ब्रह्मोत्तरं विष्णुर्मध्यपत्रं महेश्वरः ॥ अन्यथा भोजनाद्दोषात् सिद्धिहानिः प्रजायते ॥ ९० ॥ अथ जपस्थाननिर्णयः ॥ (पुरश्चरणचंद्रिकायाम्) पुण्यक्षेत्रं नदीतीरं गुहा पर्वतमस्तकम् ॥ तीर्थप्रदेशाः सिंधूनां संगमः पावनं वनम् ॥ ९१ ॥ उद्यानानि विविक्तानि बिल्वमूलं तटं गिरेः ॥ देवतायतनं कूलं समुद्रस्य निजं गृहम् ॥ साधनेषु प्रशस्यंते स्थानान्येतानि मंत्रिणाम् ॥ ९२ ॥ (नारदीये) ॥ शिवस्य सन्निधाने च सूर्य्याग्न्योर्वा गुरोरपि ॥ दीपस्य ज्वलितस्यापि जपकर्म प्रशस्यते ॥ ९३ ॥ अटवी पर्वते पुण्ये नदीतीराणि यानि च ॥ (तंत्रांतरेऽपि) अश्वत्थामलकीमूलं गोशाला जलमध्यतः ॥ ९४ ॥ (रुद्रयामले) म्लेच्छ

दुष्टमृगव्यालशंकातंकादिवर्जिते ॥ कांते च पावने निंदारहिते भक्तिसंयुते ॥ ९५ ॥ (समयाचारतंत्रे) शृणु देवि विशेषेण उत्तराम्नाय हेतवे ॥ वेश्यागृहे श्मशाने वा गत्वा मैथुनमाचरेत् ॥ ९६ ॥ ततो जपादिकं देवि कृत्वाशु लभते फलम् ॥ अथवा स्वगृहे रात्रौ भक्तिमान् यः समाचरेत् ॥ स प्राप्नोति फलं सर्वं चिंताभयविवर्जितः ॥ ९७ ॥ (ज्ञानार्णवेऽपि) यत्र वा कुत्रचिद्भागे लिंगं यत्प श्चिमामुखम् ॥ स्वयंभूबाणलिंगं वा वृषशून्यं जलास्थितम् ॥ ९८ ॥ (फेत्कारिणीतंत्रे) एकलिंगे श्मशाने वा शून्यागारे चतुष्पथे ॥ तत्रस्थः साधयेद्योगी विद्यां त्रिभुवनेश्वरीम् ॥ ९९ ॥ (महाकपिलपंचरात्रे) कुटीविरक्तामित्येते देशाः स्वुर्मंत्रसिद्धिदाः ॥ एकांते मठिकामध्ये स्थातव्यं हठयोगिना ॥ १०० ॥ (स्थानभेदेन जपमाहात्म्यम्) गृहे शतगुणं विद्याद्गोष्ठे लक्षगुणं भवेत् ॥ कोटिर्देवालये पुण्यमनंतं शिवसान्निधौ ॥ १०१ ॥ (शिववचनात्) गृहे जपं समं विंद्याद्गोष्ठे शतगुणं भवेत् ॥ नद्यां शतसहस्रं स्यादनंतं शिव सन्निधौ ॥ १०२ ॥ समुद्रतीरे च ह्रदे गिरौ देवालयेषु च ॥ पुण्याश्रमेषु सर्वेषु जपः कोटिगुणो भवेत् ॥ १०३ ॥ (स्थानभेदेन कालभेदः) वटेऽरण्ये श्मशाने च शून्यागारे चतुष्पथे ॥ अर्धरात्रेऽपि मध्याह्ने पुरश्चरणमारभेत् ॥ १०४ ॥ (स्थानलक्षणम्) ग्रामा त्क्रोशमितं स्थानं नद्यादौ स्वेच्छया मितम् ॥ नगरादावथ क्रोशं क्रोशयुग्ममथापि वा ॥ आहारादिविहारार्थं तावतीं भूमिमाक्रमेत् ॥ (एकलिंगलक्षणं फेत्कारिणीतंत्रे) पंचक्रोशांतरे यत्र न लिंगान्तरमीक्ष्यते ॥ तदेकलिंगमाख्यातं तत्र सिद्धिरनुत्तमा ॥ १०५ ॥ (श्मशानलक्षणं फेत्कारिणीतंत्रे) दह्यंते व्यसवो यत्र शवकीलकसंकुले ॥ गृध्रगोमायुकाकाद्यैर्मांसलुब्धैर्यदावृतम् ॥ तच्छ्मशानमिति ख्यातं पिशाचगणसेवितम् ॥ १०६ ॥ (चितालक्षणम्) असंस्कृता चिता ग्राह्या न तु संस्कारसंयुता ॥ चांडालादिषु संप्राप्ता केवलं शीघ्रसिद्धिदा ॥ १०७ ॥ (अत्राधिकारिणः) महाबलो महाबुद्धिर्महासाहसिकः शुचिः ॥ महास्वच्छो दयावांश्च सर्व भूतहिते रतः ॥ १०८ ॥ (शून्यागारलक्षणं त्रिशक्तिरत्ने) काकादिनीडसंयुक्तं क्रिमिच्छत्रादिसंयुतम् ॥ नागैर्दूरनिर्मुक्तं साध्व

सोऽत्रवकारणम् ॥ सौधं संवृद्धवासौघं शून्यागारं तदुच्यते ॥ १०९ ॥ (चतुष्पथलक्षणं फेत्कारिणीतंत्रे) चतुर्णां च पथां यत्र संपातो युगपद्भवेत् ॥ तच्चतुष्पथमित्युक्तं रजन्यामिष्टदायकम् ॥ ११० ॥ (मठलक्षणं कुलार्णवे) अल्पद्वारमरंध्रगर्तविवरं नात्युच्चनीचायतं सम्यग्गोमयसांद्रलिप्तममलं निःशेषजंतूज्झितम् ॥ बाह्ये मंडपवेदिकूपरुचिरं प्राकारसंवेष्टितं प्रोक्तं योगमठस्य लक्षणमिदं सिद्धैर्हठाभ्यासिभिः ॥१११॥ (अथ दिङ्निर्णयः) उपविश्यासने मंत्री प्राङ्मुखो वा ह्युदङ्मुखः॥रात्रावुदङ्मुखैः कार्यं देवकार्यं सदैव हि ॥११२॥ (महाभारते उद्योगपर्वणि) सुपर्ण उवाच ॥ अनुशिष्टोऽस्मि देवेन गालवायातियोगिना ॥ ब्रूहि कामं तु कां यावि इष्टं प्रथमतो दिशम् ॥ ११३ ॥ पूर्वां वा दक्षिणां वाहमथवा पश्चिमां दिशम् ॥ उत्तरां वा द्विजश्रेष्ठ कुतो गच्छामि गालव ॥ ११४ ॥ गालव उवाच ॥ यस्यामुदयते पूर्वं सर्वलोकप्रभावनः ॥ सविता यत्र संध्यायां साध्यानां वर्तते तु यः ॥ व्रतद्वारं द्विजश्रेष्ठ दिवसस्य तथाध्वनः ॥ ११५ ॥ (शिवपूजनदिग्विभागः शिवरहस्ये) उत्तराभिमुखैः कार्यं श्रीमहादेवपूजनम् ॥ प्राङ्मुखेनाथवा कार्यं श्रीमहादेवपूजनम् ॥ पश्चिमाभिमुखैर्वापि कर्तव्यं शिवपूजनम्॥दक्षिणाभिमुखैर्मर्त्यैर्न कर्तव्यं शिवार्चनम्॥११६॥(ताराकाल्युपासनायां दिग्विभागः फेत्कारिण्याम्) प्राङ्मुखोदङ्मुखो वापि वक्ष्यमाणक्रमेण तु ॥ श्रीकामः शान्तिकामो वा पश्चिमाभिमुखः स्थितः ॥ ११७ ॥ (कालिकापुराणे) दिग्विभागेषु कौबेरी दिक् शिवाप्रीतिदायिनी ॥ तस्मात्तन्मुख आसीनः पूजयेच्चंडिकां सदा ॥ ११८ ॥ (अथ स्नाननिर्णयः) स्नानं त्रिषवणं प्रोक्तमशक्तौ द्विः सकृत्तथा ॥ अस्नातस्य फलं नास्ति न च पितॄनतर्पतः ॥ ११९ ॥ (अथ तिलकनिर्णयः) केशवाद्यभिधानैस्तु स्थानेषु द्वादशस्वपि ॥ ललाटोदरहृत्कंठदक्षपार्श्वांसकं ततः ॥ १२० ॥ वामपार्श्वांसकर्णे च पृष्ठदेशे ककुद्यपि ॥ ललाटे तु गदं कुर्य्याद्धृदये नंदकं पुनः ॥ १२१ ॥ शंखं चक्रं भुजद्वंद्वे शार्ङ्गं बाणं च मूर्द्धनि ॥ इत्थं तु वैष्णवः कुर्याच्छैवः कुर्यात्त्रिपुंड्रकम् ॥ १२२ ॥ आग्निहोत्रोत्थितं भस्मादायाग्निरिति मंत्रतः ॥ अभिमंत्र्य त्र्यंबकेन कुर्य्यात्पंच त्रिपुंड्रकम् ॥ १२३ ॥ (अथ

आसननिर्णयः ॥ (मंत्रमहोदधौ) जपेन्निधाय दर्भांस्त्रीन्कुशचर्मवरासने ॥ काष्ठपल्लववंशाश्मगोशकृत्तृणमृन्मयम् ॥ विषमं कठिनं मंत्री त्यजेदासनमाधिदम् ॥ १२४ ॥ (तंत्रांतरे) वंशासने दरिद्रत्वं पाषाणे व्याधिसंभवः ॥ धरण्यां दुःखसंभूतिर्दौर्भाग्यं दारुकासने ॥ १२५ ॥ तूलकम्बलवस्त्राणि पट्टव्याघ्रमृगाजिनम् ॥ कल्पयेदासनं धीमान्सौभाग्यज्ञानसिद्धिदम् ॥ १२६ ॥ तृणासने यशोहानिः पल्लवे चित्तविभ्रमः ॥ कृष्णाजिने ज्ञानसिद्धिर्मोक्षश्रीर्व्याघ्रचर्मणि ॥ १२७ ॥ स्यात्पौष्टिकं च कौशेयं शांतिकं वेत्रविष्टरम् ॥ वंशासने व्याधिनाशो कम्बले दुःखमोचनम् ॥ १२८ ॥ स्यादाभिचारिकं नीले रक्ते वश्यादिकं भवेत् ॥ धवले शांतिकं मोक्षः सर्वार्थश्चित्रकम्बले ॥ सर्वाभावे त्वासनार्थं कुशविष्टरमिष्यते ॥ १२९ ॥ (हंसमाहेश्वरे) लोम्नि चैव यदासीनस्तदा सर्वं विनश्यति ॥ लोमस्पर्शनमात्रेण सिद्धिहानिः प्रजायते ॥ कुशासने मंत्रसिद्धिर्नात्र कार्या विचारणा ॥ १३० ॥ जानूर्वोरंतरे कृत्वा सम्यक्पादतले उभे ॥ ऋजुकायो विशेद्योगी स्वस्तिकं तत्प्रचक्षते ॥ ऊर्वोरुपरि विन्यस्य सम्यक्पादतले उभे ॥ अंगुष्ठौ च निबध्नीयाद्धस्ताभ्यां व्युत्क्रमात्ततः ॥ १३१ ॥ पद्मासनमिति प्रोक्तं योगिनां हृदयंगमम् ॥ एकं पादमधः कृत्वा विन्यस्योरौ तथोत्तरम् ॥ ऋजुकायो विशेद्योगी वीरासनमितीरितम् ॥ १३२ ॥ (अथ मालानिर्णयः) अरिष्टपुत्रजीवैश्च शंखपद्मैर्मणिस्तथा ॥ कुशग्रंथिश्च रुद्राक्षा उत्तमं चोत्तरोत्तरम् ॥ १३३ ॥ (मंत्रखंडे) स्फाटिकी मौक्तिकी वापि प्रोतव्या सितसूत्रकैः ॥ सर्वकर्मसमृद्ध्यर्थं जपो रुद्राक्षमालया ॥ १३४ ॥ वैष्णवे तुलसीमाला गजदंतैर्गणेश्वरे ॥ त्रिपुराया जपे शस्ता रुद्राक्षै रक्तचन्दनैः ॥ १३५ ॥ (मंत्रखंडे) रेखयाष्टगुणं विद्यात् पुत्रजीवैर्दश स्मृतम् ॥ शतं चन्दनशंखैश्च प्रवालैस्तु सहस्रकम् ॥ १३६ ॥ स्फाटिकैर्लक्षसाहस्रं मौक्तिकैर्लक्षमेव च ॥ दशलक्षं राजताक्षैः सौवर्णैः कोटिरुच्यते ॥ १३७ ॥ कुशग्रन्थ्या च रुद्राक्षैरनन्तगुणितं भवेत् ॥ अष्टोत्तरशतैर्माला पञ्चाशच्चतुराधिकैः ॥ १३८ ॥ सप्तविंशतिभिः कार्या एकग्रीवा समेरुका॥मुखं मखेन संयोज्य पुच्छं

...योजयेत् ॥ १३९ ॥ प्रोतव्या सितसूत्रेण सत्कर्मफलसिद्धये ॥ पट्टसूत्रकृता माला देव्याः प्रीतिकरी मता ॥ १४० ॥ कार्प्पा... वैष्णवी माला पद्मसूत्रैरथापि वा ॥ ऊर्णाभिर्वल्कलैर्वापि शैवी माला प्रकीर्तिता ॥ १४१ ॥ कार्पाससूत्रैरन्येषां विदध्याज्जपमालिकाम् ॥ त्रिंशद्भिः स्याद्धनं पुष्टिः सप्तविंशतिभिर्भवेत् ॥ १४२ ॥ पंचविंशतिभिर्मोक्षः पंच स्यादभिचारणे ॥ पंचाशद्भिः कुलेशानि सर्वसिद्धिरुदीरिता ॥ १४३ ॥ जप्त्वाक्षमालां सकलां भ्रामयेदाशिखामणेः ॥ प्रदक्षिणाः पुनर्वक्रमारभ्यैवं समाचरेत्॥१४४॥स्वयं वामेन हस्तेन जपमालां न संस्पृशेत् ॥ अदीक्षितो द्विजो वापि स्पृशेच्चेच्छुद्धिमाचरेत् ॥ १४५ ॥ न धारयेत्करे मूर्ध्नि कंठे च जपमालिकाम् ॥ जपकाले जपं कृत्वा सदा शुद्धस्थले क्षिपेत् ॥१४६॥ गुरुं प्रकाशयेद्धीमान्मंत्रं नैव प्रकाशयेत् ॥ अक्षमालां च मुद्रां च गुरोरपि न दर्शयेत् ॥ १४७ ॥ कम्पनात्सिद्धिहानिस्स्याद्धननं बहुदुःखकृत् ॥ शब्दे जाते भवेद्रोगी करभ्रष्टा विनाशकृत् ॥ १४८ ॥ छिन्ने सूत्रे भवेन्मृत्युस्तस्माद्यत्नपरो भवेत् ॥ जपांते कर्णदेशे वा उच्चस्थानेऽथवा न्यसेत् ॥ १४९ ॥ इति ॥ (अथ रुद्राक्षमाहात्म्यं पद्मपुराणे) शिखायां हस्तयोः कंठे कर्णयोश्चापि यो नरः ॥ रुद्राक्षं धारयेद्भक्त्या शैवं लोकमवाप्नुयात्॥ १५० ॥रुद्राक्षे देहसंस्थे तु कुक्कुरो म्रियते यदि॥सोऽपि रुद्रपदं याति किं पुनर्मानवा गुह ॥१५१॥ यो ददाति द्विजातिभ्यो रुद्राक्षं भुवि षण्मुखम् ॥ तस्य प्रीतो भवेद्रुद्रः प्रयच्छति निजं पदम् ॥१५२॥ नववक्त्रं तु रुद्राक्षं धारयेद्वामबाहुना ॥ चतुर्दशमुखं चैव शिखायां धारयेद्बुधः॥१५३॥ सप्तविंशतिरुद्राक्षमालया देहसंस्थया ॥ यत्करोति नरः पुण्यं सर्वं कोटिगुणं भवेत् ॥१५४॥ (स्कंदपुराणे विशेषः) रुद्राक्षान्कण्ठदेशे दशनपरिमितान्मस्तके विंशती द्वे षट् षट् कर्णप्रदेशे करयुगलगता द्वादश द्वादशैव ॥ बाह्वोरिन्दोः कलाभिः पृथुकगिरिशिखासूत्रयोरेकमेकं वक्षस्यष्टाधिकं स्यात्कलयति सततं स स्वयं नीलकंठः ॥ १५५॥(मुखभेदेन रुद्राक्षमाहात्म्यं स्कंदपुराणे) कार्तिकेय उवाच ॥ एकद्वित्रिचतुःपंचषट्सप्तत्रसवो नव ॥ दशैकादश द्वादश त्रयोदश चतुर्दश ॥१५६॥ एतेषां तु मुखानां तु देवता कोऽत्र शंकर ॥गुणं च कीदृशं तेषां कथयस्व यथार्थतः ॥ १५७ ॥ शंकर

उवाच ॥ एकवक्त्रः शिवः साक्षाद्ब्रह्महत्यां व्यपोहति॥द्विवक्त्रो देवदेव्यौ च गोवधं नाशयेद्ध्रुवम् ॥ १५८ ॥ त्रिवक्त्रो दहनः साक्षाद्भ्रूणहत्यां व्यपोहति ॥ चतुर्वक्त्रः स्वयं ब्रह्मा ब्रह्महत्यां व्यपोहति ॥ १५९ ॥ पंचवक्त्रः स्वयं रुद्रः कालाग्निर्नाम नामतः ॥ षड्वक्त्रः कार्तिकेयस्तु धारयेद्दक्षिणे भुजे ॥१६०॥ ब्रह्महत्यादिभिः पापैर्मुच्यते नात्र संशयः ॥ सप्तवक्त्रो महासेनो ह्यनंतो नाम नागराट् ॥१६१॥ गुरुतल्पादिभिः पापैर्मुच्यते नात्र संशयः ॥ अष्टवक्त्रो महासेनः साक्षाद्देवो विनायकः ॥ १६२ ॥ पृष्ठोदरकरेणापि संस्पृशेद्वा गुरुस्त्रियम् ॥ एवमादीनि पापानि चातिपापानि सर्वशः ॥१६३॥ विघ्नास्तस्य च नश्यंति मुक्तो याति परां गतिम् ॥ गुणा ह्येतेषु सर्वेषु अष्टवक्त्रेषु धारणात् ॥१६४॥ नववक्त्रो भैरवः स्याद्धारयेद्वामके भुजे ॥ कपिलो मुक्तिदः प्रोक्तो मम तुल्यबलो भवेत् ॥ १६५ ॥ लक्षकोटिसहस्राणि ब्रह्महत्यां करोति यः ॥ तत्सर्वं दहते शीघ्रं नववक्त्रस्य धारणात्॥१६६॥ दशवक्त्रो महासेनः साक्षाद्देवो जनार्दनः॥ ग्रहाश्चैव पिशाचाश्च वैताला ब्रह्मराक्षसाः ॥१६७॥पन्नगाश्च विनश्यंति दशवक्त्रस्य धारणात्॥ वक्त्रैकादशरुद्राक्षो रुद्र एकादशः स्मृतः॥१६८ ॥ शिखायां धारयेन्नित्यं तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ अश्वमेधसहस्रस्य वाजपेयशतस्य च ॥१६९॥ हेमशृंगस्य लक्षस्य सम्यग्दत्तस्य यत्फलम्॥तत्फलं समवाप्नोति रुद्रैकादशधारणात् ॥१७०॥रुद्राक्षद्वादशाक्षस्य कंठदेशे च धारणात्॥ आदित्यस्तुष्यते नित्यं द्वादशार्कव्यवस्थितः ॥ १७१ ॥ त्रयोदशमुखः कामः सर्वकामफलप्रदः ॥ चतुर्दशास्यः श्रीकंठो वंशोद्धारकरः परः ॥१७२॥(अस्य धारणविधानं पद्मपुराणे) पंचामृतं पञ्चगव्यं स्नानकाले प्रयोजयेत् ॥ रुद्राक्षस्य प्रतिष्ठायां मन्त्रः पंचाक्षरो यथा ॥ ॐ त्र्यंबकादिमन्त्रं च यथा तेन प्रयोजयेत् ॥ १७३ ॥ (तत्र मंत्रः) ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ ॐ हौं अघोरे घोरे हुं घोरतरे हुं ॐ ह्रीं श्रीं सर्वतः सर्वांगे नमस्ते रुद्ररूपे हुम् ॥ इति मन्त्रः॥ अनेनापि च मंत्रेण रुद्राक्षस्य द्विजोत्तमः ॥ प्रतिष्ठां विधिवत्कुर्य्यात्ततोऽधिकफलं भवेत् ॥ ततो यथा

१ मतांतरे हरगौर्याविति पाठः । २ पद्मपुराणे-त्रिविक्त्रोऽग्निर्द्विजन्मोत्थपापराशिं प्रणाशयेदिति पाठः । ३ पद्मपुराणे-पञ्चवक्त्रस्तु कालाग्निरगम्याभक्ष्यपापनुत् । इति पाठः । ४ पद्मपुराणे-गर्भहत्यां व्यपोहतीति पाठः । ५ पद्मपुराणे-शिवस्तापुज्यकारकः । इति पाठः । ६ पद्मपुराणे-द्वादशास्यो भवेदर्कः इति पाठः ।

[1]शयेत्सा धारयेद्भक्तिसंयुतः ॥ १७४ ॥ (तत्र क्रमेण मंत्रः) ॐ ॐ ह्रः नमः १ ॐ ॐ नमः २ ॐ ॐ नमः ३ ॐ ह्रीं नमः ४ ॐ हुं नमः ५ ॐ हुं नमः ६ ॐ हुं नमः ७ ॐ सः हूं नमः ८ ॐ हं नमः ९ ॐ ह्रीं नमः १० ॐ श्रीं नमः ११ ॐ हूं ह्रीं नमः १२ ॐ क्षां क्षौं नमः १३ ॐ नमो नमः १४ ॥ इति रुद्राक्षधारणम् ॥ (अथ गोमुखीनिर्णयः) वस्त्रेणाच्छादितकरं दक्षिणं यः सदा जपेत् ॥ तस्य स्यात्सफलं जाप्यं तद्धीनमफलं स्मृतम् ॥ १७५ ॥ भूतराक्षसवेतालाः सिद्धगंधर्वचारणाः ॥ हरंति प्रकटं यस्मात्तस्माद्गुप्तं जपेत्सुधीः ॥१७६॥ अथांगुलीनिर्णयः ॥ (शिवाज्ञाविद्याग्रंथे) अंगुष्ठं मोक्षदं विद्यात्तर्जनी शत्रुनाशिनी ॥ मध्यमा धनदा शांतिकरत्वे वा ह्यनामिका ॥ १७७ ॥ कनिष्ठा कर्षणे शस्ता जपकर्मणि शोभने ॥ अंगुष्ठेन विना कर्म कृतं तदफलं यतः ॥ १७८ ॥ (ग्रंथांतरे) मध्यमानामिकांगुष्ठै रक्षमाला मणीशतैः ॥ एवं जपस्य चैकस्य क्रमोऽयं चालयेज्जपेत् ॥१७९॥ अंगुष्ठेन तु मोक्षाय मध्यमाघविवृद्धये॥जपेदनामिकांगुष्ठैर्नेतराभ्यां कदाचन ॥ अंगुष्ठमध्यमायोगात्सर्वसिद्धिप्रदासने ॥ (मतान्तरे) अंगुष्ठमध्यमाभ्यां च चालयेन्मध्यमध्यतः ॥ तर्जन्या न स्पृशेदेनां मुक्तिदो गणनक्रमः ॥१८०॥ अथ जपनिर्णयः (गोभिलमते) नैरन्तर्य्यविधिः प्रोक्तो न दिनं व्यतिलङ्घयेत् ॥ दिवसातिक्रमे तेषां सिद्धिरोधः प्रजायते ॥ १८१ ॥ शनैः शनैरतिस्पष्टं न द्रुतं न विलम्बितम् ॥ न न्यूनं नातिरिक्तं वा जपं कुर्य्याद्दिनेदिने ॥ १८२ ॥ (तंत्रसारे) मनः संहृत्य विषयान्मन्त्रार्थगतमानसः ॥ न द्रुतं न विलंबं च जपेन्मौक्तिकपंक्तिवत् ॥१८३॥ उच्चरेदर्थमुद्दिश्य मानसः स जपः स्मृतः॥ जिह्वोष्ठौ चालयेत्किंचिद्देवतागतमानसः ॥ १८४ ॥ किंचिच्छ्रवणयोग्यः स्यादुपांशुः स जपः स्मृतः॥ जिह्वाजपः शतगुणः सहस्रं मानसः स्मृतः ॥ जिह्वाजपः स विज्ञेयः केवलं जिह्वया बुधैः ॥ १८५ ॥ वर्णलक्षं जपेन्मंत्रं तदर्धं वा महेश्वरि ॥ एकलक्षावधिं कुर्य्यान्नातो न्यूनं कदाचन ॥ १८६ ॥ कल्पान्ते तु कृते संख्या त्रेतायां द्विगुणा स्मृता ॥ द्वापरे त्रिगुणा प्रोक्ता कलौ संख्या चतुर्गुणा ॥ १८७ ॥ (मंत्रमहोदधौ)

---

१ स्कन्दपुराणे धारणमंत्रभेदः-ॐ ऐं नमः १ ॐ श्रीं नमः २ ॐ धुं धूं नमः ३ ॐ ह्रीं हूं नमः ४ ॐ श्रीं नमः ५ ॐ ह्रीं नमः ६ ॐ ह्रीं नमः ॐ कं नमः ८ ॐ ह्रीं नमः ९ ॐ ह्रीं नमः १० ॐ श्रीं नमः ११ ॐ ह्रां ह्रीं नमः १२ ॐ क्ष्यैं स्तौं नमः १३ ॐ डं मां नमः १४-इति भेदः

पुरश्चरण एकस्मिन्कृते जन्मांतरौघतः ॥ मंत्रो यदि न सिद्धः स्यात्तदा तत्पुनराचरेत् ॥ १८८ ॥ (ग्रंथांतरे) सम्यगनुष्ठितो मंत्रो यदि सिद्धिर्न जायते ॥ पुनस्तेनैव कर्तव्यं ततः सिद्धो भवेद्ध्रुवम् ॥ १८९॥ पुनरनुष्ठितो मंत्रो यदि सिद्धो न जायते ॥ पुनस्तेनैव कर्तव्यं ततः सिद्धो भवेद्ध्रुवम् ॥ १९० ॥ पुनः सोऽनुष्ठितो मंत्रो यदि सिद्धो न जायते ॥ उपायास्तत्र कर्तव्याः सप्त शंकरभाषिताः ॥ १९१ ॥ भ्रामणं रोधनं वश्यं पीडनं शोषपोषणे ॥ दहनांतं क्रमात्कुर्यात्ततः सिद्धो भवेत्पुनः ॥१९२॥ (मंत्रमहोदधौ) यद्वा समुद्रगामिन्यां नद्यामिंदुरविग्रहे ॥ स्पर्शान्मोक्षांतमाजप्य जुहुयात्तद्दशांशतः ॥ १९३ ॥ विप्रान्संभोज्य नानान्नैर्मंत्राणां सिद्धिमाप्नुयात् ॥ सम्यग्जपपरस्यापि सिद्ध्यंति मनवोऽचिरात् ॥ १९४ ॥ (अगस्त्यसंहितायाम्) ॥ ग्रहणेऽर्कस्य चेंदोर्वा शुचिः पूर्वामुखोषितः ॥ नद्यां समुद्रगामिन्यां नाभिमात्रोदके स्थितः ॥ स्पर्शाद्विमुक्तिपर्यंतं जपेन्मंत्रमनन्यधीः ॥ १९५ ॥ (रुद्रयामले) अपि शुद्धोदकैः स्नात्वा शुचौ देशे समाहितः ॥ ग्रासाद्विमुक्तिपर्यंतं जपेन्मंत्रमनन्यधीः ॥ इति कृत्वा न संदेहो जपस्य फलभाग्भवेत् ॥ १९६ ॥ श्राद्धादेरनुरोधेन यदि जाप्यं त्यजेन्नरः ॥ स भवेद्देवताद्रोही पितॄन् सप्त नयेदधः॥१९७॥अथ होमनिर्णयः ॥ (होमकालः) वसन्तश्चैव पूर्वाह्णे मध्याह्ने ग्रीष्म उच्यते ॥ अपराह्णे भवेद्वर्षा शरच्चैवार्द्धरात्रिके ॥ उषो हेमंतकश्चैव संध्यायां शैशिरः स्मृतः ॥ १९८ ॥ (पुरश्चरणचंद्रिकायाम्) ततो जपदशांशेन होमं कुर्याद्दिने दिने ॥ अथवा लक्षसंख्यायां पूर्णायां होममाचरेत् ॥१९९॥ ॥ (अथ होमस्थानं वायवीयसंहितायाम्) अथाग्निकार्यं वक्ष्यामि कुण्डे वा स्थण्डिलेऽपि वा ॥ वेद्यामप्यायसे पात्रे मृन्मये वा नवे शुभे ॥ स्थंडिले वा प्रकुर्वीत सुसिद्धैः सिकतैः सितैः ॥ २०० ॥ ॥ (अथ कुंडस्वरूपम्) चतुरस्रं योनिमर्द्धचन्द्रं त्र्यस्रं सुवर्तुलम् ॥ षडस्रं पंकजाकारमष्टास्रं तानि नामतः ॥ २०१ ॥ सर्वसिद्धिकरं कुंडं चतुरस्रमुदाहृतम् ॥ पुत्रप्रदं योनिकुंडमर्द्धेंद्वाभं शुभप्रदम् ॥ २०२ ॥ शत्रुक्षयकरं त्र्यस्रं वर्तुलं शांतिकर्मणि ॥ छेदमारणयोः कुंडं षडस्रं पद्मसन्निभम् ॥ पुष्टिदं रोगशमनं कुंडमष्टास्रमीरितम् ॥ २०३ ॥ (वर्णभेदेन कुंडप्रकारः) विप्राणां चतुरस्रं स्याद्राज्ञां वर्तुलमिष्यते ॥ वैश्यानामर्द्धचन्द्राभं

शूद्राणां त्र्यस्रमीरितम् ॥ चतुरस्रं तु सर्वेषां केचिदिच्छन्ति तांत्रिकाः ॥२०४॥ (अथ कुंडप्रमाणं नारदीये) कुंडं तु नारदेनोक्तं हस्तमात्रं शुभं मतम् ॥ यावत्कुंडस्य विस्तारः खननं तावदीरितम् ॥२०५॥(हस्तप्रमाणम्) चतुर्विंशत्यंगुलाढ्यं हस्तं तस्य विदो विदुः ॥ कर्तुर्दक्षिणहस्तस्य मध्यमांगुलिपर्वणः ॥ २०६ ॥ (होमप्रमाणेन कुंडप्रमाणम्) मुष्टिमात्रमितं कुंडं शतार्द्धे संप्रचक्षते ॥ शतहोमेऽरत्निमात्रं हस्तमात्रं सहस्रके ॥ २०७ ॥ द्विहस्तमयुते लक्षे चतुर्हस्तमुदीरितम् ॥ दशलक्षे तु षड्हस्तं कोट्यामष्टकरं स्मृतम् ॥ मानहीनाधिकं कुंडमनेकभयदं भवेत् ॥ २०८ ॥ (कुंडस्यांगानि) कुंडरूपं तु जानीयात् परमं प्रकृतेर्वपुः ॥ प्राच्यां शिरः समाख्यातं बाहू दक्षिणसौम्ययोः ॥ उदरं कुंडमित्युक्तं योनिपादौ तु पश्चिमे ॥ २०९ ॥ (अथ कुंडप्रमाणेन मेखलाप्रमाणम्) कुंडवन्मेखलां कृत्वा योनिं कृत्वा ततः परम् ॥ कुंडानां यादृशं रूपं मेखलानां तु तादृशम् ॥२१० ॥ कुंडानां मेखलास्तिस्रो मुष्टिमात्रे तु ताः क्रमात् ॥ उत्सधोयामतो ज्ञेया कण्ठार्द्धगलसंमिताः ॥ २११ ॥ अरत्निमात्रे कुंडे स्युस्तास्त्रिद्व्येकांगुलात्मिकाः ॥ एकहस्तमिते कुंडे वेदाग्निनयनांगुलाः ॥ २१२ ॥ मेखलानां भवेदंतः परितो नेमिरंगुलात् ॥ एकहस्तस्य कुंडस्य वर्द्धयेत्तत्क्रमात्सुधीः ॥ २१३॥ दशहस्तांतमन्येषामर्द्धांगुलवशात्पृथक् ॥ कुंडे द्विहस्ते ता ज्ञेया रसवेदगुणांगुलाः ॥ २१४ ॥ चतुर्हस्तेषु कुंडेषु वसुतर्कयुगांगुलाः ॥ कुंडे रसकरे ताः स्युर्दशाष्टत्र्यंगुलान्विताः ॥ २१५ ॥ वसुहस्तमिते कुंडे भानुपंक्त्यष्टकान्विताः ॥ दशहस्तामिते कुंडे मनुभानुदशाङ्गुलाः ॥ विस्तारोत्सेधतो ज्ञेया मेखलाः सर्वतो बुधैः ॥२१६ ॥ (योनिप्रमाणम्) होतुरग्रे योनिरासामुपर्यश्वत्थपत्रवत् ॥ मुष्ट्यारत्न्येकहस्तानां कुंडानां योनिरीरिता ॥ २१७ ॥ षट्चैतु द्व्यंगुलायामविस्तारोन्नतिशालिनी ॥ एकांगुलं तु योन्यग्रं कुर्यादीषदधोमुखम् ॥ २१८ ॥ एकैकांगुलितो योनिं कुंडेष्वन्येषु वर्द्धयेत् ॥ यवद्वयक्रमेणैव योन्यग्रमपि वर्द्धयेत् ॥२१९॥ स्थलादारभ्य नालं स्याद्योन्या मध्यं सरन्ध्रकम् ॥नार्पयेत्कुंडकोणेषु योनिं तां तत्र वित्तमः ॥२२० ॥

१ स्थलात् भूमिमारभ्य इत्यर्थः ।नालं योन्याधारं मृण्मयमूर्द्धाकारं कल्पयेत् । सरंध्रकं मेखलावालभ्युपरिस्रवणार्थं रन्ध्रं कल्पयेदित्यर्थः ।
२

(नाभिमानम्) कुंडानां कल्पयेदंतर्नाभिमंबुजसन्निभाम्॥ तत्तत्कुंडानुरूपं वा मानमस्या निगद्यते ॥२२१॥मुष्टयरत्न्येकहस्तानां नाभिरुत्सेधतारतः॥द्वित्रिवेदांगुलोपेतां कुंडेष्वन्येषु वर्द्धयेत्॥२२२॥यवयवक्रमेणैव नाभिं पृथगुदारधीः॥ योनिकुंडे योनिमब्जकुंडे नाभिं विवर्ज्जयेत्॥ ॥ २२३ ॥ नाभिक्षेत्रं त्रिधा भित्त्वा मध्ये कुर्वीत कर्णिकाम्॥बहिरंशद्वयेनाष्टौ पत्राणि परिकल्पयेत्॥२२४॥ (शाकल्यप्रमाणं महार्णवे) तिलास्तु द्विगुणाः प्रोक्ता यवेभ्यश्चैव सर्वदा ॥ अन्ये सौगंधिकाः स्निग्धा गुग्गुल्वादि यवैः समाः ॥ २२५ ॥ (त्रिकारिकायाम्)आयुःक्षयं यवाधिक्यं यवसाम्यं धनक्षयम् ॥ सर्वकामसमृद्ध्यर्थं तिलाधिक्यं सदैव हि ॥२२६॥ (अथ द्रव्यभेदेनाहुतिप्रमाणं शारदातिलके) अथात्र होममानेन प्रमाणमभिधीयते ॥ कर्षमात्रं घृतं होमे शुक्तिमात्रं पयः स्मृतम्॥ २२७॥ उक्तानि पंच गव्यानि तत्समानि मनीषिभिः॥तत्समं मधुदुग्धान्नमक्षमात्रमुदाहृतम् ॥ २२८ ॥ दधि प्रसृतिमात्रं स्याल्लाजाः स्युर्मुष्टिसंमिताः ॥ पृथुकास्तत्प्रमाणाः स्युः सक्तवोऽपि तथा मताः ॥२२९॥ गुडं पलार्द्धमानं स्याच्छर्करापि तथा मता॥ग्रासार्द्धं चरुमानं स्यादिक्षुः पर्वावधिर्मतः ॥ २३० ॥ एकैकं पत्रपुष्पाणि तथाऽपूपानि कल्पयेत्॥कदलीफलनारंगफलान्येकैकशो विदुः ॥ २३१ ॥ मातुलुंगं चतुःखण्डं पनसं दशधा कृतम् ॥ अष्टधा नारिकेलानि खण्डितानि विदुर्बुधाः ॥ २३२ ॥ त्रिधा कृतं फलं बिल्वं कपिलं खण्डितं त्रिधा ॥ उर्वारुकफलं होमे चोदितं खण्डितं धिया ॥ २३३ ॥ फलान्यन्यानि खण्डानि समिधः स्युर्दशांगुलाः ॥ दूर्वात्रयं समुद्दिष्टं गुडूची चतुरंगुला ॥ २३४ ॥ व्रीहयो मुष्टिमात्राः स्युर्मुद्गा माषा यवा अपि॥ तण्डुलाः स्युस्तदर्द्धांशाः कोद्रवा मुष्टिसंमिताः ॥ २३५ ॥ गोधूमा रक्तकलमा विहिता मुष्टिमानतः ॥ तिलाश्चुलुकमात्राः स्युस्सर्षपास्त त्प्रमाणकाः ॥ २३६ ॥ शुक्तिप्रमाणं लवणं मरिचान्येकविंशतिः॥ पुरं बदरमानं स्याद्रामठं तत्समं स्मृतम् ॥ २३७ ॥ चन्दनागुरुकर्पूरकस्तूरीकुंकुमानि च ॥ तिंतिडीबीजमानानि समुद्दिष्टानि देशिकैः ॥ २३८ ॥ (आथाग्न्यंगानि) बधिरत्वं कर्णहोमे नेत्रे त्वंधत्वमाप्नुयात् । नासिकायां मनःपीडा शिरोहोमो हि मृत्युदः ॥ २३९ ॥ यतः काष्ठं ततः श्रोत्रं यतो भूम्यथ नासिका॥ यतोऽल्पज्वलनं नेत्रं यतो भस्म ततः शिरः॥

यतः प्रज्वलितो वह्निस्तन्मुखं जातवेदसः ॥ २४० ॥ (अग्निवर्णेन शुभाशुभपरीक्षणम्) स्वर्णसिंदूरबालार्ककुंकुमक्षोदसंनिभः ॥ भेरीवारिदहस्तीनां ध्वनिर्वह्नेः शुभावहः ॥२४१॥ नागचम्पकपुन्नागबकुलाः केतकानि च ॥ यूथिकानुनिभो गंधो गंधो वह्नेः शुभावहः ॥ २४२ ॥ काकस्वरस्वरो वह्नेर्यजमानस्य दुःखदः ॥ कृष्णे कृष्णगतेर्वर्णे यजमानं विनाशयेत् ॥ २४३ ॥ एवं दुष्टेषु चिह्नेषु प्रायश्चित्तोपदेशकः ॥ मूलेनाज्येन जुहुयात्पञ्चविंशतिमाहुतीः ॥ २४४ ॥ (अथ पूर्णाहुतिविचारः संस्कारभास्करे शौनकः) अंते पूर्णाहुतिं हुत्वा समुद्रादूर्मिरित्यतः॥ सततमाज्यधारां तां पूर्णाहुतिमथाचरेत्॥२४५॥(ग्रंथांतरे)चतुर्गृहीतमाज्यं तद्गृहीत्वा स्रुचि मध्यतः ॥वस्त्रतांबूलपूगादिफलपुष्पसमन्विताम्॥२४६॥अधोमुखस्रुवच्छन्नां गंधाक्षतैरलंकृताम्॥ पूर्वं दक्षिणहस्तेन पश्चाद्वामेन पाणिना ॥२४७॥ अग्रमध्यम मध्यस्थं मूलमध्यममध्यतः॥पाणिद्वयेन होतव्यं पाणिरेको निरर्थकः॥२४८॥(शांतिरत्ने)ऐशान्यामाहरेद्भस्म स्रुचा वाथ स्रुवेण वा॥अंकनं कारयेत्तेन शिरकंठांसकेषु च॥२४९॥(होमेऽशक्तेरुपायो योगिनीहृदये)होमकर्मण्यशक्तानां विप्राणां द्विगुणो जपः॥यद्यदङ्गं भवेद्भग्नं तत्संख्याद्विगुणो जपः ॥२५०॥ होमाभावे जपः कार्यो होमसंख्याचतुर्गुणः॥विप्राणां क्षत्रियाणां च रससंख्यागुणः स्मृतः॥वैश्यानां वसुसंख्याकमेषां [illegible]विधिः ॥२५१॥ (अगस्त्यसंहितायान्तु) यदि होमेऽप्यशक्तः स्यात्पूजायां तर्पणेऽपि वा ॥तावत्संख्याजपेनैव ब्राह्मणाराधनेन च॥ २५२ ॥ (अथ यंत्रलेखनार्थे पात्रनिर्णयः) स्वर्णादिपात्रे संलिख्य मातृकायंत्रमुत्तमम् ॥ काश्मीरचन्दनेनापि भस्मना वाथ सुव्रत ॥ २५३ ॥ काश्मीरं शक्तिसंस्कारे चन्दनं वैष्णवे मनौ ॥ शैवे भस्म समाख्यातं मातृकायंत्रलेखने ॥ २५४ ॥ (धूपादिसमर्पणाङ्गनिर्णयः रुद्रयामले) निवेदयेत्पुरोभागे गंधं पुष्पं च भूषणम् ॥ दीपं दक्षिणतो दद्यात्पुरतो वा न वामतः ॥ २५५ ॥ वामतस्तु तथा धूपमग्रे वा न तु दक्षिणे ॥ नैवेद्यं दक्षिणे भागे पुरतो वा न पृष्ठतः ॥ धूपदीपौ सुभोज्यं च देवताग्रे निवेदयेत् ॥ २५६ ॥ (अथ गंधनिर्णयः)सर्वेषु गंधजा[illegible] तेषु प्रशस्तो मलयोद्भवः ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन दद्यान्मलयजं सदा ॥ २५७ ॥ (देवभेदेन गंधाः) कृष्णागुरुः सकर्पूरः सहितो मलयोद्भवैः॥

वैष्णवप्रीतिदो गन्धः कामाख्यायाश्च भैरवे ॥ २५८ ॥ कुंकुमागरुकस्तूरीचन्द्रभागैः समीकृतैः ॥ त्रिपुराप्रीतिदो गंधस्तथा चंडयाश्च शंभुना ॥ २५९ ॥ (देवभेदेन गंधाष्टकम्) गंधाष्टकं तत्रिविधं शक्तिविष्णुशिवात्मकम् ॥ चन्दनागुरुकर्पूरचोरकुंकुमरोचनाः ॥ जटामांसी कपियुताः शक्तेर्गंधाष्टकं विदुः ॥ २६० ॥ चन्दनागुरुह्रीबेरकुष्ठकुंकुमसेव्यकाः ॥ जटामांसीमुरमिति विष्णोर्गंधाष्टकं विदुः ॥ २६१ ॥ चंदनागुरुकर्पूरतमालजलकुंकुमम् ॥ कुशीतं कुष्ठसंयुक्तं शैवं गंधाष्टकं विदुः ॥ २६२ ॥ (गंधार्पणे अंगुलीविचारः) अनामिकया देवस्य ऋषीणां च तथैव च ॥ गंधानुलेपनं कार्यं प्रयत्नेन विशेषतः ॥ २६३ ॥ पितॄणामर्पयेद्गंधं तर्जन्या च सदैव हि ॥ तथैव मध्यमांगुल्या धार्यो गंधः स्वयं बुधैः ॥ २६४ ॥ अथ फलपुष्पनिर्णयः ॥ (मंत्रमहोदधौ) श्वेतं पीतं हरेरिष्टं रक्तं रविगणेशयोः ॥ अक्षतानर्कधत्तूरौ विष्णौ नैवार्पयेत्सुधीः ॥२६५॥ बंधूकं केतकीं कुंदं केसरं कुटजं जपाम् ॥ शंकरे नार्पयेद्विद्वान्मालतीं यूथिकामपि ॥ २६६ ॥ शक्तौ दूर्वार्कमंदारान्मालूरं तगरं रवौ ॥ विनायके तु तुलसीं नार्पयेज्जातुचिद्बुधः॥२६७॥ (स्नाने विहिते पुष्पस्पर्शे दोषः लघुहारीतः) स्नानं कृत्वा च ये केचित्पुष्पं गृह्णंति वै द्विजाः ॥ देवतास्तन्न गृह्णंति भस्मीभवति काष्ठवत् ॥ २६८ ॥ पुष्पं पत्रं फलं देवे न प्रदद्यादधोमुखम् ॥ पुष्पांजलौ न तद्दोषस्तथा पर्युषितस्य च ॥ २६९ ॥ (मंत्रमहोदधौ) चम्पकं कमलं त्यक्त्वा कलिकामपिवर्जयेत् ॥ कुरंटकं कांचनारं वर्जयेद्बृहतीयुगम् ॥॥ २७० ॥ अथ सर्वदेवोपयोगिधूपः ॥ (तंत्रसारे) गुग्गुलुं सरलं दारु पत्रं मलयसंभवम् ॥ ह्रीबेरमगरुं कुष्ठं गुडं सर्जरसं घनम् ॥ २७१ ॥ हरीतकीं नखीं लाक्षां जटामांसीं च शैलजम् ॥ षोडशाङ्गं विदुर्धूपं दैवे पित्र्ये च कर्मणि ॥२७२॥ अथ दीपनिर्णयः ॥ (दीपपात्रं कालिकापुराणे) सुवृत्तवर्तिसत्स्नेहपात्रेऽभग्ने सुदर्शने ॥ मृन्मये वृक्षकोटौ तु दीपं दद्यात्प्रयत्नतः ॥ २७३ ॥ तैजसं दारवं लौहं मार्तिक्यं नारिकेलजम् ॥ तृणध्वजोद्भवं चापि दीपपात्रं प्रशस्यते ॥२७४॥ (दीपविचारः) न मिश्रीकृत्य दद्यात्तु दीपं स्नेहे घृतादिकम् ॥ घृतेन दीपकं नित्यं तिलतैलेन वा पुनः॥२७५॥ दीपं घृतयुतं दक्षे तैलयुक्तं च वामतः॥ दक्षिणे च सितां वर्तिं वामतो रक्तवर्तिकाम्॥२७६॥

नैव निर्वापयेद्दीपं देवार्थमुपकल्पितम् ॥ दीपहर्ता भवेदंधः काणो निर्वापको भवेत् ॥२७७॥ (अथ वाद्यनिर्णयो योगिनीतंत्रे) शिवागारे भल्लकं च सूर्यागारे तु शंखकम् ॥ दुर्गागारे वंशवाद्यं माधुरीं च न वादयेत् ॥२७८॥(जयसिंहकल्पद्रुमे)वादित्राणामभावे तु पूजाकाले च सर्वदा ॥ घंटाशब्दो नरैः कार्यः सर्ववाद्यमयी यतः ॥ २७९ ॥ (अथ नैवेद्यनिर्णयः) भक्ष्यं भोज्यं च लेह्यं च पेयं चोष्यं च पंचमम् ॥ सर्वत्र चैतन्नैवेद्यमाराध्यास्यै निवेदयेत् ॥ २८० ॥(नैवेद्यपात्राणि)तैजसेषु च पात्रेषु सौवर्णे राजते तथा॥ ताम्रे वा प्रस्तरे वाथ पद्मपात्रेऽथवा पुनः॥ २८१ ॥ यज्ञदारुमये वापि नैवेद्यं स्थापयेद्बुधः ॥सर्वाभावे च माहेये स्वहस्तघटिते यदि ॥ २८२ ॥ (नैवेद्यल०) अर्वाग्विसर्ज्जनाद्द्रव्यं नैवेद्यं सर्वमुच्यते॥ विसर्जिते जगन्नाथे निर्माल्यं भवति क्षणात्॥२८३ ॥नैवेद्यत्यागनिषेधः ॥ (आह्निकतत्त्वे) तृषार्ताः पशवो रुद्राः कन्यका च रजस्वला ॥ देवता च सनिर्माल्या हंति पुण्यं पुराकृतम् ॥२८४॥ (रुद्रयामले)निवेदितं च यद्द्रव्यं भोक्तव्यं तद्विधानतः॥तन्न चेद्भुज्यते मोहाद्भोक्तुमायान्ति देवताः ॥ २८५ ॥ अग्राह्यं शिवनैवेद्यं पत्रं पुष्पं फलं जलम् ॥ शालिग्रामशिलासंगात्सर्वं याति पवित्रताम् ॥ ॥ २८६ ॥ (उच्छिष्टाधिकारी मंत्रमहोदधौ) विष्वक्सेनो हरेरुक्तश्चंडेश्वर उमापतेः ॥ विकर्तनस्य चंडांशुर्वक्रतुंडो गणेशितुः ॥ शक्तेरुच्छिष्टचांडाली स्मृता उच्छिष्टभोजिनः ॥ २८७ ॥ अथ वस्त्रनिर्णयः ॥ (जयसिंहकल्पद्रुमे) पीतकौशेयवसनं विष्णुप्रीत्यै प्रकीर्तितम् ॥ रक्तं शक्त्यर्कविघ्नानां शिवस्य च सितं प्रियम् ॥ मलहीनं तथाऽच्छिद्रं क्षौमं कार्पासमेव च ॥ २८८ ॥ अथ प्रदक्षिणानिर्णयः ॥ (लिंगार्चनचंद्रिकायाम्) एका चंड्यां रवौ सप्त तिस्रो दद्याद्विनायके ॥ चतस्रो विष्णवे दद्याच्छिवे तिस्रः प्रदक्षिणाः ॥ २८९ ॥ (ग्रंथांतरे) एका चंड्यां रवेः सप्त तिस्रः कार्या विनायके ॥ हरेश्चतस्रः कर्तव्याः शिवस्यार्द्धं प्रदक्षिणा॥ २९० ॥ (शिवप्रदक्षिणामाहात्म्यम्) पूजां कृत्वा च यः शंभोर्न करोति प्रदक्षिणाम् ॥ सा पूजा निष्फला तस्य पूजकः स च दांभिकः ॥ २९१ ॥ भक्त्या करोति यः सम्यक्केवलं तु प्रदक्षिणम् ॥ पूजा सर्वा कृता तेन स सम्यक्छिवपूजकः ॥ २९२ ॥ अथ कूर्म्मनिर्णयः ॥ (कूर्म्मचक्रस्यावश्यकता यामले) क्षेत्रमध्यं समाश्रित्य कूर्मचक्रं विचिंतयेत ॥ कूर्मचक्रमविज्ञाय यः कुर्याज्जपयज्ञकम् ॥ तज्जपस्य फलं नास्ति सर्वानर्थाय कल्पते ॥

॥ २९३ ॥ (तंत्रराजे) कूर्म्मस्थितिं सुविज्ञाय यो जपेदवधिस्थितिः ॥ स प्राप्नोति फलान्युक्तान्यन्यथा नाशमेति च ॥२९४॥ (पुरश्चरण चंद्रिकोक्तकूर्मचक्रम्) वर्तुलं नवकोष्ठं तत्कृत्वा कूर्माकृतिं लिखेत् ॥ स्वरयुग्मं क्रमेणैव ऐंद्राद्यष्टसु दिक्षु च ॥ २९५ ॥ कादीन् वर्णान्लक्षमीशे मध्ये क्षेत्राधिपं यजेत् ॥ क्षेत्रनामाद्यवर्णस्तु यस्मिन्कोष्ठे स्थितो भवेत् ॥ २९६ ॥ मुखं तु तस्य जानीयाद्धस्तावुभयतः स्थितौ ॥ कोष्ठे कुक्षी उभौ पादौ द्वौ शिष्टं पुच्छमीरितम् ॥२९७॥ मुखस्थो लभते सिद्धिं करस्थः स्वल्पजीवनः ॥ कुक्षिस्थितिरुदासीनः पादस्थो दुःखमाप्नुयात् ॥ २९८ ॥ पुच्छस्थः पीड्यते मंत्री बन्धनोच्चाटनादिभिः ॥ कूर्मचक्रमिति प्रोक्तं मंत्राणां सिद्धिसाधनम् ॥ ॥ २९९ ॥ (मंत्रमहोदधौ) नवधा तां धरां कृत्वा पूर्वादिषु समालिखेत् ॥ कोष्ठेषु सप्त वर्गांश्च लक्षौ मध्ये तथा स्वरान् ॥ ३०० ॥

पुरश्चरणचन्द्रिकोक्तं कूर्मम् ।

	ईशानभुजा	पूर्वमुख	अग्निभुजा	
	ल- क्ष- अं- अः-	अ- आ- क ख ग घ ङ	इ- ई- च छ ज झ ञ	
उत्तर कुक्षि दक्षि	ओ- औ- श ष स ह	व्रजा	उ- ऊ ट ठ ड ढ ण	दक्षिण कुक्षि वाम
	ए- ऐ- य र ळ व	ऌ- ॡ- प फ ब भ म	ऋ ॠ- त थ द ध न	
	वायुपाद	पश्चिमपुच्छ	नैर्ऋत्यपाद	

मंत्रमहोदधिप्रोक्तं कूर्मम् ।

	ईशान	पूर्व	अग्नि	
	ल- क्ष-	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	
उत्तर	श ष स ह	अं अः । अ आ । इ ई ओ औ । । उ ऊ ए ऐ । ऌ ॡ । ऋ ॠ	ट ठ ड ढ ण	दक्षिण
	य र ळ व	प फ ब भ म	त थ द ध न	
	वायुकोण	पश्चिम	नैर्ऋत्यकोण	

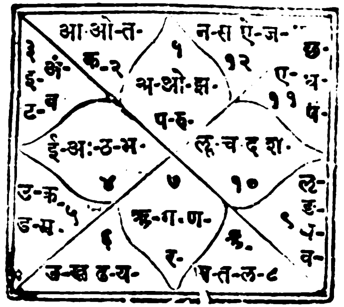
कक्षपुटिप्रोक्तं कूर्मम् ।

	ईशान	पूर्व	अग्नि	
उत्तर	दक्षभुजा महाशंखं ळ क्ष	मुख वृषभ क ख ग घ ङ	वामभुजा शूरराज च छ ज झ ञ	दक्षि०
	दक्षिणकटि पद्मयोनि श ष स ह	हृदय अमृत अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ए ऐ ओ औ अं अः	वामकटि वासुकि ट ठ ड ढ ण	
	दक्षांघ्रि पूज्य य र ल व	पुच्छ अजर प फ ब भ म	वामांघ्रि पूज्य अमर त थ द ध न	
	वायव्य	पश्चिम	नैर्ऋत्यकोण	

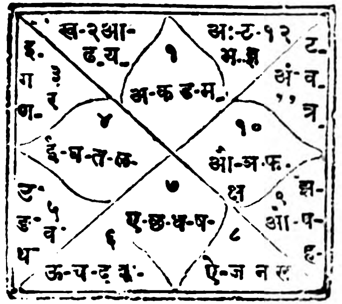
क्षेत्रनामादिमो वर्णो यत्र कोष्ठे भवेत्ततः ॥ उपविश्य जपं कुर्यान्नान्यस्मिन्दुःखदे स्थले॥३०१॥ (कक्षपुटौ) देवस्थाने सुनिश्चित्य कूर्मचक्रं सुसिद्धिदम् ॥ अष्टवर्गं लिखेद्धीमान्मध्यतो यावदुत्तरम् ॥ ३०२ ॥ लक्ष्मीशपदे क्षेत्रे वेद्यास्ते नवकोष्ठके ॥ हृदास्यभुजकट्यंघ्रिपुच्छे वर्गाः क्रमात्स्थिताः ॥३०३॥ पादादि यदि संज्ञानि तेषु क्षेत्राधिपा नव॥ अमृतो वृषभश्चैव शूरराजश्च वासुकिः ॥ ३०४ ॥ अमरा अजरश्चैव पूज्यशक्तियुतस्तथा ॥ पद्मयोनिर्महाशंखो ज्ञेयास्तत्तदनुक्रमात् ॥ मध्यात्पूर्वादितः पूज्या मंत्रमत्रैव चोच्यते ॥ ३०५ ॥ अथ मंत्रः ॐ अमुकक्षेत्रपाल देवीपुत्रावतारावतर बलिं पिशितं गृह्ण २ खल २ सर्वविघ्नान् हन२ स्वाहा ॥ वि० ॥ अनेन मंत्रेण अमृतादयः सर्वे क्षेत्रपालाः पूज्याः स्वस्यास्थितभूम्यां यः क्षेत्रपालः तस्योद्देशेन तन्नाम्ना बलिर्देयः ॥३०६॥ यत्र यत्र भवेद्वर्गे क्षेत्रनामाद्यमक्षरम्॥ तन्मुखं शेषवर्गेषु करकुक्ष्यंघ्रिकल्पना ॥ ३०७ ॥ मुखस्थः क्षोभयेन्मंत्री करस्थः स्वल्पभोगभाक् ॥ कुक्षिस्थो ह्युदासीनः पादस्थो दुःखमाप्नुयात् ॥ ३०८ ॥ पुच्छस्थो वधबंधं च जपादाप्नोति निश्चितम् ॥ दीपस्थानं ततः क्षेत्रे ज्ञात्वा मंत्राञ्शुचिर्जपेत् ॥ ३०९ ॥ (दीपस्थाने कूर्मविशेषः)(क्षेत्राधिपस्य नाम्ना हि दीपस्थानं विचारयेत् ॥ मुखं च नवधा कृत्वा स्वरवर्णादिकं लिखेत् ॥ ३१० ॥ साध्यनामादिमो वर्णो यत्र कोष्ठे भवेद्यदि ॥ अथवा कूर्मकोष्ठे तु यत्र नामाक्षरं भवेत् ॥३११॥ दीपस्थानं हि तज्ज्ञेयं तत्र स्थित्वा मनुं जपेत्) क्षेत्रसाधकर्मणामेकत्रैवाद्यमक्षरम् ॥ यदि स्यात्स ध्रुवो मंत्रः क्षिप्रमेव सुसिध्यति ॥ ३१२ ॥ (तंत्रराजे) कूर्मस्थितिं सुविज्ञाय यो जपेदवधिस्थितिः ॥ स प्राप्नोति फलान्युक्तान्यन्यथा नाशमेति च ॥३१३॥ (यामले) कूर्मचक्रमविज्ञाय यः कुर्याज्जपयज्ञकम् ॥ तज्जपस्य

फलं नास्ति सर्वानर्थाय कल्पते ॥ ३१४ ॥ (देवीयामले) कुरुक्षेत्रे प्रयागे च गंगासागरसंगमे ॥ महाकाले च काश्यां च कूर्म्मस्थानं न चिंतयेत् ॥३१५॥ (गौतमीये) पर्वते सिंधुतीरे वा पुण्यारण्ये नदीतटे ॥ यदि कुर्यात्पुरश्चर्यां तत्र कूर्म्मं न चिंतयेत् ॥ ग्रामे वा यदि वास्तौ वा गृहे तं च विचिंतयेत् ॥३१६॥ (विश्वामित्रकल्पे) काशी पुरी च केदारो महाकालश्च नासिकम्॥ त्र्यंबकं च महाक्षेत्रं पंच दीपा इमे भुवि॥३१७॥

सिद्धादियोगे
मालिनीविजये अकडमचक्रम् ।



सिद्धादियोगे
छुड्डाकडमचक्रम् ।



इति कूर्मः ॥ अथ सिद्धादिमंत्रविचारः ॥ (मालिनीविजये) ऋगासिद्धादियोगेषु मंत्र दाने विशेषतः ॥ प्रसिद्धं नाम गृह्णीयाज्जागर्ति मनुजो यतः ॥ ३१८ ॥ (सिद्धादि चक्रं मालिनीविजये) द्वादशारे तथा चक्रे कूटप्रांतविवर्जितान् ॥ आद्यंतान्विलिखेद्वर्णान् पूर्वतो यावदीश्वरः ॥ ३१९ ॥ अङ्कानेकादिभान्वंतांल्लिखेत्पूर्वादितः क्रमात् ॥ सिद्धः साध्यः सुसिद्धोऽरिश्चतुर्धा तु स्फुटो भवेत् ॥ ३२० ॥ मंत्र साधकयोराद्यो वर्णः स्याद्यत्र कोष्ठगः ॥ स एव सततं ग्राह्यः स्ववर्णान्मंत्र वर्णतः ॥ ३२१ ॥ नवैकपंचमे सिद्धः साध्यः षड्दशयुग्मके ॥ त्रिसप्तैकादशे मित्रं वेदाष्टद्वादशे रिपुः ॥३२२॥ (मंत्रमहोदधौ) नाम्नो मंत्रस्य वर्णौघं चतुर्भिर्विभजेत् सुधीः ॥ एकादिशेषे सिद्धादि क्रमाज्ज्ञेयं विचक्षणैः ॥ ३२३ ॥ सिद्धः सिध्यति कालेन साध्यस्तु जपहोमतः ॥ सुसिद्धः प्रातिमात्रेण साधकं भक्षयेदरिः ॥ ३२४ ॥ अथारिमंत्रचक्रम् ॥ अथारिमंत्रविचारः (समयाचारतंत्रे) मंत्राक्षरेण मंत्रं च दीपना म्नोर्भवेद्यादि ॥ साधकस्य च नाम्नाथ किं न सिध्यंति मंत्रिणः ॥३२५॥ तस्माच्चक्रं विचार्यैव मित्रं चेत्सर्वसिद्धिदम् ॥ अरित्वमद्वयस्येह गकारेण परस्परम् ॥३२६॥ ऋद्वयस्य ठकारेण ठकारस्य च ऋद्वयम् ॥ लृद्वयस्य पकारेण पकारस्य च लृद्वयम् ॥ ३२७ ॥ उद्वयस्य षकारेण

अथारिमंत्रचक्रम्.

वैरी	अआ	ऋॠ	ऌॡ	उऊ	ज	ल	ड	फ	फ	क
वैरि	ग	ठ	प	ष	ट	ख	तघ	र	स	

...स्योर्युगेन तु॥जकारस्य टकारेण ऌकारस्य खकारतः ॥३२८॥ डकारस्य तकारेण फकारस्य घकारतः ॥फकारस्य च रेफेण फकारस्य ...कारतः ॥ अरित्वमेषां वर्णानामन्येर्षां मिश्रभावना ॥३२९॥ (अरिमंत्रदोषोद्धारो मालिनीविजये) अरिमंत्रो गृहीतश्चेदज्ञानवशतस्तदा॥ तस्य त्यागः प्रकर्तव्यस्तत्प्रकारोऽधुनोच्यते ॥ ३३० ॥ सुदिने स्थापयेत्कुंभं सर्वतोभद्रमंडले ॥ विलोमं च जपेन्मंत्रं पूरयेत्तन्तु पाथसा ॥३३१॥तत्र देवं समावाह्य जपेदावरणार्चितः ॥तदग्रे स्थंडिलं कृत्वा प्रतिष्ठाप्यानलं ततः॥३३२॥जुहुयान्मूलमंत्रेण विलोमेन शतं घृतैः॥ दिक्पतिभ्यो बलिं दद्यात्पायसान्नैर्घृतान्वितैः ॥३३३॥पुनः संपूज्य देवेशं प्रार्थयेन्मनुनामुना॥अनुकूटमनालोच्य मया तरलबुद्धिना॥३३४॥ यदुपात्तं पूजितं च प्रभो मंत्रस्य रूपकम् ॥ तेन मे मनसः क्षोभमशेषं विनिवर्तय ॥ ३३५ ॥ पूजनं प्रत्यहं वा तु भूयाच्छ्रेयः सनातनम् ॥ तनोतु मम कल्याणं पावनीं भक्तिरस्तु मे ॥ ३३६ ॥ एवं सम्प्रार्थ्य देवेशं कर्पूरागरुचन्दनैः ॥ विलोमं विलिखेन्मंत्रं ताडपत्रे तदर्चयेत् ॥ ३३७ ॥ प्रबध्य तु निजे मूर्ध्नि स्नायात्कुंभस्थितैर्जलैः॥ पुनः सम्पूर्य तत्तोयैर्न पश्येन्मंत्रपत्रकम् ॥ ३३८ ॥ सम्पूज्य कुंभसहितं तडागे वा विनिःक्षिपेत् ॥ विप्रान्सम्भोज्य मुच्येत पीडयाऽसौ च मानवः ॥ ३३९ ॥ अथ ऋणधनशोधनम् (मालिनीविजये) नामाद्यक्षरमारभ्य यावन्मंत्रादिवर्णकम् ॥ कृत्वा स्वरैर्बुधो भिद्यात्तदन्याद्विपरीतकम् ॥३४०॥ कृत्वाऽधिको मंत्रवर्ण ऋणी चेन्मंत्रमुत्तमम् ॥स्वयं ऋणी च तन्मंत्रं त्यजेत्पूर्वऋणी यतः ॥ ३४१ ॥ (प्रकारांतरेऽपि) मंत्रसाधकनामार्णः साधकस्य तथैव च ॥ अष्टाभिस्तु हरेद्भागं शेषैर्ऋणधनम्भवेत् ॥ ३४२ ॥ विना शुद्धिं जपोपयोगिमंत्रः ॥ येषां मनूनां सिद्धादिशोधनं नास्ति तान्ब्रुवे ॥ एकवर्णस्त्रिवर्णो वा पंचार्णो रसवर्णकः ॥ ३४३ ॥ सप्तार्णो नववर्णश्च रुद्रार्णो रदनाक्षरः ॥ अष्टार्णो हंसमंत्रश्च कूटो वेदोदितो ध्रुवम् ॥३४४॥ स्वप्नलब्धः स्त्रिया प्राप्तो मालामंत्रो नृकेसरी॥ प्रसादो रविमंत्रश्च वाराहो मातृकाः परा ॥ ३४५॥ त्रिपुरा काममंत्रश्चाज्ञासिद्धः पक्षिनायकः॥ बौद्धमंत्रा जैनमंत्रा नैव सिद्धादिशोधनम्॥ एतद्भिन्नेषु मंन्त्रेषु शुद्धिरावश्यकी मता ॥ ३४६ ॥ (सिद्धसारस्वते विशेषः) नपुंसकस्य मंत्रस्य सिद्धादीन्नैव शोधयेत् ॥ ३४७ ॥ शापरहितमंत्राः ॥ भीष्मपर्वणि या गीता सा प्रशस्ता कलौ युगे ॥ विष्णोः सहस्रनामाख्यं स्तोत्रं पापप्रणाशनम् ॥ ३४८ ॥

गजेन्द्रमोक्षणं चैव तथा कारुण्यकः स्तवः ॥ नारसिंहं तथा स्तोत्रं स्तोत्रं श्रीरामसंज्ञकम् ॥ ३४९ ॥ देव्याः सप्तशतीस्तोत्रं तथा नामसहस्रकम् ॥ श्लोकाष्टकं नीलकंठं शैवं नामसहस्रकम् ॥ ३५० ॥ त्रिपुरायाः प्रसादाख्यं सूर्यस्य स्तवराजकम् ॥ पैत्रो रुचिस्तवो राश्च इन्द्राक्षीस्तोत्रमेव च ॥ ३५१ ॥ वैष्णवं च महालक्ष्म्याः स्तोत्रमिंद्रेण भाषितम् ॥ भार्गवाख्येन रामेण शतान्यन्यानि कारणात् ॥ ३५२ ॥ अथ कलिसिद्धिप्रदा मन्त्राः ॥ (मंत्रमहोदधौ) सिद्धिप्रदा कलियुगे ये मंत्रास्तान्वदाम्यतः॥ त्र्यर्ण एकाक्षरोऽनुष्टुप् त्रिविधो नरकेसरी ॥ ३५३ ॥ एकक्षरोऽर्जुनोऽनुष्टुब् द्विविधस्तुरगाननः ॥ चिंतामणिः क्षेत्रपालो भैरवो यक्षनायकः ॥ ३५४ ॥ गोपालो गजवक्त्रश्च चेटका यक्षिणी तथा ॥ मातंगी सुंदरी श्यामा तारा कर्णपिशाचिनी ॥ ३५५ ॥ शबर्येकजटा वर्मा काली नीलसरस्वती ॥ त्रिपुरा कालरात्रिश्च कलाविष्टप्रदा इमे ॥ ३५६ ॥ कलौ चतुर्वर्णोपयोगिमंत्राः ॥ अघोरा दक्षिणामूर्तिरुमा माहेश्वरो मनुः ॥ हयग्रीवो वराहश्च लक्ष्मीनारायणस्तथा ॥ ३५७ ॥ प्रणवाद्याश्चतुर्वर्णा वह्निमंत्रास्तथा रवेः ॥ प्रणवाद्यो गणपतिर्हरिद्रागणनायकः ॥ ३५८ ॥ सौरोऽष्टाक्षरमंत्रश्च तथा रामषडक्षरः ॥ मंत्रराजो ध्रुवादिश्च प्रणवो वैदिको मनुः ॥ ३५९ ॥ वर्णत्रयाय दातव्या एते शूद्राय नो बुधैः ॥ सुदर्शनं पाशुपतमाग्नेयास्त्रं नृकेसरी ॥ वर्णद्वयाय दातव्या नान्यवर्णे कदाचन ॥ ३६० ॥ छिन्नमस्ता च मातंगी त्रिपुरा कालिका शिवः ॥ लघुश्यामा कालरात्रिर्गोपालो जानकीपतिः ॥ ३६१ ॥ उग्रतारा भैरवश्च देया वर्णचतुष्टये ॥ मृगीदृशां विशेषेण मंत्रा ये ते सुसिद्धिदाः ॥ ३६२ ॥ ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः शूद्रा नार्योऽधिकारिणः ॥ श्रद्धावंतो देवगुरुद्विजपूजासु सर्वथा ॥ ३६३ ॥ मायां कामं श्रियं वाचं प्रदद्यान्मुखजन्मने ॥ मायामृते बाहुजेभ्य ऊरुजेभ्यः श्रियं गिरम् ॥ ३६४ ॥ वाणीबीजं तु शूद्रेभ्योऽन्येभ्यो वर्म वषण्नमः ॥ ३६५ ॥ (कुलार्णवे) दासस्य शिवभक्तस्य हितप्रियकरस्य च ॥ शुद्धस्यापि प्रदातव्यं नमोऽन्तं प्रणवं विना ॥ ३६६ ॥ विना हि प्रणवं मन्त्रः स्त्रीशूद्राणां प्रकीर्तितः ॥ प्रणवेन समायुक्तास्तन्मंत्राश्च विषोपमाः ॥ ३६७ ॥ (आग

मेऽपि) स्वाहाप्रणवसंयुक्तं मंत्रं शूद्रे ददेद्द्विजः॥शूद्रश्चांडालतामेति विप्रः शूद्रत्वमेव हि॥३६८॥अथ मंत्राणां पुंस्त्रीनपुंसकविचारः॥(शारदा तिलके) पुंमंत्रा हुंफडंताः स्युर्द्विठांतास्तु स्त्रियो मताः ॥ नपुंसका नमोंताः स्युरित्युक्ता मनवस्त्रिधा ॥३६९॥ (मंत्रमहोदधौ)पुंस्त्रीनपुंसकाः प्रोक्ता मनवस्त्रिविधा बुधैः ॥ वषडंता फडंताश्च पुमांसो मनवः स्मृताः ॥ ३७० ॥ वौषट्स्वाहांतगा नार्यो हूंनमोंता नपुंसकाः ॥ वश्यो च्चाटनरोधेषु पुमांसः सिद्धिदायकाः ॥ ३७१ ॥ क्षुद्रकर्मरुजां नाशे स्त्रीमंत्राः शीघ्रसिद्धिदाः ॥ अभिचारे स्मृता क्लीबा एवं ते मनवस्त्रिधा ॥ ३७२ ॥ (अग्निचन्द्रसम्बंधिमंत्रा ग्रंथांतरे) प्रणवाक्षररेफहकारप्राया मंत्रा आग्नेयाः ॥ इन्द्रामृताक्षरप्राया मन्त्राः सौम्याः ॥ सूर्ये वहति आग्नेयानां प्रबोधकालश्चन्द्रे सौम्यानाम् ॥ स्वप्रबोधकाले मन्त्रग्रहणे जपे च कृते तात्कालिकासिद्धिः स्यादेवेति ॥३७३॥ (बीजमन्त्रादिप्रकारो मन्त्रमहोदधौ)बीजमन्त्रास्तथा मन्त्रा मालामन्त्रास्तथापरे॥ त्रिधा मन्त्रगणाः प्रोक्ता बुधैरागमवेदिभिः ॥ ॥ ३७४ ॥ बीजमन्त्रा दशार्णांतास्ततो मन्त्रा नखावधिः ॥ विंशत्यधिकवर्णा ये मालामन्त्रास्तु ते स्मृताः ॥ ३७५ ॥ बाल्ये वयसि सिद्ध्यंति बीजमन्त्रा उपासितुम्॥मन्त्रा सिद्धा यौवने तु मालामन्त्राश्च वार्द्धके ॥३७६॥ उक्तान्यस्यामवस्थायामभीष्टप्राप्तये सुधीः॥ बीजमंत्रादिमंत्राणां द्विगुणं जपमाचरेत् ॥ ३७७॥ (गुप्तचैतन्यशक्तियुक्तमंत्राः शिवोऽपि) गुप्तवीर्याश्च ये मंत्रा न दास्यंति फलं प्रिये॥मंत्राश्चैतन्यसहिताः सर्वसिद्धिकराः स्मृताः ॥ ३७८ ॥ चैतन्यरहिता मन्त्रा प्रोक्ता वर्णास्तु केवलाः ॥ फलं नैव प्रयच्छंति लक्षकोटिजपादपि ॥ ३७९ ॥ अथ कामनापरत्वेन मन्त्रादौ बीजनिर्णयः ॥ (मालिनीविजये) यदि दोषे तु सर्वत्र मायाकाममथापि वा ॥ क्षिप्त्वा ह्यादौ श्रियं दद्यात्सर्वदोषविमुक्तये ॥ ३८० ॥ प्रणवो भुवनेशानि रमाबीजमनोभवम् ॥ जीवनं सर्वमन्त्राणामित्याह भगवाञ्छिवः ॥ ३८१ ॥ श्रीबीजाद्यं यदा जाप्यं तदा लक्ष्मीरचञ्चला ॥ कामाद्यं जपनादेव सर्वलोकं वशं नयेत् ॥ ॥ ३८२ ॥ वागादिजपनादेव वाक्सिद्धिर्जायतेऽचिरात् ॥ शक्तिबीजादिको मंत्रो निर्दोषमचिराद्दिशेत् ॥ ३८३ ॥ पुटनात्प्रणवाभ्यां

तु मोक्षमाप्नोति निश्चितम् ॥ एवं मंत्रवरं जप्त्वा किं न सिध्यति मंत्रवित् ॥ ३८४ ॥ अथ कामनापरत्वेन मंत्रांते पल्लव निर्णयः (हरगौरीतंत्रे) मत्राणां पल्लवो वासो मंत्राणां प्रणवः शिरः ॥ शिरःपल्लवसंयुक्तो मंत्रः कामदुघो भवेत् ॥ ३८५ ॥ वश्याकर्षणहोमेषु स्वाहांतः सिद्धिदायकः ॥ वौषट्पल्लवसंयुक्तो मंत्रः पुष्ट्यादिसाधकः ॥ ३८६ ॥ हुंकारपल्लवोपेतो मारणे ब्राह्मणं विना॥यंत्रभंजनकार्येषु सुघोरभयनाशने ॥ ३८७ ॥ वषडंतः प्रकल्प्यस्तु ग्रहबाधाविनाशकः॥उच्चाटने तु संप्रोक्तो मंत्रः फट्पल्लवान्वितः॥ ३८८॥ (मनुमते) वषड् वश्ये फडुच्चाटे हुं स्तंभे खं च मारणे ॥ स्वाहा तुष्ट्यै ठः ठः पुष्ट्यै नमः सर्वार्थसाधने ॥ ३८९ ॥ मतांतरे ॥ वषड् वश्ये फडुच्चाटे हुं द्वेषे खं च मारणे ॥ टः स्तंभे वौषडाकर्षे नमः संपत्तिहेतवे॥स्वाहा पुष्टिस्तथा तुष्टिरित्येते मंत्रपल्लवाः ॥ ३९०॥ अथ मंत्राणां छिन्नादिक दोषनिर्णयः ॥(शारदातिलके) छिन्नादिदुष्टा मन्त्रास्ते पालयन्ति न साधकम्॥ छिन्नो रुद्धः शक्तिहीनः पराङ्मुख उदीरितः॥३९१॥बधिरो नेत्रहीनश्च कीलितः स्तंभितस्तथा ॥ दग्धस्त्रस्तश्च भीतश्च मलिनश्च तिरस्कृतः ॥३९२॥ भेदितश्च सुषुप्तश्च प्रध्वस्तो बालकस्ततः॥३९३॥ कुमारश्च युवा प्रौढो वृद्धो निस्त्रिंशकस्तथा॥ निर्बीजः सिद्धिहीनश्च मंदः कूटस्तथा पुनः॥३९४ ॥ निरंशकः सत्त्वहीनः केकरो बीजहीनकः॥ धूमिलालिंगितौ स्यातां मोहितस्तु क्षुधार्तकः ॥ ३९५ ॥ अतिदृप्तोऽगहीनः स्यादतिक्रुद्धः समीरितः ॥ अतिक्रूरश्च सव्रीडः शांतमानस एव च ॥ ३९६ ॥ स्थानभ्रष्टस्तु विकलः सोऽतिवृद्धः प्रकीर्तितः ॥ निःस्नेहः पीडितश्चापि वक्ष्याम्येषां च लक्षणम् ॥ ३९७ ॥(अथ लक्षणानि) मनोर्यस्यादिमध्यांतेष्वानिलं बीजमुच्यते ॥ संयुक्तं वापि युक्तं वा स्वराक्रांतं त्रिधा पुनः॥३९८॥चतुर्धा पंचधा वाथ स मंत्रश्छिन्नसंज्ञकः॥ आदिमध्यावसानेषु भूबीजद्वंद्वलांछितः ॥ ३९९ ॥ रुद्धमंत्रः स विज्ञेयो भुक्तिमुक्तिविवर्जितः ॥ ४०० ॥ मायात्रितत्त्वंश्रीबीजं रावहीनश्च यो मनुः ॥ शक्तिहीनः स कथितो यस्य मध्ये न विद्यते ॥४०१॥ कामबीजं मुखे माया शिरस्यंकुशमेव च॥असौ पराङ्मुखः प्रोक्तो हकारो बिंदुसंयुतः ॥ ४०२ ॥ आद्यंतमध्येष्विंदुर्वा स भवेद्बधिरः स्मृतः ॥ पंचवर्णो मनुर्यः स्याद्रेफार्कंदुविवर्जितः ॥ ४०३ ॥ नेत्रहीनः स विज्ञेयो

...क: ॥आदिमध्यावसानेषु हसः प्रासादवाग्भवौ॥ स्कारो बिन्दुमाञ्जीवो रावश्चापि चतुष्फलः ॥ ४०४ ॥ माया यत्रास्ति च पदं
नास्ति यस्मिन्स कीलितः॥एकं मध्ये द्वयं मूर्ध्नि यस्मिन्नस्त्रपुरंदरौ ॥ ४०५ ॥विद्येते स तु मंत्रः स्यात्स्तंभितः सिद्धिरोधकः॥वह्निर्वायुसमायुक्तो
यस्य मंत्रस्य मूर्द्धनि ॥ ४०६ ॥ सप्तधा दृश्यते तं तु दग्धं मन्वीत मंत्रवित् ॥अस्त्रं द्वाभ्यां त्रिभिः षड्भिरष्टभिर्दृश्यतेऽक्षरैः॥४०७॥ त्रस्तः
सोऽभिहितो यस्य मुखे न प्रणवः स्थितः॥शिवो वा शक्तिरथवा भीताख्यः स प्रकीर्तितः॥४०८॥आदिमध्यावसानेषु भवेत्प्राणचतुष्टयम्॥अस्य
मन्त्रः स मलिनो मन्त्रवित्तं विवर्जयेत्॥४०९॥यस्य मध्ये दकारो वा क्रोधो वा मूर्द्धनि द्विधा॥अस्त्रं तिष्ठति मंत्रश्च स तिरस्कृत ईरितः॥४१०॥
भ्योद्वयं हृदयं शीर्षे वषड् वौषट् च मध्यतः॥यस्यासौ भेदितो मंत्रस्त्याज्यः सिद्धिषु सूरिभिः॥४११॥त्रिवर्णो हंसहीनो यः सुषुप्तः समुदाहृतः॥
मंत्रो वाप्यथवा विद्या सप्ताधिकदशाक्षरः॥४१२॥फट्कारपञ्चकादिर्यो मदोन्मत्त उदीरितः॥तद्वदस्त्रं स्थितं मध्ये यस्य मंत्रः स मूर्छितः॥४१३॥
विरामस्थानगं यस्य हृतवीर्यस्स कथ्यते॥ आदौ मध्ये तथा मूर्ध्नि चतुरस्त्रयुतो मनुः ॥४१४॥ ज्ञातव्यो हीन इत्येष यः स्यादष्टादशाक्षरः॥
एकोनविंशत्यर्णो वा यो मंत्रस्तारसंयुतः॥४१५॥हृल्लेखांकुशबीजाढ्यस्तं प्रध्वस्तं प्रचक्षते॥सप्तवर्णो मनुर्बालः कुमारोऽष्टाक्षरःस्मृतः॥४१६॥
षोडशार्णो युवा प्रौढश्चत्वारिंशाल्लिपिर्मनुः ॥ त्रिंशदर्णश्चतुःषष्टिवर्णो मंत्रः शताक्षरः ॥ ४१७ ॥ चतुःशताक्षरश्चापि वृद्ध इत्यभिधीयते ॥
नवाक्षरो ध्रुवयुतो मनुर्निस्त्रिंश ईरितः॥४१८॥अस्यावसाने हृदयं शिरोमंत्रश्च मध्यतः॥शिखी वर्म च न स्यातां वौषट् फट्कार एव वा॥
॥४१९॥शिवशक्त्यर्णहीनो वा स निर्बीज इतीरितः॥एषु स्थानेषु फट्कारः षोढा यस्मिन्प्रदृश्यते ॥४२०॥ स मंत्रः सिद्धिहीनः स्यान्मंदः
पंक्त्यक्षरो मनुः॥कूट एकाक्षरो मंत्रः स एवोक्तो निरंशकः ॥४२१॥ द्विवर्णः सत्त्वहीनः स्याच्चतुर्वर्णश्च केकरः॥षडक्षरो बीजहीनः सार्धसप्ता
क्षरो मनुः ॥४२२॥ सार्द्धद्वादशवर्णो वा धूमितः स तु निंदितः ॥ सार्द्धबीजत्रयस्तद्वदेकाविंशतिवर्णकः ॥ ४२३ ॥ विंशत्यर्णस्त्रिंशदर्णो य
स्यादालिंगितस्तु सः॥द्वात्रिंशदक्षरो मंत्रो मोहितः परिकीर्तितः ॥४२४ ॥ चतुर्विंशतिवर्णो यः सप्तविंशतिवर्णकः ॥ क्षुधार्तः स तु विज्ञेयः
यश्चतुस्त्रिंशदर्णकः ॥ ४२५ ॥ एकादशाक्षरो वापि पंचविंशतिवर्णकः॥त्रयोविंशतिवर्णो वा मंत्रो दृप्त उदाहृतः ॥ ४२६ ॥ षड्विंशत्यक्षरो

मंत्रः षट्त्रिंशद्वर्णकस्तथा ॥ त्रिंशदेकोनवर्णो वाप्यंगहीनोऽभिधीयते ॥ ४२७ ॥ अष्टाविंशत्यक्षरो य एकत्रिंशदथापि वा ॥ अतिक्रूरः स कथितो निंदितः सर्वकर्मसु ॥ ४२८ ॥ त्रिंशदक्षरको मंत्रस्त्रयस्त्रिंशदथापि वा ॥ अतिक्रूरः स गदितो निंदितः सर्वकर्मसु ॥ ४२९ ॥ ऊनचत्वारिंशदर्णः सप्तत्रिंशदथापि वा ॥ कथयंत्यतिरिक्तं तं मंत्रं मंत्रविशारदाः ॥ ४३० ॥ चत्वारिंशकमारभ्य द्विषष्टिर्यावदापयेत् ॥ तावत्संख्या निगदिता मन्त्राः सव्रीडसंज्ञकाः ॥ ४३१ ॥ पंचषष्टयक्षरा ये स्युर्मंत्रास्ते शांतमानसाः ॥ एकोनशतपर्यंतं पंचषष्टयक्षरादितः ॥ ४३२ ॥ ये मंत्रास्ते निगदिता स्थानभ्रष्टाह्वया बुधैः ॥ त्रयोदशाक्षरा ये स्युर्मंत्राः पञ्चदशाक्षराः ॥४३३॥ विकलास्तेऽभिधीयंते शतं सार्धशतं तथा ॥ शतद्वयं द्विनवतिरेकहीनाथवापि सा ॥ ४३४ ॥ शतत्रयं वा यत्संख्या निःस्नेहास्ते समीरिताः ॥ चतुःशतान्यथारभ्य यावद्वर्णसहस्रकम् ॥ ४३५ ॥ अतिवृद्धाः प्रयोगेषु परित्याज्याः सदा बुधैः ॥ सहस्रार्णाधिका मंत्रा दंडकाः पीडिताह्वयाः॥४३६॥ द्विसहस्राक्षरा मंत्राः खंडशः शतधा कृताः ॥ ज्ञातव्याः स्तोत्ररूपास्ते मंत्रा एते यथा स्थिताः ॥ ४३७ ॥ तथा विद्याश्च बोद्धव्या मंत्रिभिः काम्यकर्मसु ॥ दोषानिमानविज्ञाय यो मंत्रान्भजते जडः ॥ ४३८ ॥ सिद्धिर्न जायते तस्य कल्पकोटिशतैरपि ॥ इत्यादिदोषदुष्टांस्तान्मंत्रानात्मनि योजयेत् ॥ शोधयेद्रुद्धपवनो बद्धया योनिमुद्रया ॥ ४३९ ॥ अथ छिन्नत्वादिकदोषनिवारणार्थं दश संस्काराः (मंत्रमहोदधौ) । मंत्रश्चरणसंपन्नो मंत्रो हि फलदायकः ॥ किं होमैः किं जपैश्चैव किं मंत्रन्यासविस्तरैः ॥४४० ॥ छिन्नत्वादिकदोषा ये पंचाशन्मंत्रसंस्थिताः ॥ तैर्दोषैः सकला व्याप्ता मनवः सप्तकोटयः ॥ ४४१ ॥ अतस्तद्दोषशांत्यर्थं संस्कारदशकं चरेत् ॥ जननं जीवनं पश्चात्ताडनं बोधकं तथा ॥ ४४२ ॥ अथाभिषेको विमलीकरणाप्यायने पुनः ॥ तर्पणं दीपनं गुप्तिर्दशैता मंत्रसंस्क्रियाः ॥ ४४३ ॥ (अथ जननसंस्कारः) भूर्जपत्रे लिखेत्सम्यक् त्रिकोणं रोचनादिभिः ॥ वारुणं कोणमारभ्य सप्तधा विभजेत्समम् ॥ ४४४ ॥ एवमीशाग्निकोणाभ्यां जायंते तत्र योनयः ॥ नववेदमितास्तत्र विलिखेन्मातृकां क्रमात् ॥ ४४५ ॥ अकारादिहकारांतामाशादिवरुणावधिः ॥ देवीं तत्र समावाह्य पजयेच्चंदनादिभिः ॥ ततः समुद्धरेन्मंत्रं जननं तदुदीरितम् ॥ ४४६ ॥ (अथ द्वितीयो

दीपनसंस्कारः) जपो हंसपुटस्यास्य सहस्त्रं दीपनं स्मृतम् ॥ ४४७ ॥ (अथ तृतीयो बोधनसंस्कारः) नभोवह्नींदुयुक्तर्द्धिसंपुटस्य जपो
मनोः ॥ सहस्रपंचकमितो बोधनं तत् स्मृतं बुधैः ॥४४८॥ (चतुर्थं ताडनमाह) सहस्त्रं प्रजपेदत्र पुटितं ताडनं हि तत् ॥ (पंचमम् अभिषेकमाह)
वाग्घंसतारैर्जप्तेन सहस्त्रं पयसा मनुम् ॥ अभिषिंचेत वागाद्यैराभिषेकोऽयमीरितः ॥४४९॥ (षष्ठं विमलीकरणमाह) हरिवह्नयन्वितस्तारो
वषडंतो ध्रुवादिकः ॥ सहस्त्रं तत्पुटो जप्यो विमलीकरणे मनुः ॥ ४५० ॥ (सप्तमं जीवनमाह) स्वधावषट्पुटं जप्यात्सहस्त्रं जीवने
मनुम् ॥ (अष्टमं तर्पणमाह) क्षीराज्ययुक्तपाथोभिस्तर्पणे तर्पयेन्मनुम् ॥ ४५१ ॥ (नवमं गोपनमाह) जपेन्मायापुटं मंत्रं सहस्त्रं गोपनं
हितम् ॥ (दशममाप्यायनमाह) बाला तार्तीयबीजेन गगनाद्येन संपुटम् ॥ सहस्त्रं प्रजपेन्मंत्रमेतदाप्यायनं मतम् ॥ ४५२ ॥
संस्कारदशकं प्रोक्त मनूनां दोषनाशकम् ॥ ४५३ ॥ (अथ शारदातिलकोक्ता दश संस्काराः) कर्मण्यतिजडा मंत्रा मंत्रिणां योजिता
अपि ॥ तस्मात्तद्दोषनाशाय कर्तव्याः संस्क्रिया दश ॥ ४५४ ॥ मंत्राणां दश संस्काराः कथ्यन्ते सिद्धिदायिनः ॥ जननं जीवनं
पश्चात्ताडनं बोधनं तथा ॥ ४५५ ॥ अथाभिषेको विमलीकरणाप्यायने पुनः ॥ तर्पणं दीपनं गुप्तिश्चैताः स्युर्मंत्रसंस्क्रियाः ॥ ४५६ ॥
(जननमाह) मंत्राणां मातृकामध्यादुद्धारो जननं स्मृतम् ॥ ४५७ ॥ (जीवनमाह) प्रणवांतरितान्कृत्वा मंत्रवर्णाञ्जपेत्सुधीः ॥
एतज्जीवनमित्याहुर्मंत्रतंत्रविशारदाः ॥ ४५८ ॥ (ताडनमाह) मंत्रवर्णान्समालिख्य ताडयेच्चन्दनाम्भसा ॥ प्रत्येकं वायुना मंत्री ताडनं
तदुदाहृतम् ॥ ४५९ ॥ (बोधनमाह) विलिख्य मंत्रं तं मंत्री प्रसूनैः करवीरजैः ॥ तन्मंत्राक्षरसंख्यातैर्हन्याद्रेफेन बोधनम् ॥ ४६० ॥
(अभिषेकमाह) स्वतन्त्रोक्तविधानेन मंत्री मंत्रार्णसंख्यया ॥ अश्वत्थपल्लवैर्मंत्रमभिषिंचोद्विशुद्धये ॥ ४६१ ॥ (विमलीकरणमाह)
संचिंत्य मनसा मंत्रं ज्योतिर्मंत्रेण निर्दहेत् ॥ मंत्रे मलत्रयं मंत्री विमलीकरणं त्विदम् ॥ ४६२ ॥ (आप्यायनमाह) तारं व्योमाग्नि
मनुयुग्दंडी ज्योतिर्मनुर्मतः ॥ कुशोदकेन जप्तेन प्रत्यर्णप्रोक्षणं मनोः ॥ तेन मंत्रेण विधिवदेतदाप्यायनं मतम् ॥४६३॥ (तर्पणमाह)
मंत्रेण वारिणा सिंचेन्मंत्रेण तर्पणं स्मृतम् ॥ ४६४ ॥ (दीपनगोपनमाह) परमापरमायोगो गोपनदीपनमुच्यते ॥जप्यमानस्य मंत्रस्य

गोपनं त्वप्रकाशनम् ॥ ४६५ ॥ संस्कारा दश ते प्रोक्ताः सर्वतंत्रेषु गोपिताः ॥ यान् कृत्वा संप्रदायेन मंत्री वांछितमश्नुते ॥ ४६६ ॥ तांबूले भूर्जपत्रे वा लिखित्वा च कर्तव्याः ॥ (अथ शंकरोक्ताः सप्त उपायाः) भ्रामणं बोधनं वश्यं पीडनं पोषशोषणे ॥ दहनांतं क्रमात् कुर्यात्ततः सिद्धो भवेद्ध्रुवम् ॥ ४६७ ॥ भ्रामणं वायुबीजेन प्रथमं क्रमयोगतः ॥ तन्मंत्रं यंत्रमालिख्य सिक्तकर्पूरचन्दनैः ॥४६८॥ उशीरचन्दनाभ्यां तु यंत्रं संपुटमालिखेत् ॥ पूजनाज्जपनाद्धोमाद्भ्रामितः सिद्धिदो भवेत् ॥ ४६९ ॥ भ्रामितो यदि नो सिद्धो बोधनं तस्य कारयेत् ॥ सारस्वतेन[1] बीजेन संपुटीकृत्य संजपेत् ॥ ४७० ॥ एवं रुद्धो भवेत्सिद्धो न चेदेतद्वशी कुरु॥ अलक्तं चन्दनं कुष्ठं हरिद्रा मादनं शिला ॥ ४७१ ॥ एतैस्तु यंत्रमालिख्य भूर्जपत्रे सुशोभने ॥ धृत्वा कंठे भवेत् सिद्धः पीडनं तस्य कारयेत् ॥ ४७२ ॥ अधरोत्तर योगेन पदानि परिजाप्य वै ॥ ध्यायेच्च देवतां तद्वदधरोत्तररूपिणीम् ॥४७३॥ विद्यामादित्यदुग्धेन[2] लिखित्वाक्रम्य चांघ्रिणा ॥ तथाभूतेन मंत्रेण होमः कार्यो दिनेदिने ॥४७४॥ पीडितो लज्जयाविष्टः सिद्धिः स्यादथ पोषयेत् ॥ बालायां त्रितयं बीजमाद्यंते[3] तस्य योजयेत् ॥ ४७५ ॥ गोक्षीरमधुनालिख्य विद्यां पाणौ विधारयेत् ॥ पोषितोऽयं भवेत् सिद्धो न चेत्कुर्वीत शोषणम् ॥ ४७६ ॥ द्वाभ्यां च वायुबीजाभ्यां मंत्रं कुर्याद्विदर्भितम् ॥ एषा विद्या गले धार्या लिखित्वा वरभस्मना ॥ ४७७ ॥ शोभितो न तु सिद्ध्येच्च दहनीयोऽग्निबीजतः ॥ आग्नेयेन तु बीजेन मंत्रस्यैकैकमक्षरम् ॥ ४७८ ॥ आद्यंतमध ऊर्ध्वं च योजयेद्दाहकर्माणि ॥ ब्रह्मवृक्षस्य तैलेन मंत्रमालिख्य धारयन् ॥ ४७९ ॥ कंठदेशे ततो मंत्रासिद्धिः स्याच्छंकरोदिता ॥ इत्येतत्कथितं सम्यक् केवलं तव भक्तितः ॥ एकेनैव कृतार्थः स्याद्बहुभिः किमु सुव्रते ॥ ४८० ॥ अथोत्कीलनविधिः (मंत्रमहोदधौ) शिवेन कीलिता विद्या तदुत्कीलनमुच्यते ॥ मायातारपुटां मंत्री जप्यादष्टोत्तरं शतम् ॥४८१॥ मंत्रस्यादौ तथैवांते भवेत्सिद्धिप्रदा तु सा॥ एष नूनं विधिर्गोप्यः सिद्धिकामेन मंत्रिणा ॥ ४८२ ॥ (तंत्रांतरे) भूर्जपत्रेऽष्टगंधेन[4] अष्टोत्तरशतं मूलं विलिख्य पंचोपचारैः संपूज्य ब्राह्मणान् भोजयेत् ॥ ततस्ताम्रपात्रे जलमा

१ सारस्वतबीजम् ऐं । २ आदित्योऽर्कः । ३ ह्रीं । ४ ऐं क्लीं सौः । ५ गोरोचनम्, कर्पूरम्, गजमदः, मृगमदः, अगरम्, केशरम्, चन्दनद्वयं च इत्यष्टगन्धः ।

पूर्य प्रत्येकं क्षिपेत् ॥ अथवा नद्यादौ क्षिपेत् उत्कीलनं भवति ॥ ४८३ ॥ (अन्यत्) ॥ मृत्तिकया नराकारामिष्टदेवप्रतिमां कृत्वा प्राणान्संस्थाप्य ततो भूर्जपत्रेऽष्टगंधेन मंत्रं विलिख्य प्रतिमां हृदये संस्थाप्य मासांतरे पंचोपचारैः संपूजयेत् ।अष्टोत्तरशतं मूलं च जपेत्॥ मासांते गुरोराज्ञया नद्यादौ प्रवाहयेत् ॥ ब्राह्मणांश्च भोजयेत् तदा उत्कीलनं भवति ॥ ४८४ ॥ अथ पुरश्चरणनिर्णयः ॥ (मंत्रसिद्धभाण्डागारे) फलिष्यतीति विश्वासः सिद्धेः प्रथमलक्षणम् ॥ द्वितीयं श्रद्धया युक्तं तृतीयं गुरुपूजनम् ॥ ४८५ ॥ चतुर्थं समताभावं पञ्चमेन्द्रियनिग्रहम् ॥ षष्ठं च प्रमिताहारं सप्तमं नैव विद्यते ॥ ४८६ ॥ (मंत्रमहोदधौ) निश्चयोत्साहधैर्याच्च तत्त्वज्ञानस्य दर्शनात् ॥ अल्पाशी त्यक्तसङ्गश्च षड्भिर्मंत्रः प्रसिध्यति ॥ ४८७ ॥ (कुलप्रकाशतंत्रे) उपदेशस्य सामर्थ्याच्छ्रीगुरोश्च प्रसादतः ॥ मंत्रप्रभावाद्भक्त्या च मंत्रसिद्धिः प्रजायते ॥ ४८८ ॥ (शिवेऽपि) मनःसंहारणं शौचं मौनं मंत्रार्थचिंतनम् ॥ अव्यग्रत्वमनिर्वेदो जप्रसिद्धेस्तु हेतवः ॥ ४८९ ॥ (ग्रंथांतरे) अभ्यासात्सिद्धिमाप्नोति भोगयुक्तोऽपि मानवः ॥ सकलः साधितार्थोऽपि सिद्धो भवति भूतले॥४९०॥ अशुचिर्वा शुचिर्वापि गच्छंस्तिष्ठन् स्वपन्नपि ॥ मंत्रैकशरणो विद्वान् मनसैव समभ्यसेत् ॥न दोषो मानसे जापे सर्वदेशेऽपि सर्वदा॥४९१॥ (मंत्रसिद्धिभांडागारे) प्रवासी बहुभक्षी च प्रजल्पी नियमारतः ॥ नीचसंगाच्च लौल्याच्च षड्भिर्मंत्रो न सिध्यति ॥ ४९२ ॥ (स्त्रीभोगत्यागे महत्फलं देवीभागवते) मैथुनञ्च तदालापं तद्गोष्ठीमपि वर्जयेत् ॥ कर्मणा मनसा वाचा सर्वावस्थासु सर्वदा ॥ ४९३ ॥ सर्वत्र मैथुनत्यागं ब्रह्मचर्यं प्रचक्षते ॥ राज्ञश्चैव गृहस्थस्य ब्रह्मचर्यमुदाहृतम् ॥ ४९४ ॥ ऋतुस्नातेषु दारेषु संगतिस्तु विधानतः ॥ संस्कृतायां सवर्णायामृतु दृष्ट्वा प्रयत्नतः॥रात्रौ तु गमनं कार्यं ब्रह्मचर्यं हरेन्न तत्॥४९५॥(शिवरहस्ये)व्यासाद्यैरपि दुर्वृत्तैः कृतः स्त्रीसंग्रहो मुदा॥ दुर्लभः पुरुषाणां तु नित्यमिंद्रियनिग्रहः॥४९६॥ विषयेभ्यस्तु सर्वेभ्यः स्त्रीरूपविषयो महान् ॥ पुमांसं मोहयत्येव विरक्तमपि सत्वरम्॥विषयेभ्यो निवृत्तिश्चेज्जितं तेन न संशयः॥४९७॥(पुरश्चरणे वणिग्दत्तधनं वर्ज्यं शिवरहस्ये)वणिग्दत्तेन वित्तेन तनुं यः पोषयिष्यति॥भुक्त्वा स नरकं घोरं प्रयात्येव न संशयः ॥ ४९८ ॥ (योगिनीहृदये) ॥ ईश्वर उवाच ॥ सर्वहिंसाविनिर्मुक्तः सर्वप्राणिहिते रतः ॥ सोऽस्मिञ्शास्त्रेऽधिकारी

स्यात्तदन्ये भ्रष्टसाधकाः ॥४९९॥ (कुलार्णवे पंचमखंडे पंचदशोल्लासे)॥ देव्युवाच॥ कुलेश श्रोतुमिच्छामि पुरश्चरणलक्षणम् ॥ स्थानाहारादिभेदेन वद मे परमेश्वर॥५००॥ईश्वर उवाच॥शृणु देवि प्रवक्ष्यामि यन्मां त्वं परिपृच्छसि ॥ तस्य श्रवणमात्रेण मंत्रतत्त्वं प्रकाशते ॥ ॥ ५०१ ॥ जपयज्ञात्परो यज्ञो नापरोऽस्तीह कश्चन ॥ तस्माज्जपेन धर्मार्थकाममोक्षं च साधयेत् ॥५०२॥ सर्वपादान् परित्यज्य मंत्रपादं समाचरेत् ॥ आब्रह्मजीवे दोषाश्च नियमातिक्रमोद्भवाः ॥ ५०३ ॥ ज्ञानाज्ञानकृताः सर्वे प्रणश्यंति यथा प्रिये ॥ संसारे दुःखभूयिष्ठे यदीच्छेत्सिद्धिमात्मनः ॥ ५०४ ॥ पंचांगोपासनेनैव मंत्रजापी सुखं व्रजेत् ॥ मंत्रं यंत्रं पंजरं च स्तोत्रं नामसहस्रकम् ॥ ५०५ ॥ पूजा त्रैकालिकी नित्यं जपस्तर्पणमेव च ॥ होमो ब्राह्मणभुक्तिश्च पुरश्चरणमुच्यते॥ ५०६ ॥ यद्यदंगं च विहितं तत्संख्याद्विगुणं जपम् ॥ कुर्याद्द्वित्रिचतुःपंचसंख्यं वा साधकः प्रिये ॥ ५०७ ॥ कुर्वीत सांगसिद्ध्यर्थं तदशक्तेन भक्तितः ॥ सर्वदांगविहीनस्य मंत्री नेष्टमवाप्नुयात्॥५०८॥ सम्यक्सिद्धैकमंत्रस्य पंचांगसेवनेन च ॥ सर्वमंत्राश्च सिध्यंति तत्प्रभावात्कुलेश्वरि ॥ ५०९ ॥ उपदेशस्य सामर्थ्याच्छ्रीगुरोश्च प्रभावतः ॥ मंत्रप्रतापाद्भक्तेश्च मंत्रसिद्धिः प्रजायते ॥ ५१० ॥ सिद्धमंत्रं गुरोर्लब्ध्वा मंत्रोऽयं शीघ्रसिद्धये ॥ पूर्वजन्मकृताभ्यासान्मंत्रोऽयं शीघ्रसिद्धिदः ॥५११॥ दीक्षापूर्वं कुलेशानि पारंपर्यक्रमागतम् ॥ न्यासलब्धं तु यन्मंत्रं तच्च सिद्धं न संशयः ॥५१२॥ मासमात्रं जपेन्मंत्रं भूतलिप्यर्णसंपुटम् ॥ क्रमोत्क्रमात्सहस्रं तु तस्य सिद्धो भवेन्मनुः॥५१३॥ मण्डलं पूजयेन्मंत्रं मातृकाक्षरसंपुटम् ॥ अनुलोमविलोमेन मंत्रसिद्धिः प्रजायते ॥ ५१४ ॥ विषद्वाक्षरसंयुक्तं मातृकाक्षरसंपुटम् ॥ क्रमोत्क्रमं तु तज्जप्त्वा मासात्सिद्धो भवेन्मनुः ॥ ५१५ ॥ मातृकाजपमात्रेण मंत्राणां कोटिकोटयः ॥ जागृताः स्युर्न संदेहो यत्तत्सर्वं तदुद्भवम् ॥५१६॥ अनेन कोटिमंत्रेण चित्तव्याकुलकारकम् ॥ मंत्रगुरुकृपाव्यासमेकं स्यात्सर्वसिद्धिदम् ॥ ५१७ ॥ यदीच्छया श्रुतं मंत्रं छद्मनापि च्छलेन वा ॥ यत्र स्थितं च वाग्ध्वस्तं तज्जपेन ह्यनर्थकृत् ॥ ५१८ ॥ पुस्तके लिखितान्मंत्रानालोक्य प्रजपन्ति ये ॥ ब्रह्महत्यासमं तेषां पातकं परिकीर्तितम्॥५१९॥स्नानासनप्राणायामन्यासमालाजपक्षणम् ॥ मनसा यः स्मरेत्स्तोत्रं वचसा वा मनुं पठेत् ॥ ५२० ॥ उभयोर्निष्फलं देवि भिन्नभांडोदकं यथा ॥ शाणोल्लीढानि शस्त्राणि यथा स्यु

[illegible]सितानि वै ॥ ५२१ ॥ मंत्राश्च मूर्तिमायांति संस्कारैर्दशभिस्तथा ॥ तेषां हविष्यं शाकादि हविष्याणि फलं पयः ॥ ५२२ ॥ मूलं [illegible]
वान्नं च ह्यष्टावेतानि मंत्रिणाम् ॥ यथान्नपानपूगस्य कुरुते धर्मसंचयम् ॥५२३॥ अन्नदातुः फलस्यार्द्धं कर्तुश्चार्द्धं न संशयः ॥ तस्मा[illegible]
प्रयत्नेन परान्नं वर्जयेत्सुधीः ॥ ५२४ ॥ पुरश्चरणकर्तुश्च करो दग्धः प्रतिग्रहैः ॥ मनो दग्धं परस्त्रीभिः कार्यसिद्धिः कथं भवेत् ॥ ५२५ ॥
मनोऽन्यत्र शिवोऽन्यत्र शक्तिरन्यत्र मारुतः ॥ न सिद्ध्यंति वरारोहे लक्षकोटिजपादपि ॥५२६॥ वादार्थं पठ्यते विद्या परार्थः क्रियते जपः ॥
ख्यात्यर्थं दीयते दानं कथं सिद्धिर्वरानने ॥ ५२७ ॥ धनार्थं गम्यते तीर्थे दंभार्थं क्रियते तपः ॥ काम्यार्थं देवतायात्रा कथं सिद्धिर्वरानने
॥ ५२८ ॥ अनित्येन तु देहेन न्यासं देवार्चनं जपम् ॥ होमं कुर्वंति ये मूढाः सर्वं भवति निष्फलम् ॥ ५२९ ॥ तपोर्चनादिकं सर्वमपवित्रं
भवेत् प्रिये ॥ मलिनांगपराः केशा मुखं दुर्गंधसंयुतम् ॥ यो जपेत्तं तदा हन्याद्देवता सुजुगुप्सितम् ॥ ५३० ॥ (मंत्रमहोदधौ) भूशय्यां
ब्रह्मचर्यं च त्रिकालं देवतार्चनम् ॥ नैमित्तिकार्चनं देवस्तुतिं विश्वासमाश्रयेत् ॥ ५३१ ॥ प्रत्यहं प्रत्यहं तावन्नैव न्यूनाधिकं क्वचित् ॥
एवं जपं समाप्यान्ते दशांशं होममाचरेत् ॥ ५३२ ॥ तत्तत्कल्पोदितैर्द्रव्यैस्तदाधानमुदीर्यते ॥ प्राणायामं षडंगं च कृत्वा मूलेन मंत्रवित्
॥ ५३३ ॥ हविष्यं निशि भुंजीत त्रिःस्नाय्यभ्यंगवार्जितः ॥ व्यग्रतालस्यनिष्ठीवक्रोधं पादप्रसारणम् ॥ ५३४ ॥ अन्यभाषां त्यजेच्चैव
जपकाले सदा सुधीः ॥ स्त्रीशूद्रभाषणं निद्रां तांबूलं शयनं दिवा ॥ प्रतिग्रहं नृत्यगीते कौटिल्यं वर्जयेत्सदा ॥ ५३५ ॥ (तंत्रांतरेऽपि)
लवणं पललं चैव क्षारं क्षौद्रं रसांतरम् ॥ माषमुद्गमसूरांश्च कोद्रवांश्चणकानपि ॥ ५३६ ॥ असद्भाषणमन्याय्यं वर्जयेदन्यपूजनम् ॥
विनाश्रमोचितं नित्यमथ नैमित्तिकं चरेत् ॥ ५३७ ॥ तांबूलं गंधलेपं च पुष्पधारणमेव च ॥ मैथुनं तत्कथालापं
तद्गोष्ठीं परिवर्जयेत् ॥ ५३८ ॥ असंकल्पितकृत्यं च ह्यनिवेदितभोजनम् ॥ न छिंद्यान्नखरोमाणि न स्पृशेद्यदमंगलम्
॥ ५३९ ॥ नार्द्रवस्त्रो जपं कुर्याद्धोमं दानं प्रतिग्रहम् ॥ सर्वं तद्राक्षसं विद्याद्बहिर्जानु च यत्कृतम् ॥ ५४० ॥ न पदा पादमा
क्रम्य तथैव हि पदा करौ ॥ न चासमाहितमना न च संश्रावयञ्जपेत् ॥ ५४१ ॥ न च चंक्रमणैश्चैव न पार्श्वं चावलोकयेत् ॥ न प्रवृत्तो न

जल्पंश्च न प्रावृतशिरास्तथा ॥ ५४२ ॥ अथानुष्ठाने छिक्कादिदोषनिवारणविधिः (योगिनीहृदये) पतितानामंत्यजानां दर्शने भाषणे कृते ॥ क्षुतेऽधोवायुगमने जृंभणे जपमुत्सृजेत् ॥ ५४३ ॥ तथाचम्य च तत्प्राप्तौ प्राणायामं षडंगकम् ॥ कृत्वाचम्य जपेच्छेषं यद्वा सूर्यादिदर्शनम् ॥ ॥ ५४४ ॥ (तंत्रांतरेऽपि) सकृदुच्चरिते शब्दे प्रणवं समुदीरयेत् ॥ प्रोक्तपामरशब्देऽपि प्रणवं सकृदुच्चरेत्॥ ५४५ ॥ (याज्ञवल्क्ये) परिवाग्यमलोपः स्याज्जपादिषु कथंचन ॥ व्याहरेद्वैष्णवं मंत्रं स्मरेद्वा विष्णुमव्ययम् ॥५४६॥ क्षुते निष्ठीवने चैव दंतोच्छिष्टे तथानृते॥ पतितानां च संभाषे कर्णश्च दक्षिणं स्पृशेत् ॥५४७॥ अग्निरापश्च वेदश्च सोमसूर्यानिलास्तथा ॥ सर्वे एव हि विप्रस्य कर्णे तिष्ठंति दक्षिणे ॥ ५४८ ॥ (सनत्कुमारसंहितायाम्) जपकाले यदा पश्येदशुचिं मंत्रवित्तमः ॥ प्राणायामं तदा कुर्यात्ततः शेषं समाचरेत् ॥ ५४९ ॥ यदा चैष पठेन्मंत्री स्वयमप्यशुचिः पुनः ॥ आचम्य प्रयतो भूत्वा न्यासं पूर्ववदाचरेत् ॥ ५५० ॥ (पुरश्चरणे सूतकनिर्णयः) विनियोगं समारभ्य यथायथमथाचरेत् ॥ पुरश्चरणमध्ये तु सूतकं नैव विद्यते ॥५५१॥ (सूतकनिवृत्तिः) जातसूतकमादौ स्यादंते वै मृतसूतकम् ॥ सूतकद्वयानिर्मुक्तः स मंत्रः सर्वसिद्धिदः ॥ ५५२ ॥ तस्माद्देवि प्रयत्नेन ध्रुवेण पुटितं ध्रुवम् ॥ अष्टोत्तरशतं वापि सप्तवारं जपेदतः ॥ जपांते च ततो जप्त्वा चतुर्वर्गफलाप्तये ॥ ५५३ ॥ (तत्रैव) ब्रह्मबीजं मनौ दत्त्वा चाद्यंते च महेश्वरि ॥ सप्तवारं जपेन्मंत्री सूतकद्वयमुक्तये ॥ ५५४ ॥ पुरश्चरणादौ गायत्रीजपावश्यकता॥(मंत्रमहोदधौ) सर्वे शाक्ता द्विजाः प्रोक्ता न शैवा न च वैष्णवाः ॥ आदिदेवीमुपासंते गायत्रीं वेदमातरम्॥तस्मादादौ प्रयत्नेन गायत्रीं प्रयुतं जपेत् ॥ ५५५ ॥ (तंत्रांतरे) यस्य कस्यापि मंत्रस्य पुरश्चरणमारभेत् ॥ व्याहृतित्रयसंयुक्तां गायत्रीं चायुतं जपेत् ॥ विना जप्त्वा तु गायत्रीं तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ॥ ५५६ ॥ (शाक्तानंदतरंगिण्याम्) हविष्येणैव भोक्तव्यं कृत्वा देहविशोधनम् ॥ प्रातः स्नात्वाथ सावित्र्या जपेत्पंचसहस्रकम् ॥ ५५७ ॥ त्रिसहस्रं सहस्रं वा जपेदष्टोत्तरं शुचिः ॥ ज्ञाताज्ञातस्य पापस्य क्षयार्थं प्रथमं ततः ॥ ५५८ ॥ वाचिकसंकल्पापेक्षया मानसिकसंकल्पो मुख्यः ॥ (बीजार्णवतंत्रे षोडशपटले) संकल्पो मानसो देवि चतुर्वर्गफलप्रदः ॥ अत एव महेशानि संकल्पो मानसः स्मृतः ॥ ५५९ ॥ स्थूलो हि परमेशानि संकल्पो व्यर्थ उच्यते ॥ संकल्पेन

विना देवि यत्किंचित्कुरुते सुधीः ॥ व्यर्थमेव हि देवेशि तत्सर्वं मानसेन च ॥ ५६० ॥ (देवतापञ्चाङ्गनिर्णयः पुरश्चरणचान्द्रिकायाम्)
पटलं पद्धतिर्वर्म तथा नामसहस्रकम् ॥ स्तोत्राणि चेति पंचांगं देवताराधने स्मृतम् ॥५६१॥ कवचं देवतागात्रं पटलं देवताशिरः॥पद्धतिर्
देवहस्तौ तु मुखं साहस्रकं स्मृतम् ॥ ५६२ ॥ (पंचांगोपासनानिर्णयः देवीरहस्यतंत्रे) जप्त्वा मंत्री मंत्रराजं हुत्वा देवे दशांशतः ॥ तर्प
येत्तद्दशांशेन मार्जयेत्तद्दशांशतः ॥ ५६३ ॥ भोजयेत्तद्दशांशेन मंत्रसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ जीवहीनो यथा देहो सर्वकर्मसु न क्षमः ॥ पुरश्चरण
हीनोऽयं तथा मंत्रः प्रकीर्तितः ॥ ५६४ ॥ (ग्रहणस्पर्शकालनिश्चयकरणम्) चक्षुषा दर्शनं राहोर्यत्तद्ग्रहणमुच्यते ॥ तत्र कर्माणि कुर्वीत
गणनामात्रतो नहि ॥ ५६५ ॥ (अथ पुरश्चरणविधिः श्रीबीजार्णवतंत्रे षोडशपटले देवीं प्रति शिववाक्यम्) एकदा परमेशानि
कामाख्यायां महेश्वरि ॥ दृष्ट्वोपरागं यत्कर्म तच्छृणुष्व वरानने॥५६६॥कुतः स्नानं कुतः संध्या प्राणायामः कुतः प्रिये ॥भूतशुद्धिः कुतो भद्रे
कुतः पूजा वरानने ॥ ५६७ ॥ कालातीतभयाद्देवि सर्वं संत्यज्य कामिनि ॥ संकल्पं मानसं कृत्वा जपं कृत्वा वरानने ॥ ५६८ ॥ पंचांग
विधिना देवि सिद्धो भवति नान्यथा ॥ मंत्रविद्या महेशानि कवचं स्तव एव च ॥ ५६९॥ ध्यानं वा परमेशानि न्यासो वा कमलानने ॥
एकोच्चारेण देवेशि भवंति दश कोटयः ॥ ५७० ॥ असंख्यः स जपो देवि ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः ॥ तत्कथं परमेशानि क्रियते जपसंख्यकम्
॥ ५७१ ॥ अत एव वरारोहे होमो नास्ति शुचिस्मिते ॥ अभिषेकश्च देवेशि तथा च तर्पणादिकम् ॥५७२॥ भोजनं च महेशानि नास्ति
वै कमलानने ॥ चन्द्रसूर्यग्रहे देवि पंचांगं नास्ति कामिनि ॥ पंचांगेन विना देवि सिद्धो भवति नान्यथा ॥ ५७३ ॥ प्रथमे प्रहरे देवि
चन्द्रग्रासो यदा भवेत् ॥ चन्द्रग्रहणकाले तु जपयज्ञादिकं चरेत् ॥ ५७४ ॥ दिवसे च यदा भद्रे भास्करग्रहणं भवेत् ॥ रात्रौ भुक्त्वा
च पीत्वा च जपयज्ञादिकं चरेत् ॥ ५७५ सर्वेषु विष्णुमंत्रेषु शिवगाणपयोस्तथा ॥ शक्तिमंत्रो महेशानि प्रशस्तः सततं जपे ॥ ५७६ ॥
संकल्पो यस्तु देवेशि मानसे समुपस्थितः ॥ तं संकल्पं विजानीयाद्ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः ॥ ५७७ ॥ तस्मात्तु चंचलापांगि संकल्पं नैव
कारयेत् ॥ इति बीजार्णवे तंत्रे शिवेनैव प्रकाशितम् ॥ ५७८ ॥ (पुरश्चरणचन्द्रिकायाम्) ग्रहणेऽर्कस्य चेन्दोर्वा शुचिः पूर्वमुखोषितः ॥

नद्यां समुद्रगामिन्यां नाभिमात्रोदके स्थितः॥ ५७९ ॥ ग्रहणान्मोक्षपर्यंतं जपेन्मन्त्रं समाहितः ॥ अनंतरं दशांशेन क्रमाद्धोमादिकं चरेत्
॥ ५८० ॥ तदंते महतीं पूजां कुर्याद्ब्राह्मणतर्पणम् ॥ ततो मंत्रप्रसिद्ध्यर्थं गुरुं संपूज्य तोषयेत्॥ एवं च मंत्रसिद्धिः स्याद्देवता च प्रसीदति
॥ ५८१ ॥ (रुद्रयामले) अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ॥ अपि शुद्धोदकैः स्नात्वा शुचौ देशे समाहितः ॥ ५८२ ॥ ग्रहणान्मुक्ति
पर्यंतं जपेन्मंत्रमनन्यधीः ॥ इति कृत्वा न संदेहो जपस्य फलभाग्भवेत्॥५८३॥(तंत्रांतरेऽपि) यस्तु श्रद्धानुरोधेन ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः ॥
न करोति पुरश्चर्यां नरके स विपच्यते॥५८४॥अथ सूर्योदयमारभ्य द्वितीयसूर्योदयपर्यंतं पुरश्चरणं (देवीरहस्ये) अथवान्यप्रकारेण पुरश्च
रणमिष्यते॥सूर्योदयात्समारभ्य यावत्सूर्योदयांतरम्॥ तावज्जप्त्वा निरातंको मंत्रः कल्पद्रुमो भवेत्॥५८५॥ कृष्णाष्टमीमारभ्य कृष्णाष्टमीपर्यं
तमेकमासपुरश्चरणं(मुंडमालायाम्) अथ वान्यप्रकारण पुरश्चरणमिष्यते॥ कृष्णाष्टमीं समारभ्य यावत् कृष्णाष्टमी भवेत्॥सहस्रसंख्याजपे
तु पुरश्चरणमिष्यते ॥५८६॥ कृष्णचतुर्दशीमारभ्य शुक्लनवमीपर्यंतमेकादशदिनपुरश्चरणम् ॥ (मुंडमालायाम्) कृष्णां चतुर्दशीं प्राप्य
नवम्यन्तं महोत्सवे ॥ अष्टमीनवमीरात्रौ पजां कुर्याद्विशेषतः ॥ ५८७ ॥ दशम्यां पारणं कुर्यान्मत्स्यमांसादिभिर्युतम् ॥ षट्सहस्रं जपे
न्नित्यं भक्तिभावपरायणः ॥५८८॥ अष्टमीमारभ्य चतुर्दशीपर्यंतं सप्तदिनपुरश्चरणम् ॥ (कालीतंत्रे) अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ॥
अष्टम्याश्च चतुर्दश्यां पक्षयोरुभयोरपि ॥ ५८९ ॥ सूर्योदयात्समारभ्य यावत्सूर्योदयांतरम् ॥ तावज्जप्त्वा निरातंकं सर्वसिद्धीश्वरो भवेत्
॥ ५९० ॥ भौमशनिवारपुरश्चरणं (कालीतंत्रे) अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ॥ कुजे वा शनिवारे वा नरमुण्डं समाहृतम् ॥ ५९१ ॥
पंचगव्येन मिलितं चंदनाद्यैर्विशेषतः ॥ निक्षिप्य भूमौ हस्तार्द्धमानतः काननांतरे ॥ ५९२ ॥ तत्र तद्दिवसे रात्रौ सहस्रं यदि साधकः ॥
एकाकी प्रजपेन्मंत्रं स भवेत्कल्पपादपः ॥ ५९३ ॥ कार्तिकफाल्गुनवैशाखेषु शुक्लपक्षे प्रतिपदामारभ्यैकादश्यंतमेकादशदिने
वैष्णवमंत्रपुरश्चरणविधानम् (चन्द्रपीठे) ऊर्जे तपसि राधे वा शुक्लपक्षे तु वैष्णवे ॥ एकादश्यन्तमैशे तु भूतांतः फाल्गुने
स्मृतम् ॥ ५९४ ॥ चतुर्दशीमारभ्य चतुर्दशीपर्यंतं पञ्चदश दिनानि माहेश्वरपुरश्चरणविधानम् ॥ अथवान्यप्रकारेण

पुरश्चरणीमिष्यत ॥ चतुर्दशीं समारभ्य यावदन्या चतुर्दशी ॥ ५९५ ॥ तावज्जपेन्महेशानि पुरश्चरणमिष्यते ॥ केवलं जपमात्रेण मंत्राः सिद्धा भवंति हि ॥ ५९६ ॥ बलिहोमादिदानेन विशेषात्पीठपूजने ॥ योगिपीठं महापीठं कामरूपं तथापरम् ॥ तयोरेकतमं पूज्यं रुद्रदेह इवापरः ॥ ५९७ ॥ भाद्रमार्गमाघेषु नवरात्रे वा गणेशमंत्रपुरश्चरणविधानं (चन्द्रपीठे) अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ॥ भाद्रेऽपि विघ्नराजत्वं माघमार्गौ स्ववासरात् ॥ ५९८॥ अन्येष्वपि च मंत्रेषु पर्वोक्तं नवरात्रकम् ॥जपो मातृकया प्रातः कालान्मध्यंदिनावधि ॥ ५९९ ॥ रात्रौ याममितः कार्यः पयोमूलफलाशिना ॥ चतुर्थयामे कर्तव्या मालामंत्रे दशांशतः ॥ ६०० ॥ विंशांशाद्वा दशांशाद्वा अन्येष्वपि हुतं मतम्॥ दक्षिणा च यथोक्ता च वित्तशाठ्यं न कारयेत्॥ एवं मंत्रः प्रयोगार्हो भवत्येव न संशयः॥ ६०१॥ आश्विने चैत्रे वा प्रतिपदामारभ्य महानवमीपर्यंतं नवरात्रे शक्तिपुरश्चरणविधानं (चन्द्रपीठे)अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ॥ महालक्ष्मीं समारभ्य आमहानवमीश्वरीम् ॥ कृष्णामा नवमी चैव मधौ शक्तेर्मनौ स्मृते ॥ ६०२ ॥ शरत्काले चतुर्थ्यादिनवम्यंतं षड्दिन पुरश्चरणविधानम् (तंत्रांतरे) अथ वान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ॥ शरत्काले चतुर्थ्यादिनवम्यंतं विशेषतः॥ ६०३॥ भक्तितः पूजयित्वा तु रात्रौ तावत्सहस्रकम् ॥ जपेदेव तु विजने केवलं तिमिरालये ॥ ६०४ ॥ अष्टम्यादिनवम्यंतमुपवासपरो भवेत् ॥ स भवेत्सर्वसिद्धीशो नात्र कार्या विचारणा ॥ ६०५ ॥ पुत्रजन्मोत्सवादिने पुरश्चरणाविधानं (देवीरहस्ये) अथ वान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ॥ पुत्रजन्मोत्सवादिने सूतिकाकुल मंदिरे ॥ ६०६॥ मांत्रिको मूलमंत्रं स्वं जपेद्दशादिनावधि ॥ दशांशसंस्कृतं मंत्रं कुर्यात्सिद्धो भवेन्मनुः ॥ ६०७ ॥ मृतसूतकादिने पुरश्चरणविधानम् ॥ (देवीरहस्ये)अथ वान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ॥ मृतकाशौचादिवसे प्रथमे साधको जपेत् ॥६०८॥मनुं दशादिनं रात्रौ धीरो भूत्वा यथार्थतः ॥ एकादशाहानि सुधीः कुर्यान्मंत्रं सुसंस्कृतम् ॥ कर्मणा मनसा वाचा मंत्रः कल्पद्रुमो भवेत् ॥ ६०९ ॥ (अथ मंत्रसिद्धिचिह्नानि वक्रतुंडकल्पे) चित्तप्रसादो मनसश्च तुष्टिरल्पाशिता स्वप्नपराङ्मुखत्वम् ॥ स्वप्ने प्रपापक्वफलं भवन्ति सिद्धस्य चिह्नानि भवंति सद्यः ॥ ६१० ॥ (भैरवीतंत्रे) ज्योतिः पश्यति सर्वत्र शरीरं वा प्रकाशयुक् ॥ निजं शरीरमथवा देवतामयमेव हि ॥६११॥ (नारदपंचरात्रे) नानाश्चर्यादि हृदये

मंत्रसिद्धिमयानि वै ॥ अन्यानंदप्रदान्याशु प्रत्यक्षेण बहिस्तथा ॥६१२॥ जडर्षीस्तु क्षणं विप्र क्षणमस्ति प्रहर्षितः ॥ क्षणं दुंदुभिनिर्घोषं शृणोत्यस्यांतरिक्षतः ॥ ६१३ ॥ क्षणं च मधुरं वाद्यं नानागतिसमन्वितम् ॥ आजिघ्रति क्षणं गंधान् कर्पूरमृगनाभिजान् ॥ ६१४ ॥ उत्पतंतं क्षणं वापि पश्यत्यात्मानमात्मानि॥ चंद्रार्ककिरणाकीर्णं क्षणमालोकयेन्नभः ॥ ६१५ ॥ गजगोवृषनादांश्च शृणुयाच्च क्षणं द्विज ॥ निर्भरांबुदसंक्षोभं क्षणमाकंपयन्त्यपि ॥६१६॥ तारकाणि विचित्राणि योगिनो नभसि स्थितान् ॥ पश्यंति दाइयंतं च क्षणं मंत्रव्रती सदा ॥ ॥ ६१७ ॥ क्षणं किलकिलारावं हंसबर्हिरवं तथा ॥ क्षणं मेघोदयं पश्येत्क्षणं रात्रिं दिने सति ॥ ६१८ ॥ रात्रौ दिवसवल्लोकं संपूर्य क्षण मीक्षते॥बलेन परिपूर्णश्च तेजसा भास्करोपमः ॥ ६१९ ॥ पूर्णेंदुसदृशः कांत्या गमने विहगोपमः ॥ शमेन युक्तः प्रौढेन गांभीर्येण मुखेन च ॥ ६२० ॥ स्वल्पासनेनासंवृत्तो बहुनापि न बध्यते ॥ विण्मूत्रयोरनल्पत्वं भवेत्तद्राजयस्तथा ॥६२१॥ जपध्यानगतो मंत्री न खेदमधिगच्छति ॥ ६२२ ॥ विना भोजनपानाभ्यां पक्षमासादिकं मुने ॥ इत्येवमादिभिश्चिन्हैर्महाविस्मयकारिभिः ॥ ६२३ ॥ एवमादीनि चिह्नानि यदा पश्यति मंत्रवित्॥सिद्धिं मंत्रस्य जानीयाद्देवतायाः प्रसन्नताम्॥ततो जपेऽधिकं यत्नं प्रकुर्याज्ज्ञानलब्धये ॥ ६२४ ॥ (तंत्रांतरे) मंत्राराधनशक्तस्य प्रथमं वत्सरत्रयम् ॥ जायंते बहवो विघ्ना नियतं तस्य नारद ॥ ६२५ ॥ नोद्वेगः साधके यावत् कर्मणा मनसा यदि ॥ तृतीयवत्सरादूर्ध्वं स्वयं सिध्यति मंत्रराट् ॥ ६२६ ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे पूर्वखंडे निर्णयप्रकरणे प्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ मुद्राप्रकारः ॥ अथ मुद्राः प्रवक्ष्यामि सर्वतंत्रेषु गोपिताः ॥ याभिर्विरचिताभिश्च मोदंते मंत्रदेवताः ॥ १ ॥ अर्चने जपकाले च ध्याने काम्ये च कर्मणि ॥ स्नाने चावाहने शंखे प्रतिष्ठायां च रक्षणे ॥ २ ॥ नैवेद्ये च तथान्यत्र तत्तत्कल्पप्रकाशिते ॥ स्थाने मुद्राः प्रद्रष्टव्याः स्वस्वलक्षणलक्षिताः ॥ ३ ॥ आवाहनादिका मुद्रा नव साधारणी मता ॥ तथा षडंगमुद्राश्च सर्वमंत्रेषु योजयेत् ॥ ४ ॥ एकोनविंशतिर्मुद्रा विष्णोरुक्ता मनीषिभिः ॥ शंखचक्रगदापद्मवेणुश्रीवत्सकौस्तुभाः ॥ ५ ॥ वनमाला तथा ज्ञान मुद्रा बिल्वाह्वया तथा ॥ गरुडाख्या परा विष्णोर्मुद्रा संतोषवर्द्धिनी ॥ ६ ॥ नारसिंही च वाराही हयग्रीवी धनुस्तथा ॥ बाणमुद्रा

ततः पर्शुर्जगन्मोहिनिका च सा ॥ ७ ॥ काममुद्रा परा ख्याता शिवस्य दश मुद्रिकाः ॥ लिंगयोनित्रिशूलाख्या मालेष्टाभिर्मृगात्मिका ॥ ॥ ८ ॥ खट्वांगा च कपालाख्या डमरुः शिवतोषिका ॥ सूर्यस्यैकैव पद्माख्या सप्तमुद्रा गणेशितुः ॥ ९ ॥ दंतपाशांकुशाविघ्नपर्शुलड्डुक संज्ञकाः ॥ बीजपूराह्वया मुद्रा विज्ञेया विघ्नपूजने ॥ १० ॥ पाशांकुशवराभीतिखड्ग चर्म्मधनुःशराः ॥ मौशली मुद्रिका दौर्गी मुद्राः शक्तेः प्रियंकराः ॥ ११ ॥ लक्ष्मीमुद्रार्चने लक्ष्म्या वाग्वादिन्यास्तु पूजने ॥ अक्षमाला तथा वीणा व्याख्यापुस्तकमुद्रिका ॥ १२ ॥ सप्तजिह्वाह्वया मुद्रा विज्ञेया वह्निपूजने ॥ मत्स्यमुद्रा च कूर्माख्या लेलिहा मुंडसंज्ञिका ॥ १३ ॥ महायोनिरिति ख्याता सर्वसिद्धि समृद्धिदा ॥ शक्त्यर्चने महायोनिः श्यामादौ मुंडमुद्रिका ॥ १४ ॥ मत्स्यकूर्मलेलिहाख्या सर्वसाधारणी मता ॥ दश मुद्राश्च विज्ञेया त्रिपुरायाः प्रपूजने ॥ १५ ॥ संक्षोभद्रावणाकर्षवश्योन्मादमहांकुशाः ॥ खेचरी बीजयोन्याख्या त्रिखंडा परिकीर्तिता ॥ १६ ॥ कुंभ मुद्राभिषेके स्यात्पद्ममुद्रासने तथा ॥ कालकर्णी प्रयोक्तव्या विघ्नप्रशमकर्म्मणि ॥ १७ ॥ गालिनी च प्रयोक्तव्या जलशोधनकर्म्मणि ॥ श्रीगोपालार्चने वेणुर्नृहरेर्नारसिंहिका ॥ १८ ॥ वराहस्य च पूजायां वराहाख्यां प्रदर्शयेत् ॥ रामार्चने धनुर्बाणमुद्रे पर्शुस्तथार्चने ॥ ॥ १९ ॥ पर्शुरामस्य विज्ञेया तथा परशुमुद्रिका ॥ वासुदेवाह्वया ध्याने कुंतमुद्रा तु रक्षणे ॥ २० ॥ सर्वत्र प्रार्थने चैव प्रार्थनाख्यां नियोजयेत् ॥ उद्देशानुक्रमादासामुच्यते लक्षणं तथा ॥ २१ ॥ अथावाहनादिनवमुद्रालक्षणम् ॥ हस्ताभ्यामंजलिं बद्ध्वानामिका मूलपर्वाभिः ॥ अंगुष्ठौ निःक्षिपेत्सेयं मुद्रा त्वावाहनी मता ॥ इत्यावाहनी मुद्रा ॥ १ ॥ अधोमुखी त्वियं चेत्स्यात्स्थापनी मुद्रिका स्मृता ॥ इति स्थापनी मुद्रा ॥२॥ उच्छ्रितांगुष्ठमुष्ट्योस्तु संयोगात्सन्निधापनी ॥ इति संनिधापनी मुद्रा ॥ ३ ॥ अंतःप्रवेशितांगुष्ठा सैव संशोधनी मता ॥ इति संशोधनी मुद्रा ॥ ४ ॥ उत्तानमुष्टियुगला सम्मुखीकरणी मता ॥ इति संमुखीकरणमुद्रा ॥ ५ ॥ देवतांगे षडंगानां न्यासः स्यात् शकलीकृतिः ॥ इति शकलीकरणमुद्रा ॥ ६ ॥ सव्यहस्तकृता मुष्टिर्दीर्घाधोमुखतर्ज्जनी ॥ अवा गुंठनमुद्रेयमभितो भ्रामिता मता ॥ इत्यवगुंठनी मुद्रा ॥ ७ ॥ अन्योन्याभिमुखी श्लिष्टा कनिष्ठानामिका पुनः ॥ तथैव तर्जनीमध्या

धेनुमुद्रा समीरिता ॥ अमृतीकरणं कुर्यात्तया साधकसत्तमः ॥ इत्यमृतीकरणे धेनुमुद्रा ॥ ८ ॥ अन्योन्यग्रथितांगुष्ठा प्रसारितकरांगुली ॥ महामुद्रेयमुदिता परमीकरणे बुधैः ॥ इति परमीकरणे महामुद्रा ॥ प्रयोजयेदिमा मुद्रा देवताह्वानकर्मणि ॥ ९ ॥ इत्यावाहनादयो नव मुद्राः ॥ अथ षडंगन्यासोपयोगिषण्मुद्रालक्षणम् ॥ अंगन्यासस्य या मुद्रास्तासां लक्षणमुच्यते ॥ ऋजवो हस्तशाखाश्च हृदये च शिरस्यथ ॥ तर्ज्जनीमध्यमांगुष्ठमधोमुष्टिशिखां तथा ॥ करद्वंद्वाङ्गुलीः सर्वाः कवचे स्युः प्रमोदिकाः ॥ नाराचमुद्रिकामध्ये तर्ज्जनीध्वनिरीरिता ॥ विष्वक्सेने स्मृता मुद्रा नेत्रयोर्म्मध्यतर्ज्जनी ॥ नेत्रत्रयं यत्र भवेदनामा मध्यतर्ज्जनी ॥ इति षडंगमुद्रा ॥ अथैकोनविंशति विष्णुमुद्रालक्षणम् ॥ वैष्णवीनां तु मुद्राणां कथ्यंते लक्षणान्यथ ॥ वामांगुष्ठं तु संगृह्य दक्षिणेन तु मुष्टिना ॥ कृत्वोत्तानां ततो मुष्टिमंगुष्ठं तु प्रसारयेत् ॥ वामांगुल्यस्तथाश्लिष्टाः संयुक्ताः स्युः प्रसारिताः ॥ दक्षिणांगुष्ठसंस्पृष्टा मुद्रैषा शंखमुद्रिका ॥ इति शंखमुद्रा ॥ १ ॥ हस्तौ च संमुखौ कृत्वा सुभुग्नौ सुप्रसारितौ ॥ कनिष्ठांगुष्ठकौ लग्नौ मुद्रैषा चक्रसंज्ञिका ॥ इति चक्रमुद्रा ॥ २ ॥ अन्योन्याभिमुखौ हस्तौ कृत्वा तु ग्रथितांगुलीः ॥ अंगुष्ठमध्यमे भूयः संलग्ने संप्रसारिते ॥ गदामुद्रेयमुदिता विष्णोः संतोषवर्द्धिनी ॥ इति गदामुद्रा ॥ ३ ॥ हस्तौ तु संमुखौ कृत्वा संहतप्रोन्नतांगुलीः ॥ तलांतमिलितांगुष्ठौ कृत्वैषा पद्ममुद्रिका ॥ इति पद्ममुद्रा ॥ ४ ॥ ओष्ठे वामकरांगुष्ठे लग्नस्तस्य कनिष्ठके ॥ दक्षिणांगुष्ठसंसर्गात्तत्कनिष्ठा प्रसारिता ॥ तर्ज्जनीमध्यमानामाः किंचित्संकोच्य चालिताः ॥ वेणुमुद्रा भवेदेषा सुगुप्ता प्रेयसी हरेः ॥ इति वेणुमुद्रा ॥ ५ ॥ अन्योन्यस्पृष्टकरयोर्म्मध्यमानामिकांगुलीः ॥ अंगुष्ठेन तु बध्नीयात्कनिष्ठामूलसंस्थिते ॥ तर्ज्जन्यौ कारयेदेषा मुद्रा श्रीवत्ससंज्ञिका ॥ इति श्रीवत्समुद्रा ॥ ६ ॥ अनामां पृष्ठसंलग्नां दक्षिणस्य कनिष्ठिकाम् ॥ कनिष्ठयान्ययाबध्य तर्ज्जन्या दक्षया तथा ॥ वामानामां च बध्नीयाद्दक्षिणांगुष्ठमूलके ॥ अंगुष्ठमध्यमे वामे संयोज्य सरलाः पराः ॥ चतस्रोऽप्यग्रसंलग्ना मुद्रा कौस्तुभसंज्ञिका ॥ इति कौस्तुभमुद्रा ॥ ७ ॥ स्पृशेत्कंठादिपादांतं तर्ज्जन्यांगुष्ठया तथा ॥ करद्वयेन मालावन्मुद्रेयं वनमालिका ॥ इति वनमाला मुद्रा ॥ ८ ॥ तर्जन्यंगुष्ठकौ सक्तावग्रतो हृदि विन्यसेत् ॥ वामहस्तांबुजं वामे जानुमूर्द्धनि विन्यसेत् ॥ ज्ञानमुद्रा भवेदेषा

रामचंद्रस्य प्रेयसी ॥ इति ज्ञानमुद्रा ॥९॥ अंगुष्ठं वाममुद्धाटितमितरकरांगुष्ठकेनाथ बद्धा तस्याग्रं पीडयित्वांगुलिभिरपि च ता वामहस्तां गुलीभिः ॥ बद्धा गाढं हृदि स्थापयतु विमलधीर्व्याहरन्मारबीजं बिल्वाख्या मुद्रिकैषा स्फुटमिह कथिता गोपनीया विधिज्ञैः ॥ इति बिल्वाख्यमुद्रा ॥ १० ॥ हस्तौ तु विमुखौ कृत्वा ग्रंथयित्वा कनिष्ठिके ॥ मिथस्तर्जनिके श्लिष्टे श्लिष्टावंगुष्ठकौ तथा ॥ मध्यमानामिका द्वे तु द्वौ पक्षाविव चालयेत् ॥ एषा गरुडमुद्राख्या विष्णोः संतोषवर्द्धिनी ॥ इति गरुडमुद्रा ॥ ११ ॥ जानुमध्ये करौ दत्त्वा चिबुकोष्ठौ समावृतौ ॥ हस्तौ च भूमिसंलग्नौ कंपमानः पुनःपुनः ॥ मुखं च विवृतं कुर्याल्लेलिहानां च जिह्विकाम् ॥ नारसिंही भवेदेषा मुद्रा तत्प्रीति वर्द्धिनी ॥ इति नारसिंही मुद्रा॥१२॥अंगुष्ठाभ्यां तु करयोरथाक्रम्य कनिष्ठिके ॥ अधोमुखीभिः सर्वाभिर्मुद्रेयं नृहरेर्मता ॥ इति द्वितीया नृहरिमुद्रा ॥१२॥ दक्षोपरि करं वामं कृत्वोत्तानमधः सुधीः ॥ नामयेदिति संप्रोक्ता मुद्रा वाराहसंज्ञिका ॥ इति वाराहमुद्रा ॥ १३ ॥ दक्षहस्तं चोर्द्ध्वमुखं वामहस्तमधोमुखम् ॥ अंगुल्यग्रं तु संयुक्तं मुद्रा वाराहसंज्ञिका ॥ इति वाराहमुद्रा द्वितीया ॥ १३ ॥ वामहस्ततले दक्षा अंगुलीस्ता अधोमुखीः ॥ संरोप्य मध्यमा तासामुन्नाम्याधो विकुंचयेत् ॥ हयग्रीवप्रिया मुद्रा तन्मूर्तेरनुकारिणी ॥ इति हयग्रीवमुद्रा ॥ १४ ॥ वामस्य मध्यमाग्रं तु तर्जन्यग्रेण योजयेत् ॥ अनामिकां कनिष्ठां च तस्यांगुष्ठेन पीडयेत् ॥ दर्शयेद्वामके स्कंधे धनुर्मुद्रेयमीरिता ॥ इति धनुर्मुद्रा ॥ १५ ॥ दक्षमुष्टेस्तु तर्जन्या दीर्घया बाणमुद्रिका ॥ इति बाणमुद्रा ॥ १६ ॥ तते तलं तु करयोस्तिर्यक् संयोज्य चांगुलीम् ॥ संहतां प्रसृतां कुर्यान्मुद्रेयं पर्शुसंज्ञिका ॥ इति परशुमुद्रा ॥ १७ ॥ उर्द्ध्वस्थांगुष्ठमुष्टी द्वे मुद्रा त्रैलोक्यमोहिनी । इति जगन्मोहिनी मुद्रा ॥ १८॥ हस्तौ तु संपुटौ कृत्वा प्रसृतांगुलिकौ तथा ॥तर्जन्यौ मध्यमा पृष्ठे ह्यंगुष्ठौ मध्यमाश्रितौ ॥ काममुद्रेयमुदिता सर्वदेवप्रियंकरी ॥ इति काममुद्रा ॥ १९ ॥ इति विष्णुमुद्राः ॥ अथ शिवस्य दशमुद्रालक्षणम् ॥ महादेवप्रियाणां च कथ्यंते लक्षणान्यथ । उच्छ्रितं दक्षिणांगुष्ठं वामांगुष्ठेन बंधयेत् ॥ वामांगुलीर्दक्षिणाभिरंगुलीभिश्च बन्धयेत् । लिंगमुद्रेयमाख्याता शिवसान्निध्यका

---

१ ज्ञानार्णवे-यथा हस्तगतं चापं तथा हस्तं कुरु प्रिये । चापमुद्रेयमाख्याता वामहस्ते व्यवस्थिता॥२-यथा हस्तगता बाणास्तथा हस्तं कुरु प्रिये । बाणमुद्रेयमाख्याता रिपुवर्गनिकृंतनी ॥

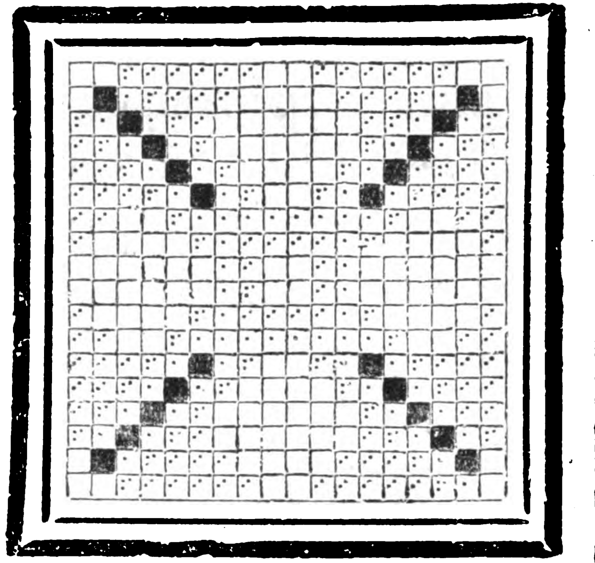
रिणी ॥ इति लिंगमुद्रा ॥ १ ॥ मिथः कनिष्ठिके बद्ध्वा तर्जनीभ्यामनामिके ॥ अनामिकोर्द्ध्वसंश्लिष्टे दीर्घमध्यमयोरथ ॥ अंगुष्ठाग्रद्वयं न्यस्येद्योनिमुद्रेयमीरिता ॥ इति योनिमुद्रा॥ २ ॥ अंगुष्ठेन कनिष्ठां तु बद्ध्वा शिष्टांगुलित्रयम्॥ प्रसारयेत्त्रिशूलाख्या मुद्रैषा परिकीर्तिता ॥ इति त्रिशूलमुद्रा ॥ ३ ॥ अंगुष्ठतर्जन्यग्रे तु ग्रंथयित्वांगुलित्रयम् ॥ प्रसारयेदक्षमाला मुद्रेयं परिकीर्तिता ॥ इत्यक्षमाला मुद्रा ॥४॥ अधः स्थितो दक्षहस्तः प्रसृतो वरमुद्रिका ॥ इति वरमुद्रा ॥ ५ ॥ ऊर्ध्वीकृतो वामहस्तः प्रसृतोऽभयमुद्रिका ॥ इत्यभयमुद्रा ॥ ६ ॥ मिलितानामिकांगुष्ठं मध्यमाग्रे नियोजयेत ॥ शिष्टांगुल्युच्छ्रिते कुर्यान्मृगमुद्रेयमीरिता ॥ इति मृगमुद्रा ॥ ७ ॥ पंचांगुल्यो दक्षिणास्तु मिलिता दधूर्द्धमूर्द्धता ॥ खट्वांगमुद्रा विख्याता शिवस्यातिप्रिया मता। । इति खट्वांगमुद्रा ॥८॥ पात्रवद्वाम हस्तं च कृत्वांके वामके तथा ॥ निधायोच्छ्रितवत्कुर्यान्मुद्रा कापालिकी मता ॥ इति कपालाख्यमुद्रा ॥ ९ ॥ मुष्टिं च शिथिलां बद्ध्वा हीषत्कुंचितमध्यमाम् ॥ दक्षिणान्तूर्द्ध्वमुन्नम्य कर्णदेशे प्रचालयेत् ॥ एषा मुद्रा डमरुका सर्वविघ्नविनाशिनी॥ इति डमरुमुद्रा ॥१०॥ इति शिवस्य दश मुद्राः ॥ अथ गणेशसप्तमुद्रालक्षणम् ॥ ततो गणेशमुद्राणामुच्यंते लक्षणानि तु ॥ उत्तानोर्ध्वमुखी मध्या सरला बद्ध मुष्टिका ॥ दंतमुद्रा समाख्याता सर्वागमविशारदैः ॥ इति दंतमुद्रा ॥ वाममुष्टेस्तु तर्ज्जन्या दक्षमुष्टेस्तु तर्ज्जनीम् ॥ संयोज्यांगुष्ठकाग्राभ्यां तर्जन्यग्रे समुत्क्षिपेत् ॥ एषा पाशाह्वया मुद्रा विद्वद्भिः परिकीर्तिता ॥ इति पाशमुद्रा ॥ २ ॥ ऋज्वीं च मध्यमां कृत्वा तर्ज्जनीं मध्यपर्वाणि ॥ संयोज्याकुंचयेत्किंचिन्मुद्रैषांकुशसंज्ञिका ॥ इत्यंकुशमुद्रा ॥ ३ ॥ तर्ज्जनी मध्यमानामा कनिष्ठांगुष्ठमुच्छ्रिता ॥ अधोमुखी दीर्घरूपा मध्यमा विघ्ननामिका ॥ इति विघ्नमुद्रा ॥ ४॥पर्शुमुद्रा निगदिता प्रसिद्धा लड्डुमुद्रिका ॥ बीजपूराह्वया मुद्रा प्रसिद्धत्वादुपेक्षिता ॥ इति पर्शुलड्डुकबीजपूरादिमुद्राः ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ इति गणेशसप्तमुद्राः ॥ अथ शक्तिदशमुद्राः ॥ शाक्तेयीनां च मुद्राणां कथ्यंते लक्षणानि तु॥ पाशांकुशवराभीतिधनुर्बाणाः समीरिताः॥ (इति षड् मुद्राः पूर्ववत् ज्ञेयाः) कनिष्ठानामिकां बद्ध्वा स्वां

गुष्ठेनैव दक्षतः ॥ मितांगुली च प्रसृते संस्पृष्टे खड्गमुद्रिका ॥ ७ ॥ वामहस्तं तथा तिर्य्यक् कृत्वा चैव प्रसार्य च ॥ आकुंचितांगुलिं कुर्याच्चर्म्ममुद्रेयमीरिता ॥ इति चर्ममुद्रा ॥८॥ मुष्टिं कृत्वा तु हस्ताभ्यां वामस्योपरि दक्षिणम् ॥ कुर्यान्मुसलमुद्रेयं सर्वविघ्नविनाशिनी ॥ इति मुसलमुद्रा ॥९॥ मुष्टिं कृत्वा कराभ्यां च वामस्योपरि दक्षिणम् ॥ कृत्वा शिरसि संयोगाद्दुर्गामुद्रेयमीरिता ॥ इति दौर्गी मुद्रा ॥१०॥ अथ लक्ष्मीमुद्रा-एका ॥ चक्रमुद्रां तथा बद्ध्वा मध्यमे द्वे प्रसार्य्य च ॥ कनिष्ठिके तथानीय तदग्रे मुष्टिके क्षिपेत् ॥ लक्ष्मीमुद्रा परा ह्येषा सर्वसम्पत्प्रदायिनी ॥ इति लक्ष्मीमुद्रा ॥ १ ॥ अथ सरस्वत्याः पंचमुद्रालक्षणम् ॥ वीणावादनवद्धस्तौ कृत्वा संचालयेच्छिरः ॥ वीणामुद्रेयमाख्याता सरस्वत्याः प्रियंकरी ॥ इति वीणामुद्रा ॥ १ . वाममुष्टिं स्वाभिमुखीं कृत्वा पुस्तकमुद्रिका ॥ इति पुस्तकमुद्रा ॥ २ ॥ दक्षिणांगुष्ठतर्ज्जन्यावग्रलग्ने पराङ्मुखे ॥ प्रसार्य्य संहितोत्ताना ह्येषा व्याख्यानमुद्रिका ॥ श्रीरामस्य सरस्वत्या अत्यंतप्रेयसी मता ॥ ३ ॥ (अक्षमालादिमुद्रिकाः पूर्वोक्ता ज्ञेयाः) इति सरस्वतीपंचमुद्राः ॥ अथ वह्निमुद्रा-एका ॥ मणिबंधस्थितौ कृत्वा प्रसृतांगुलिकौ करौ ॥ कनिष्ठांगुष्ठयुगले मिलितौ तौ प्रसारयेत् ॥ सप्तजिह्वाख्यमुद्रेयं वैश्वानरप्रियंकरी ॥ इति सप्तजिह्वाख्याग्निमुद्रा ॥ १ ॥ अथानेकमुद्रालक्षणम् ॥ कनिष्ठांगुष्ठकौ सक्तौ करयोरितरेतरम् ॥ तर्ज्जनी मध्यमानामा संहता भुग्नवर्जिताः ॥ मुद्रैषा गालिनी प्रोक्ता शंखकस्योपचालिता ॥ इति गालिनी मुद्रा ॥ १ ॥ दक्षांगुष्ठे परांगुष्ठे क्षिप्त्वा हस्तद्वयेन तु ॥ सावकाशामेकमुष्टिं कुर्यात्सा कुंभमुद्रिका ॥ इति कुंभमुद्रा ॥ २ ॥ मुष्टयोरूर्द्ध्वकृतांगुष्ठौ तर्जन्यग्रे तु विन्यसेत् ॥ सर्वरक्षाकरी ह्येषा कुंभमुद्रेयमीरिता ॥ इति कुंभमुद्रा द्वितीया ॥ २ ॥ प्रसृतांगुलिकौ हस्तौ मिथः श्लिष्टौ च संमुखौ ॥ कुर्य्यात्स्वहृदये सेयं मुद्रा प्रार्थनसंज्ञिका ॥ इति प्रार्थनामुद्रा ॥३॥ अंजल्यंजलिमुद्रा स्याद्वासुदेवाभिधान सा ॥ इत्यंजलिमुद्रा ॥ ४ ॥ अंगुष्ठावुन्नतौ कृत्वा मुष्टयोः संलग्नयोर्द्वयोः ॥ तावेवाभिमुखौ कुर्य्यान्मुद्रैषा कालकर्णिका ॥ इति कालकर्णी मुद्रा॥५॥दक्षिणा निबिडा मुष्टिरनामार्प्पिततर्ज्जनी ॥ मुद्रा विस्मयसंज्ञा स्याद्विस्मयावेशकारिणी ॥ इति विस्मयमुद्रा ॥६॥ मुष्टिरु-

र्द्ध्वकृतांगुष्ठा दक्षिणा नादमुद्रिका ॥ तर्जन्यंगुष्ठसंयोगादग्रतो बिंदुमुद्रिका ॥ इति बिंदुमुद्रा ॥ ७ ॥ अधोमुखे वामहस्ते ऊर्द्ध्वं स्याद्दक्ष हस्तकम् । क्षिप्त्वांगुलीरंगुलीभिः संग्रथ्य परिवर्तयेत् ॥ एषा संहारमुद्रा स्याद्विसर्जनविधौ स्मृता ॥ इति संहारमुद्रा ॥ ८ ॥ दक्षपाणिपृष्ठ देशे वामपाणितलं न्यसेत् ॥ अंगुष्ठौ चालयेत्सम्यङ्मुद्रेयं मत्स्यरूपिणी ॥ इति मत्स्यमुद्रा ॥९॥ वामहस्तस्य तर्जन्यां दक्षिणस्य करस्य च। वामस्य पितृतीर्थेन मध्यमानामिके तथा ॥ अधोमुखैश्च तैः कुर्य्याद्दक्षिणस्य करस्य च। कूर्मपृष्ठसमं कुर्याद्दक्षं पाणिं च सर्वतः ॥ कूर्म्म मुद्रेयमाख्याता देवताध्यानकर्मणि ॥ इति कूर्ममुद्रा ॥ १० ॥ पृष्ठे क्रोडांतरेंऽगुष्ठमुष्टिं कृत्वा करस्य च ॥ मध्यमाग्रं तु दक्षस्य तथालंब्य प्रयत्नतः ॥ मध्यमेनाथ तर्ज्जन्यामंगुष्ठाग्रे तु योजयेत् ॥ दक्षिणं योजयेत्पाणिं वाममुष्टौ तु साधकः ॥ दर्शये द्दणिक्षे भागे मुंडमुद्रेयमुच्यते ॥ इति मुंडमुद्रा ॥ ११ ॥ तर्ज्जनीमध्यमानामाः समाः कुर्यादधोमुखीः । अनामायां क्षिपेद्वृद्धामूर्द्ध्वं कृत्वा कनिष्ठिकाम् । लेलिहा नाम मुद्रेयं जीवन्यासे प्रकीर्तिता ॥ इति लेलिहा मुद्रा ॥ १२ ॥ तर्जन्यनामिकामध्ये कनिष्ठाक्रम योगतः । करयोर्योजयत्येव कनिष्ठामूलदेशतः ॥ अंगुष्ठाग्रे तु निःक्षिप्य महायोनिः प्रकीर्तिता ॥ इति महायोनिमुद्रा ॥ १३ ॥ परिवृत्तकरौ स्पृष्टावंगुष्ठौ कारयेत्समौ । अनामांतर्गते कृत्वा तर्ज्जन्यौ कुटिलाकृती ॥ कनिष्ठिके नियुंजीत निजस्थाने महेश्वरि । त्रिखंडेयं समाख्याता त्रिपुराध्यानकर्म्मणि ॥ इति त्रिखंडमुद्रा ॥ १४ ॥ मध्यमामध्यगे कृत्वा कनिष्ठेंऽगुष्ठरोधिते । तर्जन्यौ दंडवत्कुर्या न्मध्यमोपर्यनामिके ॥ एषा च प्रथमा मुद्रा सर्वसंक्षोभकारिणी ॥ इति प्रथमा मुद्रा ॥ १५ ॥ एतस्या एव मुद्राया मध्यमे सरले तथा॥ क्रियेते परमेशानि सर्वविद्रावणी परा ॥ इति सर्वविद्रावणी मुद्रा ॥ १५ ॥ मध्यमातर्ज्जनीभ्यां च कनिष्ठानामिके समे । अंकुशाकार रूपाभ्यां मध्यमे परमेश्वरि ॥ अंगुष्ठं तु नियुंजीत कनिष्ठानामिकोपरि ॥ इयमाकर्षिणी मुद्रा त्रैलोक्याकर्षिणी मता ॥ इत्याकर्षिणी मुद्रा ॥ १६ ॥ पुटाकारौ करौ कृत्वा तर्ज्जन्यावंशुकाकृती । परिवतक्रमेणैव मध्यमे तदधोगते ॥ क्रमेण देवि तेनैव कनिष्ठानामिकादयः ।

संयोज्या निबिडाः सर्वा अंगुष्ठावग्रदेशतः ॥ मुद्रेयं परमेशानि सर्ववश्यकरी मता ॥ इति सर्ववश्यकरी मुद्रा ॥ १७ ॥ संमुखौ तु करौ कृत्वा मध्यमामध्यगेंऽत्यजे । अनामिके तु सरले तद्वहिस्तर्जनीद्वयम् ॥ दंडाकारौ ततोऽगुष्ठौ मध्यमानखदेशिकौ । मुद्रैषोन्मादिनी नाम्ना क्लेदिनी सर्वयोषिताम् ॥ इत्युन्मादिनी मुद्रा ॥ १८ ॥ अस्यां त्वनामिकायुग्ममधः कृत्वांकुशाकृति । तर्जन्यावपि तेनैव क्रमेण विनियोजयेत् ॥ इत्थं महांकुशा मुद्रा सर्वकामार्थसाधनी ॥ इति महांकुशमुद्रा ॥ १९ ॥ सव्यं दक्षिणदेशेषु सव्यदेशे तु दक्षिणम् । बाहुं कृत्वा महादेवि हस्तौ संपरिवर्तयेत् ॥ कनिष्ठानामिके देवि मुक्ते तेन क्रमेण च । तर्जनीभ्यां समाक्रांते सर्वोर्द्धमपि मध्यमे ॥ अंगुष्ठौ च महादेवि सरलावपि कारयेत् । इयं सा खेचरी मुद्रा पार्थिवस्थानयोजिता ॥ इति खेचरी मुद्रा ॥ २० ॥ परिवृत्य करौ स्पृष्टावर्द्धचन्द्राकृती प्रिये । तर्जन्यंगुष्ठयुगलं युगपत्कारयेत्ततः ॥ अधः कनिष्ठावष्टब्धे मध्यमे विनियोजयेत् । अथैव कुटिले योज्ये सर्वाधस्तदनामिके ॥ बीजमुद्रेयमचिरात्सर्वसिद्धिप्रदायिनी ॥ इति बीजमुद्रा ॥ २१ ॥ मध्यमे कुटिले कृत्वा तर्जन्युपरि संस्थिते । अनामिकामध्यगते तथैव हि कानिष्ठिके ॥ सर्वा एकत्र संयोज्य अंगुष्ठपरिपीडिताः । एषा तु प्रथमा मुद्रा योनिमुद्रेति संज्ञिता ॥ इति प्रथमा योनिमुद्रा ॥ २२ ॥ वामहस्तेन मुष्टिं तु बद्ध्वा कर्णप्रदेशकम् । तर्जनीं सरलां कृत्वा भ्रामयेन्मनुवित्तमः ॥ सौभाग्यदंडिनी मुद्रा न्यासकालेऽपि सूचिता ॥ इति सौभाग्यदंडिनी मुद्रा ॥ २३ ॥ अंतरंगुष्ठमुष्ट्या तु निरुध्य तर्जनीमिमाम् ॥ रिपुजिह्वाग्रहा मुद्रा न्यासकाले तु सूचिता ॥ इति रिपुजिह्वाग्रहा मुद्रा ॥ २४ ॥ बद्ध्वा तु योनिमुद्रां वै मध्यमे कुटिले कुरु ॥ अंगुष्ठेन तदग्रे तु मुद्रेयं भूतिनी मता ॥ इति भूतिनी मुद्रा ॥ २५ ॥ वाममुष्टिं विधायाथ तर्जनीमध्यमे ततः ॥ प्रसार्य तर्जनीमुद्रा निर्दिष्टा वज्रपाणिना ॥ इति तर्जनी मुद्रा ॥ २६ ॥ मुष्टिं कृत्वा कनिष्ठाद्वयं वेष्टयेत् तर्जनीं प्रसार्याकुंचयेत् ॥ इति क्रोधमुद्रा ॥ २७ ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे पूर्वखण्डे मुद्राप्रकरणे द्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

एकोनविंशतिरेखात्मकं सर्वतोभद्रमंडलम्



श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ भद्रमंडलप्रकरणम् ॥ तत्रादौ एकोनविंशतिरेखात्मकं सर्वतोभद्रमण्डलम् ॥ (व्रतराजे हेमाद्रौ स्कांदे) प्रागुदीच्यां गता रेखाः कुर्यादेकोनविंशतिम् ॥ खंडेन्दुस्त्रिपदः कोणे श्रृंखला पंचभिः पदैः ॥ १ ॥ एकादशपदा वल्ली भद्रं तु नवभिः पदैः ॥ चतुर्विंशत्पदा वापी विंशत्या परिधिः पदैः ॥ २ ॥ मध्ये षोडशभिः कोष्ठैः पद्ममष्टदलं स्मृतम् ॥ श्वेतेंदुः श्रृंखला कृष्णा वल्लीं नीलेन पूरयेत् ॥ ३ ॥ भद्रारुणा सिता वापी परिधिः पीतवर्णिका ॥ बाह्यांतरदले श्वेता कर्णिका पीतवर्णिका ॥ ४ ॥ परिध्या वेष्टितं पद्मं बाह्ये सत्त्वं रजस्तमः ॥ तन्मध्ये स्थापयेद्देवान् ब्रह्माद्यांश्च सुरेश्वरान् ॥ ५ ॥ (तत्र देवताः व्रतराजे) तत्रादौ संकल्पः ॥ देशकालौ संकीर्त्य अद्य पुण्यतिथौ ममेह जन्मनि जन्मांतरे वा कृतकायिकवाचिकमानसिकसांसर्गिकदोषपरिहारार्थमिहामुत्र सुखसौभाग्यसुखसंपत्त्यादिकफलप्राप्त्यर्थं श्रीअमुकदेवताप्रीतये अमुककालमारभ्यामुकदिनपर्यंतं मया आचरितस्य व्रतस्य फलप्राप्तिद्वारा एतत्सर्वतोभद्रमण्डले वेदपुराणोक्तमंत्रैर्ब्रह्मादिषट्पंचाशद्देवतावाहनप्रतिष्ठापूजनं च करिष्ये॥इति संकल्पः ॥ अक्षतान्गृहीत्वा॥ततो मध्ये॥ब्रह्मजज्ञानं, गौतमो वामदेवो ब्रह्मा त्रिष्टुप् मध्ये ब्रह्मावाहने विनियोगः॥ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः॥सबुध्न्या उपमा अस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ एह्येहि धातस्तु समस्तसृष्टेः पद्मोद्भवः पद्मसुखप्रदातः।सुरासुरैर्वंदितपादपद्म यज्ञे ममास्मिन्कुरु सन्निधानम्॥भो ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ पूजां गृहाण मम संमुखः सुप्रसन्नो वरदो भव ॥ १ ॥ इत्येवंप्रकारेण सर्वत्र देवतानामावाहनादिकं ज्ञेयम् ॥ ततः उदीचीमारभ्य वायवीपर्यंतं सोमादयोऽष्टौ लोकपालाः स्थापनीयाः ॥ तत्र क्रमः-आप्यायस्व, राहूगणो गौतमः सोमो गायत्री उत्तरे सोमावाहने विनियोगः ॥

ॐ आप्यायस्वसमेतुतेविश्वतःसोमवृष्णियं भवावाजस्यसंगथे ॥ कुबेरं गुह्यकाध्यक्षं सुरासुरनमस्कृतम् ॥ धनदं शिबिकारूढं चिंतयामि सदाप्रियम् ॥ उत्तरे सोमम् ॥ २ ॥ अभित्वा, आजीगर्तिः शुनःशेप ईशानो गायत्री ईशान्यामीशानावाहने विनियोगः ॥ ॐ अभित्वा देवस वितरीशानंवार्याणां सदावन्भागमीमहे ॥ आवाहयाम्यहं देवीमीशानं च वरप्रदम् ॥ सर्वलोकप्रपूज्यं त्वामीशानं पूजयाम्यहम् ॥ ईशान्या मीशानम् ॥ ३ ॥ इन्द्रंवो, मधुच्छंदा इंद्रो गायत्री पूर्वे इंद्रावाहने विनियोगः ॥ इंद्रंवोविश्वतस्परिहवामहे जनेभ्यः अस्माकमस्तुकेवलः ॥ आवाहयाम्यहं देवं महेंद्रं च महाप्रभुम् ॥ पीतवर्णं गजारूढं वज्रपाणिं सुरेश्वरम् ॥ पूर्वे इंद्रम् ॥ ४ ॥ अग्निं दूतं, काण्वो मेधातिथिरग्नि गायत्री आग्नेय्यामग्न्यावाहने विनियोगः ॥ ॐ अग्निंदूतंवृणीमहेहोतारंविश्ववेदसम् अस्ययज्ञस्यसुक्रतुम् ॥ अथाग्निमूर्तिं ध्यायामि सर्वाभीष्ट फलप्रदाम् ॥ एकजिह्वां द्विशीर्षां च जटामुकुटमण्डिताम् ॥ आग्नेय्यामग्निम् ॥ ५ ॥ यमाय सोमं, वैवस्वतो यमो यमोऽनुष्टुप् दक्षिणे यमा वाहने विनियोगः ॥ ॐ यमायसोमꣳसुनुतयमायजुहुताहविः यमꣳहयज्ञोगच्छत्यग्निदूतोअरंकृतः ॥ आवाहयाम्यहं देवं यमं महिषवाहनम् ॥ ऊर्ध्वकेशं विरूपाक्षं भैरवं रक्तलोचनम् ॥ दक्षिणे यमम् ॥ ६ ॥ मोषुणो, घोरः कण्वो निर्ऋतिर्गायत्री नैर्ऋत्यां निर्ऋत्यावाहने विनियोगः ॥ ॐ मोषुणः परापरा निर्ऋतिर्दुर्हणावधीत् ॥ पदीष्टतृष्णयासह ॥ आवाहयाम्यहं देवं निर्ऋतिं श्वेतरूपिणम् ॥ लंबकेशं विरूपाक्षं खड्गपाणिं दुरासदम् ॥ नैर्ऋत्यां निर्ऋतिम् ॥ ७ ॥ तत्त्वायामि, शुनःशेपो वरुणस्त्रिष्टुप् पश्चिमे वरुणावाहने विनियोगः ॥ ॐ तत्त्वायामिब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहाविर्भिः ॥ अहेडमानोवरुणेहबोध्युरुशꣳसमानआयुःप्रमोषीः ॥ आवाहयाम्यहं देवं वरुणं कमलेक्षणम् ॥ रक्तांबरधरं देवं रक्तमालाविभूषितम् ॥ पश्चिमे वरुणम् ॥ ८ ॥ वायोशतं, वामदेवो वायुरनुष्टुप् वायव्यां वाय्वावाहने विनियोगः ॥ ॐ वायो शतꣳ हरीणांयुवस्वपोष्याणाम् ॥ उतवातेसहस्त्रिणोरथ आयातुपाजसा ॥ अहमावाहयिष्यामि वायुं सर्वत्र व्यापिनम् ॥ ऊर्ध्वकेशं विरूपाक्षं सर्वचैतन्यरूपिणम् ॥ वायव्यां वायुम् ॥ ९ ॥ ज्मयाअत्र, मित्रावरुणौ वसवस्त्रिष्टुप् वायु सोमयोर्मध्ये वस्वावाहने विनियोगः ॥ ॐ ज्मयाअत्रवसवोरंतदेवाउरावंतरिक्षेमर्जयंतशुभ्राः ॥ अर्वाक्पथउरुज्रयः कृणुध्वं श्रोतादूतस्य

जग्मुषोनोअस्य॥ धरो ध्रुवश्च रोमश्च आपश्चैव नलोऽनलः॥ प्रत्यूषश्च प्रभातश्च वसवोऽष्टौ प्रकीर्तिताः ॥ वायुसोममध्ये अष्टौ वसून्॥ १० ॥
आरुद्रासः, श्यावाश्व एकादश रुद्रा जगती सोमेशयोर्मध्ये एकादशरुद्रावाहने विनियोगः ॥ ॐ आरुद्रासइंद्रवंतः सजोषसोहिरण्यरथाः
सुवितायगंतन इयंवोअस्मत्प्रतिहर्यतेमतिस्तृष्णजेनदिवउत्साउदन्यवे ॥ अजैकपादहिर्बुध्न्यो विरूपाक्षोऽथ रैवतः ॥ हरश्च बहुरूपश्च
त्र्यंबकश्च सुरेश्वरः ॥ सविता च जयंतश्च पिनाकी रुद्र एव च ॥ सोमेशानयोर्मध्ये एकादश रुद्रान् ॥ ११ ॥ त्यांनु, मत्स्यः
सामदो द्वादशादित्या गायत्री ईशानेंद्रयोर्मध्ये द्वादशादित्यावाहने विनियोगः ॥ ॐ त्यांनुक्षत्रियाँ अवआदित्यान्याचिषामहे सुमृलीकाँ
अभिष्टये ॥ धाता मित्रो यमश्चेन्द्रो वरुणः सूर्य एव च ॥ भगो विवस्वान् पुरुषः सविता विष्णुरेव च ॥ त्वष्टेति द्वादशादित्यान्
पूजयामि यथाविधि ॥ ईशानेन्द्रयोर्मध्ये द्वादशादित्यान् ॥ १२ ॥ अश्विनावर्तिः, राहुगणो गौतमोऽश्विनावुष्णिक् इन्द्राग्न्योर्मध्ये
अश्व्यावाहने विनियोगः ॥ ॐ अश्विनावर्तिरस्मदागोमद्दस्राहिरण्यवत् ॥ अर्वाग्रथंसमनसानियच्छतम् ॥ रूपेणाप्रतिमौ देवौ सूर्यस्य
तनयावुभौ ॥ वडवागर्भसंभूतौ मंडले विशतामुभौ ॥ इंद्राग्न्योर्मध्ये अश्विनौ ॥ १३ ॥ ओमासः, मधुच्छंदा विश्वेदेवा गायत्री अग्नि
यमयोर्मध्ये विश्वेदेवावाहने विनियोगः ॥ ॐ ओमासश्चर्षणीधृतोविश्वेदेवासआगत दाश्वांसोदाशुषः सुतम्॥ क्रतुर्दक्षो वसुः सत्यः कामलौ
धूम्रलोचनौ। पुरूरवार्द्रवश्चैव विश्वेदेवा इमे दश॥सोमपा अग्निष्वात्ताश्च बर्हिषदस्तु कालकाः। एकश्रृंगो वसुश्चैव द्वितीयः सोमपास्तथा॥
अग्नियममध्ये विश्वेदेवान् सपैतृकान् ॥ १४ ॥ अभित्यं, देवो गौतमो वामदेवः सप्त यक्षा अष्टी यमनिर्ऋत्योर्मध्ये सप्तयक्षावाहने
विनियोगः॥ॐ अभित्यं देवं सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामिसत्यसवंरत्नधामाभिप्रियंमतिंकविमूर्ध्वायस्यामतिर्भाअदिद्युतत्सवीमनिहिरण्य
पाणिरमिमतिसुक्रतुः कृपासुवः॥ अहमावाहयिष्यामि सप्तयक्षान्महाबलान् ॥ पुण्यरूपान् पुण्यजनान् पुण्यकर्मरतान्सदा ॥ यमनिर्ऋति
मध्ये सप्त यक्षान् ॥ १५ ॥ आयंगौः, सार्पराज्ञी सर्पा गायत्री निर्ऋतिवरुणमध्ये सर्पावाहने विनियोगः ॥ ॐ आयंगौः पृश्निरक्रमीदसद
न्मातरंपुरः पितरंचप्रयन्त्स्वः ॥ आवाहयाम्यहं देवान्भूतनागान् महाबलान् ॥ सर्पराजान्महाकायान्मणिमंडलभूषितान् ॥ निर्ऋति

भूतनागान् ॥१६॥ अप्सरसाम्, ऐतश ऋष्यशृंगो गंधर्वाप्सरसोऽनुष्टुप् वरुणवाय्वोर्मध्ये गंधर्वाप्सरस आवाहने विनियोगः ॥
ॐ अप्सरसांगंधर्वाणांमृगाणांचरणेचरन् ॥ केशीकेतस्यविद्वान्सखास्वादुर्मदिंतमः ॥ आवाहयामि गंधर्वान् साप्सरोगीतततत्परान् ॥
हाहाहूहूश्चैवमाद्यान् गंधर्वाप्सरसस्तथा ॥ वरुणवायुमध्ये गंधर्वाप्सरोभ्यो नमः गंधर्वाप्सरसः ॥ १७॥ यदक्रंदः, औचथ्यो दीर्घतमाःस्कंद
त्रिष्टुप् ब्रह्मसोममध्ये स्कंदावाहने विनियोगः ॥ ॐ यदक्रंदःप्रथमंजायमानउद्यन्त्समुद्रादुतवापुरीषात् ॥ श्येनस्यपक्षाहरिणस्यबाहूउपस्तु
त्यंमहिजातंतेअर्वन् ॥ एह्येहि षण्मुख सुरेश्वर तारकारे श्रीनीलकंठवरवाहनशक्तिपाणे॥ओंकारकोटरसुरेश्वरपूज्यमान सांनिध्यमत्र कुरु
ब्रह्मकुबेरमध्ये ॥ इति स्कंदम्॥१८॥तत्रैव ॥ ऋषभम्, ऋषभो वैराजो नंदीश्वरोऽनुष्टुप् ब्रह्मसोमयोर्मध्ये नंदीश्वरावाहने विनियोगः ॥ ॐ
ऋषभं मासमानानां संपत्नानां वृषासहिम्॥हंतारं शत्रूणां कृधि विराजं गोपतिं गवाम्॥आवाहयाम्यहं देवं वृषभं सर्वपूजितम्॥ महादेवा
सने मुख्यं सर्वसिद्धिप्रदायकम्॥ स्कंदादुत्तरे नंदिनम् ॥ १९ ॥ कद्रुद्राय, घोरः कण्वः शूलो गायत्री तदुत्तरे शूलावाहने विनियोगः ॥
ॐ कद्रुद्रायप्रचेतसेमीढुष्टमायतव्यसे वोचेमशंतमंहृदे॥आवाहयामि तं शूलं शस्त्रराजं महोज्ज्वलम्॥दुष्टारिघातनेदक्षंशिवबाहुविराजितम्॥
तत्रैव शूलम्॥२०॥कुमारं, कुमारो महाकालस्त्रिष्टुप् तदुत्तरे महाकालावाहने विनियोगः ॥ॐ कुमारंमातायुवतिःसमुब्धंगुहाबिभर्तिनददाति
पित्रे॥अनीकमस्यनमिनज्जनासः पुरःपश्यंतिनिहितमरतौ ॥ नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवमक्षरमव्ययम्॥सर्वव्यापिनमीशानं रुद्रं वै विश्वरूपि
णम् ॥ शूलादुत्तरे महाकालम् ॥२१ ॥ अदितिः, लौक्यो बृहस्पतिर्दक्षोऽनुष्टुप् ब्रह्मेशानयोर्मध्ये दक्षावाहने विनियोगः॥ ॐ अदितिर्ह्यजनि
ष्टदक्षयादुहितातव तान्देवाअन्वजायंतभद्राअमृतबंधवः ॥ आवाहयामि तान् देवान् कैलासाधिपपार्षदान्॥दक्षादिप्रमुखान् सप्तगणाञ्जीव
सुखावहान् ॥ ब्रह्मेशानयोर्मध्ये दक्षादिसप्तगणान् ॥ २२ ॥ तामग्निवर्णां, सौभरिर्दुर्गास्त्रिष्टुप् ब्रह्मेंद्रयोर्मध्ये दुर्गावाहने विनियोगः ॥ ॐ
तामग्निवर्णांतपसाज्वलंतींवैरोचनीं कर्मफलेषुजुष्टाम्॥दुर्गांदेवींशरणमहंप्रपद्येसुतरासितरसेनमः॥आगच्छ कोकिले दुर्गे सिंहारूढे महाभुजे ॥
विंध्याचलकृतावासे मंडले त्वं समाविश ॥ ब्रह्मेंद्रमध्ये दुर्गाम् ॥ २३ ॥ इदंविष्णुः, काण्वो मेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री ब्रह्मेंद्रयोर्मध्ये

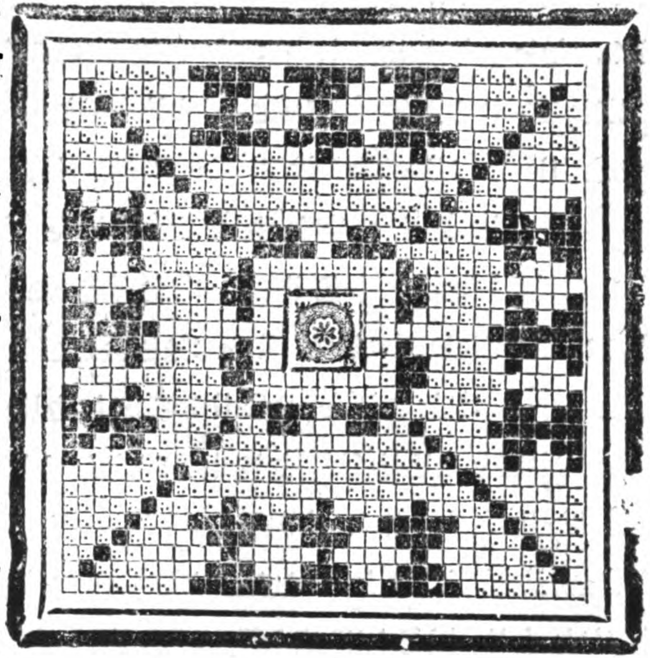
विष्णवावाहने विनियोगः ॥ ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम् ॥ समूढमस्यपा ंसुरे ॥ आवाहयाम्यहं देवं श्रीविष्णुं कमलापतिम् ॥ जगच्चक्षुर्विश्वजन्मस्थितिसंहारकारकम् ॥ दुर्गापूर्वे विष्णुम् ॥ २४ ॥ उदीरतामवरः, शंखः स्वधा पितरास्त्रिष्टुप् ब्रह्माग्न्योर्मध्ये स्वधावाहने विनियोगः ॥ ॐ उदीरतामवरउत्परासउन्मध्यमाःपितरःसोम्यासः॥असुंयईयुरवृकाऋतज्ञास्तेनोऽवंतुपितरोहवेषु॥कव्यमादाय सततं पितृभ्यो या प्रयच्छति ॥ तिष्ठत्युदीच्यां दिश्यर्कच्छविमावाहये स्वधाम् ॥ ब्रह्माग्न्योर्मध्ये स्वधाम् ॥ २५ ॥ परंमृत्यो, संकुशिको मृत्युरोगास्त्रिष्टुप् ब्रह्मयमयोर्मध्ये मृत्युरोगावाहने विनियोगः ॥ ॐ परंमृत्योअनुपरेहिपंथांयस्तेस्वइतरोदेवयानात् ॥ चक्षुष्मतेशृण्वतेतेब्रवीमिमानःप्रजांरीरिषोमोतवीरान्॥इहोपहूतो भगवान् मृत्युः शामित्रकर्मणि ॥ न कश्चिन्म्रियते तावद्यावदास्त इहांतकः॥ब्रह्मयममध्ये मृत्युरोगान् ॥ ॥ २६ ॥ गणानांत्वा, शौनको गृत्समदो गणपतिर्जगती ब्रह्मनिर्ऋत्योर्मध्ये गणपत्यावाहने विनियोगः ॥ ॐ गणनांत्वागणपतिंहवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्॥ज्येष्ठराजंब्रह्मणांब्रह्मणस्पतआनःशृण्वन्नूतिभिःसीदसादनम्॥एकदंतं महाकायं पद्मकांचनसन्निभम्॥लंबोदरं विशालाक्षं वंदेऽहं गणनायकम् ॥ ब्रह्मनिर्ऋतिमध्ये गणपतिम् ॥ २७ ॥ शन्नोदेवीः, आंबरीषः सिंधुद्वीप आपो गायत्री ब्रह्मवरुणयोर्मध्ये अबावाहने विनियोगः ॥ ॐ शन्नोदेवीरभीष्टयआपोभवन्तुपीतये ॥ शंयोरभिस्रवंतुनः ॥ः स्वच्छाः पवित्रा जनशुद्धिबीजा यादोभिरत्यंतभयंकराश्च ॥ कुर्वंतु सान्निध्यमथांबुवेगास्सर्वस्य विश्वस्य च जीवरूपाः ॥ ब्रह्मवरुणमध्ये अपः ॥ २८ ॥ मरुतो यस्य, राहूगणो गौतमो मरुतो गायत्री ब्रह्मवाय्वोर्मध्ये मरुदावाहने विनियोगः ॥ ॐ मरुतोयस्यहिक्षयेपाथादिवोविमहसः ससुगोपातमोजनः ॥ आगच्छ त्वं महादेव मृगारूढ प्रभंजन ॥ यज्ञसंरक्षणार्थाय मंडले त्वं स्थिरो भव ॥ ब्रह्मवायुमध्ये मरुद्भ्यो नमः मरुतः ॥ २९ ॥ स्योनापृथिवि, काण्वो मेधातिथिर्भूमिर्गायत्री ब्रह्मणः पादमूले कर्णिकाधः पृथिव्यावाहने विनियोगः ॥ ॐ स्योनापृथिविनो भवानृक्षरानिवेशनी॥यच्छानः शर्मसप्रथाः ॥ एह्येहि वसुधे देवि शैलजीवनकानने ॥ ब्रह्मणः पादमूले तु सान्निध्यं कुरु मे सदा॥ब्रह्मपादमूले पृथिवीम्॥३०॥इमंमेगंगे, सिंधुक्षित्प्रैयमेधो गंगादिनद्यो जगती(तत्रैव) गंगादिनद्यावाहने विनियोगः ॥ ॐ इमंमेगंगे

यमुनेसरस्वतिशुतुद्रिस्तोम ५ सचतापरुष्णिया॥ असिक्निया मरुद्वृधेवितस्तयार्जीकियेशृणुह्यासुषोमया ॥ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति॥नर्मदे सिंधुकावेरि सांनिध्यं कुर्वतामिह ॥ तत्रैव गंगादिसप्तसरितः ॥ २१ ॥ धाम्नो, गौतमो वामदेवः सागरोऽनुष्टुप् (तत्रैव)सप्तसागरावाहनेविनियोगः॥ॐधाम्नोधाम्नोराजन्नितोवरुणनोमुंच॥यदापोअघ्न्यावरुणेतिशपामहेततोवरुणनोमुंचमयिवापोमोषधीहिंसीरतोविश्वव्यचाभूस्त्वेतोवरुणनोमंच॥क्षारेक्षरसमद्योदान् घृतोदक्षीरकोदकौ॥दधिमंडोदशुद्धोदौ सप्तैतान् स्थापयाम्यहम्॥तत्रैव सप्तसागरान्॥३२॥ तदुपरि मेरुं नाममंत्रेण पूजयेत्॥ मेरवे नमः, मेरुमावाहयामि ॥ ३३ ॥ ततो मंडलाद्बहिः सोमादिसन्निधौ क्रमेण आयुधान्यावाहयेत् ॥ तत्र क्रमः ॥ सोमसमीपे गदायै नमः, गदामावाहयामि ॥ ३४ ॥ ईशानसमीपे-त्रिशूलाय नमः, त्रिशूलमावाहयामि ॥ ३५ ॥ इन्द्रसमीपे-वज्राय नमः, वज्रमावाहयामि ॥ ३६ ॥ अग्निसमीपे-शक्तये नमः, शक्तिमावाहयामि ॥३७॥ यमसमीपे-दंडाय नमः दंडमावाहयामि ॥ ३८ ॥ निर्ऋतिसमीपे खड्गाय नमः खड्गमावाहयामि ॥ ३९ ॥ वरुणसमीपे-पाशाय नमः पाशमावाहयामि ॥ ४० ॥ वायुसमीपे-अंकुशाय नमः अंकुशमावाहयामि ॥ ४१ ॥ तद्बाह्ये उत्तरे-गौतमाय नमः गौतममावाहयामि ॥ इति सर्वत्र ॥ ४२ ॥ ईशान्यां भारद्वाजाय नमः भारद्वाजम्०॥४३॥ पूर्वे-विश्वामित्राय नमः विश्वामित्रम्० ॥४४॥ आग्नेय्यां-कश्यपाय नमः कश्यपम्० ॥ ४५ ॥ दक्षिणे जमदग्नये नमः जमदग्निम्० ॥ ४६ ॥ नैर्ऋत्यां-वसिष्ठाय नमः वसिष्ठम्० ॥ ४७ ॥ पश्चिमे-अत्रये नमः अत्रिम्० ॥ ४८ ॥ वायव्याम् अरुंधत्यै नमः अरुंधतीम्० ॥ ४९ ॥ तद्बाह्ये-पूर्वादिक्रमेण ऐंद्र्यै नमः ऐंद्रीम्० ॥ ५०॥ कौमार्यै नमः कौमारीम्०॥५१॥ब्राह्म्यै नमः ब्राह्मीम्० ॥ ५२ ॥ वाराह्यै नमः वाराहीम्० ॥ ५३ ॥ चामुंडायै नमः चामुंडाम्० ॥ ५४ ॥ वैष्णव्यै नमः वैष्णवीम्० ॥ ५५॥ उत्तरस्यां-माहेश्वर्यै नमः माहेश्वरीम्० ॥ ५६ ॥ वैनायक्यै नमः वैनायकीम्० ॥ ५७ ॥ इत्यष्टौ शक्तीः प्रतिष्ठाप्य प्रत्येकं सहैवावाहयेत् पूजयेदिति ॥ अत्र एकदेवतायाः षट्पंचाशद्गणनायामाधिक्यम् ॥ तत्र शूलमहाकालयोः एकरुद्रत्वात् अग्नेस्त्रिशूलस्य ग्रहणात् पृथक्त्वं न, गणेशे सत्यपि एक एव देवता तेन न विरोधः ॥ देवतास्तु षट्पंचाशदेवेत्यलमिति ॥ इत्येकोनविंशतिरेखात्मकं सर्वतोभद्रमंडलं समाप्तम् ॥

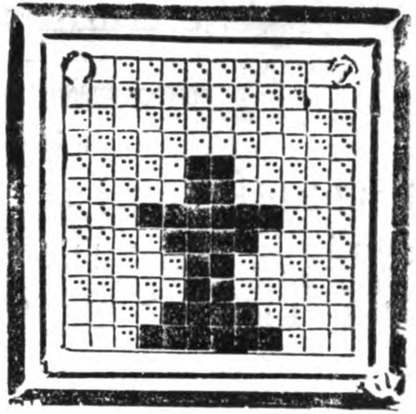
अथ चतुस्त्रिंशद्रेखात्मकं द्वादशलिंगतोभद्रमंडलं सदैवतमाह॥ (उक्तं च रुद्रयामले) रुद्र उवाच॥ उद्धारं कथयिष्येऽहं मदर्चार्थं तव प्रिये ॥ चतुस्त्रिंशत् समा रेखाः कुर्यात्पूर्वोत्तराः शुभाः ॥१॥ मध्ये वृत्तं समालेख्यं तन्मध्ये तु दशारकम् ॥ बहिरष्टदलं पद्मं ततः षोडशपत्रकम्॥२॥ चतुर्विंशतिपत्राढ्यं द्वात्रिंशत्पत्रकं तथा ॥ चत्वारिंशत्पत्रकं तु वृत्तं सूर्यसमप्रभम् ॥३॥ खंडेंदुस्त्रिपदैः कोणे शृंखला दशकोष्ठिका ॥ एकविंशत्पदा वल्ली भद्रं तु षट्पदैस्तथा ॥ ४ ॥ अष्टादशपदं लिंगं भद्रं चाष्टपदं तथा ॥ त्रयोदशपदीं वापीं कुर्याल्लिंगस्य सन्निधौ॥ ५॥ पूज्योपर्यपि भद्राणि भवंति नवभिः पदैः ॥ एवं द्वादशलिंगाढ्यं वापीषोडशकान्वितम् ॥ ६ ॥ षट्पदाष्टकभद्राढ्यं पूज्यं द्वादशकात्मकम् ॥ मध्ये विंशति भद्रं तु कथितं पूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥ वर्णक्रमः॥ वर्णक्रममथो वक्ष्ये मंडलस्य च सिद्धये ॥ घृष्टतंडुलपिष्टेन कृष्णवर्णेन निर्मितम् ॥ ८ ॥ लिंगजातं सितेंदुः स्याद्वल्ली बिल्वदलप्रभा ॥ शृंखला कृष्णवर्णा च पीतं भद्रद्वयं भवेत् ॥ ९ ॥ सिता वाप्यस्तथा पूज्या मध्यभद्रेत्वयं क्रमः ॥ पूज्योपर्यरुणे भद्रे सिते द्वे मध्यमं सितम् ॥ १० ॥ सत्त्वं रजस्तमश्चैव बाह्यतः परिधित्रयम् ॥ एवं सुशोभितं कार्यं मंडल शिवपूजने ॥ अथ देवतास्थापनम् ॥ देशकालौ संकीर्त्य अद्य पुण्यतिथौ मम इह जन्मनि जन्मांतरे च सुखसौभाग्यसंतानादिफलप्राप्त्यर्थम् उमामहेश्वरदेवताप्रीतये मया आचारितस्य अमुकव्रतस्य फलप्राप्तिद्वारा लिंगतोभद्रमंडलदेवतावाहनप्रतिष्ठापूजनं च करिष्ये॥ इति संकल्पः ॥ मंडलबाह्ये ईशानकोणे ॥ गुरवे नमः गुरुमावाहयामि स्थापयामि । एवं सर्वत्र १ ॥ आग्नेय्यां-गणपतये नमः२ ॥ नैर्ऋते दुर्गायै नमः ३ ॥ वायव्ये-क्षेत्रपालाय नमः ४ ॥ ततः भद्रमध्ये-श्रीसदाशिवाय नमः ५ ॥ इति स्थापयेत्॥ ततः अष्टदले-पूर्वस्यां दिशि कालाग्निरुद्राय नमः ॥ कूर्माय नमः ॥ मण्डूकाय नमः १ ॥ आग्नेय्यां-वराहाय नमः ॥ अनन्ताय नमः २ ॥ दक्षिणे-पृथिव्यै नमः ॥ स्कंदाय नमः ३ ॥ नैर्ऋत्यां-दिशि नलाय नमः ॥ यमाय नमः ४ ॥ पश्चिमे-पत्रेभ्यो नमः ॥ केसरेभ्यो नमः ॥ कर्णिकायै नमः ५ ॥ वायव्यां-सिंहासनाय नमः ॥ पद्मासनाय नमः ६॥ उत्तरे-धर्म्माय नमः ॥ ज्ञानाय नमः ॥ वैराग्याय नमः ७॥ ऐशान्याम्-ऐश्वर्याय नमः॥ चिदाकाशाय नमः ८ ॥ पीठमध्ये-योगपीठात्मने नमः ॥ इत्येकविंशतिदेवताः संस्थापयेत् ॥ ततः कर्णिकोपरि ॥ पूर्वे-पृथिव्यै नमः १ ॥

दक्षिणे-कपालाय नमः २॥ पश्चिमे-सरिद्भ्यो नमः ३ ॥ उत्तरे-सागरेभ्यो नमः ४ ॥ कर्णिकासमीपे-चत्वारि श्वेतभद्राणि तद्देवतास्थापनम्॥ पूर्वे-तत्पुरुषाय नमः १॥ दक्षिणे अघोराय नमः२॥ पश्चिमे-सद्योजाताय नमः ३॥उत्तरे-वामदेवाय नमः ४॥तत्समीपे-कृष्णानि अष्टौ भद्राणि तद्देवतास्थापनम्॥ऐशान्ये-भगवत्यै नमः १॥ पूर्वे-उमायैनमः२॥आग्नेय्यां-शंकरप्रियायैनमः ३॥दक्षिणे-पार्वत्यैनमः४॥नैर्ऋत्ये गौर्यै नमः५॥ पश्चिमे-काल्यै नमः ६॥वायव्यां-कौम्र्यै नमः ७॥उत्तरे-विश्वंभर्यै नमः८॥ततः कृष्णभद्राणाम् अधः अष्टौ रक्तभद्राणि तद्देवतास्थापनम् ॥ ऐशान्ये-नंदिन्यै नमः १ ॥ पूर्वे-महाकालाय नमः २ ॥ आग्नेय्यां-वृषभाय नमः ३ ॥ दक्षिणे-भृंगकिरीटिने नमः ४ ॥ नैर्ऋत्यां-स्कंदाय नमः ॥ ५ ॥ पश्चिमे-उमापतये नमः ६ ॥ वायव्यां-चण्डेश्वराय नमः ७ ॥ उत्तरे सोमसूत्राय नमः ८ ॥ अथ लिंगोपरि चत्वारि श्वेत भद्राणि तद्देवतास्थापनम् ॥ पूर्वे-धात्रे नमः १ ॥ दक्षिणे-मित्राय नमः २ ॥ पश्चिमे-यमाय नमः ३ ॥ उत्तरे-रुद्राय नमः ४ ॥ ततः तत्समीपलिंगोपरि अष्टौ पीतभद्राणि तद्देवतास्थापनम् ॥ ऐशान्ये-वरुणाय नमः १ ॥ पूर्वे-सूर्य्याय नमः २ ॥ आग्नेय्यां-भगाय नमः ३ ॥ दक्षिणे-विवस्वते नमः ४ ॥ नैर्ऋत्यां-पुरुषोत्तमाय नमः ५ ॥ पश्चिमे-सवित्रे नमः ६ ॥ वायव्ये-त्वष्ट्रे नमः ७ ॥ उत्तरे-विष्णवे नमः ८ ॥ ततः द्वादशलिंगदेवतास्थापनं पूर्वादिचतुर्दिक्षु ॥ पूर्वे-शिवाय नमः १ ॥ एकनेत्राय नमः २ ॥ एकरुद्राय नमः ३ ॥ दक्षिणे-त्रिमूर्तये नमः १ ॥ श्रीकंठाय नमः २ ॥ वामदेवाय नमः ३ पश्चिमे-ज्येष्ठाय नमः १ ॥ श्रेष्ठाय नमः २ ॥ रुद्राय नमः ३ ॥ उत्तरे कालाय नमः १ कलविकरणाय नमः २ ॥ बलविकरणाय नमः ३ ॥ अथ श्वेतषोडशवापीदेवतास्थापनमीशानादि क्रमेण ॥ अणिमायै नमः १ ॥ महिमायै नमः २ ॥ लघिमायै नमः ३ ॥ गरिमायै नमः ४ ॥ प्राप्त्यै नमः ५ ॥ प्राकाम्यायै नमः ६ ॥ ईशितायै नमः ७ ॥ वशितायै नमः ८ ॥ ब्राह्म्यै नमः ९ ॥ माहेश्वर्यै नमः १० ॥ कौमार्यै नमः ११ ॥ वैष्णव्यै नमः १२ वाराह्यै नमः १३ ॥ इन्द्राण्यै नमः १४ ॥ चामुडायै नमः १५ ॥ चण्डिकायै नमः १६ ॥ ततः वापीसमीपे अष्टौ रक्तभद्राणि तद्देवतास्थापनमैशान्यादिक्रमेण ॥ असितांग भैरवाय नमः १॥ रुरुभैरवाय नमः २॥ चंडभैरवाय नमः ३॥ क्रोधभैरवाय नमः ४॥ उन्मत्तभैरवाय नमः ५ ॥ कालभैरवाय नमः ६॥

भीषणभैरवाय नमःनमः७॥संहारभैरवायनमः८॥ अथाष्टवल्लीदेवतास्थापनमैशान्यादिक्रमेण घृताच्यै नमः १॥ मेनकायै नमः २ ॥ रंभायै नमः३॥उर्वश्यै नमः ४॥ तिलोत्तमायै नमः५॥सुकेश्यै नमः६॥मंजुघोषायै नमः७॥अप्सरोभ्यो नमः८॥ततः अथचतुस्त्रिंशद्रेखात्मकद्वादशलिंगतोभद्रम० मण्डलमध्ये परिधिसमीपे शृंखलादेवतास्थापनमाग्नेय्यादिक्रमेण-आग्नेय्यां भवाय नमः१॥शिवाय नमः २ ॥ रुद्राय नमः ३ पशुपतये नमः ४॥ उग्राय नमः ५॥ महादेवाय नमः ६ ॥ भीमाय नमः ७ ॥ ईशानाय नमः ८ ॥ अनन्ताय नमः ९ वासुकये नमः १०॥ ततः नैर्ऋते परिधिसमीपे शृंखलादेवतास्थापनम् ॥ तक्षकाय नमः १ ॥ कुलरिकाय नमः २ ॥ कर्कोटकाय नमः ३ शंखपालाय नमः ४ ॥ कंबलाय नमः ५ अश्वतराय नमः ६ ॥ वैन्याय नमः ७ ॥ अंगाय नमः ८ ॥ हैहयाय नमः ९॥ अर्जुनाय नमः १०॥ वायव्ये-दशशृंखलादेवतास्थापनम् ॥ शकुंतलाय नमः १ ॥ भरताय नमः २ ॥ नलाय नमः ३ ॥ रामाय नमः ४ ॥ सार्वभौमाय नमः ५ ॥ निषधाय नमः ६ ॥ विंध्याचलाय नमः ७ ॥ माल्यवते नमः ८ ॥ पारियात्राय नमः ९ ॥ सह्याय नमः॥१०॥ ततः ऐशान्ये-परिधिसमीपे दशशृंखलादेवतास्थापनम् ॥ हेमकूटाय नमः १ ॥ गन्धमादनाय नमः २ ॥ कुलाचलाय नमः ३ ॥ हिमवते नमः ४ ॥ रैवताचलाय नमः ५ ॥ देवागिरये नमः ६ ॥ मलयाचलाय नमः ७ ॥ कनकाचलाय नमः ८ ॥ पृथिव्यै नमः ९ ॥ अनन्ताय नमः१० ॥ अथ चतुर्दिक्षु खंडेन्दुदेवतास्थापनमैशान्यादिक्रमेण ॥ ऐशान्ये-अश्विनीकुमाराभ्यां नमः १ ॥ आग्नेय्यां-विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः २ ॥ नैर्ऋते पितृभ्यो नमः ३ ॥ वायव्यां-नागेभ्यो नमः ४ ॥

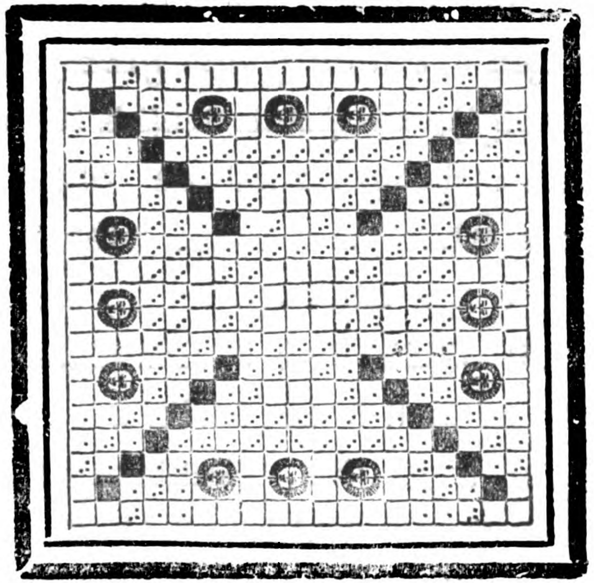


ततः मंडलाद्बहिः प्रथमं सत्त्वपरिधौ पूर्वादिक्रमेण देवतास्थापनम् ॥ इन्द्राय नमः १ ॥ अग्नये नमः २ ॥ यमाय नमः ३ ॥ निर्ऋतये नमः ४ ॥ वरुणाय नमः ५ ॥ वायवे नमः ६ ॥ कुबेराय नमः ७ ॥ ईश्वराय नमः ८ ॥ इन्द्रेशानयोर्मध्ये-ब्रह्मणे नमः ९ ॥ वरुणनैर्ऋतयोर्मध्ये-अनन्ताय नमः १० ॥ तद्बहिः रजःपरिधौ पूर्वादिक्रमेण देवतास्थापनम् ॥ वज्राय नमः १ ॥ शक्तये नमः २ ॥ दण्डाय नमः ३ ॥ खड्गाय नमः ४ ॥ पाशाय नमः ५ ॥ अंकुशाय नमः ६ ॥ गदायै नमः ७ ॥ त्रिशूलाय नमः ८ ॥ पद्माय नमः ९ ॥ चक्राय नमः ॥ १० ॥ तद्बहिः तमोमयकृष्णपरिधौ पूर्वादिक्रमेण देवतास्थापनम् ॥ कश्यपाय नमः १ ॥ अत्रये नमः २ ॥ भरद्वाजाय नमः ३ ॥ विश्वामित्राय नमः ४ ॥ गौतमाय नमः ५ ॥ जमदग्नये नमः ६ ॥ वसिष्ठाय नमः ७ ॥ अरुंधत्यै नमः ८ ॥ ततः पूर्वे-ऋग्वेदाय नमः १ ॥ दक्षिणे-यजुर्वेदाय नमः २ ॥ पश्चिमे-सामवेदाय नमः ३ ॥ उत्तरे-अथर्ववेदाय नमः ४ ॥ एवमष्टोत्तरशत १०८ देवताः संस्थाप्य षोडशोपचारैः संपूज्य ततः प्रधानदेवतां मण्डलमध्ये संस्थाप्य पूजयेत् ॥ इति द्वादशलिंगतोभद्रमण्डलविधानम् ॥ अथ त्रयोदशरेखात्मकं लघुगौरीतिलकाख्यमेकलिंगतोभद्रमण्डलम् ॥ तिर्यगूर्ध्वगता रेखाः कार्याः स्निग्धास्त्रयोदश ॥ कोणेंदुस्त्रिपदः कार्यः श्रृंखलास्त्रिपदाः सिताः ॥ १ ॥ वल्ली च षट्पदा नीला भद्रं रक्तं प्रकल्पयेत् ॥ पदैर्द्वादशभिः स्पष्टमुत्तरे पूर्वदक्षिणे ॥ २ ॥ पश्चिमायां महारुद्रमष्टाविंशतिकोष्ठकैः ॥ लिंगपार्श्वे तथा मूर्धन्यष्टौ कोष्ठाः सुपीतकाः ॥३॥ लिंगमेकं तथा गौर्य्यस्तिस्त्रश्चात्र तु मंडले ॥ पूजयेन्मण्डलं चैव तस्य गौरी प्रसीदति ॥ देवता पूर्वोक्ता एव ॥ इति लघुगौरीतिलकाख्यमेकलिंगतोभद्रमण्डलम् ॥ अथ सूर्य्यभद्रम् ॥ रेखाविंशतिसंयुक्तं भीमरथ्यास्तु मंडलम् ॥ सूर्यव्रतेषु सर्वेषु शस्यते मंडलं त्विदम् ॥ १ ॥ खंडेंदुस्त्रिपदः कार्यः श्रृंखला षट्पदा मता ॥ त्रयोदशपदैर्वल्ली भद्रं तु त्रिपदं मतम् ॥ २ ॥ सूर्यत्रयं प्रकुर्वीत सप्तविंशतिभिः पदैः ॥ सूर्यत्रयं चतुष्कोणे पदमर्धसितं भवेत् ॥३ ॥ पदैस्तु नवाभिः कृत्वा भवेत्सूर्यत्रयं ततः ॥

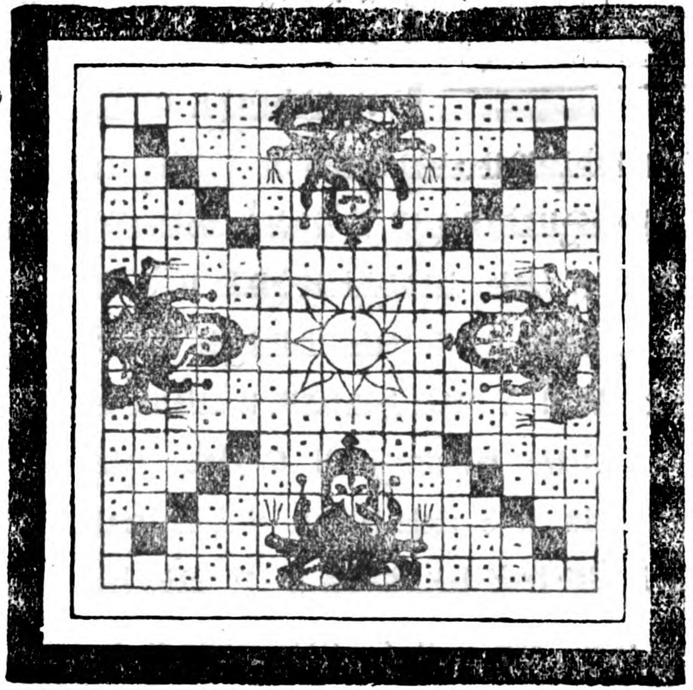


सूर्योपरि भवेद्भद्रं पदं द्वादशसंमितम् ॥ ४ ॥ उर्ध्वमिंदुं प्रकुर्वीत चतुर्भिस्तु सितैः पदैः ॥ परिधिः षोडश पदा पद्मं नवपदं ततः ॥ ५ ॥ सत्त्वं रजस्तम इति रेखाः स्युर्मंडलाद्बहिः ॥ कृष्णा च शृंखला ज्ञेया वल्ली नीला प्रकीर्तिता ॥ ६ ॥ भद्रान् पीतान् प्रकुर्वीत रवीन् रक्तान् प्रकारयेत् ॥ पीतश्च परिधिः प्रोक्तः पद्मं रक्तं तथैव च ॥ ७ ॥ इति भद्रमार्तण्डे सूर्यभद्रम् ॥ अथ गणपतिभद्रम् ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि मंडलं सर्वसिद्धिदम् ॥ नाम्ना च विघ्नमर्दाख्यं विनायकव्रते हितम् ॥ १ ॥ तिर्यगूर्ध्वं सप्तदश रेखाः कार्याः सुशोभनाः ॥

सूर्य्यमण्डलम् ॥



गणपतिभद्रमण्डलम् ॥

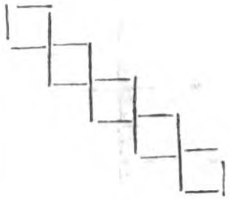


खंडेंदुस्त्रिपदः कोणे शृंखला च चतुष्पदैः ॥ २ ॥ कार्या नवपदा वल्ली भद्रं रक्तं चतुष्पदम् ॥ ततो विंशतिकोष्ठेषु कार्यो गणपतिः शुभः ॥ कोष्ठद्वयेन मुकुटं गणेशस्य च कारयेत् ॥ पीतश्च परिधिः कार्यः पदैर्विंशतिभिस्तथा ॥ ४ ॥ मध्ये षोडशकोष्ठेषु पद्मं कार्यं सुशोभनम् ॥ सर्वतोभद्रदेवान्वै विशेषेणात्र योजयेत् ॥ इति गणपतिभद्रम् ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे पूर्वखण्डे भद्रमंडलप्रकरणे तृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥

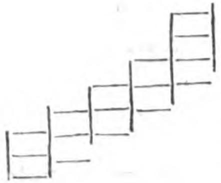
अथ मंडलानां मध्ये उक्तखंडेन्दुशृंखलादिस्वरूपज्ञानाय तच्चिह्नानि ।



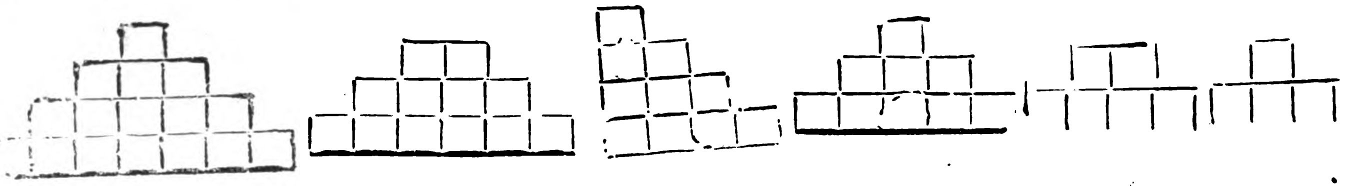
इदं खंडेंदुस्त्रिपदस्तस्य चिह्नम् ॥ अत्र श्वेतवर्णः ।



इदं शृंखलाचिह्नम् ॥ अत्र कृष्णवर्णः ।

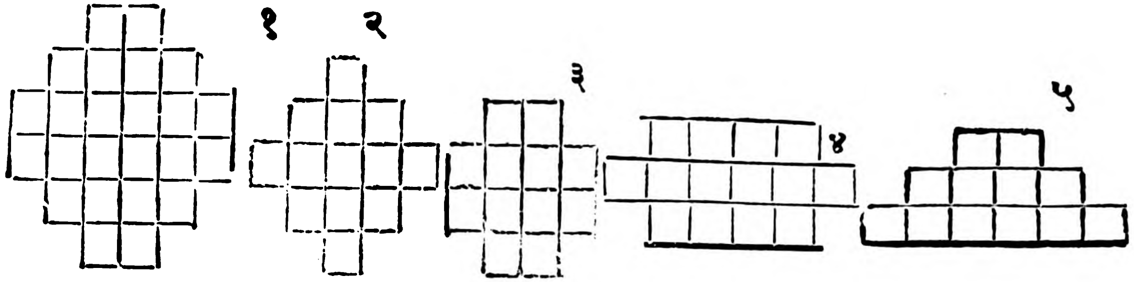


इयमेकादशादिपदात्मिका वल्ली तस्याश्चिह्नम् ॥ अत्र हरितवर्णः पीतश्च क्वचित् ।

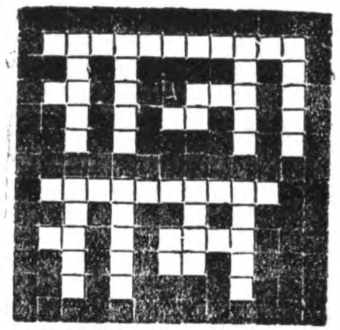


इमानि भद्रचिह्नानि ।
अत्र वर्णस्तु पीतः ।

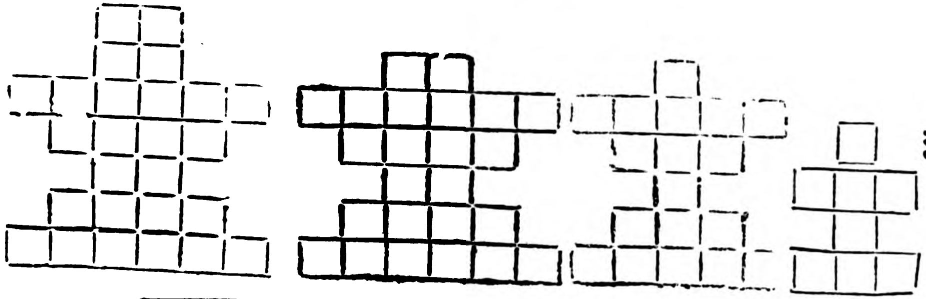
इमानि वापीचिह्नानि ॥ अत्र श्वेतवर्णः ।
पंचमी खण्डवापी ।



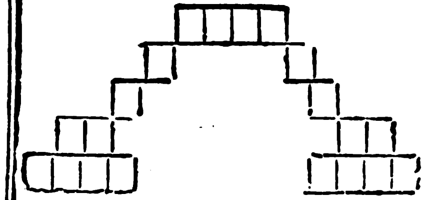
इदं राममुद्राचिह्नम् ।

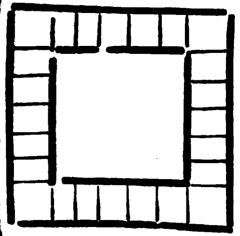


इमानि शिवलिंगाचिह्नानि।
अत्र कृष्णवर्णः।



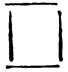
इदं तोरणचिह्नमुभयभद्रसंलग्नम्॥ अत्र रक्तादिवर्णः।

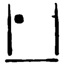


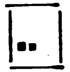


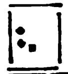
इदं परिधिचिह्नम् ॥ अत्र पीतश्वेतरक्तकृष्णवर्णाः ।

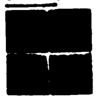
अथ स्पष्टालिखितमंडलानां कोष्ठकमध्ये पंचरंगानां पूरणार्थं बिंदुचिह्नानि संति तेषां सूचना ।

 एतादृशेषु श्वेतवर्णं श्वेतधान्यं वा पूरयेत् ।

 एकबिन्दुयुक्तेषु श्वेतकोष्ठकेषु कोष्ठकेषु पीतवर्णं पीतधान्यं वा पूरयेत् ।

 यत्र बिंदुद्वयं तत्र रक्तवर्णं रक्तधान्यं वा पूरयेत् ।

 यत्र बिंदुत्रयं तत्कोष्ठकेषु हारितवर्णं हारितधान्यं वा पूरयेत् ।

 कृष्णवर्णयुक्तकोष्ठकेषु कृष्णवर्णं कृष्णधान्यं वा पूरयेत् ।

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ सर्वदेवोपयोगिपद्धतिप्रारंभः ॥ तत्रादौ पंचांगपूजनं (देवीरहस्ये) जप्त्वा मंत्री मंत्रराजं हुत्वा देवे दशांशतः॥ तर्पयेत्तद्दशांशेन मार्जयेत्तद्दशांशतः ॥ भोजयेत्तद्दशांशेन मंत्रसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ अथ पञ्चांगपूजने मंत्रोद्धरणक्रमः (आगमचिंतामणौ) होमतर्पणयोः स्वाहा न्यासपूजनयोर्नमः ॥ मंत्रांते योजयेन्मंत्री जपकाले यथा तथा ॥ अथ संक्षेपतः सर्वासां देवतानां नित्यपूजाविधिः (रुद्रयामले) आदौ ऋष्यादिविन्यासः करशुद्धिस्ततः परम् ॥ अंगुलीव्यापकौ कृत्वा हृदादिन्यास एव च ॥ १ ॥ तालत्रयं च दिग्बंधः प्राणायामस्ततः परम् ॥ ध्यानं पजा जपश्चैव सर्वतंत्रेष्वयं विधिः ॥ २ ॥ अथ पूजादिमाहात्म्यम् ॥ पूजया विपुलं राज्यमग्निकार्येण

सम्पदः ॥ जपेन पापसंशुद्धिर्ज्ञानध्यानेन मुच्यते ॥ ३ ॥ त्रिकालं गन्धपुष्पाद्यैरर्चिते देवते निशि ॥ पुरश्चरणकृत्येन विनैवासौ प्रसीदति ॥ ४ ॥ (तंत्रांतरेऽपि) एकदा वा भवेत्पूजा न जपेत्पूजनं विना ॥ जपांते च भवेत्पूजा पूजांते वा जपेन्मतुम् ॥५॥ मासार्द्धमथवा मासमथवा द्विगुणं तथा ॥ यावत्फलातिमान्योगी तावदेवं समाचरेत् ॥ ६ ॥ (मंत्रमहोदधौ) पूजनेन फलार्द्धं स्यादन्यत्तेस्तु साधनैः ॥ (तंत्रांतरेऽपि) यदि पूजाद्यशक्तः स्याद्द्रव्याभावेन सुंदरि ॥ केवलं जपमात्रेण पुरश्चर्या विधीयते ॥ ७ ॥ नियमः पुरुषे ज्ञेयो न योषित्सु कदाचन ॥ न न्यासो योषितां चात्र न ध्यानं न च पूजनम् ॥ ८ ॥ केवलं जपमात्रेण मंत्राः सिध्यंति योषिताम् ॥ ९ ॥ अथ पूजायां पंचांगशुद्धिः ॥ (ज्ञानार्णवे) आत्मा स्थानं मंत्रद्रव्यं देवशुद्धिस्तु पंचमी ॥ यावन्न कुरुते देवि तस्य देवार्चनं कुतः ॥ पंचशुद्धिं विना पूजा ह्यभिचाराय कल्पते ॥ १० ॥ (अथात्मशुद्धिप्रकारः) सुस्नातैर्भूतशुद्धैश्च प्राणायामादिभिः प्रिये ॥ षडंगाद्यखिलन्यासैरात्मशुद्धिरितीरिता ॥ ११ ॥ (अथ मंत्रशुद्धिप्रकारः) ग्रंथिता मातृकावर्णैर्मूलमंत्राक्षराणि च ॥ क्रमोत्क्रमाद्विरावृत्त्या मंत्रशुद्धिरितीरिता ॥ १२ ॥ (अथ द्रव्यशुद्धिप्रकारः) पूजाद्रव्याणि मूलास्त्रैः प्रोक्षणीयैर्विशेषतः ॥ दर्शयेद्धेनुमुद्रादि द्रव्यशुद्धिरितीरिता ॥ ॥ १३ ॥ (अथ देवशुद्धिप्रकारः) पीठे देवं प्रतिष्ठाप्य संकलीकृत्य मंत्रवित् ॥ मूलमंत्रेण दीपादीन्माल्यादीनुदकेन च ॥ १४ ॥ त्रिवारं प्रोक्षयेद्विद्वान् देवशुद्धिरितीरिता ॥ पंचशुद्धिं विधायेत्थं पश्चाद्यजनमाचरेत् ॥ १५ ॥ (स्थानमंत्रेण स्थानं शोधयेत्) अथ षोडशोपचाराः ॥ पाद्यार्घ्याचमनीयं च स्नानं वसनभूषणे ॥ गंधपुष्पधूपदीपनैवेद्याचमनं तथा ॥ १६ ॥ तांबूलमर्चनस्तोत्रं तर्पणं च नमस्क्रियाम् ॥ प्रयोजयेत्प्रपूजायामुपचारांस्तु षोडश ॥ १७ ॥ अथ पंचोपचाराः ॥ गंधं पुष्पं तथा धूपं दीपं नैवेद्यमेव च ॥ अखंडफल

१ बृहत्पाराशरसंहितायाम्-आद्ययावाहयेद्देवमृचा तु पुरुषोत्तमम् । द्वितीययासनं दद्यात्पाद्यं चैव तृतीयया ॥ अर्घ्यं चतुर्थ्या दातव्यं पञ्चम्याचमनं तथा । षष्ठ्या स्नानं प्रकुर्वीत सप्तम्या वस्त्रधौतकम् ॥ यज्ञोपवीतं चाष्टम्या नवम्या गन्धमेव च । पुष्पं देयं दशम्या तु एकादश्या च धूपकम् ॥ द्वादश्या दीपकं दद्यात्त्रयोदश्या निवेदयेत् । चतुर्दश्या नमस्कारं पञ्चदश्या प्रदक्षिणाः ॥ षोडश्योद्वासनं कुर्याच्छेषकर्माणि पूर्ववत् । ततः सर्वं जपेद्भूयः पौरुषं सूक्तमेव च ॥ इति ॥

मासाद्य कैवल्यं लभते ध्रुवम् ॥ १८ ॥ (आसनाद्युपचारफलं शैवरत्नाकरे) आवाहनं तु यो दद्यात्स च क्रतुफल लभेत् ॥ आसनं रुचिरं दत्त्वा शक्रतत्त्वमवाप्नुयात् ॥ १९ ॥ पाद्येन पातकं हन्यादर्घ्येणाप्नोत्यनर्घ्यताम् । ततश्चाचमनं दत्त्वा सुचित्तः सुखितां व्रजेत् ॥ २० ॥ स्नानं व्याधिभयं हन्याद्वस्त्रेणायुष्यवर्द्धनम् ॥ उपवीतं तु यो दद्याद्ब्रह्मवेत्तृत्वमेव ॥ च ॥ २१ ॥ भूषणानि च यो दद्यादनापद्यमवाप्नुयात् ॥ गंधेन लभते काममक्षतैरक्षतो भवेत् ॥ २२ ॥ नानापुष्पप्रदानेन स्वर्गे राज्यमवाप्नुयात् ॥ धूपो दहति पापानि दीपो मृत्युविनाशनः ॥ २३ ॥ सर्वमान्यस्तु नैवेद्यं दत्त्वा तृप्तिरतो भवेत् ॥ मुखवासनदानेन कीर्तिमान् भवति ध्रुवम् ॥ २४ ॥ नीराजनेन शुद्धात्मा दर्पणेन प्रकाशयेत् ॥ फलदः पुत्रवान्मर्त्यस्तांबूलात्स्वर्गमाप्नुयात् ॥ २५ ॥ प्रदक्षिणं तु यः कुर्यात्पापं हंति पदे पदे ॥ दण्डप्रणामं यः कुर्य्याद्देवमुद्दिश्य सन्निधौ ॥ २६ ॥ वर्षाणि वसते स्वर्गे देहांते रेणुसंख्यया ॥ स्तोत्रेण दिव्यदेहोऽपि वाग्मी भवति तत्क्षणात् ॥ २७ ॥ पुराणपठनेनैव सर्वपापक्षयो भवेत् ॥ २८ ॥ अथ सर्वदेवतापूजनोपयोगितिथ्यादिकम् ॥ चैत्रे शुक्लचतुर्दश्यां दमनैः पूजयेद्धरम् ॥ नारायणं तु द्वादश्यामष्टम्यां गिरिनंदिनीम् ॥सप्तम्यां भास्करं देवं चतुर्थ्यां गणनायकम् । एवं तत्तत्तिथौ तं तं पवित्रैः श्रावणेऽर्चयेत् ॥माघकृष्णचतुर्दश्यां विशेषाच्छिवपूजनम् । आश्विनाद्यनवाहेषु दुर्गापूजा यथाविधि ॥ गोपालं पजयेद्विद्वान्नभःकृष्णाष्टमीदिने । रामं चैत्रसिते पक्षे नवम्यामर्चयेत्सुधीः॥वैशाखाद्यचतुर्दश्यां नरसिंहं प्रपूजयेत्॥यजेच्छुक्लचतुर्थ्यां तु गणेशं भाद्रमाघयोः॥ महालक्ष्मीं यजेद्विद्वान् भाद्रकृष्णाष्टमीदिने । माघस्य शुक्लसप्तम्यां विशेषाद्दिननायकम् ॥या काचित्सप्तमी शुक्ला रविवारयुता यदि । तस्यां दिनेशं संपूज्य दद्यादर्घ्यं पुरोदितम्॥

॥ अथ सर्वमंत्रानुष्ठानोपयोगि प्रारम्भात्पूर्वकृत्यम् ॥ तत्रादौ चन्द्रतारादिबलान्विते सुदिने सुमुहूर्ते तीर्थपुण्यक्षेत्रनिर्जनस्थानादावनुष्ठानयोग्यभूमिपरिग्रहणं कृत्वा तत्र मार्जनदहनखननसंप्लावनादिभिः स्मृत्युक्तैः शोधनोपायैः शुद्धिं संपाद्य जपस्थानस्य चतुर्दिक्षु क्रोशं क्रोशद्वयं वा क्षेत्रं चतुरस्रमाहारादिविहारार्थं परिकल्प्य जपस्थानभूमौ कूर्मशोधनं कुर्य्यात् ॥ ततः पुरश्चरणात् प्राक् तृतीयदिवसे क्षौरादिकं विधाय प्रायश्चित्तांगविष्णुपूजाविष्णुतर्पणविष्णुश्राद्धं होमं चांद्रायणादिव्रतं च कुर्य्यात् ॥ व्रताशक्तौ गोदानं द्रव्य

दानं च कुर्य्यात् ॥ सर्वकर्मणामशक्तौ प्रायश्चित्तांगपंचगव्यप्राशनं कुर्य्यात् ॥ तत्र मंत्रः ॥ ॐ यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके ॥ प्राशनं पंचगव्यस्य दहत्वग्निरिवेंधनम् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा प्रणवेन पंचगव्यं पिबेत् ॥ तद्दिने उपवासं कुर्यात् ॥ अशक्तश्चेत् पयःपानहविष्यान्नैनैकभुक्तिव्रतम् । पुरश्चरणात् पूर्वदिने स्वदेहशुद्ध्यर्थं पुरश्चरणाधिकारप्राप्त्यर्थं चायुतगायत्रीजपं कुर्य्यात् ॥ तथा च देशकालौ संकीर्त्य ज्ञाताज्ञातपापक्षयार्थं करिष्यमाणामुकदेवतापुरश्चरणाधिकारार्थममुकमंत्रेण सिध्यर्थं च गायत्र्ययुतजपमहं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य गायत्र्ययुतं जपेत् । ततो गायत्र्याचार्य्यब्रह्मर्षिं विश्वामित्रं तर्पयामि । गायत्रीछंदस्तर्पयामि । सवितारं देवं तर्पयामि ॥ इति तर्पणं कुर्यात् । ततस्तस्यां रात्रौ देवतोपास्तौ शुभाशुभस्वप्नं विचारयेत् । तथा च स्नानादिकं कृत्वा हरिपादांबुजं स्मृत्वा कुशासनादिशय्यायां यथासुखं स्थित्वा वृषभध्वजं प्रार्थयेत् । तत्र मंत्रः ॐ भगवन्देव देवेश शूलभृद्वृषवाहन ॥ इष्टानिष्टं समाचक्ष्व मम सुप्तस्य शाश्वत ॥ १ ॥ ॐ नमोऽजाय त्रिनेत्राय पिंगलाय महात्मने ॥ वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः ॥ २ ॥ स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषतः ॥ क्रियासिद्धिं विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ ३ ॥ इति मंत्रेणाष्टोत्तरशतवारं शिवं प्रार्थ्य निद्रां कुर्य्यात्॥ ततः निशि दृष्टं स्वप्नं प्रातर्गुरवे विनिवेदयेत् ॥ अथवा स्वयं स्वप्नं विचारयेत् ॥ इति पूर्वकृत्यम् ॥ अथ प्रातःकृत्यम्॥ पुरश्चरणदिवसे श्रीमत्साधकेन्द्रः प्रातःकालात्पूर्वं दंडद्वयात्मके ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय निद्रास्थानाद्बहिर्निर्गत्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचम्य रात्रिवस्त्रं परित्यज्यान्यवस्त्रं परिधाय शुद्धासन उपविश्य स्वाशिरसि सहस्रदलपंकजे कोटींदुप्रकाशपीठे श्रीगुरुं

१ देवीभागवते-यस्य कस्यापि मंत्रस्य पुरश्चरणमारभेत् । व्याहृतित्रयसंयुक्तां गायत्रीं चायुतं जपेत् ॥ नृसिंहार्कवराहाणां तांत्रिकं वैदिकं तथा । विना जप्त्वा तु गायत्रीं तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ॥

२ लिंगं चन्द्रार्कयोर्बिंबं भारतीं जाह्नवीं गुरुम् । रक्ताब्धितरणं युद्धे जयोऽनलसमर्चनम् ॥ शिखिहंसरथांगाढ्ये रथेस्थानं च मोहनम् । आरोहणं सारसस्य धरालाभश्च निम्नगा ॥ प्रासादः स्यन्दनः पद्मं छत्रं कन्या द्रुमः फली । नागो दीपो हयः पुष्प वृषभोऽश्वश्च पर्वतः ॥ सुराघटो ग्रहास्तारा नारी सूर्योदयोऽम्बराः । हर्म्यशैलविमानानामारोहो गगने गमः ॥ मद्यमांसादनं विष्ठालेपो रुधिरसेचनम् । दध्योदनादनं राज्याभिषेको गोवृषध्वजाः ॥ सिंहः सिंहासनं शंखो वादित्रं रोचनादिभिः । चन्दनं तर्पणं येषां स्वप्ने संदर्शनं शुभम् ॥ तैलाभ्यक्तः कृष्णवर्णो नग्नोनागर्तवायसौ । शुष्ककंटकिवृक्षश्च चांडालो दीर्घकंधरः ॥ प्रासादस्तलहीनश्च नैते स्वप्ने शुभावहाः ॥ इति विचारयेत् ॥

ध्यायेत् ॥ तथा च - आनंदमानंदकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपम् ॥ योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं श्रीद्गुरुं नित्यमहं भजामि ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य ॥ प्रातःप्रभृति सायांतं सायादिप्रातरंततः ॥ यत्करोमि जगन्नाथ तदस्तु तव पूजनम् ॥ १ ॥ इत्यनेन मंत्रेण सर्वं गुरवे निवेद्य तदाज्ञां गृहीत्वा मूलमंत्रदेवतायाः प्रातः स्मरणं कुर्यात्॥प्रातः स्मरणं कृत्वा गुरुमंत्रदेवतात्मनामैक्यं विभाव्य अजपाजपं गुरवे समर्पयेत् ॥ (अथाजपाजपसंकल्पः संक्षेपतः) आधारे लिंगनाभौ हृदयसरसिजे तालुमूले ललाटे द्वे पद्मे षोडशारे द्विदशदशदले द्वादशार्द्धे चतुष्के॥ वासांते बालमध्ये डफकठसहिते आदियुक्ते स्वराणां हंक्षंतत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि ॥ ॥ १ ॥ षट्शतं तु गणेशस्य षट्सहस्रं प्रजापतेः ॥ षट्सहस्रं गदापाणेः षट्सहस्रं पिनाकिनः ॥ २ ॥ आत्मनस्तत्सहस्रं च सहस्रं परमात्मनः ॥ सहस्रं श्रीगुरुभ्यश्च ह्येवं तानि नियोजयेत् ॥ ३ ॥ हंसो गणेशो विधिरेव हंसो हंसो हरिर्हंसमयश्च शंभुः ॥ हंसोऽपि जीवः परमात्महंसो हंसो गुरुर्हंसमयश्च शंभुः ॥ ४ ॥ इति पठित्वा अहोरात्रोच्चारितं षट्शताधिकमेकविंशतिसहस्रमुच्छ्वासनिश्वासात्मकमजपा गायत्रीमंत्रजपं श्रीगणेशब्रह्मविष्णुरुद्रजीवात्मपरमात्मश्रीगुरुभ्यो यथासंख्यं समर्पयामि ॥ इत्युक्त्वाष्टोत्तरशतावृत्तिं हंसगायत्रीं जपेत् ॥ अथ हंसगायत्रीमंत्रः ॥ हरिः ॐ हंसो हंसस्य विद्महे हंसो हंसस्य धीमहि ॥ हंसो हंसः प्रचोदयात् ॥ इति जपित्वा, त्रैलोक्य चैतन्यमयि त्रिशक्ते श्रीविश्वमातर्भवदाज्ञयैव ॥ प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं संसारयात्रामनुवर्तयामि ॥ १ ॥ इति संप्रार्थ्य भूमिं प्रार्थयेत् ॥ तत्र मंत्रः-समुद्रमेखले देवि पर्वतस्तनमण्डले ॥ विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे॥१॥इति भूमिं संप्रार्थ्य श्वासानुसारेण भूमौ पादं दत्त्वा बहिर्व्रजेत् ॥ इति प्रातःकृत्यम् । ततो ग्रामाद्बहिः नैर्ऋत्यकोणे जनवर्जिते उत्तराभिमुखः अनुपानत्कः वस्त्रेण शिरः प्रावृत्य मलमोचनं कृत्वा मृत्तिकया जलेन यथासंख्यं शौचं कृत्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य गंडूषं च कृत्वा दंतधावनं कुर्यात् । तथा च आम्रचम्पकापामार्गाद्यन्यतमं द्वादशांगुलं दन्तकाष्ठं गृहीत्वा प्रार्थयेत् । आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशुधनीनि च ॥ श्रियं प्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते ॥ १ ॥ इति संप्रार्थ्य ।' ॐ ह्रीं तडित् स्वाहा ' इति मंत्रेण काष्ठं छित्त्वा'ॐ क्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः ।

इत्यनेन दंतान् संशोध्य 'ऐं' मंत्रेण जिह्वामुल्लिख्य दन्तकाष्ठं क्षालयित्वा नैर्ऋत्यां शुद्धदेशे निक्षिपेत्। मूलेन मुखं प्रक्षाल्याचम्य स्नानं कुर्य्यात् ॥ तत्रादौ तीर्थस्नानप्रयोगः । गंगायमुनादिनद्यभावे तडागादिकं गत्वा ततः पाणिपादं प्रक्षाल्य नाभिमात्रे जले गत्वा शिखां बद्ध्वा आचम्य देशकालौ संकीर्त्य मम ज्ञाताज्ञातसमस्तपापक्षयार्थं करिष्यमाणामुकदेवतामंत्रपुरश्चरणाधिकारार्थं शरीरशुद्ध्यर्थं चामुकप्रायश्चित्तांगभूतमादौ तीर्थस्नानमहं करिष्ये । इति संकल्प्य स्नात्वा पुनः आचम्य देवर्षिपितृतर्पणं कृत्वा ततो यक्ष्मणे तिलजलं दद्यात् । तथा च-ॐ यन्मया दूषितं तोयं मलैः शारीरसम्भवैः ॥ तस्य पापस्य शुद्ध्यर्थं यक्ष्मैतत्ते तिलोदकम् ॥ १ ॥ इति यक्ष्मणे तिलोदकं दत्त्वा ततस्तीरमागत्य-ॐ अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम॥भूमौ दत्तेन तृप्यंतु तृप्ता यांतु परां गतिम्॥१॥इति जलांजलिं तटे निक्षिप्य पुनराचम्य सूर्य्यायार्घ्यं दद्यात् । तथा च-ॐ एहि सूर्य्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते ॥ अनुकंपय मां देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥ इति सूर्यायार्घ्यं दत्त्वा जलाद्बहिर्निष्क्रम्य शुष्कं शुभं कार्पासोत्पत्तिवस्त्रं श्वेतवर्णं प्रयोगोक्तं वा परिधाय स्नायी वस्त्रं परिपीड्य गृहं गच्छेत् ॥ इति तीर्थस्नानप्रयोगः ॥

अथ गृहस्नानप्रयोगः ॥ तात्कालिकोद्धृतोदकेन उष्णोदकेन वा स्नानं कृत्वा न तु पर्युषितशीतोदकेन, ताम्रादिबृहत्पात्रे जलं गृहीत्वा तीर्थान्यावाहयेत् ॥ तत्र मंत्रः-ॐ ब्रह्मांडोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे ॥ तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर ॥ १ ॥ ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ॥ नर्मदे सिंधुकावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु ॥ २ ॥ आवाहयामि त्वां देवि स्नानार्थमिह सुंदरि ॥ एहि गंगे नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थसमन्विते ॥ ३ ॥ ॐ पुष्कराद्यानि तीर्थानि गंगाद्याः सरितस्तथा ॥ आगच्छंतु पवित्राणि स्नानकाले सदा मम ॥ ४ ॥ इति तीर्थान्यावाह्य ॐ ऋतं च सत्यमित्यघमर्षणमंत्रेणाभिमंत्र्य वरुणमंत्रेण स्नात्वा वक्ष्यमाणैश्चतुर्भिर्मंत्रैः कुशत्रयेण शिरसि जलं प्रक्षिपेत् ॥ तत्र मंत्रः-ॐ सिसृक्षोर्निखिलं विश्वं मुहुशुक्रं प्रजापते ॥ मातरः सर्वभूतानामापो देव्यः पुनंतु माम् ॥ १ ॥ अलक्ष्मीर्मलरूपा या सर्वभूतेषु संस्थिता ॥ क्षालयंती निजस्पर्शादापो देव्यः पुनंतु माम् ॥ २ ॥ यन्मे केशेषु

सौभाग्यं सीमंते यच्च मूर्द्धनि ॥ ललाटे कर्णयोरक्ष्णोरापस्तद् घ्नंतु वो नमः ॥ ३ ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यमारिपक्षक्षयः सुखम् ॥ संतोषः क्षांतिरास्तिक्यं विद्या भवतु वो नमः ॥४॥ इति शिरः प्रोक्ष्य हस्तेन जलमादाय नासिकायां संयोज्य ॐ ऋतं च सत्यमित्यघमर्षणमंत्रं पठित्वा जलं वामभागे निक्षिपेत् ॥ एवं स्नात्वा शुष्कं शुभ्रं कार्पासोत्पत्तिवस्त्रं परिधाय सूर्यमंत्रेण सूर्यायार्घ्यं दत्त्वा स्नानीयवस्त्रं परिपीड्याचम्य शैवः पंचत्रिपुंड्रं वैष्णवो द्वादशोर्द्ध्वपुण्ड्रं तिलकं कुर्य्यात् ॥ अथ तिलकधारणप्रकारः ॥ तत्रादौ शैवे भस्मत्रिपुंड्रप्रकारः ॥ वामहस्ते दक्षिणहस्तेनाग्निहोत्रोत्थितं भस्मादाय उदकमिश्रणानन्तरम् ॐअग्निरिति भस्म, ॐवायुरिति भस्म. ॐ जलमिति भस्म, ॐस्थलमिति भस्म, ॐव्योमेति भस्म, सर्वं१ ह वा इदंभस्म मन एतानि चक्षूंषि भस्मानीति भस्माभिमंत्र्य ॐत्र्यंबकं पठित्वा ॐ तत्पुरुषाय नमः इति मंत्रेण भाले त्रिपुंड्रं कुर्य्यात् ॥ १ ॥ पुनः ॐ त्र्यंबकं पठित्वा ॐ अघोराय नमः इति दक्षिणांसे तिलकं कुर्य्यात् ॥ २ ॥ पुनः ॐ त्र्यंबकं पठित्वा ॐ सद्योजाताय नमः इति मंत्रेण वामांसे तिलकं कुर्य्यात् ॥ ३ ॥ पुनः ॐ त्र्यंबकं पठित्वा ॐ वामदेवाय नमः इति मंत्रेण जठरे तिलकं कुर्य्यात् ॥ ४ ॥ पुनः ॐ त्र्यंबकं पठित्वा ॐ ईशानाय नमः इति मंत्रेण वक्षसि च त्रिपुंड्रं कुर्य्यात् ॥ ५ ॥ इति पंचत्रिपुंड्रं कृत्वा रुद्राक्षमालां च धारयन् सन्ध्यावन्दनादि कर्म कुर्यात्। इति भस्मत्रिपुंड्रप्रकारः ॥ अथ वैष्णवानामूर्ध्वपुंड्रविधानम् ॥ गोपीचंदनतुलसीमूलसिंधुजाह्नवीतीरोद्भवमृदा केशवादिद्वादशनामभिर्ललाटादिषु द्वादशस्थानेषु ऊर्द्ध्वपुंड्रतिलकं कुर्य्यात् तत्र क्रमः॥ॐकेशवाय नमः इति ललाटे कार्य्यम् ॥ १ ॥ ॐ नारायणाय नमः इति उदरे कार्यम् ॥ २ ॥ ॐ माधवाय नमः इति हृदये कार्यम् ॥ ३ ॥ ॐ गोविंदाय नमः इति कण्ठे कार्यम् ॥४॥ ॐ विष्णवे नम इति दक्षिणपार्श्वे कार्यम् ॥५॥ ॐमधुसूदनाय नमः इति दक्षबाहौ कार्यम् ॥ ६ ॥ॐ त्रिविक्रमाय नमः इति दक्षिणकर्णे कार्यम् ॥७॥ ॐ वामनाय नमः इति वामपार्श्वे कार्यम् ॥८॥ ॐ श्रीधराय नमः इति वामबाहौ कार्यम् ॥९॥ ॐ हृषीकेशाय नमः इति वामकर्णे कार्यम् ॥ १० ॥ ॐ पद्मनाभाय नमः इति पृष्ठे कार्यम् ॥ ११ ॥ ॐ दामोदराय नमः इति

१ ललाटे तु गदां कुर्य्याद्धृदये नंदकं पुनः । शंखं चक्रं भुजद्वंद्वे शार्ङ्गं बाणं च मूर्धनि ॥ एतानि चिह्नानि धारयेत् ॥

ककुदि कार्यम् ॥ १२ ॥ एवं द्वादशस्थानेषु तिलकं कुर्य्यात् ॥ इति वैष्णवोर्ध्वपुंड्रविधानम् ॥ इति तिलकं कृत्वा वैदिकीं संध्यां विधाय शिवमंत्रेण तांत्रिकीं कुर्य्यात् ॥ अथ तांत्रिकसंध्याप्रयोगः ॥ देशकालौ संकीर्त्य श्रीअमुकदेवताराधनयोग्यताजननार्थं मंत्रसंध्यामहं करिष्ये । इति संकल्प्य ॐ ह्रां आत्मतत्त्वाय स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वाय स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रूं शिवतत्त्वाय स्वाहा ॥ ३ ॥ इति त्रिराचम्य मूलेन प्राणानायम्य ऋष्यादिकरांगन्यासौ कृत्वा मूलेन जलं संवीक्ष्य अस्त्राय फट् इति संप्रोक्ष्य अनेनैव दर्भेण संताड्य कवचाय हुम् इत्यभ्युक्ष्य तज्जलेन कुंभमुद्रया मूर्ध्नि सिंचेत् ॥ ततो वामपाणौ दक्षेण तीर्थजलमादाय हृदयादिषडंगमंत्रेणाभिमंत्र्य तद्गलितोदकबिंदुभिर्दक्षहस्तेन हृदयादिषडंगन्यासमंत्रद्वारा षड्भिः शिरसि मार्जयेत् ॥ ६ ॥ पुनः ॐ आं ह्रां व्योमव्यापिने नमः इति मार्जयेत् ॥ ७ ॥ ॐ सद्योजातंप्रपद्यामिसद्योजातायवैनमः । भवेभवेनातिभवेभवस्वमांभवोद्भवाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ वामदेवाय नमः । ज्येष्ठाय नमः । श्रेष्ठाय नमः । रुद्राय नमः । कालाय नमः । कलविकरणाय नमः । बलाय नमः । बलविकरणाय नमः । बलप्रमथनाय नमः । सर्वभूतदमनाय नमः । मनोन्मनाय नमः ॥ ९ ॥ ॐ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः । सर्वेभ्यःसर्वशर्वेभ्योनमस्तेअस्तुरुद्ररूपेभ्यः ॥ १० ॥ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ ११ ॥ ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मेअस्तु सदाशिवोम्॥ ओ३म् ह्राँह्रीँह्रूँ मूलमंत्रैश्च एतैर्मंत्रैर्मार्जयेत् । वामहस्तस्थजलं वामनासासमीपमानीय इडया देहांतरादाकृष्य पापौघं प्रक्षाल्य कृष्णवर्णं तदुदकं दक्षिणया विरेच्य वामहस्तस्थं दर्णिणेनादाय पुरःकल्पितवज्रशिलायामस्त्रमंत्रेण क्रोधादास्फालयेत् ॥ ततः पूर्ववदाचम्य करांगन्यासौ कृत्वा अर्घपात्रे जलं कृत्वा तदादाय मूलमुच्चार्य्य शिवरूपाय सूर्य्याय इममर्घ्यं स्वाहा इति त्रिरर्घ्यं दत्त्वा मूलेनोपस्थाय गायत्रीमूलमंत्रं जपेत् ॥ गायत्रीमंत्रो यथा-ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ इति गायत्रीमष्टाविंशतिमष्टोत्तरशतं वा मूलं च संजप्य जपं निवेद्य नमस्कुर्य्यात् ॥ इति तांत्रिकसंध्याप्रयोगः ॥ अथ द्वारपूजाप्रयोगः ॥ पूजागृहद्वारमागत्यास्त्राय फडिति द्वारं

संप्रोक्ष्य दक्षिणशाखायाम्-ॐ गं गणपतये नमः ॥ १ ॥ ॐ दुं दुर्गायै नमः ॥ २ ॥ वामशाखायाम्-ॐ वं वटुकाय नमः ॥ १ ॥ ॐ क्षं क्षेत्रपालायः ननः ॥ २ ॥ द्वारोपरि-ॐ सं सरस्वत्यै नमः ॥ १ ॥ देहल्याम्-ॐ-अस्त्राय फट् इति पूजयेत् ॥ इति द्वार पूजाप्रयोगः ॥ अथ क्षेत्रकीलनम् ॥ जपस्थाने नत्वा पृथ्वीग्रहणं कुर्य्यात् ॥ तद्यथा-गृहीतस्यास्य मंत्रस्य पुरश्चरणसिद्धये ॥ मयेयं गृह्यते भूमिर्मंत्रोऽयं सिद्धिमाप्नुयात् ॥ १ ॥ इति भूमिं संगृह्य अश्वत्थोदुंबरप्लक्षान्यतमवितास्तिमात्रान् दशकीलान् 'ॐ नमः सुदर्शनयास्त्राय फट्' इति मंत्रेण अष्टोत्तरशतकृत्वोऽभिमंत्रितान्-ॐ ये चात्र विघ्नकर्तारो भुवि दिव्यंतरिक्षगाः॥विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मंत्रस्य सिद्धिषु॥१॥ मयैतत्कीलितं क्षेत्रं पारित्यज्य विदूरतः ॥ अपसर्पंतु ते सर्वे निर्विघ्ना सिद्धिरस्तु मे ॥ २ ॥ इति मंत्रद्वयेन दशदिक्षु दशकीलान् निखनेत् ॥ ततस्तेषु ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट् इति मंत्रेण प्रत्येककीलान् संपूज्य तत्रैव पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिलोकपालानावाह्य पंचोपचारैः संपूज्य जपस्थानमध्ये गणेशं कूर्म्मानंतवसुधाक्षेत्रपालांश्च संपूज्य दिक्पालेभ्यः क्षेत्रपालगणपतिभ्यश्च माषभक्तबलिं दत्त्वा तद्बाह्ये भूतबलिं दद्यात्॥ तत्र मंत्रः-ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः ॥ मातरोऽप्युग्ररूपाश्च गणाधिपतयश्च मे ॥ १ ॥ भूचराः खेचराश्चैव तथा चैवांतरिक्षगाः ॥ ते सर्वे प्रीतमनसः प्रतिगृह्णंत्विमं बलिम् ॥ २ ॥ इति मंत्रद्वयेन दशदिक्षु बाह्ये माषभक्तबलिं दद्यात् ॥ ततो वामकरांगुलिभिरर्घ्यजलेनोत्सृज्य पुष्पांजलिं गृहीत्वा । ॐ भूतानि यानीह वसंति भूतले बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम् ॥ संतोषमासाद्य व्रजंतु सर्वे क्षमंतु तान्यत्र नमोऽस्तु तेभ्यः ॥ १ ॥ इति पुष्पांजलिं दत्त्वा प्रणम्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचामेत् ॥ इति क्षेत्रकीलनम् ॥ अथ प्रयोगविधानम् ॥ ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ॥ यः स्मरेत्पुंडरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥ १ ॥ इति मंत्रेण मंडपांतरं प्रोक्ष्य तत्र तावत् आसनभूमौ कूर्मशोधनं कार्यम्॥यत्र जपकर्ता एक एव तत्र कूर्ममुखे उपविश्य जपं तत्रैव दीपस्थापनं च कुर्य्यात् ॥ यत्र बहवो जापकास्तत्र कूर्ममुखोपरि दीपमेव स्थापयते । एवं कूर्मशोधनं विधाय तत्रासनाधो जलादिना त्रिकोणं

---

१ विघ्नभूताश्च ये चान्ये दिग्विदिक्षु समाश्रिताः ॥ इति पाठान्तरम् ॥

कृत्वा तत्र ॐ कूर्माय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः ॥ २ ॥ ॐ पृथिव्यै नमः ॥ ३ ॥ इति गंधाक्षतं पुष्पैः संपूज्य तदुपरि कुशासनं तदुपरि मृगाजिनं तदुपरि कंबलाद्यासनमास्तीर्य्य स्थापितानां त्रयाणामासनानामुपरि क्रमेण ॐ अनंतासनाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विमलासनाय नमः ॥ २ ॥ ॐ पद्मासनाय नमः ॥ ३ ॥ इति मंत्रत्रयेण त्रीन् दर्भान् प्रत्येकं निदध्यात् एवमासनं संस्थाप्य तत्र प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य आसनं शोधयेत्। तत्र मंत्रः-ॐ पृथ्वीति मंत्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः, कूर्मो देवता, सुतलं छंदः, आसने विनियोगः ॥ ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ॥ त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥१॥ इति मंत्रेणासनं प्रोक्षयेत्। ततः मूलमंत्रेण शिखां बद्ध्वा-ॐ केशवाय नमः ॥ १ ॥ नाराणाय नमः ॥ २ ॥ माधवाय नमः ॥ ३ ॥ इति त्रिराचम्य प्राणायामं कुर्य्यात्।तद्यथा-दक्षिणहस्तांगुष्ठेन दक्षनासापुटं निरुध्य वामनासापुटेन मूलं षोडशवारं जपन् शनैःशनैः प्राणाख्य वायुमाकृष्य शिरसि सहस्रारे धारयोदिति पूरकम् ॥ १ ॥ पुनः दक्षहस्तानामिकातर्जन्यंगुष्ठैर्नासापुटद्वयं निरुध्य मूलं चतुःषष्टिवारं जपन् कुंभयेत् ॥ २ ॥ पुनर्दक्षनासापुटांगुष्ठनिरोधनं त्यक्त्वा मूलं द्वात्रिंशद्वारं जपन् शनैःशनैस्तद्वायुं रेचयेत् ॥ ३ ॥ इति प्राणायामत्रयं कृत्वा देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः श्रीअमुकदेवशर्म्माहममुकदेवताया अमुकमंत्रसिद्धिप्रतिबंधकाशेषदुरितक्षयपूर्वकामुकमंत्रसिद्धिकामोऽद्यारभ्य यावता कालेन सेत्स्यति तावत्कालममुकमंत्रस्येयत्संख्याकजपतद्दशांशहोमतद्दशांशतर्पणतद्दशांशाभिषेकतद्दशांशब्राह्मणभोजनरूपपुरश्चरणं जपरूपपुरश्चरणं वा करिष्ये इति संकल्प्य ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट् इति मंत्रेण तालत्रयेण दिग्बंधनं कृत्वा भूतशुद्धिं कुर्य्यात्[1] ॥ अथ भूतशुद्धिप्रकारः ॥ ॐ सूर्यः सोमो यमः कालः संध्या भूतानि पंच च ॥ एते शुभाशुभस्येह कर्मणो मम साक्षिणः ॥ १ ॥ भो देव प्राकृतं चित्तं पापाक्रांतमभून्मम ॥ तन्निस्सारय चित्तान्मे पापं तेऽस्तु नमोनमः ॥ २ ॥ इति प्रार्थ्य दक्षिणभागे-श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ १ ॥ वामभागे-ॐ गणेशाय नमः ॥ २ ॥ इति नत्वा भूतशुद्धिं कुर्य्यात् । तथा च कुंभकप्राणायामे

१ यामले-भूतशुद्धिलिपिन्यासौ विना यस्तु प्रपूजयेत्। विपरीतं फलं दद्यादभक्त्या पूजने यथा ॥

मूलाधारात् कुण्डलिनीं परदेवतां बिसतंतुनिभां समुत्थाप्य ब्रह्मरंध्रगतां स्मृत्वा हृदयस्थं जीवं प्रदीपकलिकाकारं गृहीत्वा सुषुम्नामार्गेण ब्रह्मरंध्रं गत्वा ॐ हंसः सोऽहम् इति मंत्रेण जीवं ब्रह्मणि संयोजयेत्। ततः पादादिजानुपर्यंतं चतुष्कोणं वज्रलांछितं स्वर्णवर्णं पृथ्वीमंडलं (ॐ लं) इति भूबीजाढ्यं स्मरेत् ॥ १ ॥ जान्वादिनाभिपर्यंतमर्द्धचन्द्राकारं पद्मद्वयांकितं श्वेतवर्णमपां स्थानं सोममंडलम् (ॐ वँ) इति वरुणबीजाढ्यं स्मरेत् ॥ २ ॥ नाभ्यादिहृदयपर्यंतं त्रिकोणं स्वस्तिकांकितं रक्तवर्णमाग्निमंडलम् (ॐ रँ) इति वह्निबीजाढ्यं स्मरेत् ॥३॥ हृदयादिभ्रूमध्यपर्यंतं वृत्तं षड्बिंदुलांछितं धूम्राभं वायुमंडलम् (ॐ यँ) इति बीजाढ्यं स्मरेत्॥४॥ भ्रूमध्यादारभ्य ब्रह्मरंध्रांतं वृत्तं स्वच्छं मनोहरमाकाशमण्डलम् (ॐ हँ) बीजाढ्यं स्मरेत् ॥ ५॥ इति एवं भूतगणं स्मृत्वा ततः पूर्वोक्तभ्रूमंडले-पादेन्द्रियं १ गगनं २ घ्राणं ३ गंधः ४ ब्रह्मा ५ निवृत्तिः ६ समानः ७ गंतव्यदेश ८ श्च एवमष्टौ पदार्थाश्चिंत्याः ॥ १ ॥ जलमंडले-हस्तेन्द्रिय १ ग्रहण २ ग्राह्य ३ रसना ४ रस ५ विष्णु ६ प्रतिष्ठो ७ दानाः ध्येयाः ॥ २॥ तेजोमंडले-वायु १ विसर्ग २ विसर्ज्जनीय ३ चक्षू ४ रूप ५ शिवः ६ विद्या ७ व्यानाः ८ ध्येयाः ॥ ३ ॥ वायुमंडले-उपस्था १ नन्दः २ स्त्री ३ स्पर्शन ४ स्पर्श ५ ईशान ६ शांत्य ७ पानाः ८ ध्येयाः ॥ ४ ॥ आकाशमंडले-वाग् १ वक्तव्य २ वदन ३ श्रोत्र ४ शब्द ५ सदाशिव ६ शांत्यतीताः ७ प्राणा ८ इत्यष्टौ चिंत्याः ॥ ५ ॥

एवं भूतानि संचिंत्य पूर्वपूर्वकार्यस्योत्तरोत्तरं कारणे विलापनं ब्रह्मपर्य्यंतं कार्य्यम् तथा च-ॐ लं फट् इत्यनेन पंचगुणां पृथ्वीमप्सु उपसंहरामीति जले भुवं विलापयेत् ॥ १ ॥ ॐ वँ हुं फट् इति चतुर्गुणा अपोऽग्नौ उपसंहरामीति वह्नौ जलं विलापयेत् ॥ २ ॥ ॐ रँ हुं फट् इति त्रिगुणं तेजो वायावुपसंहरामीति वह्निं वायौ विलापयेत् ॥ ३ ॥ ॐ यँ हुं फट् इति द्विगुणं वायुमाकाश उपसंहरामीति वायुमाकाशे विलापयेत् ॥ ४ ॥ ॐ हँ हुं फट् इत्येकगुणमाकाशमहंकार उपसंहरामीत्याकाशमहंकारे विलापयेत् ॥ ५ ॥ ॐ अहंकारं महत्तत्त्व उपसंहरामीत्यहंकारं महत्तत्त्वे विलापयेत् ॥ ६ ॥ ॐ महत्तत्त्वं प्रकृतावुपसंहरामीति महत्तत्त्वं प्रकृतौ विलापयेत् ॥ ७ ॥ ॐ प्रकृतिमात्मन्युपसंरहामीत्यनेन मायामात्मनि विलापयेत्॥८॥ एवं शुद्धसच्चिन्मयो भूत्वा पापपूरुषं चिंतयेत्। तथा च वासनामयं वाम

कुक्षिस्थितं कृष्णमंगुष्ठपरिमाणकं ब्रह्महत्याशिरोयुक्तं कनकस्तेयबाहुकं मदिरापानहृदयं गुरुतल्पकटियुतं तत्संसर्गिपदद्वंद्वमुपपातकमस्तकं खड्गचर्मधरं दुष्टमधोवक्त्रं सुदुःसहमेवं पापपुरुषं चिन्तयित्वा पूरकप्राणायामे (ॐ यँ) इति वायुबीजेन द्वात्रिंशद्वारं षोडशवारं वा आवर्तितेन पापपुरुषं शोषयेत् ॥ १ ॥ ततः स्वशरीरयुतं पापं कुंभके (ॐ रं) इति वह्निबीजेन चतुः षष्टि ६४ वारमावर्तितेन तदुत्थेनाग्निना दहेत् ॥ २ ॥ ततो रेचकप्राणायामे (ॐ यँ) इति वायुबीजं षोडशवारं द्वात्रिंशद्वारं वा जपित्वा दक्षिणनाड्या तद्भस्म स्वशरीराद्बहिः रेचयेत् ॥ ३ ॥ ततो देहोत्थं भस्म (ॐ वँ) इत्युच्चारितेन सुधाबीजेन तदुत्थाऽमृतेन संप्लाव्य पश्चात् (ॐ लँ) इति भूबीजेन तद्भस्म घनीभूतं पिंडं कृत्वा कनकांडवद्भावयेत् ॥ ४ ॥ ततः (ॐ हँ) इति आकाशबीजं जपन् तत्पिण्डं मुकुराकारं भावयित्वा तस्य मूर्द्धादिनखांता अवयवा मनसा रचनीयाः ॥ ५ ॥ ततः पुनरपि सृष्टिमार्गेण ब्रह्मणः सकाशादाकाशादीनि भूतान्युत्पादयेत् । तथा च ब्रह्मणः प्रकृतिः १ प्रकृतेर्महत् २ महतोऽहंकारः ३ अहंकारादाकाशः ४ आकाशाद्वायुः ५ वायोरग्निः ६ अग्नेरापः ७ अद्भ्यः पृथिवी ८ पृथिव्या ओषध्यः ९ ओषधीभ्योऽन्नम् १० अन्नाद्रेतः ११ रेतसः पुरुषः १२ इत्युत्पाद्य ॐ हंसः सोऽहम् इति मंत्रेण ब्रह्मणैकीभूतं जीवं स्वहृदयांबुजे संस्थाप्य कुंडलीं मूलाधारगतां स्मरेत् । अथ ध्यानम् ॥ रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढा कराब्जैः पाशं कोदंडमिक्षूद्भवगुणमथ चाप्यंकुशं पंचबाणान्॥ बिभ्राणासृक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढ्या देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः ॥१॥ इति भूतशुद्धिप्रकारः ॥ एवं भूतशुद्धिं कृत्वा स्वशरीरे स्वेष्टदेवतायाः प्राणान् प्रतिष्ठापयेत् ॥ अथ स्वप्राणप्रतिष्ठाप्रकारः॥अस्य स्वप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः,ऋग्यजुःसामानि च्छन्दांसि, प्राणशक्तिर्देवता,आँ बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकम्, स्वशरीरेऽमुकदेवताप्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः॥ॐ ब्रह्मविष्णुमहेश्वरऋषिभ्यो नमः शिरसि ॥१॥ ॐ ऋग्यजुःसामच्छंदोभ्यो नमो मुखे॥२॥ॐ प्राणशक्त्यै नमः हृदये॥३॥ॐ बीजाय नमः गुह्ये॥४॥ह्रीं शक्तये नमः पादयोः॥५॥क्रौं कीलकाय नमः सर्वांगे ॥६॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ङंकंखंघंगं नाभौ वाय्वग्निवार्भूम्यात्मने हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ञंचंछंझंजं शब्दस्पर्शरूपरसगंधात्मने

शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ णंटंठंढंडं श्रोत्रत्वङ्नयनजिह्वाघ्राणात्मने शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ नंतंथंधंदं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ मंपंफंभंबं वक्तव्यादानगमनविसर्गानंदात्मने नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ शंयंरंवंलंहंषंक्षंसंलं बुद्धिमनोहंकार चित्तात्मने अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासं कृत्वा नाभेरारभ्य पादांतम् (आँ) इति पाशबीजं विन्यसेत् ॥ १ ॥ हृदयादारभ्य नाभ्यंतम् (ह्रीं) इति शक्तिबीजं न्यसेत् ॥ २ ॥ मस्तकादारभ्य हृदयांतं (क्रौं) इति सृणिबीजं न्यसेत् ॥ ३ ॥ ॐ यं त्वगात्मने नमः ॥ ॐ रं असृगात्मने नमः ॥ ॐ लं मांसात्मने नमः ॥ ॐ वं मेदात्मने नमः ॥ ॐ शं अस्थ्यात्मने नमः ॥ ॐ षं मज्जात्मने नमः ॥ ॐ सं शुक्रात्मने नमः ॥ ॐ हों ओजात्मने नमः ॥ ॐ हैं प्राणात्मने नमः ॥ ॐ सं जीवात्मने नमः इति दृशि हृदि विन्यसेत् ॥ ४ ॥ ॐ यंरंलंवंषंसंहंलंक्षं इति मूर्द्धादिचरणावधि व्यापकं कुर्यात् ॥ ५ ॥ ततः मंडूकादिपरतत्वांतपीठ देवताभ्यो नमः ॥ १ ॥ ॐ जयादिपीठशक्तिभ्यो नमः ॥ २ ॥ इति नत्वा ॐ आँह्रींक्रौं पीठाय नमः ॥ इति पीठे प्राणशक्तिं देवीं ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ पाशं चापासृक्कपाले सृणीषूञ्शूलं हस्तैर्बिभ्रतीं रक्तवर्णाम् ॥ रक्तोदन्वेत्पातरक्तांबुजस्थां देवीं ध्यायेत्प्राण शक्तिं त्रिनेत्राम् ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा हृदि करं निधाय ॐ आँह्रींक्रौंयँरँलँवँशँषँसँहँसःह्रीं ॐ मम शरीरेऽमुकदेवतायाः प्राण इह प्राणः ॥ १ ॥ पुनः ॐ आँह्रींक्रौंयँरँलँवँशँषँसँहँक्षँहँसः ह्रीं ॐ मम शरीरेऽमुकदेवतायाः जीव इह स्थितः ॥ २ ॥ पुनः ॐ आँह्रींक्रौंयँरँलँवँ शँषँसँक्षँहँसः ह्रीं ॐ मम शरीरेऽमुकदेवतायाः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा ॥ ३ ॥ इति वारत्रयेण स्वशरीरे स्वेष्टदेवतायाः प्राणं प्रतिष्ठाप्य ततः (ॐ) इति प्रणवेन १५ पंच दशावृत्तिं कृत्वा अनेन मम देहस्य गर्भाधानादिपंचदशसंस्कारान् संपादयामि इति वदेत् ॥ इति स्वप्राणप्रतिष्ठाप्रयोगः ॥ एवं प्रतिष्ठाप्य देवतारूपमात्मानं भावयन् प्राणायामं कृत्वा देवं यजेत् ॥ अथांतर्मातृकान्यासः ॥ ॐ अस्यान्तर्मातृकान्या

१ देवो भूत्वा देवं यजेत्। इति वचनात्। २ यथा पर्वतधातूनां दोषान् दहति पावकः। एवमन्तर्गतं पापं प्राणायामेन दह्यते।

समंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छंदः, मातृकासरस्वती देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, क्षं कीलकम्, अखिलासये न्यासे विनियोगः ॥ इति जलं भूमौ निक्षिप्य प्राणायामं कुर्य्यात्। तथा च इडया अइउऋऌएऐओऔ एभिः स्वरैः पूरयेत् । पुनः कुचुटुतुपु इति वर्गपंचकेन कुंभयेत् ॥ पुनः यरलवशषसह एभिरष्टाभिर्वर्णै रेचयेत् । इति प्राणायामं कृत्वा ऋष्यादिन्यासादिकं कुर्य्यात् । तथा च ॐ अं ब्रह्मणे ऋषये नमः आं शिरसि १, ॐ इं गायत्रीछंदसे नमः ईं मुखे २ ॐ उ सरस्वतीदेवतायै नमः ऊं हृदये ३, ॐ एं हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः ऐं गुह्ये ४, ॐ ओं स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः औं पादयोः ५, ॐ अं क्षं कीलकाय नमः अः सर्वाङ्गे ६, इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ अंकंखंगंघंङंआं अंगुष्ठाभ्यां नमः १, ॐइंचंछंजंझंञंईं तर्जनीभ्यां नमः २, ॐ उंटंठंडंढंणंऊं मध्यमाभ्यां नमः ३, ॐ एंतंथंदंधंनंऐं अनामिकाभ्यां नमः४, ॐ ओंपंफंबंभंमंऔंकनिष्ठिकाभ्यां नमः,ॐ अंयंरंलंवंशंषंसंहंलंक्षंअः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६, इति करन्यासः ॥ ॐ अंकंखंगंघंङंआं हृदयाय नमः १, ॐ इंचंछंजंझंञंईं शिरसे स्वाहा २, ॐ उंटंठंडंढंणंऊं शिखायै वषट् ३, ॐ एंतंथंदंधंनंऐंकवचायहुं ४, ॐपंफंबंभंमंऔं नेत्रत्रयायवौषट् ५, ॐ अंयंरंलंवंशंषंसंहंक्षंअः अस्त्राय फट् ६ इति हृदयादिषडंगन्यासः॥ ततः कण्ठस्थषोडशदलपद्मे-ॐ अंआंइंईंउंऊंऋंॠंऌंॡंएंऐंओंऔंअंअः इति षोडशस्वरान् न्यसेत्॥१॥ पुनः हृदयस्थे द्वादशदले-ॐ कं नमः । ॐ खं नमः ॐ गं नमः । ॐ घं नमः। ॐ ङं नमः । ॐ चं नमः । ॐ छं नमः ।ॐ जं नमः । ॐ झं नमः । ॐ ञं नमः। ॐ टं नमः। ॐ ठं नमः। इति द्वादशवर्णान् विन्यसेत्॥२॥ततः नाभौ दशदले ॐ डं नमः । ॐ ढं नमः । ॐ णं नमः । ॐ तं नमः । ॐ थं नमः । ॐ दं नमः । ॐ धं नमः । ॐ नं नमः । ॐ पं नमः । ॐ फं नमः । इति दशवर्णान् विन्यसेत् ॥ ३ ॥ तदधोलिंगे षड्दले-ॐ बं नमः । ॐ भं नमः । ॐ मं नमः । ॐ यं नमः । ॐ रं नमः । ॐ लं नमः । इति बादिलांतान्षड्वर्णान् विन्यसेत् ॥ ४ ॥ आधारे गुदे चतुर्दले-ॐ वं नमः । ॐ शं नमः । ॐ षं नमः । ॐ सं नमः। इति वादिसांतांश्चतुर्वर्णान् विन्यसेत् ॥ ५ ॥ ललाटे द्विदले-ॐ हं नमः । ॐ क्षं नमः इति द्वौ वर्णौ विन्यसेत् ॥ ६ ॥ इति न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ आधारे लिंगनाभौ प्रकटित

१ स्त्रीलिंगपूजनं स्त्रीलिंगं न्यसेत् ॥

...ये तालुमूले ललाटे द्वे पत्रे षोडशारे द्विदशदशदले द्वादशार्धे चतुष्के ॥ वासान्ते बालमध्ये डफकठसहिते कण्ठदेशे स्वराणां हंक्षं तत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि ॥ १ ॥ इत्यंतर्मातृकान्यासः ॥ इत्यंतर्मातृकान्यासं कृत्वा बहिर्मातृकान्यासं कुर्य्यात् ॥ ॥ अथ बहिर्मातृकान्यासप्रयोगः ॥ ॐ अस्य श्रीबहिर्मातृकान्याससमंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, मातृका सरस्वती देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, क्षं कीलकम्, अखिलाप्तये न्यासे विनियोगः ॥ इति जलं भूमौ निःक्षिप्य प्राणयामं कुर्य्यात्। तथा च इडया अइउऋऌएऐओऔ एभिः स्वरैः पूरयेत्। पुनः कुचुटुतुपु इति वर्गपंचकेन कुंभयेत्। पुनः यरलवशषसह एभिरष्टभिर्वर्णैं रेचयेत्। इति प्राणायामं कृत्वा ऋष्यादिन्यासादिकं कुर्य्यात्। तथा च। ॐ अं ब्रह्मणे ऋषये नमः आं शिरसि १, ॐ इं गायत्रीछन्दसे नमः ईं मुखे २, ॐ उं सरस्वतीदेवतायै नमः ऊं हृदये ३, ॐ एं हलभ्यो बीजेभ्यो नमः ऐं गुह्ये४, ॐ ओं स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः औं पादयोः५, ॐ अंक्षंकीलिकाय नमः अः सर्वांगे ६ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ अंकंखंगंघंङंआं अंगुष्ठाभ्यां नमः १, ॐ इंचंछंजंझंञंईं तर्जनीभ्यां नमः २, ॐ उंटंठंडंढंणंऊं मध्यमाभ्यां नमः ३, ॐ एंतंथंदंधंनंऐं अनामिकाभ्यां नमः ४, ॐ ओंपंफंबंभंमंऔं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५, ॐ अंयंरंलंवंशंषंसंहंलंक्षंअः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। इति करन्यासः ॥ ॐ अंकंखंगंघंङंआं हृदयाय नमः १, ॐ इंचंछंजंझंञंईं शिरसे स्वाहा २, ॐ उंटंठंडंढंणंऊं शिखायै वषट् ३, ॐ एंतंथंदंधंनंऐं कवचाय हुं ४, ॐ ओंपंफंबंभंमंऔं नेत्रत्रयाय वौषट् ५, ॐ अंयंरंलंवंशंषंसंहंलंक्षंअः अस्त्राय फट् ६ इति हृदयादिषडंगन्यासः। इति विन्यस्य मातृकान्यासं कुर्य्यात्। तथा च। ॐ अं नमः शिरसि[1] १, आं नमः मुखे २, ॐ इं नमः दक्षिणनेत्रे ३, ॐ ईं नमः वामनेत्रे ४, ॐ उं नमः दक्षिणकर्णे ५, ॐ ऊं नमः वामकर्णे ६, ॐ ऋं नमः दक्षिणनासापुटे ७, ॐ ॠं नमः वामनासापुटे ८, ॐ ऌं नमः दक्षिणकपोले[4] ९, ॐ ॡं नमः वामकपोले[5] १०, ॐ एं नमः ऊर्ध्वोष्ठे ११, ॐ ऐं नमः अधरोष्ठे १२, ॐ ओं नमः ऊर्ध्वदंतपंक्तौ १३, ॐ औं नमः अधोदंतपंक्तौ १४, ॐ अं नमः मूर्ध्नि[6] १५, ॐ

१ जपार्थं सर्वदेवानां विन्यासे च शिरोवंदना। कृते तद्धिफलं विद्यात्तस्मादादौ शिरसि न्यसेत् ॥ २ श्रीलिंगपूजने श्रीलिंगं न्यसेत् ॥ ३ तन्त्रान्तरे तु ललाटे ॥ ४ दक्षिणगण्डे ॥ ५ वामगण्डे ॥ ६ कण्ठे इति वा पाठः ॥

अः नमः मुखवृत्ते १६, ॐ कं नमः दक्षिणबाहुमूले १७, ॐ खं नमः दक्षिणकूर्परे १८, ॐ गं नमः दक्षिणमणिबंधे १९ ॐ, घं नमः दक्षिणहस्तांगुलिमूले २०, ॐ ङं नमः दक्षिणहस्तांगुल्यग्रे २१, ॐ चं नमः वामबाहुमूले २२, ॐ छं नमः वामकूर्परे २३, ॐ जं नमः वाममणिबंधे २४, ॐ झं नमः वामहस्तांगुलिमूले २५, ॐ ञं नमः वामहस्तांगुल्यग्रे २६, ॐ टं नमः दक्षिणपादमूले २७, ॐ ठं नमः दक्षिणजानुनि २८, ॐ डं नमः दक्षिणगुल्फे २९, ॐ ढं नमः दक्षिणपादांगुलिमूले ३०, ॐ णं नमः दक्षिणपादांगुल्यग्रे ३१, ॐ तं नमः वामपादमूले३२ॐ थं नमः वामजानुनि ३३ ॐ दं नमः वामगुल्फे ३४ ॐ धं नमः वामपदांगुलिमूले ३५ॐ नं नमः वामपदांगुल्यग्रे ३६ ॐ पं नमः दक्षिणपार्श्वे ३७ ॐ फं नमः वामपार्श्वे ३८ ॐ बं नमः पृष्ठे ३९ ॐ भं नमः नाभौ ४० ॐ मं नमः उदरे ४१ ॐ यं त्वगात्मने नमः हृदि ४२ ॐ रं असृगात्मने नमः दक्षांसे ४३ ॐ लं मांसात्मने नमः ककुदि ४४ ॐ वं मेदआत्मने नमः वामांसे ४३ ॐ शं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षहस्तांतम् ४६ ॐ षं मज्जात्मने नमः हृदयादिवामहस्तांतम् ४७ ॐ सं शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादांतम् ४८ ॐ हं आत्मने नमः हृदयादिवामपादांतम् ४९ ॐ लं परमात्मने नमः जठरे ५०ॐ क्षं प्राणात्मने नमः मुखे ५१ इति विन्यस्य ध्यायते । पंचाशल्लिपिभिर्विभक्तमुखदोःपत्संधिवक्षस्स्थलां भास्वन्मौलिनिबद्धचन्द्रशकलामापीनतुंगस्तनीम् ॥ मुद्रामक्षगुणं सुदाढ्यं कलशं विद्यां च हस्तांबुजैर्बिभ्राणां विशदप्रभां त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये ॥ १ ॥ इति बहिर्मातृकान्यासप्रयोगः ॥ अथ सृष्टिक्रमः ॥ तत्र तु विसर्गान्वितः प्रणवपुटितो वा मायालक्ष्मीबीजपूर्वो वा वाग्भवाद्यो वा न्यस्तव्यः । तत्र वाग्भवाद्यो यथा ऐं अं नमः जिह्वाग्रे[1] ऐं अः नमः कंठे २ ऐं कं नमः दक्षिणबाहुमूले ३ ऐं खं नमः दक्षिणकूर्परे ४ ऐं गं नमः दक्षिणमणिबंधे ५ ऐं घं नमः दक्षिणहस्तांगुलिमूले ६ ऐं ङं नमः दक्षिणहस्तांगुल्यग्रे ७ ऐं चं नमः वामबाहुमूले ८ ऐं छं नमः वामकूर्परे ९ ऐं जं नमः वाममणिबंधे १० ऐं झं नमः वामहस्तांगुलिमूले ११ ऐं ञं नमः वामहस्तांगुल्यग्रे १२ ऐं टं नमः दक्षिणपादमूले १३ ऐं ठं नमः दक्षिणजानुनि १४ ऐं डं नमः दक्षि

१ जिह्वाग्रे ॥ २ मतांतरे-हृदयान्मस्तकांतम् ॥

णगुल्फे १५ ऐं ढं नमः दाक्षिणपादांगुलिमूले १६ ऐं णं नमः दाक्षिणपादांगुल्यग्रे १७ ऐं तं नमः वामपादमूले १८ ऐं थं नमः वाम जानुनि १९ ऐं दं नमः वामगुल्फे २० ऐं धं नमः वामपादांगुलिमूले २१ ऐं नं नमः वामपादांगुल्यग्रे २२ ऐं पं नमः दक्षिणपार्श्वे २३ ऐं फं नमः वामपार्श्वे २४ ऐं बं नमः पृष्ठे २५ ऐं भं नमः नाभौ २६ ऐं मं नमः उदरे २७ ऐं यं त्वगात्मने नमः हृदि २८ ऐं रं असृगात्मने नमः दक्षांसे २९ ऐं लं मांसात्मने नमः ककुदि ३० ऐं वं मेदआत्मने नमः वामांसे ३१ऐं शं अस्थ्यात्मने नमःहृदयादिदक्ष भुजांतम् ३२ ऐं षं मज्जात्मने नमः हृदयादिवामभुजांतम् ३३ ऐं सं शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादांतम् ३४ ऐं हं आत्मने नमः हृदयादिवामपादांतम् ३५ ऐं ळं परमात्मने नमः हृदयादिमस्तकांतम् ३६ इति विन्यसेत् । इति सृष्टिक्रमः ॥ अथ स्थितिक्रमः ॥ तत्रादौ ध्यानम् ॥ सिन्दूरकांतिमसिताभरणां त्रिनेत्रां विद्याक्षसूत्रमृगपोतवरं दधानाम् ॥ पार्श्वस्थितां भगवतीमपि काञ्चनाङ्गीं ध्यायेत्कराब्जधृतपुस्तकवर्णमालाम् ॥ १ ॥ एवं ध्यात्वा न्यसेत् ॥ टंठंडं नमः ललाटे १ टंठंडं नमः मुखवृत्ते २ टंठंडं नमः दक्षनेत्रे ३ टंठंडं नमः वामनेत्रे ४ टंठंडं नमः दक्षकर्णे ५ टंठंडं नमः वामकर्णे ६ टंठंडं नमः दक्षनासायाम् ७ टंठंडं नमः वामनासायाम् ८ टंठंडं नमः दक्षगंडे ९ टंठंडं नमः वामगंडे १० टंठंडं नमः ऊर्ध्वोष्ठे ११ टंठंडं नमः अधरोष्ठे १२ टंठंडं नमः ऊर्द्ध्वदंतपंक्तौ १३ टंठंडं नमः अधोदंपक्तौ १४ टंठंडं नमः शिरसि १५ टंठंडं नमः मुखे १६ टंठंडं नमः जिह्वाग्रे १७ टंठंडं नमः कंठदेशे १८ टंठंडं नमः दक्षिणबाहुमूले १९ टंठंडं नमः दक्षिणकूर्परे २० टंठंडं नमः दक्षिणमणिबंधे २१ टंठंडं नमः दक्षिणहस्तांगुलिमूले २२ टंठंडं नमः दाक्षिणहस्तांगुल्यग्रे २३ टंठंडं नमः वामबाहुमूले २४ टंठंडं नमः वामकूर्परे २५ टंठंडं नमः वाममणिबंधे २६ टंठंडं नमः वाम हस्तांगुलिमूले २७ टंठंडं नमः वामहस्तांगुल्यग्रे २८ टंठंडं नमः दाक्षिणपादमूले २९ टंठंडं नमः दाक्षिणजानुनि ३० टंठंडं नमः दाक्षिणगुल्फे ३१ टंठंडं नमः दक्षिणपादांगुलिमूले ३२ टंठंडं नमः दक्षिणपादांगुल्यग्रे ३३ टंठंडं नमः वामपादमूले ३४ टंठंडं नमः वामजानुनि ३५ टंठंडं नमः वामगुल्फे ३६ टंठंडं नमः वामपादांगुलिमूले ३७ टंठंडं नमः वामपादांगुल्यग्रे ३८ टंठंडं नमः दक्षपार्श्वे

३९ टंठंडं नमः वामपार्श्वे ४० टंठंडं नमः पृष्ठे ४१ टंठंडं नमः उदरे ४२ टंठंडं नमः हृदये ४३ टंठंडं नमः दक्षांसे ४४ टंठंडं नमः ककुदि ४५ टंठंडं नमः वामांसे ४६ टंठंडं नमः हृदयादिदक्षहस्तांतम् ४७ टंठंडं नमः हृदयादिवामहस्तांतम् ४८ टंठंडं नमः हृदयादिदक्षपादांतम् ४९ टंठंडं नमः हृदयादिवामपादांतम् ५० टंठंडं नमः हृदयादिमस्तकांतम् ५१ इति विन्येसेत् ॥ इति स्थितिक्रमः ॥ अथ संहारक्रमः ॥ तत्रादौ ध्यानम् ॥ अक्षस्त्रजं हरिणपोतमुदग्रटंकं विद्यां करैरविरतं दधतीं त्रिनेत्राम् ॥ अर्द्धेन्दुमौलिमरुणामरविंदवासां वर्णेश्वरीं च प्रणुमः स्तनभारखिन्नाम् ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा न्यसेत् । ॐ क्षं नमः ललाटे १ ॐ हं नमः मुखवृत्ते २ ॐ सं नमः दक्षनेत्रे ३ ॐ षं नमः वामनेत्रे ४ ॐ शं नमः दक्षकर्णे ५ ॐ वं नमः वामकर्णे ६ ॐ लं नमः दक्षनासायाम् ७ ॐ रं नमः वामनासायाम् ८ ॐ यं नमः दक्षगंडे ९ मं नमः वामगंडे १० ॐ भं नमः ऊर्ध्वोष्ठे ११ ॐ बं नमः अधरोष्ठे १२ ॐ फं नमः ऊर्ध्वदंतपंक्तौ १३ ॐ पं नमः अधोदंतपंक्तौ १४ ॐ नं नमः शिरसि १५ ॐ धं नमः मुखे १६ ॐ दं नमः दक्षिणबाहुमूले १७ ॐ थं नमः दक्षिणकर्परे १८ ॐ तं नमः दक्षिणमणिबंधे १९ ॐ णं नमः दक्षहस्तांगुलिमूले २० ॐ ढं नमः दक्षिणहस्तांगुल्यग्रे २१ ॐ डं नमः वामबाहुमूले २२ ॐ ठं नमः वामकूर्परे २३ ॐ टं नमः वाममणिबंधे २४ ॐ ञं नमः वामहस्तांगुलिमूले २५ ॐ झं नमः वामहस्तांगुल्यग्रे २६ ॐ जं नमः दक्षिणपादमूले २७ ॐ छं नमः दक्षिणजानुनि २८ ॐ चं नमः दक्षिणगुल्फे २९ ॐ ङं नमः दक्षिणपादांगुलिमूले ३० ॐ घं नमः दक्षिणपादांगुल्यग्रे ३१ ॐ गं नमः वामपादमूले ३२ ॐ खं नमः वामजानुनि ३३ ॐ कं नमः वामगुल्फे ३४ ॐ अः नमः वामपादांगुलिमूले ३५ ॐ अं नमः वामपादांगुल्यग्रे ३६ ॐ औं नमः दक्षपार्श्वे ३७ ॐ ओं नमः वामपार्श्वे ३८ ॐ ऐं नमः पृष्ठे ३९ ॐ एं नमः नाभौ ४० ॐ ॡं नमः उदरे ४१ ॐ ऌं नमः हृदये ४२ ॐ ॠं नमः दक्षांसे ४३ ॐ ऋं नमः ककुदि ४४ ॐ ऊं नमः वामांसे ४५ ॐ उं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षहस्तांतम् ४६ ॐ ईं मज्जात्मने नमः हृदयादिवामहस्तांतम् ४७ ॐ इं शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादांतम् ४८ ॐ आं आत्मने नमः हृदयादिवामपादांतम् ४९ ॐ अं परमात्मने नमः

हृदयादिमस्तकांतम् ५० ॥ इति विन्यसेत् इति संहारक्रमः ॥ इति न्यासं कृत्वा विष्णुमंत्रे विष्णुकलामातृकान्यासः १ शैवमंत्रे श्रीकण्ठादिकलामातृकान्यासः २ गणेशमंत्रे गणेशकलामातृकान्यासः ३ देवीमंत्रे देवीकलामातृकान्यासः ४ सूर्यमंत्रे सूर्यकलामातृकान्यासः ५ एवं तत्तत्प्रयोगेणावलोक्य न्यासं कुर्य्यात् । ततः ऋष्यादिन्यासं करन्यासं हृदयादिषडंगन्यासं च प्रयोगोक्तं कृत्वा मूलदेवतां ध्यात्वा ॐमं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः इति सर्वाङ्गे व्यापकं कृत्वा पीठपूजां कुर्य्यात् ॥ अथ पीठपूजाप्रयोगः ॥ पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले प्रयोगोक्तमंडलेवा तन्मध्ये मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताःसंस्थापयेत् । तत्र क्रमः पुष्पाक्षतानादाय स्ववामभागे श्रीगुरुभ्यो नमः। दक्षिणे गणपतये नमः । मध्ये स्वेष्टदेवतायै नमः । इति नत्वा पीठमध्ये ॐ मं मडूकाय नमः१ ॐ कं कालाग्निरुद्राय नमः २ ॐ अं आधारशक्तये नमः ३ ॐ कूं कूर्म्माय नमः ४ ॐ अं अनंताय नमः ५ पृं पृथिव्यै नमः ६ ॐ क्षीं क्षीरसागराय नमः ७ ॐ रं रत्नदीपाय नमः ८ ॐ रं रत्नमंडपाय नमः ९ ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः १० ॐ रं रत्नवेदिकायै नमः ११ ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः १२ आग्नेय्याम्-ॐ धं धर्म्माय नमः १३ नैर्ऋत्याम्- ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः १४ वायव्याम्-ॐ वैं वैराग्याय नमः १५ ऐशान्याम्- ॐ ऐं ऐश्वर्य्याय नमः १६ पूर्वे-ॐ अं अधर्माय नमः १७ दक्षिणे-ॐ अं अज्ञानाय नमः १८ पश्चिमे-ॐ अं अवैराग्याय नमः १९ उत्तरे-ॐ अं अनैश्वर्य्याय नमः २० पुनः पीठमध्ये- ऑं आनंदकंदाय ॐ नमः २१ ॐ सं संविन्नालाय नमः २२ ॐ सं सर्वतत्त्वकमलासनाय नमः २३ ॐ प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः २४ ॐ विं विकारमयकेसरेभ्यो नमः २५ ॐ पं पञ्चाशद्वर्णाढ्यकर्णिकाभ्यो नमः २६ ॐ अं अर्कमंडलाय द्वादशकलात्मने नमः२७ ॐ सों सोममंडलाय षोडशकलात्मने नमः २८ ॐ वं वह्निमंडलाय दशकलात्मने नमः २९ ॐ सं सत्त्वाय नमः ३० ॐ रं रजसे नमः ३१ ॐ तं तमसे नमः ३२ ॐ आँ आत्मने नमः ३३ ॐ पं परमात्मने नमः ३४

---

१ आगमोक्तन विधिना नित्यं न्यासं करोति यः । देवताभावमाप्नोति मन्त्रसिद्धिः प्रजायते ॥ न्यासांगुलीनियमस्तु यामले-हृदयं मध्यमानामतर्जनीभिः स्मृतं शिरः । मध्यमातर्जनीभ्यां स्यादंगुष्ठेन शिखा स्मृता ॥ दशभिः कवचं प्रोक्तं तिस्रृभिर्नेत्रमीरितम् । अस्त्रादिकद्वयं प्रोक्तं तदा तर्जनिमध्यमे ॥ इति ॥

ॐ अं अंतरात्मने नमः ३५ ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः ३६ ॐ मं मायातत्त्वाय नमः ३७ ॐ कं कलातत्त्वाय नमः ३८ ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः ३९ ॐ पं परतत्त्वाय नमः ४० इति पीठदेवताः संस्थाप्य प्रयोगोक्तनवपीठशक्तीः पूजयेत् ॥ अथ यात्रा साधनप्रयोगः ॥ (तत्रादौ कलशस्थापनप्रयोगः) देवदक्षिणतः त्रिकोणं मंडलं कृत्वा जलेन प्रोक्ष्य त्रिकोणांतर्मायां (ह्रीं) विलिख्य ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै नमः इति मंत्रेण संपूज्य मूलेन फट् इति मंत्रेण त्रिपदाधारं प्रक्षाल्य त्रिकोणमध्ये संस्थाप्य मूलेन नमः इति संपूजयेत् । ततः सुदर्शनायास्त्राय फट् इति मंत्रेण ताम्रादिकलशं प्रक्षाल्य आधारोपरि हस्तद्वयेन संस्थाप्य रक्तवस्त्रमाल्यादिना भूषयित्वा मूलेन नमः इति मंत्रेणापूर्य ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ इति वरुणमावाह्य तन्मध्ये स्वेष्टदेवतां ध्यात्वा गंधाक्षतपुष्पैः सम्पूजयेत् ॥ इति कलशस्थापनप्रयोगः १ (अथ त्रिरर्घ्यस्थापनं तत्रादौ शंखस्थापनम्) देववामतः त्रिकोणमंडलं कृत्वा जलेन प्रोक्ष्य त्रिकोणांतर्मायां विलिख्य ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै नमः इति मंत्रेण संपूजयेत् ततः मूलेन फट् इति त्रिपदमाधारं प्रक्षाल्य त्रिकोणमध्ये संस्थाप्य ॐ मं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने अमुकपात्रासनाय नमः इत्याधारं संपूज्य आधारे पूर्वादिषु दशाग्निकलाः पूजयेत्। तथा च ॐ यं धूम्रार्चिषे नमः १ ॐ रं ऊष्मायै नमः २ ॐ लं ज्वलिन्यै नमः ३ ॐ वं ज्वालिन्यै नमः ४ ॐ शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः ५ ॐ षं सुश्रियै नमः ६ ॐ सं सुरूपायै नमः ७ ॐ हं कपिलायै नमः ८ ॐ ळं हव्यवाहायै नमः ९ ॐ क्षं कव्यवाहायै नमः १० इति पूजयेत् । ततः ॐ क्लीं महाजलचराय हुं फट् स्वाहा पांचजन्याय नमः । इति मंत्रेण क्षालितं शंखमाधारोपरि संस्थाप्य ॐ अं सूर्यमंडलाय द्वादशकलात्मने अमुकपात्राय नमः इति शंखं संपूज्य पात्रे स्वाग्रादि प्रादक्षिण्येन द्वादश सूर्य्यकलाः पूजयेत् । तथा च-ॐ कंभं तपिन्यै नमः १ ॐ खंबं तापिन्यै नमः २ ॐ गंफं धूम्रायै नमः ३ ॐ घंपं

१ वामे शंखं प्रतिष्ठाप्य मध्ये चार्घ्यं प्रकल्पयेत् । दक्षिणे प्रोक्षणीपात्रमर्घत्रयं विकल्पयेत ॥ दृष्ट्वार्घपात्रं देवेशि ब्रह्माद्या देवताः सदा । नृत्यंति सर्वयोगिन्यः प्रीताः सिद्धिं ददत्यपि ।
२ माया-ह्रीं ।

मरीच्यै नमः ४ ॐ डंनं ज्वालिन्यै नमः ५ ॐ चंधं रुच्यै नमः ६ ॐ छंदं सुषुम्नायै नमः ७ ॐ जंखं भोगदायै नमः ८ ॐ झंतं विश्वायै नमः ९ ॐ ञंणं बोधिन्यै नमः १० ॐ टंढं धारिण्यै नमः ११ ॐ ठंडं क्षमायै नमः १२ इति पूजयेत् ततः ॐ क्षंळंहंसंषंशं वंलंरंयंमंभंबंफंपंनंधंदंथंतंणंढंडंठंटंञंझंजंछंचंङंघंगंखंकंअंःअंऔंओंऐंएंॡंऌंॠंऋंऊंउंईंइंआंअं इत्येकाधिकपंचाशद्विलोममातृकामुच्चार्य मूलेन नमः इति मंत्रेण शंखे जलमापूर्य ॐ सोममंडलाय षोडशकलात्मने अमुकपात्रामृताय नमः इति गंधादिभिः संपूज्य जले षोडशचन्द्र कलाः पूजयेत् तथा च ॐ अं अमृतायै नमः १ ॐ आं मानदायै नमः २ ॐ इं पूषायै नमः ३ ॐ ईं तुष्ट्यै नमः ४ ॐ उं पुष्ट्यै नमः ५ ॐ ऊं वृत्त्यै नमः ६ ॐ ऋं धृत्यै नमः ७ ॐ ॠं शशिन्यै नमः ८ ॐ ऌं चन्द्रिकायै नमः ९ ॐ ॡं कांत्यै नमः १० ॐ एं ज्योत्स्नायै नमः ११ ॐ ऐं श्रियै नमः १२ ॐ ओं प्रीत्यै नमः १३ ॐ औं अंगदायै नमः १४ ॐ अं पूर्णायै नमः १५ ॐ अः पूर्णामृतायै नमः १६ इति संपूज्याभिमंत्रयेत्। तथा च-ॐ शंखादौ चन्द्रदैवत्यं कुक्षौ वरुणदेवता॥ पृष्ठे प्रजापतिश्चैवमग्रे गङ्गा सरस्वती ॥ १ ॥ त्रैलोक्ये.यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया॥शंखे तिष्ठंति विप्रेन्द्र तस्माच्छंखं प्रपूजयेत्॥२॥ इत्यभिमंत्र्य प्रार्थयेत्। तथा च ॐ त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे॥ निर्मितः सर्वदेवैश्च पांचजन्य नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥ इति संप्रार्थ्य ॐ पांचजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि। तन्नः शंखः प्रचोदयात्॥ इति शंखगायत्रीमष्टधा जपित्वा शंखमुद्राः प्रदर्शयेत् इति शंखस्थापनम्। ततो देवस्याग्रे अर्घ्यं देवदक्षिणतः प्रोक्षणीपात्रं च एवमेव विधिना संस्थापयेत्। (शिवसूर्य्यार्चने शंखस्थाने ताम्रादिपात्रं स्थापयेत्। इति त्रिरर्घ्यस्थापनम्॥ ततो विशेषार्घाद्वामतः श्रीपात्रम् १ गुरुपात्रम् २ देवपात्रम् ३ शक्तिपात्रम् ४ योगिनीपात्रम् ५ भोगपात्रम् ६ वीरपात्रम् ७ आत्मपात्रम् ८ बलिपात्रम् ९ एतानि नवपात्राणि पूर्ववत् संस्थाप्य दक्षिणे पाद्यार्घ्याचमनीयमधुपर्का इति चत्वारि पात्राणि पूर्ववत् संस्थापयेत्। अशक्तश्चेद्गुरुवीरात्मबलिभोगा इति पंच पात्राणि पाद्याद्युपचारार्थमेकं वा पात्रं स्थापयेत्। तत्राप्यशक्तश्चेत्तदैकमेव

१-आदौ कुंभं तथा शंखं श्रीपात्रं शक्तिपात्रकम्। गुरुपात्रं वीरपात्रं बलिपात्रं तथैव च ॥

शंखं संस्थापयेत् ॥ अथ घंटास्थापनम् ॥ देवदक्षिणतः घंटां संस्थाप्य नोदं कृत्वा पूजयेत् तद्यथा-ॐ भूर्भुवः स्वः गरुडाय नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थं गंधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि इत्यावाह्य "जगद्ध्वनिमंत्रमातः स्वाहा" इति मंत्रेण घंटास्थितगरुडं घंटां च संपूज्य गरुडमुद्रां प्रदर्शयेत् इति घंटास्थापनम् ॥ ततः गंधाक्षतपुष्पादींश्च पूजोपकरणार्थं स्वदक्षिणपार्श्वे संस्थाप्य मूलेन नमः इति जलेन प्रोक्ष्य जलार्थं बृहत्पात्रं व्यजनं छत्रादर्शचामराणि च स्ववामे स्थापयेत् ॥ अथाखंडदीपस्थापनम् ॥ देवस्य दक्षिणभागे घृतदीपं वामे तैलदीपं च स्थापयेत् । तत्र क्रमः । दीपपात्रं गोघृतेन तैलेन वाऽऽपूर्य मंत्रवर्णतंतुभिर्वर्त्तिं निक्षिप्य प्रणवेन प्रज्वाल्य सुदर्शन मंत्रेण घृतदीपं पूजयेत् । तत्र मंत्रः "ॐ रांरीं रूं रैं रौंरः ॐ सहस्रारहुं फट् स्वाहा" इति मंत्रेण गंधपुष्पाभ्यां संपूजयेत् । तैलदीपं पाशुपतास्त्र मंत्रेण पूजयेत् । तत्र मंत्रः "ॐ श्लीं पशुहुंफट् स्वाहा" इति मंत्रेण गंधपुष्पाभ्यां संपूजयेत् । इति संपूज्य हस्तद्वयेन दीपशिखां स्पृष्ट्वा मंत्रं पठेत् । तथा च-"ॐ घोराय घोरतमाय महारौद्राय वीरभद्राय ज्वालामालिने सर्वदुष्टोपसंहर्त्रे हुं फट् स्वाहा" इति मंत्रं पठित्वा पश्चात्तत्तेज आत्मने समर्प्य ततो वाक्कायचित्तशोधनं कुर्यात् । ॐ हुं फट् स्वाहेति मुखे । ॐ रक्षरक्ष हुं फट् स्वाहेति हृदि हस्तं दत्त्वात्मरक्षां विधाय(आम्) इति मंत्रेण चंदनपुष्पाणि कराभ्यां मर्दयित्वा पुष्पाक्षतानादाय॥ते सर्वे विलयं यांतु ये मां हिंसंति हिंसकाः॥ मृत्युरोगभयक्लेशाः पतंतु रिपुमस्तके ॥ १ ॥ इति मंत्रेणैशान्यां दिशि दूरतः पुष्पं क्षिप्त्वा हस्तौ प्रक्षाल्याचामेत् । ततः कूर्ममुखे स्वनामाक्षरस्थितकोष्ठे वा दीपं संस्थाप्य पूजनं कुर्यात् ॥ अथ पूजाप्रकारः ॥ तत्रादावग्न्युत्तारणप्रयोगः ॥ आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य अमुकदेवतानूतनयंत्रमूर्तीनां टंकघनादिदोषपरिहारार्थमग्न्युत्तारणं करिष्ये इति संकल्प्य स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां चाधोलिखितमंत्रैः कुर्यात् । तत्र मंत्राः । ॐ समुद्रस्यत्त्वावेकयाऽग्नेपरि

१ आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम् । घंटानादं प्रकुर्वीत पश्चाद् घंटां प्रपूजयेत् ॥ २ दीपं घृतयुतं दक्षे तैलयुक्तं च वामतः । दक्षिणे च सितां वर्तिं वामतो रक्तवर्तिकाम् ॥ ३ लिंगस्थां पूजयद्देवीं पुस्तकस्थां तथैव च । मंडलस्थां महामायां यंत्रस्थां प्रतिमासु च ॥ सौवर्णे राजते ताम्रे पट्टे भूर्जेऽथवा भुवि ॥ विना यंत्रेण चेत्पूजा देवता न प्रसीदति ॥ अन्यत्रापि-यंत्रमित्याहुरेतस्मिन्देवः प्रीणाति पूजितः । विना यंत्रेण पूजायां देवता न प्रसीदति ॥ यंत्रं मंत्रमयं प्रोक्तं मंत्रात्मा देवतेति च । देहात्मनोर्यथा भेदो मंत्रदेवतयोस्तथा ॥

व्ययामसि ॥ पावकोऽअस्मभ्यꣳशिवो भव ॥ १ ॥ हिमस्य त्वा जरायुणाग्नेपरिव्ययामसि ॥ पावकोऽअस्मभ्यꣳशिवो भव ॥ २ ॥
उपज्मन्नुपवेतसेवततरनदीष्वा ॥ अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकिताभिरागहि सेमन्नो ॥ यज्ञम्पावकवर्णꣳशिवं कृधि ॥ ३ ॥ [illegible]
यनꣳसमुद्रस्य निवेशनम् ॥ अन्न्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्यꣳशिवो भव ॥ ४ ॥ अग्ने पावक रोचिषामन्द्रयादेववाजि
ह्वया ॥ आ देवान्वक्षियक्षि च ॥ ५ ॥ सनःपावक दीदिवोऽग्नेदेवाꣳइहावह ॥ उप यज्ञꣳहविश्चनः ॥ ६ ॥ पावकयायश्चितयन्त्याकृपा
क्षामन्नुरुचउषसोनभानुना ॥ तूर्वन्नयामन्नेतशस्य नूरण ऽआयो घृणेन ततृषाणोऽअजरः ॥ ७ ॥ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्तेऽअस्त्व
र्चिषे ॥ अन्न्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तुहेतयःपावकोऽअस्मभ्यꣳशिवोभव ॥ ८ ॥ नृषदेवेडप्सुषदेवेड्बर्हिषदेवेड्वनसदेवेड्स्वर्विदेवेट्
॥ ९ ॥ येदेवा देवानांय्यज्ञियायज्ञियानाꣳसंव्वत्सरीणमुप भागमासते ॥ अहुतादो हविषो यज्ञेऽअस्मिन्त्स्वयम्पिबन्तु मधुनो घृतस्य १० ॥
येदेवादेवेष्वधिदेवत्वमायन्न्येब्रह्मणः पुरऽएतारोऽअस्य ॥ येभ्योनऋतेपवते धामकिञ्चन ते दिवो न पृथिव्याऽअधिस्नुषु ॥ ११ ॥
प्राणदाऽअपानदाव्व्यानदाव्वर्चोदाव्वरिवोदाः ॥ अन्न्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयःपावकोऽअस्मभ्यꣳशिवोभव ॥ १२ ॥ इत्य
ग्न्युत्तारणं कृत्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोध्य मूलमन्त्रोक्तासनमन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां च कुर्यात् ॥ अथ
प्राणप्रतिष्ठाप्रयोगः ॥ देशकालौ संकीर्त्य ममामुकदेवतानूतनयंत्रे मूर्तौ वा प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये इति संकल्प्य प्रतिष्ठां कुर्य्यात् । अस्य
श्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः । ऋग्यजुःसामानि छंदांसि । क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता । आँ बीजम् । ह्रीं शक्तिः । क्रौँ
कीलकम् । अस्मिन्नूतनयंत्रे मूर्तौ वा प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः । इति जलं क्षिपेत् । ततः करेणाच्छाद्य ॐ आँह्रींक्रौँयँरँलँवँशँषँसँहँसः
सोऽहं अस्यामुकदेवतासपरिवारयंत्रस्य प्राणा इह प्राणाः । पुनः ॐ आँह्रींक्रौँयँरँलँवँशँषँसँहँसः सोऽहं अस्यामुकदेवतासपरिवार

यंत्रस्य जीव इह स्थितः । पुनः ॐ आँह्रींक्रौंयँरँलँवँशँषँसँहँसः सोऽहं अस्यामुकदेवतासपरिवारयंत्रस्य सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि । पुनः ॐ आँह्रींक्रौंयँरँलँवँशँषँसँहँसः । सोऽहं अमुकदेवतासपरिवारयंत्रस्य वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा । इति प्राणान् प्रतिष्ठाप्य । यः प्राणतो निमिषतो महित्वा० विधेम इति सान्निति त्रिवारं पठेत्॥ मनोज्योतिर्जुषता० सुप्रतिष्ठा प्रतिष्ठा इत्युक्त्वा संस्कारसिद्धये पंचदशप्रणवावृत्तीः कृत्वा अनेन अमुकदेवतासपरिवारयंत्रस्य गर्भाधानादिपंचदशसंस्कारान्संपादयामि इति वदेत्। ततः ॐयंत्रराजाय विद्महे महायंत्राय धीमहि। तन्नो यंत्रः प्रचोदयात्॥इत्यष्टोत्तरशतेनाभिमंत्र्य मूलदेवतां ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्यावाहयेत्॥ अथ पाद्यादिपूजनम् ॥ अक्षतानादाय-देवेश भक्तिसुलभ परिवारसमन्वित ॥ यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावद्देव इहावह ॥ १ ॥ आगच्छ भगवन् देव स्थाने चात्र स्थितो भव ॥ यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधौ भव ॥ २ ॥ मूलं पठित्वा-ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेव इहागच्छ इह तिष्ठ । इत्यक्षतान्निःक्षिप्य आवाहनीं मुद्रां प्रदर्शयेत् । इत्यावाहनम्॥ ॥ १ ॥ तवेयं महिमामूर्त्तिस्तस्यां त्वं सर्वग प्रभो ॥ भक्तिस्नेहसमाकृष्टदीपवत्स्थापयाम्यहम् ॥ १॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेव इह तिष्ठ इत्यक्षतान्निःक्षिप्य स्थापनीं मुद्रां प्रदर्शयेत् । इति स्थापनम् ॥ २ ॥ अनन्या तव देवेश मूर्त्तिशक्तिरियं प्रभो ॥ सान्निध्यं कुरु तस्यां त्वं भक्त्यानुग्रहतत्परः ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीअमुकदेवते इह सन्निधेहि । इत्यक्षतान्निःक्षिप्य सन्निधापनीं मुद्रां प्रदर्शयेत् इति सन्निधापनम् ॥ ३ ॥ आज्ञया तव देवेश कृपांभोधे गुणांबुधे ॥ आत्मानंदैकतृप्तं त्वां निरुणध्मि पितर्गुरो ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवते इह सन्निरुध्य इत्यक्षतान्निःक्षिप्य सन्निरोधनीं मुद्रां प्रदर्शयेत् । इति सन्निरोधनम् ॥ ४ ॥ अज्ञानाद्दुर्मनस्त्वाद्वा वैकल्यात्साधनस्य च ॥ यदपूर्णं भवेत्कृत्यं तदप्यभिमुखो भव ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेव इह सम्मुखो भव । इत्यक्षतान्निःक्षिप्य सम्मुखीकरणमुद्रां प्रदर्शयेत् । इति सम्मुखीकरणम् ॥ ५ ॥ अभक्तवाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रदूराति

१ अत्र स्वेष्टदेवतानामोच्चारणं कुर्यात् । आवाह्य देवतामेकामर्चयन्नान्यदेवताम् । उभाभ्यां लभते शापं मंत्री स्वक्रमालसः ॥

गद्यते ॥ स्वतेजःपञ्जरेणाशु वेष्टितो भव सर्वतः ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेव अवगुंठितो भव । इत्यक्षतान्निःक्षिप्य अवगुंठिनीं मुद्रां प्रदर्शयेत् । इत्यवगुंठनम् ॥६ ॥ यस्य दर्शनमिच्छंति देवाः स्वाभीष्टसिद्धये ॥ तस्मै ते परमेशाय स्वागतं स्वागतं च मे ॥ ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवते सुस्वागतं समर्पयामि इति सुस्वागतम् ॥ ७ ॥ देवदेव महाराज प्रियेश्वर प्रजापते ॥ आसनं दिव्यमीशानाद्दास्येऽहं परमेश्वर ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः आसनं समर्पयामि ॥ ८ ॥ इत्यासनं दत्त्वा करौ बद्ध्वा प्रार्थयेत् । स्वागतं देवदेवेश मद्भाग्यात्त्वमिहागतः ॥ प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत्परिपालय ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः प्रार्थनां समर्पयामि नमस्करोमि ॥ ८ ॥ इति प्रार्थ्य पाद्याद्युपचारैः पूजयेत् । तद्यथा—यद्भक्ति लेशसंपर्कात्परमानंदविग्रह । तस्मै ते चरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पये ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः पाद्यं समर्पयामि । इति सामान्यार्घोदकेन शंखोदकेन वा पाद्यं दद्यात् ॥ इति पाद्यम् ॥ ९ ॥ तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम् ॥ तापत्रय विनिर्मुक्तस्तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम्॥१॥मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवःस्वः अमुकदेवाय नमः इदमर्घ्यं समर्पयामि । अर्घ्योदकेनार्घ्यं दद्यात्॥इत्यर्घ्यम् ॥ १० ॥ सर्वकालुष्यहीनाय परिपूर्णसुखात्मने ॥ मधुपर्कमिदं देव कल्पयामि प्रसीद मे ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा अमुकदेवाय नमः मधुपर्कं समर्पयामि इति मधुपर्कम् ॥ ११ ॥ वेदानामपि वेदाय देवानां देवतात्मने । आचामं कल्पयामीश शुद्धानां शुद्धिहेतवे ॥१॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवःस्वः अमुकदेवाय नमः आचमनं समर्पयामि ॥ इत्याचमनम् ॥ १२ ॥ ॐ स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकनाथ महाशय ॥ सर्वलोकेषु शुद्धात्मन्ददामि स्नेहमुत्तमम् ॥१॥ मूलं पठित्वा अमुकदेवाय नमः इति सुगंधतैलं समर्पयामि । इति सुगंधतैलम् ॥ १३ ॥ ॐ गंगासरस्वतीरेवापयोष्णीनर्मदाजलैः ॥ स्नापितोऽसि मया देव तथा शांतिं कुरुष्व मे॥१॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवायनमः

१–रुद्रयामळे निवेदयेत्पुरोभागे गंधं पुष्पं च भूषणम् । दीपं दक्षिणतो दद्यात्पुरतो वा न वामतः ॥ वामतस्तु तथा धूपमग्रे वा न तु दक्षिणे ! नैवेद्यं दक्षिणे भागे पुरतो वा न पृष्ठतः ॥ धूपदीपौ सुभोज्यं च देवताग्रे निवेदयेत् ॥ २ शक्तिपूजायां स्त्रीलिंगेनोच्चारणं कुर्यात् ॥

जलस्नानं समर्पयामि ॥ इति जलस्नानम् ॥१४॥ कामधेनुसमुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम् ॥ पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा अमुकदेवाय नमः पयःस्नानं समर्पयामि ॥ इति पयःस्नानम् ॥ १५॥ पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ॥ दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥१॥ मूलं पठित्वा अमुकदेवाय नमः दधिस्नानं समर्पयामि ॥ इति दधिस्नानम् ॥१६॥ नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्॥घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥१॥मूलंपठित्वा अमुकदेवाय नमः घृतस्नानं समर्पयामि॥इतिघृतस्नानम्१७ तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु॥तेजःपुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥१ ॥मूलं पठित्वाॐभूर्भुवःस्वः अमुकदेवाय नमः मधुस्नानं समर्पयामि ॥ इति मधुस्नानम् ॥१८॥ इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका ॥ मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः शर्करोदकस्नानं समर्पयामि ॥ इति शर्करोदकस्नानम् ॥ १९ ॥ पयो दधि घृतं चैव मधु वै शर्करायुतम् ॥पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥१॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि । इति पञ्चामृतस्नानम् ॥२०॥ मलयाचलसंभूतं चन्दनागरुसंभवम्॥चन्दनं देवदेवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥१॥ मूलं पठित्वा ॐभूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः गन्धोदकस्नानं समर्पयामि । इति गंधोदकस्नानम् ॥ २१ ॥ इति स्नापयित्वा पूर्वोक्तशुद्धोदकस्नानं कारयेत् । एवं स्नानं समर्प्य शिवसूर्य्यातिरिक्तदेवेषु शंखेन तत्तन्मूलमंत्रेण यथाशक्त्यभिषेकं कृत्वा ॐ अनेन अभिषेककर्मणाऽमुकदेवता प्रीयताम् इति समर्प्य आचमनं दद्यात् ॥ततः-सर्वभूषादिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे॥मयैवोपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् १॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः वस्त्रं समर्पयामि ॥ इति वस्त्रम् ॥ २२ ॥ नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ॥ उपवीतं चोत्तरीयं गृहाण परमेश्वर ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि ॥ इति यज्ञोपवीतम् ॥ २३ ॥ ॐ स्वभावसुंदरांगाय नानाशक्त्याश्रितः शिव॥भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चित ॥१॥ मूलं पठित्वा अमुकदेवाय नमः आभूषणं

१ पीतं विष्णौ सितं शंभौ रक्तं विघ्नार्कशक्तिषु ॥ सच्छिद्रं मलिनं जीर्णं त्यजत्तैलादिदूषितम् ॥ २ स्त्रीपूजने न तु दद्यात ॥

समर्पयामि इत्युक्त्वा दक्षहस्तांगुष्ठस्पृष्टानामिकात्मिकया मुद्रया भूषणानि दद्यात् ॥ इत्याभूषणम् ॥ २४ ॥ श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गंधाढ्यं समनोहरम् ॥ विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥१॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः गंधं समर्पयामि ॥ अंगुष्ठकनिष्ठामूललग्ना गंधमुद्राः । इति गन्धम् ॥ २५ ॥ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः ॥ मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥१॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः अक्षतान्समर्पयामि ॥ इत्यक्षतान्सर्वांगुलीभिर्दद्यात् ॥ ॥ २६ ॥ माल्यादीनि सुगंधीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ॥ मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥१॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः पुष्पं समर्पयामि ॥तर्जन्यावंगुष्ठमूललग्ने पुष्पमुद्रा ॥ २७ ॥ इति पुष्पम् ॥ एवं पुष्पांतं पूजयित्वा देवाज्ञया प्रयोगोक्तामावरणपूजां कुर्य्यात्।तत्र क्रमः। पुष्पांजलिमादाय । संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः ॥अनुज्ञां देहि मे देव परिवारार्चनाय च ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं देवोपरि दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण प्रयोगोक्तावरणपूजां कुर्य्यात्। तत्र क्रमः। श्रीपदं पूर्वमुच्चार्य्य पादुकापदमुद्धरेत्॥ पूजयामि नमः पश्चात् पूजयेदंगदेवताः ॥ इत्युच्चरन् आवरणदेवताः पूजयेत्॥तत्सर्वं तत्तत्प्रयोगे ज्ञेयम्॥अथ धूपादिपूजनम्॥फडिति धूपपात्रं संप्रोक्ष्य नमः इति गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य पुरतो निधाय(रँ)इति वह्निबीजेन उपरि अग्निं संस्थाप्य तदुपरि मूलेन दशांगं दत्त्वा घंटां वादयन् । वनस्पतिरसोद्भूतो गंधाढ्यो गंध उत्तमः ॥ आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥ १ ॥मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवःस्वः सांगाय सपरिवाराय अमुकदेवाय नमः धूपं समर्पयामि। इति पठित्वा देवस्य वामभागे धपपात्रं संस्थाप्य तर्जनीमूलयोरंगुष्ठयोगो धूपमुद्रा तां प्रदर्शयेत। इति धूपम्॥२८॥ ततो दीपपात्रं गोघृतेनापूर्य मंत्राक्षरतंतुभिर्वर्तिं निःक्षिप्य प्रणवेन प्रज्वाल्य घंटां वादयन् नेत्रादिपादपर्यंतं दीपं

---

१ शक्तिश्वेत रक्तचन्दनं दद्यात ॥२ पत्रं पुष्पं फलं देवे न च दद्यादधोमुखम्। पुष्पांजलौ न तद्दोषस्तथा पर्युषितस्य च ॥ ३ धूपयेद्दक्षहस्तेन देवता नाभिदेशतः । जलपुष्पांजलिं दद्याद्दीपदानमितीदृशम् ॥४ मंत्राक्षराणां संख्याकैस्तंतुभिर्ब्रह्मसूत्रजैः। वर्तिं कृत्वा घृतेनैव दीपं तत्र प्रदापयेत् ॥५ ॐ कारेण गौतमीये-दक्षिणं तु परित्यज्य वामं चैव निधापयेत् । अभोज्यं तद्भवेदन्नं पानीयं च सुरोपमम् ॥

प्रदर्शयन् ॥ ॐ सुप्रकाशो महादीपः सर्वतास्तिमिरापहः ॥ सबाह्याभ्यंतरज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः सांगाय सपरिवाराय अमुकदेवाय नमः दीपं समर्पयामि। इति पठित्वा देवस्य दक्षिणभागे निधाय ततः शंखजलमुत्सृज्य मध्यमांगुष्ठलग्नां दीपमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इति दीपम् ॥ २९ ॥ ततो देवस्याग्रे देवदक्षिणतो वा जलेन चतुरस्रं मण्डलं कृत्वा स्वर्णादिनिर्मितं भोजनपात्रं संस्थाप्य तन्मध्ये षड्रसोपेतं विविधप्रकारं वा नैवेद्यं निधाय ॐ ह्रीं नमः इति मंत्रेण अर्घ्यजलेन संप्रोक्ष्य मूलेन संवीक्ष्य अधोमुखदक्षिण हस्तोपरि तादृशं वामं निधाय नैवेद्येनाच्छाद्य-(ॐ यँ) इति वायुबीजेन षोडशधा संजप्य वायुना तद्गतदोषान् संशोष्य दक्षिणकरतले तत्पृष्ठलग्ने वामकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य- (ॐ रँ) इति वह्निबीजेन षोडशवारं संजप्य तदुत्पन्नाग्निना तद्दोषं दग्ध्व वामकरतले (ॐ वँ) इत्यमृतबीजं विचिंत्य तत्पृष्ठलग्नं दक्षिणकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य- (ॐ वं) इति सुधाबीजं षोडशवारं संजप्य तदुत्थामृतधारया प्लावितं विभाव्य मूलेन प्रोक्ष्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य मूलेनाष्टधाभिमंत्र्य गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य देवस्योद्गतं तेजः स्मृत्वा वामांगुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृष्ट्वा दक्षिणकरेण जलं गृहीत्वा॥ॐसत्पात्रसिद्धं सुहविर्विधानैनेकभक्षणम्॥निवेदयामि देवेश सानुगाय गृहाण तत् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः सांगाय सपरिवाराय अमुकदेवाय नमः नैवेद्यं समर्पयामि । इति भूतले देवदक्षिणे जलं क्षिप्त्वा वामहस्तेन अनामामूलयोरंगुष्ठयोगे ग्रासमुद्रां तां प्रदर्श्य देवं भुक्तवंतं विभाव्य जलं दद्यात् ॥ इति नैवेद्यम् ॥ ३० ॥नमस्ते देवदेवेश सर्वतृप्तिकरं वरम् ॥ परमानन्दपूर्ण त्वं गृहाण जलमुत्तमम् ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः सांगाय सपरिवाराय अमुकदेवाय नमः जलं समर्पयामि । इति मंत्रेण स्वर्णादिपात्रस्थं कर्पूरादिसुवासितं जलं निवेद्य देवेन तज्जलं प्राशितमिति भावयन् अंतःपटं दद्यात् ॥३१॥ अथ अंतःपटम् ॥ ब्रह्मेशाद्यैः परित उरुभिः सूपविष्टैः समेतैर्लक्ष्म्या शिंजद्वलयकरया सादरं वीज्यमानः ॥ नर्मक्रीडाप्रहसनपरान्पंक्तिभोक्तॄन् हसन्स भुंक्ते पात्रे कनकघटिते षड्रसान् देवदेवः ॥ १ ॥ शालीभक्तं सुपक्वं शिशिरकरसितं पायसापूपसूपं लेह्यं पेयं च चोष्यं सितममृतफलं परिकाद्यं सुखाद्यम् ॥ आज्यं प्राज्यं सभोज्यं नयनरुचिकरं राजिकैलामरीचस्वादीयः शाकराजीपरिकरममृताहारजोषं

जुषस्व २ ॥ इति अंतःपटं दत्त्वाचमनं दद्यात् ॥ तत्र मंत्रः ॥ ३१ ॥ उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वापि यस्य स्मरणमात्रतः ॥ शुद्धिमाप्नोति तस्मै ते पुनराचमनीयकम् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः आचमनं समर्पयामि ॥ ३२ ॥ इत्याचमनं दत्त्वा मूलेन गंडूषार्थं जलं दद्यात् । पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ॥ एलाचूर्णादिसंयुक्तं तांबूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः तांबूलं समर्पयामि । इति तांबूलम् ॥ ३३ ॥ इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव ॥ तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः फलं समर्पयामि ॥ इति फलम् ॥ ३४ ॥ बुद्धिः सवासना क्लृप्ता दर्पणं मंगलानि च ॥ मनोवृत्तिर्विचित्रा ते नृत्यरूपेण कल्पिता ॥ १ ॥ ध्यानं संगीतरूपेण शब्दा वाद्यप्रभेदतः ॥ छत्राणि नवपद्मानि कल्पितानि मया प्रभो ॥ २ ॥ सुषुम्नाध्वजरूपेण प्राणाद्याश्चामरा मताः ॥ अहंकारो गजत्वेन वेगः क्लृप्तो रथात्मना ॥ ४ ॥ इन्द्रियाणि च रूपाणि शब्दादिरथवर्त्मना ॥ मनः प्रग्रहरूपेण बुद्धिः सारथिरूपतः ॥ ४ ॥ सर्वमन्यत्तथा क्लृप्तं तवोपकरणात्मना ॥ एवं सार्द्धचतुःश्लोकान् पठित्वा छत्रादि समर्पयेत् । इति छत्राद्यर्पणम् ॥ ३५ ॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ॥ अनंतपुण्यफलदमतः शांतिं प्रयच्छ मे ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः दक्षिणां समर्पयामि । इति हिरण्यादिदक्षिणां दद्यात् ॥ ३६ ॥ शालिगोधूमपिष्टेन त्रिकोणाकारं प्रयोगोक्तं वा अमुकसंख्यापरिमितदीपं निर्माय सुवर्णादिस्थालीमध्ये संस्थाप्य घृतेनापूर्य कर्पूरादिवर्त्तीं निक्षिप्य (ह्रीं) इति मायाबीजेन प्रज्वाल्य मूलेनार्तिक्यं संपूज्य मूलं पठित्वा देवोपरि नेत्रादिपादपर्यंतं नववारं त्रिवारं वा भ्रामयेद्घंटां च नादयेत् । तत्र मंत्रः । अंतस्तेजो बहिस्तेज एकीकृत्य निरंतरम् ॥ त्रिधा देवोपरि भ्राम्य कुलदीपं निवेदयेत् ॥ १ ॥ चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च ॥ त्वमेव सर्वज्योतिस्त्वमार्तिक्यं प्रतिगृह्यताम् ॥ २ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः नीराजनं समर्पयामि ॥ इत्युच्चरन् देवदक्षिणतः निधाय शंखजलमुत्सृजेत् । इति नीराजनम् ॥ ३७ ॥ कदलीगर्भसंभूतं कर्पूरं च प्रदीपितम् ॥ आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः कर्पूरार्तिक्यं प्रदर्शयामि । इति

कर्पूरार्तिक्यम् ॥ ३८ ॥ यानि कानि च पापानि जन्मांतरकृतानि वै ॥ तानि सर्वाणि नश्यंतु प्रदक्षिणपदेपदे ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि । इत्युच्चरन् विष्णौ चतस्रः ४ शिवे तिस्रः३ दुर्गायामेका १ गणेशे तिस्रः३रवौ सप्त ७ प्रदक्षिणाः कार्याः । इति प्रदक्षिणा ॥३९॥ प्रपन्नं पाहि मामीश भीतं मृत्युग्रहार्णवात् ॥ इति वदन् साष्टांगं प्रणमेत् ॥ इति साष्टांगप्रणामः ॥४०॥ नानासुगंधपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च ॥ पुष्पांजलिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमकदेवाय नमः पुष्पांजलिं समर्पयामि । इति पुष्पांजलिः ॥४१॥ इति पुष्पांजलिं दत्त्वा ततः स्तुतिपाठेन देवं स्तुत्वा बद्धांजलिपूर्वकं प्रार्थयेत् ॥ तद्यथा-ज्ञानतोऽज्ञानतो वाथ यन्मया क्रियते शिव ॥ मम कृत्यमिदं सर्वमिति देव क्षमस्व मे ॥ १ ॥ अपराधसहस्राणि क्रियंतेऽहर्निशं मया ॥ दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥ २ ॥ अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे ॥ कोऽपरः सहतां लोके केवलं स्वामिनं विना ॥ ३ ॥ भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलंबनम् ॥ त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं शिव ॥ ४ ॥ बद्धांजलिपूर्वकं संप्रार्थ्य ततः-यदुक्तं यद्यभावेन पत्रं पुष्पं फलं जलम् ॥ निवेदितं च नैवेद्यं गृहाण मानुकंपय ॥ इति पठित्वा देवस्य दक्षिणकरे पूजार्पणजलं दत्त्वा मालायाः संस्कारान् कुर्यात् ॥ अथ मालायाः संस्काराः ॥ तत्रादौ कुशोदकसहितैः पंचगव्यैर्मालां प्रक्षाल्य अश्वत्थपत्रनवकरचिते कमले स्थापयित्वा ॐ ह्रीं अँआँइँईँउँऊँऋँॠँऌँॡँएँऐँओँऔँअंअः कँखँगँघँङँचँछँजँझँञँटँठँडँढँणँतँथँदँधँनँपँफँबँभँमँयँरँलँवँशँषँसँहँक्षँ इत्येतानि मातृकाक्षराणि मूलमंत्रं च मालायां विन्यस्य पुनः पंचगव्येन प्रोक्ष्य ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमोनमः॥भवेभवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः॥१॥इति मंत्रेण शीतजलेन प्रक्षालयेत् । पुनः ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमःकालाय नमःकलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमः इति मंत्रेण चन्दनागुरुकर्पूरादिसुगंधद्रव्यैर्घर्षयेत्॥२॥अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः॥सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ इति मंत्रेण तां धूपयेत् ॥३॥ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ इति मंत्रेण मालयां चदनं

१ अप्रतिष्ठितमालाभिर्मंत्रं जपति यो नरः । सर्वं तद्विफलं विद्यात् क्रुद्धा भवति देवता ॥

लेपयेत् ॥ ४ ॥ ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम् ॥ ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम् ॥ इति मंत्रेण मेरुसहितं प्रत्येकमणिं सकृत्सकृद्वाभिमंत्रयेत् ॥ ५ ॥ ततः अस्या मालायाः इति शब्दं संयोज्य पूर्ववत् प्राणप्रतिष्ठामंत्रप्रयोगेण मालायाः प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा ध्यायेत् ॥ ॐ ह्रीं माले माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ॥ चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥ १ ॥ इति मालां संप्रार्थ्य ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ इति मंत्रेण दक्षिणहस्ते मालामादाय हृदये धारयन् स्वेष्टदेवतां ध्यात्वा मध्यमांगुलिमध्यपर्वणि संस्थाप्य ज्येष्ठाग्रेण भ्रामयित्वा एकाग्रचित्तो मंत्रार्थं स्मरन् प्रातःकालमारभ्य मध्यंदिनं यावत् यथाशक्ति मूलमंत्रं जपेत्। नित्यमेव समानो जपः कार्य्यो न तु न्यूनाधिकः। ततो जपांते ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा मम॥शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा॥तेन सत्येन सिद्धिं मे देहि मातर्नमोऽस्तु ते। ॐ ह्रीं सिद्धये नमः। इति मालां शिरसि निधाय गोमुखीरहस्ये स्थापयेत् नाशुचिः स्पर्शयेत् नान्यं दद्यात् अशुचिस्थाने न निधापयेत् स्वयोनिवत् गुप्तं कुर्य्यात्।ततः कवचस्तोत्रसहस्रनामादिकं पठित्वा पुनर्मूलमंत्रोक्तऋष्यादिन्यासं हृदयादिषडंगन्यासं च कृत्वा पंचोपचारैः संपूज्य पुष्पांजलिं च दत्त्वा जपंदेवेऽर्पितं कुर्य्यात् । तथा च अर्घोदकेन चुलुकमादाय ॐगुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात्त्वयि स्थितिः॥१॥ ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्म्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुर्यावस्थासु मनसा वाचा कर्म्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेणशिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तंयत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा। मां मदीयं च सकलममुकदेवाय समर्पयामि नमः॥ॐ तत्सदिति ब्रह्मार्पणं भवतु।इति देवदक्षिणकरेजलसमर्पणं कृत्वा कृतांजलिपूर्वकं क्षमापनं पठेत्। अथ क्षमापनम्।आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्॥पूजाभागं न जानामि त्वंगतिःपरमेश्वर॥१॥ मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ॥ यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ २ ॥ यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ॥ तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥ ३ ॥ कर्मणा मनसा वाचा त्वत्तो नान्या गतिर्मम ॥ अंतश्चरासि भूतानामिष्टस्त्वं परमेश्वर ॥ ४ ॥ अन्यथा

१ जपस्थानार्चनस्थानं मालापुस्तकदर्शनम् । स्वभक्तेषु महेशानि दर्शनं नैव कारयेत् ॥ २ यथाशक्ति जपित्वा तं मन्त्रेण विनिवेदयेत् । क्षिपत्तर्धस्य पानीयं देववादक्षिणे करे ॥

शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ॥ तस्मात्कारुण्यभावेन क्षमस्व परमेश्वर ॥ ५ ॥ मातृयोनिसहस्रेषु सहस्रेषु व्रजाम्यहम् ॥ तेषु तेष्वचला भक्तिरच्युतेऽस्तु सदा त्वयि ॥ ६ ॥ गत पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च ॥ आगता सुखसंपत्तिः पुण्याच्च तव दर्शनात् ॥७॥ देवो दाता च भोक्ता च देवरूपमिदं जगत् ॥ देवं जपति सर्वत्र यो देवः सोऽहमेव हि॥८॥क्षमस्व देव देवेश क्षम्यतां भुवनेश्वर॥तव पादांबुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे ॥ ९ ॥ इति कृतांजलिः प्रार्थयित्वा शंखमुद्धृत्य देवोपारि भ्रामयित्वा साधु वासाधु वाकर्म्म यद्यदाचरितं मया ॥ तत्सर्वं कृपया देव गृहाणाराधनं मम ॥ १ ॥ इत्युच्चरन् देवस्य दक्षिणहस्ते किंचिज्जलं दत्त्वा प्राग्वदर्घ्यं देवशिरसि दत्त्वा शंखं यथास्थानं निवेश्य ततो गतसारनैवेद्यं देवस्योच्छिष्टं किंचिदुद्धृत्य तत्तदुच्छिष्टभोजिने विनिवेदयेत्।तद्यथा विष्णोरुच्छिष्टं विष्वक्सेनाय १ शिवस्योच्छिष्टं चंडेश्वराय २ सूर्यस्योच्छिष्टं चंडांशवे ३ गणेशोच्छिष्टं वक्रतुंडाय ४ शक्तेरुच्छिष्टमुच्छिष्टचांडाल्यै इत्युच्छिष्टाधिकारिणे ऐशान्यां दिशि दद्यात्। तच्छेषनैवेद्यं शिरसि धृत्वा नैवेद्यादिकं देवभक्तेषु विभज्य स्वयं भुक्त्वा विसर्जनं कुर्य्यात्। तथा च गच्छ गच्छ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर ॥ पूजाराधनकाले च पुनरागमनाय च ॥ इत्यक्षतान्निक्षिप्य विसर्जनं कृत्वा देवं स्वहृदये स्थापयेत् । तथा च तिष्ठ तिष्ठ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर ॥ यत्र ब्रह्मादयो देवा सर्वे तिष्ठंति मे हृदि॥१॥ इति हृदयकमले हस्तं दत्वा देवं संस्थाप्य मानसोपचारैः संपूज्य स्वात्मान देवरूपं भावयन् यथासुखं विहरेत् । एवमेव विधिना जपं समाप्य जपान्ते तत्तद्दशांशतो नित्यहोमं वा कुर्य्यात् ॥ अथ मखोत्सवप्रारंभः ॥ यागभूमिं संशोध्य षोडशस्तंभसहितं मंडपं सवितानं चतुर्द्वारे तोरणवेष्टितं कृत्वा

---

१ नैवेद्यलक्षणम् । अर्वाग्विसर्ज्जनाद्द्रव्यं नैवेद्यं सर्वमुच्यते । विसर्जिते जगन्नाथे निर्माल्यंभवति क्षणात् ॥ २ नैवेद्यत्यागनिषेधः (आह्निकतत्त्वे) तृषार्ताः पशवो रुद्राः कन्यका च रजस्वला । देवता च स्वनिर्माल्या हंति पुण्यं पुराकृतम् ॥ (रुद्रयामळे विशषः) निवेदितं च यद्द्रव्यं भोक्तव्य तद्विधानतः । तत्र चेद्भुज्यते मोहाद्रोरुमायांति देवता :

३ ऐशान्यादिचतुर्दिक्षु चतुरस्तद्बहिः पुनरैशान्यादिचतुर्दिक्षु चतुरः ऐशानीप्राच्यांतराले एकः पूर्वाग्नेयांतराले एकः आग्नेययाम्यांतराळे एकः याम्यनैर्ऋत्यंतराले एकः नैर्ऋत्यवारुण्यंतराले एकः पश्चिमवायव्यांतराले एकः वायव्योदीच्यंतराळे एकः उत्तरैशान्यंतराले एकः एवं षोडशकदलीस्तम्भान्स्थापयेत । ततः पूर्वे न्यग्रोधपत्रतोरणं दक्षिणे औदुम्बरं पश्चिमे अश्वत्थपत्रतोरणम् उत्तरे प्लक्षपत्रतोरणं बध्नीयात् पूर्वद्वारदक्षिणवामशाखयोः धनुषाकारपताका रक्तं ध्वजं च अग्निकोणे तादृशं दक्षिणद्वारे धूम्रवर्णपताका कृष्णवर्णध्वजं च नैर्ऋत्ये—

दिव्यवस्त्रपट्टदुकूलादिभिर्देवतागारं श्रीगिरिं कृत्वा कदलीस्तंभविराजितं सुमनोहरपुष्पमालोपशोभितं मंडपं विधाय तन्मध्येहोमानुसारतः कुंडं चतुरस्रं प्रयोगोक्तं वा मेखलात्रययुतं योनिसहितं यथोक्तं कुर्यात् । अथवा स्थंडिलं कुर्यात् । कुंडमैशान्यां चंडिकापीठं पूर्वे ग्रहपीठं आग्नेय्यां-मातृकापीठं नैर्ऋत्ये-वास्तुपीठं कुंडात्पश्चिमेस्वस्तिवाचनवेदिकां च हस्तोच्चमानं सर्वं कुर्यात् । यतो यजमानः सुस्नातः कलत्र पुत्रादियुतः शुचिः स्त्रियः वस्त्राभरणगंधपुष्पैरलंकृत्य गालितस्वादुजलेन कलशं संपूर्य तन्मुखे महाफलं प्रतिष्ठाप्य पाणिभ्यां गृहीत्वा मंत्रवाद्यघोषणकर्ताऽभीष्टदेवतां ध्यात्वा यागभूमिमागत्य पश्चिमद्वारमंडपं प्रविशेत् । (अथ शान्तिकलशस्थापनम्) कलशं कुंडात्पश्चिमे तंदुलाष्टदलोपरि संस्थाप्य गंधादिभिः शांतिकलशं संपूज्य तत्र देवता विन्यसेत् । ॐ गं गणपतये नमः १ ॐ दुं दुर्गायै नमः २ ॐ सं सरस्वत्यै नमः ३ ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः ४ ॐ वां वास्तुपुरुषाय नमः ५ एवं पंचदेवताः संपूज्य स्थिरासनं संभाव्य गणपतिपूजनादिकं कुर्यात् । तद्यथा पूर्वोक्तासने कूर्मभूमावुपाविश्य पूर्वोक्तप्रकारेण गणेशादीन् नमस्कृत्य एं आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः १ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा २ ह्रीं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ३ इति तत्त्वत्रयेणाचम्य मूलेन प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य अस्मिन् पुण्याहे अमुकदेवताप्रीतये मया अमुककामनया ब्राह्मणद्वारा कृतजपदशांशेन क्रियमाणामुकदेवतायागसिद्ध्यर्थं होममहं करिष्ये ॥ इत्यक्षतोदकेन संकल्प्य तदंगभूतमादौ गणेशपूजनं भूमिपूजनं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं ब्राह्मणप्रार्थनापूर्वकं करिष्ये । इति संकल्प्य ब्राह्मणं प्रार्थयेत् । तत्र मंत्रः । ब्राह्मणाः संतु मे शस्ताः पापात्पांतु समाहिताः ॥ देवानां चैव दातारस्त्रातारः सर्वदेहिनाम् ॥ १ ॥ इति संप्रार्थ्य ततः गणेशपूजनादि क्रमेण कुर्यात् । ततो देशकालौ संकीर्त्य प्रारिप्सितकर्मणोंगभूतं मंडपशुद्धिं कुंडशुद्धिं च करिष्ये । इति संकल्प्य । ततःस्थापितकलशोदकमन्यपात्रे गृहीत्वा औदुम्बरशमीदूर्वासहितजलेन भूमिं त्रिवारं प्रोक्ष्य तेनोदकेन मंडपं प्रोक्ष्य

—पताकां कृष्णां नीलध्वजं च पश्चिमेद्वारे पताकां श्वेतां पीतध्वजं च वायव्ये तादृशम् उत्तरे श्वेतवर्णपताकां पाद्मभवध्वजं च ऐशान्ये पताकां श्वेतां ध्वजं च ईशानपूर्वमध्ये पताकां ध्वजं च सर्ववर्णिकां पश्चिमनैर्ऋत्ययोर्मध्ये पताकां पंचवर्णं ध्वजं च मंडपमध्ये चित्ररत्नाकारध्वजं पताकां च स्थापयेत् ॥ १ ऐशान्ये चण्डिकापीठं ग्रहपीठं तु पूर्वतः ॥ आग्नेय्यां मातृकापीठं हस्तमुच्चं समंततः । नैर्ऋत्ये वास्तुपीठं तु सर्वयज्ञेष्वयं विधिः ॥ कुंडात्पश्चिमतः कार्या स्वस्तिवाचनवेदिका । यथोक्तोच्छ्रायविस्तारवेदिकानामयं क्रमः ॥

असर्पंतु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः॥ ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥ इति मंत्रेण गौरसर्षपान् सर्वतो मंडपांतः विकिरेत् ॥ "ॐ मूलेनास्त्राय फट्" इत्यस्त्रमंत्रेण तालत्रयं दिग्बंधनं कृत्वा पंचगव्येन मंडपं प्रोक्ष्य कुंडं प्रार्थयेत् तत्र मंत्रः। हे कुंड तव निर्माणं यथामति मया कृतम् ॥ कृपया भव संपूर्णं कुरु सिद्धिं नमोऽस्तुते ॥१॥ इति बद्धांजलिपर्वकं संप्रार्थ्य ततः कृतांजलिः स्वस्तिन इति मंत्रं पठेत्। ततः कुंडं गंधादिना संपूज्य कुंडमेखलास्विष्टदेवतां संचिंत्य संभाव्य कुंकुमाक्षतसिंदूरैः संपज्य मंडपदेवताः पूजयेत्। मंडपेषु ॐ रत्नमंडपाय नमः ॥ १ ॥ दक्षिणशाखायाम् ॐ द्वाराश्रियै नमः ॥ २ ॥ वामशाखायाम्। ॐ गं गणपतये नमः ॥ ३ ॥ मंडपोपरि ॐ तत्त्वमंडपाय नमः ॥ ४ ॥ देहल्याम् ॐ वास्तुपुरुषाय नमः ॥ ५ ॥ मंडपान्तः ॐ ब्रह्मणे नमः ॥ ६ ॥ इति संपज्य दध्योदनमाषभक्तसहितदीपपात्राण्यादाय गंधादिपात्रं जलपात्रं च गृहीत्वा मंडपाद्बहिर्बलिदानं कुर्यात्। तत्र मंत्रः। हे रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः॥ मातरोऽप्युग्ररूपाश्च गणाधिपतयश्च ये ॥ १ ॥ भूचराः खेचराश्चैव तथा चैवांतरिक्षगाः॥ विघ्नभूताश्च ये चान्ये दिग्विदिक्षु समाश्रिताः॥ ते सर्वे प्रीतमनसः प्रतिगृह्णंत्विमं बलिम् ॥२॥ इति मंत्रद्वयेन पर्वादिचतुर्दिक्षु तत्र भूमौ कुशानास्तीर्य भतबलिं दद्यात् ॥ ततः प्राग्द्वारे दक्षिणशाखायाम् ॐ देवेभ्यो नमः गंधाद्युपचारसहितदीपदध्योदन एष माषभक्तबालर्नमः इति सर्वत्र ॥ १ ॥ प्राग्द्वारे वामशाखायाम् ॐ आदित्येभ्यो नमः गंधाद्यु० ॥ २ ॥ ततः याम्यद्वारे दक्षिणशाखायाम् ॐ वसुभ्यो नमः गंधाद्यु० ॥ ३ ॥ याम्यद्वारे वामशाखायाम् ॐ मरुद्भ्यो नमः गधाद्यु० ॥४॥ ततः पश्चिमद्वारे दक्षिणशाखायाम् ॐ अश्विभ्यां देवाभ्यां नमः गंधाद्यु० ॥५॥ पश्चिमद्वारे वामशाखायाम् ॐ सुपर्णेभ्यो नमः गंधाद्युपचा० ॥ ६ ॥ तत उत्तरद्वारे दक्षिणशाखायाम् ॐ पन्नगेभ्यो नमः गंधाद्यु० ॥ ७ ॥ उत्तरद्वारे वामशाखायाम् ॐ ग्रहेभ्यो नमः गधाद्यु० ॥८॥ इति क्षेत्रबलिं दत्त्वा पूर्ववद्दिग्देवीनां बालिदानं ग्रहाणां लोकपालानां दिक्पालानां च यथाक्रमेण

१ मंडपस्य चतुर्दिक्षु दद्याद्भूतबलिं बहिः। बलिं गृह्णंत्विमे देवा आदित्या वसवस्तथा ॥ मारुतश्चाश्विनौ देवाः सुपर्णाः पन्नगा ग्रहाः। द्वौ द्वौ प्रागादि संपूज्य मम यज्ञसुखावहाः। याम्योत्तरविभागेषु चतुर्द्वारैः पृथक्पृथक ॥

एवमेव विधिना बलिं दद्यात् ।तत आचम्य प्राणानायम्य वास्तुपीठसमीपे गत्वावास्तुमंडले वास्तुमूर्तिं प्रतिष्ठाप्य संपूज्य तत्र यथोक्तबलिदानं
कृत्वानंतरं साचार्यब्रह्मऋत्विक् सपवित्रकरो यजमानः सपत्नीकः ब्रह्मादीनां प्रार्थनां कुर्य्यात्। तत्र मंत्रः । ॐ उत्तिष्ठंतु महाभागा अर्चिताः
प्रार्थिता मया॥ऋद्ध्यर्थं कमर्णस्त्वस्य कुरुध्वं मंडपं शुभम् ॥ इति संप्रार्थ्य कुशाक्षतजलमादाय देशकालौ संकीर्त्य श्रीअमुकदेवताप्रीत्यर्थम
मुकदेवतामहोत्सवसिद्ध्यर्थं षोडशस्तंभप्रतिष्ठां तोरणप्रतिष्ठां ध्वजपताकाप्रतिष्ठां च कृत्वा चतुर्दिक्षु द्वारपालसहितकलशसुप्रतिष्ठां कृत्वा प्रति
ष्ठितदेवतानां पूजनं बलिदानं च करिष्ये।इति संकल्प्य मंडपप्रतिष्ठां समारभेत्॥तत्रादौ षोडशस्तंभप्रतिष्ठाप्रयोगः॥ ऐशान्यस्तंभसमीपे गत्वा
तत्र ॐ भूर्भुवःस्वः प्रथमस्तंभे ब्रह्मन्निहागच्छ प्रतिष्ठितो भव इति ब्रह्माणमावाह्य तत्राधिदेवताः पूजयेत् तद्यथा।ॐसावित्र्यै नमः।ॐवास्तुपुरु
षाय नमः।ॐ ब्राह्म्यैनमः।इति संपूज्य स्तंभशिरसिॐ नागमात्रे नमः।इति पूजयेत् ततो ब्रह्मणस्पते त्वमस्येति गृत्समद ऋषिः त्रिष्टुप् छंदः ।
ब्रह्मा देवता पूजने विनियोगः।इति जलं क्षिप्त्वा ॐब्रह्मणे नमः।इति संपूज्यॐ ब्रह्मणे वेदाधिपतये पद्महस्ताय हंसासनसमारूढाय सांगाय
साभरणाय सशक्तिकाय एष चंदनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्तबलिर्नमः ।ब्रह्मा प्रीयतां ब्रह्मा सुप्रीतो वरदो भवतु इति कुशानास्तीर्य
बलिं दद्यात्॥१॥आग्नेयस्तंभसमीपे गत्वा तत्र ॐ भूर्भुवः स्वः द्वितीयस्तंभे विष्णो इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव इत्यावाह्य तत्राधिदेवताः संपू
जयेत् । तद्यथा । ॐलक्ष्म्यै नमः । ॐ आदित्यनंदायै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः।इति संपूज्य स्तंभशिरसिॐनागमात्रे नमः।इति पूजयेत् ।
तत इदं विष्णुरिति मेधातिथिर्ऋषिः।गायत्री छंदः।विष्णुर्देवता। पूजने विनियोगः। इति जलं क्षिप्त्वा ॐ विष्णवे नमः इति विष्णुं संपूज्य
ॐ विष्णवे यज्ञाधिपतये चक्रहस्ताय गरुडासनसमारूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चंदनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्त
बलिर्नमः । विष्णुः प्रीयताम् विष्णुः सुप्रीतो वरदो भवतु । इति बलिं दद्यात् ॥२॥ ततो नैर्ऋत्यस्तंभसमीपे गत्वा तत्र ॐ भूर्भुवःस्वः
तृतीयस्तंभे रुद्र इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव । इत्यावाह्य तत्राधिदेवताः संपूजयेत् । तद्यथा ।ॐगौर्यै नमः।ॐशोभनायै नमः। ॐमाहेश्वर्य्यै
नमः ।इति संपूज्य स्तंभशिरासि ॐनागमात्रे नमः इति पूजयेत्।ततः परिणो रुद्रस्येति गृत्समद ऋषिः।त्रिष्टुप्छंदः।रुद्रो देवता पूजने विनि

योगः।इति जलं क्षिप्त्वा ॐरुद्राय नमः।इति संपूज्य ॐरुद्राय विद्याधिपतये त्रिशूलहस्ताय वृषस्कंधसमधिरूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चंदनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्तबलिर्नमः रुद्रःप्रीयतां रुद्रःसुप्रीतो वरदो भवतु।इति बलिं दद्यात्॥३॥ततो वायव्यस्तंभसमीपे गत्वा ॐ भूर्भुवः स्वः चतुर्थस्तंभे इन्द्र इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव। इत्यावाह्य तत्राधिदेवताः पूजयेत्। तद्यथा। ॐ इन्द्राण्यै नमः। ॐ आनंदायै नमः ॐ विभूत्यै नमः इति संपूज्य स्तंभशिरसि ॐ नागमात्रे नमः।इति पूजयेत्। तत इन्द्रआसांनेतेति अप्रातिरथ ऋषिः। त्रिष्टुप्छंदः। इन्द्रो देवता। पूजने विनियोगः। इति जलं क्षिप्त्वा। ॐ इन्द्राय नमः। इति संपूज्य। ॐ इंद्राय सुराधिपतये वज्रहस्ताय ऐरावतसमाधिरूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चंदनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्तबलिर्नमः इन्द्रः प्रीयतामिंद्रः सुप्रीतो वरदो भवतु। इति बलिं दद्यात् ॥ ४ ॥ पुनस्तद्बहिरीशानकोणस्तंभसमीपे गत्वा ॐ भूर्भुवः स्वः पंचमस्तंभे सूर्य इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव। इत्यावाह्य तत्राधिदेवताः पूजयेत्। ॐ सौर्यै नमः। ॐ भूत्यै नमः। ॐ सावित्र्यै नमः। ॐ मंगलायै नमः। इति संपूज्य स्तंभशिरसि ॐ नागमात्रे नमः इति पूजयेत्। ततः चित्रं देवानामिति कुत्सांगिरस ऋषिः। त्रिष्टुप् छंदः। सूर्यो देवता। पूजने विनियोगः। इति जलं क्षिप्त्वा ॐ भास्कराय नमः। इति संपूज्य। ॐ सूर्याय ग्रहाधिपतये पद्महस्ताय अश्वगृष्टिसमधिरूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चंदनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्तबलिर्नमः।सूर्यः प्रीयताम्।सूर्यः सुप्रीतो वरदो भवतु।इति बलिं दद्यात्॥५॥ ततः ऐशान्यप्राच्यांतरालस्तंभसमीपे गत्वा ॐ भूर्भुवः स्वः षष्ठस्तंभे गणपते इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव इत्यावाह्य तत्राधिदेवताः पूजयेत्। ॐ सिद्ध्यै नमः। ॐ बुद्ध्यै नमः। ॐ विघ्नहारिण्यै नमः। ॐ जयायै नमः। इति संपूज्य स्तंभशिरसि ॐ नागमात्रे नमः। इति पूजयेत्। गणानां त्वेति गृत्समद ऋषिः। गायत्री छंदः। गणपतिर्देवता। पूजने विनियोगः। इति जलं क्षिप्त्वा ॐगणपतयेनमः।इति संपूज्य ॐ गणपतये अंकुशहस्ताय चतुर्दशविद्याप्रदायकाय विघ्नहराय मूषकसमधिरूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चंदनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्तबलिर्नमः। गणपतिः प्रीयताम्। गणपतिः सुप्रीतो वरदो भवतु ॥ ६ ॥ ततः पूर्वाग्नेयांतरा

लस्तंभसमीपे गत्वा ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तमस्तंभे धर्मराज इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव इत्यावाह्य तत्राधिदेवताः संपूजयेत् । ॐ धर्मराज्ञ्यै नमः । ॐ प्राक्संध्यायै नमः । ॐ अंजनायै नमः । ॐ क्रूरायै नमः । इति संपूज्य । स्तंभशिरसि ॐ नागमात्रे नमः । इति पूजयेत् । ततः यमाय त्वेति प्रजापतिर्ऋषिः । गायत्री छंदः । यमो देवता । पूजने विनियोगः । इति जलं क्षिप्त्वा ॐ यमाय नमः । इति संपूज्य ॐ धर्मराजाय प्रेताधिपतये दंडहस्ताय महिषस्कंधसमधिरूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्तबलिर्नमः धर्मराजः प्रीयताम् धर्मराजः सुप्रीतो वरदो भवतु । इति बलिं दद्यात् ॥७॥ ततः आग्नेयकोणस्तंभसमीपे गत्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टमस्तंभे नागराज इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव इत्यावाह्य तत्राधिदेवताः पूजयेत् । ॐ मध्यमसंध्यायै नमः । ॐ पद्मिन्यै नमः । ॐ महापद्मिन्यै नमः ॐ अंगनायै नमः । इति संपूज्य । स्तंभशिरसि ॐ नागमात्रे नमः इति पूजयेत् । ततः नमोऽस्तु सर्पेभ्य इति प्रजापतिर्ऋषिः । अनुष्टुप्छन्दः। नागराजो देवता । पूजने विनियोगः । इति जलं क्षिप्त्वा ॐ नागराजेभ्यो नमः इति संपूज्य ॐ नागाधिपतये नागकन्यासमन्विताय धरापृष्ठिसमाधिरूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चंदनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्तबलिर्नमः नागराजः प्रीयतां नागराजः सुप्रीतो वरदो भवतु ॥ ८ ॥ ततः आग्नेययाम्यांतरालस्तंभसमीपे गत्वा ॐ भूर्भुवः स्वः नवमस्तंभे स्कंद इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव । इत्यावाह्य तत्राधिदेवताः पूजयेत् । ॐ स्कंदप्रियायै नमः । ॐ पश्चिमसन्ध्यायै नमः । इति संपूज्य स्तंभशिरसि ॐ नागमात्रे नमः । इति पूजयेत् । ततः यदक्रंद इति भार्गवऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः।स्कंदो देवता। पूजने विनियोगः।इति जलं क्षिप्त्वा ॐ स्कंदाय नमः ।इति संपूज्यॐस्कंदाय सेनाधिपतये शक्तिहस्ताय मयूरसेनासमधिरूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एषचंदनाक्षतपुष्पदध्योदनमाषभक्तबलिर्नमः।स्कन्दः प्रीयताम्।स्कंदः सुप्रीतो वरदोभवतु।इतिबलिं दद्यात्॥९॥ततो याम्यनैर्ऋत्यांतरालस्तम्भसमीपे गत्वा ॐ भूर्भुवः स्वः दशमस्तंभे वायो इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव । इत्यावाह्य तत्राधिदेवताः पूजयेत् ॐ वायुप्रियायै वायव्यै नमः । ॐ कौमार्य्यै नमः इति संपूज्य स्तंभशिरसि ॐ नागमात्रे नमः । इति पजयेत् । ततः वायो येते इति गृत्समद ऋषिः। गायत्रीछन्दः। वायु

देवता। पूजने विनियोगः ।इति जलं क्षिप्त्वा ॐ वायवे नमः। इति संपूज्य ॐ वायवे प्राणाधितये ध्वजहस्ताय मृगपृष्ठिसमाधिरूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चंदनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्तबलिर्नमः। वायुः प्रीयतां वायुः सुप्रीतो वरदो भवतु। इति बलिं दद्यात् ॥ १० ॥ ततो नैर्ऋत्यकोणस्तंभसमीपे गत्वा ॐ भूर्भुवः स्वः एकादशस्तंभे सोम इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव इत्यावाह्य तत्राधिदेवताः पूजयेत्। ॐ सोमप्रियायै सौम्यै नमः ॐ अमृतकलायै नमः। ॐ विजयायै नमः। इति संपूज्य स्तंभशिरसि ॐ नागमात्रे नमः इति पूजयेत्। ततः वयःसोमेति बंधुर्ऋषिः। गायत्री छन्दः। सोमो देवता। पूजने विनियोगः। इति जलं क्षिप्त्वा ॐ सोमाय नमः इति संपज्य ॐ सोमाय नक्षत्राधिपतये गदाहस्ताय मृगवाहनाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदन माषभक्तबलिर्नमः। सोमः प्रीयताम् सोमः सुप्रीतो वरदो भवतु। इति बलिं दद्यात् ॥११॥ ततो निर्ऋतिवरुणांतरालस्तंभसमीपे गत्वा ॐ भूर्भुवः स्वः द्वादशस्तंभे वरुण इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव इत्यावाह्य तत्राधिदेवताः पूजयेत्। ॐ वरुणप्रियायै वारुण्यै नमः ॐ वृहस्पत्यै नमः। इति संपूज्य स्तंभशिरसि। ॐ नागमात्रे नमः। इति पूजयेत्। ततः तत्वायामीति शुनःशेप ऋषिः। त्रिष्टुप्छन्दः। वरुणो देवता। पूजने विनियोगः। इति जलं क्षिप्त्वा ॐ वरुणाय नमः। इति संपूज्य ॐ वरुणाय जलाधिपतये पाशहस्ताय मकरवाहनसमधिरूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्तबलिर्नमः।वरुणः प्रीयताम् वरुणः सुप्रीतो वरदो भवतु। इति बलिं दद्यात् ॥ १२ ॥ ततः पश्चिमवायव्यांतरालस्तंभसमीपे गत्वा ॐ भूर्भुवः स्वः त्रयोदशस्तंभे वसव इहागच्छत प्रतिष्ठिता भवत इत्यावाह्य तत्राधिदेवताः पूजयेत्। ॐ सिद्ध्यमृतायै नमः।वितताये नमः। विभूत्यै नमः इति संपूज्य स्तंभशिरसि ॐ नागमात्रे नमः। इति पूजयेत्। ततो निवेशन इत्यग्निर्ऋषिः। त्रिष्टुप्छंदः वसवो देवताः पजने विनियोगः। इति जलं क्षिप्त्वा ॐ वसुभ्यो नमः। इति संपूज्य ॐ वसुभ्यः उत्कृष्टपराक्रमेभ्यः अष्टसिद्ध्यधिपातिभ्यः शरहस्तेभ्यः सांगेभ्यः साभरणेभ्यः सशक्तिभ्यः एष चंदनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः। वसवः प्रीयंताम् वसवः सुप्रीता वरदा भवंतु

इति बलिं दद्यात् ॥ १३ ॥ ततो वायुकोणस्तंभसमीपे गत्वा ॐ भूर्भुवः स्वः चतुर्दशस्तंभे बलदेव इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव इत्यावाह्य तत्राधिदेवताः पूजयेत्। ॐ तत्प्रियायै नमः। ॐ अदित्यै नमः ॐ लघिम्न्यै नमः। ॐ सिनीवाल्यै नमः इति संपूज्य स्तंभशिरसि ॐ नागमात्रे नमः। इति पूजयेत्। ततः बण्महानिति जमदग्निऋषिः। बृहती छंदः। बलदेवो देवता। पूजने विनियोगः। इति जलं क्षिप्त्वा ॐ बलदेवाय नमः। इति संपूज्य ॐ बलदेवाय रेवत्यधिपतये लांगलहस्ताय रत्नांकितरथयुक्ताश्वसमधिरूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चंदनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनसहितमाषभक्तबलिर्नमः। बलदेवः प्रयितां बलदेवः सुप्रीतो वरदो भवतु इति बलिं दद्यात् ॥ १४ ॥ ततः वायव्योदीच्यांतरालस्तंभसमीपे गत्वा ॐ भुर्भुवः स्वः पंचदशस्तंभे बृहस्पते इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव इत्यावाह्य तत्राधिदेवताः पूजयेत्। ॐ पौर्णमास्यै नमः। ॐ सावित्र्यै नमः इति संपूज्य स्तंभशिरसि ॐ नागमात्रे नमः इति पूजयेत्। ततः बृहस्पत इति गृत्समद ऋषिः। त्रिष्टुप् छंदः। बृहस्पतिर्देवता पूजने विनियोगः। इति जलं क्षिप्त्वा ॐ बृहस्पतये नमः इति संपूज्य ॐ बृहस्पतये सर्वदेवेंद्राधिपतये पुस्तकस्रुवस्रुवहस्ताय हंसपृष्ठिसमधिरूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चंदनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनसाहितमाषभक्तबलिर्नमः बृहस्पतिः प्रीयतां बृहस्पतिः सुप्रीतो वरदो भवतु। इति बलिं दद्यात् ॥ १५ ॥ अथोदीच्यैशान्यांतरालस्तंभसमीपे गत्वा ॐ भूर्भुवः स्वः षोडशस्तंभे विश्वकर्मान्निहागच्छ प्रतिष्ठितो भव इत्यावाह्य तत्राधिदेवताः पूजयेत्। ॐ गायत्र्यै नमः ॐ वास्तव्यै नमः इति ॐ संपूज्य स्तंभशिरसि ॐ नागमात्रं नमः। इति पूजयेत्। ततः विश्वकर्मन्हाविषेति विश्वकर्मा भौवन ऋषिः। त्रिष्टुप् छंदः। विश्वकर्मा देवता पूजने विनियोगः। इति जलं क्षिप्त्वा ॐ विश्वकर्मणे नमः इति संपूज्य ॐ विश्वकर्मणे विश्वाधिपतये दंडहस्ताय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चंदनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनसहितमाषभक्तबलिर्नमः विश्वकर्मा प्रीयतां विश्वकर्मा सुप्रीतो वरदो भवतु इति बलिं दद्यात् ॥ १६ ॥ इति षोडशस्तंभप्रतिष्ठाप्रयोगः ॥ अथ तोरणध्वजापताकाप्रतिष्ठापूजनम् ॥ पूर्वद्वारे गत्वा "सुदृढं तोरणं पूर्वे न्यग्रोधं कांचनप्रभम् ॥ रक्षार्थं चैव वध्नीयाद्देवपूजाख्यकर्मणि ॥" इति

न्यग्रोधपत्रतोरणं बद्ध्वा ॐ भूर्भुवः स्वः पूर्वद्वारे सुदृढप्रीतये इमं न्यग्रोधतोरणं चंदनाक्षतपुष्पधूपदीपघृता क्ताक्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः सुदृढः प्रीयतां सुदृढः सुप्रीतो वरदो भवतु। इति बलिं दत्त्वा तत्रैव दक्षिणवामशाखयोर्ध्वजापताका उच्छ्रयामि स्थापयामि नमः। इति ध्वजापताकां संस्थाप्य तत्र देशे " धनुःप्रभां पताकां च सिंदूरारुणभं ध्वजम् ॥ स्थापयामि महेंद्राय शक्तियुक्ताय वज्रिणे" ॐ भूर्भुवः स्वः ध्वजापताकयोर्महेंद्र इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव इति महेंद्रमावाह्य ॐ भूर्भुवः स्वः महेंद्राय ऐरावतसहिताय इमं गंधाद्युपचारसहित क्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः। महेंद्रः प्रीयतां महेंद्रः सुप्रीतो वरदो भवतु। इति बलिं दत्त्वा तत्राधिदेवताः पूजयेत्। तद्यथा। पूर्वद्वारपार्श्वे ॐ कादंबरि गजारूढे वज्रहस्ते एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाक्षतपुष्पधूपदीपसहितामिमं क्षीरान्नबलिं गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात्। तत्र द्वारदक्षिणांसे "दंडकमंडलुं पश्चादक्षसूत्रमथाभयम्॥ बिभ्रतीं कनकच्छायां ब्राह्मीं बालां च कृष्णभाम्॥" इति ब्राह्मीं ध्यात्वा ह्रीं ऐं ब्राह्मि एह्येह्यागच्छागच्छ इमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा। इति बलिं दद्यात्। तत्र द्वारवामांसे ह्रीं ऐं महेश्वरि एह्येह्यागच्छागछ गंधाक्षतपुष्पधूपदीपसहितामिमं क्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा। इति बलिं दद्यात्। तत्र द्वारे दक्षिणवामशाखयोः कलशद्वयं संस्थाप्य रत्नप्रक्षेपं कृत्वा द्वारस्थितकलशद्वये ॐ गंगायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। इति संपूज्य। पूर्वद्वारे शांतिसूक्तजपार्थं सर्वविघ्ननिवारणार्थं च त्वामहं वृणे। इति यज्ञसूत्रं बद्ध्वा भो कलश एह्येहि गंधाद्युपचारसहितामिमं क्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात्। तत्रैव पुनर्दक्षिणांसे "आवाहयाम्यहं धात्रे निधीनां पतये प्रभो। इहागत्य बलिं गृह्ण यज्ञविघ्नं निवारय ॥ इत्यावाह्य ॐ भूर्भुवः स्वः धातर् एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा। इति बलिं दद्यात्। ततो तर से "विकृतिः प्रकृतिर्यस्य विधाता विश्वकृत्प्रभो ॥ स मे भवतु सुप्रीतो यज्ञविघ्नं निवारय ॥" इति ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः विधात एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात्। तत्र पुनर्द्वारस्य दक्षिणभागे "वेदीमध्ये ललितकमले कर्णिकायांतरस्थः सप्ताश्वोऽर्कोऽरुणरुचिरवपुः सप्तरज्जुर्द्विबाहुः॥ गोत्रेमेऽस्मि

न्बहुविधगुणः काश्यपाख्ये प्रसूतः कालिंगाख्याविषयजनितः प्राङ्मुखः पद्महस्तः ॥" इति सूर्यं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्य अधिदेवता प्रत्यधिदेवतासहित एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात् । तत्र द्वारस्य वामभागे "प्राच्यां भृगुभोजकटे प्रजातः स भार्गवः पूर्वमुखः सिताभः ॥ स पंचकोणे स रथाधिरूढो दंडाक्षमालावरदांकपत्रः ॥" इति शुक्रं ध्यात्वाॐभूर्भुवःस्वः शुक्र अधिप्रत्यधिदेवतासहित एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात् । तत्र द्वारतः दक्षिणभागे।"पानपात्रं च खड्गं च अक्षमालां कमंडलुम्॥त्रिनेत्रं वरदं शांतं कुमारं च दिगंवरम्॥"इति दिगंवरं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः दिगंबर एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात् । दूरतः उत्तरभागे ॐ "ब्रह्माणीशक्तिसंयुक्तं हंसवाहनभूषितम् । श्वेतवर्णमहं वंदे असितांगं च भैरवम् ॥"इत्यसितांगभैरवं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः असितांगभैरव एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा इति बलिं दत्वा चिच्छक्त्यादिदेवताः पूजयेत् । तद्यथा । भैरवसमीपे ॐ चिच्छक्त्यै नमः । ॐ मायाशक्त्यै नमः । द्वारपार्श्वे ॐ शंखनिधये नमः । द्वारपुरतः ॐ पद्मनिधये नमः । ऊर्ध्वे ॐ श्रियै नमः । अधो देहल्याम् ॐ वास्तुपुरुषाय नमः इति संपूज्य प्रणमेत् । इति पूर्वद्वारे तोरणध्वजपताकादिप्रतिष्ठापूजनम् ॥ १ ॥ आग्नेयकोणे गत्वा प्राणानायम्य ॐ उं उल्के अजारूढे शक्तिहस्ते एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा । इति बलिं दत्त्वा"पताकामग्नये रक्तां ध्वजं चैवाग्निसन्निभम्॥स्वाहायुक्ताय देवाय स्थापयामि हविर्भुजे॥"अग्निप्रीत्यर्थं रक्तध्वजपताकां च स्थापयामि । इति पताकां रक्तं ध्वजं च पंचहस्तदंडे उच्छ्रयेत् तत्रैव ॐ अग्नये नमः इत्यग्निं संपूज्य ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये पुंडरीकादिग्गजसहिताय अयं गंधाद्युपचारसहितः क्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः । अग्निः प्रीयतां अग्निः सुप्रीतो वरदो भवतु इति बलिं दत्त्वा तत्राधिदेवताः पूजयेत् । तद्यथा । प्राङ्मुखचतुरस्रपीठे"अनादिपुरुषो रक्तः सर्वदेवमयो हि यः । धूमकेत रणाध्यक्षस्तस्मै नित्यं नमोनमः ॥" इति सोमं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः

प्राङ्मुखचतुरस्रपीठे यमुनातीरोद्भव आत्रेयगोत्र सोम अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात् । तत्रैव "ॐ परश्वायुधधर्तारं खड्गपात्रधरं तथा ॥ त्रिनेत्रं वरदं शांतं कुमारं च दिगंबरम् ॥" इति दिगंबरं ध्यात्वा कुमार दिगंबर एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहित एष बलिर्नमः कुमारदिगंबरः प्रीयताम् । कुमारदिगंबरः सुप्रीतो वरदो भवतु । इति बलिं दद्यात् । ततः " माहेशीशक्तिसंयुक्तं वृषवाहनभूषितम् ॥ शुद्धस्फटिकसंकाशं वंदेऽहं रुरुभैरवम्" इति रुरुभैरवं ध्यात्वा ॐ रुरुभैरवाय अयं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः । भैरवः प्रीयतां भैरवः सुप्रीतो वरदो भवतु । इत्यग्निकोणप्रतिष्ठापूजनम् ॥ २ ॥ ततः दक्षिणद्वारे गत्वा "औदुंबरं च विकटं याम्ये तोरणमुत्तमम् । रक्षार्थं चैव बध्नामि देवपूजाख्यकर्मणि॥" इति औदुंबरपत्रतोरणं बद्ध्वा ॐ भूर्भुवः स्वः दक्षिणद्वारे विकटप्रीतये अयमौदुंबरतोरणचंदनाक्षतपुष्पधूपदीप घृताक्तक्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः।विकटःप्रीयतांविकटः सुप्रीतो वरदो भवतु।इति बलिं दत्त्वा तत्रैव दक्षिणवामशाखयोःध्वजपताके उच्छ्रयामि स्थापयामि नमः।इति ध्वजपताकाः संस्थाप्य तत्र देशे"धूम्रवर्णपताकां च कृष्णवर्णध्वजं तथा।।यमाय स्थापयामीति निहंत्रे कर्मसाक्षिणे॥"ध्वजपताकयोर्यम इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव इति यममावाह्य ॐभूर्भुवः स्वः यमाय वामनदिग्गजसहिताय अयं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः।यमःप्रीयतांयमःसुप्रीतो वरदो भवतु इति बलिंदत्त्वा तत्राधिदेवताः पूजयेत्।तद्यथा दक्षिणद्वारपार्श्वेॐकंकरालि महिषारूढे दंडहस्ते एह्येहि इमं गंधाक्षतपुष्पधूपदीपसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा । इति बलिं दद्यात् । तत्र द्वारदक्षिणांसे "ॐ अंकुशं दंडखट्वांगौ पाशं च दधतीं करैः॥ध्येयां बंधूकसंकाशां कौमारींकामदायिनीम्॥" इति कौमारीं ध्यात्वा ॐह्रीं क्लीं कौमारि एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहितामिमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा ।इति बलिं दद्यात्।तत्र द्वारवामांसेॐ ह्रीं श्रीं वैष्णवि एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहितामिमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात्।तत्र द्वारे दक्षिणवामशाखयोः कलशद्वयं संस्थाप्य रत्नप्रक्षेपं कृत्वा द्वारस्थितकलशद्वये ॐ गोदायै नमः ।ॐ कृष्णायै नमः । इति संपूज्य । दक्षिणद्वारे

शांतिसूक्तजपार्थं सर्वविघ्ननिवारणार्थं त्वामहं वृणे । इति यज्ञसूत्रं बद्ध्वा भो कलश एह्येहि गंधाद्युपचारसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा । इति बलिं दद्यात् । तत्रैव पुनर्दक्षिणांसे "आवाहयाम्यहं धात्रे निधीनां पतये प्रभो॥इहागत्य गृह्ण बलिं यज्ञविघ्न निवारय" इत्यावाह्य ॐ भूर्भुवः स्वः धातर् एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात् । तत उत्तरांसे "विकृतिः प्रकृतिर्यस्य विधाता विश्वकृत्प्रभो॥स मे भवतु सुप्रीतो यज्ञविघ्नं निवारय॥" इति ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः विधातर् एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा। इति बलिं दद्यात्। तत्र द्वारस्य पुनर्दक्षिणभागे वेदीमध्ये त्रिकोणे त्र्यंगुलमंडले "याम्ये गदाशक्तिगदांश्च शूरो वरप्रदो याम्यमुखोऽतिरक्तः॥ कुजोऽस्त्यवंतीविषये त्रिकोणे तस्मिन्भरद्वाजकुले प्रसूतः॥" इति दक्षिणामुखं कुजं ध्यात्वा ॐभूर्भुवः स्वः अवंतीसमुद्भव भारद्वाजगोत्र दक्षिणमुख भौम अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा । इति बलिं दद्यात् ततः द्वारतो दक्षिणभागे "धनुर्बाणधरं देवं खड्गपात्रधरं तथा ॥ त्रिनेत्रं वरदं शांतं कुमारं च दिगंबरम् ॥" इति दिगंबरम् ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा । इति बलिं दद्यात् । द्वारत उत्तर भागे "ॐ कौमारीशक्तिसंयुक्तं शिखिवाहनभूषितम् ॥गौरवर्णधरं देवं वंदे श्रीचंडभैरवम्॥" इति चण्डभैरवं ध्यात्वा ॐभूर्भुवःस्वःचंडभैरव एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा । इति बलिं दत्त्वा तत्रैव चिच्छक्त्यादिदेवताः पूजयेत् । तद्यथा । भैरवसमीपे ॐचिच्छक्त्यै नमः। ॐ मायाशक्त्यैनमः । द्वारपार्श्वे ॐशंखनिधये नमः। द्वारपुरतःॐपद्मनिधये नमः।ऊर्ध्वे ॐ श्रियै नमः । अधः देहल्याम् ॐ वास्तुपुरुषाय नमः।इति संपूज्य प्रणमेत्।इति [illegible]क्षिणद्वारप्रतिष्ठापूजनम्॥३ ॥ततोनैर्ऋतीं दिशमागत्य प्राणानायम्य ॐरक्ताक्षि प्रेतारूढे खड्गहस्ते एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचार[illegible]सहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा । इति बलिं दत्त्वा "पताकां निर्ऋतीशाय कृष्णनीलमयं ध्वजम् ॥ स्थापयामि स[illegible] रक्षोगणाधीशाय चैव हि ॥" निर्ऋतिप्रीत्यर्थं कृष्ण

नीलध्वजपताकाः स्थापयामि । इति कृष्णं ध्वजं नीलपताकां च पंचहस्तदंडे उच्छ्रयेत्। तत्रैव ॐनिर्ऋतये नमः। इति निर्ऋतिं संपूज्य ॐ भूर्भुवःस्वः निर्ऋतये कुमुदादिग्गजसहिताय अयं गंधाद्युपचारसहितः क्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः निर्ऋतिः प्रीयतां निर्ऋतिः सुप्रीतो वरदो भवतु । इति बलिं दत्त्वा तत्राधिदेवताः पूजयेत्।तद्यथा।द्वारदक्षिणतो वेदीमध्ये शूर्पाकारमंडले "पैठीनसो बर्बरदेशजातः शूर्पासनः सिंहगमः सुधूम्रः ॥ याम्याननो रक्षगणस्तु मह्यं वरप्रदः शूलसचर्मखड्गः ॥" इति राहुं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः याम्यमुख राठिनापुरोद्भव पैठीनसगोत्र राहो अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित शूर्पाकारपीठे एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात् । तत्रैव "शंखचक्रधरं देवं पानपात्रं गदाधरम् ॥ त्रिनेत्रं वरदं शांतं कुमारं च दिगंबरम्॥"इति दिगंबरं ध्यात्वा कुमार दिगंबर एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहित एष बलिर्नमः। कुमारदिगंबरःप्रीयतां कुमारदिगंबरःसुप्रीतो वरदो भवतु । इति बलिं दद्यात् । तत्रैव "वैष्णवीशक्तिसंयुक्तं गरुडासनभूषितम् ॥ नीलवर्णधरं देवं वंदे श्रीक्रोधभैरवम् ॥" इति क्रोधभैरवं ध्यात्वा ॐ क्रोधभैरव अयं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः । भैरवः प्रीयतां भैरवः सुप्रीतो वरदो भवतु । इति बलिं दद्यात् । इति निर्ऋतिकोणप्रतिष्ठापूजनम् ॥ ४ ॥ ततः पश्चिमद्वारे गत्वा "अश्वत्थं पश्चिमे भीमे तोरणं रत्नसान्निभम् ॥ रक्षार्थं चैव बध्नामि देवपूजाख्यकर्मणि ॥" इत्यश्वत्थतोरणं बद्ध्वा ॐ भूर्भुवः स्वः पश्चिमद्वारे भीमप्रीतये अयमश्वत्थतोरणचन्दनाक्षतपुष्प धूपदीपघृताक्तक्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः । भीमः प्रीयतां भीमः सुप्रीतो वरदो भवतु । इति बलिं दद्यात् । तत्रैव दक्षिणवाम शाखयोः ध्वजपताका उच्छ्रयामि स्थापयामि नमः।इति ध्वजपताकाः संस्थाप्य तत्र देशे "श्वेतवर्णपताकां च ध्वजं पीतमयं तथा॥वरुणाय जलेशाय स्थापयामि शुभाय मे ॥ " ॐ भूर्भुवः स्वः ध्वजपातकयोर्वरुण इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव इति वरुणमावाह्य ॐ भूर्भुवः स्वः अयं गंधाद्युपचारक्षीरान्नसहितमाषभक्तबलिर्नमः।वरुणःप्रीयतां वरुणःसुप्रीतो वरदो भवतु इति बलिं दत्त्वा तत्राधिदेवताः पूजयेत् पश्चिमद्वारे वामांसे ॐकौबेरि श्वेताश्वारूढे पाशहस्ते एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाक्षतपुष्पधूपदीपसहितक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा इति

बलिं दद्यात्। तत्र द्वारदक्षिणांसे "ॐमुसलं करवालं च खेटकं दधती हलम् ॥ करैश्चतुर्भिर्वाराही ध्येया कालघनच्छविः॥" इति वाराहीं ध्यात्वा ह्रीं हूं वाराहि एह्येह्यागच्छागच्छ इमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात्। तत्र द्वारदेशे दक्षिणवामपार्श्वयोः कलशद्वयं संस्थाप्य रत्नप्रक्षेपं कृत्वा द्वारस्थितकलशद्वये ॐरेवायै नमः। ॐ ताप्यै नमः। इति संपूज्य पश्चिमद्वारे शांतिसूक्तजपार्थं सर्वविघ्ननिवारणार्थंत्वामहं वृणे। इति यज्ञसूत्रं बद्ध्वा भोकलश एह्येहि गंधाद्युपचारसहितामिमंक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरुस्वाहा इति बलिंदद्यात्। तत्रैव पुनर्दक्षिणांसे "सामवेदस्तु पिंगाक्षो जाग्रतःशक्रदैवतः॥भारद्वाजस्तु विप्रेंद्र ऋत्विक्त्वं मे मखे भव॥" इति ध्यात्वाॐभूर्भुवःस्वः शक्र एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरुस्वाहा।इतिबलिंदद्यात्।ततःउत्तरांसे "वरुणोधवलोविष्णुः पुरुषो निर्मलाननः।पाशहस्तो महाभीमस्तस्मै नित्यं नमोनमः॥" इति वरुणं ध्यात्वाॐभूर्भुवःस्वःवरुणएह्येह्यागच्छागच्छइमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात्।तत्रद्वारस्य पुनर्दक्षिणभागे वेदीमध्ये चापाकारमंडले "चापासनो गृध्रमयः सुनीलःप्रत्यङ्मुखःकाश्यपजःप्रतीच्याम्॥समूलचापेषुवरप्रदश्च सौराष्ट्रदेशप्रभवश्च सौरिः॥" इति शनैश्चरं ध्यात्वाॐभूर्भुवःस्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपगोत्रशनैश्चर अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितंकुरुकुरु स्वाहा॥इति बलिं दद्यात्।तत्र द्वारतःदक्षिणभागे "खट्वांगं मुशलं चैव करवालं च पात्रकम्॥त्रिनेत्रं वरदं भीमं कुमारं च दिगंबरम्॥" इति दिगंबरं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः कुमार दिगंबर एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात्। उत्तरभागे "हेमवर्णधरं देवं तथा महिषवाहनम् ॥ वाराहीशक्तिसंयुक्तं वंदे उन्मत्तभैरवम् ॥" इति उन्मत्तभैरवं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः उन्मत्तभैरव एह्येह्यागच्छागच्छ इमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा। इति बलिं दत्वा चिच्छत्त्यादिदेवताः पूजयेत्। तद्यथा। भैरवसमीपे ॐ चिच्छत्त्यै नमः। ॐ मायाशक्त्यै नमः। द्वारपार्श्वे ॐ शंखनिधये नमः। द्वारपुरतःॐ पद्मनिधये नमः। ऊर्ध्वे ॐ श्रियै नमः। अधो देहल्याम् ॐ वास्तुपुरुषाय नमः।इति संपूज्य प्रणमेत्। इति पश्चिमद्वारप्रतिष्ठापूजनम् ॥

॥ ५ ॥ ततः वायव्यकोणे गत्वा प्राणानायम्य ॐ हं हारितमृगवाहिनि अंकुशहस्ते एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसाहितक्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा । इति बलिं दत्त्वा "पताकां वायवे श्वेतां ध्वजं पीतमयं तथा॥स्थापयाम्यनु च क्षुद्रप्राणादायं सदैव हि॥" वायुप्रीत्यर्थं श्वेतपताकां पीतध्वजं च स्थापयामि॥इति पताकां श्वेतां पीतं ध्वजं च पंचहस्तदंडे उच्छ्रयेत् । तत्रैव "वायुमाकाशगं चैव पवनं वेगसद्गतिम् ॥ आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन्पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥" इति वायुमावाह्य ॐ वायवे नमः इति वायुं संपूज्य । ॐ भूर्भुवःस्वः वायवे अयं गंधाद्युपचारसघृतक्षीरान्नसहितमाषभक्तबलिर्नमः । वायुः प्रीयतां वायुः सुप्रीतो वरदो भवतु । इति बलिं दत्त्वा तत्राधि देवताः पूजयेत् । तद्यथा । वायुमुखध्वजाकारमंडले "ध्वजासनो जैमिनिगोत्रजातोऽतर्वेद्यधीशोऽथ विचित्रवर्णः॥ याम्यैर्वृतो वायुदिगीश खङ्गचर्मा सुराचामशतो ह्यनेकः ॥" इति केतुं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अंतर्वेदिसमुद्भव जैमिनिसगोत्र केतो अधिदेवताप्रत्यधि देवतासहित एह्येह्यागच्छागच्छ अयं गंधाद्युपचारसाहितघृतक्षीरान्नमाषभक्तबलिर्नमः । केतुः प्रीयतां केतुः सुप्रीतो वरदो भवतु। इति बलिं दद्यात् । तत्रैव ॐ कुमार दिगंबर एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहित एषमाषभक्तबलिर्नमः कुमारदिगंबरः प्रीयतां कुमारदिगंबरः सुप्रीतो वरदो भवतु । इति बलिं दद्यात् । ततो कपालभैरव एह्येह्यागच्छगच्छ गंधाद्युपचारसहित एष माषभक्तबलिर्नमः कपालभैरवः प्रीयतां कपालभैरवः सुप्रीतो वरदो भवतु । इति बलिं दद्यात् । इति वायुकोणे प्रतिष्ठापूजनम् ॥ ६ ॥ ततः उत्तरद्वारसमीपे गत्वा आचम्य प्राणानायम्य "सुप्रभं तोरणं प्लक्षमुत्तरे च शशिप्रभम् ॥ रक्षार्थं चैव बध्नामि देवपूजाख्यकर्मणि॥" इति प्लक्षपत्रतोरणं बद्ध्वा ॐ भूर्भुवःस्वः उत्तरद्वारे सुप्रभतोरणाय सुप्रभप्रीतये अयं प्लक्षतोरणचंदनाक्षतपुष्पधूपदीपघृताक्तक्षीरान्नयुक्तमाष भक्तबलिर्नमः । सुप्रभः प्रीयतां सुप्रभः सुप्रीतो वरदो भवतु।इति बलिं दत्त्वा दक्षिणवामशाखयोः ध्वजंपताकामुच्छ्रयामि स्थापयामि नमः इति ध्वजंपताकां च संस्थाप्य तत्र देशे "श्वेतवर्णपताकां च पद्माभवध्वजं तथा ॥ सोमाय स्थापयाम्येव धनधान्यसमृद्धये॥" एवं कुबेर प्रीत्यर्थं हरितध्वजं हरितपताकां च संस्थाप्य कुबेर इहागच्छ इह तिष्ठ इतिकुबेरमावाह्यॐभूर्भुवः स्वःकुबेरायसार्वभौमदिग्गजसहिताय

अयं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नमाषभक्तबलिर्नमः। कुबेरः प्रीयतां कुबेरः सुप्रीतो वरदो भवतु । इति बलिं दत्त्वा तत्राधिदेवताः पूजयेत्, तद्यथा।उत्तरद्वारपार्श्वे ॐ यं यक्षिणि सिंहवाहिनि गदाहस्ते एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा । इति बलिं दद्यात् । तत्र द्वारदक्षिणांसे "अक्षस्रजं बीजपरं कपालं पंकजं करैः ॥ वहंतीं हेमसंकाशां महालक्ष्मीं स्मरे समाम् ॥" इति नारसिंहीं ध्यात्वा ॐ ह्रीं क्ष्रौं नारसिंहि एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाक्षतपुष्पधूपदीपसहितक्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा । इति बलिं दद्यात्। तत्र वामांसे ॐ ह्रीं ख्ये चामुंडे एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा । इति बलिं दद्यात् । तत्र द्वारदक्षिणवामशाखयोः कलशद्वयं संस्थाप्य रत्नप्रक्षेपं कृत्वा द्वारस्थितकलशद्वये ॐ वाण्यै नमः । ॐ वेण्यै नमःइति संपूज्य"कर्मनिष्ठौ तपोयुक्तौ ब्राह्मणौ वेदपारगौ॥सरस्वतीसूक्तपाठार्थं द्वारे भवतमृत्विजौ॥ "अथर्ववेदऋत्विजौ उत्तरद्वारे शांतिसूक्तजपार्थत्वेनाऽहं वृणे । इति यज्ञसूत्रं बद्ध्वा भो कलश एह्येहि गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात्।तत्रैव पुनर्दक्षिणांसे " बृहन्नेत्रोऽथर्ववेदोऽनुष्टुभो रुद्रदैवतः॥वैशंपायन विप्रेन्द्र ऋत्विक् त्वं मे मखे भव॥" ॐ भूर्भुवःस्वः वैशंपायन एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात् । तत उत्तरांसे "विकृतिः प्रकृतिर्यस्य विधाता विश्वकृत्प्रभो ॥ स मे भवतु सुप्रीतो यज्ञविघ्नं निवारय॥" इति ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः विधातरेह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा । इति बलिं दद्यात् । तत्र द्वारस्य पुनर्दक्षिणांसे वेदीमध्ये चतुरस्रपीठे "सौम्येऽतिदीर्घे चतुरस्रपीठे रथेंऽगिराः सौम्यमुखः सुपीतः॥ दंडाक्षमालांबुजपात्रहस्तः सिंध्वाख्यदेशो वरदः सुजीवः॥"इति बृहस्पतिं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः सिंधुदेशोद्भव अंगिरसगोत्र बृहस्पते अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति बलिं दद्यात् । तत्र द्वारतः दक्षिणभागे "शूलायुधं चंडमत्तं शक्तिं चैव च पात्रकम्॥त्रिनेत्रं वरदं शांतं कुमारं च दिगंबरम्॥"इति शांतकुमारदिगंबरं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवःस्वःशांतकुमारदिगं

वर एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाक्षतपुष्पधूपदीपसहितक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा । इति बलिं दद्यात् । द्वारत उत्तरभागे "चामुंडाशक्तिसंयुक्तं प्रेतवाहनभूषितम् ॥ रक्तवर्णधरं देवं वंदे भीषणभैरवम् ॥इति भैरवं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः भीषणभैरव एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहितमाषभक्तबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा । इति बलिं दत्त्वा चिच्छक्त्यादिदेवताः पजयेत् । तद्यथा भैरवसमीपे ॐ चिच्छक्त्यै नमः । ॐ मायाशक्त्यै नमः । द्वारपार्श्वे ॐ शंखनिधये नमः । द्वारपरतः ॐ पद्मनिधये नमः । ऊर्ध्वे ॐ द्वारश्रियै नमः । अधो देहल्याम् ॥ ॐ वास्तुपुरुषाय नमः । इति संपज्य प्रणमेत् इत्युत्तरद्वारप्रतिष्ठापूजनम् ॥ ७ ॥ अथैशान्यकोणे गत्वा प्राणानायम्य कंकालि वृषभारूढे शूलहस्ते एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा। इति बलिं दद्यात् "ईशानाय ध्वजं श्वेतं पताकां चैव वै तथा॥स्थापयामि महेशाय वृषारूढाय शूलिने॥"ईशानप्रीत्यर्थं श्वेतपताकांध्वजं च स्थापयामि इति श्वेतपताकां ध्वजं च पंचहस्तदंडे उच्छ्रयेत् तत्र ईशानाय नमःइति संपूज्य ॐ भूर्भुवःस्वःईशानाय वृषारूढाय अयं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नमाषभक्तबलिर्नमः।ईशानः प्रीयतां ईशानःसुप्रीतो वरदो भवतु ।इति बलिं दत्त्वा तत्राधिदेवताः पूजयेत्।तद्यथा उदङ्मुख शरमंडले "उदङ्मुखो मागधजो हरिस्थश्चात्रेयगोत्रःशरमंडलस्थः।सखड्गचर्माऽपिगदाधरो ज्ञः स्वीशानभागे वरदः सुपीतः॥"इति बुधं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः मागधदेशोद्भव आत्रेयसगोत्र बुध इहागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात् । तत्रैव " शूलं डमरुकं चैव शंखचक्रगदाधरम् ॥ खड्गपात्रं च खट्वांगपाशांकुशधरं तथा ॥" इति ईशानं ध्यात्वा ईशान एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात् तत्रैव "दिगंबरं कुमारं च सिंहवाहनभूषितम्॥दंष्ट्राकरालवदनमष्टैश्वर्यसुखप्रदम्॥" इति दिगंबरकुमारं ध्यात्वा दिगंबरकुमार एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा। इति बलिं दद्यात्।ततः "धारयंतं मदोन्मत्तं वडवानलभैरवम्॥चंडिकाशक्तिसंयुक्तं वंदे संहारभैरवम्॥" इति संहारभैरवं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः संहारभैरव एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहित एष माषभक्तबलिर्नमः । भैरवः

प्रीयताम् भैरवः सुप्रीतो वरदो भवतु।इति ईशानकोणप्रतिष्ठापूजनम्॥८॥तत ईशान पूर्वयोर्मध्यदेशे गत्वा ईशानपूर्वमध्ये संसर्पराज चक्रहस्त एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा। इति बलिं दद्यात्। "स्थापयाम्यंतरिक्षाय पताकां सार्ववर्णिकाम् ॥ कनकाकाररूपाय निराकाराय च ध्वजम् ॥" ब्रह्मणे सार्ववर्णिकां पताकां कनकरूपं ध्वजं च स्थापयामि। इति सार्ववर्णिकां पताकां कनकरूपं ध्वजं च पंचहस्तदंडे स्थापयेत्। तत्र देशे ॐ ब्रह्मन्निहागच्छागच्छ एष गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्न बलिर्नमः ब्रह्मा प्रीयताम्।ब्रह्मा सुप्रीतो वरदो भवतु।इतिबलिंदद्यात्। इतीशानपूर्वमध्यदेशप्रतिष्ठापूजनम्॥९॥ततःपश्चिमनैर्ऋत्ययोर्मध्येगत्वा "भूमे त्वं सर्वलोकानामाधारः षड्रसप्रदे ॥ पंचवर्णपताकां च स्थापयामि ध्वजं तथा ॥" भूमिप्रीत्यर्थं पंचवर्णपताकां ध्वजं च स्थापयामि इति पंचवर्णपताकां ध्वजं च पंचवर्णं पंचहस्तदंडे उच्छ्रयेत्। तत्रैव विष्णुप्रिये गजहंसवाहने अक्षसूत्रकमंडलुहस्ते एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा। इति बलिं दद्यात्। इति पश्चिमनैर्ऋत्यमध्यदेशप्रतिष्ठापूजनम्॥१०॥ ततो मंडपमध्यदेशे गत्वा " आदित्या वसवो रुद्रा वषट्कारः प्रजापतिः ॥ ध्वजं चित्रपताकां च स्थापयामि हि भो सुराः॥" आदित्यादि देवताप्रीत्यर्थं ध्वजं पताकां स्थापयामि। इति ध्वजं चित्रपताकां च सर्वोच्चदंडे स्थापयेत्। आदित्यादिदेवताः इहागच्छत अयं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिर्नमः। आदित्यादिदेवताः प्रीयंताम् आदित्याद्या देवताः सुप्रीता वरदा भवंतु। इति बलिं दत्वा प्रार्थयेत्। "यज्ञभागभुजो देवाः सर्वकर्मफलप्रदाः ॥ यज्ञं पातुमिहागत्य नमस्तेभ्यो ममाद्य वै ॥" इति प्रार्थयेत्। इति डामरतंत्रादितंत्रे देवता महोत्सवे षोडशस्तंभप्रतिष्ठातोरणध्वजपताकाप्रतिष्ठापूजनम् ॥ ११ ॥अथाग्निस्थापनप्रयोगः ॥ तत्रादौ कुंडेऽष्टसंस्काराः ॥ कुंडं सव्यं प्रदक्षिणीकृत्य कुंडस्य पश्चिमभागे उपविश्य आचम्य मूलेन प्राणानायम्य मूलेन षडंगं कृत्वा कुंडे स्थंडिले वा अष्टौ संस्कारान् कुर्यात् तद्यथा। देशकालौ संकीर्त्य मया सह ब्राह्मणैः कृतानां कारितानां चामुकदेवताजपानां संपर्णतासिद्ध्यर्थं जपदशांशेनोक्तहविर्द्रव्यैर्होममहं करिष्ये। तदंगभूतमादावस्मिन्कृतस्य विध्युक्तमार्गेण परिसमूहनादिसंस्कारान्करिष्ये। इति संकल्प्य। तत आचार्यो मूलमंत्रेण कुंडं

वीक्ष्य १ तेनैव कुशत्रयेण संताड्य २ ॐ मूलेन अस्त्रायफडित्यस्त्र मंत्रेण गोमयोदकं संप्रोक्ष्य तेनैव संलिप्य ३ मूलेन हुं इति वर्म्मणा मुष्टिनासिंच्य४ ॐ मूलेन हृदयाय नमः इति हृदयमंत्रेण स्रुवेण कुशमूलेन वा प्रागग्रा उत्तरोत्तरक्रमेण तिस्रो रेखाः कुंडे स्थंडिलपरिमाणाः प्रादेशमात्रा वा कृत्वा तदुपरिगा उदगग्राः प्राक् प्राक् क्रमेण तिस्रो रेखाः कुर्यात् । ततस्तासु प्रागग्रासु क्रमेण ॐ मुकुंदाय नमः । ॐ ईशानाय नमः । ॐ पुरंदराय नमः । इति गंधादिभिः संपूज्य उदगग्रासु ॐ ब्रह्मणं नमः ॐ वैवस्वताय नमः । ॐ इंदवे नमः इति पूजयेत् । एवं पंच भूसंस्काराः ५ ततः माया (ह्रीं) इति बीजेन कुंडं गंधादिना संपूज्य इति षष्ठः ६ तत आवाहनादिसप्त मुद्राः प्रदर्शयेदिति सप्तमः ७ अस्त्रेणावगुंठ्य इति कुंडेऽष्टसंस्कार : । ततः कुंडे स्थंडिले वा तन्मध्ये त्रिकोणषट्कोणवृत्त साष्टपत्रचतुरस्रयंत्रं लिखित्वा तत्र त्रिकोणे ॐ ह्रीं ॐ इति मंत्रं लिखेत् । तत्र देशे ॐ मंडूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः ॐ तत्तन्नाम्ना नवपीठशक्तिभ्यो नमः इति संपूज्य तदुपरि सुवर्णस्य कलशं निधाय॥ॐ ह्रीं वागीशीवागीश्वरयोगपीठात्मने नमः । इत्यासनं दत्त्वा मूलेन हुं इति वर्मणा अभ्युक्ष्य ॐ आग्नेययोगपीठाय नमः । इति पीठं संपूज्य "शय्यागतामृतुस्नातां नीलेन्दीवरधारिणीम् ॥ देवेन भुज्यमानां तु स्मरेत्तद्योनिमण्डले ॥" इति वागीश्वरीं ध्यात्वा ॐ कुंडाय नमः इति कुंडं गंधादिभिः संपूजयेत् । इति कुंडं संस्कृत्याग्निं प्रतिष्ठापयेत् ॥ अथाग्निस्थापनम् ॥ सूर्यकांतमणेः सकाशात् वा अरणितः श्रोत्रियागारतो वा कांस्यपात्रेण पिहितमाग्निं मूलेन फट् इत्यस्त्रमंत्रेणादाय कुंडबाह्ये आग्नेय्यां निधाय मूलेन हुं इति वर्मणा उद्घाट्य ज्वलितकुशेन मूलेन फट् इत्यस्त्रमंत्रेण नैर्ऋत्ये क्रव्यादांशं परित्यजेत् । ततो मूलमंत्रेणाग्निं पुरतो धृत्वा तेनैव वीक्ष्य अस्त्रेणाल्पं प्रोक्ष्य तेनैव कुशत्रयेण संताड्य ॐ हुं इति वर्म्मणा संसिच्य ॐ रँ इति वह्निबीजेन चैतन्यं संयोज्य ॐ इति तारेणाभिमंत्र्य धेनुमुद्रया ॐ वं इति सुधाबीजेन अमृतीकृत्य ॐ फट् इत्यस्त्रेण संरक्ष्य अवगुंठन्या मुद्रया ॐ हुंइति कवचेनावगुंठ्य ततो बाहुभ्यां वह्निपात्रं समुद्धृत्य ॐ इति प्रणवेन कुंडोपरि त्रिर्भ्रामयित्वा "शय्यागतामृतुस्नातां नीलेन्दीवरधारिणीम् ॥ देवेन भुज्यमानां तां स्मरेत्तद्योनिमण्डले॥" इति ध्यात्वा जानुस्पृष्टधरातलो मूलमंत्रेण योनौ शिवरेतोधिया

आत्मसंमुखं वह्निं धृत्वा ॐ हूँ वह्निचैतन्याय नमः इति मंत्रेण कुण्डमध्ये स्थापयेत् । ततः ॐ वागीशीवागीश्वराभ्यां नमः । इत्याच मनं दत्त्वा ॐ चित्पिंगल हन२ दह २ पच २ सर्वज्ञाज्ञापय स्वाहा । इति मंत्रेणाग्निं प्रज्वालयेत् । ततो ज्वालिनीमुद्रां प्रदर्श्य उत्थाय "ॐ अग्निं प्रज्वलितं वंदे जातवेदं हुताशनम् ॥ सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम् ॥" इति प्रार्थयेत्। ततोऽग्नेऽमुकनामासिइतिनामकृत्वा वैश्वानरेति मंत्रस्य भृगुर्ऋषिः। गायत्री छन्दः । अग्निर्देवता । रँ बीजम् । स्वाहा शक्तिः।हवने प्रार्थनायां च विनियोगः । ॐवैश्वनर जात वेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा" इति मंत्रेणाग्निं पाद्यादिभिः संपूज्य न्यासं कुर्य्यात् । तद्यथा ॐ स्प्रूं हिरण्यायै नमः लिंगे१ॐ ष्प्रूं गगनायै नमः गुदे२ ॐ श्र्यूं रक्तायै नमो मूर्ध्नि३ ॐ व्प्रूं कृष्णायै नमः वक्त्रे४ ॐ ल्र्यूं सुप्रभायै नमो नासिकायाम्५ ॐ र्यूं बहुरूपायै नमः नेत्रे ६ ॐ र्यूं अतिरिक्तायै नमः सर्वांगे ७ इत्यग्निजिह्वान्यासः ॥ ॐ देवताभ्यो नमो लिंगे १ ॐ पितृभ्यो नमो गुदे २ ॐ गंधर्वेभ्यो नमो मूर्ध्नि ३ ॐ यक्षेभ्यो नमो वक्त्रे ४ ॐ नागेभ्यो नमो नासिकायाम् ५ ॐ पिशाचेभ्यो नमः नेत्रे ६ ॐ राक्षसेभ्यो नमः सर्वांगे ७ इत्यग्निजिह्वादेवतान्यासः॥ ॐ सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः स्वाहा१ ॐस्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा २ ॐ उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै वषट् स्वाहा ३ ॐ धूमव्यापिने कवचाय हुं स्वाहा ४ ॐ सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट् स्वाहा ५ धनुर्धराय अस्त्राय फट् स्वाहा ६ इति विन्यसेत्॥ॐ अग्नये जातवेदसे नमो मूर्ध्नि१ ॐ अग्नये सप्तजिह्वाय नमो वामांसे २ ॐअग्नये हव्यवाहनाय नमो वामपार्श्वे ३ ॐ अग्नये अश्वोदरजाय नमो वामकट्याम् ४ ॐ अग्नये वैश्वानराय नमो लिंगे ५ ॐ अग्नये कौमारतेजसे नमो दक्षिणकट्याम् ६ ॐ अग्नये विश्वमुखाय नमो दक्षिणपार्श्वे ७ ॐ अग्नये देवमुखाय नमो दक्षांसे ८ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् । अथ ध्यानम् ॥ " इष्टं शक्तिं स्वस्तिकाभीतिमुच्चैर्दीर्घैर्दोर्भिर्धारयंतं जपाभम् ॥ हेमाकल्पं पद्मसंस्थं त्रिनेत्रं ध्यायेद्वह्निं बद्धमौलिं जटाभिः ॥१॥" इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य शुद्धोदकेन कुंडं स्थंडिलं वा परिषिच्य प्राचीवर्जदक्षिणे प्रागग्रैः पश्चिमे उदगग्रैः उत्तरे प्रागग्रैश्च दर्भैरगर्भैर्मध्यस्थमेखलायां परिस्तीर्य्य त्रीन् परिधीन् क्रमान्निक्षिपेत् । ततस्तेषूपरि मेखलाक्रमेण ॐ ब्रह्मणे नमः १ ॐ

विष्णवे नमः २ ॐ शिवाय नमः ३ इति गंधादिभिः संपूज्य योन्यां ॐ गौर्यै नमः । इति गौरीं संपूजयेत् । ततः "ॐ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा" इति वह्निं मध्ये गंधादिभिः संपूज्य कुंडयोनिं वस्त्रेणाच्छाद्य कुंडं नवसूत्रेण संवेष्ट्य कुशकंडिकां कुर्य्यात् । इत्यग्निस्थापनम् ॥ अथ कुशकंडिकाप्रकारः ॥ स्ववामे कुशानास्तीर्य्य तत्र क्रमेण प्रणीतां १ प्रोक्षणीम् २ आज्यस्थालीं ३ स्रुवं ४ स्रुचम् ५ अन्यदप्युपयोगि यत् तन्निधाय पवित्रे कृत्वा मूलमंत्रेण शुद्धांभसा तानि प्रोक्ष्य उत्तानानि विधाय प्रणीतां जलेन पूरयेत् । तत्र "ॐ गंगे च यमुने०" इति मंत्रेण कुशमुद्रया तीर्थान्यावाह्य पवित्रे अक्षतांश्च तत्र निःक्षिप्य उत्पवनं चरेत् । तत उदीच्यां प्रणीतां निधाय प्रोक्षण्यां तज्जलं क्षिप्त्वा पवित्राभ्यां जलमानीय हवनीयं द्रव्यजातं प्रोक्षयेत् । ततो मूलमंत्रेण मूलगायत्र्या वा दक्षिणे पीठमासाद्य तत्र ॐ अणिमादिपीठदेवताभ्यो नमः । इति पीठशक्तीः संपूज्य ॐ ब्रह्मणे नमः १ इति ब्रह्माणं षोडशोपचारैः पजयेत् । ततो हस्ताभ्यां स्रुक्स्रुवौ धृत्वाधोमुखौ वह्नौ त्रिवारं तापयित्वा वामहस्तेन तौ धृत्वा दक्षिणहस्तेन दर्भैर्यथाक्रमं तदग्रमूलमध्यानि शोधयित्वा प्रोक्षणीजलेन संप्रोक्ष्य पूर्ववत् पुनःप्रताप्य दर्भानग्नौ निक्षिप्य शक्तित्रयं न्यसेत् ॥ मूले ॐ ह्रां इच्छाशक्त्यै नमः १ मध्ये ॐ ह्रीं ज्ञानशक्त्यै नमः २ अंते ॐ ह्रूं क्रियाशक्त्यै नमः ३ ततः ॐ स्रुवे नमः १ शक्त्यै नमः २ शंभवे नमः ३ इति विन्यस्य तौ सूत्रत्रयेण संवेष्ट्य कुंकुमपुष्पादिभिः संपूज्य आत्मदक्षिणभागे कुशोपरि स्थापयेत् । इति कुशकंडिका ॥ अथ घृतसंस्काराः । आज्यथालीमानीय ॐ फट् इति वारिणा प्रोक्ष्य तस्यामाज्यं निक्षिप्य मूलमंत्रेण गोमुद्रयाऽमृतीकृत्य षट् संस्कारांश्चरेत् । तद्यथा । कुंडोद्धृते वायुकोणे स्थितेंऽगारे ॐ नमः । इति मंत्रेणाज्यस्थालीं निधाय तापनं कृत्वा दर्भयुगलं संदीप्य ॐ नमः इत्याज्ये विनिक्षिपेत् । पुनर्दर्भयुग्मं प्रदीप्य ॐ हुं इति वर्म्मणा आज्योपरि भ्रामयित्वा दर्भयुग्ममग्नौ विसर्जयेत्। ततः ॐ फडिति मंत्रेण घृते प्रज्वलितं दर्भत्रयं प्रदर्श्य तानग्नौ न्यस्य घृतस्थालीं गृहीत्वा तदंगारान् वह्नौ संयोज्य जलं संस्पृशेत् । ततः अंगुष्ठानामिकाभ्यां प्रादेशसंमितौ दर्भौ गृहीत्वा ॐ

फट्। इत्यस्त्रेण घृतमुत्पूय ॐ नमः। इति मंत्रेणात्मसंमुखं कृत्वा घृतसंप्लवनं कुर्य्यात्। इति घृतस्य षट् संस्काराः ॥ ततः प्रादेशमान मात्रं सग्रंथिदर्भयुग्मं घृतमध्ये निक्षिप्य आज्यस्य द्वौ भागौ कृत्वा कृष्णशुक्लौ पक्षौ स्मरेत्। ततो वामे इडां नाडीं दक्षिणे पिंगलां मध्ये सुषुम्णां ध्यात्वा होमं कुर्य्यात्। अथ होमप्रकारः। ॐ नमः। इति मंत्रेण स्रुवेण दक्षिणभागादाज्यं गृहीत्वा (अग्नेर्दक्षिणे लोचने) ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये १ पुनः तद्वद्वामभागादाज्यमादाय (अग्नेर्वामलोचने) ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय २ पुनः तन्मध्याज्यं गृहीत्वा (अग्नेर्भाललोचने) ॐ अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा ३ इति जुहुयात्। ततः ॐ नम इति स्रुवेणाज्यं दक्षिणभागादादाय वह्निमुखे ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इति हुत्वा व्याहृतिहोमं कुर्य्यात्। तद्यथा। ॐ भूः स्वाहा २ ॐ भुवः स्वाहा २ ॐ स्वः स्वाहा ३ इति व्याहृतिहोमं कृत्वा ततो वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा इति मंत्रेण त्रिवारं जुहुयात्। ततः प्रणवेन घृताहुति भिरेकैकवारमग्नेर्गर्भाधानादिषोडशसंस्कारान् कुर्य्यात्। शुभे कर्मणि गर्भाधानादिविवाहांतान् क्रूरकर्मणि गर्भाधानादिमरणांतान् संस्कारान् कुर्य्यात्। तत्र क्रमः। ॐ अस्याग्नेर्गर्भाधानसंस्कारं करोमि स्वाहा ॥१॥ ॐ अग्नेः पुंसवनं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥२॥ ॐ अग्नेःसीमंतोन्नयनं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥३॥ ॐ अग्नेर्जातकर्मसंस्कारं करोमि स्वाहा ॥४॥ ॐ अग्नेरमुकनामकर्मसंस्कारं करोमि स्वाहा ॥५॥ ॐ अग्नेर्निष्क्रामणं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ अग्नेः कर्णवेधं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ अग्नेरन्नप्राशनं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥ ८ ॥ ॐ अग्नेश्चौलसंस्कारं करोमि स्वाहा ॥ ९ ॥ ॐ अग्नेरुपनयनं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥ १० ॥ ॐ अग्नेर्वेदारंभं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ अग्नेर्महानाम्नि महाघृतं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥ १२ ॥ ॐ अग्नेरुपनिषद्व्रतं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥ १३ ॥ ॐ अग्नेर्व्रतविसर्गं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥ १४ ॥ ॐ अग्नेः केशांतगोदानं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥ १५ ॥ ॐ अग्नेर्विवाहसंस्कारं करोमि स्वाहा ॥ १६ ॥ (क्रूरकर्मणि ॐ अग्नेर्मृतिसंस्कारं करोमि स्वाहा ॥ १६ ॥) एवं संस्कारान् संपाद्य वह्नेः पितरौ ॐ पार्वतीपरमेश्वराभ्यां नमः। इति मंत्रेण संपूज्य आत्मनि योजयित्वा मूलाग्रघृतसंप्लुताः पंच समिधो मनसा ध्यात्वा जुहुयात्। ततः

अग्नेः सप्तजिह्वादिभतिभ्यस्तत्तन्मंत्रेणैकैकामाज्याहुतिं जुहुयात् । तत्र क्रमः ॐ स्यूं हिरण्यायै अग्निजिह्वायै नमः स्वाहा इदं हिरण्यायै अग्निजिह्वायै न मम १ ॐ ष्यूं गगनायै अग्निजिह्वायै नमः स्वाहा । इदं गगनायै अग्निजिह्वायै न मम २ ॐ श्र्यूं रक्तायै अग्निजिह्वायै नमः स्वाहा । इदं रक्तायै अग्निजिह्वायै न मम ३ ॐ व्यूं कृष्णायै अग्निजिह्वायै नमः स्वाहा । इदं कृष्णायै अग्निजिह्वायै न मम ४ ॐ ल्यूं सुप्रभायै अग्निजिह्वायै नमः स्वाहा । इदं सुप्रभायै अग्निजिह्वायै न मम ५ ॐ र्यूं बहुरूपायै अग्निजिह्वायै नमः स्वाहा । इदं बहुरूपायै अग्निजिह्वायै न मम ६ ॐ यूं अतिरिक्तायै अग्निजिह्वायै नमः स्वाहा । इदमतिरिक्तायै अग्निजिह्वायै न मम ७ इत्यग्निजिह्वाहोमः ॥ ॐ अमर्त्याय नमः । स्वाहा इदममर्त्याय न मम १ ॐपितृभ्यो नमः स्वाहा। इदं पितृभ्यो न नम २ ॐ गंधर्वेभ्यो नमःस्वाहा। इदं गंधर्वेभ्यो न मम ३ ॐ यक्षेभ्यो नमः स्वाहा । इदं यक्षेभ्यो न मम ४ ॐ नागेभ्यो नमः स्वाहा । इदं नागेभ्यो न मम ५ ॐ पिशाचेभ्यो नमः स्वाहा । इदं पिशाचेभ्यो नमः ६ ॐ राक्षसेभ्यो नमः स्वाहा इदं राक्षसेभ्यो न मम ॥७॥इत्यग्निजिह्वादिदेवताहोमः॥ अथाग्न्यंगदेवताहोमः । ततः केसरेषु अग्न्यादिकोणमध्ये दिक्षु च । ॐ सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः स्वाहा १ ॐ स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा २ ॐ उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै वषट् स्वाहा ३ ॐ धूम्रव्यापिने कवचाय हुँ स्वाहा ४ सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट् स्वाहा ५ ॐ धनुर्धरायास्त्राय फट् स्वाहा ६ इत्यग्न्यंगदेवताहोमः । ततः पूर्वादिदलेषु । ॐ अग्नये जातवेदसे नमः स्वाहा १ ॐ अग्नये सप्तजिह्वाय नमः स्वाहा २ ॐ अग्नये हव्यवाहनाय नमः स्वाहा ३ ॐ अग्नये अश्वोदरजाय नमः स्वाहा ४ ॐ अग्नये वैश्वानराय नमः स्वाहा ५ ॐ अग्नये कौमारतेजसे नमः स्वाहा ६ ॐ अग्नये विश्वमुखाय नमः स्वाहा ७ अग्नये देवमुखाय नमः स्वाहा ८ इत्यग्न्यष्टमूर्त्तिहोमः। ॐ लं इन्द्राय सुराधिपतये वज्रहस्ताय नमः स्वाहा १ ॐ रं वह्नये तेजोधिपतये छागवाहनाय शक्तिहस्ताय नमः स्वाहा २ ॐ मं यमाय प्रेताधिपतये दंडहस्ताय नमः स्वाहा ३ ॐ क्षं नैर्ऋतये रक्षोधिपतये खड्गहस्ताय नमः स्वाहा । ४ ॐ वं वरुणाय जलाधिपतये पाशहस्ताय नमः स्वाहा ५ ॐ यं वायवे प्राणाधिपतये ध्वजहस्ताय नमः स्वाहा ६ ॐ सों सोमाय क्षेत्राधि

पतये गदाहस्ताय नमः स्वाहा ७ ॐ हं ईशानाय विद्याधिपतये त्रिशूलहस्ताय नमः स्वाहा ८ ॐ आं ब्रह्मणे त्रैलोक्याधिपतये पद्महस्ताय नमः स्वाहा ९ ॐ ह्रीं अनंताय नागाधिपतये चक्रहस्ताय नमः स्वाहा १० इति सायुधदिक्पालहोमः ॥ एवं सायुधदिक्पालहोमं कृत्वा ततः स्रुवेण चतुर्वारमाज्यमादाय स्रुचि निधाय स्रुवेण तां पिधाय उत्तिष्ठन् "ॐ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा वौषट्" इत्यनेन जुहुयात् । ततो विघ्नेश्वरमंत्रेण दशाहुतीर्जुहुयात् । तत्रः क्रमः । ॐ स्वाहा १ ॐ श्रीं स्वाहा २ ॐ श्रीं ह्रीं स्वाहा ३ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं स्वाहा ४ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं स्वाहा ५ ॐ श्रींह्रींक्लींग्लौं गं स्वाहा ६ ॐ श्रींह्रींक्लींग्लौंगं गणपतये स्वाहा ७ ॐ श्रींह्रींक्लींग्लौंगं गणपतये वरवरद स्वाहा ८ श्रींह्रींक्लींग्लौंगं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे स्वाहा ९ ॐ श्रींह्रींक्लींग्लौंगं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा १० एवं दशाहुतीर्हुत्वा पुनः समस्तमंत्रैश्चतुर्वारं जुहुयात् । एवं गणपति होमं कृत्वा देवतायाः पीठ पूजयेत् । ततो हुताशने इष्टदेवतामावाह्य आवाहनादिकां मुद्रां प्रदर्श्य वह्निरूपां तां देवतां संपूज्य ततो वह्निरूपां देवतां भावयन् देवस्य मुखे मूलमंत्रेण पंचविंशतिसंख्यया घृताहुतीर्हुत्वा वह्निदैवतयोरात्मना सहैक्यं विभाव्य मूलमंत्रेण नाडीसंधानार्थमेकादशाहुतीराज्येन जुहुयात् । तत इष्टदेवताया आवरणदेवताभ्य एकैकां घृताहुतिं हुत्वा पुनर्मूलमंत्रेण दशधा घृतं जुहुयात् । इत्याज्यहोमं कृत्वा कल्पोक्तद्रव्येण जपदशांशं प्रयोगोक्तसंख्यं वा मूलमंत्रेण हुत्वा होम समाप्य पूर्णाहुतिं दद्यात् । तत्र क्रमः । होमावशिष्टेनाज्येन स्रुचं पूरयित्वा तदग्रे पुष्पं फलं निधाय तां स्रुवेणाच्छाद्य उत्थाय तयोर्मूलं नाभौ कृत्वा मूलमंत्रं वौषडंतं पठित्वा ॐ इतः पर्व प्राणबुद्धि देहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा "मां मदीयं च सकलं हरये ते समर्पये ।" ॐ तत्सदिति मंत्रेण पूर्णाहुतिं दद्यात् ॥ एवं पूर्णाहुतिं दत्त्वा संहारमुद्रया देवतां स्वात्मनि उद्वास्य पुनर्व्याहृतिभिर्हुत्वा अग्नेर्जिह्वादीनां पूर्ववत् एकैकाहुतिं दत्त्वा मेखलोपरि अग्निः परिषिच्यात्मनि पावकं योजयित्वा भो भो वह्ने

महाशक्ते सर्वकर्मप्रसाधक ॥ कर्मांतरेऽपि संप्राप्ते सान्निध्यं कुरु सादरम् ॥१॥ इत्यग्निं संप्रार्थ्य विसृजेत् । इति होमं कृत्वा दक्षिणां च दत्त्वा वह्नौ पवित्रे निक्षिप्य प्रणीतांबु भुवि क्षिप्त्वा सकुशान्परिधीनग्नौ क्षिपेत् । इति होमविधानम् ॥ अथ तर्पणादिविधानम्॥ एवं होमं समाप्य होमदशांशतो दुग्धमिश्रितजलेन मूलमंत्रांते ॐ अमुकदेवतां तर्पयामि इति तर्पणं कृत्वा तर्पणदशांशेन मलमंत्रांते सिंचामीत्यभिषेकं कुर्यात् । ततो नानाविधैरन्नैर्द्विजसत्तमान्भोजयित्वा तेभ्यो दक्षिणां दत्त्वा न्यूनसम्पूर्णतां वाचयेत् । इति पंचांग कृत्येन मंत्रः सिद्धो भवति।सिद्धे तु मंत्रे मंत्री प्रयोगोक्तकार्याणि साधयेत्।इति शारदातिलकमंत्रमहोदधिप्रोक्तं तांत्रिकहवनादिविधानम्॥ अथ कुमारीपूजाप्रयोगः ॥ (रुद्रयामले) एकवर्षा भवेत्संध्या द्विवर्षा च सरस्वती ॥ त्रिवर्षा च त्रिधा मूर्तिश्चतुर्वर्षा तु कालिका ॥ १ ॥ सुभगा पंचवर्षा तु षड्वर्षा च ह्युमा भवेत् । सप्तभिर्मालिनी प्रोक्ता ह्यष्टवर्षा च कुब्जिका ॥ २ ॥ नवभिः कालसंदर्भा दशभिश्चापरा

१ सुवर्णमयुते दद्याल्लक्षे दशसुवर्णकम् । दक्षिणा तु प्रदातव्या यथा होमे तथा जपे ॥ २ तंत्रांतरेऽपि-तीर्थतोयेन दुग्धेन सर्पिषा मधुनापि वा । गंगोदकेन वा कुर्यात्सर्वत्र साधकोत्तमः ॥ ३ मूलांते नाम चोच्चार्य तर्पयामि ततः परम् । स्वाहांते तर्पयेन्मंत्री यथासंख्यं विधानतः ॥ तर्पणं च प्रकुर्वीत द्वितीयांतमथोच्चरन् ॥ ४ मूलविद्यां समुच्चार्य तदंते देवताभिधाम् । तदंते चाभिषिंचामि नमोंते चाभिषेचनम् । इत्युच्चार्य मूर्द्धि देशे चिंतयित्वा स्वमंत्रकम् । अभिषेकं त्रिसंख्याभिर्विधाय तदनन्तरम् ॥ तत्र संचिन्तयेद्देवीं सांगावरणदेवताम् । क्षिपेत्तोयं यथासंख्यं गणान् सिंचेत्सकृत्सकृत ॥ ५ अभिषेकं समाप्यैवमभिषेकदशांशतः । ब्राह्मणान्देवताबुद्ध्या भोजयेत्साधकोत्तमः ॥ तंत्रांतरे-विभवे सति यो मोहात्र कुर्याद्विधिविस्तरम् । न तत्फलमवाप्नोति देवद्रोही स उच्यते ॥ ६ ब्राह्मणीं सर्वकार्येषु जयार्थे नृपवंशजाम् । लाभार्थे वैश्यवंशोत्थां सुतार्थे शूद्रवंशजाम् ॥ दारुणे चांत्यजातीनां पूजयेद्विधिना नरः । वर्जयेत्सर्वकार्येषु दासीगर्भसमुद्भवाम् ॥ (रुद्रयामले विशेषः) नटीकन्यां हीनकन्यां तथा कापालिकन्यकाम् । रजकस्यापि कन्यां च तथा नापितकन्यकाम् ॥ गोपालकन्यकां चैव ब्राह्मणस्यापि कन्यकाम् । शूद्रकन्यां वैश्यकन्यां तथा वैश्यस्य कन्यकाम् ॥ चाण्डालकन्यकां वापि यत्र कुत्राश्रमे स्थिताम् । सुहृद्वर्गस्य कन्यां च समानीय प्रयत्नतः॥(योगिनीतंत्रे) यदि भाग्यवशाद्देवि वैश्यकुलसमुद्भवा ॥ कुमारी लभ्यते कांते सर्वस्वेनापि साधकः ॥ यत्नतः पूजयेत्तां तु स्वर्णरौप्यादिभिर्मुदा । तदा तस्य महासिद्धि र्जायते नात्र संशयः ॥ तस्मात्तां पूजयेद्बालां सर्वजातिसमुद्भवाम् । जातिभेदो न कर्तव्यः कुमारी पूजने शिवे ॥ जातिभेदान्महेशाने नरकान्न निवर्त्तते । विचिकित्सापरो मंत्री ध्रुवं स पातकी भवेत ॥ एषा प्रशस्ता, कुमारी तु सर्वजातीयैव पूज्या ॥ ७ (कुब्जिकातंत्रे) पंचवर्षात्समारभ्य यावद्द्वादशवार्षिकी । कुमारी सा भवेद्देवि निजरूपप्रकाशिनी ॥ षड्वर्षाञ्च समारभ्य यावच्च नववार्षिकी । तावच्चैव महेशानि साधकाभीष्टसिद्धये॥ अष्टवर्षात्समारभ्य यावत्त्रयोदशाब्दिकी । कुलजां तां विजानीयात्तत्र पूजां समाचरेत् ॥ दशवर्षात्समारभ्य यावत्षोडश वार्षिकी । युवतीं तां विजानीयाद्देवतां तां विचिन्तयेत् ॥ (विश्वसारतंत्रे) अष्टवर्षा तु सा कन्या भवेद्गौरी वरानने । नववर्षा रोहिणी सा दशवर्षा तु कन्यका ॥ अत ऊर्ध्वं महामाय भवेत्सैव रजस्वला ॥

जिता ॥ एकादशा तु रुद्राणी द्वादशाब्दा तु भैरवी ॥३॥ त्रयोदशा महालक्ष्मीर्द्विसप्ता पीठनायिका॥ क्षेत्रज्ञा पंचदशभिः षोडशे चांबिका भवेत् ॥ ४ ॥ एवं क्रमेण संपूज्य यावत्पुष्पं न विद्यते ॥ प्रतिपदादिपर्णांतं वृद्धिभेदेन पूजयेत् ॥५॥ महापर्वसु सर्वेषु विशेषाच्च पवित्रके॥ महानवम्यां देवेशि कुमारीश्च प्रपूजयेत् ॥६॥अथ पूजाप्रयोगः ॥ पूजादिनात्पूर्वदिने गंधपुष्पाक्षतादिभिर्मूलेन 'भगवति कुमारि पूजार्थं त्वं मया निमंत्रितासि मां कृतार्थयेति निमंत्रितां प्रातराहूय प्रदक्षिणीकृत्योद्वर्तनाद्यैः स्नापयित्वा गंधतैलेन[१]शरीरं संस्कार्यकेशं परिष्कृत्य ललाटे सिंदूरं नयनयोः कज्जलं सर्वांगे चन्दनं वस्त्रालंकारैराभूष्य पूजागृहे चानीय पादौ प्रक्षाल्य अष्टदलपीठोपरि समावेश्य तांबूलेन मुखं संशोध्य देशकालौ स्मृत्वामुकसिद्ध्यर्थममुककर्मणि अमुकदेवताप्रीत्यर्थं कुमारीणां पूजनं करिष्ये । इति संकल्प्य न्यासं कुर्यात् । ॐ क्रां कुमारिके हृदयाय नमः १ ॐ क्रीं कुमारिके शिरसे स्वाहा २ ॐ क्लूं कुमारिके शिखायै वषट् ३ ॐ क्लैं कुमारिके कवचाय हुं ४ ॐ क्रौं कुमारिके नेत्रत्रयाय वौषट् ५ ॐ क्रः कुमारिके अस्त्राय फट् ६ इति हृदयादिषडंगन्यासः । एवमेव करन्यासं कुर्यात् । एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् । अथ ध्यानम्-बालरूपां च त्रैलोक्यसुंदरीं वरवर्णिनीम् ॥ नानालंकारनम्रांगीं भद्रविद्याप्रकाशिनीम् ॥ १ ॥ चारुहास्यां महानंदहृदयां शुभदां शुभाम् ॥ शंखकुंदेन्दुधवलां द्विभुजां वरदाभयाम् ॥ २ ॥ एवं ध्यात्वात्माशिरसि पुष्पं दत्वावाहयेत् ॥ मंत्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातॄणां रूपधारिणीम् ॥ नवदुर्गात्मिकां साक्षात्कन्यामावाहयाम्यहम् ॥३॥इत्यावाह्य ॐ ह्रीं कुलकुमारिकायै नमः इदं पाद्यमेवमिदमर्घ्यमाचमनीयमिदमनुलेपनमेतेऽक्षता एतानि पुष्पाणि एष धूप एष दीप इदं नैवेद्यमिदं तांबूलमिति पूजयित्वा षडंगानि पूजयेत् । ॐ क्रां कुमारिके हृदयाय नमः १ ॐ क्रीं कुमारिके शिरसे स्वाहा २ ॐ क्लूं कुमारिके शिखायै वषट् ३ ॐ क्लैं कुमारिके कवचाय हुं ४ ॐ क्रौं कुमारिके नेत्रत्राय वौषट् ५ ॐ क्रः कुमारिके अस्त्राय फट् ६ इति गंधादिभिः संपूज्य ॐ ह्रीं हंसः कुल कुमारिके श्रीपादुकां पूजयामि । इति पुष्पांजलित्रयं दत्त्वा नवनामभिः पूजयेत् । तद्यथा—ॐ ह्रीं कौमार्य्यै नमः १ ॐ ह्रीं त्रिपुरायै नमः

१ वाग्भवेन वपुःक्षोभं मायाबीजे गुणाष्टकम् । श्रियो बीजे श्रियो लाभो मायाबीजे रिपुक्षयः ॥ भैरवेण तु बीजेन खेचरत्वं सुरादिभिः ॥

२ ॐ ह्रीँ कल्याण्यै नमः ३ ॐ ह्रीँ रोहिण्यै नमः ४ ॐ ह्रीँ कामिन्यै नमः ५ ॐ ह्रीँ चंडिकायै नमः ६ ॐ ह्रीँ शांकर्यै नमः ७ ॐ ह्रीँ दुर्गायै नमः ८ ॐ ह्रीँ सुभद्रायै नमः ९ इति संपूज्य मूलेन पुष्पांजलित्रयं दत्त्वा प्रदक्षिणीकृत्य प्रणमेत् । तत्र मंत्रः--ॐ जगत्पूज्ये जगद्वंद्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ॥ पूजां गहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥ त्रिपुरां त्रिगुणां धात्रीं ज्ञानमार्गस्वरूपिणीम् । त्रैलोक्यवंदितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम् ॥ २ ॥ कालात्मिकां कालभीतां कारुण्यहृदयां शिवाम् । कारुण्यजननीं नित्यां कल्याणीं पूजयाम्यहम् ॥ ३ ॥ अणिमादिगुणोपेतामकारादिस्वरात्मिकाम् ॥ शक्तिभेदात्मिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पजयाम्यहम् ॥ ४ ॥ कलाधारां कलारूपां कालचण्डस्वरूपिणीम् ॥ कामदां करुणाधारां कामिनीं पूजयाम्यहम् ॥ ५ ॥ चण्डधारां चण्डमायां चण्डमुण्डविनाशिनीम् ॥ प्रणमामि च देवेशीं चण्डिकां पूजयाम्यहम् ॥ ६ ॥ सुखनंदकरीं शांतां सर्वदेवनस्कृताम् ॥ सर्वभूतात्मिकां देवीं शांकरीं जयाम्यहम् ॥ ७ ॥ दुर्गमे दुस्तरे चैव दुःखत्रयविनाशिनीम् ॥ पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गे नमाम्यहम् ॥ ८ ॥ सुंदरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम् ॥ सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां प्रणमाम्यहम् ॥ ९ ॥ इति संप्रार्थ्य साष्टांगं प्रणम्य दक्षिणां च दत्त्वा तत्रांगे स्वेष्टदेवतां ध्यात्वा तन्नामभिः पूजयेत्॥अस्य फलादेशः-पूजोपकरणानीह कुमार्यै यो ददाति हि॥संतुष्टा देवता तस्य पुत्रत्वे सोऽनुकल्प्यते ॥ १ ॥ (योगिनीतंत्रे) कुमारीपूजनफलं वक्तुं नार्हामि सुदरि ॥ जिह्वाकोटिसहस्रैस्तु वक्त्रकोटिशतैरपि ॥ २ ॥ कुमारी पूज्यते यत्र स देशः क्षितिपावनः ॥ महापुण्यतमो भूयात् समंतात्क्रोशपंचकम् ॥३॥ (रुद्रयामले) महापूजादिकं कृत्वा वस्त्रालंकारभोजनैः॥पूजनान्मन्दभाग्योऽपि लभते जयमंगलम्॥४॥पूजया लभते पुत्रान् पूजया लभते श्रियम्॥पूजया धनमाप्नोति पजया लभते महीम्॥५॥ पूजया लभते लक्ष्मीं सरस्वतीं महौजसम्॥महाविद्याःप्रसीदंति सर्वे देवा न संशयः॥६॥कालभैरवब्रह्मेंद्रब्राह्मणा ब्रह्मवेदिनः॥ रुद्रश्च देववर्गाश्च वैष्वणवा ब्रह्मरूपिणः ॥ ७ ॥ अवताराश्च द्विभुजा वैष्णवा मनुशोभिनाः ॥ अन्ये दिक्पालदेवाश्च चराचरगुरुस्तथा ॥ ॥८॥नानाविद्याश्रिताः सर्वे दानवाः कूटशालिनः॥उपसर्गस्थिता ये ये ते ते तुष्टा न संशयः॥९॥कुमारी योगिनी साक्षात्कुमारी परदेवता॥

[illegible] दुष्टनागाश्च ये ये दुष्टग्रहा अपि ॥१० ॥ भूतवेतालगंधर्वा डाकिनीयक्षराक्षसाः ॥ याश्चान्या देवताः सर्वा भूर्भुवः स्वश्च भैरवाः ॥ ॥११॥पृथिव्यादीनि सर्वाणि ब्रह्माण्डे सचराचरम्॥ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः॥१२॥संतुष्टाः सर्वतुष्टाश्च यस्तु कन्यां प्रपूजयेत ॥ अथाहं शुद्धरूपा हि अन्यलोके च का कथा ॥ कुमारीपूजनं कृत्वा त्रैलोक्यं वशमानयेत् ॥ १३ ॥ महाकांतिर्भवेत्क्षिप्रं सर्वपुण्यफलप्रदम् ॥१४ ॥ (नीलतंत्रे) महाभयार्तिदुर्भिक्षाद्युत्पातानि कुलेश्वरि ॥ दुःस्वप्नमपमृत्युश्च ये चान्ये च समुद्भवाः ॥ १५ ॥ कुमारीपूजनादेव न ते च प्रभवंति हि ॥ नित्यं क्रमेण देवेशि पूजयेद्विधिपूर्वकम् ॥१६ ॥ घ्नंति विघ्नान्पूजिताश्च भयं शत्रून्महोत्कटान् ॥ ग्रहा रोगाः क्षयं यांति भूतवेतालपन्नगाः ॥ १७ तावज्जप्त्वा पूजयित्वा कन्यां सुंदरमोहिनीम् ॥ दिव्यभावस्थितं साक्षात्तंत्रमंत्रफलं लभेत् ॥ १८ ॥ महाविद्या महामंत्र सिद्धिमंत्रं न संशयः ॥ विधियुक्तां कुमारीं तु भोजयेच्चैव भैरव ॥१९॥ पाद्यार्घ्यं च तथा धूपं कुंकुमं चंदनं शुभम् ॥ भक्तिभावेन संपूज्य कुमारीभ्यो निवेदयेत् ॥२०॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे पूर्वखण्डे सर्वदेवोपयोगिपद्धतिचतुर्थस्तरंगः॥ ४ ॥

॥ ऋद्धिसिद्धी–

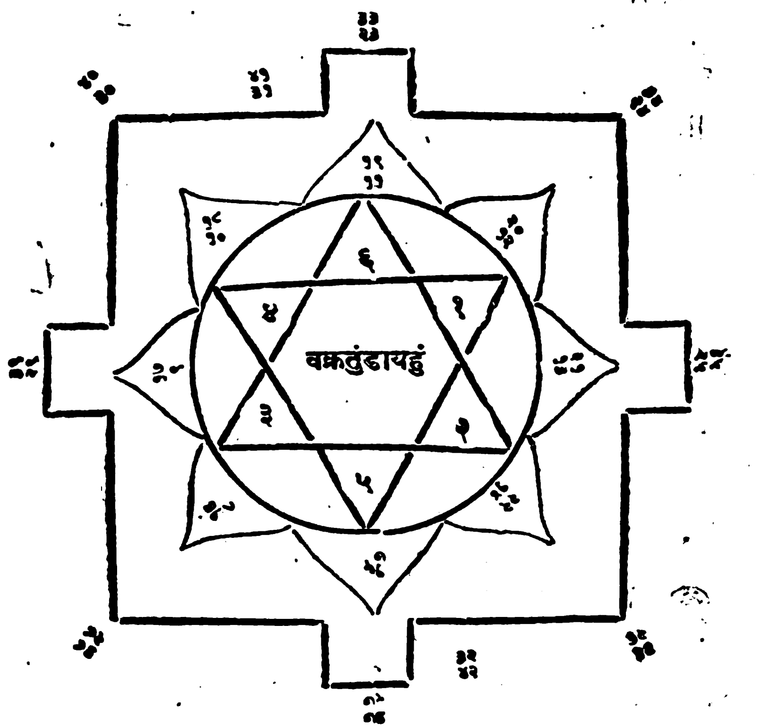


श्वराय नमः ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ गणेशतंत्रप्रारंभः ॥ तत्रादौ पटलप्रारंभः ॥ अथ षडक्षरवक्रतुंडमंत्रप्रयोगः ॥ (मंत्रो यथा-मंत्रमहोदधौ) 'वक्रतुंडाय हुं' इति षडक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम् । प्रातः कृतक्रियश्चन्द्रताराादिबलान्विते सुमुहूर्ते विविक्ते देशे जपस्थानं प्रकल्प्य गणपतिपूजनादिनांदीश्राद्धांतं विधाय जपस्थानमागत्य कूर्म्मशोधिते स्वासने प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य मूलेनाचम्य प्राणानायम्य भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठामंतर्मातृकाबहिर्मातृकान्यासं च सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कृत्वा पर्ववत् गणेशकलामातृकान्यासं विधाय प्रयोगोक्तन्यासादिकं कुर्य्यात् तत्र क्रमः-ॐ अस्य श्रीगणेशमंत्रस्य भार्गवऋषिः, अनुष्टुप् छंदः, विघ्नेशो देवता, वं बीजम्, यं शक्तिः, ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः ॥ ॐ भार्गवर्षये नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ अनुष्टुप्छंदसे नमः मुखे ॥ २ ॥ ॐ विघ्नेशदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ ॐ वं बीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ ॐ यं शक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ ॐ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ वँ नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥१॥ ॐक्रँ नमः तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ तुँ नमः मध्यमाभ्यां नमः ॥३॥ ॐ डाँ नमः अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॥४॥ ॐ यँ नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ हुँ नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॐ वँ नमः हृदयाय नमः ॥ ॥ १ ॥ ॐ क्रँ नमः शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ तुँ नमः शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ डाँ नमः कवचाय हुँ ॥ ४ ॥ ॐ यँ नमः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ हुँ नमः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ॐ वँ नमः भ्रमध्ये ॥ १ ॥ ॐ क्रँ नमः कंठे ॥ २ ॥ ॐ तुँ नमः हृदये ॥ ३ ॥ ॐ डाँ नमः नाभौ ॥ ४ ॥ ॐ यँ नमः लिंगे ॥ ५ ॥ ॐ हुँ नमः पादयोः ॥ ६ ॥ इति वर्णन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ ध्यानम्—उद्यद्दिनेश्वररुचिं निजहस्तपद्मैः पाशांकुशाभयवरान्दधतं गजास्यम् ॥रक्तांबरं सकलदुःखहरं गणेशं ध्यायेत्प्रसन्नमखिलाभरणाभिरामम्॥१॥ इति ध्यायेत्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमडले गणेशमंडले वा मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः पद्धतिमार्गेण संस्थाप्य ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः । इति संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् । तद्यथा पूर्वादिक्रमेण ॐ तीव्रायै नमः १ ॐ चालिन्यै नमः २ ॐ नन्दायै नमः ३ ॐ भोगदायै नमः ४ ॐ कामरूपिण्यै नमः ५ ॐ उग्रायै नमः ६ ॐ तेजोवत्यै नमः ७

ॐ सत्यायै नमः ८ मध्ये ॐ विघ्ननाशिन्यै नमः ९ इति पूजयेत् । ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेणाशोष्य ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः । इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पद्धतिमार्गेण प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तत्र क्रमः ॥ पुष्पांजलिमादाय "ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः ॥ अनुज्ञां देहि गणप परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं गणेशोपरि दत्त्वा पूजितस्तर्पितोऽस्तु इति वदेत् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा षट्कोणकेसरेषु षडंगानि पूजयेत् । तथा च ॥ आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च ॐ वँ नमः हृदयाय नमः हृदये श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ कँ नमः शिरसे स्वाहा शिरसि श्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ तँ नमः शिखायै वषट् शिखायां श्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ डाँ नमः कवचाय हुँ कवचे श्रीपा० ॥४॥ ॐ यँ नमः नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रत्रये श्रीपा ०॥ ५ ॥ ॐ हुं नमः अस्त्राय फट् अस्त्रे श्रीपा० ॥ ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् । ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य्य ॥ "ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥" इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य दक्षहस्ते तर्जन्यंगुष्ठाभ्यां गंधाक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा प्राचीक्रमेण अष्टसु दिक्षु ॐ विद्यायै नमः विद्याश्रीपा० १ ॥ ॐ विधात्र्यै नमः विधात्री श्रीपा० २ ॥ ॐ भोगदायै नमः भोगदाश्रीपा० ३ ॥ ॐ विघ्नघातिन्यै नमः विघ्नघातिनीश्रीपा० ४ ॥ ॐ निधिप्रदीपायै नमः निधिप्रदीपाश्रीपा० ५ ॥ ॐ पापघ्न्यै नमः पापघ्नी श्रीपा० ६ ॥ ॐ पुण्यायै नमः पुण्याश्रीपा० ७ ॥ ॐ शशिप्रभायै नमः शशिप्रभाश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ शक्तीः पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिं गृहीत्वा मूलमुच्चार्य्य 'अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् १ ॥" इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ ततो दलाग्रेषु ॐ वक्रतुंडाय

वक्रतुंडगणेशयंत्रम् ।



नमः वक्रतुंडश्रीपा० १ ॥ ॐ एकदंष्ट्राय नमः एकदंष्ट्रश्रीपा० २ ॥ ॐ महोदराय नमः महोदरश्रीपा० ३ ॥ ॐ हस्तिमुखाय नमः हस्तिमुखश्रीपा० ४ ॥ ॐ लम्बोदराय नमः लम्बोदरश्रीपा० ५ ॥ ॐ विकटाय नमः विकटश्रीपा० ६॥ ॐ विघ्नराजाय नमः विघ्नराजश्रीपा० ७ ॥ ॐ धूम्रवर्णाय नमः धूम्रवर्णश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिं गृहीत्वा मूलमुच्चार्य्य॥ "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥ १ ॥ " इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्विंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण- ॐ लं इंद्राय नमः १ ॥ ॐ रं अग्नये नमः २ ॥ ॐ मं यमाय नमः ३ ॥ क्षं निर्ऋतये नमः ४ ॥ ॐ वं वरुणाय नमः ५ ॥ ॐ यं वायवे नमः ६ ॥ ॐ कुं कुबेराय नमः ७ ॥ ॐ हं ईशानाय नमः ८ ॥ पूर्वेशानयोर्मध्ये ॐ आं ब्रह्मणे नमः ९ ॥ वरुणनैर्ऋतयोर्मध्ये ॐ ह्रीं अनंताय नमः १० ॥ इति दशदिक्पालान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति चतुर्थावरणम् ४ ॥ ततः इन्द्रादिसमीपे ॐ वं वज्राय नमः १ ॥ ॐ शं शक्तये नमः २ ॥ ॐ दं दंडाय नमः ३ ॥ ॐ खं खड्गाय नमः ४ ॥ ॐ पां पाशाय नमः ५ ॥ ॐ अं अंकुशाय नमः ६ ॥ ॐ गं गदायै नमः ७ ॥ ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ८ ॥ ॐ पं पद्माय नमः ९ ॥ ॐ चं चक्राय नमः १० ॥ इति

वज्राद्यस्त्राणि पूजयेत् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं षड्लक्षजपः अंष्टद्रव्यैर्दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कारयेत् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च "ऋतुलक्षं जपेन्मंत्रमष्टद्रव्यैर्दशांशतः॥ जुहुयान्मंत्रसंसिद्ध्यै वाडवान्भोजयेच्छुचीन्॥१॥ततः सिद्धे मनौ काम्यान्प्रयोगान्साधयेन्निजान् ॥ ब्रह्मचर्यरतो मंत्री जपेद्द्विसहस्रकम् ॥ षण्मासमध्याद्दारिद्र्यं नाशयत्येव निश्चितम् ॥ चतुर्थ्यादिचतुर्थ्यंतं जपेद्दशसहस्रकम् ॥ ३ ॥ प्रत्यहं जुहुयादष्टोत्तरं शतमतंद्रितः ॥ पूर्वोक्तं फलमाप्नोति षण्मासाद्भक्तितत्परः ॥ ४ ॥ आज्याक्तान्नस्य होमेन भवेद्धनसमृद्धिमान् ॥ पृथुकैर्नारिकेलैर्वा मरिचैर्वा सहस्रकम् ॥ ५ ॥ प्रत्यहं जुह्वतो मासाज्जायते धनसंचयः ॥ जीरसिंधुमरीचाक्तैरष्टद्रव्यैः सहस्रकम् ॥ ६ ॥ जुहुयात्प्रत्यहं पक्षात्स्यात्कुबेर इवार्थवान् ॥ चतुःशतं चतुश्चत्वारिंशदाढ्यं ४४४ दिनं प्रति ॥ तर्पयेन्मूलमंत्रेण मंडलादिष्टमाप्नुयात् ॥ ७ ॥ इति वक्रतुंडषडक्षरमंत्रप्रयोगः ॥१॥ अथ मंत्रभेदः (मंत्रमहोदधौ) मंत्रो यथा ॥ मेधोल्काय स्वाहा ॥ इति षडक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानं सर्वं पूर्ववज्ज्ञेयम् ॥ तथा च॥ "षडक्षरोऽयमादिष्टो भजनादिष्टदो मनुः॥पूर्ववत्सर्वमेतस्य समाराधनमीरितम् १ ॥" इति द्वितीयषडक्षरमंत्रप्रयोगः ॥ अथैकत्रिंशदक्षरवक्रतुंडमंत्रप्रयोगः ॥ (मंत्रमहोदधौ) मंत्रो यथा ॥ "रायस्पोषस्य ददिता निधिदो रत्नधातुमान् ॥ रक्षोहणोवलगहनोवक्रतुंडायहुं ॥" इत्येकत्रिंशदक्षरमंत्रः ॥ अस्य विधानम् ॥ अस्य श्रीवक्रतुंडगणेशमंत्रस्य भार्गवऋषिः ॥ अनुष्टुप् छंदः ॥ विघ्नेशो देवता ॥ यं बीजम् ॥ यं शक्तिः ॥ ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः ॥ ॐ भार्गवर्षये नमःशिरसि॥१॥ ॐ अनुष्टुप्छंदसे नमः मुखे ॥ २ ॥ ॐ विघ्नेशदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ ॐ वं बीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ ॐ यं शक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ ॐ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ रायस्पोषस्य अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ ददिता तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ निधिदो रत्नधातुमान् मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ रक्षोहणो अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ बलगहनो कनिष्ठिकाभ्यां

१—इक्षवः सक्तवो रंभाफलानि चिपिटास्तिलाः ॥ मोदका नारिकेलानि लाजा द्रव्याष्टकं स्मृतम् ॥

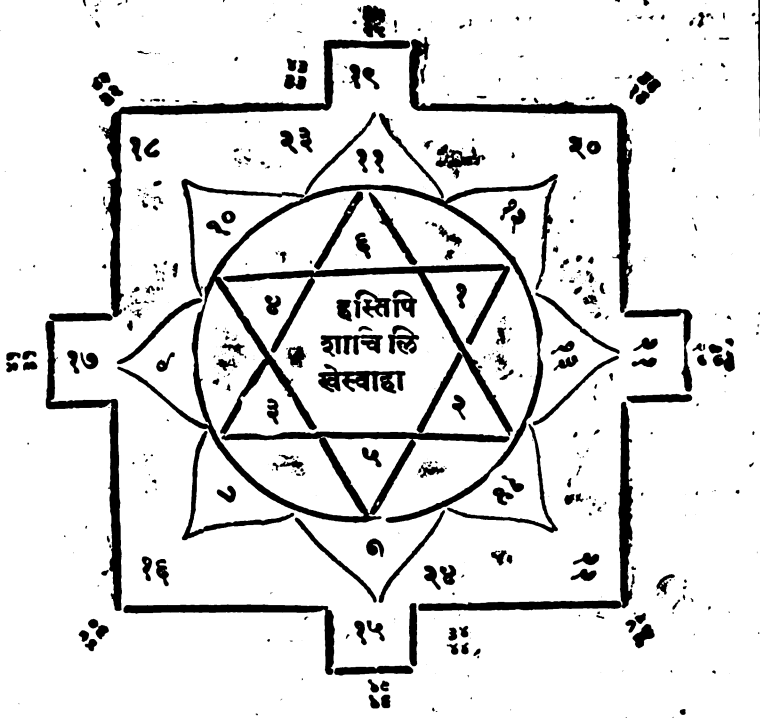
नमः ॥ ५ ॥ वक्रतुंडाय हुं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः । एवमेव हृदयादिषडंगन्यासं कुर्यात् ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्-उद्यद्दिनेश्वररुचिं निजहस्तपद्मैः पाशांकुशाभयवरान्दधतं गजास्यम् ॥ रक्तांबरं सकलदुःखहरं गणेशं ध्यायेत्प्रसन्नमखिलाभरणाभिरामम् ॥ १ ॥ इति ध्यायेत् । अन्यत् सर्वं षडक्षरवत् ॥ इत्येकत्रिंशदक्षरवक्रतुंडमंत्रप्रयोगः ॥ २ ॥ अथोच्छिष्टगणपतिनवार्णमंत्रप्रयोगः ॥ (मंत्रमहोदधौ) मंत्रो यथा ॥ हस्तिपिशाचिलिखे स्वाहा ॥ इति नवार्णमंत्रः । अस्य विधानम्-ॐअस्यश्र्युच्छिष्टगणेशनवार्णमंत्रस्य कंकोल ऋषिः । विराट्छंदः । उच्छिष्टगणपतिर्देवता । अखिलाप्तये जपे विनियोगः॥ॐ कंकोलर्षये नमः शिरसि १ ॥ ॐ विराट्छंदसे नमः मुखे २ ॥ ॐ उच्छिष्टगणपतिदेवतायै नमः हृदि ३ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ हस्ति अंगुष्ठाभ्यां नमः १ ॥ ॐ पिशाचि तर्जनीभ्यां नमः २ ॥ ॐ लिखे मध्यमाभ्यां नमः ३ ॥ ॐ स्वाहा अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॐ हस्तिपिशाचिलिखे कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ॥ ॐ हस्तिपिशाचि लिखे स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ हस्ति हृदयाय नमः १ ॥ ॐ पिशाचि शिरसे स्वाहा २ ॥ ॐ लिखे शिखायै वषट् ३ ॥ ॐ स्वाहा कवचाय हुं ४ ॥ ॐ हस्तिपिशाचि लिखे स्वाहा अस्त्राय फट् ५॥ इति हृदयादिपंचांगन्यासः॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ चतुर्भुजं रक्ततनुं त्रिनेत्रं पाशांकुशौ मोदकपात्रदंतौ ॥ करैर्दधानं सरसीरुहस्थमुन्मत्तमुच्छिष्टगणेशमीडे ॥१ ॥ इति ध्यायेत् । ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले गणेशमंडले वा मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः पद्धतिमार्गेण संस्थाप्य ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमःइति संपूज्य नवपीठशक्तीः पूजयेत् । तद्यथा । पूर्वादिक्रमेण ॐ तीव्रायै नमः १ ॐ चालिन्यै नमः २ ॐ नंदायै नमः ३ ॐ भोगदायै नमः ४ ॐ कामरूपिण्यै नमः ५ ॐ उग्रायै नमः ६ ॐ तेजोवत्यै नमः ७ ॐ सत्यायै नमः ८ मध्ये ॐ विघ्ननाशिन्यै नमः ९ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेणाशोष्य॥ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पद्धतिमार्गेण प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादि

पुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्य्यात् । तत्र क्रमः ॥ पुष्पांजलिमादाय "ॐ संविन्मयः परोदेवपरामृतरसप्रिय । अनुज्ञां देहि गणप परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं गणेशोपरि दत्त्वा पूजितस्तर्पितोऽस्तु इति वदेत् । इत्याज्ञां गृहीत्वा षट्कोणे षडंगानि पूजयेत् ॥ तथा च ॥ अग्निकोणे * " ॐ हस्ति हृदयाय नमः १ ॥ हृदयश्रीपादुकां पूजयामि । तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र पठेत् ॥ नैर्ऋत्ये ॐ गीं पिशाचि शिरसे स्वाहा शिरसि श्रीपा० २ ॥ वायव्ये ॥ ॐ गूं लिखे शिखायै वषट् शिखा श्रीपा० ३ ॥ ऐशान्ये० ॥ ॐ अ स्वाहा कवचाय हुं कवचं श्रीपादुकां पूजयामि त० ४ ॥ मध्ये ॐ गौं हस्तिपिशाचिलिखे स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रत्रये श्रीपा० ५॥ दिक्षु ॐ गः हस्तिपिशाचिलिखे स्वाहा । अस्त्राय फट् अस्त्रे श्रीपादुकां पू० त० नमः ६ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलं पठित्वा । "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ ॥ १ ॥ इति पुष्पांजलिं दत्त्वा विशेषार्घ्याद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य दक्षहस्ते तर्जन्यंगुष्ठाभ्यां गंधाक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा प्राच्यादिक्रमेण अष्टसु दिक्षु ॥ प्राच्याम् । ॐ ब्राह्म्यै नमः ब्राह्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ ॥ आग्नेय्याम् ॥ ॐ माहेश्वर्यै नमः । माहेश्वरीश्रीपा० २ ॥ दक्षिणे ॐ कौमार्यै नमः कौमारीश्रीपा० ३ ॥ नैर्ऋत्ये ॐ वैष्णव्यै नमः वैष्णवीश्रीपा० ४ ॥ पश्चिमे ॐ वाराह्यै नमः । वाराहीश्रीपादुकां पू०त० ५ ॥ वायव्ये ॐ इन्द्राण्यै नमः । इन्द्राणीश्रीपा० ६ ॥ उत्तरे ॐ चामुंडायै नमः । चामुंडाश्रीपा० ७ ॥ ऐशान्ये ॐ महालक्ष्म्यै नमः । लक्ष्मीश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ शक्तीः पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलं पठित्वा "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्प्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥ १ ॥" इत्युक्त्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घ्याद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततः अष्टदलाद्बहिः चतुरस्राभ्यंतरे प्राच्याम् ॐ वक्रतुंडाय

* तन्त्रांतरे तु हस्तिपिशाचिलिखे स्वाहेति नवार्णमंत्रः । ॐ हस्तिपिशाचिलिखे स्वाहा गं हस्तिपिशाचिलिखे स्वाहा नवार्णभेदेन दशाक्षरीमंत्रः ॥

वक्रतुंडश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि १ ॥ आग्नेय्याम् ॐ एकदंष्ट्राय नमः । एकदंष्ट्रश्रीपा० २ ॥ दक्षिणे ॐ लम्बोदराय नमः । लम्बोदर श्रीपा० ३ ॥ नैर्ऋत्ये ॐ विकटाय नमः । विकट श्रीपा० ४॥ पश्चिमे ॐ धूम्रव र्णाय नमः ॐ धूम्रवर्ण श्रीपा० ५॥ वायव्ये ॐ विघ्नराजाय नमः विघ्नराजश्रीपा० ६ ॥ उत्तरे ॐ गजाननाय नमः गजाननश्रीपा०७॥ । ऐशान्ये ॐ विनायकाय नमः । विनायकश्रीपा० ८ ॥ प्राच्येशानयोर्मध्ये ॐ गणपतये नमः । गणपति श्रीपा० ९ ॥ पश्चिमानिर्ऋतयोर्मध्ये ॐ हस्तिदंताय नमः । हस्तिदंतश्रीपा० १० ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलं पठित्वा "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥ १ ॥" इत्युक्त्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ भूपुराद्बहिः पूर्वादिक्रमेण पूर्वे ॐ लं इन्द्राय नमः । इन्द्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ १ ॥ आग्नेय्याम् ॥ ॐ रं अग्नये नमः अग्निश्रीपा० ॥२॥ दक्षिणे॥ ॐ मं यमाय नमः । यमश्रीपा०॥३॥

उच्छिष्टगणपतिनवार्णयंत्रम् ।



नैर्ऋत्ये ॐ क्षं निर्ऋतये नमः । निर्ऋतिश्रीपा० ॥४॥ पश्चिमे ॐ वं वरुणाय नमः ॥ वरुणश्रीपा०॥५॥ वायव्ये ॐ यं वायवे नमः । वायुश्री पा० ॥ ६ ॥ उत्तरे ॐ कुं कुबेराय नमः । कुबेरश्रीपा० ॥७ ॥ ऐशान्ये ॐ हं ईशानाय नमः । ईशानश्रीपा० ॥ ८ ॥ इंद्रेशानयोर्मध्ये ॐ

ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्मश्रीपा० ९ ॥ वरुणनैर्ऋतयोर्मध्ये ॐ ह्रीं अनंताय नमः अनंतश्रीपा० १० ॥ इति दशदिक्पालान् संपूज्य पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥१॥" इत्युक्त्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् इति चतुर्थावरणम् ततः पूर्वादिक्रमेण तत्तत्समीपे ॐ वं वज्राय नमः ॥ १ ॥ ॐ शं शक्तये नमः ॥२॥ ॐ दं दंडाय नमः ॥३॥ ॐ खं खड्गाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ पाँ पाशाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ अं अंकुशाय नमः ॥६॥ ॐ गं गदायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ पं पद्माय नमः ॥ ९ ॥ ॐ चं चक्राय नमः ॥ १० ॥ इत्यस्त्राणि पूजयेत्॥ ततः पुष्पांजलिं गृहीत्वा मूलमुच्चार्य्य "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल॥भक्त्या समर्प्पये तुभ्यं पंचमावरणार्चनम्॥१॥" इत्युक्त्वा पुष्पांजलिं च दत्वा विशेषार्घाद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य पिशितं वा फलं मोदकं वा गुडपायसं बलिं दद्यात् ॥ तत्र मंत्रः ॥ ॐ गँहँक्लौंग्लौं उच्छिष्टगणेशाय महाक्षाया यं बलिः ॥ इति मंत्रेण निवेदयेत् । ततः देवतानिवेदितमोदकं तांबूलं वा स्वयं भुक्त्वा उच्छिष्टमुखेन जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपः । तद्दशांशतस्तिलहोमः । तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्य्यात्॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । एवं सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च—"लक्षमेकं जपेन्मंत्रं दशांशं जुहुयात्तिलैः॥ एवं सिद्धे मनौ मंत्री प्रयोगान्कर्तुमर्हति॥१॥ स्वांगुष्ठप्रतिमां कृत्वा कपिना[1] सितभानुना[2]॥गणेशप्रतिमां रम्यामुकलक्षगलक्षिताम्॥२॥प्रतिष्ठाप्य विधानेन मधुना स्नापयेच्च ताम् ॥ आरभ्य कृष्णभूतादि याव च्छुक्ला चतुर्दशी॥३॥सगुडं पायसं तस्मै निवेद्य प्रजपेन्मनुम् ॥सहस्रं प्रत्यहं तावज्जुहुयात्सघृतैस्तिलैः॥४॥ गणेशोहमिति ध्यायन्नुच्छिष्टेनावृतो रहः ॥ पक्षाद्राज्यमवाप्नोति नृपजोऽन्योऽपि वा नरः ॥ ५ ॥ कुलालमृत्स्नाप्रतिमा पूजितैवं सुराज्यदा ॥ वल्मीकमृत्कृता लाभमेवमिष्टान्प्रयच्छति ॥ ६ ॥ गौडी सौभाग्यदा सैवं लावणी क्षोभयेदरीन् ॥ निंबजा नाशयेच्छत्रू प्रतिमैवं समर्चिता ॥ ७ ॥ मध्वा[3]

---

१ रक्तचन्दनेन ॥ २ श्वेतार्केण वा ॥ ३ घृतमधुशर्करात्तः ॥

र्कहोमतो लाजैर्वशयेदखिलं जगत् ॥ सुतोऽधिशय्यमुच्छिष्टो जपञ्छत्रून् वशं नयेत् ॥ ८ ॥ कटुतैलान्वितैराजीपुष्पैर्विद्वेषयेदरीन् ॥ द्यूते विवादे समरे जतोऽयं जयमावहेत् ॥ ९ ॥ कुबेरोऽस्य मनोर्जापान्निधीनां स्वामितामयात् ॥ लेभाते राज्यमनारी वानरेशविभीषणौ ॥ १० ॥ रक्तवस्त्रांगरागाढ्यतांबूलं निश्यदञ्जपेत् ॥ यद्वा निवेदितं तस्मै मोदकं भक्षयञ्जपेत् ॥ पिशितं वा फलं वापि तेन तेन बलिं हरेत् ॥ (रुद्रयामलतंत्रे प्रयोगविशेषः) कृष्णां चतुर्थीमारभ्य यावच्छुक्ला चतुर्थिका ॥ सहस्रं प्रजपेन्नित्यं योषिन्नियमपूर्वकम् ॥ स्नापयेन्मधुना नित्यं नैवेद्यं गुडपायसम् ॥ भुक्तोच्छिष्टो जपेन्नित्यं गणेशोऽयं सदा प्रियः ॥ १२ ॥ श्वेतार्केनाकृतिं कृत्वा रक्तचंदनकेन वा ॥ प्रतिष्ठाप्य गुष्ठमात्रां द्विजाग्निगुरुसान्निधौ ॥ १३ ॥ जप्त्वा षोडशसाहस्रं सिद्धमंत्रो भवेद्ध्रुवम् ॥ सदोच्छिष्टो गणेशानो यक्षराजेन धीमता ॥ १४ ॥ ॥ आराधितः सोपहारैः सम्यगिष्टफलप्रदः ॥ एवं कृत्वा व्यवस्थां तु तद्धनेश्वरतां गतः ॥ १५ ॥ अपामार्गसमिद्धोमैः सौभाग्यं लभते ध्रुवम् ॥ अष्टोत्तरशतैर्मंत्री एतान्मंत्राभिमंत्रितान् ॥ १६ ॥ कीशा श्वास्थिसमुद्भूतं कीलं मंत्राभिमंत्रितम् ॥ निखनेन्मंदिरे यस्य भवेदुच्चाटनं परम् ॥ १७ ॥ मनुष्यास्थिसमुद्भूतं कीलं मंत्राभिमंत्रितम् ॥ निखनेन्मंदिरे यस्य मरणं तस्य निश्चितम् ॥ १८ ॥ उद्धृते तु भवेत्स्वस्थमिति सर्वस्य निश्चितम् ॥ यद्यन्नाम्ना जपेन्मंत्र सहस्रं स वशी भवेत् ॥ १९ ॥ पंचसाहस्रहोमेन उद्धरेच्च वरां स्त्रियम् ॥ सहस्रदशहोमेन राजा सद्यो वशी भवेत् ॥ २० ॥ लक्षजाप्येन राजानौ द्विलक्षं राजपंक्तयः ॥ दशलक्षेण तद्दिष्टं वश्यं तस्य च सर्वथा ॥ २१ ॥ अणिमादिमहासिद्धिः कोटिजाप्यान्न संशयः ॥ खेचरत्वं भवेन्नित्यं सर्वज्ञत्वं च जायते ॥ २२ ॥ मंत्रं लिखित्वा शिरसि कंठे वा धारयेद्धृदि ॥ सौभाग्यं सर्वरक्षा च भवेत्तत्र सुनिश्चितम् ॥ २३ ॥ सारभूतमिदं मंत्रं न देयं यस्य कस्यचित् ॥ गुह्यं सर्वागमेष्वेवं हितबुद्ध्या प्रकाशितम् ॥ २४ ॥ न तिथिर्न च नक्षत्रं नोपवासो विधीयते ॥ यथेष्टं चिंतयेन्मंत्रं सर्वकामफलप्रदम् ॥ २५ ॥ इत्युच्छिष्टगणपतिनवार्णमंत्रप्रयोगः ॥ १ ॥ अथ द्वादशाक्षरोच्छिष्टगणेशमंत्रप्रयोगः (मंत्र महोदधौ) मंत्रो यथा ॥ ॐ ह्रीं ग हस्तिपिशाचिलिखे स्वाहा ॥ ॐ अस्य श्रीद्वादशाक्षरोच्छिष्टगणेशमंत्रस्य मनुर्ऋषिः । विराट् छंदः ।

उच्छिष्टगणपतिर्देवता । गं बीजम् । स्वाहा शक्तिः । ह्रीं कीलकम् । ह्रीं अखिलाप्तये जपे विनियोगः ॥ ॐ मनुऋषये नमः शिरसि ॥१॥ विराट्छंदसे नमः मुखे ॥ २ ॥ उच्छिष्टगणपतिदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ गं बीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ स्वाहाशक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ ह्रीं कीलकाय नमः नाभौ ॥ ६ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ ७ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ गं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ हस्ति मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ पिशाचि अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ लिखे कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ह्रीं हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ गं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ हस्ति शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ पिशाचि कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ लिखे नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ६ ॥ एवं न्यासं कुर्य्यात् ॥ अन्यत् सर्वं पूर्ववत् ॥ इति द्वादशाक्षरोच्छिष्टगणेशमंत्रप्रयोगः ॥ २ ॥ अथैकोनविंशत्यक्षरोच्छिष्टगणेशमंत्रप्रयोगः । (मंत्रमहोदधौ) मंत्रो यथा । ॐ नमः उच्छिष्टगणेशाय हस्तिपिशाचि लिखे स्वाहा ॥ इत्येकोनविंशत्यक्षरो मंत्रः । अस्य विधानम् । ॐअस्य श्रीउच्छिष्टगणेशमंत्रस्य कंकोलऋषिः। विराट् छन्दः । उच्छिष्टगणपतिर्देवता । अखिलाप्तये जपे विनियोगः ॥ ॐ कंकोलऋषये नमः शिरसि १ ॥ विराट्छन्दसे नमः मुखे २ ॐ उच्छिष्टगणपतिदेवतायै नमः हृदि ३ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ॐ नमः अगुष्ठाभ्यां नमः १ ॥ ॐ उच्छिष्टगणेशाय तर्जनीभ्यां नमः २ ॥ ॐ हस्ति मध्यमाभ्यां नमः ३ ॥ ॐ पिशाचि अनामिकाभ्यां नमः ४ ॥ ॐ लिखे कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ॥ ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ॐ नमः हृदयाय नमः १ ॥ ॐ उच्छिष्टगणेशाय शिरसे स्वाहा २ ॥ ॐ हस्ति शिखायै वषट् ३ ॥ ॐ पिशाचि कवचाय हुँ ४ ॥ ॐ लिखे नेत्रत्रयाय वौषट् ५ ॥ ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कुर्य्यात् । अन्यत् सर्वं पूर्ववत् ॥ इत्येकोनविंशत्यक्षरोच्छिष्टगणेशमंत्रप्रयोगः ३ ॥ अथ सप्तत्रिंशदक्षरोच्छिष्टगणेशमंत्रप्रयोगः । मंत्रो यथा । ॐ नमो भगवते एकदंष्ट्राय हस्तिमुखाय लम्बोदराय उच्छिष्टमहात्मने आंक्रौंह्रींगंघेघे स्वाहा। इति सप्तत्रिंशदक्षरो

मंत्रः ॥ अस्य विधानम् ॥ ॐ अस्य श्रीउच्छिष्टगणेशमंत्रस्य गणक ऋषिः । गायत्री छन्दः । उच्छिष्टगणपतिर्देवता । गं बीजम् । ह्रीं शक्तिः । आँ क्रौं कीलकम् । ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः ॥ ॐ गणकर्षये नमः शिरसि १ ॥ गायत्रीछन्दसे नमो मुखे २ ॥ उच्छिष्टगणपतिदेवतायै नमो हृदि ३ ॥ गँ बीजाय नमो गुह्ये ४ ॥ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ५ ॥ आँ क्रौं कीलकाय नमो नाभौ ६ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ७ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ नमो भगवते एकदंष्ट्राय अंगुष्ठाभ्यां नमः १ ॥ हस्तिमुखाय तर्जनीभ्यां नमः २ ॥ लम्बोदराय मध्यमाभ्यां नमः ३ ॥ उच्छिष्टमहात्मने अनामिकाभ्यां नमः ४ ॥ आँक्रौंह्रींगँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ॥ घेघे स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः । ॐ नमो भगवते एकदंष्ट्राय हृदयाय नमः १ ॥ हस्तिमुखाय शिरसे स्वाहा २ ॥ लंबोदराय शिखायै वषट् ३ ॥ उच्छिष्टमहात्मने कवचाय हुं ४ ॥ आँक्राँह्रींगं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ ॥ घेघेस्वाहा अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् । ॐ शरान्धनुः पाशसृणी स्वहस्तैर्दधानमारक्तसरोरुहस्थम् ॥ विवस्त्रपत्न्यां सुरतप्रवृत्तमुच्छिष्टमम्बासुतमाश्रयेऽहम् ॥ १ ॥ एवं ध्यात्वा पूर्वोक्तपीठपूजां विधाय पूर्वोक्तावरणपूजां च कृत्वा जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपः । तद्दशांशतो घृतहोमः ॥ तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्य्यात् । एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च–लक्षं जपेद्धृतैर्हुत्वा तद्दशांशं प्रपूजयेत् ॥ पूर्वोक्तपीठे स्वाभीष्टसिद्धये पूर्ववद्विभुम् ॥ १ ॥ कृष्णाष्टम्यादि भूतांतं यावत्तावज्जपेन्मनुम् ॥ प्रत्यहं साष्टसाहस्रं जुहुयात्तद्दशांशतः ॥ २ ॥ तर्पयेदपि मंत्रोऽयं सिद्धिमेवं प्रयच्छति ॥ धनं धान्यं सुतान्पौत्रान्सौभाग्यमतुलं यशः ॥ ३ ॥ मूर्तिं कुर्याद्गणेशस्य शुभाहे निम्बदारुणा ॥ प्राणप्रतिष्ठां कृत्वाथ तदग्रे मंत्रमाजपेत् ॥ ४ ॥ यं ध्यात्वा दासवत्सोऽपि वश्ये भवति निश्चितम् ॥ नदीजलं समादाय सप्तत्रिंशतिसंख्यया ॥ ५ ॥ मंत्रयित्वा मुखं तेन प्रक्षाल्येशसभां व्रजेत् ॥ पश्येद्यं दृश्यते येन स वश्यो जायते क्षणात् ॥ ६ ॥ चतुःसहस्रं धत्तूरपुष्पाणि मनुनार्पयेत् ॥ गणेशाय नृपादीनां जनानां वश्यताकृते ॥ ७ ॥ सुंदरीवा

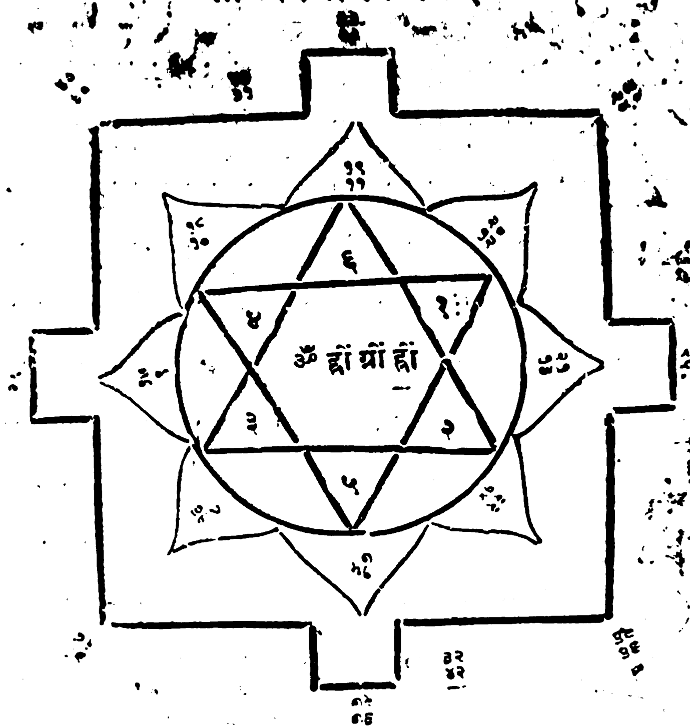
पादस्य रेणुमादाय तत्र तु ॥ संस्थाप्य गणनाथस्य प्रतिमां प्रजपेन्मनुम् ॥ ८ ॥ तां ध्यात्वा रविसाहस्रं सा समायाति दूरतः ॥ श्वेतार्केणाथ निम्बेन कृत्वा मूर्तिं घृतांशुकाम् ॥ ९ ॥ चतुर्थ्यां पूजयेद्रात्रौ रक्तैः कुसुमचन्दनैः ॥ जप्त्वा सहस्रं तां मूर्तिं क्षिपेद्रात्रौ सरित्तटे ॥ १० ॥ स्वेष्टं कार्यं समाचष्टे स्वप्ने तस्य गणाधिपः ॥ सहस्रं निम्बकाष्ठानां होमादुच्चाटयेदरीन् ॥ ११ ॥ वज्रिणा समिधा होमाद्रिपुर्य्यमपुरं व्रजयेत् ॥ वानरस्यास्थि संजप्तं क्षिप्तमुच्चाटयेद्गृहे ॥ १२ ॥ जप्तं नरास्थि कन्याया गृहे क्षिप्तं तदाप्तिकृत् ॥ कुलालस्य मृदा स्त्रीणां वामपादस्य रेणुना ॥ कृत्वा पुत्तलिकां तस्या हृदि स्त्रीनाम संलिखेत् ॥ निखनेन्मंत्रसंजप्तैर्निम्बकाष्ठैः क्षिताविमाम् ॥ सोन्मत्ता भवति क्षिप्रमुद्धृतायां सुखं भवेत् ॥ शत्रोरेवं कृता सा तु लशुनेन समाचिता ॥ १५ ॥ शरावान्तर्गता सम्यक् पूजिता द्वारि विद्विषः ॥ निखाता पक्षमात्रेण शत्रूच्चाटनकृत्स्मृता ॥ १६ ॥ विषमे समनुप्राप्ते सितार्कारिष्टदारुजम् ॥ गणपं पूजितं सम्यक् कुसुमै रक्तचन्दनैः ॥ १७ ॥ मद्यभाण्डस्थितं हस्तमात्रे तं निखनेत्स्थले ॥ तत्रोपविश्य प्रजपेन्मंत्री नक्तं दिवा मनुम् ॥ १८ ॥ सप्ताहमध्ये नश्यंति सर्वे घोरा उपद्रवाः ॥ शत्रवो वश्यतां यांति वर्द्धंते धनसंपदः ॥ १९ ॥ दुष्टस्त्रीवामपादस्य रजसा निजदेहजैः ॥ मलैर्मूत्रपुरीषाद्यैः कुंभकारमृदापि च ॥ २० ॥ एतैः कृत्वा गणेशस्य प्रतिमां मद्यभाण्डगाम् ॥ संपूज्य निखनेद्भूमौ हस्तार्द्धे पूरिते पुनः ॥ २१ ॥ संस्थाप्य वह्निं जुहुयात् कुसुमैर्हयमारजैः ॥ सहस्रं सा भवेद्दासी तन्वा च मनसा धनैः ॥ २२ ॥ एवमादिप्रयोगांस्तु नवार्णेनापि साधयेत् ॥ परीक्षिताय शिष्याय प्रदेया निजसूनवे ॥ २३ ॥ इति सप्तत्रिंशदक्षरमंत्रप्रयोगः ॥ (प्रकारांतरेणैकाधिकचत्वारिंशदक्षरमंत्रभेदो रुद्रयामलतंत्रे) मंत्रो यथा ॥ ॐ नमो भगवते एकदंष्ट्राय हस्तिमुखाय लम्बोदराय उच्छिष्टमहात्मने आँ क्रौं ह्रीं गँ घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ ॐ अस्य श्रीउच्छिष्टमहागणपतिमंत्रस्य मतंगभगवान् ऋषिः। गायत्री छंदः। उच्छिष्टमहागणपतिर्देवता। गं बीजम्। स्वाहा शक्तिः। ह्रीं कीलकम्। ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः ॥ इति विनियोगं कुर्य्यात्। अन्यत्सर्वं पूर्ववत् ॥ (मंत्रमहोदधौ) द्वात्रिंशदक्षरमंत्रभेदः ॥

१ हरहर। २ करवीरोद्भवैः।

मंत्रो यथा ॥ ॐ हस्तिमुखाय लम्बोदराय उच्छिष्टमहात्मने आँक्रोंह्रींक्लींह्रींहुंघेघे उच्छिष्टाय स्वाहा ॥ ॐ अस्य श्रीउच्छिष्टगणप मंत्रस्य गणक ऋषिः । गायत्री छंदः । उच्छिष्टगणपतिर्देवता । ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः ॥ ॐ गणकऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ गायत्रीछंदसे नमः मुखे ॥ २ ॥ ॐ उच्छिष्टगणपतिदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ ॐ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः । ॐ हस्तिमुखाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ लंबोदराय तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ उच्छिष्टमहात्मने मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ आँक्रोंह्रींक्लींह्रींहुं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ घेघे उच्छिष्टाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥ एवमेवं हृदयादिषडंगन्यासं च कुर्य्यात् ॥ अन्यत् सर्वं पूर्ववत् । तथा च—द्वात्रिंशदक्षरो मंत्रो यजनं पूर्ववत्स्मृतम् ॥ उच्छिष्टगजवक्रस्य मंत्रेष्वेषु न शोधयेत् ॥ १ ॥ सिद्धादि चात्र मासादेः प्राप्तास्ते सिद्धिदा गुरोः ॥ मनवोऽमी सदा गोप्या न प्रकाश्या यतः कुतः ॥ परीक्षिताय शिष्याय प्रदेया निजसूनवे ॥ २ ॥ इति ॥ अथ प्रकृतग्रंथैकत्रिंशदक्षरमंत्रभेदः ॥ मंत्रो यथा ॥ ॐ नमो हस्तिमुखाय लंबोदराय उच्छिष्टमहात्मने क्राँक्रीं ह्रीं घेघे उच्छिष्टाय स्वाहा ॥ अस्य विधानम् ॥ कटुनिंबमूलस्य पर्वमानां गणेशप्रतिमां कृत्वाष्टमीमारभ्यामावास्यापर्यंतं पंचशतसंख्याकं जपं प्रतिदिनं कुर्य्यात् ॥ स्वयमुच्छिष्टमुखो भूत्व गणेशाग्रे स्थाल्यां रक्तचन्दनाक्षतपुष्पाणि धृत्वा समभ्यर्च्य स्वोच्छिष्टमुखेन जपः कर्तव्यः ॥ एवं दिनसप्तकं कृत्वाष्टमे दिवसे स्वय च्छिष्टमुखो भूत्वैव पक्वखाद्येन पंचशतं जुहुयात् ॥ ततोऽभिलषितं ददाति महिमा भवति ॥ १ ॥ अभिलषितबालाचित्रोपरि गणेशं संस्थाप्य प्रत्यहमष्टोत्तरशतं जपेत् । दिनत्रयादाकर्षयति ॥ २ ॥ तं गणेशं तत्कपाले संस्थाप्य सा पुनर्गच्छति पुनरानयनायाष्टोत्तरशतं जपेत् । यदि सा पुनर्नायाति तर्हि तं गणेशमुच्छिष्टमुखाग्रे निधायाष्टोत्तरशतं जपेत् । राजा वशी भवति ॥ ३ ॥ तं गणेशं नद्यां नीत्वा प्रक्षाल्य स्वमुखाद्वारचतुष्टयं प्रक्षाल्य तस्मात् पतितं किंचिदुदकं भांडे निःक्षिपेत् । तदुदकं ये पिबंति ते सर्वे वश्या भवंति ॥ ४ ॥ तं गणेशं

द्वारे तरुवरशाखायां निक्षिप्य संपूज्याष्टोत्तरशतं जपेत्। गृहे ह्यखण्डितमन्नं भवति ॥ ५॥ तं गणेशं ताम्रे रौप्ये वा निक्षिप्य कटिबंधनात् स्त्रियो वश्या भवन्ति शत्रुगणः स्तंभीभवति ॥ ६ ॥ तं गणेशं करतले धृत्वा कनकपुष्पैरर्चयेत् पश्चात् करेण करवाले धृते सति संग्रामे जयो भवति दशशतं जपति ॥७॥ तं गणेशमन्नोपरि संस्थाप्याष्टोत्तरशतं जपेत् उदरपूरणर्थमन्नप्राप्तिर्भवति ॥८॥ तं गणेशं पाणौ प्रक्षाल्य तदुदकपानाच्छत्रुनामग्रहणाद्रिपुनाशः स्यात् ॥ ९ ॥ इत्येकाधिकत्रिंशदक्षरोच्छिष्टगणेशमंत्रप्रयोगः ॥ अथ शक्तिविनायकचतुरक्षर मंत्रप्रयोगः। (मंत्रमहोदधौ) ॐ ह्रीं ग्रीं ह्रीं ॥ इति चतुरक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम् ॥ अस्य शक्तिगणाधिपमंत्रस्य भार्गव ऋषिः। विराट् छंदः। शक्तिगणाधिपो देवता। ग्रीं बीजम्। ह्रीं शक्तिः। ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः ॥ ॐ भार्गवर्षये नमः शिरसि १ ॥ विराट्छंदसे नमः मुखे २ ॥ शक्तिगणाधिपदेवतायै नमः हृदि ३ ॥ ग्रीँ बीजाय नमः गुह्ये ४ ॥ ह्रीँ शक्तये नमः पादयोः ५ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः॥ॐग्राँ अंगुष्ठाभ्यां नमः १ ॥ ॐ ग्रीँ तर्जनीभ्यां नमः २ ॥ ॐ ग्रूँ मध्यमाभ्यां नमः ३ ॥ ॐ ग्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४ ॥ ॐ ग्रौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ॥ ॐ ग्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ग्राँ हृदयाय नमः १ ॥ ॐ ग्रीं शिरसे स्वाहा २ ॥ ॐ ग्रूँ शिखायै वषट् ३ ॥ ॐ ग्रैं कवचाय हुं ४ ॥ ॐ ग्रौँ नेत्रत्रयाय वौषट् ५ ॥ ॐ ग्रः अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ इति न्यास कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्-विषाणांकुशावक्षसूत्रं च पाशं दधानं करैर्मोदकं पुष्करेण ॥ स्वपत्न्या युतं हेमभूषाभराढ्यं गणेशं समुद्यद्दिनेशाभमीडे॥ १ ॥ इति ध्यायेत्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतो भद्रमंडले गणेशमंडले वा पद्धतिमार्गेण मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य ॐमं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः इतिसंपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्। तद्यथा। पूर्वादिक्रमेण ॐ तीव्रायै नमः १ ॥ ॐ चालिन्यै नमः२॥ॐ नंदायै नमः३॥ॐ भोगदायै नमः ४ ॥ ॐ कामरूपिण्यै नमः ५॥ ॐ उग्रायै नमः६॥ॐतेजोवत्यै नमः ७ ॥ ॐ सत्यायै नमः ८ ॥ मध्ये ॐ विघ्ननाशिन्यै नमः ९ ॥ इति पूजयेत् ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेणाशोष्य ॥ ॐ ह्रीं

शक्तिविनायकयंत्रम् ।



१ अत्र गणपतिविग्रहाद्यंकितस्थलेषु पञ्चविंशत्या [illegible] लिखेत् ।

[illegible]कमलासनाय नमः ॥ इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पद्धतिमार्गेण प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तथा च पुष्पांजलिमादाय "ॐ संविन्मयः परो देव परामृतरसप्रिय ॥ अनुज्ञां देहि गणप परिवारार्चनाय मे" ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घ्याद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितस्तर्पितोऽस्तु इति वदेत् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्षु दिक्षु मध्ये दिक्षु च ॥ ॐ ग्रां हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ग्रीं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ग्रूं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ ग्रैं कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ ग्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ ग्रः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य्य ॥ "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्प्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्" ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घ्याद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥

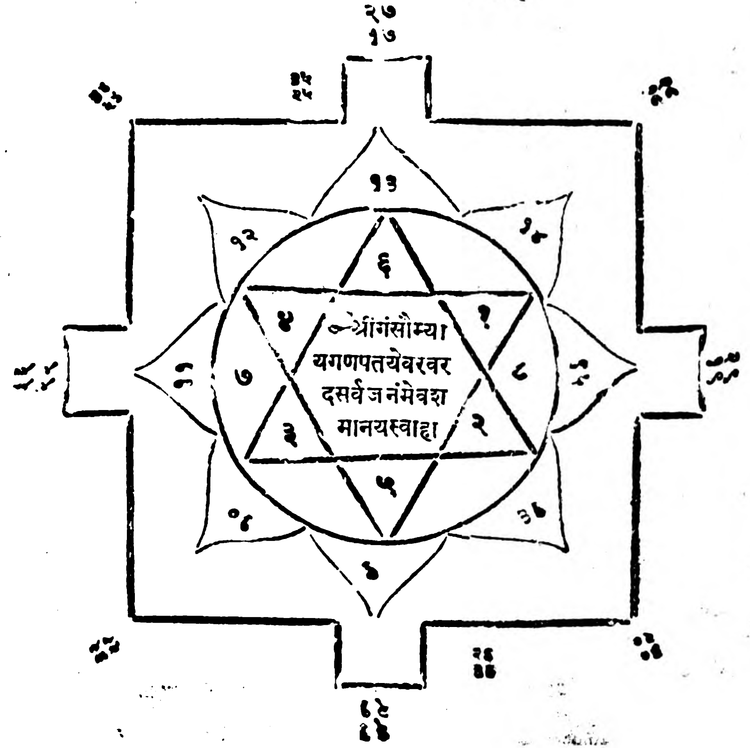
इति प्रथमावरणम् ॥ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतराले प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य दक्षहस्ते तर्जन्यंगुष्ठाभ्यां गंधाक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा प्राचीक्रमेण अष्टसु दिक्षु * ॐ वक्रतुंडाय नमः । वक्रतुंडश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥१॥ इति सर्वत्र ॥ एकदंष्ट्राय

* शिरःस्थांकपदेस्तुल्यां करस्थलेषु यंत्रपूर्तिर्विधेया ॥

नमः एकदंष्ट्रश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ महोदराय नमः । महोदरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥३॥ ॐ हस्तिमुखाय नमः । हस्तिमुख श्रीपादुकां० ॥ ४ ॥ ॐ लम्बोदराय नमः । लम्बोदरश्रीपादुकां० ॥ ५ ॥ ॐ विकटाय नमः । विकटश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ विघ्नराजाय नमः । विघ्नराजश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ धूम्रवर्णाय नमः । धूम्रवर्णश्रीपा० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिं दत्त्वाष्टदलाग्रेषु प्राची क्रमेण ॥ ॐ ब्राह्म्यै नमः १ ॥ ब्राह्मीश्रीपा० १ ॥ माहेश्वर्य्यै नमः २ ॥ माहेश्वरीश्रीपा० २ ॥ ॐ कौमार्यै नमः ३ ॥ कौमारी श्रीपा० ३ ॥ ॐ वैष्णव्यै नमः ४ ॥ वैष्णवीश्रीपा० ४ ॥ ॐ वाराह्यै नमः ५ ॥ वाराहीश्रीपा० ५ ॥ ॐ इन्द्राण्यै नमः ६ ॥ इन्द्राणीश्रीपा० ६ ॥ ॐ चामुंडायै नमः ७ ॥ चामुंडाश्रीपा० ७ ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः ८ ॥ महालक्ष्मीश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिं दत्त्वा भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयेत् ॥ इत्यावरणपूजां च कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं चतुर्लक्षजपः । अपूपैर्दशांशतो होमः । मध्वक्तैर्दशांशतस्तर्पणं तद्दशांशेन मार्जनं ब्राह्मण भोजनं च कुर्य्यात् । एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे एतन्मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च–"एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षचतुष्कं तद्दशांशतः ॥ अपूपैर्जुहुयाद्द्वह्नौ मध्वक्तैस्तर्पयेच्च तम् ॥ १ ॥ घृताक्तमन्नं जुहुयादावर्षादन्नवान्भवेत् ॥ परमान्नैर्हुता लक्ष्मीरिक्षुदंडैर्नृप श्रियः ॥ २ ॥ रम्भाफलैर्नारिकेलैः पृथुकैर्वश्यता भवेत् ॥ घृतेन धनमाप्नोति लवणैर्मधुसंयुतैः ॥ ३ ॥ वामनेत्रां वशीकुर्य्यादपूपैः पृथिवीपतिम् ॥" इति शक्तिविनायकचतुरक्षरमंत्रप्रयोगः ॥ अथ लक्ष्मीविनायकमंत्रप्रयोगः ॥ (मंत्रमहोदधौ) मंत्रो यथा । ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥ इत्यष्टाविंशत्यक्षरमंत्रः ॥ अस्य विधानम् ॥ अस्य लक्ष्मीविनायकमंत्रस्य अन्तर्य्यामी ऋषिः । गायत्री छंदः । लक्ष्मीविनायको देवता । श्रीं बीजम् । स्वाहा शक्तिः । ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । ॐ अन्तर्य्यामिऋषये नमः शिरसि ॥ १ गायत्रीछंदसे नमः मुखे ॥ २ ॥ लक्ष्मीविनायकदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ श्रीं बीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ स्वाहा शक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॐ श्रीं गं अंगुष्ठाभ्यां

नमः ॥ १ ॥ ॐ श्रीं गीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ श्रूं गूं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ श्रैं गैं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ श्रौं गौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ श्रः गः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ श्रां गां हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ श्रीं गीं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ श्रूं गूं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ श्रैं गैं कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ श्रौं गौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ श्रः गः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्-"दन्ताभये चक्रवरौ दधानं कराग्रगं स्वर्णघटं त्रिनेत्रम् ॥ धृताब्जयाऽऽलिङ्गितमब्धिपुत्र्या लक्ष्मीगणेशं कनकाभमीडे ॥ १ ॥" इति ध्यायेत् । ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले गणेशमंडले वा मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः पद्धतिमार्गेण संथाप्य-ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांत पीठदेवताभ्यो नमः। इति संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्। तद्यथा। ॐ तीव्रायै नमः ॥१॥ ॐ चालिन्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ नंदायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ भोगदायै नमः ॥४॥ ॐ कामरूपिण्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ उग्रायै नमः ॥ ६ ॥ ॐ तेजोवत्यै नमः ॥ ७ ॥ ॐ सत्यायै नमः ॥ ८ ॥ मध्ये ॐ विघ्ननाशिन्यै नमः ॥ ९ ॥ इति पूजयेत् । ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेणाशोष्य। ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः ॥ इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पद्धतिमार्गेण प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञां

लक्ष्मीविनायकयंत्रम् ।



गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्य्यात् ॥ तथा च पुष्पांजलिमादाय "ॐ संविन्मयः परेश त्वं परामृतरसप्रिय ॥ अनुज्ञां देहि गणप परिवारार्चनाय मे॥ १ ॥" इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घ्याद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितस्तर्पितोऽस्तु इति वदेत् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्य दिक्षु च॥ ॐ श्रां गां हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ श्रीं गीं शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ श्रूं गूं शिखायै वषट्॥ ३॥ ॐ श्रैं गैं कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ श्रौं गौं नेत्रत्रयाय वौषट्॥ ५ ॥ ॐ श्रः गः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य्य ॥ "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥" इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घ्याद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ देवदक्षिणपार्श्वे । ॐ शंखाय नमः शंखश्रीपा॰ १ ॥ देवतावामे॰ ।ॐ पद्मनिधये नमः । पद्मनिधिश्रीपा॰ २ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य दक्षहस्ते तर्जन्यंगुष्ठाभ्यां गंधाक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा प्राचीक्रमेण अष्टसु दिक्षु ॥ ॐ बलायै नमः । बलाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ विमलायै नमः । विमलाश्रीपा ०२॥ ॐ कमलायै नमः । कमलाश्रीपा०३॥ ॐ वनमालिकायै नमः । वनमालिकाश्रीपा॰ ४ ॥ ॐ विभीषिकायै नमः । विभीषिकाश्रीपा॰ ५ ॥ ॐ मालिकायै नमः । मालिकाश्रीपा॰ ६॥ ॐ शांकर्यै नमः । शांकरीश्रीपादुकां प॰ ७ ॥ ॐ वसुबालिकायै नमः । वसुबालिकाश्रीपा॰ ८ ॥ इत्यष्टौ शक्तीः पूजयेत् । ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य॥ "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥१॥" इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत्॥ इति द्वितीयावरणम्॥ ततो भूपुरे इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्रायुधानि च पूजयेत्॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं चतुर्लक्षजपः ॥ बिल्वसमिद्भिर्दशांशतो होमः ॥ तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्य्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति। सिद्धे चैतन्मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च–"चतुर्लक्षं जपेन्मंत्रं समिद्भिर्बिल्वशाखिनः ॥ दशांशं जुहुयात्पीठे पूर्वोक्ते तं प्रपूजयेत् ॥१॥ एवं सिद्धे मनौ मंत्री प्रयोगान्कर्तुमर्हति ॥ उरोमात्रे जले

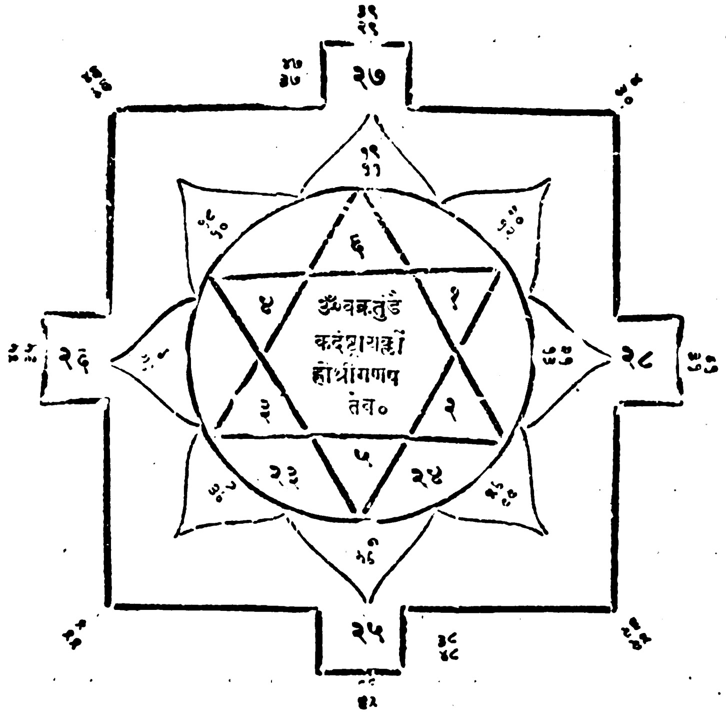
स्थित्वा मंत्री ध्यात्वार्कमंडले ॥ २ ॥ एवं त्रिलक्षजपतो धनवृद्धिः प्रजायते ॥ बिल्वमूलं समास्थाय तावज्जते फलं हि तत् ॥ ३ ॥ अशोककाष्ठैर्ज्वलिते वह्नावाज्याक्ततण्डुलैः ॥ होमतो वशयेद्विश्वमर्ककाष्ठस्रुचा ध्रुवम् ॥ ४ ॥ खदिराग्नौ नरपतिं लक्ष्मीं पायसहोमतः॥" इति लक्ष्मीविनायकमंत्रप्रयोगः ॥ अथ त्रैलोक्यमोहनकरगणेशमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रमहोदधौ । (मंत्रो यथा) ॥ वक्रतुंडैकदंष्ट्राय क्लींह्रींश्रींगँ गणपते वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥ इति त्रयस्त्रिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम् ॥ अस्य श्रीत्रैलोक्यमोहनकरगणेशमंत्रस्य गणक ऋषिः । गायत्री छंदः । त्रैलोक्यमोहनकरो गणेशो देवता । ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ॐ गणकऋषये नमः शिरसि१॥ गायत्रीछंदसे नमः मुखे २ ॥ त्रैलोक्यमोहनकरगणेशदेवतायै नमः हृदि ३ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः । ॐ वक्रतुंडैकदंष्ट्राय क्लींह्रींश्रींगँ अंगुष्ठाभ्यां नमः १ ॥ ॐ गणपते तर्जनीभ्यां नमः २ ॥ ॐ वरवरद मध्यमाभ्यां नमः ३ ॥ ॐ सर्वजनम् अनामिकाभ्यां नमः ४॥ ॐ मे वशमानय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ॥ ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६॥ इति करन्यासः ॐ वक्रतुंडैकदंष्ट्राय क्लींह्रींश्रींगँ हृदयाय नमः १ ॥ ॐ गणपते शिरसे स्वाहा २ ॥ ॐ वर वरद शिखायै वषट् ३ ॥ ॐ सर्वजनं कवचाय हुं ४ ॥ ॐ मे वशमानय नेत्रत्रयाय वौषट् ५ ॥ ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ इति न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् । गदाबीजपूरे धनुः शूलचक्रे सरोजोत्पले पाशधान्याग्रदन्तान् ॥ करैः संदधानं स्वशुंडाग्रराजन्मणीकुम्भमङ्काधिरूढं स्वपत्न्या १॥ सरोजन्मना भूषणानां भरेणोज्ज्वलद्धस्ततन्व्या समालिङ्गिताङ्गम् ॥ करीन्द्राननं चन्द्रचूडं त्रिनेत्रं जगन्मोहनं रक्तकांतिं भजेत्तम्॥२॥इति ध्यायेत्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले गणेशमंडले वा मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः पद्धतिमार्गेण संस्थाप्य ॐमं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः इति संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् । तद्यथा-पूर्वादिक्रमेण ॐ तीव्रायै नमः१ॐचालिन्यै नमः २ ॐनंदायै नमः ३ ॐ भोगदायै नमः ४ ॐ कामरूपिण्यै नमः ५ ॐ उग्रायै नमः ६ ॐ तेजोवत्यै नमः ७ ॐ सत्यायै नमः ८ मध्ये ॐ विघ्ननाशिन्यै नमः ९ इति पूजयेत् । ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च

दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेणाशोष्य । ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः । इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्य्यात् ॥ तथा च । पुष्पांजलिमादाय ॥ "संविन्मयः परेश त्वं परामृतरसप्रिय॥ अनुज्ञां देहि गणप परिवारार्चनाय मे॥१॥" इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितस्तर्पितोऽस्तु इति वदेत्॥इत्याज्ञां गृहीत्वा षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्षु दिक्षु मध्ये दिक्षु च । ॐवक्रतुंडैकदंष्ट्राय क्लींह्रींश्रींगँ हृदयाय नमः १॥ॐ गणपते शिरसे स्वाहा २॥ॐवर वरद शिखायै वषट्३॥ॐ सर्वजनं कवचाय हुं ४॥ ॐ मे वशमानय नेत्रत्रयाय वौषट् ५॥ ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ६ इति षडंगानि पूजयेत्॥ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य॥"ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्१॥" इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घ्याद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत्॥इति प्रथमावरणम् ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतराले प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य दक्षहस्ते तर्जन्यंगुष्ठाभ्यां गंधाक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा प्राचीक्रमेण अष्टसु दिक्षु ॐ वामायै नमः । वामाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र १ ॥ ॐ ज्येष्ठायै नमः । ज्येष्ठाश्रीपा० २ ॥ ॐ रौद्र्यै नमः । रौद्रीश्रीपा० ३ ॥ ॐ काल्यै नमः । कालीश्रीपा० ४ ॥ ॐ कलपदादिकायै नमः । कलपदादिकाश्रीपा० ५ ॥ ॐ विकरिण्यै नमः । विकरिणीश्रीपा० ६ ॥ ॐ बलायै नमः । बलाश्रीपा० ७ ॥ ॐ प्रमथिन्यै नमः । प्रमथिनीश्रीपा० ८ ॥ देवस्याग्रे ॥ ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः । सर्वभूतदमनीश्रीपा० १ ॥ ॐ मनोन्मन्यै नमः । मनोन्मनीश्रीपा० २ ॥ चतुर्षु दिक्षु ॥ ॐ प्रमोदाय नमः । प्रमोदश्रीपा० १॥ ॐ सुमुखाय नमः । सुमुखश्रीपा० २ ॥ ॐ दुर्मुखाय नमः । दुर्मुखश्रीपा० ३ ॥ ॐ विघ्ननाशाय नमः । विघ्ननाशश्रीपा० ४ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य्य ॥ " अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्य समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् २ ॥ " इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घ्याद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् । इति द्वितीयावरणम् ॥ ततोऽष्टदलाग्रेषु ॥ ॐ आं ब्राह्म्यै नमः । ब्राह्मीश्रीपा० ॥ ॐ ईं माहेश्वर्य्यै नमः ।

माहेश्वरीश्रीपा० २ ॥ ॐ ॐ कौमार्य्यै नमः । कौमारीश्रीपा० ३ ॥ ॐ ॠँ वैष्णव्यै नमः । वैष्णवीश्रीपा० ४ ॥ ॐ वाराह्यै नमः । वाराही श्रीपा० ५ ॥ ॐ ऐं इंद्राण्यै नमः । इन्द्राणीश्रीपा० ६ ॥ ॐ औं चामुण्डायै नमः चामुंडा श्रीपा० ७ ॥ ॐ अः महालक्ष्म्यै नमः महालक्ष्मीश्रीपा० ८ ॥ इति पूजयेत् । ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य ॥ "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥ १ ॥" इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घ्यबिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् । इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥

ततः भूपुरे पर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयेत् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात् । अस्य पुरश्चरणं चतुर्लक्षजपः ॥ अष्टद्रव्यैर्दशांशतो होमः । एवंकृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च—"वेदलक्षं जपेन्मंत्रमष्टद्रव्यैर्दशांशतः ॥ हुत्वा पूर्वोदितं पीठे पूजयेद्गणनायकम् ॥ १ ॥ एवं सिद्धे मनौ कुर्य्यात्प्रयोगानिष्टसिद्धये ॥

त्रैलोक्यमोहनकरगणेशयंत्रम् ।



वशयेत्कमलैर्भूपान्मंत्रिणः कुमुदैर्हुतैः ॥ २ ॥ समिद्भिरैश्चलदलसमुद्भूतैर्धरासुरान् ॥ उदुम्बरोत्थैर्नृपतीन्प्लक्षैर्वाटैर्विशोऽन्तिमान् ॥ ३ ॥

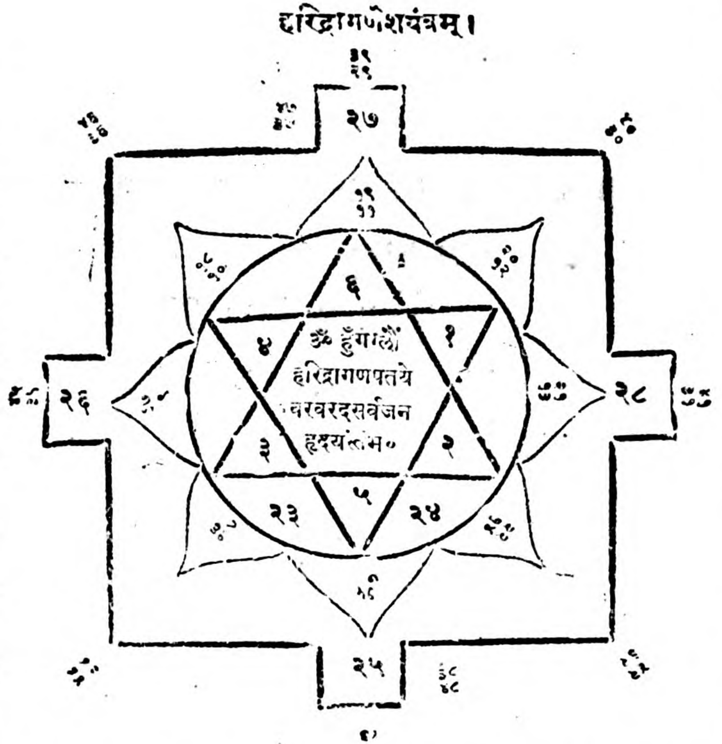
---

१ चलदलोऽश्वत्थस्तस्य समिद्भिर्धरासुरान्विप्रान् वशयेत्-प्लक्षसमिद्भिर्वैश्यान्-वटजाभिरंतिमान् (शूद्रान्) ।

क्षौद्रेण कनकप्राप्तिर्गोप्राप्तिः पयसा गवाम् ॥ ऋद्धिर्दध्नोदनैरन्नं घृतैः श्रीर्वैतसैर्जलम् ॥ ४ ॥" इति श्रीत्रैलोक्यमोहनकरगणेशमंत्रप्रयोगः ॥ अथ हरिद्रागणेशमंत्रप्रयोगः । (मंत्रमहोदधौ) मंत्रो यथा—ॐ हुँगँग्लौं ॥ हरिद्रागणपतये वरवरद सर्वजनहृदयं स्तंभय स्तंभय स्वाहा ॥ इति द्वात्रिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम् ॥ अस्य हरिद्रागणनायकमंत्रस्य मदन ऋषिः । अनुष्टुप्छंदः । हरिद्रागणनायको देवता। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ मदनऋषये नमः शिरसि १ ॥ अनुष्टुप्छंदसे नमः मुखे २ ॥ हरिद्रागणनायकदेवतायै नमः हृदि ३ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ हुँगँग्लौं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ ॥ हरिद्रागणपतये तर्जनीभ्यां नमः २ ॥ वरवरद मध्यमाभ्यां नमः ३ ॥ सर्वजनहृदयम् अनामिकाभ्यां नमः ४ ॥ स्तंभय स्तंभय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ॥ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ हुँगँग्लौं हृदयाय नमः १ ॥ हरिद्रागणपतये शिरसे स्वाहा २ ॥ वर वरद शिखायै वषट् ३ ॥ सर्वजनहृदयं कवचाय हुँ ४ ॥ स्तंभय स्तंभय नेत्रत्रयाय वौषट् ५ ॥ स्वाहा अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्-पाशाङ्कुशौ मोदकमेकदंतं करैर्दधानं कनकासनस्थम् ॥ हारिद्रखण्डप्रतिमं त्रिनेत्रं पीतांशुकं रात्रिगणेशमीडे ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले गणेशमंडले वा मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः पद्धतिमार्गेण संस्थाप्य।ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः। इति संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्। तद्यथा—पूर्वादिक्रमेण । ॐ तीव्रायै नमः १ ॐ चालिन्यै नमः २ ॐ नंदायै नमः ३ ॐ भोगदायै नमः ४ ॐ कामरूपिण्यै नमः ५ ॐ उग्रायै नमः ६ ॐ तेजोवत्यै नमः ७ ॐ सत्यायै नमः ८ मध्ये। ॐ विघ्ननाशिन्यै नमः ९ इति पूजयेत्। ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेणाशोष्य ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः ॥ इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य

देवाज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्य्यात् ॥ तत्र क्रमः ॥ पुष्पांजलिमादाय ॥"ॐ संविन्मय परेश त्वं परामृतरसप्रिय ॥ अनुज्ञां देहि गणप रिवारार्चनाय मे॥१॥"इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत्॥इत्याज्ञां गृहीत्वा षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिषु चतसृषु दिक्षु मध्ये दिक्षु च ॥ ॐ हुं गं ग्लौं हृदयाय नमः हृदये श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति सर्वत्र॥१॥ॐ हरिद्रागणपतये शिरसे स्वाहा शिरसि श्रीपा० २॥ ॐ वर वरद शिखायै वषट् ।शिखायां श्रीपा०३॥ॐ सर्वजनहृदयं कवचाय हुं कवचेश्रीपा०४॥ॐ स्तंभयस्तंभय नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्र०श्रीपा०५॥ ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् अस्त्रेश्रीपा० ६॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य्य "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥१॥" इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत्॥ इति प्रथमावरणम्१॥ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतराले प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य दक्षहस्ते तर्जन्यंगुष्ठाभ्यां गंधाक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा प्राचीक्रमेण अष्टसु दिक्षु॥ॐवामायै नमःवामाश्रीपा०१॥ ॐ ज्येष्ठायै नमः ज्येष्ठाश्रीपा०२॥ ॐ रौद्र्यै नमः रौद्रीश्रीपा०३॥ ॐ काल्यै नमः कालीश्रीपा०४॥ ॐ कलपदादिकाय नमः कलपदादिकाश्रीपा०५॥ॐ विकरिण्यै नमः विकरिणिश्रीपा०६॥ ॐ बलायै नमः बलाश्रीपा० ७ ॥ ॐ प्रमाथिन्ये नमः प्रमथिनीश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयेत् ॥ देवस्याग्रे ॥ सर्वभूतदमन्यै नमः सर्वभूतदमनीश्रीपा० १॥ ॐ मनोन्मन्यै नमः मनोन्मनीश्रीपा० २ ॥ इति पूजयेत् । ततः चतसृषु दिक्षु प्राचीक्रमेण ॥ ॐ प्रमोदाय नमः प्रमोदश्रीपा० १॥ ॐ सुमुखाय नमः सुमुखश्रीपा० २ ॥ ॐ दुर्मुखाय नमः दुर्मुखश्रीपा० ३ ॥ ॐ विघ्ननाशाय नमः विघ्ननाशश्रीपा० ४ ॥ इति पजयेत् । ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य ॥"अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥१॥" इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततोऽष्टदलाग्रेषु ॥ ॐ आँ ब्राह्म्यै नमः ब्राह्मीश्रीपा० १ ॥ ॐ ईं माहेश्वर्यै नमः माहेश्वरीश्रीपा० २ ॥ ॐ ऊं कौमार्यै नमः कौमारीश्रीपा० ३ ॥

ॐ ऋँ वैष्णव्यै नमः वैष्णवीश्रीपा० ४ ॥ ॐ ऌँ वाराह्यै नमः वाराहीश्रीपा० ५ ॥
ॐ ऐं इंद्राण्यै नमः इंद्राणीश्रीपा० ६ ॥ ॐ औं चामुंडायै नमः चामुंडाश्रीपा० ७ ॥
ॐ अः महालक्ष्म्यै नमः महालक्ष्मीश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ पजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलि
मादाय मूलमुच्चार्य ॥ "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये
तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥ १ ॥" इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं
निक्षिप्य पूजितास्तार्पिताः संतु इति वदेत्॥इति तृतीयावरणम्॥३॥ततः भूपुरे पूर्वा
दिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूजयेत्॥इत्यावरणपूजां कृत्वा
धूपादिनमस्कारान्तं संपूज्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं चतुर्लक्षजपः । हरिद्रा
चूर्णमिश्रिताज्यतंडुलैश्च दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं
च कुर्य्यात्॥एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति सिद्धे च मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत्॥तथाच—
"वेदलक्षंजपित्वान्ते हरिद्राचूर्णमिश्रितैः॥दशांशंतण्डुलैर्हुत्वाब्राह्मणानपिभोजयेत्१॥



एवमाराधितो मंत्रः सिद्धो यच्छेन्मनोरथान्॥शुक्लपक्षे चतुर्थ्यां तु कन्यापिष्टहरिद्रया ॥ २ ॥ विलिप्यांगं जले स्नात्वा पूजयेद्गणनायकम् ॥
तर्पयित्वा पुरस्तस्य सहस्रं साष्टकं जपेत् ॥ ३ ॥ शतं हुत्वा त्वाज्यपूपैर्भोजयेद्ब्रह्मचारिणः ॥ कुमारीरपि संतोष्य गुरुं प्राप्नोति वांछितम्
॥ ४ ॥ लाजैः कन्यामवाप्नोति कन्यापि लभते वरम् ॥ वंध्या नारी रजःस्नाता पूजयित्वा गणाधिपम् ॥ ५ ॥ पलप्रमाणगोमूत्रे पिष्ट्वा

सिंधुवचानिशाः ॥ सहस्रं मंत्रयेत्कन्या बटून्संभोज्य मोदकैः ॥ ६ ॥ पीत्वा तदौषधं पुत्रं लभते गुणसागरम् ॥ वाणीस्तंभं रिपुस्तंभं कुर्य्यान्मनुरुपासितः ॥ ७ ॥ जलाग्निचौरसिंहास्त्रप्रमुखानपि रोधयेत् ॥ शार्ङ्गीमांसास्थितः सेन्दुर्बीजमुक्तं गणेशितुः ॥ हरिद्राख्यस्य यजनं पूर्ववत्प्रोदितं मनोः ॥ ८ ॥ प्रोक्ता ये ते गणेशस्य मंत्रा इष्टमभीप्सिताः ॥ गोपनीया न दुष्टेभ्यो वदनीयाः कथंचन ॥ ९ ॥" इति श्रीहरिद्रागणेशमंत्रप्रयोगः ॥ अथ ऋणहर्तृगणेशमंत्रविधानम् ॥(कृष्णयामलतंत्रे) तत्रादौ ऋणहर्तृगणेशस्तोत्रप्रारंभः ॥"कैलासे पर्वते रम्ये शंभुं चन्द्रार्द्धशेखरम् ॥ षडाम्नायसमायुक्तं पप्रच्छ नगकन्यका ॥ १ ॥ पार्वत्युवाच ॥ देवेश परमेशान सर्वशास्त्रार्थपारग ॥ उपायमृणनाशस्य कृपया वद सांप्रतम् ॥ २ ॥ शिव उवाच ॥ सम्यक्पृष्टं त्वया भद्रे लोकानां हितकाम्यया ॥ तत्सर्वं संप्रवक्ष्यामि सावधानावधारय ॥ ३ ॥" ॐ अस्य श्रीऋणहरणकर्तृगणपतिस्तोत्रमंत्रस्य सदाशिव ऋषिः । अनुष्टुप् छंदः । श्रीऋणहर्तृगणपतिर्देवता । ग्लौं बीजम् । गः शक्तिः । गों कीलकम् । मम सकलर्णनाशने जपे विनियोगः ॥ ॐ सदाशिवर्षये नमः शिरसि १ । अनुष्टुप्छंदसे नमः मुखे २ । श्रीऋणहर्तृगणेशदेवतायै नमः हृदि ३ । ग्लौं बीजाय नमः गुह्ये ४ । गः शक्तये नमः पादयोः ५ । गों कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ६ । इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ गणेश अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ऋणं छिंधि तर्जनीभ्यां नमः २ । वरेण्यं मध्यमाभ्यां नमः ३ । हुं अनामिकाभ्यां नमः ४ । नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । फट् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ गणेश हृदयाय नमः १ । ऋणं छिन्धि शिरसे स्वाहा २ । वरेण्यं शिखायै वषट् ३ । हुं कवचाय हुं ४ । नमः नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । फट् अस्त्राय फट् ६ । इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ अथ ध्यानम् । "ॐ सिंदूरवर्णं द्विभुजं गणेशं लम्बोदरं पद्मदले निविष्टम् ॥ ब्रह्मादिदेवैः परिसेव्यमानं सिद्धैर्युतं तं प्रणमामि देवम् ॥४॥ सृष्ट्यादौ ब्रह्मणा सम्यक् पूजितः फलसिद्धये ॥ सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे ॥ ५ ॥ त्रिपुरस्य वधात्पूर्वं शंभुना सम्यगर्चितः ॥ सदैव० ॥ ६ ॥ हिरण्यकश्यप्वादीनां वधार्थे विष्णुनार्चितः ॥ सदैव० ॥ ७ ॥ महिषस्य वधे देव्या गणनाथः प्रपूजितः ॥ सदैव० ॥८॥ तारकस्य वधात्पूर्वं कुमारेण प्रपूजितः ॥ सदैव० ॥ ९ ॥ भास्करेण गणेशो हि पूजितश्छविसिद्धये ॥ सदैव० ॥ १० ॥ शशिना

कांतिवृद्ध्यर्थं पूजितो गणनायकः ॥ सदैव० ॥ ११ ॥ पालनाय च तपसां विश्वामित्रेण पूजितः ॥ सदैव० ॥ १२ ॥ इदं त्वृणहरस्तोत्रं तीव्रदारिद्र्यनाशनम् ॥ एकवारं पठेन्नित्यं वर्षमेकं समाहितः ॥ १३ ॥ दारिद्र्यं दारुणं त्यक्त्वा कुबेरसमतां व्रजेत् ॥ फडंतोऽयं महामंत्रः सार्द्धपंचदशाक्षरः ॥ १४ ॥ मंत्रो यथा—"ॐ गणेश ऋणं छिंधि वरेण्यं हुं नमः फट्" इति सार्द्धपंचदशाक्षरो मंत्रः ॥ इमं मंत्रं पठेदन्ते ततश्च शुचिभावनः ॥ एकविंशतिसंख्याभिः पुरश्चरणमीरितम् ॥ १५ ॥ सहस्रावर्तनात्सम्यक् षण्मासं प्रियतां व्रजेत् ॥ बृहस्पतिसमो ज्ञाने धने धनपतिर्भवेत् ॥ १६ ॥ अस्यैवायुतसंख्याभिः पुरश्चरणमीरितम् ॥ लक्षमावर्तनात्सम्यग् वांछितं फलमाप्नुयात् ॥ १७ ॥ भूतप्रेतपिशाचानां नाशनं स्मृतिमात्रतः ॥ १८ ॥ इति श्रीकृष्णयामलतंत्रे उमामहेश्वरसंवादे ऋणहरणकर्तृगणेशस्तोत्रं समाप्तम् ॥ अथ सिद्धिविनायकमन्त्रप्रयोगः ॥(प्राकृतग्रंथे) मंत्रः यथा—"ॐ नमो सिद्धिविनायकाय सर्वकार्यकर्त्रे सर्वविघ्नप्रशमनाय सर्वराज्यवश्यकरणाय सर्वजनसर्वस्त्रीपुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा॥ अस्य विधानम्॥ अष्टोत्तरशतं प्रतिदिनं जपेत् कार्यं सिद्धं भवति। यात्रासमये जपित्वा मार्गभयं नाशयति सर्वकार्याणि सिद्ध्यंति ॥ अन्यत्—"ॐ ह्रीं क्लीं वीरवरगणपतये वः वः इदं विश्वं मम वशमानय ॐ ह्रीं फट्" अस्य विधानम्॥ रक्तवस्त्रं परिधाय रक्तचंदनेन त्रिपुंड्रं कृत्वा गणपतिं ध्यात्वा द्वादशसहस्रं जपेत्। ततः प्रत्यक्षो भूत्वा वरं ददाति।पुनः प्रतिदिनं पंचामृतेन स्नात्वा अष्टोतरशतं जपेत्। तावत् होमयेत् यावदष्टसिद्धिप्राप्तिर्भवेत् ॥अन्यत्॥"ॐगीं गूं गणपतये नमः स्वाहा" अस्य विधानम्॥भूशय्याब्रह्मचर्येण लक्षं जपेत्।पंचखाद्येन दशांशतो होमः ऋद्धिसिद्धिप्राप्तिर्भवंति विघ्नान्नाशयति॥ अन्यत्॥(वीरभद्रोड्डीशतन्त्रे)"ॐगं गणपतयेनमः" अस्यविधानम्।कुंभकारस्य मृदमानीय गणेशप्रतिमां कृत्वा पंचोपचारैः संपूज्य तदग्रे प्रतिदिनं सहस्रं जपेत्।तदा सप्तदिनांतरे सिद्धो भवति। पुनः प्रतिदिनं जपित्वा बुद्धिं वर्द्धयति मासेनैकेन स्त्रीलाभो भवति षण्मासांतरे धनं प्राप्नोति। तथा च-"संध्यायां जपमानस्य सहस्रैकं स्वशक्तितः ॥ शताधिकसहस्रेण इच्छासिद्धिं ददाति च ॥१॥ अपराह्णे च देवेशि शुभां मतिं लभेन्नरः ॥ मासेनैकेन देवेशि श्रियं च लभते ध्रुवम्॥ षण्मासेन वरारोहे महाधनपतिर्भवेत्॥" अन्यत्॥ (वीरभद्रोड्डीशतंत्रे) मंत्रो यथा॥ "ॐ गं गणपतये सर्वविघ्नहराय सर्वाय सर्वगुरवे

लंबोदराय ह्रीं गं नमः ।" अस्य विधानम् ॥ पुष्यार्के श्वेतार्कमयं लंबोदरं निर्माय चतुर्भुजं कृत्वार्चयेत् । स्वगृहे स्थापयेत् । श्वेतपदार्थैरर्चयेत् । अष्टोत्तरशतं जपेत् । क्षीरमध्ये स्थापयेत् । स्वयं पूजयेत् । तद्विधानात्संध्यायामष्टोत्तरशतं जप्त्वा संग्रामकाले एकांते महती पूजा कार्या । सहस्रैकं जपेत् शिरसा धारयेत् । संग्रामे अस्त्रं निवारयति रक्षां करोति लंबोदरः । मूलनक्षत्रे सूर्यप्रभेण अंगुष्ठमात्रं लंबोदरं निर्माय पूजयेत् । सिंदूरभाजने संस्थाप्य तद्दिने प्रतिष्ठापयेत् । त्रिसंध्यं सहस्रं सहस्रं जपः कार्यो वस्त्रं च स्थापयेत् । यत्प्रार्थयति तत्प्राप्नोति । प्रत्यहं शतमष्टोत्तरं जप्त्वा मासेन मनोभीष्टं ददाति ॥ इति सिद्धिविनायकनानामंत्रप्रयोगः ॥ इति श्रीगणेशपटलं समाप्तम् ॥

॥ अथ गणेशपद्धतिप्रारम्भः ॥ तत्रादौ पूर्वकृत्यम् ॥ पुरश्चरणात् प्राक् तृतीयदिवसे क्षौरादिकं विधाय ततः प्रायश्चित्तांगभूत विष्णुपूजां विष्णुतर्पणं विष्णुश्राद्ध होमं चांद्रायणादिव्रतं च कुर्यात् । व्रताशक्तौ गोदानं द्रव्यदानं च कुर्यात् । यदि सर्वकर्माशक्तस्ततः प्रायश्चित्तांगभूतपंचगव्यप्राशनं कुर्यात् । तत्र मंत्रः । "यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके । प्राशनात्पंचगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम् ॥ १ ॥" इति पठित्वा प्रणवेन पंचगव्यं पिबेत् । तद्दिने उपवासं कृत्वा अशक्तश्चेत् पयःपानं हविष्यान्नेनैकभक्तव्रतं कृत्वा ततः पुरश्चरणात् पूर्वदिने स्वदेहशुद्ध्यर्थं पुरश्चरणाधिकारप्राप्त्यर्थं चायुतगायत्रीजपं कुर्यात् । तद्यथा—देशकालौ संकीर्त्य ज्ञाताज्ञात पापक्षयार्थं करिष्यमाणामुकगणेशपुरश्चरणाधिकारार्थममुकमंत्रेण सिद्ध्यर्थं च गायत्र्ययुतजपमहं करिष्ये इति संकल्प्य गायत्र्ययुतं जपेत् । ततः गायत्र्या आचार्य्यमृषिं विश्वामित्रं तर्पयामि १ गायत्रीछंदस्तर्पयामि २ सवितारं देवतां तर्पयामि ३ इति तर्पणं कृत्वा ततोऽस्यां रात्रौ देवतोपास्तिं शुभाशुभस्वप्नं विचारयेत् । तद्यथा-स्नानादिकं कृत्वा हरिपादांबुजं स्मृत्वा कुशासनादिशय्यायां यथासुखं स्थित्वा वृषभध्वजं प्रार्थयेत् । तत्र मंत्रः "ॐ भगवन्देव देवेश शूलभृद् वृषवाहन ॥ इष्टानिष्टं समाचक्ष्व मम सुप्तस्य शाश्वत ॥ १ ॥ ॐ नमोऽजाय त्रिनेत्राय पिंगलाय महात्मने ॥ वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः ॥ २ ॥ स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषतः ॥ क्रियासिद्धिं विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ ३ ॥" इति मंत्रेणाष्टोत्तरशतवारं शिवं प्रार्थ्य निद्रां कुर्य्यात् । ततः स्वप्नं दृष्टं निशि प्रातर्गुरवे विनिवेदयेत् ।

अथवा स्वयं स्वप्नं विचारयेत् । इति पूर्वकृत्यम् । ततश्चन्द्रतारादिबलान्विते सुमूहूर्ते विविक्ते देशे जपस्थानं प्रकल्प्य पुरश्चरणदिवसे ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय प्रातःस्मरणं कुर्यात्। अथगणेशप्रातःस्मरणम्॥ "ॐप्रातःस्मरामि गणनाथमनाथबंधुंसिंदूरपूर्णपरिशोभितगंडयुग्मम्॥ उद्दण्डविघ्नपरिखण्डनचण्डदण्डमाखण्डलादिसुरनायकवृन्दवंद्यम् ॥ १ ॥ प्रातर्नमामि चतुराननवंद्यमानामिच्छानुकूलमखिलं च वरं ददानम् ॥ तं तुन्दिलं द्विरसनाधिपयज्ञसूत्रं पुत्रं विलासचतुरं शिवयोः शिवाय ॥२॥ प्रातर्भजाम्यभयदं खलु भक्तशोकदावानलं गणविभुं वरकुंजरास्यम् ॥ अज्ञानकाननविनाशनहव्यवाहमुत्साहवर्धनमहं सुतमीश्वरस्य ॥ ३ ॥" श्लोकत्रयमिदं पुण्यं सदा साम्राज्यदायकम् ॥ प्रातरुत्थाय सततं यः पठेत्प्रयतः पुमान् ॥४॥ इति स्मरणं कृत्वा भूमिं प्रार्थयेत् ।तत्र मंत्रः।"समुद्रमेखले देवि पर्वतस्तनमंडले॥विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥ १ ॥" इति भूमिं संप्रार्थ्य श्वासानुसारेण भूमौ पादं दत्त्वा बहिर्व्रजत् । इति प्रातःकृत्यम् । ततो ग्रामाद्बहिर्नैर्ऋत्यकोणे जनवर्जिते उत्तराभिमुखः अनुपानत्कः वस्त्रेण शिरः प्रावृत्य मलमोचनं कृत्वा मृत्तिकया जलेन च यथासंख्यं शौचं कृत्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य गंडूषं कृत्वा दंतधावनं च कुर्यात् । तद्यथा--आम्रचंपकापामार्गाद्यन्यतमं द्वादशांगुलं दंतकाष्ठं गृहीत्वा प्रार्थयेत् । तत्र मंत्रः । "आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजापशुधनानि च॥ श्रियं प्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते ॥१॥"इति संप्रार्थ्य "ॐह्रीं तडित् स्वाहा"इति मंत्रेण काष्ठं छित्त्वा "ॐ क्लीं कामदेवाय सर्वजनाप्रियाय नमः" इत्यनेन दंतान् संशोध्य ऐं इति बीजेन जिह्वामुल्लिख्य दंतकाष्ठं क्षालयित्वा नैर्ऋत्ये शुद्धदेशे निक्षिपेत् । मूलेन मुखं प्रक्षाल्याचम्य स्नानं कुर्यात् । इति शौचक्रिया । ततः तीर्थस्नानं मंगलस्नानं च सर्वदेवोपयोनिपद्धतिमार्गेण कृत्वा गृहस्नानं कुर्यात् ।अथ गृहस्नानप्रयोगः॥ तात्कालिकोद्धृतोदकेन उष्णोदकेन वा कृत्वा न तु पर्युषितशीतोद

१ द्विगं चंद्रार्कयोर्बिंबं भारतीं जाह्नवीं गुरुम् । रक्ताब्धितरणं युद्धे जयोऽनलसमर्चनम् ॥ शिखिहंसरथांगाढ्ये रथे स्थानं च मोहनम् । आरोहणं खारसस्य धराला भश्च निम्नगाम् ॥ प्रासादः स्यंदनं पद्मं छत्रं कन्या द्रुमः फली । नागो दीपो हयः पुष्पं वृषभोऽश्वश्च पर्वतः ॥ सुराघटो ग्रहस्तारा नारी सूर्योदयोऽप्सराः । हर्म्यशैलविमानानामारोहो गगने गमः ॥ मद्य मांसादनं विष्ठालेपो रुधिरसेचनम् । दध्योदनादनं राज्याभिषेको गोवृषध्वजाः ॥ सिंहःसिंहासनं शंखो वादित्रं रोचनादिभिः । चन्दनं तर्पणं चैषां स्वप्ने वै दर्शनं शुभम् ॥ तैलाभ्यक्तः कृष्णवर्णो नग्नो नागर्तवायसौ ॥ शुष्ककंटकिवृक्षश्च चांडालो दीर्घकन्धरः । प्रासादस्तलहीनश्च नैते स्वप्ने शुभावहाः ॥ इति स्वयं स्वप्नं विचारयेत ॥

केन ताम्रादिबृहत्पात्रे जलं गृहीत्वा तीर्थान्यावाहयेत्॥ तत्र मंत्रः॥ "गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति॥ नर्मदे सिंधु कावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु॥ १॥ ॐ पुष्कराद्यानि तीर्थानि गंगाद्याः सरितस्तथा॥ आगच्छन्तु पवित्राणि स्नानकाले सदा मम॥ २॥ ब्रह्मांडोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे॥ तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर॥ ३॥" इति तीर्थान्यावाह्य॥ ऋतं च सत्यमिति मंत्रेणाभिमंत्र्य स्नानं कुर्य्यात्॥ एवं स्नानं कृत्वा शुष्कं शुभ्रं रक्तं वा कार्पासवस्त्रं परिधाय सूर्यायार्घ्यं दद्यात्॥ तत्र मंत्रः॥ "एहि सूर्य्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते॥ अनुकंपय मां देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥" इत्यर्घ्यं दत्त्वा स्नायी वस्त्रं परिपीड्य आचम्य पंचत्रिपुंड्रं कृत्वा रुद्राक्षमालां धारयेत्। ततो जपस्थाने गत्वा। नित्यनैमित्तिकं समाप्य अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षानामन्यतमान् वितस्तिमात्रान् दश कीलान् "ॐ नमः सुदर्शनायास्त्राय फट्" इति मंत्रेणाष्टोत्तरशताभिमंत्रितान् "ॐ ये चात्र विघ्नकर्तारो भुवि दिव्यंतरिक्षगाः॥ विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मंत्रस्य सिद्धिषु॥ १॥ मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः। अपसर्प्पंतु ते सर्वे निर्विघ्नं सिद्धिरस्तु मे॥ २॥" इति मंत्रद्वयेन दशदिक्षु निखनेत्॥ ततस्तेषु "ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्" इति मंत्रेण प्रत्येककीलान् संपूज्य तद्बाह्ये भूतबलिं दद्यात्॥ तत्र मंत्रः॥ "ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः॥ मातरोऽप्युग्ररूपाश्च गणाधिपतयश्च ये॥ १॥ विघ्नभूताश्च ये चान्ये दिग्विदिक्षु समाश्रिताः॥ ते सर्वे प्रीतमनसः प्रतिगृह्णंत्विमं बलिम्॥ २॥" इति मंत्रद्वयेन दशदिक्षु बाह्ये माषभक्तबलिं दद्यात्॥ इति भूतेभ्यो बलिं दत्त्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचामेत्॥ ततः "ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा॥ यः स्मरेत् पुंडरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः॥१॥" इति मंत्रेण मंडपांतरं प्रोक्ष्य तत्र तावत् आसनभूमौ कूर्मशोधनं कार्यम्॥ यत्र जपकर्ता एक एव तदा कूर्ममुखे उपविश्य जपं तत्रैव दीपस्थापनं च कुर्य्यात्॥ यत्र बहवः जापकास्तत्र कूर्ममुखोपरि दीपमेव स्थापयेत्॥ एवं कूर्मशोधनं विधाय तत्रासनाधो जलादिना त्रिकोणं कृत्वा तत्र॥ ॐ कूर्म्माय नमः १॥ ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः॥ २॥ ॐ पृथिव्यै नमः ३॥ इति गंधाक्षतपुष्पैः संपूज्य तदुपरि कुशासनं तदुपरि मृगाजिनं तदुपरि कंबलाद्यासनमास्तीर्य स्थापितानां त्रयाणामासनानामुपरि क्रमेण

ॐ अनंतासनाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विमलासनाय नमः ॥ २ ॥ ॐ पद्मासनायः नमः ॥ ३ ॥ इति मंत्रत्रयेण त्रीन् दर्भान् प्रत्येकं निदध्यात् ॥ एवमासनं संस्थाप्य तत्र प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य आसनशोधनं कुर्य्यात् ॥ तत्र मंत्रः॥ पृथ्वीति मंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः । कूर्मो देवता । सुतलं छंदः । आसने विनियोगः ॥ "ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ॥ त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥" इति मंत्रेण आसनं प्रोक्ष्य ॥ ततो मूलमंत्रेण शिखां बद्ध्वा आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य "श्रीअमुकगणपतिदेवताप्रीतये अमुकमंत्रासिद्धये अमुकसंख्याजपं तत्तद्दशांशहोमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनरूपपुरश्चरणमहं करिष्ये" इति संकल्प्य भूतशुद्धिं प्राणप्रतिष्ठामन्तर्मातृकाबहिर्मातृकासृष्टिस्थितिसंहारमातृकान्यासं च सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कृत्वा गणेशकलामातृकान्यासं च कुर्य्यात् ॥ तथा च तत्र क्रमः ॥ ॐ अस्य विघ्नेशादिकलामातृकान्यासस्य गणक ऋषिः । निवृद्गायत्री छंदः । विनायको देवता । हलो बीजानि । स्वराः शक्तयः । सर्वेष्टसिद्धये न्यासे विनियोगः ॥ ॐ गाँ हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ गीं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ गूँ शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ गैं कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ गौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ गः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ एवं षडंगन्यासं कृत्वा गजाननं ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ " गणांकुशवराभीतिपाणिरक्ताब्जहस्तया ॥ प्रिययालिंगितं रक्तं त्रिनेत्रं गणपं भजे ॥ १ ॥ " एवं ध्यात्वा न्यासं कुर्य्यात् ॥ तथा च तत्र क्रमः ॥ ॐ अं विघ्नेशह्रीभ्यां नमः ललाटे १ ॐ आँ विघ्नराजश्रीभ्यां नमः मुखवृत्ते २ ॐ इं विनायकपुष्टिभ्यां नमः दक्षिणनेत्रे३ ॐ ईं शिवोत्तमशान्तिभ्यां नमः वामनेत्रे४ ॐ उं विघ्नकृत्स्वस्तिभ्यां नमः दक्षिणकर्णे ५ ॐ ऊं विघ्नहर्तृसरस्वतीभ्यां नमः वामकर्णे ६ ॐ ऋं गणस्वाहाभ्यां नमः दक्षिणनासापुटे ७ ॐ ॠं एकदंतसुमेधाभ्यां नमः वामनासापुटे ८ ॐ ऌं द्विदंतकांतिभ्यां नमः दक्षिणगंडे ९ ॐ ॡं गजवक्त्रकामिनीभ्यां नमः वामगंडे १० ॐ एं निरंजनमोहिनीभ्यां नमः ऊर्ध्वोष्ठे ११ ॐ ऐं कपर्दिनटीभ्यां नमः अधरोष्ठे१२ ॐ ओं दीर्घजिह्वपार्वतीभ्यां नमः ऊर्ध्वदंतपंक्तौ १३ ॐ औं शंकुकर्णज्वालिनीभ्यां नमः अधोदंतपंक्तौ १४ ॐ अं वृषभध्वजनंदाभ्यां नमः शिरासि १५ ॐ अः गणेशसुरेशीभ्यां नमः मुखे १६ ॐ कं गजेंद्र

कामरूपिणीभ्यां नमः दक्षिणबाहुमूले १७ ॐ खं शूर्पकर्णोमाभ्यां नमः दक्षिणकूर्परे १८ ॐ अः गं त्रिलोचनतेजोवतीभ्यां नमः दक्षिणमणिबंधे १९ ॐ घं लंबोदरसत्याभ्यां नमः दक्षांगुलिमूले २० ॐ ङं महानंदविघ्नेशीभ्यां नमः दक्षांगुल्यग्रे २१ ॐ चं चतुर्मूर्तिस्वरूपिणीभ्यां नमः वामबाहुमूले २२ ॐ छं सदाशिवकामदाभ्यां नमः वामकूर्परे २३ ॐ जं आमोदमदजिह्वाभ्यां नमः वाममणिबंधे २४ ॐ झं दुर्मुखभूतिभ्यां नमः वामांगुलिमूले २५ ॐ ञं सुमुखभौतिकाभ्यां नमः वामांगुल्यग्रे २६ ॐ टं प्रमोदसिताभ्यां नमः दक्षपादमूले २७ ॐ ठं एकपादरमाभ्यां नमः दक्षिणजानुनि २८ ॐ डं द्विजिह्वमहिषीभ्यां नमः दक्षिणगुल्फे २९ ॐ ढं शूरभंजनीभ्यां नमः दक्षिणपादांगुलिमूले ३० ॐ णं वीरविकरणाभ्यां नमः दक्षिणपादांगुल्यग्रे ३१ ॐ तं षण्मुखभृकुटीभ्यां नमः वामपादमूले ३२ ॐ थं वरदलज्जाभ्यां नमः वामजानुनि ३३ ॐ दं वामदेवदीर्घघोणाभ्यां नमः वामगुल्फे ३४ ॐ धं वक्रतुंडधनुर्धराभ्यां नमः वामपादांगुलिमूले ३५ ॐ नं द्विरदयामिनीभ्यां नमः वामपादांगुल्यग्रे ३६ ॐ पं सेनानीरात्रिभ्यां नमः दक्षिणपार्श्वे ३७ ॐ फं कामांधग्रामणीभ्यां नमः वामपार्श्वे ३८ ॐ बं मत्तशशिप्रभाभ्यां नमः पृष्ठे ३९ ॐ भं विमत्तलोललोचनाभ्यां नमः नाभौ ४० ॐ मं मत्तवाहनचंचलाभ्यां नमः जठरे ४१ ॐ यं त्वगात्मभ्यां जटिदीप्तिभ्यां नमः हृदि ४२ ॐ रं असृगात्मभ्यां मुंडिसुभगाभ्यां नमः दक्षांसे ४३ ॐ लं मांसात्मभ्यां खड्डिदुर्भगाभ्यां नमः ककुदि ४४ ॐ वं मेदआत्मभ्यां वरेण्यशिवाभ्यां नमः वामांसे ४५ ॐ शं अस्थ्यात्मभ्यां नमः वृषकेतनभगाभ्यां नमः हृदयादिदक्षहस्तांतम् ४६ ॐ षं मज्जात्मभ्यां भक्तिप्रियभगिनीभ्यां नमः हृदयादिवामहस्तांतम् ४७ ॐ सं शुक्रात्मभ्यां गणेशभोगिनीभ्यां नमः हृदयादिदक्षपादांतम् ४८ ॐ हं प्राणात्मभ्यां मेघनादसुभगाभ्यां नमः हृदयादिवामपादांतम् ४९ ॐ लं शक्त्यात्मभ्यां व्याप्तिकालरात्रिभ्यां नमः जठरे ५० ॐ क्षं परमात्मभ्यां गणेश्वरकालिकाभ्यां नमः मुखे ५१ इति सर्वगणेशमंत्रांगभूतविघ्नेशादिकलामातृकान्यासः ॥ एवं कलान्यासं कृत्वा प्रयोगोक्तन्यासादिकं कुर्य्यात् ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले गणेशमंडले वा मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः स्थापयेत् ॥ तथा च — पुष्पाक्षतानादाय स्ववामभागे श्रीगुरुभ्यो नमः १ ॥ दक्षिणे गणपतये नमः २ ॥ मध्ये स्वेष्टदेवतायै नमः ३ ॥ इति

नत्वा पीठमध्ये ॐ मं मंडूकाय नमः ४ ॥ ॐ कं कालाग्निरुद्राय नमः ५ ॥ ॐ आँ आधारशक्तये नमः ६ ॥ ॐ कूं कूर्म्माय नमः ७ ॐ अं अनंताय नमः ८ ॐ पृं पृथिव्यै नमः ९ ॐ क्षीं क्षीरसागराय नमः १० ॐ रं रत्नदीपाय नमः ११ ॐ रं रत्नमंडपाय नमः १२ ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः १३ ॐ रं रत्नवेदिकायै नमः १४ ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः १५ इत्युपर्युपरि संपूज्य ॥ आग्नेय्याम् ॐ धं धर्म्माय नमः १६ नैर्ऋत्यां ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः १७ वायव्ये ॐ वैं वैराग्याय नमः १८ ऐशान्ये ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः १९ पूर्वे ॐ अं अधर्माय नमः २० दक्षिणे ॐ अं अज्ञानाय नमः २१ पश्चिमे ॐ अं अवैराग्याय नमः २२ उत्तरे ॐ अं अनैश्वर्याय नमः २३ इति पूजयेत् ॥ ततः पुनः पीठमध्ये ॥ ॐ आं आनंदकंदाय नमः २४ ॐ सं संविन्नालाय नमः २५ ॐ सं सर्वतत्त्वकमलासनाय नमः २६ ॐ प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः २७ ॐ विं विकारमयकेसरेभ्यो नमः २८ ॐ पं पञ्चाशद्वर्णाढ्यकर्णिकाभ्यो नमः २९ ॐ अं अर्कमंडलाय द्वादशकलात्मने नमः ३० ॐ सों सोममंडलाय षोडशकलात्मने नमः ३१ ॐ वं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः ३२ ॐ सं सत्त्वाय नमः ३३ ॐ रं रजसे नमः ३४ ॐ तं तमसे नमः ३५ ॐ आं आत्मने नमः ३६ ॐ पं परमात्मने नमः ३७ ॐ अं अंतरात्मने नमः ३८ ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः ३९ ॐ मं मायातत्त्वाय नमः ४० ॐ कं कलातत्त्वाय नमः ४१ ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः ४२ ॐ पं परतत्त्वाय नमः ४३ एवं पीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्॥तद्यथा—पूर्वे ॐ तीव्रायै नमः१आग्नेय्याम् ॐ चालिन्यै नमः२दक्षिणे ॐ नंदायै नमः३ नैर्ऋत्ये ॐ भोगदायै नमः ४ पश्चिमे ॐ कामरूपिण्यै नमः ५ वायव्ये ॐ उग्रायै नमः ६ उत्तरे ॐ तेजोवत्यै नमः ७ ऐशान्ये ॐ सत्यायै नमः८ पीठमध्ये ॐ विघ्ननाशिन्यै नमः ९ इति पीठशक्तीः संपूज्य पात्रासादनं कुर्य्यात्॥ अथ पात्रासादनप्रयोगः ॥ तत्र पात्रासादनं सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण सविस्तरं कृत्वा अशक्तश्चेत्साधारणं कुर्यात् ॥ तत्र क्रमः॥तत्रादौ गंधाक्षतादिपूजोपकरणानि स्वदक्षिणपार्श्वे संस्थाप्य जलार्थं बृहत्पात्रं व्यजनं छत्रादर्शचामराणि वामपार्श्वे स्थापयित्वा कलशस्थापनं कुर्यात् ॥ अथ कलशस्थापन प्रयोगः॥स्ववामभागे त्रिकोणमंडलं कृत्वा जलेन प्रोक्ष्य त्रिकोणांतर्मायां विलिख्य ॥ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै नमः इति संपूज्य ततो मूलेन

नमः इति त्रिपदाधारं प्रक्षाल्य त्रिकोणमध्ये संस्थाप्य तत्र "सुदर्शनायास्त्राय फट्" इति मंत्रेण कलशं प्रक्षाल्य आधारोपरि हस्तद्वयेन
संस्थाप्य रक्तवस्त्रमाल्यादिना भूषयित्वा मूलेन नमः इति जलेनापूर्य ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ इति वरुणमावाह्य
स्वेष्टदेवं ध्यात्वा गंधपुष्पैः संपूजयेत् इति कलशस्थापनम् । अथ शंखस्थापनप्रयोगः ॥ स्वदक्षिणे कलशोक्तविध्यनुसारेणाधारं संस्थाप्य
"ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्" इति शंखं प्रक्षाल्य आधारोपरि संस्थाप्य मूलेन नमः इति जलेनापूर्य ॥ प्रणवेन गंधादिभिः संपूज्याभि
मंत्रयेत् ॥ "ॐ शंखादौ चन्द्रदैवत्यं कुक्षौ वरुणदेवता ॥ पृष्ठे प्रजापतिश्चैवमग्रे गंगा सरस्वती ॥ १ ॥ त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदे
वस्य चाज्ञया ॥ शंखे तिष्ठंति विप्रेन्द्र तस्माच्छंखं प्रपूजयेत् ।" इत्यभिमंत्र्य प्रार्थयेत् ॥ "ॐ त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे ॥
निर्मितः सर्वदेवैश्च पांचजन्य नमोस्तुते ॥ २ ॥ पांचजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि । तन्नः शंखः प्रचोदयात् ॥" इति प्रार्थयित्वा
शंखमुद्रां प्रदर्शयेत् । इति शंखस्थापनम् ॥ अथ घंटास्थापनप्रयोगः ॥ स्ववामभागे घंटां संस्थाप्य "आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु
रक्षसां ॥ घंटानादं प्रकुर्वीत पश्चाद् घंटां प्रपूजयेत् ॥१॥" ॐ भूर्भुवः स्वः गरुडाय नमः । आवाहयामि सर्वोपचारार्थं गंधाक्षतपुष्पाणि
समर्पयामि नमस्करोमि । इत्यावाह्य । "ॐ जगद्ध्वनिमंत्रमातः स्वाहा" इति मंत्रेण घंटास्थितगरुडं घंटां च संपूज्य ॥ प्रणम्य गरुडमुद्रां
प्रदर्शयेत् ॥ इति घंटास्थापनम् । ततः शंखात्पूर्वादिप्रादक्षिण्येन पाद्यार्घ्याचमनीयमधुपर्कस्नानार्थं पंचपात्राणि अशक्तश्चेत्तर्हि एकमेव पात्रं
संस्थाप्य सामान्यविधिना पूजयेत् ॥ एवं पूजापात्राणि संपाद्य ॥ प्रयोगोक्ते यंत्रे मूर्तौ वा अग्न्युतारणपूर्वकं प्राणान् प्रतिष्ठापयेत् । अथ प्राण
प्रतिष्ठाप्रयोगः ॥ आचम्य देशकालौ संकीर्त्य ममामुकगणपतिदेवतानूतनयंत्रे(मूर्तौ वा) प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये॥ इति संकल्प्य अस्य श्रीप्राण
प्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः॥ऋग्यजुःसामानि च्छंदांसि क्रियामयवपुःप्राणाख्या देवता॥आँ वीजम् । ह्रीं शक्तिः । क्रौं कीलकम् ।
अस्यां नूतनयंत्रस्य(मूर्तौ वा)प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः॥इति जलं क्षिपेत्॥करेणाच्छाद्य॥ॐआँह्रींक्रौंयँरँलँवँशँषँसँहँसःसोऽहं अस्यामुकगणपतेः
सपरिवारयंत्रस्य(प्रतिमाया वा)प्राणा इह प्राणाः । पुनः ॐ आँह्रींक्रौंयँरँलँवँशँषँसँहँसः सोऽहम् अस्यामुकगणपतेः सपरिवारयंत्रस्य (मूर्तेर्वा)

जीव इह स्थितः ॥ २ ॥ ॐ आँह्रींक्रोंयँरँलँवँशँषँसँहँसः सोऽहं अस्यामुकगणपतेः सपरिवारयंत्रस्य (मूर्तेर्वा) सर्वेन्द्रियाणीह स्थितानि ॥३॥ ॐ आँह्रींक्रोंयँरँलँवँशँषँसँहँसः सोऽहं अस्यामुकगणपतेः सपरिवारयंत्रस्य (मूर्तेर्वा) वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा॥४॥इति प्राणान् प्रतिष्ठाप्य संस्कारसिद्धये पंचदश प्रणवावृत्तीः कृत्वा। अनेनामुकगणपतेः सपरिवारयंत्रस्य (मूर्तेर्वा) गर्भाधानादिपंचदशसंस्कारान्संपादयामि इति वदेत् ॥ एवं प्राणप्रतिष्ठाप्रयोगः ॥ अथावाहनम् । अक्षतानादाय "देवेश भक्तिसुलभ परिवारसमन्वित ॥ यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावद्देव इहावह ॥ १ ॥ आगच्छ भगवन्देव स्थाने चात्र स्थितो भव ॥ यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधौ भव॥२॥" मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतिदेवतामावाहयामि ॥ इत्यावाहनम् ॥ १॥ तवेयं महिमा मूर्तिस्तस्यां त्वां सर्वगः प्रभो ॥ भक्तिस्नेहसमाकृष्टदीपवत्स्थापयाम्यहम् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतिदेव इह तिष्ठ ॥ इति स्थापनम् ॥ २ ॥ "अनन्या तव देवेश मूर्तिशक्तिरियं प्रभो ॥ सान्निध्यं कुरु तस्यां त्वं भक्तानुग्रहतत्पर ॥ १ ॥" मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतिदेवते इह सन्निधेहि ॥ इति सन्निधापनम् ॥३॥ "आज्ञया तव देवेश कृपांभोधे गुणांबुधे ॥ आत्मानंदैकतृप्तं त्वां निरुणध्मि पितर्गुरो ॥" मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतिदेवते इह सन्निरुन्धि ॥ इति सन्निरोधनम् ॥ ४ ॥ "अज्ञानाद्दुर्मनस्त्वाद्वा वैकल्यात्साधनस्य च ॥ यदपूर्णं भवेत्कृत्यं तदप्यभिमुखो भव ॥ १ ॥" मूलं पठित्वा ॐभूर्भुवः स्वः अमुकगणपतिदेव इह सम्मुखो भव ॥ इति सम्मुखीकरणम् ॥५॥ "अभक्तवाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रदूरातिगद्युते॥ स्वतेजःपञ्जरेणाशु वेष्टितो भव सर्वतः ॥ १ ॥" मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतिदेव अवगुंठितो भव ॥ इत्यवगुंठनम् ॥ ६ ॥ "यस्य दर्शनमिच्छंति देवाः स्वाभीष्टसिद्धये ॥ तस्मै ते परमेशाय स्वागतं स्वागतं च ते ॥ १ ॥" मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः सुस्वागतं समर्पयामि ॥ इति सुस्वागतम् ॥ ७ ॥ "देवदेव महाराज प्रियेश्वर प्रजापते ॥ आसनं दिव्यमीशान दास्येऽहं परमेश्वर ॥ अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदेपदे ॥ कोऽपरः सहतां लोके केवलं स्वामिनं विना ॥ १ ॥ " मूलं

पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः आसनं समर्पयामि ॥ ८ ॥ इत्यासनं दत्त्वा प्रार्थयेत् ॥ तत्र मंत्रः ॥ "स्वागतं देवदेवेश मद्भाग्यात्त्वमिहागतः ॥ प्राकृतं त्वं च दृष्ट्वा मां बालवत्परिपालय ॥ १॥" मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः प्रार्थनां समर्पयामि नमस्करोमि ॥ इति प्रार्थयेत् ॥ ९॥ १०॥ अथ पाद्यादिपूजाप्रयोगः "यद्भक्तिलेशसंपर्कात् परमानंदसम्भवः ॥ तस्मै ते चरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पये ॥ १ ॥ " मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः पाद्यं समर्पयामि ॥ इति पाद्यम् ॥ ११ ॥ "तापत्रयहरं दिव्यं परमानंदलक्षणम् ॥ तापत्रयविनिर्मुक्त तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम् ॥ १ ॥" मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः इदमर्घ्यं समर्पयामि ॥ इत्यर्घः ॥ १२ ॥ "देवानामपि देवाय वेदानां देवतात्मने ॥ आचामं कल्पयामीश शुद्धानां शुद्धिहेतवे ॥" मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः आचमनीयं समर्पयामि॥ इत्याचमनम् ॥१३॥ इत्याचमनं दत्त्वा मधुपर्कपञ्चामृतस्नानादि च सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कुर्यात् । अशक्तश्चेज्जलस्नानं मधुस्नानं शुद्धोदकस्नानं च कुर्यात् ॥ तद्यथा—"गंगासरस्वतीरेवापयोष्णी नर्मदाजलैः ॥ स्नापितोऽसि मया देव तथा शांतिं कुरुष्व मे ॥१॥" मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः जलस्नानं समर्पयामि॥ इति जलस्नानम् ॥ १४ ॥ "तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु ॥ तेजःपुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥" मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः मधुस्नानं समर्पयामि ॥ इति मधुस्नानम् १ ॥ १५ ॥ "गंगासरस्वतीरेवापयोष्णीनर्मदाजलैः ॥ स्नापितोऽसि मया देव तथा शांतिं कुरुष्व मे ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि॥ इति शुद्धोदकस्नानम् ॥१६॥ एवं स्नानं समर्प्याचमनं दद्यात् ॥ ततः "सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे ॥ मयैवापादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥१॥" मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः रक्तवस्त्रं समर्प्पयामि॥ इति रक्तवस्त्रम् ॥१७॥ "नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ॥ उपवीतं चोत्तरीयं गृहाण परमेश्वर ॥१॥ " मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि ॥ इति यज्ञोपवीतम् ॥१८ ॥"श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम् ॥ विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥"

मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः गंधं समर्पयामि ॥ अंगुष्ठौ कनिष्ठामूललग्नौ गंधमुद्रा ॥ इति गंधम् ॥ १९ ॥ "अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः ॥ मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥ १ ॥" मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः अक्षतान्समर्पयामि ॥" सर्वांगुलीभिर्दद्यात् ॥ इत्यक्षतान् ॥ २० ॥ "माल्यादीनि सुगंधीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ॥ मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥ १ ॥" मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः रक्तपुष्पं समर्पयामि ॥ तर्जन्यांगुष्ठमूललग्ने पुष्पमुद्रा इति पुष्पम् ॥ २१ ॥ एवं पुष्पांतं पूजयित्वा प्रयोगोक्तावरणपूजां च कृत्वा धूपादिपूजनं कुर्यात् ॥ ॥ अथ धूपादिपूजाप्रयोगः ॥ फडिति धूपपात्रं संप्रोक्ष्य नमः इति गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य पुरतो निधाय रं इति वह्निबीजेन उपरि अग्निं संस्थाप्य तदुपरि दशांगं दत्त्वा घंटां च नादयन् ॥ "ॐ वनस्पतिरसोद्भूतो गंधाढ्यो गन्ध उत्तमः ॥ आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥" मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः धूपं समर्पयामि ॥ इति पठित्वा देवस्य वामभागे धूपपात्रं संस्थाप्य तर्जनीमूलयोरंगुष्ठयोगो धूपमुद्रा तां प्रदर्शयेत् ॥ इति धूपम् ॥ २२ ॥ ततो दीपपात्रं गोघृतेनापूर्य वर्णाक्षरतंतुभिर्वर्तिं निक्षिप्य प्रणवेन प्रज्वाल्य घंटां वादयन् मंत्रं पठेत् ॥ "ॐ सुप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः ॥ सबाह्याभ्यंतरं ज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥" मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः दीपं समर्पयामि ॥ इति पठित्वा देवस्य दक्षिणभागे निधाय मध्यमे अंगुष्ठलग्ने दीपमुद्रा प्रदर्शयेत् ॥ इति दीपम् ॥ २३ ॥ अथ नैवेद्यम् ॥ देवस्याग्रे जलेन चतुरस्रं मंडलं कृत्वा स्वर्णादिनिर्मितं भोजनपात्रं संस्थाप्य तन्मध्ये मोदकं गुडामिश्रितपायसं वा निधाय ॐ यं इति वायुबीजेन द्वादशवाराभिमंत्रितार्घजलेन संप्रोक्ष्य मूलेन संवीक्ष्य अधोमुखदक्षिणहस्तोपरि तादृशं वामं नैवेद्येनाच्छाद्य ॐ यं इति वायुबीजं षोडशधा संजप्य वायुना तद्गतदोषान् संशोष्य दक्षिणकरतले ॐ रं इत्यग्निबीजं विचिंत्य तत्पृष्ठलग्नं वामकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य ॐ रं इति वह्निबीजेन षोडशवारं संजप्य तदुत्पन्नाग्निना तद्दोषं दग्ध्वा वामकरं

१ पुष्पं पत्रं फलं देवे न च दद्यादधोमुखम् ॥ पुष्पांजलौ न तद्दोषस्तथा पर्युषितस्य च ॥

तले ॐ वं इति अमृतबीजं विचिंत्य तत्पृष्ठलग्नं दक्षिणकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य ॥ पुनः ॐ वं इति सुधाबीजं षोडशवारं जपित्वा तदुत्थामृतधारया प्लावितं विभाव्य मूलमंत्रेण प्रोक्ष्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य मूलेनाष्टधाऽभिमंत्र्य गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य । वामांगुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृष्ट्वा दक्षिणकरेण जलं गृहीत्वा "सत्पात्रसिद्धं सुहविर्विविधानेकभक्षणम् ॥ निवेदयामि देवेश सानुगाय गृहाण तत् ॥ १ ॥" मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः सांगाय सपरिवारायामुकगणपतये नमः नैवेद्यं समर्पयामि ॥इति जलमुत्सृज्य अनामामूलयोरंगुष्ठयोगे नैवेद्यमुद्रातां प्रदर्शयेत् ॥ इति नैवेद्यम् ॥ २४ ॥ अथांतःपटम् ॥"ब्रह्मेशाद्यैः सरसमभितः सोपविष्टैः समंतात्सिंजद्वालव्यजननिकरैर्वीज्यमानः सखीभिः ॥ नर्मक्रीडाप्रहसनपरान्पंक्तिभोक्तॄन्हसन्वै भुंक्ते पात्रे कनकघटिते षड्रसाञ्श्रीगणेशः ॥ १ ॥ शालीभक्तं सुपक्वं शिशिरकरसितं पायसापूप सूपं लेह्यं पेयं च चोष्यं सितममृतफलं क्षीरिकाद्यं सुखाद्यम् ॥ आज्यं प्राज्यं सभोज्यं नयनरुचिकरं राजिकैलामरीचस्वादीयः शाकराजीपरिकरममृताहारजोषं जुषस्व ॥ २ ॥" इत्यंतःपटम् ॥ २५॥ "नमस्ते देवदेवेश सर्वतृप्तिकरं परम् ॥ अखंडानन्दसंपूर्णं गृहाण जलमुत्तमम् ॥" मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः जलं समर्पयामि ॥ इति जलम् ॥ २६ ॥ पुनर्गंडूषार्थं जलं दत्त्वा मूलेन शुद्धाचमनं च दद्यात् ॥ अथ तांबूलम् ॥ "पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ॥ एलाचूर्णादिभिर्युक्तं तांबूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॥ १ ॥" मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवःस्वः अमुकगणपतये नमः तांबूलं समर्पयामि ॥ इति तांबूलम् ॥ २७ ॥ अथ फलम् ॥ " इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव ॥तेन मे सुफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥ १ ॥" मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः फलं समर्पयामि ॥ २८ ॥ इति फलं समर्प्य शक्तश्चेत् क्षेत्रादिदक्षिणापर्यन्तं सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण दत्त्वा आरात्रिकं कुर्य्यात् ॥ अथ कर्पूरारात्रिकम् ॥" कदलीगर्भसंभूतं कर्पूरं च प्रदीपितम् ॥ आरात्रिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥ १ ॥" इति पठित्वा मूलेन देवोपरि नेत्रादिपादपर्यंतं नववारं त्रिवारं वा भ्रामयेत् घंटां नादयेत् ॥ इति कर्पूरारात्रिकम् ॥ २९ ॥ अथ प्रदक्षिणा ॥ "यानि कानि च पापानि जन्मांतरकृतानि वै ॥ तानि सर्वाणि नश्यंतु प्रदक्षिणपदेपदे ॥ १ ॥ " इति मंत्रेण तिस्रः प्रदक्षिणा

दद्यात् ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि ॥ ३० ॥ अथ पुष्पांजलिः ॥ " नानासुगंधपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च ॥ पुष्पांजलिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥ १ ॥" मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः पुष्पांजलिं समर्पयामि ॥ इति पुष्पांजलिः ॥ ३१ ॥ अथ साष्टांगप्रणामम् ॥ "प्रपन्नं पाहि मामीश भीतं मृत्युग्रहार्णवात् ॥ " इति वदन् साष्टांग प्रणामे नाम निवेदयेत् ॥ ३२ ॥ ततस्तुतिपाठेन देवं स्तुत्वा बद्धाञ्जलिपूर्वकं क्षमापयेत् ॥ "ज्ञानतोऽज्ञानतो वाथ यन्मया क्रियतेऽशिवम् ॥ मम कृत्यमिदं सर्वमिति देव क्षमस्व मे ॥ १ ॥" अपराधसहस्राणि क्रियंतेऽहर्निशं मया ॥ दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥ २ ॥ अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे ॥ कोऽपरः सहतां लोके केवलं स्वामिनं विना ॥ ३ ॥ भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलंबनम् ॥ त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं शिव ॥ ४ ॥ " इति बद्धांजलिपूर्वकं क्षमाप्य ॥ "यदुक्तं यदि भावेन पत्रं पुष्पं फलं जलम् ॥ निवेदितं च नैवेद्यं गृहाण त्वनुकंपया ॥ १ ॥ " इति प्रार्थ्य देवस्य दक्षिणकरे किंचिज्जलं दत्त्वा पश्चात्सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण मालायाः संस्कारान् कुर्य्यात् ॥ अशक्तश्चेत्साधारणसंस्कारं कुर्य्यात् ॥ तथा च जपमालामानीय क्वचित्पात्रे वामहस्तेनाच्छाद्य मूलेनार्घ्योदकेनाभ्युक्ष्य "ॐ माले माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि । चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मात्त्वं सिद्धिदा भव ॥ १ ॥" इत्यनेन गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य ततो देवतानिवेदितमोदकं तांबूलं वा स्वयं भुक्त्वा पुनः "अविघ्नं कुरु माले त्वं सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ " इति मंत्रेण दक्षिणहस्ते मालामादाय हृदये धारयन् स्वेष्टदेवतां ध्यात्वा मध्यमांगुलिमध्यपर्वणि संस्थाप्य ज्येष्ठाग्रेण भ्रामयित्वा एकाग्रचित्तो मंत्रार्थं स्मरन् यथाशक्ति मूलमंत्रं जपेत् ॥ जपांते "ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा मम ॥ शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च देहि मे ॥ १ ॥" ॐ ह्रीं सिद्ध्यै नमः ॥ इति मालां शिरसि निधाय गोमुखीं रहसि स्थापयेत् नाशुचिः स्पर्शयेत् नान्यं दद्यात् अशुचिस्थाने न निधापयेत् स्वयोनिवद्गुप्तां कुर्य्यात् । ततः कवचस्तोत्रसहस्रनामादिकं पठित्वा पुनः मूलमंत्रस्य ऋष्यादिन्यासं करन्यासं च हृदयादिषडंगन्यासं च कृत्वा पंचोपचारैः संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात् । ततः अर्घोदकेन चुलुकमादाय "ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसा

दात्त्वयि स्थितिः ॥ १ ॥ " ॐ इतः पर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुर्यावस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्या मुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा । मां मदीयं च सकलं श्रीमदमुकगणपतिदेवतायै समर्पयामि नमः॥ ॐ तत्सदिति ब्रह्मार्पणं भवतु । इति देवदक्षिणकरे जपसमर्पणजलं दत्त्वा कृताञ्जलिपूर्वकं क्षमापनं कुर्यात् ॥ अथ क्षमापनम् ॥ "आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ॥ पूजाभागं न जानामि त्वं गतिः परमेश्वर ॥ १ ॥ कर्मणा मनसा वाचा त्वत्तो नान्या गतिर्मम ॥ अंतश्चरसि भूतानामिष्टस्त्वं परमेश्वर ॥ २ ॥ अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ॥ तस्मात्कारुण्यभावेन रक्षस्व परमेश्वर ॥ ३ ॥ शतयोनिसहस्राणां सहस्रेषु व्रजाम्यहम् ॥ तेषु चेष्टाचला भक्तिरच्युतास्तु सदा त्वयि ॥ ४ ॥ गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च ॥ आगता सुखसंपत्तिः पुण्याच्च तव दर्शनात् ॥ ५ ॥ मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ॥ यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ ॥ ६ ॥ यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ॥ तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥ ७ ॥ देवो दाता च भोक्ता च देवरूपमिदं जगत् ॥ देवं जपति सर्वत्र यो देवः सोऽहमेव हि ॥ ८ ॥ क्षमस्व देवदेवेश क्षम्यते भुवनेश्वर ॥ तव पादांबुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे ॥ ॥९॥ इति कृतांजलिः प्रार्थयित्वा ततः शंखमुद्धृत्य देवोपरि भ्रामयित्वा " साधु वासाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया ॥ तत्सर्वं कृपया देव गृहाणाराधनं मम" ॥ १ ॥ इत्युच्चरन् देवस्य दक्षिणहस्ते किंचिज्जलं दत्त्वा प्राग्वदर्घ्यं देवशिरसि दत्त्वा शंखं यथास्थानं निवेश्य मूलेन देवोच्छिष्टनैवेद्यादिकं शिरसि धृत्वा देवभक्तेषु विभज्य स्वयं भुक्त्वा बलीत्यादिकं गतसारनैवेद्यं च तदुच्छिष्टभोजिने इति निवेदयेत् ॥ अथ विसर्जनम् । गच्छ गच्छ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर ॥ यं हि ब्रह्मादयो देवा न विदुः परमं पदम् ॥ १ ॥ इत्यक्षतान्निक्षिप्य देवं स्वहृदयमध्ये स्थापयेत् ॥ तद्यथा—"तिष्ठ तिष्ठ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर ॥ यत्र ब्रह्मादयो देवाः सर्वे तिष्ठंति मे हृदि ॥ १ ॥ इति देवं हृदये संस्थाप्य मानसोपचारैः संपूज्य स्वात्मानं देवरूपं भावयन् यथासुखं विहरेत् ॥ इति गणेशपूजापद्धतिः समाप्ता ॥

। श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ वक्रतुंडगणेशकवचप्रारंभः ॥ "मौलिं महेशपुत्रोऽव्याद्भालं पातु विनायकः ॥ त्रिनेत्रः पातु मे नेत्रे शूर्पकर्णोऽ

वतु श्रुती ॥ १ ॥ हेरंबो रक्षतु घ्राणं मुखं पातु गजाननः । जिह्वां पातु गणेशो मे कंठं श्रीकण्ठवल्लभः ॥ २ ॥ स्कंधौ महाबलः पातु विघ्नहा पातु मे भुजौ ॥ करौ परशुभृत्पातु हृदयं स्कंदपूर्वजः ॥ ३ ॥ मध्यं लंबोदरः पातु नाभिं सिंदूरभूषितः । जघनं पार्वतीपुत्रः सक्थिनी पातु पाशभृत् ॥ ४ ॥ जानुनी जगतां नाथो जंघे मूषकवाहनः ॥ पादौ पद्मासनः पातु पादाधो दैत्यदर्पहा ॥ ५ ॥ एकदंतोऽग्रतः पातु पृष्ठे पातु गणाधिपः ॥ पार्श्वयोर्मोदकाहारो दिग्विदिक्षु च सिद्धिदः ॥ ६ ॥ व्रजतस्तिष्ठतो वापि जाग्रतः स्वपतोऽश्नतः ॥ चतुर्थीवल्लभो देवः पातु मे भुक्तिमुक्तिदः ॥ ७ ॥ इदं पवित्रं स्तोत्रं च चतुर्थ्यां नियतः पठेत् ॥ सिंदूररक्तः कुसुमैर्दूर्वया पूज्य विघ्नपम् ॥ ८ ॥ राजा राजसुतो राजपत्नी मंत्री कुलं चलम् ॥ तस्यावश्यं भवेद्वश्यं विघ्नराजप्रसादतः ॥ ९ ॥ समंत्रयंत्रं यः स्तोत्रं करे संलिख्य धारयेत् ॥ धनधान्यसमृद्धिः स्यात्तस्य नास्त्यत्र संशयः ॥१०॥" अस्य मंत्रः ॥ ऐं क्लीं ह्रीं वक्रतुंडाय हुं ॥ " रसलक्षं सदैकाग्र्यः षडंगन्यासपूर्वकम् ॥ हुत्वा तदंते विधिवदष्टद्रव्यं पयो घृतम् ॥ ११ ॥ यं यं काममभिध्यायन् कुरुते कर्म किंचन ॥ तं तं सर्वमवाप्नोति वक्रतुंडप्रसादतः ॥ १२ ॥ भृगुप्रणीतं यः स्तोत्रं पठते भुवि मानवः ॥ भवेदव्याहतैश्वर्यः स गणेशप्रसादः ॥ १३ ॥ " इति गणेशरक्षाकरं स्तोत्रं समाप्तम् ॥ अथ वक्रतुंडगणेशस्तवराजप्रारंभः ॥ अस्य गायत्रीमंत्रः ॥ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुंडाय धीमहि ॥ तन्नो दंतिः प्रचोदयात् ॥ " ॐ कारमाद्यं प्रवदंति संतो वाचः श्रुतीनामपि यं गृणंति॥ गजाननं देवगणानतांघ्रिं भजेऽहमर्द्धेंदुकृतावतंसम् ॥ १ ॥ पादारविंदार्चनतत्पराणां संसारदावानलभंगदक्षम् ॥ निरंतरं निर्गतदानतोयैस्तं नौमि विघ्नेश्वरमंबुदाभम् ॥ २ ॥ कृतांगरागं नवकुंकुमेन मत्तालिजालं मदपंकमग्नम् ॥ निवारयंतं निजकर्णतालैः को विस्मरेत्पुत्रमनंगशत्रोः ॥ ३ ॥ शंभोर्जटाजूटनिवासि गंगाजलं समानीय करांबुजेन ॥ लीलाभिराराच्छिवमर्चयंतं गजाननं भक्तियुता भजंति ॥ ४ ॥ कुमारमुक्तौ पुनरात्महेतोः पयोधरौ पर्वतराजपुत्र्याः ॥ प्रक्षालयंतं करशीकरेण मौग्ध्येन तं नागमुखं भजामि ॥ ५ ॥ तया समुद्भूतगजास्यहस्ताद्ये शीकराः पुष्करंध्रमुक्ताः ॥ व्योमांगणे ते विचरंति ताराः कालात्मना मौक्तिकतुल्यभासः ॥ ६ ॥ क्रीडारते वारिनिधौ गजास्ये वेलामतिक्रामति वारिपूरे ॥ कल्पा

वसानं परिचिंत्य देवाः कैलासनाथं श्रुतिभिः स्तुवंति ॥ ७॥ नागानने नागकृतोत्तरीये क्रीडारते देवकुमारसंघैः॥ त्वयि क्षणं काल गतिं विहाय तौ प्रापतुः कंदुकतामिनेंदू ॥ ८ ॥ मदोल्लसत्पंचमुखैरजस्रमध्यापयंतं सकलागमार्थम् ॥ देवानृषीन्भक्तजनैकमित्रं हैरंब मर्कारुणमाश्रयामि ॥ ९ ॥ पादांबुजाभ्यामतिवामनाभ्यां कृतार्थयंतं कृपया धरित्रीम्॥अकारणं कारणमाप्तवाचां तन्नागवक्त्रं न जहाति चेतः ॥ १० ॥ येनार्पितं सत्यवतीसुताय पुराणमालिख्य विषाणकोट्या ॥ तं चंद्रमौलेस्तनयं तपोभिराराध्यमानंदघनं भजामि ॥ ११ ॥ पदं श्रुतीनामपदं स्तुतीनां लीलावतारं परमात्ममूर्तेः ॥ नागात्मकं वा पुरुषात्मकं वा त्वभेदमाद्यं भज विघ्नराजम् ॥ १२ ॥ पाशांकुशो भग्नरदं त्वभीष्टं करैर्दधानं कररंध्रमुक्तैः ॥ मुक्ताफलाभैः पृथुशीकरौघैः सिंचंतमंगं शिवयोर्भजामि ॥१३॥ अनेकमेकं गजमेकदंतं चैतन्य रूपं जगदादिबीजम् ॥ ब्रह्मेति यं वेदविदो वदंति तं शंभुसूनुं सततं भजामि ॥ १४ ॥ स्वांकस्थितायां निजवल्लभाया मुखांबुजालोकन लोलनेत्रम् ॥ स्मेराननाब्जं मदवैभवेन रुद्धं भजे विश्वविमोहनं तम् ॥ १५ ॥ ये पूर्वमाराध्य गजाननं त्वां सर्वाणि शास्त्राणि पठंति तेषाम् ॥ त्वत्तो न चान्यत्प्रतिपाद्यमेतैस्तदास्ति चेत्सर्वमसत्यकल्पम् ॥ १६ ॥ हिरण्यवर्णं जगदीशितारं कविं पुराणं रविमंडल स्थम् ॥ गजाननं यं प्रविशंति संतस्तत्कालयोगैस्तमहं प्रपद्ये ॥ १७ ॥ वेदांतगीतं पुरुषं भजेऽहमात्मानमानंदघनं हृदिस्थम् ॥ गजाननं यन्महसा जनानां विघ्नांधकारो विलयं प्रयाति ॥ १८ ॥ शंभोः समालोक्य जटाकलापे शशांकखंडं निजपुष्करेण ॥ स्वभग्नदंतं प्रविचिंत्य मौग्ध्यादाक्रष्टुकामः श्रियमातनोतु ॥ १९ ॥ विघ्नार्गलानां विनिपातनार्थं यं नारिकेलैः कदलीफलाद्यैः ॥ प्रसादयंते मदवारणास्यं प्रभुं सदाऽभीष्टमहं भजेयम् ॥ २० ॥ यज्ञैरनेकैर्बहुभिस्तपोभिराराध्यमाद्यं गजराजवक्त्रम् ॥ स्तुत्याऽनया ये विधिवत्स्तुवंति ते सर्वलक्ष्मीनिलया भवंति ॥ २१ ॥ इति गणेशस्तवराजः समाप्तः ॥ अथ वक्रतुंडगणेशसहस्रनामस्तोत्र प्रारम्भः ॥ व्यास उवाच ॥ कथं नाम्नां सहस्रं स्वं गणेश उपदिष्टवान् ॥ शिवाय तन्ममाचक्ष्व लोकानुग्रहतत्पर ॥ १ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ देवदेवः पुरारातिः पुरत्रयजयोद्यमे ॥ अनर्चनाद्गणेशस्य जातो विघ्नाकुलः किल ॥ २ ॥ मनसा स विनिर्धार्य्य

ततस्तद्विघ्नकारणम् ॥ महागणपतिं भक्त्या समभ्यर्च्य यथाविधि ॥ ३ ॥ विघ्नप्रशमनोपायमपृच्छदपराजितः ॥ संतुष्टः पूजया शम्भोर्महागणपतिः स्वयम् ॥ ४ ॥ सर्वविघ्नैकहरणं सर्वकामफलप्रदम् ॥ ततस्तस्मै स्वकं नाम्नां सहस्रमिदमब्रवीत् ॥ ५ ॥ ॐ अस्य श्रीमहागणपतिसहस्रनाममालामंत्रस्य गणेश ऋषिः । नानाविधानि च्छन्दांसि । महागणपतिर्देवता । गमिति बीजम् । तुंड मिति शक्तिः । स्वाहेति कीलकम् । सकलविघ्ननाशनद्वारा महागणपतिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ गणेशऋषये नमः शिरसि ॥१॥ नानाविधच्छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ महागणपतिदेवतायै नमः हृदि ॥३॥ गं बीजाय नमः गुह्ये ॥४॥ तुण्डशक्तये नमः पादयोः ॥५॥ स्वाहाकीलकाय नमः नाभौ ॥६ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥७॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ महागणपतिरुवाच ॥ ॐ गणेश्वरो गणक्रीडो गणनाथो गणाधिपः ॥ एकदंष्ट्रो वक्रतुण्डो गजवक्त्रो महोदरः ॥ ६ ॥ लम्बोदरो धूम्रवर्णो विकटो विघ्ननायकः ॥ सुमुखो दुर्मुखो बुद्धो विघ्नराजो गजाननः ॥ ७ ॥ भीमः प्रमोद आमोदः सुरानन्दो मदोत्कटः ॥ हेरम्बः शम्बरः शम्भुर्लम्बकर्णो महाबलः ॥ ८ ॥ नन्दनो लम्पटोऽभीरुर्मेघनादो गणंजयः ॥ विनायको विरूपाक्षो धीरः शूरो वरप्रदः ॥ ९ ॥ महागणपतिर्बुद्धिप्रियः क्षिप्रप्रसादनः ॥ रुद्रप्रियो गणाध्यक्ष उमापुत्रोऽघनाशनः ॥ १० ॥ कुमारगुरुरीशानपुत्रो मूषकवाहनः ॥ सिद्धिप्रियः सिद्धिपतिः सिद्धः सिद्धिविनायकः ॥ ११ ॥ अविघ्नस्तुम्बुरुः सिंहवाहनो मोहिनीप्रियः ॥ कटंकरो राजपुत्रः शालकः सम्मितोऽमितः ॥ १२ ॥ कूष्माण्डसामसम्भूतिर्दुर्जयो धूर्जयो जयः ॥ भूपतिर्भुवनपतिर्भूतानाम्पतिरव्ययः ॥ १३ ॥ विश्वकर्ता विश्वमुखो विश्वरूपो निधिर्घृणिः ॥ कविः कवीनामृषभो ब्रह्मण्यो ब्रह्मणस्पतिः ॥ १४ ॥ ज्येष्ठराजो निधिपतिर्निधिप्रियपतिप्रियः ॥ हिरण्मयपुरान्तस्थः सूर्य्यमण्डलमध्यगः ॥ १५ ॥ कराहतिध्वस्तसिन्धुसलिलः पूषदन्तहृत् ॥ उमांककेलिकुतुकी मुक्तिदः कुलपालनः ॥ १६ ॥ किरीटी कुण्डली हारी वनमाली मनोमयः ॥ वैमुख्यहतदैत्यश्रीः पादाहतजिताक्षितिः ॥ १७ ॥ सद्योजातः स्वर्णमुञ्जमेखली दुर्निमित्तहृत् ॥ दुस्स्वप्नहृत्प्रसहनो गुणिनादप्रतिष्ठितः ॥ १८ ॥ सुरूपः सर्वनेत्राधिवासो वीरासनाश्रयः ॥ पीताम्बरः खण्डरदः खण्डेन्दुकृतशेखरः ॥ १९ ॥ चित्रांकः श्यामदशनो भालचन्द्रश्चतु

भुंजः ॥ योगाधिपस्तारकस्थः पुरुषो गजकर्णकः ॥ २० ॥ गणाधिराजो विजयस्थिरो गजपतिर्ध्वजी ॥ देवदेवः स्मरप्राणो दीपको वायुकीलकः ॥ २१ ॥ विपश्चिद्वरदो नादो नादभिन्नवलाहकः ॥ वाराहरदनो मृत्युंजयो व्याघ्राजिनाम्बरः ॥२२॥ इच्छाशक्तिधरो देवत्राता दैत्यविमर्दनः॥शम्भुवक्त्रोद्भवः शम्भुकोपहा शम्भुहास्यभूः ॥२३॥शम्भुतेजाः शिवाशोकहारी गौरीसुखावहः ॥ उमांगमलजो गौरीतेजोभूः स्वर्धुनीभवः ॥ २४ ॥ यज्ञकायो महानादो गिरिवर्ष्मा शुभाननः ॥ सर्वात्मा सर्वदेवात्मा ब्रह्ममूर्द्धा ककुप्श्रुतिः ॥ २५ ॥ ब्रह्माण्डकुम्भश्चिद्व्योमभालः सत्यशिरोरुहः॥ जगज्जन्मलयोन्मेषनिमिषोऽग्न्यर्कसोमदृक्॥२६॥गिरीन्द्रैकरदो धर्म्मो धर्म्मिष्ठः सामबृंहितः ॥ ग्रहर्क्षदशनो वाणीजिह्वो वासवनासिकः ॥ २७ ॥ भ्रूमध्यसंस्थितकरो ब्रह्मविद्यामदोत्कटः ॥ कलाचलांसः सोमार्कघण्टो रुद्रशिरोधरः ॥ २८ ॥ नदीनदभुजः सर्प्पांगुलीकस्तारकानखः ॥ व्योमनाभिः श्रीहृदयो मेरुपृष्ठोऽर्णवोदरः ॥ २९ ॥ कुक्षिस्थयक्षगंधर्वरक्षःकिन्नरमानुषः ॥ पृथ्वीकटिः सृष्टिलिंगः शैलोरुर्दस्रजानुकः ॥ ३० ॥ पातालजंघो मुनिपात्कालांगुष्ठस्त्रयीतनुः ॥ ज्योतिर्मण्डललांगूलो हृदयालाननिश्चलः ॥३१॥ हृत्पद्मकर्णिकाशाली वियत्केलिसरोवरः ॥ सद्भक्तध्याननिगडः पूजावारिनिवारितः ॥ ३२ ॥ प्रतापी कश्यपसुतो गणपो विष्टपी बली ॥ यशस्वी धार्मिकः स्वोजाः प्रथमः प्रमथेश्वरः ॥३३॥ चिंतामणिर्द्वीपपतिः कल्पद्रुमवनालयः ॥ रत्नमंडपमध्यस्थो रत्नसिंहासनाश्रयः ॥३४॥ तीव्राशिरोधृतपदो ज्वालिनीमौलिलालितः ॥ नन्दानन्दितपीठश्रीर्भोगदो भूषितासनः ॥ ३५ ॥ सकामदायिनीपीठः स्फुरदुग्रासनाश्रयः ॥ तेजोवतीशिरोरत्नं सत्यानित्यावतंसितः ॥ ३६ ॥ सविघ्ननाशिनीपीठः सर्वशक्त्यम्बुजाश्रयः॥ लिपिपद्मासनाधारो वह्निधामत्रयाश्रयः ॥३७॥ उन्नतप्रपदागूढगुल्फसंवृतपार्ष्णिकः ॥ पीनजंघः श्लिष्टजानुः स्थूलोरुः प्रोन्नमत्कटिः ॥ ३८ ॥ निम्ननाभिः स्थूलकुक्षिः पीनवक्षा बृहद्भुजः ॥ पीनस्कंधः कम्बुकंठो लम्बोष्ठो लम्बनासिकः ॥ ३९ ॥ भग्नवामरदस्तुंगसव्यदन्तो महाहनुः ॥ ह्रस्वनेत्रत्रयः शूर्प्पकर्णो निबिडमस्तकः ॥ ॥ ४० ॥ स्तबकाकारकुम्भाग्रो रत्नमौलिर्निरंकुशः ॥ सर्प्पहारकटीसूत्रः सर्प्पयज्ञोपवीतवान् ॥ ४१ ॥ सर्प्पकोटीरकटकः सर्प्पग्रैवेयकामदः ॥ सर्प्पकक्ष्योदराबन्धः सर्प्पराजोत्तरीयकः ॥ ४२ ॥ रक्तो रक्ताम्बरधरो रक्तमाल्यविभूषणः ॥ रक्तेक्षणो रक्तकरो रक्तताल्वो

ष्टपल्लवः ॥ ४३ ॥ श्वेतः श्वेताम्बरधरः श्वेतमाल्यविभूषणः ॥ श्वेतातपत्ररुचिरः श्वेतचामरवीजितः ॥ ४४ ॥ सर्वावयवसम्पूर्णः सर्वलक्षण
लक्षितः ॥ सर्वाभरणशोभाढ्यः सर्वशोभासमन्वितः ॥ ४५ ॥ सर्वमंगलमांगल्यः सर्वकारणकारणम् ॥ सर्वदैककरःशार्ङ्गी पूजपूरी गदाधरः
॥ ४६ ॥ इक्षुचापधरः शूली चक्रपाणिः सरोजभृत् ॥ पाशी धृतोत्पलः शालिमञ्जरीभृत्स्वदन्तभृत ॥ ४७ ॥ कल्पवल्लीधरो विश्वाभय
दैककरो वशी ॥ अक्षमालाधरो ज्ञानमुद्रावान्मुद्गरायुधः ॥ ४८ ॥ पूर्णपात्री कम्बुधरो विधृतालिसमूहकः ॥ मातुलुंगधरश्चूतकलिकाभृ
त्कुठारवान् ॥ ४९ ॥ पुष्करस्थस्वर्णघटीपूर्णरत्नाभिवर्षकः ॥ भारतीसुंदरीनाथो विनायकरतिप्रियः ॥ ५० ॥ महालक्ष्मीप्रियतमः
सिद्धलक्ष्मीमनोरमः ॥ रमारमेशपूर्वांगो दक्षिणोमामहेश्वरः ॥ ५१ ॥ महीवराहवामांगो रतिकन्दर्प्पपश्चिमः ॥ आमोदमोदजननः
सप्रमोदप्रमोदनः ॥ ५२ ॥ सामेधिता समिद्धश्रीर्ऋद्धिसिद्धिप्रवर्तकः ॥ दत्तसौमुख्यसुमुखः कांतिकन्दलिताश्रयः ॥ ५३ ॥ मदना
वत्याश्रितांघ्रिः कृतदौर्म्मुख्यदुर्मुखः ॥ विघ्नसम्पल्लवोपघ्नः सेवोन्निद्रमदद्रवः ॥ ५४ ॥ विघ्नकृन्निघ्नचरणो द्राविणीशक्तिसत्कृतः ॥ तीव्रा
प्रसन्ननयनो ज्वालिनीपालितैकदृक् ॥ ५५ ॥ मोहिनीमोहनो भोगदायिनीकांतिमंडितः ॥ कामिनीकान्तवक्त्रश्रीरधिष्ठितवसुन्धरः ॥ ५६ ॥
वसुंधरामदोन्नद्धमहाशंखनिधिः प्रभुः ॥ नमद्वसुमतीमौलिर्महापद्मनिधिप्रभुः ॥ ५७ ॥ सर्वसद्गुरुसंसेव्यः शोचिष्केशहृदाश्रयः ॥ ईशानमूर्द्धा
देवेन्द्रशिखः पवननन्दनः ॥ ५८ ॥ अग्रप्रत्यग्रनयनो दिव्यास्त्राणांप्रयोगवित् ॥ ऐरावतादिसर्वाशावारणावरणप्रियः ॥ ५९ ॥ वज्राद्यस्त्र
परीवारो गणचण्डसमाश्रयः ॥ जयाजयपरीवारो विजयाविजयावहः ॥ ६० ॥ अजिताजितपादाब्जो नित्यानित्यावतंसितः ॥ विला
सिनीकृतोल्लासः शौण्डिसौन्दर्य्यमण्डितः ॥ ६१ ॥ अनंतानन्तसुखदः सुमंगलसुमंगलः ॥ इच्छाशक्तिज्ञानशक्तिक्रियाशक्तिनिषेवितः ॥ ६२ ॥
सुभगासांश्रितपदो ललिताललिताश्रयः ॥ कामिनीकामनः काममालिनीकेलिलालितः ॥ ६३ ॥ सरस्वत्याश्रयो गौरीनन्दनः श्रीनिकेतनः ॥
गुरुगुप्तपदो वाचा सिद्धो वागीश्वरीपतिः ॥ ६४ ॥ नलिनीकामुको वामारामो ज्येष्ठामनोरमः ॥ रौद्रीमुद्रितपादाब्जो हुंबीजस्तुङ्गशक्तिकः ॥ ६५ ॥
विश्वादिजननत्राणः स्वाहाशक्तिः सकीलकः ॥ अमृताब्धिकृतावासो मदघूर्णितलोचनः ॥ ६६ ॥ उच्छिष्टगण उच्छिष्टगणेशो गणनायकः ॥

सर्वकालिकसंसिद्धिर्नित्यशैवो दिगम्बरः ॥ ६७ ॥ अनपायोऽनन्तदृष्टिरप्रमेयोऽजरामरः ॥ अनाविलोऽप्रतिरथो ह्यच्युतोऽमृतमक्षरम् ॥६८॥ अप्रतर्क्योऽक्षयोऽजय्योऽनाधारोऽनामयोऽमलः ॥ अमोघसिद्धिरद्वैतमघोरोऽप्रमिताननः ॥ ६९ ॥ अनाकारोऽधिभूम्यग्निबलघ्नोऽव्यक्त लक्षणः ॥ आधारपीठ आधार आधाराधेयवर्जितः ॥ ७० ॥ आखुकेतन आशापूरक आखुमहारथः ॥ इक्षुसागरमध्यस्थ इक्षुभक्षण लालसः ॥ ७१ ॥ इक्षुचापातिरेकश्रीरिक्षुचापनिषेवितः ॥ इंद्रगोपसमानश्रीरिन्द्रनीलसमद्युतिः ॥ ७२ ॥ इन्दीवरदलश्याम इन्दु मण्डलनिर्मलः ॥ इध्मप्रिय इडाभाग इडाधामेन्दिराप्रियः ॥ ७३ ॥ इक्ष्वाकुविघ्नविध्वंसी इतिकर्तव्यतेप्सितः ॥ ईशानमौलिरीशान ईशानसुत ईतिहा ॥ ७४ ॥ ईषणात्रयकल्पान्त ईहामात्रविवर्जितः ॥ उपेन्द्र उडुभृन्मौलिरुण्डेरकवलिप्रियः ॥ ७५ ॥ उन्नतानन उत्तुङ्ग उदारत्रिदशाग्रणीः ॥ ऊर्जस्वानूष्मलमद ऊहापोहदुरासदः ॥ ७६ ॥ ऋग्यजुःसामसंभूतिर्ऋद्धिसिद्धिप्रवर्तकः ॥ ऋजुचित्तैक सुलभ ऋणत्रयविमोचकः ॥ ७७ ॥ लुप्तविघ्नः स्वभक्तानां लुप्तशक्तिः सुरद्विषाम् ॥ लुप्तश्रीर्विमुखार्चानां लूताविस्फोटनाशनः ॥ ७८ ॥ एकारपीठमध्यस्थ एकपादकृतासनः ॥ एजिताखिलदैत्यश्रीरेजिताखिलसंश्रयः ॥ ७९ ॥ ऐश्वर्य्यनिधिरैश्वर्यमैहिकामुष्मिकप्रदः ॥ ऐरम्मदसमोन्मेष ऐरावतनिभाननः ॥ ८० ॥ ओंकारवाच्य ओंकार ओजस्वानोषधीपतिः ॥ औदार्यनिधिरौद्धत्यधुर्य औन्नत्य निःस्वनः ॥ ८१ ॥ अंकुशः सुरनागानामंकुशः सुरविद्विषाम् ॥ असमस्तविसर्गाणां पदेषु परिकीर्तितः ॥ ८२ ॥ कमण्डलुधरः कल्पः कपर्द्दी कलभाननः ॥ कर्म्मसाक्षी कर्म्मकर्त्ता कर्म्माकर्म्मफलप्रदः ॥ ८३ ॥ कदम्बगोलकाकारः कूष्माण्डगणनायकः ॥ कारुण्यदेहः कापिलः कथकः कटिसूत्रभृत् ॥ ८४ ॥ खर्वः खड्गप्रियः खड्गखातान्तस्थः खनिर्मलः ॥ खल्वाटशृङ्गनिलयः खट्वांगी खदुरासदः ॥ ८५ ॥ गुणाढ्यो गहनो गस्थो गद्यपद्यसुधार्णवः ॥ गद्यगानप्रियो गर्जो गीतगीर्वाणपूर्वजः ॥ ८६ ॥ गुह्याचाररतो गुह्यो गुह्यागमनिरूपितः ॥ गुहाशयो गुहाब्धिस्थो गुरुगम्यो गुरोर्गुरुः ॥ ८७ ॥ घण्टाघर्घरिकामाली घटकुम्भो घटोदरः ॥ चण्डश्चण्डेश्वरसुहृच्चण्डेशश्चण्डविक्रमः ॥ ८८ ॥ चराचरपतिश्चिंतामणिश्चर्वणलालसः ॥ छन्दश्छन्दोवपुश्छन्दो दुर्लक्ष्यश्छन्दविग्रहः ॥ ८९ ॥

जगद्योनिर्जगत्साक्षी जगदीशो जगन्मयः ॥ जपो जपपरो जप्यो जिह्वासिंहासनप्रभुः ॥ ९० ॥ झलज्झल्लोल्लसद्दानझङ्कारिभ्रमराकुलः ॥ टङ्कारस्फारसंरावष्टङ्कारिमणिनूपुरः ॥ ९१ ॥ ठद्वयी पल्लवान्तस्थः सर्वमंत्रैकसिद्धिदः ॥ डिण्डिमुण्डो डाकिनीशो डामरो डिण्डिमप्रियः ॥ ९२ ॥ ढक्कानिनादमुदितो ढौङ्को ढुण्ढिविनायकः ॥ तत्त्वानां परमं तत्त्वं तत्त्वम्पदनिरूपितः ॥ ९३ ॥ तारकांतरसंस्थानस्तारकस्तारकान्तकः ॥ स्थाणुः स्थाणुप्रियः स्थाता स्थावरञ्जङ्गमंजगत् ॥ ९४ ॥ दक्षयज्ञप्रमथनो दाता दानवमोहनः ॥ दयावान् दिव्यविभवो दण्डभृद्दण्डनायकः ॥ ९५ ॥ दन्तप्रभिन्नाभ्रमालो दैत्यवारणदारणः ॥ दंष्ट्रालग्नद्विपघटो देवार्थनृगजाकृतिः ॥ ९६ ॥ धनधान्यपतिर्धन्यो धनदो धरणीधरः ॥ ध्यानैकप्रकटो ध्येयो ध्यानं ध्यानपरायणः ॥ ९७ ॥ नन्द्यो नन्दिप्रियो नादो नादमध्यप्रतिष्ठितः ॥ निष्कलो निर्मलो नित्यो नित्यानित्यो निरामयः ॥ ९८ ॥ परं व्योम परं धाम परमात्मा परं पदम् ॥ परात्परः पशुपतिः पशुपाशविमोचकः ॥ ९९ ॥ पूर्णानंदः परानन्दः पुराणपुरुषोत्तमः ॥ पद्मप्रसन्ननयनः प्रणताज्ञानमोचनः ॥ १०० ॥ प्रणामप्रत्ययातीतः प्रणतार्तिनिवारणः ॥ फलहस्तः फणिपतिः फेत्कारः फाणितप्रियः ॥ १०१ ॥ बाणार्चितांघ्रियुगलो बालकेलिकुतूहली ॥ ब्रह्म ब्रह्मार्चितपदो ब्रह्मचारी बृहस्पतिः ॥ १०२ ॥ बृहत्तमो ब्रह्मपरो ब्रह्मण्यो ब्रह्मवित्प्रियः ॥ बृहन्नादाग्र्यचीत्कारो ब्रह्माण्डावलिमेखलः ॥ ॥ १०३ ॥ भ्रूक्षेपदत्तलक्ष्मीको भर्गो भद्रो भयापहः ॥ भगवान् भक्तिसुलभो भूतिदो भूतिभूषणः ॥ १०४ ॥ भव्यो भूतालयो भोगदाता भ्रूमध्यगोचरः ॥ मंत्रो मंत्रपतिर्मंत्री मदमत्तो मनोरमः ॥ १०५ ॥ मेखलावान्मन्दगतिर्मतिमान्कमलेक्षणः ॥ महाबलो महावीर्य्यो महाप्राणो महामनाः ॥ १०६ ॥ यज्ञो यज्ञपतिर्यज्ञगोप्ता यज्ञफलप्रदः ॥ यशस्करो योगगम्यो याज्ञिको याजकप्रियः ॥ ॥ १०७ ॥ रसो रसप्रियो रस्यो रञ्जको रावणार्चितः ॥ रक्षो रक्षाकरो रत्नगर्भो राज्यसुखप्रदः ॥ १०८ ॥ लक्ष्यालक्ष्यप्रदो लक्ष्यो लयस्थो लड्डुकाप्रियः ॥ लानप्रियो लास्यपरो लाभकृल्लोकविश्रुतः ॥ १०९ ॥ वरेण्यो वह्निवदनो वन्द्यो वेदांतगोचरः ॥ विकर्ता विश्वतश्चक्षुर्विधाता विश्वतोमुखः ॥ ११० ॥ वामदेवो विश्वनेता वज्री वज्रनिवारणः ॥ विश्वबंधनविष्कम्भाधारो विश्वेश्वरः

प्रभुः ॥ १११ ॥ शब्दब्रह्म शमप्राप्यः शम्भुशक्तिगणेश्वरः ॥ शास्ता शिखाग्रनिलयः शरण्यः शिखरीश्वरः ॥ ११२ ॥ षड्ऋतुकुसुमस्रग्वी षडाधारः षडक्षरः ॥ संसारवैद्यः सर्वज्ञः सर्वभेषजभेषजम् ॥ ११३ ॥ सृष्टिस्थितिलयक्रीडः सुरकुंजरभेदनः ॥ सिन्दूरितमहाकुंभः सदसद्व्यक्तिदायकः ॥ ११४ ॥ साक्षी समुद्रमथनः स्वसंवेद्यः स्वदक्षिणः ॥ स्वतंत्रः सत्यसंकल्पः सामगानरतः सुखी ॥ ११५ ॥ हंसो हस्तिपिशाचीशो हवनं हव्यकव्यभुक् ॥ हव्यं हुतप्रियो हर्षो हृल्लेखामंत्रमध्यगः ॥ ११६ ॥ क्षेत्राधिपः क्षमाभर्ता क्षमापरपरायणः ॥ क्षिप्रक्षेमकरः क्षेमानन्दः क्षोणीसुरद्रुमः ॥ ११७ ॥ धर्मप्रदोऽर्थदः कामदाता सौभाग्यवर्द्धनः ॥ विद्याप्रदो विभवदो भुक्तिमुक्तिप्रदायकः ॥ ११८ ॥ आभिरूप्यकरो वीरः श्रीप्रदो विजयप्रदः ॥ सर्ववश्यकरो गर्भदोषहा पुत्रपौत्रदः ॥ ११९ ॥ मेधादः कीर्तिदः शोकहारी दौर्भाग्यनाशनः ॥ श्रीशोकहारी दौर्भाग्यनाशनः सर्वशक्तिभृत् ॥ १२० ॥ प्रतिवादिमुखस्तम्भो हृष्टचित्तप्रसादनः ॥ पराभिचारशमनो दुःखभञ्जनकारकः ॥ २२१ ॥ लवस्त्रुटिः कला काष्ठा निमेषस्तत्परः क्षणः ॥ घटी मुहूर्तः प्रहरो दिवा नक्तमहर्निशम् ॥ १२२ ॥ पक्षो मासोऽयनं वर्षं युगं कल्पो महालयः ॥ राशिस्तारा तिथिर्योगो वारः करणमंशकम् ॥ १२३ ॥ लग्नं होरा कालचक्रं मेरुः सप्तर्षयो ध्रुवः ॥ राहुर्मन्दः कविर्जीवो बुधो भौमः शशी रविः ॥ १२४ ॥ कालः सृष्टिः स्थितिर्विश्वं स्थावरं जङ्गमं च यत् ॥ भूरापोऽग्निर्मरुद्व्योमाहंकृतिः प्रकृतिः पुमान् ॥ १२५ ॥ ब्रह्मा विष्णुः शिवो रुद्र ईशः शक्तिः सदाशिवः ॥ त्रिदशाः पितरः सिद्धा यक्षरक्षांसि किन्नराः ॥ १२६ ॥ साध्या विद्याधरा भूता मनुष्याः पशवः खगाः ॥ समुद्राः सरितः शैला भूतभव्यभवोद्भवः ॥ १२७ ॥ सांख्यं पातञ्जलं योगः पुराणानि श्रुतिः स्मृतिः ॥ वेदाङ्गानि सदाचारो मीमांसा न्यायविस्तरः ॥ १२८ ॥ आयुर्वेदो धनुर्वेदो गान्धर्वं काव्यनाटकम् ॥ वैखानसं भागवतं सात्वतं पाञ्चरात्रकम् ॥ १२९ ॥ शैवं पाशुपतं कालमुखं भैरवशासनम् ॥ शाक्तं वैनायकं सौरं जैनमार्हतसंहिता ॥ १३० ॥ सदसद्व्यक्तमव्यक्तं सचेतनमचेतनम् ॥ बन्धो मोक्षः सुखं भोगो योगः सत्यमणुर्महान् ॥ १३१ ॥ स्वस्ति हुं फट् स्वधा स्वाहा श्रौषट् वौषड्वषण्नमः ॥ ज्ञानविज्ञानमानन्दो बोधः संविच्छमो यमः ॥ १३२ ॥ एक एकाक्षरधार एकाक्षरपरायणः ॥ एकाग्रधीरेकवीर एकानेक

स्वरूपधृक् ॥ १३३ ॥ द्विरूपो द्विभुजो द्व्यक्षो द्विरदो द्वीपरक्षकः ॥ द्वैमातुरो द्विवदनो द्वन्द्वातीतो द्व्यालिगः ॥ १३४ ॥ त्रिधामा
त्रिकरस्त्रेता त्रिवर्गफलदायकः ॥ त्रिगुणात्मा त्रिलोकादिस्त्रिशक्तीशस्त्रिलोचनः ॥ १३५ ॥ चतुर्बाहुश्चतुर्दन्तश्चतुरात्मा चतुर्मुखः ॥
चतुर्विधोपायमयश्चतुर्वर्णाश्रमाश्रयः ॥ १३६ ॥ चतुर्विधवचोवृत्तिपरिवर्तप्रवर्तकः ॥ चतुर्थीपूजनप्रीतश्चतुर्थीतिथिसंभवः ॥ १३७ ॥
पञ्चाक्षरात्मा पञ्चात्मा पञ्चास्यः पञ्चकृत्यकृत् ॥ पञ्चाधारः पञ्चवर्णः पञ्चाक्षरपरायणः ॥ १३८ ॥ पञ्चतालः पञ्चकरः पञ्चप्रणवभावितः ॥
पञ्चब्रह्ममयस्फूर्तिः पञ्चवारणवारितः॥१३९॥पञ्चभक्ष्यप्रियः पञ्चबाणः पञ्चशिवात्मकः॥षट्कोणपीठः षट्चक्रधामा षड्ग्रन्थिभेदकः॥१४०॥
षडध्वध्वान्तविध्वंसी षडंगुलमहाह्रदः ॥ षण्मुखः षण्मुखभ्राता षट्शक्तिपरिवारितः ॥ १४१ ॥ षड्वैरिवर्गविध्वंसी षडूर्मिभमयभञ्जनः॥
षट्तर्कदूरः षट्कर्म्मनिरतः षड्रसाश्रयः ॥ १४२ ॥ सप्तपातालचरणः सप्तद्वीपोरुमण्डलः ॥ सप्तस्वर्लोकमुकुटः सप्तसप्तिवरप्रदः
॥ १४३ ॥ सप्तांगराज्यसुखदः सप्तर्षिगणमण्डितः ॥ सप्तच्छन्दोनिधिः सप्तहोता सप्तस्वराश्रयः ॥ १४४ ॥ सप्ताब्धिकेलिकासारः
सप्तमातृनिषेवितः ॥ सप्तच्छन्दोमोदमदः सप्तच्छन्दो मखप्रभुः ॥ १४५ ॥ अष्टमूर्तिर्ध्येयमूर्तिरष्टप्रकृतिकारणम् ॥ अष्टांगयोगफल
भूरष्टपात्राम्बुजासनः ॥ १४६ ॥ अष्टशक्तिसमृद्धश्रीरष्टैश्वर्यप्रदायकः ॥ अष्टपीठोपपीठश्रीरष्टमातृसमावृतः ॥ १४७ ॥ अष्टभैरवसेव्योऽष्ट
वसुवन्द्योऽष्टमूर्तिभृत् ॥ अष्टचक्रस्फुरन्मूर्तिरष्टद्रव्यहविःप्रियः ॥ १४८ ॥ नवनागासनाध्यासी नवविध्यनुशासिता ॥ नवद्वारपुराधारो
नवद्वारनिकेतनः ॥ १४९ ॥ नवनारायणस्तुत्यो नवदुर्गानिषेवितः ॥ नवनाथमहानाथो नवनागविभूषणः ॥ १५० ॥ नवरत्नविचि
त्रांगो नवशक्तिशिरोधृतः ॥ दशात्मको दशभुजो दशदिक्पतिवन्दितः ॥ १५१ ॥ दशाध्यायो दशप्राणो दशेन्द्रियनियामकः ॥
दशाक्षरमहामंत्रो दशाशाव्यापिविग्रहः ॥ १५२ ॥ एकादशादिभी रुद्रैः स्तुत एकादशाक्षरः ॥ द्वादशोद्दण्डदोर्दण्डो द्वादशान्तनिके
तनः ॥१५३॥ त्रयोदशभिदाभिन्नविश्वेदेवाधिदैवतम् ॥ चतुर्दशेन्द्रवरदश्चतुर्दशमनुप्रभुः ॥१५४॥ चतुर्दशादिविद्याढ्यश्चतुर्दशजगत्प्रभुः ॥
सामपञ्चदशः पञ्चदशीशीतांशुनिर्म्मलः ॥ १५५ ॥ षोडशाधारनिलयः षोडशस्वरमातृकः ॥ षोडशान्तपदावासः षोडशेन्दुकला

त्मकः ॥ १५६ ॥ कलासप्तदशीसप्तदशः सप्तदशाक्षरः ॥ अष्टादशद्वीपपतिरष्टादशपुराणकृत् ॥ १५७ ॥ अष्टादशौषधीसृष्टिरष्टादशविधिः
स्मृतः ॥ अष्टादशलिपिव्यष्टिसमष्टिज्ञानकोविदः ॥ १५८ ॥ एकविंशः पुमानेकविंशत्यंगुलिपल्लवः ॥ चतुर्विंशतितत्त्वात्मा पञ्चविंश
त्यपूरुषः ॥ १५९ ॥ सप्तविंशतितारेशः सप्तविंशतियोगकृत् ॥ द्वात्रिंशद्भैरवाधीशश्चतुस्त्रिंशन्महाह्रदः ॥ १६० ॥ षट्त्रिंशत्तत्त्व
सम्भूतिरष्टत्रिंशत्कलातनुः ॥ नमदेकोनपञ्चाशन्मरुद्वर्गनिरर्गलः ॥ १६१ ॥ पञ्चाशदक्षरश्रेणिः पंचाशद्रुद्रविग्रहः ॥ पंचाशद्विष्णु
शक्तीशः पञ्चाशन्मातृकालयः ॥ १६२ ॥ द्विपञ्चाशद्वपुःश्रेणिस्त्रिषष्ट्यक्षरसंश्रयः ॥ चतुष्षष्ट्यर्णनिर्णेता चतुःषष्टिकलानिधिः ॥ १६३ ॥
चतुःषष्टिमहासिद्धयोगिनीवृन्दवंदितः ॥ अष्टषष्टिमहातीर्थक्षेत्रभैरवभावनः ॥ १६४ ॥ चतुर्णवतिमंत्रात्मा षण्णवत्यधिकः प्रभुः ॥
शतानन्दः शतधृतिः शतपत्रायतेक्षणः ॥ १६५ ॥ शतानीकः शतमुखः शतधारवरायुधः ॥ सहस्रपत्रनिलयः सहस्रफलभूषणः ॥१६६॥
सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ सहस्रनामसंस्तुत्यः सहस्राक्षबलापहः ॥ १६७ ॥ दशसाहस्रफणिभृत् फणिराजकृतासनः ॥
अष्टाशीतिसहस्रौघमहर्षिस्तोत्रयंत्रितः ॥ १६८ ॥ लक्षाधीशप्रियाधारो लक्षाधीशमनोमयः ॥ चतुर्लक्षजपप्रीतश्चतुर्लक्षप्रकाशितः
॥ १६९ ॥ चतुरशीतिलक्षाणां जीवानां देहसंस्थितः ॥ कोटिसूर्य्यप्रतीकाशः कोटिचन्द्रांशुनिर्मलः ॥ १७० ॥ शिवाभवाध्युष्टकोटि
विनायकधुरन्धरः ॥ सप्तकोटिमहामंत्रमंत्रितावयवद्युतिः ॥ १७१ ॥ त्रयस्त्रिंशत्कोटिसुरश्रेणीप्रणतपादुकः ॥ अनंतदेवतासेव्यो
ह्यनन्तमुनिसंस्तुतः ॥ १७२ ॥ अनन्तनामानन्तश्रीरनन्तानन्तसौख्यदः ॥ इति वैनायकं नाम्नां सहस्रमिदमीरितम् ॥ १७३ ॥
इदं ब्राह्मे मुहूर्ते वै यः पठेत्प्रत्यहं नरः ॥ करस्थं तस्य सकलमैहिकामुष्मिकं सुखम् ॥ १७४ ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यं धर्म्मः शौर्य्यं बलं
यशः ॥ मेधा प्रज्ञा धृतिः कांतिः सौभाग्यमतिरूपता ॥ १७५ ॥ सत्यं दया क्षमा शांतिर्दाक्षिण्यं धर्म्मशीलता ॥ जगत्संयमनं विश्व
संवादो वादपाटवम् ॥ १७६ ॥ सभापाण्डित्यमौदार्य्यं गाम्भीर्य्यं ब्रह्मवर्चसम् ॥ औन्नत्यं च कुलं शीलं प्रतापो वीर्यमार्य्यता ॥ १७७ ॥
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं धैर्य्यं विश्वातिशायिता ॥ धनधान्याभिवृद्धिश्च सकृदस्य जपाद्भवेत् ॥ १७८ ॥ वश्यं चतुर्विधं नृणां जपादस्य

प्रजायते ॥ राज्ञो राजकलत्रस्य राजपुत्रस्य मंत्रिणः ॥ १७९ ॥ जप्यते यस्य वश्यार्थे स दासस्तस्य जायते ॥ धर्म्मार्थकाममोक्षाणामनायासेन साधनम् ॥ १८० ॥ शाकिनीडाकिनीरक्षोयक्षोरगभयापहम् ॥ साम्राज्यसुखदं चैव समस्तरिपुमर्द्दनम् ॥ १८१ ॥ समस्तकलहध्वंसि दग्धबीजप्ररोहणम् ॥ दुःस्वप्नशमनं क्रुद्धस्वामिचित्तप्रसादनम् ॥ १८२ ॥ षट्कर्म्माष्टमहासिद्धित्रिकालज्ञानसाधनम् ॥ परकृत्योपशमनं परचक्रविमर्द्दनम् ॥ १८३ ॥ संग्रामरङ्गे सर्वेषामिदमेकं जयावहम् ॥ एवं वंध्यात्वदोषघ्नं गर्भरक्षैककारणम् ॥ १८४ ॥ पठ्यते प्रत्यहं यत्र स्तोत्रं गणपतेरिदम् ॥ देशे तत्र न दुर्भिक्षमीतयो दुरितानि च ॥ १८५ ॥ न तद्गेहं जहाति श्रीर्यत्रायं जप्यते स्तवः ॥ क्षयकुष्ठप्रमेहार्शोभगन्दरविषूचिकाः ॥ १८६ ॥ गुल्मं प्लीहानमाध्मानमतिसारं महोदरम् ॥ कासं श्वासमुदावर्तं शूलं शोकादिसम्भवम् ॥ १८७ ॥ शिरोरोगं वमिं हिक्कां गण्डमालामरोचकम् ॥ वातपित्तकफद्वंद्वत्रिदोषजनितज्वरम् ॥ १८८ ॥ आगंतु विषमं शीतमुष्णं चैकाहिकादिकम् ॥ इत्याद्युक्तमनुक्तं वा रोगं दोषादिसम्भवम् ॥ १८९ ॥ सर्वं प्रशमयत्याशु स्तोत्रस्यास्य सकृज्जपात् ॥ सकृत् पाठेन संसिद्धिः स्त्रीशूद्रपतितैरपि ॥ १९० ॥ सहस्रनाममंत्रोऽयं जप्तव्यस्तु शुभाप्तये ॥ महागणपतेः स्तोत्रं सकामः प्रजपन्निदम् ॥ १९१ ॥ इच्छया सकलान्भोगानुपभुज्येह पार्थिवान् ॥ मनोरथफलैर्दिव्यैर्व्योमयानैर्मनोरमैः ॥ १९२ ॥ चन्द्रेन्द्रभास्करोपेन्द्रब्रह्मरुद्रादिसद्मसु ॥ कामरूपः कामगतिः कामतो विचरन्निह ॥ १९३ ॥ भुक्त्वा यथेप्सितान्भोगानभीष्टैः सह बन्धुभिः ॥ गणेशानुचरो भूत्वा महागणपतेः प्रियः ॥ १९४ ॥ नन्दीश्वरादिसानन्दी नन्दितः सकलैर्गणैः ॥ शिवाभ्यां कृपया पुत्रनिर्विशेषं च लालितः ॥ १९५ ॥ शिवभक्तः पूर्णकामो गणेश्वरवरात्पुनः ॥ जातिस्मरो धर्मपरः सार्वभौमोऽभिजायते ॥ १९६ ॥ निष्कामस्तु जपन्नित्यं भक्त्या विघ्नेशतत्परः ॥ योगसिद्धिं परां प्राप्य ज्ञानवैराग्यसंस्थितः ॥ १९७ ॥ निरंतरोदितानन्दे वरमानन्दसंविदि ॥ विश्वोत्तीर्णे परे पारे पुनरावृत्तिवर्जिते ॥ १९८ ॥ लीनो वैनायके धाम्नि रमते नित्यनिर्वृतः ॥ यो नामभिर्हुनेदेतैरर्चयेत्पूजयेन्नरः ॥ १९९ ॥ राजानो वश्यतां यांति रिपवो यांति दासताम् ॥ मंत्राः सिध्यंति सर्वेऽपि सुलाभस्तस्य

सिद्धयः ॥ २०० ॥ मूलमंत्रादपि स्तोत्रमिदं प्रियतरं मम ॥ नभस्ये मासि शुक्लायां चतुर्थ्यां मम जन्मनि ॥ २०१ ॥ दूर्वाभिर्नामभिः
पूजां तर्पणं विधिवच्चरेत् ॥ अष्टद्रव्यैर्विशेषेण जुहुयाद्भक्तिसंयुतः ॥ २०२ ॥ तस्येप्सितानि सर्वाणि सिद्ध्यंत्यत्र न संशयः ॥ इदं
प्रजप्तं पठितं पाठितं श्रावितं श्रुतम् ॥ २०३ ॥ व्याकृतं चर्चितं ध्यातं विमृष्टमभिनन्दितम् ॥ इहामुत्र च सर्वेषां विश्वैश्वर्य्यप्रदायकम्
॥ २०४ ॥ स्वच्छन्दचारिणाप्येष येन संधार्य्यते स्तवः ॥ संरक्ष्यते शिवोद्भूतैर्गणैरध्युष्टकोटिभिः ॥ २०५ ॥ पुस्तके लिखितं स्तोत्रं
मंत्रभूतं प्रपूजयेत् ॥ तत्र सर्वोत्तमा लक्ष्मीः सन्निधत्ते निरंतरम् ॥ २०६ ॥ दानैरशेषैरखिलैर्व्रतैश्च तीर्थैरशेषैः सकलैर्म्मखैश्च ॥ न तत्फलं
विंदति यद्गणेशसहस्रनाम्नां स्मरणेन सद्यः ॥ २०७ ॥ एतन्नाम्नां सहस्रं पठति दिनमणौ प्रत्यहं प्रोज्जिहाने सायं मध्यन्दिने वा त्रिषवण
मथवा संततं वा जनो यः ॥ स स्यादैश्वर्य्यधुर्य्यः प्रभवति वचसां कीर्तिमुच्चैस्तनोति प्रत्यूहं हंति विश्वं वशयति सुचिरं वर्द्धते पुत्रपौत्रैः
॥ २०८ ॥ अकिंचनोऽप्येकचित्तो नियतो नियताशनः ॥ जपेत्तु चतुरो मासान्गणेशार्चनतत्परः ॥ २०९ ॥ दरिद्रतां समुन्मूल्य सप्त
जन्मानुगामपि ॥ लभते महतीं लक्ष्मीमित्याज्ञा पारमेश्वरी ॥ २१० ॥ आयुष्यं वीतरोगं कुलमतिविमलं सम्पदश्चार्त्तदानाः कीर्ति
र्नित्यावदाता भणितिरभिनवा कांतिरव्याजभव्या ॥ पुत्राः संतः कलत्रं गुणवदभिमतं यद्यदेतच्च सत्यं नित्यं यः स्तोत्रमेतत्पठति गणपते
स्तस्य हस्ते समस्तम् ॥ २११ ॥ ॐ गणंजयो गणपतिर्हेरंबो धरणीधरः ॥ महागणपतिर्लक्षप्रदः क्षिप्रप्रसादनः ॥ २१२ ॥ अमोघ
सिद्धिरमितो मंत्रश्चिंतामणिर्निधिः ॥ सुमंगलो बीजमाशापूरको वरदः शिवः ॥ २१३ ॥ काश्यपो नंदनो वाचासिद्धो ढुंढिर्विनायकः ॥
मोदकैरेभिरत्रैकविंशत्या नामभिः पुमान् ॥ २१४ ॥ यः स्तौति मद्गतमना ममाराधनतत्परः ॥ स्तुतो नाम्नां सहस्रेण तेनाहं नात्र संशयः
॥ २१५ ॥ नमो नमः सुरवरपूजितांघ्रये नमो नमो निरुपममंगलात्मने ॥ नमो नमो विपुलकरैकसिद्धये नमो नमः करिकलभाननाय ते
॥ २१६ ॥ किंकिणिगणरणितस्तवचरणः प्रकटितगुरुमतिचरितविशेषः ॥ मदजललहरीकलितकपोलः शमयतु दुरितं गणपति
देवः ॥ २१७ ॥ इति श्रीवक्रतुंडगणेशसहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥ अथ वक्रतुंडशतनामस्तोत्रप्रारंभः ॥ गणेश्वरो गणक्रीडो

महागणपतिस्तथा ॥ विश्वकर्ता विश्वमुखो दुर्जयो धूर्जयो जयः ॥ १ ॥ स्वरूपः सर्वनेत्राधिवासो वीरासनाश्रयः ॥ योगाधिपस्तार
कस्थः पुरुषो गजकर्णकः ॥ २ ॥ चित्रांकः श्यामदशनो भालचंद्रश्चतुर्भुजः ॥ शंभुतेजा यज्ञकायः सर्वात्मा सामबृंहितः ॥ ३ ॥
अचलांसो व्योमनाभिः कल्पद्रुमवनालयः ॥ निम्ननाभिः स्थूलकुक्षिः पीनवक्षा बृहद्भुजः ॥ ४ ॥ पीनस्कंधः कंबुकण्ठो लम्बोष्ठो
लंबनासिकः ॥ सर्वावयवसम्पूर्णः सर्वलक्षणलक्षितः ॥ ५ ॥ इक्षुचापधरः शूली कांतिकंदलिताश्रयः ॥ अक्षमालाधरो ज्ञानमुद्रावान्
विजयावहः ॥ ६ ॥ कामिनीकामनः कामसालिनीकेलिलालितः ॥ अमोघसिद्धिराधार आधाराधेयवर्जितः ॥ ७ ॥ इन्दीवरदलश्याम
इन्दुमंडलनिर्मलः ॥ कार्मसाक्षी कर्मकर्त्ता कर्माकर्मफलप्रदः ॥ ८ ॥ कमण्डलुधरः कल्पः कपर्दी कटिसूत्रभृत् ॥ कारुण्यदेहः
कपिलो गुह्यागमनिरूपितः ॥ ९ ॥ गुहाशयो गहाब्धिस्थो घटकुंभो घटोदरः ॥ पूर्णानन्दः परानन्दो धनदो धरणीधरः ॥ १० ॥ बृहत्तमो
ब्रह्मपरो ब्रह्मण्यो ब्रह्मवित्प्रियः ॥ भव्यो भूतालयो भोगदाता चैव महामनाः ॥ ११ ॥ वरेण्यो वामदेवश्च वन्द्यो वज्रनिवारणः ॥
विश्वकर्ता विश्वचक्षुर्हवनं हव्यकव्यभुक् ॥ १२ ॥ स्वतंत्रः सत्यसंकल्पस्तथा सौभाग्यवर्द्धनः ॥ कीर्तिदः शोकहारी च त्रिवर्गफल
दायकः ॥ १३ ॥ चतुर्बाहुश्चतुर्दंतश्चतुर्थीतिथिसंभवः ॥ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ १४ ॥ कामरूपः कामगतिर्द्विरदो
द्वीपरक्षकः ॥ क्षेत्राधिपः क्षमाभर्ता लयस्थो लड्डुकप्रियः ॥ १५ ॥ प्रतिवादिमुखस्तंभो दुष्टचित्तप्रसादनः ॥ भगवान् भक्तिसुलभो
याज्ञिको याजकप्रियः ॥ १६ ॥ इत्येवं देवदेवस्य गणराजस्य धीमतः ॥ शतमष्टोत्तरं नाम्नां सारभूतं प्रकीर्तितम् ॥ १७ ॥ सहस्रनाम्ना
आकृष्य प्रोक्तं स्तोत्रं मनोहरम् ॥ ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय स्मृत्वा देवं गणेश्वरम् ॥ पठेत्स्तोत्रमिदं भक्त्या गणराजः प्रसीदति ॥१८॥ इति
श्रीरुद्रयामलतंत्र उमामहेश्वरसंवादे श्रीगणेशस्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥ अथ वक्रतुण्डस्तोत्रप्रारम्भः ॥ ॐॐॐकाररूपं हिमकररुचिरं
यत्स्वरूपं तुरीयं त्रैगुण्यातीतलीलं कलयति मनसा तेजसोदारवृत्तिः ॥ योगीन्द्रा ब्रह्मरन्ध्रे सहजगुणमयं श्रीहरेन्द्रं स्वसंज्ञं गंगंगंगणेशं गज
मुखमनिशं व्यापकं चिंतयंति ॥१॥ वंवंवंविघ्नराजं भजति निजभुजे दक्षिणे पाणिशुंडं क्रोंक्रोंक्रोंक्रोधमुद्रादलितरिपुकुलं कल्पवृक्षस्य मूले

दंदंदंदंतमेकं दधतमभिमुखं कामधेन्वादिसेव्यं धंधंधंधारयंतं दधतमतिशयं सिद्धिबुद्धीर्ददंतम् ॥२॥ तुंतुंतुंतुंगरूपं गगनमुपगतं व्याप्नुवन्तं दिगंतं क्लीं क्लीं क्लीं कामनाथं गलितमददलं लोलमत्तालिमालम् ॥ ह्रीं ह्रीं ह्रींकाररूपं सकलमुनिजनैर्ध्येयमुद्दिक्षुदंडं श्रीं श्रीं श्रीं संश्रयंतं निखिलनिधिकलं नौमि हेरंबलंबम् ॥ ३ ॥ ग्लौं ग्लौं ग्लौंकारमाद्यं प्रणवमयमहामंत्रमुक्तावलीनां सिद्धं विघ्नेशबीजं शशिकर सदृशं योगिनां ध्यानगम्यम् ॥ डांडांडांडामरूपं दलितभवभयं सूर्यकोटिप्रकाशं यंयंयंयक्षराजं जपति मुनिजनो बाह्यमाभ्यंतरं च ॥ ४ ॥ हुंहुंहुंहेमवर्णं श्रुतिगणितगुणं शूर्पकर्णं कृपालुं ध्येयं यं सूर्यबिंबे उरसि च विलसत्सर्पयज्ञोपवीतम् ॥ स्वाहाहुंफट्समेतैष्ठठठठसहितैः पल्लवैः सेव्यमानैर्मंत्राणां सप्तकोटिप्रगुणितमहिमध्यानमीशं प्रपद्ये ॥ ५॥ पूर्वं पीठं त्रिकोणं तदुपरि रुचिरं षड्दलं सूपपत्रं तस्योर्ध्वं बद्ध रेखावसुदलकमलं बाह्यतोऽधश्च तस्य ॥ मध्ये हुंकारबीजं तदनु भगवतो बीजषट्कं पुरारेरष्टौ शुक्लेशसिंधौ बहुलगणपतेर्विष्टरे वाष्टकं च ॥ ६ ॥ धर्माद्यष्टौ प्रसिद्धा दिशि विदिशि गणा बाह्यतो लोकपालान् मध्ये क्षेत्राधिनाथं मुनिजनतिलकं मंत्रमुद्रापदेशम् ॥ एवं यो भक्ति युक्तो जपति गणपतिं पुष्पधूपाक्षताद्यैर्नैवेद्यैर्मोदकानां स्तुतिनटविलसद्गीतवादित्रनादैः ॥ ७ ॥ राजानस्तस्य भृत्या इव युवतिकुलं दासवत्सर्वदाऽऽस्ते लक्ष्मीः सर्वाङ्गयुक्ता त्यजति न सदनं किंकराः सर्वलोकाः ॥ पुत्राः पौत्राः प्रपौत्रा रणभुवि विजयो द्यूतवादे प्रवीणो यस्येशो विघ्नराजो निवसति हृदये भक्तिभाजां स देवः ॥ ८ ॥ इति श्रीशंकराचार्य्यविरचितं वक्रतुंडस्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ अथ उच्छिष्टगणेशकवचप्रारंभः ॥ देव्युवाच ॥ " देवदेव जगन्नाथ सृष्टिस्थितिलयात्मक ॥ विना ध्यानं विना मंत्रं विना होमं विना जपम् ॥ १ ॥ येन स्मरणमात्रेण लभ्यते चाशु चिंतितम् ॥ तदेव श्रोतुमिच्छामि कथयस्व जगत्प्रभो ॥ २ ॥ ईश्वर उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि गुह्याद्गुह्यतरं महत् ॥ उच्छिष्टगणनाथस्य कवचं सर्वसिद्धिदम् ॥ ३ ॥ अल्पायासैर्विना कष्टैर्जपमात्रेण सिद्धिदम् ॥ एकांते निर्जनेऽरण्ये गह्वरे च रणांगणे ॥ ४ ॥ सिंधुतीरे च गंगायाः कूले वृक्षतले जले ॥ सर्वदेवालये तीर्थे लब्ध्वा सम्यग् जपं चरेत् ॥५॥ स्नानशौचादिकं नास्ति नास्ति निर्बंधनं प्रिये ॥ दारिद्र्यांतकरं शीघ्रं सर्वतत्त्वं जनप्रिये ॥ ६ ॥ सहस्रशपथं

कृत्वा यदि स्नेहोऽस्ति मां प्रति ॥ निंदकाय कुशिष्याय खलाय कुटिलाय च ॥ ७ ॥ दुष्टाय परशिष्याय घातकाय शठाय च ॥ वंचकाय वरघ्नाय ब्राह्मणीगमनाय च ॥ ८ ॥ अशक्ताय च क्रूराय गुरुद्रोहरताय च ॥ न दातव्यं न दातव्यं न दातव्यं कदाचन ॥ ९ ॥ गुरुभक्ताय दातव्यं सच्छिष्याय विशेषतः ॥ तेषां सिध्यंति शीघ्रेण ह्यन्यथा न च सिध्यति ॥ १० ॥ गुरुसंतुष्टिमात्रेण कलौ प्रत्यक्षसिद्धिदम् ॥ देहोच्छिष्टैः प्रजप्तव्यं तथोच्छिष्टैर्महामनुः ॥ ११ ॥ आकाशे च फलं प्राप्तं नान्यथा वचनं मम ॥ एषा राजवती विद्या विना पुण्यं न लभ्यते ॥ १२ ॥ अथ वक्ष्यामि देवेशि कवचं मंत्रपूर्वकम् ॥ येन विज्ञातमात्रेण राजभोगफलप्रदम् ॥ १३ ॥ ऋषिर्मे गणकः पातु शिरसि च निरंतरम् ॥ त्राहि मां देवि गायत्रीछन्दो ऋषिः सदा मुखे ॥ ॥ १४ ॥ हृदये पातु मां नित्यमुच्छिष्टगणदेवता ॥ गुह्ये रक्षतु तद्बीजं स्वाहा शक्तिश्च पादयोः ॥ १५ ॥ कामकीलकसर्वांगे विनियोगश्च सर्वदा ॥ पार्श्वद्वये सदा पातु स्वशक्तिं गणनायकः ॥ १६ ॥ शिखायां पातु तद्बीजं भ्रूमध्ये तारबीजकम् ॥ हस्तिवक्त्रश्च शिरसि लंबोदरो ललाटके ॥ १७ ॥ उच्छिष्टो नेत्रयोः पातु कर्णौ पातु महात्मने ॥ पाशांकुशमहाबीजं नासिकायां च रक्षतु ॥ १८ ॥ भूतीश्वरः परः पातु आस्यं जिह्वां स्वयंवपुः ॥ तद्बीजं पातु मां नित्यं ग्रीवायां कंठदेशके ॥ १९ ॥ गंबीजं च तथा रक्षेत्तथा त्वग्रे च पृष्ठके ॥ सर्वकामश्च हृत् पातु पातु मां च करद्वये ॥ २० ॥ उच्छिष्टाय च हृदये वह्निबीजं तथोदरे ॥ मायाबीजं तथा कट्यां द्वौ ऊरू सिद्धिदायकः ॥ २१ ॥ जंघायां गणनाथश्च पादौ पातु विनायकः ॥ शिरसः पादपर्यंतमुच्छिष्टगणनायकः ॥ २२ ॥ आपादमस्तकांतं च उमापुत्रश्च पातु माम् ॥ दिशोऽष्टौ च तथाकाशे पाताले विदिशाष्टके ॥ २३ ॥ अहर्निशं च मां पातु मदचंचललोचनः ॥ जलेऽनले च संग्रामे दुष्टकारागृहे वने ॥ २४ ॥ राजद्वारे घोरपथे पातु मां गणनायकः ॥ इदं तु कवचं गुह्यं मम वक्त्राद्विनिर्गतम् ॥ २५ ॥ त्रैलोक्ये सततं पातु द्विभुजश्च चतुर्भुजः ॥ बाह्यमाभ्यंतरं पातु सिद्धिबुद्धिर्विनायकः ॥ २६ ॥ सर्वसिद्धिप्रदं देवि कवचमृद्धिसिद्धिदम् ॥ एकांते प्रजपेन्मंत्रं कवचं युक्तिसंयुतम् ॥ २७ ॥ इदं रहस्यं कवचमुच्छिष्टगणनायकम् ॥

सर्ववर्मसु देवेशि इदं कवचनायकम् ॥ २८ ॥ एतत् कवचमाहात्म्यं वर्णितुं नैव शक्यते ॥ धर्म्मार्थकाममोक्षं च नानाफलप्रदं नृणाम् ॥ २९ ॥ शिवपुत्रः सदा पातु पातु मां च सुरार्चितः ॥ गजाननः सदा पातु गणराजश्च पातु माम् ॥ ३० ॥ सदा शक्तिरतः पातु पातु मां कामविह्वलः ॥ सर्वाभरणभूषाढ्यः पातु मां सिंदूरार्चितः ॥ ३१ ॥ पंचमोदकरः पातु पातु मां पार्वतीसुतः ॥ पाशांकुशधरः पातु पातु मां च धनेश्वरः ॥ ३२ ॥ गदाधरः सदा पातु पातु मां काममोहितः ॥ नग्ननारीरतः पातु पातु मां च गणेश्वरः ॥ ३३ ॥ अक्षयं वरदः पातु शक्तियुक्तः सदाऽवतु ॥ भालचंद्रः सदा पातु नानारत्नविभूषितः ॥ ३४ ॥ उच्छिष्टगणनाथश्च मदाघूर्णितलोचनः ॥ नारीयोनिरसास्वादः पातु मां गजकर्णकः ॥ ३५ ॥ प्रसन्नवदनः पातु पातु मां भगवल्लभः ॥ जटाधरः सदा पातु पातु मां च किरीटिकः ॥ ३६ ॥ पद्मासनस्थितः पातु रक्तवर्णश्च पातु माम् ॥ नग्नसाममदोन्मत्तः पातु मां गणदैवतः ॥ ३७ ॥ वामांगे सुंदरीयुक्तः पातु मां मन्मथप्रभुः ॥ क्षेत्रपः पिशितं पातु पातु मां श्रुतिपाठकः ॥ ३८ ॥ भूषणाढ्यस्तु मां पातु नानाभोगसमन्वितः ॥ स्मिताननः सदा पातु श्रीगणेशकुलान्वितः ॥ ३९ ॥ श्रीरक्तचंदनमयः सुलक्षणगणेश्वरः ॥ श्वेतार्कगणनाथश्च हरिद्रागणनायकः ॥ ४० ॥ पारभद्रगणेशश्च पातु सप्तगणेश्वरः ॥ प्रवालकगणाध्यक्षो गजदंतो गणेश्वरः ॥ ४१ ॥ हरबीजगणेशश्च भद्राक्षगणनायकः ॥ दिव्यौषधिसमुद्भूतो गणेशाश्चिंतितप्रदः ॥ ४२ ॥ लवणस्य गणाध्यक्षो मृत्तिकागणनायकः ॥ तंडुलाक्षगणाध्यक्षो गोमयश्च गणेश्वरः ॥ ४३ ॥ स्फटिकाक्षगणाध्यक्षो रुद्राक्षगणदैवतः ॥ नवरत्नगणेशश्च आदिदेवो गणेश्वरः ॥ ४४ ॥ पंचाननश्चतुर्वक्त्रः षडाननगणेश्वरः ॥ मयूरवाहनः पातु पातु मां मूषकासनः ॥ ४५ ॥ पातु मां देवदेवेशः पातु मामृषिपूजितः ॥ पातु मां सर्वदा देवो देवदानवपूजितः ॥४६॥ त्रैलोक्यपूजितो देवः पातु मां च विभुः प्रभुः ॥ रंगस्थं च सदा पातु सागरस्थं सदाऽवतु ॥ ४७ ॥ भूमिस्थं च सदा पातु पातालस्थं च पातु माम् ॥ अंतरिक्षे सदा पातु आकाशस्थं सदाऽवतु ॥ ४८ ॥ चतुष्पथे सदा पातु त्रिपथस्थं च पातु माम् ॥ बिल्वस्थं च वनस्थं च पातु मां सर्वतस्तनम् ॥ ४९ ॥ राजद्वारस्थितं पातु पातु मां शीघ्रसिद्धिदः ॥ भवानीपूजितः पातु ब्रह्मविष्णु

शिवार्चितः ॥ ५० ॥ इदं तु कवचं देवि पठनात्सर्वसिद्धिदम् ॥ उच्छिष्टगणनाथस्य समंत्रं कवचं परम् ॥ ५१ ॥ स्मरणा द्भूभुजत्वं च लभते सांगतां ध्रुवम् ॥ वाचःसिद्धिकरं शीघ्रं परसैन्यविदारणम् ॥ ५२ ॥ प्रातर्मध्याह्नसायाह्ने दिवा रात्रौ पठेन्नरः ॥ चतुर्थ्यां दिवसे रात्रौ पूजने मानदायकम् ॥ ५३ ॥ सर्वसौभाग्यदं शीघ्रं दारिद्र्यार्णवघातकम् ॥ सुदारसुप्रजासौख्यं सर्वसिद्धिकरं नृणाम् ॥ ५४ ॥ जलेऽथवाऽनलेऽरण्ये सिंधुतीरे सरित्तटे ॥ श्मशाने दूरदेशे च रणे पर्वतगह्वरे ॥ ५५ ॥ राजद्वारे भये घोरे निर्भयो जायते ध्रुवम् ॥ सागरे च महाशीते दुर्भिक्षे दुष्टसंकटे ॥ ५६ ॥ भूतप्रेतपिशाचादियक्षराक्षसजे भये ॥ राक्षसीयक्षिणीक्रूराशाकिनी डाकिनीगणाः ॥ ५७ ॥ राजमृत्युहरं देवि कवचं कामधेनुवत् ॥ अनंतफलदं देवि सति मोक्षं च पार्वति ॥ ५८ ॥ कवचेन विना मंत्रं यो जपेद्गणनायकम् ॥ इह जन्मनि पापिष्ठो जन्मांते मूषको भवेत् ॥ ५९ ॥ इति परमरहस्यं देवदेवार्चनं च कवचपरमदिव्यं पार्वती पुत्ररूपम् ॥ पठति परमभोगैश्वर्यमोक्षप्रदं च लभति सकलसौख्यं शक्तिपुत्रप्रसादात् ॥ ६० ॥ " इति श्रीरुद्रयामलतंत्रे उमामहेश्वर संवादे उच्छिष्टगणेशकवचं समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥ अथोच्छिष्टगणेशसहस्रनामस्तोत्रं लिख्यते ॥ उक्तं च रुद्रयामलतंत्रे ॥ श्रीभैरव उवाच ॥ श्रृणु देवि रहस्यं मे यत्पुरा सूचितं मया॥तव भक्त्या गणेशस्य वक्ष्ये नामसहस्रकम् ॥१॥ देव्युवाच ॥ "ॐ भगवन्गणनाथस्य उच्छिष्टस्य महात्मनः ॥ श्रोतुं नामसहस्रं मे हृदयं चोत्सुकायते ॥ २ ॥ भैरव उवाच ॥ प्राङ्मुखे त्रिपुरानाथे जातविघ्नाकुले शिवे ॥ मोहने मुच्यते चेतस्ते सर्वे बलदर्पिताः ॥३॥ तदा प्रभुं गणाध्यक्षं स्तुत्वा नामसहस्रकम् ॥ विघ्ना दूरात्पलायंते कालरुद्रादिव प्रजाः ॥४॥ तस्यानुग्रहतो देवि जातोऽहं त्रिपुरांतकः ॥ तमद्यापि गणेशानं स्तौत्रं नामसहस्रकैः॥५॥ तमेव तव भक्त्याहं साधकानां हिताय च ॥ महा गणपतेर्वक्ष्ये दिव्यं नामसहस्रकम् ॥ ६ ॥ ॐ अस्य श्रीउच्छिष्टगणेशसहस्रनामस्तोत्रमंत्रस्य श्रीभैरव ऋषिः । गायत्री छंदः । श्रीमहा गणपतिर्देवता । गं बीजम् । ह्रीं शक्तिः । कुरुकुरु कीलकम् । मम धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः॥ "ॐ ह्रीं श्रीं श्रीगणाध्यक्षो ग्लौं गं गणपतिर्गुणी ॥ गुणाढ्यो निर्गुणो गोप्ता गजवक्त्रो विभावसुः ॥७॥ विश्वेश्वरो विभादीप्तो दीपनो धीवरो धनी ॥ सदा शांतो जगत्त्राता

विश्वावर्तो विभाकरः ॥ ८ ॥ विश्रंभी विजयो वैद्यो वारांनिधिरनुत्तमः ॥ अणिमाविभवः श्रेष्ठो ज्येष्ठो गाथाप्रियो गुरुः ॥ ९ ॥ सृष्टिकर्ता जगद्धर्ता विश्वभर्ता जगन्निधिः ॥ पतिः पीतविभूषांको रक्तास्यो लोहितांबरः ॥ १० ॥ द्विपाक्षोच्चविमानस्थो विनयः सदयः सुखी ॥ सुरूपः सात्त्विकः सत्यः शुद्धः शंकरनंदनः ॥ ११ ॥ नंदीश्वरो जयानंदी बंधस्तुत्यो विचक्षणः ॥ दैत्यमर्दी सदाक्षीबो मदिरारुणलोचनः ॥ १२ ॥ सरात्मा विश्वासारश्च विश्वधारो विलेपनः ॥ परं ब्रह्म परं ज्योतिः साक्षी त्र्यक्षो त्रिकस्थितः ॥ १३ ॥ विश्वेश्वरो वीरहर्ता सौभाग्यो भाग्यवर्द्धनः ॥ भृंगी रिटी भृंगमाली भृंगकूजितनादितः॥१४॥विवर्तको विनीतोऽपि नयनानंदनार्चितः ॥ गंगाजलपानप्रियो गंगातीरविहारिणः ॥ १५ ॥ गंगाप्रियो गंगजश्च वाहनानि पुरः सदा ॥ गंधमादनसंवासो गंधमादनकेलिकृत् ॥ १६ ॥ गंधानुलिप्तपूर्वांगः सर्वदेवस्मरः सदा ॥ गंधर्वगणराजेशो गंधर्वगणसेवितः ॥ १७ ॥ गंधर्वपूजितो नित्यं सर्वरोगविनाशकः ॥ गंधर्वगणसंसेव्यो गंधर्ववरदायकः ॥ १८ ॥ गंधर्वो गंधमातंगो गंधर्वकुलदैवतः ॥ गंधर्वगर्वसंवेगो गंधर्ववरदायकः ॥ १९ ॥ गंधर्वप्रबलाः सत्वं गंधर्वगणसंयुतः ॥ गंधर्वादिगुणानंदो नंदोऽनंतगुणात्मकः ॥ २० ॥ विश्वमूर्तिर्विश्वधाता विनतास्यो विनर्तकः ॥ करालः कामदः कांतः कमनीयः कलानिधिः ॥ २१ ॥ कारुण्यरूपः कुटिलः कुलाचारी कुलेश्वरः ॥ विकरालो रणः श्रेष्ठः संहारो हारभूषणः ॥ २२ ॥ ऊरूरम्यमुखो रक्तो देवतादयितो रसः ॥ महाकालो महादंष्ट्रो महोरगभयानकः ॥ २३ ॥ उन्मत्तरूपः कालाग्निरग्निसूर्येन्दुलोचनः ॥ सितास्यश्चासितात्मा भैरवसौभाग्यवान्भगः ॥ २४ ॥ भर्गात्मजो भगावासो भगदो भगवर्द्धनः ॥ शुभंकरः शुचिः शांतः श्रेष्ठः श्रव्यः शचीपतिः ॥ २५ ॥ वेदाद्यो वेदकर्ता च वेदवेद्यः सनातनः ॥ विद्याप्रदो वेदरसो वैदिको वेदपारगः ॥ २६ ॥ वेदध्वनिरतो वीरो वेदवेदांगस्वर्थवित् ॥ तत्त्वज्ञः सर्वगः साधुः सदयः सदसन्मयः ॥ २७ ॥ शिवंकरः शिवसुतः शिवानंदविवर्द्धनः ॥ सैन्यः श्वेतः शतमुखो मुग्धो मोदकभंजनः ॥ २८ ॥ देवदेवो दिनकरो धृतिमान्द्युतिमान्धनः ॥ शुद्धात्मा शुद्धमतिमान् शुद्धदीप्तिः शुचिव्रतः ॥ २९ ॥ शरण्यः शौनकः शूरः शब्ददंभी जटोरुकः ॥ दारकः शिखिवाहेष्टः सितः शंकरवल्लभः ॥ ३० ॥ शंकरो निर्भयो

नित्यो लयकृद्धास्यतत्परः ॥ लूतो लीलारसोल्लासी विलासी विभ्रमो भ्रमः ॥ ३१ ॥ भ्रमणः शशिभृत्सूर्यः शनिर्धरणिनंदनः ॥ बुधो विबुधसेव्यश्च बुधराजो बलंधरः ॥ ३२ ॥ जीवो जीवप्रदो जेता स्तुत्यो नित्यो रतिप्रियः ॥ कविः काव्यार्थकुशलो जनरक्षणतत्परः ॥३३॥ जनानंदप्रदाता च जनकाह्लादकारकः ॥ गच्छो गणपतिर्गच्छनायको गच्छगर्वहा ॥ ३४ ॥ गच्छराजोऽथ गच्छेशो गच्छराजनमस्कृतः ॥ गच्छप्रियो गच्छगुरुर्गच्छत्राकृद्यमातुरः ॥३५॥ गच्छप्रभुर्गच्छचरो गच्छप्रियकृतोद्यमः ॥ गच्छगीतगुणो गर्तो मर्यादाप्रातिपालकः ॥३६॥ गीर्वाणागमसारश्च नभो गीर्वाणदेवता ॥ संपत्तिसदनाकारः संपत्तिसुखदायकः ॥ ३७ ॥ संपत्तिसुखकर्ता च संपत्तिसुभगाननः ॥ संपत्तिशुभदो नित्यं संपत्तिश्च तपोधनः ॥ ३८ ॥ रुचको मेचकस्तुष्टः प्रभुस्तोमरघातकः ॥ दंडी चंडांशुरव्यक्तः कमंडलुधरोऽनघः ॥ ३९ ॥ कामी कर्मरतः कालकोलः क्रंदितदिक्तटः ॥ भ्रामको जातिपूज्यश्च जाडयहा जडसूदनः ॥ ४० ॥ जालंधरो जगद्वासी हासकृद्दहनो गुहः ॥ हविष्मान्हव्यवाहाक्षो हाटको हाटकांगदः ॥ ४१ ॥ सुमेरुर्हिमवान्होता हरपुत्रो हलांकपः ॥ हालाप्रियो हृदा शांतः कांताहृदयपोषणः ॥ ४२ ॥ शोषणः क्लेशहा क्रूरः कुबेरः कविताकृतिः ॥ कुबेरो धीमयो धाता ध्येयो धीमान्दयानिधिः ॥ ४३ ॥ दविष्ठो दमनो हृष्टो दाता त्राता सितासमः ॥ निर्गतो नैगमो गम्यो निर्जयो जटिलोऽजरः ॥ ४४ ॥ जनजीवो जितारातिर्जगद्व्यापी जगन्मयः ॥ चामीकरनिभो नाभ्यो नलिनायतलोचनः ॥ ४५ ॥ रोचनामोचको मंत्री मंत्रकोटिसमाश्रितः ॥ पंचभूतात्मकः पंचसायकः पंचवक्त्रकः ॥ ४६ ॥ पंचमः पश्चिमः पूर्वः पूर्णः कीर्णालकः कुणिः ॥ कठोरहृदयग्रीवोऽलंकृतो ललिताशयः ॥ ४७ ॥ लोलचित्तो बृहन्नासो मासपक्षर्तुरूपवान् ॥ ध्रुवो द्रुतगतिर्बंधो धर्मवान्किप्रियो नलः ॥ ४८ ॥ अगस्त्यग्रस्तभुवनो भुवनैकमलापहः ॥ सागरः स्वर्गतिः स्वक्षः सानंदः साधुपूजितः॥४९॥ सतीपतिः समरसः सनकः सरलः सरः॥सुरप्रियो वसुमतिर्वासवो वसुपूजितः ॥ ५० ॥ वित्तदो वित्तनाथश्च धनिनां धनदायकः ॥ राजीवनयनः स्मर्ता स्मृतिहा कृत्तिकांबरः ॥ ५१ ॥ अश्विनोऽश्विमुखः शुभ्रो भरणो भरणीप्रियः॥कृत्तिकासनकः कोलो रोहिणी रोहिणोपमः॥५२॥ कृतवोष्टोरिमंदी च रोहिणीमोहिनीभृतः॥मृगराजो मृग

...रो माधवो मधुरध्वनिः ॥५३॥ आर्द्रानलो महाबुद्धिर्महोरगविभूषणः ॥ भ्रूक्षेपदंतविभवो भ्रूकरालः पुनर्नवः ॥५४॥ पुनर्देवः पुनर्जेता पुनर्जीवः पुनर्वसुः ॥ तिमिरस्तिमिकेतुश्च तिमिवासरघातनः ॥ ५५ ॥ तिष्यस्तुलाधरो जृंभो विश्लेषाश्लेषदानराट् ॥ मानवो माधवो माघो वाचालो मघवा यमः॥५६॥ मघो मघाप्रियो मेघो महाशुंडो महाभुजः ॥ पूर्वाफाल्गुनिकः प्रीतः फल्गुरुत्तरफाल्गुनः॥५७॥ फेनिलो ब्रह्मदो ब्रह्मा सततंतुसमाश्रयः ॥ घोणाहस्तश्चतुर्हस्तो हस्तिवक्त्रो हलायुधः ॥ ५८ ॥ चित्रांबरोऽर्चितपदः स्वस्तिदः स्वस्तिविग्रहः ॥ विशाखाशिखिसेव्यश्च शिखिध्वजसहोदरः॥ ५९ ॥ अणूरेणूकरस्कारो रूरेणू सुतीनरः ॥ अनूराधाप्रियो राधः श्रीमाञ्छुक्रः शुचिस्मितः ॥६०॥ ज्येष्ठः श्रेष्ठार्चितपदो मूलं त्रिजगतो गुरुः ॥ शुचिः पूर्वोत्तराषाढश्चोत्तराषाढ ईश्वरः॥६१॥ श्रव्योऽभिजिदनंतात्मा श्रवश्चेष्टितदानवः श्रावणः स्रावणः श्रोता धनी धन्यो धनप्रदः॥६२॥ धनेच्छुकः सदा तीव्रः शीतकुंभः शरद्द्युतिः ॥ पूर्वाभाद्रपदाभाद्रश्चोत्तराभाद्रपादितः ॥ ६३ ॥ रेणुकस्तनयो रामो रेवतीरमणो रमी ॥ अश्वयुक्कार्तिकेयेष्टो मार्गशीर्षो मृगोत्तमः ॥ ६४ ॥ पौषैश्वर्यः फाल्गुनात्मा वसंतश्चित्रको मधुः ॥ राज्यदोऽभिजिदात्मीयस्तारेशस्तारकद्युतिः ॥ ६५ ॥ प्रतीतः प्रोर्जितः प्रीतः परमः परमो हितः ॥ परहा पंचभूः पंचवायुपूज्यः परो महः ॥ ६६ ॥ पुराणागमविद्योगी महिषो रासभोऽग्रगः ॥ ग्रहो मेषो वृषो मंदो मन्मथो मिथुनाकृतिः ॥ ६७ ॥ कल्पभृत्कंटकटको दीपो मर्कटशप्रभुः ॥ कर्कटो घृणिकुक्कूटो वनजो हंसयोहसः॥६८॥ सिंहसिंहासनो भूष्यो मुहुर्मूषकवाहनः ॥ कन्याकलावतीपुत्रो कन्याप्रीतः कुलोद्वहः ॥६९॥ अतुल्यरूपो बलदस्तुल्यभृत्तुल्यसाक्षिकः ॥ अलिश्चापधरो धन्वी कच्छपो मकरो मणिः ॥ ७० ॥ कुंभभृत्कलशः कुब्जी मीनमांससुतर्पितः ॥ राशितारग्रहमयास्तिथिरूपो जगद्विभुः ॥ ७१ ॥ प्रतापी प्रतिपत्प्रेयो द्वितीयाद्वैतनिश्चितः ॥ त्रिरूपश्च तृतीयाग्नि त्रयीरूपस्त्रयीतनुः ॥ ७२ ॥ चतुर्थीवल्लभो देवो परागः पंचमीश्वरः ॥ षड्रसास्वादको जातः षष्ठी षष्ठीकवत्सलः ॥ ७३ ॥ सप्तार्णव गतिः सारः सप्तमीश्वररोहितः ॥ अष्टमीनंदनोऽनंतो नवमीभक्तिभावितः ॥ ७४ ॥ दशादिक्पतिपूज्यश्च दशमीद्रुहिणो द्रुतः ॥ एकादशात्मगणपो द्वादशीयुगचर्चितः ॥ ७५ ॥ त्रयोदशमणिस्तुत्यश्चतुर्दशस्वरप्रियः ॥ चतुर्दशेंद्रसंस्तुत्यः पूर्णिमानंदविग्रहः ॥ ७६ ॥

दर्शादर्शौ दर्शगश्च वानप्रस्थो महेश्वरः ॥ मौर्वी मधुरवाग् मूलं मूर्तिमान्मेघवाहनः ॥७७॥ महागजो जितक्रोधो जितशत्रुर्जयाश्रयः ॥ रौद्रो रुद्रप्रियो रुद्रो रुद्रपुत्रोऽघनाशनः ॥ ७८ ॥ भवप्रियो भवानीष्टो भारभृद्भूतभावनः ॥ गंधर्वकुशलः कुंठो वैकुंठोऽभीष्टसेवितः॥ ७९॥ वृत्रहा विघ्नहा सीरः समस्तदुरितापहा ॥ मंजुरो मार्जरो मत्तो दुर्गापुत्रो दुरालसः ॥ ८० ॥ अनंतचित्सुधाधारो वीरवीर्यैकसाधकः ॥ भास्वन्मुकुटमाणिक्यः कूजत्किंकिणिजालकः ॥ ८१ ॥ शुंडाधारी तुंडचलः कुंडली मुंडमालकः ॥ पद्माक्षः पद्महस्तश्च पद्मनाभसमर्चितः ॥ ८२ ॥ उदितारुणदंतास्यो मालाभूषणभूषितः ॥ नारदो वारणो लोलश्रवणः शूर्पकर्णकः ॥ ८३ ॥ बृहदुल्लासनासाढ्यो व्याप्तत्रैलोक्यमंडलः ॥ रत्नमंडल आसीनः कृशानुरूपशीलकः ॥ ८४॥ बृहत्कर्णाञ्चलोद्भूतवायुवीजितदिक्पटः ॥ बृहदास्यरवाक्रांतो भीमब्रह्मांडभांडकः ॥ ८५ ॥ बृहत्पादसमाक्रांतः सप्तपातालदीपितः ॥ बृहद्दंतकृतात्युग्ररणानंदरसालसः ॥ ८६ ॥ बृहद्धस्तधृताशेषायुधानिर्जितदानवः ॥ स्फुरत्सिंदूरवदनः स्फुरत्तेजोऽग्निलोचनः ॥ ८७ ॥ उद्दीपितमणिस्फर्जन्नूपुरध्वनिनादितः ॥ चलतोयप्रवाहाढ्यो नदीजलकणाकरः ॥ ८८ ॥ भ्रमत्कुंजरसंघातवंदितांघ्रिशिरोरुहः ॥ ब्रह्माच्युतमहारुद्रपुरःसरसुरार्चितः ॥ ८९ ॥ अशेषशेषप्रभृतिव्यालजालोपसेवितः ॥ गर्जत्पंचाननारावप्रसादितधरातलः ॥ ९० ॥ हाहाहूहूगतात्युग्रस्वराविश्रांतमानसः ॥ पंचाशद्वर्णबीजाढ्यो मंत्री मंत्रितविग्रहः ॥ ९१ ॥ वेदांतशास्त्रपीयूषधाराप्लावितभूतलः ॥ शंखध्वनिसमाक्रांतपातालादिनभस्तलः ॥ ९२ ॥ चिंतामणिर्महामल्लो बल्लहस्तो बलिः कविः ॥ कृतत्रेतायुगोल्लासभासमानजगत्त्रयः ॥ ९३ ॥ द्वापरः परलोकैकः कर्मध्वांतसुधाकरः ॥ सुधासिक्तवपुर्व्यासो ब्रह्मांडादिकबाहुकः ॥ ९४ ॥ अकारादिक्षकारांतवर्णपंक्तिसमुज्ज्वलः ॥ अकाराकारमोद्गीततताननादनिनादितः ॥ ९५ ॥ इकारेकारमंत्राढ्यो मालाभरणलालसः ॥ उकारोकारमोहारिर्घोरनागोपवीतकः ॥९६ ॥ ऋवर्णांकित ॠकारपद्मालयसमुज्ज्वलः ॥ ऌकारयुतॡकारशंखपूर्णादिगंतरः ॥ ७९ ॥ एकारैकारगिरिजास्तनपानविचक्षणः ॥ ओकारौकारविश्वादिकृतसृष्टिक्रमालसः ॥ ९८ ॥ अंअः वर्णावलीव्याप्तपादादिशीर्षमंडलः ॥ कर्णतालकृतात्युच्चैर्वायुवीजितनिर्जरः ॥ ९९ ॥ खगेशध्वजरत्नांकः किरीटारुणपादकः ॥

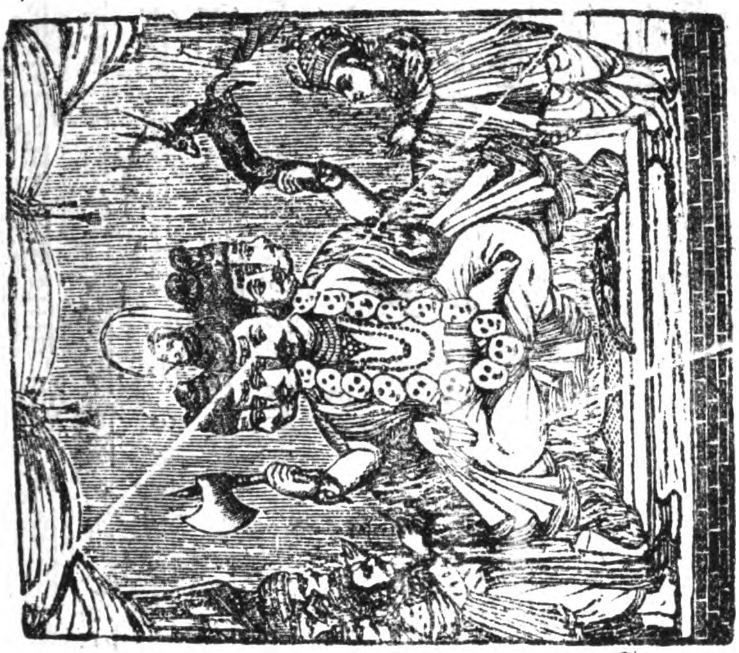
गर्विताशेषगंधर्ववगीततत्परश्रोत्रकः ॥ १०० ॥ घनवाहनवागीशपुरःसरसुरार्चितः ॥ ङवर्णामृतधाराढ्यसोममानैकदंतकः ॥ १०१ ॥ चंद्रकुंकुमजंबालालिप्तासिंदूरविग्रहः ॥ छत्रचामररत्नाढ्यमुकुटालंकृताननः ॥ १०२ ॥ जटाबद्धमहानर्घमणिपंक्तिविराजितः ॥ झंकारि मधुपव्रातगाननादविनादितः ॥ १०३ ॥ जवर्णकृतसंहारदैत्यासृक्पूर्णमुद्गरः ॥ टकारश्च फलास्वादी वेपिताशेषमूर्धजः ॥ १०४ ॥ ताम्रसिंदूरपूजाढ्यो ललाटफलकच्छविः ॥ थकारधनपंक्त्याढ्यः संतोषितद्विजव्रजः ॥ १०५ ॥ दयामृतहृदंभोजधृतत्रैलोक्यमंडलः ॥ धनदादिमहायक्षसंसेवितपदांबुजः ॥ १०६ ॥ नमिताशेषदेवौघकिरीटमणिरंजितः ॥ परवर्गापवर्गादिभोगच्छेदनदक्षकः ॥ १०७ ॥ फणिचक्रसमाक्रांतमल्लमंडलमंडितः ॥ बद्धभ्रूयुगभीमोग्रसंतर्जितसुरासुरः ॥ १०८ ॥ भवानीहृदयानंदवर्द्धनैकनिशाकरः ॥ मदिरा कलशप्रीतः करालैककरांबुजः ॥ १०९ ॥ यज्ञांतरायसंघातसज्जीकृतवरायुधः ॥ रत्नाकरसुताक्रांतकांतिकीर्तिविवर्धनः ॥ ११० ॥ लंबोदरमहाभीमवपुर्दीसकृतासुरः ॥ वरुणादिदिगीशानामर्चितार्चनचर्चितः ॥ १११ ॥ शंकरैकप्रियः प्रेमनयनानंदवर्द्धनः ॥ षोडश स्वरतालापगीतगानविचक्षणः ॥ ११२ ॥ समदुर्गसरिन्नाथस्तारणार्कोडुपोहरः ॥ ब्रह्मवैकुंठब्रह्मज्ञसंरक्षिततनूचरः ॥ ११३ ॥ तारांकमंत्रवर्णैकविग्रहोज्ज्वलविग्रहः ॥ अकारादिक्षकारांतविद्याभूषितविग्रहः ॥ ११४ ॥ ॐ श्रीविनायको ॐ ह्रीं विघ्नाध्यक्षो गणाधिपः ॥ हेरंबो मोदकाहारो वक्रतुंडो विधिः स्मृतः ॥ ११५ ॥ वेदांतगीतो विद्यार्थिसिद्धमंत्रः षडक्षरः ॥ गणेशो वरदो देवो द्वादशाक्षर मंत्रितः ॥ ११६ ॥ सप्तकोटिमहामंत्रमंत्रिताशेषविग्रहः ॥ गांगेयो गणसेव्यश्च ॐ श्रीद्वैमातुरः शिवः ॥ ११७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ग्लौं गं देवो महागणपतिः प्रभुः ॥ इदं नामसहस्रं ते महागणपतेः स्मृतम् ॥ ११८ ॥ गुह्यं गोप्यतमं सिद्धं सर्वतंत्रेषु गोपितम् ॥ सर्वमंत्रमयं दिव्यं सर्वमंत्रविनायकम् ॥ ११९ ॥ ग्रहतारामयं राशिवर्णपंक्तिसमन्वितम् ॥ सर्वविद्यामयं ब्रह्मसाधनं साधकप्रियम् ॥ १२० ॥ गणेशस्य च सर्वस्वं रहस्यं त्रिदिवौकसाम् ॥ यथेष्टफलदं लोके मनोरथप्रपूरणम् ॥ १२१ ॥ अष्टसिद्धिमयं श्रेष्ठं साधकानां जयप्रदम् ॥ विनार्चनं विना होमं विना न्यासं विना जपम् ॥ १२२ ॥ अणिमाद्यष्टसिद्धीनां साधनं

स्मृतिमात्रतः ॥ चतुर्थ्यामर्धरात्रे तु पठेन्मंत्री चतुष्पथे ॥ १२३ ॥ लिखेद् भूर्जे महादेवि पुण्यं नामसहस्रकम् ॥ धारयेत्तं चतुर्दश्यां मध्याह्ने मूर्ध्नि वा भुजे ॥ १२४ ॥ योषिद्वामकरे चैव पुरुषो दक्षिणे भजे ॥ स्तंभयेदपि ब्रह्माणं मोहयेदपि शंकरम् ॥ १२५ ॥ वशयेदपि त्रैलोक्यं मारयेदखिलान्रिपून् ॥ उच्चाटयेच्च गीर्वाणं शमयेच्च धनंजयम् ॥ १२६ ॥ वंध्या पुत्रं लभेच्छीघ्रं निर्धनो धनमाप्नुयात् ॥ त्रिवारं यः पठेद्रात्रौ गणेशस्य पुरः शिवे ॥ १२७ ॥ नक्तं शक्तियुतो देवि भुक्त्वा भोगान्यथेप्सितान् ॥ प्रत्यक्षवरदं पश्येद्गणेशं साधकोत्तमः ॥ १२८ ॥ पराह्ने पठ्यते नाम्नां सहस्रं भक्तिपूर्वकम् ॥ तस्य वित्तादिविभवो दारायुःसंपदः सदा ॥ १२९ ॥ रणे राजभये द्यूते पठेन्नामसहस्रकम् ॥ सर्वत्र जयमाप्नोति गणेशस्य प्रसादतः ॥ १३० ॥ इतीदं पुण्यसर्वस्वं मंत्रनामसहस्रकम् ॥ महागणपतेः पुण्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥" इति श्रीरुद्रयामलतंत्रे उच्छिष्टगणेशसहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथोच्छिष्टगणेशस्तवराजप्रारम्भः ॥ उक्तं च रुद्रयामले ॥ देव्युवाच ॥ "पूजांते ह्यनया स्तुत्या स्तुवीत गणनायकम् ॥ नमामि देवं सकलार्थदं तं सुवर्णवर्णं भुजगोपवीतम् ॥ गजाननं भास्करमेकदंतं लंबोदरं वारिभवासनं च ॥ १ ॥ केयूरिणं हारकिरीटजुष्टं चतुर्भुजं पाशवराभयानि ॥ सृणिं च हस्तं गणपं त्रिनेत्रं सचामरस्त्रीयुगलेन युक्तम् ॥ २ ॥ षडक्षरात्मानमनल्प भूषं मुनीश्वरैर्भार्गवपूर्वकैश्च ॥ संसेवितं देवमनाथकल्पं रूपं मनोज्ञं शरणं प्रपद्ये ॥ ३ ॥ वेदांतवेद्यं जगतामधीशं देवादिवंद्यं सुकृतैक गम्यम् ॥ स्तंबेरमास्यं ननु चन्द्रचूडं विनायकं तं शरणं प्रपद्ये ॥ ४ ॥ भवाख्यदावानलदह्यमानं भक्तं स्वकीयं परिषिंचते यः ॥ गंड स्रुतांभोभिरनन्यतुल्यं वंदे गणेशं च तमोऽरिनेत्रम् ॥ ५ ॥ शिवस्य मौलाववलोक्य चन्द्रं सुशुंडया मुग्धतया स्वकीयम् ॥ भग्नं विषाणं परिभाव्य चित्ते आकृष्टचन्द्रो गणपोऽवतान्नः ॥ ६ ॥ पितुर्जटाजूटतटे सदैव भागीरथी तत्र कुतूहलेन ॥ विहर्तुकामः स महीध्रपुत्र्या निवारितः पातु सदा गजास्यः ॥ ७ ॥ लम्बोदरो देवकुमारसंघैः क्रीडन्कुमारं जितवान्निजेन ॥ करेण चोत्तोल्य ननर्त रम्यं दन्तावलास्यो भयतः स पायात् ॥ ८ ॥ आगत्य योच्चैर्हरिनाभिपद्मं ददर्श तत्राशु करेण तच्च ॥ उद्धर्तुमिच्छन्विधिवादवाक्यं मुमोच भूत्वा चतुरो गणेशः ॥ ९ ॥ निरंतरं

संस्कृतदानपट्टे लग्नां तु गुंजद्भ्रमरावलीं वै ॥ तं श्रोत्रतालैरपसारयंतं स्मरेद्गजास्यं निजहृत्सरोजे ॥ १० ॥ विश्वेशमौलिस्थितजह्नुकन्या जलं गृहीत्वा निजपुष्करेण ॥ हरं सलीलं पितरं स्वकीयं प्रपूजयन्हस्तिमुखः स पायात् ॥ ११ ॥ स्तंबेरमास्यं घुसृणांगरागं सिंदूर पूरारुणकांतकुंभम् ॥ कुचन्दनाश्लिष्टकरं गणेशं ध्यायेत्स्वचित्ते सकलेष्टदं तम् ॥ १२ ॥ स भीष्ममातुर्निजपुष्करेण जलं समादाय कुचौ स्वमातुः ॥ प्रक्षालयामास षडास्यपीतौ स्वार्थं मुदेऽसौ कलभाननोऽस्तु ॥ १३ ॥ सिंचाम नागं शिशुभावमातं केनापि सत्कारणतो धरित्र्याम् ॥ वक्तारमाद्यं नियमादिकानां लोकैकवंद्यं प्रणमामि विघ्नम् ॥ १४ ॥ आलिंगितं चारुरुचा मृगाक्ष्या संभोगलोलं मदविह्वलांगम् ॥ विघ्नौघविध्वंसनसक्तमेकं नमामि कांतं द्विरदाननं तम् ॥१५॥ हेरंब उद्यद्रविकोटिकांतः पञ्चाननेनापि विचुंबितास्यः ॥ मुनीन्सुरान्भक्तजनांश्च सर्वान्स पातु रथ्यासु सदा गजास्यः ॥१६॥ द्वैपायनोक्तानि स निश्चयेन स्वदंतकोट्या निखिलं लिखित्वा ॥ दंतं पुराणं शुभमिंदुमौलिस्तपोभिरुग्रं मनसा स्मरामि ॥ १७ ॥ क्रीडातटान्ते जलधाविभास्ये वेलाजले लंबपतिः प्रभीतः ॥विचिंत्य कस्येति सुरास्तदा तं विश्वेश्वरं वाग्भिरभिष्टुवंति ॥ १८॥ वाचां निमित्तं स निमित्तमाद्यं पदं त्रिलोक्यामददत्स्तुतीनाम् ॥ सर्वैश्च वंद्यं न च तस्य वंद्यः स्थाणोः परं रूपमसौ स पायात् ॥ १९ ॥ इमां स्तुतिं यः पठतीह भक्त्या समाहितप्रीतिरतीव शुद्धः ॥ संसेव्यते चेंदिरया नितांतं दारिद्र्यसंघं स विदारयेन्नः ॥२०॥ इति श्रीरुद्रयामलतंत्रे हरगौरीसंवादे उच्छिष्टगणेशस्तोत्रं समाप्तम् ॥ अथ हरिद्रागणेशकवच प्रारंभः ॥ ईश्वर उवाच ॥ शृणु वक्ष्यामि कवचं सर्वसिद्धिकरं प्रिये ॥ पठित्वा पाठयित्वा च मुच्यते सर्वसंकटात् ॥ १ ॥ अज्ञात्वा कवचं देवि गणेशस्य मनुं जपेत् ॥ सिद्धिर्न जायते तस्य कल्पकोटिशतैरपि ॥ २ ॥ ॐ आमोदश्च शिरः पातु प्रमोदश्च शिखोपरि ॥ संमोदो भ्रूयुगे पातु भ्रूमध्ये च गणाधिपः ॥ ३ ॥ गणाक्रीडो नेत्रयुगं नासायां गणनायकः ॥ गणक्रीडान्वितः पातु वदने सर्वसिद्धये ॥ ४ ॥ जिह्वायां सुमुखः पातु ग्रीवायां दुर्मुखः सदा ॥ विघ्नेशो हृदये पातु विघ्ननाथश्च वक्षसि ॥ ५ ॥ गणानां नायकः पातु बाहुयुग्मं सदा मम ॥ विघ्नकर्ता च ह्युदरे विघ्नहर्ता च लिंगके ॥ ६ ॥ गजवक्त्रः कटीदेशे एकदंतो नितंबके ॥ लंबोदरः सदा पातु गुह्य

देशे ममारुणः ॥ ७ ॥ व्यालयज्ञोपवीती मां पातु पादयुगे सदा ॥ जापकः सर्वदा पातु जानुजंघे गणाधिपः ॥ ८ ॥ हारिद्रः सर्वदा पातु सर्वाङ्गे गणनायकः ॥ य इदं प्रपठेन्नित्यं गणेशस्य महेश्वरि ॥ ९ ॥ कवचं सर्वसिद्धाख्यं सर्वविघ्नविनाशनम् ॥ सर्वसिद्धिकरं साक्षात्सर्वपापविमोचनम् ॥ ॥ १० ॥ सर्वसंपत्प्रदं साक्षात्सर्वदुःखविमोक्षणम् ॥ सर्वापत्तिप्रशमनं सर्वशत्रुक्षयंकरम् ॥ ११ ॥ ग्रहपीडा ज्वरा रोगा ये चान्ये गुह्यकादयः ॥ पठनाद्धारणादेव नाशमायांति तत्क्षणात् ॥ १२ ॥ धनधान्यकरं देवि कवचं सुरपूजितम् ॥ समं नास्ति महेशानि त्रैलोक्ये कवचस्य च ॥ १३ ॥ हारिद्रस्य महादेवि विघ्नराजस्य भूतले ॥ किमन्यैरसदालापैर्यत्रायुर्व्ययतामियात् ॥ १४ ॥ इति विश्वसारतंत्रे हरिद्रागणेशकवचं समाप्तम् ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे पूर्वखण्डे गणेशतंत्रे पंचमस्तरंगः ॥ ५ ॥



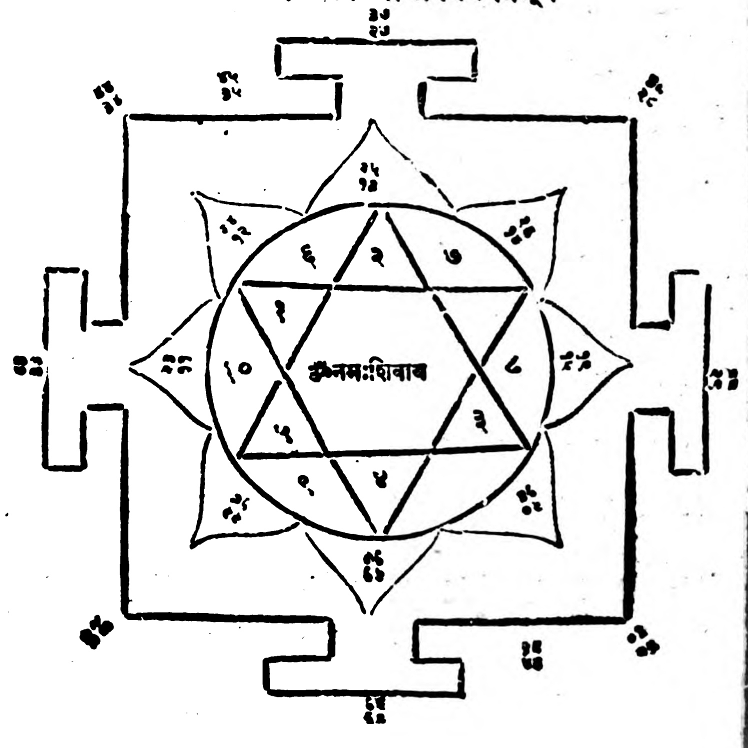
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ शिवतंत्रप्रारम्भः ॥ तत्रादौ पटलप्रारम्भः ॥ अथ वक्ष्ये महेशस्य मंत्रान्सर्वार्थसिद्धिदान् ॥ यैः पूर्वमुनिवाक्यैश्च शिवसायुज्यमंजसा ॥ ३ ॥ अथ शिवपंचाक्षरीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा (शारदातिलके) "ॐ नमः शिवाय" अस्य विधानम् ॥ अत्र रुद्राः स्मृता रक्ता धृतशूलकपालकाः ॥ शक्तयो रुद्रपीठस्थाः सिंदूरारुणविग्रहाः ॥ रक्तोत्पलकपालाभ्यामलंकृतकरांबुजाः ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा मूलेन प्राणायामत्रयं कृत्वा मंत्रन्यासादिकं कुर्यात् । तद्यथा--अस्य श्रीशिवपंचाक्षरीमंत्रस्य वामदेव ऋषिः । पंक्तिश्छंदः । ईशानो देवता । ॐ बीजम् । नमः शक्तिः । शिवायेति कीलकम् । चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थे न्यासे विनियोगः ॥ ॐ वामदेवर्षये नमः शिरसि १ ॥ पंक्तिच्छंदसे नमः मुखे २ ईशानदेवतायै नमः हृदये ३ ॐ बीजाय नमः गुह्ये ४ नमः शक्तये नमः पादयोः ५ शिवायेति कीलकाय नमः नाभौ ६ विनियोगाय नमः सर्वांगे ७ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः १ ॐ नं तर्जनीभ्यां नमः २ ॐ मं मध्यमाभ्यां नमः ३ ॐ शिं अनामिकाभ्यां नमः ४ ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ॐ यं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ इति करन्यासः ॥ ॐ ॐ हृदयाय नमः १ ॐ नं शिरसे स्वाहा २ ॐ मं शिखायै वषट् ३ ॐ शिं कवचाय हुं ४ ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट् ५ ॐ यं अस्त्राय फट् ६ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ॐ नं तत्पुरुषाय नमः तर्जन्याम् १ ॐ मं अघोराय नमः मध्यमायाम् २ ॐ शिं सद्योजाताय नमः कनिष्ठिकायाम् ३ ॐ वां वामदेवाय नमः अनामिकायाम् ४ ॐ यं ईशानाय नमः इत्यंगुष्ठयोः ५ ॐ नं तत्पुरुषाय नमः मुखे ६ ॐ मं अघोराय नमः हृदये ७ ॐ शिं सद्योजाताय नमः पादयोः ८ ॐ वां वामदेवाय नमः गुह्ये ९ ॐ यं ईशानाय नमः मूर्ध्नि १० इति पंचमूर्तिन्यासः ॐ नं तत्पुरुषाय नमः पूर्ववक्त्रे १ ॐ मं अघोराय नमः दक्षिणवक्त्रे २ ॐ शिं सद्योजाताय नमः पश्चिमवक्त्रे ३ ॐ वाँ वामदेवाय नमः उत्तरवक्त्रे ४ ॐ यं ईशानाय नमः ऊर्द्ध्ववक्त्रे ५ इति

१ (तन्त्रांतरे) नमस्कारं समुद्धृत्य वान्तं नेत्रसमन्वितम् ॥ वरुणं मुखवृत्तं च वायुं लालाटसंयुतम् ॥ अमुं पचाक्षरं मंत्रं पंचकामफलप्रदम् ॥ प्रणवादिर्यदा देवि तदा मंत्रः षडक्षरः ॥ २ बन्धूकसन्निभं देवं त्रिनेत्रं चन्द्रशेखरम् ॥ त्रिशूलधारिणं देवं चारुहासं सुनिर्मलम् ॥ कपालधारिणं देवं वरदाभयहस्तकम् ॥ उमया सहितं शम्भुं ध्यायेत्सोमेश्वरं सदा ॥ (इति तन्त्रांतरे) ॥

वक्त्रन्यासः । ॐ ॐनमः हृदये १ ॐ नं नमः वक्त्रे २ ॐ मं नमः दक्षांसे ३ ॐ शिं नमः वामांसे ४ ॐ वां नमः दक्षिणोरौ ५ ॐ यं नमः वामोरौ ६ इति ॐ गोलकन्यासे प्रथमः ॥१॥ ॐ ॐ नमः कंठे १ ॐ नं नमः नाभौ २ ॐ मं नमः दक्षिणपार्श्वे ३ ॐ शिं नमः वामपार्श्वे ४ ॐ वां नमः पृष्ठे ५ ॐ यं नमः हृदये ६ इति गोलकन्यासे द्वितीयः ॥ २ ॥ ॐ ॐ नमः मूर्ध्नि १ ॐ नं नमः मुखे २ ॐ मं नमः दक्षनेत्रे ३ ॐ शिं नमः वामनेत्रे ४ ॐ वां नमः दक्षिणनासापुटे ५ ॐ यं नमः वामनासापुटे ६ इति गोलकन्यासे तृतीयः ॥३॥ ॐ नं नमः हस्तांगुल्यग्रेषु १ ॐ मं नमः हस्तांगुलिमूलेषु २ ॐ शिं नमः मणिबंधयोः ३ ॐ वां नमः कूर्परयोः ४ ॐ यं नमः बाहुमूलयोः ५ इति गोलकन्यासे चतुर्थः ॥४॥ ॐ नं नमः पादांगुल्यग्रेषु १ ॐ मं नमः पादांगुलीमूलेषु २ ॐ शिं नमः गुल्फयोः ३ ॐ वां नमः जानुनोः ४ ॐ यं नमः जंघयोः ५ इति गोलकन्यासे पंचमः ॥ ५ ॥ ॐ ॐ नमः शिरसि १ ॐ नं नमः गुह्ये २ ॐ मं नमः हृदये ३ ॐ शिं नमः कुक्षिद्वये ४ ॐ वां नमः ऊरुद्वये ५ ॐ यं नमः पादद्वये ६ इति गोलकन्यासे षष्ठः ॥ ६ ॥ ॐ ॐ नमः हृदये १ ॐ नं नमः वक्त्रांबुजे २ ॐ मं नमः टंके ३ ॐ शिं नमः मृगे ४ ॐ वां नमः अभये ५ ॐ यं नमः वरे ६ इति गोलकन्यासे सप्तमः ॥ ७ ॥ ॐ ॐ नमः वक्त्रे १ ॐ नं नमः अंसयोः २ ॐ मं नमः हृदये ३ ॐ शिं नमः पादद्वये ४ ॐ वां नमः ऊरुद्वये ५ ॐ यं नमः जठरे ६ इति गोलकन्यासेऽष्टमः ॥ ८ ॥ ॐ नं तत्पुरुषाय नमः मूर्ध्नि १ ॐ मं अघोराय नमः भाले २ ॐ शिं सद्योजाताय नमः उदरे ३ ॐ वां वामदेवाय नमः अंसयोः ४ ॐ यं ईशानाय नमः हृदये ५ इति गोलकन्यासे नवमः समाप्तः ॥ ९ ॥ ॐ नमोऽस्तु स्थाणुभूताय ज्योतिर्लिंगामृतात्मने ॥ चतुर्मूर्तिवपुःस्थाय भसितांगाय शंभवे ॥ १ ॥ इति व्यापकं न्यसेत् ॥ एवं दशन्यासान्कृत्वा पार्वतीपतिं ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्॥ पद्मासीनं समंतात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥१॥ इति ध्यात्वा पीठपूजां कुर्यात् । तद्यथा—पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले लिंगतोभद्रमंडले वा मंडूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः

इति पीठदेवताः संपूज्य स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन नव पीठशक्तीः पूजयेत् । तद्यथा–ॐ वामायै नमः १ ॐ ज्येष्ठायै नमः २ ॐ रौद्र्यै नमः ३ ॐ काल्यै नमः ४ ॐ कलविकरिण्यै नमः ५ ॐ बलविकरिण्यै नमः ६ ॐ बलप्रमथिन्यै नमः ७ ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः ८ मध्ये ॐ मनोन्मन्यै नमः ९ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य "ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्तायानन्ताय योगपीठात्मने नमः" इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञया आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तद्यथा--संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रिय ॥ अनुज्ञां शिव मे देहि परिवारार्चनाय मे॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ षट्कोणे ऐशान्याम्।ॐ ईशानाय नमः। ईशानश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । १ इति सर्वत्र पूर्वे ॐ तत्पुरुषाय नमः । तत्पुरुषश्रीपा० २ दक्षिणे ॐ अघोराय नमः ।अघोरश्रीपा० ३ पश्चिमे ॐ वामदेवाय नमः । वामदेवश्रीपा० ४ उत्तरे ॐ सद्योजाताय नमः सद्योजातश्रीपा० ५ इति पंचमूर्तीः पूजयेत् । ततः पुष्पांजलिं गृहीत्वा ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् । इति प्रथमावरणम् ॥१॥ ततः षट्कोणाग्रेषु ऐशान्याम् ॐ निवृत्त्यै नमः । निवृत्तिश्रीपा० १ पूर्वे ॐ प्रतिष्ठायै नमः । प्रतिष्ठाश्रीपा० २ दक्षिणे ॐ विद्यायै नमः

शिवपंचाक्षरीमंत्रप्रयोगावरणयंत्रम् ।

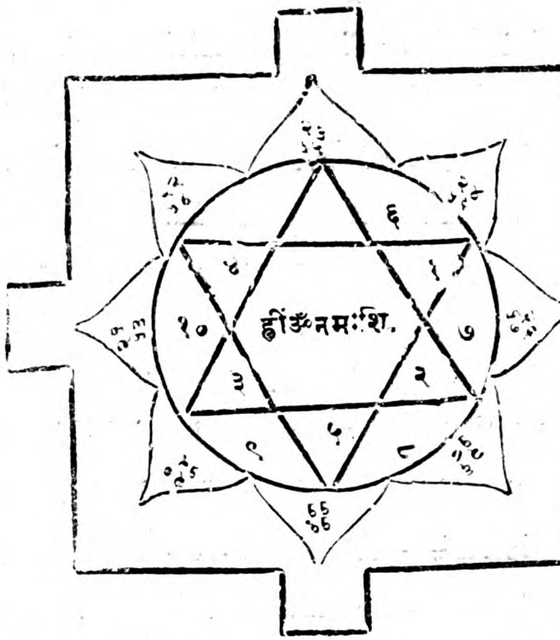


विद्याश्रीपा० ३ पश्चिमे ॐ शांत्यै नमः । शांतिश्रीपा० ४ उत्तरे शांत्यतीतायै नमः । शांत्यतीताश्रीपा० ५ इति कलाः पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ॐ अनंताय नमः । अनन्तश्रीपा० १ ॐ सूक्ष्माय नमः सूक्ष्मश्रीपा० २ ॐ शिवोत्तमाय नमः । शिवोत्तमश्रीपा० ३ ॐ एकनेत्राय नमः । एकनेत्रश्रीपा० ४ ॐ एकरुद्राय नमः । एकरुद्रश्रीपा० ५ ॐ त्रिमूर्तये नमः । त्रिमूर्तिश्रीपा० ६ ॐ श्रीकंठाय नमः ॥ श्रीकंठश्रीपा० ७ ॐ शिखंडिने नमः । शिखंडिश्रीपा० ८ इति विघ्नेशान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततोऽष्टदलाग्रेपूत्तरादिक्रमेण । ॐ उमायै नमः । उमाश्रीपा० १ ॐ चण्डेश्वराय नमः । चण्डेश्वरश्रीपा० २ ॐ नंदिने नमः । नंदिश्रीपा० ३ ॐ महाकालाय नमः । महाकालश्रीपा० ४ ॐ गणेशाय नमः गणेशश्रीपा० ५ ॐ वृषभाय नमः । वृषभश्रीपा० ६ ॐ भृंगारिटये नमः । भृंगारिटिश्रीपा० ७ ॐ स्कंदाय नमः । स्कंदश्रीपा० ८ इति गणान्पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति चतुर्थावरणम् ॥ ४ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण ॐ लं इन्द्राय नमः १ ॐ रं अग्नये नमः २ ॐ मं यमाय नमः ३ ॐ क्षं निर्ऋतये नमः ४ ॐ वं वरुणाय नमः ५ ॐ यं वायवे नमः ६ ॐ कं कुबेराय नमः ७ ॐ हं ईशानाय नमः ८ इन्द्रेशानयोर्मध्ये ॐ आं ब्रह्मणे नमः ९ वरुणनिर्ऋतिमध्ये ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः १० ॥ इति इन्द्रादिदशदिक्पालान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति पंचमावरणम् ॥ ५ ॥ ततः पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिसमीपे ॐ वं वज्राय नमः १ ॐ शं शक्तये नमः २ ॐ दं दण्डाय नमः ३ खं खड्गाय नमः ४ ॐ पां पाशाय नमः ५ ॐ अं अंकुशाय नमः ६ ॐ गं गदायै नमः ७ ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ८ ॐ पं पद्माय नमः ९ ॐ चं चक्राय नमः १० ॥ इत्यस्त्राणि पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति षष्ठावरणम् ॥ ६ ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं चतुर्विंशतिलक्षात्मकं जपः । जपांते दशांशेन वा चतुर्विंशतिसहस्रमंत्रैः पायसं त्रिमधुपलाशेन होमयेत् ।

तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जने कृत्वा शुद्धान् विप्रांश्च पायसादिना भोजयेत्। एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति॥सिद्धे च मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च-तत्त्वलक्षं जपेन्मंत्रं दीक्षितः शैववर्त्मना ॥ तावत्संख्यासहस्राणि जुहुयात्पायसैः शुभैः ॥ १ ॥ ततः सिद्धो भवेन्मंत्रः साधकाभीष्टसिद्धिदः ॥ इत्थं संपूजयेद्देवं सहस्रं नित्यशो जपेत् ॥ २ ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तः प्राप्नुयाद्वांछितां श्रियम् ॥ द्विसहस्रं जपेद्रोगान् मुच्यते नात्र संशयः ॥ ३ ॥ त्रिसहस्रं जपेन्मंत्रं दीर्घमायुरवाप्नुयात् ॥ सहस्रवृद्ध्या प्रजपेत्सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ ४ ॥ आज्यान्वितैस्तिलैः शुद्धैर्जुहुयाल्लक्षमादरात् ॥ उत्पातजनितान्क्लेशान्नाशयेन्नात्र संशयः ॥ शतलक्षं जपेत्साक्षाच्छिवो भवति मानवः ॥ ५ ॥ इति शारदातिलकोक्तशिवपंचाक्षरमंत्रप्रयोगः ॥ अथ अष्टाक्षरीशिवमंत्रप्रयोगः (शारदातिलके)॥ मंत्रो यथा—"ह्रीं ॐ नमः शिवाय ह्रीं" इत्यष्टाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—ॐ अस्य श्रीशिवाष्टाक्षरमंत्रस्य वामदेव ऋषिः। पंक्तिश्छंदः। उमापतिर्देवता। सर्वेष्टसिद्धये विनियोगः ॥ ॐ वामदेवर्षये नमः शिरसि १ पंक्तिच्छंदसे नमः मुखे २ उमापतिदेवतायै नमः हृदि ३ विनियोगाय नमः सर्वांगे ४ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ह्रीं ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः १ ॐ नं तर्जनीभ्यां नमः २ ॐ मं मध्यमाभ्यां नमः ३ ॐ शिं अनामिकाभ्यां नमः ४ ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ॐ यं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ इति करन्यासः ॥ ह्रीं ॐ हृदयाय नमः १ ॐ नं शिरसे स्वाहा २ ॐ मं शिखायै वषट् ३ ॐ शिं कवचाय हुं ४ ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट् ५ ॐ यं अस्त्राय फट् ६ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा "बंधूकसन्निभं देवं त्रिनेत्रं चन्द्रशेखरम् ॥ त्रिशूलधारिणं वंदे चारुहासं सुनिर्मलम् ॥ १ ॥ कपालधारिणं देवं वरदाभयहस्तकम् ॥ उमया सहितं शंभुं ध्यायेत्सोमेश्वरं सदा ॥२॥" इति ध्यायेत्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले लिंगतोभद्रमंडले वा पूर्वोक्ते शैवे पीठे वामादिनवशक्तीः संपूज्य ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य ॐ सकलगुणात्मशक्तियुक्तायानंताय योगपीठात्मने नमः। इति पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां

च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञया आवरण पूजां कुर्य्यात्। तद्यथा—संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रिय। अनुज्ञां शिव मे देहि परिवारार्चनाय च ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्य्यात्। षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादि चतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च। ॐ नं हृदयाय नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम इति सर्वत्र ॥१॥ ॐ मं शिरसे स्वाहा। शिरः श्रीपा० २ ॐ शिं शिखायै वषट्। शिखाश्रीपा० ३ ॐ वां कवचाय हुं। कवचश्रीपा० ४ ॐ यं अस्त्राय फट्। अस्त्रश्रीपा० ५ इति पंचांगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ ८ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजिता स्तर्पिताः संतु इति वदेत्। इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ तद्बाह्ये ॐ हृल्लेखायै नमः। हृल्लेखा श्रीपा०१ ॐ गगनायै नमः गगनाश्रीपा०२ ॐ रक्तायै नमः रक्ताश्रीपा०३ ॐ कालिकायै नमः कालिकाश्रीपा० ४ ॐ महोच्छुष्मायै नमः महोच्छुष्माश्रीपा० ५ इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥२॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची

अष्टाक्षरशिवमंत्रप्रयोगावरणयंत्रम्।



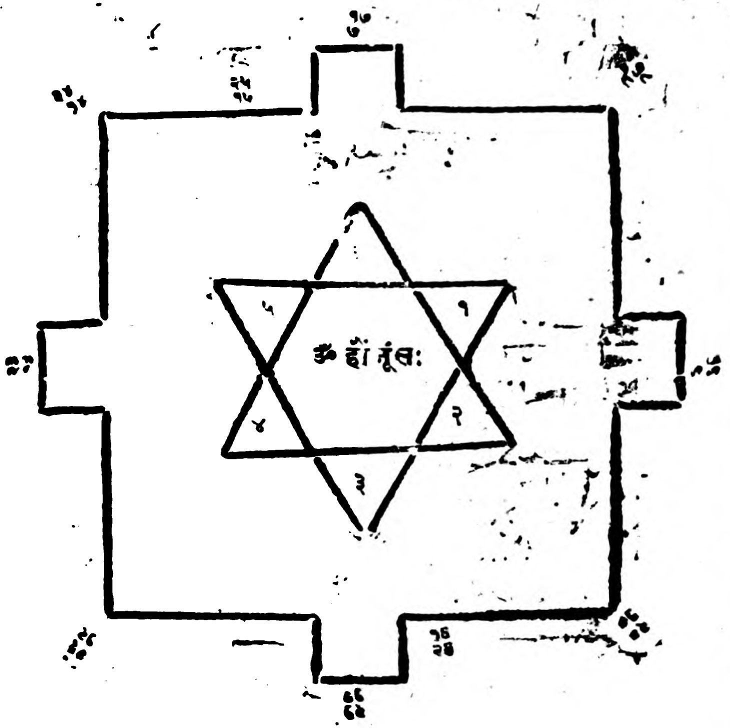
तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ॐ वृषभाय नमः। वृषभश्रीपा० १ ॐ क्षेत्रपालाय नमः। क्षेत्रपालश्रीपा० २ ॐ दुर्गायै नमः। दुर्गाश्रीपा० ३ ॐ कार्तिकेयाय नमः। कार्तिकेयश्रीपा० ४ ॐ नंदिने नमः। नंदिश्रीपा० ५ ॐ विघ्नेशाय नमः। विघ्नेशश्रीपा० ६ ॐ श्यामाय नमः। श्यामाश्रीपा० ७ ॐ सेनाय नमः। सेनश्रीपा० ८ इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्। इति तृतीयावरणम् ॥३॥ तद्बाह्ये प्राच्यादिक्रमेण ॐ ब्राह्म्यै नमः। ब्राह्मीश्रीपा० १ ॐ माहेश्वर्य्यै नमः। माहेश्वरीश्रीपा० २ ॐ कौमार्यै नमः। कौमारीश्रीपा० ३

ॐ वैष्णव्यै नमः । वैष्णवीश्रीपा० ४ ॐ वाराह्यै नमः । वाराहीश्रीपा०—५ ॐ इन्द्राण्यै नमः । इन्द्राणीश्रीपा० ६ ॐ चामुंडायै नमः । चामुंडाश्रीपा० ७ ॐ महालक्ष्म्यै नमः । महालक्ष्मीश्रीपा० ८ इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति चतुर्थावरणम् ॥ ४ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादि नमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात्। अस्य पुरश्चरणं चतुर्दशलक्षं जपेत्। तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्य्यात् । एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे च मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च " मनुलक्षं जपेन्मंत्रं तत्सहस्रं यथाविधि ॥ जुहुयान्मधुरासिक्तैरारग्वधसमिद्वरैः॥१॥ एवं यो भजते मंत्री देवेशं तमुमापतिम् ॥ स भवेत्सर्वलोकानां प्रियः सौभाग्यसंपदाम् ॥२॥ इत्यष्टाक्षरशिवमंत्रप्रयोगः ॥

अथ त्र्यक्षरमृत्युञ्जयमंत्रप्रयोगः ॥ (मंत्रमहोदधौ शारदायां च) मंत्रो यथा--ॐ हौं जूं सः । अस्य विधानम् । अस्य त्र्यक्षरात्मकमृत्युंजयमंत्रस्य कहोल ऋषिः। गायत्री छंदः। मृत्युंजयो महादेवो देवता । जूं बीजम् । सः शक्तिः।सर्वेष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ॐ कहोलर्षये नमः शिरसि १ गायत्रीछंदसे नमः मुखे २ मृत्युंजयमहादेवदेवतायै नमः हृदि ३ जूं बीजाय नमः गुह्ये ४ सः शक्तये नमः पादयोः ५ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ सां अंगुष्ठाभ्यां नमः १ ॐ सीं तर्जनीभ्यां नमः २ ॐ सूं मध्यमाभ्यां नमः ३ ॐ सैं अनामिकाभ्यां नमः ४ ॐ सौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ॐ सः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ इति करन्यासः ॥ ॐ सां हृदयाय नमः १ ॐ सीं शिरसे स्वाहा २ ॐ सूं शिखायै वषट् ॥ ३ ॐ सैं कवचाय हुं ४ ॐ सौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ ॐ सः अस्त्राय फट् ६ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् । चन्द्रार्काग्निविलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयांतःस्थितं मुद्रापाशमृगाक्षसूत्रविलसत्पाणिं हिमांशुप्रभम् ॥ कोटीरेन्दुगलत्सुधाप्लुततनुं हारादिभूषोज्ज्वलं कांत्या विश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युंजयं भावयेत् ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा सर्वतोभद्रमंडले लिंगतोभद्रमंडले वा पीठपूजां विधाय पूर्वोक्ते शिवपीठे वामादिनवपीठशक्तीः संपूजयेत् । तद्यथा—पूर्वादिक्रमेण । ॐ वामायै नमः १ ॐ ज्येष्ठायै नमः २ ॐ रौद्र्यै नमः ३ ॐ काल्यै नमः ४ ॐ कलविकरिण्यै नमः ५ ॐ बलविकरिण्यै नमः ६ ॐ बलप्रमथिन्यै नमः ७ ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः ८ मध्ये ॐ मनोन्मन्यै नमः ९ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय

घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनंताय योगपीठात्मने नमः ॥ इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञया आवरणपूजां कुर्य्यात् ॥ पुष्पांजलिमादाय "ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रिय ॥ अनुज्ञां शिव मे देहि परिवारार्चनाय मे ॥" इत्याज्ञां गृहीत्वा षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च ॐ सां हृदयाय नमः । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ ॐ सीं शिरसे स्वाहा। शिरः श्रीपा० २ ॐ सूं शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ३ ॐ सैं कवचाय हुँ । कवचश्रीपा० ४ ॐ सौं नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ ॐ सः अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य्य "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्" ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् । इति प्रथमावरणम् ॥ ततो भूपुरे इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात् । अस्य पुरश्चरणं लक्षत्रयं जपः। पुरश्चरणदशांशेन दुग्धाज्यलोलितैरमृताखंडैर्होमः । तत्तद्दशांशेन तर्प्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्य्यात् । एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे च मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् । (तथा च शारदायाम्) "गुणलक्षं जपेन्मंत्रं

त्र्यक्षरीमृत्युंजययंत्रम् ।



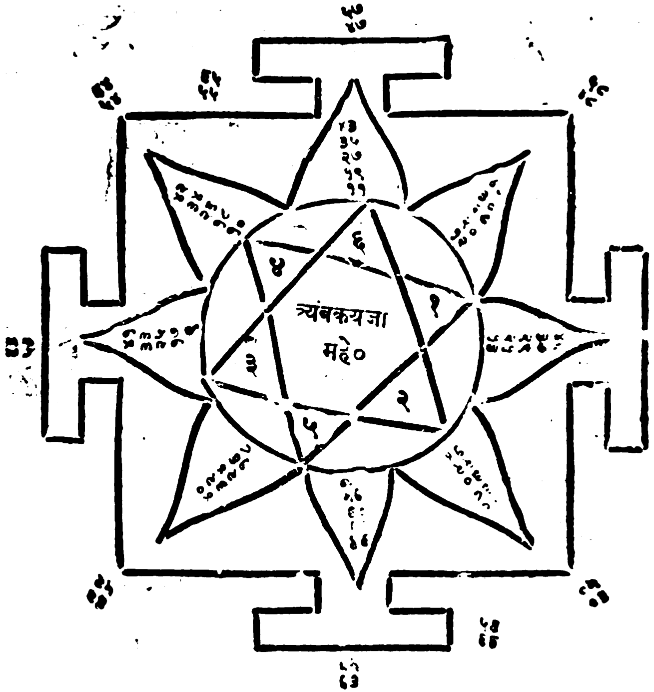
तद्दशांशं त्रिशालधीः ॥ जुहुयादमृताखंडैः शुद्धदुग्धाज्यलोलितैः ॥ १ ॥ जपपूजादिभिः सिद्धे मंत्रेऽस्मिन्मनुना क्रमात् ॥ कुर्यात्प्रयोगान् कल्पोक्तानभीष्टान्फलसिद्धये ॥ २ ॥ दुग्धयुक्तैः सुधाखंडैर्मंत्री मासं सहस्रकम् ॥ आराधितेऽग्नौ जुहुयाद्विधिवद्विजितेन्द्रियः ॥३॥ संतुष्टः शंकरस्तेन सुधाप्लावितविग्रहः ॥ आयुरारोग्यसंपत्तियशःपुत्रान्विवर्द्धयेत् ॥ ४ ॥ सुधावटौ तिला दूर्वाः पयः सर्पिः पयो हविः ॥ इत्युक्तैः सप्तभिर्द्रव्यैर्जुहुयात्सप्तवासरम् ॥ ५ ॥ क्रमाद्दशांशतो नित्यमष्टोत्तरमतन्द्रितः ॥ सप्ताधिकान् द्विजान्नित्यं भोजयेन्मधुरान्वितम् ॥ ६ ॥ विकारानुगुणं मंत्री वर्द्धयेद्धोमवासरान् ॥ होतृभ्यो दक्षिणां दद्यादरुणा गाः पयस्विनीः ॥ ७ ॥ गुरुं संप्रीणयेत्पश्चाच्छन्नाद्यैर्देवताधिया ॥ अनेन विधिना साध्यं कृत्वा द्रोहज्वरादिभिः ॥ ८ ॥ विमुक्तः सुचिरं जीवेच्छरदां शतमंजसा ॥ आभिचारे ज्वरे तीव्रे घोरोन्मादे शिरोगदे ॥ ९ ॥ असाध्यरोगक्ष्वेडादौ महादाहे महाभये ॥ होमोऽयं शांतिदः प्रोक्तः सर्वसम्पत्प्रदायकः ॥ १० ॥ द्रव्यैरेतैः प्रजुहुयात्त्रिजन्मसु यथाविधि ॥ भोजयेन्मधुरैर्भोज्यैर्ब्राह्मणान्वेदपारगान् ॥ ११ ॥ दीर्घमायुरवाप्नोति वांछितां विंदति श्रियम् ॥ एकादशाहुतीर्नित्यं दूर्वाभिर्जुहुयाद्बुधः ॥ १२ ॥ अपमृत्युजिदेष स्यादायुरारोग्यवर्द्धनः ॥ द्विजन्मसु सुधावल्लीकाश्मरीबकुलोद्भवैः ॥ १३ ॥ समिद्भिर्विहितो होमः सर्वमृत्युगदापहः ॥ सिद्धान्नैर्विहितो होमो महाज्वरविनाशनः ॥ अपामार्गसमिद्धोमः सर्वामयानिषूदनः ॥ १४ ॥ इति त्र्यक्षरमृत्युंजयमंत्रप्रयोगः ॥ अथ त्र्यंबकमंत्रप्रयोगः ॥ (शारदातिलके) "अथ त्रैयंबकं मंत्रमभिधास्याम्यनुष्टुभम् ॥ यं भजंतं नरं कालः स्वयं वीक्षितुमक्षमः ॥ १ ॥" मंत्रो यथा--"ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् ॥ उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्" इति मंत्रः । अस्य विधानम् । अस्य त्र्यंबकमंत्रस्य वसिष्ठ ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । त्र्यंबकपार्वतीपातिर्देवता । त्र्यं बीजम् । वं शक्तिः । कं कीलकम् । सर्वेष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । ॐ वसिष्ठर्षये नमः शिरसि ॥ १ ॥ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ त्र्यंबकपार्वतीपतिदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ त्र्यं बीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ वं शक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ कं कीलकाय नमः नाभौ ॥ ६ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ७ ॥

इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ त्र्यंबकम् अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ यजामहे तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ सुगंधिं पुष्टिवर्धनं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ उर्वारुकमिव बंधनात् अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ मृत्योर्मुक्षीय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ मामृतात् करतल करपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ त्र्यंबकं हृदयाय नमः ॥ १ ॥ यजामहे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ सुगंधिं पुष्टिवर्धनं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ उर्वारुकमिव बंधनात् कवचाय हुं ॥ ४ ॥ मृत्योर्मुक्षीय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ मामृतात् अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ॐ त्र्यं नमः पूर्वमुखे ॥ १ ॥ ॐ बं नमः पश्चिममुखे ॥ २ ॥ ॐ कं नमः दक्षिणमुखे ॥ ३ ॥ ॐ यं नमः उत्तरमुखे ॥ ४ ॥ ॐ जां नमः उरसि ॥ ५ ॥ ॐ मं नमः कंठे ॥ ६ ॥ ॐ हें नमः मुखे ॥ ७ ॥ ॐ सुं नमः नाभौ ॥ ८ ॥ ॐ गं नमः हृदि ॥ ९ ॥ ॐ धिं नमः पृष्ठे ॥ १० ॥ ॐ पुं नमः कुक्षौ ॥ ११ ॥ ॐ ष्टिं नमः लिंगे ॥ १२ ॥ ॐ वं नमः गुदे ॥ १३ ॥ ॐ र्धं नमः दक्षिणोरुमूले ॥ १४ ॥ ॐ नं नमः वामोरुमूले ॥ १५ ॥ ॐ उं नमः दक्षिणोरुमध्ये ॥ १६ ॥ ॐ र्वा नमः वामोरुमध्ये ॥ १७ ॥ ॐ रुं नमः दक्षिणजानुनि ॥ १८ ॥ ॐ कं नमः वामजनुनि ॥ १९ ॥ ॐ मिं नमः दक्षिणजानुवृत्ते ॥ २० ॥ ॐ वं नमः वामजानुवृत्ते ॥ २१ ॥ ॐ बं नमः दक्षिणस्तने ॥ २२ ॥ ॐ धं नमः वामस्तने ॥ २३ ॥ ॐ नां नमः दक्षिणपार्श्वे ॥ २४ ॥ ॐ मृं नमः वामपार्श्वे ॥ २५ ॥ ॐ त्यों नमः दक्षिणपादे ॥ २६ ॥ ॐ र्मु नमः वामपादे ॥ २७ ॥ ॐ क्षीं नमः दक्षिणकरे ॥ २८ ॥ ॐ यं नमः वामकरे ॥ २९ ॥ ॐ मां नमः दक्षनासायाम् ॥ ३० ॥ ॐ मृं नमः वामनासायाम् ॥ ३१ ॥ ॐ तां नमः मूर्ध्नि ॥ ३२ ॥ इति मंत्रवर्णन्यासः ॥ ॐ त्र्यंबकं शिरसि ॥ १ ॥ यजामहे भ्रुवोः ॥ २ ॥ सुगंधिं नेत्रयोः ॥ ३ ॥ पुष्टिवर्धनं मुखे ॥ ४ ॥ उर्वारुकं गंडयोः ॥ ५ ॥ इव हृदये ॥ ६ ॥ बंधनात् जठरे ॥ ७ ॥ मृत्योः लिंगे ॥ ८ ॥ मुक्षीय हृदये ॥ ९ ॥ मा जान्वोः ॥ १० ॥ अमृतात् पादयोः ॥११॥ इति पदन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ “हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसैराप्लावयंतं शिरो द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलये द्वाभ्यां वहंतं परम् ॥ अंकन्यस्तकरद्वयामृतघटं कैलासकांतं शिवं स्वच्छांभोजगतं नवेन्दुमुकुटं देवं त्रिनेत्रं भजे ॥ १ ॥”

इति ध्यायेत् । पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले लिंगतोभद्रमण्डले वा मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् । पूर्वादिक्रमेण । ॐ वामायै नमः ॥ १ ॥ ॐ ज्येष्ठायै नमः ॥ २ ॥ ॐ रौद्र्यै नमः ॥ ३ ॥ ॐ काल्यै नमः ॥ ४ ॥ ॐ कलविकरिण्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ बलविकरिण्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ बलप्रमथिन्यै नमः ॥ ७ ॥ ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः ॥ ८ ॥ मध्ये ॐ मनोन्मन्यै नमः ॥ ९ ॥ इति पूजयेत् । ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य "ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनन्ताय योगपीठात्मने नमः" इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य तत्र वृषभध्वजं त्र्यंबकं देवं पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञया आवरणपूजां कुर्य्यात् । तद्यथा—पुष्पांजलिमादाय "ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रिय ॥ अनुज्ञां शिव मे देहि परिवारार्चनाय च ॥ १ ॥" इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा देवाज्ञां विभाव्य आवरणपूजां कुर्य्यात् । तद्यथा-षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च । ॐ त्र्यंबकं हृदयाय नमः । हृदये श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ यजामहे शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० २ सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ३ उर्वारुकमिव बन्धनात् कवचाय हुं । कवचश्रीपा० ४ मृत्योर्मुक्षीय नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ मामृतात् अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य्य "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥" इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् । इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण । ॐ अर्कमूर्तये नमः । अर्कमूर्तिश्रीपा० १ ॐ इन्दुमूर्तये नमः । इन्दुमूर्तिश्रीपा० २ ॐ वसुधामूर्तये नमः । वसुधामूर्तिश्रीपा० ३ ॐ तोयमूर्तये नमः । तोयमूर्तिश्रीपा० ४ ॐ वह्निमूर्तये नमः । वह्निमूर्तिश्रीपा० ५ ॐ वायुमूर्तये नमः । वायुमूर्तिश्रीपा० ६ ॐ आकाशमूर्तये नमः । आकाशमूर्तिश्रीपा० ७ ॐ यजमानमूर्तये नमः । यजमानमूर्तिश्रीपा० ८ इत्यष्टौ मूर्तीः

पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति द्वितीयावरणम् ॥२॥ तद्बाह्येऽष्टदले प्राचीक्रमेण। ॐ रमायै नमः । रमाश्री० १ ॐ राकायै नमः । राकाश्रीपा०२ॐ प्रभायै नमः।प्रभाश्रीपा० ३ ॐ ज्योत्स्नायै नमः । ज्योत्स्नाश्रीपा० ४ ॐ पूर्णायै नमः । पूर्णाश्रीपा० ५ ॐ ऊषायै नमः ऊषाश्रीपा० ६ ॐ पूरण्यै नमः । पूरणीश्रीपा० ७ ॐ सुधायै नमः । सुधाश्रीपादुकां पूजयामि ८ इत्यष्टौ शक्तीः पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ तद्बाह्येऽष्टदले प्राचीक्रमेण । ॐ विश्वायै नमः । विश्वाश्रीपा० १ ॐ विद्यायै नमः । विद्याश्रीपा० २ ॐ सितायै नमः । सिताश्रीपा० ३ ॐ प्रह्वायै नमः । प्रह्वाश्रीपा० ४ ॐ रारायै नमः । राराश्रीपा० ५ ॐ संध्यायै नमः । संध्याश्रीपा० ६ ॐ शिवायै नमः । शिवाश्रीपा० ७ ॐ निशायै नमः । निशाश्रीपा० ८ इत्यष्टौ शक्तीः पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति चतुर्थावरणम् ॥ ४ ॥ तद्बाह्येऽष्टदले प्राचीक्रमेण । ॐ आर्य्यायै नमः । आर्य्याश्री० १ ॐ प्रज्ञायै नमः । प्रज्ञाश्रीपा० २ ॐ प्रभायै नमः । प्रभाश्रीपा० ३ ॐ मेधायै नमः । मेधाश्रीपा० ४ ॐ शांत्यै नमः । शांतिश्रीपा० ५ ॐ कांत्यै नमः । कांतिश्रीपा० ६ ॐ धृत्यै नमः । धृतिश्रीपा० ७ ॐ मृत्यै

त्र्यंबकपूजनयंत्रम् ।



नमः । मृतिश्रीपा० ८ इत्यष्टौ शक्तीः पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति पंचमावरणम् ॥ ५ ॥ तद्बाह्येऽष्टदले प्राचीक्रमेण ॐ धारायै नमः । धाराश्रीपा० १ ॐ मायायै नमः । मायाश्रीपा० २ ॐ अवन्यै नमः । अवनिश्रीपा० ३ ॐ पद्मायै नमः ।

पद्माश्रीपा० ४ ॐ शांतायै नमः। शांताश्रीपा० ५ ॐ मोघायै नमः। मोघाश्रीपा० ६ ॐ जयायै नमः। जयाश्रीपा० ७ ॐ अमलायै नमः। अमलाश्रीपा० ८ इत्यष्टौ शक्तीः पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्। इति षष्ठावरणम् ॥ ६ ॥ ततो भूपुरे इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपज्य जपं कुर्य्यात्। अस्य पुरश्चरण मेकलक्षजपः। दशद्रव्यैर्दशांशतो होमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्य्यात्। एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति। सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च–"जपेन्मंत्रमिमं लक्षमेवं ध्यायञ्जितेन्द्रियः ॥ जुहुयाद्दशभिर्द्रव्यैरयुतं घृतसंप्लुतैः ॥ १ ॥ बिल्वं पलाशं खादिरं परं च तिलसर्षपौ ॥ दुग्धं दधि पुनर्दूर्वा होमे तानि विदुर्बुधाः ॥ २ ॥ एवंकृते प्रयोगार्हो जायतेऽयं महामनुः ॥ अयुतं जुहुया द्बिल्वसमिद्भिः संपदे सुधीः ॥ ३ ॥ जुहुयाद्ब्रह्मवृक्षस्य समिद्भिर्ब्रह्मतेजसे ॥ खादिरैरयुतं हुत्वा कांतिं पुष्टिमवाप्नुयात् ॥ ४ ॥ वट वृक्षस्य समिधो जुहुयादयुतावधि ॥ धनधान्यसमृद्धः स्यादचिरेणैव साधकः ॥ ५ ॥ तिलैस्तत्संख्यया हुत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ सिद्धार्थैरयुतं हुत्वा शत्रून्विजयते नृपः ॥ ६ ॥ अनेनैव विधानेन नश्येन्मृत्युरकालजः ॥ पायसेन कृतो होमो रक्षाश्रकीर्तिकांतिदः ॥ ॥ ७ ॥ गोदुग्धेन च शुद्धान्नं हुत्वा कृत्यां विनाशयेत् ॥ अयमेव मतो होमः शांतिश्रीसंपदावहः ॥ ८ ॥ दधिहोमेन संवादं कुर्या द्विद्वेषिणोर्मिथः ॥ प्रत्यहं जुहुयान्मंत्री दूर्वा अष्टोत्तरं शतम् ॥ ९ ॥ आमयान्निखिलाञ्जित्वा दीर्घमायुरवाप्नुयात् ॥ जुहुयाजम्बुकाष्ठेन पायसान्नै र्घृतान्वितैः ॥ १० ॥ इच्छन्ननिंदितां लक्ष्मीमारोग्यमतुलं यशः ॥ गव्यदुग्धघृताक्ताभिर्दूर्वाभिर्जुहुयाद्वशी ॥ ११ ॥ स विंशतिशतं सम्यक् स्वजन्मदिवसे सुधीः ॥ आमयैः सकलैर्मुक्तो जीवेद्वर्षशतं सुधीः ॥ १२ ॥ काश्मरीसमिधस्तिस्त्रः पयोऽन्नं त्रिशतं पृथक् ॥ जुहुयाद्ब्राह्मणानंते भोजयेन्मधुरान्वितम् ॥ १३ ॥ प्रीणयेद्धनधान्याद्यैरात्मनो गुरुमादरात् ॥ अनामयमवाप्नोति दीर्घमायुः श्रिया सह ॥ १४ ॥ सघृतेन पयोऽन्नेन हुत्वा पर्वणि मंत्रिणे ॥ राजश्रियमवाप्नोति षण्मासान्नात्र संशयः ॥ १५ ॥ लाजैर्विशुद्धैर्जुहुयात्कन्या सैषा वराप्तये ॥ क्षीरद्रुमसमिद्धोमाद्ब्राह्मणादीन्वशं नयेत् ॥ १६ ॥ स्नात्वा सहस्रं प्रजपेदादित्याभिमुखो मनुम् ॥ आधिव्याधि

विनिर्मुक्तो दीर्घमायुरवाप्नुयात् ॥ अनेन मनुना सर्वं साधयेदिष्टमात्मनः" ॥ १७ ॥ इति त्र्यंबकमंत्रप्रयोगः ॥ अथ महामृत्युंजय मंत्रप्रयोगः ॥ (मंत्रमहोदधौ) महामृत्युंजयं वक्ष्ये दुरितापन्निवारणम् ॥ यं प्राप्य भार्गवः शंभोर्मृतान् दैत्यानजीवयत् ॥ १ ॥ मंत्रो यथा— " ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् ॥ उर्वारुकमिव बंधनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ " इति मंत्रः । अस्य विधानम् । देशकालौ संकीर्त्य मम शरीरे ज्वराद्यमुकरोगनिरासद्वारा सद्यः आरोग्यार्थममुककामनासिद्ध्यर्थं वा श्रीमहामृत्युंजयदेवताप्रीत्यर्थममुकसंख्यापरिमितश्रीमहामृत्युंजयजपं करिष्ये इति संकल्प्य ॥ ॐ गुरवे नमः ॥ १ ॥ ॐ गणपतये नमः ॥ २ ॥ ॐ स्वेष्टदेवतायै नमः ॥ ३ ॥ इति नत्वा न्यासादिकं कुर्य्यात् । तद्यथा— ॐ अस्य श्रीमहामृत्युंजयमंत्रस्य वामदेवकहोलवसिष्ठा ऋषयः । पंक्तिगायत्र्यनुष्टुभश्छंदांसि । सदाशिवमहामृत्युंजयरुद्रा देवताः । श्रीं बीजम् । ह्रीं शक्तिः । महामृत्युंजयप्रीतये जपे विनियोगः । ॐ वामदेवकहोलवसिष्ठऋषिभ्यो नमः शिरसि ॥१॥ पंक्तिगायत्र्यनुष्टुप्छंदोभ्यो नमः मुखे ॥ २ ॥ सदाशिवमहामृत्युंजयरुद्रदेवताभ्यो नमः हृदि ॥ ३ ॥ श्रींबीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यंबकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बंधनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरांतकाय हां ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः॥ ४ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाममंत्राय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥६॥ इति करन्यासः ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यंबकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः

यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवःस्वः सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बंधनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरांतकाय हां हीं कवचाय हुं ॥४॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाममंत्राय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय फट् ॥६॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यं नमः पूर्वमुखे ॥१॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः बं नमः पश्चिम मुखे ॥ २ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः कं नमः दक्षिणमुखे ॥ ३ ॥ ॐ हौं ॐ जं सः भूर्भुवः स्वः यं नमः उत्तरमुखे ॥ ४ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः जां नमः उरसि ॥ ५ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मं नमः कंठे ॥ ६ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः हें नमः मुखे ॥ ७ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुं नमः नाभौ ॥ ८ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः गं नमः हृदि ॥ ९ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः धिं नमः पृष्ठे ॥१०॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः पुं नमः कुक्षौ ॥ ११ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः ष्टिं नमः लिंगे ॥ १२ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः वं नमः गुदे ॥ १३ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः र्धं नमः दक्षिणोरुमूले ॥ १४ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः नं नमः वामोरुमूले ॥१५॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उं नमः दक्षिणोरु मध्ये ॥ १६ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः र्वा नमः वामोरुमध्ये ॥ १७ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः रुं नमः दक्षिण जानुनि ॥ १८ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः कं नमः वामजानुनि ॥ १९ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मिं नमः दक्षिणजानु वृत्ते ॥ २० ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः वं नमः वामजानुवृत्ते ॥ २१ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः बं नमः दक्षिणस्तने ॥ २२ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः धं नमः वामस्तने ॥२३॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः नों नमः दक्षिणपार्श्वे ॥२४॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृं नमः वामपार्श्वे ॥ २५ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्यों नमः दक्षिणपादे ॥ २६ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः

मुं नमः वामपादे ॥ २७ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः क्षीं नमः दक्षकरे ॥ २८ ॥ ॐ हौं ॐ जू सः भूर्भुवः स्वः यं नमः वामकरे ॥ २९ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवःस्वः मां नमः दक्षनासायाम् ॥ ३० ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृं नमः वामनासायाम् ॥ ३१ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः तां नमः मूर्ध्नि ॥ ३२ ॥ इति मंत्रवर्णन्यासः ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यंबकं नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे भ्रुवोः ॥ २ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगंधिं नेत्रयोः ॥ ३ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः पुष्टिवर्धनं मुखे ॥ ४ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकं गंडयोः ॥५॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः इव हृदये ॥६॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः बंधनात् जठरे ॥७॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योः लिंगे ॥८॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मुक्षीय ऊर्वोः ॥ ९ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मा जान्वोः ॥ १० ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः अमृतात् पादयोः ॥ ११ ॥ इति पदन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा "हस्तांभोजयुगस्थकुंभयुगलादुद्धृत्य तोयं शिरः सिंचंतं करयोर्युगेन दधतं स्वांके सकुंभौ करौ ॥ अक्षस्रङ्मृगहस्तमंबुजगतं मूर्द्धस्थचन्द्रस्रवत्पीयूषोन्नतनुं भजे सगिरिजं मृत्युंजयं त्र्यंबकम् ॥" इति ध्यायेत् । ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले लिंगतोभद्रमण्डले वा ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः इति पीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् । तद्यथा । पूर्वादिक्रमेण । ॐ वामायै नमः ॥ १ ॥ ॐ ज्येष्ठायै नमः ॥ २ ॥ ॐ रौद्र्यै नमः ॥ ३ ॥ ॐ काल्यै नमः ॥ ४ ॥ ॐ कलविकरिण्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ बलविकारिण्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ बलप्रमथिन्यै नमः ॥ ७ ॥ ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः ॥ ८ ॥ मध्ये ॐ मनोन्मन्यै नमः ॥ ९ ॥ इति पूजयेत् । ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेणाशोष्य "ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मकशक्तियुताय अनन्ताय योगपीठात्मने नमः ॥" इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञया आवरण पूजां कुर्यात् । तद्यथा—पुष्पांजलिमादाय "संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रिय ॥ अनुज्ञां शिव मे देहि परिवारार्चनाय ते॥१॥" इत्याज्ञां

गृहीत्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा आवरणपूजां कुर्य्यात् ॥ पंचकोणे । ऐशान्याम् "ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपति ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम् ॥" ॐ ईशानाय नमः । ईशानश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥इति सर्वत्र॥१॥पूर्वे "ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्" ॐ तत्पुरुषाय नमः। तत्पुरुषश्रीपा० ॥२॥ दक्षिणे "ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः॥ सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ 'ॐ अघोराय नमः । अघोरश्रीपा०॥३॥पश्चिमे "ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥" ॐ वामदेवाय नमः । वामदेवश्रीपा० ॥ ४ ॥ उत्तरे "ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥"ॐ सद्योजाताय नमः । सद्योजातश्रीपा० ॥५॥ इति पंचमूर्तीः पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य्य 'अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥" इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं निःक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् । इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततः पंचकोणाग्रेषु ऐशान्यादिक्रमेण । ॐ निवृत्त्यै नमः । निवृत्तिश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ प्रतिष्ठायै नमः । प्रतिष्ठाश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ विद्यायै नमः विद्याश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ शांत्यै नमः । शांतिश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ शांत्यतीतायै नमः । शांत्यतीताश्रीपा० ॥ ५ ॥ इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण । ॐ सूर्य्यमूर्तये नमः । सूर्य्यमूर्तिश्रीपा० ॥ १ ॐ इन्दुमूर्तये नमः । इन्दुमूर्तिश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ क्षितिमूर्तये नमः । क्षितिमूर्तिश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ तोयमूर्तये नमः । तोयमूर्तिश्रीपा० ॥४॥ ॐ अग्निमूर्तये नमः । अग्निमूर्तिश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ पवनमूर्तये नमः । पवनमूर्तिश्रीपा० ॥६॥ ॐ आकाशमूर्तये नमः । आकाशमूर्तिश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ यज्ञमूर्तये नमः । यज्ञमूर्तिश्रीपा० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ मूर्तीः पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ तद्बहिरष्टदले प्राचीक्रमेण ॐ रमायै नमः । रमाश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ राकायै नमः । राकाश्रीपा०॥२॥

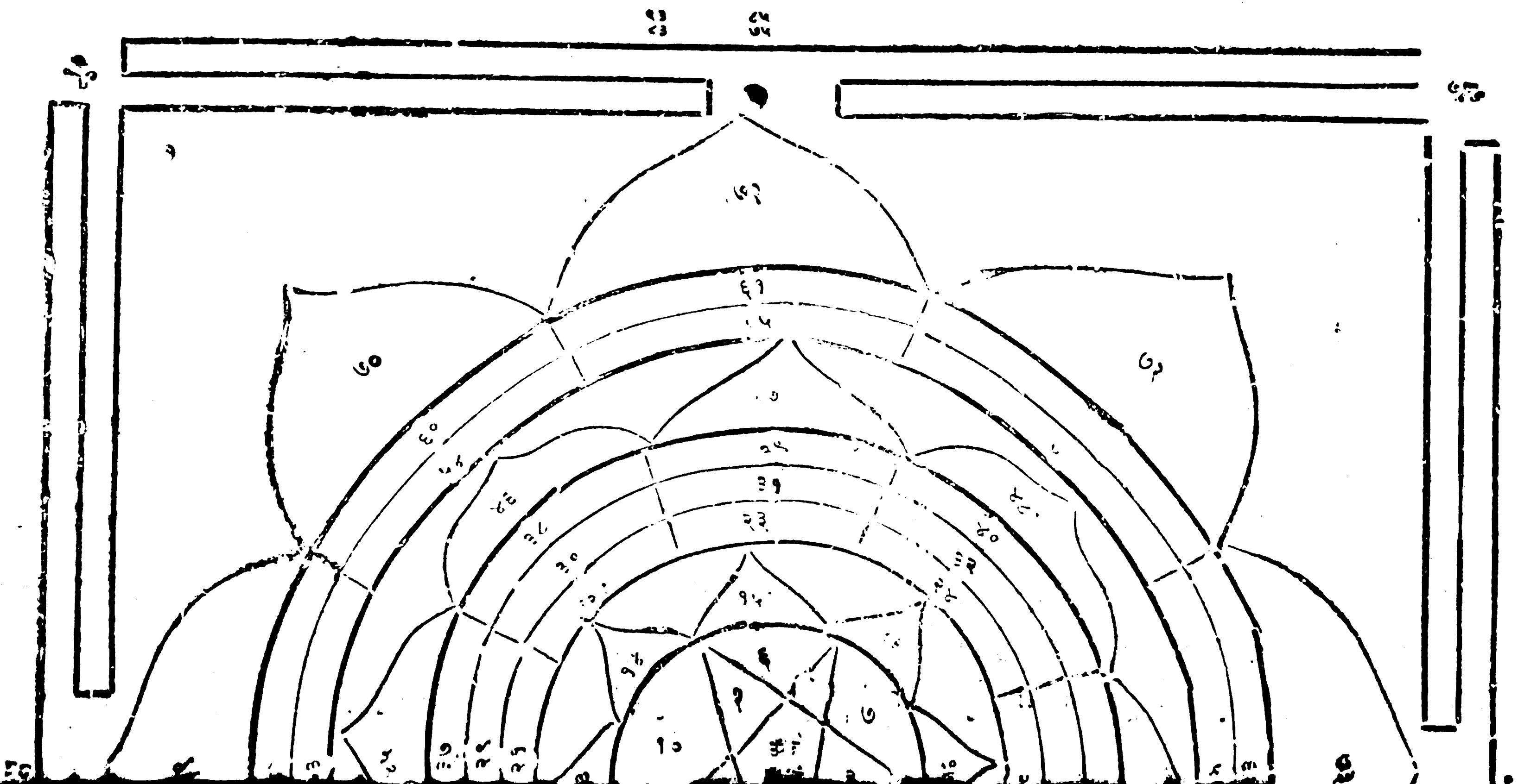
ॐ प्रभायै नमः । प्रभाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ ज्योत्स्नायै नमः । ज्योत्स्नाश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ पूर्णायै नमः । पूर्णाश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ पूषायै नमः । पूषाश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ पूर्ण्यै नमः । पूर्णाश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ सुधायै नमः ॥ सुधाश्रीपा० ॥ ८ ॥ इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥ ४ ॥ तद्बहिरष्टदले प्राचीक्रमेण । ॐ विश्वायै नमः । विश्वाश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ वंद्यायै नमः । वंद्याश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ सितायै नमः । सिताश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ प्रह्वायै नमः । प्रह्वाश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ सारायै नमः । साराश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ संध्यायै नमः । संध्याश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ शिवायै नमः । शिवाश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ निशायै नमः । निशाश्रीपा० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति पंचमावरणम् ॥ ५ तद्बहिरष्टदले प्राचीक्रमेण । ॐ आर्य्यायै नमः । आर्य्याश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ प्रज्ञायै नमः । प्रज्ञाश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ प्रभायै नमः । प्रभाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ मेधायै नमः । मेधाश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ शांत्यै नमः । शांतिश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ कांत्यै नमः । कांतिश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ धृत्यै नमः । धृतिश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ मत्यै नमः । मतिश्रीपा० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति षष्ठावरणम् ॥ ६ ॥ तद्बहिरष्टदले प्राचीक्रमेण । ॐ धरायै नमः । धराश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ उमायै नमः । उमाश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ पावन्यै नमः । पावनीश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ पद्मायै नमः । पद्माश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ शांतायै नमः । शांताश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ अमोघायै नमः । अमोघाश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ जयायै नमः । जयाश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ अमलायै नमः । अमलाश्रीपा० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति सप्तमावरणम् ॥ ७ ॥ तद्बहिरष्टदले प्राचीक्रमेण । ॐ अनंताय नमः । अनंतश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ सूक्ष्मसंज्ञाय नमः । सूक्ष्मसंज्ञश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ शिवोत्तमाय नमः । शिवोत्तमश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ एकनेत्राय नमः । एकनेत्रश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ एकरुद्राय नमः । एकरुद्रश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ त्रिमूर्तये नमः । त्रिमूर्तिश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ श्रीकंठाय नमः । श्रीकंठश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ शिखंडिने नमः । शिखंडिश्री० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इत्यष्टमावरणम् ॥ ८ ॥ तद्बहिरष्टदले उत्तरामारभ्य ॐ उमायै नमः । उमाश्रीपा० ॥ १ ॥

ॐ चण्डेश्वराय नमः । चण्डेश्वरश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ नंदिने नमः । नंदिश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ महाकालाय नमः । महाकालश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ गणेशाय नमः । गणेशश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ वृषभाय नमः । वृषभश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ भृंगिरिटये नमः । भृंगिरिटिश्रीपा० ॥ ७॥ ॐ स्कंदाय नमः । स्कंदश्रीपा० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति नवमावरणम् ॥ ९ ॥ तद्बहिरष्टदले प्राचीक्रमेण । ॐ ब्राह्म्यै नमः । ब्राह्मीश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ माहेश्वर्य्यै नमः । माहेश्वरीपा० ॥ २ ॥ ॐ कौमार्यै नमः । कौमारीश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ वैष्णव्यै नमः । वैष्णवीश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ वाराह्यै नमः । वाराहीश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ इन्द्राण्यै नमः । इन्द्राणीश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ चामुंडायै नमः । चामुंडाश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः । महालक्ष्मीश्रीपा० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति दशमावरणम् ॥ तद्बाह्ये भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् । इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतां संपूज्य कृतांजलिः प्रार्थयेत् "ॐ मृत्युंजय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम् ॥ जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबंधनैः ॥ १ ॥ तावकस्त्वद्गतप्राणस्त्वच्चित्तोऽहं सदा मृड ॥ इति विज्ञाप्य देवेशं जपेन्मृत्युंजयं परम् ॥ २ ॥" इति संप्रार्थ्य जपं कुर्य्यात् । अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपः । जपांते दशांशतो दशद्रव्यैर्होमः । होमदशांशेन मंत्रांते ॐ मृत्युंजयं तर्पयामीत्युक्त्वा दुग्धमिश्रित जलेन तर्पयेत् । ततस्तर्पणदशांशे मंत्रांते आत्मानमभिषिंचामि नमः इति यजमानमूर्द्धन्यभिषेकः ॥ होमतर्पणाभिषेकाशक्तौ तत्स्थाने तत्तद्द्विगुणो जपः कार्यः । ततोऽभिषेकदशांशतोऽष्टोत्तरशतसंख्यातो वा ब्राह्मणभोजनं कुर्य्यात् । एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे च मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च "जपेन्मंत्रमिमं लक्षमेवं ध्यायञ्जितेन्द्रियः ॥ दशद्रव्यैः प्रजुहुयात्तानि बिल्वफलं तिलाः ॥ १ ॥ पायसं सर्षपा दुग्धं दधि दूर्वा च सप्तमी ॥ वटात्पलाशात्खदिरात्समिधो मधुरप्लुताः ॥ २ ॥ एवं कृते प्रयोगार्हो जायतेऽयं महामनुः ॥ जन्मभे दशमे तस्मात्पुनश्चैकोनविंशके ॥ ३ ॥ जुहुयाद्यः सुधावल्याः समिधश्चतुरंगुलाः ॥ स रोगान् सकलाञ्शत्रून् पराभूय श्रिया युतः ॥ ४ ॥ मोदते पुत्रपौत्राद्यैः शतवर्षाणि साधकः ॥ समिद्भिः श्रीफलोत्थाभिर्होमः संपत्तिसिद्धये ॥ ५ ॥ पलाशतरुजाभिस्तु ब्रह्मवर्चससिद्धये ॥

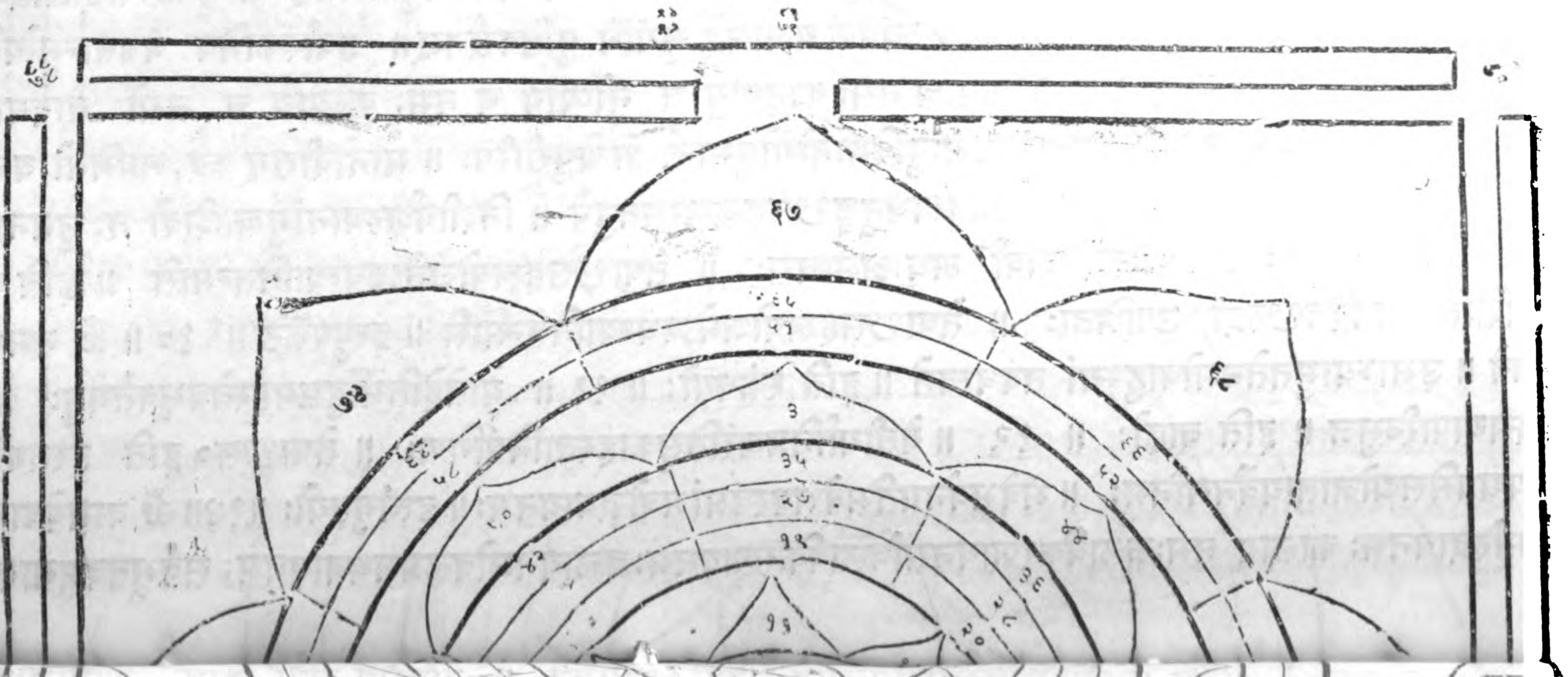
वटोत्थाभिर्धनप्राप्त्यै खादिरीभिस्तु कांतये ॥ ६ ॥ तिलैरधर्म्मनाशाय सर्षपैः शत्रुनष्टये ॥ पायसेन कृतो होमः कांतिश्रीकीर्तिदायकः ॥ ७ ॥ कृत्वा मृत्युक्षयारोग्यं दध्ना संवादसिद्धिदः ॥ होमसंख्या तु सर्वत्रायुतमानेन कीर्तिता ॥ ८ ॥ अष्टोत्तरशतं दूर्वात्रिकहोमाद्रुजां क्षयः ॥ स्वजन्मदिवसे यस्तु पायसैर्मधुरान्वितैः ॥ ९ ॥ जुहोति तस्य वर्द्धते कुलमारोग्यकीर्तयः ॥ गुडूचीवकुलोत्थाभिः समिद्भिर्हवनं नृणाम् ॥ १० ॥ जन्मतापत्रयं रोगान् मृत्युं चापि विनाशयेत् ॥ प्रत्यहं जुहुयादूर्वा अपमृत्युविनष्टये ॥ ११ ॥ किं बहूक्तेन सर्वेष्टं प्रयच्छति शिवो नृणाम् ॥ अपामार्गसमिद्भिश्च सिद्धान्नैर्ज्वरनष्टये ॥ दुग्धार्कैरमृताखंडैर्मासं होमोऽखिलाप्तये ॥ ”

इति महामृत्युंजयमंत्रप्रयोगः ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

महामृत्युंजयपूजनयंत्रम् ।



॥१०१॥



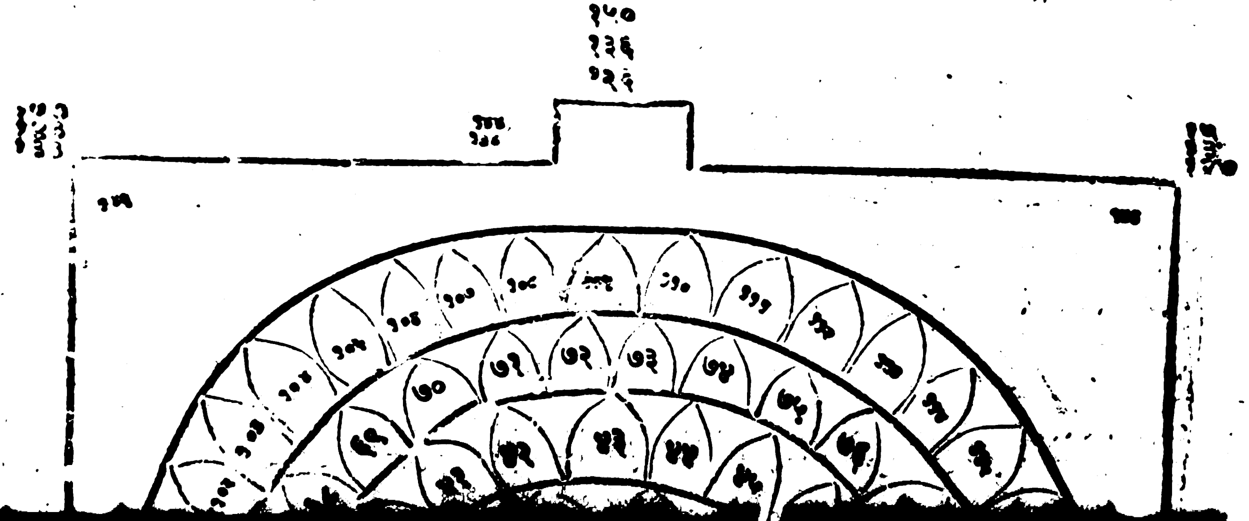
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ दशाक्षररुद्रमंत्रविधानम् ॥ मंत्रो यथा—"ॐ नमो भगवते रुद्राय" इति दशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम् ॥ अस्य श्रीरुद्रमंत्रस्य बौधायन ऋषिः । पंक्तिश्छंदः । रुद्रो देवता । ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ॐ बौधायनर्षये नमः शिरसि॥१॥ पंक्तिच्छंदसे नमः मुखे ॥ २ ॥ रुद्रदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी ॥ तयानस्तन्वाशंतमयागिरिशंताभिचाकशीहि ॥ इति शिखायाम् ॥ १ ॥ ॐ अस्मिन्महत्यर्णवें ऽतरिक्षे भवा अधि ॥ तेषा७ँसहस्रयोजनेऽवधन्वानितन्मसि ॥ इति शिरसि ॥ २ ॥ ॐ सहस्राणि सहस्रशोबाह्वोस्तव हेतयः॥ तासामीशानो भगवः पराचीनामुखाकृधि ॥ इति ललाटे ॥ ३ ॥ ॐ ह७ँसः शुचिषद्वसुरंतरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् ॥ नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजाऋतजाअद्रिजाऋतंबृहत् ॥ इति भ्रुवोर्मध्ये ॥४॥ ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्द्धनम्॥ उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥ इति नेत्रयोः॥५॥ ॐ नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः कुल्याय च नमो नादेयाय च वैशंताय च ॥ इति कर्णयोः ॥६॥ ॐ मानस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानो अश्वेषुरीरिषः ॥ मानोवीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मंतः सदमित्त्वा हवामहे ॥ इति नासिकयोः ॥ ७ ॥ ॐ अवतत्यधनुष्ट्व७ँसहस्राक्षशतेषुधे ॥ निशीर्यशल्यानांमुखाशिवो नः सुमनाभव ॥ इति मुखे ॥ ८ ॥ ॐ नीलग्रीवाः शितिकंठाः शर्वा अधःक्षमाचराः ॥ तेषा७ँसहस्रयोजनेऽवधन्वानितन्मसि ॥ इति कंठे ॥ ९ ॥ ॐनीलग्रीवाः शितिकंठा दिव७ँरुद्रा उपश्रिताः ॥ तेषा७ँसहस्रयोजनेऽवधन्वानितन्मसि ॥ इत्युपकंठे ॥ १० ॥ ॐ नमस्त आयुधायानाततायधृष्णवे ॥ उभाभ्यामुततेनमोबाहुभ्यां तवधन्वने ॥ इति स्कंधयोः ॥ ११ ॥ यातेहेतिर्मीढुष्टमहस्तेबभूवतेधनुः ॥ तयाऽस्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मयापरिभुज ॥ इति बाह्वोः ॥ १२ ॥ येतीर्थानिप्रचरंतिसृकाहस्तानिषंगिणः ॥ तेषा७ँस० इति हस्तयोः ॥ १३ ॥ ॐ सद्यो जातंप्रपद्यामिसद्योजातायवैनमोनमः ॥ भवेभवेनातिभवेभवस्वमांभवोद्भवायनमः॥ इत्यंगुष्ठयोः ॥१४॥ ॐ वामदेवायनमोज्येष्ठायनमः श्रेष्ठायनमोरुद्रायनमः कालाय नमःकलाविकरणायनमोबलाविकरणायनमः बलायनमोबलप्रमथनायनमः सर्वभूतदमनायनमो मनो

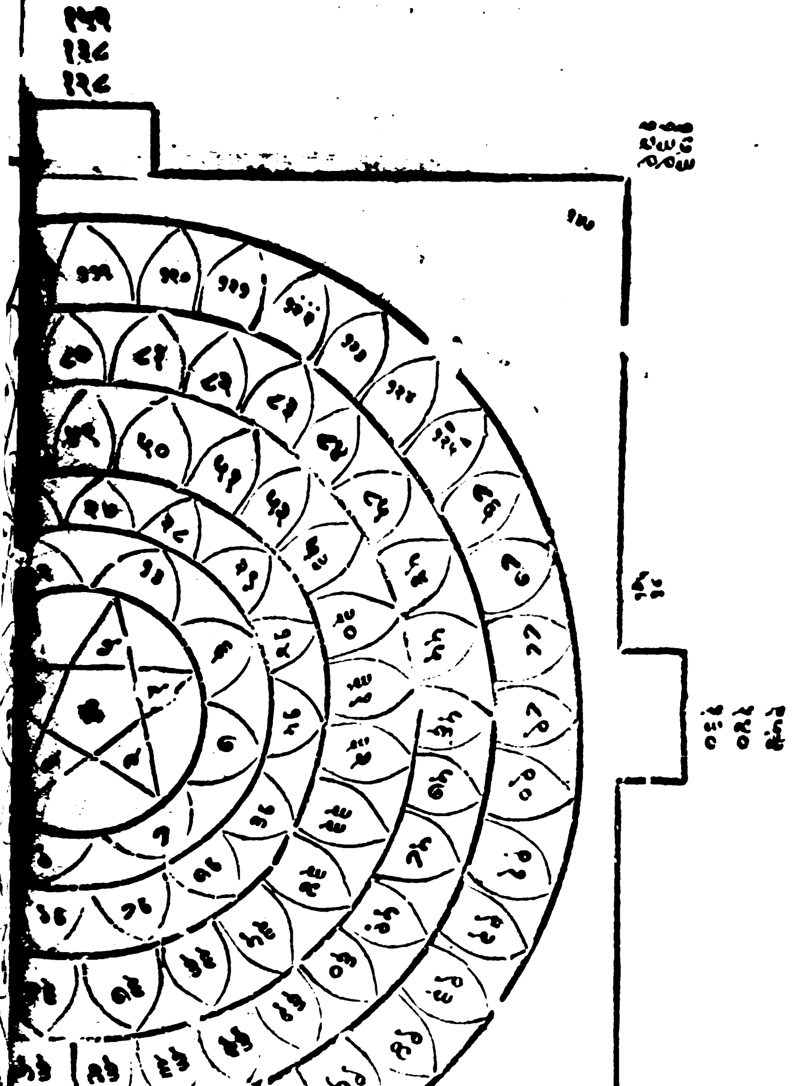
न्मनाय नमः ॥ इति तर्जन्योः॥१५॥ॐ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः॥सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्योनमस्तेअस्तुरुद्ररूपेभ्यः॥मध्यमयोः॥१६॥
ॐ तत्पुरुषाय विद्महेमहादेवायधीमहि ॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ इत्यनामिकयोः ॥ १७ ॥ ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्माशिवोमेअस्तुसदाशिवोम् ॥ इति कनिष्ठिकयोः॥१८॥ ॐ नमो वः किरिकेभ्योदेवानाᳬंहृदयेभ्यो नमोविचि
न्वत्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो नमः आनिर्हतेभ्यः ॥ इति हृदये ॥१९॥ ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्चवोनमोनमोव्रातेभ्यो व्रातपतिभ्य
श्चवोनमोनमोगृत्सेभ्योगृत्सपतिभ्यश्चवोनमोनमोविरूपेभ्योविश्वरूपेभ्यश्चवोनमः ॥ इति पृष्ठे॥२०॥ॐ नमो हिरण्यबाहवेसेनान्येदिशां
चपतयेनमोनमोवृक्षेभ्योहरिकेशेभ्यः पशूनाम्पतयेनमोनमः सस्पिंजरायत्विषीमतेपथीनाम्पतयेनमोनमोहरिकेशायोपवीतिनेपुष्टानाम्पतये
नमो नमो बभ्लुशाय ॥ इति पार्श्वद्वये ॥ २१ ॥ ॐ विज्ज्यन्धनुः कपर्दिनो व्विशल्यो बाणवांऽउत ॥ अनेशन्नस्ययाऽइषवऽआभुरस्य
निषङ्गधिः ॥ इति जठरे ॥ २२ ॥ ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रेभूतस्यजातः पतिरेकआसीत् ॥ सदाधारपृथिवींद्यामुतेमांकस्मैदेवाय
हविषा विधेम ॥ इति नाभौ ॥ २३ ॥ ॐ मीढुष्टम शिवतम शिवोनः सुमनाभव॥ परमे वृक्षऽआयुधन्निधाय कृत्तिंव्वसानऽआचर पिनाकं
म्बिभ्रदागहि ॥ इति कट्याम् ॥ २४ ॥ ॐ येभूतानामधिपतयो व्विशिखासः कपर्दिनः ॥ तेषाᳬंसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥
इति गुह्ये॥२५॥ ॐ जातवेदसेसुनवामसोममरातीयतो निदहाति वेदः ॥ सनः पर्षदति दुर्गाणिविश्वानावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः ॥ इति
गुदे ॥ २६ ॥ ॐ मानो महांतमुतमानो अर्भकंमानउक्षंतमुतमानउक्षितम् ॥ मानोऽवधीः पितरंमोतमातरंमानः प्रियास्तन्वोरुद्ररीरिषः॥
इति ऊर्वोः ॥२७॥ ॐ एषतेरुद्रभागस्तंजुषस्वतेनावसेनपरोमूजवतोतीहि ॥ अवततधन्वापिनाकहस्तःकृत्तिवासाः ॥ इति जानुनोः ॥ २८॥
ॐ येपथांपथिरक्षयऐलबृदाआयुर्युधः॥तेषाᳬंसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥ इति पादयोः॥२९॥ॐ अध्यवोचदधिवक्ताप्रथमोदैव्योभिषक्
अहींश्चसर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्चयातुधान्योधराचीःपरासुव ॥ इति कवचम् ॥ ३० ॥ ॐ नमोबिल्मिने चकवचिनेचनमोव्वर्म्मिणेच-व्वरूथिनेच

मं० म०
॥१०३॥

पू० सं० ३
शि० तं०
तं० ३

दशाक्षरीरुद्रपूजनयन्त्रम्.





नमः श्श्रुतायचश्श्रुतसेनायायचनमोदुन्दुभ्यायचाहनन्न्यायचनमोधृष्णवे इत्युपकवचम् ॥ ३१ ॥ ॐ नमोऽस्तुनीलग्रीवायसहस्राक्षायमी
ढुषे ॥ अथोयेअस्यसत्वानोहंतेभ्योकरन्नमः ॥ इति तृतीयनेत्रे ॥ ३२ ॥ ॐ प्रमुञ्चधन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम् ॥ याश्चतेहस्तऽइषवः
पराताभगवोव्वप ॥ इत्यस्त्रम् ॥ ३३ ॥ इति प्रथमो न्यासः ॥ यऽएतावन्तश्चभूया ँ सश्चदिशोरुद्राव्वितस्थिरे ॥ तेषा ँ सहस्त्रयोजने
वधन्वानितन्मासि ॥ इति दिग्बन्धः ॥ १ ॥ ॐ ॐ नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ नं नमः नासिकायाम् ॥ २ ॥ ॐ मों नमः ललाटे
॥ ३ ॥ ॐ भं नमः मुखे ॥ ४ ॥ ॐ गं नमः कंठे ॥ ५ ॥ ॐ वं नमः हृदि ॥ ६ ॥ ॐ तें नमः दक्षस्तने ॥ ७ ॥ ॐ रुं नमः
वामस्तने ॥ ८ ॥ ॐ द्रां नमः नाभौ ॥ ९ ॥ ॐ यं नमः पादयोः ॥ १० ॥ इति दशांगन्यासो द्वितियः ॥ २ ॥ ॐ सद्यो
जातंप्रपद्यामिसद्योजातायवैनमोनमः ॥ भवेभवेनातिभवेभवस्वमांभवोद्भवायनमः ॥ इति पादयोर्न्यस्य ॐ हंसोहंसेतिब्रूयात् ॥१॥ ॐ वाम
देवायनमोज्येष्ठाय० । इति ऊर्वोर्न्यस्य हंसोहंसेति ब्रूयात् ॥ २ ॥ ॐ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो० इति हृदि विन्यस्य हंसोहंसेति ब्रूयात्
॥ ३ ॥ ॐ तत्पुरुषायविद्महे० इति मुखे विन्यस्य हंसोहंसेति ब्रूयात् ॥ ४ ॥ ॐ ईशानः सर्वविद्याना० इति मूर्ध्नि विन्यस्य हंसो
हंसेति ब्रूयात् ॥ ५ ॥ इति तृतीयन्यासः ॥ ३ ॥ एवं न्यासत्रयं कृत्वा संपुटं कुर्यात् । तत्र क्रमः । कृतांजलिपुटः । ॐ त्रातार
मिंद्रमवितारमिंद्र ँ हवेहवेसुहव ँ शूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामिशक्रम्पुरुहूतमिन्द्र ँ स्वस्तिनोमघवाधात्विंद्रः ॥ इति मंत्रेण प्राच्यामिन्द्रं नम
स्कुर्यात् ॥ १ ॥ ॐ त्वंनोऽअग्नेव्वरुणस्यव्विद्वान्देवस्यहेडोऽअवयासिसीष्ठाः ॥ यजिष्ठोवह्नितमःशोशुचानोविश्वाद्वेषा ँ सिप्रमुमुग्ध्य
स्मत् ॥ इत्याग्नेय्यामाग्निं प्रणमेत् ॥ २ ॥ ॐ सुगन्नःपंथाम्प्रादिशन्नऽएहिज्ज्योतिष्मद्ध्येह्यजरन्नआयुः ॥ अपैतुमृत्युरमृतम्मऽआगा
द्वैवस्वतोनोऽअभयंकृणोतु॥इति दक्षिणस्यां यमं प्रणमेत् ॥३॥ ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहितस्करस्य॥ अन्यमस्मदि
च्छसातऽइत्यानमोदेविनिर्ऋतेतुभ्यमस्तु ॥ इति नैर्ऋत्यां निर्ऋतिं प्रणमेत् ॥४॥ ॐ तत्त्वायामिब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्भिः

१—कवचाद्विपरीतक्रममुपकवचम् ॥

अहेडमानोवरुणेहबोध्युरुश ँ स्मान ऽआयुःप्रमोषीः ॥ इति पश्चिमायां वरुणं प्रणमेत् ॥ ५ ॥ ॐ आनोनियुद्भिःशतिनीभिरध्वर ँ सह
स्रिणीभिरुपयाहियज्ञम् ॥ वायोऽअस्मिन्त्सवनेमादयस्वयूयंपातस्वस्तिभिःसदानः ॥ इति वायव्यां वायुं प्रणमेत् ॥ ६ ॥ ॐ त्वय ँ सोम
व्रतेतवमनस्तनूषुबिभ्रतः ॥ प्रजावन्तःसचेमहि ॥ इत्युदीच्यां कुबेरं प्रणमेत् ॥ ७ ॥ ॐ तमीशानंजगतस्तस्थुषस्पतिंधियंजिन्वमवसे
हूमहेव्वयम् ॥ पूषानोयथावेदसामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये ॥ इत्यैशान्यामीश्वरं प्रणमेत् ॥ ८ ॥ ॐ अस्मेरुद्रामेहनापर्वतासोवृत्र
हत्येभरहूतौसजोषाः ॥ यः श ँ सतेस्तुवतेधायिपज्रऽइन्द्रज्ज्येष्ठाऽअस्माँ २ ऽअवन्तुदेवाः ॥ इत्यूर्ध्वं ब्रह्माणं प्रणमेत् ॥ ९ ॥ ॐ
स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी ॥ यच्छानःशर्म्मसप्रथाः ॥ इत्यधः पृथ्वीं प्रणमेत् ॥ १० ॥ एवं संपुटं कृत्वा चतुर्थं रक्षा
न्यासं कुर्यात् ॥[1] ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टंय्यज्ञ ँ समिमंदधातु ॥ व्विश्वेदेवासऽइहमादयन्ता
मो ३ म् प्रतिष्ठ ॥ इति गुह्ये ॥ १ ॥ ॐ अबोध्यग्निः समिधाजनानाम्प्रतिधेनुमिवायतीमुषासम् ॥ यह्वाऽइवप्प्रवयामुज्जिहानाःप्रभानवः
सिस्रतेनाकमच्छ ॥ इति जठरानले ॥ २ ॥ ॐ मूर्द्धानंदिवोऽअरतिंपृथिव्यावैश्वानरमृतऽआजातमग्निम् ॥ कवि ँ सम्राजमतिथिं
जनानामासन्नापात्रंजनयंतदेवाः ॥ इति हृदये ॥ ३ ॥ ॐ मर्म्माणितेवर्म्मणाच्छादयामिसोमस्त्वाराजामृतेनानुवस्ताम् ॥ उरोर्व्वरीयोव्वरुण
स्तेकृणोतुजयन्तन्त्वानुदेवामदन्तु । इति मुखे ॥ ४ ॥ ॐ जातवेदायदिवापाकोसिविश्वतश्चक्षुरुतविश्वतोमुखोविश्वतोबाहुरुतव्विश्वत
स्पात् ॥ संब्बहुभ्यांधमतिसंपतत्रैर्द्यावाभूमीजनयन्देवऽएकः ॥ इति शिरसि ॥ ५ ॥ इति चतुर्थो न्यासः ॥ ४ ॥ ॐ यज्जाग्रतोदूरमुदैतिदैवं
तदुसुप्तस्यतथैवैति ॥ दूरङ्गमंज्ज्योतिषाञ्ज्योतिरेकंतन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ इति हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ येन कर्म्माण्यपसोमनीषिणो
यज्ञेकृण्वन्तिविदथेषुधीराः ॥ यदपूर्वंयक्ष्मन्तः प्रजानान्तन्मेमनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ इति शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ यत्प्रज्ञानमुतचेतो धृति
श्चयज्ज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु ॥ यस्मान्न ऋतेकिञ्चनकर्म्मक्रियतेतन्मेमनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ इति शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ येनेदम्भूतम्भुवनं

१—एवं यः संपुटं कुर्यात्स स्यात्कि.ल्बिषवर्जितः ॥ तं दीप्यमानमीक्षंते प्रेतचोराद्युपद्रवाः ॥ न पराभवितुं शक्ताः पलायंते विदूरतः ॥

भविष्यत्परिगृहीतममृतेनसर्वम् ॥ येनयज्ञस्तायतेसप्तहोतातन्मेमनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ इति कवचायहुं ॥ ४ ॥ॐ यस्मिन्नृचः सामयजूर्ठःषियस्मिन्प्रतिष्ठितारथनाभाविवाराः॥यस्मिश्चित्तर्ठंसर्वमोतम्प्रजानान्तन्मेमनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ इति नेत्रत्रयाय वौषट्॥५॥ ॐसुषारथिरश्वानिवयन्मनुष्यान्नेनीयतेभीशुभिर्व्वाजिनऽइव॥ हृत्प्रतिष्ठंयदजिरञ्जविष्ठन्तन्मेमनः शिवसंकल्पमस्तु॥ इत्यस्त्राय फट् ॥६॥ इति पंचमो न्यासः ॥ ५ ॥इति पंचन्यासान्कृत्वा पुनः षडंगन्यासं कुर्य्यात् ॥ ॐ यज्जाग्रत इत्यादिशिवसंकल्पांते ॐ हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ सहस्रशीर्षापुरुष इत्यादिपुरुषसूक्तांते शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ अद्भ्यः संभूत इत्याद्युत्तरनारायणांते शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ आशुःशिशानइत्यप्रतिरथांते कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ विभ्राड्बृहदित्यादिसूक्तांते नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ नमस्तेरुद्रमन्यव इत्यादिशतरुद्रियांते अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति षडंगन्यासः ॥ एवं न्यासाविधिं कृत्वा साष्टाङ्गं प्रणम्य अष्टभिर्मंत्रैर्नमस्कारं कुर्यात् ॥ ॐ हिरण्यगर्भःसमवर्तताग्रेभूतस्यजातः पतिरेकआसीत् ॥ सदाधारपृथिवींद्यामुतेमांकस्मैदेवायहविषाविधेम॥१॥ यः प्राणतो०॥२॥ॐ ब्रह्मजज्ञानम्प्रथमंपुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोऽवेनऽआवः ॥ सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविवः ॥ ३ ॥ ॐ महीद्यौः पृथिवीचन इमंयज्ञंमिमिक्षताम् ॥ पिपृतान्नोभरीमभिः॥ ४ ॥ उपश्वासय० ५ अग्नेनय० ६ यातेअग्ने० ७ इमंयम० ८ इत्यष्टावृचः पठित्वा आत्मानं रुद्ररूपं ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ कैलासाचलसन्निभं त्रिनयनं पंचास्यमंबायुतं नीलग्रीवमहीशभूषणधरं व्याघ्रत्वचा प्रावृतम्॥ अक्षस्रग्वरकुंडिकाभयकरं चांद्रीं कलां बिभ्रतं गंगांभोविलसज्जटं दशभुजं वंदे महेशं परम्॥१॥इति ध्यात्वा लिंगतोभद्रमंडले सर्वतोभद्रमंडले वा स्वेस्वे स्थाने मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवता आवाह्य"ॐ मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः"इति पीठदेवताःसंपूज्य पीठशक्तीः पूजयेत्॥ तत्रक्रमः। पूर्वादिषु ॐ वामायै नमः ॥१॥ ॐ ज्येष्ठायै नमः ॥२॥ ॐ रौद्र्यै नमः ॥३॥ ॐ काल्यै नमः ॥४॥ ॐ कलविकरिण्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ बलविकरिण्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ बलप्रमथिन्यै नमः ॥ ७ ॥ ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः ॥ ८ ॥ पीठमध्ये। ॐ मनोन्मन्यै नमः

॥ ९ ॥ इति नव पीठशक्तीः पूजयेत्॥ ततः । स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रमग्न्युत्तारणपूर्वकम् "ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मकशक्तियुक्तायानंताय योगपीठात्मने नमः" इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः पद्धतिमार्गेण संपूज्य देवाज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्। पुष्पांजलिमादाय ॐ संविन्मयः परोदेवः परामृतरसप्रिय॥ अनुज्ञां रुद्र मे देहि परिवारार्चनाय मे॥१॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा आवरणपूजामारभेत्। तत्र क्रमः। पश्चिमादि चतुर्दिक्षु क्रमेण। ॐ सद्योजाताय नमः। सद्योजातश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ १ ॥ इति सर्वत्र ॥ ॐ वामदेवाय नमः। वामदेवश्रीपा० ॥२॥ ॐ अघोराय नमः। अघोरश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ तत्पुरुषाय नमः। तत्पुरुषश्रीपा० ॥ ४ ॥ मध्ये ॐ ईशानाय नमः। इशानश्री० ॥ ५ ॥ इति पंचमूर्तीः पूजयेत्। ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य "ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥" इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घ्याद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत्। इति प्रथमावरणम्॥१॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतराले प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण। ॐ नंदिने नमः। नंदिश्रीपा० ॥१ ॥ ॐ महाकालाय नमः। महाकालीश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ गणेश्वराय नमः। गणेश्वरश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ वृषभाय नमः। वृषभश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ भृंगिरिटये नमः। भृंगिरिटिश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ स्कंदाय नमः। स्कंदश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ उमायै नमः। उमाश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ चंडेश्वराय नमः। चंडेश्वरश्रीपा० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्। इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततः षोडशदले पूर्वादिक्रमेण। ॐ अनंताय नमः। अनंतश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ सूक्ष्माय नमः। सूक्ष्मश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ शिवाय नमः। शिवश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ एकपादाय नमः। एकपादश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ एकरुद्राय नमः। एकरुद्रश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ त्रिमूर्तये नमः। त्रिमूर्तिश्रीपा०

१–प्रणम्य जगतामीशमुमादेहार्द्धधारिणम् ॥ यन्त्रोद्धारमहं वक्ष्ये रुद्रकल्पानुसारतः ॥ मध्ये वृत्तं समालिख्य तन्मध्ये च दशाक्षरम् ॥ बहिरष्टदलं पद्मं ततः षोडशपत्रकम् ॥ चतुर्विंशतिपत्राढ्यं द्वात्रिंशत्पत्रकं तथा ॥ चत्वारिंशत्पत्रकं तु वृत्तं सूर्यसमप्रभम् ॥ पंचपद्मात्मकं वृत्तं चतुरस्रं च भूगृहम् ॥ सत्वं रजस्तमश्चेति त्रिगुणैः परितो वृतम् ॥ चतुर्द्वारं द्वारदेशे बहिर्नागसमावृतम् ॥ रुद्रपीठमिति ख्यातं देवतास्तत्र विन्यसेत ॥ चत्वारिंशच्छतं चैक देवतानामुदाहृतम् ॥ कर्णिकामध्यदेशे तु रुद्रं पंचास्यमालिखेत् ॥

॥ ६ ॥ ॐ श्रीकंठाय नमः । श्रीकंठश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ वामदेवाय नमः । वामदेवश्रीपा० ॥ ८ ॥ ॐ ज्येष्ठाय नमः । ज्येष्ठश्री० ॥ ९ ॥ ॐ श्रेष्ठाय नमः । श्रेष्ठश्रीपा० ॥ १० ॥ ॐ रुद्राय नमः । रुद्रश्री० ॥ ११ ॥ ॐ कालाय नमः । कालश्रीपा० ॥ १२ ॥ ॐ कलविकरणाय नमः । कलविकरणश्रीपा० ॥ १३ ॥ ॐ बलाय नमः । बलश्रीपा० ॥ १४ ॥ ॐ बलविकरणाय नमः । बलविकरणश्रीपा० ॥ १५ ॥ ॐ बलप्रमथनाय नमः । बलप्रमथनश्रीपा० ॥ १६ ॥ इति षोडश देवताः पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् । इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततश्चतुर्विंशतिदले पूर्वादिक्रमेण । ॐ अणिमायै नमः । अणिमाश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ महिमायै नमः । मीहमाश्री० ॥ २ ॥ ॐ लघिमायै नमः । लघिमाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ गरिमायै नमः । गरिमाश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ प्राप्त्यै नमः । प्राप्तिश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ प्राकाम्यायै नमः । प्राकाम्याश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ ईशितायै नमः । ईशिताश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ वशितायै नमः । वशिताश्रीपा० ॥ ८ ॥ ॐ ब्राह्म्यै नमः । ब्राह्मीश्रीपा० ॥ ९ ॥ ॐ माहेश्वर्यै नमः । माहेश्वरीश्रीपा० ॥ १० ॥ ॐ कौमार्यै नमः । कौमारीश्रीपा० ॥११॥ ॐ वैष्णव्यै नमः । वैष्णवीश्रीपा० ॥ १२ ॥ ॐ वाराह्यै नमः । वाराहीश्रीपा० ॥१३॥ ॐ इन्द्राण्यै नमः । इन्द्राणीश्रीपा० ॥ १४ ॥ ॐ चामुंडायै नमः । चामुंडाश्रीपा० ॥ १५ ॥ ॐ चंडिकायै नमः । चंडिकाश्रीपा० ॥ १६ ॥ ॐ असितांगभैरवाय नमः । असितांगभैरवश्रीपा० ॥ १७ ॥ ॐ रुरुभैरवाय नमः । रुरुभैरवश्रीपा० ॥ १८ ॥ ॐ चंडभैरवाय नमः । चंडभैरवश्रीपा० ॥ १९ ॥ ॐ क्रोधभैरवाय नमः । क्रोधभैरवश्रीपा० ॥ २० ॥ ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः । उन्मत्तभैरवश्रीपा० ॥ २१ ॥ ॐ कालभैरवाय नमः । कालभैरवश्रीपा० ॥ २२ ॥ ॐ भीषणभैरवाय नमः । भीषणभैरवश्रीपा० ॥ २३ ॥ ॐ संहारभैरवाय नमः । संहारभैरवश्रीपा० ॥ २४ ॥ इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति चतुर्थावरणम् ॥ ४ ॥ ततो द्वात्रिंशत्पत्रके पूर्वादिक्रमेण । ॐ भवाय नमः । भवश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ शर्वाय नमः । शर्वश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ ईशानाय नमः । ईशानश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ पशुपतये नमः । पशुपतिश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ रुद्राय नमः । रुद्रश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ उग्रायः नमः । उग्रश्रीपा० ॥ ६ ॥

ॐ भीमाय नमः। भीमश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ महादेवाय नमः। महादेवश्रीपा० ॥ ८ ॥ ॐ अनंताय नमः। अनंतश्रीपा० ॥ ९ ॥ ॐ वासुकये नमः। वासुकिश्रीपा० ॥ १० ॥ ॐ तक्षकाय नमः। तक्षकश्रीपा० ॥ ११ ॥ ॐ कुलीरकाय नमः। कुलीरकश्रीपा० ॥ १२ ॥ ॐ कर्कोटकाय नमः। कर्कोटकश्रीपा० ॥ १३ ॥ ॐ शंखपालाय नमः। शंखपालश्रीपा० ॥ १४ ॥ ॐ कंबलाय नमः। कंबलश्रीपा० ॥ १५ ॥ ॐ अश्वतराय नमः। अश्वतरश्रीपा०[1] ॥ १६ ॥ ॐ वैन्याय नमः। वैन्यश्रीपा० ॥ १७ ॥ ॐ पृथवे नमः। पृथुश्रीपा० ॥ १८ ॥ ॐ हैहयाय नमः। हैहयश्रीपा० ॥ १९ ॥ ॐ अर्जुनाय नमः। अर्जुनश्रीपा० ॥ २० ॥ ॐ शाकुंतलेयाय नमः। शाकुंतलेयश्रीपा० ॥ २१ ॥ ॐ भरताय नमः। भरतश्रीपा० ॥ २२ ॥ ॐ नलाय नमः। नलश्रीपा० ॥ २३ ॥ ॐ रामाय नमः। रामश्रीपा०[2] ॥ २४ ॥ ॐ हिमवते नमः। हिमवच्छ्रीपा० ॥ २५ ॥ ॐ निषधाय नमः। निषधश्रीपा० ॥ २६ ॥ ॐ विंध्याय नमः। विंध्यश्रीपा० ॥ २७ ॥ ॐ माल्यवते नमः। माल्यच्छ्रीपा० ॥ २८ ॥ ॐ पारियात्राय नमः। पारियात्रश्रीपा० ॥ २९ ॥ ॐ मलयाय नमः। मलयश्रीपा० ॥ ३० ॥ ॐ हेमकूटाय नमः। हेमकूटश्रीपा० ॥ ३१ ॥ ॐ गंधमादनाय नमः। गंधमादनश्रीपा०[3] ॥ ३२ ॥ इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्। इति पंचमावरणम् ॥ ५ ॥ ततः चत्वारिंशद्दले पूर्वादिक्रमेण। ॐ इन्द्राय नमः। इन्द्रश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ अग्नये नमः। अग्निश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ यमाय नमः। यमश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ वरुणाय नमः। वरुणश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ वायवे नमः। वायुश्रीपा० ॥ ६ ॥ कुबेराय नमः। कुबेरश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ ईशानाय नमः ईशानश्रीपा० ॥ ८ ॥ ॐ शच्यै नमः। शचीश्रीपा० ॥ ९ ॥ ॐ स्वाहायै नमः। स्वाहाश्रीपा० ॥ १० ॥ ॐ वाराह्यै नमः। वाराहीश्रीपा० ॥ ११ ॥ ॐ खड्गिन्यै नमः। खड्गिनीश्रीपा० ॥ १२ ॥ ॐ वारुण्यै नमः। वारुणीश्रीपा० ॥ १३ ॥ ॐ वायव्यै नमः। वायवीश्रीपा० ॥ १४ ॥ ॐ कौबेर्यै नमः। कौबेरी

१ इति नागाष्टकम्। २ इति नृपाष्टकम्। ३ इति गिर्यष्टकम्।

श्रीपा० ॥ १५ ॥ ॐ ईशान्यै नमः । ईशानीश्रीपा० ॥ १६ ॥ ॐ वज्राय नमः । वज्रश्रीपा० ॥ १७ ॥ ॐ शक्तये नमः । शक्तिश्रीपा० ॥ १८ ॥ ॐ दंडाय नमः । दंडश्रीपा० ॥ १९ ॥ ॐ खड्गाय नमः । खड्गश्रीपा० ॥ २० ॥ ॐ पाशाय नमः । पाशश्रीपा० ॥ २१ ॥ ॐ अंकुशाय नमः । अंकुशश्रीपा० ॥ २२ ॥ ॐ गदायै नमः । गदाश्रीपा० ॥ २३ ॥ ॐ त्रिशूलाय नमः । त्रिशूलश्रीपा० ॥ २४ ॥ ॐ ऐरावताय नमः । ऐरावतश्रीपा० ॥ २५ ॥ ॐ मेषाय नमः । मेषश्रीपा० ॥ २६ ॥ ॐ माहिषाय नमः । महिषश्रीपा० ॥ २७ ॥ ॐ प्रेताय नमः । प्रेतश्रीपा० ॥ २८ ॥ ॐ मकराय नमः । मकरश्रीपा० ॥ २९ ॥ ॐ हारिणाय नमः । हरिणश्रीपा० ॥ ३० ॥ ॐ नराय नमः । नरश्रीपा० ॥ ३१ ॥ ॐ वृषभाय नमः । वृषभश्रीपा० ॥ ३२ ॥ ॐ ऐरावताय नमः । ऐरावतश्रीपा० ॥ ३३ ॥ ॐ पुंडरीकाय नमः । पुंडरीकश्रीपा० ॥ ३४ ॥ ॐ वामनाय नमः । वामनश्रीपा० ॥ ३५ ॥ ॐ कुमुदाय नमः । कुमुदश्रीपा० ॥ ३६ ॥ ॐ अंजनाय नमः । अंजनश्रीपा० ॥ ३७ ॥ ॐ पुष्पदन्ताय नमः । पुष्पदन्तश्रीपा० ॥ ३८ ॥ ॐ सार्वभौमाय नमः । सार्वभौमश्रीपा० ॥ ३९ ॥ ॐ सुप्रतीकाय नमः । सुप्रतीकश्रीपा० ॥ ४० ॥ इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति षष्ठावरणम् ॥ ६ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण पुनः ईन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयेत् ॥ ततो भूपुराभ्यंतरे आग्नेय्याम् ॐ विरूपाक्षाय नमः । विरूपाक्षश्रीपा० ॥ १ ॥ नैर्ऋते ॐ विरूपाय नमः । विरूपश्रीपा० ॥ २ ॥ वायव्याम् ॐ पशुपतये नमः । पशुपतिश्रीपा० ॥ ३ ॥ ऐशान्याम् ॐ ऊर्ध्वलिंगाय नमः । ऊर्ध्वलिंगश्रीपा० ॥ ४ ॥ इति पूजयेत् । ततो भूपुराद्बहिः पूर्वादिक्रमेण । ॐ विप्रवर्णाय श्वेतरूपाय सहस्रफणमंडिताय शेषाय नमः । शेषश्रीपा० ॥ १ ॐ वैश्यवर्णाय नीलरूपाय पंचाशत्फणायोत्तुंगकायाय तक्षकाय नमः । तक्षकश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ विप्रवर्णाय कुंकुमरूपाय सहस्रफणमंडिताय अनन्ताय नमः । अनन्तश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ क्षत्रियवर्णाय पीतरूपाय सप्तशतफणमंडितायोत्तुंगकायाय वासुकये नमः । वासुकिश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ क्षत्रियवर्णाय पीतरूपाय सप्तशतफणमंडिताय शंखपालाय नमः । शंखपालश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ वैश्यवर्णाय कृष्णरूपाय पंचशतफण

मंडितायोत्तुंगकायाय महापद्माय नमः । महापद्मश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ शूद्रवर्णाय कृष्णरूपाय त्रिंशत्फणमंडिताय कंबलाय नमः । कंबल श्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ शूद्रवर्णाय श्वेतरूपाय त्रिंशत्फणयुक्ताय कर्कोटकाय नमः । कर्कोटकश्रीपा० ८ ॥ इति सप्तमावरणं पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति सप्तमावरणम्॥ ७ ॥ एवमावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनांतं संपूज्य बद्धांजलिपूर्वकं प्रार्थयेत् ॥ "ॐ नमो विरंचिविष्ण्वीशभेदिने परमात्मने ॥ सर्गसंस्थितिसंहारव्यापृतव्यक्तमूर्तये ॥ १ ॥ नमश्चतुर्धाप्रोद्भूतभूतभीतात्मनो भुवः ॥ भूरिभारार्ति संहर्त्रे भूतनाथाय शूलिने ॥ २ ॥ विश्वग्रासाय विकसत्कालकूटविषाशिने ॥ तत्कालांकांकितग्रीवनीलकंठाय ते नमः ॥ ३ ॥ नमो ललाटनयनप्रोल्लसत्कृष्णवर्त्मने ॥ ध्वस्तस्मरनिरस्ताधियोगिध्याताय शंभवे ॥ ४ ॥ नमो देहार्द्धकांताय दग्धदक्षाध्वराय च ॥ चतुर्वर्गेष्ट सिद्ध्यर्थदायिने मायिनेऽणवे ॥ ५ ॥ स्थूलाय मूलभूताय शूलवारितविद्विषे ॥ कालहंत्रे नमश्चंद्रखंडमण्डितमौलये ॥ ६ ॥ दिग्वाससे कपर्दांतभ्रांताहिशरादिंदवे ॥ देवदैत्योरगेन्द्रादिमौलिघृष्टांघ्रये नमः ॥ ७ ॥ भस्मासक्ताय भक्ताय भुक्तिमुक्तिप्रदायिने ॥ सकृद्व्यक्त स्वरूपाय शंकराय नमोनमः ॥ ८ ॥ नमोंऽधकांतकारिपवेऽसुरद्विषे नमोऽस्तु ते द्विरदवरावभेदिने ॥ विषोल्लसत्फणिकुलबद्धमूर्तये नमः सदा वृषवरवाहनाय ते ॥ ९ ॥ वियन्मरुद्धुतवहवायुकुंभिनीमखेशरव्यमृतमयूखमूर्तये ॥ नमः सदा नरकायावभेदिने भवेह नो भवभयभंग कृद्विभो ॥ १० ॥" इति रुद्रस्तवेन स्तुत्वा साष्टांगं प्रणम्य जपं कुर्यात् । अस्य पुरश्चरणं दशलक्षजपः । अयुतहोमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जन ब्राह्मणभोजनं च कुर्य्यात् । एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् । "प्रयोगान् पूर्वमंत्रोक्तान् कुर्वीतात्र दशाक्षरे ॥ दशाक्षरं जपन् विप्रो रुद्रजापी भवेत्सदा ॥१॥ एवमर्चन्महादेवं पंचांगन्यासपूर्वकम्॥ दशाक्षरजपासको न सीदेत्स्वेष्टसाधने ॥२॥ मनोहराणि गेहानि सुंदर्यो वामलोचनाः॥ धनमिच्छापूरणांतं लभते शिवसेवनात्॥६॥" इति मंत्रमहोदधिशांतिसारादिप्रोक्तं दशाक्षररुद्रमंत्रविधानम् ॥ अथ त्वरितरुद्रमंत्रपुरश्चरणप्रयोगः॥ (हेमाद्रिशांतिरत्नेषु) मंत्रो यथा—"ॐ यो रुद्रोऽग्नौयोऽप्सुयओषधीषुयोरुद्रोविश्वाभुवनाविवेश तस्मै रुद्राय नमोऽस्तु" इत्येकत्रिंशदक्षरो मंत्रः। अस्य विधानम् । अस्य त्वरितरुद्रमंत्रस्य अथर्वण ऋषिः। अनुष्टुप्छंदः । त्वरितरुद्रसंज्ञिका देवता ।

नमः इति बीजम् । अस्तु इति शक्तिः । त्वरितरुद्रप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । ॐ आथर्वणर्षये नमः शिरसि॥१॥अनुष्टुप्छंदसे नमः मुखे ॥२॥ त्वरितरुद्रसंज्ञकदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ नमः इति बीजाय नमः गुह्ये॥ ४ ॥ अस्तु इति शक्तये नमः पादयोः ॥५॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ६॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ यो रुद्रः अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ अग्नौ तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ योऽप्सु मध्यमाभ्यां नमः ॥३॥ ॐ य ओषधीषु अनामिकाभ्यां नमः॥४॥ ॐ यो रुद्रो विश्वाभुवना विवेश कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥५॥ॐ तस्मै रुद्राय नमोऽस्तु करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ यो रुद्रो हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ अग्नौ शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ योऽप्सु शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ य ओषधीषु कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ तस्मै रुद्राय नमोऽस्तु अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ॐ यः पादयोः ॥ १ ॥ ॐ रुद्रः जंघयोः ॥ २ ॥ ॐ अग्नौ जानुनोः ॥ ३ ॥ ॐ यः ऊर्वोः ॥ ४ ॥ ॐ अप्सु गुल्फयोः ॥ ५ ॥ ॐ यः मेढ्रे ॥ ६ ॥ ॐ ओषधीषु नाभौ ॥ ७ ॥ ॐ यः उदरे ॥ ८ ॥ ॐ रुद्रः हृदये ॥ ९ ॥ ॐ विश्वा कंठे ॥ १० ॥ ॐ भुवना मुखे ॥ ११ ॥ ॐ विवेश नासिकायाम् ॥ १२ ॥ ॐ तस्मै नेत्रयोः ॥ १३ ॥ ॐ रुद्राय भ्रुवोः ॥ १४ ॥ ॐ नमः ललाटे ॥ १५ ॥ ॐ अस्तु शिरसि ॥ १६ ॥ इति पादादिन्यासः ॥ ॐ यः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ रुद्रः ललाटे ॥ २ ॥ ॐ अग्नौ नेत्रयोः ॥ ३ ॥ ॐ यः कर्णयोः ॥ ४ ॥ ॐ अप्सु नासिकायाम् ॥ ५ ॥ ॐ यः मुखे ॥ ६ ॥ ॐ ओषधीषु बाह्वोः ॥ ७ ॥ ॐ यः हृदये ॥ ८ ॥ ॐ रुद्रः नाभौ ॥ ९ ॥ ॐ विश्वा गुह्ये ॥ १० ॥ ॐ भुवना अपाने ॥ ११ ॥ ॐ विवेश ऊर्वोः ॥ १२ ॥ ॐ तस्मै जानुनोः ॥ १३ ॥ ॐ रुद्राय जंघयोः ॥ १४ ॥ ॐ नमः गुल्फयोः ॥ १५ ॥ ॐ अस्तु चरणयोः॥१६॥इति मूर्धादिन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा "ॐ एषतेरुद्रभागःसहस्वस्त्रांबिकयातंजुषस्व स्वाहा" इत्यादिमंत्रद्वारा शुभदामुद्रां[1] प्रदर्श्य ध्यानं कुर्य्यात् । अथ ध्यानम् यथा—ॐ रुद्रं चतुर्भुजं देवं त्रिनेत्रं वरदाभयम् ॥ दधानमूर्ध्वं हस्ताभ्यां शूलं डमरुमेव च ॥ १ ॥

१ अंगुलयग्राणि मूले तु कृत्वांगुष्ठेन पीडयेत् । सा मुद्रा शुभदा प्रोक्ता सेव शांतिप्रदायिनी ॥ इति शुभदा मुद्रा ॥

अंकसंस्थामुमां पद्मे दधानं च करद्वये ॥ आद्ये करद्वये कुंभं मातुलुंगं च बिभ्रतम् ॥ २ ॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य भेदपक्षे शिवे पीठे गंधादिपूजनं कृत्वा अधःशाय्येकभक्ताशी जपं कुर्य्यात् । अस्य पुरश्चरणं विंशतिसहस्रजपः । तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जन ब्राह्मणभोजनं च कुर्य्यात् । एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे च मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च—अधःशाय्येकभक्ताशी ब्रह्मचारी हविष्यभुक् ॥ अयुते द्वे जपेत्सर्वं प्रत्यहं पूजयेच्छिवम् ॥ १ ॥ जुहुयात्तद्दशांशेन तद्दशांशेन तर्पणम् ॥ मार्जनं तद्दशांशेन तद्दशांशेन भोजयेत् ॥ २ ॥ एवं कृते तु सिद्धिः स्यात्फलार्थं तु ततो जपेत् ॥ पुरश्चरणमेवं तु कृत्वा संपूज्य शंकरम् ॥ ३ ॥ जपेत्त्वीरतरुद्रं तु सर्वकामसमृद्धये ॥ श्रीकामः शांतिकामो वा जपेल्लक्षमतंद्रितः ॥ ४ ॥ बिल्वसमिद्भिः श्रीकामः शांतिकामः शमीमयैः ॥ जुहुयादाज्यसंमिश्रैस्तर्पणं मार्जनं ततः ॥५॥ जप्त्वा लक्षं सुपुत्रार्थी पायसं जुहुयात्ततः ॥ वित्तार्थी श्रीफलैर्होममायुष्कामस्तु दूर्वया ॥६ ॥ तिलैराज्येन संमिश्रैस्तेजस्कामो घृतेन वै ॥ व्रीहिभिः पशुकामस्तु राष्ट्रकामस्तु वै यवैः ॥७॥ पायसं सर्वकामेन होतव्यं शर्करान्वितम् ॥ मध्वक्ता न्याम्रपत्राणि तीव्रज्वरविनाशिना ॥८॥ हिमभूतज्वरार्थं तु गुडूचीर्भिर्हुनेद् ध्रुवम् ॥ सर्वरोगविनाशाय सूर्यस्याभिमुखो जपेत् ॥ ९ ॥ अयुते द्वे जपाहोमः कार्योऽर्कसमिधा शुभः ॥ औदुंबरैरन्नकामस्तेजस्कामस्तु बादरैः ॥ १० ॥ अपामार्गसमिद्धोमाद्भूतबाधा विनश्यति ॥ ग्रहबाधाविनाशाय जपेदश्वत्थसन्निधौ ॥ ११ ॥ लवणान्वितदध्यक्तास्तीक्ष्णाग्राश्वत्थसंभवाः ॥ हूयंते समिधः शुष्काः स्वाहांतं मंत्रमुच्चरेत् ॥ १२ ॥ दशपंचाहुतीर्हुत्वा गच्छ गच्छेत्युदीरयेत् ॥ यावद्धोमो बलिर्देयः पुरुषाहारसम्मितः ॥ १३ ॥ एवं कृते प्रमुच्येत पुमान् स्त्री वा महाग्रहात् ॥ जुहुयाच्छतपत्राणि संहृष्टो जयमाप्नुयात् ॥ १४ ॥ लाजहोमेन कन्यार्थी कन्यां प्राप्नोति रूपिणीम् ॥ लाजाश्च मधुसंमिश्राः श्वेतपुष्पाणि वा पुनः ॥ १५ ॥ हूयंते हरिते देशे तस्य विश्वं वशे भवेत् ॥ वामांगमुत्तमं कार्य्यं स्त्रीवशित्वे विचक्षणैः ॥ १६ ॥ हस्त्यश्वामात्य शांत्यर्थं तिलैश्चाज्येन संयुतैः ॥ होमस्थाने तु संस्थाप्य कुंभमेकं जलान्वितम् ॥ १७ ॥ मंत्रं जप्त्वा सहस्रं तु कुंभं स्पृष्ट्वा प्रयत्नतः ॥ अभिषेकं तु तेषां वै शालां प्रोक्ष्य प्रदक्षिणम् ॥ १८ ॥ ग्रहग्रामादिशांतिस्तु सर्वैः कार्या तु पूर्ववत् ॥ वास्तुपूजा प्रकर्तव्या प्राच्यां दिशि

पदे शुभे ॥ १९ ॥ ईशानाय बलिः कार्यः पशूनां पतये तथा ॥ एवं कृते पशूनां तु प्रजानां शांतिमाप्नुयात् ॥ २० ॥ अद्भुतेषु च सर्वेषु पशूनां ग्रामबाह्यतः ॥ उपविश्य जपेद्रुद्रं त्वरितं बहुभिः सह ॥२१॥ होमः पलाशसमिधा कर्तव्यो घृतसंयुजा ॥ ईशानाय बलिः कार्यो यस्यां दिशि तदद्भुतम् ॥ २२ ॥ तदाशापतये चैव पशूनां पतये तथा ॥ वृष्टिकामो जपेल्लक्षं तिलैर्होमो घृतान्वितैः ॥ २३ ॥ बलिपूजा प्रकर्तव्या शिवस्य वरुणस्य च ॥ सर्वस्मिन्नपि चैवार्थे त्वरितस्य जपो भवेत् ॥२४॥ अयुतद्वयजाप्यैस्तु यावल्लक्षं ततोऽधिकम् ॥ एवं कृते तु सिद्धिः स्यान्निष्कामः प्राप्नुयाच्छिवम्॥२५॥ऐहिकामुष्मिकान्भोगान्भुक्त्वा सायुज्यमाप्नुयात् ॥ इत्येकत्रिंशदक्षरत्वरितरुद्रमंत्रपुरश्चरणम्।

॥ अथ दक्षिणामूर्त्तिमंत्रप्रयोगः ॥ अथ वक्ष्ये मंत्ररत्नं समस्तपुरुषार्थदम् ॥ अवाप्येन जतेन दिव्यं ज्ञानं मुनीश्वराः ॥ १ ॥ तत्रादौ षट्त्रिंशदक्षरमंत्रप्रयोगः (शारदातिलके) मंत्रो यथा—"ॐ ह्रीं दक्षिणामूर्तये तुभ्यं वटमूलनिवासने॥ ध्यानैकनिरतांगाय नमो रुद्राय शंभवे ह्रीं ॐ" इति षट्त्रिंशदक्षरमंत्रः ॥ अस्य दक्षिणामूर्त्तिमंत्रस्य शुक ऋषिः । अनुष्टुप् छंदः । दक्षिणामूर्तिशंभुर्देवता चतुर्विधपुरुषार्थ सिद्ध्ये जपे विनियोगः ॥ ॐ शुकऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ अनुष्टुप्छंदसे नमः मुखे ॥ २ ॥ दक्षिणामूर्तिशंभुदेवतायै नमः हृदि ॥३॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ह्रीं दक्षिणामूर्तये ह्रीं ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं तुभ्यं ह्रीं ॐ तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं वटमूलनिवासिने ह्रीं ॐ मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं ध्यानैकनिरतांगाय ह्रीं ॐ अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं नमो रुद्राय ह्रीं ॐ कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं शंभवे ह्रीं ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ह्रीं दक्षिणामूर्तये ह्रीं ॐ हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं तुभ्यं ह्रीं ॐ शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं वटमूलनिवासिने ह्रीं ॐ शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं ध्यानैकनिरतांगाय ह्रीं ॐ कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं नमो रुद्राय ह्रीं ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॐ ह्रीं शंभवे ह्रीं ॐ अस्त्राय फट् । इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ५ ॐ नमः मूर्ध्नि ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं नमः भाले ॥ २ ॥ ॐ दं नमः दक्षिणनेत्रे ॥ ३ ॥ ॐ क्षिं नमः वामनेत्रे ॥ ४ ॥ ॐ णां नमः दक्षिणकर्णे ॥ ५ ॥ ॐ मूं नमः वामकर्णे ॥ ६ ॥

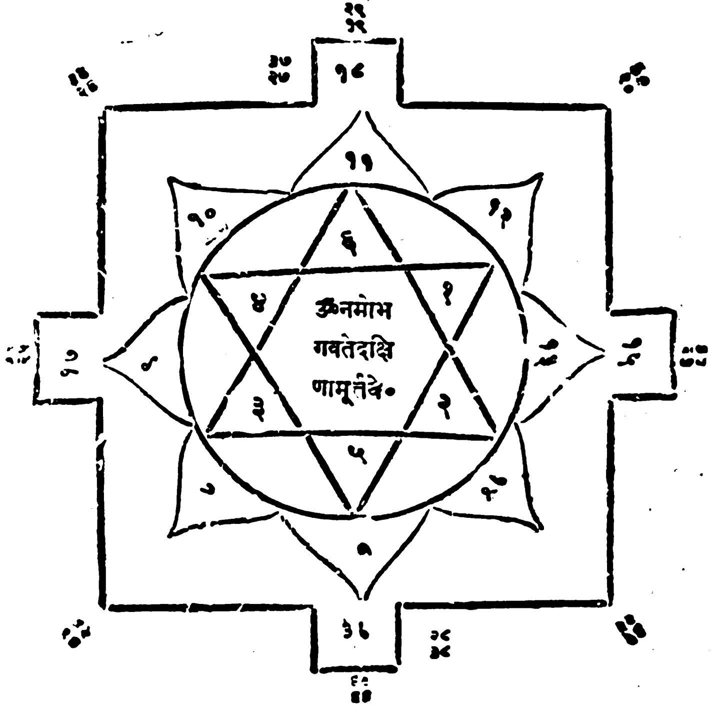
ॐ तें नमः दक्षिणगंडे ॥ ७ ॥ ॐ यें नमः वामगंडे ॥ ८ ॥ ॐ तुं नमः नासिकयोः ॥ ९ ॥ ॐ भ्यं नमः मुखे ॥१०॥ ॐ वं नमः दक्षिण हस्तमूले ॥ ११ ॥ ॐ टं नमः दक्षकूर्परे ॥ १२ ॥ ॐ मूं नमः दक्षिणमणिबंधे ॥ १३ ॥ ॐ लं नमः दक्षहस्तांगुलिमूले ॥ १४ ॥ ॐ निं नमः दक्षहस्तांगुल्यग्रे ॥ १५ ॥ ॐ वां नमः वामहस्तमूले ॥ १६ ॥ ॐ सिं नमः वामकूर्परे ॥ १७ ॥ ॐ नें नमः वाम मणिबंधे ॥ १८ ॥ ॐ ध्यां नमः वामहस्तांगुलिमूले ॥ १९ ॥ ॐ नैं नमः वामहस्तांगुल्यग्रे ॥ २० ॥ ॐ कं नमः गले ॥ २१ ॥ ॐ निं नमः स्तनयोः ॥ २२ ॥ ॐ रं नमः हृदि ॥ २३ ॥ ॐ तां नमः नाभौ ॥ २४ ॥ ॐ गां नमः कट्याम् ॥ २५ ॥ ॐ यं नमः गुह्ये ॥ २६ ॥ ॐ नं नमः दक्षिणपादमूले ॥ २७ ॥ ॐमों नमः दक्षिणजानुनि ॥ २८ ॥ ॐ रुं नमः दक्षिणगुल्फे ॥ २९ ॥ ॐ द्रां नमः दक्षिणपादमूले ॥ ३० ॥ ॐ यं नमः दक्षिणपादांगुल्यग्रे ॥ ३१ ॥ ॐ शं नमः वामपादमूले ॥ ३२ ॥ ॐ भं नमः वामजानुनि ॥ ३३ ॥ ॐ वें नमः वामगुल्फे ॥ ३४ ॥ ॐ ह्रीं नमः वामपादांगुलिमूले ॥ ३५ ॥ ॐ ॐ नमः वामपादांगुल्यग्रे ॥ ३६ ॥ इति मंत्रवर्णन्यासः ॥"ॐ ह्रीं दक्षिणामूर्तये तुभ्यं वटमूलनिवासने ॥ ध्यानैकनिरतांगाय नमो रुद्राय शंभवे ह्रीं ॐ"इति मंत्रेण मूर्धादि पादपर्यंतं व्यापकं न्यासं कुर्यात्। इति न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत्॥ "ॐ हिमाचलतटे रम्ये सिद्धकिन्नरसेविते॥विविधद्रुमशाखाभिः सर्वतो वारितातपे ॥ १ ॥ सुपुष्पितैर्लताजालैराश्लिष्टकुसुमद्रुमैः ॥ शिलाविवरनिर्गच्छन्निर्झरानिलसेविते ॥ २ ॥ गायद्भृंगांगनासंघे नृत्यद्बर्हिकदंबके ॥ कूजत्कोकिलसंघेन मुखरीकृतदिङ्मुखे ॥ ३ ॥ परस्परविनिर्मुक्तमात्सर्यमृगसेविते ॥ आद्यैः शुकाद्यैर्मुनिभिरजस्रं समधिष्ठिते ॥ ४ ॥ पुरंदरमुखैर्देवैः सेवायातैर्विलोकितम् ॥ वटवृक्षं महोच्छ्रायं पद्मरागफलोज्ज्वलम् ॥ ५ ॥ गारुत्मतमयैः पत्रैर्निबिडैरुपशोभितम् ॥ नवरत्नमयाकल्पैर्लंबमानैरलंकृतम् ॥ ६ ॥ सजलैः स्थलजैः पुष्पैरामोदिभिरलंकृतम् ॥ शृण्वद्भिर्वेदशास्त्राणि शुकवृन्दैर्निषेवितम् ॥ ७ ॥ संसारतापविच्छेदकुशलच्छायमद्भुतम् ॥ विचिंत्य तस्य मूलस्थे रत्नसिंहासने शुभे ॥ ८ ॥ आसीनममिताकल्पं शरच्चंद्रनिभाननम् ॥ स्तूयमानं मुनिगणैर्दिव्यज्ञानाभिलाषिभिः ॥ ९ ॥ संस्मरेज्जगतामाद्यं दक्षिणामूर्तिमव्ययम् ॥ १० ॥ कैलासाद्रिनिभं

शशांकशकलस्फूर्जज्जटामंडितं नासालोकनतत्परं त्रिनयनं वीरासनाध्यासितम् ॥ मुद्राटंककुरंगजानुविलसत्पाणिं प्रसन्नाननं कक्षाबद्धभुजंगमं मुनिवृतं वंदे महेशं परम् ॥११॥" इति ध्यात्वा शिवपंचाक्षरोदिते पीठे पीठपूजां विधाय तामेव आवरणपूजां च कृत्वा जपं कुर्यात् । अस्य पुरश्चरणमयुतद्वयाधिकं त्रिलक्षं जपः । तथा च—अयुतद्वयसंयुक्तं गुणलक्षं जपेन्मनुम् ॥तद्दशांशं तिलैः शुद्धैर्जुहुयात्क्षीरसंयुतैः॥१॥ पंचाक्षरोदिते पीठे विधानेन प्रपूजयेत्॥उपचारैः समुत्पन्नैः पाद्याद्यैः परमेश्वरम् ॥२॥ एवं कृतपुरश्चर्यः सिद्धमन्त्रो भवेत्सुधीः ॥ भिक्षाहारो जपेन्मासं मनुमेनं जितेंद्रियः ॥ ३ ॥ नित्यं सहस्रमष्टार्द्धं परं विंदति वाङ्मयम् ॥ त्रिवारं जप्तमेतेन मनुना सलिलं पिबेत् ॥४॥ नित्यशो दक्षिणामूर्तिं ध्यायन्साधकसत्तमः ॥ शास्त्रव्याख्यानसामर्थ्यं लभते वत्सरांतरे ॥ ५ ॥ ब्राह्मोसैंधवसिद्धार्थवचाकुष्ठकणोत्पलैः ॥ सुगंधिसंयुतैः कल्कैः शृतं ब्राह्मीरसे घृतम् ॥ ६ ॥ मनुनानेन संजप्तमयुतं साधु साधितम् ॥ निपीतं कविताकांतिरक्षायुःश्रीधृतिप्रदम् ॥७॥ इति षट्त्रिंशदक्षरदक्षिणामूर्तिमंत्रप्रयोगः ॥ अथ द्वाविंशत्यक्षरदक्षिणामूर्तिमंत्रप्रयोगः ॥ (शारदातिलके) मंत्रो यथा—"ॐ नमो भगवते दक्षिणामूर्तये मह्यं मेधां प्रयच्छ स्वाहा ॥" इति द्वाविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य दक्षिणामूर्तिमंत्रस्य चतुर्मुख ऋषिः । गायत्री छन्दः । वेदव्याख्यानतत्परदक्षिणामूर्तिर्देवता । सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः ॥ ॐ चतुर्मुखर्षये नमः शिरसि ॥ १ ॥ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ दक्षिणामूर्तये देवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ ४ ॥ इति हृदयादिन्यासः ॥ ॐ आं ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ ईं ॐ तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ ऊं ॐ मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ ऐं ॐ अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ औं ॐ कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ अः ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ आं ॐ हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ईं ॐ शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ऊं ॐ शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ ऐं ॐ कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ औं ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ अः ॐ अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ इति न्यासविधिं कृत्वा पूर्ववत् वटमूलस्थं मंत्रदैवतं संचिन्त्य

१ यथा—तारुद्धैः स्वैरदीर्घैः षाडभंगानि कल्पयेत् । अथवा मन्त्रसंभूतैः पदैर्वा कल्पयेत्क्रमात् ।

ध्यायेत् ॥ स्फटिकरजतवर्णं मौक्तिकीमक्षमालाममृतकलशविद्याज्ञानमुद्राः कराग्रैः ॥ दधतमुरगकक्षं चन्द्रचूडं त्रिनेत्रं विधृतविविध भूषं दक्षिणामूर्तिमीडे ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा शिवपंचाक्षरोदिते पीठे पीठपूजां विधाय आवरणपूजां कुर्यात् । तत्र क्रमः । षट्कोणकेशरेषु अग्निकोणे ॐ आं ॐ हृदयाय नमः ॥ १ ॥ नैर्ऋते ॐ ईं ॐ शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ वायव्ये ॐ ऊं ॐ शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ऐशान्ये ॐ ऐं ॐ कवचाय हुं ॥ ४ ॥ देवतापूर्वे ॐ औं ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ देवपश्चिमे ॐ अः ॐ अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीं प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ॐ सरस्वत्यै नमः ॥ १ ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः ॥ २ ॥ ॐ सनकाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ सनन्दनाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ सनत्कुमाराय नमः ॥ ५ ॥ ॐ शुकाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ व्यासाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ गणेशाय नमः ॥ ८ ॥ इति पूजयेत् । ततः भूपुराभ्यंतरे पूर्वादिचतुर्दिक्षु ॐ सिद्धाय नमः ॥ १ ॥ ॐ गंधर्वाय नमः ॥ २ ॥ योगींद्राय नमः ॥ ३ ॥ ॐ विद्याधराय नमः ॥ ४ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततो भूपुरे इन्द्रादिदशदिक्पालान् । तद्बाह्ये वज्राद्यायुधानि च पूजयेत् । इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात् । अस्य पुरश्चरणं लक्षात्मको जपः । तथा च—लक्षमेकं जपेन्मंत्रं ब्रह्मचारिव्रते स्थितः ॥ जुहुयात्सघृतैः पद्मैर्दशांशं संस्कृतेऽनले ॥ १ ॥ इत्थं पूजादिभिः सिद्धे मंत्रेऽस्मिन्साधकोत्तमः ॥ वल्लभो जायते वाचां वाचस्पति

दक्षिणामूर्त्तिपूजनयंत्रम् ।



रितापरः ॥ २ ॥ मंत्रेणानेन संजप्तैर्विशुद्धैः सलिलैः सुधीः ॥ अभिषिंचेत्स्वशिरसि श्रियमारोग्यमाप्नुयात् ॥ ३ ॥ कंठेमात्र जले स्थित्वा जपेन्मंत्रं सहस्रकम् ॥ प्रत्यहं मंडलादर्वाक्कवीनामग्रणीर्भवेत् ॥४॥ गौर्या पार्श्वस्थया सार्द्धं श्रीकामी चिंतयन्विभुम् ॥ अयुतं प्रजपेन्मंत्रं भूयसीं श्रियमाप्नुयात् ॥ ५ ॥ भुंजानः प्रयतो मंत्री गोमूत्रे श्रृतमोदनम् ॥ भिक्षान्नमथवा मंत्रमयुतद्वितयं जपेत् ॥ ६ ॥ अश्रुतान्वेद शास्त्रादीन् व्याचष्टे नात्र संशयः ॥ सिद्धगंधर्वमुनिभिर्योगींद्रैरपि सेविते ॥७ ॥ ज्ञानवागर्थिनां प्रीत्यै कथितौ मंत्रनायकौ ॥ इति द्वाविंशत्य क्षरदक्षिणामूर्तिमन्त्रप्रयोगः ॥ अथ पार्थिवलिंगविधानम् ॥ (मंत्रमहोदधौ) अथ प्रातःकृत्यम् । नद्यादौ स्नात्वा स्वासने प्राङ्मुख उद ङ्मुखो वोपविश्य आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य मम श्रीमहादेवप्रसादार्थममुककामनार्थं वा अमुकसंख्यापरिमितपार्थिवलिंग पूजनं करिष्ये । इति संकल्प्य न्यासादिकं कुर्यात् । तद्यथा—ॐ ह्रां पृथिव्यै नमः हृदयाय नमः॥१॥ॐ ह्रां पृथिव्यै नमः शिरसे स्वाहा॥२॥ॐ ह्रां पृथिव्यै नमः शिखायै वषट् ॥३॥ॐ ह्रां पृथिव्यै नमः कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ ह्रां पृथिव्यै नमः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ ह्रां पृथिव्यै नमः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं कुर्यात् । ततो मृदमानीय शर्करा बहिष्कृत्य शुद्धपात्रे निधाय 'वं' इति सुधाबीजेन मृदमासिच्य पिंडं कृत्वाग्रे संस्थाप्य तस्मादल्पमृदं गृहीत्वा "ॐ ह्रींग्लौंगंग्लौंगं गणपतये ग्लौंगंह्रीं" इति मंत्रेण बालगणेश्वरं कृत्वा पीठे संस्थाप्य लिंगं कुर्यात् । तद्यथा—" ॐ नमो हराय" इति मंत्रेण बिभीतकफलमात्रमृदं गृहीत्वा " ॐ नमो महेश्वराय" इति मंत्रेण अंगुष्ठमानादधिकं वितस्तिमात्रावधि यथेष्टं लिंगं कृत्वा "ॐ नमः शूलपाणये" इति मंत्रेण पीठे लिंगं स्थापयेत्। एवं यथासंख्यं लिंगं कृत्वा अवशिष्टमृदा "ॐ ऐंहुंक्षुंक्लीं कुमाराय नमः" इति मंत्रेण कुमारं कृत्वा लिंगपंक्त्यंते संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कुर्यात् । ततः"ॐ नमः पिनाकिने इहागच्छ इह तिष्ठ"इति लिंगे शिवमावाह्य ध्यायेत् । अथ ध्यानम् ।"दक्षांकस्थं गजपतिमुखं प्रामृशन्द क्षदोष्णा वामोरुस्थं नगपतनयांके गुहं चापरेण ॥ इष्टाभीती परकरयुगे धारयन्निंदुकांतिरव्यादस्मांस्त्रिभुवननतो नीलकंठस्त्रिनेत्रः ॥१॥" इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य पाद्यादिपूजनं कुर्यात्। तद्यथा—'ॐ नमः पशुपतये'इति मंत्रेण स्नापयित्वा शतरुद्रियमंत्रेण अभिषेकं

कुर्यात् । ततः 'ॐ नमः शिवाय' इति मंत्रेण गंधपुष्पधूपदीपनैवेद्यान्यर्पयेत्। इति पूजां कृत्वावरणपूजां कुर्यात् । तद्यथा—पूर्वादिवामावर्तेन पूर्वे ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः ॥ १ ॥ ऐशान्ये ॐ भवाय जलमूर्तये नमः ॥ २ ॥ उत्तरे ॐ रुद्राय तेजोमूर्तये नमः ॥ ३ ॥ वायव्ये ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः ॥ ४ ॥ पश्चिमे ॐ भीमायाकाशमूर्तये नमः ॥ ५ ॥ नैर्ऋत्ये ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः ॥ ६ ॥ दक्षिणे ॐ महादेवाय चंद्रमूर्तये नमः ॥ ७ ॥ आग्नेये ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ मूर्तीः संपूज्य पर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयेत्। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य तिस्रः प्रदक्षिणाः कृत्वा स्तुतिपाठेन स्तुत्वा "ॐ नमः शिवाय" इति षडक्षरं यथाशक्ति जपित्वा "ॐ नमो महादेवाय" इति मंत्रेण विसृजेत् । ततो गणेशगुहौ स्वस्वमंत्राभ्यामेवा खिलोपचारैः संपूज्य विसजेत् । तथा च—पूजयेत्कार्य्यवशतो लक्षावधि सहस्रतः ॥ लक्षपार्थिवलिंगानां पूजनाद्भुवि मुक्तिभाक् ॥ १ ॥ लक्षं तु गुडलिंगानां पूजनात्पार्थिवो भवेत् ॥ या नारी गुडलिंगानि सहस्रं पूजयेत्सती ॥ २ ॥ भर्तुः सुखमखंडं सा प्राप्नोति पार्वती भवेत् ॥ नवनीतस्य लिंगानि संपूज्येष्टमवाप्नुयात् ॥ ३ ॥ भस्मनो गोमयस्यापि वालुकायास्तथा फलम् ॥ क्रीडंति पृथुका भूमौ कृत्वा लिंगं रजोमयम् ॥ ४ ॥ पूजयंति विनोदेन तेऽपि स्युः क्षितिनायकाः ॥ प्रातर्गोमयलिंगानि नित्यं यस्त्रीणि पूजयेत् ॥ ५ ॥ बृहतीबिल्वयोः पत्रैर्नैवेद्यं गुडमर्पयेत् ॥ एवं मासत्रयं कुर्वन्ननल्पं लभते धनम् ॥ ६ ॥ एकादशैव लिंगानि गोमयोत्थानि यो यजेत् ॥ प्रातर्मध्याह्नयोः सायं निशीथे प्रतिवासरम् ॥ ७ ॥ स सर्वाः सम्पदो यायात् षण्मासादेवमाचरन् ॥ एकादश यजेन्नित्यं शालिपिष्ट मयानि सः ॥ ८ ॥ लिंगानि मासमात्रेण स कल्मषचयं दहेत् ॥ स्फाटिकं पूजितं लिंगमेनोनिकरनाशनः ॥ ९ ॥ सर्वकामप्रदं पुंसा मुदुंबरसमुद्भवम् ॥ रेवाश्मजं सर्वसिद्धिप्रदं दुःखविनाशनम् ॥ १० ॥ यथाकथंचिल्लिंगस्य पूजा नित्यकृतेष्टदा ॥ यो यजेत्पिचुमंदोत्थैः पत्रैर्गोमयजं शिवम् ॥११॥ क्रुद्धं महेश्वरं ध्यायेत्स पराजयते रिपून् ॥ यो लिंगं पूजयेन्नित्यं शिवभक्तिपरायणः ॥१२॥ मेरुतुल्योऽपि तस्याशु

१—भटकटैया। २ पापसमूहनाशनः ।

पापराशिलयं व्रजेत्॥दोग्ध्रीणां तु गवां लक्षं यो दद्याद्वेदपाठिने ॥१३॥ पार्थिवं योऽर्चयेल्लिंगं तयोर्लिंगार्चको वरः ॥ चतुर्दश्यां तथाष्टम्यां पौर्णमास्यां विधुक्षये ॥ १४ ॥ पयसा स्नापयेल्लिंगं धरादानफलं व्रजेत्॥लिंगपूजां विधायाग्रे स्तोत्रं वा शतरुद्रियम् ॥१५॥ प्रजपेत्तन्मना भूत्वा शिवे स्वं विनिवेदयेत् ॥ यत्संख्याकं यजेल्लिंगं तन्मितं होममाचरेत् ॥१६॥ आज्यान्वितैस्तिलैरग्नौ घृतैर्वा पायसेन वा ॥शिवमंत्रेण[1] तस्यांते ब्राह्मणान् भोजयेच्छतम् ॥१७॥एवं कृते समस्तेष्टसिद्धिर्भवति निश्चितम्॥१८॥इति पार्थिवलिंगपूजनविधानम्॥इति शिवपटलः समाप्तः ॥ अथ शिवपूजापद्धतिप्रारम्भः ॥ तत्रादौ मंत्रानुष्ठानोपयोगि पूर्वकृत्यम् ॥ चन्द्रताराबलान्विते सुदिने सुमुहूर्ते तीर्थपुण्य क्षेत्रनिर्जनस्थानादावनुष्ठानयोग्यभूमिपरिग्रहणं कृत्वा तत्र मार्जनदहनखननसंप्लावनादिभिः स्मृत्युक्तैः शोधनोपायैः शुद्धिं संपाद्य जप स्थानस्य चतुर्दिक्षु क्रोशं क्रोशद्वयं वा क्षेत्रं चतुरस्रमाहारविहारार्थं परिकल्प्य जपस्थानभूमौ कूर्म्मशोधनं कुर्य्यात्॥ ततः पुरश्चरणात्प्राक् तृतीयदिवसे क्षौरादिकं विधाय प्रायश्चित्तांगभूतविष्णुपूजाविष्णुतर्पणविष्णुश्राद्धं होमं चांद्रायणादिव्रतं च कुर्य्यात् । व्रताशक्तौ गोदानं द्रव्यदानं च कुर्य्यात् । सर्वकर्मणामशक्तौ प्रायश्चितांगभूतपंचगव्यप्राशनं कुर्य्यात् । तत्र मंत्रः " ॐ यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके ॥ प्राशनात् पंचगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम् ॥ १ ॥" मूलं पठित्वा प्रणवेन पंचगव्यं पिबेत् ॥ तद्दिने उपवासः कर्त्तव्यः । अशक्तश्चेत् पयःपानं हविष्यान्नेनैकभक्तव्रतं वा कुर्यात् । पुरश्चरणात्पूर्वदिने स्वदेहशुद्ध्यर्थं पुरश्चरणाधिकारप्राप्त्यर्थं चायुत गायत्रीजपं कर्य्यात् । तद्यथा । देशकालौ संकीर्त्य ज्ञाताज्ञातपापक्षयार्थं करिष्यमाणशिवपुरश्चरणाधिकारार्थममुकमंत्रसिद्ध्यर्थं च गायत्र्ययुतजपमहं करिष्ये । इति संकल्प्य गायत्र्ययुतं जपेत् । ततो गायत्र्याचार्य्यर्षिं विश्वामित्रं तर्पयामि ॥ १ ॥ गायत्रीछंदस्तर्प यामि ॥ २ ॥ सवितारं देवं तर्पयामि ॥ ३ ॥ इति तर्पणं कृत्वा ततस्तस्यां रात्रौ देवतोपास्तिं शुभाशुभस्वप्नं च विचारयेत । तद्यथा— स्नानादिकं कृत्वा हरिपादांबुजं स्मृत्वा कुशासनादिशय्यायां यथासुखं स्थित्वा वृषभध्वजं प्रार्थयेत् । तत्र मंत्रः । "ॐ भगवन्देवदेवेश शूलभृद्वृषवाहन ॥ इष्टानिष्टं समाचक्ष्व मम सुप्तस्य शाश्वतः ॥ १ ॥ ॐ नमोऽजाय त्रिनेत्राय पिंगलाय महात्मने ॥ वामाय विश्वरूपाय

[1] 'ॐ नमः शिवाय' इति मंत्रेण होमयेत् ।

स्वप्नाधिपतये नमः ॥ २ ॥ स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषतः ॥ क्रियासिद्धिं विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥३॥ इति मंत्रेणाष्टोत्तरशतवारं शिवं प्रार्थ्य निद्रां कुर्य्यात् । ततः स्वप्नं दृष्टं निशि प्रातर्गुरवे विनिवेदयेत् । अथवा स्वयं स्वप्नं विचारयेत्॥इति पूर्वकृत्यम् ॥

अथ प्रातःकृत्यम्॥पुरश्चरणदिवसे श्रीमत्साधकेन्द्रः प्रातकालात्पूर्वं दण्डद्वयात्मके ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय निद्रास्थानाद्बहिर्निर्गत्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचम्य रात्रिवस्त्रं परित्यज्यान्यवस्त्रं परिधाय शुद्धासन उपविश्य शिरसि सहस्रदलपंकजे कोटींदुप्रकाशपीठे श्रीगुरुं ध्यायेत् ॥ "आनंदमानंदकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपम् ॥ योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं श्रीमद्गुरुं नित्यमहं भजामि॥१॥" इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य "प्रातःप्रभृति सायांतं सायादि प्रातरंततः॥यत्करोमि जगन्नाथ तदस्तु तव पूजनम् ॥१॥" इत्यनेन मंत्रेण सर्वं गुरवे विनिवेद्य तदाज्ञां गहीत्वा शिवप्रातःस्मरणं कुर्य्यात् ॥ प्रातःशिवस्मरणं यथा-"प्रातःस्मरामि भवभीतिहरं सुरेशं गङ्गाधरं वृषभवाहनमम्बिकेशम् ॥ खट्वांगशूलवरदाभयहस्तमीशं संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥ १ ॥ प्रातर्भजामि गिरिशं गिरिजार्धदेहं सर्गस्थितिप्रलयकारणमादिदेवम् ॥ विश्वेश्वरं विजितविश्वमनोभिरामं संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥२॥ प्रातर्भजामि शिवमेकमनंतमाद्यं वेदांतवेद्यमखिलं पुरुषं महांतम् ॥ नामादिभेदरहितं षडभावशून्यं संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम्॥३॥ प्रातः समुत्थाय शिवं विचिंत्य श्लोकत्रयं येऽनुदिनं पठंति ॥ ते दुःखजातं बहुजन्मसंचितं हित्वा पदं यांति तदेव शम्भोः ॥ ४ ॥" इति प्रातःस्मरणं कृत्वा गुरुमंत्रदेवतात्मनामैक्यं विभाव्य अजपाजपं गुरवे समर्पयेत् ॥ अथाजपाजपसंकल्पः संक्षेपतः । "आधारे लिंगनाभौ हृदयसरसिजे तालुमूले ललाटे द्वे पत्रे षोडशारे द्विदशदशदले द्वादशार्द्धे चतुष्के ॥ वासांते वालमध्ये डफकठसहिते आदियुक्ते स्वराणां हंक्षं तत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि

१ लिङ्गं चन्द्रार्कयोर्बिंबं भारती जाह्नवी गुरुः । रक्ताब्धितरणं युद्धे जयोऽनलसमर्चनम् ॥ १ ॥ शिखिहंसरथांगाढ्यं रथे स्थानं च मोहनम् । आरोहणं सारसस्य धरालाभश्च निम्नगा ॥ २ ॥प्रासादः स्यंदनः पद्म छत्रं कन्या द्रुमः फली ॥ नागो दीपो हयः पुष्पं वृषभोऽश्वश्च पर्वतः ॥ ३ ॥ सुराघटो ग्रहास्तारा नारी सूर्यादयोऽप्सराः ॥ हर्म्यशैलविमानानामारोहो गगने गमः ॥ ४ ॥ मद्यमांसादनं विष्ठालेपो रुधिरसेचनम् ॥ दध्यौदनादनं राज्याभिषेको गोवृषध्वजौ ॥ ५ ॥ सिंहः सिंहासनं शंखो वादित्रं रोचनादिभिः ॥ चन्दनं दर्पणश्चैषां स्वप्ने संदर्शनं शुभम् ॥ ६ ॥ तैलाभ्यक्तः कृष्णवर्णो नग्नो ना गर्तवायसौ ॥ शुष्कः कण्टकिवृक्षश्च चांडालो दीर्घकन्धरः ॥ ७ ॥ प्रासादस्तलहीनश्च नैते स्वप्ने शुभावहाः ॥ इति विचारयेत् ॥

॥ १ ॥ षट्शतं तु गणेशस्य षट्सहस्रं प्रजापतेः ॥ षट्सहस्रं गदापाणेः षट्सहस्रं पिनाकिनः ॥ २ ॥ आत्मनस्तत्सहस्रं च सहस्रं परमात्मनः ॥ सहस्रं श्रीगुरुभ्यश्च ह्येतानि विनियोजयेत् ॥ ३ ॥ हंसो गणेशो विधिरेव हंसो हंसो हरिर्हंसमयश्च शंभुः ॥ हंसोऽपि जीवः परमात्महंसो हंसो गरुर्हंसमयश्च शंभुः ॥ ४ ॥ ” इति पठित्वा अहोरात्रोच्चरितं षट्शताधिकमेकविंशतिसहस्रमुच्छ्वासनिःश्वासात्मकमजपा गायत्रीमंत्रजपं श्रीगणेशब्रह्मविष्णुरुद्रजीवात्मपरमात्मश्रीगुरुभ्यो यथासंख्यं समर्पयामि ॥ इत्युक्त्वाऽष्टोत्तरशतावृत्तिं हंसगायत्रीं जपेत्॥ हंसगायत्रीमंत्रो यथा—हरिः “ ॐ हंसो हंसस्य विद्महे हंसो हंसस्य धीमहि ॥ हंसो हंसः प्रचोदयात् । ” इति जपित्वा “ॐ त्रैलोक्य चैतन्यमयि त्रिशक्ते श्रीविश्वमातर्भवदाज्ञयैव ॥ प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं संसारयात्रामनुवर्तयामि ॥ ” इति संप्रार्थ्य भूमिं प्रार्थयेत् ॥ तत्र मंत्रः । “ ॐ समुद्रमेखले देवि पर्वतस्तनमंडले ॥ विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥ १ ॥ ” इति भूमिं प्रार्थ्य श्वासानुसारेण भूमौ पदं दत्त्वा बहिर्व्रजेत्। इति प्रातःकृत्यम् ॥ ततो ग्रामाद्बहिर्नैर्ऋत्यकोणे जनवर्जिते देशे उत्तराभिमुखः अनुपानत्कः वस्त्रेण शिरः प्रावृत्य मलमोचनं कृत्वा मृत्तिकया जलेन यथासंख्यं शौचं कृत्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य गंडूषं च कृत्वा दंतधावनं कुर्यात् ॥ तद्यथा—आम्रचंपकापामार्गाद्यन्यतमस्य द्वादशांगुलं दंतकाष्ठं गृहीत्वा प्रार्थयेत् । “ॐ आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजापशुधनानि च ॥ श्रियं प्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते ॥ १ ॥ इति संप्रार्थ्य ‘ॐ ह्रीं तडिति स्वाहा’ इति मंत्रेण काष्ठं छित्त्वा ‘ॐ क्लीं कामदेवाय सर्वजन प्रियाय नमः ’ इत्यनेन दंतान् संशोध्य ‘ ऐं ’ मंत्रेण जिह्वामुल्लिख्य दंतकाष्ठं क्षालयित्वा नैर्ऋत्यां शुद्धदेशे निःक्षिपेत् ॥ ततो मूलेन मुखं प्रक्षाल्याचाम्य स्नानं कुर्यात् ॥ तद्यथा—गंगायमुनाद्यभावे नदीतडागादिकं गत्वा सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण तीर्थस्नानं मंगल स्नानं च कुर्यात् । अशक्तश्चेद्गृहस्नानं कुर्यात् । तत्र प्रयोगः । तात्कालिकोद्धृतोदकेन उष्णोदकेन वा स्नानं कृत्वा न तु पर्युषित शीतोदकेन । तद्यथा—ताम्रादिबृहत्पात्रे जलं गृहीत्वा तीर्थान्यावाहयेत् । तत्र मंत्रः। “ॐ ब्रह्मांडोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे॥ तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर ॥ १ ॥ ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ॥ नर्मदे सिंधुकावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु ॥ २॥

आवाहयामि त्वां देवि स्नानार्थमिह सुंदरि ॥ एहि गंगे नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थसमन्विते ॥ ३ ॥ ” इति मंत्रेण तीर्थान्यावाह्य ॐ “ ऋतं च सत्यम्० ” इति मंत्रेणाभिमंत्र्य स्नायात् । एवं स्नात्वा शुष्कं शुभ्रं कर्पासोत्पन्नं वस्त्रं परिधाय सूर्यायार्घ्यं दद्यात् । तत्र मंत्रः । “ॐ एहि सूर्य्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते ॥ अनुकंपय मां देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥ ” इति मंत्रेणार्घ्यं दत्वा स्नानीयवस्त्रं परिपीड्याचम्य शैवं पंचत्रिपुंड्रं वैष्णवं द्वादशोर्ध्वपुंड्रं च तिलकं सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कुर्यात् । इति तिलकं कृत्वा नित्यनैमित्तिकं समाप्य द्वारपूजनं कुर्यात् । अथ द्वारपूजनम् । गृहद्वारमागत्य मूलेन फडिति द्वारं संप्रोक्ष्य दक्षिणशाखायाम् । ॐ गं गणपतये नमः ॥ १ ॥ ॐ दुं दुर्गायै नमः ॥ २ ॥ वामशाखायाम् ॐ वं वटुकाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः ॥ ४ ॥ द्वारोपरि ॐ सं सरस्वत्यै नमः ॥ ५ ॥ देहल्याम् ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति पूजयेत् । इति द्वारपूजनं कृत्वा क्षेत्रं कीलयेत् । तथा च जपस्थाने गत्वा “ॐ गृहीतस्यास्य मंत्रस्य पुरश्चरणसिद्धये ॥ मयेयं गृह्यते भूमिर्मंत्रोऽयं सिद्धिमेति च ॥१॥” इति मंत्रेण भूमिं संगृह्य अश्वत्थोदुंबरप्लक्षाणामन्यतमस्य वितस्तिमात्रान् दश कीलान् “ॐ नमः सुदर्शनायास्त्राय फट् ” । इति मंत्रेणाष्टोत्तरशताभिमंत्रितान् ॥ “ॐ ये चात्र विघ्नकर्तारो भुवि दिव्यंतरिक्षगाः॥विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मंत्रस्य सिद्धिषु ॥ १ ॥ मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः ॥ अपसर्पंतु ते सर्वे निर्विघ्नं सिद्धिरस्तु मे ॥ २ ॥ ” इति मंत्रेण दशदिक्षु दश कीलान् निखनेत् । ततस्तेषु “ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्” इति मंत्रेण प्रत्येकं कीलान् संपूज्य तत्रैव पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालानावाह्य पंचोपचारैः संपूज्य जपस्थानमध्ये गणेशकूर्मानंतवसुधाक्षेत्रपालांश्च संपूज्य दिक्पालेभ्यः क्षेत्रपालगणपतिभ्यश्च माषभक्तबलिं दत्वा तद्बाह्ये भूतबलिं दद्यात् । तत्र मंत्रः “ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः ॥ मातरोऽप्युग्ररूपाश्च गणाधिपतयश्च ये ॥ १ ॥ भूचराः खेचराश्चैव तथा चैवांतरिक्षगाः ॥ ते सर्वे प्रीतमनसः प्रतिगृह्णंत्विमं बलिम् ॥२॥ ” इति मंत्रद्वयेन दशदिक्षु बाह्ये माषभक्तबलिं दद्यात् । ततो वामकरांगुलिभिरर्घ्यं जलेनोत्सृज्य पुष्पांजलिं गृहीत्वा “ॐ भूतानि यानीह वसंति भूतले बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम्॥संतोषमासाद्य व्रजंतु सर्वे क्षमंतु वान्यत्र नमोऽस्तु तेभ्यः ॥१॥”

इति पुष्पांजलिं दत्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचमेत् ॥ इति क्षेत्रकीलनम् । अथ प्रयोगविधानम् । "ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ॥ यः स्मरेत्पुंडरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥ १ ॥" इति मंत्रेण मण्डपांतरं प्रोक्ष्य तत्र तावदासनभूमौ कूर्मशोधनं कार्यम् । यत्र जपकर्ता एक एव तत्र कूर्ममुखे उपविश्य तत्रैव जपं दीपस्थापनं च कुर्यात् । यत्र बहवो जापकास्तत्र कूर्ममुखोपरि दीपमेव स्थापयेत् । एवं कूर्मशोधनं विधाय तत्रासनाधो जलादिना त्रिकोणंकृत्वातत्र ॐ कूर्माय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः ॥ २ ॥ ॐ पृथिव्यै नमः ॥ ३ ॥ इति गंधाक्षतपुष्पैः संपूज्य तदुपरि कुशासनं तदुपरि मृगाजिनं तदुपरि कंबलाद्यासनमास्तीर्य्य स्थापितानां त्रयाणामासनानामुपरि क्रमेण ॐ अनन्तासनाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विमलासनाय नमः ॥ २ ॥ ॐ पद्मासनाय नमः ॥ ३ ॥ इति मंत्रत्रयेण त्रीन् दर्भान् प्रत्येकं निदध्यात् । एवमासनं संस्थाप्य तत्र प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य आसनं शोधयेत् । तद्यथा—ॐ पृथ्वीति मंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः । कूर्मो देवता । सुतलं छन्दः । आसने विनियोगः । "ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता॥ त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥१॥"इति मंत्रेणासनं प्रोक्षयेत् । ततः मूलेन शिखां बद्ध्वा ॐ केशवाय नमः ॥ १ ॥ ॐ नारायणाय नमः ॥२॥ ॐ माधवाय नमः ॥३॥ इति त्रिराचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः श्रीअमुकदेवशर्माहं स्वमहादेवामुकमंत्रसिद्धिप्रतिबंधकाशेषदुरितक्षयपूर्वकामुकमंत्रसिद्धिकामोऽद्यारभ्य यावता कालेन सेत्स्यति तावत्कालपर्यन्तममुकमंत्रस्य इयत्संख्याकजपतद्दशांशहोमतद्दशांशतर्पणतद्दशांशमार्जनतद्दशांशाभिषेकतद्दशांशब्राह्मणभोजनरूपपुरश्चरण (केवलजपरूपपुरश्चरणं वा) महं करिष्ये । इति संकल्प्य । "ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्" इति मंत्रेण तालत्रयं दिग्बंधनं कुर्यात् । ततो भूतशुद्धिं स्वप्राणप्रतिष्ठामंतर्मातृकाबहिर्मातृकासृष्टिस्थितिसंहारमातृकान्यासं च सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कृत्वा प्रयोगोक्तन्यासान् कुर्यात् । अथ पीठपूजनम् । पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले लिंगतोभद्रमण्डले वा स्ववामे श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ १ ॥ दक्षिणे ॐ गणपतये नमः ॥ २ ॥ मध्ये स्वेष्टदेवतायै नमः ॥ ३ ॥ इति नत्वा पीठमध्ये ॐ मं मंडूकाय नमः ॥ १ ॥ ॐ कालाग्निरुद्राय नमः ॥ २ ॥ ॐ अं

आधारशक्तये नमः ॥ ३ ॥ ॐ कूं कूर्माय नमः ॥ ४ ॥ ॐ अं अनन्ताय नमः ॥ ५ ॥ ॐ पृं पृथिव्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ क्षीं क्षीरसागराय नमः ॥ ७ ॥ ॐ रं रत्नदीपाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ रं रत्नमंडपाय नमः ॥ ९ ॥ ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः ॥ १० ॥ ॐ रं रत्नवेदिकायै नमः ॥ ११ ॥ ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः ॥ १२ ॥ इति पूजयेत् । आग्नेय्याम् ॐ धं धर्म्माय नमः ॥ १३ ॥ नैर्ऋत्याम् ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः ॥ १४ ॥ वायव्याम् ॐ वैं वैराग्याय नमः ॥ १५ ॥ ऐशान्याम् ॐ ऐं ऐश्वर्य्याय नमः ॥ १६ ॥ पूर्वे ॐ अं अधर्म्माय नमः ॥ १७ ॥ दक्षिणे ॐ अं अज्ञानाय नमः ॥ १८ ॥ पश्चिमे ॐ अं अवैराग्याय नमः ॥ १९ ॥ उत्तरे ॐ अं अनैश्वर्य्याय नमः ॥ २० ॥ पुनः पीठमध्ये ॐ आं आनन्दकन्दाय नमः ॥ २१ ॥ ॐ सं संविन्नालाय नमः ॥ २२ ॥ ॐ सं सर्वतत्त्वकमलासनाय नमः ॥ २३ ॥ ॐ प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः ॥ २४ ॥ ॐ विं विकारमयकेसरेभ्यो नमः ॥ २५ ॥ ॐ पं पञ्चाशद्वर्णाढ्यकर्णिकाभ्यो नमः ॥ २६ ॥ ॐ अं अर्कमंडलाय द्वादशकलात्मने नमः ॥ २७ ॥ ॐ सों सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः ॥ २८ ॥ ॐ वं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः ॥ २९ ॥ ॐ सं सत्त्वाय नमः ॥ ३० ॥ ॐ रं रजसे नमः ॥ ३१ ॥ ॐ तं तमसे नमः ॥ ३२ ॥ ॐ आं आत्मने नमः ॥ ३३ ॥ ॐ पं परमात्मने नमः ॥ ३४ ॥ ॐ अं अंतरात्मने नमः ॥ ३५ ॥ ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः ॥ ३६ ॥ ॐ मं मायातत्त्वाय नमः ॥ ३७ ॥ ॐ कं कलातत्त्वाय नमः ॥ ३८ ॥ ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः ॥ ३९ ॥ ॐ पं परतत्त्वाय नमः ॥ ४० ॥ इति मण्डूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संपूज्य प्रयोगोक्तनवपीठशक्तीः पूजयेत् । ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य आसनमंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां च कुर्य्यात् । तद्यथा-देशकालौ संकीर्त्य मम महादेवनूतनयंत्रे मूर्तौ वा प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये । इति संकल्प्य प्रतिष्ठां कुर्यात् ।अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः । ऋग्यजुःसामानि च्छन्दांसि । क्रियामयवपुःप्राणाख्या देवता । आं बीजम् । ह्रीं शक्तिः । क्रौं कीलकम् । अस्य नूतनयंत्रे मूर्तौ वा प्राणप्रतिष्ठापने विनि

योगः । इति जलं क्षिपेत् । ततः करेणाच्छाद्य "ॐ आं ह्रीं क्रौं यँरँलँवँशँषँसँहँसः सोहँ अस्य महादेवसपरिवारयंत्रस्य प्राणा इह प्राणाः । पुनः ॐ आंह्रींक्रौंयँरँलँवँशँषँसँहँसः सोहँ अस्य महादेवसपरिवारयंत्रस्य जीव इह स्थितः । पुनः ॐ आंह्रींक्रौंयँरँलँवँशँषँसँहँसः सोहँ अस्य महादेवसपरिवारयंत्रस्य सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि । पुनः ॐ आंह्रींक्रौंयँरँलँवँशँषँसँहँसः सोहँ अस्य महादेवसपरिवारयंत्रस्य वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु नमः स्वाहा" इति प्राणान् प्रतिष्ठाप्य "ॐ यः प्राणतो निमिषतोमहित्वा० विधेम" इति मंत्रं त्रिवारं पठेत् । "मनोजूतिर्जुषता० सुप्रतिष्ठा प्रतिष्ठा" इत्युक्त्वा संस्कारासिद्ध्ये पंचदशप्रणवावृत्तीः कृत्वा अनेन महादेवसपरिवारयंत्रस्य गर्भाधानादिपंचदशसंस्कारान्संपादयामि इति वदेत् । ततः "ॐ यंत्रराजाय विद्महे महायंत्राय धीमहि तन्नो यंत्रः प्रचोदयात्" इत्यष्टोत्तरशतकृत्वोऽभिमंत्र्य पाद्यादिपूजनं कुर्यात् ॥ अथ पाद्यादिपूजनम् ॥ ॐ आयाहि भगवञ्शंभो शर्व त्वं गिरिजापते ॥ प्रसन्नो भव देवेश नमस्तुभ्यं हि शंकर ॥ इत्यावाहनम् ॥ १॥ ॐ विश्वेश्वर महादेव राजराजेश्वराप्रिय ॥ आसनं दिव्यमीशान दास्येऽहं तुभ्यमीश्वर ॥ इत्यासनम्॥ २॥ ॐ स्वागतं देवदेवेश मद्भाग्यात्त्वमिहागतः ॥ प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत्परिपालय ॥ इति सुस्वागतम् ॥ ३ ॥ ॐ महादेव महेशान महादेव परात्पर ॥ पाद्यं गृहाण मद्दत्तं पार्वतीसहितेश्वर ॥ इति पाद्यम् ॥ ४ ॥ ॐ त्र्यंबकेश सदाचार जगदादिविधायक ॥ अर्घ्यं गृहाण देवेश सांब सर्वार्थदायक ॥ इत्यर्घ्यम् ॥ ५ ॥ ॐ त्रिपुरांतक दीनार्तिनाशिञ्छ्रीकण्ठ शाश्वत ॥ गृहाणाचमनीयं च पवित्रोदककल्पितम् ॥ इत्याचमनीयम् ॥६ ॥ ॐ गंगासरस्वतीरेवापयोष्णीनर्मदाजलैः ॥ स्नापितोऽसि मया देव तथा शांतिं कुरुष्व मे ॥ इति जलस्नानम् ॥७॥ ॐ मधुरं गोपयः पुण्यं पटपूतं पुरस्कृतम् ॥स्नानार्थं देवदेवेश गृहाण परमेश्वर ॥इति पयःस्नानम्॥८॥ॐ दुर्लभं दिवि सुस्वादु दधि सर्वप्रियं परम् ॥ पुष्टिदं पार्वतीनाथ स्नानाय प्रतिगृह्यताम् ॥ इति दधिस्नानम्॥९॥ॐ घृतं गव्यं शुचि स्निग्धं सुसेव्यं पुष्टिमिच्छताम् ॥ गृहाण गिरिजानाथ स्नानाय चंद्रशेखर ॥ इति घृतस्नानम्॥१०॥ॐ मधुरं मृदु मोहघ्नं स्वरभङ्गविनाशनम् ॥ महादेवेदमुत्सृष्टं तव स्नानाय शंकर ॥ इति मधुस्नानम् ॥ ११ ॥ ॐ तापशांतिकरी शीता मधुरा स्वादुसंयुता ।

स्नानार्थं देवदेवेश शर्करेयं प्रदीयते ॥ इति शर्करोदकस्नानम् ॥ १२ ॥ ॐ गंगा गोदावरी रेवा पयोष्णी यमुना तथा ॥ सरस्वत्यादि तीर्थानि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ इति शुद्धोदकस्नानम् ॥ १३ ॥ इति स्नापयित्वा शतरुद्रियद्वारा अभिषेकं कुर्यात् ॥ ॐ वस्त्राणि पट्टकूलानि विचित्राणि नवानि च ॥ मयानीतानि देवेश प्रसन्नो भव शंकर ॥ इति वस्त्रम् ॥ १४ ॥ ॐ सौवर्णं राजतं ताम्रं कार्पासस्य तथैव च ॥ उपवीतं मया दत्तं प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ इत्युपवीतम् ॥ १५ ॥ ॐ सर्वेश्वर जगद्वंद्य दिव्यासनसमास्थित ॥ गंधं गृहाण देवेश चंदनं प्रतिगृह्यताम् ॥ अंगुष्ठः कनिष्ठामूललग्नो गंधमुद्रा। इति गंधम् ॥१६॥ ॐ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ शुभ्रा धौताश्च निर्मलाः॥ मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥ सर्वांगुलीभिर्दद्यात्। इत्यक्षताः ॥ १७ ॥ ॐ माल्यादीनि सुगंधीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ॥ मयाहृतानि पूजार्थं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ॥ तर्जन्यावंगुष्ठमूललग्ने पुष्पमुद्रा ॥ इति पुष्पम् ॥ १८ ॥ ॐ बिल्वपत्रं सुवर्णेन त्रिशूलाकारमेव च ॥ मयार्पितं महादेव बिल्वपत्रं गृहाण मे ॥ इति बिल्वपत्रम् ॥ १९ ॥ इति पुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य विशेषफलाकांक्षी सहस्रनामभिः प्रत्येकनाम्ना पुष्पबिल्वपत्रद्वारा शिवं पूजयेत् ॥ ततः प्रयोगोक्तावरणपूजां कृत्वा धूपादिपूजनं कुर्यात्। अथ धूपादिपूजनम्॥ फडिति धूपपात्रं संप्रोक्ष्य नम इति गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य पुरतो निधाय 'रं' इति वह्निबीजेन उपरि आग्निं संस्थाप्य तदुपरि मूलेन दशांगं दत्त्वा घंटां वादयन् ॐ वनस्पतिरसोत्पन्नो गंधाढ्यो गंध उत्तमः ॥ आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ सांगाय सपरिवाराय श्रीमहादेवाय धूपं समर्पयामि।इति पठित्वा देवस्य वामभागे धूपपात्रं निधाय तर्जनीमूलयोरंगुष्ठयोगो धूपमुद्रा तां प्रदर्शयेत्। इति धूपम् ॥ २० ॥ ततो दीपपात्रं गोघृतेनापूर्य मंत्राक्षरतंतुभिर्वर्ती निक्षिप्य 'ॐ' इति प्रणवेन प्रज्वाल्य घंटां वादयन् नेत्रादिपादपर्यंतं दीपं प्रदर्शयेत्। तत्र मंत्रः–ॐ आज्याक्तवर्तिसंयुक्तं वह्निना दीपितं तु यत्॥ दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥ सांगाय सपरिवाराय महादेवाय दीपं समर्पयामि। इति पठित्वा देवस्य दक्षिणभागे निधाय ततः शंखजलमुत्सृज्य मध्यमांगुष्ठलग्नां दीपमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इति दीपम् ॥ २१ ॥ ततो देवस्याग्रे देवदक्षिणतो वा जलेन चतुरस्रमंडलं कृत्वा स्वर्णादिनिर्मितं भोजनपात्रं संस्थाप्य तन्मध्ये

षड्रसोपेतं विविधप्रकारं वा नैवेद्यं निधाय ‘ ॐ ह्रीं नमः ’ इति मंत्रेणार्घ्यजलेन प्रोक्ष्य मूलेन संवीक्ष्य अधोमुखदक्षिणहस्तोपरि तादृशं वामं निधाय नैवेद्यमाच्छाद्य (ॐ यं) इति वायुबीजेन षोडशधा संजप्य वायुना तद्गतदोषान् संशोष्य दक्षिणकरतले तत्पृष्ठलग्नं वामकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य (ॐ रं) इति वह्निबीजेन षोडशवारं संजप्य तदुत्पन्नाग्निना तद्दोषं दग्ध्वा वामकरतले अमृतबीजं विचिंत्य तत्पृष्ठलग्नं दक्षिणकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य (ॐ वँ) इति सुधाबीजं षोडशवारं संजप्य तदुत्थामृतधारया प्लावितं विभाव्य मूलेन प्रोक्ष्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य मूलेनाष्टधाभिमंत्र्य गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य देवस्योद्गतं तेजः स्मृत्वा वामांगुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृष्ट्वा दक्षिणकरेण जलं गृहीत्वा “ॐ अपूपानि च पक्वानि मण्डका वटकानि च ॥ पायसं सूपमन्नं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥”सांगाय सपरिवाराय श्रीमहादेवाय नमः। नैवेद्यं समर्पयामि। इति भूतले देवदक्षिणकरे जलं क्षिप्त्वा वामहस्तेन अनामामूलयोरंगुष्ठयोगे ग्रासमुद्रां प्रदर्श्य देवं भुक्तवंतं विभाव्य जलं दद्यात् ॥ २२ ॥ तद्यथा। ॐ नमस्ते देवदेवेश सर्वतृप्तिकरं वरम् ॥ परमानंदपूर्ण त्वं गृहाण जलमुत्तमम् ॥ ॐ सांगाय सपरिवाराय श्रीमहादेवाय नमः। जलं समर्पयामि–इति मंत्रेण स्वर्णादिपात्रस्थं कर्पूरादिसुवासितं जलं निवेद्य देवेन तज्जलं प्राशितमिति भावयन् अंतःपटं दत्त्वा देवकीर्तनं कुर्यात् ॥ २३ ॥ ॐ उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वापि यस्य स्मरणमात्रतः ॥ शुद्धिमाप्नोति तस्मै ते पुनराचमनीयकम् ॥ इत्याचमनम् ॥ २४ ॥ इत्याचमनं दत्त्वा मूलेन गंडूषार्थं जलं दद्यात् ॥ ॐ कर्पूरादीनि द्रव्याणि सुगंधीनि महेश्वर ॥ गृहाण जगतां नाथ करोद्वर्तनहेतवे ॥ इति करोद्वर्तनम् ॥ २५ ॥ ॐ कूष्मांडं मातुलुंगं च नारिकेलफलानि च ॥ गृहाण पार्वतीकांत सोमशेखर शंकर ॥ इति फलानि ॥ २६ ॥ ॐ पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ॥ गृहाण देवदेवेश द्राक्षादीनि सुरेश्वर ॥ इति तांबूलम् ॥२७॥ ॐ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजसमन्वितम् ॥ पंचरत्नं मया दत्तं गृह्यतां वृषभध्वज ॥ इति द्रव्यम्॥२८॥ “ॐ कदलीगर्भसंभूतं कर्पूरं च प्रदीपितम् ॥ आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥” इति कर्पूरार्तिक्यम् ॥ २९ ॥ ॐ हर विश्वाखिलाधार निराधार निराश्रय ॥ पुष्पांजलिं गृहाणेश सोमेश्वर नमोऽस्तु ते ॥ इति पुष्पांजलिः ॥ ३० ॥ “ ॐ यानि

कानि च पापानि जन्मांतरकृतानि वै ॥ तानि सर्वाणि नश्यंतु प्रदक्षिणपदे पदे ॥ इति पठित्वा तिस्रः प्रदक्षिणा दद्यात् ॥३१॥ "ॐहेतवे जगतामेव संसारार्णवसेतवे ॥ प्रभवे सर्वविद्यानां शंभवे गुरवे नमः ॥ ३२ ॥" इति वदन् साष्टांगं प्रणमेत् ॥ इति साष्टांगं प्रणम्य पुष्पांजलिं च दत्त्वा स्तुतिपाठेन स्तुत्वा बद्धांजलिः प्रार्थयेत् । तद्यथा । "ज्ञानतोऽज्ञानतो वाऽथ यन्मया क्रियते शिव ॥ मम कृत्य मिदं सर्वमेतदेव क्षमस्व मे ॥ १ ॥ अपराधसहस्राणि क्रियंतेऽहर्निशं मया ॥ दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥ २ ॥ अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे ॥ कोऽपरः सहतां लोके केवलं स्वामिनं विना ॥ ३ ॥ भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलंबनम् ॥ त्वयि जाता पराधानां त्वमेव शरणं शिव ॥४॥" इति संप्रार्थ्य "यदुक्तं यदि भावेन पत्रं पुष्पं फलं जलम् ॥ निवेदितं च नैवेद्यं गृहाणाथानुकंपय ॥ ५ ॥" इति पठित्वा देवस्य दक्षिणकरे पूजार्पणजलं दत्त्वा सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण मालायाः संस्कारान् कुर्यात् । अशक्तश्चेत्साधारणं कुर्यात् । तद्यथा—मूलेन मालां संप्रोक्ष्य गंधादिभिः संपूज्य ध्यायेत् । "ॐ माले माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ॥ चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्त स्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥ १ ॥" इति संप्रार्थ्य—"ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं सर्वकार्येषु सर्वदा ॥" इति मंत्रेण दक्षिणहस्ते मालामादाय हृदये धारयन् स्वेष्टदेवतां ध्यात्वा मध्यमांगुलिमध्यपर्वणि संस्थाप्य ज्येष्ठाग्रेण भ्रामयित्वा एकाग्रचित्तो मंत्रार्थं स्मरन् यथाशक्ति प्रातः कालमारभ्य मध्यंदिनं यावत् मूलमंत्रं जपेत् । नित्यशः समाना जपाः कार्या न तु न्यूनाधिकम् । जपांते "ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा मम ॥ शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा ॥ तेन सत्येन सिद्धिं मे देहि मातर्नमोऽस्तु ते ॥ ॐ ह्रीं सिद्ध्यै नमः ।" इति मालां शिरसि निधाय गोमुखीं रहसि स्थापयेत् । नाशुचिः स्पर्शयेत् । नान्यस्मै दद्यात् । अशुचिस्थाने न निधापयेत् । स्वयो निवद्गुप्तां कुर्यात् । इति जपं कृत्वा कवचस्तोत्रसहस्रनामादिकं पठित्वा पुनः मूलमंत्रोक्तऋष्यादिन्यासं हृदयादिषडंगन्यासं च कृत्वा पंचोपचारैः संपूज्य पुष्पांजलिं च दत्त्वा जपं देवायार्पयेत् । तद्यथा । अर्घ्योदकेन चुलुकमादय "ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात्त्वयि स्थितिः ॥ १ ॥" ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुर्यावस्थासु मनसा वाचा

कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा । मदीयं च सकलं श्रीमहादेवाय समर्पयामि नमः ॥ ॐ तत्सदिति ब्रह्मार्पणं भवतु । इति देवदक्षिणकरे जलसमर्पणं कृत्वा कृतांजलिः क्षमापनं पठेत् । तथा च--"ॐ आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ॥ पूजाभागं न जानामि त्वं गतिः परमेश्वर ॥१॥ मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर॥ यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ २ ॥ यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ॥ तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥३॥ कर्मणा मनसा वाचा त्वत्तो नान्या गतिर्मम ॥अंतश्चरश्च भूतानामिष्टस्त्वं परमेश्वर ॥ ४ ॥ अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ॥ तस्मात्कारुण्यभावेन क्षमस्व परमेश्वर ॥ ५ ॥ प्रातर्योनिसहस्रेषु सहस्रेषु व्रजाम्यहम् ॥ तेषु चेष्टाचला भक्तिरच्युतेऽस्तु सदा त्वयि ॥६ ॥ गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च ॥ आगता सुखसंपत्तिः पुण्याच्च तव दर्शनात् ॥ ७॥ देवो दाता च भोक्ता च देवरूपमिदं जगत् ॥ देवं जपति सर्वत्र यो देवः सोऽहमेव हि ॥ ८ ॥ क्षमस्व देवदेवेश क्षम्यते भुवनेश्वर ॥ तव पादांबुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे ॥ ९॥" इति प्रार्थ्य शंखजलमुद्धृत्य देवोपरि भ्रामयित्वा "साधु वाऽसाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया ॥ तत्सर्वं कृपया देव गृहाणाराधनं मम॥" इत्युच्चरन् देवस्य दक्षिणहस्ते जलं दत्त्वा शंखं यथास्थाने निवेशयेत् । ततो गतसारं नैवेद्यं देवस्योच्छिष्टं किंचिदुद्धृत्य "ॐ चण्डेश्वराय नमः"इत्युच्छिष्टाधिकारिणे ऐशान्यां दिशि दद्यात्।तच्छेषं नैवेद्यं शिरसि धृत्वा नैवेद्यादिकं देवभक्तेषु विभज्य स्वयं भुक्त्वा विसर्जनं कुर्यात्। तथा च--"ॐ गच्छ गच्छ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर ॥ पूजाराधनकाले च पुनरागमनाय च ॥" इत्यक्षतान्निक्षिप्य विसर्जनं कृत्वा देवं स्वहृदये स्थापयेत् । तद्यथा--"ॐ तिष्ठ तिष्ठ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर ॥ यत्र ब्रह्मादयो देवाः सर्वे तिष्ठंति मे हृदि ॥ १ ॥" इति हृदयकमले हस्तं दत्त्वा देवं संस्थाप्य मानसोपचारैः संपूज्य स्वात्मानं देवरूपं भावयन् यथासुखं विहरेत् । एवमेव विधिना जपं समाप्य संस्कृते वह्नौ जपदशांशतो होमः तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् । एतत्सर्वं सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कुर्यात् । इति शिवपूजापद्धतिः समाप्ता ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ सदाशिवकवचप्रारंभः ॥ "श्रीदेव्युवाच ॥ भगवन्देवदेवेश

सर्वाम्नायप्रपूजित ॥ सर्वं मे कथितं देव कवचं न प्रकाशितम् ॥ १ ॥ प्रासादाख्यस्य मंत्रस्य कवचं मे प्रकाशय ॥ सर्वरक्षाकरं देव यदि स्नेहोऽस्ति मां प्रति ॥२॥ श्रीभगवानुवाच ॥ प्रासादमंत्रकवचस्य वामदेव ऋषिः । पंक्तिश्छंदः । सदाशिवो देवता । सकलाभीष्टसिद्ध्ये जपे विनियोगः ॥ शिरो मे सर्वदा पातु प्रासादाख्यः सदाशिवः ॥ षडक्षरस्वरूपो मे वदनं तु महेश्वरः ॥ ३॥ पंचाक्षरात्मा भगवान्भुजौ मे परिरक्षतु ॥ मृत्युंजयस्त्रिबीजात्मा आस्यं रक्षतु मे सदा ॥ ४ ॥ वटमूलं समासीनो दक्षिणामूर्तिरव्ययः ॥ सदा मां सर्वदः पातु षट्त्रिंशार्णस्वरूपधृक् ॥५॥द्वाविंशार्णात्मको रुद्रो दक्षिणः परिरक्षतु॥त्रिवर्णात्मा नीलकंठः कंठं रक्षतु सर्वदा ॥६॥चिंतामणिर्बीजरूपो ह्यर्द्धनारीश्वरो हरः ॥ सदा रक्षतु मे गुह्यं सर्वसम्पत्प्रदायकः ॥७ ॥ एकाक्षरस्वरूपात्मा कूटव्यापी महेश्वरः ॥ मार्तंडभैरवो नित्यं पादौ मे परिरक्षतु ॥ ८ ॥ तुंबुराख्यो महाबीजस्वरूपस्त्रिपुरांतकः ॥ सदा मां रणभूमौ च रक्षतु त्रिदशाधिपः ॥ ९ ॥ ऊर्ध्वमूर्द्धानमीशानो मम रक्षतु सर्वदा ॥ दक्षिणास्यं तत्पुरुषः पायान्मे गिरिनायकः ॥ १० ॥ अघोराख्यो महादेवः पूर्वास्यं परिरक्षतु ॥ वामदेवः पश्चिमास्यं सदा मे परिरक्षतु ॥ ११ ॥ उत्तरास्यं सदा पातु सद्योजातस्वरूपधृक् ॥ इत्थं रक्षाकरं देवि कवचं देवदुर्लभम् ॥ १२ ॥ प्रातःकाले पठेद्यस्तु सोऽभीष्टं फलमाप्नुयात् ॥ पूजाकाले पठेद्यस्तु कवचं साधकोत्तमः ॥ १३ ॥ कीर्तिश्रीकांतिमेधायुःसहितो भवति ध्रुवम् ॥ कंठे यो धारयेदेतत्कवचं मत्स्वरूपकम् ॥ १४ ॥ युद्धे च जयमाप्नोति द्यूते वादे स साधकः ॥ कवचं धारयेद्यस्तु साधको दक्षिणे भुजे ॥ १५ ॥ देवा मनुष्या गंधर्वा वश्यास्तस्य न संशयः ॥ कवचं शिरसा यस्तु धारयेद्यतमानसः ॥ १६ ॥ करस्थास्तस्य देवेशि अणिमाद्यष्टसिद्धयः ॥ भूर्जपत्रे त्विमां विद्यां शुक्लपट्टेन वेष्टिताम् ॥ १७ ॥ रजतोदरसंविष्टां कृत्वा वा धारयेत्सुधीः ॥ संप्राप्य महतीं लक्ष्मीमंते मद्देहरूपभाक् ॥ १८ ॥ यस्मै कस्मै न दातव्यं न प्रकाश्यं कदाचन ॥ शिष्याय भक्तियुक्ताय साधकाय प्रकाशयेत् ॥ १९ ॥ अन्यथा सिद्धिहानिः स्यात्सत्यमेतन्मनोरमे ॥ तव स्नेहान्महादेवि कथितं कवचं शुभम् ॥ २० ॥ न देयं कस्यचिद्रुद्रे यदीच्छेदात्मनो हितम् ॥योऽर्चयेद्गंधपुष्पाद्यैः कवचं मन्मुखोदितम् ॥ तेनार्चिता महादेवि सर्वे देवा न संशयः ॥ ” इति भैरवतन्त्रे

सदाशिवकवचं समाप्तम् ॥ अथ सदाशिवस्तोत्रप्रारंभः ॥ "धरापोऽग्निमरुद्व्योममखेशेंद्वर्कमूर्तये ॥ सर्वभूतान्तरस्थाय शंकराय नमो नमः ॥ १ ॥ श्रुत्यंतकृतवासाय श्रुतये श्रुतिजन्मने ॥ अतीन्द्रियाय महसे शाश्वताय नमो नमः ॥ २ ॥ स्थूलसूक्ष्मविभागाभ्यामनिर्देश्याय शंभवे ॥ भवाय भवसंभूतदुःखहंत्रे नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥ तर्कमार्गातिदूराय तपसां फलदायिने ॥ चतुर्वर्गवदान्याय सर्वज्ञाय नमो नमः ॥ ४ ॥ आदिमध्यांतशून्याय निरस्ताशेषभीतये । योगिध्येयाय महते निर्गुणाय नमो नमः ॥ ५ ॥ विश्वात्मनेऽविचिंत्याय विलसच्चंद्रमौलये ॥ कंदर्पदर्पकालाय कालहंत्रे नमोनमः ॥६॥ विषाशनाय विहरद्वृषस्कन्धमुपेयुषे ॥ सरिद्दामसमाबद्धकपर्दाय नमो नमः ॥ ७ ॥ शुद्धाय शुद्धभावाय शुद्धानामंतरात्मने ॥ पुरांतकाय पूर्णाय पुण्यनाम्ने नमो नमः ॥ ८ ॥ भक्ताय निजभक्तानां भुक्तिमुक्तिप्रदा[illegible] ॥ विवाससे विवासाय विश्वेषां ते नमो नमः ॥ ९ ॥ त्रिमूर्तिमूलभूताय त्रिनेत्राय नमो नमः ॥ त्रिधाम्ने धामरूपाय जन्मघ्नाय नमो नमः ॥ १० ॥ देवासुरशिरोरत्नकिरणारुणितांघ्रये ॥ कांताय निजकांतायै दत्तार्द्धाय नमो नमः ॥ ११ ॥ स्तोत्रेणानेन पूजायां प्रीणयेज्जगतः पतिम् ॥ भक्तिमुक्तिप्रदं भक्त्या सर्वज्ञं परमेश्वरम् ॥ १२ ॥" इति सदाशिवस्तोत्रं समाप्तम् ॥ अथ शतनामस्तोत्रप्रारंभः ॥ "ॐ शिवो महेश्वरः शंभुः पिनाकी शशिशेखरः॥वामदेवो विरूपाक्षः कपर्दी नीललोहितः ॥१॥ शंकरः शूलपाणिश्च खट्वांगी विष्णुवल्लभः ॥ शिपिविष्टोऽम्बिकानाथः श्रीकण्ठो भक्तवत्सलः ॥ २॥ भवः शर्वस्त्रिलोकेशः शितिकंठः शिवाप्रियः ॥ उग्रः कपाली कामारिरन्धकासुरसूदनः ॥ ३ ॥ गंगाधरो ललाटाक्षः कालकालः कृपानिधिः ॥ भीमः परशुहस्तश्च मृगपाणिर्जटाधरः ॥ ४ ॥ कैलासवासी कवची कठोरस्त्रिपुरांतकः । वृषांको वृषभारूढो भस्मोद्धूलितविग्रहः ॥५॥ सामप्रियः स्वरमयस्त्रयीमूर्तिरनीश्वरः ॥ सर्वज्ञः परमात्मा च सोमसूर्याग्निलोचनः ॥ ६ ॥ हविर्यज्ञमयः सोमः पंचवक्त्रः सदाशिवः ॥ विश्वेश्वरो वीरभद्रो गणनाथः प्रजापतिः ॥७॥ हिरण्यरेता दुर्द्धर्षो गिरीशो गिरिशोऽनघः॥ भुजङ्गभूषणो भर्गो गिरिधन्वा गिरिप्रियः ॥ ८ ॥ कृत्तिवासाः पुरारातिर्भगवान्प्रमथाधिपः ॥ मृत्युञ्जयः सूक्ष्मतनुर्जगद्व्यापी जगद्गुरुः ॥९॥

१ नाशायेति पाठान्तरम् ॥

व्योमकेशो महासेनो जनकश्चारुविक्रमः ॥ रुद्रो भूतपतिः स्थाणुरहिर्बुध्न्यो दिगम्बरः ॥ १० ॥ अष्टमूर्तिरनेकात्मा सात्त्विकः शुद्धविग्रहः ॥ शाश्वतः खण्डपरशुरजः पाशविमोचकः ॥ ११ ॥ मृडः पशुपतिर्देवो महादेवोऽव्ययः प्रभुः ॥ पूषदंतभिदव्यग्रो दक्षाध्वर हरो हरः ॥ १२ ॥ भगनेत्रभिदव्यक्तः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ अपवर्गप्रदोऽनंतस्तारकः परमेश्वरः ॥ १३ ॥ इमानि दिव्यनामानि जप्यंते सर्वदा मया ॥ नामकल्पलतेयं मे सर्वाभीष्टप्रदायिनी ॥ १४ ॥ नामान्येतानि सुभगे शिवदानि न संशयः ॥ वेदसर्वस्वभूतानि नामान्येतानि वस्तुतः ॥ १५ ॥ एतानि यानि नामानि तानि सर्वार्थदान्यतः ॥ जप्यंते सादरं नित्यं मया नियमपूर्वकम् ॥ १६ ॥ वेदेषु शिवनामानि श्रेष्ठान्यघहराणि च॥ संत्यनंतानि सुभगे वेदेषु विविधेष्वपि ॥ १७ ॥ तेभ्यो नामानि संगृह्य कुमाराय महेश्वरः ॥ अष्टोत्तरसहस्रं तु नाम्नामुपदिशत्पुरा ॥ १८ ॥" इति शिवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥ अथ शिवसहस्रनामस्तोत्रप्रारम्भः ॥ सूत उवाच ॥ "श्रूयतामृषयः श्रेष्ठाः कथयामि यथाश्रुतम् ॥ विष्णुना प्रार्थितो येन संतुष्टः परमेश्वरः ॥ १ ॥ तदहं कथयाम्यद्य पुण्यं नामसहस्रकम् ॥ श्रीविष्णुरुवाच ॥ शिवो हरो मृडो रुद्रः पुष्करः पुष्पलोचनः॥२॥ अर्थिगम्यः सदाचारः शर्वः शंभुर्महेश्वरः ॥ चन्द्रापीडश्चन्द्रमौलिर्विश्वादिश्चामरेश्वरः ॥३ ॥ वेदांतसारसंदोहः कपाली नीललोहितः ॥ ध्यानधारापरिच्छेद्यो गौरीभर्ता गणेश्वरः ॥ ४ ॥ अष्टमूर्तिर्विश्वमूर्तिस्त्रिवर्गः स्वर्गसाधनः ॥ ज्ञानगम्यो दृढप्रज्ञो देवदेवस्त्रिलोचनः ॥५॥ वामदेवो महादेवः पटुः परिवृढो दृढः ॥विश्वरूपो विरूपाक्षो वागीशः शुचिमत्तरः ॥ ६ ॥ शर्वः प्रमाणसंवादी वृषांको वृषवाहनः ॥ ईशः पिनाकी खट्वांगी चित्रवेषश्चिरंतनः ॥७॥ तमोहरो महायोगी गोप्ता ब्रह्माण्डहृज्जटी ॥ कालकालः कृत्तिवासाः सुभगः प्रणतात्मकः ॥ ८ ॥ त्रिपुंड्रधारी चक्षुष्यो दुर्वासाः पुरशासनः ॥ दिव्यायुधः स्कंदगुरुः परमेष्ठी परात्परः॥९ ॥ अनादिमध्यनिधनो गिरीशो गिरिबांधवः ॥कुबेरबंधुः श्रीकण्ठो लोकवर्णोत्तमो मृदुः ॥ १० ॥ समाधिवेद्यः कोदण्डी नीलकण्ठः परश्वधी ॥ विशालाक्षो मृगव्याधः सुरेशः सर्य्यतापनः॥११॥ धर्मधामा क्षमाक्षेत्रं भगवान् भगनेत्रभित् ॥ उग्रः पशुपतिस्तार्क्ष्यः प्रियभक्तः प्रियंवदः ॥ १२ ॥ दाता दयाकरो दक्षः कपर्दी कामशासनः ॥ श्मशाननिलयः सूक्ष्मः

श्मशानस्थो महेश्वरः ॥ १३ ॥ लोककर्ता मृगपतिर्महाकर्ता महौषधिः ॥ उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः ॥ १४ ॥ नीतिः सुनीतिः शुद्धात्मा सोमः सोमतरः सुखी ॥ सोमपोऽमृतपः सौम्यो महाज्योतिर्महाद्युतिः॥१५॥ तेजोमयोऽमृतमयोऽन्नमयश्च सुधापतिः॥ अजातशत्रुरालोकसंभाव्यो हव्यवाहनः ॥ १६ ॥ लोककरो वेदकरः सूत्रकारः सनातनः ॥ महर्षिः कपिलाचार्य्यो विश्वदीप्तिर्विलोचनः ॥ १७ ॥ पिनाकपाणिर्भूदेववशगः स्वस्तिकृत्सुधीः ॥ धातृधामा धामकरः सर्वदः सर्वगोचरः ॥ १८ ॥ ब्रह्मसृग्विश्वसृक्सर्वः कर्णिकरप्रियः कविः ॥ शाखो विशाखो गोशाखः शिवो भिषगनुत्तमः ॥ १९ ॥ गंगाप्लवोदको भव्यः पुष्कलः स्थपतिः स्थिरः । विजितात्मा विधेयात्मा भूतवाहनसारथिः ॥ २० ॥ सगणो गणवर्यश्च सुकीर्त्तिश्छिन्नसंशयः ॥ कामदेवः कामपालो भस्मोद्धूलितविग्रहः ॥ २१ ॥ भस्मप्रियो भस्मशायी कामी कांतः कृतागमः ॥ समावर्तो निवृत्तात्मा धर्मपुंजः सदाशिवः ॥ २२ ॥ अकल्मषश्चतुर्बाहुर्दुरावासो दुरासदः ॥ दुर्लभो दुर्गमो दुर्गः सर्वायुधविशारदः ॥ २३ ॥ अध्यात्मयोगनिलयः सुतंतुस्तंतुवर्द्धनः ॥ शुभांगो लोकसारंगो जगदीशो जनार्दनः ॥ २४ ॥ भस्मशुद्धिकरो मेरुरोजस्वी शुद्धविग्रहः ॥ असाध्यः साधुसाध्यश्च भृत्यमर्कटरूपधृक् ॥ २५ ॥ हिरण्यरेताः पौराणो रिपुजीवहरोऽचलः ॥ महाह्रदो महागर्तः सिद्धवृन्दारकेडितः ॥ २६ ॥ व्याघ्रचर्माम्बरो व्याली महाभूतो महानिधिः ॥ अमृतानुभवः श्रीमान् पांचजन्यः प्रभञ्जनः ॥ २७ ॥ पंचविंशतितत्त्वस्थः पारिजातः परात्परः ॥ सुलभः सुव्रतः शूरो वाङ्मयैकनिधिर्निधिः ॥ २८ ॥ वर्णाश्रमगुरुर्वर्णी शत्रुजिच्छत्रुतापनः ॥ आश्रमः क्षपणः क्षामो ज्ञानवानचलेश्वरः ॥ २९ ॥ प्रमाणभतो दुर्ज्ञेयः सुपर्णो वायुवाहनः ॥ धनुर्धरो धनुर्वेदो गुणः शशिगुणाकरः ॥ ३० ॥ सत्यः सत्यपरो दीनो धर्मांगो धर्मसाधनः ॥ अनंतदृष्टिरानन्दो दंडो दमयिता दमः ॥ ३१ ॥ अभिचार्यो महामायो विश्वकर्मा विशारदः ॥ वीतरागो विनीतात्मा तपस्वी भूतवाहनः ॥ ३२ ॥ उन्मत्तवेषः प्रच्छन्नो जितकामोऽर्च्चितप्रियः ॥ कल्पांतः प्रकृतिः कल्पः सर्वलोकप्रजापतिः ॥ ३३ ॥ तरस्वी तारको धीमान् प्रधानः प्रभुरव्ययः ॥ लोकपालोऽन्तर्हितात्मा कल्पादिः कमलेक्षणः ॥ ३४ ॥ वेदशास्त्रार्थतत्त्वज्ञो

नियमो नियमाश्रयः ॥ चन्द्रः सूर्यः शनिः केतुर्विरागो विद्रुमच्छविः ॥३५॥ भक्तिवश्यः परब्रह्म मृगबाणार्पणो नयः ॥ अद्रिरद्र्यालयः कांतः परमात्मा जगद्गुरुः ॥ ३६ ॥ सर्वकामालयस्तुष्टो मांगल्यो मंगलावृतः ॥ महातपा दीर्घतपाः स्थविष्ठः स्थविरो द्रुमः ॥ ३७ ॥ अहः संवत्सरो व्याप्तिः प्रमाणं परमं तपः ॥ संवत्सरकरो मंत्रः प्रत्ययः सर्वदर्शनः ॥३८॥ अजः सर्वेश्वरः सिद्धो महारेता महाबलः ॥ योगी योग्यो महातेजाः सिद्धः सर्वादिविग्रहः ॥ ३९ ॥ वसुर्वसुमनाः सत्यः सर्वपापहरो हरः ॥ सुकीर्तिः शोभितः श्रावी ह्यवाङ्मनसगोचरः ॥ ४० ॥ अमृतः शाश्वतः शांतो द्रोणहस्तः प्रतापवान् ॥ कमंडलुधरो धन्वी वेदांगो वेदविन्मुनिः ॥ ४१ ॥ भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता लोकनाथो दुरावरः ॥ अतींद्रियो महामायः सर्वावासश्चतुष्पथः ॥ ४२ ॥ कालयोगी महानादो महोत्साहो महाबलः ॥ महाबुद्धिर्महावीर्यो भूतचारी पुरन्दरः ॥ ४३ ॥ निशाचरः प्रेतचारी महाशक्तिर्महाद्युतिः ॥ अनिर्देश्यवपुः श्रीमान् सर्वाचार्यमनोगतिः ॥ ४४ ॥ बहुश्रुतो महामायो नियतात्मा ध्रुवोऽध्रुवः ॥ तेजस्तेजोद्युतिधरो नरकः सर्वशासकः ॥ ४५ ॥ नृत्यप्रियो नित्यनृत्यः प्रकाशात्मा प्रकाशकः ॥ स्पष्टः क्रूरो बुधो मंत्रः समानः सारसंप्लवः ॥ ४६ ॥ युगादिकृद्युगावर्तो गंभीरो वृषवाहनः ॥ इष्टो विशिष्टः शिष्टेष्टः शरभः शरभो धनुः ॥ ४७ ॥ तीर्थरूपस्तीर्थनामा तीर्थादृश्यः सुतीर्थदः ॥ अपान्निधिरधिष्ठानं विजयो जयकालवित् ॥ ४८ ॥ प्रतिष्ठितः प्रमाणज्ञो हिरण्यकवचो हरिः ॥ विमोचनः सुरगणो विद्येशो बिंदुसंश्रयः ॥ ४९ ॥ बालरूपो बलोन्मत्तो विकर्ता गहनो गुहः ॥ करणं कारणं कर्ता सर्वबंधविमोचनः ॥ ५० ॥ व्यवसायो व्यवस्थानः स्थानदो जगदादिजः ॥ गुरुदो ललितो भेदो निवासात्मनि संस्थितः ॥ ५१ ॥ वीरेश्वरो वीरभद्रो विश्वरूपो विधिर्विराट् ॥ वीरचन्द्रो मणिर्द्धर्ता तीव्रानन्दो नदीश्वरः ॥ ५२ ॥ अग्न्याधारस्त्रिशूली च शिपिविष्टः शिवालयः ॥ वालखिल्यो महावीर्यस्तिग्मांशुर्बधिरः खगः ॥ ५३ ॥ अभिरामः सुशरणः सुब्रह्मण्यः सुधानिधिः ॥ मघवा कौशिको गोमान् विरामः सर्वसाधनः ॥ ५४ ॥ ललाटजो विश्वदेहः सारसंसारचक्रभृत् ॥ अमोघो दण्डिमध्यस्थो हरिणो ब्रह्मवर्चसः ॥ ५५ ॥ परमार्थः परमयः शंबरो व्याघ्रकोऽनलः ॥ रुचिर्वररुचिर्वंद्यो वाचस्पतिरहर्पतिः ॥ ५६ ॥ रवि

विरोचनः स्कंदः शास्ता वैवस्वतोऽमरः ॥ युक्तिरुन्मत्तकीर्तिश्च सानुगश्च परंजयः ॥ ५७ ॥ कैलासाधिपतिः कांतः सविता रवि
लोचनः ॥ विश्वोत्तमो वीतभयो विश्वभर्ता निवारितः ॥५८॥ नित्यो नियतकल्याणः पुण्यश्रवणकीर्तनः ॥ दूरश्रवा विश्वसहो ध्येयो दुःख
प्रणाशनः ॥ ५९ ॥ उत्तारणो दुष्कृतिहा विज्ञेयो दुःसहो भवः ॥ अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मीः किरीटी त्रिदशाधिपः ॥ ६० ॥ विश्वगोप्ता
विश्वकर्ता सुवीरो रुचिरांगदः ॥ जननो जनजन्मादिः प्रीतिमान्नीतिमान्धवः ॥ ६१ ॥ वसिष्ठः कश्यपो भानुर्भीमो
भीमपराक्रमः ॥ प्रणवः सत्पथाचारो महाकाशो महाधनः ॥ ६२ ॥ जन्माधिपो महादेवः सकलागमपारगः ॥ तत्त्वं
तत्त्वविदेकात्मा विभुर्विष्णुविभूषणः ॥ ६३ ॥ ऋषिर्ब्राह्मण ऐश्वर्यो जन्ममृत्युजरातिगः ॥ पंचयज्ञसमुत्पत्तिर्विश्वेशो विमलोदयः ॥
॥ ६४ ॥ अनाद्यंतश्चात्मयोनिर्वत्सलो भक्तलोकधृक् ॥ गायत्रीवल्लभः प्रांशुर्विश्ववासः प्रभाकरः ॥ ६५ ॥ शिशुर्गिरिरतः
सम्राट् सुषेणः सुरशत्रुहा ॥ अनेमिरिष्टनेमिश्च मुक्तिदो विगतज्वरः ॥ ६६ ॥ स्वयंज्योतिस्तपज्ज्योतिरतिज्योतिरचंचलः ॥
पिंगलः कपिलः श्मश्रुर्भालनेत्रस्त्रयीतनुः ॥ ६७ ॥ ज्ञानस्कंदो महानीतिर्विश्वोत्पत्तिरुपप्लवः ॥ भोगी विवस्वतस्तत्त्वो योगपारो
दिवस्पतिः ॥ ६८ ॥ कल्याणगुणनामा च पापहा पुण्यदर्शनः ॥ उदारकीर्तिरुद्योगी महन्मान्यश्च सत्त्वपः ॥ ६९ ॥ रूक्षो
मलिनकेशश्च स्वाधिष्ठानपदाश्रयः ॥ पवित्रः पापनाशश्च मणिपूरो नभोगतिः ॥ ७० ॥ हृत्पुंडरीकमासीनः शक्रः शांतो वृषाकपिः ॥
कृष्णो ग्रहपतिः कृष्णः समर्थोऽनर्थनाशनः ॥ ७१ ॥ अधर्मशत्रुरज्ञेयः पुरुहूतः पुरुश्रुतः ॥ ब्रह्मगर्भो बृहद्गर्भो धर्मधेनुर्धनागमः
॥ ७२ ॥ जगद्धितैषी सुगतः कुमारः कुशलागमः ॥ हिरण्यवर्णो ज्योतिष्मान्नानाभूतरतो ध्वनिः ॥ ७३ ॥ आरोग्यो नयनाध्यक्षो
विश्वामित्रो धनेश्वरः ॥ ब्रह्मज्योतिर्वसुर्धामा महाज्योतिरनुत्तमः ॥ ७४ ॥ मातामहो मातरिश्वा नभस्वान्नागहारधृक् ॥ पुलस्त्यः
पुलहोऽगस्त्यो जातूकर्ण्यः पराशरः ॥ ७५ ॥ निरावरणनिर्वारो वैरंच्यो विष्टरश्रवाः ॥ आत्मभूरनिरुद्धोऽत्रिर्ज्ञानमूर्तिर्महायशाः
॥ ७६ ॥ लोकवीराग्रणीर्वीरश्चन्द्रः सत्यपराक्रमः ॥ व्यालकल्पो महाकल्पः कल्पवृक्षः कलाधरः ॥ ७७ ॥ अलंकरिष्णुरचलो

असंसृतिपतिः शक्रप्रमादः पादपासनः ॥ वसुश्रवाः रोचिष्णुर्विक्रमोऽम्बरः ॥ आशुः शब्दपतिर्वह्नी पवनः शिखिसारथिः ॥ ७८ ॥ असंसृतिपतिः शक्रप्रमादः पादपासनः ॥ वसुश्रवाः
कव्यवाहः प्रतप्तो विश्वभोजनः ॥ ७९ ॥ जप्यो जरारिः शमनो लोहिताश्वस्तनूनपात् ॥ नभोयोनिः सुनिष्पन्नः सुरभिः शिशिरात्मकः
॥ ८० ॥ वसंतो माधवो ग्रीष्मो नभःस्थो बीजवाहनः ॥ अंगिरा गुरुरात्रेयो विमलो विश्ववाहनः ॥ ८१ ॥ पावनः
पुरुजिच्छक्रस्त्रैविद्यो नरवारणः ॥ मनो बुद्धिरहंकारः क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालकः ॥ ८२ ॥ जमदग्निर्जलनिधिर्विगोलो विश्वगोलकः ॥
अघोरानुत्तरो यज्ञः श्रेष्ठो निःश्रेयसालयः ॥ ८३ ॥ शैलो गगनकुंदाभो दानवारिररिंदमः ॥ चामुण्डाजीवकश्चारुर्निःशल्यो लोक
कल्पधृक् ॥८४॥चतुर्वेदश्चतुर्भावश्चतुरश्चतुराप्रियः ॥ आम्नायोऽथ समाम्नायस्तीर्थवेदशिवालयः ॥८५॥ बहुरूपो महारूपः सर्वरूपश्चराचरः ॥
नयनिर्मापको न्यायो न्यायगम्यो निरंजनः॥८६॥सहस्रमूर्द्धा देवेन्द्रः सर्वशास्त्रप्रभंजनः ॥ मुण्डो विरूपो विक्रांतो दण्डी ताण्डगुणोत्तमः
॥ ८७ ॥ पिंगलाक्षो हयग्रीवो नीलग्रीवो निरामयः ॥सहस्रबाहुः सर्वेशः शरण्यः सर्वलोकधृक् ॥ ८८ ॥ पद्मासनः परंज्योतिः परंपारं परं
फलम् ॥ पद्मगर्भो महागर्भो विश्वगर्भो विचक्षणः ॥ ८९ ॥ चराचरज्ञो वरदो वरेशस्तु महास्वनः ॥ देवासुरगुरुर्देवो देवासुरनमस्कृतः
॥ ९० ॥ देवासुरमहामित्रो देवासुरमहाश्रमः ॥ देवादिदेवो देवाग्निर्देवासुरवरप्रदः ॥ ९१ ॥ देवासुरेश्वरो दिव्यो देवासुरमहेश्वरः ॥
देवदेवो महाचिंत्यो देवतात्मात्मसंभवः ॥ ९२ ॥ सद्योनष्टासुरव्याघ्रो देवसिंहो दिवाकरः ॥ विबुधाग्रचरः श्रेष्ठः सर्वदेवोत्तमोत्तमः ॥९३॥
शिवज्ञानप्रदः श्रीमान् शिखी श्रीपर्वतप्रियः ॥ वज्रहस्तः सिद्धखड्गो नरसिंहनिपातनः ॥९४॥ ब्रह्मचारी लोकचारी धर्मचारी धनाधिपः॥
नंदी नंदीश्वरो नंदो लग्नवृत्तिधरः शुचिः ॥ ९५ ॥ लिङ्गाध्यक्षः सुराध्यक्षो योमाध्यक्षो युगावहः ॥ स्वर्द्धामा स्वर्गतः स्वामी स्वरः
स्वरतमः स्वनः॥ ९६ ॥ बोधाध्यक्षो बीजकर्ता धर्मकृद्धर्मसम्भवः॥ दंभो लोभोऽथ वै शंभुः सर्वभूतमहेश्वरः॥९७॥ श्मशाननिलयस्त्र्यक्षः
सेतुरप्रतिमाकृतिः ॥ लोकोत्तरः स्फुटालोकस्त्र्यंबको नागभूषणः ॥ ९८ ॥ अंधकारिर्मखद्वेषी विष्णोः स्कंधरतात्मकः ॥
हितदश्च क्षयगुणो दक्षारिः पूषदंतभित् ॥ ९९ ॥ पूर्जनिः खंडपरशुः सकलो निष्कलो मुनिः ॥ अकालः सकलाधारः

पांडुरोगो मृगो नगः ॥ १०० ॥ पूर्णः पूरयिता पुण्यः सुकुमारः सुलोचनः ॥ संगो गोपप्रियाक्रूरः पुण्यकीर्तिरनामयः ॥ १०१ ॥
मनोजवस्तीर्थकरो जटिलो जीवितेश्वरः ॥ जीवितांतकरो नित्यो वसुरेता वसुप्रदः ॥ १०२ ॥ सुजातिः सत्कृतिः सिद्धिः सजातिः
कालकंटकः ॥ कलाधरो महाकालभूतः सत्यपरायणः ॥ १०३ ॥ लोकलावण्यकर्ता च लोकोत्तरसुखालयः ॥ तेजोमयो द्युतिधरो लोक
मानाग्रणीरणुः ॥ १०४ ॥ शुचिस्मितः प्रसन्नात्मा अजेयो दुरतिक्रमः ॥ ज्योतिर्मयो नीरुजाङ्गो गङ्गाप्रेष्ठो जलेश्वरः ॥ १०५ ॥ तुंबवीणो
महाकायो विशोकः शोकनाशनः ॥ त्रिलोकपास्त्रिलोकेशः सर्वशुद्धिरधोक्षजः ॥ १०६ ॥ अव्यक्तलक्षणो देवो व्यक्तोऽव्यक्तो विशां
पतिः ॥परः शिवो वसुर्नासासारो मानंदनो मयः॥१०७॥ब्रह्मा विष्णुः प्रजापालो हंसो हंसगतिर्वयः ॥ वेधा विधाता स्रष्टा च संहर्ता च चतु
र्मुखः ॥ १०८ ॥ कैलासशिखरावासी सर्वावासी सदागतिः ॥ हिरण्यगर्भो द्रुहिणो भूतनाथोऽथ भूपतिः ॥ १०९ ॥ सद्योगी योगविद्योगी
वरदो ब्राह्मणप्रियः ॥ देवप्रियो देवनाथो देवको देवाचिंतकः ॥ ११० ॥ विषमाक्षो विरूपाक्षो वृषभो वृषवर्धनः ॥ निर्म्ममो निरहंकारो
निर्मोहो निरुपद्रवः ॥ १११ ॥ दर्पहा दर्पदो दृप्तः सर्वार्थपरिवर्तकः ॥ सहस्रजित्सहस्रार्चिः स्निग्धप्रकृतिदक्षिणः ॥ ११२ ॥ भूतभव्य
भवन्नाथः प्रभवोऽभूतिनाशनः ॥ अर्थोऽनर्थो महाकोशः परकार्यैकपण्डितः ॥ ११३ ॥ निष्कंटकः कृतानंदो निर्व्याजो व्याजमर्दनः ॥
सत्त्ववान् सात्यकिः सत्यः कीर्तिस्नेहः कृतागतः ॥ ११४ ॥ अकंपितो गुणग्राही नैकात्मा नैककर्मकृत् ॥ सुप्रीतः सुमुखः सूक्ष्मः सुकरो
दक्षिणानिलः ॥ ११५ ॥ नंदिस्कंधधरो धुर्यः प्रकटः प्रीतिवर्धनः ॥ अपराजितः सर्वसत्त्वो गोविंदः सत्त्ववाहनः ॥ ११६ ॥ अधृतः
स्वधृतः सिद्धः पूतमूर्तिर्यशोधनः ॥ वाराहशृङ्गधृक् शूरो बलवानेकनाथकः ॥ ११७ ॥ श्रुतिप्रकाशः श्रुतिमानेकबंधुरनेककृत् ॥
श्रीवत्सलः शिवारंभः शांताभद्रः समो यशः ॥ ११८ ॥ भूशयो भूषणो भूतिर्भूतकृद्भूतिभावनः ॥ अकम्पो भक्तिकायस्तु कालहा निष्क
लेश्वरः ॥ ११९ ॥ सत्यव्रतो महात्यागी नित्यशांतिः परायणः ॥ परार्थवृत्तिर्वरदो भिक्षुस्तवविशारदः ॥ १२० ॥ शुभदः शुभकर्ता च

शुभनामा शुभः स्वयम् ॥ अनर्थितो गुणग्राही ह्यकर्ता कनकप्रभः ॥ १२१ ॥ स्वभावभद्रो मध्यस्थः शत्रुघ्नो विघ्ननाशनः ॥ शिखण्डी
कवची शूली जटी मुंडी च कुंडली ॥ १२२ ॥ अमृत्युः सर्वदृक् सिंहस्तेजोराशिर्महामणिः ॥ असंख्येयोऽप्रमेयात्मा वीर्यवान् वीर्य
कोविदः ॥ १२३ ॥ वैद्यश्चैव वियोगी च सप्तवीरो मुनीश्वरः ॥ अनुक्रमो दुराधर्षो मधुरः प्रियदर्शनः ॥ १२४ ॥ सुरेशस्तारणः शर्वः शब्दः
प्रतपताङ्गतिः ॥ कालक्षयः कालकारी सुकृतिः कृतवासुकिः ॥ १२५ ॥ महेष्वासो महीभर्ता निष्कलंको विशृंखलः ॥ द्युमणिस्तरणि
र्धन्यः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः ॥ १२६ ॥ विवृतः संवृतस्तुत्यो व्यूढोरस्को महाभुजः ॥ सर्वयोनिर्निरातंको नरनारायणप्रियः ॥ १२७ ॥
निर्लेपो निःप्रसङ्गात्मा निर्व्यङ्गो व्यंगनाशनः ॥ स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोता व्याप्तमूर्तिर्निराकुलः ॥ १२८ ॥ निरवद्यपदोपायो
विद्याराशिरसत्कृतः ॥ प्रशांतबुद्धिरक्षुण्णः संग्रहा नित्यसुंदरः ॥ १२९ ॥ पापहा धर्मधात्रीशः साकल्यः शर्वरीपतिः ॥ परमार्थगुरु
र्दृष्टिः सुरैराश्रितवत्सलः ॥ १३० ॥ सोमो रसज्ञो रसदः सर्वसत्त्वावलंबनः ॥ एवं नाम्नां सहस्रेण तुष्टाव वृषभध्वजम् ॥ १३१ ॥ प्रार्थ
यामास शंभुं वै पूजयामास शंकरम् ॥ परीक्षार्थं हरेरीशः कमलेषु महेश्वरः ॥ १३२ ॥ गोपयामास कमलं तदेकं भुवनेश्वरः ॥ वित्ते
विचारितं तेन कुतो वै कमलं गतम् ॥१३३॥ यातु यातु सुखेनैव नेत्रं किं कमलं नहि ॥ तदेव कमलं कृत्वा यजामि चन्द्रशेखरम् ॥१३४॥
इत्येवं हृदयं ज्ञात्वा विष्णोरमिततेजसः ॥ मामेति व्याहरन्नेव प्रादुरासीज्जगद्गुरुः ॥ १३५ ॥ यत्रैव च कृता पजा कृष्णेन परमा
त्मना ॥ तस्मादवततराशु मंडलात्पार्थिवस्य सः ॥ १३६ ॥ यथोक्तरूपिणं शंभुं तेजोराशिसमुत्थितम् ॥ नमस्कृत्य पुरः स्थित्वा
स्तुतिं कृत्वा विशेषतः ॥ १३७ ॥ प्रसन्नवदनो भूत्वा शंभोश्च सम्मुखे स्थितः ॥ इत्थंभूतं हरिर्दृष्ट्वा कोटिभास्करभूषितम् ॥ १३८ ॥
प्रणमामीश्वरं शंभुं देवदेवं जनार्दनः ॥ तदा प्राह महादेवः प्रहसन्निव शंकरः ॥ १३९ ॥ संप्रेक्षमाणो विष्णुं तु कृतांजलिपुटं
स्थितम् ॥ १४० ॥ शंकर उवाच ॥ ज्ञातं मयेदं सकलं देवकार्यं जनार्दनः ॥ सुदर्शनाख्यं चक्रं च ददामि तव शोभनम् ॥ १४१ ॥

यद्रूपं भवता दृष्टं सर्वलोकसुखावहम् ॥ हिताय सर्वदेवेश कृतं भावय सुव्रत ॥ १४२ ॥ रणादावपि संस्मृत्य देवानां दुःखनाशनम् ॥ इदं रूपमिदं चक्रमिदं नामसहस्रकम् ॥१४३॥ये शृण्वंति सदा भक्त्या सिद्धिः स्यादनपायिनी ॥ एवमुक्त्वा ददौ चक्रं सूर्यायुतसमप्रभम् ॥ १४४॥ विष्णुरपि च संस्नाय जग्राहोदङ्मुखस्तदा॥नमस्कृत्य तदा देवं पुनर्वचनमब्रवीत् ॥१४५॥शृणु देव मया ध्येयं पठनीयं च किं प्रभो॥लोकानां दुःखनाशार्थं वद त्वं लोकशंकर॥ १४६॥ इति पृष्टस्तदा तेन संतुष्टस्तु शिवोऽब्रवीत् ॥ रूपं ध्येयं मदीयं वै सर्वानर्थविनाशनम् ॥ १४७ ॥ अनेकदुःखनाशार्थं पाठ्यं नामसहस्रकम्॥धार्यं चक्रं सदामेऽद्य सर्वानर्थप्रशांतये ॥ १४८ ॥अन्ये च ये पठिष्यंति पाठयिष्यंति नित्यशः ॥ तेषां दुःखं न स्वप्नेऽपि जायते नात्र संशयः ॥ १४९ ॥ राज्ञां च संकटे प्राप्ते शतवारं पठेद्यदि ॥ साङ्गं च विधियुक्तं च कल्याणं लभते नरः ॥ १५० ॥ रोगनाशकरं चैतद्विद्यानायकमुत्तमम् ॥ यमुद्दिश्य फलं श्रेष्ठं पठिष्यंति नरास्त्विह ॥ १५१ ॥ लप्स्यंते नात्र संदेहः फलं सत्यमनुत्तमम्॥ मम प्रातः समुत्थाय पूजां कृत्वा मदीयकम्॥१५२॥पठते मत्समक्षं वै नित्यं सिद्धिर्न दूरतः॥ ऐहिकां सिद्धिमासाद्य परलोकसमुद्भवाम् ॥ १५३ ॥ प्राप्नोति पाठको नित्यं मत्प्रसादात्सुरेश्वर ॥ सायुज्यमुक्तिमायाति नात्र कार्या विचारणा ॥ १५४ ॥ एवमुक्त्वा तदा विष्णुं शंकरः प्रीतमानसः॥ उपस्पृश्य कराभ्यां हि उवाच शंकरः पुनः ॥ १५५ ॥ वरदोऽस्मि सुरश्रेष्ठ वरान् वृण यथेप्सितान्॥ भक्त्या वशीकृतो नूनं स्तवेनानेन ते तदा ॥१५६॥ इत्युक्तो देवदेवेन देवदेवं प्रणम्य तम्॥यथेदानीं कृपा देव क्रियते चाप्यतः परम् ॥ १५७ ॥ कार्या चैव विशेषेण कृपालुत्वात्त्वया प्रभो॥ त्वयि भक्तिर्महादेव प्रसीद वरमुत्तमम् ॥१५८॥ नान्यदिच्छामि भक्तानामार्तिर्नैव भवेत्प्रभो ॥ तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य दयावान् सुतरां भवः॥१५९॥ पस्पर्श च तदा तस्मै श्रद्धां शीतांशुलक्षणः ॥ प्राह त्वैनं महादेवः परमानन्दमच्युतम् ॥ ॥१६०॥मयि भक्तिश्च वंद्यश्च पूज्यश्चैव सुरैरपि॥विश्वंभरस्त्वदीयं वै नाम पापहरं परम् ॥१६१ ॥ भविष्यति न संदेहो मत्प्रसादात्सुरोत्तम ॥ इत्युक्त्वाऽतर्दधे रुद्रो भगवान्नीललोहितः ॥ १६२ ॥ जनार्दनोऽपि भगवान् वचनाच्छंकरस्य च ॥ प्राप्य चक्रं शुभं ध्यानं स्तोत्र

मेतन्निरंतरम् ॥ १६३ ॥ पपाठाध्यापयामास भक्तैस्तदुपपादितम् ॥ अन्येऽपि ये पठिष्यंति ते विंदंतु तथा फलम् ॥ १६४ ॥
इति पृष्टं समायातं श्रृण्वतां पापहारकम्॥ अतः परं च किं श्रेष्ठाः कथयामि वचः पुनः ॥१६५॥ इति श्रीशिवसहस्रनामस्तोत्रं संपूर्णम् ॥
अथ मृत्युञ्जयकवचप्रारंभः ॥ भैरव उवाच ॥ श्रृणुष्व परमेशानि कवचं मन्मुखोदितम् ॥ महामृत्युंजयस्यास्य न देयं परमाद्भुतम् ॥
॥ १ ॥ यं धृत्वा यं पठित्वा च यं श्रुत्वा कवचोत्तमम् ॥ त्रैलोक्याधिपतिर्भूत्वा सुखितोऽस्मि महेश्वरि ॥ २ ॥ तदेव वर्णयिष्यामि तव
प्रीत्या वरानने॥तथापि परमं तत्त्वं न दातव्यं दुरात्मने॥३॥ॐ अस्य श्रीमहामृत्युंजयकवचस्य श्रीभैरवऋषिः। गायत्रीछन्दः । श्रीमृत्युंजय
रुद्रो देवता । ॐ बीजम् । जं शक्तिः । सः कीलकम् । हौं इति तत्त्वम् । चतुर्वर्गफलसाधने पाठे विनियोगः ॥ ॐ चन्द्रमंडल
मध्यस्थे रुद्रमाले विचित्रिते ॥ तत्रस्थं चिंतयेत्साध्यं मृत्युं प्राप्तोऽपि जीवति ॥ ४ ॥ ॐ जूं सः हौं शिरः पातु देवो मृत्युंजयो मम ॥
श्रीशिवो वै ललाटं च ॐ हौं भ्रुवौ सदाशिवः ॥ ५ ॥ नीलकंठोऽवतान्नेत्रे कपर्दी मेऽवताच्छ्रुती ॥ त्रिलोचनोऽवताद्गण्डौ नासां मे
त्रिपुरांतकः ॥ ६ ॥ मुखं पीयूषघटभृदोष्ठौ मे कृत्तिकाम्बरः ॥ हनुं मे हाटकेशानो मुखं वटुकभैरवः ॥ ७ ॥ कंधरां कालमथनो गलं
गणप्रियोऽवतु ॥ स्कंधौ स्कंदपिता पातु हस्तौ मे गिरिशोऽवतु ॥ ८ ॥ नखान्मे गिरिजानाथः पायादंगुलिसंयुतान् ॥ स्तनौ तारापतिः
पातु वक्षः पशुपतिर्मम ॥ ९ ॥ कुक्षिं कुबेरवदनः पार्श्वौ मे मारशासनः ॥ शर्वः पातु तथा नाभिं शूली पृष्ठं ममावतु ॥ १० ॥
शिश्नं मे शंकरः पातु गुह्यं गुह्यकवल्लभः ॥ कटिं कालांतकः पायादूरू मेंऽधकघातकः ॥ ११ ॥ जागरूकोऽवताज्जानू जंघे मे काल
भैरवः ॥ गुल्फौ पायाज्जटाधारी पादौ मृत्युंजयोऽवतु ॥१२॥ पादादिमूर्द्धपर्यंतं सद्योजातो ममावतु ॥ रक्षाहीनं नामहीनं वपुः पात्वमृते
श्वरः ॥ १३ ॥ पूर्वे बलविकरणो दक्षिणे कालशासनः ॥ पश्चिमे पार्वतीनाथ उत्तरे मां मनोन्मनः ॥ १४ ॥ ऐशान्यामीश्वरः पाया
दाग्नेय्यामग्निलोचनः ॥ नैर्ऋत्यां शंभुरव्यान्मां वायव्यां वायुवाहनः ॥ १५ ॥ ऊर्ध्वं बलप्रमथनः पाताले परमेश्वरः ॥ दशदिक्षु सदा

पातु महामृत्युंजयश्च माम् ॥ १६ ॥ रणे राजकुले द्यूते विषमे प्राणसंशये ॥ पायादों जूं महारुद्रो देवदेवो दशाक्षरः ॥ १७ ॥
प्रभाते पातु मां ब्रह्मा मध्याह्ने भैरवोऽवतु ॥ सायं सर्वेश्वरः पातु निशायां नित्यचेतनः ॥१८॥ अर्धरात्रे महादेवो निशांते मां महोदयः ॥
सर्वदा सर्वतः पातु ॐ जूं सः हौं मृत्युंजयः ॥ १९ ॥ इतीदं कवचं पुण्यं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ॥ सर्वमंत्रमयं गुह्यं सर्वतंत्रेषु गोपितम् ॥२०॥
पुण्यं पुण्यप्रदं दिव्यं देवदेवादिदैवतम् ॥ य इदं च पठेन्मंत्रं कवचं वाचयेत्ततः ॥ २१ ॥ तस्य हस्ते महादेवि त्र्यंबकस्याष्टसिद्धयः ॥ रणे
धृत्वा चरेद्युद्धं हत्वा शत्रूञ्जयं लभेत् ॥२२॥ जपं कृत्वा गृहे देवि संप्राप्स्यति सुखं पुनः ॥ महाभये महारोगे महामारीभये तथा ॥ दुर्भिक्षे
शत्रुसंहारे पठेत्कवचमादरात् ॥१२३॥ इति श्रीमहामृत्युंजयकवचं समाप्तम् ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे पूर्वखण्डे शिवतंत्रे षष्ठस्तरंगः ॥ ६ ॥



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ विष्णुतंत्रप्रारंभः ॥ तत्रादौ पटलप्रारंभः ॥ अथ वक्ष्ये महामंत्रान्विष्णोः सर्वार्थसाधकान् ॥ येषां संस्मरणात्संतो भवाब्धेः पारमाश्रिताः ॥ १ ॥ अथाष्टाक्षरविष्णुमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा—" ॐ नमो नारायणाय " इत्यष्टाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम् । अस्य मंत्रस्य साध्यनारायण ऋषिः । दैवीगायत्री छन्दः । विष्णुर्देवता । सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः ॥ साध्यनारायणर्षये नमः शिरसि १ दैवीगायत्रीछन्दसे नमः मुखे २ विष्णुदेवतायै नमः हृदि ३ विनियोगाय नमः सर्वांगे ४ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ क्रुद्धोल्काय अंगुष्ठाभ्यां नमः १ ॐ महोल्काय तर्जनीभ्यां नमः २ ॐ वीरोल्काय मध्यमाभ्यां नमः ३ ॐ द्युल्काय अनामिकाभ्यां नमः ४ ॐ सहस्रोल्काय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ इति करन्यासः ॥ ॐ क्रुद्धोल्काय हृदयाय नमः १ ॐ महोल्काय शिरसे स्वाहा २ ॐ वीरोल्काय शिखायै वषट् ३ ॐ द्युल्काय कवचाय हुं ४ ॐ सहस्रोल्कायास्त्राय फट् ५ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ॐ ॐ नमः हृदयाय नमः १ ॐ नं नमः शिरसे स्वाहा २ ॐ मों नमः शिखायै वषट् ३ ॐ नां नमः कवचाय हुं ४ ॐ रां नमः नेत्रत्रयाय वौषट् ५ ॐ यं नमः अस्त्राय फट् ६ ॐ णां नमः कुक्ष्योः ७ ॐ यं नमः पृष्ठे ८ इति मंत्रवर्णैः षडंगन्यासः ॥ अथ मंत्रवर्णैरष्टांगन्यासः ॥ ॐ ॐ नमः आधारे १ ॐ नं नमः हृदि २ ॐ मों नमः वक्त्रे ३ ॐ नां नमः दक्षिणभुजे ४ ॐ रां नमः वामभुजे ५ ॐ यं नमः दक्षिणपादे ६ ॐ णां नमः वामपादे ७ ॐ यं नमः नाभौ ८ इति प्रथमन्यासः ॥ १ ॥ ॐ ॐ नमः कंठे ॐ नं नमः नाभौ २ ॐ मों नमः हृदि ३ ॐ नां नमः दक्षिणस्तने ४ ॐ रां नमः वामस्तने ५ ॐ यं नमः दक्षिणपार्श्वे ६ ॐ णां नमः वामपार्श्वे ७ ॐ यं नमः पृष्ठे ८ इति द्वितीयन्यासः ॥ २ ॥ ॐ ॐ नमः मूर्ध्नि १ ॐ नं नमः मुखे २ ॐ मों नमः दक्षिणनेत्रे ३ ॐ नां नमः वामनेत्रे ४ ॐ रां नमः दक्षिणकर्णे ५ ॐ यं नमः वामकर्णे ६ ॐ णां नमः दक्षिणनासापुटे ७ ॐ यं नमः वामनासापुटे ८ इति तृतीयन्यासः ॥ ३ ॥ ॐ ॐ नमः दक्षबाहुमूले १ ॐ नं नमः दक्षकूर्परे २ ॐ मों नमः दक्षमणिबंधे ३ ॐ नां नमः दक्षहस्तांगुलिमूले ४

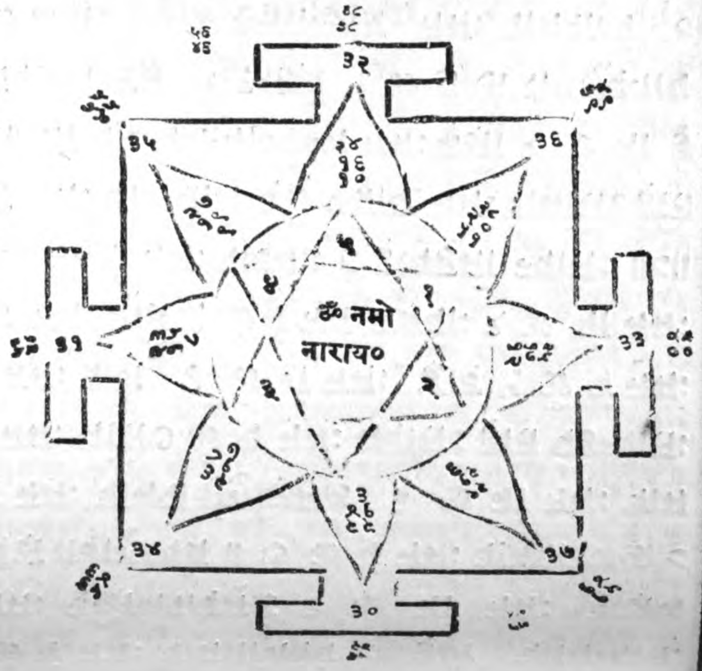
१—मंत्रन्यासं ततः कुर्यात्सर्वकामफलप्रदम् ॥ यं विना नैव तत्सिद्धिः सम्यगप्युरनिष्फलम् ॥

ॐ रां नमः दक्षहस्तांगुल्यग्रे ५ ॐ यं नमः वामबाहुमूले ६ ॐ णां नमः वामकूर्परे ७ ॐ यं नमः वाममणिबंधे ८ इति चतुर्थन्यासः ॥ ४ ॥ ॐ ॐ नमः वामहस्तांगुलिमूले १ ॐ नं नमः वामहस्तांगुल्यग्रे २ ॐ मों नमः दक्षिणपादमूले ३ ॐ नां नमः दक्षिण जानुनि ४ ॐ रां नमः दक्षिणांगुलौ ५ ॐ यं नमः दक्षपादांगुलिमूले ६ ॐ णां नमः दक्षपादांगुल्यग्रे ॥ ७ ॐ यं नमः वामपादमूले ८ इति पंचमन्यासः ॥ ५ ॥ ॐ ॐ नमः वामजानुनि १ ॐ नं नमः वामगुल्फे २ ॐ मों नमः वामपादांगुलिमूले ३ ॐ नां नमः वाम पादांगुल्यग्रे ॥४ ॥ (हृदये करं दत्त्वा) ॐ रां नमः त्वचि५ ॐ यं नमः रक्ते ६ ॐ णां नमः मांसे७ ॐ यं नमः मेदसि८ इति षष्ठन्यासः ॥ ६ ॥ ॐ ॐ नमः अस्थ्नि १ ॐ नं नमः मज्जायाम् २ ॐ मों नमः शुक्रे ३ ॐ नां नमः प्राणे ४ ॐ रां नमः हृदि ५ ॐ यं नमः दक्षिणगले ६ ॐ णां नमः वामगले ७ ॐ यं नमः हृदि ८इति सप्तमन्यासः ॥७॥ॐ ॐ नमः मूर्ध्नि १ ॐ नं नमः नेत्रयोः २ ॐ मों नमः मुखे ३ ॐ नां नमः हृदि४ ॐ रां नमः कुक्षौ५ ॐ यं नमः ऊर्वोः६ ॐ णां नमः जंघयोः७ ॐ यं नमः पादयोः ८ इत्यष्टमो न्यासः ॥८॥ इति मंत्रवर्णाष्टन्यासाः॥ॐ चक्राय नमः दक्षिणगंडे १ॐ शंखाय नमः वामगंडे २ॐ गदायै नमः दक्षिणांसे ३ॐ पद्माय नमः वामांसे४ इति विन्यस्य मूर्तिपंजरन्यासं कुर्यात् ॥ तत्र क्रमः॥ॐ ॐ अं केशवाय धात्रे नमः ललाटे १ ॐ नं आं नारायणायार्यम्णे नमः कुक्षौ २ ॐ मों इं माधवाय मित्राय नमः हृदि ३ ॐ भं ईं गोविंदाय वरुणाय नमः कंठे ४ ॐ गं उं विष्णवेंऽशवे नमः दक्षपार्श्वे ५ ॐ वं ऊं मधुसूदनाय भगाय नमः दक्षिणांसे ६ ॐ तें एं त्रिविक्रमाय विवस्वते नमः गलदक्षिणभागे ७ ॐ वां ऐं वामनायेन्द्राय नमः वामपार्श्वे ८ ॐ सुं ओं श्रीधराय पूष्णे नमः वामांसे ९ ॐ दें औं हृषीकेशाय पर्जन्याय नमः गलवामभागे १० ॐ वां अं पद्मनाभाय त्वष्ट्रे नमः पृष्ठे ११ ॐ यं अः दामोदराय विष्णवे नमः ककुदि १२ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय मूर्ध्नि १३ इति द्वादशमूर्तिपंजर न्यासः ॥ ॐ किरीटकेयूरहारमकरकुंडलधरशंखचक्रगदांभोजपीतांबरधरश्रीवत्सांकितवक्षःस्थलश्रीभूमिसहितात्मज्योतिर्द्वयदीप्तकराय

१ द्वादशार्णं मंत्रवरं विन्यसेद्ब्रह्मरन्ध्रके ॥ वासुदेवो भवेत्साक्षाद्व्यापितस्तस्य तेजसा ॥ २ तन्मूर्तिपञ्जरन्यासोऽभीप्सितः परमेष्ठिना ॥ सकृन्न्यासाद्भवेन्मन्त्री विष्णुमूर्तिरनुत्तमा ॥

सहस्रादित्यतेजसे नमः इति मंत्रेण शिरआदिपादांतं व्यापकं विन्यसेत् ॥ इति किरीटमंत्रन्यासः ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत् ॥ उद्यत्कोटिदिवाकराभमनिशं शंखं गदां पंकजं चक्रं बिभ्रतमिन्दिरावसुमतीसंशोभिपार्श्वद्वयम् ॥ कोटीरांगदहारकुंडलधरं पीतांबरं कौस्तुभोदीप्तं विश्वधरं स्ववक्षसि लसच्छ्रीवत्सचिह्नं भजे ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा सर्वतोभद्रमंडले मं मंडूकादिपरतत्वांतपीठदेवताभ्यो नमः इति पीठदेवताः संपूज्य पीठशक्तिं पूजयेत् ॥ तत्र क्रमः ॥ पूर्वादिक्रमेण ॐ विमलायै नमः १ ॐ उत्कर्षिण्यै नमः २ ॐ ज्ञानायै नमः ३ ॐ क्रियायै नमः ४ ॐ योगायै नमः ५ ॐ प्रह्व्यै नमः ६ ॐ सत्यायै नमः ७ ॐ ईशानायै नमः ८ मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ९ इति नवपीठशक्तीः पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रमअग्न्युत्तारणपूर्वकम् "ॐ नमो भगवते विष्णवे सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्मसंयोगपद्मपीठात्मने नमः" इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपज्य देवाज्ञां गहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तत्र क्रमः ॥ पुष्पांजलिमादाय ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रिय ॥ अनुज्ञां देहि मे विष्णो परिवारार्चनाय मे ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत् । तद्यथा—षट्कोणकेसरेषु अग्निकोणे ॐ क्रुधोल्काय हृदयाय नमः १ नैर्ऋत्ये ॐ महोल्काय शिरसे स्वाहा २ वायव्ये ॐ वीरोल्काय शिखायै वषट् ३ ऐशान्ये ॐ द्युल्काय कवचाय हुं ४ देवपश्चिमे सहस्रोल्कायास्त्राय फट् ५ इति पंचांगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूल

अष्टाक्षरविष्णुपूजनयंत्रम् ।

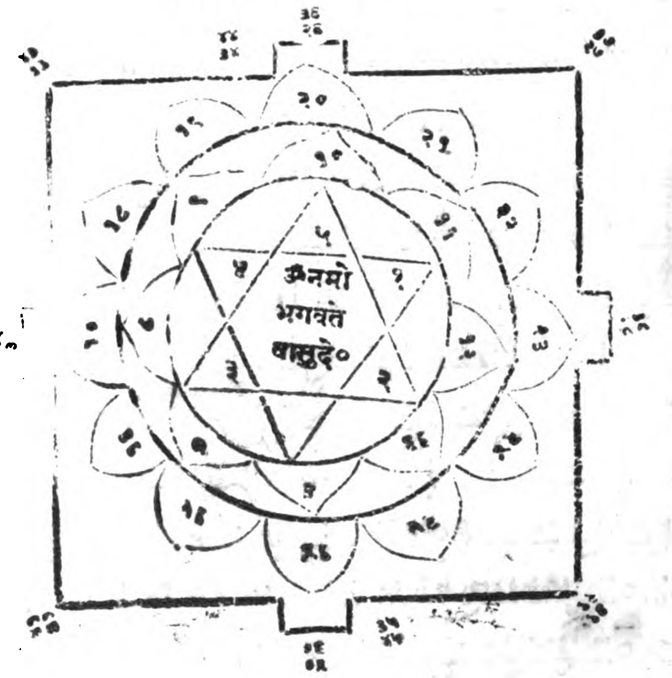


मुच्चार्य ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥१॥ ततोऽष्टदलमूले पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीं प्रकल्प्य पूर्वादिक्रमेण ॐ ॐ नमः १ ॐ नं नमः २ ॐ मों नमः ३ ॐ नां नमः ४ ॐ रां नमः ५ ॐ यं नमः ६ ॐ णां नमः ७ ॐ यं नमः ८ इति मंत्रवर्णान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततोऽष्टदलमध्येषु पूर्वे ॐ वासुदेवाय नमः । वासुदेव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ इति सर्वत्र । दक्षिणे ॐ संकर्षणाय नमः संकर्षणश्रीपा० २ पश्चिमे ॐ प्रद्युम्नाय नमः प्रद्युम्नश्रीपा० ३ उत्तरे ॐ अनिरुद्धाय नमः अनिरुद्धश्रीपा० ४ अग्निकोणे ॐ शांत्यै नमः शांतिश्रीपा० ५ नैर्ऋते ॐ श्रियै नमः श्रीश्रीपा० ६ वायव्ये ॐ सरस्वत्यै नमः सरस्वतीश्रीपा० ७ ऐशान्ये ॐ रत्यै नमः रतिश्रीपा० ८ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततोऽष्टदलाग्रेषु ॥ पूर्वे ॐ चक्राय नमः १ दक्षिणे ॐ शंखाय नमः २ पश्चिमे ॐ गदायै नमः ३ उत्तरे ॐ पद्माय नमः ४ अग्निकोणे ॐ कौस्तुभाय नमः ५ नैर्ऋते ॐ मुसलाय नमः ६ वायवे ॐ खड्गाय नमः ७ ऐशान्ये ॐ वनमालायै नमः ८ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति चतुर्थावरणम् ॥ ४ ॥ भूपुराभ्यंतरे पूर्वे ॐ गरुडाय नमः १ दक्षिणे ॐ शंखनिधये नमः २ पश्चिमे ॐ ध्वजाय नमः ३ उत्तरे ॐ पद्मनिधये नमः ४ अग्निकोणे ॐ विघ्नाय नमः ५ नैर्ऋते ॐ आर्य्यायै नमः ६ वायव्ये ॐ दुर्गायै नमः ७ ऐशान्ये ॐ सेनान्यै नमः ८ इत्यष्टौ पजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति पंचमावरणम् ॥ ५ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण । ॐ लं इन्द्राय नमः इन्द्रश्रीपा० १ ॐ रं अग्नये नमः अग्निश्रीपा० २ ॐ मं यमाय नमः यमश्रीपा० ३ ॐ क्षं निर्ऋतये नमः निर्ऋतिश्रीपा० ४ ॐ वं वरुणाय नमः वरुणश्रीपा० ५ ॐ यं वायवे नमः वायुश्रीपा० ६ ॐ कुं कुबेराय नमः कुबेरश्रीपा० ७ ॐ हं ईशानाय नमः ईशानश्रीपा० ८ इन्द्रेशानयोर्मध्ये ॐ आं ब्रह्मणे नमः ब्रह्मश्रीपा० ९ वरुणनिर्ऋत्योर्मध्ये ॐ ह्रीं अनंताय नमः अनंतश्रीपा० १० इति दशदिक्पालान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । तद्बाह्ये पूर्वादिक्रमेण । ॐ वं वज्राय नमः १ ॐ शं शक्तये

नमः २ ॐ दं दंडाय नमः ३ ॐ खं खड्गाय नमः ४ ॐ पं पाशाय नमः ५ ॐ अं अंकुशाय नमः ६ ॐ गं गदायै नमः ७ ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ८ ॐ पं पद्माय नमः ९ ॐ चं चक्राय नमः इत्यस्त्राणि पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्। इति सप्तमावरणम् ॥ ७ ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं षोडशलक्षजपः ॥ तथा च—"विकारलक्षं प्रजपेन्मनुमेनं समाहितः ॥ तद्दशांशं सरसिजैर्जुहुयान्मधुराप्लुतैः ॥ १ ॥ धर्मार्थकामाँल्लब्ध्वा वै विष्णोः सायुज्यमाप्नुयात् ॥" इत्यष्टाक्षरविष्णुमंत्रप्रयोगः ॥ अथ द्वादशाक्षरविष्णुमंत्रप्रयोगः (शारदायाम्) मंत्रो यथा—"ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम् ॥ अस्य मंत्रस्य प्रजापतिर्ऋषिः। गायत्री छंदः। वासुदेवपरमात्मा देवता। सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः ॥ ॐ प्रजापतिऋषये नमः शिरसि १ गायत्रीछंदसे नमः मुखे २ वासुदेवपरमात्मदेवतायै नमः हृदि ३ विनियोगाय नमः सर्वांगे ४ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः १ नमः तर्जनीभ्यां नमः २ भगवते मध्यमाभ्यां नमः ३ वासुदेवाय अनामिकाभ्यां नमः ४ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ इति करन्यासः ॥ ॐ हृदयाय नमः १ नमः शिरसे स्वाहा २ भगवते शिखायै वषट् ३ वासुदेवाय कवचाय हुँ ४ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय अस्त्राय फट् ५ इति पंचांगन्यासः ॥ ॐ ॐ नमः मूर्ध्नि १ ॐ नं नमः भाले २ ॐ मों नमः नेत्रयोः ३ ॐ भं नमः मुखे ४ ॐ गं नमः गले ५ ॐ वं नमः बाह्वोः ६ ॐ तें नमः हृदये ७ ॐ वां नमः कुक्षौ ८ ॐ सुं नमः नाभौ ९ ॐ दें नमः लिंगे १० ॐ वां नमः जान्वोः ११ ॐ यं नमः पादयोः १२ इति मंत्रवर्णन्यासः ॥ इति न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत् ॥ विष्णुं शारदचन्द्रकोटिसदृशं शंखं रथांगं गदामंभोजं दधतं सिताब्जनिलयं कांत्या जगन्मोहनम् ॥ आबद्धांगदहारकुण्डलमहामौलिं स्फुरत्कंकणं श्रीवत्सांकमुदारकौस्तुभधरं वंदे मुनींद्रैः स्तुतम् ॥ इति ध्यात्वा सर्वतोभद्रमंडले "मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः" इति पीठदेवताः संपूज्य पीठशक्तीः पूजयेत्॥ तद्यथा—पूर्वादिक्रमेण ॐ विमलायै नमः १ ॐ उत्कर्षिण्यै नमः २ ॐ ज्ञानायै नमः ३ ॐ क्रियायै नमः ४ ॐ योगायै नमः ५ ॐ प्रह्व्यै नमः ६

ॐ सत्यायै नमः ७ ॐ ईशानायै नमः ८ मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ९ इति नवपीठशक्तीः संपूजयेत् । ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रमग्न्युत्तारणपूर्वकम् "ॐ नमो भगवते विष्णवे सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्मसंयोगपद्मपीठात्मने नमः" इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञां गृहीत्वा आवरण पूजां कुर्य्यात् ॥ तत्र क्रमः ॥ पुष्पांजलिमादाय ॐ संविन्मयः परो देवः परामृत रसप्रिय ॥ अनुज्ञां देहि मे विष्णो परिवारार्चनाय ते ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा आवरणपूजामारभेत् । षट्कोणकेसरेषु अग्निकोणे ॐ हृदयाय नमः १ नैर्ऋते ॐ नमः शिरसे स्वाहा २ वायव्ये भगवते शिखायै वषट् ३ ईशान्ये वासुदेवाय कवचाय हुं ४ देवतापश्चिमे ॐ नमो भगवते वासुदेवाय अस्त्राय फट् ५ इति पंचांगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् । इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततः पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीं प्रकल्प्य ततोऽष्टदले पूर्वे ॐ वासुदेवाय नमः वासुदेवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र १ दक्षिणे ॐ संकर्षणाय नमः संकर्षणश्रीपा० २ पश्चिमे ॐ प्रद्युम्नाय नमः प्रद्युम्नश्रीपा० उत्तरे ॐ अनिरुद्धाय नमः अनिरुद्धश्रीपा० ४ अग्निकोणे ॐ शांत्यै नमः शांति

द्वादशाक्षरीविष्णुमंत्रयंत्रम् ।

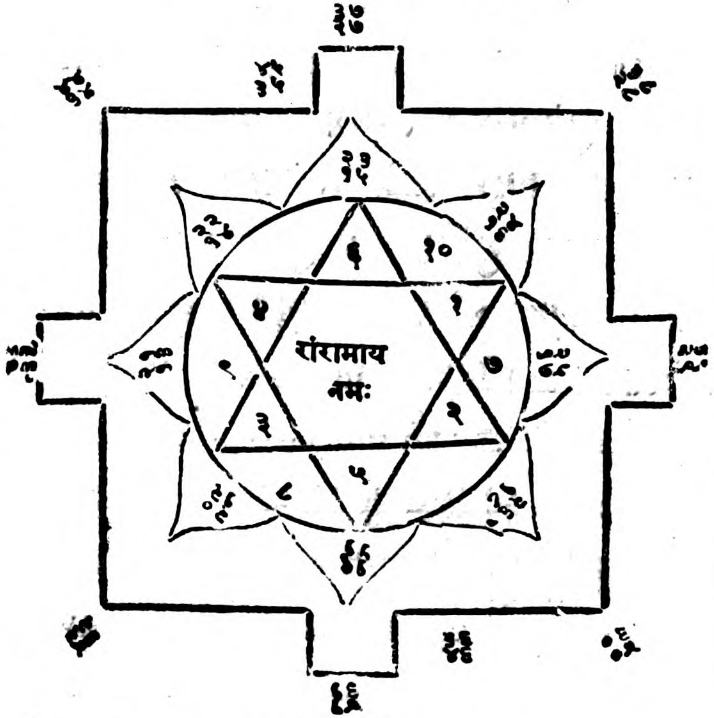


श्रीपा० ५ नैर्ऋते ॐ श्रियै नमः श्रीश्रीपा० ६ वायव्ये ॐ सरस्वत्यै नमः सरस्वतीश्रीपा० ७ ऐशान्ये ॐ रत्यै नमः रतिश्रीपा० ८
इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्। इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततो द्वादशदले पूर्वादिक्रमेण ॐ ॐ केशवाय नमः केशवश्रीपा० १
ॐ नं नारायणाय नमः नारायणश्रीपा० २ ॐ मों माधवाय नमः माधवश्रीपा० ३ ॐ भं गोविंदाय नमः गोविंदश्रीपा०४ ॐ गं विष्णवे
नमः विष्णुश्रीपा० ५ ॐ वं मधुसूदनाय नमः मधुसूदनश्रीपा० ६ ॐ तें त्रिविक्रमाय नमः त्रिविक्रमश्रीपा० ७ ॐ वां वामनाय नमः
वामनश्रीपा० ८ ॐ सुं श्रीधराय नमः श्रीधरश्रीपा० ९ ॐ दें हृषीकेशाय नमः हृषीकेशश्रीपा० १० ॐ वां पद्मनाभाय नमः पद्मनाभ
श्रीपा० ११ ॐ यं दामोदराय नमः दामोदरश्रीपा० १२ इति द्वादशमूर्तीः पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्। इति तृतीयावरणम्॥३॥ ततो
भूपुरे। इन्द्रादीन् दशदिक्पालान् तद्बाह्ये वज्राद्यस्त्राणि च पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादि नमस्कारांतं
संपूज्य जपं कुर्य्यात्।अस्य पुरश्चरणं द्वादशलक्षजपः। द्वादशसहस्रहोमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणामार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्य्यात्। एवं कृते
मंत्रः सिद्धो भवति। सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च—वर्णलक्षं जपेन्मंत्रं दीक्षितो विजितेन्द्रियः ॥ तत्सहस्रं
प्रजुहुयात्तिलैराज्यपरिप्लुतैः ॥ १ ॥ एवं संपूजितो विष्णुः प्रदद्यादिष्टमात्मनः ॥ पायसेन घृताक्तेन मंत्रवर्णसहस्रकम् ॥ २ ॥ जुहुया
न्मानवः सिद्ध्यै समिद्भिः क्षीरभूरुहाम् ॥ तत्संख्यया पयोऽक्ताभिः सर्वपापविमुक्तये ॥ ३ ॥ इति द्वादशाक्षरविष्णुमंत्रप्रयोगः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ राममंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा—"रां रामाय नमः ॥ " इति षडक्षरमंत्रः ॥ अस्य विधानम्। अस्य मंत्रस्य
ब्रह्मा ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्रीरामो देवता। रां बीजम्। नमः शक्तिः। चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्ये जपे विनियोगः। ॐ ब्रह्मणे ऋषये
नमः शिरसि १ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे २ श्रीरामदेवतायै नमः हृदि ३ रां बीजाय नमः गह्ये ४ नमः शक्तये नमः पादयोः ५ विनि
योगाय नमः सर्वांगे ६ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १ ॐ रीं तर्जनीभ्यां नमः २ ॐ रूं मध्यमाभ्यां नमः ३ ॐ
रैं अनामिकाभ्यां नमः ४ ॐ रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ॐ रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ इति करन्यासः ॥ ॐ रां हृदयाय नमः १

ॐ रीं शिरसे स्वाहा २ ॐ रूं शिखायै वषट् २ ॐ रैं कवचाय हुं ४ ॐ रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ ॐ रः अस्त्राय फट् ६ इति हृदयादि षडंगन्यासः ॥ ॐ रां नमः ब्रह्मरंध्रे १ ॐ रां नमः भ्रुवोर्मध्ये २ ॐ मां नमः हृदि ३ ॐ यं नमः नाभौ ४ ॐ नं नमः लिंगे ५ ॐ मं नमः पादयोः ६ इति मंत्रवर्णन्यासः ॥ इति न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत् । नीलांभोधरकांतिकांतमनिशं वीरासनाध्यासिनं मुद्रां ज्ञानमयीं दधानमपरं हस्तांबुजं जानुनि ॥ सीतां पार्श्वगतां सरोरुहकरां विद्युन्निभां राघवं पश्यंतीं मुकुटांगदादिविविधाकल्पोज्ज्वलांगं भजे ॥१॥ इति ध्यायेत्।ततः सर्वतोभद्रमंडले "ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः" इति पीठदेवताः संपूज्य नवपीठशक्तीः पूजयेत्।तद्यथा— पूर्वादिक्रमेण । ॐ विमलायै नमः १ ॐ उत्कर्षिण्यै नमः २ ॐ ज्ञानायै नमः ३ ॐ क्रियायै नमः ४ ॐ योगायै नमः ५ ॐ प्रह्व्यै नमः ६ ॐ सत्यायै नमः ७ ॐ ईशानायै नमः ८ मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ९ ॥ इति पूजयेत् । ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा अग्न्युत्तारणपूर्वकम् "ॐ नमो भगवते रामाय सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्मसंयोगपद्मपीठात्मने नमः" इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठ मध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वावाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् । तत्र क्रमः । पुष्पांजलिमादाय ॐ संविन्मयः परो देव परामृतरसप्रिय ॥ अनुज्ञां देहि मे राम परिवारार्चनाय ते ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् । इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत् । देववामपार्श्वे श्रीसीतायै नमः । सीताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ इति सर्वत्र । अग्नि कोणे । ॐ शार्ङ्गाय नमः शार्ङ्गश्रीपा० २ दक्षिणपार्श्वे ॐ शराय नमः ३ वामपार्श्वे ॐ चापाय नमः ४ इति पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् । इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततः षट्कोणकेसरेषु अग्निकोणे ॐ रां हृदयाय नमः १ निर्ऋते ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा २ वायव्ये ॐ रूं शिखायै वषट् ३ ऐशान्ये ॐ रैं कवचाय हुं ४ पज्यपूजकयोर्मध्ये

ॐ रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ देवपश्चिमे ॐ रः अस्त्राय फट् ६ इति षडंगानि पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ तद्बहिरष्टदले पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीं प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ॐ हनुमते नमः । हनुमच्छ्रीपा० १ ॐ सुग्रीवाय नमः । सुग्रीवश्रीपा० २ ॐ भरताय नमः । भरतश्रीपा० ३ ॐ विभीषणाय नमः । विभीषणश्रीपा० ४ ॐ लक्ष्मणाय नमः । लक्ष्मणश्रीपा० ५ ॐ अंगदाय नमः । अंगदश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ शत्रुघ्नाय नमः । शत्रुघ्नश्रीपा० ७ ॐ जाम्बवते नमः । जाम्बवच्छ्रीपा० ८ इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति तृतीयावरणम् ३ ततोऽष्टदलाग्रेषु । ॐ सृष्टाय नमः । सृष्टश्रीपा० १ ॐ जयन्ताय नमः । जयंतश्रीपा० २ ॐ विजयाय नमः । विजयश्रीपा० ३ ॐ सुराष्ट्राय नमः । सुराष्ट्रश्रीपा० ४ ॐ राष्ट्रवर्द्धनाय नमः । राष्ट्रवर्द्धनश्रीपा० ५ ॐ अकोपाय नमः । अकोपश्रीपा० ६ ॐ धर्म्मपालाय नमः । धर्म्मपालश्रीपा० ७ ॐ सुमन्ताय नमः । सुमन्तश्रीपा० ८ इत्यष्टौ

षडक्षरीराममंत्रप्रयोगावरणयंत्रम्



पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति चतुर्थावरणम् ॥ ४ ॥ ततो भूपुरे इन्द्रादिदशदिक्पालान् तद्बहिर्वज्राद्यस्त्राणि च पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इत्यावरणपूजां च कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात् । अस्य पुरश्चरणं षड्लक्षजपः । तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् । एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च

(शारदातिलके) वर्णलक्षं जपेन्मंत्रं तद्दशांशं सरोरुहैः ॥ जुहुयादर्चिते वह्नौ ब्राह्मणान्भोजयेत्ततः ॥ १ ॥ एवं पूजादिभिः सिद्धे मनौ
कर्माणि साधयेत् ॥ जातीप्रसूनैर्जुहुयाच्चंदनांभःसमुक्षितैः ॥ २ ॥ राजवश्याय कमलैर्धनधान्यादिसंपदे ॥ नीलोत्पलानां होमेन वशये

अथ षड्विधमंत्रस्वरूपचक्रम् ।

दखिलं जगत् ॥ ३ ॥ बिल्वप्रमाणैर्जुहुयादिंदिरावाप्तये नरः ॥ दूर्वाहोमेन दीर्घायु
र्भवेन्मंत्री निरामयः ॥ ४ ॥ रक्तोत्पलहुतान्मंत्री धनमाप्नोति वांछितम् ॥ मेधा
कामेन होतव्यं पालाशकुसुमैर्नवैः ॥ ५ ॥ तज्जतमंभः प्रपिबेत्कविर्भवति वत्सरात् ॥
तन्मंत्रितान्नं भुंजीत महदारोग्यमाप्नुयात् ॥ ६ ॥ अयं मंत्रः षड्विधः । तथा च-स्व
कामशक्तिवाग्लक्ष्मीताराद्यः पंचवर्णकः ॥ षडक्षरः षड्विधः स्याच्चतुर्वर्गफलप्रदः ॥१॥ ब्रह्मा
संमोहनः शक्तिर्दक्षिणामूर्तिरव्ययः ॥ अगस्तिः श्रीशिवः प्रोक्तो मुनयोऽत्र क्रमादिमे ॥२॥
अथवा कामबीजादेर्विश्वामित्रो मुनिर्मनोः ॥ छंदो गायत्रसंज्ञं च श्रीरामश्चैव

षड्विधमंत्रस्वरूपम्.	ऋषिः	छंदः	देवता
१ रां रामाय नमः	ब्रह्मा	गायत्री	श्रीरामः
२ क्लीं रामाय नमः	संमोहन-विश्वामित्रः	गायत्री	श्रीरामः
३ ह्रीं रामाय नमः	शक्तिः	गायत्री	श्रीरामः
४ ऐं रामाय नमः	दक्षिणामूर्तिः	गायत्री	श्रीरामः
५ श्रीं रामाय नमः	अगस्तिः	गायत्री	श्रीरामः
६ ॐ रामाय नमः	शिवः	गायत्री	श्रीरामः

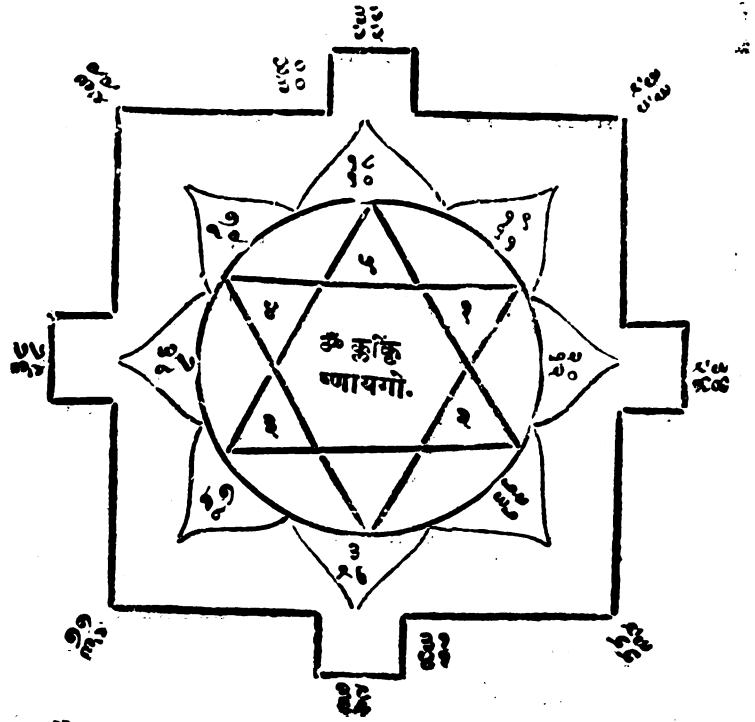
देवता ॥३॥ ध्यानपूजादिकं सर्वं पूर्ववत्कार्यम् ॥ इति षड्विधमंत्रस्वरूपम् ॥ अथ दशाक्षररामंत्रप्रयोगः ॥(शारदायाम्) मंत्रः यथा "हुं
जानकीवल्लभाय स्वाहा" इति दशाक्षरो मंत्रः । अस्य मंत्रस्य वसिष्ठ ऋषिः । विराट् छंदः । सीतापाणिपरिग्रहे श्रीरामो देवता । हुं बीजम् ।
स्वाहा शक्तिः । चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धये जपे विनियोगः । ॐ वशिष्ठऋषये नमः शिरसि १ विराट्छंदसे नमः मुखे २ सीतापाणिपरिग्रहे
श्रीरामदेवतायै नमः हृदि ३ हुं बीजाय नमः गुह्ये ४ स्वाहाशक्तये नमः पादयोः ५ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥
ॐ क्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः २ ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः ३ ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां नमः ४ ॐ क्लीं
कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ क्लीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ इति करन्यासः ॥ एवं हृदयादिषडंगन्यासं कुर्यात् ॥ ॐ हुं नमः

शिरसि १ ॐ जां नमः ललाटे २ ॐ नं नमः भ्रूमध्ये ३ ॐ कीं नमः तालुनि ५ ॐ वं नमः कंठे ५ ॐ ह्लं नमः हृदि ६ ॐ भां नमः बाह्वोः ७ ॐ यं नमः नाभौ ८ ॐ स्वां नमः जान्वोः ९ ॐ हां नमः पादयोः १० इति मंत्रवर्णन्यासः ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत् । "अयोध्यानगरे रम्ये रत्नसौन्दर्यमंडपे ॥ मंदारपुष्पैराबद्धवितानतोरणांकिते ॥ १ ॥ सिंहासनसमारूढं पुष्पकोपरि राघवम् ॥ रक्षोभिर्हरिभिर्देवैर्दिव्ययानगतैः शुभैः॥२॥ संस्तूयमानं मुनिभिः सर्वतः परिसेवितम् ॥ सीतालंकृतवामांगं लक्ष्मणेनोपशोभितम् ॥ ३ ॥ श्यामं प्रसन्नवदनं सर्वाभरणभूषितम् ॥ एवं ध्यात्वा मंत्रं जपेत् । अस्य पुरश्चरणं दशलक्षजपः । अन्यत्सर्वं पूर्ववत् ॥ इति दशाक्षरराम मंत्रप्रयोगः ॥ राममंत्रषट्स्वरूपम्॥वह्निर्नारायणाढ्यो यो जठरः केवलस्तथा ॥ द्व्यक्षरो मंत्रराजोऽयं सर्वाभीष्टफलप्रदः ॥ १ ॥ श्री मायामन्मथैकैकबीजाद्यंतगतो मनुः ॥ चतुर्वर्णः स एव स्यात् षड्वर्णो वांछितप्रदः ॥२॥ स्वाहांतो हुंफडंतो वा नमोऽन्तो वा भवेन्मनुः॥ तारो मायारमानंगवाक्स्वबीजैस्तु षड्विधः ॥ ३ ॥ त्र्यक्षरो मंत्रराजः स्यात्सर्वाभीष्टफलप्रदः ॥ द्व्यक्षरश्चन्द्रभद्रांतो मंत्रोऽयं. चतुरक्षरः ॥ ४ ॥ रामाय हृन्मनुः प्रोक्तो मंत्रः पंचाक्षरोऽपरः ॥ पंचाशन्मातृकावर्णप्रत्येकपूर्वको मनुः ॥ ५ ॥ लक्ष्मीवाग्मन्मथादिश्च तारादिः स्यादनेकधा ॥ वह्निस्थं शयनं विष्णोरूर्द्धचन्द्रविभूषितम् ॥ ६ ॥ एकाक्षरो मनुः प्रोक्तो मंत्रराजः सुरद्रुमः ॥ ब्रह्मा मुनिः स्याद्गायत्री छंदो रामस्तु देवता॥ ७ ॥ एकाक्षरे तु द्वादशलक्षजपः ॥ अन्येषां षड्लक्षजपः ॥ इति राममंत्रप्रयोगः ॥ अथ रामनामलेखनविधिः (श्रीमदानंदरामायणे मनोहरकांडे) श्रृणुष्व विष्णुदास त्वं यत्तेऽहं प्रवदामि च॥तुष्ट्यर्थं रामचन्द्रस्य नित्यं पत्रे तु मानवैः॥लेखनीयं रामनाम शतानि नव प्रत्यहम् ॥ अथवाष्टोत्तरशतं पूजनीयं सविस्तरम् ॥ २॥ एवं कोटिमितं लेख्यं लक्षं वास्तु ततः परम् ॥ हवनं हि दशांशेन कर्तव्यं विधिपूर्वकम् ॥३॥इदं विष्णुरिति ऋचा तिलाज्यैः पायसेन वा ॥ नवान्नेनाऽथवा कार्यं राघवं परिपूज्य च ॥ ४ ॥ युधिष्ठिरस्तु तच्छ्रुत्वा करिष्यति यथाविधि॥मासत्रयेण तस्यैव राज्यप्राप्तिर्भविष्यति॥५॥अंते च परमं स्थानं गमिष्यति मनोबलम्॥इति रामनामलेखन विधिः ॥ अथ कृष्णमंत्रप्रयोगः॥मंत्रो यथा–(शारदातिलके)" क्लीं कृष्णाय गोविंदाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा" इत्यष्टादशाक्षरो मंत्रः ॥

अस्य विधानम्॥ अस्य मंत्रस्य नारद ऋषिः । गायत्री छन्दः। श्रीकृष्णो देवता । क्लीं बीजम्। स्वाहा शक्तिः। चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॐ नारदऋषये नमः शिरसि ॥१॥ ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे॥२॥ श्रीकृष्णदेवतायै नमः हृदि ॥३॥ क्लींबीजाय नमः गुह्ये ॥४॥ स्वाहाशक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ क्लीं कृष्णाय अंगुष्ठाभ्यां नमः १ गोविंदाय तर्जनीभ्यां नमः २ गोपीजन मध्यमाभ्यां नमः ३ वल्लभाय अनामिकाभ्यां नमः ४ स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५इति करन्यासः क्लीं कृष्णाय हृदयाय नमः१ गोविंदाय शिरसे स्वाहा२ गोपीजनशिखायै वषट्३ वल्लभाय कवचाय हुं४स्वाहा अस्त्राय फट्५इति हृदयादि पंचांगन्यासः । एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् । अथ ध्यानम्। स्मरेद्वृन्दावने रम्ये मोहयंतमनारतम् । गोविंदं पुंडरीकाक्षं गोपकन्याः सहस्रशः ॥ १ ॥ आत्मनो वदनांभोजप्रेषिताक्षिमधुव्रताः॥ पीडिताः कामबाणेनाविरामाश्लेषणोत्सुकाः॥२ ॥ मुक्ताहारलसत्पीनतुंगस्तनभरानताः ॥ स्रस्तधम्मिल्लवसना मदस्खलितभाषणाः ॥ ३ ॥ दंतपंक्तिप्रभोद्भासिस्पन्दमानाधरांचिताः ॥ विलोभयंतीर्विविधैर्विभ्रमैर्भावगर्भितैः ॥ ४॥ फुल्लेन्दीवरकांतमिन्दुवदनं बर्हावतंसं प्रियं श्रीवत्सांकमुदारकौस्तुभधरं पीतांबरं सुंदरम् ॥ गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसंघावृतं गोविंदं कलवेणुवादनपरं दिव्यांगभूषं भजे ॥ ५ ॥ इति ध्यायेत् । ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले "ॐ मं मंडूकादिपरतत्वांतपीठ देवताभ्यो नमः" इति पीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् । तद्यथा—पूर्वादिक्रमेण । ॐ विमलायै नमः ॥ १ ॥ ॐ उत्कर्षिण्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ ज्ञानायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ क्रियायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ योगायै नमः ॥ ५ ॐ प्रह्व्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ सत्यायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ ईशानायै नमः ॥ ८ ॥ मध्ये-ॐ अनुग्रहायै नमः ॥ ९ ॥ इति पूजयेत् । ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य "ॐ नमो भगवते श्रीकृष्णाय सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्मसंयोगप्रपीठात्मने नमः" इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञया आवरणपूजां कुर्यात्।तद्यथा—पुष्पांजलिमादाय । ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरस

प्रिय ॥ अनुज्ञां कृष्ण मे देहि परिवारार्चनाय ते ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा आवरणपूजामारभेत् ॥ तद्यथा—पंचकोणे आग्नेय्यादिक्रमेण ॥ क्लीं कृष्णाय हृदयाय नमः । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र ॥ १ ॥ गोविंदाय शिरसे स्वाहा शिरःश्रीपा० ॥ २ ॥ गोपीजन शिखायै वौषट् । शिखाश्री० ॥ ३ ॥ वल्लभाय कवचाय हुं कवचश्रीपा० ॥ ४ ॥ स्वाहा अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ॥ ५ ॥ इति पंचांगानि पूजयेत् । ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य "ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥" इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् । इति प्रथमावरणम् ॥१॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतराले प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ॐ कालिंद्यै नमः । कालिंदीश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ नाग्नजित्यै नमः । नाग्नजितीश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ मित्रविंदायै नमः । मित्रविंदाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ चारुहासिन्यै नमः । चारुहासिश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ रोहिण्यै नमः । रोहिणीश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ जांबवत्यै नमः । जांबवतीश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ रुक्मिण्यै नमः । रुक्मिणीश्रीपा० ७ ॐ सत्यभामायै नमः । सत्यभामाश्रीपा० ८ इत्यष्टौ पट्टराज्ञीः पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततोऽष्टदलाग्रेषु प्राचीक्रमेण ॐ ऐरावताय नमः ॥ १ ॥ ॐ पुंडरीकाय नमः ॥२॥ ॐ वामनाय नमः ॥३॥

अष्टाक्षरकृष्णपूजनयंत्रम्.



ॐ कुमुदाय नमः ॥४॥ ॐ अंजनाय नमः ॥५॥ ॐ पुष्पदन्ताय नमः॥६॥ॐ सार्वभौमाय नमः॥७॥ॐ सुप्रतीकाय नमः ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ गजान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणमयुतद्वयात्मको जपः ॥ तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनं ब्राह्मणभोजनं च कुर्य्यात्। एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति। सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च—मंत्रमेनं यथान्यायमयुतद्वितयं जपेत् ॥

नवविधकृष्णमंत्रस्वरूपचक्रम् ।

क्लीं कृष्णाय स्वाहा ।	इति षडक्षरो मंत्रः । ६
गोपीजनवल्लभाय स्वाहा ।	इति दशाक्षरो मंत्रः ।
क्लीं हृषीकेशाय नमः ।	इत्यष्टाक्षरो मंत्रः ।
श्रीं ह्रीं क्लीं कृष्णाय स्वाहा ।	इत्यष्टाक्षरो मंत्रः ।
श्रीं ह्रीं क्लीं कृष्णाय गोविंदाय स्वाहा ।	इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ।
ॐ नमो भगवते रुक्मिणीवल्लभाय स्वाहा ।	इति षोडशाक्षरो मंत्रः ।
ऐं क्लीं कृष्णाय ह्रीं गोविंदाय श्रीं गोपीजनवल्लभाय स्वाहा सौः ।	इति द्वाविंशत्यक्षरो मंत्रः ।
ॐ क्लीं नमो भगवते नंदपुत्राय बालाद्विवपुषे श्यामलाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा ।	इति अष्टाविंशदक्षरो मंत्रः ।
ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं गोपीजनवल्लभाय स्वाहा ।	इति चतुर्दशाक्षरो मंत्रः ।

पूजनादिकं सर्वं पूर्ववत्

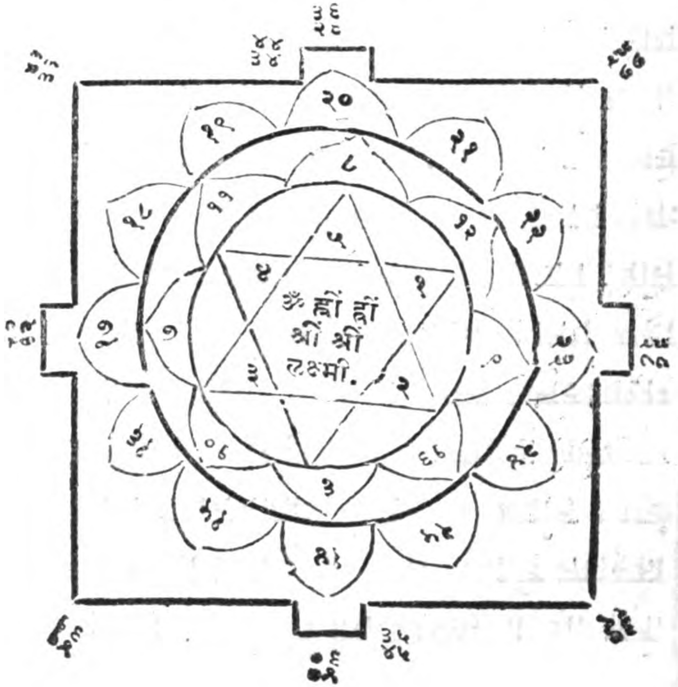
जुहुयादरुणाम्भोजैर्दशांशं सुसमाहितः ॥१॥ इति संपूजयेद्देवं गोविन्दं जगतां पतिम्॥ कुर्वीत कल्पनिर्दिष्टान्प्रयोगान्निजवांछितान् ॥ २ ॥ लक्ष्मीं प्रसूनैर्जुहुयाच्छ्रियमिच्छन्ननिंदिताम् ॥ साज्येनान्नेन जुहुयादाज्यान्नस्य समृद्धये ॥ ३ ॥ अरुणैः कुसुमैर्विप्राञ्जातीभिः पृथिवीपतीन् ॥ प्रसूनैरसितैर्वैश्याञ्छूद्रान्नीलोत्पलैर्नवैः ॥ ४॥ वशयेल्लवणैः सर्वान् पंकजैर्वनिताजनम् ॥ गोशालासु कृतो होमः पायसेन ससर्पिषा ॥ ५ ॥ गवां शांतिं करोत्याशु गोविंदो गोकुलप्रियः ॥ शिशुवेषधरं देवं किंकिणीदामशोभितम् ॥ ६ ॥ स्मृत्वा प्रतर्पयेन्मंत्री दुग्धबुद्ध्या शुभैर्जलैः ॥ धनधान्यांशुकादीनि प्रीतस्तस्मै ददाति सः ॥ ७ ॥ इति कृष्णमन्त्रप्रयोगः ॥

॥ अथ लक्ष्मीनारायणमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा (शारदातिलके ;"ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं लक्ष्मीवासुदेवाय नमः" इति चतुर्दशाक्षरो मंत्रः ।

अस्य विधानम्। अस्य मंत्रस्य प्रजापतिर्ऋषिः। गायत्री छन्दः। वासुदेवो देवता। धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः। ॐ प्रजापतिऋषये नमः। शिरसि॥ १ ॥ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ वासुदेवदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ श्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ लक्ष्मी मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ वासुदेवाय अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ श्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ लक्ष्मी शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ वासुदेवाय कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ नमः अस्त्राय फट् ॥ ५ ॥ इति हृदयादिपंचांगन्यासः ॥ एव न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ ॐ विद्युच्चन्द्रनिभं वपुः कमलजा वैकुंठयोरेकतां प्राप्तं स्नेहवशेन रत्नविलसद्भूषाभरालंकृतम् ॥ विद्यापंकजदर्पणान्मणिमयं कुंभं सरोजं गदां शंखं चक्रममूनि बिभ्रदमितां दिश्याच्छ्रियं वः सदा॥ १ ॥ इति ध्यायेत् ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले "ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः" इति पीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्। तद्यथा—पूर्वादिक्रमेण। ॐ विमलायै नमः ॥ १ ॥ ॐ उत्कर्षिण्यै नमः ॥ २ ॥ ज्ञानायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ क्रियायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ योगायै नमः ॥ ५ ॥ ॐ प्रह्वयै नमः ॥ ६ ॥ ॐ सत्यायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ ईशानायै नमः ॥ ८ ॥ मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ॥ ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य "ॐ नमो भगवते लक्ष्मीनारायणाय सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्मसंयोगपद्मपीठात्मने नमः" इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्यावाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञयाऽऽवरणपूजां च कुर्यात् ॥ तद्यथा—पुष्पांजलिमादाय। ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः ॥ अनुज्ञां देहि मे देव परिवारार्चनाय ते ॥१॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा आवरणपूजामारभेत् ॥ पंचकोणकेसरेषु आग्नेयादिक्रमेण ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं हृदयाय नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ श्रीं श्रीं

शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ लक्ष्मी शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ वासुदेवाय कवचाय हुं । कवचश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ नमः अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ॥ ५ ॥ इति पंचांगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजिता स्तर्पिताः संतु इति वदेत् । इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राच्यादि चतुर्दिक्षु ॐ वासुदेवाय नमः । वासुदेवश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ संकर्षणाय नमः । संकर्षणश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ प्रद्युम्नाय नमः । प्रद्युम्नश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ अनिरुद्धाय नमः । अनिरुद्धश्रीपा० ॥ ४ ॥ आग्नेयादिचतुष्कोणेषु ॐ शांत्यै नमः । शांतिश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ श्रियै नमः । श्रीश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ सरस्वत्यै नमः । सरस्वतीश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ रत्यै नमः रतिश्रीपा० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततो द्वादशदले प्राच्यादिक्रमेण ॐ केशवाय नमः केशवश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ नारायणाय नमः । नारायणश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ माधवाय नमः । माधवश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ गोविंदाय नमः । गोविन्दश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ विष्णवे नमः । विष्णुश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ मधुसूदनाय नमः । मधुसूदनश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ त्रिविक्रमाय नमः त्रिविक्रमश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ वामनाय नमः । वामनश्रीपा० ॥ ८ ॥ ॐ श्रीधराय नमः । श्रीधरश्रीपा० ॥ ९ ॥ ॐ हृषीकेशाय नमः । हृषीकेशश्रीपा० ॥ १० ॥ ॐ पद्मनाभाय नमः । पद्मनाभश्रीपा० ॥ ११ ॥

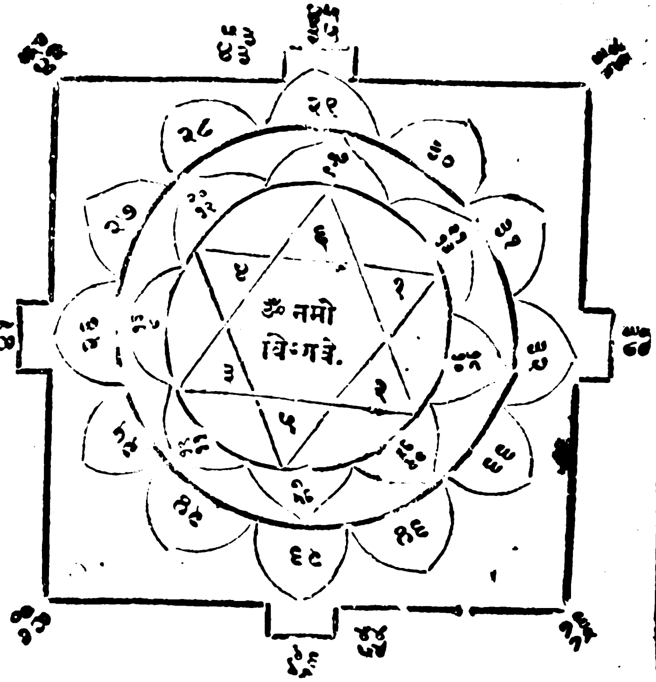
लक्ष्मीनारायणपूजनयन्त्रम्.



ॐ दामोदराय नमः । दामोदरश्रीपा० ॥ १२ ॥ इति द्वादश मूर्तीः पजयित्वा पुष्पांजालिं च दद्यात् । इति तृतीयावरणम् ॥ ३॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयित्वा पुष्पांजालिं च दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादि नमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्यात् । अस्य पुरश्चरणं चतुर्दशलक्षजपः । तत्सहस्रेण होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् । एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे च मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च—वर्णलक्षं जपेदेनं तत्सहस्रं सरोरुहैः॥होमं कुर्याद्विकसितैर्मधुरत्रयसंप्लुतैः ॥ १ ॥ पायसेन कृतो होमो लक्ष्मीवश्यप्रदायकः ॥ मधुराक्तैस्तिलैर्हुत्वा सर्वकार्याणि साधयेत् ॥ २ ॥ इति चतुर्दशाक्षरलक्ष्मीनारायणमंत्रप्रयोगः ॥ अथ दधिवामनाख्यचमत्कारिमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा (शारदातिलके) "ॐ नमो विष्णवे सुरपतये महाबलाय स्वाहा" इत्यष्टादशाक्षरो मंत्रः॥ अस्य विधानम्॥ अस्य मंत्रस्य इन्दुर्ऋषिःविराट् छंदःदधिवामनो देवता । सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः ॥ ॐ इन्दुऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ विराट्छंदसे नमः मुखे ॥ २ ॥ दधिवामनदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥४॥इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ नमः तर्जनीभ्यां नमः ॥२॥ विष्णवे मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ सुरपतये अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ महाबलाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ हृदयाय नमः ॥ १ ॥ नमः शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ विष्णवे शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ सुरपतये कवचाय हुं ॥ ४ ॥ महाबलाय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ स्वाहा अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ॐ नमः मूर्ध्नि ॥ १ ॥ ॐ नं नमः भाले ॥ २ ॥ ॐ मों नमः नेत्रयोः ॥ ३ ॥ ॐ विं नमः कर्णयोः ॥ ४ ॥ ॐ ष्णं नमः नासिकयोः ॥ ५ ॥ ॐ वें नमः ओष्ठयोः ॥ ६ ॥ ॐ सुं नमः तालुके ॥७॥ ॐ रं नमः कंठे ॥८ ॥ ॐ पं नमः बाहुद्वये ॥ ९ ॥ ॐ तं नमः पृष्ठे ॥ १० ॥ ॐ यें नमः हृदये ॥ ११ ॥ ॐ मं नमः उदरे ॥ १२ ॥ ॐ हां नमः नाभौ ॥ १३ ॥ ॐ बं नमः गुह्ये ॥ १४ ॥ ॐ लां नमः ऊरुद्वये ॥ १५ ॥ ॐ यं नमः जानुद्वये ॥ १६ ॥ ॐ स्वां नमः जंघयोः ॥ १७ ॥ ॐ हां नमः पादयोः ॥ १८ ॥ इति मंत्रवर्णन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ

ध्यानम्॥ ॐ मुक्तागौरं नवमणिलसद्भूषणं चंद्रसंस्थं भृंगाकारैरलकनिकरैः शोभिवक्त्रारविंदम्॥ हस्ताब्जाभ्यां कनककलशं शुद्धतोयाभिपूर्णं दध्यन्नाढ्यं कनकचषकं धारयंतं भजामः ॥ १ ॥ इति ध्यायेत् ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले "ॐ मं मंडूकादिचन्द्रमण्डलांतं पीठदेवताभ्यो नमः" इति पीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्। तद्यथा—पूर्वादिक्रमेण। ॐ विमलायै नमः ॥१ ॥ ॐ उत्कर्षिण्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ ज्ञानायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ क्रियायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ योगायै नमः ॥ ५ ॥ ॐ प्रह्व्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ सत्यायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ ईशानायै नमः ॥ ८ ॥ मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः॥ ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य "ॐ नमो भगवते दधिवामनाय सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्मसंयोगपद्मपीठात्मने नमः ॥" इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञया आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तद्यथा—पुष्पांजलिमादाय ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रिय। अनुज्ञां देहि मे देव परिवारार्चनाय ते ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा आवरणपूजामारभेत् ॥ षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च ॐ हृदयाय नमः हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र ॥ १ ॥ नमः शिरसे स्वाहा। शिरःश्रीपा०॥ २ ॥ ॐ विष्णवे शिखायै वषट्। शिखाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ सुरपतये कवचाय हुं। कवचश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ महाबलाय नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रश्रीपा० ॥ ५ ॥ स्वाहा अस्त्राय फट्। अस्त्रश्रीपा०॥ ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥

दधिवामनपूजनयन्त्रम्

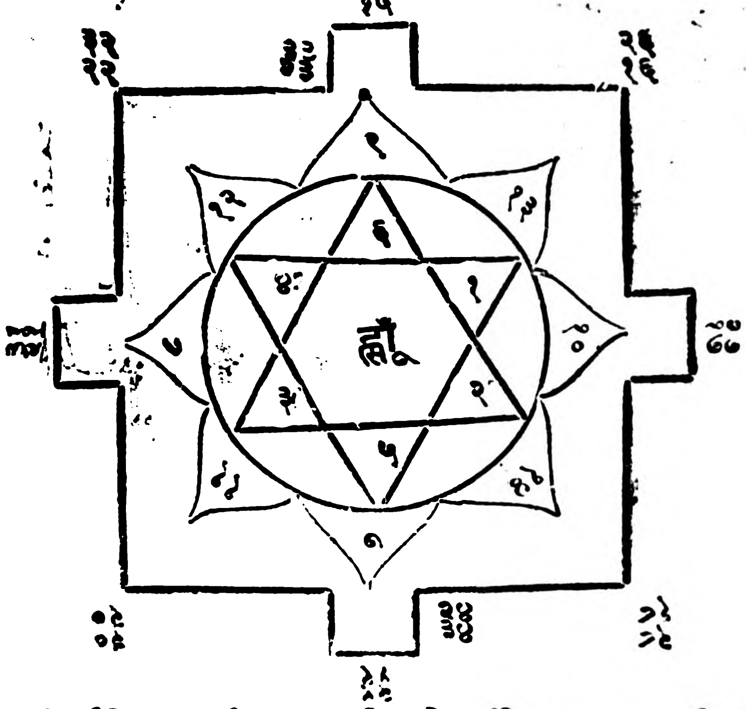


ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् । इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतराले प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राच्यादिचतुर्दिक्षु ॐ वासुदेवाय नमः । वासुदेवायश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ संकर्षणाय नमः । संकर्षण श्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ प्रद्युम्नाय नमः । प्रद्युम्नश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ अनिरुद्धाय नमः । अनिरुद्धश्रीपा० ॥ ४ ॥ अग्न्यादिचतुष्कोणेषु ॐ शांत्यै नमः । शांतिश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ श्रियै नमः । श्रीश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ सरस्वत्यै नमः । सरस्वतीश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ रत्यै नमः । रतिश्रीपा० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततोऽष्टदलाग्रेषु प्राच्यादिषु चतुर्दिक्षु ॐ ध्वजाय नमः ॥ १ ॥ ॐ वैनतेयाय नमः ॥ २ ॥ ॐ कौस्तुभाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ वनमालिकायै नमः ॥ ४ ॥ आग्नेयादिषु चतुष्कोणेषु ॐ शंखाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ चक्राय नमः ॥ ६ ॥ ॐ गदायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ शार्ङ्गाय नमः ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततो द्वादशदले प्राचीक्रमेण ॐ केशवाय नमः । केशवश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ नारायणाय नमः । नारायणश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ माधवाय नमः । माधवश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ गोविन्दाय नमः । गोविन्दश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ विष्णवे नमः । विष्णुश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ मधुसूदनाय नमः । मधुसूदनश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ त्रिविक्रमाय नमः त्रिविक्रमश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ वामनाय नमः । वामनश्रीपा० ॥ ८ ॥ ॐ श्रीधराय नमः । श्रीधरश्रीपा० ॥ ९ ॥ ॐ हृषीकेशाय नमः । हृषीकेशश्रीपा० ॥ १० ॥ ॐ पद्मनाभाय नमः । पद्मनाभश्रीपा० ॥ ११ ॥ ॐ दामोदराय नमः । दामोदरश्रीपा० ॥ १२ ॥ इति द्वादशमूर्तीः पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥ ४ ॥ ततो भूपुरे इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं त्रिलक्षजपः । तत्तद्दशांशहोमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्य्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे च मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च—गुणलक्षं

जपेन्मंत्रं तद्दशांशं घृतप्लुतैः ॥ पायसान्नैः प्रजुहुयाद्दध्यन्नैर्वा यथाविधि ॥ १ ॥ विधानमेतद्देवस्य कीर्तितं सुरपूजितम् ॥ पायसाज्यैर्जुहुयात्सहस्रं श्रियमाप्नुयात् ॥२॥ धान्यहोमेन धान्याप्तिः शतपुष्पासमुद्भवैः ॥ बीजैः सहस्रसंख्यातैर्होमो भयविनाशनः ॥३॥ दध्योदनेन शुद्धेन हुत्वा मुच्येत दुर्गतेः ॥ स्मृत्वा त्रैविक्रमं रूपं जपेन्मंत्रमनन्यधीः ॥ ४ ॥ मुक्तो बन्धाद्भवेत्सद्यो नात्र कार्या विचरणा ॥ पटे संपाद्य देवेशं भित्तौ वा पूजयेत्सुधीः ॥ सुगंधिकुसुमैर्नित्यं महतीं श्रियमश्नुते ॥ ५ ॥ इत्यष्टादशाक्षरदधिवामनाख्यमंत्रप्रयोगः ॥

अथ हयग्रीवविष्णुमंत्रप्रयोगः ॥ (तंत्रसारे) मंत्रो यथा—"हंसः सोऽहं विश्वातीर्णस्वरूपाय चिन्मयानंदरूपिणे ॥ तुभ्यं नमो हयग्रीव विद्याराजाय विष्णवे स्वाहा हंसः सोऽहम् ॥" इति द्विचत्वारिंशदक्षरो हयग्रीवमंत्रः ॥ अस्य मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । अनुष्टुप् छंदः । हयग्रीवो देवता । सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः ॥ ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ अनुष्टुप्छंदसे नमः मुखे ॥ २ ॥ हयग्रीवाय देवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ हंसः सोऽहम् अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ विश्वातीर्णस्वरूपाय तर्जनीभ्यां नमः ॥२॥ चिन्मयानंदरूपिणे मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ तुभ्यं नमो हयग्रीव अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ विद्याराजाय विष्णवे कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ स्वाहा हंसः सोऽहं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥ हंसः सोऽहं हृदयाय नमः ॥ १ ॥ विश्वातीर्णस्वरूपाय शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ चिन्मयानंदरूपिणे शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ तुभ्यं नमो हयग्रीव कवचाय हुं ॥ ४ ॥ विद्याराजाय विष्णवे नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ स्वाहा हंसः सोऽहम् अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत् ॥ शरच्छशांकप्रभमश्ववक्त्रं मुक्तामयैराभरणैरुपेतम् ॥ रथांगशंखांचितबाहुयुग्मं जानुद्वयन्यस्तकरं भजामः ॥ १ ॥ इति ध्यायेत् । ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले ॐ " मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः " इति पीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् । तद्यथा—ॐ विमलायै नमः ॥ १ ॥ ॐ उत्कर्षिण्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ ज्ञानायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ क्रियायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ योगायै नमः ॥ ५ ॥ ॐ प्रह्व्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ सत्यायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ ईशानायै नमः ॥ ८ ॥

हयग्रीवपूजनयन्त्रम्.



मध्ये ॐ अनुग्रहाये नमः ॥ ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य "ॐ नमो भगवते हयग्रीवाय सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्मसंयोग पद्मपीठात्मने नमः" इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा (ह्लूं) इति बीजमंत्रेण मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तद्यथा—पुष्पांजलिमादाय ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रिय ॥ अनुज्ञां देहि मे देव परिवारार्चनाय ते ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा आवरणपूजामारभेत् ॥ षट्कोणकेसरेषु आग्नेयादि क्रमेण मध्ये दिक्षु च षडंगानि पूजयेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ ततोऽष्टदले पूज्य पूजकयोरन्तराले प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य पूर्वे ॐ ऋग्वेदाय नमः ॥ १ ॥ दक्षिणे ॐ यजुर्वेदाय नमः ॥ २ ॥ पश्चिमे ॐ सामवेदाय नमः ॥३॥ उत्तरे ॐ अथर्ववेदाय नमः ॥ ४ ॥ अग्निकोणे ॐ सर्वस्मृतिभ्यो नमः॥५॥नैर्ऋते ॐ सर्वन्यायशास्त्रेभ्यो नमः ॥ ६॥वायव्ये ॐ सर्वधर्मशास्त्रेभ्यो नमः ॥ ७ ॥ ऐशान्ये ॐ सर्वपुराणशास्त्रेभ्यो नमः ॥ ८ ॥ इति पूजयेत् । ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजिता स्तर्पिताः संतु इति वदेत् । इति द्वितियावरणम् ॥ २ ॥ अन्यावरणं सर्वं पूर्ववत् संपूज्य जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं द्वाचत्वारिंश

लक्षं जपः ॥ तथा च—"वर्णलक्षं जपेन्मंत्रं कुंदपुष्पैर्मधुप्लुतैः ॥ दशांशं वैष्णवे वह्नौ जुहुयान्मंत्रसिद्धये ॥ १ ॥ एवं यो भजते देवं साक्षाद्वागीश्वरो भवेत् ॥ बिल्वैः फलैः कृतो होमः श्रीकरः परिगीयते ॥२ ॥ कुन्दपुष्पाणि जुहुयादिच्छन्वाक्श्रियमव्ययाम् ॥ मनुनानेन संजप्तं घृतं ब्राह्मीरसे श्रृतम् ॥ ३ ॥ कवितामाहरेत्पुंसामनर्गलविजृंभिताम् ॥ वचामनेन संजप्तां भक्षयेत्प्रातरन्वहम् ॥ ४ ॥ सर्ववेदागमादीनां व्याख्याता जायतेऽचिरात्॥मनोरस्य समो नास्ति ज्ञानैश्वर्यप्रदोऽपरः ॥ ५ ॥ इति चत्वारिंशदक्षरहयग्रीवमंत्रप्रयोगः ॥

अथ हयग्रीवस्यैकादशाक्षरमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा—" ॐ हयग्रीवाय नमः स्वाहा ॐ" इत्येकादशाक्षरो हयग्रीवमंत्रः ॥ अस्य मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । अनुष्टुप् छंदः । हयग्रीवरूपी विष्णुर्देवता । सर्वेष्टसिद्धये विनियोगः ॥ ऋष्यादिन्यासं कृत्वा कराङ्गन्यासं कुर्य्यात् ॥ हसां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ हसीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ हसूं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ हसैं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ हसौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ हसः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः । एवमेव हृदयादिषडंगन्यासं कुर्यात् ॥ अथ ध्यानम् ॥ धवलनलिननिष्ठं क्षारगौरं कराग्रैर्जपवलयसरोजे पुस्तकाभीष्टदानैः ॥ दधतममलवस्त्राकल्पदानाभिरामं तुरगवदनविष्णुं नौमि विद्याध्रजिष्णुम् ॥ १ ॥ एवं ध्यात्वा विष्णुपीठे संपूज्य आवरणपूजां कुर्य्यात् ॥ प्रथमावरणम्—प्रज्ञाहय १ मेधाहय २ स्मृतिहय ३ विद्याहय ४ लक्ष्मीहय ५ वागीशीहय ६ विद्याविशालहय ७ नामविमर्दनहये ८ रित्यष्टभिः॥ द्वितीयम् ॥लक्ष्मीसरस्वतीरातिप्रीतिकीर्तिकांतितुष्टिपुष्टिभिः तृतीयम्॥ कुमुदादिभिर्गजैः चतुर्थम् ॥ इन्द्रादिभिः पंचमावरणम् ॥ अन्यत् सर्वं पूर्ववत् ॥ अस्य पुरश्चरणं लक्षचतुष्टयं जपः ॥ तथा च-वेदलक्षं जपेन्मंत्री दशांशं जुहुयात्ततः ॥ साज्येन दशांशहोमः । इति हयग्रीवस्यैकादशाक्षरमंत्रप्रयोगः ॥

॥ अथ वाराहरूपविष्णुमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा (शारदातिलके)"ॐ नमो भगवते वाराहरूपाय भूर्भुवः स्वः स्यात्पते भूपतित्वं देह्यते ददापय स्वाहा" इति त्रयस्त्रिंशदक्षरो वाराहमंत्रः ॥ अस्य मंत्रस्य भार्गव ऋषिः । अनुष्टुप् छंदः । आदिवाराहो देवता॥सर्वेष्टसिद्धये जपे

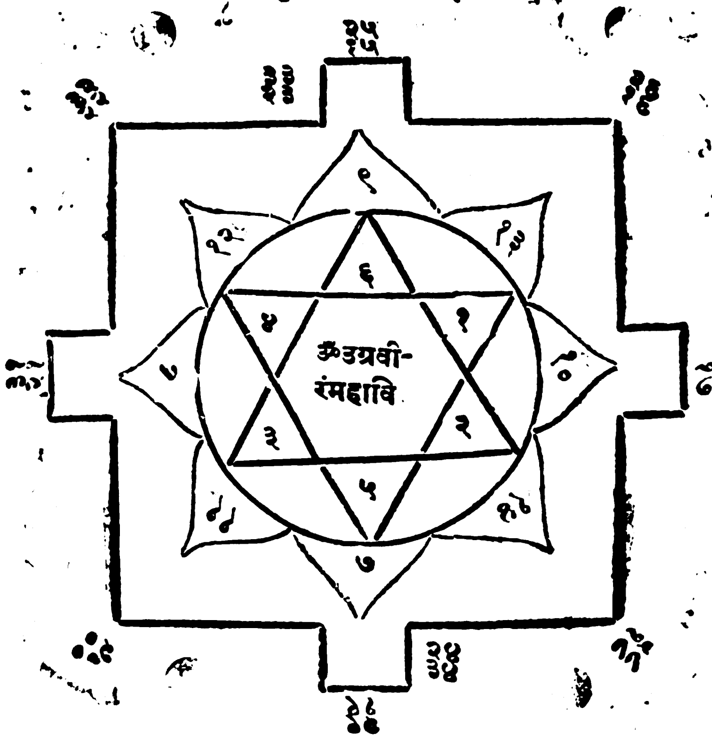
विनियोगः ॥ भार्गवऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ अनुष्टुप् छंदसे नमः मुखे ॥ २ ॥ आदिवाराहदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ ४॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ एकदंष्ट्राय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥१॥ ॐ व्योमोल्काय तर्जनीभ्यां नमः॥२॥ ॐ तेजोऽधिपतये मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ विश्वरूपाय अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ महादंष्ट्राय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ एकदंष्ट्राय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ व्योमोल्काय शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ तेजोऽधिपतये शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ विश्वरूपाय कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ महादंष्ट्राय अस्त्राय फट् ॥ इति हृदयादिपंचांगन्यासः ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ आपादं जानुदेशाद्वरकनकनिभं नाभिदेशादधस्तान्मुक्ताभं कंठदेशात्तरुणरविनिभं मस्तकान्नीलभासम् ॥ ईडे हस्तैर्दधानं रथचरणदरैः खड्गखेटौ गदाख्यां शक्तिं दानाभये च क्षितिधरणलसद्दंष्ट्रमाद्यं वराहम्॥१॥एवं ध्यात्वा वैष्णवे पीठे यंत्रं संस्थाप्य मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य आवरणपूजां कुर्यात् । ततः षट्कोणकेसरेषु अग्निकोणे ॐ एकदंष्ट्राय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ नैर्ऋत्ये ॐ व्योमोल्काय शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ वायव्ये ॐ तेजोऽधिपतये शिखायै वषट् ॥३॥ ऐशान्ये ॐ विश्वरूपाय कवचाय हुं ॥४॥ देवपश्चिमे ॐ महादंष्ट्रायास्त्राय फट् ॥ ५ ॥ इति पंचांगानि पूजयेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीं प्रकल्प्य पूर्वादि क्रमेण ॐ चक्राय नमः ॥ १ ॥ ॐ शंखाय नमः ॥ २ ॥ ॐ खड्गाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ खेटकाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ गदायै नमः ॥ ५ ॥ ॐ शक्तये नमः ॥ ६ ॥ ॐ वराय नमः ॥ ७ ॥ ॐ अभयाय नमः ॥ ८ ॥ इति पूजयेत् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ ततो भूपुरे इन्द्रादि दशदिक्पालान् तद्बाह्ये वज्राद्यस्त्राणि च पूजयेत् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं लक्षं जपः । तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्य्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे च मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च—" लक्षमेकं जपेन्मंत्रं मधुराक्तैः सरोरुहैः ॥ जुहुयात्तद्दशांशेन पीठे विष्णोः प्रपूजयेत् ॥ १ ॥ ध्यानाद्देवो धनं दया

जपाद्दद्याद्वसुंधराम् ॥ प्रयच्छेज्जपपूजाद्यैर्धनधान्यमहाश्रियः ॥ २ ॥ रवौ सिंहगतेऽष्टम्यां शुक्लपक्षे सितां शिलाम् ॥ पंचगव्येषु निःक्षिप्य स्पृष्ट्वा तामयुतं जपेत् ॥ ३ ॥ उत्तराभिमुखो भूत्वा तां शिलां निखनेद्भुवि ॥ शत्रुचौरमहाभूतैः कृतां बाधां प्रणाशयेत् ॥ ४ ॥ भानूदये भौमवारे साध्यक्षेत्रात्समाहरेत् ॥ मृत्तिकां संजपन्मंत्रं तां पुनर्विभजेत्त्रिधा ॥ ५ ॥ चुल्ल्यामेकांशमालिप्य पाकपात्रे तथापरम् ॥ गोदुग्धे परमालोड्य शोधितांस्तंडुलान् क्षिपेत् ॥ ६ ॥ संस्कृतेऽग्नौ पचेत्सम्यक् चरुं मंत्री जपन्मनुम् ॥ अवतार्य चरुं पश्चादग्नौ देवं यथाविधि ॥ ७ ॥ धूपदीपादिकैरिष्ट्वा पुनराज्यप्लुतं चरुम् ॥ जुहुयादेधिते वह्नौ यावदष्टोत्तरं शतम् ॥ ८ ॥ एवं सप्तारवारेषु जुहुयात्क्षेत्रसिद्धये ॥ प्रातःकाले भृगोर्वारे मृदं साध्यमहीतलात् ॥ ९ ॥ आदाय हविरापाद्य पूर्ववज्जुहुयात्सुधीः ॥ विरोधो नश्यति क्षेत्रे सह चौराद्युपद्रवैः ॥ १० ॥ राजवृक्षसमुत्थाभिः समिद्भिर्मनुनामुना ॥ त्रिसहस्रं प्रजुहुयात्तस्य स्युः सर्वसंपदः ॥ ११ ॥ शालिभिर्जुहुयान्मंत्री नित्यमष्टोत्तरं शतम् ॥ समृद्धैर्धान्यसंघातैः शोभते तस्य मंदिरम् ॥ १२ ॥ तावदाज्येन जुहुयान्मंडलात्स्वर्णमाप्नुयात् ॥ लाजैः कन्यामवाप्नोति मध्वक्तैर्निजवांछितम् ॥ १३ ॥ मधुरत्रयसंयुक्तैर्जुहुयादुत्पलैः शुभैः॥ महतीं श्रियमाप्नोति मंडलात्पूर्वसंख्यया ॥ १४ ॥ इति वाराहमंत्रप्रयोगः ॥ अथ नृसिंहमंत्रप्रयोगः॥ (शारदातिलके) मंत्रो यथा—"ॐ उग्रवीरं महाविष्णुं ज्वलंतं सर्वतोमुखम् ॥ नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम्॥१॥" इति श्लोकरूपमंत्रः॥ अस्य नृसिंहमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः। सुरासुरनमस्कृतनृसिंहो देवता । सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः ॥ ॐ ब्रह्मर्षये नमः शिरसि ॥ १ ॥ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ श्रीनृसिंहदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ उग्रवीरम् अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ महाविष्णुं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ज्वलंतं सर्वतोमुखं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ नृसिंहभीषणम् अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ भद्रं मृत्युमृत्युं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ नमाम्यहं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ उग्रवीरं हृदयाय नमः ॥ १ ॥

महाविष्णुं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ज्वलंतं सर्वतोमुखं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ नृसिंहभीषणं कवचाय हुं ॥ ४ ॥ भद्रं मृत्युमृत्युं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ नमाम्यहम् अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ॐ उं नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ ग्रं नमः ललाटे ॥ २ ॥ ॐ वीं नमः नेत्रयोः ॥ ३ ॥ ॐ रं नमः मुखे ॥ ४ ॥ ॐ मं नमः दक्षिणबाहुमूले ॥ ५ ॥ ॐ हां नमः दक्षिणकूर्परे ॥ ६ ॥ ॐ विं नमः दक्षिणमणिबन्धे ॥ ७ ॥ ॐ ष्णुं नमः दक्षहस्तांगुलिमूले ॥ ८ ॥ ॐ ज्वं नमः दक्षहस्तांगुल्यग्रे ॥ ९ ॥ ॐ लं नमः वामबाहुमूले ॥ १० ॥ ॐ तं नमः वामकूर्परे ॥ ११ ॥ ॐ सं नमः वाममणिबन्धे ॥ १२ ॥ ॐ वं नमः वामहस्तांगुलिमूले ॥ १३ ॥ ॐ तों नमः वामहस्तांगुल्यग्रे ॥ १४ ॥ ॐ मुं नमः दक्षपादमूले ॥ १५ ॥ ॐ खं नमः दक्षजानुनि ॥ १६ ॥ ॐ नं नमः दक्षगुल्फे ॥ १७ ॥ ॐ सिं नमः दक्षपादांगुलिमूले ॥ १८ ॥ ॐ हं नमः दक्षपादांगुल्यग्रे ॥ १९ ॥ ॐ भीं नमः वामपादमूले ॥ २० ॥ ॐ षं नमः वामजानुनि ॥ २१ ॥ ॐ णं नमः वामगुल्फे ॥ २२ ॥ ॐ भं नमः वामपादांगुलिमूले ॥ २३ ॥ ॐ द्रं नमः वामपादांगुल्यग्रे ॥ २४ ॥ ॐ मृं नमः कटथाम् ॥ २५ ॥ ॐ त्युं नमः कुक्षौ ॥ २६ ॥ ॐ मृं नमः हृदये ॥ २७ ॥ ॐ त्युं नमः गले ॥ २८ ॥ ॐ नं नमः दक्षिणपार्श्वे ॥ २९ ॥ ॐ मां नमः वामपार्श्वे ॥ ३० ॥ म्यं नमः लिंगे ॥ ३१ ॐ हं नमः ककुदि ॥ ३२ ॥ इति मंत्रवर्णन्यासः ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ माणिक्याद्रिसमप्रभं निजरुचा संत्रस्तरक्षोगणं जानुन्यस्तकरांबुजं त्रिनयनं रत्नोल्लसद्भूषणम् ॥ बाहुभ्यां धृतशंखचक्रमनिशं दंष्ट्राग्रवक्त्रोल्लसज्ज्वालाजिह्वमुदग्रकेशनिचयं वंदे नृसिंहं विभुम् ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा सर्वतोभद्रमंडले मं "मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः" इति पीठदेवताः संपूज्य पाठिशक्ताः पूजयेत् ॥ तत्र क्रमः ॥ पूर्वादिक्रमेण ॐ विमलायै नमः ॥ १ ॥ ॐ उत्कर्षिण्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ ज्ञानायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ क्रियायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ योगायै नमः ॥ ५ ॥ ॐ प्रह्वयै नमः ॥ ६ ॥ ॐ सत्यायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ ईशानायै नमः ॥ ८ ॥

मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ॥ ९ ॥ इति नव पीठशक्तीः संपूज्य स्वर्णादिनिर्मित यंत्रमग्न्युत्तारणपूर्वकम् "ॐ नमो भगवते नृसिंहाय दैत्यशत्रुसर्वात्मसंयोग पद्मपीठाय नमः" इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राण प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तत्र क्रमः ॥ षट्कोण केसरेषु अग्निकोणे ॐ उग्रवीरं हृदयाय नमः ॥ १ ॥ नैर्ऋत्ये ॐ महाविष्णुं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ वायव्ये ॐ ज्वलंतं सर्वतोमुखं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ऐशान्ये ॐ नृसिंहं भीषणं कवचाय हुं ॥ ४ ॥ पूज्यपूजकयो र्मध्ये भद्रं मृत्युमृत्युं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ देवतापश्चिमे ॐ नमाम्यहं अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीं प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण प्राच्यां ॐ गरुडपक्षिराजाय नमः गरुडश्री पादुकां पूजयामि तपर्यामि नमः ॥ १ ॥ इति सर्वत्र ॥ दक्षिणे ॐ शंकराय नमः शंकरश्रीपा० ॥ २ ॥ पश्चिमे ॐ शेषाय नमः शेषश्रीपा० ॥ ३ ॥

नृसिंहपूजनयन्त्रम्



उत्तरे ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्मश्रीपा० ॥ ४ ॥ अग्निकोणे ॐ श्रियै नमः श्रीश्रीपा० ॥ ५ ॥ नैर्ऋते ॐ ह्रियै नमः ह्रीश्रीपा० ॥ ६ ॥ वायव्ये ॐ धृत्यै नमः धृतिश्रीपा० ॥ ७ ॥ ऐशान्ये ॐ पुष्ट्यै नमः पुष्टिश्रीपा० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण ॥ ॐ लं इन्द्राय नमः इन्द्रश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ रं अग्नये नमः अग्निश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ मं यमाय नमः यमश्रीपा०

॥ ३ ॥ ॐ क्षं निर्ऋतये नमः निर्ऋतिश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ वं वरुणाय नमः वरुणश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ यं वायवे नमः वायुश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ कुं कुबेराय नमः कुबेरश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ हं ईशानाय नमः ईशानश्रीपा० ॥ ८ ॥ इन्द्रेशानयोर्मध्ये ॐ आं ब्रह्मणे नमः ब्रह्मश्रीपा० ॥ ९ ॥ वरुणनिर्ऋतयोर्मध्ये ॐ ह्रीं अनंताय नमः अनंतश्रीपादुकां पू० ॥ १० ॥ इति दश दिक्पालान् पूजयेत् ॥ तद्बाह्ये पूर्वादिक्रमेण ॥ ॐ वं वज्राय नमः ॥ १ ॥ ॐ शं शक्तये नमः ॥ २ ॥ ॐ दं दंडाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ खं खड्गाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ पं पाशाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ अं अंकुशाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ गं गदायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ पं पद्माय नमः ॥ ९ ॥ ॐ चं चक्राय नमः ॥ १० ॥ इत्यस्त्राणि पूजयेत् ॥ इत्यावरणपजां कृत्वा धूपादिनीराजनांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं द्वात्रिंशल्लक्षजपः । तत्सहस्रहोमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्य्यात् । एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे च मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च–"वर्णलक्षं जपेन्मंत्रं तत्सहस्रं घृतप्लुतैः ॥ पायसान्नैः प्रजुहुयाद्विधिवत्पूजितेऽनले ॥ १ ॥ एवंकृते भवेन्मंत्री सिद्धमंत्रः प्रतापवान् ॥ इत्थं जपादिभिः सिद्धे मनौ काम्यानि साधयेत् ॥ २ ॥ उद्यत्कोटि रविप्रभं नरहरिं कोटीरहारोज्ज्वलं दंष्ट्राभीममुखे लसन्नखमुखैर्दीर्घैरनेकैर्भुजैः ॥ निर्भिन्नासुरनाथमग्निशशभृत्सूर्य्यात्मनेत्रत्रयं विद्युत्पुंजजटाकलाप भयदं वह्निं वमंतं भजे ॥ ३ ॥ सौम्ये सौम्यं स्मरेत्कार्ये क्रूरे क्रूरमिमं भजेत् ॥ श्रीपुष्ट्यै जुहुयान्मंत्री बिल्वकाष्ठैधितेऽनले ॥ ४ ॥ सहस्रं श्रियमाप्नोति पत्रैर्वा बिल्वसंभवैः ॥ प्रसूनैर्वा फलैस्तद्वद्दूर्वाहोमादरोगताम् ॥ ५ ॥ मंत्रजप्तां वचां श्वेतां भक्षयेत्प्रातरन्वहम् ॥ वाक्सिद्धिं लभते मंत्री वाचस्पतिरिवापरः ॥६॥ व्याघ्रचौरमृगादिभ्यो महारण्ये भयाकुलान् ॥ रक्षेन्मनुरयं जप्तो भयेष्वन्येषु मंत्रिणः ॥ ७ ॥ अनेन मंत्रितं भस्म विषग्रहमहाभयान् ॥ नाशयेदचिरादेव मंत्रस्यास्य प्रभावतः ॥ ८ ॥ घोराभिचारे सोन्मादे महोत्पाते महाभये ॥ जपेन्मंत्रं स्मरन्देवं दुःखान्मुक्तो भवेन्नरः ॥ ९ ॥ सिंहरूपं महाभीमं महादंष्ट्रादिभीषणम् ॥ स्मृत्वात्मानं रिपुं पश्चाद्ध्यायेन्मृगशिशुं रिपुम् ॥ १० ॥ गृहीत्वा गलदेशे तं पुनर्दिक्षु क्षिपेद्द्रुतम् ॥ पुत्रमित्रकलत्राद्यैरुच्चाटो जायते रिपोः ॥ ११ ॥ पूर्वंमृत्युपदे साध्यनाम कृत्वा

स्वंय हरेः ॥ निशितैर्नखदंष्ट्राद्यैः खंडयमानं रिपुं स्मरन् ॥ १२ ॥ नित्यमष्टोत्तरशतं जपेन्मंत्रमतंद्रितः ॥ जायते मंडलादर्वाक् शत्रुर्वैवस्वतप्रियः ॥१३॥ यंत्रं करोति विधिवच्छत्रुसेनानिवारणे ॥ विभीतकाष्ठैर्ज्वलिते पावके रिपुमर्दनम् ॥१४॥ विचिंत्य देवं नृहरिं संपूज्य कुसुमादिभिः ॥ समूलचूलैर्जुहुयाच्छरैर्दशशतं पृथक् ॥ १५ ॥ रिपुं खादन्निव जपेन्निर्भिदन्निव तान्क्षिपेत् ॥ हुत्वा सप्तदिनं सेनामिष्टां मंत्री महीपतेः ॥ १६ ॥ प्रस्थापयेच्छुभे लग्ने परराष्ट्रजयेच्छया ॥ तस्याः पुरस्तान्नृहरिं निघ्नंतं रिपुमण्डलम् ॥ १७ ॥ ध्यात्वा प्रयोगं कुर्वीत यावदायाति सा पुनः ॥ विजित्य निखिलाञ्शत्रून् सह वीर श्रिया सुखम् ॥ १८ ॥ आगत्य विजयी राजा ग्रामक्षेत्रधनादिभिः ॥ प्रीणयेन्मंत्रिणं सम्यग् विभवैः प्रीतमानसः ॥ १९ ॥ मंत्री यदि न संतुष्येदनर्थः स्यान्महीपतेः ॥ राजा विजयमाप्नोति युद्धेषु विधिनामुना ॥ इति नृसिंहस्य द्वात्रिंशदक्षरात्मकमंत्रप्रयोगः ॥ १ ॥ इति विष्णुपटलः समाप्तः ॥

अथ विष्णुपद्धतिप्रारंभः ॥ तत्रादौ प्रारम्भात्पूर्वं मंत्रानुष्ठानोपयोगि कृत्यम् ॥ चन्द्रतारादिबलान्विते सुदिने सुमुहूर्ते पुण्यतीर्थक्षेत्रनिर्जनस्थानादावनुष्ठानयोग्यभूमिपरिग्रहणं कृत्वा तत्र मार्जनदहनखननसंप्लावनादिभिः स्मृत्युक्तैः शोधनोपायैः शुद्धिं संपाद्य जपस्थानस्य चतुर्दिक्षु क्रोशं क्रोशद्वयं वा क्षेत्रमाहारविहाराद्यर्थं परिकल्प्य जपस्थानभूमौ कूर्मशोधनं कुर्यात् ॥ ततः पुरश्चरणात् प्राक् तृतीयदिवसे क्षौरादिकं विधाय प्रायश्चित्तांगं विष्णुपूजाविष्णुतर्पणविष्णुश्राद्धं होमं चांद्रायणादिव्रतं च कुर्यात् । व्रताशक्तौ गोदानं द्रव्यदानं च कुर्यात् ॥ यदि सर्वकर्माशक्तस्तर्हि प्रायश्चित्तांगं पंचगव्यप्राशनं कुर्यात् । तत्र मंत्रः ॥ ॐ यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके ॥ प्राशनात्पंचगव्यस्य दहत्यग्निरिवेंधनम् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा प्रणवेन पंचगव्यं पिबेत् । तद्दिने चोपवासं कृत्वा अशक्तश्चेत् पयःपानं हविष्यान्नभोजनमेकभक्तव्रतं वा कुर्यात् ॥ पुरश्चरणात्पूर्वदिने स्वदेहशुद्ध्यर्थं पुरश्चरणाधिकारप्राप्त्यर्थं चायुतगायत्रीजपं कुर्यात् ॥ तद्यथा—देशकालौ संकीर्त्य मम ज्ञाताज्ञातपापक्षयार्थं करिष्यमाणश्रीविष्णुपुरश्चरणाधिकारार्थममुकमंत्रसिद्ध्यर्थं च गायत्र्ययुतजपममुकगोत्रोऽमुकशर्माहं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य गायत्र्ययुतं जपेत् ॥ ततो गायत्र्याचार्य्यमृषिं विश्वामित्रं तर्पयामि ॥ १ ॥ गायत्री

छंदस्तर्पयामि ॥ २ ॥ सवितारं देवं तर्पयामि ॥ ३ ॥ इति तर्पणं कृत्वा तस्मिन्रात्रौ देवतोपास्तिं शुभाशुभस्वप्नं च विचारयेत् ॥तद्यथा— स्नानादिकं कृत्वा हरिपादांबुजं स्मृत्वा कुशासनादिशय्यायां यथासुखं स्थित्वा वृषभध्वजं प्रार्थयेत् ॥ तत्र मंत्रः "ॐ भगवन्देवदेवेश शूलभृद्वृषवाहन ॥ इष्टानिष्टं समाचक्ष्व मम सुप्तस्य शाश्वतम् ॥ १ ॥ ॐ नमोऽजाय त्रिनेत्राय पिंगलाय महात्मने ॥ वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः ॥ २ ॥ स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषतः ॥ क्रियासिद्धिं विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥३॥ इति मंत्रेणाष्टोत्तर शतवारं शिवं प्रार्थ्य निद्रां कुर्यात्॥ ततः स्वप्नं दृष्टं निशि प्रातर्गुरवे विनिवेदयेत् ॥अथवा स्वयं स्वप्नं विचारयेत् ॥ इति पूर्वकृत्यम् ॥ अथ प्रातःकृत्यम् । रश्चरणदिवसे श्रीमत्साधकेन्द्रः प्रातःकालात्पूर्वं दंडद्वयात्मके ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय प्रातःस्मरणं कुर्यात्॥अथ प्रातःस्मरणे नारायणस्तुतिराचारमयूखे(व्यासः)॥ॐ प्रातः स्मरामि भवभीतिमहार्तिशांत्ये नारायणं गरुडवाहनमब्जनाभम्॥ग्राहाभिभूतवरवारणमुक्तिहेतुं चक्रायुधं तरुणवारिजपत्रनेत्रम् ॥ १ ॥ प्रातर्नमामि मनसा वचसा च मूर्ध्ना पादारविंदयुगलं परमस्य पुंसः ॥ नारायणस्य नरकार्णवतारणस्य पारायणप्रवणविप्रपरायणस्य ॥ २ ॥ प्रातर्भजामि भजतामभयङ्करं तं प्राक्सर्वजन्मकृतपापभयापहत्यै ॥ यो ग्राहवक्त्रपतितां

१ लिंगं चन्द्रार्कयोर्बिंबं भारती जाह्नवी: गुरुम् ॥ रक्ताब्धितरणं युद्धे जयोऽनलसमर्चनम् ॥ शिखिहंसरथांगाढ्ये रथे स्थानं च मोहनम् । आरोहणं सारसस्य धरालाभश्च निम्नगा ॥ प्रासादः स्यंदनं पद्मं छत्रं कन्या द्रुमः फली । नागो दीपो हयः पुष्पं वृषभोऽश्वश्च पर्वतः ॥ सुराघटो ग्रहास्तारा नारी सूर्यादयोऽप्सराः । हर्म्यशैलविमानानामारोहो गगने गमः ॥ मद्यमांसादनं विष्टालेपो रुधिरसेचनम् । दध्योदनादनं राज्याभिषेको गोवृषध्वजाः ॥ सिंहः सिंहासनं शंखो वादित्रं रोचनादिभिः । चन्दनं तर्पणं चैषां स्वप्ने वै दर्शनं शुभम् ॥ तैलाभ्यक्तः कृष्णवर्णो नग्नो ना गर्तवायसौ॥ शुष्कः कण्टकिवृक्षश्च चाण्डालो दीर्घकन्धरः ॥ प्रासादस्तलहीनश्च नैते स्वप्ने शुभावहाः ॥ इति विचारयेत ॥

२ राममन्त्रानुष्ठाने रामस्मरणं कुर्यात । तथा च ॥ प्रातः स्मरामि रघुनाथमुखारविंदं मन्दस्मितं मधुरभाषि विशालभालम् ॥ कर्णावलम्बिचलकुण्डलशोभिगंडं कर्णान्तदीर्घनयनं नयनाभिरामम ॥ १ ॥ प्रातर्भजामि रघुनाथकरारविंदं रक्षोगणाय भयदं वरदं निजेभ्यः ॥ यद्राजसंसदि विभज्य महेशचापं सीताकरग्रहणमंगलमाप सद्यः ॥ २ ॥ प्रातर्नमामि रघुनाथपदारविंदं वज्रांकुशादिशुभरेखि सुखावहं मे ॥ योगीन्द्रमानसमधुव्रतसेव्यमानं शापापहं सपदि गौतमधर्मपत्न्याः ॥ ३ ॥ प्रातर्वदामि वचसा रघुनाथनाम वाग्दोषहारि सकलं शमलं निहंति ॥ यत्पार्वती स्वपतिना सह भोक्तुकामा प्रीत्या सहस्रहरिनामसमं जजाप ॥ ४ ॥ प्रातः श्रये श्रुतिनुतां रघुनाथमूर्त्तिं नीलांबुदोत्पलसितेतररत्ननीलाम् ॥ आमुक्तमौक्तिकविशेषविभूषणाढ्यां ध्येयां समस्तमुनिभिर्निजमृत्युहत्यै ॥ ५ ॥ यः श्लोकपंचकमिदं प्रयतः पठेत नित्यं प्रभातसमये पुरुषः प्रबुद्धः ॥ श्रीरामकिंकरजनेषु स एव मुख्यो भूत्वा प्रयाति हरिलोकमनन्यलभ्यम् ॥ इति रामप्रातःस्मरणम् ॥

द्विगजेन्द्रघोरशोकप्रणाशमकरोद्धृतशंखचक्रः ॥३॥ श्लोकत्रयमिदं पुण्यं प्रातः प्रातः पठेन्नरः ॥ लोकत्रयगुरुस्तस्मै दद्यादात्मपदं हरिः ॥ ४ ॥ इति प्रातःस्मरणं कृत्वा भूमिं प्रार्थयेत् ॥ तत्र मंत्रः ॥ ॐ समुद्रमेखले देवि पर्वतस्तनमंडले ॥ विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥ १ ॥ इति भूमिं संप्रार्थ्य श्वासानुसारेण भूमौ पादं दत्त्वा बहिर्व्रजेत् ॥ इति प्रातःकृत्यम् ॥ ततो ग्रामाद्बहिर्नैर्ऋत्यकोणे जनवर्जिते देशे उत्तराभिमुखः अनुपानत्कः वस्त्रेण शिरः प्रावृत्य मलमोचनं कृत्वा मृत्तिकया जलेन च यथासंख्यं शौचं कृत्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य गंडूषं च कृत्वा दंतधावनं कुर्यात् ॥ तद्यथा–आम्रचंपकापामार्गाद्यन्यतमं द्वादशांगुलं दंतकाष्ठं गृहीत्वा प्रार्थयेत् ॥ ॐ आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजापशुधनानि च ॥ श्रियं प्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते ॥ १ ॥ इति संप्रार्थ्य ॥ "ॐ ह्रीं तडित् स्वाहा" इति मंत्रेण काष्ठं छित्त्वा 'ॐ क्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः' इत्यनेन दंतान् संशोध्य 'ऐं' मंत्रेण जिह्वामुल्लिख्य दंतकाष्ठं क्षालयित्वा नैर्ऋत्यां शुद्धदेशे निःक्षिपेत् ॥ ततो मूलेन मुखं प्रक्षाल्याचम्य स्नानं कुर्यात् ॥ तद्यथा—तात्कालिकोद्धृतोदकेन उष्णोदकेन वा स्नानं कुर्यात्। न तु पर्युषितशीतोदकेन । तद्यथा–ताम्रादिबृहत्पात्रे जलं गृहीत्वा तीर्थान्यावाहयेत् ॥ तत्र मंत्रः ॥ ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ॥ नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन्सान्निधिं कुरु ॥१॥ आवाहयामि त्वां देवि स्नानार्थमिह सुंदरि ॥ एहि गंगे नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थसमन्विते ॥ २ ॥ इति तीर्थान्यावाह्य "ॐ ऋतं च सत्यं०" इति मंत्रेणाभिमंत्र्य वरुणमंत्रेण स्नात्वा शुष्कं शुभ्रं कार्पासोत्पत्ति वस्त्रं परिधाय सूर्यायार्घ्यं दद्यात् ॥ तत्र मंत्रः ॥ ॐ "एहि सूर्य्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते ॥ अनुकंपय मां देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥" इत्यर्घ्यं दत्त्वा स्नानवस्त्रं परिपीड्य आचम्य नित्यनैमित्तिकं समाप्य द्वादशोर्ध्वपुंड्रं तिलकं कुर्यात् ॥ अथ द्वारपूजा प्रयोगः ॥ पूजागृहद्वारमागत्य अस्त्राय फडिति द्वारं संप्रोक्ष्य दक्षिणशाखायाम् ॐ गं गणपतये नमः ॥ १ ॥ ॐ दुं दुर्गायै नमः ॥२॥ वामशाखायाम् ॐ वं वटुकाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः ॥ ४ ॥ द्वारोपरि ॐ सं सरस्वत्यै नमः ॥ ५ ॥ देहल्याम् ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट् ॥ इति पूजयेत् ॥ जपस्थाने गत्वा "ॐ गृहीतस्यास्य मंत्रस्य पुरश्चरणसिद्धये ॥ मयेयं गृह्यते भूमिर्मंत्रोऽयं सिद्धिम

त्विति ॥ १ ॥ ” इति मंत्रेण भूमिं संगृह्य अश्वत्थोदुंबरप्लक्षाणामन्यतमस्य वितस्तिमात्रान् दश कीलान् “ ॐ नमः सुदर्शनायास्त्राय फट्” इति मंत्रेणाष्टोत्तरशतवारानभिमंत्रितान् “ ॐ ये चात्र विघ्नकर्तारो भुवि दिव्यंतरिक्षगाः ॥ विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मंत्रस्य सिद्धिषु ॥ १ ॥ मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः ॥ अपसर्पंतु ते सर्वे निर्विघ्नं सिद्धिरस्तु मे ॥ २ ॥ ” इति मंत्रद्वयेन दशादिक्षु दश कीलान् निखनेत् ॥ ततस्तेषु “ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्” इति मंत्रेण प्रत्येकं कीलं संपूज्य तत्रैव पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिलोकपालानावाह्य पंचोपचारैः संपूज्य जपस्थानमध्ये गणेशकूर्मानंतवसुधाक्षेत्रपालांश्च संपूज्य दिक्पालेभ्यः क्षेत्रपालगणपत्यादिभ्यश्च बलिं दत्त्वा तद्बाह्ये भूतबलिं दद्यात् ॥ तत्र मंत्रौ ॥ “ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः ॥ मातरोऽप्युग्ररूपाश्च गणाधिपतयश्च ये॥१॥ भूचराः खेचराश्चैव तथा चैवांतरिक्षगाः ॥ ते सर्वे प्रीतमनसः प्रतिगृह्णंत्विमं बलिम् ॥२॥” इति मंत्रद्वयेन दशादिक्षु बाह्ये माषभक्तबलिं दत्त्वा वामकरांगुलिभिरर्घ्यजलेनोत्सृज्य पुष्पांजलिं गृहीत्वा “ ॐ भूतानि यानीह वसंति भूतले बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम् ॥ संतोषमासाद्य व्रजंतु सर्वे क्षमंतु नान्यत्र नमोऽस्तु तेभ्यः ॥ १ ॥” इति पुष्पांजलिं दत्त्वा प्रणम्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचामेत् ॥ इति क्षेत्रकीलनम् ॥ अथ प्रयोगविधानम् ॥ “ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ॥ यः स्मरेत्पुंडरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥ १ ॥ ” इति मंत्रेण मंडपांतरं संप्रोक्ष्य तत्र तावत् आसनभूमौ कूर्मशोधनं कार्यम्। यदा जपकर्ता एक एव तदा कूर्ममुखे उपविश्य जपं दीपस्थापनं च कुर्यात्॥ यत्र बहवो जापकास्तत्र कूर्ममखे दीपमेव स्थापयेत्॥इति कूर्मशोधनं विधाय तत्रासनाधो जलादिना त्रिकोणं कृत्वा तत्र ॐ कूर्माय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः ॥ २ ॥ ॐ पृथिव्यै नमः ॥ ३ ॥ इति गंधाक्षतपुष्पैः संपूज्य तदुपरि कुशासनम् १ तदुपरि मृगाजिनम् २ तदुपरि कंबलाद्यासनम् ३ आस्तीर्य स्थापितानां त्रयाणामासनानामुपरि क्रमेण ॐ अनंतासनाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विमलासनाय नमः ॥ २ ॥ ॐ पद्मासनाय नमः ॥ ३ ॥ इति मंत्रत्रयेण त्रींस्त्रीन् दर्भान् प्रत्येकमुपरि निदध्यात् ॥ एवमासनं संस्थाप्य तत्र प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य आसनं शोधयेत् ॥ तत्र मंत्रः॥ ॐ पृथ्वीति मंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः । कूर्मो देवता । सुतलं छन्दः। आसने

विनियोगः ॥ ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ॥ त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥ १ ॥ इति मंत्रेणासनं प्रोक्षयेत् ॥ ततः मूलेन शिखां बद्ध्वा ॐ केशवाय नमः ॥ १ ॥ ॐ नारायणाय नमः ॥ २॥ ॐ माधवाय नमः ॥ ३ ॥ इति त्रिराचम्य प्राणायामं कुर्यात्॥तद्यथा—दक्षिणहस्तांगुष्ठेन दक्षनासापुटं निरुध्य वामनासापुटेन मूलं षोडशवारं जपञ्शनैः शनैः प्राणाख्यवायुमाकृष्य शिरसि सहस्रारे धारयेदिति पूरकः ॥ १ ॥ पुनः दक्षहस्तानामिकातर्जन्यंगुष्ठैः नासापुटद्वयं निरुध्य मूलं चतुःषष्टिवाराञ्जपन् कुंभयेत् ॥२॥ पुनर्दक्षनासापुटांगुष्ठनिरोधं त्यक्त्वा मूलं द्वात्रिंशद्वारं जपञ्छनैः शनैस्तद्वायुं रेचयेत् ॥ ३ ॥ इति प्राणायामत्रयं कृत्वा देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रश्चामुकदेवशर्माहं श्रीविष्णुदेवताया अमुकमंत्रसिद्धिप्रतिबंधकाशेषदुरितक्षयपूर्वकामुकमंत्रसिद्धिकामोऽद्यारभ्य यावता कालेन सेत्स्यति तावत्कालममुकमंत्रस्य इयत्संख्यजपं तद्दशांशहोमतद्दशांशतर्पणतद्दशांशाभिषेकतद्दशांशब्राह्मणभोजनरूपपुरश्चरणं (कवलजपरूपपुरश्चरणं वा) करिष्ये॥ इति संकल्प्य"ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्" इति तालत्रयेण दिग्बन्धनं कृत्वा भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठां तर्मातृकाबहिर्मातृकासृष्टिस्थितिसंहारमातृकान्यासांश्च सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कृत्वा केशवादिकलामातृकान्यासं च कुर्यात् ॥ अथ केशवादिकलामातृकान्यासप्रयोगः ॥ अस्य केशवादिकलामातृकान्यासस्य प्रजापतिर्ऋषिः। गायत्री छन्दः । अर्धलक्ष्मीहरिर्देवता। नारायणप्रसन्नतार्थे न्यासे विनियोगः ॥ ॐ प्रजापतिऋषये नमः शिरसि॥१ ॥ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ अर्द्धलक्ष्मीहरये देवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ श्रीं अगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ श्रीं अनामिकाभ्यां मनः ॥ ४ ॥ ॐ श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ इति करन्यासः ॥ ६ ॥ ॐ श्रीं हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ श्रीं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ श्रीं कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ श्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ श्रीं अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ ॐ उद्यत्प्रद्योतनशतरुचिं तप्तहेमावदातं पार्श्वद्वंद्वं जलधिसुतया विश्वधात्र्या च पुष्टम् ॥ नाना

रत्नोल्लासितांविविधाकल्पमापीतवस्त्रं विष्णुं वन्दे दरकमलकौमोदकीचक्रपाणिम् ॥१॥ एवं ध्यात्वा मातृकां न्यसेत्॥ॐ अं केशवाय कीर्त्यै नमः ललाटे ॥ १ ॥ ॐ आं नारायणाय कांत्यै नमः मुखे ॥ २ ॥ ॐ इं माधवाय पुष्ट्यै नमः दक्षनेत्रे ॥ ३ ॥ ॐ ईं गोविन्दाय तुष्ट्यै नमः वामनेत्रे ॥ ४ ॥ ॐ उं विष्णवे धृत्यै नमः दक्षकर्णे ॥ ५ ॥ ॐ ऊं मधुसूदनाय शांत्यै नमः वामकर्णे ॥ ६ ॥ ॐ ऋं त्रिविक्रमाय क्रियायै नमः दक्षनासापुटे ॥ ॐ ॠं वामनाय दयायै नमः वामनासापुटे ॥ ८ ॥ ॐ लृं श्रीधराय मेधायै नमः दक्षगंडे ॥ ९ ॥ ॐ लॄं हृषीकेशाय दुर्गायै नमः वामगंडे ॥ १०॥ ॐ एं पद्मनाभाय श्रद्धायै नमः ऊर्ध्वोष्ठे ॥ ११ ॥ ॐ ऐं दामोदराय लज्जायै नमः अधरोष्ठे ॥ १२ ॥ ॐ ओं वासुदेवाय लक्ष्म्यै नमः ऊर्ध्वदंतपंक्तौ ॥ १३ ॥ ॐ औं संकर्षणाय सरस्वत्यै नमः अधोदंतपंक्तौ ॥ १५ ॥ ॐ अं प्रद्युम्नाय धृत्यै नमः मस्तके ॥ १५ ॥ ॐ अः अनिरुद्धाय रत्यै नमः मुखे ॥ १६ ॥ ॐ कं चक्रिणे जयायै नमः दक्षबाहुमूले ॥ १७ ॥ ॐ खं गदिने दुर्गायै नमः दक्षिणकूर्परे ॥ १८ ॥ ॐ गं शार्ङ्गिणे प्रभायै नमः दक्षिणमणिबंधे ॥ १९ ॥ ॐ घं खड्गिने सत्यायै नमः दक्षहस्तांगुलिमूले ॥ १० ॥ ॐ ङं शंखिने चन्द्रायै नमः दक्षहस्तांगुल्यग्रे ॥ २१ ॥ ॐ चं हलिने वाण्यै नमः वामबाहुमूले ॥ २२ ॥ ॐ छं मुसलिने विलासिन्यै नमः वामकूर्परे ॥ २३ ॥ ॐ जं शूलिने विजयाय नमः वाममणिबंधे ॥ २४ ॥ ॐ झं पाशिने विरजायै नमः वामहस्तांगुलिमूले ॥ २५ ॥ ॐ ञं अंकुशिने विंबायै नमः वामहस्तांगुल्यग्रे ॥ २६ ॥ ॐ टं मुकुंदाय विनदायै नमः दक्षपादमूले ॥ २७ ॥ ॐ ठं नंदजाय सुनंदायै नमः दक्षजानुनि ॥ २८ ॥ ॐ डं नंदिने स्मृत्यै नमः दक्षगुल्फे ॥ २९ ॥ ॐ ढं नराय ऋद्ध्यै नमः दक्षपादांगुलिमूले ॥ ३० ॥ ॐ णं नरकजिते समृद्ध्यै नमः दक्षपादांगुल्यग्रे ॥ ३१ ॥ ॐ तं हरये शुद्ध्यै नमः वामपादमूले ॥ ३२ ॥ ॐ थं कृष्णाय वृद्ध्यै नमः वामजानुनि ॥ ३३ ॥ ॐ दं सत्याय भुक्त्यै नमः वामगुल्फे ॥ ३४ ॥ ॐ धं सात्त्वताय मत्यै नमः वामपादांगुलिमूले ॥ ३५ ॥ ॐ नं सौराघ्राय क्षमायै नमः वामपादांगुल्यग्रे ॥ ३६ ॥ ॐ पं शूराय रमायै नमः दक्षपार्श्वे ॥ ३७ ॥ ॐ फं जनार्दनाय उमायै नमः वामपार्श्वे ॥३८॥ ॐ बं भूधराय क्लेदिन्यै नमः पृष्ठे

॥ ३९ ॥ ॐ भं विश्वमूर्तये क्लिन्नायै नमः नाभौ ॥ ४० ॥ ॐ मं वैकुंठाय वसुदायै नमः उदरे ॥ ४१ ॥ ॐ यं स्वक्षमाय पुरुषोत्तमाय वसुधायै नमः हृदि ॥ ४२ ॥ ॐ रं असृगात्मने बलिने परायै नमः दक्षांसे ॥ ४३ ॥ ॐ लं मांसात्मने बालानुजाय परायणायै नमः ककुदि ॥ ४४ ॥ ॐ वं मेदात्मने बलाय सूक्ष्मायै नमः वामांसे ॥ ४५ ॥ ॐ शं अस्थ्यात्मने वृषघ्नाय संध्यायै नमः हृदयादिदक्षकरांतम् ॥ ४६ ॥ ॐ षं मज्जात्मने वृषाय प्रज्ञायै नमः हृदयादिवामकरांतम् ॥ ४७ ॥ ॐ सं शुक्रात्मने हंसाय प्रभायै नमः हृदयादिदक्षपादांतम् ॥ ४८ ॥ ॐ हं प्राणात्मने वाराहाय निशायै नमः हृदयादिवामपादांतम् ॥ ४९ ॥ ॐ ळं जीवात्मने विमलाय अमोघायै नमः हृदयाद्युदरांतम् ॥ ५० ॥ ॐ छं क्रोधात्मने नृसिंहाय विद्युतायै नमः हृदयादिमुखांतम् ॥ ५१ ॥ इति विष्णुकेलामातृकान्यासं कृत्वा प्रयोगोक्तन्यासादिकं च कुर्यात् ॥ अथ पीठपूजाप्रयोगः ॥ पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः स्थापयेत् ॥ तद्यथा—स्ववामभागे श्रीगुरवे नमः ॥ १ ॥ दक्षिणे गणपतये नमः ॥ २ ॥ मध्ये स्वेष्टदेवतायै नमः ॥ ३ ॥ इति नत्वा पुष्पाक्षतानादाय पीठमध्ये ॐ मं मंडूकाय नमः ॥ १ ॥ ॐ कं कालाग्निरुद्राय नमः ॥ २ ॥ ॐ अं आधारशक्तये नमः ॥ ३ ॥ ॐ कूं कूमार्य नमः ॥ ४ ॥ ॐ अं अनंताय नमः ॥ ५ ॥ ॐ पृं पृथिव्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ क्षीं क्षीरसागराय नमः ॥ ७ ॥ ॐ रं रत्नदीपाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ रं रत्नमंडपाय नमः ॥ ९ ॥ ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः ॥ १० ॥ ॐ रं रत्नवेदिकायै नमः ॥ ११ ॥ ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः ॥ १२ ॥ आग्नेय्याम् ॐ धं धर्माय नमः ॥ १३ ॥ नैर्ऋत्याम् ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः ॥ १४ ॥ वायव्ये ॐ वैं वैराग्याय नमः ॥ १५ ॥ ऐशान्ये ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः ॥ १६ ॥ पूर्वे ॐ अं अधर्माय नमः ॥ १७ ॥ दक्षिणे ॐ अं अज्ञानाय नमः ॥ १८ ॥ पश्चिमे ॐ अं अवैराग्याय नमः ॥ १९ ॥ उत्तरे ॐ अं अनैश्वर्याय नमः ॥ २० ॥ पुनः पीठमध्ये । ॐ आं आनंदकंदाय नमः ॥ २१ ॥ ॐ संविन्नालाय नमः ॥ २२ ॥ ॐ सं सर्व

१ केशवादिरयं न्यासो न्यासमात्रेण देहिनाम् । अच्युतत्वं ददात्येव सत्यं सत्यं न संशयः ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा साक्षान्नारायणो भवेत् ॥

तत्त्वकमलासनाय नमः ॥ २३ ॥ ॐ प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः ॥ २४ ॥ ॐ विं विकारमयकेसरेभ्यो नमः ॥ २५ ॥ ॐ पं पंचाशद्वर्णाढ्यकर्णिकाभ्यो नमः ॥ २६ ॥ ॐ अं अर्कमंडलाय द्वादशकलात्मने नमः ॥ २७ ॥ ॐ सों सोममंडलाय षोडशकलात्मने नमः ॥ २८ ॥ ॐ वं वह्निमंडलाय दशकलात्मने नमः ॥ २९ ॥ ॐ सं सत्त्वाय नमः ॥ ३० ॥ ॐ रं रजसे नमः ॥ ३१ ॥ ॐ तं तमसे नमः ॥ ३२ ॥ ॐ आं आत्मने नमः ॥ ३३ ॥ ॐ पं परमात्मने नमः ॥ ३४ ॥ ॐ अं अंतरात्मने नमः ॥ ३५ ॥ ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः ॥ ३६ ॥ ॐ मं मायातत्त्वाय नमः ॥ ३७ ॥ ॐ कं कलातत्त्वाय नमः ॥ ३८ ॥ ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः ३९ ॥ ॐ पं परतत्त्वाय नमः ॥ ४० ॥ इति पीठदेवताः संस्थाप्य प्रयोगोक्तनवपीठशक्तीः पूजयेत् ॥ अथ शंखस्थापनप्रयोगः ॥ देववामतः त्रिकोणमंडलं कृत्वा जलेन प्रोक्ष्य त्रिकोणांतर्मायां (ह्रीं) विलिख्य "ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै नमः" इति संपूज्य मूलेन त्रिपदाधारं प्रक्षाल्य त्रिकोणमध्ये संस्थाप्य "ॐ वं वह्निमंडलाय दशकलात्मने शंखपात्राशनाय नमः" इत्याधारं संपूजयेत् ॥ ततः "ॐ क्लीं महाजलचराय हुं फट् स्वाहा पांचजन्याय नमः" इति मंत्रेण क्षालितं शंखमाधारोपरि संस्थाप्य "ॐ अं सूर्यमंडलाय द्वादशकलात्मने शंखपात्राय नमः" इति शंखं पूजयेत् ॥ ततो मूलेन नमः इति शंखे जलमापूर्य ॐ सों सोममंडलाय षोडशकलात्मने शंखपात्रामृताय नमः इति गंधादिभिः संपूज्याभिमंत्रयेत् ॥ तथा च—ॐ शंखादौ चन्द्रदैवत्यं कुक्षौ वरुणदेवता ॥ पृष्ठे प्रजापतिश्चैवमग्रे गंगा सरस्वती ॥ १ ॥ त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया ॥ शंखे तिष्ठंति विप्रेन्द्र तस्माच्छंखं प्रपूजयेत् ॥ २ ॥ इत्यभिमंत्र्य प्रार्थयेत् ॥ तथा च—ॐ त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे ॥ निर्मितः सर्वदेवैश्च पांचजन्य नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥ इति संप्रार्थ्य "ॐ पांचजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि । तन्नः शंखः प्रचोदयात्" इति शंखगायत्रीमष्टधा जपित्वा शंखमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इति शंखस्थापनम् ॥ अथ घंटास्थापनप्रयोगः ॥ देवदक्षिणतः घंटां संस्थाप्य नादं कृत्वा पूजयेत् ॥ तद्यथा—ॐ भूर्भुवः स्वः गरुडाय नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि ॥ इत्यावाह्य "॥ ॐ जगद्ध्वनिमंत्रमातः स्वाहा" इति मंत्रेण घंटास्थितगरुडं

घंटां च संपूज्य गरुडमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इति घंटां संस्थाप्य गंधाक्षतपुष्पादींश्च पूजोपकरणार्थं स्वदक्षिणपार्श्वे संस्थाप्य मूलेन नमः इति जलेन प्रोक्ष्य जलार्थे बृहत्पात्रं व्यजनं छत्रादर्शचामराणि च स्ववामे संस्थापयेत् । ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेणाशोष्य आसनमंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य देशकालौ संकीर्त्य मम विष्णुदेवतानूतनयंत्रे मूर्तौ वा प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये ॥ इति संकल्प्य प्रतिष्ठां कुर्य्यात् ॥ तद्यथा—अस्य श्रीप्राण प्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः । ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि क्रियामयवपुःप्राणाख्या देवता । ॐ बीजम् । ह्रीं शक्तिः । क्रों कीलकम् । अस्मिन्नूतनयंत्रे मूर्तौ वा प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः ॥ इति जलं क्षिपेत् ॥ करेणाच्छाद्य ॐ आंह्रींक्रोंयंरंलंवंशंषंसंहंसः सोऽहं अस्य विष्णु देवतासपरिवारयंत्रस्य प्राणा इह प्राणाः पुनः ॐ आं ह्रींक्रोंयंरंलंवंशंषंसंहंसः सोऽहं अस्य विष्णुदेवतासपरिवारयंत्रस्य जीव इह स्थितः । पुनः । ॐ आं ह्रींक्रोंयंरंलंवंशंषंहंसः सोऽहं अस्य विष्णुदेवतासपरिवारयंत्रस्य सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि । पुनः । ॐ आं ह्रींक्रोंयंरंलंवंशं षंसंहंसः सोऽहं अस्य विष्णदेवतासपरिवारयंत्रस्य वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा इति प्राणान् प्रतिष्ठाप्य "यः प्राणतो निमिषतो महित्वा० विधेम" इति मन्त्रं त्रिवारं पठेत् ॥ "ॐ मनोजूतिर्जुषतां० सुप्रतिष्ठा प्रतिष्ठा" इत्युक्त्वा संस्कारसिद्धये पंचदश प्रणवावृत्तीः कृत्वा अनेन विष्णुदेवतासपरिवारयंत्रस्य गर्भाधानादिपंचदशसंस्कारान्संपादयामि इति वदेत् । ततः ॐ यंत्रराजाय विद्महे महायंत्राय धीमहि ॥ तन्नो यंत्रः प्रचोदयात् ॥ इत्यष्टोत्तरशतमभिमंत्र्य मूलदेवतां ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्या वाहयेत् ॥ अक्षतानादाय ॐ देवेश भक्तिसुलभ परिवारसमन्वित ॥ यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावद्देव इहावह ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीविष्णवे नमः इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाहनम् ॥ १ ॥ ॐ अज्ञानाद्दुर्मनस्त्वाद्वा वैकल्यात्साधनस्य च ॥ यदि पूर्णं भवेत्कृत्यं तदाप्यभिमुखो भव ॥ १ ॥ ॐ भू० श्रीविष्णवे नमः इह सम्मुखो भव इति सम्मुखीकरणम् ॥ २ ॥ ॐ यस्य दर्शनमिच्छंति देवाः स्वाभीष्टसिद्धये ॥ तस्मै ते परमेशाय स्वागतं स्वागतं च ते ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भू० श्रीविष्णवे नमः सुस्वागतं समर्पयामि इति सस्वागतम् ॥ ३ ॥ ॐ

देवदेव महाराज प्रियेश्वर प्रजापते ॥ आसनं दिव्यमीशान दास्येऽहं परमेश्वर ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीविष्णवे नमः आसनं समर्पयामि इत्यासनम् ॥४॥ इत्यासनं दत्त्वा करं बद्ध्वा प्रार्थयेत्॥ ॐ स्वागतं देवदेवेश मद्भाग्यात्त्वमिहागतः॥प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत्परिपालय ॥ १॥ मूलं पठित्वा ॐ भू० श्रीविष्णवे नमः प्रार्थनां समर्पयामि नमस्करोमि ॥५॥ इति प्रार्थयित्वा पाद्यादिपूजनं कुर्यात्॥अथ पाद्यादिपूजनम् ॥ॐ यद्भक्तिलेशसंपर्कात्परमानंदसंभवः॥ तस्मै ते चरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पयेत् ॥ १॥ मूलं पठित्वा ॐ भू०श्रीविष्णवे नमः पाद्यं समर्पयामि इति सर्वत्र॥इत्यर्घोदकेन पाद्यं दद्यात्॥ इति पाद्यम् ॥१॥ ॐ देवानामपि देवाय देवानां देवतात्मने ॥ आचामं कल्पयामीश शुद्धानां शुद्धिहेतवे॥१॥इत्याचमनम् ॥ २ ॥ ॐ तापत्रयहरं दिव्यं परमानंदलक्षणम् ॥ तापत्रयविमोक्षाय तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम् ॥ १ ॥ अर्घ्योदकेनार्घ्यं दद्यात् ॥ इत्यर्घ्यम् ॥ ३ ॥ ॐ सर्वकालुष्यहीनाय परिपूर्णसुखात्मने ॥ मधुपर्कमिदं देव कल्पयामि प्रसीद मे ॥ १ ॥ इति मधुपर्कम् ॥४ ॥ ॐ उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वाऽपि यस्य स्मरणमात्रतः ॥ शुद्धिमाप्नोति तस्मै ते पुनराचमनीयकम् ॥ १ ॥ इति पुनराचमनीयम् ॥ ५ ॥ ॐ स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकनाथ महाशय ॥ सर्वलोकेषु शुद्धात्मन्ददामि स्नेहमुत्तमम् ॥ १ ॥ इति सुगंधतैलम् ॥ ६ ॥ ॐ गंगासरस्वतीरेवापयोष्णीनर्मदाजलैः ॥ स्नापितोऽसि मया देव तथा शांतिं कुरुष्व मे ॥ १ ॥ इति जलस्नानम् ॥ ७ ॥ ॐ पयो दधि घृतं चैव मधु शर्करया युतम् ॥ पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥ इति पंचामृतेन स्नापयित्वा पुनर्जलस्नानं च कारयेत् ॥ ८ ॥ ॐ सर्वभूषादिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे ॥ मयैवापादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥ इति वस्त्रम् ॥९॥ ॐ नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ॥ उपवीतं चोत्तरीयं गृहाण परमेश्वर ॥ १ ॥ इति यज्ञोपवीतम् ॥ १० ॥ ॐ स्वभावसुंदरांगाय सत्यासत्याश्रयाय ते ॥ भूषणानि विचित्राणि कल्पयामि सुरार्चित ॥ १ ॥ दक्षहस्तांगुष्ठस्पृष्टानामिकाग्रिमकया मुद्रया भूषणानि दद्यात् ॥इत्याभूषणम् ॥ ११ ॥ॐ श्रीखण्डं चंदनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम् ॥ विलेपनं सुरश्रेष्ठ चंदनं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥ अंगुष्ठो कनिष्ठामूललग्नो गंधमुद्रा इति गंधम् ॥ १२ ॥ ॐ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः

सुशोभिताः ॥ मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥ १ ॥ सर्वांगुलीभिर्दद्यात् ॥ इत्यक्षतान् ॥ १३ ॥ माल्यादीनि सुगंधीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ॥ मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥ १ ॥ तर्जन्यावंगुष्ठमूललग्ने पुष्पमुद्रा ॥ इति पुष्पम् ॥ १४ ॥ पु... पुष्पांतं पूजयित्वा देवाज्ञया प्रयोगोक्तावरणपूजां कृत्वा धूपादिपजनं कुर्यात् ॥ अथ धूपादिपूजनम् ॥ फडिति धूपपात्रं संप्रोक्ष्य मूलेन नमः इति गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य पुरतो निधाय (रँ) इति वह्निबीजेन आग्निं संस्थाप्य तदुपरि मूलेन दशांगं दत्त्वा घंटां वादयन् ॐ वनस्पतिरसोद्भूतो गंधाढ्यो गंध उत्तमः ॥ आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भू० सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सवाहनाय श्रीविष्णवे नमः धूपं समर्पयामि ॥इति पठित्वा देवस्य वामभागे धूपपात्रं निधाय तर्जनीमूलयोरंगुष्ठयोगो धूपमुद्रा तां प्रदर्शयेत् ॥ इति धूपम् ॥ १ ॥ ततो दीपपात्रं गोघृतेनापूर्य मंत्राक्षरतंतुभिर्वर्तीं निःक्षिप्य प्रणवेन (ॐ) प्रज्वाल्य घंटां वादयन् नेत्रादिपादपर्यंतं दीपं प्रदर्शयेत् ॥ ॐ सुप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः ॥ सबाह्याभ्यंतरं ज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥ मलं पठित्वा ॐभू० सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सवाहनाय श्रीविष्णवे नमः दीपं समर्पयामि॥इति पठित्वा देवस्य दक्षिणभागे निधाय ततः शंखजलमुत्सृज्य मध्यमे अंगुष्ठलग्ने दीपमुद्रा तां प्रदर्शयेत् ॥ इति दीपम् ॥२॥ततः देवस्याग्रे देवदक्षिणतो वा जलेन चतुरस्रं मण्डलं कृत्वा स्वर्णादिनिर्मितं भोजनपात्रं संस्थाप्य तन्मध्ये षड्रसोपेतं विविधप्रकारं वा नैवेद्यं निधाय ॐ ह्रीं नमः इत्यर्घ्यजलेन प्रोक्ष्य मूलेन संवीक्ष्य अधोमुखदक्षिणहस्तोपरि तादृशं वामं निधाय नैवेद्यमाच्छाद्य (ॐ यँ) इति वायुबीजेन षोडशधा संजप्य वायुना तद्भूतदोषान् संशोष्य ततो दक्षिणकरतले तत्पृष्ठलग्नवामकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य (ॐ रँ) इति वह्निबीजेन षोडशवारान् संजप्य तदुत्पन्नाग्निना तद्दोषं दग्ध्वा ततो वामकरतले (ॐ वं) इति अमृतबीजं विचिंत्य तत्पृष्ठलग्नं दक्षिणकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य (ॐ वं) इति सुधाबीजं षोडशवारं संजप्य तदुत्थामृतधारया प्लावितं विभाव्य मूलेन प्रोक्ष्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य मूलेनाष्टधाभिमंत्र्य गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य देवस्योद्धृतं तेजः स्मृत्वा वामांगुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृष्ट्वा दक्षिणकरेण जलं गृहीत्वा "ॐ सत्पात्रसिद्धं सुहविर्विविधानेकभक्षणम् ॥ निवेदयामि देवेश

सानुगाय गृहाण तत् ॥ ” मूलं पठित्वा ॐ भू० सांगाय सपरिवाराय सवाहनाय श्रीविष्णवे नमः ॥ नैवेद्यं समर्पयामि ॥ १ ॥ इति भूतले देवदक्षिणे जलं क्षिप्त्वा वामहस्तेन अनामामूलयोरंगुष्ठयोगे ग्रासमुद्रा तां प्रदर्श्य देवं भुक्तवन्तं विभाव्य जलं दद्यात्॥इति नैवेद्यम् ॥ ३ ॥ ॐ नमस्ते देवदेवेश सर्वतृप्तिकरो वरः ॥ परमानंदपूर्णस्त्वं गृहाण जलमुत्तमम् ॥ १ ॥ मलं पठित्वा ॐ भ० सांगाय सपरिवाराय सवाहनाय सायुधाय श्रीविष्णवे नमः ॥ जलं समर्पयामि ॥ इति मंत्रेण स्वर्णादिपात्रस्थं कर्पूरादिसुवासितं जलं निवेद्य देवेन तज्जलं प्राशितमिति भावयन् अंतःपटं दद्यात् ॥ इति जलम् ॥ ४ ॥ ॐ ब्रह्मेशाद्यैः सरसमभितः सूपविष्टैः समन्तात्सिंजद्वालव्यजननिकरैर्वीज्यमानः सखीभिः ॥ नर्मक्रीडाप्रहसनपरान्पंक्तिभोक्तॄन् हसन्वै भुंक्ते पात्रे कनकघटिते षड्रसान्देवदेवः ॥१॥ शालीभक्तं सुपक्वं शिशिरकरसितं पायसापूपसूपं लेह्यं पेयं च चोष्यं सितममृतफलं क्षीरिकाद्यं सुखाद्यम् ॥ आज्यं प्राज्यं सभोज्यं नयनरुचिकरं राजिकैलामरीचस्वादीयः शाकराजीपरिकरममृताहारजोषं जुषस्व ॥ २ ॥ इति अंतःपटं दत्त्वा आचमनं दद्यात् ॥ ५ ॥ ॐ उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वापि यस्य स्मरणमात्रतः ॥ शुद्धिमाप्नोति तस्मै ते पुनराचमनीयकम् ॥ १ ॥ ॐ भू० श्रीविष्णवे नमः आचमनं समर्पयामि ॥ इत्याचमनं दत्त्वा मूलेन गंडूषार्थं जलं च दद्यात् ॥ ६ ॥ ॐ पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ॥ एलाचूर्णादिसयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥ इति ताम्बूलम् ॥ ७ ॥ ॐ इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव ॥ तेन मे सुफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥ १ ॥ इति फलम् ॥ ८ ॥ ॐ बुद्धिः सवासना क्लृप्ता दर्पणं मंगलानि च ॥ मनोवृत्तिर्विचित्रा ते नृत्यरूपेण कल्पिता ॥ १ ॥ ध्यानं च गीतरूपेण शब्दा वाद्यप्रभेदतः ॥ छत्राणि नवपद्मानि कल्पितानि मया प्रभो ॥ २ ॥ सुषुम्णा ध्वजरूपेण प्राणाद्याश्चामरा मताः ॥ अहंकारो गजत्वेन वेगः क्लृप्तो रथात्मना ॥ ३ ॥ इन्द्रियाण्यश्वरूपाणि शब्दादीरथवर्त्मना ॥ मनः प्रग्रहरूपेण बुद्धिः सारथिरूपतः ॥ ४ ॥ सर्वं मया तथा क्लृप्तं तवोपकरणात्मना ॥ इमान् सार्द्धचतुष्टयश्लोकान् पठित्वा छत्रादि समर्पयेत् ॥ इति छत्राद्यर्पणम् ॥ ९ ॥ ॐ कदलीगर्भसंभूतं कर्पूरं च प्रदीपितम् ॥ आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥ इति कपरार्त्तिक्यम् ॥ १० ॥ ॐ यानि कानि च पापानि

जन्मांतरकृतानि वै ॥ तानि सर्वाणि नश्यंतु प्रदक्षिणपदे पदे ॥ १ ॥ इति चतुरः प्रदक्षिणाः कुर्यात् ॥ ११ ॥ ॐ प्रसन्नं पाहि मामीश भीतं मृत्युग्रहार्णवात् ॥ इति वदन् साष्टांगं प्रणमेत ॥ १२ ॥ ॐ नानासुगंधपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च ॥ पुष्पांजलिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥१॥इति पुष्पांजलिः॥१३॥इति पुष्पांजलिं दत्त्वा ततः स्तुतिपाठेन स्तुत्वा बद्धांजलिपूर्वकं प्रार्थयेत्॥ ॐ ज्ञानतोऽज्ञानतो वाथ यन्मया क्रियते हरे ॥ मम कृत्यमिदं सर्वमिति देव क्षमस्व मे ॥१॥ अपराधसहस्राणि क्रियंतेऽहर्निशं मया ॥ दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥२॥ अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे ॥ कोऽपरः सहतां लोके केवलं स्वामिनं विना ॥ ३ ॥ भूमौ स्खालित पादानां भूमिरेवावलंबनम् ॥ त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं हरे ॥ ४ ॥ इति बद्धांजलिपूर्वकं संप्रार्थ्य "ॐ यदुक्तं येन भावेन पत्रं पुष्पं फलं जलम् ॥ निवेदितं च नैवेद्यं त्वं गृहाणा नुकंपया ॥ १ ॥" इति पठित्वा देवस्य दक्षिणकरे पूजार्पणजलं दद्यात् ॥ ततो माला मादाय सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण मालायाः संस्कारान् कृत्वा अशक्तश्चेत् "ॐ ह्रीं माले माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणी॥चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥ १ ॥ इति मालां संप्रार्थ्य ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ "इति मंत्रेण दक्षिणहस्ते मालामादाय हृदये धारयन् स्वेष्टदेवतां ध्यात्वा मध्यमांगुलिमध्यपर्वणि संस्थाप्य ज्येष्ठाग्रेण भ्रामयित्वा एकाग्रचित्तो मंत्रार्थं स्मरन् यथाशक्ति प्रातःकालमारभ्य मध्यदिनं यावत् मूलमंत्रं जपेत् ॥ नित्यमेव समानं जपं कुर्यान्न तु न्यूनाधिकम् ॥ ततो जपांते "ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा मम ॥ शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा ॥ तेन सत्येन सिद्धिं मे देहि मातर्नमोऽस्तु ते ॥१॥" ॐ ह्रीं सिद्ध्यै नमः ॥ इति मालां शिरसि निधाय गोमुखीरहस्ये स्थापयेत् । नाशुचिः स्पर्शयेत् । नान्यस्मै दद्यात् । अशुचिस्थाने न निधापयेत् । स्वयोनिवत् गुप्तां कुर्यात् ॥ ततः कवचस्तोत्रसहस्रनामादिकं पठित्वा पुनः मूलमन्त्रोक्तं ऋष्यादिन्यासं हृदयादि षडंगन्यासं च कृत्वा पंचोपचारैः संपूज्य पुष्पांजलिं च दत्त्वा जपार्पणं कुर्यात् ॥ तथा च अर्घ्योदकेन चुलुकमादाय ॐ गुह्या तिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात्त्वयि स्थितिः ॥ १ ॥ ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्मा

धिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुर्यावस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा ॥ मदीयं च सकलं श्रीविष्णुदेवतायै समर्पयामि नमः ॥ ॐ तत्सदिति ब्रह्मार्पणं भवतु इति देवदक्षिणकरे जलसमर्पणं कृत्वांऽजलिपूर्वकं क्षमापनं पठेत् ॥ तथा च—ॐ आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ॥ पूजाभागं न जानामि त्वं गतिः परमेश्वर ॥ १ ॥ मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ॥ यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ २ ॥ यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ॥ तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥ ३ ॥ कर्मणा मनसा वाचा त्वत्तो नान्या गतिर्मम ॥ अंतश्चरासि भूतानामिष्टस्त्वं परमेश्वर ॥ ४ ॥ अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ॥ तस्मात्कारुण्यभावेन क्षमस्व परमेश्वर ॥ ५ ॥ प्रातर्योनिसहस्रेषु सहस्रेषु व्रजाम्यहम् ॥ तेषु तेष्वचला भक्तिरच्युतेऽस्तु सदा त्वयि ॥ ६ ॥ गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च ॥ आगता सुखसंपत्तिः पुण्याच्च तव दर्शनात् ॥ ७ ॥ देवो दाता च भोक्ता च देवरूपमिदं जगत् ॥ देवं जपति सर्वत्र यो देवः सोऽहमेव हि ॥ ८ ॥ क्षमस्व देवदेवेश क्षम्यतां भुवनेश्वर ॥ तव पादांबुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे ॥ ९ ॥ इति कृतांजलिः प्रार्थयित्वा शंखजलमुद्धृत्य देवोपरि भ्रामयित्वा "साधु वासाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया ॥ तत्सर्वं कृपया देव गृहाणाराधनं मम ॥ १ ॥" इत्युच्चरन् देवस्य दक्षिण हस्ते किंचिज्जलं दत्त्वा प्राग्वदर्घ्यं देवशिरसि दत्त्वा शंखं यथास्थाने निवेशयेत् ॥ ततो गतसारनैवेद्यं देवस्योच्छिष्टं किंचिदुद्धृत्य ॐ विष्वक्सेनाय नमः ॥ इति विष्वक्सेनं संपूज्योच्छिष्टाधिकारिणे ऐश्यान्यां दिशि दद्यात् ॥ तच्छेषनैवेद्यं शिरसि धृत्वा नैवेद्यादिकं देवभक्तेषु विभज्य स्वयं भुक्त्वा विसर्जनं कुर्यात् ॥ तथा च—"ॐ गच्छ गच्छ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर ॥ पूजाराधनकाले च पुन रागमनाय च ॥१॥" इत्यक्षतान्निक्षिप्य विसर्जनं कृत्वा "ॐ तिष्ठ तिष्ठ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर ॥ यत्र ब्रह्मादयो देवाः सर्वे तिष्ठंति मे हृदि ॥१॥" इति हृदयकमले हस्तं दत्त्वा देवं स्वहृदये संस्थाप्य मानसोपचारैः संपूज्य स्वात्मानं देवरूपं भावयन् यथासुखं विहरेत् ॥ एवमेव विधिना जपं समाप्य सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण तत्तद्दशांशहोमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् ॥ इति विष्णुपूजापद्धतिः

श्रीनारद उवाच ॥ " भगवन्सर्वधर्मज्ञ कवचं यत्प्रकाशितम् ॥ त्रैलोक्यमंगलं नाम कृपया कथय
समाप्ता ॥ अथ विष्णुकवचप्रारंभः ॥ श्रीनारद उवाच ॥ " भगवन्सर्वधर्मज्ञ कवचं यत्प्रकाशितम् ॥ नारायणेन कथितं कृपया ब्रह्मणे पुरा ॥ २ ॥ ब्रह्मणा कथितं
प्रभो ॥ १॥ सनत्कुमार उवाच ॥ शृणु वक्ष्यामि विप्रेन्द्र कवचं परमाद्भुतम् ॥ नारायणेन कथितं कृपया ब्रह्मणे पुरा ॥ २ ॥ ब्रह्मणा कथितं
मह्यं परं स्नेहाद्ददामि ते ॥ अतिगुह्यतरं तत्त्वं ब्रह्ममंत्रौघविग्रहम् ॥ ३ ॥ यत्कृत्वा पठनाद्ब्रह्मा सृष्टिं वितनुते ध्रुवम् ॥ यत्कृत्वा पठना
त्पाति महालक्ष्मीर्जगत्त्रयम् ॥ ४ ॥ पठनाद्धारणाच्छम्भुः संहर्ता सर्वमंत्रवित् ॥ त्रैलोक्यजननी दुर्गा महिषादिमहासुरान् ॥ ५॥ वरदृप्ता
ञ्जघानैव पठनाद्धारणाद्यतः ॥ एवमिन्द्रादयः सर्वे सर्वैश्वर्य्यमवाप्नुयुः ॥६॥ इदं कवचमत्यंतं गुप्तं कुत्रापि नो वदेत् ॥ शिष्याय भक्ति
युक्ताय साधकाय प्रकाशयेत् ॥७ ॥ शठाय परशिष्याय दत्त्वा मृत्युमवाप्नुयात्॥ त्रैलोक्यमंगलस्यास्य कवचस्य प्रजापतिः ॥ ८ ॥ ऋषि
श्छन्दश्च गायत्री देवो नारायणः स्वयम् ॥ धर्म्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ॥९॥ ॐ प्रणवो मे शिरः पातु नमो नारायणाय च ॥
भालं मे नेत्रयुगलमष्टार्णो भक्तिमुक्तिदः ॥१०॥ क्लीं पायाच्छ्रोत्रयुग्मं चैकाक्षरः सर्वमोहनः ॥ क्लीं कृष्णाय सदा घ्राणं गोविंदायेति जिह्वि
काम् ॥ ११ ॥ गोपीजनपदं वल्लभाय स्वाहाननं मम ॥ अष्टादशाक्षरो मंत्रः कंठं पातु दशाक्षरः ॥ १२ ॥ गोपीजनपदं वल्लभाय
स्वाहा भुजद्वयम् ॥ क्लीं ग्लौं क्लीं श्यामलांगाय नमः स्कंधौ दशाक्षरः ॥ १३ ॥ क्लीं कृष्णः क्लीं करौ पायात् क्लीं कृष्णायांगतो
ऽवतु ॥ हृदयं भुवनेशानी क्लीं कृष्णाय क्लीं स्तनौ मम ॥ १४ ॥ गोपालायाग्निजायांतं कुक्षियुग्मं सदावतु ॥ क्लीं कृष्णाय सदा पातु
पार्श्वयुग्ममनुत्तमः ॥ १५ ॥ कृष्णगोविंदकौ कटथां स्मराद्यौ ङेयुतो मनुः ॥ अष्टाक्षरः पातु नाभिं कृष्णेति द्व्यक्षरोऽवतु ॥ १६ ॥ पृष्ठं
क्लीं कृष्णकंकालं क्लीं कृष्णाय द्विठांतकः ॥ सक्थिनी सततं पातु श्रीं ह्रीं क्लीं कृष्णठद्वयम् ॥ १७ ॥ ऊरू सप्ताक्षरः पायात्त्रयोद
शाक्षरोऽवतु ॥ श्रीं ह्रीं क्लीं पदतो गोपीजनवल्लभदं ततः ॥ १८ ॥ भाय स्वाहेति पायुं वै क्लीं ह्रीं श्रीं स दशार्णकः ॥ जानुनी च सदा
पातु ह्रीं श्रीं क्लीं च दशाक्षरः ॥ १९ ॥ त्रयोदशाक्षरः पातु जंघे चक्राद्युदायुधः ॥ अष्टादशाक्षरो ह्रीं श्रीं पूर्वको विंशदर्णकः ॥ २० ॥
सर्वांगं मे सदा पातु द्वारकानायको बली ॥ नमो भगवते पश्चाद्वासुदेवाय तत्परम् ॥२१॥ ताराद्यो द्वादशार्णोऽयं प्राच्यां मां सर्वदावतु ॥

श्रीं ह्रीं क्लीं च दशार्णस्तु क्लीं ह्रीं श्रीं षोडशार्णकः ॥ २२ ॥ गदाद्युदायुधो विष्णुर्मामग्नेर्दिशि रक्षतु ॥ ह्रीं श्रीं दशाक्षरो मंत्रो दक्षिणे मां सदावतु ॥ २३ ॥ तारो नमो भगवते रुक्मिणीवल्लभाय च ॥ स्वाहेति षोडशार्णोऽयं नैर्ऋत्यां दिशि रक्षतु ॥ २४ ॥ क्लीं हृषीकपदेशाय नमो मां वारुणेऽवतु ॥ अष्टादशार्णः कामांतो वायव्ये मां सदावतु ॥ २५ ॥ श्रीं मायाकामकृष्णाय ह्रीं गोविन्दाय द्विठो मनुः ॥ द्वादशार्णात्मको विष्णुरुत्तरे मां सदावतु ॥ २६ ॥ वाग्भवं कामकृष्णाय ह्रीं गोविंदाय तत्परम् ॥ श्रीं गोपीजनवल्लभांते भाय स्वाहा हसौ स्वतः ॥ २७ ॥ द्वाविंशत्यक्षरो मंत्रो भाभैशान्ये सदावतु । कालियस्य फणामध्ये दिव्यनृत्यं करोति तम् ॥ २८ ॥ नमामि देवकीपुत्रं नृत्यराजानमच्युतम् ॥ द्वाविंशदक्षरो मंत्रोऽप्यधो मां सर्वदावतु ॥ २९ ॥ कामदेवाय विद्महे पुष्पबाणाय धीमहि ॥ तन्नोऽनङ्गः प्रचोदयादेषा मां पातु चोर्ध्वतः ॥ ३० ॥ इति ते कथितं विप्र ब्रह्ममंत्रौघविग्रहम् । त्रैलोक्यमंगलं नाम कवचं ब्रह्मरूपकम् ॥ ॥ ३१ ॥ ब्रह्मणा कथितं पूर्वं नारायणमुखाच्छ्रुतम् ॥ तव स्नेहान्मयाख्यातं प्रवक्तव्यं न कस्यचित् ॥ ३२ ॥ गुरुं प्रणम्य विधिवत्कवचं प्रपठेत्ततः ॥ सकृद्द्विस्त्रिर्यथाज्ञानं सोऽपि सर्वतपोमयः ॥ ३३ ॥ मंत्रेष्वसकलेष्वेव देशिको नात्र संशयः ॥ शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः ॥ ३४ ॥ हवनादीन्दशांशेन कृत्वा तत्साधयेच्छुभम् ॥ यदि स्यात्सिद्धकवचो विष्णुरेव भवेत्स्वयम् ॥ ३५ ॥ मंत्रसिद्धिर्भवेत्तस्य पुरश्चर्याविधानतः ॥ स्पर्द्धामुद्धूय सततं लक्ष्मीर्वाणी वसेत्ततः ॥ ३६ ॥ पुष्पांजल्यष्टकं दत्त्वा मूलेनैव पठेत्सकृत् ॥ दशवर्षसहस्राणां पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥ ३७ ॥ भूर्जे विलिख्य गुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद्यदि ॥ कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ सोऽपि विष्णुर्न संशयः ॥ ३८ ॥ अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च ॥ महादानानि यान्येव प्रादक्षिण्यं भुवस्तथा ॥ ३९ ॥ कलां नार्हंति तान्येव सकृदुच्चारणात्ततः ॥ कवचस्य प्रसादेन जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ॥ ४० ॥ त्रैलोक्यं क्षोभयत्येव त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥ इदं कवचमज्ञात्वा यजेद्यः पुरुषोत्तमम् ॥ शतलक्षप्रजप्तोऽपि न मंत्रस्तस्य सिद्ध्यति ॥ ४१ ॥" इति विष्णुकवचं समाप्तम् ॥ अथ नारायणहृदयम् ॥ आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ स्मृत्वा ममाभीष्टसिद्ध्यर्थं संकलीकरणरीत्या संपुटीकरणरीत्या वा नारायणहृदयस्य

सकृदावर्तनं करिष्ये॥इति संकल्पयेत्॥ ॐ अस्य श्रीनारायणहृदयस्तोत्रमंत्रस्य भार्गव ऋषिः। अनुष्टुप् छंदः। श्रीलक्ष्मीनारायणो देवता। ॐ बीजम्। नमः शक्तिः। नारायणायेति कीलकम्। श्रीलक्ष्मीनारायणप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः॥ ॐ भार्गवऋषये नमः शिरसि॥ १॥ ॐ अनुष्टुप्छंदसे नमः मुखे॥ २॥ ॐ श्रीलक्ष्मीनारायणदेवतायै नमो हृदि॥ ३॥ ॐ बीजाय नमो गुह्ये॥ ४॥ ॐ नमः शक्तये नमः पादयोः॥ ५॥ ॐ नारायणेति कीलकाय नमः नाभौ॥ ६॥ ॐ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे॥ ७॥ इति ऋष्यादिन्यासः॥ ॐ नारायणः परं ज्योतिरित्यंगुष्ठाभ्यां नमः॥ १॥ ॐ नारायणः परं ब्रह्मेति तर्जनीभ्यां नमः॥२॥ ॐ नारायणः परो देव इति मध्यमाभ्यां नमः॥ ३॥ ॐ नारायणः परो ध्यातेति अनामिकाभ्यां नमः॥ ४॥ ॐ नारायणः परं धामेति कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥५॥ ॐ नारायणः परो धर्म्म इति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ ६॥ इति करन्यासः॥ ॐ नारायणः परं ज्योतिरीति हृदयाय नमः॥ १॥ ॐ नारायणः परंब्रह्मेति शिरसे स्वाहा॥ २॥ ॐ नारायणः परो देव इति शिखायै वषट्॥ ३॥ ॐ नारायणः परो ध्यातेति कवचाय हुं॥ ४॥ ॐ नारायणः परं धामेति नेत्रत्रयाय वौषट्॥ ५॥ ॐ नारायणः परो धर्म्म इत्यस्त्राय फट्॥ ६॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः॥ इति न्यासं कृत्वा "ॐ नमः सुदर्शनायास्त्राय हुं फट् बध्नामि नमश्चक्राय स्वाहा" इति मंत्रेण तालत्रयेण दशदिक्षु दिग्बंधनं कुर्यात्॥ इति दिग्बंधनं कृत्वा ध्यायेत्॥ अथ ध्यानम्॥ "उद्यदादित्यसंकाशं पीतवाससमच्युतम्॥ शंखचक्रगदापाणिं ध्यायेल्लक्ष्मीपतिं हरिम्॥ १॥ इति ध्यात्वा "ॐ नमो नाराणाय" इति अष्टोत्तरशतं जपित्वा पाठं कुर्यात्॥ अथ मूलाष्टकम्॥ "ॐ नारायणः परं ज्योतिरात्मा नारायणः परः॥ नारायणः परं ब्रह्म नारायण नमोऽस्तुते॥ १॥ नारायणः परो देवो दाता नारायणः परः॥ नारायणः परो ध्याता नारायण नमोऽस्तु ते॥ २॥ नारायणः परं धाम ध्यानं नारायणः परः॥ नारायणः परो धर्म्मो नारायण नमोऽस्तुते॥३॥ नारायणः परो वेद्यो विद्या नारायणः परः॥ विश्वं नारायणः साक्षान्नारायण नमोऽस्तु ते॥ ४॥ नारायणाद्विधिर्जातो जातो नारायणाच्छिवः॥ जातो नारायणादिन्द्रो नारायण नमोऽस्तु ते॥ ५॥ रविर्नारायणं तेजश्चान्द्रं नारायणं महः॥ वह्निर्नारायणः साक्षान्नारायण

नमोऽस्तु ते ॥६॥ नारायण उपास्यः स्याद्गुरुर्नारायणः परः ॥ नारायणः परो बोधो नारायण नमोऽस्तु ते ॥ ७ ॥ नारायणः फलं मुख्यं सिद्धिर्नारायणः सुखम् ॥ सेव्यो नारायणः शुद्धो नारायण नमोऽस्तु ते ॥८॥" इति मूलाष्टकम्॥अथ प्रार्थनादशकम्॥ ॐ नारायणस्त्वमेवासि दहराख्ये हृदि स्थितः ॥ प्रेरकः प्रेर्य्यमाणानां त्वया प्रेरितमानसः ॥ १ ॥ त्वदाज्ञां शिरसा धृत्वा जपामि जनपावनम् ॥ नानोपासन मार्गाणां भावहृद्भावबोधकः ॥ २ ॥ भावार्थकृद्भावभूतो भावसौख्यप्रदो भव ॥ त्वन्मायामोहितं विश्वं त्वयैव परिकल्पितम् ॥ ३ ॥ त्वदधिष्ठानमात्रेण सैषा सर्वार्थकारिणी ॥ त्वमेव तां पुरस्कृत्य मम कामान्समर्प्पय ॥ ४ ॥ न मे त्वदन्यस्त्रातास्ति त्वदन्यन्नहि दैवतम् ॥ त्वदन्यं नहि जानामि पालकं पुण्यरूपकम् ॥ ५ ॥ यावत्सांसारिको भावो मनःस्थो भावनात्मकः ॥ तावत्सिद्धिर्भवेत्साध्या सर्वथा सर्वदा विभो ॥ ६ ॥ पापिनामहमेवाग्र्यो दयालूनां त्वमग्रणीः ॥ दयनीयो मदन्योऽस्ति तव कोऽत्र जगत्त्रये ॥ ७ ॥ त्वयाप्यहं न सृष्टश्चेन्न स्यात्तव दयालुता ॥ आमयो नैव सृष्टश्चेदौषधस्य वृथोदयः ॥ ८ ॥ पापसंघपरिक्रांतः पापात्मा पापरूपधृक् ॥ त्वदन्यः कोऽत्र पापेभ्यस्त्राता मे जगतीतले ॥ ९ ॥ त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव ॥ त्वमेव विद्या च गुरुस्त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥ १० ॥ " इति प्रार्थनादशकम् ॥ "प्रार्थनादशकं चैव मूलाष्टकमुदाहृतम् ॥ यः पठेच्छृणुयान्नित्यं तस्य लक्ष्मीः स्थिरा भवेत् ॥ १ ॥ नारायणस्य हृदयं सर्वाभीष्टफलप्रदम् ॥ लक्ष्मीहृदयकं स्तोत्रं यदि चेत्तद्विना कृतम् ॥ २ ॥ तत्सर्वं निष्फलं प्रोक्तं लक्ष्मीः क्रुद्ध्यति सर्वदा ॥ एतत्संकलितं स्तोत्रं सर्वकर्मफलप्रदम् ॥ ३ ॥ लक्ष्मीहृदयकं चैव तथा नारायणात्मकम् ॥ जपेद्यः संकलीकृत्य सर्वाभीष्टमवाप्नुयात् ॥ ४ ॥ नारायणस्य हृदयमादौ जप्त्वा ततः परम् ॥ लक्ष्मीहृदयकं स्तोत्रं जपेन्नारायणं पुनः ॥ ५ ॥ पुनर्नारायणं जप्त्वा पुनर्लक्ष्मीकृतं जपेत् ॥ पुनर्नारायणं जाप्यं संकलीकरणं भवेत् ॥ ६ ॥ एवं मध्ये द्विवारेण जपेत्संकलितं हि तत् ॥ लक्ष्मीहृदयकं स्तोत्रं सर्वकामप्रकाशितम् ॥ ७ ॥ तद्वज्जपादिकं कुर्य्यादेतत्संकलितं शुभम् ॥ सर्वान्कामानवाप्नोति आधिव्याधिभयं

हरेत् ॥ ८ ॥ गोप्यमेतत्सदा कुर्यान्न सर्वत्र प्रकाशयेत् ॥ अति गुह्यतमं शास्त्रं प्राप्तं ब्रह्मादिकैः पुरा ॥ ९ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन गोप
येत्साधयेत्सुधीः ॥ यत्रैतत्पुस्तकं तिष्ठेल्लक्ष्मीनारायणात्मकम् ॥ १० ॥ भूतपैशाचवेताला न स्थिरास्तत्र सर्वदा ॥ लक्ष्मीहृदयकं प्रोक्तं
विधिना साधयेत्सुधीः ॥ ११ ॥ भृगुवारे च रात्रौ च पूजयेत्पुस्तकद्वयम् ॥ सर्वस्वं सर्वदा सत्यं गोपयेत्साधयेत्सुधीः ॥ १२ ॥ गोप
नात्साधनाल्लोके धन्यो भवति तत्त्वतः ॥ १३ ॥ इत्यथर्वणरहस्ये उत्तरभागे श्रीनारायणहृदयं सम्पूर्णम् ॥ अथ विष्णुस्तोत्रम् ॥ ॐ
आदाय वेदान्सकलान्समुद्रान्निहत्य शंखासुरमत्युदग्रम् ॥ दत्ताः पुरा येन पितामहाय विष्णुं तमाद्यं भज मत्स्यरूपम् ॥ १ ॥ दिव्या
मृतार्थं मथिते महाब्धौ देवासुरैर्वासुकिमन्दराभ्याम् ॥ भूमेर्महावेगविघूर्णितायास्तं कूर्ममाधारगतं स्मरामि॥२॥ समुद्रकांची सरिदुत्तरीया
वसुंधरा मेरुकिरीटभारा ॥ दंष्ट्राग्रतो येन समुद्धृता भूस्तमादिकोलं शरणं प्रपद्ये ॥ ३ ॥ भक्तार्तिभंगक्षमयाधिपो यः स्तंभां
तरालादुदितो नृसिंहः ॥ रिपुं सुराणां निशितैर्नखाग्रैर्विदारयंतं न च विस्मरामि ॥ ४ ॥ चतुःसमुद्राभरणा धरित्री न्यासाय
नालं चरणस्य यस्य ॥ एकस्य न्यान्यस्य पदं सुराणां त्रिविक्रमं सर्वगतं नमामि ॥ ५ ॥ त्रिःसप्तकृत्वो नृपतीन्निहत्य यस्तर्पणं
रक्तमयं पितृभ्यः ॥ चकार दोर्दण्डबलेन सम्यक् तमादिशूरं प्रणमामि रामम् ॥ ६ ॥ कुले रघूणां समवाप्य जन्म
विधाय सेतुं जलधेर्जलांतः ॥ लंकेश्वरं यः शमयांचकार सीतापतिं तं प्रणमामि भक्त्या ॥ ७ ॥ हलेन सर्वानसुरान्निकृष्य
चकार चूर्णं मुसलप्रहारैः ॥ यः कृष्णमासाद्य बलं बलीयान् भक्त्या भजे तं बलभद्ररामम् ॥ ८ ॥ पुरा सुराणामसु
रान्विजेतुं संभावयञ्छीवरचिह्नवेषम् ॥ चकार यः शास्त्रममोघकल्पं तं मूलभूतं प्रणतोऽस्मि बुद्धम् ॥ ९ ॥ कल्पावसाने निखिलैः सुरैः
स्वैः संघट्टयामास निमेषमात्रात् ॥ यस्तेजसा स्वेन ददाह भीमो विष्ण्वात्मकं तं तुरगं भजामः ॥ १० ॥ शंखं सुचक्रं सुगदां
सरोजं दोर्भिर्दधानं गरुडाधिरूढम् ॥ श्रीवत्सचिह्नं जगदादिमूलं तमालनीलं हृदि विष्णुमीडे ॥ ११ ॥ क्षीराम्बुधौ शेषविशेषतल्पे
शयानमंतःस्मितशोभिवक्त्रम् ॥ उत्फुल्लनेत्राम्बुजमंबुदाभमाद्यं श्रुतीनामसकृत्स्मरामि ॥ १२ ॥ प्रीणयेदनया स्तुत्या जगन्नाथं जगन्म

यम् ॥ धर्म्मार्थकाममोक्षाणामाप्तये पुरुषोत्तम् ॥ १३ ॥ " इति श्रीविष्णुस्तोत्रं समाप्तम् ॥ अथ विष्णोरष्टोत्तरशतनामस्तोत्रप्रारंभः ॥
" ॐ अष्टोत्तरं शतं नाम्नां विष्णोरतुलतेजसः ॥ यस्य श्रवणमात्रेण नरो नारायणो भवेत् ॥ १ ॥ विष्णुर्जिष्णुर्वषट्कारो देवदेवो वृषा
कपिः ॥ दामोदरो दीनबंधुरादिदेवो दितेः सुतः ॥ २ ॥ पुण्डरीकः परानंदः परमात्मा परात्परः ॥ परशुधारी विश्वात्मा कृष्णः कालि
मलापहः ॥ ३ ॥ कौस्तुभोद्भासितोरस्को नरो नारायणो हरिः ॥ हरो हरप्रियः स्वामी वैकुण्ठो विश्वतोमुखः ॥ ४ ॥ हृषीकेशो
ऽप्रमेयात्मा वराहो धरणीधरः ॥ वामनो वेदवक्ता च वासुदेवः सनातनः ॥५॥ रामो विरामो विरजो रावणारी रमापतिः ॥ वैकुण्ठवासी
वसुमान् धनदो धरणीधरः ॥ ६ ॥ धर्मेशो धरणीनाथो ध्येयो धर्मभृतां वरः ॥ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ ७ ॥
सर्वगः सर्ववित्सर्वः शरण्यः साधुवल्लभः ॥ कौसल्यानंदनः श्रीमान् रक्षःकुलविनाशकः ॥ ८ ॥ जगत्कर्ता जगद्धर्ता जगज्जेता जना
र्तिहा ॥ जानकीवल्लभो देवो जयरूपो जलेश्वरः ॥ ९ ॥ क्षीराब्धिवासी क्षीराब्धितनयावल्लभस्तथा ॥ शेषशायी पन्नगारिवाहनो विष्टर
श्रवाः ॥ १० ॥ माधवो मथुरानाथो मोहदो मोहनाशनः ॥ दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षो ह्यच्युतो मधुसूदनः ॥ ११ ॥ सोमसूर्याग्निनयनो
नृसिंहो भक्तवत्सलः ॥ नित्यो निरामयः शुद्धो नरदेवो जगत्प्रभुः ॥ १२ ॥ हयग्रीवो जितरिपुरुपेन्द्रो रुक्मिणीपतिः ॥ सर्वदेवमयः श्रीशः
सर्वाधारः सनातनः ॥ १३ ॥ सौम्यः सौम्यप्रदः स्रष्टा विष्वक्सेनो जनार्दनः ॥ यशोदातनयो योगी योगशास्त्रपरायणः ॥ १४ ॥
रुद्रात्मको रुद्रमूर्ती राघवो मधुसूदनः ॥ इति ते कथितं दिव्यं नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥ १५ ॥ सर्वपापहरं पुण्यं विष्णोरमिततेजसः ॥
दुःखदारिद्र्यदौर्भाग्यनाशनं सुखवर्द्धनम् ॥ १६ ॥ सर्वसंपत्करं सौम्यं महापातकनाशनम् ॥ प्रातरुत्थाय विप्रेन्द्रः पठेदेकाग्रमानसः ॥
तस्य नश्यंति विपदां राशयः सिद्धिमाप्नुयात् ॥ १७ ॥ इत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं संपूर्णम् ॥ अथ विष्णुसहस्रनामस्तोत्रप्रारंभः ॥
श्रीमहादेव उवाच ॥ "ब्रह्महत्यासहस्राणां पापं शाम्येत्कथंचन ॥ न पुनस्त्वय्यविज्ञाते कल्पकोटिशतैरपि ॥ १ ॥ यस्मान्मया कृता स्पर्द्धा
पवित्रः स्यां कथं हरे ॥ नश्यंति सर्वपापानि तन्मां वद सुरेश्वर ॥ २ ॥ तदाह देवो गोविंदो मम प्रीत्या यथायथम् ॥ ३ ॥ श्रीभगवानु

मत्पदावहम् ॥ तत्परोऽनुदिनं शंभोः सर्वैश्वर्यं यदीच्छसि ॥ ४ ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥ तमेव
वाच ॥ सदा नामसहस्रं मे पावनं मत्पदावहम् ॥ जगत्पूज्योऽस्मि पार्वति ॥ ५ ॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥ तन्मे कथय देवेश
तपसा नित्यं भजामि स्तौमि चिंतये ॥ तेनाद्वितीयमहिमा जगत्पूज्योऽस्मि पार्वति ॥ साधु साधु त्वया पृष्टो विष्णोर्भगवतः शिवे॥
यथाहमपि शंकर ॥ सर्वेश्वरी निरुपमा तव स्यां सदृशी प्रभो ॥ ६ ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥ साधु साधु त्वया पृष्टो विष्णोर्भगवतः शिवे॥
नाम्नां सहस्रं वक्ष्यामि मुख्यं त्रैलोक्यमंगलम् ॥ ७ ॥ नारायणाय पुरुषोत्तमाय च महात्मने ॥ विशुद्धसत्त्वाधिष्ठाय महाहंसाय
धीमहि ॥ ८ ॥ ॐ अस्य श्रीविष्णोः सहस्रनाममंत्रस्य महादेव ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । परमात्मा देवता । सूर्यकोटिप्रतीकाश इति
बीजम् । गंगातीर्थोत्तमा शक्तिः । प्रपन्नाशनिपंजर इति कीलकम् ॥ धर्मार्थकाममोक्षार्थे पाठे विनियोगः ॥ ॐ महादेवर्षये नमः
शिरसि ॥ १ ॥ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ परमात्मदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ सूर्यकोटिप्रतीकाशबीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥
गंगातीर्थोत्तमशक्तये नमः पादयोः ॥ ५॥ प्रपन्नाशनिपंजरकीलकाय नमः नाभौ॥ ६ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ७ ॥ इति ऋष्यादि
न्यासः ॥ ॐ वासुदेवं परं ब्रह्म इत्यंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ मूलप्रकृतिरिति तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ भूमहावराह इति मध्यमाभ्यां
नमः ॥३॥ ॐ सूर्यवंशध्वजो राम इत्यनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ ब्रह्मादिकमलादिगदासूर्यकेशवमिति कनिकाभ्यां नमः ॥५॥ शेष इति
करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥६॥ इति करन्यासः ॥ ॐ वासुदेवं परं ब्रह्म इति हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ मूलप्रकृतिरितिशिरसे स्वाहा ॥२॥
ॐ भूमहावाराह इति शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ सूर्यवंशध्वजो रामः इति कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ ब्रह्मादिकमलादिगदासूर्यकेशवमिति
नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ दिव्यास्त्र इत्यस्त्राय फट् ॥६॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥
ॐ विष्णुं भास्वत्किरीटांगदवलयगणाकल्पहारोदरांघ्रिश्रोणीभूषं सुवक्षोमणिमकरमहाकुंडलं मंडितांसम् ॥ हस्तोद्यच्चक्रशंखांबुजगदममलं
पीतकौशेयवासोविद्युद्भासं समुद्यद्दिनकरसदृशं पद्महस्तं नमामि ॥ ९ ॥ ॐ वासुदेवः परं ब्रह्म परमात्मा परात्परम् ॥ परं धाम परज्योतिः
परतत्त्वं परं पदम् ॥१०॥ परं शिवं परो ध्येयः परं ज्ञानं परा गतिः ॥ परमार्थः परं श्रेयः परानंदः परोदयः ॥११॥ परोऽव्यक्तः परं व्योम

पराद्धः परमेश्वरः ॥ निरामयो निर्विकारो निर्विकल्पो निराश्रयः ॥ १२ ॥ निरंजनो निरालंबो निर्लेपो निरवग्रहः ॥ निर्गुणो निष्कलोऽनंतो
ऽचिंत्योसावचलोऽच्युतः ॥ १३ ॥ अतीन्द्रियोऽमितोऽरोध्योऽनीहोऽनीशोऽव्ययोऽक्षयः ॥ सर्वज्ञः सर्वगः सर्वः सर्वदः सर्वभावनः ॥ १४ ॥
सर्वशंभुः सर्वसाक्षी पूज्यः सर्वस्य सर्वदृक् ॥ सर्वशक्तिः सर्वसारः सर्वात्मा सर्वतोमुखः ॥ १५ ॥ सर्वावासः सर्वरूपः सर्वादिः सर्वदुःखहा ।
सर्वार्थः सर्वतोभद्रः सर्वकारणकारणम् ॥१६॥ सर्वातिशायकः सर्वाध्यक्षः सर्वेश्वरेश्वरः ॥ षड्विंशको महाविष्णुर्महागुह्यो महाहरिः ॥ १७ ॥
नित्योदितो नित्ययुक्तो नित्यानन्दः सनातनः ॥ मायापतिर्योगपतिः कैवल्यपतिरात्मभूः॥१८॥ जन्ममृत्युजरातीतः कलातीतो भवातिगः ॥
पूर्णः सत्यः शुद्धबुद्धस्वरूपो नित्यचिन्मयः ॥ १९ ॥ योगिप्रियो योगमयो भवबंधैकमोचकः ॥ पुराणः पुरुषः प्रत्यक्चैतन्यपुरुषोत्तमः ॥२०॥
वेदांतवेद्यो दुर्ज्ञेयस्तापत्रयविवर्जितः ॥ ब्रह्मविद्याश्रयोऽलंघ्यः स्वप्रकाशः स्वयंप्रभः ॥ २१ ॥ सर्वोपेय उदासीनः प्रणवः सर्वतः समः ॥
सर्वानवद्यो दुष्प्रापस्तुरीयस्तमसः परः ॥ २२ ॥ कूटस्थः सर्वसंश्लिष्टो वाङ्मनोगोचरातिगः ॥ संकर्षणः सर्वहरः कालः सर्वभयंकरः
॥ २३ ॥ अनुल्लंघ्यः सर्वगतिर्महारुद्रो दुरासदः ॥ मूलप्रकृतिरानन्दः प्रज्ञाता विश्वमोहनः ॥ २४ ॥ महामायो विश्वबीजं परशक्तिसुखै
कभुक् ॥ सर्वकाम्योऽनंतशीलः सर्वभूतवशंकरः ॥२५॥ अनिरुद्धः सर्वजीवो हृषीकेशो मनःपतिः ॥ निरुपाधिः प्रियो हंसोऽक्षरः सर्वनियो
जकः ॥ २६ ॥ ब्रह्मा प्राणेश्वरः सर्वभूतभृद्देहनायकः ॥ क्षेत्रज्ञः प्रकृतिस्वामी पुरुषो विश्वसूत्रधृक् ॥ २७ ॥ अंतर्यामी त्रिधामांतः
साक्षी त्रिगुण ईश्वरः ॥ योगिमृग्यः पद्मनाभः शेषशायी श्रियः पतिः ॥२८॥ श्रीसत्योपास्यपादाब्जोऽनंतः श्रीः श्रीनिकेतनः ॥ नित्यवक्षः
स्थलस्थश्रीः श्रीनिधिः श्रीधरो हरिः ॥२९॥ रम्यश्रीनिश्चयः श्रीदो विष्णुः क्षीराब्धिमंदिरः ॥ कौस्तुभोद्भासितोरस्को माधवो जगदार्तिहा
॥ ३० ॥ श्रीवत्सवक्षा निःसीमः कल्याणगुणभाजनम् ॥ पीतांबरो जगन्नाथो जगद्धाता जगत्पिता ॥३१॥ जगद्बन्धुर्जगत्स्रष्टा जगत्कर्ता
जगन्निधिः ॥ जगदेकस्फुरद्वीर्यो नाहंवादी जगन्मयः ॥३२॥ सर्वाश्चर्यमयः सर्वसिद्धार्थः सर्ववीराजित् ॥ सर्वामोघोद्यमो ब्रह्मरुद्राद्युत्कृष्टचे
तनः ॥ ३३ ॥ शंभोः पितामहो ब्रह्मपिता शक्राद्यधीश्वरः ॥ सर्वदेवप्रियः सर्वदेववृत्तिरनुत्तमः ॥ ३४ ॥ सर्वदेवैकशरणं सर्वदेवैक

यज्ञभावनः ॥ ३५ ॥ यज्ञत्राता यज्ञपुमान् वनमाली द्विजप्रियः ॥ द्विजैकमानदोऽहिंस्रः कुलदेवो
देवतम् ॥ यज्ञभुग्यज्ञफलदो यज्ञेशो यज्ञभावनः ॥ ३५ ॥ यज्ञत्राता यज्ञपुमान् वनमाली द्विजप्रियः ॥ द्विजैकमानदोऽहिंस्रः कुलदेवो
ऽसुरांतकः ॥ ३६ ॥ सर्वदुष्टांतकृत्सर्वसज्जनानन्दपालकः ॥ सर्वलोकैकजठरः सर्वलोकैकमण्डलः ॥ ३७ ॥ सृष्टिस्थित्यंतकृच्चक्री शार्ङ्ग
धन्वा गदाधरः ॥ शंखभृन्नन्दकी पद्मपाणिर्गरुडवाहनः ॥ ३८ ॥ अनिर्देश्यवपुः सर्वः सर्वलोकैकपावनः ॥ अनंतकीर्तिर्निःश्रीशः
पौरुषः सर्वमंगलः ॥ ३९ ॥ सूर्यकोटिप्रतीकाशो यमकोटिविनाशनः ॥ ब्रह्मकोटिजगत्स्रष्टा वायुकोटिमहाबलः ॥ ४० ॥ कोटी
न्दुजगदानन्दी शंभुकोटिमहेश्वरः ॥ कुबेरकोटिलक्ष्मीवान् शत्रुकोटिविनाशनः ॥ ४१ ॥ कंदर्पकोटिलावण्यो दुर्गकोटिविमर्दनः ॥ समुद्र
कोटिगम्भीरस्तीर्थकोटिसमाह्वयः ॥ ४२ ॥ हिमवत्कोटिनिष्कम्प्यः कोटिब्रह्माण्डविग्रहः ॥ कोटयश्वमेधपापघ्नो यज्ञकोटिसमार्चनः ॥४३॥
सुधाकोटिस्वास्थ्यहेतुः कामधुक्कोटिकामदः ॥ ब्रह्मविद्याकोटिरूपः शिपिविष्टः शुचिश्रवाः ॥ ४४ ॥ विश्वंभरस्तीर्थपादः पुण्यश्रवणकीर्तनः ॥
आदिदेवो जगज्जैत्रो मुकुन्दः कालनेमिहा ॥ ४५ ॥ वैकुंठोऽनंतमाहात्म्यो महायोगीश्वरेश्वरः ॥ नित्यतृप्तो नृसद्भावो निःशंको नरकांतकः
॥ ४६ ॥ दीनानाथैकशरणं विश्वैकव्यसनापहा ॥ जगत्क्षमाकृतो नित्यः कृपालुः सज्जनाश्रयः ॥ ४७ ॥ योगेश्वरः सदोदीर्णो वृद्धिक्षय
विवर्जितः ॥ अधोक्षजो विश्वरेताः प्रजापतिसमाधिपः ॥ ४८ ॥ शक्रब्रह्मार्चितपदः शंभुर्ब्रह्मार्द्धधामगः ॥ सूर्यसोमेक्षणो विश्वभोक्ता
सर्वस्य पारगः ॥ ४९ ॥ जगत्सेतुर्द्धर्मसेतुर्द्धीरोऽरिष्टधुरन्धरः ॥ निर्मलोऽखिललोकेशो निःशङ्कोऽद्भुतभोगवान् ॥ ५० ॥ रम्यमायो विश्व
विश्वो विष्वक्सेनो नगोत्तमः ॥ सर्वः श्रियः पतिर्देव्याः सर्वभूषणभूषितः ॥५१॥ सर्वलक्षणलक्षण्यः सर्वदैत्येन्द्रदर्पहा ॥ समस्तदेवसर्वज्ञः
सर्वदेवतनायकः ॥५२॥ समस्तदेवतादुर्गः प्रपन्नाशनिपंजरः ॥ समस्तदेवकवचं सर्वदेवशिरोमणिः ॥ ५३ ॥ समस्तभयनिर्भिन्नो भगवान्
विष्टरश्रवाः ॥ विभुः सर्वहितोऽप्यर्को हतारिः सुरतिप्रदः ॥५४॥ सर्वदैवतजीवेशो ब्राह्मणादिनियोजकः ॥ ब्रह्मा शंभुः परार्द्धाढ्यो ब्रह्मज्येष्ठः
शिशुः स्वराट् ॥५५॥ विराड् भक्तपराधीनः स्तुत्यः सर्वार्थसाधकः ॥ सर्वार्थकर्ता कृत्यज्ञः स्वार्थकृत्यसदोज्झितः॥५६॥सदानवः सदाभद्रः
सदाशांतः सदाशिवः ॥ सदाप्रियः सदातुष्टः सदापुष्टः सदार्चितः॥५७॥ सदापूतः पावनाग्रो वेदगुह्यो वृषाकपिः ॥ सहस्रनामा त्रियुग

श्चतुर्मूर्तिश्चतुर्भुजः ॥५८॥ भूतभव्यभवन्नाथो महापुरुषपूर्वजः ॥ नारायणो मुंजकेशः सर्वयोगाविनिःसृतः ॥५९॥ वेदसारो यज्ञसारः साम
सारस्तपोनिधिः ॥ साध्यश्रेष्ठः पुराणर्षिर्निष्ठाशांतिपरायणः ॥ ६० ॥ शिवत्रिशूलविध्वंसी श्रीकंठैकवरप्रदः ॥ नरकृष्णो हरिर्धर्मनन्दनो धर्म
जीवनः ॥ ६१ ॥ आदिकर्ता सर्वसत्यः सर्वस्त्रीरत्नदर्पहा ॥ त्रिकलोर्जितकंदर्प उर्वशीदृङ्मुनीश्वरः ॥ ६२ ॥ आद्यः कविर्हयग्रीवः सर्ववागी
श्वरेश्वरः ॥ सर्वदेवमयो ब्रह्मगुरुर्वाग्मीश्वरः पतिः ॥ ६३ ॥ अनंतविद्याप्रभवो मूलविद्याविनाशकः ॥ सर्वार्हणो जगज्जाड्यनाशको मधु
सूदनः ॥ ६४ ॥ अनन्तमंत्रकोटीशः शब्दब्रह्मैकपावकः ॥ आदिविद्वान्वेदकर्ता वेदात्मा श्रुतिसागरः ॥ ६५ ॥ ब्रह्मार्थवेदाभरणसर्व
विज्ञानजन्मभूः ॥ विद्याराजो ज्ञानराजो ज्ञानसिंधुरखण्डधीः॥ ६६ ॥ मत्स्यदेवो महाशृंगो जगद्बीजवहित्रधृक् ॥ लीलाव्याप्ताखिलांभोधि
श्चतुर्वेदप्रवर्तकः ॥ ६७ ॥ आदिकूर्मोऽखिलाधारस्तृणीकृतजगद्भवः ॥ अमरीकृतदेवौघः पीयूषोत्पत्तिकारणम् ॥ ६८ ॥ आत्माधारो धरा
धारो यज्ञाङ्गो धरणीधरः॥हिरण्याक्षहरः पृथ्वीपतिः श्राद्धादिकल्पकः॥६९॥समस्तपितृभीतिघ्नः समस्तपितृजीवनम् ॥ हव्यकव्यैकभुग्भव्यो
गुणभव्यैकदायकः ॥ ७० ॥ लोमांतलीनजलधिः क्षोभिताशेषसागरः ॥ महावराहो यज्ञघ्नध्वंसनो याज्ञिकाश्रयः ॥ ७१ ॥ नरसिंहो
दिव्यसिंहः सर्वारिष्टार्तिदुःखहा ॥ एकवीरोऽद्भुतबलो यन्त्रमन्त्रैकभंजनम् ॥७२॥ ब्रह्मादिदुःसहज्योतिर्युगांताग्न्यतिभीषणः ॥ कोटिवज्रा
धिकनखो गजदुष्प्रेक्षमूर्तिधृक् ॥७३॥ मातृचक्रप्रमथनो महामातृगणेश्वरः ॥ अचिंत्योऽमोघवीर्य्याढ्यः समस्तासुरघस्मरः ॥७४॥ हिरण्य
कशिपुच्छेदी कालः संकर्षणः पतिः ॥ कृतांतवाहनः सद्यः समस्तभयनाशनः॥७५॥ सर्वविघ्नांतकः सर्वसिद्धिदः सर्वपूरकः ॥ समस्तपातक
ध्वंसी सिद्धमंत्राधिकाह्वयः ॥ ७६ ॥ भैरवेशो हरार्तिघ्नः कालकल्पो दुरासदः ॥ दैत्यगर्भस्त्राविनामा स्फुटब्रह्माण्डवर्जितः ॥ ७७ ॥
स्मृतिमात्राखिलत्राता भूतरूपो महाहरिः ॥ ब्रह्मचर्मशिरःपट्टदिक्पालोऽर्द्धाङ्गभूषणः ॥ ७८ ॥ द्वादशार्कशिरोधामा रुद्रशीर्षैकनूपुरः ॥
योगिनीग्रस्तगिरिजात्राता भैरवतर्जकः ॥ ७९ ॥ वीरचक्रेश्वरोऽत्युग्रो यमारिः कालसंवरः ॥ क्रोधेश्वरो रुद्रचण्डीपरिवादी सुदुष्टभाक् ॥
॥ ८० ॥ सर्वाक्षः सर्वमृत्युश्च मृत्युर्मृत्युनिर्वर्तकः ॥ असाध्यः सर्वरोगघ्नः सर्वदुर्ग्रहसौम्यकृत् ॥ ८१ ॥ गणेशकोटिदर्पघ्नो

दुःसहोऽशेषगोत्रहा ॥ देवदानवदुर्द्धर्षो जगद्भक्ष्यप्रदः पिता ॥ ८२ ॥ समस्तदुर्गतित्राता जगद्भक्षकभक्षकः ॥ उग्रेशोऽसुरमार्जारः
कालमूषकभक्षकः ॥ ८३ ॥ अनंतायुधदोर्दण्डो नृसिंहो वीरभद्राजित् ॥ योगिनीचक्रगुह्येशः शक्रारिः पशुमांसभुक् ॥ ८४ ॥
रुद्रो नारायणो मेषरूपशंकरवाहनः ॥ मेषरूपी शिवत्राता दुष्टशक्तिसहस्रभुक् ॥८५॥ तुलसीवल्लभो वीरोऽचिंत्यमायोऽखिलेष्टदः॥ महाशिवः
शिवो रुद्रो भैरवैककपालभृत् ॥ ८६ ॥ भिल्लश्चक्रेश्वरश्चक्रो दिव्यमोहनरूपधृक् ॥ गोरीसौभाग्यदो मायानिधिर्मायाभयापहः ॥ ८७॥
ब्रह्मतेजोमयो ब्रह्मश्रीमयश्च त्रयीमयः॥ सुब्रह्मण्यो बलिध्वंसी वामनोऽदितिदुःखहा ॥ ८८॥ उपेन्द्रो नृपतिर्विष्णुः कश्यपान्वयमण्डनः ॥
बलिस्वाराज्यदः सर्वदेवविप्रात्मदोऽच्युतः ॥ ८९ ॥ उरुक्रमस्तीर्थपादस्त्रिदशश्च त्रिविक्रमः ॥ व्योमापादः स्वपादांभः पवित्रितजग
त्त्रयः ॥ ९० ॥ ब्रह्मेशाद्यभिवंद्यांघ्रिर्द्रुतकर्माद्रिधारणः ॥ अचिंत्याद्भुतविस्तारो विश्ववृक्षो महाबलः ॥ ९१ ॥ बहुमूर्द्धापराङ्गच्छिन्द्भृगु
पत्नीशिरोहरः ॥ पापस्तेयः सदापुण्यो दैत्येशो नित्यखण्डकः ॥ ९२ ॥ पूरिताखिलदेवेशो विश्वार्थैकावतारकृत् ॥ अमरो नित्यगुप्तात्म
भक्ताचिंतामणिः सदा ॥ ९३ ॥ वरदः कार्तवीर्य्यादिराजराज्यप्रदोऽनघः ॥ विश्वश्लाघ्योऽमिताचारो दत्तात्रेयो मुनीश्वरः ॥ ९४ ॥
परशक्तिसमायुक्तो योगानंदमदोन्मदः ॥ समस्तेन्द्रारितेजोहृत् परमानंदपादपः ॥९५॥ अनसूयागर्भरत्नो भोगमोक्षसुखप्रदः ॥ जमदग्नि
कुलादित्यो रेणुकाद्भुतशक्तिहृत् ॥ ९६ ॥ मातृहत्यादनिर्लेपः स्कंदजिद्विप्रराज्यदः ॥ सर्वक्षत्रांतकृद्वीरदर्पहा कार्तवीर्यजित् ॥ ९७ ॥
योगी योगावतारश्च योगीशो योगतत्परः ॥ परमानंददाता च शिवाचार्ययशःप्रदः ॥ ९८ ॥ भीमः परशुरामश्च शिवाचार्यैकविश्वभूः ॥
शिवाखिलज्ञानकोशी भीष्माचार्य्योऽग्निदैवतः ॥ ९९ ॥ द्रोणाचार्यगुरुर्विश्वजैत्रधन्वा कृतांतकृत् ॥ अद्वितीयतमोमूर्तिर्ब्रह्मचर्य्यैक
दक्षिणः ॥ १०० ॥ मनुश्रेष्ठः सतां सेतुर्महीयान् वृषभो विराट् ॥ आदिराजः क्षितिपिता सर्वरत्नैकदोहकृत् ॥१०१॥ पृथुजन्माद्येकदक्षो
ह्रीः श्रीः कीर्तिः स्वयंधृतिः ॥ जगद्वृत्तिप्रदश्चक्रवर्तिश्रेष्ठो दुरस्त्रधृक् ॥ १०२ ॥ सनकादिमुनिप्राप्तभगवद्भक्तिवर्द्धनः ॥ वर्णाश्रमादि
धर्म्माणां कर्ता वक्ता प्रवर्तकः ॥ १०३ ॥ सूर्यवंशध्वजो रामो राघवः सद्गुणार्णवः ॥ ककुत्स्थवीरताधर्मो राजधर्मधुरधंरः ॥ १०४ ॥ नित्य

स्वस्थाशयः सर्वभद्रग्राही शुभैकदृक् ॥ नवरत्नं रत्ननिधिः सर्वाध्यक्षो महानिधिः ॥ १०५ ॥ सर्वश्रेष्ठाश्रयः सर्वशस्त्रास्त्रग्रामवीर्य्यवान् ॥
जगद्वशी दाशरथिः सर्वरत्नाश्रयो नृपः॥१०६॥धर्म्मः समस्तधर्म्मस्थो धर्म्मद्रष्टाऽखिलार्तिहृत्॥ अतीन्द्रो ज्ञानविज्ञानपारदृश्वा क्षमाम्बुधिः
॥ १०७ ॥ सर्वप्रकृष्टः शिष्टेष्टो हर्षशोकाद्यनाकुलः ॥ पित्राज्ञात्यक्तसाम्राज्यः सपत्नोदयनिर्भयः ॥ १०८ ॥ गुहादेशार्पितैश्वर्यः
शिवस्पर्द्धाजटाधरः ॥ चित्रकूटाप्तरत्नाद्रिजगदीशो रणेचरः ॥ १०९ ॥ यथेष्टमोघशस्त्रास्त्रो देवेन्द्रतनयाक्षिहा ॥ ब्रह्मेन्द्रादिनतैषीको
मारीचघ्नो विराधहा ॥ ११० ॥ ब्रह्मशापहताशेषदण्डकारण्यपावनः ॥ चतुर्दशसहस्राख्यरक्षोघ्नैकशरैकभृत ॥ १११ ॥ खरारिस्त्रिशिरो
हंता दूषणघ्नो जनार्द्दनः ॥ जटायुषोऽग्निगतिदः कबंधस्वर्गदायकः ॥ ११२ ॥ लीलाधनुःकोटयपास्तदुन्दुभ्यास्थिमहाचयः ॥ सप्तताल
व्यथाकृष्टध्वजपातालदानवः ॥ ११३ ॥ सुग्रीवराज्यदो धीमान्मनसैवाभयप्रदः ॥ हनूमद्रुद्रमुख्येशः समस्तकपिदेहभृत् ॥ ११४ ॥
अग्निदैवत्यबाणैकव्याकुलीकृतसागरः ॥ सम्लेच्छकोटिबाणैकशुष्कनिर्दग्धसागरः॥११५॥सनागदैत्यधामैकव्याकुलीकृतसागरः ॥ समु
द्राद्भुतपूर्वैकबद्धसेतुर्य्यशोनिधिः ॥११६॥ असाध्यसाधको लंकासमूलोत्कर्षदाक्षिणः ॥ वरदृप्तजनस्थानपौलस्त्यकुलकृंतनः ॥ ११७ ॥
रावणघ्नः प्रहस्तच्छित् कुम्भकर्णभिदुग्रहा ॥ रावणैकमुखच्छेत्ता निश्शंकेन्द्रैकराज्यदः ॥ ११८ ॥ स्वर्गास्वर्गत्वविच्छेदी देवेन्द्रादिन्द्रता
हरः ॥ रक्षोदेवत्वहृद्धर्म्मो धर्म्महर्म्यः पुरुष्टुतः ॥ ११९ ॥ नातिमात्रदशास्यारिर्दत्तराज्यविभीषणः ॥ सुधावृष्टिमृताशेषस्वसैन्यजीव
नैककृत् ॥ १२० ॥ देवब्राह्मणनामैकधातासर्वामरार्चितः ॥ ब्रह्मसूर्येन्द्ररुद्रादिवंद्योऽर्चितः सतां प्रियः ॥ १२१ ॥ अयोध्याखिल
राज्यार्हः सर्वभूतमनोहरः ॥ स्वाम्यतुल्यकृपादत्तो हीनोत्कृष्टैकसत्प्रियः ॥ १२२ ॥ स्वपक्षादिन्यायदर्शी हीनार्थोऽधिकसाधकः ॥ व्याध
व्याजानुचितकृत्तावकोऽखिलतुष्टिकृत् ॥ १२३॥ पार्वत्यधिकयुक्तात्मा प्रियात्यक्तसुरारिजित् ॥ साक्षात्कुशलवत्लक्ष्मीन्द्राग्निनातोऽपराजितः
॥ १२४ ॥ कोशलेन्द्रो वीरबाहुः सत्यार्थस्त्यक्तसोदरः॥यशोदानंदनो नन्दी धरणीमण्डलोदयः ॥१२५॥ ब्रह्मादिकाम्यसान्निध्यसनाथीकृत
दैवतः ॥ ब्रह्मलोकाप्तचांडालाद्यशेषप्राणिसार्थपः ॥ १२६ ॥ स्वर्नीतगर्दभाश्वादिचिरायोध्यावलैककृत् ॥ रामोऽद्वितीयः सौमित्रि

लक्ष्मणप्रहतेन्द्रजित् ॥ १२७ ॥ विष्णुभक्ताशिवांहःक्षित् पादुकाराज्यनिर्वृतः ॥ भरतोऽसह्यगन्धर्वकोटिघ्नो लवणांतकः ॥ १२८ ॥
शत्रुघ्नो वैद्यराडायुर्वेदगर्भौषधीपतिः ॥ नित्यानित्यकरो धन्वंतरिर्य्यज्ञो जगद्धरः ॥ १२९ ॥ सूर्यविघ्नः सुराजीवो दक्षिणेशो द्विजप्रियः ॥
छिन्नमूर्द्धोपदेशार्कतनूजकृतमैत्रिकः ॥ १३० ॥ शेषांगस्थापितनरः कपिलः कर्दमात्मजः ॥ योगात्मकध्यानभङ्गः सगरात्मजभस्मकृत्
॥ १३१ ॥ धर्मो विश्वेन्द्रसुरभीपतिः शुद्धात्मभावितः ॥ शंभुत्रिपुरदाहैकस्थैर्य्यविश्वरथोद्धतः ॥ १३२ ॥ विश्वात्माशेषरुद्रार्थशिरश्छे
दाक्षताकृतिः ॥ वाजपेयादिनामाग्निर्वेदधर्म्मपरायणः ॥ १३३ ॥ श्वेतद्वीपपतिः सांख्यप्रणेता सर्वसिद्धिराट् ॥ विश्वप्रकाशितध्यान
योगो मोहतमिस्रहा ॥ १३४ ॥ भक्तशंभुजितो दैत्यामृतवापीसमस्तपः ॥ महाप्रलयविश्वैकोऽद्वितीयोऽखिलदैत्यराट् ॥ १३५ ॥ शेषदेवः
सहस्राक्षः सहस्रांघ्रिशिरोभुजः ॥ फणीफणिफणाकारयोजिताभ्यम्बुदक्षितिः ॥ १३६ ॥ कालाग्निरुद्रजनको मुसलास्त्रो हलायुधः ॥
नीलांबरो वारुणीशो मनोवाक्कायदोषहा ॥ १३७ ॥ स्वसंतोषतृप्तिमात्रः पातितैकदशाननः ॥ बलिसँय्यमनो घोरो रौहिणेयः प्रलंबहा
॥ १३८ ॥ मुष्टिकघ्नो द्विविदहा कालिन्दीभेदनो बलः ॥ रेवतीरमणः पूर्वभक्तिरेवाच्युताग्रजः ॥ १३९ ॥ देवकीवासुदेवोत्थो दितिकश्यप
नन्दनः ॥ वार्ष्णेयः सात्त्वतांश्रेष्ठः शौरिर्य्यदुकुलोद्वहः ॥ १४० ॥ नराकृतिः पूर्णब्रह्म सव्यसाची परंतपः ॥ ब्रह्मादिकामना
नित्यजगत्पर्वतशैशवः ॥ १४१ ॥ पूतनाघ्नः शकटभिद्यमलार्जुनभंजनः ॥ वत्सासुरारिः केशिघ्नो धेनुकारिर्गवीश्वरः ॥ १४२ ॥
दामोदरो गोपदेवो यशोदानन्दकारकः ॥ कालीयमर्द्दनः सर्वगोपगोपीजनप्रियः ॥ १४३ ॥ लीलागोवर्द्धनधरो गोविन्दो गोकुलोत्सवः ॥
अरिष्टमथनः कामोन्मत्तगोपीविमुक्तिदः ॥ १४४ ॥ सद्यःकुवलयापीडघाती चाणूरमर्द्दनः ॥ कंसारिरुग्रसेनादिराज्यस्थाप्यारि
हाऽमरः ॥ १४५ ॥ सुधर्मांकितभूलोको जरासंधबलांतकः ॥ त्यक्तभक्तजरासंधभीमसेनयशःप्रदः ॥ १४६ ॥ सान्दीपनिमृतापत्य
दाता कालांतकादिजित् ॥ रुक्मिणीरमणो रुक्मिशास्नो नरकांतकृत् ॥ १४७ ॥ समस्तनरकत्राता सर्वभूपतिकोटिजित् ॥ समस्त
सुंदरीकांतो सुरारिर्गरुडध्वजः ॥ १४८ ॥ एकाकी जितरुद्रार्कमरुदापोऽखिलेश्वरः ॥ देवेन्द्रदर्पहा कल्पद्रुमालंकृतभूतलः ॥ १४९ ॥

बाणबाहुसहस्रच्छित्स्कंधाद्रिगणकोटिजित् ॥ लीलाजितमहादेवो महादेवैकपूजितः ॥ १५० ॥ इन्द्रार्थार्जुननिर्भर्त्सुर्जयदः पाण्डवैकधृक् ॥ काशीराजशिरश्छेत्ता रुद्रशक्त्येकमर्दनः ॥ १५१ ॥ विश्वेश्वरप्रसादाढ्यः काशीराजसुतार्दनः ॥ शंभुप्रतिज्ञापाता च स्वयंभूगणपूजकः ॥ १५२ ॥ काशीशगणकोटिघ्नो लोकशिक्षाद्विजार्चकः ॥ शिवतीव्रतपोवश्यः पुराशिवत्ववरप्रदः ॥ १५३ ॥ गयासुरप्रतिज्ञाधृक् स्वांशशंकरपूजकः ॥ शिवकन्याव्रतपतिः कृष्णरूपः शिवारिहा ॥१५४॥ महालक्ष्मीवपुर्गौरीत्राणो देवलवातहा ॥ विनिद्रमुचुकुंदैकब्रह्मास्त्रयवनारवहृत् ॥ १५५ ॥ अक्रूरोऽक्रूरमुख्यैकभक्तस्वच्छंदमुक्तिदः ॥ सबालस्त्रीजलक्रीडामृतवापीकृतार्णवः ॥ १५६ ॥ ब्रह्मापातेरानीलपरिणीताद्विजात्मकः ॥ श्रीदामशङ्कुभकार्थभूम्यानीतेन्द्रभैरवः ॥ १५७ ॥ दुर्वृत्तशिशुपालैकमुक्तिकोद्धारकेश्वरः ॥ आचाण्डालादिकं प्राप्याद्वारकानिधिकोटिकृत् ॥ १५८ ॥ ब्रह्मास्त्रदग्धगर्भस्थपरीक्षिज्जीवनैककृत् ॥ परिणीतद्विजसुतानेतार्जुनमदापहः ॥ १५९ ॥ गूढमुद्राकृतिग्रस्तभीष्माद्याखिलगौरवः ॥ पार्थार्थखण्डिताशेषदिव्यास्त्रः पार्थमोहभृत् ॥ १६० ॥ ब्रह्मशापच्छलध्वस्तयादवो विभवावहः ॥ अनंगो जितगौरीशो रतिकांतः सदोप्सितः ॥ १६१॥ पुष्पेषुर्विश्वविजयी स्मरः कामेश्वरीपतिः॥ ऊषापतिर्विश्वहेतुर्विश्वतृप्तोऽधिपूरुषः॥१६२॥चतुरात्मा चतुर्वर्णश्चतुर्वेदविधायकः ॥ चतुर्विश्वैकविश्वात्मासर्वोत्कृष्टांसु कोटिषु ॥ १६३ ॥ आश्रयात्मापुराणर्षिर्व्यासः शास्त्रसहस्रकृत् ॥ महाभारतनिर्माता कवीन्द्रो बादरायणः ॥ १६४ ॥ कृष्णद्वैपायनः सर्वपुरुषार्थकबोधकः ॥ वेदांतकर्ता ब्रह्मैकव्यंजकः पुरुवंशकृत्॥१६५॥बुद्धो ध्यानजिताशेषदेवदेवो जगत्प्रियः॥ निरायुधो जगज्जैत्रः श्रीधनो दुष्टमोहनः ॥ १६६ ॥ दैत्यदेवबहिष्कर्ता वेदार्थश्रुतिगोपकः ॥ शुद्धोदनिर्नष्टदिष्टः सुखदः सदसत्पतिः ॥ १६७ ॥ यथायोग्याखिलकृपः सर्वशून्योऽखिलेष्टदः ॥ चतुष्कोटिपृथक्तत्त्वप्रज्ञापारमितेश्वरः ॥ १६८ ॥ पाषण्डश्रुतिमार्गेण पाषण्डश्रुतिगोपकः ॥ कल्की विष्णुयशःपुत्रः कलिकालविलोपकः ॥ १६९ ॥ समस्तम्लेच्छहस्तघ्नः सर्वशिष्टद्विजातिकृत् ॥ सत्यप्रवर्तको देवद्विजदीर्घक्षुधापहः ॥ १७० ॥ अश्व एवादिदेवेन पृथ्वीदुर्गतिनाशनः ॥ सद्यःक्ष्मानंतलक्ष्मक्लिन्नष्टनिःशेषधर्मकृत् ॥ १७१ ॥ अनंतस्वर्णयागैकहेमपूर्णाखिलद्विजः ॥ असाध्यैक

जगच्छास्ता विश्ववन्द्यो जयध्वजः ॥ १७२ ॥ आत्मतत्त्वाधिपः कर्तृश्रेष्ठो विधिरुमापतिः ॥ भर्तुः श्रेष्ठः प्रजेशाग्र्यो मरीचिजनकाग्रणीः ॥
॥ १७३ ॥ कश्यपो देवराडिन्द्रः प्रह्लादो दैत्यराट् शशी ॥ नक्षत्रेशो रविस्तेजः श्रेष्ठः शुक्रः कवीश्वरः ॥ १७४ ॥ महर्षिराड् भृगुर्विष्णु
रादित्येशो बलिः स्वराट् ॥ वायुर्वह्निः शुचिः श्रेष्ठः शङ्करो रुद्रराड् गुरुः ॥ १७५ ॥ विद्वत्तमश्चित्ररथो गंधर्वाग्र्यो वसूत्तमः ॥ वर्णादि
रग्र्यास्त्री गौरी शक्त्यग्र्या श्रीश्च नारदः ॥१७६॥ देवर्षिराट् पाण्डवाग्र्योऽर्जुनो नारदवादराट् ॥ पवनः पवनेशानो वरुणो यादसाम्पतिः ॥
॥ १७७ ॥ गंगातीर्थोत्तमोद्भूतं छत्रकाग्र्यं वरौषधम् ॥ अन्नं सुदर्शनास्त्राग्र्यो वज्रप्रहरणोत्तमम् ॥ १७८ ॥ उच्चैःश्रवा वाजिराज ऐरावत
इभेश्वरः ॥ अरुंधत्येकपत्नीशो ह्यश्वत्थोऽशेषवृक्षराट् ॥१७९॥ अध्यात्मविद्याविद्यात्मा प्रणवश्छन्दसांवरः ॥ मेरुर्गिरिपतिर्मार्गो मासाग्र्यः
कालसत्तमः ॥ १८० ॥ दिनाद्यात्मा पूर्वसिद्धिः कपिलः सामवेदराट् ॥ तार्क्ष्यः खगेन्द्र ऋत्वग्र्यो वसंतः कल्पपादपः ॥ १८१ ॥ दातृश्रेष्ठः
कामधेनुरार्तिघ्नाग्र्यः सुरोत्तमः॥चिंतामणिर्गुरुश्रेष्ठो माता हिततमः पिता॥१८२॥सिंहो मृगेन्द्रो नागेन्द्रो वासुकिर्भूधरो नृपः॥ वर्णेशो ब्राह्मण
श्चांतःकरणाग्र्यं नमोनमः ॥ १८३ ॥ इत्येतद्वासुदेवस्य विष्णोर्नामसहस्रकम् ॥ सर्वापराधशमनं परं भक्तिविवर्धनम् ॥ १८४ ॥ अक्षय
ब्रह्मलोकादिसर्वार्थाप्त्येकसाधनम् ॥ विष्णुलोकैकसोपानं सर्वदुःखविनाशनम् ॥ १८५ ॥ समस्तसुखदं सत्यं परं निर्वाणदायकम् ॥
कामक्रोधादिनिःशेषमनोमलविशोधनम्॥१८६॥शांतिदं पावनं नृणां महापातकिनामपि॥ सर्वेषां प्राणिनामाशु सर्वाभीष्टफलप्रदम् ॥१८७॥
सर्वविघ्नप्रशमनं सर्वारिष्टविनाशनम् ॥ घोरदुःखप्रशमनं तीव्रदारिद्र्यनाशनम् ॥ १८८ ॥ तापत्रयापहं गुह्यं धनधान्ययशस्करम् ॥
सर्वैश्वर्यप्रदं सर्वसिद्धिदं सर्वकालदम् ॥ १८९ ॥ तीर्थयज्ञतपोदानव्रतकोटिफलप्रदम् ॥ अप्रज्ञजाड्यशमनं सर्वविद्याप्रवर्तकम् ॥ १९० ॥
राज्यदं राज्यकामानां रोगिणां सर्वरोगनुत् ॥ वंध्यानां सुतदं चाशु सर्वश्रेष्ठफलप्रदम् ॥ १९१ ॥ अस्त्रग्रामविषध्वंसि ग्रहपीडाविना
शनम् ॥ मांगल्यं पुण्यमायुष्यं श्रवणात्पठनाज्जपात् ॥ १९२ ॥ सकृदस्याखिला वेदाः सांगा मंत्राश्च कोटिशः ॥ पुराणशास्त्रं स्मृतयः
पठिताः पाठितास्तथा ॥ १९३ ॥ जप्त्वास्य श्लोकं श्लोकार्द्धं पादं वा पठतः प्रिये ॥ नित्यं सिद्ध्यति सर्वेषामचिरात्किमुतोऽखिलम् ॥

॥ १९४ ॥ प्राणेन सदृशं सद्यः प्रत्यहं सर्वकर्मसु ॥ इदं भद्रे त्वया गोप्यं पाठ्यं स्वार्थैकसिद्धये ॥ १९५ ॥ नावैष्णवाय दातव्यं विकल्पोपहतात्मने ॥ भक्तिश्रद्धाविहीनाय विष्णुसामान्यदर्शिने ॥ १९६ ॥ देयं पुत्राय शिष्याय शुद्धाय हितकाम्यया ॥ मत्प्रसादादृते नेदं ग्रहीष्यंत्यल्पमेधसः ॥ १९७ ॥ कलौ सद्यः फलं कल्पग्राममेष्यति नारद ॥ लोकानां भाग्यहीनानां येन दुःखं विनश्यति ॥ १९८ ॥ क्षेत्रेषु वैष्णवेष्वेतदार्य्यावर्ते भविष्यति ॥ नास्ति विष्णोः परं सत्यं नास्ति विष्णोः परं पदम् ॥ १९९ ॥ नास्ति विष्णोः परं ज्ञान नास्ति मोक्षो ह्यवैष्णवः ॥ नास्ति विष्णोः परो मंत्रो नास्ति विष्णोः परं तपः ॥ २०० ॥ नास्ति विष्णोः परं ध्यानं नास्ति मंत्रो ह्यवैष्णवः ॥ किं तस्य बहुभिर्मंत्रैः किं जपैर्बहुविस्तरैः ॥ २०१ ॥ वाजपेयसहस्रैः किं भक्तिर्यस्य जनार्दने ॥ सर्वतीर्थमयो विष्णुः सर्वशास्त्रमयः प्रभुः ॥ २०२ ॥ सर्वक्रतुमयो विष्णुः सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ आब्रह्मसारसर्वस्वं सर्वमेतन्मयोदितम् ॥ २०३ ॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥ धन्यास्म्यनुगृहीतास्मि कृतार्थास्मि जगद्गुरो ॥ यन्मयेदं श्रुतं स्तोत्रं त्वद्रहस्यं सुदुर्लभम् ॥ २०४ ॥ अहो बत महत्कष्टं समस्तसुखदे हरौ ॥ विद्यमानेऽपि सर्वेशे मूढाः क्लिश्यंति संसृतौ ॥ २०५ ॥ यमुद्दिश्य सदा नाथो महेशोऽपि दिगंबरः ॥ जटिलो भस्मलिप्ताङ्गस्तपस्वी वीक्षितो जनैः ॥ २०६॥ अतोऽधिको न देवोऽस्ति लक्ष्मीकांतान्मधुद्विषः ॥ यत्तत्त्वं चिंत्यते नित्यं त्वया योगीश्वरेण हि ॥ २०७ ॥ अतः परं किमधिकं पदं श्रीपुरुषोत्तमात् ॥ तमविज्ञाय तान् मूढा यजंते ज्ञानमानिनः ॥ २०८ ॥ मुषितास्मि त्वया नाथ चिरं यदयमीश्वरः ॥ प्रकाशितो न मे तस्य दत्ताद्या दिव्यशक्तयः ॥ २०९॥ अहो सर्वेश्वरो विष्णुः सर्वदेवोत्तमोत्तमः ॥ भवदादिगुरुर्मूढैः सामान्य इव लक्ष्यते ॥ २१० ॥ महीयसां हि माहात्म्यं भजमानान्भजंति चेत् ॥ द्विषतोऽपि तथा पापानुपेक्षते क्षमालयाः ॥ २११ ॥ मयापि बाल्ये स्वपितुः प्रजा दृष्टा बुभुक्षिताः ॥ दुःखादशक्ताः स्वं पोष्टुं श्रिया नाध्यासिताः पुरा ॥ २१२ ॥ त्वया संवर्द्धिताभिश्च प्रजाभिर्विबुधादयः ॥ विशसद्भिः स्वशक्त्याद्याः ससुहृन्मित्रबान्धवाः ॥ २१३ ॥ तया विना क देवत्वं क धैर्य्यं क परिग्रहः ॥ सर्वे भवंति जीवंतो यातनाः शिरसि स्थिताः ॥ २१४ ॥ तामृते नैव धर्मार्थौ कामो मोक्षोऽपि दुर्लभः ॥ क्षुधितानां दुर्गतानां

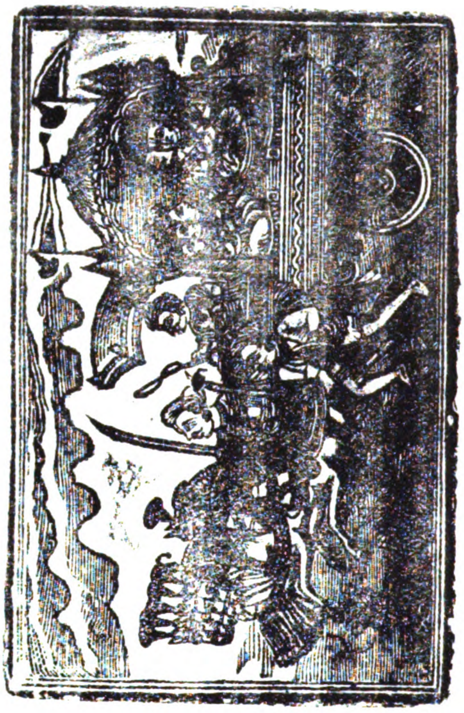
कुतो योगसमाधयः ॥ २१५ ॥ सा च संसारसारैका सर्वलोकैकपालिका ॥ वश्या सा कमला यस्य त्यक्त्वा त्वामपि शंकर ॥ २१६ ॥ श्रिया धर्मेण शौर्य्येण रूपेणार्जवसंपदा ॥ सर्वातिशयवीर्येण संपूर्णस्य महात्मनः ॥ २१७ ॥ कस्तेन तुल्यतामेति देवदेवेन विष्णुना ॥ यस्यांशांशकभागेन विना सर्वं विलीयते ॥ २१८ ॥ जगदेतत्तथा प्राहुर्दोषायैतद्विमोहिता ॥ नास्य जन्म जरा मृत्युर्नाप्राप्यं चार्थमेव वा ॥ २१९ ॥ तथापि कुरुते धर्म्मान्पालनाय सतां कृते ॥ विज्ञापय महादेवं प्रणम्यैकमहेश्वरम् ॥ २२० ॥ अवधार्य्य तथा साहं कांत कामद शाश्वत ॥ कामाद्यासक्तचित्तत्वात्किं तु सर्वेश्वर प्रभो ॥ २२१ ॥ त्वन्मयत्वात्प्रसादाद्वा शक्नोमि पठितुं न चेत् ॥ विष्णोः सहस्रनामैतत्प्रत्यहं वृषभध्वज ॥ २२२ ॥ नाम्नैकेन तु येन स्यात्तत्फलं ब्रूहि मे प्रभो ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥ ॐ राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ॥ सहस्रनामभिस्तुल्यं रामनाम वरानने ॥ २२३ ॥ अतः सर्वाणि तीर्थानि जलं चैव प्रयागजम् ॥ विष्णोर्नामसहस्रस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥ २२४ ॥ इति नारदपंचरात्रोक्तश्रीविष्णोर्नामसहस्रं समाप्तम् ॥

॥अथ महापुरुषविद्यारम्भः ॥ जितं ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन ॥ सुब्रह्मण्य नमस्तेऽस्तु महापुरुष पूर्वज ॥१॥ नमो हिरण्यगर्भाय प्रधानव्यक्तिरूपिणे ॥ ॐ नमो वासुदेवाय शुद्धज्ञानस्वरूपिणे ॥२॥ देवानां दानवानां च सामान्यमसि दैवतम् ॥ सर्वदा चरणद्वंद्वं व्रजामि शरणं तव ॥ ३ ॥ एकस्त्वमसि लोकस्य स्रष्टा संहारकस्तथा ॥ अध्यक्षश्चानुमंता च गुणमायासमावृतः ॥ ४ ॥ संसारसागरं घोर मनंतं क्लेशभाजनम् ॥ त्वामेव शरणं प्राप्य निस्तरंति मनीषिणः ॥ ५ ॥ न ते रूपं न चाकारो नायुधानि न चास्पदम् ॥ तथापि पुरुषा कारो भक्तानां त्वं प्रकाशसे ॥ ६ ॥ नैव किंचित्परोक्षं ते प्रत्यक्षोऽसि न कस्यचित् ॥ नैव किंचिदसाध्यं ते न च साध्योऽसि कस्यचित् ॥ ७ ॥ कार्याणां कारणं पूर्वं वचसां वाच्यमुत्तमम् ॥ योगिनां परमां सिद्धिं परमं ते पदं विदुः ॥ ८ ॥ अहं भीतोऽस्मि देवेश संसारेऽस्मिन्महाभये ॥ त्राहि मां पुंडरीकाक्ष न जाने शरणं परम् ॥ ९ ॥ कालेष्वपि च सर्वेषु दिक्षु सर्वासु चाच्युत ॥ शरीरेऽपि गतो चापि वर्तते मे महद्भयम् ॥ १० ॥ त्वत्पादकमलादन्यन्न मे जन्मांतरेष्वपि ॥ निमित्तं कुशलस्यास्ति येन गच्छामि सद्गतिम् ॥ ११ ॥ विज्ञानं

यदिदं प्राप्तं यदिदं ज्ञानमूर्जितम् ॥ जन्मांतरेऽपि मे देव माभूदस्य परिक्षयः ॥ १२ ॥ दुर्गतावपि जातायां त्वं गतिस्त्वं मतिर्मम ॥ यदि नाथं च विज्ञेयं तावतास्मि कृती सदा ॥ १३ ॥ अकामकलुषं चित्तं मम ते पादयोः स्थितम् ॥ कामये वैष्णवत्वं तु सर्वजन्मसु केवलम् ॥ १४ ॥ इति महापुरुषविद्या समाप्ता ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ नृसिंहकवचप्रारम्भः ॥ नारद उवाच ॥ इन्द्रादिदेववृंदेश ईड्येश्वर जगत्पते ॥ महाविष्णोर्नृसिंहस्य कवचं ब्रूहि मे प्रभो ॥ १ ॥ यस्य प्रपठनाद्विद्वांस्त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥ ब्रह्मोवाच ॥ शृणु नारद वक्ष्यामि पुत्रश्रेष्ठ तपोधन ॥ कवचं नरसिंहस्य त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥ २ ॥ स्रष्टाहं जगतां वत्स पठनाद्धारणाद्यतः ॥ लक्ष्मीर्जगत्त्रयं पाति संहर्ता च महेश्वरः ॥ ३ ॥ पठनाद्धारणाद्देवा बहवश्च दिगीश्वराः॥ ब्रह्ममंत्रमयं वक्ष्ये भ्रांत्यादिविनिवारकम् ॥ ४ ॥ यस्य प्रसादा दुर्वासास्त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥ पठनाद्धारणाद्यस्य शास्ता च क्रोधभैरवः ॥ ५ ॥ त्रैलोक्यविजयस्यापि कवचस्य प्रजापतिः ॥ ऋषिश्छंदस्तु गायत्री नृसिंहो देवता विभुः ॥ ६ ॥ क्ष्रौं बीजं मे शिरः पातु चन्द्रवर्णो महामनुः ॥७॥"ॐ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलंतं सर्वतोमुखम् ॥ नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम् ॥ ८ ॥ द्वात्रिंशदक्षरो मन्त्रो मंत्रराजः सुरद्रुमः ॥ कंठं पातु ध्रुवं क्ष्रौं हृद्भगवते चक्षुषी मम ॥ ९ ॥ नरसिंहाय च ज्वालामालिने पातु कर्णकम् ॥ दीप्तदंष्ट्राय च तथा अग्निनेत्राय नासिकाम् ॥ १० ॥ सर्वरक्षोघ्नाय च तथा सर्वभूतहिताय च ॥ सर्वज्वरविनाशाय दहदह पदद्वयम् ॥ ११ ॥ रक्षरक्ष वर्ममंत्रः स्वाहा पातु मुखं मम ॥ तारादिरामचंद्राय नमः पातु हृदं मम ॥ १२ ॥ क्लीं पायात्पार्श्वयुग्मं च तारो नमः पदं ततः॥ नारायणाय नाभिं च आं ह्रीं क्रौं क्ष्रौं च हुंफट् ॥१३॥ षडक्षरः कटिं पातु ॐनमो भगवते पदम् ॥ वासुदेवाय च पृष्ठं क्लीं कृष्णाय क्लीं ऊरुद्वयम् ॥१४ ॥ क्लीं कृष्णाय सदा पातु जानुनी च मनूत्तमः ॥ क्लीं ग्लौं क्लीं श्यामलांगाय नमः पायात्पदद्वयम् ॥ १५ ॥ क्ष्रौं नृसिंहाय क्ष्रौं च सर्वांगे मे सदावतु ॥ इति ते कथितं वत्स सर्वमंत्रौघविग्रहम् ॥ १६ ॥ तव स्नेहान्मया ख्यातं प्रवक्तव्यं न कस्यचित् ॥ गुरुपूजां विधायाथ गृह्णीयात्कवचं ततः ॥ १७ ॥ सर्वपुण्ययुतो भूत्वा सर्वसिद्धियुतो भवेत् ॥ शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः ॥ १८ ॥ हवनादीन्दशांशेन कृत्वा तत्साधकोत्तमः ॥

ततस्तु सिद्धकवचो रूपेण मदनोपमः ॥ १९ स्पर्द्धामुद्धूय भवने लक्ष्मीर्वाणी वसेन्मुखे ॥ पुष्पाञ्जल्यष्टकं दत्त्वा मूलेनैव पठेत्सकृत् ॥ २० ॥ अपि वर्षसहस्राणां पूजानां फलमाप्नुयात् ॥ भूर्जे विलिख्य गुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद्यदि ॥ २१ ॥ कंठे वा दक्षिणे बाहौ नरसिंहो भवेत्स्वयम् ॥ योषिद्वामभुजे चैव पुरुषो दक्षिणे करे ॥ २२ ॥ बिभृयात्कवचं पुण्यं सर्वसिद्धियुतो भवेत् ॥ काकवन्ध्या च या नारी मृतवत्सा च या भवेत् ॥ २२ ॥ जन्मवन्ध्या नष्टपुत्रा बहुपुत्रवती भवेत् ॥ कवचस्य प्रसादेन जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ॥ २४ ॥ त्रैलोक्यं क्षोभयत्येवं त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥ भूतप्रेतपिशाचाश्च राक्षसा दानवाश्च ये ॥ २५ ॥ तं दृष्ट्वा प्रपलायंते देशाद्देशांतरं ध्रुवम् ॥ यस्मिन्गृहे च कवचं ग्रामे वा यदि तिष्ठति ॥ तद्देशं तु परित्यज्य प्रयांति ह्यतिदूरतः ॥ २६ ॥ इति ब्रह्मसंहितायां त्रैलोक्यमोहनं नाम नृसिंहकवचं समाप्तम् ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे पूर्वखण्डे विष्णुतंत्रे सप्तमस्तरंगः ॥ ७ ॥

समाप्तमिदं विष्णुतंत्रम् ।

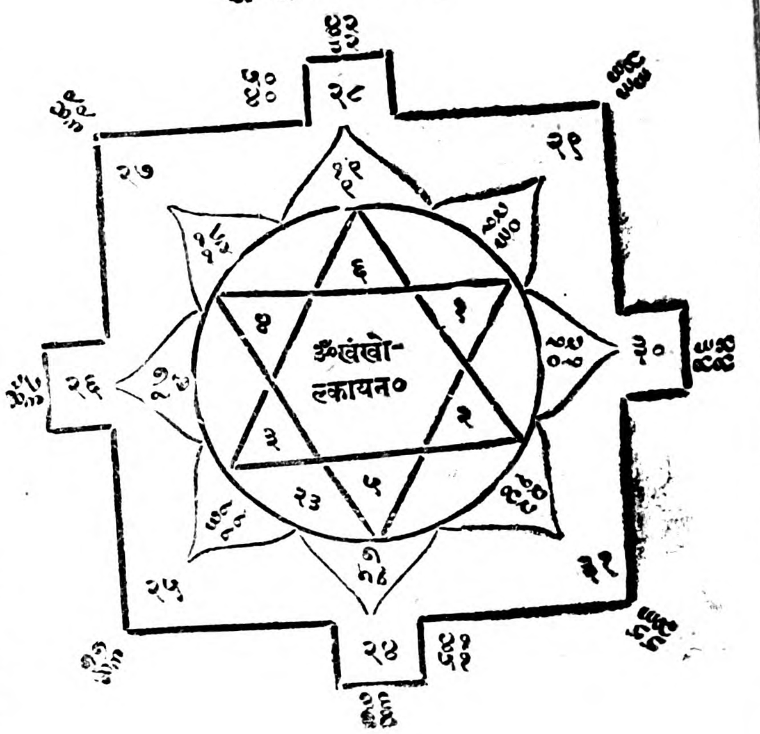


श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ सूर्य्यतंत्रप्रारंभः॥ तत्रादौ पटलप्रारंभः ॥ अथ सूर्यमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा-(शारदातिलके) " ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य्य आदित्य श्रीं" इति दशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्॥ अस्य सूर्य्यमंत्रस्य भृगुर्ऋषिः गायत्री छंदः । दिवाकरो देवता । ह्रीं बीजम्। श्रीं शक्तिः । दृष्टादृष्टफलसिद्धये जपे विनियोगः ॥ ॐ भृगुऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ गायत्रीछंदसे नमः मुखे ॥ २ ॥ दिवाकर देवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ ह्रींबीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ श्रींशक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ सत्यतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा-अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ ब्रह्मतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ विष्णुतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ रुद्रतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ अग्नितेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ सर्वतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ सत्यतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ब्रह्मतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ विष्णुतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ रुद्रतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ अग्नितेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ सर्वतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहास्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ॐ ॐ आदित्याय नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ एं रवये नमः मुखे ॥ २ ॥ ॐ उं भानवे नमः हृदये ॥ ३ ॥ ॐ इं भास्कराय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ ॐ अं सूर्य्याय नमः पादयोः ॥ ५ ॥ इति मूर्तिन्यासः ॥ ॐ ॐ नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ घृं नमः मुखे ॥ २ ॥ ॐ णिं नमः कंठे ॥ ३ ॥ ॐ सूं नमः हृदि ॥ ४ ॥ ॐ र्यं नमः कुक्षौ ॥ ५ ॥ ॐ आं नमः नाभौ ॥ ६ ॥ ॐ दिं नमः लिंगे ॥ ७ ॥ ॐ त्यं नमः पादयोः ॥ ८ ॥ इति मंत्रवर्णन्यासः ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ रक्ताब्जयुग्माभयदानहस्तं केयूरहारांगदकुंडलाढ्यम् ॥ माणिक्यमौलिं दिननाथमीडे बंधूककांतिं विलसत्त्रिनेत्रम् ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिसूर्यमंडलाय द्वादशकलात्मने इत्यंतं पीठदेवतां संपूज्य पीठशक्तीः

पूजयेत् ॥ तद्यथा—पूर्वादिक्रमेण ॥ ॐ रां दीप्तायै नमः ॥ १ ॥ ॐ रीं सूक्ष्मायै नमः ॥ २ ॥ ॐ रूं जयायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ रैं भद्रायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ वें विभूत्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ वों विमलायै नमः ॥ ६ ॥ ॐ वौं अघोरायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ रं विद्युतायै नमः ॥ ८ ॥ मध्ये ॐ रः सर्वतोमुख्यै नमः ॥ ९ ॥ इति पीठशक्तीः संपूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रमग्न्युत्तारणपूर्वकं "ब्रह्मविष्णुशिवात्मकाय सौराय योगपीठाय नमः" इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा "ॐ खं खखोल्काय नमः" इति मंत्रेण मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तत्र क्रमः ॥ पुष्पांजलिमादाय "ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः ॥ अनुज्ञां सूर्य मे देहि परिवारार्चनाय ते ॥ १ ॥" इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा आवरणपूजामारभेत ॥ षट्कोणकेसरेषु अग्निकोणे । ॐ सत्यतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा हृदयाय नमः हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र ॥१ ॥ निर्ऋतिकोणे । ॐ ब्रह्मतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा शिरसे स्वाहा शिरःश्रीपा० ॥ २ ॥ वायव्ये । ॐ विष्णुतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा शिखायै वषट् शिखाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ऐशान्ये ॐ रुद्रतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा कवचाय हुं कवचश्रीपा० ॥ ४ ॥ पूज्यपूज्यकयोर्मध्ये । ॐ अग्नितेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रश्रीपा० ॥ ५ ॥ देवतापश्चिमे । ॐ सर्वतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा अस्त्राय फट् अस्त्रश्रीपा० ॥ ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य "ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥" इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीं प्रकल्प्य प्राच्यादिक्रमेण चतुर्दिक्षु ॐ ॐ आदित्याय नमः आदित्यश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ १ ॥ ॐ यं रवये नमः । रविश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ उं भानवे नमः भानुश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ इं भास्कराय नमः भास्करश्रीपा० ॥ ४ ॥ इति संपूज्य आग्नेय्यादिविदिक्षु च ॐ ऊषायै नमः ऊषाश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ प्रं प्रज्ञायै नमः प्रज्ञाश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ प्रभायै नमः प्रभाश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ संध्यायै नमः संध्या

इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततोऽष्टदलाग्रेषु पूर्वादिक्रमेण ॥ ॐ ब्राह्म्यै नमः ।
श्रीपा० ॥ ८ ॥ इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ॐ कौमार्ये नमः । कौमारीश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ वैष्णव्यै नमः
ब्राह्मीश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ माहेश्वर्यै नमः । माहेश्वरीश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ इन्द्राण्यै नमः । इन्द्राणीश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ चामुंडायै
वैष्णवीश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ वाराह्यै नमः । वाराहीश्रीपा० ॥ ५ ॥

सूर्यपूजनयन्त्रम्.



नमः । चामुंडाश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः । महालक्ष्मीश्रीपा० ॥ ८ ॥
स्वपुरतः । ॐ अरुणाय नमः । अरुणश्रीपा० ॥ ९ ॥ इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं
च दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततो भूपुराभ्यंतरे पूर्वादिक्रमेण ॐ चन्द्राय
नमः । चन्द्रश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ मंगलाय नमः । मंगलश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ बुधाय
नमः । बुधश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ बृहस्पतये नमः । बृहस्पतिश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ शुक्राय
नमः । शुक्रश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ शनैश्चराय नमः । शनैश्चरश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ राहवे
नमः । राहुश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ केतवे नमः । केतुश्रीपा० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ ग्रहान्
पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥ ४ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादि
क्रमेण ॥ ॐ लं इन्द्राय नमः । इन्द्रश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ रं अग्नये नमः । आग्निश्रीपा०
॥ २ ॥ ॐ मं यमाय नमः यमश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ क्षं निर्ऋतये नमः । निर्ऋति
श्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ वं वरुणाय नमः । वरुणश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ यं वायवे नमः
वायुश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ कुं कुबेराय नमः । कुबेरश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ हं ईशानाय
नमः । ईशानश्रीपा० ८ ॥ इन्द्रेशानयोर्मध्ये ॐ आँ ब्रह्मणे नमः । ब्रह्मश्रीपा० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं अनंताय नमः । अनन्तश्रीपा० ॥ १० ॥ इति दिक्पालान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति पंचमावरणम् ॥ ५ ॥ तद्बाह्ये ॐ वं वज्राय नमः ॥ १ ॥ ॐ शं शक्तये नमः ॥ २ ॥ ॐ दं दंडाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ खं खड्गाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ पं पाशाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ अं अंकुशाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ गं गदायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ पं पद्माय नमः ॥ ९ ॥ ॐ चं चक्राय नमः ॥ १० ॥ इत्यस्त्राणि पूजयेत् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादि नीराजनांतं संपूज्य जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं दशलक्षजपः ॥ दशसहस्रहोमः ॥ तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् ॥ एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति । सिद्धे च मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च—" दशलक्षं जपेन्मंत्रं सामिद्भिः क्षीरशाखिनाम् ॥ तत्सहस्रं प्रजुहुयात्क्षीराक्ताभिर्जितेंद्रियः ॥ १ ॥ एवं संपूज्य विधिवद्भास्करं भक्तवत्सलम् ॥ दद्यादर्घ्यं प्रतिदिनं वारे वा तस्य चोदिते ॥ २ ॥" अथार्घ्यविधानम् ॥ प्रभाते मंडलं कृत्वा पूर्ववत्पीठमर्चयेत् ॥ पात्रं ताम्रमयं प्रस्थतोयग्राहि मनोरमम् ॥ ३ ॥ विधाय तत्र मनुना पूरयेत्तच्छुभोदकैः ॥ कुंकुमं रोचनं राजीरक्तचंदनवैणवान् ॥ ४ ॥ करवीरजपाशालीकुशश्यामाकतंडुलान् ॥ निक्षिपेत्सलिले तस्मिन्नैक्यं संकल्प्य भानुना ॥ ५ ॥ सांगमभ्यर्चयेत्तस्मिन्भास्करं प्रोक्तलक्षणम् ॥ गंधपुष्पादिनैवेद्यैर्यथाविधि विधानवित् ॥ ६ ॥ तद्विधाय जपेन्मंत्रं सम्यगष्टोत्तरं शतम् ॥ पुनः संपूज्य गंधाद्यैर्जानुभ्यामवनीं गतः ॥ ७ ॥ आमस्तकं तदुद्धृत्य व्योमि सावरणे रवौ ॥ दृष्टिं विधाय स्वैकेन मूलमंत्रं धिया जपन् ॥ ८ ॥ दद्यादर्घ्यं दिनेशाय प्रसन्नेनांतरात्मना ॥ कृत्वा पुष्पांजलिं भूयो जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥ ९ ॥ यावदर्घामृतं भानुः समादत्ते निजैः करैः ॥ तेन तृप्तो दिनमणिर्दद्यात्तस्मै मनोरथान् ॥ १० ॥ अर्घदानमिदं पुंसामायुरारोग्यवर्द्धनम् ॥ धनधान्यपशुक्षेत्रपुत्रमित्रकलत्रदम् ॥ ११ ॥ तेजोवीर्ययशःकांतिविद्याविभवभाग्यदम् ॥ गायत्र्युपासनाशक्तः संध्यावंदनतत्परः ॥ दशवर्णं जपन्विप्रो नैव दुःखमवाप्नुयात् ॥ १२ ॥ इति सूर्यदशाक्षरमंत्रप्रयोगः ॥ इति सूर्यपटलं समाप्तम् ॥

॥ अथ सूर्यपद्धतिप्रारंभः ॥ पूर्वकृत्यं कृत्वा पुरश्चरणदिवसे ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय प्रातःस्मरणं कुर्यात् । अथ सूर्यप्रातःस्मरणम् । ॐ

प्रातः स्मरामि खलु तत्सवितुर्वरेण्यं रूपं हि मंडलमृचोऽथ तनुर्यजूंषि ॥ सामानि यस्य किरणाः प्रभवादिहेतुं ब्रह्माहरात्मकमलक्ष्यमचिंत्य रूपम् ॥ १ ॥ प्रातर्नमामि तरणिं तनुवाङ्मनोभिर्ब्रह्मेन्द्रपूर्वकसुरैर्नुतमर्चितं च ॥ वृष्टिप्रमोचनविनिग्रहहेतुभूतं त्रैलोक्यपालनपरं त्रिगुणात्मकं च ॥ २ ॥ प्रातर्भजामि सवितारमनंतशक्तिं पापौघशत्रुभयरोगहरं परं च ॥ तं सर्वलोककलनात्मककालमूर्तिं गोकण्ठबंधनविमोचनमादिदेवम् ॥ ३ ॥ श्लोकत्रयमिदं भानोः प्रातः प्रातः पठेत्तु यः ॥ स सर्वव्याधिनिर्मुक्तः परं सुखमवाप्नुयात् ॥ ४ ॥ इति प्रातःस्मरणं कृत्वा शौचादिकं विधाय स्नानं च कुर्यात् ॥ ततः पूजागृहमागत्य नित्यनैमित्तिकं विधाय स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठांतर्मातृकाबहिर्मातृकासृष्टिस्थितिसंहारमातृकान्यासं च कृत्वा प्रयोगोक्तन्यासादिकं च कुर्यात् ॥ ततो वामभागे श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ १ ॥ दक्षिणे गणपतये नमः ॥ २ ॥ मध्ये स्वेष्टदेवतायै नमः ॥ ३ ॥ इति नत्वा पीठपूजां कुर्यात् ॥ तद्यथा—पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले सूर्यमण्डले वा मध्यभागे ॐ मं मंडूकाय नमः ॥ १ ॥ ॐ कं कालाग्निरुद्राय नमः ॥ २ ॥ ॐ अं आधारशक्तये नमः ॥ ३ ॥ ॐ कूं कूर्माय नमः ॥ ४ ॥ ॐ अं अनन्ताय नमः ॥ ५ ॥ ॐ पृं पृथिव्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ क्षीं क्षीरसागराय नमः ॥ ७ ॥ ॐ रं रत्नदीपाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ रं रत्नमण्डपाय नमः ॥ ९ ॥ ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः ॥ १० ॥ ॐ रं रत्नवेदिकायै नमः ॥ ११ ॥ ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः ॥ १२ ॥ आग्नेय्याम् । ॐ धं धर्माय नमः ॥ १३ ॥ नैर्ऋत्याम् । ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः ॥ १४ ॥ वायव्ये । ॐ वैं वैराग्याय नमः ॥ १५ ॥ ऐशान्ये । ॐ ऐं ऐश्वर्य्याय नमः ॥ १६ ॥ पूर्वे । ॐ अं अधर्माय नमः ॥ १७ ॥ दक्षिणे । ॐ अं अज्ञानाय नमः ॥ १८ ॥ पश्चिमे । ॐ अं अवैराग्याय नमः ॥ १९ ॥ उत्तरे । ॐ अं अनैश्वर्याय नमः ॥ २० ॥ पुनः पीठमध्ये । ॐ आं आनन्दकन्दाय नमः ॥ २१ ॥ ॐ सं संविन्नालाय नमः ॥ २२ ॥ ॐ सं सर्वतत्त्वकमलासनाय नमः ॥ २३ ॥ ॐ प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः ॥ २४ ॥ ॐ विं विकारमयकेसरेभ्यो नमः ॥ २५ ॥ ॐ पं पंचाशद्वर्णाढ्यकर्णिकाभ्यो नमः ॥ २६ ॥ ॐ अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः ॥ २७ ॥ इति "मंडूकादिसूर्यमंडलाय

द्वादशकलात्मने " इत्यंतं पीठदेवताः संपूज्य प्रयोगोक्तनवपीठशक्तीः पूजयेत् ॥ ततः शंखस्थाने ताम्रपात्रं घंटां च सर्वदेवोपयोगिपद्धति मार्गेण संस्थाप्य गंधाक्षतपुष्पादींश्च पूजोपकरणार्थं स्वदक्षिणपार्श्वे निधाय मूलेन नमः इति जलेन संप्रोक्ष्य जलार्थे बृहत्पात्रं व्यजनं छत्रादर्शचामराणि च स्ववामे स्थापयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जल धारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य आसनमंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य देशकालौ स्मृत्वा मम श्रीसूर्यनारायणनूतनयंत्रे मूर्तौ वा प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये ॥ इति संकल्प्य प्रतिष्ठां कुर्यात् ॥ तद्यथा—ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः । ऋग्यजुःसामानि च्छदांसि । क्रियामयवपुःप्राणाख्या देवता । आं बीजम् । ह्रीं शक्तिः । क्रौं कीलकम् । अस्य नूतनयंत्रे मूर्तौ वा प्राण प्रतिष्ठापने विनियोगः ॥ इति जलं क्षिप्त्वा करेणाच्छाद्य । ॐ आं ह्रीं क्रौं यँरँलँवँशँषँसँहँहंसः सोहं अस्य सूर्यनारायणसपरिवारयंत्रस्य प्राणा इह प्राणाः ॥ १ ॥ पुनः ॐ आंह्रींक्रौंयँरँलँवँशँषँसँहँ हंसः सोहं अस्य सूर्यनारायणसपरिवारयंत्रस्य जीव इह स्थितः ॥ २ ॥ पुनः । ॐ आंह्रींक्रौं यँरँलँवँशँषँसँहँहंसः सोहं अस्य सूर्यनारायणसपरिवारयंत्रस्य सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि ॥ ३ ॥ पुनः । ॐ आं ह्रींक्रौं यँरँलँवँशँषँसँहँहंसः सोहं अस्य सूर्यनारायणसपरिवारयंत्रस्य वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा॥४॥इति प्राणान् प्रतिष्ठाप्य"यः प्राणतोनिमिषतोमहित्वा०विधेम" इति मन्त्रिति त्रिवारं पठेत्।"ॐ मनोजूतिर्जुषतां सुप्रीतष्ठा प्रतिष्ठा" इत्युक्त्वा संस्कारसिद्धये पंचदश प्रणवावृत्तीः कृत्वा अनेन सूर्यनारायणसपरिवारयंत्रस्य गर्भाधानादिपंचदशसंस्कारान्संपाद यामि इति वदेत् । ततः " ॐ यंत्रराजाय विद्महे महायंत्राय धीमहि ॥ तन्नो यंत्रः प्रचोदयात् ॥ " इत्यष्टोत्तरशतमभिमंत्र्य मूलदेवतां ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्यावाहयेत्॥ तद्यथा—अक्षतानादाय"ॐ देवेश भक्तिसुलभ परिवारसमन्वित ॥ यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावद्देव इहावह" ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसूर्यनारायणाय नमः इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाहनम् ॥ १ ॥ " ॐ अज्ञानाद्दुर्मन स्त्वाद्वा वैकल्यात्साधनस्य च ॥ यद्यपूर्णं भवेत्कृत्यं तदाप्यभिमुखो भव " ॥ १ ॥ ॐ सूर्यनारायणाय नमः इह संमुखो भव ॥ इति

सम्मुखीकरणम् ॥ २ ॥ " ॐ यस्य दर्शनमिच्छंति देवाः स्वाभीष्टसिद्धये ॥ तस्मै ते परमेशाय स्वागतं स्वागतं च ते" ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसूर्यनारायणाय नमः सुस्वागतं समर्पयामि ॥ इति सर्वत्र ॥ ३ ॥ "ॐ देवदेव महाराज प्रियेश्वर प्रजापते ॥ आसनं दिव्यमीशान दास्येऽहं परमेश्वर" ॥ १ ॥ इत्यासनम् ॥ ४ ॥ इत्यासनं दत्त्वा करौ बद्ध्वा प्रार्थयेत् ॥ " ॐ स्वागतं देवदेवेश तद्भाग्यात्त्वमिहागतः ॥ प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत्परिपालय" ॥ १ ॥ इति प्रार्थयित्वा पाद्यादिपूजनं कुर्यात् ॥ अथ पाद्यादि पूजनम् ॥ "ॐ यद्भक्तिलेशसंपर्कात्परमानन्दसंभवः ॥ तस्मै ते चरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पये"॥१॥इत्यर्घोदकेन पाद्यं दद्यात् ॥ १ ॥ " ॐ देवानामपि देवाय देवानां देवतात्मने ॥ आचामं कल्पयामीश शुद्धानां शुद्धिहेतवे" ॥ १ ॥ इत्याचमनम् ॥ २ ॥"ॐ तापत्रय हरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम् ॥ तापत्रयविमोक्षाय तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम्" ॥ १ ॥ इत्यर्घोदकेनार्घ्यं दद्यात् ॥ ३ ॥ " ॐ सर्व कालुष्यहीनाय परिपूर्णसुखात्मने ॥ मधुपर्कमिदं देव कल्पयामि प्रसीद मे " ॥ १ ॥ इति मधुपर्कम् ॥ ४ ॥" ॐ उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वापि यस्य स्मरणमात्रतः ॥ शुद्धिमाप्नोति तस्मै ते पुनराचमनीयकम्"॥१॥ इत्याचमनीयम्॥५॥"ॐ स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकनाथ महाशय ॥ सर्वलोकेषु शुद्धात्मन्ददामि स्नेहमुत्तमम् " ॥ १ ॥ इति सुगंधतैलम्॥ ६ ॥ "ॐ गंगासरस्वतीरेवापयोष्णीनर्मदाजलैः ॥ स्नापितोऽसि मया देव तथा शांतिं कुरुष्व मे" ॥ १ ॥ इति जलस्नानम् ॥ ७ ॥ ॐ "पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करायुतम् ॥ पंचामृतं मया नीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्"॥१ ॥ इति पंचामृतेन स्नापयित्वा पुनः जलस्नानं च कारयेत् ॥८॥ "ॐ सर्वभूषादिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे ॥ मयैवापादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् " ॥ १ ॥ इति रक्तवस्त्रम् ॥ ९ ॥ " ॐ नवभिस्तंतुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ॥ उपवीतं चोत्तरीयं गृहाण परमेश्वर " ॥ १ ॥ इति यज्ञोपवीतम् ॥ १० ॥ " स्वभावसुंदरांगाय सत्यासत्याश्रयाय ते ॥ भूषणानि विचित्राणि कल्पयामि सुरार्चित" ॥ १ ॥ दक्षहस्तांगुष्ठस्पृष्टानामिकात्मिकया मुद्रया भूषणानि दद्यात् ॥ ११ ॥ "ॐ श्रीखण्डं चंदनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम् ॥ विलेपनं सुरश्रेष्ठ चंदनं प्रतिगृह्यताम्" ॥१॥ अंगुष्ठकनिष्ठामूललग्ने गन्धमुद्रा इति गंधम् ॥ १२ ॥ " ॐ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ

कुकुमाक्ताः सुशोभिताः ॥ मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर" ॥ १ ॥ सर्वांगुलीभिर्दद्यात् ॥ इत्यक्षतान् ॥ १३ ॥ " ॐ माल्या दीनि सुगंधीनि मालत्यादीनि वै प्रभो॥मयाऽऽनीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर"॥१॥तर्जन्यावंगुष्ठमूललग्ने पुष्पमुद्रा॥इति पुष्पम्॥१४॥ एवं पुष्पांतं पूजयित्वा देवाज्ञया प्रयोगोक्तावरणपूजां कृत्वा धूपादिपूजनं कुर्यात्॥ अथ धूपादिपूजनम्॥ "ॐ वनस्पतिरसोद्भूतो गंधाढ्यो गंध उत्तमः ॥ आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्" ॥१॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः सांगाय सपरिवाराय सवाहनाय सायुधाय श्रीसूर्य्यनारायणाय नमः॥धूपं समर्पयामि॥इति सर्वत्र ॥ तर्जनीमूलयोरंगुष्ठयोगे धूपमुद्रया नाभिदेशतः तां धूपायित्वा देवस्य वामभागे धूपपात्रं निधाय शंखजलमुत्सृजेत् ॥ इति धूपम् ॥ १ ॥ ततः दीपपात्रं गोघृतेनापूर्य मंत्राक्षरतंतुभिर्वर्ती निक्षिप्य प्रणवेन (ॐ) प्रज्वाल्य घंटां वादयन् नेत्रादिपादपर्यंतं दीपं प्रदर्शयेत्॥"ॐ सुप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः॥ स बाह्याभ्यंतरज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्" ॥ १॥ मूलं पठित्वा ॐभू० सां० दीपं समर्पयामि॥इति पठित्वा देवस्य दक्षिणभागे निधाय शंखजलमुत्सृज्य मध्यमांगुष्ठलग्ने दीपमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥२॥ ततो देवस्याग्रे देवदक्षिणतो वा जलेन चतुरस्रं मंडलं कृत्वा स्वर्णादिनिर्मितं भोजनपात्रं संस्थाप्य तन्मध्ये षड्रसोपेतं विविधप्रकारं नैवेद्यं निधाय " ॐ ह्रीं नमः " इत्यर्घ्यजलेन प्रोक्ष्य मूलेन संवीक्ष्य अधोमुखदक्षिणहस्तोपरि तादृशं वामं निधाय नैवेद्येनाच्छाद्य (ॐ यँ) इति वायुबीजेन षोडशधा संजप्य वायुना तद्गतदोषान् संशोष्य ततो दक्षिणकरतले तत्पृष्ठलग्नं वामकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य (ॐ रं)इति वह्निबीजेन षोडशवारं संजप्य तदुत्पन्नाग्निना तद्दोषं दग्ध्वा ततो वामकरतले (ॐ वं) इति अमृतबीजं विचिंत्य तत्पृष्ठलग्नं दक्षिणकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य (ॐ वं) इति सुधाबीजं षोडशवारं संजप्य तदुत्थामृतधारया प्लावितं विभाव्य मूलेन प्रोक्ष्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य मूलेनाष्टधाभिमंत्र्य गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य देवस्योद्गतं तेजः स्मृत्वा वामांगुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृष्ट्वा दक्षिणकरेण जलं गृहीत्वा "ॐ सत्पात्रसिद्धं सुहविर्विविधानेकभक्षणम् ॥ निवेदयामि देवेश सानुगाय गृहाण तत्॥१॥" मूलं पठित्वा ॐ भू० सां० नैवेद्यं समर्पयामि इति भूतले देवदक्षिणे जलं क्षिप्त्वा वामहस्तेन अनामामूलयोरंगुष्ठयोगे ग्रासमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इति नैवेद्यम् ॥ ३ ॥ " ॐ नमस्ते देव

देवेश सर्वतृप्तिकरं परम् ॥ परमानन्दपूर्ण त्वं गृहाण जलमुत्तमम्" ॥ १ ॥ इति जलम् ॥ ४ ॥ "ॐ उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वापि यस्य स्मरण मात्रतः ॥ शुद्धिमाप्नोति तस्मै ते पुनराचमनीयकम्" ॥ २ ॥ इत्याचमनं दत्त्वा मूलेन गंडूषार्थं जलं दद्यात् ॥ ५ ॥ "ॐ पूगीफलं मह द्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ॥ एलाचूर्णादिकैर्युक्तं तांबूलं प्रतिगृह्यताम्" ॥ ३ ॥ इति तांबूलम् ॥ ६ ॥ "ॐ इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव ॥ तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि" ॥१॥ इति फलम् ॥७॥ "ॐ कदलीगर्भसंभूतं कर्पूरं च प्रदीपितम् ॥ आरार्तिक्य महं कुर्वे पश्य मे वरदो भव" ॥ १ ॥ इति कर्पूरार्तिक्यम् ॥ ८ ॥ "ॐ यानि कानि च पापानि जन्मांतरकृतानि वै ॥ तानि सर्वाणि नश्यंतु प्रदक्षिणपदे पदे ॥ १ ॥" इति सप्तप्रदक्षिणाः कृत्वा "ॐ प्रपन्नं पाहि मामीश भीतं मृत्युग्रहार्णवात्" ॥ इति वदन् साष्टांगं प्रणमेत् ॥९॥ "ॐ नानासुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च ॥ पुष्पांजलिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥१॥" इति पुष्पांजलिः ॥१०॥ इति पुष्पांजलिं दत्त्वा ततः स्तुतिपाठेन स्तुत्वा बद्धांजलिः प्रार्थयेत् ॥ तद्यथा—"ॐ ज्ञानतोऽज्ञानतो वाथ यन्मया क्रियते शिवः ॥ मम कृत्यमिदं सर्वमिति देव क्षमस्व मे" ॥१॥ अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ॥ दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥२॥ अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे ॥ कोऽपरः सहतां लोके केवलं स्वामिनं विना ॥३॥ भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलंबनम् ॥ त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं शिव ॥४॥ इति बद्धांजलिः संप्रार्थ्य "ॐ यदुक्तं यदि भावेन पत्रं पुष्पं फलं जलम् ॥ निवेदितं च नैवेद्यं गृहाण मानुकंपय ॥ १॥" इति पठित्वा देवस्य दक्षिणकरे पूजार्पणजलं दद्यात् ॥ ततो मालामादाय सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण मालायाः संस्कारान् कृत्वा अशक्तश्चेत् "ॐ ह्रीं माले माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ॥ चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥ १ ॥" इति मालां संप्रार्थ्य "ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं सर्वकार्येषु सर्वदा" इति मंत्रेण दक्षिणहस्ते मालामादाय हृदये धारयन् स्वेष्टदेवतां ध्यात्वा मध्यमांगुलिमध्यपर्वणि संस्थाप्य ज्येष्ठाग्रेण भ्रामयित्वा एकाग्रचित्तो मंत्रार्थं स्मरन् यथाशक्ति प्रातःकालमारभ्य मध्यंदिनं यावत् मूलमंत्रं जपेत् ॥ नित्यमेवं समाना जपाः कार्याः । न तु न्यूनाधिकाः । ततो जपांते "ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा मम ॥ शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च

सर्वदा ॥ तेन सत्येन सिद्धिं मे देहि मातर्नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥” ॐ ह्रीं सिद्ध्यै नमः। इति मालां शिरसि निधाय गोमुखीरहस्ये स्थापयेत्। नाशुचिः स्पर्शयेत्। नान्यस्मै दद्यात्। अशुचिस्थाने न निधापयेत्। स्वयोनिवद्गुप्तां कुर्यात् ॥ ततः। कवचस्तोत्रसहस्रनामादिकं पठित्वा पुनः मूलमंत्रोक्तऋष्यादिन्यासं हृदयादिषडंगन्यासं च कृत्वा पंचोपचारैः संपूज्य पुष्पांजलिं च दत्त्वा जपार्पणं कुर्यात् ॥तद्यथा अर्घ्योदकेन चुलुकमादाय ॥ “ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात्त्वयि स्थितिः ॥ १ ॥” इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्म्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुर्यावस्थासु वाचा मनसा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत् स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा ॥ मदीयं च सकलं श्रीसूर्य्यनारायणायार्पयामि ॥ ॐ तत्सदिति ब्रह्मार्पणं भवतु इति देव दक्षिणकरे जलसमर्पणं कृत्वा कृतांजलिपूर्वकक्षमापनं पठेत् ॥ तथा च—“ॐ आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ॥पूजाभागं न जानामि त्वं गतिः परमेश्वर ॥ १ ॥ मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ॥ यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ २ ॥ यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ॥ तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥३ ॥कर्मणा मनसा वाचा त्वत्तो नान्या गतिर्मम ॥ अंतश्चरेण भूतानि इष्टस्त्वं परमेश्वर ॥ ४ ॥ अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ॥ तस्मात्कारुण्यभावेन क्षमस्व परमेश्वर ॥ ५ ॥ प्रातर्योनिसहस्राणां सहस्रेषु व्रजाम्यहम् ॥ तेषुतेष्वचला भक्तिरच्युतेऽस्तु सदा त्वयि ॥ ६ ॥ गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च ॥ आगता सुखसंपत्तिः पुण्याच्च तव दर्शनात् ॥ ७ ॥ देवो दाता च भोक्ता च देवरूपमिदं जगत् ॥ देवं जपति सर्वत्र यो देवः सोऽहमेव हि ॥ ८ ॥ क्षमस्व देवदेवेश क्षम्यते भुवनेश्वर ॥ तव पादाम्बुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे ॥ ९ ॥” इति कृतांजलिः प्रार्थयित्वा शंखजलमुद्धृत्य देवोपरि भ्रामयित्वा “साधु वाऽसाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया॥ तत्सर्वं कृपया देव गृहाणाराधनं मम ॥ १॥”इत्युच्चरन् देवस्य दक्षिणहस्ते किंचिज्जलं दत्त्वा प्राग्वदर्घ्यं देवाशिरसि दत्त्वा शंखं यथास्थानं निवेशयेत् ॥ ततो गतसारनैवेद्यं देवस्योच्छिष्टं किंचिदुद्धृत्य ॐ चंडांशवे नमः इति चंडांशुं संपूज्य इत्युच्छिष्टाधिकारिणे ऐशान्यां दिशि दद्यात् ॥ तच्छेषनैवेद्यं शिरसि धृत्वा देवभक्तेषु

विभज्य स्वयं भुक्त्वा विसर्जनं कुर्यात्॥तद्यथा ॥ "ॐ गच्छ गच्छ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर॥ पूजाराधनकाले च पुनरागमनाय च॥१॥"
इत्यक्षतान् निक्षिप्य विसर्जनं कृत्वा "ॐ तिष्ठ तिष्ठ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर ॥ यत्र ब्रह्मादयो देवाः सर्वे तिष्ठंति मे हृदि ॥ १ ॥"
इति हृदयकमले हस्तं दत्त्वा स्वहृदये संस्थाप्य मानसोपचारैः संपूज्य स्वात्मानं देवरूपं भावयन् यथासुखं विहरेत् ॥ एवमेव विधिना जपं समाप्य सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण तत्तद्दशांशहोमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् ॥इति सूर्य्यनारायणपूजापद्धतिः समाप्ता॥

अथ सूर्य्यकवचप्रारंभः ॥ श्रीसूर्य उवाच॥ साम्ब साम्ब महाबाहो शृणु मे कवचं शुभम्॥ त्रैलोक्यमंगलं नाम कवचं परमाद्भुतम्॥१॥ यज्ज्ञात्वा मंत्रवित्सम्यक् फलमाप्नोति निश्चितम् ॥ यद्धृत्वा च महादेवो गणानामधिपोऽभवत् ॥२॥ पठनाद्धारणाद्विष्णुः सर्वेषां पालकः सदा ॥ एवमिंद्रादयः सर्वे सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः ॥ ३॥ कवचस्य ऋषिर्ब्रह्मा छन्दोऽनुष्टुबुदाहृतम् ॥ श्रीसूर्यो देवता चात्र सर्वदेवनमस्कृतः ॥ ॥ ४ ॥ आरोग्ययशोमोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ प्रणवो मे शिरः पातु घृणिर्मे पातु भालकम् ॥ ५ ॥ सूर्य्योऽव्यान्नयनद्वंद्वमादित्यः कर्णयुग्मकम् ॥ अष्टाक्षरो महामंत्रः सर्वाभीष्टफलप्रदः ॥ ६ ॥ ह्रीं बीजं मे शिखां पातु हृदये भुवनेश्वरः ॥ चन्द्रबीजं विसर्गाढ्यं पातु मे गुह्यदेशकम् ॥ ७ ॥ त्र्यक्षरोऽसौ महामंत्रः सर्वतंत्रेषु गोपितः ॥ शिवो वह्निसमायुक्तो वामाक्षिबिंदुभूषितः ॥ ८ ॥ एकाक्षरो महा मंत्रः श्रीसूर्यस्य प्रकीर्तितः ॥ गुह्याद्गुह्यतरो मंत्रो वांछाचिंतामणिः स्मृतः ॥९॥ शीर्षादिपादपर्यंतं सदा पातु मनूत्तमः ॥ इति ते कथितं दिव्यं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ॥ १० ॥ श्रीप्रदं कांतिदं नित्यं धनारोग्यविवर्धनम् ॥ कुष्ठादिरोगशमनं महाव्याधिविनाशनम् ॥ ११ ॥ त्रिसंध्यं यः पठेन्नित्यमरोगी बलवान्भवेत् ॥ बहुना किमिहोक्तेन यद्यन्मनसि वर्तते ॥ १२ ॥ तत्तत्सर्वं भवत्येव कवचस्य च धारणात् ॥ भूतप्रेतपिशाचाश्च यक्षगंधर्वराक्षसाः ॥ १३ ॥ ब्रह्मराक्षसवेताला नैव द्रष्टुमपि क्षमाः ॥ दूरादेव पलायंते तस्य संकीर्तनादपि ॥ १४ ॥ भूर्जपत्रे समालिख्य रोचनागुरुकुंकुमैः ॥ रविवारे च संक्रांत्यां सप्तम्यां च विशेषतः ॥ १५ ॥ धारयेत्साधकश्रेष्ठस्त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥ त्रिलोहमध्यगं कृत्वा धारयेद्दक्षिणे भुजे ॥ १६ ॥ शिखायामथवा कंठे सोऽपि सूर्य्यो न संशयः ॥ इति ते कथितं साम्ब

त्रैलोक्ये मंगलाभिधम् ॥१७॥ कवचं दुर्लभं लोके तव स्नेहात्प्रकाशितम्॥ अज्ञात्वा कवचं दिव्यं यो जपेत्सूर्यमुत्तमम् ॥ सिद्धिर्न जायते
तस्य कल्पकोटिशतैरपि ॥ १८॥ इति ब्रह्मयामले त्रैलोक्यमंगलं नाम श्रीसूर्यकवचं समाप्तम् ॥ ॥ अथ सूर्यस्तवराजप्रारंभः ॥ वसिष्ठ
उवाच ॥ स्तुवंस्तत्र ततः साम्बः कृशो धमनिसंततः ॥ राजन्नामसहस्रेण सहस्रांशुं दिवाकरम् ॥ १ ॥ खिद्यमानं तु तं दृष्ट्वा सूर्यः कृष्णा
त्मजं तदा॥ स्वप्ने तु दर्शनं दत्त्वा पुनर्वचनमब्रवीत्॥२॥श्रीसूर्य उवाच॥साम्ब साम्ब महाबाहो श्रृणु जाम्बवतीसुत॥ अलं नामसहस्रेण
पठ स्तवमिमं शुभम् ॥ ३ ॥ यानि नामानि गुह्यानि पवित्राणि शुभानि च ॥ तानि ते कीर्तयिष्यामि श्रुत्वा वत्सावधारय ॥ ४ ॥
विकर्तनो विवस्वांश्च मार्तंडो भास्करो रविः ॥ ५ ॥ लोकप्रकाशकः श्रीमाँल्लोकचक्षुर्ग्रहेश्वरः ॥ लोकसाक्षी त्रिलोकेशः कर्ता हर्ता तमि
स्रहा ॥ ६ ॥ तपनस्तापनश्चैव शुचिः सप्ताश्ववाहनः ॥ गभस्तिहस्तो ब्रध्नश्च सर्वदेवनमस्कृतः ॥ ७ ॥ एकविंशतिरित्येष स्तव
इष्टः सदा मम ॥ देहारोग्यकरश्चैव धनवृद्धियशस्करः ॥ ८ ॥ स्तवराज इति ख्यातस्त्रिषु लोकेषु विश्रुतः ॥ य एतेन महा
बाहो द्वे संध्ये स्तवनोदये ॥ ९ ॥ स्तौति मां प्रणतो भूत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ कायिकं वाचिकं चैव मानसं यच्च दुष्कृतम्
॥ १० ॥ एतज्जाप्येन तत्सर्वं प्रणश्यति न संशयः ॥ एष जप्यश्च होमश्च संध्योपासनमेव च ॥ ११ ॥ बलिमंत्रोऽर्घमंत्रश्च
धूपमंत्रस्तथैव च ॥ अन्नप्रदाने स्नाने च प्रणिपाते प्रदक्षिणे ॥ पूजितोऽयं महामंत्रः सर्वपापहरः शुभः ॥ १२ ॥
एवमुक्त्वा तु भगवान् भास्करो जगदीश्वरः ॥ आमंत्र्य कृष्णतनयं तत्रैवांतरधीयत ॥ १३ ॥ सांबोऽपि स्तवराजेन स्तुत्वा
सप्ताश्ववाहनम् ॥ पूतात्मा नीरुजः श्रीमांस्तस्माद्रोगाद्विमुक्तवान् ॥ १४ ॥ इति साम्बपुराणे सूर्यस्तवराजः समाप्तः ॥ शुभम् ॥
अथ सूर्यस्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रप्रारंभः ॥ धौम्य उवाच ॥ ॐ सूर्योऽर्यमा भगस्त्वष्टा पूषार्कः सविता रविः ॥ गभस्तिमानजः
कालो मृत्युर्दाता प्रभाकरः ॥ १ ॥ पृथिव्यापश्च तेजश्च खं वायुश्च परायणम् ॥ सोमो बृहस्पतिः शुक्रो बुधोऽङ्गारक एव च ॥ २ ॥
इन्द्रो विवस्वान्दीप्तांशुः शुचिः सौरिः शनैश्वरः ॥ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कंदो वै वरुणो यमः ॥ ३ ॥ वैद्युतो जाठरश्चाग्निरैंधन

स्तेजसांपतिः ।। धर्म्मध्वजो वेदकर्ता वेदाङ्गो वेदवाहनः ॥ ४ ॥ कृतं त्रेता द्वापरश्च कालिः सर्वमलाश्रयः ॥ कला काष्ठा मुहूर्तश्च क्षपा यामस्तथा क्षणः ॥ ५ ॥ संवत्सरकरोऽश्वत्थः कालचक्रो विभावसुः ॥ पुरुषः शाश्वतो योगी व्यक्ताव्यक्तः सनातनः ॥ ६ ॥ कालाध्यक्षः प्रजाध्यक्षो विश्वकर्मा तमोनुदः ॥ वरुणः सागरांशश्च जीमूतो जीवनारिहा ॥ ७ ॥ भूताश्रयो भूतपतिः सर्वलोकनमस्कृतः ॥ स्रष्टा संवर्तको वह्निः सर्वस्यादिरलोलुपः ॥ ८ ॥ अनंतः कपिलो भानुः कामदः सर्वतोमुखः ॥ जयो विशालो वरदः सर्वधातुनिषेवितः ॥ ९ ॥ मनः सुपर्णो भूतादिः शीघ्रगः प्राणधारणः ॥ धन्वंतरिर्धूमकेतुरादिदेवोऽदितेः सुतः ॥ १० ॥ द्वादशात्माऽरविंदाक्षः पिता माता पितामहः ॥ प्रजाद्वारं सर्गद्वारं मोक्षद्वारं त्रिविष्टरम् ॥ ११ ॥ दाहकर्ता प्रशांतात्मा बिश्वात्मा विश्वतोमुखः ॥ चराचरात्मा सूक्ष्मात्मा मैत्रेयः करुणान्वितः ॥ १२ ॥ एतद्वै कीर्तनीयस्य सूर्यस्यामिततेजसः ॥ नामाष्टशतकं चेदं प्रोक्तमेतत्स्वयंभुवा ॥ १३ ॥ सुरगणपितृयक्षसेवितं ह्यसुरनिशाचरसिद्धवंदितम् ॥ वरकनकहुताशनप्रभं प्रणिपतितोऽस्मि हिताय भास्करम् ॥ १४ ॥ सूर्य्योदये यः सुसमाहितः पठेत्स पुत्रदारान्धनरत्नसंचयम् ॥ लभेत जातिस्मरतां नरः सदा धृतिं च मेधां च स विंदते पुमान् ॥ १५ ॥ इमं स्तवं देववरस्य यो नरः प्रकीर्तयेच्छुद्धमनाः समाहितः ॥ विमुच्यते शोकदवाग्निसागराल्लभेत कामान्मनसा यथेप्सितान् ॥ १६ ॥ इति श्रीमहाभारते वनपर्वणि धौम्ययुधिष्ठिरसंवादे श्रीसूर्यस्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥ अथ आदित्यहृदयप्रारंभः ॥ ततो युद्धपरिश्रांतं समरे चिंतया स्थितम् ॥ रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम् ॥ १॥ दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम् ॥ उपगम्याब्रवीद्राममगस्त्यो भगवांस्तदा ॥२॥ राम राम महा बाहो शृणु गुह्यं सनातनम्॥ येन सर्वानरीन्वत्स समरे विजयिष्यसे ॥३॥ आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम् ॥ जयावहं जपेन्नित्यमक्षयं परमं शिवम् ॥ ४ ॥ सर्वमंगलमांगल्यं सर्वपापप्रणाशनम् ॥ चिंताशोकप्रशमनमायुर्वर्द्धनमुत्तमम् ॥ ५ ॥ रश्मिमंतं समुद्यंतं देवासुरनमस्कृतम् ॥ पूजयस्व विवस्वंतं भास्करं भुवनेश्वरम् ॥ ६॥ सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः॥ एष देवासुरगणाँल्लोकान्पाति गभस्तिभिः ॥ ७ ॥ एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कंदः प्रजापतिः ॥ महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो

ह्यपांपतिः ॥ ८ ॥ पितरो वसवः साध्या अश्विनौ मरुतो मनुः ॥ वायुर्वह्निः प्रजाप्राण ऋतुकर्ता प्रभाकरः ॥ ९ ॥ आदित्यः सविता
सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान् ॥ सुवर्णसदृशो भानुर्हिरण्यरेता दिवाकरः ॥ १० ॥ हरिदश्वः सहस्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान् ॥ तिमि
रोन्मथनः शंभुस्त्वष्टा मार्तण्डकोंऽशुमान् ॥ ११ ॥ हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनोऽहस्करो रविः ॥ अग्निगर्भोऽदितेः पुत्रः शंखः शिशिर
नाशनः ॥ १२ ॥ व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुःसामपारगः ॥ घनवृष्टिरपांमित्रो विन्ध्यवीथीप्लवंगमः ॥ १३ ॥ आतपी मंडली
मृत्युः पिङ्गलः सर्वतापनः ॥ कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः ॥ १४ ॥ नक्षत्रग्रहताराणामधिपो विश्वभावनः ॥ तेजसामपि
तेजस्वी द्वादशात्मन्नमोऽस्तु ते ॥ १५ ॥ नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः ॥ ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः ॥ १६ ॥
जयाय जयभद्राय हर्य्यश्वाय नमो नमः ॥ नमो नमः सहस्रांशो आदित्याय नमो नमः ॥ १७ ॥ नम उग्राय वीराय सारङ्गाय नमो
नमः ॥ नमः पद्मप्रबोधाय प्रचण्डाय नमोऽस्तु ते ॥ १८ ॥ ब्रह्मेशानाच्युतेशाय शूरायादित्यवर्चसे ॥ भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे
नमः ॥ १९ ॥ तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने ॥ कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः ॥ २० ॥ तप्तचामीकराभाय
हरये विश्वकर्मणे ॥ नमस्तमोऽभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे ॥ २१ ॥ नाशयत्येष वै भूतं तमेव सृजति प्रभुः ॥ पात्येष च तपत्येष
वर्षत्येष गभस्तिभिः ॥ २२ ॥ एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः ॥ एष चैवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम् ॥ २३ ॥
देवाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च ॥ यानि कृत्यानि लोकेषु सर्वेषु परमः प्रभुः ॥ २४ ॥ एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कांतारेषु भयेषु च ॥
कीर्तयन्पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघव ॥ २५ ॥ पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम् ॥ एतत्त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यसे ॥ २६ ॥
अस्मिन्क्षणे महाबाहो रावणं त्वं जयिष्यसि ॥ एवमुक्त्वा ततोऽगस्त्यो जगाम स यथागतम् ॥ २७ ॥ एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभ
वत्तदा ॥ धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान् ॥ २८ ॥ आदित्यं वीक्ष्य जप्त्वेदं परं हर्षमवाप्तवान् ॥ त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनु
रादाय वीर्य्यवान् ॥ २९ ॥ रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा जयार्थं समुपागतम् ॥ सर्वयत्नेन महता वृतस्तस्य वधेऽभवत् ॥ ३० ॥ अथ रविरव

शिरोस्य रामं मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः ॥ निशिचरपतिसंक्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति ॥ ३१ ॥ इति वाल्मीकीये श्रीमद्रामायणे आदित्यहृदयस्तोत्रं समाप्तम्॥अथ सूर्यसहस्रनामस्तोत्रप्रारंभः॥सुमंतुरुवाच॥माघे मासि सिते पक्षे सप्तम्यां कुरुनन्दन॥ निराहारो रविं भक्त्या पूजयेद्विधिना नृप ॥ १ ॥ पूर्वोक्तेन जपेज्जाप्यं देवस्य पुरतः स्थितः॥ शुद्धैकाग्रमना राजञ्जितक्रोधो जितेन्द्रियः ॥ २ ॥ शतानीक उवाच ॥ केन मंत्रेण जप्तेन दर्शनं भगवान् व्रजेत् ॥ स्तोत्रेण वापि सविता तन्मे कथय सुव्रत ॥ ३ ॥ सुमंतुरुवाच ॥ स्तुतो नामसहस्रेण यदा भक्तिमता मया ॥ तदा मे दर्शनं यातः साक्षाद्देवो दिवाकरः ॥४॥ शतानीक उवाच ॥ नाम्नां सहस्रं सवितुः श्रोतुमिच्छामि ते द्विज ॥ येन ते दर्शनं यातः साक्षाद्देवो दिवाकरः ॥ ५ ॥ सुमंतुरुवाच ॥ सर्वमंगलमांगल्यं सर्वपापप्रणाशनम्॥ न चेदस्ति भयं किंचिद्यजनेन च शाम्यति ॥ ६ ॥ ज्वराद्विमुच्यते राजन्स्तोत्रेऽस्मिन्पठिते नरः ॥ अन्ये च रोगाः शाम्यंति पठतः शृण्वत स्तथा ॥ ७ ॥ संपद्यंते यथाकामाः सर्वभोगा यथेप्सिताः ॥ य एतदादितः श्रुत्वा संग्रामं प्रविशेन्नरः ॥८॥ स जित्वा समरे शत्रूनभ्येति गृहमक्षतः ॥ वंध्यानां पुत्रजननं भीतानां भयनाशनम् ॥ ९॥ भूतिकारि दरिद्राणां कुष्ठिनां परमौषधम् ॥ बालानां चैव सर्वेषां ग्रहरक्षो निवारणम् ॥ १० ॥ पठेदेतद्धि यो राजन् स श्रेयः परमाप्नुयात् ॥ स सिद्धसर्वसंकल्पः सुखमत्यंतमश्नुते ॥ ११ ॥ धर्मार्थिभिर्द्धर्म्म लब्ध्यै सुखाय च सुखार्थिभिः ॥ राज्याय राज्यकामैश्च पठितव्यमिदं नरैः ॥ १२ ॥ विद्यावहं तु विप्राणां क्षत्रियाणां जयावहम् ॥ पश्वावहं तु वैश्यानां शूद्राणां धर्म्मवर्द्धनम् ॥ १३ ॥ पठतां शृण्वतामेतद्भवतीति न संशयः॥तच्छृणुष्व नृपश्रेष्ठ प्रयतात्मा ब्रवीमि ते ॥ नाम्नां सहस्रं विख्यातं देवदेवस्य भास्वतः ॥ १४ ॥ ॐ अस्य श्रीसूर्यसहस्रनाम्नां भगवान् पराशर ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । श्रीसूर्य्यो देवता । सकलाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ विश्वविद्विश्वजित्कर्ता विश्वात्मा विश्वतोमुखः ॥ विश्वेश्वरो विश्वयोनिर्नियतात्मा जितेन्द्रियः ॥ १ ॥ कालाश्रयः कालकर्ता कालहा कालनाशनः ॥ महायोगी महाबुद्धिर्महात्मा सुमहाबलः ॥ २ ॥ प्रभुर्विभुर्भूतनाथो भूतात्मा भुवनेश्वरः ॥ भूतभव्यो भावितात्मा भूतांतःकरणःशिवः ॥ ३ ॥ शरण्यः कमलानन्दो नन्दनो नंदवर्द्धनः ॥

वरेण्यो वरदो योगी सुसंयुक्तः प्रकाशकः ॥ ४ ॥ प्राक्प्राणः परमः प्राणः प्रीतात्मा प्रियतः प्रियः ॥ नयः सहस्रपात्साधुर्दिव्यकुण्डल
मण्डितः ॥ ५ ॥ अव्यंगधारी धीरात्मा प्रचेता वायुवाहनः ॥ समाहितमतिर्द्धाता विधाता कृतमंगलः ॥ ६ ॥ कपर्दी कल्पकृद्रुद्र
सुमना धर्मवत्सलः ॥ समायुक्तो विमुक्तात्मा कृतात्मा कृतिनां वरः ॥ ७ ॥ अविचिंत्यवपुः श्रेष्ठो महायोगी महेश्वरः ॥ कांतः
कामादिरादित्यो नियतात्मा निराकुलः ॥ ८ ॥ कामः कारुणिकः कर्ता कमलाकरबोधनः ॥ सप्तसप्तिरचिंत्यात्मा महाकारुणिको
त्तमः ॥ ९ ॥ संजीवनो जीवनाथो जगज्जीवो जगत्पतिः ॥ अजेयो विश्वनिलयः संविभागो वृषध्वजः ॥ १० ॥ वृषाकपिः कल्पकर्ता
कल्पांतकरणो रविः ॥ एकचक्ररथो मौनी सुरथो रथिनां वरः ॥ ११ ॥ अक्रोधनो रश्मिमाली तेजोराशिर्विभावसुः ॥ दिव्यकृद्दिनकृद्देवो
देवदेवो दिवस्पतिः ॥ १२ ॥ दीननाथो हविर्होता दिव्यबाहुर्दिवाकरः ॥ यज्ञो यज्ञपतिः पूषा स्वर्णरेताः परावहः ॥ १३ ॥
परापरज्ञस्तरणिरंशुमाली मनोहरः ॥ प्राज्ञः प्रजापतिः सूर्यः सविता विष्णुरंशुमान् ॥ १४ ॥ सदागतिर्गंधबाहुर्विहितो विधिराशुगः ॥
पतंगः पतगः स्थाणुर्विहङ्गो विहगो वरः ॥ १५ ॥ हर्य्यश्वो हरिताश्वश्च हरिदश्वो जगत्प्रियः ॥ त्र्यंबकः सर्वदमनो भावितात्मा भिषग्वरः
॥ १६ ॥ आलोककृल्लोकनाथो लोकालोकनमस्कृतः ॥ कालः कल्पांतको वह्निस्तपनः संप्रतापनः ॥ १७ ॥ विरोचनो विरूपाक्षः सहस्राक्षः
पुरंदरः ॥ सहस्ररश्मिर्मिहिरो विविधांबरभूषणः ॥ १८ ॥ खगः प्रतर्दनो धन्यो हयगो वाग्विशारदः ॥ श्रीमांश्च शिशिरो वाग्मी श्रीपतिः
श्रीनिकेतनः ॥ १९ ॥ श्रीकंठः श्रीधरः श्रीमान् श्रीनिवासो वसुप्रदः ॥ कामचारी महामायो महेशो विदिताशयः ॥ २० ॥ तीर्थक्रियावान्
सुनयो विभवो भक्तवत्सलः ॥ कीर्तिः कीर्तिकरो नित्यः कुंडली कवची रथी॥२१॥ हिरण्यरेताः सप्ताश्वः प्रयतात्मा परंतपः ॥बुद्धिमानमर
श्रेष्ठो रोचिष्णुः पाकशासनः ॥ २२ ॥ समुद्रो धनदो धाता मान्धाता कश्मलापहः ॥ तमोघ्नो ध्वांतहा वह्निर्होतांतःकरणो गुहः ॥ २३ ॥
पशुमान्प्रयतानन्दो भूतेशः श्रमितां वरः॥नित्योदितो नित्यरथः सुरेशः सुरपूजितः ॥२४॥ अजितो विजयो जेता जंगमस्थावरात्मकः ॥
जीवानन्दो नित्यगामी विजेता विजयप्रदः॥२५॥ पर्जन्योऽग्निस्थितिः स्थेयः स्थविरोऽणुर्निरंजनः ॥ प्रद्योतनो रथारूढः सर्वलोकप्रकाशकः॥

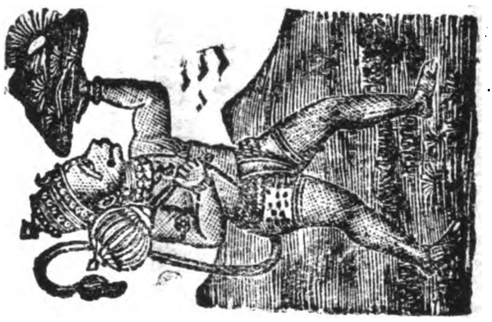
॥ २६ ॥ ध्रुवो मेधी महावीर्य्यो हंसः संसारतारकः ॥ सृष्टिकर्ता क्रियाहेतुर्मार्त्तण्डो मरुतां पतिः ॥ २७ ॥ मरुत्वान्दहनस्त्वष्टा भगो
भाग्योऽर्य्यमा पतिः ॥ वरुणांशो जगन्नाथः कृत्यकृत्यः सुलोचनः ॥ २८ ॥ विवस्वान् भानुमान् कार्यकारणं तेजसांनिधिः ॥ असंगगामी
तिग्मांशुर्धर्मादिर्दीप्तदीधितिः ॥ २९ ॥ सहस्रदीधितिर्ब्रध्नः सहस्रांशुर्दिवाकरः॥ गभस्तिमान् दीधितिमान् स्रग्विमानतुलद्युतिः॥ ३० ॥
भास्करः सुरकार्य्यज्ञः सर्वज्ञस्तीक्ष्णदीधितिः ॥ सुरज्येष्ठः सुरपतिर्बहुज्ञो वचसां पतिः ॥ ३१ ॥ तेजोनिधिर्बृहत्तेजा बृहत्कीर्तिर्बृहस्पतिः ॥
आहिमानूर्जितो धीमानामुक्तः कीर्तिवर्द्धनः ॥३२॥ महावैद्यो गणपतिर्गणेशो गणनायकः ॥ तीव्रप्रतापनस्तापी तापनो विश्वतापनः॥३३॥
कार्त्तस्वरो हृषीकेशः पद्मानन्दोऽभिनंदितः ॥ पद्मनाभोऽमृताहारः स्थितिमान्केतुमान्नभः॥३४॥ अनाद्यंतोऽच्युतो विश्वो विश्वामित्रो घृणी
विराट् ॥ आमुक्तः कवची वाग्मी कंचुकी विश्वभावनः॥ ३५ ॥ अनिमित्तगतिः श्रेष्ठः शरण्यः सर्वतोमुखः॥ विगाही रेणुरसहः समायुक्तः
समाहितः ॥ ३६ ॥ धर्मकेतुर्धर्मरतिः संहर्ता संयमो यमः ॥ प्रणतार्तिहरो वादी सिद्धकार्यो जनेश्वरः ॥ ३७ ॥ नभोविगाहनः सत्यस्ता
मसः सुमनोहरः॥हारी हरिर्हरो वायुर्ऋतुः कालानलद्युतिः॥३८॥सुखसेव्यो महातेजा जगतामंतकारणम्॥महेन्द्रो विष्टुतः स्तोत्रं स्तुतिहेतुः
प्रभाकरः ॥ ३९ ॥ सहस्रकर आयुष्मानरोषः सुखदः सुखी ॥ व्याधिहा सुखदः सौख्यं कल्याणः काल्पिनां वरः ॥ ४० ॥ आरोग्यकर्मणां
सिद्धिर्वृद्धिर्ऋद्धिरहस्पतिः॥हिरण्यरेता आरोग्यं विद्वान्बंधुर्बुधो महान्॥४१॥प्रणवान्धृतिमान्धर्मो धर्मकर्ता रुचिप्रदः॥सर्वप्रियः सर्वसहः सर्व
शत्रुनिवारणः ॥ ४२ ॥ प्रांशुर्विद्योतनो द्योतः सहस्राकिरणः कृतिः ॥ केयूरभूषणोद्भासी भासितो भासनोऽनलः ॥ ४३ ॥ शरण्यार्तिहरो
होता खद्योतः खगसत्तमः ॥ सर्वद्योतो भवद्योतः सर्वद्युतिकरोऽमलः ॥४४ ॥ कल्याणः कल्याणकरः कल्पः कल्पकरः कविः ॥ कल्याण
कृत्कल्पवपुः सर्वकल्याणभाजनः॥४५॥शांतिप्रियः प्रसन्नात्मा प्रशान्तः प्रशमप्रियः ॥उदारकर्मा सुनयः सुवर्चा वर्चसोज्ज्वलः॥४६॥वर्चस्वी
वर्चसामीशस्त्रैलोक्येशो वशानुगः ॥ तेजस्वी सुयशा वर्णिवर्णाध्यक्षो वलिप्रियः ॥ ४७ ॥ यशस्वी वेदनिलयस्तेजस्वी प्रकृतिस्थितः ॥
आकाशगः शीघ्रगतिराशुगः श्रुतिमान् खगः ॥४८॥ गोपतिर्ग्रहदेवेशो गोमानेकः प्रभंजनः॥जनिता प्रजनं जीवो दीपः सर्वप्रकाशकः॥४९॥

कर्मसाक्षी योगनित्यो नभस्वानसुरांतकः॥ रक्षोघ्नो विघ्नशमनः किरीटी सुमनःप्रियः॥५०॥ मरीचिमाली सुमतिः कृतातिथ्यो विशेषतः ॥
शिष्टाचारः शुभाचारः स्वाचाराचारतत्परः॥५१॥मंदारो माठरो रेणुः क्षोभणः पक्षिणां गुरुः॥ स्वविशिष्टो विशिष्टात्मा विधेयो ज्ञानशोभनः
॥ ५२ ॥ महाश्वेताप्रियो ज्ञेयः सामगो मोददायकः ॥ सर्ववेदप्रगीतात्मा सर्ववेदालयोऽलयः॥ ५३ ॥ वेदमूर्तिश्चतुर्वेदो वेदभृद्वेदपारगः ॥
क्रियावानतिरोचिष्णुर्वरीयांश्च वरप्रदः ॥५४॥ व्रतचारी व्रतधरो लोकबंधुरलंकृतः ॥ अलंकाराक्षरो दिव्यविद्यावान् विदिताशयः ॥ ५५ ॥
अकारो भूषणो भूष्यो भूष्णुर्भुवनपूजितः ॥ चक्रपाणिर्वज्रधरः सुरेशो लोकवत्सलः ॥ ५६ ॥ राज्ञीपतिर्महाबाहुः प्रकृतिर्विकृतिर्गुणः ॥
अंधकारापहः श्रेष्ठो युगावर्तो युगादिकृत ॥५७॥ अप्रमेयः सदायोगी निरहंकार ईश्वरः ॥ शुभप्रदः शुभः शोभा शुभकर्मा शुभास्पदः॥ ५८॥
सत्यवान्धृतिमानर्च्यो ह्यकारो वृद्धिदोऽनलः ॥ बलभृद्बलदो बंधुर्बलवान् बलिनां वरः ॥ ५९ ॥ अनङ्गो नागराडिन्द्रः पद्मयोनिर्गणेश्वरः ॥
संवत्सर ऋतुर्नेता कालचक्रप्रवर्तकः ॥६०॥ पद्मेश्वरः पद्मयोनिः प्रभवोनसरद्युतिः ॥ सुमूर्तिः सुमतिः सोमो गोविंदो जगदादिजः॥ ६१ ॥
पीतवासाः कृष्णवासा दिग्वासातीन्द्रियो हरिः ॥ अतीन्द्रोऽनेकरूपात्मा स्कंदः परपुरंजयः ॥ ६२ ॥ शक्तिमान् शूलधृग्भास्वान् मोक्षहेतु
रयोनिजः ॥ सर्वदर्शोऽजितोऽदर्शो दुःस्वप्नाशुभनाशनः ॥ ६३ ॥ मंगल्यकर्ता तरणिर्वेगवान् कश्मलापहः ॥ स्पष्टाक्षरो महामंत्रो विशाखो
यजनप्रियः ॥ ६४ ॥ विश्वकर्मा महाशक्तिर्ज्योतिरीशो विहंगमः॥ विचक्षणो दक्ष इन्द्रः प्रत्यूहः प्रियदर्शनः ॥ ६५ ॥ अश्विनौ वेदनिलयो
वेदविद्विदिताशयः॥ प्रभाकरो जितरिपुः सुजनोऽरुणसारथिः ॥६६॥ कुबेरसुरथः स्कंदो महितोऽभिहितो गुरुः ॥ ग्रहराजो ग्रहपतिर्ग्रहनक्षत्र
मंडनः ॥ ६७ ॥ भास्करः सततानंदो नन्दनो नंदिवर्द्धनः ॥ मंगलो वै मंगलवान् मंगल्यो मंगलापहः ॥ ६८ ॥ मंगलाचारचरितः शीर्णः
सर्वव्रतो व्रती ॥ चतुर्मुखः पद्ममाली पूतात्मा प्रणतार्तिहा॥६९॥ अकिंचनः सत्यसंधो निर्गुणो गुणवान्गुणी ॥ संपूर्णः पुंडरीकाक्षो विधेयो
योगतत्परः ॥ ७० ॥ सहस्रांशुः क्रतुपतिः सर्वस्वं सुमतिः सुवाक् ॥ सुवाहनो माल्यदामा धृताहारो हरिप्रियः ॥ ७१ ॥ ब्रह्मप्रचेताः
प्रथितः प्रतीतात्मा स्थिरात्मकः ॥ शतबिंदुः शतमखो गरीयाननलप्रभुः ॥ ७२ ॥ धीरो महत्तरो धन्यः पुरुषः पुरुषोत्तमः ॥ विद्याधरा

धिराजो हि विद्यावान्भूतिदः स्थितः ॥ ७३ ॥ अनिर्देश्यवपुः श्रीमान् विश्वात्मा बहुमंगलः ॥ सुस्थितः सुरथः स्वर्णो
मोक्षाधारनिकेतनः ॥ ७४ ॥ निर्द्वंद्वो द्वंद्वहाऽसर्गः सर्वगः संप्रकाशकः ॥ दयालुः सूक्ष्मधीः शांतिः क्षेमाक्षेमस्थितिप्रियः ॥ ७५ ॥
भूधरो भूपतिर्वक्ता पवित्रात्मा त्रिलोचनः ॥ महावराहः प्रियकृद्दाता भोक्ताऽभयप्रदः ॥ ७६ ॥ चतुर्वेदधरो नित्यो विनिद्रो विविधाशनः
चक्रवर्ती धृतिकरः संपूर्णोऽथ महेश्वरः ॥ ७७ ॥ विचित्ररथ एकाकी सप्तसप्तिः परात्परः ॥ सर्वोदधिस्थितिकरः स्थितिः
स्थेयः स्थितिप्रियः ॥ ७८ ॥ निष्कलः पुष्करनिभो वसुमान् वासवप्रियः ॥ वसुमान् वासवस्वामी वसुदाता वसुप्रदः ॥ ७९ ॥
बलवान् ज्ञानवांस्तत्त्वमोंकारस्त्रिषु संस्थितः ॥ संकल्पयोनिर्दिनकृद्भगवान् कारणावहः ॥ ८० ॥ नीलकण्ठो धनाध्यक्षश्चतुर्वेदप्रियंवदः ॥
वषट्कारो हुतं होता स्वाहाकारो हुताहुतिः ॥८१॥ जनार्दनो जनानंदो नरो नारायणोंऽबुदः ॥ स्वर्णांगक्षपणो वायुः सुरासुरनमस्कृतः ॥८२॥
विग्रहो विमलो बिंदुर्विशोको विमलद्युतिः॥द्योतितो द्योतनो विद्वान्विविक्त्वान्वरदो बली ॥ ८३ ॥ धर्मयोनिर्महामोहो विष्णुभ्राता सनातनः ॥
सावित्रीभावितो राजा विसृतो विघृणी विराट्॥८४॥सप्तार्चिः सप्ततुरगः सप्तलोकनमस्कृतः॥संपन्नोऽथ जगन्नाथः सुमनाः शोभनप्रियः ॥८५॥
सर्वात्मा सर्वकृत्सृष्टिः सप्तिमान्सप्तमीप्रियः॥सुमेधा माधवो मेध्यो मेधावी मधुसूदनः॥८६॥अंगिरा गतिकालज्ञो धूमकेतुः सुकेतनः॥सुखी सुख
प्रदः सौख्यं कामी कांतिप्रियो मुनिः॥८७॥संतापनः संतपन आतपी तपसांपतिः ॥ उग्रश्रवाः सहस्रोस्त्रः प्रियंकारी प्रियंकरः ॥ ८८ ॥ प्रीतो
विमन्युरंभोदो जीवनो जगतांपतिः॥जगत्पिता प्रीतमनाः सर्वः शर्वो गुहाबलः॥८९॥सर्वगो जगदानंदो जगन्नेता सुरारिहा॥श्रेयः श्रेयस्करो
ज्यायानुत्तमोत्तम उत्तमः ॥ ९० ॥ उत्तमोऽथ महामेरुर्धारणो धरणीधरः ॥ धाराधरो धर्मराजो धर्माधर्मप्रवर्तकः ॥९१॥ रथाध्यक्षो रथ
पतिस्त्वरमाणोऽमितानलः ॥ उत्तरोऽनुत्तरस्तापी तारापतिरपांपतिः ॥९२ ॥ पुण्यसंकीर्तनः पुण्यो हेतुर्लोकत्रयाश्रयः ॥ स्वर्भानुर्विहगारिष्टो
विशिष्टोत्कृष्टकर्मकृत् ॥ ९३ ॥ व्याधिप्रणाशनः क्षेमः शूरः सर्वजितांवरः ॥ एकनाथो रथाधीशः शनैश्चरपिता सितः ॥ ९४ वैव
स्वतगुरुर्मृत्युर्द्धर्मनित्यो महाव्रतः ॥ प्रलंबहारः संचारी प्रद्योतो द्योतितोऽनलः ॥ ९५ ॥ संतानकृत्परो मंत्रो मंत्रमूर्तिर्महाबलः ॥ श्रेष्ठात्मा

सुप्रियः शंभुर्महतामीश्वरेश्वरः ॥ ९६ संसारगतिविच्छेत्ता संसारार्णवतारकः ॥ सप्तजिह्वः सहस्रार्ची रत्नगर्भोऽपराजितः ॥ ९७ ॥
धर्मकेतुरमेयात्मा धर्म्माधर्म्मवरप्रदः ॥ लोकसाक्षी लोकगुरुर्लोकेशश्छंदवाहनः ॥ ९८ ॥ धर्मरूपः सूक्ष्मवायुर्द्धनुष्पाणिर्द्धनुर्द्धरः ॥ पिना
कधृङ्महोत्साहो नैकमायो महाशनः॥९९॥ वीरः शक्तिमतांश्रेष्ठः सर्वशस्त्रभृतांवरः॥ ज्ञानगम्यो दुराराध्यो लोहिताङ्गोऽरिमर्दनः ॥१०० ॥
अनंतो धर्मदो नित्यो धर्मकृच्च त्रिविक्रमः॥दैवतत्रयक्षरोऽमयो नीलाङ्गो नीललोहितः॥१०१॥एकोऽनेकस्त्रयी व्यासः सविता समितिंजयः॥
शार्ङ्गधन्वाऽनलो भीमः सर्वप्रहरणायुधः ॥ १०२ ॥ परमेष्ठी परंज्योतिर्नाकपाली दिवस्पतिः ॥ वदान्यो वासुकिर्वैद्य आत्रेयोऽतिपराक्रमः
॥ १०३ ॥ द्वापरः परमोदारः परमब्रह्मचर्य्यवान् ॥ उद्दीप्तवेषो मुकुटी पद्महस्तो हिमांशुभृत् ॥ १०४ ॥ स्मितः प्रसन्नवदनः पद्मोदर
निभाननः ॥ सायंदिवादिव्यवपुरनिर्देश्यो महारथः ॥१०५ ॥ महारथो महानीशः शेषः सत्त्वरजस्तमः॥ धृतातपत्रप्रतिमो विमर्षीनिर्णयः
स्थितः ॥ १०६ ॥ अहिंसकः शुद्धमतिरद्वितीयोऽरिमर्दनः ॥ सर्वदो धनदो मोक्षविहारी बहुदायकः ॥१०७ ॥ ग्रहनाथो ग्रहपतिर्ग्रहे
शस्तिमिरापहः ॥ मनोहरवपुः शुभ्रः शोभनः सुप्रभाननः ॥१०८॥ सुप्रभः सुप्रभाकारः सुनेत्रो निक्षुभापतिः ॥ राज्ञीप्रियः शब्दकरो
ग्रहेशस्तिमिरापहः ॥ १०९ ॥ सैंहिकेयरिपुर्देवो वरदो वरनायकः ॥ चतुर्भुजो महायोगी योगीश्वरपतिस्तथा ॥ ११० ॥ अनादिरूपो
ऽदितिजो रत्नकांतिः प्रभामयः ॥ जगत्प्रदीपो विस्तीर्णो महाविस्तीर्णमण्डलः ॥ १११ ॥ एकचक्ररथः स्वर्णरथः स्वर्णशरीरधृक् ॥
निरालंबो गगनगो धर्मकर्मप्रभावकृत्॥११२॥ धर्मात्मा कर्मणां साक्षी प्रत्यक्षः परमेश्वरः॥मेरुसेवी सुमेधावी मेरुरक्षाकरो महान्॥११३॥
आधारभूतो रतिमांस्तथा च धनधान्यकृत् ॥ पापसंतापसंहर्ता मनोवांछितदायकः ॥ ११४ ॥ रोगहर्ता राज्यदायी रमणीयगुणोऽनृणी ॥
कालत्रयानंतरूपो मुनिवृंदनमस्कृतः ॥ ११५ ॥ संध्यारागकरः सिद्धः संध्यावंदनवंदितः ॥ साम्राज्यदाननिरतः समाराधनतोषवान् ॥
॥ ११६ ॥ भक्तदुःखक्षयकरो भवसागरतारकः॥ भयापहर्ता भगवानप्रमेयपराक्रमः॥ मनुस्वामी मनुपतिर्मान्यो मन्वंतराधिपः॥ ११७ ॥
एतत्ते सर्वमाख्यातं यन्मां त्वं परिपृच्छसि ॥ नाम्नां सहस्रं सवितुः पाराशर्य्यो यदाह मे ॥ ११८ ॥ धर्म्यं यशस्यमायुष्यं दुष्टदुःस्वप्न

नाशनम् ॥ बंधमोक्षकरं चैव भानोर्नामानुकीर्तनम् ॥ ११९ ॥ यस्त्विदं शृणुयान्नित्यं पठित्वा प्रयतो नरः ॥ अक्षयं सुखमन्नाद्यं भवेत्तस्यो पसाधितम् ॥ १२० ॥ नृपाग्नितस्करभयं व्याधिभ्यो न भयं भवेत् ॥ विजयी च भवेन्नित्यं श्रेयश्च परमाप्नुयात् ॥ १२१ ॥ कीर्तिमान् सुभगो विद्वान्स सुखी प्रियदर्शनः ॥ भवेद्वर्षशतायुश्च सर्वव्याधिविवर्जितः ॥ १२२ ॥ नाम्नां सहस्रमिदमंशुमतः पठेद्यः प्रातः शुचिर्नियमवान् सुसमाधियुक्तः ॥ द्वारेण तं परिहरंति सदैव रोगा भीताः सुपर्णमिव सर्वमहोरगेन्द्राः ॥ १२३ ॥ इति श्रीभविष्यपुराणे सप्तमकल्पे भगवतः श्रीसूर्य्यस्य नाम्नां सहस्रं समाप्तम् ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे पूर्वखण्डे श्रीसूर्यतंत्रेऽष्टमस्तरंगः ॥ ८ ॥ इति सू० त० ॥



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ हनुमत्तन्त्रप्रारंभः॥ तत्रादौ पटलप्रारंभः ॥ अथ हनुमद्द्वादशाक्षरमंत्रप्रयोगः॥ (मंत्रमहोदधौ) मंत्रो यथा— "हौं ह्स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं हनुमते नमः"इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम् ॥ अस्य हनुमन्मंत्रस्य रामचन्द्र ऋषिः । जगती छन्दः । हनुमान् देवता । ह्सौं बीजम्। ह्स्फ्रें शक्तिः। सर्वेष्टसिद्ध्ये जपे विनियोगः ॥ॐ रामचन्द्रऋषये नमः शिरसि ॥१॥जगतीछन्दसे नमः मुखे ॥२॥ हनुमद्देवतायै नमः हृदि ॥ ३॥ ह्सौं बीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ ह्स्फ्रें शक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ हौं हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्स्फ्रें शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ख्फ्रें शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ ह्स्रौं कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ ह्स्ख्फ्रें नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ ह्सौं अस्त्राय फट् ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव कर न्यासं कृत्वा मूर्ध्नि १ भाले २ नेत्रयोः ३ मुखे ४ कंठे ५ बाह्वोः ६ हृदि ७ कुक्षौ ८ नाभौ ९ लिंगे १० जानुद्वये ११ पादयोः १२ इति द्वादशस्थानेषु द्वादशमंत्रवर्णान् प्रणवाद्यनमोऽतान् न्यसेत् ॥ इति न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ ध्यानम् । बालार्कायुततेजसं त्रिभुवनप्रक्षोभकं सुंदरं सुग्रीवादिसमस्तवानरगणैः संसेव्यपादांबुजम् ॥ नादेनैव समस्तराक्षसगणान्संत्रासयंतं प्रभुं श्रीमद्रामपदांबुजस्मृतिरतं ध्यायामि वातात्मजम् ॥ १ ॥ एवं ध्यात्वा सर्वतोभद्रमण्डले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ पूर्वादिक्रमेण । ॐ विमलायै नमः ॥ १ ॥ ॐ उत्कर्षिण्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ ज्ञानायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ क्रियायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ योगायै नमः ॥ ५ ॥ ॐ प्रह्व्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ सत्यायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ ईशानायै नमः ॥ ८ ॥ मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ॥ ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेणाशोष्य " ॐ नमो भगवते हनुमते सर्वभूतात्मने हनुमते सर्वात्मसंयोगपद्मपीठात्मने नमः "इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञया आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तद्यथा—पुष्पांजलि मादाय" संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः ॥ अनुज्ञां हनुमन्देहि परिवारार्चनाय मे॥"इति पुष्पांजलिं दत्त्वा आज्ञां प्राप्य आवरण

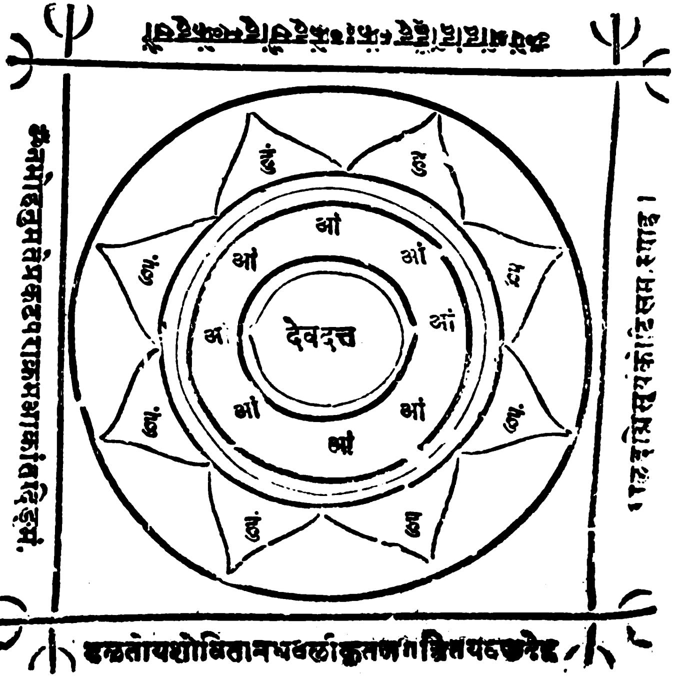
पूजां कुर्यात् ॥ तद्यथा । षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादि चतसृषु दिक्षु मध्ये दिक्षु च॥ ॐ ह्रौं हृदयाय नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ ह्स्फ्रें शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ स्फ्रें शिखायै वषट् शिखाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ ह्लौं कवचाय हुम् । कवचश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ ह्स्ल्फ्रें नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ ह्लौं अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ॥ ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य “ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ ” इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ ततोऽष्टदलेषु पूज्यपूजकयोरंतराले प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण दक्षिणावर्तेन च ॐ *रामभक्ताय नमः । रामभक्तश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ महातेजसे नमः । महातेजःश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ कपिराजाय नमः । कपिराजश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ महाबलाय नमः । महाबलश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ द्रोणाद्रिहारकाय नमः। द्रोणाद्रिहारकश्रीपा० ॥५ ॥ ॐ मेरुपीठार्चनकारकाय नमः । मेरुपीठार्चनकारकश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ दक्षिणाशाभास्कराय नमः । दक्षिणाशाभास्करश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ सर्वविघ्ननिवारकाय नमः । सर्वविघ्ननिवारकश्रीपा० ॥ ८ ॥ इति नामभिः संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततोऽष्टदलाग्रेषु प्राचीक्रमेण ॥ ॐ सुग्रीवाय नमः । सुग्रीवश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ अंगदाय नमः । अंगदश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ नीलाय नमः । नीलश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ जांबवते नमः । जांबवच्छ्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ नलाय नमः । नलश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ सुषेणाय नमः । सुषेणश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ द्विविदाय नमः । द्विविदश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ मयंदाय नमः । मयंदश्रीपा० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ वानरान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततः भूपुरे इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्यात्॥ अस्य पुरश्चरणं द्वादशसहस्रजपः ॥ तद्दशांशतो होमः ॥ एवंकृते मंत्रः सिद्धो भवति ॥ सिद्धे च मंत्रे मंत्री प्रयोगान्

* रामभक्तो महातेजाः कपिराजो महाबलः ॥ द्रोणाद्रिहारको मेरुपीठिकार्चनकारकः ॥१॥ दक्षिणाशाभास्करश्च सर्वविघ्ननिवारकः ॥ एवं नामानि संपूज्य दलाग्रेषु च वानरान् ॥२॥

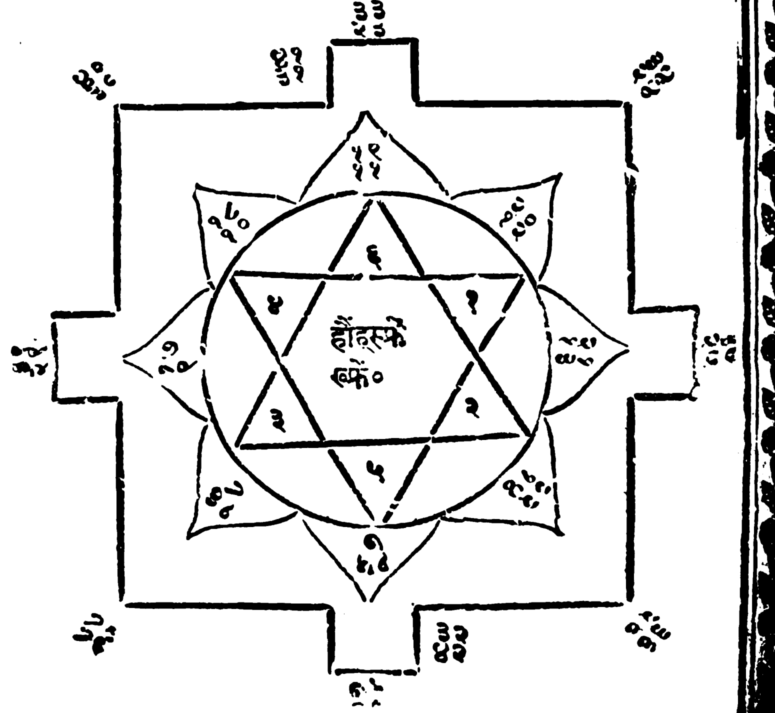
एवं सिद्धे मनौ मंत्री साधयेत् ॥ तथा च-" एवं ध्यात्वा जपेदर्कसहस्रं जितमानसः ॥ दशांशं जुहुयाद्व्रीहीन्पयोदध्याज्यसंयुतान् ॥ १ ॥ द्वाविंशतिं ब्रह्मचारी विप्रान्सम्भोजयेदथ॥एवं कृते महाभूतविषचौराद्यु स्वपरेष्टं प्रसाधयेत् ॥ कदलीबीजपूराम्रफलैर्हुत्वा सहस्रकम् ॥२॥ रात्रौ नवशतं मंत्रं जपेद्दशदिनावधि ॥ पद्रवाः॥ ३ ॥ नश्यंति क्षणमात्रेण विद्वेषिग्रहदानवाः॥अष्टोत्तरशतं वारि मांत्रितं विषनाशनम् ॥४॥ भस्माभिः सलिलैर्वापि ताडयेज्ज्वरिणं क्रुधा ॥६॥ यो नरस्तस्य नश्यंति राजशत्रूत्थभीतयः॥५॥अभिचारोत्थभूतोत्थज्वरे तं मंत्रितैर्जलैः ॥ तन्मंत्रितं पयः पीत्वा योद्धुं गच्छेन्मनुं दिनत्रयाज्ज्वरान्मुक्तः स सुखं लभते नरः ॥ तन्मंत्रितौषधं जग्ध्वा नीरोगो जायते ध्रुवम् ॥ ७ ॥ त्रिमंत्रितेन संस्पृष्टाः शुष्यंत्याचिरतो जपन् ॥ तज्जप्तभस्मलिप्तांगः शस्त्रसंघैर्न बाध्यते॥८॥ शस्त्रक्षतं व्रणः शोफो लूतास्फोटोऽपि भस्मना॥ निखनेद्भस्मकीलौ तौ विद्विषो नृणाम् ॥ ९ ॥ सूर्यास्तमयमारभ्य जपेत्सूर्योदयावधि ॥ कीलक भस्म चादाय सप्ताहावधिसंयुतः ॥ १० ॥ खाद्यादियोजितं यस्मै दीयते द्वार्य्यलक्षितः ॥ विद्वेषं मिथ आपन्नाः पलायंतेऽरयोऽचिरात् ॥११॥ अभिमंत्रितभस्मांबु देहचंदनसंयुतम् ॥ अंगुष्ठमात्रां स तु दासवत् ॥ १२ ॥ क्रूराश्च जंतवोऽनेन भवंति विधिना वशाः ॥ ईशानदिक्स्थमूलेन भूतांकुशतरोः शुभाम् ॥ १३ ॥ भूताभि प्रतिमां प्रविधाय हनूमतः ॥ प्राणसंस्थापनं कृत्वा सिंदूरैः परिपूज्य च ॥ १४ ॥ गृहस्याभिमुखो द्वारे निखनेन्मंत्रमुच्चरन् ॥ १६ ॥ चारचौराग्निविषरोगनृपोद्भवाः ॥ १५ ॥ संजायंते गृहे तस्मिन्न कदाचिदुपद्रवाः ॥ प्रत्यहं धनपुत्राद्यैरेधते तद् गृहं चिरम् ॥ कृतप्राणप्रतिष्ठां तां निशि श्मशानभूमिस्थो भस्मना मृत्स्नयापि वा ॥ शत्रोः प्रतिकृतिं कृत्वा हृदि नाम समालिखेत् ॥ १७ ॥ पाण्योस्तले भिंद्याच्छस्त्रैर्मनुं जपन् ॥ मंत्रांते प्रोच्चरेच्छत्रोर्नाम छिंधि च भिंधि च ॥ १८ ॥ मारयेति च तस्यांते दंतैरोष्ठं निपीड्य च ॥ अर्धचन्द्राकृतौ कुंडे स्थंडिले वा हुतं चरेत् ॥ प्रपीड्याथ त्यक्त्वा तां सदनं व्रजेत् ॥ १९ ॥ एवं सप्तदिनं कुर्वन्हन्याच्छत्रुं शिवावितम् ॥

१ देहचन्दनं देहे धृतं यच्चन्दनं तेन युतं भस्मांबु च मंत्रितं यस्मै देयं स वश्यः स्यात् ॥ २ भूतांकुशतरोः करंजस्य अरिष्टस्य ईशानदिशि स्थितेन मूलेनांगुष्ठमितां हनूमत्प्रतिमां कृत्वा प्राणान्संस्थाप्य सिंदूरैरभ्यर्च्य यद् गृहद्वारि निखन्यते तत्र सर्वोपद्रवनाशः सम्पत्तिवृद्धिश्च ॥ ३ शिवावितं शिवेनापि रक्षितं शत्रुमेवं कुर्वन् हन्यात् ॥

॥२० ॥ मुक्तकेशः श्मशानस्थो लवणैराजिकायुतैः ॥ उन्मत्तफलपुष्पैश्च नखरोमविषैरपि ॥ २१ ॥ काककौशिकगृध्राणां पक्षैः श्लेष्मांतकाक्षजैः ॥ समिद्वरैश्च त्रिशतं दक्षिणाशामुखो निशि ॥ २२ ॥ सप्तघस्त्रानिदं कुर्वन्मारयेद्रिपुमुद्धतम् ॥ शतषट्कं जपेद्रात्रौ श्मशाने दिवसत्रयम्॥२३॥ततो वेताल उत्थाय वदेद्भावि शुभाशुभम् ॥ उदितं कुरुते सर्वं किंकरीभूय मांत्रिणः॥२४॥वश्ये युद्धे नृपद्वारे समरे चौरसंकटे ॥ मंत्रोऽयं साधितो दद्यादिष्टसिद्धिं ध्रुवं नृणाम् ॥ २५ ॥
वस्त्रे शिलायां फलके ताम्रपात्रेऽथ कुड्यके॥भूर्जे वा तालपत्रे वा रोचनानाभिकुंकुमैः ॥ २६ ॥ यंत्रमेतत्समालिख्य त्यक्त्वाऽसौ ब्रह्मचर्यवान् ॥ कपेः प्राणान्प्रतिष्ठाप्य पूजयेत्तं यथाविधि ॥ २७ ॥ सर्वदुःखनिवृत्त्यैतद्यंत्रमात्मनि धारयेत् ॥ज्वरमार्यभिचारघ्नं सर्वोपद्रवशांतिकृत् ॥ १८ ॥ योषितामपि बालानां धृतं जनमनोहरम् ॥
इति हनुमद्द्वादशाक्षरमंत्रप्रयोगः१ ॥



हनुमत्कूटद्वादशाक्षरीपूजनयन्त्रम्.



१ उन्मत्तो धत्तूरः ॥ २ श्लेष्मांतकश्चिक्कणफलो वृक्षः ॥ ३ अक्षो विभीतकस्तद्रुथसमिद्भिश्च ॥

मंत्रो यथा-(मंत्रमहोदधौ) " ॐ नमो भगवते आंजनेयाय महाबलाय स्वाहा" इत्यष्टादशा

॥ अथ हनुमदष्टादशाक्षरमंत्रप्रयोगः ॥ हनुमान् देवता । हुं बीजम् । स्वाहा शक्तिः । सर्वेष्टसिद्धये

क्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्॥ अस्य मंत्रस्य ईश्वर ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । हनुमद्देवतायै नमः हृदि ॥३॥ हुंबीजाय नमः गुह्ये

जपे विनियोगः ॥ ॐ ईश्वरऋषये नमः शिरसि ॥ १॥ अनुष्टुप्छंदसे नमः मुखे॥२॥ ॐ आञ्जनेयाय नमः हृदयाय नमः

॥४॥ स्वाहाशक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ अग्निगर्भाय नमः कवचाय हुं ॥ ४ ॥

॥ १॥ ॐ रुद्रमूर्तये नमः शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ वायुपुत्राय नमः शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं करन्यासं

ॐ रामदूताय नमः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ ब्रह्मास्त्रनिवारकाय नमः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ श्रवणकुंडलशोभिमुखांबुजं नमत वानरराज

कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्॥ "ॐ दहनतप्तसुवर्णसमप्रभं भयहरं हृदये विहितांजलिम् ॥ संस्थाप्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तद्यथा—

मिहाद्भुतम् ॥ १ ॥" इति ध्यायेत् ॥ ततः सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः ॥ ३ ॥ ॐ क्रियायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ

पूर्वादिक्रमेण ॥ ॐ विमलायै नमः ॥ १ ॥ ॐ उत्कर्षिण्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ ज्ञानाय नमः ॥ मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ॥ ९ ॥

योगायै नमः ॥ ५ ॥ ॐ प्रह्वयै नमः ॥ ६ ॥ ॐ सत्यायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ ईशानायै नमः ॥ ८ ॥ जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण

इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां दत्त्वा पीठमध्ये

संशोष्य " ॐ नमो भगवते हनुमते सर्वभूतात्मने हनुमंताय सर्वात्मसंयोगपद्मपीठात्मने नमः" ॥इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं मूलमुच्चार्य

संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य आवरणपूजां कुर्यात्॥तद्यथा-पुष्पांजलिमादाय दत्त्वा पूजिता

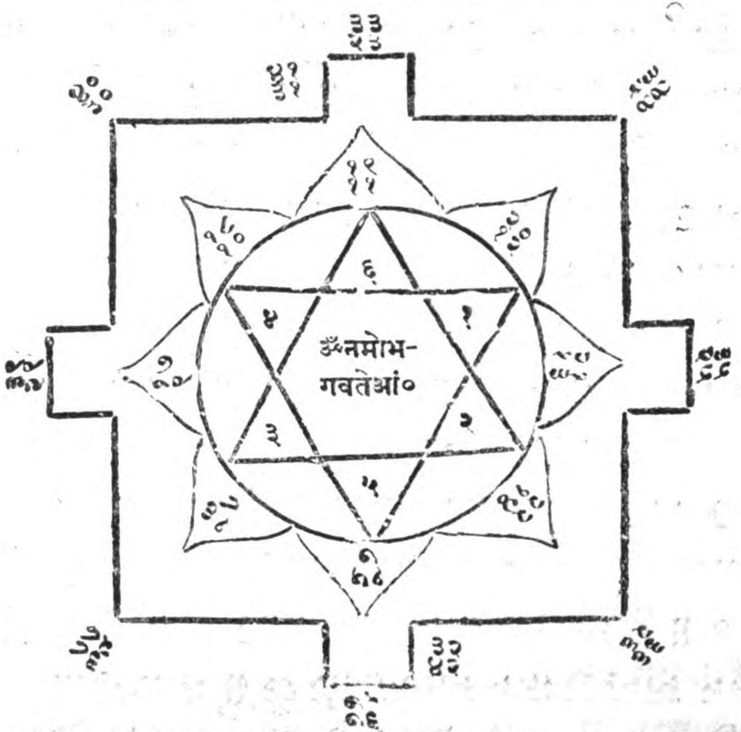
"ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रिय ॥ अनुज्ञां हनुमन्देहि परिवारार्चनाय मे ॥" इति पठित्वा पुष्पांजलिं च ॐ आंजनेयाय

स्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत ॥ षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षुमध्ये दिक्षु च ॥ २ ॥ ॐ

हृदयाय नमः । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ रुद्रमूर्तये शिरसे वाहा । शिरःश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ

वायुपुत्राय शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा ० ॥ ३ ॥ ॐ अग्निगर्भाय कवचाय हुंम्
कवचश्रीपा ० ॥ ४ ॥ ॐ रामदूताय नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा ० ॥ ५ ॥
ॐ ब्रह्मास्त्रनिवारकाय अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा ० ॥ ६ ॥ इत्यंगानि पूजयेत् ॥
ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य "ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ " इति पठित्वा
पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् । इति प्रथमावरणम्
॥ १ ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतराले प्राचीं तदनुसारेण अन्या
दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण दक्षिणावर्तेन च ॐ रामभक्ताय नमः ॥ १ ॥ ॐ
महातेजसे नमः ॥ २॥ ॐ कपिराजाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ महाबलाय नमः ॥ ४ ॥
ॐ द्रोणाद्रिहारकाय नमः ॥५ ॥ ॐ मेरुपीठार्चनकारकाय नमः ॥ ६ ॥ दक्षिणा
शाभास्कराय नमः ॥७॥ ॐ सर्वविघ्ननिवारकाय नमः॥८॥ इति संपूज्य पुष्पांजलिं
च दद्यात्॥ इति द्वितीयावरणम्॥२॥ ततोऽष्टकोणाग्रेषु प्राचीक्रमेण । ॐ सुग्रीवाय
नमः ॥१॥ ॐ अंगदाय नमः ॥२॥ ॐ नीलाय नमः॥३॥ ॐ जाम्बवते नमः ॥४ ॥

द्वादशाक्षरीहनुमत्कल्पपूजनयन्त्रम्.



ॐ नलाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ सुषेणाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ द्विविदाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ मयंदाय नमः ॥ ८ ॥ इति संपूज्य पुष्पांजलिं
च दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥
इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्यात्॥अस्य पुरश्चरणमयुतजपः । तद्दशांशतो होमः । एवं कृते मंत्रः सिद्धो

भवति । सिद्धे च मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च । "अयुतं प्रजपेन्मन्त्रं दशांशं जुहुयात्तिलैः ॥ जितेंद्रियो नक्तभोजी प्रत्यहं साष्टकं शतम् ॥ १ ॥ जपित्वा क्षुद्ररोगेभ्यो मुच्यते दिवसत्रयात् ॥ १ ॥ भूतप्रेतपिचादिनाशायैवं समाचरेत् ॥ महारोगनिवृत्त्यै तु सहस्रं प्रत्यहं जपेत् ॥ २ ॥ एकाशनोऽयुतं नित्यं जपन्ध्यायन्कपीश्वरम् ॥ राक्षसौघं विनिघ्नंतमचिराज्जयति द्विषम् ॥ ३ ॥ सुग्रीवेण समं रामं संदधानं स्मरन्कपिम् ॥ प्रजप्यायुतमेतस्य संधिं कुर्याद्विरुद्धयोः ॥ ४ ॥ लंकां दहंतं तं ध्यायन्नयुतं प्रजपेन्मनुम् ॥ शत्रूणां प्रदहेद् ग्रामानचिरादेव साधकः ॥ ५ ॥ प्रयाणसमये ध्यायन् हनूमंतं मनुं जपन् ॥ यो याति सोऽचिरात्स्वेष्टं साधयित्वा गृहं भजेत् ॥ ६ ॥ यः कपीशं सदा गेहे पूजयेज्जपतत्परः ॥ आयुर्लक्ष्म्यौ प्रवर्द्धेते तस्य नश्यंत्युपद्रवाः ॥ ७ ॥ शार्दूल तस्करादिभ्यो रक्षेन्मनुरयं स्मृतः ॥ प्रस्वापकाले चौरेभ्यो दुष्टस्वप्नादपि ध्रुवम् ॥ ८ ॥ इत्यष्टादशाक्षरहनुमन्मंत्रप्रयोगः ॥

अथ द्वादशाक्षरमंत्ररूपहनुमत्कल्पः ॥ (गारुडीतंत्रे) देव्युवाच ॥ शैवानि गाणपत्यानि शाक्तानि वैष्णवानि च ॥ साधनानि च सौराणि चान्यानि यानि तानि च ॥ १ ॥ श्रुतानि देवदेवेश त्वद्वक्त्रान्निःसृतानि च ॥ किंचिदन्यत्तु देवानां साधनं यदि कथ्य ताम् ॥ २॥ महादेव उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि सावधानाऽवधारय ॥ हनुमत्साधनं पुण्यं महापातकनाशनम् ॥ ३ ॥ एतद्गुह्यतमं लोके शीघ्रसिद्धिकरं परम् ॥ जपी यस्य प्रसादेन लोकत्रयजितो भवेत् ॥ ४ ॥ तत्साधनमहं वक्ष्ये नृणां सिद्धिकरं द्रुतम् ॥ ५ ॥ वियत्सनरकं घोरं हनुमते तदनंतरम्॥ रुद्रात्मकाय कवचं फडिति द्वादशाक्षरम् ॥ ६ ॥ एष मंत्रो मयाख्यातो गोपनीयः प्रयत्नतः ॥ तव

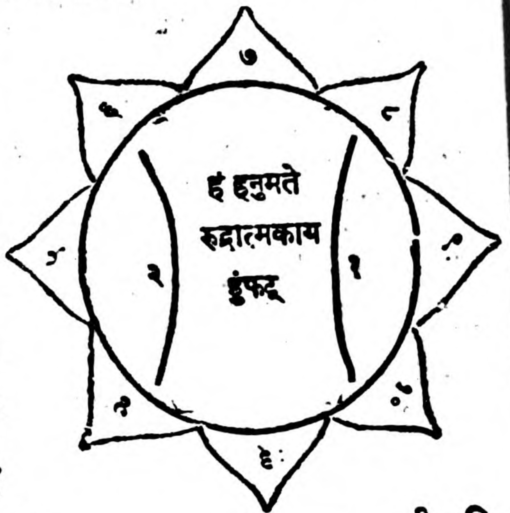
---

१ अथ भाषानुवादः-देवीजी बोली हे ईश्वर ! शिवसाधन गणेशसाधन शक्तिसाधन विष्णुसाधन सूर्य्यसाधन आदि अनेकसाधनोंकी रीति मैंने तुम्हारे समीप श्रवण करी है अब मैं अन्यान्य देवतोंका साधन सुननेकी इच्छा करती हूँ सो आप कहिये ॥ १ ॥ २ ॥ महादेवजी बोले हे देवि ! मैं इस समय हनुमत्साधन कहता हूँ सो तुम सावधान होकर श्रवण करो। यह साधन बड़े पुण्यका देनेवाला और बड़े बड़े जो पातक हैं उनका नाश करनेवाला है ॥ ३ ॥ इसकी साधनविधि अविगुप्त है और शीघ्र सिद्धिकी देने वाली है। इस साधनके बलसे साधक तीनों लोकोंको जय करनेमें समर्थ हो सकता है ॥ ४ ॥ तिसके साधनकी विधि मैं कहता हूँ जो मनुष्योंको सिद्धिकी देनेवाली है ॥ ५ ॥ प्रथम हं दूसरे

स्नेहे न भक्त्या च दासोऽस्मि तव सुन्दरि ॥७॥मंत्रराजोऽर्जुनायायं प्रदत्तो हरिणा पुरा॥ जपेन साधनं कृत्वा जितं सर्वं चराचरम् ॥८॥ मंत्रो यथा–"हं हनुमते रुद्रात्मकाय हुं फट्" इति द्वादशाक्षरो मंत्रः॥ अस्य विधानम्॥ नदीकूले विष्णुगेहे निर्जनस्थाने पर्वते वने वा जपस्थानभूमिपरिग्रहणं कृत्वा नदीतीरे स्नात्वा कुशासने उपविश्य आचम्य मूलेन प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्यामुकगोत्रोऽमुक शर्म्माहं श्रीहनुमत्प्रीतिकामोऽमुकमंत्रेण लक्षजपरूपपुरश्चरणमहं करिष्ये इति संकल्प्य भूतशुद्ध्यादिकं कुर्यात्॥ अस्य ऋष्यादिकादेरभावः॥ "हं हनुमते रुद्रात्मकाय हुं फट् स्वाहा" इत्यंगुष्ठाभ्यां नमः॥१॥एवमेव विधिना करन्यासं हृदयादिषडंगन्यासं च कृत्वा ध्यायेत्॥ अथ ध्यानम्॥ ॐ महाशैलं समुत्पाट्य धावन्तं रावणं प्रति॥ तिष्ठ तिष्ठ रणे दुष्ट घोररावं समुच्चरन्॥ १॥ लाक्षारसारुणं गात्रं कालांतकयमोपमम्॥ ज्वलदग्निलसन्नेत्रं सूर्य्यकोटिसमप्रभम्॥ अंगदाद्यैर्महावीरैर्वेष्टितं रुद्ररूपिणम्॥ एवंरूपं हनूमन्तं ध्यात्वा पूजां समारभेत्॥ इति ध्यायेत्॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडलं कृत्वा ततः सकेसरं रक्तचंदनं घृष्ट्वा तेन लेखनीं च कृत्वा ताम्रादिपत्रेऽष्टदलपद्मं विलिख्य मंडले संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्यावाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य मूलेन पुष्पांजल्यष्टकं दत्वा ततः "ॐ कुले रघूणां समवाप्य जन्म विधाय सेतुं जलधेर्जलांतः॥ लंकेश्वरं यः शमयांचकार सीतापतिं तं प्रणमामि भक्त्या॥ १ ॥ इति रामं ध्यात्वा पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य्य "ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रिय॥ अनुज्ञां हनुमन्देहि परिवारार्चनाय मे" ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत्॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत॥ तथा च पूज्यपूजकयोरंतराले प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ॐ सुग्रीवाय नमः सुग्रीवश्री

हनुमते, पीछे रुद्रात्मकाय अन्तमें हुं फट् अर्थात् "हं हनुमते रुद्रात्मकायहुंफट्" यह बारह अक्षरका मन्त्र जो मैंने कहा इसको यत्नपूर्वक गुप्त रखना चाहिये। हे सुन्दरि। मैं तुम्हारा दास हूँ इस वास्ते मैंने तुम्हारे स्नेह और भक्तिके वशीभूत होकर यह मन्त्र कहा है॥ ७ ॥ इस मन्त्रको प्रथम भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रजीने अर्जुनसे कहा था। अर्जुनने इसी मन्त्रको

द्वादशाक्षरीहनुमन्मन्त्रयन्त्रम्.



पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि ॥ इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ लक्ष्मणाय नमः । लक्ष्मणश्री
पा० ॥ २ ॥ ॐ अंगदाय नमः। अंगदश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ नलाय नमः । नलश्रीपा० ॥ ४ ॥
ॐ नीलाय नमः। नीलश्रीपा० ॥ ५॥ ॐ जाम्बवते नमः। जाम्बवच्छ्रीपा० ॥६॥ ॐ कुमुदाय नमः।
कुमुदश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ केसरिणे नमः। केसरिश्रीपा० ॥ ८ ॥ देवदक्षिणतः । ॐ पवनाय नमः
पवनश्रीपा० ॥९॥ वामे । ॐ अंजन्यै नमः । अंजनीश्रीपा० ॥ १० ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलि
मादाय मूलमुच्चार्य । " ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यमिदं
ह्यावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजल्यष्टकं दत्त्वा विशेषार्घ्याद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः
संतु इतिवदेत् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य पुनर्ध्यात्वा एकाग्रचित्तो मंत्रार्थं
स्मरन् जपं कुर्य्यात् ॥ अस्यपुरश्चरणं जपलक्षः। लक्षांते दिवसं प्राप्य तेन महत्पूजनं कृत्वा दिवारात्रिं
व्याप्य जपेत् ॥ तावत्कालं जपेत् यावत्संदर्शनं भवेत्॥एवंकृते हनुमांस्त्रिभागशेषासु निशासु आगच्छति साधकाय वरं दत्त्वा पुनर्व्रजति ।
तथा च—नदीकूले विष्णुगेहे निर्जने पर्वते वने ॥ एकाग्रचित्तमाधाय साधयेत्साधनं महत्॥९॥महाशैलं समुत्पाट्य धावंतं रावणं प्रति ॥
तिष्ठतिष्ठ रणे दुष्ट घोरं रावं समुच्चरन् ॥ लाक्षारसारुणं गात्रं कालान्तकयमोपमम् ॥ ज्वलदग्निलसन्नेत्रं सूर्य्यकोटिसमप्रभम् ॥ अंगदा
द्यैर्महावीरैर्वेष्टितं रुद्ररूपिणम् ॥ १० ॥ एवंरूपं हनूमंतं ध्यात्वा यः प्रजपेन्मनुम् ॥ लक्षजपात्प्रसन्नः स्यात्सत्यं ते कथितं मया ॥ ११ ॥

सिद्ध करके चर और अचर जगतको जीता है ॥ ८ ॥ नदीके किनारे विष्णुभगवान्के मंदिरमें निर्जनस्थानमें अथवा पर्वतमें एकाग्रचित्त होकर इस साधनको करे ॥ ९ ॥ हनुमानजी
बड़े भारी पर्वतको उखाड कर रावणकी ओरको धावमान हो रहे हैं और रावणसे घोर शब्द करके कहते हैं कि रे दुष्टात्मन् ! ठहर ठहर भाग मत, हनुमान्जीका वर्ण लाखके रङ्गके
समान अरुण है, हनुमानजीका भयानक स्वरूप कालांतक यमके समान है, इनके दोनों नेत्र अग्निकी भांति प्रकाशमान हैं और देह कोटिसूर्यकी कांतिवाली है । रुद्ररूपी हनुमानजी
अंगदजी आदि बड़े बड़े वीरोंसे युक्त हैं ॥ १० ॥ इस प्रकार हनुमान्जीका ध्यान करके मन्त्रका जप करे । लक्ष जप पूर्ण होजाने पर हनुमान्जी उस साधक पर प्रसन्न हो जाते हैं ॥

ध्यानैकमात्रतः पुंसां सिद्धिरेव न संशयः ॥ प्रातः स्नात्वा नदीतीरे उपविश्य कुशासने ॥१२॥ प्राणायामं षडंगञ्च मूलेन सकलं चरेत् ॥ पुष्पांजल्यष्टकं दत्त्वा ध्यात्वा रामं ससीतकम् ॥ १३ ॥ ताम्रपात्रे ततः पद्ममष्टपत्रं सकेसरम् ॥ रक्तचन्दनघृष्टेन लिखेत्तस्य शलाकया ॥ १४ ॥ कर्णिकायां लिखेन्मंत्रं तत्रावाह्य कपिप्रभुम् ॥ कर्णिकायां हनूमंतं ध्यात्वा पाद्यादिकं ततः ॥ १५ ॥ गंधपुष्पादिकं चैव निवेद्य मूलमंत्रतः ॥ सुग्रीवं लक्ष्मणं चैव चाङ्गदं नलनीलकम् ॥ १६ ॥ जाम्बवंतं च कुमुदं केसरिणं दले दले ॥ पूर्वादिक्रमतो देवि पूजयेद्गंधचन्दनैः ॥ १७ ॥ पवनश्चांजनश्चैव पूजयेद्दक्षवामतः ॥ दलाग्रेषु कपिभ्योऽपि पुष्पाञ्जल्यष्टकं ततः ॥ १८ ॥ ध्यात्वा तु मंत्रराजं वै लक्षं यावत्तु साधकः ॥ लक्षांते दिवसं प्राप्य कुर्य्याच्च पूजनं महत् ॥ १९ ॥ एकाग्रचित्तमनसा तस्मिन्पवननंदने ॥ दिवारात्रौ जपं कुर्य्याद्यावत्संदर्शनं भवेत् ॥ २० ॥ सुदृढं साधकं मत्वा निशीथे पवनात्मजः ॥ सुप्रसन्नस्ततो भूत्वा प्रयाति साधकाग्रतः ॥ २१ ॥ यथेप्सितं वरं दत्त्वा साधकाय कपिप्रभुः ॥ वरं लब्ध्वा साधकेन्द्रो विहरेदात्मनः सुखैः ॥ २२ ॥ एतद्धि साधनं पुण्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥ तव स्नेहान्मयाख्यातं भक्तासि मयि पार्वति ॥ २३ ॥ इति श्रीगारुडे तंत्रे देवीश्वरसंवादे द्वादशाक्षरहनुमत्कल्पः समाप्तः ॥

हे देवि ! तुम्हारे प्रति यह हनुमान्‌जीका मंत्र मैंने सत्य कहा है ॥ ११ ॥ पुरुषोंको ध्यानमात्र करनेसे ही सिद्धि होती है इसमें कोई सन्देह नहीं है किन्तु ध्यान भक्तिपूर्वक होना चाहिये। प्रातःकाल स्नान कर नदीके किनारे कुशाके आसन पर बैठे॥१२॥प्राणायाम और षडंगन्यास सब मूलमन्त्रसे करे पीछे मूलमन्त्रद्वारा आठ अञ्जलि पुष्पप्रदान कर सीता सहित श्रीरामचन्द्रजीका ध्यान करे ॥ १३ ॥ इसके उपरांत हनुमान्‌जीका यन्त्र अंकित करे। पहले केसर सहित घिसे रक्तचन्दन और रक्तचन्दनकी कलमसे ताम्रपत्रके ऊपर अष्टदल कमल लिखना चाहिये ॥ १४ ॥ तिसके बीचमें मूलमन्त्र लिखकर उस मूलमन्त्रको हनुमान्‌जीका स्वरूप समझ कर आवाहन पूर्वक पाद्यादि देवे ॥ १५ ॥ फिर मूलमन्त्रसे गन्ध-पुष्पादि निवेदन कर सुग्रीव लक्ष्मण अंगद नल नील ॥ १६ ॥ जाम्बवन्त कुमुद और केसरी इन्होंको कमलके आठों दलोंमें लिखकर पूर्वादिक्रमसे इन आठोंका पूजन करना चाहिये ॥ १७ ॥ हनुमान्‌जीके दक्षिण भागमें पवनका पूजन करे और वामभागमें अञ्जनीका पूजन करे ॥ दलके अग्रभागमें "ॐ कपिभ्यो नमः" इस मंत्रसे आठ अंजलि पुष्प चढ़ावे ॥ १८ ॥ पीछे कपिराजका ध्यान करके मंत्रका जप करे ॥ इस मंत्रको एक लाख जपना चाहिये। जिस दिन लक्ष जप पूरा होजावे उस दिन महापूजा करनी चाहिये ॥ १९ ॥ एकाग्रचित्तसे रात्रि दिन हनुमान्‌जीके मंत्रका जप करने पर हनुमान्‌जीका दर्शन होता है। जबतक दर्शन न हो, जप करता रहे ॥ २० ॥ ऐसा करनेसे हनुमान्‌जी साधकको दृढ़प्रतिज्ञ जान रात्रिके समय प्रसन्न हो साधकके समीप आते हैं ॥ २१ ॥ तहां हनुमान्‌जी साधकको अभिलषित वर देते हैं। साधक वरको प्राप्त हो सुखपूर्वक विहार करता है ॥ २२ ॥ यह परम पुण्यका देनेवाला साधन देवताओंको भी दुर्लभ है। हे देवि ! तुम मेरी भक्ता हो इस कारण तुम्हारे स्नेहके वशीभूत हो प्रकाश करा है ॥ २३ ॥ यह गारुड तन्त्रमें लिखा हुआ पार्वतीमहादेवका संवाद है ॥ इति ॥

॥ अथ हनुमद्दशाक्षरमन्त्रवीरसाधनप्रयोगः ॥ "हनुमतोऽतिगुह्यं तु लिख्यते वीरसाधनम् ॥ स्वबीजं पूर्वमुच्चार्य पवनं च ततो वदेत् ॥ १ ॥ नन्दनं च ततो देयं ङेऽवसानेऽनलप्रिया ॥ दशार्णोऽयं मनुः प्रोक्तो नराणां सुरपादपः ॥ २ ॥" मंत्रो यथा—"हं पवननन्दनाय स्वाहा" इति दशाक्षरो मंत्रः॥ अस्य विधानम् ॥ "ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय कृतनित्यक्रियो द्विजः ॥ गत्वा नदीं ततः स्नात्वा तीर्थमावाह्य चांभसि ॥ मूलमंत्रं ततो जप्त्वा सिंचेदादित्यसंख्यया ॥ ३ ॥" ततो वाससी परिधाय गंगातीरे पर्वते वा उपविश्य । ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ इत्यादिना करन्यासं हृदयादिषडंगन्यासं च कृत्वा प्राणायामं कुर्यात् ॥ तथा च—अकारादिवर्णानुच्चार्य वामनासापुटेन वायुं पूरयेत् ॥ पंचवर्गानुच्चार्य्य वायुं कुंभयेत् ॥ यकारादिवर्णानुच्चार्य्य दक्षिणनासापुटेन वायुं रेचयेत् ॥ एवं वारत्रयं कृत्वा मंत्रवर्णैरंगन्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ ध्यायेद्रणे हनूमंतं कपिकोटिसमन्वितम् ॥धावंतं रावणं जेतुं दृष्ट्वा सत्वरमुत्थितम् ॥ लक्ष्मणं च महावीरं पतितं रणभूतले ॥ गुरुं च क्रोधमुत्पाद्य गृहीत्वा गुरुपर्वतम् ॥ हाहाकारैः सदर्पैश्च कम्पयंतं जगत्त्रयम् ॥ ब्रह्मांडं स समावाप्य कृत्वा भीमं कलेवरम् ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा षट्सहस्रं जपेत् । सप्तमदिवसं प्राप्य तदा दिवारात्रिं व्याप्य जपेत् । ततो महाभयं दत्त्वा त्रिभागशेषासु निशासु नियतमागच्छति साधको यदि मायां तरति तदेप्सितं वरं प्राप्नोति ॥

१ अथ भाषानुवादः-हनुमान्‌जीका अत्यंत गुप्त वीरसाधन कहा जाता है। "हं पवननंदनाय स्वाहा" यह दशाक्षर मंत्र मनुष्योंके लिये कल्पवृक्षके समान है। अब मैं इसके करनेकी विधि कहता हूँ। साधक ब्राह्ममुहूर्तमें उठ संध्यावंदनादि नित्यक्रिया करनेके उपरांत नदीके किनारे जाय स्नान करके तीर्थावाहनपूर्वक आठ बार मूलमंत्रका जप करे फिर उस जलके द्वारा बारह बार अपने मस्तकपर अभिषेक करे । पीछे वस्त्रयुगल धारण कर गंगाके तीर वा पर्वत पर बैठ 'ह्रां अंगुष्ठाभ्यांनमः' इस प्रकार करन्यास और हृदयादिषडंगन्यास करे । तिसके पीछे अकारादि १६ स्वरवर्णोंको उच्चारण करके वामनासापुटमें वायुको पूर्ण करे तथा ककारादि मकार पर्यंत २५ अक्षरोंको उच्चारण करके दोनों नासापुटोंमें वायुको बन्द करे और यकारादि क्षकारांत वर्णोंको उच्चारण करके दक्षिणनासापुटसे वायुका रेचन करे अर्थात् बाहर निकाल दे । इसी प्रकार दक्षिणनासापुटसे वायुको खैंचकर दोनों नासापुटोंमें कुंभक और वाम नासापुटसे रेचन करे ॥ फिर वामनासापुटसे पूर्ण दोनों नासापुटोंसे धारण और दक्षिणसे रेचन करे । इस प्रकार तीन बार प्राणायाम कर मंत्रके अक्षरोंसे अंगन्यासपूर्वक ध्यान करे । हनुमान्‌जी संग्रामके बीच कोटि वानरोंसे युक्त हैं । हनुमान्‌जी रावणको पराजय करनेके निमित्त धावित हो रहे हैं। हनुमान्‌जीको देखकर रावण कंपायमान हो रहा है। महावीर लक्ष्मणजीको रणभूमिमें गिरे हुए देख हनुमान्‌जी क्रोधके साथ महापर्वतको उखाड घमंडके साथ हाहाकार ध्वनिसे तीनों लोकोंको कंपित कर रहे हैं । हनुमान्‌जी ब्रह्मांडव्यापी भीम कलेवरको धारण किये हुए स्थित हैं । इस प्रकार ध्यान करके छ हजार मूलमंत्रका जप करना चाहिये, छ दिन

विद्यां वापि धनं वापि राज्यं वा शत्रुनिग्रहम् ॥ तत्क्षणादेव चाप्नोति सत्यं सत्यं सुनिश्चितम् ॥ इति दशाक्षरवीरमंत्रसाधनम् ॥ ॥ अथ अष्टादशाक्षरमन्त्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा—"ॐ नमो हनुमते आवेशय आवेशय स्वाहा" इत्यष्टादशाक्षरमंत्रः ॥अस्य विधानम् ॥ ॥ अथ चतुर्दशाक्षरहनुमन्मंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा–"ॐ नमो हरिमर्कटमर्कटाय स्वाहा" इति चतुर्दशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम् ॥ अथ हनुमत्पूजापद्धतिप्रारंभः ॥ तत्रादौ मंत्रानुष्ठानप्रारम्भात्पूर्वकृत्यम् ॥ चन्द्रतारादिबलान्वित सुमुहूर्ते पुण्यतीर्थक्षेत्रे विष्णुगेहे पर्वते वने वा निर्जनस्थानादावनुष्ठानयोग्यभूमिपरिग्रहणं कृत्वा तत्र मार्जनदहनखननसंप्लावनादिभिः स्मृत्युक्तैः शोधनोपायैः शुद्धिं संपाद्य जपस्थानस्य चतुर्दिक्षु क्रोशं क्रोशद्वयं वा क्षेत्रमाहारादिविहारार्थं परिकल्प्य जपस्थानभूमौ कूर्मशोधनं कुर्यात् ॥ ततः पुरश्चरणात् प्राक् तृतीयदिवसे क्षौरादिकं विधाय ततः प्रायश्चित्तांगतार्थं विष्णुपूजातर्पणश्राद्धानि होमं चान्द्रायणादिव्रतं च कुर्यात् ॥ व्रताशक्तौ गोदानं

इस प्रकार जप करके सातवें दिन दिनरात जप करना चाहिये। इस प्रकार जप करने पर रात्रिके चौथे पहरमें महाभयमदर्शनपूर्वक निश्चय हनुमान्जी साधकके समीप आगमन करते हैं। यदि साधक मायाको अर्थात् भयको परित्याग करनेमें समर्थ हो तो अभिलषित वर प्राप्त कर सकता है। विद्याको धनको राज्यको तथा शत्रुनिग्रहको उसी समय प्राप्त होता है; सत्य है, सत्य है, भले प्रकार निश्चय किया हुआ है ॥ इति ॥

१ रक्तचंदनकी हनुमान्जीकी प्रतिमा बनाकर प्राणप्रतिष्ठा करे और रक्तवस्त्र धारण करावे। पीछे आप रक्तवस्त्र धारण कर रक्तवर्णके आसनपर पूर्वाभिमुख बैठकर रात्रिके समय हनुमान्जीका पंचोपचार पूजन करे, गुडके चूरमेका नैवेद्य लगावे, उस नैवेद्यको मूर्तिके सामने आठ पहर धरा रहने दे, जब दूसरे दिन नैवेद्य लगावे तब पहले दिनका नैवेद्य उठा कर किसी पात्रमें इकट्ठा करता रहे। अनुष्ठान समाप्त होनेके पीछे किसी दुर्बल ब्राह्मणको देवै या पृथ्वीमें गाड देदेवे। घृतका दीपक जलावे, रुद्राक्षकी मालासे ११०० मंत्र नित्य जपै, उसी स्थानमें रक्तवस्त्र पर सोजावे; ऐसा करनेसे ११ दिनके भीतर हनुमान्जी ब्रह्मचारी स्वरूप हो रात्रिके समय स्वप्नद्वारा दर्शन देकर साधकके प्रश्नका उत्तर अवश्य देते हैं। साधक जो पूंछता है बताते हैं और भी जिस कामके वास्ते जपै उसका मनोरथ पूर्ण करते हैं। यह एक महात्माका उपदेश किया हुआ बडा चमत्कारी मंत्र है, मेरा अनुभव किया हुआ सिद्ध मंत्र है। इसको गुप्त रखना चाहिये ॥ इत्यष्टादशाक्षरहनुमन्मंत्रप्रयोगः ॥

२ इस मंत्रको आकके पत्तेपर गुलाल बिछाकर अनारकी कलमसे एक लाख मंत्र लिखे, तो मनोरथ सिद्ध हो राज्यका प्रयोजन सिद्ध हो अनेक कार्य मनोवांछित सिद्ध हो इसमें कुछ संदेह नहीं अगर "ॐ नमो हरिमर्कटमर्कटाय अमुकं हरिमर्कटमर्कटाय स्वाहा" इस प्रकार भोजपत्र या कागजपर सिंदूरसे लिखकर वीरमूर्ति हनुमान्के मस्तकपर चिपकाय देवे पंचोपचार पूजन करके सरसोंके तेलकी हनुमान्जीके मस्तकपर इस मंत्रके द्वारा एक लाख धारा देवै तो शत्रुका नाश हो, शत्रुका धन नष्ट हो, अत्यंत दुःखी होकर वैरीपै आन पडे। यह विधि भी एक जटिल सिद्ध पुरुषकी कही हुई हमारी अनुभूत विधा है। इति चतुर्दशाक्षरहनुमन्मन्त्रप्रयोगः ॥ इति हनुमत्पटलं समाप्तम्।

द्रव्यदानं च कुर्यात् ॥ यदि सर्वकर्माशक्तिस्तदा प्रायश्चितांगतार्थं पंचगव्यप्राशनं कुर्य्यात् ॥ तत्र मंत्रः ॥ " ॐ यस्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके ॥ प्राशनात्पंचगव्यस्य दहत्यग्निरिवेंधनम् ॥१॥ मूलं पठित्वा प्रणवेन पंचगव्यं पिबेत् ॥ तद्दिने उपवासं कुर्यात् । अशक्तश्चेत् पयःपानं हविष्यान्नैकभक्तव्रतं वा कुर्यात् ॥ ततः पुरश्चरणात् पूर्वदिने स्वदेहशुद्ध्यर्थं पुरश्चरणाधिकारप्राप्त्यर्थं चायुतगायत्री जपं कुर्यात् ॥ तथा च देशकालौ संकीर्त्य ममामुकगोत्रस्यामुकशर्मणो ज्ञाताज्ञातपापक्षयार्थं करिष्यमाणश्रीहनुमन्मंत्रपुरश्चरणाधिकारार्थं चायुतगायत्रीजपमहं करिष्ये । इति संकल्प्य व्याहृतित्रयपूर्वकगायत्र्ययुतं जपेत् । ततो गायत्र्या आचार्यऋषिं विश्वामित्रं तर्पयामि ॥ १ ॥ गायत्रीछंदस्तर्पयामि ॥ २ ॥ सवितारं देवतां तर्पयामि ॥ ३ ॥ इति तर्पणं कृत्वा ततस्तस्यां रात्रौ देवतोपास्तिशुभा शुभं स्वप्नं विचारयेत् ॥ तथा च स्नानादिकं कृत्वा हरिपादाम्बुजं स्मृत्वा कुशासनादिशय्यायां यथासुखं स्थित्वा वृषभध्वजं प्रार्थयेत् ॥ तत्र मंत्रः । " ॐ भगवन्देवदेवेश शूलभृद्वृषवाहन ॥ इष्टानिष्टं समाचक्ष्व मम सुप्तस्य शाश्वतः ॥ १ ॥ ॐ नमोऽजाय त्रिनेत्राय पिंगलाय महात्मने ॥ वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः ॥ २ ॥ स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषतः ॥ क्रियासिद्धिं विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ ३ ॥ " इति मंत्रेणाष्टोत्तरशतवारं शिवं प्रार्थ्य निद्रां कुर्यात् ॥ ततः स्वप्नं दृष्टं निशि प्रातर्गुरवे विनिवेदयेत् ॥ अथवा स्वयं स्वप्नं विचारयेत् ॥ इति पूर्वकृत्यम् ॥ अथ प्रातःकृत्यम् ॥ पुरश्चरणदिवसे श्रीमत्साधकेन्द्रः प्रातःकालात्पूर्वं दंडद्वयात्मके ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय प्रातःस्मरणं कृत्वा भूमिं प्रार्थयेत् ॥ तत्र मंत्रः ॥ " ॐ समुद्रमेखले देवि पर्वतस्तनमंडले ॥ विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥ १ ॥ " इति भूमिं संप्रार्थ्य श्वासानुसारेण भूमौ पादं दत्त्वा बहिर्व्रजेत् ॥ ततो

---

१ लिंगं चन्द्रार्कयोर्बिंबं भारती जाह्नवी गुरुः ॥ रक्ताब्धितरणं युद्धे जयोऽनलसमर्चनम् ॥ शिखिहंसरथांगाढ्ये रथे स्थानं च मोहनम् ॥ आरोहणं सारसस्य धरालाभश्च निम्नगा ॥ प्रासादः स्यंदनं पद्मं छत्रं कन्या द्रुमः फली । नागो द्वीपो हयः पुष्पं वृषभोऽश्वश्च पर्वतः ॥ सुराघटो ग्रहास्तारा नारी सूर्योदयोऽप्सराः । हर्म्यशैलविमानानामारोहो गगने गमः ॥ मद्यमांसादनं विष्ठालेपो रुधिरसेचनम् । दध्योदनादनं राज्याभिषेको गोवृषध्वजाः ॥ सिंहः सिंहासनं शंखो वादित्रं रोचनादिभिः । चन्दनं दर्पणं चैषां स्वप्ने वै दर्शनं शुभम् ॥ तैलाभ्यक्तः कृष्णवर्णो नग्नो ना गर्दभवायसौ ॥ शुष्ककण्टकिवृक्षश्च चाण्डालो दीर्घकन्धरः ॥ प्रासादस्थलहीनश्च नैते स्वप्ने शुभावहाः ॥ इति स्वयं स्वप्नं विचारयेत् ॥

ग्रामाद्बहिः नैर्ऋत्यकोणे जनवर्जिते देशे उत्तराभिमुखः अनुपानत्कः वस्त्रेण शिरः प्रावृत्य मलमोचनं कृत्वा मृत्तिकया जलेन यथासंख्यं शौचं कृत्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य गंडूषं च कृत्वा दंतधावनं कुर्यात्॥तथा च—आम्रचंपकापामार्गाद्यन्यतमं द्वादशांगुलं दंतकाष्ठं गृहीत्वा प्रार्थयेत् ॥ " ॐ आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजापशुधनानि च ॥ श्रियं प्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते ॥ १ ॥ " इति संप्रार्थ्य । "ॐ ह्रीं तडित्स्वाहा" इति मंत्रेण काष्ठं छित्वा "ॐ क्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः " इत्यनेन दंतान् संशोध्य ऐं बीजेन जिह्वामु ल्लिख्य दंतकाष्ठं क्षालयित्वा नैर्ऋत्यां शुद्धदेशे निःक्षिपेत् ॥ ततो मूलेन मुखं प्रक्षाल्याचम्य स्नानं कुर्यात् ॥ तथा च तात्कालिकोद्धृतोद केनोष्णोदकेन वा स्नानं कृत्वा न तु पर्युषितशीतोदकेन ताम्रादिबृहत्पात्रे जलं गृहीत्वा तीर्थान्यावाहयेत् ॥ तत्र मंत्रः ॥ " ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ॥ नर्मदे सिंधुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥ १ ॥ आवाहयामि त्वां देवि स्नानार्थमिह सुंदरि ॥ एहि गंगे नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थसमन्विते ॥ २ ॥ " इति तीर्थान्यावाह्य ॥ "ॐ ऋतं च सत्यं० " इति मंत्रेणाभिमंत्र्य वरुणमंत्रेण स्नात्वा शुष्कं शुभ्रं कर्पासोत्पन्नरक्तवस्त्रं परिधाय सूर्यायार्घ्यं दद्यात् ॥ तत्र मंत्रः । " ॐ एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते ॥ अनुकंपय मां देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥१॥" इत्यर्घ्यं दत्त्वा स्नायी वस्त्रं परिपीडय आचम्य नित्यनैमित्तिकं समाप्य शैवं पंचत्रिपुंड्रं वैष्णवं द्वादशोर्ध्वपुंड्रं तिलकं कुर्यात् ॥ ततः पूजागृहद्वारमागत्य मूलेन अस्त्राय फडिति द्वारं संप्रोक्ष्य दक्षिणशाखायाम् । ॐ गं गणपतये नमः ॥ १ ॥ ॐ दुं दुर्गायै नमः ॥ २ ॥ वामशाखायाम् ॐ वं वटुकाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः ॥ ४ ॥ द्वारोपरि ॐ सं सरस्वत्यै नमः ॥ ५ ॥ देहल्याम् ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति द्वारपूजां कृत्वा जपस्थाने गत्वा " ॐ गृहीतस्यास्य मंत्रस्य पुरश्चरण सिद्धये ॥ मयेयं गृह्यते भूमिर्मंत्रोऽयं सिद्ध्यतामिति ॥ १ ॥ इति मंत्रेण संगृह्य अश्वत्थोदुंबरप्लक्षाणामन्यतमस्य वितस्तिमात्रान् दश कीलान् "ॐ नमः सुदर्शनायास्त्राय फट्" इति मंत्रेणाष्टोत्तरशताभिमंत्रितान् "ॐ ये चात्र विघ्नकर्तारो भुवि दिव्यंतरिक्षगाः ॥ विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मंत्रस्य सिद्धये ॥ १ ॥ मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः ॥ अपसर्पंतु ते सर्वे निर्विघ्नं सिद्धिरस्तु मे ॥ २ ॥ " इति

मंत्रद्वयेन दशदिक्षु दश कीलान् निखनेत् ॥ ततश्च "ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्" इति मंत्रेण प्रत्येककीलं संपूज्य तत्रैव पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिलोकपालानावाह्य पंचोपचारैः संपूज्य जपस्थानमध्ये गणेशकूर्मानंतवसुधाक्षेत्रपालांश्च संपूज्य दिक्पालेभ्यः क्षेत्रपालगणपतिभ्यश्च बलिं दत्त्वा तद्बाह्ये भूतबलिं दद्यात् ॥ तत्र मंत्रः॥"ॐ ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः ॥ मातरोऽप्युग्ररूपाश्च गणाधिपतयश्च ये ॥ १ ॥ भूचराः खेचराश्चैव तथा चैवांतरिक्षगाः ॥ ते सर्वे प्रीतमनसः प्रतिगृह्णंत्विमं बलिम् ॥ २ ॥" इति मंत्रद्वयेन दशदिक्षु बाह्ये माषभक्तबलिं दत्त्वा वामकरांगुलिभिरर्घ्यजलेनोत्सृज्य पुष्पांजलिं गृहीत्वा "ॐ भूतानि यानीह वसंति भूतले बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम् ॥ संतोषमासाद्य व्रजंतु सर्वे क्षमंतु नान्यत्र नमोऽस्तु तेभ्यः ॥१॥" इति पठित्वा पुष्पांजलिं दत्त्वा प्रणम्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचमेत् ॥ ततः "ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ॥ यः स्मरेत्पुंडरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ १ ॥ ॥ इति मंत्रेण मंडपांतरं संप्रोक्ष्य तत्र तावदासनभूमौ कूर्मशोधनं कार्यम् ॥ यत्र जपकर्त्ता एक एव तदा कूर्ममुखे उपविश्य तत्रैव जपं दीपस्थापनं च कुर्यात् ॥ यत्र बहवो जापकास्तत्र कूर्ममुखोपरि दीपमेव स्थापयेत् ॥ इति कूर्मशोधनं विधाय तत्रासनाधो जलादिना त्रिकोणं कृत्वा तत्र "ॐ कूर्माय नमः ॥१ ॥ ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः॥ २ ॥ ॐ पृथिव्यै नमः ॥ ३॥" इति गंधाक्षतपुष्पैः संपूज्य तदुपरि कुशासनं १ तदुपरि मृगाजिनं २ तदुपरि कम्बलाद्यासनं ३ केवलकुशासनं वा आस्तीर्य स्थापितानां त्रयाणामासनानामुपरि क्रमेण "ॐ अनन्तासनाय नमः १ ॐ विमलासनाय नमः२" ॐ पद्मासनाय नमः३" इति मंत्रत्रयेण त्रीन् दर्भान् प्रत्येकं निदध्यात्॥एवमासनं संस्थाप्य तत्र प्राङ्मुख उदङ्मुखो वोपविश्यासनं शोधयेत् ॥ तत्र मंत्रः ॥ ॐ पृथ्वीति मंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः । कूर्मो देवता । सुतलं छन्दः । आसने विनियोगः ॥ "ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ॥ त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥ १ ॥" इति मंत्रेणासनं प्रोक्ष्य मूलेन शिखां बद्ध्वा "ॐ केशवाय नमः ॥ १ ॥ॐ नारायण नमः ॥ २॥ ॐ माधवाय नमः ॥ ३ ॥" इति त्रिराचम्य प्राणायामं कुर्यात्॥तथा च—दक्षिणहस्तांगुष्ठेन दक्षिणनासापुटं निरुध्य वामनासापुटेन मूलं षोडशवारं जपन् शनैः शनैः

प्राणाख्यवायुमाकृष्य शिरसि सहस्रारे धारयेदिति पूरकः ॥ १ ॥ पुनः दक्षहस्तानामिकातर्जन्यंगुष्ठैर्नासापुटद्वयं निरुध्य मूलं चतुःषष्टिवारं जपन् कुंभयेत् ॥ २ ॥ पुनर्दक्षनासापुटांगुष्ठनिरोधनं त्यक्त्वा मूलं द्वात्रिंशद्वारं जपञ्छनैः शनैस्तद्वायुं रेचयेत् ॥ ३ ॥ एवमेव प्राणायामजपं कृत्वा देशकालौ संकीर्त्यामुकगोत्रः श्रीअमुकदेवशर्मा श्रीहनुमद्देवताया अमुकमंत्रसिद्धिप्रतिबंधकाशेषदुरितक्षयपूर्वकामुकमंत्रसिद्धिकामः इयत्संख्याजपतत्तद्दशांशहोमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनरूपपुरश्चरणं (केवलजपरूपपुरश्चरणं वा) अहं करिष्ये इति संकल्प्य "ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट् " इति तालत्रयेण दिग्बन्धनं कृत्वा भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठांतर्मातृकाबहिर्मातृकासृष्टिस्थितिसंहारमातृकान्यासांश्च सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कृत्वा प्रयोगोक्तन्यासादिकं कुर्यात्॥अथ पीठपूजाप्रयोगः॥पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः स्थापयेत् ॥ तथा च—वामभागे श्रीगुरवे नमः ॥१॥ दक्षिणे गणपतये नमः॥२॥मध्ये स्वेष्टदेवतायै नमः ॥ ३ ॥ इति नत्वा पुष्पाक्षतानादाय पीठमध्ये ॐ मं मंडूकाय नमः ॥ १ ॥ ॐ कालाग्निरुद्राय नमः ॥ २ ॥ ॐ अं आधारशक्तये नमः ॥ ३ ॥ ॐ कूं कूर्माय नमः ॥ ४ ॥ ॐ अं अनन्ताय नमः ॥ ५ ॥ ॐ पृं पृथिव्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ क्षीं क्षीरसागराय नमः ॥ ७ ॥ ॐ रं रत्नदीपाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ रं रत्नमंडपाय नमः ॥ ९ ॥ कं कल्पवृक्षाय नमः ॥ १० ॥ ॐ रं रत्नवेदिकायै नमः ॥ ११ ॥ ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः ॥ १२ ॥ आग्नेय्याम् ॐ धं धर्माय नमः ॥ १३ ॥ नैर्ऋत्याम् ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः ॥ १४ ॥ वायव्ये ॐ वैं वैराग्याय नमः ॥ १५ ॥ ऐशान्ये ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः ॥ १६ ॥ पूर्वे ॐ अं अधर्माय नमः ॥ १७ ॥ दक्षिणे ॐ अं अज्ञानाय नमः ॥ १८ ॥ पश्चिमे ॐ अं अवैराग्याय नमः ॥ १९ ॥ उत्तरे ॐ अं अनैश्वर्याय नमः ॥ २० ॥ पुनः पीठमध्ये । ॐ आं आनन्दकंदाय नमः ॥ २१ ॥ ॐ सं संविन्नालाय नमः ॥ २२ ॥ ॐ सं सर्वतत्त्वकमलासनाय नमः ॥ २३ ॥ ॐ प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः ॥ २४ ॥ ॐ विं विकारमयकेसरेभ्यो नमः ॥ २५ ॥ ॐ पं पंचाशद्वर्णाढ्यकर्णिकाभ्यो नमः ॥ २६ ॥ ॐ अं अर्कमंडलाय द्वादशकलात्मने नमः ॥ २७ ॥ ॐ सों सोममंडलाय षोडशकलात्मने नमः ॥ २८ ॥ ॐ वं वह्निमंडलाय दश

कलात्मने नमः ॥ २९ ॥ ॐ सं सत्त्वाय नमः ॥ ३० ॥ ॐ रं रजसे नमः ॥ ३१ ॥ ॐ तं तमसे नमः ॥ ३२ ॥ ॐ आं आत्मने नमः ॥ ३३ ॥ ॐ पं परात्मने नमः ॥ ३४ ॥ ॐ अं अंतरात्मने नमः ॥ ३५ ॥ ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः ॥ ३६ ॥ ॐ मं मायातत्त्वाय नमः ॥ ३७ ॥ ॐ कं कलातत्त्वाय नमः ॥ ३८ ॥ ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः ॥ ३९ ॥ ॐ पं परतत्त्वाय नमः ॥ ४० ॥ इति पीठदेवताः संस्थाप्य प्रयोगोक्तनवपीठशक्तीः पूजयेत् ॥ अथ शंखस्थापनप्रयोगः ॥ देववामतः त्रिकोणमंडलं कृत्वा जलेन प्रोक्ष्य त्रिकोणांतर्मायां (ह्रीं) विलिख्य "ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै नमः" इति संपूज्य मूलेन त्रिपदाधारं प्रक्षाल्य त्रिकोणमध्ये संस्थाप्य "ॐ वं वह्निमंडलाय दशकलात्मने शंखपात्रासनाय नमः ॥" इत्याधारं संपूजयेत् ॥ ततः "ॐ क्लीं महाजलचराय हुं फट् स्वाहा पांचजन्याय नमः॥" इति मंत्रेण क्षालितं शंखमाधारोपरि संस्थाप्य "ॐ अं सूर्यमंडलाय द्वादशकलात्मने शंखपात्राय नमः" इति शंखं पूजयेत्॥ ततो मूलेन 'नमः' इति शंखे जलमापूर्य "ॐ सों सोममंडलाय षोडशकलात्मने शंखपात्रामृताय नमः" इति गंधादिभिः संपूज्याभिमंत्रयेत् ॥ तत्र मंत्रः ॥ "ॐ शंखादौ चन्द्रदैवत्यं कुक्षौ वरुणदेवता ॥ पृष्ठे प्रजापतिश्चैवमग्रे गंगा सरस्वती ॥ १ ॥ त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया ॥ शंखे तिष्ठंति विप्रेन्द्र तस्माच्छंखं प्रपूजयेत् ॥ २ ॥" इत्यभिमंत्र्य प्रार्थयेत् ॥ तत्र मंत्रः ॥ "ॐ त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे ॥ निर्मितः सर्वदेवश्च पांचजन्य नमोऽस्तु ते "॥ इति संप्रार्थ्य ॥ "ॐ पांचजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि॥ तन्नः शंखः प्रचोदयात्॥" इति शंखगायत्रीमष्टधा जपित्वा शंखमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इति शंखस्थापनम् ॥ अथ घंटास्थापनप्रयोगः ॥ देवदक्षिणतः घंटां संस्थाप्य नादं कृत्वा पूजयेत् ॥ तथा च—"ॐ भूर्भुवः स्वः गरुडाय नमः " आवाहयामि सर्वोपचारार्थं गंधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि ॥ इत्यावाह्य "ॐ जगद्ध्वने मंत्रमातः स्वाहा " इति मंत्रेण घंटास्थितगरुड घंटां च संपूज्य गरुडमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इति घंटां संस्थाप्य गंधाक्षतपुष्पादींश्च पूजोपकरणार्थं स्वदक्षिणपार्श्वे निधाय मूलेन नमः इति जलेन प्रोक्ष्य जलार्थं बृहत्पात्रं छत्रादर्शचामराणि च स्ववामे संस्थापयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य

तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोध्य आसनमंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य देशकालौ संकीर्त्य मम श्रीहनुमद्देवतानूतनयंत्रे मूर्तौ वा प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये । इति संकल्प्य प्रतिष्ठां च कुर्यात् ॥ तथा च ॥ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः । ऋग्यजुःसामानि च्छंदांसि । क्रियामयवपुःप्राणाख्या देवता । आं बीजम् । ह्रीं शक्तिः । क्रौं कीलकम् । अस्य नूतनयंत्रे मूर्तौ वा प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः॥इति जलं भूमौ क्षिप्त्वा करेणाच्छाद्य ॐ आं ह्रीं क्रौं यँरँलँवँशँषँसँहंसः सोहं अस्य हनुमद्देवतासपरिवारयंत्रस्य प्राणा इह प्राणाः ॥ १ ॥ पुनः ॐ आं ह्रीं क्रौं यँरँलँवँशँषँसँहंसः सोहं अस्य हनुमद्देवतासपरिवारयंत्रस्य जीव इह स्थितः ॥२॥ पुनः ॐ आं ह्रीं क्रौं यँरँलँवँशँषँसँहंसः सोहं अस्य हनुमद्देवतासपरिवारयंत्रस्य सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि ॥ ३ ॥ पुनः ॐ आं ह्रीं क्रौं यँरँलँवँशँषँसँहंसः सोहं अस्य हनुमद्देवतासपरिवारयंत्रस्य वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा॥४॥इति प्राणान् प्रतिष्ठाप्य "यः प्राणतो निमिषतो महित्वे० विधेम इति मन्" इति त्रिवारं पठेत्॥ततः ॐ मनो जूतिर्जुषता०सुप्रतिष्ठा प्रतिष्ठा॥इत्युक्त्वा संस्कारसिद्ध्ये पंचदशप्रणवावृत्तीः कृत्वा अनेन श्रीहनुमद्देवतासपरिवारयंत्रस्य गर्भाधानादि पंचदशसंस्कारान्संपादयामि नमः ॥ इति वदेत् । ततः "यंत्रराजाय विद्महे महायंत्राय धीमहि ॥ तन्नो यंत्रः प्रचोदयात्" इत्यष्टोत्तरशतवारमभिमंत्र्य मूलदेवतां ध्यात्वा आवाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः पूजयेत् ॥ अथावाहनादिपूजनम् ॥ अक्षतानादाय " ॐ देवेश भक्तिसुलभ परिवारसमन्वित ॥ यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावद्देव इहावह॥१॥" मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीहनुमते नमः इहागच्छ इह तिष्ठ । एवं सर्वत्र ॥ इत्यावाहनम् ॥१॥ "ॐ अज्ञानाद्दुर्मनस्त्वाद्वा वैकल्यात्साधनस्य च ॥ यद्यपूर्णं भवेत्कृत्यं तदाप्यभिमुखो भव ॥ १ ॥" मू० ॐ भू० श्रीहनुमते नमः इह सम्मुखो भव ॥ इति सम्मुखीकरणम् ॥ २ ॥ " ॐ यस्य दर्शनमिच्छन्ति देवाः स्वाभीष्टसिद्धये ॥ तस्मै ते परमेशाय स्वागतं स्वागतं च ते ॥ १ ॥" मू० ॐ भू० श्रीहनुमते नमः सुस्वागतं समर्पयामि ॥ इति सुस्वागतम् ॥ १ ॥ " ॐ देवदेव महाराज प्रियेश्वर प्रजापते ॥ आसनं दिव्यमीशान दास्येऽहं परमेश्वर ॥ १ ॥ " मूलं पठित्वा "ॐ भू० श्रीहनुमते नमः

आसनं समर्पयामि ॥ इत्यासनम् ॥ ४ ॥ इत्यासनं दत्त्वा करौ बद्ध्वा प्रार्थयेत् ॥ " ॐ स्वागतं देवदेवेश मद्भाग्यात्त्वमिहागतः ॥ प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत्परिपालय ॥ १ ॥ " मू० ॐ भू० श्रीहनुमते नमः प्रार्थनां समर्पयामि नमस्करोमि ॥ इति प्रार्थ्य पाद्यादि पूजनं कुर्यात् ॥ अथ पाद्यादिपूजनम् ॥ " ॐ यद्भक्तिलेशसंपर्कात्परमानंदसंभवः ॥ तस्मै ते चरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पये ॥ १ ॥ " मू० ॐ भू० श्रीहनुमते नमः पाद्यं समर्पयामि । इति पाद्यम् ॥ १ ॥ " ॐ देवानामपि देवाय देवानां देवतात्मने ॥ आचामं कल्पयामीश शुद्धानां शुद्धिहेतवे ॥ १ ॥ " मू० ॐ भू० श्रीहनुमते नमः आचमनं समर्पयामि । इत्याचमनम् ॥ २ ॥ " ॐ तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम् ॥ तापत्रयविमोक्षाय तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम् ॥ १ ॥ इत्यर्घोदकेनार्घ्यं दत्त्वा श्रीहनुमते नमः अर्घ्यं स० इति वदेत् । इत्यर्घ्यम् ॥ ३ ॥ " ॐ सर्वकालुष्यहीनाय परिपूर्णसुखात्मने ॥ मधुपर्कमिदं देव कल्पयामि प्रसीद मे ॥ १ ॥ " मू० ॐ भू० श्रीहनुमते नमः मधुपर्कं समर्पयामि ॥ इति सर्वत्र । इति मधुपर्कः ॥ ४ ॥ "ॐ उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वापि यस्य स्मरणमात्रतः ॥ शुद्धिमाप्नोति तस्मै ते पुनराचमनीयकम् ॥ १ ॥" इति पुनराचमनीयम् ॥ ५ ॥ " ॐ गंगासरस्वतीरेवापयोष्णीनर्मदाजलैः ॥ स्नापितोऽसि मया देव तथा शांतिं कुरुष्व मे ॥ १ ॥ " इति स्नानम् ॥ ६ ॥ " ॐ सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे ॥ मयैवापादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥ इति रक्तवस्त्रे ॥ ७ ॥ " ॐ नवभिस्तंतुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ॥ उपवीतं चोत्तरीयं गृहाण परमेश्वर ॥ १ ॥" इति यज्ञोपवीतम् ॥ ८ ॥ "ॐ स्वभावसुंदरांगाय सत्यासत्याश्रयाय ते ॥ भूषणानि विचित्राणि कल्पयामि सुरार्चित ॥ १ ॥" दक्षहस्तांगुष्ठस्पृष्टानामिकात्मिकया मुद्रया भूषणानि दद्यात् ॥ इत्याभूषणम् ॥ ९ ॥ "ॐ श्रीखंडं चंदनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम् ॥ विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥" अंगुष्ठौ कनिष्ठामूललग्नौ गंधमुद्रा ॥ १० ॥ "ॐ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः ॥ मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥ १ ॥" सर्वांगुलीभिर्दद्यात् । इत्यक्षताः ॥ ११ ॥ "ॐ माल्यादीनि सुगंधीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ॥ मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥ १ ॥" तर्जन्यंगुष्ठमूललग्ने पुष्पमुद्रा इति

पुष्पम् ॥ १२ ॥ इति पुष्पांतं पूजयित्वा प्रयोगोक्तावरणपूजां च कृत्वा धूपादिपूजनं कुर्यात् ॥ अथ धूपादिपूजनम् ॥ 'फाडिति' धूपपात्रं संप्रोक्ष्य मूलेन नमः इति गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य पुरतो निधाय (रं) इति वह्निबीजेनाग्निं संस्थाप्य तदुपरि मूलेन दशांगं दत्त्वा घंटां वादयन् "ॐ वनस्पतिरसोद्भूतो गंधाढ्यो गंध उत्तमः ॥ आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥" मू० ॐ भू० सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सवाहनाय श्रीहनुमते नमः धूपं समर्पयामि । इति पठित्वा नाभिदेशे धूपयित्वा देवस्य वामभागे धूपपात्रं निधाय शंखजलं चोत्सृज्य तर्जनीमूलांगुष्ठयोगे धूपमुद्रा तां प्रदर्शयेत् । इति धूपः ॥ १ ॥ ततः दीपपात्रं गोघृतेनापूर्य मंत्राक्षरतंतुभिर्वर्तिं निक्षिप्य (ॐ) इति प्रणवेन प्रज्वाल्य घंटां वादयन् नेत्रादिपादपर्यंतं दीपं प्रदर्शयेत्॥ "ॐ सुप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः॥ सबाह्याभ्यंतरज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥१॥" मू० ॐ भू० सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सवाहनाय श्रीहनुमते नमः दीपं समर्पयामि इति पठित्वा देवस्य दक्षिणभागे दीपपात्रं निधाय ततः शंखजलमुत्सृज्य मध्यम अंगुष्ठलग्ने दीपमुद्रा तां प्रदर्शयेत् । इति दीपः॥२॥ततो देवस्याग्रे देवदक्षिणतो वा जलेन चतुरस्रं मंडलं कृत्वा स्वर्णादिभोजनपात्रं संस्थाप्य तन्मध्ये षड्रसोपेतं विविधप्रकारं मोदकं वा निधाय मूलेन संप्रोक्ष्याधोमुखदक्षिणहस्तोपरि तादृशं वामहस्तं निधाय नैवेद्येनाच्छाद्य (ॐ यं) इति वायुबीजेन षोडशधा संजप्य वायुना तद्गतदोषान् संशोष्य ततो दक्षिणकरतलं तत्पृष्ठलग्नवामकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य (ॐ रं) इति वह्निबीजेन षोडशवारं संजप्य तदुत्पन्नाग्निना तद्दोषं दग्ध्वा ततो वामकरतले (ॐ वं) इति अमृतबीजं विचिंत्य तत्पृष्ठलग्नं दक्षिणकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य (ॐ वं) इति सुधाबीजं षोडशवारं संजप्य तदुत्थामृतधारया प्लावितं विभाव्य मूलेन प्रोक्ष्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य मूलेनाष्टधाऽभिमंत्र्य गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य देवस्योद्गतं तेजः स्मृत्वा वामांगुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृष्ट्वा दक्षिणकरेण जलं गृहीत्वा "ॐ सत्पात्रसिद्धं सुहविर्विविधानेकभक्षणम् ॥ निवेदयामि देवेश सानुगाय गृहाण तत्॥१॥" मू० ॐ भू० सांगाय सपरिवाराय सवाहनाय सायुधाय श्रीहनुमते नमः नैवेद्यं समर्पयामि॥इति भूतले देवदक्षिणे जलं क्षिप्त्वा वामहस्तेन अनामामूलयोरंगुष्ठयोगे ग्रासमुद्रा तां प्रदर्श्य देवं भुक्तवन्तं विभाव्य जलं दद्यात्।इति नैवेद्यम्॥३॥

"ॐ नमस्ते देवदेवेश सर्वतृप्तिकरं परम् ॥ परमानंदपूर्ण त्वं गृहाण जलमुत्तमम् ॥" इति जलम् ॥४॥ "ॐ उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वापि यस्य स्मरणमात्रतः ॥ शुद्धिमाप्नोति तस्मै ते पुनराचमनीयकम् ॥" इत्याचमनम् ॥ ५ ॥ इत्याचमनं दत्त्वा मूलेन गंडूषार्थं जलं च दद्यात् ॥ ६ ॥ "ॐ पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ॥ एलाचूर्णादिकैर्युक्तं तांबूलं प्रतिगृह्यताम् ॥" इति तांबूलम् ॥ ७ ॥ "ॐ इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव ॥ तेन मे सुफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥" इति फलम् ॥ ८ ॥ "ॐ कदलीगर्भसंभूतं कर्पूरं च प्रदीपितम् ॥ आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥" इति कर्पूरम् ॥ ९ ॥ "ॐ यानि कानि च पापानि जन्मांतरकृतानि वै ॥ तानि सर्वाणि नश्यंतु प्रदक्षिणपदे पदे ॥ इति तिस्रः प्रदक्षिणाः कृत्वा" ॐ प्रपन्नं पाहि मामीश भीतं मृत्युग्रहार्णवात् ॥" इति वदन् साष्टांगं प्रणमेत् ॥ १० ॥ "ॐ नानासुगंधिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च ॥ पुष्पांजलिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥ १ ॥" इति पुष्पांजलिः ॥ ११ ॥ इति पुष्पांजलिं दत्त्वा ततः स्तुतिपाठेन स्तुत्वा बद्धांजलिपूर्वकं प्रार्थयेत् ॥ तथा च—"ॐ ज्ञानतोऽज्ञानतो वाऽथ यन्मया क्रियते विभो ॥ मम कृत्यमिदं सर्वमिति देव क्षमस्व मे ॥१॥ अपराधसहस्राणि क्रियंतेऽहर्निशं मया ॥ दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥ २ ॥ अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे ॥ कोऽपरः सहतां लोके केवलं स्वामिनं विना ॥३॥ भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलंबनम् ॥ त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं प्रभो ॥ ४ ॥" इति बद्धांजलिपूर्वकं संप्रार्थ्य "ॐ यदुक्तं यदि भावेन पत्रं पुष्पं फलं जलम् ॥ निवेदितं च नैवेद्यं गृहाण मानुकंपय ॥१॥" इति पठित्वा देवस्य दक्षिणकरे पूजार्पणजलं दद्यात् ॥ ततो मालामादाय सर्वदेवोपयोगि पद्धतिमार्गेण मालायाः संस्कारान् कृत्वा अशक्तश्चेत् "ॐ ह्रीं माले माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ॥ चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥ १ ॥" इति मालां संप्रार्थ्य ॥ "ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं सर्वकार्येषु सर्वदा" इति मंत्रेण दक्षिणहस्ते मालामादाय हृदये धारयन् स्वेष्टदेवतां ध्यात्वा मध्यमांगुलिमध्यपर्वणि संस्थाप्य ज्येष्ठाग्रेण भ्रामयित्वा एकाग्रचित्तो मंत्रार्थं स्मरन् यथाशक्ति मूलमंत्रं जपेत् ॥ नित्यशः समाना एव जपाः कार्या न तु न्यूनाधिकाः । ततो जपांते "ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा मम ॥

शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा ॥ तेन सत्येन सिद्धिं मे देहि मातर्नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥" "ॐ ह्रीं सिद्ध्यै नमः" इति मालां शिरसि निधाय गोमुखीरहसे स्थापयेत् ॥ नाशुचिः स्पर्शयेत् ॥ नान्यस्मै दद्यात् ॥ अशुचिस्थाने न निधापयेत् ॥ स्वयोनिवत् गुप्तां कुर्यात् ॥ ततः कवचस्तोत्रसहस्रनामादिकं पठित्वा पुनर्मूलमंत्रोक्तन्यासादिकं च कृत्वा पंचोपचारैः संपूज्य पुष्पांजलिं च दत्त्वा जपार्पणं कुर्यात् ॥ तथा च–शंखोदकेन चुलुकमादाय ॥ " ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात्त्वयि स्थितिः ॥ १ ॥." ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुर्यावस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा ॥ मदीयं च सकलं श्रीहनुमद्देवतायै समर्पयामि ॥ ॐ तत्सत् इति ब्रह्मार्पणं भवतु ॥ इति देवदक्षिणकरे जलसमर्पणं कृत्वा कृतांजलिपूर्वकं क्षमापनं पठेत् ॥ तथा च–" ॐ आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ॥ पूजाभागं न जानामि त्वं गतिः परमेश्वर ॥ १ ॥ मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ॥ यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ २ ॥ यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ॥ तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥ ३ ॥ कर्मणा मनसा वाचा त्वत्तो नान्यो गतिर्मम ॥ अंतश्चरेण भूतानि इष्टस्त्वं परमेश्वर ॥ ४ ॥ अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ॥ तस्मात्कारुण्यभावेन क्षमस्व परमेश्वर ॥५॥ प्रातर्योनिसहस्राणां सहस्रेषु व्रजाम्यहम् ॥ तेषु तेष्वचला भक्तिरच्युतेऽस्तु सदा त्वयि ॥६॥ गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च ॥ आगता सुखसंपत्तिः पुण्याच्च तव दर्शनात् ॥ ७ ॥ देवो दाता च भोक्ता च देवरूपमिदं जगत् ॥ देवं जपति सर्वत्र यो देवः सोऽहमेव हि ॥८ ॥ क्षमस्व देवदेवेश क्षम्यते भुवनेश्वर ॥ तव पादांबुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे ॥९॥ " इति कृतांजलिः प्रार्थ्य शंखजलमुद्धृत्य देवोपरि भ्रामयित्वा "साधु वासाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया ॥ तत्सर्वं कृपया देव गृहाणाराधनं मम ॥ १ ॥ इत्युच्चरन् देवस्य दक्षिणहस्ते किंचिज्जलं दत्त्वा प्राग्वदर्घ्यं देवशिरसि दत्त्वा शंखं यथास्थाने निवेशयेत् ॥ ततो गतसारनैवेद्यं देवस्योच्छिष्टं शिरसि धृत्वा नैवेद्यादिकं देवभक्तेषु विभज्य स्वयं भुक्त्वा विसर्जनं कुर्यात् ॥ तथा च–

"ॐ गच्छ गच्छ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर ॥ पूजाराधनकाले च पुनरागमनाय च ॥ १ ॥" इत्यक्षतान्निक्षिप्य विसर्जनं कृत्वा ॐ "तिष्ठ तिष्ठ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर ॥ यत्र ब्रह्मादयो देवाः सर्वे तिष्ठंति मे हृदि ॥ १ ॥" इति हृदयकमले हस्तं दत्त्वा देवं स्वहृदये संस्थाप्य मानसोपचारैः संपूज्य स्वात्मानं देवरूपं भायवन् यथासुखं विहरेत् । एवमेव विधिना जपं समाप्य सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण तत्तद्दशांशहोमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् ॥ इति हनुमत्पूजापद्धतिः समाप्ता ॥

अथ पंचमुखीहनुमत्कवचप्रारंभः ॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥ सदाशिव वरस्वामिञ्ज्ञानद प्रियकारक ॥ कवचादि मया सर्वं देवानां संश्रुतं प्रिय ॥ १ ॥ इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं करुणानिधे ॥ वायुसूनोर्वरं येन नान्यदन्वेषितं भवेत् ॥ साधकानां च सर्वस्वं हनुमत्प्रीतिवर्द्धनम् ॥ २ ॥ श्रीशिव उवाच ॥ देवेशि दीर्घनयने दीक्षादीप्तकलेवरे ॥ मां पृच्छसि वरारोहे न कस्यापि मयोदितम् ॥ ३ ॥ कथं वाच्यं हनुमतः कवचं कल्पपादपम् ॥ स्त्रीरूपा त्वामिदं नानाकूटमंडितविग्रहम् ॥ ४ ॥ गह्वरं गुरुगम्यं च यत्र कुत्र वदिष्यसि ॥ तेन प्रत्युत पापानि जायंते गजगामिनि ॥ ५ ॥ अत एव महेशानि नो वाच्यं कवचं प्रिये ॥ ६ ॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥ वदान्यस्य वचो नेदं नादेयं जगतीतले ॥ त्वं वदान्यावधिः प्राणनाथो मे प्रियकृत्सदा ॥ ७ ॥ मह्यं च किं न दत्तं ते तदिदानीं वदाम्यहम् ॥ गणपं शाक्तं सौरं च शैवं वैष्णवमुत्तमम् ॥ ८ ॥ मंत्रयंत्रादिजालं हि मह्यं सामान्यतस्त्वया ॥ दत्तं विशेषतो यद्यत्तत्सर्वं कथयामि ते ॥ ९ ॥ श्रीरामतारको मंत्रः कोदण्डस्यापि मे प्रियः ॥ नृहरेः सामराजो हि कालिकाद्याः प्रियंवद ॥ १० ॥ दशविद्याविशेषेण षोडशीमंत्रनायिकाः ॥ दक्षिणामूर्तिसंज्ञोऽन्यो मंत्रराजो धरापते ॥ ११ ॥ सहस्रार्जुनकस्यापि मंत्रा येऽन्ये हनूमतः ॥ ये ते ह्यदेया देवेश तेऽपि मह्यं समर्पिताः ॥ १२ ॥ किं बहूक्तेन गिरिश प्रेमयंत्रितचेतसा ॥ अर्धाङ्गमपि मह्यं ते दत्तं किं ते वदाम्यहम् ॥ स्त्रीरूपं मम जीवेश पूर्वं तु न विचारितम् ॥ १३ ॥ श्रीशिव उवाच ॥ सत्यं सत्यं वरारोहे सर्वं दत्तं मया तव ॥ परं तु गिरिजे तुभ्यं कथ्यते शृणु सांप्रतम् ॥ १४ ॥ कलौ पाखण्डबहुला नानावेषधरा नराः ॥ ज्ञानहीना लुब्धकाश्च वर्णाश्रमबहिष्कृताः ॥ १५ ॥ वैष्णवत्वेन विख्याताः शैवत्वेन वरा

नन ॥ शाक्तत्वेन च देवेशि सौरत्वेनेतरे जनाः ॥ १६ ॥ गाणपत्वेन गिरिजे शास्त्रज्ञानबहिष्कृताः ॥ गुरुत्वेन समाख्याता विचारिष्यंति
भूतले ॥१७॥ ते शिष्यसंग्रहं कर्तुमुद्युक्ता यत्र कुत्रचित् ॥ मंत्राद्युच्चारणे तेषां नास्ति सामर्थ्यमम्बिके ॥ १८ ॥ तच्छिष्याणां च गिरिजे
तथापि जगतीतले ॥ पठंति पाठयिष्यंति विप्रद्वेषपराः सदा ॥ १९ ॥ द्विजद्वेषपराणां हि नरके पतनं ध्रुवम् ॥ प्रकृतं वच्मि गिरिजे
यन्मया पूर्वमीरितम् ॥ २० ॥ नानारूपमिदं नानाकूटमण्डितविग्रहम् ॥ तत्रोत्तरं महेशानि शृणु यत्नेन साम्प्रतम् ॥ २१ ॥
तुभ्यं मया यदा देवि वक्तव्यं कवचं शुभम् ॥ नानाकूटमयं पश्चात्त्वयाऽपि प्रेमतः प्रियम् ॥ २२ ॥ वक्तव्यं कुत्रचित्तु भुवने विचारि
ष्यति ॥ विश्वांतःपातिनां भद्रे यदि पुण्यवतां सताम्॥२३॥सत्सम्प्रदायशुद्धानां दीक्षामंत्रवतां प्रिये ॥ ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्या विशेषेण
वरानने ॥ २४ ॥ उच्चारणे समर्थानां शास्त्रनिष्ठावतां सदा ॥ हस्तागतं भवेद्भद्रे तदा ते पुण्यमुत्तमम् ॥२५॥ अन्यथा शूद्रजातीनां पूर्वो
क्तानां महेश्वरि॥मुखशुद्धिविहीनानां दांभिकानां सुरेश्वरि ॥ २६ ॥ यदा हस्तगतं तत्स्यात्तदा पापं महत्तव ॥ तस्माद्विचार्य देवेशि ह्यधिका
रिणमम्बिके ॥ २७ ॥ वक्तव्यं नात्र सन्देहो ह्यन्यथा निरयं व्रजेत् ॥ किं कर्तव्यं मया तुभ्यमुच्यते प्रेमतः प्रिये ॥ त्वयापीदं विशेषेण
गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥ २८ ॥ पाठः ॥ ॐ श्रीपञ्चवदनायाञ्जनेयाय नमः॥ ॐ अस्य श्रीपंचमुखहनुमन्मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । गायत्री
छंदः । पंचमुखविराड्हनुमान्देवता । ह्रीं बीजम् । श्रीं शक्तिः । क्रौं कीलकम् । क्रूं कवचम् । क्रैं अस्त्राय फट् । इति दिग्बंधः ॥ श्रीगरुड
उवाच ॥ अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि शृणु सर्वाङ्गसुंदरि ॥ यत्कृतं देवदेवेन ध्यानं हनुमतः प्रियम् ॥ १ ॥ अथ ध्यानम् ॥ पंचवक्त्रं महा
भीमं त्रिपंचनयनैर्युतम् ॥ बाहुभिर्दशभिर्युक्तं सर्वकामार्थसिद्धिदम् ॥ १ ॥ पूर्वं तु वानरं वक्त्रं कोटिसूर्यसमप्रभम् ॥ दंष्ट्राकरालवदनं
भृकुटीकुटिलेक्षणम् ॥ २ ॥ अस्यैव दक्षिणं वक्त्रं नारसिंहं महाद्भुतम् ॥ अत्युग्रतेजोवपुषं भीषणं भयनाशनम् ॥ ३ ॥ पश्चिमं
गारुडं वक्त्रं वक्रतुण्डं महाबलम् ॥ सर्वनागप्रशमनं विषभूतादिकृंतनम् ॥ ४ ॥ उत्तरं सौकरं वक्त्रं कृष्णं दीप्तं नभोपमम् ॥
पातालसिंहवेतालज्वररोगादिकृंतनम् ॥ ५ ॥ ऊर्ध्वं हयाननं घोरं दानवान्तकरं परम् ॥ येन वक्त्रेण विप्रेन्द्र तारकाख्यं महासुरम्

॥ ६ ॥ जघान शरणं तत्स्यात्सर्वशत्रुहरं परम् ॥ ध्यायेत्पंचमुखं रुद्रं हनुमंतं दयानिधिम् ॥ ७ ॥ खड्गं त्रिशूलं खट्वाङ्गं
पाशमंकुशपर्वतम् ॥ मुष्टिं कौमोदकीं वृक्षं धारयंतं कमण्डलुम् ॥ ८ ॥ भिन्दिपालं ज्ञानमुद्रां दशभिर्मुनिपुंगव ॥ एतान्यायुधजा
लानि धारयंतं भजाम्यहम् ॥ ९ ॥ प्रेतासनोपविष्टं तं सर्वाभरणभूषितम् ॥ दिव्यमालांबरधरं दिव्यगंधानुलेपनम् ॥ १० ॥
सर्वाश्चर्यमयं देवं हनुमद्विश्वतोमुखम् ॥ ११ ॥ पञ्चास्यमच्युतमनेकविचित्रवर्णं वक्त्रं शशांकशिखरं कपिराजवर्यम् ॥ पीताम्बरादिमुकुटैरुप
शोभिताङ्गं पिङ्गाक्षमाद्यमनिशं मनसा स्मरामि ॥ १२ ॥ मर्कटेश महोत्साह सर्वशत्रुहरः परः ॥ शत्रुं संहर मां रक्ष श्रीमन्नापद उद्धर
॥ १३ ॥ ॐ हरिमर्कटमर्कटमंत्रमिमं परिलिख्यति लिख्यति वामतले ॥ यदि नश्यति नश्यति शत्रुकुलं यदि मुंचति मुंचति वामलता
॥ १४ ॥ इति ध्यात्वा कवचं पठेत् ॥ ॐ हरिमर्कटमर्कटाय स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते पंचवदनाय पूर्वकपिमुखाय सकलशत्रु
संहारणाय स्वाहा ॥२॥ ॐ नमो भगवते पंचवदनाय दक्षिणमुखाय करालवदनाय नरसिंहाय सकलभूतमथनाय स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ नमो
भगवते पंचवदनाय पश्चिममुखाय गरुडाननाय सकलविषहराय स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ नमो भगवते पंचवदनायोत्तरमुखायादिवराहाय
सकलसम्पत्कराय स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ नमो भगवते पंचवदनायोर्द्ध्वमुखाय हयग्रीवाय सकलजनवशंकराय स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ अस्य श्रीपंच
मुखहनुमन्मंत्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । पञ्चमुखवीरहनुमान्देवता । हनुमानिति बीजम् ॥ वायुपुत्र इति शक्तिः॥अंजनी
सुत इति कीलकम् । श्रीरामदूतहनुमत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ रामचन्द्रऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ अनुष्टुप्छन्दसे नमः
मुखे ॥ २ ॥ पञ्चमुखवीरहनुमद्देवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ हनुमानिति बीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ वायुपुत्र इति शक्तये नमः पादयोः
॥ ५ ॥ अंजनीसुत इति कीलकाय नमः नाभौ ॥ ६ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ७ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ अंजनीसुताय
अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ रुद्रमूर्तये तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ वायुपुत्राय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ अग्निगर्भाय अनामि
काभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ रामदूताय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ पंचमुखहनुमते करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ इति करन्यासः ॥

ॐ अंजनीसुताय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ रुद्रमूर्तये शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ वायुपुत्राय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ अग्निगर्भाय कवचाय हुम् ॥ ४ ॐ रामदूताय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ पंचमुखहनुमतेऽस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ ॐ पंचमुखहनुमते स्वाहा ॥ इति दिग्बंधः ॥ इति षडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा पुनर्ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ वन्दे वानरनारसिंहखगराट्क्रोडाश्ववक्त्रान्वितं दिव्यालंकरणं त्रिपंचनयनं देदीप्यमानं रुचा ॥ हस्ताब्जैरसिखेटपुस्तकसुधाकुम्भांकुशाद्रीन् हलं खट्वांगं फणिभूरुहं दशभुजं सर्वारिवीरापहम् ॥१॥ ॐ रामदूतायाञ्जनेयाय वायुपुत्राय महाबलपराक्रमाय सीतादुःखनिवारणाय लंकादहनकारणाय महाबलप्रचण्डाय फाल्गुनसखाय कोलाहलसकलब्रह्माण्डविश्वरूपाय सप्तसमुद्रनीरालंघनाय पिङ्गलनयनायामितविक्रमाय सूर्यबिम्बफलसेवनाय दुष्टनिबर्हणाय दृष्टिनिरालंकृताय सञ्जीविनीसञ्जीविताङ्गदलक्ष्मणमहाकपिसैन्यप्राणदाय दशकण्ठविध्वंसनाय रामेष्टाय फाल्गुनमहासखाय सीतासहितरामवरप्रदाय षट्प्रयोगागमपञ्चमुखवीरहनुमन्मन्त्रजपे विनियोगः॥ॐ हरिमर्कटमर्कटाय वंवंवंवंवं वौषट् स्वाहा॥१॥ॐ हरिमर्कटमर्कटाय फंफंफंफंफं फट् स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ हरिमर्कटमर्कटाय खेंखेंखेंखेंखें मारणाय स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ हरिमर्कटमर्कटाय लुंलुंलुंलुंलुं आकर्षितसकलसम्पत्कराय स्वाहा॥४॥ ॐ हरिमर्कटमर्कटाय धंधंधंधंधं शत्रुस्तंभनाय स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ हरिमर्कटमर्कटाय ठंठंठंठंठं कूर्ममूर्तये पञ्चमुखवीरहनुमते परयंत्रपरतंत्रोच्चाटनाय स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ कंखंगंघंङंचंछंजंझंञंटंठंडंढंणंतंथंदंधंनंपंफंबंभंमंयंरंलंवंशंषंसंहंळंक्षंस्वाहा ॥ इति दिग्बंधः ॥ ७ ॥ ॐ पूर्वकपिमुखाय पंचमुखहनुमते ठंठंठंठंठं सकलशत्रुसंहारणाय स्वाहा ॥ ८ ॥ ॐ दक्षिणमुखाय पंचमुखहनुमते कराळवदनाय नरसिंहाय ॐ ह्रांह्रींह्रूंह्रैंह्रौंह्रः सकलभूतप्रेतदमनाय स्वाहा ॥ ९ ॥ ॐ पश्चिममुखाय गरुडाननाय पंचमुखहनुमते मंमंमंमंमं सकलविषहराय स्वाहा ॥ १० ॥ ॐ उत्तरमुखायादिवराहाय लंलंलंलंलं नृसिंहाय नीलकण्ठमूर्तये पञ्चमुखहनुमते स्वाहा
॥१७८॥ ॥ ११ ॥ ॐ ऊर्ध्वमुखाय हयग्रीवाय रुंरुंरुंरुंरुं रुद्रमूर्तये सकलप्रयोजननिर्वाहकाय स्वाहा ॥ १२ ॥ ॐ अंजनीसुताय वायुपुत्राय [illegible] सीताशोकनिवारणाय श्रीरामचन्द्रकृपापादुकाय महावीर्यप्रमथनाय ब्रह्माण्डनाथाय कामदाय पंचमुखवीरहनुमते स्वाहा ॥

भूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसशाकिनीडाकिन्यन्तरिक्षग्रहपरयंत्रपरतंत्रोच्चाटनाय स्वाहा ॥ सकलप्रयोजननिर्वाहकाय पंचमुखवीरहनुमते
श्रीरामचन्द्रवरप्रदाय जँजँजँजँजँ स्वाहा ॥ १३ ॥ कवचं तु पठित्वेदं महाकवचं पठेन्नरः ॥ एकवारं जपेत्स्तोत्रं सर्वशत्रु
निवारणम् ॥ १ ॥ द्विवारं तु पठेन्नित्यं पुत्रपौत्रप्रवर्धनम् ॥ त्रिवारं च पठेन्नित्यं सर्वसम्पत्करं शुभम् ॥ २ ॥ चतुर्वारं पठेन्नित्यं सर्व
रोगनिवारणम् ॥ पंचवारं पठेन्नित्यं सर्वलोकवशंकरम् ॥ ३ ॥ षड्वारं च पठेन्नित्यं सर्वदेववशंकरम् ॥ सप्तवारं पठेन्नित्यं सर्वसौभाग्य
दायकम् ॥ ४ ॥ अष्टवारं पठेन्नित्यमिष्टकामार्थसिद्धिदम् ॥ नववारं पठेन्नित्यं राजभोगमवाप्नुयात् ॥ ५ ॥ दशवारं पठेन्नित्यं त्रैलोक्य
ज्ञानदर्शनम् ॥ रुद्रावृत्तीः पठेन्नित्यं सर्वसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ ६ ॥ कवचस्मरणेनैव महाबलमवाप्नुयात् ॥ ७ ॥ इति श्रीसुदर्शनसंहितायां
श्रीरामचंद्रसीताप्रोक्तं श्रीपञ्चमुखहनुमत्कवचं सम्पूर्णम् ॥ एकमुखहनुमत्कवचं षट्कवचीप्रयोगे मिश्रतरंगे ज्ञेयम् ॥ अथैकादशमुखहनुम
त्कवचम् ॥ लोपामुद्रोवाच ॥ कुम्भोद्भव दयासिंधो श्रुतं हनुमतः परम् ॥ यंत्रमंत्रादिकं सर्वं त्वन्मुखोदीरितं मया ॥ १ ॥ दयां कुरु
मयि प्राणनाथ वेदितुमुत्सहे ॥ कवचं वायुपुत्रस्य एकादशमुखात्मनः ॥ २ ॥ इत्येवं वचनं श्रुत्वा प्रियायाः प्रश्रयान्वितम् ॥ वक्तुं
प्रचक्रमे तत्र लोपामुद्रापतिः प्रभुः ॥३॥ अगस्त्य उवाच ॥ नमस्कृत्वा रामदूतं हनुमंतं महामतिम् ॥ ब्रह्मप्रोक्तं तु कवचं शृणु सुन्दरि
सादरम् ॥४॥ सनन्दनाय सुमहच्चतुराननभाषितम् ॥ कवचं कामदं दिव्यं सर्वरक्षोनिबर्हणम् ॥५॥ सर्वसम्पत्प्रदं पुण्यं मर्त्यानां मधुरस्वरे
॥ ६ ॥ ॐ अस्य श्रीमदेकादशमुखहनुमत्कवचस्य सनन्दन ऋषिः । अनुष्टुप्छंदः । प्रसन्नात्मा हनुमान्देवता । वायुपुत्रेति बीजम् । मुख्यः
प्राण इति शक्तिः । सर्वकामार्थसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ स्फें बीजं शक्तिधृक् पातु शिरो मे पवनात्मजः ॥ क्रौं बीजात्मा
नयनयोः पातु मां वानरेश्वरः ॥ १ ॥ क्षं बीजरूपी कर्णौ मे सीताशोकविनाशनः ॥ ग्लौं बीजवाच्यो नासां मे लक्ष्मणप्राणदायकः ॥२॥
वं बीजार्थश्च कण्ठं मे पातु चाक्षय्यकारकः ॥ ऐं बीजवाच्यो हृदयं पातु मे कपिनायकः ॥ ३ ॥ वं बीजकीर्तितः पातु बाहू मे चाञ्जनीसुतः ॥
ह्रां बीजो राक्षसेन्द्रस्य दर्पहा पातु चोदरम् ॥४॥ ह्सौं बीजमयो मध्यं पातु लंकाविदाहकः ॥ ह्रीं बीजधरो मां पातु गुह्यं देवेन्द्रवंदितः ॥५॥

रं बीजात्मा सदा पातु चोरुवारिधिलंघनः ॥ सुग्रीवसचिवः पातु जानुनी मे मनोजवः ॥ ६ ॥ पादौ पादतले पातु द्रोणाचलधरो हरिः ॥ आपादमस्तकं पातु रामदूतो महाबलः ॥ ७ ॥ पूर्वे वानरवक्त्रो मामाग्नेय्यां क्षत्रियान्तकृत् ॥ दक्षिणे नारसिंहस्तु नैर्ऋत्यां गणनायकः ॥ ८ ॥ वारुण्यां दिशि मामव्यात्खगवक्त्रो हरीश्वरः ॥ वायव्यां भैरवमुखः कौबेर्य्यां पातु मां सदा ॥ ९ ॥ क्रोडास्यः पातु मां नित्यमीशान्यां रुद्ररूपधृक् ॥ ऊर्ध्वं हयाननः पातु त्वधः शेषमुखस्तथा ॥ १० ॥ रामास्यः पातु सर्वत्र सौम्यरूपी महाभुजः ॥ इत्येवं रामदूतस्य कवचं प्रपठेत्सदा ॥ ११ ॥ एकादशमुखस्यैतद् गोप्यं वै कीर्तितं मया ॥ रक्षोघ्नं कामदं सौम्यं सर्वसम्पद्विधायकम् ॥ १२ ॥ पुत्रदं धनदं चोग्रशत्रुसंघविमर्द्दनम् ॥ स्वर्गापवर्गदं दिव्यं चिंतितार्थप्रदं शुभम् ॥ १३ ॥ एतत्कवचमज्ञात्वा मंत्रसिद्धिर्न जायते ॥ चत्वारिंशत्सहस्राणि पठेच्छुद्धात्मना नरः ॥ १४ ॥ एकवारं पठेन्नित्यं कवचं सिद्धिदं पुमान् ॥ द्विवारं वा त्रिवारं वा पठन्नायुष्यमाप्नुयात् ॥ १५ ॥ क्रमादेकादशादेवमावर्तनजपात्सुधीः ॥ वर्षान्ते दर्शनं साक्षाल्लभते नात्र संशयः ॥१६॥ यं यं चिंतयते चार्थं तं तं प्राप्नोति पूरुषः ॥ ब्रह्मोदीरितमेतद्धि तवाग्रे कथितं महत् ॥ १७॥ इत्येवमुक्त्वा वचनं महर्षिस्तूष्णीं बभूवेन्दुमुखीं निरीक्ष्य ॥ संहृष्टचेता हि तदा तदीयौ पादौ ननामातिमुदा स्वभर्तुः ॥ १८ ॥ इति श्री अगस्त्यसारसंहितायामेकादशमुखहनुमत्कवचं सम्पूर्णम् ॥ अथ श्रीरामप्रोक्तहनुमत्कवचप्रारंभः ॥ ॐ अस्य श्रीहनुमत्कवचस्य श्रीरामचंद्र ऋषिः। अनुष्टुप् छंदः। श्रीहनुमान्देवता। मारुतात्मज इति बीजम्। अंजनीसूनुरिति शक्तिः। आत्मन इति कीलकम्। सकलकार्यसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॐ श्रीरामचन्द्रऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ अनुष्टुप्छंदसे नमः मुखे ॥ २ ॥ श्रीहनुमद्देवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ मारुतात्मजेति बीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ अंजनीसूनुरिति शक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ आत्मनः इति कीलकाय नमः नाभौ ॥ ६ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ ७ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ हनुमते अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ पवनात्मजाय तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ अक्षपघ्नाय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ विष्णुभक्ताय अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ लङ्काविदाहकाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ श्रीकिंकराय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥

इति करन्यासः ॥ ॐ हनुमते हृदयाय नमः ॥ १ ॥ पवनात्मजाय शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ अक्षपघ्नाय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥
विष्णुभक्ताय कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ लंकाविदाहकाय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ श्रीरामकिंकराय अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादि
षडंगन्यासः ॥ ध्यायेद्बालदिवाकरद्युतिनिभं देवारिदर्पापहं देवेन्द्रप्रमुखप्रशस्तयशसं देदीप्यमानं रुचा ॥ सुग्रीवादिसमस्तवानरयुतं
सुव्यक्ततत्त्वप्रियं संरक्तारुणलोचनं पवनजं पीताम्बरालंकृतम् ॥ १ ॥ वज्राङ्गं पिङ्गकेशाढ्यं स्वर्णकुंडलमंडितम् ॥ नियुद्धमुपसंक्रम्य
पारावारपराक्रमम् ॥ २ ॥ वामहस्ते गदायुक्तं पाशहस्तं कमण्डलुम् ॥ ऊर्ध्वदक्षिणदोर्दण्डं हनूमंतं विचिंतयेत् ॥ ३॥ स्फटिकाभं स्वर्ण
कांतिं द्विभुजं च कृताञ्जलिम् ॥ कुंडलद्वयसंशोभिमुखाम्बुजहरिं भजेत् ॥ ४ ॥ हनुमान्पूर्वतः पातु दक्षिणे पवनात्मजः ॥ पातु प्रतीच्या
मक्षघ्नः पातु सागरपारगः ॥ ५ ॥ उदीच्यामूर्ध्वगः पातु केसरिप्रियनन्दनः ॥ अधस्ताद्विष्णुभक्तश्च पातु मध्ये च पावनिः ॥ ६ ॥
अवांतरदिशः पातु सीताशोकविनाशनः ॥ लंकाविदाहकः पातु सर्वापद्भ्यो निरंतरम् ॥ ७ ॥ सुग्रीवसचिवः पातु मस्तकं वायुनंदनः ॥
भालं पातु महावीरो भ्रुवोर्मध्ये निरंतरम् ॥ ८ ॥ नेत्रे छायापहारी च पातु नः प्लवगेश्वरः ॥ कपोलौ कर्णमूले च पातु श्रीरामकिंकरः
॥ ९ ॥ नासाग्रमंजनीसूनुः पातु वक्त्रं कपीश्वरः ॥ पातु कंठं च दैत्यारिः स्कंधौ पातु सुरार्चितः ॥ १० ॥ भुजौ पातु महातेजा
करौ तु चरणायुधः ॥ नखान्नखायुधः पातु कुक्षौ पातु कपीश्वरः ॥ ११ ॥ वक्षो मुद्रापहारी च पार्श्वे पातु भुजायुधः ॥ लंका
विभंजकः पातु पृष्ठे देशे निरंतरम् ॥ १२ ॥ नाभिं च रामदूतश्च कटिं पात्वनिलात्मजः ॥ गुह्यं पातु कपीशस्तु गुल्फौ पातु महाबलः
॥ १३ ॥ अचलोद्धारकः पातु पादौ भास्करसन्निभः ॥ अङ्गान्यमितसत्त्वाढ्यः पातु पादांगुलीः सदा ॥ १४ ॥ सर्वाङ्गानि महा
शूरः पातु रोमाणि चात्मवान् ॥ हनुमत्कवचं यस्तु पठेद्विद्वान्विचक्षणः ॥ १५ ॥ स एव पुरुषश्रेष्ठो भुक्तिं मुक्तिं च विंदति ॥ त्रिकाल
मेककालं वा पठेन्मासत्रयं पुनः ॥ १६ ॥ सर्वारिष्टं क्षणे जित्वा स पुमाञ्छ्रियमाप्नुयात् ॥ अर्धरात्रे जले स्थित्वा सप्तवारं पठे
द्यदि ॥ १७ ॥ क्षयापस्मारकुष्ठादितापज्वरनिवारणम् ॥ अश्वत्थमूलेऽर्कवारे स्थित्वा पठति यः पुमान् ॥ १८ ॥ स एव जयमाप्नोति

संग्रामेष्वभयं तथा ॥ यः करे धारयेन्नित्यं सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ १९ ॥ लिखित्वा पूजयेद्यस्तु तस्य ग्रहभयं हरेत् ॥ कारागृहे प्रयाणे च संग्रामे देशविप्लवे ॥ २० ॥ यः पठेद्धनुमत्कवचं तस्य नास्ति भयं तथा ॥ २१ ॥ यो वारांनिधिमल्पपल्वलमिवोल्लंघ्य प्रतापान्वितो वैदेहीघनतापशोकहरणो वैकुण्ठभक्तप्रियः ॥ अक्षाद्यर्जितराक्षसेश्वरमहादर्पापहारी रणे सोऽयं वानरपुङ्गवोऽवतु सदा चास्मान्समीरात्मजः ॥ २२ ॥ इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे अगस्त्यनारदसंवादे श्रीरामचन्द्रप्रोक्तं हनुमत्कवचं सम्पूर्णम्॥ अथ हनुमत्सहस्रनामस्तोत्रप्रारम्भः ॥ ऋषय ऊचुः ॥ ऋषे लोहगिरिं प्राप्तः सीताविरहकातरः ॥ भगवान् किं व्यधाद्रामस्तत्सर्वं ब्रूहि सत्वरम् ॥ १ ॥ वाल्मीकिरुवाच ॥ मायामानुषदेहोऽयं ददर्शाग्रे कपीश्वरम् ॥ हनुमंतं जगत्स्वामी बालार्कसमतेजसम्॥ २ ॥ स सत्वरं समागम्य साष्टाङ्गं प्रणिपत्य च ॥ कृताञ्जलिपुटो भूत्वा हनुमान् राममब्रवीत् ॥ ३ ॥ श्रीहनुमानुवाच ॥ धन्योऽस्मि कृतकृत्योऽस्मि दृष्ट्वा त्वत्पादपंकजम् ॥ योगिनामप्यगम्यं च संसारभयनाशनम् ॥ ४ ॥ पुरुषोत्तम देवेश कर्तव्यं तन्निवेद्यताम् ॥ श्रीराम उवाच ॥ जनस्थानं कपिश्रेष्ठ कोऽप्यागत्य विदेहजाम् ॥ ५ ॥ हृतवान्विप्रसंवेषो मारीचानुगते मयि ॥ गवेष्यः साम्प्रतं वीर जानकीहरणे परः ॥ ६ ॥ त्वयाऽगम्यो न को देशस्त्वं च ज्ञानवतां वरः ॥ सप्तकोटिमहामंत्रमंत्रितावयवः प्रभुः ॥ ७ ॥ ऋषय ऊचुः ॥ को मंत्रः किं च तद्ध्यानं तन्नो ब्रूहि यथार्थतः ॥ तथा सुधारसं पीत्वा न तृप्यामः परंतप ॥ ८ ॥ वाल्मीकिरुवाच ॥ मंत्रं हनुमतो विद्धि भुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ॥ महारिष्टमहापापमहादुःखनिवारणम् ॥ ९ ॥ ॐ ऐं ह्रीं हनुमते रामदूताय लंकाविध्वंसनायाञ्जनीगर्भसंभूताय शाकिनीडाकिनीध्वंसनाय किलिकिलिबुबुकारेण विभीषणाय हनुमद्देवाय "ॐ ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां फट् स्वाहा ॥" अन्यं हनुमतो मंत्रं सहस्रनामसंज्ञकम् ॥ जानंति ऋषयः सर्वे महादुरितनाशनम् ॥ १० ॥ अस्य संस्मरणात्सीता लब्धा राज्यमकण्टकम्॥ विभीषणाय च ददावात्मानं लब्धवान्मया ॥ ११ ॥ ऋषय ऊचुः ॥ सहस्रनामसन्मंत्रं दुःखाघौघनिवारणम् ॥ वाल्मीके ब्रूहि नस्तूर्णं शुश्रूषामः कथां पराम् ॥ १२ ॥ वाल्मीकिरुवाच ॥ शृण्वंतु ऋषयः सर्वे सहस्रनामकं स्तवम् ॥ स्तवानामुत्तमं दिव्यं सदर्थस्य प्रदा

यकम् ॥ १२ ॥ अथ पाठः ॥ ॐ अस्य श्रीहनुमत्सहस्रनामस्तोत्रमंत्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । श्रीहनुमन्महारुद्रो देवता।
ह्रींश्रींह्रौंह्रां बीजम् । श्रीं इति शक्तिः । किलिकिलिबुबुकारेणेति कीलकम् । लंकाविध्वंसनेति कवचम् । मम सर्वोपद्रवशांत्यर्थे
सर्वकर्मसिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः ॥ श्रीरामचन्द्रऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ श्रीहनूमन्महारुद्र
देवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ ह्रींश्रींह्रौं ह्रां बीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ श्रीं इति शक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ किलिकिलिबुबुकारेणेति
कीलकाय नमः नाभौ ॥ ६ ॥ लंकाविध्वंसनेति कवचाय नमः बाहुद्वये ॥ ७ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ ८ ॥ इति ऋष्यादि
न्यासः ॥ ॐ ऐं हनुमते अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ लंकाविध्वंसनाय तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ अञ्जनीगर्भसम्भूताय मध्यमाभ्यां
नमः ॥ ३ ॥ ॐ शाकिनीडाकिनीविध्वंसनाय अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ किलिकिलिबुबुकारेण बिभीषणाय हनुमद्देवाय
कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रींश्रींह्रौंह्रां फट् स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ हनुमते हृदयाय नमः
॥ १ ॥ ॐ लंकाविध्वंसनाय शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ अंजनीगर्भसंभूताय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ शाकिनीडाकिनीविध्वंसनाय
कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ किलिकिलिबुबुकारेण विभीषणाय हनुमद्देवाय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ ह्रींश्रींह्रौंह्रां फट् स्वाहा अस्त्राय
फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ प्रतप्तस्वर्णवर्णाभं संरक्तारुणलोचनम् ॥ सुग्रीवादियुतं ध्यायेत्पीताम्बरसमावृतम् ॥ १४ ॥
गोष्पदीकृतवारीशं पुच्छमस्तकमीश्वरम् ॥ ज्ञानमुद्रां च बिभ्राणं सर्वालंकारभूषितम् ॥ १५ ॥ श्रीरामचन्द्र उवाच ॥ ॐ हनुमाञ्श्रीपदो
वायुपुत्रो रुद्रोऽनघोऽजरः ॥ अमृत्युर्वीरवीरश्च ग्रामवासो जनाश्रयः ॥१६ ॥ धनदो निर्गुणः कायो वीरो निधिपतिर्मुनिः ॥ पिंगाक्षो वरदो
वाग्ग्मी सीताशोकविनाशनः ॥१७॥ शिवः सर्वः परोऽव्यक्तो व्यक्ताव्यक्तो रसाधरः ॥ पिंगरोमः पिंगकेशः श्रुतिगम्यः सनातनः ॥ १८ ॥
अनादिर्भगवान् देवो विश्वहेतुर्निरामयः॥आरोग्यकर्ता विश्वेशो विश्वनाथो हरीश्वरः॥१९॥भर्गो रामो रामभक्तः कल्याणप्रकृतिः स्थिरः॥
विश्वंभरो विश्वमूर्तिर्विश्वाकारोऽथ विश्वदः॥२०॥विश्वात्मा विश्वसेव्योऽथ विश्वो विश्वहरो रविः॥विश्वचेष्टो विश्वगम्यो विश्वध्येयः कलाधरः

॥२१॥ प्लवंगमः कपिश्रेष्ठो ज्येष्ठो विद्यावनेचरः ॥ बालो वृद्धो युवा तत्त्वं तत्त्वगम्य उदग्रजः ॥ २२ ॥ अंजनीसूनुरव्यग्रो ग्रामख्यातो धराधरः ॥ भूर्भुवःस्वर्महर्लोको जनलोकस्तपोऽव्ययः ॥ २३ ॥ सत्यमोंकारगम्यश्च प्रणवो व्यापकोऽमलः ॥ शिवधर्मप्रतिष्ठाता रामेष्टः फाल्गुनप्रियः ॥ २४ ॥ गोष्पदीकृतवारीशः पूर्णकामो धरापतिः ॥ रक्षोघ्नः पुण्डरीकाक्षः शरणागतवत्सलः ॥ २५ ॥ जानकीप्राणदाता च रक्षःप्राणापहारकः ॥ पूर्णः सत्यः पीतवासा दिवाकरसमप्रभः ॥ २६ ॥ देवोद्यानविहारी च देवताभयभंजनः ॥ भक्तोदयो भक्तलब्धो भक्तपालनतत्परः ॥ २७ ॥ द्रोणहर्ता शक्तिनेता शक्तिराक्षसमारकः ॥ रक्षोघ्नो रामदूतश्च शाकिनीजीवहारकः ॥ २८ ॥ बुबुकारहतारातिर्गर्वपर्वतमर्दनः ॥ हेतुस्त्वहेतुः प्रांशुश्च विश्वभर्ता जगद्गुरुः ॥२९॥ जगन्नेता जगन्नाथो जगदीशो जनेश्वरः ॥ जगद्धितो हरिः श्रीशो गरुडस्मयभंजनः ॥३०॥ पार्थध्वजो वायुपुत्रोऽमितपुच्छोऽमितप्रभः ॥ ब्रह्मपुच्छः परं ब्रह्म पुच्छो रामेष्ट एव च ॥३१॥ सुग्रीवादियुतो ज्ञानी वानरो वानरेश्वरः ॥ कल्पस्थायी चिरंजीवी प्रसन्नश्च सदाशिवः ॥३२॥ सन्नतः सद्गतिर्भक्तिमुक्तिदः कीर्तिनायकः ॥ कीर्तिः कीर्तिप्रदश्चैव समुद्रः श्रीपदः शिवः ॥३३॥ भक्तोदयो भक्तगम्यो भक्तभाग्यप्रदायकः ॥ उदधिक्रमणो देवः संसारभयनाशकः ॥३४॥ वलिबन्धनकृद्विश्वजेता विश्वप्रतिष्ठितः ॥ लंकारिः कालपुरुषो लंकेशगृहभञ्जनः ॥ ३५ ॥ भूतावासो वासुदेवो वसुस्त्रिभुवनेश्वरः ॥श्रीरामरूपः कृष्णस्तु लंकाप्रासादभञ्जकः ॥ ३६ ॥ कृष्णः कृष्णस्तुतः शांतः शांतिदो विश्वपावनः ॥ विश्वभोक्ताऽथ मारघ्नो ब्रह्मचारी जितेन्द्रियः ॥३७॥ ऊर्द्ध्वगो लांगुली माली लांगूलाहतराक्षसः ॥ समीरतनुजो वीरो वीरमारो जयप्रदः ॥ ३८ ॥ जगन्मंगलदः पुण्यः पुण्यश्रवणकीर्तनः ॥ पुण्यकीर्तिः पुण्यगतिर्जगत्पावनपावनः ॥ ३९ ॥ देवेशो जितमारोऽथ रामभक्तिविधायकः ॥ ध्याता ध्येयो भगः साक्षी चेता चैतन्यविग्रहः ॥ ४० ॥ ज्ञानदः प्राणदः प्राणो जगत्प्राणसमीरणः ॥ बिभीषणप्रियः शूरः पिप्पलायनसिद्धिदः ॥ ४१ ॥ सिद्धिः सिद्धाश्रयः कालः कालभक्षकभञ्जनः ॥ लंकेशनिधनस्थायी लंकादाहक ईश्वरः ॥ ४२ ॥ चन्द्रसूर्याग्निनेत्रश्च कालाग्निः प्रलयांतकः ॥ कपिलः कपिशः पुण्यराशिर्द्वादशराशिगः ॥ ४३ ॥ सर्वाश्रयोऽप्रमेयात्मा रेवत्यादिनिवारकः ॥ लक्ष्मणप्राणदाता च सीताजीवनहेतुकः ॥४४॥ रामध्येयो हृषीकेशो विष्णुभक्तो जटी बलिः ॥

देवारिदर्पहा होता धाता कर्ता जगत्प्रभुः ॥४५॥ नगरग्रामपालश्च शुद्धो बुद्धो निरंतरः॥ निरंजनो निर्विकल्पो गुणातीतो भयंकरः॥४६॥
हनुमांश्च दुराराध्यस्तपःसाध्यो महेश्वरः ॥ जानकीघनशोकोत्थतापहर्ता परात्परः ॥ ४७ ॥ वाङ्मयः सदसद्रूपकारणं प्रकृतेः परः ॥
भाग्यदो निर्मलो नेता पुच्छलंकाविदाहकः ॥ ४८ ॥ पुच्छबद्धयातुधानो यातुधानरिपुप्रियः ॥ छायापहारी भूतेशो लोकेशः सद्गतिप्रदः
॥४९॥ प्लवंगमेश्वरः क्रोधः क्रोधसंरक्तलोचनः ॥ सौम्यो गुरुः काव्यकर्ता भक्तानां च वरप्रदः ॥ ५० ॥ भक्तानुकम्पी विश्वेशः पुरुहूतः
पुरन्दरः॥ क्रोधहर्ता तापहर्ता भक्ताभयवरप्रदः॥५१॥ अग्निर्विभावसुर्भानुर्यमो निर्ऋतिरेव च ॥ वरुणो वायुगतिमान् वायुः कुबेर ईश्वरः
॥५२॥ रविश्चन्द्रः कुजः सौम्यो गुरुः काव्यः शनैश्चरः॥राहुः केतुर्मरुद्दाता धर्ता हर्ता समीरजः॥५३॥ मशकीकृतदेवारिर्दैत्यारिर्मधुसूदनः॥
कामः कपिः कामपालः कपिलो विश्वजीवनः ॥५४॥ भागीरथीपदाम्भोजः सेतुबन्धविशारदः॥स्वाहा स्वधा हविः कव्यहव्यवाहप्रकाशकः
॥५५॥ स्वप्रकाशो महावीरो लघुरमितविक्रमः ॥ भंजनो दानगतिमान् सद्गतिः पुरुषोत्तमः॥५६॥जगदात्मा जगद्योनिर्जगदंतो ह्यनंतकः ॥
विपाप्मा निष्कलंकोऽथ महात्मा हृदयंकृतिः॥५७॥ खं वायुः पृथिवी रामो वह्निर्दिक्पाल एवच ॥ क्षेत्रज्ञः क्षेत्रहर्ता च पल्वलीकृतसागरः
॥५८॥ हिरण्मयः पुराणश्च खेचरो भूचरो मनुः ॥ हिरण्यगर्भः सूत्रात्मा राजराजो निशांपतिः॥५९॥वेदांतवेद्य उद्गीथो वेदवेदांगपारगः ॥
प्रतिग्रामस्थितिः सद्यःस्फूर्तिदाता गुणाकरः ॥६०॥ नक्षत्रमाली भूतात्मा सुरभिः कल्पपादपः ॥ चिंतामणिर्गुणनिधिः प्रजाधारो ह्यनुत्तमः
॥६१॥ पुण्यश्लोकः पुरारातिर्ज्योतिष्मान् शर्वरीपतिः ॥ किलिकिलिरावसंत्रस्तभूतप्रेतपिशाचकः ॥६२॥ ऋणत्रयहरः सूक्ष्मः स्थूलः सर्व
गतिः पुमान्॥ अपस्मारहरः स्मर्ता श्रुतिर्गाथास्मृतिर्मनुः॥६३॥स्वर्गद्वारप्रजाद्वारमोक्षद्वारपतीश्वरः ॥ नादरूपः परं ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्मपुरातनः
॥६४॥ एकोऽनेको जनः शुक्लः स्वयंज्योतिरनाकुलः ॥ ज्योतिर्ज्योतिरनादिश्च सात्त्विको राजसस्तमः॥६५॥ तमोहर्ता निरालम्बो निराहारो
गुणाकरः ॥ गुणाश्रयो गुणमयो बृहत्कर्मा बृहद्यशाः॥६६॥बृहद्धनुर्बृहत्पादो बृहन्मूर्धा बृहत्स्वनः ॥ बृहत्कायो बृहन्नासो बृहद्बाहुर्बृहत्तनुः
॥६७ ॥ बृहद्यत्नो बृहत्कामो बृहत्पुच्छो बृहत्करः॥ बृहद्गतिर्बृहत्सेव्यो बृहल्लोकफलप्रदः ॥ ६८ ॥ बृहच्छक्तिर्बृहद्वाञ्छाफलदो बृहदीश्वरः ॥

बृहल्लोकनुतो द्रष्टा विद्यादाता जगद्गुरुः ॥६९॥ देवाचार्य्यः सत्यवादी ब्रह्मवादी कलाधरः॥ सप्तपातालगामी च मलयाचलसंश्रयः॥ ७०॥
उत्तराशास्थितः श्रीदो दिव्यौषधिवशः खगः॥शाखामृगः कपीन्द्रोऽथ पुराणः प्राणचंचुरः॥७१॥चतुरो ब्राह्मणो योगी योगगम्यः परावरः॥
अनादिनिधिदो व्यासो वैकुण्ठः पृथिवीपतिः॥७२॥अपराजितो जितारातिः सदानन्दो गिरीशजः॥गोपाली गोपतिर्योद्धा कलिकालपरात्परः
॥७३॥मनोवेगी सदायोगी संसारभयनाशनः॥तत्त्वदाताऽथ तत्त्वज्ञस्तत्त्वं तत्त्वप्रकाशकः॥७४॥शुद्धो बुद्धो नित्ययुक्तो भक्तराजो जगद्रथः॥
प्रलयोऽमितमायश्च मायातीतो विमत्सरः ॥७५॥ मायाभर्जितरक्षाश्च मायानिर्मितविष्टपः ॥ मायाश्रयश्च निर्लेपो मायानिर्वर्तकः सुखम्
॥७६॥ सुखी सुखप्रदो नागो महेशकृतसंस्तवः ॥ महेश्वरः सत्यसंधः शरभः कलिपावनः ॥ ७७ ॥ रसो रसज्ञः संमानो रूपं चक्षुः श्रुती
रवः ॥ घ्राणो गंधः स्पर्शनं च स्पर्शोऽहंकारमानगः ॥ ७८ ॥ नेतिनेतीतिगम्यश्च वैकुण्ठभजनप्रियः ॥ गिरीशो गिरिजाकांतो दुर्वासाः
कविरंगिराः ॥७९॥ भृगुर्वसिष्ठश्च्यवनो नारदस्तुम्बरुर्बलः॥ विश्वक्षेत्रो विश्वबीजो विश्वनेत्रश्च विश्वपः॥८०॥ याजको यजमानश्च पावकः
पितरस्तथा॥श्रद्धा बुद्धिः क्षमा तंत्रो मंत्रो मंत्रपितासुरः॥८१॥राजेन्द्रो भूपती रुण्डमालीसंसारसारथिः॥नित्यसम्पूर्णकामश्च भक्तकामधुगुत्तमः
॥ ८२ ॥ गणपः केशवो भ्राता पिता माताऽथ मारुतिः ॥ सहस्रमूर्द्धा सहस्रास्यः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ ८३ ॥ कामजित्कामदहनः
कामी कामफलप्रदः ॥ मुद्रापहारी रक्षोघ्नः क्षितिभारहरो बलः ॥ ८४ ॥ नखदंष्ट्रायुधो विष्णुभक्ताभयवरप्रदः ॥ दर्पहा दर्पदो दंष्ट्राशतमूर्ति
रमूर्तिमान् ॥८५॥महानिधिर्महाभागो महाभर्गो महर्द्धिदः॥ महाकारो महायोगी महातेजा महाद्युतिः॥८६॥महाकर्मा महानादो महामंत्रो
महामतिः॥महागमो महोदारो महादेवात्मको विभुः॥८७॥रुद्रकर्मा कृतकर्मा रत्ननाभः कृतागमः॥ अम्भोधिलंघनः सिंहः सत्यधर्मप्रमोदनः
॥८८ ॥ जितामित्रो जयः सोमो विजयो वायुवाहनः ॥ जीवो धाता सहस्रांशुर्मुकुन्दो भूरिदक्षिणः॥८९ ॥ सिद्धार्थः सिद्धिदः सिद्धसंकल्पः
सिद्धिहेतुकः ॥ सप्तपातालचरणः सप्तर्षिगणवंदितः ॥ ९० ॥ सप्ताब्धिलंघनो वीरः सप्तद्वीपोरुमण्डलः ॥ सप्तांगराज्यसुखदः
सप्तमातृनिषेवितः ॥ ९१ ॥ सप्तस्वर्लोकमुकुटः सप्तहोत्रस्वराश्रयः ॥ सप्तच्छन्दोनिधिः सप्तच्छंदः सप्तजनाश्रयः ॥ ९२ ॥

सप्तसामोपगीतश्च सप्तपातालसंश्रयः ॥ मेधादः कीर्तिदः शोकहारी दौर्भाग्यनाशनः ॥ ९३ ॥ सर्ववश्यकरो गर्भदोषहा पुत्रपौत्रदः ॥
प्रतिवादिमुखस्तंभो रुष्टचित्तप्रसादनः ॥ ९४ ॥ पराभिचारशमनो दुःखहा बन्धमोक्षदः ॥ नवद्वारपुराधारो नवद्वारनिकेतनः ॥ ९५ ॥
नरनारायणस्तुल्यो नवनाथमहेश्वरः ॥ मेखली कवची खड्गी भ्राजिष्णुर्जिष्णुसारथिः ॥ ९६ ॥ बहुयोजनविस्तीर्णपुच्छः पुच्छहतासुरः
दुष्टग्रहनिहंता च पिशाचग्रहघातकः ॥ ९७ ॥ बालग्रहविनाशी च धर्मनेता कृपाकरः ॥ उग्रकृत्य उग्रवेग उग्रनेत्रः शतक्रतुः ॥ ९८ ॥
शतमन्युस्तुतः स्तुत्यः स्तुतिः स्तोता महाबलः ॥ समग्रगुणशाली च व्यग्रो रक्षोविनाशनः ॥ ९९ ॥ रक्षोऽग्निदाहो ब्रह्मेशः श्रीधरो
भक्तवत्सलः ॥ मेघनादो मेघरूपो मेघवृष्टिनिवारकः ॥ १०० ॥ मेघजीवनहेतुश्च मेघश्यामः परात्मकः ॥ समीरतनयो योद्धा तत्त्वविद्याविशारदः
॥ १०१ ॥ अमोघो मोघदृष्टिश्च दिष्टदोऽरिष्टनाशनः ॥ अर्थोऽनर्थापहारी च समर्थो रामसेवकः ॥ १०२ ॥ अर्थिवन्द्यो सुराराति: पुण्डरी
काक्ष आत्मभूः ॥ संकर्षणो विशुद्धात्मा विद्याराशिः सुरेश्वरः ॥ १०३ ॥ अचलोद्धारको नित्यः सेतुकृद्रामसारथिः ॥ आनन्दः परमानन्दो
मत्स्यः कूर्मो निधीशयः ॥ १०४ ॥ वाराहो नारसिंहश्च वामनो जमदग्निजः ॥ रामः कृष्णः शिवो वृद्धः कल्की रामश्च मोहनः ॥ १०५ ॥
नंदी शृंगी च चण्डी च गणेशो गणसेवितः ॥ कर्माध्यक्षः सुरारामो विश्रामो जगतीपतिः ॥ १०६ ॥ जगन्नाथः कपीशश्च सर्वावासः सदाश्रयः ॥
सुग्रीवादिस्तुतो दांतः सर्वकर्मा प्लवंगमः ॥ १०७ ॥ नखदारितरक्षाश्च नखयुद्धविशारदः ॥ कुशलः सुधनः शेषो वासुकिस्तक्षकस्तथा ॥ १०८ ॥
स्वर्णवर्णो बलाढ्यश्च पुरजेताऽघनाशनः ॥ कैवल्यदीपः कैवल्यो गरुडः पन्नगो गुरुः ॥ १०९ ॥ क्लिक्लिरावहतारातिगर्वपर्वतभेदनः ॥
वज्रांगो वज्रवज्रश्च भक्तवज्रनिवारकः ॥ ११० ॥ नखायुधो मणिग्रीवो ज्वालामाली च भास्करः ॥ प्रौढप्रतापस्तपनो भक्तताप
निवारकः ॥ १११ ॥ शरणं जीवनं भोक्ता नानाचेष्टोऽथ चंचलः ॥ स्वस्थस्त्वस्वास्थ्यहा दुःखशातनः पवनात्मजः ॥ ११२ ॥
पावनः पवनः कांतो भक्तागःसहनो बली ॥ मेघनादरिपुर्मेघनादसंहतराक्षसः ॥ ११३ ॥ क्षरोऽक्षरो विनीतात्मा वानरेशः सतां गतिः ॥ श्री
कण्ठः शितिकण्ठश्च सहायोऽसहनायकः ॥ ११४ ॥ अस्थूलस्त्वनणुर्भर्गो दिव्यः संसृतिनाशनः ॥ अध्यात्मविद्यासारश्चाप्यध्यात्मकुशलः

सुधीः ॥ ११५ ॥ अकल्मषः सत्यहेतुः सत्यदः सत्यगोचरः ॥ सत्यगर्भः सत्यरूपः सत्यः सत्यपराक्रमः ॥ ११६ ॥ अंजनीप्राणलिंगश्च वायु
वंशोद्वहः श्रुतिः ॥ भद्ररूपो रुद्ररूपः सुरूपश्चित्ररूपधृक् ॥११७॥ मैनाकवंदितः सूक्ष्मदर्शनो विजयोऽजयः॥ क्रांतदिङ्मण्डलो रुद्रः प्रकटी
कृतविक्रमः ॥ ११८ ॥ कंबुकण्ठः प्रसन्नात्मा ह्रस्वनासो वृकोदरः ॥ लंबोष्ठः कुण्डली चित्रमाली योगविदांवरः ॥ ११९ ॥ विपश्चित्कवि
रानन्दविग्रहोऽनल्पशासनः ॥ फल्गुनीसूनुरव्यग्रो योगात्मा योगतत्परः ॥ १२० ॥ योगवियोगकर्ता च योगयोनिर्दिगम्बरः ॥ अकारा
दिक्षकारांतवर्णनिर्मितविग्रहः ॥१२१॥ उलूखलमुखः सिद्धसंस्तुतः प्रमथेश्वरः ॥ श्लिष्टजंघः श्लिष्टजानुः श्लिष्टपाणिः शिखाधरः ॥१२२॥
सुशर्माऽमितशर्मा च नारायणपरायणः ॥ जिष्णुर्भविष्णू रोचिष्णर्ग्रसिष्णुः स्थाणुरेव च ॥१२३॥ हरिरुद्रानुकृद्वृक्षकंपनो भूमिकंपनः॥गुण
प्रवाहः सूत्रात्मा वीतरागस्तुतिप्रियः॥१२४॥ नागकन्याभयध्वंसी ऋतुपर्णः कपालभृत् ॥ अनुकूलोऽक्षयोऽपायोऽनपायो वेदपारगः ॥१२५॥
अक्षरः पुरुषो लोकनाथ ऋक्षप्रभुर्दृढः ॥ अष्टांगयोगफलभूः सत्यसंधः पुरुष्टुतः ॥ १२६ ॥ श्मशानस्थाननिलयः प्रेतविद्रावणक्षमः ॥
पंचाक्षरपरः पंचमातृको रंजनध्वजः ॥ १२७ ॥ योगिनीवृन्दवंद्यश्रीः शत्रुघ्नोऽनंतविक्रमः ॥ ब्रह्मचारीन्द्रियरिपुर्धृतदण्डो दशात्मकः
॥१२८॥ अप्रपंचः सदाकारः शूरसेनो विदारकः॥ वृद्धः प्रमोद आनन्दः सप्तजिह्वपतिर्धरः॥१२९॥ नवद्वारपुराधारः प्रत्यग्रः सामगायकः ॥
षट्चक्रधामा स्वर्लोकभयहृन्मानदोऽमदः ॥ १३० ॥ सर्ववश्यकरः शक्तिरनंतोऽनंतमंगलः ॥ अष्टमूर्तिर्नयोपेतो विरूपः सुरसुंदरः
॥ १३१ ॥ धूमकेतुर्महाकेतुः सत्यकेतुर्महारथः ॥ नन्दिप्रियः स्वतंत्रश्च मेखली डमरुप्रियः ॥ १३२ ॥ लोहांगः सर्वविद्धन्वी खण्डलः
शर्व ईश्वरः ॥ फलभुक् फलहस्तश्च सर्वकर्मफलप्रदः ॥ १३३ ॥ धर्माध्यक्षो धर्मफलो धर्मो धर्मप्रदोऽर्थदः ॥ पंचविंशतितत्त्वज्ञस्तारको ब्रह्म
तत्परः ॥ १३४ ॥ त्रिमार्गवसतिर्भीमः सर्वदुष्टनिबर्हणः ॥ ऊर्जस्वान्निष्कलः शूली मौलिर्गर्जन्निशाचरः ॥ १३५ ॥ रक्तांबरधरो रक्तो
रक्तमालाविभूषणः ॥ वनमाली शुभांगश्च श्वेतः श्वेतांबरो युवा ॥ १३६ ॥ जयोऽजयपरीवारः सहस्रवदनः कपिः ॥ शाकिनीडाकिनीयक्ष
रक्षोभूतप्रभंजकः ॥ १३७ ॥ सद्योजातः कामगतिर्ज्ञानमूर्तिर्यशस्करः ॥ शंभुतेजाः सार्वभौमो विष्णुभक्तः प्लवंगमः ॥ १३८ ॥ चतुर्नवति

मंत्रज्ञः पौलस्त्यबलदर्पहा ॥ सर्वलक्ष्मीप्रदः श्रीमानंगदप्रिय ईतिनुत् ॥ १३९ ॥ स्मृतिबीजं सुरेशानः संसारभयनाशनः ॥ उत्तमः श्रीपरीवारः श्रितरुद्रश्च कामधुक् ॥ १४० ॥ वाल्मीकिरुवाच ॥ इति नाम्नां सहस्रेण स्तुतो रामेण वायुभूः ॥ उवाच तं प्रसन्नात्मा संधायात्मानमव्ययम्॥१४१॥श्रीहनुमानुवाच ॥ ध्यानास्पदमिदं ब्रह्म मत्पुरः समुपस्थितम्॥स्वामिन्कृपानिधे राम ज्ञातोऽसि कपिना मया ॥ १४२ ॥त्वद्ध्याननिरता लोकाः किं मां जपसि सादरम् ॥ तवागमनहेतुश्च ज्ञातो ह्यत्र मयाऽनघ ॥१४३॥ कर्तव्यं मम किं राम तथा ब्रूहि च राघव ॥ इति प्रचोदितो रामः प्रहृष्टात्मेदमब्रवीत्॥१४४॥श्रीराम उवाच ॥ दुर्जयः खलु वैदेहीं गृहीत्वा कोऽपि निर्गतः ॥हत्वा तं निर्घृणं वीरमानय त्वं कपीश्वर ॥ १४५ ॥ मम दास्यं कुरु सखे भव विश्वसुखंकरः ॥ तथा कृते त्वया वीर मम कार्यं भविष्यति ॥१४६॥ ओमित्याज्ञां तु शिरसा गृहीत्वा स कपीश्वरः ॥ विधेयं विधिवत्तत्र चकार शिरसा स्वयम् ॥ १४७ ॥ इदं नाम्नां सहस्रं तु योऽधीते प्रत्यहं नरः ॥ दुःखौघो नश्यते तस्य सम्पत्तिर्वर्धतेऽचिरम् ॥ १४८ ॥ वश्यं चतुर्विधं तस्य भवत्येव न संशयः ॥ राजानो राजपुत्राश्च राजकीयाश्च मंत्रिणः ॥ १४९ ॥ अश्वत्थमूले जपतां नास्ति वैरिकृतं भयम् ॥ त्रिकालपठनात्तस्य सिद्धिः स्यात्करसंस्थिता ॥ १५० ॥ ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय प्रत्यहं यः पठेन्नरः॥ ऐहिकामुष्मिकं सोऽपि लभते नात्र संशयः ॥१५१॥ संग्रामे सन्निविष्टानां वैरिविद्रावणं परम् ॥ ज्वरापस्मारशमनं गुल्मादीनां निवारणम् ॥१५२॥ साम्राज्यसुखसंपत्तिदायकं जायते नृणाम् ॥ स्वर्गं मोक्षं समाप्नोति रामचन्द्रप्रसादतः ॥ १५३ ॥ य इदं पठते नित्यं श्रावयेद्वा समाहितः ॥ सर्वान्कामानवाप्नोति वायुपुत्रप्रसादतः ॥ १५४ ॥ इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे उत्तरखंडे श्रीरामकृतं हनुमत्सहस्रनामस्तोत्रं संपूर्णम्॥ अथ हनुमत्स्तोत्रप्रारम्भः॥हनुमानुवाच॥तिरश्चामपि यो राजा समवायं समीयुषाम्॥तथा सुग्रीवमुख्यानां यस्तं वंद्यं नमाम्यहम्॥१॥सकृदेव प्रसन्नाय विशिष्टायैव राज्यदः॥बिभीषणाय यो देवस्तं वीरं प्रणमाम्यहम्॥२॥यो महापुरुषो व्यापी महाब्धौ कृतसेतुकः॥स्तुतो येन जटायुश्च महाविष्णुं नमाम्यहम्॥३॥तेजसाप्यायिता यस्य ज्वलंति ज्वलनादयः॥प्रकाशते स्वतंत्रो यस्तं ज्वलंतं नमाम्यहम् ॥४॥सर्वतोमुखता येन लीलया दर्शिता रणे ॥ राक्षसेश्वरयोधानां तं वंदे सर्वतोमुखम्॥५॥नृभावं तु प्रपन्नानां हिनस्ति च सदा

रुजम् ॥ नृसिंहतनुमप्राप्तो यस्तं नृसिंहं नमाम्यहम्॥६॥यस्माद्बिभ्यति वातार्कज्वलनेंद्राः समृत्यवः॥भयं तनोति पापानां भीषणं तं नमाम्यहम् ॥७॥ परस्य योग्यतां वीक्ष्य हरते पापसन्ततिम् । पुरस्य योग्यतां वीक्ष्य तं भद्रं प्रणमाम्यहम् ॥८॥ यो मृत्युं निजदासानां मारयत्यतिचेष्टदः ॥ तत्रापि निजदासार्थं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम्॥९॥ यत्पादपद्मप्रणतो भवत्युत्तमपूरुषः ॥ तमीशं सर्वदेवानां नमनीयं नमाम्यहम् ॥ १० आत्मभावं समुत्क्षिप्य दास्यं चैव रघूत्तमम् ॥ भजेऽहं प्रत्यहं रामं ससीतं सहलक्ष्मणम् ॥११॥ नित्यं श्रीरामभक्तस्य किंकरा यमाकिंकराः ॥ शिववत्यो दिशस्तस्य सिद्धयस्तस्य दासिकाः ॥१२॥ इदं हनुमता प्रोक्तं मंत्रराजात्मकं स्तवम् ॥ पठेदनुदिनं यस्तु स रामे भक्तिमान्भवेत्॥ इति हनुमत्कल्पे श्रीहनुमन्मंत्रराजात्मकस्तवराजः समाप्तः ॥ अथ लांगूलास्त्रशत्रुंजयस्तोत्रप्रारंभः॥ ॐ हनुमंतं महावीरं वायुतुल्यपराक्रमम् ॥ मम कार्यार्थमागच्छ प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥१॥ ॐ अस्य श्रीहनुमच्छत्रुंजयस्तोत्रमालामंत्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः । नाना छन्दांसि । श्रीमन्महावीरो हनुमान्देवता । मारुतात्मज ह्सौं इति बीजम् । अंजनसूनु ह्स्फें इति शक्तिः । ॐ हांहांहां इति कीलकम् । श्रीरामभक्त ह्रां इति प्राणः।श्रीरामलक्ष्मणानन्दकर ह्रांह्रींह्रूं इति जीवः। ममारातिपराजयनिमित्तशत्रुंजयस्तोत्रमालामंत्रजपे विनियोगः॥ ॐ ऐं श्रीं ह्रांह्रींह्रूं स्फेंख्फेंह्सौंह्स्ख्फ्रेंह्सौं नमो हनुमते अंगुष्ठाभ्यां नमः॥ १ ॥इति बीजादौ सर्वत्र संयोज्य रामदूताय तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ लक्ष्मणप्राणदात्रे मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ अंजनीसूनवे अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ सीताशोकविनाशाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ लंकाप्रासादभंजनाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥६॥ इति करन्यासः ॥ ॐ हनुमते हृदयाय नमः ॥१॥ रामदूताय शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ लक्ष्मणप्राणदात्रे शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ अंजनीसूनवे कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ सीताशोकविनाशिने नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ लंकाप्रासादभंजनाय अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ अथ ध्यानम् ॥ "ॐ ध्यायेद्बालदिवाकरद्युतिनिभं देवारिदर्पापहं देवेन्द्रप्रमुखैः प्रशस्तयशसं देदीप्यमानं रुचा ॥ सुग्रीवादिसमस्तवानरयुतं सुव्यक्ततत्त्वप्रियं संरक्तारुणलोचनं पवनजं पीतांबरालंकृतम्॥१॥ मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेंद्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्॥वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि॥२॥ वज्रांगपिंगकेशाढ्यं स्वर्ण

उद्यद्दक्षिणदोर्दण्डं हनुमंतं विचिंतयेत्
कुंडलमंडितम् ॥ नियुद्ध उपसंगात्रं पारावारपराक्रमम् ॥३॥ वामहस्तगदायुक्तं पाशहस्तकमंडलुम् ॥ "अथ मंत्रः॥"ॐ ऐंश्रीं ह्रांह्रींह्रूं स्फ्रैंह्रौं
॥४॥" इति ध्यात्वा " अरेमल्लचटखेत्युच्चारणेऽथवा तोडरमल्लचटखेत्युच्चारणे कपिमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥"अथ मंत्रः॥ भूतभविष्यद्वर्त
ह्सौंह्स्फ्रैंह्सौंनमो हनुमते त्रैलोक्याक्रमणपराक्रमश्रीरामभक्त मम परस्य च सर्वशत्रून् चतुर्वर्णसंभवान् पुंस्त्रीनपुंसकान् भूतभविष्यद्वर्त
मानान् नानादूरस्थसमीपस्थान् नानानामधेयान् नानासंकरजातिजान् कलत्रपुत्रमित्रभृत्यबंधुसुहृत्समेतान् पशुशक्तिसहितान् धनधान्यादि
संपत्तियुतान् राज्ञो राजपुत्रसेवकान् मंत्रिसचिवसखीन् आत्यंतिकक्षणेन त्वरया एतद्दिनावधि नानोपायैर्मारय २ शस्त्रैश्छेदय २ अग्निना
ज्वालय२ दाहय२अक्षयकुमारवत्पादतलाक्रमणेनानेन शिलातलेनात्रोटय२घातय२वध२ भूतसंघैः सह भक्षय२ क्रुद्धचेतसा नखैर्विदारय२
देशादस्मादुच्चाटय २ पिशाचवत् भ्रंशय २ भ्रामय २ भयातुरान् विसंज्ञान् सद्यः कुरु २ भस्मीभूतान् उद्धूलय २ भक्तजनवत्सल साती
शोकापहारक सर्वत्र मामेनं च रक्ष रक्ष ह्रांह्रांह्रांहुंहुंहुं घेघेघेहुंफट्स्वाहा" ॥१॥ "ॐनमो हनुमते महाबलपराक्रमाय महाविपत्तिनिवार
काय भक्तजनमनःकामनाकल्पद्रुमाय दुष्टजनमनोरथस्तंभनाय प्रभंजनप्राणप्रियाय स्वाहा ॥ २॥" " ॐ ह्रांह्रींह्रूंह्रैंह्रौंह्रः मम शत्रून्
शूलेन च्छेदय २ अग्निना ज्वालय २ दाहय २ उच्चाटय २ हुंफट् स्वाहा ३ " इति मंत्रं पठित्वा पुनर्ध्यायेत्॥ ॐ हनुमते नमः । श्रीमन्तं
हनुमंतमार्तरिपुभिर्भूभृत्तरुभ्राजितं चाल्यद्वालधिबन्धवैरिनिचयं चामीकराद्रिप्रभम् ॥ अष्टौ रक्तपिशंगनेत्रनलिनं भ्रूभंगमंगस्फुरत्प्रोद्य
च्चण्डमयूखमंडलमुखं दुःखापहं दुःखिनाम् ॥ १ ॥ कौपीनं कटिसूत्रमौंज्यजिनयुग्देहं विदेहात्मजा—प्राणाधीशपदारविंदनिरतस्वांतं
कृतान्तं द्विषाम् ॥ ध्यात्वैवं समरांगणस्थितमथानीय स्वहृत्पंकजे संपूज्याखिलपूजनोक्तविधिना संप्रार्थये प्रार्थितम् ॥ इति ध्यात्वा स्तोत्रं
पठेत् ॥ॐ हनूमन्नंजनीसूनो महाबलपराक्रम ॥ लोलल्लांगूलपातेन ममारातीन्निपातय ॥ १ ॥ मर्कटाधिप मार्तण्डमंडलग्रासकारक ॥
लोलल्लां० ॥ २ ॥ अक्षक्षपण पिंगाक्ष क्षितिजाशुक्क्षयंकर ॥ लो० ३ ॥ रुद्रावतार संसारदुःखभारापहारक॥ लोल० ॥ ४ श्रीरामचरणां
भोजमधुपायितमानस ॥ लो० ॥ ५ ॥ वालिकालरदक्लांतसुग्रीवोन्मोचन प्रभो ॥ लोल० ॥ ६ ॥ सीताविरहवारीशमग्नसीतेशतारक ॥

लोल० ॥ ७ ॥ रक्षोराजप्रतापाग्निदह्यमानजगद्वन ॥ लो० ॥ ८ ॥ ग्रस्ताशेषजगत्स्वास्थ्य राक्षसांभोधिमन्दर ॥ लो० ॥ ९ ॥ पुच्छगुच्छ स्फुरद्भूमानलदग्धारिपत्तन॥लो०॥१०॥जगन्मनोदुरुल्लंघ्यपारावारविलंघन॥लो०११ स्मृतमात्रसमस्तेष्टपूरक प्रणतप्रिय॥लो०॥१२॥रात्रिंचर चमूराशिकर्तनैकविकर्तन ॥ लो० ॥ १३ ॥ जानकीजानकीजानिप्रेमपात्र परंतप ॥ लोल० ॥ १४ ॥ भीमादिकमहावीरवीरवेशावतारक ॥ लो० ॥ १५ वैदेहीविरहक्लांतरामरोषैकविग्रह ॥ लो० ॥ १६ ॥ वज्रांगनखदंष्ट्रेश वज्रिवज्रावकुण्ठन ॥ लो० ॥ १७ ॥ अखर्व गर्वगंधर्वपर्वतोद्भेदनस्वर ॥ लो० ॥ १८ ॥ लक्ष्मणप्राणसंत्राण त्रातस्तीक्ष्णकरान्वय ॥ लो० ॥ १९ ॥ रामादिविप्रयोगार्तभरताद्यार्तिनाशन ॥ लो० ॥ २० ॥ द्रोणाचलसमुत्क्षेपसमुत्क्षिप्तारिवैभव ॥ लो० ॥ २१ ॥ सीताशीर्वादसम्पन्नसमस्तावयवाक्षत ॥ लोलल्लांगूलपातेन ममारातीन्निपातय ॥ २२ ॥ इत्येवमश्वत्थतलोपविष्टः शत्रुंजयं नाम पठेत्स्वयं यः ॥ स शीघ्रमेवास्तसमस्तशत्रुः प्रमोदते मारुतजप्रसादात् ॥२३॥ इति श्रीलांगूलास्त्रशत्रुंजयहनुमत्स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे पूर्वखण्डे हनुमत्तंत्रे नवमस्तरङ्गः ॥९॥

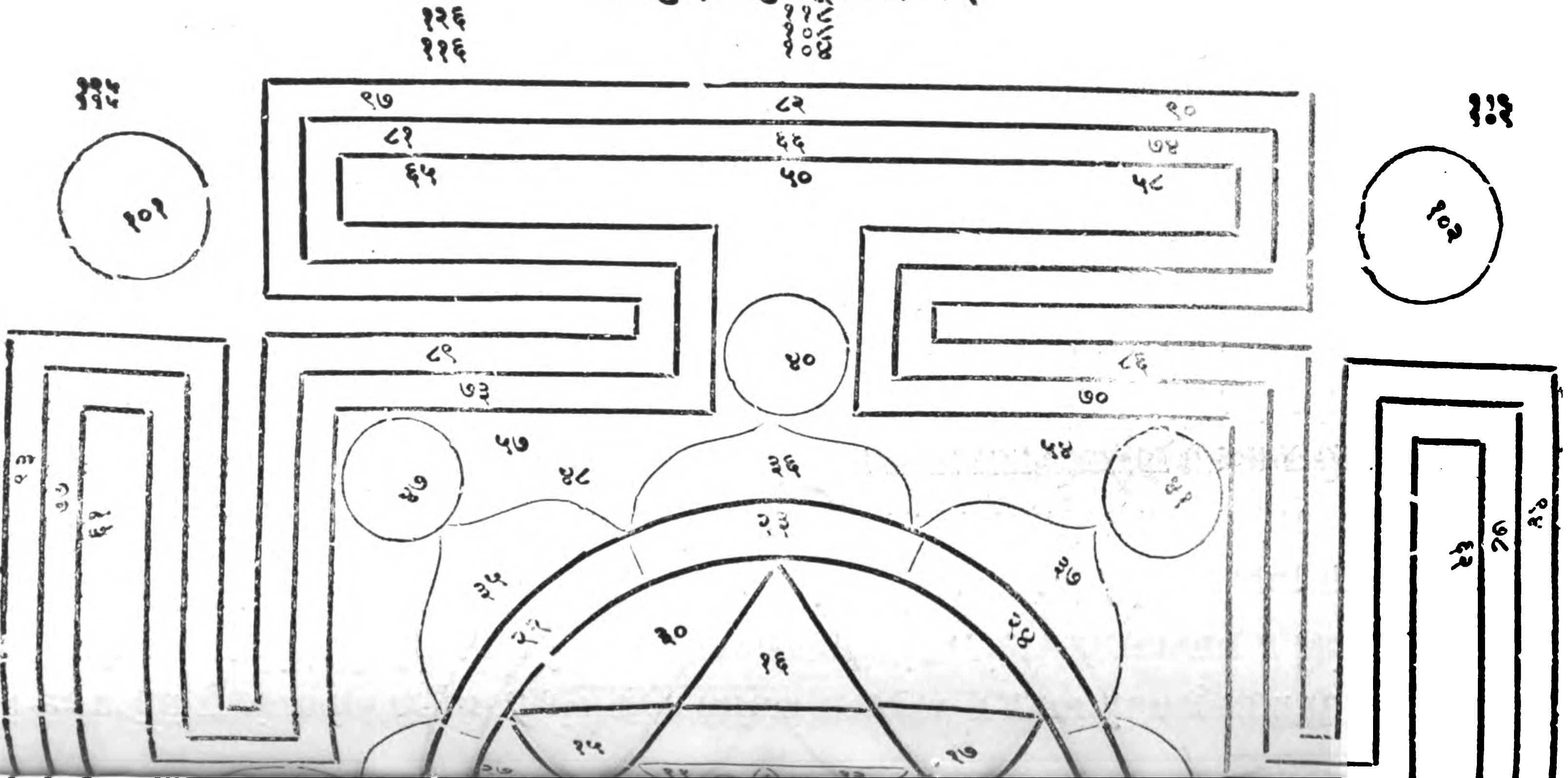
समाप्तोऽयं हनुमत्तरङ्गः ।

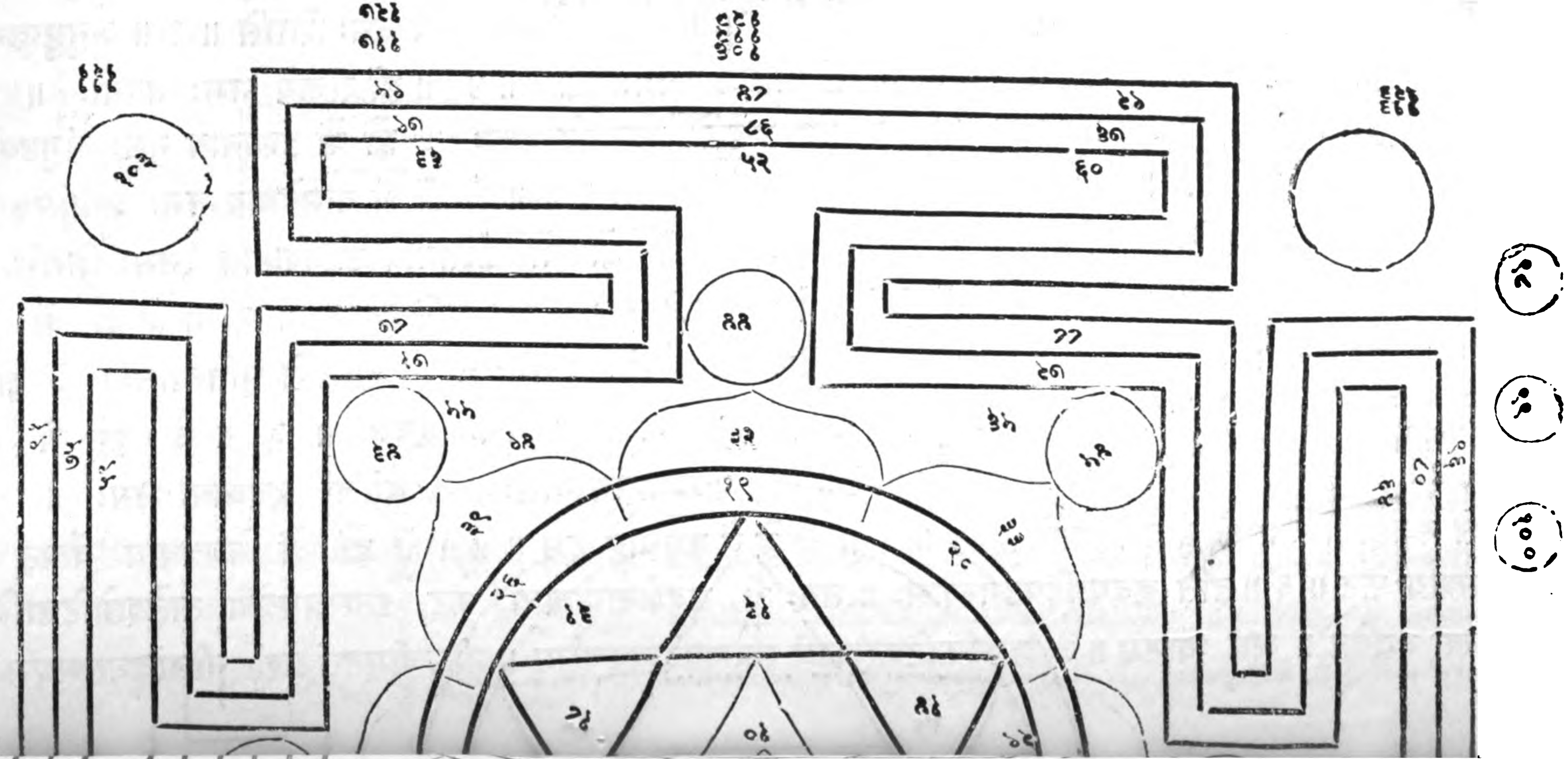
श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ श्रीवटुकभैरवतंत्रप्रारंभः॥तत्रादौ पटलप्रारंभः ॥ दृष्ट्वा तंत्राण्यनेकानि माधवाख्येन धीमता॥श्रीमद्वटुकनाथस्य पटलं वक्ष्यतेऽधुना॥१॥ (रुद्रयामले) एकदा गिरिजा शंभुं पप्रच्छोपासनाविधिम् ॥ येनेदं सर्वलोकानामीप्सितं च फलं भवेत् ॥२॥ श्री पार्वत्युवाच॥प्राणनाथ जगन्नाथ जगदादिजगन्मय ॥ शंभो शंकर देवेश वटुकाराधनं वद ॥३॥ एकादशसहस्रं तु भजनं हि त्वयोदितम् ॥ विधिस्तस्य विशेषेण ब्रूहि त्वं शंकराधुना ॥४॥ येन कार्याणि सिध्यंति साधकानां निरंतरम् ॥ सुगोप्यमपि देवेश विधिं प्रब्रूहि शंकर॥५॥ ईश्वर उवाच ॥ सम्यक् पृष्टं त्वया देवि लोकदुःखविमोचनम् ॥ मया वटुकरूपं हि धृतं सर्वसुखावहम् ॥ ६ ॥ अन्ये देवास्तु कालेन प्रसन्नाः संभवंति हि ॥ वटुकः सेवितः सद्यः प्रसीदति ध्रुवं शिवे ॥ ७ ॥ दुःखे च सेवितः शीघ्रं दुःखं नाशयते क्षणात् ॥ सुखे च सेवितो नित्यं सुखं वर्द्धयते बहु ॥ ८॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि वटुकस्य महात्मनः ॥ विधानं परमं गोप्यं ब्रह्मादीनां सुदुर्लभम् ॥ ९ ॥ मंत्रेणैव सुसंक्षेपात्कथयिष्यामि वल्लभे ॥ येन विज्ञातमात्रेण त्रैलोक्यं साधयेत्सुधीः ॥ १० ॥ एकदा देवदेवेशि तपसे मंदराचलम् ॥ गतोऽहं परमानंदान्मूलप्रकृतिमीश्वरीम् ॥ ११ ॥ चक्रे परमसंतुष्टां तपसा भावितात्मना ॥ आकाशरूपिणी देवी प्रोवाच वचनं मुदा ॥ १२ ॥ तुष्टाहं शंकर प्रीता वरं वरय दुर्लभम् ॥ वटुकस्य विधानं मे परमं भक्तितो वरम् ॥ १३ ॥ परमाशयान्मंत्रस्य येन सिध्यंति सर्वथा ॥ मनोरमाणि मंत्रस्य सर्वकार्याणि सांप्रतम् ॥ १४ ॥ इति वाक्यं च मे श्रुत्वा मूलभूता सनातनी ॥ उवाच यादृशं देवी विधानं शृणु वल्लभे ॥ १५ ॥ वटुकाख्यस्य देवस्य भैरवस्य महात्मनः ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशाद्यैर्वंदितस्य दयानिधेः ॥ १६ ॥ न्यासा एकादश प्रोक्ता वटुकाराधने शिवे ॥ यान्विना नैव सिद्धिः स्याद्वर्षाणामयुतैरपि ॥ १७ ॥ प्रथमः प्रेतबीजेन नृसिंहबीजेन चापरः ॥ काणबीजेन सत्यायाः श्रीबीजेन ततः परः ॥ १८ ॥ प्राणबीजेन वै न्यासान् कुर्यात्तत्र विचक्षणः ॥ घंटाबीजेन च न्यासं विधाय ख्यातिबीजतः ॥ १९ ॥ मूलबीजेन पश्चाच्च न्यासं कृत्वा महामतिः ॥ भ्रामरीबीजतो न्यासं विदध्यात्प्रीतिसंयुतः ॥ २० ॥ एवं न्यासाङ्गपादौ तु न करोति नरो यदा ॥ वांछयेऽहं वरारोहे तावन्मंत्रो न सिध्यति ॥ २१ ॥ इति न्यासान् समाधाय पुरश्चरण

कारकः ॥ यथोक्तन्यासकारी च यदि नो वरमाप्नुयात् ॥ २२ ॥ तदा कन्यादषणोत्थं मम पापं प्रजायताम् ॥ न्यासैरेतैर्वरारोहे ब्रह्महत्या विनश्यति ॥ २३ ॥ का कथाऽन्यस्य पापस्य सत्यं सत्यं वदामि ते ॥ मम न्यासानथो वक्ष्ये त्रीन्देवस्य महात्मनः ॥ २४ ॥ यान् विधाय नरो विंदेत् सिद्धिं लोकेषु दुर्लभाम् ॥ आकूतबीजं विन्यस्येन्मस्तके गंडयोर्मुखे ॥ २५ ॥ कालबीजं चक्षुषोश्च कर्णयोरपि विन्यसेत् ॥ नाभौ लिंगे गुदे वापि विद्याबीजं कपोलयोः ॥ २६ ॥ ब्रह्मरंध्रे दंतपंक्तौ विन्यसेत्साधकोत्तमः ॥ एतन्न्यासत्रयं प्रोक्तं साधकाभीष्टसिद्धिदम् ॥ २७ ॥ यस्य प्रसादमासाद्य साधकः शीघ्रसिद्धिदः ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि शृंखलान्यासमुत्तमम् ॥ २८ ॥ यस्य प्रसादाच्च शिवे वटुकः सिद्धिदो भवेत् ॥ महापराख्यं बीजं च विन्यसेत्साधकोत्तमः ॥ २९ ॥ न्यासेनानेन सुश्रोणि साक्षाच्छिवसमो भवेत् ॥ वटुकस्याथ वक्ष्यामि मातृकान्यासमुत्तमम् ॥ ३० ॥ कृतेन येन वटुकः साधकस्य करे भवेत् ॥ वटुकस्य परं पूज्यं मातृकान्यासमुत्तमम् ॥ ३१ ॥ विज्ञाय साधयेत्प्राज्ञः स सद्यः शिवतां व्रजेत् ॥ विनैवं मातृकान्यासं योऽन्येन न्यासमाचरेत् ॥ ३२ ॥ वटुकस्तस्य कुपितः सद्यः शापं प्रयच्छति ॥ तस्य न्यासः प्रकर्तव्यः साधकेन विपश्चिता ॥ ३३ ॥ सर्वेषु मातृस्थानेषु वपुःपावनहेतवे ॥ मातृकान्यासमेनं हि त्यक्त्वाऽन्यं न्यासमाचरेत् ॥ ३४ ॥ वर्षकोटिप्रयत्नेन स सिद्धिं नैव विंदति ॥ ॐकारमादौ संयोज्य सर्वं पूर्ववदाचरेत् ॥ ३५ ॥ अयमंतर्मातृकाख्यो न्यासः स्यात्पूर्वसिद्धिदः ॥ ॐ कारमादिमं कृत्वा न्यासोऽयं वरवर्णिनि ॥ नाम्ना बहिर्मातृकाख्यो न्यासं चूडामणिर्भवेत् ॥ ३६ ॥ अथान्यं न्यासमाख्यास्ये शृणुष्व वरवर्णिनि ॥ सरस्वतीमातृकाख्यं सद्यः सिद्धिप्रदायकम् ॥ ३७ ॥ न्यसेन्महामते बीजं मातृकास्थानकेषु च ॥ महासरस्वती देवी सद्यःसिद्धिप्रदायिका ॥ ३८ ॥ महासरस्वतीबीजं कथितं देवदुर्लभम् ॥ इमे न्यासाः समाख्याता वटुकाराधने शिवे ॥ ३९ ॥ सद्यःसिद्धिकरा देवि भाग्यलभ्या न संशयः ॥ न्यूनन्यासस्य कर्ता यः सद्यो हानिमवाप्नुयात् ॥ ४० ॥ एतस्मादधिकान्न्यासान्न्यस्तं च पीठन्यासकम् ॥ यंत्रावरणन्यासं च पीठपूजाविधिं चरेत् ॥ ४१ ॥ एवं न्यासतनुं देवि ध्यायेद्वटुकभैरवम् ॥ शुद्धस्फटिकसंकाशं द्विनेत्रोत्पलशोभितम् ॥ ४२ ॥ कुटिलालकसंवीतं चारुस्मेरमुखांबुजम् ॥ नानारत्नमयैः कल्पैः किंकिणी

जालनूपुरैः ॥ ४३ ॥ दीप्तं शुक्लांबरावीतं द्विभुजं दक्षिणे करे ॥ त्रिशिखं सव्यहस्ते च दधानं दंडमद्भुतम् ॥ ४४ ॥ वटुवेशधरं शंभुं सात्त्विकं साधकः स्मरेत् ॥ एवं ध्यात्वा यजेद्देवं शैवे पीठे सुरेश्वरि ॥ ४५ ॥ पात्रासादनशंखं च घंटाकलशस्थापनम् ॥ विशेषार्घस्थापनं वा यंत्रस्थापनमेव च ॥ ४६ ॥ सप्तधातुमये पीठे ताम्रजे वा पटे शुभे ॥ संस्थाप्य तत्र तद्यंत्रं ध्यात्वा तत्र वटुं प्रिये ॥ ४७ ॥ यथा कामस्तथा ध्यानं कारयेत्साधकोत्तमः ॥ क्रूरकार्येषु सर्वेषु ध्यानं वै तामसं स्मृतम् ॥ ४८ ॥ वश्ये विद्वेषणे स्तंभे राजसं ध्यानमीरितम् ॥ सात्त्विकं शुभकार्येषु ध्यानभेदः समीरितः ॥ ४९ ॥ अन्ये वै ध्यानभेदाश्च स्तवराजे प्रकीर्तिताः ॥ मूर्तिमूलेन संकल्प्य तस्यामावाहयेत्प्रभुम् ॥ ५० ॥ सद्योजातेन मंत्रेण मूलाद्येन च सुव्रते ॥ सन्निधाप्याथ मूलेन केवलेन स्वमुद्रया ॥ ५१ ॥ अघोरांतेन मूलेन सन्निरोधनमाचरेत् ॥ मूलेन संमुखीकुर्य्यादवगुण्ठयाथ मूलतः ॥ ५२ ॥ षडंगैः शकलीकृत्यामृतीकृत्य च मूलतः ॥ परमीकरणं चैव स्वस्वमुद्राभिरर्चयेत् ॥ ५३ ॥ एतत्सर्वं विधातव्यं ततो ध्यायेत्समाहितः ॥ कृत्वा सुस्थापनं तस्य मुद्राः संदर्शयेदथ ॥ ५४ ॥ लिंगाद्याः पूर्वमद्दिष्टा योनिमुद्रा तथांतिमा ॥ तां दर्शयेत्तत्पुरुषं मूलाभ्यां च महेश्वरि ॥ ५५ ॥ आसनाद्यैश्च पुष्पांतैरुपचारैस्ततोऽर्चयेत् ॥ ततो देवाज्ञया सम्यग्यजेदावरणदेवताः ॥ ५६ ॥ मंत्राक्षराणां संख्याकैस्तंतुभिर्ब्रह्मसूत्रजैः ॥ वर्तिं कृत्वा घृतेनैव दीपं तत्र प्रदापयेत् ॥ ५७ ॥ तैलेन वा प्रकुर्वीत दीपदानविधानतः ॥ बलिं न्यासविधिं कृत्वा ध्यानं कृत्वा यथोक्तवत् ॥ ५८ ॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥ भगवन् करुणासिंधो दीनबन्धो जगद्गुरो ॥ कृपां कृत्वा समाख्याहि सूत्रैरेव पृथक्पृथक् ॥ ५९ ॥ साधकस्तु तथा सिद्धिमचिरेणैव विंदति ॥ कालेनेह यथाऽल्पेन साधकः सिद्धिमाप्नुयात् ॥ ६० ॥ गोपनीयो न मंत्रोऽयं वटुकाख्यो जगद्गुरो ॥ तथा निरूपय विभो बालकोऽपि यथा लभेत् ॥ ६१ ॥ ईश्वर उवाच ॥ शृणु देवि जगत्पूज्ये न्यासबीजानि शोभने ॥ प्रकटानि यथा शश्वत्कथयामि हिताय ते ॥ ६२ ॥ तत्रादावापदुद्धारकवटुकमंत्रप्रयोगः ॥ (रुद्रयामले) मंत्रो यथा–"ॐ ह्रीं वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं" इत्येकविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम् ॥ आचम्य मूलेन प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य श्रीमद्वटुकभैरवदेवताप्रीतये

आपदुद्धारवटुकपूजनयन्त्रम्.





ममामुकमंत्रसिद्ध्यर्थं लक्ष्यसंख्यात्मकजप(अथवैकविंशतिलक्षात्मकजप)रूपपुरश्चरणमहं करिष्ये॥इति संकल्प्य भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठांतर्मातृकाबहिर्मातृकासृष्टिस्थितिसंहारमातृकान्यासं च सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कृत्वा प्रेतबीजाद्यश्रीकंठादिकलामातृकान्यासांतं सर्वन्यासं च पद्धतिमार्गेण कृत्वा प्रयोगोक्तन्यासादिकं कुर्यात्॥तद्यथा-अस्य श्रीवटुकभैरवमंत्रस्य बृहदारण्य ऋषिः॥अनुष्टुप्छन्दः॥श्रीवटुकभैरवो देवता। ह्रीं बीजम्। ह्रीं शक्तिः। ॐ कीलकम्। श्रीवटुकभैरवप्रीतये जपे विनियोगः॥ ॐ बृहदारण्यऋषये नमः शिरसि॥१॥ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे॥२॥ श्रीवटुकभैरवदेवतायै नमः हृदि॥ ३॥ ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये ॥४ ॥ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ ॐ कीलकाय नमः नाभौ॥ ६ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥७॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॐ ह्रौं वौं ईशानाय नमः अंगुष्ठयोः॥१॥ ॐ ह्रैं वैं तत्पुरुषाय नमः तर्जन्योः॥२॥ ॐ ह्रूं वूं अघोराय नमः मध्यमयोः॥३॥ ॐ ह्रीं वीं वामदेवाय नमः अनामिकयोः॥४॥ ॐ ह्रां वां सद्योजाताय नमः कनिष्ठिकयोः॥५॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ह्रौं वौं ईशानाय ऊर्ध्ववक्त्राय नमः शिरसि ॥१॥ ॐ ह्रैं वैं तत्पुरुषाय पूर्ववक्त्राय नमः मुखे॥२ ॥ ॐ ह्रूं वूं अघोराय दाक्षिणवक्त्राय नमः दाक्षिणकर्णे ॥३ ॥ ॐ ह्रीं वीं वामदेवाय उत्तरवक्त्राय नमः वामकर्णे॥४ ॥ ॐ ह्रां वां सद्योजाताय पश्चिमवक्त्राय नमः चूडाधः॥ ५ ॥ इति मूर्तिन्यासः॥ ॐ ह्रौं वौं ईशानाय नमः शिरसि॥१॥ ॐ ह्रैं वैं तत्पुरुषाय नमः मुखे॥२॥ ॐ ह्रूं वूं अघोराय नमः हृदये ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं वीं वामदेवाय नमः गुह्ये॥४॥ ॐ ह्रां वां सद्योजाताय नमः पादयो॥५॥ इति पंचब्रह्ममंत्रन्यासः॥ ॐ ह्रां वां हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं वीं शिरसे स्वाहा॥२॥ ॐ ह्रूं वूं शिखायै वषट्॥३॥ ॐ ह्रैं वैं कवचाय हुम्॥४॥ ॐ ह्रौं वौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ ह्रः वः अस्त्राय फट्॥६॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः॥ ततः ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट् इत्यस्त्रमंत्रेण तालैश्छोटिकाभिर्वा दश दिग्बंधनं कृत्वा ध्यायेत्॥ अथ ध्यानम्॥ ॐ शुद्धस्फटिकसंकाशं सहस्रादित्यवर्चसम्॥ नीलजीमूतसंकाशं नीलांजनसमप्रभम्॥१॥

अष्टबाहुं त्रिनयनं चतुर्बाहुं द्विबाहुकम् ॥ दंष्ट्राकरालवदनं नूपुरारावसंकुलम् ॥ २ ॥ भुजंगमेखलं देवमग्निवर्णशिरोरुहम् ॥ दिगंबरं कुमारेशं वटुकाख्यं महाबलम् ॥३॥ खट्वांगमासिपाशं च शूलं दक्षिणभागतः ॥ डमरुं च कपालं च वरदं भुजगं तथा ॥ अग्निवर्णसमोपेतं सारमेयसमन्वितम् ॥ ४ ॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूजयेत् ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले लिंगतोभद्रमण्डले वा मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः पद्धतिमार्गेण संस्थाप्य ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः । इति संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् । तद्यथा-पूर्वादिक्रमेण ॐ वां वामायै नमः ॥ १ ॥ ॐ ज्यें ज्येष्ठायै नमः ॥ २ ॥ ॐ रौं रौद्र्यै नमः ॥ ३ ॥ ॐ कां काल्यै नमः ॥४ ॥ ॐ कं कलविकरण्यै नमः ॥ ॐ बं बलविकरण्यै नमः ॥ ६ ॥ॐ बं बलप्रमथिन्यै नमः ॥ ७ ॥ ॐ सं सर्वभूतदमन्यै नमः ॥ ८ ॥ मध्ये । ॐ मं मनोन्मन्यै नमः ॥ ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य ततः शक्तिगंधाष्टकेन यंत्रं विलिख्य "ॐ नमो भगवते वटुकाय सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनंताय योगपीठात्मने नमः ॥ " इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तथा च-पुष्पांजलिमादाय । "ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रिय ॥ अनुज्ञां देहि वटुक परिवार्चनाय मे ॥ १ ॥ इत्युक्त्वा पुष्पांजलिं भैरवोपरि दत्त्वा आज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत ॥ अत्र सर्वत्र पूज्यपूजकयोरंतराले प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य आवरणदेवतां पूजयेत् ॥ ततो दक्षहस्ते तर्जन्यंगुष्ठाभ्यां गधांक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा देवस्यांगे आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च ॐ ह्रां वां हृदयाय नमः । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि

---

१ ॐ लिंगस्थां पूजयेद्देवीं पुस्तकस्थां तथैव च॥ मण्डलस्थां महामायां यंत्रस्थां प्रतिमासु च ॥सौवर्णे राजते ताम्रे पट्टे भूर्जेऽथवा भुवि। विना यंत्रेण चेत्पूजा देवता न प्रसीदति॥

२-शक्त्यष्टगंधो यथा-स्वयंभूकुसुमं कुण्डगोलोत्थं रोचनागुरु । काश्मीरमृगनाभिं च चन्दनं मलयोद्भवम् । एष गंधः समाख्यातः सर्वदा चण्डिकाप्रियः ॥

नमः ॥ इति सर्वत्रोच्चरेत् ॥ १॥ ॐ ह्रीं वीं शिरसे स्वाहा शिरः श्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ ह्रूं वूं शिखायै वषट् शिखाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रैं वैं कवचाय हुम् कवचश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ ह्रौं वौं नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रत्रयश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रः वः अस्त्राय फट् अस्त्रश्रीपा० ॥ ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य्य "ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घ्याद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततः कर्णिकाद्बहिरष्टदले प्राच्यादिक्रमेण । ॐ ह्रीं आं असितांगभैरवाय नमः असितांगभैरवश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं ईं रुरुभैरवाय नमः रुरुभैरवश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं ऊं चंडभैरवाय नमः चंडभैरवश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं ॠं क्रोधभैरवाय नमः क्रोधभैरवश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं लृं उन्मत्तभैरवाय नमः उन्मत्तभैरवश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं ऐं कपालभैरवाय नमः । कपालभैरवश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं औं भीषणभैरवाय नमः । भीषणभैरवश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं अं संहारभैरवाय नमः । संहारभैरवश्रीपा० ॥ ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ भैरवान्संपूज्य त्रिकोणे पूर्वादिकोणेषु । ॐ सत्त्वाय नमः ॥ १ ॥ ॐ रजसे नमः ॥ २ ॥ ॐ तमसे नमः ॥ ३ ॥ इति त्रिगुणान् संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ त्रिकोणाद्बहिः षट्कोणे पूर्वादिक्रमेण । ॐ ह्रीं भूतनाथाय नमः । भूतनाथश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं आदिनाथाय नमः । आदिनाथश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं आनंदनाथाय नमः । आनंदनाथश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं सिद्धशाबरनाथाय नमः । सिद्धशाबरनाथश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं सहजानंदनाथाय नमः । सहजानंदनाथश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं निःसीमानंदनाथाय नमः । निःसीमानंदनाथश्रीपा० ॥ ६ ॥ इति संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततो वर्तुले पूर्वादिक्रमेण ॐ ह्रीं डाकिनीपुत्रेभ्यो नमः । डाकिनीपुत्रश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं राकिनीपुत्रेभ्यो नमः । राकिनीपुत्रश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं लाकिनीपुत्रेभ्यो नमः । लाकिनीपुत्रश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं काकिनीपुत्रेभ्यो नमः । काकिनी

पुत्रश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं शाकिनीपुत्रेभ्यो नमः। शाकिनीपुत्रश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं हाकिनीपुत्रेभ्यो नमः। हाकिनीपुत्रश्रीपा० ॥ ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं याकिनीपुत्रेभ्यो नमः। याकिनीपुत्रश्रीपा० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं देवीपुत्रेभ्यो नमः। देवीपुत्रश्रीपा० ॥ ८ ॥ देवदक्षिणतः ॥ ॐ ह्रीं उमापुत्रेभ्यो नमः। उमापुत्रश्रीपा० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं रुद्रपुत्रेभ्यो नमः। रुद्रपुत्रश्रीपा० ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं मातृपुत्रेभ्यो नमः। मातृपुत्रश्रीपा० ॥ ११ ॥ पश्चिमनैर्ऋतयोर्मध्ये। ॐ ह्रीं ऊर्ध्वमुखीपुत्रेभ्यो नमः। ऊर्ध्वमुखपुत्रश्रीपा० ॥ १२ ॥ पूर्वेशानयोर्मध्ये ॥ ॐ ह्रीं अधोमुखीपुत्रेभ्यो नमः। अधोमुखीपुत्रश्रीपा० ॥ १३ ॥ इति त्रयोदशपुत्रवर्गान् पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिं गृहीत्वा मूलमुच्चार्य "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥ १ ॥" इति पठित्वा पुष्पांजलिं दत्त्वा विशेषार्घ्याद्बिंदुं भैरवोपरि निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥ ४ ॥ वर्तुलाद्बहिः पूर्वाद्याग्नेयांतं क्रमेण वामावर्तेन च पूर्वे ॐ ह्रीं ब्रह्माणीपुत्रवटुकाय नमः। ब्रह्माणीपुत्रवटुकश्रीपा० ॥ १ ॥ ऐशान्ये। ॐ ह्रीं माहेश्वरीपुत्रवटुकाय नमः। माहेश्वरीपुत्रवटुकश्रीपा० ॥ २ ॥ उत्तरे। ॐ ह्रीं वैष्णवीपुत्रवटुकाय नमः। वैष्णवीपुत्रवटुकश्रीपा० ॥ ३ ॥ वायव्ये। ॐ ह्रीं कौमारीपुत्रवटुकाय नमः। कौमारीपुत्रवटुकश्रीपा० ॥ ४॥ पश्चिमे। इन्द्राणीपुत्रवटुकाय नमः। इन्द्राणीपुत्रवटुकश्रीपा० ॥ ५ ॥ नैर्ऋत्ये ॐ ह्रीं महालक्ष्मीपुत्रवटुकाय नमः महालक्ष्मीपुत्रवटुकश्रीपा० ॥ ६ ॥ दक्षिणे। ॐ ह्रीं वाराहीपुत्रवटुकाय नमः। वाराहीपुत्रवटुकश्रीपा० ॥ ७ ॥ आग्नेये ॥ ॐ ह्रीं चामुंडापुत्रवटुकाय नमः। चामुंडापुत्रवटुकश्रीपा० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ मातृपुत्रवटुकान् पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिं गृहीत्वा मूलमुच्चार्य "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं पंचमावरणार्चनम्"॥१॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दत्त्वा विशेषार्घ्याद्बिंदुं भैरवोपरि निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति पंचमावरणम् ॥५॥ अष्टदलाद्बहिः चतुरस्राभ्यंतरे इंद्रादिक्रमेण प्राचीं प्रकल्प्य पूर्वादिदशदिक्षु च पूर्वे ॐ ह्रीं हेतुकाय नमः। हेतुकश्रीपादुकां पूज० ॥१॥ आग्नेये। ॐ ह्रीं त्रिपुरां

तकाय नमः । त्रिपुरांतकश्रीपा० ॥२॥ दक्षिणे । ॐ ह्रीं वैतालाय नमः । वैतालश्रीपादुकां पूजयामि तर्प०॥३॥नैर्ऋते । ॐ ह्रीं अग्निजिह्वाय नमः । अग्निजिह्वश्रीपा० ॥४॥ पश्चिमे । ॐ ह्रीं कालांतकाय नमः । कालांतकश्रीपा०॥५॥वायव्ये । ॐ ह्रीं करालाय नमः । करालश्रीपा० ॥६॥ उत्तरे । ॐ ह्रीं एकपादाय नमः । एकपादश्रीपा०॥७॥ ऐशान्ये । ॐ ह्रीं भीमरूपाय नमः । भीमरूपश्रीपा० ॥८॥ इन्द्रेशानयोर्मध्ये । ॐ ह्रीं अचलाय नमः । अचलश्रीपा० ॥९॥ नैर्ऋतवरुणयोर्मध्ये । ॐ ह्रीं हाटकेशाय नमः । हाटकेशश्रीपा० ॥ १० ॥ इति हेतुकादीन् दशवटुकान् पूजयेत्॥ततः पुष्पांजलिं गृहीत्वा मूलमुच्चार्य । "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल॥भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठमावरणार्चनम्" ॥१॥इति पठित्वा पुष्पांजलिं दत्त्वा विशेषार्घ्यबिंदुं भैरवोपरि निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति षष्ठावरणम् ॥ ६ ॥

तत्र त्रिरेखात्मकभूपुरस्य प्रथमरेखायां दिग्विदिगंतरालेषु षोडशस्थानेषु श्रीकंठादिमहासेनांतान्यजेत् ॥ तत्र क्रमः ॥ पूर्वे । ॐ ह्रीं अं श्रीकंठेशपूर्णोदरीभ्यां नमः । श्रीकंठेशपूर्णोदरीश्रीपा० ॥ १ ॥ दक्षिणे । ॐ ह्रीं आं अनंतेशविरजाभ्यां नमः । अनंतेशविरजाश्रीपा०॥२॥ पश्चिमे । ॐ ह्रीं इं सूक्ष्मेशशाल्मलीभ्यां नमः । सूक्ष्मेशशाल्मलीश्रीपा० ॥ ३ ॥ उत्तरे । ॐ ह्रीं ईं त्रिमूर्तीशलोलाक्षीभ्यां नमः त्रिमर्तीशलोलाक्षीश्रीपा० ॥ ४ ॥ आग्नेय्याम् । ॐ ह्रीं उं अमरेशवर्तुलाक्षीभ्यां नमः ।अमरेशवर्तुलाक्षीश्रीपा० ॥५॥ नैर्ऋते ।ॐ ह्रीं ऊं अर्धीशदीर्घघोणाभ्यां नमः । अर्धीशदीर्घघोणाश्रीपा०॥६॥ वायव्ये ॥ ॐ ह्रीं ऋं भारभूतीशदीर्घमुखीभ्यां नमः । भारभूतीशदीर्घमुखीश्रीपादुकां पू० ॥ ७ ॥ ऐशान्ये । ॐ ह्रीं ॠं अतिथीशगोमुखीभ्यां नमः । अतिथीशगोमुखीश्रीपा० ॥ ८ ॥ पूर्वाग्निमध्ये । ॐ ह्रीं लृं स्थाण्वीशदीर्घजिह्वाभ्यां नमः । स्थाण्वीशदीर्घजिह्वाश्रीपा० ॥ ९ ॥ दक्षिणनैर्ऋतमध्ये ॥ ॐ ह्रीं लॄं हरेशकुंडोदरीभ्यां नमः । हरेशकुंडोदरीश्रीपा० ॥१०॥ पश्चिमवायुमध्ये । ॐ ह्रीं एं झिंटीशोर्ध्वकेशीभ्यां नमः । झिंटीशोर्ध्वकेशीश्रीपा० ॥ ११ ॥ उत्तरेशानमध्ये ॥ ॐ ह्रीं ऐं भौतिकेशविकृतमुखीभ्यां नमः । भौतिकेशविकृतमुखीश्रीपा० ॥ १२ ॥ अग्निदक्षिणमध्ये।ॐ ह्रीं ओं सद्योजातेशज्वालामुखीभ्यां

नमः । सद्योजातेशज्वालामुखीश्रीपा० ॥१३॥ निर्ऋतिवरुणमध्ये । ॐ ह्रीं औं अनुग्रहेशोल्कामुखीभ्यां नमः । अनुग्रहेशोल्कामुखीश्रीपा०
॥ १४ ॥ वायुसोममध्ये ॐ ह्रीं अं अक्रूरेशश्रीमुखीभ्यां नमः । अक्रूरेशश्रीमुखीश्रीपा० ॥ १५ ॥ ईशानपूर्वमध्ये । ॐ ह्रीं अः
महासेनेशविद्यामुखीभ्यां नमः।महासेनेशविद्यामुखीश्रीपा०॥१६॥ इति पूजयेत्॥ ततः पुष्पांजलिं गृहीत्वा मूलमुच्चार्य “अभीष्टसिद्धिं मे
देहि शरणागतवत्सल ॥भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्”॥इति पठित्वा पुष्पांजलिं दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं भैरवोपरि निक्षिप्य पूजिता
स्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥इति सप्तमावरणम्॥७॥ ततो भूपुरस्य द्वितीयरेखायां दिग्विदिगंतरालेषु षोडशस्थानेषु क्रोधीश्वराद्यषोडशांतान्
पूजयेत् ॥ तत्र क्रमः । पूर्वे । ॐ ह्रीं कं क्रोधीशमहाकालीभ्यां नमः । क्रोधीशमहाकालीश्रीपा० ॥ १ ॥ दक्षिणे । ॐ ह्रीं खं चंडीशसरस्व
तीभ्यां नमः । चंडीशसरस्वतीश्रीपा० ॥२॥ पश्चिमे । ॐ ह्रीं गं पंचांतकेशसर्वसिद्धिगौरीभ्यां नमः । पंचांतकेशसर्वसिद्धिगौरीश्रीपा० ॥३॥
उत्तरे । ॐ ह्रीं घं शिवोत्तमेशत्रैलोक्यविजयाभ्यां नमः । शिवोत्तमेशत्रैलोक्यविजयाश्रीपा० ॥ ४ ॥ आग्नेय्याम् । ॐ ह्रीं ङं एकरुद्रेशमंत्र
शक्तिभ्यां नमः । एकरुद्रेशमंत्रशक्तिश्रीपा० ॥ ५ ॥ नैर्ऋत्ये । ॐ ह्रीं चं कूर्मेशात्मशक्तिभ्यां नमः । कूर्मेशात्मकशक्तिश्रीपा० ॥ ६ ॥
वायव्ये । ॐ ह्रीं छं एकनेत्रेशभूतमातृकाभ्यां नमः । एकनेत्रेशभूतमातृकाश्रीपा० ॥ ७ ॥ ऐशान्ये । ॐ ह्रीं जं चतुराननेशलंबोदरीभ्यां
नमः । चतुराननेशलंबोदरीश्रीपा० ॥ ८ ॥ पूर्वाग्निमध्ये । ॐ ह्रीं झं अजेशद्राविणीभ्यां नमः । अजेशद्राविणीश्रीपा० ॥ ९ ॥ दक्षिण
नैर्ऋतमध्ये । ॐ ह्रीं ञं सर्वेशनागरीभ्यां नमः । सर्वेशनागरीश्रीपा० ॥ १० ॥ पश्चिमवायुमध्ये । ॐ टं सोमेशखेचरीभ्यां नमः ।
सोमेशखेचरीश्रीपा० ॥ ११ ॥ उत्तरेशानमध्ये । ॐ ह्रीं ठं लांगलीशमंजरीभ्यां नमः । लांगलीशमंजरीश्रीपा० ॥ १२ ॥ आग्नेययाम्यमध्ये
ॐ ह्रीं डं दारुकेशरूपिणीभ्यां नमः । दारुकेशरूपिणीश्रीपा० ॥ १३ ॥ नैर्ऋतपश्चिममध्ये । ॐ ह्रीं ढं अर्धनारीशवीरणीभ्यां नमः ।
अर्धनारीशवीरणीश्रीपादुकांपू० ॥ १४ ॥ वायुसोममध्ये । ॐ ह्रीं णं उमाकांतेशकाकोदरीभ्यां नमः । उमाकांतेशकाकोदरीश्रीपा०

॥ १५ ॥ ईशानपूर्वमध्ये ॥ ॐ ह्रीं तं आषाढेशपूतनाभ्यां नमः । आषाढेशपूतनाश्रीपा० ॥ १६ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिं गृहीत्वा मूलमुच्चार्य ॥ "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यमष्टमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दत्त्वा विशेषार्घ्याद्बिंदुं भैरवोपरि निक्षिप्य पूजास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इत्यष्टमावरणम् ॥ ८ ॥ ततोभूपुरस्य तृतीयरेखायां दिग्विदिगंतरालेषु षोडशस्थानेषु दंडीश्वरादिभृग्वीशांतान् पूजयेत् ॥ तत्र क्रमः ॥ पूर्वे । ॐ ह्रीं थं दंडीशभद्रकालीभ्यां नमः । दंडीशभद्रकालीश्रीपादुकां पू० ॥१॥ दक्षिणे । ॐ ह्रीं दं अत्रीशयोगिनीभ्यां नमः । अत्रीशयोगिनीश्रीपा० ॥ २ ॥ पश्चिमे । ॐ ह्रीं धं मीनेशशंखिनीभ्यां नमः । मीनेशशंखिनीश्रीपा० ॥ ३ ॥ उत्तरे । ॐ ह्रीं नं मेषेशगर्जनीभ्यां नमः । मेषेशगर्जनीश्रीपा० ॥ ४ ॥ आग्नेय्याम् ॥ ॐ ह्रीं पं लोहितेशकालरात्रिभ्यां नमः । लोहितेशकालरात्रिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ५ ॥ नैर्ऋत्ये । ॐ ह्रीं फं शिखीशकुब्जिकाभ्यां नमः । शिखीशकुब्जिकाश्रीपा० ॥ ६ ॥ वायव्ये । ॐ ह्रीं बं छागलेशकपर्दिनीभ्यां नमः । छागलेशकपर्दिनीश्रीपा० ॥ ७ ॥ ऐशान्ये ॥ ॐ ह्रीं भं द्विरंडेशवज्रिणीभ्यां नमः । द्विरंडेशवज्रिणीश्रीपा० ॥ ८ ॥ पूर्वाग्निमध्ये । ॐ ह्रीं मं महाकालेशजयाभ्यां नमः । महाकालेशजयाश्रीपा० ॥ ९ ॥ दक्षिणनैर्ऋतमध्ये । ॐ ह्रीं यं त्वगात्मभ्यां बालेशसुमुखेश्वरीभ्यां नमः । बालेशसुमुखेश्वरीश्रीपा० ॥ १० ॥ पश्चिमवायव्यमध्ये । ॐ ह्रीं रं असृगात्मभ्यां भुजंगेशरेवतीभ्यां नमः । भुजंगेशरेवतीश्रीपा० ॥ ११ ॥ उत्तरेशानयोर्मध्ये । ॐ ह्रीं लं मांसात्मभ्यां पिनाकीशमाधवीभ्यां नमः । पिनाकीशमाधवीश्रीपा० ॥ १२ ॥ आग्नेयदक्षिणमध्ये । ॐ ह्रीं वं वेदात्मभ्यां खड्गीशवारुणीभ्यां नमः । खड्गीशवारुणीश्रीपा० ॥ १३ ॥ नैर्ऋतपश्चिममध्ये । ॐ ह्रीं शं अस्थ्यात्मभ्यां बकेशवायवीभ्यां नमः । बकेशवायवीश्रीपा० ॥१४॥ वायुसोममध्ये । ॐ ह्रीं षं मज्जात्मभ्यां । श्वेतेशरक्षोवधारिणीभ्यां नमः । श्वेतेशरक्षोवधारिणीश्रीपा० ॥ १५ ॥ ईशानपूर्वमध्ये । ॐ ह्रीं सं शुक्रात्मभ्यां भृग्वीशसहजाभ्यां नमः । भृग्वीशसहजाश्रीपा० ॥१६॥ इति पूजयेत् ॥ ततो भूपुराद्बहिः देवदक्षि

णतः लकुलीशादित्रयं पूजयेत् ॥ तत्र क्रमः । ॐ ह्रीं हं प्राणात्मभ्यां लकुलीशलक्ष्मीभ्यां नमः । लकुलीशलक्ष्मीश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ
ह्रीं लं शक्त्यात्मभ्यां नमः । शिवेशव्यापिनीश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं क्षं क्रोधात्मभ्यां संवर्तकेशमहामायाभ्यां नमः ।
संवर्तकेशमहामायाश्रीपा० ॥ ३ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः ऐशान्ये । ॐ ह्रीं योगिनीसहितेभ्यो दिव्ययोगीश्वरेभ्यो नमः । योगिनीसहित
दिव्ययोगीश्वरश्रीपा० ॥ १ ॥ आग्नेये । ॐ ह्रीं योगिनीसहितेभ्योऽन्तरिक्षस्थयोगीश्वरेभ्यो नमः । योगिनीसहितांतरिक्षस्थयोगीश्वरश्रीपा०
॥ २ ॥ नैर्ऋते । ॐ ह्रीं योगिनीसहितभूमिस्थयोगीश्वरेभ्यो नमः । योगिनीसहितभूमिस्थयोगीश्वरश्रीपा० ॥ ३ ॥ पूर्वे । गं गणपतये
नमः । गणपतिश्रीपा० ॥ ४ ॥ दक्षिणे । भैं भैरवाय नमः । भैरवश्रीपा० ॥ ५ ॥ पश्चिमे । क्षं क्षेत्रपालाय नमः । क्षेत्रपालश्रीपा० ॥ ६ ॥
उत्तरे । दुं दुर्गायै नमः । दुर्गाश्रीपा०॥७॥इति पूजयेत्॥ ततः पुष्पांजलिं गृहीत्वा मूलमुच्चार्य । "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम्॥इति पठित्वा पुष्पांजलिं दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं भैरवोपरि निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत्॥
इति नवमावरणम् ॥९॥ततो भूपुराद्बहिः पूर्वादिक्रमेण दशदिक्षु इन्द्रादीन् दशदिक्पालान् पूजयेत् ॥ तत्र क्रमः। ॐ ह्रीं लं इंद्राय नमः ।
इन्द्रश्रीपा० ॥१॥ ॐ ह्रीं रं अग्नये नमः । अग्निश्रीपा० ॥२॥ ॐ ह्रीं मं यमाय नमः । यमश्रीपा०॥३॥ ॐ ह्रीं क्षं निर्ऋतये नमः । निर्ऋति
श्रीपा०॥४॥ह्रीं वं वरुणाय नमः । वरुणश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं यं वायवे नमः । वायुश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं सों सोमाय नमः । सोमश्रीपा०
॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं हं ईशानाय नमः । ईशानश्रीपा० ॥ ८ ॥ इन्द्रेशानयोर्मध्ये । ॐ ह्रीं आं ब्रह्मणे नमः । ब्रह्मश्रीपा० ॥ ९ ॥ वरुणनिर्ऋतयो
र्मध्ये।ॐ ह्रीं अनंताय नमः अनंतश्रीपा०॥१०॥इति दशदिक्पालान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥इति दशमावरणम्॥१०॥ततः इन्द्रादि
समीपे । ॐ वं वज्राय नमः ॥१॥ ॐ शं शक्तये नमः ॥ २॥ ॐ दं दंडाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ खं खड्गाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ पां पाशाय नमः
॥ ५॥ ॐ अं अंकुशाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ गं गदायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ॥ ८॥ ॐ पं पद्माय नमः ॥ ९ ॥ ॐ चं चक्राय

नमः ॥ १० ॥ इत्यस्त्राणि पूजयित्वा रुद्राख्यपदं संयोज्य पुष्पांजलिं च दत्त्वा स्तंभ: १ चतुरास्त्राणि २ मच्छ ३ गोक्षु ४ योनि मुद्रा इति पंच मुद्राः प्रदर्शयेत् ॥ इत्येकादशावरणम् ॥ ११॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य पंचबलिदानं दत्त्वा पशुबलिदानादिकं विधाय जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणमेकविंशतिलक्षजपः॥ जपांते तिलाज्येन मधुमिश्रितेन दशांशतो होमः। होमांते होमदशांशेन मंत्रांते"ॐ वटुकभैरवं तर्पयामि"इत्युक्त्वा दुग्धमिश्रितजलेन तर्पणं कुर्यात् ॥ ततस्तर्पणदशांशेन मंत्रांते "ॐ आत्मानमभिषिंचामि नमः॥"इति मूर्ध्न्यभिषेकः॥होमतर्पणाभिषेकाशक्तौ तत्तत्स्थाने तत्तद्द्विगुणो जपः कार्यः। ततोऽभिषेकदशांशसंख्याकमष्टोत्तरशतं वा ब्राह्मणान् भोजयेत्॥इति शारदातिलके ज्ञेयम् ॥ रुद्रयामले पुरश्चरणलक्षजपः॥तत्तद्दशांशेन होमतर्पणब्राह्मणभोजनानि कारयेत् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति। सिद्धे च मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च (रुद्रयामले) "लक्षमेकं जपेन्मंत्रं हविष्याशी जितेन्द्रियः ॥ तद्दशांशं च जुहुयात्तिलैर्मधुरसंयुतैः ॥ १ ॥ अनेन मनुना देवी सिद्धेन जगतीतले ॥ असाध्यं नास्ति लोकेषु सत्यं सत्यं मयोदितम्॥२॥ एवं सिद्धे मनौ मंत्री प्रयोगान् कर्तुमर्हसि ॥ यथा कामस्तथा ध्यानं कारयेत्साधकोत्तमः॥३॥क्रूरकार्येषु सर्वेषु ध्यानं वै तामसं स्मृतम् ॥ वश्ये विद्वेषणे स्तंभे राजसं ध्यानमीरितम् ॥ ४ ॥ सात्त्विकं शुभकार्येषु ध्यानभेदः समीरितः ॥ बालसूर्य्यांशुसंकाशं राजसं ध्यानमुच्यते ॥ ५ ॥ सात्त्विकं श्वेतवर्णं च कृष्णं तामसमुच्यते ॥ सर्वकामार्थसिद्ध्यर्थे राजसं ध्यानमुच्यते ॥ ६ ॥ " अथ तामसध्यानं यथा "ॐ त्रिनेत्रं रक्तवर्णं च वरदाभयहस्तकम्॥ सव्ये त्रिशूलमभयं कपालं वरमेव च॥७॥ रक्तवस्त्रपरीधानं रक्तमाल्यानुलेपनम् ॥ नीलग्रीवं च सौम्यं च सर्वाभरणभूषितम् ॥ ८ ॥ अथ राजसध्यानम् ॥ तुषारकर्णिकाभासं मायारूपमनंतकम् ॥ मूर्ध्नि खंडेन्दुशकलं त्रिनेत्रं शांतिलोचनम् ॥ ९ ॥ सर्वकारणकर्तारं द्विभुजं रत्नभूषितम् ॥ कपालं वामहस्ते च सूक्ष्मदण्डं च दक्षिणे ॥ १० ॥ पादनूपुरसंयुक्तं [illegible]भूषितम् ॥ सर्पमालासमायुक्तं हस्तोरुस्थूलजानुषु ॥ अंत्रमालासमायुक्तं सर्वाभरणभूषितम् ॥ ११ ॥ अथ सात्त्विकं

ध्यानम् ॥ श्वेतवर्णं चतुर्बाहुं जटामुकुटधारिणम् ॥ भुजंगपाशहस्तं च हस्ते दंडकमण्डलुम् ॥ १२ ॥ शुक्लयज्ञोपवीतं च शुक्लकौपीनवाससम् ॥ शुक्लवस्त्रपरीधानं श्वेतमालानुलेपनम् ॥ १३ ॥ त्रिनेत्रं नीलकंठं च मुक्ताभरणभूषितम् ॥ अन्ये वै ध्यानभेदाश्च स्तवराजे प्रकीर्तिताः ॥ १४ ॥ अथ प्रयोगः (रुद्रयामले) शुक्लपक्षे द्वितीयायां शुक्रवारे समाहितः ॥ पूर्ववत्पूजयेद्देवं सिद्धान्नं च निवेदयेत् ॥ १ ॥ पलार्द्धं च वचाचूर्णं तन्मानघृतसंयुतम् ॥ पद्मपत्रे विनिःक्षिप्य त्रिसहस्रं[1] जपेद्बुधः ॥ २ ॥ प्राशयेन्नियतो भूत्वा पुनर्लक्षत्रयं जपेत् ॥ तस्यैवं कुर्वतः प्रज्ञा निःसीमा भवति ध्रुवम् ॥ ३ ॥ गद्यपद्यमयी वाणी श्रुतस्याप्यवधारणम् ॥ कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां भूमिपुत्रस्य वासरे ॥ ४ ॥ आराध्य विधिवद्देवं तस्याग्रे स्थापयेद्बुधः ॥ रोचनां हैमजे पात्रे संपूज्य विधिनाथ ताम् ॥ ५ ॥ गंधपुष्पादिना स्पृष्ट्वा तां जपेदयुतत्रयम् ॥ तद्वत्वर्तिं प्रज्वाल्य कपिलाघृतसेविताम् ॥ ६ ॥ सौवर्णे नृकपाले वा पात्रे संगृह्य चांजनम् ॥ संपूज्य च पुनर्जप्त्वा तत्पात्रं मंत्रसंग्रहम् ॥ ७ ॥ ध्यात्वा वादवदंशोरे तदा चांजनमाचरेत् ॥ वश्या भवंति ते सर्वे यान्यान्पश्यति साधकः ॥ ८ ॥ वंध्याचिकित्सां कुर्वाणो वालार्काभं समर्चयेत् ॥ हरिद्रार्धपलं चैव वचाचूर्णं च तत्समम् ॥ ९ ॥ पेषयित्वा तु गोमूत्रे गोलकं घृतसंयुतम् ॥ पद्मपत्रे विनिःक्षिप्य स्थापयेद्देवसान्निधौ ॥ १० ॥ प्रणिपत्य नमस्कृत्य जपेदुच्चैः सहस्रकम् ॥ एवमेव प्रकारेण प्राशयेत्तु महौषधम् ॥ ११ ॥ श्रीमंतमायुष्मंतं च बलवंतं सुदर्शनम् विद्यावंतं पुत्रवंतं सद्यः पुत्रमवाप्नुयात् ॥ १२ ॥ वश्यार्थमयुतं जप्त्वा रक्तपुष्पैर्दशांशतः ॥ होमं कुर्यात्करवीरैः श्वेतैर्विद्यामवाप्नुयात् ॥ १३ ॥ लक्ष्म्याप्त्यै कमलैर्होमो दीर्घायुर्दूर्वया हुते ॥ गुडेन रोगनाशः स्यादपमृत्युनिवारणम् ॥ १४ ॥ वस्त्रेण वस्त्रप्राप्तिः स्याद्धान्याप्तिर्धान्यहोमतः ॥ पुत्रजीवीफलैर्होमे सर्वसिद्धिमवाप्नुयात् ॥ १५ ॥ अश्वत्थसमिधाहोमे पुत्राप्तिः सर्वसिद्धयः ॥ लवणघृतहोमेन शत्रून्मादकरो भवेत् ॥ १६ ॥

[1] शारदातिलके त्रिशतमिति पाठः ॥

काकोलूकमांसहोमाच्छत्रून्मारयते ध्रुवम् ॥ सप्तरात्रेण देवेशि श्मशाने च त्रिलक्षकम् ॥ १७ ॥ जपित्वा बलिदानेन वटुको दर्शने भवेत् ॥ वटवृक्षतले मर्त्यस्त्रिलक्षं प्रजपेन्निशि ॥ १८ ॥ रसायनं च गुटिकां चेटकासिद्धिमाप्नुयात् ॥ विभीतकवृक्षतले यदि लक्षं जपेन्नरः ॥१९॥ वेतालभूतप्रेताश्च वश्या भवंति निश्चयात् ॥ जुहुयादरुणाम्भोजैर्यजेदोषैर्मधुप्लुतैः ॥ २० ॥ लक्षसंख्या तदर्धं वा प्रत्यहं भोजयेद्द्विजान् ॥ वनितां युवतीं रम्यः प्रीणयेद्देवताधिया ॥ २१ ॥ होमांते धनधान्याद्यैस्तोषयेद्गुरुमात्मनः ॥ एवं कृते जगद्वश्यं रमाया भवनं भवेत् ॥ २२ ॥ रक्तोत्पलैस्त्रिमध्वक्तैररुणैर्वा हरिद्रजैः ॥ पुष्पैः पयोन्नैः सघृतैर्होमाद्विश्वं वशं नयेत् ॥ २३ ॥ वाक्सिद्धिं लभते मंत्री पालाशकुसुमैर्हुतैः ॥ कर्पूरागरुसंयुक्तं गुग्गुलुं जुहुयात्सुधीः ॥ २४ ॥ ज्ञानं दिव्यमवाप्नोति तेनैव स भवेत्कविः ॥ क्षीराक्तैरमृताखंडैर्होमैः सर्वापमृत्युजित् ॥ २५ ॥ दूर्वाभिरायुषे होमः क्षीराक्ताभिर्दिनत्रयम् ॥ गिरिकर्णीभवैः पुष्पैस्तवधूकर्णिकारजैः ॥ २६ ॥ मालतीकुसुमैर्हुत्वा तत्पुत्रांश्च वशं नयेत् ॥ कारंडकुसुमैर्वैश्यान् वृषलान् पाटलोद्भवैः ॥ २७ ॥ आत्मानमाविलेपांतस्थितसाध्याह्वयान्वितम् ॥ मंत्रमुच्चार्य जुहुयान्मंत्री मधुरलोडितैः ॥ २८ ॥ सर्षपैः पटुसंमिश्रैर्वशयेत्पार्थिवान्क्षणात् ॥ अनेनैव विधानेन सपत्नीं तत्सुतानपि ॥ २९ ॥ जातिबिल्वफलैः पुष्पैर्मधुरत्रयसंयुतैः ॥ नरनारीनरपतीन्होमतो वशयेद्ध्रुवम् ॥ ३० ॥ मालतीकुसुमोद्भूतैः पुष्पैश्चंदनलोडितैः ॥ जुहुयात्कवितां मंत्री लभते वत्सरान्तरे ॥ ३१ ॥ मधुरत्रयसंयुक्तैः फलैर्बिल्वसमुद्भवैः ॥ जुहुयाद्वशयेल्लोकाञ्छ्रियं प्राप्नोति वांछिताम् ॥३२ ॥ पाटलैः कुसुमैः कुन्दैरुत्पलैर्नागचंपकैः ॥ नद्यावर्तैर्विकचितैः कृतमालैर्जुहोति यः ॥ ३३ ॥ जायते वत्सरादर्वाक् श्रिया विजितपार्थिवः ॥ साज्येऽन्ने च हुते मंत्री भवेदन्नसमृद्धिमान् ॥ ३४ ॥ कस्तूरीकुंकुमोपेतं कर्पूरं जुहुयाद्वशी ॥ कंदर्पादधिकं सद्यः सौंदर्यमधिगच्छति ॥ ३५ ॥ लाजान् प्रजुहुयान्मंत्री दधिक्षीरघृतप्लुतान् ॥ विजित्य रोगानखिलाञ्जीवेच्च शरदां शतम् ॥ ३६ ॥ पादद्वयं मलयजं पादं कुसुमकेशरम् ॥ पादं गोरोचनायाश्च त्रीणि पिष्ट्वा हिमांभसा ॥ ३७ ॥ विदध्यात्तिलकं भाले यान्पश्चाद्यान्विलोकयेत् ॥

यान्स्पृशेत् स्पर्शिता ये वै वश्याः स्युस्तस्य तेऽचिरात् ॥ ३८ ॥ कर्पूरकपिचोराणि समभागानि कल्पयेत् ॥ चतुर्भागा जटामांसी तावती रोचना मता ॥ ३९ ॥ कुंकुमं सप्तभागं स्याद् द्विभागं चंदनं मतम् ॥ अगरं नवभागं स्यादेवं भागक्रमेण च ॥ ४० ॥ हिमाद्रिः कन्यकापिष्टमेतत्सर्वं सुसाधितम् ॥ यो भाले तिलकं धत्ते कुर्याद्भूमिपतीन्नरान् ॥ ४१ ॥ वासितान्मदगर्वाढ्यान्मदोन्मत्तान्मतंगजान् ॥ सिंहान्व्याघ्रान्महासर्पान्भूतवेतालराक्षसान् ॥ ४२ ॥ दर्शनादेव वशयेत्तिलकं धारयन्नरः ॥ (शारदातिलके विशेषः) बिल्वप्रसूनैर्जुहुयान्महतीं विंदते श्रियम् ॥ ४३ ॥ लवणैर्मधुसंयुक्तैर्वशयेद्वनिताजनान् ॥ वृष्टिकामेन होतव्यं वेतसानां समिद्वरैः ॥ ४४ ॥ वश्याय जुहुयान्मंत्री मधुना दिवसत्रयम् ॥ कृष्णाष्टमीं समारभ्य यावत्स्यात्त चतुर्दशी ॥ ४५ ॥ तिलैस्तण्डुलसंमिश्रैर्मधुरत्रयलोलितैः ॥ त्रिसहस्रं प्रतिदिनं जुहुयात्संस्कृतेऽनले ॥ ४६ ॥ वटुकेशं समभ्यर्च्य भक्ष्यभोज्यफलान्वितः ॥ नित्यं निवेद्य समये मध्यरात्रे बलिं हरेत् ॥ ४७ ॥ एवं जपित्वा प्रयतः सहस्राण्येकविंशतिः ॥ समाप्तिदिवसे रात्रावजं हत्वा बलिं हरेत् ॥ ४८ ॥ ततः कारयिता राजा तोषयेत्साधकं धनैः ॥ प्रयोगदिवसे नित्यं भक्ष्यभोज्यैः सदक्षिणैः ॥ ४९ ॥ विप्रान्सप्त महादेवि तोषयेद्वांछितासये॥ समाप्तिदिवसे विप्रान्सप्त सप्त समाहितः ॥५०॥ भोजयेद्वस्त्रवित्ताद्यैस्तोषयेज्जगदीश्वरि । विधिनानेन संतुष्टो वटुकेशः प्रयच्छति ॥ ५१ ॥ तेजो बलं यशः पुत्रान्कान्तिं लक्ष्मीं मनोरमाम् ॥ नश्यंति शत्रवः सर्वे वर्धन्ते मित्रबांधवाः ॥ ५२ ॥ अवग्रहो न जायेत विषये तस्य भूपते ॥ जुहुयात्केवलैर्लोणैरयुतं स्तंभनेच्छया ॥ ५३ ॥ साधयेद्विधिनानेन भस्म सर्वार्थसिद्धिदम् ॥ उशीरं चंदनं कुष्ठं घनसारं सकुंकुमम् ॥ ५४ ॥ श्वेतार्कमूलवाराहीलक्ष्मीक्षीरमहीरुहाम् ॥ त्वचो बिल्वतरोर्मूलं शोषयित्वा सुचूर्णयेत् ॥ ५५ ॥ चूर्णं व्योम्नि गृहीतेन गोमयेन विमिश्रितम्॥कृत्वा पिंडं हि संशोष्य संस्कृते हव्यवाहने॥५६॥मूलेन दग्ध्वा तद्भस्म शुद्धे पात्रे विनिःक्षिपेत् ॥ केतकीमालतीपुष्पैर्वासयेद्भस्म शोधितम् ॥ ५७ ॥ अयुतं प्रजपेन्मंत्रं स्पृष्ट्वा भस्म सुपूजितम् ॥ एतदादाय दिवसे प्रातः पुंड्रं करोति

य: ॥ ५८ ॥ ब्राह्मणो वेदविधिना त्रिपुंड्रं धारयेत्सुधीः ॥ शूद्राद्यैर्मूलमंत्रेण सर्वे वा मूलमंत्रतः ॥ ५९ ॥ तस्य रोगाः प्रणश्यंति कृत्याद्रोहमहाग्रहाः ॥ रिपुचोरमृगादिभ्यो भयमस्य न जायते ॥ ६० ॥ वर्द्धंते संपदः सर्वाः पूज्यते सकलैर्जनैः ॥ राजा वश्यो भवेत्तस्य सामात्यः सपरिच्छदः ॥ ६१ ॥ अभिषेकं प्रकुर्वीत राज्ञो विजयकांक्षिणः ॥ पूर्वोक्तमंडले क्लृप्ते वितानध्वजशोभिते ॥ ६२ ॥ सर्वतोभद्रमालिख्य कर्णिकां तस्य पूजयेत् ॥ अष्टद्रोणप्रमाणेन शालिभिः शोभितैः शुभैः ॥ ६३ ॥ तदर्धास्तण्डुलास्तस्मिन्न्यस्य दूर्वाक्षतान्वितम् ॥ होमादिविहितं कुंभं नवरत्नसमन्वितम् ॥ ६४ ॥ संस्थाप्य विमलैस्तोयैरापूर्यास्मिन्विनिःक्षिपेत् ॥ क्षीरद्रुमप्रवालानि लक्ष्मीदूर्वासमायुतम् ॥ ॥ ६५ ॥ कर्पूरं चंदनं विल्वमुशीरं कुंकुमं पुनः ॥ कंकोलमगुरुं जातिं मल्लिकाचंपकोत्पलैः ॥ ६६ ॥ गोमेददाडिमं पश्चात्पट्टसूत्रेण वेष्टयेत् ॥ तस्मिन्नावाह्य वटुकं राजसं संप्रपूजयेत्॥६७॥ बहिरष्टसु कुंभेषु भैरवानष्ट पूजयेत् ॥ त्रयोदशसु कुंभेषु त्रयोदश गणान्यजेत् ॥६८॥ बाह्ये दशसु कुंभेषु लोकेशानर्चयेत्सुधीः ॥ तद्बहिर्द्व्यष्टकुंभेषु श्रीकंठादीन्सुरेश्वरान् ॥ ६९ ॥ पंचत्रिंशद्घटेष्वर्चेत्कादिः वर्णेश्वरान् क्रमात् ॥ इति गंधादिभिः सम्यक् पंचावरणमर्चयेत् ॥ ७० ॥ अयुतं प्रजपेत्स्पृष्ट्वा तान्घटान्देशिकोत्तमः ॥ पायसै सर्पिषा शुद्धैस्तिलैर्दशशतं पृथक् ॥ ७१ ॥ जुहुयात्तान्घटान्स्पृष्ट्वा प्रत्यहं बलिमाहरेत् ॥ राजसोक्तप्रकारेण रात्रौ देशिकसत्तमः ॥७२ ॥ सुदिने शोभने लग्ने वाचयित्वा द्विजातिभिः ॥ स्वस्तिमंगलवाक्यानि विशुद्धैर्वेदपारगैः ॥ ७३ ॥ नदत्सु पंचवाद्येषु प्रणम्य वटुकेश्वरम् ॥ जितेन्द्रियं शुद्धकायं राजानं ब्राह्मणप्रियम् ॥ ७४ ॥ आस्तिकं शुद्धवचनमाभिषिंचेत्प्रसन्नधीः ॥ अभिषिक्तो नरपतिः प्रणिपत्य गुरुं परम् ॥ ७५ ॥ भूयसीं दक्षिणां दद्यात्प्रसीदति यथा गुरुः ॥ राजाभिषिक्तो भवति साक्षाद्भूमिपुरंदरः ॥७६ ॥ परान्विजयते भूपान्स्तूयते सकलैर्नरैः ॥ भक्ष्यभोज्यैर्धनैर्धान्यैः पूजयंति यशस्विनः ॥ कृताभिषेकः षण्मासं प्रतिमासं महीपतिः ॥७७॥ इत्येकविंशत्यक्षरवटुकभैरव मंत्रप्रयोगः॥अथ स्वर्णाकर्षणभैरवमंत्रप्रयोगः ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि स्वर्णाकर्षणभैरवम् ॥ यस्यानुष्ठानमात्रेण स्वर्णराशिमवाप्नुयात्॥१॥

शांतिकं पौष्टिकं चैव वश्याकर्षणमोहनम्॥ मारणोच्चाटनं द्वेषस्तंभनं च प्रशस्यते ॥ २ ॥ मंत्रो यथा—"ऐंह्रींश्रींऐंश्रीं आपदुद्धारणाय ह्रां ह्रीं ह्रूं अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय मम दारिद्र्यविद्वेषणाय महाभैरवाय नमःश्रींह्रींऐं"इति सप्तपंचाशदक्षरो मंत्रः॥ अस्य विधानम् ॥ ॐ अस्य श्रीस्वर्णाकर्षणभैरवमंत्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः। पंक्तिश्छंदः। हरिहरब्रह्मात्मकस्वर्णाकर्षणभैरवो देवता। ह्रीं बीजम् ह्रीं शक्तिः। ॐ कीलकम्। स्वर्णाकर्षणभैरवप्रसादसिद्ध्यर्थं स्वर्णराशिप्राप्तये स्वर्णाकर्षणभैरवमंत्रजपे विनियोगः ॥ ॐ ब्रह्मर्षये नमः। शिरसि ॥ १ ॥ पंक्तिच्छंदसे नमः मुखे ॥ २ स्वर्णाकर्षणभैरवदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ॥५॥ ॐ कीलकाय नमः सर्वांगे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ऐं ह्रीं श्रीं आपदुद्धारणाय अंगुष्ठाभ्यां ममः ॥१॥ ह्रां ह्रीं ह्रूं अजामलबद्धाय तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ लोकेश्वराय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ स्वर्णाकर्षणभैरवाय अनामिकाभ्यां नमः॥४॥ मम दारिद्र्यविद्वेषणाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ महाभैरवाय नमः श्रीं ह्रीं ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं श्रीं आपदुद्धारणाय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ह्रां ह्रीं ह्रूं अजामलबद्धाय शिरसे स्वाहा ॥२॥ लोकेश्वराय शिखायै वषट्॥३ ॥ स्वर्णाकर्षणभैरवाय कवचाय हुम् ॥४॥ मम दारिद्र्यविद्वेषणाय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ महाभैरवाय नमः श्रीं ह्रीं ऐं अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ "पीतवर्णं चतुर्बाहुं त्रिनेत्रं पीतवाससम् ॥ अक्षयस्वर्णमाणिक्यं तडित्पूरितपात्रकम् ॥ १ ॥ अभिलषितं महाशूलं तोमरं चामरद्वयम् ॥ सर्वाभरणसंपन्नं मुक्ताहारोपशोभितम् ॥ २ ॥ मदोन्मत्तं सुखासीनं भक्तानां च वरप्रदम् ॥ संततं चिंतयेद्देव्यं भैरवं सर्वसिद्धिदम् ॥ ३ ॥ पारिजातद्रुमकांतारस्थिते मणिमंडपे ॥ सिंहासनगतं ध्यायेद्भैरवं स्वर्णदायकम् ॥ ४ ॥ गांगेयपात्रं डमरुं त्रिशूलं वरं करैः संदधतं त्रिनेत्रम् ॥ देव्या युतं तप्तसुवर्णवर्णं स्वर्णाकृतिं भैरवमाश्रयामि॥५॥"इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूजयेत। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले लिंगतोभद्रमंडले वा मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठ

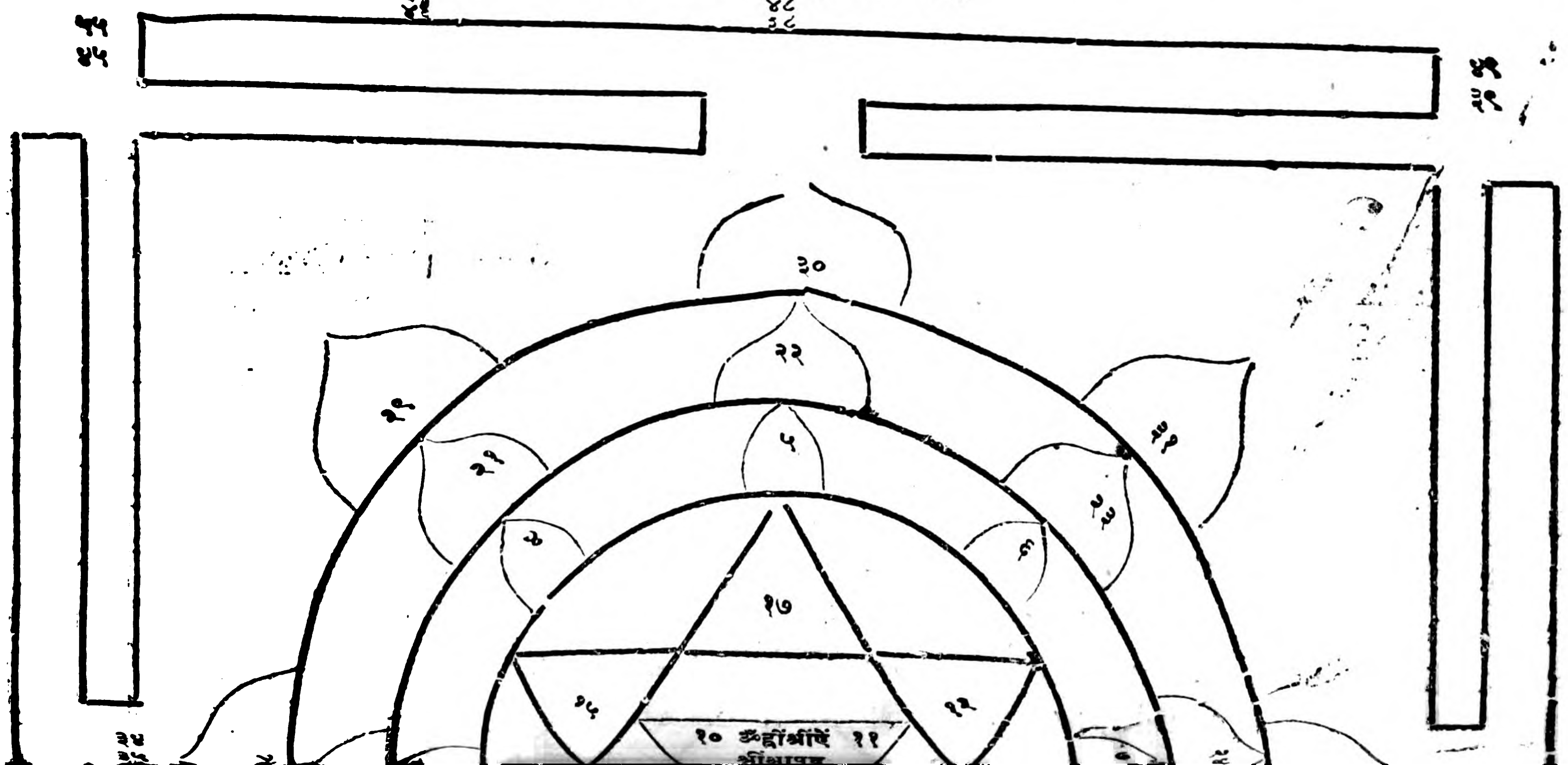
देवताः पद्धतिमार्गेण संस्थाप्य ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः। इति संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्॥तद्यथा—पूर्वादिक्रमेण। ॐ वामायै नमः ॥ १ ॥ ॐ ज्येष्ठायै नमः ॥२॥ ॐ रौद्र्यै नमः ॥ ३ ॥ ॐ काल्यै नमः ॥ ४ ॥ ॐ कलविकरण्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ बलविकरण्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ बलप्रमथिन्यै नमः ॥ ७ ॥ ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः ॥८॥ मध्ये । ॐ मनोन्मन्यै नमः ॥९॥ इति पीठ शक्तीः संपूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य "ॐ नमो भगवते स्वर्णाकर्षणभैरवयोगपीठात्मने नमः ॥" इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पुनर्ध्यायेत् ॥ ध्यानम् । ॐ गांगेयपात्रं डमरुं त्रिशूलं वरं करैः संदधतं त्रिनेत्रम् ॥ देव्या युतं तप्तसुवर्णवर्णं स्वर्णाकृतिं भैरवमाश्रयामि ॥ १ ॥ मन्दारद्रुममूलभाजि सुमहामाणिक्यसिंहासने संविष्टोदरभिन्नपंकजरुचा देव्या कृतालिंगनः ॥ भक्तेभ्यः कररत्नपात्र भरितं स्वर्णं ददानोऽनिशं स्वर्णाकर्षणभैरवो विजयते स्वर्गापवर्गैकभूः ॥ २ ॥ इति ध्यात्वा ॥ मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्यावाहनादि पुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञया आवरणपूजां कुर्य्यात् ॥ तद्यथा—पुष्पांजलिमादाय। "ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रिय॥अनुज्ञां देहि वटुक परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् । इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत ॥ तथा च—ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतराले प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राच्यादिक्रमेण ॐ आकाशाय नमः । मूर्ध्नि पूजयामि ॥ १ ॥ ॐ समीरणाय नमः । मुखे पूजयामि ॥२॥ ॐ दभ्राय नमः । बाह्वोः पूजयामि ॥ ३ ॥ ॐ वैवर्ताय नमः। हृदि पूजयामि ॥ ४ ॥ ॐ विश्वंभराय नमः । उदरे पूजयामि ॥ ५ ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः । कटौ पूजयामि ॥ ६ ॥ ॐ जनार्दनाय नमः । जानुनोः पूजयामि ॥ ७ ॥ ॐ इन्द्राय नमः । पादयोः पूजयामि ॥ ८॥ इत्यष्टांगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य्य "ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥" इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घ्यबिंदुं निःक्षिप्य समुद्राः सचक्रकाः सायुधाः

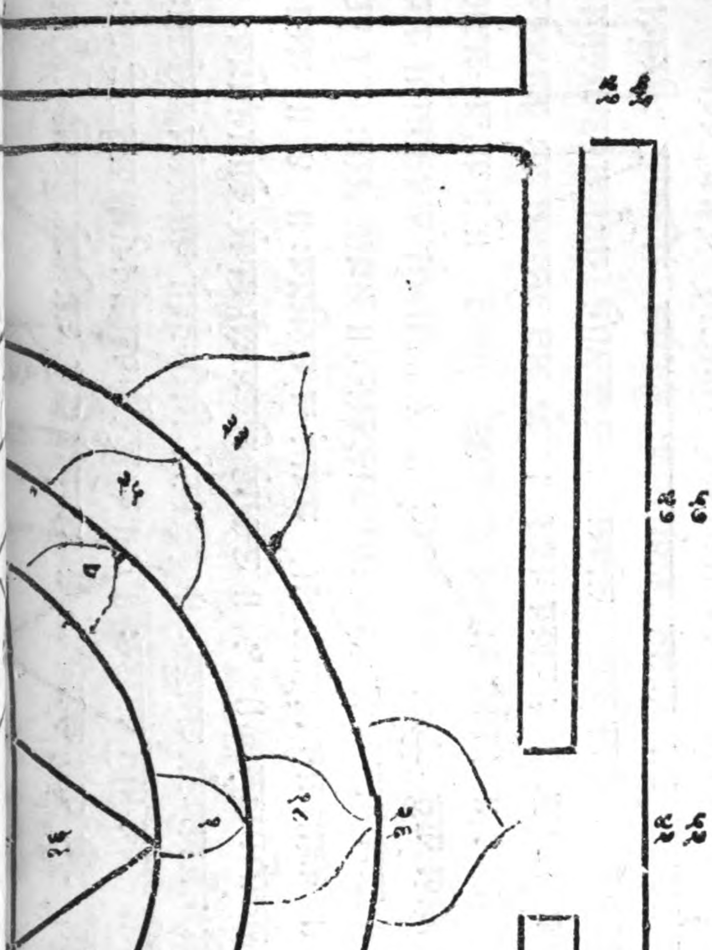
सवाहनाः सशक्तिकाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः स्वर्णाकर्षणभैरवाःपूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥१॥ ततस्त्रिकोणमध्ये पूर्वकोणे ॐ वटुकभैरवाय नमः। वटुकभैरवश्रीपा० पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि ॥ इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ईशानकोणे ॐ कालभैरवाय नमः । कालभैरवश्रीपा० ॥२॥ अग्निकोणे ॐ क्षेत्रपालभैरवाय नमः। क्षेत्रपालभैरवश्रीपा०॥३॥इति संपूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य "ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल॥ भक्त्या समर्प्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्॥१॥" इति पुष्पांजलिं दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं भैरवोपरि दत्त्वा समुद्राः सायुधाः सवाहनाः सशक्तिकाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः स्वर्णाकर्षणभैरवाः पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततः त्रिकोणाद्बहिः षट्कोणे आग्नेय्यादिक्रमेण अग्निकोणे ॐ आपदुद्धारणाय नमः। आपदुद्धारणश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ १ ॥ नैर्ऋत्यकोणे । ॐ अजामलबद्धाय नमः । अजामलबद्धपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥२॥ वायुकोणे ॐ लोकेश्वराय नमः। लोकेश्वरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥३॥ ऐशान्ये। ॐ स्वर्णाकर्षणभैरवाय नमः। स्वर्णाकर्षणभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥४॥प्राच्याम्। ॐ मम दारिद्र्यविद्वेषणाय नमः। मम दारिद्र्यविद्वेषणश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ५ ॥ पश्चिमे । ॐ श्रीमहाभैरवाय नमः। श्रीमहाभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ६ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य "ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥ १ ॥" इति पुष्पांजलिं दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं भैरवोपरि दत्त्वा समुद्राः सचक्रकाः सायुधाः सवाहनाः सशक्तिकाः सपरिवाराः स्वर्णाकर्षणभैरवाः सर्वोपचारैः पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततो वृते पूर्वादिक्रमेण ॐ असितांगभैरवाय ब्राह्मीशक्तिसहिताय नमः। ब्राह्मीशक्तिसहितासितांगभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ १ ॥ ॐ रुरुभैरवाय माहेश्वरीशक्तिसहिताय नमः । माहेश्वरीशक्तिसहितरुरुभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ २ ॥ ॐ चंडभैरवाय कौमारीशक्तिसहिताय नमः।

कौमारीशक्तिसहितचंडभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ३ ॥ ॐ क्रोधभैरवाय वैष्णवीशक्तिसाहिताय नमः । वैष्णवीशक्तिसहित क्रोधभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ४ ॥ ॐ उन्मत्तभैरवाय वाराहीशक्तिसहिताय नमः । वाराहीशक्तिसहितोन्मत्तभैरवश्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ५ ॥ ॐ कपालिभैरवाय नारसिंहीशक्तिसाहिताय नमः । नारसिंहीशक्तिसहितकपालिभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ६ ॥ ॐ भीषणभैरवाय चामुंडाशक्तिसहिताय नमः । चामुण्डाशक्तितभीषणभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ७ ॥ ॐ संहारभैरवाय चंडिकाशक्तिसाहिताय नमः । चंडिकाशक्तिसहितसंहारभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ भैरवान् पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य "ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥ १ ॥ "इति पुष्पांजलिं दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं भैरवोपरि दत्त्वा समुद्राः सचक्रकाः सायुधाः सवाहनाः सशक्तिकाः सपरिवाराः स्वर्णाकर्षणभैरवाः सर्वोपचारैः पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥ ४ ॥ ततो वर्तुलाद्बहिरष्टदले पूर्वादिक्रमेण ॐ आदित्याय स्वशक्तिसाहिताय नमः । स्वशक्तिसाहितादित्यश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ १ ॥ ॐ सोमाय स्वशक्तिसाहिताय नमः । स्वशक्तिसहितसोमश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥२ ॥ ॐ भौमाय स्वशक्तिसहिताय नमः । स्वशक्तिसहितभौमश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ३ ॥ ॐ बुधाय स्वशक्तिसहिताय नमः । स्वशक्तिसाहितबुधश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ४ ॥ ॐ जीवाय स्वशक्तिसाहिताय नमः । स्वशक्तिसहितजीवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ५ ॥ ॐ शुक्राय स्वशक्तिसाहिताय नमः । स्वशक्तिसहितशुक्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ६ ॥ ॐ शनैश्चराय स्वशक्तिसाहिताय नमः । स्वशक्तिसहितशनैश्चरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ७ ॥ ॐ राहवे केतवे च स्वस्वशक्तिसहिताय नमः । स्वस्वशक्तिसहितराहुकेतुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ८ ॥ इति नवग्रहान् पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य "ॐ अभीष्ट

सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं पंचमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ ” इति पुष्पांजलिं दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं भैरवोपरि
दत्त्वा समुद्राः सचक्रकाः सायुधाः सवाहनाः सशक्तिकाः सपरिवाराः स्वर्णाकर्षणभैरवाः सर्वोपचारैः पूजितास्तर्पिताः संतु
इति वदेत् ॥ इति पंचमावरणम् ॥ ५ ॥ ततो भूपुराभ्यंतरे देववदक्षिणतः ॐ पूजाविधिसिद्ध्यै नमः । पूजाविधिसिद्धिश्रीपादुकां
पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ १ ॥ ॐ रससिद्ध्यै नमः । रससिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ २ ॥ ॐ स्वर्णसिद्ध्यै नमः ।
स्वर्णसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ३ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिं गृहीत्वा मूलमुच्चार्य “ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि
शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ ” इति पुष्पांजलिं दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं भैरवोपरि दत्त्वा
पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति षष्ठावरणम् ॥६ ॥ ततो भूपुराद्बहिः देवतावामभागे ॐ भूतप्रेतपिशाचवेतालासुरेभ्यो नमः ।
भूतप्रेतपिशाचवेतालासुरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि । इति पूजयेत् ॥ इति सप्तमावरणम् ॥ ७ ॥ ततो भूपुरे इंद्रादिदशदिक्पालान्
तद्बाह्ये वज्राद्यायुधानि च पूजयेत् ॥८॥९॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य देवं ध्यात्वा जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं
लक्षजपः ॥ तथा च—“लक्षं जपेद्दशांशेन पायसैर्जुहुयात्सुधीः॥ दशांशं तर्पयेत्पश्चाद्धोमयेच्च दशांशकम् ॥ १॥ ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चान्मंत्र
सिद्धिर्न संशयः ॥ एवं सिद्धे कृते मंत्रे अयुतं प्रजपेन्मनुम् ॥ २ ॥ दारिद्र्यं दूरमुत्क्षिप्य जायते धनदोपमः ॥ करवीरैर्जातिपुष्पै
र्जपादाडिमसंभवैः ॥ ३ ॥ रक्तप्रसूनैर्जुहुयात्सौभाग्यं च समश्नुते ॥ सिद्धद्रव्येण जुहुयाल्लभ्यंते चाष्टसिद्धयः ॥ ४ ॥ पायसेनापि
जुहुयाल्लभ्यते सकलं फलम् ॥ आज्यं च जुहुयाद्देवि ऐहिकामुष्मिकं फलम् ॥ ५ ॥ मंत्रसिद्धिं च लभते चंदनाद्यैंधनैः क्रमात् ॥ इति
स्वर्णाकर्षणभैरवसप्तपंचाशदक्षरमन्त्रपुरश्चरणप्रयोगः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अथ स्वर्णाकर्षणभैरवपूजनयन्त्रम्.

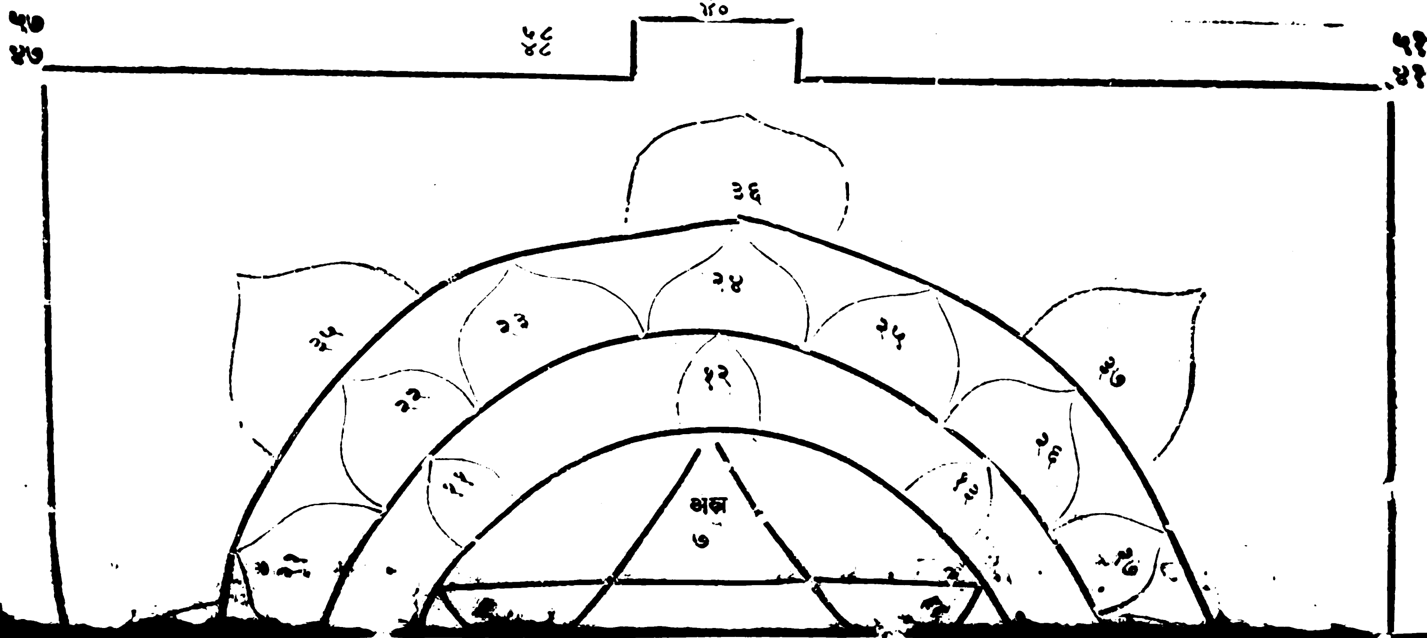


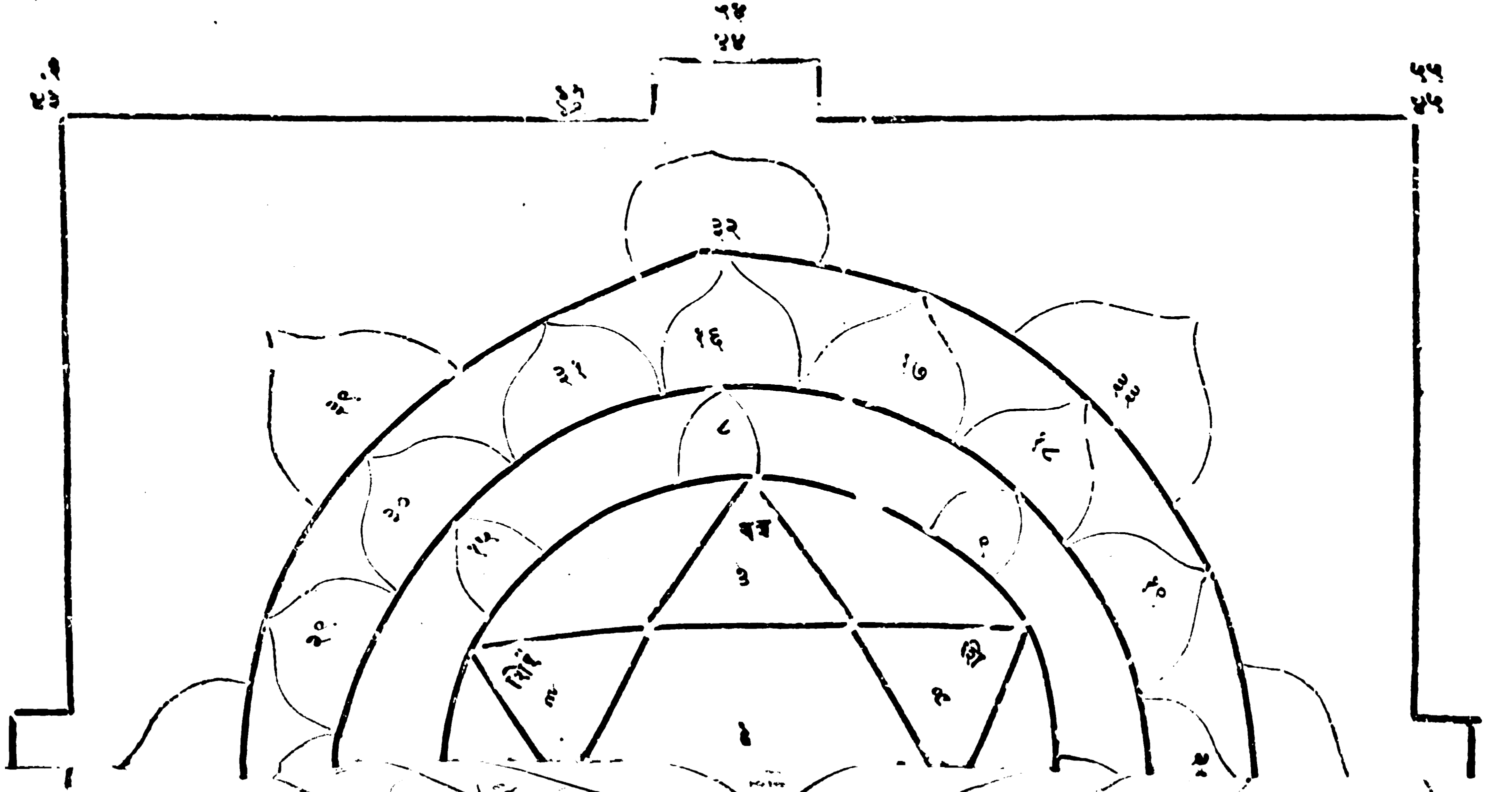


अथ वटुकभैरववीरसाधनप्रयोगः ॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥ भगवन्देवदेवेश रहस्यं वटुकस्य मे ॥ ब्रूहि येन वशीकुर्युः साधका भैरवं शिवम् ॥१ ॥ ईश्वर उवाच ॥ शृणु देवि परं गोप्यं कथयामि सुशोभने ॥ रहस्यं सिद्धिदं साक्षाद्वटुकस्य महात्मनः ॥ २ ॥ सर्वे वटुकदेवस्य साधने ये निरूपिताः ॥ उपाया निष्फला एव विनैकं वीरसाधनम् ॥ ३ ॥ यश्चैतत्साधनं हित्वा उपायं चान्यमाश्रयेत् ॥ न स सिद्धिमवाप्नोति नरो वर्षशतैरपि ॥ ४ ॥ तत्र प्रयोगो यथा—साधकेन्द्रः कृतनित्यक्रियः पालाशपत्रकृतषोडश पुटेषु जलेन प्रफुल्लितान् सुपक्कान् माषान् मुद्गान् मसूरान् चणकान् ओदनक्षीरापूपान् सुहालीन् एकैकं पदार्थं द्विद्विपात्रे एवं षोडशपात्रेषु संपूर्य अन्यपात्रे किंचिदधिकं च पूर्वोक्तं सर्वं कन्यया कर्तितं कार्पाससूत्रं कुंकुमेन रंजितान् क्षीरवृक्षभवानष्टौ कीलान् स्तंभार्थमेकं कीलं तेभ्यः स्थूलान्नव कीलान् गंधाक्षतपुष्पधूपदीपान् अष्टौ तांबूलानि च फलानि गृहीत्वा उत्तरसाधकसहितः श्मशाननिकटे गत्वा पादौ प्रक्षाल्य आचम्य स्वेष्टदेवतां ध्यात्वा बद्धाञ्जलिरिदं वाक्यं वदेत् । "ॐ अत्र श्मशाने याः काश्चिद्देवता निव संति हि ॥ ताः प्रयच्छंतु मे सिद्धिं प्रसन्नाः संतु पांतु माम् ॥ १ ॥ " इति संप्रार्थ्य आत्मरक्षां कुर्यात् ॥ तथा च--अक्षतानादाय "ॐ पूर्वे मां शंकरः पातु तथाग्नेय्यां च शूलधृक् ॥ कपाली दक्षिणे पातु नैर्ऋत्ये जटिलोऽवतु ॥ १ ॥ पश्चिमे पार्वतीनाथो वायव्ये प्रम थाधिपः ॥ उत्तरे मुंडमालोऽव्यादैशान्ये वृषभध्वजः ॥ २ ॥ ऊर्ध्वं पातु तथा शंभुरधस्ताद्धूलिधूसरः ॥ अग्रतो भैरवः पातु पृष्ठतः पातु खेचरः ॥ ३ ॥ दक्षिणे भचरः पातु वामे च पिशिताशनः ॥ केशान्पातु विशालाक्षो मूर्धानं च मरुत्प्रियः ॥ ४ ॥ मस्तकं पातु भृग्वीशो नेत्रे पातु महामनाः ॥ कपोलौ पातु वीरेशो गंडौ गंडाभिमर्दनः ॥ ५ ॥ उत्तरोष्ठे विरूपाक्षो ह्यधरे योगिनीप्रियः ॥ अक्षेषु दक्षविध्वंसी चिबुके तु कपालधृक् ॥६ ॥ कण्ठे रक्षतु मां देवो नीलकण्ठो जगद्गुरुः ॥ दक्षस्कंधे गिरीन्द्रेशो वामस्कंधे वसुंजयः ॥ ७ ॥ दक्षिणे च भुजे सर्वमंत्रनाथः सदाऽवतु ॥ वामे भुजे सार्वभौमो हृदये पातु पाण्डुरः ॥ ८॥ दक्षहस्ते पशुपतिर्वामे पातु महेश्वरः ॥ उदरे सर्वकल्याणकारकोऽवतु मां सदा ॥ ९ ॥ नाभौ कामप्रविध्वंसी जंघे पातु दयामयः ॥ जानुनी पातु जामित्रो गुल्फौ गौरीपतिः सदा

॥ १० ॥ पादपृष्ठे सामनिधिस्तथा पादांगुलीर्हरः ॥ पादाधः पातु सततं व्योमकेशो जगत्प्रियः ॥ ११ ॥" इति आत्मरक्षामंत्रान् पठित्वा पूर्वादिदिक्षु रक्षाबीजमंत्रान् पठेत् ॥ ॐ ह्रांह्रींह्रूंह्रः नमः पूर्वे ॥ १ ॥ ह्रीं ह्रूं ह्रौं नमः आग्नेये ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं नमः दक्षिणे ॥ ३ ॥ ग्लूँ ब्लं नगनग नमः नैर्ऋत्ये ॥ ४ ॥ ॐ प्रूँ प्रूँ प्रूँ संसः नमः पश्चिमे ॥ ५ ॥ ॐ भ्रां भ्रां नमः वायव्ये ॥ ६ ॥ ॐ भ्रां भ्रां भैरवाय नमः उत्तरे ॥ ७ ॥ ब्रांब्रंब्रंफट् नमः ऐशान्ये ॥ ८ ॥ ॐ ग्लौं ब्लँ नमः ऊर्ध्वे ॥ ९ ॥ ॐ ग्रांग्रंग्रः नमः अधोदेशे ॥ १० ॥ इति पठन् नमस्कुर्यात् ॥ ततः पूर्वाद्यष्टदिक्षु कीलाष्टकं मध्यश्मशाने च स्तंभनार्थं स्थूलकीलकं च निखाय पूजासाहित्यं मध्यस्तंभसमीपे संस्थाप्य पूर्वाभिमुखो भैरवं प्रार्थयेत् ॥ ॐ भां भैरवाय नमः । भां भैरव भैरव भयंकर हर मां रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा॥ इति प्रार्थयेत् ॥ ततः सिद्धमाषादिभरितपलाशपुटकं गंधपुष्पधूपदीपादिपूजसामग्रीं गहीत्वा पायसोदकपात्रहस्तो निर्भयः पूर्वकीलक समीपं गत्वा तत्र"ॐ लं इन्द्र सांग सपरिवार इहागच्छागच्छ"इतीन्द्रमावाह्य ततः ऐरावतारूढं वज्रहस्तं पीतवर्णं सहस्राक्षं सुरगणपरिवारम् ॥ इति ध्यात्वा ततः "ॐ लं इन्द्राय नमः" आसनार्घ्यपाद्याचमनस्नानगंधपुष्पाक्षतधूपदीपोपचारैः संपूज्य तत्पुरतश्चतुरस्रं मंडलं जलेन कृत्वा तत्र माषपुटकं निधाय दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन् "ॐ ह्रांह्रींह्रूं भो इन्द्र सुरनायक शीघ्रं मे प्रसन्नो भव सनातनीं सिद्धिं मे देहि रक्ष मामिमं माषबलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट्" इति मंत्रेण तस्मिन् पात्रे जलं बलिं चोत्सृज्य तांबूलंच दत्त्वा प्रणमेत् ॥ १ ॥ तत आग्नेयकोणगतकीलसमीपं गत्वा तत्र "ॐ रं अग्ने सांग सपरिवार इहागच्छागच्छ इत्यग्निमावाह्य ततः मेषारूढं शक्तिहस्तं त्रिनेत्रं तेजोनिधिं ध्यात्वा ततो "रं अग्नये नमः " इत्यासनार्घ्यपाद्याचमनस्नानगंधपुष्पाक्षतधूपदीपोपचारैः संपूज्य तत्पुरतश्चतुरस्रं मंडलं जलेन कृत्वा तत्र मुद्गभरितं पुटकं विधाय दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन् "ॐरँरांरुँरूँरिंरीं ह्रिंह्रूंह्रौंअग्ने तेजोनायक शीघ्रं मे प्रसन्नो भव सनातनीं सिद्धिं मे देहि इमं मुद्गबलिं गृह्ण गृह्ण हुँ फट्"इति मंत्रेण तस्मिन्पात्रे जलं बलिं चोत्सृज्य तांबूलं च दत्त्वा प्रणमेत् ॥२॥ ततः दक्षिणकीलसमीपं गत्वा तत्र "ॐ मं यम सांग सपरिवार इहागच्छागच्छ" इति यममावाह्य महि

अथ वीरसाधनपूजनयन्त्रम्.




३२
१६

पारूढं कृष्णवर्णं दंडहस्तं प्रेतगणपरिवेष्टितं ध्यात्वा "ॐ मं यमाय नमः" इत्यासनाद्युपचारैः संपूज्य तत्पुरतश्चतुरस्रं मंडलं जलेन कृत्वा तत्र मसूरभरितं पुटकं निधाय दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन् "ॐ प्राँ प्रीं प्रूँ भो यम प्रेताधिपते शीघ्रं मे प्रसन्नो भव इमं मसूरबलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट्" इति मंत्रेण तस्मिन्पात्रे जलं बलिं चोत्सृज्य तांबूलं च दत्त्वा प्रणमेत् ॥३॥ ततः नैर्ऋत्यकोणगतकीलसमीपं गत्वा तत्र "ॐ क्षं निर्ऋते सांग सपरिवार इहागच्छागच्छ" इति निर्ऋतिमावाह्य प्रेतारूढं धूम्रवर्णं खड्गहस्तं रक्षोभिः परिवृतं ध्यात्वा "ॐ क्षं निर्ऋतये नमः" इत्यासनाद्युपचारैः संपूज्य तत्पुरतश्चतुरस्रं मंडलं जलेन कृत्वा तत्र चणकपूरितं पुटकं निधाय दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन् "फ्रूँफ्रेंफ्रूँहूँहूँखेंखेंह्रौंह्रौं भो भो रक्षोनाथ शीघ्रं मे प्रसन्नो भव इदं चणकबलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट् ॥" इति मंत्रेण तस्मिन्पात्रे जलं बलिं चोत्सृज्य तांबूलं च दत्त्वा प्रणमेत् ॥४॥ ततः पश्चिमदिग्गतकीलसमीपं गत्वा तत्र "ॐ वं वरुण सांग सपरिवार इहागच्छागच्छ इति वरुणमावाह्य मकरारूढं पाशहस्तं श्वेतवर्णं यादोगणपरिवारसहितं ध्यात्वा "ॐ वं वरुणाय जलनाथाय नमः" इत्यासनाद्युपचारैः संपूज्य तत्पुरतश्चतुरस्रं मंडलं जलेन कृत्वा तत्रौदनपूरितपात्रं निधाय दक्षहस्तेन जलं गृहीत्वा वामहस्ते तत्पात्रं स्पृशन् "ॐब्रांब्रींब्रूं भो भो वरुण जलनाथ शीघ्रं मे प्रसन्नो भव सिद्धिं मे देहि इममोदनबलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट्" इति मंत्रेण तस्मिन्पात्रे जलं बलिं चोत्सृज्य तांबूलं च दत्त्वा प्रणमेत्॥५॥ ततो वायुकोणगतकीलसमीपं गत्वा तत्र "ॐ यं वायो सांग सपरिवार इहागच्छागच्छ" इति वायुमावाह्य मृगारूढं वृक्षायुधधरं स्वमरुद्गणसहितं ध्यात्वा "ॐ यं वायवे नमः" इत्यासनाद्युपचारैः संपूज्य तत्पुरतश्चतुरस्रं मंडलं जलेन कृत्वा तत्र पायसपूरितं पुटकं निधाय दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन् "ॐ वांवींवूं ब्रांब्रंब्रीं भो भो वायो भुवनपते शीघ्रं मे प्रसन्नो भव सिद्धिं मे देहि इमं पायसबलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट्" इति मंत्रेण तस्मिन्पात्रे जलं बलिं चोत्सृज्य ताम्बूलं च दत्त्वा प्रणमेत् ॥६॥ ततः उत्तरदिग्गतकीलसमीपं गत्वा तत्र "ॐ कुं कुबेर सांग सपरिवार इहागच्छागच्छ" इति कुबेरमावाह्य नरवाहनं गदाहस्तं शुक्लवर्णं यक्षगणपरिवेष्टितं ध्यात्वा "ॐ कुं कुबेराय नमः" इत्यासनाद्युपचारैः संपूज्य तत्पुरतश्चतुरस्रं मंडलं जलेन कृत्वा तत्रापूपपूरितं पुटकं निधाय दक्षहस्ते

जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन् "ॐ क्रूंक्रूंक्रूं ॐ क्रांक्रांक्रां भो भो यक्षनाथ शीघ्रं मे प्रसन्नो भव सिद्धिं मे देहि इममपूपबलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट्" इति मंत्रेण तस्मिन्पात्रे जलं बलिं चोत्सृज्य तांबूलं च दत्त्वा प्रणमेत् ॥ ७ ॥ ततः ईशानकोणगतकीलसमीपं गत्वा। तत्र "ॐ हं ईशान सांग सपरिवार इहागच्छागच्छ" इतीशानमावाह्य वृषभारूढं शूलहस्तं श्वेतवर्णं विद्यागणसेवितमीशानं ध्यात्वा "ॐ हं ईशानाय नमः" इत्यासनाद्युपचारैः संपूज्य तत्पुरतश्चतुरस्त्रं मण्डलं जलेन कृत्वा तत्र शष्कुलीपूरितपुटकं निधाय दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा। वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन् "ॐ श्रांश्रींश्रूं ॐ श्रांश्रांश्रां भो भो ईशान विद्याधिपते शीघ्रं मे प्रसन्नो भव सिद्धिं मे देहि इमं शष्कुलीबलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट्।" इति मंत्रेण तस्मिन्पात्रे जलं बलिं चोत्सृज्य तांबूलं च दत्त्वा प्रणमेत् ॥८॥ इत्यष्टदिक्पालेभ्यो बलिं दत्त्वा ततः मध्यस्तंभसमीपे गत्वा नि[illegible] सन् ततः 'ह्रांह्रींह्रूं स्तंभाय नमः' इत्यासनाद्युपचारैः संपूज्य मंत्रमयं कवचं पठेत् ॥ कवचं मंत्रमयं यथा—
"ॐ ह्रांह्रींह्रूंहः क्षांक्षींक्षूंक्षः खांखींखूंखः घ्रांघ्रींघ्रूंघ्रः म्रांम्रींम्रूंम्रः म्रोंम्रोंम्रोंम्रों क्रोंक्रोंक्रोंक्रों श्रोंश्रोंश्रोंश्रों ज्रोंज्रोंज्रोंज्रों हुंहुंहुंहुंहुंहुंहुंहुं फट् सर्वतो रक्ष रक्ष रक्ष रक्ष भैरवनाथनाथ हुं फट्।"[1] इति मंत्ररूपकवचद्वारा स्वशरीरे व्यापकरूपेणात्मरक्षां कृत्वा स्तंभसमीपे स्वासने पूजिते पूर्वाभिमुख उपविश्य स्वपुरतः स्तंभात् पश्चिमे भूतले यंत्रं लिखित्वा तन्मध्ये देवमावाह्य आसनादिषोडशोपचारैः संपूज्य अंगादि संपूज्य तत्राष्टदले पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीं तदनुसारेणान्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण । ॐ असितांगभैरवाय नमः ॥ १ ॥ ॐ रुरुभैरवाय नमः ॥ २ ॥ ॐ चण्डभैरवाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ क्रोधभैरवाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ कपालभैरवाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ भीषणभैरवाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ संहारभैरवाय नमः ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ भैरवान् पूजयेत् ॥ ततः षोडशदले प्राच्यादिक्रमेण ॐ कुलिशाय नमः ॥ १ ॥ ॐ सुकुलिशाय नमः ॥ २ ॥ ॐ जामित्राय नमः ॥ ३ ॥ ॐ रामठाय नमः ॥ ४ ॥

---

१ अस्य प्रसादमासाद्य साधको निर्भयो भवेत् । सर्वरक्षाकरः प्रोक्तः साधकाभीष्टदायकः ॥ एवं विधाय मतिमांस्तनौ रक्षां विशालधीः । वीरशांतिमथो कुर्यात्सर्वकार्यस्य सिद्धये ॥ यतो सिध्यंति कार्याणि साधकानां महेश्वरि । यावत्कुर्यान्न वीराणां शांतिं साधकसत्तमः ॥ तावन्न जायते सिद्धिः साधकस्य कथंचन ॥

ॐ अरिभाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ प्रचंडाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ चण्डकेशाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ चण्डात्मने नमः ॥ ८ ॥ ॐ चामराय नमः ॥ ९ ॥ ॐ चरित्राय नमः ॥ १० ॥ ॐ चमत्काराय नमः ॥ ११ ॥ ॐ चंचलाय नमः ॥ १२ ॥ ॐ चारुभूषणाय नमः ॥ १३ ॥ ॐ चामीकराय नमः ॥ १४ ॥ ॐ चारुवाहाय नमः ॥ १५ ॥ ॐ चारुवाहांकिताय नमः ॥ १६ ॥ इति वटुके षोडशमित्राणि पूजयेत् ॥ तद्बहिरष्टदलेषु प्राच्यादिक्रमेण ॐ ब्राह्म्यै नमः ॥ १ ॥ ॐ माहेश्वर्य्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ कौमार्य्यै नमः ॥ ३ ॥ ॐ वैष्णव्यै नमः ॥ ४ ॥ ॐ वाराह्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ नारसिंह्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ चामुंडायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ चंडिकायै नमः ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ मातृकाः पूजयेत् ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुनः मध्ये श्रीवटुकभैरवं धूपादिनमस्कारांतं पूजयित्वा पायसनैवेद्यं दत्त्वा अक्षतानादाय स्थापितयंत्रदेवतामंडले विकिरन् वीरशांतिं पठेत्। तथा च–

"ॐ श्मशानदेशे ये वीराः शिरस्यादाय शासनम्। मम स्थिता निकृंतंति साधकानां मनोरथान् ॥ अपूजिताः पूजितास्ते सर्वकामफलप्रदाः ॥ १ ॥" इति वीरशांतिं पठित्वा तत्रैव ॐ चंड आयाहि ॥ १ ॥ ॐ प्रचंड आयाहि ॥ २ ॥ ॐ ऊर्ध्वकेश आयाहि ॥ ३ ॥ ॐ भीषण आयाहि ॥ ४ ॥ ॐ प्रभीषण आयाहि ॥ ५ ॥ ॐ व्योमकेश आयाहि ॥ ६ ॥ ॐ व्योमवाह आयाहि ॥ ७ ॥ ॐ व्योमव्यापक आयाहि ॥ ८ ॥ इति पृथक् पृथक् गंधादिभिरुपचारैः संपूज्य पायसनैवेद्यं च पृथक् पृथक् समर्प्य निर्भयः सन् पश्चिमाभिमुखः प्राणायामऋष्यादिन्यासपूर्वकं प्रयोगोक्तान् न्यासान् कृत्वा प्राग्वन्मालां संपूज्य मूलमंत्रस्याष्टाक्षरपदोच्चारणपूर्वकमुच्चैः स्तवराजं पठित्वा प्रसन्नचित्तो मूलमंत्रं जपेत् ॥ तदा देवतायामागतायां वामहस्तेन पायसपात्रमादाय दक्षिणहस्तेन देवं भोजयेत् ॥ ततस्तृप्तो देवो वरं वरयेति ब्रूयात्तदा दंडवद्भूमौ प्रणम्य निजेप्सितवरं गृहीत्वा स्वयं गत्वा महोत्सवं कुर्यात् ॥ तथा च (रुद्रयामले) "भैरवाय समीपे तु वामहस्तेन पायसम् ॥ भोजयेच्च जपं कुर्यान्निर्भयः प्रीतमानसः ॥ १ ॥ तृप्तो देवो यदा ब्रूयाद्वरं वरय वाञ्छितम् ॥ प्रणम्य दंडवद्भूमौ वाञ्छितं वरमुच्चरन् ॥ २ ॥ गृहे चागत्य प्रयत उत्सवं च समाचरेत् ॥

मनुना देवि सिद्धो भवति भूतले ॥ ३ ॥ असाध्यं नास्ति लोकेषु सत्यं सत्यं मयोदितम् ॥ ४ ॥" इति वीरसाधनप्रयोगः ॥

अथ वटुकभैरवदीपदानप्रयोगः ॥ उक्तं च—(शिवागमसारे) पार्वत्युवाच ॥ देवदेव जगन्नाथ भक्तानुग्रहकारक ॥ दीपदानविधिं ब्रूहि
बटुकस्य महात्मनः ॥ १ ॥ महादेव उवाच ॥ नोक्तः पूर्वं महेशानि दीपो वै भैरवस्य च ॥ आपत्काले महादेवि दीपयागं समाचरेत् ॥
॥ २ ॥ न तिथिर्न च नक्षत्रं न योगः करणं शशी ॥ न राशिर्न च सूर्यादिग्रहान्नैव विचिंतयेत् ॥ ३ ॥ यथाकामनया ध्यात्वा
दीपदानं प्रयोजयेत् ॥ दीपनाशे पुनर्दीपं कृत्वा शांतिं तु कारयेत् ॥ ४ ॥ त्रिपंचसप्तनवभिः पात्रं कृत्वा विचक्षणः ॥ शुभे सौम्यमुखो
दीपो ह्यशुभे दक्षिणामुखः ॥ ५ ॥ (तत्र मुहूर्तनिर्णयः) श्रावणाश्विनवैशाखकार्तिकेयादिपंचके ॥ शुक्लपक्षे प्रकर्तव्या यावत्कृष्णा
च पंचमी ॥ १ ॥ सप्तमी पूर्णिमा चैव द्वितीया पंचमी तथा ॥ त्रयोदशी च दशमी तृतीया प्रतिपत्तथा ॥ २ ॥ द्वादशी च तथा
षष्ठी ह्येताः स्युस्तिथयः शुभाः ॥ वृद्धिवैधृतिपाताश्च ये ते योगाः शुभाः स्मृताः ॥ ३ ॥ बालवं कौलवं चैव गरं चेति शुभानि वै ॥
ग्रीष्मं विना शुभाः पंच ऋतवः परिकीर्तिताः ॥ ४ ॥ मासद्वयात्मकाः श्रेष्ठा दिनं दिनार्द्धमेव च ॥ ५ ॥ सूर्योदयं समारभ्य यावदस्तं
गतो रविः ॥ अहोरात्रप्रमाणेन ग्रीष्माद्याः परिकीर्तिताः ॥ ६ ॥ दिवा पूर्वाह्णकः कालो रात्रौ निशीथ एव च ॥ यद्वा सर्वत्र रात्रौ
तु सूर्य्यचन्द्रोपरागयोः ॥ अर्द्धोदये महाष्टम्यां कालमोहौ च रात्रिके ॥ ७ ॥ (अथ कार्यपरत्वेन पात्रविस्तारे तैलमानम्) विंशत्पल
मिते पात्रे बुध्नोच्छ्राये षडंगुलम् ॥ विस्तारे चांगुलान्येव षोडश परिकीर्तितम् ॥ १ ॥ पंचाशत्पलगव्यं च वश्ये चौर्यादिकर्मणि ॥
त्रिंशद्दशपले पात्रे मानं तद्वत्प्रकीर्तितम् ॥२॥ षष्टिपलमिते पात्रे बुध्नोच्छ्राये नवांगुलम् ॥ अंगुलानि चतुर्विंशदायामे परिकल्पयेत् ॥ ३ ॥
शतं पंचसप्तमिते तैले सर्वशत्रुविनाशनम् ॥ द्विपंचाशत्पले पात्रे बुध्नोच्छ्राये तु षष्टिमत् ॥ ४ ॥ शतं पलमिते तैले द्वीपाद्वैरिविनाशनम् ॥ शतं
पलसह पलमिते पात्रे चोच्छ्रायो द्वादशांगुलः ॥ ५ ॥ द्वात्रिंशच्चैव ह्यायामे तन्मध्ये तु सहस्रकम् ॥ सर्वकर्मणि सिद्धिः स्याद्दीपे पलसह
स्रके ॥ ६ ॥ सपादशतपात्रे च पंचोत्तरशताधिके ॥ पंचदशांगुलोच्छ्रायं व्यायामे षट् च त्रिंशके ॥ ७ ॥ अयुतपलदीपश्च निगडा

द्वंदिमुक्तये ॥ सहस्रपलदीपे च बंदिमोक्षः प्रजायते ॥८॥ त्रिंशत्पलमिते पात्रे मान्यं चैव तु पूर्ववत् ॥ त्रिंशत्पलमिते तैले दिनान्येकोनविंशतिः ॥ ९ ॥ कन्याभिकांक्षी तैलेन प्रत्यहं दीपमाचरेत् ॥ इच्छितां लभते कन्यां भैरवस्य प्रसादतः ॥ १० ॥ नृकपालमिते पात्रे चोच्छ्रायं तु रसांगुलम् ॥ विंशत्पलमिते दीपे प्रत्यहं विंशतिर्दिने ॥ ११ ॥ सर्वरोगविनाशाय क्षयापस्मारदारुणे ॥ दशपलमिते पात्रे बुध्रोच्छ्राये तु त्रिंशतम् ॥ १२ ॥ दशपलमिते तैलं प्रत्यहं सप्तवासरे ॥ राजवश्यकरं क्षिप्रं यदि साक्षाज्जगत्पतिः ॥ नित्यदीपप्रमाणे तु पात्रं पलत्रयं स्मृतम् ॥ १३ ॥ (तंत्रांतरेऽपि) शतमष्टोत्तरं चाथ पलानि प्रथमे विधौ ॥ अष्टाशीति द्वितीये च परेऽष्टाविंशतिः प्रिये ॥ सर्वकार्येषु देवेशि संख्या प्रोक्ता त्रिधाऽत्र वै ॥ १४ ॥ (अथ कार्यपरत्वेन पात्रे धातुमानम्) सौवर्णं सिद्धिदं पात्रं वश्ये रौप्यं प्रकल्पयेत् ॥ विद्वेषणकरं लौहं मारणे मृण्मयं तथा ॥ १५ ॥ उच्चाटनकरं कांस्यं मोहे पित्तलजं स्मृतम् ॥ अन्योक्तसर्वकार्येषु सर्वाभावे तु ताम्रजम् ॥ १६ ॥ (तंत्रांतरेऽपि) गोधूमाश्च तिला माषा मुद्गाश्च तण्डुलाः क्रमात् ॥ पंच धान्यमिदं प्रोक्तं सर्वदा दीपदापने ॥ १७ ॥ वश्ये तण्डुलपिष्टोत्थं मारणे माषपिष्टजम् ॥ तिलपिष्टसमुद्भूतमुच्चाटनविधौ स्मृतम् ॥ १८ ॥ प्रियस्यागमने प्रोक्तं गोधूमोत्थं सतण्डुलम् ॥ मोहने मुद्गजं प्रोक्तं पात्रद्रव्यमनुक्रमात् ॥ १९ ॥ (अथ कार्य्यपरत्वेन तैलमानम्) गव्यमाकर्षणे कृत्ये कौस्तुभं स्तंभने स्मृतम् ॥ तिलतैलं तथा नव्यं घृतं वश्ये प्रकल्पयेत्॥१॥ कटुतैलं द्वेषणे च मारणे राजिकं स्मृतम् ॥ आज्यं चौष्ट्रं माहिषं च मैषमुच्चाटने मतम् ॥ २ ॥ बंदिबंधनमोक्षे च तथा भूतपिशाचके ॥ सार्षपं तैलमापूर्य दीपदानं विधीयते ॥ ३ ॥ अथवा तिलतैलं तु सर्वकार्ये प्रशस्यते ॥ ४ ॥ (अथ कार्यपरत्वेन वर्तिमानम्) एका पंच तथा सप्त एकविंशतिसंख्यया ॥ आयुग्माऽथ प्रकर्तव्या युग्मां नैव तु कारयेत् ॥ १ ॥ (तंत्रांतरेऽपि) वर्तिरेका प्रकर्तव्या तिस्रो वा वर्तयस्तथा ॥ शतेनं त्रिशतेनाथ सहस्रेणाथ

१(तत्रांतरेऽपि) शुभकार्ये माषमयं विपरीते तु लोहजम् ॥ २ (तत्रांतरेऽपि) गोघृतेन कृते दीपे देवता वशमानयेत् ॥ वश्यार्थमतसीतैलम् । मधुवृक्षजं तैलं विद्वेषे । उच्चाटने करंज तैलम् । बादमोक्षे भूतपिशाचनिवारणे सर्षपतैलम् ॥

वर्तिकाम् ॥२॥ कारयित्वा शुभे पात्रे संस्थाप्य ज्वालयेत्तथा ॥ श्वेतं शांतौ तथा पीतं स्तंभे वश्ये तु रक्तकम् ॥ ३ ॥ मांजिष्टं द्वेषणे प्रोक्तं
मारणे कृष्णसूत्रजम् ॥ सर्वाभावे महादेवि श्वेतसूत्रं प्रशस्यते ॥ ४ ॥ (अथ दीपदानप्रयोगः॥) तत्रात्मनो यजमानस्य वा चन्द्रतारानु
कूले शुभेऽह्नि तिथिवारसुलग्नेषु त्वरितकार्यं चेदमृतघटीषु शुभहोरायां वा दीपारंभं कुर्यात् ॥ स च ग्रहणे संक्रांतौ कृष्णाष्टम्यां दुर्गोत्सवे
र्धोदयादिमहापर्वसु कृतस्तात्कालिकफलप्रदो भवति ॥ दीपदानसंभारो यथा—कपिलागोमयम् १ चिंचाद्यम्लद्रव्यम् २
यथाकामं दीपपात्रम् ३ यथोक्तमाज्यं तैलं वा ४ यथोक्ता वर्तयः ५ शीघ्रकार्ये पात्रपल ६३ द्रव्यपल १०८ तंतु १०००
द्वितीयपक्षे पात्रपल ३२ द्रव्यपल ८८ तंतु ३०० मध्यप्रकारे पात्रपल १६ द्रव्यपल २८ तंतु १०० कनिष्ठपक्षे पात्रपल ८ द्रव्यपल
८ तंतु १६ नित्यदीपे पात्रपल ३ द्रव्यपल १ तंतु २१ शुभे दीपमुखमुत्तरे । साधकः पूर्वाभिमुखः । आधारयंत्रमुखमुत्तरे । अशुभे
दीपयंत्रसाधकानां मुखं दक्षिणे । नित्ये षडंगुलान्यष्टखदिरकीलानि नैमित्तिके द्वादशांगुलानि कीलानि दीपाग्रे प्रथमकीलपूजनं
दक्षिणावर्ते दीवडी ८ कीलप्रत्येक १ रक्तचन्दनसिंदूरादिसुपक्वान् माषान् कमलाकारं रक्तचंदनकरवीरकुसुमाक्षतैर्युतं सदीपं बलि
दानार्थमेकैकरात्रे एवाष्टपात्रे संपूर्य एवं च दीपदानात्पूर्वदिने सामग्रीं संपाद्य एकभक्तव्रतं कृत्वाऽपरदिने कृतोपवासो भूमौ
स्वपेत् । दीपदानादिने ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय नित्यनैमित्तिकं समाप्य कंबलासन उपविश्य आदौ गणपतिपूजनं कृत्वा अर्घ
संस्थाप्य देशकालौ संकीर्त्य श्रीमद्बटुकभैरवप्रीतिकामो दीपदानं कर्तुं ममेप्सितफलावाप्त्यै आचार्यं त्वामहं वृणे इत्याचार्य
वृत्वा वस्त्रभूषणानि निवेद्य दक्षिणां दत्वा “ॐ भक्त्या समागतोऽहं ते पादयोर्भक्तवत्सल ॥ दीपकार्यं च भवता संपाद्यं वै नमो
नमः ॥ १ ॥” इति मंत्रेण दंडवन्नमस्कृत्य अन्यान् त्रीन् पंच सप्त नवैकादश वा ब्राह्मणान् वृणुयात् ॥ तैर्ब्राह्मणैः सहाचार्यः पुण्याह
वाचनादिनांदीश्राद्धांतानि कृत्वा भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठांतर्मातृकाबहिर्मातृकासृष्टिस्थितिसंहारमातृकान्यासं च कृत्वा पद्धतिमार्गेण पंचदश
न्यासान् कुर्यात् ॥ ततः सपादहस्तां समंततः चतुरस्त्रां चतुरंगुलोच्चां दीपवेदीं शोधितस्थले निर्माय कपिलागोमयेनोपालिप्य तस्योपरि

रक्तचंदनेन वटुकभैरवप्रयोगोक्तयंत्रं लिखेत् ॥ ततो दीपवेदिकाग्रे तंडुलैरष्टदलं कृत्वा तस्योपरि कलशोक्तविधिना कलशं संस्थाप्य ततः स्वर्णादिनिर्मितां वटुकप्रतिमामग्न्युत्तारणपूर्वकमासनमंत्रेणासनं दत्त्वा कलशोपरि स्थापयित्वा प्राणान्प्रतिष्ठाप्य पाद्यादिनमस्कारांतं संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ ततो देशकालौ संकीर्त्य मम यजमानस्य वा सकलमनोरथसिद्धये प्रयोगानुसारेण चत्वारिंशद्दिनं वाष्टविंशतिदिनं वा एकविंशतिदिनं वा पंचदशादिनं वा सप्तदिनपर्यंतममुकसंख्यामितेन पात्रेण घृतेन तैलेन वा अमुकसंख्याकाभि र्वर्तिभिर्दीपदानमहं करिष्ये इति संकल्पयेत् ॥ ॐ अस्य श्रीवटुकभैरवदीपदानमालामंत्रस्य मन्मथ ऋषिः । पंक्तिश्छंदः । आपदुद्धारक वटुकभैरवो देवता । वं बीजम् । ह्रीं शक्तिः । ममं सर्वमनोरथसिद्धये दीपदाने विनियोगः ॥ ॐ मन्मथऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ पंक्तिच्छंदसे नमः मुखे ॥ २ ॥ आपदुद्धारकवटुकभैरवदेवतायै नमः हृदि ॥३॥ वं बीजाय नमः गुह्ये ॥४॥ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥६॥ इति ऋष्यादिन्यासं कृत्वा प्रयोगोक्तन्यासादिकं विधाय यथाकामं ध्यायेत् । ततः पूर्वोक्तदीपवेद्युपरि लिखितं यंत्रमक्षतैः पूरयित्वा तस्या वेद्या अष्टदिक्षु खदिरवृक्षोद्भवानष्टकीलान् निखाय तेषु कीलेषु पूर्वादिदिशमारभ्याष्टभैरवेभ्यो बलिं दद्यात् ॥ तथा च—पूर्वकीलसमीपे जलेन चतुरस्रमंडलं कृत्वा तत्र माषपात्रं निधाय "ॐ जयंतभैरवाय नमः" इति गंधादिभिः जयंतं संपूज्य दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन् ततः "ॐ ह्रीं जयंतभैरव एह्येहि इमं सदीपं माषान्नबलिं गृह्ण गृह्ण मां रक्ष रक्ष अभीष्टं कुरु कुरु स्वाहा" इति मंत्रेण तस्मिन् पात्रे जलं बलिं चोत्सृज्य प्रणमेत् ॥ १ ॥ ततः आग्नेयकोणगतकीलसमीपे जलेन चतुरस्र मंडलं कृत्वा तत्र माषपात्रं निधाय "ॐअघोरभैरवाय नमः" इति गंधादिभिरघोरं संपूज्य दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन् ततः "ॐ ह्रीं अघोरभैरव एह्येहि इमं सदीपं माषान्नबलिं गृह्णगृह्ण मां रक्ष रक्ष अभीष्टं कुरु कुरु स्वाहा" इति मंत्रेणास्मिन्पात्रे जलं बलिं चोत्सृज्य प्रणमेत् ॥२॥ ततः दक्षिणकीलसमीपे जलेन चतुरस्रमंडलं कृत्वा तत्र माषपात्रं निधाय "ॐ चामीकराय नमः" इति चामीकरं संपूज्य दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन् ततः "ॐ ह्रीं चामीकरभैरव एह्येहि इमं सदीपं माषान्नबलिं गृह्ण गृह्ण मां

रक्ष रक्ष अभीष्टं कुरुकुरु स्वाहा" इति मंत्रेणास्मिन्पात्रे जलं बलिं चोत्सृज्य प्रणमेत् ॥ ३ ॥ ततः नैर्ऋत्यकोणगतकीलसमीपे जलेन चतुरस्रमंडलं कृत्वा तत्र माषपात्रं निधाय "ॐ असितांगभैरवाय नमः" इति असितांगभैरवं संपूज्य दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन् "ॐ असितांगभैरव एह्येहि इमं सदीपं माषान्नबलिं गृह्ण गृह्ण मां रक्ष रक्ष अभीष्टं कुरु कुरु स्वाहा" इति मंत्रेणास्मिन्पात्रे जलं बलिं चोत्सृज्य प्रणमेत् ॥ ४ ॥ ततः पश्चिमकीलसमीपे जलेन चतुरस्रमंडलं कृत्वा तत्र माषपात्रं निधाय "ॐ भीषणभैरवाय नमः" इति भीषणभैरवं संपूज्य दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन् "ॐ ह्रीं भीषणभैरव एह्येहि इमं सदीपं माषान्नबलिं गृह्ण गह्ण मां रक्ष रक्ष अभीष्टं कुरु कुरु स्वाहा" इति मंत्रेणास्मिन्पात्रे जलं बलिं चोत्सृज्य प्रणमेत् ॥ ५ ॥ ततो वायुकोणगतकीलसमीपे जलेन चतुरस्रमण्डलं कृत्वा तत्र माषपात्रं निधाय "ॐ प्रचंडभैरवाय नमः" इति प्रचंडभैरवं संपूज्य दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन् "ॐ ह्रीं प्रचंडभैरव एह्येहि इमं सदीपं माषान्नबलिं गृह्ण गृह्ण मां रक्ष रक्ष अभीष्टं कुरु कुरु स्वाहा" इति मंत्रेणास्मिन्पात्रे जलं बलिं चोत्सृज्य प्रणमेत् ॥ ६ ॥ ततः उत्तरदिग्गतकीलसमीपे जलेन चतुरस्रमण्डलं कृत्वा तत्र माषपात्रं निधाय "ॐ करालभैरवाय नमः" इति करालं संपूज्य दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन् "ॐ ह्रीं करालभैरवाय एह्येहि इमं सदीपं माषान्नबलिं गृह्ण गृह्ण मां रक्ष रक्ष अभीष्टं कुरु कुरु स्वाहा" इति मंत्रेणास्मिन्पात्रे जलं बलिं चोत्सृज्य प्रणमेत् ॥ ७ ॥ ततः ईशानकोणगतकीलसमीपे जलेन चतुरस्रमंडलं कृत्वा तत्र माषपात्रं निधाय "ॐ कपालभैरवाय नमः" इति कपालं भैरवं संपूज्य दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन् "ॐ ह्रीं कपालभैरव एह्येहि इमं सदीपं माषान्नबलिं गृह्ण गृह्ण मां रक्ष रक्ष अभीष्टं कुरु कुरु स्वाहा" इति मंत्रेणास्मिन्पात्रे जलं बलिं चोत्सृज्य प्रणमेत् ॥ ८ ॥ इत्यष्टदिक्षु बलिं दत्त्वा "ॐ गुरुभ्यो नमः ॥ १ ॥ ॐ परमगुरुभ्यो नमः ॥ २ ॥ ॐ परात्परगुरुभ्यो नमः ॥ ३ ॥ ॐ परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः ॥ ४ ॥ ॐ ग्लौं गणपतये नमः ॥ ५ ॥ क्षौं क्षेत्रपालाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ वं वटुकभैरवाय नमः ॥ ७ ॥ इति" नत्वा ततो यथाकामं

कृतं दीपं वेदीमध्ये तंडुलोपरि संस्थाप्य गायत्रीमंत्रेण यथाकामं घृतं तैलं वाऽऽपूर्य यथाकामं वर्ति निधाय यावत्संख्यकास्तन्तवस्ता वर्तीभिर्मंत्रावृत्तिभिरभिमंत्र्य मूलेन दीपानुरूपां शलाकां दीपे निधाय दक्षिणधारां छुरिकां निधाय "ॐ ह्रीं क्ष्रीं छुरिके मम शत्रूच्छेदिनि रिपून् निर्दलय निर्दलय मां पाहि पाहि स्वाहा" इति छुरिकां संपूज्य ततः "ॐ ह्रां ह्रीं सर्वांगसुंदर्यै शलाकायै नमः" इति शलकां पूजयेत्। ततो मूलेन गायत्रीमंत्रेण वा दीपं प्रज्वाल्य पूर्ववत्पुनर्न्यासादिकं कृत्वा हस्ते कुशजलगंधाक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा "ॐ ऐं श्रीं क्लीं ऐं श्रीं सर्वज्ञाय प्रचंडपराक्रमाय वटुकभैरवाय इमं दीपं गृहाण सर्वकार्याणि साधय साधय दुष्टान्नाशय २ त्रासय २ सर्वतो मम रक्षां कुरु कुरु हुं फट् स्वाहा" इति दीपं संकल्प्य जलं च दीपाग्रे निक्षिप्य पुनर्दक्षहस्ते जलमादाय "ॐ गृहाण दीपं देवेश वटुकेश महाप्रभो ॥ ममाभीष्टं कुरु क्षिप्रमापद्भ्यो मां समुद्धर ॥ १ ॥" मूलं पठित्वा "वटुकभैरवाय इमं दीपं निवेदयामि नमः" इति जलं भूमौ निक्षिप्य दीपं भैरवाय निवेद्य दीपस्य प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्। तथा च-करेणाच्छाद्य ॐ आं ह्रीं क्रौं यँरँलँवँशँषँसँहौं अँसँहंसः ह्रीं अँ हंसः अस्य वटुकभैरवदीपस्य प्राणा इह प्राणाः। पुनः अस्य वटुकभैरवदीपस्य जीव इह स्थितः। पुनः अस्य वटुकभैरवदीपस्य सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि ।पुनः अस्य वटुकभैरवदीपस्य वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा ॥ ४ ॥ इति प्राणान्प्रतिष्ठाप्य तत्र दीपे वटुकमावाह्य यथाकामं ध्यात्वा पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः पद्धतिमार्गेण संपज्य प्रयोगोक्तावरणपूजां च कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य बलिं दद्यात्। तथा च—दीपस्य वामभागे त्रिकोणवृत्तषट्कोणमंडलं कृत्वा "ॐ बलिमंडलाय नमः" इति मंडलं संपूज्य तत्राधारं संस्थाप्य तत्र शाल्योदनशर्करालाजचूर्णगुडापूपशष्कुलीसूपपायसान्नादिकं घृतप्लुतमनेकजातीयं बलिद्रव्यं (तंत्रांतरेऽपि) घृतमधुशर्करामोदकमाषान्नवटकं च विविधभक्ष्यद्रव्याणि यथासंभवं माषमुद्गान्नप्रधानबलिद्रव्यं क्षत्रियादिभिः समांसबलिद्रव्यं कमलाकारं कृत्वा तस्योपरि गंधाक्षतपुष्पदीपादिकं निधाय आधारोपरि संस्थाप्य देशकालौ

संकीर्त्य ममामुकफलावाप्तये श्रीवटुकभैरवप्रीतये अमुकद्रव्यबलिदानमहं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य "ॐ वं वटुकबलिद्रव्याय नमः" इति संपूज्य दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामकरांगुष्ठेन बलिपात्रं स्पृशन् मूलं पठित्वा " ॐ एह्येहि विदुषि पुरं भंजय २ नर्तय २ निग्रह २ महाभैरववटुक बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ॥ १ ॥ एह्येहि देवीपुत्र वटुकनाथ कपिलजटाभारभासुर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्व विघ्नान्नाशय २ सर्वोपचारसहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ॥ २ ॥ " इति मंत्रेण जलं बलिमुत्सृज्य प्रणमेत् ॥ समांसबलिपक्षे " ॐ पशु पाशाय विद्महे शिरश्छेदाय धीमहि ॥ तन्नः पशुः प्रचोदयात् ॥ १ ॥ " ॐ अरिपिशितमांसान्नबलिं गृह्ण गृह्ण " शत्रुपक्षस्य रुधिरं पिशितं च दिने दिने ॥ भक्षयेद्यो गणैः सार्द्धं सारमेयसमन्वितः ॥ १ ॥ सर्वगणेभ्यो नमः । आमिषं गृह्ण २ भक्षय २ मां रक्ष रक्ष स्वाहा ॥ " इति मंत्रेण दद्यात् । इति बलिं दत्त्वा यथाकामं देवं ध्यात्वा ततः अष्टोत्तरसहस्रमष्टोत्तरशतं वा यथाशक्ति मूलं प्रजप्याष्टो त्तरशतनामस्तवराजं च एकविंशतिवारमेकादशवारं वा शतवारं वा महाप्रयोगश्चेत्सहस्रवारं वा ब्राह्मणैः सहावृत्य पुनः पूर्वोक्त संख्यया मंत्रं जपेत् ॥ ततः "गुह्यातिगुह्य०" इति मंत्रेण जपं समर्प्य ततः स्तोत्रकवचसहस्रनामादिकं दीपसमाप्तिपर्यंतं प्रत्यहं पठेत् । यावद्दीपस्तावदशुभं न वदेत् ॥ क्रोधपरनिंदापरस्त्रीषु पराङ्मुखो भवेत् पाठांते वटुकान् कुमारिकाः सुवासिनीश्च पायसान्नैर्वटकैर्मोद केश्चणकैश्च नानाभक्ष्यभोज्यैश्च प्रत्यहं तर्पयित्वा आचार्यः स्वयं वा शांतिस्तोत्रं पठेत् । शांतिस्तोत्रं यथा—"यस्यार्चनेन विधिना किमपीह लोके कर्म प्रसिद्धमिति नाम फलं प्रसूते ॥ तं संततं सकलसाधकवांछितार्तिचिंतामणिं सुरगणाधिपतिं नमामि ॥ १ ॥ रक्तांबरं ज्वलनपिंगजटाकलापं ज्वालावलीकुटिलचन्द्रधरं त्रिनेत्रम् ॥ बालार्कचाम्रफलकांचनतुल्यवर्णं देवीसुतं वटुकनाथमहं भजामि ॥ २ ॥ हरतु कुलगणेशो विघ्नसर्पानशेषान्नयतु कुलसपर्यापूर्णतां साधकानाम् ॥ पिबतु वटुकनाथः शोणितं निंदकानां दिशतु सकलकामा न्साधकानां गणेशः॥३॥सततवितततेजाश्चक्रभासा विनम्रप्रसनसमुदितो वै विश्वसंदोहनाभिः ॥ प्रलयनयननाभिः किंतु चात्मोद्भवाभि

भवतु भुवनगर्भो भैरवो नः पुनातु ॥४॥ या काचिद्योगिनी रौद्रा सौम्या घोरतरापरा ॥ गृह्णातु बलिपूजां सा मम व्याधिं व्यपोहतु ॥५॥
नंदंतु साधकाः सर्वे विनश्यंतु प्रदूषकाः॥अवस्था शांभवी मेऽस्तु प्रसन्नोऽस्तु गुरुः सदा ॥६ ॥" इति पठेत्॥ततो जपदशांशेन होमतर्पण
मार्जनब्राह्मणभोजनं च कृत्वा ब्राह्मणान् जपानुसारेण दक्षिणादिभिः संतोष्य आचार्यं कार्यानुसारेण दक्षिणावस्त्रालंकारादिभिः परितोष्य
प्रणमेत् ॥ तथा च—" अयं दीपाविधिः प्रोक्तो वटुकस्य तवानघे ॥ योजनीयः प्रयत्नेन सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ १ ॥ परिवारसमा
युक्तौ सपुत्रौ सहपत्निकौ ॥ सर्वान्देवान्प्रपूज्याथावरणेन समन्वितान्॥ २ ॥ मध्यं तु पूजयेद्देवं वटुकं दीपमध्यतः ॥ पंचोपचारैः संपूज्य
धूपदीपादिभिः क्रमात् ॥ ३ ॥ कवचं स्तवराजं च आपदुद्धारणं जपेत् ॥ मंत्रं लक्षं जपेद्देवि कवचं चायुतं पठेत् ॥ ४ ॥ सहस्रं
स्तवराजं च कार्यमुद्दिश्य मंत्रवित् ॥ कलौ चतुर्गुणं प्रोक्तं दीपाग्रे प्रपठेत्सदा ॥ ५ ॥ सूर्यास्तकालमारभ्य यावत्सूर्योदयो भवेत् ॥ ताव
न्मंत्रं जपेद्रात्रौ कार्यमुद्दिश्य मंत्रवित् ॥ ६ ॥ अष्टमीदिनमारभ्य यावत्कृष्णा चतुर्दशी ॥ तावन्मंत्रं जपेद्रात्रौ सर्वकार्यप्रसाधने ॥ ७ ॥
नदीतीरे शिवागारे बिल्वमूले गिरौ तथा ॥ गुहायां सिद्धपीठे च सन्निधौ भैरवस्य च ॥८॥ पुत्रप्राप्तिः सहस्रे स्याद्द्विगुणे च धनागमः ॥
त्रिगुणे बंधनान्मुक्तिश्चतुःसंख्ये प्रियागमः॥९॥बाणसंख्ये स्तंभनं स्याद्रससंख्ये क्षयो भवेत्॥सप्तसंख्ये जगद्वश्यमष्टसंख्ये तु मोहनम्॥१०॥
अंकसंख्ये महोत्साह उच्चाटो दशसंख्यके ॥ एकादशेन देवेशि ह्यखिलाः सिद्धयः स्मृताः ॥ ११ ॥ लक्षेणैकेन देवेशि चक्रवर्ती
भवेद्ध्रुवम् ॥ कोटिसंख्ये महादेवि भवेद्भैरवसन्निभः ॥ १२ ॥ नौकाया व्यवहारे च जपेत्सप्तशतं तथा ॥ कृषिकर्मणि वाणिज्ये
रुद्रसंख्याशतानि च ॥ १३ ॥ दीपाग्रे कलशाग्रे च पठित्वा फलमाप्नुयात् ॥ दीपाग्रे च यथाशक्ति गायत्री वटुकस्य च ॥ १४ ॥
जपेद्दीपं समर्प्याथ कवचं प्रजपेत्ततः ॥ मंत्रं जप्त्वा पुनर्वर्म पठेन्मन्त्रं ततः परम् ॥ १५ ॥ स्तवराजं पठित्वा तु मंत्रं जप्त्वा निवेदयेत् ॥
पुत्रो[illegible]र्पितमौलिना ॥ कथितो रामचन्द्रेण दीपदानविधिः शुभः ॥ १६ ॥ इति वटुकभैरवदीपदानविधानम् ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ श्रीबटुकभैरवपूजापद्धतिप्रारंभः ॥ "नमः कर्पूरगौराय कैलासाचलवासिने ॥ गौरीकंठग्रहानन्दनिष्पं

प्रार्थयामहे ॥ १ ॥ उत्पत्तिस्थितिसंहारकारको जगदीश्वरः ॥ देवाधिदेवो वटुकभैरवोऽवतु मां सदा ॥२॥ भैरवाराधनविधिं प्रवक्ष्यामि समासतः ॥ साधकानां हितार्थाय मुमुक्षूणां विशेषतः ॥ षट्कर्मणां च संसिद्ध्यै वक्ष्ये भैरवपद्धतिम् ॥ ३ ॥" पुरश्चरणात् प्राक् तृतीय दिवसे क्षौरादिकं विधाय ततः प्रायश्चित्तार्थं विष्णुपूजां विष्णुतर्पणं विष्णुश्राद्धं होमं चांद्रायणादिव्रतं च कुर्यात् ॥ व्रताशक्तौ गोदानं द्रव्यदानं च कुर्यात् ॥ यदि सर्वकर्माशक्तस्तदा प्रायश्चित्तार्थं पंचगव्यप्राशनं कुर्यात् ॥ तत्र मंत्रः ॥ "ॐ यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके ॥ प्राशनात्पंचगव्यं हि दहत्यग्निरिवेंधनम् ॥ १ ॥" इति पठित्वा प्रणवेन पंचगव्यं पिबेत् ॥ तद्दिने उपवासं कृत्वा अशक्तश्चेत् पयःपानं हविष्यान्नेन एकभुक्तव्रतं वा कुर्यात् ॥ ततः पुरश्चरणात् पूर्वदिने स्वदेहशुद्ध्यर्थं पुरश्चरणाधिकारप्राप्त्यर्थं चायुतगायत्रीजपं कुर्यात् ॥ तत्र क्रमः ॥ देशकालौ संकीर्त्य ज्ञाताज्ञातपापक्षयार्थं करिष्यमाणश्रीमद्वटुकभैरवपुरश्चरणाधिकारार्थं ममुकमंत्रेण सिद्ध्यर्थं च गायत्र्ययुतजपमहं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य गायत्र्या अयुतं जपेत् ॥ ततो गायत्र्याचार्यऋषिं विश्वामित्रं तर्पयामि ॥ १ ॥ गायत्रीछंदस्तर्पयामि ॥ २ ॥ सवितारं देवं तर्पयामि ॥ ३ ॥ इति तर्पणं कुर्यात् ॥ ततस्तस्यां रात्रौ देवतो पास्ति शुभाशुभं स्वप्नं विचारयेत् ॥ तत्र क्रमः ॥ स्नानादिकं कृत्वा हरिपादांबुजं स्मृत्वा कुशासनादिशय्यायां यथासुखं स्थित्वा वृषभध्वजं प्रार्थयेत् ॥ तत्र मंत्रः ॥ "ॐ भगवन्देवदेवेश शूलभृद्वृषवाहन ॥ इष्टानिष्टं समाचक्ष्व मम सुप्तस्य शाश्वत ॥ १ ॥ ॐ नमोऽजाय त्रिनेत्राय पिंगलाय महात्मने ॥ वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः ॥ २ ॥ स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषतः ॥ क्रियासिद्धिं विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ ३ ॥" इति मंत्रेणाष्टोत्तरशतवारं शिवं प्रार्थ्य स्वप्यात् ॥ ततः स्वप्नं दृष्टं निशि प्रातर्गुरवे विनिवेदयेत् अथवा स्वयं स्वप्नं विचारयेत्[1] ॥ ततः चंद्रतारादिबलान्विते सुमुहूर्ते विविक्ते देशे जपस्थानं प्रकल्प्य पुरश्चरणदिवसे

---

१ लिंगं चन्द्रार्कयोर्बिंबं भारती जाह्नवी गुरुः ॥ रक्ताब्धितरणं युद्धे जयोऽनलसमर्चनम् ॥ शिखिहंसरथांगाढ्ये रथे स्थानं प्रमोहनम् ॥ आरोहणं सारसस्य धराकाभ्र निम्नगा ॥ प्रासादः स्यंदनं पद्मं छत्रं कन्या द्रुमः फली। नागो द्वीपो हयः पुष्पं वृषभोऽश्वश्च पर्वतः ॥ सुराघटो ग्रहास्तारा नारी सूर्योदयोऽप्सराः। हर्म्यशैलविमानानामारोहो गगने गमः ॥ मद्यमांसादनं विष्ठालेपो रुधिरसेचनम्। दध्योदनादनं राज्याभिषेको गोवृषध्वजाः ॥ सिंहः सिंहासनं शंखो वादित्रं रोचना दधि ॥ चन्दनं दर्पणं वेश्या स्वप्ने संदर्शनं शुभम् ॥ तैलाभ्यक्तः कृष्णवर्णो नग्नो ना गर्तवायसौ ॥ शुष्ककण्टकिवृक्षश्च चांडालो दीर्घकन्धरः ॥ प्रासादस्तलहीनश्च नैते स्वप्ने शुभावहाः ॥ इति विचारयेत् ॥

श्रीमान्साधकेंद्रः प्रातःकालात्पूर्वं दंडद्वयात्मके ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय निद्रास्थानाद्बहिर्निर्गत्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचम्य रात्रिवस्त्रं परित्यज्यान्यवस्त्रं परिधाय शुद्धासने चोपविश्य स्वशिरसि सहस्रदलपंकजे कोटींदुप्रकाशपीठे श्रीगुरुं ध्यायेत् ॥ गुरुस्मरणम् । "आनंदमानंदकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपम् ॥ योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं श्रीमद्गुरुं नित्यमहं भजामि ॥१॥" इति स्मृत्वा मानसोपचारैः संपूज्य "प्रातःप्रभृति सायांतं सायादिप्रातरंततः ॥ यत्करोमि जगन्नाथ तदस्तु तव पजनम् ॥ १ ॥" इत्यनेन मंत्रण सर्वं गुरवे निवेद्य तदाज्ञां गृहीत्वा श्रीवटुकप्रातःस्मरणं कुर्यात् ॥ अथ श्रीवटुकप्रातःस्मरणम् ॥ "प्रातः स्मरामि वटुकं सकमारमूर्तिं श्रीस्फाटिकाभसदृशं कुटिलालकाढ्यम् ॥ वक्त्रं दधानमणिमादिगुणैर्हि युक्तं हस्तद्वयं मणिमयैः पदभूषणैश्च ॥१॥ प्रातर्नमामि वटुकं तरुणं त्रिनेत्रं कामास्पदं वरकपालत्रिशूलदंडान् ॥ भक्तार्तिनाशकरणे दधतं करेषु तं कौस्तुभाभरणभूषितदिव्यदेहम् ॥ २ ॥ प्रातःकाले सदाऽहं भगणपरिधरं भालदेशे महेशं नागं पाश कपालं डमरुमथ सृणिं खड्गघंटाभयानि॥दिग्वस्त्रं पिंगकेशं त्रिनयनसहितं मुंडमालं करेषु यो धत्ते भीमदंष्ट्रं मम विजयकरं भैरवं तं नमामि॥३॥ देवदेव कृपासिंधो सर्वनाशिन्महाव्यय॥संसारासक्तचित्तं मां मोक्षमार्गे निवेशय॥४॥ एतच्छ्लोकचतुष्कं वै भैरवस्य तु यः पठेत्॥सर्वबाधाविनिर्मुक्तो जायते निर्भयः पुमान्॥५॥"एवं ध्यात्वा गुरुमंत्रदेवतात्मनामैक्यं विभाव्य अजपाजपं गुरवे समर्पयेत् ॥ अथाजपाजपसंकल्पः संक्षेपतः॥ " आधारे लिंगनाभौ हृदयसरसिजे तालुमूले ललाटे द्वे पत्रे षोडशारे द्विदशदशदले द्वादशार्द्धे चतुष्के॥वासांते वालमध्ये डफकठसहिते आदियुक्ते स्वराणां हंक्षंतत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि॥१॥षट्शतं तु गणेशस्य षट्सहस्रं प्रजापतेः ॥ षट्सस्रं गदापाणेः षट्सहस्रं पिनाकिनः ॥ २ ॥ आत्मनस्तत्सहस्रं च सहस्रं परमात्मनः ॥ सहस्रं श्रीगुरुभ्यश्च एतानि विनियोजयेत् ॥ ३ ॥ हंसो गणेशो विधिरेव हंसो हंसो हरिर्हंसमयश्च शंभुः ॥ हंसोऽपि जीवः परमात्महंसो हंसो गुरुर्हंसमयश्च शंभुः ॥ ४ ॥ " इति पठित्वा अहोरात्रोच्चारितं षट्शताधिकमेकविंशतिसहस्रमुच्छ्वासनिःश्वासात्मकमजपागायत्रीमंत्रजपं श्रीगणेशब्रह्मविष्णुरुद्रजीवात्मपरमात्मश्रीगुरुभ्यो यथासंख्यं समर्पयामि ॥ इत्युक्त्वाष्टोत्तरशतावृत्तिं हंसगायत्रीं जपेत् ॥ अथ

हरिः ॐ " हंसो हंसस्य विद्महे हंसो हंसस्य धीमहि ॥ हंसो हंसः प्रचोदयात् ॥" इति जपित्वा " त्रैलोक्यचैतन्यमयि
हंसगायत्रीमंत्रः॥ हरिः ॐ " हंसो हंसस्य विद्महे हंसो हंसस्य धीमहि ॥ हंसो हंसः प्रचोदयात् ॥ १ ॥ " इति संप्रार्थ्य भूमिं प्रार्थयेत् ॥
त्रिशक्ते श्रीविश्वमातर्भवदाज्ञयैव ॥ प्रातः समुत्थाय तव प्रियाथ संसारयात्रामनुवर्तयामि ॥ १ ॥" इति भूमिं संप्रार्थ्य
अथ भूमिप्रार्थनामंत्रः ॥ " समुद्रमेखले देवि पर्वतस्तनमंडले ॥ विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥ १ ॥" इति भूमिं संप्रार्थ्य
अथ भूमिप्रार्थनामंत्रः ॥ ततो ग्रामाद्बहिः नैर्ऋत्यकोणे ज़नवर्जिते उत्तरा
श्वासानुसारेण भूमौ पाद दत्त्वा बहिर्व्रिजेत् ॥ इति प्रातःकृत्यम् ॥ अथ शौचक्रिया ॥ ततो ग्रामाद्बहिः नैर्ऋत्यकोणे ज़नवर्जिते उत्तरा
भिमुखः अनुपानत्कः वस्त्रेण शिरः प्रावृत्य मलमोचनं कृत्वा मृत्तिकया जलेन यथासंख्यं शौचं कृत्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य गंडूषांतं दंत
धावनं कुर्यात् ॥ अथ दंतधावनम् ॥ आम्रचंपकापामार्गाद्यन्यतमं द्वादशांगुलं दंतकाष्ठं गृहीत्वा प्रार्थयेत्॥ " आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः
पशुधनानि च ॥ श्रियं प्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते ॥ ४ ॥" इति प्रार्थ्य " ॐ ह्रीं तडित्स्वाहा ॥ " इति मंत्रेण काष्ठं छित्त्वा
" ॐ क्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः ॥" इत्यनेन दंतान् संशोध्य "ऐं" मंत्रेण जिह्वामुल्लिख्य दंतकाष्ठं क्षालयित्वा नैर्ऋत्ये शुद्धदेशे
निःक्षिपेत् ॥ मूलेन मुखं प्रक्षाल्याचम्य स्नानं कुर्यात् ॥ अथ स्नानम् ॥ ततः तीर्थस्नानं मंगलस्नानं च सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कृत्वा
अशक्तश्चेद् गृहस्नानं कुर्यात् ॥ तत्र क्रमः ॥ तात्कालिकोद्धृतोदकेनोष्णोदकेन वा स्नानं कृत्वा न तु पर्युषितशीतोदकेन । तद्यथा—
ताम्रादिबृहत्पात्रे जलं गृहीत्वा तीर्थान्यावाहयेत् ॥ तत्र मंत्रः—"ब्रह्मांडोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे ॥ तेन सत्येन मे देव तीर्थं
देहि दिवाकर ॥ १ ॥ ॐ पुष्कराद्यानि तीर्थानि गंगाद्याः सरितस्तथा ॥ आगच्छन्तु पवित्राणि स्नानकाले सदा मम ॥ २ ॥ " इति
तीर्थान्यावाह्य ॥ " गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ॥ नर्मदे सिंधुकावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु ॥ ३ ॥ " इति पठित्वा " ऋतं
च सत्यं०" इति मंत्रेणाभिमंत्र्य स्नायात् ॥ एवं स्नानं कृत्वा शुष्कं शुभ्रं कार्पासोत्पन्नं वस्त्रं परिधाय सूर्यायार्घ्यं दद्यात ॥ तत्र मंत्रः
"एहि सूर्य्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते ॥ अनुकंपय मां देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥" इत्यर्घ्यं दत्त्वा स्नायी वस्त्रं परिपीड्य यज्ञोत्थ
भस्मना पंचत्रिपुंड्रं कृत्वा रुद्राक्षमालां धारयन् वैदिकीं संध्यां विधाय तांत्रिकीं कुर्यात् ॥ अथ तांत्रिकीसंध्याप्रयोगः ॥

देशकालौ संकीर्त्य श्रीवटुकभैरवाराधनयोग्यताजननार्थं तंत्रसंध्यामहं करिष्ये इति संकल्प्य ॥ " ॐ ह्रीं आत्मतत्त्वाय स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वाय स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रूं शिवतत्त्वाय स्वाहा ॥ ३ ॥ " इति त्रिराचम्य मूलेन प्राणानायम्य ऋष्यादिकरांगन्यासान् कृत्वा मूलेन जलं संवीक्ष्य ॥ " अस्त्राय फट् ॥ " इति संप्रोक्ष्य । अनेनैव दर्भेण संताडय "कवचाय हुम् "इत्यभ्युक्ष्य तज्जलेन कुंभमुद्रया मूर्ध्नि सिंचेत् ॥ ततो वामपाणौ दक्षेण तीर्थजलमादाय॥ " ॐ ह्रां वां हृदयाय नमः ॥ " इति मंत्रेण सप्तवारमभिमंत्र्य तद्गलितोदकबिंदुभिर्दक्षहस्तेन शिरसि मार्जयेत् ॥ तत्र मंत्राः—ह्रां व्रां हृदयाय नमः वौषट् ॥ १ ॥ ह्रीं व्रीं शिरसे स्वाहा वौषट् ॥ २ ॥ ह्रूं व्रूं शिखायै वौषट् ॥ ३ ॥ ह्रैं व्रैं कवचाय हुं वौषट् ॥ ४ ॥ ह्रौं व्रौं नेत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ह्रः व्रः अस्त्राय फट् ॥६॥ ॐ आं ह्रां व्योमव्यापिने नमः ॥७॥ ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः ॥ भवे भवेनातिभवेभवस्वमां भवोद्भवाय नमः ॥८॥ ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलायनमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥९॥ॐअघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ॥ सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ १० ॥ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥११॥ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्॥१२॥ ह्रां ह्रीं ह्रूं मूलमंत्रश्च। एतैर्मंत्रैर्मार्जयित्वा वामहस्तस्थं जलं वामनासासमीपमानीय इडया देहांतरादाकृष्य पापौघं प्रक्षाल्य कृष्णवर्णं तदुदकं दक्षिणया विरेच्य वामहस्तस्थमुदकं दक्षिणेनादाय पुरःकल्पितवज्रशिलायामस्त्रमंत्रेण क्रोधादास्फालयेत्॥ ततः पूर्ववदाचम्य करांगन्यासौ कृत्वा अर्घ्यपात्रे जलं कृत्वा तदादाय मूलमुच्चार्य"शिवरूपाय सूर्यायेदमर्घ्यं स्वाहा॥"इति त्रिरर्घ्यं दत्त्वा मूलेनोपस्थाय गायत्रीं मूलमंत्रं जपेत् च॥ गायत्रीमंत्रो यथा— "ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ " गायत्रीमष्टविंशतिवारमष्टोत्तरशतवारं मूलं च संजप्य जपं निवेद्य नमस्कारं कुर्यात् ॥ इति तांत्रिकीसंध्याप्रयोगः ॥ अथ द्वारपूजा ॥ ततः पूजागृहद्वारमागत्य द्वारपूजां कुर्यात् ॥ तत्र क्रमः ॥

"अस्त्राय फट्" इति द्वारं संप्रोक्ष्य दक्षिणशाखायाम् ॥ गं गणपतये नमः ॥ १ ॥ दुं दुर्गायै नमः ॥ २ ॥ वामशाखायाम् । वं वटुकाय नमः ॥३॥ क्षं क्षेत्रपालाय नमः ॥ ४ ॥ द्वारोपरि । सं सरस्वत्यै नमः ॥५॥ देहल्याम् । अस्त्राय फट् ॥६॥ इति पूजयेत् ॥ अथ प्रयोगः ॥ ततो जपस्थाने गत्वा ॥ अश्वत्थौदुंबरप्लक्षाणामन्यतमस्य वितस्तिमात्रान् दश कीलान् "ॐ नमः सुदर्शनायास्त्राय फट्" इति मंत्रेणाष्टोत्तरशताभिमंत्रितान् "ॐ ये चात्र विघ्नकर्तारो भुवि दिव्यंतरिक्षगाः ॥ विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मंत्रस्य सिद्धिषु ॥ १ ॥ मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः ॥ अपसर्पंतु ते सर्वे निर्विघ्नं सिद्धिरस्तु मे ॥ २ ॥ इति मंत्रद्वयेन दशदिक्षु दश कीलान् निखनेत् ॥ ततस्तेषु "ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्" इति मंत्रेण प्रत्येककीलान् संपूज्य तद्वाह्ये भूतबलिं दद्यात् ॥ तत्र मंत्रः ॥ "ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः ॥ मातरोऽप्युग्ररूपाश्च गणाधिपतयश्च मे ॥ १ ॥ विघ्नभूताश्च ये चान्ये दिग्विदिक्षु समाश्रिताः ॥ ते सर्वे प्रीतमनसः प्रतिगृह्णंत्विमं बलिम् ॥ २ ॥" इति मंत्रद्वयेन दशदिक्षु बाह्ये माषभक्तबलिं दद्यात् ॥ ततो वामकरांगुलिभिरर्घ्यजलेनोत्सृज्य पुष्पांजलिमादाय "ॐ भूतानि यानीह वसंति भूतले बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम् ॥ संतोषमासाद्य व्रजंतु सर्वे क्षमंतु नान्यत्र नमोऽस्तु तेभ्यः ॥" इति पुष्पांजलिं दत्त्वा प्रणमेत् ॥ इति भूतेभ्यो बलिं दत्त्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचामेत् ॥ ततः "ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ॥ यः स्मरेत्पुंडरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥ १ ॥" इति मंत्रेण मंडपांतरं प्रोक्ष्य ॥ तत्र तावदासनभूमौ कूर्मशोधनं कार्यम् ॥ यत्र जपकर्ता एक एव तदा कूर्ममुखे उपविश्य तत्रैव जपं दीपस्थापनं च कुर्यात् ॥ यत्र बहवो जापकास्तत्र कूर्ममुखोपरि दीपमेव स्थापयेत् ॥ एवं कूर्मशोधनं विधाय तत्र आसनाधो जलादिना त्रिकोणं कृत्वा तत्र "ॐ कूर्माय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः ॥ २ ॥ ॐ पृथिव्यै नमः ॥ ३ ॥" इति गंधाक्षतपुष्पैः संपूज्य तदुपरि कुशासनं तदुपरि मृगाजिनं तदुपरि कम्बलाद्यासनमास्तीर्य स्थापितानां त्रयाणामासनानामुपरि क्रमेण "ॐ अनन्तासनाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विमलासनाय नमः ॥ २ ॥ ॐ पद्मासनाय नमः ॥ ३ ॥" इति मंत्रत्रयेण त्रीन् दर्भान् प्रत्येकं निदध्यात् ॥ एवमासनं संस्थाप्य तत्र प्राङ्मुख उद

ङ्मुखो वा उपविश्यासनं शोधयेत् ॥ तत्र मंत्रः ॥ ॐ पृथ्वीति मंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः । कूर्मो देवता। सुतलं छन्दः । आसने विनियोगः ॥ "ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ॥ त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥१॥ " इति मंत्रेणासनं प्रोक्ष्य ततो मूलेन शिखां बद्ध्वा आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य मम श्रीमद्वटुकभैरवदेवताप्रीतये अमुकमंत्रसिद्ध्यर्थं लक्षसंख्यात्मकं (अथ वा एकविंशतिलक्षसंख्यात्मकं) जपं तत्तद्दशांशहोमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनरूपपुरश्चरणमहं करिष्ये इत्युच्चार्य जलं भूमौ क्षिपेत् ॥ ततो भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठांतर्मातृकाबहिर्मातृकासृष्टिस्थितिसंहारमातृकान्यासान्सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कृत्वा प्रेतबीजाद्यसरस्वतीबीजांतं पंचदश न्यासान् कुर्यात् ॥ तद्यथा—ॐ हसहौं हृदयाय नमः ॥१ ॥ ॐ हसहौं शिरसे स्वाहा ॥२ ॥ॐ हसहौं शिखायै वषट् ॥३ ॥ ॐ हसहौं कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ हसहौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ हसहौं अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति प्रेतबीजन्यासः प्रथमः ॥ १ ॥ ॐ हसक्ष्रं नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ हसक्ष्रं नमः बाह्वोः ॥ २ ॥ ॐ हसक्ष्रं नमः लिंगे ॥ ३ ॥ ॐ हसक्ष्रं नमः नाभौ ॥ ४ ॥ ॐ हसक्ष्रं नमः हस्तांगुलीषु ॥ ५ ॥ ॐ हसक्ष्रं नमः पादांगुलीषु ॥ ६ ॥ इति सिंहबीजन्यासो द्वितीयः ॥ २ ॥ ॐ ज्रौं नमः ब्रह्मरंध्रे ॥ १ ॥ ॐ ज्रौं नमः मुखे ॥ २ ॥ ॐ ज्रौं नमः नेत्रद्वये ॥ ३ ॥ ॐ ज्रौं नमः ग्रीवायाम् ॥ ४ ॥ ॐ ज्रौं नमः नासापुटयोः ॥ ५ ॥ ॐ ज्रौं नमः कपोलयोः ॥ ६ ॥ ॐ ज्रौं नमः चिबुके ॥ ७ ॥ ॐ ज्रौं नमः ब्रह्मरंध्रे ॥ ८ ॥ इति काणबीजन्यासस्तृतीयः ॥ ३ ॥ ॐ मलहौं नमः पादयोः ॥ १ ॥ ॐ मलहौं नमः हस्तयोः ॥ २ ॥ ॐ मलहौं नमः करयोः ॥ ३ ॥ ॐ मलहौं नमः नेत्रयोः ॥ ४ ॥ ॐ मलहौं नमः कर्णयोः ॥ ५ ॥ ॐ मलहौं नमः मुखे ॥ ६ ॥ ॐ मलहौं नमः कुक्षिद्वये ॥ ७ ॥ ॐ मलहौं नमः लिंगे ॥ ८ ॥ इति सत्याबीजन्यासश्चतुर्थः ॥ ४ ॥ ॐ श्रूं नमः चिबुके ॥ १ ॥ ॐ श्रूं नमः पादयोः ॥ २ ॥ ॐ श्रूं नमः कर्णयोः ॥ ३ ॥ ॐ श्रूं नमः हृदये ॥ ४ ॥ ॐ श्रूं नमः मुखे ॥ ५ ॥ ॐ श्रूं नमः पादयोः ॥ ६ ॥ ॐ श्रूं नमः नाभौ ॥ ७ ॥ ॐ श्रूं नमः पादयोः ॥ ८ ॥ इति महाबीजन्यासः पंचमः ॥ ५ ॥ ॐ प्रं नमः हृदये ॥१॥ ॐ प्रूं नमः सव्यकुक्षौ ॥ २ ॥ ॐ प्रूं नमः हृदये ॥ ३ ॥ ॐ प्रूं नमः वामकुक्षौ ॥४ ॥ ॐ प्रूं नमः

हृदये ॥ ५ ॥ ॐ प्रूं नमः दक्षपादतले ॥ ६ ॥ ॐ प्रूं नमः हृदये ॥ ७ ॥ ॐ प्रूं नमः वामपादतले ॥ ८ ॥ ॐ प्रूं नमः हृदये ॥९॥ इति प्राणबीजन्यासः षष्ठः ॥ ६ ॥ ॐ घ्रूं नमः गलघंटिकायाम् ॥ १ ॥ ॐ घ्रूं नमः नाभौ ॥ २ ॥ ॐ घ्रूं नमः घंटिकायाम् ॥ ३ ॥ ॐ घ्रूं नमः हृदये ॥ ४ ॥ इति घंटाबीजन्यासः सप्तमः ॥७॥ ॐ ख्यूं नमः मस्तके ॥ १ ॥ ॐ ख्यूं नमः पादयोः ॥ २ ॥ ॐ ख्यूं नमः ग्रीवायाम् ॥ ३ ॥ ॐ ख्यूं नमः नाभिमंडले ॥ ४ ॥ ॐ ख्यूं नमः गले ॥५॥ ॐ ख्यूं नमः हृदये ॥ ६ ॥ ॐ ख्यूं नमः जंघयोः ॥ ७ ॥ ॐ ख्यूं नमः नेत्रयोः ॥ ८ ॥ ॐ ख्यूं नमः कर्णयोः ॥ ९ ॥ ॐ ख्यूं नमः बाह्वोः ॥ १० ॥ ॐ ख्यूं नमः स्तनयोः ॥ ११ ॥ इति ख्यातिबीजन्यासोऽष्टमः ॥ ८ ॥ ॐ ॐ नमः हृदये ॥ १ ॥ ॐ ॐ नमः मुखे ॥ २ ॥ ॐ ॐ नमः पादयोः ॥ ३ ॥ ॐ ॐ नमः हस्तयोः ॥ ४ ॥ ॐ ॐ नमः कर्णयोः ॥ ५॥ ॐ ॐ नमः नासापुटयोः ॥ ६ ॥ इति मूलबीजन्यासो नवमः ॥ ९ ॥ ॐ भरलसहीं नमः मुखे ॥ १ ॥ ॐ भरलसहीं नमः नेत्रद्वये ॥ २ ॥ ॐ भरलसहीं नमः कर्णद्वये ॥ ३ ॥ ॐ भरलसहीं नमः कपोलयोः ॥ ४ ॥ ॐ भरलसहीं नमः गंडयोः ॥ ५॥ ॐ भरलसहीं नमः कंठदेशे ॥ ६ ॥ ॐ भरलसहीं नमः स्तनयोः ॥७॥ ॐ भरलसहीं नमः हृदये ॥ ८ ॥ ॐ भरलसहीं नमः पादयोः ॥ ९ ॥ ॐ भरलसहीं नमः चिबुके ॥ १० ॥ ॐ भरलसहीं नमः मस्तके ॥ ११ ॥ ॐ भरलसहीं नमः बाह्वोः ॥ १२ ॥ ॐ भरलसहीं नमः स्कंधयोः ॥ १३ ॥ ॐ भरलसहीं नमः दंतपंक्त्योः ॥ १४ ॥ ॐ भरलसहीं नमः ब्रह्मरंध्रे ॥ १५ ॥ ॐ भरलसहीं नमः आधारे ॥ १६ ॥ ॐ भरलसहीं नमः भ्रूमध्ये ॥ १७ ॥ इति भ्रामरीबीजन्यासो दशमः ॥ १० ॥ ॐ नमरलमरक्षरशरहसीं नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ नमरलमरक्षरशरहसीं नमः गंडयोः ॥ २ ॥ ॐ नमरलमरक्षरशरहसीं नमः वक्त्रे ॥ ३ ॥ इति आकूतीबीजन्यास एकादशः ॥ ११ ॥ ॐ करलसरमरीं नमः नेत्रयोः ॥ १ ॥ ॐ करलसरमरीं नमः कर्णयोः ॥ २ ॥ ॐ करलसरमरीं नमः नाभौ ॥ ३ ॥ ॐ करलसरमरीं नमः लिंगे ॥ ४ ॥ ॐ करलसरमरीं नमः गुदे ॥५॥ इति कालबीजन्यासो द्वादशः ॥ १२ ॥ ॐ क्षरशरहसीं नमः कपोलयोः ॥ १ ॥ ॐ क्षरशरहसीं नमः ब्रह्मरंध्रे ॥ २ ॥ ॐ क्षरशरहसीं नमः दंतपङ्क्त्योः ॥ ३ ॥

इति विद्याबीजन्यासस्त्रयोदशः ॥ १३ ॥ ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नमः मस्तके ॥ १ ॥ ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नमः दक्षनेत्रे ॥ २ ॥ एवं सर्वत्र । ॐ वामनेत्रे ॥ ३ ॥ ॐ १९ दक्षकर्णे ॥ ४ ॥ ॐ १९ वामकर्णे ॥ ५ ॥ ॐ १९ दक्षिणकपोले ॥ ६ ॥ ॐ १९ वामकपोले ॥ ७ ॥ ॐ १९ दक्षगंडके ॥ ८ ॥ ॐ १९ वामगंडके ॥ ९ ॥ ॐ १९ चिबुके ॥ १० ॥ ॐ १९ गले ॥ ११ ॥ ॐ १९ दक्षस्कंधे ॥ १२ ॥ ॐ १९ वामस्कंधे ॥ १३ ॥ ॐ १९ दक्षस्तने ॥ १४ ॥ ॐ १९ वामस्तने ॥ १५ ॥ ॐ १९ हृदये ॥ १६ ॥ ॐ १९ दक्षकुक्षौ ॥ १७ ॥ ॐ १९ वामकुक्षौ ॥ १८ ॥ ॐ १९ नाभौ ॥ १९ ॥ ॐ १९ वक्षसि ॥ २० ॥ ॐ १९ दक्षजंघायाम् ॥ २१ ॥ ॐ १९ वामजंघायाम् ॥ २२ ॥ ॐ १९ लिंगे ॥ २३ ॥ ॐ १९ दक्षमेढ्रे ॥ २४ ॥ ॐ १९ वाममेढ्रे ॥ २५ ॥ ॐ १९ मूलाधारे ॥ २६ ॥ ॐ १९ दक्षगुल्फे ॥ २७ ॥ ॐ १९ वामगुल्फे ॥ २८ ॥ ॐ १९ दक्षपादे ॥ २९ ॥ ॐ १९ वामपादे ॥ ३० ॥ ॐ १९ दक्षपादांगुलीषु ॥ ३१ ॥ ॐ १९ वामपादांगुलीषु ॥ ३२ ॥ ॐ १९ ब्रह्मरंध्रे ॥ ३३ ॥ ॐ १९ मूलाधारे ॥ ३४ ॥ ॐ १९ ब्रह्मरंध्रे ॥ ३५ ॥ इति शृंखलामहापराख्यबीजन्यासश्चतुर्दशः ॥ १४ ॥ ॐ कलडरसहरहक्षशरईं ललाटे ॥ १ ॥ इति सर्वत्र ॥ ॐ १२ मुखवृत्ते ॥ २ ॥ ॐ १२ दक्षनेत्रे ॥ ३ ॥ ॐ १२ वामनेत्रे ॥ ४ ॥ ॐ १२ दक्षकर्णे ॥ ५ ॥ ॐ १२ वामकर्णे ॥ ६ ॥ ॐ १२ दक्षनासापुटे ॥ ७ ॥ ॐ १२ वामनासापुटे ॥ ८ ॥ ॐ १२ दक्षगंडे ॥ ९ ॥ ॐ १२ वामगंडे ॥ १० ॥ ॐ १२ ऊर्ध्वोष्ठे ॥ ११ ॥ ॐ १२ अधरोष्ठे ॥ १२ ॥ ॐ १२ ऊर्ध्वदंतपंक्तौ ॥ १३ ॥ ॐ १२ अधोदंतपंक्तौ ॥ १४ ॥ ॐ १२ शिरसि ॥ १५ ॥ ॐ १२ मुखाभ्यंतरे ॥ १६ ॥ ॐ १२ दक्षबाहुमूले ॥ १७ ॥ ॐ १२ दक्षकूर्परे ॥ १८ ॥ ॐ १२ दक्षमणिबंधे ॥ १९ ॥ ॐ १२ दक्षकरांगुलिमूले ॥ २० ॥ ॐ १२ दक्षकरांगुल्यग्रे ॥ २१ ॥ ॐ १२ वामबाहुमूले ॥ २२ ॥ ॐ १२ वामकूर्परे ॥ २३ ॥ ॐ १२ वाममणिबंधे ॥ २४ ॥ ॐ १२ वामकरांगुलिमूले ॥ २५ ॥ ॐ १२ वामकरांगुल्यग्रे ॥ २६ ॥ ॐ १२ दक्षपादमूले ॥ २७ ॥ ॐ १२ दक्षजानुनि ॥ २८ ॥ ॐ १२ दक्षगुल्फे ॥ २९ ॥ ॐ १२ दक्षपादांगुलिमूले ॥ ३० ॥ ॐ १२ दक्षपादांगुल्यग्रे ॥ ३१ ॥ ॐ १२ वामपादमूले ॥ ३२ ॥ ॐ १२ वामजानुनि ॥ ३३ ॥ ॐ १२ वामगुल्फे ॥ ३४ ॥ ॐ

ॐ१२ वामपादांगुल्यग्रे ॥३६॥ ॐ १२ दक्षपार्श्वे ॥३७॥ ॐ १२ वामपार्श्वे ॥३८॥ ॐ१२ पृष्ठवंशे ॥३९॥ॐ
१२ वामपादांगुलिमूले ॥३५॥ ॐ १२ वामपादांगुल्यग्रे ॥३६॥ ॐ १२ दक्षांसे ॥४३॥ ॐ १२ वामांसे ॥४४॥ ॐ १२ ककुदि ॥ ४५ ॥ ॐ १२
१२ नाभौ ॥४०॥ ॐ १२ जठरे ॥४१॥ ॐ १२ हृदि ॥४२ ॥ ॐ १२ हृदयादिवामकरांगुल्यग्रपर्यंतम् ॥ ४७ ॥ ॐ १२ हृदयादिदक्षपादांगुल्यग्रपर्यंतम् ॥ ४८ ॥
हृदादिदक्षकरांगुल्यग्रपर्यंतम् ॥ ४६ ॥ ॐ १२ नाभ्यादिहृदयपर्यंतम् ॥ ५० ॥ ॐ १२ हृदादिमुखपर्यंतं न्यसेत् ॥ ५१ ॥ इति
ॐ १२ हृदयादिवामपादांगुल्यग्रपर्यंतम् ॥ ४९ ॥ ॐ १२ नाभ्यादिहृदयपर्यंतम् ॥ ५० ॥ अथ पीठदेवतान्यासः ॥ ॐ
महासरस्वतीबीजमातृकान्यासः पंचदशः ॥ १५ ॥ इति पंचदश न्यासान् कृत्वा पीठदेवता न्यसेत् ॥ अथ पीठदेवतान्यासः ॥ ॐ अं अनंताय नमः ॥
मं मंडूकाय नमः मूलाधारे ॥ १ ॥ ॐ कां कालाग्निरुद्राय नमः स्वाधिष्ठाने ॥२॥ ॐ कूं कूर्माय नमः नाभौ ॥३॥ ॐ मं मणिमंडपाय नमः॥
ॐ आं आधारशक्तये नमः॥ ॐ क्षीं क्षीरसागराय नमः॥ ॐ रं रत्नदीपाय नमः ॥ ॐ सुं सुधांबुधये नमः ॥ ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः वामांसे
ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः ॥ ॐ रं रत्नवेदिकायै नमः ॥इति हृदये ॥४॥ ॐ धं धर्माय नमः दक्षांसे ॥ ५ ॥ ॐ अं अज्ञानाय नमः
ॐ वैं वैराग्याय नमः वामोरौ ॥ ७ ॥ ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः दक्षोरौ ॥ ८ ॥ ॐ अं अधर्माय नमः वदने ॥ ९ ॥ ॐ आं आनंदकंदाय नमः ॥
वामपार्श्वे ॥ १० ॥ ॐ अं अवैराग्याय नमः नाभौ ॥ ११ ॥ ॐ अं अनैश्वर्याय नमः दक्षपार्श्वे ॥ १२ ॥ ॐ पं पंचाश
ॐ सं सविन्नालाय नमः॥ ॐ सं सर्वतत्त्वपद्माय नमः॥ ॐ प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः॥ ॐ विं विकारमयकेसरेभ्यो नमः ॥ ॐ रं
द्वर्णबीजाढ्यकर्णिकायै नमः ॥ ॐ अं अर्कमंडलाय द्वादशकलात्मने नमः ॥ ॐ चं चन्द्रमंडलाय षोडशकलात्मने नमः ॥ ॐ आं आत्मने
अग्निमंडलाय द्वादशकलात्मने नमः॥ॐ संसत्त्वबोधात्मने नमः ॥ ॐ रं रजःप्रकृत्यात्मने नमः ॥ ॐ तं तमोमोहात्मने नमः॥ॐ कं कलातत्त्वात्मने
नमः ॥ ॐ पं परमात्मने नमः ॥ ॐ अं अंतरात्मने नमः ॥ॐ ज्ञां ज्ञानात्मने नमः ॥ ॐ मां मायातत्त्वात्मने नमः ॥ ततः हृद्येव पूर्वाद्यष्टदिक्षु नव
नमः॥ॐ विं विद्यातत्त्वात्मने नमः ॥ॐ पं परतत्त्वात्मने नमः॥ ॐ शिं शिवतत्त्वात्मने नमः॥इति हृदये॥१३॥ ॐ रौं रौद्रायै नमः
पीठशक्तीर्न्यसेत् ॥ ॐ वां वामायै नमः पूर्वभागे ॥ ॐ ज्यें ज्येष्ठायै नमः आग्नेये ॥ ॐ श्रें श्रेष्ठायै नमः दक्षिणे ॥

नैर्ऋते ॥ ॐ कां काल्यै नमः पश्चिमे ॥ ॐ कं कलविकरण्यै नमः वायव्ये ॥ ॐ बं बलविकरण्यै नमः उत्तरे ॥ ॐ बं बलप्रमथिन्यै नमः ऐशान्ये ॥ ॐ सं सर्वभूतदमन्यै नमः ऊर्ध्वभागे ॥ ॐ मं मनोन्मन्यै नमः हृदयमध्ये ॥ १४ ॥ "ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्तायानंताय योगपीठात्मने नमः" इति मंत्रेण स्वहृदये पीठदेवतायै आसनं दत्त्वा आवरणदेवतान्यासं कुर्यात् ॥ १५ ॥ अथावरणदेवतान्यासः ॥ तत्र शिरसि ॐ ह्रां वां हृदये देवाय भूतनाथाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं वीं शिरसि देवाय आदिनाथाय नमः॥२॥ ॐ ह्रूं वं शिखायां देवायानंदनाथाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रैं वैं कवचदेवाय सिद्धशाबरनाथाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रौं वौं नेत्रदेवाय सहजानंदनाथाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रः वः अस्त्रदेवाय निःसीमानंदनाथाय नमः ॥ ६ ॥ इति प्रथमावरणदेवतान्यासः ॥ १ ॥ ललाटे ॐ डां डाकिनीपुत्रेभ्यो नमः ॥ १ ॥ ॐ शां शाकिनीपुत्रेभ्यो नमः ॥ २ ॥ ॐ लां लाकिनीपुत्रेभ्यो नमः ॥ ३ ॥ ॐ कां काकिनीपुत्रेभ्यो नमः ॥ ४ ॥ ॐ सां साकिनीपुत्रेभ्यो नमः ॥ ५ ॥ ॐ हां हाकिनीपुत्रेभ्यो नमः ॥ ६ ॥ ॐ मां मालिनीपुत्रेभ्यो नमः ॥ ७ ॥ ॐ दें देवीपुत्रेभ्यो नमः ॥ ८ ॥ ॐ मां मातृपुत्रेभ्यो नमः ॥ ९ ॥ ॐ रुं रुद्रपुत्रेभ्यो नमः ॥ १० ॥ ॐ ऊं ऊर्ध्वमुखपुत्रेभ्यो नमः ॥ ११ ॥ ॐ अं अधोमुखपुत्रेभ्यो नमः ॥ १२ ॥ इति द्वितीयावरणदेवतान्यासः ॥ २ ॥ कंठस्थाने ॐ ब्रं ब्रह्माणीपुत्रवटुकाय नमः ॥ १ ॥ ॐ मां माहेश्वरीपुत्रवटुकाय नमः ॥ २ ॥ ॐ कौं कौमारीपुत्रवटुकाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ वैं वैष्णवीपुत्रवटुकाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ इं इन्द्राणीपुत्रवटुकाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ मं महालक्ष्मीपुत्रवटुकाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ वां वाराहीपुत्रवटुकाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ चां चामुण्डापुत्रवटुकाय नमः ॥ ८ ॥ इति तृतीयावरणदेवतान्यासः ॥ ३ ॥ हृदये ॐ हें हेतुकाय नमः ॥ १ ॥ ॐ त्रिं त्रिपुरांतकाय नमः ॥ २ ॥ ॐ वें वेतालाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ अं अग्निजिह्वाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ कां कालांतकाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ कं करालाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ एं एयालाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ त्रीं त्रीमाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ अं अचलाय नमः ॥ ९ ॥ ॐ हां हाटकेशाय नमः ॥ १० ॥ इति चतुर्थावरणदेवतान्यासः ॥ ४ ॥ नाभौ ॐ श्रीं श्रीकण्ठाय नमः

॥ १ ॥ ॐ अं अनंतेशाय नमः ॥ २ ॥ ॐ सूं सूक्ष्मेशाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ अं अमींशाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ भां भारभूतीशाय नमः
॥ ५ ॥ ॐ अं अतिथीशाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ स्थां स्थाण्वीशाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ हं हरेशाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ झिं झिंटीशाय नमः
॥ ९ ॥ ॐ भौं भौतिकेशाय नमः ॥ १० ॥ ॐ सं सद्योजातेशाय नमः ॥ ११ ॥ ॐ अं अनुग्रहेशाय नमः ॥ १२ ॥ ॐ क्रूं
क्रूरेशाय नमः ॥ १३ ॥ ॐ मं महासेनेशाय नमः ॥ १४ ॥ इति पंचमावरणदेवतान्यासः ॥ ५ ॥ स्वाधिष्ठाने ॐ क्रों क्रोधीशाय
नमः ॥ १ ॥ ॐ चं चंडीशाय नमः ॥ २ ॥ ॐ पं पंचांतकेशाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ शिं शिवोत्तमेशाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ एं एकरुद्रे
शाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ कूं कूर्मेशाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ एं एकनेत्रेशाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ चं चतुराननेशाय नमः ॥ ॥ ८ ॥ ॐ अं
अजेशाय नमः ॥ ९ ॥ ॐ सं सर्वेशाय नमः ॥ १० ॥ ॐ सों सोमेशाय नमः ॥ ११ ॥ ॐ लां लांगलीशाय नमः ॥ १२ ॥ ॐ
दां दारुकेशाय नमः ॥ १३ ॥ ॐ अं अर्धनारीशाय नमः ॥ १४ ॥ ॐ उं उमाकांतेशाय नमः ॥ १५ ॥ ॐ आं आषाढीशाय
नमः ॥ १६ ॥ इति षष्ठावरणदेवतान्यासः ॥ ६ ॥ मूलाधारे ॐ दं दंडीशाय नमः ॥ १ ॥ ॐ अं अत्रीशाय नमः ॥ २ ॥ ॐ मीं
मीनेशाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ में मेघेशाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ लों लोहितेशाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ शिं शिखीशाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ छं
छगलंडेशाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ द्विं द्विरंडेशाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ मं महाकालीशाय नमः ॥ ९ ॥ ॐ वां वालीशाय नमः ॥ १० ॥
ॐ भुं भुजंगेशाय नमः ॥ ११ ॥ ॐ पिं पिनाकीशाय नमः ॥ १२ ॥ ॐ खं खड्गीशाय नमः ॥ १३ ॥ ॐ वं वकीशाय नमः
॥ १४ ॥ ॐ श्वें श्वेतेशाय नमः ॥ १५ ॥ ॐ भृं भृग्वीशाय नमः ॥ १६ ॥ ॐ नं नकुलीशाय नमः ॥ १७ ॥ ॐ शिं शिवे
शाय नमः ॥ १८ ॥ ॐ सं संवर्तकेशाय नमः ॥ १९ ॥ ॐ दिं दिव्ययोगिन्यै नमः ॥ २० ॥ ॐ अं अंतरिक्षयोगिन्यै नमः
॥ २१ ॥ ॐ भूं भूमिष्ठयोगिन्यै नमः ॥ २२ ॥ ॐ सं संवर्तयोगिन्यै नमः ॥ २३ ॥ इति सप्तमावरणदेवतान्यासः ॥ ७ ॥
पादयोः ॐ इं इंद्राय वज्रहस्ताय नमः ॥ १ ॥ ॐ अं अग्नये शक्तिहस्ताय नमः ॥ २ ॥ ॐ यं यमाय दंडहस्ताय नमः ॥ ३ ॥ ॐ

क्षं निर्ऋतये खड्गहस्ताय नमः ॥ ४ ॥ ॐ वं वरुणाय पाशहस्ताय नमः ॥ ५ ॥ ॐ वां वायवे अंकुशहस्ताय नमः ॥ ६ ॥ ॐ सों सोमाय गदाहस्ताय नमः ॥ ७ ॥ ॐ ईं ईशानाय त्रिशूलहस्ताय नमः ॥ ८ ॥ ॐ ब्रं ब्रह्मणे कमलहस्ताय नमः ॥ ९ ॥ ॐ अं अनंताय चक्रहस्ताय नमः ॥ १० ॥ इत्यष्टमावरणदेवतान्यासः ॥ ८ ॥ इति न्यासं कृत्वा श्रीकण्ठादिकलामातृकान्यासं कुर्यात् ॥ तथा च । ॐ अस्य श्रीकण्ठादिन्यासस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः । गायत्री छन्दः । अर्धनारीश्वरो देवता । हलो बीजानि । स्वराः शक्तयः । चतुर्विध पुरुषार्थसिद्ध्यर्थे न्यासे विनियोगः ॥ ॐ दक्षिणामूर्तिऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ अर्धनारीश्वरदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ हल्बीजेभ्यो नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ स्वरशक्तिभ्यो नमः पादयोः ॥ ५ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ ६ ॥ इति श्रीकंठादिना कलामातृकांतर्गतऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ह्लाँ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्लीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्लूं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्लैं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्लौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति श्रीकंठादिना कलामातृकांतर्गतकरन्यासः ॥ ॐ ह्लाँ हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्लीं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्लूं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ ह्लैं कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ ह्लौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ ह्लः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति श्रीकंठादिना कलामातृकांतर्गतहृदयादिषडंगन्यासः ॥ अथ ध्यानम् ॥ "पाशांकुशवराक्षस्रक्पाणिशीतांशुशेखरम् ॥ त्र्यक्षं रक्तसुवर्णाभमर्धनारीश्वरं भजे ॥१॥ बन्धूककांचननिभं रुचिराक्षमालां पाशांकुशौ च वरदं निजबाहुदंडैः॥बिभ्राणमिन्दुशकलाभरणं त्रिनेत्रमर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामः ॥ २ ॥" इति ध्यात्वा श्रीकण्ठाद्यान् न्यसेत् ॥ तद्यथा—ॐ ह्लौं अं श्रीकंठेशपूर्णोदरीभ्यां नमः मस्तके ॥ १ ॥ ॐ ह्लौं आं अनंतेशशिवराजाभ्यां नमः आननवृत्ते ॥ २ ॥ ॐ ह्लौं इं सूक्ष्मेशशाल्मलीभ्यां नमः दक्षिणनेत्रे ॥ ३ ॥ ॐ ह्लौं ईं त्रिमूर्तिलोलाक्षीभ्यां नमो वामनेत्रे ॥ ४ ॥ ॐ ह्लौं उं अमरेशवर्तुलाक्षीभ्यां नमो दक्षकर्णे॥५॥ ॐ ह्लौं ऊं अर्धीशदीर्घघोणाभ्यां नमो वामकर्णे ॥ ६ ॥ ॐ ह्लौं ऋं भारभूतीशदीर्घमुखीभ्यां नमः दक्षनासापुटे ॥ ७ ॥ ॐ ह्लौं ॠं अतिथीशगोमुखीभ्यां नमः वामनासापुटे ॥ ८ ॥ ॐ ह्लौं ऌं

स्थाणवीशदीर्घजिह्वाभ्यां नमो दक्षगंडे॥९॥ ह्लौं लृं हरेशकुंडोदरीभ्यां नमः वामगंडे ॥ १०॥ॐ ह्लौं पं झिण्टीशोर्ध्वकेशीभ्यां नमः ऊर्ध्वोष्ठे
॥ ११ ॥ ॐ ह्लौं ऐं भौतिकेशाविकृतमुखीभ्यां नमः अधरोष्ठे ॥ १२ ॥ ॐ ह्लौं ओं सद्योजातेशज्वालामुखीभ्यां नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ
॥ १३ ॥ ॐ ह्लौं औं अनुग्रहेशोल्कामुखीभ्यां नमः अधोदन्तपंक्तौ ॥ १४ ॥ ॐ ह्लौं अं अक्रूरेशश्रीमुखीभ्यां नमः शिरसि ॥ १५ ॥ ॐ
ह्लौं अः महासेनेशविद्यामुखीभ्यां नमः मुखमध्ये ॥ १६ ॥ ॐ ह्लौं कं क्रोधीशमहाकालीभ्यां नमः दक्षस्कन्धे ॥ १७ ॥ ॐ ह्लौं खं
चंडेशसरस्वतीभ्यां नमः दक्षकूर्परे ॥ १८ ॥ ॐ ह्लौं गं पञ्चांतकेशगौरीभ्यां नमः दक्षिणमणिबन्धे ॥ १९ ॥ ॐ ह्लौं घं शिवोत्तमेश
त्रैलोक्यविजयाभ्यां नमः दक्षहस्तांगुलिमूले ॥ २० ॥ ॐ ह्लौं ङं एकरुद्रेशमंत्रशक्तिभ्यां नमः दक्षहस्तांगुल्यग्रे ॥ २१ ॥ ॐ ह्लौं चं
कर्मेशात्मशक्तिभ्यां नमः वामस्कन्धे ॥ २२ ॥ ॐ ह्लौं छं एकाननेशभूतमातृकाभ्यां नमः वामकूर्परे ॥ २३ ॥ ॐ ह्लौं जं चतुराननेश
लम्बोदरीभ्यां नमः वाममणिबन्धे ॥ २४ ॥ ॐ ह्लौं झं अंजेशद्रविणीभ्यां नमः वामहस्तांगुलिमूले ॥२५ ॥ ॐ ह्लौं ञं सर्वेशनागरीभ्यां
नमः वामहस्तांगुल्यग्रे ॥ २६ ॥ ॐ ह्लौं टं सोमेशखेचरीभ्यां नमः दक्षपादमूले ॥ २७ ॥ ॐ ह्लौं ठं लंगलीशमंजरीभ्यां नमः
दक्षजानुनि ॥ २८ ॥ ॐ ह्लौं डं दारुकेशभागिनीभ्यां नमः दक्षगुल्फे ॥ २९ ॥ ॐ ह्लौं ढं अर्धनारीश्वरेशवारुणीभ्यां नमः दक्ष
पादांगुलिमूले ॥ ३० ॥ ॐ ह्लौं णं उमाकांतेशवृकोदरीभ्यां नमः दक्षपादांगुल्यग्रे ॥ ३१ ॥ ॐ ह्लौं तं आषाढीशपूतनाभ्यां नमः
वामपादमूले ॥ ३२ ॥ ॐ ह्लौं थं दंडीशभद्रकालीभ्यां नमः वामजानुनि ॥ ३३ ॥ ॐ ह्लौं दं अत्रीशयोगिनीभ्यां नमः वामगुल्फे
॥ ३४ ॥ ॐ ह्लौं धं मीनेशशंखिनीभ्यां नमः वामपादांगुलिमूले ॥ ३५ ॥ ॐ ह्लौं नं मेषशतर्जनीभ्यां नमः वामपादांगुल्यग्रे
॥ ३६ ॥ ॐ ह्लौं पं लोहितेशकालरात्रिभ्यां नमः दक्षकुक्षौ ॥ ३७ ॥ ॐ ह्लौं फं शिखीशकुण्डलिनीभ्यां नमः वामकुक्षौ ॥ ३८ ॥
ॐ ह्लौं बं छागलण्डेशकपर्दिनीभ्यां नमः पृष्ठे ॥ ३९ ॥ ॐ ह्लौं भं द्विरण्डेशवज्राभ्यां नमः नाभौ ॥ ४० ॥ ॐ ह्लौं मं महाकालेश
जयाभ्यां नमः उदरे ॥ ४१ ॥ ॐ ह्लौं यं त्वगात्मभ्यां वालीशसुमुखेश्वरीभ्यां नमः हृदये ॥ ४२ ॥ ॐ ह्लौं रं असृगात्मभ्यां

भुजंगेशरेवतीभ्यां नमः दक्षांसे ॥ ४३ ॥ ॐ ह्लौं लं मांसात्मभ्यां पिनाकीशमाधवीभ्यां नमः ककुदि ॥ ४४ ॥ ॐ ह्लौं वं मेदआत्मभ्यां खड्गीशवारुणीभ्यां नमः वामांसे ॥ ४५ ॥ ॐ ह्लौं शं अस्थ्यात्मभ्यां केशवायवीभ्यां नमः हृदयादिदक्षकराग्रांतम् ॥ ४६ ॥ ॐ ह्लौं षं मज्जात्मभ्यां श्वेतेशरक्षोवधारिणीभ्यां नमः हृदयादिवामकराग्रांतम् ॥ ४७ ॥ ॐ ह्लौं सं शुक्रात्मभ्यां भृग्वीशसहजाभ्यां नमः हृदयादिवामपादांतम् ॥ ४८ ॥ ॐ ह्लौं हं प्राणात्मभ्यां लकुलीशलक्ष्मीभ्यां नमः हृदयादिदक्षपादांतम् ॥ ४९ ॥ ॐ ह्लौं ळं शक्त्यात्मभ्यां शिवेशव्यापिनीभ्यां नमः हृदयादिनाभ्यंतम् ॥ ५० ॥ ॐ ह्लौं क्षं परमात्मभ्यां संवर्तकेशमायाभ्यां नमः हृदयादिशिरोऽतम् ॥५१॥ इति विन्यस्य ध्यायेत् ॥ " अत्र रुद्राः स्मृता रक्ता धृतशूलकपालकाः ॥ शक्तयो रुद्रपीठस्थाः सिंदूरारुणविग्रहाः ॥ रक्तोत्पलकपालाभ्यामलंकृतकरांबुजाः ॥ १ ॥ " इति श्रीकण्ठादिकलामातृकान्यासं कृत्वा प्रयोगोक्तन्यासादिकं कुर्य्यात् ॥ ततः । पीठादौ रचिते लिंगतोभद्रमंडले सर्वतोभद्रमंडले वा तन्मध्ये मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः स्थापयेत् ॥ तत्र क्रमः । पुष्पाक्षतानादाय स्ववामभागे श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ १ ॥ दक्षिणे गणपतये नमः ॥ २ ॥ मध्ये स्वेष्टदेवतायै नमः ॥ ३ ॥ इति संपूज्य ततः पीठमध्ये ॐ मं मंडूकाय नमः ॥ १ ॥ ॐ कं कालाग्निरुद्राय नमः ॥ २ ॥ ॐ आं आधारशक्तये नमः ॥ ३ ॥ ॐ कूं कूर्म्माय नमः ॥ ४ ॥ ॐ अं अनंताय नमः ॥ ५ ॥ ॐ पृं पृथिव्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ क्षीं क्षीरसागराय नमः ॥ ७ ॥ ॐ रं रत्नदीपाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ रं रत्नमंडपाय नमः ॥ ९ ॥ ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः ॥ १० ॥ ॐ रं रत्नवेदिकायै नमः ॥ ११ ॥ ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः ॥ १२ ॥ इति पूजयेत् ॥ आग्नेय्याम् ॐ धं धर्म्माय नमः ॥ १३ ॥ नैर्ऋत्याम् ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः ॥ १४ ॥ वायव्याम् ॐ वैं वैराग्याय नमः ॥ १५ ॥ ऐशान्याम् ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः ॥ १६ ॥ पूर्वे ॐ अं अधर्माय नमः ॥ १७ ॥ दक्षिणे ॐ अं अज्ञानाय नमः ॥ १८ ॥ पश्चिमे ॐ अं अवैराग्याय नमः ॥ १९ ॥ उत्तरे ॐ अं अनैश्वर्याय नमः ॥ २० ॥ इति पूजयेत् ॥ पुनः पीठमध्ये । ॐ आं आनंदकंदाय नमः ॥ २१ ॥ ॐ सं संविन्नालाय नमः ॥ २२ ॥ ॐ सं सर्वतत्त्वकमलासनाय नमः ॥ २३ ॥ ॐ प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः ॥ २४ ॥ ॐ विं विकारमयकेसरेभ्यो

ॐ सौं सोममंडलाय
नमः ॥ २५ ॥ ॐ पं पञ्चाशद्वर्णाढ्यकर्णिकाभ्यो नमः ॥ २६ ॥ ॐ अं अर्कमंडलाय द्वादशकलात्मने नमः ॥ २७ ॥ ॐ सौं सोममंडलाय
षोडशकलात्मने नमः ॥ २८ ॥ ॐ वं वह्निमंडलाय दशकलात्मने नमः ॥ २९ ॥ ॐ सं सत्त्वाय नमः ॥ ३० ॥ ॐ रं रजसे
नमः ॥ ३१ ॥ ॐ तं तमसे नमः ॥३२॥ ॐ आं आत्मने नमः ॥ ३३ ॥ ॐ पं परमात्मने नमः ॥ ३४ ॥ ॐ अं अंतरात्मने नमः ॥ ३५॥ ॐ
ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः ॥ ३६ ॥ ॐ मां मायातत्त्वाय नमः ॥३७॥ ॐ कं कलातत्त्वाय नमः ॥ ३८ ॥ ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः ॥ ३९॥ ॐ
पं परतत्त्वाय नमः ॥ ४० ॥ एवं पीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ पूर्वे ॐ वां वामायै नमः ॥ १ ॥ आग्नेय्याम् ॐ ज्यें ज्येष्ठायै
नमः ॥ २ ॥ दक्षिणे । ॐ रौं रौद्र्यै नमः ॥ ३ ॥ नैर्ऋत्ये । ॐ कां काल्यै नमः ॥ ४ ॥ पश्चिमे । ॐ कं कलविकरण्यै नमः ॥ ५॥ वायव्ये ।
ॐ बं बलविकरण्यै नमः ॥ ६ ॥ उत्तरे । ॐ बं बलप्रमथिन्यै नमः ॥ ७ ॥ ऐशान्ये । ॐ सं सर्वभूतदमन्यै नमः ॥ ८ ॥ पीठमध्ये ॥ ॐ
मं मनोन्मन्यै नमः ॥९॥ इति पीठशक्तीः पूजयेत्॥ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां
च दद्यात् ॥ स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य ॥ शक्तिगंधाष्टकेन यंत्रं विलिख्य "ॐ नमो भगवते वटुकाय सकलगुणात्मशक्तियुक्तायानंताय
योगपीठात्मने नमः॥" इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा वक्ष्यमाणं देवयंत्रं पूजनं विनैव केवलं पीठमध्ये संस्थाप्य पात्रासादनं कुर्यात् तत्रादौ
साम्बकलशस्थापनम्॥ देवदक्षिणे यक्षकर्दममिश्रितजलेन भूमिं विलिप्य त्रिकोणं च कृत्वा जलेन प्रोक्ष्य ततस्त्रिकोणांतर्मायां 'ह्रीं' विलिख्य
त्रिकोणेषु कूटत्रयेण संपूजयेत् ॥ तद्यथा—मूलस्य खंडत्रयं कृत्वा अग्निकोणे प्रथमकूटं दक्षिणकोणे द्वितीयकूटं वामकोणे तृतीयकूटं च संपूज्य

१ लिंगस्थां पूजयेद्देवीं पुस्तकस्थां तथैव च ॥ मण्डलस्थां महामायां यंत्रस्थां प्रतिमासु च॥सौवर्णे राजते ताम्रे पट्टे मूर्तौ च वा भुवि ॥ विना यंत्रेण चेत्पूजा देवता न प्रसीदति ॥
२ स्वयंभूकुसुमं कुण्डगोलोत्थं रोचनागरू । काश्मीरमृगनाभिं च साद्रं च मलयोद्भवम् । एष गंधः समाख्यातः सर्वदा चण्डिकाप्रियः ॥ ३ "कुलार्णवे-स्वर्णरूप्यशिलाकूर्मकपालालाबु
मृन्मयम् ॥ नारिकेलं च शंखं च मुक्ताः शुक्तिसमुद्भवम् ॥ पुण्यवृक्षसमुद्भूतं पात्रसंलोलितं शुभम्॥ साध्यसाधकयोर्मध्ये षट् त्रिंशदंगुलं भवेत्॥द्वादशांगुलमर्द्धं च ह्यधोभागे तथांगुलम्॥
द्वादशांगुलमध्ये तु तत्र संस्थापयेद्बुधः ॥ स्वार्थे च द्वादश त्यक्त्वा दिवा च द्वादश त्यजेत् ॥ द्वादशांगुलमध्यस्थं तत्र चार्घ्यं निधापयेत् ॥ ४ यक्षकर्दममाह धन्वंतरिः-कर्पूरागरुकस्तूरी
कुंकुमं चंदनं तथा ॥ महासुगंधिरित्युक्तो नामतो यक्षकर्दमः ॥ ५ मूलेन खण्डत्रयं कृत्वा कूटसंज्ञो भवति ।

त्रिकोणमध्ये ह्रींकारदेशे ॐ ह्रीं आधारशक्तिभ्यो नमः । इति आधारशक्तीः पूजयेत् ॥ ततः मूलेन नमः इति त्रिपदा आधारं प्रक्षाल्य त्रिकोणमध्ये संस्थाप्य ततः प्रथमकूटमुच्चार्य धर्मप्रददशकलाव्याप्तात्मने वह्निमंडलाय नमः इत्याधारं संपूज्य पूर्वादिक्रमेण दश वह्निकला यजेत् ॥ तद्यथा—यं धूम्रार्चिषे नमः ॥ १ ॥ रं ऊष्मायै नमः ॥ २ ॥ लं ज्वालिन्यै नमः ॥ ३ ॥ वं ज्वालिन्यै नमः ॥ ४ ॥ शं विस्फुलिंगिन्यै नमः ॥ ५ ॥ षं सुश्रियायै नमः ॥ ६ ॥ सं सुरूपायै नमः ॥ ७ ॥ हं कपिलायै नमः ॥८॥ लं हव्यवाहायै नमः ॥ ९ ॥ क्षं कव्यवाहायै नमः ॥१०॥ इति पूजयेत् ॥ ततो मूलेनास्त्राय फट् ॥ इति कलशं प्रक्षाल्य आधारोपरि हस्तद्वयेन संस्थाप्य रक्तवस्त्रमाल्या दिभिर्भूषयित्वा ततो द्वितीयकूटमुच्चार्य "ॐ अर्थप्रदद्वादशकलाव्याप्तात्मने सूर्यमंडलाय नमः" इति कलशं संपूज्य तद्गात्रे पूर्वादिषु सूर्यस्य द्वादश कलाः पूजयेत् । तद्यथा—ॐ कं भं तपिन्यै नमः ॥ १ ॥ ॐ खं बं तापिन्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ गं फं धूम्रायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ घं पं मरीच्यै नमः॥४॥ ॐ ङं नं ज्वालिन्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ चं धं रुच्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ छं दं सुषुम्णायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ जं थं भोगदायै नमः ॥ ८ ॥ ॐ झं तं विश्वायै नमः ॥ ९ ॥ ॐ ञं णं बोधिन्यै नमः ॥ १० ॥ ॐ टं ढं धारिण्यै नमः ॥ ११ ॥ ॐ ठं डं क्षमायै नमः ॥ १२ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः शुद्धोदकेन मुखपर्यंतं घटमापूर्य " ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ॥ नर्मदे सिंधुकावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु " इति तीर्थान्यावाह्य ततस्तृतीयकूटमुच्चार्य "ॐ कामप्रदषोडशकलाव्याप्तात्मने सोममंडलाय नमः" इति जले पूजयित्वा पूर्वादिषु षोडश सोमकला यजेत् । तद्यथा—ॐ अं अमृतायै नमः ॥ १ ॥ ॐ आं मानदायै नमः ॥ २ ॥ ॐ इं पूषायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ ईं तुष्ट्यै नमः ॥ ४ ॥ ॐ उं पुष्ट्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ ऊं रत्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ ऋं धृत्यै नमः ॥ ७ ॥ ॐ ॠं शशिन्यै नमः ॥ ८ ॥ ॐ ऌं चन्द्रिकायै नमः ॥ ९ ॥ ॐ ॡं कान्त्यै नमः ॥ १० ॥ ॐ एं ज्योत्स्नायै नमः ॥ ११ ॥ ॐ ऐं श्रियै नमः ॥ १२ ॥ ॐ ओं प्रीत्यै नमः ॥ १३ ॥ ॐ औं अंगदायै नमः ॥ १४ ॥ ॐ अं पूर्णायै नमः ॥ १५ ॥ ॐ अः पूर्णामृतायै नमः ॥ १६ ॥ इति पूजयित्वा देवं ध्यायेत् ॥ इति साम्बकलशस्थापनम् ॥ १ ॥ अथ सुधाकुंभस्थापनम् ॥ स्ववामे

त्रिकोणं षट्कोणं वृत्तं चतुरस्रं मंडलं कृत्वा शंखमुद्रया मंडलं स्पर्शयेत् । ततस्त्रिकोणांतरमयं विलिख्य त्रिकोणेषु कूटत्रयं पूजयेत्। तद्यथा— अग्निकोणे प्रथमकूटं दक्षिणकोणे द्वितीयकूटं वामकोणे तृतीयकूटं च पूजयेत् ॥ ततः षट्कोणेषु अग्निकोणे ॐ हृदयशक्तिभ्यां नमः।ऐशान्ये ॐ शिरःशक्तिभ्यां नमः।वायव्ये-शिखाशक्तिभ्यां नमः।नैर्ऋते-कवचशक्तिभ्यां नमः । पूर्वे नेत्रशक्तिभ्यां नमः।पश्चिमे अस्त्रशक्तिभ्यां नमः।इति षडंगानि गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य षट्कोणाद्बहिर्वर्तुले अकारादिक्षकारांतं मातृकां संपूजयेत् ॥ ततो वर्तुलाद्बहिश्चतुरस्रे पूर्वद्वारे उड्यानपीठाय नमः।दक्षिणद्वारे जालंधरपीठाय नमः । पश्चिमद्वारे पूर्णगिरिपीठाय नमः । उत्तरद्वारे कामगिरिपीठाय नमः॥इति चतुःपीठानि गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य त्रिकोणमध्ये 'ॐ ह्रीं आधारशक्तिभ्यो नमः'इत्याधारशक्तीः पूजयेत्॥ ततो मूलेन 'नमः' इति मंत्रेणाधारद्रव्यं प्रक्षाल्य मंडलोपरि संस्थाप्य ततः प्रथमकूटमुच्चार्य "ॐ धर्मप्रदशकलाव्यात्मने वह्निमंडलाय नमः" इति संपूज्य पूर्वादिषु दश वह्निकला यजेत्। तथा च— ॐ यं धूम्रार्चिषे नमः ॥ १ ॥ ॐ रं ऊष्मायै नमः ॥ २ ॥ ॐ लं ज्वलिन्यै नमः ॥ ३ ॥ ॐ वं ज्वालिन्यैः नमः ॥ ४ ॥ ॐ शं विस्फुलिंग्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ षं सुश्रियै नमः ॥ ६ ॥ ॐ सं सुरूपायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ हं कपिलायै नमः ॥ ८ ॥ ॐ लं हव्यवाहायै नमः ॥ ९ ॥ ॐ क्षं कव्यवाहायै नमः ॥ १० ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः मूलेनास्त्राय फट् इति मंत्रेण कलशं प्रक्षाल्य रक्तवस्त्र माल्यादिभिर्भूषयित्वा रत्नखचितं तत्पात्रं त्रिपदाधारोपरि हस्तद्वयेन संस्थाप्य द्वितीयकूटमुच्चार्य्य "ॐ अर्थप्रदद्वादशकलाव्यात्मने सूर्यमंडलाय नमः" इति मंत्रेण कलशं स्पृष्ट्वा पूर्वादिषु द्वादश सूर्यकला यजेत् । तथा च—ॐ कं भं तपिन्यै नमः ॥ १ ॥ ॐ खं बं तापिन्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ गं फं धूम्रायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ घं पं मरीच्यै नमः ॥ ४ ॥ ॐ ङं नं ज्वालिन्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ चं धं रुच्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ छं दं सुषुम्णायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ जं थं भोगदायै नमः ॥ ८ ॥ ॐ झं तं विविश्वायै नमः ॥ ९ ॥ ॐ ञं णं बोधिन्यै नमः ॥ १० ॥ ॐ टं ढं धारिण्यै नमः ॥ ११ ॥ ॐ ठं डं क्षमायै नमः ॥ १२ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः सुवासित वस्त्रगालिततीर्थामृतेन घटमापूर्य्य तृतीयकूटमुच्चार्य "ॐ कामप्रदषोडशकलाव्यात्मने सोममंडलाय नमः" इति संप्रोक्ष्य तदमृते षोडश

चन्द्रकला यजेत् ॥ तथा च—ॐ अं अमृतायै नमः ॥ १ ॥ॐ आं मानदायैः नमः ॥ २ ॥ ॐ इं पूषायै नमः ॥३॥ ॐ ईं तुष्ट्यै नमः ॥ ४ ॥ ॐ उं पुष्ट्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ ऊं रत्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ ऋं धृत्यै नमः ॥ ७ ॥ ॐ ॠं शशिन्यै नमः ॥ ८ ॥ ॐ लृं चन्द्रिकायै नमः ॥ ९ ॥ ॐ लॄं कांत्यै नमः ॥ १० ॥ ॐ एं ज्योत्स्नायै नमः ॥ ११ ॥ ॐ ऐं श्रियै नमः ॥ १२ ॥ ॐ ओं प्रीत्यै नमः ॥ १३ ॥ ॐ औं अंगदायै नमः ॥ १४ ॥ ॐ अं पूर्णायै नमः ॥ १५ ॥ ॐ अः पूर्णामृतायै नमः ॥ १६ ॥ इति संपूज्य द्रव्यशुद्धिं कुर्यात्॥ तथा च--"ॐ सुधादेव्यै च विद्महे कामेश्वर्यै च धीमहि॥ तन्नो रक्ताक्षी प्रचोदयात् च" इति सुधागायत्रीमंत्रेण दशधाभिमंत्र्य मूलमंत्रं दशधा जपेत् ॥ इति शुद्धिं संपाद्य शापमोचनं कुर्यात्। तथा च—ॐ एवमेव परं ब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं ध्रुवम् ॥ कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम् ॥ १ ॥ सूर्यमंडलसंभूते वरुणालयसम्भवे ॥ आस्यबीजमये देवि शुक्रशापाद्विमुच्यताम् ॥ २ ॥ वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि ॥ तेन सत्येन ते देवि ब्रह्महत्या व्यपोहतु ॥ ३ ॥ इति मंत्रेण सुधायामाच्छाद्य मंत्र पठेत् ॥ तत्र मंत्रः ॥ 'ॐ सां सीं सूं सैं सौं सः शुक्रशापविमोचिकायै सुधादेव्यै नमः ॥ १ ॥' इति द्वादशधा जपेत् ॥ 'ॐ व्रां व्रीं व्रूं व्रैं व्रौं व्रः ब्रह्मशापविमोचिकायै सुरादेव्यै नमः' इति दशधा जपेत् ॥ २ ॥ 'ॐ ह्रीं श्रीं क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः सुधाकृष्णशापं विमोचय २ अमृतं स्रावय २ स्वाहा' इति दशधा जपेत् ॥ ३ ॥ 'ॐ रां रीं रूं रैं रौं रः रुद्रशापविमोचिकायै सुरादेव्यै नमः' इति दशधा जपेत् ॥ ४ ॥ इति शुक्रब्रह्मकृष्णरुद्रशापोद्धारणं कृत्वा दशदोषनिवारणं कुर्यात् ॥ तथा च—'ॐ ह्रीं क्रीं परमस्वामिनि परमाकाशशून्यवाहिनि चन्द्रसूर्याग्निभक्षिणि पात्रं विश विश स्वाहा' इति मंत्रं पात्रोपरि दशधा जपेत् ॥ १ ॥ 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महेश्वराय विद्महे सुधादेव्यै च धीमहि ॥ तन्नोऽर्द्धनारीश्वरः प्रचोदयात्' इति मंत्रं पात्रोपरि दशधा जपेत् ॥ २ ॥ इति मंत्रद्वयं पठित्वा ततो दशदोषनिवारणार्थं दशमंत्रद्वारा पात्रोपरि अक्षतान्निःक्षिपेत्। तद्यथा-'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पथिकदेवताभ्यो हुं फट् स्वाहा' ॥१॥ 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फें यं रं लं आं आस्फालिनी ग्रामचांडालिनी हुं फट् स्वाहा' ॥२॥ 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां संगमस्पर्शचाऽऽलिनी हुं

फट् स्वाहा '॥ ३ ॥'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फें घं ङं लं क्षं दृष्टिचांडालिनी हुं फट् स्वाहा '॥ ४ ॥ 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ग्लौं ग्लां क्रोधचांडालिनी हुं
फट् स्वाहा '॥ ५ ॥ 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं सृष्टिचांडालिनी हुं फट् स्वाहा' ॥ ६ ॥ 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं क्रों घटचांडालिनी हुं फट् स्वाहा'
॥ ७ ॥ ' ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं छं तपनीयवधचांडालिनी हुं फट् स्वाहा ॥ ८ ॥' 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षं आं क्रों क्रीं :निर्दयचांडालिनी हुं फट्
स्वाहा' ॥ ९ ॥ ' ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्रूं छं स्रां स्रौं खेदय खेदय सर्वजनसृष्टिस्पर्शदोषाय हुं फट् स्वाहा' ॥ १० ॥ इत्युक्त्वा कुंभोपरि अक्षता
न्निःक्षिपेत् ॥ ततः 'ॐ हंसः शुचिषद्वसुरंतरिक्षसद्धोतावेदिषदतिथिर्दुरोणसत् ॥ नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जागोजाऋतजा अद्रिजाऋतं
बृहत् ॥ १ ॥' इत्यनेन त्रिवारं द्रव्योपरि पठित्वा गन्धपुष्पाणि निःक्षिप्य द्रव्यं शुद्धमिति भावयन् दोषरहितद्रव्यमध्ये आनंदभैरवमानंद
भैरवीं च ध्यायेत् ॥ अथानंदभैरवध्यानम् ॥ 'सूर्यकोटिप्रतीकाशं चंद्रकोटिसुशीतलम् ॥ अष्टादशभुजं देवं पंचवक्त्रं त्रिलोचनम् ॥ १ ॥
अमृतार्णवमध्यस्थं ब्रह्मपद्मोपरि स्थितम् ॥ वृषारूढं नीलकंठं सर्वाभरणभूषितम् ॥ २ ॥ कपालखट्वांगधरं घंटाडमरुवादिनम् ॥ पाशांकु
शधरं देवं गदामुसलधारिणम् ॥ ३ ॥ खड्गखेटकपट्टीशमुद्गरं शूलकुंतलम् ॥ विधृतं खेटकं मुंडं वरदाभयपाणिकम् ॥ ४ ॥ लोहितं
देवदेवेशं भावयेत्साधकोत्तमः ॥ ५ ॥' इति ध्यात्वा ॥ ' ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं हसक्षमलवरयूं आनंदभैरवाय वौषट् ' इति मंत्रेणानंदभैरवं
त्रिः संपूज्य आनंदभैरवीं ध्यायेत् ॥ तद्यथा-" भावयेच्च सुरां देवीं चन्द्रकोटियुतप्रभाम् ॥ हेमकुंदेंदुधवलां पंचवक्त्रां त्रिलोचनाम् ॥१॥
अष्टादशभुजैर्युक्तां सर्वानंदकरोद्यताम्॥प्रहसंतीं विशालाक्षीं देवदेवस्य संमुखीम् ॥२॥" इति ध्यात्वा 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसक्षमलवरयीं सुधा
देव्यै वौषट् ।'इत्यानंदभैरवीं संपूजयेत् । ततः स्थालीमध्ये किंचिद्द्रव्यं गृहीत्वा द्रव्यमध्ये शक्तिचक्रं विलिख्य तदभावे त्रिकोणदक्षावर्तेन
विलिख्य ऊर्ध्वरेखायाम्-अंआंइंईउंऊंऋंॠंऌंॡंएंऐंओंऔंअंअः दक्षिणरेखायाम्-कंखंगंघंङंचंछंजंझंञंटंठंडंढंणंतं उत्तररेखायाम्-थंदंधंनंपंफं
बंभंमंयंरंलंवंशंषंसंहं दक्षिणपार्श्वे-ॐ लं नमः वामपार्श्वे-ॐ क्षं नमः त्रिकोणमध्ये-कामकलां'ईं'इति विलिख्य द्रव्यमध्ये अमृतत्वं विचिंत
येत्।तत्र मंत्रः "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं अमृते अमृतोद्भव अमृतवर्षिणि अमृतस्वरूपिणि अमृतं स्रावय स्रावय शुक्रादिशापात् सुरां मोचय मोचय

मोचिकायै नमः" इति विचिंतयेत् । ततः "ह्रीं ॐ जूं सः" इति मत्युंजयमंत्रं द्वाविंशातिवारं जपित्वा तेनैव मंत्रेण द्रव्यं कलशे क्षिप्त्वा मूलेनाष्टधाऽभिमंत्र्य सुधामंत्रेणाभिमंत्रयेत् ॥ तत्र मंत्रः ॥"पावमानः परानन्दः पावमानः परो रसः॥ पावमानं परं ज्ञानं तेन ते पावयाम्य हम्"इति अभिमंत्रयेत्-पश्चाद्धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य मत्स्यमुद्रयाच्छाद्य कवचेनावगुंठ्य चक्रेण संरक्ष्य अस्त्रेण च्छोटिकाभिर्दशदिग्बंधनं कृत्वा कलशं ध्यायेत् ॥ अथ कलशध्यानम् ॥ "देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ ॥ उत्पन्नोऽसि महाकुंभ विष्णुना विधृतः करे ॥१॥ त्वत्तोये सर्वदेवाः स्युः सर्वे वेदाः समाश्रिताः॥त्वयि तिष्ठंति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥२॥शिवस्त्वं च घटोऽसि त्वं विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः॥ आदित्याद्या ग्रहाः सर्वे विश्वेदेवाः सपैतृकाः॥३॥ त्वयि तिष्ठंति कलशे यतः कामफलप्रदाः ॥ त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव ॥ ॥४ ॥ त्वदालोकनमात्रेण भुक्तिमुक्तिफलं महत् ॥ सान्निध्यं कुरु भो कुंभ प्रसन्नो भव सर्वदा ॥५॥"इति ध्यात्वा घटसूक्तं पठेत्॥ अथ घटसूक्तम्"समुद्रे मथ्यमाने तु क्षीरोदे सागरोत्तमे ॥ तत्रोत्पन्नां सुरां ध्यायेत्कन्यकारूपधारिणीम् ॥ १ ॥ अष्टादशभुजां देवीं रक्तांतायत लोचनाम् ॥ आपीनवर्णां स्वर्णाभां बहुरूपां परां सुराम्॥२॥तां सर्वां तु सुरां सर्वदेवानामभयंकरीम्॥ या सुरा सा रमा देवी यो गन्धः स जनार्दनः ॥३॥ यो वर्णः स भवेद्ब्रह्मा यो मदः स महेश्वरः ॥ स्वादे तु संस्थितः सोमः शब्दसंस्थो हुताशनः॥४॥ इच्छायां मन्मथो देवः पाताले तु च भैरवः ॥ घटो ब्रह्मा रसो विष्णुर्बिंदवो रुद्र एव च ॥ ५ ॥ हुंकार ईश्वरः प्रोक्तो ह्युन्मोदस्तु सदाशिवः ॥घटमूले स्थितो ब्रह्मा घटमध्ये तु माधवः ॥ ६ ॥ घटकंठे नीलकंठो घटाग्रे सर्वदेवताः ॥ लघ्वी हि वारुणी देवी महामांसचरुप्रिया ॥ ७ ॥ सर्वविद्या तु या देवी सुरादेवि नमोऽस्तु ते ॥ अनेन घटसूक्तेन द्रव्यशुद्धिः प्रजायते ॥ ८ ॥" एवं घटसूक्तं पठित्वा कलशे प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् ॥ अथ कलशप्राणप्रतिष्ठाप्रयोगः॥ करेणाच्छाद्य ॐ आं ह्रीं क्रोंयँ रं लं वं शं पं सं हंसः सोऽहं श्रीमद्बटुकभैरवस्याधारसहितस्य कलशेऽस्मिन् अग्निसूर्यसोमकलानां प्राणा इह प्राणाः ।पुनः ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हंसः सोहं श्रीमद्बटुकभैरवस्यास्मिन्कलशे जीव इह

१ श्यामारहस्ये-अमृतं चिंतयेद्द्रव्यमष्टधा त्वमृतं जपेत् ॥ अष्टधा मूलमंत्रं च जपेत्कृत्वा घटं ततः ॥

स्थितः । पुनः ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हंसः सोऽहं श्रीमद्वटुकभैरवस्यास्मिन्कलशे सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुर्जिह्वाश्रोत्रघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा ॥ ३॥ इति प्राणान्प्रतिष्ठाप्य गंधादिभिः संपूज्य तत्र कलशे चतुर्दिक्षु पंच रत्नानि पूजयेत् । तद्यथा-पूर्वे ॐ ग्लूं गगनरत्नाय नमः। दक्षिणे-ॐ स्लूं स्वर्गरत्नाय नमः । पश्चिमे-ॐ प्लूं पातालरत्नाय नमः।उत्तरे-ॐ म्लूं मर्त्यरत्नाय नमः । मध्ये-ॐ न्लूं नागरत्नाय नमः ॥ एवं पंचरत्नानि संपूज्य पंचमुद्रया नमस्कृत्य कलशे बलिं दद्यात् ॥ तद्यथा—कुंभसमीपे रक्तचन्दनसिंदूरकुंकुममेकत्र मेलयित्वा तेन त्रिकोणवृत्तचतुरस्रमंडलं कृत्वा तत्र 'सर्वपथिकदेवेभ्यो नमः' इति गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य तदुपरि द्रव्यशुद्धिमीनमुद्रान्वितं बलिं निधाय तत्त्वमुद्रया बलिमुत्सृज्य तं बलिं वामपाणिना कलशोपरि त्रिधा भ्रामयित्वा मूलमुच्चरन्पूजाबाह्ये निःक्षिपेत्॥इति सुधाकलशस्थापनविधिः॥अथ शुद्धिस्थापनविधिः॥कुम्भस्य वामतः शुद्धिं संस्थाप्य पात्रासादनं कुर्यात्॥ तद्यथा-कुंभस्य वामतः सांबकलशस्थापनोक्तविधिना शुद्धिं संस्थाप्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य "ॐउद्बुध्यस्व पशो त्वं हि न पशुस्त्वं शिवोऽसि भो॥ शिवाकृत्यमिदं पिंडं यतस्त्वं शिवतां व्रज ॥१॥ ॐ पशुपाशाय विद्महे शिरश्छेदाय धीमहि । तन्नश्छागः प्रचोदयात् ॥२ ॥ "इति त्रिवारं पठेत् ॥ इति शुद्धिस्थापनम् ॥ इति शुद्धिं संस्थाप्य पात्रासादनं कुर्यात्। अथ पात्रासादनप्रयोगः ॥ तत्रादौ शंखस्थापनप्रयोगः ॥ देववामतः सांबकलशस्थापनोक्तविधिना शंखं संस्थाप्य गंधादिभिः संपूज्याभिमंत्रयेत् । तंत्र मंत्रः ॥ " ॐ शंखादौ चन्द्रदैवत्यं कुक्षौ वरुणदेवता ॥ पृष्ठे प्रजापतिश्चैवमग्रे गंगा सरस्वती ॥ १ ॥ त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया ॥ शंखे तिष्ठंति विप्रेन्द्र तस्माच्छंखं प्रपूजयेत् ॥ २ ॥ इत्यभिमंत्र्य प्रार्थयेत् ॥ तत्र मंत्रः ॥ "ॐ त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे ॥ निर्मितः सर्वदेवैश्च पांचजन्य नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥" इति संप्रार्थ्य । " ॐ पांचजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि ॥ तन्नः शंखः प्रचोदयात् ॥ " इत्यष्टधा

१ वामे शंखं प्रतिष्ठाप्य मध्ये चार्घ्यं प्रकल्पयेत् ॥ दक्षिणे प्रोक्षणीपात्रमर्घ्यत्रयविकल्पने ॥ दृष्ट्वार्घ्यपात्रं देवेशि ब्रह्माद्या देवताः सदा ॥ नृत्यंति सर्वयोगिन्यः प्रीताः सिद्धिं ददत्यपि ॥ आदौ कुंभं तथा शंखं श्रीपात्रं शक्तिपात्रकम् ॥ गुरुपात्रं वीरपात्रं बलिपात्रं तथैव च ॥

जपित्वा शंखमुद्रां प्रदर्शयेत् । इति शंखस्थापनम् ॥ अथ विशेषार्घ्यस्थापनम् ॥ आत्मश्रीचक्रयोर्मध्ये स्वपुरतः सांबकलशोक्तविधिना विशेषार्घ्यपदमुच्चरन् विशेषार्घ्यं संस्थाप्याभिमंत्रयेत् ॥ तत्र मंत्रः ॥ " ॐ ऐं क्लीं सौं ब्रह्माण्डखण्डसंभूतमशेषरससंभवम् ॥ आपूरितं महापात्रं पीयूषरसमावह ॥ १ ॥ अखंडैकरसानंदकलेवरसुधात्मनि ॥ स्वच्छंदस्फुरणान्मंत्रान्निधेह्यकुलरूपिणी ॥ २ ॥ क्लीं अकुलस्थामृताकारे सिद्धज्ञानकलेवरे ॥अमृतत्वं निधेह्यस्मिन्वस्तुनि क्लिन्नरूपिणी ॥ ३ ॥ सौः तद्रूपेणैकरस्यं च कृत्वास्यैतत्स्वरूपिणी ॥ भूत्वा पराभृताकारं मयि विस्फुरणं कुरु ॥ ४ ॥ " अनेन मंत्रेणार्घ्यमभिमंत्र्य पूर्ववत् पंचरत्नानि पूजयेत् ॥ इति विशेषार्घ्यस्थापनम् ॥ इति विशेषार्घ्यं स्थापयित्वा देवदक्षिणतः प्रोक्षणीपात्रमेवमेव विधिना स्थापयेत्॥इति त्रिरर्घ्यस्थापनम् ॥ ततो विशेषार्घ्याद्वामतः श्रीपात्रं १ गुरुपात्रं २ भैरवपात्रं ३ शक्तिपात्रं ४ योगिनीपात्रं ५ भोगपात्रं ६ वीरपात्रं ७ आत्मपात्रं ८ बलिपात्रं ९ एतानि मव पात्राणि दक्षिणे पाद्यार्घ्याचमनीयमधुपर्का इति चत्वारि पात्राणि सांबकलशोक्तविधिना स्थापयेत् ॥ अशक्तश्चेद्गुरुवीरात्मबलिभोगेति पंचपात्राणि पाद्याद्युपचारार्थमेकं वा पात्रं स्थापयेत् ॥ तत्राप्यशक्तश्चेत्तदा एकमेव शंखं संस्थापयेत् ॥ अथ घंटास्थापनप्रयोगः ॥ देवदक्षिणतः घंटां संस्थाप्य नादं कृत्वा पूजयेत् ॥ तथा च " ॐ भूर्भुवः स्वः गरुडाय नमः । आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गंधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि " इत्यावाह्य । "ॐ जगद्ध्वने मंत्रमातः स्वाहा " इति मंत्रेण घंटास्थितगरुडं घंटां च संपूज्य गरुडमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इति घंटास्थापनम्॥अथ अखण्डदीपस्थापनप्रयोगः॥ देवस्य दक्षिणभागे घृतदीपं वामे तैलदीपं स्थापयेत् ॥ तथा च दीपपात्रं गोघृतेन तैलेन वाऽऽपूर्य एकविंशातितंतुभिर्वर्तिं निःक्षिप्य प्रणवेन (ॐ) प्रज्वाल्य सुदर्शनमंत्रेण घृतदीपं पूजयेत् ॥ सुदर्शनमंत्रो यथा--"ॐ रांरींरूंरैंरौंरः सुदर्शनायास्त्राय फट् स्वाहा"इति मंत्रेण गंधपुष्पाभ्यां पूजयेत् ॥ तैलदीपं पाशुपतास्त्रमंत्रेण पूजयेत् ॥ पाशुपतास्त्रमंत्रो यथा--'ॐ श्लीं

[illegible]मार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम् ॥ घंटानादं प्रकुर्वीत पश्चाद् घण्टां प्रपूजयेत् ॥ दीपं घृतयुतं दक्षे तैलयुक्तं च वामतः ॥ दक्षिणे च सितां वर्तिं वामतो [illegible]के ॥

पशु हुं फट् स्वाहा' इति मंत्रेण पूजयेत् ॥ इति संपूज्य हस्तद्वयेन दीपशिखां स्पृष्ट्वा मंत्रं पठेत् ॥ तत्र मंत्रः ॥ "ॐ अघोराय घोर
तमाय महारौद्राय वीरभद्राय ज्वालामालिने सर्वदुष्टप्राणोपसंहर्त्रे हुं फट् स्वाहा" इति पठित्वा तेजसात्मानं समर्प्य चित्तं शोधयेत्॥तथा
च–हुं फट् स्वाहा इति मुखे ॥१॥ ॐ रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहेति हृदये॥२॥ हस्तं दत्त्वात्मरक्षां निधाय "ॐ" इति मंत्रेण चंदनपुष्पाणि
कराभ्यां मर्दयित्वा पुष्पाक्षतानादाय "ॐ ते सर्वे विलयं यांतु ये मां हिंसंति हिंसकाः॥ मृत्युरोगभयक्लेशाः पतंतु रिपुमस्तके ॥ १ ॥"
इति मंत्रेणैशान्यां दिशि दूरतः पुष्पं क्षिप्त्वा हस्तौ प्रक्षाल्याचामेत् ॥ इत्यखण्डदीपस्थापनम् ॥ इति दीपं संस्थाप्य गंधाक्षतादिपूजोपकर
णानि स्वदक्षिणे संस्थाप्य मूलेन 'नमः' इति संप्रोक्ष्य जलार्थं बृहत्पात्रं व्यजनच्छत्रादर्शचामराणि च वामपार्श्वे निधापयेत् ॥ अथ मांस
शोधनम् ॥ "ॐ पशुपाशाय विद्महे शिरश्छेदाय धीमहि ॥ तन्नो मांसः प्रचोदयात्" इति दशधा जपेन मांसः शुद्धो भवति ॥ अथ
मीनशोधनम् ॥ "ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् ॥ उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्" इति मंत्रेण शोधयेत् ॥ अथ
मुद्राशोधनम् ॥ "ॐ गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति ॥ गर्भं ते अश्विनौ धत्तां वर्धेतां पुष्करस्रजौ ॥ १ ॥" "ॐ प्लूं ज्लूं ग्लूं
स्वाहा" इति मंत्रेण मांसमीनमुद्राः शोधयेत् ॥ इति शोधयित्वा यंत्रस्य प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् ॥ अथ प्राणप्रतिष्ठाप्रयोगः ॥ देशकालौ सं
कीर्त्य मम वटुकभैरवदेवतानूतनयंत्रे प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये इति संकल्पयेत्॥अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः।ऋग्यजुः
सामानि च्छन्दांसि। क्रियामयवपुःप्राणाख्या देवता। आं बीजम्। ह्रीं शक्तिः। क्रौं कीलकम्। अस्मिन्नूतनयंत्रे प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः॥
इति जलं क्षिपेत् ॥ ततो यंत्रं करेणाच्छाद्य ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हंसः सोहं अस्य वटुकभैरवसपरिवारयंत्रस्य प्राणा इह
प्राणाः ॥ १ ॥ पुनः ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हंसः सोहं अस्य वटुकभैरवसपरिवारयंत्रस्य जीव इह स्थितः ॥ २ ॥ पुनः
ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हंसः सोहं अस्य वटुकभैरवसपरिवारयंत्रस्य सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि ॥ ३ ॥ पुनः ॐ आं ह्रीं क्रौं यँ
रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँसः सोहं अस्य वटुकभैरवसपरिवारयंत्रस्य वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं

२७

चिरं तिष्ठंतु स्वाहा ॥४॥ इति प्रतिष्ठाप्य "यःप्राणतोनिमिषतोमहित्वोवेविधेम इति मान्त्रीति" त्रिवारं पठेत् ॥ "मनोजूतिर्जुषतासुप्रतिष्ठाप्रतिष्ठा' इत्युक्त्वा संस्कारसिद्ध्ये पंचदशप्रणवावृत्तीः कृत्वा अनेन वटुकभैरवसपरिवारयंत्रस्य गर्भाधानादिपंचदशसंस्कारान्संपादयामीति वदेत् ॥ इति प्राणान् प्रतिष्ठाप्य ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ शुद्धस्फटिकसंकाशं सहस्रादित्यवर्चसम् ॥ नीलजीमूतसंकाशं नीलांजनसमप्रभम् ॥१॥ अष्टबाहुं त्रिनयनं चतुर्बाहुं द्विबाहुकम् ॥ दंष्ट्राकरालवदनं नूपुरारावसंकुलम् ॥ २ ॥ भुजंगमेखलं देवमग्निवर्णशिरोरुहम् ॥ दिगंबरं कुमारेशं वटुकाख्यं महाबलम् ॥ ३ ॥ खट्वांगमसिपाशं च शूलं दाक्षिणभागतः ॥ डमरुं च कपालं च वरदं भुजगं तथा ॥ ४ ॥ अग्निवर्णसमोपेतं सारमेयसमन्वितम् ॥ एवं ध्यात्वा हि वटुकं ततो यजनमारभेत् ॥५॥ तत्र मंत्रः ॥ अक्षतानादाय "देवेश भक्तिसुलभ परिवारसमन्वित ॥ यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावद्देव इहावह ॥ १ ॥ आगच्छ देव वटुक स्थाने चात्र स्थितो भव ॥ यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधौ भव ॥२॥" मूलं पठित्वा 'ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवदेवते इहागच्छ इह तिष्ठ' इत्यक्षतान्निःक्षिप्य आवाहनीमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इत्यावाहनम् ॥ १ ॥ "तवेयं महिमा मूर्तिस्तस्यां त्वां सर्वग प्रभो ॥ भक्तिस्नेहसमाकृष्टं दीपवत्स्थापयाम्यहम् ॥ १ ॥" मूलं पठित्वा 'ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवदेवते इह तिष्ठ ॥' इत्यक्षतान्निःक्षिप्य स्थापिनीमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इति स्थापनम् ॥२॥ " अनन्या तव देवेश मूर्तिशक्तिरियं प्रभो ॥ सान्निध्यं कुरु तस्यां त्वं भक्तानुग्रहतत्परः ॥ १ ॥" मूलं पठित्वा 'ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवदेवते इह सान्निधेहि ' इत्यक्षतान्निःक्षिप्य सन्निधापनीमुद्रां प्रदर्शयेत् । इति संनिधापनम् ॥३॥ "आज्ञया तव देवेश कृपांभोधे गुणांबुधे ॥ आत्मानं दैकतृप्तं त्वां निरुणध्मि पितर्गुरो ॥ १ ॥ " मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवदेवते इह सन्निरुध्य ॥ इत्यक्षतान्निःक्षिप्य सन्निरोधनमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इति सन्निरोधनम् ॥ ४ ॥ "अज्ञानाद्दुर्मनस्त्वाद्वा वैकल्यात्साधनस्य च ॥ यदपूर्णं भवेत्कृत्यं तत्राप्यभिमुखो भव ॥ १ ॥" मूलमंत्रं पठित्वा ' ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवदेव इह संमुखो भव ' इत्यक्षतान्निःक्षिप्य सम्मुखीकरणमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इति सम्मुखीकरणम् ॥ ५ ॥ "अभक्तवाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रदूरातिगद्युते ॥ स्वतेजःपञ्जरेणाशु वेष्टितो भव सर्वतः ॥ १ ॥ " मूलमंत्रं पठित्वा

'ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवदेव अवगुंठितो भव'इत्यक्षतान्निःक्षिप्य अवगुंठनीमुद्रां प्रदर्शयेत्॥इत्यवगुंठनं कृत्वा सुस्वागतं कुर्यात्॥६॥ तत्र मंत्रः॥"यस्य दर्शनमिच्छंति देवाः स्वाभीष्टसिद्धये॥तस्मै ते परमेशाय स्वागतं स्वागतं च ते॥१॥" मूलमंत्रं पठित्वा'ॐ श्रीवटुकभैरवाय नमः ' सुस्वागतं समर्पयामि ॥ इति सुस्वागतम् ॥७॥ "देवदेव महाराज प्रियेश्वर प्रजापते॥आसनं दिव्यमीशान दास्येऽहं परमेश्वर ॥ १ ॥ " मूलमंत्रं पठित्वा ' ॐ भूर्भुवः स्वः वटुकभैरवाय नमः ' आसनं समर्पयामि ॥ इत्यासनं दत्त्वा करौ बद्ध्वा प्रार्थयेत् ॥ ८ ॥ तत्र मंत्रः ॥ " स्वागतं देवदेवेश मद्भाग्यात्त्वमिहागतः ॥ प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत्परिपालय ॥१ ॥" मूलमंत्रं पठित्वा' ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवाय नमः' प्रार्थनां समर्पयामि नमस्करोमि ॥ इति प्रार्थ्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूजयेत् ॥ ९ ॥ अथ पाद्यादिपूजनम् ॥ "ॐ यद्भक्तिलेशसंपर्कात्परमानंदविग्रहः ॥ तस्मै ते चरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पयेत् ॥१ ॥" मूलमंत्रं पठित्वा 'ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवाय नमः' पाद्यं समर्पयामि ॥ इति सामान्यार्घोदकेन पाद्यं दद्यात् ॥ १॥ "ॐ तापत्रयहरं दिव्यं परमानंदलक्षणम् ॥ तापत्रयविनिर्मुक्त तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम् ॥१॥" मूलमंत्रं पठित्वा 'ॐ भूर्भुवः स्वः श्री वटुकभैरवाय नमः' अर्घ्यं समर्पयामि ॥ इत्यर्घः॥२॥"ॐ सर्वकालुष्यहीनाय परिपूर्णसुखात्मने॥मधुपर्कमिमं देव कल्पयामि प्रसीद मे ॥१॥" मूलं पठित्वा 'ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवाय नमः' मधुपर्कं समर्पयामि ॥ इति मधुपर्कम्॥३॥"ॐ वेदानामपि वेदाय देवानां देवतात्मने ॥ आचामं कल्पयामीश शुद्धानां शुद्धिहेतवे ॥१॥" मूलमंत्रं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः आचमनं समर्पयामि ॥ इत्याचमनम् ॥४॥ ॐ इत्याचमनं दत्त्वा पञ्चामृतस्नानादिकं च सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कृत्वा जलस्नानं कुर्यात् ॥ तद्यथा– "ॐ गंगासरस्वतीरेवापयोष्णीनर्मदाजलैः ॥ स्नापितोऽसि मया देव तथा शांतिं कुरुष्व मे ॥ १ ॥ " मूलं पठित्वा 'ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवाय नमः' शंखोदकस्नानं[१] समर्पयामि ॥ इति स्नानम् ॥५॥ "ॐ सर्वभूषादिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे ॥ मयैवापादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥१ ॥" मूलमंत्रं पठित्वा ' ॐ श्रीवटुकभैरवाय

१ अथवा शंखोदकेन ।

नमः' वस्त्रं समर्पयामि ॥ इति वस्त्रम् ॥ ६ ॥ "ॐ नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ॥ उपवीतं चोत्तरीयं गृहाण परमेश्वर ॥१॥" मूलमंत्रं पठित्वा 'ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवाय नमः' यज्ञोपवीतं समर्पयामि॥इति यज्ञोपवीतम्॥७॥"ॐ श्रीखण्डं चंदनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम्॥विलेपनं सुरश्रेष्ठ चंदनं प्रतिगृह्यताम् ॥१॥" मूलं पठित्वा 'ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवाय नमः' गंधं समर्पयामि॥अंगुष्ठो कनिष्ठामूललग्नौ गंधमुद्रा । इति गंधम् ॥८॥ "ॐ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः॥मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥१॥ "मूलं पठित्वा 'ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवाय नमः' अक्षतान्समर्पयामि॥इत्यक्षतान् ॥९॥ "ॐ माल्यादीनि सुगंधीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ॥ मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥१॥" मूलं पठित्वा 'ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवाय नमः' पुष्पं समर्पयामि । तर्जन्यावंगुष्ठमूललग्ने पुष्पमुद्रा इति पुष्पाणि॥१०॥एवं पुष्पांतं पूजयित्वा ततो देवाज्ञयावरणपूजां कुर्यात्॥अथावरणपूजा ॥ तत्र क्रमः ॥ " श्रीपदं पूर्वमुच्चार्य पादुकापदमुच्चरेत् ॥ पूजयामि नमः पश्चात्पूजयेदंगदेवताः ॥ १ ॥ " ॥ इत्युच्चरन् आवरणदेवताः पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय "ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रिय ॥ अनुज्ञां देहि वटुक परिवारार्चनाय मे ॥ २ ॥ " इत्युक्त्वा पुष्पांजलिं भैरवोपरि दत्त्वा आज्ञां गृहीत्वा अत्र सर्वत्र पूज्यपूजकयोरंतराले प्राची तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्रयोगोक्तावरणपूजां कृत्वा धूपादिभिः पूजनं कुर्यात् ॥ अथ धूपादिपूजाप्रयोगः ॥ फडिति धूपपात्रं संप्रोक्ष्य मूलेन नमः इति गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य पुरतो निधाय (ॐ रं) इति वह्निबीजेनोपरि अग्निं संस्थाप्य तदुपरि मूलेन दशांगं दत्त्वा घंटां वादयन् 'ॐ वनस्पतिरसोद्भूतो गधाढ्यो गंध उत्तमः ॥ आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥१॥" मूलं पठित्वा 'ॐ भूर्भुवः स्वः सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सवाहनाय श्रीवटुकभैरवाय नमः' धूपं समर्पयामि॥इति नाभिदेशतः धूपयित्वा देववामतः धूपपात्रं निधाय तर्जनीमूलयोरंगुष्ठयोगे धूपमुद्रां प्रदर्शयेत्॥इति धूपम् ॥१ ॥ ततो दीपमात्रे गोघृतमापूर्य एकविंशतितंतुभिर्वर्तिं निक्षिप्य प्रणवेन (ॐ) प्रज्वाल्य घंटां वादयन् नेत्रादिपादपर्यंतं दीपं प्रदर्शयेत्॥ "ॐ [illegible] महादीपः सर्वतास्तिमिरापहः ॥ सबाह्याभ्यंतरं ज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥१॥" मूलं पठित्वा 'ॐ भूर्भुवः स्वः सांगाय सप

दीपं समर्पयामि ॥ इति पठित्वा देवस्य दक्षिणभागे निधापयेत् ॥ ततः शंखजल
रिवाराय सायुधाय सवाहनाय श्रीवटुकभैरवाय नमः’ दीपं समर्पयामि ॥ इति पठित्वा देवस्य दक्षिणभागे निधापयेत् ॥ ततः शंखजल
मुत्सृज्य मध्यमांगुष्ठयोगे दीपमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इति दीपम् ॥ २ ॥ देवस्याग्रे जलेन चतुरस्रं मंडलं कृत्वा स्वर्णादिनिर्मितं भोजनपात्रं
संस्थाप्य तन्मध्ये षड्रसोपेतं माषपिष्टं तैलपकं वटकं च विविधप्रकारं वा नैवेद्यं संस्थाप्य ‘ ॐ ह्रीं नमः’ इति मंत्रेणार्घ्यजलेन संप्रोक्ष्य
मूलेन संवीक्ष्य अधोमुखदक्षिणहस्तोपरि तादृशं वामं निधाय नैवेद्येनाच्छाद्य (ॐ यं) इति वायुबीजं षोडशधा संजप्य वायुना
तद्गतदोषान् संशोष्य ततो दक्षिणकरतले तत्पृष्ठलग्नं वामकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य (ॐ रं) इति वह्निबीजं षोडशवारं संजप्य तदुत्पन्ना
ग्निना तद्दोषं दग्ध्वा ततो वामकरतले अमृतबीजं विचिंत्य तत्पृष्ठलग्नं दक्षिणकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य(ॐ वं) इति सुधाबीजं षोडश
वारं संजप्य तदुत्थामृतधारयाप्लावितं विभाव्य मूलेन प्रोक्ष्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य मूलेनाष्टधाऽभिमंत्र्य गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य वामांगुष्ठेन नैवेद्य
पात्रं स्पृष्ट्वा दक्षिणकरेण जलं गृहीत्वा “ॐ सत्पात्रसिद्धं सुहविर्विविधानेकभक्षणम् ॥ निवेदयामि देवेश सानुगाय गृहाण तत् ॥१॥
मूलं पठित्वा ‘ॐ भूर्भुवः स्वः सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सवाहनाय श्रीमद्वटुकभैरवाय नमः’ नैवेद्यं समर्पयामि ॥ इति
जलमुत्सृज्य ‘ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा’ इति देवस्य दक्षहस्ते जलं दत्त्वा देवेन तज्जलं प्राशितमिति भावयन् ततो वामहस्ते
नानामामूलांगुष्ठयोगे ग्रासमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ दक्षिणहस्तेन प्राणादिपंचमुद्राः[1] प्रदर्शयेत् ॥ एवं पंच मुद्राः प्रदर्श्य देवं भुक्तवंतं विभाव्य
जलं दद्यात् ॥ इति नैवेद्यम् ॥ ३॥ “ॐ नमस्ते देवदेवेश सर्वतृप्तिकरो वरः ॥ परमानंदपूर्णस्त्वं गृहाण जलमुत्तमम् ॥ १ ॥” मूलं
पठित्वा “ॐ भूर्भुवः स्वः सांगाय सपरिवाराय श्रीमद्वटुकभैरवाय जलं समर्पयामि ॥” इति मंत्रेण स्वर्णादिपात्रस्थं कर्पूरादिसुवासितं
जलं निवेद्य अंतःपटं दद्यात् ॥ ४ ॥ तद्यथा–“ब्रह्मेशाद्यैः सरसमभितः सोपविष्टैः समंतात्सिंजद्वालव्यजननिकरैर्वीज्यमानो वयस्यैः ॥

१ अंगुष्ठतर्जनीमध्यमानामाभिः ॐ प्राणाय स्वाहा इति प्राणमुद्रा प्रथमा, अंगुष्ठतर्जनीमध्यमाभिः ॐ अपानाय स्वाहा इत्यपानमुद्रा द्वितीया, अंगुष्ठमध्यमानामाभिः ॐ व्यानाय स्वाहा इति व्यानमुद्रा तृतीया, अंगुष्ठतर्जनीमध्यमानामाभिः ॐ उदानाय स्वाहा इति उदानमुद्रा चतुर्थी, सर्वांगुलीभिः ॐ समानाय स्वाहा इति समानमुद्रा पंचमी ।

नर्मक्रीडाप्रहसनपरान्हासयन्पंक्तिभोक्तॄन् भुंक्ते पात्रे कनकघटिते षड्रसान् भैरवेशः ॥ १ ॥ शालीभक्तं सुपक्वं शिशिरकरासितं पायसापूपसूपं लेह्यं पेयं च चोष्यं सितममृतफलं क्षीरिकाद्यं सुखाद्यम् ॥ आज्यं प्राज्यं सभोज्यं नयनरुचिकरं राजिकैलामरीच स्वादीयः शाकराजीपरिकरममृताहारजोषं जुषस्व ॥ २ ॥" इति अंतःपटं दत्त्वाचमनं दद्यात् ॥ ५ ॥ तद्यथा—"ॐ वेदानामपि वेदाय देवानां देवतात्मने ॥ आचामं कल्पयामीश शुद्धानां शुद्धिहेतवे ॥ १ ॥" मूलं पठित्वा 'ॐ भूर्भुवः स्वः सांगाय सपरिवाराय श्रीमद्वटुक भैरवाय नमः' आचमनं समर्पयामि ॥ इत्याचमनं दत्त्वा गंडूषार्थं मूलमंत्रेण जलं दद्यात् ॥ इत्याचमनम् ॥ ६ ॥ ततो गतसारं नैवेद्यं किंचिदुद्धृत्य "ॐ चंडेश्वराय नमः ॥" इति देवस्योच्छिष्टं चंडेश्वरायैशान्यां दिशि दद्यात् ॥ अथ पंचबलिदानविधिः ॥ ततो यंत्रस्य पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरेषु त्रिकोणवृत्तचतुरस्रं मंडलं कृत्वा "ॐ ह्रीं मंडलाय नमः ॥" इति मंडलं संपूज्य ॥ पूर्वे-"ॐ वं वटुकाय नमः" इति पाद्यादिभिः संपूज्य पक्वान्नपूर्णसलिलमीनमांसं कमलाकारं दीपचतुष्टययुक्तं वा बलिपात्रेषु पूरयित्वा मीनमुद्रां प्रदर्श्य वामांगुष्ठानामाभ्यां गृहीत्वा "ॐ एह्येहि देवीपुत्र वटुकनाथ कपिलजटाभारभासुर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान्नाशय२ सर्वोपचारसहितं बलिं गृह्ण २ स्वाहा एष बलिर्वटुकाय नमः॥" इति मंत्रेण पूर्वदल उत्सृजेत् ॥ १ ॥ ततो दक्षिणे-पूर्ववन्मंडलं संपूज्य तन्मध्ये 'यों योगिनीभ्यो नमः ॥' इति योगिनीरभ्यर्च्य पूर्ववत्पात्रे द्रव्यं पूरयित्वा योनिमुद्रां प्रदर्श्य दक्षांगुष्ठानामाभ्यां बलिपात्रं गृहीत्वा "ॐ ऊर्ध्वं ब्रह्मांडतो वा दिवि गगनतले भूतले निष्कले वा पाताले वा तले वा सलिलपवनयोर्यत्र कुत्र स्थिता वा ॥ क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृतपदा धूपदीपादिकेन प्रीता देव्यः सदा नः शुभबलिविधिना पांतु वीरेन्द्रवंद्याः ॥१॥" "ॐ योगिनीभ्यः स्वाहा सर्वयोगिनी हुं फट् स्वाहा

१ शारदातिलके—शालयन्नं पललं सर्पिर्लाजचूर्णानि शर्करा ॥ गुडमिक्षुरसापूपैर्मध्वक्तैः परिमिश्रितैः ॥ कृत्वा ग्रासं समाराध्य देवं प्रागुक्तवर्त्मना ॥ रक्तचन्दनपुष्पाद्यैर्भक्त्या तस्मै बलिं हरेत् ॥ तन्त्रांतरेऽपि-राजसो मांसरक्ताढ्यः पललत्रयसमन्वितः ॥ आदावन्ते प्रयोगस्य वटुकाय बलिं हरेत् ॥ विश्वसारतन्त्रे-मेषकुक्कुटयोर्मांसं शालयन्नं घृतसंप्लुतम् ॥ लाजचूर्णमपूपं च गुडमिक्षुसमन्वितम् ॥ मरीचैर्जीरकैश्चैव गुडखण्डैस्तथैव च ॥ शालितंडुलभक्तं च गोक्षीरेण समन्वितम् ॥ अन्यत्रापि-पललत्रयं माषचूर्णं दधिक्षीरं घृतं तथा ॥ गुडोदकेन संयुक्तं मिश्रीकृत्य विचक्षणः ॥ इति बलिं दद्यात् ॥

एष बलिर्योगिनीभ्यो नमः" इति मंत्रेण बलिपात्रं दक्षिणमण्डल उत्सृजेत् ॥ २ ॥ ततः पश्चिमे--पूर्ववन्मंडलं संपूज्य तन्मध्ये--'क्षं क्षेत्रपालाय नमः' इति क्षेत्रपालमभ्यर्च्य पूर्वोक्तपात्रे द्रव्यं पूरयित्वा अंकुशमुद्रां प्रदर्श्य दक्षांगुष्ठमध्यमानामाभ्यां बलिपात्रं गृहीत्वा "ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः क्षेत्रपाल धूपादिसहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा एष बलिः क्षेत्रपालाय नमः" इति मंत्रेण बलिपात्रं पश्चिममण्डल उत्सृजेत्॥३॥ततः उत्तरे-पूर्ववन्मण्डलं संपूज्य तन्मध्ये 'गं गणेशाय नमः' इति गणेशमभ्यर्च्य पूर्वोक्तपात्रे द्रव्यं पूरयित्वा दक्षांगुष्ठतर्जन्यनामाभ्यां बलिपात्रं गहीत्वा—"ॐ गां गीं गूं गैं गौं गः गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय बलिं गृह्णगृह्ण एष बलिर्गणपतये नमः" इति मंत्रेण बलिपात्रमुत्तरमण्डल उत्सृजेत् ॥ ४ ॥ ततो गणपतिसमीपे पूर्ववन्मण्डलं कृत्वा—"ॐ ह्रीं व्यापकमंडलाय नमः" इति संपूज्य साधारणबलिं माषभक्तं वा संस्थाप्य मूलेनाभिमंत्र्य तत्र धूपदीपादिभिः सर्वभूतानि संपूज्य तत्त्वमुद्रां प्रदर्श्य 'ॐ ह्रीं सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्योहं स्वाहा एष बलिः सर्वभूतेभ्यो नमः' इति मंत्रेण बलिपात्रं गणपतिसमीप उत्सृजेत् ॥ इति पंच बलीनशक्तश्चेदेकमेव बलिं भैरवाय दद्यात् ॥ इति पंचबलिदानम् ॥ अथ पशुबलिदानप्रयोगः ॥ अर्द्धरात्रे देवं संपूज्य पंचाब्दं सर्वलक्षणोपेतं छागाद्यं पशुमानीय "ॐ वाराही यमुना गंगा करतोया सरस्वती ॥ कावेरी चन्द्रभागा च सिंधुर्भैरवसागराः ॥ १ ॥ अजस्नाने ममेशानि सान्निध्यमिह कल्पय ॥ पशुपाशविनाशाय हेमकूटस्थिताय च ॥ पराय परमेशाय हुंकाराय च मर्तये ॥ २ ॥ " इति जलमभिमंत्र्य मूलेन स्नापयित्वा सिंदूरमाल्यादिभिरलंकृत्य देवस्याग्रे संस्थाप्य मूलं पठित्वा गंधमिश्रिताघ्यौदकेन त्रिः संप्रोक्ष्य अस्त्रेण संरक्ष्य कवचेनावगुंठ्य धेनुमुद्रयामृतीकृत्य कृतांजलिः प्रार्थयेत् ॥ "ॐ छाग त्वं बलिरूपेण महाभाग्यादुपस्थितः ॥ प्रणमामि सदा भक्त्या रूपिणं बलिरूपिणम् ॥ १ ॥ भैरवप्रीतिकामस्य दातुरापद्विनाशिने ॥ भैरवबलिरूपाय बले तुभ्यं नमो नमः ॥ २ ॥ यज्ञार्थे पशवः सृष्टाः स्वयमेव स्वयंभुवा ॥ अतस्त्वां घातयिष्यामि यस्माद्यज्ञे वधोऽवधः ॥ ३ ॥ " इति संप्रार्थ्य प्रत्यंगं पूजयेत् ॥ तथा च—" ॐ रुधिरवदनायै नमः इति शिरसि ॥ १ ॥ ॐ चडिण्कायै नमः । इति कपोले ॥ २ ॥ ॐ चन्द्रार्काभ्यां नमः । इति चक्षुषोः ॥ ३ ॥

ॐ बृहस्पतये नमः । इति कर्णयोः ॥ ४ ॥ ॐ सरस्वत्यै नमः । इति नासायाम् ॥ ५ ॥ ॐ उग्रदंतिकायै नमः । इति जिह्वायाम् ॥ ६ ॥ ॐ महादंतिकायै नमः । इति ग्रीवायाम् ॥ ७ ॥ ॐ पृथिव्यै नमः । इति उदरे ॥ ८ ॥ ॐ धर्माय नमः । इति जंघाचतुष्टये ॥ ९ ॥" इति संपूज्य जलं गृहीत्वा "ॐ ह्रीं वरुणमंडलाधिष्ठितविग्रहाय पशुरूपभैरवाय इमं पशुं प्रोक्षामि स्वाहा " इति संप्रोक्ष्य ततस्तिलकुशजलं गृहीत्वा देशकालौ संकीर्त्यामुकगोत्रः श्रीमदमुकशर्माहं छागसमसंख्याकपंचवर्षावच्छिन्नश्रीमद्वटुकभैरवप्रीतिकामोऽहमेताञ्छागान्वह्निदैवतान् श्रीमद्वटुकभैरवाय तुभ्यं घातयिष्ये इति संपूज्य खड्गपूजां कुर्यात्॥तथा च—खड्गं पुरतो निधाय"ॐनीलं हयं समधिरुह्य पुरः प्रयांती नीलांशुकाभरणमाल्यविलेपनाढ्या ॥ निद्रापुटेन भुवनानि तिरोदधाना खड्गायुधा भगवती परिपातु भक्तान् ॥ १ ॥ " इति खड्गं ध्यात्वा " ॐ ह्रीं श्रीं नमो भगवति माहेश्वरि सर्वपशुजनमनश्चक्षुस्तिरस्करिणी कुरुकुरु स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं क्लीं ऐं ग्लौं तिरस्करिणी सकलजनवाग्वादिनी सकलपशुजनमनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणतिरस्करिणी कुरुकुरु ठः ठः ठः स्वाहा इति मंत्रद्वयेन नमस्कृत्य ' ॐ ह्रीं ह्रीं खड्गं आं कालिकालि वज्रेश्वरि लोहदंडायै नमः ' इति गंधादिभिस्त्रिः संपूज्य खड्गोपरि सिंदूरादिना ह्रींकारं विलिख्य " ॐ खड्गाय नमः " इति संपूज्य बलिकर्णे पशुगायत्रीं श्रावयेत् ॥ तत्र मंत्रः ॥ " ॐ ह्रीं बलिरूपाय विद्महे वटुकप्रियाय धीमहि ॥ तन्नः पशुः प्रचोदयात्" इति बलिकर्णे श्रावयित्वा खड्गं हस्ते चादाय प्रार्थयेत् ॥ " ॐ असिर्विशसनः खड्गस्तीक्ष्णधारो दुरासदः ॥ श्रीगर्भो विजयश्चैव धर्मपाल नमोऽस्तु ते॥१॥ इत्यष्टौ तव नामानि स्वयमुक्तानि वेधसा ॥ नक्षत्रं कृत्तिका ते तु गुरुर्देवो महेश्वरः ॥ २ ॥ रोहिणी च शरीरं ते धाता देवो जनार्दनः ॥ पिता पितामहो देवस्त्वं मां पालय सर्वदा ॥ ३ ॥ नीलजीमूतसंकाशस्तीक्ष्णदंष्ट्रः कृशोदरः ॥ भावशुद्धो मर्षणश्च अतितेजास्तथैव च ॥ ४ ॥ इयं येन धृता क्षोणी हतश्च महिषासुरः ॥ तीक्ष्णधाराय शुद्धाय तस्मै खड्गाय ते नमः ॥ ५ ॥ भैरवीरसनाबुद्ध्या एकघाते तु घातयेत् ॥ ६ ॥ " इति खड्गं संप्रार्थ्य " ॐ रे वज्रासुरनाशाय देव कार्यार्थतत्परः ॥ पशुश्छेद्यः स्वयं शीघ्रं खड्गनाथ नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥ इति पठित्वा " पशुपाशाय विद्महे विप्रकर्णाय धीमहि ॥ तन्न

श्छागः प्रचोदयात्'' इति मूलं पठित्वा श्रीवटुकभैरवाय इमं छागबलिं तुभ्यमहं प्रददे ॥ इति बलिस्कंधे खड्गं दत्त्वा सकलं रुधिरं मुण्डं च देवाग्रे कृत्वा''ॐ अद्य पंचवर्षावच्छिन्नश्रीवटुकभैरवप्रीतिकाम इदं छागरुधिरं समुण्डं श्रीवटुकभैरव तुभ्यमहं प्रददे''इति समर्प्य ततः ''ॐ बलिं गृह्णंत्विमं देवा आदित्या वसवस्तथा ॥ मरुतो येऽश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगा ग्रहाः ॥ १ ॥ असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरग राक्षसाः ॥ डाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः ॥ २ ॥ जृंभिकासिद्धगन्धर्वा मल्ला विद्याधरा नगाः ॥ दिक्पाला लोक पालाश्च ये च विघ्नविनाशकाः ॥ ३ ॥ जगतां शांतिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः ॥ मा विघ्नं मा च मे पापं मा संतु परिपंथिनः ॥ ४ ॥ सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भतप्रेतसुखावहाः ॥ ५ ॥'' इति निवेदयेत् । ततो हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य स्नात्वा तिलकं धृत्वा देवं संप्रार्थ्य पुष्पांजलिं च दत्त्वा बान्धवैः सह भुंजीत ॥ एवमेव गजतुरङ्गादिना बलिं दद्यात् ॥ '' अनेन बलिदानेन सन्तुष्टो भैरवः स्वयम् ॥ शत्रुसैन्यं विभज्याथ स्वगणेभ्यः प्रयच्छति ॥ क्रुद्धः स भंजयेच्छीघ्रं नात्र कार्या विचारणा ॥ १ ॥ '' इति पशुबलिदानप्रयोगः ॥ अथ तांबूलम् ॥'' ॐ पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलान्वितम् ॥ कर्पूरादिसमायुक्तं तांबूलं प्रतिगृह्यताम् ॥'' मूलं पठित्वा 'ॐ भूर्भुवः स्वः वटुकभैरवाय नमः' तांबूलं समर्पयामि ॥ इति तांबूलम् ॥६॥ इति तांबूलं दत्त्वा छत्रचामरादीन् सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण दद्यात् ॥ अशक्तश्चेदारार्तिकं कुर्यात् ॥ अथ आरार्तिकम् ॥ शालिगोधूमपिष्टेन सगुडजीरकेण च त्रिकोणाकारं मंडूकरूपं वा नव दीपान् स्वर्णादिस्थालीमध्ये संस्थाप्य घृतेनापूर्य कर्पूरादिवर्तीं निःक्षिप्य मायाबीजेन(ह्रीं)प्रज्वाल्य चक्रमुद्रां प्रदर्श्य मूलेनारार्तिक्यं संपूज्य मूलं पठित्वा देवोपरि नेत्रादिपादपर्यंतं नववारं त्रिवारं वा भ्रामयित्वा घंटां नादयेत् । तत्र मंत्रः ॥ '' अंतस्तेजा बहिस्तेजा एकीकृत्य निरंतरम् ॥ त्रिधा देवोपरि भ्राम्य कुलदीपं निवेदयेत् ॥ १ ॥ चंद्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च ॥ त्वमेव सर्वज्योतींषि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम् ॥ २ ॥''मूलं पठित्वा 'ॐ भूर्भुवः स्वः वटुकभैरवाय नमः' नीराजनं समर्पयामि ॥ ततो देवदक्षिणतः निधाय शंखजलमुत्सृजेत् ॥ इति आरार्तिक्यम् ॥ अथ प्रदक्षिणा ॥''यानि कानि च पापानि जन्मांतरकृतानि वै ॥ तानि सर्वाणि नश्यंतु प्रदक्षिणपदे पदे ॥१॥'' इति

मंत्रेण तिस्रः प्रदक्षिणाः कृत्वा मूलमुच्चार्य "ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवाय नमः" प्रदक्षिणाः समर्पयामि॥इति प्रदक्षिणाः कृत्वा "प्रपन्नं पाहि मामीश भीतं मृत्युग्रहार्णवात्॥" इति वदन् साष्टांगं प्रणमेत् ॥ अथ पुष्पांजलिः॥ "नानासुगंधपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च ॥ पुष्पांजलिं मया दत्तं गृहाण भैरवेश्वर॥१॥मूलं पठित्वा "ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवाय नमः" पुष्पांजलिं समर्पयामि॥इति पुष्पांजलिं दत्त्वा ततः स्तुति पाठेन देवं स्तुत्वा बद्धांजलिपूर्वकं प्रार्थयेत् ॥ अथ प्रार्थना ॥ "ज्ञानतोऽज्ञानतो वाथ यन्मया क्रियते शिव ॥ मम कृत्यमिदं सर्वमिति देव क्षमस्व मे ॥१॥ अपराधसहस्राणि क्रियंतेऽहर्निशं मया ॥ दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥२॥अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे ॥ कोऽपरः सहतां लोके केवलं स्वामिनं विना ॥ ३ ॥ भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलंबनम् ॥ त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं शिव ॥ ४ ॥" इति बद्धांजलिपर्वकं संप्रार्थ्य ॥ ततः "यदुक्तं यच्च भावेन पत्रं पुष्पं फलं जलम् ॥ निवेदितं च नैवेद्यं गृहाण चानुकंपय ॥ १ ॥ इति पठित्वा देवस्य दक्षिणकरे पूजार्पणजलं दत्त्वा सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण मालायाः संस्कारान्संपाद्याशक्तश्चेत्साधारणसंस्कारान् कुर्यात् ॥ अथ साधारणमालासंस्काराः ॥ जपार्थे रुद्राक्षमालामानीय कचित्पात्रे वामहस्तेनाच्छाद्य मूले नार्घोदकेनाभ्युक्ष्य वस्त्रेणाशोष्य "ॐ माले माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ॥ चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मात्त्वं सिद्धिदा भव॥१॥" इत्यनेन गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य पुनः "ॐअविघ्नं कुरु माले त्वं सर्वकार्येषु सर्वदा॥" इति मंत्रेण दक्षिणहस्ते मालामादाय हृदये धारयन्स्वेष्टदेवतां ध्यात्वा मध्यमांगुलिमध्यपर्वणि संस्थाप्य ज्येष्ठाग्रेण भ्रामयित्वा एकाग्रचित्तो मंत्रार्थं स्मरन् यथाशक्ति मूलमंत्रं जपेत् ॥ नित्यमेव समाना जपाः कार्या न तु न्यूनाधिकाः॥ मूलमंत्रो यथा—"ॐ ह्रीं वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं" इत्येकविंशत्यक्षरं मंत्रं जपेत् ॥ ततो जपांते "त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा मम ॥ शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च देहि मे ॥१॥" "ॐ ह्रीं सिद्ध्यै नमः" इति मालां शिरसि निधाय गोमुखीं रहसि स्थापयेत् ॥ नाशुचिः स्पर्शयेत् ॥ नान्यस्मै दद्यात् ॥ अशुचिस्थाने न निधापयेत् ॥ स्वयो

१ जपस्यानार्चनस्थाने मालापुस्तकदर्शनम् ॥ स्वभक्तेषु महेशानि दर्शनं नैव कारयेत् ॥ इति वचनात् ॥

निवद् गुप्तां कुर्यात् ॥ ततः कवचस्तोत्रसहस्रनामादिकं पठित्वा पुनः मूलमंत्रस्य ऋष्यादिन्यासं हृदयादिषडंगन्यासं च कृत्वा पंचोपचारैः संपूज्य पुष्पांजलिं च दत्वा जपं देवार्पणं कुर्यात् ॥ तद्यथा—अर्घोदकेन चुलुकामादाय "ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात्त्वयि स्थितिः ॥ १ ॥ "ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुर्यावस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा ॥ मदीयं च सकलं श्रीमद्बटुकभैरवदेवतायै समर्पयामि नमः ॥ "ॐ तत्सदिति ब्राह्मार्पणं भवतु ॥ इति देवदक्षिणकरे जपसमर्पणजलं दत्वा कृतांजलिपूर्वकं क्षमापनं पठेत्॥ अथ क्षमापनम् ॥ आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ॥ पूजाभागं न जानामि त्वं गतिः परमेश्वर ॥१॥ मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ॥ यत्पजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ २ ॥ यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ॥ तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥ ३ ॥ कर्मणा मनसा वाचा त्वत्तो नान्या गतिर्मम ॥ अन्तश्चरसि भूतानामिष्टस्त्वं परमेश्वर ॥ ४ ॥ अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ॥ तस्मात्कारुण्यभावेन रक्षस्व परमेश्वर ॥ ५ ॥ अन्ते योनिसहस्राणां सहस्रेषु व्रजाम्यहम् ॥ तेषु तेष्वचला भक्तिरच्युतेऽस्तु सदा त्वयि ॥ ६ ॥ गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च ॥ आगता सुखसंपत्तिः पुण्याच्च तव दर्शनात् ॥ ७ ॥ देवो दाता च भोक्ता च देवरूपमिदं जगत् ॥ देवो जयति सर्वत्र यो देवः सोऽहमेव हि ॥ ८ ॥ क्षमस्व देवदेवेश क्षम्यते भुवनेश्वर ॥ तव पादांबुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे ॥ ९ ॥" इति कृतांजलिः प्रार्थ्य ततः शंखमुद्धृत्य देवोपरि भ्रामयित्वा "साधु वासाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया ॥ तत्सर्वं कृपया देव गृहाणाराधनं मम ॥ १ ॥" इत्युच्चरन् देवस्य दक्षिणहस्ते किंचिज्जलं दत्त्वा प्राग्वदर्घ्यं देवशिरसि दत्त्वा शंखं यथास्थाने निवेश्य देवस्योच्छिष्ट नैवेद्यं शिरसि धृत्वा नैवेद्यादिकं देवभक्तेषु विभज्य स्वयं भुक्त्वा विसर्जनं कुर्यात्॥अथ विसर्जनम्॥'ॐ गच्छ गच्छ परस्थाने स्वस्थाने

१ नैवेद्यलक्षणम्–अर्वाग्विसर्जनाद्द्रव्यं नैवेद्यं सर्वमुच्यते ॥ विसर्जिते जगन्नाथे निर्माल्यं भवति क्षणात् ॥ २ नैवेद्यत्यागनिषेधः (आह्निकरत्ने) तृषार्ताः पशवो वृद्धाः कन्यका च रजस्वला। देवता च सनिर्माल्या इति पुण्यं पुराकृतम् ॥ (रुद्रयामले विशेषः) निवेदितं च यद्द्रव्यं भोक्तव्यं तद्विधानतः॥ तच्च चेद्धुत्यते मोहाद्द्रोक्तुमायान्ति देवताः ॥

परमेश्वर ॥ यान्हि ब्रह्मादयो देवा न विदुः परमं पदम् ॥१॥' इत्यक्षतान्निःक्षिप्य विसर्जनं कृत्वा देवं स्वहृदयमध्ये स्थापयेत् ॥तद्यथा— "तिष्ठ तिष्ठ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर ॥ यत्र ब्रह्मादयो देवाः सर्वे तिष्ठंति मे हृदि ॥१॥ "इति हृदयकमले हस्तं दत्त्वा देवं संस्थाप्य मानसोपचारैः संपूज्य स्वात्मानं देवरूपं भावयन् यथासुखं विहरेत् । ततोऽर्धरात्रे ग्रामाद्बहिश्चतुष्पथे नित्यं देवतिथ्यां वा रविशनि भौमवारेषु वा पूर्वोक्तविधिना बलिं दद्यात् ॥ तथा च–पूर्ववन्मण्डलं कृत्वा मण्डलं संपूज्य तन्मध्ये वटुकं पंचोपचारैः संपूजयेत् ॥ ततः "गदात्रिशूलडमरुपात्रहस्तं त्रिलोचनम् ॥ कृष्णाभं भैरवं ध्यायेत्सर्वविघ्ननिवारणम् ॥१॥ " एवं ध्यात्वा "ॐ श्रीवटुकभैरव ऐह्येहि बलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट् स्वाहा" इति बलिं दत्त्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य शांतिस्तोत्रं पठेत् ॥ अथ शांतिस्तोत्रम् ॥ "नश्यंतु प्रेतकूष्माण्डा नश्यंतु दूषका नराः ॥ साधकानां शिवाः संतु स्वाम्नायपरिपालनम् ॥ १ ॥ नन्दंतु मातरः सर्वा जयंतु योगिनीगणाः ॥ जयंतु सिद्धा डाकिन्यो जयंतु गुरुशक्तयः ॥ २ ॥ नन्दन्तु ह्यणिमाद्याश्च नन्दंतु गुह्यकादयः ॥ नन्दन्तु भैरवाः सर्वे सिद्धविद्याधरादयः ॥ ३ ॥ ये चाम्नायविशुद्धाश्च मंत्रिणः शुद्धबुद्धयः ॥ सर्वदा नन्दयानन्दं नन्दन्तु कुलपालकाः ॥ ४ ॥ इन्द्राद्यास्तर्पिताः सन्तु तृप्यंतु वास्तु देवताः ॥ चन्द्रसूर्यादयो देवास्तृप्यंतु गुरुभक्तितः ॥ नक्षत्राणि ग्रहा योगाः करणाद्यास्तथापरे ॥ ते सर्वे सुखिनो यान्तु मासाश्च तिथयस्तथा ॥ ६ ॥ तृप्यन्तु पितरः सर्वे ऋतवो वत्सरादयः ॥ खेचरा भूचराश्चैव तृप्यन्तु मम भक्तितः ॥ ७ ॥ अंतरिक्षचरा घोरा ये चान्ये देवयोनयः ॥ सर्वे तु सुखिनो यांतु सर्वा नद्यश्च पक्षिणः ॥ ८ ॥ पर्वताः सुखिनः संतु तथा तत्कन्दरा गुहाः ॥ ऋषयो ब्राह्मणाः सर्वे शांतिं कुर्वंतु मे सदा ॥ ९ ॥ तीर्थानि पशवो गावो याश्चान्याः पुण्यभूमयः ॥ वृद्धाः पतिव्रता नार्यः शिवं कुर्वंतु मे सदा ॥ १० ॥ शिवं सर्वत्र मे चास्तु पुत्रदारधनादिषु ॥ राजानः सुखिनः सन्तु क्षेम मार्गे तु मे सदा ॥ ११ ॥ शुभा मे दिवसा यान्तु शिवास्तिष्ठंतु मे शिवाः ॥ द्वेष्टारः साधकानां च सदैवाम्नायदूषकाः ॥ १२ ॥ डाकिनीनां मुखे यान्तु तृप्तातृप्ताश्च तेषु ताः ॥ शत्रवो नाशमायांतु

ये निंदकास्ते विपदं प्रयान्तु ये साधकास्ते प्रभवन्तु सिद्धाः ॥ ये सर्ववीराः करुणावलोका
मम निंदाकराः सदा ॥ १३ ॥ ये निंदकास्ते विपदं प्रयान्तु ये साधकास्ते प्रभवन्तु सिद्धाः ॥ ये सर्ववीराः करुणावलोका
त्पुनः पुरात्मन्मम सन्निधत्स्व ॥ १४ ॥ " इति शांतिपाठं पठित्वा जलमुत्सृज्य स्वगृहे गत्वा पृष्ठदेशे नावलोकयेत् ॥ गृहद्वारमागत्य
हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य गृहप्रवेशं कृत्वा कुशासने शय्यायां यथासुखं स्वप्यात् ॥ इति श्रीवटुकभैरवपूजापद्धतिः समाप्ता ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ श्रीवटुकभैरवब्रह्मकवचम् ॥ उक्तं च रुद्रयामले ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ "भगवन्सर्ववेत्ता त्वं देवानां प्रीतिदायकम्॥
भैरवं कवचं ब्रूहि यदि चास्ति कृपा मयि ॥१॥ प्राणत्यागं करिष्यामि यदि नो कथयिष्यसि ॥ सत्यं सत्यं पुनः सत्यं सत्यमेव न संशयः
॥ २ ॥ इत्थं देव्या वचः श्रुत्वा प्रहस्यातिशयं प्रभुः ॥ उवाच वचनं तत्र देवदेवो महेश्वरः ॥ ३ ॥ ईश्वर उवाच ॥ वाटुकं कवचं
दिव्यं शृणु मत्प्राणवल्लभे ॥ चंडिकातंत्रसर्वस्वं वटुकस्य विशेषतः ॥ ४ ॥ तत्र मंत्राद्यक्षरं तु वासुदेवस्वरूपकम् ॥ शंखवर्णद्वयो ब्रह्मा
वटुकश्चन्द्रशेखरः ॥ ५ ॥ आपदुद्धारणो देवो भैरवः परिकीर्तितः ॥ प्रवक्ष्यामि समासेन चतुर्वर्गप्रसिद्धये ॥ ६ ॥ प्रणवः कामदं विद्या
लज्जाबीजं च सिद्धिदम् ॥ वटुकायेति विज्ञेयं महापातकनाशनम् ॥ ७ ॥ आपदुद्धारणायेति त्वापदुद्धारणं नृणाम् ॥ कुरु द्वय महेशानि
मोहने परिकीर्तितम् ॥ ८ ॥ वटुकाय महेशानि स्तंभने परिकीर्तितम् ॥ लज्जाबीजं तथा विद्यान्मुक्तिदं परिकीर्तितम् ॥ ९ ॥ द्वाविंश
त्यक्षरो मंत्रः क्रमेण जगदीश्वरि ॥ " पाठः ॥ ॐ अस्य श्रीवटुकभैरवब्रह्मकवचस्य भैरव ऋषिः । अनुष्टुप् छंदः । श्रीवटुकभैरवो देवता ।
मम वटुकभैरवप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ "ॐ पातु नित्यं शिरसि पातु ह्रीं कंठदेशके ॥१०॥ वटुकाय पातु नाभौ चापदुद्धारणाय
च ॥ कुरुद्वयं लिंगमूले त्वाधारे वटुकाय च ॥ ११ ॥ सर्वदा पातु ह्रीं बीजं बाह्वोर्युगलमेव च ॥ षडंगसहितो देवो नित्यं रक्षतु भैरवः ॥
॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं वटुकाय सततं सर्वांगं मम सर्वदा ॥ ॐ ह्रीं पादौ महाकालः पातु वीरासनो हृदि ॥१३॥ ॐ ह्रीं कालः शिरः पातु
कंठदेशे तु भैरवः ॥ गणराट् पातु जिह्वायामष्टाभिः शक्तिभिः सह ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं दंडपाणिर्गुह्यमूले भैरवीसहितस्तथा ॥ ॐ ह्रीं विश्व
नाथः सदा पातु सर्वांगं मम सर्वदः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं अन्नपूर्णा सदा पातु चांसौ रक्षतु चंडिका ॥ असितांगः शिरः पातु ललाट

रुरुभैरवः ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं चंडभैरवः पातु वक्त्रं कंठं श्रीक्रोधभैरवः ॥ उन्मत्तभैरवः पातु हृदयं मम सर्वदा ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं नाभिदेशे कपाली च लिंगे भीषणभैरवः ॥ संहारभैरवः पातु मूलाधारं च सर्वदा ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं बाहुयुग्मं सदा पातु भैरवो मम केवलम् ॥ हंसबीजं पातु हृदि सोऽहं रक्षतु पादयोः॥१९॥ ॐ ह्रीं प्राणापानौ समानं च उदानं व्यानमेव च॥रक्षतु द्वारमूले च दशदिक्षु समंततः॥ ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं प्रणवं पातु सर्वांगं लज्जाबीजं महाभये ॥ इति श्रीब्रह्मकवचं भैरवस्य प्रकीर्तितम् ॥ २१ ॥ चतुर्वर्गप्रदं नित्यं स्वयं देव प्रकाशितम् ॥ यः पठेच्छृणुयान्नित्यं धारयेत्कवचोत्तमम् ॥ २२ ॥ सदानंदमयो भूत्वा लभते परमं पदम् ॥ य इदं कवचं देवि चिन्त येन्मन्मुखोदितम् ॥ २३ ॥ कोटिजन्मार्जितं पापं तस्य नश्यति तत्क्षणात् ॥ जलमध्येऽग्निमध्ये वा दुर्ग्रहे शत्रुसंकटे ॥ २४ ॥ कवच स्मरणाद्देवि सर्वत्र विजयी भवेत् ॥ भक्तियुक्तेन मनसा कवचं पूजयेद्यदि ॥ २५ ॥ कामतुल्यस्तु नारीणां रिपूणां च यमोपमः ॥ तस्य पादांबुजद्वंद्वं राज्ञां मुकुटभूषणम् ॥ २६ ॥ तस्य भूतिं विलोक्यैव कुबेरोऽपि तिरस्कृतः ॥ यस्य विज्ञानमात्रेण मंत्रसिद्धिर्न संशयः ॥ २७ ॥ इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद्वटुकं नरः ॥ न चाप्नोति फलं तस्य परं नरकमाप्नुयात् ॥ २८ ॥ मन्वंतरत्रयं स्थित्वा तिर्यग्योनिषु जायते ॥ इह लोके महारोगी दारिद्र्येणातिपीडितः ॥ २९ ॥ शत्रूणां वशगो भूत्वा करपात्री भवेज्जडः ॥ देयं पुत्राय शिष्याय शांताय प्रियवादिने ॥३०॥ कार्पण्यरहितायालं वटुभक्तिरताय च ॥योऽपरागे प्रदाता वै तस्य स्यादतिसत्वरम् ॥ ३१ ॥आयुर्विद्या यशो धर्मं बलं चैव न संशयः ॥ इति ते कथितं देवि गोपनीयं स्वयोनिवत्॥३२॥इति श्रीरुद्रयामलोक्तं श्रीवटुकभैरवब्रह्मकवचं संपूर्णम्॥ श्रीगणेशाय नमः॥ अथ श्रीवटुकभैरवसहस्रनामस्तोत्रम् (रुद्रयामले)॥ॐ अस्य श्रीवटुकभैरवसहस्रनामात्मकस्तोत्रस्य दुर्वासा ऋषिः । अनुष्टुप् छंदः । भैरवो वटुकनाथो देवता । मम सर्वकार्यसिद्ध्यर्थं सर्वशत्रुनिवारणार्थं वटुकसहस्रनामपाठे विनियोगः ॥ ॐ

---

१ महाकालोऽस्य ऋषिरिति रुद्रजापे । १ दत्तात्रेय ऋषिरिति ब्रह्मजापे । १ गौतम ऋषिरिति गौतमीतन्त्रे । १ रावणोऽस्य ऋषिरिति भैरवीतन्त्रे । १ हनुमानृषिरिति भैरवतन्त्रे । १ निर्गुणो वटुकः सनकादय ऋषय इति मोक्षपटले । १ महाविष्णुः श्रीकृष्ण ऋषिरिति विष्णुयामले । एवं कार्यपरत्वे यथारुचि पाठे ऋषिस्मरणं कृत्वा स्तोत्रं पठेत् ।

नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ नमो भद्रस्वरूपाय जयदाय नमोनमः ॥ १ ॥ नमः कल्पस्वरूपाय विकल्पाय नमो नमः ॥ नमः शुद्धस्वरूपाय सुप्रकाशाय ते नमः ॥ २ ॥ नमः कंकालरूपाय कालरूप नमोऽस्तु ते ॥ नमस्त्र्यंबकरूपाय महाकालाय ते नमः ॥ ३ ॥ नमः संसारसाराय सारदाय नमो नमः ॥ नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ ४ ॥ नमः क्षेत्रनिवासाय क्षेत्रपालाय ते नमः ॥ क्षेत्राक्षेत्रस्वरूपाय क्षेत्रकर्त्रे नमो नमः ॥ ५ ॥ नमो नागविनाशाय भैरवाय नमो नमः ॥ नमो मातंगरूपाय भाररूप नमोऽस्तु ते ॥ ६ ॥ नमः सिद्धस्वरूपाय सिद्धिदाय नमो नमः॥ नमो बिंदुस्वरूपाय बिंदुसिंधुप्रकाशिने ॥७॥ नमो मंगलरूपाय मङ्गलाय नमो नमः ॥ नमः संकष्टनाशाय शंकराय नमो नमः ॥ ८ ॥ नमो धर्मस्वरूपाय धर्मदाय नमो नमः ॥ नमोऽनंतस्वरूपाय एकरूप नमोऽस्तु ते ॥ ९ ॥ नमो वृद्धिस्वरूपाय वृद्धिकामिन्नमोऽस्तु ते ॥ नमो मोहनरूपाय मोक्षरूपाय ते नमः ॥ १० ॥ नमो जलदरूपाय सामरूप नमोऽस्तु ते ॥ नमः स्थूलस्वरूपाय शुद्धरूपाय ते नमः ॥ ११ ॥ नमो नीलस्वरूपाय रंगरूपाय ते नमः ॥ नमो मंडलरूपाय मंडलाय नमो नमः ॥ १२ ॥ नमो रुद्रस्वरूपाय रुद्रनाथाय ते नमः ॥ नमो ब्रह्मस्वरूपाय ब्रह्मवक्त्रे नमो नमः ॥ १३ ॥ नमस्त्रिशूलधाराय धाराधारिन्नमोऽस्तु ते ॥ नमः संसारबीजाय वीररूपाय नमो नमः॥ १४ ॥ नमो विमलरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ नमो जंगमरूपाय जलजाय नमो नमः ॥ १५ ॥ नमः कालस्वरूपाय कालरुद्राय ते नमः ॥ नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ १६ ॥ नमः शत्रुविनाशाय भीषणाय नमो नमः ॥ नमः शांताय दांताय भ्रमरूपिन्नमोऽस्तु ते ॥ १७ ॥ न्यायगम्याय शुद्धाय योगिध्येयाय ते नमः ॥ नमः कमलकांताय कालवृद्धाय ते नमः ॥ १८ ॥ नमो ज्योतिःस्वरूपाय सुप्रकाशाय ते नमः ॥ नमः कल्पस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ १९ ॥ नमो जयस्वरूपाय जगज्जाड्यनिवारिणे ॥ महाभूताय भूताय भूतानां पतये नमः ॥ २० ॥ नमो नन्दाय वृन्दाय वादिने ब्रह्मवादिने ॥ नमो वादस्वरूपाय न्यायगम्याय ते नमः ॥ २१ ॥ नमो भवस्वरूपाय मायानिर्माणरूपिणे ॥ विश्ववंद्याय वंद्याय नमो विश्वंभराय ते ॥ २२ ॥ नमो नेत्रस्वरूपाय नेत्ररूपिन्नमोऽस्तु ते ॥ नमो वरुणरूपाय भैरवाय

नमो नमः ॥ २३ ॥ नमो यमस्वरूपाय वृद्धरूपाय ते नमः ॥ नमः कुबेररूपाय कालनाथाय ते नमः ॥ २४ ॥ नम ईशानरूपाय
अग्निरूपाय ते नमः ॥ नमो वायुस्वरूपाय विश्वरूपाय ते नमः ॥ २५ ॥ नमः प्राणस्वरूपाय प्राणाधिपतये नमः ॥ नमः संहाररूपाय
पालकाय नमो नमः ॥ २६ ॥ नमश्चंद्रस्वरूपाय चण्डरूपाय ते नमः ॥ नमो मंदारवासाय वासिने सर्वयोगिनाम् ॥ २७ ॥ योगि
गम्याय योग्याय योगिनां पतये नमः ॥ नमो जंगमवासाय वामदेवाय ते नमः ॥ २८ ॥ नमः शत्रुविनाशाय नीलकंठाय ते नमः ॥
नमो भक्तिविनोदाय दुर्भागाय नमो नमः ॥२९॥ नमो मान्यस्वरूपाय मानदाय नमो नमः ॥ नमो भूतिविभूषाय भूषिताय नमो नमः॥
॥ ३० ॥ नमो रजःस्वरूपाय सात्त्विकाय नमो नमः ॥ नमस्तामसरूपाय तारणाय नमो नमः ॥ ३१ ॥ नमो गंगाविनोदाय जटासंधा
रिणे नमः ॥ नमो भैरवरूपाय भयदाय नमो नमः ॥ ३२ ॥ नमः संग्रामरूपाय संग्रामजयदायिने ॥ संग्रामसाररूपाय यौवनाय नमो
नमः ॥ ३३ ॥ नमो वृद्धिस्वरूपाय वृद्धिदाय नमो नमः ॥ नमस्त्रिशूलहस्ताय शूलसंहारिणे नमः ॥ ३४ ॥ नमो द्वंद्वस्वरूपाय रूपदाय
नमो नमः ॥ नमः शत्रुविनाशाय शत्रुबुद्धिविनाशिने ॥ ३५ ॥ महाकालाय कालाय कालनाथाय ते नमः ॥ नमो भैरवरूपाय भैरवाय
नमो नमः ॥ ३६ ॥ नमः शंभुस्वरूपाय शंभुरूपिन्नमोऽस्तु ते ॥ नमः कमलहस्ताय डमरुहस्ताय ते नमः ॥ ३७ ॥ नमः कुक्कुर
वाहाय वहनाय नमो नमः ॥ नमो विमलनेत्राय त्रिनेत्राय नमो नमः ॥३८॥ नमः संसाररूपाय सारमेयाय वाहिने ॥ संसारज्ञानरूपाय
ज्ञाननाथाय ते नमः ॥ ३९ ॥ नमो मंगलरूपाय मंगलाय नमो नमः ॥ नमो न्यायविशालाय मंत्ररूपाय ते नमः ॥ ४० ॥ नमो यंत्र
स्वरूपाय यंत्रधारिन्नमोऽस्तु ते ॥ नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ ४१ ॥ नमः कलंकरूपाय कलंकाय नमो नमः ॥ नमः संसार
पाराय भैरवाय नमो नमः ॥ ४२ ॥ रुंडमालाविभूषाय भीषणाय नमो नमः ॥ नमो दुःखनिवाराय विहाराय नमो नमः ॥ ४३ ॥ नमो
दंडस्वरूपाय क्षणरूपाय ते नमः ॥ नमो मुहूर्तरूपाय सर्वरूपाय ते नमः ॥ ४४ ॥ नमो मोदस्वरूपाय श्रोणरूपाय ते नमः ॥ नमो
नक्षत्ररूपाय क्षेत्ररूपाय ते नमः ॥ ४५ ॥ नमो विष्णुस्वरूपाय बिंदुरूपाय ते नमः ॥ नमो ब्रह्मस्वरूपाय ब्रह्मचारिन्नमोऽस्तु ते ॥

॥ ४६ ॥ नमः कंथानिवासाय पटवासाय ते नमः ॥ नमो ज्वालनरूपाय ज्वलनाय नमो नमः॥ ४७ ॥ नमो वटुकरूपाय धूर्तरूपाय ते
नमः ॥ नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः॥४८॥ नमो वैद्यस्वरूपाय वैद्यरूपिन्नमोऽस्तु ते॥नम औषधरूपाय औषधाय नमो नमः॥ ४९ ॥
नमो व्याधिनिवाराय व्याधिरूपिन्नमो नमः ॥ नमो ज्वरनिवाराय ज्वररूपाय ते नमः॥ ५० ॥ नमो रुद्रस्वरूपाय रुद्राणां पतये नमः॥ विरू
पाक्षाय देवाय भैरवाय नमोनमः ॥ ५१ ॥ नमो ग्रहस्वरूपाय ग्रहाणां पतये नमः ॥ नमः पवित्राधाराय पर्शुधाराय ते नमः ॥ ५२ ॥
यज्ञोपवीतिदेवाय देवदेव नमोऽस्तु ते॥ नमो यज्ञस्वरूपाय यज्ञानां फलदायिने ॥५३॥ नमो रुद्रप्रतापाय तापनाय नमो नमः॥नमो गणेश
रूपाय गणरूपाय ते नमः ॥ ५४ ॥ नमो रश्मिस्वरूपाय रश्मिरूपाय ते नमः ॥ नमो मलयरूपाय राश्मिरूपाय ते नमः ॥ ५५ ॥ नमो
विभक्तिरूपाय विमलाय नमो नमः ॥ नमो मधुररूपाय मधुपूर्णकलापिने ॥ ५६ ॥ कालेश्वराय कालाय कालनाथाय ते नमः ॥
नमो विश्वप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥ ५७ ॥ नमो योनिस्वरूपाय भ्रातृरूपाय ते नमः ॥ नमो भगिनिरूपाय भैरवाय नमो नमः
॥ ५८ ॥ नमो वृषस्वरूपाय कर्मरूपाय ते नमः ॥ नमो वेदांतवेद्याय वेदसिद्धांतसारिणे ॥ ५९ ॥ नमः शाखाप्रकाशाय पुरुषाय नमो
नमः ॥ नमः प्रकृतिरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥६०॥ नमो विश्वस्वरूपाय शिवरूपाय ते नमः ॥ नमो ज्योतिःस्वरूपाय निर्गुणाय नमो
नमः ॥ ६१ ॥ निरंजनाय शांताय निर्विकाराय ते नमः ॥ निर्मायाय विमोहाय विश्वनाथाय ते नमः ॥ ६२ ॥ नमः कण्ठप्रकाशाय
शत्रुनाशाय ते नमः ॥ नम आशाप्रकाशाय आशापूरकृते नमः ॥ ६३ ॥ नमो मत्स्यस्वरूपाय योगरूपाय ते नमः ॥ नमो वाराह
रूपाय वामनाय नमो नमः ॥ ६४ ॥ नम आनन्दरूपाय आनन्दाय नमो नमः ॥ नमोऽस्त्वनर्घ्यकेशाय ज्वलत्केशाय ते नमः ॥ ६५ ॥
नमः पापविमोक्षाय मोक्षदाय नमो नमः॥नमः कैलासनाथाय कालनाथाय ते नमः॥६६॥नमो विन्ददविन्दाय विन्दुभाय नमो नमः ॥
नमः प्रणवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥६७॥ नमो मेरुनिवासाय भक्तवासाय ते नमः॥ नमो मेरुस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥६८॥नमो
भद्रस्वरूपाय भद्ररूपाय ते नमः ॥नमो योगिस्वरूपाय योगिनां पतये नमः ॥६९॥ नमो मैत्रस्वरूपाय मित्ररूपाय ते नमः ॥ नमो ब्रह्म

निवासाय काशीनाथाय ते नमः ॥ ७० ॥ नमो ब्रह्मांडवासाय ब्रह्मवासाय ते नमः ॥ नमो मातंगवासाय सूक्ष्मवासाय ते नमः ॥ ७१ ॥ नमो मातृनिवासाय भ्रातृवासाय ते नमः ॥ नमो जगन्निवासाय जलावासाय ते नमः ॥ ७२ ॥ नमः कौलनिवासाय नेत्रवासाय ते नमः ॥ नमो भैरववासाय भैरवाय नमो नमः ॥७३॥ नमः समुद्रवासाय वह्निवासाय ते नमः ॥ नमश्चन्द्रनिवासाय चन्द्रावासाय ते नमः ॥ ७४ ॥ नमः कलिंगवासाय कालिंगाय नमो नमः ॥ नम उत्कलवासाय शक्रवासाय ते नमः ॥ ७५ ॥ नमः कर्पूरवासाय सिद्धिवासाय ते नमः ॥ नमः सुन्दरवासाय भैरवाय नमो नमः ॥ ७६ ॥ नम आकाशवासाय वासिने सर्वयोगिनाम् ॥ नमो ब्राह्मणवासाय शूद्रवासाय ते नमः ॥ ७७ ॥ नमः क्षत्रियवासाय वैश्यवासाय ते नमः ॥ नमः पक्षिनिवासाय भैरवाय नमो नमः ॥ ७८ ॥ नमः पातालमूलाय मूलावासाय ते नमः ॥ नमो रसातलस्थाय सर्वपातालवासिने ॥ ७९ ॥ नमः कंकालवासाय कंकवासाय ते नमः ॥ नमो मंत्रनिवासाय भैरवाय नमो नमः ॥ ८० ॥ नमोऽहंकाररूपाय रजोरूपाय ते नमः ॥ नमः सत्त्वनिवासाय भैरवाय नमो नमः ॥ ८१ ॥ नमो नलिनरूपाय नालिनांगप्रकाशिने ॥ नमः सूर्यस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ ८२ ॥ नमो दुष्टनिवासाय साधूपायनरूपिणे ॥ नमो नम्रस्वरूपाय स्तंभनाय नमो नमः ॥ ८३ ॥ पंचयोनिप्रकाशाय चतुर्योनिप्रकाशिने ॥ नवयोनिप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥ ८४ ॥ नमः षोडशरूपाय नमः षोडशधारिणे ॥ चतुःषष्टिप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥ ८५ ॥ नमो बिंदुप्रकाशाय सुप्रकाशाय ते नमः॥नमो गणस्वरूपाय मुखरूप नमोऽस्तु ते॥८६॥नमश्चाम्बररूपाय भैरवाय नमो नमः॥नमो नानास्वरूपाय सुखरूप नमोऽस्तु ते ॥ ८७ ॥ नमो दुर्गस्वरूपाय दुःखहर्त्रे नमोऽस्तु ते ॥ नमो विशुद्धदेहाय दिव्यदेहाय ते नमः ॥ ८८ ॥ नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ नमः प्रेतनिवासाय पिशाचाय नमो नमः ॥ ८९ ॥ नमो निशाप्रकाशाय निशारूप नमोऽस्तु ते ॥ नमः सोमार्धरामाय धराधीशाय ते नमः ॥ ९० ॥ नमः संसारभाराय भारकाय नमो नमः ॥ नमो देहस्वरूपाय अदेहाय नमो नमः ॥ ९१ ॥ देवदेहाय देवाय भैरवाय नमो नमः ॥ विश्वेश्वराय विश्वाय विश्वधारिन्नमोऽस्तु ते ॥ ९२ ॥ स्वप्रकाशप्रकाशाय भैरवाय

नमो नमः ॥ स्थितिरूपाय नित्याय स्थितीनां पतये नमः॥९३॥ सुस्थिराय सुकेशाय केशवाय नमो नमः ॥ स्थविष्ठाय गरिष्ठाय प्रेष्ठाय परमात्मने ॥९४॥ नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ नमः पारदरूपाय पवित्राय नमो नमः॥९५॥ नमो वेधकरूपाय ह्यनिंद्याय नमो नमः॥नमः शब्दस्वरूपाय शब्दातीताय ते नमः॥९६॥नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ नमोऽनिंद्यस्वरूपाय ह्यनिंदाय नमो नमः ॥ ॥ ९७ ॥ नमो विशदरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ नमः शरणरूपाय शरण्यानां सुखाय ते ॥ ९८ ॥ नमः शरण्यरक्षाय भैरवाय नमो नमः ॥ नमः स्वाहास्वरूपाय स्वधारूपाय ते नमः ॥९९ ॥ नमो वौषट्स्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ अक्षराय नमस्तुभ्यं त्रिधा मात्रास्वरूपिणे ॥१००॥ नमोऽक्षराय शुद्धाय भैरवाय नमो नमः ॥ अर्धमात्राय पूर्णाय संपूर्णाय नमो नमः ॥ १०१ ॥ नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ नमोऽष्टचक्ररूपाय ब्रह्मरूपाय ते नमः ॥ १०२ ॥ नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ नमो भैरवरूपाय सृष्टिकर्त्रे महात्मने ॥ १०३ ॥ नमः पाल्यस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ सनातनाय नित्याय निर्गुणाय गुणाय ते ॥ १०४ ॥ नमः सिद्धाय शांताय भैरवाय नमो नमः ॥ नमो धारास्वरूपाय खड्गहस्ताय ते नमः ॥ १०५ ॥ नमस्त्रिशूलहस्ताय भैरवाय नमो नमः ॥ नमः कुंडलवर्णाय शवमुंडविभूषिणे ॥ १०६ ॥ महाक्रुद्धाय चंडाय भैरवाय नमो नमः ॥ नमो वासुकिभूषाय सर्वभूषाय ते नमः ॥ ॥ १०७ ॥ नमः कपालहस्ताय भैरवाय नमो नमः ॥ पानपात्रप्रमत्ताय मत्तरूपाय ते नमः ॥ १०८ ॥ नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ माध्वाकारसुपर्णाय माधवाय नमो नमः ॥ १०९ ॥ नमो मांगल्यरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ नमः कुमाररूपाय स्त्रीरूपाय नमो नमः ॥ ११० ॥ नमो गंधस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ नमो दुर्गंधरूपाय सुगंधाय नमो नमः ॥ १११ ॥ नमः पुष्पस्वरूपाय पुष्पभूषण ते नमः ॥ नमः पुष्पप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥ ११२ ॥ नमः पुष्पविनोदाय पुष्पपूजाय ते नमः ॥ नमो भक्तिनिवासाय भक्तदुःखनिवारिणे ॥ ११३ ॥ भक्तप्रियाय शांताय भैरवाय नमो नमः ॥ नमो भक्तिस्वरूपाय रूपदाय नमो नमः॥ ११४ ॥ नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ नमो वासाय भद्राय वीरभद्राय ते नमः ॥ ११५ ॥ नमः संग्रामसाराय भैरवाय नमो नमः ॥

नमः खट्वांगहस्ताय कालहस्ताय ते नमः ॥ ११६ ॥ नमोऽघोराय घोराय घोराघोरस्वरूपिणे ॥ घोरधर्माय घोराय भैरवाय नमो नमः ॥ ११७ ॥ घोरत्रिशूलहस्ताय घोरपानाय ते नमः ॥ घोररूपाय नीलाय भैरवाय नमो नमः ॥ ११८ ॥ घोरवाहनगम्याय ह्यगम्याय नमो नमः ॥ घोरब्रह्मस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ ११९ ॥ घोरशब्दाय घोराय घोरदेहाय ते नमः ॥ घोरद्रव्याय घोराय भैरवाय नमो नमः ॥ १२० ॥ घोरसंगाय सिंहाय सिद्धिसिंहाय ते नमः ॥ नमः प्रचंडसिंहाय सिंहरूपाय ते नमः ॥ १२१ ॥ नमः सिंहप्रकाशाय सुप्रकाशाय ते नमः ॥ नमो विजयरूपाय जयदाय नमो नमः ॥ १२२ ॥ नमो भार्गवरूपाय गर्भरूपाय ते नमः ॥ नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ १२३ ॥ नमो मेध्याय शुद्धाय मायाधीशाय ते नमः ॥ नमो मेघप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः॥१२४॥ दुर्जेयाय दुरंताय दुर्लभाय दुरात्मने ॥ भक्तिलभ्याय भव्याय भाविताय नमो नमः ॥१२५ ॥ नमो गौरवरूपाय गौरवाय नमो नमः ॥ नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ १२६ ॥ नमो विघ्ननिवाराय विघ्ननाशिन्नमोऽस्तु ते ॥ विघ्नविद्रावणायैव भैरवाय नमो नमः ॥ ॥ १२७ ॥ नमः किंशुकरूपाय रजोरूपाय ते नमः ॥ नमो नीलस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ १२८ ॥ नमो गणस्वरूपाय गणनाथाय ते नमः ॥ नमो विश्वविकासाय भैरवाय नमो नमः ॥ १२९ ॥ नमो योगिप्रकाशाय योगिगम्याय ते नमः ॥ नमो हेरंबरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ १३० ॥ नमस्त्रिधास्वरूपाय रूपदाय नमो नमः ॥ नमः स्वरस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ १३१ ॥ नमः सरस्वतीरूप बुद्धिरूपाय ते नमः ॥ नमो वंद्यस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ १३२ ॥ नमस्त्रिविक्रमरूपाय त्रिस्वरूपाय ते नमः ॥ नमः शशांकरूढाय भैरवाय नमो नमः ॥ १३३ ॥ नमो व्यापकरूपाय व्याप्यरूपाय ते नमः ॥ नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः॥१३४॥ नमो विशदरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ नमः सत्त्वस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१३५ ॥ नमः सूक्तस्वरूपाय शिवदाय नमो नमः ॥ नमो गंगास्वरूपाय यमुनारूपिणे नमः ॥ १३६ ॥ नमो गौरीस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ नमो दुःखविनाशाय दुःखमोक्षणरूपिणे ॥ १३७ ॥ महाचलाय वंद्याय भैरवाय नमो नमः ॥ नमो नंदस्वरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ १३८ ॥ नमो नंदिस्वरूपाय स्थिर

रूपाय ते नमः ॥ नमः केलिस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ १३९ ॥ नमः क्षेत्रनिवासाय वासिने ब्रह्मवादिने ॥ नमः शांताय शुद्धाय
भैरवाय नमो नमः ॥ १४० ॥ नमो नर्मदरूपाय जलरूपाय ते नमः ॥ नमो विश्वविनोदाय जयदाय नमो नमः ॥ १४१ ॥ नमो
महेन्द्ररूपाय महनीयाय ते नमः ॥ नमः संसृतिरूपाय शरण्याय च ते नमः ॥ १४२ ॥ नमस्त्रिबन्धुवासाय बालकाय नमो नमः ॥
नमः संसारासाराय सरसां पतये नमः ॥ १४३ ॥ नमस्तेजःस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ नमः कारुण्यरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥
॥ १४४ ॥ नमो गोकर्णरूपाय ब्रह्मवर्णाय ते नमः ॥ नमः शंकरवर्णाय हस्तिकर्णाय ते नमः ॥ १४५ ॥ नमो विष्टरकर्णाय यज्ञ
कर्णाय ते नमः ॥ नमः शंबुककर्णाय भैरवाय नमो नमः ॥ १४६ ॥ नमो दिव्यसुकर्णाय कालकर्णाय ते नमः ॥ नमो भयदकर्णाय
भैरवाय नमो नमः ॥ १४७ ॥ नम आकाशवर्णाय कालकर्णाय ते नमः ॥ नमो दिग्रपकर्णाय भैरवाय नमो नमः ॥ १४८ ॥ नमो
विशुद्धकर्णाय विमलाय नमो नमः ॥ नमः सहस्रकर्णाय भैरवाय नमो नमः ॥ १४९॥ नमो नेत्रप्रकाशाय सुनेत्राय नमो नमः ॥ नमो
वरदनेत्राय जयनेत्राय ते नमः ॥ १५० ॥ नमो विमलनेत्राय योगिनेत्राय ते नमः ॥ नमः सहस्रनेत्राय भैरवाय नमो नमः ॥ १५१ ॥
नमः कलिंदरूपाय कालिंदाय ते नमो नमः ॥ नमो ज्योतिःस्वरूपाय ज्योतिषाय नमो नमः ॥ १५२ ॥ नमस्तारप्रकाशाय ताररूपिन्नमो
ऽस्तु ते ॥ नमो नक्षत्रनेत्राय भैरवाय नमो नमः ॥ १५३ ॥ नमश्चन्द्रप्रकाशाय चन्द्ररूप नमोऽस्तु ते ॥ नमो रश्मिस्वरूपाय भैरवाय
नमो नमः ॥ १५४ ॥ नम आनन्दरूपाय जगदानन्दरूपिणे ॥ नमो द्रविडरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ १५५ ॥ नमः शंखनिवासाय
शंकराय नमो नमः ॥ नमो मुद्राप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः॥१५६॥ नमो न्यासस्वरूपाय न्यासरूप नमोऽस्तु ते ॥ नमो बिंदुस्वरूपाय
भैरवाय नमो नमः ॥ १५७ ॥ नमो विसर्गरूपाय प्रणवरूपाय ते नमः ॥ नमो मन्त्रप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥ १५८ ॥ नमो जंगु
करूपाय जंगमाय नमो नमः॥नमो गरुडरूपाय भैरवाय नमो नमः॥१५९॥नमो लंवुकरूपाय लंबिकाय नमो नमः॥ नमो लक्ष्मीस्वरूपाय
भैरवाय नमो नमः ॥१६०॥ नमो वीरस्वरूपाय वीरणाय नमो नमः ॥नमः प्रचण्डरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१६१॥ नमो डंबरस्वरूपाय

डमरुधारिन्नमोऽस्तु ते ॥ नमः कलंकनाशाय कालनाथाय ते नमः ॥१६२॥ नम ऋद्धिप्रकाशाय सिद्धिदाय नमो नमः ॥ नमः सिद्धस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥६३॥नमो धर्मप्रकाशाय धर्मनाथाय ते नमः ॥धर्माय धर्मराजाय भैरवाय नमो नमः ॥१६४॥ नमो धर्माधिपतये धर्मध्येयाय ते नमः ॥ नमो धर्मार्थसिद्धाय भैरवाय नमो नमः ॥ १६५ ॥ नमो विरजरूपाय रूपारूपप्रकाशिने ॥ नमो राजप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥ १६६ ॥ नमः प्रतापसिंहाय प्रतापाय नमो नमः ॥ नमः कोटिप्रतापाय भैरवाय नमो नमः ॥ १६७ ॥ नमः सहस्ररूपाय कोटिरूपाय ते नमः ॥ नम आनन्दरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ १६८ ॥ नमः संहारबन्धाय बन्धकाय नमो नमः ॥ नमो विमोक्षरूपाय मोक्षदाय नमो नमः॥१६९॥नमो विष्णुस्वरूपाय व्यापकाय नमो नमः॥नमो मांगल्यनाथाय शिवनाथाय ते नमः॥१७०॥ नमो व्यालाय व्याघ्राय व्याघ्ररूपिन्नमोऽस्तु ते॥नमोव्यालविभूषाय भैरवाय नमो नमः॥१७१॥नमो विद्याप्रकाशाय विद्यानां पतये नमः॥ नमो योगिस्वरूपाय क्रूररूपाय ते नमः ॥ १७२ ॥ नमः संहाररूपाय शत्रुनाशाय ते नमः ॥ नमः पालकरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ ॥ १७३ ॥ नमः कारुण्यदेवाय देवदेवाय ते नमः ॥ नमो विश्वविलासाय भैरवाय नमो नमः ॥ १७४ ॥ नमो नमः प्रकाशाय काशीवासिन्नमोऽस्तु ते ॥ नमो भैरवक्षेत्राय क्षेत्रपालाय ते नमः ॥ १७५ ॥ नमो भद्रस्वरूपाय भद्रकाय नमो नमः ॥ नमो भद्राधिपतये भयहंतर्नमोऽस्तु ते ॥ १७६ ॥ नमो मायाविनोदाय मायिने मदरूपिणे ॥ नमो मत्ताय शांताय भैरवाय नमो नमः ॥ १७७ ॥ नमो मलयवासाय कैलासाय नमो नमः ॥ नमः कैलासवासाय कालिकातनयाय ते ॥ १७८ ॥ नमः संसारपाराय भैरवाय नमो नमः ॥नमो मातृविनोदाय विमलाय नमो नमः ॥१७९ ॥ नमो यमप्रकाशाय नियमाय नमो नमः ॥ नमः प्राणप्रकाशाय ध्यानाधिपतये नमः ॥ ॥ १८० ॥ नमः समाधिरूपाय निर्गुणाय नमो नमः ॥ नमो मंत्रप्रकाशाय मंत्ररूपाय ते नमः ॥ १८१ ॥ नमो वृंदविनोदाय वृंदकाय नमो नमः ॥ नमो बृंहितरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ १८२ ॥ नमो मान्यस्वरूपाय मानदाय नमो नमः ॥ नमो विश्वप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥ १८३ ॥ नमो वै स्थिरपीठाय सिद्धपीठाय ते नमः ॥ नमो मंडलपीठाय उक्तपीठाय ते नमः ॥ १८४ ॥ नमो

नमो विनोदनाथाय सिद्धिनाथाय ते नमः ॥ १८५ ॥ नमो नाथाय नाथाय ज्ञाननाथाय
यशोदानाथाय कामनाथाय ते नमः ॥ नमो विनोदनाथाय सिद्धिनाथाय ते नमः ॥ नमो बालक
ते नमः ॥ नमः शंकरनाथाय जयनाथाय ते नमः ॥ १८६ ॥ नमो मुद्गलनाथाय नीलनाथाय ते नमः ॥ नमो बालक
नाथाय धर्मनाथाय ते नमः ॥ १८७ ॥ विश्वनाथाय नाथाय कार्यनाथाय ते नमः ॥ नमो भैरवनाथाय महानाथाय ते नमः॥१८८॥नमो
ब्रह्मसनाथाय योगनाथाय ते नमः ॥ नमो विश्वविहाराय विश्वभाराय ते नमः ॥ १८९ ॥ नमो रंगसनाथाय रंगनाथाय ते नमः ॥
नमो मोक्षसनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥ १९० ॥ नमो गोरक्षनाथाय गोरक्षाय नमो नमः ॥ नमो मंदारनाथाय नन्दनाथाय ते नमः
॥ १९१ ॥ नमो मंगलनाथाय चंपानाथाय ते नमः ॥ नमः सन्तोषनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥ १९२ ॥ नमोऽगराग
नाथाय सुखनाथाय ते नमः ॥ नमः कारुण्यनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥ १९३ ॥ नमो द्रविडनाथाय दरीनाथाय ते नमः ॥
नमः संसारनाथाय जगन्नाथाय ते नमः ॥ १९४ ॥ नमो माध्वीकनाथाय मंत्रनाथाय ते नमः ॥ नमो न्यासनाथाय
ध्याननाथाय ते नमः ॥१९५॥ नमो गोकर्णनाथाय महानाथाय ते नमः ॥ नमः शुभ्रसनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥१९६॥ नमो विमल
नाथाय मंडलेशाय ते नमः ॥ नमः सरोजनाथाय मत्स्यनाथाय ते नमः ॥ १९७ ॥ नमो भक्तसनाथाय भक्तिनाथाय ते नमः ॥
नमो मोहननाथाय वत्सनाथाय ते नमः ॥ १९८ ॥ नमो मातृसनाथाय त्रिश्वनाथाय ते नमः ॥ नमो बिंदुसनाथाय जयनाथाय ते
नमः ॥ १९९ ॥ नमो मंगलनाथाय धर्मनाथाय ते नमः॥ नमो गंगासनाथाय भूमिनाथाय ते नमः ॥ २०० ॥ नमो धीरसनाथाय बिंदु
नाथाय ते नमः ॥ नमः कंचुकिनाथाय शृंगिनाथाय ते नमः ॥२०१॥ नमः समुद्रनाथाय गिरिनाथाय ते नमः ॥ नमो मांगल्यनाथाय
कुट्टनाथाय ते नमः ॥ २०२ ॥ नमो वेदांतनाथाय श्रीनाथाय नमो नमः ॥ नमो ब्रह्मांडनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥ २०३ ॥ नमो
गिरिशनाथाय वामनाथाय ते नमः ॥ नमो बीजसनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥ २०४ ॥ नमो मंदरनाथाय मंदनाथाय ते नमः ॥
नमो भैरवीनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥ २०५ ॥ अंबानाथाय नाथाय जंतुनाथाय ते नमः ॥ नमः कालिसनाय भैरवाय नमो नमः ॥

॥ २०६ ॥ नमो मुकुंदनाथाय कुंदनाथाय ते नमः ॥ नमः कुंडलनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥२०७॥ नमोऽष्टचक्रनाथाय चक्रनाथाय ते नमः ॥ नमो विभूतिनाथाय शूलनाथाय ते नमः॥ २०८ ॥ नमो न्यायसनाथाय न्यायनाथाय ते नमः ॥ नमो दयासनाथाय जंगमेशाय ते नमः ॥ २०९ ॥ नमो विशदनाथाय जगन्नाथाय ते नमः ॥ नमः कामिकनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥ २१० ॥ नमः क्षेत्रसनाथाय जीवनाथाय ते नमः ॥ नमः केवलनाथाय चैलनाथाय ते नमः ॥२११॥ नमो मात्रासनाथाय अमात्राय नमो नमः ॥ नमो द्वंद्वसनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥ २१२ ॥ नमः शूरसनाथाय शूरनाथाय ते नमः ॥ नमः सौजन्यनाथाय सौजन्याय नमो नमः ॥२१३ ॥ नमो दुष्टसनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥ नमो भयसनाथाय बिंबनाथाय ते नमः ॥ २१४ ॥ नमो मायासनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥ नमो विटंकनाथाय टंकनाथाय ते नमः ॥ २१५ ॥ नमश्चर्मसनाथाय खड्गनाथाय ते नमः ॥ नमः शक्तिसनाथाय धनुर्नाथाय ते नमः ॥ ॥ २१६ ॥ नमो मानसनाथाय शापनाथाय ते नमः ॥ नमो यंत्रसनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥ २१७ ॥ नमो गंडूषनाथाय गंडूषाय नमो नमः ॥ नमो डाकिनिनाथाय भैरवाय नमः ॥ २१८ ॥ नमो डामरनाथाय डारकाय नमो नमः ॥ नमो डंकसनाथाय डंकनाथाय ते नमः ॥ २१९ ॥ नमो मांडव्यनाथाय यज्ञनाथाय ते नमः ॥ नमो यजुःसनाथाय क्रीडानाथाय ते नमः ॥ २२० ॥ नमः सामसनाथायाथर्वनाथाय ते नमः ॥ नमः शून्याय नाथाय स्वर्गनाथाय ते नमः॥२२१॥ इदं नामसहस्रं मे रुद्रेण परिकीर्तितम्॥यः पठेत्पाठयेद्वापि स एव मम सेवकः॥२२२॥यं यं चिंतयते कामं कारंकारं प्रियाकृतिम् ॥ यः श्रृणोति दुरापं स तं तं प्राप्नोति मामकः ॥२२३॥ राजद्वारे श्मशाने तु पृथिव्यां जलसन्निधौ ॥ यः पठेन्मानवो नित्यं स शूरः स्यान्न संशयः॥२२४॥एककालं द्विकालं वा त्रिकालं वा पठेन्नरः॥ स भवेद् बुद्धिमाँल्लोके सत्यमेव न संशयः॥२२५॥यः श्रृणोति नरो भक्त्या स एव गुणसागरः ॥ यः श्रद्धया रात्रिकाले श्रृणोति पठतेऽपि वा ॥ २२६ ॥ स एव साधकः प्रोक्तः सर्वदुष्टविनाशकः ॥ अर्धरात्रे पठेद्यस्तु स एव पुरुषोत्तमः॥२२७॥ त्रिसंध्ये वै देवगृहे श्मशाने च विशेषतः ॥ वने च मार्गगमने बले दुर्जनसन्निधौ॥२२८॥यः पठेत्प्रयतो नित्यं स सुखी स्यान्न संशयः ॥ विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी

लभते धनम्॥२२९॥शौर्यार्थी लभते शौर्यं पुत्रार्थी पुत्रमाप्नुयात् ॥ एवं विंशतिमंत्रेण अक्षरेण सहैव मे ॥२३०॥ यः पठेत्प्रातरुत्थाय सर्व काममवाप्नुयात् ॥ रसार्थी पाठमात्रेण रसं प्राप्नोति नित्यशः॥२३१॥अन्नार्थी लभते चान्नं सुखार्थी सुखमाप्नुयात्॥ रोगी प्रमुच्यते रोगा द्बद्धो मुच्यते बंधनात् ॥२३२॥ शापार्थी लभते शापं सर्वशत्रुविनाशनम् ॥ स्थावरं जंगमं वापि विषं सर्वं प्रणश्यति ॥ २३३ ॥ सर्वलोक प्रियः शांतो मातापितृप्रियंकरः ॥ संग्रामे विजयस्तस्य यः पठेद्भक्तिसंयुतः ॥ २३४ ॥ सर्वत्र जयदं देवि स्तोत्रमेतत्प्रकीर्तितम् ॥ इदं स्तोत्रं महापुण्यं निंदकाय न दर्शयेत्॥२३५॥असाधकाय दुष्टाय मातापितृविकारिणे ॥ अधार्मिकाकुलीनाभ्यां नैतत्स्तोत्रं प्रकाशयेत् ॥ ॥ २३६ ॥ साधकाय च भक्ताय योगिने धार्मिकाय च ॥ गुरुभक्ताय शांताय दर्शयेत्साधकोत्तमः ॥ २३७ ॥ अन्यथा पापलिप्तः स्यात्क्रोधनो भैरवोत्तमे ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन गोपनीयं प्रयत्नतः ॥ २३८ ॥ इदं स्तोत्रं च रुद्रेण रामस्यापि मुखेऽर्पितम् ॥ तन्मुखान्निः सृतं लोके दरिद्रायापि साधवे ॥ २३९ ॥ रामेण कथितं भ्रात्रे लक्ष्मणाय महात्मने ॥ ततो दुर्वाससा प्राप्तं तेनैवोक्तं तु पांडवे ॥ २४० ॥ पांडुरप्यब्रवीत्कृष्णं कृष्णेनेह प्रकीर्तितम् ॥ अस्य स्तोत्रस्य माहात्म्यं रामो जानाति तत्त्वतः ॥ २४१ ॥ रामोऽपि राज्यं संप्राप्तो ह्यस्य स्तोत्रस्य पाठतः ॥ पांडवोऽपि तथा राज्यं संप्राप्तो भैरवस्य च ॥ २४२ ॥ अनेन स्तोत्रपाठेन किमलभ्यं भवेदिति ॥ सर्व लोकस्य पूज्यस्तु जायते नात्र संशयः ॥ २४३ ॥ इति श्रीरुद्रयामलोक्तश्रीवटुकभैरवसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ श्रीबटुकभैरवस्तवराजप्रारंभः ॥ (उक्तं च रुद्रयामले) ॥ मेरुपृष्ठे सुखासीनं देवदेवं त्रिलोचनम्॥ शंकरं परिपप्रच्छ पार्वती परमे श्वरम् ॥ १ ॥ पार्वत्युवाच ॥ य एष भैरवो नाम आपदुद्धारको मतः ॥ त्वया च कथितो देव भैरवः कल्प उत्तमः ॥ तस्य नामसहस्राणि प्रयुतन्यार्बुदानि च ॥ २ ॥ सारमुद्धृत्य तेषां वै नामाष्टशतकं वद ॥ यानि संकीर्त्तयन्मर्त्यः सर्वदुःखविवर्जितः ॥ सर्वान्का मानवाप्नोति साधकः सिद्धिमेव च ॥३॥ ईश्वर उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि भैरवस्य महात्मनः ॥ आपदुद्धारणस्येह नामाष्टशतमुत्तमम्॥ ॥ ४ ॥ सर्वपापहरं पुण्यं सर्वापद्विनिवारणम् ॥ सर्वकामार्थदं देवि साधकानां सुखावहम् ॥ ५ ॥ सर्वमंगलमांगल्यं सर्वोपद्रवनाश

नम् ॥ आयुष्करं पुष्टिकरं श्रीकरं च यशस्करम् ॥ ६ ॥ आद्यन्ते स्तोत्रपाठस्य मूलमंत्रं जपेन्नरः ॥ अष्टोत्तरशतं धीमान् यथासंख्य मथापि वा ॥ जपांतेऽप्युत्तरन्यासाः कर्तव्या जपसिद्धये ॥ ७ ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यं सिद्धार्थे विनियोजयेत् ॥ साधकः सर्वलोकेषु सत्यं सत्यं न संशयः ॥ ८ ॥ ॐ अस्य श्रीवटुकभैरवस्तोत्रमंत्रस्य बृहदारण्यक ऋषिः । अनुष्टुप् छंदः । श्रीवटुकभैरवो देवता ।अष्टबाहुमिति बीजम् । त्रिनयनमिति शक्तिः । प्रणवः कीलकम् । ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥ॐ बृहदारण्यकऋषये नमः शिरसि १ अनुष्टुप्छंदसे नमः मुखे २ श्रीवटुकभैरवदेवतायै नमः हृदये ३ अष्टबाहुमिति बीजाय नमः गुह्ये ४ त्रिनयनेति शक्तये नमः पादयोः ५ ॐ कीलकाय नमः नाभौ ६ विनियोगाय नमः सर्वांगे॥७॥इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ह्रां वां ईशानः सर्वविद्यानामश्विरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्॥ अंगुष्ठाभ्यां नमः॥१॥ ॐ ह्रीं वीं तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ॥तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ तर्जनीभ्यां नमः॥२॥ ॐ हूँ वूँ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः॥ सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ मध्यमाभ्यां नमः ॥३॥ ॐ हैं वैं वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कल विकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥ अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रौं वौं सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः ॥ भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥ कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रः वः पंचवक्त्राय महादेवाय नमः ॥ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ह्रां वां ईशानः सर्व विद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम् ॥ हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं वीं तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ हूं वूं अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ॥ सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ हैं वैं वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो

मनोन्मनाय नमः ॥ कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ ह्रौं वौं सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः ॥ भवेभवे नाति भवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥ नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५॥ ॐ ह्वः वः पंचवक्त्राय महादेवाय नमः अस्त्राय फट् ॥६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ॥ ॐ ह्रीं भैरवाय नमः मूर्ध्नि ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं भीमदर्शनाय नमः ललाटे ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं भूताश्रयाय नमः नेत्रयोः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं भूतनायकाय नमः कर्णयोः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं त्रिशूलाय नमः नासिकायाम् ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं रक्तपाय नमः जिह्वायाम् ॥ ६॥ ॐ ह्रीं नागहार नागयज्ञोपवीतिकाय नमः कंठे ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय नमः करयोः॥८॥ ॐ ह्रीं क्षेत्रपालाय नमः हृदये ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं क्षेत्रदाय नमः नाभौ ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं अबोधनाशनाय नमः कट्याम् ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं त्रिनेत्राय नमः ऊर्वोः ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं रक्तपायिने नमः जंघयोः ॥१३॥ ॐ ह्रीं देवदेवेशाय नमः सर्वांगे ॥१४॥ इति देहन्यासः॥ॐ ह्रीं भैरवाय नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं भीमदर्शनाय नमः तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं भूतश्रेष्ठाय नमः मध्यमाभ्यां नमः ॥३ ॥ ॐ ह्रीं भूतनायकाय नमः अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं क्षत्रियाय नमः कनिष्ठिकाभ्यां ननः॥५॥ ॐ ह्रीं क्षेत्रपालाय नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥६॥ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय दिग्विदिशायाम् ॥ ७ ॥ ॐ भैरवाय नमः सर्वांगे ॥८॥ इति करन्यासो द्वितीयः ॥ ॐ ह्रीं भैरवाय नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं भीमदर्शनाय नमः ललाटे ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं भूतहननाय नमः नेत्रयोः॥३॥ ॐ ह्रीं सारमेयानुगाय नमः भ्रुवोः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं भूतनाथाय नमः कर्णयोः॥ ५॥ॐ ह्रीं प्रेतवाहनाथाय नमः कपोलयोः ॥६॥ ॐ ह्रीं भस्मांगाय नमः नासापुटे ॥७॥ ॐ ह्रीं सर्पभूषणाय नमः ओष्ठयोः ॥८॥ ॐ ह्रीं आदिनाथय नमः मुखे ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं शक्तिहस्ताय नमः गले॥१०॥ॐ ह्रीं दैत्यशमनाय नमः स्कंधयोः ॥११॥ ॐ ह्रींअतुलतेजसे नमः बाह्वोः ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं कपालिने नमः करयोः ॥१२॥ ॐ ह्रीं मुण्डमालिने नमः हृदये॥१३ ॥ ॐ ह्रीं शांताय नमः वक्षःस्थले ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं कामचारिणे नमः स्तनयोः ॥१५ ॥ ॐ ह्रीं सदातुष्टाय नमः उदरे ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं क्षेत्रेशाय नमः पार्श्वयोः ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं क्षेत्रपालाय नमः पृष्ठे ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं

---

१ एवं न्यासप्रभावेण भक्तोपरि भैरवः प्रसन्नो भवति ॥

क्षेत्रज्ञाय नमः नाभौ ॥ १९॥ ॐ ह्रीं पापौघनाशाय नमः कट्याम् ॥२०॥ ॐ ह्रीं वटुकाय नमः लिंगे ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं रक्षाकराय नमः गुदे ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं रक्तलोचनाय नमः ऊर्वोः ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं घुर्घुराय नमः जानुनि ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं रक्तपायिने नमः जंघयोः ॥ २५ ॥ ॐ ह्रीं सिद्धपादुकाय नमः गुल्फयोः ॥ २६ ॥ ॐ ह्रीं सुरेश्वराय नमः पादपृष्ठे ॥ २७ ॥ ॐ ह्रीं आपदुद्धारकाय नमः आपादतलमस्तकपर्यंतं न्यसेत् ॥ २८ ॥ 'ॐ ह्रीं क्ष्म्रौं ब्लौं ह्रीं ॐ स्वाहा आपदुद्धारणभैरवाय नमः ॥' अनेन सर्वाङ्गे व्यापकं कुर्यात् ॥ २९ ॥ इति व्यापकन्यासः ॥ ॐ ह्रीं डमरुहस्ताय नमः पूर्वे ॥ १ ॥ ह्रीं दंडधारिणे नमः दक्षिणे ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं खड्गहस्ताय नमः पश्चिमे ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं घंटावादिने नमः उत्तरे ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं अग्निवर्णाय नमः अग्नये ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं दिगम्बराय नमः नैर्ऋते ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं सर्वभूतस्थाय नमः वायव्ये ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं अष्टसिद्धिदाय नमः ऐशान्याम् ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं खेचारिणे नमः ऊर्ध्वम् ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं रौद्ररूपिणे नमः पाताले ॥ १० ॥ इति दिङ्न्यासः ॥ ॐ ह्रीं रुद्राय नमः अंगुष्ठयोः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं शिखिसखाय नमः तर्जन्याम् ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं शिवाय नमः मध्यमायाम् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं त्रिशूलिने नमः अनामिकायाम् ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः कनिष्ठिकायाम् ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं त्रिपुरांतकाय नमः करतलयोः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं मांसाशिने नमः कराग्रेषु ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं दिगंबराय नमः करपृष्ठयोः ॥ ८ ॥ इति विलोमरूपेण करन्यासः ॥ ॐ ह्रीं भूतनाथाय नमः हृदयाय नमः ॥ ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं आदिनाथाय नमः शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं आनन्दनाथाय नमः शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं सिद्धशावरनाथाय नमः कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं सहजानन्दनाथाय नमः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीआनन्दनाथाय नम अस्त्राय फट् ॥६॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ॥ एवं न्यासविधिं समाप्य कामनापरत्वेनोपयोगिरूपं ध्यायेत् ॥ अथ सात्त्विकं ध्यानम् ॥

१ एवं न्यासविधिं कृत्वा ना साक्षाद्भैरवो भवेत् ॥ २ क्रूरकार्येषु सर्वेषु ध्यानं यै तामसं स्मृतम् ॥ वश्ये विद्वेषणे स्तंभे राजसं ध्यानमीरितम् ॥ सात्त्विकं शुभकार्येषु ध्यानभेदः समीरितः ॥ सर्वकामार्थसिद्ध्यर्थं राजसं ध्यानमुच्यते ॥

वंदे बालं स्फटिकसदृशं कुंडलोद्भासितांगं दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किंकिणीनूपुराढ्यैः ॥ दीप्ताकारं विशदवदनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं हस्ता
ग्राभ्यां वटुकसदृशं शूलदंडौ दधानम्॥१॥ अथ राजसं ध्यानम्॥उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिनयनं रक्तांगरागस्त्रजं स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं
शूलं दधानं करैः ॥ नीलग्रीवमुदारभूषणयुतं शीतांशुखंडोज्ज्वलं बंधूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावये॥२॥ अथ तामसं ध्यानम् ॥
ध्यायेन्नीलाद्रिकांतं शशिशकलधरं मुंडमालं महेशं दिग्वस्त्रं पिंगकेशं डमरुमथ सृणिं खड्गपाशाभयानि ॥नागं घंटां कपालं करसरसिरुहै
र्बिभ्रतं भीमदंष्ट्रं दिव्याकल्पं त्रिनेत्रं मणिमयविलसत्किंकिणीनूपुराढ्यम् ॥ ३ ॥ अथ सकलमनोरथप्राप्त्यर्थमिदं त्रिगुणात्मकं
ध्यानम् ॥ शुद्धःस्फटिकसंकाशं सहस्रादित्यवर्चसम् ॥ नीलजीमूतसंकाशं नीलांजनसमप्रभम् ॥ १ ॥ अष्टबाहुं त्रिनयनं चतुर्बाहुं द्विबा
हुकम् ॥ दंष्ट्राकरालवदनं नूपुरारावसंकुलम् ॥ २ ॥ भुजंगमेखलं देवमग्निवर्णं शिरोरुहम् ॥ दिगंबरं कुमारेशं वटुकाख्यं महाबलम् ॥३॥
खट्वांगमासिपाशं च शूलं दक्षिणभागतः ॥ डमरु च कपालं च वरदं भुजगं तथा ॥ अग्निवर्णसमोपेतं सारमेयसमन्वितम् ॥ ४ ॥
अथ साधारणं ध्यानम् ॥ करकलितकपालः कुंडली दंडपाणिस्तरुणतिमिरनीलो व्यालयज्ञोपवीती ॥ ऋतुसमयसपर्या
विघ्नविच्छेदहेतुर्जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥ १ ॥ आनीलकुंतलमलक्तकरक्तवर्णं मौनीकृतं कृत
मनोज्ञमुखारविंदम् ॥ कल्याणकीर्तिकमनीयकपालपाणिं वंदे महावटुकनाथमभीष्टसिद्ध्यै ॥ २ ॥ आनम्रसर्वगीर्वाणशिरोभृंगांगसंगि
नम् ॥ भैरवस्य पदांभोजं भूयोऽहं नौमि भूतये ॥३॥ एवं यथारुचि ध्यात्वा भैरवं प्रार्थयेत् ॥ तत्र मंत्रः ॥" ॐ ह्रीं भैरव भैरव भयकर
हर मां रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा" इति मंत्रेण प्रार्थ्य पटलस्थयंत्रपीठे आवाहनादि प्राणं प्रतिष्ठाप्य षोडशोपचारैरभ्यर्च्य पुनः कामनापरत्वेन
यथारुचि ध्यात्वा प्रार्थनामंत्रेण प्रार्थ्य दीपदानं कुर्यात् ॥ अथ दीपदानप्रयोगः॥ मंत्राक्षराणां संख्याकैस्तंतुभिर्ब्रह्मसूत्रजैः ॥ वर्तिं दत्त्वा
घृतेनैव दीपं तत्र प्रदापयेत्॥ अथ दीपदानमंत्रः॥"ॐ ह्रींश्रींक्लींह्रींश्रींवं सर्वज्ञाय महाबलपराक्रमाय वटुकाय नमः इमं दीपं गृहाण सर्व
कार्यार्थसाधक दुष्टान्नाशय नाशय त्रासय त्रासय सर्वतो मम रक्षां कुरु कुरु फट् स्वाहा ॥"अनेन मंत्रेण दीपं दत्त्वा मूलमंत्रेण त्रिराचम्य

हस्तौ प्रक्षालयेत्॥एवं दीपदानं समाप्य बलिदानं कुर्यात्॥अथ बलिदानेप्रयोगः ॐ ह्रां नमः॥१॥ॐ ह्रीं नमः ॥२॥ ॐ कुं नमः ॥ ३ ॥ एभिर्बीजैस्त्रिभिराचम्य मूलेन प्राणायामं कृत्वा देशकालौ संकीर्त्य ममामुकफलावाप्तये श्रीवटुकप्रीतये बलिदानमहं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य गणपतिं दुर्गां रक्तैश्चन्दनाक्षतपुष्पैरभ्यर्च्य देवस्याग्रे त्रिकोणं चतुरस्रं मण्डलं कृत्वा तत्र गंधाद्यैरभ्यर्च्य पात्रस्थं कवलागारं संपादितं बलिं निधाय गंधपुष्पाभ्यां मूलांते 'बलिरूपाय नमः' इति बलिं संपूज्य देवं तत्र संचिंत्य संपूज्य हस्ते बलिमादाय "ॐ एह्येहि देव वटुकनाथ कपिलजटाभारभासुर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वोपचारसहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा एषबलिर्वटुकाय नमः"इति मंत्रेण बलिं दद्यात् ॥ ततो देशकालौ संकीर्त्य मम सकलकामनासिद्ध्यर्थे श्रीवटुकभैरवस्तोत्रस्यैकादशसहस्रपुरश्चरणांगत्वेन प्रतिस्तोत्रं मूलमंत्रस्योत्तरशतसंख्याजपसंपुटितामुकसंख्यपाठमहं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य ॥ मूलमंत्रमष्टोत्तरशतवारं जपेत् ॥ अथ मूलमंत्रः ॥ "ॐ ह्रीं वटुकायापदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं ॐ"॥ एवमष्टोत्तरशतमूलमंत्रस्य जपेन श्रीवटुकभैरवः प्रीयताम् ॥ ततो वटुकाय नमस्कृत्य पंचोपचारैः पूजयित्वा स्तोत्रं पठेत् ॥ अथ स्तोत्रम् ॥ ॐ–ह्रीं भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः ॥ क्षेत्रदः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रज्ञः क्षत्रियो विराट् ॥ १ ॥ श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशीः स्मरांतकृत् ॥ रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धसेवितः ॥ २ ॥ कंकालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः ॥ त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिंगललोचनः ॥ ३ ॥ शूलपाणिः खड्गपाणिः कंकाली धूम्रलोचनः ॥ अभीरुर्भैरवो नाथो भूतपो योगिनीपतिः ॥ ४ ॥ धनदो धनहारी च धनवान्प्रीतिभावनः ॥ नागहारो नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत् ॥५॥ कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः ॥ त्रिलोचनोज्ज्वलन्नेत्रस्त्रिशिखी च त्रिलोकपः ॥ ६ ॥ त्रिनेत्रतनयो डिंभः शांतः शांतजनप्रियः ॥ वटुको वटुवेषश्च खट्वांगवरधारकः ॥ ७ ॥ भूताध्यक्षः पशुपतिर्भिक्षुकः परिचारकः ॥ धूर्तो दिगंबरः

१ द्विविधो बलिराख्यातो राजसः सात्त्विको बुधैः ॥ राजसो मांसरक्ताढ्य पलत्रयसमन्वितः ॥ मुद्गपायससंयुक्तो मधुरत्रयसंयुतः ॥ सात्त्विको मांसरहितः शेषमन्यत्पुरोक्तवत् ॥ ब्राह्मणो नियतः शुद्धः सात्त्विकं बलिमाहरेत् ॥

शूरो हरिणः पांडुलोचनः॥८॥प्रशांतः शांतिदः सिद्धः शंकरः प्रियबांधवः ॥ अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः॥९॥अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तशिखी सखः॥भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः॥१०॥कंकालधारी मुंडी च नागयज्ञोपवीतवान्॥जृंभणो मोहनः स्तंभी मारणः क्षोभणस्तथा ॥ ११ ॥ शुद्धनीलांजनप्रख्यो दैत्यहा मुंडभूषितः ॥ बलिभुग्बलिभुङ्नाथो बालो बालपराक्रमः ॥ १२ ॥ सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवितः॥ कामी कलानिधिः कांतः कामिनीवशकृद्वशी ॥ १३ ॥ सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरितीव हि॥ अष्टोत्तरशतं नाम्नां भैरवस्य महात्मनः ॥ १४ ॥ मया ते कथितं देवि रहस्यं सर्वकामदम्॥य इदं पठति स्तोत्रं नामाष्टशतमुत्तमम्॥१५॥ न तस्य दुरितं किंचिन्न च भूतभयं तथा ॥ न च मारीभयं तस्य ग्रहराजभयं तथा ॥ १६ ॥ न शत्रुभ्यो भयं क्वापि प्राप्नुयान्मानवः क्वचित् ॥ पातकानां भयं चैव पठेत्स्तोत्रमनुत्तमम्॥१७॥ मारीभये राजभये तथा चोराग्निजे भये॥औत्पत्तिके महाघोरे तथा दुःस्वप्नदर्शने ॥ १८ ॥ बंधने च तथा घोरे पठेत्स्तोत्रमनन्यधीः ॥ सर्वं प्रशमनं याति भयं भैरवकीर्तनात् ॥ १९ ॥ एकादशसहस्रं तु पुरश्चरणमुच्यते ॥ यस्त्रिसंध्यं पठेद्देवि संवत्सरमतंद्रितः॥२०॥स सिद्धिं प्राप्नुयादिष्टां दुर्लभामपि मानवः॥षण्मासं भूमिकामस्तु जपित्वा प्राप्नुयान्महीम्॥२१॥ राजशत्रुविनाशार्थं जपेन्मासाष्टकं पुनः ॥ रात्रौ वारत्रयं चैव नाशयत्येव शात्रवान् ॥ २२ ॥ जपेन्मासत्रयं मर्त्यो राजानं वशमानयेत् ॥ धनार्थी च सुतार्थी च दारार्थी यस्तु मानवः ॥२३॥ जपेन्मासत्रयं देवि वारमेकं तथा निशि ॥धनं पुत्रं तथा दारान्प्राप्नुयान्नात्र संशयः ॥ २४ ॥ रोगी रोगात्प्रमुच्येत बद्धो मुच्येत बंधनात् ॥ भीतो भयात्प्रमुच्येत देवि सत्यं न संशयः ॥ २५ ॥ निगडैश्चापि बद्धो यः कारागेहे निपातितः ॥ शृंखलाबंधनं प्राप्तं पठेच्चैव दिवानिशि ॥ २६ ॥ यं यं चिंतयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ॥ अप्रकाश्यं परं

१-ग्रन्थांतरे विशेषः— रात्रौ वारत्रयं यो वै तस्य वश्यं जगद्भवेत् ॥ प्रातश्चैकादशावृत्ति रात्रौ वा पुनरेव हि ॥ १ ॥ पूर्ववच्च विधिं कृत्वा पठनीयः स्तवः शुभः ॥ महानिशि त्रिरावृत्तिं यः करोति सदा शुचिः ॥ २ ॥ राजानो वशमायांति स भासा भास्करो भवेत् ॥ शनौ च प्रातरुत्थाय दशावृत्तिं चरेदिह ॥ ३ ॥ होमादिकं च संपाद्य षण्मासादतुलां श्रियम् ॥ शनौ चैवाश्वत्थमूले पूजयित्वा शिवं प्रिये ॥ ४ ॥ शतावृत्तिं पठित्वा तु जगद्वल्लभतामियात् ॥ रवौ च नाभिमात्रे हि जले स्थित्वा पठेदिह ॥ ५ ॥ एकादश तथावृत्तिं पठित्वा प्राप्नुयाच्छ्रियम् ॥ पठेच्च रोगशांत्यर्थं नक्षत्रे पुष्यसंज्ञके ॥ ६ ॥ अष्टावृत्तिं पठेद्यो वै आरोग्यं लभते ध्रुवम् ॥ रवौ च विप्रान्संपूज्य पाठयेच्छतवारकम् ॥ ७ ॥ वारे वारे च

गुह्यं न देयं यस्य कस्यचित् ॥ २७ ॥ सुकुलीनाय शांताय ऋजवे दंभवर्जिते ॥ दद्यात्स्तोत्रमिमं पुण्यं सर्वकामफलप्रदम् ॥ २८ ॥ इति श्रुत्वा ततो देवी नामाष्टशतमुत्तमम् ॥ जजाप परया भक्त्या सदा सर्वेश्वरेश्वरी॥२९ ॥भैरवोऽपि प्रहृष्टोऽभूत्सर्वलोकमहेश्वरः॥ वरं ददाति भक्तेभ्यः पठेत्स्तोत्रमनन्यधीः ॥ संतोषं परमं प्राप्य भैरवस्य महात्मनः ॥ ३० ॥ वारंवारं भुवनजननि प्रोच्यते साधुवादः सत्यं सत्यं जगति सकले भैरवो देव एकः॥यां यां सिद्धिं भुवनजठरे कामयेन्मानवो यस्तांस्तां सिद्धिं वितरति सदा भैरवः सुप्रसन्नः॥३१॥पाणिभ्यां परितः प्रपीड्य सुदृढं निश्चोत्य निश्चोत्य च ब्रह्माण्डं सकलं प्रचालितरसालोच्चैः फलाभं मुहुः ॥ पायंपायमपाययत्रिजगति ह्युन्मत्तवत्ते रसैर्नृत्यंस्तांडवडंबरेण शिरसा पायान्महाभैरवः ॥ ३२ ॥ बिभ्राणः शुभ्रवर्णं द्विगुणनवभुजं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रं ज्ञाने मुद्रेंद्रशास्त्रं सविषममृतकं शंखभैषज्यचापम् ॥ शूलं खट्वांगबाणान् डमरुमसिगदावह्निमारोग्यमालामिष्टाभीतिं च दोर्भिर्जयति खलु महाभैरवः सर्वसिद्ध्यै ॥ ३३ ॥ काकाशः क्व समीरणः क्व दहनः कापश्च विश्वंभरा क्व ब्रह्मा क्व जनार्दनः क्व तरणिः क्वेंदुश्च देवासुराः ॥ कल्पांते दिगिभेशवत्प्रमुदितः श्रीसिद्धयोगीश्वरः क्रीडानाटकनायको विजयते देवो महाभैरवः ॥ ३४ ॥ लिखित्वा परया भक्त्या भैरवस्तोत्रमुत्तमम् ॥ अष्टानां ब्राह्मणानां च देयं पुस्तकमादरात् ॥ ३५ ॥ यान् यान् समीहते कामांस्तांस्तान्प्राप्नोत्यसंशयम् ॥ इह लोके सुखं प्राप्य पुस्तकस्य प्रसादतः ॥ ३६ ॥ शिवलोकमनुप्राप्य शिवेन सह मोदते ॥ लिखित्वा भूर्जपत्रे तु त्रिलोहपरिवेष्टितम् ॥ ३७ ॥ सौम्ये च वस्तुवसने

षण्मासं पठित्वा सुतमाप्नुयात् ॥ मृतजन्मभवा वंध्या जीवत्पुत्रा भवेदिह ॥ ८ ॥ कन्याकामो भवेद्यो वै त्रिकालं रविवासरे ॥ षण्मासादप्सरस्तुल्यां लभते स्त्रियमुत्तमाम् ॥ ९ ॥ वैद्यानामप्यसाध्यो वै रोगो भवति यस्य च ॥ तस्य रोगस्य शांत्यर्थं पठेत्स्तोत्रमनुत्तमम् ॥ १० ॥ निष्फलश्च क्रतुस्तस्य भवतीह सदा प्रिये ॥ सहस्रावर्तनं कृत्वा सफलश्च क्रतुर्भवेत् ॥ ११ ॥ ग्रहणे च पठेद्यो वै विधिना चन्द्रसूर्ययोः ॥ मनोऽभिलषितां सिद्धिं प्राप्नुयान्नात्र संशयः ॥१२ ॥ तीर्थे चैव शुभे क्षेत्रे शिवस्य सन्निधौ प्रिये ॥ पठित्वा पुत्रमन्त्रं च सद्यः सिद्धिं लभेदिह ॥१३॥ त्रिरावृत्तिं दशावृत्तिं विंशतिं वा शतावधिः ॥सहस्रसंख्यया वाथ चैकादशसहस्रकम् ॥१४॥ पुरश्चरणकं प्रोक्तं भैरवस्य महात्मनः ॥ पुरश्चरणकं कृत्वा पठते नित्यमेव च ॥१५॥ सद्यः सिद्धिं यथोक्तां हि प्राप्नुयान्नात्र संशयः॥ मानुषं जन्म चासाद्य दुःखभाजो भवन्ति वै॥१६॥ ते भजन्तु सदा देवं भैरवं सुखदायकम् ॥ तद् दुःखं नैव विद्यते भैरव यन्ननाशयेत्॥ १७ ॥

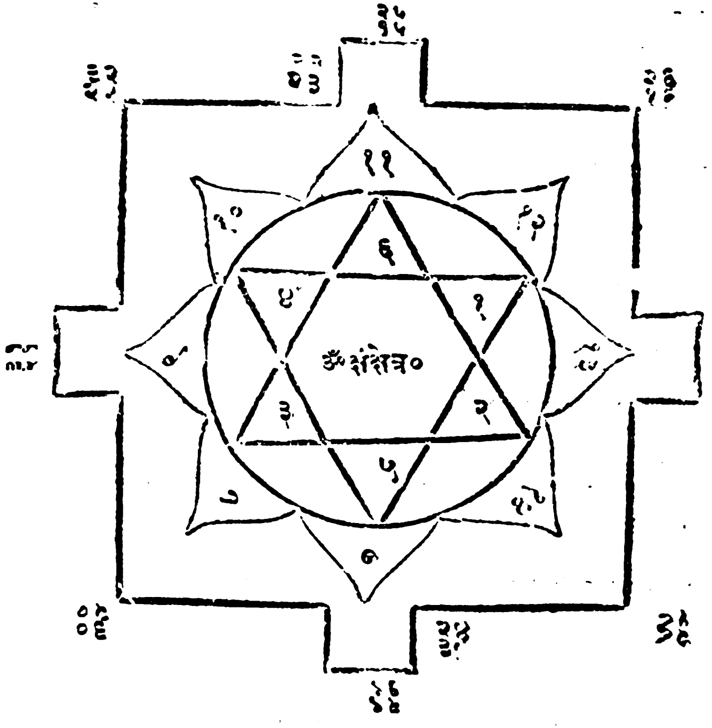
कर्पटे च सुशोभने ॥ करे बाहौ गले कट्यां मूर्ध्नि त्रिलोहगोपितम् ॥ यस्तु धारयते स्तोत्रं सर्वत्र जय माप्नुयात् ॥ ३८ ॥ इति श्रीरुद्रयामलतंत्रे देवीश्वरसंवादे आपदुद्धारकश्रीवटुकभैरवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥ अथ वटुकभैरवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् (कालसंकर्षणतंत्रे) ॐ अस्य श्रीवटुकभैरवस्तोत्रमंत्रस्य कालाग्निरुद्र ऋषिः । अनुष्टुप् छंदः । आपदुद्धारकवटुकभैरवो देवता । ह्रीं बीजम् । भैरवीवल्लभः शक्तिः । नीलवर्णो दंडपाणिरिति कीलकम् । समस्तशत्रुदमने समस्तापन्निवारणे सर्वाभीष्टप्रदाने च विनियोगः॥ ॐ कालाग्निरुद्रऋषये नमः । शिरसि ॥ १ ॥ अनुष्टुप्छंदसे नमः मुखे ॥ २ ॥ आपदुद्धारकवटुकभैरवदेवतायै नमः हृदये ॥ ३ ॥ ह्रीं बीजायनमः । गुह्ये ॥ ४ ॥ भैरवीवल्लभशक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ नीलवर्णो दंडपाणिरिति कीलकाय नमः नाभौ ॥ ६ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ ७ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ अथ मूलमंत्रः ॥ "ॐ ह्रीं वां वटुकाय क्ष्रौं क्ष्रौं आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रां वटुकाय स्वाहा ॥ " इति मूलमंत्रः ॥ अथ ध्यानम् ॥ नीलजीमूतसंकाशो जटिलो रक्तलोचनः ॥ दंष्ट्राकरालवदनः सर्पयज्ञोपवीतवान् ॥ १ ॥ दंष्ट्रायुधालंकृतश्च कपालस्रग्विभूषितः ॥ हस्तन्यस्तकरोटीको भस्मभूषितविग्रहः ॥ २ ॥ नागराजकटीसूत्रो बालमूर्तिर्दिगंबरः॥ मंजुसिंजानमंजरिपादकंपितभूतलः ॥ ३ ॥ भूतप्रेतपिशाचैश्च सर्वतः परिवारितः ॥ योगिनीचक्रमध्यस्थो मातृमंडलवेष्टितः ॥ ४ ॥ अट्टहासस्फुरद्वक्त्रो भृकुटीभिषणाननः ॥ भक्तसंरक्षणार्थाय दिक्षु भ्रमणतत्परः ॥ एवंभूतस्तु वटुको ध्यातव्यो भैरवीश्वरः ॥५॥ एवं ध्यात्वा स्तोत्रं पठेत् ॥ ॐ ह्रीं वटुको वरदः शूरो भैरवः कालभैरवः॥ भैरवीवल्लभो भव्यो दंडपाणिर्दयानिधिः ॥६॥ वेतालवाहनो रौद्रो रुद्रभ्रुकुटिसंभवः ॥ कपाललोचनः कांतः कामिनीवशकृद्वशी ॥ ७ ॥ आपदुद्धारणो धीरो हरिणांकशिरोमणिः ॥ दंष्ट्राकरालो दष्टौष्ठो धृष्टो दुष्टनिर्बहणः ॥ ८ ॥ सर्पहारः सर्पशिराः सर्पकुंडलमंडितः ॥ कपाली करुणापूर्णः कपालैकशिरोमणिः ॥ ९ ॥ श्मशानवासी मांसाशी मधुमत्तोऽट्टहासवान् ॥ वाग्मी वामव्रतो वामो वामदेवप्रियंकरः ॥ ॥१०॥ वनेचरो रात्रिचरो वसुदो वायुवेगवान् ॥ योगी योगव्रतधरो योगिनीवल्लभो युवा ॥११॥ वीरभद्रो विश्वनाथो विजेता वीरवंदितः॥

भूताध्यक्षो भूतिधरो भूतभीतिनिवारणः ॥ १२ ॥ कलंकहीनः कंकाली क्रूरः कुक्कुरवाहनः ॥ गाढो गहनगंभीरो गणनाथसहोदरः ॥ ॥ १३ ॥ देवीपुत्रो दिव्यमूर्तिर्दीप्तिमान् दीप्तिलोचनः ॥ महासेनप्रियकरो मान्यो माधवमातुलः ॥ १४ ॥ भद्रकालीपतिर्भद्रो भद्रदो भद्रवाहनः ॥ पशूपहाररसिकः पाशी पशुपतिः पतिः ॥ १५ ॥ चंडः प्रचंडचंडेशश्चंडीहृदयनन्दनः॥ दक्षो दक्षाध्वरहरो दिग्वासा दीर्घलोचनः ॥ १६ ॥ निरातंको निर्विकल्पः कल्पः कल्पांतभैरवः ॥ मदतांडवकृन्मत्तो महादेवप्रियो महान् ॥ १७ ॥ खट्वांगपाणिः खातीतः खरशूलः खरांतकृत् ॥ ब्रह्मांडभेदनो ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मणपालकः ॥ १८ ॥ दिक्चरो भूचरो भूष्णुः खचरः खेलनाप्रियः ॥ सर्वदुष्टप्रहर्ता च सर्वरोगनिषूदनः ॥ १९ ॥ सर्वकामप्रदः शर्वः सर्वपापनिकृंतनः ॥ इत्थमष्टोत्तरशतं नाम्नां सर्वसमृद्धिदम् ॥२०॥ आपदुद्धारजनकं वटुकस्य प्रकीर्तितम् ॥ एतच्च शृणुयान्नित्यं लिखेद्वा स्थापयेद्गृहे ॥ २१ ॥ धारयेद्वा गले बाहौ तस्य सर्वाः समृद्धयः ॥ न तस्य दुरितं किंचिन्न चोरनृपजं भयम् ॥ २२ ॥ न चापस्मृतिरोगेभ्यो डाकिनीभ्यो भयं नहि ॥ न कूष्मांडग्रहादिभ्यो नापमृत्योर्न च ज्वरात् ॥ २३ ॥ मासमेकं त्रिसंध्यं च शुचिर्भूत्वा पठेन्नरः ॥ सर्वदारिद्र्यनिर्मुक्तो निधिं पश्यति भूतले ॥ २४ ॥ मासद्वयमधीयानः पादुकासिद्धिमान् भवेत् ॥ अंजनं गुटिका खड्गं धातुवादरसायनम् ॥ २५ ॥ सारस्वतं च वेतालवाहनं बिलसाधनम् ॥ कार्यसिद्धिं महासिद्धिं मंत्रं चैव समीहितम् ॥ २६ ॥ वर्षमात्रमधीयानः प्राप्नुयात्साधकोत्तमः ॥ एतत्ते कथितं देवि गुह्याद्गुह्यतरं परम् ॥ २७ ॥ कालसंकर्षणीतंत्रे कलिकल्मषनाशनम् ॥ नरनारीनृपाणां च वशीकरणमंबिके ॥ २८ ॥ इति कालसंकर्षणतंत्रोक्तवटुकाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे पूर्वखण्डे वटुकभैरवतंत्रे दशमस्तरंगः ॥ १० ॥ ॥ ॥

॥ अथ मिश्रतरंगप्रारंभः ॥ तत्रादौ क्षेत्रपालमंत्रप्रयोगः॥ मंत्रो यथा—"ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः" इति नवाक्षरो मंत्रः॥अस्य विधानम् ॥ अस्य क्षेत्रपालमंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। गायत्री छन्दः। क्षेत्रपालो देवता। क्षं बीजम्। लः शक्तिः। सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः॥ ॐ ब्रह्म ऋषये नमः शिरसि ॥१॥ ॐ गायत्रीछंदसे नमः मुखे ॥ २ ॥ ॐ क्षेत्रपालदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ ॐ क्षं बीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ ॐ लः शक्तये नमः। पादयोः ॥ ५ ॥ ॐ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ क्षां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ क्षीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ क्षूं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ क्षैं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ क्षौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ क्षः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ क्षां हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ क्षीं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ क्षूं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ क्षैं कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ "ॐ क्षौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ क्षः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ ॐ नीलांजनादिनिभमूर्द्धपिशंगकेशं वृत्तोग्रलोचनमुदात्तगदाकपालम् ॥ आशांबरं भुजगभूषणमुग्रदंष्ट्रं क्षेत्रेशमद्भुततनुं प्रणमामि देवम् ॥ १ ॥" इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूजयेत् ॥ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य "ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः॥" इति संपूजयेत्॥ अस्य पीठशक्त्यादेरभावः॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्यावाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्यावरणपूजां कुर्यात्॥तद्यथा—षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च "ॐ क्षां हृदयाय नमः हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ क्षीं शिरसे स्वाहा॥शिरःश्रीपा०॥२॥ ॐ क्षूं शिखायै वषट्। शिखाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ क्षैं कवचाय हुम्॥कवचश्रीपा०॥४॥ ॐ क्षौं नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रत्रयश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ क्षः अस्त्राय फट्। अस्त्रश्रीपा० ॥ ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य "ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥" इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा

पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततोऽष्टदले पूज्य पूजकयोरंतराले प्राचीं तदनुसारेणान्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ॐ अग्निलाख्याय नमः[१]। अग्निलाख्यश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ अग्निकेशाय नमः। अग्निकेशश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ करालाय नमः करालश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ घंटारवाय नमः। घंटारवश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ महाकोपाय नमः। महाकोपश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ पिशिताशनाय नमः ॥ पिशिताशनश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ पिंगलाक्षाय नमः। पिंगलाक्षश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ ऊर्द्ध्वकेशाय नमः। ऊर्द्ध्वकेशश्रीपा० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ ततः भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादीन् दशदिक्पालान् वज्रायायुधानि च संपूज्य बलिं च दद्यात् ॥ 'ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः' इति मंत्रेण माषभक्तबलिं दत्त्वार्धरात्रे पुनर्बलिं दद्यात्॥ अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः ॥ तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं कुर्यात् ॥ एवं कृते क्षेत्रपालः प्रसन्नो भवति ॥ तथा च—"लक्षमेकं जपेन्मंत्रं जुहुयात्तद्दशांशतः ॥ चरुणा घृतसिक्तेन ततः क्षेत्रे समर्चयेत् ॥ १ ॥ बलिनानेन संतुष्टः क्षेत्रपालः प्रयच्छति ॥ कांतिमेधावलारोग्यतेजःपुष्टियशःश्रियः" इति क्षेत्रपालनवाक्षरमंत्रप्रयोगः ॥ १ ॥

अथ क्षेत्रपालपूजनयन्त्रम्.



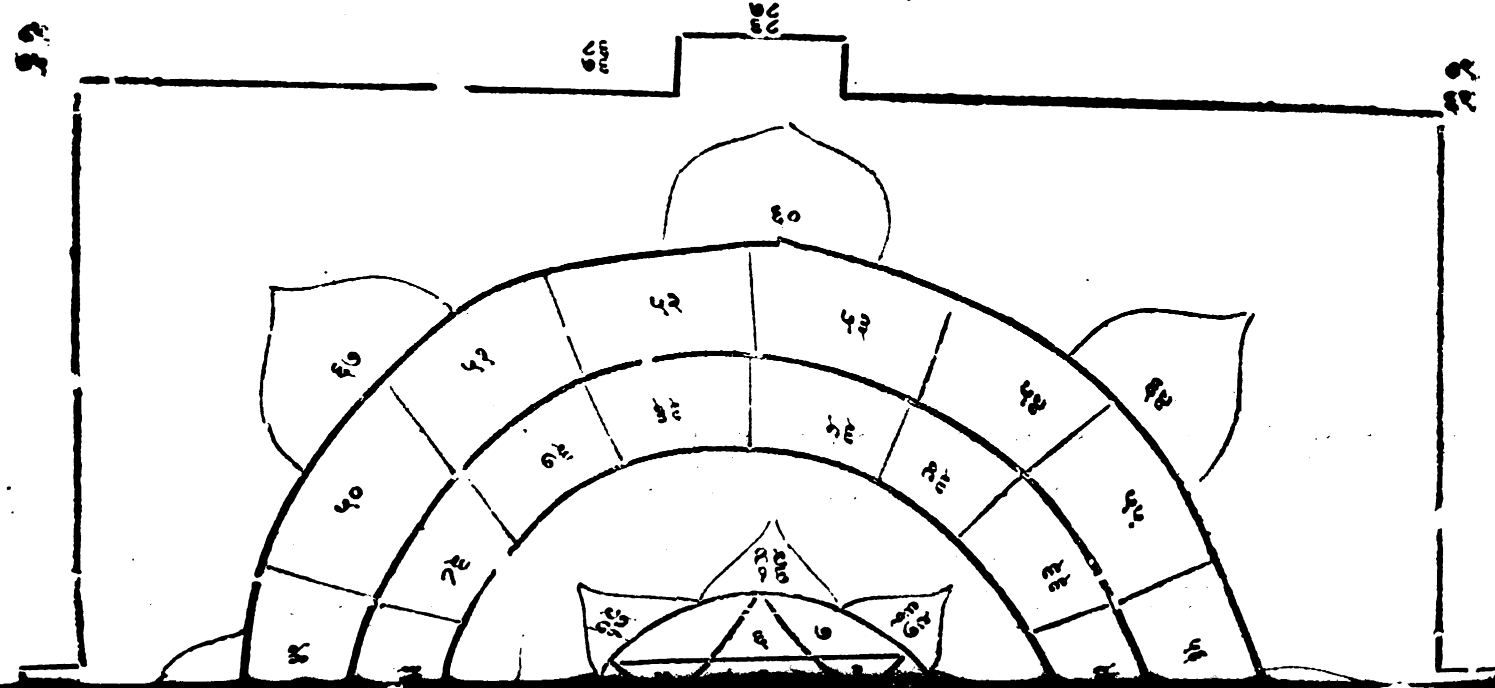
॥ ॥ ॥ ॥ ॥

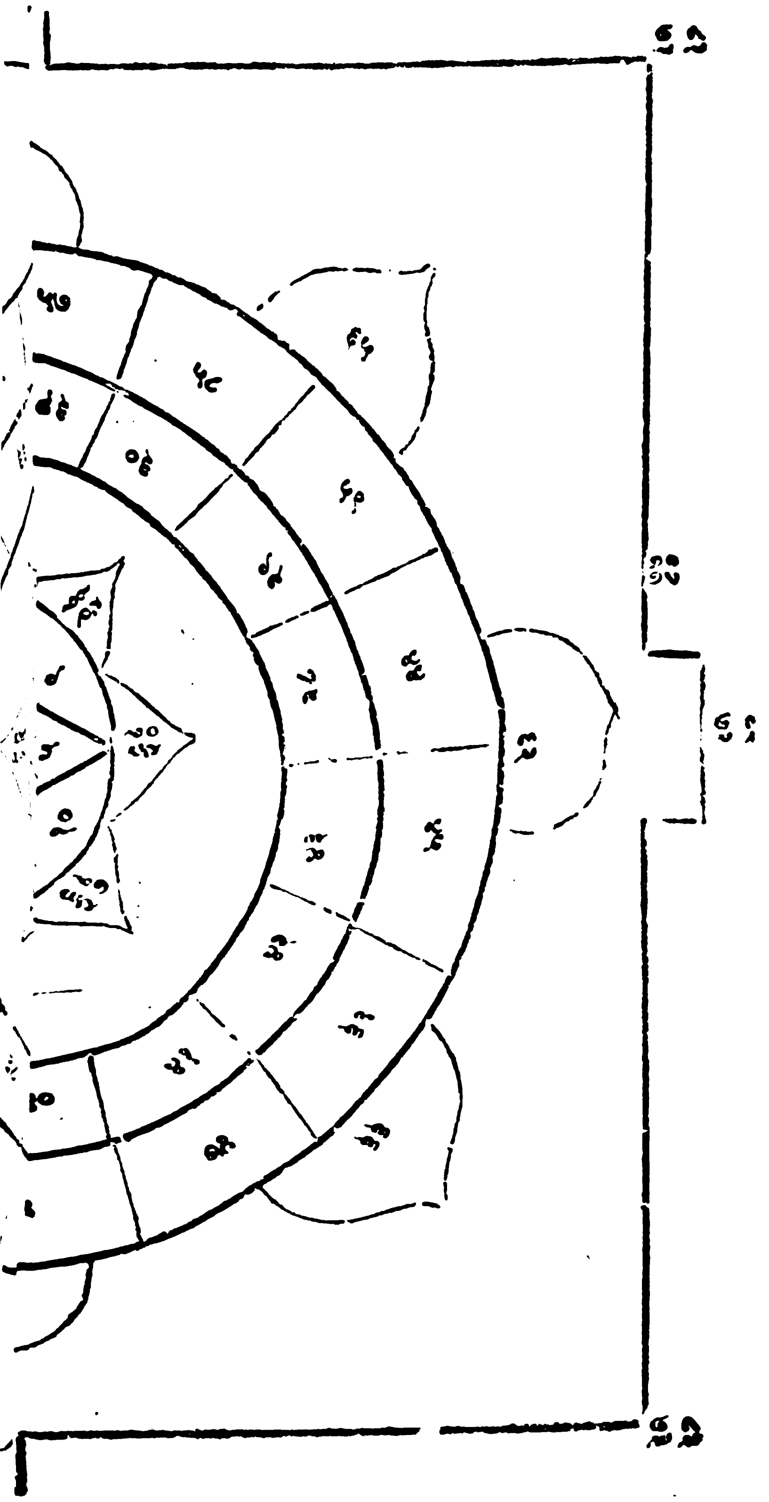
१ अग्निकाख्यमग्निकेशं करालं तदनंतरम् ॥ घंटारवं महाकोपं पिशिताशनसंज्ञकम् ॥ पिंगलाक्षमूर्द्धकेशं पत्रेषु परितो यजेत ॥

॥ अथ कामदेवबीजमंत्रप्रयोगः ॥ बीजं यथा--क्लीं इत्येकाक्षरो बीजमंत्रः ॥ अस्य विधानम् ॥ ॐ कामबीजमंत्रस्य संमोहन
ऋषिः । गायत्री छंदः । सर्वसम्मोहनमकरध्वजो देवता । सर्वसंमोहने विनियोगः ॥ ॐ संमोहनऋषये नमः । शिरसि ॥ १ ॥
गायत्रीछंदसे नमः । मुखे ॥ २ ॥ सर्वसंमोहनमकरध्वजदेवतायै नमः । हृदि ॥ ३ ॥ विनियोगाय नमः । सर्वाङ्गे ॥ ४ ॥
इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ क्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ क्लूं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥
ॐ क्लैं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ क्लौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ क्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥
ॐ क्लां हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ क्लीं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ क्लूं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ क्लैं कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ क्लौं नेत्र
त्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ क्लः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ॥ एवं न्यासः ॥ कृत्वा ध्यायेत् । अथ ध्यानम् ॥
जपारुणं रक्तविभूषणाढ्यं मीनध्वजं चारुकृतांगरागम् ॥ करांबुजैरंकुशमिक्षुचापपुष्पास्त्रपाशौ दधतं भजामि ॥ १ ॥ इति ध्यायेत् । ततः
पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य "ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः" इति संपूज्य नव पीठ
शक्तीः पूजयेत् ॥ पूर्वादिक्रमेण ॐ मोहिन्यै नमः ॥ १ ॥ ॐ क्षोभिण्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ त्रास्यै नमः ॥ ३ ॥ ॐ स्तंभिन्यै नमः ॥
॥ ४ ॥ ॐ कर्षिण्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ द्राविण्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ आह्लादिन्यै नमः ॥ ७ ॥ ॐ क्लिन्नायै नमः ॥ ८ ॥ मध्ये ॐ
क्लेदिन्यै नमः ॥ ९ ॥ इति पूजयेत् । ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा
स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य "ॐ क्लीं मकरध्वजाय सर्वसंमोहनशक्ताय पद्मासनाय नमः" इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य
प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वावाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञया आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तद्यथा--पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य "ॐ
संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः ॥ अनुज्ञां देहि मे काम परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥" इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा

१ अन्यस्वरूपो यथा-'क्लीं कामदेवाय नमः' इत्यष्टाक्षरो मंत्रः । अन्यत्सर्वं पूर्ववत् ॥

अथ कामदेवपूजनयन्त्रम्.





वरणपूजामारभेत ॥षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च ॐ क्रां हृदयाय नमः॥हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र ॥१ ॥ ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा। शिरः श्रीपा०॥२॥ ॐ क्लू शिखायै वषट्। शिखाश्रीपा० ॥३॥ ॐ क्रैं कवचाय हुम्। कवचश्रीपा० ॥४॥ ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रत्रयश्रीपा० ॥५ ॥ ॐ क्रः अस्त्राय फट् ।अस्त्रश्रीपा०॥६॥ इति षडंगानि पूजयेत्॥ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य "ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥ १ ॥" इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ तदग्रेषु ॥ ॐ द्रां शोषणाय नमः । शोषणश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं मोहनाय नमः। मोहनश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ संदीपनाख्यक्रीडाय नमः । संदीपनाख्यक्रीडश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ ब्लूं तापनाय नमः। तापनश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ मादनाय नमः। मादनश्रीपा० ॥ ५ ॥ इति पंच बाणान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतराले प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ॥ ॐ कामाय नमः। कामश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ भस्मशरीराय नमः। भस्मशरीरश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ अनंगाय नमः । अनंगश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ मन्मथाय नमः। मन्मथश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ वसंतसखाय नमः। वसंतसखश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ स्मराय नमः। स्मरश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ इक्षुधनुर्धराय नमः। इक्षुधनुर्धरश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ पुष्पबाणाय नमः। पुष्पबाणश्रीपा० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ नामभिः पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततोऽष्टदलाग्रेषु वामावर्तेन ॐ अनंगरूपायै नमः। अनंगरूपाश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ अनंगमदनायै नमः। अनंगमदनाश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ अनंगमन्मथायै नमः। अनंगमन्मथाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ अनंगकुसुमायै नमः। अनंगकुसुमाश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ अनंगकुसुमातुरायै नमः । अनंगकुसुमातुराश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ अनंगशिशिरायै नमः । अनंगशिशिराश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ अनंगमेखलायै नमः। अनंगमेखलाश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ अनंगदीपकायै नमः । अनंगदीपकाश्रीपा० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ शक्तीः पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥ ४ ॥ ततः षोडशदले प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च ॐ युवत्यै नमः।

युवतीश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ विप्रलंभायै नमः । विप्रलंभाश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ ज्योत्स्नायै नमः । ज्योत्स्नाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ सुभ्रुवे नमः । सुभ्रूश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ मदद्रवायै नमः । मदद्रवाश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ सुरतायै नमः । सुरताश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ वारुण्यै नमः । वारुणीश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ लोलायै नमः लोलाश्रीपा० ॥ ८ ॥ ॐ कांत्यै नमः । कांतिश्रीपा० ॥ ९ ॥ ॐ सौदामिन्यै नमः । सौदामिनीश्रीपा० ॥ १० ॥ ॐ कामच्छत्रायै नमः । कामच्छत्राश्रीपा० ॥ ११ ॥ ॐ चन्द्रलेखायै नमः । चन्द्रलेखाश्रीपा० ॥ १२ ॥ ॐ शक्त्यै नमः । शक्तिश्रीपा० ॥ १३ ॥ ॐ मदनायै नमः । मदनाश्रीपा० ॥ १४ ॥ ॐ योन्यै नमः । योनिश्रीपा० ॥ १५ ॥ ॐ मायावत्यै नमः । मायावतीश्रीपा० ॥ १६ ॥ इति संपज्य पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति पंचमावरणम् ॥ ५ ॥ ततः षोडश दलाग्रेषु ॐ शोकाय नमः । शोकश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ मोहाय नमः । मोहश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ विलासाय नमः । विलासश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ विभ्रमाय नमः । विभ्रमश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ मदनातुराय नमः । मदनातुरश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ अपजयाय नमः । अपजय श्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ युवाकामाय नमः । युवाकामश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ चूतपुष्पाय नमः ॥ चूतपुष्पश्रीपा० ॥ ८ ॥ ॐ रतिप्रियाय नमः । रतिप्रियश्रीपा० ॥ ९ ॥ ॐ ग्रीष्मांतकराय नमः । ग्रीष्मांतकरश्रीपा० ॥ १० ॥ ॐ उज्जयिने नमः । उज्जयिश्री० ॥ ११ ॥ ॐ हेमंते शिशिरोन्मदाय नमः । हेमंते शिशिरोन्मदश्रीपा० ॥ १२ ॥ ॐ इक्षुचापधराय नमः । इक्षुचापधरश्रीपा० ॥ १३ ॥ ॐ पुष्पबाणहस्ताय नमः । पुष्पबाणहस्तश्रीपा० ॥ १४ ॥ ॐ रक्तभूषाय नमः । रक्तभूषश्रीपा० ॥ १५ ॥ ॐ वनितासक्तमानसाय नमः ॥ वनितासक्तमानसश्रीपा० ॥ १६ ॥ इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति षष्ठावरणम् ॥ ६ ॥ ततोऽष्टदले प्राच्यादि चतुर्दिक्षु ॐ हावाय नमः । हावश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ भावाय नमं । भावश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ कटाक्षाय नमः । कटाक्षश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ भ्रूविलासाय नमः । भ्रूविलासश्रीपा० ॥ ४ ॥ आग्नेय्यादिचतुष्कोणेषु ॐ माधव्यै नमः । माधवीश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ मालत्यै नमः । मालतीश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ हरिणाक्ष्यै नमः । हरिणाक्षीश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ मदोत्कटायै नमः । मदोत्कटाश्रीपा० ॥ ८ ॥

इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति सप्तमावरणम् ॥ ७ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात्॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य पुष्पांजल्यष्टकं दद्यात्॥तत्र मंत्रः–"ॐ नमोऽस्तु पुष्पबाणाय जगदानंदकारिणे ॥ मन्मथाय जगन्नेत्रे रतिप्रीतिप्रदायिने ॥ १ ॥" इति पुष्पांजल्यष्टकं दत्त्वा करौ बद्ध्वा प्रार्थयेत् ॥ तत्र मंत्रः–"ॐ देवदेव जगन्नाथ वांछितार्थप्रदायक ॥ कृत्स्नान्पूरय मे त्वर्थान्कामान्कामेश्वरीप्रिय ॥ १ ॥" इति संप्रार्थ्य जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं त्रिलक्षजपः ॥ तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति। सिद्धे च मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च–"लक्षत्रयं जपेन्मंत्रं मधुरत्रयसंयुतैः ॥ पुष्पैः किंशुकजैः फुल्लैर्हुत्वा तत्तद्दशांशतः ॥ १ ॥ इत्थं यो भजते देवं सुगंधिकुसुमादिभिः ॥ स भवेल्लब्धसौभाग्यो लक्ष्म्या जितधनेश्वरः ॥ २ ॥ अशोकपुष्पैर्दध्यक्तैर्जुहुयाद्दिवसत्रयम् ॥ अष्टोत्तरसहस्रं यः स भवेज्जगतां प्रियः ॥ ३ ॥ गव्येनाज्येन जुहुयान्मंत्रेणाष्टोत्तरं शतम् ॥ साधकेन्द्रससंपातमर्चिते हव्यवाहने ॥ ४ ॥ संपाताज्येन वनिता भोजयेदात्मनः पतिम् ॥ अनया यद्यदादिष्टं तत्तत्स कुरुते सदा ॥ ५ ॥ कन्यार्थी जुहुयाल्लाजैर्दध्यक्तैर्मंडलांतरे ॥ कन्यामिष्टामवाप्नोति सापि सत्पतिमाप्नुयात् ॥ ६ ॥ कथितं पुष्पबाणस्य सांगोपांगसमर्चनम् ॥ सौभाग्यकांतिविभवदारापुत्रसमृद्धिदम् ॥ ७ ॥" अथ कामगायत्रीमंत्रो यथा "ॐ कामदेवाय विद्महे पुष्पबाणाय धीमहि ॥ तन्नोऽनंगः प्रचोदयात् ॥" अष्टोत्तरशतं कामगायत्र्या मंत्रवित्तमः ॥ गायत्र्येषा बुधैरुक्ता जप्ता जनविमोहिनी ॥ ८ ॥ इति कामदेवबीजमंत्रप्रयोगः ॥

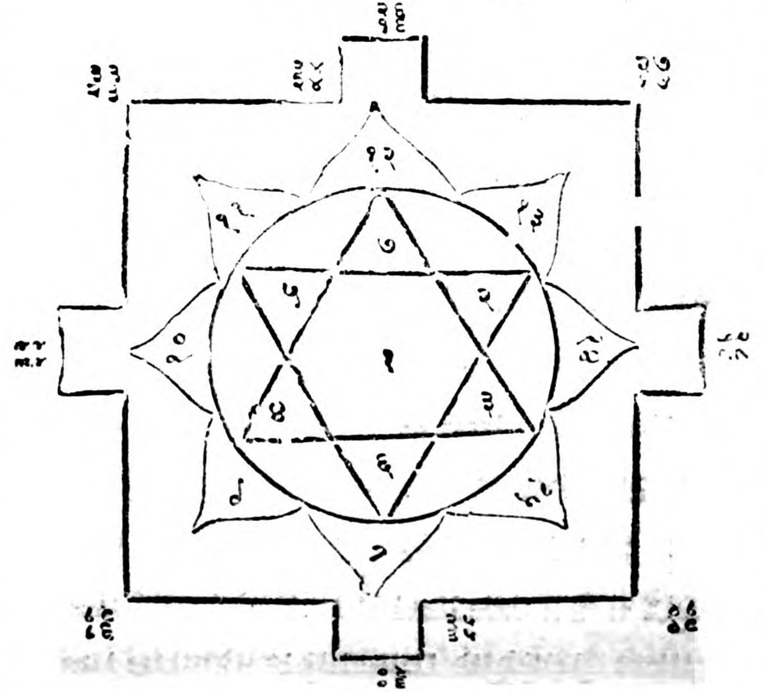
अथ वरुणमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा-ॐ ध्रुवासु त्वासु क्षितिषु क्षियंतो॰व्य १ स्मत्पाशं वरुणो मुमोचत् ॥ अवो वन्वाना अदितेरुपस्थाद्यूयंपातस्वस्तिभिः सदानः स्वः ॥ इति त्रिचत्वारिंशदक्षरो वरुणमंत्रः ॥ अस्य विधानम् ॥ अस्य वरुणमंत्रस्य वसिष्ठ ऋषिः । त्रिष्टुप्छंदः । वरुणो देवता । सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः ॥ ॐ वसिष्ठऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ त्रिष्टुप्छंदसे नमः मुखे ॥ २ ॥ वरुणदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ध्रुवासुत्वासुक्षितिषु इत्यंगुष्ठाभ्यां

नमः ॥ १ ॥ क्षियंतोव्य स्मत्पाशम् इति तर्जनीभ्यां नमः॥२॥वरुणो मुगोचादीति मध्यमाभ्यां नमः॥३॥ अवोवन्वाना अदितेरिति अनामिका
भ्यां नमः ॥ ४ ॥ उपस्थाद्यूयंपात इति कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५॥ स्वास्तिभिः सदा नः स्वः इति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति कर
न्यासः ॥ ॐ ध्रुवासुत्वासुक्षितिषु हृदयाय नमः ॥ १ ॥ क्षियंतो व्यस्मत्पाशं शिरसे स्वाहा ॥२॥ वरुणो मुमोचत् शिखायै वषट् ॥ ३ ॥
अवोवन्वाना अदितेः कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ उपस्थाद्यूयंपात नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ स्वस्तिभिः सदा नः स्वः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥
इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ॐ ध्रं नमः ध्रुं । दक्षपादांगुल्यग्रे ॥ १॥ ॐ वां नमः । दक्षपादांगुलिमूले ॥२॥ॐ सुं नमः । दक्षगुल्फे ॥३ ॥
ॐ त्वां नमः । दक्षजानुनि ॥ ४ ॥ ॐ सुं नमः । दक्षपादमूले ॥ ५ ॥ ॐ क्षिं नमः । वामपादांगुल्यग्रे ॥ ६ ॥ ॐ तिं नमः वाम
पादांगुलिमूले ॥ ७ ॥ ॐ षुं नमः । वामगुल्फे ॥ ८ ॥ ॐ क्षिं नमः । वामजानुनि ॥ ९ ॥ ॐ यं नमः । वामपादमूले ॥ १० ॥
ॐ तों नमः । गुदे ॥ ११ ॥ ॐ व्यं नमः । लिंगे ॥ १२ ॥ ॐ स्मं नमः । आधारे ॥ १३ ॥ ॐ त्पां नमः । नाभौ ॥ १४ ॥ ॐ शं
नमः । दक्षिणकुक्षौ ॥ १५ ॥ ॐ वं नमः । वामकुक्षौ ॥ १६ ॥ ॐ रुं नमः । पृष्ठे ॥ १७ ॥ ॐ णों नमः हृदि ॥ १८ ॥ ॐ
मुं नमः । दक्षिणस्तने ॥ १९ ॥ ॐ मों नमः । वामस्तने ॥ २० ॥ ॐ चं नमः । गले ॥ २१ ॥ ॐ अं नमः । दक्षिणहस्तांगु
ल्यग्रे ॥ २२ ॥ ॐ वों नमः । दक्षिणहस्तांगुलिमूले ॥ २३ ॥ ॐ वं नमः । दक्षिणमणिबंधे ॥ २४ ॥ ॐ न्वां नमः । दक्षिण
कूर्परे ॥ २५ ॥ ॐ नां नमः । दक्षबाहुमूले ॥ २६ ॥ ॐ अं नमः । वामहस्तांगुल्यग्रे ॥ २७ ॥ ॐ दिं नमः । वामहस्तांगुलिमूले
॥ २८ ॥ ॐ तें नमः । वाममणिबंधे ॥ २९ ॥ ॐ रुं नमः । वामकूर्परे ॥ ३० ॥ ॐ पं नमः । वामबाहुमूले ॥ ३१ ॥ ॐ स्थां
नमः । वक्त्रे ॥ ३२ ॥ ॐ द्यूं नमः । दक्षकपोले ॥ ३३ ॥ ॐ यं नमः । वामकपोले ॥ ३४ ॥ ॐ पां नमः । दक्षिणनासापुटे
॥ ३५ ॥ ॐ तं नमः । वामनासापुटे ॥ ३६ ॥ ॐ स्वं नमः । दक्षिणनेत्रे ॥ ३७ ॥ ॐ स्तिं नमः । वामनेत्रे ॥ ३८ ॥ ॐ

भिं नमः। दक्षिणकर्णे ॥ ३९ ॥ ॐ सं नमः । वामकर्णे ॥ ४० ॥ ॐ दां नमः भ्रूमध्ये ॥ ४१ ॥ ॥ ॐ नं नमः । मस्तके ॥ ४२ ॥ ॐ स्वं नमः । शिरसि ॥ ४३ ॥ इति मंत्रवर्णन्यासः ॥ इति न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ ॐ चन्द्रप्रभं पंकजसन्निषण्णं पाशांकुशाभीतिवरं दधानम् ॥ मुक्ताविभूषांचितसर्वगात्रं ध्यायेत्प्रसन्नं वरुणं विभूत्यै ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः पूजयेत् ।

ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य "ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः" इति संपूजयेत् । अस्य पीठशक्त्यादेरभावः ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञया आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तद्यथा—षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च ॐ हृदयाय नमः । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ शिरसे स्वाहा । शिरः श्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ कवचाय हुम् । कवचश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ॥ ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य "ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या

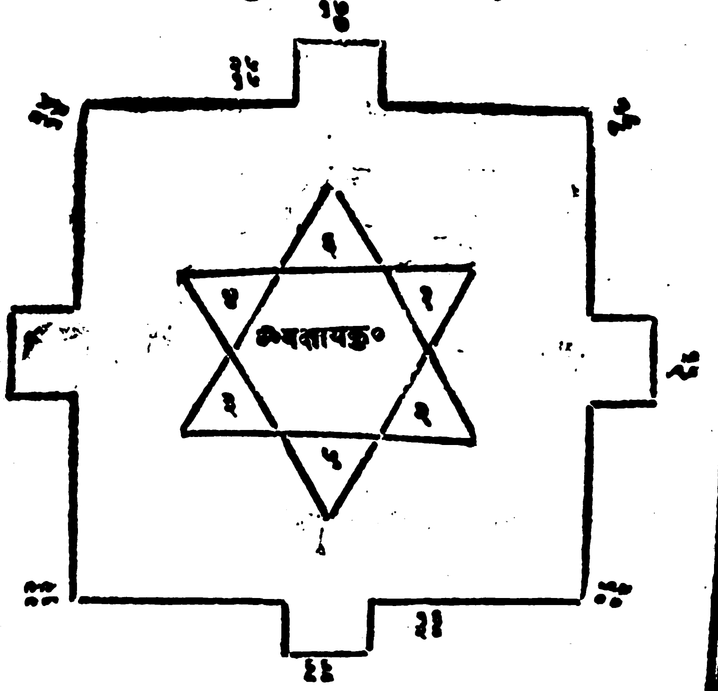
अथ वरुणपूजनयन्त्रम्.



समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥१॥इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति प्रथमावरणम्॥१॥ततोऽष्टदलेषु पूज्यपूजकयोरंतराले प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ॐ शेषाय नमः शेषश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ वासुकये नमः । वासुकिश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ तक्षकाय नमः । तक्षकश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ कर्कोटकाय नमः । कर्कोटकश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ पद्माय नमः । पद्मश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ महापद्माय नमः । महापद्मश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ शंखपालाय नमः । शंखपालश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ कुलिकाय नमः । कुलिकश्रीपा० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति द्वितीयावरणम् ॥२॥ ततो भूपुरे इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्यात् । अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपः । तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् । एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति ॥ सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च—"लक्षमेकं जपेन्मंत्रं पायसेन दशांशतः ॥ सर्पिःसिक्तेन जुहुयान्मन्त्री मंत्रस्य सिद्धये ॥ १॥ ऋणमुक्त्यै जपेन्मंत्रं प्रत्यहं साष्टकं शतम् ॥ जपेनानेन लभते महतीमव्ययां श्रियम् ॥ २ ॥ सितेक्षुशकलैर्मंत्री जुहुयाद्घृतसंप्लुतैः ॥ चतुर्दिनं दशशतमृणमुक्त्यै महाश्रिये॥ ३ ॥ समिद्भिर्वेतसोत्थाभिः क्षीराक्ताभिर्दिनत्रयम् ॥जुहुयाद्वृष्टिसंसिद्ध्यै मंत्रविद्विजितेन्द्रियः ॥ ४ ॥ अनेन विधिना मंत्री सूर्ये शतभिषं गते ॥ चतुःशतं घृतयुतं पायसं जुहुयाद्वशी ॥ ५ ॥ ऋणनाशाय संपत्त्यै वश्यारोग्याभिवृद्धये ॥ भृगुवारे कृतो होमः पायसेन ससर्पिषा ॥ ६ ॥ महतीं संपदं कुर्यान्नाशयेत्सकलापदः ॥ शालिभिर्घृतसंसिक्तैः सरिदंतरितः सुधीः॥७॥त्र्यहं चतुःशतं हुत्वा स्तंभयेत्परसैन्यकम्॥ सायं प्रत्यङ्मुखो वह्निमाराध्य प्रजपेन्मनुम् ॥ ८ ॥ चतुःशतं विमुच्येत मंत्री सर्वैरुपद्रवैः ॥ मंत्री प्रत्यङ्मुखो भूत्वा तर्पयेद्विमलैर्जलैः॥९॥सर्वोपद्रवनाशाय समस्ताभ्युदयाप्तये॥बहुना किमिहोक्तेन मंत्रेणानेन साधकः॥साधयेत्सकलान्कामाञ्जपहोमादितत्परः॥१०॥इति वरुणत्रिचत्वारिंशदक्षरमंत्रप्रयोगः ॥ अथ कुबेरमंत्रप्रयोगः॥ (मंत्रमहोदधौ) मंत्रो यथा—"ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धनधान्याधिपतये धनधान्यसमृद्धिं मे देहि दापय स्वाहा" इति पंचत्रिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम् ॥ अस्य कुबेरमंत्रस्य विश्रवा ऋषिः । बृहती छंदः । शिवमित्रधनेश्वरो देवता।

ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । ॥ ॐ विश्रवऋषये नमः । शिरसि ॥ १ ॥ बृहतीछंदसे नमः । मुखे ॥ २ ॥ शिवमित्रधनेश्वरदेवतायै नमः । हृदि ॥ ३ ॥ विनियोगाय नमः । सर्वांगे ॥ ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः॥ ॐ यक्षाय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ कुबेराय शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ वैश्रवणाय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धनधान्याधिपतये कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ धनधान्यसमृद्धिं मे नेत्राय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ देहि दापय स्वाहा अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ॐ यक्षायांगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ कुबेराय तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ वैश्रवणाय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ धनधान्याधिपतये अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ धनधान्यसमृद्धिं मे कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ देहि दापय स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥ इति न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ "मनुजवाह्यविमानवरस्थितं गरुडरत्ननिभं निधिनायकम् ॥ शिवसखं मुकुटादिविभूषितं वरगदे दधतं भज तुंदिलम् ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः पूजयेत् ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले धर्मादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य "ॐ धर्मादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः" इति पीठदेवताः संपूज्य (अस्य पीठशक्त्यादेरभावः) ततः स्वर्णादिनिर्मितं मंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्यावाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञयावरणपूजां कुर्यात् ॥ तद्यथा—पुष्पांजलिमादाय "ॐ संविन्मयः परो देवः

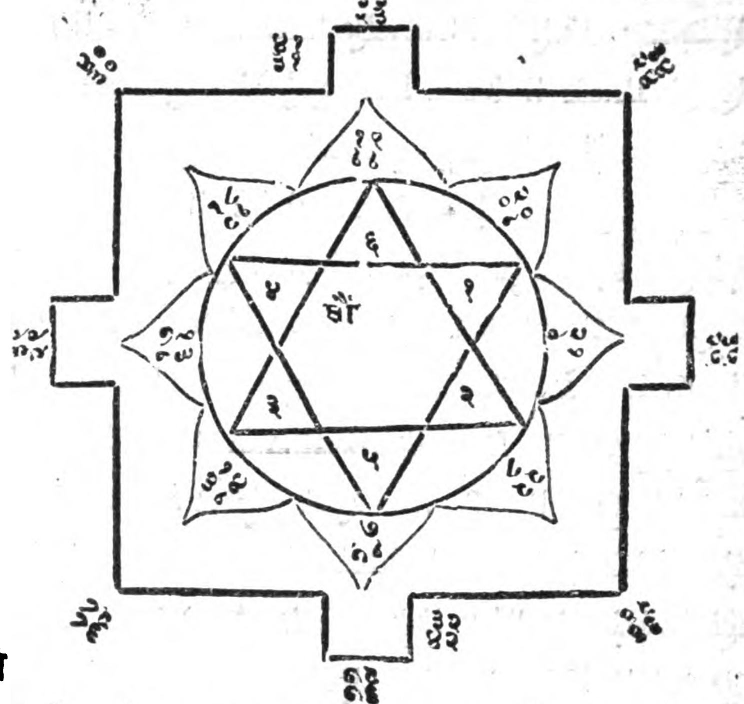
अथ कुबेरपूजनयन्त्रम् ।



परामृतरसप्रियः ॥ अनुज्ञां देहि धनद परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥" इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वावरणपूजामारभेत ॥ तद्यथा—षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च ॐ यक्षाय हृदयाय नमः । हृदय श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र ॥१॥ ॐ कुबेराय शिरसे स्वाहा । शिरः श्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ वैश्रवणाय शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा०॥३॥ ॐ धनधान्याधिपतये कवचाय हुं कवचश्रीपा०॥४॥ॐ धनधान्यसमृद्धिं मे नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रश्रीपा०॥५॥ ॐ देहि दापय स्वाहा अस्त्राय फट्।अस्त्रश्रीपा०॥६॥इति षडंगानि पूजयेत्॥ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य"अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततो भूपुरे इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात्॥इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः। तिलाज्येन दशांशतो होमः। एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे च मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत्॥ तथा च—लक्षमेकं जपेन्मंत्रं दशांशं जुहुयात्तिलैः॥सिद्धे मनौ प्रकुर्वीत प्रयोगानिष्टसिद्धये॥१॥शिवालये जपेन्मंत्रमयुतं धनवृद्धये ॥बिल्व मूलोपविष्टेन जप्तो लक्षं धनर्द्धिदः ॥ २ ॥ इति पंचत्रिंशदक्षरकुबेरमंत्रप्रयोगः॥ अथ षोडशाक्षरकुबेरमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा—" ॐ श्रीं ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं क्लीं वित्तेश्वराय नमः॥" इति षोडशाक्षरो मंत्रः॥ अस्य विधानम् ॥ ॐ श्रीं हृदयाय नमः॥१॥ ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ह्रीं क्लीं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ श्रीं क्लीं कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ वित्तेश्वराय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ नमः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति षडंगन्यासं कुर्यात् ॥ ऋष्यादिकं ध्यानपूजादिकं च सर्वं पूर्ववत्॥ तथा च—षोडशाक्षरमंत्रोऽयं सर्वदारिद्र्यनाशनः॥ध्यानार्चनादिकं सर्वमस्य पूर्ववदाचरेत् ॥ १ ॥ इति षोडशाक्षरकुबेरमंत्रप्रयोगः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ चन्द्रमोमंत्रप्रयोगः ॥ अथ चन्द्रमसो वक्ष्ये मनुं सर्वसमृद्धिदम् ॥ अथ षडक्षरचन्द्रमोमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा—(शारदातिलके) 'सौं सोमाय नमः' इति षडक्षरमंत्रः ॥ अस्य सोममंत्रस्य भृगुर्ऋषिः । पंक्तिश्छंदः । सोमो देवता । सौं बीजम् ॥ नमः शक्तिः । मम सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः॥ ॐ भृगुऋषये नमः ।

शिरसि ॥१॥ पंक्तिच्छंदसे नमः । मुखे ॥ २ ॥ सोमदेवतायै नमः । हृदि ॥३॥ सौं बीजाय नमः । गुह्ये॥४॥नमः शक्तये नमः । पादयोः ॥ ५ ॥ विनियोगाय नमः । सर्वांगे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ सां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ सीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ सूं मध्यमाभ्यां नमः ॥३॥ ॐ सैं अनामिकाभ्यां नमः ॥४॥ ॐ सौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ॐ सः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ सां हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ सीं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ सूं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ सैं कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ सैं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ सः अस्त्राय फट् ॥६॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत् ॥ कर्पूरस्फटिकावदातमनिशं पूर्णेन्दुबिंबाननं मुक्तादामविभूषितेन वपुषा निर्मूलयंतं तमः ॥ हस्ताभ्यां कुमुदं वरं च दधतं नीलालकोद्भासितं स्वस्यांकस्थमृगूदिताश्रयगुणं सोमं सुधाब्धिं भजे ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा सर्वतोभद्रमंडले सोमतोभद्रमंडले वा मं मंडूकादिसोमांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडूकादिसोमांतपीठदेवताभ्यो नमः ॥' इति पीठदेवताः संपूज्य तन्मध्ये "ॐ सौं सोमाय रोहिणीपतये नमः" इति संपूज्य रौप्यादिनिर्मितं यंत्रमग्न्युत्तारणपूर्वकं "सौं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः" इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्यावाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञां गृहीत्वावरणपूजां कुर्यात् ॥ तत्र क्रमः ॥ षट्कोणकेसरेषु अग्निकोणे । ॐ सां हृदयाय नमः ॥ १ ॥ निर्ऋतिकोणे । ॐ सीं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ वायव्ये । ॐ सूं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ऐशान्ये । ॐ सैं कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ पूज्यपूजकयोर्मध्ये । ॐ सौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ देवतापश्चिमे । ॐ सः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य " ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ " इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इतिप्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण

अथ चंद्रपूजनयन्त्रम्.



वामावर्तेन च । ॐ रोहिण्यै नमः । रोहिणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ कृत्तिकायै नमः । कृत्तिकाश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ रेवत्यै नमः । रेवतश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ भरण्यै नमः । भरणीश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ रात्र्यै नमः । रात्रिश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ आर्द्रायै नमः । आर्द्राश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ ज्योत्स्नायै नमः । ज्योत्स्नाश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ कलायै नमः । कलाश्रीपा० ॥ ८ ॥ इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततोऽष्टदलाग्रेषु ॐ आं आदित्याय नमः । आदित्यश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ भौं भौमाय नमः । भौमश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ बुं बुधाय नमः । बुधश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ शं शनैश्वराय नमः । शनैश्वरश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ बृं बृहस्पतये नमः । बृहस्पतिश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ रां राहवे नमः । राहुश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ शुं शुक्राय नमः । शुक्रश्रीपा० ॥७॥ ॐ कें केतवे नमः । केतुश्रीपा० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ ग्रहान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥३॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण । ॐ लं इन्द्राय नमः । इन्द्रश्रीपा० ॥१॥ ॐ रं अग्नये नमः । अग्निश्रीपा० ॥२॥ ॐ मं यमाय नमः । यमश्रीपा० ॥३॥ ॐ क्षं निर्ऋतये नमः । निर्ऋतिश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ वं वरुणाय नमः । वरुणश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ यं वायवे नमः । वायुश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ कुं कुबेराय नमः । कुबेरश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ हं ईशानाय नमः । ईशानश्रीपा० ॥ ८ ॥ इन्द्रेशानयोर्मध्ये ॐ आं ब्रह्मणे नमः । ब्रह्मश्रीपा० ॥ ९ ॥ वरुणनिर्ऋत्योर्मध्ये ॐ ह्रीं अनंताय नमः । अनंतश्रीपा० ॥ १० ॥ इति दिक्पालान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥४॥

तद्यथा ॐ वं वज्राय नमः ॥ १ ॥ ॐ शं शक्तये नमः ॥ २ ॥ ॐ दं दंडाय नमः ॥३॥ ॐ खं खड्गाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ पं पाशाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ अ अंकुशाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ गं गदायै नमः ॥ ७॥ ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ पं पद्माय नमः ॥ ९॥ ॐ चं चक्राय नमः ॥ १० ॥ इत्यस्त्राणि पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनांतं संपूज्य जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं षड्लक्षजपः । षट्सहस्रहोमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च—"रसलक्षं जपेन्मंत्रं साधको विजितेन्द्रियः॥ तत्सहस्रं प्रजुहुयात्पायसेन ससर्पिषा ॥१॥ सोमांतं पूजिते पीठे पूजयेद्रोहिणीपतिम् ॥ एवं सिद्धमनुर्मंत्री संपदां वसतिर्भवेत् ॥ २ ॥ हृत्पुंडरीकमध्यस्थं ताराहारविभूषणम् ॥ तारापतिं स्मरन्मंत्री त्रिसहस्रं मनुं जपेत् ॥ ३ ॥ राज्यैश्वर्यं दरिद्रोऽपि प्राप्नुयाद्वत्सरांतरे ॥ पूर्वोक्तसंख्यं प्रजपेच्छशिनं मूर्ध्नि चिंतयेत् ॥ ४ ॥ रोगापमृत्युदुःखानि जित्वा वर्षशतं वसेत् ॥ ब्रह्मचर्यरतः शुद्धश्चतुर्लक्षमिदं जपन् ॥ ५ ॥ निधानं भूगतं सद्यः प्राप्नुयाद्यत्नवर्जितम् ॥ जितेन्द्रियो जपेन्मंत्रं पूर्णिमायां विशेषतः ॥ ६ ॥ भवेत्सौभाग्यनिलयः संपदामपरो निधिः ॥ घोराञ्ज्वराञ्छिरोरोगानभिचारानुपद्रवान् ॥ ७ ॥ विद्विषामपि संघातं नाशयेन्मनुनाऽमुना ॥ पौर्णमास्यां निराहारो दद्यादर्घ्यं विधूदये ॥ ८ ॥ प्राक्प्रत्यगायतं कुर्याद्भूतले मंडलत्रयम् ॥ निषण्णः पश्चिमे मंत्री मंडले विहितासने ॥ ९ ॥ मध्यस्थे स्थापयेत्पश्चात्पूजाद्रव्याण्यशेषतः ॥ अस्मिन्हि मंडले सोममर्चयित्वांबुजान्विते ॥ १० ॥ राजतं चषकं भद्रं स्थापयेत्पुरतः सुधीः ॥ गोदुग्धेन समापूर्य स्पृष्ट्वा तं प्रजपेन्मनुम् ॥ ११ ॥ अष्टोत्तरशतं पश्चाद्विद्यामंत्रेण[1] देशिकः ॥ दद्यादर्घ्यं शशांकाय सर्वकामार्थसिद्धये ॥ १२ ॥ अनेन विधिना कुर्वन्प्रतिमासमतंद्रितः ॥ षण्मासाभ्यंतरे सिद्धिं साधकेंद्रः समश्नुते ॥ १३ ॥ श्रियमत्यूर्जितां पुत्रान्सौभाग्यं विपुलं यशः ॥ कन्यामिष्टामवाप्नोति कन्यापि वरमीप्सितम् ॥ १४ ॥ बहुना किमिहोक्तेन सर्वं दद्यान्निशापतिः ॥" इति षडक्षरचन्द्रमोमंत्रप्रयोगः ॥ अथ चन्द्रमस्स्तोत्रम् ॥ "ॐ श्वेताम्बरः श्वेतवपुः किरीटी श्वेतद्युति

१ "ॐ विद्ये विद्यामालिने चन्द्रिणि चन्द्रमुखि स्वाहा" इति विद्यामन्त्रः ॥

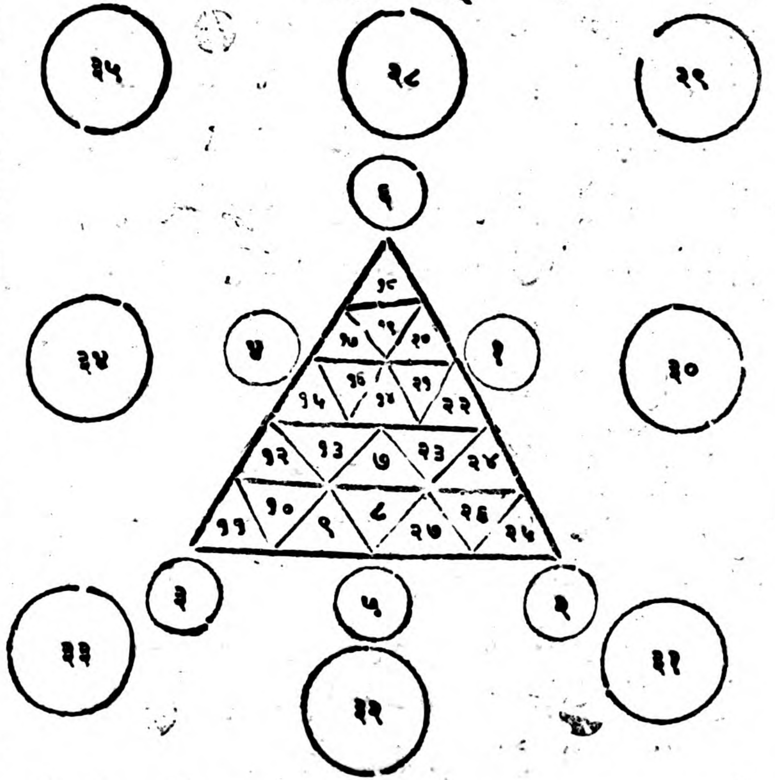
दंडधरो द्विबाहुः ॥ चन्द्रोऽमृतात्मा वरदः शशांकः श्रेयांसि मह्यं प्रददातु देवः ॥ १ ॥ दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम् ॥ नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुटभूषणम् ॥ २ ॥ क्षीरसिन्धुसमुत्पन्नो रोहिणीसहितः प्रभुः ॥ हरस्य मुकुटावास बालचन्द्र नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥ सुधामया यत्किरणाः पोषयंत्योषधीवनम् ॥ सर्वान्नरसहेतुं तं नमामि सिंधुनन्दनम् ॥ ४ ॥ राकेशं तारकेशं च रोहिणी प्रियसुन्दरम् ॥ ध्यायतां सर्वदोषघ्नं नमामीन्दुं मुहुर्मुहुः ॥ ५ ॥ इति चन्द्रमस्स्तोत्रं संपूर्णम् ॥ अथ धनपुत्रादिप्रदमंगलमंत्र विधानम् ॥ (मंत्रमहोदधौ) मंत्रो यथा—"ॐ हां हंसः खं खः" इति षडक्षरो मन्त्रः । अस्य विधानम् ॥ मार्गशीर्षे वैशाखे वा शुक्लपक्षे चंद्रतारादिबलान्विते भौमवासरे व्रतं प्रगृह्य वक्ष्यमाणविधिना संवत्सरपर्यंतं कार्यम् ॥ तद्यथा—मंगलवारे अरुणोदयवेलाया मुत्थाय शौचविधिं विधाय अपामार्गकाष्ठेन मौनधारणपूर्वकं दंतधावनं कृत्वा नद्यादौ गृहे वा यथाविधि स्नात्वा रक्तवाससी परिधाय नित्यकर्म समाप्य शिवालये स्वगृहे वा रक्तगोमयलिप्तमंडले स्वासने प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य दक्षिणपार्श्वे रक्तचंदनरक्तपुष्पा दीनि संपाद्य सपवित्रकर आचम्य मूलेन प्राणानायम्य देशकालौ स्मृत्वा मम जन्मराशेः सकाशान्नामराशेः सकाशाज्जन्मलग्नाद्वर्षलग्नाद्वा गोचराच्चतुर्थाष्टमादित्याद्यनिष्टस्थानस्थितभौमसर्वानिष्टफलनिवृत्तिपूर्वकतृतीयैकादशशुभस्थानस्थितवदुत्तमफलावाप्त्यर्थम् आयुरारोग्य वृद्ध्यर्थमृणच्छेदार्थममुकरोगविनाशार्थं वा पुत्रप्राप्त्यर्थं श्रीमंगलदेवताप्रसन्नतार्थं भौमव्रतं करिष्ये ॥ तदंगत्वेन न्यासध्यानपूजार्घ्य दानादि च करिष्ये । इति संकल्प्य कर्ता स्वदेहे न्यासान् कुर्यात् ॥ तद्यथा—अस्य मंत्रस्य विरूपाक्ष ऋषिः । गायत्री छंदः । धरात्मजो भौमो देवता । हां बीजम् । हंसः शक्तिः । सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः ॥ ॐ विरूपाक्षऋषये नमः शिरसि १ गायत्रीछंदसे नमः मुखे २ धरात्मजभौमदेवतायै नमः हृदि ३ हां बीजाय नमः गुह्ये ४ हंसः शक्तये नमः पादयोः ५ विनियोगाय नमः सर्वांगे ६ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ॐ भौमाय अंगुष्ठाभ्यां नमः १ ॐ हां भौमाय तर्जनीभ्यां नमः २ ॐ हं भौमाय मध्यमाभ्यां नमः ३ ॐ सः

भौमाय अनामिकाभ्यां नमः ४ ॐ खं भामायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ॐ खः भौमाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ॐ भौमाय हृदयाय नमः १ ॐ हां भौमाय शिरसे स्वाहा २ ॐ हं भौमाय शिखायै वषट् ३ ॐ सः भौमाय कवचाय हुम् ४ ॐ खं भौमाय नेत्रत्रयाय वौषट् ५ ॐ खः भौमाय अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ॐ मंगलाय नमः अंघ्र्योः १ ॐ भूमिपुत्राय नमः जानुनोः २ ॐ ऋणहर्त्रे नमः ऊर्वोः ३ ॐ धनप्रदाय नमः कट्याम् ४ ॐ स्थिरासनाय नमः गुह्ये ५ ॐ महाकायाय नमः उरसि ६ ॐ सर्वकामविरोधकाय नमः वामबाहौ ७ ॐ लोहिताय नमः दक्षिणबाहौ ८ ॐ लोहिताक्षाय नमः गले ९ ॐ सामगानां कृपाकराय नमः वदने १० ॐ धरात्मजाय नमः अंसयोः ११ ॐ कुजाय नमः नेत्रयोः १२ ॐ भौमाय नमः ललाटे १३ ॐ भूतिदाय नमः भ्रुवोः १४ ॐ भूमिनंदनाय नमः मस्तके १५ ॐ अंगारकाय नमः शिखायाम् १६ ॐ यमाय नमः सर्वांगे १७ ॐ सर्वरोगप्रहारिणे नमः मूर्धादिहस्तांतम् १८ ॐ वृष्टिकर्त्रे नमः मूर्धादिपादांतम् १९ ॐ वृष्टिहर्त्रे नमः पादादिमूर्धांतम् २० ॐ सर्वरोगापहारकाय नमः दशदिक्षु च २१ ॐ अंगारकाय नमः नाभौ २२ ॐ वक्राय नमः वक्षसि २३ ॐ भूमिनंदनाय नमः मूर्ध्नि २४ इति न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ "जपाभं शिवस्वेदजं हस्तपद्मैर्गदाशूलशक्ती करे धारयंतम्॥अवंतीसमुत्थं सुमेषासनस्थं धरानंदनं रक्तवस्त्रं समीडे ॥१॥" इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य ताम्राघ्र्यं पद्धतिमार्गेण संस्थाप्य पीठपूजादिकं कुर्यात् ॥ तद्यथा—पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले लिंगतोभद्रमंडले वा मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य " ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः" इति संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तद्यथा—पूर्वादिक्रमेण ॐ वामायै नमः ॥ १ ॥ ॐ ज्येष्ठायै नमः ॥ २ ॥ ॐ रौद्र्यै नमः ॥ ३ ॥ ॐ काल्यै नमः ॥ ४ ॥ ॐ कलविकरण्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ बलविकरण्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ बलप्रमथिन्यै नमः ॥ ७ ॥ ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः ॥ ८ ॥ मध्ये ॐ मनोन्मन्यै नमः ॥ ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णपात्रे ताम्रपात्रे

वा एकाविंशतित्रिकोणात्मकं यंत्रं रक्तचंदननिर्मितां प्रतिमां वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य "ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय भूमिपुत्राय योगपीठात्मने नमः।" इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणस्थापनं कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य "ॐ अंगारकाय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि ॥ तन्नो भौमः प्रचोदयात्" इति भौमगायत्र्या आवाहनादिरक्तगंधाक्षतरक्तपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तद्यथा—यंत्रे अग्न्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च ॐ ॐ भौमाय हृदयाय नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ ह्रौं भौमाय शिरसे स्वाहा। शिरः श्रीपा० ॥२॥ ॐ हं भौमाय शिखायै वषट्। शिखाश्रीपा० ॥३॥ ॐ सः भौमाय कवचाय हुम्। कवचश्रीपा० ॥४॥ ॐ खं भौमाय नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रत्रयश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ खः भौमाय अस्त्राय फट्। अस्त्रश्रीपा० ॥ ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य "ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्" ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततो यंत्रे पूज्यपूजकयोरंतराले प्राचीं तदनुसारेणान्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण दक्षिणावर्तेन च ॐ मंगलाय नमः। मंगलश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ भूमिपुत्राय नमः। भूमिपुत्रश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ ऋणहर्त्रे नमः। ऋणहर्तृश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ धनप्रदाय नमः। धनप्रदश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ स्थिरासनाय नमः। स्थिरासनश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ महाकायाय नमः। महाकायश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ सर्वकर्मावरोधकाय नमः। सर्वकर्मावरोधकश्रीपा० ॥ ॥ ७ ॥ ॐ लोहिताय नमः। लोहितश्रीपा० ॥ ८ ॥ ॐ लोहिताक्षाय नमः। लोहिताक्षश्रीपा० ॥ ९ ॥ ॐ सामगानां कृपाकराय नमः। सामगानां कृपाकरश्रीपा० ॥ १० ॥ ॐ धरात्मजाय नमः। धरात्मजश्रीपा० ॥ ११ ॥ ॐ कुजाय नमः। कुजश्रीपा० ॥ ॥ १२ ॥ ॐ भौमाय नमः भौमश्रीपा० ॥ १३ ॥ ॐ भूतिदाय नमः। भूतिदश्रीपा० ॥ १४ ॥ ॐ भूमिनन्दनाय नमः।

भूमिनंदनश्रीपा० ॥ १५ ॥ ॐ अंगारकाय नमः । अंगारकश्रीपा० ॥ १६ ॥ ॐ यमाय नमः । यमश्रीपा० ॥ १७ ॥ सर्वरोगप्रहारिणे नमः । सर्वरोगप्रहारिश्रीपा० ॥ १८ ॥ ॐ सर्ववृष्टिकर्त्रे नमः । सर्ववृष्टिकर्तृश्रीपा० ॥ १९ ॥ ॐ वृष्टिहर्त्रे नमः । वृष्टिहर्तृश्रीपा०॥२०॥ ॐ सर्वरोगापहारकाय नमः । सर्वरोगापहारकश्रीपा०॥२१॥इत्येकविंशतिनामभिः प्रत्येककोष्ठे पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततो यंत्रे पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु ॐ ब्राह्म्यै नमः । ब्राह्मीश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ माहेश्वर्य्यै नमः । माहेश्वरीश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ कौमार्य्यै नमः । कौमारीश्रीपादुकां० ॥ ३ ॥ ॐ वैष्णव्यै नमः । वैष्णवीश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ वाराह्यै नमः । वाराहीश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ इन्द्राण्यै नमः । इन्द्राणीश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ चामुंडायै नमः । चामुंडाश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः । महालक्ष्मीश्रीपा० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ मातृकाः संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततो यंत्रे पूर्वादिक्रमेण ॐ लं इंद्राय नमः ॥ १ ॥ ॐ रं अग्नये नमः ॥ २ ॥ ॐ मं यमाय नमः

भौमपूजनयन्त्रम्.



॥ ३ ॥ ॐ क्षं निर्ऋतये नमः ॥ ४ ॥ ॐ वं वरुणाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ यं वायवे नमः ॥ ६ ॥ ॐ कुं कुबेराय नमः ॥ ७ ॥ ॐ हं ईशानाय नमः ॥ ८ ॥ पूर्वेशानयोर्मध्ये ॐ आं ब्रह्मणे नमः ॥ ९ ॥ वरुणनिर्ऋत्योर्मध्ये ॐ ह्रीं अनंताय नमः ॥ १० ॥ इति

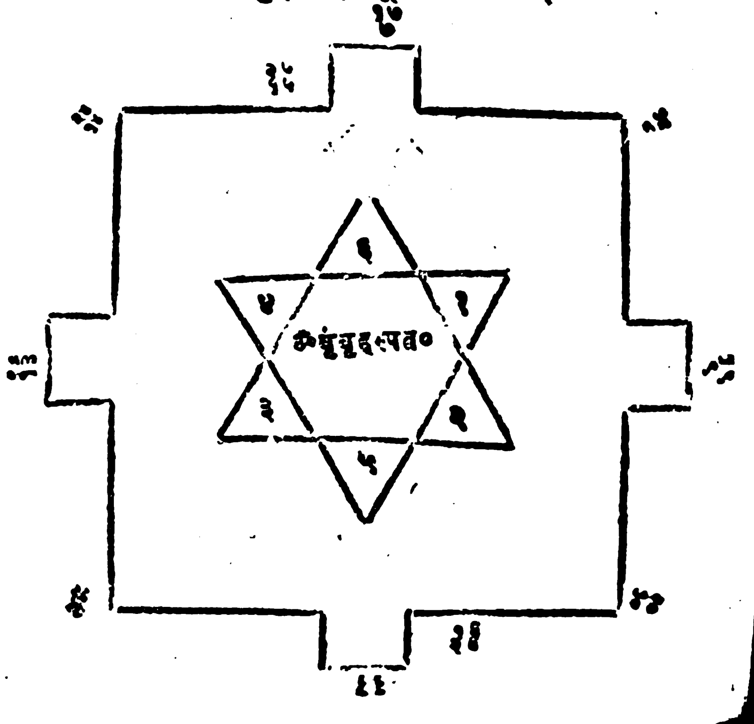
दशदिक्पालान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥ ४ ॥ ततः पर्वादिक्रमेण इन्द्रादिसमीपे ॐ वं वज्राय नमः ॥ १ ॥ ॐ शं शक्तये नमः ॥ २ ॥ ॐ दं दंडाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ खं खड्गाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ पं पाशाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ अं अंकुशाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ गं गदायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ पं पद्माय नमः ॥ ९ ॥ ॐ चं चक्राय नमः ॥ १० ॥ इत्यस्त्राणि संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति पंचमावरणम् ॥ ५ ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपदीपगोधूमान्ननैवेद्यतांबूल दक्षिणानीराजनादिभिः संपूज्य अर्घ्यं दद्यात् ॥ तद्यथा—जलपूर्णे ताम्रपात्रे गंधपुष्पाक्षतफलानि च निक्षिप्य जानुभ्यामवनीं गत्वा "ॐ भूमिपुत्र महातेजः स्वेदोद्भव पिनाकिनः ॥ सुतार्थिनी प्रपन्ना त्वां गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥ रक्तप्रवालसंकाश जपाकुसुम सन्निभ ॥ महीसुत महाबाहो गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥२॥ "इति मंत्रद्वयेनार्घ्यं दत्त्वा पूर्वोक्तैरेकविंशतिनामभिस्तावती प्रदक्षिणाः कृत्वा साष्टांगं प्रणम्य यथासंख्यं मूलमंत्रं जपित्वा रेखामार्जनं कुर्यात् ॥ तद्यथा—खदिरांगारकेण रेखात्रयं समं कृत्वा ततः " दुःखदौर्भाग्य नाशाय पुत्रसंतानहेतवे ॥ कृतरेखात्रयं वामपादेनैतत्प्रमार्ज्म्यहम् ॥ १ ॥ ऋणदुःखविनाशाय मनोऽभीष्टार्थसिद्धये ॥ मार्जयाम्यसिता रेखास्तिस्रो जन्मत्रयोद्भवाः ॥ २ ॥ "इति मंत्रद्वयेन वामपादेन मार्जयेत् । इति रेखामार्जनम्" ॥ पुष्पांजलिमादाय " ॐ धरणीगर्भ गर्भसंभूतं विद्युत्तेजःसमप्रभम् ॥ कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम् ॥१॥ ऋणहर्त्रे नमस्तुभ्यं दुःखदारिद्र्यनाशिने ॥ नमामि द्योत मानाय सर्वकल्याणकारिणे ॥ २ ॥ देवदानवगन्धर्वयक्षराक्षसपन्नगाः ॥ सुखं यांति यतस्तस्मै नमो धरणिसूनवे ॥ ३ ॥ यो वक्रगतिमा पन्नो नृणां विघ्नं प्रयच्छति ॥ पूजितः सुखसौभाग्यं तस्मै क्ष्मासूनवे नमः ॥४॥ प्रसादं कुरु मे नाथ मंगलप्रद मंगल ॥ मेषवाहन रुद्रात्म न्पुत्रान्देहि धनं यशः ॥५॥" इति संप्रार्थ्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ ततो ब्राह्मणान्संपूज्य गुरवे दक्षिणां दत्त्वा पूजायां निवेदितान्नं भक्षयेत् ॥ अस्य पुरश्चरणं षड्लक्षजपः ॥ समाप्ते व्रते सर्वतोभद्रमण्डलमध्ये ताम्रकलशं यथाविधि संस्थाप्य तत्र स्वर्णमयीं भौमप्रतिमां संपूज्य तदै

शान्त्यां स्थंडिले अग्निं प्रतिष्ठाप्य आघारावाज्यहोमं कृत्वा मूलमंत्रेणाज्यमिश्रितखदिरसमिद्भिर्दशांशतो जुहुयात् ॥ ततः पूर्णपात्रदानांतं होमशेषं समाप्य स्वर्णमूर्त्यादिकमाचार्याय दत्त्वा पंचाशद्ब्राह्मणान् गोधूमान्नेन भोजयेत् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति। सिद्धे च मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत्॥तथा च-"रसलक्षजपैर्होमः समिद्भिः खदिरस्य च॥इत्थं जपादिभिः सिद्धं स्वेष्टसिद्धौ प्रयोजयेत् ॥१॥ नारी पुत्रमभीप्संती भौमाह्वे तद्व्रतं चरेत् ॥ मार्गशीर्षेऽथ वैशाखे तस्यारम्भः प्रशस्यते ॥२॥प्रतिभौमदिनं कुर्यादेवं संवत्सरावधिः॥ तिलैर्विधापयेद्धोमं शतार्द्धं भोजयेद्द्विजान् ॥ ३ ॥ एवं व्रतपरा नारी प्राप्नुयात्सुभगान्सुतान् ॥ धनाप्त्यै ऋणनाशाय व्रतं कुर्यात्पुमानपि ॥ ४ ॥" इति भौमषडक्षर मंत्रप्रयोगः ॥अथ मंगलस्तोत्रम् ॥ ॐ अस्य श्रीभौमस्तोत्रस्य गर्गऋषिः। मंगलो देवता। त्रिष्टुप्छन्दः। ऋणापहरणे जपे विनियोगः। अथ ध्यानम् ॥"रक्ताम्बरो रक्तवपुः किरीटी चतुर्मुखो मेषगदो गदाधृक् ॥ धरासुतः शक्तिधरश्च शूली सदा मम स्याद्वरदः प्रशांतः ॥ १ ॥ ॐ मंगलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः ॥ स्थिरात्मजो महाकायः सर्वकामार्थसाधकः ॥ २ ॥ लोहितो लोहितांगश्च सामगानां कृपाकरः ॥ धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः ॥ ३ ॥ अंगारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः ॥ वृष्टिकर्ताऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रदः ॥ ४ ॥ एतानि कुजनामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत् ॥ ऋणं न जायते तस्य धनं प्राप्नोत्यसंशयः ॥ ५ ॥ अंगारको ऽतिबलवानपि यो ग्रहाणां स्वेदोद्भवस्त्रिनयनस्य पिनाकपाणेः॥ आरक्तचन्दनसुशीतलवारिणा यो ऽप्यभ्यर्चितोऽथ विपुलां प्रददाति सिद्धिम् ॥ ६ ॥ भो भो धरात्मज इति प्रथितः पृथिव्यां दुःखापहो दुरितशोकसमस्तहर्ता ॥ नृणामृणं हरति तान्धनिनः प्रकुर्याद्यः पूजितः सकल मंगलवासरेषु ॥७॥ एकेन हस्तेन गदां बिभर्ति त्रिशूलमन्येन ऋजुक्रमेण ॥ शक्तिं सदान्येन वरं ददाति चतुर्भुजो मंगलमादधातु ॥८ ॥ यो मंगलो मंगलमादधाति मध्यग्रहो यच्छति वांछितार्थम् ॥ धर्मार्थकामादिसुखं प्रभुत्वं कलत्रपुत्रैर्न कदा वियोगः ॥९॥ कनकमयशरीर स्तेजसा दुर्निरीक्ष्यो हुतवहसमकांतिर्मालवे लब्धजन्मा ॥ अवनिजतनयेषु श्रूयते यः पुराणो दिशतु मम विभूतिं भूमिजः सप्रभावः ॥ १० ॥

इति वसिष्ठसंहितायां भौमस्तोत्रं समाप्तम् ॥ अथ बुधस्तोत्रप्रारम्भः ॥ पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो देवदुःखापहर्ता ॥ धर्मस्य धृक् सोमसुतः सदा मे सिंहाधिरूढो वरदो बुधश्च ॥ १ ॥ प्रियंगुकलिकश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ॥ सौम्यं सौम्यगुणोपेतं नमामि शशिनन्दनम् ॥ २ ॥ सोमसूनुर्बुधश्चैव सौम्यः सौम्यगुणान्वितः ॥ सदा शांतः सदा क्षेमो नमामि शशिनन्दनम् ॥३॥ उत्पातरूपी जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः ॥ सूर्यप्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु मे बुधः ॥ ४ ॥ शिरीषपुष्पसंकाशः कपिशीलो युवा पुनः ॥ सोमपुत्रो बुधश्चैव सदा शांतिं प्रयच्छतु ॥ ५ ॥ श्यामः शिरालश्च कलाविधिज्ञः कौतूहली कोमलवाग्विलासी ॥ रजोऽधिको मध्यमरूपधृक् स्यादाताम्रनेत्रो द्विजराजपुत्रः ॥ ६ ॥ अहो चन्द्रसुत श्रीमान् मगधेषु समुद्भवन् ॥ अत्रिगोत्रश्चतुर्बाहुः खड्गखेटकधारकः ॥ ७ ॥ गदाधरो नृसिंहस्थः स्वर्णनाभसमन्वितः ॥ केतकीद्रुमपत्राभ इन्द्रविष्णुप्रपूजितः ॥ ८ ॥ ज्ञेयो बुधः पंडितश्च रौहिणेयश्च रोमज ॥ कुमारो राजपुत्रश्च सुसेव्यः शशिनन्दनः ॥ ९ ॥ गुरुपुत्रश्च तारेयो विबुधो बोधनस्तथा ॥ सौम्यः सौम्यगुणोपेतो रत्नदानफलप्रदः ॥ १० ॥ एतानि बुधनामानि प्रातःकाले पठेन्नरः ॥ बुद्धिर्विवृद्धितां याति बुधपीडा न जायते ॥ ११ ॥ इति बुधस्तोत्रं समाप्तम् ॥ अथ बृहस्पतिमंत्रप्रयोगः ॥ (मंत्रमहोदधौ) मंत्रो यथा-" ॐ बृं बृहस्पतये नमः " इत्यष्टाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम् ॥ अस्य बृहस्पतिमंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । अनुष्टुप्छंदः । सुराचार्यो देवता । बृं बीजम् । नमः शक्तिः । ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ ब्रह्मऋषये नमः । शिरसि ॥ १ ॥ अनुष्टुप्छंदसे नमः । मुखे ॥ २ ॥ सुराचार्यदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ बृं बीजाय नमः । गुह्ये ॥ ४ ॥ नमः शक्तये नमः । पादयोः ॥ ५ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ब्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥१॥ ॐ ब्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ ब्रूं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ ब्रैं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ ब्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ ब्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ब्रां हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ब्रीं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ब्रूं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ ब्रैं कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ ब्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ ब्रः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादि

षडंगन्यासः ॥ इति न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ “ रत्नाष्टापदवस्त्रराशिममलं दक्षात्किरंतं करादासीनं विपणौ करं निदधतं रत्नादिराशौ परम् ॥ पीतालेपनपुष्पवस्त्रमखिलालंकारसंभूषितं विद्यासागरपारगं सुरगुरुं वंदे सुवर्णप्रभम् ॥ १ ॥” इति ध्यात्वा सर्वतोभद्रमंडले धर्माधर्मादिपीठांतं पीठदेवताः संस्थापयेत् ॥ अत्र पीठशक्तयो न संति ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तद्यथा—षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च ॐ ब्रां हृदयाय नमः । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ ब्रीं शिरसे स्वाहा शिरःश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ ब्रूं शिखायै वैषट् । शिखाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ ब्रैं कवचाय हुंम् । कवचश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ ब्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ ब्रः अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ॥ ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य “ ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ ” इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इंद्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य

अथ बृहस्पतिपूजनयन्त्रम्.



पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणमशीतिसहस्रजपः ॥ तद्दशांशतो घृतहोमः । एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च—"जपित्वाशीतिसाहस्रं हुत्वा तेन घृतेन वा ॥ धर्माधर्मादिपीठे तं पूजयेदंगदिग्भवैः ॥ १ ॥ सिद्धे मनौ प्रकुर्वीत प्रयोगानिष्टसिद्धये ॥ हरिद्राकुसुमैर्हुत्वा घृताक्तैर्दिवसत्रयम् ॥ २ ॥ सविंशतिशतं[1] मंत्री वासांसि लभते मणीन् ॥ शत्रुरोगादिपीडासु स्वजने कलहोद्भवे ॥ ३ ॥ जुहुयात्पिप्पलोत्थाभिः समिद्भिस्तन्निवृत्तये ॥ ४ ॥" इत्यष्टाक्षरबृहस्पतिमंत्रप्रयोगः ॥ अथ बृहस्पतिस्तोत्रप्रारंभः ॥ "क्रौं—शक्रादिदेवैः परिपूजितोऽसि त्वं जीवभूतो जगतो हिताय ॥ ददाति यो निर्मलशास्त्रबुद्धिं स वाक्पतिर्मे वितनोतु लक्ष्मीम् ॥ १ ॥ पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो देवगुरुः प्रशांतः ॥ दधाति दण्डं च कमण्डलुं च तथाक्षसूत्रं वरदोऽस्तु मह्यम् ॥ २ ॥ बृहस्पतिः सुराचार्य्यो दयावाञ्छुभलक्षणः ॥ लोकत्रयगुरुः श्रीमान्सर्वज्ञः सर्वतो विभुः ॥ ३ ॥ सर्वेशः सर्वदा तुष्टः श्रेयस्कृत्सर्वपूजितः ॥ अक्रोधनो मुनिश्रेष्ठो नीतिकर्ता महाबलः ॥ ४ ॥ विश्वात्मा विश्वकर्ता च विश्वयोनिरयोनिजः ॥ भूर्भुवो धनदाता च भर्ता जीवो जगत्पतिः ॥ ५ ॥ पंचविंशतिनामानि पुण्यानि शुभदानि च ॥ नन्दगोपालपुत्राय भगवत्कीर्तितानि च ॥ ६ ॥ प्रातरुत्थाय यो नित्यं कीर्तयेत्तु समाहितः ॥ विप्रस्तस्यापि भगवान् प्रीतः स च न संशयः ॥७॥" (तंत्रांतरेऽपि) देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचनसन्निभम् ॥ बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥ १ ॥ अमराणां बुद्धिदाता वाग्ग्मी यः करुणाकरः ॥ यावंतो ये च मुनयः पुरुषाकारपीतभाः ॥ २ ॥ बृहस्पतिः सुराचार्य्यो गीष्पतिर्धिषणो गुरुः ॥ जीव आंगिरसो वाचस्पतिश्चित्राशिखण्डिजः ॥ ३ ॥ सकलसुरविनेता ब्रह्मतुल्यप्रभावस्त्रिदशपतिकरैर्यो घृष्टपादारविंदः ॥ विमलमतिविकासी सर्वमांगल्यहेतुर्दिशतु मम विभूतिं वाक्पतिः सुप्रभावः ॥ ४ ॥ बृहस्पतिमहं नौमि गुरुं देवेन्द्रपूजितम् ॥ सर्वशास्त्रप्रवक्तारं सर्वकामफलप्रदम् ॥५॥ सर्वसंशयच्छेत्तारं वेत्तारं सर्वकर्मणाम् ॥ परब्रह्ममयं नित्यं परमानंदरूपिणम् ॥ ६ ॥ सर्वसिद्धिप्रदं देवं शरण्यं

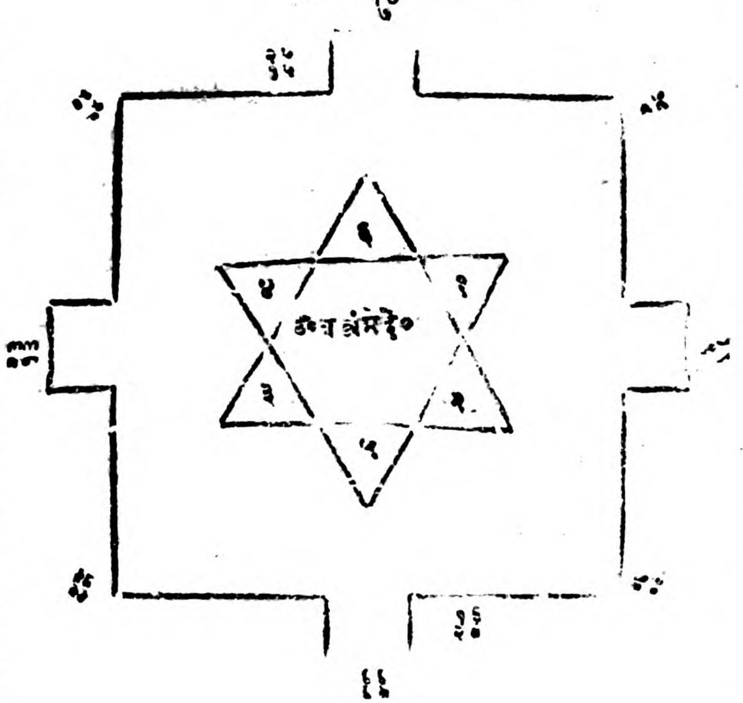
---

१ सविंशतिशतं १२० ॥

भक्तवत्सलम् ॥ वरेण्यं वरदं शांतं त्रिदशार्तिहरं परम् ॥ ७ ॥ लंबकूर्चं सुवर्णाभं स्वर्णयज्ञोपवीतिनम् ॥ पीतवस्त्रपरीधानं मार्तण्डातेल कान्वितम् ॥८॥ चन्दनागुरुकर्पूरैः सुगंधैः शतपत्रकैः ॥ संपूज्य ध्यायते यस्तु भक्त्या सुदृढया नरैः ॥ ९ ॥ धनं धान्यं जयं सौख्यं सौभाग्यं नृपमान्यता ॥ भवंति सर्वदा तेषां त्वत्प्रसादात्सुरेश्वर ॥ १० ॥ रोगाग्निसर्पचौराद्यास्तेषां न प्रभवंति हि ॥ सुस्थानस्थोऽधि देशे च ध्यानात्सर्वार्थसाधकः ॥ ११ ॥ (तंत्रांतरेऽपि) नमः सुरेन्द्रवंद्याय देवाचार्याय ते नमः ॥ नमोऽस्त्वनंतसामर्थ्य वेदसिद्धांतपारग ॥ ॥ १ ॥ सदानंद नमस्तेऽस्तु नमः पीडाहराय च ॥ नमो वाचस्पते तुभ्यं नमस्ते पीतवाससे ॥ २ ॥ नमोऽद्वितीयरूपाय लंबकूर्चाय ते नमः ॥ नमः प्रहृष्टनेत्राय विप्राणां पतये नमः ॥ ३ ॥ नमो भार्गवशिष्याय विपन्नहितकारक ॥ नमस्ते सुरसैन्याय विपन्नत्राण हेतवे ॥ ४ ॥ विषमस्थस्तथा नृणां सर्वकष्टप्रणाशनम् ॥ प्रत्यहं तु पठेद्यो वै तस्य कामफलप्रदम् ॥ ५ ॥ बृहस्पतिमंत्रो—यथा "ॐ नमोऽस्तु बृहस्पतये पीतवस्त्राभरणाय यज्ञोपवीतमालाधराय ममार्चनं गृहाण कुरु कुरु स्वाहा" इति चत्वारिंशदक्षरमंत्रः॥इति बृहस्पतिस्तोत्रं समाप्तम्॥अथ शुक्रमंत्रप्रयोगः ॥ (मंत्रमहोदधौ) मंत्रो यथा—"ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा" इत्येकादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम् ॥ अस्य मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । विराट् छन्दः । दैत्यपूज्यः शुक्रो देवता । ॐ बीजम् । स्वाहा शक्तिः । ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । ब्रह्मऋषये नमः । शिरसि ॥ १ ॥ विराट्छंदसे नमः । मुखे ॥ २ ॥ दैत्यपूज्यशुक्रदेवतायै नमः । हृदि ॥ ३ ॥ ॐ बीजाय नमः । गुह्ये ॥ ४ ॥ स्वाहा शक्तये नमः । पादयोः ॥ ५ ॥ विनियोगाय नमः । सर्वाङ्गे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः । ॐ हृदयाय नमः ॥ १ ॥ वस्त्रं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ मे शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ देहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ शुक्राय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ स्वाहा अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करांगन्यासं कुर्यात् । एवं न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत् । अथ ध्यानम् ॥ श्वेतांभोजनिषण्णमापणतटे श्वेतांबरालेपनं नित्यं भक्तजनाय संप्रददतं वासो मणीन् हाटकम् ॥ वामेनैव करेण दक्षिणकरे व्याख्यानमुद्रांकितं शुक्रं दैत्यवरार्चितं स्मितमुखं वंदे सितांगं प्रभुम् ॥१॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य सर्वतोभद्रमंडले धर्मादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः पूजयेत् ॥

ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्र मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य आवरणपूजां कुर्यात् ॥ षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च पूर्वोक्तषडंगन्यासमंत्रेण षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य "ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥" इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततो भूपुरे इन्द्रादि दशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणमयुतजपः। तद्दशांशतो घृतहोमः । एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे च मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च—अयुतं प्रजपेन्मंत्रं दशांशं जुहुयाद् घृतैः ॥ सिद्धे मंत्री प्रकुर्वीत प्रयोगानिष्टसिद्धये ॥१॥ सुगंधैः श्वेतकुसुमैर्जुहुयाच्छुभवासरे ॥ एकविंशतिवारं यो लभते सोऽशुकं मणीन्"॥इत्येकादशाक्षरशुक्रमंत्रप्रयोगः ॥ अथ शुक्रस्तोत्रप्रारंभः॥

अथ शुक्रपूजनयन्त्रम्.



नमस्ते भार्गवश्रेष्ठ देवदानवपूजित ॥ वृष्टिरोधप्रकर्त्रे च वृष्टिकर्त्रे नमो नमः ॥ १॥ देवयानीपितस्तुभ्यं वेदवेदांगपारग ॥ परेण तपसा शुद्धः शंकरो लोकशंकरीम्॥२॥ प्राप्तो विद्यां जीवनाख्यां तस्मै शुक्रात्मने नमः ॥ नमस्तस्मै भगवते भृगुपुत्राय वेधसे ॥ ३ ॥ तारामण्डलमध्यस्थस्वभासा भासिताम्बर ॥ यस्योदये जगत्सर्वं मंगलार्हं भवेदिह ॥ ४ ॥ अस्तं याते ह्यरिष्टं स्यात्तस्मै मंगलरूपिणे ॥ त्रिपुरावा

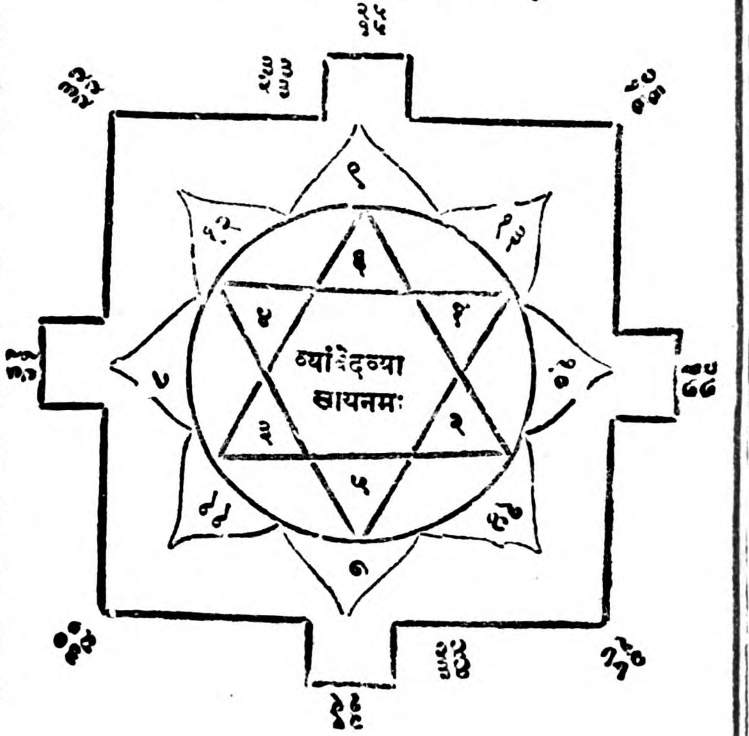
सिनो दैत्यान् शिवबाणप्रपीडितान् ॥ ५ ॥ विद्यया जीवयञ्छुक्र नमस्ते भृगुनन्दन ॥ ययातिगुरवे तुभ्यं नमस्ते कविनन्दन ॥६॥ बलिराज्यप्रदो जीवस्तस्मै जीवात्मने नमः ॥ भार्गवाय नमस्तुभ्यं पूर्वं गीर्वाणवंदित ॥ ७ ॥ जीवपुत्राय यो विद्यां प्रादात्तस्मै नमो नमः ॥ नमः शुक्राय काव्याय भृगुपुत्राय धीमहि ॥ ८ ॥ नमः कारणरूपाय नमस्ते कारणात्मने ॥ स्तवराजमिमं पुण्यं भार्गवस्य महात्मनः ॥ ९ ॥ यः पठेच्छृणुयाद्वापि लभते वांछितं फलम् ॥ पुत्रकामो लभेत्पुत्रान् श्रीकामो लभते श्रियम् ॥ १० ॥ राज्यकामो लभेद्राज्यं स्त्रीकामः स्त्रियमुत्तमाम् ॥ भृगुवारे प्रयत्नेन पठितव्यं समाहितैः ॥ ११ ॥ अन्यवारे तु होरायां पूजयेद्भृगुनन्दनम् ॥ ॥ रोगार्तो मुच्यते रोगाद्भयार्तो मुच्यते भयात् ॥ १२ ॥ यद्यत्प्रार्थयते वस्तु तत्तत्प्राप्नोति सर्वदा ॥ प्रातःकाले प्रकर्तव्या भृगुपूजा प्रयत्नतः ॥ १३ ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तः प्राप्नुयाच्छिवसन्निधौ ॥ १४ ॥ इति स्कंदपुराणे शुक्रस्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ अथ व्यासमंत्रप्रयोगः ॥ (मंत्रमहोदधौ) मंत्रो यथा—"व्यां वेदव्यासाय नमः ॥ " इत्यष्टाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम् ॥ अस्य मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । सत्यवतीसुतो देवता । व्यां बीजम् । नमः शक्तिः । ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥ॐ ब्रह्मऋषये नमः । शिरसि ॥ १ ॥ अनुष्टुप्छन्दसे नमः । मुखे ॥ २ ॥ सत्यवतीसुतदेवतायै नमः । हृदि ॥ ३ ॥ व्यां बीजाय नमः । गुह्ये ॥ ४ ॥ नमः शक्तये नमः । पादयोः ॥ ५ ॥ विनियोगाय नमः । सर्वांगे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ व्यां हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ व्यीं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ व्यूं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ व्यैं कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ व्यौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ व्यः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं करांगन्यासं कुर्यात् ॥ इति न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ "व्याख्यामुद्रिकया लसत्करतलं सद्योगपीठस्थितं वामे जानुतले दधानमपरं हस्तेषु विद्यानिधिम् ॥ विप्रव्रातवृतं प्रसन्नमनसं

१ समूहः ।

पाथोरुहांगद्युतिं पाराशर्य्यमतीव पुण्यचरितं व्यासं स्मरेत्सिद्धये॥ १ ॥" इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूजयेत् ॥ ततः सर्वतोभद्रमंडले धर्मादिपीठदेवताः संस्थाप्य "ॐ धर्मादिपीठदेवताभ्यो नमः॥" इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृते

अथ वेदव्यासपूजनयन्त्रम्.



नाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्यावाहनादि पुष्पान्तैरुपचारैः संपूज्य आवरणपूजां कुर्यात् ॥ षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च । ॐ व्यां हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ व्यीं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ व्यूं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ व्यैं कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ व्यौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ व्यः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य "ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततोऽष्टदले पूज्य पूजकयोरंतराले प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राच्यादिचतुर्दिक्षु दक्षिणावर्तेन च । ॐ शल्याय नमः । शल्यश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ इति सर्वत्र॥१॥ ॐ वैशंपायनाय नमः । वैशंपायनश्रीपा०॥२॥ॐ जैमिनये नमः । जैमिनिश्रीपा०॥३॥ॐ सुमन्ताय नमः।सुमन्तश्रीपा०॥४॥आग्नेय्यादिचतुष्कोणेषु ॐ श्रीशुकाय

नमः। श्रीशुकश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ उग्रश्रवसे नमः । उग्रश्रवःश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ समन्याय नमः। समन्यश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ चिमनाय नमः। चिमनश्रीपा० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततो भूपुरे इन्द्रादिदश दिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणमयुतजपः॥पायसान्नेन दशांशतो होमः ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति। सिद्धे च मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत्॥ तथा च- "जपेदष्टसहस्राणि पायसैर्होममाचरेत् ॥ एवं सिद्धमनुर्मंत्री कवित्वं शोभनाः प्रजाः ॥१॥ व्याख्यानशक्तिं कीर्तिं च लभते संपदां चयम् ॥ मृत्युंजयेन पुटितं यो व्यासस्य मनुं जपेत् ॥२॥ सर्वोपद्रवसंत्यक्तो लभते वांछितं फलम् ॥ मृत्युंजयस्य मंत्रोऽयं त्रिवर्णो मृत्युनाशनः ॥३॥ जप्तोऽयं केवलो नृणामिष्टसिद्धिं प्रयच्छति॥ किं पुनस्तेन पुटितो वेदव्यासमनूत्तमः॥४॥इति वेदव्यासाष्टाक्षरमन्त्रप्रयोगः॥

॥ अथ धर्मराजमंत्रप्रयोगः ॥ (मंत्रमहोदधौ) मंत्रो यथा—"ॐ क्रों ह्रीं आं वैं वैवस्वताय धर्मराजाय भक्तानुग्रहकृते नमः" इति चतुर्विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम् ॥ ॐ क्रों ह्रीं हृदयाय नमः ॥१॥ आं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ वैवस्वताय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ धर्मराजाय कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ भक्तानुग्रहकृते नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ नमः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ॐ क्रों ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥१॥ आं वैं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ वैवस्वताय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ धर्मराजाय अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ भक्तानुग्रहकृते कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा सावधानमना देवं ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ "पाथः संयुतमेघसन्निभतनुः प्रद्योतनस्यात्मजो नृणां पुण्यशुभावहः स्ववपुषा पापीयसां दुःखकृत् ॥ श्रीमद्दक्षिणादिक्पतिर्महिषगो भूषाभरालंकृतो ध्येयः संयमिनीपतिः पितृगणस्वामी यमो दंडभृत् ॥१॥" इति ध्यायेत् ॥ सिद्धमंत्रत्वादृष्यादिपूजाभावः॥ "अभ्यस्तोऽयं सदा मंत्रः सकलापद्विनाशनः॥ नरकप्राप्तिरोद्धा स्याद्रिपुभीतिनिवर्तकः॥

१ ॐ जूं सः व्यां वेदव्यासाय नमः सः जूं ॐ इति जपेत ॥

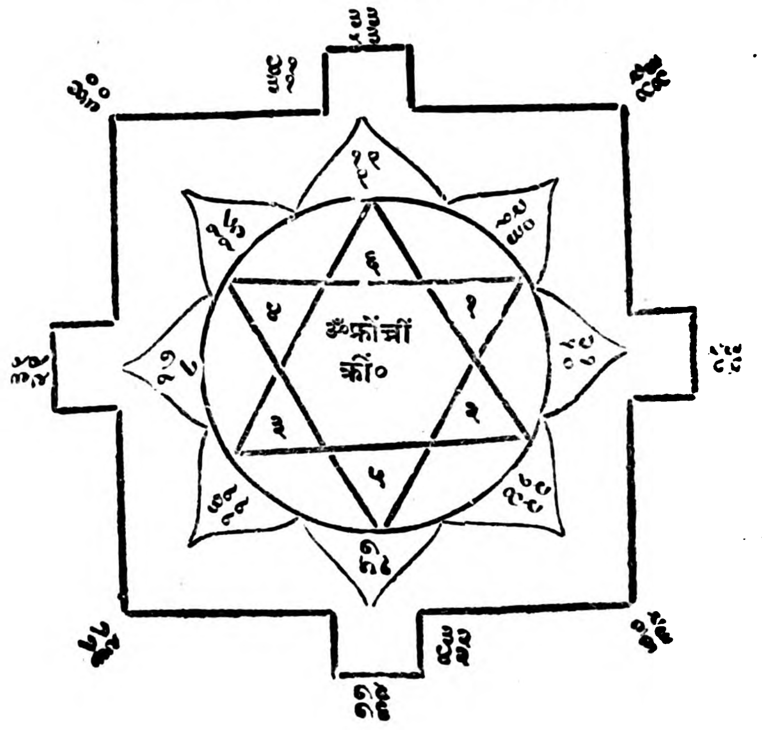
॥ २ ॥" इति धर्मराजमंत्रप्रयोगः ॥ अथ चित्रगुप्तमंत्रप्रयोगः ॥ (मंत्रमहोदधौ) मंत्रो यथा--"ॐ नमो विचित्राय धर्मलेखकाय यमवाहिकाधिकारिणे म्ल्व्र्यूं जन्मसंपत्प्रलयं कथय कथय स्वाहा" इत्यष्टात्रिंदशक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम् ॥ ॐ नमो विचित्राय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ धर्मलेखकाय तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ यमवाहिकाधिकारिणे मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ म्ल्व्र्यूं जन्मसंपत्प्रलयं मनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ कथय कथय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ नमो विचित्राय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ धर्मलेखकाय शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ यमवाहिकाधिकारिणे शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ म्ल्व्र्यूं जन्मसंपत्प्रलयं कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ कथय कथय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ स्वाहा अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ "किरीटोज्ज्वलं वस्त्रभूषाभिरामं विचित्रासनासीनमिंदुप्रभास्यम् ॥ नृणां पापपुण्यानि पत्रे लिखंतं भजे चित्रगुप्तं सखायं यमस्य ॥ १ ॥" इति ध्यात्वा मंत्रं जपेत् ॥ तथा च । "मंत्रोऽयं चित्रगुप्तस्य सर्वदुःखौघनाशनः ॥ सिद्धो मनुरयं पुंसां जपतां चित्रगुप्तकः ॥ प्रसन्नो गणयेत्पुण्यं नैव पापं कदाचन ॥ १ ॥ "इति चित्रगुप्तमंत्रप्रयोगः ॥ अथ घंटाकर्णमंत्रप्रयोगः॥(प्राकृतग्रंथे) मंत्रो यथा--"ॐ घंटाकर्णो महावीरो देवदत्तः सर्वोपद्रवनाशनं कुरु कुरु स्वाहा" इति सप्तविंशत्यक्षरो मंत्रः॥ अस्य विधानम्॥स्वासने पूर्वाभिमुखः स्थित्वा गंधाक्षतपुष्पधूपदीपकर्पूरैः सपूज्य पंचत्रिंशच्छतं[३५००] प्रत्यहं जपेत् ॥ जपांते पश्चिमाभिमुखो भूत्वा गुग्गुलेन सहस्रं जुहुयात् ॥ एवं कृते त्रिदिनांतरे सर्वोपद्रवा नश्यंति राजभयादिकं नश्यति निर्भयो भवति ॥ इति घंटाकर्णमंत्रप्रयोगः ॥ अथ कार्तवीर्यार्जुनमंत्रप्रयोगः ॥ (मंत्रमहोदधौ) अथेष्टदान्मनून् वक्ष्ये कार्तवीर्यस्य गोपितान् ॥ यः सुदर्शनचक्रस्यावतारः क्षितिमंडले ॥१॥ मंत्रो यथा-"ॐ फ्रों ब्रीं क्लीं भ्रूं आं ह्रीं क्रों श्रीं हुं फट् कार्तवीर्यार्जुनाय नमः" इति विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम् ॥

१ मन्त्रो दशविधः—फ्रों कार्तवीर्यार्जुनाय नमः; ह्रीं कार्तवीर्यार्जुनाय नमः; फ्रों श्रों कार्तवीर्यार्जुनाय नमः; फ्रों क्लीं कार्तवीर्यार्जुनाय नमः, फ्रों भ्रीं कार्तवीर्यार्जुनाय नमः; फ्रों क्रों कार्तवीर्यार्जुनाय नमः; हुं कार्तवीर्यार्जुनाय नमः; फट् फ्रों एं कार्तवीर्यार्जुनाय नमः; फ्रों भ्रूं कार्तवीर्यार्जुनाय नमः; आं फ्रों कार्तवीर्यार्जुनाय नम इति दशमन्त्राणां त्रिष्टुप् छन्दः । अन्यत् सर्वं पूर्ववज्ज्ञेयम् ॥

अस्य कार्तवीर्यार्जुनमंत्रस्य दत्तात्रेय ऋषिः । अनुष्टुप् छंदः । कार्तवीर्यार्जुनो देवता । ॐ बीजम् । नमः शक्तिः । ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ दत्तात्रेयऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ अनुष्टुप्छंदसे नमः । मुखे ॥ २ ॥ कार्तवीर्यार्जुनदेवतायै नमः । हृदि ॥ ३ ॥ ॐ बीजाय नमः । गुह्ये ४ ॥ नमः शक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ फ्रां त्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ क्लीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ हूं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ क्रैं श्रैं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ हुं फट् कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ कार्तवीर्यार्जुनाय नमः ॥ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ फ्रां त्रां हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ क्लीं श्रीं शिरसे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ हूं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ क्रैं श्रैं कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ हुं फट् अस्त्राय फट् ॥ ५ ॥ ॐ कार्तवीर्यार्जुनाय नमः । सर्वांगे ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ॐ फ्रौं ॐ हृदये ॥ १ ॥ ॐ त्रीं ॐ जठरे ॥ २ ॥ ॐ क्लीं ॐ नाभौ ॥ ३ ॥ ॐ भ्रूं ॐ पुनः जठरे ॥ ४ ॥ ॐ आं ॐ गुह्ये ॥ ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं ॐ दक्षपाते ॥ ६ ॥ ॐ क्रौं ॐ वामपादे ॥ ७ ॥ ॐ श्रीं ॐ सक्थिनि ॥ ८ ॥ ॐ हुं ॐ जानुनि ॥ ९ ॥ ॐ फं ॐ जंघयोः ॥ १० ॥ ॐ कां ॐ मस्तके ॥ ११ ॥ ॐ तं ॐ ललाटे ॥ १२ ॥ ॐ वीं ॐ भ्रुवोः ॥ १३ ॥ ॐ यां ॐ श्रुत्योः ॥ १४ ॥ ॐ जुं ॐ नेत्रयोः ॥ १५ ॥ ॐ नां ॐ नासिकायाम् ॥ १६ ॥ ॐ यं ॐ वक्त्रे ॥ १७ ॥ ॐ नं ॐ गले ॥ १८ ॥ ॐ मं ॐ अंसयोः ॥ १९ ॥ ॐ फ्रों त्रीं क्लीं भ्रूं आं ह्रीं क्रौं श्रीं हुं फट् कार्तवीर्यार्जुनाय नमः॥ इति सर्वांगे पादादिमूर्धांतं व्यापकं कुर्यात् ॥ इति मंत्रवर्णव्यापकन्यासः॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ उद्यत्सूर्य्यसहस्रकांतिरखिलक्षोणीधवैर्वंदितो हस्तानां शतपंचकेन च दधच्चापानिषूंस्तावतः ॥ कंठे हाटकमालया परिवृतश्चक्रावतारो हरेः पायात्स्यन्दनगोऽरुणाभवसनः श्रीकार्तवीर्यो नृपः ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूजयेत् ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य "ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवता

भ्यो नमः ” इति संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तद्यथा—पूर्वादिक्रमेण ॐ विमलायै नमः ॥ १ ॥ ॐ उत्कर्षिण्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ ज्ञानायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ क्रियायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ योगायै नमः ॥ ५ ॥ ॐ प्रह्वयै नमः ॥ ६ ॥ ॐ सत्यायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ ईशानायै नमः ॥ ८ ॥ मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ॥ ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्र निधाय

अथ कार्तवीर्यार्जुनपूजनयन्त्रम्.



घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य “ ॐ नमो भगवते कार्तवीर्यार्जुनाय पद्मपीठात्मने नमः ” इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तद्यथा—षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च । ॐ फ्रां त्रां हृदयाय नमः । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ इति सर्वत्र ॥ १ ॥ क्लीं श्रीं शिरसे स्वाहा । शिरः श्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ हूं शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ॥ ३ ॥ क्रैं श्रैं कवचाय हुम् । कवचश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ हुं फट् अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ कार्तवीर्यार्जुनाय नमः सर्वांगे ॥ सर्वांगश्रीपा० ॥ ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य “ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ ” इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतराले प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राच्यादि

चतुर्दिक्षु ॐ चोरमदविभंजनाय नमः ॥ १ ॥ ॐ मारीमदविभंजनाय नमः ॥ २ ॥ ॐ अरिमदविभंजनाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ दैत्यमदविभंजयाय नमः ॥ ४ ॥ आग्नेय्यादिकोणेषु । ॐ दुःखनाशाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ दुष्टनाशाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ दुरितनाशाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ रोगनाशकाय नमः ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततोऽष्टदलाग्रेषु प्राचीक्रमेण ॥ ॐ क्षेमंकर्यै नमः ॥ १ ॥ ॐ वश्यकर्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ श्रीकर्यै नमः ॥ ३ ॥ ॐ यशस्कर्यै नमः ॥ ४ ॥ ॐ आयुष्कर्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ प्रज्ञाकर्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ विद्याकर्यै नमः ॥ ७ ॥ ॐ धनकर्यै नमः ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपः ॥ तिलतंडुलपायसेन दशांशतो होमः॥एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति। सिद्धे च मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च–“लक्षमेकं जपेन्मंत्रं दशांशं जुहुयात्तिलैः॥सतंडुलैः पायसेन विष्णुपीठे यजेत्तु तम् ॥१॥ एवं संसाधितो मंत्रः प्रयोगार्हः प्रजायते॥शुद्धभूमावष्टगंधैर्लिखित्वा यंत्रमादरात् ॥ तत्र कुंभं प्रतिष्ठाप्य तत्रावाह्यार्चयेन्नृपम् ॥ २ ॥ स्पृष्ट्वा कुंभं जपेन्मंत्रं सहस्रं विजितेन्द्रियः ॥ अभिषिंचेत्तदंभोभिः प्रियं सर्वेष्टसिद्धये ॥३॥ पुत्रान् यशो रोगनाशमायुः स्वजनरंजनम् ॥ वाक्सिद्धिं सुदृशः कुंभाभिषिक्तो लभते नरः ॥ ४ ॥ शत्रूपद्रवमापन्ने ग्रामे वा पुटभेदने ॥ संस्थापयेदिदं यंत्रमरिभीतिनिवृत्तये ॥५॥ सर्षपारिष्टलशुनकार्पासैर्मार्यते रिपुः ॥ धत्तूरैः स्तभ्यते निंबैर्द्वेष्यते वश्यतेंऽबुजैः ॥ ६ ॥ उच्चाटयते बिभीतस्य समिद्भिः खदिरस्य च ॥ कटुतैलमाहिष्याज्यैर्होमद्रव्यांजनं स्मृतम् ॥ ७ ॥ यवैर्हुतैः श्रियः प्राप्तिस्तिलैराज्यैरघक्षयः ॥ तिलतंडुलसिद्धार्थलाजैर्वश्यो नृपो भवेत् ॥ ८ ॥ अपामार्गार्कदूर्वाणां होमो लक्ष्मीप्रदोऽघनुत् ॥ स्त्रीवश्यकृत्प्रियंगूनां पुराणां भूतशांतिदः ॥ ९ ॥ अश्वत्थोदुंबरप्लक्षवटबिल्वसमुद्भवाः ॥ समिधो लभते हुत्वा पुत्रानायुर्धनं सुखम् ॥ १० ॥

१ मालकांगुनी । २ गूगल ।

निर्मोकहेमसिद्धार्थलवणैश्चोरनाशनम् ॥ रोचनागोमयैः स्तंभो भूप्राप्तिः शालिभिर्हुतैः॥ ११ ॥ होमसंख्या तु सर्वत्र सहस्रादयुतावधिः ॥ प्रकल्पनीया मंत्रज्ञैः कार्यगौरवलाघवात् ॥ १२ ॥ इति विंशत्यक्षरः कार्तवीर्यार्जुनमंत्रप्रयोगः ॥ अन्यो मंत्रो यथा–"ॐ नमो भगवते श्रीकार्तवीर्यार्जुनाय सर्वदुष्टांतकाय तपोबलपराक्रमपरिपालितसप्तद्वीपाय सर्वराजन्यचूडामणये महाशक्तिमते सहस्रबाहवे हुं फट्" इति त्रिषष्टिवर्णो मंत्रः ॥ अस्य विधानम् ॥ राजन्यचक्रवर्तिने हृदयाय नमः ॥ १ ॥ वीराय शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ शूराय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ माहिष्मतीपतये कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ रेवांबुपरितृप्ताय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ कारागेहप्रबाधितदशास्याय अस्त्राय फट् ॥६॥ इति षडंगन्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ "सिच्यमानं युवतिभिः क्रीडंतं नर्मदाजले॥हस्तैर्जलौघं रुंधंतं ध्यायेन्मत्तं नृपोत्तमम् ॥१ ॥" इति ध्यायेत् ॥ अस्य पुरश्चरणमयुतजपः ॥ पूजादिकं सर्वं पूर्ववत् ॥ तथा च–"एवं ध्यात्वायुतं मंत्रं जपेदन्यत्तु पूर्ववत् ॥ पूर्ववत्सर्वमेतस्य समाराधनमीरितम् ॥ १ ॥ इति ॥ अन्यो मंत्रो यथा–" कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहुसहस्रवान् ॥ तस्य संस्मरणादेव हृतं नष्टं च लभ्यते ॥" इत्यनुष्टुब्रूपो मंत्रः ॥ ॐ कीर्तवीर्यार्जुनो नाम हृदयाय नमः ॥ १ ॥ राजा बाहुसहस्रवान् शिरसे स्वाहा ॥२॥ तस्य संस्मरणादेव शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ हृतं नष्टं च लभ्यते कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ कीर्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहुसहस्रवान् ॥ तस्य संस्मरणादेव हृतं नष्टं च लभ्यते ॥ अस्त्राय फट् ॥ ५ ॥ इति पंचांगन्यासं कुर्यात् ॥ अन्यत् सर्वं पूर्ववत्–अन्यः ॥ "ॐ कार्तवीर्यः खलद्वेषी कृतवीर्यसुतो बली ॥ सहस्रबाहुः शत्रुघ्नो रक्तवासा धनुर्धरः ॥ रक्तगंधो रक्तमाल्यो राजा स्मर्तुरभीष्टदः ॥" इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम् ॥ "द्वादशैतानि नामानि कार्तवीर्यस्य यः पठेत् ॥ अनष्टद्रव्यता तस्य नष्टस्य पुनरागमः" इति ॥ गायत्रीमंत्रो यथा–"ॐ कार्तवीर्याय विद्महे महावीर्य्याय धीमहि ॥ तन्नोऽर्जुनः प्रचोदयात्" ॥ गायत्र्येषार्जुनस्योक्ता प्रयोगादौ जपेत्तु ताम् ॥ आनुष्टुभं मनुं रात्रौ जपतां चौरसंचयाः ॥ पलायंते गृहाद्दूरं तर्पणाद्र्चनादपि ॥ १ ॥ इति कार्तवीर्यार्जुनमंत्रप्रयोगः ॥

१ केंचुल। २ धतूरा।

श्रीमद्भागवतानुष्ठानचक्रम् ।

एकाहपारायणम् ।

दिन	अध्याय	स्कंध	अध्याय
१	३३५	१२	१३

एकाहपारायणं शुक्राचार्य्यमतात् श्रावणकृष्णपक्षे कुर्यात् ॥ १ ॥

द्व्यहपारायणम् ।

दिन	अध्याय	स्कंध	अध्याय
१	१९०	९	१३
२	१४५	१२	१३

त्रय्यारुणिमतात् द्व्यहपारायणं श्रावणशुक्लपक्षे कुर्यात् ॥२॥

त्र्यहपारायणम् ।

दिन	अध्याय	स्कंध	अध्याय
१	१५३	७	१५
२	१३८	१०	९०
३	६४	१२	१३

त्र्यहपारायणं हारीतमतात् मुक्तिकाम आश्विनशुक्लपक्षे कुर्यात् ॥ ३ ॥

चतुरहपारायणम् ।

दिन	अध्याय	स्कंध	अध्याय
१	८१	४	२३
२	८९	८	१७
३	८३	१०	५२
४	८२	१२	१३

चतुरहपारायणं सर्वं कामनाप्राप्तौ शौनकमतात् भाद्रपदशुक्लपक्षे कुर्यात् ॥ ४ ॥

पंचाहपारायणम् ।

दिन	अध्याय	स्कंध	अध्याय
१	६९	४	७
२	६९	६	१९
३	६३	९	२४
४	६९	१०	६९
५	६५	१२	१३

पंचाहपारायणं अकृतव्रणमतात् सर्वकामनाप्राप्त्यर्थं भाद्रपदशुक्लपक्षे कुर्यात् ॥ ५ ॥

षडहपारायणम् ।

दिन	अध्याय	स्कंध	अध्याय
१	६१	३	३२
२	६६	५	१५

सप्ताहपारायणम् ।

दिन	अध्याय	स्कंध	अध्याय
१	७१	४	९
२	६२	६	१३

सप्ताहपारायणम् ।

दिन	अध्या.	स्कंध	अध्याय
१	५३	३	२४
२	४३	५	[illegible]

सप्ताहपारायणम् ।

दिन	अध्याय	स्कंध	अध्याय
१	४९	३	१०
२	६७	५	२३

षष्ठहपारायणं शांशपायनमतात् धनप्राप्तिकामो भाद्रपद कृष्णपक्षे कुर्यात ॥ ६ ॥

सप्ताहपारायणं शांशपायनमताद्धनप्राप्तिकामो भाद्रपद कृष्णपक्षे कुर्यात् ॥ ७ ॥

सप्ताहपारायणं वशिष्ठमतात्पुत्रप्राप्तिकामो वैशाखे कुर्यात् ॥ ७ ॥

सप्ताहपारायणं सुतमतान्निष्कामः कार्तिकशुक्लपक्षे कुर्यात ॥ ७ ॥

सप्ताहपारायणम् ।

दिन	ऽध्याय	स्कंध	ऽध्याय
१	२९	२	१०
२	६४	४	३१
३	४१	६	१९
४	३९	८	२४
५	७३	१०	४९
६	७२	११	३१
७	१३	१२	१३

सप्ताहपारायणं विश्वामित्रमतात् संकटमोचनार्थं मार्गशीर्षे कुर्यात् ॥ ७ ॥

सप्ताहपारायणम् ।

दिन	ऽध्याय	स्कंध	ऽध्याय
१	४८	३	१९
२	५१	५	६
३	४९	७	१०
४	५३	९	२४
५	४९	१०	४९
६	४१	१०	९०
७	४५	१२	१३

सप्ताहपारायणं जमदग्निमताद्विघ्ननाशनकामः पौषे कुर्यात् ॥ ७ ॥

सप्ताहपारायणम् ।

दिन	ऽध्याय	स्कंध	ऽध्याय
१	६१	३	३६
२	५७	५	२६
३	३४	७	१९
४	४८	९	२४
५	९०	१०	९०
६	३२	११	३१
७	१३	१२	१३

सप्ताहपारायणं भारद्वाजमतात् बंधमोक्षकामो माघे कुर्यात् ॥ ७ ॥

सप्ताहपारायणम् ।

दिन	ऽध्या.	स्कंध	ऽध्याय
१	४८	३	१९
२	६०	५	१५
३	४५	७	१५
४	६०	१०	१२
५	७२	१०	८४
६	३७	११	३१
७	१३	१२	१३

सप्ताहपारायणं गौतममतात् शत्रुपराजयकामः फाल्गुने कुर्यात् ॥ ७ ॥

सप्ताहपारायणम् ।

दिन	ऽध्याय	स्कंध	ऽध्याय
१	४९	३	२०
२	५०	५	६
३	३९	६	१९
४	५९	९	२०
५	३९	१०	३५
६	६१	११	६
७	३८	१२	१३

सप्ताहपारायणं अत्रिमताद्रोगमुक्तिकामश्चैत्रे कुर्यात् ॥ ७ ॥

दशाहपारायणम् ।

दिन	अध्याय	स्कंध	अध्याय
१	३५	३	६
२	३४	५	७
३	३३	५	२
४	३६	६	१९
५	३९	८	२४
६	३५	१०	११
७	३४	१०	४५
८	३४	१०	७९
९	३४	११	२३
१०	२१	१२	१३

दशाहपारायणं कश्यमताद्द्रा-व्यप्राप्तिकाम आषाढे शुक्लपक्षे कुर्यात ॥ १० ॥

पंचदशाहपारायणम् ।

दिन	अध्याय	स्कंध	अध्याय
१	२१	२	२
२	२३	३	१९
३	२२	४	४
४	२३	४	२९
५	२२	५	१८
६	२३	६	१५
७	२४	८	५
८	२५	९	६
९	२२	१०	४
१०	२२	१०	२६
११	२३	१०	४९
१२	२१	१०	७०
१३	२२	११	२
१४	२३	११	२५
१५	१९	१२	१३

बृहस्पतिमतात्स्वर्गकामाग्निकामो ज्येष्ठशुक्लपक्षे आषाढे वा कुर्यात ११

मासपारायणम् ।

कृष्णपक्षे				शुक्लपक्षे			
दिन	अध्या.	स्कंध	अध्या.	दिन	अध्या.	स्कंध	अध्या.
१	११	१	११	१	१४	८	१५
२	१०	२	२	२	१३	९	४
३	१०	३	२	३	१४	९	१८
४	१०	३	१२	४	१२	१०	६
५	११	३	२३	५	११	१०	१७
६	११	४	१	६	१३	१०	३०
७	९	४	१०	७	११	१०	४२
८	१२	४	२२	८	१२	१०	५४
९	१०	५	१	९	११	१०	६५
१०	९	५	१०	१०	१३	१०	७८
११	१०	५	२०	११	९	१०	९७
१२	११	६	५	१२	११	११	९
१३	११	६	१६	१३	१२	११	२१
१४	१०	७	७	१४	१३	१२	२
१५	९	८	१	१५	११	१२	१३

मासपारायणं यदा कृष्णादि तदा शुक्लांतं यदा शुक्लादि तदा कृष्णांतम् । एवं प्रजापालनादवर्गकामनाप्राप्तिमूलकं बृहस्पतिमतमिदम् । एवं द्विमासिकषाण्मासिकसांवत्सरिकादिकमपि पारायणं ज्ञेयम् ॥ बृहस्पतिमतस्याष्टः समाप्ता ॥ मतांतरे वैशाखशुक्लपंचमीमारभ्य ज्येष्ठशुक्लपंचमी पर्यंत ॥ ३० ॥

॥ अथ हनुमदादिषट्कवचप्रयोगः ॥ (श्रीमदानंदरामायणे मनोहरकांडे) आदौ नरैर्मारुतेश्च पठित्वा कवचं शुभम् ॥ ततः शत्रुघ्नकवचं पठनीयमिदं शुभम् ॥ १ ॥ पठनीयं भरतस्य कवचं परमं ततः ॥ ततः सौमित्रिकवचं पठनीयं सदा नरैः ॥ २ ॥ पठनीयं ततः सीताकवचं भाग्यवर्द्धनम् ॥ ततः श्रीरामचंद्रस्य कवचं सर्वदोत्तमम् ॥ ३ ॥ पठनीयं नरैर्भक्त्या सर्ववांछितदायकम् ॥ एवं षट् कवचान्यत्र पठनीयानि सर्वदा ॥ ४ ॥ पठनं षट्कवचानां श्रेष्ठं मोक्षैकसाधनम् ॥ ज्ञात्वात्र मानवैर्भक्त्या कार्यं च पठनं सदा

॥ ५ ॥ अशक्तेनात्र चत्वारि पठनीयानि सादरम् ॥ हनुमतश्च सौमित्रेः सीताया राघवस्य च ॥ ६ ॥ इमानि पठनीयानि चत्वारि कवचानि हि ॥ चतुर्णां कवचानां च पठने मानवस्य च ॥ ७ ॥ न यद्यत्रावकाशश्चेत्तदा त्रीणि पठेन्नरः ॥ मारुतेश्चात्र सीताया स्तथा श्रीराघवस्य च ॥ ८ ॥ त्रयाणां कवचानां च न पाठावसरो यदा ॥ पठनार्थं मानवस्य तदा द्वे कवचे स्मृते ॥ ९ ॥ मारुतेश्चाथ रामस्य सीताया राघवस्य वा ॥ नैकमेव पठेच्चात्र श्रीरामकवचं शुभम् ॥ १० ॥ अवकाशे कवचानां षट्कमेव सदा नरैः ॥ पठनीयं क्रमेणैव कर्तव्यो नालसः कदा ॥ ११ ॥ यदावकाशो नास्त्येव तदा तेषां सुखाप्तये ॥ मया विशेषः प्रोक्तोऽयं न सर्वेषां मये रितः ॥ १२ ॥ तत्रादौ एकमुखहनुमत्कवचप्रारम्भः ॥ एकदा सुखमासीनं शंकरं लोकशंकरम् ॥ पप्रच्छ गिरिजा कांतं कर्पूरधवलं शिवम् ॥ १ ॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥ भगवन्देवदेवेश लोकनाथ जगत्प्रभो ॥ शोकाकुलानां लोकानां केन रक्षा भवेद्ध्रुवम् ॥ २ ॥ संग्रामे संकटे घोरे भूतप्रेतादिके भये ॥ दुःखदावाग्निसंतप्तचेतसां दुःखभागिनाम् ॥ ३ ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि लोकानां हितकाम्यया ॥ विभीषणाय रामेण प्रेम्णा दत्तं च यत्पुरा ॥ ४ ॥ कवचं कपिनाथस्य वायुपुत्रस्य धीमतः ॥ गुह्यं तत्ते प्रवक्ष्यामि विशेषाच्छृणु सुंदरि ॥ ५ ॥ उद्यदादित्यसंकाशमुदारभुजविक्रमम् ॥ कंदर्पकोटिलावण्यं सर्वविद्याविशारदम् ॥ ६ ॥ श्रीरामहृदया नन्दं भक्तकल्पमहीरुहम् ॥ अभयं वरदं दोर्भ्यां कलये मारुतात्मजम् ॥ ७ ॥ हनूमानंजनीसूनुर्वायुपुत्रो महाबलः ॥ रामेष्टः फाल्गुन सखः पिंगाक्षोऽमितविक्रमः ॥ ८ ॥ उदधिक्रमणश्चैव सीताशोकविनाशनः ॥ लक्ष्मणप्राणदाता च दशग्रीवस्य दर्पहा ॥ ९ ॥ एवं द्वादश नामानि कपींद्रस्य महात्मनः ॥ स्वापकाले प्रबोधे च यात्राकाले च यः पठेत् ॥ १० ॥ तस्य सर्वं भयं नास्ति रणे च विजयी भवेत् ॥ राजद्वारे गह्वरे च भयं नास्ति कदाचन ॥ ११ ॥ उल्लंघ्य सिंधोः सलिलं सलीलं यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः ॥ आदाय तेनैव ददाह लंकां नमामि तं प्रांजलिरांजनेयम् ॥ १२ ॥ "ॐ नमो हनुमते सर्वसर्वग्रहान् भूतभविष्यद्वर्तमानान् समीपस्थान् सर्वकालदुष्टबुद्धीनुच्चाटयो च्चाटय परबलान् क्षोभय क्षोभय मम सर्वकार्याणि साधय साधय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं फट् घेघेघे ॐ शिवसिद्धिं ॐ ह्रां ॐ ह्रीं ॐ ह्रूं ॐ ह्रै ॐ

ह्रौं ॐ ह्रः स्वाहा परकृत्ययंत्रमंत्रपराहंकारभूतप्रेतपिशाचदृष्टिसर्वविघ्नदुर्जनचेष्टाकुविद्यासर्वोग्रभयानि निवारय २ बंध२ लुंठ २ विलुंच २ किलि २ सर्वकुयंत्राणि दुष्टवाचं ॐ फट् स्वाहा" ॐ अस्य श्रीहनुमत्कवचस्तोत्रमंत्रस्य श्रीरामचन्द्रऋषिः । श्रीहनुमान् परमात्मा देवता । अनुष्टुप् छंदः । मारुतात्मज इति बीजम् । अंजनीसूनुरिति शक्तिः । लक्ष्मणप्राणदातेति कीलकम् । रामदूतायेत्यस्त्रम् । हनुमान् देवता इति कवचम् । पिंगाक्षोऽमितविक्रम इति मंत्रः। श्रीरामचन्द्रप्रेरणया रामचन्द्रप्रीत्यर्थं मम सकलकामनासिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः॥ ॐ ह्रीं अजंनीसुताय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं रुद्रमूर्तये तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रूं रामदूताय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रैं वायुपुत्राय अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रौं आग्निगर्भाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रः ब्रह्मास्त्रनिवारणाय करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ह्रां अंजनीसुताय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं रुद्रमूर्तये शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रूं रामदूताय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रैं वायुपुत्राय कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ ह्रौं अग्निगर्भाय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ ह्रः ब्रह्मास्त्र निवारणाय अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ अथ ध्यानम् ॥ "ध्यायेद्बालदिवाकरद्युतिनिभं देवारिदर्पापहं देवेंद्रप्रमुखं प्रशस्तयशसं देदीप्यमानं रुचा ॥ सुग्रीवादिसमस्तवानरयुतं सुव्यक्ततत्त्वप्रियं संरक्तारुणलोचनं पवनजं पीतांबरालंकृतम् ॥ १ ॥ उद्यन्मार्तंडकोटिप्रकटरुचियुतं चारुवीरासनस्थं मौंजीयज्ञोपवीताभरणरुचिशिखं शोभित कुण्डलांकम् ॥ भक्तानामिष्टदं तं प्रणतमुनिजनं वेदनादप्रमोदं ध्यायेद्देवं विधेयं प्लवगकुलपतिं गोष्पदीभूतवार्धिम् ॥ २ ॥ वज्रांगं पिंगकेशाढ्यं स्वर्णकुंडलमंडितम् ॥ निगूढमुपसंगम्य पारावारपराक्रमम् ॥ ३ ॥ स्फटिकाभं स्वर्णकांतिं द्विभुजं च कृतांजलिम् ॥ कुंडलद्वयसंशोभिमुखांभोजं हरिं भजे ॥ ४ ॥ सव्यहस्ते गदायुक्तं वामहस्तकमंडलुम् ॥ उद्यद्दक्षिणदोर्दंडं हनूमंतं विचिंतयेत् ॥ ५ ॥" अथ मंत्रः ॥ "ॐ नमो हनुमते शोभिताननाय यशोऽलंकृताय अंजनीगर्भसंभूताय रामलक्ष्मणानन्दकाय कपिसैन्यप्रकाशनपर्वतोत्पाटनाय सुग्रीवसाह्यकरणपरोच्चाटनकुमारब्रह्मचर्यगंभीर शब्दोदय ॐ ह्रीं सर्वदुष्टग्रहनिवारणाय स्वाहा ॥ " " ॐ नमो हनुमते एहिएहिएहि सर्वग्रहभूतानां शाकिनीडाकिनीनां विषम

ग्रहाणां सर्वेषामाकर्षयाकर्षय मर्दय मर्दय छेदयच्छेदय मर्त्यान्मारय मारय शोषय २ प्रज्वल २ भूतमण्डलपिशाचमण्डलानिरसनाय भूतज्वरप्रेतज्वरचातुर्थिकज्वरब्रह्मराक्षसपिशाचच्छेदनाक्रियाविष्णुज्वरमहेशज्वरान् छिंधि छिंधि भिंधि भिंधि अक्षिशूले शिरोऽभ्यंतरे ह्यक्षिशूले गुल्मशूले पित्तशूले ब्रह्मराक्षसकुलप्रबलनागकुलविनिर्विषझाटिति २ ॐ ह्रीं फट् घेघे स्वाहा ॥ " "ॐ नमो हनुमते पवन पुत्रवैश्वानरमुखपापदृष्टिषोढादृष्टिहनुमते का आज्ञा फुरे स्वाहा" स्वगृहे द्वारे पट्टके तिष्ठ तिष्ठेति तत्र रोगभयं राजकुलभयं नास्ति तस्योच्चारणमात्रेण सर्वे ज्वरा नश्यंति ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं घेघे स्वाहा ॥ "श्रीरामचन्द्र उवाच ॥ हनूमान् पूर्वतः पातु दक्षिणे पवनात्मजः ॥ पातु प्रतीच्यां रक्षोघ्नः पातु सागरपारगः ॥ १ ॥ उदीच्यामूर्ध्वगः पातु केसरीप्रियनन्दनः ॥ अधस्तु विष्णुभक्तश्च पातु मध्यं तु पावनिः ॥ २ ॥ लंकाविदाहकः पातु सर्वापद्भ्यो निरंतरम् ॥ सुग्रीवसचिवः पातु मस्तकं वायुनन्दनः ॥ ३ ॥ भालं पातु महावीरो भ्रुवोर्मध्ये निरंतरम् ॥ नेत्रे छायापहारी च पावनः प्लवगेश्वरः ॥ ४ ॥ कपोले कर्णमूले च पातु श्रीरामकिंकरः ॥ नासाग्रमंजनीसूनुः पातु वक्त्रं हरीश्वरः ॥ ५ ॥ वाचं रुद्रप्रियः पातु जिह्वां पिंगललोचनः ॥ पातु देवः फाल्गुनेष्टश्चुबुकं दैत्यदर्पहा ॥ ६ ॥ पातु कंठं च दैत्यारिः स्कंधौ पातु सुरार्चितः ॥ भुजौ पातु महातेजा करौ च चरणायुधः ॥ ७ ॥ नखान्नखायुधः पातु कुक्षौ पातु कपीश्वरः ॥ वक्षो मुद्रापहारी च पातु पार्श्वे भुजायुधः ॥ ८ ॥ लंकाविभंजनः पातु पृष्ठदेशे निरंतरम् ॥ नाभिं च रामदूतस्तु कटिं पात्वनिलात्मजः ॥ ९ ॥ गुह्यं पातु महाप्राज्ञो लिंगं पातु शिवप्रियः ॥ ऊरू च जानुनी पातु लंकाप्रासादभंजनः ॥ १० ॥ जंघे पातु कपिश्रेष्ठो गुल्फौ पातु महाबलः ॥ अचलोद्धारकः पातु पादौ भास्करसन्निभः ॥ ११ ॥ अंगान्यमितसत्वाढ्यः पातु पादांगुलीस्तथा ॥ सर्वाङ्गानि महाशूरः पातु रोमाणि चात्मवित् ॥ १२ ॥ हनुमत्कवचं यस्तु पठेद्विद्वान्विचक्षणः ॥ स एव पुरुषश्रेष्ठो भुक्तिं मुक्तिं च विंदति ॥ १३ ॥ त्रिकालमेककालं वा पठेन्मासत्रयं नरः ॥ सर्वान् रिपून्क्षणाज्जित्वा स पुमान् श्रियमाप्नुयात् ॥ १४ ॥ मध्यरात्रे जले स्थित्वा सप्तवारं पठेद्यदि ॥ क्षयापस्मारकुष्ठादितापत्रयनिवारणः ॥ १५ ॥ अश्वत्थमूलेऽर्कवारे स्थित्वा पठति यः पुमान् ॥

अचलां श्रियमाप्नोति संग्रामे विजयं तथा॥१६॥बुद्धिर्बलं यशो धैर्यं निर्भयत्वमरोगता ॥ सुदार्ढ्यं वाक्स्फुरत्वं च हनुमत्स्मरणाद्भवेत् ॥१७॥ मारणं वैरिणां सद्यः शरणं सर्वसंपदाम् ॥ शोकस्य हरणे दक्षं वंदे तं रणदारुणम् ॥ १८ ॥ लिखित्वा पूजयेद्यस्तु सर्वत्र विजयी भवेत् ॥ यः करे धारयेन्नित्यं स पुमाञ्छ्रियमाप्नुयात् ॥ १९ ॥ स्थित्वा तु बंधने यस्तु जपं कारयति द्विजैः ॥ तत्क्षणान्मुक्तिमाप्नोति निगडात्तु तथैव च॥२०॥य इदं प्रातरुत्थाय पठेच्च कवचं सदा ॥ आयुरारोग्यसंतानैस्तस्य स्तव्यः स्तवो भवेत् ॥ २१ ॥ इदं पूर्वं पठित्वा तु रामस्य कवचं ततः ॥ पठनीयं नरैर्भक्त्या नैकमेव पठेत्कदा ॥ २२ ॥ हनुमत्कवचं चात्र श्रीरामकवचं विना ॥ ये पठंति नरा श्चात्र पठनं तद्वृथा भवेत् ॥ २३ ॥ तस्मात्सर्वैः पठनीयं सर्वदा कवचद्वयम् ॥ रामस्य वायुपुत्रस्य सद्भक्तैश्च विशेषतः ॥ २४ ॥ इति श्रीमदानन्दरामायणे श्रीरामकृतैकमुखहनुमत्कवचं समाप्तम् ॥ १ ॥ अथ शत्रुघ्नकवचप्रारंभः ॥ शत्रुघ्नं धृतकार्मुकं धृतमहातूणीरबाणो त्तमं पार्श्वे श्रीरघुनंदनस्य विनयाद्वामे स्थितं सुंदरम् ॥ रामं स्वीयकरेण तालदलजं धृत्वातिचित्रं वरं सूर्याभं व्यजनं सभास्थितमहं तं वीजयंतं भजे ॥ १ ॥ अस्य श्रीशत्रुघ्नकवचमंत्रस्य अगस्तिर्ऋषिः । श्रीशत्रुघ्नो देवता । अनुष्टुप् छंदः । सुदर्शन इति बीजम् । कैकेयी नन्दन इति शक्तिः । श्रीभरतानुज इति कीलकम् । भरतमंत्रीत्यस्त्रम् । श्रीरामदास इति कवचम् । लक्ष्मणांशज इति मंत्रः ॥ श्रीशत्रु घ्नप्रीत्यर्थं सकलमनःकामनासिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः ॥ ॐ शत्रुघ्नाय अंगुष्ठाभ्यां नमः॥१॥ॐ सुदर्शनाय तर्जनीभ्यां नमः॥२॥ ॐ कैकेयी नन्दनाय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ भरतानुजाय अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ भरतमंत्रिणे कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ राम दासाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ शत्रुघ्नाय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ सुदर्शनाय शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ कैकेयीनन्दनाय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ भरतानुजाय कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ भरतमंत्रिणे नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ रामदासाय अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः॥ अथ ध्यानम् ॥ रामस्य संस्थितं वामे पार्श्वे विनयपूर्वकम् ॥ कैकेयीनन्दनं सौम्यं मुकुटे नातिरंजितम् ॥ १ ॥ रत्नकंकणकेयूरवनमालाविराजितम् ॥ रशनाकुंडलधरं रत्नहारसनूपुरम् ॥ २ ॥ व्यजनेन वीजयंतं जानकीकांतम

दरात् ॥ रामन्यस्तेक्षणं वीरं कैकेयीतोषवर्द्धनम् ॥ ३ ॥ द्विभुजं कंजनयनं दिव्यपीतांबरान्वितम् ॥ सुभुजं सुन्दरं मेघश्यामलं सुन्दरा
कलम् ॥ ४ ॥ रामवाक्ये दत्तकर्णं रक्षोघ्नं खड्गधारिणम् ॥ धनुर्बाणधरं श्रेष्ठं धृततूणीरमुत्तमम् ॥ ५ ॥ सभायां संस्थितं रम्यं कस्तूरी
कांकितम् ॥ मुकुटस्थावतंसेन शोभितं च स्मिताननम् ॥ ६ ॥ रविवंशोद्भवं दिव्यरूपं दशरथात्मजम् ॥ मथुरावासिनं देवं लवणा
सुरमर्दनम् ॥ ७ ॥ इति ध्यात्वा तु शत्रुघ्नं रामपादेक्षणं हृदि ॥ पठनीयं वरं चेदं कवचं तस्य पावनम् ॥ ८ ॥ पूर्वे त्ववतु शत्रुघ्नः पातु
याम्ये सुदर्शनः ॥ कैकेयीनन्दनः पातु प्रतीच्यां सर्वदा मम ॥९॥ पातूदीच्यां रामबन्धुः पात्वधो भरतानुजः ॥ रविवंशोद्भवश्चोर्ध्वं मध्ये
दशरथात्मजः ॥१०॥ सर्वतः पातु मामत्र कैकेयीतोषवर्द्धनः ॥ श्यामलांगः शिरः पातु भालं श्रीलक्ष्मणांशजः ॥११॥ भ्रुवोर्मध्ये सदा पातु
सुमुखोऽत्रावनीतले ॥ श्रुतकीर्तिपतिर्नेत्रे कपोले पातु राघवः ॥१२॥ कर्णौ कुण्डलकर्णोऽव्यान्नासाग्रं नृपवंशजः ॥ मुखं मम युवा पातु पातु
वाणीं स्फुटाक्षरः ॥१३॥ जिह्वां सुबाहुतातोऽव्याद्यूपकेतुपिता द्विजान् ॥ चुबुकं रम्यचुबुकः कंठं पातु सुभाषणः ॥१४॥ स्कंधौ पातु महातेजा
भुजौ राघववाक्यकृत् ॥ करौ मे कंकणधरः पातु खड्गी नखान्मम ॥१५॥ कुक्षी रामप्रियः पातु पातु वक्षो रघूत्तमः ॥ पार्श्वे सुरार्चितः पातु
पातु पृष्ठं वराननः ॥ १६ ॥ जठरं पातु रक्षोघ्नः पातु नाभिं सुलोचनः ॥ कटी भरतमंत्री मे गुह्यं श्रीरामसेवकः ॥ १७ ॥ रामार्पितमनाः
पातु लिंगमूरू स्मिताननः ॥ कोदंडधारी पात्वत्र जानुनी मम सर्वदा ॥ १८ ॥ राममित्रं पातु जंघे गुल्फौ पातु सुनूपुरः ॥ पादौ
नृपतिपूज्योऽव्याच्छ्रीमान्पादांगुलीर्मम ॥ १९ ॥ पात्वंगानि समस्तानि ह्युदरांगः सदा मम ॥ रोमाणि रमणीयोऽव्याद्रात्रौ पातु सुधा
र्मिकः ॥ २० ॥ दिवा मे सत्यसंधोऽव्याद्भोजने शरसत्करः ॥ गमने कलकंठोऽव्यात्सर्वदा लवणांतकः ॥ २१ ॥ एवं शत्रुघ्नकवचं मया
ते समुदीरितम् ॥ ये पठंति नरास्त्वेतत्ते नराः सौख्यभागिनः ॥ २२ ॥ शत्रुघ्नस्य वरं चेदं कवचं मंगलप्रदम् ॥ पठनीयं नरैर्भक्त्या पुत्र
पौत्रप्रवर्द्धनम् ॥ २३ ॥ अस्य स्तोत्रस्य पाठेन यं यं कामं नरोऽर्थयेत् ॥ तं तं लभेन्निश्चयेन सत्यमेतद्वचो मम ॥ २४ ॥ पुत्रार्थी प्राप्नु
यात्पुत्रं धनार्थी धनमाप्नुयात् ॥ इच्छाकामं तु कामार्थी प्राप्नुयात्पठनादिना ॥ २५ ॥ कवचस्यास्य भूम्यां हि शत्रुघ्नस्य विनिश्चयात् ॥

तस्मादेतत्सदा भक्त्या पठनीयं नरैः शुभम् ॥ २६ ॥ इति श्रीमदानन्दरामायणे सुतीक्ष्णागस्त्यसंवादे शत्रुघ्नकवचं समाप्तम् ॥ २ ॥ अथ भरतकवचप्रारंभः ॥ अतः परं भरतस्य कवचं ते वदाम्यहम् ॥ सर्वपापहरं पुण्यं सदा श्रीरामभक्तिदम् ॥ १ ॥ कैकेयीतनयं सदा रघुवरन्यस्तेक्षणं श्यामलं सप्तद्वीपपतेर्विदेहतनयाकांतस्य वाक्ये रतम् ॥ श्रीसीताधवसव्यपार्श्वनिकटे स्थित्वा वरं चामरं धृत्वा दक्षिणसत्करेण भरतं तं वीजयंतं भजे ॥ २ ॥ अस्य श्रीभरतकवचमंत्रस्यागस्त्य ऋषिः । श्रीभरतो देवता अनुष्टुप् छंदः । शंख इति बीजम् । कैकेयीनन्दन इति शक्तिः । भरतखण्डेश्वर इति कीलकम् । रामानुज इत्यस्त्रम् । सप्तद्वीपेश्वरदास इति कवचम् । रामांशज इति मंत्रः । श्रीभरतप्रीत्यर्थं सकलमनोरथसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः ॥ ॐ भरताय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ शंखाय तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ कैकयीनन्दनाय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ भरतखंडेश्वराय अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ रामानुजाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॥ ५ ॥ ॐ सप्तद्वीपेश्वराय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ भरताय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ शंखाय शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ कैकेयीनन्दनाय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ भरतखंडेश्वराय कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ रामानुजाय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ सप्तद्वीपेश्वराय अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ ॐ रामांशजाय चेति दिग्बंधः ॥ ७ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ अथ ध्यानम् ॥ ॐ रामचन्द्रसव्यपार्श्वे स्थितं केकयजासुतम् ॥ रामाय चामरेणैव वीजयंतं मनोरमम् ॥ १ ॥ रत्नकुंडलकेयूरकंकणादिसुभूषितम् ॥ पीतांबरपरीधानं वनमालाविराजितम् ॥ २ ॥ मांडवीधौतचरणं रशनानूपुरान्वितम् ॥ नीलोत्पलदलश्यामं द्विजराजसमाननम् ॥ ३ ॥ आजानुबाहुं भरतखंडस्य प्रतिपालकम् ॥ रामानुजं स्मितास्यं च शत्रुघ्नपरिवंदितम् ॥ ४ ॥ रामन्यस्तेक्षणं सौम्यं विद्युत्पुंजसमप्रभम् ॥ रामभक्तं महावीरं वंदे तं भरतं शुभम् ॥५॥ एवं ध्यात्वा तु भरतं रामपादेक्षणं हृदि ॥ कवचं पठनीयं हि भरतस्येदमुत्तमम् ॥६॥ ॐ पूर्वतो भरतः पातु दक्षिणे कैकयीसुतः ॥ नृपात्मजः प्रतीच्यां हि पातूदीच्यां रघूत्तमः ॥ १ ॥ अधः पातु श्यामलांगश्चोर्ध्वं दशरथात्मजः ॥ मध्ये भरतवर्षेशः सर्वतः सूर्यवंशजः ॥ २ ॥ शिरस्तक्षपिता पातु भालं पातुः हरिप्रियः ॥ भ्रूवोर्मध्यं जनकजावाक्यैकतत्परोऽवतु ॥ ३ ॥

पातु जनकजामाता मम नेत्रे सदात्र हि ॥ कपोलौ मांडवीकांतः कर्णमूले स्मिताननः ॥ ४ ॥ नासाग्रं मे सदा पातु कैकेयीतोष
वर्द्धनः ॥ उदारांगो मुखे पातु वाणीं पातु जटाधरः ॥ ५ ॥ पातु पुष्करतातो मे जिह्वां दंतान् प्रभामयः ॥ चुबुकं वल्कलधरः कंठं पातु
वराननः ॥ ६ ॥ स्कंधौ पातु जितारातिर्भुजौ शत्रुघ्नवंदितः ॥ करौ कवचधारी च नखान् खड्गधरोऽवतु ॥ ७ ॥ कुक्षी रामानुजः
पातुः वक्षः श्रीरामवल्लभः ॥ पार्श्वे राघवपार्श्वस्थः पातु पृष्ठं सभाषणः ॥ ८ ॥ जठरं च धनुर्धारी नाभिं शरकरोऽवतु ॥ कटिं पद्मेक्षणः
पातु गुह्यं रामैकमानसः ॥ ९ ॥ राममित्रं पातु लिंगमूरू श्रीरामसेवकः ॥ नंदिग्रामस्थितः पातु जानुनी मम सर्वदा ॥ १० ॥ श्रीराम
पादुकाधारी पातु जंघे सदा मम ॥ गुल्फौ श्रीरामबंधुश्च पादौ पातु सुरार्चितः ॥ ११ ॥ रामाज्ञापालकः पातु ममांगान्यत्र सर्वदा ॥ मम
पादांगुलीः पातु रघुवंशसुभूषणः ॥ १२ ॥ रोमाणि पातु मे रम्यः पातु रात्रौ सुधीर्मम ॥ तूणीरधारी दिवसं दिक्पातु मम सर्वदा
॥ १३ ॥ सर्वकालेषु मां पातु पांचजन्यः सदा भुवि ॥ एवं श्रीभरतस्येदं सुतीक्ष्णकवचं शुभम् ॥ १४ ॥ मया प्रोक्तं तवाग्रे हि महा
मंगलकारकम् ॥ स्तोत्राणामुत्तमं स्तोत्रमिदं ज्ञेयं सुपुण्यदम् ॥ १५ ॥ पठनीयं सदा भक्त्या रामचन्द्रस्य हर्षदम् ॥ पठित्वा भरतस्येदं
कवचं रघुनंदनः ॥ १६ ॥ यथा याति परं तोषं तथा स्वकवचेन न ॥ तस्मादेतत्सदा जप्यं कवचानामनुत्तमम् ॥ १७ ॥ अस्यात्र पठना
न्मर्त्यः सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ विद्याकामो लभेद्विद्यां पुत्रकामो लभेत्सुतम् ॥ १८ ॥ पत्नीकामो लभेत् पत्नीं धनार्थी धनमाप्नुयात् ॥
यद्यन्मनोभिलषितं तत्तत्कवचपाठतः ॥१९॥ लभ्यते मानवैरत्र सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ तस्मात्सदा जपनीयं रामोपासकमानवैः ॥२०॥
इति श्रीमदानंदरामायणे सुतीक्ष्णागस्त्यसंवादे श्रीभरतकवचं समाप्तम् ॥ ३ ॥ अथ लक्ष्मणकवचप्रारंभः ॥ अगस्त्य उवाच ॥ सौमित्रिं
रघुनायकस्य चरणद्वंद्वेक्षणं श्यामलं बिभ्रंतं स्वकरेण रामशिरसि च्छत्रं विचित्रांबरम् ॥ बिभ्रंतं रघुनायकस्य सुमहत्कोदंडबाणासने तं वंदे
कमलेक्षणं जनकजावाक्ये सदा तत्परम् ॥ १ ॥ अस्य श्रीलक्ष्मणकवचमंत्रस्य अगस्त्य ऋषिः । अनुष्टुप् छंदः । श्रीलक्ष्मणो देवता ।
शेष इति बीजम् । सुमित्रानन्दन इति शक्तिः । रामानुज इति कीलकम् । रामदास इत्यस्त्रम् । रघुवंशज इति कवचम् । सौमित्रिरिति मंत्रः ।

श्रीलक्ष्मणप्रीत्यर्थं सकलमनोऽभिलषितसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः ॥ ॐ लक्ष्मणाय अंगुष्ठाभ्यां नमः॥ १ ॥ ॐ शेषाय तर्जनीभ्यां नमः॥२॥ ॐ सुमित्रानंदनाय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ रामानुजाय अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ रामदासाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ रघुवंशजाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ लक्ष्मणाय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ शेषाय शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ सुमित्रानन्दनाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ रामानुजाय कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ रामदासाय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ रघुवंशजाय अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ ॐ सौमित्रये इति दिग्बंधः ॥ ७ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ अथ ध्यानम् ॥ रामपृष्ठस्थितं रम्यं रत्नकुंडलधारिणम् ॥ नीलोत्पलदलश्यामं रत्नकंकणमंडितम् ॥१॥ रामस्य मस्तके दिव्यं बिभ्रतं छत्रमुत्तमम् ॥ वरपीतांबरधरं मुकुटे नातिशोभितम् ॥ २ ॥ तूणीरं कार्मुकं चापि बिभ्रतं च स्मिताननम् ॥ रत्नमालाधरं दिव्यं पुष्पमालाविराजितम् ॥ ३ ॥ एवं ध्यात्वा लक्ष्मणं च राघवन्यस्तलोचनम् ॥ कवचं जपनीयं हि ततो भक्त्यात्र मानवैः ॥ ४ ॥ लक्ष्मणः पातु मे पूर्वे दक्षिणे राघवानुजः ॥ प्रतीच्यां पातु सौमित्रिः पातूदीच्यां रघूत्तमः ॥ ५ ॥ अधः पातु महावीरश्चोर्ध्वं पातु नृपात्मजः ॥ मध्ये पातु रामदासः सर्वतः सत्यपालकः ॥ ६ ॥ स्मिताननः शिरः पातु भालं पातूर्मिलाधवः ॥ भ्रुवोर्मध्ये धनुर्धारी सुमित्रानंदनोऽक्षिणी ॥ ७ ॥ कपोले राममंत्री च सर्वदा पातु वै मम ॥ कर्णमूले सदा पातु कबंधभुजखण्डनः ॥ ८ ॥ नासाग्रं मे सदा पातु सुमित्रानंदवर्धनः ॥ रामन्यस्तेक्षणः पातु सदा मेऽत्र मुखं भुवि ॥ ९ ॥ सीतावाक्यकरः पातु मम वाणीं सदाऽत्र हि ॥ सौम्यरूपः पातु जिह्वामनंतः पातु मे द्विजान् ॥ १० ॥ चिबुकं पातु रक्षोघ्नः कंठं पात्वसुरार्दनः ॥ स्कंधौ पातु जितारातिर्भुजौ पंकजलोचनः ॥ करौ कंकणधारी च नखान् रक्तनखोऽवतु ॥ कुक्षिं पातु विनिद्रो मे वक्षः पातु जितेन्द्रियः ॥ ११ ॥ राघवपृष्ठस्थः पृष्ठदेशं मनोरमः ॥ नाभिं गंभीरनाभिस्तु कटिं च रुक्ममेखलः ॥ १२ ॥ पार्श्वे प्रियः ॥ ऊरू पातु विष्णुतुल्यः सुमुखोऽवतु जानुनी ॥ १३ ॥ गुह्यं पातु सहस्रास्यः पातु लिंगं हरिप्रियः ॥ ऊरू पातु विष्णुतुल्यः सुमुखोऽवतु जानुनी ॥ १४ ॥ नागेन्द्रः पातु मे जंघे गुल्फौ नूपुरवान्मम ॥ पादावंगदतातोऽव्यात्पात्वं

नि सुलोचनः ॥ १५ ॥ चित्रकेतुपिता पातु मम पादांगुलीः सदा ॥ रोमाणि मे सदा पातु रविवंशसमुद्भवः ॥ १६ ॥
पातु निशायां मम सादरम् ॥ भूगोलधारी मां पातु दिवसे दिवसे सदा ॥ १७ ॥ सर्वकालेषु मामिंद्रजिद्धंताऽवतु सर्वदा ॥ एवं सौमि
कवचं सुतीक्ष्ण कथितं मया ॥ १८ ॥ इदं प्रातः समुत्थाय ये पठंत्यत्र मानवाः ॥ ते धन्या मानवा लोके तेषां च सफलो भवः ॥ १९ ॥
सौमित्रेः कवचस्यास्य पठनान्निश्चयेन हि ॥ पुत्रार्थी लभते पुत्रान्धनार्थी धनमाप्नुयात् ॥ २० ॥ पत्नीकामो लभेत्पत्नीं गोधनार्थी तु
गोधनम् ॥ धान्यार्थी प्राप्नुयाद्धान्यं राज्यार्थी राज्यमाप्नुयात् ॥ २१ ॥ पठितं रामकवचं सौमित्रिकवचं विना ॥ घृतेन हीनं नैवेद्यं
तेन दत्तं न संशयः ॥ २२ ॥ केवलं रामकवचं पठितं मानवैर्यदि ॥ तत्पाठेन तु संतुष्टो न भवेद्रघुनन्दनः ॥ २३ ॥ अतः प्रयत्न
तश्चेदं सौमित्रिकवचं नरैः ॥ पठनीयं सदैव सर्ववांछितदायकम् ॥ २४ ॥ इति श्रीमदानन्दरामायणे सुतीक्ष्णागस्त्यसंवादे श्रीलक्ष्मणकवचं
समाप्तम् ॥ ४ ॥ अथ सीताकवचप्रारम्भः ॥ या सीताऽवनिसंभवाऽथ मिथिलापालेन संवर्द्धिता पद्माक्षावनिभुक्सुताऽनलगता या मातु
लिंगोद्भवा ॥ या रत्ने लयमागता जलनिधौ या वेदपारं गता लंकां सा मृगलोचना शशिमुखी मां पातु रामप्रिया ॥ १ ॥ अस्य श्री
सीताकवचस्तोत्रमंत्रस्य अगस्तिर्ऋषिः । श्रीसीता देवता । अनुष्टुप् छन्दः । रमेति बीजम् । जनकजेति शक्तिः । अवनिजेति कीलकम् ।
पद्माक्षसुतेत्यस्त्रम् । मातुलिंगीति कवचम् । मूलकासुरघातिनीति मंत्रः ॥ श्रीसीतारामचन्द्रप्रीत्यर्थं सकलकामनासिद्ध्यर्थं च जपे विनि
योगः ॥ ॐ ह्रां सीतायै अगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं रमायै तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रूं जनकजायै मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रैं
अवनिजायै अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रौं पद्माक्षसुतायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रः मातुलिंग्यै करतलकरपृष्ठाभ्यां
नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ह्रां सीतायै हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं रमायै शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रूं जनकजायै
शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रैं अवनिजायै कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ ह्रौं पद्माक्षसुतायै नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ ह्रः मातुलिंग्यै
अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ अथ ध्यानम् ॥ "ॐ सीतां कमलपत्राक्षीं विद्युत्पुंजसमप्रभाम् ॥ द्विभुजां सुकुमा

रांगीं पीतकौशेयवासिनीम् ॥ १ ॥ सिंहासने रामचन्द्रवामभागस्थितां वराम् ॥ नानालंकारसंयुक्तां कुंडलद्वयधारिणीम् ॥ २ ॥ चूडाकंकणकेयूररशनानूपुरान्वितां ॥ सीमन्ते रविचन्द्राभ्यां निटिले तिलकेन च ॥ ३ ॥ नूपुराभरणेनापि घ्राणेऽतिशोभितां शुभाम् ॥ हरिद्रां कज्जलं दिव्यं कुंकुमं कुसुमानि च ॥ ४ ॥ बिभ्रतीं सुरभिद्रव्यं सुगंधस्नेहमुत्तमम् ॥ स्मिताननां गौरवर्णां मंदारकुसुमं करे ॥ ५ ॥ बिभ्रतीमपरे हस्ते मातुलिंगमनुत्तमम् ॥ रम्यहासां च बिंबोष्ठीं चन्द्रवाहनलोचनाम् ॥ ६ ॥ कलानाथसमानास्यां कलकंठमनोरमाम्॥मातुलिंगोद्भवां देवीं पद्माक्षदुहितां शुभाम्॥७॥मैथिलीं रामदयितां दासीभिः परिवीजिताम् ॥ एवं ध्यात्वा जनकजां हेमकुंभपयोधराम् ॥ ८ ॥ श्रीसीता पूर्वतः पातु दक्षिणेऽवतु जानकी ॥ प्रतीच्यां पातु वैदेही पातूदीच्यां च मैथिली ॥ ९ ॥ अधः पातु मातुलिंगी ऊर्ध्वं पद्माक्षजाऽवतु ॥ मध्येऽवनिसुता पातु सर्वतः पातु मां रमा ॥ १० ॥ स्मितानना शिरः पातु पातु भालं नृपात्मजा ॥ पद्माऽवतु भ्रुवोर्मध्ये मृगाक्षी नयनेऽवतु ॥ ११ ॥ कपोले कर्णमूले च पातु श्रीरामवल्लभा ॥ नासाग्रं सात्त्विकी पातु पातु वक्त्रं तु राजसी ॥१२॥ तामसी पातु मद्वाणीं पातु जिह्वां पतिव्रता ॥ दंतान् पातु महामाया चिबुकं कनकप्रभा॥१३॥ पातु कंठं सौम्यरूपा स्कंधौ पातु सुरार्चिता ॥ भुजौ पातु वरारोहा करौ कंकणमंडिता १४ ॥ नखान् रक्तनखा पातु कुक्षौ पातु लघूदरा ॥ वक्षः पातु रामपत्नी पार्श्वे रावणमोहिनी ॥ १५ ॥ पृष्ठदेशे वह्निगुताऽवतु मां सर्वदैव हि ॥ दिव्यप्रदा पातु नाभिं कटिं राक्षसमोहिनी ॥ १६ ॥ गुह्यं पातु रत्नगुप्ता लिंगं पातु हरिप्रिया ॥ ऊरू रक्षतु रंभोरूर्जानुनी प्रियभाषिणी ॥ १७ ॥ जंघे पातु सदा सुभ्रूर्गुल्फौ चामरवीजिता ॥ पादौ लवसुता पातु पात्वंगानि कुशांबिका ॥१८॥ पादांगुलीः सदा पातु मम नूपुरनिःस्वना॥ रोमाण्यवतु मे नित्यं पीतकौशेयवासिनी ॥ १९ ॥ रात्रौ पातु कालरूपा दिने दानैकतत्परा ॥ सर्वकालेषु मां पातु मूलकासुरघातिनी ॥२०॥ एवं सुतीक्ष्ण सीतायाः कवचं ते मयेरितम् ॥ इदं प्रातः समुत्थाय स्नात्वा नित्यं पठेत्पुनः ॥ २१ ॥ जानकीं पूजयित्वा स सर्वान्कामा

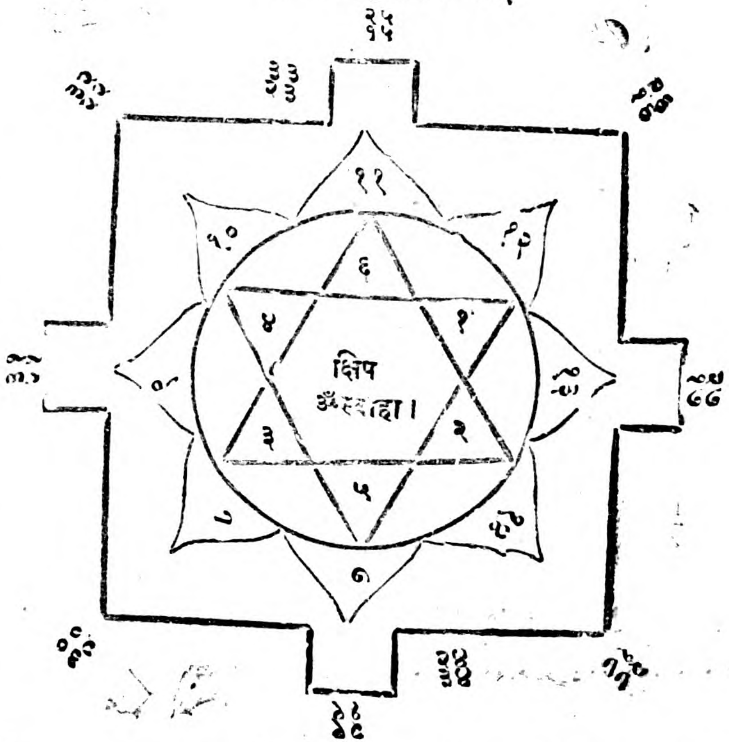
नवाप्नुयात् ॥ धनार्थी प्राप्नुयाद्द्रव्यं पुत्रार्थी पुत्रमाप्नुयात् ॥ २१ ॥ स्त्रीकामार्थी शुभां नारीं सुखार्थी सौख्यमाप्नुयात् ॥ अष्ट
जपनीयं सीतायाः कवचं सदा ॥ २३ ॥ अष्टभूसुरसीतायै नरैः प्रीत्यार्पयेत्सदा ॥ फलपुष्पादिकादीनि यानि तानि पृथक्पृथक्
॥ २४ ॥ सीतायाः कवच चेदं पुण्यं पातकनाशनम् ॥ ये पठंति नरा भक्त्या ते धन्या मानवा भुवि ॥ २५ ॥ पठंति रामकवचं
सीतायाः कवचं विना ॥ तथा विना लक्ष्मणस्य कवचेन वृथा स्मृतम् ॥ २६ ॥ इति श्रीमदानंदरामायणे मनोहरकांडे सुतीक्ष्णा
गस्त्यसंवादे श्रीसीतायाः कवचं समाप्तम् ॥ ५ ॥ अथ श्रीरामकवचप्रारंभः ॥ "आजानुबाहुमरविंददलायताक्षमाजन्मशुद्धरसहा
समुखप्रसादम् ॥ श्यामं गृहीतशरचापमुदाररूपं रामं सराममभिराममनुस्मरामि ॥ १ ॥" अस्य श्रीरामकवचस्य अगस्त्य ऋषिः ।
अनुष्टुप् छंदः । सीतालक्ष्मणोपेतः श्रीरामचन्द्रो देवता । श्रीरामचन्द्रप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ अथ ध्यानम् ॥ "नीलजीमूत
संकाशं विद्युद्वर्णाम्बरावृतम् ॥ कोमलांगं विशालाक्षं युवानमतिसुंदरम् ॥ १ ॥ सीतासौमित्रिसंहितं जटामुकुटधारिणम् ॥ सासितूण
धनुर्बाणपाणिं दानवमर्दनम् ॥ २ ॥ यदा चोरभये राजभये शत्रुभये तथा ॥ ध्यात्वा रघुपतिं क्रुद्धं कालानलसमप्रभम् ॥ ३ ॥
चीरकृष्णाजिनधरं भस्मोद्धूलितविग्रहम् ॥ आकर्णाकृष्टविशिखकोदंडभुजमंडितम् ॥ ४ ॥ रणे रिपून् रावणादींस्तीक्ष्णमार्गणवृष्टिभिः ॥
संहरंतं महावीरमुग्रमैंद्ररथस्थितम् ॥ ५ ॥ लक्ष्मणाद्यैर्महावीरैर्वृतं हनुमदादिभिः ॥ सुग्रीवाद्यैर्महावीरैः शैलवृक्षकरोद्यतैः ॥ ६ ॥
वेगात्करालहुंकारैर्भुभुक्कारमहारवैः ॥ नदद्भिः परिवादद्भिः समरे रावणं प्रति ॥ ७ ॥ श्रीराम शत्रुसंघान्मे हन मर्दय खादय ॥
भूतप्रेतपिशाचादीन् श्रीरामाशु विनाशय ॥ ८ ॥ एवं ध्यात्वा जपेद्रामकवचं सिद्धिदायकम् ॥ सुतीक्ष्ण वज्रकवचं शृणु वक्ष्याम्यनुत्त
मम् ॥ ९ ॥ श्रीरामः पातु मे मूर्ध्नि पूर्वे च रघुवंशजः ॥ दक्षिणे मे रघुवरः पश्चिमे पातु पावनः ॥ १ ॥ उत्तरे मे रघुपतिर्भालं
दशरथात्मजः ॥ भ्रुवोर्दूर्वादलश्यामस्तयोर्मध्ये जनार्दनः ॥ २ ॥ श्रोत्रं मे पातु राजेन्द्रो दृशौ राजीवलोचनः ॥ घ्राणं मे पातु

राजर्षिगंडौ मे जानकीपतिः ॥ ३ ॥ कर्णमूले खरध्वंसी भालं मे रघुवल्लभः ॥ जिह्वां मे वाक्पतिः पातु दंतपंक्ती रघूत्तमः ॥ ४ ॥ ओष्ठौ
श्रीरामचन्द्रो मे मुखं पातु परात्परः ॥ कंठं पातु जगद्वंद्यः स्कंधौ मे रावणांतकः ॥ ५ ॥ धनुर्बाणधरः पातु भुजौ मे वालिमर्दनः ॥ सर्वा
ण्यंगुलिपर्वाणि हस्तौ मे राक्षसांतकः ॥ ६ ॥ वक्षो मे पातु काकुत्स्थः पातु मे हृदयं हरिः ॥ स्तनौ सीतापतिः पातु पार्श्वं मे जग
दीश्वरः ॥ ७ ॥ मध्यं मे पातु लक्ष्मीशो नाभिं मे रघुनायकः ॥ कौसल्येयः कटी पातु पृष्ठं दुर्गतिनाशनः ॥ ८ ॥ गुह्यं पातु हृषीकेशः
सक्थिनी सत्यविक्रमः ॥ ऊरू शार्ङ्गधरः पातु जानुनी हनुमत्प्रियः ॥ ९ ॥ जंघे पातु जगद्व्यापी पादौ मे ताटिकांतकः ॥
सर्वांगं पातु मे विष्णुः सर्वसंधिननामयः ॥ १० ॥ ज्ञानेन्द्रियाणि प्राणादीन् पातु मे मधुसूदनः ॥ पातु श्रीरामभद्रो मे शब्दादीन्विष
यानपि ॥ ११ ॥ द्विपदादीनि भूतानि मत्संबंधीनि यानि च ॥ जामदग्न्यमहादर्पदलनः पातु तानि मे ॥ १२ ॥ सौमित्रिपूर्वजः पातु
वागादीनीन्द्रियाणि च ॥ रोमांकुराण्यशेषाणि पातु सुग्रीवराज्यदः ॥ १३ ॥ वाङ्मनोबुद्ध्यहंकारैर्ज्ञानाज्ञानकृतानि च ॥ जन्मांतर
कृतानीह पापानि विविधानि च ॥ १४ ॥ तानि सर्वाणि दग्ध्वाशु हरकोदण्डखण्डनः ॥ पातु मां सर्वतो रामः शार्ङ्गबाणधरः सदा॥१५॥
इति श्रीरामचन्द्रस्य कवचं वज्रसंमितम् ॥ गुह्याद्गुह्यतमं दिव्यं सुतीक्ष्ण मुनिसत्तम ॥१६॥ यः पठेच्छृणुयाद्वापि श्रावयेद्वा समाहितः ॥
स याति परमं स्थानं रामचन्द्रप्रसादतः ॥ १७ ॥ महापातकयुक्तो वा गोघ्नो वा भ्रूणहा तथा ॥ श्रीरामचन्द्रकवचपठनाच्छुद्धिमाप्नु
यात् ॥ १८ ॥ ब्रह्महत्यादिभिः पापैर्मुच्यते नात्र संशयः ॥ भो सुतीक्ष्ण यथा पृष्टं त्वया मम पुरा शुभम् ॥ तथा श्रीरामकवचं
मया ते विनिवेदितम् ॥ १९ ॥ इति श्रीमदानन्दरामायणे मनोहरकांडे सुतीक्ष्णागस्त्यसंवादे श्रीरामकवचं समाप्तम् ॥ ६ ॥ एवं षट्
कवचान्यत्र पठनीयानि सर्वदा ॥ पठनं षट्कवचानां श्रेष्ठं मोक्षैकसाधनम् ॥ इति श्रीहनुमदादिषट्कवचप्रयोगः समाप्तः ॥
अथ हरिवाहनगरुडमंत्रप्रयोगः ॥ (मंत्रमहोदधौ) मंत्रो यथा—"क्षिप ॐ स्वाहा" इति पंचाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य मंत्रस्य अनंत ऋषिः

मंत्रो यथा—"क्षिप ॐ स्वाहा" इति

जपे विनियोगः ॥ ॐ अनंतऋषये नमः । शिरसि ॥ १ ॥
पंक्तिश्छन्दः । पक्षींद्रो देवता । ॐ बीजम् । स्वाहा शक्तिः । ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ अनंतऋषये नमः । शिरसि ॥ १ ॥
पंक्तिच्छंदसे नमः । मुखे ॥ २ पक्षींद्रदेवतायै नमः । हृदि ॥ ३ ॥ ॐ बीजाय नमः । गुह्ये ॥ ४ ॥ स्वाहाशक्तये नमः । पादयोः ॥ ५ ॥
विनियोगाय नमः । सर्वाङ्गे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ज्वल ज्वल महामते स्वाहा हृदये ॥ १ ॥ ॐ गरुडचूडानने
स्वाहा शिरसि ॥ २ ॥ ॐ गरुडशिखे स्वाहा शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ गरुड प्रभंजय प्रभंजय प्रभेदय प्रभेदय त्रासय त्रासय विमर्दय
विमर्दय स्वाहा कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ उग्ररूपधर सर्वविषहर भीषय भीषय सर्वं दह दह भस्मीकुरु २ स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट् ॥
॥ ५ ॥ ॐ अप्रतिहतबलाप्रतिहतशासन हुं फट् स्वाहा अस्त्राय फट् ॥६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः॥ ॐ ज्वल २ महामते स्वाहा अंगु
ष्ठयोः ॥ १ ॥ ॐ गरुडचूडानने स्वाहा तर्जन्योः ॥ २ ॥ ॐ गरुडशिखे स्वाहा मध्यमयोः ॥ ३ ॥ ॐ गरुड प्रभंजय २ प्रभेदय २
विमर्दय २ स्वाहा अनामिकयोः ॥ ४ ॥ ॐ उग्ररूपधर सर्वविषहर भीषय २ सर्वं दह २ भस्मीकुरु २ स्वाहा कनिष्ठयोः ॥५॥ ॐ अप्रति
हतबलाप्रतिहतशासन हुं फट् । करतलकरपृष्ठयोः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ क्षिं नमः पादयोः ॥ १ ॥ ॐ पं नमः कटयोः ॥ २ ॥
ॐ ॐ नमः हृदि ॥ ३ ॥ ॐ स्वां नमः वक्त्रे ॥ ४ ॥ ॐ हां नमः मूर्ध्नि ॥ ५ ॥ इति मंत्रवर्णन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ
ध्यानम् ॥ तप्तस्वर्णनिभं फणीन्द्रनिकरैः क्लृप्तांगभूषं प्रभुं स्मर्तॄणां शमयंतमुग्रमखिलं नृणां विषं तत्क्षणात् ॥ चंचवग्रप्रचलद्भुजंग
मभयं पाण्योर्वरं बिभ्रतं पक्षोच्चारितसामगीतममलं श्रीपक्षिराजं भजे ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे
निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य बाह्यरेफद्वयहुंकारमध्यस्थक्षकारबिंद्वंततार्क्ष्यबीजमुक्तकर्णिकं
स्वरद्वंद्वात्मकं केसरेष्वकचटतपयशाष्टवर्गयुक्ताष्टदले मातृकापद्मपीठे "ॐ पक्षिराजाय स्वाहा इति" मंत्रेणासनं दत्त्वा पीठमध्य संस्थाप्य
पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पान्तैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञया आवरणपूजां कुर्यात्॥तद्यथा—पुष्पांजलिमादाय "संविन्मयः परो

अथ गरुडपूजनयन्त्रम्.



देवः परामृतरसप्रियः ॥ अनुज्ञां देहि गरुड परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥ " इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत ॥ ततः षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च ॥ ॐ ज्वल ज्वल महामते स्वाहा ॥ हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ गरुडचूडानने स्वाहा शिरः श्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ गरुडशिखे स्वाहा । शिखाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ गरुड प्रभंजय २ प्रभेदय २ त्रासय २ विमर्दय २ स्वाहा । वर्मश्री० ॥ ४ ॥ ॐ उग्ररूपधर सर्वविषहर भीषय २ सर्वं दह २ भस्मीकुरु २ स्वाहा । नेत्रश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ अप्रतिहतबलाप्रतिहतशासन हुं फट् स्वाहा । अस्त्रश्रीपा० ॥ ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य " अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ ." इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतराले प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण दक्षिणावर्तेन च । ॐ अनंताय नमः । अनंतश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ वासुकये नमः । वासुकिश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ तक्षकाय नमः । तक्षकश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ कर्कोटकाय नमः कर्कोटकश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ पद्माय नमः । पद्मश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ महापद्माय नमः । महापद्मश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ शंखपालाय

ॐ कुलिकाय नमः । कुलिकश्रीपा० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ नागान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥
नमः । शंखपालश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ कुलिकाय नमः । कुलिकश्रीपा० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ नागान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इत्या
इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततो भूपुरे इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ एवं कृते मन्त्रः
वरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्करांतं संपूज्य जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं पंचलक्षजपः ॥ तद्दशांशतस्तिलाज्यहोमः ॥ पूजयेन्मातृकापद्मे गरुडं
सिद्धो भवति । सिद्धे च मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च–"पंचलक्षं जपेन्मंत्रं दशांशं जुहुयात्तिलैः ॥ २ ॥ शत्रून्सर्वान्पराभूय
वेदविग्रहम् ॥ १ ॥ एवं सिद्धे मनौ मंत्री नाशयेद्गरलद्वयम् ॥ विष्णुभक्तिपरो नित्यं यो भजेत्पक्षिनायकम् ॥ ३ ॥ इति श्रीगरुडपंचाक्षर
सुखी भोगसमन्वितः ॥ जीवेदनेकवर्षाणि सेवितो धरणीधवैः ॥ कलेवरांते श्रीनाथसायुज्यं लभते तु सः ॥ ३ ॥ इति श्रीगरुडपंचाक्षर
मंत्रप्रयोगः ॥ १ ॥ अथ गरुडमालामंत्रः ॥ (तंत्रसारे) "ॐ नमो भगवते गरुडाय कालाग्निवर्णाय एह्येहि कालानललोलजिह्वाय
पातय २ मोहय २ विद्रावय २ भ्रम २ भ्रामय २ हन २ दह २ पत २ हुं फट् स्वाहा" ॥ अस्य विधानम् ॥ अस्य पुरश्चरणमयुत
जपः । घृताक्तैः कृष्णपुष्पैर्दशांशतो होमः । एवं ध्यानमात्रेण दृष्टो निर्विषो भवेत् । चिरं जीवेत् । तथा च--"विषमालोकनेनैव हन्यान्नाग
कुलोद्भवम् ॥" इति मालामंत्रप्रयोगः ॥ अन्यत्—"ॐ नमो भगवते गरुडाय महेन्द्रपर्वतशिखराकाररूपाय संहारय २ मोचय २
निर्विष २ विषमप्यमृतं चाहारसदृशरूपमिदं ज्ञापयामि स्वाहा" इति मालामंत्रः ॥ अस्य विधानम् ॥ अनेन गरुडमंत्रप्रसादेन मंत्री
गरुडो भूत्वाभिमंत्रितं स्थावरविषं भक्षितमप्यमृतं भवति किममृतान्नपानादिकमिति ॥ अथ गरुडस्तवः ॥ (तंत्रसारे) "सुपर्णं वैनतेयं
च नागारिं नागभीषणम् ॥ जैवातृकं विषारिं च अजितं विश्वरूपिणम् ॥ १ ॥ गरुत्मंतं खगश्रेष्ठं तार्क्ष्यं कश्यपनंदनम् ॥ द्वादशैतानि
नामानि गरुडस्य महात्मनः ॥ २ ॥ यः पठेत्प्रातरुत्थाय स्थाने वा शयनेऽपि वा ॥ विषं नाक्रमते तस्य न च हिंसंति हिंसकाः ॥ ३ ॥
संग्रामे व्यवहारे च विजयस्तस्य जायते ॥ बंधनान्मुक्तिमाप्नोति यात्रायां सिद्धिमेव च ॥ ४ ॥" इति गरुडस्तवः ॥ (हारीतः)

"नर्मदायै नमः प्रातर्नर्मदायै नमो निशि ॥ नमोऽस्तु नर्मदे तुभ्यं त्राहि मां विषसर्पतः ॥ १ ॥ सर्पापसर्प भद्रं ते दूरं गच्छ महाविष ॥ जन्मेजयस्य यज्ञान्ते आस्तीकवचनं स्मर ॥२॥ आस्तीकवचनं श्रुत्वा यः सर्पो न निवर्तते ॥ शतधा भिद्यते मूर्ध्नि शिंशवृक्षफलं यथा॥३॥ एतान्गरुडमंत्रांस्तु निशायां पठते यदि ॥ मुच्यते सर्वबाधाभ्यो नात्र कार्या विचारणा ॥ ४ ॥ " (गोभिलः) " अगस्तिर्माधवश्चैव मुचुकुन्दो महाबलः ॥ कपिलो मुनिरास्तीकः पंचैते सुखशायिनः ॥ १ ॥ " इति गरुडमंत्रप्रयोगः ॥

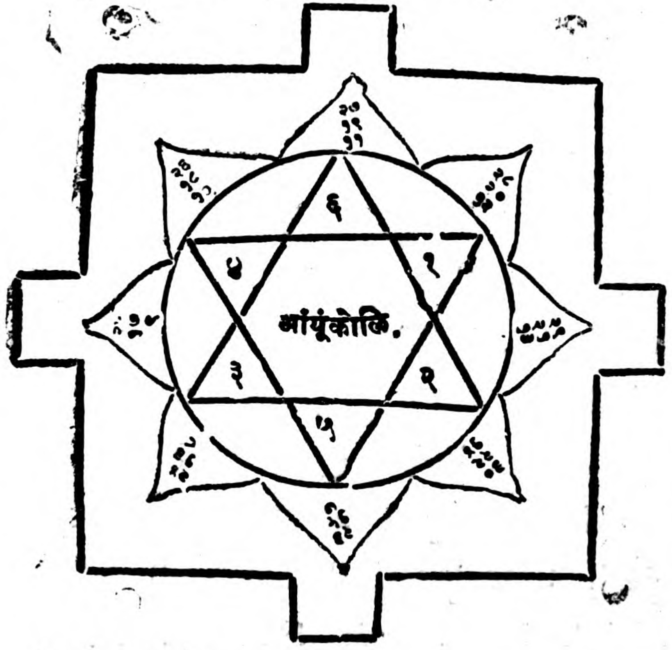
॥ अथ चरणायुधमंत्रप्रयोगः ॥ (मंत्रमहोदधौ) चरणायुधमंत्रस्य विधानमभिधीयते॥ मंत्री यद्विधिना कृत्वा साधयेत्स्वमनोरथान् ॥ मंत्रो यथा—" आं यूं कोलि यूं कोलि वां ह्रीं यूं कोलि यूं कोलि चुवाक्रों " इत्यष्टादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम् ॥ प्रातः कृत्यक्रियश्चंद्रतारादिबलान्विते सुमुहूर्ते शैलाग्रे सरितस्तटे वा वृषशून्ये शंकरमंदिरे वा स्वासने पश्चिमाभिमुखः स्थित्वाचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य मम चरणायुधामुकमंत्रसिद्ध्यर्थं चरणायुधप्रसादार्थं लक्षजपस्तत्तद्दशांशहोमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनरूपपुरश्चरणमहं करिष्ये । इति संकल्प्य भूतशुद्ध्यादिमातृकान्यासांतं कृत्वा प्रयोगोक्तन्यासादिकं कुर्यात् ॥ तद्यथा—अस्य चरणायुधमंत्रस्य महारुद्र ऋषिः । अतिजगती छन्दः । ह्रीं बीजम् । क्रों शक्तिः । चरणायुधो देवता । ममाभीष्टसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः ॥ ॐ महारुद्रऋषये नमः । शिरसि ॥ १ ॥ अतिजगतीछन्दसे नमः । मुखे ॥ २ ॥ ह्रीं बीजाय नमः । गुह्ये ॥ ३ ॥ क्रों शक्तये नमः । पादयोः ॥ ४ ॥ चरणायुधदेवतायै नमः । हृदि ॥ ५ ॥ विनियोगाय नमः । सर्वांगे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ आं यूं कोलि अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ यूं कोलि तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ वां ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ यूं कोलि अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ यूं कोलि कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ चुवाक्रों करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥ आं यूं कोलि हृदयाय नमः ॥ १ ॥ यूं कोलि शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ वां ह्रीं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ यूं कोलि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ यूं कोलि नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ चुवाक्रों अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ॐ आं नमः । मूर्ध्नि ॥ १ ॥ ॐ यूं नमः । भाले ॥ २ ॥ ॐ कों नमः । दक्षिणभ्रुवि ॥ ३ ॥ ॐ लिं

ॐ यूं नमः । दक्षनेत्रे ॥ ५ ॥ ॐ कों नमः । वामनेत्रे ॥ ६ ॥ ॐ लिं नमः दक्षकर्णे ॥ ७ ॥ ॐ वां
नमः । वामभ्रुवि ॥ ४ ॥ ॐ यूं नमः । दक्षनेत्रे ॥ ५ ॥ ॐ कों नमः । वामनेत्रे ॥ ६ ॥ ॐ लिं नमः दक्षकर्णे ॥ ७ ॥ ॐ वां
नमः । वामकर्णे ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं नमः । दक्षनासापुटे ॥ ९ ॥ ॐ यूं नमः । वामनासापुटे ॥ १० ॥ ॐ कों नमः । वक्त्रे ॥ ११ ॥
ॐ लिं नमः । कंठे ॥ १२ ॥ ॐ यूं नमः । कुक्षिद्वये ॥ १३ ॥ ॐ कों नमः । नाभौ ॥ १४ ॥ ॐ लिं नमः । लिंगे ॥ १५ ॥
ॐ चुं नमः । गुदे ॥ १६ ॥ ॐ वां नमः । जानुद्वये ॥ १७ ॥ ॐ क्रों नमः । पादद्वये ॥ १८ ॥ इति मंत्रवर्णन्यासः ॥ इति
न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ ॐ सर्वालंकृतिदीप्तकंठचरणो हेमाभदेहद्युतिः पक्षद्वंद्वविधूननेऽतिकुशलः सर्वामराभ्यर्चितः ॥
गौरीहस्तसरोजगोऽरुणशिखः सर्वार्थसिद्धिप्रदो रक्तं चंचुपुटं दधच्चलपदः पायान्निजान्कुक्कुटान् ॥ १ ॥" इति ध्यात्वा मानसोपचारैः
संपूजयेत् ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले लिंगतोभद्रमंडले वा मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य "ॐ मं मंडूकादिपर
तत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः ॥" इति पीठदेवताः संपूज्य नवपीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तद्यथा—पूर्वादिक्रमेण—ॐ वामायै नमः ॥ १ ॥ ॐ
ज्येष्ठायै नमः ॥ २ ॥ ॐ रौद्र्यै नमः ॥ ३ ॥ ॐ काल्यै नमः ॥ ४ ॥ ॐ कलविकरिण्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ बलविकरिण्यै नमः
॥ ६ ॥ ॐ बलप्रमथिन्यै नमः ॥ ७ ॥ ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः ॥ ८ ॥ मध्ये ॐ मनोन्मन्यै नमः ॥ ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः
स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य "ॐ नमो भग
वते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय चरणायुधाय योगपीठात्मने नमः॥" इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा
पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य कुक्कुटाज्ञां गृहीत्वाऽऽवरणपूजां कुर्यात् ॥ तद्यथा—पुष्पांजलि
मादाय मूलमुच्चार्य "ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः ॥ चरणायुध देह्याज्ञां परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥" इति
पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् । इत्याज्ञां गृहीत्वाऽऽवरणपूजामारभेत । तद्यथा—षट्कोणकेसरेषु
आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च । "ॐ आं यूं कोलि हृदयाय नमः । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र ॥ १ ॥

ॐ यूं कोलि शिरसे स्वाहा[1]। शिरःश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ वां ह्रीं शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ यूं कोलि कवचाय हुम् । कवचश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ यूं कोलि नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ चुवा क्रों अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ॥ ६ ॥

इति षडंगानि पूजयेत् । ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य "ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ " इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतराले प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण । ॐ शंकराय नमः ॥ शंकरश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ गौर्यै नमः । गौरीश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ गणपतये नमः । गणपतिश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ कार्तिकेयाय नमः ॥ कार्तिकेयश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ मंदाराय नमः । मंदारश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ पारिजाताय नमः । पारिजातश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ मयूराय नमः मयूरश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ बर्हिणे नमः । बर्हिश्रीपा० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥२॥ दलाग्रेषु इन्द्राद्यष्टलोकपालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादि नमस्कारांतं संपूज्य बलिं दद्यात् ॥ तद्यथा—दधिदुग्धमधुकर्पूरसितातांबूलमिश्रितं

अथ चरणायुधपूजनयन्त्रम्.



पायसेन पिंडं कृत्वा गंधाक्षतपुष्पैः संपूज्य दीपं निधाय "ॐ यूँ क्षं ह्रीं कुक्कुट कुक्कुट एह्येहि इमं बलिं गृह्ण २ गृह्णापय सर्वान्कामा

[1] महाकायेतिति पाठः ।

ध्येहि यं कुं हीं यूं नमः कुक्कुटाय" इति मंत्रेण निवेदयेत् ॥ इति बलिं दत्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य पुनर्ध्यात्वा जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुर
रणं लक्षं जपः । तिलाज्येन दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् । एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे
च मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च-"एवं ध्यात्वा समासीनः शैलाग्रे सरितस्तटे ॥ वृषशून्ये पश्चिमास्थे यद्वा शंकरसद्मनि ॥१॥
शैवे पीठे यजेत्ताम्रचूडं गौरीकरस्थितम् ॥ लक्षं जपेद्दशांशेन तिलैर्हवनमाचरेत् ॥२॥ एवं कृते प्रयोगार्हो जायते मंत्रनायकः ॥ प्रयोगादौ
प्रजप्योऽसौ[1]वयुतं द्विशताधिकम् ॥ ३ ॥ दध्ना क्षीरेण मधुना चन्द्रेण सितयान्वितैः ॥ दद्याद्बलिं सतांबूलैः पायसैर्बलिमंत्रतः ॥ ४ ॥
भोजनादौ भोजनांते लक्ष्मीसंप्राप्तये सुधीः ॥ बलिमेतं प्रदायाथ कुर्वे रोधननाथताम् ॥ शांतौ पुष्टावपि बलिमेतमेव प्रदापयेत् ॥ ५ ॥
"अन्नराजैस्त्रिमधुरोपेतैर्दद्याद् बलिं निशि ॥ वशयेदखिलं विश्वं त्रिदिनं चौ[1]दनैर्नृपः ॥ ६ ॥ " अन्यत्--" दुग्धमिश्रितगोधूमपिष्टैः
कुर्यादपूपकम् ॥ आज्यकर्पूरयुक्तेन तेन दद्याद्बलिं निशि ॥ त्र्यहमेवं बलौ दत्ते सुखी स्याद्वशयेज्जगत् ॥ ७ ॥" अन्यत्—"करवीरैर्बिल्व
पत्रैः पीतपुष्पैः सुगंधिभिः ॥ सहस्रसंख्यैः प्रत्येकं पूजयित्वा जपेन्मनुम् ॥ ८ ॥ सहस्रं निशि सप्ताहं यमुद्दिश्य जनं सुधीः ॥ स याति
दासतां तस्य मनोवचनकर्मभिः ॥ ९ ॥ " अन्यत्—"छागलावकयोर्मांसैः सप्ताहं वितरेद्बलिम् ॥ सहस्रं प्रत्यहं जप्त्वा वशयेदखिलं
जगत् ॥ १० ॥ नृपोत्थिते सपत्नोत्थे भये जाते च संकटे ॥ आपद्यपि तथान्यस्यां बलिं दद्यात् सुखाप्तये ॥ गोपनीयो विधिरयं बलेः
कथ्यो न दुर्मतौ ॥ ११ ॥ " अन्यत्—"मुक्तकेश उदावक्त्रो जपेद्गानुसहस्रकम् ॥ प्रत्यहं [2]वसुघस्रांतं यमुद्दिश्याधिया[3]मिनि ॥
तमाकर्षति दूरस्थमपि किं निकटास्थितम् ॥ १२ ॥ " अन्यत्--"जातीफलैलाः संचूर्ण्य कर्पूरं मध्यतः क्षिपेत् ॥ अभिमंत्र्यार्कसाहस्रं
सिंदूररजसा युतम् ॥१३॥ उष्णीकृत्याग्नितापेन क्लेदयेद्गाङ्ग[4]पाथसा ॥ स्थापयेदायसे[5] पात्रे तत्पृष्ठं स्तंभितो भवेत् ॥१४॥ "अन्यत्–"कर्मार[6]

१ ओदनैस्त्रिदिनं बलिं दत्वा नृपं वशयेत् ॥ २ वसुघस्रांतमष्टदिनपर्यंतम् ॥ ३ अधियामिनि रात्रौ ॥ ४ गांगपाथः गंगाजलम् ॥ ५ आयसे पात्रे लोहपात्रे ॥ ६ कमारेति लोहकार गृहाद्वह्निमानीय लोहपात्रे संस्थाप्य करवीरकाष्ठैः संदीप्य तत्र सर्षपतैलाक्तानि विषचूर्णयुतानि धत्तूरबीजानि शतं शतं सप्ताहं हुत्वा शत्रुमुच्चाटयेत् । एवं पक्षं कृत्वा देशांतरं नयेत् । मासं कृत्वा मारयेत् ॥

सदनाद्वह्निमानीयायसभाजने ॥ स्थापयित्वेंधयेत्काष्ठैः करवीरसमुद्भवैः ॥ १५ ॥ जुहुयात्तत्र धत्तूरबीजानि शतसंख्यया ॥ सिद्धार्थ तैललिप्तानि विषकर्णयुतानि च ॥ १६ ॥ सप्ताहमेवं कृत्वारिं स्थानादुच्चाटयेद्ध्रुवम् ॥ पक्षं देशांतरगतं मासं संप्रापयेन्मृतिम् ॥ १७ ॥" अन्यत्—"तालपत्रं नराकारं कृत्वात्र स्थापयेदसून् ॥ जपेदष्टसहस्रं तत्तीक्ष्णतैलविलेपितम् ॥ १८ ॥ तस्य खंडानि पंचाशत् कृत्वा पितृवनोत्थिते ॥ उन्मत्ततरुसंदीप्ते जुहुयाज्जातवेदसि ॥१९॥ एवं प्रकुर्वंस्त्रिदिनं मारयेन्मोहयेदरिम्" ॥ "अन्यत्–साध्यर्क्षतरुकाष्ठेन कृत्वा पुत्तलिकां शुभाम् ॥ तस्यामसून्प्रतिष्ठाप्य सहस्रं प्रजपेन्मनुम् ॥२०॥ चिताकाष्ठस्य कीलेन तां स्पृष्ट्वा पितृकानने ॥ छिंद्याद्यदंगं शस्त्रेण तदंगं तस्य नश्यति ॥२१॥" अन्यत्—"वैरिमूत्रयुतां मृत्स्नां तत्पादरजसा सह ॥ कुलालमृद्युतां कृत्वा पुत्तलीं रचयेत्तया ॥२२॥ तस्यां हृदि पदे मूर्ध्नि नामकर्मान्वितं मनुम् ॥ लिखेच्छ्मशानजांगारैरसून्संस्थापयेत्ततः ॥ २३ ॥ जप्त्वा सहस्रं मंत्रेण तीक्ष्णतैलविलेपिताम् ॥ शस्त्रेण शतधा कृत्वा जुहुयात्पितृभूवसौ ॥ २४ ॥ विभीतकाष्ठसंदीप्ते यमाशावदनो निशि ॥ शत्रोर्निधनतारायां कृत्वैवं मारयेदरिम् ॥२५॥" अन्यत्—"निर्धाय गोमयं भूमौ प्रकुर्यात्प्रतिमां रिपोः ॥ तालपत्रे समालिख्य मनुं नाम्ना विदर्भितम् ॥२६॥ तत्पत्रं निक्षिपेत्तस्या हृदि तत्प्रतिमोपरि ॥ मृज्जं वा दारुजं कुंभं गोमयोदकपूरितम् ॥ २७ ॥ मनूनामयुतं ताडपत्रेणाद्यं निधापयेत् ॥ तदसून्स्थापयेत्कुंभे

१ तालेति–नराकारं तालपत्रं कृत्वा रात्रौ शत्रोः प्राणान् संस्थाप्य भल्लातकतैलेन विलिप्य अष्टाधिकं सहस्रमभिमंत्र्य तस्य पञ्चाशत्खण्डानि कृत्वा धत्तूरकाष्ठदीप्ते श्मशानाग्नौ त्रिदिनं हुत्वारिं मारयेन्मोहयेच्च ॥ २ साध्येति–नक्षत्रवृक्षा उक्ताः तेन शत्रुपुत्तलिकां कृत्वा रात्रौ शत्रोः प्राणान्संस्थाप्य सहस्रमभिमंत्र्य चिताकाष्ठकीलेन तां पुत्तलीं स्पृष्ट्वा सहस्रं जपेत् । तस्याः प्रतिमायाः श्मशाने यदंगं शस्त्रेण छिंद्यात्तदंगं तस्य शत्रोर्नश्यति ॥ ३ वैरिमूत्रमृदं तस्य पादरजश्चान्वितामेकीकृत्य कुलालमृत्तिकायां निःक्षिप्य वैरिपुत्तलिकां कृत्वा तां श्मशानांगारैः अमुकस्यामुककर्म कुरुकुरु इति मन्त्रांते संयोज्य हृदि पदे मूर्ध्नि मंत्रं लिखेत् ॥ तत्र शत्रोः प्राणान्संस्थाप्य भल्लातकतैलेन विलिप्य सहस्रमन्त्रैरभिमन्त्र्य शतखण्डं कृत्वा विभीतककाष्ठदीप्ते श्मशानाग्नौ दक्षिणाभिमुखः निधनताराजन्मनक्षत्रात्सप्तमनक्षत्रं षोडश पञ्चविंश च रात्रौ हुत्वारिं मारयेत् ॥ ४ गोमयेन शत्रोः प्रतिमां कृत्वा नामविदर्भितमन्त्रं तालपत्रे विलिख्य तत्तालपत्रं गोमयप्रतिमाहृदि निःक्षिप्य प्रतिमोपरि रूप्यताम्रमृदादिजान्यतमनिर्मितं घटं संस्थाप्य गोमयोदकाम्भसामापूर्य तत्रापि नामविदर्भितमंत्रलेखयुतं तालपत्रं निःक्षिप्य तत्र कलशे शत्रोः प्राणस्थापनं कृत्वा प्रत्यहं त्रिसंध्यं शतं मंत्रं कुंभं स्पृष्ट्वा जपेत् ॥ यावत् शत्रोः प्रतिबिंबं घटे दृश्यते तावत्कालं जपेत् । घटोदके शत्रुप्रतिबिंबे दृष्टे घटाधःस्था या गोमयप्रतिमा तस्याः यदंगं छिद्यते तद्रिपोर्नश्यति । हृदि गलेच छिन्ने तन्मृतिः । प्रतिमामूर्ध्नि कण्टकैर्विद्धे शिरोरोगः । हृदि विद्धे मनः पीडा । पादयुग्मे कंटकविद्धे पादरोगः [illegible]

त्रिसंध्यं प्रजपेन्मनुम् ॥ २८ ॥ प्रत्यहं शतसंख्याकं छायां यावज्जवेद्रिपोः ॥ गोमयांभासि दृष्टायां तच्छायायां तु साधकः ॥ २९ ॥ अथ स्थायाः प्रतिकृतेरिच्छयादंगभीप्सितम् ॥ शलेण तस्य नाशाय मृतये हृदयं गलम् ॥ ३० ॥ प्रविद्धे कंटकैर्मूर्ध्नि शिरोरोगो भवेद्रिपोः ॥ आभयो हृदये विद्धे पदोः पादव्यथा भवेत् ॥३१॥ " अन्यत्—"दारुणा कुक्कुटं कृत्वा तत्रास्य स्थापयेदसून् ॥ तं स्पृष्ट्वा पूर्ववद्धयात्वा जपेद्रविसहस्रकम् ॥ ३२ ॥ उपचारैः समभ्यर्च्य छादयेद्रक्तवाससा ॥ रथे संस्थाप्य तं देवं दिक्षु योधान्निधापयेत् ॥ ३३ ॥ चतुरो वर्मसंवीतानश्वारूढानुदायुधान् ॥ तत्संयुतो रणे गच्छेज्जेतुं बलवतो रिपून् ॥ ३४ ॥ वीराढ्यं कुक्कुटं दृष्ट्वा पलायंते रणेऽरयः ॥ भीता दश दिशः सर्वे हर्य्यक्षं करिणो यथा ॥ ३५ ॥" अन्यत्—"ताम्रचूडस्य मंत्रेण मोदकाद्यभिमंत्रितम् ॥ यस्मै ददीत भक्षाय स वशो मंत्रिणो भवेत् ॥ ३६ ॥"--अन्यत् "अष्टोत्तरशतं जप्त्वा रोचनाचन्दनादिभिः ॥ विदधत्तिलकं भाले दर्शनाद्वशयेज्जनान् ॥ ३७ ॥" इति श्रीचरणायुधस्य (ताम्रचूडकुक्कुटस्य वा) मंत्रप्रयोगः ॥ अथ पक्षिराजघूकतंत्रप्रारंभः ॥ चतुर्दश्यामभायां वा रविवारो भवेद्यदि ॥ गृहीत्वा पक्षिराजं चोदरं तस्य विदार्य च ॥ १ ॥ विष्ठा तस्य बहिष्कृत्य नग्नो भूत्वा श्मशानके ॥ प्रज्वाल्य नृकपाले तु तत्पात्राद्धृतकज्जलम् ॥२॥ गुग्गुलं धूपयेत्तस्य मंत्रेण चाभिमंत्रयेत् ॥ अष्टोत्तरशतं वारं तदा सिद्धो भवेद्ध्रुवम् ॥३॥ कज्जलं तेन संग्राह्य ताम्रयंत्रेण वेष्टिता॥ गुटिका मुखमध्यस्था ख्याताऽदृश्यत्वकारिणी॥४॥कज्जलेनाञ्जयेन्नेत्रे तदा पश्यति देवताम् ॥ भूतप्रेतपिशाचादियक्षैश्च सह योगिनीः ॥५॥ नेत्रे प्रक्षाल्य गोमूत्रैर्मानुषीदृक् प्रजायते ॥ योगद्वयेन कथिता मंत्रमेकं वदामि ते॥६॥ तत्र मंत्रः—"ॐ कुरुकुरु स्वाहा मेहमरीअनेनधनेयः पाठेश्वरनिमः ॥" उक्तयोगानामयं मंत्रः ॥ " उलूकमज्जातैलेन कज्जलं पारयेन्नरः ॥ तेनांजनेन संयुक्तो ह्यदृश्यो भवति ध्रुवम् ॥ ७ ॥ घूकनेत्रं गृहीत्वा तु तैलेन सह घर्षयेत्॥श्मशाने कज्जलं पार्य नेत्रे तेनांजयेत्ततः॥८॥अदृश्यो भवति क्षिप्रं देवैरपि न दृश्यते॥ काकोलूकस्य पिच्छानि आत्मकेशास्तथैव च॥९॥ अंतर्धूमगतान् दग्ध्वा सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत् ॥ अंकोलतैलगुटिकां कृत्वा शिरसि धारयेत् ॥ १० ॥

१ चन्दनादिभिरित्यादिशब्दात्कुंकुमकस्तूरीकर्पूरगजमदा ग्राह्याः ॥

अदृश्यो जायते क्षिप्रं देवानामपि दुर्लभम् ॥ काकोलूकस्य नीलस्य ग्राह्ये एतेषु लोचने ॥ ११ ॥ तल्लोहेनांजयेच्चक्षुरदृश्यो भवति ध्रुवम् ॥ नेत्रे प्रक्षाल्य गोमूत्रैर्मानुषी दृक् प्रजायते ॥ १२ ॥ उलूकस्य श्रृगालस्य सूकरस्याक्षिरक्तकम् ॥ नीलांजनयुतं पिष्ट्वा दग्ध्वा श्रावपुटे दहेत् ॥१३॥ तेनांजितो नरोऽदृश्यो जायते नात्र संशयः ॥ सर्वयोगेन वै मंत्रं कथयामि श्रृणु प्रिये ॥१४॥ तत्र मंत्रः ॥ ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय नमो रुद्राय हिलि २ चिलि २ व्याघ्रचर्मपरिधानाय मरुल २ कुरु २ चंडप्रचण्ड किलिकिलि स्वाहा" उक्तयोगानामयं मंत्रः॥अन्यत्—रविदिने घूकमांसं रक्तचंदनकुंकुमैः ॥ सह पिष्ट्वा वर्टी कृत्वा टंकमानं तदा बुधैः ॥१५॥ धूपो देयो गुग्गुलोश्च मंत्रात्समभिमंत्रयत् ॥ तांबूले दीयते यस्यै सा वश्या भवति ध्रुवम् ॥ १६ ॥ घूकतालुं च तांबूले धृत्वा नारीं प्रदापयेत् ॥ वश्या भवति सा नारी प्राणैरपि धनैरपि ॥ १७ ॥ घूकतुंडं गृहीत्वा तु नागकेसरकेसरैः ॥ गोरोचनेन संयुक्तं मंत्रात्समभिमंत्रयेत् ॥ १८ ॥ अष्टोत्तरशतं वारं तिलकं क्रियते नरैः ॥ तस्य दर्शनमात्रेण वश्या भवति निश्चितम् ॥ १९ ॥ घूकजिह्वां निंबपत्रैरेकीकृत्य प्रपेषयेत् ॥ नेत्रांजनेन वै पश्येत्सर्वे वश्या भवंति हि ॥२०॥ घूकनेत्रं गृहीत्वा तु बिडालीनेत्रसंयुतम् ॥ वत्सनागसमायुक्तं नागकेशरकेशकैः ॥ २१ ॥ रससर्षपयोगेन समभागेन पेषयेत् ॥ श्मशाने गर्तकुंडे तु स्थापयेद्दिनसप्तकम् ॥ २२ ॥ ततो निष्कास्य यस्या वै शिरसि प्रक्षिपेद्बुधः ॥ विनाह्वानप्रसंगेन साऽऽयाति निश्चितं प्रिया ॥ २३ ॥ पूर्वोक्तसर्वद्रव्यैश्च नांदनवनकपासकैः ॥ वर्तिं कृत्वा प्रयत्नेन एकवर्णिक गोघृतम् ॥ २४ ॥ मृत्पात्रे तद्विनिःक्षिप्य मघायां रविवासरे ॥ अर्द्धरात्रे भवेन्नग्नः श्मशाने विजितेन्द्रियः ॥ २५ ॥ श्लोटुखर्पर पात्रेण ह्यथ नरकपालके ॥ कज्जलं पारयेद्यत्नान्मंत्रेण चाभिमंत्रयेत् ॥ २६ ॥ अष्टोत्तरशतं वारं गुग्गुलुं धूपयेत्ततः ॥ सिद्धो भवति सर्वत्र काम्यकर्मणि योजयेत् ॥२७॥ योषिद्वस्त्रे कज्जलेन रेखामेकां तु कारयेत् ॥ वश्याऽऽयाति तथा नारी यथाब्धौ सरिदागमः ॥ २८ ॥ घूकविष्ठां गृहीत्वा तु काकविष्ठासमायुताम् ॥ यस्या मूर्ध्नि क्षिपेच्चूर्णं वश्या भवति निश्चितम्॥२९॥उलूकहृदयं मांसं गोरोचनसमन्वितम्॥ अष्टाविंशतिवारं च मंत्रेणैवाभिमंत्रयेत् ॥ ३० ॥ अंजनंचांजयेन्नेत्रे दृष्टिमात्रेण वश्यताम् ॥ योगसिद्धिकरं मंत्रं कथयामि श्रृणु प्रिये

१ विना बुलाये ॥ २ काचा ठीकरा ॥

॥ ३१ ॥ तत्र मंत्रः ॥ " ॐ नमो महापंखेश अमुकं मे वशे कुरु कुरु स्वाहा ॥ " उक्तयोगानामयं मंत्रः ॥ अन्यत्--" एकहस्ते काकपक्षे घूकपक्षे परे करे ॥ मंत्रयित्वा मेलयित्वा कुशसूत्रेण बंधयेत् ॥ ३२ ॥ अंजलिभिर्जलेनैव तर्पयेद्धस्तपक्षके ॥ एवं सप्तदिनं कुर्यादष्टोत्तरशतं जपेत् ॥३३॥ विद्वेषं कुरुते यस्य भवेत्तस्य हि नान्यथा ॥ उक्तयोगमिमं मंत्रं शृणु यत्नेन वै पुनः ॥३४॥" तत्र मंत्रः ॥ " ॐ नमो महापंखेश अमुकस्य अमुकेन सह विद्वेषं कुरु कुरु स्वाहा॥" उक्तयोगानामयं मंत्रः ॥ अष्टोत्तरशतजपात्सिद्धिः॥३५॥अन्यत्--घूकपक्षे कुजे वारे यद्गृहे निखनेन्नरः॥ उच्चाटनं भवेत्तस्य विना मंत्रेण सिध्यति ॥ ३६ ॥ घूकविष्ठां गृहीत्वा तु सिद्धार्थैः सह मानवः ॥ यस्यांगे निक्षिपेच्चूर्णं सद्य उच्चाटनं भवेत् ॥ ३७ ॥ काकोलूकस्य पक्षं तु हुत्वा चाष्टाधिकं शतम् ॥ यन्नाम्ना मंत्रयोगेन ह्यवश्योच्चाटनं भवेत् ॥ ३८ ॥ पक्षिराजशिरश्चूर्णं रिपोश्च मस्तके क्षिपेत् ॥ मंत्रयोगेन वै तं स शीघ्रमुच्चाटयेद्ध्रुवम् ॥ ३९ ॥ घूकदंष्ट्रां निंबुकाष्ठं बिडालीनखचर्मणी ॥ धत्तूराम्बु श्मशानास्थि ह्यरिगेहे विनिःक्षिपेत् ॥ ॥ ४० ॥ उच्चाटनं भवेत्तस्य सिद्धियोग उदाहृतः ॥ उक्तयोगमिमं मंत्रं शृणु यत्नेन वै पुनः ॥ ४१ ॥ तत्र मंत्रः ॥ "ॐ नमो महापंखेश अमुक सपुत्रबांधवैः सह हनहन दहदह पचपच शीघ्रमुच्चाटयोच्चाटय हुं फट् स्वाहा ठः ठः ॥ " उक्तयोगानामयं मंत्रः ॥ अष्टोत्तरशतजपैः सिद्धिः॥ अन्यत्--" घूकविष्ठां गृहीत्वा तु विषचूर्णसमन्विताम् ॥ यस्यांगे निःक्षिपेच्चूर्णं सद्यो याति यमालयम् ॥ ४२ ॥ तत्र मंत्रः "ॐ नमो महापंखेश कालरूपाय अमुकं भस्मीकुरुकुरु स्वाहा ॥ " उक्तयोगानामयं मंत्रः ॥ अष्टोत्तरशतजपैः सिद्धिः ॥ अन्यत्--" उलूकस्य कर्पेर्वापि तांबूले यस्य दापयेत् ॥ विष्ठां प्रयत्नतस्तस्य बुद्धिस्तंभः प्रजायते ॥ ४३ ॥ " ॐ नमो महापंखेश बुद्धिस्तंभनं कुरुकुरु स्वाहा ॥ " उक्तयोगानामयं मंत्रः ॥ अष्टोत्तरशतजपैः सिद्धिः ॥ अन्यत्--"घूकविष्ठां गृहीत्वा त्वैरंडतैलेन पेषयेत् ॥ यस्यांगे निःक्षिपेद्विंदुं विक्षिप्तो जायते नरः ॥ ४४ ॥ तत्र मंत्रः ॥ "ॐ नमो महापंखेश विक्षिप्तं कुरुकुरु स्वाहा ॥ " उक्तयोगानामयं मंत्रः ॥ अष्टोत्तरशतजपैः सिद्धिः ॥ अन्यत्--"उलूकहृदयं मांसं मंत्रेण चाभिमंत्रयेत् ॥ गुग्गुलुं धूपयेत्तस्य शयानस्य हृदि क्षिपेत् ॥ ४५ ॥ मानसं वक्ति वृत्तान्तं यत्किंचिद्वर्तते हृदि ॥ यस्मै कस्मै न दातव्यं सिद्धियोग उदाहृतः ॥ ४६ ॥ तत्र मंत्रः ॥ "ॐ नमो महापंखेश स्वप्नावस्थायां मनोभिलषितं कथय स्वाहा " उक्तयोगानामयं मंत्रः ॥

अष्टोत्तरशतजपैः सिद्धिः ॥ अन्यत्--आषाढे कृष्णपक्षे च चतुर्दश्यां शुभे दिने ॥ उलूकस्य कपाले तु धत्तूरं च मृदा सह ॥ ४७ ॥ दत्त्वा च वीजयेत्कूपं निखनेद्भूमिमंडले ॥ भैरवं च पुनर्ध्यात्वा जलोच्छिष्टेन सिंचयेत् ॥ ४८ ॥ दीपं प्रज्वालयेन्नित्यं घृतेन सह साधकः यावत्संभवति वृक्षस्तावत्कालं यथाविधि ॥ ४९ ॥ फलपुष्पत्वचामूलं पिष्ट्वा तु तिलकं यदि ॥ इन्द्ररूपं भवेत्तस्य सहस्रनयनैर्युतम् ॥ ५० ॥ तत्र मंत्रः ॥ "ॐ नमो महापंखेश सहस्राक्षिरूपं कुरुकुरु स्वाहा" उक्तयोगानामयं मंत्रः ॥ अष्टोत्तरशतजपैः सिद्धिः ॥ अन्यत्--पक्षिराजशिखायुक्तं हरितालं मनःशिला ॥ वटीं कृत्वा प्रयत्नेन मंत्रेण चाभिमंत्रयेत् ॥ ५१ ॥ अष्टोत्तरशतवारंसिद्धो भवति तां वटीम् ॥ अंजयेन्नेत्रयुगले रात्रौ पठति पुस्तकम् ॥ ५२ ॥ उलूकस्य कपालेन घृतेन सह कज्जलम् ॥ तेन नेत्रांजनं कृत्वा रात्रौ पठति पुस्तकम् ॥ ५३ ॥ तत्र मंत्रः ॥ ॐ नमो महापंखेश रात्रौरात्रौ दर्शय स्वाहा ॥" उक्तयोगानामयं मंत्रः ॥ अष्टोत्तरशतजपै सिद्धिः ॥ अन्यत्--"उलूकचक्षुरादाय कुंकुमं रोचनं शशी ॥ समांसं मधुना पिष्ट्वा अंजनं भूनिधिं दिशेत् ॥ ५४ ॥ तत्र मंत्रः ॥ "ॐ नमो महापंखेश भूनिधिं दर्शय २ ठःठः स्वाहा ॥" उक्तयोगानामयं मंत्रः ॥ अष्टोत्तरशतजपैः सिद्धिः ॥ अन्यत्--"औलूकं दक्षिणं पक्षं सितसूत्रेण वेष्टयेत् ॥ बन्धयेद्वामकर्णे तु हरत्यैकाहिकं ज्वरम् ॥ ५५ ॥ घूकपक्षं गुग्गुलुं च कृष्णवस्त्रेण वेष्टयेत् ॥ वर्तिं कृत्वा प्रयत्नेन घृतेन सह कज्जलम् ॥ ५६ ॥ चातुर्थिकज्वरशांतिरंजनेन कृतेन वै ॥ महाश्चर्यमिदं ज्ञेयं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ५७ ॥ घूकविष्ठां गृहीत्वा तु गुंजामात्रेण वै नरः ॥ ताम्बूले भक्षिता सा तु सर्वज्वरविनाशकृत् ॥ ५८ ॥ तत्र मंत्रः ॥ ॐ नमो महापंखेश ज्वरं नाशयनाशय स्वाहा ॥" उक्तयोगानामयं मंत्रः ॥ अष्टोत्तरशतजपैः सिद्धिः ॥ अन्यत्--"घूकमांसं गृहीत्वा तु च्छायाशुष्कं तु तु कारयेत् ॥ धूपं दत्त्वा प्रयत्नेन भूतबाधा विनश्यति ॥ ५९ ॥ तत्र मंत्रः ॥ " ॐ नमो महापंखेश भूतबाधां नाशयनाशय स्वाहा ॥" उक्तयोगानामयं मंत्रः ॥ अष्टोत्तरशतजपैरस्य सिद्धिः ॥ इति भूतबाधामंत्रप्रयोगः ॥ अथ संतानोपायः ॥ अरुण उवाच ॥ वृथा धनं गृहं धान्यमपुत्रजन्म निष्फलम् ॥ ममोपरि दयां कृत्वा प्रायश्चित्तं वदस्व मे ॥ १ ॥ श्रीसूर्य उवाच ॥ विप्रद्रव्यापहारी यः सोऽनपत्यः प्रजायते ॥ तेन कार्यं विशुद्ध्यर्थं महारुद्रजपादिकम् ॥ २ ॥

[illegible] ॥ एकेनापि हि वस्त्रेण दंपतीस्नानमुत्तमम्॥३॥ श्रवणं हरिवंशस्य ब्राह्मणोद्वाहनं खग ॥ अष्टोत्तरशतान् विप्रान् मिष्टान्नेन तु तर्पयेत् ॥ ४ ॥ ईशान इति मंत्रेण जपं कुर्यात्सहस्रकम् ॥ दशांशहोमसंयुक्तं कुर्याच्च विधिवत्ततः ॥ ५ ॥ पद्मैस्तु लक्षसंख्याकैः शिवं संपूज्य यत्नतः ॥ स्वर्णधेनुः प्रदातव्या सवत्सा सुरभिस्तथा ॥ ६ ॥ घृतकुंभं वैनतेय ब्राह्मणाय निवेदयेत्॥ एवं कृतेन वै तस्य ह्यपत्यं जायते सुता ॥ ७ ॥ (गारुडेऽपि) हरिवंशकथां श्रुत्वा शतचण्डीविधानतः ॥ भक्त्या श्रीशिवमाराध्य पुत्रमुत्पादयेत्सुधीः ॥ ८ ॥ (महार्णवेऽपि) सौवर्णं बालकं कृत्वा दद्याद्दोलासमन्वितम् ॥ अथवा वृषभं दद्याद्विप्रोद्वाहनमेव वा ॥ महारुद्रजपो वापि लक्षपद्मैः शिवार्चनम् ॥ ९ ॥ अथ मृतपुत्रत्वहरोपायः ॥ बालघाती च पुरुषो मृतवत्सः प्रजायते ॥ ब्राह्मणोद्वाहनं चैव कर्तव्यं तेन शुद्ध्यति ॥ १० ॥ श्रवणं हरिवंशस्य कर्तव्यं च यथाविधि ॥ महारुद्रजपं चैव कारयेच्च यथाविधि ॥ ११ ॥ जुहुयाच्च शतांशेन दूर्वा आज्यपरिप्लुताः ॥ एकादश स्वर्णनिष्काः प्रदातव्या च दक्षिणा ॥ १२ ॥ एकादश पशूंश्चैव दद्याद्वित्तानुसारतः ॥ अन्येभ्योऽपि यथाशक्ति द्विजेभ्यो दक्षिणां दिशेत्॥१३॥ स्नापयेद्दम्पती पश्चान्मंत्रैर्वरुणदैवतैः॥आचार्याय प्रदेयानि वस्त्रालंकरणानि च ॥ १४ ॥

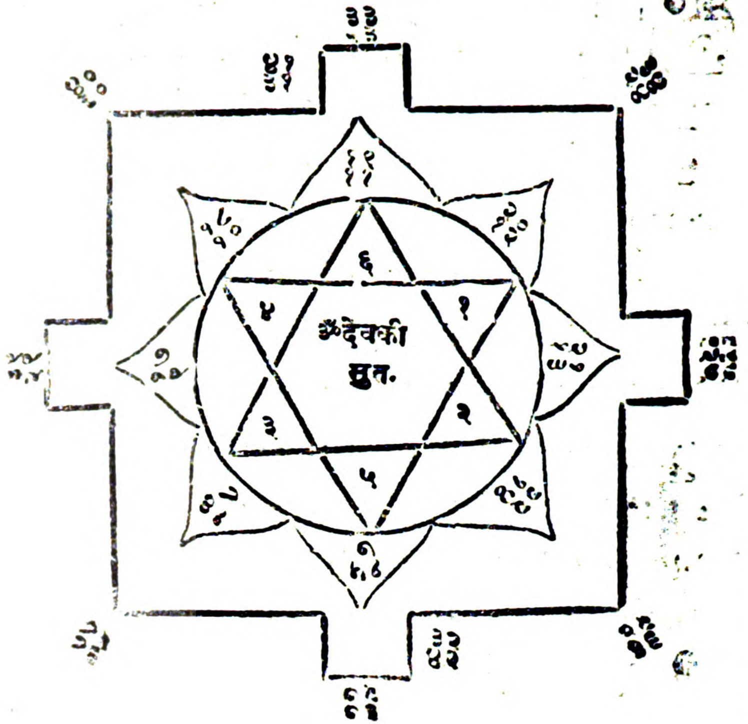
तत्रादौ हरिवंशश्रवणविधानम् ॥ (कौस्तुभे) दंपत्योरनुकूले सुदिने कृतनित्यक्रियः देवालयादिपुण्यस्थले स्वगृहे वा स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ स्मृत्वा अनेकजन्मार्जितानपत्यत्वमृतापत्यत्वादिनिदानभूतबालघातनिक्षेपहरणविप्ररत्नापहरणादिदुरितसमूलनाशद्वारा दीर्घायुर्बहुपुत्रादिसंततिप्राप्तिकामो हरिवंशं श्रोष्यामि । तदंगत्वेन गणपतिपूजनं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नांदीश्राद्धं च करिष्ये इति संकल्प्य गणपतिपूजनादिनांदीश्राद्धांतं सर्वं कुर्यात् ॥ ततो विभवानुसारेण श्रुताध्ययनसंपन्नं ब्राह्मणमासने उदङ्मुखमुपवेश्य स्वयं प्राङ्मुख उपविश्य पादप्रक्षालनं कृत्वा गंधादिभिः संपूजयेत् ॥ ततो वरणद्रव्याणि गृहीत्वा देशकालौ संकीर्त्य दीर्घायुष्वत्पुत्रकामनयाऽमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिर्गंधपुष्पस्वर्णमुद्रिकासनकमंडलुतांबूलवासोभिर्हरिवंशश्रवणार्थं श्रावयितारं त्वामहं वृणे ॥ इति वृत्वा 'ॐ वृतोऽस्मि' इति प्रतिवचनानंतरं वस्त्रालंकारैः संपूज्य पुस्तकं दद्यात् ॥ ततः आचार्यः प्रतिदिनं पुस्तकं संपूज्य नारायणं नमस्कृत्यानंतरं स्वगुरून्प्रणम्य स्पष्टपदाक्षरं वाचयेत् ॥ दंपती प्रतिदिनं "ॐ देवकीसुत गोविंद वासुदेव जगत्पते॥

देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥ १ ॥" इति मंत्रजपपूर्वकमेकचित्तौ श्रवणं कुर्याताम्॥तैलतांबूलक्षौरमैथुनखट्वाशयनानि यावत्समाप्ति वर्जयंतौ हविष्यं भुंजीयाताम् ॥ वाचकमपि प्रत्यहं पायसादिना भोजयेत् ॥ ग्रंथसमाप्तौ वाचकाय स्वलंकृतां पयस्विनीं सवत्सां स्वर्णशृंगीं रौप्यखुरां ताम्रपृष्ठीं कांस्यपित्तलदोहिनीं वस्त्रयुतां स्वर्णभूषणादिदक्षिणां च दत्त्वा परितोष्य न्यूनं संपूर्णं वाचयित्वा शतं विप्रांश्चतुर्विंशतिमिथुनानि च पायसान्नेन भोजयेत् ॥ एवं कृते पुत्रो भवति न संदेहः ॥ इति हरिवंशश्रवणविधानम् ॥ १ ॥ अथ संतानगोपालमंत्रप्रयोगः ॥ (मंत्रमहोदधौ) मंत्रो यथा—"ॐ देवकीसुत गोविंद वासुदेव जगत्पते । देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥ १ ॥ इत्यानुष्टुभो मंत्रः । अस्य विधानम् ॥ अस्य गोपालमंत्रस्य नारद ऋषिः । अनुष्टुप् छंदः । कृष्णो देवता । मम पुत्र कामनार्थं जपे विनियोगः । ॐ नारदऋषये नमः शिरसि १ अनुष्टुप्छंदसे नमः मुखे २ कृष्णदेवतायै नमः हृदि ३ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ देवकीसुत हृदयाय नमः १ गोविंद तर्जनीभ्यां नमः २ वासुदेव मध्यमाभ्यां नमः ३ जगत्पते अनामिकाभ्यां नमः ४ देहि मे तनयं कृष्ण कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ त्वामहं शरणं गतः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ इति करन्यासः ॥ ॐ देवकीसुत हृदयाय नमः १ गोविंद शिरसे स्वाहा २ वासुदेव शिखायै वषट् ३ जगत्पते कवचाय हुम् ४ देहि मे तनयं कृष्ण नेत्रत्रयाय वौषट् ५ त्वामहं शरणं गतः अस्त्राय फट् ६ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ [1]ध्यानम् । ॐ विजयेन युतो रथस्थितः प्रसभानीय समुद्रमध्यतः ॥ प्रददत्तनयान् द्विजन्मने स्मरणीयो वसुदेवनंदनः ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः बहिःपूजां कुर्यात् । तथा च—पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः पद्धतिमार्गेण संस्थाप्य "ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः" इति संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्। तथा च—पूर्वादिक्रमेण ॐ विमलायै नमः१। ॐ उत्कर्षिण्यै नमः २ । ॐ ज्ञानायै नमः ३ । ॐ क्रियायै नमः ४ । ॐ योगायै नमः ५ । ॐ प्रह्व्यै नमः ६ । ॐ सत्यायै नमः ७ । ॐ ईशानायै नमः ८ । मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ९ । इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेना

१ इति ध्यानो मन्त्रमहोदधौ ।

भ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोज्य "ॐ नमो भगवते श्रीगोपालाय सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्मसंयोगपद्मपीठात्मने नमः" इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञया आवरणपूजां कुर्यात् । तथा च—पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य "ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः ॥ अनुज्ञां देहि गोपाल परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥" इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्वा विशेषार्घ्याद्बिंदुं निःक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् । इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत॥तथा च-षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्षु दिक्षु मध्ये दिक्षु च ॐ देवकीसुत हृदयाय नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ ॥ इति सर्वत्र । ॐ गोविंद शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० २ ॥ ॐ वासुदेव शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ३ ॥ ॐ जगत्पते कवचाय हुंम् । कवचश्रीपा० ॥ ४ ॥ देहि मे तनयं कृष्ण नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ त्वामहं शरणं गतः अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य "ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् । इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततः पूज्यपूजकयोरंतराले प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्याष्टदले प्राच्यादिक्रमेण ॐ कालिंद्यै नमः ।

सन्तानगोपालपूजनयन्त्रम्.



कालिंदीश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ नाग्नजित्यै नमः । नाग्नजितीश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ मित्रविंदायै नमः । मित्रविंदाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ चारुहासिन्यै नमः । चारुहासिनीश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ रोहिण्यै नमः । रोहिणीश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ जांबवत्यै नमः । जांबवतीश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ रुक्मिण्यै नमः । रुक्मिणीश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ सत्यभामायै नमः । सत्यभामाश्रीपा० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ पट्टराज्ञीः पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततोऽष्टदलाग्रेषु प्राचीक्रमेण ॐ ऐरावताय नमः १ ॥ ॐ पुंडरीकाय नमः २ ॥ ॐ वामनाय नमः ३॥ ॐ कुमुदाय नमः ४॥ ॐ अंजनाय नमः ५॥ ॐ पुष्पदंताय नमः ६॥ ॐ सार्वभौमाय नमः ७॥ ॐ सुप्रतीकाय नमः ८॥ इत्यष्टौ दिग्गजान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात् । इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्यात् । अस्य पुरश्चरणं लक्षजपे पुत्रप्राप्तिर्भवति । तथा च--'लक्षं जपोऽयुतं होमस्तिलैर्मधुरसंयुतैः ॥ अर्चा पूर्वोदिता चैव मन्त्रः पुत्रप्रदो नृणाम्॥१॥' इति संतानगोपालमंत्रपुरश्चरणप्रयोगः॥२॥ अथ पुत्रप्रदाभिलाषाष्टकम् ॥ विश्वानर उवाच ॥ एकं ब्रह्मैवाद्वितीयं समस्तं सत्यं सत्यं नेह नानास्ति किंचित्॥ एको रुद्रो न द्वितीयोऽवतस्थे तस्मादेकं त्वां प्रपद्ये महेशम् ॥१॥ एकः कर्ता त्वं हि विश्वस्य शंभो नानारूपेष्वेकरूपोऽस्यरूपः ॥ यद्वत्प्रत्यर्क एकोऽप्यनेकस्तस्मान्नान्यं त्वां विनेशं प्रपद्ये ॥ २ ॥ रज्जौ सर्पः शुक्तिकायां च रौप्यं वारां पूरस्तन्मृगाख्ये मरीचौ ॥ यद्वत्तद्वद्विष्वगेव प्रपंचो यस्मिञ्ज्ञाते तं प्रपद्ये महेशम् ॥ ३ ॥ तोये शैत्यं दाहकत्वं च वह्नौ तापो भानौ शीतभानौ प्रसादः ॥ पुष्पे गंधो दुग्धमध्ये च सर्पिर्यत्तच्छंभो त्वं ततस्त्वां प्रपद्ये ॥ ४ ॥ शब्दं गृह्णास्यश्रवास्त्वं हि जिघ्रस्यघ्राणस्त्वं व्यंघ्रिरायासि दूरात् ॥ व्यक्षः पश्यस्त्वं रसज्ञोऽप्यजिह्वः कस्त्वां सम्यग्वेत्त्यतस्त्वां प्रपद्ये ॥ ५॥ नो वेदस्त्वामीश साक्षाद्धि वेद नो वा विष्णुर्नो विधाताऽखिलस्य ॥ नो योगीन्द्रा नेन्द्रमुख्याश्च देवा भक्तो वेद त्वामतस्त्वां प्रपद्ये ॥ ६ ॥ नो ते गोत्रं नाऽपि जन्मापि नाख्या नो वा रूपं नैव शीलं न देशः ॥ इत्थंभूतोऽपीश्वरस्त्वं त्रिलोक्याः सर्वान् कामान् पूरयेस्तद्भजे त्वाम् ॥ ७ ॥ त्वत्तः सर्वं त्वं हि सर्वं स्मरारे त्वं गौरीशस्त्वं च नग्नोऽतिशांतः ॥ त्वं वै वृद्धस्त्वं युवा त्वं च बालस्तत्किं यत्त्वं नास्यतस्त्वां नतोऽस्मि ॥ ८ ॥ स्तुत्वेति भूमौ निपपात विप्रः स दंडवद्यावदतीव हृष्टः ॥

तावत्स बालोऽखिलवृद्धवृद्धः प्रोवाच भूदेव वरं वृणीहि ॥ ९ ॥ तत उत्थाय हृष्टात्मा मुनिर्विश्वानरः कृती ॥ प्रत्यब्रवीत्किमज्ञातं सर्वज्ञस्य तव प्रभो ॥ १० ॥ सर्वांतरात्मा भगवाञ्छर्वः सर्वप्रदो भवान् ॥ याच्ञां प्रति नियुङ्क्ते मां किमीशो दैन्यकारिणीम् ॥ ११ ॥ इति श्रुत्वा वचस्तस्य देवो विश्वानरस्य ह ॥ शुचेः शुचिव्रतस्याथ शुचि स्मित्वाऽब्रवीच्छिशुः ॥ १२ ॥ बाल उवाच ॥ त्वया शुचे शुचिष्मत्यां योऽभिलाषः कृतो हृदि ॥ अचिरेणैव कालेन स भविष्यत्यसंशयः ॥ १३ ॥ तव पुत्रत्वमेष्यामि शुचिष्मत्यां महामते ॥ ख्यातो गृहपतिर्नाम्ना शुचिः सर्वामरप्रियः ॥ १४ ॥ अभिलाषाष्टकं पुण्यं स्तोत्रमेतत्त्वयेरितम् ॥ अब्दं त्रिकालपठनात्कामदं शिव सन्निधौ ॥ १५ ॥ एतत्स्तोत्रस्य पठनं पुत्रपौत्रधनप्रदम् ॥ सर्वशांतिकरं वापि सर्वापत्परिणाशनम् ॥ १६ ॥ स्वर्गापवर्गसंपत्तिकारकं नात्र संशयः ॥ प्रातरुत्थाय सुस्नातो लिंगमभ्यर्च्य शांभवम् ॥ १७ ॥ वर्षं जपन्निदं स्तोत्रमपुत्रः पुत्रवान्भवेत् ॥ वैशाखे कार्तिके माघे विशेषनियमैर्युतः ॥ १८ ॥ यः पठेत्स्नानसमये लभते सकलं फलम् ॥ कार्तिकस्य तु मासस्य प्रसादादहमव्ययः ॥ १९ ॥ तव पुत्रत्वमेष्यामि यस्त्वन्यस्तत्पठिष्यति ॥ अभिलाषाष्टकमिदं न देयं यस्य कस्यचित् ॥ २० ॥ गोपनीयं प्रयत्नेन महावंध्याप्रसूतिकृत् ॥ स्त्रिया वा पुरुषेणापि नियमाल्लिंगसन्निधौ ॥२१॥ अब्दं जप्तमिदं स्तोत्रं पुत्रदं नात्र संशयः ॥ इत्युक्त्वां तर्दधे बालः सोऽपि विप्रो गृहं गतः॥ २२ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे काशीखंडे विश्वेश्वरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥ अन्यः पुत्रप्राप्तिप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा—"ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा" इति द्वादशाक्षरो मंत्रः । अस्य विधानम् ॥ चूतवृक्षसमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ॥ अपुत्रो लभते पुत्रं नान्यथा शंकरोदितम् । ॥१॥ इति द्वादशाशरमंत्रप्रयोगः ॥ पुत्रोत्पत्तिकारकयन्त्रम्॥इस यंत्रको अच्छे नक्षत्र और शुभ दिनमें गोरोचनसे भोजपत्रपर लिख गूगलकी धूप देकर सोना या चांदीसे मढा कर वंध्या स्त्रीके कंठमें बांधे तो जिस स्त्रीके लडका न होता हो अथवा होकर मरजाता हो उसके निश्चय पूर्वक पुत्र उत्पन्न होकर जीता है इसमें संदेह नहीं। इस यंत्रका बडा प्रभाव जानना ॥ १ ॥ अथ मृतवत्सा

शंकरमातुशंकरपितु

४०	४२	४	९
१	३	४८	४३
४६	४७	५	४
२	७	४५	४४

लक्षणं यत्नश्च–(दत्तात्रेयतन्त्रे) गर्भः संजातमात्रो हि पक्षे मासे च वत्सरे ॥ म्रियते द्वित्रिवर्षेषु यस्याः सा मृतवत्सका ॥ १ ॥ तस्योपायः ॥ अत्र योगः प्रकर्तव्यः यथाशंकरभाषितम् ॥ मार्गशीर्षेऽथवा ज्येष्ठे पूर्णायां लेपिते गृहे ॥२॥नूतनं कलशं पूर्णं गन्धतोयेन कारयेत् ॥ शाखाफलसमायुक्तं नवरत्नसमन्वितम् ॥ ३ ॥ सुवर्णमुद्रिकायुक्तं षट्कोणमण्डलस्थितम् ॥ तन्मध्ये पूजयेद्देवीमेकांतीं नाम विश्रुताम् ॥ ४ ॥ गन्धपुष्पाक्षतैर्धूपैर्दीपैर्नैवेद्यसंयुतैः ॥ अर्चयेद्भक्तिभावेन मधुना दुग्धमाषकैः॥ ५ ॥ वाराही च तथा चान्द्री ब्राह्मी माहेश्वरी तथा ॥ कौमारी वैष्णवी देवी षट्सु पत्रेषु मातरः॥ ६ ॥ पूजयेन्मंत्रभावेन दधिपिंडानि कारयेत् ॥ सप्तसंख्याप्रमाणानि षट्संख्या मातृषट्कतः ॥ ७ ॥ सप्तमं तु पृथग्धृत्वा शुचिस्थाने विशेषतः ॥ तद्भुक्त्वा गृहमागच्छेत् कन्या वा वटुकास्त्रियः ॥ ८ ॥ भोजयेद्दक्षिणां दत्त्वा प्रमाणं कारयेत्ततः ॥ विसृज्य देवतां चाथ नद्यां तत्कलशोदकम् ॥ ९ ॥ सुकुलं वीक्षयेद्धीमाञ्शुभेन शुभमादिशेत् ॥ विपरीतं पुनः कुर्याद्यागं तावत्सुसिद्धिदम् ॥ १० ॥ प्रतिवर्षमिदं कुर्याद्दीर्घजीवी सुतो भवेत् ॥ सिद्धियोगमिदं ज्ञानं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ११ ॥ अस्य मंत्रः–"ॐ नमः परब्रह्मपरमात्मने अमुके गृहे गर्भजीवितं सुतान् कुरु कुरु स्वाहा" इति मंत्रमयुतं जपेत् सिद्धिः ॥१॥ अथ काकवन्ध्यालक्षणं यत्नश्च ॥ पूर्वं पुत्रवती या सा कचिद्वन्ध्या भवेद्यदि ॥ काकवन्ध्या तु सा ज्ञेया चिकित्सा तत्र कथ्यते ॥१॥ विष्णुक्रांतां समूलां तु पिष्ट्वा महिषिदुग्धके ॥ महिषीनवनीतेन ऋतुकाले तु भोजयेत्॥२॥एवं सप्तदिनं कुर्यात् पुनर्गर्भश्च लभ्यते ॥ तत्र मंत्रः "ॐ नमः शक्तिरूपाय अमुकगृहे पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा"। अष्टोत्तरशतं जपेत् सिद्धिः॥ १ ॥ ओषधीप्रयोगो यथा–तत्रादौ वन्ध्याशुद्धिप्रयोगः। (तंत्रसारे) एकविंशत्यहं यावद्दुग्धेन सह. मेथिकाम् ॥ मेथीतोलकमेकं च खंडकं तोलकद्वयम् ॥१॥ घृतं तोलकमेकं च पिबेद्दुग्धेन मिश्रितम् ॥ मृतवत्सा मृतगर्भा काकवंध्या तथैव च ॥२॥ पुत्रहीना च वन्ध्या च पंच चैव प्रकीर्तिताः ॥ संहरेत्सर्वदोषांश्च मेथीभक्षणमुत्तमम् ॥ ३ ॥ नाडीशुद्धायां स्त्रियामुपरि ऋतुकालमिदमौषधं देयम् ॥ पलाशपत्रयोगः ॥(दत्तात्रेयतंत्रे) ॥ पत्रमेकं पलाशस्य गर्भिणीपयसान्वितम् ॥ ऋत्वंते तानि पीतानि वंध्या भवति गर्भिणी ॥ १ ॥ तत्र मंत्रः-ॐ नमः सिद्धिरूपाय अमुकी

कुरुं कुरुकुरु स्वाहा"। अष्टोत्तरशतं जपेत्। सिद्धिः ॥ १ ॥ अथानेकयोगाः। (चिकित्साशास्त्रे) समूलपत्रां सर्पाक्षीं[1] रविवारे समुद्धरेत् ॥ एकवर्णगवां क्षीरैः कन्याहस्तेन पेषयेत् ॥ १ ॥ ऋतुकाले पिबेद्वंध्या पलार्द्धं तद्दिने दिने ॥ क्षीरशाल्यन्नमुद्गांश्च लघ्वाहारं प्रदापयेत् ॥ एवं सप्तदिनं कुर्याद्वंध्याऽपि लभते सुतम् ॥ २ ॥ श्वेतायाः कंटकार्याश्च मूलं तद्वच्च गर्भकृत् ॥ न कर्म कारयेत् किंचिद्वर्जयेच्छीतमातपम् ॥३॥ शिफांबर्हिशिखायास्तु[2] क्षीरेण परितोषितम् ॥ पिबेदृतुमती नारी गर्भधारणहेतवे ॥ ४ ॥ अश्वगंधाकषायेण सिद्धं दुग्धं घृतान्वितम् ॥ ऋतुस्नातांगना प्रातः पीत्वा गर्भं दधाति हि ॥ ५॥ अथ गर्भप्रातियंत्रम् ॥ मेहतरजब्राईलका कौल है कि यह दुवा हज़रतअहमद मुज़तवी

عا	ثا	ث	حا
را	را	را	را
ر	ر	ر	ر
<	<	<	<

महम्मद मुस्तफेसे वास्ते पैदाइश फरजन्दके पहुंची है जिसके लडका पैदा न होता हो इस यंत्रको स्त्री अपनी दाहिनी रान अर्थात् जंघामें बांधे तो इन्शाल्ला फरजन्द अर्थात् लडका नेक जमाल अर्थात् सुन्दर रूपवाला पैदा होगा, अगर शक लावे तो काफर है ॥ इति सन्तानोपायः ॥ अथ प्रथमरजस्वलायाः शुभाशुभम् ॥ प्रथमो ज्ञायते कालो रजोदर्शनकारकः ॥ शुभाशुभं प्रयत्नेन लक्षणज्ञा रजस्वला ॥ १ ॥ रवौ वैधव्यमिन्दौ तु सुपुत्रजननी भवेत् ॥ स्वात्महा मंगले सौम्ये बहुकन्या न संशयः ॥ २ ॥ गुरौ सुपुत्रतां याति शनौ कुत्सितसंततिः ॥ एवं ज्ञात्वा नरो धीमान् प्रायश्चित्तं तु कारयेत् ॥ ३ ॥ इति श्रीमन्त्रमहार्णवे पूर्वखण्डे मिश्रतन्त्रे एकादशस्तरंगः ॥ ११ ॥ समाप्तोऽयं पूर्वखण्डः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

१ सर्पाक्षी लक्ष्मणा इति बोध्यम्। २ बर्हिशिखा मोरशिखा ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ मध्यखण्डप्रारंभस्तत्रादौ गायत्रीतंत्रप्रारंभः ॥ अथ वेदादिगीतायाः प्रसादजननं विधिम् ॥ गायत्र्याः संप्रवक्ष्यामि धर्म्मार्थकाममोक्षदम् ॥ १ ॥ नित्यनैमित्तिके काम्ये तृतीये तपवर्द्धने ॥ गायत्र्यास्तु परं नास्ति इह लोके परत्र च ॥ २ ॥ (देवीभागवते) अथातः श्रूयतां ब्रह्मन् गायत्र्याः पापनाशनम् । पुरश्चरणकं पुण्यं यथेष्टफलदायकम् ॥ ३ ॥ पर्वताग्रे नदीतीरे बिल्वमूले जलाशये ॥ गोष्ठे देवालयेऽश्वत्थे उद्याने तुलसीवने ॥ ४ ॥ पुण्यक्षेत्रे गुरोः पार्श्वे चित्तैकाग्र्यस्थलेऽपि च ॥ पुरश्चरणकृन्मंत्री सिध्यत्येव न संशयः ॥ ५ ॥ गायत्री छंदो मंत्रस्य यथा संख्याक्षराणि च ॥ तावल्लक्षाणि कर्तव्यं पुरश्चरणकं तथा ॥ ६ ॥ जीवहीनो यथा देहः सर्वकर्मसु न क्षमः ॥ पुरश्चरणहीनस्तु तथा मंत्रः प्रकीर्तितः ॥ ७ ॥ ज्येष्ठाषाढौ भाद्रपदं पौषं तु मलमासकम् ॥ अंगारं शनिवारं च व्यतीपातं च वैधृतिम् ॥८॥ अष्टमीं नवमीं षष्ठीं चतुर्थीं च त्रयोदशीम् ॥ चतुर्दशीममावस्यां प्रदोषं च तथा निशाम् ॥ ॥ ९ ॥ यमाग्निरुद्रसर्पेन्द्रवसुश्रवणजन्मभम् ॥ मेषकर्कतुलाकुंभान् मकरं चैव वर्जयेत् ॥ १० ॥ सर्वाण्येतानि वर्ज्यानि पुरश्चरणकर्माणि ॥ चन्द्रतारानुकूले च शुक्लपक्षे विशेषतः ॥ ११ ॥ पुरश्चरणकं कुर्यान्मंत्रसिद्धिः प्रजायते ॥ स्वस्तिवाचनकं कुर्यान्नांदीश्राद्धं यथाविधि ॥ १२ ॥ विप्रान्संतर्प्य यत्नेन भोजनाच्छादनादिभिः ॥ प्रत्यङ्मुखः शिवस्थाने द्विजश्चान्यतमे जपेत् ॥ १३ ॥ आरंभदिनमारभ्य समाप्तिदिवसावधि ॥ न न्यूनं नातिरिक्तं च जपं कुर्याद्दिने दिने ॥ १४ ॥ नैरंतर्येण कुर्वंति पुरश्चर्यां मुनीश्वराः ॥ प्रातरारभ्य विधिवज्जपेन्मध्यंदिनावधि ॥ १५ ॥ गायत्री चैव संसेव्या धर्म्मकामार्थमोक्षदा ॥ गायत्र्यास्तु परं नास्ति इह लोके परत्र च ॥ १६ ॥

॥ अथ गायत्रीशापमोचनम् ॥ ॐ अस्य श्रीब्रह्मशापविमोचनमंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । भुक्तिमुक्तिप्रदा ब्रह्मशापविमोचनी गायत्रीशक्तिर्देवता । गायत्री छंदः । ब्रह्मशापविमोचने विनियोगः ॥ "ॐ गायत्री ब्रह्मेत्युपासीत यद्रूपं ब्रह्मविदो विदुः ॥ तां पश्यंति धीराः सुमनसा वाचामग्रतः॥ॐ वेदांतनाथाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि॥ तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात् ॥ॐ देवी गायत्री त्वं ब्रह्मशापविमुक्ता भव॥

इति त्रिवारं पठेत् ॥ इति ब्रह्मशापविमोचनम् ॥ १ ॥ ॐ अस्य श्रीवसिष्ठशापविमोचनमंत्रस्य निग्रहानुग्रहकर्ता वसिष्ठऋषिः । वसिष्ठानुगृहीता गायत्री शक्तिर्देवता । विश्वोद्भवा गायत्री छंदः । वसिष्ठशापविमोचने विनियोगः ॥ "ॐ सोऽहमर्कमयं ज्योतिरात्मज्योतिरहं शिवः ॥ आत्मज्योतिरहं शुक्रः सर्वज्योतीरसोऽस्म्यहम् ॥ ॐ देवी गायत्री त्वं वसिष्ठशापविमुक्ता भव ॥" इति त्रिवारं पठेत् ॥ इति वशिष्ठशापमोचनम् ॥२॥ ॐ अस्य श्रीविश्वामित्रशापमोचनमंत्रस्य नूतनसृष्टिकर्ता विश्वामित्र ऋषिः । विश्वामित्रानुगृहीता गायत्री शक्तिर्देवता । वाग्देहा गायत्री छंदः । विश्वामित्रशापविमोचने विनियोगः ॥ "ॐ गायत्रीं भजाम्यग्निमुखीं विश्वगर्भां यदुद्भवा देवाश्चक्रिरे विश्वसृष्टिं तां कल्याणीमिष्टकरीं प्रपद्ये यन्मुखान्निःसृतोऽखिलवेदगर्भः ॥" ॐ गायत्री त्वं विश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव ॥ इति त्रिवारं पठेत् ॥ इति विश्वामित्रशापमोचनम् ॥३॥ एवं शापोद्धारं कृत्वा करौ बद्ध्वा प्रार्थयेत् ॥ तथा च—सोऽहमर्कमयं ज्योतिरर्को ज्योतिरहं शिवः ॥ आत्मज्योतीरहं शुक्रः शुक्रज्योतीरसोऽहमोम् ॥१॥ महाविष्णुमहेशेशे दिव्ये सिद्धे सरस्वति ॥ अजरे अमरे चैव दिव्ययोने नमोऽस्तु ते ॥ २॥ इति संप्रार्थ्य शापरहितशुद्धगायत्रीं भावयन् ध्यानं कुर्यात् ॥ अथ शुद्धगायत्रीध्यानम् ॥ ॐ यद्देवासुरपूजितं परतरं सामर्थ्यतारात्मकं पुन्नागांबुजपुष्पनागबकुलैः केशैः शुकैरर्चितम् ॥ नित्यं ध्यानसमस्तदीप्तिकरणं कालाग्निरुद्दीपनं तत्संहारकरं नमामि सततं पातालसंस्थं मुखम् ॥१॥ इति गायत्रीशापमोचनम् ॥ अथ गायत्रीपुरश्चरणप्रयोगः ॥ ब्रह्मगायत्रीमंत्रो यथा—"ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ॥ धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्" इति सप्तव्याहृतिसहितगायत्रीमन्त्रः ॥ अस्य विधानम् ॥ चन्द्रतारादिबलान्विते सुमुहूर्ते शिवालयादिपवित्रस्थले जपस्थानं प्रकल्प्य तत्र दहनखननसंप्लावनादिभिः स्मृत्युक्तैः शोधनोपायैः शुद्धिं संपाद्य गोमयेनोपलिप्य तत्रासनभूमौ कूर्मशोधनं कृत्वा अनुष्ठानारंभं

---

१ शापयुक्ता तु गायत्री सफला न कदाचन ॥ शापादुत्तारिता सा तु भुक्तिमुक्तिफलप्रदा ॥

कुर्यात् ॥ तथा च कर्ता प्रारंभात्पूर्वदिने ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय यथोपदेशं शौचं कृत्वा नद्यादौ स्नात्वा प्रातःसंध्यादिनित्यकर्म समाप्य आचार्य्यमाहूय संपूज्य तदनुज्ञया सपत्नीकः स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य सपवित्रकरः आचम्य प्राणानायम्य सामान्यतो गणपत्यादि स्मरणं कृत्वा देहशुद्ध्यर्थं प्रायश्चित्तं कुर्यात् ॥ देशकालौ संकीर्त्य करिष्यमाणगायत्रीपुरश्चरणेऽधिकारप्राप्त्यर्थं कृच्छ्रत्रयममुकप्रत्याम्नाये नाहमाचरिष्ये ॥ इति संकल्प्य धेनुदानतिलहोमसुवर्णादिप्रत्याम्नायद्वारा कृच्छ्राणि संपाद्य कृतांजलिः अमुकशर्मणो मम गायत्री पुरश्चरणेऽनेन कृच्छ्रत्रयानुष्ठानेनाधिकारसिद्धिरस्त्विति विप्रान् वदेत् ॥ विप्रा अधिकारसिद्धिरस्त्विति ब्रूयुः । पुनर्देशकालौ संकीर्त्य करिष्यमाणपुरश्चरणांगत्वेन पुरश्चरणाधिकारप्राप्त्यर्थं गायत्र्ययुतजपं करिष्ये इति संकल्प्य गायत्र्ययुतं जपेत् ॥ ततः ॐ तत्सवितुरित्यस्याचार्यमृषिं विश्वामित्रं तर्पयामि ॥ १ ॥ गायत्रीछन्दस्तर्पयामि ॥ २ ॥ सवितृदेवतां तर्पयामि ॥ ३ ॥ इति तर्पणं कृत्वा रुद्रं नमस्कृत्य कद्रुद्रायेत्यादीनि रुद्रसूक्तानि सकृज्जपेत् ॥ इति पूर्वदिनकृत्यम् ॥ जपप्रारंभदिने सुमुहूर्ते सपत्नीको यजमानः सुगंधतैलाभ्यंगं पूर्वकमुष्णोदकेन मंगलस्नानं कृत्वा शुक्लधौतवासांसि परिधाय यथायोग्यालंकृतो धृतकुंकुमादित्रिपुंड्रतिलकः सपवित्रोपग्रहः स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य मम इह जन्मनि जन्मांतरेषु कृतकायिकवाचिकमानासिकसांसर्गिक समस्तपापक्षयार्थं पुत्रपौत्रधनधान्याभिवृद्ध्यर्थं चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं सप्रणवव्याहृतिपूर्वकचतुर्विंशतिलक्षजपात्मकगायत्रीपुरश्चरणं स्वयं विप्रद्वारा वा करिष्ये । तदंगत्वेन गणेशपूजनं स्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नांदीश्राद्धमाचार्य्यजपकर्तृवरणं च करिष्ये इति संकल्प्य गणेशपूजनादिनांदीश्राद्धांतं कृत्वा नांदीश्राद्धांते सविता प्रीयतामिति पठित्वा आचार्यजपकर्तृवरणं कुर्यात् ॥ तथा च आचार्य्यं जपकर्तॄंश्चोदङ्मुखानासनेषूपवेश्य सर्वेषां पादप्रक्षालनं कृत्वा दक्षिणहस्ते वरणद्रव्याणि गृहीत्वा देशकालौ संकीर्त्य मम सकलपापक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणगायत्रीजपपुरश्चरणकर्माणि अमुकगोत्रोत्पन्नममुकवेदशाखा

ध्यायिनममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिर्गंधाक्षततांबूलस्वर्णांगुलीयकासनमालाकमंडलुयुग्मवासोभिर्जपकरणाथमाचार्यत्वेन त्वामहं वृणे इत्याचार्यं वृत्वा ॐ वृतोऽस्मीति प्रतिवचनानंतरं पृथक् पृथक् हस्ते यज्ञकंकणं बद्ध्वा गंधपुष्पादिभिः संपूज्य प्रार्थयेत् ॥ ॐ अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवंतोऽभ्यर्थिता मया ॥ सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यो मद्यज्ञो विधिपूर्वकम् ॥१॥अंगीकुर्वंतु कर्मैतत्कल्पद्रुमसमाशिषः ॥ यथोक्तनियमैर्युक्त जपार्थे स्थिरबुद्धयः ॥ २ ॥ अस्मिन् यज्ञे मया पूज्याः संतु मे नियमान्विताः ॥ अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः ॥ ३ ॥ जप ध्यानरता नित्यं प्रसन्नमनसः सदा ॥ अदुष्टभाषिणः संतु मा संतु परनिन्दकाः ॥ ममापि नियमा ह्येते भवंतु भवतामपि॥४॥इति संप्रार्थ्य प्रत्येकं वस्त्रद्वयम् आसनम् १ अर्घ्यपात्रम् १ आचमनपात्रं १ जलपात्रं१ सुवर्णांगुलीयकं १ मालां १ च दद्यात् ॥ अत्र जापकास्त्वेकविंशतिः २१ न्यूनाधिका वा कार्य्याः ॥ ततः सर्वे जापका आचम्य प्राणानायम्य “ सूर्यः सोमो यमः कालः संध्ये भूतान्यहः क्षपा ॥ पवमानो दिक्पतिर्भूराकाशं खेचरामराः ॥ ब्रह्मशासनमास्थाय कल्पध्वमिह सन्निधिम् ॥”इति प्रार्थयेयुः॥ ततो देशकालौ संकीर्त्य ममामुकशर्मणो यजमानस्यसकलपापक्षयद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंयजमानानुज्ञयागायत्रीपुरश्चरणांतर्गतामुकसहस्रसंख्यापरिमितविहितगायत्रीजपं करिष्ये इति स्वस्वप्रात्याहिकजपं संकल्प्य न्यासं कुर्यात् ॥ सर्वेषां समान एव जपो न तु न्यूनाधिकः । अत्र उत्तमजपो द्विसाहस्रः । मध्यमः सार्द्धद्विसाहस्रः । अधमस्त्रिसाहस्रो ज्ञेयः ॥ अथ न्यासाः ॥ ॐ गुरवे नमः॥१॥गणपतये नमः॥२॥दुर्गायै नमः॥३॥वेदमातृभ्यो नमः ॥४॥ इति नत्वा त्रिः प्राणानाम्य न्यासारंभं कुर्यात् ॥ तथा च॥ॐ प्रणवस्य ब्रह्मा ऋषिः। गायत्री छंदः। परमात्मा देवता। शरीरशुद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि ॥१॥ गायत्रीछंदसे नमः मुखे ॥ २ ॥ ॐ परमात्मदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांङ्गे॥४॥ इति प्रणवेन ऋष्यादिन्यासः॥सप्तव्याहृतीनां जमदग्निभरद्वाजात्रिगौतमकश्यपविश्वामित्रवसिष्ठा ऋषयः। गायत्र्युष्णिग

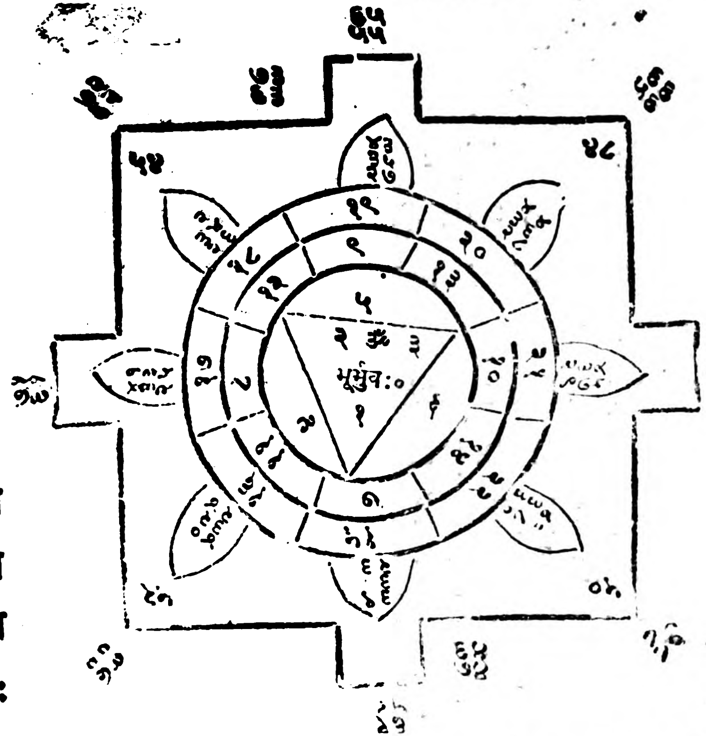
१ तद्वांतरेऽपि भृगु इति पाठः॥

नुष्टुब्बृहतीपंक्तित्रिष्टुब्जगत्यश्छंदांसि। अग्निवायुसूर्य्यबृहस्पतिवरुणेन्द्रविश्वेदेवा देवताः। सर्वपापक्षयार्थे जपे विनियोगः॥ ॐ जमदग्निभरद्वाजात्रिगौतमकाश्यपविश्वामित्रवशिष्ठऋषिभ्यो नमः शिरसि ॥ १ ॥ गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपंक्तित्रिष्टुब्जगतीछंदोभ्यो नमो मुखे ॥ २ ॥ अग्निवायुसूर्य्यबृहस्पतिवरुणेन्द्रविश्वेदेवदेवताभ्यो नमः हृदये ॥३॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥४॥ इति सप्तव्याहृतीनामृष्यादिन्यासः। ॐ गायत्र्याः विश्वामित्र ऋषिः। गायत्री छंदः। सविता देवता। जपोपनयने विनियोगः। ॐ विश्वामित्रऋषये नमः शिरसि १। गायत्रीछंदसे नमः मुखे २ सवितृदेवतायै नमः हृदये ३। विनियोगाय नमः सर्वांगे ४। इति गायत्र्या ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ भूः नमः हृदये १। ॐ भुवः नमः मुखे २। ॐ स्वः नमः दक्षांसे ३। ॐ महः नमः वामांसे ४। ॐ जनः नमः दक्षिणोरौ ५। ॐ तपः नमः वामोरौ ६। ॐ सत्यं नमः जठरे ७। ॐ तत् नमः पादांगुलिमूलेषु ८। ॐ सं नमः गुल्फयोः ९। ॐ विं नमः जानुनोः १०। ॐ तुं नमः पादमूलयोः ११। ॐ वं नमः लिंगे १२। ॐ रें नमः नाभौ १३। ॐ णिं नमः हृदये १४। ॐ यं नमः कण्ठे १५। ॐ भं नमः हस्तांगुलिमूलेषु १६। ॐ गों नमः मणिबंधयोः १७। ॐ दें नमः कूर्परयोः १८। ॐ वं नमः बाहुमूलयोः १९। ॐ स्यं नमः आस्ये २०। ॐ धीं नमः नासापुटयोः २१। ॐ मं नमः कपोलयोः २२। ॐ हिं नमः नेत्रयोः २३। ॐ धिं नमः कर्णयोः २४। ॐ यों नमः भ्रूमध्ये २५। ॐ यों नमः मस्तके २६। ॐ नं नमः पश्चिमवक्त्रे २७। ॐ प्रं नमः उत्तरवक्त्रे २८। ॐ चों नमः दक्षिणवक्त्रे २९। ॐ दं नमः पूर्ववक्त्रे ३०। ॐ यात् नमः ऊर्ध्ववक्त्रे ३१। इति मंत्रवर्णन्यासः ॥ ॐ तत् नमः शिरसि १। ॐ सवितुर्नमः भ्रुवोर्मध्ये २। ॐ वरेण्यं नमः नेत्रयोः ३। ॐ भर्गो नमः मुखे ४। ॐ देवस्य नमः कण्ठे ५। ॐ धीमहि नमः हृदये ६। ॐ धियो नमः नाभौ ७। ॐ यो नमः गुह्ये ८। ॐ नः नमः जानुनोः ९। ॐ प्रचोदयात् नमः पादयोः १०। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोमिति शिरसि ११। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं नमः नाभ्यादिपादांगुलीपर्यंतम् १२। ॐ भर्गो

देवस्य धीमहि नमः हृदयादिनाभ्यंतम् १३ । ॐ धियो यो नः प्रचोदयात नमः मूर्द्धादिहृदयांतम् १४ । इति पदन्यासः ॥ ॐ तत्सवितुर्ब्रह्मणे अंगुष्ठाभ्यां नमः १।ॐ वरेण्यं विष्णवे तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ भर्गो देवस्य रुद्राय मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ धीमहि ईश्वराय अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ धियो यो नः सदाशिवाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ॐ प्रचोदयात् सर्वात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ । इति करन्यासः ॥ ॐ तत्सवितुर्ब्रह्मणे हृदयाय नमः १ । ॐ वरेण्यं विष्णवे शिरसे स्वाहा २ । ॐ भर्गोदेवस्य रुद्राय शिखायै वषट् ३ । ॐ धीमहि ईश्वराय कवचाय हुम् ४ । ॐ धियो यो नः सदाशिवाय नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ प्रचोदयात् सर्वात्मने अस्त्राय फट् ६ । इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् । "ॐमुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैर्युक्तामि-दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम् ॥ गायत्रीं वरदाभयांकुशकशापाशं कपालं गुणं शंखं चक्रमथारविंदयुगलं हस्तैर्वहंतीं भजे ॥ १ ॥ कुमारीमृग्वेदयुतां ब्रह्मरूपां विचिंतयेत् ॥ हंसस्थितांकुशकरां सूर्य्यमंडलसंस्थिताम् ॥ २ ॥ मध्याह्ने विष्णुरूपां च तार्क्ष्यस्थां पीतवासिनीम् ॥ युवतीं सयजुर्वेदां सूर्यमंडलसंस्थिताम् ॥ ३ ॥ सायाह्ने शिवरूपां च वृद्धां वृषभवाहिनीम् ॥ सूर्यमण्डलमध्यस्थां सामवेदसमायुताम् ॥४॥" इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूजयेत्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण संस्थाप्य "ॐ मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः" इति संपूज्य स्वस्वनामभिर्वा पूजयित्वा नवपीठशक्तीः पूजयेत् । तथा च पूर्वाद्यष्टदिक्षु । ॐ रां दीप्तायै नमः १। ॐ रीं सूक्ष्मायै नमः २। ॐ रूं जयायै नमः३। ॐ रें भद्रायै नमः ४। ॐ रैं विभूत्यै नमः ५ । ॐ रों विमलायै नमः ६ । ॐ रौं अमोघायै नमः ७ । ॐ रं विद्युतायै नमः ८ । मध्ये । ॐ रः सर्वतोमुख्यै नमः ९ । इति पीठशक्तीः पूजयेत् १०॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वाग्न्युत्तारणमंत्रं पठित्वा स्वच्छवस्त्रेणाशोष्य तदुपरि देव्या अष्टगंधेन त्रिकोणं कृत्वा तद्बहिर्वर्तुलं तद्बाह्ये अष्टदलं तद्बहिश्चतुरस्रं चतुर्द्वारोपशोभितं यंत्रं लिखित्वा " ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रार्बिंबात्मकाय सौराय योगपीठाय नमः "। इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पुन

ध्यात्वा मूर्तिं प्रकल्प्य । " ॐ आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि ॥ गायत्रि छंदसां मातर्ब्रह्मयोने नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥ " इति मंत्रेणावाह्य गायत्रीं मूलमंत्रेण पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्या आज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् । तथा च-पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य "ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये । अनुज्ञां देहि गायत्रि परिवारार्चनाय मे ॥ " इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत । तथा च-ततः त्रिकोणस्य पूर्वकोणे । ॐ गायत्र्यै नमः ॥१॥ निर्ऋतिकोणे ॐ सावित्र्यै नमः ॥२॥ वायुकोणे ॐ सरस्वत्यै नमः ॥३॥ इति पूजयेत् । ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य "ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ २ ॥ तत्र त्रिकोणाद्बहिः वर्तुले ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्मश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ १ ॥ इति सर्वत्र वदेत् । ॐ विष्णवे नमः

गायत्रीपूजनयन्त्रम्.



विष्णुश्रीपा० ॥२॥ ॐ रुद्राय नमः । रुद्रश्रीपा० ॥३॥ इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥२॥ ततोऽष्टदलेषु पूर्वादि चतुर्दिक्षु । ॐ आदित्याय नमः । आदित्यश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ भानवे नमः । भानुश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ भास्कराय नमः । भास्करश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ रवये नमः । रविश्रीपा० ॥ ४ ॥ आग्नेय्यादिचतुष्कोणेषु । ॐ ऊषायै नमः । ऊषाश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ प्रज्ञायै नमः ।

प्रज्ञाश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ प्रभायै नमः । प्रभाश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ सन्ध्यायै नमः । सन्ध्याश्रीपा० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा
पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततोऽष्टदलेषु प्राच्यादिक्रमेण । ॐ प्रह्लादिन्यै नमः । प्रह्लादिनीश्रीपा० ॥ १ ॥
ॐ प्रभायै नमः । प्रभाश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ नित्यायै नमः । नित्याश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ विश्वंभरायै नमः । विश्वंभराश्रीपा० ॥ ४ ॥
ॐ विशालिन्यै नमः । विशालिनीश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ प्रभावत्यै नमः । प्रभावतीश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ जयायै नमः । जयाश्रीपा०
॥ ७ ॥ ॐ शांत्यै नमः । शांतिश्रीपा० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥ ४ ॥ ततो
ऽष्टदलमूलेषु प्राच्यादिक्रमेण । ॐ कांत्यै नमः । कांतिश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ दुर्गायै नमः । दुर्गाश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ सरस्वत्यै नमः ।
सरस्वतीश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ विश्वरूपायै नमः । विश्वरूपाश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ विशालायै नमः । विशालाश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ
ईशायै नमः । ईशाश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ चापिन्यै नमः । चापिनीश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ विमलायै नमः । विमलाश्रीपा० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ
पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति पंचमावरणम् ॥ ५ ॥ ततोऽष्टदलमध्येषु प्राच्यादिक्रमेण । ॐ अपहारिण्यै नमः । अपहारिणी
श्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ सूक्ष्मायै नमः । सूक्ष्माश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ विश्वयोन्यै नमः । विश्वयोनिश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ जयावहायै नमः ।
जयावहाश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ पद्मालयायै नमः । पद्मालयाश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ परायै नमः । पराश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ शोभायै नमः ।
शोभाश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ पद्मरूपायै नमः । पद्मरूपाश्रीपा० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति षष्ठावरणम् ।
॥ ६ ॥ ततोऽष्टदलाग्रेषु । ॐ आं ब्राह्म्यै नमः । ब्राह्मीश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ ईं माहेश्वर्यै नमः । माहेश्वरीश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ ऊं
कौमार्यै नमः । कौमारीश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ ॠं वैष्णव्यै नमः । वैष्णवीश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ ॡं वाराह्यै नमः । वाराहीश्रीपा० ॥ ५ ॥
ॐ ऐं इन्द्राण्यै नमः । इन्द्राणीश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ औं चामुंडायै नमः । चामुंडाश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ अः महालक्ष्म्यै नमः ।
महालक्ष्मीश्रीपा० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ मातृकाः संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति सप्तमावरणम् ॥ ७ ॥ ततः भूपुराभ्यंतरे पूर्वाद्यष्टसु

दिक्षु ॐ सों सोमाय नमः। सोमश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ बुं बुधाय नमः। बुधश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ गुं गुरवे नमः। गुरुश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ शुं शुक्राय नमः। शुक्रश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ भौं भौमाय नमः। भौमश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ शं शनैश्चराय नमः। शनैश्चरश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ रां राहवे नमः। राहुश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ कें केतवे नमः। केतुश्रीपा०॥ ८ ॥ इत्यष्टौ ग्रहान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इत्यष्टमावरणम् ॥ ८ ॥ ततो भूपुराद्बहिः पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इत्थमावरणैर्देवीं दशभिः संपूज्य धूपादिनमस्कारांतं संपूजयेत् ॥ ततो गायत्रीशापमोचनं कृत्वा संस्कृतां मालामादाय हृदये धारयन् सर्वे जापकाः बद्धासनेषूपविष्टाः सुनिश्चलाः जपध्यानसमायुक्ताः नासाग्रावलोकिनो मौनिनः समाहितमानसा उन्नतगात्रा एकाग्रचित्तेन मंत्रदेवतां सवितारं ध्यायंतो मंत्रार्थं स्मरन्तः सप्तव्याहृतीस्त्यक्त्वा सप्रणवव्याहृतित्रयपूर्वकं "ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्"इति मंत्रं मध्यंदिनावधि जपेयुः॥ ततो जपान्ते "ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव ॥ शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च देहि मे॥१॥'ॐ ह्रीं सिद्ध्यै नमः' इति मालां शिरसि निधाय गोमुखीं रहस्ये स्थापयेत् ॥ न कस्यापि दर्शयेत् ॥ नाशुचिः स्पर्शयेत् ॥ नान्यस्मै दद्यात् ॥ स्वयोनिवद्गुप्तां कुर्यात् ॥ इति जपं कृत्वा त्रिः प्राणानायम्य पूर्वोक्तन्यासं कृत्वा कवचादिना प्रार्थ्य पंचोपचारैः संपूज्य नीराजनं कृत्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा " ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणा स्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु मे देवि प्रसन्ना सर्वदा भव ॥ १ ॥ " इति देव्या दक्षिणकरे जपसमर्पणजलं च दद्यात् ॥ एवं प्रत्यहं समानसंख्य एव जपो न तु न्यूनाधिकः। सर्वे जापका भूमौ शयानाः हविष्यान्नमश्नंतो ब्रह्मचर्याऽस्पृश्यस्पर्शादि नियमांश्चरेयुः। अस्य पुरश्चरणं चतुर्विंशतिलक्षजपः। जपदशांशतो होमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् ॥ अथ होमप्रकारः ॥ देशकालौ संकीर्त्य अद्य पुरश्चरणसांगतासिद्ध्यर्थं होमविधिं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य सामान्यतो गणपतिं संपूज्य ततः कुण्डे स्थंडिले वा स्वगृह्योक्तविधिना पंचभूसंस्कारपूर्वकं अग्निं प्रतिष्ठाप्य ग्रहपीठे सूर्यादिनवग्रहमंडलदेवतानावाह्य संपूज्य कलशस्था

पनं कृत्वा कुशकण्डिकां संपाद्याघारावाज्यभागौ जुहुयात् ॥ तथा च-'ॐ इदं हवनीयद्रव्यमन्वाधानोक्तदेवताभ्योऽस्तु न मम ॥' इति यजमानो द्रव्यत्यागं कुर्यात् ॥ ततः सूर्यादिग्रहेभ्योऽर्कादिसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः प्रत्येकमष्टाविंशतिमष्टौ वा हुत्वा तैरेव द्रव्यैरधिप्रत्यधिदेवताभ्यश्चतुश्चतुःसंख्याकाभिः पंचलोकपालदिक्पालेभ्यश्च द्विद्विसंख्याकाभिर्जुहुयात् ॥ ततः आवरणदेवताभ्यश्चर्वादिद्रव्यैरेकैकाहुतिभिर्हुत्वा प्रधानहोमं कुर्यात् ॥ तथा च प्रधानदेवसवित्रे चतुर्विंशतिसहस्रतिलाहुतिभिस्त्रिसहस्रसंख्याकाभिः पायसाहुतिभिस्तावतीभिर्घृताहुतिभिस्तावतीभिर्दूर्वाहुतिभिस्तावतीभिः क्षीरद्रुमसमिदाहुतिभिश्च हुत्वा शेषेण स्विष्टकृद्धोमं कृत्वा समापयेत् ॥ होमकाले 'इदं सवित्रे न मम' इति त्यागः ॥ होमे सप्रणवा व्याहृतिरहिता स्वाहांता गायत्री दूर्वात्रयस्यैकाहुतिः । दूर्वासमिधां दधिमध्वाज्याक्तानां होमः ॥ ततो बलिदानांते मूलादौ संयोज्य "समुद्रज्येष्ठा०" इत्यादिभिर्यजमानस्याभिषेकः ॥ अभिषेकांते प्रतिलक्षं तु स्वर्णनिष्कत्रयं तदर्धं वा शक्त्या वा दक्षिणां प्रत्येकब्राह्मणाय दत्त्वा आचार्याय द्विगुणां दद्यात् ॥ ततो जले सवितारं संपूज्य होमसंख्यादशांशेन गायत्र्यंते सवितारं तर्पयामीत्युक्त्वा दुग्धमिश्रितजलेन तर्पणं कर्यात् ॥ ततस्तर्पणदशांशेन गायत्र्यंते "आत्मानमभिषिंचामि नमः" इति यजमानमूर्ध्न्यभिषेकः ॥ होमतर्पणाभिषेकानां मध्ये समर्थो न भवति चेत् तत्तत्स्थाने तत्तद्द्विगुणो जपः ॥ ततोभिषेकसंख्यादशांशानधिकान्वा ब्राह्मणान् भोजयेत् ॥ ततो ब्राह्मणान् दक्षिणादिभिः परितोष्य आशीर्वादं गृहीत्वा चतुर्विंशतिलक्षात्मकगायत्रीपुरश्चरणं संपूर्णमस्त्विति भवंतो ब्रुवंत्विति विप्रान् प्रार्थयेत् । ते च गायत्रीपुरश्चरणं सम्पूर्णमास्त्विति ब्रूयुः ॥ ततः क्रमपूर्तिकामो विष्णुं स्मरेत् ॥ कर्ता ब्राह्मणैः सह हविष्याशी सत्यवागधःशायी परिगृहीतभूप्रदेशानतिचारी च भवेत् ॥ एवं कृते गायत्रीपुरश्चरणं सिद्धं भवति । सिद्धे च मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च-"गायत्रीच्छंदोमंत्रस्य यथासंख्याक्षराणि च ॥ तावल्लक्षाणि कर्तव्यं पुरश्चरणकं तथा ॥ १ ॥ जुहुयात्तद्दशांशेन सघृतेन पयोऽधसा ॥ तिलैः पत्रैः प्रसनैश्च यवैश्च मधुरान्वितैः ॥ २ ॥" (शारदातिलके तु शतांशहोमोऽप्युक्तः) । तेन मया प्रोक्तम् ॥ तथा च-"तत्त्वसंख्यासहस्राणि मंत्रविज्जुहुयात्तिलैः ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तो दीर्घमायुः

स विंदति ॥ ३ ॥ आयुषेनाज्यहविषा केवलेनाथ सर्पिषा॥ दूर्वात्रिकैस्तिलैर्मंत्री जुहुयात्रिसहस्रकम् ॥ ४ ॥ अरुणाब्जै स्त्रिमध्वक्तैर्जुहुयादयुतं ततः॥ महालक्ष्मीर्भवेत्तस्य षण्मासान्नात्र संशयः॥ ५॥ ब्रह्मश्रियेऽत्र जुहुयात्प्रसूनैर्ब्रह्मवृक्षजैः ॥ बहुना किमिहोक्तेन यथावत्साधुसाधिता ॥ ६ ॥ द्विजन्मनामियं विद्या सिद्धा कामदुघा मता ॥ आमध्याह्नं जपं कुर्यादुपांशु वाथ मानसम् ॥ ॥ ७ ॥ (मंत्रमहोदधौ) हविष्यं निशि भुंजीत त्रिःस्नाय्यभ्यंगवर्जितः ॥ व्यग्रतालस्यनिष्ठीवक्रोधपादप्रसारणम् ॥ ८ ॥ अन्यभाषां त्यजेक्षे च जपकाले त्यजेत्सुधीः ॥ स्त्रीशूद्रभाषणं निंदां तांबूलं शयनं दिवा ॥ ९ ॥ प्रतिग्रहं नृत्यगीते कौटिल्यं वर्जयेत्सदा ॥ भूशय्यां ब्रह्मचर्य्यं च त्रिकालं देवतार्चनम् ॥ १० ॥ नैमित्तिकार्चनं देवस्तुतिं विश्वासमाश्रयेत् ॥ प्रत्यहं प्रत्यहं तावन्नैव न्यूनाधिकं क्वचित् ॥ ११ ॥ एवं जपान्समाप्यांते दशांशं होममाचरेत् ॥ तर्पणं तद्दशांशेन मार्जनं तद्दशांशतः ॥ १२ ॥ एवं कृत पुरश्चर्य्यः पुरश्चरणसिद्धये ॥ सिद्धे मंत्रे प्रकुर्वीत प्रयोगान्मनसेप्सितान् ॥ १३ ॥ अथ कार्यपरत्वेन प्रयोगो यथा—विद्यार्थी वाग्भवाद्यम्। लक्ष्मीकामः श्रीबीजम् । वश्यार्थी कामबीजम् । सर्वकामार्थी मायाबीजम्। आयुःकामार्थी मृत्युंजयचतुरक्षरसहितं जपेदिति जपविधिः॥ " मध्याह्ने मितभुग्मौनी त्रिस्नानार्चनतत्परः॥ जपेल्लक्षत्रयं धीमाञ्ज्ञान्यमानसिकस्तु यः ॥ १४ ॥ कर्मभिर्यो जपेत्पश्चात् क्रमशः स्वेच्छयापि वा ॥ यावत्कार्यं न कुर्वीत न लोपेत्तावता व्रतम् ॥ १५ ॥ आदित्यस्योदये स्नात्वा सहस्रं प्रत्यहं जपेत् ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यं धनं च लभते ध्रुवम् ॥ १६ ॥ त्रिरात्रोपोषितः सम्यग्घृतं हुत्वा सहस्रशः ॥ सहस्रं लाभमाप्नोति हुत्वाग्नौ खदिरेन्धनम् ॥ १७ ॥ पालाशीभिः समिद्भिश्च घृताक्ताभिर्हुताशने ॥ सहस्रं लाभमाप्नोति राहुसूर्यसमागमे ॥ १८ ॥ हुत्वा तु खदिरं वह्नौ घृताक्तं रक्तचन्दनम् ॥ सहस्रहेमं चाप्नोति राहुचन्द्रसमागमे ॥ १९ ॥ रक्तचन्दनमिश्रं तु सघृतं हव्यवाहने ॥ हुत्वा गोमयमाप्नोति सहस्रं गोधनं द्विजः॥ २०॥ जातीचम्पकराजार्ककुसुमानां सहस्रशः ॥ हुत्वा वस्त्रमवाप्नोति घृताक्तानां हुताशने ॥ २१ ॥ सूर्यमण्डलबिम्बे च हुत्वा तोयं सहस्रशः ॥ सहस्रं प्राप्नुयाद्धेम रौप्यमिंदुमये हुते ॥ २२ ॥ अलक्ष्मीपापसंयुक्ते मल

...के ॥ मुच्येत्सहस्रजाप्येन स्नायाद्यस्तु जलेन वै ॥ २३॥ गोघृतेन सहस्रेण लोध्रेण जुहुयाद्यदि ॥ चौराग्निमरुतोत्थानि
भयानि न भवंति वै ॥ २४ ॥ क्षीराहारो जपेल्लक्षमपमृत्युमपोहति ॥ घृताशी प्राप्नुयान्मेधां बहुविज्ञानसंचयाम् ॥ २५ ॥ हुत्वा वेतस
पत्राणि घृताक्तानि हुताशने ॥ लक्षाधिपस्य पदवीं सार्वभौमं न संशयः ॥ २६ ॥ लक्षेण भस्महोमस्य हुत्वा ह्युत्तिष्ठते जलात् ॥
आदित्याभिमुखः स्थित्वा नाभिमात्रे जले शुचौ ॥ २७ ॥ गर्भपाताद्यः स्त्रीणां प्रदराद्या महारुजः ॥ नाशमेष्यंति ते सर्वे मृत...
दिदुःखदाः ॥ २८ ॥ तिलानां लक्षहोमेन घृताक्तानां हुताशने ॥ सर्वकामसमृद्धात्मा परं स्थानमवाप्नुयात् ॥ २९ ॥ यवानां लक्षहोमेन
घृताक्तानां हुताशने ॥ सर्वकामसमृद्धात्मा परां सिद्धिमवाप्नुयात् ॥ ३० ॥ घृतस्याहुतिलक्षेण सर्वान् कामानवाप्नुयात् ॥ पंचगव्य
शनो लक्षं जपेज्जातिस्मृतिर्भवेत् ॥ ३१ ॥ तदेव ह्यनले हुत्वा प्राप्नोति बहुसाधनम् ॥ अन्नादिहवनान्नित्यमन्नाद्यं च भवेत्सदा ॥ ३२ ॥
जुहुयात्सर्वसाध्यानामाहुत्यायुतसंख्यया ॥ रक्तसिद्धार्थकान् हुत्वा सर्वान् साधयते रिपून् ॥ ३३ ॥ लवणं मधुसंयुक्तं हुत्वा सर्ववशी
भवेत् ॥ करवीराणि हुत्वा तु रक्तानि ज्वालयेज्जलम् ॥ ३४ ॥ हुत्वा भल्लातकं तैलं देशादेव प्रचालयेत् ॥ हुत्वा तु निंबपत्राणि
नृणां विद्वेषशांतये ॥ ३५ ॥ रक्तानां तंडुलानां च घृताक्तानां हुताशने ॥ हुत्वा बलमवाप्नोति शत्रुभिर्न स जीयते ॥ ३६ ॥ प्रत्यानयन
सिद्ध्यर्थं मधुसर्पिःसमन्वितम् ॥ गवां क्षीरं प्रदीप्तेऽग्नौ जुह्वतस्तत्प्रशाम्यति ॥ ३७ ॥ ब्रह्मचारी मिताहारो यः सहस्रत्रयं जपेत् ॥
संवत्सरेण लभते धनैश्वर्यं न संशयः ॥ ३८ ॥ शमीबिल्वपलाशानामर्कस्य तु विशेषतः ॥ पुष्पाणां समिधश्चैव हुत्वा हेम ह्यवाप्नुयात्
॥ ३९ ॥ आब्रह्मत्र्यंबकादीनां यस्यायतनमाश्रितः ॥ जपेल्लक्षं निराहारः स तस्य वरदो भवेत् ॥ ४० ॥ बिल्वानां लक्षहोमेन
घृताक्तानां हुताशने ॥ परां श्रियमवाप्नोति यदि न भ्रूणहा भवेत् ॥ ४१ ॥ पद्मानां लक्षहोमेन घृताक्तानां हुताशने ॥ प्राप्नोति राज्य
मखिलं सुसंपन्नमकंटकम् ॥ ४२ ॥ पंचविंशतिलक्षेण दधिक्षीरं हुताशने ॥ स्वदेहे सिद्ध्यते जंतुः कौशिकस्य मतं तथा ॥ ४३ ॥
एकाहं पंचगव्याशी एकाहं मारुताशनः ॥ एकाहं च द्विजोऽन्नाशी गायत्रीजप उच्यते ॥ ४४ ॥ महारोगा विनश्यंति लक्षजप्यानुभा

वतः ॥ स्नात्वा शतेन गायत्र्याः शतमन्तर्जले जपेत् ॥४५॥ शतेन यस्त्वपः पीत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ गोघ्नः पितृघ्नमातृघ्नौ ब्रह्महा गुरुतल्पगः ॥४६॥ स्वर्णहारी तैळहारी वस्तु विप्रः सुरां पिबेत् ॥ चन्दनद्वयसंयुक्तं कर्पूरं तण्डुलं यवम् ॥ ४७ ॥ ळवंगं सुफलं चाज्यं सिता चाम्रस्य दारुकैः ॥ अन्यो न्यूनविधिः प्रोक्तो गायत्र्याः प्रातिकारकः ॥४८॥ एवं कृते महासौख्यं प्राप्नोति साधको ध्रुवम् ॥ अन्नाज्य भोजनं हुत्वा कृत्वा वा कर्म गर्हितम् ॥४९॥ न सीदेत् प्रतिगृह्णानो महीमपि ससागराम् ॥ ये चास्य उत्थिता लोके ग्रहाः सूर्यादयो भुवि॥ ते यांति सौम्यतां सर्वे शिवे इति न संशयः ॥ ५० ॥ इति शारदातिलकादिप्रोक्तो ब्रह्मगायत्रीपुरश्चरणप्रयोगः ॥ १ ॥

॥ अथ हंसगायत्रीमंत्रो यथा ॥ "ॐ परमहंसाय विद्महे महातत्त्वाय धीमहि ॥ तन्नो हंसः प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ ॐ परमहंसाय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ महातत्त्वाय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो हंसः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ॥ एवमेव करांगन्यासं कुर्यात् ॥ "ॐ सोऽहं सोऽहं परोरजसे सावदोम्" इति हंसमंत्रः ॥ इति हंसगायत्री ॥ २ ॥ अथ ब्रह्मगायत्रीमंत्रो यथा–"ॐ वेदात्मने च विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि ॥ तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ ॐ वेदात्मने हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ हिरण्यगर्भाय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो ब्रह्मा नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं करन्यासं कुर्यात् ॥ इति ब्रह्मगायत्री ॥ ३ ॥ अथ सरस्वतीगायत्रीमंत्रो यथा–" ॐ ऐं वाग्देव्यै च विद्महे कामराजाय धीमहि ॥ तन्नो देवी प्रचोदयात्" इति मंत्रः ॥ ॐ ऐं वाग्देव्यै च हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ कामराजाय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं करन्यासं कुर्यात् ॥ इति सरस्वतीगायत्री ॥ ४ ॥ अथ विष्णुगायत्रीमन्त्रो यथा ॥ " ॐ श्रींविष्णवे च विद्महे वासु

देवाय धीमहि ॥ तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्" इति मंत्रः ॥ ॐ श्रीविष्णवे च हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ वासुदेवाय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो विष्णुर्नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं कुर्यात् ॥ इति विष्णुगायत्री ॥ अन्या –"ॐ त्रैलोक्यमोहनाय विद्महे आत्मारामाय धीमहि ॥ तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥" इति विष्णुगायत्रीमंत्रो द्वितीयः ॥ अन्या-"ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि ॥ तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥" इति विष्णुगायत्रीमंत्रस्तृतीयः ॥५॥अथ लक्ष्मीगायत्रीमन्त्रो यथा-ॐ महादेव्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि॥ तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ ॐ महादेव्यै च हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरहे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ विष्णुपत्न्यै च शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो लक्ष्मीर्नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं कुर्यात् ॥ 'ॐ क्लीं श्रीं श्रीं लक्ष्मीदेव्यै नमः' इति लक्ष्मीमन्त्रः ॥ इति लक्ष्मीगायत्री ॥६॥ अथ नारयणगायत्रीमन्त्रो यथा - "ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि॥ तन्नो नारायणः प्रचोदयात्॥" इति मन्त्रः ॥ ॐ नारायणाय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ वासुदेवाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो नारायणो नेत्रत्रयाय वषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं कुर्यात्'ॐ ह्रीं श्रीं श्रीमन्नारायणाय नमः' इति मूलमंत्रः ॥ इति नारायणगायत्री ॥ ७ ॥ अथ रामगायत्रीमंत्रो यथा -"ॐ दाशरथये विद्महे सीतावल्लभाय धीमहि ॥ तन्नो रामः प्रचोदयात् ॥" इति मन्त्रः ॥ ॐ अस्य श्रीरामगायत्रीमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः । गायत्री छन्दः । श्रीजानकीवल्लभो देवता । श्रीरामेति बीजम् । दाशरथये इति शक्तिः । गायत्र्यावहने जपे विनियोगः॥ ॐ वामदेवऋषये नमः

---

१ तन्त्रांतरे तु-ॐ महादेवी च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि ॥ तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥ वा-ॐमहालक्ष्म्यै च विद्महे महाश्रियै च धीमहि ॥ तन्नः श्रीः प्रचोदयात् ॥ इति महालक्ष्मीमन्त्रः ।

शिरसि ॥ १ ॥ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ श्रीजानकीवल्लभदेवतायै नमः हृदये ॥ ३ ॥ श्रीरामेति बीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ दाशरथये इति शक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ दाशरथये हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ सीतावल्लभाय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो रामः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं कुर्यात् ॥ ॐ ह्रां ह्रीं रां रामाय नमः ॥ इति राममूलमंत्रः ॥ 'ॐ जानकीकांत तारक रां रामाय नमः॥' इति रामतारकमंत्रः॥ इति रामगायत्री ॥८॥ अथ जानकीगायत्रीमंत्रो यथा—" ॐ जनकजायै विद्महे रामप्रियायै धीमहि ॥ तन्नः सीता प्रचोदयात् ॥ " इति मंत्रः ॥ ॐ जनकजायै हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐविद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ रामप्रियायै शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नः सीता नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं कुर्यात् ॥ 'ॐ सीं सीतायै नमः ॥' इति मूलमंत्रः॥ इति सीतागायत्री ॥ ९ ॥ अथ लक्ष्मणगायत्रीमंत्रो यथा—" ॐ दाशरथये विद्महे अलबेलाय धीमहि ॥ तन्नो लक्ष्मणः प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ ॐ दाशरथये हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ अलबेलाय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो लक्ष्मणः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं कुर्यात् ॥ ' ॐ ह्रां ह्रीं रां रां लं लक्ष्मणाय नमः ॥' इति मूलमंत्रः॥ इति लक्ष्मणगायत्री॥ १० ॥ अथ हनुमद्गायत्रीमंत्रो यथा—"ॐ अंजनीजाय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि ॥ तन्नो हनुमान् प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ ॐ अंजनीजाय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ वायुपुत्राय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो हनुमान् नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं कुर्यात् ॥ "ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः " इति मूलमंत्रः ॥ इति हनुमद्गायत्री ॥ ११ ॥ अथ गरुडगायत्रीमंत्रो

यथा-ॐ तत्पुरुषाय विद्महे सुवर्णपर्णाय धीमहि ॥ तन्नो गरुडः प्रचोदयात् ॥ " इति मंत्रः ॥ ॐ तत्पुरुषाय हृदयाय नमः ॥ १ ॥
ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ सुवर्णपर्णाय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो गरुडो नेत्रत्रयाय
वौषट् ॥५॥ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट्॥६॥इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं कुर्यात् ॥ 'ॐ प्रां गीं प्रूं प्रैं प्रौं प्रः' इति मूलमंत्रः ॥
इति गरुडगायत्री ॥ १२ ॥ अथ कृष्णगायत्रीमंत्रो यथा - ॐ देवकीनन्दनाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि ॥ तन्नः कृष्णः प्रचो
दयात् ॥ " इति मंत्रः ॥ ॐ देवकीनंदनाय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ वासुदेवाय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥
ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४ ॥ ॐ तन्नः कृष्णः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥
एवमेव करन्यासं कुर्यात् ॥ 'ॐ क्लीं कृष्णाय नमः' ॥ इति मूलमंत्रः ॥ इति कृष्णगायत्री ॥ १३ ॥ अथ गोपालगायत्री मंत्रो यथा--
ॐ गोपालाय विद्महे गोपीजनवल्लभाय धीमहि ॥ तन्नो गोपालः प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ ॐ गोपालाय हृदयाय नमः ॥ १ ॥
ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ गोपीजनवल्लभाय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो गोपालः
नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं कुर्यात् ॥ "ॐ गोपा
लाय गोचराय वंशशब्दाय नमो नमः" इति मूलमंत्रः ॥ इति गोपालगायत्री ॥ १४ ॥ अथ राधिकागायत्रीमंत्रो यथा ॥
"ॐ वृषभानुजायै विद्महे कृष्णप्रियायै धीमहि ॥ तन्नो राधिका प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ ॐ वृषभानुजायै हृदयाय नमः ॥ १ ॥
ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ कृष्णप्रियायै शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो राधिका नेत्रत्रयाय
वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं कुर्यात् ॥ 'ॐ रां राधिकायै
नमः' इति मूलमंत्रः ॥ इति राधिकागायत्री ॥ १५॥ अथ परशुरामगायत्रीमंत्रो यथा -- "ॐ जामदग्न्याय विद्महे महावीराय धीमहि ॥

---

१ तन्त्रांतरे तु पक्षायेति पाठः। २ तन्त्रांतरे तु ॐ श्रीकृष्णाय विद्महे दामोदराय धीमहि ॥ तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् । इति मन्त्रः ॥

तन्नः परशुरामः प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ ॐ जामदग्न्याय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ महावीराय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नः परशुरामो नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं कुर्यात् ॥ "ॐ रां रां ॐ रां रां ॐ परशुहस्ताय नमः इति मूलमंत्रः ॥ इति परशुरामगायत्री ॥ १६ ॥ अथ नृसिंहगायत्रीमंत्रो यथा ॥ "ॐ उग्रनृसिंहाय विद्महे वज्रनखाय धीमहि ॥ तन्नो नृसिंहः प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ ॐ उग्रनृसिंहाय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ वज्रनखाय शिखायै वषट् ॥ ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो नृसिंहः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं कुर्यात् ॥ 'ॐ नृं नृं नृं नृसिंहाय नमः ॥' इति मूलमंत्रः ॥ इति नृसिंहगायत्री ॥ १७ ॥ अथ हयग्रीवमंत्रो यथा ॥ " ॐ वागीश्वराय विद्महे हयग्रीवाय धीमहि ॥ तन्नो हंसः प्रचोदयात् ॥ " इति मंत्रः ॥ ॐ वागीश्वराय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ हयग्रीवाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो हंसः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं कुर्यात् ॥ इति हयग्रीवगायत्री ॥ १८ ॥ अथ शिवगायत्रीमंत्रो यथा -- " ॐ महादेवाय विद्महे रुद्रमूर्तये धीमहि ॥ तन्नः शिवः प्रचोदयात् ॥ " इति मंत्रः ॥ ॐ महादेवाय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ रुद्रमूर्तये शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नः शिवः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं कुर्यात् ॥ " ॐ संसंसंह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ शिवाय नमः " इति मूलमंत्रः ॥ इति शिवगायत्री ॥१९ ॥ अथ रुद्रगायत्रीमंत्रो यथा - " ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ " इति मंत्रः ॥ ॐ तत्पुरुषाय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाह

१ तन्त्रान्तरे तु-'वज्रनखाय विद्महे तीक्ष्णदंष्ट्राय धीमहि ॥ तन्नो नारसिंहः प्रचोदयात इति' मन्त्रः ॥

॥ २ ॥ ॐ महादेवाय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो रुद्रः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं कुर्यात् ॥ इति रुद्रगायत्री ॥२०॥ अथ दक्षिणामूर्तिगायत्री मंत्रो यथा—"ॐ दक्षिणामूर्तये विद्महे ध्यानस्थाय धीमहि ॥ तन्नो धीशः प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ ॐ दक्षिणामूर्तये हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ध्यानस्थाय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो धीशः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं कुर्यात् ॥ इति दक्षिणामूर्तिगायत्री ॥ २१ ॥ अथ गौरीगायत्रीमंत्रो यथा—"ॐ सुभगायै च विद्महे काममालायै धीमहि ॥ तन्नो गौरी प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ ॐ सुभगायै हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ काममालायै शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो गौरी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं कुर्यात् ॥ "ॐ क्लीं ॐ गौं गौरीभ्यो नमः" इति मूलमंत्रः ॥ इति गौरीगायत्री ॥ २२ ॥ अथ गणेशगायत्री मंत्रो यथा—"ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुंडाय धीमहि ॥ तन्नो दंती प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ ॐ तत्पुरुषाय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ वक्रतुंडाय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो दंती नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं कुर्यात् ॥ इति गणेशगायत्री ॥ २३ ॥ अथ षण्मुखगायत्रीमंत्रो यथा—ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि ॥ तन्नः षण्मुखः प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ ॐ तत्पुरुषाय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ महासेनाय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नः षण्मुखः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं कुर्यात् ॥ इति षण्मुखगायत्री ॥ २४ ॥ अथ नंदीगायत्रीमंत्रो यथा—"ॐ तत्पुरुषाय विद्महे

चक्रतुंडाय धीमहि ॥ तन्नो नंदिः प्रचोदयात् ॥ " इति मंत्रः ॥ ॐ तत्पुरुषाय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ चक्रतुंडाय शिखायै वौषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो नंदिः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं कुर्यात् ॥ इति नंदिगायत्री ॥ २५ ॥

अथ सूर्य्यगायत्रीमंत्रो यथा—"ॐ भास्कराय विद्महे महातेजाय धीमहि ॥ तन्नः सूर्य्यः प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ ॐ भास्कराय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ महातेजाय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नः सूर्य्यः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं कुर्यात् ॥ "ॐ ह्रौं ह्रीं ह्रूं ह्र ह्रौं ह्रः ॐ विष्णुतेजसे ज्वालामणिकुण्डलाय स्वाहा" ॥ इति मूलमंत्रः ॥ इति सूर्य्यगायत्री ॥ २६ ॥

अथ चन्द्रगायत्रीमंत्रो यथा—" ॐ क्षीरपुत्राय विद्महे अमृततत्त्वाय धीमहि ॥ तन्नश्चन्द्रः प्रचोदयात् ॥ " इति मंत्रः ॥ ॐ क्षीरपुत्राय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ अमृततत्त्वाय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नश्चन्द्रः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं कुर्यात् ॥ "ॐ चन्द्रत्वांचन्द्रेणक्रीणामिशुक्रेणमृतममृतेनगोरस्मोरतेचांद्राणि" इति मूलमंत्रः ॥ इति चन्द्रगायत्री ॥ २७ ॥

अथ भौमगायत्रीमंत्रो यथा—"ॐ अंगारकाय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि ॥ तन्नो भौमः प्रचोदयात् ॥ " इति मंत्रः ॥ ॐ अंगारकाय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ शक्तिहस्ताय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो भौमः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं कुर्यात् ॥ "ॐ अं अंगारकाय नमः" इति मूलमंत्रः ॥ इति भौमगायत्री ॥ २८ ॥ अथ पृथ्वीगायत्रीमंत्रो यथा—"ॐ पृथ्वीदेव्यै च विद्महे

१ तन्त्रांतरे तु—महाद्युतिकरायेति पाठः । पुनः ॐ आदित्याय विद्महे मार्तण्डाय धीमहि ॥ तन्नः सूर्य्यः प्रचोदयात् ॥ इति मन्त्रभेदः ।

सहस्रमूर्त्यै च धीमहि ॥ तन्नो मही प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ ॐ पृथ्वीदेव्यै च हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ सहस्रमूर्त्यै च शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो मही नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं कुर्यात् ॥ "ॐ भूरसिभूतादिरसिविश्वस्यधायाभुवनस्यमाहिंसीर्नमः ॥" इति मूलमंत्रः ॥ इति पृथ्वीगायत्री ॥ २९ ॥ अथाग्निगायत्रीमंत्रो यथा—"ॐ महाज्वालाय विद्महे अग्निमध्याय धीमहि ॥ तन्नोऽग्निः प्रचोदयात् ॥"[1] इति मंत्रः ॥ ॐ महाज्वालाय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ अग्निमध्याय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नोऽग्निः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं कुर्यात् ॥ "ॐ अं अं अग्नये नमः" इति मूलमंत्रः ॥ इति अग्निगायत्री ॥ ३० ॥ अथ जलगायत्रीमंत्रो यथा—"ॐ जलबिंबाय विद्महे नीलपुरुषाय धीमहि ॥ तन्नस्त्वंबु प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ ॐ जलबिंबाय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ नीलपुरुषाय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नस्त्वंबु नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं कुर्यात् ॥ "ॐ जँ जँ ॐ वँ वँ ॐ लँ लँ ॐ जलबिंबाय नमः ॥" इति मूलमंत्रः ॥ इति जलगायत्री ॥ ३१ ॥ अथाकाशगायत्रीमंत्रो यथा—"ॐ आकाशाय च विद्महे नभोदेवाय धीमहि ॥ तन्नो गगनं प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ ॐ आकाशाय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ नभोदेवाय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो गगनं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं कुर्यात् ॥ "ॐ गँगँ ॐ नँनँ ॐ आँ आँ ॐ गगनाय नमः" इति मूलमंत्रः ॥ इति गगनगायत्री ॥ ३२ ॥ अथ वायुगायत्रीमंत्रो यथा—"ॐ पवनपुरुषाय विद्महे सहस्र

१ तन्त्रांतरे तु—"ॐ वैश्वानराय विद्महे लालीलाय धीमहि ॥ तन्नोऽग्निः प्रचोदयात् ॥" इति मन्त्रः ॥

मूर्तये च धीमहि ॥ तन्नो वायुः प्रचोदयात् ॥ ” इति मंत्रः ॥ ॐ पवनपुरुषाय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ सहस्रमूर्तये च शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो वायुः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं कुर्यात् ॥ “ ॐ पँपँ ॐ वाँवाँ ॐ युँ युँ ॐ पवनपुरुषाय नमः ॥ ” इति मूलमंत्रः ॥ इति पवनगायत्री ॥ ३३ ॥ ॥ अथ इन्द्रगायत्रीमंत्रो यथा—“ॐ तत्पुरुषाय विद्महे सहस्राक्षाय धीमहि ॥ तन्न इन्द्रः प्रचोदयात् ॥ ” इति मंत्रः ॥ ॐ तत्पुरुषाय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ सहस्राक्षाय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्न इन्द्रः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं च कुर्यात् ॥ इति इन्द्रगायत्री ॥ ॥ ३४ ॥ अथ कामगायत्रीमंत्रो यथा—“ॐ मन्मथेशाय विद्महे कामदेवाय धीमहि ॥ तन्नोऽनंगः प्रचोदयात्” इति मंत्रः ॥ ॐ मन्मथेशाय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ कामदेवाय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचायहुम् ॥ ४ ॥ तन्नोऽनंगः नेत्रत्रयाय वषट् ॥ ५ ॥ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं च कुर्यात् ॥ इति कामगायत्री ॥ ३५ ॥ अथ गुरुगायत्रीमंत्रो यथा—“ॐ गुरुदेवाय विद्महे परब्रह्माय धीमहि ॥ तन्नो गुरुः प्रचोदयात् ॥” इति मंत्रः ॥ ॐ गुरुदेवाय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ परब्रह्माय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो गुरुः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं च कुर्यात् ॥ “ ॐ हुँ सँ क्राँ सौः गुरुदेवपरमात्मने नमः” इति मूलमंत्रः ॥ इति गुरुगायत्री ॥३६॥ अथ तुलसीगायत्री मंत्रो यथा—“ॐ श्रीत्रिपुराय विद्महे तुलसीपत्राय धीमहि ॥ तन्नस्तुलसी प्रचोदयात् ॥” इति मंत्रः ॥ ॐ श्रीत्रिपुराय हृदयाय नमः

१ तंत्रांतरे तु ॐ कामदेवाय विद्महे पुष्पबाणाय धीमहि ॥तन्नोऽनंगः प्रचोदयात् ॥ इति मंत्रः ॥

॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ तुलसीपत्राय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नस्तुलसी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं च कुर्यात् ॥ इति तुलसीगायत्री ॥ ३७ ॥ अथ देवीगायत्रीमंत्रो यथा—"ॐ देव्यै ब्रह्माण्यै विद्महे महाशक्त्यै च धीमहि ॥ तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ ॐ देव्यै ब्रह्माण्यै हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ महाशक्त्यै च शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं च कुर्यात् ॥ "ॐ ह्रौं श्रीं क्लीं नमः ॥" इति मूलमंत्रः ॥ इति देवीगायत्री ॥ ३८ ॥ अथ शक्तिगायत्रीमंत्रो यथा—"ॐ सर्वसम्मोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै धीमहि ॥ तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ ॐ सर्वसम्मोहिन्यै हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ विश्वजनन्यै शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ तन्नः शक्तिः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं च कुर्यात् ॥ इति शक्तिगायत्री ॥ ३९ ॥ अथ दुर्गागायत्रीमंत्रो यथा—"ॐ कात्यायन्यै च विद्महे कन्याकुमार्यै धीमहि ॥ तन्नो दुर्गा प्रचोदयात् ॥" ॐ कात्यायन्यै च हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ कन्याकुमार्यै शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो दुर्गा नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं च कुर्यात् ॥ इति दुर्गागायत्री ॥ ४० ॥ अथ जयदुर्गागायत्रीमंत्रो यथा—"ॐ नारायण्यै च विद्महे दुर्गायै च धीमहि ॥ तन्नो गौरी प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ ॐ नारायण्यै च हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ दुर्गायै च शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो गौरी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥

१ तंत्रांतरे तु ॐ महादेव्यै च विद्महे दुर्गायै च धीमहि ॥ तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥ इति मंत्रः ॥

एवमेव करन्यासं च कुर्यात् ॥ इति जयदुर्गागायत्री ॥ ४१ ॥ अथान्नपूर्णागायत्रीमंत्रो यथा—"ॐ भगवत्यै च विद्महे माहेश्वर्य्यै च धीमहि ॥ तन्नोऽन्नपूर्णा प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ ॐ भगवत्यै च हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ माहेश्वर्य्यै च शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नोऽन्नपूर्णा नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं च कुर्यात् ॥ इत्यन्नपूर्णागायत्री ॥ ४२ ॥ अथ कालीगायत्रीमंत्रो यथा—"ॐ कालिकायै च विद्महे श्मशानवासिन्यै धीमहि ॥ तन्नोऽघोरा प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ ॐ कालिकायै हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ श्मशानवासिन्यै शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नोऽघोरा नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं करन्यासं च कुर्यात् ॥ इति कालिकागायत्री ॥ ४३ ॥ अथ तारागायत्रीमंत्रो यथा—"ॐ तारायै च विद्महे महोग्रायै च धीमहि ॥ तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ ॐ तारायै च हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ महोग्रायै च शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव न्यासं करन्यासं च कुर्यात् ॥ इति तारागायत्री ॥४४॥ अथ षोडशी (त्रिपुरसुन्दरी) गायत्रीमंत्रो यथा—"ॐ ऐं त्रिपुरादेव्यै विद्महे क्लीं कामेश्वर्य्यै धीमहि ॥ सौस्तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ ॐ ऐं त्रिपुरादेव्यै हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ शिरसे विद्महे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ क्लीं कामेश्वर्य्यै शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ सौस्तन्नः क्लिन्ने नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं च कुर्यात् ॥ इति त्रिपुरागायत्री ॥ ४५ ॥ अथ भुवनेश्वरीगायत्रीमंत्रो यथा—

१ तन्त्रांतरे तु ॐ क्लीं त्रिपुरादेव्यै विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि ॥ तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात् ॥ इति त्रिपुरगायत्रीमंत्रः ॥ बालागायत्रीमन्त्रो यथा—ऐं वागीश्वर्य्यै विद्महे क्लीं कामेश्वर्य्यै धीमहि ॥ सौस्तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् ॥ इति षोडशीभेदेन बालागायत्रीमंत्रः ।

"ॐ नारायण्यै च विद्महे भुवनेश्वर्यै धीमहि ॥ तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ नारायण्यै च हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ भुवनेश्वर्यै शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं च कुर्यात् ॥ इति भुवनेश्वरीगायत्री ॥४६॥ अथ भैरवीगायत्रीमंत्रो यथा—"ॐ त्रिपुरायै च विद्महे भैरव्यै च धीमहि ॥ तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ ॐ त्रिपुरायै च हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ भैरव्यै च शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं च कुर्यात् ॥ इति भैरवीगायत्री ॥ ४७ ॥ अथ छिन्नमस्तागायत्रीमंत्रो यथा—"ॐ वैरोचन्यै च विद्महे छिन्नमस्तायै धीमहि ॥ तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ ॐ वैरोचन्यै च हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ छिन्नमस्तायै शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं च कुर्यात् ॥ इति छिन्नमस्तागायत्री ॥ ४८ ॥ अथ धूमावतीगायत्रीमंत्रो यथा—"ॐ धूमावत्यै च विद्महे संहारिण्यै च धीमहि ॥ तन्नो धूमा प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ ॐ धूमावत्यै च हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ संहारिण्यै च शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो धूमा नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं च कुर्यात् ॥ इति धूमावतीगायत्री ॥ ४९ ॥ अथ बगलामुखीगायत्रीमंत्रो यथा—"ॐ बगलामुख्यै च विद्महे स्तंभिन्यै च धीमहि ॥ तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ ॐ बगलामुख्यै च हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ स्तंभिन्यै च शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं च कुर्यात् ॥ इति बगलागायत्री ॥ ५० ॥ अथमातङ्गी

गायत्रीमंत्रो यथा—"ॐ मातङ्ग्यै च विद्महे उच्छिष्टचाण्डाल्यै च धीमहि ॥ तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ ॐ मातङ्ग्यै च हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ उच्छिष्टचाण्डाल्यै च शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं च कुर्यात् ॥ इति मातङ्गीगायत्री ॥ ५१ ॥ अथ महिषमर्दिनीगायत्रीमंत्रो यथा—"ॐ महिषमर्दिन्यै विद्महे दुर्गायै च धीमहि ॥ तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ ॐ महिषमर्दिन्यै हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ दुर्गायै शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं च कुर्यात् ॥ इति महिषमर्दिनीगायत्री ॥ ५२ ॥ अथ त्वरितागायत्रीमंत्रो यथा—"ॐ त्वरिता देव्यै विद्महे महानित्यायै धीमहि ॥ तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥" इति मंत्रः ॥ ॐ त्वरिता देव्यै हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ महानित्यायै शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं च कुर्यात् ॥ इति त्वरितागायत्री ॥ ५३ ॥ इति श्रीत्र्यधिकपञ्चाशद्देवतागायत्रीमंत्रे गायत्रीपटलतंत्रं समाप्तम् ॥ १ ॥ अथ गायत्रीकवचप्रारंभः ॥ याज्ञवल्क्य उवाच ॥ स्वामिन् सर्वजगन्नाथ संशयोऽस्ति महान्मम ॥ चतुःषष्टिकलानां च पातकानां च तद्वद ॥१॥ मुच्यते केन पुण्येन ब्रह्मरूपं कथं भवेत् ॥ देहश्च देवतारूपो मंत्ररूपो विशेषतः ॥ २ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ क्रमतः श्रोतुमिच्छामि कवचं विधिपूर्वकम् ॥ ॐ अस्य श्रीगायत्रीकवचस्य ब्रह्माविष्णुरुद्रा ऋषयः । ऋग्यजुःसामाथर्वाणि च्छंदांसि । परब्रह्मस्वरूपिणी गायत्री देवता भूः बीजम् । भुवः शक्तिः । स्वः कीलकम् । श्रीगायत्रीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि ॥ १ ॥ ऋग्यजुःसामाथर्वच्छंदोभ्यो नमः मुखे ॥ २ ॥ परब्रह्मस्वरूपिणीगायत्रीदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ भूः बीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥

इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ भूर्भुवः भुवः शक्तये नमः पादयोः॥ ५ ॥ स्वः कीलकाय नमः नाभौ ॥ ६ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ ७ ॥
स्वः तत्सवितुरित्यंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरेण्यं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भर्गोदेवस्य मध्य
माभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः धीमह्यनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः धियो यो नः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५॥ ॐ भूर्भुवः
स्वः प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुरीति हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
वरेण्यमिति शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भर्गोदेवस्येति शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः धीमहीति कवचाय हुम् ॥४॥
ॐ भूर्भुवः स्वः धियो यो नः इति नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः प्रचोदयादिति अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंग
न्यासः ॥ इति न्यासं कृत्वा करौ बद्ध्वा प्रार्थयेत् ॥ तथा च–वर्णास्त्रां कुंडिकाहस्तां शुद्धनिर्मलज्योतिषम् ॥ सर्वतत्त्वमयीं वन्दे
गायत्रीं वेदमातरम् ॥१॥ इति संप्रार्थ्य ध्यानं कुर्यात्॥ अथ ध्यानम्॥मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैर्युक्तामिंदुनिबद्धरत्नमुकुटां
तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम् ॥ गायत्रीं वरदाभयांकुशकशां शुभ्रं कपालं गुणं शंखं चक्रमथारविंदयुगलं हस्तैर्वहंतीं भजे॥१॥ ॐ गायत्री पूर्वतः
पातु सावित्री पातु दक्षिणे ॥ ब्रह्मविद्या च मे पश्चादुत्तरे मां सरस्वती ॥१॥ पावकीं मे दिशं रक्षेत्पावकोज्ज्वलशालिनी ॥ यातुधानीं दिशं
रक्षेद्यातुधानगणार्दिनी ॥ २ ॥ पावमानीं दिशं रक्षेत्पवमानविलासिनी ॥ दिशं रौद्रीमवतु मे रुद्राणी रुद्ररूपिणी ॥३ ॥ ऊर्ध्वं ब्रह्माणी
मे रक्षेदधस्ताद्वैष्णवी तथा ॥ एवं दश दिशो रक्षेत्सर्वतो भुवनेश्वरी ॥ ४ ॥ ब्रह्मास्त्रस्मरणादेव वाचां सिद्धिः प्रजायते ॥ ब्रह्मदण्डश्च मे
पातु सर्वशस्त्रास्त्रभक्षकः ॥ ५ ॥ ब्रह्मशीर्षस्तथा पातु शत्रूणां वधकारकः ॥ सप्त व्याहृतयः पांतु स सदा बिंदुसंयुतः ॥ ६ ॥ वेदमाता
च मां पातु सरहस्या सदैवता ॥ देवीसूक्तं सदा पातु सहस्राक्षरदेवता ॥ ७ ॥ चतुःषष्टिकला विद्या दिव्याद्या पातु देवता ॥ बीज
शक्तिश्च मे पातु पातु विक्रमदेवता ॥ ८ ॥ तत्पदं पातु मे पादौ जंघे मे सवितुः पदम् ॥ वरेण्यं कटिदेशं तु नाभिं भर्गस्तथैव च ॥९॥
देवस्य मे तु हृदयं धीमहीति गलं तथा ॥ धियो मे पातु जिह्वायां यः पदं पातु लोचने ॥ १० ॥ ललाटे नः पदं पातु मूर्द्धानं मे

प्रचोदयात् ॥ तद्वर्णः पातु मूर्द्धानं सकारः पातु भालकम् ॥ ११ ॥ चक्षुषी मे विकारस्तु श्रोत्रं रक्षेत्तु कारकः ॥ नासापुटे वकारो मे रेकारस्तु कपोलयोः ॥ १२ ॥ णिकारस्त्वधरोष्ठे च यंकारस्त्वधरोष्ठके ॥ आस्यमध्ये भकारस्तु गोंकारस्तु कपोलयोः ॥ १३ ॥ देकारः कंठदेशे च वकारः स्कन्धदेशयोः ॥ स्यकारो दक्षिणं हस्तं धीकारो वामहस्तके ॥ १४ ॥ मकारो हृदयं रक्षेद्धिकारो जठरं तथा ॥ धिकारो नाभिदेशं तु योकारस्तु कटिद्वयम् ॥ १५ ॥ गुह्यं रक्षतु योकार ऊरू मे नः पदाक्षरम् ॥ प्रकारो जानुनी रक्षेच्चोकारो जंघदेशयोः ॥ १६ ॥ दकारो गुल्फदेशं तु यात्कारः पादयुग्मकम् ॥ जातवेदेति गायत्री त्र्यंबकेति दशाक्षरा ॥ १७ ॥ सर्वतः सर्वदा पातु आपोज्योतीति षोडशी ॥ इदं तु कवचं दिव्यं बाधाशतविनाशकम् ॥ १८ ॥ चतुःषष्टिकलाविद्यासकलैश्वर्यसिद्धिदम् ॥ जपारंभे च हृदयं जपांते कवचं पठेत् ॥ १९ ॥ स्त्रीगोब्राह्मणमित्रादिद्रोहाद्यखिलपातकैः ॥ मुच्यते सर्वपापेभ्यः परं ब्रह्माधिगच्छति ॥ २० ॥ पुष्पांजलिं च गायत्र्या मूलेनैव पठेत्सकृत् ॥ शतसाहस्रवर्षाणां पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥ २१ ॥ भूर्जपत्रे लिखित्वैतत्स्वकंठे धारयेद्यदि ॥ शिखायां दक्षिणे बाहौ कंठे वा धारयेद्बुधः ॥ २२ ॥ त्रैलोक्यं क्षोभयेत्सर्वं त्रैलोक्यं दहति क्षणात् ॥ पुत्रवान्धनवाञ्छ्रीमान्नानाविद्यानिधिर्भवेत् ॥ २३ ॥ ब्रह्मास्त्रादीनि सर्वाणि तदंगस्पर्शनात्ततः ॥ भवंति तस्य तुल्यानि किमन्यत्कथयामि ते ॥ २४ ॥ अभिमंत्रितगायत्रीकवचं मानसं पठेत् ॥ तज्जलं पिबतो नित्यं पुरश्चर्याफलं भवेत् ॥ २५ ॥ लघुसामान्यकं मंत्रं महामंत्रं तथैव च ॥ यो वेत्ति धारणां युञ्जञ्जीवन्मुक्तः स उच्यते ॥ २६ ॥ सप्त व्याहृतयो विप्र सप्तावस्थाः प्रकीर्तिताः ॥ सप्तजीवशता नित्यं व्याहृती अग्निरूपिणी ॥ २७ ॥ प्रणवे नित्ययुक्तस्य व्याहृतीषु च सप्तसु ॥ सर्वेषामेव पापानां संकरे समुपस्थिते॥२८॥शतं सहस्रमभ्यर्च्य गायत्रीपावनं महत्॥दशशतमष्टोत्तरशतं गायत्रीपावनं महत् ॥२९॥भक्तिमान्यो भवेद्विप्रः संध्याकर्म समाचरेत् ॥ काले काले तु कर्तव्यं सिद्धिर्भवति नान्यथा ॥ ३० ॥ प्रवणं पूर्वमुद्धृत्य भूर्भुवःस्वस्तथैव च ॥ तुर्यं सहैव गायत्रीजप एव उदाहृतः ॥ ३१ ॥ तुरीयपादमुत्सृज्य गायत्रीं च जपेद्द्विजः ॥ स मूढो नरकं याति कालसूत्रमधोगतिः ॥ ३२ ॥ मंत्रादौ जननं

सफला भवेत् ॥ ३३ ॥ मंत्रादौ पाशबीजं च मंत्रांते कुशबीजकम् ॥ मंत्र
प्रोक्तं मंत्रांते मृतसूतकम् ॥ उभयोर्दोषनिर्मुक्तं गायत्री सफला भवेत् ॥ ३३ ॥ वाचिकं त्वेकमेव स्यादुपांशु शतमुच्यते ॥ सहस्रं मानसं प्रोक्तं. त्रिविधं जपलक्षणम्
मध्ये तु या माया गायत्री सफला भवेत् ॥ ३४ ॥ वाचिकं त्वेकमेव स्यादुपांशु शतमुच्यते ॥ सहस्रं मानसं प्रोक्तं त्रिविधं जपलक्षणम्
मध्ये तु या माया गायत्री सफला भवेत् ॥ ३४ ॥ जपं चाक्षस्वरूपेणानामिकामध्यपर्वणि ॥ ३६ ॥ अनामा मध्यया हीना
॥ ३५ ॥ अक्षमालां च मुद्रां च गुरोरपि न दर्शयेत् ॥ जपं चाक्षस्वरूपेणानामिकामध्यपर्वणि नियमः स्मृतः ॥ गायत्र्या वेदमूलत्वा
कनिष्ठादिक्रमेण तु । तर्जनीमूलपर्यंतं गायत्रीजपलक्षणम् ॥ ३७ ॥ पर्वभिस्तु जपेदेवमन्यत्र नियमः स्मृतः ॥ ३९ ॥ प्रातः
द्वेदः पर्वसु गीयते ॥ ३८ ॥ दशभिर्जन्मजनितं शतेनैव पुराकृतम् ॥ त्रियुगं तु सहस्राणि गायत्री हंति किल्बिषम् ॥ ३९ ॥ प्रातः
कालेषु कर्तव्यं सिद्धिं विप्रो य इच्छति ॥ नादालये समाधिश्च संध्यायां समुपासते ॥ ४० ॥ अंगुल्यग्रेग यजतं यजतं मेरुलंघने ॥ असं
ख्यया च यजतं तजतं निष्फलं भवेत् ॥ ४१ ॥ विना वस्त्रं प्रकुर्वीत गायत्री निष्फला भवेत् ॥ वस्त्रपुच्छं न जानाति वृथा तस्य परि
श्रमः ॥ ४२ ॥ गायत्रीं तु परित्यज्य अन्यं मंत्रमुपासते ॥ सिद्धान्नं च परित्यज्य भिक्षामटति दुर्मतिः ॥ ४३ ॥ ऋषिश्छंदो देवताख्या
बीजशक्तिश्च कीलकम् ॥ विनियोगं न जानाति गायत्री निष्फला भवेत् ॥ ४४ ॥ वर्णमुद्रा ध्यानपदमावाहनविसर्जनम् ॥ दीपचक्रं न
जानाति गायत्री निष्फला भवेत् ॥ ४५ ॥ शक्तिन्यासस्तथा स्थानं मंत्रसंबोधनं परम् ॥ त्रिविधं यो न जानाति गायत्री निष्फला भवेत्
॥४६॥ पंचोपचारकांश्चैव होमद्रव्यं तथैव च ॥ पंचांगं च विना नित्यं गायत्री निष्फला भवेत् ॥४७॥ मंत्रसिद्धिर्भवेज्जातु विश्वामित्रेण
भाषितम् ॥ व्यासो वाचस्पतिं जीवस्तुता देवी तपः स्मृतौ॥४८॥देवी जप्ता सहस्रं सा ह्युपपातकनाशिनी॥लक्षजाप्ये तथा तच्च महापातक
नाशिनी ॥ ४९ ॥ कोटिजाप्येन राजेंद्र यदिच्छति तदाप्नुयात् ॥ न देयं परशिष्येभ्यो ह्यभक्तेभ्यो विशेषतः ॥ शिष्येभ्यो भक्तियुक्तेभ्यो
ह्यन्यथा मृत्युमाप्नुयात् ॥ ५० ॥ इति श्रीमद्वासिष्ठसंहितायां गायत्रीकवचं सम्पूर्णम् ॥ अथ गायत्रीपंजरस्तोत्रम् ॥ भगवंतं देवदेवं
ब्रह्माणं परमेष्ठिनम् ॥ विधातारं विश्वसृजं पद्मयोनिं प्रजापतिम् ॥ १ ॥ शुद्धस्फटिकसंकाशं महेन्द्रशिखरोपमम् ॥ बद्धपिंगजटाजूट
तडित्कनककुंडलम् ॥ २ ॥ शरच्चंद्राभवदनं स्फुरदिन्दीवरेक्षणम् ॥ हिरण्मयं विश्वरूपमुपवीताजिनावृतम् ॥ ३ ॥ मौक्तिकाभाक्ष

वलयस्तंत्रीलयसमन्वितः ॥ कर्पूरोद्धूलिततनुः स्रष्टुर्नयनवर्द्धनम् ॥ ४ ॥ विनयेनोपसंगम्य शिरसा प्रणिपत्य च ॥ नारदः परिपप्रच्छ देवर्षिगणमध्यगः ॥ ५ ॥ नारद उवाच ॥ भगवन्देवदेवेश सर्वज्ञ करुणानिधे ॥ श्रोतुमिच्छामि प्रश्नेन भोगमोक्षैकसाधनम् ॥ ६ ॥ ऐश्वर्यस्य समग्रस्य फलदं द्वंद्ववर्जितम् ॥ ब्रह्महत्यादिपापघ्नं पापाद्यरिभयापहम् ॥ ७ ॥ यदेकं निष्कलं सूक्ष्मं निरंजनमनामयम् ॥ यत्ते प्रियतमं लोके तन्मे ब्रूहि पितर्मम ॥८॥ ब्रह्मोवाच॥शृणु नारद वक्ष्यामि ब्रह्ममूलं सनातनम् ॥ सृष्ट्यादौ मन्मुखे क्षिप्तं देवदेवेन विष्णुना ॥ ९ ॥ प्रपंचबीजमित्याहुरुत्पत्तिस्थितिहेतुकम् ॥ पुरा मया तु कथितं कश्यपाय सुधीमते ॥१०॥ सावित्रीपंजरं नाम रहस्यं निगमत्रये ॥ ऋष्यादिकं च दिग्वर्णं सांगावरणकं क्रमात् ॥ ११ ॥ वाहनायुधमंत्रास्त्रमूर्तिध्यानसमन्वितम् ॥ स्तोत्रं शृणु प्रवक्ष्यामि तव स्नेहाच्च नारद ॥ १२ ॥ ब्रह्मनिष्ठाय देयं स्याददेयं यस्य कस्यचित् ॥ आचम्य नियतः पश्चादात्मध्यानपुरःसरम् ॥ १३ ॥ ओमित्यादौ विचिंत्याथ व्योमहेमाब्जसंस्थिताम् ॥ धर्मकंदगतज्ञानाैश्वर्याष्टदलान्विताम् ॥१४॥ वैराग्यकर्णिकासीनां प्रणवग्रहमध्यगाम् ॥ ब्रह्मवेदी समायुक्तां चैतन्यपुरमध्यगाम् ॥ १५ ॥ तत्त्वहंससमाकीर्णां शब्दपीठे सुसंस्थिताम् ॥ नादबिंदुकलातीतां गोपुरैरुपशोभिताम् ॥ ॥ १६ ॥ विद्याविद्यामृतत्वादिप्रकारैरभिसंवृताम् ॥ निगमार्गलसंच्छन्नां निर्गुणद्वारवाटिकाम् ॥ १७ ॥ चतुर्वर्गफलोपेतां महाकल्पवनैर्वृताम् ॥ सांद्रानंदसुधासिंधुनिगमद्वारवाटिकाम् ॥ १८ ॥ ध्यानधारणयोगादितृणगुल्मलतावृताम् ॥ सदसच्चित्स्वरूपाख्यमृगपक्षिसमाकुलाम् ॥ १९ ॥ विद्याविद्याविचारत्वाल्लोकालोकाचलावृताम् ॥ अविकारसमाश्लिष्टनिजध्यानगुणावृताम् ॥ २० ॥ पंचीकरणपंचोत्थभूततत्त्वनिवेदिताम् ॥ वेदोपनिषदर्थाख्यदेवर्षिगणसेविताम् ॥ २१ ॥ इतिहासग्रहगणैः सदारैरभिवंदिताम् ॥ गाथाप्सरोभिर्यक्षैश्च गणकिन्नरसेविताम् ॥ २२ ॥ नारसिंहपुराणाख्यैः पुरुषैः कल्पचारणैः ॥ कृतगानविनोदादिकथालापनतत्पराम् ॥ २३ ॥ तदित्यवाङ्मनोगम्यतेजोरूपधरां पराम् ॥ जगतः प्रसवित्रीं तां सवितुः सृष्टिकारिणीम् ॥ २४ ॥ वरेण्यमित्यन्नमयीं पुरुषार्थफलप्रदाम् ॥ अविद्यावर्णवर्ज्यां च तेजोवद्गर्भसंज्ञिकाम् ॥ २५ ॥ देवस्य सच्चिदानंदपरब्रह्मरसात्मिकाम् ॥ धीमह्यहं स वै तद्वद्ब्रह्माद्वैतस्वरू-

पिणीम् ॥ २६ ॥ धियो यो नस्तु सविता प्रचोदयादुपासिताम् ॥ परोऽसौ सविता साक्षादेनोनिर्हरणाय च ॥ २७ ॥ परोरजस
पिणीम् ॥ २६ ॥ धियो यो नस्तु सविता प्रचोदयादुपासिताम् ॥ २८ ॥ रसोमृतं ब्रह्मपदैस्तां नित्यां तापिनीं पराम् ॥
इत्यादि परं ब्रह्म सनातनम् ॥ आपो ज्योतिरिति द्वाभ्यां पांचभौतिकसंज्ञकम् ॥ २८ ॥ रसोमृतं ब्रह्मपदैस्तां नित्यां तापिनीं पराम् ॥
इत्यादि परं ब्रह्म सनातनम् ॥ आपो ज्योतिरिति द्वाभ्यां पांचभौतिकसंज्ञकम् ॥२९॥ महर्जनस्तपःसत्यलोकोपरि सुसंस्थिताम्॥तादृगस्या विराड्रूपरहस्यं प्रवदाम्यहम् ॥३०॥
भूर्भुवः सुवरित्येतैर्निगमत्वप्रकाशिकाम् ॥२९॥ महर्जनस्तपःसत्यलोकोपरि सुसंस्थिताम्॥तादृगस्या विराड्रूपरहस्यं प्रवदाम्यहम् ॥३०॥
भूर्भुवः सुवरित्येतैर्निगमत्वप्रकाशिकाम् ॥ मेघभ्रुकुटिमाक्रांतविधिविष्णुशिवार्चिताम् ॥३१॥ गुरुभार्गवकर्णांतां सोमसूर्याग्निलोचनाम् ॥
व्योमकेशालकाकाशद्योकिरीटविराजिताम् ॥ मेघभ्रुकुटिमाक्रांतविधिविष्णुशिवार्चिताम् ॥३१॥ गुरुभार्गवकर्णांतां सोमसूर्याग्निलोचनाम् ॥
व्योमकेशालकाकाशद्योकिरीटविराजिताम् ॥ ३२ ॥ संध्याद्विरोष्ठपुटितां लसद्वाग्भूपजिह्विकाम्॥संध्यासौ द्युमणेः कंठलसद्बाहुसमन्विता
इडापिंगलसूक्ष्माभ्यां वामनासापुटान्विताम् ॥ ३२ ॥ संध्याद्विरोष्ठपुटितां लसद्वाग्भूपजिह्विकाम्॥संध्यासौ द्युमणेः कंठलसद्बाहुसमन्विता
इडापिंगलसूक्ष्माभ्यां वामनासापुटान्विताम् ॥ आकाशोदरवित्रस्तनाभ्यवांतरदेशिकाम् ॥३४॥ प्रजापत्याख्यजघनां कटींद्राणीतिसंज्ञि
म् ॥३३॥ पर्जन्यहृदयासक्तवसुसुस्तनमंडलाम् ॥ आकाशोदरवित्रस्तनाभ्यवांतरदेशिकाम् ॥३४॥ प्रजापत्याख्यजघनां कटींद्राणीतिसंज्ञि
म् ॥३३॥ पर्जन्यहृदयासक्तवसुसुस्तनमंडलाम् ॥ जानुनी जहुकाशिकवैश्वदेवसदाभुजाम् ॥ अयनद्वयजंघाद्यसुराद्यपितृसंज्ञिका
काम् ॥ ऊरूमलयमेरुभ्यां शोभमानाऽसुरद्विषाम् ॥ ३५ ॥ जानुनी जहुकाशिकवैश्वदेवसदाभुजाम् ॥ अयनद्वयजंघाद्यसुराद्यपितृसंज्ञिका
काम् ॥ ऊरूमलयमेरुभ्यां शोभमानाऽसुरद्विषाम् ॥ ३५ ॥ प्रहराश्यर्क्षदेवर्षिमूर्ति च परसंज्ञिकाम् ॥ ३७ ॥ तिथिमासर्तुवर्षाख्यसुकेतु
म् ॥ ३६ ॥ पदांघ्रिनखरोमाणि भूतलद्रुमलांछिताम् ॥ प्रहराश्यर्क्षदेवर्षिमूर्ति च परसंज्ञिकाम् ॥ ३७ ॥ तिथिमासर्तुवर्षाख्यसुकेतु
म् ॥ ३६ ॥ पदांघ्रिनखरोमाणि भूतलद्रुमलांछिताम् ॥ ३८ ॥ मायाकल्पितवैचित्र्यसंध्याच्छादनसंवृताम् ॥ ज्वलत्का
निमिषात्मिकाम् ॥ अहोरात्रार्द्धमासाख्यां सूर्यचन्द्रमसात्मिकाम् ॥ ३८ ॥ मायाकल्पितवैचित्र्यसंध्याच्छादनसंवृताम् ॥ ज्वलत्का
निमिषात्मिकाम् ॥ अहोरात्रार्द्धमासाख्यां सूर्यचन्द्रमसात्मिकाम् ॥ चंद्रकोटिसुशीतलाम् ॥ सुधामंडलमध्यस्थां सांद्रानंदाऽमृतात्मि
लानलप्रख्यां तडित्कोटिसमप्रभाम् ॥ ३९ ॥ कोटिसूर्यप्रतीकाशां चंद्रकोटिसुशीतलाम् ॥ सुधामंडलमध्यस्थां सांद्रानंदाऽमृतात्मि
लानलप्रख्यां तडित्कोटिसमप्रभाम् ॥ ३९ ॥ कोटिसूर्यप्रतीकाशां चराचरमयीं नित्यां ब्रह्माक्षरसमन्विताम् ॥ ४१ ॥ ध्यात्वा स्वात्मनि
काम् ॥ ४० ॥ वागतीतां मनोरम्यां वरदां वेदमातरम् ॥ चराचरमयीं नित्यां ब्रह्माक्षरसमन्विताम् ॥ ४१ ॥ ध्यात्वा स्वात्मनि
काम् ॥ ४० ॥ वागतीतां मनोरम्यां वरदां वेदमातरम् ॥ ४२ ॥ देवता च परो हंसः परब्रह्मादिदेवता ॥ प्रणवो बीजशक्तिः
भेदेन ब्रह्मपंजरमारभे ॥ पंजरस्य ऋषिश्चाहं छंदो विकृतिरुच्यते ॥ ४२ ॥ देवता च परो हंसः परब्रह्मादिदेवता ॥ प्रणवो बीजशक्तिः
भेदेन ब्रह्मपंजरमारभे ॥ पंजरस्य ऋषिश्चाहं छंदो विकृतिरुच्यते ॥ मंत्रमापोज्योतिरिति योनिर्हंसः सत्रेधकम् ॥४४॥ विनि
स्यादों कीलकमुदाहृतम् ॥४३॥ तत्तत्वं धीमहि क्षेत्रं धियोऽस्त्रं यत् परं पदम् ॥ मंत्रमापोज्योतिरिति योनिर्हंसः सत्रेधकम् ॥४४॥ विनि
स्यादों कीलकमुदाहृतम् ॥४३॥ तत्तत्वं धीमहि क्षेत्रं धियोऽस्त्रं यत् परं पदम् ॥ ४५ ॥ पूर्वोक्तदेवतां ध्यायेत्साकारगुणसंयुताम् ॥
योगस्तु सिद्ध्यर्थं पुरुषार्थचतुष्टये ॥ ततस्तैरंगषट्कं स्यात्तैरेव व्यापकत्रयम् ॥ ४५ ॥ पूर्वोक्तदेवतां ध्यायेत्साकारगुणसंयुताम् ॥
योगस्तु सिद्ध्यर्थं पुरुषार्थचतुष्टये ॥ ततस्तैरंगषट्कं स्यात्तैरेव सितशुभ्रसमाननाम् ॥ वाणीं परां रमां मायां चामरै
पंचवक्त्रां दशभुजां त्रिपंचनयनैर्युताम् ॥ ४६ ॥ मुक्ताविद्रुमसौवर्णां सितशुभ्रसमाननाम् ॥ वाणीं परां रमां मायां चामरै
पंचवक्त्रां दशभुजां त्रिपंचनयनैर्युताम् ॥ ४६ ॥ मुक्ताविद्रुमसौवर्णां ॥ ४८ ॥ ऊर्ध्वेन्दुबद्धमुकुटकिरीट
दर्पणैर्युताम् ॥ ४७ ॥ षडंगदेवतामंत्रै रूपाद्यवयवात्मिकाम् ॥ मृगेन्द्रवृषपक्षींद्रमृगहंसासनस्थिताम् ॥ ४८ ॥ ऊर्ध्वेन्दुबद्धमुकुटकिरीट
दर्पणैर्युताम् ॥ ४७ ॥ षडंगदेवतामंत्रै रूपाद्यवयवात्मिकाम् ॥ मृगेन्द्रवृषपक्षींद्रमृगहंसासनस्थिताम् ॥ ४८ ॥ ऊर्ध्वेन्दुबद्धमुकुटकिरीट

मणिकुंडलाम् ॥ रत्नताटंकमांगल्यपरग्रैवेयनूपुराम् ॥४९॥ अंगुलीयककेयूरकंकणाद्यैरलंकृताम् ॥ दिव्यस्रग्वस्त्रसंछन्नरविमंडलमध्यगाम् ॥५०॥ वराभयाब्जयुगलां शंखचक्रगदांकुशाम् ॥ शुभ्रं कपालं दधतीं वहन्तीमक्षमालिकाम् ॥५१॥ गायत्रीं वरदां देवीं सावित्रीं वेदमातरम् ॥ आदित्यपथगां नित्यां स्मरेद्ब्रह्मस्वरूपिणीम् ॥ ५२ ॥ विचित्रमंत्रजननीं स्मरेद्विद्यां सरस्वतीम् ॥ त्रिपदाऋङ्मयी पूर्वामुखी ब्रह्मास्त्रसंज्ञिका॥५३॥चतुर्विंशतितत्त्वाख्या पातु प्राचीं दिशं मम ॥ चतुष्पादयजुर्ब्रह्मदंडाख्या पातु दक्षिणाम् ॥ ५४ ॥ षट्त्रिंशत्तत्त्वयुक्ता सा पातु मे दक्षिणां दिशम् ॥ प्रत्यङ्मुखी पंचपदी पंचाशत्तत्त्वरूपिणी ॥ ५५ ॥ पातु प्रतीचीमनिशं सामब्रह्मशिरोऽङ्किता ॥ सौम्या ब्रह्मस्वरूपाख्या साथर्वांगिरसात्मिका ॥ ५६ ॥ उदीचीं षट्पदा पातु चतुष्षष्टिकलात्मिका ॥ पंचाशत्तत्त्वरचिता [१]भवपादा शताक्षरी ॥५७॥ व्योमाख्या पातु मे चोर्ध्वां दिशं वेदांगसंस्थिता ॥ विद्युन्निभा ब्रह्मसंज्ञा मृगारूढा चतुर्भुजा॥५८॥ चापेषुचर्मासिधरा पातु मे पावकीं दिशम् ॥ ब्राह्मी कुमारी गायत्री रक्तांगी हंसवाहिनी ॥ ५९ ॥ बिभ्रत्कमंडल्वक्षस्त्रक्स्त्रुवान्मे पातु नैर्ऋतीम् ॥ चतुर्भुजा वेदमाता शुक्लांगी वृषवाहिनी ॥ ६० ॥ वराभयकपालाक्षस्त्रग्विणी पातु वारुणीम् ॥ श्यामा सरस्वती वृद्धा वैष्णवी गरुडासना ॥ ६१ ॥ शंखार्यब्जाभयकरा पातु शैवीं दिशं मम ॥ चतुर्भुजा वेदमाता गौरांगी सिंहवाहना ॥ ६२ ॥ वराभयाब्जयुगलैर्भुजैः पात्ववरां दिशम् ॥ तत्तत्पार्श्वस्थिता स्वस्ववाहनायुधभूषणा ॥ ६३ ॥ स्वस्वदिक्षु स्थिताः पांतु ग्रहशक्त्यंगदेवताः ॥ मंत्राधिदेवतारूपा मुद्राधिष्ठानदेवताः ॥ ६४ ॥ व्यापकत्वेन पात्वस्मानापादतलमस्तकम् ॥ तत्पदं मे शिरः पातु भालं मे सवितुः पदम् ॥ ६५ ॥ वरेण्यं मे दृशौ पातु श्रुती भर्गः सदा मम ॥ घ्राणं देवस्य म पातु पातु धीमहि मे मुखम् ॥६६॥ जिह्वां मम धियः पातु कंठे मे पातु यः पदम् ॥ नः पदं पातु मे स्कंधौ भुजौ पातु प्रचोदयात् ॥ ६७ ॥ करौ मे च परः पातु पादौ मे रजसोऽवतु ॥ ॐ मे नाभिं सदा पातु कटिं मे पातु मे सदा ॥ ६८ ॥ ओमापः सक्थिनी पातु गुह्यं ज्योतिः सदा मम ॥ ऊरू मम रसः पातु जानुनी अमृतं मम ॥ ६९ ॥

[१] एकादशपदामित्यर्थ. ।

जंघे ब्रह्मपदं पातु गुल्फौ भूः पातु मे सदा ॥ पादौ मम भुवः पातु सुवः पात्वखिलं वपुः ॥ ७० ॥ रोमाणि मे महः पातु रोमकं पातु मे जनः ॥ प्राणश्च धातुस्तत्त्वानि तदीशः पातु मे तपः ॥ ७१ ॥ सत्यं पातु ममायूंषि हंसो वृद्धिं च पातु मे ॥ शुचिषत्पातु मे शुक्रं वसु पातु श्रियं मम ॥ ७२ ॥ मतिं पात्वंतरिक्षेसद्धोता दान च पातु मे ॥ वेदिषत्पातु मे विद्यामतिथिः पातु मे गृहम् ॥ ७३ ॥ धर्मं दुरोणसत्पातु नृषत्पातु सुतान्मम ॥ वरसत्पातु मे मायामृतसत्पातु मे सुतान् ॥ ७४ ॥ व्योमसत्पातु मे बंधून् भ्रातॄनब्जश्च पातु मे ॥ पशून्मे पातु गोजाश्च ऋतजाः पातु मे भुवम् ॥७५॥ सर्वं मे अद्रिजा पातु यानं मे पात्वृतं सदा ॥ अनुक्तमथ यत्स्थानं शरीरेंऽतर्बहिश्च यत् ॥ ७६ ॥ तत्सर्वं पातु मे नित्यं हंसः सोऽहमहर्निशम् ॥ इदं तु कथितं सम्यङ् मया ते ब्रह्मपंजरम् ॥ ७७ ॥ संध्ययोः प्रत्यहं भक्त्या जपकाले विशेषतः ॥ धारयोद्द्विजवर्यो यः श्रावयेद्वा समाहितः ७८ ॥ स विष्णुः स शिवः सोऽहं सोऽक्षरः स विराट् स्वराट् ॥ शताक्षरात्मकं देव्या नामाष्टाविंशतिः शतम् ॥ ७९ ॥ शृणु वक्ष्यामि तत्सर्वमतिगुह्यं सनातनम् ॥ भूतिदा भुवना वाणी वसुधा सुमना मही ॥ ८० ॥ हरिणी जननी नंदा सविसर्गा तपस्विनी ॥ पयस्विनी सती त्यागा चैंदवी सत्यवीरसा ॥ ॥ ८१ ॥ विश्वा तुर्य्या परा रेच्या निर्घृणी यमिनी भवा ॥ गोवेद्या च जरिष्ठा च स्कंदिनी धीर्मतिर्हि मा ॥ ८२ ॥ भीषणा योगिनी यक्षी नदी प्रज्ञा च चोदिनी ॥ धनिनी यामिनी पद्मा रोहिणी रमणी ऋषिः ॥ ८३ ॥ सेनामुखी सामयी च वकुला दोषवर्जिता ॥ सर्वकामदुघा सोमोद्भवाहंकारवर्जिता ॥ ८४ ॥ द्विपदा च चतुष्पदा त्रिपदा चैकषट्पदा ॥ अष्टापदी नवपदी सा सहस्राक्षरात्मिका ॥ ८५ ॥ इदं यः परमं गुह्यं सावित्रीमंत्रपंजरम् ॥ नामाष्टविंशतिशतं शृणुयाच्छ्रावयेत्पठेत् ॥ ८६ ॥ मर्त्यानाममृतत्वाय भीतानामभयाय च ॥ मोक्षाय च मुमुक्षूणां श्रीकामानां श्रिये सदा ॥ ८७ ॥ विजयाय युयुत्सूनां व्याधितानामरोगकृत् ॥ वश्याय वश्यकामानां विद्यायै वेदकामिनाम् ॥ ८८ ॥ द्रविणाय दरिद्राणां पापिनां पापशांतये ॥ वादिनां वादिविजय कवीनां कविताप्रदम् ॥ ८९ ॥ अन्नाय क्षुधितानां च स्वर्गाय नाकमिच्छताम् ॥ पशुभ्यः पशुकामानां पुत्रेभ्यः पुत्रकांक्षिणाम् ॥ ९० ॥

क्लेशिनां शोकशांत्यर्थं नृणां शत्रुभयाय च ॥ राजवश्याय द्रष्टव्यं पंजरं नृपसेविनाम् ॥ ९१ ॥ भक्त्यर्थं विष्णुभक्तानां विष्णौ सर्वांतरात्मनि ॥ नायकं विधिसृष्टानां शांतये भवति ध्रुवम् ॥ ९२ ॥ निःस्पृहाणां नृणां मुक्तिः शाश्वती भवति ध्रुवम् ॥ जप्यं त्रिवर्गसंयुक्तं गृहस्थेन विशेषतः ॥ ९३ ॥ मुनीनां ज्ञानसिद्ध्यर्थं यतीनां मोक्षसिद्धये ॥ उद्यंतं चंद्रकिरणमुपस्थाय कृतांजलिः ॥ ९४ ॥ कानने वा स्वभवने तिष्ठञ्छुद्धो जपेदिदम् ॥ सर्वान्कामानवाप्नोति तथैव शिवसन्निधौ ॥ ९५ ॥ मम प्रीतिकरं दिव्यं विष्णुभक्तिविवर्द्धनम् ॥ ज्वरार्त्तानां कुशाग्रेण मार्जयेत्कुष्ठरोगिणाम् ॥ ९६ ॥ अंगमंगं यथालिंगं कवचेन तु साधकः ॥ मंडलेन विशुद्ध्येत सर्वरोगैर्न संशयः ॥ ९७ ॥ मृतप्रजा च या नारी जन्मवन्ध्या तथैव च ॥ कन्यादिवंध्या या नारी तासामंगं प्रमार्जयेत् ॥ ९८ ॥ पुत्रान्नरोगिणस्तास्तु लभंते दीर्घजीविनः ॥ तास्ताः संवत्सरादर्वाग्गर्भन्तु दधिरे पुनः ॥ ९९ ॥ पतिविद्वेषिणी या स्त्री अंगं तस्याः प्रमार्जयेत् ॥ तमेव भजते सा स्त्री पतिं कामवशं नयेत् ॥ १०० ॥ अश्वत्थे राजवश्यार्थं बिल्वमूले स्वरूपभाक् ॥ पलाशमूले विद्यार्थी तेजसाभिमुखो रवौ ॥ १०१ ॥ कन्यार्थी चंडिकागेहे जपेच्छत्रुभयाय च ॥ श्रीकामो विष्णुगेहे च उद्याने श्रीर्वशीभवेत् ॥ १०२ ॥ आरोग्यार्थे स्वगेहे च मोक्षार्थी शैलमस्तके ॥ सर्वकामो विष्णुगेहे मोक्षार्थी यत्र कुत्रचित् ॥ १०३ ॥ जपारंभे तु हृदयं जपांते कवचं पठेत् ॥ किमत्र बहुनोक्तेन शृणु नारद तत्त्वतः ॥ यं यं चिंतयते नित्यं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ॥ १०४ ॥ इति श्रीमद्वसिष्ठसंहितायां ब्रह्मनारदसंवादे श्रीमद्गायत्रीपंजरस्तोत्रं समाप्तम् ॥ अथ गायत्रीस्तवराजः ॥ ॐ अस्य श्रीगायत्रीस्तवराजस्तोत्रमंत्रस्य विश्वामित्रऋषिः। सकलजननी चतुष्पदा गायत्री परमात्मा देवता। सर्वोत्कृष्टं परं धाम प्रथमपादो बीजम्। द्वितीयः शक्तिः। तृतीयः कीलकम्। दशप्रणवसंयुक्ता सव्याहृतिका तुर्यपादसहिता व्यापकं मम धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः॥न्यासं कृत्वा ध्यायेत्॥अथ ध्यानम्॥ 'गायत्रीं वेदधात्रीं शतमखफलदां वेदशास्त्रैकवेद्यां चिच्छक्तिं ब्रह्मविद्यां परमशिवपदां श्रीपदं वै करोति ॥ सर्वोत्कृष्टं पदं तत्सवितुरनु पदांते वरेण्यं शरण्यं भर्गो देवस्य धीमह्यभिदधति धियो यो नः प्रचोदयादित्यौर्वतेजः॥१॥साम्राज्यबीजं प्रणवत्रिपादं सव्यापसव्यं प्रजपेत्सहस्रकम्॥

संपूर्णकामं प्रणवं विभूतिं तथा भवेद्वाक्यविचित्रवाणी॥२॥शुभं शिवं शोभनमस्तु मह्यं सौभाग्यभोगोत्सवमस्तु नित्यम् ॥ प्रकाशविद्यात्रय
शास्त्रसर्वं भजेन्महामंत्रफलं प्रिये वै ॥ ३ ॥ ब्रह्मास्त्रं ब्रह्मदंडं शिरसि शिखिमहद्ब्रह्मशीर्षं नमोऽतं सूक्तं पारायणोक्तं प्रणदमथ महावाक्य
सिद्धांतमूलम् ॥ सूर्य्यं त्रीणि द्वितीयं प्रथममनुमहावेदवेदांतसूक्तं नित्यं स्मृत्यानुसारं नियमितचरितं मूलमंत्रं नमोऽतम्॥४॥अस्त्रं शस्त्रहतं
स्वघोरसहितं दंडेन वाजीहतम् आदित्यादिहतं शिरोऽतसहितं पापक्षयार्थं परम् ॥ तुर्य्यांत्यादिविलोममंत्रपठनं बीजं शिखांतोर्ध्वकं नित्यं
कालनियम्यविप्रविदुषां किं दुष्कृतं भूसुरान् ॥५॥ नित्यं मुक्तिप्रदं नियम्य पवनं निर्घोषशक्तित्रयं सम्यग्ज्ञानगुरूपदेशविधिवद्देवीं शिखां
तामपि ॥ षष्ट्येकोत्तरसंख्ययानुगतसौषुम्णादिमार्गत्रयीं ध्यायेन्नित्यसमस्तवेदजननीं देवीं त्रिसंध्यामयीम् ॥ ६ ॥ गायत्रीं सकलागमाथ
विदुषां सौरस्य बीजेश्वरीं सर्वाम्नायसमस्तमंत्रजननीं सर्वज्ञधामेश्वरीम् ॥ब्रह्मादित्रयसंपुटार्थकरणीं संसारपारायणीं संध्यां सर्वसमानतंत्र
परया ब्रह्मानुसंधायिनीम् ॥७॥ एकद्वित्रिचतुःसमानगणनात्वर्णाष्टकं पादयोः पादादौ प्रणवादिमंत्रपठने मंत्रत्रयीसंपुटाम् ॥ संध्यायां द्विपदं
पठेत्परतरं सायं तुरीयं युतं—नित्यानित्यमनंतकोटिफलदं प्राप्तं नमस्कुर्महे ॥ ८ ॥ ओजोसीति सहोस्यवो बलमसि भ्राजोसि तेजस्विनी
वर्चस्वी सविताग्निसोमममृतं रूपं परं धीमहि ॥ देवानां द्विजवर्यतां मुनिगणे मुक्तार्थिनां शांतिनामोमित्येकमृचं पठंति यमिनो यं यं स्मरे
त्तत्प्राप्नुयात् ॥ ९ ॥ ओमित्येकमजस्वरूपममलं तत्सतधा भादितं—तारं तंत्रसमन्वितं परतरे पादत्रयं गर्भितम् ॥ आपो ज्योतिरसोऽमृतं
जनमहः सत्यं तपः स्वर्भुवर्भूयो भूय नमामि भूर्भुवःस्वरोमेतैर्महामंत्रकम् ॥ १० ॥ आदौ बिंदुमनुस्मरन्परतरे बालात्रिवर्णोच्चरन्—
ध्याहृत्यादिसबिंदुयुक्तत्रिपदातारत्रयं तुर्यकम् ॥ आरोहादवरोहतः क्रमगता श्रीकुंडलीत्थं स्थिता—देवी मानसपंकजे त्रिनयना पंचानना
पातु माम् ॥ ११ ॥ सर्वे सर्ववशे समस्तसमये सत्यात्मिके सात्त्विके—सावित्रीसाहितात्मिके शशियुते सांख्यायनीगोत्रजे ॥ संध्यात्रीण्यु
पकल्प्य संग्रहविधिः संध्याभिधानामके—गायत्रीप्रणवादिमंत्रगुरुणा संप्राप्य तस्मै नमः ॥ १२ ॥ क्षेमं दिव्यमनोरथाः परतरे चेतः
समाधीयतां--ज्ञानं नित्यवरेण्यमेतदमलं देवस्य भर्गो धियन् ॥ मोक्षश्रीर्विजयार्थिनोऽथ सवितुः श्रेष्ठं विधिस्तत्पदं--प्रज्ञामेधप्रचोदयात्प्रति

दिनं यो नःपदं पातु माम्॥१३॥ सत्यं तत्सवितुर्वरेण्यविरलं विश्वादिमायात्मकं--सर्वाद्यं प्रतिपादपादरमया तारं तथा मन्मथम् ॥ तुर्य्या
न्यत्रितयं द्वितीयमपरं संयोगसव्याहृतिं-सर्वाम्नायमनोन्मनीं मनसिजां ध्यायामि देवीं पराम् ॥ १४ ॥ आदौ गायत्रिमंत्रं गुरुकृतनियमं
धर्मकर्मानुकूलं-सर्वाद्यं सारभूतं सकलमनुमयं देवतानामगम्यम् ॥ देवानां पूर्वदेवं द्विजकुलमुनिभिः सिद्धविद्याधराद्यैः को वा वक्तुं समर्थ
स्तव मनुमहिमाबीजराजादिमूलम् ॥ १५ ॥ गायत्रीं त्रिपदां त्रिबीजसहितां त्रिव्याहृतिं त्रपदां--त्रिब्रह्मत्रिगुणां त्रिकालनियमां वेदत्रयीं
तां पराम् ॥ सांख्यादित्रयरूपिणीं त्रिनयनां मातृत्रयीं तत्परां त्रैलोक्यत्रिदशत्रिकोटिसहितां संध्यां त्रयीं तां नुमः ॥ १६ ॥ ओमि
त्येतत्त्रिमात्रात्रिभुवनकरणं त्रिस्वरं वह्निरूपं त्रीणि त्रीणि त्रिपादं त्रिगुणगुणमयं त्रैपुरांतं त्रिसूक्तम् ॥ तत्वानां पूर्वशक्तिं द्वितयगुरुपदं
पीठयंत्रात्मकं तं--तस्मादेतत्त्रिपादं त्रिपदमनुसरं त्राहि मां भो नमस्ते ॥ १७ ॥ स्वस्ति श्रद्धाऽतिमेधा मधुमतिमधुरः संशयः प्रज्ञकांति
र्विद्या बुद्धिर्बलं श्रीरतनुधनपतिः सौम्यवाक्यानुवृत्तिः॥मेधा प्रज्ञा प्रतिष्ठा मृदुपतिमधुरापूर्णविद्याप्रपूर्णं—प्रातं प्रत्यूषचिंत्यं प्रणवपरवशा
त्प्राणिनां नित्यकर्म ॥१८॥ पंचाशद्वर्णमध्ये प्रणवपरयुते मंत्रमाद्यं नमोंतं—सर्वं सव्यापसव्यं शतगुणमभितो वर्ममष्टोत्तरं ते ॥ एवं नित्यं
प्रजप्तं त्रिभुवनसहितं तुर्य्यमंत्रं त्रिपादं ज्ञानं विज्ञानगम्यं गगनसुसदृशं ध्यायते यः स मुक्तः ॥ १९ ॥ आदिक्षांतसबिंदुयुक्तसहितं मेरुं
क्षकारात्मकं व्यस्ताव्यस्तसमस्तवर्गसहितं पूर्णं शताष्टोत्तरम् ॥ गायत्रीं जपतां त्रिकालसहितां नित्यं सनैमित्तिकं--चैवं जाप्यफलं शिवेन
कथितं सद्भोगमोक्षप्रदम् ॥ २० ॥ सप्तव्याहृतिसप्ततारविकृतिः सत्यं वरेण्यं धृतिः सर्वं तत्सवितुश्च धीमहि महाभर्गस्य देवं भजे ॥
धाम्नो धामधमाधिधारणमहान् धीमत्पदं ध्यायते ॐ तत्सर्वमनुप्रपूर्णदशकं पादत्रयं केवलम् ॥२१॥ विज्ञानं विलसद्विवेकवचसः प्रज्ञानुसं
धारिणीं श्रद्धामेध्ययशःशिरःसुमनसः स्वस्तिश्रियःस्त्वां सदा ॥ आयुष्यं धनधान्यलक्ष्मिमतुलां देवीं कटाक्षं परं तत्काले सकलार्थ
साधनमहान्मुक्तिर्महत्त्वं पदम् ॥ २२ ॥ पृथ्वी गंधोऽर्चनायां नभसि कुसुमता वायुधूपप्रकर्षो—वह्निर्दीपप्रकाशो जलममृतमयं नित्यसंकल्प
पूजा ॥ एतत्सर्वं निवेद्यं मुखवसति हृदि सर्वदा दंपतीनां—त्वं सर्वज्ञ शिवं कुरुष्व ममतां नाहं त्वया ज्ञेयसि ॥ २३ ॥ सौम्यं सौभाग्य

हेतुं सकलसुखकरं सर्वसौख्यं समस्तं–सत्यं सद्भोगनित्यं सुखजनसुहृदं सुंदरं श्रीसमस्तम्॥ सौमंगल्यं समग्रं सकलशुभकरं स्वस्तिवाचं
समस्तं–सर्वाद्यं सद्विवेकं त्रिपदपदयुगं प्रातुमध्यासमस्तम् ॥२४॥ गायत्रीपदपंचपंचप्रगवद्वंद्वं त्रिधा संपुटं–सृष्ट्यादिक्रममंत्रजाप्यदशकं
देवीपदं क्षुत्रयम् ॥ मंत्रादिस्थितकेषु संपुटमिदं श्रीमातृकावेष्टितं वर्णांत्यादिविलोममंत्रजपनं संहारसंमोहनम् ॥ २५ ॥ भूराद्यं भूर्भुस्वः
त्रिपदपदयुतं त्र्यक्षमाद्यंतयोज्यं–सृष्टिस्थित्यंतकार्य्यं क्रमशिखिसकलं सर्वमंत्रं प्रशस्तम्॥सर्वांगं मातृकाणां मनुमयवपुषं मंत्रयोगं प्रयुक्तं
संहारं क्षादिवर्णं वसुशतगणनं मंत्रराजं नमामि ॥२६॥ वैश्वामित्रमुदाहृतं हितकरं सर्वार्थसिद्धिप्रदं–स्तोत्राणां परमं प्रभातसमये पारा
यणं नित्यशः ॥ वेदानां विधिवादमंत्रसकलं सिद्धिप्रदं संपदां–संप्राप्नोत्यपरत्र सर्वसुखदं चायुष्यमारोग्यकम् ॥ २७ ॥ इति विश्वामित्र
कृतो गायत्रीस्तवराजः समाप्तः ॥ ॥ अथ गायत्रीसहस्रनामप्रारंभः ॥ ॐ कैलासे सुखमासीनं तुषारकरशेखरम् ॥ बद्धांजलिर्नम
स्कृत्याभ्यर्च्य पृच्छति पार्वती ॥ १ ॥ पार्वत्युवाच ॥ किं विन्यस्तं त्वया देव स्वशरीरे निरंतरम् ॥ कथमेतादृशी कांतिः कथं तेऽष्टौ
समृद्धयः ॥ २ ॥ सर्वतत्त्वप्रभुत्वं च कथंकथमथाश्रयेत् ॥ कृपया ब्रूहि देवेश प्रसन्नोऽसि यदि प्रभो ॥ ३ ॥ भगवन्त्रिविधा विद्याः
श्रोतुमिच्छामि ते प्रभो ॥ इदानीं श्रोतुमिच्छामि गायत्र्याश्च महोत्सवम् ॥ ४ ॥ नाम्नां सहस्रं देवेश कृपया वक्तुमर्हसि ॥ यद्यहं प्रेयसी
भार्य्या यद्यहं प्राणवल्लभा ॥ ५ ॥ इति श्रुत्वा वचो देव्याः प्रसन्नः प्रभुरीश्वरः ॥ श्रूयतामिति चाभाष्य जगाद जगदंबि
काम् ॥ ६ ॥ महादेव उवाच ॥ शृणु देवि रहस्यं मे कस्याप्यग्रे न चोदितम् ॥ गोपितं सर्वतंत्रेषु सिद्धानां स्तोत्रमुत्तमम् ॥ ७ ॥ सर्व
सौभाग्यजनकं सर्वसंपत्तिदायकम् ॥ सर्ववश्यकरं लोके सर्वप्रत्यूहनाशनम् ॥ ८ ॥ सर्ववादिमुखस्तंभं निग्रहानुग्रहक्षमम् ॥ त्वत्प्रीत्या
कथयिष्यामि सुगोप्यमपि दुर्लभम् ॥ ९ ॥ सर्वपापक्षयकरं सर्वज्ञानमयं शिवम् ॥ परायणानां परमा परब्रह्मस्वरूपिणी ॥ १० ॥ परा च
परमेशानी परब्रह्मात्मिका मता ॥ तां देवीं च वरारोहां चेतसा चिंतयाम्यहम् ॥ ११ ॥ ऐश्वर्यं च दशप्राप्तिर्वरदादित्वमेव च ॥
गायत्र्या दिव्यसाहस्रं स्वप्ने चाप्तं मयापि यत् ॥ १२ ॥ ऋषिरस्य समाख्यातो महादेवो महेश्वरः ॥ देवता देवजननी छंदः सामादि

कीर्तितम् ॥ १३ ॥ धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोग उदाहृतः ॥ सर्वभूतांतरीं ध्यात्वा पद्मासनगतां शुचिः ॥ १४ ॥ ततः सहस्र
नामेदं पठितव्यं मुमुक्षुभिः॥ सर्वकार्यकरं पुण्यं महापातकनाशकम् ॥ १५ ॥ ॐ तत्काररूपा तद्रूपा तत्पदार्थस्वरूपिणी ॥ तपः
स्वाध्यायनिरता तपःश्रद्धाग्विदां वरा ॥ १ ॥ तत्कीर्तिगुणसंपन्ना तथ्यवादितपोनिधिः॥ तत्पदेशानुसंबंधा तपोलोकनिवासिनी ॥ २ ॥
तरुणादित्यसंकाशा तप्तकांचनभूषणा ॥ तमोऽपहारिणी तंत्री तन्निपातनिवारिणी ॥३॥ तलादिभुवनांतःस्था तारिणी ताररूपिणी ॥ तर्क
रूपितकोशादितर्कशास्त्रविदारिणी ॥ ४ ॥ तर्कवादिमुखस्तंभा राज्ञां च परिपालिनी ॥ तंत्रसारा तंत्रमाता तंत्रमार्गप्रदर्शिनी ॥ ५ ॥ तंत्री
तंत्रविधानज्ञा तंत्रस्था तंत्रसाक्षिणी ॥तदेकध्याननिरता तत्त्वज्ञानप्रबोधिनी॥६॥तन्नावमंत्रसुप्रीता तपस्विजनसेविता॥ॐकाररूपा सावित्री
सर्वरूपा सनातनी ॥७॥ संसारदुःखशमनी सर्वयागफलप्रदा ॥ सफला सत्यसंकल्पा सत्यासत्यप्रदायिनी ॥८॥ संतोषजननी सारा सत्यलोक
निवासिनी॥समुद्रतनयाराध्या सामगानप्रिया सती ॥९॥ समाना सामिधेनी च समस्तसुरसेविता॥सर्वसंपत्तिजननी संप्रदासिंधुसेविता॥१०॥
सर्वोत्तुंगा तुंगहीना सद्गुणा सकलेष्टदा॥सनकादिमुनिध्येया समानाधिकवर्जिता॥११॥साध्या सिद्धा सुधावासा सिद्धिः साध्यप्रदायिनी ॥
सम्यगाराध्यनिलया समुत्तीर्णा सदाशिवा ॥१२॥ सर्ववेदांतनिलया सर्वशास्त्रार्थवादिनी ॥ सहस्रदलपद्मस्था सर्वज्ञा सर्वतोमुखी ॥ १३ ॥
समयासमयाचारा सत्या षड्ग्रंथिभेदिनी॥सप्तकोटिमहामंत्रमाता सर्वप्रदायिनी॥१४॥सगुणा संभ्रमा साक्षिसर्वचैतन्यरूपिणी ॥ सत्कीर्तिः
सात्त्विकी साध्वी सच्चिदानंदरूपिणी ॥१५॥ संकल्परूपिणी संध्या शालग्रामनिवासिनी ॥ सर्वोपाधिविनिर्मुक्ता सत्यज्ञानप्रबोधिनी ॥ १६ ॥
विकाररूपा विप्रश्रीर्विप्राराधनतत्परा ॥ विप्रिणी विप्रकल्याणी विप्रवाक्यस्वरूपिणी ॥१७॥ विप्रकैवल्यशयना विप्राविप्रप्रसादिनी ॥ विप्र
मंदिरमध्यस्था विप्रवादविनोदिनी ॥ १८ ॥ विप्रोपाधिविनिर्मुक्ता विप्रहत्याविमोचिनी ॥ विप्रत्रात्री विप्रगोत्रा विप्रगोत्रविवर्धिनी ॥ १९ ॥
विप्रभोजनसंतुष्टा विष्णुरूपा विनोदिनी ॥ विष्णुमाया विष्णुमाया विष्णुगर्भा विचित्रिणी ॥ २० ॥ वैष्णवी विष्णुभगिनी विष्णु
मायाविलासिनी ॥ विकाररहिता वंद्या विज्ञानघनरूपिणी ॥ २१ ॥ विश्वसाक्षीविश्वयोनिर्विश्वामित्रप्रसादिनी ॥ विबुधा विष्णुसंकल्पा

विकल्पा विश्वसाक्षिणी ॥२२॥ विष्णुचैतन्यनिलया विष्णुस्था विश्ववादिनी ॥ विवेकी विविधानंदविजया विश्वमोहिनी ॥ २३ ॥
विद्याधरीविधानज्ञा विबुधार्थस्वरूपिणी ॥ विरूपाक्षी विराड्रूपा विक्रमा विश्वमंगला ॥२४॥ विश्वंभरा समाराध्या विश्वभ्रमणकारिणी ॥
विनायकी विनोदस्था वीरगोष्ठीविवर्द्धिनी ॥ २५ ॥ विवाहरहिता वंद्या विंध्याचलनिवासिनी ॥ विद्या विद्याकरी वेद्या वैद्य
विद्याप्रबोधिनी ॥ २६ ॥ विमला विभवा विद्या किंकरस्था किंकसाक्षिणी ॥ वीरमध्या वरारोहा वितंत्रा विश्वनायिका ॥ २७ ॥
वीरहत्याप्रशमनी विनम्रजनपालिनी ॥ वीरधा विविधाकारा विरोधिजनवादिनी ॥ २८ ॥ तुकाररूपा तुर्यश्रीस्तुलसीवनवासिनी ॥
तुलस्था मातुला तुल्या तुल्यगोत्री तुलेश्वरी ॥ २९ ॥ तुरंगी तुरगारूढा तुरंगरयमोदिनी ॥ तुरंगरदनामोहा तुलादानफलप्रदा ॥३० ॥
तुलामाघस्नानतुष्टा तुष्टिपुष्टिप्रदायिनी ॥ तुरंगमप्रसंतुष्टा तुलिता तुल्यमध्यगा ॥ ३१ ॥ तुगोत्तुंगा तुंगकुचा तुहिनाचल
संस्थिता ॥ तुंबुरादिस्तुतिप्रीता तुषारवपुरीश्वरी ॥ ३२ ॥ तुष्टा च तुष्टजननी तुष्टलोकनिवासिनी ॥ तुलाधारा तुलामध्या तुलस्था तुल
रूपिणी ॥ ३३ ॥ तुरीयगुणगंभीरा तुर्यनामस्वरूपिणी ॥ तुर्य्यविद्यालास्यसंस्था तुर्य्यशास्त्रार्थवादिनी ॥ ३४ ॥ तुर्य्यशास्त्रार्थतत्त्वज्ञा
तुर्य्यवादविनोदिनी ॥ तुर्य्यनादान्तनिलया तुर्य्यानंदस्वरूपिणी ॥ ३५ ॥ तुरीयभक्तिजननी तुर्य्यमार्गप्रदर्शिनी ॥
वकाररूपा वागीशा वरेण्या वरसंस्थिता ॥ ३६ ॥ वरा वरिष्ठा वैदेही वैद्यशास्त्रप्रदर्शिनी ॥ वैकल्यश्रमणी वाणी वांछितार्थफलप्रदा
॥ ३७ ॥ वयस्थावयमध्यस्था वयोऽवस्थाविवर्जिता ॥ वंदिनी वादिनी वार्य्या वाङ्मयी वीरवंदिनी ॥ ३८ ॥ वानप्रस्थाश्रमस्थायिवन
दुर्गा वनालया ॥ वनजाक्षी वनचरी वनितावनमोदिनी ॥ ३९ ॥ वशिष्ठवामदेवादिवंद्या वंद्यस्वरूपिणी ॥ वाल्मीकिवाक्करी वाचा वारुणी
वरुणप्रिया ॥ ४० ॥ वैद्या वैद्यचिकित्सा च वषट्कारी वसुंधरा ॥ वसुमाता वसुत्रात्री वसुजन्मविमोचिनी ॥ ४१ ॥ वसुप्रदा वासुदेवी
वासुदेवमनोहरी ॥ वासवार्चितपादश्रीर्वासवारिविनाशिनी ॥४२॥ वागीशवाङ्मनःस्थायिवनवासवशा वशी ॥ वामदेवी वरारोहा वाद्य
घोषणतत्परा ॥ ४३ ॥ वाचस्पतिसमाराध्या वागीशा वाक्च कीरवाक् ॥ रेकाररूपा रेवा च रेवातीरनिवासिनी ॥ ४४ ॥ रेकिणी रेवती

रक्षा रुद्रजन्मा रजस्वला ॥ रेणुका रमणी रम्या रतिवृद्धा रतारती ॥ ४५ ॥ रावणादिपदानंदा राजश्रीराजशेखरा ॥ रणमध्या रथारूढा रविकोटिसमप्रभा ॥ ४६ ॥ रविमंडलमध्यस्था रजनी रविलोचना ॥ रथांगपाणी रक्षोघ्नी रागिणी रावणार्चिता ॥ ४७ ॥ रंभादिकन्यकाराध्या राज्यदा राज्यवर्धिनी ॥ रजताद्रीश ऊरुस्था रम्या राजीवलोचना ॥४८॥ रमा वाणी रमाराध्या राज्यदात्री रथोत्सवा ॥ रेतोवती रथोत्साहा राजहृद्रोगहारिणी ॥ ४९ ॥ रंगप्रवृद्धमधुरा रंगमंडपमध्यगा ॥ रंजिता राजजननी रमा रेवा रतीरिणी ॥५०॥ रात्रिणी रागिणी राज्याराजराजेश्वरार्चिता ॥ राजन्वती राजनीतिस्तथा रजतवासिनी ॥ ५१ ॥ राघवार्चितपादश्रीराघवी राघवप्रिया ॥ रत्नसागरमध्यस्था रत्नदीपनिवासिनी ॥ ५२ ॥ रत्नप्राकारमध्यस्था रत्नमंडपमध्यगा ॥ रत्नाभिषेकसंतुष्टा रत्नांगी रत्नदायिनी ॥ ५३ ॥ निकाररूपिणी नित्या नित्यतृप्ता निरंजना ॥ निद्रात्ययविशेषज्ञा नीलजीमूतसन्निभा ॥५४॥ नीवारशुकवत्तन्वी नित्यकल्याणरूपिणी ॥ नित्योत्सवा नित्यनित्या नित्यानंदस्वरूपिणी ॥ ५५ ॥ निर्विकल्पा निर्गुणस्था निश्चिता निरुपद्रवा ॥ निःसंशया संशयघ्नी निर्लोभा लोभनाशिनी ॥ ५६ ॥ निर्भवा भवपाशघ्नी नीतिशास्त्रविचारिणी ॥ निखिलागममध्यस्था निखिलागमसंस्थिता ॥ ५७ ॥ नित्योपाधिविनिर्मुक्ता नित्यकर्मफलप्रदा ॥ नीलग्रीवा निरीहा च निरंजनवरप्रदा ॥ ५८ ॥ नवनीतप्रिया नारी नरकार्णवतारिणी ॥ नारायणी निराहारा निर्मला निर्गुणाप्रिया ॥ ५९ ॥ निर्मला निर्गमाचारा निखिलागमवेदिनी ॥ निमिषानिमिषोत्पन्ना निमेषांडविधायिनी ॥ ६० ॥ निवातदीपमध्यस्था निश्चिता चिंतनाशिनी ॥ नीलवेणी नीलखंडा निर्विषा विषनाशिनी ॥ ६१ ॥ नीलांशुकपरीधाना निंदिता निखिलेश्वरी ॥ निःश्वासा श्वाससध्यस्था मिथो याननिवासिनी ॥ ६२ ॥ यंकाररूपा यंत्रशी यंत्रयंत्रा यशस्विनी ॥ यंत्राराधनसंतुष्टा यजमानस्वरूपिणी ॥ ६३ ॥ यशस्विनी यकारस्था यूपस्तंभनिवासिनी ॥ यमघ्नी यमकल्पा च यशःकामा यतीश्वरी ॥ ६४ ॥ यमादियोगनिरता यतिनिर्दोषहारिणी ॥ याता यज्ञा यज्ञिया च यज्ञेश्वरपतिव्रता ॥ ६५ ॥ यज्ञयज्ञा यजर्यज्वा यज्ञीनिकरकारिणी ॥ यज्ञसूत्रप्रदा ज्येष्ठा यज्ञकर्मफलप्रदा ॥६६॥ यवांकुरप्रियायामा यवनी यवनाधिपा ॥ यज्ञकर्त्रीयज्ञभोक्त्री यज्ञांगी यज्ञवाहिनी ॥६७॥ यज्ञ

साक्षीयज्ञमुखी यजुषी यज्ञरक्षिका ॥ भकाररूपा भद्रेशी भद्रकल्याणदायिनी ॥ ६८ ॥ भक्तप्रिया भक्तसखी भक्ताभीष्टस्वरूपिणी ॥
भक्तिनी भक्तिसुलभा भक्तिदा भक्तवत्सला ॥६९॥ भक्तचैतन्यनिलया भक्तबंधविमोचिनी॥ भक्तस्वरूपिणी भग्यी भाग्यारोग्यप्रदायिनी
॥ ७० ॥ भक्तमाता भक्तगम्या भक्ताभीष्टप्रदायिनी ॥ भास्वरी भैरवी भोगी भवानी भयनाशिनी ॥७१॥ भद्रात्मिका भद्रदायी भद्रकाली
भयंकरी ॥ भगा निष्यंदिनी भाग्या भवबंधविमोचिनी ॥७२॥ भीमा भीमनभा भंगी भंगुरा भीमदर्शिनी ॥ भल्ली भल्लीधरा भेरुभेरुंडा भीम
पापहा ॥७३॥ भावज्ञा भोग्यदात्री च भवघ्नी भूतिभूषणा ॥ भूतिदा भूमिदात्री च भूपतित्वप्रदायिनी ॥७४॥ भ्रामरी भ्रमरी भारी भवसंसार
तारिणी॥भंडासुरवधोत्साहाभांडवा भावनोदिनी॥७५॥गोकाररूपा गोमातागुरुपत्नीगुरुर्गिरा॥गोरोचनप्रिया गौरी गोविंदगुणवर्धिनी ॥७६॥
गोपालचेष्टासंतुष्टागोवर्धनविवर्द्धिनी ॥ गोविंदरूपिणीगोप्त्रीगोष्टगोत्रविवर्द्धिनी ॥ ७७ ॥ गीतागीतप्रियागेयागोकागोकुलवर्द्धिनी ॥ गोधी
गोहत्यशमनीगुणाचगुणविग्रहा ॥ ७८ ॥ गोविंदजननीगोष्ठागोपदागोकुलोत्सवा ॥ गौतमीगोचरीगोप्त्रीगोमुखीगुरुवासिनी ॥७९॥
गोपालीगोमयीगुंठागोष्ठीगोपुरवासिनी॥ गरुडीगरुडश्रेष्ठागारुडीगरुडध्वजा॥८०॥गंभीरागंडकीगंगागरुडध्वजवल्लभा ॥गगनस्थागयावासा
गुणवृत्तिर्गुणोद्भवा ॥ ८१ ॥ देकाररूपादेवेशीदर्शिनीदेवतार्चिता ॥ देवराजेश्वरार्द्धांगी दीनदैन्यविमोचिनी ॥ ८२ ॥ देशकालपरिज्ञाना
देशोपद्रावनाशिनी ॥ देवमातादेवमोहा देवदानवमोहिनी ॥ ८३ ॥ देवेंद्रार्चितपादश्रीर्देवदेवप्रसादिनी ॥ देशांतरीदेवरूपादेवालयनिवा
सिनी ॥ ८४ ॥ देशभ्रमणकृद्देवी देशस्वास्थ्यप्रदायिनी ॥ देवयानादेवता च देवसैन्यप्रपालिनी ॥ ८५ ॥ वकाररूपावाग्देवीवाचामान
सगोचरी ॥ वैकुंठदेशिनीवेद्यावायुरूपावरप्रदा ॥ ८६॥ वक्रतुंडार्चितपदावक्रतुंडप्रदायिनी ॥ वैचित्रीचवसुमतिर्वसुस्थानावसुप्रिया ॥ ८७॥
वषट्काराचचामुंडावरारोहावरावरी ॥ वैदेहीजननीवेद्यावैदेहीशोकनाशिनी ॥ ८८ ॥ वेदमातावेदकन्यावेदरूपाविनोदिनी ॥ वेदांत
वादिनीवेदावेदांतनिलयामरा ॥ ८९ ॥ वेदश्रवावेदघोषावेदगानाविनोदिनी ॥ वेदशास्त्रार्थतत्त्वज्ञावेदमार्गप्रदर्शिनी ॥ ९० ॥ वैदिककर्म
फ.दा ..दसाग.तारिणी ॥ वदवादावेदगृह्यावेदाश्वरथवाहिनी ॥९१॥ वेदचक्रावेदवंद्यावेदांगीवेदवित्कविः ॥ शकाररूपाश्यामांगीश्याम

श्यामसरोरुहा ॥ ९२ ॥ श्यामिकाश्यालवृक्षाचशतपत्रनिकेतना ॥ सर्वदृष्टसंनिविष्टाचसर्वसंप्रेमगीसदा ॥ ९३ ॥ सव्यापसव्यदासव्यां सध्रीचीचसहायिनी ॥ सकलासागरासारासार्वभौमस्वभाविनी ॥ ९४ ॥ संतोषजननीसेव्यासर्वेशीसर्वरंजनी ॥ सरस्वतीसमाराध्यासमंदा सिंधुसेविनी ॥ ९५ ॥ सन्मोहिनीसदामोहासर्वमांगल्यदायिनी ॥ समस्तभुवनेशानीसर्वकामफलप्रदा ॥ ९६ ॥ सर्वसिद्धिप्रदासाध्वी सर्वज्ञानप्रदायिनी॥सर्वदारिद्र्यशमनीसर्वदुःखविमोचिनी॥९७॥सर्वरोगप्रशमिनीसर्वपापाविमोचिनी॥समदृष्टिःसमगुणासर्वसाक्षिसहायिनी ॥ ९८ ॥ सामर्थ्यवाहिनीसंख्यासांद्रानंदपयोधरी ॥ संकीर्णमंदिरस्थानासाकेतकुलपालिनी ॥ ९९ ॥ संहारीशंकरीशौरीसाकेतपुरवासिनी ॥संबोधिनीसमुत्तिष्ठासम्यग्ज्ञानस्वरूपिणी ॥१००॥ संपत्करीसमानांगीसर्वभावसुसंस्थिता ॥संबोधिनीसमानंदासन्मार्गकुलपालिनी ॥ १०१ ॥ संजीविनीसर्वमेधासभ्यासंपत्प्रदायिनी ॥ समिद्धासमिधासीनासामान्यासामवेदिनी ॥ १०२ ॥ समुत्तीर्णासदाचारासंहारासर्वपाविनी ॥ सर्पिणी सर्पमाताचसर्पदष्टविमोचिनी ॥१०३॥ सर्वयागप्रशमिनीसर्वज्ञत्वफलप्रदा ॥ संक्रमासंक्रमासिंधुः सर्गासंग्रामपूजिता ॥ ॥ १०४ ॥ संकटासंकटाहारीसकुंकुमविलेपना ॥ सुमुखासुमुखस्थायी सांगोपांगार्चनप्रिया ॥ १०५ ॥ सस्तुतासंस्तुतिःप्रीतिः सत्यवादी सदासुखी ॥ धीकाररूपाधीमाताधीराधीरप्रसादिनी ॥ १०६ ॥ धीरोत्तमाधीरधीराधीरस्थाधीरशेखरा ॥ स्थितिर्धैर्य्यास्थविष्ठाचस्थपतिस्थलविग्रहा ॥ १०७ ॥ धीराधाराधीरवंद्या धीपतिर्धीरमानसा ॥ धीपदाधीपदस्थायी धीशानाधीप्रदासखी ॥ १०८ ॥ मकाररूपामैत्रेयीमहामंगलदेवता ॥ मनोवैकल्यशमिनीमलयाचलवासिनी ॥ १०९ ॥ मलयध्वजराजश्रीर्मीनाक्षीमधुरालया ॥ महादेवीमहारूपा महाभैरवपूजिता ॥ ११० ॥ मनुविद्यामंत्रमातामंत्रवश्यामहेश्वरी ॥ मत्तमातंगगमनामधुरामेरुमंडपा ॥ १११ ॥ महागुप्तामहाभूता महाभयविनाशिनी ॥ महाशौरीमहामंत्रीमहावैरिविनाशिनी ॥ ११२ ॥ महालक्ष्मीर्महागौरी महिषासुरमर्दिनी ॥ महेशमंडलस्थाच मधुरागमवर्जिता ॥ ११३ ॥ मेधामेधाकरीमेध्यामाधवीमधुमर्दिनी ॥ मंत्रामंत्रमयीमान्यामायामहिममंत्रिणी ॥ ११४ ॥ मायारूपामायधारीमायस्थामायवादिनी ॥ मायासंकल्पजननीमायामायविनोदिनी ॥ ११५ ॥ मायासपंचजननीमायासंहाररूपिणी ॥ मायामंत्रप्रसा

ह्रा च मायाजनविमोहिनी ॥११६॥ महापरा महारूपा महाविघ्नविनाशिनी ॥ महानुभावा मंत्रेशी महामंगलदेवता ॥११७॥ ह्रिंकारस्था
ह्रषीकेशी हितकायप्रवर्द्धिनी ॥ हीनोपाधिविनिर्मुक्ताहीनलोकावमोचिनी ॥ ११८ ॥ ह्रींकारा ह्रींमती ह्रींह्रींह्रींदेवी ह्रींस्वभाविनी ॥
ह्रींमतीह्रीवतीह्रस्वाह्रींशिवा ह्रींकुलोद्भवा॥११९॥ हितवादी हितप्रीता हितकारुण्यवर्द्धिनी ॥ हिताशिनी हितक्रोधा हितकर्मफलप्रदा ॥
॥ १२० ॥ हिमाहिमसुताहेमा हेमाचलनिवासिनी ॥ हेतीहिमप्रदाहारा होत्राहोतृहुतप्रदा ॥ १२१ ॥ हिमस्थाहिमजाहेमाहितकर्म
स्वभाविनी ॥ धीकाररूपाधिषणा धर्मरूपाधनेश्वरी ॥ १२२ ॥ धनुर्धराधराधारा धर्मकर्मफलप्रदा ॥ धर्माचाराधर्मसाराधर्ममध्य
निवासिनी ॥ १२३ ॥ धनुर्वेदीधनुर्वादीधन्याधूर्तविनाशिनी ॥ धनधान्याधेनुरूपाधनाढ्याधनदायिनी ॥ १२४ ॥ धनेशीधर्मनिरता
धर्मराजप्रसादिनी ॥ धर्मस्वरूपाधर्मेशीधर्माधर्मविचारिणी ॥ १२५ ॥ धर्मसूक्ष्माधर्मसाक्षीधर्मिष्ठाधर्मगोचरा ॥ योकाररूपायोगेशी
योगस्थायोगरूपिणी ॥ १२६ ॥ योगायोगोपमाराध्या योगमार्गनिवासिनी ॥ योगासनस्थायोगेशी योगमायाविलासनी ॥ १२७ ॥
योगयोगोपमाराध्या योगांगीयोगविग्रहा ॥ योगवासीयोगभोगीयोगमार्गप्रदर्शिनी ॥ १२८ ॥ योधायोधवतीयोध्याऽयोध्या
योधनतत्परा ॥ योधिनीयोधिनीसेव्यायोधज्ञानप्रबोधिनी ॥ १२९ ॥ योगेश्वरप्राणनाथायोगीश्वरहृदिस्थिता ॥ योगायोगक्षेमकर्त्रीयोगक्षेम
विहारिणी ॥ १३० ॥ योगराजेश्वरीराध्यायोगानंदस्वरूपिणी ॥ नवसिद्धिसमाराध्यानारायणमनोहरी ॥ १३१ ॥ नारायणीनवाधारानव
ब्रह्मार्चितासदा ॥ नगेंद्रतनयाराध्यानामरूपविवर्जिता ॥ १३२ ॥ नारसिंहार्चितपदानवबंधविमोचिनी ॥ नवग्रहार्चितपदानवबंधविमोचनी
॥१३३॥ नैमित्तिकार्थनपदानंदितारिविनाशिनी ॥ नवसूत्रविधानज्ञानैमिषारण्यवासिनी ॥ १३४ ॥ नवपीठस्थितादेवीनवर्षिगणसेविता ॥
नवचंदनदिग्धांगी नवकुंकुमधारिणी ॥ १३५ ॥ नववल्कपरीधानानवरत्नविभूषणा ॥ नवभस्मविदिग्धांगी नवचंद्रकलाधरा ॥ १३६ ॥
प्रकाशरूपाप्राणेशीप्राणसंरक्षिणी सदा ॥ प्राणसंजीविनीप्राणाप्राणाप्राणप्रबोधिनी ॥ १३७ ॥ प्रज्ञाप्रज्ञाप्रभाप्राच्याप्रतीचीप्रभुधाप्रिया ॥
प्राचीराप्रणयांतस्थाप्रभातज्ञानरूपिणी ॥ १३८ ॥ प्रभातकर्मसंतुष्टप्राणायामपरायणा ॥ प्रायज्ञाप्रणवाप्राशाप्रविक्तिः प्रकृतिः परा ॥ १३९ ॥

प्रबंधाप्रबुधासाक्षीप्राज्ञाप्रारब्धनाशिनी ॥ प्रबोधनिरताप्रेक्ष्याप्रबंधप्राणसाक्षिणी ॥ १४० ॥ प्रयागतीर्थनिलयाप्रत्यक्षापरमेश्वरी ॥
प्रणवाद्यंतनिलया प्रणवादिः प्रचोदयात् ॥ १४१ ॥ चोकाररूपाचोरघ्नी चोरबाधाविनाशिनी ॥ चेतनाचेतनाशीताचौराचौर्याचम
त्कृतिः ॥ १४२ ॥ चक्रवर्तित्वधारीचचक्रिणी चक्रधारिणी ॥ चिरंजीवीचिदानंदाचिद्रूपा चिद्विलासिनी ॥ १४३ ॥ चिंताचिन्ताप्रश
मिनीचिंतितार्थफलप्रदा ॥ चांपेयीचंपकप्रीताचंडी चंडाट्टहासिनी ॥ १४४ ॥ चण्डेश्वरी चंडमाला चण्डमुण्डविनाशिनी ॥ चकोराक्षी
चिरप्रीताचिकुराचिकुरप्रिया ॥ १४५ ॥ चैतन्यरूपिणीचैत्रीचेतनाचित्तसाक्षिणी ॥ चित्राचित्रविचित्रांगीचित्रगुप्तप्रसादिनी
॥ १४६ ॥ चलनाचलसंस्थायी चापिनीचलचित्रिणी ॥ चन्द्रमंडलमध्यस्था कोटिचन्द्रसुशीतला ॥ १४७ ॥ चन्द्रानुजसमाराध्या
चन्द्रचन्द्रमहोदरी ॥ चर्चितारिश्चन्द्रमाताचन्द्रकांताचलेश्वरी ॥ १४८ ॥ चराचरनिवासाचचक्रपाणिसहोदरी ॥ दकाररूपा
दत्तश्रीर्दारिद्र्यच्छेदकारिणी ॥ १४९ ॥ दंतिनीदंडिनीदीना दरिद्रा दीनवत्सला ॥ दक्षाराध्यादक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी
॥ १५० ॥ दक्षादाक्षायणीदक्षा दीक्षादक्षवरप्रदा ॥ दक्षिणादक्षिणाराध्या दक्षिणामूर्तिरूपिणी ॥ १५१ ॥ दयावती
दमवती दनुजादिर्दयानिधिः ॥ दंतशोभानिभादेवदमना दाडिमस्तनी ॥ १५२ ॥ दंडादमयतांदंडीदंडा दंडप्रसादिनी ॥ दंड
कारण्यनिलया दंडकारिविनाशिनी ॥ १५३ ॥ दंष्ट्राकरालप्रवृषी दंडशोभा दलादली ॥ दरिद्रारिष्टशमनी दमा दमनपूजिता ॥ १५४ ॥
दानवार्चितपादश्रीर्द्रविणा द्रविणी दया ॥ दामोदरी दानवारिर्दामोदरसहोदरी ॥ १५५ ॥ दात्री दानप्रिया दार्वी दानश्रीर्दीन
दंडपा ॥ दम्पती दम्पती दूर्वा दधिदुग्धा दया दमा ॥ १५६ ॥ दाडिमीबीजसंदोहदंतपंक्तिविराजिता ॥ दर्पणा दर्पणस्वच्छा द्रुममंडल
वासिनी ॥ १५७ ॥ दशावतारजननी दशदिग्दीपपूजिता ॥ दया दशदिशादश्या दशदाशी दयानिधिः ॥ १५८ ॥ देशकालपरिज्ञाना
देशकालविशोधिनी ॥ दशम्यादिकलाराध्या दशग्रीवप्रदर्पहा ॥ १५९ ॥ दशापराधशमनी दशवृत्तिफलप्रदा ॥ यात्काररूपिणी याज्ञी
यादवी यादवार्चिता ॥ १६० ॥ ययातिपूजनप्रीता याज्ञिकी याजकप्रिया ॥ यादवी यातना याता यामपूजाफलप्रदा ॥ १६१ ॥ यश

स्विनी यमाराध्या यमकन्या यतीश्वरी ॥ यमादियोगसंतुष्टा योगींद्रहृदिसंगमा ॥१६२॥ यमोपाधिविनिर्मुक्ता यशस्यविधिरच्युता ॥ यातना
यातना देहयात्रापापादिवर्जिता ॥ १६३ ॥ इत्येतत्कथितं देवि रहस्यं सर्वकामदम् ॥ सर्वपापप्रशमनं सर्वतीर्थफलप्रदम् ॥ १६४ ॥
सर्वरोगहरं पुण्यं सर्वज्ञानमयं शिवम् ॥ सर्वसिद्धिप्रदं देवि सर्वसौभाग्यवर्द्धनम् ॥ १६५ ॥ आयुष्यं वर्द्धते नित्यं लिखितं यत्र तिष्ठति ॥
न चौराग्निभयं तस्य न च भूतभयं क्वचित् ॥ १६६ ॥ किं पुनर्बहुनोक्तेन तथापि च वदाम्यम् ॥ सकृच्छ्रवणमात्रेण कोटिजन्माघनाशनम्
॥ १६७ ॥ महापातककोटीनां भंजनं स्मृतिमात्रतः ॥ अपवादकदौर्भाग्यशमनं भुक्तिमुक्तिदम् ॥ १६८ ॥ विषरोगादिदारिद्र्यमृत्यु
संहारकारणम् ॥ सप्तकोटिमहामंत्रपारायणफलप्रदम् ॥ १६९ ॥ शतरुद्रियकोटीनां जपयज्ञफलप्रदम् ॥ चतुःसमुद्रपर्यंतभूदानं तत्फलं शिवे
॥ १७० ॥ सहस्रकोटिगोदानफलदं स्मृतिमात्रतः ॥ कोटयश्वमेधफलदं जरामृत्युनिवारणम् ॥ १७१ ॥ कन्याकोटिप्रदानेन यत्फलं
लभते नरः ॥ तत्फलं लभते सम्यङ् नाम्नां दशशतीजपात् ॥१७२॥ यः शृणोति महाविद्यां श्रावयेद्वा समाहितः ॥ सोऽपि मुक्तिमवाप्नोति
यत्र गत्वा न शोचति ॥१७३॥ ब्रह्महत्यादिपापानां नाशः स्याच्छ्रवणेन च ॥ किं पुनः पठनादस्य मुक्तिः स्यादनपायिनी ॥ १७४ ॥ इदं
रहस्यं परमं पुराणं स्वस्त्ययनं महत् ॥ यः सकृद्वा पठेत्स्तोत्रं शृणुयाद्वा समाहितः॥१७५॥ लभते च ततः कामानंते ब्रह्मपदं व्रजेत् ॥ स
च शत्रूञ्जयेत्सद्यो मातंगानिव केसरी ॥१७६॥ इति श्रीरुद्रयामले शिवपार्वतीसंवादे ब्रह्मप्रोक्तं श्रीगायत्र्या मंत्रवर्णात्मकं दिव्यसहस्रनाम
स्तोत्रं संपूर्णम् ॥ अथ गायत्रीतत्त्वप्रारंभः ॥ श्रीगायत्र्यै नमः ॥ श्रीगायत्रीतत्त्वमालामंत्रस्य विश्वामित्र ऋषिः । अनुष्टुप् छंदः । परमात्मा
देवता । हलो बीजानि । स्वराः शक्तयः । अव्यक्तं कीलकम् । मम समस्तपापक्षयार्थे गायत्रीतत्त्वपाठे विनियोगः ॥ ॐ चतुर्विंशतितत्त्वानां
यदेकं तत्त्वमुत्तमम् ॥ अनुपाधि परं ब्रह्म तत्परं ज्योतिरोमिति ॥ १ ॥ यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदांते च प्रतिष्ठितः ॥ तस्य प्रकृतिलीनस्य
तत्परं ज्योतिरोमिति ॥ २ ॥ तत्सदादिपदैर्वाच्यं परमं पदमव्ययम् ॥ अभेदत्वं पदार्थस्य तत्परं ज्योतिरोमिति ॥ ३ ॥ यस्य मायांश
भागेन जगदुत्पद्यतेऽखिलम् ॥ तस्य सर्वोत्तमं रूपमरूपस्याभिधीमहि ॥ ४ ॥ यं न पश्यंति परमं पश्यंतोऽपि दिवौकसः ॥ तं भूतानिल

देवं तु सुपर्णमुपधावताम् ॥ ५ ॥ यदंशः प्रेरितो जंतुः कर्मपाशनियंत्रितः ॥ आजन्मकृतपापानामपहंतु दिवौकसः ॥ ६ ॥ इदं महामुनिप्रोक्तं गायत्रीतत्त्वमुत्तमम् ॥ यः पठेत्परया भक्त्या स याति परमां गतिम् ॥ ७ ॥ सर्ववेदपुराणेषु सांगोपांगेषु यत्फलम् ॥ सकृदस्य जपादेव तत्फलं प्राप्नुयान्नरः ॥ ८ ॥ अभक्ष्यभक्षणात्पूतो भवति, अगम्यागमनात्पूतो भवति, सर्वपापेभ्यः पूतो भवति, प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति, सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति, मध्यंदिनमुपयुंजानोऽसत्प्रतिग्रहादिना मुक्तो भवति, अनुलवं पुरुषाः पुरुषमभिवदंति,यं यं काममभिध्यायति तत्तदेवाप्नोति, पुत्रपौत्रान् कीर्तिसौभाग्यानि चोपलभते,सर्वभूतात्ममित्रं देहांते तद्विशिष्टो गायत्रीपरमं पदमवाप्नोति ॥ इति वेदसारे गायत्रीतत्त्वं संपूर्णम् ॥ अथ गायत्र्युपनिषद् ॥ नमस्कृत्य भगवान् याज्ञवल्क्यः स्वयं परिपृच्छति त्वं ब्रूहि भगवन् गायत्र्या उत्पत्तिं श्रोतुमिच्छामि । ब्रह्मोवाच ॥ प्रणवेन व्याहृतयः प्रवर्तंते तमसस्तु परं ज्योतिः कः पुरुषः स्वयंभूर्विष्णुरिति हताः स्वांगुल्या मथयेत् मथ्यमानात्फेनो भवति फेनाद्बुद्बुदो भवति बुद्बुदादंडं भवति अंडवानात्मा भवति आत्मन आकाशो भवति आकाशाद्वायुर्भवति वायोरग्निर्भवति अग्नेरोंकारो भवति ॐकाराद्व्याहृतिर्भवति व्याहृत्या गायत्री भवति गायत्र्याः सावित्री भवति सावित्र्याः सरस्वती भवति सरस्वत्या वेदा भवंति वेदेभ्यो ब्रह्मा भवति ब्रह्मणो लोका भवंति तस्माल्लोकाः प्रवर्तंते चत्वारो वेदाः सांगाः सोपनिषदःसेतिहासास्ते सर्वे गायत्र्याः प्रवर्तंते यथाऽग्निर्देवानां ब्राह्मणो मनुष्याणां मेरुः शिखरिणां गंगा नदीनां वसंत ऋतूनां ब्रह्मा प्रजापतीनामेवासौमुख्यः गायत्र्या गायत्री छंदो भवति किं भूः किं भुवः किं स्वः किं महः किं जनः किं तपः किं सत्यं किं तत् किं सवितुः किंवरेण्यं किं भर्गः किं देवस्य किं धीमहि किं धियः किं यः किं नः किं प्रचोदयात् । भूरितिभूर्लोकः भुवरित्यंतरिक्षलोकः स्वरितिस्वर्लोकः महरिति महर्लोकः जनइति जनोलोकः तपइतितपोलोकः सत्यमितिसत्यलोकः ॐभूर्भुवःस्वरोमिति त्रैलोक्यम् तदसौ तेजः यत्तेजसोऽग्निर्देवता सवितुरित्यादित्यस्य वरेण्यमित्यन्नमन्नमेव प्रजापतिः भर्गइत्यापो वै भर्गः एतास्तत्सर्वा देवताः देवस्येंद्रो वै देवयद्दिवं तदिंद्रस्तस्मात्सर्वकृत् [illegible]नो नाम विष्णुः धीमहि किमध्यात्मं तत्परमं पदमित्यध्यात्मं योन इति पृथिवी वै यो नः प्रचोदयात् काम इमाँल्लोकान्प्रच्यवन् यो

नृशंस्योऽस्तोष्यस्तत्परमो धर्मः इत्येषा गायत्री किंगोत्रा कत्यक्षरा कातिपदा कातिकुक्षिः कतिशीर्षाणि सांख्यायनसगोत्रा गायत्रा चतुर्विं
शत्यक्षरा त्रिपदा षट्कुक्षिः सावित्री केशास्त्रयः पादा भवंति काऽस्याः कुक्षिः कानि पंचशीर्षाणि ऋग्वेदोऽस्याः प्रथमः पादो भवति
यजुर्वेदो द्वितीयः सामवेदस्तृतीयः पूर्वादिक्प्रथमा कुक्षिर्भवति दक्षिणा द्वितीया पश्चिमा तृतीया उदीची चतुर्थी ऊर्ध्वा पंचमी अधरा
षष्ठी कुक्षिः व्याकरणमस्याः प्रथमं शीर्षं भवति शिक्षा द्वितीयं कल्पस्तृतीयं निरुक्तं चतुर्थं ज्योतिषामयनं पंचमं किं लक्षणं किमु चेष्टितं
किमुदाहृतं किमक्षरं दैवत्यं लक्षणं मीमांसा अथर्ववेदो विचेष्टितं छंदो विधिरित्युदाहृतं को वर्णः कः स्वरः श्वेतो वर्णः षट् स्वराणि
इमान्यक्षराणि दैवतानि भवंति पूर्वा भवति गायत्री मध्यमा सावित्री पश्चिमा संध्या सरस्वती प्रातःसंध्या रक्ता रक्तपद्मासनस्था—रक्तां
बरधरा—रक्तवर्णा—रक्तगंधानुलेपना—चतुर्मुखा—अष्टभुजा—द्विनेत्रा—दंडाक्षमालाकमंडलुस्रुक्स्रुवधारिणी—सर्वाभरणभूषिता—गायत्री
कौमारी ब्राह्मी हंसवाहिनी ऋग्वेदसहिता ब्रह्मदैवत्या त्रिपदा गायत्री षट्कुक्षिः पंचशीर्षा—अग्निमुखा रुद्रशिवविष्णहृदया ब्रह्मकवचा
सांख्यायनसगोत्रा भूर्लोकव्यापिनी—अग्निस्तत्त्वम् उदात्तानुदात्तस्वरितस्वरमकारः आत्मज्ञाने विनियोगः॥ इत्येषा गायत्री मध्याह्नसंध्या
श्वेता श्वेतपद्मासनस्था श्वेतांबरधरा श्वेतगंधानुलेपना पंचमुखी-दशभुजा-त्रिनेत्रा-शूलाक्षमालाकमंडलुकपालधारिणी-सर्वाभरणभूषिता
सावित्री युवती माहेश्वरी वृषभवाहिनी-यजुर्वेदसहिता रुद्रदैवत्या त्रिपदा सावित्री—षट्कुक्षिः—पंचशीर्षा—अग्निमुखा-रुद्रशिखा-ब्रह्म
कवचा-भारद्वाजसगोत्रा—भुवर्लोकव्यापिनी वायुस्तत्त्वम् उदात्तानुदात्तस्वरितस्वरमुकारः श्वेतवर्णः आत्मज्ञाने विनियोगः॥इत्येषा सावित्री
सायंसंध्या कृष्णा कृष्णपद्मासनस्था—कृष्णांबरधरा—कृष्णवर्णा—कृष्णगंधानुलेपना—कृष्णमाल्यांबरधरा—एकमुखी—चतुर्भुजा—द्विनेत्रा
शंखचक्रगदापद्मधारिणी—सर्वाभरणभूषिता सरस्वती वृद्धा वैष्णवी गरुडवाहिनी सामवेदसहिता—विष्णुदैवत्या त्रिपदा षट्कुक्षिः पंच
शीर्षा अग्निमुखा विष्णुहृदया रुद्रशिखा ब्रह्मकवचा—काश्यपसगोत्रा स्वर्लोकव्यापिनी सूर्यस्तत्त्वम् उदात्तानुदात्तस्वरितं मकारः कृष्ण
वर्णा मोक्षज्ञाने विनियोगः॥इत्येषा सरस्वती रक्ता गायत्री—श्वेता सावित्री कृष्णवर्णा सरस्वती प्रणवो नित्ययुक्तश्च व्याहृतिषु च सप्तसु॥

सर्वेषामेव पापानां संकरे समुस्थिते ॥ दशशतं समभ्यर्च्य गायत्री पावनी महत् ॥ प्रह्लादोऽत्रिर्वसिष्ठश्च शुकः कण्वः पराशरः ॥ विश्वामित्रो महातेजाः कपिलः शौनको महान् ॥ याज्ञवल्क्यो भरद्वाजो जमदग्निस्तपोनिधिः ॥ गौतमो मुद्गलः श्रेष्ठो वेदव्यासश्च लोमशः ॥ अगस्त्यः कौशिको वत्सः पुलस्त्यो मांडुकस्तथा ॥ दुर्वासास्तपसा श्रेष्ठो नारदः कश्यपस्तथा ॥ उक्तात्युक्ता तथा मध्या प्रतिष्ठान्यासपूर्विकाः ॥ गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् च बृहती पंक्तिरेव च ॥ त्रिष्टुप् च जगती चैव तथातिजगती मता ॥ शक्वरी चाति पूर्वा स्यादष्ट्यत्यष्टी तथैव च ॥ धृतिश्चातिधृतिश्चैव प्रकृतिः कृतिराकृतिः ॥ विकृतिः संकृतिश्चैव तथातिकृतिरुत्कृतिः ॥ इत्येताश्छंदसां संज्ञाः क्रमशो वच्मि सांप्रतम् ॥ भूरिति छंदो भुवरिति छंदः स्वरिति च्छंदो भूर्भुवः स्वरोमिति देवी गायत्री । इत्येतानि च्छंदांसि प्रथममाग्नेयं द्वितीयं प्राजापत्यं तृतीयं सौम्यं चतुर्थमैशानं पंचममादित्यं षष्ठं बार्हस्पत्यं सप्तमं पितृदेवत्यम् अष्टमं भगदेवत्यं नवममार्यम्णं दशमं सावित्रम् एकादशं त्वाष्ट्रं द्वादशं पौष्णं त्रयोदशमैन्द्राग्नं चतुर्दशं वायव्यं पंचदशं वामदेवत्यं षोडशं मैत्रा वरुणं सप्तदशं भ्रातृव्यमष्टदशं वैश्वदेव्यम् एकोनविंशं वैष्णवं विंशं वासवम् एकविंशं रौद्रं द्वाविंशमाश्विनं त्रयोविंशं चतुर्विंशं ब्राह्मम्। "दीर्घान्स्वरेणसंयुक्तान्बिन्दुनादसमन्वितान् ॥ व्यापकान्विन्यसेत्पश्चाद्दशपंक्त्याक्षराणि च ॥" ह्रुंवुंपुस इति प्रत्यक्षबीजानि। "प्रह्लादिनी प्रभा सत्या विश्वा भद्रा विलासिनी । प्रभावती जया कांता शांता पद्मा सरस्वती॥विद्रुमस्फटिकाकारं पद्मरागसमप्रभम् । इन्द्रनील मणिप्रख्यं मौक्तिकं कुंकुमप्रभम् ॥ अजनाभं च गांगेयं वैदूर्यं चन्द्रसन्निभम् । हारिद्रं कृष्णदुग्धाभं रविकांतिसमप्रभम् ॥ शुकपिच्छ समाकारं क्रमेण परिकल्पयेत् । पृथिव्यापस्तथा तेजो वायुराकाश एव च ॥ गंधो रसश्च रूपं च शब्दः स्पर्शस्तथैव च । घ्राणं जिह्वा च चक्षुश्च त्वक्छ्रोत्रं च तथापरम् ॥ उपस्थपायुपादादि पाणिर्वागपि च क्रमात् । मनो बुद्धिरहंकारमव्यक्तं च यथाक्रमम् ॥ सुमुखं संपुटं चैव विततं विस्तृतं तथा । एकमुखं द्विमुखं च त्रिमुखं च चतुर्मुखम्॥पंचमुखं षण्मुखं चाधोमुखं चैव व्यापकम् । आंजलिकं ततः प्रोक्तं मुद्रितं तु त्रयोदशम् ॥ शकटं यमपाशं च ग्रंथितं संमुखोन्मुखम् । प्रलंबं मुष्टिकं चैव मत्स्यः कूर्मो वराहकम् ॥ सिंहाक्रांतं

महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा। एता मुद्राश्चतुर्विंशगायत्र्याः सुप्रतिष्ठिताः॥" ॐ मूर्ध्नि संघाते ब्रह्मा विष्णुर्ललाटे रुद्रो भ्रूमध्ये चक्षुषोश्चंद्रादित्यौ कर्णयोः शुक्रबृहस्पती नासिके वायुदैवत्यं प्रभातं दोषा उभे संध्ये मुखमग्निर्जिह्वा सरस्वती ग्रीवा स्वाध्यायास्तनयोर्वसवः बाह्वोर्मरुतः हृदयं पर्जन्यम् आकाशमपरं नाभिरन्तरिक्षं कटिरिंद्रियाणि जघनं प्राजापत्यं कैलासमलयौ उरू विश्वेदेवा जानुभ्यां

अथ गायत्रीचक्रम्.

अक्षर०	ऋष०	छन्दां०	देवताः	वर्णाः	तत्वा०	शक्तयः	मुद्राः	कलाः	फलम्	पापहरफलम्	तकारान्तापादांगुष्ठयोः
त	वसिष्ठः	गायत्री	अग्निः	पीतं	पृथ्वी	ब्राह्मी	सुमुखं	तपनी	आयुष्यम्	अज्ञानदोषहरम्	ॐतकारपादांगुष्ठ०
त्स	भरद्वाजः	उष्णिक्	वायुः	श्यामं	अप्	गौरी	संपुटम्	सकला	आरोग्यम्	उपपातकहरम्	ॐत्सकारंगुल्फ०
वि	गौतमः	अनुष्टुप्	सूर्य्यः	श्वेतं	तेजः	प्रभा	विततं	विश्वा	ऐश्वर्य्यदम्	महापातकहरम्	ॐविकारंजंघयोः
तु	विश्वामित्रः	बृहती	विद्युत्	नीलं	वायुः	नित्या	विस्तीर्णं	तुष्टा	धनदम्	दुष्टग्रहदोषहरम्	ॐतुकारंजान्वोः
र्व	भृगुः	पंक्तिः	यमः	वह्निः	आकाशं	विश्वा	एकमुखं	वरदा	कामदम्	भ्रूणहत्यादोषहरम्	ॐर्वकारंऊर्वोः
रे	शांडिल्यः	त्रिष्टुप्	वरुणः	अतिशुभ्रं	गंधः	भद्रा	द्विमुखं	रेवती	विद्यादम्	अगम्यागमनहरम्	ॐरेकारंगुदे.
णि	लोहितः	व्यक्तिः	बृहस्पतिः	हरितम्	रसः	विलासिनी	त्रिमुखम्	सूक्ष्मा	कामदम्	अभक्ष्याभक्षहरम्	ॐणिकारंलिंगे.
यं	गर्गः	कान्तिः	पर्जन्यः	अतिपीतं	रूपं	विश्वा	चतुर्मुखं	ज्ञाना	धनदम्	पुरुषहत्याहरम्	ॐयंकारंकट्यां.
भ	शातातपः	बृहती	इन्द्रः	ताम्रं	स्पर्शः	काली	पंचमुखम्	भर्गा	सन्ततिदम्	गोहत्याहरम्	ॐभकारंनाभौ.
र्गो	सनत्कुमारः	सत्या	गन्धर्वः	रक्तम्	शब्दः	जवा	षण्मुखम्	गोमती	अभीष्टदम्	स्त्रीहत्याहरम्	ॐर्गोकारमुदरे.

अथ श्लोकाः

प्रणवंपूर्वमुद्धृत्यव्याहृत्यासप्तभिस्तथा॥ चतुर्विंशतिगायत्र्यादिराद्यस्योपवीतकम्॥ १ ॥ ब्रह्मणोत्पादितंसूत्रं विष्णुनात्रिगुणीकृतम् ॥ रुद्रेणदीयतेग्रंथिः सावित्र्याचाभिमंत्रितम् ॥ २ ॥ श्लोकार्द्धेनप्रवक्ष्यामियदुक्तंग्रंथकोटिषु ॥ परोपकारःपुण्यायपापायपरपीडनम् ॥ ३ ॥ तयादत्तोप्रश्नः योयोधिहिमधीस्यवदेगों भयणीर्भतुत्रित्सत ॥ शिवःशिवःशिवा जीवः नजीवःकेवलःशिवः॥ पशुपाशस्थितोजीवः पाशमुक्तःसदाशिवः॥ ४॥ वासिष्ठशापमोचनं हुंफदस्वाहाउपसंहारमुद्राप्रदर्शनम्॥ प्रणवोभूर्भुवःस्वश्चपुनः

दे	शुनःशेपः	पंक्तिः	त्वष्टा	श्यामः	वाक्	कान्ता	अधोमुखं	दविका	इष्टकन्यादं.	एनसदोषहरम्	ॐ देकारंस्तनयोः
व	भार्गवः	विराट	मैत्रावरुणिः	पीतम्	पाणिः	शान्ता	शकटम्	वरा	कान्तिदम्	फयरादोषहरम्	ॐ वकारंहृदये
स्य	पाराशरः	विभ्राट्	यौष्णः	विद्युत्	चरणः	दुर्गा	यमपाशः	सिद्धान्ता	चिंतितासि.	पितृभ्रातृदोषहरम्	ॐ स्यकारंकण्ठे
धी	पुण्डरीकः	विस्तारपं०	सुरेशः	शुभ्रम्	उपस्थं	सरस्वती	ग्रथितम्	ध्योना	कीर्तिदाय.	पूर्वनीतपापहरम्	ॐ धीकारंमुखे
म	कुत्सः	कात्यायनी	मरुत्	रक्तः	वायुः	विद्युद्वर्णा	उन्मुखोन्मु.	मर्यादा	सौभाग्यदं	सर्वपापहरम्	ॐ मकारंताल्वदेशे
हि	दक्षः	पंक्तिः	सौम्यः	नीलम्	श्रोत्रम्	विशाला	प्रलंबं	स्फुटा	अभीष्टसि.	प्रतिग्रहदोषहरम्	ॐ हिकारंनासाग्रे
धि	कश्यपः	त्रिष्टुप्	अंगिराः	रक्तः	त्वचा	विभूतिः	मुष्टिकं	बुद्धिः	त्रैलोक्यभो	प्रायश्चक्षेपहरम्	ॐ धिकारंनेत्रयोः
यो	जमदग्निः	जगती	विश्वेदेवाः	रुक्मसदृशं	चक्षुः	कमला	मत्स्यः	योगमातरः	प्राशयप्रदं	मनःसर्वपापहरम्	ॐयोकारंभ्रुवोर्मध्ये
यो	आत्रेयः	महाजगती	अश्विनौ	उद्युत्सूर्य०	जिह्वा	कला	कूर्मः	योगांतरं	देवप्रतिम.	इन्द्रपदप्राप्तिः	ॐ योकारंललाटे
नः	बिष्णुः	महिष्मती	प्रजापतिः	श्वेतः	नासिका	पाप्मा	वराहका	पृथ्वी	त्रैलोक्यदं	विष्णुपदप्राप्तिः	ॐ नःकारंपूर्वमुखे
प्र	अंगिराः	नृमती	कुबेरः	रोचनाभः	मनः	अचला	सिंहाकांतं	प्रभवा	परानुग्रह.	रुद्रपदप्राप्तिः	ॐप्रकारंदक्षिणमु.
चो	कुमारः	भू छंदः	शंकरः	चंद्रसदृशं	अहंकारः	परा	महाकांतं	उष्मा	तेजसोति.	ब्रह्मपदप्राप्तिः	ॐचोकारंप. मुखे
द	मृगशृंगः	भुवः	ब्रह्मा	पीतः	बुद्धिः	सुशीला	मुद्गरं	दिध्यामानं	स्वर्गप्रदम्	सायुज्यपदप्राप्तिः	ॐदकारंउत्तरमुखे
यात्	भगः	●	विष्णुः	शुभ्रवर्णः	गुदा	वज्जवृया	पल्लवं	निरंजनं	सर्वलोकप्र.	सर्वव्यापित्वम्	ॐ यकारंमूर्ध्नि

प्रणवसंयुताम् ॥ अन
क्तामन्यतेमनयोःपराम्
वंचतदायंच कुर्यात्प्र
अयांतारक्षितांकुर्यादि
दिति॥योनवांछतिसंता
केवलम् ॥ ९ ॥ प्रत
नक्षरंमोक्षमाप्नुयात् ॥
समंविद्याद्रोष्टेशतगुणो
सहस्रंस्यादनंतंशिवसा
अग्रेपृष्ठेतथावामेसमीपे
प्रदक्षिणंहोमंनकुर्यान्ना
शिवमध्येजपंकुर्यादथ
यजमानोजापकश्चषण्म
ति ॥ १० ॥ तकार

जान्वोः कुशिकौ जंघयोरयनद्वयम् सुराः पितरः पादौ पृथिवी वनस्पतिः गुल्फौ रोमाणि मुहूर्तास्ते विग्रहाः केतुमासा ऋतवः संध्याकाल त्रयमाच्छादनं संवत्सरो निमिषः । अहोरात्रावादित्यचंद्रमसौ॥ सहस्रपरमां देवीं शतमध्यां दशापराम् । सहस्रनेत्रीं देवीं गायत्रीं शरणमहं प्रपद्ये । तत्सवितुर्वरदाय नमः । तत्प्रातरादित्याय नमः । सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति । प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं

[illegible]ति । तत्सायंप्रातः प्रयुञ्जानोऽपापो भवति । य इदं गायत्रीहृदयं ब्राह्मणः प्रयतः पठेत् चत्वारो वेदा अधीता भवंति सर्वेषु तीर्थेषु स्नातो भवति सर्वैर्देवैर्ज्ञातो भवति सर्वप्रतिग्रहात्पूतो भवति अलेह्यलेहात्पूतो भवति अचोष्यचोषात्पूतो भवति सुरापानात्पूतो भवति सुवर्णस्तेयात्पूतो भवति पंक्तिभेदनात्पूतो भवति पतितसंभाषणात्पूतो भवति अनृतवचनात्पूतो भवति गुरुतल्पगमनात्पूतो भवति अगम्यागमनात्पूतो भवति वृषलीगमनात्पूतो भवति ब्रह्महत्यायाः पूतो भवति भ्रूणहत्यायाः पूतो भवति वीरहत्याः पूतो भवति अब्रह्मचारी सुब्रह्मचारी भवति अनेन हृदयाधीतेन क्रतुशतेनेष्टं भवति । षष्टिसहस्रं गायत्रीजपा भवंति । अष्टौ ब्राह्मणान्ग्राहयेत् अर्थसिद्धिर्भवति य इदं गायत्रीहृदयं ब्राह्मणः प्रयतः पठेत् ॥ सर्वपापैः प्रमुच्यते ब्रह्मलोके महीयते ब्रह्मलोके महीयते ॥ इति गायत्र्युपनिषत् संपूर्णा ॥ इति श्रीमन्त्रमहार्णवे मध्यखण्डे गायत्रीतंत्रे प्रथमस्तरङ्गः ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ श्रीदुर्गातंत्रप्रारंभः ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ भगवन्सर्वतंत्रज्ञ साधकानां जयावह ॥ यत्पुरा सूचितं देव दुर्गापंचांगमुत्तमम् ॥ १ ॥ सर्वस्वं सर्वदेवानां रहस्यं सर्वमंत्रिणाम् ॥ तदद्य कृपया ब्रूहि यद्यस्ति मयि ते दया ॥ २ ॥ भैरव उवाच ॥ एतद्गुह्यतमं देवि पंचांगं तत्त्वलक्षणम् ॥ दुर्गायाः सारसर्वस्वं न कस्य कथितं मया ॥३॥ तव स्नेहात्प्रवक्ष्यामि दुर्गापंचांगमीश्वरि ॥ गुह्यं गोप्यतमं गुह्यं न देयं ब्रह्मवादिभिः॥४॥ या देवी दैत्यदमनी दुर्गेत्यष्टाक्षरात्मिका ॥ देवैराराधिता पूर्वं ब्रह्माच्युतपुरःसरैः ॥ ५ ॥ पुरंदरहितार्थाय वधार्थाय सुरद्विषाम्॥सैवं सृजति भूतानि राजसी परमेश्वरी ॥६॥ सात्त्विकी रक्षति प्रान्ते संहरिष्यति तामसी॥ इत्थं गुणत्रयीरूपा सृष्टिस्थितिलयात्मिका ॥ ७ ॥ अष्टाक्षरी महाविद्या संध्यातीता परात्मिका ॥ तस्याः पंचांगमधुना रहस्यं त्रिदिवौकसाम् ॥ ८ ॥ वक्ष्यामि परमप्रीत्या न चाख्येयं दुरात्मने ॥ अभक्ताय न दातव्यमित्याज्ञा पारमेश्वरी ॥ ९ ॥ अथ दुर्गानामप्राप्तिः (देवीरहस्यतंत्रे) "तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम् ॥ दुर्गादेवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति" ॥१०॥(हिंगुलाद्रिखंडे उत्तरसंहितायाम्) आश्विने तु सिताष्टम्यां संगवे तु हतोऽसुरः ॥ तया देव्या महाविष्णोस्त्रैलोक्यसुखहेतवे ॥ ११ ॥ रुरुदैत्यस्य पुत्रो यो दुर्गसंज्ञोऽतितापदः ॥ तन्नाशकरणेनैव दुगानामाऽभवत्किल ॥ १२ ॥ तत्रादौ दुर्गापटलप्रारंभः ॥ दृष्ट्वा तंत्राण्यनेकानि पुराणानि विशेषतः ॥ जगन्मातुश्च दुर्गायाः पटलं कथयाम्यहम् ॥ १३ ॥ नामूलं लिख्यते किंचिदिह विज्ञेयमादरात् ॥ नैवात्र संशयः कार्य्यो नानाभेदविधानके ॥ १४ ॥ तंत्रांतरेष्वनेकानि विधानानि मुनीश्वरैः ॥ कथितानीह दुर्गायाः प्रसिद्धानि च संति वै ॥ १५ ॥ देशादेशाच्च तेषां वै संग्रहः क्रियते मया ॥ साधकानां हितार्थाय श्रीदुर्गायाः प्रसादतः ॥ १६ ॥ (देवीरहस्यतंत्रैकपंचाशत्तमे पटले) भैरव उवाच ॥ श्रीशैलराजशिखरे नानाद्रुमलताकुले ॥ वसंतलक्ष्मीनिलये समासीनमुमापतिम् ॥ १७ ॥ एकदा देवमीशानं शशिशेखरमुत्तमम् ॥ उमाश्रितार्धवपुषं देवदानवसेवितम् ॥ १८ ॥ ध्यानासक्ताक्षित्रितयं जटाजूटलतारुणम् ॥ भस्मांगरागधवलं नारायणनमस्कृतम् ॥ १९ ॥ ब्रह्मादिदेवप्रणतं गंधर्वजनवंदितम् ॥ यक्षराक्षसनागेन्द्रगन्धर्वकुल

उत्थाय विनता भूत्वा पर्यपृच्छत पार्वती ॥ २१ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ भग
पूजितम् ॥ २० ॥ भैरवं भैरवाकारं गिरीशं परमेश्वरम् ॥ उत्थाय विनता भूत्वा पर्यपृच्छत पार्वती ॥ चराचरं
वन्सर्वलोकेश सर्वलोकनमस्कृत ॥ गुणातीत गणाध्यक्ष भूतेश्वर महेश्वर ॥ २२ ॥ सृजस्यवासि नित्यं त्वं संहरस्यखिलं जगत् ॥ चराचरं
तत्त्वमेव किंपुनर्जपसि प्रभो ॥ २३ ॥ किं ध्यायसि महादेव सततं भक्तवत्सल ॥ वद शीघ्रं दयांभोधे यद्यहं प्रेयसी तव ॥ २४ ॥
ईश्वर उवाच ॥ देवि किं ते प्रवक्ष्यामि रहस्यमिदमद्भुतम् ॥ सर्वस्वं सारभूतं मे सर्वेषां तत्त्वमुत्तमम् ॥ २५ ॥ लक्षवारसहस्राणि वारि
तासि पुनः पुनः ॥ स्त्रीस्वभावान्महादेवि पुनस्त्वं परिपृच्छसि ॥ २६ ॥ अथ भक्त्या तव स्नेहाद्वक्ष्यामि परमाद्भुतम् ॥ देवीरहस्य
तंत्रोक्तं तंत्रराजं महेश्वरि ॥ २७ ॥ सर्वागमैकमुकुटं सर्वसारमयं ध्रुवम् ॥ सर्वतंत्रमयं दिव्यं पटलं कथयाम्यहम् ॥ २८ ॥
अनुक्रमणिकां दिव्यां शृणु तंत्रस्य पार्वति ॥ यस्याः श्रवणमात्रेण कोटिपूजाफलं लभेत् ॥ २९ ॥ श्रीविद्यानिर्णयो देवि मंत्र
साधनकोऽपरः ॥ शिवमंत्रप्रकाशाख्यो दीक्षाविधिरनुत्तमः ॥ ३० ॥ पुरश्चर्याविधिर्देवि पंचरत्नेश्वरीक्रमः ॥ होमसाधनकश्चैव यंत्रपूजा
विधिः परः ॥ ३१ ॥ आचारनिर्णयो देवि सर्वमेव प्रकाशितम् ॥ तत्रादौ देवि वक्ष्येऽहं दुर्गाभुवनमुत्तमम् ॥ ३२ ॥ अथ दुर्गा
भुवनवर्णनम् ॥ जयं नाम महादिव्यं बहुविस्तारविस्तृतम् ॥ नानारत्नसमाकीर्णं सूर्यकोटिसमप्रभम् ॥ ३३ ॥ इन्द्रगोपकवर्णं
च चन्द्रकोटिमनोहरम् ॥ अप्रमेयमसंख्येयमगम्यं सर्ववादिनाम् ॥ ३४ ॥ इदं दिव्यं जयं नाम भुवनं परमेश्वरि ॥ तत्रैव
वसते दुर्गा नवरूपात्मिका परा ॥ ३५ ॥ या देवदेवी वरदा सर्वलोकैकसुंदरी ॥ या दुर्गेति स्मृता लोके ब्रह्मांडोदर
वर्तिनी ॥ ३६ ॥ विष्णुना तपसा पूर्वमाराध्य परमेश्वरी ॥ महिषस्यासुरेन्द्रस्य वधार्थायावतारिता ॥ ३७ ॥ योग
माया महामाया सर्वदा परमेश्वरी ॥ तामेवाहर्निशं ध्याये श्रीविद्यां परमां जपे ॥ ३८ ॥ तामद्याहं प्रवक्ष्यामि विद्याचरणदायिनीम् ॥
यां श्रुत्वैव शिवो जातः पंचनादात्मकः शिवः ॥ ३९ ॥ यदा शुद्धारिहीना सा दुर्गा निष्कलरूपिणी ॥ साक्षाद्भुवनरूपापि महज्ज्योतिः
स्वरूपिणी ॥ ४० ॥ तदाशवहकाले तु ज्योतीरूपे महेश्वरी ॥ शिवः प्रभामंडलतो निर्गतश्चेतनो विभुः ॥ ४१ ॥ अश्रृणोन्नादमाधारं

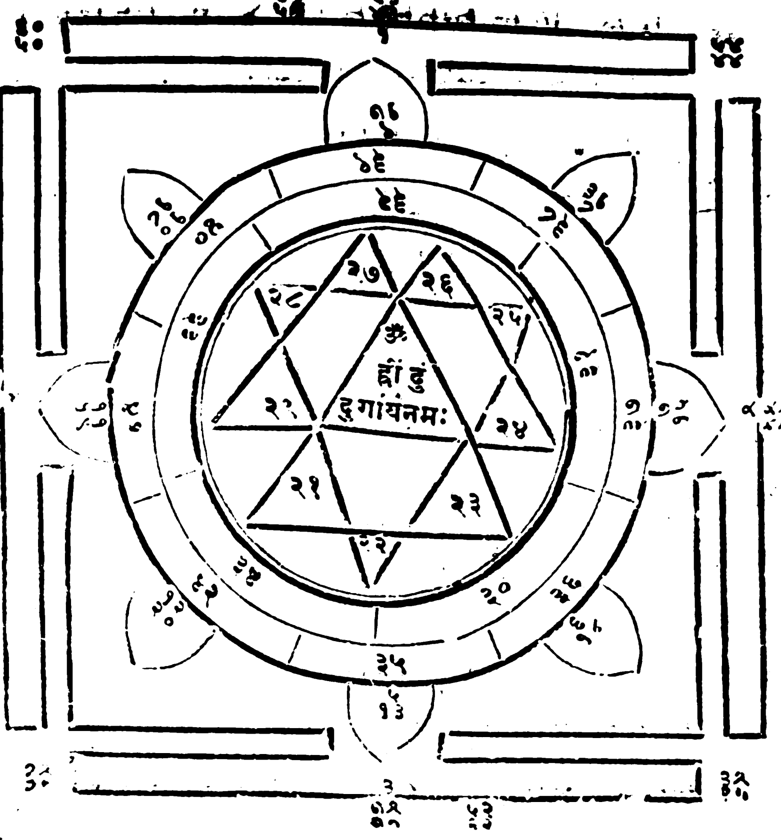
जगतां बीजमुत्तमम् ॥ अवमं सारमायां त्वं सृष्टोऽग्रे मनुनायकः ॥ ४२ ॥इति श्रुत्वा परानादं तारमित्युपदीर्यते ॥ शिवो जजाप सहसा बीजं त्रिजगतां शिवे ॥ ४३ ॥ तेन मायेति शब्दं स शुश्राव गगनात्ततः ॥ इमं भज महेशान सदानंदालयं परम् ॥ ४४ ॥ बिंदुनादमयो देवः शिवोऽभूत्परमेश्वरः ॥ ततो नादं स शुश्राव दृष्टिकर्णविवर्जितम् ॥ ४५ ॥ दुर्गां भजेति स शिवः पंचनादात्मकोऽभवत् ॥ ततो जप्त्वा पराविद्यामसृजज्जगदंबिका ॥ ४६ ॥ आदौ वायुं शिवः सृष्ट्वा ततः सृष्टिं यथेच्छया ॥ इच्छामात्रं शिवे विश्वं विश्वेश्वरि चराचरम् ॥ ४७ ॥ ससर्ज लवमात्रं स शितिकंठः शिवः शिवे ॥ इति मां गुप्तविद्यां तु लब्ध्वा गुरुपदार्चनात् ॥ ४८ ॥ किं किं न साधयेल्लोके साधको मंत्रसाधकः ॥ वस्त्रं वाह्निं च कामं च धनं वृत्तं च साधकः ॥ ४९ ॥ वशीकुर्य्याद्यथाबुद्धि येन तुर्याकुलो भवेत् ॥ श्रीचक्रमिदमाधारं देव्या विभवकारणम् ॥ ५० ॥ गद्यं सर्वस्वमंबायाः पूज्यं साधकसत्तमम् ॥ चक्रं लिखेन्महादेवि पूज्य मब्जार्कयोर्दलैः ॥ ५१ ॥ येन देवी महामाया श्रीदुर्गाशु प्रसीदति ॥ चक्रेशं पजयेद्यस्तु नीलाभां दहतीं द्युतिम् ॥ ५२ ॥ ॥ वह्नींदुसूर्यांबुरजं मंडलाकारमर्चयेत् ॥ लसन्मुकुटरोचिष्णुः स भवेत्साधकोत्तमः ॥ ५३ ॥ तस्य शंखनिभा कीर्तिर्भ्रमते भुवनत्रये ॥ ससुरासुरगंधर्वं वशं याति महेश्वरि ॥ ५४ ॥ शरासवरसानंदमयो भूत्वा जपेन्मनुम् ॥ खेटकास्तस्य तुष्यंति साधकस्यांगपूजनात् ॥ ॥ ५५ ॥ तस्य रोगा विनश्यंति सर्वे शूलादयोऽचिरात् ॥ तर्जनीं तव वक्ष्यामि रिपवो यांति विद्रुताः ॥ ५६ ॥ तस्य गेहं धनं गावो महिषा विष्टरं गजाः ॥ दुर्गा रत्नवती भूमिस्तस्य पीठं मनोहरम् ॥ ५७ ॥ साधकस्य भवेदेवं संपत्तिर्बहुधार्चनात् ॥ एवं ध्यायेन्महादेवीं दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम् ॥ ५८ ॥ ध्यानेनानेन देवेन्द्रो भविष्यति हि साधकः ॥ इतीदं देवि तत्त्वं ते कथितं परमाद्भुतम् ॥ ॥ ५९ ॥ अवक्तव्यमदातव्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥ ६० ॥ इति दुर्गाभुवनवर्णनम् ॥ ॥ अथ दुर्गाष्टाक्षरमंत्रप्रयोगः ॥ (देवीरहस्यतंत्रे) नास्यांतरायबाहुल्यं नापि मित्रारिदूषणम् ॥ नो वा प्रयाससंयोगो नाचारयुगविप्लवः ॥ १ ॥ साक्षात्सिद्धिप्रदो मंत्रो दुर्गायाः कलिनाशनः ॥ अष्टाक्षरोऽष्टसिद्धीशो गोपनीयो दिगंबरैः ॥ २ ॥ मंत्रो यथा—"ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः ।" इत्यष्टाक्षरो

महेश्वर ऋषिः । श्रीदुर्गाष्टाक्षरात्मिका देवता । दुं बीजम् । ह्रीं शक्तिः ॥
मंत्रः ॥ अस्य विधानम् ॥ ॐ अस्य श्रीदुर्गाष्टाक्षरमंत्रस्य महेश्वरऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ अनुष्टुप्छंदसे नमः
ॐ कीलकाय नम इति दिग्बंधः । धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ महेश्वरऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ अनुष्टुप्छंदसे नमः
मुखे ॥ २ ॥ श्रीदुर्गाष्टाक्षरात्मिकादेवतायै नमो हृदि ॥ ३ ॥ दुं बीजाय नमो नाभौ ॥ ४ ॥ ह्रीं शक्तये नमो गुह्ये ॥ ५ ॥ ॐ
कीलकाय नमः पादयोः ॥ ६ ॥ नमो दिग्बंधः इति सर्वाङ्गे ॥ ७ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां
नमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ह्रां हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा ॥
॥ २ ॥ ॐ ह्रूं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रैं कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥
इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ॐ ॐ नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं नमो मुखे ॥ २ ॥ ॐ दुं नमो वक्षसि ॥ ३ ॥ ॐ गां नमो नाभौ ॥४॥
ॐ यैं नमः पृष्ठे ॥ ५ ॥ ॐ नं नमो जान्वोः ॥ ६ ॥ ॐ मः नमः पादयोः ॥ ७ ॥ इति वर्णन्यासः ॥ ॐ ॐ आत्मतत्त्वाय
नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वाय नमो मुखे ॥२॥ ॐ दुं शिवतत्त्वाय नमो हृदि ॥ ३ ॥ ॐ गुरुतत्त्वाय नमो नाभौ ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं शक्तितत्त्वाय नमः जंघयोः ॥ ५ ॥ ॐ दुं शिवशक्तितत्त्वाय नमः पादयोः ॥ ६ ॥ इति तत्त्वन्यासः ॥ ॐ अंआं कं
खंगंघंङंइंईं हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं उंऊंचंछंजंझंञंऋंॠं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ दुं ऌंटंठंडंढंणंॡं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥
ॐ गां एं तंथंदंधंनं ऐं कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ यैं ओं पंफंबंभंमं औं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ नमः अंयंरंलंवंशंषंसंहंळंक्षंअः अस्त्राय
फट् ॥६॥ इति शुद्धमातृकान्यासः ॥ एवं करन्यासं कुर्यात् ॥ततः पद्धतिमार्गेण देवीकलामातृका विन्यस्य पूर्वोक्तषडंगं कृत्वा ध्यायेत् ॥
अथ ध्यानम् ॥ दूर्वानिभां त्रिनयनां विलसत्किरीटां शंखाब्जखड्गशरखेटकशूलचापान् ॥ संतर्जनीं च दधतीं महिषासनस्थां दुर्गां
नवारकुलपीठगतां भजेऽहम् ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य ततः सर्वतोभद्रमंडले पीठपूजां विधाय मंडूकादिपीठदेवताः

पद्धतिमार्गेण संस्थाप्य नवपीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तद्यथा—ॐ प्रभायै नमः ॥ १ ॥ ॐ मायायै नमः ॥ २ ॥ ॐ जयायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ सूक्ष्मायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ विशुद्धायै नमः ॥ ५ ॥ ॐ नंदिन्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ सुप्रभायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ विजयायै नमः ॥ ८ ॥ ॐ सर्वसिद्धिदायै नमः ॥ ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रपत्रं ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य तस्योपरि श्रीचक्रं चतुर्द्वारं त्रिवृत्तमष्टदलं वृत्तं षडस्रं त्रिकोणं बिंद्वात्मकयंत्रमष्टगंधेन विलिख्य ॐ ह्रीं वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहाय फट् ॥ इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पुनर्ध्यात्वावाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञया आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तद्यथा—पुष्पांजलिमादाय ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ॥ अनुज्ञां देहि मे दुर्गे परिवारार्चनाय ते ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं दुं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीचक्राय नमः ॥ इति पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत ॥ तद्यथा—भूपुराभ्यंतरे पूर्वादिचतुर्दिक्षु ॐ ह्रीं दुं गं गणेशाय नमः गणेशश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ ह्रौं कुमाराय नमः कुमारश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ प्रीं पुष्पदंताय नमः पुष्पदंतश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ वैं विकर्तनाय नमः विकर्तनश्रीपा० ॥ ४ ॥ इति द्वारपालान् संपूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य ॥ ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतराले प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च ॐ ब्राह्म्यै नमः ब्राह्मीश्री० ॥१॥ ॐ नारायण्यै नमः नारायणीश्री० ॥२॥ ॐ चामुंडायै नमः चामुण्डाश्री० ॥३॥ ॐ अपराजितायै नमः अपराजिताश्री० ॥४॥ ॐ माहेश्वर्यै नमः माहेश्वरीश्री० ॥५॥ ॐ कौमार्यै नमः कौमारीश्री० ॥ ६ ॥ ॐ वाराह्यै नमः वाराहीश्री० ॥ ७ ॥ ॐ नारसिंह्यै नमः । नारसिंहीश्री० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ संपूज्य पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य "अभीष्टसि०" ॐ ह्रीं दुं सर्वाशापूरकाय श्रीचक्राय नमः॥इति पुष्पांजलिं दद्यात्॥इति द्वितीयावरणम्॥२॥

ततोऽष्टदलाग्रेषु प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च । ॐ असितांगभैरवाय नमः असितांगभैरवश्री० ॥ १ ॥ ॐ रुरुभैरवाय नमः । रुरुभैरवश्री० ॥ २ ॥ ॐ चंडभैरवाय नमः । चंडभैरवश्री० ॥३॥ ॐ क्रोधभैरवाय नमः । क्रोधभैरवश्री० ॥ ४ ॥ ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः । उन्मत्तभैरवश्री० ॥ ५ ॥ ॐ कपालभैरवाय नमः । कपालभैरवश्री० ॥ ६ ॥ ॐ भीषणभैरवाय नमः । भीषणभैरवश्री० ॥ ७ ॥ ॐ संहारभैरवाय नमः । संहारभैरवश्रीपा० ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ भैरवान्पूजयित्वा पूर्वोक्तं पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततः नवकोणे देव्यग्रिकोणमारभ्य वामावर्तेन च । ॐ शैलपुत्र्यै नमः । शैलपुत्रीश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ ब्रह्मचारिण्यै नमः । ब्रह्मचारिणीश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ चंडघंटायै नमः । चंडघंटाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ कूष्माण्डायै नमः । कूष्मांडाश्री० ॥ ४ ॥ ॐ स्कंदमात्रे नमः । स्कंदमातृश्री० ॥ ५ ॥ ॐ कात्यायन्यै नमः । कात्यायनीश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ कालरात्र्यै नमः । कालरात्रिश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ महागौर्यै नमः । महागौरीश्री० ॥ ८ ॥ ॐ सिद्धिदायै नमः । सिद्धिदाश्रीपा० ॥ ९ ॥ इति संपूज्य 'अभीष्ट०' ॐ ह्रीं दुं अष्टसिद्धिदाय श्रीचक्राय नमः ॥ इति दूर्वा

अथ दुर्गायन्त्रपूजनम् ।



१ पाठांतरे-देवदूत्यै नमः इति पूजयेत् ।

दलांजलिं च दद्यात् ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥४॥ ततो वृत्ते पूर्वादिक्रमेण वामावर्तेन च ॥ ॐ अंबिकायै नमः अंबिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१॥ॐ अष्टाक्षरायै नमः अष्टाक्षराश्रीपा०॥२॥ॐ अष्टभुजायै नमः अष्टभुजाश्री०॥३॥ॐ नीलकंठायै नमः नीलकंठाश्रीपा० ॥४॥ ॐ जगदंबिकायै नमः जगदंबिकाश्री० ॥५॥ इति संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति पंचमावरणम् ॥५॥ ततो वृत्ते प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च। ॐ शंखाय नमः ॥ १ ॥ ॐ पद्मायनमः ॥ २ ॥ ॐ खड्गाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ बाणेभ्यो नमः ॥ ४ ॥ ॐ धनुषे नमः ॥ ५ ॥ ॐ खेटकाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ शूलाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ तर्जन्यै नमः ॥ ८ ॥ इत्यस्त्राणि संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति षष्ठावरणम् ॥ ६ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण । ॐ लं इन्द्राय नमः ॥ १ ॥ ॐ रं अग्नये नमः ॥ २ ॥ ॐ मं यमाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ क्षं निर्ऋतये नमः ॥ ४ ॥ ॐ वं वरुणाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ यं वायवे नमः ॥ ६ ॥ ॐ कुं कुबेराय नमः ॥ ७ ॥ ॐ हं ईशानाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ आं ब्रह्मणे नमः ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं अनंताय नमः ॥ १० ॥ तद्बाह्ये इन्द्रादिसमीपे ॐ वं वज्राय नमः ॥ १ ॥ ॐ शं शक्तये नमः ॥ २ ॥ ॐ दं दंडाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ खं खड्गाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ पां पाशाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ अं अंकुशाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ गं गदायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ पं पद्माय नमः ॥ ९ ॥ ॐ चं चक्राय नमः ॥ १० ॥ इति इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति सप्तमावरणम् ॥७॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य षडंगं कृत्वा पुनर्ध्यात्वा देव्यग्रे मालामादाय जपं कुर्यात् । अस्य पुरश्चरणमष्टलक्षं चतुर्लक्षं वा एकलक्षं वा कुर्यात् ॥ तत्तद्दशांशहोमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् । एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति सिद्धे च मंत्रे मंत्री प्रयोगान् स... । तथा च—महाचीनक्रमस्थानां साधकानां जयावहः ॥ मन्त्रराजो महादेवि सद्यो भोगापवर्गदः ॥ १ ॥ वर्णलक्षं पुरश्चर्या तदर्धं वा महेश्वरि ॥ एकलक्षावधिं कुर्यान्नातो न्यूनं कदाचन ॥ २ ॥ यं विधाय कलौ मंत्री भवेत्कल्पद्रुमोपमः ॥ ततो मंत्रं जपेन्नित्यं दुर्गाया अष्टसिद्धिदम् ॥ ३ ॥ यं जप्त्वा साधको भूमौ विचरेद्भैरवो यथा ॥ स्तंभनं मोहनं चैव

मारणाकर्षणे ततः ॥ ४ ॥ वशीकारं तथोच्चाटं शांतिकं पौष्टिकं तथा ॥ एषां साधनमाचक्षे प्रयोगानां महेश्वरि ॥ ५ ॥ महा चीनक्रमस्थानां साधकानां हिताय च ॥ अयुतं तु जपेन्मूलं श्मशाने निशि साधकः ॥ ६ ॥ हुनेद्दशांशतः सर्पिर्यवान्मांसान्मृग च्युतान् ॥ स्तंभनं जायते क्षिप्रं वादिकामिजनांभसाम् ॥ ७ ॥ अयुतं प्रजपेद्देवि वटे रुद्राक्षमालया ॥ होमो दशांशतः कार्यो घृतपद्मा क्षपंकजैः ॥ ८ ॥ आरग्वधैः स्वधामूलैर्मोहनं जायते क्षणात् ॥ देवानां दानवानां च का कथाऽल्पधियां नृणाम् ॥ ९ ॥ अयुतं प्रजपेन्मूलं वने साधकसत्तमः ॥ वेतसीमूलगो वापि हुनेत्तत्र दशांशतः ॥ १० ॥ घृतपायसशंबूकान् रिपुर्मृत्युमुखं व्रजेत् ॥ अयुतं प्रजपेद्रात्रौ शून्यागारे कुलेश्वरि ॥११॥ होमो दशांशतः कार्यो घृतव्योषधिजीरकैः ॥ कपिबीजैरपि प्रातर्भवेदाकर्षणं स्त्रियाः ॥ १२ ॥ अयुतं प्रजपेन्मूलं चत्वरे त्वरितं हुनेत् ॥ आज्याब्जेक्षुरसाखंडरक्तपुष्पाणि पार्वति ॥ १३ ॥ शक्रोऽपि वशतामेति किं पुनः क्षुद्रभूमिपः ॥ अयुतं प्रजपेन्मूलं साधकोऽश्वत्थमूलके ॥ १४ ॥ हुनेदाज्यं दशांशेन केशान् स्त्रीणां त्वचः कणान् ॥ रिपुमुच्चाटयेच्छीघ्रं यदि शक्रसमो भवेत् ॥ १५ ॥ अयुतं प्रजपेन्मूलं सुरद्रुमतले हुनेत् ॥ घृतांडकुक्कुटांगानि नानापुष्पाणि पृच्छकः ॥ १६ ॥ रोगोपद्रव कालस्य सद्यः शांतिर्भविष्यति ॥ अयुतं प्रजपेन्मूलं लीलोपवनमंडले ॥ १७ ॥ होमो दशांशतः कार्यो घृतमीनाज्यमस्तकैः ॥ पादैरष्टभिरीशानि सद्यः पुष्टिः प्रजायते ॥ १८ ॥ (शारदातिलके) राजा विजयते शत्रून् साधको विजयश्रियम् ॥ प्राप्नोति रोगी दीर्घायुः सर्वव्याधिविवर्जितः ॥ १९ ॥ वंध्याभिषिक्ता विधिना लभते तनयं वरम् ॥ मंत्रेणानेन संजप्तमाज्यं क्षुद्रज्वरापहम् ॥ २० ॥ गर्भिणीनां विशेषेण अत्तं भस्मादिकं ततः ॥ २१ ॥ इति श्रीदेवीरहस्यतंत्रे श्रीदुर्गाष्टाक्षरमंत्रप्रयोगः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ श्रीचंडिकामालामंत्रप्रयोगः ॥ (उक्तं चाथर्वणागमसंहितायाम्) मंत्रो यथा—"ॐ ह्रः ॐ सौं ॐ ह्रौं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीजयजय चंडिका चामुंडे चंडिके त्रिदशमुकुटकोटिसंघट्टितचरणारविंदे गायत्रि सावित्रि सरस्वति अहिकृताभरणे भैरवरूपधारिणि प्रकटितदंष्ट्रोग्रवदने घोराननयने ज्वलज्ज्वालासहस्रपरिवृते महाट्टहासधवलीकृतादिगंतरे सर्वयुगपरिपूर्णे कपालहस्ते

गजाजिनोत्तरीयभूतवेतालपरिवृते अकंपितधराधरे मधुकैटभमहिषासुरधूम्रलोचनचंडमुंडरक्तबीजशुंभनिशुंभदैत्यनिकृंते कालरात्रि महामाये शिवे नित्ये ॐ ऐं ह्रीं ऐंद्रि आग्नेयि याम्ये नैर्ऋति वारुणि वायवि कौबेरि ऐशानि ब्रह्मविष्णुशिवस्थिते त्रिभुवनधराधरे वामे ज्येष्ठे रौद्रि अंबिके ब्राह्मीमाहेश्वरी कौमारी वैष्णवी वाराहींद्राणी ईशानी महालक्ष्मीः इति स्थिते महोग्रविषमहाविषोरगफणामणिमुकुटरत्न महाज्वालामलमणिमहाहिहारबाहुकहोत्तमांगनवरत्ननिधिकोटितत्त्वबाहुजिह्वावाणीशब्दस्पर्शरूपरसगंधात्मिके क्षितिसाहसमध्यस्थिते महोज्ज्वलमहाविषोपविषगंधर्वविद्याधराधिपते ॐ ऐंकारा ॐ ह्रींकारा ॐ क्लींकारा हस्ते ॐ आँह्रींक्रौंअनभ्रेनभ्रेपाते प्रवेशय २ ॐ द्रां द्रीं शोषय २ ॐ द्रांद्रींमोहय २ ॐ क्लांक्लींदीपय २ ॐ ब्लूंब्लूंसंतापय २ ॐ सौंसौंउन्मादय २ ॐ म्लैंम्लैंमोहय २ ॐ खाँखाँशोधय २ ॐ याँयाँउन्मादय २ ॐ ह्रीह्रींआवेशय२ॐ स्त्रींस्त्रींउच्छादय२ॐ स्त्रींत्रींआकर्षय २ ॐ हुंहुंआस्फोटय २ ॐ त्रूंत्रूंत्रोटय२ ॐ छाँछाँछेदय२ ॐ कूंकूंउच्चाटय २ ॐ हूंहूंहन २ ॐ ह्रांह्रांमारय २ ॐ घ्रींघ्रींघर्षय २ ॐ स्त्रींस्त्रींविध्वंसय २ ॐ प्लूंप्लूंप्लावय २ ॐ भ्रांभ्रांभ्रामय २ ॐ भ्रांभ्रांदर्शय २ ॐ दांदांदिशांबंधय २ ॐ दींदींवर्तिनामेकाग्रचित्ताविशिकुरुतेंगये ॐ ह्रांह्रींहूंह्रैंह्रौंह्रः ॐ फ्रां फ्रीं फ्रूं फ्रैं फ्रौं फ्रः ॐ चामुंडायै विच्चे स्वाहा मम सकलमनोरथं देहि सर्वोपद्रवं निवारय २ अमुकं वशे कुरु २ भूतप्रेतपिशाचब्रह्मपिशाच ब्रह्मराक्षसयक्षयमदूतशाकिनीडाकिनीसर्वश्वापदतस्करादिकं नाशय २ मारय २ भंजय २ ॐ ह्रींश्रींक्लींस्वाहा" । इति मालामंत्रः अस्य विधानम् । ॐ अस्य श्रीचंडिकामालामंत्रस्य मार्कंडेय ऋषिः । अनुष्टुप् छंदः । श्रीचंडिका देवता । ॐ ह्वः बीजम् । ॐ सौं शक्तिः । ॐ कीलकम् । मम श्रीचंडिकाप्रसादसिद्ध्यर्थं सकलजनवश्यार्थं श्रीचंडिकामालामंत्रजपे विनियोगः ॥ ॐ मार्कंडेयऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ अनुष्टुप्छंदसे नमः मुखे ॥ २ ॥ ॐ श्रीचंडिकादेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ ॐ ह्वः बीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ ॐ सौं शक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रौं कीलकाय नमः नाभौ ॥ ६ ॥ ॐ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ७ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ह्रां फां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं फीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रूं फूं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रैं फैं

अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रौं फौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रः फः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ह्रांफाँ हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रींफीं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रूंफूं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रैं फैं कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ ह्रौंफौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ ह्रः फः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् । ॐ कल्याणीं कमलासनस्थशुभदां गौरीं घनश्यामलामाविर्भावितभूषणामभयदामार्द्रैकरक्षैः शुभैः॥ श्रींह्रींक्लींवरमंत्रराजसहितामानंदपूर्णात्मिकां श्रीशैले भ्रमरांबिकां शिवयुतां चिन्मात्रमूर्तिं भजे ॥१॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य सुवासिन्याः कुमार्याः पूजां कृत्वा पश्चाज्जपं कुर्य्यात् । अस्य पुरश्चरणं नित्यमेकविंशत्यधिकशतम् ॥१२१॥ जपेन स्त्री पुरुषो वा वश्यो भवति । तथा च—एकविंशत्यधिकशतजाप्येन वशमानयेत् ॥ स्त्री वापि पुरुषो वापि सत्यं सत्यं न संशयः ॥ १ ॥ राजद्वारे श्मशाने च विवादे शत्रुसंकटे ॥ शत्रोरुच्चाटने चैव सर्वकार्याणि साधयेत् ॥ इत्यथर्वणागमसंहितोक्तश्रीचंडिकामालामंत्रविधानम् ॥

अथ नवार्णमंत्रप्रयोगः ॥ ऋषिरुवाच ॥ परिपृच्छसि राजेन्द्र चंडिकापूजनादि यत् ॥ तदहं ते प्रवक्ष्यामि यथावदनुपूर्वशः ॥१॥ त्रैलोक्यडामरं मंत्रं शृणु भूप नवाक्षरम् ॥ येन विज्ञानमात्रेण परमैश्वर्यवान् भवेत् ॥ २ ॥ अनेनास्य सिद्धादिविचारो नास्तीति सूचितम् ॥ मंत्रो यथा—"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे" इति नवाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम् ॥ ॐ अस्य श्रीनवार्णमंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः । गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छंदांसि । महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः । नंदजाशाकंभरीभीमाः शक्तयः । रक्तदंतिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि । ह्रीं कीलकम् । अग्निवायुसूर्यास्तत्त्वानि । कार्यनिर्देशे जपे विनियोगः ॥ ॐ ब्रह्मविष्णुमहेश्वरऋषिभ्यो नमः शिरसि ॥ १ ॥ गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छंदोभ्यो नमः मुखे ॥ २ ॥ महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः हृदि ॥ ३ ॥ नंदजा

१—ऐं बीजमादौन्दुसमानदीप्तिं ह्रीं सूर्यतेजोद्युतिमद्द्वितीयम् ॥ क्लीं मूर्तिवैश्वानरतुल्यरूपं तृतीयमानंत्यसुखाय चिंत्यम् ॥ विशुद्धजांबूनदकांति तुर्यं सुंपञ्चमं रक्ततरं प्रकल्प्य ॥ डाषष्ठमुग्रार्तिहरं सुनीलं यै सप्तमं कृष्णतरं रिपुघ्नम् ॥ वि पांडुरं चाष्टममादिसिद्धिं च्चे धूम्रवर्णं नवमं विशालम् ॥ एतानि बीजानि नवात्मकस्य जप्तुः प्रकुर्युः सकलार्थसिद्धिम् ॥ इति मंत्रोद्धारः ॥

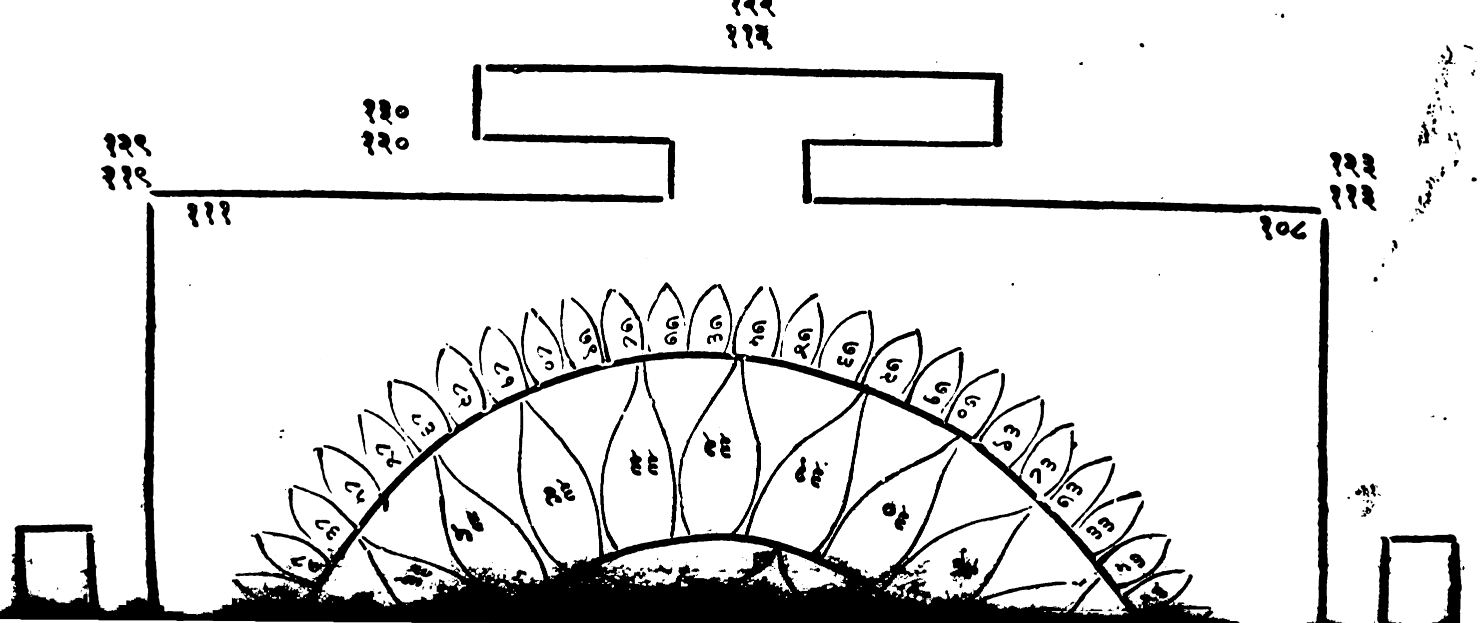
शाकंभरीभीमाशाकिभ्यो नमः दक्षिणस्तने ॥ ४ ॥ रक्तदंतिकादुर्गाभ्रामरीबीजेभ्यो नमः वामस्तने ॥५॥ ह्रीं कीलकाय नमः नाभौ ॥६॥ अग्निवायुसूर्यतत्त्वेभ्यो नमः हृदि ॥ ७ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥८॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ एवमृष्यादिकं विन्यस्यैकादश न्यासान् कुर्यात् ॥ तद्यथा—ॐ ऐंअंआंकंखंगंघंङंइंईं हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं उंऊंचंछंजंझंञंऋंॠं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ क्लीं ऌंटंठंडंढंणं ॡं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ चामुण्डा एंतंथंदंधंनंऐंकवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ यैंओंपंफंबंभंमंऔं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ विच्चे अंयंरंलं वंशंषंसंहंळंक्षंअः अस्त्राय फट् ॥ इति मातृकान्यासः प्रथमः ॥ १ ॥ ॐ ऐंह्रीं क्लीं नमः कनिष्ठयोः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं क्लीं नमः अनामिकयोः ॥ २ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः मध्यमयोः ॥ ३ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः तर्जन्योः ॥ ४ ॥ ॐ ऐंह्रींक्लीं नमः अंगुष्ठयोः ॥ ५ ॥ ॐ ऐंह्रींक्लीं नमः करतलकरपृष्ठयोः ॥ ६ ॥ ॐ ऐंह्रींक्लीं नमः पृष्ठे ॥ ७ ॥ ॐ ऐंह्रींक्लींनमः मणिबंधे ॥ ८ ॥ ॐ ऐंह्रींक्लीं नमः कूर्परे ॥ ९ ॥ ॐ ऐंह्रींक्लीं नमः हृदये ॥ १० ॥ ॐऐंह्रींक्लीं नमः शिरसि ॥ ११ ॥ ॐ ऐंह्रींक्लीं नमः शिखायाम् ॥ १२ ॥ ॐ ऐंह्रींक्लीं नमः कवचे ॥ १३ ॥ ॐ ऐंह्रींक्लीं नमः नेत्रत्रये ॥ १४ ॥ ॐऐंह्रींक्लीं नमः अस्त्रे ॥ १५ ॥ इति सारस्वतन्यासो द्वितीयः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं ब्राह्मी पूर्वतो मां पातु ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं माहेश्वरी आग्नेये मां पातु ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं कौमारी दक्षिणे मां पातु ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं वैष्णवी नैर्ऋत्ये मां पातु ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं वाराही पश्चिमे मां पातुः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं इंद्राणी वायव्ये मां पातु ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं चामुंडा उत्तरे मां पातु ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं महालक्ष्मीः ऐशान्ये मां पातु ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं व्योमेश्वरी ऊर्ध्वं मां पातु ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं सप्तद्वीपेश्वरी भूमौ मां पातु ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं कामेश्वरी पाताले मां पातु ॥ ११ ॥ इति मातृगणन्यासस्तृतीयः ॥ ३ ॥ ॐ नंदजायै कमलांकुशमंडितायै नमः पूर्वांगे मां पातु ॥ १ ॥ ॐ रक्तदंतिकायै खड्गपात्रहस्तायै नमः दक्षिणांगे मां पातु ॥ २ ॥ ॐ शाकंभर्य्यै पुष्पपल्लवसंयुतायै नमः पृष्ठे मां पातु ॥ ३ ॥ ॐ

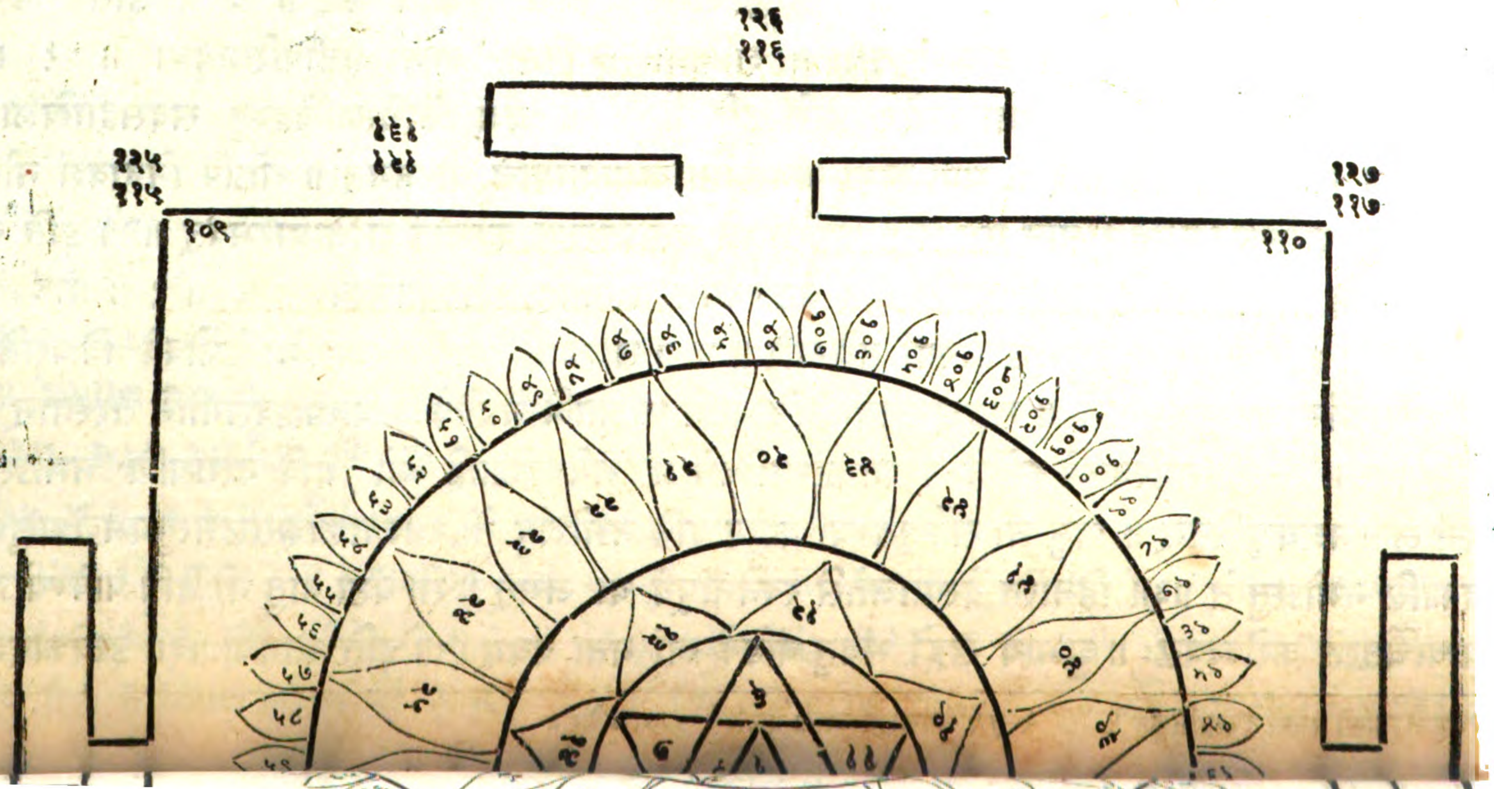
१—प्रथमं मातृकान्यासः कार्यः पूर्वोक्तमार्गतः। कृतेन येन देवस्य सारूप्यं याति मानवः ॥ २—अस्मिन्सारस्वते न्यासे कृते जाड्यं विनश्यति ॥ ३—तृतीयेऽस्मिन्कृते न्यासे त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥

ॐ भीमायै शिरःपात्रकरायै नमः मस्तकादिचरणांतं मां पातु ॥ ५ ॥ ॐ भ्रामर्यै
दुर्गायै धनुर्बाणहस्तायै नमः वामांगे मां पातु ॥ ४ ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः पादादिनाभिपर्यंतं सदा
चित्रकांत्यै नमः पादादिमस्तकांतं मां पातु ॥ ६ ॥ इति नंदजादिन्यासश्चतुर्थः ॥ ४ ॥ ॐ रुद्राय त्रिलोचनाय नमः विशुद्धेर्ब्रह्मरंध्रांतं
मां पातु ॥ १ ॥ ॐ जनार्दनाय नमः नाभेः विशुद्धिपर्यंतं मां पातु नित्यम् ॥ २ ॥ ॐ वृषभाय नमः
सदा मां पातु ॥ ३ ॥ ॐ हंसाय नमः पादयोः मां पातु ॥ ४ ॥ ॐ गरुडाय नमः करयोः मां पातु ॥ ५ ॥ ॐ आनंदमयपरमात्मने नमः परापरदेहभागे मां पातु ॥ ८ ॥
नेत्रयोः मां पातु ॥ ६ ॥ ॐ गजाननाय नमः सर्वांगे मां पातु ॥ ७ ॥ ॐ सरस्वत्यै अष्टा
इति ब्रह्माख्यन्यासः पंचमः ॥ ५ ॥ ॐ महालक्ष्म्यै अष्टादशभुजायै नमः मध्ये मां पातु ॥ १ ॥ ॐ सिंहाय नमः हस्तयोः मां
दशभुजायै नमः ऊर्ध्वं मां पातु ॥ २ ॥ ॐ महाकाल्यै दशभुजायै नमः अधः मां पातु ॥ ३ ॥ ॐ महेशचंडिकाभ्यां
पातु ॥ ४ ॥ ॐ हंसाय नमः नेत्रयोः मां पातु ॥ ५ ॥ ॐ यमाय महिषवाहनाय नमः पादयोः मां पातु ॥ ६ ॥ ॐ ऐं
नमः सर्वाङ्गे मां पातु ॥ ७ ॥ ॐ महेशचंडिकाभ्यां नमः पृष्ठे मां पातु ॥ ८ ॥ इति महालक्ष्म्यादिन्यासः षष्ठः ॥ ६ ॥ ॐ
नमः ब्रह्मरंध्रे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं नमः दक्षिणनेत्रे ॥ २ ॥ ॐ क्लीं नमः वामनेत्रे ॥ ३ ॥ ॐ चां नमः दक्षिणकर्णे ॥ ४ ॥ [illegible] विं नमः
मुं नमः वामकर्णे ॥ ५ ॥ ॐ डां नमः दक्षिणनासापुटे ॥ ६ ॥ ॐ यैं नमः वामनासापुटे ॥ ७ ॥ ॐ ऐंह्रीक्लीं चामुंडायै विच्चे पादादि ब्रह्मरंध्रांतम् ।
मुखे ॥ ८ ॥ ॐ च्चें नमः पायौ ॥ ९ ॥ इति मंत्रवर्णन्यासः सप्तमः ॥ ७ ॥ ॐ ऐंह्रींक्लींचामुंडायै विच्चे नमः मस्तकादिपादांतम् । इत्यष्टवारं न्यसेत् ॥ १ ॥
इत्यष्टवारं न्यसेत् ॥ इति देवीन्यासोऽष्टमः ॥ ८ ॥ ॐ ऐंह्रींक्लीं चामुंडायै विच्चे नमः पूर्वे । इत्यष्टवारं
ॐ ऐंह्रींक्लीं चामुंडायै विच्चे नमः पादादिमस्तकांतम् । इत्यष्टवारं न्यसेत् ॥ २ ॥

१–तुर्यन्यासं नरः कुर्याज्जरामृत्यू व्यपोहति ॥ २–कृतेऽस्मिन्पञ्चमे न्यासे सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ ३–षष्ठे च विहिते न्यासे सद्गतिं प्राप्नुयान्नरः ॥–४ विन्यस्ते सप्तमे न्यासे द्रुतं रोगक्षयो भवेत् ॥ ५–कृतेऽस्मिन्नष्टमे न्यासे सर्वं दुःखं विनश्यति ॥

दुर्गानवार्णमन्त्रयन्त्रम् ।




१२६
११६
१३३
१११
१२५
११५
१०९
१२७
११७
११०

न्यसेत् ॥ ३ ॥ ॐ ऐंह्रींक्लीं चामुंडायै विच्चे नमः दक्षभागे ॥ इत्यष्टवारं न्यसेत् ॥ ४ ॥ ॐ ऐंह्रींक्लीं चामुंडायै विच्चे नमः पृष्ठे ॥ इत्यष्टवारं न्यसेत् ॥ ५ ॥ इति मंत्रव्यापको न्यासो नवमः ॥ ९ ॥ ॐ ऐंह्रींक्लीं चामुंडायै विच्चे हृदयाय नमः ॥ १० ॥ ॐ ऐंह्रींक्लीं चामुंडायै विच्चे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ऐंह्रींक्लीं चामुंडायै विच्चे शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ ऐंह्रींक्लीं चामुंडायै विच्चे कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ ऐंह्रींक्लींचामुंडायै विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ ऐंह्रींक्लींचामुंडायै विच्चे अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति षडंगन्यासो दशमः ॥ १० ॥ ॐ ऐं खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥ शंखिनी चापिनी बाणभुशुंडीपरिघायुधा ॥ १ ॥ सौम्यासौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुंदरी ॥ परा पराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ॥ २ ॥ यच्च किंचित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके ॥ तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे मया ॥ ३ ॥ यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत् ॥ सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥ ४ ॥ विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च ॥ कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कस्तोतुं शक्तिमान्भवेत् ॥५॥ इति सर्वांगे न्यसेत् ॥ ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ॥ घंटास्वनेन नः पाहि चापज्यानिस्वनेन च ॥ १ ॥ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चंडिके रक्ष दक्षिणे ॥ भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥ २ ॥ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरंति ते ॥ यानि चात्यंतघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥ ३ ॥ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेंऽबिके ॥ करपल्लवसंगीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥४॥ इति सर्वतो न्यसेत् ॥ २ ॥ ॐ क्लीं सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ॥ भयेभ्यस्त्राहि नो देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥ एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम् ॥ पातु नः सर्वभूतेभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते॥२॥ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम्॥त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥३॥ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् ॥ सा घंटा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव॥४॥ असुरासृग्वसापंकचर्चितस्ते करोज्ज्वलः ॥ शुभाय खड्गो भवतु चंडिके त्वां नता वयम्॥५॥ इति स्तनयोः॥३॥ इत्येकादशो न्यासः॥११॥

१–मूलमन्त्रकृतो [illegible] ॥

एवमेकादशन्यासान्कृत्वा षडंगन्यासं कुर्यात् ॥ तद्यथा—ॐ ऐं हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ क्लीं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ चामुंडायै कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति षडंगन्यासः ॥ ॐ ऐं नमः शिखायाम् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं नमः दक्षिणनेत्रे ॥ २ ॥ ॐ क्लीं नमः वामनेत्रे ॥ ३ ॥ ॐ चां नमः दक्षिणकर्णे ॥ ४ ॥ ॐ मुं नमः वामकर्णे ॥ ५ ॥ ॐ डां नमः दक्षिणनासापुटे ॥ ६ ॥ ॐ यैं नमः वामनासापुटे ॥ ७ ॥ ॐ विं नमः वक्त्रे ॥ ८ ॥ ॐ च्चें नमः गुदे ॥ ९ ॥ इति मंत्रवर्णन्यासः ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे पादादिमूर्धांतम् इति व्यापकम् अष्टवारं न्यसेत् ॥ एवं न्यासं कृत्वा महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीति त्रिरूपां ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ "खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्शूलं भुशुंडीं शिरः शंखं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् ॥ यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हंतुं मधुं कैटभं नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकाम् ॥ १ ॥ अक्षस्रक्परशू गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुंडिकां दंडं शक्तिमसिं च चर्मजलजं घंटां सुराभाजनम् ॥ शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवालप्रभां सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥२॥ घंटाशूलहलानि शंखमुसले चक्रं धनुः सायकं हस्ताब्जैर्दधतीं घनांतविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ॥ गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महापूर्वामत्र सरस्वतीमनु भजे शुंभादिदैत्यार्दिनीम् ॥३॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः पूजयेत्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले पीठपूजां कृत्वा मंडूकादिपीठदेवताः पद्धतिमार्गेण संस्थाप्य नवपीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तद्यथा—पूर्वादिक्रमेण ॥ ॐ जयायै नमः ॥१॥ ॐ विजयायै नमः ॥२॥ ॐ अजितायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ अपराजितायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ नित्यायै नमः ॥ ५ ॥ ॐ विलासिन्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ दोग्ध्र्यै नमः ॥ ७ ॥ ॐ अघोरायै नमः ॥ ८ ॥ ॐ मंगलायै नमः ॥ ९ ॥ इति नव पीठशक्तीः पूजयेत्। ततः स्वर्णादियंत्रं ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य तस्योपरि त्रिकोणषट्कोणाष्टदलचतुर्विंशतिदलं तस्योपरि चतुः

१ देवी भागवते-शालग्रामे घटे वापि यंत्रे वा प्रतिमासु वा। बाणे लिंगेऽथवा सूर्ये यजेदेवीमनन्यधीः ॥

षष्टिदलं च देव्यष्टगंधेन लिखित्वा तस्योपरि चतुर्द्वारात्मकं भूपुरं विलिख्य "ॐ ह्रीं वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहाय फट्" इति मंत्रेण पुष्पा व्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा पद्धतिमार्गेण पुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य पुष्पांजलिं गृहीत्वा "संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ॥ अनुज्ञां देहि मे दुर्गे परिवारार्चनाय ते ॥१॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा देव्याज्ञया आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तत्र: त्रिकोणे पूर्वकोणे ॐ ब्रह्मसरस्वतीभ्यां नमः । ब्रह्मसरस्वतीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ इति सर्वत्र ॥ १ ॥ नैर्ऋत्य कोणे । ॐ विष्णुलक्ष्मीभ्यां नमः । विष्णुलक्ष्मीश्रीपा० ॥ २ ॥ वायुकोणे । ॐ पार्वतीशंकराभ्यां नमः । पार्वतीशंकरश्रीपा० ॥ ३ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय " अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् " ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संत इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततो देव्युत्तरे । ॐ सिंहाय नमः ॥ ॥ १ देवीदक्षिणतः । ॐ महिषाय नमः ॥ २ ॥ इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततः पूज्यपूजकयोरंतराले प्राची तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च षट्कोणकेसरेषु । ॐ नंदजायै नमः । नंदजा श्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ रक्तदंतायै नमः । रक्तदंताश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ शाकंभर्यै नमः । शाकंभरीश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ दुर्गायै नमः । दुर्गाश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ भीमायै नमः । भीमाश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ भ्रामर्यै नमः । भ्रामरीश्रीपा० ॥ ६ ॥ इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततोऽष्टदले प्राचीक्रमेण । ॐ ब्राह्म्यै नमः[1] । ब्राह्मीश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ माहेश्वर्यै नमः । माहेश्वरीश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ कौमार्यै नमः । कौमारीश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ वैष्णव्यै नमः । वैष्णवीश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ वाराह्यै नमः । वाराहीश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ नारसिंह्यै नमः । नारसिंहीश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ ऐंद्र्यै नमः । ऐंद्रीश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ चामुंडायै नमः । चामुंडाश्रीपा० ॥ ८ ॥ इति संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥ ४ ॥ ततः चतुर्विंशतिपत्रेषु प्राची

१ विष्णुमाया चेतना च बुद्धिर्निद्रा क्षुधा तथा । छाया शक्तिः परा तृष्णा क्षांतिर्जातिश्च लज्जया ॥ शांतिः श्रद्धा कीर्तिलक्ष्म्यौ धृतिर्वृत्तिः श्रुतिः स्मृतिः । दयातुष्टिस्तथा पुष्टिस्तथा भ्रांतिरिति क्रमात् ॥

ॐ बुद्ध्यै नमः । बुद्धि

क्रमेण ॥ ॐ विष्णुमायायै नमः । विष्णुमायाश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ चेतनायै नमः । चेतनाश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ छायायै नमः । छायाश्री

श्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ निद्रायै नमः । निद्राश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ क्षुधायै नमः । क्षुधाश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ तृष्णायै नमः । तृष्णाश्रीपा०

पा० ॥ ६ ॥ ॐ शक्त्यै नमः । शक्तिश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ परायै नमः । पराश्रीपा० ॥ ८ ॥ ॐ लज्जायै नमः । लज्जाश्रीपा०

॥ ९ ॥ ॐ क्षांत्यै नमः । क्षांतिश्रीपा० ॥ १० ॥ ॐ जात्यै नमः । जातिश्रीपा० ॥ ११ ॥ ॐ कीर्त्यै नमः । कीर्तिश्रीपा० ॥ १५ ॥

॥ १२ ॥ ॐ शांत्यै नमः । शांतिश्रीपा० ॥ १३ ॥ ॐ श्रद्धायै नमः । श्रद्धाश्रीपा० ॥ १४ ॥ ॐ श्रुत्यै नमः ।

ॐ लक्ष्म्यै नमः । लक्ष्मीश्रीपा० ॥ १६ ॥ ॐ धृत्यै नमः । धृतिश्रीपा० ॥ १७ ॥ ॐ वृत्त्यै नमः । वृत्तिश्रीपा० ॥ १८ ॥ ॐ तुष्ट्यै नमः । तुष्टिश्रीपा०

श्रुतिश्रीपा० ॥ १९ ॥ ॐ स्मृत्यै नमः । स्मृतिश्रीपा० ॥ २० ॥ ॐ दयायै नमः । दयाश्रीपा० ॥ २१ ॥ ॐ इति

॥ २२ ॥ ॐ पुष्ट्यै नमः । पुष्टिश्रीपा० ॥२३॥ ॐ भ्रांत्यै नमः । भ्रांतिश्रीपा० ॥ २४ ॥ इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति

पंचमावरणम् ॥ ५ ॥ ततः चतुष्षष्टिदले प्राचीक्रमेण वामावर्त्तेन च ॥ ॐ जयायै नमः ॥ १ ॥ ॐ विजयायै नमः ॥ २ ॥ ॐ जयंत्यै

नमः ॥ ३ ॥ ॐ अपराजितायै नमः ॥४॥ ॐ दिव्ययोग्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ महायोग्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ सिद्धयोग्यै नमः ॥ ७ ॥ ॐ

माहेश्वर्यै नमः ॥ ८ ॥ ॐ प्रेताश्यै नमः ॥ ९ ॥ ॐ डाकिन्यै नमः ॥ १० ॥ काल्यै नमः ॥ ११ ॥ ॐ कालरात्र्यै नमः ॥ १२ ॥ ॐ

टंकाक्ष्यै नमः ॥ १३ ॥ ॐ रौद्र्यै नमः ॥ १४ ॥ ॐ वेताल्यै नमः ॥ १५ ॥ ॐ हुंकार्यै नमः ॥ १६ ॥ ॐ ऊर्ध्वकेशिन्यै नमः ॥ १७ ॥ ॐ

विरूपाक्ष्यै नमः ॥ १८ ॥ ॐ शुष्कांग्यै नमः ॥ १९ ॥ ॐ नरभोजिकायै नमः ॥ २० ॥ ॐ फट्कार्यै नमः ॥ २१ ॥

१–जया च विजया चैव जयन्ती चापराजिता । दिव्ययोगी महायोगी सिद्धयोगी महेश्वरी ॥ प्रेताशी डाकिनी काली कालरात्रिस्तथैव च । टंकाक्षी रौद्री वेताली हुंकारी चोर्ध्व
केशिनी ॥ विरूपाक्षी च शुष्कांगी नरभोजनिका तथा । फट्कारी वीरभद्रा च धूम्रांगी कलहप्रिया ॥ राक्षसी घोररक्ताक्षी विश्वरूपा भयंकरी । चण्डमारी च चंडी च वाराही
मुण्डधारिणी ॥ भैरवी च तथोध्र्वाक्षी दुर्मुखी प्रेतवाहिनी । खट्वांगी चैव लम्बोष्ठी मालिनी मत्तयोगिनी ॥ काली रक्ता च कंकाली तथा च भुवनेश्वरी । त्रोटकी च महामारी यमदूती करा
लिनी ॥ केशिनी दमिनी चैव रोमगंगा प्रवाहिनी । विडाली कामुकालाक्षी जया चाधोमुखी तथा ॥ मुंडाग्रधारिणी व्याघ्री कांक्षिणी प्रेतभक्षिणी । धूर्जटी निकटी घोरी कपाली विष
लंबिनी ॥ चतुःषष्टिस्तु योगिन्यः पूजनीयाः प्रयत्नतः ॥

ॐ वीरभद्रायै नमः ॥ २२ ॥ ॐ धूम्रांग्यै नमः ॥ २३ ॥ ॐ कलहप्रियायै नमः ॥ २४ ॥ ॐ राक्षस्यै नमः ॥२५॥ ॐ घोररक्ताक्ष्यै नमः ॥ २६ ॥ ॐ विश्वरूपायै नमः ॥ २७ ॥ ॐ भयंकर्यै नमः ॥ २८ ॥ ॐ चण्डमार्यै नमः ॥ २९ ॥ चंडयै नमः ॥३०॥ ॐ वाराह्यै नमः॥३१॥ ॐ मुंडधारिण्यै नमः ॥३२॥ ॐ भैरव्यै नमः ॥३३॥ ॐ ऊर्ध्वाक्ष्यै नमः ॥ ३४ ॥ ॐ दुर्मुख्यै नमः ॥ ३५ ॥ ॐ प्रेतवाहिन्यै नमः॥ ३६ ॥ ॐ खट्वांग्यै नमः ॥ ३७ ॥ ॐ लंबोष्ठ्यै नमः ॥ ३८ ॥ ॐ मालिन्यै नमः ॥ ३९ ॥ ॐ मत्तयोगिन्यै नमः ॥ ४० ॥ ॐ काल्यै नमः ॥४१॥ ॐ रक्तायै नमः ॥४२॥ ॐ कंकाल्यै नमः ॥४३॥ ॐ भुवनेश्वर्यै नमः ॥४४॥ ॐ त्रौटिक्यै नमः ॥ ४५ ॥ महामायै नमः ॥४६॥ ॐ यमदूत्यै नमः ॥ ४७ ॥ ॐ करालिन्यै नमः ॥४८॥ ॐ केशिन्यै नमः ॥४९॥ ॐ दमन्यै नमः ॥ ५० ॥ ॐ रोमगंगाप्रवाहिन्यै नमः ॥ ५१ ॥ ॐ बिडाल्यै नमः ॥ ५२ ॥ ॐ कामुकालाक्ष्यै नमः ॥ ५३ ॥ ॐ जयायै नमः ॥ ५४ ॥ ॐ अधोमुख्यै नमः ॥ ५५ ॥ ॐ मुंडाग्रधारिण्यै नमः ॥ ५६ ॥ ॐ व्याड्यै नमः ॥ ५७ ॥ ॐ कांक्षिण्यै नमः ॥ ५८ ॥ ॐ प्रेतभक्षिण्यै नमः ॥ ५९ ॥ ॐ धूर्जट्यै नमः ॥ ६० ॥ ॐ विकट्यै नमः ॥ ६१ ॥ ॐ घोर्यै नमः ॥ ६२ ॥ ॐ कपाल्यै नमः ॥६३॥ ॐ विषलंबिन्यै नमः ॥ ६४ ॥ इति चतुःषष्टियोगिनीः संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति षष्ठावरणम् ॥ ॥ ६ ॥ ततो भूपुराभ्यंतरे आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु ॐ गं गणेशाय नमः । गणेशश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः । क्षेत्रपालश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ वं वटुकाय नमः । वटुकश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ यों योगिन्यै नमः । योगिनीश्रीपा० ॥ ४ ॥ इति द्वारपालान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति सप्तमावरणम् ॥७॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशादिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात्।इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य मंत्रार्थं स्मरन् जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं चतुर्लक्षजपः तद्दशांशेन दशां

१—मन्त्रे बीजत्रयं क्रमेण महासरस्वतीमहालक्ष्मीमहाकालीनां वाचकम् विच्चे इत्यत्रापि वित्–च–इति पदत्रयं क्रमेण चित्–सत्–आनन्दानां वाचकं तच्च सम्बोधनांतं बीजत्रयस्य क्रमेण विशेषणम् चामुण्डायै पदं ब्रह्मविद्यावाचकम् तादर्थ्ये चतुर्थी ।अनुसन्दध्महे इति शेषः॥ तथा चायमर्थः । हे चिद्रूपिणी महासरस्वति ! हे सद्रूपिणि महालक्ष्मि ! हे आनन्दरूपिणि महाकालि ! त्वां चामुंडायै ब्रह्मविद्याप्राप्त्यर्थमनुसन्दध्महे ध्यायाम इत्यर्थः ॥

शतो होमः तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् । एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे च मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा
च—“एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षचतुष्कं तद्दशांशतः॥पायसान्नेन जुहुयात्पूजिते हेमरेतसि॥१॥एवं सिद्धे मनौ मंत्री भवेत्सौभाग्यभाजनम्॥नव
बीजविशुद्धोऽयं मंत्रस्त्रैलोक्यपावनः ॥ २ ॥ एवं जपति यो मंत्री फलं तस्य वदाम्यहम् ॥ वश्या भवंति कामिन्यो राजानोऽनुचरा इव ॥
॥३॥न हस्तिसर्पदावाग्निचोरशत्रुभयं भवेत् ॥ सर्वाः समृद्धयस्तस्य जायंते चंडिकाज्ञया॥४॥नश्यंति दारुणा रोगाः सत्यं सत्यं न संशयः ॥
अनेन विधिना नित्यं यः कुर्याच्चंडिकार्चनम्॥५॥तस्य तुष्टा महालक्ष्मीर्यच्च दद्याच्छृणुष्व तत् ॥ महदैश्वर्यमतुलं त्रैलोक्ये तस्य जायते
॥ ६ ॥ धर्मराजसमायुक्तं पुत्रपौत्रसमाकुलम् ॥ तं करोति महालक्ष्मीर्ब्रह्मविष्णुशिवोपमम् ॥ ७ ॥ रिपवः संक्षयं यांति तत्स्थानाच्छत
योजनम्॥तेनैकेन वसंतोऽपि न तं पश्यंति दस्यवः॥८॥तस्य स्मरणमात्रेण विघ्नानां जायते क्षयः॥ त्रिषु लोकेषु यत्किंचित्ससुरासुरदुर्लभम्
॥ ९ ॥ तत्तत्सर्वं समायाति महालक्ष्मीप्रसादतः ॥ यो जपेत्परया भक्त्या महालक्ष्मीं तु पूजयन् ॥ १० ॥ स नरो लभते नित्यं पूजाफल
मनुत्तमम् ॥ सहस्रमस्य मंत्रस्य नवबीजस्य यो जले ॥ ११ ॥ नाभिमात्रे जपेत्सम्यक् कवित्वं लभते ध्रुवम् ॥ १२ ॥ अयुतं
नवतत्त्वस्य राजबंधनसंकटैः ॥ जपेत्तदाशु मुच्येत यो मंत्री चंडिकाज्ञया ॥ १३ ॥ अस्मिन्नवाक्षरे मंत्रे महालक्ष्मीर्व्यवस्थिता ॥
तस्मात्सुसिद्धः सर्वेषां सर्वदिक्षु प्रदीपकः ॥ १४ ॥” अन्यत्रापि नवार्णस्य बिल्वमूले मासं जपः ॥ बिल्वदलैर्मधुरत्रययुतैर्मासहोमः ॥
दशांशेन क्षीरसंयुतैः कमलैर्होमो वा । लक्ष्मीप्राप्तिः ॥ १५ ॥ अन्यत्रापि “ मार्कण्डेयपुराणोक्तं नित्यं चंडीस्तवं पठन् ॥ पुटितं मूल
मंत्रेण जपन्नाप्नोति वांछितम् ॥ १६ ॥ आश्विनस्य सिते पक्षे आरभ्याग्नितिथिं सुधीः ॥ अष्टम्यंतं जपेल्लक्षं दशांशं होममाचरेत् ॥
॥ १७ ॥ प्रत्यहं पूजयेद्देवीं पठेत्सप्तशतीमपि ॥ विप्रानाराध्य मंत्री स्वमिष्टार्थं लभतेऽचिरात् ॥ १८ ॥ सार्थस्मृतिं पठेच्चंडीस्तवं
स्पष्टपदाक्षरम् ॥ समाप्तौ तु महालक्ष्मीं ध्यात्वा कृत्वा षडंगकम् ॥ १९ ॥ अष्टोत्तरशतं मूलं देवतायै निवेदयेत् ॥ एवं यः कुरुते
स्तोत्रं नावसीदति जातुचित् ॥ २० ॥ चंडिकां प्रभजन्मर्त्यो धनैर्धान्यैर्यशश्च्रयैः ॥ पुत्रैः पौत्रै रुचारोग्यैर्युक्तो जीवेच्छतं समाः ॥

१–हेमरेतसि वह्नौ ॥

॥ २१ ॥ (कार्यपरत्वेन नवार्णे दुर्गापाठे वा पल्लवनिर्णयः हरगौरीतंत्रे) ततः सप्तशतीं चैव रहस्यं पल्लवं तथा ॥ चंडीपाठे तथा होमे क्रम उक्तो मनीषिभिः ॥ २२ ॥ मंत्राणां पल्लवो वासो मंत्राणां प्रणवः शिरः ॥ शिरःपल्लवसंयुक्तो मंत्रः कामदुघो भवेत् ॥ २३ ॥ वश्याकर्षणहोमेषु स्वाहांतः सिद्धिदायकः ॥ वौषट्पल्लवसंयुक्तो मंत्रः पुष्ट्यादिसाधकः ॥ २४ ॥ हुंकारपल्लवोपेतो मारणे ब्राह्मणं विना ॥ यंत्रभंजनकार्येषु सद्यो र भयनाशने ॥ २५ ॥ वषडंतः प्रकल्प्यस्तु ग्रहबाधाविनाशकः ॥ उच्चाटने तु संप्रोक्तो मंत्रः फट्पल्लवान्वितः ॥ नमोऽतः शांतिके पुष्टौ प्रणिपाते च कीर्तितः ॥ २६ ॥ (मनुमते) वषड् वश्ये फडुच्चाटे हुं स्तंभे खे च मारणे ॥ स्वाहा तष्ट्यै ठः ठः पुष्ट्यै नमः सर्वार्थसाधने ॥ २७ ॥ (तंत्रांतरे) वषड् वश्ये फडुच्चाटे हुं द्वेषे खे च मारणे ॥ ठः स्तंभे वौषडाकर्षे नमः संपत्तिहेतवे ॥ २८ ॥ स्वाहा पुष्टिस्तथा तुष्टिरित्येते मंत्रपल्लवाः ॥ २९ ॥ (कार्यपरत्वेन नवार्णस्वरूपम्) वौषडाकर्षणे चादौ मंत्रांते साध्यनामकः ॥ तदंते वौषडंते च जपेद्विज्ञाय मंत्रवित् ॥ ३० ॥ मंत्रादौ स्तंभनं बीजं मंत्रांते साध्यनाम च ॥ नामांते च पुनर्बीजमिति ज्ञात्वा मनुं जपेत् ॥ ३१ ॥ वषड् द्वंद्वं तु वश्यादौ न्यसेन्मंत्रांत एव हि ॥ साध्यनाम तदंते च वषडंते जपेत्सुधीः ॥ ३२ ॥ मारणे बीजमादौ च साध्यनाम ततः परम् ॥ तदंते च मनुं जप्त्वा नामबीजं क्रमात्पठेत् ॥ ॥ ३३ ॥ मंत्रांते बीजमुच्चार्य तदंते साध्यनाम च ॥ नामांते च पुनर्बीजं द्वंद्वमुच्चाटने स्मृतम् ॥ ३४ ॥ मन्वंतरं तथा बीजं मंत्रान्नामानि निर्दिशेत् ॥ स्वाहा नमः स्वधा चेति मंत्रांते च पठेत्सुधीः ॥ एवं ज्ञात्वा प्रयोगांश्च सर्वकर्माणि साधयेत् ॥ ३५ ॥ (कार्यपरत्वेन जपसंख्या) मारणे दशलक्षं च मोहने द्वादशं तथा ॥ उच्चाटने चतुर्विंशद्वश्ये कोटिं जपेद् बुधः ॥ ३६ ॥ स्तंभने

१ मंत्रस्वरूपो यथा–"वषट् ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अमुकनामानं वषट् मे वश्यं कुरुकुरु स्वाहा" इति वश्यम् ॥ "ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं फट् उच्चाटनं कुरु कुरु स्वाहा" इत्युच्चाटनम् ॥ " इति क्लीं क्लीं ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे देवदत्तं क्लींक्लीं मोहनं कुरुकुरु क्लींक्लीं स्वाहा" इति मोहनम् ॥ "ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे देवदत्तं रंरं खे खे मारयमारय रंरं शीघ्रं भस्मीकुरुकुरु स्वाहा" इति मारणम् ॥ " ॐ ठंठं ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे देवदत्तं ह्रीं वाचं मुखं पदं स्तंभयस्तंभय ह्रीं जिह्वां कीलयकीलय ह्रीं बुद्धिं विनाशयविनाशय ह्रीं ॐ ठंठे स्वाहा" इति स्तंभनम् ॥ "ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे देवदत्तं यंयं शीघ्रमाकर्षयाकर्षय स्वाहा" इत्याकर्षणम् ॥

षोडश प्रोक्तं विद्वेषे च त्रयोदशम् ॥ एतद्राज्ञां प्रकर्तव्यं वैश्येष्वर्द्धं निगद्यते ॥ ३७ ॥ ब्राह्मणे द्विगुणं देवि शूद्राणामर्द्धकार्द्धकम् ॥ स्त्रीणां हि द्विगुणं प्रोक्तं यतः सा शक्तिरूपिणी ॥ ३८ ॥ मारणं वर्जितं स्त्रीषु यतश्चान्यानि कारयेत् ॥ स्त्रीषु वै मारणं मोहात्कर्तुर्मृत्युर्न संशयः ॥ ३९ ॥ (कार्यपरत्वेन दिङ्निर्णयः) मारणे स्तंभने वश्ये उच्चाटनविधौ तथा ॥ दक्षिणस्यां दिशि मुखं मोहने पश्चिमे मुखम् ॥ ४० ॥ विद्वेषे चोत्तरमुखमासनं शृणु वल्लभे ॥ (कार्यपरत्वेनासननिर्णयः) मारणे कंबलं कृष्णं कृष्णांबरधरः स्वयम् ॥ ४१ ॥ मोहनं चासनं पीतं पीतवस्त्रधरो बुधः ॥ रक्तं चोच्चाटने प्रोक्तं रक्तवस्त्रविभूषितः ॥ ४२ ॥ वश्ये श्वेतं पूर्ववच्च कर्बुरं स्तंभने तथा ॥ विद्वेषे चासनं धूम्रं शृणु बद्धासनं प्रिये ॥ ४३ ॥ (कार्यपरत्वेन बद्धासननिर्णयः) मारणे वीरवत्तिष्ठेन्मोहने कटिनम्रकम् ॥ उच्चाटने त्रिकोणं वै वश्ये चैकोऽर्धपादकः ॥ ४४ ॥ कमलं स्तंभने तिष्ठेद्विद्वेषे पृष्ठपादकः ॥ एतद्बद्धासनं प्रोक्तं प्रयोगाणां विधिं शृणु ॥ ४५ ॥ (षट्प्रयोगा यथा– तत्रादौ मारणप्रयोगः ॥) कर्तव्यदिवसात्पूर्वं स्नानार्थं चिंतयेद्बुधः ॥ दिनानि विंशतिं वामे वै कार्यो विधिस्तनोः ॥ ४६ ॥ शरीरशोधनं कार्यं मदिराक्षि विनिश्चितम् ॥ द्विजपादोदकं सुभ्रु शतानां सरसां तथा ॥४७॥ कूपाष्टनवनद्या षड्वापीनां च जलं प्रिये ॥ एतज्जलं समागृह्य ताम्रकुंभेषु निःक्षिपेत् ॥४८॥ पत्रं बकुलवृक्षस्य आश्वत्थं वटनिंबयोः ॥ गोदुग्धेनव संपेष्य स्नानं कुर्याद्विचक्षणः ॥ ४९ ॥ त्रिपुंड्रधारणं कृत्वा ललाटे रक्तचंदनैः ॥ ।सने कंबलं कृष्णं कृष्णांबरधरः स्वयम् ॥५०॥ मारणे वीरवत्तिष्ठे दक्षिणस्यां मुखे कृते॥ शृणुष्व चापरं कर्म भूमिशोधनमत्तमम् ॥ ५१ ॥ मारणेनाष्टकोणेन कुर्याद्भूमिस्थलं बुधः ॥ पंचकूपोद्धृतं तोयं गृह्णीयादेकपाणिना ॥ ५२ ॥ श्मशानभस्म सिंदूरमजारक्तं तिलं तथा ॥ गोमयं वृद्धधेन्वास्तु मृदं वंशादधस्तलात् ॥ ५३ ॥ एभिर्विलेपयेद्भूमिमष्टकोणसमान्विताम् ॥ स्वदक्षिणकरांगुष्ठाद्गृहीत्वा रुधिरं प्रिये ॥ ५४ ॥ भृंगराजरसं रक्तचन्दनं केसरोद्भवम् ॥ कर्पूरकदलीपत्रजलं हिंगुरसं शुभे ॥ ५५ ॥ एतत्सर्वं च संपेष्य एकास्मिन्कारयेद्बुधः ॥ श्मशानकाष्ठमानीय तेन कृत्वा च लेखनीम् ॥ ५६ ॥ नवां

गुलप्रमाणां नवार्णयंत्रं लिखेत्सुधीः ॥ पूजनं यंत्रराजस्य जगन्मातः शुभे श्रृणु ॥ ५७ ॥ स्वत्रामजानुरुधिरं रक्तचंदनमिश्रितम् ॥ पिष्ट्वा सर्षपतैलेन सिंदूरं कदलीजलम् ॥ ५८ ॥ कुशान्सप्त समान्बद्ध्वा ऊर्णसूत्रेण साधकः ॥ तेनैव स्नापयेद्यंत्रं वामहस्तेन भामिनि ॥ ५९ ॥ रक्तपुष्पं चंदनं च रक्तसूत्रं च तण्डुलम् ॥ सिंदूरं वटवृक्षस्य दुग्धं बिंबाफलं तथा ॥ ६० ॥ एतान्सर्वान्विशालाक्षि शोधयेत्साधकः सदा ॥ एतैः प्रपूजयेद्यंत्रं महामाया प्रसीदति ॥ ६१ ॥ विस्मृतं न मयाक च सामान्यं कथितं शुभे ॥ अतः परं श्रृणुष्वाद्य विधिं धूपस्य निर्मलम् ॥ ६२ ॥ साधकानां ध्रुवं सिद्धिर्धूपेनैव प्रजायते ॥ मारणे कारणं देवि धूपमेव निगद्यते ॥६३॥ धूपमाहात्म्यमतुलं डामरे कथितं मया ॥ धूपवार्तां न जानंति डामरे विमुखा नराः ॥६४॥ कथं सिद्धिर्भवेत्तेषां विपरीते शुभानने ॥ गोरोचनं च कर्पूरं काश्मीरवनसंभवम् ॥६५॥ एलाफलं लवंगं च मृगनाभिः सुरा तथा ॥ लंबकर्णस्य मांसं च गोघृतं सुरभीपयः ॥ ६६ ॥ देवदारु सिता रक्तचंदनं श्वेतसंज्ञकम् ॥ नागरस्तगरो वालक्षरो मोहनगंधिका ॥ ६७ ॥ एतान्सर्वांस्तु संपेष्य कारयेदेकमिश्रितम् ॥ धूपयेद्धूपमंत्रेण कार्यसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥६८॥ सप्त मन्त्रान्पठित्वा तु साधको गद्गदाकृतिः ॥ एकचित्तं समाधाय धूपं कुर्याद्विचक्षणः ॥ ६९ ॥ मारणे कारणं देवि दीप एव निगद्यते ॥ लोहदीपः प्रकर्तव्यस्तिलस्य तैलमेव च ॥ ७० ॥ पीततलं गरुं शुक्लं तैलनिंबश्च निश्चितम् ॥ श्मशानसूत्रमानीय वामहस्तेन भामिनी ॥ ७१ ॥ वर्तिका तेन कार्या तु अंगुलित्रयसंमिता ॥ त्रिकोणां पृथिवीं लिप्त्वा अंगुलित्रयसंमिताम् ॥ ७२ ॥ तस्या मध्ये लिखेद्यंत्रं नवाक्षरयुतं प्रिये ॥ लेखनी कैचकी कार्या नवांगुलयुता शुभा ॥ ७३ ॥ लिखेद्यंत्रं चंदनेन रक्तेन मधुना सह ॥ स्थापयेद्यंत्रराजस्य अधोभागे च सन्निधौ ॥ ७४ ॥ अस्मिन्दीपे महामायां कालिकां रुधिरप्रियाम् ॥ ज्वलज्जिह्वां सदा ध्यायेच्छत्रुसंहारकारिणीम् ॥ ७५ ॥ इति ध्यात्वा महामायां पूजयेद्रक्तचंदनः ॥ एभिः स्तवैश्च मां नित्यमेष मंत्रे निवेदयेत् ॥ ७६ ॥ एवं दीपो मया प्रोक्तो मालायाश्च विधिं श्रृणु ॥ सर्पास्थिसंभवा माला कदलीतंतुग्रंथिता ॥ ७७ ॥ मारणे कथिता देवि साधकानां हिताय च ॥ चंडिकायै

१ ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी ॥ दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥ इति मंत्रेण अर्घं दद्यात् । २ "ॐ सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ॥ एवमेतत्त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ॥" इति मन्त्रेण धूपं दद्यात् ॥

यंत्रराजे अर्चयित्वा च वीटकम् ॥ ७८ ॥ पश्चादेकैकमुद्धृत्य चर्वयेच्छनकैः सुधीः ॥ यावज्जपसमाप्तिः स्यात्तावत्तांबूलचर्वणम् ॥ ७९ ॥
दशलक्षं जपेन्मंत्रं वैश्येष्वर्द्धं निगद्यते ॥ ब्राह्मणे द्विगुणं देवि शूद्राणामर्द्धकार्द्धकम् ॥ ८० ॥ स्त्रीणां च द्विगुणं प्रोक्तं यतः सा शक्ति
रूपिणी ॥ मारणं वर्जितं स्त्रीषु यतश्चान्यानि कारयेत् ॥ ८१ ॥ स्त्रीषु च मारणं मोहात्कर्तुर्मृत्युर्न संशयः ॥ जपसंख्यादशांशेन नित्य
होमं च कारयेत् ॥ ८२ ॥ गोमहिष्योर्घृतं वाम अजादुग्धं च तंडुलम् ॥ लवंगं चैव कर्पूरं सर्षपं हिंगुमेव च ॥ ८३ ॥ शंष्कुली[2] तु
गोधूमस्य गुडेन मिश्रिते शुभे ॥ चिंचिणीकाष्ठमानीय खनेत्कुंडं त्रिकोणकम् ॥ ८४ ॥ काष्ठांश्चतुरंगुलान्कृत्वा जुहुयाच्चंडिकाप्रियः ॥
मंत्रो नवाक्षरः प्रोक्तो मारणे कथितो मया ॥ ८५ ॥ मारणे मोहने वश्ये भोजनं त्वेकमुच्यते ॥ तृतीयप्रहरे देवि भोज्यं लवणवर्जि
तम् ॥ ८६ ॥ माषस्य द्विदलं सुभ्रु तंडुलं मिलितद्वयम् ॥ गोघृतं मधुसंयुक्तं मिश्रितं पयसा प्रिये ॥ ८७ ॥ प्रभावे भोजनं देवि
यत्प्राप्त तत्तदेव हि ॥ भोजने क्लेशसंकर्तुः प्रयोगोऽफलदो भवेत् ॥ ८८ ॥ विधिर्वै मंत्रराजस्य कथितः प्राणवल्लभे ॥ शैवेन शाक्त
विप्रेण कर्तव्यं निश्चितं प्रिये ॥ ८९ ॥ मयोक्तं देवि मंत्रस्य चंडिकायाः प्रियस्य च ॥ कार्यं विचक्षणेनैव चंडिकाकिंकरेण वै ॥ ९० ॥
इति मारणम् ॥ (मोहनप्रयोगो यथा—) " कर्तव्यदिवसात्पूर्वं स्नानार्थं चिंतयेद्बुधः ॥ दिनानि विंशतिं वामे पूर्वं कार्यो विधिस्ततोः
॥ ९१ ॥ शरीरशोधनं कार्यं मदिराक्षि विनिश्चितम् ॥ गजपादजलं सुभ्रु वापीसप्त सरस्त्रयः ॥ ९२ ॥ सरितौ द्वे समाख्याते तोयग्रहण
कर्मणि ॥ एषां जलं समानीय संक्षिपेन्मृन्मये घटे ॥ ९३ ॥ आम्रं पत्रं फलं सुज्ञे पत्रं चामलकपीतयोः[3] ॥ मेषीदुग्धेन संपेष्य स्नानं
कुर्याच्च साधकः ॥ ९४ ॥ त्रिपुंड्रधारणं कृत्वा ललाटे पीतचंदनैः ॥ मोहने चासनं पीतं पीतवस्त्रधरो बुधः ॥ ९५ ॥ कटिनस्त्रासने
तिष्ठेन्मोहने पश्चिमे मुखम् ॥ शृणुष्व चापरं कर्म भूमिशोधनमुत्तमम् ॥ ९६ ॥ हरिद्राकेतकीपत्रं वंशपत्रं गुडं तथा ॥ धूपत्रयात्स
मानीय तोयं पादोद्धृतं शुभम् ॥ ९७ ॥ गोमयं बालवत्सस्य मृदं सरितसंगमात् ॥ एभिर्भूमिं विलेप्यार्द्रामर्द्रां कुर्यादलेपनाम् ॥ ९८ ॥

१ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे देवदत्त रंरं खेखे मारयमारय रंरं शीघ्रं भस्मीकुरुकुरु स्वाहा" इति मंत्रं जपेत् ॥ २ शष्कुली पूरिका ॥ ३ छायानाशी धर्मोऽयं वा ॥

संयुक्तां या त्रिकोणेन मोहनेषु मयोदितः ॥ स्ववामपादरुधिरं गृहीयाद्यत्र साधकः ॥ ९९ ॥ कर्पूरशुंठीविजया अर्कवृक्षपयस्तथा ॥
तंडुलं चंदनं श्वेतमेकस्मिन्पेषयेद्बुधः ॥ १०० ॥ निंबकाष्ठस्य कर्तव्या लेखनी चतुरंगुला ॥ तथा लिखेन्महामायायंत्रं मोक्षप्रदायकम् ॥
॥ १०१ ॥ पूजनं यंत्रराजस्य जगन्मातः शुभे शृणु ॥ कर्पूरमिक्षुदंडस्य रसं तंडुलचूर्णकम् ॥ १०२ ॥ कृष्णतिलोद्भवं तैलं कुशानि
त्रीणि बंधिता ॥ दर्वया बंधिता दर्भास्तैः स्नानं कारयेद्बुधः ॥ १०३ ॥ कृष्णपुष्पं तथा कृष्णकज्जलं कृष्णतंडुलम् ॥ कृष्णसूत्रं च
सिंदूरं गवां दुग्धं यवं तथा ॥ १०४ ॥ एभिः पूजा प्रकर्तव्या यंत्रराजस्य मोहने ॥ विस्तृतं न मयोक्तं वै सामान्यं कथितं शुभे ॥
॥ १०५ ॥ अतः परं शृणुष्वाद्य विधिं धूपस्य निर्मलम् ॥ साधकानां ध्रुवं सिद्धिर्धूपेनैव प्रजायते ॥ १०६ ॥ मोहने कारणं देवि
धूपमेव निगद्यते ॥ धूपमाहात्म्यमतुलं डामरे कथितं मया ॥ १०७ ॥ धूपवार्तां न जानंति डामरे विमुखा नराः ॥ कथं सिद्धिर्भवेत्तेषां
विपरीते शुभानने ॥ १०८ ॥ कर्पूरं विजयापत्रमर्कपुष्पमजाघृतम् ॥ गोघृतं महिषीदुग्धमष्टगंधं सिता मधु ॥ १०९ ॥ गुग्गुलुं लौह
बाणं च ऐरंडं बीजकं तथा ॥ एतान्सर्वाननेकत्र संपेष्य मिश्रयेद्बुधः ॥ ११० ॥ प्रमाणं माषधान्यस्य मत्स्यमांसं क्षिपेद् बुधः ॥ धूपं
दद्याद्यंत्रराजे धूपमंत्रेण साधकः ॥ १११ ॥ दशवारं पठेन्मंत्रं साधको गद्गदाकृतिः ॥ एकचित्तं समाधाय धूपं कुर्याद्विचक्षणः ॥
॥ ११२ ॥ कांस्यदीपः प्रकर्तव्यस्तैलं श्वेत तिलस्य च ॥ कृष्णतैलं श्रीफलस्य तैलं श्वेता सिता मधु ॥ ११३ ॥ रक्तवस्त्रं पथि
भ्रष्टं समानीय च साधकः ॥ तेनैव वर्तिका कार्या सप्तांगलसमन्विता ॥ ११४ ॥ लेपयेत्पृथिवीं विद्वान् चतुष्कोणां च द्व्यंगुलाम् ॥
यंत्रराजं लिखेत्तस्मिन्मध्ये प्रीत्या च साधकः ॥ ११५ ॥ दूर्वाया लेखनी कार्या सप्तांगुलयुता प्रिये ॥ कर्पूरेण हरिद्राभ्यां लिख
यंत्रं शुभानने ॥ ११६ ॥ स्थापयेद्यंत्रराजस्य ऊर्द्ध्वभागेऽगुलत्रये ॥ पजयेत्केसरं पीततंडुलाभ्यां विचक्षणः ॥ ११७ ॥ अस्मिन्दीपे
महामायां देवीं कात्यायनीं शुभाम् ॥ प्रसन्नवदनां ध्यायेत्सदा संक्लेशनाशिनीम् ॥ ११८ ॥ इति कात्यायनीं ध्यात्वा पूजयेत्पीत

१ "ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ॥ बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति" ॥ इति मंत्रेण पूजयेत् ॥ २ "शक्रादयस्सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या ॥ तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांसा वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः फट्" इति मन्त्रेण धूपयेत् ॥

वीर इति मंत्रे निवेदयेत् ॥ ११९ ॥ एवं दीपो मया प्रोक्तो मालायाश्च विधिं शृणु ॥ ग्रंथिता वाजिकेशेन
चंदनैः ॥ इत्येतत्कथितं वीर इति मंत्रे निवेदयेत् ॥ ११९ ॥ एवं दीपो मया प्रोक्तो मालायाश्च विधिं शृणु ॥ ग्रंथिता वाजिकेशेन
कथिता निंबबीजिका ॥१२०॥ मोहनेषु विधिश्चायं मालायाः प्राणवल्लभे ॥ चंडिकाया यंत्रराजे अर्पयित्वा च वीटकम् ॥ १२१ ॥
पश्चादेकैकमुद्धृत्य चर्वयेच्छनकैः सुधीः ॥ यावज्जपसमाप्तिः स्यात्तावत्तांबूलचर्वणम् ॥ १२२ ॥ कार्यं विचक्षणेनैव चंडिकाकिंकरेण वै ॥
जपेत्तु द्वादशं लक्षं वैश्येष्वर्धं निगद्यते ॥ १२३ ॥ ब्राह्मणे द्विगुणं देवि शूद्राणामर्द्धार्द्धकम् ॥ स्त्रीणां च द्विगुणं प्रोक्तं यतः सा शक्ति
रूपिणी ॥ १२४ ॥ नित्यमेवं जपांते च दशांशे होममाचरेत् ॥ अजामेष्योर्घृतं देवि गोदुग्धं तंडुलं यवम् ॥ १२५ ॥ कर्पूरं च
तजं यावमेलाशर्करयान्वितम् ॥ आम्रकाष्ठं समानीय पंचकोणं च कुंडलम् ॥ १२६ ॥ सप्तांगुलमितान्काष्ठाञ्जुहुयात्साधकः सदा ॥
मंत्रो नवाक्षरः प्रोक्तो मोहने कथितो मया ॥ १२७ ॥ मारणे मोहने वश्ये भोजनं त्वेकमुच्यते ॥ तृतीयप्रहरे देवि भोजनं क्षारवर्जि
तम् ॥ १२८ ॥ माषस्य द्विदलं सुभ्रु तंडुलं मिलितद्वयम् ॥ गोघृतं मधुसंयुक्तं मिश्रितं पयसा प्रिये ॥ १२९ ॥ अभावे भोजनं
देव्या तत्तत्प्रातं न [illegible] हि ॥ भोजने क्लेशसंकतुः प्रयोगोऽफलदो भवेत् ॥ १३० ॥ विधिर्वै मंत्रराजस्य कथितः प्राणवल्लभे ॥ शैवेन
शाक्ताविप्रेण कर्तव्यं निश्चित प्रिये ॥ १३१ ॥ इति मोहनम् ॥ उच्चाटनप्रयोगो यथा—कर्तव्यदिवसात्पूर्वं स्नानार्थं चिंतयेद्बुधः ॥
दिनानि विंशतिं वामे पर्वं कार्यो विधिस्तनोः ॥ १३२ ॥ शरीरशोधनं कार्यं मादिराक्षि विनिश्चितम् ॥ नंदिपादजलं वामे कपत्रयजलं
तथा ॥ १३३ ॥ तडागादेवमानीय निःक्षिपेत्काष्ठजे घटे ॥ बदरीबर्बुरयोः पत्रं चिंचिणीकाफलातसम् ॥ १३४ ॥ उरूथदुग्धे
संपेष्य स्नात्वा तूच्चाटने द्विजः ॥ शृणुष्व चापरं कर्म भमिशोधनमुत्तमम् ॥ १३५ ॥ नीलपत्रं च विजया अर्कपत्रं यवं तथा ॥ एक
कूपोद्धृतं तोयं पञ्चथां चैव समुद्धृतम् ॥ १३६ ॥ गोमयं बालवत्साया वल्मीकाच्च मृदं तथा ॥ एभिर्विशोधयेद्भूमिं वर्तुलाकार
निर्मिताम् ॥ १३७ ॥ त्रिपुंड्रधारणं कृत्वा ललाटे रक्तचंदनैः ॥ रक्तवस्त्रासनं प्रोक्तं रक्तवस्त्रविभूषितः ॥ १३८ ॥ तिष्ठेत्तत्र त्रिकोणां वै
दाक्षिणस्यां मुखे कृते ॥ स्ववामपार्श्वज रक्तं संगह्य यंत्रसाधकः ॥ १३९ ॥ निंबकाष्ठं बिल्वकाष्ठं बदरीकाष्ठमेव च ॥ शृंगवेररसं हिंगु

१ इत्येतत्कथितं वीर इति सर्वनिवेदयेत् इति पाठान्तरम् ॥ २ आर्द्रक ॥

वाटिकारसमेव च ॥ १४० ॥ एतान्सर्वान्समानीय मिश्रितं कारयेद् बुधः ॥ लेखनी दाडिमी कार्या प्रमाणे द्वादशांगुलम् ॥ १४१ ॥ तया लिखेत्स्वयं नम्रो वामहस्तेन निश्चितम् ॥ पूजनं यंत्रराजस्य जगन्मातः शुभे शृणु ॥ १४२ ॥ हरिद्रा चंदनं श्वेतं हरितालं जलं वचाम् ॥ कुशानि पंच संबध्य कदलीतंतुना प्रिये ॥ १४३ ॥ स्नापयेत्प्रीतियुक्तेन यंत्रं शक्रेस्ततुं शुभाम् ॥ पीतपुष्पं तथा पीतचंदनं पीत तंडुलम् ॥ १४४ ॥ सूत्रं पीतं च सिंदूरमजादुग्धं तथैव च ॥ एभिः प्रीत्या प्रपूजयेमं यंत्रराजं विचक्षणः ॥ १४५ ॥ विस्तृतं न मयोक्तं वै सामान्यं कथितं शुभे ॥ अतः परं शृणुष्वाद्य विधिं धूपस्य निर्मलम् ॥ १४६ ॥ साधकानां ध्रुवं सिद्धिर्धूपेनैव प्रजायते ॥ प्रयोगे कारणं देवि धूप एव निगद्यत ॥ १४७ ॥ धूपमाहात्म्यमतुलं डामरे कथितं मया ॥ धूपवार्तां न जानंति डामरे विमुखा नराः ॥ १४८ ॥ कथं सिद्धिर्भवेत्तेषां विपरीते शुभानने ॥ मधूकफलपुष्पैश्च गुग्गुलुं चंदनद्वयम् ॥ १४९ ॥ हरिद्रा हरितालं च देवदारु च नागरम् ॥ सिता लवंग कर्पूरं सुरा वालक्षरं मधु ॥ १५० ॥ मेषीघृतं गोघृतं च महिषीघृतमेव च ॥ एतान्सर्वांश्च संपेष्य कारये द्धूपमुत्तमम् ॥ १५१ ॥ धूपयेद्धूपमंत्रेण कार्यं सिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ चतुर्वारं पठेन्मंत्रं साधको गद्गदाकृतिः ॥ एकचित्तं समाधाय धूपं कुर्या द्विचक्षणः ॥ १५२ ॥ मृन्मयो दीपकः कार्यस्तैलं चामलकोद्भवम् ॥ एरंडतैलं तैलं च मधूकस्य वरानने ॥ १५३ ॥ वर्तिका पीतवस्त्रस्य अंगुलित्रयसंमिता ॥ लेपयेत्पृथिवीं वामे गोमयेन मृदायुताम् ॥ १५४ ॥ त्रितयांगुलसंयुक्तां लिखेद्यंत्रं सुधीः प्रिये ॥ वामपार्श्वे दाडिमस्य करणीया च लेखनी ॥ १५५ ॥ गोधूमचूर्णमध्वाक्तसर्पिषां गैरिकं जतु ॥ एभिर्यंत्रं लिखेद्वामे स्थापयेत्पूर्वदक्षिणे ॥ १५६ ॥ पंचांगुलसमायुक्ते पजयेद्रक्तचंदनैः ॥ दीपमध्ये सदा ध्यायेद्दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम् ॥१५७॥ एवं स्तवाभियुक्तानां देवानां तत्र पार्वती ॥ एपं दीपो मया प्रोक्तो मालायाश्च विधिं शृणु ॥ १५८ ॥ उच्चाटने प्रवालस्य ऊर्णसूत्रेण ग्रंथिता ॥ चंडिकायां यंत्रराजे अर्चयित्वा च

१ "ॐ करोतु सानश्शुभहेतुरीश्वरीशुभानिभद्राण्यभिहन्तु चापदः" इत्यर्धेन स्वधं दद्यात् ॥ २ "ॐ मयूरकुक्कुटवृतेमहाशक्तिधरेऽनघेक्लीं" इति मन्त्रेण धूपयेत्-॥ १ इति मंत्रेण दीपं दद्यात् ॥

वीटकम् ॥ १५९ ॥ पश्चादेकैकमुद्धृत्य चर्वयेच्छनकैः सुधीः ॥ यावजपसमाप्तिः स्यात्तावत्तांबूलचर्वणम् ॥ १६० ॥ कार्य्यं विचक्षणेनैव चंडिकाकिंरेण वै ॥ चतुर्विंशतिलक्षं तु वैश्ये द्वादशलक्षकम् ॥ १६१ ॥ ब्राह्मणे द्विगुणं देवि शूद्राणामर्द्धार्द्धकम् ॥ स्त्रीणां च द्विगुणं प्रोक्तं यतः सा शक्तिरूपिणी ॥ १६२ ॥ जपांते तद्दशांशेन नित्यहोमं च कारयेत् ॥ गोघृतं महिषीदुग्धं तंडलं पीतसर्षपम् ॥ १६३ ॥ देवदारु लवंगं च श्रीफलस्य रसस्तथा ॥ कुंडं कृत्वा पंचकोणं काष्ठवर्बुरमेव च ॥ १६४ ॥ सप्तांगुलमितान् कृत्वा जुहुयात्प्रेमतत्परः ॥ मंत्रं नवार्णवं प्रोक्तं षट्प्रयोगेषु चाहुतौ ॥ १६५ ॥ उच्चाटने यवस्यैव चूर्णं कृत्वा तिलस्य च ॥ गुडामिश्रितसंस्कार्य्या एतैश्च करपट्टिका ॥ १६६ ॥ राजमाषस्य द्विदलं हरिद्रादिविवर्जितम् ॥ भोक्तव्यं वामहस्तेन तृतीयप्रहरे शुभे ॥ १६७ ॥ अभावे भोजनं देव्या यत्तत्प्राप्तं तदेव हि ॥ भोजने क्लेशसंकर्तुः प्रयोगोऽफलदो भवेत् ॥ १६८ ॥ विधिर्वै मंत्रराजस्य कथितः प्राणवल्लभे ॥ शैवेन शाक्तविप्रेण कर्तव्यं निश्चितं प्रिये ॥ १६९ ॥ इत्युच्चाटनम् ॥ ३ ॥ वशीकरणप्रयोगो यथा—कर्तव्यदिवसात्पूर्वं स्नानार्थं चिंतयेद् बुधः ॥ दिनानि विंशतिं वामे पूर्वं कार्यो विधिस्तनोः ॥ १७० ॥ शरीरशोधनं कार्यं मदिराक्षि विनिश्चितम् ॥ मृगपादोद्धृतं तोयं कूपैकं प्राणरंजने ॥ १७१ ॥ एकादशतडागस्य जलं सरितसंगमात् ॥ क्षिप्त्वा कांते घटे तोयं वश्यकर्मणि साधकः ॥ १७२ ॥ एतज्जलं च महिषीदुग्धेन पेषयेत्सुधीः ॥ स्नानं कृत्वा द्विजो वामे वश्ये वश्येन्द्रियः प्रिये ॥ १७३ ॥ त्रिपुंड्रधारणं कृत्वा ललाटे रक्तचंदनैः ॥ श्वेतासने समाविश्य श्वेतांबरधरः स्वयम् ॥ एकोर्ध्वपादे यस्तिष्ठेद्दक्षिणस्यां मुखे कृते ॥ ॥ १७४ ॥ शृणुष्व चापरं कर्म भूमिशोधनमुत्तमम् ॥ निंबपत्रं च हिंगुं च जंबीरस्य रसं मधु ॥ १७५ ॥ सप्तकूपोद्धृतं तोयं करेण दक्षिणेन वै ॥ गोमयं नंदिनो ग्राह्यं वश्येषु भूमिलेपने ॥ १७६ ॥ चतुष्कोणयुता कार्या वश्यकर्माणि निश्चितम् ॥ स्वमूर्ध्नो रुधिरं देवि गृह्णीयाद्वामपाणिना ॥ १७७ ॥ भृंगराजरसं सुभ्रु गोदुग्धं प्रथमं तथा ॥ मधुसिंदूरकर्पूरदेवदारुत्वचारसम् ॥ १७८ ॥ एकस्मिन्सर्वमुद्धृत्य लेखनी दूर्वया तथा ॥ सप्तांगुलप्रमाणेन पृष्ठभागेन संलिखेत् ॥ १७९ ॥ पूजनं यंत्रराजस्य जगन्मातः शुभे शृणु ॥

१ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे देवदत्त फट् उच्चाटनं कुरुकुरु स्वाहेति मन्त्रं जपेत ॥

गोदुग्धं महिषीदुग्धमजामेष्योः पयस्तथा ॥ १८० ॥ एलाफलोद्गतं तोयं कर्पूरं श्वेतचंदनैः ॥ चंदनेनोद्भूतं तैलं सूत्रं पंचकुशास्तथा ॥ १८१ ॥ कुशा एकादश प्रोक्तास्तैः स्नानं कारयेत्प्रिये ॥ श्वेतपुष्पं श्वेतगंधं श्वेतौ तंडुलसूत्रकौ ॥ १८२ ॥ सिंदरं महिषीदुग्धं तिलतैलं गुडं प्रिये ॥ पूजयेद्यंत्रराजं च महामायाप्रियं शुभे ॥ १८३ ॥ विस्तृतं न मयोक्तं वै सामान्यं कथितं शुभे ॥ अतः परं शृणुष्वाद्य विधिं धूपस्य निर्मलम् ॥ १८४ ॥ साधकानां ध्रुवं सिद्धिर्धूपेनैव प्रजायते ॥ वश्यकर्मणि वै देवि धूप एव निगद्यते ॥ १८५ ॥ धूपमाहात्म्यमतुलं डामरे कथितं मया ॥ धूपवार्तां न जानंति डामरे विमुखा नराः ॥ १८६ ॥ अर्थसिद्धिर्भवेत्तेषां विपरीते शुभानने ॥ चंदनद्वयशुंठयश्च आम्रबीजं च दाडिमम् ॥ १८७ ॥ निंबबीजत्वचा सुभ्रु देवदारु च गौरिकम् ॥ हरिद्रा गुग्गुलुः श्वेतं सर्षपं जीरकद्वयम् ॥ १८८ ॥ लवंगं मृगनाभिश्च जंबीररसमुत्तमम् ॥ पिप्पली शर्करा पित्ताघृतं मेष्याः पयश्च गोः ॥ १८९ ॥ एतान्संपेष्य कुशलो धूपं दद्यात् विचक्षणः ॥ धूपयेद् धूपमंत्रेण[2] साधको गद्गदाकृतिः ॥ १९० ॥ एकाचित्तं समाधाय धूपं कुर्याद्विचक्षणः ॥ वश्यकामनया देवि दीप एव निगद्यते ॥ १९१ ॥ दीपः पैत्तलिकः कार्य्यस्तैलं निंबस्य सार्षपम् ॥ अर्कतूलिकया देवि कार्या वर्तिस्त्र्यंगुला ॥ ॥ १९२ ॥ लेपयेत्पृथिवीं सुभ्रु पंचांगुलमितां शुभाम् ॥ तस्यां लिखेद्यंत्रराजं दाक्षिणे पार्श्वके प्रिये ॥ १९३ ॥ लेखनी विष्णुवृक्षस्य पंचांगुलसमन्विता ॥ पूजयेद्यंत्रराजं च सिंदूरैः पीतसर्षपैः ॥ १९४ ॥ अर्कदुग्धं च गोदुग्धमजादुग्धं हारिद्रिका ॥ एभिर्यंत्रे लिखेद्देवि साधकश्चंडिकाप्रियः ॥ १९५ ॥ अस्मिन्दीपे सदा ध्यायेत्कालिकां कमलासनाम् ॥ भक्तिमुक्तिप्रदां देवि चारुहाससमन्विताम् ॥ १९६ ॥ इति ध्यात्वा महामायां पूजयेद्गंधचंदनैः ॥ शक्रादयः सुरगणा एष मंत्रे निवेदयेत् ॥ १९७ ॥ एवं दीपो मया प्रोक्तो मालायाश्च विधिं शृणु ॥ ग्रंथिता वाजिकेशेन कथिता निंबबीजिका ॥ १९८ ॥ वश्यार्थेषु विधिश्चायं मालायाः प्राणवल्लभे ॥

१-उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान्। तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम॥ इति मंत्रेण सर्वं दद्यात् ॥ २ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ॥ घंटास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥ पंचोच्चारण स्वाहा ॥ इति मंत्रेण धूपयेत् ॥

चंडिकाया यंत्रराजे अर्चयित्वा च वीटकम् ॥ १९९ ॥ पश्चादेकैकमुद्धृत्य चर्वयेच्छनकैः सुधीः ॥ यावज्जपसमाप्तिः स्यात्तावत्तांबूल चर्वणम् ॥ २०० ॥ कोटिमंत्रं जपित्वा तु वैश्वेष्वर्धं निगद्यते ॥ ब्राह्मणे द्विगुणं देवि शूद्राणामर्द्धकार्द्धकम् ॥ २०१ ॥ स्त्रीणां[1] च द्विगुणं प्रोक्तं यतः सा शक्तिरूपिणी ॥ जपसंख्यादशांशेन नित्यहोमं च कारयेत् ॥ २०२॥ घृतत्रयं समानीय गोदुग्धं तंडुलं तिलम् ॥ शांकुलीं यवचूर्णस्य कर्पूरं च हरिद्रिकाम् ॥ २०३ ॥ निंबकाष्ठं समानीय कृत्वा च चतुरंगुलम् ॥ शर्करामिश्रितं कृत्वा जहुयाद्भाव भक्तितः ॥ २०४ ॥ पंचकोणयुतं कुंडं संपूज्य विधिना ततः ॥ मंत्रो नवाक्षरः प्रोक्तो वश्ये स कथितो मया ॥ २०५ ॥ मारणे मोहने वश्ये भोजनं त्वेकमुच्यते ॥ तृतीयप्रहरे देवि भोजनं लवणं विना ॥ २०६ ॥ माषस्य द्विदलं सुभ्रु तंडुलं मिलितद्वयम्॥ गोघृतं मधुसंयुक्तं मिश्रित पयसा प्रिये ॥ २०७ ॥ अभावे भोजनं देव्या यद्यत्प्राप्तं तदेव हि ॥ भोजने क्लेशसंकर्तुः प्रयोगोऽफलदो भवेत् ॥ २०८ ॥ विधिर्वै मंत्रराजस्य कथितः प्राणवल्लभे ॥ शैवेन शाक्तविप्रेण कर्तव्यो निश्चितं प्रिये ॥ २०९ ॥ इति वश्यम् ॥ ४ ॥ स्तंभनप्रयोगो यथा—कर्तव्यदिवसात्पूर्वं स्नानार्थं चिंतयेद् बुधः ॥ दिनानि विंशतिं वामे पूर्वं कार्यो विधिस्तनोः ॥ २१० ॥ शरीर शोधनं कार्यं मदिराक्षि विनिश्चितम् ॥ योषित्पादजलं[2] कांते विवाहात्स्पर्शवर्जितम् ॥ २११ ॥ कूपत्रयं सरश्चैकं सरित्रितयसंगतम् ॥ एषां जलं समानीय संक्षिपेल्लोहके घटे ॥ २१२ ॥ जंबीरपत्रमेरंडहारिद्रापत्रजं जलम् ॥ पिष्ट्वा च तंडुले तोये कारयेत्स्नान मद्भुतम् ॥ २१३ ॥ प्रथमो बदरीवृक्षस्तज्जलेन स्वयं प्रिये ॥ त्रिपुंड्रधारणं कृत्वा ललाटे रक्तचंदनैः ॥ २१४ ॥ आसनं कर्बुरं कृत्वा कर्बुरांबरधृक् स्वयम् ॥ कमलासने तत्र तिष्ठेद्दक्षिणस्यां मुखे कृते ॥ २१५ ॥ शृणुष्व चापरं कर्म भूमिशोधनमुत्तमम् ॥ कदलीतोयमाम्रस्य पत्रं गुंजाफलं त्वचम् ॥ २१६ ॥ गोमूत्रं कृष्णसरसः सप्त द्विश्च यथाक्रमम् ॥ जलं द्वाभ्यां कराभ्यां च ग्राह्यं हरिणजं मलम् ॥ २१७ ॥ स्तंभने लेपयेद्भूमिं चक्राकारसमन्वितम् ॥ मृगरक्तं[3] च कर्णोत्थं वामकर्णत्वचा[4] प्रिये ॥ २१८ ॥ आम्र

१ पुरी ॥ २ विवाहदिनात् अन्यदिने पुरुषहस्तस्पर्शवर्जितायाः पतिसंगमरहितायाः स्त्रियाः पादजलमानीय ॥ ३ मृगस्य दक्षिणकर्णरक्तम् ॥ ४ मृगस्य वामकर्णत्वचाम् ॥

बर्बूरकाष्ठं च चंदनौ रक्तश्वेतकौ ॥ विजया कुटकी शुंठी सिता च सैंधवं शुभे ॥ २१९ ॥ गंगोदकेन संपेष्य लेखनी वंशसंभवा ॥ पंचांगुलप्रमाणेन कठिनग्रात्स्वयं लिखेत् ॥ २२० ॥ पूजनं यंत्रराजस्य जगन्मातः शुभे शृणु ॥ कूपोदकं समानीय मिश्रयेत्कदलीजलैः ॥ २२१ ॥ कुशानि नव संबध्य मेषकेशेन निश्चितम् ॥ तेनैव स्नापयेद्यंत्रं प्रीतिपूर्वं शुभानने ॥ २२२ ॥ धूम्रपुष्पं गैरिकं च हरितालं मसूरिका ॥ गंगायः सिकताशुद्धं शुद्धं गंगोदकं प्रिये ॥ २२३ ॥ चंदनौ द्वौ मया प्रोक्तौ मेषीदुग्धं तथा प्रिये ॥ एभिः पूजा प्रकर्तव्या यंत्रराजस्य निश्चितम् ॥ २२४ ॥ विस्तृतं न मयोक्तं वै सामान्यं कथितं शुभे ॥ अतः परं शृणुष्वाद्य विधिं धूपस्य निर्मलम् ॥ २२५ ॥ साधकानां ध्रुवं सिद्धिर्धूपेनैव प्रजायते ॥ स्तंभने कारणं देवि धप एव निगद्यते ॥ २२६ ॥ धूपमाहात्म्यमतुलं डामरे कथितं मया ॥ धूपवार्ता न जानंति डामरे विमुखा नराः ॥ २२७ ॥ कथं सिद्धिर्भवेत्तेषां विपरीते शुभानने ॥ २२८ ॥ अर्कबीजं तथा पुष्पं पत्रं मूलं च काष्ठकम् ॥ लवंगं हरितालं च हिंगुगैरिकतंडुलम् ॥ २२९ ॥ बिल्वसारं गुडं तैलं सगंधीयं वचं तथा ॥ नागरं देवदारुं च पीतसर्षपजं मलम् ॥२३०॥ गोघृतं नवनीतं च सिता पूगीफलं तथा ॥ एतैर्धूपो विशेषेण कर्तव्यः प्राणवल्लभे ॥२३१॥ स्तंभने कारणं देवि दीप एव निगद्यते ॥ काष्ठदीपः प्रकर्तव्यस्तैलं कृष्णतिलस्य च ॥ २३२ ॥ निंबतैलं च श्रेष्ठोरु कर्पूरस्य रसस्तथा ॥ शणस्य वर्तिका कार्या सप्तांगुलप्रमाणिका ॥ २३३ ॥ विलेप्य पृथिवीं वामे पंचकोणयुतां शुभाम् ॥ पैप्पली लेखनी कार्या त्र्यांगुलयुता प्रिये ॥ २३४ ॥ लिखेद्यंत्रं विशालाक्षि साधकः प्रेमतत्परः ॥ शंखतोयं हरिद्रा च जंबीरस्य रसस्तथा ॥ २३५ ॥ एभिर्लिखेत्सदा यंत्रं दीपः स्थाप्यश्च दक्षिणे ॥ अंगुलत्रयसंयुक्ते पूजयेच्छ्वेतचंदनैः ॥ २३६ ॥ ध्यायेद्दीपे सदानंदकारिणीं सिंधुजां शुभाम् ॥ सावर्णिः सूर्यतनय इति मंत्रे निवेदयेत् ॥ २३७ ॥ एवं दीपो मया प्रोक्तो मालायाश्च विधिं शृणु ॥ स्तंभने स्फाटिका माला तूलिकासूत्र

१—शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ॥ सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते । इति मन्त्रेण सर्वं दद्यात् ॥ २ अतसीपुष्पम् ॥ ३—कल्कम् । ४ ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि बलिपूजां तथाकृताम् । ग्रीणि ह्रीं—इति धूपयेत् ॥ ५—सावर्णिः सूर्यतनयो योमनुः कथ्यतेऽष्टमः ॥ निशामय तदुत्पत्तिं विस्तराद्गदतो मम ॥ इति मन्त्रेण निवेदयेत् ॥

ग्रंथिता ॥ २३८ ॥ चंडिकायै यंत्रराजे अर्चयित्वा च वीटकम् ॥ पश्चादेकैकमुद्धृत्य चर्वयेच्छनकैः सुधीः ॥ २३९ ॥ यावज्जप
समाप्तिः स्यात्तावत्तांबूलचर्वणम् ॥ स्तंभने षोडश लक्षं वैश्येष्वर्धं निगद्यते ॥ २४० ॥ ब्राह्मणे द्विगुणं देवि शूद्राणामर्द्धकार्द्धकम् ॥
स्त्रीणां च द्विगुणं प्रोक्तं यतः सा शक्तिरूपिणी ॥ २४१ ॥ जपमेव दशांशेन नित्यहोमं च कारयेत् ॥ अजाघृतं गोघृतं तु मेषी
दुग्धं च तंडुलम् ॥ २४२ ॥ तिलमेरंडबीजं च शणबीजं लवंगकम् ॥ शष्कुली चणकान्नस्य सितया मिश्रितस्य च ॥ २४३ ॥ काष्ठं
चंदनवृक्षस्य नवांगुलसमन्वितम् ॥ कुंडं षट्कोणकं कृत्वा जुहुयादेकमानसः ॥ २४४ ॥ स्तंभने तु मसूरस्य द्विदलं चणकस्य च ॥
तंडुले मेलयित्वा च भोक्तव्यं साधकेन वै ॥ २४५ ॥ तृतीयप्रहरे देवि साधकेनैव निश्चितम् ॥ वर्जितं रसैराजेन कार्यसिद्धि
र्भवेद् ध्रुवम् ॥ २४६ ॥ अभावे भोजनं देव्या यत्तत्प्राप्तं तदेव हि ॥ भोजने क्लेशसंकर्तुः प्रयोगोऽफलदो भवेत् ॥ २४७ ॥
विधिर्वै मंत्रराजस्य कथितः प्राणवल्लभे ॥ शैवेन शाक्तविप्रेण कर्तव्यो निश्चितं प्रिये ॥ २४८ ॥ इति स्तंभनम् ॥ ५ ॥ विद्वे
षणप्रयोगो यथा—कर्तव्यदिवसात्पूर्वं स्नानार्थं चिंतयेद् बुधः ॥ दिनानि विंशतिं वासे पूर्वं कार्यो विधिस्तनोः ॥ २४९ ॥ शरीरशोधनं
कार्यं मदिराक्षि विनिश्चितम् ॥ शिशुपादोद्भवं तोयं कूपद्वादशकं शुभे ॥ २५० ॥ तडागानांसप्तदश नदीनां च जलं तथा ॥ एतज्जलं
समानीय संक्षिपेद्राजते घटे ॥२५१॥ संपेष्य तिलतैलेन स्नानं कृत्वा विशेषतः ॥ त्रिपुंड्रधारणं कृत्वा ललाटे रक्तचंदनैः ॥ २५२ ॥
विद्वेषे चासनं धूम्रं धूम्रांबरधरः स्वयम् ॥ पृष्ठपातासने तिष्ठेदुत्तरस्यां मुखे कृते ॥ २५३ ॥ शृणुष्व चापरं कर्म भूमिशोधनमुत्त
मम् ॥ गैरिकं हरितालं च लवणं सैंधवं तथा ॥ २५४ ॥ कूपैकाजलमानीय कन्याहस्ताद्विचक्षणः ॥ पुरीषं वाजिनश्चैव मृद
मारण्यसंभवाम् ॥ २५५ ॥ एभिर्विशोध्य पृथिवीं विद्वेषार्थे जपेद् बुधः ॥ उष्ट्रग्रीवोद्भवं रक्तं गृह्णीयाद्दक्षपाणिना ॥ २५६ ॥

---

१ ॐ ठंठं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं ह्रीं वाचं मुखं पदं स्तंभय स्तंभय ह्लीं जिह्वां कीलय कीलय ह्लीं बुद्धिं विनाशय विनाशय ह्लीं ॐ ठंठं स्वाहा" इति मन्त्रं जपेत् ॥
२ पूरिका ॥ ३ लवणेन ॥

एलाफलं तेजपत्रं तत्फलं तत्त्वचा मधु ॥ अजादुग्धेनं संपेष्य करोति मिश्रितं बुधः ॥ २५७ ॥ लेखनी कंटकी कार्या आम्नाये च शुभेक्षणे ॥ त्र्यंगुलस्य प्रमाणेन हस्तं कृत्वा गृहे तथा ॥ २५८ ॥ वामेनैव लिखेद्यंत्रमिष्टकार्यार्थसिद्धये ॥ एषा लेखनकौशल्या मदिराक्षि मयोदिता ॥ २५९ ॥ पूजनं यंत्रराजस्य जगन्मातः शुभे शृणु ॥ लवंगं मरिचं शुंठी कटुका त्रिफला मधु ॥ २६० ॥ एतान्पिष्ट्वा शुभे तोये पंचकूपोद्धृते तथा ॥ मिश्रितं मधुना कुर्यात्कुशा द्वादशसंमिताः ॥ २६१ ॥ बांधिता शणसूत्रेण स्नापयेच्चंडिकां प्रिये ॥ भृंगराजरसं सुभ्रु चंदनं श्वेतरक्तकम् ॥ २६२ ॥ सिंदूरं विजयापत्रमर्कमूलं पयस्तथा ॥ एभिः प्रपूजयेद्देवि यंत्रराजं विचक्षणः ॥ २६३ ॥ विस्तृतं न मयोक्तं ते सामान्यं कथितं शुभे ॥ अतः परं शृणुष्वाद्य विधिं धूपस्य निर्मलम् ॥ २६४ ॥ साधकानां ध्रुवं सिद्धिर्धूपेनैव प्रजायते ॥ विद्वेषे कारणं देवि धूप एव निगद्यते ॥ २६५ ॥ धूपमाहात्म्यमतुलं डामरे कथितं मया ॥ धूपवार्तां न जानंति डामरे विमुखा नराः ॥ कथं सिद्धिर्भवेत्तेषां विपरीते शुभानने ॥ २६६ ॥ गुग्गुलुं लोहबाणं च हरिद्रां तजमेव च ॥ हिंगुगौरिककर्पूरमांसुरीं दालकं मधु ॥ २६७ ॥ लवंगं मृगनाभिं च चंदनद्वयचूर्णकम् ॥ कटुकां पिप्पलीं देवदारुं नागरतागरौ ॥ ॥ २६८ ॥ महिषीघृतदुग्धे च सिताद्वयं गुडं प्रिये ॥ एकत्र चूर्णयेत्सर्वान् धूपं कृत्वा विधानवित् ॥ २६९ ॥ पंच मंत्रान्पठित्वा तु साधको गद्गदाकृतिः ॥ एकचित्तं समाधाय धूपं कुर्याद्विचक्षणः ॥ २७० ॥ विद्वेषे कारणं देवि दीप एव निगद्यते ॥ ताम्रदीपश्च गोमूत्रं तैलं श्वेततिलस्य च ॥ २७१ ॥ एरंडस्य तथा तैलं वर्तिः कार्या च तौलिका ॥ दशांगुलप्रमाणेन पृथ्वी लेप्या नवांगुला ॥ ॥ २७२ ॥ बर्बुरी लेखनी कार्या द्व्यंगुलत्रयनिर्मिता ॥ यवचूर्णेन वामोरु कन्यायाश्च रसेन वै ॥ २७३ ॥ लिखेद्यंत्रं प्रिये प्रेम्णा दीपः स्थाप्यश्च दक्षिणे ॥ अंगुलैकप्रमाणेन पूजयेद्रक्तचंदनैः ॥ २७४ ॥ दीपमध्ये सदा ध्यायेच्चंडिकां चण्डनाशिनीम् ॥ इति ध्यात्वा

---

१ जायफळ । २ दालचीनी । ३ सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि । एवमेतत्त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ॥ इति मन्त्रेण सर्वं दद्यात् ॥ ४ राई ॥ ५ॐ इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति । तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयं नमः ॥ इति मन्त्रं पंचधा पठित्वा धूपयेत् ॥ ६ घृतकुमारिका ।

महामायां पूजयेद्रक्तचंदनैः ॥ २७५ ॥ शूलेनं पाहि नो देवि इति मंत्रे निवेदयेत् ॥ एवं दीपो मया प्रोक्तो मालायाश्च विधिं शृणु ॥ ॥ २७६ ॥ विद्वेषे बदरीबीजग्रंथिता कीटरोमकैः ॥ माला या च मया प्रोक्ता साधकानां हिताय च ॥ २७७ ॥ चंडिकायै यंत्रराजे अर्चयित्वा च वीटिकम् ॥ पश्चादेकैकमुद्धृत्य चर्वयेच्छनकैः सुधीः ॥ २७८ ॥ यावज्जपसमाप्तिः स्यात्तावत्तांबूलचर्वणम् ॥ जपे त्रयोदशं लक्षं वैश्येष्वर्धं निगद्यते ॥ २७९ ॥ ब्राह्मणे द्विगुणं देवि शूद्राणामर्द्धकार्द्धकम् ॥ स्त्रीणां च द्विगुणं प्रोक्तं यतः सा शक्तिरूपिणी ॥ २८० ॥ जपांते तद्दशांशेन नित्यहोमं च कारयेत् ॥ गोघृतं तिलतैलं च यवं कृष्णतिलाः प्रिये ॥ २८१ ॥ द्विदलं चणकस्यैव कर्पूरं चंदनं जतु ॥ देवदारु वचा दालमर्ककाष्ठं शुभानने ॥ २८२ ॥ दुग्धमुरूथवृक्षस्य हिंगु गैरिकमेव च ॥ काष्ठं पंचांगुलमितं कुर्यात्कुंडं त्रिकोणतः ॥ २८३ ॥ जुहुयाद्वारुणीं पश्चात्साधको विमलाशयः ॥ मंत्रो नवाक्षरः प्रोक्तो विद्वेषे कथितो मया ॥ ॥ २८४ ॥ विद्वेषे भोजनं कार्यं दवि गोधूमतंडुलौ ॥ मुँनिवृक्षस्य द्विदलं सैंधवेन युतं प्रिये ॥ २८५ ॥ अभावे भोजनं देवि यत्तत्प्रासं तदेव हि ॥ भोजने क्लेशसंकर्तुः प्रयोगोऽफलदो भवेत् ॥ २८६ ॥ विधिर्वै मंत्रराजस्य कथितः प्राणवल्लभे ॥ शैवेन शाक्तविप्रेण कर्तव्योनिश्चितं प्रिये ॥ २८७ ॥ कार्यं विचक्षणेनैव चंडिकाकिंकरेण वै ॥ मयोक्तं देवि मंत्रस्य चांडिकायाः प्रियस्य च ॥ २८८ ॥ इति डामरे रावणकृते शतसहस्रप्रतिबद्धे चतुःषष्टितमोल्लासे नवार्णमंत्रराजषट्प्रयोगाः ॥ नवार्णमहामंत्रस्वरूपं यथा—"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महादुर्गे नवाक्षरीनवदुर्गे नवात्मिके नवचंडीमहामाये महामोहे महायोगनिद्रे जये मधुकैटभ विद्राविणि महिषासुरमर्दिनि धूम्रलोचनसंहंत्रि चंडमुंडविनाशिनि रक्तबीजांतके निशुंभध्वंसिनि शुंभदर्पघ्नि देवि अष्टादशबाहुके कपालखट्वांगशूलखड्ग खेटकधारिणि छिन्नमस्तकधारिणि रुधिरमांसभोजिनि समस्तभूतप्रेतादियोगध्वंसिनि ब्रह्मेन्द्रादिस्तुते देवि मां रक्षरक्ष मम

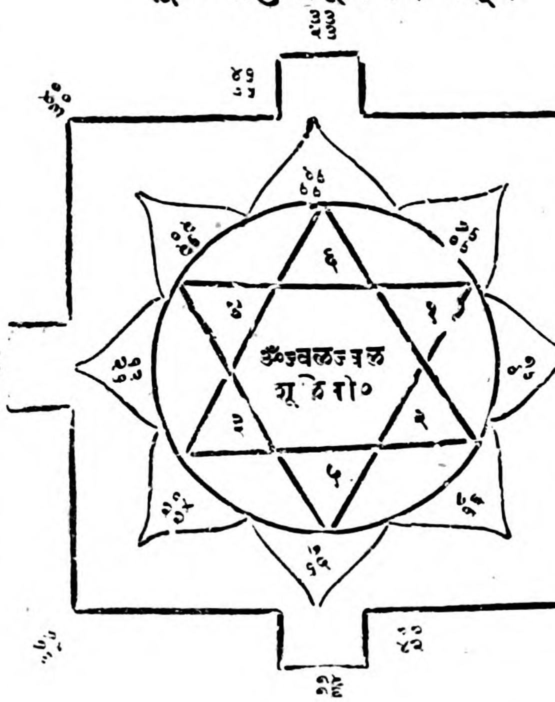
१ शूलेन पाहिनो देवि पाहि खड्गेन चांबिके । घंटास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥ इति मन्त्रेण दीपं दद्यात् ॥ २ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे हुँ अमुकामुकेन सह विद्वेषण कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति मंत्रं जपेत ॥ ३ दालचीनी । ४ तूर ॥

शत्रून् नाशयनाशय ह्रीं फट् हूँ फट् ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे" महामंत्रः ॥ अस्य विधानम् । ऋष्यादिकं न्यासादिकं च पूर्ववत् कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ अरुणकमलसंस्था तद्रजःपुंजवर्णा करकमलधृतेष्टाभीतियुग्मांबुजा च ॥ मणिमुकुटविचित्रालंकृता कल्पजातैर्भवतु भुवनमाता संततं श्रीः श्रिये नः ॥ १ ॥ इन्दुप्रख्यामिंदुखंडार्धमौलिं शंकाभीष्टाभीतिहस्तां त्रिनेत्राम् ॥ हेमाब्जस्थां पीतवस्त्रां प्रसन्नां देवीं दुर्गां दिव्यरूपां नमामि ॥ २ ॥ पंचाशद्वर्णभेदैर्विहितवदनयोः पादहृत्कुक्षिवक्षोदेशां भास्वत्कपर्दाकलितशशिकलामिंदुकुंदावदाताम् ॥ अक्षस्रक्कुंभचिंतालिखितवरकरां तीक्ष्णपद्मासनस्थामच्छाकल्पामतुच्छस्तनजघनभरां भारतीं तां नमामि ॥३॥ इति ध्यात्वा नवार्णवत् पीठपूजामावरणपूजां च कृत्वा जपं कुर्यात् ॥ अस्य संपुटितपाठहोमेऽपि आहुतिसंख्या सप्तशत्येव ॥ इति नवार्णमहामंत्रः ॥ इति नवार्णमंत्रप्रयोगः ॥ अथ दुर्गे स्मृतामंत्रप्रयोगः॥मंत्रो यथा—"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे ॐ ह्रीं श्रीं कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलंतीं तृप्तां तर्पयंतीं पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ॐ ह्रीं श्रीं क्लींॐह्रींश्रींक्लीं दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजंतोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि॥ यदंति यच्च दूरके भयं विंदति मामिह॥पवमानवितज्जहि॥दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॐ ह्रींश्रींक्लीं ॐह्रींश्रींक्लीं कांसोस्मितांहिरण्यप्राकारामार्द्रांज्वलंतींतृप्तांतर्पयंती पद्मेस्थितांपद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ॐह्रींश्रींक्लीं चामुंडायैविच्चे" इति मंत्रः॥अस्य विधानम्॥दुर्गे स्मृता इति मंत्रस्य हिरण्यगर्भऋषिः।उष्णिक् छंदः । श्रीमहामाया देवता । शाकंभरी शक्तिः । दुर्गा बीजम् । श्रीं वायुस्तत्त्वम् । मम चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ हिरण्यगर्भऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ उष्णिक्छंदसे नमः मुखे ॥ २ ॥ श्रीमहामायादेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ शाकंभरीशक्तये नमः दक्षिणस्तने ॥ ४ ॥ दुर्गाबीजाय नमः वामस्तने ॥ ५ ॥ श्रीं वायुतत्त्वाय नमः हृदि ॥ ६ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ ७ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजंतोः अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ यदंति यच्च दूरके भयं विंदति मामिह मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ पवमानवितज्जहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ इति करन्यासः ॥ एवमेव हृदयादिषडंगन्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य रूपं च शत्रु भयकार्यतिहारि कुत्र ॥ चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि ॥ ११ ॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य योनिमुद्रया नत्वा जपं कुर्य्यात् । महत्कार्ये लक्षमयुतं सहस्रमष्टोत्तरशतं जप्त्वा सकलकार्य्यसिद्धिर्भवति दशांशक्षीराज्य हवनं दशांशतर्पणमार्जनसुवासिनीब्राह्मणभोजनं च कुर्य्यात् ॥ इति दुर्गेस्मृतामंत्रप्रयोगः ॥ अथ शूलिनीदुर्गामंत्रविधानम् । उक्तं च शारदातिलके । मंत्रो यथा—"ॐज्वलज्वल शूलिनि दुष्टग्रहान् हुँफट्स्वाहा" इति पंचदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम् ॥ ॐ अस्य श्रीशूलिनीदुर्गामंत्रस्य दीर्घतमा ऋषिः । ककुप् छंदः । शूलिनीदुर्गा देवता । सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः ॥ ॐ दीर्घतमऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ ककुप्छंदसे नमः मुखे ॥ २ ॥ शूलिनीदुर्गादेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ शूलिनि दुर्गे हुंफट् अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ शूलिनि वरदे हुंफट् तर्जनीभ्यां स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ शूलिनि विंध्यवासिनि हुंफट् मध्यमाभ्यां वषट् ॥ ३ ॥ ॐ शूलिन्यसुरमर्दिनि युद्धप्रिये त्रासय हुंफट् अनामिकाभ्यां हुम् ॥ ४ ॥ ॐ शूलिनि देवसिद्धिसुपूजिते नंदिनि रक्षरक्ष महायोगेश्वरि हुँफट् कनिष्ठिकाभ्यां फट् ॥ ५ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ शूलिनि दुर्गे हुँफट् हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ शूलिनि वरदे हुं फट् शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ शूलिनि विंध्यवासिनि हुँफट् शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ शूलिन्य सुरमर्दिनि युद्धप्रिये त्रासय हुं फट् कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ शूलिनि देवसिद्धिसुपूजिते नंदिनि रक्ष रक्ष महायोगेश्वरि हुं फट् अस्त्राय फट् ॥ ५ ॥ इति हृदयादिपंचांगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ अध्यारूढां मृगेन्द्रं सजलजलधरश्यामलां पद्महस्तैः शूलं बाणंकृपाणंत्वरिजलजगदाचापपाशान्वहंतीम् ॥ चंद्रोत्तंसां त्रिनेत्रां चतसृभिरसिमत्खेटकं बिभ्रतीभिः कन्याभिः सेव्यमानां प्रतिभटभयदां शूलिनीं भावयामि ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूजयेत् ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादि

पीठदेवताः दुर्गाः पद्धतिमार्गेण संस्थाप्य नवपीठशक्तीः पूजयेत् ॥ पूर्वादिक्रमेण ॐ प्रभायै नमः ॥ १ ॥ ॐ मायायै नमः ॥ २ ॥ ॐ जयायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ सूक्ष्मायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ विशुद्धायै नमः ॥ ५ ॥ ॐ नंदिन्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ सुप्रभायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ विजयायै नमः ॥ ८ ॥ मध्ये ॐ सर्वसिद्धिदायै नमः ॥ ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य "ॐवज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहासनाय हुं फट् नमः" इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतै रुपचारैः संपूज्य देव्या आज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तद्यथा—पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य" ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ॥ अनुज्ञां देहि मे दुर्गे परिवारार्चनाय ते ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इत्याज्ञां गहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तथा च षट्कोणकेसरेषु आग्नेयादिचतुष्कोणेषु मध्ये दिक्षु च ॥ ॐ शूलिनि दुर्गे हुं फट् हृदयाय नमः हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ शूलिनि वरदे हुं फट् शिरसे स्वाहा शिरःश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ शूलिनि विंध्यवासिनि हुंफट् शिखायै वषट् शिखाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ शूलिन्यसुरमर्दिनि युद्धप्रिये त्रासय हुं फट् कवचाय हुं कवचश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ शूलिनि देवासिद्धसुपूजिते नंदिनि रक्ष रक्ष महायोगेश्वरि हुं फट् अस्त्राय फट् ॥ ५ ॥ इति पंचांगानि पूजयेत् ॥ ततः

शूलिनीदुर्गापूजनयन्त्रम् ।



पुष्पांजलिमादाय 'मूलमुच्चार्य्य अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्' ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्वा विशेषार्घोद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततः पूज्यपूजकयो रंतराल प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण । ॐ दुर्गायै नमः । दुर्गाश्रीपा० ॥१॥ ॐ वरदायै नमः । वरदाश्रीपा० ॥२॥ विंध्यवासिन्यै नमः । विंध्यवसिनी श्रीपा० ॥ ३ ॥ ॥ ॐ असुरमर्दिन्यै नमः । असुरमर्दिनीश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ युद्धप्रियायै नमः । युद्धप्रिया श्रीपा० ॥५॥ ॐ देवसिद्धपजितायै नमः । देवसिद्धपूजिताश्रीपा० ॥६॥ ॐ नंदिन्यै नमः । नंदिनीश्रीपा० ॥७॥ ॐ महायोगेश्वर्य्यै नमः महायोगेश्वरीश्रीपा० ॥८॥ इत्यष्टौ शक्तीः पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥२॥ ततः पत्राग्रेषु तदस्त्राणि पूजयेत् ॥ तद्यथा—चक्राय नमः ॥ १ ॥ ॐ शंखाय नमः ॥२॥ ॐ खड्गाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ गदायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ चापाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ त्रिशूलाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ बाणेभ्यो नमः ॥ ७ ॥ ॐ पाशाय नमः ॥ ८ ॥ इत्यष्टास्त्राणि पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततो भूपुरे इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं पंचलक्षजपः ॥ सर्पिषान्नेन दशांशतो होमः ॥ तत्तद्दशांशेन तर्पणं मार्जनं ब्राह्मणभोजनं च कुर्य्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति ॥ सिद्धे च मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च—"मनुमेनं जपेन्मंत्री वर्णलक्षं विचक्षणः ॥ सर्पिषान्नेन वा होमस्तद्दशांशमितो भवेत् ॥ १ ॥ इत्थं जपादिभिः सिद्धं कुर्य्यात्कर्म निजेप्सितम् ॥ अष्टोत्तर सहस्रं यस्तिलैस्त्रिमधुरप्लुतैः ॥ नित्यं प्रजुहुयात्तस्य शक्तिः स्यादतिमानुषी ॥ २ ॥ अष्टोत्तरशतं नित्यं सर्पिषा जुहुयान्नरः ॥ वांछितं वत्सरादर्वाक् प्राप्नोति महतीं श्रियम् ॥ ३ ॥ पूर्वं होमो भवेन्नणां सर्ववांछितसिद्धिदः ॥ छुरिकाद्यानि शस्त्राणि जप्तानि मनुना मुना ॥ ४ ॥ संसिक्ताज्यविलिप्तानि वितरंति जयश्रियम् ॥ अश्वत्थार्कसमिद्भिर्वा तिलैर्वा मधुरोक्षितैः ॥ ५ ॥ होमो वै दिशति क्षिप्र मीप्सितान्मंत्रिणो वरान् ॥ उद्यदायुधहस्तां तां देवीं कालघनप्रभाम् ॥ ६ ॥ ध्यात्वात्मानं जपेन्मंत्रं स्पृष्ट्वा तं मुंचति ग्रहः ॥ सर्पा

खवृश्चिकादीनां विषमाशु विनाशयेत् ॥ ७ ॥ मनुनानेन विधिवन्मंत्रविद्देवताधिया ॥ मंत्रेणानेन संजप्तान्बाणानादाय योधकः ॥
॥ ८ ॥ विमुंचेत्प्रतिसेनायां सा द्रुतं विद्रुता भवेत् ॥ शूलपाशधरां देवीं ध्यात्वारमानमनाकुलः ॥९॥ प्रविशेद्युद्धदेशं यो जित्वायाति स
निर्व्रणः ॥ जुहुयात्तिलसिद्धार्थैर्लक्षमेकं यथाविधि ॥ १० ॥ नामयुक्तं जपेन्मंत्रं वश्यास्तौ मतिमेष्यति ॥ गुटिकां गोमयोत्पन्नां हुत्वा
ष्टशतसंख्यया ॥ ११ ॥ सप्ताहात्कुरुते मंत्री विद्वेषं त्विधयोर्मिथः ॥ गृहीत्वा गोमयं व्योम्नि त्रिसहस्रं जपेत्पुनः ॥ १२ ॥ गमि
ष्यति द्वारदेशे निखातं स्तंभकृद्भवेत् ॥ बहुनोक्तेन किं सर्वं साधयेन्मनुनाऽमुना ॥ १३ ॥ इति शूलिनीदुर्गामंत्रप्रयोगः ॥ अथ
दुर्गासप्तशतीप्रयोगः ॥ तत्रादौ चरित्रत्रयरहस्यत्रयानिर्णयो रुद्रयामले ॥ "प्रथमं चरितं प्रोक्तं मधुकैटभघातनम् ॥ द्वितीयं विद्धि चरितं
महिषासुरघातनम् ॥ १ ॥ उत्तरं चरितं ज्ञेयं शुंभदैत्यवधान्वितम् ॥ चरितानि जपेत्त्रीणि सरहस्यान्यतंद्रितः ॥ २ ॥ (रहस्यं मंत्रां
त्याध्यायद्वयं त्रयं वा) चरितं मध्यमं वापि जपेद्वा चंडिकामयम् ॥ नमो देव्या इमं मंत्रं जपेद्वा कालिकाप्रियम् ॥ " इति मार्कण्डेय
लिखितत्वेन प्रसिद्धे ग्रंथे तूक्तम् ॥ अथ दुर्गापाठक्रमः ॥ आधारे स्थापयित्वा तु पुस्तकं वाचयेत्ततः ॥ हस्ते संस्थापनाद्देवी ह्रस्वार्धं हि
फलं यतः ॥ ३ ॥ पुस्तके वाचनं हस्तं सहस्रादधिकं यदि ॥ ततो न्यूनस्य तु भवेद्वाचनं पुस्तकं विना ॥ ४ ॥ न स्वयं लिखितं
स्तोत्रं न ब्राह्मणलिपिं पठेत् ॥ न च स्वयंकृतं स्तोत्रं तथाऽन्येन च यत्कृतम् ॥ ५ ॥ यतः करभौ प्रशंसंति ऋषिभिर्भाषितं तु
यत् ॥ अनुक्रमात्पठेदेवं शिरःकंपादिकं त्यजेत् ॥ पठ्यमानाध्यायमध्ये विरामो यदि वा भवेत् ॥ पुनरध्यायमारभ्य पठेत्सर्व
मुदारधीः ॥ ७ ॥ प्रणवं पूर्वमुच्चार्य स्तोत्रं वा संहितां पठेत् ॥ अंते च प्रणवं दद्यादित्युवाचादिपरुषः ॥ ८ ॥ न मानसं पठेत्स्तोत्रं
वाचिकं तु प्रशस्यते ॥ नानेन सदृशं स्तोत्रं विद्यते भुवनत्रये ॥ ९ ॥ ततश्चानेन देवेशी स्तूयते प्रत्यहं नरैः ॥ धर्मार्थकाममोक्षाणा
मालयो जायते नरः ॥१०॥ सप्तशतीपाठेऽगषट्कस्य मुख्यतामपठने दोषं चाह—"अंगहीनो यथा देही सर्वकर्मसु न क्षमः ॥ अंगषट्क
विहीना तु तथा सप्तशती स्तुतिः ॥ ११ ॥ तस्मादेतत्पठित्वैवं जपेत्सप्तशतीं पराम् ॥ अन्यथा शापमाप्नोति हानिं चैव पदे पदे ॥ १२ ॥

रावणाद्याः स्तोत्रमेतदंगहीनं निषेविरे ॥ हता रामेण ते यस्मात्तांगहीनं पठेत्ततः ॥ १३ ॥ अंगषट्कं विजानीयात्कवचार्गलकीलकैः ॥ रहस्यात्रितयेनैव सहितैर्मनुजेश्वर ॥ १४ ॥ सप्तशतीपाठे कवचार्गलाकीलकानामावश्यकतामाह ॥ उक्तं च देवीमाहात्म्ये—पुरा दश मुखो ब्रह्मन्दिव्यमानो विहायसि ॥ गच्छन्नत्यूर्ध्वमार्गैः सन्सर्वदिक्षु विचारयन् ॥ १५ ॥ भुवि सप्तशतीमालापरायणपरं द्विजम् ॥ अवतीर्य समालोक्य किमिदं पठ्यते द्विज ॥ १६ ॥ इत्युक्त्वा प्रददौ छत्रं संतुष्टस्तु द्विजोत्तमः ॥ स्वपुस्तकं दशास्याय प्रददौ भक्ति दायकः ॥ १७ ॥ आदाय रावणो दृष्ट्वा शाकंभर्या मनुस्तवम् ॥ भीमास्तद्दृष्टिः सन् स्तोत्रमयाकृष्याविशोषितम् ॥ १८ ॥ देवब्रह्म स्तुतियुतं चरित्रत्रितयान्वितम् ॥ संपूज्य पुस्तकं पाठादेवास्तु निधनं गताः ॥ १९ ॥ आरुण्याख्यस्ततो दैत्यस्त्रैलोक्यं चातिपीडयत् ॥ ततो देवा ऋषिस्तोत्रं विना सप्तशतीमनुम् ॥ २० ॥ जपंतस्तु महाकालं महादेवीमुपासत ॥ अप्रसन्ना महादेवी देवा ब्रह्माणमाययुः ॥ २१ ॥ शनैर्विष्णुं शनैः शंभुं दृष्ट्वा सर्वं व्यबोधयन्॥ईश्वरस्तान् समालोक्य कवचार्गलकीलकैः॥२२॥सहसप्तशतीमालामहातंत्रमुपादिशत्॥ ततः प्रसन्ना श्रीदेवी भ्रामरं रूपमाश्रिता ॥ २३ ॥ अनेकभ्रमरैः सार्धमरुणाख्यं महासुरम् ॥ हत्वा ब्रह्मादिदेवानां भीतानामभयं ददौ ॥२४॥ ब्रह्मा मृकंडुपुत्राय सुरथाय समाधये ॥ मार्कंडेयाय ताभ्यां च प्रसन्ना जगदंबिका ॥ २५ ॥ जय त्वं च जयंती च श्लोकद्वितयमर्गलम् ॥ मधुकैटभविद्रावि विधात्रीति नवार्णकम् ॥ २६ ॥ कीलकं शंकरप्रोक्तं कवचं ब्रह्मणा कृतम् ॥ अर्गलं विष्णुना प्रोक्तमेतत्त्रितयमुत्तमम् ॥ २७ ॥ अर्गलाकीलके चादौ पठित्वा कवचं पठेत् ॥ जपेत्सप्तशतीं चंडीं क्रम एष शिवोदितः ॥ २८ ॥ अर्गला दुरितं हंति कीलकं फलदं भवेत् ॥ कवचं रक्षयेन्नित्यं तस्मादेतत्त्रयं पठेत् ॥२९॥ अर्गला हृदये यस्य तस्मादर्गलवानसौ ॥ भविष्यति न संदेहो नान्यथा शिवभाषितम् ॥ ३० ॥ कीलकं हृदये यस्य स कीलितमनोरथः ॥ कवचं हृदये यस्य स वज्रकवचः प्रभुः॥३१॥ (कामनापरत्वेन चंडीपाठ संख्या वाराहीतंत्रे) ॥ शिव उवाच ॥ चंडीपाठफलं देवि शृणु त्वं गदतो मम ॥ एकावृत्त्यादिपाठानां यथावत्कथयाम्यहम् ॥३२॥ संकल्प

१ ईश्वरः शिवः तान् देवान् दुःखितान् समालोक्य प्रथमं कवचं ततः अर्गलां ततः कीलकं ततः सप्तशतीपठनमिति क्रमेण महातंत्ररूपं दुर्गापाठमुपादिशत ॥

पूर्वं संपूज्य न्यस्यांगेषु मनून्सकृत् ॥ पश्चाद्बलिप्रदानेन फलमाप्नोति मानवः ॥३३॥ उपसर्गोपशांत्यर्थं त्रिरावृत्तिं पठेन्नरः ॥ गृहोपशांतौ कर्तव्या पंचावृत्तिर्वरानने ॥ ३४ ॥ महाभये समुत्पन्ने सप्तावृत्तिमुदीरयेत् ॥ नवावृत्तौ भवेच्छांतिर्वाजपेयफलं व्रजेत् ॥ ३५ ॥ राजवश्याय भूत्यै च रुद्रावृत्तिमुदीरयेत् ॥ अर्कावृत्त्या काम्यसिद्धिर्वैरिहानिश्च जायते ॥ ३६ ॥ मन्वावृत्त्या रिपुर्वश्यस्तथा स्त्री वशतामियात् ॥ सौख्यं पंचदशावृत्त्या श्रियमाप्नोति मानवः ॥ ३७ ॥ कल्पावृत्त्या पुत्रपौत्रधनधान्यागमं विदुः ॥ राजभीतिविनाशाय विपक्षोच्चाटनाय च ॥ ३८ ॥ कुर्यात्सप्तदशावृत्तिं तथाष्टदशकं प्रिये ॥ महाऋणविमोक्षाय विंशावृत्तिं पठेन्नरः ॥ ३९ ॥ पंचविंशावर्तनाद्धि भवेद्बंधविमोक्षणम् ॥ संकटे समनुप्राप्ते वृश्चिकस्यामये सदा ॥ ४० ॥ जातिध्वंसे कुलोच्छेदे ह्यायुषो नाशमागते ॥ वैरिवृद्धौ व्याधिवृद्धौ धननाशे तथा क्षये ॥ ४१ ॥ तथैव त्रिविधोत्पाते तथा चैवातिपातके ॥ कुर्याद्यत्नाच्छतावृत्तिं ततः संपद्यते शुभम् ॥ ४२ ॥ विपदस्तस्य नश्यंति अंते याति परां गतिम् ॥ जयवृद्धौ शतावृत्त्या राजवृद्धौ सदा पठेत् ॥ ४३ ॥ मनसा चिंतिता देवि सिद्धिरष्टोत्तराच्छतात् ॥ शताश्वमेधयज्ञानां फलमाप्नोति सुव्रते ॥ ४४ ॥ सहस्रावर्तनाल्लक्ष्मीरावृणोति स्वयं स्थिरा ॥ भुक्त्वा कामान्यथाकामं नरो मोक्षमवाप्नुयात् ॥ ४५ ॥ यथाश्वमेधः क्रतुषु देवानां च यथा हरिः ॥ स्तवानामपि सर्वेषां तथा सप्तशतीस्तवः ॥ ४६ ॥ नातः परतरं स्तोत्रं किंचिदस्ति वरानने ॥ भुक्तिमुक्तिप्रदं पुण्यं पावनानां च पावनम् ॥ ४७ ॥ अथवा बहुनोक्तेन किमन्येन वरानने ॥ पंचाशदावृत्तिपाठात्सर्वाः सिध्यंति सिद्धयः ॥ ४८ ॥ (अथ सप्तशत्याः शापोद्धारोत्कीलने कात्यायनीतंत्रे) त्रयोदशाध्यायं पठित्वा प्रथमं पठेत् । ततो द्वादशद्वितीयौ तत एकादशतृतीयौ चतुर्थदशमौ पंचमनवमौ षडष्टमौ सप्तमं द्विवारमिति पाठेन शापोद्धारः ॥ ४९ ॥ अन्यच्च—ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं क्रां क्रीं चंडिकादेव्यै शापानुग्रहं कुरु कुरु स्वाहा इति पाठादौ सप्तवारं जपेदिति शापोद्धारः ॥ ५० ॥ अथोत्कीलनम् ॥ इत्थं रूपेण कीलेन महादेवेन कीलितमिति सप्तशतीस्तोत्रे शिवशापतदुद्धारः । प्रथमं मध्यमचरित्रं पठित्वा ततः प्रथमतृतीयौ पठेदित्युत्कीलनमिति क्वचित् दृश्यते ॥ ५१ ॥ अन्यच्च—कीलकं मध्यमादौ च पश्चात्कवचमेव च ॥

प्रथमं चरितं जप्त्वा ततश्चरितमुत्तमम् ॥ ५२ ॥ ततः परं चार्गलां च कीलकं च ततः परम् ॥ एवमुत्कीलनं प्रोक्तं पुरातनमहर्षिभिः ॥ ५३ ॥ अन्यच्च—ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशतिचंडिके उत्कीलनं कुरु स्वाहा ॥ पाठादौ एकविंशतिजपे तदोत्कीलनम् ॥ ५४ ॥ अथ जाग्रत्करणम् ॥ 'ॐ रं सं मूलं रं क्षं ॐ' इति सप्तवारजपेन जाग्रद्विद्या भवति । (इति सप्तशती स्तोत्रांतर्गतमंत्राणां कामनापरत्वेन संपुटनिर्णयः ॥) रात्रिसूक्तं जपेदादौ मध्ये सप्तशतीस्तवम् ॥ अंते च देवीसूक्तानि रहस्यं तदनंतरम् ॥ ५५ ॥ चरिते चरिते राजञ्जपेन्मंत्रं नवाक्षरम् ॥ शतमादौ शतं चांते विधानेन तु सुव्रत ॥ ५६ ॥ अन्यच्च—जपेन्नवाक्षरं मंत्रमथवाष्टोत्तरं शतम् ॥ शतमादौ शतं चांते मध्ये सप्तशतीं जपेत् ॥५७॥ अन्यच्च—महामायामनोरादौ चरितस्यादितोऽपि वा ॥ प्रत्यध्यायसमारंभे तत्समाप्तौ जपेत्तथा ॥ ५८ ॥ प्रतिश्लोकादितो यद्वा तदंते वा पठेन्नरः ॥ नवार्णमनुना सार्धं संपुटोऽयमुदाहृतः॥ सकामः संपुटो जाप्यो निष्कामः संपुटं विना ॥ ५९ ॥ कात्यायनीतंत्रे प्रतिश्लोकमाद्यंतयोः प्रणवेन जपेन्मंत्रसिद्धिः ॥६०॥ अन्यच्च—सप्तव्याहृतिपूर्वकं श्लोकं कृत्वा महास्तोत्रं जपेन्मंत्रसिद्धिः ॥ ६१ ॥ अन्यच्च—सव्याहृतिकां गायत्रीमादावंते वा कृत्वा श्लोकं जपेत् तदा महाफलम् ॥ ६२ ॥ अन्यच्च—प्रतिश्लोकं व्याहृतित्रययुतां गायत्रीं जपेत् तदा महाफलम् ॥ ६३ ॥ अन्यच्च—प्रतिश्लोकमादावंते "जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः॥ स नः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वा नावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः" इति ऋचं जपेत् सर्वकामसिद्धिः ॥६४॥ अन्यच्च—ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ॥ धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः ॥ स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिंधु दुरितात्यग्निः ॥ ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिम्पुष्टिवर्धनम् ॥ उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ इति शताक्षरत्र्यंबकमंत्रेण संपुटीकृत्य मंत्रं पठेत् ॥ रोगारिक्षयमृत्यून्मूलनं सर्वापद्विनिवारणमभीप्सितप्राप्तिः ॥ ६५ ॥ अन्यच्चप्रतिश्लोकम्—शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ॥ सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ इति श्लोकं पठेत् सर्वकार्यसिद्धिः ॥ ६६ ॥ अन्यच्च प्रतिश्लोकम्—करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहंतु चापदः ॥

इत्यर्धं पठेत् सर्वकामाप्तिः ॥ ६७ ॥ अन्यच्च प्रतिश्लोकम्—एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः ॥ सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः ॥ इत्याद्यंतं पठेत् स्वाभीष्टवरप्राप्तिः ॥ ६८ ॥ अन्यच्च—दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजंतोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ॥ दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥ इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यंतं पठेत् । सर्वापत्तिनिवारणं स्यात् ॥ ६९ ॥ अन्यच्च—ॐ कांसोस्मि तां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलंती तृप्तां, तर्पयंतीम् ॥ पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ इति ऋचं प्रतिश्लोकाद्यंतं पठेत् । लक्ष्मीप्राप्तिः ॥ ७० ॥ अन्यच्च—ॐ अनृणा इत्यादि ऋचं प्रतिश्लोकाद्यंतं पठेत् । ऋणपरिहारः ॥ ७१ ॥ अन्यच्च—ॐ शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधानमुद्गीथरम्यपदपाठवतां च साम्नाम् ॥ देवि त्रयी भगवती भवभावनाय वार्तासि सर्वजगतां परमार्तिहंत्री ॥ इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यंतं पठेत् ॥ सुखप्राप्तौ दारिद्र्यदुःखभयमोचने च ॥ ॥ ७२ ॥ अन्यच्च—सर्वबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः ॥ मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ॥ इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यंतं पठेत् ॥ धनधान्यसुखप्राप्तिः ॥ ७३ ॥ अन्यच्च—या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यंतं पठेत् । मनउत्सवप्राप्तिः ॥ ७४ ॥ अन्यच्च—ॐ धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्माण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति ॥ स्वर्गं प्रयाति च ततो भवतीप्रसादाल्लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन ॥ इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यंतं पठेत् । सकलकर्मसुकृतप्राप्तिः ॥ ७५ ॥ अन्यच्च—ॐ त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यंते च सर्वदा ॥ विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने ॥ इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यंतं पठेत् । सर्वकार्यसिद्धिः ॥ ७६ ॥ अन्यच्च—ॐ देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ॥ प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥ इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यंतं पठेत् । सर्वापन्निवृत्तिः—सर्वकामाप्तिश्च । एषु प्रयोगेषु प्रतिश्लोकं दीपाग्रे नमस्कारकरणे अतिशीघ्रं सिद्धिः॥७७॥ अन्यच्च—ॐ रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान्सकलानभीष्टान्॥त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयांति ॥ इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यंतं पठेत् । सकलरोगनाशः स्यात्॥७८॥ अन्यच्च—सर्व

नाशने–उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान् ॥ तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम ॥ इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यंतं पठेत् । सर्वबाधानाशः स्यात् ॥७९॥ अन्यच्च-मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसंगा ॥ श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा ॥ इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यंतं पठेत् वाक्सिद्धिः ॥ ८० ॥ अन्यच्च स्तवने—ॐ सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ॥ शरण्ये त्र्यंबके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यंतं पठेत् ॥ ८१ ॥ अन्यच्च-भयमोचने–ॐ ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम्॥त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते॥इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यंतं पठेत्॥८२॥ अन्यच्च–दुःस्वप्नपीडापरिहारे–शांतिकर्माणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शने॥ ग्रहपीडासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणुयान्मम ॥ इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यंतं पठेत् ॥८३॥अन्यच्च परप्रयोगशमने–ततो निशुंभः संप्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः ॥ आजघान शरैर्देवि कालीं केसरिणं तथा ॥ इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यंतं पठेत् ॥८४॥ अन्यच्च अपद्वेषनाशने–तयास्माकं वरो दत्तो यथापत्सु स्मृताखिलाः ॥ भवतां नाशयिष्यामि तत्क्षणात्परमापदः॥ इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यंतं पठेत्॥८५॥ अन्यच्च मारणार्थे—ॐ एवमुक्त्वा समुत्पत्य सारूढा तं महासुरम् ॥ पादेनाक्रम्य कंठे च शूलेनैनमताडयत्॥ इति श्लोकं प्रति श्लोकाद्यंतं पठेत्॥८६॥अन्यच्च शत्रुपरिहारे--त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन त्रातं त्वया समर मूर्धनि तेऽपि हत्वा॥नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्तमस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते॥इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यंतं पठेत्॥८७॥ अन्यच्च-शत्रुपराभवार्थे। ॐ या देवीसर्वभूतेषु क्षांतिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यंतं पठेत् ॥८८॥ अन्यच्च-शत्रुमुखस्तंभनं पुत्रप्राप्तिश्च ॥ स्मरन्ममैतच्चरितं नरो मुच्येत संकटात् ॥ मम प्रभावात्सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथा ॥ इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यंतं पठेत् ॥ ८९ ॥ अन्यच्च विषमचित्तशमने—पुनरप्यतिरौद्रेण रूपेण पृथिवीतले ॥ अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांस्तु दानवान् ॥ इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यंतं पठेत् ॥ ९० ॥ अन्यच्च–ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ॥ बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥ इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यंतं पठेत्तवश्यं मोहनं च इत्यनुभवसिद्धम् ॥ ९१ ॥

अन्यच्च-ॐरक्तचामुंडे तुरुतरु अमुकं मे वशमानय स्वाहा। अनेन प्रत्यध्यायमाद्यंतयोः पूजा सर्वांते अयुतं जपः अयुतमंत्रैश्च होमयेत्। कटुतैलेन रक्तचंदनराजिकासहस्राहुतिमंत्रेण राजानं वशमानयेत्। मधुनाशोकपुष्पैश्च रात्रौ हुत्वा तु पूर्ववत् ॥ चक्रवर्ती भवेद्वश्यश्चंडीमंत्रप्रभावतः॥अंते शतं ब्राह्मणाः कुमार्यश्च भोजनीयाः ॥ ९२ ॥ अन्यच्चराजवश्ये—तत्किमेतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि ॥ ममास्य च भवत्येषा विवेकांधस्य मूढता ॥ इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यंतं पठेत् ॥ ९३ ॥ अन्यच्च दुर्जनमोहने-ॐ सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता ॥ मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ ॥ इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यंतं पठेत् ॥ ९४ ॥ अन्यच्च—वैरिमोहने-ॐ सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मक्तये ॥ सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी ॥९५॥ इति श्लोक प्रति श्लोकाद्यंतं पठेत् अन्यच्च-ॐ मम वैरिवशं यतः कान्भोगानुपलप्स्यते ॥ ये ममानुगता नित्यं प्रसादधनभोजनैः॥इति श्लोके प्रतिश्लोकं संपुटिते श्लोकोक्तं फलम् ॥ ९६ ॥ अन्यच्च-ॐ इत्युक्ता सा तदा देवी गंभीरांतः स्मिता जगौ ॥ दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत् ॥ इति प्रतिश्लोकपाठे विद्याप्राप्तिः वाग्वैकृतनाशश्च ॥ ९७ ॥ अन्यच्च मनईप्सिताप्राप्त्यै गतप्रयोगप्राप्त्यै च—परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चंडिका ॥इत्यर्धं पठेत् ॥ ९८ ॥ अन्यच्च देवीसंतोषप्राप्त्यै–स च वैश्यस्तपस्तेपे देवीसूक्तं परं जपन् ॥ तौ तस्मिन्पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्तिं महीमयीम् ॥ इति पठेत् ॥ ९९ ॥ अन्यच्च-प्रतिमंत्रं प्रणव (ॐ) पुटितं जपेत् शीघ्रतरकार्यसिद्धिः। अत्र त्रिमध्वाक्तकमलैर्होमः अत्र विप्रतीर्थतोयैर्वा ब्राह्मणभोजनांते मार्जनं कुर्यात् ॥ १०० ॥ अन्यच्च-माया (ह्रीं) श्री (श्रीं) कामेन (क्लीं) पुटिते सर्वेष्टसिद्धिः ॥ १०१ ॥ अन्यच्च-प्रतिश्लोकं कामबीज (क्लीं) संपुटितस्यैकचत्वारिंशद्दिनानि त्रिरावृत्तौ पुत्रप्राप्तिः एकविंशतिदिनपर्यंतमुक्तरीत्या प्रत्यहं पंचावृत्त्या वशीकरणम् ॥ आकर्षणार्थे द्विचत्वारिंशद्दिनपर्यंतं कामपुटितस्य दशावृत्तिः ॥ १०२ ॥ अन्यच्च-मायाबीज (ह्रीं) पुटितस्य फट्पल्लवसहितस्य त्रिसप्तदिनपर्यंतं त्रयोदशावृत्तौ उच्चाटनसिद्धिः। तादृशस्यैव चतुश्चत्वारिंशद्दिनपर्यंतं सर्वोपद्रवनाशः स्यात्॥१०३॥ अन्यदेकोनपंचाशद्दिनपर्यंतं प्रतिश्लोकम् (श्रीं) इति श्रीबीजसंपुटितस्य पंचदशावृत्तौ लक्ष्मीप्राप्तिः सद्यो मोहन

॥१०४॥ अन्यत् प्रतिश्लोकम्-(मैं) बीजसंपुटितस्य शतावृत्या विद्याप्राप्तिः ॥१०५॥ अन्यच्च-मायादौ कूर्चबीजेन संपुटितस्य सकावशवृत्तो सर्वोपद्रवनाशः स्यात् ॥१०६॥ (कार्यपरत्वेन सप्तशतीस्तोत्रांतर्गतप्रतिश्लोकप्रयोगेणाह) ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीति मशेषजंतोः स्वस्थैः स्मृतामतिमतीव शुभां ददासि॥ दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥ अस्य केवलस्यापि श्लोकस्य कार्यानुसारेण लक्षमयुतं सहस्रं शतं वा जपात् सर्वापत्तिनिव रणं स्यात्॥१॥ अन्यच्च-ततो वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि॥ अत्रैव च निजं राज्यं हतशत्रुबलं बलात्॥ इति मंत्रस्य लक्षजपे पुनः स्वराज्यप्राप्तिः ॥२॥ अन्यच्च-ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जंतोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि। यदंति यच्च दूरके भयं विंदति मामिह। पवमानवितज्जहि। दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥ इति कार्यानुसारेण लक्षमयुतं सहस्रं शतं वा जपात् सर्वापत्तिनिवारणं स्यात् ॥ ३ ॥ अन्यच्च—ॐ भगवत्या कृतं सर्वं न किंचिदवशिष्यते॥ यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः ॥ यदि चापि वरो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि ॥ संस्मृतासंस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः ॥ यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने॥ तस्य वित्तर्धिविभवैर्धनदारादिसंपदाम्॥ वृद्धयेस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदांबिके॥ इति द्वादशोत्तरशताक्षरो मंत्रः सर्वकामदः सर्वापन्निवारणश्च ॥ ४ ॥ अन्यच्च-ॐ देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य॥ प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य॥ इति श्लोकस्य यथाकार्यं लक्षायुतसहस्रशतान्यतमे जपे सर्वापन्निवृत्तिः सर्वकामातिश्च। इति श्लोकेन दीशाग्रे केवलमेव नमस्कारकरणे अतिशीघ्रं सिद्धिः ॥५॥ अन्यच्च-ॐ इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः॥ चकार कोपं शंभुश्च भ्रुकुटीकुटिलाननौ॥ इति श्लोकं त्रिंशत्सहस्रं जपेत्। संपत्समृद्धिर्भवति ॥ ६ ॥ अन्यच्च-ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः॥ नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणता स्म ताम्॥ इति मंत्रेण मासं जपः दशांशेन क्षीरसंयुतैः कमलैर्होमो वा लक्ष्मीप्राप्तिः ॥ ७ ॥ अन्यच्च-ॐ रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान्सकलानभीष्टान्॥ त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयांति॥ इति लक्षं जपेत् रोगनाशः स्यात् ॥८॥ अन्यच्च-

इत्युक्का सा तदा देवी गंभीरांतः स्मिता जगौ॥दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत्॥ इति लक्षं जपेत् विद्याप्राप्तिः वाग्वैकुतनाशश्च ॥ ९ ॥ अन्यच्च—ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् ॥ सा घंटा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव ॥ इत्यनेन सदीपबलिदानं घंटाबंधनेन बालग्रहशांतिः ॥ १० ॥ अन्यच्च—ॐ इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति ॥ तदा तदाऽवतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम् ॥ इति श्लोकस्य लक्षजपे महामारीशांतिः ॥ ११ ॥ अन्यच्च—ॐ सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ॥ एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ॥ इत्यस्य लक्षजपे श्लोकोक्तं फलं सर्वबाधाशमनं च ॥ १२ ॥ अन्यच्च—ॐ एवमुक्त्वा समुत्पात्य सा रूढा तं महासुरम् ॥ पादेनाक्रम्य कंठे च शूलेनैनमताडयत् ॥ इति लक्षं जपेत् मारणोक्तावृत्तिभिः फलसिद्धिः ॥ १३ ॥ अन्यच्च—ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ॥ बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥ इति श्लोकजपमात्रेण सद्यो मोहनमित्यनुभवसिद्धम् ॥ १४ ॥ इति ॥ (दुर्गापाठस्य नव नामानि तल्लक्षणानि च) रहस्योक्तानि नामानि ब्रह्मोक्तानि वदामि ते ॥ महाविद्या महातंत्री चंडी सप्तशतीति च ॥ मृतसंजीवनी नाम पंचमं परिकीर्तितम् ॥ १ ॥ षष्ठं चैव महाचंडी सप्तमं रूपदीपिका ॥ २ ॥ अष्टमं तु चतुःषष्टियोगिनी नवमी परा ॥ एतानि योऽभिजानाति नामानि नृपनंदन ॥ ३ ॥ जपं विना भवेत्तस्य चंडिका वरदा सदा ॥ पूर्वोक्तं नवविद्यानां स्वरूपं तत्र चोदितम् ॥ ४ ॥ आद्याद्वितीयतृतीयचरितानुक्रमेण च ॥ महाविद्या सप्तशती सर्वतंत्रेषु गोपिता ॥ ५ ॥ आद्यंतमध्यचरितं महातंत्रमितीरितम् ॥ आदिमध्यांतचारित्रक्रमाच्चंडीमहामनुः ॥ ६ ॥ मध्यमाद्यंतचारित्रक्रमात्सप्तशतीति च ॥ इत्यादिमध्यचारित्रान्मृतसंजीवनी स्मृता ॥ ७ ॥ अंत्यमध्यादिचारित्रान्महाचंडीति कथ्यते ॥ रूपं देहीति संयोज्य नवार्णमनुना सह ॥ ८ ॥ संपुटत्वेन संयोज्य प्रतिश्लोकं जपेत्तथा ॥ रूपचंडीति सा प्रोक्ता सर्वाभीष्टफलप्रदा ॥ ९ ॥ योगिनीनां चतुःषष्टियोगात्सप्तशतीमनोः ॥ चतुःषष्टीति सा प्रोक्ता योगसिद्धिप्रदायिनी ॥१०॥ पराबीजसमायोगात्पराचंडीति कथ्यते ॥ एवं नवानां भेदानां नामानि च पृथक् पृथक् ॥११॥ (इति नवदुर्गाविधानम्) नवदुर्गालक्षणं यथा—प्रत्येकं तैस्त्रिभिर्बीजै

जयादिनवनामभिः ॥ जयां च विजयां भद्रां भद्रकालीमनंतरम् ॥ १ ॥ सुमुखीं दुर्मुखीं प्रज्ञां पश्चाद् व्याघ्रमुखीं तथा ॥ अथ सिंहमुखीं दुर्गां नवदुर्गां विदुर्बुधाः ॥ २ ॥ एवं ज्ञात्वा सप्तशतीं यो जपेत्सुसमाहितः ॥ तस्य देवी सुप्रसन्ना सर्वाभीष्टप्रदा भवेत् ॥ ३ ॥ अस्य विधानम् । कृतनित्यक्रियः स्वयं चंदनागुरुकुंकुमादिलिप्तांगः सुवस्त्रमाल्याद्यलंकृतः पूजास्थानं गत्वा प्राङ्मुखः स्वासने उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य स्वेष्टदेवीं ध्यात्वा हस्ते कुशजलमादाय देशकालौ संकीर्त्य शुक्लपक्षे प्रतिपदमारभ्य नवमीपर्यंतं नवदुर्गाविधानमहं करिष्ये । इति संकल्प्य देवीं संपूज्य देव्यग्रे शालिपुंजोपरि स्वर्णादिरचितं कुंभं नवतंतुना वेष्टितं चंदनादिचर्चितं सुधूपितं सहिरण्यं वज्रमुक्ता फलपद्मरागनीलमरकतैः पंचरत्नैः समायुक्तं मही द्यौरिति भूमिं स्पृष्ट्वा ओषधयः सामिति मंत्रेण धान्यराशिं स्पृष्ट्वा आजिघ्र कलशमिति कलशं संस्थाप्य इमं मे गंगे इति जलेनापूर्य तत्र कुंकुमागरुकर्पूरचंदनपंकं कुसुमानि च निःक्षिप्य तस्य मुखे आम्रदलानि निधाय तदुपरि नारिकेलफलाढ्यं सतंडुलं–कलशजातीयं पात्रं निधाय पूर्णा दर्वीति[1] मंत्रेण मंत्रयेत् । युवा सुवासा इति रक्तवस्त्रेणावेष्ट्य कुंभस्य दशदिक्षु पूर्वादिक्रमेणेंद्रादिदशदिक्पालान् संपूज्य ततः स्वर्णादिनिर्मितां देवीप्रतिमां ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य आसनमंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा कलशोपरि संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पद्धतिमार्गेण षोडशोपचारैः संपूज्य न्यासादिकं कृत्वा सप्तशतीपाठं नवार्णमंत्रजपं च कुर्यात् । प्रत्यहमेकैकामावृत्तिं पठित्वा दशमे दिवसे वक्ष्यमाणविधिना कुंडादावग्निं संस्थाप्य प्राग्वद्धोमं कृत्वा ब्राह्मणान् कुमारिकाः सुवासिनीश्च पूजाभोजनतांबूलदक्षिणादिभिः परितोष्य प्रणम्य विसृजेत् । अत्रापि स्वयमशक्तश्चेद्ब्राह्मणद्वारा यथोक्तविधिना जपादि कारयित्वा दक्षिणादिभिः परितोषयेदिति । अस्यैव विधानस्य कृष्णपक्षे षष्ठ्यादिचतुर्दश्यंतं क्रियमाणस्य कालरात्रिरिति नाम उक्तम् । तथा च–कृष्णषष्ठीं समारभ्य नवदुर्गाविधानवत् ॥ यो यथा कुरुते जाप्यं कालरात्रिरुदाहृता ॥ ४ ॥ महाकालोद्भवं दुःखं कालरात्रिर्व्यपोहति ॥ नवदुर्गाविधानेऽपि यत्फलं परिकीर्तितम् ॥ काल

---

१ पूर्णादर्वी ।

रात्रिविधानेऽपि तत्फलं लभते ध्रुवम् ॥ २ ॥ इति नवदुर्गाकालरात्रिसंज्ञकनवचंडीविधानं समाप्तम् ॥ (नित्यचंडीविधानम्) ॥ नित्यचंडयादिजाप्यश्च विधानं ते वदाम्यहम् ॥ शुक्लभूतामवष्टभ्य मासं प्रतिदिनं जपेत् ॥ १ ॥ सकृद्रहस्यसंयुक्तं चंडिकाचरितत्रयम् ॥ दशांशहोमसहितं सोच्यते नित्यचंडिका ॥ २ ॥ धनपुत्रयशोदात्री महाव्याधिविनाशिनी ॥ महाभयमहादुःखहंत्री सौख्यप्रदायिनी ॥३॥ अस्य विधानम् । कृतनित्यक्रियः पूजास्थानं गत्वा पूर्वाभिमुखः स्वासने समुपविश्य आचम्य प्राणानायम्य स्वेष्टदेवतां स्मरन् हस्ते कुशजलमादाय देशकालौ संकीर्त्य अमुकराशिगते सवितरि शुक्लपक्षे चतुर्दश्याममुकक्षेत्रे अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहममुकफलाप्तये अद्यारभ्य मासमात्रं नित्यचंडीजपं करिष्ये इति संकल्प्य प्राग्वत्पूजादिकं कृत्वा मूलं जपित्वा देव्या यच्चरितत्रयं नवार्णादिन्यासपूर्वकं रहस्यं सकृज्जपेत् । कवचार्गलाकीलकपूर्वकमपि पठेत् । एवमेकमासं जपित्वा मासानंतरं वक्ष्यमाणविधिना कुंडे स्थंडिले वाग्निं संस्थाप्य सघृतपायसैस्तिलमिश्रैर्मूलमंत्रस्य जपदशांशहोमपुरःसरं वक्ष्यमाणविधिना हुत्वा पूर्णाहुतिं च दद्यात् । ब्राह्मणान् कुमारिकाः सुवासिनीश्च संपूज्य भोजयित्वा तांबूलदक्षिणादिभिः परितोष्य प्रणम्य विसृजेत् । एवं स्वयं कर्तुमशक्तश्चेद्ब्राह्मणद्वारा कारयित्वा तं वस्त्रालंकारादिभिर्दक्षिणाभिर्भूयसीभिः परितोषयेत् । एतत्त्रिगुणितं सर्वं नवदुर्गाजपे फलम् ॥ कथितं तदवाप्नोति नित्यचंडिजपे कृते ॥ १ ॥ इति नित्यमासचंडिविधानम् ॥ (शीघ्रकार्यसिद्धये प्रत्यहं नवचंडिविधानम्) ॥ आदौ अनुलोमं त्रयोदशाध्यायान् पठित्वा पश्चाद्विलोमेन पठित्वा पुनः शापोद्धारवत्पठित्वा एवं क्रमेण प्रत्यहं नवचंडीं कुर्यात् । अल्पकार्ये नवदिनपर्यंतं मध्यमकार्ये एकविंशतिदिनपर्यंतं महाकार्ये त्रयस्त्रिंशद्दिनपर्यंतं मंत्रं सिद्ध्यनंतरं जपेत् । जपांते पायसतिलाज्यमधुपुष्परसजातीपत्रफलयवव्रीहिसितशर्करायुतैर्दशांशेन नवार्णपीठयुतेऽग्नौ जुहुयात् । तद्दशांशेन हरिद्राकुंकुमजलेन संतर्पयेत् । तद्दशांशेन पायसलड्डुकपंचखाद्यैर्भोजयेत् । अत्र मार्जनमेवं कृते शीघ्रकार्यसिद्धिः । इति प्रत्यहं नवचंडिविधानम् ॥ (नवरात्रे वार्षिकनवचंडीविधानम्) ॥ आश्विने शुक्लपक्षे तु कर्तव्यं

१ प्रियालबदरखर्जूरैर्नारिकेलैः सगोस्तनैरिति पंचखाद्यानि ॥

नवरात्रकम् ॥ प्रतिपदादिक्रमेणैव यावच्च नवमी भवेत् ॥ १ ॥ (अमावास्याद्वितीयावेधे नवरात्रं शुभाशुभम्) ॥ यो मां पूजयते नित्यं द्वितीयादिगुणान्विताम् ॥ प्रतिपच्छारदे ज्ञात्वा सोऽश्नुते सुखमव्ययम् ॥ २ ॥ यदि कुर्यादमायुक्तप्रतिपत्स्थापनं मम ॥ तस्य शापायुतं दत्वा भस्मशेषं करोम्यहम् ॥ ३ ॥ तत्र सा पूर्वाह्णव्यापिनी ग्राह्या (अस्य विधानम्) ॥ तत्राश्विनशुक्लप्रातिपदि पूर्वाह्णे तिळतैलेन कृताभ्यंगेन यजमानः साधकः कृतनित्यक्रियः सुसंस्कृते शुभे स्थाने सुरम्ये गृहे तोरणाद्यलंकृते कदलीस्तंभमंडिते सुधूपद्रव्यधूपिते सुदीपप्रकाशाढ्ये स्वासने प्राङ्मुखः समुपविश्याचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थं सकलमनोरथफलावाप्त्यर्थं चतुर्विधपुरुषार्थसिध्यर्थं नवचंडीविधानमहं करिष्ये इति संकल्प्य गणेशपूजनादिकं कृत्वा तस्मिन्गृहे पूर्वस्यां दिशि ॐ गजारूढे कादंबरि देवि इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाह्य काचित्पीठे संस्थाप्य श्रीकादंबरि एष ते गंधः ॥ १ ॥ कादंबरि इमानि ते पुष्पाणि वौषट् ॥२॥ ॐ कादंबरि एष ते धूपो नमः ॐ कादंबरि एष ते दीपो नमः ॥ ४ ॥ तदग्रे पात्रांतरे घृतशर्करासहितं पायसं नानाव्यंजनादिसहितं निधाय ॐ श्रीकादंबरि एष ते बलिर्नमः ॥ ५ ॥ इति बलिमुत्सृज्य क्षमस्वेति प्रणमेत् । तत आग्नेय्याम् ॐ अजवाहने उल्के देवि इहागच्छ इह तिष्ठ इत्युल्कामावाह्य संपूज्य बलिं दद्यात् । दक्षिणे ॐ महिषारूढे करालि देवि इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाह्य संपूज्य बलिं च दद्यात् । नैर्ऋत्ये ॐ प्रेतवाहने रक्ताक्षि देवि इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाह्य संपूज्य बलिं च दद्यात् । पश्चिमे । ॐ श्वेतकौलीरवाहने श्वेतांबरे देवीहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाह संपूज्य बलिं च दद्यात् । वायव्ये । ॐ मृगवाहने हरितां देवि इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाह्य संपूज्य बलिं दद्यात् । उत्तरे ॐ सिंहासने यक्षिणि देवि इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाह्य संपूज्य बलिं च दद्यात् । ईशान्ये ॐ वृषवाहने कंकालि देवि इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाह्य संपूज्य बलिं च दद्यात् । पूर्वेशानयोर्मध्ये ॐ हंसवाहने सुरश्रेष्ठे देवि इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाह्य संपूज्य बलिं च दद्यात् । निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये ॐ अहिवाहने सर्पराज्ञि देवि इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाह्य संपूज्य बलिं च दद्यात् । एवं दशदिक्षु यथाक्रमेणेंद्रादीनपि संपूज्य गृहमंडले स्वशाखोक्त

विधिना नवग्रहान् यथास्थानं संपूजयत् ।ततश्चतुरस्रचतुर्हस्तवेदिकायां सर्वतोभद्रं वाष्टदलं विधाय शालिपुंजोपरि स्वर्णादिरचित कुंभं नवतंतुवेष्टितं चंदनादिचर्चितं सुधूपितं सहिरण्यं वज्रमुक्ताफलपद्मरागनीलमरकतैः पंचरत्नैः समायुक्तं मही द्यौरिति भूमिं स्पृष्ट्वा ओषधयः सामिति मंत्रेण धान्यराशिं स्पृष्ट्वा आजिघ्र कलशम् इति कलशं संस्थाप्य इमं मे गंगे इति जलेनापूर्य तत्र कुंकुमागरुकर्पूर चंदनपंकं कुसुमानि च निक्षिप्य तस्य मुखे आम्रदलानि निधाय तदुपरि नारिकेलफलाढ्यं सतंडुलं कलशजातीयं पात्रं निधाय पूर्णा दर्वीति मंत्रेण मंत्रयेत् ॥ युवा सुवासा इति रक्तवस्त्रेणावेष्ट्य ततः स्वर्णादिनिर्मितं महिषघ्नीदेवीप्रतिमां ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण सम्प्रोक्ष्य आसनमंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा कलशोपरि संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वावाहयेत् । तत्र मंत्रः । एहि दुर्गे महाभागे रक्षार्थं मम सर्वदा ॥ आवाहयाम्यहं देवि सर्वकामार्थसिद्धये ॥ १ ॥ अस्यां मूर्तौ समागच्छ स्थितिं मत्कृपया कुरु ॥ रक्षां कुरु सदा भद्रे विश्वेश्वरि नमोऽस्तु ते ॥२॥ इत्यावाह्य ॐ जयंती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी ॥ दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वधा स्वाहा नमोऽस्तु ते॥ इति मंत्रेण पुष्पाद्यैरुपचारैः संपूज्य नवार्णयंत्रावरणपूजां कृत्वा धूपादिपूजनानंतरं प्रार्थयेत् ॥ ॐ महिषघ्नि महामाये चामुंडे मुंडमालिनि ॥ द्रव्यमारोग्यविजयौ देहि देवि नमः सदा॥१॥ भूतप्रेतपिशाचेभ्यो रक्षोभ्यश्च महेश्वरि ॥ देवेभ्यो मानुषेभ्यश्च भयेभ्यो रक्ष मां सदा ॥ २ ॥ सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ॥ शरण्ये त्र्यंबके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥ रूपं देहि यशो देहि भगं भगवति देहि मे ॥ पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान्कामान् प्रदेहि मे ॥ ३ ॥ इति संप्रार्थ्य

१ आम्रहात् कुरुते यस्तु कलशस्थापनं मम ॥ तस्य सर्वविनाशः स्यात्ज्येष्ठपुत्रो विनश्यति ॥ २ मत्स्यपुराणे–जटाजूटसमायुक्तामर्धेन्दुकृतलक्षणाम् ॥ लोचनत्रयसंयुक्तां पद्मेन्दुसदृशाननाम् ॥ अतसीपुष्पवर्णाभां सुप्रतिष्ठां सुलोचनाम् ॥ नवयौवनसंपन्नां सर्वाभरणभूषिताम् ॥ सुचारुदशनां तद्वत्पीनोन्नतपयोधराम् ॥ त्रिभंगस्थानसंस्थानां महिषासुरमर्दिनीम् ॥ त्रिशूलं दक्षिणे दद्यात् खड्गं चक्रं तथैव च ॥ तीक्ष्णबाणं तथा शक्तिं वामतोऽपि निवेशयेत् ॥ खेटकं पूर्णचापं च पाशमंकुशमूर्ध्वजम् ॥ घण्टां वा परशुं वापि वामतः सन्निवेशयेत् ॥ अधस्तान्महिषं तद्वद्विशिरस्कं प्रदर्शयेत् ॥ शिरश्छेदोद्भवं तद्वद्दानवं खड्गपाणिनम् ॥ हृदि शूलेन निर्भिन्नं निर्यदन्त्रविभूषितम् ॥ रक्तरक्तीकृतांगं च रक्तविस्फुरितेक्षणम् ॥ वेष्टितं नागपाशेन भ्रुकुटीभीषणाननम् ॥ सपाशं वामहस्तेन धृतकेशं च दुर्गया ॥ वमद्रुधिरवक्त्रं च देव्याः सिंहं प्रदर्शयेत् ॥ देव्यास्तु दक्षिणं पादं समं सिंहोपरि स्थितम् ॥ किंचिदूर्ध्वं तथा वामांगुष्ठं महिषोपरि ॥ स्तूयमानं च तद्रूपममरैः सन्निवेशयेत् ।. इतिलक्षणां प्रतिमां कुर्यात् ॥

कृत्वा आदौ नारायणादीन् नमस्कृत्य कवचार्गलाकीलकपूर्वकं चरितत्रयं रहस्यत्रययुतं पठेत् । स्वयमशक्तश्चेद्ब्राह्मणं संपूज्य चंडीपाठार्थं त्वामहं वृणे इति यज्ञसूत्रं बद्ध्वा पूगीफलं सदक्षिणं ब्राह्मणकरे दत्त्वा जापयित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा नमस्कारं च कृत्वा पद्धतिमार्गेण कुमारीपूजनं कुर्यात् । ततो गुरुपूजनं यथावत्कृत्वा ब्राह्मणपूजनं विधाय ब्राह्मणान् भोजयित्वा तांबूलदक्षिणादिभि स्तोषयेत् । एवं प्रतिपत्कृत्यं विधायैवमेव द्वितीयायां द्विगुणं त्रिगुणं तृतीयायां चतुर्गुणं चतुर्थ्यामेकमेकोत्तरवृद्ध्या कुमारीपूजनं ब्राह्मण समाराधनं नवम्यंतं नवम्यां नवगुणं यथा भवति तथा कुर्यात् ॥ ततो नवम्यां कृतजपदशांशहोमः कार्यः । तत्र प्रयोगः नवचंड्यां हस्तमात्रं समंताच्चतुर्विंशत्यंगुलं कुंडं स्थंडिलं वा विधाय तत्र पायसतिलाज्यद्रव्याणि फलपुष्पादिसंभारान् संपाद्य हस्ते कुशजल मादाय देशकालौ संकीर्त्य मया कृतस्य कारितस्य वा जपस्य सांगतासिद्ध्यर्थं दशांशेन तिलाज्यपायसादिद्रव्यैर्होमं करिष्ये । इति संकल्प्य आगमोक्तविधिना पद्धतिमार्गेणाग्निसंस्कारं कृत्वा प्रधानहोमं कुर्यात् । ततः पूर्वोक्तसर्वन्यासान् कृत्वा वह्नौ पीठपूजां कृत्वा देवी मावाह्यावाहनादिमुद्राः प्रदर्श्य षडंगं कृत्वा षोडशोपचारैः संपूज्य मलेन शतमेकादशाधिकमाज्याहुतीर्हुत्वा पायसतिलपलाशपुष्पसर्षप पूगीफललाजदूर्वांकुरयवाबिल्वफलरक्तगुग्गुलद्रव्याणि तिलमिश्रपायसमेव वा कवचार्गलाकीलकरहस्यैः प्रतिश्लोकं हुत्वा जपस्य दशां शेन प्रतिश्लोकं सप्तशतीमंत्रोक्तद्रव्याणि तिलपायसं वा जुहुयात् । अध्यायसमाप्तौ उवाचस्थले च पत्रपुष्पफलैः पद्धतिमार्गेण होमः । इत्यनेन नवार्णेन च जपदशांशतो होमः । इति होमं कृत्वा नामभिः स्रुवेणाज्यं पायसं पद्धतिमार्गेण जुहुयात् । ततः पुनः प्रधानहोमं कृत्वा पद्धतिमार्गेण पूर्णाहुतिं च दद्यात् । ततः कर्मशेषं समाप्य मूलमंत्रेण होमदशांशेन दुग्धमिश्रितजलेन दुग्धेन वा तर्पणं कृत्वा तद्दशांशेन मार्जयेत् । ततः श्रेयःसंपादनं ततः आचार्यादीन् वस्त्राद्यैः संपूज्याचार्याय शतं तदर्धं तदर्धमष्टौ वा गोमिथुनानि सुवर्णचतुष्टयं दद्यात् । ब्राह्मणाय निष्कद्वयं गोद्वयं च दद्यात् । ततः द्वारपालकेभ्योऽन्येभ्यश्च दक्षिणां च दत्त्वा कलशोदकेन यज

१-वित्तशाठ्यं परित्यज्य कुर्यादाचार्यतोषणम् ॥ वस्त्रांगुलीयभूधेनुवाजिहेमप्रदानतः ॥ अशक्तो नित्यमेकं तु दद्यादस्मै प्रयत्नतः ॥

मानं सपरिवारं वेदोक्तमंत्रैः पौराणिकैश्चाभिषिंचेयुः । ततो यजमानो नवग्रहाणामुत्तरपूजां कृत्वा विसृज्य आचार्यहस्ते दत्त्वा देवीं संपूज्य पद्धतिमार्गेण छागादेर्नारिकेलस्य वा पद्धतिमार्गेण बलिं दद्यात् । ततः स्नात्वा तिलकं धृत्वा खड्गिनी शूलिनीत्येकेन शूलेन पाहिनो देवीति चतुष्टयेन नमो देव्यै इति पंचकेन सर्वस्वरूपे इति पंचभिश्च स्तुत्वा नमस्कृत्य पुष्पांजलिं च दत्त्वा प्रार्थयेत् । तत्र मंत्रः । रूपं देहि यशो देहि भगं भगवति देहि मे ॥ पुत्रान्देहि धनं देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे ॥ महिषघ्नि महामाये चामुंडे मुंडमालिनि ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यं देहि देवि नमोऽस्तु ते॥इति संप्रार्थ्य'ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु मे देवि प्रसादात्तव सुंदरि ॥' इति देवीवामकरे जलसमर्पणं कृत्वा मूलेन पुष्पेण देवीमुद्रास्य नासया हृदि प्रतिष्ठां विभाव्य षडंगं कुर्यात् । इति नवरात्रं कृत्वा दशम्यां देवीं विसर्जयेत् । तत्र मंत्रः । ' उत्तिष्ठ देवि चंडेशि शुभां पूजां प्रगृह्य च ॥ कुरुष्व मम कल्याणमष्टभिः शक्तिभिः सह ॥ ' इत्युत्थाप्य " दुर्गे देवि जगन्मातः स्वस्थानं गच्छ पूजिते ॥ संवत्सरे व्यतीते तु पुनरागमनाय वै ॥ इमां पूजां मया देवि यथाशक्त्युपपादिताम् ॥ रक्षार्थं त्वं समादाय व्रज स्वस्थानमुत्तमम् ॥" इति मंत्रेण स्वर्णमयीं प्रतिमामाचार्याय दत्त्वा श्लोकं पठेत् । 'त्रैलोक्यमातर्देवि त्वं सर्वभूतदयान्विते॥दानेनानेन संतुष्टा सुप्रीता वरदा भव'इति पठित्वा मृन्मयमूर्त्यादि सर्वम् उत्तिष्ठ देवि चंडेशीति मंत्रेण उत्थाप्य ' गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं देवि चंडिके ॥ व्रज स्रोतोजलं वृद्ध्यै स्थीयतां च जले त्विह॥' इति जले प्रवाहयेत् । ततोऽग्निं संपूज्य विभूतिं धृत्वा गच्छगच्छेति विसृज्य कृतस्य कर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं यथाशक्ति महालक्ष्मीप्रीत्यर्थं ब्राह्मणान् भोजयिष्ये । इति संकल्प्य'यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या–प्रमादात्कुर्वतां कर्म–इतिश्लोकौ पठित्वा विष्णुस्मरणं कृत्वा पूर्णतां ब्राह्मणैर्वाचयित्वा सर्वं कर्मेश्वरार्पणं कृत्वा सुब्राह्मणान् भोजयित्वा हीनदीनांधकृपणेभ्योऽन्नं दत्त्वा तांबूलदक्षिणादिभिः संतोष्य सुहृद्युतो भुंजीत । तत्फलम्–नवमीतिथिपर्यंतं वृद्धपूजाजपादिकम् ॥ एकाहारं व्रती कुर्यात्सत्यादिनियमैर्युतः ॥ १ ॥ क्रीडंति विविधैर्भोगैर्देवलोके सुदुर्लभे ॥ नाधयो व्याधयस्तेषां न च शत्रुभयं भवेत् ॥ २ ॥ इन्द्रब्रह्मादयो देवास्तामायांति प्रसे

॥ अपुत्रो लभते पुत्रं निर्धनो धनवान् भवेत् ॥ ३ ॥ अविद्यो लभते विद्यां सकामश्च मनोरथान् ॥ व्याधयः संक्षय यांति शत्रवः क्षयमाप्नुयुः ॥ न तस्यास्ति भयं किंचिद्राजचोराग्निवातजम् ॥ इति नवरात्रे वार्षिकनवचंडीविधानम् ॥ (शतचंडीसहस्रचंड्यादिविधानम् ॥) तत्रादौ पूजासामग्री—अशीतिगुंजाप्रमाणा कस्तूरी १, तावन्मानं केसरम् २, तावज्जातीफलम् ३, तावान्कर्पूरः ४, एतच्चतुष्टयं पलमात्रं चंदनेन घर्षयेत् । तेन पलद्वयमनुलेपनं भवति । पलं तु विंशत्युत्तरत्रिशद्गुंजामितम् ५, वस्त्रस्य तु मानानुक्तेः स्त्रीजनपरिधानयोग्यं ग्राह्यम् ६, गद्याणत्रयहेमानिर्मितालंकाराः स्त्रीजनोचिताः, गद्याणमानं तु लौकिकतोलस्यार्धम् ७, पुष्पाणि२५०००—८,पलद्वयमितः गुग्गुलुः९,दीपा विंशतिर्घृतपूरिताः१०,कुंभप्रमाणं घृतं—कुंभस्तु विंशतिद्रोणः, द्रोणस्तु खार्याः खलु षोड शांशः११,कुडवद्वयमात्रं हविष्यान्नभोजनम्१२,नैवेद्यं पलचतुष्कं कुडवः१३,शतद्वयं नागवल्लीदलम्१४,तदनुरूपं पूगीफलादिकं कर्पूरादि च ग्राह्यम् १५, इति संगृह्य पूजामारभेत । तत्र अनावृष्ट्याद्यखिलदुरितशांत्यर्थं राज्यावाप्त्यादिसकलकामनासिद्ध्यर्थं यजमानः शिवालय समीपे सुसमे भूप्रदेशे भूमिं संशोध्य षोडशस्तंभसहितं मंडपं सवितानं चतुर्द्वारं तोरणवेष्टितं कृत्वा दिव्यवस्त्रपट्टदुकूलादिभिर्देवतागारं श्रीगिरिं कृत्वा कदलीस्तंभविराजितं सुमनोहरं पुष्पमालोपशोभितं शतचंड्यां षोडशहस्तं सहस्रचंड्यां विंशतिहस्तं मंडपं प्रसाध्य सर्वदेवो पयोगिपद्धतिमार्गेण स्तंभतोरणादिप्रतिष्ठापूजनं कृत्वा तदाग्नेयस्तंभे वडवागणेशकूर्मशेषवसुधानां पूजां कृत्वा ताम्रपात्रेऽर्घ्यमादाय जानुभ्यामवनीं कृत्वा 'आगच्छ सर्वकल्याणि वसुधे लोकधारिणि ॥ उद्धृतासि वराहेण सशैलवनकानना॥मंडपं कारयाम्यद्य त्वदूर्ध्वं शुभलक्षणम् ॥ गृहाणार्घ्यं मया दत्तं प्रसन्ना शुभदा भव॥'इति भूम्यै अर्घ्यं दत्त्वा मंडपं विधाय आरंभदिने कर्ता सपत्नीकस्तिलतैलेन कृताभ्यंगो भूषितांगः संपूर्णकलशहस्तो भद्रंकर्णेभिरिति मंडपं प्रदक्षिणीकृत्य पश्चिमद्वारेण प्रविश्योपविश्य देशकालौ स्मृत्वा ममामुककामनासिद्ध्यर्थं सनवग्रहमखां शतचंडीं सहस्रचंडीं वा ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये । तदंगतया विहितं गणेशपूजनं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नांदीश्राद्धं चाहं करिष्ये । इति संकल्प्य तानि यथावत्कृत्वा अत्र शतचंडीजपे ऋत्विजो

नवं[1]आचार्यो दशमः सहस्रचंड्यां शतमृत्विजः अष्टौ लोकपालाः सर्वेषां मधुपर्कादिना पूजां कृत्वा पद्धतिमार्गेण वृत्वा वस्त्रद्वयमासनद्वय मेकैकं मर्घ्यपात्रजलपात्रांगुलीयककर्णभूषणादि दद्यात् । आचार्याय तु द्विगुणम्।ततः आचार्यः भूतापसारणमंत्रं पठित्वा सर्षपान् विकीर्य पंचगव्यैः कुशैः आपो हिष्ठेति तृचेन मंडपं प्रोक्ष्य स्वस्त्ययनमिति मंत्रद्वयं पठेत् । ततो मध्यवेद्यां पीठे सुखासने उपविश्य ततः पूजावेद्यां आग्नेय्यां विष्णवे नमः ॥ १ ॥ पूर्वस्यामिन्द्राय नमः ॥ २ ॥ ऐशान्याम् ब्रह्मणे नमः ॥ ३ ॥ पश्चिमे गणेशाय नमः ॥ ४ ॥ वेदीमध्ये महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीभ्यो नमः । इति संपूज्य आचार्य ईशाने ग्रहवेद्यां ग्रहान् संस्थाप्य संपज्य पद्धति मार्गेण आसनादिभूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठांतर्मातृकाबहिर्मातृकादिमूलविद्यान्यासादिकं कृत्वा कलशस्थापनं कुर्यात् । वेदीमध्ये सर्वतोभद्र मंडलं कृत्वा पीठपूजां विधाय पीठदेवताः संस्थाप्य तन्मध्ये हैमरजतताम्रमृन्मयान्यतमं वा कलशं पद्धतिमार्गेण संस्थाप्य रक्तवस्त्रे नवार्णयंत्रं लिखित्वा कलशोपरि स्थापयेत् । ततः शतचंड्यां पलेन सहस्रचंड्यां पंचपलेन तदर्धेन तदर्धार्धेन वा महिषमर्दिनीप्रतिमां कृत्वा अग्न्युत्तारणप्रतिष्ठापूर्वकमासनमंत्रेणासनं दत्त्वा तस्मिन्कलशे यंत्रमध्ये स्थापयित्वा पद्धतिमार्गेण पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य आवरणपूजां च कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य गणेशवटुकक्षेत्रपालयोगिनीभ्यो बलिं दत्त्वा भूतबलिं दद्यात् । तद्यथा—ॐ सर्वे
पीठोपपीठानि द्वारोपस्तरणेऽपि च ॥ क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंदोहाः सर्वे दिग्भागसंस्थिताः ॥ १ ॥ योगिनीयोगवीरेन्द्राः सर्वे यंत्रसमागताः ॥
नगरे त्वथ वा ग्रामे अटव्यां सरितस्तटे ॥ २ ॥ वापीकूपेषु वृक्षेषु श्मशाने च चतुष्पथे ॥ नानारूपधरा ये च वटुरूपधराश्च ये ॥
॥ ३ ॥ सर्वे तत्रैव संतुष्टा बलिं गृह्णंतु मे सदा ॥ शरणागतोऽस्म्यहं तेषां ते सर्वे मे सुखप्रदाः ॥ ४ ॥ बलिदानेन संतुष्टाः प्रयच्छंतु
ममेप्सितम् ॥सर्वकार्याणि कुर्वंतु दोषांश्च घ्नंतु मे सदा ॥ ५ ॥ इति सर्वेभ्यो बलिं दद्यात् । ततः कुमार्यः प्रत्यहं शतं नव वा पूज्याः ।

[1] देवीरहस्यतन्त्रे—नवभिर्ब्राह्मणैः सार्धं कृत्वाचार्यो द्विजोत्तमः ॥ ददाति नव विप्रेभ्य आचार्यश्चंडिकामयः ॥ क्रोडतन्त्रे-अयुग्मब्राह्मणैः कार्या शतावृत्तिः सुसिद्धये ॥ देवी पठनं युग्मविप्रकृतं तु यत् ॥ निष्फलं च भवेत्सर्वं भूतिनाशः प्रजायते ॥ मन्त्रमहोदधौ—स्नात्वा नित्यकृतिं कृत्वा वृणुयाद्दशवाडवान् ॥ तेनाचार्यसमेतेन क्रम एष मनीषिणाम् ॥ माहात्म्यं रुद्रयामले-आचार्येण समं विप्रान्वरयेद्दश सुव्रतान् ॥ इति बोध्यम् ॥ [2] मूर्तिं देव्याः प्रकुर्वीत सुवर्णस्य पलेन वै ॥ तदर्धेन तदर्धेन तदर्धेन महामते ॥

सुवासिनीपूजनं च विधाय द्वितीयदिने द्विगुणं तृतीयदिने त्रिगुणं चतुर्थे चतुर्गुणमिति शतचंड्यां कृत्वा सहस्रचंड्यां दशोत्तरां वृद्धिं कुर्यात् । पूजां देव्यै समर्प्य सर्वे विप्राः कृतांगन्यासाः शतं नवार्णवमंत्रं कवचार्गलाकीलकानि च सकृज्जपित्वांते रहस्यानि नवार्णं शतं जपेयुः । कवचादीनां प्रत्यावृत्तौ नावृत्तिः। एवं प्रथमे एकावृत्तिः द्वितीये द्वितीयावृत्तिः तृतीये तृतीयावृत्तिः चतुर्थे चतुर्थावृत्तिः। एवं शतसहस्रावृत्तयः सम्पद्यंते । नित्यक्षीरान्नभोजनमशक्तौ हविष्यान्नं सर्वेषां प्रत्यहं शतं सहस्रं वा ब्राह्मणान् भोजयेत् । एवं चतुर्दिनपर्यंतं कृत्वा पंचमेऽह्नि होमं कुर्य्यात् । तद्यथा—मंडपमध्ये ऐशान्यां हस्तमात्रं त्र्यंगुलवप्रां गृहवेदीं कृत्वा तत्पश्चिमे च शतचंड्यां द्विहस्तं सहस्रचंड्यां चतुर्हस्तं कुंडं स्थंडिलं वा चतुरस्रं पद्मकुंडं वा कुर्यात् । वेदीमध्ये ब्रह्माणम् १ उत्तरादिषु सोमादीन् वायुसोममध्यादिक्रमेण अपः १ वसून् २ रुद्रान् ३ द्वादशादित्यान् ४ यक्षान् ५ सर्पान् ६ अप्सरसः ७ गंधर्वान् ८ ब्रह्मसोममध्ये कुमारम् १ ऋषभम् २ अदितिम् ३ ब्रह्मेंद्रयोर्मध्ये दुर्गाम् १ विष्णुम् २ ब्रह्माग्निमध्ये सुधाम् १ ब्रह्मयममध्ये मृत्युम् १ रोगम् २ ब्रह्मनिर्ऋतिमध्ये गणपतिम् १ ब्रह्मवरुणमध्ये अपः १ ब्रह्मवायमध्ये मरुतः १ ब्रह्मपादमूले भमिम् १ तत्रैव गंगादिनदीः धाम्नो धाम्न इति सप्तसागरान् बहिः सोमादिसन्निधौ क्रमेण गदाम् १ त्रिशूलम् २ वज्रम् ३ शक्तिम् ४ दंडम् ५ खड्गम् ६ पाशम् ७ अंकुशम् ८ पुनरुत्तरादिषु गौतमम् १ भरद्वाजम् २ विश्वामित्रम् ३ कश्यपम् ४ जमदग्निम् ५ वशिष्ठम् ६ अत्रिम् ७ अरुंधतीं च पूर्वादिषु ऐंद्रीम् १ कौमारीम् २ ब्राह्मीम् ३ बाराहीम् ४ चामुंडाम् ५ वैष्णवीम् ६ माहेश्वरीम् ७ वैनायकीम् ८ चावाह्य संपूज्य बलिं दत्वा अग्निस्थापनं कृत्वा प्रधानहोमं समाप्य कवचार्गलाकीलकरहस्यैः प्रतिश्लोकं हुत्वा जपदशांशतो मूलेन जुहुयात् । नवरात्रे तु नवम्यामेव

१ मन्त्रमहोदधौ–एवं चतुर्दिनं कृत्वा पञ्चमे होममाचरेत् ॥ रुद्रयामले–एकं द्वे त्रीणि चत्वारि जपेद्दिनचतुष्टयम् ॥ पञ्चमे दिवसे प्राप्ते होमं कुर्याद्विधानतः ॥ क्रोडतन्त्रे–त्रिपञ्चसप्तभिर्वापि नवैकादशभिस्तथा ॥ अदीर्घदिवसैः क्षिप्रं विहय्याच्चंडिकामखम् ॥ इति वचनात् ॥ २ पायसान्नेस्त्रिमध्वाक्तैर्द्राक्षारंभाफलैरपि ॥ मातुलिंगैरिक्षुदण्डैर्नारिकेलैः सुरस्तिलैः ॥ जातीफलैराम्रफलैरन्यैर्मधुरवस्तुभिः सप्तशत्या दशावृत्त्या प्रतिश्लोकेन वै हुनेत् ॥ अयुतं नवार्णमन्त्रे होमः रुद्रयामले । शर्करा पायसं दूर्वास्तिलाञ्छुक्लान्यवानपि ॥ चंडीपाठस्य होमे तु प्रतिश्लोके दशांशः ॥ इति होमयेत् ॥

होमः। होमस्तु पद्धतिमार्गेण विधिना कुर्यात्।पूजास्विष्टकृतादि सर्वं तद्वत्कुर्यात्।एतद्दशगुणो विधियुतचंड्यामेतद्दशगुणो विधिर्लक्षचंड्यां शतब्राह्मणैरेव वा चत्वारिंशद्दिनैरयुतचंडी कार्या। तत्र प्रथमदिने एकैवावृत्तिः द्वितीयदिने द्वे तृतीये तिस्रः चतुर्थे चतस्रः तैरेव चतुःशतदिनैर्वा लक्षचंडीत्यादि बोध्यम्। तथाच—निष्कं सुवर्णमथवा प्रत्येकं दक्षिणां दिशेत् ॥ भोजयेच्च शतं विप्रान्भक्ष्यभोज्यैः पृथग्विधैः ॥१॥ सुघोरायामनावृष्ट्यां भूकंपे च सुदारुणे ॥ परचक्रभये तीव्रे क्षयरोग उपस्थिते ॥ १ ॥ राजवश्यादिकार्येषु आयुष्मत्सुतजन्मनि ॥ महोत्पातविनाशाय पंचविंशतियोजने ॥ २ ॥ देशे सर्वत्र शांत्यर्थं शतचंडीमिमां जपेत् ॥ क्रोडतंत्रे—यदायदा सतां हानिरात्मनो ग्लानिरेव च ॥ ३ ॥ तदा कार्या शतावृत्ती रिपुघ्ना भूतिवर्धिनी ॥ दुःस्वप्नदर्शने घोरे महामारीसमुद्भवे ॥ ४ ॥ वृष्टिप्रदा शतावृत्तिः कार्या चायुःक्षये तथा ॥ महाभये च्छेदयोगे दुर्भिक्षे मरणेऽपि च ॥ ५ ॥ कुर्यात्तत्र शतावृत्तिं देवीमाहात्म्यकस्य हि ॥ अद्भुते च समुत्पन्ने बांधवानां महोत्सवे ॥ ६ ॥ कुर्याच्चंडीशतावृत्तिं सर्वसंपत्तिकारणम् ॥ शतावृत्त्या भवेदायुः शतावृत्त्या समागमः ॥ ॥ ७ ॥ वश्या भवंति राजानः श्रियमाप्नोति संपदः ॥ धनार्थी प्राप्नुयादर्थं पुत्रकामो लभेत्सुतम् ॥ ८ ॥ विद्यार्थी प्राप्नुयाद्विद्यां रोगी रोगात्प्रमुच्यते ॥ चतुर्वर्गफलावाप्तिकारणं रिपुनाशनम् ॥९॥ चंडीशतावृत्तिफलं नास्ति यज्ञे वरानने ॥ शताश्वमेधगोमेधवाजपेयफलप्रदा ॥१०॥ यतः किं बहुनोक्तेन चंडीपाठफलं प्रिये ॥ प्रत्येकावर्तनं देवि हयमेधेन संमितम् ॥११॥ त्रिरावृत्त्या व्रजेत्कामान् पंचवृत्त्या रिपूञ्जयेत् ॥ १२ ॥ मंत्रमहोदधौ—नृपोपद्रव आपन्ने दुर्भिक्षे भूमिकंपने ॥ अतिवृष्ट्यामनावृष्टौ परचक्रभये क्षये ॥ १३ ॥ सर्वे विघ्ना विनश्यंति शतचंडीविधौ कृते ॥ रोगाणां वैरिणां नाशो धनपुत्रसमृद्धयः ॥१४॥ शंकरस्य भवान्या वा प्रसादान्निकटे शुभम् ॥ एवं कृते जगद्वश्यं सर्वे नश्यंत्युपद्रवाः ॥ १५ ॥ राज्यं धनं यशः पुत्रानिष्टमन्यल्लभेत सः ॥ रुद्रयामले—सहस्रचंडीविषये । सहस्रचंडीं विधिवच्छृणु विष्णो महामते ॥ राज्यभ्रंशो ह्यकस्माच्चेजनमारे महाभये ॥ १६ ॥ गजमारेऽश्वमारे च परचक्रभये तथा ॥ इत्यादि विविधे

दुःखे क्षयरोगादिजे भये ॥ १७ ॥ सहस्रं चंडिकापाठं कुर्याद्वा कारयेत्तथा ॥ जापकास्तु शतं प्रोक्ता विंशद्धस्तस्तु मंडपः ॥ १८ ॥ भोज्याः सहस्रं विप्रेन्द्रा गोशतं दक्षिणां दिशेत् ॥ गुरवे द्विगुणं देयं शय्यादानं तथैव च ॥ १९ ॥ सप्तधान्यं च भूदानं श्वेताश्वश्च मनोहरः॥पंचनिष्कमिता मूर्तिः कर्तव्या वर्धमानतः ॥२०॥अष्टादशभुजां देवीं सर्वायुधविभूषिताम् ॥ अन्नं वारि च दातव्यं सहस्रं प्रत्यहं विभो ॥२१॥ शतं वा नियताहारः पयोमानेन वर्तयेत् ॥ एवं यश्चंडिकापाठं सहस्रं तु समाचरेत् ॥२२॥ तस्य स्यात्कार्यसिद्धिस्तु नात्र कार्या विचारणा॥२३॥इत्येष पटलो दिव्यो मंत्रसर्वस्व रूपवान्॥ दुर्गारहस्यभूतोऽपि गोपनीयो मुमुक्षुभिः॥२४॥इति दुर्गापटलः समाप्तः१

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ दुर्गापूजापद्धतिप्रारंभः ॥ तत्रादौ दुर्गापूजामाहात्म्यमुक्तं च पाद्मे सृष्टिखंडे ॥ भीष्म उवाच ॥ चंडिकानुग्रहाद्दैत्या गताः शिष्टा रसातलम् ॥ तद्वदस्व महाप्राज्ञ चंडिकापूजने फलम् ॥ १ ॥ यथा संपूज्यते देवी तुष्टा यच्छति यत्फलम् ॥ श्रोतुं कौतूहलं मेऽद्य तद्वदस्व सविस्तरम् ॥ २ ॥ पुलस्त्य उवाच ॥ शृणुष्व नृपशार्दूल चंडिकापूजने फलम् ॥ यत्कृत्वा स्वर्गभुङ् मर्त्यः पश्चान्मोक्षं व्रजेद्ध्रुवम् ॥ ३ ॥ यत्पूजने फलं देव्या न तत्क्रतुशतैरपि ॥ लभ्यते नितरां तात तीर्थदानव्रतादिभिः ॥ ४ ॥ चंडिकां पूजयेद्भक्त्या यो नरः प्रत्यहं नृप ॥ न क्षमस्तत्फलं वक्तुं साक्षाद्देवः पितामहः ॥ ५ ॥ अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च ॥ चंडिकापूजनस्यैव लक्षांशेनापि नो समः ॥ ६ ॥ स दाता स मुनिर्यष्टा स तपस्वी स तीर्थपः ॥ यः सदा पूजयेद्दुर्गां नानापुष्पानुलेपनैः ॥ ७ ॥ धूपैर्दीपैस्तथा भोज्यैः प्रणमेद्वापि भावनीम् ॥ स योगी स मुनिः श्रीमांस्तस्य मुक्तिः करे स्थिता ॥ ८ ॥ वर्षमेकं तु यो दुर्गां पूजयेद्विजितेंद्रियः ॥ एकाहारो महाबाहो सोऽग्निष्टोमफलं लभेत् ॥ ९ ॥ पौर्णमास्यां नवम्यां च अष्टम्यां च नराधिप ॥ स्नापयित्वा शुभां दुर्गां वाजपेयफलं लभेत् ॥ १० ॥ शुक्लपक्षे नवम्यां तु अष्टम्यां परमेश्वरीम् ॥ त्रिकालं पूजयेद्यस्तु चतुर्दश्यां नराधिप ॥ ११ ॥ स गच्छति परं स्थानं यत्र देवी व्यवस्थिता ॥ क्रीडित्वा सुचिरं कालं राजा भवति भूतले ॥ १२ ॥ नवम्यां सोपवासस्तु यः पूजयति चंडिकाम् ॥ दशानामश्वमेधानां फलं प्राप्नोति मानवः ॥ १३ ॥ जितेन्द्रियो ब्रह्मचारी शुचिर्भूत्वा तु

यो नरः ॥ चंडिकां पूजयेद्भक्त्या स याति परमां गतिम् ॥ १४ ॥ स्नानोपवासनियमैः पूजाजागरमार्जनैः ॥ सर्वकालेषु सर्वेषु चंडिकां
यः प्रपूजयेत् ॥ १५ ॥ विमानवरमारुह्य ध्वजमालाकुलं नृप ॥ ब्रह्मलोकं नरो गत्वा मोदते शाश्वतीः समाः ॥ १६ ॥ तस्मा
त्सर्वप्रयत्नेन यथाविभवविस्तरैः ॥ पूजयेत्सततं दुर्गां महापुण्यफलेच्छया ॥ १७ ॥ अयने विषुवे चैव षडशीतिमुखे नृप ॥ मासे
श्चतुर्भिर्यत्पुण्यं विधिना पूज्य चंडिकाम् ॥ १८ ॥ तत्फलं लभते वीर नवम्यां कार्तिकस्य तु ॥ मासि चाश्वयुजे वीर शुक्लपक्षे त्रिशूलि
नीम् ॥ १९ ॥ नवम्यां पूजयेद्यस्तु तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ अश्वमेधसहस्रस्य राजसूयशतस्य च ॥ २० ॥ तत्फलं लभते वीर
दिवि देवगणैर्वृतः ॥ मासिमासि नरो भक्त्या पूजयेद्यस्तु चंडिकाम् ॥ २१ ॥ व्रजेत्षाण्मासिकं पुण्यं नवम्यां तु न संशयः ॥ मेरु
पर्वततुल्योऽपि राशिः पापस्य कर्मणः ॥ २२ ॥ चंडिकावैद्यमासाद्य नश्यते दुष्टरोगवत् ॥ दुर्गार्चने रतो नित्यं महापातकसंभवैः
॥ २३ ॥ दोषैर्न लिप्यते वीर पद्मपत्रमिवांभसा ॥ छित्त्वा भित्त्वा च भूतानि हत्वा सर्वमिदं जगत् ॥ २४ ॥ प्रणम्य शिरसा देवीं
न स पापैर्विलिप्यते ॥ सर्वावस्थां गतो वापि युक्तो वा सर्वपातकैः ॥ २५ ॥ दुर्गां दृष्ट्वा नरः सोऽपि प्रयाति परमं पदम् ॥ स्वपंस्तिष्ठ
न्व्रजन् मार्गे प्रलपन्भोजने रतः ॥ २६ ॥ स्मरते सततं दुर्गां स च मुच्येत बंधनात् ॥ न तद्देशे तु दुर्भिक्षं न च दुःखं प्रवर्तते ॥ २७ ॥
न कश्चिन्म्रियते राजन्पूज्यते यत्र चंडिका ॥ यो दुर्गां पूजयेन्नित्यं श्वपचो वा जितेंद्रियः ॥ २८ ॥ भावेन च समायुक्तः सोऽपि
याति परां गतिम् ॥ पूजयित्वा तु तां भक्त्या श्रद्धया सर्वमंगलाम् ॥ २९ ॥ प्रयाति परमं स्थानं यत्र सा सर्वमंगला ॥ व्रताभिषेकं
यः कुर्यादहोरात्रं नराधिपः ॥ ३० ॥ सूक्ष्मधारेण ताम्रेण भगवत्या विचक्षणः ॥ मासि चाश्वयुजे वीर सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ३१ ॥
कार्तिके पौर्णमास्यां यः सोपवासोऽर्चयेदुमाम् ॥ सोऽग्निष्टोमफलं विंदेत्सूर्यलोकं च गच्छति ॥ ३२ ॥ आषाढे पौर्णमास्यां तु योऽर्चये
दंबिकां नरः ॥ सोपवासो महाभागः स याति परमां गतिम् ॥ ३३ ॥ पौर्णमास्यां तु यो माघे पूजयेद्विधिवच्छिवाम् ॥ सोऽश्वमेध
मवाप्नोति विष्णुलोके महीयते ॥ ३४ ॥ अयने दक्षिणे यस्तु पूजयेदंबिकां नृप ॥ सकृद्गंधोदकैश्चैव गंधर्वसदने वसेत् ॥ ३५ ॥ पं

गव्येन तूक्षित्वा पंचचूडाचलं व्रजेत् ॥ आपः क्षीरं कुशाग्राणि तंडुला हविरक्षताः ॥ ३६ ॥ सह सिद्धार्थका दूर्वा कुंकुमं रोचना
मधु ॥ अर्घोऽयं कुरुशार्दूल द्वादशांग उदाहृतः ॥ ३७ ॥ अनेन पूजयेद्यस्तु स याति परमं पदम् ॥ दारवेणार्घपात्रेण दत्त्वाऽर्घ्यं विधिव
न्नृप ॥ ३८ ॥ देव्यै तदा महाराज अग्निष्टोमफलं व्रजेत् ॥ अब्दमेकशतं दिव्यं शक्रलोके महीयते ॥ ३९ ॥ गंधानुलेपनं कृत्वा
ज्योतिष्टोमफलं व्रजेत् ॥ चंदनेनावलिप्यार्यामग्निष्टोमफलं व्रजेत् ॥ ४० ॥ विलिप्य कृष्णागरुणा वाजपेयफलं भजेत् ॥ कुंकुमेन
विलिप्यार्यां गोसहस्रफलं भजेत् ॥ ४१ ॥ चंदनागुरुकर्पूरैः सूक्ष्मपत्रैः सकुंकुमैः ॥ दुर्गामालिप्य विधिवत्कल्पकोटिं वसेद्दिवि ॥ ४२ ॥
अग्निहोत्रपरे विप्रे वेदवेदांगपारगे ॥ सुवर्णानां सुवर्णानां शते दत्ते यत्फलम् ॥ ४३ ॥ तत्फलं लभते राजन्पूजयित्वा तु चंडि
काम् ॥ मालया बिल्वपत्राणां नवम्यां च पुरेण च ॥ ४४ ॥ मालाद्वयेन संपूज्य दुर्गां देवीं नराधिप ॥ बिल्ववृक्षस्य पुष्पैश्च
राजसूयफलं भजेत् ॥ ४५ ॥ करवीरस्य स्रग्भिश्च पूजयेद्यस्तु चंडिकाम् ॥ वाजपेयस्य यज्ञस्य फलं प्राप्नोति मानवः ॥ ४६ ॥
द्रोणपुष्पसुस्रग्भिस्तु पजयेद्यस्तु चंडिकाम् ॥ राजसूयफलं प्राप्य स्वर्गलोके महीयते ॥ ४७ ॥ पूजयित्वा तु राजेंद्र श्रद्धया विधि
पूर्वकम् ॥ अन्यपुष्पस्य मालाभिः पितृलोके महीयते ॥ ४८ ॥ शमीपुष्पस्य मालाभिस्त्वार्यां संपूज्य भक्तितः ॥ गोसहस्रफलं लब्ध्वा
विष्णुलोके महीयते ॥ ४९ ॥ सर्वेषामेव पुष्पाणां प्रवरं नीलमुत्पलम् ॥ नीलोत्पलसहस्रेण यस्तु मालां प्रयच्छति ॥ ५० ॥ दुर्गायै
विधिवद्वीर तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ वर्षकोटिसहस्राणि वर्षकोटिशतानि च ॥ ५१ ॥ दिव्यमूर्तिधरो भूत्वा रुद्रलोके महीयते ॥ सर्वासां
पुष्पजातीनां यत्फलं परिकीर्तितम् ॥ ५२ ॥ तस्माच्छतगुणं प्राप्य दुर्गालोके महीयते ॥ नीलोत्पलस्रजां देवीं पूजयेद्यस्तु चंडिकाम्
॥ ५३ ॥ वाजपेयफलं प्राप्य रुद्रलोके महीयते ॥ अलाभे पुष्पजातीनां पत्राण्यपि निवेदयेत् ॥ ५४ ॥ पत्राणामप्यलाभे तु ओष
धीस्तु निवेदयेत् ॥ ओषधीनामलाभे तु भक्त्या भगवती जिता ॥ ५५ ॥ प्रत्येकमुक्तपुष्पेषु कुशेष्वपि फलं नृप ॥ आंगिरसेषु तेष्वेव
द्विगुणं कांचनस्य तु ॥ ५६ ॥ मल्लिकामुत्पलं पत्रं शमीपुन्नागचंपकम् ॥ कर्णिकारमशोकं च द्रोणपुष्पं विशेषतः ॥ ५७ ॥ चंदनं

च जपापुष्पं नागकेसरमेव च ॥ यः प्रयच्छति पुण्यात्मा पुष्पाण्येतानि भावतः ॥ ५८ ॥ चंडिकायै नरश्रेष्ठः स च प्रोक्तफलं भजेत् ॥ संप्राप्य कालाद्राजत्वं चंडिकानुचरो भवेत् ॥ ५९ ॥ पद्माकृतिं च यः कुर्यान्मंडलं चंडिकागृहे ॥ स ब्रह्मणः पुरं गत्वा मोदते ब्रह्मणा सह ॥ ६० ॥ शंखवर्णं तु यः कुर्यान्मंडलं विधिवन्नृप ॥ स दिव्यं यानमारुह्य चंद्रलोकमवाप्नुयात् ॥ ६१ ॥ नानावर्णेन चूर्णेन कृत्वा मंडलमुत्तमम् ॥ गत्वा माहेश्वरीलोकं मोदते शाश्वतीः समाः ॥ ६२ ॥ वज्राकृतिं वज्रचूर्णैर्यः कुर्यान्मंडलं नृप ॥ ऐरावतं समारूढ इंद्राणीलोकमाप्नुयात् ॥ ६३ ॥ यः करोति नरो भक्त्या दुर्गायाः पुरतो महत् ॥ श्वेतकृष्णैः सितैर्वर्णैः श्रीवत्सांकितमुत्तमम् ॥ ६४ ॥ मंडलं स नरो वीर विमानवरमाश्रितः ॥ सेव्यमानोऽप्सरोव्रातैर्व्रजेच्छ्रीलोकमुत्तमम् ॥ ६५ ॥ यः करोति नरो भक्त्या मंडलं चाम्बिकान्वितम् ॥ रमते किन्नरैः सार्धं यावदाभूतसंप्लवम् ॥ ६६ ॥ चक्रैर्वा शतशाखैस्तु क्षीरवृक्षसमुद्भवैः ॥ हेमजैश्चापि कलशैर्जलक्षीरघृतान्वितैः ॥ ६७ ॥ अनेकवर्णसंयुक्तैरक्षतैर्नीरतंडुलैः ॥ यः करोति नरो भक्त्या चक्राकारं तु मंडलम् ॥ ६८ ॥ चंडिकायाः पुरो राजञ्जलजैः स्थलसंभवैः ॥ पत्रैः पुष्पैर्यथालाभं सर्वर्तुभूद्भवैः शुभैः ॥ ६९ ॥ वन्यानां सर्वपत्रैश्च पुष्पैश्चैव प्रपूजयेत् ॥ शुभं वाप्यशुभं वापि फलं पुष्पं निवेदयेत् ॥ ७० ॥ भक्त्या युतो नरः सर्वं स च देवत्वमाप्नुयात् ॥ नानापुष्पस्य मालाभिर्मंडपं चंडिकोपरि ॥ ७१ ॥ यः कुर्याद्विधिवद्भक्त्या विष्णुलोके महीयते ॥ कुर्यात्पुष्पगृहं भक्त्या विधिवच्चंडिकोपरि ॥ ७२ ॥ नवम्यां पूर्वकाले वा विचित्रकुसुमोज्ज्वलम् ॥ विमानवरमारुह्य पुष्पदामोपशोभितम् ॥ ७३ ॥ अक्षयं मोदते कालं चंडिकालयमाश्रितः ॥ पूजाविभक्तविन्यासरचनादिषु सर्वतः ॥ फलमेव समासेन ज्ञेयं विज्ञानुसारतः ॥ ७४ ॥ घृतपिष्टप्रदीपाद्यैर्घृतमिश्रितपल्लवैः ॥ ओषधीभिश्च मेध्याभिः सर्वबीजैर्यवादिभिः ॥ ७५ ॥ नवम्यां सर्वकाले तु यात्राकाले विशेषतः ॥ यः कुर्याच्छ्रद्धया वीर दिव्यं नीराजनं नरः ॥ ७६ ॥ शंखभेर्यादिनिर्घोषैर्महद्भिर्देवनादितैः ॥ जयशब्दैः पुष्कलैश्च शिवलोकं स गच्छति ॥ ७७ ॥ लवणेनाक्षतैः कृत्वा देवीनीराजनं परम् ॥ तावत्कल्पसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते ॥ ७८ ॥ सुवर्णरौप्यवर्णैश्च कृत्वा नीराजनं नरः ॥ भगवत्यै महाराज

ब्रह्मलोके महीयते ॥ ७९ ॥ त्रिकालं यो नरः कुर्याद्दुर्गायाः पुरतो नृप ॥ नृत्यं गीतं च वादित्रं तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ ८०
यावंत्यब्दानि कुरुते गीतं नृत्यं च वादितम् ॥ तावत्कल्पान्हि राजेंद्र देवीलोके सुखं वसेत् ॥ ८१ ॥ एकाहमपि यो भक्त्या पंचगव्येन
चंडिकाम् ॥ स्नापयेन्नृपशार्दूल स गच्छेत्सुरभीपुरम् ॥ ८२ ॥ कपिलापंचगव्येन घृतक्षीरयुतेन च ॥ स्नानं शतगुणं
प्रोक्तमितरेभ्यो नराधिप ॥ ८३ ॥ वर्षैश्च षट्सहस्राणां पापानां समुपार्जनम् ॥ तत्सर्वं विलयं याति तोयेन लवणं
यथा ॥ ८४ ॥ घृताभ्यंगने देव्यास्तु कृतेन विधिवन्नृप ॥ तस्मादभ्यंजयेद्भक्त्या नित्यं भगवतीं नृप ॥ ८५ ॥
नवम्यां शुक्लपक्षे तु विधिवच्चंडिकां नृप ॥ घृतेन स्नापयेद्यस्तु तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ ८६ ॥ दश पूर्वान्दश परानात्मानं च विशेषतः ॥
भवार्णवात्समुद्धृत्य दुर्गालोके महीयते ॥ ८७ ॥ क्षीराद्यैः स्नापयेद्यस्तु श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ॥ चंडिकां स नरो याति गोलोकं तमसः
परम् ॥ ८८ ॥ चंडिकां स्नापयेद्यस्तु नरश्चेक्षुरसेन च ॥ सौपर्णकेन यानेन विष्णुना सह मोदते ॥ ८९ ॥ यो नरः स्नापयेद्दुर्गां
श्रद्धया हेमवारिणा ॥ सौवर्णं यानमारूढो मोदते पुरुषैर्दिवि ॥ ९० ॥ रक्तोदकेन विधिवत्स्नापयेच्छ्रद्धयान्वितः ॥ चंडिकां स नरः
पूर्वैर्विष्णुलोके महीयते ॥ ९१ ॥ स्नापयेद्य उमां देवीं नरः कर्पूरवारिणा ॥ सौवर्णयानमारूढः स गच्छेद्यत्र चंडिका ॥ ९२ ॥
चंडिकां स्नापयित्वा तु श्रद्धयाऽगुरुवारिणा ॥ इन्द्रलोकं समासाद्य क्रीडते सह किन्नरैः ॥ ९३ ॥ पितॄनुद्दिश्य यो दुर्गां मधुना पायसेन
च ॥ स्नापयेद्विधिवद्भक्त्या तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ ९४ ॥ तृप्ता भवंति पितरस्तस्य वर्षशतद्वयम् ॥ य एवं स्नापयेन्नित्यं स्नानद्रव्यै
र्नराधिप ॥ ९५ ॥ युगपद्विधिवद्वीर तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ अश्वमेधसहस्रस्य राजसूयशतस्य च ॥ ९६ ॥ अग्निष्टोमस्य यज्ञस्य
स फलं विंदते नरः ॥ स्नापयित्वा नरस्ताम्रैर्वाजपेयफलं व्रजेत् ॥ ९७ ॥ सौवर्णैः स्नापयित्वा च चंडिकां कलशैर्नृप ॥ अश्वमेधफलं
प्राप्य ब्रह्मलोके महीयते ॥ ९८ ॥ घृतस्नातां तथा दुर्गां समुद्वर्तयते तु यः ॥ यवगोधूमजैश्चूर्णैर्घर्षयेच्छर्करेण च ॥ ९९ ॥ घृतेन
पयसा दध्ना स्नापयेच्चंडिकां ततः ॥ बिल्वपत्रैः सुगंधाढ्यैर्घर्षयेद्यत्नतः पुमान् ॥ १०० ॥ गोसहस्रशते दत्ते यत्फलं पुष्करे स्मृतम् ॥

तत्फलं लभते वीर देव्या उद्वर्तने कृते ॥ १०१ ॥ दत्त्वार्घ्यं विधिवद्भक्त्या दुर्गायै पद्मधारिणा ॥ संपूज्यमानो गंधर्वै रमते दिवि देव
वत् ॥ १०२ ॥ कृतोपवासो विधिवत्स भोगी पुत्रवान्भवेत् ॥ उत्तरे ह्ययने यस्तु सोपवासोऽर्चतेंऽबिकाम् ॥ १०३ ॥ बहुपुत्रो बहु
धनः स नरः कीर्तिमान्भवेत् ॥ इत्येते कथिता वीर पूजाकाला मनीषिभिः ॥ १०४ ॥ कृत्वोपवासं विधिवद्विषुवे योऽर्चयेच्छिवाम् ॥
शक्तिमान्बहुपुत्रश्च स भवेद्बलवान्नरः ॥ १०५ ॥ योऽर्चयेद्विधिवद्दुर्गां ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः ॥ कृत्वोपवासं विधिवत्स भवेत्पुत्रवान्नरः ॥
॥ १०६ ॥ शांतिकामो नरो यस्तु राहुग्रस्ते दिवाकरे ॥ सोपवासोऽर्चयेद्देवीं स गच्छेत्परमं पदम् ॥ १०७ ॥ इत्येते कथिता वीर
पूजाकाला मनीषिभिः ॥ दुर्गायाः कुरुशार्दूल येषु ब्रह्मदिवं व्रजेत् ॥ १०८ ॥ दुर्गाया दर्शनं पुण्यं दर्शनादभिवंदनम् ॥ वंदनात्स्प
र्शनं श्रेष्ठं स्पर्शनादपि पजनम् ॥ १०९ ॥ पूजनाल्लेपनं श्रेष्ठं लेपनात्तर्पणं स्मृतम् ॥ तर्पणान्मांसदानं तु महिषाजनिपातनम् ॥ ११०[1] ॥
अहन्यहनि यो दुर्गां पूजयेद्रुधिरादिभिः ॥ कुलानां शतमुद्धृत्य ब्रह्मलोके महीयते ॥ १११ ॥ वरं प्राणपरित्यागः शिरसः कर्तनं
वरम् ॥ ॥ न चापूज्येह भुंजीत चंडिकां चंडरूपिणीम् ॥ ११२ ॥ यश्च देव्या गृहं नित्यं संमार्जयति भक्तितः ॥ स भवेद्बलवान्देवं सर्व
संपत्तिसंयुतः ॥ ११३ ॥ देव्या गृहं तु यो देव गोमयेनोपलेपयेत् ॥ स्त्री पुमान्वा यथावच्च षण्मासाभ्यंतरे सुर ॥ ११४ ॥ स भजे
दीप्सितान्कामान्देवीलोकं च गच्छति ॥ पुलस्त्य उवाच ॥ स्नानकाले महाराज नानावादित्रमंगलैः ॥ ११५ ॥ जयशब्दैश्च यो दुर्गां
तर्पयेत जलादिभिः ॥ संपूजयति भक्त्या च गंधपुष्पादिभिस्तथा ॥ स क्रीडते दिवं गत्वा गंधर्वाप्सरसां गणैः ॥ ११६ ॥ कृष्णा
गुरु सकर्पूरं सिंदूरं चन्दनं तथा ॥ भगवत्यै नरो भूयः पदं दत्त्वा नराधिप ॥ ११७ ॥ इह कामानवाप्याथ शिवलोके महीयते ॥
गुग्गुलुं सघृतं दत्त्वा दुर्गायै च नरर्षभ ॥ ११८ ॥ वर्षार्धं विधिवद्भक्त्या गोसहस्रफलं भजेत् ॥ अगुरुधूपमावेद्य सर्वयज्ञफलं भजेत् ॥
॥ ११९ ॥ सितागुरुं नरो दत्त्वा गोसहस्रफलं भजेत् ॥ सर्वेषामेव धूपानां दुर्गाया गुग्गुलुः प्रियः ॥ १२० ॥ घृतयुक्तो विशेषेण

१ इदं भीष्मसम्बोधनम् । एवमग्रेऽपि ॥

सततं प्रीतिवर्द्धनः ॥ द्वे सहस्रे पलानां तु तथा पलशद्वतयम् ॥ १२१ ॥ दत्त्वा शुक्लनवम्यां तु चंडिकावल्लभो भवेत् ॥ महिषाक्षं घृताक्तं तु दग्ध्वा बिल्वमथापि वा ॥ १२२ ॥ वाजपेयफलं प्राप्य सूर्यलोके महीयते ॥ सक्तुमागुरुधूपेन सर्वमंगलप्रातिदा ॥ १२३ ॥ शोधयेत्पापकलिकं कांचनं दहनो यथा ॥ वस्त्राणि सुविचित्राणि सूक्ष्माणि सुमृदूनि च ॥ १२४ ॥ यः प्रयच्छाति दुर्गायै स गच्छति शिवालयम् ॥ सुवर्णघटितं वस्त्रं यो दुर्गायै प्रयच्छति ॥ ॥ १२५ ॥ गोसहस्रफलं प्राप्य सूर्यलोके महीयते ॥ एवं वित्तानुसारेण फलं ज्ञेयं समासतः ॥ १२६ ॥ संध्याकाले नवम्यां यो बलिं कुर्यान्नराधिपः ॥ चंडिकायतने भक्त्या महिषाज निपातनैः ॥ १२७ ॥ विमानवरमारुह्य सर्वदेवनमस्कृतम् ॥ स गच्छति परं स्थानं यत्र सा चंडिका स्थिता ॥ १२८ ॥ गुडखंडाज्यसंमिश्रमन्नं दत्त्वा नराधिप ॥ वैष्णवः सकलं प्राप्य सूर्यलोके महीयते ॥ १२९ ॥ गुडखंडघृतानां च तथा शर्करया नृप ॥ दत्ते चोद्वर्तने देव्यै स याति ब्रह्मणः पदम् ॥ १३० ॥ शाल्योदनं रसानां च प्रपानं विरजस्तथा ॥ यः प्रयच्छति दुर्गायै स च गच्छे च्छिवालयम् ॥ १३१ ॥ दुर्गामुद्दिश्य पानीयं केतकीगंधवासितम् ॥ यः प्रयच्छति राजेन्द्र स गणाधिपतिर्भवेत् ॥ १३२ ॥ आम्रं च नारिकेलं च खर्जूरं बीजपूरकम् ॥ यः प्रयच्छति दुर्गायै स गच्छेत्परमं पदम् ॥ १३३ ॥ घृतदीपप्रदानेन योऽर्चयेच्चंडिकां नरः ॥ सोऽश्वमेधफलं प्राप्य चंडिकानुचरो भवेत् ॥ १३४ ॥ तैलदीपं च यो दद्यात् पूजयित्वा तु चंडिकाम् ॥ नागलोकं समासाद्य क्रीडते सह किन्नरैः ॥ १३५ ॥ आत्मदेहवसादीपं प्रज्वाल्य चंडिकाग्रतः ॥ निवेदयेन्नरो भक्त्या मोदते सोंऽबिकालये ॥ १३६ ॥ यः कुर्यात्कार्तिके मासे शोभनां दीपमालिकाम् ॥ चंडिकायतने भक्त्या स सूर्यालयमाव्रजेत् ॥ १३७ ॥ घृतेन कुरुशार्दूल अमायां च स्वशक्तितः ॥ विशेषतो नवम्यां तु भक्त्या श्रद्धासमन्वितः ॥ १३८ ॥ तावद्वर्षसहस्राणि ब्रह्मलोके महीयते ॥ अश्मसार मयं कृत्वा नानादीपसमन्वितम् ॥ १३९ ॥ दीपं दत्तं समुद्बोध्य दुर्गायाः पुरतो नृप ॥ नरः कल्पायुतं साग्रं दुर्गालोके महीयते ॥ १४० ॥ चन्द्रांशुनिर्मलं छत्रं मणिमाणिक्यभूषितम् ॥ सर्वतः शोभनं कृत्वा नानापुष्पानुलेपनैः ॥ १४१ ॥ दुर्गार्थं

पुरतो वीर स याति परमां गतिम् ॥ चामरे श्रद्धया देव्यै दत्त्वा च परयान्वितः ॥ राजसूयफलं प्राप्य हंसलोके महीयते ॥ १४२ ॥
संप्रसारितदेही यो दंडवत्पतितो भुवि ॥ चंडिकापुरतो वीर स याति परमां गतिम् ॥ १४३ ॥ तत्फलं लभते वीर प्रणम्य शिरसा
महीम् ॥ दुर्गापूजोपकरणं स्वल्पं वा यदि वा बहु ॥ १४४ ॥ कृत्वा वित्तानुसारेण इन्द्रलोके महीयते ॥ १४५ ॥ पुलस्त्य
उवाच ॥ देवैः पुरा जगत्कर्ता पृष्टो देवः पितामहः ॥ ब्रूहि दुर्गार्चनं देव येन तुष्यति चंडिका ॥ १४६ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ शंभुः
पूजयते देवीं मंत्रशक्तिमयीं शुभाम् ॥ अक्षमालां करे न्यस्य तेनासौ विभवोद्भवः ॥ १४७ ॥ दुर्गां रत्नमयीं देवाः पूजयामि सदा
ह्यहम् ॥ तेन प्राप्तं मया चैव ब्रह्मत्वं च सुदुर्लभम् ॥ १४८ ॥ इन्द्रनीलमयीं देवीं विष्णुः पूजयते सदा ॥ विष्णुत्वं प्राप्तवांस्तेन
ह्यद्भुतैकं सनातनम् ॥ १४९ ॥ देवीं हेममयीं दुर्गां धनदोऽर्चयते सदा ॥ तेनासौ धनदो देवो धनेशत्वमवाप्तवान् ॥ १५० ॥
विश्वे देवा महात्मानो रौप्यं देवीं मनोरमाम् ॥ यजंति विधिवत्तेन विश्वे देवत्वमागताः ॥ १५१ ॥ वायुः पूजयते भक्त्या देवीं
पित्तलसंभवाम् ॥ वायुत्वं तेन संप्राप्तं ह्यनुत्तमगुणावहम् ॥ १५२ ॥ वसवः कांस्यकां देवीं पूजयंते विधानतः ॥ प्राप्तास्ततो
महात्मानो वसुत्वं तन्महोदयम् ॥ १५३ ॥ अश्विनौ पार्थिवीं देवीं पूजयंतौ विधानतः ॥ तेन तावश्विनौ देवौ स्वर्वैद्यौ
संबभूवतुः ॥ १५४ ॥ स्फाटिकीं शोभनां देवीं वरुणोऽर्चयते सदा ॥ वरुणत्वं च संप्राप्तस्तेन चर्द्धया समन्वितम् ॥ १५५ ॥
देवीं रत्नमयीं पुण्यामग्निर्यजति भावितः ॥ अग्नित्वं प्राप्तवांस्तेन तेजोरूपसमन्वितम् ॥ १५६ ॥ ताम्रां देवीं सदाकालं
भक्त्या देवो दिवाकरः ॥ अर्चते[1] तेन संप्राप्तं सूर्यत्वं शुभमुत्तमम् ॥ १५७ ॥ मुक्ताफलमयीं देवीं सोमः पूजयते सदा ॥ तेन
सोमेन संप्राप्तं सोमत्वं सततोज्ज्वलम् ॥१५८॥ प्रवालकमयीं देवीं पूजयंति विधानतः ॥ तेन ते ग्रहतां प्राप्ता ग्रहाः सूर्यादयोऽनिशम्
॥ १५९ ॥ वारिजां शोभनां देवीं पूजयंत्यसुरोत्तमाः ॥ वारिजाश्च महात्मानस्तेन तेऽमितविक्रमाः ॥ १६० ॥ त्रपुसीसमयीं देवीं

१ हंसो रविः । २ यजते इति पाठो वा ।

यजंते पितरः सदा ॥ पितृत्वं प्राप्य ते सर्वे संपूज्याश्च जगत्त्रये ॥ १६१ ॥ तथा लोहमयीं देवीं पिशाचाः पूजयंति ताम् ॥ तेन सिद्धिबलोपेताः प्रयांति परमं पदम् ॥ १६२ ॥ त्रैलोहिनीं सदा देवीं यजंते गुह्यकादयः ॥ तेन भोगबलोपेताः प्रयांतीश्वरमंदिरम् ॥ १६३ ॥ वज्रलोहमयीं देवीं यजंते भूतयोनयः ॥ तेन मुक्ता सुरत्वं च लभंते सततं दिवि ॥ १६४ ॥ देवास्तथा यूयमपि यदी शिवां मणिमयीमिष्ट्वा लप्स्यध्वे मानसेप्सितम् ॥ १६५ ॥ चंडिकां पूजयित्वा तु प्रहृष्टेनांतरात्मना ॥ कृतांजलि च्छथ परां गतिम् ॥ पुटो भूत्वा इदं स्तोत्रमुदीरयेत् ॥ १६६ ॥ (स्तोत्रं यथा) दुर्गां शिवां शांतिकरीं ब्रह्माणीं ब्रह्मणः प्रियाम् ॥ सर्वलोकप्रणेत्रीं च प्रणमामि सदांबिकाम् ॥ १ ॥ मंगलां शोभनां शुद्धां निष्कलां परमां कलाम् ॥ विश्वेश्वरीं विश्ववंद्यां चंडिकां प्रणमाम्यहम् ॥ २ ॥ सर्वदेवमयीं देवीं सर्वदेवनमस्कृताम् ॥ ब्रह्मेशविष्णुनमितां प्रणमामि सदा उमाम् ॥ ३ ॥ विंध्यस्थां विंध्यनिलयां दिव्यस्थान निवासिनीम् ॥ योगिनीं योगविद्यां च चंडिकां प्रणमाम्यहम् ॥ ४ ॥ ईशानमातरं देवीमीश्वरीमीश्वरप्रियाम् ॥ प्रणतोऽस्मि सदा दुर्गां संसारार्णवतारिणीम् ॥ ५ ॥ दुर्गा संकटहंत्रीति दुर्गेति प्रथिता भुवि ॥ सर्वबुद्ध्यधिदेवीयमंतर्यामिस्वरूपिणी ॥ ६ ॥ वैष्णवानां च शैवानामुपास्येयं च नित्यशः ॥ मूलप्रकृतिरूपा सा सृष्टिस्थित्यंतकारिणी ॥ ७ ॥ सर्वे देवा हरिब्रह्मप्रमुखा मनवस्तथा ॥ मुनयो ज्ञाननिष्ठाश्च योगिनश्चाश्रमास्तथा ॥ ८ ॥ लक्ष्म्यादयस्तथा देव्यः सर्वा ध्यायंति तां शिवाम् ॥ इदं यः पठते स्तोत्रं शृणुयाद्वापि भक्तितः ॥ ९ ॥ तदेव जन्मसाफल्यं दुर्गास्मरणमस्ति चेत् ॥ स मुक्तः सर्वपापेभ्यो दुर्गालोके महीयते ॥ १० ॥ इति दुर्गापूजनमाहात्म्यम् । (अथ दुर्गापूजाप्रयोगः ॥) हिमालय उवाच ॥ देवि देवि महेशानि करुणासागराऽम्बिके ॥ ब्रूहि पूजाविधिं सम्यग्यथावदधुना निजम् ॥ १ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ वक्ष्ये पूजाविधिं राजन्नंबिकाया यथा प्रियम् ॥ अत्यंतश्रद्धया सार्धं शृणु पर्वतपुंगव ॥ २ ॥ तत्रादौ चन्द्रतारादिबलान्विते सुदिने सुमुहूर्ते तीर्थपुण्यक्षेत्रनिर्जनस्थानादौ अनुष्ठानयोग्यभूमेः परिग्रहणं कृत्वा तत्र मार्जनदहनखननसंप्लावनादिभिः स्मृत्युक्तैः शोधनोपायैः शुद्धिं संपाद्य जपस्थानस्य चतुर्दिक्षु क्रोशं क्रोशद्वयं वा क्षेत्रं चतुरस्रमाहारादिविहारार्थं परिकल्प्य

जपस्थानभूमौ कूर्मशोधनं कुर्यात्। ततः पुरश्चरणात् प्राक् तृतीयदिवसे क्षौरादिकं विधाय ततः प्रायश्चित्तांगगतविष्णुपूजाविष्णुतर्पण विष्णुश्राद्धं होमं चांद्रायणादिव्रतं च कुर्यात्। व्रताशक्तौ गोदानं द्रव्यदानं च कुर्यात्। यदि सर्वकर्मणामशक्तिस्ततः प्रायश्चित्तांगगत पंचगव्यप्राशनं कुर्यात्। तत्र मंत्रः। ॐ यत्त्वगास्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके ॥ प्राशनं पंचगव्यस्य दहत्वग्निरिवेंधनम् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा प्रणवेन पंचगव्यं पिबेत्। तद्दिने उपवासं कृत्वा अशक्तश्चेत् पयःपानहविष्यान्ने एकभुक्तिव्रतं वा। पुरश्चरणात्पूर्वदिने स्वदेहशुद्ध्यर्थं पुरश्चरणाधिकारप्राप्त्यर्थं चायुतगायत्रीजपं कुर्यात्। तद्यथा—देशकालौ संकीर्त्य ज्ञाताज्ञातपापक्षयार्थं करिष्यमाणामुक चंडीपुरश्चरणाधिकारार्थममुकमंत्रसिद्ध्यर्थं च गायत्र्ययुतजपमहं करिष्ये। इति संकल्प्य वैदिकगायत्रीम्। "ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै विद्महे अष्टाक्षरायै धीमहि। तन्नश्चंडी प्रचोदयात्" इति दुर्गागायत्रीं वायुतं जपेत्। ततः तस्यां रात्रौ देवतोपास्ति शुभाशुभस्वप्नं सर्वदेवोप योगिपद्धतिमार्गेण विचारयेत्। इति पूर्वकृत्यम्। पुरश्चरणदिवसे श्रीमान्साधकेन्द्रः प्रातःकालात्पूर्वं दंडद्वयात्मके ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय प्रातः कृत्यादि तीर्थस्नानानांतं सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कृत्वा गृहे स्नानं कुर्यात्। तद्यथा—तत्कालिकोद्धृतोदकेन उष्णोदकेन वा स्नानं कृत्वा न तु पर्युषितशीतोदकेन ताम्रादिबृहत्पात्रे जलं गृहीत्वा तीर्थान्यावाहयेत्। तत्र मंत्रः। ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सर स्वति ॥ नर्मदे सिंधु कावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु ॥ १ ॥ इति तीर्थान्यावाह्य ॐ ऋतं च सत्यं० इति मंत्रेणाभिमंत्र्य वरुणमंत्रेण स्नात्वा शुष्कं शुभ्रं कर्पासोत्पन्नं रक्तवस्त्रं प्रयोगोक्तं वा परिधाय ॐ एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते ॥ अनुकंपय मां देव गृहा णार्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥ इति सूर्यायार्घ्यं दत्त्वा स्नानार्द्रवस्त्रं परिपीड्य आचम्य शैवश्चेत्त्रिपुण्ड्रं वैष्णवो द्वादशोर्ध्वपुण्ड्रं तिलकं कुर्यात्। ततो देव्या अगारे स्वमंदिरे शुचौ देशे गोमयलिप्ते रंगमालाभिरलंकृत्य मंडपे षोडशकदलीस्तंभनिर्मितं यथोक्तसंख्याकं चतुर्दिक्षु चतु र्द्वारोपशोभितं तोरणानि यथोक्तानि स्ववितानध्वजपताकादिभिरलंकृतच्छत्रचामरमंडितानि एवं मंडपद्वारदेशमागत्य सर्वदेवोपयोगि पद्धतिदुर्गामखोत्सवप्रकरणे चावलोक्य द्वारप्रतिष्ठां कृत्वा अशक्तश्चेत् साधारणं कुर्यात्। तद्यथा—मूलेन फट् इति द्वारं संप्रोक्ष्य। पूर्वे—

गां गूं गणेशाय नमः ॥१॥ दक्षिणे ॐ क्षां ह्रौं वटुकाय नमः ॥२॥ पश्चिमे ॐ क्षां क्षें क्षेत्रपालाय नमः ॥३॥ उत्तरे ॐ यां यूं योगिनीगणेभ्यो नमः ॥४॥ देहल्याम् ॐ गं गंगायै नमः ॥५॥ ऊर्ध्वे ॐ यं यमुनायै नमः ॥६॥ मध्ये ॐ सं सरस्वत्यै नमः ॥७॥ इति पूजयेत् ॥ इति द्वारपूजां कृत्वा गृहांतः प्रविश्य "गृहीतस्यास्य मंत्रस्य पुरश्चरणसिद्धये॥ मयेयं गृह्यते भूमिर्मंत्रोऽयं सिध्यतामिति॥ १॥ इति मंत्रेण भूमिं संगृह्य क्षेत्रकीलनं कुर्यात्। तद्यथा। अश्वत्थोदुंबरप्लक्षाणामन्यतमान्वितस्तिमात्रान् दश कीलान् मूलेन 'अस्त्राय फट्' इति मंत्रेण अष्टोत्तरशतमभिमंत्र्य। ॐ ये चात्र विघ्नकर्तारो भुवि दिव्यंतरिक्षगाः॥ विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मंत्रस्य सिद्धिषु ॥ १ ॥ मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः॥ अपसर्पंतु ते सर्वे निर्विघ्नं सिद्धिरस्तु मे ॥ २ ॥ इति मंत्रद्वयेन दशदिक्षु दश कीलान् निखनेत्। ततस्तेषु मूलेन। 'अस्त्राय फट्' इति मंत्रेण प्रत्येकं कीलान् संपूज्य तत्रैव पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिलोकपालानावाह्य पंचोपचारैः संपूज्य ततः जपस्थानमध्ये गणेशं कूर्ममनंतवसुधाक्षेत्रपालांश्च संपूज्य दिक्पालेभ्यः क्षेत्रपालगणपतिभ्यश्च माषभक्तबलिं दत्त्वा तद्बाह्ये भूतबलिं दद्यात्। तत्र मंत्रः। ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः॥ मातरोऽप्युग्ररूपाश्च गणाधिपतयश्च ये॥ भूचराः खेचराश्चैव तथा चैवांतरिक्षगाः॥ ते सर्वे प्रीतमनसः प्रतिगृह्णंत्विमे बलिम् ॥ २ ॥ इति मंत्रद्वयेन दशदिक्षु बाह्ये माषभक्तबलिं दद्यात्। ततो वामकरांगुलिभिरर्घ्यजलं चोत्सृज्य पुष्पांजलिमादाय। ॐ भूतानि यानीह वसंति भूतले बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम् ॥ संतोषमासाद्य व्रजंतु सर्वे क्षमंतु नान्यत्र नमोऽस्तु तेभ्यः॥ १ ॥ इति पुष्पांजलिं दत्त्वा प्रणमेत्। इति क्षेत्रकीलनं कृत्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचमेत्। ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा॥ यः स्मरेत्पुंडरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरे शुचिः॥ इति मंत्रेण मंडपांतरं संप्रोक्ष्य तत्र तावदासनभूमौ कूर्मशोधनं कार्यम्। यत्र जपकर्ता एक एव तदा कूर्ममुखे उपविश्य जपं तत्रैव दीपस्थापनं च कुर्यात्। यत्र बहवो जापकास्तत्र कूर्ममुखोपरि दीपमेव स्थापयेत्। एवं कूर्मशोधनं विधाय तत्रासनाधोजलादिना त्रिकोणं कृत्वा तत्र ॐ कूर्माय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ पृथिव्यै नमः ॥ ३ ॥ इति गंधाक्षतपुष्पैः संपूज्य तदुपरि कुशासनम् ॥ १ ॥ तदुपरि मृगाजि

नम्‌ ॥ २ ॥ तदुपरि कंबलाद्यासनमास्तीर्य स्थापितानां त्रयाणामासनानामुपरि क्रमेण । ॐ अनंतासनाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विमलासनाय नमः ॥ २ ॥ ॐ पद्मासनाय नमः ॥ ३ ॥ इति मंत्रत्रयेण त्रीन्दर्भान्प्रत्येकं निदध्यात्‌ । एवमासनं संस्थाप्य तत्र प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य । ॐ पृथ्वीति मंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः । कूर्मो देवता । सुतलं छंदः । आसने विनियोगः इति जलं क्षिप्त्वा ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ॥ त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्‌ ॥ इत्यासनं संप्रोक्ष्य मूलेन शिखां बद्ध्वा ऐं आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः ॥ १ ॥ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा ॥ २ ॥ क्लीं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ॥ ३ ॥ इति तत्त्वत्रयेणाचम्य । अपक्रामंतु भूतानि पिशाचाः प्रेतगुह्यकाः ॥ ये चात्र निवसंत्यन्या देवता भुवि संस्थिताः ॥ १ ॥ अपसर्पंतु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ॥ ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यंतु शिवाज्ञया ॥ २ ॥ मूलेन फट् इति तालत्रयेण तीक्ष्णदृष्ट्यावलोकनेन विघ्नानुत्सार्य दिग्बंधनं कृत्वा मूलेनाचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रश्चामुकदेवशर्म्माहं श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थममुकमंत्रसिद्ध्यर्थं यथोक्तं नवचंडीशतचंडीसहस्रचंड्ययुतचंडीलक्षचंडीकोटिचंडीविधानं वा श्रीदुर्गाप्रीत्यर्थमहं करिष्ये।अथवा सकलपरिवारस्यायुरारोग्यैश्वर्यसंपद्विवृद्ध्यर्थं पुत्रपौत्रादिसमृद्ध्यर्थंसर्वेप्सितासिद्ध्यर्थं धनधान्यसमृद्ध्यर्थं सकलमनोरथप्राप्त्यर्थमाधिदैविकाधिभौतिकाध्यात्मिकत्रिविधतापोपशमनार्थं जन्मराशेः सकाशाद्दुष्टस्थानस्थिता ग्रहाः ये केचित् क्रूरग्रहास्तत्सर्वारिष्टोपशांत्यर्थं सर्वकामनासंपूर्णतासिद्ध्यर्थं च स्वयमृत्विग्द्वारा वामुकचंडीविधानमहं करिष्ये इति संकल्प्य ब्राह्मणान् वृणुयात् । तद्यथा—पावनाः सर्ववर्णानां ब्राह्मणा ब्रह्मरूपिणः ॥ अनुगृह्णंतु मामद्य महाचंड्याख्यकर्मणि ॥ १ ॥ चंडीकर्मरता नित्यं वेदशास्त्रार्थकोविदाः ॥ श्रोत्रियाः सत्यवादाश्च वेदध्यानरताः पराः ॥ २ ॥ यद्वाक्यामृतसंसिक्ता ऋद्धिं यांति नरद्रुमाः ॥ अंगीकर्वंतु मत्कर्म

[illegible]णस्वरूपम्—सदाचाराः कुलीनाश्च श्रीमन्तः सत्यवादिनः ॥ चण्डिकापाठसंपूर्णा दयावन्तो जितेन्द्रियाः॥ ईदृग्लक्षणसंपूर्णा दंभमोहविवर्जिताः ॥ [illegible] [illegible]न्वितः॥ विद्यागमसमायुक्तान्मन्त्रविद्याविशारदान् ॥

कल्पद्रुमं समाश्रिताः ॥ ३ ॥ यथोक्तनियमैर्युक्ता मंत्रार्थस्थिरबुद्धयः ॥ यत्कृपालोकनात्सर्वा वृद्धयो ऋद्धिमाप्नुयुः ॥ ४ ॥ [illegible] जपे पूज्याः संतु मे नियमान्विताः ॥ अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मवादिनः ॥ ५ ॥ चंडीध्यानरता नित्यं प्रसन्नमनसः सदा ॥ सत्यभाषिणः संतु मा संतु परवादकाः ॥ ६ ॥ ममापि नियमा ह्येते भवंतु भवतामपि ॥ ७ ॥ इति विप्रानपि स्तुत्वा पादप्रक्षालनं कृत्वा तिलकं दत्त्वा देशकालौ संकीर्त्य अमुकचंड्याख्ये कर्मणि तदंगभतं सकलकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकप्रवरान्वित ममुकशर्माणममुकशाखाध्यायिनं नवार्णसमन्वितसप्तशतीमालासहितैः एभिः पुष्पचंदनवासोऽलंकरणादिभिराचार्यत्वेन त्वामहं वृणे । इत्याचार्यदक्षिणकरे यज्ञसूत्रं बद्ध्वा ततो देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रममुकप्रवरान्वितममुकशाखाध्यायिनममुकशर्माण मस्मिन्कर्मणि दाता त्वामहं वृणे । इति विप्रा नवार्णोपासकाः वरणीयाः । ततो देशकालौ संकीर्त्य प्रारिप्सितकर्मणोंऽगभूतमादौ निर्विघ्न तासिद्ध्यर्थं गणपतिपूजनं करिष्ये इति संकल्प्य गणपतिपूजनं कुर्यात् । ततः देशकालौ संकीर्त्य प्रारिप्सितकर्मणोंऽगभूतं मातृकाप्रतिष्ठा पूजनं करिष्ये इति संकल्प्य मातृकाः पूजयेत् । तथा च–ॐ भूर्भुवः स्वः गौरि इहागच्छ इह तिष्ठ गंधाद्युपचारान्समर्पयामि नमः इति सर्वत्र १ । ॐ भू० पद्मे इ० २ । ॐ भू० शचि इ० ३ । ॐ भू० मेधे० इ० ४ । ॐ भू० सावित्रि इ० ५ । ॐ भू विजये इ० ६ । ॐ भू० जये इ० ७ । ॐ भू० देवसेने इ० ८ । ॐ भू ९ स्वधे इ० ९ । ॐ भू० स्वाहे इ० १० । ॐ भू० मात्रे लोकमात्रे इ० ११ । ॐ भू० धृते इ० १२ । ॐ पुष्टे इ० । १३ ॐ भू० तुष्टे इ० १४ । ॐ भू० आत्मकुलदेवते इ० १५ । ॐ भू० गणेश इ० १६ । एवं गौर्यादिषोडशमातृकाःपूज येत् । ततः ॐ भू० ब्राह्मि इ० १ । ॐ भू० माहेश्वरि इ० २ । ॐ भू० कौमारि इ० ३ । ॐ भू० वैष्णवि इ० ४ । ॐ भू० वाराहि इ० ५। ॐ भू० इन्द्राणि इ० ६ । ॐ भू० चामुंडे इ० ७ । ॐ भू० चंडिके इ० ८ । एवं ब्राह्म्याद्यष्टस्थलमातृकाः पूजयेत् । ततः ॐ भू० कीर्ते इ० १ । ॐ भू० लक्ष्मि इ० २ । ॐ भू धृते इ० ३ । ॐ भू० मेधे इ० ४ । ॐ भू० पुष्टे इ० ५ । ॐ भू० श्रद्धे इ० ६ । ॐ भू० क्रिये इ० ७ । ॐ भू० मते इ० ८ । ॐ भू० बुद्धे इ० ९ । ॐ भू० लज्जे इ० १० । ॐ भू० श्रीः इ० ११ । ॐ भू० शांते इ० १२ । ॐ भू०

कांते इ० १३। ॐ भू० तुष्टे इ० १४। एव कीर्त्यादिचतुर्दशमातृकाः पूजयेत्। ततः पुनः ॐ भू० कीर्त्ते इ० १। ॐ भू० लक्ष्मि इ० २। ॐ भू० धृते इ० ३। ॐ भू० मेधे इ० ४। ॐ भू० बुद्धे इ० ५। ॐ भू० प्रज्ञे इ० ६। ॐ भू० सरस्वति इ० ७। इति पजयित्वा प्रधानमातृकाः पूजयेत्। तद्यथा—ॐ भू० ऐं महाकालि विच्चे इ० १। ॐ भू० ह्रीं महालक्ष्मि विच्चे इ० २। ॐ भू० क्लीं महासरस्वति विच्चे इ० ३। एवं संपूज्य प्रणमेत्। तथा च। हस्तैः पद्मं रथांगं गुणमथ हरिणं पुस्तकं वर्णमालां टंकं शूलं कपालं दरममृतलसद्धेमकुंभं वहंतीम्॥ मुक्ताविद्युत्पयोजस्फटिकनवजपाबंधुरैः पंचवक्त्रैस्त्र्यक्षैर्वक्षोजनम्रांसकलशशिनिभां मातृकां तां नमामि॥ १॥ इति प्रणम्य अस्य श्रीमातृकापूजनविधेर्न्यूनातिरिक्तं ब्राह्मणानां प्रसादात्सर्वं संपूर्णमस्तु इति वदेत्। इति मातृकापूजनं कृत्वा प्राणायामयोगेन भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठांतर्मातृकाबहिर्मातृकासृष्टिस्थितिसंहारमातृकान्यासं च कृत्वा देवीकलामातृकान्यासं च कुर्यात्। तथा च—अस्य देवीकलामातृकान्यासस्य प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्रीछंदः श्रीमातृकाशारदा देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः अमुकमंत्रांगत्वेन मातृकान्यासे विनियोगः। ॐ प्रजापतिऋषये नमः शिरसि १। गायत्रीछंदसे नमो मुखे २। शारदादेवतायै नमो हृदि ३। हलबीजेभ्यो नमो गुह्ये ४। स्वरशक्तये नमः पादयोः ५। विनियोगाय नमः सर्वांगे ६। ॐ अं ॐ आं हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ इं ॐ ईं शिरसे स्वाहा २। ॐ उं ॐ ऊं शिखायै वषट् ३। ॐ एं ॐ ऐं कवचाय हुम् ४। ॐ ओं ॐ औं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ अं ॐ अः अस्त्राय फट् ६। एवं करांगन्यासं कृत्वा ध्यायेत्। अथ ध्यानम्। शंखचक्राब्जपरशुपाशानक्षमालिकाः॥ पुस्तकातनुकुंभौ च त्रिशूलं दधती करैः॥२॥ सितपीतसितश्वेतरक्तवर्णैस्त्रिलोचनैः॥ पंचास्यसंयुतां चंद्रसंकांतिं शारदां भजे॥२॥ इति ध्यात्वा मातृका न्यसेत्। तद्यथा—ॐ अं निवृत्त्यै नमः ललाटे १। ॐ आं प्रतिष्ठायै नमः मुखवृत्ते २। ॐ इं विद्यायै नमः दक्षनेत्रे ३। ॐ ईं शांत्यै नमः वामनेत्रे ४। ॐ उं इंधिकायै नमः दक्षकर्णे ५। ॐ ऊं दीपिकायै नमः वामकर्णे ६। ॐ ऋं रेचिकायै नमः दक्षनासापुटे ७। ॐ ॠं मोचिकायै नमः वामनासापुटे ८। ॐ लृं परायै नमः दक्षकपोले ९। ॐ लॄं सूक्ष्मायै नमः वामकपोले १०। ॐ एं सूक्ष्मामृतायै नमः

ऊर्ध्वोष्ठे ११। ॐ ऐं ज्ञानामृतायै नमः अधरोष्ठे १२। ॐ ओं आप्यायिन्यै नमः ऊर्ध्वदंतपंक्तौ १३ । ॐ औं व्यापिन्यै नमः अधोदंतपंक्तौ १४ ॐ अं व्योमरूपायै नमः जिह्वायाम् १५ । ॐ अः अनंतायै नमः कंठे १६ । ॐ कं सृष्ट्यै नमः दक्षबाहुमूले १७ । ॐ खं ऋद्ध्यै नमः दक्षकूर्परे १८। ॐ गं स्मृत्यै नमः दक्षमणिबन्धे १९ । ॐ घं मेधायै नमः दक्षहस्तांगुलिमूले २०। ॐ ङं कांत्यै नमः दक्षहस्तांगुल्यग्रे २१ । ॐ चं लक्ष्म्यै नमः वामबाहुमूले २२ । ॐ छं द्युत्यै नमः वामकूर्परे २३ । ॐ जं स्थिरायै नमः वाममणिबन्धे २४। ॐ झं स्थित्यै नमः वामहस्तांगुलिमूले २५ । ॐ ञं सिद्ध्यै नमः वामहस्तांगुल्यग्रे २६ । ॐ टं जरायै नमः दक्षपादमूले २७। ॐ ठं पालिन्यै नमः दक्षजानुनि २८ । ॐ डं क्षांत्यै नमः दक्षगुल्फे २९। ॐ ढं ईश्वर्यै नमः दक्षपादांगुलिमूले ३०। ॐ णं रत्यै नमः दक्षपादांगुल्यग्रे ३१ । ॐ तं कामिकायै नमः वामपादमूले ३२ । ॐ थं वरदायै नमः वामजानुनि ३३। ॐ दं आह्लादिन्यै नमः वामगुल्फे ३४ । ॐ धं प्रीत्यै नमः वामपादांगुलिमूले ३५ । ॐ नं दीर्घायै नमः वामपादांगुल्यग्रे ३६ । ॐ पं तीक्ष्णायै नमः दक्षपार्श्वे ३७ । ॐ फं रौद्र्यै नमः वामपार्श्वे ३८। ॐ बं भयायै नमः पृष्ठे ३९ । ॐ भं निद्रायै नमः नाभौ ४० । ॐ मं तंद्रिकायै नमः जठरे ४१ । ॐ यं क्षुधायै नमः हृदि ४२ । ॐ रं क्रोधिन्यै नमः दक्षांसे ४३ । ॐ लं क्रियायै नमः ककुदि ४४ । ॐ वं उत्कार्य्यै नमः वामांसे ४५ । ॐ शं मृत्युकायै नमः हृदयादिदक्षहस्तांतम् ४६ । ॐ षं पीतायै नमः हृदयादिवामहस्तांतम् ४७ । ॐ सं श्वेतायै नमः हृदयादिदक्षपादांतम् ४८ । ॐ हं अरुणायै नमः हृदयादिवामपादांतम् ४९ । ॐ क्षं असितायै नमः मूर्द्धादिपादांतम् ५० । ॐ ज्ञं अनंतायै नमः पादादिमूर्द्धांतम् ५१ । एवं देवीकलामातृकान्यासं कृत्वा प्रयोगोक्तन्यासादिकं कुर्यात् । इति न्यासं विधाय देवीं ध्यात्वा । ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः इति सर्वांगे व्यापकं कृत्वा पीठपूजां कुर्यात् । तद्यथा—पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडलमध्यभागे। ॐ ॐकारपीठाय नमः १ । ॐ पं पूर्णपीठाय नमः । २ ॐ कं कामपीठाय नमः ३ ।

प्राच्यां दिशि । ॐ उं उड्यानपीठाय नमः ४ । आग्नेय्याम् । ॐ मां मातृपीठाय नमः ५ । दक्षिणे । ॐ जं जालंधरपीठाय नमः ६ । नैर्ऋत्ये । ॐ कं कोल्हापुरोपपीठाय नमः ७ । पश्चिमे । ॐ पूं पूर्णागिरिपीठाय नमः ८ । वायव्याम् । ॐ सौं सौहारोपपीठाय नमः ९ । उत्तरे । ॐ कं कोल्हागिरिपीठाय नमः १० । ऐशान्याम् । ॐ कं कामरूपपीठाय नमः ११ । इति पीठं संपूज्य । दक्षिणे ॐ गुरवे नमः १ । ॐ परमगुरवे नमः २ । ॐ परमेष्ठिगुरवे नमः ३ । ॐ गुरुपंक्तये नमः ४ । ॐ मातापितृभ्यां नमः ५ । ॐ उपमन्युनारदसनकव्यासादिभ्यो नमः ६ । वामे । ॐ गं गणपतये नमः१ । ॐ दुं दुर्गायै नमः २ । ॐ सं सरस्वत्यै नमः ३ । ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः ४ । इति नत्वा पीठदेवताः स्थापयेत् । तद्यथा—पीठमध्ये । ॐ मं मंडूकाय नमः १ । ॐ आं अधारशक्त्यै नमः २ । ॐ मूं मूलप्रकृत्यै नमः ३ । ॐ कं कालाग्निरुद्राय नमः ४ । तदुपरि । ॐ अं आदिकूर्माय नमः ५ । ॐ अं अनंताय नमः ६ । ॐ आं आदिवराहाय नमः ७ । ॐ पृं पृथिव्यै नमः ८ । तदुपरि । ॐ अं अमृतार्णवाय नमः ९ । ॐ रं रत्नदीपाय नमः १० । ॐ हं हेमगिरये नमः ११ । ॐ नं नन्दनोद्यानाय नमः १२ । ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः १३ । ॐ मं मणिभूतलाय नमः १४ । ॐ दं दिव्यमंडपाय नमः १५ । ॐ सं स्वर्णवेदिकायै नमः १६ । ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः १७ । ॐ धं धर्माय नमः १८ । ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः १९ । ॐ वैं वैराग्याय नमः २० । ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः २१ । इति संपूज्य पूर्वे ॐ अं अधर्माय नमः २२ । दक्षिणे ॐ अं अज्ञानाय नमः २३ । पश्चिमे ॐ अं अवैराग्याय नमः २४ । उत्तरे ॐ अं अनैश्वर्याय नमः २५ । पुनर्मध्ये । ॐ सत्त्वाय नमः २६ । ॐ प्रं प्रबोधात्मने नमः २७ । ॐ रं रजसे नमः २८ । ॐ प्रं प्रकृत्यात्मने नमः २९ । ॐ तं तमसे नमः ३० । ॐ मं मोहात्मने नमः ३१ । ॐ सों सोममंडलाय नमः ३२ । ॐ सुं सूर्यमंडलाय नमः ३३ । ॐ वं वह्निमंडलाय नमः ३४ । ॐ मं मायातत्त्वाय नमः ३५ । ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः ३६ । ॐ शं शिवतत्त्वाय नमः ३७ । ॐ ब्रं ब्रह्मणे नमः ३८ । ॐ मं महेश्वराय नमः ३९ । ॐ आं आत्मने नमः ४० । ॐ अं अंतरात्मने नमः ४१ । ॐ पं परमात्मने नमः ४२ । ॐ जं जीवात्मने नमः ४३ । ॐ ज्ञं ज्ञाना

रमने नमः ४४। ॐ कं कंदाय नमः ४५। ॐ नं नीलाय नमः ४६। ॐ पं पद्माय नमः ४७। ॐ मं महापद्माय नमः ४८। ॐ रं रत्नेभ्यो नमः ४९। ॐ कें केसरेभ्यो नमः ५०। ॐ कं कर्णिकायै नमः ५१। इति पीठदेवताः संपूज्य नवपीठशक्तीः पूजयेत्। तद्यथा—पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु। ॐ नंदायै नमः १। ॐ भगवत्यै नमः २। ॐ रक्तदंतिकायै नमः ३। ॐ शाकंभर्यै नमः ४। ॐ दुर्गायै नमः ५। ॐ भीमायै नमः ६। ॐ कालिकायै नमः ७। ॐ भ्रामर्यै नमः ८। मध्ये। ॐ शिवदूत्यै नमः ९। इति पूजयित्वा प्रयोगोक्तपीठशक्तिं वा पूजयेत्। इति पीठपूजां कृत्वा पात्रासादनं कुर्यात्॥ अथ पात्रासादनम्॥ तत्रादौ कलशस्थापनप्रयोगः। देव्या अग्रे त्रिकोणमंडलं कृत्वा जलेन प्रोक्ष्य त्रिकोणांतर्मायां (ह्रीं) विलिख्य ॐ ह्रीं आधारशक्तये नमः इति संपज्य शालिपुंजोपरि स्वर्णादिरचितं कुंभं नवतंतुना वेष्टितं चंदनादिचर्चितं सुधूपितं सहिरण्यं वज्रमुक्ताफलपद्मरागनीलमरकतैः पंचरत्नैः समायुक्तं संस्थाप्य मूलेन नमः इति जलेनापूर्य तत्र कुंकुमागुरुकर्पूरचंदनपंकं सुकुसुमानि च निक्षिप्य तस्य मुखे आम्रदलानि निधाय नारिकेलफलाढ्यं सतंडुलं पात्रं निधाय ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ इति वरुणमावाह्य तन्मध्ये स्वेष्टदेवतां ध्यात्वा गंधाक्षतपुष्पैः संपूज्य प्रणमेत्। इति कलशस्थापनम्। अथ शंखस्थापनम्। देवीवामतः त्रिकोणमंडलं कृत्वा जलेन प्रोक्ष्य त्रिकोणांतर्मायां (ह्रीं) विलिख्य ॐ ह्रीं आधारशक्तये नमः इति संपूज्य मूलेन फट् इति त्रिपदमाधारं प्रक्षाल्य त्रिकोणमध्ये संस्थाप्य तत्र देशे ॐ मं वह्निमंडलाय दशकलात्मने शंखपात्रासनाय नमः इति आधारं संपूज्य आधारे पूर्वादिषु दशाग्निकलाः पूजयेत्। तद्यथा—ॐ यं धूम्रार्चिषे नमः १। ॐ रं ऊष्मायै नमः २। ॐ लं ज्वलिन्यै नमः ३। ॐ वं ज्वालिन्यैः नमः ४। ॐ शं विस्फुलिंगिन्यै नमः ५। ॐ षं सुश्रियै नमः ६। ॐ सं स्वरूपायै नमः ७। ॐ हं कपिलायै नमः ८। ॐ लं हव्यवाहायै नमः ९। ॐ क्षं कव्यवाहायै नमः १०। इति पूजयेत्। ततः ॐ क्लीं महाजलचराय हुं फट् स्वाहा पांचजन्याय नमः इति मंत्रेण प्रक्षालितं शंखमाधारोपरि संस्थाप्य तत्र देशे। ॐ अं सूर्य

१ अथ कामनापरत्वेन कलशमध्ये निक्षेपपदार्थाः "धनकामो न्यसेत्स्वर्णं धान्यकामस्तु मौक्तिकम्॥ श्रीकामः कमलं न्यस्य कामार्थी दमनं न्यसेत्॥ मोक्षकामो न्यसेद्दर्भं जयकामोऽपराजिताम्॥ उच्चाटनार्थं हिंगूलं वश्यार्थं शिखिमूलिकाम्॥ मारणाय मरीचं तु केतकीं मोहनाय च॥ आकर्षणार्थं धत्तूरं प्रक्षिपेत्कलशोपरि॥"

मंडलाय द्वादशकलात्मने श्रीदुर्गाशंखपात्राय नमः इति शंखं संपूज्य पात्रे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन द्वादशसूर्यकलाः पूजयेत्। तथा च–ॐ कं भं तपिन्यै नमः १। ॐ खं वं तापिन्यै नमः २। ॐ गं फं धूम्रायै नमः ३। ॐ घं पं मरीच्यै नमः ४। ॐ ङं नं ज्वालिन्यै नमः ५ ॐ चं धं रुच्यै नमः ६। ॐ छं दं सुषुम्णायै नमः ७। ॐ जं खं भोगदायै नमः ८। ॐ झं तं विश्वायै नमः ९। ॐ ञं णं बोधिन्यै नमः १०। ॐ टं ढं धारिण्यै नमः ११। ॐ ठं डं क्षमायै नमः १२। इति पूजयेत्। ततः ॐ क्षं ळं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं ॣं ॢं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं इत्येकाधिकपंचाशत् ५१। विलोममातृकामुच्चार्य मूलेन नमः इति शंखे जलमापूर्य तत्र देशे ॐ सोममंडलाय षोडशकलात्मने श्रीदुर्गाशंखपात्रामृताय नमः इति गंधादिभिः संपूज्य जले षोडशचन्द्रकलाः पूजयेत्। तद्यथा–ॐ अं अमृतायै नमः १। ॐ आं मानदायै नमः २। ॐ इं पूषिण्यै नमः ३। ॐ ईं तुष्ट्यै नमः ४। ॐ उं पुष्ट्यै नमः ५। ॐ ऊं वृत्यै नमः ६। ॐ ऋं धृत्यै नमः ७। ॐ ॠं शशिन्यै नमः ८। ॐ ॢं चंद्रिकायै नमः ९। ॐ ॣं कांत्यै नमः १०। ॐ एं ज्योत्स्नायै नमः ११। ॐ ऐं श्रियै नमः १२। ॐ ओं प्रीत्यै नमः १३। ॐ औं अंगदायै नमः १४। ॐ अं पूर्णायै नमः १५। ॐ अः पूर्णामृतायै नमः १६। इति संपूज्याभिमंत्रयेत्। तथा च–"ॐ शंखादौ चन्द्रदैवत्यं कुक्षौ वरुणदेवता॥ पृष्ठे प्रजापतिश्चैवमग्रे गंगा सरस्वती॥ १॥ त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया॥ शंखे तिष्ठंति विप्रेन्द्र तस्माच्छंखं प्रपूजयेत्" ॥१॥ इत्यभिमंत्र्य प्रार्थयेत्। तथा च–"ॐ त्वं पुरा सागरा जातो विष्णुना विधृतः करे॥ निर्मितः सर्वदेवैश्च पांचजन्य नमोऽस्तु ते॥ १॥" इति संप्रार्थ्य 'ॐ पांचजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि॥ तन्नः शंखः प्रचोदयात्॥ इति शंखगायत्रीमष्टधा जपित्वा शंखमुद्राः प्रदर्शयेत्॥ इति शंखस्थापनम्॥१॥ततो देव्यग्रे चार्घ्यं

१ गन्धाक्षतपुष्पयवपंचकुशाग्रबिल्वसर्षपदूर्वाष्टद्रव्याणि अर्घ्यपात्रजले क्षिपेत्–दूर्वाविष्णुक्रांताश्यामाकपद्मानि पाद्यपात्रजले क्षिपेत्–जातीफलकंकोललवंगान्याचमनपात्रजले क्षिपेत्। पयोदधिघृतखण्डानि मधुपर्कपात्रे क्षिपेत्॥

देवीदक्षिणतः प्रोक्षणीपात्रं च एवमेव विधिना संस्थाप्य त्रिरर्घ्यस्थापनानंतरं अर्घाद्वामतः श्रीपात्रं १ गुरुपात्रं २ देवीपात्रं ३ शक्तिपात्रं ४ योगिनीपात्रं ५ भोगपात्रं ६ वीरपात्रम् ७ आत्मपात्रं ८ बलिपात्रम् ९ एतानि नव पात्राणि संस्थाप्य दक्षिणे पाद्यार्घ्याचमनीयमधुपर्काणीति चत्वारि पात्राणि संस्थापयेत् । अशक्तश्चेद्गुरुवीरात्मबलिभोगसंज्ञकानीति पंचपात्राणि पाद्याद्युपचारार्थमेकं वा पात्रं स्थापयेत् । अथ घंटास्थापनं देवीदक्षिणतः 'जगद्ध्वनिमंत्रमातः स्वाहा' इति मंत्रेण घंटां च संपूज्य गरुडमुद्रां प्रदर्शयेत् । ततः गंधाक्षतपुष्पादींश्च पूजोपकरणार्थं स्वदक्षिणपार्श्वे निधाय । "ॐ दुर्गार्चनकाले तु यानि यानीह सांप्रतम् ॥ वस्तूनि सौरभाढ्यानि पवित्राणि भवन्तु वै ॥ १ ॥ मूलेन नमः इति जलेन प्रोक्ष्य जलार्थं बृहत्पात्रं व्यजनं छत्रादर्शचामराणि च स्ववामे संस्थाप्य अखंडदीपस्थापनं कुर्यात् । देवीं दक्षिणभागे घृतदीपं वामे तैलदीपं स्थापयेत् । तद्यथा—दक्षिणे दीपपात्रं गोघृतेन तैलेन वाममापूर्य मंत्रवर्णतंतुभिः वर्तिं निक्षिप्य प्रणवेन प्रज्वाल्य सुदर्शनमंत्रेण घृतदीपं पूजयेत् । तत्र मंत्रः "ॐ रां रीं रूं रैं रौं रः ॐ सहस्रारं हुं फट् स्वाहा"१ तैलदीपं पाशुपतास्त्रमंत्रेण पूजयेत् । तत्र मंत्रः । ॐ श्लीं पशु हुं फट् स्वाहा । इति मंत्रेण गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य हस्तद्वयेन दीपशिखां स्पृष्ट्वा मंत्रं पठेत् । तत्र मंत्रः "ॐ घोराय घोरतमाय महारौद्राय वीरभद्राय ज्वालामालिने सर्वदुष्टोपसंहर्त्रे हुं फट् स्वाहा ॥ १ ॥" इति पठित्वा पश्चात्तत्तेजसात्मानं समर्प्य ततो वाक्कायचित्तशोधनं कुर्यात् । ॐ हुं फट् स्वाहा । इति मुखे ॐ रक्षरक्ष हुं फट् स्वाहेति हृदि हस्तं दत्त्वात्मरक्षां विधाय 'ॐ' इति मंत्रेण चन्दनपुष्पाणि कराभ्यां मर्दयित्वा पुष्पाक्षतानादाय "ते सर्वे विलयं यांतु ये मां हिंसंति हिंसकाः ॥ मृत्युरोगभयक्लेशाः पतंतु रिपुमस्तके ॥१॥" इति मन्त्रेण ऐशान्यां दिशि दूरतः पुष्पं क्षिप्त्वा हस्तौ प्रक्षाल्याचामेत् । (अथ पूजाप्रयोगः) स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं च ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य ॐ वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहासनाय नमः । इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा मूर्तिं कलशोपरि संस्थाप्य यंत्रं मंडलोपरि च संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां च कुर्यात् । तद्यथा—देश

---

१ प्रतिमालक्षणं यथा-आमाषात्पञ्चपर्यन्ता चंडिकाप्रतिमा बुधैः ॥ कर्तव्या च तदर्धा तु यथाशक्त्या नराधिप ॥

कालौ संकीर्त्य मम श्रीदुर्गानूतनयंत्रे मूर्तौ च प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये इति संकल्प्य प्रतिष्ठां कुर्यात् । ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि क्रियामयवपुःप्राणाख्या देवता आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकमस्य नूतनयन्त्रे मूर्तौ च प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः । इति जलं क्षिप्त्वा करेणाच्छाद्य । ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रं लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः सोहमस्य दुर्गासपरिवारयन्त्रस्य प्राणा इह प्राणाः १ । पुनः । ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः सोहं अस्य श्रीदुर्गासपरिवारयन्त्रस्य जीव इह स्थितः २ । पुनः । ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः सोहमस्य श्रीदुर्गासपरिवारयन्त्रस्य सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि ३ । ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः सोहं अस्य श्रीदुर्गासपरिवारयन्त्रस्य वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा । एवमेव विधिना मूर्तिं च प्रतिष्ठाप्य 'यः प्राणतो निमिषतो महित्वे विधेम०' इति मन्त्रं त्रिवारं पठेत् । मनोजूतिर्जुषताम् सुप्रतिष्ठा प्रतिष्ठा इत्युक्त्वा संस्कारसिद्धये पञ्चदश प्रणवावृत्तीः कृत्वा अनेन श्रीदुर्गासपरिवारयन्त्रस्य मूर्तौ च गर्भाधानादिपञ्चदशसंस्कारान्संपादयामि इति वदेत् । ततो यन्त्रराजाय विद्महे महायन्त्राय धीमहि । तन्नो यन्त्रं प्रचोदयात् ॥ इत्यष्टोत्तरशतमभिमन्त्र्य देवीं ध्यायेत् । अथ ध्यानम् । " ध्याये न्नित्यां महादेवीं मूलप्रकृतिमीश्वरीम् ॥ ब्रह्मविष्णुशिवादीनां पूज्यां वंद्यां सनातनीम् ॥ १ ॥ नारायणीं विष्णुमायां वैष्णवीं विष्णुभक्तिदाम् ॥ सर्वस्वरूपां सर्वेशां सर्वाधारां परात्पराम् ॥ २ ॥ तप्तकांचनवर्णाभां सूर्यकोटिसमप्रभाम् ॥ ईषद्धास्यप्रसन्नास्यां भक्तानुग्रहकातराम् ॥ ३ ॥ दुर्गां शतभुजां देवीं भक्तदुर्गतिनाशिनीम् ॥ त्रिलोचनप्रियां साध्वीं त्रिगुणां च त्रिलोचनाम् ॥ ४ ॥ बिभ्रतीं कबरीभारान्मालतीमाल्यमंडितान् ॥ वर्तुलं वामवक्त्रं च शंभोर्मानसमोहनम् ॥ ५ ॥ नासादक्षिणभागेन बिभ्रतीं गजमौक्तिकम् ॥ सिंदूरबिंदुना शश्वद्भालमध्यस्थलोज्ज्वलाम् ॥ ६ ॥ वह्निशुद्धांशुकाधानां गंधचंदनचर्चिताम् ॥ बिभ्रतीं स्तनयुग्मं च कस्तूरीचित्रशोभिताम् ॥ ७ ॥ विधातुश्च विधात्रीं च सर्वधात्रीं च शांकरीम् ॥ सृष्टौ स्रष्टुः शिल्परूपां दयां पातुश्च पालने ॥ ८ ॥

संहारकाले संहर्तुः परां संहाररूपिणीम् ॥ निशुंभशुंभमथिनीं महिषासुरमर्दिनीम् ॥ १ ॥" इति ध्यात्वा स्वशिरसि पुष्पांजलिं दत्त्वावाहयेत्। तत्र मंत्रः। "एह्येहि भगवत्यंब शिवलोकात्सनातने ॥ गृहाण मम पजां च शारदीयां सुरेश्वरि ॥ १ ॥ इहागच्छ जगत्पूज्ये तिष्ठ तिष्ठ महेश्वरि ॥ हे मातरस्यामर्चायां सन्निरुद्धा भवांबिके ॥२॥ इहागच्छंतु त्वत्प्राणाश्चाधःप्राणैः सहाच्युते ॥ इहागच्छंतु त्वरितं तत्रैव सर्वशक्तयः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं च दुर्गायै वह्निजायांतमेव च ॥ समुच्चार्योरसि प्राणाः संतिष्ठंतां सदाशिवे ॥ ४ ॥ सर्वेन्द्रियाधिदेवास्ते इहागच्छंतु चंडिके ॥ इहागच्छंतु ते शक्त्या इहागच्छतु चेश्वरः ॥ ५ ॥ दुर्गे देवि इहागच्छ सान्निध्य मिह कल्पय ॥ पूजाभागान्गृहाण त्वं योगिनीकोटिभिः सह ॥ ६ ॥" मूलं पठित्वा। ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गे इहागच्छ इह तिष्ठ इत्या वाहनं कृत्वा सिंहासनं दद्यात्। तत्र मंत्रः। "अमूल्यरत्ननिर्माणं नानाचित्रविराजितम्। वरं सिंहासनं श्रेष्ठं गृह्यतां शंकरप्रिये ॥ १ ॥" इति सिंहासनं दत्त्वा स्वागतं कुर्यात्। तद्यथा—स्वागतं भगवत्येवं शिवलोकाच्छिवप्रिये ॥ प्रसादं कुरु मे भद्रे भद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥ ॥ १ ॥ धन्योऽहं कृतकृत्योऽहं सफलं जीवनं मम ॥ आगतासि यतो मातर्माहेश्वरि ममालयम् ॥ २ ॥ अद्य मे सफलं जन्म सार्थकं जीवनं मम ॥ पूजयामि यतो दुर्गां पुण्यक्षेत्रे च भारते ॥ ३ ॥ स्वागतं देवदेवेशि मद्भाग्यात्त्वमिहागता ॥ प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बाल वत्परिपालय ॥ ४ ॥ इति स्वागतं कृत्वा पाद्यादिपूजनं कुर्यात् ॥ अथ पाद्यादिपूजनम् ॥ अमूल्यरत्नपात्रस्थं निर्मलं जाह्नवीजलम् ॥ पादप्रक्षालनार्थाय दुर्गे पाद्यं च गृह्यताम् ॥१॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गायै नमः पाद्यं समर्पयामि इति सामान्यार्घोदकेन शंखोदकेन वा पाद्यं दद्यात्। इति पाद्यम् ॥१॥ ॐ वेदानामपि वेद्यायै देवानां देवतात्मने॥ आचमं कल्पयामीशि शुद्धानां शुद्धिहेतवे॥१॥ मूलं पठित्वा। ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गायै नमः आचमनं समर्पयामि। इति कनिष्ठाहीनोन्नतसंयुक्तचतुरंगलीरूपाचमनमुद्रया चंदनपुष्प जातीकर्पूरकंकोललवंगतमालकादिचूर्णसंयुक्तजलं मुखे दद्यात्। इत्याचमनम् ॥ २ ॥ ॐ सर्वकालष्यहीनायै परिपूर्णसुखात्मने ॥ मधुपर्कमिमं देवि कल्पयामि प्रसीद मे ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा। ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गायै नमः मधुपर्कं समर्पयामि। इति संयुक्ता

 ॥३३२॥

धोमुखानामिकास्पृष्टांगुष्ठात्मिकया मधुघृतशर्करादधिदुग्धसंघातात्मकमधुपर्कं मुखे दद्यात् । इति मधुपर्कः ॥ ३ ॥ ॐ उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वापि यस्याः स्मरणमात्रतः ॥ शुद्धिमाप्नोति तस्यै ते पुनराचमनीयकम् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा । ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गायै नमः आचमनं समर्पयामि । इत्याचमनं द्वितीयम् ॥ ४ ॥ ॐ तापत्रयहरं दिव्यं परमानंदलक्षणम् ॥ तापत्रयविनिर्मुक्तं तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा । ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गायै नमः इदमर्घ्यं समर्पयामि । इत्यनेन कुशाग्राक्षततिलव्रीहियवाज्यसिद्धार्थपुष्पमिश्रित जलात्मकार्घ्यं शिरसि सर्वांगुलीसंयोगेन दद्यात् । इत्यर्घ्यः ॥ ५ ॥ ॐ स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकमातर्महाशये ॥ सर्वलोकेषु शुद्धात्मन् ददामि स्नेहमुत्तमम् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा । ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गायै नमः सुगंधतैलं समर्पयामि । इत्युक्त्वा हरिद्रादिद्रव्यं सुगंधतैलं च उद्वर्तयेत् । इति सुगंधतैलम् ॥ ६ ॥ ॐ परमानंदबोधाब्धिनिमग्ननिजमूर्तये ॥ सांगोपांगमिदं स्नानं कल्पयाम्यहमीश्वरि ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा । ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गादेव्यै नमः जलस्नानं समर्पयामि । कनिष्ठाहीनदक्षहस्तमुष्ट्यात्मिकया मुद्रया स्नानीयं दद्यात् । इति जलस्नानम् ॥ ७ ॥ इति जलस्नानं दत्त्वा पंचामृतादिकैः स्नापयित्वा देवीसूक्तेन यथाशक्त्यभिषेकं कुर्यात् । ततः । ॐ माया चित्रपटच्छन्ननिजगुह्योरुतेजसे ॥ निवारणाय विज्ञानवासस्ते कल्पयाम्यहम् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा । ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गादेव्यै नमः उत्तानदक्षिणहस्तांगुष्ठस्पृष्टतन्मध्यमात्मिकया मुद्रया रक्तवस्त्रं दद्यात् । इति वस्त्रम् ॥ ८ ॥ ॐ यामाश्रित्य महादेवो जगसंहारकस्सदा ॥ तस्यै ते परमेशान्यै कल्पयाम्युत्तरीयकम् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा । ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गादेव्यै नमः इदमुत्तरीयं समर्पयामि इत्युत्तरीयम् ॥ ९ ॥ ॐ स्वभावसुंदरांगायै नानाशक्त्याश्रिते शिवे ॥ भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चिते ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गादेव्यै नमः भूषणं समर्पयामि । इति वाक्येन दक्षहस्तांगुष्ठस्पृष्टानामिकात्मिकया मुद्रया भूषणानि दद्यात् ॥ १० ॥ ॐ चंदनागुरुकस्तूर्यः कुंकुमं रोचनं तथा ॥ कर्पूरादिसुगंधाढ्यं सर्वांगेषु विलेपयेत् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गादेव्यै नमः चंदनं समर्पयामि । इति वाक्येन मंत्रेणोक्तचंदनं कनिष्ठांगुष्ठसंयोगेन देव्यंगे निवेदयेत् । इति गंधम् ॥ ११ ॥

समर्पयामि । ... कर्पूरादिसुगंधाढ्यं सर्वांगेषु विलेपयेत् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः

ॐ अक्षतांस्तंडुलांश्चैव कुंकुमाक्तान्मनोहरान् ॥ गृहाण त्वं महादुर्गे सर्वसिद्धिप्रदा भव ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा । ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गा-
देव्यै नमः अक्षतान् समर्पयामि इति वाक्येन ... अक्षतान् सर्वांगुलीभिर्दद्यात् । इत्यक्षताः॥ १२ ॥ तुरीयवनसंभूतं नानागुणमनोहरम् ॥
अमन्दसौरभं पुष्पं गृह्यतामिदमुत्तमम् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा । ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गादेव्यै नमः पुष्पं समर्पयामि । इति वाक्येन तर्जन्यं-
गुष्ठयोगेन दद्यात् । इति पुष्पम् ॥ १३ ॥ ब्रह्मविष्णुशिवादीनां द्रोणपुष्पं सदा प्रियम् ॥ तत्ते दुर्गे प्रयच्छामि सर्वकामार्थसिद्धये ॥
॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गादेव्यै नमः द्रोणपुष्पं समर्पयामि । इति पठंस्तर्जन्यंगुष्ठयोगेन दद्यात् । इति द्रोणपुष्पम्॥१४॥
अमृतोद्भववृक्षोत्थं शंकरस्य सदा प्रियम् ॥ बिल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरि ॥ मूलं पठित्वा । ॐ भूर्भुवः स्वः
श्रीदुर्गादेव्यै नमः बिल्वपत्रं समर्पयामि । इति बिल्वपत्रम् ॥ १५ ॥ इति पुष्पांतं पूजयित्वा अस्मिन्नवसरे अंगपूजनं कुर्यात् ।
तद्यथा—ॐ चंचलायै नमः इति पादौ पूजयामि १ । ॐ आषाढायै नमः जानुद्वयं पू० २ । ॐ कमलवासिन्यै नमः कटिं पू० ३ ।
ॐ जनन्यै नमो नाभिं पू० ४ । ॐ मन्मथायै नमः स्तनौ पू० ५ । ॐ एकनाभ्यै नमो हृदयं पू० ६ । ॐ ललितायै नमः पाणी
पू० ७ । उन्मत्तकंठायै नमः कंठं प० ८ । भूभृत्यै नमो मुखं पू० ९ । ॐ गौर्यै नमो नेत्रे पू० १० । ॐ धात्र्यै
नमो नासापुटौ पू० ११ ॐ विधात्र्यै नमः कर्णौ पू० १२ । ॐ सर्वसौवर्णायै नमो ललाटं पू० १३ । ॐ सर्वनिष्कलंकायै नमो
मस्तकं पू० १४ । ॐ सर्वसिद्धिप्रदायै नमः सर्वाङ्गं पूजयामि १५ ॥ इति गंधाक्षतपुष्पाभ्यां संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा प्रयोगोक्तावरणपूजां
संपाद्य धूपादिपूजनं कुर्यात् ॥ अथ धूपादिपूजनम् । मूलेन फडिति धूपपात्रं संप्रोक्ष्य पुरतो निधाय मूलेन नमः इति गंधपुष्पाभ्यां
संपूज्य । ॐ(रं)इति वह्निबीजेन उपरि अग्निं संस्थाप्य तदुपरि मूलेन गुग्गुलुमिश्रितदशांगं दत्त्वा घंटां वादयन् दक्षतर्जन्यंगुष्ठयोगेन धूप
मुद्रया देवतागुणान्कीर्तयन्नाभिदेशतो धूपयेत् । तत्र मंत्रः । ॐ दशांगं गुग्गुलुं धूपं चंदनागुरुसंयुतम् ॥ सर्वेषामुत्तमं धूपं श्रीदुर्गायै
निवेदयेत् ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः धूपं समर्पयामि । इति पठित्वा

देव्या वामभागे धूपपात्रं निधाय शंखजलमुत्सृजेत्। इति धूपः १६। दीपपात्रं गोघृतेनापूर्य मंत्राक्षरतंतुभिर्वर्तिं निक्षिप्य प्रणवेन(ॐ) प्रज्वाल्य घंटां वादयन् मध्यमांगुष्ठलग्नदीपमुद्रया नेत्रादिपादपर्यंतं दीपं दर्शयेत्। तत्र मंत्रः। ॐ घृताद्यैर्वर्तितश्चैव महातेजोमयो ज्वलन्॥ महान्तमंधकारं च निवारयति भूतले॥ मूलं पठित्वा। ॐ भूर्भुवः स्वः सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै श्रीदुर्गादेव्यै नमो दीपं समर्पयामि। इति देवीदक्षिणतः दीपपात्रं निधाय शंखजलमुत्सृजेत्। इति दीपः १७। देव्यग्रे देवीदक्षिणतो वा जलेन चतुरस्रं मंडलं कृत्वा स्वर्णादिनिर्मितं भोजनपात्रं निधाय तन्मध्ये षड्रसोपेतं विविधप्रकारं पायसं वा निधाय मूलेन ॐ ह्रीं नमः इत्यर्घ्योदकेन संप्रोक्ष्य मूलेन संवीक्ष्य अधोमुखदक्षिणहस्तोपरि तादृशं वामं निधाय नैवेद्यमाच्छाद्य ॐ (यं) इति वायुबीजेन षोडशधा संजप्य वायुना तद्गतदोषान् संशोष्य ततो दक्षिणकरतले तत्पृष्ठलग्नवामकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य ॐ (रं) इति वह्निबीजं षोडश वारं संजप्य तदुत्पन्नाग्निना तद्दोषं दग्ध्वा वामकरतले अमृतबीजं विचिंत्य तत्पृष्ठलग्नं दक्षिणकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य ॐ (वं) इति सुधाबीजं षोडशवारं संजप्य तदुत्थामृतधारया प्लावितं विभाव्य मूलेन प्रोक्ष्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य मूलेनाष्टधाभिमंत्र्य गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य देव्यास्योद्गतं तेजः स्मृत्वा वामांगुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृष्ट्वा दक्षिणकरेण जलं गृहीत्वा 'सत्पात्रसिद्धं सुहविर्विविधानेकभक्षणम्॥ नैवेद्यं मनसाभीष्टं श्रीदुर्गायै निवेदयेत्॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः सांगायै सपरिवारायै सायुधायै श्रीदुर्गायै नमः इदं नैवेद्यं गृहाण स्वाहा। इति नैवेद्यं समर्प्य वामहस्तेन अनामिकामूलयोरंगुष्ठयोगेन ग्रासमुद्रां प्रदर्श्य देवीं भुक्तवतीं विभाव्य जलं दद्यात्। इति नैवेद्यम्॥ १८ ॥ नमस्ते देवदेवेशि सर्वतृप्तिकरं वरम्॥ परमानंदसंपूर्णं गृहाण जलमुत्तमम्॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः जलं समर्पयामि। इति मंत्रेण स्वर्णादिपात्रस्थं कर्पूरादिसुवासितं जलं निवेद्य देव्या तज्जलं प्राशितमिति भावयन् अंतःपटं दद्यात्। इति जलम्॥ १९ ॥ ततः देव्याः सपरिवाराया देवतायाः तृप्तिं विभाव्य हस्तप्रक्षालनार्थं चंदनेन करोद्वर्तनं कृत्वा उष्णोदकेन आचमनं दद्यात्। तत्र मंत्रः। उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वापि यस्याः स्मरणमात्रतः॥ शुद्धिमाप्नोति

मयो ते पुनराचमनीयकम् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः आचमनं समर्पयामि । इत्याचमनम् ॥ २० ॥ इत्याचमनं दत्त्वा गंडूषार्थं जलं दद्यात् । कर्पूरैर्नागवल्लीभिः क्रमुकादिभिरन्वितम् ॥ शिववक्षो निवासायै तांबूलं च समर्पये ॥ १ ॥ मलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः सां० श्रीदुर्गादेव्यै नमः तांबूलं समर्पयामि । इति तांबूलम् ॥ २१ ॥ फलैश्च पुरनारंगैः कदलीमधुरैस्तथा ॥ नारिकेलसमायुक्तं फलं च प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा । ॐ भूर्भुवः स्वः सां० श्री दुर्गादेव्यै नमः फलं समर्पयामि । इति फलम् ॥ २२ ॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेम बीजं विभावसोः ॥ अनंतपुण्यफलदमतः शांतिं प्रयच्छ मे ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा । ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गादेव्यै नमः दक्षिणां समर्पयामि । इति हिरण्यादिदाक्षिणां दद्यात् ॥ २३ ॥ शालि गोधूमपिष्टेन त्रिकोणाकारं प्रयोगोक्तं वा अमुकसंख्यापरिमितदीपं निर्माय स्वर्णादिस्थालीमध्ये संस्थाप्य घृतेनापूर्य कपूरादिवर्ति निक्षिप्य मायाबीजेन (ह्रीं) प्रज्वाल्य मूलेनार्तिक्यं संपूज्य मूलं पठित्वा देव्युपरि नेत्रादिपादपर्यंतं नववारांस्त्रिवारान्वा भ्रामयेत् । घंटां च वादयेत् । तत्र मंत्रः । अंतस्तेजो बहिस्तेजो ह्येकीकृत्य निरंतरे ॥ त्रिधा देव्या परिभ्राम्य कुलदीपं निवेदयेत् ॥ १ ॥ चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च ॥ त्वमेव सर्वज्योतिस्त्वमार्तिक्यं मे गृहाण वै ॥ २ ॥ मूलं पठित्वा । ॐ भू० श्रीदुर्गादेव्यै नमः आर्तिक्यं समर्पयामि । इत्युच्चरन् देव्या दक्षिणतः निधाय शंखजलमत्सृजेत् । इति नीराजनम् ॥ २४ ॥ ॐ कदलीगर्भसंभूतकर्पूरैश्च प्रदीपितम् ॥ आरार्तिक्यमहं कर्वे पश्य मे वरदा भव ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा । ॐ भू० श्रीदुर्गादेव्यै नमः कर्पूरार्तिक्यं प्रदर्शयामि । इति कर्पूरार्तिक्यम् ॥ २५ ॥ ॐ "यानि कानि च पापानि जन्मांतरकृतानि वै ॥ तानि सर्वाणि नश्यंतु प्रदक्षिणपदे पदे" ॥ १ ॥ इति पठित्वा एकां (१) प्रदक्षिणां कुर्यात् ॥ २६ ॥ "प्रपन्नं पाहि मामीशे भीतं मृत्युमहार्णवात्" इति वदन् साष्टांगं प्रणमेत् ॥ ॥ २७ ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय "नानासुगंधयुक्तं च यथाकालोद्भवं तथा ॥ मया पुष्पांजलिं दत्तं गृहाण परमेश्वरि" ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भू० श्रीदुर्गादेव्यै नमः पुष्पांजलिं समर्पयामि । इति पुष्पांजलिः ॥ २८ ॥ इति पुष्पांजलिं दत्त्वा ततः स्तुतिपाठेन

देवीं स्तुत्वा बद्धांजलिपूर्वकं प्रार्थयेत् । तद्यथा–" ज्ञानतोऽज्ञानतो वाथ यन्मया क्रियते शिवे ॥ मम कृत्यमिदं सर्वमिति देवि क्षमस्व मे ॥ १ ॥ अपराधसहस्राणि क्रियंतेऽहर्निशं मया ॥ दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥ २ ॥ अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे ॥ कोऽपरः सहतां लोके केवलं स्वामिनं विना ॥ ३ ॥ भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलंबनम् ॥ त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं शिवे " ॥ ४ ॥ इति संप्रार्थ्य देवीवामकरे पूजार्पणजलं दत्वा सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कुमारीपूजनं कृत्वा दिग्देवीभ्यो बलिं दद्यात् । तद्यथा–बलि द्रव्येण पिंडवत्कृत्वा गंधादिभिः संपूज्य तस्योपरि दीपं दानविधिक्रमेण संस्थाप्य ॐ भूर्भुवः स्वः गजारूढे कादंबरि एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहितसदीपमाषभक्तबलिर्नमः एवं सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ भू० अजारूढे उल्के ए० २ । ॐ भू० महिषारूढे करालि ए० ३ । प्रेतारूढे रक्ताक्षि ए० ४ । उरगारूढे श्वेतवक्त्रे ए० ५ । मृगारूढे हरिते ए० ६ । सिंहारूढे यक्षिणि ए० ७ । वृषारूढे कंकालि ए० ८ । हंसारूढे सुरज्येष्ठे ए० ९ । अहिवाहिनि सर्वराज्ञि ए० १० । एवं दिग्देवीनां बलिं दत्त्वा नवग्रहेभ्यो दद्यात् । तद्यथा–मध्ये वृत्तमंडले सप्ताश्वरथारूढ सूर्य्य ए० १ । आग्नेये चतुरस्रपीठे मृगारूढ सोम ए० २ । दक्षिणे त्रिकोणपीठे मेषारूढ अंगारक ए० ३ । ईशाने बाणाकृतिपीठे सिंहारूढ सौम्य ए०४ । उत्तरे पट्टिशाकारपीठे हयारूढ आंगिरस ए० ५ । प्राच्यां पंचकोणपीठे श्वेताश्वारूढ भार्गव ए० ६ । पश्चिमे धनुराकारपीठे गृध्रारूढ मन्द ए०७। नैर्ऋत्ये सूर्पाकारपीठे सिंहारूढ राहो ए० ८ । वायुकोणे ध्वजाकारपीठे केतो ए० ९ । इति ग्रहेभ्यो बलिं दत्त्वा पंचलोकपालेभ्यो बलिं दद्यात् । तद्यथा–नैर्ऋत्ये शूर्पाकृतिपीठे उंदुरारूढ गणेश ए० १ । पश्चिमे धनुराकृतिशानिपीठे सिंहारूढे दुर्गे ए० २ । मध्ये वृत्तपीठे मृगकृष्णसमारूढ वायो ए० ३ । नैर्ऋत्ये शूर्पाकारराहुपीठे आकाश ए० ४ । वायव्ये ध्वजाकारपीठे अश्विनीकुमारौ ए० ५ । इति बलिं दत्त्वा पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यो बलिं दद्यात् । तद्यथा—कौशिक गजारूढ इन्द्र ए० १ । मेषारूढ यम अग्ने० २ । महिषारूढ यम० ३ । कौशिकारूढ नैर्ऋत० ४ । मकरारूढ वरुण० ५ । मृगारूढ वायो ए० ६ । दशाश्वसमारूढ कुबेर० ७ । वृषारूढ ईश्वर० ८ । हंसारूढ ब्रह्मन्० ९ ।

गरुडारूढ अनंत० इति बलिदानं समाप्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचम्य मालायाः संस्कारान्कुर्यात् ॥ अथ मालायाः संस्काराः ॥ कुशोदकसहितैः पंचगव्यैर्मालां प्रक्षाल्य अश्वत्थपत्रे नवे रचिते कमले वा स्थापयित्वा ॥ ॐ ह्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं इत्येतानि मातृकाक्षराणि मूलमंत्रं च मालायां विन्यस्य पुनः पंचगव्येन प्रोक्ष्य ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः ॥ भवे भवेनातिभवे भवस्वमां भवोद्भवाय नमः ॥१॥ इति मन्त्रेण शीतजलेन प्रक्षालयेत् ॥ पुनः ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमः ॥ इति मंत्रेण चन्दनागुरुकर्पूरादिसुगन्धद्रव्यैर्घर्षयेत् ॥ २ ॥ ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ॥ सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्य इति मंत्रेण तां धूपयेत् ॥ ३ ॥ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ इति मंत्रण मालायां चन्दनं लेपयेत्॥४॥ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्॥इति मंत्रेण मेरुसहितं प्रत्येकमणिं सकृदसकृद् वाभिमन्त्रयेत् ॥इत्यभिमन्त्र्य अस्या मालायाः इति शब्दं संयोज्य प्राणप्रतिष्ठामंत्रेण मालायाः प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा ध्यायेत् ॥ "ॐ माले माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ॥ चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव" ॥१॥ इति मालां संप्रार्थयेत् ॥ इति मालां प्रतिष्ठाप्य एकाग्रमनाः संभाषणादि परिहरन्दिशोऽनवलोकयन्देवीं मनसा ध्यायन्संपूर्णवर्णस्वरोच्चारतत्पदमात्राविभक्तिविवेकज्ञानवान्निराहारो यताहारो नक्तंभोजी अधःशायी शतमादौ शतं कवचार्गलाकीलकं सकृज्जपित्वा ततः सप्तशतीमालास्तोत्रं त्रयोदशाध्यायात्मकम् ॐ कारमादौ संयोज्य पठेत् ॥ शतमादौ शतं चांते नवार्णं जपेत् ॥ एवं नवचंडीविधाने नित्यचंडीविधानेऽप्येवं नवदुर्गाविधानेऽप्येवं कालरात्रिविधानेऽप्येवं शतचंड्यादिविधाने सहस्रचंड्या विधानेऽप्येवम् । केवलमंत्रानुष्ठाने । "ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं सर्वकार्येषु सर्वदा ॥" इति मंत्रेण दक्षिणहस्ते मालामादाय शतावृत्तिजपं कृत्वा तद्दशगुणितं ऊह्यम् ॥ प्रत्येकं कवचार्गलाकीलकादि कृत्वा मध्ये चरितत्रयमालां कृत्वा रहस्यसहितां जपित्वा

हृदये धारयन् स्वेष्टदेवीं ध्यात्वा मध्यमांगुलिमध्यपर्वणि संस्थाप्य ज्येष्ठाग्रेण भ्रामयित्वा एकाग्रचित्तो मंत्रार्थं स्मरन्यथाशक्ति प्रातःकालमारभ्य मध्यंदिनं यावत् मूलमंत्रं जपेत् । नित्यमेव सामान्यजपः कार्यो न तु न्यूनाधिकः । ततो जपांते ॥ " ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव ॥ शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा ॥ तेन सत्येन सिद्धिं मे देहि मातर्नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥ " ॐ ह्रीं सिद्ध्यै नमः इति मालां शिरसि निधाय गोमुख्यां रहस्यास्थापयेत् ॥ नाशुचिः स्पृशेत् । नान्यस्मै दद्यात् । अशुचिस्थाने न निदध्यात् । स्वयोनिवत् गुप्तां कुर्यात् । ततः कवचस्तोत्रसहस्रनामादिकं पठित्वा पुनः मूलमंत्रेण न्यासादिकं विधाय देवीं पंचोपचारैः संपूज्य पुष्पांजलिं च दत्त्वा जपस्य देव्या अर्पणं कुर्यात् । अर्घोदकेन चुलुकमादाय । " ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्त्वयि स्थितम् ॥ १ ॥ ॐ इतः पर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुर्यावस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृत तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा । मदीयं च सकलं श्री दुर्गादेव्यै समर्पयामि नमः । ॐ तत्सदिति ब्रह्मार्पणं भवतु ।" इति देवीवामकरे जपसमर्पणं कृत्वा कृतांजलिपूर्वकं क्षमापनं पठेत् ॥ अथ क्षमापनम् ॥ " आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ॥ पूजाभागं न जानामि त्वं गतिः परमेश्वरि ॥ १ ॥ मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ॥ यत्पजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ॥२॥ यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ॥ तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ ३ ॥ कर्मणा मनसा वाचा त्वत्तो नान्या गतिर्मम ॥ त्वमंतः सर्वभूतानां वीक्षसे परमेश्वरि ॥ ४ ॥ अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ॥ तस्मात्कारुण्यभावेन क्षमस्व परमेश्वरि ॥ ५ ॥ मातर्योनिसहस्रेषु सहस्रेषु व्रजाम्यहम् ॥ तेषु तेष्वचला भक्तिरच्युतेऽस्तु सदा त्वयि ॥ ६ ॥ गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च ॥ आगता सुखसंपत्तिः पुण्याच्च तव दर्शनात् ॥ ७ ॥ देवी दात्री च भर्त्री च देवीरूपमिदं जगत् ॥ देवी जयति सर्वत्र या देवी साहमेव हि ॥ ८ ॥ क्षमस्व देवदेवेशि मत्कृतं भुवनेश्वरि ॥ तव पादांबुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे " ॥ ९ ॥ इति कृतांजलिः प्रार्थयित्वा ततः शंखजलमुद्धृत्य देव्या उपरि भ्राम

यित्वा " साधु वासाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया ॥ तत्सर्वं कृपया देवि गृहाणाराधितं मम " इत्युच्चरन् देव्यै स्वामकरेण किंचि
जलं दत्त्वा प्राग्वदर्घ्यं देवीशिरसि दत्त्वा शंखं यथास्थाने निवेश्य ततः गतसारनैवेद्यं किंचिदुद्धृत्य ऐशान्यां दिशि ॐ ह्रीं उच्छिष्ट
चांडाल्यै नमः इति उच्छिष्टचांडालीं संपूज्य " ॐ उच्छिष्टचांडालिनि देवि निर्माल्यैश्चंदनादिभिः ॥ लेह्यचोष्यान्नपानादिनिर्माल्यस्त
ग्विलेपनैः ॥ १ ॥ निर्माल्यभोजनं तुभ्यं ददामि श्रीशिवाज्ञया " इति मंत्रेण निर्माल्यैस्तदुच्छिष्टभोजनं दत्त्वा तच्छेषनैवेद्यं शिरसि
धृत्वा देवीभक्तेषु विभज्य स्वयं भुक्त्वा देवीं विसर्जयेत् । तत्र मंत्रः । " ॐ गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं परमेश्वरि ॥ पूजा
राधनकाले च पुनरागमनाय च । " इति पठित्वा संहारमुद्रया देवीं विसृज्य स्वहृदये स्थापयेत् ॥ तत्र मंत्रः । ॐ तिष्ठ तिष्ठ परस्थाने
स्वस्थाने परमेश्वरि ॥ यत्र ब्रह्मादयो देवाः सर्वे तिष्ठंति मे हृदि ॥१॥ " इति हृदयकमले हस्तं दत्त्वा देवीं संस्थाप्य मानसोपचारैः
संपूज्य स्वात्मानं देवरूपं भावयन्यथासुखं विहरेत् । एवमेव विधिना जपं समाप्य जपांते तद्दशांशतो नित्यहोमं वा कुर्यात् ॥
अथ दुर्गामखोत्सवप्रारंभः ॥ यागभूमिं संशोध्य षोडशस्तंभसहितं मंडपं सवितानं चतुर्द्वारं तोरणवेष्टितं कृत्वा दिव्यवस्त्रपट्टदुकूलादि
भिर्देवतागारं श्रीगिरिं कृत्वा कदलीस्तंभविराजितं सुमनोहरं पुष्पमालोपशोभितं मंडपं विधाय तन्मध्ये होमानुसारतः कुंडं चतुरस्रं प्रयो
गोक्तं वा मेखलात्रययुतं योनिसहितं कुर्यात् । अथवा स्थंडिलं कुर्यात् । स्तंभतोरणादिप्रतिष्ठापूजनं सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण
कृत्वा तेनैवाग्निं संस्थाप्य प्रधानहोमं समाप्य चरुतिलाज्येन पुनर्होमं कुर्यात् । तत्र क्रमः । ॐ गणपतये नमः स्वाहा इदं गणपतये
न मम इति सर्वत्र १ ॥ ॐ दुर्गायै० २ ॥ ॐ सरस्वत्यै० ३ ॥ ॐ क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा० ४ ॥ ॐ कादंबर्यै० ५ ॥ ॐ उल्कायै०
६ ॥ ॐ कराल्यै० ७ ॥ ॐ रक्तायै० ८ ॥ ॐ श्वेतकौबेर्य्यै० ९ ॥ ॐ यक्षिण्यै० १० ॥ ॐ काल्यै० ११ ॥ ॐ सुरश्रेष्ठायै० १२ ॥ ॐ जं
जयायै० १३ ॥ ॐ विं विजयायै नमः स्वाहा इदं० १४ ॥ ॐ जं जयंत्यै० १५ ॥ ॐ अं अपराजितायै० १६ ॥ ॐ निं नित्यायै० १७ ॥
ॐ विं विलासिन्यै० १८ ॥ ॐ दों दोग्ध्र्यै० १९ ॥ ॐ अं अघोरायै० २० ॥ ॐ मं मंगलायै नमः २१ ॥ ॐ धात्रे नमः २२ ॥ ॐ

विधात्रे० २३ ॥ ॐ शंखनिधये० २४ ॥ ॐ पद्मनिधये० २५ ॥ ॐ द्वारश्रियै० २६ ॥ ॐ वास्तुपुरुषाय० २७ ॥ ॐ ऐरावताय० २८ ॥ ॐ पुंडरीकाय० २९ ॥ ॐ वामनाय० ३० ॥ ॐ कुमुदाय० ३१ ॥ ॐ अंजनाय० ३२ ॥ ॐ पुष्पदंताय० ३३ ॥ ॐ सार्वभौमाय० ३४ ॥ ॐ सुप्रतीकाय० ३५ ॥ ॐ दमनकाय० ३६ ॥ ॐ पुंडरीकाय० ३७ ॥ ॐ गुग्गुलाय० ३८ ॥ ॐ कुरंटकाय० ३९ ॥ ॐ ऋग्वेदाय० ४० ॥ ॐ यजुर्वेदाय० ४१ ॥ ॐ सामवेदाय० ४२ ॥ ॐ अथर्ववेदाय० ४३ ॥ इति होमं कृत्वा ग्रहमखं कुर्यात् । ॐ आदित्याय० ४४ ॥ ॐ सोमाय० ४५ ॥ ॐ भौमाय० ४६ ॥ ॐ बुधाय० ४७ ॥ ॐ बृहस्पतये० ४८ ॥ ॐ शुक्राय० ४९ ॥ ॐ शनैश्चराय० ५० ॥ ॐ राहवे० ५१॥ ॐ केतवे० ५२ ॥ ततः ॐ रुद्राय० ५३ ॥ ॐ गौर्यै० ५४ ॥ ॐ स्कंदाय० ५५ ॥ ॐ विष्णवे० ५६ ॥ ॐ ब्रह्मणे० ५७ ॥ ॐ इंद्राय० ५८ ॥ ॐ यमाय० ५९ ॥ ॐ कालाय० ६० ॥ ॐ चित्रगुप्ताय० ६१ ॥ ॐ अग्नये० ६२ ॥ ॐ अद्भ्यः स्वाहा इदमद्भ्यो न मम ६३ ॥ ॐ महाभार० ६४ ॥ ॐ इंद्राय० ६५॥ ॐ इन्द्राण्यै० ६६ ॥ ॐ वरुणाय० ६७ ॥ ॐ सर्पाय० ६८॥ ॐ ब्रह्मणे० ६९॥ ॐ अनंताय० ७० ॥ ॐ वासुकये० ७१ ॥ ॐ तक्षकाय० ७२ ॥ ॐ कर्कोटकाय० ७३ ॥ ॐ पद्माय० ७४॥ ॐ महापद्माय० ७५॥ ॐ शंखपालाय नमः ०७६॥ ॐ कंबलाय नमः० ७७ ॥ ॐ कुलिकाय० ७८ ॥ ॐ गणपतये० ७९ ॥ ॐ दुर्गायै० ८० ॥ ॐ वायवे० ८१ ॥ ॐ आकाशाय० ८२ ॥ ॐ अश्विदेवाभ्यां० ८३ ॥ इति होमं कृत्वा पीठदेवताहोमं कुर्यात् । ॐ ओंकारपीठादिकामरूपपीठांतेभ्यो नमः स्वाहा इति पीठेभ्यो नमः ८४ ॥ ततः ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः स्वाहा० ८५ ॥ इति होमं कृत्वा मंडूकादिपृथक्पृथङ्नाम्ना वा होमयेत् । तत्र श्चादावरणदेवताहोमं कुर्यात् । तद्यथा—ॐ गं गणपतये० ८६ ॥ ॐ क्षं क्षेत्रपालाय० ८७॥ ॐ पं पादुकाभ्यो० ८८॥ ॐ वं वटुकनाथाय० ८९ ॥ ॐ अं अग्निमुखवेतालाय० ९० ॥ ॐ प्रं प्रेतवाहनवेतालाय० ९१ ॥ ॐ जं ज्वालामुखवेतालाय० ९२ ॥ ॐ धूं धूम्राक्षवेतालाय० ९३ ॥ ॐ जं जयायै० ९४॥ ॐ विं विजयायै० ९५॥ ॐ जं जयंत्यै० ९६ ॥ ॐ अं अपराजितायै० ९७ ॥ ॐ निं नित्यायै नमः स्वाहा०९८॥ ॐ विं विलासिन्यै०९९॥ ॐ दं दोग्ध्र्यै०१००॥ ॐ अं अघोरायै०१०१॥ॐ मं मंगलायै०१०२॥ॐ हं हंसवाहिन्यै ब्राह्म्यै विद्ये नमः स्वाहा इदं

ब्राह्मये नम०१०३ॐ ह्लौं वृषभवाहिन्यै माहेश्वर्यै विच्चे नमः स्वाहा०१०४॥ॐक्रीं मयूरवाहिन्यै कौमार्यै विच्चे नमः स्वाहा१०५॥ ॐ श्रीं गरुड वाहिन्यै वैशाख्यै विच्चे नमः स्वाहा १०६ ॥ ॐ दं दंष्ट्रोद्धृतवसुंधरायै वाराह्यै नमः स्वाहा १०७ ॥ ॐ क्ष्रौं स्तंभोद्भवायै नारसिंह्यै विच्चे नमः स्वाहा १०८ ॥ ॐ लौं गजवाहिन्यै ऐंद्र्यै विच्चे नमः स्वाहा १०९ ॥ ॐ खें गणनाथपरिवारायै सदा रुद्रेण संयुक्तायै चंड मुण्डमंडितायै सिंहारूढायै चामुंडायै विच्चे नमः स्वाहा ११० ॥ ॐ ह्रीं हेमगर्भायै नंदायै विच्चे नमः स्वाहा १११ ॥ ॐ ह्रीं सुरक्तायै रक्तदंतिकायै विच्चे नमः स्वाहा ११२ ॥ ॐ ह्रीं नीलायै शाकंभर्यै विच्चे नमः स्वाहा ११३ ॥ ॐ ह्रीं सर्वरूपार्ति हारिण्यै दुर्गायै विच्चे नमः स्वाहा ११४॥ ॐ ह्रीं दंष्ट्राश्रितमुखायै नीलपात्रशिरोधरायै भीमायै विच्चे नमः स्वाहा११५॥ ॐ ह्रीं तेजोमंडल-दुर्धर्षायै वरदायै भ्रामर्यै विच्चे नमः स्वाहा ११६ ॥ ॐ यं यक्षिण्यै० ११७ ॥ ॐ कं कालिकायै ११८ ॥ ॐ सं सुरश्रेष्ठायै० ११९ ॥ ॐ दं दशाननायै० १२० ॥ ॐ रं रत्यै०१२१॥ ॐ प्रं प्रीत्यै० १२२॥ॐ वं विश्वेश्वर्यै०१२३॥ॐ अं अष्टादशभुजायै मनोभवायै० १२४॥ॐ अणिम्ने० १२५ ॥ ॐ महिम्ने० १२६ ॥ ॐ लघिम्ने० १२७ ॥ ॐ गरिम्णे० १२८॥ॐ प्राप्त्यै० १२९॥ ॐ प्राकाम्यै० १३० ॥ ॐ ईशितायै० १३१॥ॐ वशितायै० १३२ ॥ॐ असितांगभैरवाय० १३३ ॥ ॐ रुरुभै० १३४ ॥ ॐ चंडभै० १३५ । ॐ क्रोधभै० १३६ ॥ ॐ उन्मत्तभै०१३७ ॥ ॐ कपालभै० १३८ ॥ ॐ भीषणभै० १३९॥ ॐ संहारभै० १४०॥ इति होमं कृत्वा लोकपालेभ्यो जुहुयात् । तद्यथा—लँ वज्रहस्ताय सुराधिपतये इंद्राय० १४१॥ ॐ रं शक्तिहस्ताय तेजोऽधिपतये अग्नये० १४२॥ ॐ मं दंडहस्ताय प्रेताधिपतये यमाय० १४३॥ॐ क्षं खड्गहस्ताय रक्षोऽधि-पतये निर्ऋतये० १४४॥ॐ वं पाशहस्ताय जलाधिपतये वरुणाय० १४५॥ॐ यं अंकशहस्ताय प्राणाधिपतये वायवे०१४६॥ॐ सं गदाहस्ताय नक्षत्राधिपतये० १४७ ॥ ॐ हँ त्रिशूलहस्ताय विद्याधिपतये ईशानाय० १४८ ॥ इति होमं कृत्वा ततः ॐ गुं गुरुभ्योनमः १४९ ॥ ॐ पं परमगुरुभ्यो नमः स्वाहा १५० ॥ ॐ पं परमेष्ठिगुरुभ्यो० १५१॥ ॐ गं गणेशाय० १५२॥ ॐ हं हरये० १५३॥ ॐ हैं हराय० १५४ ॥ एताभ्यो देवताभ्य एकैकाश्चरुतिलाज्याहुतयः ॥ ततः पूर्वोक्तसर्वन्यासं कृत्वा वह्नौ पीठपूजां कृत्वा हुताशने देवीमावाह्य पंचोपचारैः

संपूज्य अग्निमध्यभागे ॐ ह्रीं महालक्ष्म्यै विच्चे नमः स्वाहा इदं महालक्ष्म्यै न मम१।इति सर्वत्र।तद्दक्षिणभागे॥ॐ ऐं महाकाल्यै विच्चे नमः स्वाहा २। देव्या वामभागे ॥ ॐ क्लीं महासरस्वत्यै विच्चे नमः स्वाहा ३। इति त्रिराहुतिं हुत्वा पुनस्तत्रैव देव्या दक्षिणभागे॥ ॐ क्ष्म्रौं सिंहाय नमः स्वाहा० १ ॥ ॐ ह्रूं महिषाय नमः स्वाहा २ ॥ ॐ ह्लौं ह्लैं गौरीरुद्राभ्याम्० ३। देव्याः पृष्ठभागे लक्ष्मीसान्निध्ये। ॐ लक्ष्मी हृषीकेशाभ्यां० ४ ॥ देव्याः पृष्ठभागे। ॐ ऐं विरंचये० ५ ॥ इति हुत्वा पुनः ॐ ह्रूं कं कालाय नमः १ ॥ ॐ रुं रुद्राय नमः २ ॥ ॐ सं सिंहाय नमः ३ ॥ ॐ मं मृत्यवे नमः ४ ॥ ॐ वं विजयाय नमः स्वाहा ५॥ ॐ गं गणेशाय० ६ ॥ ॐ मं महिषाय० ७ ॥ ॐ भं भैरवाय० ८ ॥ इति हुत्वा विष्णुमायादिहोमं कुर्यात् ॥ ॐ विष्णुमायायै० १॥ ॐ चेतनायै०२ ॥ ॐ बुद्ध्यै० ३॥ ॐ निद्रायै० ४॥ ॐ क्षुधायै० ५ ॥ ॐ छायायै० ६ ॥ ॐ शक्त्यै० ७ ॥ ॐ तृष्णायै० ८ ॥ ॐ क्षांत्यै० ९ ॥ ॐ जात्यै० १० ॥ ॐ लज्जायै० ११ ॥ ॐ शांत्यै० १२ ॥ ॐ श्रद्धायै० १३ ॥ कांत्यै० १४ ॥ ॐ लक्ष्म्यै० १५ ॥ ॐ धृत्यै० १६ ॥ ॐ स्मृत्यै० १७ ॥ ॐ दयायै० १८ ॥ ॐ तुष्ट्यै० १९ ॥ ॐ पुष्ट्यै० २० ॥ ॐ मात्रे० २१ ॥ ॐ भ्रांत्यै० २२ ॥ इति होमं कृत्वा रंगहोमं कुर्यात्। तद्यथा—ॐ ह्रां हृ० १ ॥ ॐ ह्रीं शि० २ ॥ ॐ ह्रूं शि० ३ ॥ ॐ ह्रैं क० ४ ॥ ॐ ह्रौं ने० ५ ॥ ॐ ह्रः अ० ६ ॥ इति हुत्वा ॥ ॐ नालाय० १ ॥ ॐ मूलाय० २ ॥ ॐ पद्माय० ३ ॥ ॐ महापद्माय० ४ ॥ ॐ आधारशक्तये० ५ ॥ कूर्माय० ६ ॥ ॐ शेषाय० ७ ॥ ॐ पृथिव्यै० ८ ॥ इति जुहुयात् । ततो मूलेन शतमेकादशाधिकमाज्याहुतीर्हुत्वा पायसातिलपलाशपुष्पसर्षपपूगीफललाजदूर्वाकुरयवबिल्वफलरक्तचंदनगुग्गुलद्रव्याणि मितमिश्रपायसमेव वा प्रयोगोक्तद्रव्येण वा अर्गलाकीलकरहस्यैः प्रतिश्लोकं हुत्वा कृतस्य जपस्य दशांशेन प्रतिश्लोकं सप्तशतीमंत्रेणोक्तद्रव्याणि तिलपायसं वा जुहुयात्। कवचाहुतिनिषेधः। अध्यायसमाप्तौ महाहुतिं मंत्रेण हुत्वा

१ चंडीस्तवे प्रतिश्लोकमेकाहुतिरिहेष्यते ॥ रक्षाकवचगर्भं च होमं तत्र न कारयेत ॥ मौर्ख्यात्कवचगमंत्रः प्रतिश्लोकं जुहोति यः ॥ स्याद्देहपतनं तस्य नरकं प्रतिपद्यते ॥ अन्धकाख्यो महादैत्यो दुर्गाहोमपरायणः ॥ कवचाहुतिजात्पापान्महेशेन निपातितः ॥ इति कवचनिषेधः ॥

२ प्रत्यध्यायांते महाहुतिमन्त्रो यथा-प्रथमाध्यायांते—" नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ॥ नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥" सांगायै सपरि

धान्यस्थले च पत्रपुष्पफलैर्होमः। यद्वा "नमोदेव्यै०" इत्यनेन नवार्णेन वा जपदशांशहोमः। एवं होमं कृत्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्वा जयजयशब्दान्कारयेत्। ततः पुनः प्रधानहोमं कृत्वा ततोऽग्निपूजनं ग्रहपूजनं पीठे वरुणदेवतापूजनं च कृत्वा इंद्रादिदशदिक्पालेभ्यो बलिं निवेद्य मेखलोपरि अद्भिः परिषिच्यात्मनि पावकं योजयित्वा छागाद्यपशुमाषभक्तकूष्मांडानां नारिकेलस्य वा बलिं दत्वा पूर्णाहुतिं दद्यात्। तद्यथा—प्रक्षालितपाणिपादः आचम्य देशकालौ संकीर्त्य कृतस्य अमुकचंडीहोमस्य संपूर्णतासिद्ध्यर्थं पूर्णाहुतिहोममहं करिष्ये। इति संकल्प्य होमावशिष्टेनाज्येन स्रुचं पूरयित्वा तदग्रे पुष्पफलवस्त्रयुतं नारिकेलादिचंदनमालादियुतं निधाय तां स्रुवेणाच्छाद्य उत्थाय तयो मूलं नाभौ कृत्वा मूलमंत्रं वौषडंतं पठित्वा। ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं देव्यर्पणं भवतु ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा। इति पूर्णाहुतिं दद्यात्। इति पूर्णाहुतिं हुत्वाग्निं प्रार्थयेत्। तद्यथा—"भो भो वह्ने महाशक्ते सर्वकर्मप्रसाधक। कर्मांतरेऽपि संप्राप्ते सान्निध्यं कुरु सादरम्॥" इत्यग्निं संप्रार्थ्य

रावायै सवाहनायै सायुधायै वाग्भवबीजाधिष्ठात्र्यै महाकाल्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा। इत्यनेन कपित्थफलं नागवल्लीदलद्वयसहितं कुंकुमाक्षतपुष्पैरभ्यर्चितं सघृतं होमयेत्॥ एवं द्वितीयाध्यायांते—नमो देव्यै० सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै लक्ष्मीबीजाधिष्ठात्र्यै महालक्ष्म्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा। इत्यनेन नारिकेलफलं सघृतं होमयेत्॥ एवं तृतीयाध्यायांते—नमो दे० अष्टाविंशतिवर्णात्मिकायै महालक्ष्म्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा। इत्यनेन सघृतमधुपुष्पाणि होमयेत्॥ एवं चतुर्थाध्यायांते। ॐ नमो दे० त्रिवर्णात्मिकायै शक्तिलक्ष्म्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा। इत्यनेन पूगीफलं सघृतं होमयेत्॥ ततः पंचमाध्यायांते—ॐ नमोदे० विष्णुमायादिचतुर्विंशतिदेवतायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा। इत्यनेन बीजपूरफलं सघृतं होमयेत्॥ ततः षष्ठाध्यायांते—ॐ नमो दे० शताक्ष्यै धूम्राक्ष्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा। इत्यनेन नारिकेलफलं सघृतं होमयेत्॥ ततः सप्तमाध्यायांते ॐ नमो दे० कर्पूरबीजाधिष्ठात्र्यै कालीचामुण्डादेव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा। इत्यनेन कूष्मांडफलखण्डं सघृतं होमयेत्॥ ततोऽष्टमाध्यायांते —ॐ नमो दे० अष्टमातृकासहितायै रक्ताक्ष्यै देव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा। इत्यनेनेक्षुदंडखंडं सघृतं होमयेत्॥ ततः नवमाध्यायांते—ॐ नमो दे० वाग्भवबीजाधिष्ठात्र्यै महाकाल्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा। इत्यनेन पुनः कूष्मांडखण्डमिक्षुदंडं सघृतं होमयेत्॥ ततो दशमाध्यायांते—ॐ नमो दे० सिंहवाहनायै त्रिशूलपाशधारिण्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा। इत्यनेन मातुलिंगफलं सघृतं होमयेत्॥ ततः एकादशाध्यायांते—ॐ नमो दे० सर्वनारायण्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा। इत्यनेन दाडिमफलं सघृतं होमयेत्॥ ततो द्वादशाध्यायांते—ॐ नमो दे० बालायै त्रिपुरसुन्दर्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा। इत्यनेन बिल्वफलं सघृतं होमयेत्॥ ततस्त्रयोदशाध्यायांते—ॐ नमो दे० श्रीत्रिपुरसुन्दर्यै श्रीविद्यायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा। इत्यनेन कदलीफलं सघृतं होमयेत्॥ एवमेव विधिना प्रत्यध्यायांते महाहुतिं कुर्यात्॥

विसृजेत्। इति होमं कृत्वा दक्षिणां च दत्त्वा वह्नौ पवित्रे निक्षिप्य प्रणीतांबु भुवि क्षिप्त्वा सकुशान्परिधीनग्नौ क्षिपेत्। इति होमं समाप्य होमदशांशतो दुग्धमिश्रितजलेन मूलमंत्रांते अमुकचंडीं तर्पयामि इति तर्पणं कृत्वा तर्पणदशांशेन मूलमंत्रांते सिंचामि इत्यभिषेकं कुर्य्यात्। ततो नानाविधैरन्नैर्द्विजसत्तमान्भोजयित्वा तेभ्यो दक्षिणां दत्त्वा न्यूनसंपूर्णतां वाचयेत्। इति पंचांगकृत्येन मंत्रः सिद्धो भवति। एवं सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान्साधयेत्॥ अथ कुमारीपूजाप्रयोगः॥ पूजादिनात्पूर्वदिने गंधपुष्पाक्षतादिभिर्मूलेन भगवत्कुमारी पूजार्थं त्वं मया निमंत्रितासि मां कृतार्थयेति निमंत्रितां प्रातराहूय प्रदक्षिणीकृत्योद्वर्तनाद्यैः स्नापयित्वा गंधतैलेन शरीरं संस्कार्याकेशं परिष्कृत्य ललाटे सिंदूरं नयनयोः कज्जलं सर्वाङ्गे चंदनं दत्त्वा वस्त्रालंकारैराभूष्य पूजागृहमानीय पादौ प्रक्षाल्य अष्टदलपीठोपरि समावेश्य तांबूलेन मुखं संशोध्य देशकालौ स्मृत्वामुकसिद्ध्यर्थं श्रीदुर्गादेवीप्रीत्यर्थं कुमारीणां पूजनं करिष्ये इति संकल्प्य न्यासं कुर्यात्। ॐ क्रां कुमारिके हृदयाय नमः १॥ ॐ क्रीं कुमारिके शिरसे स्वाहा २॥ ॐ क्लूं कुमारिके शिखायै वषट् ३॥ ॐ क्रैं कुमारिके कवचाय हुम् ४॥ ॐ क्रौं कुमारिके नेत्रत्रयाय वौषट् ५॥ ॐ क्रः कुमारिके अस्त्राय फट् ६॥ इति षडंगं विन्यस्य एवमेव विधिना करांगन्यासं कुर्यात्। एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्। "ॐ बालरूपां च त्रैलोक्यसुंदरीं वरवर्णिनीम्॥ नानालंकारनम्राङ्गीं

१—"सुवर्णमयुतं दद्याल्लक्षेर्दशसुवर्णकम्॥ दक्षिणा तु प्रदातव्या यथा होमे तथा जपे"॥ मतांतरे। आचार्याय शतं तदर्धं तदर्धमष्टौ च गोमिथुनानि सुवर्णचतुष्टयं च दद्यात्॥ ब्राह्मणाय निष्कद्वयं गोद्वयं च ऋत्विग्भ्यः प्रत्येकं निष्कत्रयं गोमिथुनं च दद्यात्। इदं सहस्रचंड्यां तदर्धं शतचंड्यां तदर्धं नवचंड्यां अशक्तौ सर्वेभ्यः सुवर्णमाचार्याय द्विगुणं दद्यात्॥

२—विशुद्धेश्वरतन्त्रे यथा—"तर्पणं चन्दनं तोयैस्तीर्थतोयैरथो पुनः॥ गुरूपदिष्टमार्गेण मधुना वाथ तर्पयेत्"॥ तन्त्रान्तरेऽपि—"तीर्थतोयेन दुग्धेन सर्पिषा मधुनापि च॥ गन्धोदकेन वा कुर्यात्सर्वत्र साधकोत्तमः॥ उच्चार्य नाम मूलांते तर्पयामि ततः परम्॥ स्वाहांतं तर्पयेन्मन्त्री यथासंख्यविधानतः॥ तर्पणं च प्रकुर्वीत द्वितीयांतमथोच्चरन्॥"

३—मूलविद्यां समुच्चार्य तदन्ते देवताभिधाम्॥ तदन्ते चाभिषिंचामि नमोऽते चाभिषेचनम्॥ इत्युच्चार्य मूर्ध्नि देशे चिंतयित्वा स्वमन्त्रकम्॥ अधिकां स्वीयसंख्यां तु विधाय तदनंतरम्॥ तत्र संचिंतयेद्देवीं सांगावरणदेवताम्॥ क्षिपेत्तोयं यथासंख्यं गणान् सिंचेत्सकृत्सकृत्॥

४—"अभिषेकं समाप्यैवमभिषेकदशांशतः॥ ब्राह्मणान्देवताबुद्ध्या भोजयेत्साधकोत्तमः॥" तन्त्रांतरेऽपि—सहस्रचंड्यां सहस्रं लक्षचंड्यां लक्षं कोटिचंड्यां कोटिं तथैव शतचंड्यां शतं नवचंड्यां नव ब्राह्मणान् भोजयेदेवं सुवासिनीकुमारीभोजनं च कारयेत्॥ तन्त्रांतरेऽपि—विभवे सति यो मोहात् कुर्याद्विधिविस्तरम्॥ न तत्फलमवाप्नोति देवद्रोही स उच्यते॥

भद्रविद्याप्रकाशिनीम् ॥ १ ॥ चारुहास्यां महानंदहृदयां शुभदां शुभाम् ॥ शंखकुंदेन्दुधवलां द्विभुजां वरदाभयाम् ॥ २ ॥" एवं त्वात्मशिरसि पुष्पं दत्त्वावाहयेत् । "मंत्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातृणां रूपधारिणीम् ॥ नवदुर्गात्मिकां साक्षात्कन्यामावाहयाम्यहम् ॥ १ ॥" इत्यावाह्य ॐ ह्रीं कुलकुमारिकायै नमः इदं पाद्यम् एवमिदमर्घ्यमिदमाचमनीयमिदमनुलेपनमेतेऽक्षताः एतानि पुष्पाणि एष धूपः एष दीपः इदं नैवेद्यमिदं तांबूलमिति पूजयित्वा उपर्युक्तषडंगन्यासमंत्रेण षडंगं पूजयेत् । ततः ॐ ह्रीं हंसः कुलकुमारिके पुष्पांजलिं समर्पयामि । इति पुष्पांजलित्रयं दत्त्वा नवनामभिः पूजयेत् । तद्यथा—ॐ ह्रीं कौमार्य्यै नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं त्रिपुरायै नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं कल्याण्यै नमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं रोहिण्यै नमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं कामिन्यै नमः ॥५॥ ॐ ह्रीं चंडिकायै नमः ॥६॥ ॐ ह्रीं शांकर्यै नमः ॥७॥ ॐ ह्रीं दुर्गायै नमः ८ । ॐ ह्रीं सुभद्रायै नमः ९ । इति नामभिः संपूज्य मूलेन पुष्पांजलित्रयं दत्त्वा प्रदक्षिणीकृत्य प्रणमेत् ॥ तत्र मन्त्रः ॥ "ॐ जगत्पूज्ये जगद्वंद्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ॥ पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥ त्रिपुरां त्रिगुणां धात्रीं ज्ञानमार्गस्वरूपिणीम् ॥ त्रैलोक्यवंदितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम् ॥ २ ॥ कालात्मिकां कालभीतां कारुण्यहृदयां शिवाम् ॥ कारुण्यजननीं नित्यां कल्याणीं पजयाम्यहम् ॥ ३ ॥ अणिमादिगुणोपेतामकारादिस्वरात्मिकाम् ॥ शक्तिभेदात्मिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम् ॥ ४ ॥ कलाधारां कलारूपां कालचण्डस्वरूपिणीम् ॥ कामदां करुणाधारां कामिनीं पूजयाम्यहम् ॥ ५ ॥ चण्डधारां चण्डमायां चण्डमुंडविनाशिनीम् ॥ प्रणमामि च देवेशीं चंडिकां पूजयाम्यहम् ॥ ६ ॥ सुखानन्दकरीं शांतां सर्वदेवनमस्कृताम् ॥ सर्वभूतात्मिकां देवीं शांकरीं पूजयाम्यहम् ॥ ७ ॥ दुर्गमे दुस्तरे चैव दुःखत्रयविनाशिनीम् ॥ पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गे नमाम्यहम् ॥ ८ ॥ सुंदरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम् ॥ सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां प्रणमाम्यहम् ॥ ९ ॥" इति प्रणम्य तदंगे श्रीदुर्गामावाह्य षोडशनामभिः पूजयेत् । तद्यथा—ॐ ह्रीं उमायै नमः १॥ ॐ ह्रीं शूलधारिण्यै नमः २॥ ॐ ह्रीं खेचर्यै नमः३॥ ॐ ह्रीं

१ वाग्भवेन वपुःक्षोभं मायाबीजे गुणाष्टकम् ॥ श्रियोबीजे श्रियो लाभो मायाबीजे रिपुक्षयः ॥ भैरवेण तु बीजेन खे चरेद्वै सुरादिभिः ॥

चत्वरवासिन्यै नमः ४ ॥ ॐ ह्रीं सुगंधनासिकायै नमः ५ ॥ ॐ ह्रीं सर्वधारिण्यै नमः ६ ॥ ॐ ह्रीं चंडिकायै नमः ७ ॥ ॐ ह्रीं सौभद्रिकायै नमः ८ ॥ ॐ ह्रीं अशोकवासिन्यै नमः ९ ॥ ॐ ह्रीं वज्रधारिण्यै नमः १० ॥ ॐ ह्रीं ललितायै नमः ११ ॥ ॐ ह्रीं सिंहवाहिन्यै नमः १२ ॥ ॐ ह्रीं भगवत्यै नमः १३ ॥ ॐ ह्रीं विंध्यवासिन्यै नमः १४ ॥ ॐ ह्रीं महाबलायै नमः १५ ॥ ॐ ह्रीं भूतलवासिन्यै नमः १६ ॥ इति संपूज्य साष्टांगं प्रणमेत् । इति कुमारीपूजनम् ॥ अथ छागादिबलिदानप्रयोगः ॥ अर्धरात्रे पंचाब्दं सर्वलक्षणोपेतं छागादिपशुमानीय । “ ॐ वाराही यमुना गंगा करतोया सरस्वती ॥ कावेरी चंद्रभागा च सिन्धुभैरवसागराः ॥ १ ॥ अजस्नाने महेशानि सान्निध्यमिह कल्पय ॥ पशुपाशविनाशाय हेमकूटस्थिताय च ॥ २ ॥ पराय परमेष्ठिने हुंकाराय च मूर्तये ॥ ” इति पठित्वा मूलेन स्नापयित्वा सिंदूरमाल्यादिनालंकृत्य देव्यग्रे निधाय गंधमिश्रिताघ्योंदकेन मूलेन त्रिः संप्रोक्ष्य कृतांजलिः प्रार्थयेत् । “ छाग त्वं बलिरूपेण महाभाग्यादुपस्थितः ॥ प्रणमामि सदा भक्त्या रूपिणं बलिरूपिणम् ॥ १ ॥ चंडिकाप्रीतिकामस्य दातुरापद्विनाशिने ॥ चंडिकाबलिरूपाय बले तुभ्यं नमो नमः ॥ २ ॥ यज्ञार्थे पशवः सृष्टाः स्वयमेव स्वयंभुवा ॥ अतस्त्वां घातयिष्यामि तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः ॥ ३ ॥ ” इति संप्रार्थ्य पार्श्वपूजां कुर्यात् । तद्यथा—पार्श्वे ॐ जयंत्यै नमः १ ॥ ॐ मंगलायै नमः २ ॥ ॐ काल्यै नमः ३ ॥ ॐ भद्रकाल्यै नमः ४ ॥ ॐ मानस्तोकायै नमः ५ ॥ ॐ विजयायै नमः ६ ॥ ॐ अपराजितायै नमः ७ । मध्ये—ॐ अनंतायै नमः ८ । इति संपूज्य प्रत्यंगं पूजयेत् । तद्यथा—ॐ रुधिरवदनायै नमः इति शिरसि १ ॥ ॐ चंडिकायै नमः इति कपोले २ ॥ ॐ चंद्रार्काभ्यां नमः इति चक्षुषोः ३ ॥ ॐ बृहस्पतये नमः इति कर्णयोः ४ ॥ ॐ सरस्वत्यै नमः इति नासायाम् ५ ॥ ॐ उग्रदंतिकायै नमः इति जिह्वायाम् ६ ॥ ॐ महादंतिकायै नमः इति ग्रीवायाम् ७ ॥ ॐ पृथिव्यै नमः इति उदरे ८ ॥ ॐ धर्माय नमः इति जंघाचतुष्टये ९ ॥ इति संपूज्य जलं गृहीत्वा “ह्रीं श्रीं वरुणमंडलाधिष्ठितविग्रहायै पशुरूप चंडिकायै इमं पशुं प्रोक्षामि स्वाहा” इति पशुं संप्रोक्ष्य ततस्तिलकुशजलान्यादाय देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः श्री—अमुक शर्माहं

छागसंख्यासंख्याकपंचवर्षावच्छिन्नश्रीमद्दुर्गादेव्याःप्रीतिकामोऽहमेतान्छागान्वह्निदैवतान्भगवति श्रीदुर्गे देवि तुभ्यं घातयिष्ये। इति संकल्प्य खड्गपूजां कुर्यात्। तद्यथा—खड्गं पुरतो निधाय "ॐ कृष्णं पिनाकपाणिं च कालरात्रिस्वरूपिणम्॥उग्रं रक्तास्यनयनं रक्तमाल्यानुलेपनम् ॥ १ ॥ रक्तांबरधरं चैव पाशहस्तं कुटुंबिनम्॥ पीयमानं च रुधिरं भुंजानं क्रव्यसंहतिम्॥ रसना त्वं चंडिकायाः सुरलोकप्रसाधिका।" इति खड्गं ध्यात्वा। ॐ ह्रीं ह्रीं खड्ग औं कालिकालि वज्रेश्वरीलोहदंडाय नमः इति गंधादिभिस्त्रिः संपूज्य खड्गोपरि सिंदूरादिना ह्रीं कारं विलिख्य। ॐ खड्गाय नमः इति संपूज्य बलिकर्णे पशुगायत्रीं श्रावयेत्। तत्र मंत्रः। ॐ ह्रीं "बलिरूपाय विद्महे देवीप्रियाय धीमहि। तन्नः पशुः प्रचोदयात्।" इति बलिकर्णे श्रावयित्वा खड्गं हस्तेनादाय प्रार्थयेत्। तद्यथा—"ॐ असिर्विशसनः खड्गस्तीक्ष्णधारो दुरासदः॥ श्रीगर्भो विजयश्चैव धर्मपाल नमोऽस्तु ते॥ १ ॥ इत्यष्टौ तव नामानि स्वयमुक्तानि वेधसा॥नक्षत्रं कृत्तिका ते तु गुरुर्देवो महेश्वरः॥ २ ॥ रोहिण्यश्च शरीरं ते धाता देवो जनार्दनः॥ पिता पितामहो देवस्त्वं मां पालय सर्वदा॥ ३ नीलजीमूतसंकाशस्तीक्ष्णदंष्ट्रः कृशोदरः॥ भावशुद्धो मर्षणश्च अतितेजास्तथैव च॥ ४ ॥ इयं येन धृता क्षोणी हतश्च महिषासुरः॥ तीक्ष्णधाराय शुद्धाय तस्मै खड्गाय ते नमः॥ ५ ॥ चंडिकारसनासि त्वमेकघातेन घातय॥ ६ ॥" इति खड्गं संप्रार्थ्य "हे वज्रासुरनाशाय देवकार्यार्थतत्पर॥ पशुं छिन्धि स्वयं शीघ्रं खड्गनाथ नमोऽस्तु ते॥ १॥ यज्ञार्थे पशवः सृष्टा यज्ञार्थे पशुघातनम्॥ अतस्त्वां घातयिष्यामि तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः॥२॥" इति पठित्वा पशुपाशाय विद्महे विप्रकर्णाय धीमहि। तन्नश्छागः प्रचोदयात्। मूलं पठित्वा श्रीदुर्गे देवि इमं छागबलिं तुभ्यमहं प्रददे इति बलिस्कंधे खड्गं दत्त्वा सकलं रुधिरं मुंडं च देव्यग्रे कृत्वा समभागेन संपूर्णं परमं कर्किदापयेन्मांससमीपजं दीपम्॥ क्रौं क्रौं नमो नमः अनेन प्रतिमुण्डं दद्यात्ततस्तर्पयेदेभिः। ॐ चामुंडां तर्पयामि नमः इति पूर्वे १॥ ॐ योगिनीं तर्पयामि नमः इति दक्षिणे २॥ ॐ डाकिनीं तर्पयामि नमः इति पश्चिमे ३॥ ॐ भैरवीं तर्पयामि नमः इति उत्तरे ४॥ ॐ विदारिकां तर्पयामि नमः इति आग्नेय्याम् ५॥ॐ पापराक्षसीं तर्पयामि नमः इति नैर्ऋत्ये ६॥ ॐ पूतनां तर्पयामि नमः इति वायव्ये ७॥ ॐ कालिकां तर्पयामि नमः इत्यैशान्याम् ८॥इति

मांसन संतर्प्य ॐ अद्य पंचवर्षावच्छिन्नश्रीदुर्गादेव्याः प्रीतिकाम इदं छागरुधिरं समुण्डं विष्णुदैवतं भगवति श्रीदुर्गे देवि तुभ्यमहं प्रददे इति देवीं समर्प्य ततः शेषेण "ॐ बलिं गृह्णन्त्विमं देवा आदित्या वसवस्तथा॥मरुतो येऽश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगा ग्रहाः ॥ १ ॥ असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः॥ डाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः॥२॥ जृंभिकाः सिद्धगंधर्वा मल्ला विद्याधरा नगाः॥ दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनाशकाः॥३॥ जगतां शांतिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः। मा विघ्नो मा च मे पापं मा संतु परिपंथिनः॥४॥ सौम्या भवंतु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः॥५॥" इति विनिवेद्य स्नात्वा तिलकं धृत्वा खड्गिनी शूलिनीत्येकेन स्तुत्वा नमस्कृत्य पुष्पांजलिं दत्त्वा "रूपं देहि यशो देहि भगं भगवति देहि मे ॥ पुत्रान्देहि धनं देहि सर्वकामांश्च देहि मे ॥" इति प्रार्थयेत् । इति पशुबलिः ॥ इति श्रीदुर्गापद्धतिः समाप्ता ॥ अद्येत्यादिपूर्वो० श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताप्रीत्यर्थं चण्डीसप्तशतीपाठाख्यं कर्म करिष्ये ॥ तद ङ्गत्वेनादौ कवचार्गलाकीलकपठनमाद्यन्तयोरष्टोत्तरशतसंख्यनवार्णजपपूर्वकं क्रमेण रात्रिसूक्तदेवीसूक्तपठनमंते रहस्यत्रयपठनं च करिष्ये॥ इति संकल्प्य ॥ प्रथमं नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः॥ नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥ इति मंत्रेण पंचोपचारैः पुस्तकपूजां कुर्यात् ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नम श्चण्डिकायै ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ ॥ ॐ यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम् ॥ यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह ॥ १ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ ॥ अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम् ॥ देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने ॥ २ ॥ प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी ॥ तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥३॥ पंचमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च ॥ सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम् ॥ ४ ॥ नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः ॥ उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना ॥ ५ ॥ अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे ॥ विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गताः ॥ ६ ॥ न तेषां जायते किंचिदशुभं रणसंकटे ॥ नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं नहि ॥ ७ ॥ येस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते ॥ ये त्वां स्मरंति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः ॥ ८ ॥ प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना ॥ ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी

गरुडासना ॥ ९ ॥ माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखिवाहना ॥ लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्तां हरिप्रिया ॥ १० ॥ श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृषवाहना ॥ ब्राह्मी हंससमारूढा सर्वाभरणभूषिता ॥११॥ इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः ॥ नानाभरणशोभाढ्या नाना रत्नोपशोभिताः ॥ १२ ॥ दृश्यन्ते रथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः ॥ शंखं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम् ॥ खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च ॥ १३ ॥ कुन्तायुधं त्रिशलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम् ॥ दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च ॥ १४॥ धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय वै ॥ नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे ॥ ॥१५ ॥ महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि ॥ त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्द्धिनि ॥ १६ ॥ प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यां भयवार्द्धिनी ॥ दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्ग धारिणी ॥ १७॥ प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद्वायव्यां मृगवाहिनी ॥ उदीच्यां पातु कौमारी ईशान्यां शूलधारिणी ॥ १८ ॥ ऊर्ध्वं ब्रह्माणी मे रक्षेदधस्ताद्वैष्णवी तथा ॥ एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना ॥१९॥ जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः ॥ अजिता वामपार्श्वे च दक्षिणे चापराजिता ॥२० ॥ शिखामुद्द्योतिनी रक्षेदुमा मर्ध्नि व्यवस्थिता ॥ मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद्यशस्विनी॥२१॥ त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके ॥ शंखिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी ॥ २२ ॥ कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शाङ्करी ॥ नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका ॥ २३ ॥ अधरे चामृतकला जिह्वायां च सरस्वती ॥ दन्तान्रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे तु चण्डिका ॥ २४ ॥ घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके ॥ कामाक्षी चिबुकं रक्षेद्वाचं मे सर्वमंगला ॥ २५ ॥ ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी ॥ नीलग्रीवा बहिः कण्ठे नलिकां नलकूबरी ॥ २६ ॥ स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद्बाहू मे वज्रधारिणी ॥ हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चांगुलीषु च ॥ २७ ॥ नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी ॥ स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनःशोकविनाशिनी ॥२८॥ हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी ॥ नाभौ च कामिनी रक्षेद्गुह्यं गुह्येश्वरी तथा ॥ २९ ॥ पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिषवाहिनी ॥ कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी ॥३०॥ जंघे महाबला रक्षेत्सर्वकामप्रदायिनी ॥ गुल्फ

योर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी ॥ ३१ ॥ पादांगुलीषु श्रीरक्षेत्पादाधस्तलवासिनी ॥ नखान्दंष्ट्राकराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी ॥ ३२ ॥ रोमकूपेषु कौमारी त्वचं वागीश्वरी तथा ॥ रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती ॥ ३३ ॥ अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी ॥ पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा ॥ ३४ ॥ ज्वालामुखी नखाजालमभेद्या सर्वसंधिषु ॥ शुक्रं ब्रह्माणी मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा ॥ ३५ ॥ अहंकारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मधारिणी ॥ प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम् ॥ ३६ ॥ वज्रहस्ता च मे रक्षेत्प्राणकल्पं च शोभना ॥ रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी ॥३७॥ सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा ॥ आयूरक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी॥३८॥यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनं विद्यां च चक्रिणी ॥गोत्रमिन्द्राणी मे रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके॥३९॥पुत्रान्रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्यां रक्षतु भैरवी ॥ पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा ॥ ४० ॥ राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता ॥ रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु॥४१॥ तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी ॥ पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः॥४२॥ कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति ॥ तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः॥४३॥ यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ॥ परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान् ॥ ४४ ॥ निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः ॥ त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान् ॥४५॥ इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम् ॥ यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः॥४६॥ दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः ॥ जीवेद्वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः ॥४७॥ नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूता विस्फोटकादयः॥ स्थावरं जंगमं चैव कृत्रिमं चापि यद्विषम् ॥४८॥ अभिचाराणि सर्वाणि मंत्रयंत्राणि भूतले ॥ भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः ॥४९॥ सहजा कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा ॥ अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः ॥ ५०॥ ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः ॥ ब्रह्मराक्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः ॥ ५१ ॥ नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते ॥ मानोन्नतिर्भवेद्राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परम् ॥५२॥ यशसा वर्धते सोऽपि कीर्तिमण्डितभूतले ॥ जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा ॥५३॥ यावद्भूमंडलं धत्ते सशैलवनकाननम्॥ तावत्तिष्ठति मेदिन्यां

लभते परमं
सन्ततिः पुत्रपौत्रिकी ॥५४॥ देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम् ॥ प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः ॥ ५५ ॥ ॐनमश्चंडिकायै ॥
रूपं शिवेन सह मोदते ॥ ५६ ॥ इति श्रीवाराहपुराणे हरिहरब्रह्मविरचितं देव्याः कवचं समाप्तम्॥श्रीजगदंबार्पणमस्तु॥ जय भूतार्तिहारिणि॥
जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी॥दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते॥१॥जय त्वं देवि चामुंडे जहि॥३॥महिषासुर
जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते॥२॥मधुकैटभविद्राविविधातृवरदे नमः॥रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जयं देवि यशो
निर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः॥रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥४॥ रक्तबीजवधे देवि चंडमुंडविनाशिनि॥रूपं देहि देवि सर्व
देहि द्विषो जहि॥५॥शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनि॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥६॥वन्दितांघ्रियुगे देहि द्विषो
सौभाग्यदायिनि॥रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥७॥अचिन्त्यरूपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनि॥रूपं देहि जयं देहि यशो त्वां चण्डिके
जहि ॥ ८॥ नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चंडिके दुरितापहे॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥९॥ स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं देहि द्विषो
व्याधिनाशिनि॥रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥१०॥चण्डिके सततं ये त्वामर्चयंतीह भक्तितः॥रूपं देहि जयं देहि यशो विधेहि बल
जहि॥११॥देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्॥रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥१२॥विधेहि द्विषतां नाशं देहि द्विषो
मुच्चकैः॥रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥१३॥विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम्॥ रूपं देहि जयं देहि यशो लक्ष्मीवंतं जनं
जहि॥१४॥सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टचरणेऽम्बिके॥रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ १५ ॥ विद्यावन्तं यशस्वन्तं देहि द्विषो
कुरु॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१६ ॥ प्रचण्डदैत्यदर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो शश्वद्भ
जहि ॥ १७ ॥ चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रसंस्तुते परमेश्वरि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १८ ॥ कृष्णेन संस्तुते देवि देहि यशो
क्त्या सदाऽम्बिके ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १९॥ हिमाचलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वरि ॥ रूपं देहि जयं ॥ देवि
देहि द्विषो जहि ॥ २० ॥ इन्द्राणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २१

प्रचण्डदोर्दण्डदैत्यदर्पविनाशिनि॥रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२२ ॥ देवि भक्तजनोद्दामदत्तानन्दोदयेऽम्बिके ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥२३॥ पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम् ॥तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम् ॥२४॥ इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः ॥ स तु सप्तशतीसंख्यावरमाप्नोतिसम्पदाम् ॥ २५ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे अर्गलास्तोत्रं समाप्तम् ॥ २ ॥ ॐ नमश्चंडिकायै ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ विशुद्धज्ञानदेहाय त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे ॥ श्रेयःप्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमार्द्धधारिणे ॥ १ ॥ सर्वमेतद्विजानीयान्मन्त्राणामपि कीलकम् ॥ सोऽपि क्षेममवाप्नोति सततं जाप्यतत्परः ॥२॥सिद्ध्यन्त्युच्चाटनादीनि वस्तूनि सकलान्यपि ॥ एतेन स्तुवतां देवीं स्तोत्रमात्रेण सिध्यति॥३॥ न मन्त्रं नौषधं तत्र न किञ्चिदपि विद्यते॥विना जाप्येन सिद्ध्येत सर्वमुच्चाटनादिकम्॥४॥समग्राण्यपि सिद्ध्यंति लोकशंकामिमां हरः॥कृत्वा नियंत्रयामास सर्वमेवमिदं शुभम् ॥ ५ ॥ स्तोत्रं वै चण्डिकायास्तु तच्च गुप्तं चकार सः॥समाप्नोति सुपुण्येन तां यथावन्नियन्त्रणाम् ॥६॥ सोऽपि क्षेममवाप्नोति सर्वमेव न संशयः॥कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः ॥७॥ ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथैषा प्रसिद्ध्यति॥इत्थं रूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम् ॥ ८॥यो निष्कीलां विधायैनां नित्यं जपति संस्फुटम्॥स सिद्धः स गणः सोऽपि गन्धर्वो जायते नरः॥९॥न चैवाप्यटतस्तस्य भयं क्वापि हि जायते॥ नापमृत्युवशं याति मृतो मोक्षमवाप्नुयात् ॥१०॥ ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत न कुर्वाणो विनश्यति॥ ततो ज्ञात्वैव सम्पन्नमिदं प्रारभ्यते बुधैः॥ ११ ॥ सौभाग्यादि च यत्किञ्चिद्दृश्यते ललनाजने ॥ तत्सर्वं त्वत्प्रसादेन तेन जाप्यमिदं शुभम् ॥ १२ ॥ शनैस्तु जाप्यमानेऽस्मिन्स्तोत्रे सम्पत्तिरुच्चकैः ॥ भवत्येव समग्रापि ततः प्रारभ्यमेव तत् ॥१३॥ ऐश्वर्यं यत्प्रसादेन सौभाग्यारोग्यसम्पदः॥शत्रुहानिः परो मोक्षः स्तूयते सा न किं जनैः ॥ १४ ॥ ॥ इति श्रीभगवत्याः कीलकस्तोत्रं समाप्तम् ॥ ३ ॥श्रीगणपतिर्जयति ॥ ॐ अस्य श्रीनवार्णमंत्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः ॥ गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छंदांसि ॥ श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः ॥ ऐं बीजम् ॥ ह्रीं शक्तिः॥ क्लीं कीलकम् ॥ श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः॥ ॥ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि । गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छंदोभ्यो नमः मुखे ॥

महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः हृदि ॥ ऐं बीजाय नमः गुह्ये ॥ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः॥ क्लीं कीलकाय नमः नाभौ ॥
इति मूलेन करौ संशोध्य ॥ ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ चामुण्डायै अना
मिकाभ्यां नमः ॥ ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ एवं हृदयादि ॥
ततोऽक्षरन्यासः ॥ ॐ ऐं नमः शिखायाम् ॥ ॐ ह्रीं नमः दक्षिणनेत्रे ॥ ॐ क्लीं नमः वामनेत्रे ॥ ॐ चां नमः दक्षिणकर्णे ॥ ॐ मुं
नमः वामकर्णे ॥ ॐ डां नमः दक्षिणनासायाम् ॥ ॐ यैं नमः वामनासायाम् ॥ ॐ विं नमः मुखे ॥ ॐ च्चें नमः गुह्ये ॥ एवं विन्यस्याष्ट
वारं मूलेन व्यापकं कुर्यात्॥ ॐ ऐं प्राच्यै नमः ॥ ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः ॥ ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः ॥ ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः॥ ॐ क्लीं प्रतीच्यै
नमः॥ ॐ क्लीं वायव्यै नमः ॥ ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः ॥ ॐ विच्चे ऐशान्यै नमः ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः ॥ॐ ऐं
ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे भूम्यै नमः ॥ ॥ अथ ध्यानम् ॥ खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्शूलं भुशुंडीं शिरः शंखं संदधतीं करैस्त्रिनयनां
सर्वांगभूषावृताम् ॥ नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हंतुं मधुं कैटभम् ॥ १ ॥ अक्ष
स्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुः कुंडिकां दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घंटां सुराभाजनम् ॥ शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः
प्रसन्नाननां सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥ २ ॥ घंटाशूलहलानि शंखमुसले चक्रं धनुः सायकं हस्ताब्जैर्दधतीं
घनांतविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ॥ गौरीदेहसमुद्भवां त्रिनयनामाधारभूतां महापूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजेच्छुंभादिदैत्यार्दिनीम्
॥ ३ ॥ अष्टोत्तरशतसंख्यया मन्त्रराजं जपेत् ॥ इति नवार्णविधिः ॥ ॥ अथ रात्रिसूक्तम् ॥ ॥ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थिति
संहारकारिणीम् ॥ निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुम् ॥ १ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका ॥
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधामात्रात्मिका स्थिता ॥ २ ॥ अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः ॥ त्वमेव संध्या सावित्री त्वं देवि
जननी परा ॥ ३ ॥ त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् ॥ त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यंते च सर्वदा ॥ ४ ॥ विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं

स्थितिरूपा च पालने ॥ तथा संहृतिरूपांते जगतोऽस्य जगन्मये ॥ ५ ॥ महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः ॥ महामोहा च भवती महादेवी महासुरी ॥ ६ ॥ प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी ॥ कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा ॥ ७ ॥ त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ॥ लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शांतिः क्षांतिरेव च ॥ ८ ॥ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥ शंखिनी चापिनी बाणा भशुंडीपरिघायुधा ॥ ९ ॥ सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुंदरी ॥ परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ॥ १० ॥ यच्च किंचित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाऽखिलात्मिके ॥ तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा ॥ ११ ॥ यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत् ॥ सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥ १२ ॥ विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च ॥ कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान्भवेत् ॥ १३ ॥ सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता ॥ मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ ॥ १४ ॥ प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु ॥ बोधश्च क्रियतामस्य हंतुमेतौ महासुरौ ॥ ॥ १५ ॥ इति रात्रिसूक्तं समाप्तम् ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ अथ सप्तशतीन्यासाः ॥ अथ प्रथममध्यमोत्तमचरित्राणां ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः ॥ श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः ॥ गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छंदांसि ॥ नंदाशाकंभरीभीमाः शक्तयः ॥ रक्तदंतिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि ॥ अग्निर्वायुसूर्यास्तत्त्वानि ॥ ऋग्यजुःसामवेदा ध्यानानि ॥ सकलकामनासिद्धये श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ॥ तत्रादौ न्यासाः ॥ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥ शंखिनी चापिनी बाणा भुशुंडी परिघायुधा ॥ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ॥ घंटास्वनेन नः पाहि चापज्यानिस्वनेन च ॥ तर्जनीभ्यां नमः ॥ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चंडिके रक्ष दक्षिणे ॥ भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥ मध्यमाभ्यां नमः ॥ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरंति ते ॥ यानि चात्यर्थघोराणि तैरक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥ अनामिकाभ्यां नमः ॥ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ॥ करपल्लवसंगीनि तैरस्मान्रक्ष सर्वतः ॥ कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ॥ भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥

करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥एवं हृदयादि॥खड्गिनी शूलिनी घोरा०हृदयाय नमः॥शूलेन पाहि नो देवि० शिरसे स्वाहा ॥ प्राच्यां रक्ष प्रती
च्यां० शिखायै वषट् ॥ सौम्यानि यानि रूपाणि० कवचाय हुम् ॥ खड्गशूलगदादीनि० नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ सर्वस्वरूपे सर्वेशे० अस्त्राय
फट् ॥ अथ ध्यानम् ॥ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कंधस्थितां भीषणां कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेवितान् ॥ हस्तैश्चक्र
दरालिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥ १ ॥ इति ध्यानम् ॥ प्रथमचरित्रस्य ब्रह्मा
ऋषिः ॥ महाकाली देवता ॥ गायत्री छंदः ॥ नंदा शक्तिः ॥रक्तदंतिका बीजम्॥अग्निस्तत्त्वम् ॥ ऋग्वेदः स्वरूपम् ॥ श्रीमहाकाली
प्रीत्यर्थं प्रथमचरित्रजपे विनियोगः ॥ खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुंडीं शिरः शंखं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वांगभूषावृताम्॥नीला
श्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हंतुं मधुं कैटभम् ॥ मार्कण्डेय उवाच॥१॥सावर्णिः सूर्यतनयो
यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः॥ निशामय तदुत्पत्तिं विस्तराद्गदतो मम ॥२॥महामायानुभावेन यथा मन्वंतराधिपः ॥स बभूव महाभागः सावर्णि
स्तनयो रवेः ॥ ३ ॥ स्वारोचिषेंऽतरे पूर्वं चैत्रवंशसमुद्भवः ॥ सुरथो नाम राजाभूत्समस्ते क्षितिमण्डले॥४॥ तस्य पालयतः सम्यक्प्रजाः
पुत्रानिवौरसान् ॥ बभूवुः शत्रवो भूपाः कोलाविध्वंसिनस्तदा॥५॥तस्य तैरभवद्युद्धमतिप्रबलदण्डिनः ॥ न्यूनैरपि स तैर्युद्धे कोलाविध्वंसि
भिर्जितः ॥६॥ ततः स्वपुरमायातो निजदेशाधिपोऽभवत् ॥ आक्रान्तः स महाभागस्तैस्तदा प्रबलारिभिः ॥७॥अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैर्दुर्बल
स्य दुरात्मभिः ॥ कोशो बलं चापहृतं तत्रापि स्वपुरे ततः ॥ ८ ॥ ततो मृगयाव्याजेन हृतस्वाम्यः स भूपतिः ॥ एकाकी हयमारुह्य
जगाम गहनं वनम् ॥९॥ स तत्राश्रममद्राक्षीद्द्विजवर्यस्य मेधसः ॥ प्रशांतश्वापदाकीर्णं मुनिशिष्योपशोभितम् ॥१०॥ तस्थौ कंचित्स
कालं च मुनिना तेन सत्कृतः ॥ इतश्चेतश्च विचरंस्तस्मिन्मुनिवराश्रमे ॥ ११ ॥ सोऽचिंतयत्तदा तत्र ममत्वाकृष्टचेतनः ॥ मत्पूर्वैः पालितं
पूर्वं मया हीनं पुरं हि तत् ॥१२॥ मद्भृत्यैस्तैरसद्वृत्तैर्धर्मतः पाल्यते न वा ॥ न जाने स प्रधानो मे शूरहस्ती सदामदः ॥ १३ ॥ मम
वैरिवशं यातः कान्भोगानुपलप्स्यते ॥ ये ममानुगता नित्यं प्रसादधनभोजनैः ॥१४॥ अनुवृत्तिं ध्रुवं तेऽद्य कुर्वंत्यन्यमहीभृताम् ॥ अस

न्यायव्ययशीलैस्तैः कुर्वद्भिः सततं व्ययम् ॥१५॥ संचितः सोऽतिदुःखेन क्षयं कोशो गमिष्यति ॥ एतच्चान्यच्च सततं चिंतयामास पार्थिवः
॥ १६ ॥ तत्र विप्राश्रमाभ्याशे वैश्यमेकं ददर्श सः ॥ स पृष्टस्तेन कस्त्वं भो हेतुश्चागमनेऽत्र कः॥१७॥सशोक इव कस्मात्त्वं दुर्मना इव
लक्ष्यसे ॥ इत्याकर्ण्य वचस्तस्य भूपतेः प्रणयोदितम् ॥१८॥ प्रत्युवाच स तं वैश्यः प्रश्रयावनतो नृपम्॥१९॥ वैश्य उवाच ॥२०॥ समाधि
र्नामवैश्योऽहमुत्पन्नो धनिनां कुले ॥ २१ ॥ पुत्रदारैर्निरस्तश्च धनलोभादसाधुभिः ॥ विहीनश्च धनैर्दारैः पुत्रैरादाय मे धनम् ॥२२॥ वन
मभ्यागतो दुःखी निरस्तश्चाप्तबन्धुभिः॥सोऽहं न वेद्मि पुत्राणां कुशलाकुशलात्मिकाम्॥२३॥प्रवृत्तिं स्वजनानां च दाराणां चात्र संस्थितः॥
किं नु तेषां गृहे क्षेममक्षेमं किं नु सांप्रतम् ॥२४॥ कथं ते किं नु सद्वृत्ता दुर्वृत्ताः किं नु मे सुताः ॥२५॥ राजोवाच ॥ २६ ॥ यैर्निरस्तो
भवाँल्लुब्धैः पुत्रदारादिभिर्धनैः ॥ २७ ॥ तेषु किं भवतः स्नेहमनुबध्नाति मानसम् ॥२८॥ वैश्य उवाच ॥२९॥ एवमेतद्यथा प्राह भवान
स्मद्गतं वचः ॥ ३० ॥ किं करोमि न बध्नाति मम निष्ठुरतां मनः ॥ यैः सन्त्यज्य पितृस्नेहं धनलुब्धैर्निराकृतः ॥३१॥ पतिस्वजनहार्दं च
हार्दि तेष्वेव मे मनः ॥ किमेतन्नाभिजानामि जानन्नपि महामते ॥३२॥ यत्प्रेमप्रवणं चित्तं विगुणेष्वपि बंधुषु ॥ तेषां कृते मे निःश्वासो
दौर्मनस्यं च जायते ॥ ३३ ॥ करोमि किं यन्न मनस्तेष्वप्रीतिषु निष्ठुरम् ॥ ३४ ॥ मार्कंडेय उवाच ॥ ३५ ॥ ततस्तौ सहितौ विप्र
तं मुनिं समुपस्थितौ ॥ ३६ ॥ समाधिर्नाम वैश्योऽसौ स च पार्थिवसत्तमः ॥कृत्वा तु तौ यथान्यायं यथार्हं तेन संविदम् ॥ ३७ ॥
उपविष्टौ कथाः काश्चिच्चक्रतुर्वैश्यपार्थिवौ ॥ ३८ ॥ राजोवाच ॥ ३९ ॥ भगवंस्त्वामहं प्रष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व तत् ॥ ४० ॥
दुःखाय यन्मे मनसः स्वचित्तायत्ततां विना ॥ ममत्वं गतराज्यस्य राज्यांगेष्वखिलेष्वपि ॥४१॥ जानतोऽपि यथाऽज्ञस्य किमेतन्मुनिसत्तम॥
अयं च निकृतः पुत्रैर्दारैर्भृत्यैस्तथोज्झितः ॥४२॥ स्वजनेन च संत्यक्तस्तेषु हार्दी तथाप्यति॥एवमेष तथाऽहं च द्वावप्यत्यंतदुःखितौ ॥४३ ॥
दृष्टदोषेऽपि विषये ममत्वाकृष्टमानसौ ॥ तत्किमेतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि ॥ ४४ ॥ ममास्य च भवत्येषा विवेकांधस्य मूढता
॥ ४५ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ४६ ॥ ज्ञानमस्ति समस्तस्य जंतोर्विषयगोचरे ॥ ४७ ॥ विषयश्च महाभाग याति चैवं पृथक्पृथक् ॥

दिवांधाः प्राणिनः केचिद्रात्रावंधास्तथापरे ॥ ४८ ॥ केचिद्दिवा तथा रात्रौ प्राणिनस्तुल्यदृष्टयः ॥ ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किं तु ते
नहि केवलम् ॥ ४९ ॥ यतो हि ज्ञानिनः सर्वे पशुपक्षिमृगादयः ॥ ज्ञानं च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृगपक्षिणाम् ॥ ५० ॥ मनुष्याणां
च यत्तेषां तुल्यमन्यत्तथोभयोः ॥ ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान्पतङ्गाञ्छावचंचुषु ॥ ५१ ॥ कणमोक्षादृतान्मोहात्पीड्यमानानपि क्षुधा ॥
मानुषा मनुजव्याघ्र साभिलाषाः सुतान्प्रति ॥ ५२ ॥ लोभात्प्रत्युपकाराय नन्वेतान्किं न पश्यसि ॥ तथापि ममतावर्ते मोहगर्ते
निपातिताः ॥ ५३ ॥ महामायाप्रभावेण संसारस्थितिकारिणा ॥ तन्नात्र विस्मयः कार्यो योगनिद्रा जगत्पतेः ॥ ५४ ॥ महा
माया हरेश्चैषा तया संमोह्यते जगत् ॥ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ॥ ५५ ॥ बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥
तया विसृज्यते विश्वं जगदेतच्चराचरम् ॥ ५६ ॥ सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये ॥ सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी
॥ ५७ ॥ संसारबंधहेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी ॥ ५८ ॥ राजोवाच ॥ ५९ ॥ भगवन्का हि सा देवी महामायेति यां भवान् ॥ ६० ॥
ब्रवीति कथमुत्पन्ना सा कर्मास्याश्च किं द्विज ॥ यत्प्रभावा च सा देवी यत्स्वरूपा यदुद्भवा ॥ ६१ ॥ तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो ब्रह्म
विदां वर ॥ ६२ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ६३ ॥ नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम् ॥ ६४ ॥ तथापि तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयतां
मम ॥ देवानां कार्यसिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा ॥ ६५ ॥ उत्पन्नेति तदा लोके सा नित्याप्यभिधीयते ॥ योगनिद्रां यदा विष्णु
र्जगत्येकार्णवीकृते ॥ ६६ ॥ आस्तीर्य शेषमभजत्कल्पांते भगवान्प्रभुः ॥ तदा द्वावसुरौ घोरौ विख्यातौ मधुकैटभौ ॥ ६७ ॥
विष्णुकर्णमलोद्भूतौ हंतुं ब्रह्माणमुद्यतौ ॥ स नाभिकमले विष्णोः स्थितो ब्रह्मा प्रजापतिः ॥ ६८ ॥ दृष्ट्वा तावसुरौ चोग्रौ प्रसुप्तं च
जनार्दनम् ॥ तुष्टाव योगनिद्रां तामेकाग्रहृदयः स्थितः ॥ ६९ ॥ विबोधनार्थाय हरेर्हरिनेत्रकृतालयाम् ॥ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थिति
संहारकारिणीम् ॥ ७० ॥ निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥ ७१ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ ७२ ॥ त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं
हि वषट्कारः स्वरात्मिका ॥ ७३ ॥ सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधामात्रात्मिका स्थिता ॥ अर्धमात्रास्थिता नित्या याऽनुच्चार्या विशेषतः ॥

॥ ७४ ॥ त्वमेव संध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा ॥ त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् ॥ ७५ ॥ त्वयैतत्पाल्यते देवि
त्वमत्स्यंते च सर्वदा ॥ विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने ॥ ७६ ॥ तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ॥
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः ॥ ७७॥ महामोहा च भवती महादेवी महासुरी ॥ प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी
॥ ७८ ॥ कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा ॥ त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ॥ ७९ ॥ लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं
शांतिः क्षांतिरेव च ॥ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥ ८० ॥ शंखिनी चापिनी बाणभुशुंडीपरिघायुधा ॥
सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुंदरी ॥ ८१ ॥ परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ॥ यच्च किंचित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके
॥ ८२ ॥ तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा ॥ यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत् ॥ ८३ ॥ सोऽपि
निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः॥ विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च॥८४॥ कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान्भवेत् ॥
सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता ॥८५॥ मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ ॥ प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु ॥८६॥
बोधश्च क्रियतामस्य हंतुमेतौ महासुरौ ॥ ८७ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ८८ ॥ एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा ॥ ८९ ॥ विष्णोः प्रबोध
नार्थाय निहंतुं मधुकैटभौ ॥ नेत्रास्यनासिकाबाहुहृदयेभ्यस्तथोरसः ॥ ९० ॥ निर्गम्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः ॥ उत्तस्थौ च
जगन्नाथस्तया मुक्तो जनार्दनः ॥ ९१ ॥ एकार्णवे हि शयनात्ततः स ददृशे च तौ ॥ मधुकैटभौ दुरात्मानावतिवीर्यपराक्रमौ ॥ ९२ ॥
क्रोधरक्तेक्षणावत्तुं ब्रह्माणं जनितोद्यमौ ॥ समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधे भगवान्हरिः॥९३॥पंचवर्षसहस्राणि बाहुप्रहरणो विभुः॥तावप्यति
बलोन्मत्तौ महामायाविमोहितौ ॥ ९४ ॥ उक्तवंतौ वरोऽस्मत्तो व्रियतामिति केशवम् ॥ ९५ ॥ भगवानुवाच ॥ ९६ ॥ भवेतामद्य
मे तुष्टौ मम वध्यावुभावपि ॥ ९७ ॥ किमन्येन वरेणात्र एतावद्धि वृतं मया ॥ ९८ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ९९ ॥ वंचिताभ्यामिति तदा सर्वं
[illegible] ां जहि न यत्रोर्वी सलिलेन परिप्लुता ॥१॥ ऋषिरुवाच ॥

॥२॥ तथेत्युक्त्वा भगवता शंखचक्रगदाभृता ॥ कृत्वा चक्रेण वै छिन्ने जघने शिरसी तयोः ॥ ३ ॥ एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता
स्वयम् ॥ प्रभावमस्या देव्यास्तु भूयः शृणु वदामि ते ॥ १०४ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वंतरे देवीमाहात्म्ये मधुकैटभवधो नाम
प्रथमोऽध्यायः ॥१ ॥ उवाच ॥ १४ ॥ अर्ध ॥ २४ ॥ श्लोक ॥ ६६ ॥ एवम् ॥ १०४ ॥ मध्यमचरितस्य विष्णुर्ऋषिः ॥ महालक्ष्मीर्देवता ॥
उष्णिक्छन्दः ॥ शाकंभरी शक्तिः ॥ दुर्गा बीजम् ॥ वायुस्तत्त्वम् ॥ यजुर्वेदः स्वरूपम् ॥ महालक्ष्मीप्रीत्यर्थं मध्यमचरितजपे विनि
योगः ॥ ॐ अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुः कुंडिकां दंडं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घंटां सुराभाजनम् ॥ शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं
हस्तैः प्रसन्नाननां सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ देवासुरमभूद्युद्धं पूर्णमब्दशतं पुरा ॥ महिषे
ऽसुराणामधिपे देवानां [illegible]ंदरे ॥ २ ॥ तत्रासुरैर्महावीर्यैर्देवसैन्यं पराजितम् ॥ जित्वा च सकलान्देवानिंद्रोऽभून्महिषासुरः ॥ ३ ॥
ततः पराजिता देवाः पद्मयोनिं प्रजापतिम् ॥ पुरस्कृत्य गतास्तत्र यत्रेशगरुडध्वजौ ॥ ४ ॥ यथा वृत्तं तयोस्तद्वन्महिषासुरचेष्टितम् ॥
त्रिदशाः कथयामासुर्देवाभिभवविस्तरम् ॥ ५ ॥ सूर्येंद्राग्न्यनिलेंदूनां यमस्य वरुणस्य च ॥ अन्येषां चाधिकारान्स स्वयमेवाधि
तिष्ठति ॥ ६ ॥ स्वर्गान्निराकृताः सर्वे तेन देवगणा भुवि ॥ विचरंति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना ॥७ ॥ एतद्वः कथितं सर्वममरारि
विचेष्टितम् ॥ शरणं वः प्रपन्नाः स्मो वधस्तस्य विचिंत्यताम् ॥ ८ ॥ इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः ॥ चकार
कोपं शंभुश्च भ्रुकुटीकुटिलाननौ ॥ ९ ॥ ततोऽतिकोपपूर्णस्य चक्रिणो वदनात्ततः ॥ निश्चक्राम महत्तेजो ब्रह्मणः शंकरस्य च ॥ १० ॥
अन्येषां चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः ॥ निर्गतं समहत्तेजस्तच्चैक्यं समगच्छत ॥ ११ ॥ अतीव तेजसः कूटं ज्वलंतमिव
पर्वतम् ॥ ददृशुस्ते सुरास्तत्र ज्वालाव्याप्तदिगंतरम् ॥ १२ ॥ अतुलं तत्र तत्तेजः सर्वदेवशरीरजम् ॥ एकस्थं तदभून्नारी व्याप्तलोकत्रयं
त्विषा ॥ १३ ॥ यदभूच्छांभवं तेजस्तेनाजायत तन्मुखम् ॥ याम्येन चाभवन्केशा बाहवो विष्णुतेजसा ॥ १४ ॥ सौम्येन
स्तनयोर्युग्मं मध्यं चैंद्रेण चाभवत् ॥ वारुणेन च जंघोरू नितंबस्तेजसा भुवः ॥ १५ ॥ ब्रह्मणस्तेजसा पादौ तदंगुल्योऽर्कतेजसा ॥

वसूनां च करांगुल्यः कौबेरेण च नासिका ॥ १६ ॥ तस्यास्तु दंताः संभूताः प्राजापत्येन तेजसा ॥ नयनत्रितयं जज्ञे तथा
पावकतेजसा ॥ १७ ॥ भ्रुवौ च सन्ध्ययोस्तेजः श्रवणावनिलस्य च ॥ अन्येषां चैव देवानां संभवस्तेजसां शिवा ॥ १८ ॥ ततः समस्त
देवानां तेजोराशिसमुद्भवाम् ॥ तां विलोक्य मुदं प्रापुरमरा महिषार्दिताः॥१९॥ शूलं शूलाद्विनिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाकधृक् ॥ चक्रं च
दत्तवान्कृष्णः समुत्पाट्य स्वचक्रतः ॥ २०॥ शंखं च वरुणः शक्तिं ददौ तस्यै हुताशनः ॥ मारुतो दत्तवांश्चापं बाणपूर्णे तथेषुधी ॥२१॥
वज्रमिंद्रः समुत्पाट्य कुलिशादमराधिपः ॥ ददौ तस्यै सहस्राक्षो घंटामैरावताद्गजात् ॥ २२ ॥ कालदंडाद्यमो दंडं पाशं चांबुपतिर्ददौ ॥
प्रजापतिश्चाक्षमालां ददौ ब्रह्मा कमंडलुम् ॥ २३ ॥ समस्तरोमकूपेषु निजरश्मीन्दिवाकरः ॥ कालश्च दत्तवान्खड्गं तस्यै चर्म च
निर्मलम् ॥ २४ ॥ क्षीरोदश्चामलं हारमजरे च तथांबरे ॥ चूडामणिं तथा दिव्यं कुंडले कटकानि च ॥ २५ ॥ अर्धचंद्रं तथा शुभ्रं
केयूरान्सर्वबाहुषु ॥ नूपुरौ विमलौ तद्वद् ग्रैवेयकमनुत्तमम् ॥ २६ ॥ अंगुलीयकरत्नानि समस्तास्वंगुलीषु च ॥ विश्वकर्मा ददौ तस्यै
परशुं चातिनिर्मलम् ॥ २७ ॥ अस्त्राण्यनेकरूपाणि तथाभेद्यं च दंशनम् ॥ अम्लानपंकजां मालां शिरस्युरसि चापराम् ॥ २८ ॥
अददज्जलधिस्तस्यै पंकजं चातिशोभनम् ॥ हिमवान्वाहनं सिंहं रत्नानि विविधानि च ॥ २९ ॥ ददावशून्यं सुरया पानपात्रं धना
धिपः ॥ शेषश्च सर्वनागेशो महामणिविभूषितम् ॥ ३० ॥ नागहारं ददौ तस्यै धत्ते यः पृथिवीमिमाम् ॥ अन्यैरपि सुरैर्देवी भूषणै
रायुधैस्तथा ॥ ३१ ॥ सम्मानिता ननादोच्चैः साट्टहासं मुहुर्मुहुः ॥ तस्या नादेन घोरेण कृत्स्नमापूरितं नभः ॥ ३२ ॥ अमायता
तिमहता प्रतिशब्दो महानभूत् ॥ चुक्षुभुः सकला लोकाः समुद्राश्च चकंपिरे ॥ ३३ ॥ चचाल वसुधा चेलुः सकलाश्च महीधराः ॥
जयेति देवाश्च मुदा तामूचुः सिंहवाहिनीम् ॥ ३४ ॥ तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां भक्तिनम्रात्ममूर्तयः ॥ दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं त्रैलोक्यममरारयः
॥ ३५ ॥ सन्नद्धाखिलसैन्यास्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः ॥ आः किमेतदिति क्रोधादाभाष्य महिषासुरः ॥ ३६ ॥ अभ्यधावत तं शब्द
मशेषैरसुरैर्वृतः ॥ स ददर्श ततो देवीं व्याप्तलोकत्रयां त्विषा ॥ ३७ ॥ पादाक्रांत्या नतभुवं किरीटोल्लिखितांबराम् ॥ क्षोभिताशेषपातालां

शखाभे[illegible] ॥ ३८ ॥ दिशो भुजसहस्रेण समंताद्व्याप्य संस्थिताम् ॥ ततः प्रववृते युद्धं तया देव्या सुरद्विषाम् ॥ ३९ ॥
बहुधासुकैरादीपितदिगंतरम् ॥ महिषासुरसेनानीश्चिक्षुराख्यो महासुरः ॥ ४० ॥ युयुधे चामरश्चान्यैश्चतुरंगबलान्वितः ॥ रथाना
मयुतैः षड्भिरुदग्राख्यो महासुरः ॥ ४१ ॥ अयुध्यतायुतानां च सहस्रेण महाहनुः ॥ पंचाशद्भिश्च नियुतैरसिलोमा महासुरः ॥४२॥ अयु
तानां शतैः षड्भिर्बाष्कलो युयुधे रणे ॥ गजवाजिसहस्रौघैरनेकैः परिवारितः ॥४३॥ वृतो रथानां कोट्या च युद्धे तस्मिन्नयुध्यत ॥ बिडा
लाख्योऽयुतानां च पंचाशद्भिरथायुतैः ॥४४॥ युयुधे संयुगे तत्र रथानां परिवारितः ॥ अन्ये च तत्रायुतशो रथनागहयैर्वृताः ॥४५॥ युयुधुः
संयुगे देव्या सह तत्र महासुराः ॥ कोटिकोटिसहस्रैस्तु रथानां दन्तिनां तथा ॥ ४६ ॥ हयानां च वृतो युद्धे तत्राभून्माहिषासुरः ॥ तोमरै
र्भिंदिपालैश्च शक्तिभिर्मुसलैस्तथा ॥४७॥ युयुधुः संयुगे देव्या खड्गैः परशुपट्टिशैः॥ केचिच्च चिक्षिपुः शक्तीः केचित्पाशांस्तथापरे ॥४८॥
देवीं खड्गप्रहारैस्तु ते तां हंतुं प्रचक्रमुः ॥ सापि देवी ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका ॥४९॥ लीलयैव प्रचिच्छेद निजशस्त्रास्त्रवर्षिणी ॥
अनायस्ताननना देवी स्तूयमाना सुरर्षिभिः॥५०॥मुमोचासुरदेहेषु शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी॥सोऽपि क्रुद्धो धुतसटो देव्यावाहनकेसरी ॥५१॥
चचारासुरसैन्येषु वनेष्विव हुताशनः ॥ निःश्वासान्मुमुचे यांश्च युध्यमाना रणेऽम्बिका ॥५२॥ त एव सद्यः संभूता गणाः शतसहस्रशः ॥
युयुधुस्ते परशुभिर्भिंदिपालासिपट्टिशैः ॥५३॥ नाशयंतोऽसुरगणान्देवीशक्त्युपबृंहिताः ॥ अवादयंत पटहान्गणाः शंखांस्तथापरे ॥५४॥
मृदंगांश्च तथैवान्ये तस्मिन्युद्धमहोत्सवे ॥ ततो देवी त्रिशूलेन गदया शक्तिवृष्टिभिः ॥५५॥ खड्गादिभिश्च शतशो निजघान महासुरान्॥
पातयामास चैवान्यान्घंटास्वनविमोहितान् ॥५६॥ असुरान्भुविपाशेन बद्ध्वा चान्यानकर्षयत् ॥ केचिद्द्विधाकृतास्तीक्ष्णैः खड्गपातैस्तथा
परे ॥५७॥ विपोथिता निपातेन गदया भुवि शेरते ॥ वेमुश्च केचिद्रुधिरं मुसलेन भृशं हताः ॥५८॥ केचिन्निपतिता भूमौ भिन्नाः शूलेन
वक्षसि ॥ निरंतराः शरौघेण कृताः केचिद्रणाजिरे ॥ ५९ ॥ सेनानुकारिणः प्राणान् मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः ॥ केषांचिद्बाहवश्छिन्ना
श्छिन्नग्रीवास्तथापरे ॥ ६० ॥ शिरांसि पेतुरन्येषामन्ये मध्ये विदारिताः ॥ विच्छिन्नजंघास्त्वपरे पेतुरुर्व्यां महासुराः ॥ ६१ ॥ एक

बाह्वक्षिचरणाः केचिद्देव्या द्विधाकृताः ॥ छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि पतिताः पुनरुत्थिताः ॥ ६२ ॥ कबंधा युयुधुर्देव्या गृहीतपरमायुधाः ॥ ननृतुश्चापरे तत्र युद्धे तूर्यलयाश्रिताः ॥ ६३ ॥ कबंधाश्छिन्नशिरसः खड्गशक्त्यृष्टिपाणयः ॥ तिष्ठतिष्ठेति भाषंतो देवीमन्ये महासुराः ॥ ६४ ॥ पातितै रथनागाश्वैरसुरैश्च वसुंधरा ॥ अगम्या साभवत्तत्र यत्राभूत्स महारणः ॥६५॥ शोणितौघा महानद्यः सद्यस्तत्र विसुस्रुवुः ॥ मध्ये चासुरसैन्यस्य वारणासुरवाजिनाम् ॥ ६६ ॥ क्षणेन तन्महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका ॥ निन्ये क्षयं यथा वह्निस्तृणदारुमहाचयम् ॥ ६७ ॥ स च सिंहो महानादमुत्सृजन्धुतकेसरः ॥ शरीरेभ्योऽमरारीणामसूनिव विचिन्वति ॥ ६८ ॥ देव्या गणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं तथासुरैः ॥ यथैषां तुतुषुर्देवाः पुष्पवृष्टिमुचो दिवि॥६९॥इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वंतरे देवीमाहात्म्ये महिषासुरसैन्यवधो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ उवाच ॥ १ ॥ श्लोक ॥ ६८ ॥ एवम् ॥ ६९ ॥ एवमादितः ॥ १७३ ॥ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ निहन्यमानं तत्सैन्यमवलोक्य महासुरः ॥ सेनानीश्चिक्षुरः कोपाद्ययौ योद्धुमथांबिकाम् ॥ २ ॥ स देवीं शरवर्षेण ववर्ष समरेऽसुरः ॥ यथा मेरुगिरेः शृंगं तोयवर्षेण तोयदः॥ ३ ॥ तस्य छित्त्वा ततो देवी लीलयैव शरोत्करान् ॥ जघान तुरगान्बाणैर्यंतारं चैव वाजिनाम् ॥ ४ ॥ चिच्छेद च धनुः सद्यो ध्वजं चातिसमुच्छ्रितम् ॥ विव्याध चैव गात्रेषु छिन्नधन्वानमाशुगैः ॥ ५ ॥स छिन्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः ॥ अभ्यधावत तां देवीं खड्गचर्मधरोऽसुरः ॥ ६ ॥ सिंहमाहत्य खड्गेन तीक्ष्णधारेण मूर्धनि ॥ आजघान भुजे सव्ये देवीमप्यतिवेगवान् ॥ ७॥ तस्याः खड्गो भुजं प्राप्य पफाल नृपनन्दन ॥ ततो जग्राह शूलं स कोपादरुणलोचनः ॥ ८ ॥ चिक्षेप च ततस्तत्तु भद्रकाल्यां महासुरः ॥ जाज्वल्यमानं तेजोभी रविबिंबमिवांबरात् ॥९॥ दृष्ट्वा तदापतच्छूलं देवी शूलममुञ्चत ॥ तच्छूलं शतधा तेन नीतं स च महासुरः ॥ १० ॥ हते तस्मिन्महावीर्ये महिषस्य चमूपतौ ॥ आजगाम गजारूढश्चामरस्त्रिदशार्दनः ॥११॥ सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ देव्यास्तामंबिका द्रुतम् ॥ हुंकाराभिहतां भूमौ पातयामास निष्प्रभाम् ॥ १२ ॥ भग्नां शक्तिं निपतितां दृष्ट्वा क्रोधसमन्वितः ॥ चिक्षेप चामरः शूलं बाणैस्तदपि साच्छिनत् ॥ १३॥ ततः सिंहः समुत्पत्य गजकुंभांतरे स्थितः ॥ बाहुयुद्धेन युयुधे तेनोच्चैस्त्रिदशारिणा ॥ १४॥

[illegible] नागान्महीं गतौ ॥ युयुधातेऽतिसंरब्धौ प्रहारैरतिदारुणैः ॥१५॥ ततो वेगात्खमुत्पत्य निपत्य च मृगारिणा ॥ करप्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक्कृतम् ॥ १६ ॥ उदग्रश्चरणे देव्या शिलावृक्षादिभिर्हतः ॥ दंतमुष्टितलैश्चैव करालश्च निपातितः ॥१७॥ देवी क्रुद्धा गदापातैश्चूर्णयामास चोद्धतम् ॥ बाष्कलं भिंदिपालेन बाणैस्ताम्रं तथांधकम् ॥ १८ ॥ उग्रास्यमुग्रवीर्यं च तथैव च महाहनुम् ॥ त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी ॥ १९ ॥ बिडालस्यासिना कायात्पातयामास वै शिरः ॥ दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ शरैर्निन्ये यमक्षयम् ॥ २० ॥ एवं संक्षीयमाणे तु स्वसैन्ये महिषासुरः ॥ माहिषेण स्वरूपेण त्रासयामास तान्गणान् ॥२१॥ कांश्चित्तुंडप्रहारेण खुरक्षेपैस्तथापरान् ॥ लांगूलताडितांश्चान्याञ्छृङ्गाभ्यां च विदारितान् ॥ २२ ॥ वेगेन कांश्चिदपरान्नादेन भ्रमणेन च ॥ निःश्वासपवनेनान्यान्पातयामास भूतले ॥२३॥ निपात्य प्रमथानीकमभ्यधावत सोऽसुरः ॥ सिंहं हंतुं महादेव्याः कोपं चक्रे ततोऽम्बिका ॥२४॥ सोऽपि कोपान्महावीर्यः खुरक्षुण्णमहीतलः ॥श्रृंगाभ्यां पर्वतानुच्चांश्चिक्षेप च ननाद च॥२५॥वेगभ्रमणविक्षुण्णा मही तस्य व्यशीर्यत॥लांगूलेनाहतश्चाब्धिः प्लावयामास सर्वतः ॥ २६ ॥ धुतश्रृंगविभिन्नाश्च खंडं खंडं ययुर्घनाः ॥ श्वासानिलास्ताः शतशो निपेतुर्नभसोऽचलाः ॥२७॥ इति क्रोधसमाध्मातमापततं महासुरम् ॥ दृष्ट्वा सा चंडिका कोपं तद्वधाय तदाकरोत्॥२८॥ सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं तं बबंध महासुरम् ॥ तत्याज माहिषं रूपं सोऽपि बद्धो महामृधे ॥ २९ ॥ ततः सिंहोऽभवत्सद्यो यावत्तस्याम्बिका शिरः । छिनत्ति तावत्पुरुषः खड्गपाणिरदृश्यत ॥ ३० ॥ तत एवाशु पुरुषं देवी चिच्छेद सायकैः॥ तं खड्गचर्मणा सार्धं ततः सोऽभून्महागजः॥३१॥करेण च महासिंहं तं चकर्ष जगर्ज च ॥ कर्षतस्तु करं देवी खड्गेन निरकृंतत ॥ ३२ ॥ ततो महासुरो भूयो माहिषं वपुरास्थितः ॥ तथैव क्षोभयामास त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥ ३३ ॥ ततः क्रुद्धा जगन्माता चण्डिका पानमुत्तमम् ॥ पपौ पुनः पुनश्चैव जहासारुणलोचना ॥ ३४ ॥ ननर्द चासुरः सोऽपि बलवीर्यमदोद्धतः ॥॥विषाणाभ्यां च चिक्षेप चंडिकां प्रति भूधरान् ॥ ३५ ॥ सा च तान्प्रहितांस्तेन चूर्णयंती शरोत्करैः॥ उवाच तं मदोद्धूतमुखरागाकुलाक्षरम् ॥ ३६ ॥ देव्युवाच ॥ ३७ ॥ गर्ज गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत्पिबाम्यहम् ॥ मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यंत्याशु

देवताः ॥ ३८ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ३९ ॥ एवमुक्त्वा समुत्पत्य सा रूढा तं महासुरम् ॥ पादेनाक्रम्य कंठे च शूलेनैनमताडयत् ॥ ४० ॥
ततः सोऽपि पदाक्रांतस्तया निजमुखात्ततः॥ अर्धनिष्क्रान्त एवासीद्देव्या वीर्येण संवृतः॥४१॥ अर्धनिष्क्रांत एवासौ युध्यमानो महासुरः॥
तया महासिना देव्या शिरश्छित्त्वा निपातितः ॥ ४२ ॥ ततो हाहाकृतं सर्वं दैत्यसैन्यं ननाश तत् ॥ प्रहर्षं च परं जग्मुः सकला
देवतागणाः ॥ ४३ ॥ तुष्टुवुस्तां सुरा देवीं सह दिव्यैर्महर्षिभिः ॥ जगुर्गंधर्वपतयो ननृतुश्चाप्सरोगणाः ॥ ४४ ॥ इति मार्कंडेयपुराणे
सावर्णिके मन्वंतरे देवीमाहात्म्ये महिषासुरवधो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ उवाच ॥ ३ श्लोकाः ॥ ४१ ॥एवम् ॥ ४४ ॥ एवमादितः
॥ २१७ ॥ ऋषिरुवाच ॥१॥ शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या ॥ तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांसा
वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः ॥ २ ॥ देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या निश्शेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या ॥ तामंबिकामखिल
देवमहर्षिपूज्यां भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः ॥३॥ यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननंतो ब्रह्मा हरश्च नहि वक्तुमलं बलं च ॥
सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु ॥ ४ ॥ या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां
कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ॥ श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ॥ ५ ॥ किं वर्णयाम तव रूप
मचिंत्यमेतत्किंचातिवीर्यमसुरक्षयकारिभूरि ॥ किंचाहवेषु चरितानि तवाति यानि सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु ॥ ६ ॥ हेतुः समस्त
जगतां त्रिगुणापि दोषैर्न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा ॥ सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूतमव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या ॥ ७ ॥
यस्याः समस्तसुरता समुदीरणेन तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि ॥ स्वाहासि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतुरुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः
स्वधा च ॥ ८ ॥ या मुक्तिहेतुरविचिंत्यमहाव्रता त्वमभ्यस्यसे सुनियतेंद्रियतत्त्वसारैः ॥ मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषैर्विद्याऽसि सा
भगवती परमा हि देवि ॥९॥ शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधानमुद्गीथरम्यपदपाठवतां च साम्नाम्॥देवि त्रयी भगवती भवभावनाय
वार्ता च सर्वजगतां परमार्तिहंत्री॥१०॥मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा दुर्गाऽसि दुर्गभवसागरनौरसंगा ॥ श्रीः कैटभारिहृदयैककृता

चिवासा गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा ॥ ११ ॥ ईषत्सहासममलं परिपूर्णचंद्रबिम्बानुकारि कनकोत्तमकांतिकांतम्॥अत्यद्भुतं प्रहृत
मात्तरुषा तथापि वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण॥१२॥ दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भ्रुकुटीकरालमुद्यच्छशांकसदृशच्छवि यन्न सद्यः ॥ प्राणा
न्मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं कैर्जीव्यते हि कुपितांतकदर्शनेन॥१३॥देवि प्रसीद परमा भवती भवाय सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि
विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेतन्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य ॥ १४ ॥ ते संमता जनपदेषु धनानि तेषां तेषां यशांसि न च सीदति
धर्मवर्गः ॥ धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना ॥ १५ ॥ धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्माण्य
त्यादृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति ॥ स्वर्गं प्रयाति च ततो भवतीप्रसादाल्लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन ॥ १६ ॥ दुर्गे स्मृता हरसि
भीतिमशेषजंतोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ॥ दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता
॥ १७ ॥ एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते कुर्वंतु नाम नरकाय चिराय पापम् ॥ संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयांतु मत्वेति नूनमहितान्वि
निहंसि देवि ॥ १८ ॥ दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म सर्वासुरानरिषु यत्प्रहिणोषि शस्त्रम् ॥ लोकान्प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्र-
पूता इत्थं मतिर्भवति तेष्वहितेषु साध्वी ॥ १९ ॥ खड्गप्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः शूलाग्रकांतिनिवहेन दृशोऽसुराणाम् ॥ यन्नागता
विलयमंशुमदिंदुखंडयोग्याननं तव विलोकयतां तदेतत् ॥ २० ॥ दुर्वृत्तवृत्तशमनं तव देवि शीलं रूपं तथैतदविचिंत्यमतुल्यमन्यैः ॥
वीर्यं च हंतृहृतदेवपराक्रमाणां वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम् ॥ २१ ॥ केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य रूपं च शत्रुभयकार्य
तिहारि कुत्र ॥ चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि ॥ २२ ॥ त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन त्रातं
त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा ॥ नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्तमस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते ॥ २३ ॥ शूलेन पाहि नो देवि
पाहि खड्गेन चाम्बिके ॥ घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च॥ २४ ॥ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ॥ भ्रामणे
नात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥ २५ ॥ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरंति ते॥ यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्

॥ २६ ॥ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ॥ करपल्लवसंगीनि तैरस्मान्रक्ष सर्वतः ॥ २७ ॥ ऋषिरुवाच ॥ २८ ॥ एवं स्तुता
सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नंदनोद्भवैः ॥ अर्चिता जगतां धात्री तथा गंधानुलेपनैः॥ २९ ॥ भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैः सुधूपिता ॥ प्राह प्रसाद
सुमुखी समस्तान्प्रणतान्सुरान् ॥ ३० ॥ देव्युवाच ॥ ३१ ॥ व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवांछितम् ॥ ३२ ॥ देवा ऊचुः ॥ ३३ ॥
भगवत्या कृतं सर्वं न किंचिदवशिष्यते ॥ यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः ॥ ३४ ॥ यदि चापि वरो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि ॥
संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः ॥ ३५ ॥ यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने ॥ तस्य वित्तर्द्धिविभवैर्धनदारादिसंप
दाम् ॥ ३६ ॥ वृद्धयेऽस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके ॥ ३७ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ३८ ॥ इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथात्मनः ॥ तथे
त्युक्त्वा भद्रकाली बभूवांतर्हिता नृप ॥ ३९ ॥ इत्येतत्कथितं भूप संभूता सा यथा पुरा ॥ देवी देवशरीरेभ्यो जगत्त्रयहितैषिणी ॥ ४० ॥
पुनश्च गौरीदेहात्सा समुद्भूता यथाभवत् ॥ वधाय दुष्टदैत्यानां तथा शुंभनिशुंभयोः ॥ ४१ ॥ रक्षणाय च लोकानां देवानामुपकारिणी ॥
तच्छृणुष्व मया ख्यातं यथावत्कथयामि ते ॥ ४२ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वंतरे देवीमाहात्म्ये शक्रादिस्तुतिर्नाम चतु
र्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ उवाच ॥ ५ ॥ अर्द्धे ॥ २ ॥ श्लोकाः ॥ ३५ ॥ एवम् ॥ ४२ ॥ एवमादितः ॥ २५९ ॥ उत्तमचरितस्य रुद्रऋषिः॥महासर
स्वती देवता॥ अनुष्टुप् छंदः ॥ भीमा शक्तिः ॥ भ्रामरी बीजम् ॥ सूर्यस्तत्त्वम् ॥ सामवेदः स्वरूपम् ॥ महासरस्वतीप्रीत्यर्थमुत्तमचरितजपे
विनियोगः ॥ घण्टाशूलहलानि शंखमुसले चक्रं धनुः सायकं हस्ताब्जैर्दधतीं घनांतविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ॥ गौरीदेहसमुद्भवा
त्रिनयनामाधारभूतां महापूर्वामत्रसरस्वतीमनुभजे शुंभादिदैत्यार्दिनीम् ॥ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ पुरा शुंभनिशुंभाभ्यामसुराभ्यां
शचीपतेः ॥ त्रैलोक्यं यज्ञभागाश्च हृता मदबलाश्रयात् ॥ २ ॥ तावेव सूर्यतां तद्वदधिकारं तथैंदवम् ॥ कौबेरमथ याम्यं च
चक्राते वरुणस्य च ॥ ३ ॥ तावेव पवनर्द्धिं च चक्रतुर्वह्निकर्म च ॥ ततो देवा विनिर्धूता भ्रष्टराज्याः पराजिताः ॥ ४ ॥ हृताधिकारास्त्रि
दशास्ताभ्यां सर्वे निराकृताः ॥महासुराभ्यां तां देवीं संस्मरंत्यपराजिताम् ॥ ५ ॥ तयास्माकं वरो दत्तो यथापत्सु स्मृताखिलाः ॥ भवतां

नाशयिष्यामि तत्क्षणात्परमापदः॥६॥इति कृत्वा मतिं देवा हिमवंतं नगेश्वरम्॥जग्मुस्तत्र ततो देवीं विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः॥७॥देवा ऊचुः
॥८॥ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः॥ नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥९॥ रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्य्यै धात्र्यै
नमो नमः॥ ज्योत्स्नायै चेंदुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥१०॥ कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कूर्म्यै नमो नमः॥ नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै
शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥ ११॥ दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै ॥ ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥१२॥अतिसौम्याति
रौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः॥नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः॥१३॥ या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेतिशब्दिता॥नमतस्यै॥१४॥
नमस्तस्यै ॥ १५ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १६ ॥ या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते ॥ नमस्तस्यै॥१७ ॥ नमस्तस्यै ॥ १८ ॥
नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १९॥ या देवी सर्व भूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै॥२०॥ नमस्तस्यै॥२१॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥२२॥
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता॥ नमस्तस्यै ॥२३॥ नमस्तस्यै॥२४॥नमस्तस्यै नमो नमः॥२५॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण
संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ २६ ॥ नमस्तस्यै ॥ २७ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २८ ॥ या देवी सर्वभूतेषु च्छायारूपेण संस्थिता ॥
नमस्तस्यै ॥ २९ ॥ नमस्तस्यै ॥ ३० ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ३१ ॥ या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ३२ ॥
नमस्तस्यै ॥ ३३ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ३४ ॥ या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ३५ ॥ नमस्तस्यै ॥ ३६ ॥
नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ३७ ॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षांतिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ३८ ॥ नमस्तस्यै ॥ ३९ ॥ नमस्तस्यै नमो
नमः ॥ ४० ॥ या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ४१ ॥ नमस्तस्यै ॥ ४२ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः
॥ ४३ ॥ या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ४४ ॥ नमस्तस्यै ॥ ४५ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ४६ ॥ या देवी
सर्वभूतेषु शांतिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ४७ ॥ नमस्तस्यै ॥ ४८ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ४९ ॥ या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धा
रूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ५० ॥ नमस्तस्यै ॥ ५१ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ५२ ॥ या देवी सर्वभूतेषु कांतिरूपेण संस्थिता ॥

नमस्तस्यै ॥ ५३ ॥ नमस्तस्यै ॥ ५४ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ५५ ॥ या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ५६ ॥ नमस्तस्यै ॥ ५७ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ५८ ॥ या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ५९ ॥ नमस्तस्यै ॥ ६० ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६१ ॥ या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ६२ ॥ नमस्तस्यै ॥ ६३ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६४ ॥ या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ६५ ॥ नमस्तस्यै ॥ ६६ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६७ ॥ या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ६८ ॥ नमस्तस्यै ॥ ६९ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ७० ॥ या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ७१ ॥ नमस्तस्यै ॥ ७२ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ७३ ॥ या देवी सर्वभूतेषु भ्रांतिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ७४ ॥ नमस्तस्यै ॥ ७५ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ७६ ॥ इंद्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या ॥ भूतेषु सततं तस्यै व्याप्त्यै देव्यै नमो नमः ॥ ७७ ॥ चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत् ॥ नमस्तस्यै ॥ ७८ ॥ नमस्तस्यै ॥ ७९ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ८० ॥ स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रयात्तथा सुरेंद्रेण दिनेषु सेविता ॥ करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहंतु चापदः ॥ ८१ ॥ या सांप्रतं चोद्धतदैत्यतापितैरस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते ॥ या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥ ८२ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ८३ ॥ एवं स्तवादियुक्तानां देवानां तत्र पार्वती ॥ स्नातुमभ्याययौ तोये जाह्नव्या नृपनंदन ॥ ८४ ॥ साब्रवीत्तान्सुरान्सुभ्रूर्भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का ॥ शरीरकोशतश्चास्याः समुद्भूताब्रवीच्छिवा ॥ ८५ ॥ स्तोत्रं ममैतत्क्रियते शुंभदैत्यनिराकृतैः ॥ देवैः समेतैः समरे निशुंभेन पराजितैः ॥ ८६ ॥ शरीरकोशाद्यत्तस्याः पार्वत्या निःसृताम्बिका ॥ कौशिकीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते ॥ ८७ ॥ तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाभूत्सापि पार्वती ॥ कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृताश्रया ॥ ८८ ॥ ततोऽम्बिकां परं रूपं बिभ्राणां सुमनोहरम् ॥ ददर्श चण्डो मुंडश्च भृत्यौ शुंभनिशुंभयोः ॥ ८९ ॥ ताभ्यां शुंभाय चाख्याता सातीवसुमनोहरा ॥ काप्यास्ते स्त्री महाराज भासयंती हिमाचलम् ॥ ९० ॥ नैव तादृक्कचिद्रूपं दृष्टं केनचिदुत्तमम् ॥ ज्ञायतां

काप्यसौ देवी गृह्यतां चासुरेश्वर ॥ ९१ ॥ स्त्रीरत्नमतिचार्वंगी द्योतयंती दिशस्त्विषा ॥ सा तु तिष्ठति दैत्येंद्र तां भवान्द्रष्टुमर्हति
॥ ९२ ॥ यानि रत्नानि मणयो गजाश्वादीनि वै प्रभो ॥ त्रैलोक्ये तु समस्तानि सांप्रतं भांति ते गृहे ॥ ९३ ॥ ऐरावतः समानीतो
गजरत्नं पुरन्दरात् ॥ पारिजाततरुश्चायं तथैवोच्चैःश्रवा हयः ॥ ९४ ॥ विमानं हंससंयुक्तमेतत्तिष्ठति तेंऽगणे ॥ रत्नभूतमिहानीतं
यदासीद्वेधसोऽद्भुतम् ॥ ९५ ॥ निधिरेष महापद्मः समानीतो धनेश्वरात् ॥ किंजल्किनीं ददौ चाब्धिर्मालामम्लानपङ्कजाम्
॥ ९६ ॥ छत्रं ते वारुणं गेहे कांचनस्रावि तिष्ठति ॥ तथायं स्यंदनवरो यः पुरासीत्प्रजापतेः ॥ ९७ ॥ मृत्योरुत्क्रांतिदा नाम
शक्तिरीश त्वया हृता ॥ पाशः सलिलराजस्य भ्रातुस्तव परिग्रहे ॥ ९८ ॥ निशुंभस्याब्धिजाताश्च समस्ता रत्न
जातयः ॥ वह्निरपि ददौ तुभ्यमग्निशौचे च वाससी ॥ ९९ ॥ एवं दैत्येंद्र रत्नानि समस्तान्याहृतानि ते ॥ स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वया
कस्मान्न गृह्यते ॥ १०० ॥ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ निशम्येति वचः शुंभः स तदा चंडमुंडयोः ॥ प्रेषयामास सुग्रीवं दूतं देव्या महासुरम् ॥
॥ २ ॥ इति चेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनान्मम ॥ यथा चाभ्येति संप्रीत्या तथा कार्यं त्वया लघु ॥ ३ ॥ स तत्र गत्वा यत्रास्ते
शैलोद्देशेऽतिशोभने ॥ सा देवी तां ततः प्राह श्लक्ष्णं मधुरया गिरा ॥ ४ ॥ दूत उवाच ॥ ५ ॥ देवि दैत्येश्वरः शुंभस्त्रैलोक्ये परमे
श्वरः ॥ दूतोऽहं प्रेषितस्तेन त्वत्सकाशमिहागतः ॥ ६ ॥ अव्याहताज्ञः सर्वासु यः सदा देव योनिषु ॥ निर्जिताखिलदैत्यारिः स यदाह
शृणुष्व तत् ॥ ७ ॥ मम त्रैलोक्यमखिलं मम देवा वशानुगाः ॥ यज्ञभागानहं सर्वानुपाश्नामि पृथक्पृथक् ॥ ८ ॥ त्रैलोक्ये वररत्नानि
मम वश्यान्यशेषतः ॥ तथैव गजरत्नं च हृतं देवेंद्रवाहनम् ॥ ९ ॥ क्षीरोदमथनोद्भूतमश्वरत्नं ममामरैः । उच्चैःश्रवससंज्ञं तत्प्राणि
पत्य समर्पितम् ॥ ११० ॥ यानि चान्यानि देवेषु गंधर्वेषूरगेषु च ॥ रत्नभूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभने ॥ ११ ॥ स्त्रीरत्नभूतां त्वां
देवि लोके मन्यामहे वयम् ॥ सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो वयम् ॥ १२ ॥ मां वा ममानुजं वापि निशुंभमुरुविक्रमम् ॥
भज त्वं चंचलापांगि रत्नभूतासि वै यतः ॥ १३ ॥ परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यसे मत्परिग्रहात् ॥ एतद् बुद्ध्या समालोक्य मत्परिग्रहतां

व्रज ॥ १४ ॥ ऋषिरुवाच ॥ १५ ॥ इत्युक्ता सा तदा देवी गंभीरांतःस्मिता जगौ ॥ दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत् ॥
॥ १६ ॥ देव्युवाच ॥ १७ ॥ सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किंचित्त्वयोदितम् ॥ त्रैलोक्याधिपतिः शुंभो निशुंभश्चापि तादृशः
॥ १८ ॥ किं त्वत्र यत्प्रतिज्ञातं मिथ्या तत्क्रियते कथम् ॥ श्रूयतामल्पबुद्धित्वात्प्रतिज्ञा या कृता पुरा ॥ १९ ॥ यो मां जयति
संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति ॥ यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति ॥ १२० ॥ तदा गच्छतु शुंभोऽत्र निशुंभो वा महासुरः ॥
मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणिं गृह्णातु मे लघु॥२१॥दूत उवाच॥२२॥अवलिप्तासि मैवं त्वं देवि ब्रूहि ममाग्रतः ॥ त्रैलोक्ये कः पुमांस्तिष्ठे
दग्रे शुंभनिशुंभयोः॥२३॥ अन्येषामपि दैत्यानां सर्वे देवा न वै युधि ॥ तिष्ठंति संमुखे देवि किं पुनः स्त्री त्वमेकिका॥२४॥इंद्राद्याः सकला
देवास्तस्थुर्येषां न संयुगे ॥ शुंभादीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यसि संमुखम् ॥ २५ ॥ सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता पार्श्वं शुंभनिशुंभयोः ॥ केशा
कर्षणनिर्धूतगौरवा मा गमिष्यसि॥२६॥ देव्युवाच ॥२७॥ एवमेतद्बली शुंभो निशुंभश्चातिवीर्यवान् ॥ किं करोमि प्रतिज्ञा मे यदनालो
चिता पुरा ॥२८॥ स त्वं गच्छ मयोक्तं ते यदेतत्सर्वमादृतः ॥ तदाचक्ष्वासुरेंद्राय स च युक्तं करोतु यत् ॥१२९॥इति श्रीमार्कंडेयपुराणे
सावर्णिके मन्वंतरे देवीमाहात्म्ये देव्या दूतसंवादो नाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ उवाच ॥ ९ ॥ खंडानि ॥ ६६ ॥ श्लोकाः ॥ ५४ ॥
एवम् ॥ १२९ ॥ एवमादितः ॥ ३८८ ॥ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ इत्याकर्ण्य वचो देव्याः स दूतोऽमर्षपूरितः ॥ समाचष्ट समागम्य दैत्य
राजाय विस्तरात् ॥ २ ॥ तस्य दूतस्य तद्वाक्यमाकर्ण्यासुरराट् ततः ॥ सक्रोधः प्राह दैत्यानामधिपं धूम्रलोचनम् ॥३॥ हे धूम्रलोचनाशु
त्वं स्वसैन्यपरिवारितः ॥ तामानय बलाद्दुष्टां केशाकर्षणविह्वलाम् ॥ ४ ॥ तत्परित्राणदः कश्चिद्यदि वोत्तिष्ठतेऽपरः ॥ स हंतव्योऽमरो वापि
यक्षो गंधर्व एव वा ॥५॥ ऋषिरुवाच ॥६॥ तेनाज्ञप्तस्ततः शीघ्रं स दैत्यो धूम्रलोचनः ॥ वृतः षष्ट्या सहस्राणामसुराणां द्रुतं ययौ ॥७॥
स दृष्ट्वा तां ततो देवीं तुहिनाचलसंस्थिताम् ॥ जगादोच्चैः प्रयाहीति मूलं शुंभनिशुंभयोः ॥८॥ न चेत्प्रीत्याद्य भवती मद्भर्तारमुपैष्यति॥
ततो बलान्नयाम्येष केशाकर्षणविह्वलाम् ॥ ९ ॥ देव्युवाच ॥ १० ॥ दैत्येश्वरेण प्रहितो बलवान्बलसंवृतः ॥ बलान्नयसि मामेवं ततः

किं ते करोम्यहम्

॥ १३ ॥ अथ क्रुद्धं ॥ ११ ॥ ऋषिरुवाच ॥१२॥ इत्युक्तः सोऽभ्यधावत्तामसुरो धूम्रलोचनः ॥ हुंकारेणैव तं भस्म सा चकारांबिका ततः ॥
महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका ॥ ववर्ष सायकैस्तीक्ष्णैस्तथा शक्तिपरश्वधैः ॥ १४ ॥ ततो धुतसटः कोपात्कृत्वा
नादं सुभैरवम् ॥ पपातासुरसेनायां सिंहो देव्याः स्ववाहनः ॥१५॥ कांश्चित्करप्रहारेण दैत्यानास्येन चापरान् ॥आक्रान्त्या चाधरेणान्यान्स
जघान महासुरान् ॥ १६ ॥ केषांचित्पाटयामास नखैः कोष्ठानि केसरी ॥ तथा तलप्रहारेण शिरांसि कृतवान्पृथक् ॥ १७ ॥ विच्छिन्न
बाहुशिरसः कृतास्तेन तथापरे॥पपौ च रुधिरं कोष्ठादन्येषां धुतकेसरः ॥१८॥क्षणेन तद्बलं सर्वं क्षयं नीतं महात्मना ॥तेन केसरिणा देव्या
वाहनेनातिकोपिना ॥ १९ ॥ श्रुत्वा तमसुरं देव्या निहतं धूम्रलोचनम्॥बलं च क्षयितं कृत्स्नं देवीकेसरिणा ततः ॥२०॥चुकोप दैत्याधि
पतिः शुंभः प्रस्फुरिताधरः॥आज्ञापयामास च तौ चंडमुंडौ महासुरौ॥२१॥हे चंड हे मुंड बलैर्बहुभिः परिवारितौ॥तत्र गच्छत गत्वा च सा
समानीयतां लघु ॥२२॥ केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा वा यदि वः संशयो युधि॥ तदाशेषायुधैः सर्वैरसुरैर्विनिहन्यताम्॥२३॥तस्यां हतायां दुष्टायां
सिंहे च विनिपातिते॥शीघ्रमागम्यतां बद्ध्वा गृहीत्वा तामथांबिकाम् ॥२४॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वंतरे देवीमाहात्म्ये धूम्र
लोचनवधो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ उवाच ॥ ४ ॥ अर्धश्लो० ॥ श्लोकाः ॥ २० ॥ एवम् ॥ २४ ॥ एवमादितः ॥ ४१२ ॥
ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ आज्ञप्तास्ते ततो दैत्याश्चंडमुंडपुरोगमाः ॥ चतुरंगबलोपेता ययुरभ्युद्यतायुधाः ॥ २ ॥ ददृशुस्ते ततो देवीमीषद्धासां
व्यवस्थिताम् ॥ सिंहस्योपरि शैलेंद्रशृङ्गे महति कांचने॥३॥ ते दृष्ट्वा तां समादातुमुद्यमं चक्रुरुद्यताः ॥ आकृष्टचापासिधरास्तथान्ये तत्स
मीपगाः ॥ ४ ॥ ततः कोपं चकारोच्चैरंबिका तानरीन्प्रति ॥ कोपेन चास्या वदनं मषीवर्णमभूत्तदा ॥ ५ ॥ भ्रुकुटीकुटिलात्तस्या ललाट
फलकाद्द्रुतम् ॥ काली करालवदना विनिष्क्रांतासिपाशिनी ॥६॥ विचित्रखट्वांगधरा नरमालाविभूषणा ॥ द्वीपिचर्मपरीधाना शुष्कमांसा
तिभैरवा ॥७॥ अतिविस्तारवदना जिह्वाललनभीषणा ॥ निमग्नारक्तनयना नादापूरितदिङ्मुखा ॥ ८ ॥ सा वेगेनाभिपतिता घातयन्ती
महासुरान् ॥ सैन्ये तत्र सुरारीणामभक्षयत तद्बलम् ॥ ९ ॥ पार्ष्णिग्राहांकुशग्राहयोधघंटासमन्वितान् ॥ समादायैकहस्तेन मुखे

चिक्षेप वारणान् ॥ १० ॥ तथैव योधं तुरगै रथं सारथिना सह ॥ निक्षिप्य वक्त्रे दशनैश्चर्वयंत्यातिभैरवम् ॥ ११ ॥ एकं जग्राह केशेषु
ग्रीवायामथ चापरम् ॥ पादेनाक्रम्य चैवान्यमुरसान्यमपोथयत् ॥ १२ ॥ तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि तथा सुरैः ॥ मुखेन
जग्राह रुषा दशनैर्मथितान्यपि ॥ १३ ॥ बलिनां तद्बलं सर्वमसुराणां दुरात्मनाम् ॥ ममर्दाभक्षयच्चान्यानन्यांश्चाताडयत्तदा ॥ १४ ॥
असिना निहताः केचित्केचित्खट्वांगताडिताः ॥ जग्मुर्विनाशमसुरा दंताग्राभिहतास्तथा ॥ १५ ॥ क्षणेन तद्बलं सर्वमसुराणां निपाति
तम् ॥ दृष्ट्वा चंडोऽभिदुद्राव तां कालीमतिभीषणाम् ॥ १६ ॥ शरवर्षैर्महाभीमैर्भीमाक्षीं तां महासुरः ॥ छादयामास चक्रैश्च मुंडः क्षिप्तैः
सहस्रशः ॥ १७ ॥ तानि चक्राण्यनेकानि विशमानानि तन्मुखम् ॥ बभुर्यथार्कबिंबानि सुबहूनि घनोदरम् ॥ १८ ॥ ततो जहासातिरुषा
भीमं भैरवनादिनी ॥ काली करालवक्त्रांतर्दुर्दर्शदशनोज्ज्वला ॥ १९ ॥ उत्थाय च महासिंहं देवी चंडमधावत ॥ गृहीत्वा चास्य केशेषु
शिरस्तेनासिनाच्छिनत् ॥ २० ॥ अथ मुंडोऽभ्यधावत्तां दृष्ट्वा चंडं निपातितम् ॥ तमप्यपातयद्भूमौ सा खड्गाभिहतं रुषा ॥ २१ ॥
हतशेषं ततः सैन्यं दृष्ट्वा चंडं निपातितम् ॥ मुंडं च सुमहावीर्यं दिशो भेजे भयातुरम् ॥ २२ ॥ शिरश्चंडस्य काली च गृहीत्वा मण्डमेव
च ॥ प्राह प्रचंडाट्टहासमिश्रमभ्येत्य चंडिकाम् ॥ २३ ॥ मया तवात्रोपहृतौ चण्डमुंडौ महापशू ॥ युद्धयज्ञे स्वयं शुंभं निशुंभं च हनि
ष्यसि ॥ २४ ॥ ऋषिरुवाच ॥ २५ ॥ तावानीतौ ततो दृष्ट्वा चंडमुंडौ महासुरौ ॥ उवाच कालीं कल्याणी ललितं चंडिका वचः ॥ २६ ॥
यस्माच्चंडं च मुण्डं च गृहीत्वा त्वमुपागता॥चामुंडेति ततो लोके ख्याता देवी भविष्यसि॥२७॥इति श्रीमार्कंडेयपुराणे सावर्णिके मन्वंतरे
देवीमाहात्म्ये चंडमुंडवधो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ उवाच ॥ २ ॥ श्लोकाः ॥ २५ ॥ एवम् ॥ २७ ॥ एवमादितः ॥ ४३९ ॥ ऋषि
रुवाच ॥ १ ॥ चंडे च निहते दैत्ये मुण्डे च विनिपातिते ॥ बहुलेषु च सैन्येषु क्षयितेष्वसुरेश्वरः ॥ २ ॥ ततः कोपपराधीनचेताः शुम्भः
प्रतापवान् ॥ उद्योगं सर्वसैन्यानां दैत्यानामादिदेश ह ॥ ३ ॥ अद्य सर्वबलैर्दैत्याः षडशीतिरुदायुधाः ॥ कंबूनां चतुरशीतिर्निर्यान्तु
स्वबलैर्वृताः ॥ ४ ॥ कोटिवीर्याणि पंचाशदसुराणां कुलानि वै ॥ शतं कुलानि धूम्राणां निर्गच्छन्तु ममाज्ञया ॥ ५ ॥ कालका दौर्हृदा

मौर्याः कालिकेयास्तथासुराः ॥ युद्धाय सज्जा निर्यांतु आज्ञया त्वरिता मम ॥६ ॥ इत्याज्ञाप्यासुरपतिः शुम्भो भैरवशासनः ॥ निर्जगाम
महासैन्यसहस्रैर्बहुभिर्वृतः ॥ ७ ॥ आयातं चण्डिका दृष्ट्वा तत्सैन्यमतिभीषणम् ॥ ज्यास्वनैः पूरयामास धरणीगगनांतरम् ॥ ८ ॥
ततः सिंहो महानादमतीव कृतवान्नृप ॥ घण्टास्वनेन तं नादमंबिका चोपबृंहयत् ॥ ९ ॥ धनुर्ज्यासिंहघण्टानां नादापूरितदिङ्मुखा ॥
निनादैर्भीषणैः काली जिग्ये विस्तारितानना ॥ १० ॥ तं निनादमुपश्रुत्य दैत्यसैन्यैश्चतुर्दिशम् ॥ देवी सिंहस्तथा काली शरोघैः परि
वारिताः ॥११॥ एतस्मिन्नंतरे भूप विनाशाय सुरद्विषाम् ॥ भवायामरसिंहानामति वीर्यबलान्विताः ॥ १२ ॥ ब्रह्मेशगुहविष्णूनां तथेंद्रस्य
च शक्तयः ॥ शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्चण्डिकां ययुः ॥ १३ ॥ यस्य देवस्य यद्रूपं यथा भूषणवाहनम् ॥ तद्वदेव हि तच्छक्तिरसुरा
न्योद्धुमाययौ ॥ १४ ॥ हंसयुक्तविमानाग्रे साक्षसूत्रकमण्डलुः ॥ आयाता ब्रह्मणः शक्तिर्ब्रह्माणी साभिधीयते ॥ १५ ॥ माहेश्वरी वृषा
रूढा त्रिशूलवरधारिणी ॥ महाहिवलया प्राप्ता चन्द्ररेखाविभूषिणा ॥ १६ ॥ कौमारीशक्तिहस्ता च मयूरवरवाहना ॥ योद्धुमभ्याययौ
दैत्यानंबिका गुहरूपिणी ॥ १७ ॥ तथैव वैष्णवी शक्तिर्गरुडोपरि संस्थिता ॥ शंखचक्रगदाशार्ङ्गखड्गहस्ताभ्युपाययौ ॥ १८ ॥ यज्ञ
वाराहमतुलं रूपं या बिभ्रती हरेः ॥ शक्तिः साप्याययौ तत्र वाराहीं बिभ्रती तनुम् ॥१९॥ नारसिंही नृसिंहस्य बिभ्रती सदृशं वपुः ॥
प्राप्ता तत्र सटाक्षेपक्षिप्तनक्षत्रसंहतिः ॥२०॥ वज्रहस्ता तथैवैंद्री गजराजोपरि स्थिता ॥ प्राप्ता सहस्रनयना यथा शक्रस्तथैव सा॥२१॥
ततः परिवृतस्ताभिरीशानो देवशक्तिभिः ॥ हन्यंतामसुराः शीघ्रं मम प्रीत्याह चण्डिकाम् ॥ २२ ॥ ततो देवीशरीरात्तु विनिष्क्रांतातिं
भीषणा ॥ चंडिका शक्तिरत्युग्रा शिवा शतनिनादिनी ॥ २३ ॥ सा चाह धूम्रजटिलमीशानमपराजिता ॥ दूत त्वं गच्छ भगवन्पार्श्वं
शुंभनिशुंभयोः ॥ २४ ॥ ब्रूहि शुंभं निशुंभं च दानवावतिगर्वितौ ॥ ये चान्ये दानवास्तत्र युद्धाय समुपस्थिताः ॥ २५ ॥ त्रैलोक्य
मिंद्रो लभतां देवाः संतु हविर्भुजः ॥ यूयं प्रयात पातालं यदि जीवितुमिच्छथ ॥ २६ ॥ बलावलेपादथ चेद्भवंतो युद्धकांक्षिणः ॥ तदा
गच्छत तृप्यंतु मच्छिवाः पिशितेन वः ॥ २७ ॥ यतो नियुक्तो दौत्येन तया देव्या शिवः स्वयम् ॥ शिवदूतीति लोकेऽस्मिंस्ततः सा

ख्यातिमागता ॥२८॥ तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वाख्यातं महासुराः ॥ अमर्षापूरिता जग्मुर्यत्र कात्यायनी स्थिता॥२९॥ ततः प्रथममे
वाग्रे शरशक्त्यृष्टिवृष्टिभिः ॥ ववर्षुरुद्धतामर्षास्तां देवीममरारयः ॥३०॥ सा च तान्प्रहितान्बाणाञ्छूलशक्तिपरश्वधान् ॥चिच्छेद लीलया
ध्मातधनुर्मुक्तैर्महेषुभिः ॥ ३१ तस्याग्रतस्तथा काली शूलपातविदारितान् ॥ खट्वांगपोथितांश्चारीन्कुर्वती व्यचरत्तदा ॥ ३२ ॥ कमंडलु
जलाक्षेपहतवीर्यान्हतौजसः ॥ ब्रह्माणी चाकरोच्छत्रून्येन येन स्म धावति ॥ ३३ ॥ माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा चक्रेण वैष्णवी ॥ दैत्या
ञ्जघान कौमारी तथा शक्त्यातिकोपना ॥ ३४ ॥ ऐंद्री कुलिशपातेन शतशो दैत्यदानवाः ॥ पेतुर्विदारिताः पृथ्व्यां रुधिरौघप्रवर्षिणः
॥ ३५ ॥ तुंडप्रहारविध्वस्ता दंष्ट्राग्रक्षतवक्षसः ॥ वाराहमूर्त्या न्यपतंश्चक्रेण च विदारिताः ॥ ३६ ॥ नखैर्विदारितांश्चान्यान्भक्षयंती
महासुरान् ॥ नारसिंही चचाराजौ नादापूर्णदिगंतरा ॥ ३७ ॥ चंडाट्टहासैरसुराः शिवदूत्यभिदूषिताः ॥ पेतुः पृथिव्यां पतितास्तां
श्चखादाथ सा तदा ॥ ३८ ॥ इति मातृगणं क्रुद्धं मर्दयंतं महासुरान् ॥ दृष्ट्वाभ्युपायैर्विविधैर्नेशुर्देवारिसैनिकाः ॥ ३९ ॥ पलायनपरान्दृष्ट्वा
दैत्यान्मातृगणार्दितान्॥ योद्धुमभ्याययौ क्रुद्धो रक्तबीजो महासुरः ॥ ४०॥ रक्तबिंदुर्यदा भूमौ पतत्यस्य शरीरतः ॥ समुत्पतति मेदिन्या
स्तत्प्रमाणस्तदासुरः ॥ ४१ ॥ युयुधे स गदापाणिरिंद्रशक्त्या महासुरः ॥ ततश्चैंद्री स्ववज्रेण रक्तबीजमताडयत् ॥ ४२ ॥ कुलि
शेनाहतस्याशु बहु सुस्राव शोणितम् ॥ समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्रूपास्तत्पराक्रमाः ॥ ४३ ॥ यावंतः पतितास्तस्य शरीरा
द्रक्तबिंदवः ॥ तावंतः पुरुषा जातास्तद्वीर्यबलविक्रमाः ॥ ४४ ॥ ते चापि युयुधुस्तत्र पुरुषा रक्तसंभवाः ॥ समं मातृभिरत्युग्र
शस्त्रपातातिभीषणम् ॥ ४५ ॥ पुनश्च वज्रपातेन क्षतमस्य शिरो यदा ॥ ववाह रक्तं पुरुषास्ततो जाताः सहस्रशः ॥ ४६ ॥ वैष्णवी
समरे चैनं चक्रेणाभिजघान ह ॥ गदया ताडयामास ऐंद्री तमसुरेश्वरम् ॥ ४७ ॥ वैष्णवीचक्रभिन्नस्य रुधिरस्रावसंभवैः ॥
सहस्रशो जगद्व्याप्तं तत्प्रमाणैर्महासुरैः ॥ ४८ ॥ शक्त्या जघान कौमारी वाराही च तथासिना ॥ माहेश्वरी त्रिशूलेन रक्तबीजं
महासुरम् ॥ ४९॥ स चापि गदया दैत्यः सर्वा एवाहनत्पृथक् ॥ मातृः कोपसमाविष्टो रक्तबीजो महासुरः ॥ ५०॥ तस्याहतस्य बहुधा

यो वै रक्तौघस्तेनासञ्छतशोऽसुराः ॥५१॥ तैश्चासुरासृक्संभूतैरसुरैः सकलं जगत् ॥ व्याप्तमासीत्ततो देवा
शक्तिशूलादिभिर्भुवि ॥ पपात तान्विषण्णान्सुरान्दृष्ट्वा चंडिका प्राह सत्वरा ॥ उवाच कालीं चामुंडे विस्तीर्णं वदनं कुरु ॥ ५३ ॥ मच्छस्त्र
भयमाजग्मुरुत्तमम् ॥ ५२ ॥ ता
पातसंभूतान्रक्तबिंदून्महासुरान् ॥ रक्तबिंदोः प्रतीच्छ त्वं वक्त्रेणानेन वेगिना ॥ ५४ ॥ भक्षयंती चर रणे तदुत्पन्नान्महासुरान् ॥ एव
मेष क्षयं दैत्यः क्षीणरक्तो गमिष्यति॥५५॥भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा न चोत्पत्स्यंति चापरे॥इत्युक्त्वा तां ततो देवी शूलेनाभिजघान तम्
॥५६॥ मुखेन काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम् ॥ ततोऽसावाजघानाथ गदया तत्र चंडिकाम्॥५७॥ न चास्या वेदनां चक्रे गदापातो
ऽल्पिकामपि ॥ तस्याहतस्य देहात्तु बहु सुस्राव शोणितम् ॥ ५८ ॥ यतस्ततस्तद्वक्त्रेण चामुंडा संप्रतीच्छति ॥ मुखे समुद्गता येऽस्या
रक्तपातान्महासुराः ॥ ५९ ॥ तांश्चखादाथ चामुंडा पपौ तस्य च शोणितम् ॥ देवी शूलेन वज्रेण बाणैरसिभिर्ऋष्टिभिः ॥ ६० ॥ जघान
रक्तबीजं तं चामुंडा पीतशोणितम् ॥ स पपात महीपृष्ठे शस्त्रसंघसमाहतः ॥६१॥ नीरक्तश्च महीपाल रक्तबीजो महासुरः ॥ ततस्ते हर्ष
मतुलमवापुस्त्रिदशा नृप ॥ ६२ ॥ तेषां मातृगणो जातो ननर्तासृङ्मदोद्धतः ॥ ६३ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वंतरे
देवीमाहात्म्ये रक्तबीजवधो नामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ उवाच ॥ १ ॥ अर्धम् ॥ १ ॥ श्लोकाः ॥ ६१ ॥ एवम् ॥ ६३ ॥ एवमादितः
॥ ५०२ ॥ राजोवाच ॥ १ ॥ विचित्रमिदमाख्यातं भगवन्भवता मम ॥ देव्याश्चरितमाहात्म्यं रक्तबीजवधाश्रितम् ॥ २ ॥ भूयश्चेच्छाम्यहं
श्रोतुं रक्तबीजे निपातिते ॥ चकार शुंभो यत्कर्म निशुंभश्चातिकोपनः ॥ ३ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ४ ॥ चकार कोपमतुलं रक्तबीजे निपातिते ॥
शुंभासुरो निशुंभश्च हतेष्वन्येषु चाहवे ॥५॥ हन्यमानं महासैन्यं विलोक्यामर्षमुद्वहन् ॥ अभ्यधावन्निशुंभोऽथ मुख्ययासुरसेनया ॥ ६ ॥
तस्याग्रतस्तथा पृष्ठे पार्श्वयोश्च महासुराः ॥ संदष्टौष्ठपुटाः क्रुद्धा हंतुं देवीमुपाययुः ॥ ७ ॥ आजगाम महावीर्यः शुंभोऽपि स्वबलैर्वृतः ॥
निहंतुं चंडिकां कोपात्कृत्वा युद्धं तु मातृभिः ॥ ८ ॥ ततो युद्धमतीवासीद्देव्याः शुंभनिशुंभयोः ॥ शरवर्षमतीवोग्रं मेघयोरिव वर्षतोः ॥९॥
चिच्छेदास्ताञ्छरांस्ताभ्यां चंडिका स्वशरोत्करैः ॥ ताडयामास चांगेषु शस्त्रौघैरसुरेश्वरौ ॥ १० ॥ निशुंभो निशितं खड्गं चर्म चादाय

सुप्रभम् ॥ अताडयन्मूर्ध्नि सिंहं देव्या वाहनमुत्तमम् ॥११॥ ताडिते वाहने देवी क्षुरप्रेणासिमुत्तमम्॥ निशुंभस्याशु चिच्छेद चर्म चाप्यष्ट
चंद्रकम् ॥ १२ ॥ छिन्ने चर्मणि खड्गे च शक्तिं चिक्षेप सोऽसुरः॥ तामप्यस्य द्विधा चक्रे चक्रेणाभिमुखागताम् ॥ १३ ॥ कोपाध्मातो निशुं
भोऽथ शूलं जग्राह दानवः ॥ आयांतं मुष्टिपातेन देवी तच्चाप्यचूर्णयत् ॥ १४ ॥ आविद्ध्याथ गदां सोऽपि चिक्षेप चंडिकां प्रति ॥ सापि
देव्यास्त्रिशूलेन भिन्ना भस्मत्वमागता॥१५॥ततः परशुहस्तं तमायांतं दैत्यपुंगवम्॥आहत्य देवी बाणौघैरपातयत भूतले॥१६॥तस्मिन्निपतिते
भूमौ निशुंभे भीमविक्रमे॥ भ्रातर्यतीव संक्रुद्धः प्रययौ हंतुमंबिकाम् ॥ १७ ॥ स रथस्थस्तथात्युच्चैर्गृहीतपरमायुधैः ॥ भुजैरष्टाभिरतुलै
र्व्याप्याशेषं बभौ नभः ॥ १८ ॥ तमायांतं समालोक्य देवी शंखमवादयत् ॥ ज्याशब्दं चापि धनुषश्चकारातीव दुःसहम् ॥ १९ ॥ पूर
यामास ककुभो निजघंटास्वनेन च ॥ समस्तदैत्यसैन्यानां तेजोवधविधायिना ॥ २० ॥ ततः सिंहो महानादैस्त्याजितेभमहामदैः ॥ पूर
यामास गगनं गां तथैव दिशो दश॥२१॥ ततः काली समुत्पत्य गगनं क्ष्मामताडयत् ॥कराभ्यां तन्निनादेन प्राक्स्वनास्ते तिरोहिताः॥२२॥
अट्टाट्टहासमशिवं शिवदूती चकार ह ॥ तैः शब्दैरसुरास्त्रेसुः शुंभः कोपं परं ययौ ॥ २३ ॥ दुरात्मंस्तिष्ठ तिष्ठेति व्याजहारांबिका यदा ॥
तदा जयेत्यभिहितं देवैराकाशसंस्थितैः॥२४॥शुंभेनागत्य या शक्तिर्मुक्ता ज्वालातिभीषणा॥आयांती वह्निकूटाभा सा निरस्ता महोल्कया
॥ २५ ॥ सिंहनादेन शुंभस्य व्याप्तं लोकत्रयान्तरम् ॥ निर्घातनिःस्वनो घोरो जितवानवनीपते ॥ २६ ॥ शुंभमुक्ताञ्छरान्देवी शुंभ
स्तत्प्रहिताञ्छरान् ॥ चिच्छेद स्वशरैरुग्रैः शतशोऽथ सहस्रशः॥२७॥ततः सा चण्डिका क्रुद्धा शूलेनाभिजघान तम्॥स तदा निहतो भूमौ
मूर्च्छितो निपपात ह॥२८॥ततो निशुंभः संप्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः॥आजघान शरैर्देवीं कालीं केसरिणं तथा॥२९॥ पुनश्च कृत्वा बाहूना
मयुतं दनुजेश्वरः॥चक्रायुधेन दितिजश्छादयामास चंडिकाम्॥३०॥ ततो भगवती क्रुद्धा दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी ॥ चिच्छेद तानि चक्राणि
स्वशरैः सायकांश्च तान् ॥ ३१ ॥ ततो निशुंभो वेगेन गदामादाय चंडिकाम् ॥ अभ्यधावत वै हंतुं दैत्यसेनासमावृतः ॥ ३२ ॥ तस्या
पततं एवाशु गदां चिच्छेद चंडिका ॥ खड्गेन शितधारेण स च शूलं समाददे ॥ ३३ ॥ शूलहस्तं समायांतं निशुंभममरार्दनम् ॥

हृदि विव्याध शूलेन वेगाविद्धेन चंडिका ॥ ३४ ॥ भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयान्निःसृतोऽपरः ॥ महाबलो महावीर्यस्तिष्ठेति पुरुषो
वदन् ॥ ३५ ॥ तस्य निष्क्रामतो देवी प्रहस्य स्वनवत्ततः ॥ शिरश्छिच्छेद खड्गेन ततोऽसावपतद्भुवि ॥ ३६ ॥ ततः सिंहश्चखादो
ग्रदंष्ट्राक्षुण्णशिरोधरान् ॥ असुरांस्तांस्तथा काली शिवदूती तथापरान् ॥ ३७ ॥ कौमारीशक्तिनिर्भिन्नाः केचिन्नेशुर्महासुराः ॥ ब्रह्माणी
मंत्रपूतेन तोयेनान्ये निराकृताः ॥ ३८ ॥ माहेश्वरीत्रिशूलेन भिन्नाः पेतुस्तथापरे ॥ वाराहीतुंडघातेन केचिच्चूर्णी कृता भुवि ॥ ३९ ॥
खंडं खंडं च चक्रेण वैष्णव्या दानवाः कृताः ॥ वज्रेण चैंद्रीहस्ताग्रविमुक्तेन तथापरे ॥ ४० ॥ केचिद्विनेशुरसुराः केचिन्नष्टा महाह
वात् ॥ भक्षिताश्चापरे कालीशिवदूतीमृगाधिपैः ॥ ४१ ॥ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वंतरे देवीमाहात्म्ये निशुंभवधो
नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ उवाच ॥ २ ॥ श्लोकाः ॥ ३९ ॥ एवम् ॥ ४१ ॥ एवमादितः ॥ ५४३ ॥ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ निशुंभं
निहतं दृष्ट्वा भ्रातरं प्राणसंमितम् ॥ हन्यमानं बलं चैव शुंभः क्रुद्धोऽब्रवीद्वचः ॥ २ ॥ बलावलेपाद्दुष्टे त्वं मा दुर्गे गर्वमावह ॥
अन्यासां बलमाश्रित्य युध्यसे याऽतिमानिनी ॥ ३ ॥ देव्युवाच ॥ ४ ॥ एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा ॥ पश्यैता दुष्टमय्येव
विशंत्यो मद्विभूतयः ॥ ५ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ६ ॥ ततः समस्तास्ता देव्यो ब्रह्माणीप्रमुखा लयम् ॥ तस्या देव्यास्तनौ जग्मुरेकैवासी
त्तदांबिका ॥ ७ ॥ देव्युवाच ॥ ॥ ८ ॥ अहं विभूत्या बहुभिरिहरूपैर्यदा स्थिता ॥ तत्संहृतं मयैकैव तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव ॥
॥ ९ ॥ ऋषिरुवाच ॥ १० ॥ ततः प्रववृते युद्धं देव्याः शुंभस्य चोभयोः ॥ पश्यतां सर्वदेवानामसुराणां च दारुणम् ॥ ११ ॥ शरवर्षैः
शितैः शस्त्रैस्तथास्त्रैश्चैव दारुणैः ॥ तयोर्युद्धमभूद्भूयः सर्वलोकभयंकरम् ॥ १२ ॥ दिव्यान्यस्त्राणि शतशो मुमुचे यान्यथांबिका ॥ बभंज
तानि दैत्येंद्रस्तत्प्रतीघातकर्तृभिः ॥ १३ ॥ मुक्तानि तेन चास्त्राणि दिव्यानि परमेश्वरी ॥ बभंज लीलयैवोग्रहुंकारोच्चारणादिभिः ॥ १४ ॥
ततः शरशतैर्देवीमाच्छादयत सोऽसुरः ॥ सापि तत्कुपिता देवी धनुश्चिच्छेद चेषुभिः ॥ १५ ॥ छिन्ने धनुषि दैत्येंद्रस्तथा शक्तिमथाददे ॥
चिच्छेद देवी चक्रेण तामप्यस्य करे स्थिताम् ॥ १६ ॥ ततः खड्गमुपादाय शतचंद्रं च भानुमत् ॥ अभ्यधावत्तदा देवीं दैत्याना

मधिपेश्वरः ॥ १७ ॥ तस्यापतत एवाशु खड्गं चिच्छेद चंडिका ॥ धनुर्मुक्तैः शितैर्बाणैश्चर्म चार्ककरामलम् ॥ १८॥ हताश्वः स तदा दैत्य श्छिन्नधन्वा विसारथिः ॥ जग्राह मुद्गरं घोरमंबिकानिधनोद्यतः ॥ १९ ॥ चिच्छेदापततस्तस्य मुद्गरं निशितैः शरैः ॥ तथापि सोऽभ्य धावत्तां मुष्टिमुद्यम्य वेगवान् ॥ २० ॥ स मुष्टिं पातयामास हृदये दैत्यपुङ्गवः ॥ देव्यास्तं चापि सा देवी तलेनोरस्यताडयत् ॥ २१ ॥ तलप्रहाराभिहतो निपपात महीतले॥ स दैत्यराजः सहसा पुनरेव तथोत्थितः ॥२२ ॥ उत्पत्य च प्रगृह्योच्चैर्देवीं गगनमास्थितः ॥ तत्रापि सा निराधारा युयुधे तेन चंडिका ॥ २३ ॥ नियुद्धं खे तदा दैत्यश्चंडिका च परस्परम् ॥ चक्रतुः प्रथमं सिद्धमुनिविस्मयकारकम् ॥ ॥ २४॥ ततो नियुद्धं सुचिरं कृत्वा तेनांबिका सह ॥ उत्पाट्य भ्रामयामास चिक्षेप धरणीतले॥ २५ ॥ स क्षिप्तो धरणीं प्राप्य मुष्टिमुद्यम्य वेगतः॥ अभ्यधावत दुष्टात्मा चंडिकानिधनेच्छया ॥ २६ ॥ तमायांतं ततो देवी सर्वदैत्यजनेश्वरम् ॥ जगत्यां पातयामास भित्त्वा शूलेन वक्षसि ॥ २७ ॥ स गतासुः पपातोर्व्यां देवीशूलाग्रविक्षतः ॥ चालयन्सकलां पृथ्वीं साब्धिद्वीपां सपर्वताम् ॥ २८ ॥ ततः प्रसन्न मखिलं हते तस्मिन्दुरात्मनि॥ जगत्स्वास्थ्यमतीवाप निर्मलं चाभवन्नभः ॥२९॥ उत्पातमेघाः सोल्का ये प्रागासंस्ते शमं ययुः ॥ सरितो मार्गवाहिन्यस्तथासंस्तत्र पातिते ॥३०॥ ततो देवगणाः सर्वे हर्षनिर्भरमानसाः ॥ बभूवुर्निहते तस्मिन्गंधर्वा ललितं जगुः ॥ ३१ ॥ अवा दयंस्तथैवान्ये ननृतुश्चाप्सरोगणाः ॥ ववुः पुण्यास्तथा वाताः सुप्रभोऽभूद्दिवाकरः ॥ ३२॥ जज्वलुश्चाग्नयः शांताः शांता दिग्जनितस्वनाः ॥ ३३ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वंतरे देवीमाहात्म्ये शुंभवधो नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ उवाच ॥ ५॥ अर्धम् ॥ १ ॥ श्लोकाः ॥ २७ ॥ एवम् ॥ ३३ ॥ एवमादितः ॥ ५७६ ॥ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ देव्या हते तत्र महासुरेंद्रे सेंद्राः सुरा वह्निपुरोगमा स्ताम् ॥ कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्टलाभाद्विकासिवक्त्राब्जविकासिताशाः ॥ २॥ देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ॥ प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥३॥ आधारभूता जगतस्त्वमेका महीस्वरूपेण यतः स्थितासि॥अपां स्वरूपस्थितया त्वयैतदाप्यायते कृत्स्नमलंघ्यवीर्ये॥४॥त्वं वैष्णवी शक्तिरनंतवीर्या विश्वस्य बीजं परमासि माया॥संमोहितं देवि समस्तमेतत्त्वं वै प्रसन्ना

भुवि मक्तिहेतुः॥५॥विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः ।स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु॥त्वयैकया पूरितमंबयेतत्का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः
॥ ६ ॥ सर्वभूता यदा देवी स्वर्गमुक्तिप्रदायिनी ॥ त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवंति परमोक्तयः ॥ ७ ॥ सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि
संस्थिते ॥ स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ८ ॥ कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनी ॥ विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि
नमोऽस्तु ते ॥ ९ ॥ सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ॥ शरण्ये त्र्यंबके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १० ॥ सृष्टिस्थिति
विनाशानां शक्तिभूते सनातनि ॥ गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥११॥शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ॥ सर्वस्यार्तिहरे देवि
नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १२ ॥ हंसयुक्तविमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणि ॥ कौशांभःक्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १३ ॥ त्रिशूल
चंद्राहिधरे महावृषभवाहिनि ॥ माहेश्वरीस्वरूपेण नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १४ ॥ मयूरकुक्कुटवृते महाशक्तिधरेऽनघे॥ कौमारीरूपसंस्थाने
नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १५ ॥ शंखचक्रगदाशार्ङ्गगृहीतपरमायुधे ॥ प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १६ ॥ गृहीतोग्रमहाचक्रे
दंष्ट्रोद्धृतवसुंधरे ॥ वराहरूपिणि शिवे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१७॥ नृसिंहरूपेणोग्रेण हंतुं दैत्यान्कृतोद्यमे॥त्रैलोक्यत्राणसहिते नारायणि
नमोऽस्तु ते ॥ १८ ॥ किरीटिनि महावज्रे सहस्रनयनोज्ज्वले ॥ वृत्रप्राणहरे चैंद्रि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १९ ॥ शिवदूतीस्वरूपेण हत
दैत्यमहाबले॥ घोररूपे महारावे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ २० ॥ दंष्ट्राकरालवदने शिरोमालाविभूषणे ॥ चामुंडे मुंडमथने नारायणि नमो
ऽस्तु ते ॥ २१ ॥ लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टिस्वधे ध्रुवे ॥ महारात्रिमहाविद्ये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥२२॥ मेधे सरस्वतिवरे भूति बाभ्रवि
तामासि॥ नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि नमोऽस्तु ते॥२३॥ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते॥भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते
॥२४॥ एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्॥पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ॥२५॥ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् ॥
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते॥२६॥हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्॥सा घंटा पातु नो देवि पापेभ्योऽनःसुतानिव॥२७॥
असुरासृग्वसापंकचर्चितस्ते करोज्ज्वलः ॥ शुभाय खड्गो भवतु चाडिके त्वां नता वयम्॥२८॥रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान्सकला

नभीष्टान्॥त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयांति॥२९॥एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाद्य धर्मद्विषां देवि महासुराणाम् ॥
रूपैरनेकैर्बहुधात्ममूर्तिं कृत्वाऽम्बिके तत्प्रकरोति कान्या॥३०॥विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपेष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या ॥ ममत्वगर्तेऽति
महान्धकारे विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम् ॥३१॥रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा यत्रारयो दस्युबलानि यत्र ॥ दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये तत्र
स्थिता त्वं परिपासि विश्वम्॥३२॥विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्॥विश्वेशवंद्या भवती भवंति विश्वाश्रया
ये त्वयि भक्तिनम्राः॥३३॥ देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीतेर्नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः॥ पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु उत्पात
पाकजनितांश्च महोपसर्गान् ॥३४॥ प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि ॥ त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव॥३५॥देव्यु
वाच ॥ ३६ ॥ वरदाहं सुरगणा वरं यं मनसेच्छथ॥ तं वृणुध्वं प्रयच्छामि जगतामुपकारकम् ॥ ३७ ॥ देवा ऊचुः ॥ ३८ ॥ सर्वबाधा[1]
प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ॥ एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ॥ ३९ देव्युवाच ॥ ४० ॥ वैवस्वतेंऽतरे प्राप्ते अष्टाविंशतिमे
युगे ॥ शुंभो निशुंभश्चैवान्यावुत्पत्स्येते महासुरौ ॥ ४१ ॥ नंदगोपगृहे जाता यशोदागर्भसंभवा ॥ ततस्तौ नाशयिष्यामि विंध्याचल
निवासिनी ॥ ४२ ॥ पुनरप्यतिरौद्रेण रूपेण पृथिवीतले ॥ अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांश्च दानवान् ॥ ४३ ॥ भक्षयंत्याश्च तानुग्रान्वै
प्रचित्तान्महासुरान् ॥ रक्ता दंता भविष्यंति दाडिमीकुसुमोपमाः ॥ ४४ ॥ ततो मां देवताः स्वर्गे मर्त्यलोके च मानवाः ॥ स्तुवंतो
व्याहरिष्यंति सततं रक्तदंतिकाम् ॥ ४५ ॥ भूयश्च शतवार्षिक्यामनावृष्ट्यामनंभसि ॥ मुनिभिः संस्मृता भूयो संभविष्याम्ययोनिजा
॥ ४६ ॥ ततः शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्यामि यन्मुनीन् ॥ कीर्तयिष्यंति मनुजाः शताक्षीमिति मां ततः ॥४७॥ ततोऽहमखिलं लोकमात्म
देहसमुद्भवैः ॥ भरिष्यामि सुराः शाकैरावृष्टेः प्राणधारकैः ॥४८॥ शाकंभरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि ॥ तत्रैव च वधिष्यामि
दुर्गमाख्यं महासुरम् ॥ ४९ ॥ दुर्गादेवीतिविख्यातं तन्मे नाम भविष्यति ॥ पुनश्चाहं यदा भीमं रूपं कृत्वा हिमाचले ॥ ५० ॥ रक्षांसि

१ सर्वाबाधाप्रशमनमित्यपि पाठो बहुषु पुस्तकेषु तथैव दृष्टत्वात् ।

भक्षयिष्यामि मुनीनां त्राणकारणात् ॥ तदा मां मुनयः सर्वे स्तोष्यंत्यानम्रमूर्तयः ॥५१॥ भीमादेवीतिविख्यातं तन्मे नाम भविष्यति॥
यदारुणाख्यस्त्रैलोक्ये महाबाधां करिष्यति ॥ ५२ ॥ तदाहं भ्रामरं रूपं कृत्वासंख्येयषट्पदम् ॥ त्रैलोक्यस्य हितार्थाय वधिष्यामि
महासुरम् ॥ ५३ ॥ भ्रामरीति च मां लोकास्तदा स्तोष्यंति सर्वतः ॥ इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति ॥ ५४ ॥ तदा तदा
ऽवतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम् ॥ ५५ ॥ इति श्रीमार्कंडेयपुराणे सावर्णिके मन्वंतरे देवीमाहात्म्ये देवैः कृता नारायणी स्तुतिर्नामैका
दशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ उवाच ॥ ४ ॥ अर्धम् ॥ १ ॥ श्लोकाः ॥ ५० ॥ एवम् ॥ ५५ ॥ एवमादितः ॥ ६३० ॥ देव्युवाच ॥१॥ एभिः स्तवै
श्च मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः ॥ तस्याहं सकलां बाधां नाशयिष्याम्यसंशयम् ॥ २ ॥ मधुकैटभनाशं च महिषासुरघातनम् ॥
कीर्तयिष्यंति ये तद्वद्वधं शुंभनिशुंभयोः ॥ ३ ॥ अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः ॥ श्रोष्यंति चैव ये भक्त्या मम माहात्म्यमुत्त
मम् ॥ ४ ॥ न तेषां दुष्कृतं किंचिद्दुष्कृतोत्था न चापदः ॥ भविष्यति न दारिद्र्यं न चैवेष्टवियोजनम् ॥५॥ शत्रुतो न भयं तस्य दस्युतो
वा न राजतः ॥ न शस्त्रानलतोयौघात्कदाचित्संभविष्यति ॥ ६ ॥ तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं पठितव्यं समाहितैः ॥ श्रोतव्यं च सदा भक्त्या
परं स्वस्त्ययनं हि तत् ॥ ७ ॥ उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान् ॥ तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम ॥ ८ ॥ यत्रैतत्पठ्यते
सम्यङ्नित्यमायतने मम ॥ सदा न तद्विमोक्ष्यामि सान्निध्यं तत्र मे स्थितम् ॥ ९ ॥ बलिप्रदाने पूजायामग्निकार्ये महोत्सवे ॥ सर्वं ममै
तच्चरितमुच्चार्यं श्राव्यमेव च ॥ १० ॥ जानताऽजानता वापि बलिपूजां तथा कृताम् ॥ प्रतीक्षिष्याम्यहं प्रीत्या वह्निहोमं तथा कृतम्
॥ ११॥ शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी ॥ तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः ॥१२॥ सर्वबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्य
सुतान्वितः ॥ मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ॥१३॥ श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं तथाचोत्पत्तयः शुभाः ॥ पराक्रमं च युद्धेषु जायते
निर्भयः पुमान् ॥ १४ ॥ रिपवः संक्षयं यांति कल्याणं चोपपद्यते ॥ नंदते च कुलं पुंसां माहात्म्यं मम शृण्वताम् ॥ १५ ॥ शांतिकर्मणि
सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शने ॥ ग्रहपीडासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणुयान्मम ॥ १६ ॥ उपसर्गाः शमं यांति ग्रहपीडाश्च दारुणाः ॥

दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुपजायते ॥ १७ ॥ बालग्रहाभिभूतानां बालानां शांतिकारकम् ॥ संघातभेदे च नृणां मैत्रीकरणमुत्त
मम् ॥ १८ ॥ दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम् ॥ रक्षोभूतपिशाचानां पठनादेव नाशनम् ॥ १९ ॥ सर्वं ममैतन्माहात्म्यं
मम सान्निधिकारकम् ॥ पशुपुष्पार्घधूपैश्च गंधदीपैस्तथोत्तमैः ॥ २० ॥ विप्राणां भोजनैर्होमैः प्रोक्षणीयरहर्निशम् ॥ अन्यैश्च विविधै
र्भोगैः प्रदानैर्वत्सरेण या ॥ २१ ॥ प्रीतिर्मे क्रियते साऽस्मिन्सकृदुच्चरिते श्रुते ॥ श्रुतं हरति पापानि तथारोग्यं प्रयच्छति ॥ २२ ॥ रक्षां
करोति भूतेभ्यो जन्मनां कीर्तनं मम ॥ युद्धेषु चरितं यन्मे दुष्टदैत्यनिबर्हणम् ॥२३॥ तस्मिन्छ्रुते वैरिकृतं भयं पुंसां न जायते ॥ युष्माभिः
स्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्मर्षिभिः कृताः ॥२४॥ ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु प्रयच्छंति शुभां मतिम् ॥ अरण्ये प्रांतरे वापि दावाग्निपरिवारितः॥
॥ २५ ॥ दस्युभिर्वा वृतः शून्ये गृहीतो वापि शत्रुभिः ॥ सिंहव्याघ्रानुयातो वा वने वा वनहस्तिभिः ॥२६॥ राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो वध्यो
बंधगतोऽपि वा ॥ आघूर्णितो वा वातेन स्थितः पोते महार्णवे ॥ २७ ॥ पतत्सु चापि शस्त्रेषु संग्रामे भृशदारुणे ॥ सर्वबाधासु घोरासु
वेदनाभ्यर्दितोऽपि वा ॥२८॥ स्मरन्ममैतच्चरितं नरो मुच्येत संकटात् ॥ मम प्रभावात्सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तदा ॥२९॥ दूरादेव पलायंते
स्मरतश्चरितं मम ॥ ३० ॥ ऋषिरुवाच ॥ ३१ ॥ इत्युक्त्वा सा भगवती चंडिका चंडविक्रमा ॥ ३२ ॥ पश्यतामेव देवानां तत्रैवांतरधी
यत ॥ तेऽपि देवा निरातंकाः स्वाधिकारान्यथा पुरा ॥३३॥ यज्ञभागभुजः सर्वे चक्रुर्विनिहतारयः ॥दैत्याश्च देव्या निहते शुंभे देवरिपौ
युधि ॥३४ ॥ जगद्विध्वंसके तस्मिन्महोग्रेऽतुलविक्रमे ॥ निशुंभे च महावीर्ये शेषाः पातालमाययुः ॥३५॥ एवं भगवती देवी सा नित्यापि
पुनः पुनः ॥ संभूय कुरुते भूप जगतः परिपालनम् ॥ ३६ ॥ तयैतन्मोह्यते विश्वं सैव विश्वं प्रसूयते ॥ सा याचिता च विज्ञानं तुष्टा
ऋद्धिं प्रयच्छति ॥ ३७ ॥ व्याप्तं तयैतत्सकलं ब्रह्मांडं मनुजेश्वर ॥ महाकाल्या महाकाले महामारीस्वरूपया ॥ ३८ ॥ सैव काले महा
मारी सैव सृष्टिर्भवत्यजा ॥ स्थितिं करोति भूतानां सैव काले सनातनी ॥ ३९ ॥ भवकाले नृणां सैव लक्ष्मीर्वृद्धिप्रदा गृहे ॥ सैवाभावे
तथालक्ष्मीर्विनाशायोपजायते ॥ ४० ॥ स्तुता संपूजिता पुष्पैर्धूपगंधादिभिस्तथा ॥ ददाति वित्तं पुत्रांश्च मतिं धर्मे गतिं शुभाम् ॥ ४१ ॥

इति श्रीमार्कंडेयपुराणे सावर्णिके मन्वंतरे देव्याश्चरितमाहात्म्यं नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ उवाच ॥ २ ॥ अर्ध० ॥ २ ॥ श्लोकाः
॥ ३७ ॥ एवम् ॥ ४१ ॥ एवमादितः ॥ ६७१ ॥ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ एतत्ते कथितं भूप देवीमाहात्म्यमुत्तमम् ॥ एवंप्रभावा सा देवी
ययेदं धार्यते जगत् ॥ २ ॥ विद्या तथैव क्रियते भगवद्विष्णुमायया ॥ तया त्वमेष वैश्यश्च तथैवान्ये विवेकिनः ॥ ३ ॥ मोह्यंते मोहिता
श्चैव मोहमेष्यंति चापरे ॥ तामुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम् ॥ ४ ॥ आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा ॥ ५ ॥ मार्कं
डेय उवाच ॥ ६ ॥ इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः स नराधिपः ॥ ७ ॥ प्रणिपत्य महाभागं तमृषिं शंसितव्रतम् ॥ निर्विण्णोऽति
ममत्वेन राज्यापहरणेन च ॥ ८ ॥ जगाम सद्यस्तपसे स च वैश्यो महामुने ॥ संदर्शनार्थमम्बाया नदीपुलिनमास्थितः
॥ ९ ॥ स च वैश्यस्तपस्तेपे देवीसूक्तं परं जपन् ॥ तौ तस्मिन्पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्तिं महीमयीम् ॥ १० ॥ अर्हणां चक्रतुस्तस्याः
पुष्पधूपाग्नितर्पणैः ॥ निराहारौ यताहारौ तन्मनस्कौ समाहितौ ॥ ११ ॥ ददतस्तौ बलिं चैव निजगात्रासृगुक्षितम् ॥ एवं समाराध
यतोस्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्मनोः ॥ १२ ॥ परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चंडिका ॥ १३ ॥ देव्युवाच ॥ १४ ॥ यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च
कुलनंदन ॥१५॥ मत्तस्तत्प्राप्यतां सर्वं परितुष्टा ददामि तत् ॥ १६ ॥ मार्कंडेय उवाच ॥१७॥ ततो वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि
॥ १८ ॥ अत्रैव च निजं राज्यं हतशत्रुबलं बलात् ॥ सोऽपि वैश्यस्ततो ज्ञानं वव्रे निर्विण्णमानसः ॥ १९ ॥ ममेत्यहमिति प्राज्ञः
संगविच्युतिकारकम् ॥ २० ॥ देव्युवाच ॥ २१ ॥ स्वल्पैरहोभिर्नृपते स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान् ॥ २२ हत्वारिपूनस्खलितं तव तत्र
भविष्यति ॥ मृतश्च भूयः संप्राप्य जन्म देवाद्विवस्वतः ॥ २३ ॥ सावर्णिको मनुर्नाम भवान्भुवि भविष्यति ॥ वैश्यवर्य त्वया यश्च
वरोऽस्मत्तोऽभिवांछितः ॥ २४ ॥ तं प्रयच्छामि संसिद्ध्यै तव ज्ञानं भविष्यति ॥ २५ ॥ मार्कंडेय उवाच ॥ २६ ॥ इति दत्त्वा तयोर्देवी
यथाभिलषितं वरम् ॥ २७ ॥ बभूवांतर्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता ॥ एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः ॥ २८ ॥
सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः ॥ २९ ॥ इति श्रीमार्कंडेयपुराणे सावर्णिके मन्वंतरे देवीमाहात्म्ये सुरथवैश्ययोर्वरप्रदानं

नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ उवाच ॥ ६ ॥ अर्धानि ॥ ११ ॥ श्लोकाः ॥ १२ ॥ एवम् ॥ २९ ॥ एवमादितः ॥ ७०० ॥ अथोत्तर न्यासाः ॥ खड्गिनी शूलिनी घोरा० हृदयाय नमः ॥ शूलेन पाहिनो देवि० शिरसे स्वाहा ॥ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च० शिखायै वषट् ॥ सौम्यानि यानि रूपाणि० कवचाय हुम् ॥ खड्गशूलगदादीनि० नेत्रत्रयाय वौषट् । सर्वस्वरूपे सर्वेशे० अस्त्राय फट् ॥ अथ ध्यानम् । विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कंधस्थितां भीषणां कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम् ॥ हस्तैश्चक्रदरालिखेट विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥ १ ॥ अथ देवीसूक्तम् ॥ ॥ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः॥ नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ १ ॥ रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः ॥ ज्योत्स्नायै चेंदुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः॥२॥ कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कूर्म्यै नमो नमः ॥ नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः॥३॥ दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै ॥ ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥४॥ अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः॥ नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः॥ ५ ॥ या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेतिशब्दिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६ ॥ या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ७ ॥ या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ८ ॥ या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ९ ॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१०॥ या देवी सर्वभूतेषु च्छायारूपेण संस्थिता॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥११॥ या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १२ ॥ या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१३॥ या देवी सर्वभूतेषु शांतिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१४॥ या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१५॥ या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१६॥ या देवी सर्वभूतेषु शांतिरूपेण

संस्थिता॥नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१७॥ या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता॥नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो
नमः ॥१८॥ या देवी सर्वभूतेषु कांतिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१९॥ या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण
संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥२०॥या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता॥नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो
नमः॥२१॥या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २२ ॥ या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण
संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २३ ॥ या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नम
स्तस्यै नमो नमः ॥ २४ ॥ या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २५ ॥ या देवी
सर्वभूतेषु भ्रांतिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २६ ॥ इंद्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या ॥
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्त्यै देव्यै नमो नमः ॥ २७ ॥ चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत् ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै
नमो नमः ॥ २८ ॥ स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रयात्तथा सुरेंद्रेण दिनेषु सेविता ॥ करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभि
हंतु चापदः ॥ २९ ॥ या सांप्रतं चोद्धतदैत्यतापितैरस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते ॥ या च स्मृता तत्क्षणमेव हंति नः सर्वापदो
भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥ ३० ॥ इति देवीसूक्तं पठित्वाऽष्टोत्तरशतं नवार्णजपं कृत्वा तदुत्तरन्यासान्विधाय " गुह्यातिगुह्यगोप्त्री
त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥ ३१ ॥ इति देव्या वामहस्ते जपं निवेदयेत् ॥ श्रीगणपति
र्जयति ॥ अस्य श्रीसप्तशतीरहस्यत्रयस्य नारायणऋषिः ॥ अनुष्टुप् छन्दः ॥ महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः ॥ यथोक्तफला
वाप्त्यर्थं जपे विनियोगः ॥ राजोवाच ॥ भगवन्नवतारा मे चंडिकायास्त्वयोदिताः ॥ एतेषां प्रकृतिं ब्रह्मन्प्रधानं वक्तुमर्हसि ॥ १ ॥
आराध्यं यन्मया देव्याः स्वरूपं येन तद्द्विज ॥ विधिना ब्रूहि सकलं यथावत्प्रणतस्य मे ॥ २ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ इदं रहस्यं परम
मनाख्येयं प्रचक्षते ॥ भक्तोऽसीति न मे किंचित्तवावाच्यं नराधिप ॥ ३ ॥ सर्वस्याद्या महालक्ष्मीस्त्रिगुणा परमेश्वरी ॥ लक्ष्यालक्ष्य

स्वरूपा सा व्याप्य कृत्स्नं व्यवस्थिता ॥४॥ मातुलिंगं गदां खेटं पानपात्रं च बिभ्रती ॥ नागं लिंगं च योनिं च बिभ्रती नृपमूर्धनि ॥५॥ तप्तकांचनवर्णाभा तप्तकांचनभूषणा ॥ शून्यं तदखिलं स्वेन पूरयामास तेजसा ॥ ६ ॥ शून्यं तदखिलं लोकं विलोक्य परमेश्वरी ॥ बभार रूपमपरं तमसा केवलेन हि ॥ ७ ॥ सा भिन्नांजनसंकाशा दंष्ट्रांचितवरानना ॥ विशाललोचना नारी बभूव तनुमध्यमा ॥ ॥ ८ ॥ खड्गपाशशिरःखेटैरलंकृतचतुर्भुजा ॥ कबंधहारं शिरसा बिभ्राणाहिशिरःस्रजम् ॥ ९ ॥ सा प्रोवाच महालक्ष्मीं तामसी प्रमदोत्तमा ॥ नाम कर्म च मे मातर्देहि तुभ्यं नमो नमः ॥ १० ॥ तां प्रोवाच महालक्ष्मीस्तामसीं प्रमदोत्तमाम् ॥ ददामि तव नामानि यानि कर्माणि तानि च॥११॥महामाया महाकाली महामारी क्षुधा तृषा ॥ निद्रा तृष्णा चैकवीरा कालरात्रिर्दुरत्यया ॥१२॥ इमानि तव नामानि प्रतिपाद्यानि कर्मभिः॥ एभिः कर्माणि ते ज्ञात्वा योऽधीते सोऽश्नुते सुखम् ॥ १३ ॥ तामित्युक्त्वा महालक्ष्मीः स्वरूपमपरं नृप ॥ सत्त्वाख्येनातिशुद्धेन गुणेनेंदुप्रभं दधौ ॥ १४ ॥ अक्षमालांकुशधरा वीणापुस्तकधारिणी ॥ सा बभूव वरा नारी नामान्य स्यै च सा ददौ ॥ १५ ॥ महाविद्या महावाणी भारती वाक्सरस्वती ॥ आर्या ब्राह्मी कामधेनुर्वेदगर्भा च धीश्वरी ॥ १६ ॥ अथो वाच महालक्ष्मीर्महाकालीं सरस्वतीम् ॥ युवां जनयतां देव्यौ मिथुने स्वानुरूपतः ॥ १७ ॥ इत्युक्त्वा ते महालक्ष्मीः ससर्ज मिथुनं स्वयम् ॥ हिरण्यगर्भौ रुचिरौ स्त्रीपुंसौ कमलासनौ ॥ १८ ॥ ब्रह्मन्विधे विरिंचेति धातरित्याह तं नरम् ॥ श्रीः पद्मे कमले लक्ष्मीत्याह माता स्त्रियं च ताम् ॥ १९ ॥ महाकाली भारती च मिथुने सृजतः सह ॥ एतयोरपि रूपाणि नामानि च वदामि ते ॥ २० ॥ नील कंठं रक्तबाहुं श्वेतांगं चन्द्रशेखरम् ॥ जनयामास पुरुषं महाकाली सितां स्त्रियम् ॥ २१ ॥ स रुद्रः शंकरः स्थाणुः कपर्दी च त्रिलोचनः ॥ त्रयी विद्या कामधेनुः सा स्त्री भाषाक्षरा स्वरा ॥ २२ ॥ सरस्वती स्त्रियं गौरीं कृष्णं च पुरुषं नृप ॥ जनयामास नामानि तयोरपि वदामि ते ॥ २३ ॥ विष्णुः कृष्णो हृषीकेशो वासुदेवो जनार्दनः ॥ उमा गौरी सती चंडी सुन्दरी सुभगा शुभा ॥ २४ ॥ एवं युवतयः सद्यः पुरुषत्वं प्रपेदिरे ॥ चक्षुष्मंतोऽनुपश्यंति नेतरेऽतद्विदो जनाः ॥ २५ ॥ ब्रह्मणे प्रददौ पत्नीं महालक्ष्मीर्नृप

त्रयम्॥ रुद्राय गौरीं वरदां वासुदेवाय च श्रियम् ॥ २६ ॥ स्वरया सह संभूय विरंचोऽण्डमजीजनत् ॥ बिभेद भगवान्रुद्रस्तद्गौर्या सह
वीर्यवान् ॥ २७ ॥ अंडमध्ये प्रधानादिकार्यजातमभून्नृप॥ महाभूतात्मकं सर्वं जगत्स्थावरजंगमम् ॥२८॥ पुपोष पालयामास तल्लक्ष्म्या
सह केशवः ॥ संजहार जगत्सर्वं सह गौर्या महेश्वरः ॥२९॥ महालक्ष्मीर्महाराज सर्वसत्त्वमयीश्वरी ॥ निराकारा च साकारा सैव नाना
भिधानभृत् ॥ ३० ॥ नामांतरैर्निरूप्यैषा नाम्ना नान्येन केनचित् ॥ ३१ ॥ इति प्राधानिकं रहस्यं समाप्तम् ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥
त्रिगुणा तामसी देवी सात्त्विकी या त्वयोदिता॥सा शर्वा चंडिका दुर्गा भद्रा भगवतीर्यते॥१॥योगनिद्रा हरेरुक्ता महाकाली तमोगुणा ॥
मधुकैटभनाशार्थं यां तुष्टावांबुजासनः ॥ २ ॥ दशवक्त्रा दशभुजा दशपादांजनप्रभा॥विशालया राजमाना त्रिंशल्लोचनमालया॥३॥स्फुर
द्दशनदंष्ट्रा सा भीमरूपापि भूमिप ॥ रूपसौभाग्यकांतीनां सा प्रतिष्ठा महाश्रियाम् ॥ ४ ॥ खड्गबाणगदाशूलशंखचक्रभुशुंडिभृत्॥परिघं
कार्मुकं शीर्षं निश्चोतद्रुधिरं दधौ ॥५॥ एषा सा वैष्णवी माया महाकाली दुरत्यया । आराधिता वशीकुर्यात्पूजाकर्तुश्चराचरम्॥६॥सर्व
देवशरीरेभ्यो याविर्भूतामितप्रभा॥त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः साक्षान्महिषमर्दिनी॥७॥श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतस्तनमंडला॥ रक्तमध्या
रक्तपादा नीलजंघोरुरुन्मदा ॥ ८ ॥ सुचित्रजघना चित्रमाल्यांबरविभूषणा ॥ चित्रानुलेपना कांतिरूपसौभाग्यशालिनी ॥ ९ ॥ अष्टादश
भुजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती ॥ आयुधान्यत्र वक्ष्यंते दक्षिणाधःकरक्रमात्॥१०॥ अक्षमाला च कमलं बाणोऽसिः कुलिशं गदा॥चक्रं
त्रिशूलं परशुः शंखो घंटा च पाशकः ॥ ११ ॥ शक्तिर्दंडश्चर्म चापं पानपात्रं कमंडलुः ॥ अलंकृतभुजामेभिरायुधैः कमलासनाम्॥१२॥सर्व
देवमयीमीशां महालक्ष्मीमिमां नृप ॥ पूजयेत्सर्वलोकानां स देवानां प्रभुर्भवेत् ॥१३ ॥ गौरीदेहात्समुद्भूता या सत्त्वैकगुणाश्रया ॥साक्षा
त्सरस्वती प्रोक्ता शुंभासुरनिबर्हिणी ॥ १४॥ दधौ चाष्टभुजा बाणान्मुसलं शूलचक्रभृत् ॥ शंखं घंटां लांगलं च कार्मुकं वसुधाधिप॥१५॥
एषा संपूजिता भक्त्या सर्वज्ञत्वं प्रयच्छति॥ निशुंभमथिनी देवी शुंभासुरनिबर्हिणी॥ १६॥इत्युक्तानि स्वरूपाणि मूर्तीनां तव पार्थिव॥उपा
सनं जगन्मातुः पृथगासां निशामय ॥ १७ ॥ महालक्ष्मीर्यदा पूज्या महाकाली सरस्वती ॥ दक्षिणोत्तरयोः पूज्ये पृष्ठतो मिथुनत्रयम् ॥

॥ १८ ॥ विरंचिः स्वरया मध्ये रुद्रो गौर्या च दक्षिणे॥वामे लक्ष्म्या हृषीकेशः पुरतो देवतात्रयम्॥१९॥ अष्टादशभुजा मध्ये वामे चास्या दशानना ॥ दक्षिणेऽष्टभुजा लक्ष्मीर्महतीति समर्चयेत् ॥२०॥ पूर्वादिदलतः पूज्या असितांगादिभैरवाः ॥ अष्टादशभुजा चैषा यदा पूज्या नराधिप ॥ २१ ॥ दशानना चाष्टभुजा दक्षिणोत्तरयोस्तदा ॥ दशानना यदा पूज्या दक्षिणोत्तरयोस्तदा ॥ २२ ॥ कालमृत्यू च संपूज्यौ सर्वारिष्टप्रशांतये ॥ यदा चाष्टभुजा पूज्या शुंभासुरनिबर्हिणी॥२३॥ नवास्याः शक्तयः पूज्यास्तदा रुद्रविनायकौ ॥ नमो देव्या इतिस्तोत्रै र्महालक्ष्मीं समर्चयेत् ॥२४॥ अवतारत्रयार्चायां स्तोत्रमंत्रास्तदाश्रयाः॥अष्टादशभुजा चैषा पूज्या महिषमर्दिनी॥२५॥महालक्ष्मीर्महाकाली सैव प्रोक्ता सरस्वती॥ईश्वरी पुण्यपापानां सर्वलोकमहेश्वरी ॥२६॥ महिषांतकरी येन पूजिता स जगत्प्रभुः ॥ पूजयेज्जगतां धात्रीं चण्डिकां भक्तवत्सलाम् ॥ २७ ॥ अर्घादिभिरलंकारैर्गंधपुष्पैस्तथोत्तमैः ॥ धूपैर्दीपैश्च नैवेद्यैर्नानाभक्ष्यसमन्वितैः ॥ २८ ॥ रुधिराक्तेन बलिना मांसेन सुरया नृप ॥ बलिमांसादिपूजेयं विप्रवर्ज्या मयेरिता ॥२९॥ तेषां किल सुरामांसैर्नोक्ता पूजा नृप क्वचित् ॥ प्रणामाचमनीयेश्च चंदनेन सुगंधिना ॥ ३० ॥ सकर्पूरैश्च तांबूलैर्भक्तिभावसमन्वितैः ॥ वामभागेऽग्रतो देव्याश्छिन्नशीर्षं महासुरम् ॥ ३१ ॥ पूजयेन्महिषं येन प्राप्तं सायुज्यमीशया ॥ दक्षिणे पुरतः सिंहं समग्रं धर्ममीश्वरम् ॥ ३२ ॥ वाहनं पूजयेद्देव्या धृतं येन चराचरम् ॥ ततः कृतांजलिर्भूत्वा स्तुवीत चरितैरिमैः ॥ ३३ ॥ एकेन वा मध्यमेन नैकेनेतरयोरिह ॥ चरितार्धं तु न जपेज्जपञ्छिद्रमवाप्नुयात् ॥ ३४ ॥ स्तोत्रमंत्रैः स्तुवीतेमां यदि वा जगदंबिकाम् ॥ प्रदक्षिणा नमस्कारान्कृत्वा मूर्ध्नि कृतांजलिः ॥ ३५ ॥ क्षमापयेज्जगद्धात्रीं मुहुर्मुहुरतंद्रितः ॥ प्रतिश्लोकं च जुहुयात्पायसं तिलसर्पिषा ॥ ३६ ॥ जुहुयात्स्तोत्रमंत्रैर्वा चंडिकायै शुभं हविः ॥ भूयो नामपदैर्देवीं पूजयेत्सुसमाहितः ॥ ३७ ॥ प्रयतः प्रांजलिः प्रह्वः प्राणानारोप्य चात्मनि ॥ सुचिरं भावयेद्देवीं चंडिकां तन्मयो भवेत् ॥ ३८ ॥ एवं यः पूजयेद्भक्त्या प्रत्यहं परमेश्वरीम् ॥ भुक्त्वा भोगान्यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नुयात् ॥ ३९ ॥ यो न पूजयते नित्यं चंडिकां भक्तवत्सलाम् ॥ भस्मीकृत्यास्य पुण्यानि निर्दहेत्परमेश्वरी ॥४०॥ तस्मात्पूजय भूपाल सर्वलोकमहेश्वरीम् ॥ यथोक्तेन विधानेन चंडिकां सुखमाप्स्यसि ॥ ४१ ॥

इति वैकृतिकं रहस्यं समाप्तम् ॥ ऋषिरुवाच ॥ नंदा भगवती नाम या भविष्यति नंदजा ॥ स्तुता संपूजिता भक्त्या वशीकुर्याज्जगत्त्रयम् ॥ १ ॥ कनकोत्तमकांतिः सा सुकांतिः कनकांबरा ॥ देवी कनकवर्णाभा कनकोत्तमभूषणा ॥ २ ॥ कमलांकुशपाशाब्जैरलंकृतचतुर्भुजा ॥ इंदिरा कमला लक्ष्मीः सा श्रीरुक्मांबुजासना ॥ ३ ॥ या रक्तदंतिका नाम देवी प्रोक्ता मयानघ ॥ तस्याः स्वरूपं वक्ष्यामि शृण सर्वभयापहम् ॥ ४ ॥ यच्छ्रुत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः॥ रक्तांबरा रक्तवर्णा रक्तसर्वांगभूषणा ॥ ५ ॥ रक्तायुधा रक्तनेत्रा रक्तकेशातिभीषणा ॥ रक्ततीक्ष्णनखा रक्तरसना रक्तदंतिका ॥ ६ ॥ पतिं नारीवानुरक्ता देवी भक्तं भजेज्जनम् ॥ वसुधेव विशाला सा सुमेरुयुगलस्तनी ॥ ७ ॥ दीर्घौ लंबावतिस्थूलौ तावतीव मनोहरौ ॥ कर्कशावतिकांतौ तौ सर्वानंदपयोनिधी ॥ ८ ॥ भक्तान्संपाययेद्देवी सर्वकामदुघौ स्तनौ ॥ खड्गपात्रशिरःखेटैरलंकृतचतुर्भुजा ॥ ९ ॥ आख्याता रक्तचामुंडा देवी योगेश्वरीति च ॥ अनया व्याप्तमखिलं जगत्स्थावरजंगमम् ॥१०॥ इमां यः पूजयेद्भक्त्या स व्याप्नोति चराचरम् ॥ भुक्त्वा भोगान्यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नुयात्॥११॥ अधीते य इमं नित्यं रक्तदंत्या वपुः स्तवम् ॥ तं सा परिचरेद्देवी पतिं प्रियमिवांगना ॥१२॥ शाकंभरी नीलवर्णा नीलोत्पलविलोचना॥ गंभीरनाभिस्त्रिवलीविभूषिततनूदरी ॥ १३ ॥ सुकर्कशसमोत्तुंगवृत्तपीनघनस्तनी ॥ मुष्टौ शिलीमुखापूर्णं कमलं कमलालया ॥ १४ ॥ पुष्पपल्लवमूलादिफलाढ्यं शाकसंचयम् ॥ काम्यानंतरसैर्युक्तं क्षुत्तृण्मृत्युजरापहम् ॥ १५ ॥ कार्मुकं च स्फुरत्कांति बिभर्ति परमेश्वरी ॥ शाकंभरी शताक्षी सा सैव दुर्गा प्रकीर्तिता ॥१६॥ उमा गौरी सती चण्डी कालिका सा च पार्वती ॥ शाकंभरीं स्तुवन्ध्यायञ्जपन्संपूजयन्नमन् ॥ ॥ १७ ॥ अक्षय्यमश्नुते शीघ्रमन्नपानामृतं जलम् ॥ भीमाऽपि नीलवर्णा सा दंष्ट्रादशनभासुरा ॥ १८ ॥ विशाललोचना नारी वृत्तपीनपयोधरा ॥ चंद्रहासं च डमरुं शिरः पात्रं च बिभ्रती ॥ १९ ॥ एकवीरा कालरात्रिः सैवोक्ता कामदा स्तुता ॥ तेजोमंडलदुर्धर्षा भ्रामरी चित्रकांतिभृत् ॥ २० ॥ चित्रभ्रमरसंकाशा महामारीति गीयते ॥ इत्येता मूर्तयो देव्या व्याख्याता वसुधाधिप ॥ २१ ॥ जगन्मातुश्चंडिकायाः कीर्तिताः कामधेनवः ॥ इदं रहस्यं परमं न वाच्यं कस्यचित्त्वया ॥ २२ ॥ व्याख्यानं दिव्यमूर्तीनामधीष्वावहितः

स्वयम् ॥ एतस्यास्त्वं प्रसादेन सर्वमान्यो भविष्यसि ॥२३॥ सर्वरूपमयी देवी सर्वं देवीमयं जगत् ॥ अतोऽहं विश्वरूपां त्वां नमामि परमेश्वरीम् ॥ २४ ॥ इति मूर्तिरहस्यं समाप्तम् ॥ ॥ श्रीजगदंबार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ दुर्गाष्टाक्षरकवचम् ॥ उक्तं च देवीरहस्यतंत्रे तत्रैवाष्टचत्वारिंशत्तमे पटले ॥ श्रीभैरव उवाच ॥ " अधुना देवि वक्ष्येऽहं कवचं मंत्रगर्भकम् ॥ दुर्गायाः सारसर्वस्वं कवचेश्वरसंज्ञकम् ॥ १ ॥ परमार्थप्रदं नित्यं महापातकनाशनम् ॥ योगिप्रियं योगिगम्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥२॥ विना दानेन मंत्रस्य सिद्धिर्देवि कलौ भवेत् ॥ धारणादस्य देवेशि शिवस्त्रैलोक्यनायकः ॥ ३ ॥ भैरवी भैरवेशानी विष्णुर्नारायणो बली । ब्रह्मा पार्वति लोकेशो विघ्नध्वंसी गजाननः ॥ ४ ॥ सेनानीश्च महासेनो जिष्णुर्लेखर्षभः प्रिये ॥ सूर्यस्तमोऽपहो लोके चन्द्रोऽमृतविधिस्तथा ॥ ५ ॥ बहुनोक्तेन किं देवि दुर्गाकवचधारणात् ॥ मर्त्योऽप्यमरतां याति साधको मंत्रसाधकः ॥ ६ ॥ कवचस्यास्य देवेशि ऋषिः प्रोक्तो महेश्वरः ॥ छंदोऽनुष्टुप् प्रिये दुर्गा देवताऽष्टाक्षरा स्मृता ॥ चक्रिबीजं च बीजं स्यान्मायाशक्तिरितीरिता ॥ ७ ॥ अथ पाठः ॥ ॐ मे पातु शिरो दुर्गा ह्रीं मे पातु ललाटकम् ॥ दुं नेत्रेऽष्टाक्षरा पातु चक्री पातु श्रुती मम ॥ ८ ॥ मं ठं गंडौ च मे पातु देवेशी रक्तकुंडला ॥ वायुर्नासां सदा पातु रक्तबीजनिषूदिनी ॥ ९ ॥ लवणं पातु मे चोष्ठौ चामुंडा चंडघातिनी ॥ भेकी बीजं सदा पातु दंतान्मे रक्तदंतिका ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं पातु मे कंठं नीलकंठांकवासिनी ॥ ॐ ऐं क्लीं पातु मे स्कंधौ स्कंदमाता महेश्वरी ॥ ११ ॥ ॐ सौः क्लीं मे पातु बाहू देवेशी बगलामुखी ॥ ऐं श्रीं ह्रीं पातु मे हस्तौ शिवाशतनिनादिनी ॥ १२ ॥ सौः ऐं ह्रीं पातु मे वक्षो देवता विंध्यवासिनी ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं पातु कुक्षिं मम मातंगिनी परा ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं ऐं पातु मे पार्श्वे हिमाचलनिवासिनी ॥ ॐ स्त्रीं हूं ऐं पातु पृष्ठं मम दुर्गतिनाशिनी ॥ १४ ॥ ॐ क्रीं हूं पातु मे नाभिं देवी नारायणी सदा ॥ ॐ ऐं क्लीं सौः सदा पातु कटिं कात्यायनी मम ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं पातु शिश्नं [illegible]बगलामुखी ॥ ऐं सौः क्लीं सौः पातु गह्यं गुह्यकेश्वरपूजिता ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं ऐं श्रीं ह सौः पायादूरू मम मनोन्मनी ॥

ॐ जूं सः सौं जानु पातु जगदीश्वरपूजिता ॥ १७ ॥ ॐ ऐं क्लीं पातु मे जंघे मेरुपर्वतवासिनी ॥ ॐ ह्रीं श्रीं गीं सदा पातु गुल्फौ मम गणेश्वरी ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं दुं पातु मे पादौ पार्वती षोडशाक्षरी ॥ पूर्वे मां पातु ब्रह्माणी वह्नौ पातु च वैष्णवी ॥ १९ ॥ दक्षिणे चंडिका पातु नैर्ऋत्ये नारसिंहिका ॥ पश्चिमे पातु वाराही वायव्ये माऽपराजिता ॥ २० ॥ उत्तरे पातु कौमारी चैशान्यां शांभवी तथा ॥ ऊर्ध्वं दुर्गा सदा पातु पात्वधस्ताच्छिवा सदा ॥ २१ ॥ प्रभाते त्रिपुरा पातु निशीथे छिन्नमस्तका ॥ निशांते भैरवी पातु सर्वदा भद्रकालिका ॥ २२ ॥ अग्नेरंबा च मां पातु जलान्मां जगदंबिका ॥ वायोर्मां पातु वाग्देवी वनाद्वनजलोचना ॥ २३ ॥ सिंहात्सिंहासना पातु सर्पात्सर्पांतकासना ॥ रोगान्मां राजमातंगी भूताद्भूतेशवल्लभा ॥ २४ ॥ यक्षेभ्यो यक्षिणी पातु रक्षोभ्यो राक्षसांतका ॥ भूतप्रेतपिशाचेभ्यः सुमुखी पातु मां सदा ॥ २५ ॥ सर्वत्र सर्वदा पातु ॐ ह्रीं दुर्गा नवाक्षरा ॥ इत्येवं कवचं गुह्यं दुर्गासर्वस्वमुत्तमम् ॥ २६ ॥ मंत्रगर्भं महेशानि कवचेश्वरसंज्ञकम् ॥ वित्तदं पुण्यदं पुण्यं वर्म सिद्धिप्रदं कलौ ॥ २७ ॥ वर्म सिद्धिप्रदं गोप्यं परात्परहस्यकम् ॥ श्रेयस्करं मनुमयं रोगनाशकरं परम् ॥ २८ ॥ महापातककोटिघ्नं मानदं च यशस्करम् ॥ अश्वमेधसहस्रस्य फलदं परमार्थदम् ॥ २९ ॥ अत्यंतगोप्यं देवेशि कवचं मंत्रसिद्धिदम् ॥ पठनात्सिद्धिदं लोके धारणान्मुक्तिदं शिवे ॥ ३० ॥ रवौ भूर्जे लिखेद्धीमान्कृत्वा कर्माह्निकं प्रिये ॥ श्रीचक्रांगेऽष्टगंधेन साधको मंत्रसिद्धये ॥ ३१ ॥ लिखित्वा धारयेद्बाहौ गुटिकां पुण्यवर्धिनीम् ॥ किं किं न साधयेल्लोके गुटिका वर्मणोऽचिरात् ॥ ३२ ॥ गुटिकां धारयन्मूर्ध्नि राजानं वशमानयेत् ॥ धनार्थी धारयेत्कंठे पुत्रार्थी कुक्षिमंडले ॥ ३३ ॥ तामेवं धारयेन्मूर्ध्नि लिखित्वा भूर्जपत्रके ॥ श्वेतसूत्रेण संवेष्ट्य लाक्षया परिवेष्टयेत् ॥ ३४ ॥ सवर्णेनाथ संवेष्ट्य धारयेद्रक्तरज्जुना ॥ गुटिका कामदा देवि देवानामपि दुर्लभा ॥ ३५ ॥ कवचस्यास्य गुटिकां धृत्वा मुक्तिप्रदायिनीम् ॥ कवचस्यास्य देवेशि गणितुं नैव शक्यते ॥ ३६ ॥ महिमा वै महादेवि जिह्वाकोटिशतैरपि ॥ अदातव्यमिदं वर्म मन्त्रगर्भं रहस्यकम् ॥ ३७ ॥ अवक्तव्यं महापुण्यं सर्वसारस्वतप्रदम् ॥ अदीक्षिताय नो दद्यात्कुचैलाय दुरात्मने ॥ ३८ ॥ अन्यशिष्याय दुष्टाय निंदकाय कुलार्थिनाम् ॥ दीक्षिताय कुलीनाय गुरु

भक्तिरताय च ॥ ३९ ॥ शांताय कुलशान्ताय शाक्ताय कुलवासिने ॥ इदं वर्म शिवे दद्यात्कुलभागी भवेन्नरः ॥ ४० ॥ इदं रहस्यं परमं दुर्गाकवचमुत्तमम् ॥ गुह्यं गोप्यतमं गोप्यं गोपनीयं स्वयोनिवत्" ॥ ४१ ॥ इति श्रीदेवीरहस्यतन्त्रोक्तं श्रीदुर्गाकवचं समाप्तम् ॥

॥ अथ ब्रह्मांडमोहनाख्यं दुर्गाकवचम् ॥ ब्रह्मवैवर्तपुराणे ॥ नारद उवाच ॥ "भगवन्सर्वधर्मज्ञ सर्वज्ञानविशारद ॥ ब्रह्मांडमोहनं नाम प्रकृतेः कवचं वद ॥ १ ॥ नारायण उवाच ॥ शृणु वक्ष्यामि हे वत्स कवचं च सुदुर्लभम् ॥ श्रीकृष्णेनैव कथितं कृपया ब्रह्मणे पुरा ॥ ॥ २ ॥ ब्रह्मणा कथितं पूर्वं धर्माय जाह्नवीतटे ॥ धर्मेण दत्तं मह्यं च कृपया पुष्करे पुरा ॥ ३ ॥ त्रिपुरारिश्च यद्धृत्वा जघान त्रिपुरं पुरा ॥ ममोच ब्रह्मा यद्धृत्वा मधुकैटभयोर्भयात् ॥ ४ ॥ संजहार रक्तबीजं यद्धृत्वा भद्रकालिका । यद्धृत्वा हि महेंद्रश्च संप्राप कमलालयाम् ॥ ५ ॥ यद्धृत्वा च महायोद्धा बाणः शत्रुभयंकरः ॥ यद्धृत्वा शिवतुल्यश्च दुर्वासा ज्ञानिनां वरः ॥ ६ ॥ ॐ दुर्गेति चतुर्थ्यंतः स्वाहांतो मे शिरोऽवतु ॥ मंत्रः षडक्षरोऽयं च भक्तानां कल्पपादपः ॥ ७ ॥ विचारो नास्ति वेदे च ग्रहणेऽस्य मनोर्मुने ॥ मंत्रग्रहणमात्रेण विष्णुतुल्यो भवेन्नरः ॥ ८ ॥ मम वक्त्रं सदा पातु ॐ दुर्गायै नमोंऽतकः ॥ ॐ दुर्गे इति कंठं तु मन्त्रः पातु सदा मम ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीमिति मन्त्रोऽयं स्कंधं पातु निरंतरम् ॥ ह्रीं श्रीं क्लीमिति पृष्ठं च पातु मे सर्वतः सदा ॥ १० ॥ ह्रीं मे वक्षस्थले पातु हं सं श्रीमिति संततम् ॥ ऐं श्रीं ह्रीं पातु सर्वांगं स्वप्ने जागरणे सदा ॥ ११ ॥ प्राच्यां मां पातु प्रकृतिः पातु वह्नौ च चंडिका ॥ दक्षिणे भद्रकाली च नैर्ऋत्यां च महेश्वरी ॥ १२ ॥ वारुण्यां पातु वाराही वायव्यां सर्वमंगला ॥ उत्तरे वैष्णवी पातु तथैशान्यां शिवप्रिया ॥ १३ ॥ जले स्थले चांतरिक्षे पातु मां जगदंबिका ॥ इति ते कथितं वत्स कवचं च सुदुर्लभम् ॥ १४ ॥ यस्मै कस्मै न दातव्यं प्रवक्तव्यं न कस्यचित् ॥ गुरुमभ्यर्च्य विधिवद्वस्त्रालंकारचन्दनैः ॥ १५ ॥ कवचं धारयेद्यस्तु सोऽपि विष्णुर्न संशयः ॥ स्नाने च सर्वतीर्थानां पृथिव्याश्च प्रदक्षिणे ॥ १६ ॥ यत्फलं लभते लोकस्तदेतद्धारणे मुने ॥ पंचलक्षजपेनैव सिद्धमेतद्भवेद्ध्रुवम् ॥ १७ ॥ लोके च सिद्धकवचो नावसीदति संकटे ॥ न तस्य मृत्युर्भवति जले वह्नौ विषे ज्वरे ॥ १८ ॥ जीवन्मुक्तो

भवेत्सोऽपि सर्वसिद्धीश्वरीश्वरि ॥ यदि स्यात्सिद्धकवचो विष्णुतुल्यो भवेद्ध्रुवम् " ॥ १९ ॥ इति श्रीब्रह्मवैवर्ते प्रकृतिखंडांतर्गतदुर्गा कवचं समाप्तम् ॥ अथ दुर्गाकवचम् ॥ कुब्जिकातंत्रे ॥ ईश्वर उवाच ॥ "शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वसिद्धिदम्॥पठित्वा पाठयित्वा च नरो मुच्येत संकटात् ॥ १ ॥ अज्ञात्वा कवचं देवि दुर्गामंत्रं च यो जपेत् ॥ स नाप्नोति फलं तस्य परत्र नरकं व्रजेत् ॥ २ ॥ उमा देवी शिरः पातु ललाटं शूलधारिणी ॥ चक्षुषी खेचरी पातु कर्णौ चत्वरवासिनी ॥ ३ ॥ सुगंधा नासिके पातु वदनं सर्व धारिणी ॥ जिह्वां च चंडिका देवी ग्रीवां सौभद्रिका तथा ॥ ४ ॥ अशोकवासिनी चेतो द्वौ बाहू वज्रधारिणी ॥ हृदयं ललिता देवी उदरं सिंहवाहिनी ॥ ५ ॥ कटिं भगवती देवी द्वावूरू विंध्यवासिनी ॥ महाबला च जंघे द्वे पादौ भूतलवासिनी ॥ ६ ॥ एवं स्थितासि देवि त्वं त्रैलोक्यरक्षणात्मिके ॥ रक्ष मां सर्वगात्रेषु दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते "॥ ७ ॥ इति कुब्जिकातंत्रोक्तं दुर्गाकवचं समाप्तम् ॥

अथ दुर्गाष्टाक्षरसहस्रनामप्रारंभः ॥ उक्तं च देवीरहस्यतंत्रे चैकोनपंचाशत्तमे पटले ॥ भैरव उवाच ॥ " अधुना शृणु वक्ष्यामि दुर्गासर्वस्वमीश्वरि ॥ रहस्यं सर्वदेवानां दुर्लभं यमिनामपि ॥ १ ॥ श्रीदुर्गातत्त्वमुद्दिष्टं सारं त्रैलोक्यकारणम् ॥ मंत्रनामसहस्रं च दुर्गायाः पण्यदं परम् ॥ २ ॥ यत्पठित्वा शिवे धृत्वा देवीनामसहस्रकम् ॥ अश्वमेधायुतं पुण्यं लोके सौभाग्यवर्धनम् ॥ ३ ॥ श्रेयस्करं विश्ववंद्यं सर्वदेवनमस्कृतम् ॥ गुह्यं गोप्यतमं देवि पठनात्सिद्धिदायकम् ॥ ४ ॥ ॐ अस्य श्रीदुर्गानामसहस्रस्य श्रीमहेश्वर ऋषिरनुष्टुप्छंदः श्रीदुर्गा देवता दुं बीजं ह्रीं शक्तिः ॐ कीलकं धर्मार्थकाममोक्षार्थे सहस्रनामपाठे विनियोगः ॥ ॐ महेश्वरऋषये नमः शिरसि १ ॥ अनुष्टुप्छंदसे नमो मुखे २ ॥ श्रीदुर्गादेवतायै नमो हृदि ३ ॥ दुं बीजाय नमो नाभौ ४ ॥ ह्रीं शक्तये नमो मुखे ५ ॥ ॐ कीलकाय नमः पादयोः ६ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ७ ॥ ॐ ह्रीं दुर्गा जगन्माता भद्रिका भद्रकालिका ॥ प्रचंडा चंडिका चंडी चंडमुंडनिषूदिनी ॥ ५ ॥ अनसूया त्रुटिस्तारा कृत्तिका कुब्जकालया ॥ प्रलयस्थितिसंभूतिविभूतिर्भयनाशिनी ॥ ६ ॥ महामाया महाविद्या मूलविद्या चिदीश्वरी ॥ मदालसा मदोत्तुंगा मदिरा मदनप्रिया ॥ ७ ॥ अलिंग्यालप्रसूः पुण्या पवित्रा परमेश्वरी ॥

आदिदेवी कला कांता त्रिपुरा जगदीश्वरी ॥ ८ ॥ मनोन्मनी महालक्ष्मीः सिद्धलक्ष्मी सरस्वती ॥ सरित्कादंबरी गोधा गुह्यकाली
गणेश्वरी ॥ ९ ॥ गणांबिका जया तापी तपना तापहारिणी ॥ तपोमयी दुरालंभा दुष्टग्रहनिवारिणी ॥ १० ॥ दुःखघ्नी सुखदा
माध्वी परमामृतसूः सुरा ॥ सुधा सुधांशुनिलया प्रलयानलसन्निभा ॥ ११ ॥ समस्तसंपदंभोजविलया कलिकालया ॥ विद्येश्वरी
विश्वमयी विराट्छंदोगतिर्मतिः ॥ १२ ॥ धृतिश्च दांभिकी दोला लोपामुद्रा पटीयसी ॥ गरिष्ठारिष्टहा दुष्टा कृशा काशी कुलाकुला
॥ १३ ॥ अकुलस्था पदन्यासा न्यासरूपा विरूपिणी ॥ विरूपाक्षी कोटराक्षी कुलकांतापराजिता ॥ १४ ॥ अजिता कुलिका
लंपा लंपटा त्रिपुरेश्वरी ॥ त्रितयी वेदविन्यासा संन्यासा सुमतिर्भया ॥ १५ ॥ अभया स्वर्मुखी देवी महौषधिरलंबुषा ॥ चपला
चंडिका चंडी चंडमुंडनिषूदिनी ॥ १६ ॥ चपलाक्षी मदाविष्टा मदिरारुणलोचना ॥ पुरी त्रिपुरसूराद्या रमा रामा मनोरमा ॥ १७ ॥
संध्या संध्याभ्रशीला च शाला श्यामपयोधरा ॥ शशांकमुकुटा श्यामा सुरा सुंदरलोचना ॥ १८ ॥ विषमाक्षी विशालाक्षी वशा
वागीश्वरी शिला ॥ मनःशिला च कस्तूरी मृगनाभिर्मृगेक्षणा ॥ १९ ॥ मृगारिवाहना साध्वी मानदा मत्तभाषिणी ॥ नारसिंही
वामदेवी वामा वामश्रुतिप्रिया ॥२०॥ पुण्या पुण्यगतिः पुण्या पुत्री पुण्यजनप्रिया ॥ चामुंडा चोग्रमुंडा च महाचंडतमा उमा ॥ २१ ॥
तमस्विनी प्रभा ज्योत्स्ना महाज्योतिःस्वरूपिणी ॥ स्वरूपा सद्गतिः साध्वी सदसद्रूपराजिता ॥ २२ ॥ सृष्टिस्थितिः क्षेमकरी क्षामा
क्षामोन्नतस्तनी ॥ क्षोणी क्षयकरी क्षीणा शवस्था शिववल्लभा ॥ २३ ॥ दंतुरा दाडिमप्रीतिर्दया दांभिकसूदिनी ॥ राक्षसी डाकिनी
योग्या योगिनी योगवल्लभा ॥ २४ ॥ कबंधा कंदरा कृत्या कृत्तिका कंटकांतका ॥ कलंकरहिता काली कंपा काश्मीरवल्लभा ॥
॥ २५ ॥ काशी कीर्तिप्रदा कांची काश्मीरी कोकिलस्वना ॥ प्रभावती महारौद्री रुद्रपत्नी रुजापहा ॥ २६ ॥ रतिः स्तुतिस्तुरी
तुर्या तोतुला तलवासिनी ॥ तपःप्रिया सरिच्छ्रेष्ठा पंगुपुत्री यमस्वसा ॥ २७ ॥ यामी यमांतका याम्या यमुना स्वर्नदी तडित् ॥
नारायणी विश्वमाता भवानी पापनाशिनी ॥ २८ ॥ विगता विगतप्रश्वा कृशा कृष्टासिधारिणी ॥ वारी वराम्बरधरा वरदा

सूदिनी ॥ २९ ॥ वीरसूर्वामनाकारा दीर्घसूत्रा दयावती ॥ दरी धनप्रिया धात्री धात्रीवल्ली महोदरी ॥ ३० ॥ गणेश्वरी गणा
कांची कांचीकिंकिणिघंटिका ॥ माया मायावती मत्ता प्रमत्ता प्रत्रेश्वरी ॥ ३१ ॥ पौरंदरी शची सीता शीतातपस्वभावजा ॥
स्वाभाविकगुणा गण्या गांभीर्यगुणभूषणा ॥ ३२ ॥ सूतिः सूर्यकला सुत्ता सततसततिरूपिणी ॥ तेजस्विनी सदानंदा सभासंतोष
वर्धिनी ॥ ३३ ॥ तर्पणा कर्षणा होत्री संकल्पा शुभमंत्रिका ॥ दर्भा द्रोणिकला शांता समिधा सुरवेदिका ॥ ३४ ॥ धूम्राहुते
श्वरमतिश्रामीकरुचाश्रिता ॥ दिव्यानलेश्वरी नीला कालानलसरस्वती ॥ ३५ ॥ अपर्णा सुफला यज्ञा सभया निर्भयाभया ॥
भीमस्वना भर्गशिखा भास्वती भाकरा विभा ॥ ३६ ॥ विभावरी नदी नंद्या नद्यावर्तप्रवर्तिनी ॥ पृथ्वीधरा विषधरा विश्वगर्भा प्रव
र्तिका ॥ ३७ ॥ विश्वमाया विश्वबाला विश्वंभरविलासिनी ॥ उरगेशा पद्मनाभा पद्मनाभप्रसूः प्रजा ॥ ३८ ॥ तोरणा तुलसी
दीक्षा दक्षा दाक्षायणी द्युतिः ॥ संपुटा शयना शय्या शासना शमनांतका ॥ ३९ ॥ श्यामाकवर्णा शार्दूली शष्पनीतांशुवल्लभा ॥
स्तुत्या प्रणीता नियतिः कंपना कंपहारिणी ॥ ४० ॥ चंपका भूधरा चीना दीना दीनजनप्रिया ॥ वसुंधरा वासवेशी वसुनाथा
वटेश्वरी ॥ ४१ ॥ समुद्रासंगमा पूर्णा तरला तरुवासिनी ॥ पार्वती पामरी मान्या माननीया मधुप्रिया ॥ ४२ ॥
माधवी मधुपानस्था मंदिरा मंदुरा मृगी ॥ ममर्षाभरुषा रेवा रेवती रमणी रमा ॥ ४३ ॥ ऋद्धिहस्ता सिद्धिहस्ता
चान्नपूर्णा महेश्वरी ॥ अणुरूपा जगज्ज्योतिः समस्तासुरघातिनी ॥ ४४ ॥ गारुडी गगनालंबा लंबमानकचप्रिया ॥
पीतांबरा पीतपुष्पा पूतना गीतवल्लभा ॥ ४५ ॥ बलाका जगदंता च जरा जयवरप्रदा ॥ प्रीतिः कठोरवदना करालरदना रमा ॥ ४६ ॥
जिह्वाहस्ता च बगला प्रणया विनयप्रदा ॥ कीरी करालदेहा च शेमुषी मक्षिका मषी ॥ ४७ ॥ उत्तीर्णा तर्णिका तीक्ष्णा श्लक्ष्णा
कामेश्वरी शिवा ॥ शिवपत्नी सरोजाक्षी पद्महस्ता सरस्वती ॥ ४८ ॥ तथ्या पथ्यकरी रथ्या रथस्था विततस्वरा ॥ महती
रागिणी मार्गी शुचिहासा हरीश्वरी ॥ ४९ ॥ हरिद्रलांशुलसिता लक्ष्मीनायकसुंदरी ॥ अंबालिकांबा देवेशी ह्यनद्याग्निशिखा श्रुतिः

॥ ५० ॥ अलसाल्पगतिश्चांत्यानंतानंतगुणाश्रया ॥ आद्या चादित्यसंकाशा ह्यादित्यकुलसुंदरी ॥ ५१ ॥ आत्मरूपाधिशामिनी चादिमायादिदेवता ॥ इंद्रप्रसूरिनद्योतिरिनाग्निशशिलोचना ॥ ५२ ॥ उमा उर्वी उरुभुजा उत्तुंगा चोक्षगाहना ॥ उत्तंका चोत्तमा ध्येया उल्हासा चोरुगर्विणी ॥ ५३ ॥ ऊष्मा ऊर्गा च गुर्वंगी ऊर्ध्वाक्षी ऊर्ध्वमस्तका ॥ ऋद्धिश्चर्चा ऋत्वर्णेशी ऋगहर्त्री च वार्तकी ॥ ५४ ॥ ऋद्धिजा चारुवस्त्रा च ऋणिवासा महालसा ॥ ऌकारा ऌक्वुरा लीना ऌकारवरधारिणी ॥ ५५ ॥ एणांकमुकुटा चेहा चारुचंद्रकला कला ॥ ऐंकारगतिरैश्वर्यदायिनी चेश्वरी गतिः ॥ ५६ ॥ ॐकारबीजरूपा च औत्रिकी बीजधारिणी ॥ अंबिका लंपिकांबा च अस्वरोद्धाररूपिणी ॥ ५७ ॥ काली च भद्रकाली च कालिका कालवल्लभा ॥ कदंबनिलया कंथा कांचीमंडनमंडिता ॥ ५८ ॥ कलंकरहिता कूर्पा कांचनाभा करीरगा ॥ कनकाचलवासा च कारुण्याकुलमानसा ॥ ५९ ॥ कुलस्था कौलिनि. कल्या कुरुकुल्ला कपालिनी ॥ कपालकुलनिर्विण्णा क्रेंकरा कंजलोचना ॥ ६० ॥ खंजनाक्षी खड्गधरा खेटकायुधभूषणा ॥ खर्पराढ्या च खलहा खेटिनी खेचरी खगा ॥ ६१ ॥ खगायुधा खगगतिः खकाराशरभूषणा ॥ गणाध्यक्षा गजगतिर्गणेशजननी गदा ॥ ६२ ॥ गोधा गदाधरप्राज्या गगनेशी महीमला ॥ घुर्घुरा घटभूर्घूका घुसृणाभा घनेश्वरी ॥ ६३ ॥ घुनसारप्रिया साम्या घत्वर्णरुतभूषणा ॥ चांद्री चंद्रस्तुता चार्वी चंद्रिका चंडनिःस्वना ॥ ६४ ॥ चंचरीकस्वना देवी चंचच्चामीकरांगदा ॥ छत्रिका च्छुरिका छच्छा छत्र चामरभूषणा ॥ ६५ ॥ ज्रींकारी जलजिह्वा च जृंभिका जलयोगिनी ॥ जटाजूटधरा जातिर्जातीपुष्पसमानना ॥ ६६ ॥ जलेश्वरी जग द्ध्येया जानकी जननी जटा ॥ झंझाझरी झरत्कारी जरत्कांची त्वकिंकिणी ॥ ६७ ॥ झिंटिका झंपकृज्झंपा झंपत्रासनिवारिणी ॥ ञणुरूपा ञकहस्ता ञकाराक्षरसंमता ॥ ६८ ॥ टंकायुधा महातथ्या टंकारा करुणा सती ॥ ठक्वुरा ठत्करा ठानी डिंडीरवसना डला ॥ ६९ ॥ ढंडानिलमयी ढंडा ढणत्कारकरा ढसा ॥ णांतानणी णीलायुधा णवर्णाक्षरभूषणा ॥ ७० ॥ तरुणी तुंदिला तोदा तामसी तामसप्रिया ॥ ताम्रानना ताम्रकरा ताम्रांबरधरा तुला ॥ ७१ ॥ तापत्रयहरी तापी तैलासका तिलोत्तमा ॥ स्थाणुपत्नी

स्थली स्थूला स्थितिः स्थैर्यधरा स्थुला ॥ ७२ ॥ दंतिनी दंतुरा दावी देवकी देवनायिका ॥ दामिनी दमिनी दंड्या दंडहस्ता [illegible]
नतिः ॥ ७३ ॥ दुर्वारा दुर्गतिर्द्राक्षी द्राक्षा द्रविडवासिनी ॥ दूरस्था दुंदुभिध्वाना दरदा दरनाशिनी ॥ ७४ ॥ दुःखघ्नी च द्रुगा
द्रष्ट्री दया दांभिकनाशिनी ॥ धर्म्या धर्मप्रसूर्धन्या धनदा धातृवल्लभा ॥ ७५ ॥ धनुर्धरा धनुर्वल्ली धनुष्कवरदायिनी ॥ धूमाली धूम्र
वदना धूमश्रीर्धूम्रलोचना ॥ ७६ ॥ नलिनी नर्तकी नांतानंगा नलिनलोचना ॥ निर्मला निगमाचारा निम्नगा नगजा नमिः ॥ ७७ ॥
नीलग्रीवा निरीहा च नीपोपवनवासिनी ॥ निरंजनजनिर्जन्या निद्रालुर्नीरवासिनी ॥ ७८ ॥ नटिनी नाट्यनिरता नवनीतप्रियानिला ॥
नारायणी निराकारा निर्लेपा नित्यवल्लभा ॥ ७९ ॥ पद्मावती पद्मकरा पुत्रदा पुत्रवत्सला ॥ परोत्तरा पुरी पाठा पीनश्रोणिः पुलोमजा
॥८०॥ पुष्पिणी पुस्तककरा पटुः पाटीरवाहना ॥ पापघ्नी पद्मिनी पाली पली परमसुंदरी ॥८१॥ पिशाची च पिशाचघ्नी पानपात्रधरा पुटा ॥
पूर्णिमा पंचमी पौत्री पुरूरववरप्रदा ॥ ८२ ॥ पंचयज्ञा पंचशरी पंचाशन्मनुवल्लभा ॥ पांचली पंचपुत्रा च पूर्णा पूर्णमनोरथा
॥ ८३ ॥ फलिनी फलदात्री च फलहस्ता फणिप्रिया ॥ फिरंगहा स्फीतमतिः स्फीतिः स्फीतिमती स्फुरा ॥ ८४ ॥ वलमाया
वलस्तन्या विल्वसेना बलाबला ॥ बगलेश्वरपूज्या च बलिनी बलवर्धिनी ॥ ८५ ॥ बुद्धमाता बौद्धमतिर्बद्धा बंधनमोचिनी ॥
भगिनी भगमाला च भगलिंगामृतस्रवा ॥ ८६ ॥ भीमेश्वरी च भेरुंडा भगेशी भगमर्षिणी ॥ भगलिंगस्थिता भग्या भाग्यदा भग
मालिनी ॥ ८७ ॥ मत्ता मनोहरा मेना मैनाकजननी मुरी ॥ मुरली मानवी मोक्री मनस्विजनमोदिता ॥ ८८ ॥ मत्तमातंगगा
माद्री मरालगतिमंजुला ॥ यज्ञेश्वरीश्वरी यज्ञा यजुर्वेदप्रियाश्रिता ॥ ८९ ॥ यशोवती यतिस्था च यतिस्था यतिवल्लभा ॥ यवनी
यौवनस्था च यवा यक्षजनाश्रया ॥ ९० ॥ यज्ञसूत्रप्रदा ज्येष्ठा यज्ञभूर्यूपमालिनी ॥ रंजिता राजपत्नी च राजसूयफलप्रदा ॥ ९१ ॥
रजोवती रजश्चित्रा राज्यदा राज्यवर्धिनी ॥ राज्ञी रात्रिवरेशानी रोगघ्नी त्रिपुरेश्वरी ॥ ९२ ॥ ललिता ललितालापा लोपा ललन

१ यतीनामायतिरुत्तरकालः स वल्लभो यस्याः सा ।

लालसा ॥ लाटीरद्रुममासा च लाटीरद्रुमवर्तिनी ॥ ९३ ॥ लंका ललज्जटाजूटा लंघिता सुरसुंदरी ॥ लोकेशवरदा लीना लयकर्त्री महालया ॥ ९४ ॥ वेदिर्विनग्ना वाणी च वेणा वेणुर्वनेश्वरी ॥ वंद्यमाना वर्णाढ्या वाराही वीरमातृका ॥ ९५ ॥ शंखिनी शंखवलया शंखायुधधरा शमा ॥ शशिमंडलमध्यस्था शीतलांबुनिवासिनी ॥ ९६ ॥ श्मशानस्था महाघोरा श्मशाननिलयेश्वरी ॥ सिंधुः सूत्रधरा सत्रा समस्तकुलचारिणी ॥ ९७ ॥ सप्तमी सात्त्विकी सत्त्वा सूत्रस्थासुरसूदिनी ॥ सुरेश्वरी संपदाढ्या समस्ताचलचारिणी ॥ ॥ ९८ ॥ समदा संमसिः संमा सवना सवनेश्वरी ॥ हंसी हरिप्रिया हास्या हरिनेत्रा हरांबिका ॥ ९९ ॥ हेषा हटेश्वरी हीरा हलिनी हलदायिनी ॥ हे हाहा हारवा हाला हालाहलहताशया ॥१००॥ क्षेमा क्षेमप्रदा क्षामा क्षौमांबरधराक्षया ॥ क्षितिः क्षीरप्रिया लक्ष्या क्षितिभृत्क्षणदा क्षुधा ॥ १०१ ॥ क्षत्रिया ब्राह्मणी क्षेत्रा क्षरा क्षंबीजमंडिता ॥ लक्ष्यबीजस्वरूपा च क्षकाराक्षरमातृका ॥ १०२ ॥ दुर्गाघ्ननाशिनी दूर्वा दुर्गमा दुर्गनाशिनी ॥ दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी ॐ ह्रीं दुं बीजमंडिता ॥ १०३ ॥ इति नामसहस्रं तु मंत्रगर्भं महाफलम् ॥ दुर्गाया दुर्गतिहरं सर्वदेवनमस्कृतम् ॥ १०४ ॥ सर्वमंत्रमयं दिव्यं देवदानवपूजितम् ॥ श्रेयस्करं महापुण्यं महापातकनाशनम् ॥ १०५ ॥ यः पठेत्पाठयेद्वापि शृणोति श्रावयेत्तथा ॥ स महापातकैर्मुक्तो देवदानवसेवितः ॥ १०६ ॥ इह लोके सुखं भुक्त्वा परत्र त्रिदिवं व्रजेत् ॥ दुर्गानामसहस्रं तु मूलमंत्रैकसाधनम् ॥ १०७ ॥ अर्धरात्रे पठेद्वीरो मधुरं भवसेवितम् ॥ त्रिवारं वर्मपूर्वं तु भवेद्वागीशसन्निभः ॥ १०८ ॥ यः पठेद्देवि मध्याह्ने स्त्रीयुतो मुक्तकुंतलः ॥ तस्य वैरिकुलं त्रस्येद्दर्शनादेव नश्यति ॥ १०९ ॥ दहनादिव देवेशि पतंगकुलमद्रिजे ॥ यः पठेद्वेतसीमूले सायं पूजितभैरवः ॥ ११० ॥ तस्यास्यकुहराद्वाणी निःसरेद्गद्यपद्यभाक् ॥ यः पठेत्सततं देवि शयने सुरताकुलः ॥ १११ ॥ स भवेद्वैरिविध्वंसी धनेन धनदोपमः ॥ वाग्भिर्वागीशसदृशः कवित्वेन सितोपमः ॥ ११२ ॥ तेजसा सूर्यसंकाशो यशसा सोमसन्निभः ॥ बलेन वायुतुल्यो हि लक्ष्म्या गीर्वाणनायकः ॥११३॥ किं बहुनोक्तेन स भवेद्भैरवोपमः ॥ स्तंभनाकर्षणोच्चाटवशीकरणक्षमः ॥११४॥ रवौ भूर्जे लिखेद्देवि निशीथे चाष्टगन्धकैः ॥

को मंत्रसाधकः ॥११५॥ लिखित्वा वेष्टयेन्नामसहस्रमणिमीश्वरि ॥ श्वेतवस्त्रेण संवेष्ट्य लाक्षया परिवेष्टयेत् ॥ ११६ ॥
सुवर्णरजताद्यैश्च वेष्टयेत्पीतसूत्रकैः ॥ संपूज्य गुटिकां देवि शुभाहे साधकोत्तमः ॥ ११७ ॥ धारयेन्मूर्ध्नि वा बाहौ गुटिकां काम
दायिनीम् ॥ रणे रिपून्विजित्याशु कल्याणी गृहमाविशेत् ॥ ११८ ॥ वंध्या वामभुजे धृत्वा कृत्वा साधकपूजनम् ॥ लभते तनयान्देवि
साक्षाद्वैश्रवणोपमान् ॥ ११९ ॥ गुटिकैषा महादिव्या गोप्या कामफलप्रदा ॥ साधकैः सततं पूज्या साक्षाद्दुर्गास्वरूपिणी ॥ १२० ॥
योऽर्चयेत्साधको दुर्गां गुटिकां धारयेत्प्रिये ॥ पठेद्वर्म शिवे मंत्रं नामसाहस्रिकं परम् ॥ १२१ ॥ अंगस्तोत्रं फलं तस्य देवि वक्ष्येऽधुना
शृणु ॥ वने राजकुले वापि दुर्भिक्षे शत्रुसंकटे ॥ १२२ ॥ ग्रहयक्षपिशाचादिभूतप्रेतभये तथा ॥ वीरो विगतभीर्देवि सर्वत्र विजयी
भवेत् ॥ १२३ ॥ स्तंभयेद्वायुसूर्यौ च चेंद्रादीन्साधकोत्तमः ॥ मोहयेत्त्रिजगत्सद्यः कांताश्चाकर्षयेद्ध्रुवम् ॥ १२४ ॥ मारयेदखिला
ञ्छत्रून्रिपूनुच्चाटयेत्तथा ॥ वशयेद्देवताः सद्यः किं पुनर्मानवाञ्छिवे ॥ १२५ ॥ शमयेदखिलान्रोगान्महोत्पातानुपद्रवान् ॥
किं किं न लभते वीरो दुर्गापञ्चांगपूजनात् ॥ १२६ ॥ इदं रहस्यं दुर्गाया अष्टाक्षर्या महेश्वरि ॥ सर्वस्वं सारतत्त्वं च मूलविद्यामयं
परम् ॥ १२७ ॥ महाचीनक्रमस्थानां साधकानां यशस्करम् ॥ पठेत्संपूजयेद्देव्या मन्त्रनामसहस्रकम् ॥ १२८ ॥ इदं सारो
हि तन्त्राणां तत्त्वानां तत्त्वमुत्तमम् ॥ दुर्गानामसहस्रं तु तव भक्त्या प्रकाशितम् ॥१२९॥ अभक्ताय न दातव्यं गोप्तव्यं पशुसंकटे ॥
अभक्तेभ्योऽपि पुत्रेभ्यो दत्त्वा नरकमाप्नुयात् ॥ १३० ॥ दीक्षिताय कुलीनाय गुरुभक्तिरताय च ॥ शांताय भक्तियुक्ताय देयं नाम
सहस्रकम् ॥ १३१ ॥ विना दानं न गृह्णीयान्न दद्याद्दक्षिणां विना ॥ दत्त्वा गृहीत्वाप्युभयोः सिद्धिहानिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ १३२ ॥
इदं नामसहस्रं तु गुप्तं गोप्यतमं शिवे ॥ तव भक्त्या मयाख्यातं गोपनीयं स्वयोनिवत्" ॥ १३३ ॥ इति श्रीदेवीरहस्यतन्त्रोक्तं दुर्गा
सहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥ अथ दुर्गाष्टाक्षरस्तोत्रप्रारंभः ॥ उक्तं च देवीरहस्यतंत्रे पंचाशत्तमे पटले ॥ भैरव उवाच ॥ " अधुना
देवि वक्ष्यामि दुर्गास्तोत्रं मनोहरम् ॥ मूलमंत्रमयं दिव्यं सर्वसारस्वतप्रदम् ॥ १ ॥ दुर्गार्तिशमनं पुण्यं साधकानां जयप्रदम् ॥ दुर्गाया

अंगभूतं तु स्तोत्रराजं परात्परम् ॥२॥ ॐ अस्य श्रीदुर्गास्तोत्रराजस्य महेश्वर ऋषिः । अनुष्टुप् छंदः ॥ श्रीदुर्गाष्टाक्षरात्मिका देवता । दुं बीजम् । [1]परा शक्तिः । नमः कीलकम् । धर्मार्थकाममोक्षार्थे दुर्गास्तोत्रपाठे विनियोगः॥ ॐ महेश्वरऋषये नमः शिरसि १ । अनुष्टुप्छंदसे नमोमुखे २ । श्रीदुर्गाष्टाक्षरात्मिकादेवतायै नमो हृदि ३ । दुं बीजाय नमो नाभौ ४ । ह्रीं शक्तये नमो गुह्ये ५ । नमः कीलकाय नमः पादयोः ६ । विनियोगाय नमः सर्वांगे ७ । इति विन्यास्य ध्यानं कुर्यात ॥ दूर्वानिभां त्रिनयनां विलसत्किरीटां शंखाब्जखड्गशरखेटकशूलचापान् ॥ संतर्जनीं च दधतीं महिषासनस्थां दुर्गां नवारकुलपीठगतां भजेऽहम् ॥ तारं हारं मंत्रमालां सुबीजं ध्याये दंतयौ बलं बालकांतः ॥ तस्य स्मारंस्मारमंघ्रिद्वयीं द्राग्रंभा याति स्वर्गतः कामवश्या॥ ४ ॥ मायां जपेद्यस्तव मंत्रमध्ये दुर्गे सदा दुर्गतिखेदखिन्नः ॥ भवेत्स भूमौ नृपमौलिमालामाणिक्यनिर्घृष्टपदारविंदः ॥ ५ ॥ चाक्रिकं यदि जपेत्तवांबिके चक्रमध्यगत ईश्वरेश्वरि ॥ साधको भवति चक्रवर्तिनां नायको नयविलासकोविदः ॥ ६ ॥ चक्रिबीजमपरं स्मरेच्छिवे योऽरिवर्गविहिताहितव्यथः ॥ आजिमंडलगतो जयेद्रिपून्वाजिवारणरथाश्रितो नरः ॥ ७ ॥ दूर्वाबीजं यो जपेत्प्रेतभूमौ सायं मायाभस्मनालिप्तकायः ॥ गीर्वाणानां नायको देवमंत्री मुक्त्वा राज्यं प्राज्यमाद्यं करोति ॥ ८ ॥ वायव्यबीजं यदि साधको जपेत्प्रियाकुचद्वंद्वविमर्दनक्षमः ॥ समस्तकांताजननेत्रवागुराविलासहंसो भविता स पार्वति ॥ ९ ॥ विश्वं विश्वेश्वरि यदि जपेत्कामवेलाकुलार्तो रात्रौ मात्राक्षरविलसितन्यास ईशानि मातः ॥ तस्य स्मेराननसरसिजभ्राजमानांगलक्ष्मीर्वश्याऽवश्यं सुरपुरवधूमौलिमालोर्वशी स्यात् ॥ १० ॥ भूगेहांचितसत्त्रिवृत्तविलसन्नागारवृत्तांचितव्यश्रारोल्लासिताग्निकोणाविलसच्छ्रीबिंदुपीठस्थिताम् ॥ ध्यायेच्चेतसि शर्वपत्नि भवतीं माध्वीरसाघूर्णितां यो मंत्री स भविष्यति स्मरसमः स्त्रीणां धरण्यां दिवि ॥ ११ ॥ दुर्गास्तवं मनुमयं मनुराजमौलिमाणिक्यमुत्तमशिवांगरहस्यभूतम् ॥ प्रातः पठेद्यदि जपावसरेऽर्चनायां भूमौ भवेत्स नृपतिर्दिवि देवनाथः ॥ १२ ॥ इति स्तोत्रं महापुण्यं पंचांगैक

१ परा ह्रीं × २ श्रीं ।

शिरोमणिम् ॥ यः पठेदर्धरात्रे तु तस्य वश्यं जगत्त्रयम् " ॥ १३ ॥ इति श्रीदेवीरहस्यतंत्रोक्तं श्रीदुर्गाष्टाक्षरस्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ अथ दुर्गास्तवः ॥ उक्तं च हरिवंशे ॥ वैशंपायन उवाच ॥ " आर्यास्तवं प्रवक्ष्यामि यथोक्तमृषिभिः पुरा ॥ नारायणीं नमस्यामि देवीं त्रिभुवनेश्वरीम् ॥ १ ॥ त्वं हि सिद्धिर्धृतिर्मेधा श्रीर्विद्या सन्नतिर्मतिः ॥ संध्या रात्रिः प्रभा निद्रा कालरात्रिस्तथैव च ॥ २ ॥ आर्या कात्यायनी देवी कौशिकी ब्रह्मचारिणी ॥ जननी सिद्धसेनानीरुग्रचारिमहातपाः ॥ ३ ॥ जया च विजया चैव पुष्टिश्च त्वं क्षमा दया ॥ ज्येष्ठा यमस्य भगिनी नीलकौशेयवासिनी ॥४॥ बहुरूपा विरूपा च अनेकविधचारिणी ॥ विरूपाक्षी विशालाक्षी भक्तानां परिरक्षिणी ॥५॥ पर्वताग्रेषु घोरेषु नदीषु च गृहेषु च ॥ वासस्तव महादेवि वनेषूपवनेषु च ॥ ६ ॥ शबरैर्बर्बरैश्चैव पुलिंदैरभिपूजिता ॥ मयूरपक्षध्वजिनी लोकान्क्रमसि सर्वशः ॥ ७ ॥ कुक्कुटैश्छागलैर्मेषैः सिंहैर्व्याघ्रैः समाकुला ॥ घंटानिनादबहुला विश्रुता विंध्यवासिनी ॥ ८ ॥ शूलिनी पट्टिशयुता सूर्यचन्द्रपताकिनी ॥ नवमी कृष्णपक्षस्य शुक्लस्यैकादशी तथा ॥ ९ ॥ भगिनी बलदेवस्य रजनी कलहप्रिया ॥ आवासः सर्वभूतानां निष्ठा च परमा गतिः ॥ १० ॥ नंदगोपसुता चैव देवानां विजयावहा ॥ चीरवासा सुवासाश्च रात्रिः संध्या त्वमेव च ॥ ११ ॥ प्रकीर्णकेशी मृत्युश्च तथा मांसौदनप्रिया ॥ लक्ष्मीरलक्ष्मीरूपेण दानवानां वधाय च ॥ १२ ॥ सावित्री चव वेदानां माता मंत्रगणस्य च ॥ अंतर्वेदी च यज्ञानामृत्विजश्चैव दक्षिणा ॥ १३ ॥ सिद्धिः सांयात्रिकाणां तु वेला त्वं सागरस्य च ॥ यक्षाणां प्रथमा यक्षी नागानां सुरसेति च ॥ १४ ॥ कन्यानां ब्रह्मचर्या त्वं सौभाग्यं प्रमदासु च ॥ ब्रह्मचारिण्यथो दीक्षा शोभा च परमा तथा ॥ १५ ॥ ज्योतिषां त्वं प्रभा देवि नक्षत्राणां च रोहिणी ॥ राजद्वारेषु तीर्थेषु नदीनां संगमेषु च ॥ १६ ॥ पूर्णा च पूर्णिमा चंद्रे कृत्तिवासा इति स्मृता ॥ सरस्वती च वाल्मीकेः स्मृतिर्द्वैपायनस्य च ॥ १७ ॥ कर्षकाणां च सीतेति भूतानां धरणिस्तथा ॥ ऋषीणां धर्मबुद्धिस्तु देवानां मानसी तथा ॥ १८ ॥ सुरादेवीति भूतेषु स्तूयसे त्वं स्वकर्मभिः ॥ इन्द्रस्य चारुदृष्टिस्त्वं सहस्रनयनेति च ॥ १९ ॥ तापसानां च देवि त्वमरणिश्चाग्निहोत्रिणाम् । क्षुधा च सर्वभूतानां तृप्तिस्त्वं दैवतेषु च ॥ २० ॥ स्वाहा

तृप्तिर्धृतिर्मेधा वसूनां त्वं वसूमती ॥ आशा च मानुषाणां तु तुष्टिश्च कृतकर्मणाम् ॥२१॥दिशश्च विदिशश्चैव तथा ह्यग्निशिखा प्रभा ॥
शकुनी पूतना च त्वं रेवती वसुदारुणा ॥ २२ ॥ निद्रा च सर्वभूतानां मोहिनी क्षत्रिया तथा ॥ विद्यानां ब्रह्मविद्या च त्वमोंकारो वषट्
तथा ॥ २३ ॥ नारीणां पार्वती च त्वं पौराणीमृषयो विदुः ॥ अरुंधत्येकभर्त्रीणां प्रजापतिवचो यथा ॥ २४ ॥ पर्यायनामभि
र्दिव्यैरिंद्राणी चेति विश्रुता ॥ त्वया व्याप्तमिदं सर्वं जगत्स्थावरजंगमम् ॥ २५ ॥ संग्रामेषु च सर्वेषु अग्निप्रज्वलितेषु च ॥ नदीतीरेषु
चोरेषु कांतारेषु भयेषु च ॥ प्रवासे राजबंधे च शत्रूणां च प्रदर्शने ॥ २६ ॥ प्रयाणाद्येषु सर्वेषु त्वं हि रक्षा न संशयः ॥ त्वयि मे
हृदयं देवि त्वयि चित्तं मनस्त्वयि ॥ २७ ॥ रक्ष मां सर्वपापेभ्यः प्रसादं कर्तुमर्हसि ॥ इमं तव स्तवं दिव्यमिति व्यासप्रकल्पितम्
॥ २८ ॥ यः पठेत्प्रातरुत्थाय शुचिः प्रयतमानसः ॥ त्रिभिर्मासैः कांक्षितं च फलं वै संप्रयच्छसि ॥ २९ ॥ षड्भिर्मासैर्वरिष्ठं तु
वरमेकं प्रयच्छसि ॥ अर्चिता नवभिर्मासैर्दिव्यं चक्षुः प्रयच्छसि ॥ ३० ॥ संवत्सरेण सिद्धिं तु यथाकामं प्रयच्छसि ॥ सत्यं
ब्रह्म च दैवं च द्वैपायनवचो यथा ॥ ३१ ॥ नृणां बंधं वधं घोरं पुत्रनाशं धनक्षयम् ॥ व्याधिं मृत्युभयं चैव पूजिता
शमयिष्यसि ॥ ३२ ॥ भविष्यसि महाभागे वरदा कामरूपिणी ॥ मोहयित्वा च तं कंसमेका त्वं भोक्ष्यसे जगत् ॥ ३३ ॥
अहमप्यात्मनो वृत्तिं विधास्ये गोषु गोपवत् ॥ स्ववृद्ध्यर्थमहं चैव करिष्ये कंसगोपनम् ॥ ३४ ॥ एवं तु स समादिश्य
गतोऽतर्धानमीश्वरः ॥ सा चापि तं नमस्कृत्य तथास्त्विति विनिश्चिता" ॥ ३५ ॥ इति श्रीहरिवंशोक्तः श्रीआर्य्यास्तवः समाप्तः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ दुर्गास्तोत्रम् ॥ उक्तं च ब्रह्मवैवर्तपुराणे प्रकृतिखंडे अंतिमेऽध्याये ॥ "पुरा स्तुता सा गोलोके कृष्णेन
परमात्मना ॥ संपूज्य मधुमांसेन प्रीतेन रासमंडले ॥ १ ॥ मधुकैटभयोर्युद्धे द्वितीये विष्णुना पुरा ॥ तत्रैव काले सा दुर्गा ब्रह्मणः
[illegible] २ ॥ चतुर्थे संस्तुता देवी भक्ता च त्रिपुरारिणा ॥ पुरा त्रिपुरयुद्धे च महाघोरतरे रणे ॥ ३ ॥ पंचमे संस्तुता देवी

वृत्रासुरवधे तथा ॥ शक्रेण सर्वैर्देवैश्च घोरे च प्राणसंकटे ॥ ४ ॥ तदा मुनींद्रैर्मुनिभिर्मानवैः सुरथादिभिः ॥ संस्तुता पूजिता सा च कल्पे कल्पे परात्परा ॥ ५ ॥ स्तोत्रं च श्रूयतां ब्रह्मन्सर्वविघ्नविनाशनम् ॥ सुखदं मोक्षदं सारं भवाब्धेः पारकारकम् ॥ ६ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ त्वमेव सर्वजननी मूलप्रकृतिरीश्वरी ॥ त्वमेवाद्या सृष्टिविधौ स्वेच्छया त्रिगुणात्मिका ॥ ७ ॥ कार्यार्थे सगुणा त्वं च वस्तुतो निर्गुणा स्वयम् ॥ परब्रह्मस्वरूपा त्वं सत्या नित्यस्वरूपिणी ॥ ८ ॥ निजस्वरूपा परमा भक्तानुग्रहविग्रहा ॥ सर्वस्वरूपा शर्वाणी सर्वाधारा परात्परा ॥ ९ ॥ सर्वज्ञा सर्वतोभद्रा सर्वमङ्गलमङ्गला ॥ सर्वज्ञानप्रदा देवी सर्वज्ञा सर्वभाविनी ॥ १० ॥ त्वं स्वाहा देवदाने च पितृदाने स्वधा स्वयम् ॥ दक्षिणा सर्वदाने च सर्वकर्मणि संततम् ॥ ११ ॥ निद्रा त्वं च दया त्वं च तृष्णा त्वं चात्मनश्च मे ॥ तत्क्षांतिः शांतिरीशा च कांतिस्तुष्टिश्च शाश्वती ॥ १२ ॥ श्रद्धा पुष्टिश्च तंद्रा च लज्जा शोभा प्रभा सदा ॥ सतां संपत्स्वरूपा श्रीर्विपत्तिरसतामिह ॥ १३ ॥ प्रीतिरूपा पुण्यवतां पापिनां कलहांकुरा ॥ शश्वत्कर्ममयी शक्तिः सर्वदा सर्वजीविनाम् ॥ १४ ॥ देवेभ्यः संपदां दात्री धातुर्धात्री कृपामयी ॥ कुलायः सर्वदेवानां सर्वासुरविनाशिनी ॥ १५ ॥ योगनिद्रा योगरूपा योगदात्री च योगिनाम् ॥ माहेश्वरी च ब्रह्माणी विष्णुमाया च वैष्णवी ॥ १६ ॥ भद्रदा भद्रकाली च सर्वलोकभयंकरी ॥ ग्रामे ग्रामे ग्रामदेवी गृहदेवी गृहे गृहे ॥ १७ ॥ महायुद्धे महामारी दुष्टसंहाररूपिणी ॥ रक्षास्वरूपा शिष्टानां मातेव हितकारिणी ॥ १८ ॥ ब्राह्मण्यरूपा विप्राणां तपस्या च तपस्विनाम् ॥ विद्या विद्यावतां त्वं च बुद्धिर्बुद्धिमतां सती ॥ १९ ॥ मेधा स्मृतिस्वरूपा च प्रतिभा प्रतिभावताम् ॥ राज्ञां प्रतापरूपा च विशां वा विट्स्वरूपिणी ॥ २० ॥ इत्यात्मना कृतं स्तोत्रं दुर्गायाः स्वर्गकारणम् ॥ पूजाकाले पठेद्यो हि सिद्धं तद्वाञ्छितं भवेत् ॥ २१ ॥ वंध्या वा काकवंध्या वा मृतवत्सा च दुर्भगा ॥ श्रुत्वा स्तोत्रं वर्षमेकं सुपुत्रं लभते ध्रुवम् ॥ २२ ॥ कारागारे महाघोरे यो बद्धो दृढबंधने ॥ श्रुत्वा स्तोत्रं मासमेकं बन्धनान्मुच्यते ध्रुवम् ॥ २३ ॥ यक्ष्मग्रस्तो गलत्कुष्ठी महाशूली महाज्वरी ॥ श्रुत्वा स्तोत्रं वर्षमेकं सद्यो रोगात्प्रमुच्यते ॥ २४ ॥ राजद्वारे श्मशाने च महारण्ये रणस्थले ॥ हिंस्रजंतुसमीपे

तु श्रुत्वा स्तोत्रं प्रमुच्यते ॥ २५ ॥ महादरिद्रो मूर्खश्च वर्षं स्तोत्रं पठेत्तु यः ॥ विद्यावान्धनवांश्चैव स भवेन्नात्र संशयः" ॥ २६ ॥ इति श्री ब्रह्मवैवर्तांतर्गतप्रकृतिखंडोक्तं दुर्गास्तोत्रं समाप्तम् ॥ ॥ अथ परशुरामकृतं दुर्गास्तोत्रम् ॥ परशुराम उवाच ॥ "श्रीकृष्णस्य च गोलोके परिपूर्णतमस्य च ॥ आविर्भूता विग्रहतः परा सृष्ट्युन्मुखस्य च ॥ १ ॥ सूर्यकोटिप्रभायुक्ता रत्नालंकारभूषिता ॥ वह्नि शुद्धांशुकाधाना सस्मिता सुमनोहरा ॥ २ ॥ नवयौवनसंपन्ना सिंदूरबिंदुशोभिना ॥ ललिता कबरीभारमालतीमाल्यमंडिता ॥ ३ ॥ अहोऽनिर्वचनीया त्वं चार्वी मूर्तिं च बिभ्रती ॥ मोक्षप्रदा मुमुक्षूणां जगत्कर्ता विधिः स्वयम् ॥ ४ ॥ मुमोह क्षणमात्रेण दृष्ट्वा त्वां सर्वमोहिनीम् ॥ रासे संभूय सहसा सस्मिता राधिता पुरा ॥ ५ ॥ सद्भिः ख्याता तेन राधा मूलप्रकृतिरीश्वरी ॥ कृष्णस्त्वां सहसाज्ञाय वीर्याधानं चकार ह ॥ ६ ॥ ततोऽडमंभसो जज्ञे यतो भूतो महाविराट् ॥ यस्यैव लोमकूपेषु ब्रह्मांडान्यखिलानि च ॥ ७ ॥ तच्छृंगारश्रमेणैव त्वन्निश्वासो बभूव ह ॥ ततस्त्वं पंचधाभूय पंच मूर्तीश्च बिभ्रती ॥ ८ ॥ प्राणाधिष्ठात्री या मूर्तिः कृष्णस्य परमात्मनः ॥ कृष्णप्राणाधिकां राधां तां वदंति पुराविदः ॥ ९ ॥ वेदाधिष्ठात्री या मूर्तिर्वेदशास्त्रप्रसूरपि ॥ तां सावित्रीं शुद्धरूपां प्रवदंति मनीषिणः ॥ १० ॥ ऐश्वर्याधिष्ठात्री मूर्तिर्या शांतिः शांतिस्वरूपिणी ॥ लक्ष्मीं वदंति संतस्तां शुद्धसत्त्वस्वरूपिणीम् ॥ ११ ॥ रागाधिष्ठात्री या देवी शुक्लमूर्तिः सतां प्रसूः ॥ सरस्वतीं तां शास्त्रज्ञाः प्रवदंति बुधा भुवि ॥ १२ ॥ बुद्धिर्विद्या सर्वशक्तिर्या मुक्तिरधिदेवता ॥ सर्वमंगलरूपा त्वं सर्वमंगलकारिणी ॥ १३ ॥ सर्वमंगलबीजस्य शिवस्य मंदिरेऽधुना ॥ शिवे शिवस्वरूपा त्वं लक्ष्मीर्नारायणांतिके ॥ १४ ॥ सरस्वती च सावित्री वेदसूर्ब्रह्मणः प्रिया ॥ राधा रासेश्वरस्यैव परिपूर्णतमस्य च ॥ १५ ॥ परमानंदरूपासि छाया चंद्रस्य रोहिणी ॥ शची शक्रस्य कामस्य कामिनी रतिरीश्वरी ॥ १६ ॥ वरुणानी जलेशस्य वायोः स्त्री प्राणवल्लभा ॥ वह्नेः प्रिया या स्वाहा च कुबेरस्य च सुंदरी ॥ १७ ॥ यमस्य च सुशीला वै नैर्ऋतस्य च कोटवी ॥ ईशानस्य शशिकला शतरूपा मनोः प्रिया ॥ १८ ॥ देवहूतिः कर्दमस्य वशिष्ठस्याप्यरुंधती ॥ अदितिर्देवमाता या मुद्रागस्त्यमुनेः प्रिया

॥ १९ ॥ अहल्या गौतमस्यापि सर्वाधारा वसुंधरा ॥ गंगा च तुलसी चापि पृथिव्यां याः सरिद्वराः ॥ २० ॥ एताः सर्वाश्च या अन्याः सर्वास्त्वत्कलयांबिके ॥ गृहलक्ष्मीर्गृहे नृणां राजलक्ष्मीश्च राजसु ॥ २१ ॥ तपस्विनां तपस्या त्वं गायत्री ब्राह्मणस्य च ॥ सतां सत्यस्वरूपा त्वं ह्यसतां कलहांकुरा ॥ २२ ॥ ज्योतीरूपा निर्गुणस्य शक्तिस्त्वं सगुणस्य च ॥ सूर्ये प्रभास्वरूपा त्वं दाहिका च हुताशने ॥ २३ ॥ जले सत्यस्वरूपा च शोभारूपा निशाकरे ॥ त्वं भूमौ गंधरूपा च गगने शब्दरूपिणी ॥ २४ ॥ स्मृतिमर्धो च बुद्धिर्वाग्ज्ञानशक्तिंर्विपश्चिताम् ॥ कृष्णेन विद्या या दत्ता सर्वज्ञानप्रसूः शुभा ॥ २५ ॥ शूलिने कृपया सा त्वं यतो मृत्युंजयः शिवः ॥ सृष्टिपालनसंहारशक्तयास्त्रिविधाश्च याः ॥ २६ ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशानां सा त्वमेव नमोऽस्तु ते ॥ २७ ॥ मधुकैटभभीत्या च त्रस्तो धाता प्रकंपितः ॥ स्तुत्वा मुमोच यां देवीं तां मूर्ध्ना प्रणमाम्यहम् ॥ २८ ॥ मधुकैटभयोर्युद्धे प्राप्तोऽसौ विष्णुरीश्वरीम् ॥ बभूव शक्तिमान्स्तुत्वा यां दुर्गां तां नमाम्यहम् ॥ २९ ॥ त्रिपुरस्य महायुद्धे सरथे पतिते शिवे ॥ यां तुष्टुवुः सुराः सर्वे तां दुर्गां प्रणमाम्यहम् ॥ ३० ॥ विष्णुना वृषरूपेण स्वयं शंभुः समुत्थितः ॥ जघान त्रिपुरं स्तुत्वा यां दुर्गां तां नमाम्यहम् ॥ ३१ ॥ कालचक्रं च जगति शश्वद् भ्रमति वेगतः ॥ मृत्युश्चरति जंत्वोघे तां दुर्गां प्रणमाम्यहम् ॥ ३२ ॥ स्रष्टा सृजति सृष्टं च पाता पाति यदाज्ञया ॥ संहर्ता हरते काले तां दुर्गां प्रणमाम्यहम् ॥ ३३ ॥ ज्योतिःस्वरूपो भगवाञ्छ्रीकृष्णो निर्गुणः स्वयम् ॥ यया विना न शक्तश्च सृष्टिं कर्तुं नमामि ताम् ॥ ३४ ॥ रक्ष रक्ष जगन्मातस्त्वपराधान्क्षमस्व मे ॥ शिशूनामपराधेन जातु माता न कुप्यति ॥ ३५ ॥ इत्युक्त्वा पर्शुरामश्च प्रणम्य तां रुरोद च ॥ तुष्टा दुर्गा संभ्रमेण चाभयं सा वरं ददौ ॥ ३६ ॥ अमरो भव रे पुत्र वत्स सुस्थिरतां व्रज ॥ मम प्रसादात्सर्वत्र जयोऽस्तु तव संततम् ॥ ३७ ॥ सर्वांतरात्मा भगवांस्तुष्टोऽस्तु सततं हरिः ॥ भक्तिर्भवतु ते कृष्णे शिवदे च शिवे गुरौ ॥ ३८ ॥ इष्टदेवे गुरौ यस्य भक्तिर्भवति शाश्वती ॥ तं हंतुं नहि शक्ता वै रुष्टाश्च सर्वदेवताः ॥ ३९ ॥ श्रीकृष्णस्य च भक्तस्त्वं शिष्यस्त्वं

१ सहार्थे तृतीया।

शंकरस्य च ॥ गुरुपत्न्याश्च भक्तो हि कस्त्वां हंतुं महेश्वरः ॥ ४० ॥ अहो न कृष्णभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित् ॥ अन्यदेवेषु भक्ता वा न भक्ता वा निरंकुशाः ॥ ४१ ॥ चंद्रमा बलवांस्तुष्टो येषां भाग्यवतां भृगो ॥ तेषां तारागणा रुष्टाः किं कुर्वंति च दुर्बलाः ॥ ४२ ॥ यस्य तुष्टः सभायां चेन्नरदेवो महान्सखा ॥ तस्य किं वा करिष्यंति रुष्टा भृत्याश्च दुर्बलाः ॥ ४३ ॥ इत्युक्त्वा पार्वती तुष्टा दत्त्वा रामाय चाशिषम् ॥ जगन्मातुः पुरस्तूर्णं जयशब्दो बभूव ह ॥ ४४ ॥ कण्वशाखोक्तस्तोत्रं च पूजाकाले हि यः पठेत् ॥ यात्राकाले च प्रातर्वा वांछितार्थं लभेत सः ॥ ४५ ॥ पुत्रार्थी लभते पुत्रं कन्यार्थी लभते सुताम् ॥ विद्यार्थी लभते विद्यां प्रजार्थी लभते प्रजाम् ॥ ४६ ॥ भ्रष्टराज्यो व्रजेद्राज्यं धनं भ्रष्टधनो व्रजेत् ॥ यस्य तुष्टो गुरुर्देवो राजानो बांधवास्तथा ॥ ४७ ॥ तस्य तुष्टाश्च वरदाः स्तोत्रराजप्रसादतः ॥ दस्युग्रस्तोऽहिसंग्रस्तः शत्रुग्रस्तो भयानकः ॥ ४८ ॥ व्याधिग्रस्तो भवेन्मुक्तः स्तोत्रस्मरणमात्रतः ॥ राजद्वारे श्मशाने च कारागारे च बंधने ॥ ४९ ॥ जलराशौ निमग्नश्च मुक्तो भवति मानवः ॥ स्वामिभेदे पुत्रभेदे मित्रभेदेऽतिदारुणे ॥ ५० ॥ स्तोत्रस्मरणमात्रेण वांछितार्थं लभेत सः ॥ कृत्वा हविष्यं वर्षं च स्तोत्रराजं शृणोति यः ॥ ५१ ॥ भक्त्या दुर्गां च संपूज्य महावंध्या प्रसूयते ॥ लभते सा दिव्यपुत्रं ज्ञानिनं चिरजीविनम् ॥ ५२ ॥ असौभाग्या च सौभाग्यं षण्मासश्रवणाद्व्रजेत् ॥ नवमासं काकवंध्या मृतवत्सा च भक्तितः ॥ ५३ ॥ स्तोत्रराजं या शृणोति सा पुत्रं लभते ध्रुवम् ॥ कन्यामाता पुत्रहीना पंचमासं शृणोति या ॥ ५४ ॥ घटे संपूज्य दुर्गां च सा पुत्रं लभते ध्रुवम्"॥५५॥इति श्रीपरशुरामप्रोक्तं दुर्गास्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ अथ दुर्गाशतनामात्मकस्तोत्रप्रारंभः ॥ उक्तं च विश्वसारतंत्रे ॥ ईश्वर उवाच ॥ "शतनाम प्रवक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने ॥ अस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता सदा भवेत् ॥ १ ॥ ॐ सती साध्वी भवा प्रीता भवानी भवमोचिनी ॥ आर्या दुर्गा जया आद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी ॥ २ ॥ पिनाकधारिणी चित्रा चंद्रघंटा महातपा ॥ मनोबुद्धिरहं [illegible] सत्यानंदस्वरूपिणी ॥ अनंता भाविनी भाव्या भवा भव्या सदागतिः ॥ [illegible]

[illegible] ज्ञविनाशिनी ॥ ५ ॥ अपर्णा चैकपर्णा च पाटला पाटलावती ॥ पट्टांबरपरीधाना कलमंजीररंजिनी ॥ ६ ॥ [illegible]
[illegible] सुंदरी कुलसुंदरी ॥ वनदुर्गा च मातंगी मतंगमुनिपूजिता ॥७॥ ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा ॥ चामुंडा
चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः ॥ ८ ॥ विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया सत्या च वाक्प्रदा ॥ बहुला बहुलप्रेमा सर्ववाहनवाहना ॥ ९ ॥
निशुंभशुंभहननी महिषासुरमर्दिनी ॥ मधुकैटभहंत्री च चण्डमुण्डविनाशिनी ॥ १० ॥ सर्वासुरविनाशा च सर्वदानवघातिनी ॥
सर्वशास्त्रमयी विद्या सर्वास्त्रधारिणी तथा ॥ ११ ॥ अनेकशस्त्रहस्ता च अनेकास्त्रविधारिणी ॥ कुमारी चैव कन्या च कौमारी
युवती यतिः ॥ १२ ॥ अप्रौढा चैव प्रौढा च वृद्धमाता बलप्रदा ॥ य इदं च पठेत्स्तोत्रं दुर्गानामशताष्टकम्[1] ॥ १३ ॥ नासाध्यं
विद्यते देवि त्रिषु लोकेषु पार्वति ॥ धनं धान्यं सुताञ्जायां हयं हस्तिनमेव च ॥ १४ ॥ चतुर्वर्गं तथा चांते विन्देन्मुक्तिं च शाश्वतीम् ॥
कुमारीः पूजयित्वा च ध्यात्वा देवीं सुरेश्वरीम् ॥ १५ ॥ पूजयेत्परया भक्त्या पठेन्नामशताष्टकम् ॥ तस्य सिद्धिर्भवेद्देवि सर्वैः सुर
वरैरपि ॥ १६ ॥ राजानो दासतां यांति राज्यश्रियमवाप्नुयात् ॥ गोरोचनालक्तककुंकुमेन सिंदूरकर्पूरमधुत्रयेण ॥ विलिख्य यंत्रं
विधिना विधिज्ञो भवेत्सदा धारणतः पुरारिः ॥ १७ ॥ भौमामायां निशाभागे चंद्रे शतभिषां गते ॥ विलिख्य प्रपठन्स्तोत्रं स भवेत्सं
पदां पदम्" ॥१८॥ इति श्रीविश्वसारतंत्रे दुर्गानामशतकं समाप्तम् ॥ अथ मार्कण्डेयपुराणोक्तचंडिकास्तोत्रप्रारंभः ॥ "या देवी खड्गहस्ता
सकलजनपदव्यापिनी विश्वदुर्गा श्यामांगी शुक्लपाशा द्विजगणगणिता ब्रह्मदेहार्धवासा ॥ ज्ञानानां साधयित्री यतिगिरिगमनज्ञानदिव्य
प्रबोधा सा दवी दिव्यमूर्तिः प्रदहतु दुरितं चंडमुंडा प्रचंडा॥१॥ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं चर्ममुंडे शवगमनहते भीषणे भीमवक्रे क्रां क्रीं क्रूं क्रोधमूर्ति
र्विकृतकुचमुखे रौद्रदंष्ट्राकराले ॥ कं कं कंकालधारि भ्रमसि जगदिदं भक्षयंती ग्रसंती हुंकारं चोच्चरंती प्रदहतु० ॥ २ ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं
रुद्ररूपे त्रिभुवननमिते पाशहस्ते त्रिनेत्र रां रीं रूं रंगरंगे किलिकिलितरवे शूलहस्ते प्रचंडे ॥ लां लीं लूं लंबजिह्वे हसति कहकहाशुद्ध

१ कवचशताष्टकम् ।

घोराट्टहासे कंकाली कालरात्रिः प्रदहतु० ॥३॥ ॐ–घ्रां घ्रीं घ्रूं घोररूपे घघघघघटितैर्घुर्घुरारावघोरे निर्मांसी शुष्कजंघे पिबतु नरवसाधूम्र धूम्रायमाने॥ॐ–द्रां द्रीं द्रूं द्रावयंती सकलभुवि तथा यक्षगंधर्वनागान्क्षां क्षीं क्षूं क्षोभयंती प्रदहतु०॥४॥ॐत्रां त्रीं त्रूं चंडगर्वे हरिहरनमिते रुद्रमूर्तिश्च कीर्तिश्चंद्रादित्यौ च कर्णौ जडमुकुटशिरोवेष्टिता केतुमाला॥स्त्रक्सर्वे चोरगेंद्रौ शशिकिरणनिभा तारकाहारकंठा सा देवी दिव्य मूर्तिः प्रदहतु० ॥ ५ ॥ ॐ–खं खं खं खड्गहस्ते वरकनकनिभे सूर्यकांते स्वतेजोविद्युज्ज्वालावलीनां नवनिशितमहाकृत्तिका दक्षिणे च ॥ वामे हस्ते कपालं वरविमलसुरापूरितं धारयंती सा देवी दिव्यमूर्तिः प्र० ॥ ६ ॥ ॐ हुं हुं फट् कालरात्री रु रु सुरमथनी धूम्रमारी कुमारी ह्रां ह्रीं ह्रूं हत्तिशोरोक्षपितुकिलकिलाशब्द अट्टाट्टहासे ॥ हाहाभूतप्रसूते किलिकिलितमुखा कीलयंती ग्रसंती हुंकार चोच्चरंती प्र० ॥ ७ ॥ ॐ–भृंगी काली कपालीपरिजनसहिते चंडि चामुंडानित्या रों रों रोंकारानित्ये शशिकरधवले कालकूटे दुरंते ॥ हुंहुंहुंकारकारी सुरगणनमिते कालकारी विकारी वश्ये त्रैलोक्यकारी प्र० ॥ ८॥ ॐ वंदे दंडप्रचंडा डमरुरुणिमणिष्टोपटंकारघंटैर्नृत्यंती याट्टपातैरटपटविभवैर्निर्मला मंत्रमाला ॥ सुक्षौ कक्षौ वहंती खरखरितसखाचार्चिनि प्रेतमालामुच्चैस्तैश्चाट्टहासैर्घुरुघुरितरवा चर्म मुंडा प्रचंडा ॥ ९ ॥ ॐ–त्वं ब्राह्मी त्वं च रौद्रा शवशिखिगमना त्वं च देवी कुमारी त्वं चक्री चक्रहस्ता घुरघुरितरवा त्वं वराह स्वरूपा ॥ रौद्रे त्वं चर्ममुंडा सकलभुवि परे संस्थिते स्वर्गमार्गे पाताले शैलभृंगे हरिहरनमिते देवि चंडे नमस्ते ॥ १० ॥ ॐ रक्ष त्वं मुंडधारी गिरिवरविवरे निर्झरे पर्वते वा संग्रामे शत्रुमध्ये विश विश भविके संकटे कुत्सिते वा ॥ व्याघ्रे चौरे च सर्पेऽप्युदधिभुवि तथा वह्निमध्ये च दुर्गे रक्षेत्सा दिव्यमूर्तिः प्रदहतु दुरितं चंडमुंडा प्रचंडा ॥ ११ ॥ इत्येवं बीजमंत्रैः स्तवनमतिशिवं पातकव्याधिनाशं प्रत्यक्षं दिव्यरूपं ग्रहगणमथनं मर्दनं शाकिनीनाम् ॥ इत्येवं वेगवेगं सकलभयहरं मंत्रशक्तिश्च नित्यं मंत्राणां स्तोत्रकं यः पठति स लभते प्रार्थितां मंत्रसिद्धिम् "॥ १२ ॥ इति श्रीमार्कंडेयविरचितं चंडिकास्तोत्रं समाप्तम् ॥ अथ मार्कंडेयप्रोक्तलघुदुर्गासप्तशती

१ दीर्घ आर्षः ।

स्तोत्रप्रारंभः॥"ॐ-वीं वीं वीं वेणुहस्ते स्तुतिविधवटुके हां तथा तानमाता स्वानंदे नंदरूपे अविहतनिरुते भक्तिदे मुक्तिदे त्वम्॥हंसः
विशाले वलयगतिहसे सिद्धिदे वाममार्गे ह्रीं ह्रीं ह्रीं सिद्धलोके कष कष विपुले वीरभद्रे नमस्ते॥१॥ॐ-ह्रींकारं चोच्चरंती मम हरतु भयं
चर्ममुंडे प्रचंडे खां खां खां खड्गपाणे ध्रकध्रकध्रकिते उग्ररूपे स्वरूपे॥ हुंहुंहुंकारनादे गगनभुवि तथा व्यापिनी व्योमरूपे हंहंहंकारनादे
सुरगणनमिते राक्षसानां निहंत्रि ॥२॥ ऐं लोके कीर्तयंती मम हरतु भयं चंडरूपे नमस्ते घ्रां घ्रां घ्रां घोररूपे घघघघघटिते घर्घरे घोर
रावे ॥ निर्मांसे काकजंघे घसितनखनखाधम्रनेत्रे त्रिनेत्रे हस्ताब्जे शूलमुंडे कलकुलकुकुले श्रीमहेशी नमस्ते ॥ ३ ॥ क्रीं क्रीं क्रीं ऐं
कुमारी कुहकुहमखिले कोकिले मानुरागे मुद्रासंज्ञत्रिरेखां कुरु कुरु सततं श्रीमहामारि गुह्ये॥तेजोंगे सिद्धिनाथे मनुपवनचले नैव आज्ञा
निधाने ऐंकारे रात्रिमध्ये शयितपशुजने तंत्रकांते नमस्ते ॥ ४ ॥ ॐ-व्रां व्रीं व्रुं व्रूं कवित्ये दहनपुरगते रुक्मरूपेण चक्रे त्रिः शक्त्या
युक्तवर्णादिककरनमिते दादिवंपूर्ववर्णे ॥ ह्रींस्थाने कामराजे ज्वल ज्वल ज्वलिते कोशितैस्तास्तुपत्रे स्वच्छंदं कष्टनाशे सुरवरवपुषे गुह्य
मुंडे नमस्ते ॥ ५ ॥ ॐ-घ्रां घ्रीं घ्रूं घोरतुंडे घघघघघघघे घर्घरान्यांघ्रिघोषे ह्रीं क्रीं द्रं द्रौं च चक्रे र र र र रमिते सर्वबोधप्रधाने ॥
द्रीं तीर्थे द्रीं तज्येष्ठे जुगजुगजजुगे म्लेच्छदे कालमुंडे सर्वांगे रक्तघोरामथनकरवरे वज्रदंडे नमस्ते ॥ ६ ॥ ॐ-क्रां क्रीं क्रूं वाम
भित्ते गगनगडगडे गुह्ययोन्याहिमुंडे वज्रांगे वज्रहस्ते सुरपतिवरदे मत्तमातंगरूढे ॥ सूतेजे शुद्धदेहे ललललललिते छेदिते पाशजाले
कुंडल्याकाररूपे वृषवृषभहरे ऐंद्रि मातर्नमस्ते ॥ ७ ॥ ॐ-हुंहुंहुंकारनादे कषकषवसिनी मांसि वैतालहस्ते सुंसिद्धर्षैः सुसिद्धिर्ढढढढ
ढढढः सर्वभक्षी प्रचंडी ॥ जूं सः सौं शांतिकर्मे मृतमृतनिगडे निःसमे सीसमुद्रे देवि त्वं साधकानां भवभयहरणे भद्रकाली
नमस्ते ॥ ८ ॥ ॐ देवि त्वं तुर्यहस्ते करधृतपरिघे त्वं वराहस्वरूपे त्वं चैंद्री त्वं कुबेरी त्वमसि च जननी त्वं पुराणी महेंद्री ॥ ऐं ह्रीं ह्रीं
कारभूते अतलतलतले भूतले स्वर्गमार्गे पाताले शैलभृंगे हरिहरभुवने सिद्धिचंडी नमस्ते ॥ ९ ॥ हंसि त्वं शौंडदुःखं शमितभवभये
सर्वविघ्नांतकार्ये गांगींगूंगैंषडंगे गगनगटितटे सिद्धिदे सिद्धिसाध्ये ॥ क्रूंक्रूंमुद्रागजांशो गसपवनगते त्र्यक्षरे वै कराले

ॐ ह्रीं हूं गां गणेशी गजमुखजननी त्वं गणेशी नमस्ते " ॥ १० ॥ इति मार्कण्डेयकृतलघुसप्तशतीदुर्गास्तोत्रं समाप्तम् ॥
अथ रुद्रचंडीपाठः ॥ उक्तं च रुद्रयामले ॥ श्रीशंकर उवाच ॥ "चंडिकाहृदयं न्यस्य शरणं यः करोत्यपि ॥ अनंतफलमाप्नोति
देवीचंडीप्रसादतः ॥ घोरचंडी महाचंडी चंडमुंडविखंडिनी ॥ १ ॥ चतुर्वक्त्रा महावीर्य्या महादेवविभूषिता ॥ रक्तदंता
वरारोहा महिषासुरमर्दिनी ॥ तारिणी जननी दुर्गा चंडिका चंडविक्रमा ॥ २ ॥ गुह्यकाली जगद्धात्री चंडी च यामलोद्भवा ॥
श्मशानवासिनी देवी घोरचंडी भयानका ॥ ३ ॥ शिवा घोरा रुद्रचंडी महेशी गणभूषिता ॥ जाह्नवी परमा कृष्णा महात्रिपुरसुंदरी
॥ ४ ॥ श्रीविद्या परमाविद्या चंडिका वैरिमर्दिनी ॥ दुर्गा दुर्गाशिवा घोरा चंडहस्ता प्रचंडिका ॥ ५ ॥ माहेशी बगला देवी भैरवी
चंडविक्रमा ॥ प्रमथैर्भूषिता कृष्णा चामुंडा मुंडमर्दिनी ॥ ६ ॥ रणखंडा चंद्रघंटा रणे रामवरप्रदा ॥ मारणी भद्रकाली च शिवा घोरा
भयानका ॥७॥ विष्णुप्रिया महामाया नंदगोपगृहोद्भवा ॥ मंगला जननी चंडी महाक्रुद्धा भयंकरी ॥ ८ ॥ विमला भैरवी निद्रा जाति
रूपा मनोहरा ॥ तृष्णा निद्रा क्षुधा माया शक्तिर्मायामनोहरा ॥९॥ तस्यै देव्यै नमो या वै सर्वरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै
नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १० ॥ इमां चंडीं जगद्धात्रीं ब्राह्मणस्तु सदा पठेत् ॥ नान्यस्तु संपठेद्देवि पठने ब्रह्महा भवेत् ॥ ११ ॥
यः शृणोति धरायां च मुच्यते सर्वपातकैः ॥ ब्रह्महत्या च गोहत्या स्त्रीवधोद्भवपातकम् ॥१२॥ श्वश्रूगमनपापं च कन्यागमनपातकम् ॥
तत्सर्वं पातकं दुर्गे मातुर्गमनपातकम् ॥ १३ ॥ सुतस्त्रीगमनं चैव यद्यत्पापं प्रजायते ॥ परदारकृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यति ॥ १४ ॥ जन्म
जन्मांतरात्पापाद्गुरुहत्यादिपातकात् ॥ मुच्यते मुच्यते देवि गुरुपत्नीप्रसंगमात् ॥१५॥ मनसा वचसा पापं यत्पापं ब्रह्महिंसने ॥ मिथ्या[illegible]
च यत्पापं तत्पापं नश्यति क्षणात् ॥ १६ ॥ श्रवणं पठनं चैव यः करोति धरातले ॥ स धन्यश्च कृतार्थश्च राजा राजाधिपो [illegible]
॥ १७ ॥ रविवारे यदा चंडीं पठेदागमसंमताम् ॥ नवावृत्तिफलं तस्य जायते नात्र संशयः ॥ १८ ॥ सोमवारे यदा चंडीं पठेद्यस्तु
समाहितः ॥ सहस्रावृत्तिपाठस्य फलं जानीहि सुव्रत ॥ १९ ॥ कुजवारे जगद्धात्रीं पठेदागमसंमताम् ॥ शतावृत्तिफलं तस्य बुधे

लक्षफलं ध्रुवम् ॥ २० ॥ गुरौ यदि महामाये लक्षयुग्मफलं ध्रुवम् ॥ शुक्रे देवि जगद्धात्रि चंडीपाठेन शांकरी ॥ २१ ॥ ज्ञेयं तुल्यफलं दुर्गे यदि चंडीसमाहितः ॥ शनिवारे जगद्धात्रि कोटयावृत्तिफलं ध्रुवम् ॥ २२ ॥ अत एव महेशानि यो वै चंडीं समभ्यसेत् ॥ स सद्यश्च कृतार्थः स्याद्राजराजाधिपो भवेत् ॥२३॥ आरोग्यं विजयं सौख्यं वस्त्ररत्नप्रवालकम् ॥ पठनाच्छ्रवणाच्चैव जायते नात्र संशयः ॥ २४ ॥ धनं धान्यं प्रवालं च वस्त्रं रत्नविभूषणम् ॥ चंडीश्रवणमात्रेण कुर्यात्सर्वं महेश्वरी ॥ २५ ॥ यः करिष्यत्यविज्ञाय रुद्रयामलचंडिकाम् ॥ पापैरेतैः समायुक्तो रौरवं नरकं व्रजेत् ॥ २६ ॥ अश्रद्धया च कुर्वंति ते च पातकिनो नराः ॥ रौरवं नरकं कुंडं कृमिकुंडं मलस्य वै ॥ २७ ॥ शुक्रस्य कुंडं स्त्रीकुंडं यांति ते ह्यचिरेण वै ॥ ततः पितृगणैः सार्धं विष्ठायां जायते कृमिः ॥ २८ ॥ शृणु देवि महामाये चंडीपाठं करोति यः ॥ गंगायां चैव यत्पुण्यं काश्यां विश्वेश्वराग्रतः ॥ २९ ॥ प्रयागे मुंडने चैव हरिद्वारे हरेर्गृहे ॥ तस्य पुण्यं भवेद्देवि सत्यं दुर्गे रमे शिवे ॥ ३० ॥ त्रिगयायां त्रिकाश्यां वै यच्च पुण्यं समुत्थितम् ॥ तच्च पुण्यं तच्च पुण्यं तच्च पुण्यं न संशयः ॥ ३१ ॥ अन्यच्च—महाचंडी शिवा घोरा भया भीमा भयानका ॥ कांचनी कमला विद्या महारोगविमर्दिनी ॥ ३२ ॥ गुह्यचंडी घोरचंडी चंडी त्रैलोक्यदुर्लभा ॥ देवानां दुर्लभा चंडी रुद्रयामलसंमता ॥ ३३ ॥ अप्रकाश्या महादेवी प्रिया रावणमर्दिनी ॥ मत्स्यप्रिया मांसरता मत्स्यमांसबलिप्रिया ॥ ३४ ॥ मदमत्ता महानित्या भूतप्रमथसंगता ॥ महाभागा महारामा धान्यदा धनरत्नदा ॥ ३५ ॥ वस्त्रदा मणिराज्यादिसदाविषयवर्धिनी ॥ मुक्तिदा सर्वदा चंडी महापत्तिविनाशिनी ॥ ३६ ॥ इमां हि चंडीं पठते मनुष्यः शृणोति भक्त्या परमां शिवस्य ॥ चण्डीं धरण्यामतिपुण्ययुक्तां स वै न गच्छेत्परमंदिरं किम् ॥ ३७ ॥ जप्यं मनोरथं दुर्गे तनोति धरणीतले ॥ रुद्रचंडीप्रसादेन किं न सिध्यति भूतले ॥ ३८ ॥ अन्यच्च—रुद्रध्येया रुद्ररूपा रुद्राणी रुद्रवल्लभा ॥ रुद्रशक्ती रुद्ररूपा रुद्राननसमन्विता ॥ १ ॥ शिवचंडी महाचंडी शिवप्रेतगणान्विता ॥ भैरवी परमा विद्या महाविद्या च षोडशी ॥ २ ॥ सुंदरी परमा पूज्या महात्रिपुरसुंदरी ॥ गुह्यकाली भद्रकाली महाकालविमर्दिनी ॥ ३ ॥ कृष्णा तृष्णास्वरूपा सा जगन्मोहनकारिणी ॥

अतिमात्रा महालज्जा सर्वमंगलदायिनी ॥ ४ ॥ घोरतंद्री भीमरूपा भीमा देवी मनोहरा ॥ मंगला बगला सिद्धिदायिनी सर्वदा शिवा ॥५॥ स्मृतिरूपा कीर्तिरूपा योगीन्द्रैरपि सेविता ॥ भयानका महादेवी भयदुःखविनाशिनी ॥ ६ ॥ चंडिका शक्तिहस्ता च कौमारी सर्वकामदा ॥ वाराही च वराहास्या इन्द्राणी शक्रपूजिता ॥ ७ ॥ माहेश्वरी महेशस्य महेशगणभूषिता ॥ चामुंडा नारसिंही च नृसिंहरिपुमर्दिनी ॥८॥ सर्वशत्रुप्रशमनी सर्वारोग्यप्रदायिनी ॥ इति सत्यं महादेवि सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥९॥ नैव शोको नैव रोगो नैव दुःखं भयं तथा ॥ आरोग्यं मंगलं नित्यं करोति शुभमंगलम् ॥ १० ॥ महेशानि वरारोहे ब्रवीमि सदिदं वचः ॥ अभक्ताय न दातव्यं मम प्राणाधिकं शुभम् ॥ ११ ॥ तव भक्त्या प्रशांताय शिवविष्णुप्रियाय च ॥ दद्यात्कदाचिद्देवेशि सत्यं सत्यं महेश्वरि ॥ १२ ॥ अनंतफलमाप्नोति शिवचंडीप्रसादतः ॥ अश्वमेधं वाजपेयं राजसूयशतानि च ॥ १३ ॥ तुष्टाश्च पितरो देवास्तथा च सर्वदेवताः ॥ दुर्गेयं मृन्मयी ज्ञानं रुद्रयामलपुस्तकम् ॥ १४ ॥ मन्त्रमक्षरसंज्ञानां करोत्यपि नराधमः ॥ अत एव महेशानि किं वक्ष्ये तव सन्निधौ ॥ १५ ॥ लंबोदराधिकश्चंडीपठनाच्छ्रवणात्तु यः ॥ तत्त्वमस्यादिवाक्येन मुक्तिमाप्नोति दुर्लभाम्" ॥ १६ ॥ इति श्रीरुद्रयामले देवीश्वरसंवादे रुद्रचंडी समाप्ता ॥ "इदं पंचांगमखिलं श्रीदुर्गाया रहस्यकम् ॥ सर्वसिद्धिप्रदं गुह्यं सर्वाशापरिपूरकम् ॥ गुह्यं मन्त्ररहस्यं तु तव भक्त्या प्रकाशितम् ॥ अभक्ताय न दातव्यमित्याज्ञा पारमेश्वरी ॥" ॥ २ ॥ इति श्रीमन्त्रमहार्णवे मध्यखण्डे श्रीदुर्गातन्त्रे द्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ दशमहाविद्यापद्धतिप्रारंभः ॥ दशमहाविद्या यथा चामुंडातंत्रे—"काली तारा महाविद्या षोडशी भुवनेश्वरी ॥ भैरवी छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा॥१॥बगला सिद्धविद्या च मातङ्गी कमलात्मिका ॥ एता दश महाविद्याः सिद्धविद्याः प्रकीर्तिताः" ॥ २ ॥ तत्रादौ पुरश्चरणात् पूर्वकृत्यम् ॥ चन्द्रतारादिबलान्विते सुदिने सुमुहूर्ते तीर्थपुण्यक्षेत्रनिर्जनस्थानादौ अनुष्ठानयोग्यभूमिपरिग्रहणं कृत्वा तत्र मार्जनदहनखननसंप्लावनादिभिः स्मृत्युक्तैः शोधनोपायैः शुद्धिं संपाद्य जपस्थानस्य चतुर्दिक्षु क्रोशं क्रोशद्वयं वा क्षेत्रमाहारादिविहारार्थं परिकल्प्य जपस्थानभूमौ कूर्मशोधनं कुर्य्यात्। ततः पुरश्चरणात् प्राक् तृतीयदिवसे क्षौरादिकं विधाय ततः प्रायश्चित्तांगतो विष्णुपूजाविष्णुतर्पणविष्णुश्राद्धं होमं चांद्रायणादिव्रतं च कुर्य्यात्। व्रताशक्तौ गोदानं द्रव्यदानं च कुर्य्यात् । यदि सर्वकर्मणामशक्तस्तदा प्रायश्चित्तांगभूतपंचगव्यप्राशनं कुर्य्यात् । तत्र मंत्रः। ॐ—यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके॥प्राशनात् पंचगव्यस्य दहत्यग्निरिवेंधनम् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा प्रणवेन पंचगव्यं पिबेत् ॥ तद्दिने उपवासं कृत्वा अशक्तश्चेत् पयःपानं हविष्यान्नेन एकभक्तव्रतम् । ततः पुरश्चरणात् पूर्वदिने स्वदेहशुद्ध्यर्थं पुरश्चरणाधिकारप्राप्त्यर्थं चायुतगायत्रीजपं कुर्य्यात् । तद्यथा—देशकालौ संकीर्त्य ज्ञाताज्ञातपापक्षयार्थं करिष्यमाणामुकदेवीपुरश्चरणाधिकारार्थममुकमंत्रस्य सिद्धयर्थं च गायत्र्यायुतं जपमहं करिष्ये । इति संकल्प्य गायत्र्यायुतं जपेत् । ततो गायत्र्याचार्य्यऋर्षि विश्वामित्रं तर्पयामि १ गायत्रीछंदस्तर्पयामि २ सवितारं देवं तर्पयामि ३ इति तर्पणं कुर्य्यात् ॥ ततोऽस्यां रात्रौ देवतोपारिंत शुभाशुभस्वप्नं च विचारयेत । तद्यथा—स्नानादिकं कृत्वा हरिपादांबुजं स्मृत्वा कुशासनादिशय्यायां यथासुखं स्थित्वा वृषभध्वजं प्रार्थयेत् । तत्र मंत्रः "ॐ—भगवन्देवदेवेश शूलभृद्वृषवाहन ॥ इष्टानिष्टं समाचक्ष्व मम सुप्तस्य शाश्वत ॥ १ ॥ नमोऽजाय त्रिनेत्राय पिंगलाय महात्मने ॥ वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः ॥ २ ॥ स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषतः ॥ क्रियासिद्धिं विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर" ॥ ३ ॥ इति मंत्रेण अष्टोत्तरशतवारं शिवं प्रार्थ्य निद्रां कुर्य्यात् ।

ततो निशि स्वप्नं दृष्टं प्रातर्गुरवे विनिवेदयेत् । अथवा स्वयं स्वप्नं विचारयेत् । इति पूर्वदिनकृत्यम् । अथ प्रातःकृत्यम् । पुरश्चरणदिवसे श्रीमत्साधकेन्द्रः प्रातःकालात्पूर्वं दंडद्वयात्मके ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय निद्रास्थानाद्बहिर्निर्गत्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचम्य रात्रिवस्त्रं परित्यज्यान्यवस्त्रं परिधाय शुद्धासन उपविश्य स्वशिरसि सहस्रदलपंकजे कोटींदुप्रकाशपीठे श्रीगुरुं ध्यायेत् । तथा च—ॐ आनंदमानंदकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपम् ॥ योगींद्रमीड्यं भवरोगवैद्यं श्रीमद्गुरुं नित्यमहं भजामि ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य "प्रातःप्रभृति सायांतं सायादिप्रातरंततः । यत्करोमि जगन्नाथ तदस्तु तव पूजनम् ॥ १ ॥" इत्यनेन मंत्रेण सर्वं गुरवे निवेद्य तदाज्ञां गृहीत्वा मूलमंत्रदेवतायाः प्रातःस्मरणं कुर्य्यात् । तथा च—"प्रातः स्मरामि शरदिन्दुकरोज्ज्वलाभां सद्रत्नवन्मकरकुण्डलहारभूषाम् ॥ दिव्यायुधोर्जितसुनीलसहस्रहस्तां रक्तोत्पलाभचरणां भवतीं परेशाम् ॥ १ ॥ प्रातर्नमामि महिषासुरचण्डमुण्डशुम्भासुरप्रमुखदैत्यविनाशदक्षाम् ॥ ब्रह्मेन्द्ररुद्रमुनिमोहनशीललीलां चण्डीं समस्तसुरमूर्तिमनेकरूपाम् ॥ २ ॥ प्रातर्भजामि भजतामभिलाषदात्रीं धात्रीं समस्तजगतां दुरितापहन्त्रीम् ॥ संसारबंधनविमोचनहेतुभूतां मायां परां समधिगम्य परस्य विष्णोः ॥ ३ ॥ श्लोकत्रयमिदं देव्याश्चण्डिकायाः पठेन्नरः ॥ सर्वान्कामानवाप्नोति विष्णुलोके महीयते ॥ ४ ॥" इति प्रातःस्मरणं कृत्वा रु मंत्रदेवतात्मनामैक्यं विभाव्य अजपाजपं गुरुं समर्पयेत् । तद्यथा—ॐ—"आधारे लिंगनाभौ हृदयसरसिजे तालुमूले ललाटे द्वे पत्रे षोडशारे द्विदशदशदले द्वादशार्द्धे चतुष्के ॥ वासांते बालमध्ये डफकठसहिते आदियुक्ते स्वराणां हक्षं तत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि ॥ १ ॥ षट्शतं तु गणेशस्य षट्सहस्रं प्रजापतेः ॥ षट्सहस्रं गदापाणेः षट्सहस्रं पिनाकिनः ॥ २ ॥

१ लिंगं चन्द्रार्कयोर्बिंबं भारती जाह्नवी गुरुः ॥ रक्ताब्धितरणं युद्धे जयोऽनलसमर्चनम् ॥ शिखिहंसरथांगाढ्ये रथे स्थानं प्रमोहनम् ॥ आरोहणं सारसस्य धरालाभश्च निम्नगा ॥ प्रासादः स्यंदनं पद्मं छत्रं कन्या द्रुमः फली । नागो द्वीपो हयः पुष्पं वृषभोऽश्वश्च पर्वतः ॥ सुराघटो ग्रहास्तारा नारी सूर्य्योदयोऽप्सराः । हर्म्यशैलविमानानामारोहो गगने गमः ॥ मद्यमांसादनं विष्ठालेपो रुधिरसेचनम् । दध्योदनादनं राज्याभिषेको गोवृषध्वजाः ॥ सिंहः सिंहासनं शंखो वादित्रं रोचना दधि ॥ चन्दनं दर्पणं वैषां स्वप्ने संदर्शनं शुभम् ॥ तैलाभ्यक्तः कृष्णवर्णो नग्नो ना गर्तवायसौ ॥ शुष्ककण्टकिवृक्षश्च चांडालो दीर्घकन्धरः ॥ प्रासादस्तलहीनश्च नैते स्वप्ने शुभावहाः ॥ इति विचारयेत् ॥

आत्मनस्तत्सहस्रं च सहस्रं परमात्मनः ॥ सहस्रं श्रीगुरुभ्यश्च एतानि विनियोजयेत् ॥ ३ ॥ हंसो गणेशो विधिरेव हंसो हंसो [illegible]
हंसमयश्च शंभुः ॥ हंसोऽपि जीवः परमात्महंसो हंसो गुरुर्हंसमयश्च शंभुः" ॥ ४ ॥ इति पठित्वा अहोरात्रोच्चारितं षट्शताधिकैकविंश
शतिसहस्रमुच्छ्वासनिश्वासात्मकमजपागायत्रीमंत्रजपं श्रीगणेशब्रह्मविष्णुरुद्रजीवात्मपरमात्मश्रीगुरुभ्यो यथासंख्यं समर्पयामि । इत्युक्त्वा
अष्टोत्तरशतावृत्तिं हंसगायत्रीं जपेत् । तत्र मंत्रः—हरिः ॐ हंसो हंसस्य विद्महे हंसो हंसस्य धीमहि । हंसो हंसः प्रचोदयात् ॥
इति जपित्वा "त्रैलोक्यचैतन्यमयि त्रिशक्ते श्रीविश्वमातर्भवदाज्ञयैव ॥ प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं संसारयात्रामनुवर्तयामि ॥ १ ॥"
इति संप्रार्थ्य भूमिं प्रार्थयेत् । तत्र मंत्रः ॥ "ॐ—समुद्रमेखले देवि पर्वतस्तनमंडले ॥ विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे" ॥ १ ॥
इति भूमिं संप्रार्थ्य श्वासानुसारेण भूमौ पादं दत्त्वा बहिर्व्रजेत् । इति प्रातःकृत्यम् ॥ अथ शौचक्रियाः ॥ ग्रामाद्बहिः नैर्ऋत्यकोणे जन
वर्जिते उत्तराभिमुखः अनुपानत्कः वस्त्रेण शिरः प्रावृत्य मलमोचनं कृत्वा मृत्तिकया जलेन यथासंख्यं शौचं कृत्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य
गंडूषं कृत्वा दंतधावनं कुर्यात् । तद्यथा—आम्रचम्पकापामार्गाद्यन्यतमं द्वादशांगुलं दंतकाष्ठं गृहीत्वा प्रार्थयेत् ॥ "ॐ—आयुर्बलं यशो वर्चः
प्रजापशुधनानि च ॥ श्रियं प्रज्ञां च मेधां च त्वन्नो देहि वनस्पते ॥ १ ॥" इति संप्रार्थयेत् "ॐ ह्रीं तडित् स्वाहा" इति मंत्रेण
काष्ठं छित्त्वा "ॐ क्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः" इत्यनेन दंतान् संशोध्य "ऐं" इति बीजेन जिह्वामुल्लिख्य दंतकाष्ठं क्षाल
यित्वा नैर्ऋत्यां शुद्धदेशे निक्षिपेत् । ततः मूलेन मुखं प्रक्षाल्याचम्य सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण तीर्थस्नानं कुर्यात् । तीर्थस्नाना
शक्तौ गृहस्नानं कुर्यात् । इति शौचक्रियाः ॥ अथ गृहस्नानप्रयोगः ॥ तात्कालिकोद्धृतोदकेन उष्णोदकेन वा स्नानं कृत्वा न तु
पर्युषितशीतोदकेन । ताम्रादिबृहत्पात्रे जलं गृहीत्वा तीर्थान्यावाहयेत् । तत्र मंत्रः ॥ "ॐ—ब्रह्मांडोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे ॥
तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर ॥ १ ॥ ॐ—गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ॥ नर्मदे सिंधुकावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं
कुरु ॥ २ ॥ आवाहयामि त्वां देवि स्नानार्थमिह सुंदरि ॥ एहि गंगे नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थसमन्विते ॥ ३ ॥ पुष्कराद्यानि तीर्थानि

गंगाद्याः सरितस्तथा ॥ आगच्छंतु पवित्राणि स्नानकाले सदा मम ॥ ४ ॥" इति तीर्थान्यावाह्य " ॐ ऋतं च सत्यं० " इति मंत्रे णाभिमंत्र्य वरुणमंत्रेण स्नात्वा वक्ष्यमाणैश्चतुर्भिर्मंत्रैः कुशत्रयेण शिरसि जलं प्रक्षिपेत् । तत्र मंत्राः "ॐ–सिसृक्षोर्निखिलं विश्वं मुहुः शुक्रं प्रजापतेः ॥ मातरः सर्वभूतानामापो देव्यः पुनंतु माम् ॥ १ ॥ अलक्ष्मीर्मलरूपा या सर्वभूतेषु संस्थिता ॥ क्षालयंति निजस्पर्शा दापो देव्यः पुनंतु माम् ॥ २ ॥ यन्मे केशेषु दौर्भाग्यं सीमंते यच्च मूर्धनि ॥ ललाटे कर्णयोरक्ष्णोरापस्तद् घ्नन्तु वो नमः ॥ ३ ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्य्यमरिपक्षक्षयः सुखम् ॥ संतोषः क्षांतिरास्तिक्यं विद्या भवतु वो नमः ॥ ४ ॥ " इति शिरः प्रोक्ष्य हस्ते जलमादाय नासिकायां संयोज्य " ॐ ऋतं च सत्यं०" इत्यघमर्षणमंत्रं पठित्वा जलं वामभागे निक्षिपेत् । एवं स्नात्वा शुष्कं शुभ्रं कार्पासो त्पन्नवस्त्रं परिधाय सूर्य्यायार्घ्यं दद्यात् । तद्यथा—" ॐ–एहि सूर्य्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते ॥ अनुकंपय मां देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते" ॥ १ ॥ इति सूर्य्यायार्घ्यं दत्त्वा स्नानवस्त्रं परिपीड्याचम्य तिलकं कुर्य्यात् ॥ अथ भस्मत्रिपुंड्रप्रकारः ॥ वामहस्ते दक्षिण हस्तेन अग्निहोत्रोत्थितं भस्म कुलचन्दनादि वादाय उदकमिश्रं कृत्वा "ॐ अग्निरिति भस्म ॐ वायुरिति भस्म ॐ जलमिति भस्म ॐ स्थलमिति भस्म ॐ व्योमेति भस्म सर्वठं० ह वा इदं भस्म मन एतानि चक्षूंषि भस्मानीति" भस्माभिमंत्र्य "ॐ त्र्यंबकं०" पठित्वा "ॐ तत्पुरुषाय नमः" इति मंत्रेण भाले त्रिपुंड्रं कृत्वा तस्योपरि देव्यस्त्रं (ह्रीं) इति लिखेत्॥१॥ ततः "ॐ त्र्यंबकं०" पठित्वा "ॐ अघो राय नमः" इति मंत्रेण दक्षिणांसे त्रिपुंड्रं कुर्यात् ॥२॥ ततः "त्र्यंबकं" पठित्वा "ॐ सद्योजाताय नमः" इति मंत्रेण वामांसे त्रिपुंड्रं कुर्य्यात् ॥ ३ ॥ ततः " त्र्यंबकं " पठित्वा "ॐ वामदेवाय नमः" जठरे त्रिपुंड्रं कुर्य्यात् ॥ ४ ॥ ततः "त्र्यंबकं" पठित्वा " ॐ ईशा नाय नमः" इति मंत्रेण वक्षसि च त्रिपुंड्रं कृत्वा तस्योपरि कालीबीजं (क्रीं) इति लिखेत् ॥ ५ ॥ इति पंचसु त्रिपुंड्रं कृत्वा रुद्राक्ष मालां धारयन् वैदिकीं संध्यां विधाय सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण तांत्रिकीं संध्यां कुर्य्यात् । इति भस्मत्रिपुंड्रप्रकारः ॥ अथ द्वारपूजा प्रकारः॥प्रथमं पंचवर्णरजश्चित्रं शुद्धं स्थानं गत्वा पूजावेद्या बहिः स्थित्वा गुरुं प्रणम्य इष्टदेवतां प्रणम्य दिक्पालांश्च प्रणम्य "अत्राय

फट्” इति द्वारं संप्रोक्ष्य द्वारोपरि ॐ गं गणेशाय नमः १ वामशाखायाम् ॐ वं वटुकाय नमः २ दक्षिणशाखायाम् ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः ३ अधः ॐ यं योगिनीभ्यो नमः ४ इति पूजयेत् ॥ पुनः ॐ गं गंगायै नमः । ॐ यं यमुनायै नमः । इति शाखापार्श्वयोः॥ ॐ लं लक्ष्म्यै नमः।ॐ सं सरस्वत्यै नमः । इति ऊर्ध्वे अधश्च पूजयेत्।ॐब्रह्माण्याद्यष्टमातृभ्यो नमः।इति देहल्यां गंधपुष्पादिना पजयेत् । इति द्वारपूजां कृत्वा ततो दक्षिणाङ्गं संकोचयन् दक्षचरणमग्रे निधाय वामशाखामस्पृशन् मण्डलाभ्यंतरे गत्वा क्षेत्रकीलनं कुर्यात् ॥ अथ क्षेत्रकीलनम् ॥ “ॐ—गृहीतस्यास्य मंत्रस्य पुरश्चरणसिद्धये ॥ मयेयं गृह्यते भूमिर्मंत्रोऽयं सिद्धिमाप्नुयात् ॥ १ ॥ ” इति मंत्रेण भूमिं संग्राह्य अश्वत्थोदुंबरप्लक्षाणामन्यतमवितस्तिमात्रान् दशकीलान् “ ॐ नमः सुदर्शनायास्त्राय फट् ” इति मंत्रेणाष्टोत्तरशतमभिमंत्र्य “ ॐ—ये चात्र विघ्नकर्तारो भुवि दिव्यंतरिक्षगाः ॥ विघ्नभताश्च ये चान्ये मम मंत्रस्य सिद्धिषु ॥ १ ॥ मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः ॥ अपसर्पंतु ते सर्वे निर्विघ्नं सिद्धिरस्तु मे ॥ २ ॥ ” इति मंत्रद्वयेन दशदिक्षु दशकीलान् निखनेत् । ततस्तेषु “ ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट् ” इति मंत्रेण प्रत्येककीलान् संपूज्य तत्रैव पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिलोकपालानावाह्य पञ्चोपचारैः संपज्य ततः जपस्थानमध्ये गणेशं कूर्मानंतवसुधाक्षेत्रपालांश्च संपूज्य दिक्पालेभ्यः क्षेत्रपालगणपतिम्यश्च माषभक्तबलिं दत्त्वा तद्बाह्ये भूतबलिं दद्यात् । तद्यथा—“ ॐ—ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः ॥ मातरोऽप्युग्ररूपाश्च गणाधिपतयश्च ये ॥ १ ॥ भूचराः खेचराश्चैव तथा चैवांतरिक्षगाः ॥ ते सर्वे प्रीतमनसः प्रतिगृह्णंत्विमं बलिम् ॥ २ ॥ ”इति मंत्रद्वयेन दशदिक्षु बाह्ये माषभक्तबलिं दत्त्वा ततो वामकरांगुलिभिरर्घ्यजलमुत्सृज्य पुष्पांजलिमादाय “ ॐ—भूतानि यानीह वसंति भूतले बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम् ॥ संतोषमासाद्य व्रजन्तु सर्वे क्षमन्तु चान्यत्र नमोऽस्तु तेभ्यः ॥१॥”इति पुष्पांजलिं दत्त्वा प्रणमेत् ॥ इति क्षेत्रकीलनं कृत्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचामेत् ॥ इति क्षेत्रकीलनम् ॥ अथ पुरश्चरणविधानम् ॥ ॐ—अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ॥ यः स्मरेत्पुंडरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरं शुचिः ॥ १ ॥ “ॐ रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा” इति मंत्रेण मंडपांतरं प्रोक्ष्य तत्र तावत् आसनभूमौ कूर्मशोधनं

कार्य्यम् ॥ यत्र जपकर्त्ता एक एव तदा कूर्मसुखे उपविश्य जपं तत्रैव दीपस्थापनं च कुर्य्यात् । यत्र बहवो जापकास्तत्र कूर्ममुखोपरि दीपमेव स्थापयेत् । "ह्रीं" एवं कूर्मशोधनं कृत्वा "ॐ रक्षरक्ष हूँ फट् स्वाहा" इति मन्त्रेणासनाधो जलेनाभिषिच्य "ॐ पवित्रवज्रभूमे हूँ फट् स्वाहा" इत्यभिमंत्र्य "आधारशक्तिकमलासनाय नमः" इति समभ्यर्च्य तत्रासनाधः " आसुरेखे वज्ररेखे हूं फट् स्वाहा " इति मंत्रेण जलादिना त्रिकोणं कृत्वा तत्र मध्ये (ह्लौं) इति प्रेतबीज विलिख्य ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः १ । ॐ पृथिव्यै नमः २ । ॐ कूर्म्माय नमः ३ । इति गंधाक्षतपुष्पैः संपूज्य तदुपरि कुशासनं तदुपरि मृगाजिनं तदुपरि कम्बलाद्यासनमास्तीर्य तदभावे तु पंचविंशतिकुशनिर्मितविष्टरं शवरूपं वा प्रकल्पयेत् । स्थापितानां त्रयाणामासनानामुपरि क्रमेण ॐ अनंतासनाय नमः १ । ॐ विमलासनाय नमः २ । ॐ पद्मासनाय नमः ३ । इति मन्त्रत्रयेण त्रीन् दर्भान् प्रत्येकं निदध्यात् । एवमासनं संस्थाप्य "ह्लौं महाप्रेतपद्मासनाय नमः" इत्यभ्यर्च्य तत्रासने प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा आत्मयन्त्रे उपविश्य वामोरूपरि दक्षिणपादं कृत्वा बद्धवीरासनः वामपादोपरि दक्षिणोरुं धृत्वा विपरीतं वा संस्थाप्य आसनशोधनं कुर्य्यात् । ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः । सुतलंछन्दः । कूर्म्मो देवता । आसनपरिग्रहे विनियोगः । " ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ॥ त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् " ॥१ ॥ इति मंत्रेणासनं प्रोक्ष्य मूलं पठित्वा " ॐ मणिधारिणि वज्रिणि शिखरिणि सर्वलोकवशंकरि हूं फट् स्वाहा" इति शिखां बद्ध्वा गुरुं प्रणम्य इष्टदेवतां प्रणम्य दिक्पालांश्च प्रणम्य आचान्तः कुशहस्तो मौनी पापशमनार्थं श्लोकद्वयं पठेत् । तद्यथा—" ॐ देवि त्वत्प्रकृतं चित्तं पापाक्रांतमभून्मम ॥ तन्निःसरतु चित्तान्मे पापं हुं फट् च ते नमः ॥ १॥ सूर्यः सोमो यमः कालो महाभूतानि पंच च ॥ एते शुभाशुभस्येह कर्मणो नव साक्षिणः ॥ २ ॥ " इति पठित्वा मौनी मूलेनाचम्य " ॐ वज्रोदकेन हूँ फट् स्वाहा " इति जलं गृहीत्वा " हूँ स्वाहा " इति करे चादाय " ॐ ह्रीं [illegible] सर्वपापानि शमयाशेषविकल्पमपनय हूँ फट् स्वाहा " इत्यनेन पादौ प्रक्षालयेत् । ततः 'ॐ ह्रीं स्वाहा' इति पुनराचम्य ' ऐं [illegible]

नमः १ ॥ ऐं कपालिन्यै नमः २ ॥ ऐं कुल्लायै नमः ३ ॥ इति त्रिराचम्य ;ततो मूलेन हस्तौ प्रक्षाल्य ॐ कालिकायै नमः १ ॥ ॐ कपालिन्यै नमः । इति दशहस्तांगुलीभिरोष्ठौ द्विरुन्मृज्य ॐ कुल्लायै नमः । इति पुनः करं प्रक्षाल्य मूलेन प्राणायामत्रयं कुर्य्यात् । तद्यथा—दक्षिणहस्तांगुष्ठेन दक्षनासापुटं निरुध्य वामनासापुटेन मूलं षोडशवारं जपन् शनैः शनैः प्राणाख्यवायुमाकृष्य शिरसि सहस्रारे धारयेदिति पूरकः १ ॥ ततो दक्षहस्तानामिकातर्जन्यंगुष्ठैर्नासापुटद्वयं निरुध्य मूलं चतुःषष्टिवारं जपन् कुंभयेत् इति कुंभकः २ ॥ पुन दक्षनासापुटमंगुष्ठनिरोधनं त्यक्त्वा मूलं द्वात्रिंशद्वारं जपञ्छनैःशनैस्तद्वायुं रेचयेत् इति रेचकः ३ ॥ इति प्राणायामत्रयं कुर्य्यात् ॥ ततः ' ॐ हूँ फट् स्वाहा' इति मंत्रेण "ॐ ह्रीं स्वाहा" इति मंत्रेण वा चित्तशोधनं कृत्वा "रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा" इत्यात्मानमभिरक्ष्य "ॐ शताभिषेके शताभिषेके पदे हूँ फट् स्वाहा" "ॐ पुष्पकेतुराजार्हत् पुष्पे पुष्पे महापुष्पे सुपुष्पे पुष्पसंभवे॥पुष्पचयावकीर्णे हूँ फट् स्वाहा" इति पुष्पाण्यभिमंत्र्य अन्यानि पूजावस्तानि सर्वाणि सामान्यार्घोदकेनाभिषिच्य धेनुमुद्रामत्स्यमुद्रे दर्शयित्वा पुष्पाणि शुद्धानि विभावयेत् ततः वमिति जलधारां प्रक्षिप्य वह्निबीजेन वह्निप्रकारं विचिंत्य ' हूँ फट् ' इति मंत्रेण चतुर्दिक्षु क्रोधदृष्ट्या निरीक्ष्य सर्वान् विघ्नानु त्सारयेत् । तद्यथा—" सर्वविघ्नानुत्सारय हूं फट् स्वाहा " इति मंत्रेण ऊर्ध्वमवलोक्य दिव्यांश्चतुर्दिक्षु जलक्षेपेणान्तरिक्षगान् वाम पार्ष्णिघातत्रयेण भौमान् विघ्नानुत्सार्य लाजचन्दनसिद्धार्थतिलदधिदूर्वाक्षतानामन्यतममादाय " ॐ अपसर्पंतु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः ॥ ये चात्र विघ्नकर्तारस्ते नश्यंतु शिवाज्ञया ॥" इति पठंश्चतुर्दिक्षु क्षिपेत् । ततो वामे ॐ गुरुभ्यो नमः १॥ॐपरमगुरुभ्यो नमः २ ॥ ॐ परात्परगुरुभ्यो नमः ३ ॥ ॐ परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः ४ ॥ दक्षिणे ॐ गणेशाय नमः ५ ॥ पुरतः ॐ अमुकदेव्यै नमः ६ ॥ इति प्रणम्य करशुद्धिं कुर्य्यात्। तद्यथा—' हूँ ' इति बीजेन चन्दनाक्तानि कुसुमान्यङ्गुल्यग्रेणादाय 'ह्रौं' इति मंत्रेण कराभ्यां मर्दयित्वा । क्रौं ' इति बीजेन दक्षहस्तेन संमृज्य ' ॐ तत्सत् ' इति मंत्रेण वामहस्तेनाघ्राय ' ह्रौं' इति मंत्रेण ऐशान्यां दिशि पुष्पं परित्यजेत् । " ॐ—ते सर्वे विलयं यांतु ये मां हिंसंति हिंसकाः ॥ मृत्युरोगभयक्रोधाः पतंतु रिपुमस्तके ॥ " इति मंत्रेण वा परित्यजेत् । इति

त्यागश्च। पुनः नाराचमुद्रां प्रदर्शयेत्। इति करशुद्धिं कर्यात्। ततः भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठांतर्मातृकावहिर्मातृकासृष्टिस्थितिसंहारमातृकान्यासं च सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कृत्वा देवीकलामातृकान्यासं कुर्य्यात् । तद्यथा—अस्य देवीकलामातृकान्यासस्य प्रजापतिर्ऋषिः। गायत्री छंदः। श्रीमातृकाशारदा देवता। हलो बीजानि। स्वराः शक्तयः। अमुकमंत्रांगत्वेन मातृकान्यासे विनियोगः। ॐ प्रजापति ऋषये नमः शिरसि १॥ गायत्रीछंदसे नमः मुखे २ ॥ शारदादेवतायै नमः हृदि ३ ॥ हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः गुह्ये ४ ॥ स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः पादयोः ५॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६ ॥ इति देवीकलामातृकान्यासे ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ अं ॐ आं हृदयाय नमः १॥ ॐ इं ॐ ईं शिरसे स्वाहा २॥ ॐ उं ॐ ऊं शिखायै वषट् ३ ॥ ॐ एं ॐ ऐं कवचाय हुं ४ ॥ ॐ ओं ॐ औं नेत्रत्रयाय वौषट् ५॥ ॐ अं ॐ अः अस्त्राय फट् ६ ॥ इति देवीकलामातृकान्यासे हृदयादिषडंगन्यासः ॥ अथ ध्यानम् ॥ ॐ–शंखचक्राब्जपरशुकपालेनाक्षमालिकाः ॥ पुस्तकासवकुंभौ च त्रिशूलं दधती करैः ॥ १ ॥ सितपीतसितश्वेतरक्तवर्णैस्त्रिलोचनैः ॥ पंचास्यैः संयुतां चन्द्रसकांतिं शारदां भजे ॥ २ ॥ इति ध्यात्वा मातृका न्यसेत् ॥ ॐ अं निवृत्त्यै नमः ललाटे १ ॥ ॐ आं प्रतिष्ठायै नमः मुखवृत्ते २ ॥ ॐ इं विद्यायै नमः दक्षनेत्रे ३ ॥ ॐ ईं शांत्यै नमः वामनेत्रे ४ ॥ ॐ उं इंधिकायै नमः दक्षकर्णे ५ ॥ ॐ ऊं दीपिकायै नमः वामकर्णे ६ ॥ ॐ ऋं रेचिकायै नमः दक्षनासापुटे ७॥ ॐ ॠं मोचिकायै नमः वामनासापुटे ८ ॥ ॐ ऌं परायै नमः दक्षकपोले ९ ॥ ॐ ॡं सूक्ष्मायै नमः वामकपोले १०॥ ॐ एं सूक्ष्मामृतायै नमः ऊर्ध्वोष्ठे ११ ॥ ॐ ऐं ज्ञानामृतायै नमः अधरोष्ठे १२॥ ॐ ओं कात्यायन्यै नमः ऊर्ध्वदंतपंक्तौ १३ ॥ ॐ औं व्यापिन्यै नमः अधोदंतपंक्तौ १४ ॥ ॐ अं व्योमरूपायै नमः जिह्वायाम् १५ ॥ ॐ अः अनंतायै नमः कंठे १६ ॥ ॐ कं सृष्ट्यै नमः दक्षबाहुमूले १७॥ ॐ खं ऋद्ध्यै नमः दक्षकूर्परे १८॥ ॐ गं [illegible]यै नमः दक्षमणिबंधे १९॥ॐ घं मेधायै नमः दक्षहस्तांगुलिमूले २०॥ॐ ङं कांत्यै नमः दक्षहस्तांगुल्यग्रे २१॥ॐ चं लक्ष्म्यै नमः वाम[illegible]मूले२२॥ ॐ छं द्युत्यै नमः वामकूर्परे २३॥ ॐ जं स्थिरायै नमः वाममणिबंधे २४ ॥ ॐ झं स्थित्यै नमः वामहस्तांगुलिमूले २५ ॥

ॐ ञं सिद्धयै नमः वामहस्तांगुल्यग्रे २६॥ ॐ टं जरायै नमः दक्षपादमूले २७ ॥ ॐ ठं पालिन्यै नमः दक्षजानुनि २८ ॥ ॐ डं क्षांत्यै
नमः दक्षगुल्फे २९ ॥ ॐ ढं ईश्वर्य्यै नमः दक्षपादांगुलिमूले ३० ॥ ॐ णं रत्यै नमः दक्षपादांगुल्यग्रे ३१ ॥ ॐ तं कामिकायै नमः
वामपादमूले ३२ ॥ ॐ थं वरदायै नमः वामजानुनि ३३ ॥ ॐ दं आह्लादिन्यै नमः वामगुल्फे ३४ ॥ ॐ धं प्रीत्यै नमः वामपादांगुलि
मूले ३५ ॥ ॐ नं दीर्घायै नमः वामपादांगुल्यग्रे ३६ ॥ ॐ पं तीक्ष्णायै नमः दक्षपार्श्वे ३७ ॥ ॐ फं रौद्र्यै नमः वामपार्श्वे ३८ ॥
ॐ बं भयायै नमः पृष्ठे ३९ ॥ ॐ भं निद्रायै नमः नाभौ ४० ॥ ॐ मं तंद्रिकायै नमः जठरे ४१ ॥ ॐ यं क्षुधायै नमः हृदये ४२ ॥
ॐ रं क्रोधिन्यै नमः दक्षांसे ४३ ॥ ॐ लं क्रियायै नमः ककुदि ४४ ॥ ॐ वं उल्कार्य्यै नमः वामांसे ४५ ॥ ॐ शं मृत्युकायै नमः
हृदयादिदक्षहस्तांतम् ४६ ॥ ॐ षं पीतायै नमः हृदयादिवामहस्तांतम् ४७ ॥ ॐ सं श्वेतायै नमः हृदयादिदक्षपादांतम् ४८ ॥ ॐ हं
अरुणायै नमः हृयदादिवामपादांतम् ४९ ॥ ॐ ळं असितायै नमः मूर्द्धादिपादांतम् ५० ॥ ॐ क्षं अनन्तायै नमः पादादिमूर्द्धांतम्
५१ ॥ इति देवीकलामातृकान्यासं कृत्वा प्रयोगोक्तऋष्यादिन्यासषडङ्गन्यासादिकं विधाय मूलदेवतां ध्यात्वा पीठपूजां कुर्य्यात् ॥

अथ पीठपूजनम् ॥ पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले तन्मध्ये मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थापयेत् ॥ तद्यथा—पुष्पाक्षतानादाय
स्ववामभागे श्रीगुरुभ्यो नमः १॥ दक्षिणे गणपतये नमः २ ॥ मध्ये स्वेष्टदेवतायै नमः ३॥ इति नत्वा पीठमध्ये ॐ मं मंडूकाय नमः
१ ॥ ॐ कं कालाग्निरुद्राय नमः २ ॥ ॐ अं आधारशक्तये नमः ३ ॥ ॐ कुं कूर्म्माय नमः ४ ॥ ॐ अं अनन्ताय नमः ५ ॥ ॐ पं
पृथिव्यै नमः ६ ॥ ॐ क्षीं क्षीरसागराय नमः ७ ॥ ॐ रं रत्नद्वीपाय नमः ८ ॥ ॐ रं रत्नमंडपाय नमः ९ ॥ ॐ कं कल्पवृक्षाय
नमः १० ॥ ॐ रं रत्नवेदिकायै नमः ११ ॥ ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः १२ ॥ इति पूजयेत् ॥ आग्नेय्यां ॐ धं धर्म्माय नमः १३ ॥
नैर्ऋत्यां ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः १४ ॥ वायव्यां ॐ वैं वैराग्याय नमः १५ ॥ ऐशान्यां ॐ ऐं ऐश्वर्य्याय नमः १६ ॥ पूर्वे ॐ अं
अधर्म्माय नमः १७ ॥ दक्षिणे ॐ अं अज्ञानाय नमः १८ ॥ पश्चिमे ॐ अं अवैराग्याय नमः १९ ॥ उत्तरे ॐ अं अनैश्व

र्याय नमः २० ॥ इति पूजयेत् ॥ पुनः पीठमध्ये ॐ अं आनन्दकन्दाय नमः २१ ॥ ॐ सं संविन्नालाय नमः २२ ॥ ॐ सं सर्वतत्त्व कमलासनाय नमः २३ ॥ ॐ प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः २४ ॥ विं ॐ विकारमयकेसरेभ्यो नमः २५ ॥ ॐ पं पञ्चाशद्वर्णाढ्यकर्णिकाभ्यो नमः २६ ॥ ॐ अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः २७ ॥ ॐ सों सोममंडलाय षोडशकलात्मने नमः २८ ॥ ॐ वं वह्निमंडलाय दशकलात्मने नमः २९ ॥ ॐ सं सत्त्वाय नमः ३० ॥ ॐ रं रजसे नमः ३१ ॥ ॐ तं तमसे नमः ३२ ॥ ॐ आं आत्मने नमः ३३ ॥ ॐ पं परमात्मने नमः ३४ ॥ ॐ अं अन्तरात्मने नमः ३५ ॥ ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः ३६ ॥ ॐ मं मायातत्त्वाय नमः ३७ ॥ ॐ कं कलातत्त्वाय नमः ३८ ॥ ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः ३९ ॥ ॐ पं परतत्त्वाय नमः ४० ॥ इति पीठदेवताः संपूज्य प्रयोगोक्तनवपीठशक्तीः पूजयेत् ॥ इति पीठपूजां कृत्वा पात्रासादनं कुर्य्यात् ॥ अथ पात्रासादनम् ॥ (तत्रादौ त्रिरर्घ्यस्थापनम्) आत्मयंत्रयोर्मध्ये त्रिकोणचतुरस्रमंडलं कृत्वा जलेन प्रोक्ष्य त्रिकोणांतरमायां (ह्रीं) विलिख्य "ॐ ह्रीं आधारशक्तये नमः" इति मंत्रेण संपूज्य चतुरस्रे पूर्वादिचतुर्षु दिक्षु ॐ पूर्णगिरिपीठाय नमः १॥ ॐ उड्डीयानगिरिपीठाय नमः २॥ ॐ कामरूपपीठाय नमः ३ ॥ ॐ जालंधरपीठाय नमः ४॥ इति पूजयेत् ॥ ततो मूलेन फट् इति त्रिपादमाधारं प्रक्षाल्य त्रिकोणमध्ये संस्थाप्य ॐ वाँ वीं वूँ हस क्षमलवरयूँ धर्म्मदवह्निमंडलाय दशकलात्मने अमुकदेव्यर्घ्यपात्राधाराय नमः ॥ इति मंत्रेण आधारं संपूज्य आधारे पूर्वादिषु दशाग्निकलाः पूजयेत् ॥ तद्यथा—यं धूम्रार्चिषे नमः १ ॥ रं ऊष्मायै नमः २ ॥ लं ज्वलिन्यै नमः ३ ॥ वं ज्वालिन्यै नमः ४॥ शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः ५॥ षं सुश्रियै नमः ६॥ सं सुरूपायै नमः ७ । हं कपिलायै नमः ८ । लं हव्यवाहायै नमः ९ । क्षं कव्यवाहायै नमः १० । इति संपूजयेत् ॥ ततः सौवर्णं राजतं ताम्रं नारिकेलं वा पात्रं मूलेन फट् इति प्रक्षालितं चार्घ्यं आधारोपरि संस्थाप्य ह्रीं ह्रीं हूं हसक्षमलवरयूँ वसुप्रदतपिन्यादि द्वादशकलात्मने अर्कमंडलाय अमुकदेव्यर्घ्यपात्राय नमः । इति संपूज्य पात्रे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन द्वादशार्ककलाः पूजयेत् । तद्यथा—कं भं तपिन्यै नमः १ । खं बं तापिन्यै नमः २ । गं फं धूम्रायै नमः ३ । घं पं मरीच्यै नमः ४ । ङं नं ज्वालिन्यै नमः ५ । चं धं

रुच्यै नमः ६ । छं दं सुषुम्णायै नमः ७ । जं खं भोगदायै नमः ८ । झं तं विश्वायै नमः ९ । ञं णं बोधिन्यै नमः १० । टं ढं धारिण्यै नमः ११ । ठं डं क्षमायै नमः १२ । इति पूजयेत् । ततः ॐ क्षं ळं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं ॡं ऌं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं इत्येकाधिकपञ्चाशद् ५१ । विलोममातृकामु

च्चार्य मूलेन नमः इति क्षीरं जलं वा मधु संविदादि वा आपूर्य ॐ सां सीं सूं सहक्षमलवरयूं कामप्रदामृतादिषोडशकलात्मने सोम मंडलाय अमकदेव्यर्घामृताय नमः इति संपूज्य जले षोडश चन्द्रकलाः पूजयेत् । तद्यथा—अं अमतायै नमः १ । आं मानदायै नमः २ । इं पूषायै नमः ३ । ईं तुष्ट्यै नमः ४ । उं पुष्ट्यै नमः ५ । ऊं वृत्त्यै नमः ६ । ऋं धृत्यै नमः ७ । ॠं शशिन्यै नमः ८ । ऌं चंद्रिकायै नमः ९ । ॡं कांत्यै नमः १० । एं ज्योत्स्नायै नमः ११ । ऐं श्रियै नमः १२ । ओं प्रीत्यै नमः १३ । औं अंगदायै नमः १४ । अं पूर्णायै नमः १५ । अः पूर्णामृतायै नमः १६ । इति पूजयेत् । इत्यर्घ्यं संस्थाप्य एलालवंगकर्पूरादिसुगंधादि निःक्षिप्य तन्मध्ये ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ॥ नर्मदे सिंधु कावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु॥१॥ॐ ब्रह्मांडोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे ॥ तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर॥२॥इति श्लोकद्वयेन तीर्थान्यावाह्यांकुशमुद्रां प्रदर्श्य तन्मध्ये स्वेष्टदेवीं ध्यायेत् । इति विशेषार्घ्यस्थापनम् ॥ १॥ (अथ शंखस्थापनम्) देवीवामतः पूर्ववत् शंखनामोच्चारणपूर्वकं शंखं संस्थाप्याभिमंत्रयेत् । तद्यथा—ॐ शंखादौ चन्द्रदैवत्यं कुक्षौ वरुणदेवता ॥ पृष्ठे प्रजापतिश्चैवमग्रे गंगासरस्वती ॥ १ ॥ त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया ॥ शंखे तिष्ठंति विप्रेन्द्र तस्माच्छंखं प्रपूजयेत् ॥२॥ इत्यभिमंत्र्य प्रार्थयेत् । तद्यथा—ॐ त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे ॥ निर्मितः सर्वदेवैश्च पांचजन्य नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥ इति संप्रार्थ्य ॐ पांचजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि ॥ तन्नः शंखः प्रचोदयात् ॥ इति शंखगायत्री मष्टधा जपित्वा शंखमुद्रां प्रदर्शयेत् । इति शंखस्थापनम् ॥ २ ॥ ततो देवीदक्षिणतः एवमेव विधिना प्रोक्षणीपात्रं संस्थापयेत् । इति त्रिरर्घ्यस्थापनम् । ततो विशेषार्घाद्वामतः श्रीपात्रम् १ । गुरुपात्रम् २ । देवपात्रम् ३ । शक्तिपात्रम् ४ । योगिनीपात्रम् ५ । भोग

पात्रम् ६ । वीरपात्रम् ७ । आत्मपात्रम् ८ । बलिपात्रम् ९ । एतानि नव पात्राणि पूर्ववत् स्थापयित्वा दक्षिणे पाद्यार्घ्याचमनीय मधुपर्कार्थं चत्वारि पात्राणि स्थापयेत् । अशक्तश्चेद्गुरुवीरात्मबलिभोगेति पंचपात्राणि पाद्याद्युपचारार्थमेकं वा बृहत्पात्रं संस्थापयेत् । तदप्यशक्तश्चेत्तदा एकमेव शंखं संस्थाप्य कलशस्थापनं कुर्य्यात् ॥ अथ कलशस्थापनप्रयोगः ॥ (तत्रादौ सुधाकुंभस्थापनम्) देव दक्षिणतः स्वर्णादिकलशं पूर्ववत् संस्थाप्य तन्मध्ये सुधां निक्षिप्य गंधादिभिः संपूज्य शापमोचनं कुर्य्यात । तद्यथा—सुधाकुंभपूर्वे ग्लूँ गगनरत्नेभ्यो नमः १ । दक्षिणे स्लूँ स्वर्गरत्नेभ्यो नमः २ । पश्चिमे प्लूँ पातालरत्नेभ्यो नमः ३ । उत्तरे म्लूँ मनुष्यरत्नेभ्यो नमः ४ । मध्ये नूँ नागरत्नेभ्यो नमः ५ । इति संपूज्य ॐ सुधादेव्यै विद्महे च कामेश्वर्य्यै च धीमहि ॥ तन्नो रक्ताक्षी प्रचोदयात् ॥ इति सुधागाय त्र्याऽद्भिर्दशधाभिमंत्र्य मूलमंत्र च दशधा जपित्वा ततो सुधायाः शापमोचनं कुर्य्यात् । तद्यथा—करेणाच्छाद्य एवमेव परब्रह्मस्थूलसूक्ष्म मयं ध्रुवम् ॥ कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम् ॥ १ ॥ सूर्यमंडलसंभूते वरुणालयसंभवे ॥ आस्यबीजमये देवि शुक्रशापाद्विमुच्य ताम् ॥ २ ॥ वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानंदमयं यदि ॥ तेन सत्येन ते देवि ब्रह्महत्यां व्यपोहति ॥ ३ ॥ इति मंत्रत्रयेण सुधया आच्छाद्य पात्रोपरि पुनः मंत्र पठेत् । ॐ साँ सीं सूँ सैं सौं सः शुक्रशापविमोचिकायै सुधादेव्यै नमः इति द्वादशधा जपेत् ॥ १ ॥ ॐ वाँ वीं वूं वैं वः ब्रह्मशाप विमोचिकायै सुधादेव्यै नमः ॥ इति दशधा जपेत् ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः सुधाकृष्णशापं विमोचय विमोचय अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा ॥ इति दशधा जपेत् ॥ ३ ॥ ॐ राँ रीं रूँ रैं रौं रः रुद्रशापविमोचिकायै सुरादेव्यै नमः इति दशधा जपेत् ॥ ४ ॥ इति शुक्रब्रह्मकृष्णरुद्रशाप विमुक्तां विभाव्य दशदोषनिवारणं कुर्य्यात् ॥ तद्यथा—ॐ ह्रीं क्रीं परमस्वामिनि परमाकाशशून्यवाहिनि चन्द्रसूर्याग्निभाक्षिणि पात्रं विश विश स्वाहा इति पात्रोपरि दशधा जपेत् । ॐ ऐं श्री महेश्वराय विद्महे सुधादेव्यै धीमहि ॥ तन्नोऽर्द्धनारीश्वरः प्रचोदयात् ॥ इति पात्रोपरि [illegible] अष्टिवा दशदोषनिवारणार्थे दशवारं मंत्रं पठेत् । तद्यथा—अक्षतानादाय ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पथिकदेवताभ्यो हुं फट् स्वाहा ॥ इति [illegible] पेत् । ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यँ रँ लँ आँ आस्फालिनीग्रामचांडालिनी हुं फट् स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां संगमस्पर्श

चांडालिनी हुं फट् स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फें घं ङं लं क्षं दृष्टिचांडालिनी हुं फट् स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ग्लौं ग्लां क्रोधचांडालिनी हुं फट् स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं सृष्टिचांडालिनी हुं फट् स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आँ क्रीं घटचांडालिनी हुं फट् स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं छं तपनीयवधचांडालिनी हुं फट् स्वाहा ॥ ८ ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षं आं क्रौं क्लीं निर्दयचांडालिनी हुं फट् स्वाहा ॥ ९ ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्तूं छं स्त्रौं स्त्रौं खेदय खेदय सर्वजनदृष्टिस्पर्शदोषाय हुं फट् स्वाहा ॥ १० ॥ इति मंत्रेण कुंभोपर्यक्षतान् निक्षिप्य गंधादिभिः संपूज्य द्रव्यशुद्धिमिति भावयन् दोषरहितद्रव्यमध्ये अमृतेशीं विचिंतयेत्। तद्यथा—मूलं पठित्वा अमृते अमृतोद्भवे अमतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय सां जूं जुं अमृतेश्वर्य्यै स्वाहा ॥ इत्यमृतेशीं विचिंत्य सुधादेवीं ध्यायेत् । ॐ—अखंडैकवरानन्दकरे परसुधात्मनि ॥ स्वच्छन्दस्फुरणामंत्रानिधे ह्यमृतरूपिणि ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा तन्मध्ये आनंदभैरवमानंदभैरवीं च ध्यायेत् । अथानंदभैरवध्यानं यथा—सूर्यकोटिप्रतीकाशं चन्द्रकोटिसुशीतलम् ॥ अष्टादशभुजं देवं पंचवक्त्रं त्रिलोचनम् ॥ अमृतार्णवमध्यस्थं ब्रह्मपद्मोपरि स्थितम् ॥ वृषारूढं नीलकंठं सर्वाभरणभूषितम् ॥ ३ ॥ कपालखट्वाङ्गधरं घंटाडमरुवादिनम् ॥ पाशांकुशधरं देवं गदामुशलधारिणम् ॥ ४ ॥ खड्गखेटकपट्टीशमुद्गरं शूलकुंतले ॥ विधृतं खेटकं मुंडं वरदाभयपाणिकम् ॥ लोहितं देवदेवेशं भावयेत्साधकोत्तमः ॥ ५ ॥ इति ध्यात्वा "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं हसक्षमलवरयूं आनंदभैरवाय वौषट्" इति मंत्रेण आनंदभैरवं त्रिः संपूज्य आनंदभैरवीं ध्यायेत् । अथानंदभैरवीध्यानं यथा—भावयेच्च सुरां देवीं चन्द्रकोटियुतप्रभाम् ॥ हेमकुन्देन्दुधवलां पंचवक्त्रां त्रिलोचनाम् ॥ १ ॥ अष्टादशभुजैर्युक्तां सर्वानंदकरोद्यताम् ॥ प्रहसंतीं विशालाक्षीं देवदेवस्य संमुखीम् ॥ इति ध्यात्वा "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसक्षमलवरयीं आनंदभैरव्यै वौषट्" इति संपूज्य हव्यमध्ये अमृतत्वं विचिंतयेत् ॥ तत्र मंत्रः ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतस्वरूपिणि अमृतं स्रावय स्रावय शुक्रादिशापात् सुरां मोचय मोचय मोचिकायै नमः" इति घटोपरि अष्टधा जपित्वा मूलमंत्रं च अष्टधा जपेत् । ततः पावमानः परानंदः पावमानः परो रसः ॥ पावमानपरं ज्ञानं तेन ते पावयाम्य

हम् ॥ १ ॥ इति घटमभिमंत्र्य धेनुमुद्रयामृतीकृत्य मत्स्यमुद्रयाच्छाद्य कवचेनावगुंठ्य चक्रेण संरक्ष्य अस्त्रेण छोटिकाभिर्दशदिग्बंधनं कृत्वा कलशे ध्यायेत् । तद्यथा—देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ ॥ उत्पन्नोऽसि महाकुंभ विष्णुना विधृतः करे ॥ १ ॥ त्वत्तोये सर्वदेवाः स्युः सर्वे वेदाः समाश्रिताः ॥ त्वयि तिष्ठंति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥ २ ॥ शिवस्त्वं च भवाक्षि त्वं विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ॥ आदित्याद्या ग्रहाः सर्वे विश्वेदेवाः सपैतृकाः ॥ ३ ॥ त्वयि तिष्ठंति कलशे यतः कामफलप्रदाः ॥ त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव ॥ ४ ॥ त्वदालोकनमात्रेण भुक्तिमक्तिफलं महत् ॥ सान्निध्यं कुरु भो कुंभ प्रसन्नो भव सर्वदा ॥ ५ ॥ इति ध्यात्वा घटसूक्तं पठेत् । तद्यथा—समुद्रे मथ्यमाने तु क्षीरोदसागरोत्तमे ॥ तत्रोत्पन्नां सुरां ध्यायेत्कन्यकारूपधारिणीम् ॥ १ ॥ अष्टादशभुजां देवीं रक्तांतायतलोचनाम् ॥ आपीनवर्णां स्वर्णाभां बहुरूपां परां सुराम् ॥ २ ॥ सा सर्वे तु सुराः सर्वा देवीनामभयंकरी ॥ या सरा सा रमा देवी यो गंधः स जनार्दनः ॥ ३ ॥ यो वर्णः स भवेद्ब्रह्मा यो मदः स महेश्वरः ॥ स्वादे तु संस्थितः सोमः शब्दसंस्थो हुताशनः ॥ ४ ॥ इच्छायां मन्मथो देवः पाताले तु च भैरवः ॥ घटो ब्रह्मा रसो विष्णुर्बिंदवो रुद्र एव च ॥ ५ ॥ हुंकार ईश्वरः प्रोक्तो व्योमादेस्तु सदाशिवः ॥ घटमूले स्थितो ब्रह्मा घटमध्ये तु माधवः ॥ ६ ॥ घटकंठे नीलकंठो घटाग्रे सर्वदेवताः ॥ लघ्वी हि वारुणी देवी महामांसचरुप्रिये ॥ ७ ॥ सर्वविद्या तु या देवी सुरादेवि नमोऽस्तु ते ॥ अनेन घटसूक्तेन द्रव्यशुद्धिः प्रजायते ॥ ८ ॥ एवं घटसूक्तं पठित्वा द्रव्यशुद्धिं भावयन् कलशे प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् । तद्यथा—करेणाच्छाद्य ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं अमुकदेव्या आधारसहितकलशेऽस्मिन् अग्निसूर्यसोमकलानां प्राणा इह प्राणाः १ ॥ ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं अमुकदेव्या अस्मिन्कलशे जीव इह स्थितः २ ॥ ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं अमुकदेव्या अस्मिन्कलशे सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुर्जिह्वाश्रोत्रघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा ३ ॥ इति कलशे प्राणं प्रतिष्ठाप्य गंधादिभिः संपूज्य कलशे बालिं दद्यात् । तद्यथा—कुंभसमीपे रक्तचंदनासिंदूरकुंकुमान्येकत्र मेलयित्वा

तेन त्रिकोणवृत्तचतुरस्रं मंडलं कृत्वा 'तत्र सर्वपथिकदेवेभ्यो नमः' इति गंधादिभिः संपूज्य तदुपरि द्रव्यशुद्धिमीनमुद्रान्वितं बलिं निधाय तत्त्वमुद्रया बलिमुत्सृज्य तं बलिं वामपाणिना कलशोपरि त्रिधा परिभ्राम्य मूलमुच्चरन् पूजाबाह्ये निक्षिपेत् । इति सुधाकलशस्थापनम् । अथ स्वीकारः ॐ–सिद्धाढ्यां शिवगेहिनीं करलसत्पाशांकुशां भैरवीं भक्ताभीष्टवरप्रदां सुकुशलां संसारबंधच्छिदम् ॥ पीयूषाम्बुधिमन्थनोद्भवरसां संविद्विलासां परां वीराराधितपादुकां सुविजयां ध्यायेज्जगन्मोहिनीम् ॥ इति ध्यात्वा ॐ–संविदे ब्रह्मसंभूते ब्रह्मपुत्रि सदाऽनघे ॥ भैरवानंदतृप्त्यर्थं पवित्रा भव सर्वदा ॥ ॐ ब्राह्मण्यै नमः स्वाहा १ ॥ ॐ–सिद्धमूलक्रिये देवि हीनबोधप्रबोधिनी ॥ राजप्रजावशंकरि शत्रुकंठनिषूदिनि ॥ ऐं क्षत्रियायै नमः स्वाहा २ ॥ ॐ–ज्ञानेन्धनप्रदीप्ताग्निज्वालाग्निज्ञानरूपिणी ॥ आनन्दस्यागमं प्रीतिं सम्यग् ज्ञानं प्रयच्छ मे ॥ ह्रीं वैश्यायै नमः स्वाहा ३ ॥ ॐ–नमस्यामि नमस्यामि योगमार्गप्रदर्शिनि ॥ त्रैलोक्यविजये मातः समाधिफलदा भव॥ क्लीं शूद्रायै नमः स्वाहा ४ ॥ इत्येतैर्मंत्रैः संप्रोक्ष्य "ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतमाकर्षयाकर्षय सिद्धिं देहि सर्वं मे वशमानय स्वाहा" इति मंत्रेणाभिमंत्र्य "ॐ ह्रां ह्रीं लं अः अं डं एं महाघोरेशाय नमः" इत्यनेन संगृह्य मूलमंत्रं सप्तवारं जपित्वा तन्मध्ये स्वेष्टदेवीमावाह्य धेनुमुद्रां योनिमुद्रां च प्रदर्श्य स्वधादेवीं प्रार्थयेत् । तथा च–संविद्देवि गरीयसी गुणमयी वैगुण्यविध्वंसिनी मायामोहमदान्धकारशमनी तापत्रयोन्मूलिनी ॥ वाग्देवी वदनांबुजैकरसिका संबोधिनी दीपिका ब्रह्मज्ञानविवेकसिद्धविजया विज्ञानमूर्त्यै नमः ॥ १ ॥ संविदासवयोर्मध्ये संविदेव गरीयसी ॥ भयनाशाय निर्गंधा विख्याता मोदकारिणी ॥ २ ॥ इति स्तुत्वा मानसोपचारैः संपूज्य 'ऐं गुरुपादुकाभ्यो नमः' इति मंत्रेण ब्रह्मरंध्रे श्रीगुरुं त्रिधा तर्पयित्वा मूलेन हृत्कमले स्वेष्टदेवीं पंचधा तर्पयित्वा ततः ॐ आत्मतत्त्वेन आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ॥ १ ॥ ऐं विद्यातत्त्वेन विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा ॥ २ ॥ ऐं शिवतत्त्वेन शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ॥ ३ ॥ मूलमुच्चार्य्य सर्वतत्त्वेन सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ॥ ४ ॥ ऐं वद वद वाग्वादिनि मम जिह्वाग्रे स्थिरा भव सर्वसत्त्ववशंकरि स्वाहा । इति मुखेन जठराग्नौ जुहुयात् मूलमंत्रेण सर्वं पिबेत् । इति सुधाकुंभस्थापनम् ॥ अथ सांबकलशस्थापनम् ।

देवीदक्षिणतः त्रिकोणमंडलं कृत्वा जलेन प्रोक्ष्य त्रिकोणांतर्मायां (ह्रीं) विलिख्य ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै नमः इति मन्त्रेण संपूज्य मूलेन फट् इति मन्त्रेण त्रिपदाधारं प्रक्षाल्य त्रिकोणमध्ये संस्थाप्य मूलेन नमः इति पूजयेत् । ततः सुदर्शनायास्त्राय फट् इति मन्त्रेण ताम्रादिकलशं प्रक्षाल्य आधारोपरि हस्तद्वयेन संस्थाप्य रक्तवस्त्रमाल्यादिना भूषयित्वा मूलेन नमः इति मन्त्रेण संपूर्य ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छेह तिष्ठ इति वरुणमावाह्य तन्मध्ये स्वेष्टदेवीं ध्यात्वा गन्धाक्षतपुष्पैः संपूजयेत् । इति सांबकलशस्थापनम् ॥

॥ अथ घण्टास्थापनम् ॥ देवीदक्षिणतः पूर्ववत् घंटां संस्थाप्य नादं कृत्वा पूजयेत् । तद्यथा—ॐ भूर्भुवः स्वः गरुडाय नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि इत्यावाह्य 'जगद्ध्वनिमन्त्रमातः स्वाहा' इति मन्त्रेण घंटास्थितगरुडघंटां संपूज्य गरुडमुद्रां च प्रदर्शयेत्। इति घंटास्थापनम् ॥ इति घंटां संस्थाप्य गन्धाक्षतपुष्पादीनि च पूजोपकरणानि स्वदक्षिणपार्श्वे संस्थाप्य मूलेन नमः इति जलेन प्रोक्ष्य "ॐ शताभिषेके शताभिषेके पदे हुं फट् स्वाहा ॥ ॐ पुष्पकेतुराजार्हत् पुष्पे पुष्पे महापुष्पे सुपुष्पे पुष्पसंभवे पुष्पचयावकीर्णे हुँ फट् स्वाहा" इति पुष्पाण्यभिमंत्र्य अन्यानि पूजावस्तूनि सर्वाणि सामान्यार्घ्योदकेनाभिषिंच्य धेनुमुद्रामत्स्यमुद्रे दर्शयित्वा पुष्पाणि शुद्धानि विभाव्य जलार्थे बृहत्पात्रं व्यंजनं छत्रादर्शचामराणि च स्ववामे संस्थाप्य अखंडदीपस्थापनं कुर्य्यात् ॥

अथाखंडदीपस्थापनम् ॥ देवदक्षिणतः घृतदीपं वामे तैलदीपं च स्थापयेत् । तद्यथा—दीपपात्रे मोघृतेन तैलेन वा संपूर्य मंत्रवर्णतंतुभिः वर्तिं निक्षिप्य प्रणवेन प्रज्वाल्य सुदर्शनमंत्रेण घृतदीपं पाशुपतास्त्रमंत्रेण तैलदीपं च पूजयेत् । सुदर्शनमंत्रो यथा—ॐ रां रीं रूं रैं रौं रः ॐ सहस्रार हुं फट् स्वाहा । पाशुपतास्त्रमंत्रो यथा—ॐ श्लीं पशु हुं फट् स्वाहा इति मंत्रेण गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य हस्तद्वयेन दीपशिखां स्पृष्ट्वा मंत्रं पठेत् । तत्र मंत्रः—ॐ घोराय घोरतराय महारौद्राय वीरभद्राय ज्वालामालिने सर्वदुष्टोपसंहर्त्रे हुं फट् स्वाहा । इति [illegible] पश्चा[illegible]जसात्मानं समर्प्य चित्तशोधनं कुर्य्यात् । तद्यथा—ॐ हुं फट् स्वाहा इति मुखे । ॐ रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहेति हृदि । [illegible] विधाय ॐ इति मंत्रेण चंदनपुष्पाणि कराभ्यां मर्दयित्वा पुष्पाक्षतानादाय " ते सर्वे विलयं यांतु ये मां हिंसं[illegible]

...सकाः ॥ मृत्युरोगभयक्लेशाः पतंतु रिपुमस्तके ॥ १ ॥" इति मंत्रेण ऐशान्यां दिशि दूरतः पुष्पं क्षिप्त्वा हस्तौ प्रक्षाल्याचम्य कूर्म मुखे स्वनामाक्षरस्थितिकोष्ठे वा दीपं संस्थापयेत् । इत्यखंडदीपस्थापनम् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा पटलमार्गेण पीठ मध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् ॥ अथ प्राणप्रतिष्ठाप्रयोगः ॥ देशकालौ संकीर्त्य ममामुकदेव्या नूतनयंत्रे मूर्तौ वा प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये । इति संकल्प्य प्रतिष्ठां कुर्यात् । तद्यथा—ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुःसामानि छंदांसि क्रियामयवपुःप्राणाख्या देवता आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकं अस्य नूतनयंत्रस्य मूर्तेर्वा प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः । इति जलं निक्षिप्य करेणाच्छाद्य ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं अस्य अमुकदेवीसपरिवारयंत्रस्य प्राणा इह प्राणाः ॥ १ ॥ पुनः ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं अस्य अमकदेवीसपरिवारयंत्रस्य जीव इह स्थितः ॥ २ ॥ पुनः ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं अस्य अमुकदेवीसपरिवारयंत्रस्य सर्वेन्द्रियाणि त्विह स्थितानि ॥ ३ ॥ पुनः ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं अमकदेवीसपरिवारयंत्रस्य वाङ्मनस्त्वक्चक्षुश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा ॥ ४ ॥ इति प्राणं प्रतिष्ठाप्य 'यः प्राणतो निमिषतो महित्वे विधेम इति मन्त्रिति' त्रिवारं पठेत् । मनोजूतिर्जुषता० सुप्रतिष्ठा प्रतिष्ठा । इत्युक्त्वा संस्कारसिद्धये पंचदशप्रणवावृत्तीः कृत्वा अनेन अमुकदेव्या सपरिवारयंत्रस्य गर्भाधानादिपंचदशसंस्कारा न्संपादयामि । इति वदन् 'ॐ यंत्रराजाय विद्महे महायंत्राय धीमहि ॥ तन्नो यंत्रः प्रचोदयात् " इति दशधाऽभिमंत्र्य मूलदेवतां ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूजयेत् ॥ अथ मानसोपचारपूजा ॥ मूलाधारे ध्वजाधो गुदोर्ध्वे चतुष्कोणपत्रे वं शं षं समिति सहिते प्रसुप्तभुजगा कारां स्वयंभूलिंगवेष्टिनीं ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् । ध्यायेत्कुंडलिनीं सूक्ष्मां मूलाधारनिवासिनीम् ॥ प्रसुप्तभुजगाकारां विद्युत्पटल सन्निभाम् ॥ १ ॥ तामिष्टदेवतारूपां सार्द्धत्रिवलयान्विताम् ॥ कोटिसौदामिनीभासां स्वयंभूलिंगवेष्टिनीम् ॥ २ ॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूजयेत् । तद्यथा—उद्यच्चंदनकुंकुमारुणपयोधाराभिराप्लावितां नानावर्णमणिप्रवालघटितां दत्तां गृहाणांबिके ॥ आमृष्टां

सुरसुंदरीभिरभितो हस्तांबुजैर्भक्तितो मातः सुंदरि भक्तिकल्पलतिके श्रीपादुकामादरात् ॥ ॥ देवेन्द्रादिभिरर्चितं सुरगणैरादाय
सिंहासनं चंचत्कांचनसंचयातिरचितं चारुप्रभाभासुरम् ॥ एतच्चंपककेतकीपरिमलं तैलं मया निर्मितं गंधोद्वर्तनमादरेण तरुणीदत्तं गृहा
णांबिके ॥ २ ॥ पश्चाद्देवि गृहाण शंभुगृहिणि ध्वंसे शिवप्रेयसि गंधद्रव्यसमूहनिर्भरभरं धात्रीफलं निर्मलम् ॥ त्वत्केशान्परिशोध्य
कंकतिकया मंदाकिनीस्रोतसि स्नात्वा प्रोक्षणगंधिकं भवतु ते श्रीसुंदरि त्वन्मुदे ॥ ३ ॥ सुराधिपतिकामिनीकरसरोजनालीधृतां सचंदन
सुकुंकुमागुरुभरेण विभ्राजिताम् ॥ महापरिमलोज्वलां सरसशुद्धकस्तूरिकां गृहाण वरदायिनि त्रिपुरसुंदरि श्रीप्रदे ॥ ४ ॥ गंधर्वामर
किन्नरप्रियतमासंतानहस्ताम्बुजे विस्तारैर्ध्रियमाणमुत्तरतरं काश्मीरजापिंजरम् ॥ मातर्भास्करभानुमंडललसत्कांतिप्रतानोज्ज्वलं चैलं
निर्मलमातनोतु वसनं श्रीसुंदरि त्वन्मुदे ॥ ५ ॥ स्वर्णाकल्पितकुंडले श्रुतियुगे हस्तांबुजे मुद्रिका मध्ये सा रसना नितम्बफलके मंजीर
मंघ्रिद्वये ॥ हारो वक्षसि कंकणौ क्वणरणत्कारौ करद्वंद्वके विन्यस्तं मुकुटं शिरस्यनुदिनं दत्तोन्मुदं श्रूयताम् ॥ ६ ॥ ग्रीवायां धृतकांति
कांतपटलं ग्रैवेयकं सुंदरं सिंदूरं विलसल्ललाटफलके सौंदर्यमुद्राधरम् ॥ राजत्कज्जलमुज्ज्वलोत्पलपलश्रीमोचने लोचने तद्दिव्यौषधि
निर्मितं रचयतु श्रीशांभवि श्रीप्रदे ॥७॥ अमंदतरमंदरोन्माथितदुग्धसिंधूद्भवं निशाकरकरोपमं त्रिपुरसुंदरि श्रीप्रदे ॥ गृहाण मुखमीक्षितुं
मुकुरबिंबमाविद्रुमैर्विनिर्मितमघच्छिदे वलिकरांबुजस्थायिनम् ॥ ८ ॥ कस्तूरीद्रवचंदनागुरुसुधाधाराभिराप्लावितं चंचच्चंपकपाटलादिसुर
भिद्रव्यैः सुगन्धीकृतम् ॥ देवस्त्रीगणमस्तकस्थितमहारत्नादि कुम्भोद्धृतश्चाम्भः शांभवि सम्भ्रमेण विमलं दत्तं गृहाणांबिके ॥ ९ ॥
कह्लारोत्पलनागकेसरसरोजाख्यावलीमालतीमल्लीकैरवकेतकादिकुसुमैरक्ताश्वमारादिभिः ॥ पुष्पैर्माल्यभरेण वै सुरभिभिर्नानारसः
स्रोतसां ताम्राम्भोजनिवासिनीं भगवतीं श्रीसुन्दरीं पूजये ॥ १० ॥ मांसीगुग्गुलचन्दनागुरुरजःकर्पूरशैलेयजैर्माध्वीकैः सुरकुसुमैः
सुरभिवैः सर्पिभिरामिश्रितैः ॥ सौरभ्यस्थितिमंदिरे मणिमये पात्रे भवत्प्रीतये धूपोऽयं सुरमानिनीविरचितः श्रीसुंदरि त्वन्मुदे॥११॥
[illegible] निर्म्मितः ॥ सुवर्णचषकस्थितः सघनसारवर्त्या युतस्तव त्रिपुर

स्फुरत्तु देवि दीपो मुदे ॥१२॥ जातीसौरभनिर्भरं रुचिकरं शाल्योदनं निर्मलं युक्तं हिंगुमरीचजीरसुरभिद्रव्यान्वितैर्व्यंजनैः ॥ पक्वान्नेन सपायसेन मधुना दध्याज्यसंमिश्रितं नैवेद्यं सुरकामिनीविरचितं श्रीसुंदरि त्वन्मुदे ॥ १३ ॥ लवंगकलिकोज्ज्वलं बहुलनागवल्लीदलं सजातिफलकोमलं सघनसारपूगीफलम् ॥ सुधामधुरिमाकुलं रुचिररत्नपात्रस्थितं गृहाण मुखपंकजे स्फुरितमेव तांबूलकम् ॥ १४ ॥ शरच्चभवचंद्रमःस्फुरितचंद्रिकासुंदरं दलत्सुरतरंगिणीललितमौक्तिकाडंबरम् ॥ गृहाण नवकांचनप्रभवदण्डखंडोज्ज्वलं महात्रिपुरसुंदरि प्रकटमातपत्रं महत् ॥ १५ ॥ मातस्ते सुचिरं तनोतु सभगे स्त्रीभिः समांदोलितं शुभ्रं चामरमिंदुकुंदसदृशं प्रस्वेददुःखापहम् ॥ सद्योऽगस्त्यवशिष्ठनारदशुकव्यासादिवाल्मीकिभिः स्वे चित्ते क्रियमाण एव क्रियतां शर्वाणि वेदध्वनिः ॥ १६ ॥ स्वर्गांगनावेणुमृदंगशंखभेरीनिनादैरुपगीयमाना ॥ कोलाहलैराकुलिता तवास्तु विद्याधरीनृत्यकला सुखाय ॥ १७ ॥ देवि भक्तिरसभावितवृत्तं प्रीयतां यदि कुतोऽपि न लभ्यते ॥ तत्रैलोक्यमपि सफलमेकं जन्मकोटिभिरपीह न लभ्यम् ॥ १८ ॥ एतैः षोडशभिः पद्यैरुपचारोपकल्पितैः ॥ यः परां देवतां स्तौति स तेषां फलमाप्नुयात् ॥ इति मानसोपचारपूजनम् ॥ इति मानसोपचारैः संपूज्य पाद्यादिपूजनं कुर्यात् ॥ ॥ अथ पाद्यादिपूजनम् ॥ अक्षतानादाय—आत्मसंस्थामजां शुद्धां त्वामहं परमेश्वरीम् ॥ अरण्यामिव हव्याशं मूर्तावावाहयाम्यहम् ॥ ॥ १ ॥ देवेशि भक्तिसुलभे परिवारसमन्विते ॥ यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावद्देवि इहावस ॥ २ ॥ मूलं पठित्वा भगवति अमुकदेवि इहागच्छ इत्यक्षतान्निक्षिप्य प्रसारितसंहतांगुलीमूलपर्वणोरंगुष्ठयोग आवाहनमुद्रा तां प्रदर्शयेत् । इत्यावाहनम् ॥ १ ॥ तवेयं महिमामूर्तिस्तस्यां त्वां सर्वगां प्रभो ॥ भक्तिस्नेहसमाकृष्टां दीपवत्स्थापयाम्यहम् ॥ मूलं पठित्वा अमुकदेवि इह तिष्ठ इत्यक्षतान्निक्षिप्य पूर्वोक्तामधोमुखमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इति स्थापनम् ॥ २ ॥ ॐ—सर्वान्तर्यामिनी देवि सर्वबीजमये शुभे ॥ स्वात्मस्थायै परं शुद्धमासनं कल्पयाम्यहम् ॥ मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः आसनं समर्पयामि इति पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पद्ममुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इत्यासनम् ॥ ३ ॥ अस्मिन् वरासने देवि सुखासीनेऽक्षरात्मिके ॥ प्रतिष्ठिता भवेः सा त्वं प्रसीद परमेश्वरि ॥ मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः इह प्रतिष्ठिता

भव इति पूर्वोक्तया मुद्रया प्रतिष्ठापयेत् ॥ अनन्या तव देवेशि मूर्तिशक्तिरियं प्रभो ॥ सान्निध्यं कुरु तस्यां त्वं भक्तानुग्रह तत्परे ॥ मूलं पठित्वा अमुकदेवि इह सन्निधेहि इत्यक्षतान्निक्षिप्य उच्छ्रितांगुष्ठमुष्टयोः संयोगात् सन्निधापनीमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इति सन्निधापनम् ॥ ४ ॥ आज्ञया तव देवेशि कृपांभोधे गुणांबुधे ॥ आत्मानंदैकतृप्तां त्वां संरुणद्धि महेश्वरि ॥ मूलं पठित्वा अमुकदेवि इह सन्निरुध्य इत्यक्षतान्निक्षिप्य प्रवेष्टितांगुष्ठमुष्ट्यात्मिकया सन्निरोधिनीमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इति सन्निरोधनम् ॥ ५ ॥ अज्ञानाद्दुर्मनस्त्वाद्वा वैकल्यात्साधकस्य च ॥ मम न्यूनं भवेत्कृत्यं तदप्यभिमुखा भव ॥ मूलं पठित्वा अमुकदेवि इह संमुखा भव इत्यक्षतान्निक्षिप्य उत्तानमुष्टियुगलात्मिकया संमुखीकरणमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इति संमुखीकरणम् ॥ ६ ॥ अभक्तवाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रदूरातिगद्युते ॥ स्वतेजःपंजरेणाशु वेष्टिता भव सर्वतः ॥ मूलं पठित्वा हूँ अमकदेवि अवगुंठिता भव इत्यक्षतान्निक्षिप्य सव्यहस्तमुष्टिदीर्घाधोमुखतर्जन्यात्मिकया अवगुंठनीमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इत्यवगुंठनम् ॥ ७ ॥ ततोऽजलिं बद्ध्वा ॐ—दशपीयूषवर्षिण्या पूरयेद्यज्ञविष्टरम् ॥ मूर्तौ वा यज्ञसंपूर्तौ स्थिरा भव महेश्वरि ॥ इत्यंजल्यात्मिकया मुद्रया प्रार्थयेत् ॥ ८ ॥ ॐ—यस्या दर्शनमिच्छंति देव्यास्स्वाभीष्टसिद्धये ॥ तस्यै ते परमेशान्यै आगतं स्वागतं च मे ॥ मूलं पठित्वा सांगे सायुधे सवाहने सावरणे श्रीअमुकदेवि तव स्वागतम् ॥ इत्यक्षतान्निक्षिप्य प्रसारितांगुल्यधोमुखकरद्वयेन स्वागतमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इति स्वागतम् ॥ ९ ॥ ॐ—कृतार्थोऽनुगृहीतोऽस्मि सफलं जीवितं च मे ॥ आगता देवदेवेशि सुस्वागतमिदं पुनः ॥ मूलं पठित्वा सांगे सायुधे सवाहने सावरणे श्रीअमुकदेवि तव स्वागतम् ॥ इत्यक्षतान्निक्षिप्य ऊर्ध्वमुखीं पूर्वोक्तमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इति सुस्वागतम् ॥ १० ॥ इति सुस्वागतं कृत्वा करौ बद्ध्वा प्रार्थयेत् ॥ स्वागतं देवदेवेशि मद्भाग्यात्त्वमिहागता ॥ प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत्परिपालय ॥ मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः प्रार्थनां समर्पयामि नमस्करोमि ॥ ११ ॥ इति संप्रार्थ्य ततो मूलमंत्रेणाघ्योंदकेन त्रिः संप्रोक्ष्य योनिं महायोनिं च बद्ध्वा खड्गमुण्डाऽभयवरमुद्रां प्रदर्श्य पंचपुष्पांजलींश्च दद्यात् तत्र एकं पादे १। द्वितीयं जानुनि २ । तृतीयं नाभौ ३ चतुर्थं हृदये ४ । मस्तके पंचममिति पुष्पांजलिं

त्वा पाद्यादिपूजनं कुर्य्यात् ॥ (अथ पाद्यादिपूजनम्) ॐ—यद्भक्तिलेशसम्पर्कात्परमानन्दसम्भवः॥ तस्मै ते चरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पये ॥ मूलं पठित्वा अमुकदेव्य नमः पाद्यं समर्पयामि इति पूर्वोक्तपुष्पगन्धोशीररोचनश्यामाकविष्णुक्रांताब्जदूर्वायुतं जलमनामां गुष्ठयोर्योगेन सामान्यार्घोदकेन शंखोदकेन वा पादयोर्दद्यात् ॥ इति पाद्यम् ॥ १ ॥ ॐ—वेदानामपि वेदाय देवानां देवतात्मने ॥ आच मनं कल्पयामीशे शुद्धानां शुद्धिहेतवे ॥ मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः आचमनं समर्पयामि इत्याचमनीयं कनिष्ठाहीनोन्नतसंयुक्तं चतुरंगुलीरूपाचमनमुद्रया चन्दनपुष्पजातीकर्पूरकंकोलल वंगतमालकादिचूर्णसंयुक्तार्घजलं मुखे दद्यात् ॥ इत्याचमनम् ॥ २ ॥ ॐ—सर्वकालष्यहीनायै परिपूर्णसुखात्मने ॥ मधुपर्कमिदं देवि कल्पयामि प्रसीद मे ॥ मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः मधुपर्कं समर्पयामि ॥ संय्युक्ताधोमुख्यनामिकास्पृष्टांगुष्ठात्मिकया मधुघृतशर्करादधिदुग्धसंघातात्मकं मधुपर्कं मुखे दद्यात् ॥ इति मधपर्कम् ॥ ३ ॥ ॐ—उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वापि यस्याः स्मरणमात्रतः ॥ शुद्धिमाप्नोति तस्यै ते पूनराचमनीयकम् ॥ मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः शुद्धाचमनं समर्पयामि ॥ इति पुनराचमनम् ॥ ४ ॥ ॐ—तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम् ॥ तापत्रयविनिर्मुक्तं तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम् ॥ मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः अर्घ्यं समर्पयामि । एषोऽर्घः अमुकदेव्यै स्वाहा । इत्यनेन पठितेन कुशाग्राक्षततिलव्रीहियवाज्यसिद्धार्थपुष्पामिश्रितार्घजलात्मकं देवीशिरसि सर्वांगुलीसंयोगेनार्घ्यं दद्यात् ॥ इत्यर्घ्यम् ॥ ५ ॥ ॐ स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकमातर्म्महाशये ॥ सर्वलोकेषु शुद्धात्मन्ददामि स्नेहमुत्तमम् ॥ मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः इदं हरिद्रादिद्रव्यं तैलं च समर्पयामि इति पठित्वा नमः इत्युक्त्वा उद्वर्तयेत् ॥ इति सुगन्धतैलाद्युद्वर्तनम् ॥ ६ ॥ ॐ—परमानन्दबोधाब्धिनिमग्ननिजमूर्तये ॥ सांगोपांगमिदं स्नानं कल्पयाम्यहमीश्वरि ॥ मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः स्नानं समर्पयामि इति पठित्वा कनिष्ठाहीनदक्षहस्तमुष्टयात्मिकया मुद्रया स्नानीयं दद्यात् ॥ इति स्नानम् ॥ ७ ॥ ॐ—मया चित्रपटच्छन्ननिजगुह्योरुतेजसः ॥ निवारणाय विज्ञानवास ते कल्पयाम्यहम् ॥ मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः वस्त्रं समर्पयामि इत्युक्त्वा उत्तानदक्षिणहस्तांगुष्ठस्पृष्टतन्मध्यमात्मिकया मद्रया रक्तवस्त्रं प्रयोग।।क्तवस्त्रं

वा दद्यात् ॥ इति वस्त्रम् ॥ ८ ॥ ॐ—यामाश्रित्य महादेवो जगत्संहारकस्सदा ॥ तस्यै ते परमेशान्यै कल्पयाम्युत्तरीयकम् ॥ मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि इत्युक्त्वा पूर्वोक्तमुद्राभ्यां यज्ञोपवीतं दद्यात् ॥ इति यज्ञोपवीतम् ॥ ९ ॥ ततो मूलेनाष्टोत्तरसहस्रशतदशान्यतमवारगंधोदकैर्देवीमभिषिंचयेत् ॥ ततः ॐ—स्वभावसुन्दरांगायै नानाशक्त्याश्रिते शिवे॥भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चिते ॥ मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः भूषणानि समर्पयामि इति वाक्येन दक्षहस्तांगुष्ठस्पृष्टानामिकारमिकया मुद्रया भूषणानि दद्यात् ॥ इत्याभूषणम् ॥ १० ॥ ॐ—परमानंदसौभाग्यपरिपूर्णदिगंतरे ॥ गृहाण परमं गंधं कृपया परमेश्वरि ॥ मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः गंधं समर्पयामि इति वाक्येन कर्पूरमिश्रितश्रीखण्डचन्दनं बहुचंदनं च कनिष्ठांगुष्ठसंयोगेन देव्यङ्गे निवेदयेत् ॥ इति गंधम् ॥ ११ ॥ ॐ--अक्षतान् धवलान्देवि स्वर्णरौप्यमयीकृतान् ॥ गृहाण जगदीशाने प्रसीद परमेश्वरि ॥ मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः अक्षतान्समर्पयामि इति वाक्येन सर्वाङ्गुलीभिर्दद्यात् ॥ इत्यक्षताः ॥ १२ ॥ ॐ--तुरीयवनसंभूतं नानागुण्यमनोहरम् ॥ आनंदसौरभं पुष्पं गृह्यतामिदमुत्तमम् ॥ मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमःपुष्पं समर्पयामि वौषट् इति वाक्येन तर्जन्यंगुष्ठयोगेन दद्यात् ॥ इति पुष्पम् ॥ १३ ॥ एवं पुष्पांतं पूजयित्वा देवाज्ञया प्रयोगोक्तावरणपूजां कृत्वा धूपादिपूजनं कुर्यात् ॥ ॥ अथ धूपादिपूजनम् ॥ फडिति धूपपात्रं संप्रोक्ष्य नमः इति गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य पुरतो निधाय (रं) इति वह्निबीजेन उपरि अग्निं संस्थाप्य तदुपरि मूलेन दशांगं दत्त्वा वामहस्तेन घंटां वादयन् दक्षतर्जन्यङ्गुष्ठयोगेन धूपमुद्रया देवतागुणान्कीर्तयन्नाभिदेशतो धूपयेत् तत्र मंत्रः--ॐ—वनस्पतिरसोपेतो गंधाढ्यः सुमनोहरः ॥आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ मूलं पठित्वा सांगायै सपरिवारायै अमुकदेव्यै नमः धूपं समर्पयामि इति धूपं दत्त्वा देव्या वामभागे धूपपात्रं संस्थाप्य शंखाम्बु निक्षिपेत्॥इति धूपः ॥ १४ ॥ततो दीपपात्रं गोघृते

१ यथोत्पन्नमपर्युषितमच्छिद्रं नवं शुभं पुष्पं दद्यात् । अंजलिदाने त्वधोमुखता न दोषाय । श्वेतरक्तजपापुष्पकरवीरतगरजातीकेतकीयूथिका[illegible] [illegible]बिल्वपत्रचंपकनागकेशरमल्लिकाकिंकिणिकाकीनीवर्वराकरक्तपद्मकुन्दमकोकनदबन्धूककेतकवाचान्यतमपुष्पाणि निवेदयेत । अर्कमंदारौ अविहितौ । कुन्दकं मालतीं वर्जयेत । [illegible] नार्पयेत् ॥

नापूर्य मंत्राक्षरसंख्यया तंतुनिर्वर्तिं निक्षिप्य प्रणवेन (ॐ) प्रज्वाल्य घंटां वादयन् नेत्रादिपादपर्यंतं दीपं प्रदर्शयन् मंत्रं पठेत् । तत्र मंत्रः ॐ-सुप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः ॥ सबाह्याभ्यंतरज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ मूलं पठित्वा सांगायै सपरिवारायै अमुक देव्यै नमः दीपं समर्पयामि इति वाक्येन दीपं दत्त्वा देवीदक्षिणे दीपं संस्थाप्य ततः शंखजलमुत्सृज्य मध्यमांगुष्ठलग्नां दीपमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इति दीपः ॥ १५ ॥ ततो देव्या अग्रे देवीदक्षिणतो वा जलेन चतुरस्रं मंडलं कृत्वा स्वर्णादिनिर्मितं भोजनपात्रं संस्थाप्य तन्मध्ये साज्यशर्करापायसादिकं षड्रसोपेतं विविधप्रकारं वा निधाय फट् इति मंत्रेण चक्रमुद्रयाऽभिरक्ष्य ' ॐ ह्रीं नमः ' इति मंत्रेण अर्घ्यजलेन संप्रोक्ष्य मूलेन संवीक्ष्य अधोमुखदक्षिणहस्तोपरि तादृशं वामं निधाय नैवेद्येनाच्छाद्य (यं) इति वायु बीजेन षोडशधा संजप्य वायुना तद्गतदोषान् संशोष्य ततो दक्षिणकरतले तत्पृष्ठलग्नं वामकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य (रं) इति वह्नि बीजेन षोडशवारं संजप्य तदुत्पन्नाग्निना तद्दोषं दग्ध्वा ततो वामकरतले अमृतबीजं विचिंत्य तत्पृष्ठलग्नं दक्षिणकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य (वं) इति सुधाबीजं षोडशवारं संजप्य तदुत्थामृतधारयाप्लावितं विभाव्य मूलेन प्रोक्ष्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य मूलेनाष्टधाभिमंत्र्य गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य देव्यास्योद्गतं तेजः स्मृत्वा वामांगुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृष्ट्वा दक्षिणकरेण जलं गृहीत्वा ॐ--सत्पात्रसिद्धं सुहविर्विविधा नेकभक्षणम् ॥ निवेदयामि देवेशि कृपया त्वं गृहाण तत् ॥ मूलं पठित्वा सांगायै सपरिवारायै सायुधायै सवाहनायै असुकदेव्यै नमः नैवेद्यं समर्पयामि इति भूतले देवीदक्षिणे जलं क्षिप्त्वा वामहस्तेन अनामामूलयोरंगुष्ठयोगेन ग्रासमुद्रां प्रदर्श्य देवीं भुक्तवतीं विभाव्य जलं दद्यात् ॥ इति नैवेद्यम् ॥ १६ ॥ ॐ—समस्तदेवदेवेशि सर्वावासिकरं परम् ॥ अखण्डानन्दसम्पूर्णं गृहाण जलमुत्तमम् ॥ मूलं पठित्वा सांगायै सपरिवारायै सायुधायै सवाहनायै असुकदेव्यै नमः जलं समर्पयामि इति मंत्रेण स्वर्णादिपात्रस्थं कर्पूरादिसुवासितं जलं निवेद्य देव्या तज्जलं प्राशितमिति भावयन् अंतःपटं दद्यात् ॥ इति जलम् ॥ १७ ॥ ततः आचमनमन्त्रेणाचमनं मूलेन गंडूषार्थं जलं च दत्त्वा

प्राणापानसमानोदानव्यानाख्याः पञ्च मुद्राः प्रदर्शयेत् ॥ ॐ—एलालवंगकर्पूरनागवल्लीदलैर्युतम् ॥ पूगभागेरितं देवि ताम्बूलं गृह्यतां नमः ॥ मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः तांबूलं समर्पयामि इति वाक्येन एलालवंगकर्पूरजातीफलादिसंयुतं तमालदलपूगेत्यादि मिश्रितं तांबूलं मुखप्रदेशे तत्त्वमुद्रया दद्यात् ॥ इति तांबूलम् ॥ १८ ॥ इदं फलं मया देवि स्थापितं पुरतस्तव ॥ तेन मे सुफलावाप्तिर्भवे जन्मनि जन्मनि ॥ मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः फलं समर्पयामि॥इति फलम् ॥१९॥ इति धूपादि संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात्॥तत्र मन्त्रः ॐ—नानासुगंधपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च ॥ पुष्पांजलिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि ॥ मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः पुष्पांजलिं समर्पयामि । इति पुष्पांजलिं दत्त्वा ततः स्तुतिपाठेन देवीं स्तुत्वा बद्धांजलिपूर्वकं प्रार्थयेत् ॥ तद्यथा—ॐ—ज्ञानतोऽज्ञानतो वाथ यन्मया क्रियते शिवे ॥ मम कृत्यमिदं सर्वमिति देवि क्षमस्व मे ॥ १ ॥ अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ॥ दासोऽहमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥ २ ॥ अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे ॥ कोऽपरः सहतां लोकं केवलं स्वामिनीं विना ॥ ३॥ भूमौ स्खलित पादानां भूमिरेवावलंबनम् ॥ त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं शिवे ॥ ४ ॥ इति बद्धांजलिपूर्वकं संप्रार्थ्य ततः—यदुक्तं यदि भावेन पत्रं पुष्पं फलं जलम्॥निवेदितं च नैवेद्यं तद्गृहाणानुकंपया॥१॥ इति पठित्वा देवीवामकरे पूजार्पणजलं दत्त्वा मालायाः संस्कारान्कुर्यात् ॥ अथ मालायाः संस्काराः ॥ तत्रादौ कुशोदकसहितैः पंचगव्यैर्मालां प्रक्षाल्य अश्वत्थपत्रैर्नवै रचिते कमले स्थापयित्वा ॐ ह्रीं अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ इत्येतानि मातृकाक्षराणि मूलमंत्रं च मालायां विन्यस्य पुनः पंचगव्येन प्रोक्ष्य ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमोनमः ॥ भवेभवेनातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः॥ १ ॥ इति मंत्रेण शीतजलेन प्रक्षाल्य पुनः ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमः ॥ १ ॥ इति मंत्रेण चंदनागुरुकर्पूरादिसुगंध

१ कनिष्ठानामिकाभ्यां प्राणमुद्रा । २ मध्यमातर्जनीभ्यामपानाख्या । ३ अनामामध्यमाभ्यां समानाख्या । ४ अनामातर्जनीभ्यामुदानाख्या । ५ सर्वांगुलीभिर्व्यानाख्या ।

द्रव्यैर्घर्षयित्वा पुनः "ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ॥ सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ १ ॥" इति मंत्रेण

ता धूपयित्वा पुनः "ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ १ ॥" इति मंत्रेण मालायाश्चंदनं लेपयित्वा

पुनः "ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम् ॥ १ ॥" इति मंत्रेण मेरु

सहितं प्रत्येकमणिं सकृदसकृद्वाऽभिमंत्र्य अस्या मालायाः इति लयः संयोज्य प्राणप्रतिष्ठामंत्रेण प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा पुनः ॐ--माले

माले महामाले सर्वशक्तिस्वरूपिणि ॥ चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥ १ ॥ इति मालां संप्रार्थ्य पुनः ॐ--अविघ्नं

कुरु माले त्वं सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ ॐ ह्रीं मालायै नमः इत्यनेन मालां दक्षिणकरे निधाय हृदये धारयन् स्वेष्टदेवीं ध्यात्वा मध्यमां

गुलिमध्यपर्वणि संस्थाप्य ज्येष्ठाग्रेण भ्रामयित्वा स्वशरीरे कामकलां विभाव्य शिरसि गुरुं ध्यात्वा हृदि देवीं भावयन् जिह्वायां मंत्र

दीपनं विभाव्य तत्प्रभापटले जिह्वामपि दीपरूपां विभाव्य एकाग्रचित्तो मंत्रार्थं स्मरन् यथाशक्ति प्रातःकालमारभ्य मध्यंदिनं यावत्

मूलमंत्रं जपेत्। नित्यसेवने सामान्यजपं कुर्यान्नतु न्यूनाधिकम् । ततो जपांते ॐ--त्वं माले सर्वभूतानां सर्वलोकप्रिया मता ॥ शिवं

कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा ॥ इति मालां शिरसि निधाय ह्रीं सिद्ध्यै नमः इति संपूज्य पुनः प्राणायामन्यासादिकं च

विधाय ततो देवीं पुष्पाक्षतादिभिः संपूज्य पुष्पचंदनाक्षतयुतशंखोदकेन ॐ--गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धि

र्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥ १ ॥ ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुर्यावस्थासु मनसा वाचा कर्मणा

हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वममुकदेव्यै समर्पयामि ब्रह्मार्पणं भवतु । इति देव्या वामकरे जलसमर्पणं

कृत्वा ततो मालां शिरस उच्चार्य ॐ--त्वं माले सर्वदेवानां सर्वसिद्धिप्रदा मता ॥ तेन सत्येन मे सिद्धिं देहि मातर्नमोऽस्तु ते ॥ इति

मालां संपूज्य गोमुखीरहस्ये स्थापयेत् । नाशुचिः स्पर्शयेत् । नान्यस्मै दद्यात् । अशुचिस्थाने न निधापयेत् । स्वयोनिवद् गुप्तां

कुर्यात् । ततो देव्यै पुष्पांजल्यष्टकं दत्त्वा स्तोत्रसहस्रनामकवचादिकं पठित्वा नित्यबलिं कुर्यात् ॥ अथ नित्यबलिदानप्रयोगः ॥

वामे चतुरस्रमंडलं कृत्वा किंचित्पात्रे संस्थाप्य तस्मिन्मांसमाषान्नशाकाज्यपायसापूपकाद्यन्यतमबलिं निधाय फट् इति संप्रोक्ष्य नमः
इत्यभ्यर्च्य यं इति वायुबीजेन द्वादशवारं जप्तेन तद्गतदोषान् संशोध्य वामहस्ततले दक्षहस्तपृष्ठं निवेश्य रं इति वह्निबीजेन षोडशवारं
जप्तेन धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य हुं इत्यवगुंठ्य योनिधेनुमुद्रे दर्शयित्वा तत्त्वमुद्राञ्च प्रदर्श्य ॐ क्रीं श्रीं अमुकदेव्यै स्वाहा एष बलिर्नमः
इत्युत्सृज्य नैर्ऋत्यां दिशि धारयेत् । एष नित्यबलिदानमंत्रः ॥ ततो रात्रौ काम्यबलिर्देयः । तत्र मंत्रस्तु "ॐ पद्मे पद्मे
महापद्मे पद्मावति महायक्षाधिपते मयोपनीतामिमं बलिं गृह्ण गृह्ण गृह्णापय गृह्णापय मम सर्वशांतिं कुरु कुरु परविद्यां चाकृष्या
कृष्य छिंधि ह्रीं हूं स्वाहा" इति मंत्रेण चतुष्पथादिस्थाने पूर्वोक्तशोधनं विधाय तत्त्वमुद्रां प्रदर्श्य मांसाद्यन्यतमबलिं दद्यात् ॥
इति नित्यबलिदानप्रयोगः ॥ ततोऽधिकभक्त्युत्तरशक्तिकालादिलाभे चतुर्थ्यंतैः प्रत्येकैः सहस्रनामस्तोत्रांतर्गतनामभिः पुष्पादिना
संपूजयेत् ॥ अथ छागादिबलिदानप्रयोगः ॥ अर्द्धरात्रे छागाद्यं पंचाङ्गं[1] सर्वलक्षणसंयुतमानीय ॐ--वाराही यमुना गंगा करतोया
सरस्वती ॥ कावेरी चन्द्रभागा च सिंधुभैरवसागराः ॥ १ ॥ अजस्नाने महेशानि सान्निध्यमिह कल्पय ॥ पशुपाशविनाशाय हेमकूट
स्थिताय च ॥ २ ॥ पराय परमेष्ठिने हुंकाराय च मूर्तये ॥ इति पठित्वा मूलमंत्रेण स्नापयित्वा सिंदूरमाल्यादिभिरलंकृत्य देवस्याग्रे
निधाय ततो गंधमिश्रिताघ्योदकेन मूलेन त्रिः संप्रोक्ष्य कृतांजलिः प्रार्थयेत् ॥ ॐ--छाग त्वं बलिरूपेण महाभाग्यादुपस्थितः ॥ प्रण
मामि सदा भक्त्या रूपिणं बलिरूपिणम् ॥ १ ॥ चण्डिकाप्रीतिकामस्य दातुरापद्विनाशिने ॥ चण्डिकाबलिरूपाय बले तुभ्यं नमोनमः
॥ २ ॥ यज्ञार्थे पशवः सृष्टाः स्वयमेव स्वयंभुवा ॥ अतस्त्वां घातयिष्यामि तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः ॥ ३ ॥ इति संप्रार्थ्य पार्श्वपूजां
कुर्य्यात् । पार्श्वे ॐ जयंत्यै नमः १ ॥ ॐ मंगलायै नमः २ ॥ ॐ काल्यै नमः ३ ॥ ॐ भद्रकाल्यै नमः ४ ॥ ॐ मानस्तोकायै
नमः ५ । ॐ विजयायै नमः ६ । ॐ अपराजितायै नमः ७ । मध्ये ॐ अनंतायै नमः ८ । इति संपूज्य ततः प्रत्यंगं पूजयेत्

१ तदर्घ्यामिशेषे विजयार्थं नृपोत्तमः ॥ पंचाङ्गलक्षणोपेतं गंधपुष्पाक्षतार्चितम् ॥

तद्यथा–ॐ रुधिरवदनायै नमः इति ललाटे १। ॐ चण्डिकायै नमः इति कपोले २। ॐ चन्द्रार्काभ्यां नमः इति चक्षुषोः ३।
ॐ बृहस्पतये नमः इति कर्णयोः ४। ॐ सरस्वत्यै नमः इति नासायाम् ५। ॐ उग्रदंतिकायै नमः इति जिह्वायाम् ६। ॐ महा
दंतिकायै नमः इति ग्रीवायाम् ७। ॐ पृथिव्यै नमः इति उदरे ८। ॐ धर्म्माय नमः इति जंघाचतुष्टये ९। इति संपूज्य ततो जलं गृहीत्वा
"ॐ ह्रीं श्रीं वरुणमण्डलाधिष्ठितविग्रहायै पशुरूपचण्डिकायै इमं पशुं प्रोक्षामि स्वाहा" इति पशुं संप्रोक्ष्य ततस्तिलकुशजलान्यादाय देशकालौ
संकीर्त्य अमुकगोत्रः श्रीअमुकशर्म्माहं छागसमसंख्यकदशवर्षावच्छिन्नश्रीमदमुकदेव्याः प्रीतिकामोऽहमेताञ्छागान् वह्निदैवतान् भग
वत्यै अमुकदेव्यै तुभ्यं घातयिष्ये इति संकल्प्य खड्गपूजां कुर्यात्। तथाच खड्गं पुरतो निधाय ॐ–कृष्णं पिनाकपाणिं च काल
रात्रिस्वरूपिणम्॥ उग्रं रक्तास्यनयनं रक्तमाल्यानुलेपनम्॥ १॥ रक्तांबरधरं चैव पाशहस्तं कुटुंबिनम्॥ पिबमानं च रुधिरं भुंजानं
क्रव्यसंहतिम्॥ २॥ इति खड्गं ध्यात्वा "ॐ कालिकालि वज्रेश्वरि लोहदण्डाय नमः" इति मंत्रेण गंधादिभिस्त्रिः संपूज्य तस्योपरि
सिंदूरादिना ह्रींकारं विलिख्य खड्गाय नमः इति संपूज्य ततो बलिकर्णे बलिगायत्रीं श्रावयेत्। तत्र मंत्रः–ह्रीं बलिरूपाय विद्महे
देवीप्रियाय धीमहि॥ तन्नः पशुः प्रचोदयात्॥ इति बलिकर्णे बलिगायत्रीं श्रावयित्वा खड्गं हस्तेनादाय प्रार्थयेत्। ॐ–असिर्विश
सनः खड्गस्तीक्ष्णधारो दुरासदः॥ श्रीगर्भो विजयश्चैव धर्मपाल नमोऽस्तु ते॥ १॥ इत्यष्टौ तव नामानि स्वयमुक्तानि वेधसा॥
नक्षत्रं कृत्तिका ते तु गुरुर्देवो महेश्वरः॥ २॥ रोहिणी च शरीरं ते धाता देवो जनार्दनः॥ पिता पितामहो देवस्त्वं मां पालय
सर्वदा॥ ३॥ नीलजीमूतसंकाशस्तीक्ष्णदंष्ट्रः कृशोदरः॥ भावशुद्धोऽमर्षणश्च अतितेजास्तथैव च॥ ४॥ इयं येन धृता क्षोणी हतश्च
महिषासुरः॥ तीक्ष्णधाराय शुद्धाय तस्मै खड्गाय ते नमः॥ चण्डिकारसनाबुद्ध्या एकघाते तु घातयेत्॥ ५॥ इति खड्गं संप्रार्थ्य
रे वज्रासुरनाशाय देवकार्य्यार्थतत्परः॥ पशुश्छेद्यः स्वयं शीघ्रं खड्गनाथ नमोऽस्तु ते॥ १॥ यज्ञार्थे पशवः सृष्टा यज्ञार्थे पशुघात
नम्॥ अतस्त्वां घातयिष्यामि तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः॥ २॥ इति पठित्वा॥ "पशुपाशाय विद्महे विप्रकर्णाय धीमहि॥ तन्नश्छागः

प्रचोदयात् ॥ मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः इमं छागबलिं तुभ्यमहं प्रददे ॥ इति बलिस्कंधे खड्गं दत्त्वा सकलं रुधिरं मुंडं च देव्यग्रे कृत्वा समभागेन संपूर्णं परमं कविर्दर्पयेत् । मांससमीपजं दीपं क्रौं क्रौं नमोनमः अनेन मुण्डे मुण्डे दीपं दद्यात्ततस्तर्प्पयेदेभिः ॥ ॐ चामुंडां तर्पयामि नमः इति पूर्वे १ ॥ ॐ योगिनीं तर्पयामि नमः इति दक्षिणे २ ॥ ॐ डाकिनीं तर्पयामि नमः इति पश्चिमे ३ । ॐ भैरवीं तर्पयामि नमः इति उत्तरे ४ । ॐ विदारिकां तर्पयामि नमः इति आग्नेय्याम् ५ । ॐ पापराक्षसीं तर्पयामि नमः इति नैर्ऋत्ये ६ । ॐ पूतनां तर्पयामि नमः इति वायव्ये ७ । ॐ कालिकां तर्पयामि नमः इत्यैशान्ये ८ । अद्य दशवर्षावच्छिन्नश्रीअमुकदेव्याः प्रीतिकाम इमं छागरुधिरं समुण्डं विष्णुदैवतं भगवत्यै श्रीअमुकदेव्यै तुभ्यमहं संप्रददे इति समर्पणं कुर्य्यात् ॥ इति छागबलिः ॥ अथ कुमारीसुवासिनीपूजाप्रयोगः ॥ रुद्रयामले—एकवर्षा भवेत्संध्या द्विवर्षा च सरस्वती ॥ त्रिवर्षा च त्रिधामूर्तिश्चतुर्वर्षा तु कालिका ॥ १ ॥ सुभगा पंचवर्षा तु षड्वर्षा च उमा भवेत् ॥ सप्तभिर्मालिनी प्रोक्ता अष्टवर्षा च कुब्जिका ॥ २ ॥ नवभिः कालसंदर्भा दशाभिश्चापराजिता ॥ एकादशा तु रुद्राणी द्वादशाब्दैस्तु भैरवी ॥ ३ ॥ त्रयोदशा महालक्ष्मीर्द्विसप्ता पीठनायिका ॥ क्षेत्रज्ञा पंचदशाभिः षोडशैश्चाम्बिका भवेत् ॥ ४ ॥ एवं क्रमेण संपूज्य यावत्पुष्पं न विद्यते ॥ प्रतिपदादिपूर्णांतं वृद्धिभेदेन पूजयेत् ॥ ५ ॥ महापर्वसु सर्वेषु विशेषाश्च पवित्रके ॥ महानवम्यां देवेशि कुमारीश्च प्रपूजयेत् ॥ ६ ॥ अष्टोत्तरशतं वापि एकां वाऽपि प्रपूजयेत् ॥ पूजिताः प्रतिपूज्यान्ते निर्दहन्त्यवमानिताः ॥ ७ ॥ कुमारी योगिनी साक्षात्कुमारी परदेवता ॥ असुरा अष्ट नागाश्च ये ये दुष्टग्रहा अपि ॥ ८ ॥ भूतवेतालगन्धर्वडाकिनीयक्षराक्षसाः ॥ याश्चान्या देवताः सर्वा भूर्भुवः स्वश्च भैरवाः ॥ ९ ॥ पृथिव्यादीनि सर्वाणि ब्रह्मांडं सचराचरम् ॥ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः ॥ १० ॥

१ ब्राह्मणीं सर्वकार्येषु जयार्थे नृपवंशजाम् । लाभार्थे वैश्यवंशोत्थां सुतार्थे शूद्रवंशजाम् ॥ दारुणे चांत्यजातां तु पूजयेद्विधिना नरः ॥ इत्युक्ता ब्राह्मणाः ॥ वर्जयेत्सर्वकार्येषु दासीगर्भसमुद्भवाम् ॥

सन्तुष्टं सर्वतुष्टं स्यात्तु कन्यां प्रपूजयेत् ॥ अथ पूजनम् ॥ पूजादिनात्पूर्वदिने गन्धपुष्पाक्षतादिभिर्मूलेन भगवति कुमारि पूजार्थे त्वं मया निमंत्रितासि मां कृतार्थयेति निमंत्रितां प्रातराहूय प्रदक्षिणीकृत्योद्वर्त्तनाद्यैः स्नापयित्वा गन्धतैलेन शरीरं संस्कुर्य्यात् । केशं परिष्कृत्य ललाटे सिन्दूरेण नयनयोः कज्जलेन सर्वाङ्गे चन्दनेन वस्त्रालंकारैश्चाभूष्य पादौ प्रक्षाल्य अष्टदलपीठोपरि समावेश्य तांबूलेन मुखं संशोध्य देशकालौ स्मृत्वाऽमुकफलसिद्ध्यर्थममुककर्मणि अमुकदेव्याः प्रीत्यर्थं कुमारीणां पूजनं करिष्ये इति संकल्प्य न्यासं कुर्य्यात् ॥ ॐ क्रां कुलकुमारिके हृदयाय नमः १ । ॐ क्रीं कुलकुमारिके शिरसे स्वाहा २ । ॐ क्लूं कुलकुमारिके शिखायै वषट् ३ । ॐ क्रैं कुलकुमारिके कवचाय हुम् ४ । ॐ क्रौं कुलकुमारिके नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ क्रः कुलकुमारिके अस्त्राय फट् ६ । इति हृदयादिषडङ्गन्यासः । एवमेव कराङ्गन्यासं कुर्य्यात् । एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् । ॐ–शंखकुन्देन्दुधवलां द्विभुजां वरदाभयाम् ॥ चन्द्रमध्यमहांभोजभावहावविराजिताम् ॥ १ ॥ एवं ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य पुनर्ध्यात्वा गंधादिपूजनं कुर्य्यात् । ह्रीं कुलकुमारिकायै नमः इदं पाद्यम् एवमिदमर्घ्यमिदमाचमनीयमिदमनुलेपनमेतेऽक्षता एतानि पुष्पाणि एष धूपः एष दीपः इदं नैवेद्यमिदं तांबूलमिति पूजयित्वा षडंगन्यासविधिना षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः ॐ ह्रीं हंसः कुलकुमारिकाश्रीपादुकां पूजयामि इति पुष्पांजलित्रयं च दत्त्वा तत्राङ्गे स्वेष्टदेवीमावाह्य च पूजयेत् ॥ ततः षोडशनामभिः षोडशवारं पूजयेत् । तद्यथा–ॐ ऐं संध्यायै नमः १ ॥ ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः २ ॥ ॐ ऐं त्रिमूर्त्यै नमः ३ ॥ ॐ ऐं कालिकायै नमः ४ ॥ ॐ ऐं सुभगायै नमः ५ ॥ ॐ ऐं उमायै नमः ६ ॥ ॐ ऐं मालिन्यै नमः ७ ॥ ॐ ऐं कुब्जिकायै नमः ८ ॥ ॐ ऐं कालसंकर्षिण्यै नमः ९ ॥ ॐ ऐं अपराजितायै नमः १० ॥ ॐ ऐं रुद्राण्यै नमः ११ ॥ ॐ ऐं भैरव्यै नमः १२ ॥ ॐ ऐं महालक्ष्म्यै नमः १३ ॥ ॐ ऐं पीठनायिकायै नमः १४ ॥ ॐ ऐं क्षेत्रज्ञायै नमः १५ ॥ ॐ ऐं चर्चिकायै नमः १६ ॥ इति संपूज्य कौमार्या नवनामभिः पूजयेत् । तद्यथा–ॐ ह्रीं कौमार्य्यै नमः १ ॥ ॐ ह्रीं त्रिपुरायै नमः २ ॥ ॐ ह्रीं कल्याण्यै नमः ३ ॥ ॐ ह्रीं रोहिण्यै नमः ४ ॥ ॐ ह्रीं कामिन्यै नमः ५ ॥ ॐ ह्रीं चंडिकायै नमः ६ ॥ ॐ ह्रीं शांकर्यै

नमः ७ ॥ ॐ ह्रीं दुर्गायै नमः ८ ॥ ॐ ह्रीं सुभद्रायै नमः ९ ॥ इति नामाभिः संपूज्य मूलेन पुष्पांजलित्रयं दत्त्वा प्रदक्षिणीकृत्य प्रणमेत् । तत्र मंत्रो यथा-ॐ–जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ॥ पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते ॥१॥ त्रिपुरां त्रिगुणां धात्रीं ज्ञानमार्गस्वरूपिणीम् ॥ त्रैलोक्यवंदितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम् ॥ २ ॥ कालात्मिकां कालभीतां कारुण्यहृदयां शिवाम् ॥ कारुण्यजननीं नित्यां कल्याणीं पूजयाम्यहम् ॥ ३ ॥ अणिमादिगुणोपेतामकारादिस्वरात्मिकाम् ॥ शक्तिभेदात्मिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम् ॥ ४ ॥ कलाधारां कलारूपां कालचण्डस्वरूपिणीम् ॥ कामदां करुणाधारां कामिनीं पूजयाम्यहम् ॥ ५ ॥ चण्डधारां चण्डमायां चण्डमुण्डविनाशिनीम्॥प्रणमामि च देवेशीं चण्डिकां पूजयाम्यहम् ॥६॥ सुखानंदकरीं शांतां सर्वदेवनमस्कृताम्॥ सर्वभूतात्मिकां देवीं शाङ्करीं पूजयाम्यहम् ॥७॥दुर्गमे दुस्तरे चैव दुःखत्रयविनाशिनीम्॥ पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गे नमाम्यहम्॥८॥ सुंदरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम् ॥ सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां प्रणमाम्यहम् ॥९॥ इति प्रणमेत्॥ इति कुमारीसुवासिनीपूजनम्॥ अथ आरार्तिक्यम् ॥ कस्मिंश्चित्स्वर्णादिभाजने गोधूमचूर्णपिष्टे कर्पूरमिश्रिता एकादश श्वेतवर्तिकाः प्रज्वाल्य धूपदानविध्युक्तप्रकारेण प्रोक्षणादिकं कृत्वा घंटां वादयन् ॐ–कर्पूरवर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं च यत् ॥ आरार्तिकमिदं दिव्यं गृहाण जगदीश्वरि ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा इदमारार्तिक्यं साङ्गायै सायुधायै सबलवाहनायै सपरिवारायै सावरणायै श्रीअमुकदेव्यै नमः इति पठन् नेत्रप्रदेशे दशधा भ्रामयित्वा पुष्पांजलित्रयं दत्त्वा योनिमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इति आरार्तिक्यम्॥ ततश्छत्रचामरे दर्शयित्वा पुष्पांजलिं गृहीत्वा श्लोकचतुष्टयं पठेत् । तथा च–बुद्धिः शरासने क्लृप्ता दर्पणं मंगलानि च ॥ मनोवृत्तिर्विचित्रा ते नृत्यरूपेण कल्पिता ॥ १ ॥ ध्वनयो गीतरूपेण शब्दवाद्यप्रभेदतः ॥ छत्राणि तव पद्मानि कल्पितानि मया प्रभो ॥ २ ॥ सुषुम्णा ध्वजरूपेण प्राणाद्या वा शरात्मना ॥ अहंकारो गजत्वेन वेगः क्लृप्तो रथात्मना ॥ ३ ॥ इन्द्रियाण्यश्वरूपाणि शब्दादीनथ वर्त्मना ॥ मनः प्रग्रहरूपेण बुद्धिः सारथिरूपतः॥सर्वमन्यन्मया क्लृप्तं तवोपकरणात्मना ॥ ४ ॥ इति पुष्पांजलिं च दत्त्वा इतः पूर्वपापबुद्धे देवधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा हस्ताभ्यां

पञ्च्यामुद्रेण शिक्षा यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्प्पणं भवतु स्वाहा मदीयं च सकलं अमुकदेव्यै ते समर्पये तव इति देव्यै समर्प्य प्राणायामादिकं कृत्वा पुष्पाक्षतादिभिः संपूज्य क्षमापयेत् ॥ क्षमापनमंत्रो यथा—अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रांत्या यन्न्यूनमधिकं कृतम् ॥ विपरीतं च तत्सर्वं क्षमस्व परमेश्वरि ॥ १ ॥ मंत्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं सुरेश्वरि ॥ संपूजिता मया देवि तस्मात्त्वं वरदा भव ॥ २ ॥ आवाहनं च पूजां च त्वन्माहात्म्यं जपं तथा ॥ विसर्जनं न जानामि कालिके त्वं क्षमस्व मे ॥ ३ ॥ यदक्षरपदभ्रष्टं स्वरव्यंजनवर्जितम् ॥ तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ ४ ॥ यस्याः स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ॥ न्यूनं संपूर्णतां याति प्रसीद परमेश्वरि॥५॥कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानंदविग्रहे॥ गृहाणार्च्चामिमां सर्वां प्रसीद परमेश्वरि॥६॥ इत्येतैः पुष्पांजलिना क्षमापयेत् । ततो योनिमुद्रां बद्ध्वा प्रणम्य देव्याश्चोच्छिष्टं तदुच्छिष्टभोजिने विनिवेदयेत्॥तद्यथा—किंचिदुच्छिष्टं गृहीत्वा ऐशान्यां दिशि ह्रीं चण्डेश्वर्य्यै नमः इति चण्डेश्वरीं संपूज्य—ॐ—चण्डेश्वरि महादेवि निर्म्माल्यैश्चन्दनादिभिः ॥ लेह्यचोष्यान्नपानादिनिर्माल्यस्त्रग्विलेपनैः ॥ निर्माल्यभोजनं तुभ्यं ददामि श्रीशिवाज्ञया ॥ १॥ इति मंत्रेण निर्माल्यं दद्यात् । ततस्तत्रैवोच्छिष्टचाण्डालिनीं संपूज्य तदुच्छिष्टनैवेद्यासत्रमुच्छिष्टचाण्डाल्यै दद्यात् । ततोऽधिकं देव्याश्चोच्छिष्टनैवेद्यं शिरसि धृत्वा नैवेद्यादिकं देवभक्तेषु विभज्य स्वयं भुक्त्वा विसर्जनं कुर्य्यात्॥ अथ विसर्जनम्॥ गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं परमेश्वरि॥पूजाराधनकाले च पुनरागमनाय च॥इति पठित्वा संहारमुद्रया देवीं विसृज्य स्वहृदये स्थापयेत् । तथा च—तिष्ठतिष्ठ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वरि ॥ यत्र ब्रह्मादयो देवाः सर्वे तिष्ठंति मे हृदि ॥ १॥ इति हृदयकमले हस्तं दत्त्वा देवीं संस्थाप्य मानसोपचारैः संपूज्य स्वात्मानं देवरूपं भावयन् यथासुखं विहरेत् । एवमेव विधिना जपं समाप्य जपांते तद्दशांशतो नित्यहोमं कुर्य्यात् ॥ अथ नित्यहोमप्रकारः ॥ कुंडे स्थंडिले वा मूलेन वीक्ष्य अस्त्रेण प्रोक्षणताडने कृत्वा कुशैराच्छाद्य व्याहृतित्रयमुच्चार्य्य वह्निमानीय तिस्रो रेखाः संलिख्य अस्त्रमंत्रेण नैर्ऋत्ये क्रव्यादं संपरित्यज्य मूलेनाभिमंत्र्य (वं) इति धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्यास्त्रेण संरक्ष्य (हूं) इत्यवगुंठ्य परितो भ्रामयेत् । त्रिः प्रणवं पठन् शय्यागतां ऋतुस्नातां नीलेन्दीवरधारिणीं देवेन

भुज्यमानां वागीश्वरीं कुंडे ध्यात्वा तयोर्निमंडले ईश्वरेतोधिया वह्निं "हूं वह्निचैतन्याय नमः" इति मंत्रेण मूलं च पठन् स्थापयेत् । ततो वह्निं पुष्पाक्षतादिना संपूज्य तत्र इष्टदेवतामावाह्य संपूज्य घृतादिभिर्व्यस्तसमस्ताभिर्महाव्याहृतिभिराहुतिचतुष्टयं दत्त्वा स्वकल्पोक्त द्रव्येण यथासंख्यं होमं कुर्य्यात् । पुनर्व्याहृतिभिर्हुत्वा मूर्तौ देवीं नियोज्य संहारमुद्रया वह्निं विसृज्य देव्यै आचमनादिकं दत्त्वा यानि कानि च इत्यादिना त्रिः प्रदक्षिणं कुर्य्यात् ॥ इति नित्यहोमप्रकारः ॥ अथ कुलाचारो निरूप्यते ॥ कालीतंत्रे—अथाचारं प्रवक्ष्यामि यस्मादमृतमश्नुते ॥ सर्वभूतहिते युक्तः समयाचारपालकः ॥ ५०० ॥ अनित्यकर्मा संयोगी नित्यानुष्ठानतत्परः ॥ मंत्राराधनमात्रेण शिवभावेन तत्परः ॥ १ ॥ देवतायां परस्यां तु सर्वकर्मनिवेदकः ॥ कुलस्त्रीवीरनिंदां च तद्द्रव्याहरणं तथा ॥ २ ॥ स्त्रीषु रोषप्रहारं च वर्जयेन्मतिमान्सदा ॥ स्त्रीमयं च जगत्सर्वं स्वयं तावत्तथा भवेत् ॥ ३ ॥ पेयं चर्व्यं तथा चोष्यं भक्ष्यं लेह्यं गृहं सुखम् ॥ सर्वं च युवतीरूपं भावयेन्मतिमान्सदा ॥ ४ ॥ कुलजां युवतीं वीक्ष्य नमस्कुर्यात्समाहितः ॥ यदि भाग्यवशाद्देवि कुलदृष्टिः प्रजायते ॥ ५ ॥ तदैव मानसीं पूजां तत्र तासां प्रकल्पयेत् ॥ तासां भगादिदेवीनां स्तनं वक्त्रं च दर्शनम् ॥ ६ ॥ बालां वा यौवनोन्मत्तां वृद्धां वा सुंदरीं तथा ॥ कुत्सितां वा महादुष्टां नमस्कृत्य विभावयेत् ॥ ७ ॥ तासां प्रहारं निंदां च कौटिल्यमप्रियं तथा ॥ सर्वथा च न कर्तव्यमन्यथा शक्तिरोधकृत् ॥ ८ ॥ स्त्रियो देव्यः स्त्रियः प्राणाः स्त्रियश्चैव विभूषणम् ॥ स्त्रीसंगिना सदा भाव्यमन्यथा स्वस्त्रिया अपि ॥ ९ ॥ (शिवागमेऽपि) शिवः शक्तिः शक्तिः शिवः शक्तिर्ब्रह्मा जनार्दनः ॥ शक्तिरिन्द्रो रविः शक्तिः शक्तिश्चन्द्रो ग्रहा ध्रुवम् ॥ शक्तिरूपं जगत्सर्वं यो न जानाति पातकी ॥ १० ॥ जपस्थाने महाशंखान्निवेश्यार्द्धं जपं चरन् ॥ स्त्रियं गच्छन् स्पृशन् पश्यन् विशेषात्कुलजां शुभाम् ॥ ११ ॥ भक्ष्यं तांबूलमन्यांश्च भक्ष्यद्रव्यान्यथारुचि ॥ भक्तेभ्यः शेषभक्ष्याणि भुक्त्वा शेषं जपं चरेत् ॥ १२ ॥ वीरतंत्रे—दिक्कालनियमो नात्र स्थित्यादिनियमो न च ॥ जपे न कालनियमो नार्चादिषु बलिष्वपि ॥ १३ ॥ स्वेच्छानियम उक्तश्च महामंत्रस्य साधने ॥ वस्त्रासनं देहगेहसंस्पर्शादिश्च वारिणः ॥ १४ ॥ शुद्धिं न चाचरेत्तत्र निर्विकल्पं मन

...रेत ॥ कुलार्णवतंत्रे—कुलाचारणं गत्वा प्रणम्य पापविशुद्धये ॥ १५ ॥ याचयेदमृतं कौलं तदभावे जलं पिबेत् ॥ कुलाचारेण ...दत्तं पात्रं तु भक्तितः ॥ १६ ॥ नमस्कृत्य तु गृह्णीयादन्यथा नरकं व्रजेत् ॥ अन्यत्रापि—न वृथा गमयेत्कालं द्यूतक्रीडादिना सुधीः ॥ १७ ॥ गमयेद्देवतापूजाजपयागस्तवादिना ॥ वीराणां जपयागस्तु सर्वकाले प्रशस्यते ॥ १८ ॥ सर्वदेशे सर्वपीठे कर्तव्यो नात्र संशयः ॥ प्रत्यक्षे वा परोक्षे वा प्रत्यहं प्रणमेद्गुरुम् ॥ १९ ॥ न वदेच्छ्रीगुरोर्नाम जपादन्यत्र तु प्रिये ॥ श्रीनाथदेवस्वामीति विवादे साधने वदेत् ॥ २०॥ वीरतंत्रे—स्नानादि मानसं शौचं मानसः प्रवरो जपः ॥ पूजनं मानसं दिव्यं मानसं तर्पणादिकम् ॥ २१ ॥ सर्व एव शुभः कालो नाशुभो विद्यते क्वचित् ॥ न विशेषो दिवा रात्रौ न संध्यायां महानिशि ॥ २२ ॥ सर्वदा पूजयेद्देवि सुस्नातः कृतभोजनः ॥ महानिश्यशुचौ देशे बालिं मंत्रेण दापयेत् ॥ २३ ॥ यत्तु रात्रौ महापूजा कर्तव्या वीरवंदिते ॥ न दिने सर्वथा कार्य्या शासनान्मम सुव्रते ॥ २४ ॥ (अथ कुलपूजाविषयं गांधर्वे) पृथ्वीमृतुमतीं वीक्ष्य सहस्रं यदि नित्यशः ॥ तदा वादी सुसिद्धांत हतः क्षितितलं व्रजेत् ॥ २५ ॥ पर्वते हस्तमारोप्य निर्भयो यतमानसः ॥ कवितां लभते सोऽपि अमृतत्वं च गच्छति ॥ २६ ॥ नील तंत्रे—पद्मं दृष्ट्वा तथा विंबं खंजनं शिखरं तथा ॥ चामरं रविबिंबं च तिलपुष्पं शिरोरुहम् ॥ २७ ॥ त्रिशूलं वीक्ष्य जप्त्वा च शतशः शुद्धभावनः ॥ सुखं प्रसादं सुमुखं सुलोचनं सुहास्यकम् ॥ २८ ॥ सुवेशं सुगतिं गन्धं सुगन्धं सुखमेव च ॥ लभते च यथासंख्यं शृणु पार्वति सादरम् ॥ २९ ॥ भावचूडामणौ—एकाकी निर्जने देशे श्मशाने विजने वने ॥ शून्यागारे नदीतीरे निःशंको विहरेत्सदा ॥ ३० ॥

१—अर्द्धयामात्परं यच्च मुहूर्तद्वयमेव च ॥ सा महारात्रिरुद्दिष्टा तत्कृतं चाक्षयं भवेत् ॥ २—पृथ्वीकुलम् । ३—अत्रापि सहस्रमिति सम्बन्धः । ४—नित्यश इति षोडशदिनं यावत् । ५—पर्वतं स्तनम् । ६—पद्मं मुखं च अधरं चक्षुर्मस्तकं केशं सिंदूरं नासिकां नाभिं त्रिवलीमिति बोद्धव्यम् । ७—कुलवर्त्म सर्वत्र गोपनीयम् । तथा तन्त्रे—निर्जने चैव कर्तव्यं न चैव जन सन्निधौ ॥ किंवा पक्षिपतंगादिदर्शने नैव कारयेत् ॥ पातालमण्डले वापि गह्वरे सुनियंत्रिते ॥ निश्छिद्रमण्डपेनापि कर्तव्यं न च सन्निधौ ॥ कुलपुष्पं कुलद्रव्यं कुलपूजां कुलं जपम् । कुलं कुलपतिं चैव कुलमालां कुलाकुलम् ॥ कुलचक्रं कुलध्यानं सर्वथा न प्रकाशयेत् ॥ प्रकाशात्सिद्धिहानिः स्यात्प्रकाशान्निधनादिकम् । प्रकाशान्मन्त्रनाशः स्यात् प्रकाशं कुलहिंसनम् ॥ प्रकाशान्मृत्युलाभः स्यान्न प्रकाश्यं कदाचन ॥ पूजाकाले च देवेशि यदि कोऽप्यत्र तिष्ठति ॥ दर्शयेद्वैष्णवीं मुद्रां विष्णुन्यासं ततः परम् ॥ प्रकाशाद्यदि गुप्तिः स्यात्तत्प्रकाशान्न दूषणम् ॥ गोपने यदि व्यक्तिः स्यान्न गुप्तिः सा विधीयते ॥ कदाचिदेव हानिस्तु न च व्यक्तिः कदाचन ॥ क्वं पूजा न कर्तव्या न च व्यक्तिः कदाचन ॥

महाचीनक्रमे देवीं ध्यात्वा तत्र प्रपूजयेत् ॥ तद्गुमोत्थितपुष्पेण पजयेद्भक्तिभावतः ॥ ३१ ॥ स भवेत्कुलदेवश्च कल क्रमगतः शुचिः ॥ ब्रह्मोत्तरे महापद्मे देवीं ध्यात्वा यथाविधि ॥ ३२ ॥ तत्सधारसधारेण तर्पयेन्मातृकानने ॥ महाचीनद्रुमलता वेष्टितः साधकोत्तमः ॥ ३३ ॥ रात्रौ यदि जपेन्मन्त्रं शैवकल्पलता भवेत् ॥ तिथिक्रमेण संख्याभिर्लताभिर्वेष्टितो यदि ॥ ३४ ॥ तदा मासेन सिद्धिः स्यात्सहस्रजपमानतः ॥ अष्टम्यां च चतुर्दश्यां द्विगुणं यदि दृश्यते ॥ ३५ ॥ तत्रैव महती सिद्धिर्देवतानां सुदुर्लभा ॥ कुलचूडामणौ–शृणु पुत्र रहस्यं मे समयाचारसंभवम् ॥ ३६ ॥ येन हीना न सिद्ध्यंति जन्मकोटिसहस्रशः ॥ मनवः कुल शास्त्राणां कुलचर्य्यानुचारिणाम् ॥ ३७ ॥ उदारचित्तः सर्वत्र वैष्णवाचारतत्परः ॥ परनिंदासहिष्णुः स्यादुपकाररतस्तथा ॥ ३८ ॥ पर्वते विजने वापि निर्जने शून्यमंडपे ॥ चतुष्पथे जनैः शून्ये यदि दैवाद्गतिर्भवेत् ॥ ३९ ॥ क्षणं ध्यात्वा मनुं जप्त्वा नत्वा गच्छे यथासुखम् ॥ गृध्रं वीक्ष्य महाकालीं नमस्कुर्य्यादलक्षितः ॥ ४० ॥ क्षेमंकरीं तथा वीक्ष्य जंबुकीं यमदूतिकाम् ॥ कुरंगं श्येनभू काकौ कृष्णमार्जारमेव च ॥ ४१ ॥ कृशोदरि महाचंडे मुक्तकेशावलिप्रिये ॥ कुलाचारप्रसन्नास्ये नमस्ते शंकरप्रिये ॥ ४२ ॥ श्मशानं च शवं दृष्ट्वा प्रदक्षिणमनुव्रजन् ॥ प्रणम्यानेन मंत्रेण मंत्री सुखमवाप्नुयात् ॥ ४३ ॥ घोरदंष्ट्रे करालास्ये किटिशब्दप्रणादिनि ॥ घोरे घोररवास्फाले नमस्ते चितिवासिनि ॥ ४४ ॥ रक्तवस्त्रं तथा पुष्पं विलोक्य त्रिपुरात्मिकाम् ॥ प्रणमेद्दण्डवद्भूमौ इमं मन्त्रं पठेन्नरः ॥ ४५ ॥ बन्धूकपुष्पसंकाशे त्रिपुरे भयनाशिनि ॥ भाग्योदयसमुत्पन्ने नमस्ते वरवर्णिनि ॥ ४६ ॥ कृष्णवस्त्रं तथा पुष्पं राजानं राजपुत्रकम् ॥ हस्त्यश्वरथशस्त्राणि कनकान् वीरपुरुषान् ॥ ४७ ॥ माहिषं कुलदेवं च दृष्ट्वा महिषमर्दिनीम् ॥ प्रणम्य जय दुर्गांवे स च विघ्नैर्न लिप्यते ॥ ४८ ॥ जय देवि जगद्धात्रि त्रिपुराद्ये त्रिदेवते ॥ भक्तेभ्यो वरदे देवि महिषघ्नि नमोऽस्तु ते ॥ ४९ ॥ मद्यभांडं समालोक्य मत्स्यं मांसं वरस्त्रियम् ॥ दृष्ट्वा च भैरवीं देवीं प्रणम्य विमृशन्मनुम् ॥ ५० ॥ घोरविघ्नविनाशाय कुलाचार समृद्धये ॥ नमामि वरदे देवि मुंडमालाविभूषिते ॥ ५१ ॥ रक्तधारासमाकीर्णवदने त्वां नमाम्यहम् ॥ सर्वविघ्नहरे देवि नमस्ते हर

॥ ५२ ॥ एतेषां दर्शनेनैव यदि नैवं प्रकुर्वते ॥ शाक्तिमंत्रं पुरस्कृत्य तस्य सिद्धिर्न जायते ॥ ५३ ॥ कुलचूडामणौ—कुलवारे कुलाष्टम्यां चतुर्दश्यां विशेषतः ॥ योगिनीपूजनं चैव प्रधानं कुलपूजनम् ॥ ५४ ॥ यथा विष्णुतिथौ विष्णुः पूजितो वांछितप्रदः । तथा कुलतिथौ दुर्गा पूजिता वरदायिनी ॥ ५५ ॥ (अथ शिवाबलिप्रयोगः कुलचूडामणौ) बिल्वमूले प्रांतरे वा श्मशाने वापि साधकः ॥ मांसप्रधानं नैवेद्यं संध्याकाले निवेदयेत् ॥ ५६ ॥ कालिकालीति वक्तव्ये तत्रामा शिवरूपिणी ॥ पशुरूपधरा याति परिवारगणैः सह ॥ ५७ ॥ भुक्त्वा रौति यदैशान्यां मुखमुत्तोल्य सुस्वरम् ॥ तदैव मंगलं तस्य नान्यथा कुलदूषणम् ॥ ५८ ॥ अवश्य मन्नदानेन नियतं तोषयेच्छिवाम् ॥ नित्यश्राद्धं यथा संध्यावंदनं पितृतर्पणम् ॥ ५९ ॥ तथैव कुलसेव्यानां नित्यता कुलपूजने ॥ पशुरूपां शिवां देवीं यो नार्चयति निर्जने ॥ ६० ॥ शिवारावेण तस्याशु सर्वं नश्यति निश्चितम् ॥ जपपूजाविधानेन यत्किंचित्सुकृतानि च ॥ ६१ ॥ गृहीत्वा शापमादाय शिवा रोदिति निर्जने ॥ एकया भुज्यते यत्र त्यक्तया यदि भैरव ॥ ६२ ॥ तत्रैव सर्वशक्तीनां प्रीतिः परमदुर्लभा ॥ पशुशक्तिः पक्षिशक्तिर्नरशक्तिर्यथाक्रमम् ॥ ६३ ॥ पूजानां द्विगुणं कर्म सगुणं साधयेद्यतः ॥ तेन सर्वप्रयत्नेन कर्तव्यं पूजनं महत् ॥ ६४ ॥ राजादिभयमापन्ने देशांतरभयादिके ॥ शुभाशुभानि कर्माणि विचिंत्य बलिमाहरेत् ॥ ६५ ॥ गृह्ण देवि महाभागे शिवे कालाग्निरूपिणि ॥ शुभाशुभफलं व्यक्तं ब्रूहि गृह्ण बलिं तव ॥ ६६ ॥ एवमुच्चार्य दातव्यो बलिः कुलजनप्रियः ॥ यदि नो भुज्यते वत्स तदा नैव शुभं भवेत् ॥ ६७ ॥ शुभं यदि भवेत्तत्र भुज्यते तदशेषतः ॥ एवं ज्ञात्वा महादेवि शांतिस्वस्त्ययनं चरेत् ॥ ६८ ॥ इति शिवाबलिः ॥ (अथ प्रातःकृत्यम्) साधकः प्रातरुत्थाय कुलवृक्षं प्रणम्य च ॥ मूलादिब्रह्मरंध्रांतं कुलं ध्यात्वा गुरुं स्मरेत् ॥ ६९ ॥ प्रह्लादानंदनाथाख्यं सनकानंदमेव च ॥ कुमारानन्दनाथाख्यं वशिष्ठानंद

---

१ कुलवारादिनियमस्तु यामले—रविश्चन्द्रो गुरुः सौरिश्चत्वारश्चाकुला इमे ॥ भौमशुक्रौ कुलाख्यौ तु बुधवारः कुलाकुलः ॥ द्वितीया दशमी षष्ठी कुलाकुलमुदाहृतम् ॥ विषमाश्चाकुलाः सर्वाः शेषाश्च तिथयः कुलाः ॥ वरुणार्द्राभिजिन्मूलं कुलाकुलमुदाहृतम् ॥ कुलानि तु समग्राणि शेषाण्येवाकुलानि च ॥ तिथिवारे च नक्षत्रे अकुले स्थायिनो जयः ॥ कुलाख्ये जयिनो नित्यं साम्यं चैव कुलाकुले ॥ एवं कुलाकुलवारादिकं ज्ञात्वा साधकः कर्म कुर्यात् ॥

नायकम् ॥ ७० ॥ क्रोधानन्दः सुखानन्दो ज्ञानानन्दस्ततः परम् ॥ बोधानन्दमथाभ्यर्च्य ध्यायेत्कुलमुखोपरि ॥ ७१ ॥ महारससरसोल्लास
हृदयानन्दलोचनः ॥ कुलालिगणनिर्भिन्नघूर्णिताशेषतामसाः ॥ ७२ ॥ कुलशिष्यैः परिवृताः पूर्णांतःकरणोद्यताः ॥ वराभयोद्यतकराः
कुलतन्त्रार्थवेदिनः ॥ ७३ ॥ एवं कुलगुरुं ध्यात्वा विमृश्य कुलनायिकाम् ॥ कुलस्थानं समानीय स्नानार्थं तीर्थमाश्रयेत् ॥ ७४ ॥
(अथ कुलस्नानं कुलचूडामणौ) आचांतः कुलदर्भेण सदर्भैः कुलपुंड्रकः ॥ कुलपात्रं सदूर्वं हि सतिलं सजलं ततः ॥ ७५ ॥ गृहीत्वा
कुलेऽव्याश्च प्रीतये स्नानमाचरेत् ॥ कृतसंकल्प एवासौ कुलचक्रं जले न्यसेत् ॥ ७६ ॥ कुलस्थानात्समानीय कुलमुद्रां कुशेन च ॥
कुलतीर्थानि तत्रैव समावाह्य शिवात्मकम् ॥ ७७ ॥ तत्तोयं च द्विधा कृत्वा त्रिधा च प्रोक्षणं तनोः ॥ स्वतंत्रेऽपि—मूलं पठन्मूर्ध्नि
तोऽयं मुद्रया कुंभसंज्ञया ॥ ७८ ॥ क्षिप्त्वा वारत्रयं देवि आचामेत्साधकाग्रणीः ॥ आत्मविद्या शिवैस्तत्त्वैस्ततोऽन्यच्च समाचरेत् ॥ ७९ ॥
ज्ञानार्णवे—कुलसूर्याय देवाय त्रिरर्घ्यं तु प्रदापयेत् ॥ देवानृषीन्पितॄंश्चैव तर्पयेत्कुलवारिणा ॥ ८० ॥ (अथ दूतीयागो निरूप्यते)
तत्रादौ विजयास्वीकारः । तथाच विजयाकल्पे—संविदासवयोर्मध्ये संविदेव गरीयसी ॥ संवित्प्रयोगस्तेनेह पूजादौ साधकोत्तमः ॥
कर्तव्याश्च महापूजाः करणीयाः सुनिश्चितैः ॥८१॥ अयं प्रयोगः पूजादौ कुलीनैः सर्वत्र कर्तव्यः॥ अन्यत्रापि--आनंदेन विना भ्रंशो न च
तृप्यंति देवताः ॥ ताश्च ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्रैः शुक्लरक्तपीतकृष्णपुष्पभेदैस्तासां शुद्धिस्तु तत्रैव ॥ ॐ--संविदे ब्रह्मसंभूते ब्रह्मपुत्रि
सदानघे ॥ भैरवाणां च तृप्त्यर्थं पवित्रा भव सर्वदा ॥ ८२ ॥ ॐ ब्रह्माण्यै नमः स्वाहा ॥ इति शोधयेत् ॥ ॐ--सिद्धिमूलकरे
देवि मूलबोधप्रदायिनि ॥ राजप्रजावशंकरि शत्रुकंठत्रिशूलिनी ॥ ८३ ॥ ऐं क्षत्रियायै नमः स्वाहा शोधयेदपरां ततः ॥
ॐ—ज्ञानेंधनदीप्ताग्ने ज्ञानाग्निज्वालरूपिणि ॥ आनंदस्याहुतिं प्रीतिं सम्यग्ज्ञानं प्रयच्छ मे ॥ ८४ ॥ ह्रीं वैश्यायै नमः स्वाहा ॥
ॐ—नमस्यामि नमस्यामि योगमार्गप्रवर्तिनि ॥ त्रैलोक्यविजये मातः समाधिफलदा भव ॥ ८५ ॥ क्लीं शूद्रायै नमः स्वाहा शूद्रां च
शोधयेत्ततः ॥ ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतमाकर्षयाकर्षय सिद्धिं देहि देहि श्रीमदमुकदेवतापदं मे वशमानय स्वाहा ॥

...से मंत्रमनुः प्रोक्तः सर्वासामपि शोधने ॥ ८६ ॥ मूलं मंत्रं सप्तवारं तस्योपरि नियोजयेत् ॥ तस्या ध्यानम् ॥ कालिंदी...
कांतिसंतापहारिणीम् ॥ वराभयसमायुक्तां सव्योत्तरभुजद्वये ॥ नानारोगहरां रौद्रीं सर्वसौख्यप्रदायिनीम् ॥ विजयां तामहं वंदे दुर्गां दुर्गति
हारिणीम् ॥ ८७ ॥ आवाहनादिमुद्रां च धेनुं योनिं ततः परम् ॥ दिग्बंधनच्छोटिकाभिस्तालत्रयपुरःसरम् ॥ ८८ ॥ द्रव्यदृष्ट्या
पार्ष्णिघातैः सर्वा इच्छा निरस्य च।[4]सप्तधा तर्पयेद्ब्रह्मरंध्रे मूलं जपन्मनुम् ॥ ८९ ॥ गुरुपद्मे सहस्रारे तथा संकेतमुद्रया ॥ त्रिवारं
तर्पयेद्भक्त्या साधकः सिद्धिहेतवे ॥ ९० ॥ अथ स्वीकरणमंत्रः ॥ ऐं वद वद वाग्वादिनि मम जिह्वाग्रे स्थिरा भव सर्वसत्त्ववशंकरि
स्वाहा ॥ इति मंत्रेण स्वमुखे जुहुयात्। चूडामणौ–विना हेतुं कर्मासाद्य क्षोभयुक्तो महेश्वरः ॥ न पूजां मानसीं कुर्य्यान्न ध्यानं नापि
चिंतनम् ॥ ९१ ॥ तस्माद्भुक्त्वा च पीत्वा च पूजयेत्परमेश्वरीम् ॥ इमामपि विजयामेव प्रकरणात् ॥ विजयादशनामानि ॥ ॐ–सुमिन्द्र
शूलिनी देवी विजया चर्चिता परा। अमृता तुलसी तुंगा तेजोमयी सुरेश्वरी ॥ ९२ ॥ एतानि दश नामानि त्रिजयाहस्तगः पठेत् ॥ दुःखदा
रिद्य्रनाशश्च भवेत्सत्यं वदाम्यहम् ॥ इति नमेत् ॥ ९३ ॥ (अथ कुलयजनप्रकारः उत्तरतंत्रे) याममात्रे गते रात्रौ कुलगेहगतः पुमान् ॥
तांबूलपूरितमुखो धूपामोदसुगंधितः ॥ ९४ ॥ रक्तचंदनदिग्धांगो रक्तमाल्यानुलेपितः ॥ रक्तवस्त्रपरीधानो लाक्षारसगृहे गतः ॥ ९५ ॥
रक्तमाल्येन संवीतो रक्तपुष्पविभूषितः ॥ पंचकरांगसंकेतैः पूजयेत्कुलनायिकाम् ॥ ९६ ॥ (कुलनायिका यथा)[5]नटी कपालिनी वेश्या
शुष्काशी नापितांगना। रजकी रंजकी चैव सैरंध्री च सुवासिनी ॥ ९७ ॥ घटिका खटिका चैव तथा गोपालकन्यका ॥ विशेषवैदग्ध्ययुताः
सर्वा ह्येताः कुलांगनाः ॥ ९८ ॥ गुरुभक्त्या देवभक्त्या घृणालज्जाविवर्जिताः ॥ संगोपनरताः प्राप्तास्तरुण्यः सर्वसिद्धिदाः ॥ ९९ ॥ अक्षता
चारसंपन्नां शीलसौभाग्यशालिनीम् ॥ सदानुष्ठाननिरतां सात्त्विकीं भक्तिसंयुताम् ॥ १०० ॥ कालुष्यरहितां कुर्य्यात्समया भक्तवत्सलाम् ॥

१ प्रत्येकेन तु मंत्रेण शोधयेद्वा अनेन समुदायं शोधयेत्। २ तदुपरि सप्तधा मूलं च जपित्वा। ३ धेनुयोनिमुद्रां प्रदर्शयेत्। ४ मूलमिष्टदेवतामंत्रमुच्चार्यामुकदेवतां तर्पयामि एवं गुरुं च। ततः संकेतमुद्रया तत्त्वमुद्रया ततः स्वीकुर्य्यात्। ५ कुमारीतंत्रे–नटी कपालिनी वेश्या रजकी नापितांगना ॥ ब्राह्मणी शूद्रकन्या च तथा गोपालकन्यका ॥ मालाकारस्य कन्यापि नव कन्याः प्रकीर्तिताः ॥ ब्राह्मणी तु ब्राह्मणविषया।

चातुर्य्यौदार्य्यदाक्षिण्यकरुणादिगुणान्विताम् ॥ १०१ ॥ रूपयौवनसंपन्नां शीलसौभाग्यशालिनीम् ॥ सदा परिगृहीतां वा यद्वा संकेत मागताम् ॥१०२॥ अथवा तत्क्षणे यातां मदनानलतापिताम् ॥ विलिप्तां रक्तगंधेन रक्तांबरविभूषिताम् ॥१०३॥ सुगंधिरक्तकुसुमां सर्वा भरणभूषिताम् ॥ सुधूपधूपितां तन्वीं दूतीकर्मसु योजयेत्॥१०४॥आनीय च यजेत्तां तु प्रसूनतूलिकोपरि॥चार्त्वंगीं विकृतांगीं वा सविकल्प कमानसाम् ॥ १०५ ॥ वर्षीयसीं पापरतां हूंकारार्थप्रलोलुपाम् ॥ अभक्तामलसां दीनां वर्जयेत्साधकोत्तमः ॥ १०६ ॥ अर्थाद्वा कामतो वापि सौख्यादपि च यो नरः ॥ लिंगयोनिरतो मंत्री रौरवान्न निवर्तते ॥ १०७ ॥ उपविष्टा यदा देवी तदा पुत्री तु कन्यका ॥ पूजार्हा च यदा देवी तदा माऽऽत्मनि संशयः ॥ १०८ ॥ तदानीय कुलं सम्यगुद्वर्तनमनंतरम् ॥ स्नानशुक्लदुकूलादिअनुलेपनशोभि ताम् ॥ १०९ ॥ अलंकृतां समानीय स्वागतं चासनं तथा ॥ निवेश्य तूलिकामध्ये नानापुष्पसुगंधिना ॥ ११० ॥ चंदनागुरुकर्पूर कस्तूरीकुंकुमादिभिः ॥ समाकीर्य निवेश्याथ पूजयेत्कुलनायिकाम् ॥ १११ ॥ अंगन्यासकरन्यासौ प्राणायामं ततः परम् ॥ विधाय मातृकान्यासं कुलांगेऽपि प्रविन्यसेत् ॥ ११२ ॥ ततः पंचमकारमानीय शोधनं कुर्यात् ॥ अथ देवद्रव्यस्य शोधनम् ॥ प्रोक्षणादिकं कृत्वा हंस इति जपित्वा ततः—एवमेव परं ब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं ध्रुवम् ॥ कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम् ॥ ११३ ॥ सूर्य मंडलसंभूते वरुणालयसंभवे ॥ आमाबीजमये देवि शुक्रशापाद्विमुच्यताम् ॥ ११४ ॥ वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानंदमयं यदि ॥ तेन सत्येन ते देवि ब्रह्महत्या व्यपोहतु ॥ ११५ ॥ ॐ वां वीं वूं वैं वौं वः ब्रह्मशापविमोचितायै सुरायै देव्यै नमः ॥ इति दशधा जपेत् ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रां क्रूं क्रैं क्रौं क्रः कृष्णशापं विमोचय विमोचय अमृतं स्रावय स्वाहा ॥ इति दशधा जपेत् ॥ ॐ शां शीं शूं शैं शौं शः शुक्रशापविमोचितायै सुरादेव्यै नमः इति दशधा जपेत् ॥ ततो मूलमंत्रं तदुपरि अष्टधा जपेत् । देवतामयं विभावयेत् ॥

१ एवंविधं कुलमानीय उद्वर्तनादिकं विधाय प्रसूनतूलिकोपरि नियोजयेत् । २ भूतशुद्ध्यादिकं विधाय तत्तत्कुलांगन्यासं कुर्यात् । पंचमात्तु परं नास्ति शाक्तानां सुखमोक्षयोः ॥ केवलैः पंचमेनापि सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥

इति द्रव्यशुद्धिः ॥ देव्यास्तु दक्षिणे भागे चक्रपार्श्वे निवेदयेत् ॥ एतद्द्रव्यं तु शूद्रस्य नान्येषां तु कदाचन ॥ ११६ ॥ मद्यं मैथुनं विना वत्स यत्किंचित्कुलसाधकः । शक्त्यै दत्त्वा ततः शेषं गुरवे तन्निवेदयेत् ॥ ११७ ॥ तदनुज्ञां मूर्ध्नि कृत्वा शेषमात्मनि योजयेत् ॥ पीत्वा पीत्वा पुनः पीत्वा यावत्पतति भूतले ॥ उत्थाय च पुनः पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ॥ ११८ ॥ भैरवतंत्रे—पाने भ्रांतिर्भवेद्यस्य घृणा स्याद्रक्तरेतसोः॥ शुचौ चाशुद्धताभ्रांतिः पापशंका च मैथुने ॥ ११९ ॥ स भ्रष्टः पूजयेद्देवीं चंडीमंत्रं कथं जपेत् ॥ मदिरायां मैथुने च जातिं वृत्तिं न चाचरेत् ॥ १२० ॥ मधु मांसं विना देवि कुलपूजां समाचरेत् ॥ जन्मान्तरसहस्रस्य सुकृतं तस्य नश्यति ॥ १२१ ॥ कुलार्णवे—सुरा शक्तिः शिवो मांसं तद्भोक्ता भैरवः स्वयम् ॥ तयोरैक्यात्समुत्पन्न आनंदो मोक्ष उच्यते ॥ १२२ ॥ आनंदो ब्रह्मणो रूपं तच्च देहे व्यवस्थितम् ॥ परशक्त्या च मिथुनं संयोगानन्दनिर्भराः ॥ १२३ ॥ युक्तास्ते मैथुनं तत्स्यादितरे स्त्रीनिषेवकाः ॥ एतेषां शोधनस्य वाऽऽवश्यकत्वात् ॥ तथा च—संशोधनमनाचार्यस्त्रीपुंमध्येषु साधकः ॥ आचार्यसिद्धिहानिः स्यात्क्रुद्धा भवति सुन्दरी ॥ १२४ ॥ अथ मांसशोधनम् ॥ मांसं तु त्रिविधं ज्ञेयं जलखेचरभूचरम् ॥ त्रिविधं मांसं संप्रोक्तं देवताप्रीतिकारकम् ॥ १२५ ॥ मात्स्यं तु त्रिविधं देवि उत्तमाधममध्यमम् ॥ उत्तमं त्रिविधं देवि शालपाठीनरोहितम् ॥ १२६ ॥ प्रवीणं कंटकैर्हीनं तैलाक्तं सुकलान्वितम् ॥ देव्याः प्रीतिकरं चैव मध्यमं तच्चतुर्विधम् ॥ १२७ ॥ क्षुद्राणि तानि सर्वाणि अधमानि विदुर्बुधाः ॥ अस्य शोधनं स्वतन्त्रतन्त्रे—ॐ "प्रतद्विष्णुस्तवते वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानिविममेरजांसियोअस्कभायदुत्तरः अधस्थमासदत" ॥ इति मन्त्रेण मांसं शोधयेत् ॥ ॐ "त्र्यंबकेति" मंत्रेण मीनं शोधयेत् ॥ अथ मुद्रा तु द्विधा कुलार्णवे—त्रैहेयं मण्डलाकारं चन्द्रबिंबनिभं

---

१ तथा च श्रीक्रमे—न दद्याद्ब्राह्मणो मद्यं महादेव्यै कथञ्चन । वामकामो ब्राह्मणोऽपि मद्यं मांसं न भक्षयेत् ॥ वैश्यस्य माक्षिकं शुद्धं क्षत्रियस्य तु साज्यकम् ॥ ब्राह्मणस्य गवां क्षीरं ताम्रे वा विसृजेन्मधु ॥ नारिकेलोदकं कांस्ये सर्वेषां द्रव्यशोधनम् ॥ २ ब्राह्मणे मांसाभावे प्रतिनिधिः—समयाचारतन्त्रे—लवणार्द्रं कपिण्याकगोधूममाषकं तथा॥ लशुनं च महादेवि मांसप्रतिनिधिः स्मृतः ॥

शुभम् ॥ चारु पक्कं मनोहारि शंकराद्यैश्च पूजितम् ॥ १२८ ॥ पूजाकाले देवताया मुद्रैषा परिकीर्तिता ॥ यामले—अष्टधान्यादिकं यावच्चर्वणीयं प्रकल्पयेत् ॥ तेषां संज्ञा कृता मुद्रा महामोदप्रदायिनी ॥ १२९ ॥ तेषां शोधनम् ॥ "ॐ तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यंति सूरयः । दिवीवचक्षुराततम् । तद्विप्रासोविपन्यवो जागृवांसःसमिंधताम् । विष्णोर्यत्परमंपदम्"॥इति मुद्राः शोधयेत् ॥अथ शक्तिशोधनं भावचूडामणौ—अदीक्षितकुलासंगात् सिद्धिहानिः प्रजायते ॥ तत्कथाश्रवणं चेत्स्यात्तत्कल्पगमनं यदि ॥ १३० ॥ सुकुलीनः कथं देवि पूजयेत्परमेश्वरीम् ॥ संशोधनमनाचार्य्येति कौलिकतन्त्रे ॥ अभिषेको भवेच्छुद्धिर्मंत्रस्योच्चारबिंदुभिः ॥ बलाद्वा यत्नतो वापि अभिषेकं समाचरेत् ॥ १३१ ॥ अभिषेकमन्त्रः—ऐं क्लीं सौः त्रिपुरायै नमः इमां शक्तिं पवित्रीकुरु मम शक्तिं कुरु प्रियं स्वाहा ॥ तस्याः कर्णे भेदबुद्ध्या मायाबीजं (ह्रीं) समुच्चरेत् ॥ इति शक्तिशोधनम् ॥ ततः शोधितद्रव्यमर्घ्ये क्षिपेत्॥ तथा च स्वतन्त्रे—आद्य द्रव्यमर्घ्यपात्रे निःक्षिप्य प्रयतः सुधीः ॥ कुंडगोलो वं द्रव्यं स्वयंभूकुसुमं तथा ॥ १३२ ॥ अर्घ्यं दत्त्वा महेशानि सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥ सुधायाश्चार्घ्यदानेन साधको हि भवेत्प्रियः ॥ १३३ ॥ महायोगी भवेद्देवीपीठप्रक्षालितैर्जलैः ॥ तेन पञ्चमकारेण पूजा कर्तव्या ततोऽर्घ्यस्थापनं तदनन्तरं पर्यंकमध्ये मंडूकादिनाम्नीः पीठदेवताः पूजयेत् ॥ गन्धपुष्पाक्षतादीनि च दत्त्वा तत्रैव धूपयेत् ॥ तैस्योपरि[1] कुलं स्थाप्य पूजानुष्ठानमेव च ॥ पूजयेच्च ततस्तस्यां पञ्चकामान्समाहितः ॥ १३४ ॥ ह्रीं[2] चैव कामराजं च क्लीं कंदर्पम् ऐं च मन्मथम् ॥ ब्लूं मकरध्वजं चैव स्त्रीं चैव हि मनोभवम् ॥ १३५ ॥ ॐकारादिनमोंतं च कुसुमैर्गंधसंयुतैः ॥ पूजयित्वा चतुर्दिक्षु पूजये त्कुलनायिकाम् ॥ १३६ ॥ वटुकं भैरवं चैव दुर्गां च क्षेत्रपालकम् ॥ वाग्भवं कामबीजं च स्त्रीबीजं कामराजकम् ॥ १३७ ॥ त्स्लूमात्मकं[3] ततो दत्त्वा आधारशक्तिमुद्धरेत् ॥ श्रीपादुकां ततो दत्त्वा पूजयामि वदेत्ततः ॥ १३८ ॥ अनेन मनुना तस्य ललाटे सुमने

१ तूलिकोपरि कुलं स्थापयित्वा प्रपूजयेत् ॥ २ ॐ ह्रीं कामराजाय नमः इत्यादि ॥ ३ ऐं क्लीं स्त्रीं क्लीं ब्लूं आधारशक्तिपीठपादुकां पूजयामि तस्या ललाटे सिंदूरेण ... लिखेत् ॥

हरम् ॥ त्रिकोणं तत्र संलिख्य सिंदूराद्यैर्वरानने ॥ महाप्रेतासनं मध्ये बालां च पूजयेत्ततः ॥ १३९ ॥ (कुलार्णवे) गणेशं च
कुलाध्यक्षं दुर्गां लक्ष्मीं सरस्वतीम् ॥ त्रिकोणेषु च संयोज्य वसंतं मदनं प्रिये ॥ १४० ॥ स्तनयोः पूजयेत्पश्चान्मुखे तस्याः सुधा
करम् ॥ (उत्तरतन्त्रे) मौलौ गणेशं केशाग्रे कुलाध्यक्षं ललाटके ॥ १४१ ॥ दुर्गां भ्रुवोस्तथा लक्ष्मीं रसनायां सरस्वतीम् ॥ (ज्ञाना
र्णवे) दक्षपादादिमूर्द्धांतं वाममूर्द्धादि सुन्दरि ॥ १४२ ॥ पादांतं पूजयेत्सर्वाः कला वै कामसोमयोः ॥ श्रद्धा प्रीती रतिश्चैव भूतिः कांति
र्मनोरमा ॥ १४३ ॥ मनोहरा मनोरामा मदनोत्पादिनी तथा ॥ मोहिनी दीपिनी चैव शोषिणी च वशंकरी ॥ १४४ ॥ रंजनी
चैव देवेशि षोडशी प्रियदर्शना ॥ स्वरषोडशसंयुक्ता एताः क्रमकला यजेत् ॥ १४५ ॥ ततश्चन्द्रकलाः पूज्याः शिरसश्चरणावधि ॥
स्वरैरेवं प्रपूजा हि सर्वकार्यार्थसिद्धये ॥ १४६ ॥ (ललितातंत्रे) भगे तदीये विज्ञेया नाड्यस्तिस्रः प्रवाहिकाः ॥ एका तु
वाहिका चान्द्री सौरी कन्या तु वाहिका ॥ १४७ ॥ आग्नेयी चापरा ज्ञेया पूजयेत्तासु साधकः ॥ अम्बु स्रवति चांद्री सा पुष्पं स्रवति
भानवी ॥ १४८ ॥ बीजं स्रवति चाग्नेयी तास्तु नामभिरर्चयेत् ॥ वाग्भवाद्यैर्नमोयुक्तैः पूजयेत्सुप्रसन्नधीः ॥ १४९ ॥ (उत्तरतंत्रे)
पूजयेन्मदनागारे रक्तचंदनचर्चिते ॥ भगमालामनु प्रोच्य त्रितारानंतरं तथा ॥ १५० ॥ ऐं ह्रीं श्रीं जँ ल्लुँ क्लिन्ने ततः परम् ॥
सर्वाणीति भगाणीति वशमानय मे ततः ॥ १५१ ॥ स्त्रीं ह्रीं क्लीं ल्लुं भगमालिन्यै नमः । ऐं ह्रीं श्रीं इति मंत्रेण गंधाद्यैस्तामभ्यर्च
येत् ॥ ततस्तत्रैव मूलं पूजयेत् ॥ तंत्रांतरे–इहाप्यावाहनं चैव जीवन्यासं महेश्वरि ॥ अथैवं च विधानेन तां षोडशोपचारकैः ॥
॥ १५२ ॥ इष्टदेवं प्रपूज्याथ सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥ (ततः स्वलिंगं पूजयेत्) तथा च–अर्पयेद्गंधपुष्पाद्यैः स्वशिवं तदनन्तरम् ॥
॥ १५३ ॥ मूलमंत्रं च ॐ नमः शिवाय तत्परं यजेत् ॥ तत्पुरुषवामाघोरसद्योजातेशसंज्ञकः ॥ १५४ ॥ निवृत्तिं च प्रतिष्ठां च
विद्यां च तदनन्तरम् ॥ शांतिं च शांत्यतीतां च तदंगे तदनन्ततरम् ॥ १५५ ॥ समग्रविद्यामुच्चार्य त्रिकोणं चैव पूजयेत् ॥ अवधूतेश्वरीं

१ ह्सौः सदाशिव महाप्रेतपद्मासनाय नमः इति पूजयेत् । २ ॐ श्रद्धायै नमः इत्यादिना पूजयेत् । ३ ऐं चांद्र्यै नमः–मतांतरे ऐं चांद्र्यै अम्बुस्रवायै नमः—एवं ऐं सौर्यै
नमः—ऐं आग्नेय्यै नमः–इति पूजयेत् ।

कुब्जां कामाख्यां समयामपि॥१५६॥वज्रेश्वरीं कालिकां च तथा दिक्करवासिनीम् ॥ तथा चंडेश्वरीं तारां पूजयेदत्र साधकः ॥ १५७ ॥ तदनुज्ञां ततो लब्ध्वा दत्त्वा तांबूलमेव च ॥ शिवं च तत्र निक्षिप्य गजशुंडाख्यमुद्रया॥१५८॥धर्म्माधर्महविर्दीप्ते आत्माग्नौ मनसा स्रुचा ॥ सुषुम्नावर्त्मना नित्यमक्षवृत्तीर्जुहोम्यहम् ॥१५९॥ स्वाहांतोऽयं महामन्त्र आरंभे परिकीर्तितः ॥ ततो जपेत् स्त्रियं गच्छन् विद्यां त्रिभुवनेश्वरीम् ॥ १६० ॥ जपेदिति—अष्टोत्तरसहस्रशतं वाऽक्षुब्धो जपेत् ॥ आकाशगाभ्यां हस्ताभ्यामवलंब्योन्मनीशुचा ॥ धर्म्माधर्म्मकलास्नेहपूर्णमग्नौ जुहोम्यहम् ॥ १६१ ॥ स्वाहांतोऽयं महामन्त्रः शुक्रत्यागे प्रकीर्तितः ॥ (विशेषस्तु ज्ञानार्णवे) शिवशक्तिसमायोगो योग एव न संशयः ॥ शीतकारो मन्त्ररूपं वचनं स्तवनं भवेत् ॥ १६२ ॥ आलिंगनं तु कस्तूरी कर्पूरं चंदनं भवेत् ॥ नखदन्तक्षतादीनि पुष्पाणि विविधानि च ॥ १६३ ॥ मैथुनं तर्पणं विद्धि विजयातो विसर्जनम् ॥ (ज्ञानार्णवे) आलिंगनं चुंबनं च स्तनयोर्मर्द्दनं ततः ॥ १६४ ॥ दर्शनं स्पर्शनं योनेर्विकारं लिंगघर्षणम् ॥ प्रवेशं स्थापनं शक्तेर्नैव पुष्पाणि पूजने ॥ १६५ ॥ (यामले) संयोगाज्जायते सौख्यं परमानन्दलक्षणम् ॥ कुलामृतं प्रयत्नेन गृह्णीयाद्दुर्लभं नरः॥१६६॥ तेनामृतेन दिव्येन सर्वे तुष्टा भवंति हि ॥ यत्कामं कुरुते मंत्री तत्क्षणाद्देवि सिध्यति ॥ १६७ ॥ (ज्ञानार्णवे) कुलद्रव्यं च संशोध्य शिवशक्तिमयं प्रिये ॥ बीजामृतं परं ब्रह्मरूपं निःक्षिप्य सुन्दरि ॥ १६८ ॥ अर्घ्यपात्रेऽमृतं क्षिप्त्वा निर्विकल्पः सदानघः ॥ श्रीविद्याक्रममभ्यर्च्य परब्रह्ममयो भवेत् ॥ १६९ ॥ (श्रीविद्येत्युपलक्षणम्) ॥ इति ते कथितं ज्ञानं साररम्यं वरानने ॥ सविकल्पस्तु सततं पापभाग्जायते नरः ॥ १७० ॥ विचिकित्सापरो मंत्री जायते गुरुतल्पगः ॥ अत एव वरारोहे निर्विकल्पः सदा भवेत् ॥ १७१ ॥ (समयाचारे) कुलामृतं समादाय अर्घ्येण निःक्षिपेद् बुधः ॥ तदर्घ्येण समाराध्य पूजाशेषं समापयेत् ॥ १७२ ॥ (कुलामृतं शोधितम् शोधनमन्त्रस्तु श्रीक्रमे) ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि शुक्रशापं प्रमोचय प्रमोचय अमृतं स्रावय स्रावय अमृतं कुरु कुरु स्वाहा॥अस्य मन्त्रस्य देवेशि शुक्रसिद्धिर्भवेत् प्रिये॥ शुक्रैरक्षततंडुलैः सुगंधैः कुसुमान्वितैः ॥ १७३ ॥ अर्घ्यद्रव्यैश्च देवेशि योनौ देवीं प्रपूजयेत् ॥ (उत्तरतन्त्रे) धूपदीपैश्च नैवेद्यैर्विविधैः

कुलसाधकः ॥ विधाय वंदितां तां च तदुच्छिष्टं स्वयं चरेत् ॥१७४॥ (शिवागमे) अविचाराच्छशक्त्युच्छिष्टं पिबेच्चक्रेश्वरो यदि ॥ घोरं च नरकं याति कुलमार्गात्पतेद्ध्रुवम् ॥ १७५ ॥ तस्माद्विचार्य यत्नेन शक्त्युच्छिष्टं भजेत्सुधीः ॥ आनंदं कारयेद्वीरस्तत्त्वं निश्रांतितः पिबेत् ॥ १७६ ॥ ततो रहस्यमालया कुलयुक्तो गुरुशिरसि हृदि देवीं च ध्यात्वा शिवोऽहमिति भावयन् जपं कुर्यात् ॥ अत एवं लक्षजपादौ मध्येऽते च शक्तिं पूजयेत् ॥ गते तु प्रथमे यामे तृतीयप्रहरावधि ॥ निशायां च प्रजप्तव्यं रात्रिशेषे जपेन्न च ॥ १७७ ॥ (स्वतंत्रे) ततो नग्नां स्त्रियं नग्नो रमन् क्लेदयुतोऽपि वा ॥ जपेल्लक्षं महादेवीं होमयेज्ज्वलितेंधने ॥ १७८ ॥ एतत्कल्पान्महादेवि मंत्रः सिध्यति निश्चितम् ॥ (अष्टशक्तिपूजने यथा–) ब्राह्मणी क्षत्रिया वैश्या शूद्रा च कुलभूषणाः ॥ वेश्या नापितकन्या च रजकी नटनी तथा ॥ १७९ ॥ विशेषवैदग्ध्ययुक्ताः सर्वा एव कुलांगनाः ॥ अष्टकन्यारूपभेदं विलोक्यामर्षवेष्टितम् ॥ १८० ॥ ब्रह्माण्याद्यास्तु शक्तीनां संज्ञाभिः कृतसंज्ञकाः ॥ एवं पूर्वोक्तं पूजयेत् (मतांतरे) अन्या यदि न गच्छेत्तु निजकन्या निजानुजा ॥ अग्रजा मातुलानी वा माता वा तत्सपत्निका॥१८१॥पूर्वाभावे परा योज्या मदंशा योषितो मताः॥ सर्वाभावे एकतरा पूजनीयाः प्रयत्नतः॥१८२॥ (अथ कुलस्तोत्रम्) मातर्देवि नमस्तेऽस्तु ब्रह्मरूपधरेऽनघे ॥ कृपया हर विघ्नं मे मंत्रसिद्धिं प्रयच्छ मे ॥ १८३ ॥ महेशि वरदे देवि परमानंदरूपिणि ॥ कृ० ॥ १८४ ॥ कौमारि सर्वविद्येशि कुमारक्रीडने चरे ॥ कृ० ॥ १८५ ॥ विष्णुरूपधरे देवि विनतासुतवाहिनि ॥ कृ० ॥ १८६ ॥ वाराहि वरदे देवि दंष्ट्रोद्धृतवसुंधरे ॥ कृ० ॥ १८७ ॥ शक्ररूपधरे देवि शक्रादिसुरपूजिते ॥ कृ० ॥ ॥ १८८ ॥ चामुंडे मुंडमालास्रक्चर्चिते विघ्ननाशिनि ॥ कृ० ॥ १८९ ॥ महालक्ष्मि महोत्साहे क्षोभसंतापहारिणि ॥ कृ० ॥ ॥ १९० ॥ मितिमातृभय देवि मितिमातृबहिष्कृते ॥एके बहुविधे देवि विश्वरूपे नमोऽस्तु ते ॥ १९१ ॥ एतत्स्तोत्रं पठेद्यस्तु कर्मारंभेषु संयुतः ॥ विदग्धं वा समालोक्य तस्य विघ्नं न जायते ॥ १९२ ॥ कुलनित्स्य द्वारदेवाः कथितास्तव पुत्रक ॥ दीक्षाकाले नित्यपूजासमयेनार्चयेद्यदि ॥ १९३ ॥ तस्य पूजाफलं वत्स नीयते यक्षराक्षसैः ॥ यदि व्रीडापरा सा तु भोजने तद्गृहाद्बहिः ॥ स्थितस्तवास्पठेत्स्तोत्रं यावत्तृप्तिः प्रजायते ॥ १९४ ॥ इति कुलपुरश्चरणम्॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे मध्यखण्डे दशमहाविद्यापद्धतिस्तृतीयस्तरङ्गः३ ॥


श्रीकाल्यै नमः।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ कालीतंत्रप्रारंभः ॥ तत्रादौ द्वाविंशत्यक्षरदक्षिणकाली मंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा—"ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूँ हूँ दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूँ हूँ स्वाहा" इति द्वाविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानं मंत्रमहोदधौ— अस्य श्रीदक्षिणकालीमंत्रस्य भैरव ऋषिः । उष्णिक् छंदः । दक्षिणकालिका देवता । क्रीं बीजम् । हूँ शक्तिः । क्रीं कीलकम् । ममाभीष्टसिध्यर्थे जपे विनियोगः । ॐ भैरवऋषये नमः शिरसि १ । उष्णिक्छंदसे नमः मुखे २ । दक्षिणकालिकादेवतायै नमः हृदि ३ । क्रीं बीजाय नमः गुह्ये ४ । हूँ शक्तये नमः पादयोः ५ । क्रीं कीलकाय नमः नाभौ ६ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७ । इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ क्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ क्रूं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ क्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ क्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ॐ क्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ । इति करन्यासः ॥ ॐ क्रां हृदयाय नमः १ । ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा २ । ॐ क्रूं शिखायै वषट ३ । ॐ क्रैं कवचाय हुम् ४ । ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ क्रः अस्त्राय फट ६ । इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ नमो हृदि १ । ॐ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ दक्षभुजे २ । ॐ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ नमो वामभुजे ३ । ॐ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ नमो दक्षपादे ४ । ॐ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ हँ क्षँ नमो वामपादे ५ इति विन्यसेत ॥ ॐ क्रीं नमः ब्रह्मरंध्रे १ । ॐ क्रीं नमः भ्रूमध्ये २ । ॐ क्रीं नमः ललाटे ३ । ॐ ह्रीं नमः नाभौ ४ । ॐ ह्रीं

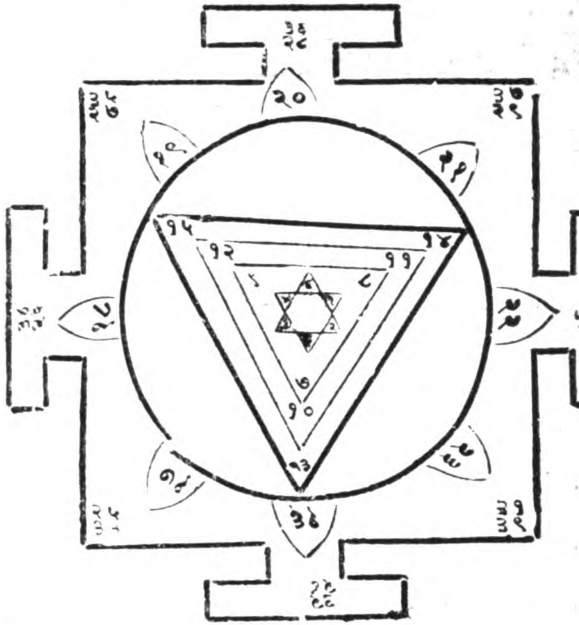
नमः गुह्ये ५ । ॐ हूँ नमः वक्त्रे ६ । ॐ क्रूँ नमः गुर्वङ्के ७ । इति विन्यसेत् ॥ इति तंत्रांतरेऽपि ॥ ततो मूलमंत्रेण नवधा सप्तधा पञ्चधा वा व्यापकन्यासं कुर्य्यात् इति न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ ॐ सद्यश्छिन्नशिरः कृपाणमभयं हस्तैर्वरं बिभ्रतीं घोरास्यां शिरसां स्रजा सुरुचिरामुन्मुक्तकेशावलिम् ॥ सृक्कासृक्प्रवहां श्मशाननिलयां श्रुत्योः शवालंकृतिं श्यामांगीं कृतमेखलां शवकरैर्देवीं भजे कालिकाम् ॥ १ ॥ अथ कालीतंत्रोक्तध्यानम्—ॐ शवारूढां महाभीमां घोरदंष्ट्रां हसन्मुखीम् ॥ चतुर्भुजां खड्गमुण्डवराभयकरां शिवाम् ॥ १ ॥ मुंडमालाधरां देवीं ललज्जिह्वां दिगम्बराम् ॥ एवं संचिंतयेत्कालीं श्मशानालयवासिनीम् ॥ २ ॥ अन्यच्च—करालवदनां घोरां मुक्तकेशीं चतुर्भुजाम् ॥ कालिकां दक्षिणां दिव्यां मुण्डमालाविभूषिताम् ॥ १ ॥ सद्यश्छिन्नशिरः खड्गवामोर्ध्वाधःकरांबुजाम् ॥ अभयं वरदं चैव दक्षिणाधोर्ध्वपाणिकाम् ॥ २ ॥ महामेघप्रभां श्यामां तथा चैव दिगंबराम् ॥ कंठावसक्तमुंडालीगलद्रुधिरचर्चिताम् ॥ ३ ॥ कर्णावतंसतानीतशवयुग्मभयानकाम् ॥ घोरदंष्ट्राकरालास्यां पीनोन्नतपयोधराम् ॥ ४ ॥ शवानां करसंघातैः कृतकांचीं हसन्मुखीम् ॥ सृक्कद्वयगलद्रक्तधाराविस्फुरिताननाम् ॥ ५ ॥ घोररूपां महारौद्रीं श्मशानालयवासिनीम् ॥ दन्तुरां दक्षिणव्यापिमुक्तलंबकचोच्चयाम् ॥ ६ ॥ शवरूपमहादेवहृदयोपरिसंस्थिताम् ॥ शिवाभिर्घोररूपाभिश्चतुर्दिक्षु समन्विताम् ॥ ७ ॥ महाकालेन सार्द्धोर्द्धमुपविष्टरतातुराम्[1] ॥ सुखप्रसन्नवदनां स्मेराननसरोरुहाम् ॥ ८ ॥ एवं संचिंतयेद्देवीं श्मशानालयवासिनीम् ॥ इति ॥ अथ हंसतंत्रोक्तध्यानम् । नमामि दक्षिणामूर्तिं कालिकां परभैरवीम् ॥ भिन्नाञ्जनचयप्रख्यां प्रवीरशवसंस्थिताम् ॥ १ ॥ गलच्छोणितधाराभिः स्मेराननसरोरुहाम् ॥ पीनोन्नतकुचद्वन्द्वां पीनवक्षोनितंबिनीम् ॥ २ ॥ दक्षिणां मुक्तकेशालीं दिगम्बरविनोदिनीम् ॥ महाकालशवाविष्टां स्मेरानन्दोपरिस्थिताम् ॥ ३ ॥ मुखसान्द्रस्मितामोदमोदिनीं मदविह्वलाम् ॥ आरक्तमुखसान्द्राभिर्नेत्रालीभिर्विराजिताम् ॥ ४ ॥ शवद्वयकृतोत्तंसां सिन्दूरतिलकोज्ज्वलाम् ॥ पञ्चाशन्मुण्डघटितमालाशोणितलोहिताम् ॥ ५ ॥ नाना

[1] मतांतरे—महाकालेन च समं विपरीतरतातुराम् ॥ इति पाठः ॥

मणिविशोभाढयनानालंकारशोभिताम् ॥ शवास्थिकृतकेयूरशंखकंकणमण्डिताम् ॥ ६ ॥ शववक्षस्समारूढां लेलिहानां शवं कचित् ॥ शवमांसकृतग्रासां साट्टहासं मुहुर्मुहुः ॥ ७ ॥ खड्गमुण्डधरां वामे सव्येऽभयवरप्रदाम् ॥ दंतुरां च महारौद्रीं चण्डनादातिभीषणाम् ॥ ८ ॥ शिवाभिर्घोररूपाभिर्वेष्टितां भयनाशिनीम् ॥ माभैर्माभैस्स्वभक्तेषु जल्पंतीं घोरनिःस्वनैः ॥ यूयं किमिच्छथ ब्रूत ददामीति प्रभाषिणीम् ॥ ९ ॥ इति ध्यानम् ॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूजयेत् । ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले पद्धतिमार्गेण मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य "ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः" इति पीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् । तथा च—पूर्वादिक्रमेण ॐ जयायै नमः १ ॥ ॐ विजयायै नमः २ ॥ ॐ अजितायै नमः ३ ॥ ॐ अपराजितायै नमः ४ ॥ ॐ नित्यायै नमः ५ ॥ ॐ विलासिन्यै नमः ६ ॥ ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७ ॥ ॐ अघोरायै नमः ८ ॥ मध्ये ॐ मंगलायै नमः ९ ॥ इति पीठशक्तीः संपूजयेत् । ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेणावेष्ट्य "ॐ ह्रीं कालिकायोगपीठात्मने नमः" इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पद्धतिमार्गेण प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्य्यात् । तद्यथा—पुष्पांजलिमादाय—ॐ संविन्मये परेशानि परामृते चरुप्रिये ॥ अनुज्ञां दक्षिणे देवि परिवारार्चनाय मे ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् । इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत । तथा च—षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च षडंगानि पूजयेत् ॥ तत्र ध्यानम्—तुषारस्फटिकश्यामनीलकृष्णारुणास्तथा ॥ वरदाभयधारिण्यः प्रधानतनवः स्त्रियः ॥ इति ध्यात्वा पूजयेत् । तद्यथा—ॐ क्रां हृदयाय नमः हृदयदेवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ इति सर्वत्र १ ॥ ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा शिरोदेवताश्रीपा० २ ॥ ॐ क्रूं [illegible]खायै वौषट् शिखादेवताश्रीपा० ३ । ॐ क्रैं कवचाय हुं कवचदेवताश्रीपा० ४ ॥ ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रदेवता[illegible]पा० ५ ॥ ॐ क्रः अस्त्राय फट अस्त्रदेवताश्रीपा० ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् । ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य्य ॐ अभीष्ट

सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले॥भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घोद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् । इति प्रथमावरणम् ॥१ ॥ ततः पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राची क्रमेण षट्कोणेषु काल्यादीः पूजयेत् । तत्र ध्यानम्–ॐ सर्वाः श्यामा असिकरा मुण्डमालाविभूषिताः ॥ तर्जनीं वामहस्तेन धारयंत्यश्च सुस्मिताः॥इति ध्यात्वा पूजयेत्। तद्यथा–ॐ काल्यै नमः कालीश्रीपादुकां पूजयामि त० १। ॐ कपालिन्यै नमः कपालिनीश्रीपा० २। ॐ कुल्लायै नमः कल्लाश्रीपा० ३ । ॐ कुरुकुल्लायै नमः कुरुकुल्लाश्रीपा० ४। ॐ विरोधिन्यै नमः विरोधिनी श्रीपादुकां पू० ५। ॐ विप्रचित्तायै नमः विप्रचित्ताश्रीपा० ६ । इति पूजयेत् । ततः पुष्पांजालिमादाय मूलमुच्चार्य—अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घोद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २॥ ततस्त्रियंत्रकोणेषूग्राद्या नव पूजयेत । तत्र क्रमः–प्रथमत्रिकोणसम्मखे ॐ उग्रायै नमः उग्राश्रीपा० १ । वामे ॐ उग्रप्रभायै नमः उग्रप्रभाश्रीपा० २ । दक्षे ॐ दीप्तायै नमः दीप्ताश्रीपा० ३। द्वितीयत्रिकोणसम्मुखे ॐ नीलायै नमः नीला श्रीपा० ४। वामे ॐ घनायै नमः घनाश्रीपा० ५। दक्षे ॐ बलाकिकायै नमः बलाकिकाश्रीपा० ६ । तृतीयत्रिकोणसम्मुखे ॐ मात्रायै नमः मात्राश्रीपा० ७ । वामे ॐ मुद्रायै नमः मुद्राश्रीपा० ८। दक्षे ॐ मित्रायै नमः मित्राश्रीपा०। ९ इति पूजयेत् । ततः पुष्पांजालिमादाय मूलमुच्चार्य

दक्षिणकालीपूजनयंत्रम् ।



अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततोऽष्टदले प्राचीक्रमेणाष्ट शक्तीः पूजयेत् । तद्यथा—दण्डं कमण्डलुं पश्चादक्षसूत्रं महाभयम् ॥ बिभ्रती कनकच्छाया ब्राह्मीकृष्णाजिनोज्ज्वला ॥ १ ॥ शूलं परश्वधं क्षुद्रदुन्दुभिं नृकरोटिकाम् ॥ वहंती हिमसंकाशा ध्येया माहेश्वरी शुभा ॥ २ ॥ अंकुशं दण्डखट्वांगौ पाशं च दधती करैः ॥ बंधूकपुष्पसंकाशा कुमारी कामदायिनी ॥ ३ ॥ चक्रं घंटां कपालं च शंखं च दधती करैः ॥ तमालश्यामला ध्येया वैष्णवी विभ्रमोज्ज्वला ॥ ४ ॥ मुशलं करवालं च खेटकं दधती हलम् ॥ करैश्चतुर्भिर्वाराही ध्येया कालघनच्छविः ॥५॥ अंकुशं तोमरं विद्युत्कुलिशं बिभ्रती करैः ॥इन्द्रनीलनिभेन्द्राणी ध्येया सर्वसमृद्धिदा ॥ ६ ॥ शूलं कृपाणं नृशिरः कपालं दधती करैः ॥ मुण्डस्रङ्मंडिता ध्येया चामुण्डा रक्तविग्रहा ॥७॥ अक्षस्रजं बीजपूरं कपालं दधती करैः ॥ वहंती हेमसंकाशा मोहलक्ष्मीः समीरिता ॥८॥ इति ध्यात्वा पूजयेत् ॥ तद्यथा—ॐ ब्राह्म्यै नमः ब्राह्मीश्रीपा० १ । ॐ नारायण्यै नमः नारायणीश्रीपा० २। ॐ माहेश्वर्यै नमः माहेश्वरीश्रीपा०३ । ॐ चामुंडायै नमः चामुंडाश्रीपा०४ । ॐ कौमार्यै नमः कौमारीश्रीपा० ५ । ॐ अपराजितायै नमः अपराजिताश्रीपा० ६ । ॐ वाराह्यै नमः वाराहीश्रीपा० ७ ॐ नारसिंह्यै नमः नारसिंहीश्रीपा ८ । इति पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य—अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् । इति चतुर्थावरणम् ॥४ ॥ ततो भूपुराभ्यंतरेऽष्टसु दिक्षु प्राचीक्रमेण अष्टभैरवान् पूजयेत् । तत्र ध्यानम् । भीषणास्यं त्रिनयनमर्द्धचन्द्रविभूषितम् ॥ स्फटिकाभं कंकणादिभूषाशतसमायुतम्॥१॥ अष्टवर्षवयस्कं च कुंतलोल्लसितं भजे ॥ धारयंतं दण्डशूले भैरव्यादिसमायुतम् ॥ २ ॥ इति ध्यात्वा पूजयेत् । शाक्तप्रमोदे—ॐ ऐं ह्रीं अं असितांगभैरवाय नमः असितांगभैरवश्रीपा० १ । ॐ ऐं ह्रीं इं रुरुभैरवाय नमः रुरुभैरवश्रीपा० २ । ॐ ऐं ह्रीं उं चंडभैरवाय नमः चंडभैरवश्रीपा० ३ । ॐ ऐं ह्रीं ऋं क्रोधभैरवाय नमः क्रोधभैरवश्रीपा० ४ । ॐ ऐं ह्रीं ऌं उन्मत्तभैरवाय नमः उन्मत्तभैरवश्रीपा० ५ ॥ ॐ ऐं ह्रीं एं कपालि

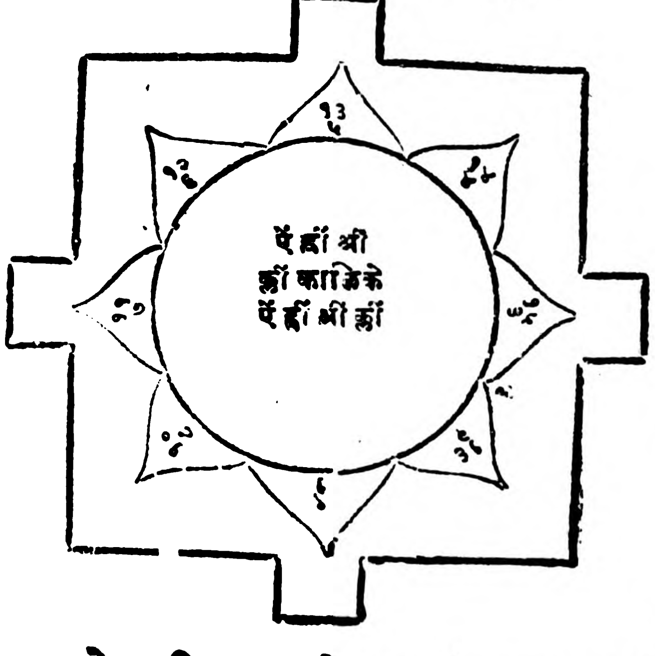
भैरवाय नमः कपालिभैरवश्रीपा० ६। ॐ ऐं ह्रीं आं भीषणभैरवाय नमः भीषणभैरवश्रीपा० ७। ॐ ऐं ह्रीं अं संहारभैरवाय नमः संहारभैरवश्रीपा० ८। इति पूजयेत् ॥ ततस्तत्समीपेऽष्टभैरवीः पूजयेत्। तत्र ध्यानम्। भावयेच्च महादेवीं चन्द्रकोटियुतप्रभाम् ॥ हिमकुन्देन्दुधवलां पंचवक्त्रां त्रिलोचनाम् ॥ १ ॥ अष्टादशभुजैर्युक्तां सर्वानंदकरोद्यताम् ॥ प्रहसंतीं विशालाक्षीं देवदेवस्य संमुखीम् ॥ २ ॥ इति ध्यात्वा पूजयेत्। तद्यथा—ॐ श्रीं श्रीभैरव्यै नमः श्रीभैरवीश्रीपा० १। ॐ मं महाभैरव्यै नमः महाभैरवीश्रीपा० २। ॐ सिं सिंहभैरव्यै नमः सिंहभैरवीश्रीपा० ३। ॐ धूं धूम्रभैरव्यै नमः धूम्रभैरवीश्रीपा० ४। ॐ भीं भीमभैरव्यै नमः भीमभैरवीश्रीपा० ५। ॐ उं उन्मत्तभैरव्यै नमः उन्मत्तभैरवीश्रीपा० ६। ॐ वं वशीकरणभैरव्यै नमः वशीकरणभैरवीश्रीपा० ७। ॐ मों मोहनभैरव्यै नमः मोहनभैरवीश्रीपा० ८। इति पूजयेत ॥ ततो भूपुराद्बहिः इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च पद्धतिमार्गेण पूजयेत् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात्। अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः करवीरपुष्पैर्दशांशतो होमः एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति। एतत्सिद्धेर्मंत्री प्रयोगान्साधयेत्। तथा च—एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षं जुहुयात्तद्दशांशतः ॥ प्रसूनैः करवीरोत्थैः पूजायंत्रमथोच्यते ॥ १ ॥ एवमाराधिता काली सिद्धा भवति मंत्रिणाम् ॥ ततः प्रयोगान्कुर्वीत महाभैरवभाषितान् ॥ २ ॥ आत्मनोऽर्थे परस्यार्थे श्रीप्रसिद्धिप्रदायकान् ॥ सुदृशो मदनावासं पश्यन् यः प्रजपेन्मनुम् ॥ ३ ॥ अयुतं सोऽचिरादेव वाक्पतेः समतामियात् ॥ दिगंबरो मुक्तकेशः श्मशानस्थोऽर्धयामिनि ॥ ४ ॥ जपेद्योऽयुतमेतस्य भवेयुः सर्वकामनाः ॥ शावं हृदयमारुह्य निर्वासाः प्रेतभूगतः ॥ ५ ॥ अर्कपुष्पसहस्रेण युक्तेन स्वीयरेतसा ॥ देवीं यः पूजयेद्भक्त्या जपन्नेकैकशो मनुम् ॥ ६ ॥ सोऽचिरेणैव कालेन धरणीप्रभुतां व्रजेत् ॥ रजःकीर्णभगं नार्या ध्यायन्योऽयुतमाजपेत् ॥ ७ ॥ स कवित्वेन रम्येण जनान्मोहयति ध्रुवम् ॥ त्रिपंचारे महापीठे शवस्य हृदि संस्थिताम् ॥ ८ ॥ महाकालेन देवेन मारयुद्धं प्रकुर्वतीम् ॥ तां ध्यायन् स्मेरवदनां विदधत्सुरतं स्वयम् ॥ ९ ॥ जपेत्सहस्रमपि यः स शंकरसमो भवेत् ॥ अस्थिलोमत्वचायुक्तं मांसं मार्जारमेषयोः ॥ १० ॥ उष्ट्रस्य महिषस्यापि बलिं यस्तु समर्पयेत् ॥ भूताष्टम्योर्मध्यरात्रे वश्याः स्युस्तस्य

जंतवः ॥ ११ ॥ विद्यालक्ष्मीयशःपुत्रैः सुचिरं सुखमेधते ॥ यो हविष्याशनरतो दिवा देवीं स्मरन् जपेत् ॥ १२ ॥ नक्तं निधुवनासक्तो लक्षं स स्याद्धरापतिः ॥ रक्तांभोजैर्हुतैर्मंत्री धनैर्जयति वित्तपम् ॥ १३ ॥ बिल्वपत्रैर्भवेद्राज्यं रक्तपुष्पैर्वशीकृतिः ॥ असृजा महिषादीनां कालिकां यस्तु तर्पयेत् ॥ १४ ॥ तस्य स्युरचिरादेव करस्थाः सर्वसिद्धयः ॥ यो लक्षं प्रजपेन्मंत्रं शवमारुह्य मंत्रवित् ॥ तस्य सिद्धो मनुः सद्यः सर्वेप्सितफलप्रदः ॥ १५ ॥ तेनाश्वमेधप्रमुखैर्यागैरिष्टं सुजन्मना ॥ दत्तं दानं तपस्तप्तमुपास्ते यस्तु कालिकाम् ॥ ॥ १६ ॥ ब्रह्मा विष्णुः शिवो गौरी लक्ष्मीर्गणपती रविः ॥ पूजिताः सकला देवा यः कालीं पूजयेत्सदा ॥ १७ ॥ इति द्वाविंशत्यक्षरदक्षिणकालीमंत्रप्रयोगः ॥ १ ॥ अथ दक्षिणकालीमंत्रभेदः मंत्रमहोदधौ ॥ मंत्रो यथा—ॐ ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिणकालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं इत्येकविंशत्यक्षरो मंत्रः। अस्य विधानं—बिल्वमूले शवारूढो वटमूले तथैव च ॥ लक्षं मनुमिमं जप्त्वा सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥२॥ इति। अन्यस्तु—क्रीं हूं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा। इति चतुर्दशाक्षरो मंत्रः ॥ ३ ॥ अन्यश्च—ॐ हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं दक्षिणकालिके हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं स्वाहा इति द्वाविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ ४ ॥ अन्यश्च—ॐ क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणकालिके स्वाहा। इति पंचदशाक्षरो मंत्रः ॥५॥ अन्यश्च—ॐ क्रीं इत्येकाक्षरो मंत्रः ॥ ६ ॥ अन्यश्च—ॐ क्रीं कालिके स्वाहा। इति षडक्षरो मंत्रः ॥ ७ ॥ अन्यश्च—ॐ क्रीं हूं ह्रीं इति त्र्यक्षरो मंत्रः ॥ ८ ॥ अन्यश्च—ॐ क्रीं हूं ह्रीं हुं फट्। इति पंचाक्षरो मंत्रः ॥ ॥ ९ ॥ ॐ हूं ह्रीं हुं फट् स्वाहा। इति सप्ताक्षरो मंत्रः ॥ १० ॥ अस्य विधानं सर्वं पूर्ववत् ज्ञेयम्। तथा च—एतेषां पूर्ववत्प्रोक्तं यजनं नारदादिभिः ॥ निग्रहानुग्रहे शक्ताः कालीमंत्राः स्मृता इमे ॥ इति दक्षिणकालीमंत्रप्रयोगः ॥ अथ भद्रकालीमंत्रप्रयोगः ॥ तंत्रांतरेऽपि मंत्रो यथा—ॐ ह्रौं कालि महाकालि किलिकिले फट् स्वाहा। इति चतुर्दशाक्षरो मंत्रः। अस्य विधानं न्यासादिकं पूर्ववत्कृत्वा ध्यायेत्। अथ ध्यानम्। क्षुत्क्षामा कोटराक्षी मसिमलिनमुखी मुक्तकेशी रुदंती नाहं तृप्ता वदंती जगदखिलमिदं ग्रासमेकं करोमि ॥ हस्ताभ्यां धारयंती ज्वलदनलशिखासन्निभं पाशमुग्रं दंतैर्जंबूफलाभैः परिहरतु भयं पातु मां भद्रकाली ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा

...ादिकं सर्वं पूर्ववत् कृत्वा जपं कुर्य्यात् ॥ तथा च--जपमाला विधातव्या ह्यष्टोत्तरशतेन वा ॥ ध्यातव्येयं महाकाली देवी सर्वभयापहा ॥ १ ॥ प्रयोगमात्रं कर्तव्यं वैरिनिग्रहकारकम् ॥ इयं देवी महादेव शत्रुनिग्रहकारिणी ॥ यथेष्टं चिंतयाऽऽचिंत्य धर्मकर्मार्थसिद्धिदा ॥ ॥ २ ॥ अत्र पुरश्चरणादिकं सर्वं दक्षिणकालीवत् ज्ञेयम् । इति चतुर्दशाक्षरभद्रकालीमंत्रप्रयोगः ॥ अथ श्मशानकालीमंत्रप्रयोगः ॥ तंत्रसारेऽपि मंत्रो यथा—ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कालिके ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं । इत्येकादशाक्षरो मंत्रः । अस्य विधानम्—अस्य श्मशानकालीमंत्रस्य भृगुर्ऋषिः । त्रिवृच्छंदः । श्मशानकाली देवता । ऐं बीजम् । ह्रीं शक्तिः । क्लीं कीलकम् । मम सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः । ॐ भृगुऋषये नमः शिरसि १ ॥ त्रिवृच्छंदसे नमः मुखे २ ॥ श्मशानकालिकादेवतायै नमः हृदि ३ ॥ ऐं बीजाय नमः गुह्ये ४ । ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ५ ॥ क्लीं कीलकाय नमः नाभौ ६ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ ॥ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ ॥ श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३ ॥ क्लीं अनामिकाभ्यां नमः ४ ॥ कालिके कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ॥ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कालिके ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ऐं हृदयाय नमः १ ॥ ह्रीं शिरसे स्वाहा २ ॥ श्रीं शिखायै वषट् ३ ॥ क्लीं कवचाय हुँ ४ ॥ कालिके नेत्रत्रयाय वौषट् ५ ॥ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कालिके ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः॥ इति न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अंजनाद्रिनिभां देवीं श्मशानालयवासिनीम् ॥ रक्तनेत्रां मुक्तकेशीं शुष्कमांसातिभैरवीम् ॥ १ ॥ पिंगाक्षीं वामहस्तेन मद्यपूर्णां समांसकाम् ॥ सद्यः कृत्तं शिरो दक्षहस्तेन दधतीं शिवाम् ॥ २ ॥ स्मितवक्त्रां सदा चाममांसचर्वणतत्पराम् ॥ नानालंकारभूषांगीं नग्नां मत्तां सदा शवैः ॥ ३ ॥ इति ध्यात्वा पूर्वोक्तपीठपूजां कुर्य्यात् । ततस्ताम्रपात्रे पद्माष्टदलं वृत्तं तद्बाह्ये धरणीतले चतुरस्रं यंत्रं लिखित्वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण प्रोक्ष्य ह्रीं कालिकायोगपीठात्मने नमः । इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्या आज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्य्यात् । ततोऽष्टदले ॐ ब्राह्म्यै नमः १ ॥ ॐ माहेश्वर्यै नमः २ ॥ ॐ कौमार्यै

नमः ३ ॥ ॐ वैष्णव्यै नमः ४ ॥ ॐ वाराह्यै नमः ५ ॥ ॐ इन्द्राण्यै नमः ६ ॥ ॐ चामुंडायै नमः ७ ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः ८ ॥ इति प्राचीक्रमेण पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । तद्बाह्ये प्राचीक्रमेण ॐ असितांग भैरवाय नमः १ । ॐ रुरुभैरवाय नमः २ । ॐ चंडभैरवाय नमः ३ । ॐ क्रोध भैरवाय नमः ४ । ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः ५ ॥ ॐ कपालिभैरवाय नमः ६ । ॐ भीषणभैरवाय नमः ७ । ॐ संहारभैरवाय नमः ८ । इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । ततो भूपुरे इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्यात् । तथाच—एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं श्मशाने तु विशेषतः ॥ गृहे वापि गृहस्थोऽपि मत्स्यमांसैः सुभोजनैः ॥ १ ॥ नग्नो भूत्वा महापूजां कुर्याद्रात्रौ समाहितः ॥ वर्णलक्षं जपेन्मन्त्रं तद्दशांशेन होमयेत् ॥ २ ॥ एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री पूर्वोक्तप्रयोगान् साधयेत् ॥ इति श्मशानकालीमन्त्रप्रयोगः ॥ ६ ॥ इति श्रीकालीपटलं समाप्तम् ॥ अथ श्यामा (अर्थात्) दक्षिणकाली कवचप्रारंभः ॥ भैरव्युवाच ॥ कालीपूजा श्रुता नाथ भावाश्च विविधाः प्रभो ॥

श्मशानकालीपूजनयन्त्रम् ।



इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं पूर्वसूचितम् ॥ १ ॥ त्वमेव श्रेष्ठः पाता च संहर्ता च त्वमेव हि ॥ त्वमेव शरणं नाथ पाहि मां दुःखसंकटात् ॥ २ ॥ भैरव उवाच ॥ रहस्यं शृणु वक्ष्यामि भैरवि प्राणवल्लभे ॥ श्रीजगन्मंगलं नाम कवचं मंत्रविग्रहम् ॥ ३ ॥ पठित्वा धारयित्वा च त्रैलोक्यं मोहयेत्क्षणात् ॥ नारायणोऽपि यद्धृत्वा नारी भूत्वा महेश्वरम् ॥ ४ ॥ योगिनं क्षोभमनयद्यद्धृत्वा च

रघूत्तमः ॥ वरतृप्तौ जघानैव रावणादिनिशाचरौ ॥ ५ ॥ यस्य प्रसादादीशोऽपि त्रैलोक्यविजयी विभुः ॥ धनाधिपः कुबेरोऽपि सुरेशोऽभूच्छचीपतिः ॥ ६ ॥ एवं हि सकला देवाः सर्वसिद्धीश्वराः प्रिये ॥ श्रीजगन्मंगलस्यापि कवचस्य ऋषिः शिवः ॥ ७ ॥ छन्दोऽनुष्टुब्देवता च कालिका दक्षिणेरिता ॥ ८ ॥ जगतां मोहने दुष्टविजये भुक्तिमुक्तिषु ॥ योषिदाकर्षणे चैव विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ ९ ॥ ॥ पाठः ॥ शिरो मे कालिका पातु क्रींकारैकाक्षरी परा ॥ क्रीं क्रीं क्रीं मे ललाटं च कालिका खड्गधारिणी ॥ १० ॥ हूँ हूँ पातु नेत्रयुग्मं ह्रीं ह्रीं पातु श्रुती मम ॥ दक्षिणे कालिका पातु घ्राणयुग्मं महेश्वरी ॥ ११ ॥ क्रीं क्रीं क्रीं रसनां पातु हूँ हूँ पातु कपोलकम् ॥ वदनं सकलं पातु ह्रीं ह्रीं स्वाहास्वरूपिणी ॥ १२ ॥ द्वाविंशत्यक्षरा स्कंधौ महाविद्या सुखप्रदा ॥ खड्गमुंडधरा काली सर्वांगमभितोऽवतु ॥ १३ ॥ क्रीं हूँ ह्रीं त्र्यक्षरा पात चामुंडा हृदयं मम ॥ ऐं हूं ॐ ऐं स्तनद्वंद्वं ह्रीं फट् स्वाहा ककुत्स्थलम् ॥ १४ ॥ अष्टाक्षरा महाविद्या भजौ पातु सकर्तृका ॥ क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं करौ पातु षडक्षरी मम ॥ १५ ॥ क्रीं नाभिं मध्यदेशं च दक्षिणे कालिकावतु ॥ क्रीं स्वाहा पातु पृष्ठं च कालिका सा दशाक्षरा ॥ १६ ॥ क्रीं मे गुह्यं सदा पातु कालिकायै नमस्ततः ॥ सप्ताक्षरा महाविद्या सर्वतंत्रेषु गोपिता ॥ १७ ॥ ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिका हूँ हूँ पातु कटिद्वयम् ॥ काली दशाक्षरा विद्या स्वाहा ममोरुयुग्मकम् ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं क्रीं मे स्वाहा पातु कालिका जानुनी सदा ॥ काली हृदयविद्येयं चतुर्वर्गफलप्रदा ॥ १९ ॥ क्रीं ह्रीं ह्रीं पातु सा गुल्फं दक्षिणे कालिकावतु ॥ क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा पदं पातु चतुर्दशाक्षरा मम ॥ २० ॥ खड्गमुंडधरा काली वरदा भयहारिणी ॥ विद्याभिः सकलाभिः सा सर्वांगमभितोऽवतु ॥ २१ ॥ काली कपालिनी कुल्ला कुरुकुल्ला विरोधिनी ॥ विप्रचित्ता तथोग्रोग्रप्रभा दीप्ता घनत्विषा ॥ २२ ॥ नीला घना बलाका च मात्रा मुद्रामिता च मा ॥ एताः सर्वाः खड्गधारा मुंडमालाविभूषणाः ॥ २३ ॥ रक्षंतु दिग्विदिक्षु मां ब्राह्मी नारायणी तथा ॥ माहेश्वरी च चामुंडा कौमारी चापराजिता ॥ २४ ॥ वाराही नारसिंही च सर्वाश्चामितभूषणाः ॥ रक्षंतु स्वायुधैर्दिक्षु विदिक्षु मां यथा तथा ॥ २५ ॥ इति ते कथितं दिव्यं कवचं परमाद्भुतम् ॥

श्रीजगन्मंगलं नाम महाविद्यौघविग्रहम् ॥ २६ ॥ त्रैलोक्याकर्षकं ब्रह्मन् कवचं मन्मुखोदितम् ॥ गुरुपूजां विधायाथ विधिवत् प्रपठे त्ततः ॥ २७ ॥ कवचं त्रिः सकृद्वापि यावज्जीवं च वा पुनः ॥ एतच्छतार्द्धमावर्त्य त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥ २८ ॥ त्रैलोक्यं क्षोभयत्येव कवचस्य प्रसादतः ॥ महाकविर्भवेन्मासात्सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥ २९ ॥ पुष्पांजलिं कालिकायै मूलेनैवार्पयेत्सकृत् ॥ शतवर्षसहस्राणां पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥ ३० ॥ भूर्जे विलिखितं चैतत्स्वर्णस्थं धारयेद्यदि ॥ शिखायां दक्षिणे बाहौ कंठे वा धारयेद्यदि ॥ ३१ ॥ त्रैलोक्यं मोहयेत्क्रोधात्त्रैलोक्यं चूर्णयेत्क्षणात् ॥ पुत्रवान्धनवान्श्रीमान्नानाविद्यानिधिर्भवेत् ॥ ३२ ॥ ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि तद्गात्रस्पर्शनात्ततः ॥ नाशमायांति या नारी वंध्या च मृतपुत्रिणी ॥ ३३ ॥ कंठे वा वामबाहौ वा कवचस्य च धारणात् ॥ बह्वपत्या जीववत्सा भवत्येव न संशयः ॥ ३४ ॥ न देयं परशिष्येभ्यो ह्यभक्तेभ्यो विशेषतः ॥ शिष्येभ्यो भक्तियुक्तेभ्य श्चान्यथा मृत्युमाप्नुयात् ॥ ३५ ॥ स्पर्द्धामुद्धूय कमलावाग्देवीमंदिरे मुखे ॥ पौत्रांतं स्थैर्यमास्थाय निवसत्येव निश्चितम् ॥ ३६ ॥ इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेत्कालिदक्षिणम्॥ शतलक्षं प्रजप्त्वापि तस्य मंत्रो न सिद्ध्यति ॥ स शस्त्रघातमाप्नोति सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात् ॥ ॥३७॥इति भैरवतंत्रे भैरवभैरवीसंवादे श्यामादक्षिणकालिकाकवचं समाप्तम् ॥ अथ श्यामा (अर्थात्)दक्षिणकालिकर्पूरस्तोत्रप्रारंभः ॥

कर्पूरं मध्यमाद्यस्वरपररहितं सेन्दुवामाक्षियुक्तं बीजं ते मातरेतत्त्रिपुरहरवधु त्रिःकृतं ये जपंति ॥ तेषां गद्यानि पद्यानि च मुखकुहरादुल्लसंत्येव वाचः स्वच्छंदं ध्वांतधाराधररुचिरुचिरे सर्वसिद्धिं गतानाम् ॥ १ ॥ ईशानः सेन्दुवामश्रवणपरिगतो बीजमन्यन्महेशि द्वंद्वं ते मंदचेता यदि जपति जनो वारमेकं कदाचित् ॥ जित्वा वाचामधीशं धनदमपि चिरं मोहयत्यंबुजाक्षीवृंदं चंद्रार्द्धचूडे स भवति सुमहाघोररावावतंसे[1] ॥ २ ॥ ईशो वैश्वानरस्थः शशिधरविलसद्वामनेत्रेण युक्तो बीजं ते द्वंद्वमन्यद्विगलितचिकुरे कालिके ये जपंति ॥ द्वेष्टारं घ्नंति ते च त्रिभुवनमपि ते वश्यभावं नयंति सृक्कद्वंद्वास्रधाराद्वयधरवदने दक्षिणे कालिकेति ॥ ३ ॥ ऊर्द्ध्वं वामे कृपाणं कर

१ घोरशावावतंसे इति वा पाठः।

[illegible]ऽभीतिं वरं च त्रिजगदघहरे दक्षिणे कालिके च ॥ जपन्त्येतन्नाम ये वा तव मनुविभवं धारयंत्येवमंब
तेषाम[illegible]ौ करस्थाः प्रकटितवदने सिद्धयस्त्र्यंबकस्य ॥ ४ ॥ वर्गाद्यं वह्निसंस्थं विधुरतिवलितं तत्त्रयं कूर्चयुग्मं लज्जाद्वंद्वं च पश्चात्स्मित
मुखि त्वदधष्ठद्वयं योजयित्वा ॥ मातर्ये ये जपंति स्मरहरमहिले भावयंते स्वरूपं ते लक्ष्मीलास्यलीलाकमलदलदृशः कामरूपा भवंति ॥
॥ ५ ॥ प्रत्येकं वा द्वयं वा त्रयमपि च परं बीजमत्यंतगुह्यं त्वन्नाम्ना योजयित्वा सकलमपि सदा भावयंतो जपंति ॥ तेषां नेत्रार
विंदे विहरति कमलावक्त्रशुभ्रांशुबिंबे वाग्देवी दिव्यमुण्डस्रगतिशयलसत्कंठपीनस्तनाढ्ये ॥ ६ ॥ गतासूनां बाहुप्रकटकृतकांचीपरि
लसन्नितंबां दिग्वस्त्रां त्रिभुवनविधात्रीं त्रिनयनाम् ॥ श्मशानस्थे तल्पे शवहृदि महाकालसुरतप्रयुक्तां त्वां ध्यायन् जननि जडचेता अपि
कविः ॥ ७ ॥ शिवाभिर्घोराभिः शवनिवहमुंडास्थिनिकरैः परं संकीर्णायां प्रकटितचितायां हरवधूम् ॥ प्रविष्टां संतुष्टामुपरि सुरतेना
तियुवतीं सदा त्वां ध्यायंति क्वचिदपि न तेषां परिभवः ॥ ८ ॥ वदामस्ते किंवा जननि वयमुच्चैर्जडधियो न धाता नापीशो हरिरपि
न ते वेत्ति परमम् ॥ तथापि त्वद्भक्तिर्मुखरयति चास्माकमपि ते तदेतत्क्षंतव्यं न खलु पशुरोषः समुचितः ॥ ९ ॥ समंतादापीनस्तन
जघनधृग्यौवनवतीरतासक्तो नक्तं यदि जपति भक्तस्तव मनुम् ॥ विवासास्त्वां ध्यायन्गलितचिकुरस्तस्य वशगाः समस्ताः
सिद्धौघा भुवि चिरतरं जीवति कविः ॥ १० ॥ समाः स्वस्थीभूतो जपति विपरीतो यदि सदा विचिंत्य त्वां ध्यायन्नतिशयमहाकालसु
रताम् ॥ तदा तस्य क्षोणीतलविहरमाणस्य विदुषः करांभोजे वश्याः स्मरहरवधूसिद्धिनिवहाः ॥ ११ ॥ प्रसूते संसारं जननि भवती
पालयति च समस्तं क्षित्यादि प्रलयसमये संहरति च ॥ अतस्त्वां धातापि त्रिभुवनपतिः श्रीपतिरपि महेशोऽपि प्रायः सकलमपि किं
स्तौमि भवतीम् ॥ १२ ॥ अनेके सेवंते हरगृहिणि गीर्वाणनिवहा विमूढास्ते मातः किमपि नहि जानंति परमम् ॥ समाराध्यामाद्यां
हरिहरविरंच्यादिविबुधैः प्रपन्नोऽस्मि स्वैरं रतिरसमहानंदनिरताम् ॥ १३ ॥ धरित्री कीलालं शुचिरपि समीरोऽपि गगनं त्वमेका
कल्याणी गिरिशरमणी कालि सकलम् ॥ स्तुतिः का ते मातस्तव करुणया मामगतिकं प्रसन्ना त्वं भूया भवमनु न भूयान्मम जनुः ॥

॥ १४ ॥ श्मशानस्थः स्वस्थो गलितचिकुरो दिक्पटधरः सहस्रं त्वर्काणां निजगलितवीर्येण कुसुमम् ॥ जपंस्त्वत्प्रत्येकं मनुमपि तव ध्याननिरतो महाकालि स्वैरं स भवति धरित्रीपरिवृढः ॥ १५ ॥ गृहे संमार्जन्या परिगलितवीर्य्यं हि कुसुमं समूलं मध्याह्ने वितरति चितायां कुजदिने ॥ समुच्चार्य्य प्रेम्णा मनुमपि सकृत्कालि सततं गजारूढो याति क्षितिपरिवृढः सत्कविवरः ॥ १६ ॥ स्वपुष्पैरा कीर्णं कुसुमधनुषो मंदिरमहो पुरो ध्यायं ध्यायं यदि जपति भक्तस्तव मनुम् ॥ स गंधर्वश्रेणीपतिरिव कवित्वामृतनदीनदेनः पर्य्यंते परमपदलीनः प्रभवति ॥ १७ ॥ त्रिपंचारे पीठे शवशिवहृदि स्मेरवदनां महाकालेनोच्चैर्मदनरसलावण्यनिरताम् ॥ समासक्तो नक्तं स्वयमपि रतानंदनिरतो जनो यस्त्वां ध्यायेदपि जननि स स्यात्स्मरहरः ॥ १८ ॥ सलोमास्थि स्वैरं पललमपि मार्जारमपि ते परं चोष्ट्रं मैषं नरमहिषयोश्छागमपि वा ॥ बलिं ते पूजायामपि वितरतां मर्त्यवसतां सतां सिद्धिः सर्वा प्रतिपदमपर्वा प्रभवति ॥ १९ ॥ वशी लक्षं मंत्रं प्रजपति हविष्याशनरतो दिवा मातर्युष्मच्चरणयुगलध्याननिपुणः ॥ परं नक्तं नग्नो निधुवनविनोदेन च मनुं जनो लक्षं सम्यक्स्मरहरसमानः क्षितितले ॥ २० ॥ इदं स्तोत्रं मातस्तव मनुसमुद्धारणजनुस्वरूपाख्यं पादांबुजयुगलपूजाविधियुतम् ॥ निशार्द्धे वा पूजासमय अथवा यस्तु पठति प्रलापस्तस्यापि प्रसरति कवित्वामृतरसः ॥ २१ ॥ कुरंगाक्षीवृंदस्तमनुसरति प्रेमतरलं वशस्तस्य क्षोणीपतिरपि कुबेरप्रतिनिधिः ॥ रिपुः कारागारं कलयति च तत्केलिकलया चिरं जीवन्मुक्तः स भवति सुभक्तः प्रतिजनुः ॥ २२ ॥ इति भैरवतंत्रे श्यामा (अर्थात) दक्षिणकालिकाकर्पूरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥ अथ कालीस्तवप्रारंभः ॥ प्राग्देहस्थो यदाऽहं तव चरणयुगं नाश्रितो नार्चितोऽहं तेनाद्धा कीर्तिवर्गैर्जठरजदहनैर्बाध्यमानो बलिष्ठैः ॥ क्षिप्त्वा जन्मांतरान्नः पुनरिह भविता क्वाश्रयः क्वापि सेवा क्षंतव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले ॥ १ ॥ बाल्ये बालाभिलापैर्जडित जडमतिर्बाललीलाप्रसक्तो न त्वां जानामि मातः कलिकलुषहरांभोगमोक्षप्रदात्रीम् ॥ नाचारो नैव पूजा न च यजनकथा न स्मृति नैव सेवा क्षंतव्यो० ॥ २ ॥ प्राप्तोऽहं यौवनं चेद्विषधरसदृशैरिन्द्रियैर्दष्टगात्रो नष्टप्रज्ञः परस्त्रीपरधनहरणे सर्वदा साभिलाषः ॥ त्वत्पा

दाम्भोजयुग्मं क्षणमपि मनसा न स्मृतं तत्कदापि क्षंतव्यो० ॥ ३ ॥ प्रौढे भिक्षाभिलाषी सुतदुहितृकलत्रार्थमन्नादिचेष्टः क्व प्राप्ये कुत्र यामीत्यनुदिनमनिशं चिंतया मग्नदेहः । नो ते ध्यानं न चास्था न च भजनविधिर्नामसंकीर्त्तनं वा क्षंतव्यो० ॥ ४ ॥ वृद्धत्वे बुद्धिहीनः कृशविवशतनुः श्वासकासातिसारैः कर्मानर्होऽक्षिहीनः प्रगलितदशनः क्षुत्पिपासाभिभूतः ॥ पश्चात्तापेन दग्धो मरणमनुदिनं ध्येयमात्रं न चान्यत् क्षंतव्यो मे० ॥ ५॥ कृत्वा स्नानं दिनादौ क्वचिदपि सलिलं नाहृतं नैव पुष्पं नो नैवेद्यादिकं ते क्वचिदपि विहितं नापि भावो न भक्तिः ॥ न न्यासो वै न चैवं तव गुणकथनं नापि चर्चा कृता ते क्षंतव्यो० ॥ ६ ॥ जानामि त्वां न चाहं भवभयहरणे सर्वसिद्धिप्रदात्रीं नित्यानन्दोदयाढ्यां त्रितयगुणमयीं नित्यशुद्धोदयाढ्याम् ॥ मिथ्याकर्माभिलाषैरनुदिनमभितः पीडितो दुःखसंघैः क्षंतव्यो० ॥ ७ ॥ कालाभ्रश्यामलाङ्गीं विगलितचिकुरां खड्गमुण्डाभिरामां त्रासत्राणेष्टदात्रीं कुणपगणशिरोमालिनीं दीर्घनेत्राम् ॥ संसारस्यैकसारां भवजननहरां भावितो भावनाभिः क्षंतव्यो० ॥ ८ ॥ ब्रह्मा विष्णुस्तथेशः परिणमति सदा त्वत्पदाम्भोजयुग्मं भाग्याभावान्न चाहं भवजननि भवत्पादयुग्मं भजामि ॥ नित्यं लोभप्रलोभैः कृतविवशमतिः कामुकस्त्वां प्रयाचे क्षंतव्यो० ॥९॥ रागद्वेषैः प्रमत्तः कलुषयुततनुः कामनाभोगलुब्धः कार्याकार्याविचारी कुलमतिरहितः कौलसंघैर्विहीनः ॥ क्व ध्यानं ते क्व चर्चा क्व च मनुजपनं नैव किंचित्कृतं हि क्षंतव्यो० ॥ १० ॥ रोगी दुःखी दरिद्रः परवशकृपणः पांशुलः पापचेता निद्रालस्यप्रसक्तः सुजठरभरणे व्याकुलः कल्पितात्मा ॥ किं ते पूजाविधानं त्वयि क्व च नु मतिः क्वानरागः क्व चास्था क्षंतव्यो० ॥ ११ ॥ मिथ्याव्यामोहरागैः परिवृतमनसः क्लेशसंघान्वितस्य क्षुन्निद्रौघान्वितस्य स्मरसुविहारिणः पापकर्मप्रवृत्तेः ॥ दारिद्र्यस्य क्व धर्म्मः क्व च जननरुचिः क्व स्थितिः साधुसंघैः क्षंतव्यो० ॥ १२ ॥ मातस्तातस्य देहाज्जननिजठरगः संस्थितस्त्वद्वशेऽहं त्वं हर्त्री कारयित्री करणगुणमयी कर्महेतुस्वरूपा ॥ त्वं बुद्धिश्चित्तसंस्थाप्यहमतिभवती सर्वमेतत्क्षमस्व क्षंतव्यो० ॥ १३ ॥ त्वं भूमिस्त्वं जलं च त्वमसि हुतवहस्त्वं जगद्वायुरूपा त्व चाकाशं मनश्च प्रकृतिरसि महत्पूर्विका पूर्वपूर्वा ॥ आत्मा त्वं चासि मातः परमसि भवती त्वं परं नैव किंचित् क्षंतव्यो०॥१४॥

त्वं काली त्वं च तारा त्वमसि गिरिसुता सुन्दरी भैरवी त्वं त्वं दुर्गा छिन्नमस्ता त्वमसि च भुवना त्वं हि लक्ष्मीः शिवा त्वम् ॥ धूमा मातङ्गिनी त्वं त्वमसि च बगला मङ्गलादिस्तवाख्या क्षंतव्यो० ॥ १५ ॥ स्तोत्रेणानेन देवीं परिणमति जनो यः सदा भक्तियुक्तो दुष्कृत्यादुर्गसंघं परितरति शतं विघ्नता नाशमेति ॥ नाधिर्व्याधिः कदाचिद्भवति यदि पुनः सर्वदा सापराधः सर्वं तत्कामरूपे त्रिभुवनजननि क्षामयेः पुत्रबुद्ध्या ॥१६॥ ज्ञाता वक्ता कवीशो भवति धनपतिर्दानशीलो दयात्मा निष्पापी निष्कलंकी कुलपतिकुशलः सत्यवाग्धार्मिकश्च ॥ नित्यानन्दो दयाढ्यः पशुगणविमुखः सत्पथाचारशीलः संसाराब्धिं सुखेन प्रतरति गिरिजापादयुग्मावलम्बात् ॥ १७॥ इति कालीस्तोत्रं समाप्तम् ॥ अथ काल्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रप्रारंभः ॥ श्रीभैरव उवाच ॥ शतनाम प्रवक्ष्यामि कालिकाया वरानने ॥ यस्य प्रपठनाद्वाग्मी सर्वत्र विजयी भवेत् ॥ १ ॥ काली कपालिनी कांता कामदा कामसुन्दरी ॥ कालरात्रिः कालिका च कालभैरवपूजिता ॥ २ ॥ कुरुकुल्ला कामिनी च कमनीयस्वभाविनी ॥ कुलीना कलकर्त्री च कुलवर्त्मप्रकाशिनी ॥ ३ ॥ कस्तूरिरसनीला च काम्या कामस्वरूपिणी ॥ ककारवर्णनिलया कामधेनुः करालिका ॥ ४ ॥ कुलकांता करालास्या कामार्त्ता च कलावती ॥ कृशोदरी च कामाख्या कौमारी कुलपालिनी ॥ ५ ॥ कुलजा कुलकन्या च कलहा कुलपूजिता ॥ कामेश्वरी कामकांता कुञ्जरेश्वरगामिनी ॥ ६ ॥ कामदात्री कामहर्त्री कृष्णा चैव कपर्दिनी ॥ कुमुदा कृष्णदेहा च कालिन्दी कुलपूजिता ॥ ७ ॥ काश्यपी कृष्णमाता च कुलिशाङ्गी कला तथा ॥ क्रींरूपा कुलगम्या च कमला कृष्णपूजिता ॥ ८ ॥ कृशाङ्गी किन्नरी कर्त्री कलकण्ठी च कार्तिकी ॥ कम्बुकण्ठी कौलिनी च कुमुदा कामजीविनी ॥ ९ ॥ कुलस्त्रीकीर्तिका कृत्या कीर्तिश्च कुलपालिका ॥ कामदेवकला कल्पलता कामाङ्गवर्द्धिनी ॥ १० ॥ कुंता च कुमुदप्रीता कदम्बकुसुमोत्सुका ॥ कादम्बिनी कमलिनी कृष्णानंदप्रदायिनी ॥ ११ ॥ कुमारीपूजनरता कुमारीगणशोभिता ॥ कुमारीरंजनरता कुमारीव्रतधारिणी ॥ १२ ॥ कंकाली कमनीया च कामशास्त्रविशारदा ॥ कपालखट्वांगधरा कालभैरवरूपिणी ॥ १३ ॥ कोटरी कोटराक्षी च काशीकैलासवासिनी ॥ कात्यायनी कार्यकरी काव्यशास्त्र

प्रमोदिनी ॥ १४ ॥ कामाकर्षणरूपा च कामपीठनिवासिनी ॥ कंकिनी काकिनी क्रीडा कुत्सिता कलहप्रिया ॥ १५ ॥ कुण्डगोलो-
द्भवप्राणा कौशिकी कीर्तिवर्द्धिनी ॥ कुंभस्तनी कटाक्षा च काव्या कोकनदप्रिया ॥ १६ ॥ कांतारवासिनी कांतिः कठिना कृष्ण
वल्लभा ॥ इति ते कथितं देवि गुह्याद्गुह्यतरं परम् ॥ १७ ॥ प्रपठेय इदं नित्यं कालीनामशताष्टकम् ॥ त्रिषु लोकेषु देवेशि तस्यासाध्यं
न विद्यते ॥ १८ ॥ प्रातःकाले च मध्याह्ने सायाह्ने च सदा निशि ॥ यः पठेत्परया भक्त्या कालीनामशताष्टकम् ॥ १९ ॥ कालिका
तस्य गेहे च संस्थानं कुरुते सदा ॥ शून्यागारे श्मशाने वा प्रांतरे जलमध्यतः ॥ २० ॥ वह्निमध्ये च संग्रामे तथा प्राणस्य संशये ॥
शताष्टकं जपन्मंत्री लभते क्षेममुत्तमम् ॥ २१ ॥ कालीं संस्थाप्य विधिवत्स्तुत्वा नामशताष्टकैः ॥ साधकः सिद्धिमाप्नोति कालिकायाः
प्रसादतः ॥ २२ ॥ इति काल्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥ अथ कालीहृदयप्रारंभः ॥ श्रीमहाकाल उवाच ॥ महाकौतू
हलस्तोत्रं हृदयाख्यं महोत्तमम् ॥ शृणु प्रिये महागोप्यं दक्षिणायाः सुगोपितम् ॥ १॥ अवाच्यमपि वक्ष्यामि तव प्रीत्या प्रकाशितम्॥
अन्येभ्यः कुरु गोप्यं च सत्यं सत्यं च शैलजे॥२॥ श्रीदेव्युवाच ॥ कस्मिन् युगे समुत्पन्नं केन स्तोत्रं कृतं पुरा ॥ तत्सर्वं कथ्यतां शंभो
दयानिधे महेश्वर ॥ ३ ॥ श्रीमहाकाल उवाच ॥ पुरा प्रजापतेः शीर्षच्छेदनं कृतवानहम् ॥ ब्रह्महत्याकृतैः पापैर्भैरवत्वं ममागतम् ॥
॥ ४ ॥ ब्रह्महत्याविनाशाय कृतं स्तोत्रं मया प्रिये ॥ कृत्याविनाशकं स्तोत्रं ब्रह्महत्यापहारकम् ॥ ५ ॥ ॐ अस्य श्रीदक्षिण
काल्या हृदयस्तोत्रमंत्रस्य श्रीमहाकाल ऋषिरुष्णिक्छंदः श्रीदक्षिणकालिका देवता क्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः नमः कीलकं सर्वत्र सर्वदा जपे
विनियोगः ॥ ॐ क्रां हृदयाय नमः १ ॥ ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा २ ॥ ॐ क्रूं शिखायै वषट् ३ ॥ ॐ क्रैं कवचाय हुं ४ ॥ ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय
वौषट् ५॥ ॐ क्रः अस्त्राय फट् ६॥ इति हृदयादिन्यासः ॥ अथ ध्यानम्—ॐ ध्यायेत्कालीं महामायां त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम्॥चतुर्भुजां लल
जिह्वां पूर्णचन्द्रनिभाननाम् ॥१॥ नीलोत्पलदलप्रख्यां शत्रुसंघविदारिणीम् ॥ नरमुण्डं तथा खड्गं कमलं वरदं तथा ॥२॥ बिभ्राणां रक्त
वदनां दंष्ट्रालीं घोररूपिणीम् ॥ अट्टाट्टहासनिरतां सर्वदा च दिगम्बराम्॥३॥शवासनस्थितां देवीं मुण्डमालाविभूषिताम् ॥ इति ध्यात्वा

महादेवीं ततस्तु हृदयं पठेत् ॥ ४ ॥ ॐ—कालिका घोररूपाढ्या सर्वकामफलप्रदा ॥ सर्वदेवस्तुता देवी शत्रुनाशं करोतु मे ॥ ५ ॥
ह्रींह्रींस्वरूपिणी श्रेष्ठा त्रिषु लोकेषु दुर्लभा ॥ तव स्नेहान्मया ख्यातं न देयं यस्य कस्यचित् ॥ ६ ॥ अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि निशा
मय परात्मिके ॥ यस्य विज्ञानमात्रेण जीवन्मुक्तो भविष्यति ॥ ७ ॥ नागयज्ञोपवीताश्च चन्द्रार्द्धकृतशेखराम् ॥ जटाजूटाश्च संचिंत्य
महाकालसमीपगाम् ॥ ८ ॥ एवं न्यासादयः सर्वे ये प्रकुर्वंति मानवाः ॥ प्राप्नुवंति च ते मोक्षं सत्यं सत्यं वरानने ॥ ९ ॥ यंत्रं शृणु
परं देव्याः सर्वार्थसिद्धिदायकम् ॥ गोप्यं गोप्यतरं गोप्यं गोप्यं गोप्यतरं महत् ॥ १० ॥ त्रिकोणं पञ्चकं चाष्टकमलं भूपुरान्वि
तम् ॥ मुण्डपंक्तिं च ज्वालां च कालीयंत्रं सुसिद्धिदम् ॥ ११ ॥ मंत्रं तु पूर्वकथितं धारयस्व सदा प्रिये ॥ देव्या दक्षिणकाल्यास्तु
नाममालां निशामय ॥ १२ ॥ काली दक्षिणकाली च कृष्णरूपा परात्मिका ॥ मुण्डमाला विशालाक्षी सृष्टिसंहारकारिका ॥ १३ ॥
स्थितिरूपा महामाया योगनिद्रा भगात्मिका ॥ भगसर्पिःपानरता भगोद्योता भगांगजा ॥ १४ ॥ आद्या सदा नवा घोरा महातेजाः
करालिका ॥ प्रेतवाहा सिद्धिलक्ष्मीरनिरुद्धा सरस्वती ॥ १५ ॥ एतानि नाममाल्यानि ये पठंति दिने दिने ॥ तेषां दासस्य दासोऽहं
सत्यं सत्यं महेश्वरि ॥ १६ ॥ ॐ—कालीं कालहरां देवीं कंकालबीजरूपिणीम् ॥ कालरूपां कलातीतां कालिकां दक्षिणां भजे ॥ १७ ॥
कुण्डगोलप्रियां देवीं स्वयंभूकुसुमे रताम् ॥ रतिप्रियां महारौद्रीं कालिकां प्रणमाम्यहम् ॥ १८ ॥ दूतीप्रियां महादूतीं दूतीयोगेश्वरीं
पराम् ॥ दूतीयोगोद्भवरतां दूतीरूपां नमाम्यहम् ॥ १९ ॥ क्रींमंत्रेण जलं जप्त्वा सप्तधा सेचनेन तु ॥ सर्वे रोगा विनश्यंति नात्र कार्या
विचारणा ॥ २० ॥ क्रींस्वाहांतैर्महामंत्रैश्चन्दनं साधयेत्ततः ॥ तिलकं क्रियते प्राज्ञैर्लोको वश्यो भवेत्सदा ॥ २१ ॥ क्रीं हूँ ह्रीं मंत्रजप्तैश्च
ह्यक्षतैः सप्तभिः प्रिये ॥ महाभयविनाशश्च जायते नात्र संशयः ॥ २२ ॥ क्रींह्रीं हूँ स्वाहामंत्रेण श्मशानाग्निं च मंत्रयेत् ॥ शत्रोर्गृहे
प्रतिक्षिप्त्वा शत्रोर्मृत्युर्भविष्यति ॥ २३ ॥ हूँ ह्रीं क्रीं चैव उच्चाटे पुष्पं संशोध्य सप्तधा ॥ रिपूणां चैव चोच्चाटं नयत्येव न संशयः ॥ २४ ॥
आकर्षणे च क्रींक्रींक्रीं जप्त्वाक्षतान् प्रतिक्षिपेत् ॥ सहस्रयोजनस्था च शीघ्रमागच्छति प्रिये ॥ २५ ॥ क्रींक्रींक्रीं हूँ हूँ ह्रींह्रीं च

शोधितं तथा ॥ ।तिलकेन जगन्मोहः सप्तधा मंत्रमाचरेत् ॥ २६ ॥ हृदयं परमेशानि सर्वपापहरं परम् ॥ अश्वमेधादियज्ञानां कोटिकोटि गुणोत्तरम् ॥ २७ ॥ कन्यादानादिदानानां कोटिकोटिगुणं फलम् ॥ दूतीयागादियागानां कोटिकोटिफलं स्मृतम् ॥ २८ ॥ गंगादिसर्व तीर्थानां फलं कोटिगुणं स्मृतम् ॥ एकधा पाठमात्रेण सत्यं सत्यं मयोदितम् ॥ २९ ॥ कौमारीस्वेष्टरूपेण पूजां कृत्वा विधानतः ॥ पठे त्स्तोत्रं महेशानि जीवन्मुक्तः स उच्यते ॥ ३० ॥ रजस्वलाभगं दृष्ट्वा पठेदेकाग्रमानसः ॥ लभते परमं स्थानं देवीलोके वरानने ॥ ३१ ॥ महादुःखे महारोगे महासंकटके दिने ॥ महाभये महाघोरे पठेत्स्तोत्रं महोत्तमम् ॥ सत्यं सत्यं पनः सत्यं गोपायेन्मातृजारवत्॥३२॥इति कालीहृदयं समाप्तम्॥अथ कालीसहस्रनामस्तोत्रप्रारंभः॥कैलासशिखरे रम्ये नानादेवगणावृते॥नानावृक्षलताकीर्णे नानापुष्पैरलंकृते॥१॥ चतुर्मण्डलसंयुक्ते श्रृंगारमण्डपे स्थितम् ॥ समाधौ संस्थितं शांतं क्रीडंतं योगिनीप्रियम्॥२॥तत्र मौनधरं दृष्ट्वा देवी पृच्छति शंकरम् ॥ देव्युवाच ॥ किं त्वया जप्यते देव किं त्वया स्मर्य्यते सदा ॥ ३ ॥ सृष्टिः कुत्र विलीनास्ति पुनः कुत्र प्रजायते ॥ ब्रह्माण्डकारणं यत्तत् किमाद्यं कारणं महत् ॥ ४ ॥ मनोरथमयी सिद्धिस्तथा वांछामयी शिव ॥ तृतीया कल्पनासिद्धिः कोटिसिद्धीश्वरत्वकम् ॥ ५ ॥ शक्ति पाताष्टदशकं चराचरपुरीगतिः ॥ महेन्द्रजालमिन्द्रादिजालानां रचना तथा ॥ ६ ॥ अणिमाद्यष्टकं देव पराकायप्रवेशनम् ॥ नवीनसृष्टि करणं समुद्रशोषणं तथा ॥ ७ ॥ अमायां चन्द्रसंदर्शो दिवा चन्द्रप्रकाशनम् ॥ चन्द्राष्टकं चाष्टदिक्षु तथा सूर्याष्टकं शिव ॥ ८ ॥ जले जलमयत्वं च वह्नौ वह्निमयत्वकम् ॥ ब्रह्मविष्ण्वादिनिर्माणमिन्द्राणां कारणं करे ॥९॥ पातालगुटिका यक्षवेतालपंचकं तथा ॥ रसायनं तथा गुप्तिस्तथैव चाखिलांजनम् ॥ १० ॥ महामधुमती सिद्धिस्तथा पद्मावती शिव ॥ तथा भोगवती सिद्धिर्यावत्यः संति सिद्धयः ॥ ११ ॥ केन मंत्रेण तपसा कलौ पापसमाकुले ॥ आयुष्यं पुण्यरहिते कथं भवति तद्वद ॥ १२ ॥ श्रीशिव उवाच ॥ विना मंत्रं विना स्तोत्रं विनैव तपसा प्रिये ॥ विना बलिं विना न्यासं भूतशुद्धिं विना प्रिये ॥ १३ ॥ विना ध्यानं विना यंत्रं विना पूजा दिना प्रिये ॥ विना क्लेशादिभिर्देवि देहदुःखादिभिर्विना ॥ १४ ॥ सिद्धिराशु भवेद्येन तदेव कथ्यते मया ॥ शून्ये ब्रह्माण्डगोले तु

पंचाशच्छून्यमध्यके ॥ १५ ॥ पंचशून्यस्थिता तारा सर्वान्ते कालिका स्मृता ॥ अनन्तकोटिब्रह्माण्डराजदन्तात्मके शिवे ॥ १६ ॥
स्थाप्य शून्यालयं कृत्वा कृष्णवर्णं विधाय च ॥ महानिर्गुणरूपा च वाचातीता परा कला ॥ १७ ॥ क्रीडायां संस्थिता देवी शून्य
रूपा प्रकल्पयेत् ॥ सृष्टेरारंभकार्य्ये तु दृष्टा छाया तया यदा ॥ १८ ॥ इच्छाशक्तिस्तु सा जाता तया कालो विनिर्मितः ॥ प्रति
बिंबं तत्र दृष्टं जाता ज्ञानाभिधा तु सा ॥ १९ ॥ इदमेतत्किंविशिष्टं जातं विज्ञानकं मुदा ॥ तत्रा क्रियाभिधा जाता तदीक्षातो महे
श्वरि ॥ २० ॥ ब्रह्माण्डगोले देवेशि राजदंतस्थितं च यत् ॥ सा क्रिया स्थापयामास स्वस्वस्थानक्रमेण च ॥ २१ ॥ तत्रैव
स्वेच्छया देवि सामरस्यपरायणा ॥ तदिच्छा कथ्यते देवि यथावदवधारय ॥ २२ ॥ युगादिसमये देवि शिवं परगुणोत्तमम् ॥ तदिच्छा
निर्गुणं शांतं सच्चिदानन्दविग्रहम् ॥ २३ ॥ शाश्वतं सुन्दरं शुक्लं सर्वदेवयुतं वरम् ॥ आदिनाथं गुणातीतं काल्या संयुतमीश्वरम् ॥२४॥
विपरीतरतं देवं सामरस्यपरायणम् ॥ पूजार्थमागतं देवगंधर्वाप्सरसाङ्गणम् ॥ २५ ॥ यक्षिणीं किन्नरीमन्यामुर्वश्याद्यां तिलोत्तमाम् ॥
वीक्ष्य तं मायया प्राह सुन्दरी प्राणवल्लभा ॥ २६ ॥ त्रैलोक्यसुन्दरी प्राणस्वामिनी प्राणरंजिनी ॥ किमागतं भवत्याऽद्य मम भाग्यार्णवो
महान् ॥ २७ ॥ उक्त्वा मौनधरं शंभुं पूजयंत्यप्सरोगणाः ॥ अप्सरस ऊचुः ॥ संसाराच्चारितं देव त्वया विश्वजनप्रिय २८ ॥
सृष्टेरारंभकार्य्यार्थमुद्युक्तोऽसि महाप्रभो ॥ वेश्याकृत्यमिदं देव मंगलार्थप्रगायनम् ॥ २९ ॥ प्रयाणोत्सवकाले तु समारंभे प्रगाय
नम् ॥ गुणाद्यारंभकालो हि वर्त्तते शिव शङ्कर ॥ ३० ॥ इन्द्राणीकोटयः संति तस्याः प्रसवबिंदुतः ॥ ब्रह्माणी वैष्णवी
चैव माहेशी कोटिकोटयः ॥ ३१ ॥ तव सामर सानन्द दर्शनार्थं समुद्भवाः ॥ संजाताश्चाग्रतो देव चास्माकं सौख्य
सागर ॥ ३२ ॥ रतिं हित्वा कामिनीनां नान्यत्सौख्यं महेश्वर ॥ सा रतिर्दृश्यतेऽस्माभिर्महत्सौख्यार्यकारिका ॥ ३३ ॥
एवमेतत्तु चास्माभिः कर्त्तव्यं भर्तृणा सह ॥ एवं श्रुत्वा महादेवो ध्यानावस्थितमानसः ॥ ३४ ॥ ध्यानं हित्वा मायया तु प्रोवाच

१ 'काले तु' इति वा पाठः।

कालिकां प्रति ॥ कालि कालि प्रिये रुण्डमाले भैरववादिनि ॥ ३५ ॥ शिवारूपधरे क्रूरे घोरदंष्ट्रे भयानके ॥ त्रैलोक्यसुन्दर्यः
सुन्दर्यः संति मेऽग्रतः ॥ ३६ ॥ सुन्दरीवीक्षणं कर्म्म कुरु कालि प्रिये शिवे ॥ ध्यानं मुञ्च महादेवि ता गच्छंति गृहं प्रति ॥ ३७ ॥
तव रूपं महाकालि महाकालप्रियंकरम् ॥ एतासां सुन्दरं रूपं त्रैलोक्यप्रिगकारकम् ॥ ३८ ॥ एवं मायाप्रभाविष्टो महाकालो वद
न्निति ॥ ततः कालवचः श्रुत्वा कालं प्राह च कालिका ॥ ३९ ॥ माययाच्छाद्य चात्मानं निजस्त्रीरूपधारिणी ॥ इतःप्रभृति स्त्रीमात्रं
भविष्यति युगे युगे ॥ ४० ॥ वल्ल्याद्यौषधयो देव दिवा वल्लीस्वरूपताम् ॥ रात्रौ स्त्रीरूपमासाद्य रतिकेलिं परस्परम् ॥ ४१ ॥
अज्ञानं चैव सर्वेषां भविष्यति युगे युगे ॥ एवं शापं च दत्त्वा तु पुनः प्रोवाच कालिका ॥ ४२ ॥ विपरीतरतिं कृत्वा चिंतयंति
भजंति ये ॥ तेषां वरं प्रदास्यामि नित्यं तत्र वसाम्यहम् ॥ ४३ ॥ इत्युक्त्वा कालिका विद्या तत्रैवांतरधीयत ॥ त्रिंशत्रिखर्वषड्
वृन्दनवत्यर्बुदकोटयः ॥ ४४ ॥ दर्शनार्थं तपस्तेपे सा वै कुत्र गता प्रिया ॥ मम प्राणप्रिया देवी हाहा प्राणप्रिये शिवे ॥ ४५ ॥
किं करोमि क्व गच्छामि चेत्थेवं भ्रमसंकुलः ॥ तस्याः काल्या दया जाता मम चिंतापरः शिवः ॥ ४६ ॥ यंत्रप्रस्तारबुद्धिस्तु काल्या
दत्तातिसत्वरम् ॥ यंत्रयागं तदारभ्य पूर्वं बिन्दुत्वगोचरम् ॥ ४७ ॥ श्रीचक्रयंत्रप्रस्ताररचनाभ्यासतत्परः ॥ इतस्ततो भ्राम्यमाण
त्रैलोक्यं चक्रमध्यकम् ॥ ४८ ॥ चक्रपारदर्शनार्थं कोटयर्बुदयुगं गतम् ॥ भक्तप्राणप्रिया देवी महाश्रीचक्रनायिका ॥ ४९ ॥ तत्र बिन्दौ
परं रूपं सुन्दरं सुमनोहरम् ॥ रूपं जातं महेशानि जाग्रत् त्रिपुरसुन्दरि ॥ ५० ॥ रूपं दृष्ट्वा महादेवो राजराजेश्वरोऽभवत् ॥ तस्याः
कटाक्षमात्रेण तस्या रूपधरः शिवः ॥ ५१ ॥ विनाशृङ्गारसंयुक्ता तदा जाता महेश्वरी ॥ विना कल्यंशतो देवि जगत्स्थावरजंगमम् ॥
॥ ५२ ॥ न शृंगारो न शक्तित्वं कापि नास्ति महेश्वरी ॥ सुन्दर्या प्रार्थिता काली तुष्टा प्रोवाच कालिका ॥ ५३ ॥ सर्वासां
नेत्रकेशे च ममांशोऽत्र भविष्यति ॥ पूर्वावस्थातु देवेशि ममांशास्तिष्ठति प्रिये ॥ ५४ ॥ सावस्था तरुणाख्या तु तदंतेनैव तिष्ठति ॥
मद्भक्तानां महेशानि सदा तिष्ठति निश्चितम् ॥ ५५ ॥ शक्तिस्तु कुण्ठिता जाता तथा रूपं न सुन्दरम् ॥ चिंताविष्टा तु मलिना जाता

तत्र च सुन्दरी ॥ ५६ ॥ क्षणं स्थित्वा ध्यानपरा कालीचिंतनतत्परा ॥ तदा काली प्रसन्नाऽभूत्क्षणार्द्धेन महेश्वरि ॥ ५७ ॥ वरं ब्रूहि वरं ब्रूहि वरं ब्रूहीति सादरम् ॥ सुन्दर्युवाच ॥ मम सिद्धिवरं देहि वरोऽयं प्रार्थ्यते मया ॥ ५८ ॥ तादृगुपायं कथय येन शक्तिर्भविष्यति ॥ श्रीकाल्युवाच ॥ मम नामसहस्रं च मया पूर्वं विनिर्मितम् ॥ ५९ ॥ मत्स्वरूपं ककाराख्यं महासाम्राज्यनामकम् ॥ वरदानाभिधं नाम क्षणार्द्धाद्वरदायकम् ॥ ६० ॥ तत्पठस्व महामाये तव शक्तिर्भविष्यति ॥ ततः प्रभृति श्रीविद्या तन्नामपाठतत्परा ॥ ६१ ॥ तदेव नामसाहस्रं सुन्दरीशक्तिदायकम् ॥ कथ्यते नामसाहस्रं सावधानमनाः शृणु ॥ ६२ ॥ सर्वसाम्राज्यमेधाख्यनामसाहस्रकस्य च ॥ महाकाल ऋषिः प्रोक्त उष्णिक् छंदः प्रकीर्तितम् ॥ ६३॥ देवता दक्षिणा काली माया बीजं प्रकीर्तितम् ॥ हूँ शक्तिः कालिका बीजं कीलकं परिकीर्तितम् ॥ ६४ ॥ ध्यानं च पूर्ववत्कृत्वा साधय स्वेष्टसाधनम् ॥ कालिकावरदानादिस्वेष्टार्थे विनियोगतः ॥ कीलकेन षडङ्गानि षड्दीर्घाब्जेन कारयेत् ॥ ६५ ॥ ॐ अस्य श्रीसर्वसाम्राज्यमेधानामकालीरूपककारात्मकसहस्रनामस्तोत्रमंत्रस्य महाकाल ऋषिरनुष्टुप्छंदः श्रीदक्षिणमहाकाली देवता ह्रीं बीजं हूँ शक्तिः क्रीं कीलकं कालीवरदानाद्यखिलेष्टार्थे पाठे विनियोगः ॥ ॐ महाकालऋषये नमः शिरसि१ ॥ अनुष्टुप्छंदसे नमः मुखे २ ॥ श्रीदक्षिणमहाकालीदेवतायै नमः हृदये ३ ॥ ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये ४ ॥ हूँ शक्तये नमः पादयोः ५ ॥ क्रीं कीलकाय नमो नाभौ ६ ॥ विनियोगाय नम : सर्वाङ्गे ७ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ क्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १ ॥ ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ ॥ ॐ क्रूं मध्यमाभ्यां नमः ३ ॥ ॐ क्रै अनामिकाभ्यां नमः ४ ॥ ॐ क्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ॥ ॐ क्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ । इति करांगन्यासः ॥ ॐ क्रां हृदयाय नमः १ । ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा २ । ॐ क्रूं शिखायै वषट् ३ । ॐ क्रैं कवचाय हुम् ४ । ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ क्रः अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ॥ अथ ध्यानम्—ॐ करालवदनां घोरां मुक्तकेशीं चतुर्भुजाम् ॥ कालिकां दक्षिणां दिव्यां मुण्डमालाविभूषिताम् ॥ सद्यश्छिन्नशिरःखड्गवामोर्ध्वाधःकराम्बुजाम् ॥ अभयं वरदं चैव दक्षि[illegible]ताम् ॥ महामेघप्रभां श्यामां तथा चैव दिगंबराम् ॥ कण्ठावसक्तमुण्डालीगलद्रुधिरचर्चिताम् ॥ कर्णावतंसतानीतशव

ग्ग्मभयानकाम् ॥ घोरदंष्ट्राकरालास्यां पीनोन्नतपयोधराम्॥शवानां करसंघातैः कृतकांचीं हसन्मुखीम्॥सृक्कद्वयगलद्रक्तधाराविस्फुरिता ननाम् ॥ घोररूपां महारौद्रीं श्मशानालयवासिनीम् ॥ दंतुरां दक्षिणव्यापिमुक्तलम्बकचोच्चयाम् ॥ शवरूपमहादेवहृदयोपरि संस्थिताम् ॥ शिवाभिर्घोररूपाभिश्चतुर्दिक्षु समन्विताम् ॥ महाकालेन सार्द्धोर्द्धमुपविष्टरतातुराम् ॥ सुखप्रसन्नवदनां स्मेराननसरोरुहाम् ॥ एवं संचिंतयेद्देवीं श्मशानालयवासिनीम् ॥ ६६ ॥ ॐ–क्रीं काली क्रं कराली च कल्याणी कमला कला ॥ कलावती कलाढ्या च कलापूज्या कलात्मिका ॥ ६७ ॥ कलादृष्टा कलापुष्टा कलामस्ता कलाकरा ॥ कलाकोटिसमाभासा कलाकोटिप्रपूजिता ॥ ६८ ॥ कलाकर्मकलाधारा कलापारा कलागमा ॥ कलाधारा कमलिनी ककारा करुणा कविः ॥ ६९ ॥ ककारवर्णसर्वांगी कलाकोटिप्रभूषिता ॥ ककारकोटिगुणिता ककारकोटिभूषणा ॥ ७० ॥ ककारवर्णहृदया ककारमनुमण्डिता ॥ ककारवर्गनिलया काकशब्दपरायणा ॥ ७१ ॥ कवीरास्फालनरता कमलाकरपूजिता ॥ कमलाकरनाथा च कमलाकररूपधृक् ॥ ७२ ॥ कमलाकरसिद्धिस्था कमलाकरपारदा ॥ कमलाकरमध्यस्था कमलाकरतोषिता ॥ ७३ ॥ कथंकारपरालापा कथंकारपरायणा ॥ कथंकारपदांतस्था कथंकारपदार्थभूः ॥ ७४ ॥ कमलाक्षी कमलजा कमलाक्षप्रपूजिता ॥ कमलाक्षवरोद्युक्ता ककारा कर्बुराक्षरा ॥ ७५ ॥ करतारा करच्छिन्ना करश्यामा करार्णवा ॥ करपूज्या कररता करदा करपूजिता ॥ ७६ ॥ करतोया करामर्षा कर्मनाशा करप्रिया ॥ करप्राणा करकजा करका करकांतरा ॥ ७७ ॥ करकाचलरूपा च करकाचलशोभिनी ॥ करकाचलपुत्री च करकाचलतोषिता ॥ ७८ ॥ करकाचलगेहस्था करकाचलरक्षिणी ॥ करकाचलसम्मान्या करकाचलकारिणी ॥ ७९ ॥ करकाचलवर्षाढ्या करकाचलरंजिता ॥ करकाचलकांतारा करकाचलमालिनी ॥ ८० ॥ करकाचलभोज्या च करकाचलरूपिणी ॥ करामलकसंस्था च करामलकसिद्धिदा ॥ ८१ ॥ करामलकसंपूज्या करामलकतारिणी ॥ करामलककाली च करामलकरोचिनी ॥ ८२ ॥ करामलकमाता च करामलकसेविनी ॥ करामलकवद्ध्येया करामलकदायिनी ॥ ८३ ॥ कञ्जनेत्रा कञ्जगतिः कञ्जस्था कञ्जधारिणी ॥ कञ्जमालाप्रियकरी कञ्जरूपा च कञ्जजा ॥

॥ ८४ ॥ कञ्जजातिः कञ्जगतिः कञ्जहोमपरायणा ॥ कञ्जमण्डलमध्यस्था कञ्जाभरणभूषिता ॥ ८५ ॥ कञ्जसंमाननिरता कञ्जोत्पत्तिपरायणा ॥ कञ्जराशिसमाकारा कञ्जारण्यनिवासिनी ॥८६॥ करञ्जवृक्षमध्यस्था करञ्जवृक्षवासिनी ॥ करञ्जफलभूषाढ्या करञ्जवनवासिनी ॥ ॥ ८७ ॥ करञ्जमालाभरणा करवालपरायणा ॥ करवालप्रहृष्टात्मा करवालप्रिया गतिः ॥ ८८ ॥ करवालप्रिया कंथा करवालविहारिणी ॥ करवालमयी कर्म्मा करवालप्रियंकरी ॥ ८९ ॥ कबन्धमालाभरणा कबन्धराशिमध्यगा ॥ कबन्धकूटसंस्थाना कबन्धानंतभूषणा ॥ ९० ॥ कबन्धनादसंतुष्टा कबंधासनधारिणी ॥ कबंधगृहमध्यस्था कबंधवनवासिनी ॥ ९१ ॥ कबंधकाञ्चीकरणी कबंधराशिभूषणा ॥ कबंधमाला जयदा कबंधदेहवासिनी ॥ ९२ ॥ कबंधासनमान्या च कपालाकल्पधारिणी ॥ कपालमालामध्यस्था कपालव्रततोषिता ॥ ९३ ॥ कपालदीपसंतुष्टा कपालदीपरूपिणी ॥ कपालदीपवरदा कपालकज्जलस्थिता ॥ ९४ ॥ कपालमाला जयदा कपालजपतोषिणी ॥ कपालसिद्धिसंहृष्टा कपालभोजनोद्यता ॥ ९५ ॥ कपालव्रतसंस्थाना कपालकमलालया ॥ कवित्वामृतसारा च कवित्वामृतसागरा ॥ ९६ ॥ कवित्वसिद्धिसंहृष्टा कवित्वादानकारिणी ॥ कविपूज्या कविगतिः कविरूपा कविप्रिया ॥ ९७ ॥ कविब्रह्मानन्दरूपा कवित्वव्रततोषिता ॥ कविमानससंस्थाना कविवांछाप्रपूरिणी ॥ ९८ ॥ कविकण्ठस्थिता कं ह्रीं कंकंकंकविपूर्तिदा ॥ कज्जला कज्जलादानमानसा कज्जलप्रिया ॥ ९९ ॥ कपालकज्जलसमा कज्जलेशप्रपूजिता ॥ कज्जलार्णवमध्यस्था कज्जलानन्दरूपिणी ॥ १०० ॥ कज्जलप्रियसंतुष्टा कज्जलप्रियतोषिणी ॥ कपालमालाभरणा कपालकरभूषणा ॥ १०१ ॥ कपालकरभूषाढ्या कपालचक्रमण्डिता ॥ कपालकोटिनिलया कपालदुर्गकारिणी ॥ १०२ ॥ कपालगिरिसंस्थाना कपालचक्रवासिनी ॥ कपालपात्रसन्तुष्टा कपालार्घ्यपरायणा ॥ १०३ ॥ कपालार्घ्यप्रियप्राणा कपालार्घ्यवरप्रदा ॥ कपालचक्ररूपा च कपालरूपमात्रगा ॥ १०४ ॥ कदली कदलीरूपा कदलीवनवासिनी ॥ कदलीपुष्पसंप्रीता कदलीफलमानसा ॥ १०५ ॥ कदलीहोमसंतुष्टा कदलीदर्शनोद्यता ॥ कदलीगर्भमध्यस्था कदलीवनसुंदरी ॥ १०६ ॥ कदम्बपुष्पनिलया कदंबवनमध्यगा ॥ कदंबकुसुमामोदा कदंबवन

तोषिणी ॥ १०७ ॥ कदंबपुष्पसंपूज्या कदंबपुष्पहोमदा ॥ कदंबपुष्पमध्यस्था कदंबफलभोजिनी ॥ १०८ ॥ कदंबकाननांतःस्था कदंबाचलवासिनी ॥ कक्षपा कक्षपाराध्या कक्षपासनसंस्थिता ॥ १०९ ॥ कर्णपूरा कर्णनासा कर्णाढ्या कालभैरवी ॥ कलप्रीता कलहदा कलहा कलहातुरा ॥ ११० ॥ कर्णयक्षी कर्णवार्ता कथिनी कर्णसुन्दरी ॥ कर्णपिशाचिनी कर्णमञ्जरी कपिकक्षदा ॥ १११ ॥ कविकक्षविरूपाढ्या कविकक्षस्वरूपिणी ॥ कस्तूरीमृगसंस्थाना कस्तूरीमृगरूपिणी ॥ ११२ ॥ कस्तूरीमृगसंतोषा कस्तूरीमृगमध्यगा ॥ कस्तूरीरसनीलांगी कस्तूरीगंधतोषिता ॥ ११३ ॥ कस्तूरीपूजकप्राणा कस्तूरीपूजकप्रिया ॥ कस्तूरीप्रेमसंतुष्टा कस्तूरीप्राणधारिणी ॥ ११४ ॥ कस्तूरीपूजकानन्दा कस्तूरीगंधरूपिणी ॥ कस्तूरीमालिकारूपा कस्तूरीभोजनप्रिया ॥ ११५ ॥ कस्तूरीतिलकानन्दा कस्तूरीतिलकप्रिया ॥ कस्तूरीहोमसंतुष्टा कस्तूरीतर्पणोद्यता ॥ ११६ ॥ कस्तूरीमार्ज्जनोद्युक्ता कस्तूरीचक्रपूजिता ॥ कस्तूरीपुष्पसंपूज्या कस्तूरीचर्वणोद्यता ॥ ११७ ॥ कस्तूरीगर्भमध्यस्था कस्तूरीवस्त्रधारिणी ॥ कस्तूरिकामोदरता कस्तूरीवनवासिनी ॥ ११८ ॥ कस्तूरीवनसंरक्षा कस्तूरीप्रेमधारिणी ॥ कस्तूरीशक्तिनिलया कस्तूरीशक्तिकुण्डगा ॥ ११९ ॥ कस्तूरीकुण्डसंस्नाता कस्तूरीकुण्डमज्जना ॥ कस्तूरीजीवसंतुष्टा कस्तूरीजीवधारिणी ॥ १२० ॥ कस्तूरीपरमामोदा कस्तूरीजीवनक्षमा ॥ कस्तूरीजातिभावस्था कस्तूरीगंधचुम्बना ॥ १२१ ॥ कस्तूरीगंधसंशोभाविराजितकपालभूः ॥ कस्तूरीमदनांतःस्था कस्तूरीमदहर्षदा ॥ १२२ ॥ कस्तूरीकवितानाढ्या कस्तूरीगृहमध्यगा ॥ कस्तूरीस्पर्शकप्राणा कस्तूरीविन्दकांतका ॥ १२३ ॥ कस्तूर्य्यामोदरसिका कस्तूरीक्रीडनोद्यता ॥ कस्तूरीदाननिरता कस्तूरीवरदायिनी ॥ १२४ ॥ कस्तूरीस्थापनासक्ता कस्तूरीस्थानरंजिनी ॥ कस्तूरीकुशलप्रश्ना कस्तूरीस्तुतिवन्दिता ॥ १२५ ॥ कस्तूरीवंदकाराध्या कस्तूरीस्थानवासिनी ॥ कहरूपा कहाढ्या च कहानन्दा कहात्मभूः ॥ १२६ ॥ कहपूज्या कहात्याख्या कहहेया कहात्मिका ॥ कहमालाकण्ठभूषा कहमंत्रजपोद्यता ॥ १२७ ॥ कहनामस्मृतिपरा कहनामपरायणा ॥ कहपरायणरता कहदेवी कहेश्वरी ॥ १२८ ॥

कहहेतुकहानन्दा कहनादपरायणा ॥ कहमाता कहांतःस्था कहमंत्रकहेश्वरा ॥ १२९ ॥ कहज्ञेया कहाराध्या कहध्यानपरायणा ॥
कहतंत्रा कहकहा कहचर्यापरायणा ॥ १३० ॥ कहाचारा कहगतिः कहताण्डवकारिणी ॥ कहारण्या कहरतिः कहशक्तिपरायणा
॥ १३१ ॥ कहराज्यनता कर्म्मसाक्षिणी कर्मसुन्दरी ॥ कर्मविद्या कर्मगतिः कर्मतंत्रपरायणा ॥ १३२ ॥ कर्ममात्रा कर्मगात्रा कर्म
धर्मपरायणा ॥ कर्मरेखानाशकर्त्री कर्मरेखाविनोदिनी ॥ १३३ ॥ कर्मरेखामोहकरी कर्मकीर्तिपरायणा ॥ कर्मविद्या कर्मसारा कर्म्मा
धारा च कर्मभूः ॥ १३४ ॥ कर्मकारी कर्महारी कर्मकौतुकसुन्दरी ॥ कर्मकाली कर्मतारा कर्मच्छिन्ना च कर्मदा ॥ १३५ ॥ कर्म
चाण्डालिनी कर्मवेदमाता च कर्मभूः ॥ कर्मकाण्डरतानंता कर्मकाण्डानमानिता ॥ १३६ ॥ कर्मकाण्डपरीणाहा कमठी कमठाकृतिः ॥
कमठाराध्यहृदया कमठाकण्ठसुन्दरी ॥ १३७ ॥ कमठासनसंसेव्या कमठी कर्मतत्परा ॥ करुणाकरकांता च करुणाकरवन्दिता ॥१३८॥
कठोराकरमाला च कठोरकुचधारिणी ॥ कपर्दिनी कपटिनी कठिना कंकभूषणा ॥ १३९ ॥ करभोरूः कठिनदा करभा करभालया ॥
कलभाषामयी कल्पा कल्पनाकल्पदायिनी ॥ १४० ॥ कमलस्था कलामाला कमलास्या क्वणत्प्रभा ॥ ककुद्मिनी कष्टवती करणीय
कथार्चिता ॥ १४१ ॥ कचार्चिता कचतनुः कचसुन्दरधारिणी ॥ कठोरकुचसंलग्ना कटिसूत्रविराजिता ॥ १४२ ॥ कर्णभक्ष
प्रिया कन्दा कथाकन्दगतिः कलिः ॥ कलिघ्नी कलिदूती च कविनायकपूजिता ॥ १४३ ॥ कणकक्षानियंत्री च सदा कविवरार्चिता ॥
कर्त्री च कर्तृका भूषाकारिणी कर्णशत्रुपा ॥ १४४ ॥ करणेशी करणपा कलवाचा कलानिधिः ॥ कलना कलनाधारा कलनाका
रिका करा ॥ १४५ ॥ कलज्ञेया कर्कराशिः कर्कराशिप्रपूजिता ॥ कन्याराशिः कन्यका च कन्यकाप्रियभाषिणी ॥ १४६ ॥
कन्यकादानसंतुष्टा कन्यकादानतोषिणी ॥ कन्यादानकरानन्दा कन्यादातृगृहेष्टदा ॥ १४७ ॥ कर्षणा कक्षदहना कामिता कमला
सना ॥ करमालानंदकर्त्री करमालाप्रभूषिता ॥ १४८ ॥ करमालाशयानन्दा करमालासमागमा ॥ करमालासिद्धिदात्री करमाला
करप्रिया ॥ १४९ ॥ करप्रिया कररता करदानपरायणा ॥ कलानन्दा कलिगतिः कलिपूज्या कलिप्रसूः ॥ १५० ॥ कलनाद

निनादस्था कलनादस्वरप्रदा ॥ कलनादसमाजस्था कहोला च कहोलदा ॥ १५१ ॥ कहोलगेहमध्यस्था कहोलवरदायिनी ॥
कहोलकविताधारा कहोलऋषिमानिता ॥ १५२ ॥ कहोलमानसाराध्या कहोलवाक्यकारिणी ॥ कर्तृरूपा कर्तृमयी कर्तृमाता च
कर्तरी ॥ १५३ ॥ कनीया कनकाराध्या कनीनकमयी तथा ॥ कनीयानन्दनिलया कनकानन्दतोषिता ॥ १५४ ॥ कनीयक
करा काष्ठा कथार्णवकरीकरी ॥ करीगम्या करिगतिः करिध्वजपरायणा ॥ १५५ ॥ करिनाथप्रिया कण्ठा कथानकप्रतोषिता ॥
कमनीया कमनका कमनीयविभूषणा ॥ १५६ ॥ कमनीयसमाजस्था कमनीयव्रतप्रिया ॥ कमनीयगुणाराध्या कपिला कपि
लेश्वरी ॥ १५७ ॥ कपिलाराध्यहृदया कपिलाप्रियवादिनी ॥ कहचक्रमंत्रवर्णा कहचक्रप्रसूनका ॥ १५८ ॥ कएईलह्रीं
स्वरूपा च कएईलह्रींवरप्रदा ॥ कएईलह्रींसिद्धिदात्री कएईलह्रींस्वरूपिणी ॥ १५९ ॥ कएईलह्रींमंत्रवर्णा कएईलह्रींप्रसूकला ॥
कवर्गा च कपाटस्था कपाटोद्घाटनक्षमा ॥ १६० ॥ कंकाली च कपाली च कंकालप्रियभाषिणी ॥ कंकालभैरवाराध्या कंकालमान
संस्थिता ॥ १६१ ॥ कंकालमोहनिरता कंकालमोहदायिनी ॥ कलुषघ्नी कलुषहा कलुषार्तिविनाशिनी ॥ १६२ ॥ कलिपुष्पा
कलादाना कशिपुः कश्यपार्चिता ॥ कश्यपा कश्यपाराध्या कलिपूर्णकलेवरा ॥ १६३ ॥ कलेवरकरी कांची कवर्गा च करालका ॥
करालभैरवाराध्या करालभैरवेश्वरी ॥ १६४ ॥ कराला कलनाधारा कपर्दीशवरप्रदा ॥ कपर्दीशप्रेमलता कपर्दिमालिकायुता
॥ १६५ ॥ कपर्दिजपमालाढ्या करवीरप्रसूनदा ॥ करवीरप्रियप्राणा करवीरप्रपूजिता ॥ १६६ ॥ कर्णिकारसमाकारा कर्णिकार
प्रपजिता ॥ करीषाग्निस्थिता कर्षा कर्षमात्रसुवर्णदा ॥ १६७ ॥ कलशा कलशाराध्या कषाया करिगानदा ॥ कपिला कलकण्ठी च
कलिकल्पलता मता ॥ १६८ ॥ कल्पमाता कल्पलता कल्पकारी च कल्पभूः ॥ कर्पूरामोदरुचिरा कर्पूरामोदधारिणी ॥ १६९ ॥
कर्पूरमालाभरणा कर्पूरवासपूर्तिदा ॥ कर्पूरमालाजयदा कर्पूरार्णवमध्यगा ॥ १७० ॥ कर्पूरतर्पणरता कटकाम्बरधारिणी ॥ कपटेश्वर
संपज्या कपटेश्वररूपिणी ॥ १७१ ॥ कटुः कपिध्वजाराध्या कलापपुष्पधारिणी ॥ कलापपुष्परुचिरा कलापपुष्पपूजिता ॥ १७२ ॥

क्रकचा क्रकचाराध्या कथंब्रूमाकरालता ॥ कथंकारविनिर्मुक्ता काली कालक्रिया क्रतुः ॥ १७३ ॥ कामिनी कामिनीपूज्या कामिनी पुष्पधारिणी ॥ कामिनीपुष्पनिलया कामिनीपुष्पपूर्णिमा ॥ १७४ ॥ कामिनीपुष्पपूजार्हा कामिनीपुष्पभूषणा ॥ कामिनीपुष्प तिलका कामिनीकुण्डचुम्बना ॥ १७५ ॥ कामिनीयोगसंतुष्टा कामिनीयोगभोगदा ॥ कामिनीकुण्डसम्मग्ना कामिनीकुण्डमध्यगा ॥ ॥ १७६ ॥ कामिनीमानसाराध्या कामिनीमानतोषिता ॥ कामिनीमानसंचारा कालिका कालकालिका ॥ १७७ ॥ कामा च कामदेवी च कामेशी कामसंभवा ॥ कामभावा कामरता कामार्ता काममञ्जरी ॥ १७८ ॥ काममञ्जीररणिता कामदेवप्रियांतरा ॥ कामकाली काम कला कालिका कमलार्चिता ॥ १७९ ॥ कादिका कमला काली कालानलसमप्रभा ॥ कल्पांतदहना कांता कांताराप्रियवासिनी ॥ १८० ॥ कालपूज्या कालरता कालमाता च कालिनी ॥ कालवीरा कालघोरा कालसिद्धा च कालदा ॥ १८१ ॥ कालञ्जनसमाकारा कालञ्जर निवासिनी ॥ कालऋद्धिः कालवृद्धिः कारागृहविमोचिनी ॥ १८२ ॥ कादिविद्या कादिमाता कादिस्था कादिसुन्दरी ॥ काशी काञ्ची च काञ्चीशा काशीशवरदायिनी ॥ १८३ ॥ क्रांबीजा चैव क्रींबीजा हृदयाय नमस्स्मृता ॥ काम्या काम्यगतिः काम्यसिद्धिदात्री च कामभूः ॥ १८४ ॥ कामाख्या कामरूपा च कामचापविमोचिनी ॥ कामदेवकलारामा कामदेवकलालया ॥ १८५ ॥ कामरात्रिः कामदात्री कांतारा चलवासिनी ॥ कामरूपा कालगतिः कामयोगपरायणा ॥ १८६ ॥ कामसम्मर्दनरता कामगेहविकासिनी ॥ कालभैरवभार्या च कालभैरवकामिनी ॥ १८७ ॥ कालभैरवयोगस्था कालभैरवभोगदा ॥ कामधेनुः कामदोग्ध्री काममाता च कांतिदा ॥ १८८ ॥ कामुका कामुकाराध्या कामु कानन्दवर्द्धिनी ॥ कार्तवीर्या कार्त्तिकेया कार्त्तिकेयप्रपूजिता ॥ १८९ ॥ कार्या कारणदा कार्य्यकारिणी कारणांतरा ॥ कांतिगम्या कांतिमयी कात्या कात्यायनी च का ॥ १९० ॥ कामसारा च काश्मीरा काश्मीराचारतत्परा ॥ कामरूपाचाररता कामरूपप्रियंवदा ॥ १९१ ॥ कामरूपाचार सिद्धिः कामरूपमनोमयी ॥ कार्तिकी कार्तिकाराध्या कांचनारप्रसूनभूः ॥ १९२ ॥ कांचनारप्रसूनाभा कांचनारप्रपूजिता ॥ कांचरूपा कांच भूमिः कांस्यपात्रप्रभोजिनी ॥ १९३ ॥ कांस्यध्वनिमयी कामसुन्दरी कामचुंबना ॥ काशपुष्पप्रतीकाशा कामद्रुमसमागमा ॥ १९४ ॥

कामपुष्पा कामभूमिः कामपूज्या च कामदा ॥ कामदेहा कामगेहा कामबीजपरायणा ॥ १९५ ॥ कामध्वजसमारूढा कामध्वजसमा
स्थिता ॥ काश्यपी काश्यपाराध्या काश्यपानन्ददायिनी ॥ १९६ ॥ कालिन्दीजलसंकाशा कालिन्दीजलपूजिता ॥ कादेवपूजानिरता
कादेवपरमार्थदा ॥ १९७ ॥ कर्म्मणा कर्म्मणाकारा कामकर्मगकारिणी ॥ कार्म्मणत्रोटनकरी काकिनी कारणाह्वया ॥ १९८ ॥ काव्या
मृता च कालिङ्गा कालिङ्गमर्दनोद्यता ॥ कालागुरुविभूषाढ्या कालागुरुविभूतिदा ॥ १९९ ॥ कालागुरुसुगंधा च कालागुरुप्रतर्पणा ॥
कावेरीनीरसंप्रीता कावेरीतीरवासिनी ॥ २०० ॥ कालचक्रभ्रमाकारा कालचक्रनिवासिनी ॥ कानना काननाधारा कारुः कारुणिका
मयी ॥ २०१ ॥ काम्पिल्यवासिनी काष्ठा कामपत्नी च कामभूः ॥ कादम्बरीपानरता तथा कादम्बरीकला ॥ २०२ ॥ कामवंद्या
च कामेशी कामराजप्रपूजिता ॥ कामराजेश्वरी विद्या कामकौतुकसुन्दरी ॥ २०३ ॥ काम्बोजजा काञ्छिनदा कांस्यकाञ्चनकारिणी ॥
काञ्चनाद्रिसमाकारा काञ्चनाद्रिप्रदानदा ॥ २०४ ॥ कामकीर्तिः कामकेशी कारिकाकांतराश्रया ॥ कामभेदी च कामार्तिनाशिनी काम
भूमिका ॥ २०५ ॥ कालनिर्णाशिनी काव्यवनिता कामरूपिणी ॥ कायस्था कामसंदीप्तिः काव्यदा कालसुन्दरी ॥ २०६ ॥
कामेशी कारणवरा कामेशीपूजनोद्यता ॥ काञ्चीनूपुरभूषाढ्या कुंकुमाभरणान्विता ॥ २०७ ॥ कालचक्रा कालगतिः कालचक्रमनो
भवा ॥ कुन्दमध्या कुन्दपुष्पा कुन्दपुष्पप्रिया कुजा ॥ २०८ ॥ कुजमाता कुजाराध्या कुठारवरधारिणी ॥ कुञ्जरस्था कुशरता कुशे
शयाविलोचना ॥ २०९ ॥ कुनठी कुररी कुद्रा कुरंगी कुटजाश्रया ॥ कुंभीनसविभूषा च कुंभीनसवधोद्यता ॥ २१० ॥ कुंभकर्ण
मनोल्लासा कुलचूडामणिः कुला ॥ कुलालगृहकन्या च कुलचूडामणिप्रिया ॥ २११ ॥ कुलपूज्या कुलाराध्या कुलपूजापरायणा ॥
कुलभूषा तथा कुक्षिः कुररीगणसेविता ॥ २१२ ॥ कुलपुष्पा कुलरता कुलपुष्पपरायणा ॥ कुलवस्त्रा कुलाराध्या कुलकुण्डसमप्रभा
॥ २१३ ॥ कुलकुण्डसमोल्लासा कुलपूजापरायणा ॥ कुण्डपुष्पप्रसन्नास्या कुण्डगोलोद्भवात्मिका ॥ २१४ ॥ कुण्डगोलोद्भवाधारा
कुण्डगोलमयी कुहूः ॥ कुण्डगोलप्रियप्राणा कुण्डगोलप्रपूजिता ॥ २१५ ॥ कुण्डगोलमनोल्लासा कुण्डगोलवरप्रदा ॥ कुण्डदेवरता

कुद्धा कुलसिद्धिकरा परा ॥ २१६ ॥ कुलकुण्डसमाकारा कुलकुण्डसमानभूः ॥ कुण्डसिद्धिः कुण्डऋद्धिः कुमारीपूजनोद्यता ॥ २१७ ॥ कुमारीपूजकप्राणा कुमारीपूजकालया ॥ कुमारीकामसंतुष्टा कुमारीपूजनोत्सुक ॥ २१८ ॥ कुमारीव्रतसंतुष्टा कुमारीरूपधारिणी ॥ कुमारीभोजनप्रीता कुमारी च कुमारदा ॥ २१९ ॥ कुमारमाता कुलदा कुलयोनिः कुलेश्वरी ॥ कुललिंगा कुलानन्दा कुलरम्या कुतर्कधृक् ॥ २२० ॥ कुंती च कुलकांता च कुलमार्गपरायणा ॥ कुल्ला च कुरुकुल्ला च कुल्लुका कुलकामदा ॥ २२१ ॥ कुलिशांगी कुब्जिका च कुब्जिकानन्दवर्द्धिनी ॥ कुलीना कुञ्जरगतिः कुञ्जरेश्वरगामिनी ॥ २२२ ॥ कुलपाली कुलवती तथैव कुलदीपिका ॥ कुलयोगेश्वरी कुण्डा कुंकुमारुणविग्रहा ॥ २२३ ॥ कुंकुमानन्दसंतोषा कुंकुमार्णववासिनी ॥ कुंकुमा :कुसुमप्रीता कुलभूः कुलसुन्दरी ॥ २२४ ॥ कुमुद्वती कुमुदिनी कुशला कुलटालया ॥ कुलटालयमध्यस्था कुलटासंगतोषिता ॥ २२५ ॥ कुलटाभवनोद्युक्ता कुशावर्ता कुलार्णवा ॥ कुलार्णवाचाररता कुण्डली कुण्डलाकृतिः ॥ २२६ ॥ कुमतिश्च कुलश्रेष्ठा कुलचक्रपरायणा ॥ कूटस्था कूटदृष्टिश्च कुंतला कुंतलाकृतिः ॥ २२७ ॥ कुशलाकृतिरूपा च कूर्चबीजधरा च कूः ॥ कुंकुंकुंकुंशब्दरता क्रुंक्रुंक्रुंक्रुंपरायणा ॥ ॥ २२८ ॥ कुंकुंकुंशब्दनिलया कुक्कुरासंगवासिनी ॥ कुकरासङ्गसंयुक्ता कुकरानंतविग्रहा ॥ २२९ ॥ कूर्चारंभा कूर्चबीजा कूर्चजापपरायणा ॥ कुचस्पर्शनसंतुष्टा कुचालिंगनहर्षदा ॥ २३० ॥ कुमतिघ्नी कुबेरार्चा कुचभूः कुलनायिका ॥ कुगायना कुचधरा कुमाता कुन्ददंतिनी ॥ २३१ ॥ कुगेया कुहराभासा कुगेया कुघ्नदारिका ॥ कीर्तिः किरातिनी क्लिन्ना किन्नरा किन्नरीक्रिया ॥ ॥ २३२ ॥ क्रींकारा क्रींजपासक्ता क्रींह्रँस्त्रींमंत्ररूपिणी ॥ किर्मीरितदृशापांगी किशोरी च किरीटिनी ॥ २३३ ॥ कीटभाषा कीटयोनिः कीटमाता च कीटदा ॥ किंशुका कीरभाषा च क्रियासारा क्रियावती ॥ २३४ ॥ कींकींशब्दपरा क्लांक्लींक्लूँक्लैंक्लौंमंत्ररूपिणी ॥ काँकींकूँकैंस्वरूपा च कः फटमंत्रस्वरूपिणी ॥ २३५ ॥ केतकीभूषणानन्दा केतकीभरणान्विता ॥ कैकदा कोशिनी केशी केशिसूदनतत्परा ॥ २३६ ॥ केशरूपा केशमक्ता कैकेयी कौशिकी तथा ॥ कैरवा कैरवाह्लादा केशरा केतरूपिणी ॥ २३७ ॥

केशवाराध्यहृदया केशवासक्तमानसा ॥ क्लैब्यविनाशिनी क्लैं च क्लैंबीजजपतोषिता ॥ २३८ ॥ कौशल्या कोशलाक्षी च कोशा च
कोमला तथा ॥ कोलापुरनिवासा च कोलासुरविनाशिनी ॥ २३९ ॥ कोटिरूपा कोटिरता क्रोधिनी क्रोधरूपिणी ॥ केका च
कोकिला कोटिः कोटिमंत्रपरायणा ॥ २४० ॥ कोटयानंतमंत्रयुका कैरूपा केरलाश्रया ॥ केरलाचारनिपुणा केरलेन्द्रगृहस्थिता ॥
॥ २४१ ॥ केदाराश्रमसंस्था च केदारेश्वरपूजिता ॥ क्रोधरूपा क्रोधपदा क्रोधमाता च कौशिकी ॥ २४२ ॥ कोदण्डधारिणी
क्रौंचा कौशल्या कौलमार्गगा ॥ कौलिनी कौलिकाराध्या कौलिकागारवासिनी ॥ २४३ ॥ कौतुकी कौमुदी कौला कुमारी कौर
वार्चिता ॥ कौण्डिन्या कौशिकी क्रोधा ज्वालाभासुररूपिणी ॥ २४४ ॥ कोटिकालामलज्वाला कोटिमार्तण्डविग्रहा ॥ कृत्तिका
कृष्णवर्णा च कृष्णा कृत्या क्रियातुरा ॥ २४५ ॥ कृशाङ्गी कृतकृत्या च क्रः फट्स्वाहास्वरूपिणी ॥ क्रौंक्रौंहूँफट्मंत्रवर्णा क्रींह्रींहूँ
फट् नमः स्वधा ॥ २४६ ॥ क्रींक्रींह्रींह्रीं तथा हूँ हूँ फट्स्वाहामंत्ररूपिणी ॥ इति श्रीसर्वसाम्राज्यमेधानामसहस्रकम् ॥ २४७ ॥
सुन्दरीशक्तिदानाख्यस्वरूपाभिधमेव च ॥ कथितं दक्षिणाकाल्याः सुंदर्य्यै प्रीतियोगतः ॥२४८॥ वरदानप्रसङ्गेन रहस्यमपि दर्शितम् ॥
गोपनीयं सदा भक्त्या पाठनीयं परात्परम् ॥२४९॥ प्रातर्मध्याह्नकाले च मध्यार्द्धरात्रयोरपि ॥ यज्ञकाले जपांते च पठनीयं विशेषतः ॥
॥२५०॥यः पठेत्साधको धीरः कालीरूपो हि वर्षतः ॥ पठेद्वा पाठयेद्वापि श्रृणोति श्रावयेदपि ॥ २५१ ॥ वाचकं तोषयेद्वापि स भवेत्का
लिकातनुः ॥ सहेलं वा सलीलं वा यश्चैनं मानवः पठेत् ॥ २५२ ॥ सर्वदुःखविनिर्मुक्तस्त्रैलोक्यविजयी कविः ॥ मृतवंध्या काकवंध्या
कन्यावंध्या च वंध्यका ॥ २५३ ॥ पुष्पवंध्या शूलवंध्या श्रृणुयात्स्तोत्रमुत्तमम् ॥ सर्वसिद्धिप्रदातारं सत्कविं चिरजीविनम् ॥
॥ २५४ ॥ पाण्डित्यकीर्तिसंयुक्तं लभते नात्र संशयः ॥ यं यं काममुपस्कृत्य कालीं ध्यात्वा जपेत्स्तवम् ॥ २५५ ॥ तं तं कामं
करे कृत्वा मंत्री भवति नान्यथा ॥ योनिपुष्पैर्लिंगपुष्पैः कुण्डगोलोद्भवैरपि ॥ २५६ ॥ संयोगामृतपुष्पैश्च वस्त्रदेवीप्रसूनकैः ॥ काली

पुष्पैः पीठतोयैर्य्योनिक्षालनतोयकैः ॥ २५७ ॥ कस्तूरीकुंकुमैर्देवीं नखकालागुरुक्रमात् ॥ अष्टगंधैर्धूपदीपैर्यवयात्रकसंयुतैः ॥ २५८ ॥
रक्तचन्दनसिंदूरैर्मत्स्यमांसादिभूषणैः ॥ मधुभिः पायसैः क्षीरैः शोधितैः शोणितैरपि ॥ २५९ ॥ महोपचारै रक्तैश्च नैवेद्यै
सुरसान्वितैः ॥ पूजयित्वा महाकालीं महाकालेन लालिताम् ॥ २६० ॥ विद्याराज्ञीं कुल्लुकाञ्च जप्त्वा स्तोत्रं जपेच्छिवे ॥
कालीभक्तस्त्वेकचित्तः सिंदूरतिलकान्वितः ॥ २६१ ॥ ताम्बूलपूरितमुखो मुक्तकेशो दिगंबरः ॥ शवयोनिस्थितो वीरः श्मशाने
सुरतान्वितः ॥ २६२ ॥ शून्यालये बिन्दुपीठे पुष्पाकीर्णे शिवावने ॥ शयानोत्थः प्रभुंजानः कालीदर्शनमाप्नुयात् ॥ २६३ ॥ तत्र
यद्यत्कृतं कर्म तदनंतफलं भवेत् ॥ ऐश्वर्ये कमला साक्षात् सिद्धौ श्रीकालिकाम्बिका ॥ २६४ ॥ कवित्वे तारिणीतुल्यः सौन्दर्य्ये
सुन्दरीसमः ॥ सिंधोर्द्धारासमः कार्ये श्रुतौ श्रुतिधरस्तथा ॥ २६५ ॥ वज्रास्त्रमिव दुर्द्धर्षस्त्रैलोक्यविजयास्त्रभृत् ॥ शत्रुहंता काव्य
कर्ता भवेच्छिवसमः कलौ ॥ २६६ ॥ दिग्विदिक्चन्द्रकर्त्ता च दिवारात्रिविपर्य्ययी ॥ महादेवसमो योगी त्रैलोक्यस्तंभकः क्षणात्
॥ २६७ ॥ गाने तु तुंबुरुः साक्षाद्दाने कर्णसमो भवेत् ॥ गजाश्वरथपत्तीनामस्त्राणामधिपः कृती ॥ २६८ ॥ आयुष्येषु भुशुण्डी च
जरापलितनाशकः ॥ वर्षषोडशवान्भूयात् सर्वकाले महेश्वरि ॥ २६९ ॥ ब्रह्माण्डगोले देवेशि न तस्य दुर्लभं क्वचित् ॥ सर्वं हस्तगतं
भूयान्नात्र कार्या विचारणा ॥ २७० ॥ कुलपुष्पयुतं दृष्ट्वा तत्र कालीं विचिंत्य च ॥ विद्याराज्ञीं तु संपूज्य पठेन्नामसहस्रकम् ॥ २७१ ॥
मनोरथमयी सिद्धिस्तस्य हस्ते सदा भवेत् ॥ परदारान्समालिंग्य सम्पूज्य परमेश्वरीम् ॥ २७२ ॥ हस्ताहस्तकया योगं कृत्वा जप्त्वा
स्तवं पठेत् ॥ योनिं वीक्ष्य जपेत्स्तोत्रं कुबेरादधिको भवेत् ॥ २७३ ॥ कुण्डगोलोद्भवं गृह्य वर्णाक्तं होमयेन्निशि ॥ पितृभूमौ महे
शानि विधिरेखां प्रमार्जयेत् ॥ २७४ ॥ तरुणीं सुन्दरीं रम्यां चंचलां कामगर्विताम् ॥ समानीय प्रयत्नेन संशोध्य न्यासयोगतः ॥
॥ २७५ ॥ प्रसूनमंचे संस्थाप्य पृथिवीं वशमानयेत् ॥ मूलचक्रं तु संभाव्य देव्याश्वरणसंयुतम् ॥ २७६ ॥ सम्पूज्य परमेशानीं
संकल्प्य तु महेश्वरि ॥ जप्त्वा स्तुत्वा महेशानीं प्रणवं संस्मरेच्छिवे ॥ २७७ ॥ अष्टोत्तरशतैर्य्योनिं प्रमंत्र्याचुंब्य यत्नतः ॥ संयोगी

भूय जप्त्वयं सर्वविद्याधिपो भवेत् ॥ २७८ ॥ शून्यागारे शिवारण्ये शिवदेवालये तथा ॥ शून्यदेशे तडागे च गंगागर्भे चतुष्पथे ॥ २७९ ॥ श्मशाने पर्वतप्रांते एकलिंगे शिवामुखे ॥ मुण्डयोनौ ऋतौ स्नात्वा गेहे वेश्यागृहे तथा ॥ २८० ॥ कुट्टिनीगृहमध्ये च कदलीमण्डपे तथा ॥ पठेत्सहस्रनामाख्यं स्तोत्रं सर्वार्थसिद्धये ॥ २८१ ॥ अरण्ये शून्यगर्ते च रणे शत्रुसमागमे ॥ प्रजपेच्च ततो नाम काल्याश्चैव सहस्रकम् ॥ २८२ ॥ बालानन्दपरो भूत्वा पठित्वा कालिकास्तवम् ॥ कालीं संचिन्त्य प्रजपेत्पठेन्नामसहस्रकम् ॥ २८३ ॥ सर्वसिद्धीश्वरो भूयाद्वाञ्छासिद्धीश्वरो भवेत् ॥ मुण्डचूडकयोर्योनित्वचि वा कोमले शिवे ॥ २८४ ॥ विष्टरे शववस्त्रे वा पुष्पवस्त्रासने ऽपि वा ॥ मुक्तकेशो दिगावासो मैथुनी शयने स्थितः ॥ २८५ ॥ जप्त्वा कालीं पठेत्स्तोत्रं खेचरीसिद्धिभाग्भवेत् ॥ चिकुरं योग मासाद्य शुक्रोत्सारणमेव च ॥ २८६ ॥ जप्त्वा श्रीदक्षिणां कालीं शक्तिपातशतं भवेत् ॥ लतां स्पृशञ्जपित्वा च रमित्वा त्वर्चयन्नपि ॥ २८७ ॥ आह्लादयन्दिगावासः परशक्तिं विशेषतः ॥ स्तुत्वा श्रीदक्षिणां कालीं योनिं स्वकरगाश्चरेत् ॥ २८८ ॥ पठेन्नाम सहस्रं यः स शिवादधिको भवेत् ॥ लतांतरेषु जप्त्वयं स्तुत्वा कालीं निराकुलः ॥ २८९ ॥ दशावधानो भवति मासमात्रेण साधकः ॥ कालरात्र्यां महारात्र्यां वीररात्र्यामपि प्रिये ॥ २९० ॥ महारात्र्यां चतुर्दश्यामष्टम्यां संक्रमेऽपि वा ॥ कुहूपूर्णेन्दुशुक्रेषु भौमा मायां निशामुखे ॥ २९१ ॥ नवम्यां मंगलदिने तथा कुलतिथौ शिवे ॥ कुलक्षेत्रे प्रयत्नेन पठेन्नामसहस्रकम् ॥ २९२ ॥ सौदर्शनो भवे दाशु किन्नरीसिद्धिभाग्भवेत् ॥ पश्चिमाभिमुखं लिंगं वृषशून्यं पुरातनम् ॥ २९३ ॥ तत्र स्थित्वा जपेत्स्तोत्रं सर्वकामाप्तये शिवे ॥ भौमे वारे निशीथे वा अमावस्यादिने शुभे ॥ २९४ ॥ माषभक्तबलिं छागं कृसरान्नं च पायसम् ॥ दग्धमीनं शोणितं च दधिदुग्धगुडार्द्रकम् ॥ २९५ ॥ बलिं दत्त्वा जपेत्तत्र त्वष्टोत्तरसहस्रकम् ॥ देवगंधर्वसिद्धौघैः सेवितां सुरसुन्दरीम् ॥ २९६ ॥ लभेद्देवेशि मासेन तस्य चासन संहतिः ॥ हस्तत्रयं भवेदूर्ध्वं नात्र कार्या विचारणा ॥ २९७ ॥ हेलया लीलया भक्त्या कालीं स्तौति नरस्तु यः ॥ ब्रह्मादीन्स्तंभयेद्देवि माहेशीं मोहयेत्क्षणात् ॥ २९८ ॥ आकर्षयेन्महाविद्या दश पूर्वास्त्रियामतः ॥ कुर्वीत विष्णुनिर्माणं यमादीनां तु मारणम् ॥ २९९ ॥

ध्रुवमुच्चाटयेन्नूनं सृष्टिनूतनतां नरः॥ मेषमाहिषमार्जारखरच्छागनरादिकैः ॥ ३०० ॥ खड्गिसूकरकापोतैष्टिट्टिभैः शशकैः पलैः ॥ शोणितैः सास्थिमांसैश्च कारण्डैर्दुग्धपायसैः॥३०१॥कादम्बरीसिंधुमध्वैस्सुरारिष्टैश्च सासवैः ॥ योनिक्षालिततोयैश्च योनिर्लिंगामृतैरपि ॥३०२॥स्वजातकुसुमैः पूज्य जपांते तर्पयेच्छिवाम्॥सर्वसाम्राज्यनाम्ना तु स्तुत्वा नत्वा स्वशक्तितः॥३०३॥शक्त्या लभन् पठेत्स्तोत्रं कालीरूपो दिनत्रयात्॥ दक्षिणा कालिका तस्य गेहे तिष्ठति नान्यथा ॥३०४॥ वेश्यालतागृहे गत्वा तस्याश्चुम्बनतत्परः॥ तस्या योनौ मुखं दत्त्वा तद्रसं विलिहञ्जपेत् ॥ ३०५ ॥ तदंते नामसाहस्रं पठेद्भक्तिपरायणः ॥ कालिकादर्शनं तस्य भवेद्देवि त्रियामतः ॥ ३०६ ॥ नृत्यपात्रगृहे गत्वा मकारपञ्चकान्वितः ॥ प्रसूनमंचे संस्थाप्य शक्तिन्यासपरायणः ॥ ३०७ ॥ पात्राणां साधनं कृत्वा दिग्वस्त्रां तां समाचरेत् ॥ संभाव्य चक्रं तन्मूले तत्र सावरणां जपेत् ॥ ३०८ ॥ शतं भाले शतं केशे शतं सिन्दूरमण्डले ॥ शतत्रयं कुचद्वंद्वे शतं नाभौ महेश्वरि ॥ ३०९ ॥ शतं योनौ महेशानि संयोगे च शतत्रयम् ॥ जपेत्तत्र महेशानि तदंते प्रपठेत्स्तवम् ॥ ३१० ॥ शतावधानो भवति मासमात्रेण साधकः॥ मातङ्गिनीं समानीय किंवा कापालिनीं शिवे ॥ ६११ ॥ दंतमाला जपे कार्य्या गले धार्य्या नृमुण्डजा ॥ नेत्रपद्मे योनिचक्रं शक्तिचक्रं स्वचक्रके ॥ ३१२ ॥ कृत्वा जपेन्महेशानि मुण्डयंत्रं प्रपूजयेत् ॥ मुण्डासनास्थितो वीरो मकारपञ्चकान्वितः ॥ ३१३ ॥ अन्यामालिङ्ग्य प्रजपेदन्यां संचुम्ब्य वै पठेत् ॥ अन्यां संपूजयेत्तत्र त्वन्यां सम्मर्दयन् जपेत् ॥ ३१४ ॥ अन्यायोनौ शिवं दत्त्वा पुनः पूर्ववदाचरेत् ॥ अवधानसहस्रेषु शशिपातशतेषु च ॥ ३१५ ॥ राजा भवति देवेशि मासपंचकयोगतः ॥ यवनीशक्तिमानीय गानशक्तिपरायणाम् ॥ ३१६ ॥ कुलाचारमतेनव तस्या योनिं विकासयेत् ॥ तत्र प्रदाय जिह्वां तु जपेन्नामसहस्रकम् ॥ ३१७ ॥ नृकपाले तत्र दीपं जपेत्प्रज्वाल्य यत्नतः ॥ महाकविवरो भूयान्नात्र कार्य्या विचारणा ॥ ३१८ ॥ कामार्तां शक्तिमानीय योनौ तु मूलचक्रकम् ॥ विलिख्य परमेशानि तत्र मंत्रं लिखेच्छिवे ॥ ३१९ ॥ तल्लिहन् प्रजपेद्देवि सर्वशास्त्रार्थतत्त्ववित् ॥ अश्रुतानि च शास्त्राणि वेदादीन् पाठयेद् ध्रुवम् ॥ ३२० ॥ विना न्यासैर्विना पाठैर्विना ध्यानादिभिः प्रिये ॥ चतुर्वेदाधिपो भूत्वा त्रिकालज्ञस्त्रिवर्षतः ॥३२१॥

चतुर्विधं च पाण्डित्यं तस्य हस्तगतं क्षणात् ॥ शिवाबलिः प्रदातव्यः सर्वदा शून्यमण्डले ॥३२२॥ कालीध्यानं मंत्रचिंता नीलसाधनमेव च ॥ सहस्रनामपाठश्च कालीनामप्रकीर्तनम्॥३२३॥भक्तस्य कार्य्यमेतावदन्यदभ्युदयं विदुः॥वीरसाधनकं कर्म्म शिवापूजा बलिस्तथा ॥ ॥ ३२४ ॥ सिंदूरतिलको देवि वेश्यालापो निरंतरम् ॥ वेश्यागृहे निशाचारो रात्रौ पर्य्यटनं तथा ॥ ३२५ ॥ शक्तिपूजा योनिदृष्टिः खड्गहस्तो दिगम्बरः ॥ मुक्तकेशो वीरवेषः कुलमूर्त्तिधरो नरः ॥ ३२६ ॥ कालीभक्तो भवेद्देवि नान्यथा क्षेममाप्नुयात् ॥ दुग्धास्वादी योनिलेही संविदासवघर्णितः ॥३२७॥ वेश्यालतासमायोगान्मासात्कल्पलता स्वयम् ॥ वेश्याचक्रसमायोगात्कालीचक्रसमः स्वयम् ॥ ॥ ३२८ ॥ वेश्यादेहसमायोगात् कालीदेहसमः स्वयम् ॥ वेश्यामध्यगतं वीरं कदा पश्यामि साधकम् ॥ ३२९ ॥ एवं वदति सा काली तस्माद्वेश्या वरा मता ॥ वेश्या कन्या तथा पीठजातिभेदकुलक्रमात् ॥ ३३० ॥ अकुलक्रमभेदेन ज्ञात्वा चापि कुमारीकाम् ॥ कुमारीं पूजयेद्भक्त्या जपांते भवने प्रिये ॥ ३३१ ॥ पठेन्नामसहस्रं यः कालीदर्शनभाग्भवेत् ॥ भक्त्या कुमारीं सम्पूज्य वेश्याकुलसमुद्भवाम् ॥ ३३२ ॥ वस्त्रहेमादिभिस्तोष्य यत्नात्स्तोत्रं पठेच्छिवे ॥ त्रैलोक्यविजयी भूयाद्दिवा चन्द्रप्रकाशकः ॥ ३३३ ॥ यद्यद्दत्तं कुमार्य्यै त तदनंतफलं भवेत् ॥ कुमारीपूजनफलं मया वक्तुं न शक्यते ॥ ३३४ ॥ चांचल्याद्दुरितं किंचित्क्षम्यतामथ मंजलिः ॥ एका चेत्पूजिता बाला द्वितीया पूजिता भवेत् ॥ ३३५ ॥ कुमार्यः शक्तयश्चैव सर्वमेतच्चराचरम् ॥ शक्तिमानीय तद्गात्रे न्यासजालं प्रविन्यसेत् ॥ ३३६ ॥ वामभागे च संस्थाप्य जपेन्नामसहस्रकम् ॥ सर्वसिद्धीश्वरो भूयान्नात्र कार्य्या विचारणा ॥ ॥ ३३७ ॥ श्मशानस्थो भवेत्स्वस्थो गलितं चिकरं चरेत् ॥ दिगम्बरः सहस्रं च सूर्य्यपुष्पं समानयेत् ॥ ३३८ ॥ स्ववीर्य्येण प्लुतं कृत्वा प्रत्येकं प्रजपन् हुनेत् ॥ पूज्य ध्यात्वा महाभक्त्या क्षमापालो नरः पठेत् ॥ ३३९ ॥ नखं केशं स्ववीर्य्यं च यद्यत्सम्मार्जनीगतम् ॥ मुक्तकेशो दिशावासो मूलमंत्रपुरःसरः ॥ ३४० ॥ कुजवारे मध्यरात्रे होमं कृत्वा श्मशानके ॥ पठेन्नामसहस्रं यः पृथ्वीशाकर्षको भवेत् ॥ ३४१ ॥ पुष्पयुक्ते भगे देवि संयोगानन्दतत्परः ॥ पुनश्चिकुरमासाद्य मूलमंत्रं जपन् शिवे ॥ ३४२ ॥

चितावह्नौ मध्यरात्रे वीर्य्यमुत्सार्य्य यत्नतः ॥ कालिकां पूजयेत्तत्र पठेन्नामसहस्रकम् ॥ ३४३ ॥ पृथ्वीशाकर्षणं कुर्य्यान्नात्र कार्या विचारणा ॥ कदलीवनमासाद्य लक्षमंत्रं जपेन्नरः ॥ ३४४ ॥ मधुमत्या स्वयं देव्या सेव्यमानः स्मरोपमः ॥ श्रीमधुमतीत्युक्ता तथा स्थावरजङ्गमान् ॥ ३४५ ॥ आकर्षिणीं समुच्चार्य्य ठंठं स्वाहा समुच्चरेत् ॥ त्रैलोक्याकर्षिणी विद्या तस्य हस्ते सदा भवेत् ॥ ३४६ ॥ नदीं पुरीं च रत्नानि हेमस्त्रीशैलभूरुहान् ॥ आकर्षयत्यम्बुनिधिं सुमेरुं च दिगंततः ॥ ३४७ ॥ अलभ्यानि च वस्तूनि दूराद्भूमितलादपि ॥ वृत्तांतं च सुरस्थानाद्रहस्ये विदुषामपि ॥ ३४८ ॥ राज्ञां च कथयत्येषा सत्यं सत्वरमादिशेत् ॥ द्वितीयवर्षपाठेन भवेत्पद्मावती शुभा ॥ ३४९ ॥ ॐ ह्रींपद्मावतिपदं ततस्त्रैलोक्यनाम च ॥ वार्ता च कथयंद्वंद्वं स्वाहांतो मंत्र ईरितः ॥ ॥ ३५० ॥ ब्रह्मविष्ण्वादिकानां च त्रैलोक्ये यादृशी भवेत् ॥ सर्वं वदति देवेशि त्रिकालज्ञः कविः शुभः ॥ ३५१ ॥ त्रिवर्षं संपठन्देवि लभेद्भोगवतीं कलाम् ॥ महाकालेन दृष्टोऽपि चितामध्यगतोऽपि वा ॥ ३५२ ॥ तस्या दर्शनमात्रेण चिरंजीवी नरो भवेत् ॥ मृतसंजीविनीत्युक्ता मृतमुत्थापयद्वयम् ॥ ३५३ ॥ स्वाहांतो मनुराख्यातो मृतसंजीवनात्मकः ॥ चतुर्वर्षं पठेद्यस्तु स्वप्नसिद्धिस्ततो भवेत् ॥ ३५४ ॥ ॐ ह्रीं स्वप्नवाराहि कालि स्वप्ने कथयोच्चरेत् ॥ अमुकस्यामुकं देहि क्रीं स्वाहांतो मनुर्मतः ॥ ३५५ ॥ स्वप्नसिद्धा चतुर्वर्षात्तस्य स्वप्ने सदा स्थिता ॥ चतुर्वर्षस्य पाठेन चतुर्वेदाधिपो भवेत् ॥ ३५६ ॥ तद्धस्तजलसंयोगान्मूर्खः काव्यं करोति च ॥ तस्य वाक्यपरिचयान्मूर्तिर्विन्दति काव्यताम् ॥ ३५७ ॥ मस्तके तु करं कृत्वा वद वाणीमिति ब्रुवन् ॥ साधको वांछया कुर्य्यात्तत्तथैव भविष्यति ॥ ३५८ ॥ ब्रह्माण्डगोलके याश्च याः काश्चिज्जगतीतले ॥ समस्ताः सिद्धयो देवि करामलकवत्सदा ॥ ३५९ ॥ साधकस्मृतिमात्रेण यावंत्यः संति सिद्धयः ॥ स्वयमायांति पुरतो जपादीनां तु का

१ श्रीमधुमती स्थावरजंगमाकर्षिणी ठंठं स्वाहा । इति मधुमती मंत्रोद्धारः ॥ २ ॐ ह्रीं पद्मावति त्रैलोक्यवार्तां कथयकथय स्वाहा । इति पद्मावतीमंत्रोद्धारः ॥ ३ ॐ मृतसंजीविनी मृतमुत्थापयोत्थापय स्वाहा । इति मृतसंजीविनीमंत्रोद्धारः ॥ ४ ॐ ह्रीं स्वप्नवाराहि कालि स्वप्ने कथय अमुकस्यामुकं देहि क्रीं स्वाहा । इति स्वप्नसिद्धिमंत्रोद्धारः ॥

कथा ॥ ३६० ॥ विदेशवर्तिनो भूत्वा वर्तंते चेटका इव ॥ अमायां चन्द्रसंदर्शश्चन्द्रग्रहगमेव च ॥ ३६१ ॥ अष्टम्यां पूर्णचन्द्रत्वं चन्द्रसूर्याष्टकं तथा ॥ अष्टदिक्षु तथाष्टौ च करोत्येव महेश्वरि ॥ ३६२ ॥ अणिमा खेचरत्वं च चराचरपुरीगतम् ॥ पादुकाखड्गवेताल यक्षिणीगुह्यकादयः ॥ ३६३ ॥ तिलको गुप्तताद्दश्यं चराचरकथानकम् ॥ मृतसंजीविनीसिद्धिर्गुटिका च रसायनम् ॥ ३६४ ॥ उड्डीनासिद्धिर्देवेशि षष्टिसिद्धीश्वरत्वकम् ॥ तस्य हस्ते वसेद्देवि नात्र कार्या विचारणा ॥ ३६५ ॥ केतौ वा दुन्दुभौ वस्त्रे विताने वेष्टने गृहे ॥ भित्तौ च फलके देवि लेख्यं पूज्यं च यत्नतः ॥ ३६६ ॥ मध्ये चक्रं दशांगोक्तं परितो नामलेखनम् ॥ तद्धारणान्महेशानि त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥ ३६७ ॥ एको हि शतसाहस्रं निर्जित्य च रणांगणे ॥ पुनरायाति च सुखं स्वगृहं प्रति पार्वति ॥ ३६८ ॥ एको हि शतसंदर्शी लोकानां भवति ध्रुवम् ॥ कलशं स्थाप्य यत्नेन नामसाहस्रकं पठेत् ॥ ३६९ ॥ सेकः कार्य्यो महेशानि सर्वापत्ति निवारणे ॥ भूतप्रेतग्रहादीनां रक्षसां ब्रह्मरक्षसाम् ॥ ३७० ॥ वेतालानां भैरवाणां स्कंदवैनायकादिकान् ॥ नाशयेत् क्षणमात्रेण नात्र कार्य्या विचारणा ॥ ३७१ ॥ भस्माभिर्मंत्रितं कृत्वा ग्रहग्रस्तं विलेपयेत् ॥ भस्मसंक्षेपणादेव सर्वग्रहविनाशनम् ॥ ३७२ ॥ नवनीतं चाभिमंत्र्य स्त्रीभ्यो दद्यान्महेश्वरि ॥ वंध्या पुत्रप्रदा देवि नात्र कार्य्या विचारणा ॥ ३७३ ॥ कण्ठे वा वामबाहौ वा योनौ वा धारणा च्छिवे ॥ बहुपुत्रवती नारी सुभगा जायते ध्रुवम् ॥ ३७४ ॥ पुरुषो दक्षिणांगे तु धारयेत्सर्वसिद्धये ॥ बलवान् कीर्तिमान् धन्यो धार्मिकः साधकः कृती ॥ ३७५॥ बहुपुत्रो रथानां च गजानामाधिपः सुधीः ॥ कामिनीकर्षणोद्युक्तः क्रीं च दक्षिणकालिके ॥ ३७६ ॥ क्रींस्वाहा प्रजपेन्मंत्रमयुतं नामपाठकः ॥ आकर्षणं चरेद्देवि जलखेचरभूगतान् ॥ ३७७ ॥ वशीकरणकामो हि हूँहूँह्रींह्रीं च दक्षिणे ॥ कालिके पूर्वबीजानि पूर्ववत्प्रजपन् पठेत् ॥ ३७८ ॥ उर्वशीमपि वशयेन्नात्र कार्य्या विचारणा ॥ क्रीं चै दक्षिणकालिके स्वाहा

---

१ ॐ क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं स्वाहा । इत्याकर्षणमन्त्रोद्धारः ॥ २ हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं स्वाहा । इति वशीकरणमंत्रोद्धारः ॥ ३ क्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा । इति मारणमन्त्रोद्धारः ॥

युक्तं जपेन्नरः ॥ ३७९ ॥ पठेन्नामसहस्रं तु त्रैलोक्य मारयेद्ध्रुवम् ॥ सद्भक्ताय प्रदातव्या विद्या राज्ञि शुभे दिने ॥ ३८० ॥
सद्विनीताय शांताय दांतायातिगुणाय च ॥ भक्ताय ज्येष्ठपुत्राय गुरुभक्तिपराय च ॥ ३८१ ॥ वैष्णवाय प्रशुद्धाय शिवाबलिरताय
च ॥ वेश्यापूजनयुक्ताय कुमारीपूजकाय च ॥ ३८२ ॥ दुर्गाभक्ताय रौद्राय महाकालप्रजापिने ॥ अद्वैतभावयुक्ताय कालीभक्तिपराय
च ॥ ३८३ ॥ देयं सहस्रनामाख्यं स्वयं काल्या प्रकाशितम् ॥ गुह्यैवतमंत्राणां महेशस्यापि पार्वति ॥ ३८४ ॥ अभेदेन स्मरे
न्मंत्रं स शिवः स गणाधिपः ॥ यो मंत्रं भावयेन्मंत्री स शिवो नात्र संशयः ॥ ३८५ ॥ स शाक्तो वैष्णवः सौरः स एव पूर्णदीक्षितः ॥
अयोग्याय न दातव्यं सिद्धिरोधः प्रजायते ॥ ३८६ ॥ वेश्यास्त्रीनिन्दकायाथ सुरासंवित्प्रनिन्दके ॥ सुरामुखो मनुं स्मृत्वा सुराचार्यो
भविष्यति ॥ ३८७ ॥ वाग्देवता घोरे आद्यापरपारे च हूँ वदेत् ॥ घोररूपे महाघोरे मुक्तीभीमपदं वदेत् ॥ ३८८ ॥ भीषणमुष्य
षष्ठ्यंतं हेतुर्वामयुगे शिवे ॥ शिववह्नियुगाद्यं हूँ हूँ कवचमनुर्भवेत् ॥ ३८९ ॥ एतस्य स्मरणादेव दुष्टानां च मखे सुरा ॥ अवतीर्णा
भवेद्देवि दुष्टानां भद्रनाशिनी ॥ ३९० ॥ खलाय परतंत्राय परनिंदापराय च ॥ भ्रष्टाय दुष्टसत्त्वाय परवादरताय च ॥ ३९१ ॥ शिवा
भक्ताय दुष्टाय परदाररताय च ॥ न स्तोत्रं दर्शयेद्देवि शिवहत्याकरो भवेत् ॥ ३९२ ॥ कालिकानन्दहृदयः कालिकाभक्तिमानसः ॥
कालीभक्तो भवेत्सोऽयं धन्यरूपः स एव तु ॥ ३९३ ॥ कलौ काली कलौ काली कलौ काली वरप्रदा ॥ कलौ काली कलौ काली
कलौ काली तु केवला ॥ ३९४ ॥ बिल्वपत्रसहस्राणि करवीराणि वै तथा ॥ प्रतिनाम्ना पूजयेद्धि तेन काली वरप्रदा ॥ ३९५ ॥
कमलानां सहस्रं तु प्रतिनाम्ना समर्पयेत् ॥ चक्रं संपूज्य देवेशि कालिकावरमाप्नुयात् ॥ ३९६ ॥ मंत्रक्षोभयुतो नैव कलशस्थजलेन
च ॥ नाम्ना प्रसेचयेद्देवि सर्वक्षोभविनाशकृत् ॥ ३९७ ॥ तथा दमनकं देवि सहस्रमाहरेद्व्रती ॥ सहस्रनाम्ना संपूज्य कालीवरमवाप्नु
यात् ॥ ३९८ ॥ चक्रं विलिख्य देहस्थं धारयेत्कालिकातनुः ॥ काल्यै निवेदितं यत्तदंशं भक्षयेच्छिवे ॥ ३९९ ॥ दिव्यदेह
धरो भूत्वा कालीदेहे स्थितो भवेत् ॥ नैवेद्यनिन्दकान् दुष्टान् दृष्ट्वा नृत्यंति भैरवाः ॥ ४०० ॥ योगिन्यश्च महावीरा रक्तपानोद्यताः

प्रिये ॥ मांसास्थिचर्म्मणोद्युक्ता भक्षयंति न संशयः ॥ ४०१ ॥ तस्मान्न निन्दयेद्देवि मनसा कर्म्मणा गिरा ॥ अन्यथा कुरुते यस्तु
तस्य नाशो भविष्यति ॥ ४०२ ॥ क्रमदीक्षायुतानां च सिद्धिर्भवति नान्यथा ॥ मंत्रक्षोभश्च वा भूयात् क्षीणायुर्वा भवेद्ध्रुवम् ॥
॥ ४०३ ॥ पुत्रहारी स्त्रियो हारी राज्यहारी भवेद्ध्रुवम् ॥ क्रमदीक्षायुतो देवि क्रमाद्राज्यमवाप्नुयात् ॥ ४०४ ॥ एकवारं पठेद्देवि
सर्वपापविनाशनम् ॥ द्विवारं च पठेद्यो हि वांछां विंदति नित्यशः ॥ ४०५ ॥ त्रिवारं च पठेद्यस्तु वागीशसमतां व्रजेत् ॥ चतुर्वारं
पठेद्देवि चतुर्वर्णाधिपो भवेत् ॥ ४०६ ॥ पंचवारं पठेद्देवि पंचकामाधिपो भवेत् ॥ षड्वारं च पठेद्देवि षडैश्वर्याधिपो भवेत् ॥
॥ ४०७ ॥ सप्तवारं पठेत्सप्तकामानां चिंतितं लभेत् ॥ वसुवारं पठेद्देवि दिगीशो भवति ध्रुवम् ॥ ४०८ ॥ नववारं पठेद्देवि नवनाथ
समो भवेत् ॥ दशवारं कीर्त्तयेद्यो दशार्हः खेचरेश्वरः ॥ ४०९ ॥ विंशतिवारं कीर्तयेद्यः सर्वैश्वर्यमयो भवेत् ॥ पंचविंशतिवारैस्तु सर्व
चिंताविनाशकः ॥ ४१० ॥ पञ्चाशद्वारमावर्त्य पंचभूतेश्वरो भवेत् ॥ शतवारं कीर्त्तयेद्यः शताननसमानधीः ॥ ४११ ॥ शतपंचकमावर्त्य
राजराजेश्वरो भवेत् ॥ सहस्रावर्त्तनाद्देवि लक्ष्मीरावृणुते स्वयम् ॥ ४१२ ॥ त्रिसहस्रं समावर्त्य त्रिनेत्रसदृशो भवेत् ॥ पंचसाहस्रमावर्त्य
कामकोटिविमोहनः ॥ ४१३ ॥ दशसाहस्रमावर्त्य भवेद्दशमुखेश्वरः ॥ पंचविंशतिसाहस्रैश्चतुर्विंशतिसिद्धिधृक् ॥ ४१४ ॥ लक्षावर्त्तनमात्रेण
लक्ष्मीपतिसमो भवेत् ॥ लक्षत्रयावर्त्तनात्तु महादेवं विजेष्यति ॥ ४१५ ॥ लक्षपंचकमावर्त्य कलापंचकसंयुतः ॥ दशलक्षावर्त्तनात्तु दश
विद्यासिरुत्तमा ॥ ४१६ ॥ पंचविंशतिलक्षैस्तु दशविद्येश्वरो भवेत् ॥ पंचाशल्लक्षमावृत्य महाकालसमो भवेत् ॥ ४१७ ॥ कोटिमावर्त्तयेद्यस्तु
कालीं पश्यति चक्षुषा ॥ वरदानोद्युककरां महाकालसमन्विताम् ॥ ४१८ ॥ प्रत्यक्षं पश्यति शिवे तस्या देहो भवेद्ध्रुवम् ॥ श्रीविद्याकालिका
तारात्रिशक्तिविजयी भवेत् ॥ ४१९ ॥ विधेर्लिपिं च सम्मार्ज्य किंकरत्वं विसृज्य च ॥ माहाराज्यमवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ॥ ४२० ॥
त्रिशक्तिविषये देवि क्रमदीक्षा प्रकीर्तिता ॥ क्रमदीक्षायुतो देवि राजा भवति निश्चितम् ॥ ४२१ ॥ क्रमदीक्षाविहीनस्य फलं पूर्व
मिहेरितम् ॥ क्रमदीक्षायुतो देवि शिव एव न चापरः ॥ ४२२ ॥ क्रमदीक्षासमायुक्तः काल्युक्तसिद्धिभाग्भवेत् ॥ क्रमदीक्षाविही

नस्य सिद्धिहानिः पदे पदे ॥ ४२३ ॥ अहो जन्मवतां मध्ये धन्यः क्रमयुतः कलौ ॥ तत्रापि धन्यो देवेशि नामसाहस्रपाठकः ॥ ४२४ ॥ दशकालीविधौ देवि स्तोत्रमेतत्सदा पठेत् ॥ सिद्धिं विंदति देवेशि नात्र कार्या विचारणा ॥ ४२५ ॥ काकी काली महाविद्या कलौ काली च सिद्धिदा ॥ कलौ काली च सिद्धा च कलौ काली वरप्रदा ॥ ४२६ ॥ कलौ काली साधकस्य दर्शनार्थं समुद्यता ॥ कलौ काली केवला स्यान्नात्र कार्य्या विचारणा ॥ ४२७ ॥ नान्यविद्या नान्यविद्या नान्यविद्या कलौ भवेत् ॥ कलौ कालीं विहायाथ यः कश्चित्सिद्धिकामुकः ॥ ४२८ ॥ स तु शक्तिं विना देवि रतिसम्भोगमिच्छति ॥ कलौ कालीं विना देवि यः कश्चित्सिद्धिमिच्छति ॥ ४२९ ॥ स नीलसाधनं त्यक्त्वा परिभ्रमति सर्वतः ॥ कलौ कालीं विहायाथ यः कश्चिन्मोक्षमिच्छति ॥ ४३० ॥ गुरुध्यानं परित्यज्य सिद्धिमिच्छति साधकः ॥ कलौ कालीं विहायाथ यः कश्चिद्राज्यमिच्छति ॥ ४३१ ॥ स भोजनं परित्यज्य भिक्षुवृत्तिमभीप्सति ॥ स धन्यः स च विज्ञानी स एव सुरपूजितः ॥ ४३२ ॥ स दीक्षितः सुखी साधुः सत्यवादी जितेन्द्रियः ॥ स वेदवक्ता स्वाध्यायी नात्र कार्या विचारणा ॥ ४३३ ॥ शिवरूपं गुरुं ध्यात्वा शिवरूपं गुरुं स्मरेत् ॥ सदाशिवः स एव स्यान्नात्र कार्या विचारणा ॥ ४३४ ॥ स्वस्मिन् कालीं तु संभाव्य पूजयेज्जगदम्बिकाम् ॥ त्रैलोक्यविजयी भूयान्नात्र कार्य्या विचारणा ॥ ४३५ ॥ गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥ रहस्यातिरहस्यं च रहस्यातिरहस्यकम् ॥ ४३६ ॥ श्लोकार्द्धं पादमात्रं वा पादार्द्धं च तदर्धकम् ॥ नामार्द्धं यः पठेद्देवि न वंध्यदिवसं नयेत् ॥ ४३७ ॥ पुस्तकं पूजयेद्भक्त्या त्वरितं फलसिद्धये ॥ न च मारीभयं तत्र न चाग्निवायुसंभवम् ॥ ४३८ ॥ न भूतादिभयं तत्र सर्वत्र सुखमेधते ॥ कुंकुमालक्तकेनैव रोचनागुरुयोगतः ॥ ४३९ ॥ भूर्जपत्रे लिखेत्पुस्तं सर्वकामार्थसिद्धये ॥ इति संक्षेपतः प्रोक्तं किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ॥ ४४० ॥ इति गदितमशेषं कालिकावर्णरूपं प्रपठति यदि भक्त्या सर्वसिद्धीश्वरः स्यात् ॥ अभिनवसुखकामः सर्वविद्याभिरामो भवति सकलसिद्धिः सर्ववीरा समृद्धिः ॥ ४४१ ॥ इति श्रीकालीतंत्रे रुद्रयामले च कालीसहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥ अथ कालीसहस्रनामावलिप्रारंभः ॥ ॐ क्रीं काल्यै

नमः १ । ॐ क्रूं करालये नमः २ । कल्याण्यै० ३ । कमलायै० ४ । कलायै० ५ । कलावत्यै० ६ । कलाढ्यायै० ७ । कला
पूज्यायै० ८ । कलात्मिकायै० ९ । कलाहृष्टायै० १० । कलापुष्टायै० ११ । कलामस्तायै० १२ । कलाकरायै० १३ । कला
कोटिसमाभासायै० १४ । कलाकोटिप्रपूजितायै० १५ । कालकर्म्मकलाधारायै० १६ ॥ कलापरायै० १७ । कलागमायै० १८ ।
कलाधारायै० १९ । कमलिन्यै० २० । ककारायै० २१ । करुणायै० २२ । कव्यै० २३ । ककारवर्णसर्वांग्यै० २४ । कला
कोटिप्रभूषितायै० २५ । कलाकोटिगुणितायै० २६ ॥ ककारकोटिभूषणायै० २७ । ककारवर्णहृदयायै० २८ । ककारमनुमंडि
तायै० २९ । ककारवर्णनिलयायै० ३० । काकशब्दपरायणायै० ३१ । ककारवर्णमुकुटायै० ३२ । ककारवर्णभूषायै० ३३ ।
ककारवर्णरूपायै० ३४ । काकशब्दपरायणायै० ३५ ॥ काकवीरास्फालरतायै० ३६ । कमलाकरपूजितायै० ३७ । कमलाकर
नाथायै० ३८ । कमलाकररूपधृषे० ३९ । कमलाकरसिद्धिस्थायै० ४० । कमलाकरपादायै० ४१ । कमलाकर
मध्यस्थायै० ४२ । कमलाकरतोषितायै० ४३ । कथंकारपरालापायै० ४४ । कथंकारपरायै० ४५ । कथंकारपद
स्थायै० ४६ । कथंकारपदार्थभुवे० ४७ । कमलाक्ष्यै० ४८ । कमलजायै० ४९ । कमलाक्षरप्रपूजितायै० ५० । कमलाक्षरवरो
द्युक्तायै० ५१ । ककारायै० ५२ । कर्बुराक्षरायै० ५३ । करतारायै० ५४ । करच्छिन्नायै० ५५ । करश्यामायै० ५६ ।
करार्णवायै० ५७ । करपूज्यायै० ५८ । कररतायै० ५९ । करदायै० ६० । करपूजितायै० ६१ । करतोयायै० ६२ ।
करामर्षायै० ६३ । कर्म्मनाशायै० ६४ । करप्रियायै० ६५ । करप्राणायै० ६६ । करकजायै० ६७ । करकायै० ६८ ।
करकांतरायै० ६९ । करकाचलरूपायै० ७० । करकाचलशोभिन्यै० ७१ । करकाचलपुत्र्यै० ७२ । करकाचलतोषितायै०
७३ । करकाचलगेहस्थायै० ७४ । करकाचलरक्षिण्यै० ७५ । करकाचलसम्मान्यायै० ७६ । करकाचलकारिण्यै० ७७ ।
करकाचलवर्षाढ्यायै० ७८ । करकाचलरंजितायै० ७९ । करकाचलकांतारायै० ८० । करकाचलमालिन्यै० ८१ । करकाचल

भोज्यायै० ८२ । करकाचलरूपिण्यै० ८३ । करामलकसंस्थायै० ८४ । करामलकासिद्धिदायै० ८५ । करामलकसंपूज्यायै० ८६ । करामलकतारिण्यै० ८७ । करामलककाल्यै० ८८ । करामलकरोचिन्यै० ८९ । करामलकमात्रे० ९० । करामलकसेविन्यै० ९१ । करामलकवद्ध्येयायै० ९२ । करामलकदायिन्यै० ९३ । कञ्जनेत्रायै० ९४ । कञ्जमत्यै० ९५ । कञ्जस्थायै० ९६ । कञ्ज धारिण्यै० ९७ । कञ्जमालाप्रियकर्यै० ९८ । कञ्जरूपायै० ९९ । कञ्जजायै० १०० । कञ्जजात्यै० १०१ । कञ्जगत्यै० १०२ । कञ्जहोमपरायणायै० १०३ । कञ्जमण्डलमध्यस्थायै० १०४ । कञ्जाभरणभूषितायै० १०५ । कञ्जसम्माननिरतायै० १०६ । कञ्जोत्पत्तिपरायणायै० १०७ । कञ्जराशिसमाकारायै० १०८ । कञ्जारण्यनिवासिन्यै० १०९ । करञ्जवृक्षमध्यस्थायै० ११० । करञ्जवृक्षवासिन्यै० १११ । करञ्जफलभूषाढ्यायै० ११२ । करञ्जवनवासिन्यै० ११३ । करञ्जमालाभरणायै० ११४ । करवाल परायणायै० ११५ । करवालप्रहृष्टात्मने० । ११६ । करवालप्रियागत्यै० ११७ । करवालप्रियाकंथायै० ११८ । करवाल विहारिण्यै० ११९ । करवालमय्यै० १२० । कर्मायै० १२१ । करवालप्रियंकर्यै० १२२ । कबंधमालाभरणायै० १२३ । कबंध राशिमध्यगायै० १२४ । कबंधकूटसंस्थानायै० १२५ । कबंधानंतभूषगायै० १२६ । कबंधनादसंतुष्टायै० १२७ । कबंधासन धारिण्यै० १२८ । कबंधगृहमध्यस्थायै० १२९ । कबंधवनवासिन्यै० १३० । कबंधकाञ्च्यै० १३१ । करिण्यै० १३२ । कबंधराशि भूषणायै० १३३ । कबंधमालाजयदायै० १३४ । कबंधदेहवासिन्यै० १३५ । कबंधासनमान्यायै० १३६ । कपालमाल्यधारिण्यै० १३७ । कपालमालामध्यस्थायै० १३८ । कपालव्रततोषितायै० १३९ । कपालदीपसंतुष्टायै० १४० । कपालदीपरूपिण्यै० १४१ । कपालदीपवरदायै० १४२ । कपालकज्जलस्थितायै० १४३ । कपालमालाजयदायै० १४४ । कपालजलतोषिण्यै० १४५ । कपालसिद्धिसंहृष्टायै० १४६ । कपालभोजनोद्यतायै० १४७ । कपालव्रतसंस्थानायै० १४८ । कपालकमलालयायै० १४९ । कवि त्वामृतसारायै० १५० । कवित्वामृतसागरायै० १५१ । कवित्वसिद्धिसंहृष्टायै० १५२ । कवित्वादानकारिण्यै० १५३ । कविपूज्यायै०

१५४ । कविगर्त्यै० १५५ । कविरूपायै० १५६ । कविप्रियायै० १५७ । कविब्रह्मानंदरूपायै० १५८ । कवित्वव्रततोषितायै० १५९ । कवित्वव्रतसंस्थानायै० १६० । कविवांछाप्रपूरण्यै० १६१ । कविकण्ठस्थितायै० १६२ । कँ ह्रीं कँ कँ कँ कविपूर्तिदायै० १६३ । कज्जलायै० १६४ । कज्जलदानमानसायै० १६५ । कज्जकाप्रियायै० १६६ । कपालकज्जलसमायै० १६७ । कज्जलेशप्रपूजितायै० १६८ । कज्जलार्णवमध्यस्थायै० १६९ । कज्जलानन्दरूपिण्यै० १७० । कज्जलप्रियसंतुष्टायै० १७१ । कज्जलप्रियतोषिण्यै० १७२ । कपालमालाभरणायै० १७३ । कपालकरभूषणायै० १७४ । कपालकरभूषाढ्यायै० १७५ । कपालचक्रमण्डितायै० १७६ । कपालकोटिनिलयायै० १७७ । कपालदुर्गकारिण्यै० १७८ । कपालगिरिसंस्थानायै० १७९ । कपालचक्रवासिन्यै० १८० । कपालपात्रसंतुष्टायै १८१ । कपालार्घ्यपरायणायै० १८२ । कपालार्घ्याप्रियप्राणायै० १८३ । कपालार्घ्यवरप्रदायै० १८४ । कपालचक्ररूपायै० १८५ । कपालरूपमात्रगायै० १८६ । कदल्यै० १८७ । कदलीरूपायै० १८८ । कदलीवनवासिन्यै० १८९ । कदलीपुष्पसंप्रीतायै० १९० । कदलीफलमानसायै० १९१ । कदलीहोमसंतुष्टायै० १९२ । कदलीदर्शनोद्यतायै० १९३ । कदलीगर्भमध्यस्थायै० १९४ । कदलीवनसुन्दर्य्यै० १९५ । कदंबपुष्पनिलयायै० १९६ । कदंबवनमध्यगायै० १९७ । कदंबकुसुमामोदायै० १९८ । कदंबवनतोषिण्यै० १९९ । कदंबपुष्पसंपुज्यायै० २०० । कदंबपुष्पहोमदायै० २०१ । कदंबपुष्पमध्यस्थायै० २०२ । कदंबफलभोजिन्यै० २०३ । कदंबकाननांतस्थायै० २०४ । कदंबाचलवासिन्यै० २०५ । कक्षपायै० २०६ । कक्षपाराध्यायै० २०७ । कक्षपासनसंस्थितायै० २०८ । कर्णपूरायै० २०९ । कर्णनासायै० २१० । कर्णाढ्यायै० २११ । कालभैरव्यै० २१२ । कलप्रीतायै० २१३ । कलहदायै २१४ । कलहायै० २१५ । कलहातुरायै० २१६ । कर्णयक्ष्यै० २१७ । कर्णकथिन्यै० २१८ । कर्णसुंदर्य्यै० २१९ । कर्णपिशाचिन्यै० २२० । कर्णमंजर्य्यै० २२१ । काविकक्षदायै० २२२ । कविकक्षविरूपाढ्यायै० २२३ । कविकक्षस्वरूपिण्यै० २२४ । कस्तूरीमृगसंस्थानायै० २२५ । कस्तूरीमृगरूपिण्यै० २२६ । कस्तूरीमृग

संतो गायै० २२७। कस्तूरीमृगमध्यगायै० २२८ । कस्तूरीरसनीलाङ्गायै० २२९ । कस्तूरीगंधतोषितायै० २३० । कस्तूरीपूजक
प्राणायै० २३१ । कस्तूरीपूजकप्रियायै० २३२ । कस्तूरीप्रेमसंतुष्टायै० २३३ । कस्तूरीप्राणधारिण्यै० २३४ । कस्तूरीपूजकानन्दायै०
२३५ । कस्तूरीगंधरूपिण्यै० २३६ । कस्तूरीमालिकारूपायै० २३७ । कस्तूरीभोजनप्रियायै० २३८। कस्तूरीतिलकानन्दायै०२३९ । कस्तूरी
तिलकप्रियायै० २४० । कस्तूरीहोमसंतुष्टायै० २४१ । कस्तूरीतर्पणोद्यतायै० २४२ । कस्तूरीमार्जनोद्युक्तायै० २४३ । कस्तूरीचक्रपूजि
तायै० २४४ । कस्तूरीपुष्पसंपूज्यायै० २४५। कस्तूरीचर्वणोद्यतायै० २४६ । कस्तूरीगर्भमध्यस्थायै० २४७ । कस्तूरीवस्त्रधारिण्यै० २४८।
कस्तूरिकामोदरतायै०२४९ । कस्तूरीवनवासिन्यै०२५०। कस्तूरीवनसंरक्षायै०२५१ । कस्तूरीप्रेमधारिण्यै०२५२कस्तूरीशक्तिनिलयायै० २५३।
कस्तूरीशक्तिकुण्डगायै० २५४ । कस्तूरीकुण्डसंस्नातायै०२५५। कस्तूरीकुण्डमज्जनायै० २५६ । कस्तूरीजीवसंतुष्टायै०२५७। कस्तूरीजीव
धारिण्यै० २५८ ।कस्तूरीपरमामोदायै० २५९। कस्तूरीजीवनक्षमायै० २६० । कस्तूरीजातिभावस्थायै०२६१ । कस्तूरीगंधचुंबनायै० २६२।
कस्तूरीगंधसंशोभाविराजितकपालभुवे० २६३ । कस्तूरीमदनांतस्थायै० २६४ । कस्तूरीमदहर्षदायै० २६५ । कस्तूर्य्यै० २६६ । कविता
नाढ्यायै०२६७ । कस्तूरीगृहमध्यगायै०२६८ । कस्तूरीस्पर्शप्राणायै०२६९ । कस्तूरीनिन्दकांतकायै०२७० । कस्तूर्य्यामोदरसिकायै० २७१ ।
कस्तूरीक्रीडनोद्यतायै० २७२ । कस्तूरीदाननिरतायै० २७३ । कस्तूरीवरदायिन्यै० २७४ । कस्तूरीस्थापनाशक्तायै० २७५ । कस्तूरी
स्थानरंजिन्यै० २७६ । कस्तूरीकुशलप्राणायै० २७७। कस्तूरीस्तुतिवंदितायै० २७८। कस्तूरीवंदकाराध्यायै० २७९ । कस्तूरी
स्थानवासिन्यै० २८० । कहरूपायै० २८१ । कहाढ्यायै० २८२ । कहानन्दायै० २८३ । कहात्मभुवे० २८४ । कहपूज्यायै०
२८५ । कहेत्याख्यायै० २८६ । कहहेयायै० २८७ । कहात्मिकायै० २८८ । कहमालायै० २८९ । कंठभूषायै०२९० । कहमंत्रजपोद्यतायै०२९१।
कहनामस्मृतिपरायै० २९२ । कहनामपरायणायै० २९३ । कहपरायणरतायै० २९४ । कहदेव्यै० २९५ । कहेश्वर्य्यै० २९६ । कहहेतवे०
२९७ । कहनन्दायै० २९८ । कहनादपरायणायै० २९९ । कहमात्रे० ३०० । कहांतस्थायै० ३०१ । कहमंत्रायै० ३०२ । कहेश्वरायै० ३०३ ।

कहगेयायै० ३०४ । कहाराध्यायै० ३०५ । कहध्यानपरायणायै० ३०६ । कहतंत्रायै० ३०७ । कहकहायै० ३०८ । कहचर्य्यापरायणायै० ३०९ । कहाचारायै० ३१० । कहगत्यै० ३११ । कहताण्डवकारिण्यै० ३१२ । कहारण्यायै० ३१३ । कहरत्यै० ३१४ । कहशक्तिपरायणायै० ३१५ । कहराज्यरतायै० ३१६ । कर्मसाक्षिण्यै० ३१७ । कर्मसुन्दर्य्यै० ३१८ । कर्मविद्यायै० ३१९ । कर्मगत्यै० ३२० । कर्मतंत्रपरायणायै० ३२१ । कर्ममायै० ३२२ । कर्मगात्रायै० ३२३ । कर्मधर्मपरायणायै० ३२४ । कर्मरेखानाशकर्त्र्यै० ३२५ । कर्मरेखाविनोदिन्यै० ३२६ । कर्मरेखामोहकर्य्यै० ३२७ । कर्मकीर्तिपरायणायै० ३२८ । कर्मविद्यायै० ३२९ । कर्मसारायै० ३३० । कर्माधारायै० ३३१ । कर्मभुवे० ३३२ । कर्मकार्य्यै० ३३३ । कर्महार्य्यै० ३३४ । कर्मकौतुकसुन्दर्य्यै० ३३५ । कर्मकाल्यै० ३३६ । कर्मतारायै० ३३७ । कर्मच्छिन्नायै० ३३८ । कर्मदायै० ३३९ । कर्मचाण्डालिन्यै० ३४० । कर्मवेदमात्रे० ३४१ । कर्मभ्रुवे० ३४२ । कर्मकाण्डरतानंतायै० ३४३ । कर्मकाण्डानुमानितायै० ३४४ । कर्मकाण्डपरीणाहायै० ३४५ । कमठ्यै० ३४६ । कमठाकृत्यै० ३४७ । कमठाराध्यहृदयायै० ३४८ । कमठायै० ३४९ । कण्ठसुन्दर्य्यै० ३५० । कमठासनसंसेव्यायै० ३५१ । कमठायै० ३५२ । कर्मतत्परायै० ३५३ । करुणाकरकांतायै० ३५४ । करुणाकरवंदितायै० ३५५ । कठोरायै० ३५६ । करमालायै० ३५७ । कठोरकुचधारिण्यै० ३५८ । कपर्दिन्यै० ३५९ । कपटिन्यै० ३६० । कठिनायै० ३६१ । कंकभूषणायै० ३६२ । करभोर्वै० ३६३ । कठिनदायै० ३६४ । करभायै० ३६५ । करभालयायै० ३६६ । कलभाषामय्यै० ३६७ । कल्पायै० ३६८ । कल्पनायै० ३६९ । कल्पदायिन्यै० ३७० । कमलस्थायै० ३७१ । कलामालायै० ३७२ । कमलास्यायै० ३७३ । क्वणत्प्रभायै० ३७४ । ककुद्मिन्यै० ३७५ । कष्टवत्यै० ३७६ । करणीयकथार्चितायै० ३७७ । कचार्चितायै० ३७८ । कचतन्वै० ३७९ । कचसुन्दरधारिण्यै० ३८० । कठोरकुचसंलग्नायै० ३८१ । कटिसूत्रविराजितायै० ३८२ । कर्णभक्ष्यप्रियायै० ३८३ । कंदायै० ३८४ । कथायै० ३८५ । कन्दवत्यै० ३८६ । कल्यै० ३८७ । कलिघ्न्यै०

३८८। कलिदूत्यै० ३८९ । कापिनायकपूजितायै० ३९० । कणकक्षानियंत्र्यै० ३९१ । किञ्चित्कविवरार्चितायै० ३९२ । कत्र्यै० ३९३ । कर्तृकाभूषायै० ३९४ । करिण्यै० ३९५ । कर्कशत्रुपायै० ३९६ । कर्णेश्यै० ३९७। कर्णपायै० ३९८ । कलवाचा यै० ३९९ । कलानिध्यै० ४०० कलनायै० ४०१ । कलनाधारायै० ४०२ । कारिकायै० ४०३ । करकायै० ४०४ । करा यै० ४०५ । कलगेयायै० ४०६ । कर्कराश्यै० । ४०७ । कर्कराशिपूजितायै० ४०८ । कन्याराश्यै० ४०९ । कन्यकायै० ४१० । कन्याप्रियभाषिण्यै० ४११। कन्यकादानसंतुष्टायै० ४१२ । कन्यकादानतोषिण्यै० ४१३ । कन्यादानकरानंदायै० ४१४ । कन्यकादानग्रहेष्टदायै० ४१५। कर्षणायै० ४१६ । कक्षदहनायै० ४१७ । कामितायै० ४१८ । कमलासनायै० ४१९ । करमालानन्दकर्त्र्यै० ४२० । करमालाप्रतोषितायै० ४२१ । करमालाशयानन्दायै० ४२२ । करमालासमागमायै० ४२३ । करमालासिद्धिदात्र्यै० ४२४ । करमालायै० । ४२५ । करप्रियायै० ४२६ । करप्रियाकररतायै० ४२७। करदानपरायणायै० ४२८ । कलानन्दायै० ४२९ । कलिपूज्यायै० ४३० । कलिप्रस्वै० ४३१ । कलनादनिनादस्थायै० ४३२ । कलनादवरदायै० ४३३ । कलनादसमाजस्थायै० ४३४। कहोलायै० ४३५ । कहोलदायै० ४३६ । कहोलगेहमध्यस्थायै० ४३७। कहोलवरदायै० ४३८ । कहोलकविताधरायै० ४३९ । कहोलऋषिमानितायै० ४४० । कहोलमानसाराध्यायै० ४४१ । कहोलवाक्यकारिण्यै० ४४२ । कर्तृरूपायै० ४४३ । कर्तृमयायै० ४४४ । कर्तृमात्रे० ४४५ । कर्त्तव्यै० ६ । कनीयस्यै० ४४७ । कनकाराध्यायै० ४४८ । कनीनकमय्यै० ४४९ । कनीयानन्दनिलयायै० ४५० । कनकानन्दतोषितायै० ४५१ । कनीनककरायै० ४५२ । काष्ठायै० ४५३ । कथार्णवकर्य्यै० ४५४ । कर्य्यै० ४५५ । करिगम्यायै० ४५६ । करिगत्यै० ४५७ । करिध्वजपरायणायै० ४५८ । करिनाथप्रियायै० ४५९ । कण्ठायै० ४६० । कथानकप्रतोषितायै० ४६१ । कमनीयायै० ४६२ । कमनकायै० । ४६३ । कमनीयविभूषणायै० ४६४ । कमनीयसमाजस्थायै० ४६५ ।

कमनीयव्रतप्रियायै० ४६६ । कमनीयगुणाराध्यायै० ४६७ । कपिलायै० ४६८ । कपिलेश्वर्य्यै० ४६९ । कपिलाराध्यहृदयायै० ४७० ।
कपिलाप्रियवादिन्यै० ४७१ । कहचक्रमंत्रवर्णायै० ४७२ । कहचक्रप्रसूनकायै० ४७३ । कएईलह्रींस्वरूपायै० ४७४ ।
कएईलह्रींवरप्रदायै० ४७५ । कएईलह्रींसिद्धिदात्र्यै० ४७६ । कएईलह्रींस्वरूपिण्यै० ४७७ । कएईलह्रींमंत्रवर्णायै० ४७८ । कए
ईलह्रींप्रसूकलायै० ४७९ । कएवर्गायै० ४८० । कपाटस्थायै० ४८१ । कपाटोद्घाटनक्षमायै० ४८२ । कंकाल्यै० ४८३ ।
कपाल्यै० ४८४ । कंकालप्रियभाषिण्यै० ४८५ । कंकालभैरवाराध्यायै० ४८६ । कंकालमानसंस्थितायै० ४८७ । कंकालमोह
निरतायै० ४८८ । कंकालमोहदायिन्यै० ४८९ । कलुषघ्न्यै० ४९० । कलुषहायै० ४९१ । कलुषार्तिविनाशिन्यै० ४९२ ।
कलिपुष्पायै० ४९३ । कलादानायै० ४९४ । कशिप्वै० ४९५ । कश्यपार्चितायै० ४९६ । कश्यपायै० ४९७ । कश्यपा
राध्यायै० ४९८ । कलिपूर्णकलेवरायै० ४९९ । कलेवरकर्य्यै० ५०० । कांच्यै० ५०१ । कवर्गायै० ५०२ । करालकायै० ५०३ ।
करालभैरवाराध्यायै० ५०४ । करालभैरवेश्वर्य्यै० ५०५ । करालायै० ५०६ । कलनाधारायै० ५०७ । कपर्दीशवरप्रदायै० ५०८ ।
कपर्दीशप्रेमलतायै० ५०९ । कपर्दिमालिकायै० ५१० । कपर्दिजपमालाढ्यायै० ५११ । करवीरप्रसूनदायै० ५१२ । करवीरप्रिय
प्राणायै० ५१३ । करवीरप्रपूजितायै० ५१४ । कर्णिकारसमाकारायै० ५१५ । कर्णिकारप्रपूजितायै० ५१६ । करीषाग्नि
स्थितायै० ५१७ । कर्षायै० ५१८ । कर्षमात्रसुवर्णदायै० ५१९ । कलशायै० ५२० । कलशाराध्यायै० ५२१ । कषायायै०
५२२ । करिगानदायै० ५२३ । कपिलायै० ५२४ । कलकंठ्यै० ५२५ । कविकल्पलतायै० ५२६ । कल्पलतायै० ५२७ ।
कल्पमात्रे० ५२८ । कल्पकार्य्यै० ५२९ । कल्पभुवे० ५३० । कर्पूरामोदरुचिरायै० ५३१ । कर्पूरामोदधारिण्यै० ५३२ । कर्पूर
मालाभरणायै० ५३३ । कर्पूरवासपूर्तिदायै० ५३४ । कर्पूरमालाजपदायै० ५३५ कर्पूरार्णवमध्यगायै० ५३६ । कर्पूरतर्पणरतायै०
५३७ । कटकाम्बरधारिण्यै० ५३८ । कपटेश्वरसंपूज्यायै० ५३९ । कपटेश्वररूपिण्यै० ५४० । कव्यै० ५४१ । कपिध्वजा

राध्यायै० ५४२ । कलापपुष्परूपिण्यै० ५४३ । कलापपुष्परुचिरायै० ५४४ । कलापपुष्पपूजितायै० ५४५ । क्रकचायै० ५४६ । क्रकचाराध्यायै० ५४७ । कथंब्रूमायै० ५४८ । करलतायै० ५४९ । कथंकारविनिर्मुक्तायै० ५५० । काल्यै० ५५१ । कालाक्रेयायै० ५५२ । क्रतवे० ५५३ । कामिन्यै० ५५४ । कामिनीपूज्यायै० ५५५ । कामिनीपुष्पधारिण्यै० ५५६ । कामिनीपुष्पनिलयायै० ५५७ । कामिनीपुष्पपूर्णिमायै० ५५८ । कामिनीपुष्पपूजार्हायै० ५५९ । कामिनीपुष्पभूषणायै० ५६० । कामिनीपुष्पतिलकायै० ५६१ । कामिनीकुण्डचुंबनायै० ५६२ । कामिनीयोगसंतुष्टायै० ५६३ । कामिनीयोगभोगदायै० ५६४ । कामिनीकुण्डसंमग्नायै० ५६५ । कामिनीकुण्डमध्यगायै० ५६६ । कामिनीमानसाराध्यायै० ५६७ । कामिनीमानतोषितायै० ५६८ । कामिनीमानसंचारायै० ५६९ । कालिकायै० ५७० । कालकालिकायै० ५७१ । कामायै० ५७२ । कामदेव्यै० ५७३ । कामेश्यै० ५७४ । कामसंभवायै० ५७५ । कामभवायै० ५७६ । कामरतायै० ५७७ । कामार्तायै० ५७८ । काममंजर्यै० ५७९ । काममंजीररणितायै० ५८० । कामदेवप्रियांतरायै० ५८१ । कामकाल्यै० ५८२ । कामकलायै० ५८३ । कालिकायै० ५८४ । कमलार्चितायै० ५८५ । कादिकायै० ५८६ । कमलायै० ५८७ । काल्यै० । ५८८ । कालानलसमप्रभायै० ५८९ । कल्पांतदहनायै० ५९० । कांतायै० ५९१ । कांतारप्रियवासिन्यै० ५९२ । कालपूज्यायै० ५९३ । कालरतायै० ५९४ । कालमात्रे० ५९५ । कालिन्यै० ५९६ । कालवीरायै० ५९७ । कालघोरायै० ५९८ । कालसिद्धायै० ५९९ । कालदायै० ६०० । कालांजनसमापारायै० ६०१ । कालंजरनिवासिन्यै० ६०२ । कालऋद्ध्यै० ६०३ । कालवृद्ध्यै० ६०४ । कारागृहविमोचिन्यै० ६०५ । कादिविद्यायै० ६०६ । कादिमात्रे० ६०७ । कादिस्थायै० ६०८ । कादिसुन्दर्यै० ६०९ । काश्यै० ६१० । कांच्यै० ६११ । कांचीशायै० ६१२ । काशीवरदायिन्यै० ६१३ । क्रींबीजायै० ६१४ । क्रांबीजायै० ६१५ । काम्यायै० ६१६ । कामगत्यै० ६१७ । काम्यसिद्धिदात्र्यै० ६१८ । कामभुवे० ६१९ । कामाख्यायै० ६२० । कामरूपायै० ६२१ । कामचापविमोचिन्यै० ६२२ । कामदेवकला

रामायै० ६२३ । कामदेवकलालयायै० ६२४ । कामराज्यै० ६२५ । कामदात्र्यै० ६२६ । कांताराचलवासिन्यै० ६२७ । काल
रूपायै० ६२८ । कालगत्यै० ६२९ । कालयोगपरायणायै० ६३० । कामसम्मर्दनरतायै० ६३१ । कामगेहविनाशिन्यै० ६३२ ।
कालभैरवभार्य्यायै० ६३३ । कालभैरवकामिन्यै० ६३४ । कालभैरवयोगस्थायै० ६३५ । कालभैरवभोगदायै० ६३६ । काम
धेन्वै० ६३७ । कामदोग्ध्र्यै० ६३८ । काममात्रे० ६३९ । कांतिदायै० ६४० । कामुकायै० ६४१ । कामुकाराध्यायै० ६४२ ।
कामुकानन्दवर्द्धिन्यै० ६४३ । कार्तवीर्य्यायै० ६४४ । कार्तिकेयायै० ६४५ । कार्तिकेयप्रपूजितायै० ६४६ । कार्य्यायै० ६४७ ।
कारणदायै० ६४८ । कार्य्यकारिण्यै० ६४९ । कारणांतरायै० ६५० । कांतिगम्यायै० ६५१ । कांतिमय्यै० ६५२ । कांत्यायै०
६५३ । कात्यायन्यै० ६५४ । कायै० ६५५ । कामसारायै० ६५६ । काश्मीरायै० ६५७ । काश्मीराचारतत्परायै० ६५८ ।
कामरूपाचाररतायै० ६५९ । कामरूपप्रियंवदायै० ६६० । कामरूपाचारसिद्ध्यै० ६६१ । कामरूपमनोमय्यै० ६६२ । कार्तिक्यै०
६६३ । कार्तिकाराध्यायै० ६६४ । कांचनारप्रसूनभुवे० ६६५ । कांचनारप्रसूनाभायै० ६६६ । कांचनारप्रपूजितायै०
६६७ । कांचरूपायै० ६६८ । कांचभूम्यै० ६६९ । कांस्यपात्रप्रभोजिन्यै० ६७० । कांस्यध्वनिमय्यै० ६७१ । कामसुन्दर्य्यै०
६७२ । कामचुम्बनायै० ६७३ । कामपुष्पप्रतीकाशायै० ६७४ । कामद्रुमसमागमायै० ६७५ । कामपुष्पायै० ६७६ । कामभूम्यै०
६७७ । कामपूज्यायै० ६७८ । कामदायै० ६७९ । कामदेहायै० ६८० । कामगेहायै० ६८१ । कामबीजपरायणायै०
६८२ । कामध्वजसमारूढायै० ६८३ । कामध्वजसमास्थितायै० ६८४ । काश्यप्यै० ६८५ । काश्यपाराध्यायै० ६८६ । काश्यपा
नन्ददायिन्यै० ६८७ । कालिन्दीजलसंकाशायै० ६८८ । कालिन्दीजलपूजितायै० ६८९ । कादेवपजानिरतायै० ६९० ।
कादेवपरमार्थदायै० ६९१ । कार्म्मणायै० ६९२ । कार्म्मणाकारायै० ६९३ । कामकार्म्मणकारिण्यै० ६९४ । कार्म्मणत्रोटनकारिण्यै०
६९५ । काकिन्यै० ६९६ । कारणाह्वयायै० ६९७ । काव्यामृतायै० ६९८ । कालिंगायै० ६९९ । कालिंगमर्दनोद्यतायै०

इति मंत्रेण मूलं च पठन् स्थापयत् ।

७००। कालागुरुभूषणाढ्यायै० ७०१ । कालागुरुभूतिदायै० ७०२ । कालागुरुसुगंधायै० ७०३ । कालागुरुप्रतर्पणायै० ७०४ । कावेरीनीरसंप्रीतायै० ७०५ । कावेरीतीरवासिन्यै० ७०६ । कालचक्रभ्रमाकारायै० ७०७ । कालचक्रनिवासिन्यै० ७०८ । काननायै० ७०९ । काननाधारायै० ७१० । काव्यायै० ७११ । कारुणिकामय्यै० ७१२ । कांपील्यवासिन्यै० ७१३ । काष्ठायै० ७१४ । कामपत्न्यै० ७१५ कामभुवे० ७१६ । कादंबरीपानरतायै० ७१७ । कादंबर्य्यै० ७१८ । कलायै० ७१९ । कामवंध्यायै० ७२० । कामेश्यै० ७२१ । कामराजप्रपूजितायै० ७२२ । कामराकेश्वरीविद्यायै० ७२३ । कामकौतुकसुन्दर्य्यै० ७२४ । कांबोजायै नमः ७२५ । कांछिनदायै० ७२६ । कांश्यायै० ७२७ । कांचनकारिण्यै० ७२८ । कांचनाद्रिसमाकारायै० ७२९ । कांचनाद्रिप्रदानदायै० ७३० कामकीर्त्यै० ७३१ । कामकेश्यै० ७३२ । कारिकायै० ७३३ । कांताराश्रयायै० ७३४ । कामभेद्यायै० ७३५ । कामार्तिनाशिन्यै०७३६ । कामभूमिकायै०७३७ । कालनिर्णाशिन्यै० ७३८ । कामवनितायै० ७३९ । कामरूपिण्यै० ७४० । कामसन्दीप्त्यै० ७४१ । काव्यदायै० ७४२ । कालसुन्दर्य्यै० ७४३ । कामेश्यै० ७४४ । कारणवरायै० ७४५ । कामेशीपूजनोद्यतायै० ७४६ । कांचीनूपुरभूषाढ्यायै० ७४७ । कुंकुमाभरणान्वितायै०७४८ । कालचक्रायै० ७४९ । कालगत्यै०७५० । कालचक्रमनोभवायै०७५१ । कुन्दमध्यायै० ७५२ । कुन्दपुष्पायै० ७५३ । कुंदपुष्पप्रियायै० ७५४ । कुजायै० ७५५ । कुजमात्रे० ७५६ । कुजाराध्यायै० ७५७ । कुठारवरधारिण्यै० ७५८ । कुञ्जरस्थायै० ७५९ । कुशरतायै० ७६० । कुशेशयविलोचनायै० ७६१ । कुनट्यै० ७६२ । कुरर्य्यै० ७६३ । कुद्रायै० ७६४ । कुरंग्यै० ७६५ । कुटजाश्रयायै० ७६६ । कुंभीनसविभूषायै० ७६७ । कुंभीनसवधोद्यतायै०७६८ । कुंभकर्णमनोल्लासायै० ७६९ । कुलचूडामण्यै० ७७० । कुलायै० ७७१ । कुलगृहकन्यायै० ७७२ । कुलचूडामणिप्रियायै० ७७३ । कुलपूज्यायै० ७७४ । कुलाराध्यायै० ७७५ । कुलपूजापरायणायै० ७७६ । कुलभाषायै० ७७७ । कुक्ष्यै० ७७८ । कुररीगणसेवितायै० ७७९ । कुलपुष्पायै० ७८० । कुलरतायै० ७८१ । कुलपुष्पपरायणायै० ७८२ । कुलावस्त्रायै० ७८३ । कुलाराध्यायै० ७८४ । कुलाकुण्डसमप्रभायै० ७८५ । कुलकुण्डसमोल्लासायै० ७८६ । कुण्डपुष्प

७७१ । कुलगृहकन्यायै० ७७२ । कुलचूडामणिप्रियायै० ७७३। कुलवृक्षायै० ७७४ । कुलाराध्यायै० ७७५ । कुलपूजापरा

७८७ । कुण्डपुष्पप्रसन्नास्यायै० ७८८ । कुण्डगोलोद्भवात्मिकायै० ७८९ । कुण्डगोलोद्भवाधारायै० ७९० । कुण्डगोलमय्यै० ७९१ । कुहै० ७९२ । कुण्डगोलप्रियप्राणायै० ७९३ । कुण्डगोलप्रपूजितायै० ७९४ । कुण्डगोलमनोल्लासायै० ७९५ । कुण्डगोलबलप्रदायै० ७९६ । कुण्डदेवरतायै० ७९७ । क्रुद्धायै० ७९८। कुलसिद्धिकपरापरायै० ७९९ । कुलकुण्डसमाकारायै० ८०० । कुलकुण्डसमानभ्रुवे० ८०१ । कुण्डसिद्ध्यै० ८०२ । कुण्डरिद्ध्यै० ८०३ । कुमारीपूजनोद्यतायै० ८०४ । कुमारीपूजकप्राणायै० ८०५ । कुमारीपूजकालयायै० ८०६ । कुमार्य्यै० ८०७ । कामसंतुष्टायै० ८०८ । कुमारीपूजनोत्सुकायै० ८०९ । कुमारीव्रतसंतुष्टायै० ८१० । कुमारीरूपधारिण्यै० ८११ । कुमारीभोजनप्रीतायै० ८१२ कुमार्य्यै० ८१३ । कुमारदायै० ८१४ । कुमारमात्रे० ८१५ । कुलदायै० ८१६ । कुलयोन्यै० ८१७ । कलेश्वर्य्यै० ८१८ । कुललिंगायै० ८१९ । कुलानन्दायै० ८२० । कुलरम्यायै० ८२१ । कुतर्कधृषे० ८२२ । कुंत्यै० ८२३ । कलकांतायै० ८२४ । कुलमार्गपरायणायै० ८२५ । कुल्लायै० ८२६ । कुरुकुल्लायै० ८२७ । कुल्लुकायै० ८२८ । कुलकामदायै० ८२९ । कुलिशाङ्ग्यै० ८३० । कुरिकायै० ८३१ । कुरिकानन्दवर्द्धिन्यै० ८३२ । कुलानायै० ८३३ । कुञ्जरगत्यै० ८३४ । कञ्जरेश्वरगामिन्यै० ८३५ । कुलपाल्यै० ८३६ । कलवत्यै० ८३७ । कुलदीपिकायै० ८३८ । कुलयोगीश्वर्य्यै० ८३९। कुण्डायै० ८४० । कुंकुमारुणविग्रहायै० ८४१ । कुंकुमानंदसंतोषायै० ८४२।कुंकुमार्णववासिन्यै० ८४३।कुंकुमायै० ८४४।कुंकुमप्रीतायै० ८४५ । कुलभुवे० ८४६।कुलसुन्दर्य्यै० ८४७।कुमुद्वत्यै० ८४८। कुमुदिन्यै० ८४९। कुशलायै० ८५०। कुलटालयायै० ८५१। कुलटालयमध्यस्थायै० ८५२ । कुलटासंगतोषितायै०८५३। कुलटाभुवनोद्युक्तायै०८५४। कशावर्तायै० ८५५ । कुलार्णवायै० ८५६। कुलार्णवाचाररतायै० ८५७ । कुण्डल्यै० ८५८ । कुण्डलाकृत्यै० ८५९ । कुमत्यै० ८६० । कुलश्रेष्ठायै० ८६१ । कलचक्रपरायणायै० ८६२ । कूटस्थायै० ८६३ । कूटदृष्टयै० ८६४ । कंतलायै० ८६५ । कुंतलाकृत्यै० ८६६ । कुशलाकृतिरूपायै० ८६७ । कूर्चबीजधरायै० ८६८ । कैं० ८६९ ।कुँकुँकुँकुँशब्दरतायै० ८७० । क्रुँक्रुँक्रुँक्रुँपरायणायै० ८७१ । कुँकुँकुँशब्दनिलयायै० ८७२ । कुक्कुरालयवासिन्यै० ८७३ । कुक्कुरासङ्गसंयुक्तायै० ८७४ । कुक्कुरानंत

विग्रहायै० ८७५ । कूर्चारंभायै० ८७६ । कूर्चबीजायै० ८७७ । कूर्चजपपरायणायै० ८७८ । कुलिन्यै० ८७९ । कुलसंस्थानायै० ८८० । कूर्चकण्ठपरागत्यै० ८८१ । कूर्चवीणाभालदेशायै० ८८२ । कूर्चमस्तकभूषितायै० ८८३ । कुलवृक्षगतायै० ८८४ । कूर्म्मायै० ८८५ । कूर्म्माचलनिवासिन्यै० ८८६ । कुलबिंदवे० ८८७ । कुलशिवायै० ८८८ । कुलशक्तिपरायणायै० ८८९ । कुलबिंदुमणिप्रख्यायै० ८९० । कुंकुमद्रुमवासिन्यै० ८९१ । कुचमर्दनसंतुष्टायै० ८९२ । कुचजापपरायणायै० ८९३ । कुचस्पर्शनसंतुष्टायै० ८९४ । कुचालिङ्गनहर्षदायै० ८९५ । कुगतिघ्न्यै० ८९६ । कुबेरार्च्चायै० ८९७ । कुचभ्रुवे० ८९८ । कुलनायिकायै० ८९९ । कुगायनायै० ९०० । कुचधरायै० ९०१ । कुमात्रे० ९०२ । कंदर्दंतिन्यै० ९०३ । कुगयाय० ९०४ । कुहराभासायै० ९०५ । कुगेयाकुघ्नदारिकायै० ९०६ कीर्त्यै० ९०७ । किरातिन्यै० ९०८ । क्लिन्नायै० ९०९ । किन्नरायै० ९१० । किन्नर्यै० ९११ । क्रियायै० ९१२ । क्रींकारायै० ९१३ । क्रींजपासक्तायै० ९१४ । क्रींहूंस्त्रींमंत्ररूपिण्यै० ९१५ । किर्मीरितदृशापाङ्ग्यै० ९१६ । किशोर्यै० ९१७ । किरीटिन्यै० ९१८ । कीटभाषायै० ९१९ । कीटयोन्यै० ९२० । कीटमात्रे० ९२१ । कीटदायै० ९२२ । किंशुकायै० ९२३ । कीरभाषायै० ९२४ । क्रियासारायै० ९२५ । क्रियावत्यै० ९२६ । कींकींशब्दपरायै० ९२७ । क्लींक्लींक्लूँक्लैंक्लौंमंत्ररूपिण्यै० ९२८ । काँकींकूँकैंस्वरूपायै० ९२९ । कःफट्मंत्रस्वरूपिण्यै० ९३० । केतकीभूषणानंदायै० ९३१ । केतकीभरणान्वितायै० ९३२ । केकदायै० ९३३ । केशिन्यै० ९३४ । केशिसूदनतत्परायै० ९३५ । केशरूपायै० ९३६ । केशमुक्तायै० ९३७ । कैकेय्यै० ९३८ । कौशिक्यै० ९३९ । कैरवायै० ९४० । कैरवाह्लादायै० ९४१ । केशरायै० ९४२ । केतुरूपिण्यै० ९४३ । केशवाराध्यहृदयायै० ९४४ । केशवासक्तमानसायै० ९४५ । क्लैब्यविनाशिन्यै० ९४६ । क्लैंबीजजपतोषितायै० ९४७ । कौशल्यायै० ९४८ । कोशलाक्ष्यै ९४९ । कोशायै० ९५० । कोमलायै० ९५१ । कोलापुरनिवासायै० ९५२ । कोलासुरविनाशिन्यै० ९५३ । कोटिरूपायै० ९५४ । कोटिरतायै० ९५५ । क्रोधिन्यै० ९५६ । क्रोधरूपिण्यै० ९५७ । [illegible]यै० ९५८ । कोकिलायै० ९५९ । कोट्यै० ९६० । कोटिमंत्रपरायणायै० ९६१ । कोट्यनंतमंत्रयुक्तायै० ९६२ । कैरूपायै० ९६३ ।

त्र्यायै० ९६४ । केरलाचारनिपुणायै० ९६५। केरलेन्द्रगृहस्थितायै० ९६६ । केदाराश्रमसंस्थायै० ९६७ । केदारेश्वरपूजितायै० ९६८। क्रोधरूपायै० ९६९ । क्रोधपदायै० ९७० । क्रोधमात्रे० ९७१ कौशिक्यै० ९७२ । कोदण्डधारिण्यै० ९७३। क्रौंचायै० ९७४ । कौशल्यायै० ९७५ । कौलमार्गगायै० ९७६ । कौलिन्यै० ९७७ । कौलिकाराध्यायै० ९७८ । कौलिकागारवासिन्यै० ९७९ । कौतुक्यै० ९८० । कौमुद्यै० ९८१ । कौलायै० ९८२ । कौमार्य्यै० ९८३ । कौरवार्चितायै० ९८४ । कौण्डिन्यायै० ९८५ । कौशिक्यै० ९८६ । क्रोधज्वालाभासुररूपिण्यै० ९८७ । कोटिकालानलज्वालायै० ९८८ । कोटिमार्तण्डविग्रहायै० ९८९ । कृत्तिकायै० ९९० । कृष्णवर्णायै० ९९१ । कृष्णायै० ९९२ । कृत्यायै० ९९३ । क्रियातुरायै० ९९४ । कृशाङ्ग्यै० ९९५ । कृतकृत्यायै० ९९६ । क्रः फट् स्वाहास्त्ररूपिण्यै० ९९७ । क्रौं क्रौं हूँ फट् मंत्रवर्णायै० ९९८ । क्रींह्रींहूँफट् नमस्स्वधायै० ९९९ । क्रींक्रीं ह्रींह्रीं तथा हूँ हूँ फट्स्वाहामंत्ररूपिण्यै नमः १००० । इति श्रीसर्वसाम्राज्यमेधाचतुर्थ्यंतनामसहस्रकं सम्पूर्णम् । इति श्रीमंत्रमहार्णवे मध्यखण्डे कालीतंत्रे चतुर्थस्तरङ्गः ॥ ४ ॥



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ तारातंत्रप्रारंभः ॥ कीर्त्यंते सिद्धिदातारस्ताराया मन वोऽधुना ॥ गुरूपदेशाज्ज्ञातैर्यैः कृतार्थाः स्युर्नरा भुवि ॥ १ ॥ अथ तारापटलम् ॥ तत्रादौ पंचाक्षरमंत्रप्रयोगः मंत्रमहोदधौ ॥ मंत्रो यथा—'ॐ ह्रीं त्रीं हुं फट् ॥' इति पंचाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अस्य तारामंत्रस्य अक्षोभ्य ऋषिः बृहती छंदः तारा देवता ह्रीं बीजं हुं शक्तिः ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ अक्षोभ्य ऋषये नमः शिरसि १। बृहतीछंदसे नमः मुखे २। तारादेवतायै नमः हृदि ३। ह्रीं बीजाय नमः लिंगे ४। हुं शक्तये नमः पादयोः ५। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६। इति ऋष्यादिन्यासः। ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १।ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ह्रां हृदयाय नमः १। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ ह्रूं शिखायै वषट् ३। ॐ ह्रैं कवचाय हुं ४। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा षोढा न्यासं कुर्य्यात्॥तद्यथा—ॐ ह्रीं त्रीं हुं अं श्रीकंठाय नमो ललाटे १। ह्रीं त्रीं हुं आं अनंताय नमो मुखे २ ॥ ह्रीं त्रीं हूं इं सूक्ष्मेशाय नमो दक्षिणनेत्रे ३। ह्रीं त्रीं हुं ईं त्रिमूर्तये नमो वामनेत्रे ४। ह्रीं त्रीं हुं

१ तत्रांतरेऽपि-ऐं ॐ ह्रीं क्रीं हुं फट् ॥ इति षडक्षरो मन्त्रः । २ आदिबीजन ॐकारेण वियुक्ता रहिता सती आदिमैः पूर्वोक्तैरेकमटा प्रोदिता ॥ तेन ह्रीं त्रीं हुं फडिति चतुरक्षरो मन्त्रः वा आद्यंतबीजः ॐ फड्भ्यां रहिता नीलसरस्वती सैव तेन ह्रीं त्रीं हुं—इति त्र्यक्षरो मन्त्रः ॥

शाय नमो दक्षकर्णे ५। ह्रीं त्रीं हुं ॐ अर्घीशाय नमो वामकर्णे ६। ह्रीं त्रीं हुं ऋं भारभूतीशाय नमो दक्षनासापुटे ७। ह्रीं त्रीं हुं ॠं अतिथीशाय नमो वामनासापुटे ८। ह्रीं त्रीं हुं लृं स्थाण्वीशाय नमो दक्षगंडे ९। ह्रीं त्रीं हुं लॄं हरेशाय नमो वामगंडे १०। ह्रीं त्रीं हुं एँ भिंटीशाय नम ऊर्ध्वोष्ठे ११। ह्रीं त्रीं हुं ऐं भौतिकेशाय नमः अधरोष्ठे १२। ह्रीं त्रीं हुं ओं सद्योजातेशाय नम ऊर्ध्वदंतपङ्क्तौ १३। ह्रीं त्रीं हुं औं अनुग्रहेशाय नमः अधोदंतपङ्क्तौ १४। ह्रीं त्रीं हुं अं अक्रूरेशाय नमः शिरसि १५। ह्रीं त्रीं हुं अः महासेनेशाय नमो मुखमध्ये १६। ह्रीं त्रीं हुं कं क्रोधीशाय नमो दक्षस्कंधे १७। ह्रीं त्रीं हुं खं चंडेशाय नमो दक्षकूर्परे १८। ह्रीं त्रीं हुं गं पंचांतकेशाय नमो दक्षिणमणिबंधे १९। ह्रीं त्रीं हुं घं शिवोत्तमेशाय नमो दक्षहस्तांगुलिमूले २०। ह्रीं त्रीं हुं ङं एकरुद्रेशाय नमो दक्षहस्तांगुल्यग्रे २१। ह्रीं त्रीं हुं चँ कूर्मेशाय नमो वामस्कंधे २२। ह्रीं त्रीं हुं छं एकाननेशाय नमो वामकूर्परे २३। ह्रीं त्रीं हुं जँ चतुराननेशाय नमो वाममणिबंधे २४। ह्रीं त्रीं हुं झँ अजेशाय नमो वामहस्तांगुलिमूले २५। ह्रीं त्रीं हुं ञँ सर्वेशाय नमो वामहस्तांगुल्यग्रे २६। ह्रीं त्रीं हुं टँ सोमेशाय नमो दक्षपादमूले २७। ह्रीं त्रीं हुं ठँ लांगलीशाय नमो दक्षजानुनि २८। ह्रीं त्रीं हुं डँ दारुकेशाय नमो दक्षगुल्फे २९। ह्रीं त्रीं हुं ढँ अर्धनारीश्वरेशाय नमो दक्षपादांगुलिमूले ३०। ह्रीं त्रीं हुं णँ उमाकांतेशाय नमो दक्षपादांगुल्यग्रे ३१। ह्रीं त्रीं हुं तँ आषाढीशाय नमो वामपादमूले ३२। ह्रीं त्रीं हुं थँ दंडीशाय नमो वामजानुनि ३३। ह्रीं त्रीं हुं दँ अत्रीशाय नमो वामगुल्फे ३४। ह्रीं त्रीं हुं धँ मीनेशाय नमो वामपादांगुलिमूले ३५। ह्रीं त्रीं हुं नँ मेषेशाय नमो वामपादांगुल्यग्रे ३६। ह्रीं त्रीं हुं पँ लोहितेशाय नमो दक्षकुक्षौ ३७। ह्रीं त्रीं हुं फँ शिखीशाय नमो वामकुक्षौ ३८। ह्रीं त्रीं हुं बँ छागलंडेशाय नमः पृष्ठे ३९। ह्रीं त्रीं हुं भँ द्विरंडेशाय नमो नाभौ ४०। ह्रीं त्रीं हुं मँ महाकालेशाय नम उदरे ४१। ह्रीं त्रीं हुं यँ बालेशाय नमो हृदये ४२। ह्रीं त्रीं हुं रं भुजंगेशाय नमो दक्षांसे ४३। ह्रीं त्रीं हुं लँ पिनाकीशाय नमः ककुदि ४४। ह्रीं त्रीं हुं वँ खड्गीशाय नमो वामांसे ४५। ह्रीं त्रीं हुं शं केशवाय नमो हृदयादिदक्षहस्तांतम् ४६। ह्रीं त्रीं हुं षँ श्वेतेशाय नमो हृदयादिवामहस्तांतम् ४७। ह्रीं त्रीं हुं सँ भृग्वी

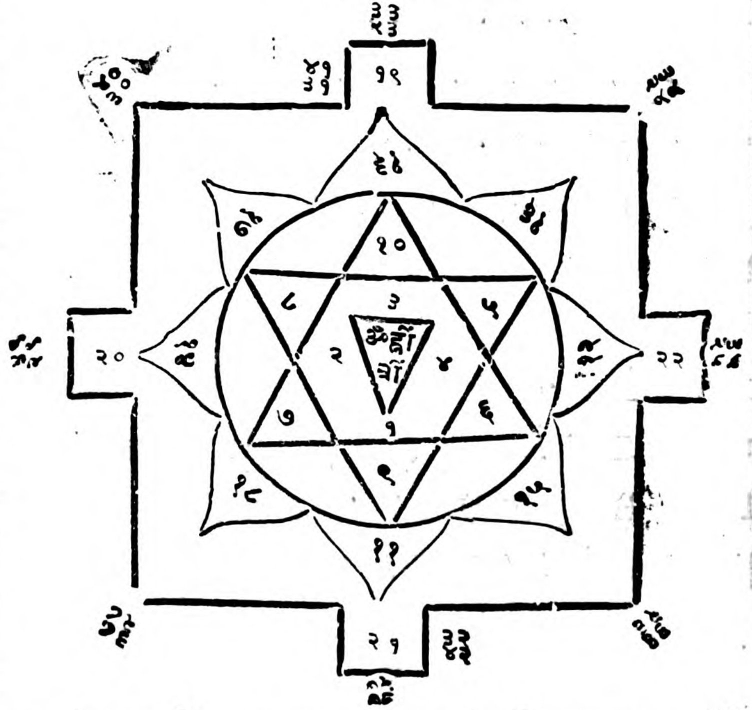
शाय नमो हृदयादिवामपादांतम् ४८। ह्रीं त्रीं हुं हँ लकुलीशाय नमो हृदयादिदक्षपादांतम् ४९। ह्रीं त्रीं हुं ळँ शिवेशाय नमो हृद
यादिनाभ्यंतम् ५०। ह्रीं त्रीं हुं क्षँ संवर्तकेशाय नमो हृदयादिशिरोन्तम् ५१। इति श्रीकंठादिन्यासः प्रथमः ॥ १ ॥ ह्रीं त्रीं हुं अँ
आँ इँ ईं उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐं ओं औं अँ अः रक्तवर्णं सूर्यं हृदि १। ह्रीं त्रीं हुं यँ रं लँ वँ शुक्लवर्णं सोमं भ्रूद्वये २। ह्रीं त्रीं हुं
कँ खँ गँ घँ ङँ रक्तवर्णं मंगलं लोचनत्रये ३। ह्रीं त्रीं हुं चँ छँ जँ झँ ञँ श्यामवर्णं बुधं वक्षःस्थले ४। ह्रीं त्रीं हुं टँ ठँ डँ ढँ णँ पीत
वर्णं बृहस्पतिं कंठकूपे ५। ह्रीं त्रीं हुं तँ थँ दँ धँ नँ श्वेतवर्णं भार्गवं घंटिकायाम् ६। ह्रीं त्रीं हुं पँ फँ बँ भँ मँ नीलवर्णं शनैश्चरं
नाभिदेशे ७। ह्रीं त्रीं हुं शँ षँ सँ हँ धूम्रवर्णं राहुं मुखे ८। ह्रीं त्रीं हुं ळँ क्षँ धूम्रवर्णं केतुं नाभौ ९। इति ग्रहन्यासो द्वितीयः
॥ २ ॥ ह्रीं त्रीं हुं अँ इँ उँ ऋँ ऌँ एँ ओं अँ इन्द्राय नमः ललाटपूर्वे १। ह्रीं त्रीं हुं आँ ईं ऊँ ॠँ ॡँ ऐं औं अः अग्नये नमः ललाटाग्ने
य्याम् २। ह्रीं त्रीं हुं कँ खँ गँ घँ ङँ यमाय नमः ललाटदक्षिणे ३। ह्रीं त्रीं हुं चँ छँ जँ झँ ञँ निर्ऋतये नमः ललाटनैर्ऋत्याम् ४।
ह्रीं त्रीं हुं टँ ठँ डँ ढँ णँ वरुणाय नमः ललाटपश्चिमे ५। ह्रीं त्रीं हुं तँ थँ दँ धँ नँ वायवे नमः ललाटवायव्याम् ६। ह्रीं त्रीं हुं
पँ फँ बँ भँ मँ सोमाय नमः ललाटोत्तरस्याम् ७। ह्रीं त्रीं हुं यँ रँ लँ वँ ईशानाय नमः ललाटैशान्याम् ८। ह्रीं त्रीं हुं शँ षँ सँ हँ
ब्रह्मणे नमः ललाटोर्ध्वायाम् ९। ह्रीं त्रीं हुं ळँ क्षँ अनंताय नमः ललाटाधोदिशि १०। इति दिक्पालन्यासस्तृतीयः ॥ ३ ॥
ह्रीं त्रीं हुं वँ शँ षँ सँ डाकिनीयुतब्रह्माणं चतुर्दलसमन्वितभूताधारे० १। ह्रीं त्रीं हुं बँ भँ मँ यँ रं लँ राकिनीयुतश्रीविष्णुं लिंगस्थषड्दले
सर्वाधिष्ठानचक्रे न्यसेत् २। ह्रीं त्रीं हुं डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ राकिनीयुतरुद्रं दशदलचक्रे नाभिस्थे मणिपूरके न्यसेत् ३। ह्रीं त्रीं
हुं कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ काकिनीयुतमीश्वरमनाहते द्वादशदले चक्रे हृदि न्यसेत् ४। ह्रीं त्रीं हुं अँ आँ इँ ईं उँ ऊँ ऋँ
ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐं ओं औं अँ अः शाकिनीयुतसदाशिवं विशुद्धाख्यषोडशदले कंठस्थे विन्यसेत् ५। ह्रीं त्रीं हुं हँ क्षँ हाकिनीयुतं पर
शिवमाज्ञाचक्रे मनोहरे भ्रूमध्यसंस्थिते प्रविन्यसेत् ६। इति षट्चक्रन्यासश्चतुर्थः ॥ ४ ॥ ह्रीं त्रीं हुं अँ आँ कँ खँ गँ घँ ङँ तारारै

नमो ब्रह्मरंध्रे १। ह्रीं त्रीं हुं इँ ईं चँ छँ जँ झँ ञँ उग्रायै नमो ललाटे २। ह्रीं त्रीं हुं उँ ऊँ टँ ठँ डँ ढँ णँ महोग्रायै नमो भ्रूमध्ये ३। ह्रीं त्रीं हुं ऋँ ॠँ तँ थँ दँ धँ नँ वज्रायै नमः कंठदेशे ४। ह्रीं त्रीं हुं लृँ ॡँ पँ फँ बँ भँ मँ महाकाल्यै नमो हृदि ५। ह्रीं त्रीं हुं एँ ऐँ यँ रं लँ वँ सरस्वत्यै नमो नाभौ ६। ह्रीं त्रीं हुं ओं औं शँ षँ सँ हँ कामेश्वर्यै नमो लिंगमूले ७। ह्रीं त्रीं हुं अँ अः ळँ क्षँ चामुंडायै नमो मूलाधारे ८। इति तारादिन्यासः पंचमः॥ ५॥ ह्रीं त्रीं हुं अँ इँ उँ ऋँ लृँ एँ ओं अँ कामरूपपीठाय नमः आधारे १। ह्रीं त्रीं हुं आँ ईं ऊँ ॠँ ॡँ ऐं औं अः जलंधरपीठाय नमो हृदि २। ह्रीं त्रीं हुं कँ खँ गँ घँ ङँ पूर्णगिरिपीठाय नमो ललाटे ३। ह्रीं त्रीं हुं चँ छँ जँ झँ ञँ उड्डियानपीठाय नमः केशसंधौ ४। ह्रीं त्रीं हुं टँ ठँ डँ ढँ णँ वाराणसीपीठाय नमो भ्रुवोः ५। ह्रीं त्रीं हुं तँ थँ दँ धँ नँ अवंतिपीठाय नमो नेत्रयोः ६। ह्रीं त्रीं हुं पँ फँ बँ भँ मँ मायापुरीपीठाय नमः मुखे ७। ह्रीं त्रीं हुं यँ रं लँ वँ मथुरापीठाय नमः कंठे ८। ह्रीं त्रीं हुं शँ षँ सँ हँ अयोध्यापीठाय नमो नाभौ ९। ह्रीं त्रीं हुं ळँ क्षँ कांचीपुरीपीठाय नमः कट्याम् १०। इति पीठन्यासः षष्ठः॥ ६॥ इति षोढा न्यासं कृत्वा देवरूपं भावयन् हृदयादिषडंगन्यासं कुर्यात्॥ तद्यथा–ॐ ह्रां त्रां हां एकजटायै हृदयाय नमः १। ह्रीं त्रीं ह्रीं तारिण्यै शिरसे स्वाहा २। ह्रूं त्रूं हूं वज्रोदकायै शिखायै वषट् ३। ह्रैं त्रैं हैं उग्रतारायै कवचाय हुं ४। ह्रौं त्रौं हौं महापरिसरायै नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ह्रः त्रः हः पिंगोग्रैकजटायै अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडंगन्यासः॥ ह्रां त्रां हां एकजटायै अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ह्रीं त्रीं ह्रीं तारिण्यै तर्जनीभ्यां नमः २। ह्रूं त्रूं हूं वज्रोदकायै मध्यमाभ्यां नमः ३। ह्रैं त्रैं हैं उग्रतारायै अनामिकाभ्यां नमः ४। ह्रौं त्रौं हौं महापरिसरायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ह्रः त्रः हः पिंगोग्रैकजटायै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः॥ इति विन्यस्य तर्जनीमध्यमाभ्यां ॐ रंवह्निप्रकारछोटिकाभिर्दशदिग्बंधनं विधाय (फट्) इति मंत्रेण तालत्रयेण दिग्बंधनं कृत्वा मूलेन तारपुटया सप्तधा व्यापकं न्यसेत्॥ अथ ध्यानम्॥ ॐ विश्वव्यापकवारिमध्यविलसच्छ्वेतांबुजन्मस्थितां कर्त्रीं

१ षोढा न्यासं ततः कुर्याद्देवताभावसिद्धये॥ षोढा न्यासस्तु तारायाः प्रोक्तस्त्विष्टप्रदायकः॥ २ अथवा– ह्रां त्रां ह्रां इति सर्वत्र योज्यम्॥

खड्गकपालनीलनालिनै राजत्करां नीलभाम् ॥ कांचीकुंडलहारकंकणलसत्केयूरमंजीरतामासैर्नागवरैर्विभूषिततनूमारक्तनेत्रत्रयाम् ॥ १ ॥

तारापूजनयन्त्रम् ।



पिंगोग्रैकजटां लसत्सुरसनां दंष्ट्राकरालाननां हस्तैश्चापि वरं कटौ विदधतीं श्वेतास्थिपट्टालिकाम् ॥ अक्षोभ्येण विराजमानशिरसं स्मेराननांभोरुहां तारां शावहृदासनां दृढकुचामंबां त्रिलोक्याः स्मरेत् ॥ २ ॥ इति ध्यायेत् ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य "ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः" इति पीठ देवताः संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु ॐ मेधायै नमः १ । ॐ प्रज्ञायै नमः २ । ॐ प्रभायै नमः ३ । ॐ विद्यायै नमः ४। ॐ धियै नमः ५ । ॐ धृत्यै० ६ । ॐ स्मृत्यै० ७। ॐ बुद्ध्यै नमः ८। मध्ये ॐ विश्वेश्वर्यै नमः ९ । इति पीठशक्तीः संपूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादि निर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोक्ष्य "ह्रौं सरस्वतीयोगपीठात्मने नमः" इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तद्यथा—पुष्पांजलिमादाय— संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ॥ अनुज्ञां देहि ताराख्ये परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः

संतु इति वदेत् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा देव्याश्चतुर्दिक्षु गणेशादीन् पूजयेत् ॥ तद्यथा—पूर्वे—पाशांकुशौ कपालं च त्रिशूलं दधतं करैः ॥ अलंकारचयोपेतं गणेशं प्राक् समर्चयेत्॥ ॐ गं गणेशाय नमः । ॐ गं गणेश इहागच्छ इहातिष्ठ इत्यावाह्य पंचोपचारैःसंपूज्य ॐ गं गणेश वज्रपुष्पं प्रतीच्छ फट् स्वाहा । इत्यनेन पुष्पं दद्यात् ॥ १ ॥ दक्षिणे—करालशूले हस्ताभ्यां दधतं सर्पभूषणम् ॥ श्वयूथवेष्टितं रम्यं बटुकं दक्षिणेऽर्चयेत् ॥ ॐ बं बटुकाय नमः । ॐ बं बटुक इहागच्छ इहातिष्ठ इत्यावाह्य पंचोपचारैः संपूज्य ॐ बं बटुक वज्रपुष्पं प्रतीच्छ फट् स्वाहा । इत्यनेन पुष्पं दद्यात् ॥ २ ॥ पश्चिमे—असिशूलकपालानि डमरुं दधतं करैः ॥ कृष्णं दिगंबरं क्रूरं क्षेत्रपं पश्चिमे यजेत् ॥ ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः । ॐ क्षेत्रपाल इहागच्छ इहातिष्ठ इत्यावाह्य पंचोपचारैः संपूज्य क्षं क्षेत्रपाल वज्रपुष्पं प्रतीच्छ फट् स्वाहा । इत्यनेन पुष्पं दद्यात् ॥ ३ ॥ उत्तरे—कपालं डमरुं पाशं लिंगं संबिभ्रतीः करैः ॥ अंत्रावल्यारक्तवस्त्रा योगिनीरुत्तरे यजेत् ॥ ॐ यं योगिनीभ्यो नमः । ॐ यं योगिन्य इहागच्छथ इहातिष्ठथ इत्यावाह्य पंचोपचारैः संपूज्य ॐ यं योगिन्यो वज्रपुष्पं प्रतीच्छथ फट् स्वाहा । इत्यनेन पुष्पं दद्यात्॥४॥ इत्यनेन संपूज्य ततो देव्या मस्तके अक्षोभ्यं पजयेत् । तद्यथा—ॐ अक्षोभ्य इहागच्छ इहातिष्ठ इत्यावाह्य अक्षोभ्य वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा । इति मंत्रेणाक्षोभ्यं पूजयेत् । ततः षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च षडंगानि पूजयेत् । तद्यथा—ॐ एकजटायै हृदयाय नमः १ । ॐ तारिण्यै शिरसे स्वाहा २ । ॐ वज्रोदकायै शिखायै वषट् ३ । ॐ उग्रतारायै कवचाय हुं ४ । ॐ महापरिसरायै नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ पिंगोग्रैकजटायै अस्त्राय फट् ६ । इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य—अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयो रंतराले प्राचीं तदनुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण चतुर्दिक्षु ॐ वैं वैरोचनाय नमः। वैरोचन इहागच्छ इहातिष्ठ इत्यावाह्य पंचोपचारैः संपूज्य ॐ वैं वैरोचन वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा । इत्यनेन पुष्पं दद्यात् ॥ १ ॥ ॐ अं अमिताभाय नमः । अमिताभ इहा

गच्छ इहातिष्ठ इत्यावाह्य ॐ अं अमिताभ वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा इत्यनेन पुष्पं दद्यात् ॥ २ ॥ ॐ पं पद्मनाभायै[13] नमः । पद्मनाभ इहागच्छ इहातिष्ठ इत्यावाह्य ॐ पं पद्मनाभ वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा । इत्यनेन पुष्पं दद्यात् ॥ ३ ॥ ॐ शं शंखपांडुराय नमः[14]। शंखपांडुर इहागच्छ इहातिष्ठ इत्यावाह्य ॐ शं शंखपांडुर वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा । इत्यनेन पुष्पं दद्यात् ॥ ४ ॥ इति संपूज्य विदिग्दलेषु ॐ लां लामकायै नमः[15]। लामके इहागच्छ इहातिष्ठ इत्यावाह्य पंचोपचारैः संपूज्य ॐ लां लामके वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा । इत्यनेन पुष्पं दद्यात् ॥५॥ ॐ मां मामकायै नमः[16]। मामके इहागच्छ इहातिष्ठ इत्यावाह्य पंचोपचारैः संपूज्य ॐ मां मामके वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा । इत्यनेन पुष्पं दद्यात् ॥ ६ ॥ ॐ पां पाडुरायै नमः[17]। पांडुरे इहागच्छ इहातिष्ठ इत्यावाह्य पंचोपचारैः संपूज्य ॐ पां पांडुरे वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा । इत्यनेन पुष्पं दद्यात् ॥ ७ ॥ ॐ तां तारकायै नमः[18] । तारके इहागच्छ इहातिष्ठ इत्यावाह्य पंचोपचारैः संपूज्य ॐ तां तारके वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा । इत्यनेन पुष्पं दद्यात् ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ ततो भूपुराभ्यंतरे पर्वादि चतुर्दिक्षु ॐ पं पद्मांतकाय नमः[19]। इहागच्छ इहातिष्ठ इत्यावाह्य पद्मांतकश्रीपा० इति पंचोपचारैः संपूज्य ॐ पं पद्मांतक वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा। इत्यनेन पुष्पं दद्यात् ॥ १ ॥ ॐ जं जन्मांतकाय नमः[20]। इहागच्छ इहातिष्ठ इत्यावाह्य जन्मांतकश्रीपा० इति पंचोपचारैः संपूज्य ॐ जं जन्मांतक वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा। इत्यनेन पुष्पं दद्यात् ॥ २ ॥ ॐ विं विघ्नांतकाय नमः[21]। इहागच्छ इहातिष्ठ इत्यावाह्य विघ्नांतकश्रीपा०इति पंचोपचारैः संपूज्य ॐ विं विघ्नांतक वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा। इत्यनेन पुष्पं दद्यात् ॥ ३ ॥ ॐ नं नरकांतकाय नमः[22]। इहागच्छ इहातिष्ठ इत्यावाह्य नरकांतकश्रीपा० इति पंचोपचारैः संपूज्य ॐ नं नरकांतक वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा । इत्यनेन पुष्पं दद्यात् ॥ ४ ॥ इति संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ततो भूपुराद्बहिः पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयेत्। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य पूजांते बलिं च दद्यात्। तत्र मंत्रः—"ॐ ह्रीं श्रीमदेकजटे नीलसरस्वति महोग्रतारे देवि खख सर्वभतपिशाचराक्षसान् ग्रस ग्रस मम जाड्यं

छेदय छेदय श्रीं ह्रीं फट् स्वाहा" ॥ इति द्विपंचाशदक्षरमंत्रेण मधुमांसपायसमाषभक्तं वा नित्यमेव पूजांते बलिं दत्त्वा जपं कुर्य्यात् ॥ पुनः अर्द्धरात्रे चतुष्पथे नित्यमेव बलिं दद्यात्। तत्र मंत्रः—"ॐ ह्रीं एकजटे महायक्षाधिपते मयोपनीतं बलिं गृह्ण गृह्ण ह्रीं स्वाहा।" अस्यः पुरश्चरणं चतुर्लक्षजपः रक्तपद्मक्षीराज्यैन दशांशतो होमः तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि च कुर्य्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । एतत्सिद्धेर्मंत्री प्रयोगान् कुर्य्यात् । तथा च—एवं ध्यायन्नदन्भक्ष्यमनेकं दधि मध्वपि॥ मधु मांसं च तांबूलं जपेल्लक्षचतुष्टयम्॥ ॥ १ ॥ दशांशं जुहुयाद्रक्तपद्मैः क्षीराज्यलोलितैः ॥ स्थापयित्वा महाशंखं जपस्थाने जपं चरेत् ॥ २ ॥ नारीं पश्यन्स्पृशन्गच्छन्महानिशि बलिं ददेत् ॥ न कार्य्यः सुभ्रुवां द्वेषो यत्नात्ताः पूजयेत्सदा ॥ ३ ॥ जपे न कालनियमो न स्थितौ सर्वदा जपेत् ॥ श्मशाने शून्यसदने देवागारेऽथ निर्जने ॥ ४ ॥ पर्वते वनमध्ये वा शवमारुह्य मंत्रावित् ॥ समरे शत्रुनिहतं यद्वा षाण्मासिकं शिशुम् ॥ ॥ ५ ॥ विद्यां संसाधयेच्छीघ्रं साधितैवं प्रसिध्यति ॥ एवं सिद्धे मनौ मंत्री प्रयोगान्विदधीत च ॥ ६ ॥ अथ प्रयोगो यथा—जातमात्रस्य बालस्य दिवसत्रितयादधः ॥ जिह्वायां विलिखेन्मंत्रं मध्वाज्याभ्यां शलाकया ॥ ७ ॥ सुवर्णकृतया यद्वा मंत्री धवलदूर्वया ॥ गतेऽष्टमेऽब्दे बालोऽसौ जायते कविराड् ध्रुवम् ॥ ८ ॥ तथा परैरजेयोऽपि भूपसंघैर्धनार्चितः ॥ अन्यः—उपरागे[1] दतानीय तरद्दारु सरोजले ॥ निर्माय कीलकं तेन तैलमध्वमृतैर्लिखेत् ॥ ९ ॥ सरोजिनीदले मत्रं वेष्टयेन्मातृकाक्षरैः ॥ निखाय तद्दलं कुंडे चतुरस्रे समे खले ॥ १० ॥ संस्थाप्य पावकं तत्र जुहुयान्मनुनाऽमुना ॥ सहस्रं रक्तपद्मानां धेनुदुग्धजलाप्लुतम् ॥ ११ ॥ होमांते विविधैरन्नैः पलैरपि बलिं हरेत् ॥ तत्र मंत्रः—"ॐ पद्मे पद्मे महापद्मे पद्मावत्यै स्वाहा ॥" ततो निशीथेऽपि बलिं पूर्वोक्तमनुना हरेत् ॥१२॥ एवं कृते पंडितानामजेयः कविराड् भवेत् ॥ अन्यः—निवासो भारतलक्ष्म्योर्जनतारंजनक्षमः ॥ १३ ॥ शताभिजप्तो यो मंत्री रोचनामालिके[2]

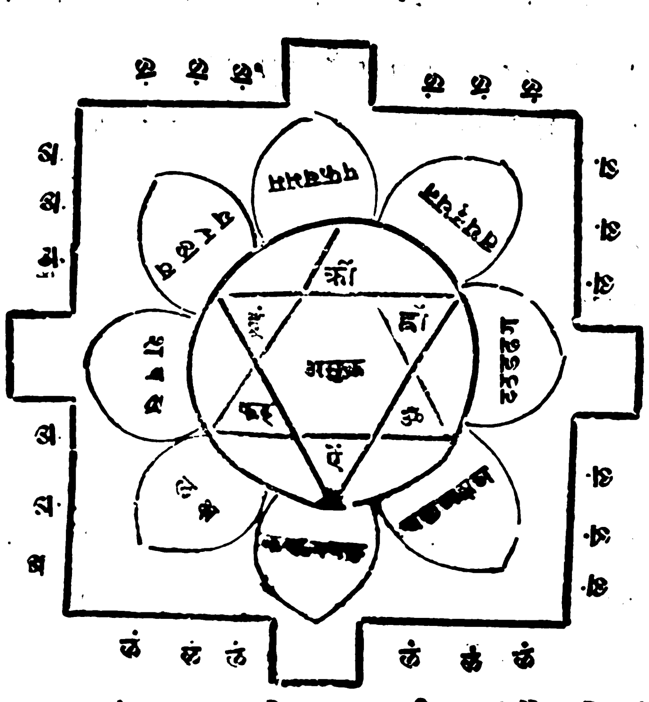
१ उपरागेति ग्रहणे। तडागं तरत्काष्ठं दत्ता दंतेनानीय तेन लेखनीं कृत्वा तैलमधुसुराभिः पद्मिनीपत्रे तया मनुमालिख्य वर्णैः संवेष्ट्य कुण्डं निखाय तद्दुपर्यग्निं प्रतिष्ठाप्य गोदुग्धाक्तेन रक्तपद्मसहस्रेण तत्र हुत्वा षोडशार्णेन मांसैर्होमांते बलिं दत्त्वा मध्यरात्रे पूर्वोक्तमन्त्रेण बलिं दद्यात । एवं कृते उक्तफलसिद्धिः ॥

२ अलिके ललाटे धरेत् ॥

धरेत् ॥ स यं पश्यति तस्याग्रे दासवज्जायते क्षणात् ॥ १४ ॥ अन्यः—श्मशानांगारमाहृत्य शर्वर्यां कुजवासरे ॥ कृष्णांबरेण संवेष्ट्य निबद्धं रक्ततंतुभिः ॥ १५ ॥ शताभिजप्तमूलेन निक्षिपेद्वैरिवेश्मनि ॥ उच्चाटयति सप्ताहात्सकुटुंबान्विरोधिनः ॥ १६ ॥ अन्यः—क्षाराढ्यया निशामंत्रं लिखित्वा पौरुषेऽस्थिनि ॥ रविवारे निशीथिन्यां सहस्रमाभिमंत्रयेत् ॥ १७ ॥ तत्क्षिप्तं शत्रुसदने मंडलाद्भ्रंशकं भवेत् ॥ क्षेत्रे क्षिप्तं सस्यहान्यै जवहृत्तुरगालये ॥ १८ ॥ धारणयंत्रं यथा—षट्कोणमध्ये प्रविलिख्य मूलं साध्यान्वितं केसरयस्वरा ढ्यम् ॥ काद्यष्टवर्गान्वितपत्रमब्जं लिखेद्बहिर्भूमिपुरेण वीतम् ॥ १९ ॥ यंत्रमेतल्लिखेद्भूर्जे रसेन जंतुजन्मना ॥ पीतांबरेण संवेष्ट्य बध्नीयात्पीतसूत्रतः ॥ २० ॥ शिशूनां कंठतो बद्धं रक्षकं भूतभीतितः ॥ वामबाहौ तु नारीणां पुत्रदं सुभगत्वकृत् ॥ २१ ॥ दक्षबाहौ नृणां बद्धं निर्द्धनानां धनप्रदम् ॥ ज्ञानदं ज्ञानमिच्छूनां राज्ञां तु विजयप्रदम् ॥ २२ ॥ एतद्यंत्रं पुरा धृत्वा गोतमाद्या महर्षयः ॥ लेभिरे मोक्षसंसिद्धिं साम्राज्यं भूमिनायकाः ॥ २३ ॥ किं भूरिणा नृणामेतद्वांछितां यच्छति श्रियम् ॥ कवित्वं राजमानं च कीर्तिमायुररोगताम् ॥ २४ ॥ नैव तारासमा काचिद्देवता सर्वसिद्धिदा ॥ कलौ युगे ततो गोप्या वांछितां सिद्धिमीप्सताम् ॥ २५ ॥ इति षडक्षरस्तारामंत्रप्रयोगः ॥ अथ द्वात्रिंशत्यक्षरस्तारामंत्रभेदः ॥ मंत्रो यथा—"ॐ श्रीं ह्रीं ह्रां हुं नमस्तारायै महातारायै सकलदुस्तरांस्तारय २ तर २ स्वाहा ।" अस्य विधानं सर्वं पूर्ववत् ज्ञेयम् । तथा च—द्वात्रिंशदर्णताराद्या पूजाऽस्याः पूर्ववन्मता ॥ इति ॥ २ ॥ अथ तारामंत्रभेदानाह ॥ ताराभेदा मयोच्यंते शीघ्रसिद्धिप्रदायिनः ॥ अथाष्टौ मंत्राः ॥ ॐ त्रीं ह्रीं हुं फट् । इति सप्ताक्षरो ब्रह्मोपासितमंत्रः ॥ १ ॥ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः हुं उग्रतारे हुं फट् । इति द्वादशाक्षरो विष्णूपासितमंत्रः ॥ २ ॥

१ सैंधवयुक्तहरिद्रया ॥२ ॥ षड्डिति षट्कोणे साध्यान्वितं मूलमभुकं रक्ष रक्षेति युक्त मूलमंत्रं विलिख्याष्टदलकेसरेषु अंआमित्यादिस्वराणां युग्मपत्रेषु कचटतपयशळेतिवर्गान् विलिख्य बहिश्चतुष्कोणेन वेष्टयेत् ॥ ३ जंतुजन्मना लाक्षोत्थेन रसेन ॥ ४ तारा गोप्या—अहं तदुपासक इति कस्याप्यग्रे न प्रकाशयेत् ॥

ताराधारणयन्त्रम्.



ॐ हुं ह्रीं क्लीं सौः हुं फट्। इति सप्ताक्षरो द्वितीयो विष्णूपासितमंत्रः ॥ ३ ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः हुं उग्रतारे हुं फट् ।इ ति द्वादशाक्षरश्चतुर्मुखोपासितमंत्रः ॥
॥ ४ ॥ ॐ हुं ह्रीं क्लीं हूं सौः हुं फट् । इति सप्ताक्षरश्चतुर्मुखोपासितमंत्रः ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं हुं ह्रां हुं फट् । इति षडक्षर एकजटामंत्रः ॥ ६ ॥ ॐ त्रीं हुं ह्रीं हुं फट् ।
इति पंचाक्षर एकजटामंत्रः ॥ ७ ॥ ॐ श्रीं हुं फट् क्लीं ऐं । इति पंचाक्षरो नारायणो
पासितमंत्रः ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ मंत्राः ॥ एषां विधानम्—अष्टविद्यानां वशिष्ठ
ऋषिः । गायत्रीछंदः । तारकादेवता । ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥
न्यासादिकं सर्वं पूर्ववत्कृत्वा ध्यायेत्। श्वेतांबरां शारदचन्द्रकांतिं सद्भूषणां चन्द्र
कलावतंसाम् ॥ कर्त्रीं कपालान्वितपादपद्मां तारां त्रिनेत्रां प्रभजेऽखिलर्द्ध्यै ॥
इति ध्यात्वा पूजादिकं सर्वं पूर्ववत्कृत्वा जपं कुर्य्यात्। एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति।
एतस्मिन्सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तद्यथा—न्यासं तु पूर्ववत्कृत्वा ध्याये
त्तारां हृदंबुजे ॥ जपपूजादिकं सर्वमासां पूर्ववदाचरेत् ॥ १ ॥ प्रयोगे विशेषः—
मधुयुक्परमान्नेन होमाद्विद्यानिधिर्भवेत् ॥ रक्तां वश्ये स्वर्णवर्णां स्तंभने मारणे सिताम् ॥ २ ॥ उच्चाटने धूम्रवर्णां शांतौ श्वेतां स्मरेदिमाम् ॥ भूरिणा किमिहोक्तेन विद्या एताः प्रसाधिताः ॥ पूरयन्त्यखिलं नॄणां मनोरथामेह ध्रुवम् ॥ ३ ॥ इति ॥ अथ ताराभेदैकजटामंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रमहोदधौ मंत्रो यथा—"ॐ ह्रीं। नमो भगवत्येकजटे मम वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा ॥" इति द्वाविंशत्य क्षरो मंत्रः। अस्य विधानम्—अस्य श्रीमदेकजटामंत्रस्य पतंजलिर्ऋषिःगायत्रीछंदः। एकजटादेवता।ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ पतंजलिऋषये नमः शिरसि १ । गायत्रीछंदसे नमः मुखे २ । एकजटादेवतायै नमः हृदि ३ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४। इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ह्राँ अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ ह्रूँ मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ह्राँ हृदयाय नमः १ । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ ह्रूँ शिखायै वषट् ३। ॐ ह्रैं कवचाय हुं ४। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ६ ॥ इति न्यासं कुर्य्यात् ॥ ध्यानार्चने प्रयोगश्च सर्वं पूर्ववत् ज्ञेयम् । तथा च–ध्यानार्चनप्रयोगास्तु कुर्यात्पूर्वोक्तमंत्रवत् ॥ इति॥ अथ नीलसरस्वतीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा–“ॐ श्रीं ह्रीं ह्सौः हुं फट् नीलसरस्वत्यै स्वाहा ॥” इति मंत्रः ॥ अस्य नीलसरस्वतीमंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। गायत्री छंदः। नीलसरस्वती देवता। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥ ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि १। गायत्रीछंदसे नमः मुखे २। नीलसरस्वतीदेवतायै नमः हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४ । इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ह्सौः मध्यमाभ्यां नमः ३। हुं फट् अनामिकाभ्यां नमः ४ । नीलसरस्वत्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ श्रीं हृदयाय नमः १ । ह्रीं शिरसे स्वाहा २। ह्सौः शिखायै वषट् ३। हुं फट् कवचाय हुं ४। नीलसरस्वत्यै नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । स्वाहा अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ घंटां शिरः शूलमसिं कराग्रैः संबिभ्रतीं चन्द्रकलावतंसाम् ॥ प्रमथ्नतीं पादतले पशुं तां भजे मुदा नीलसरस्वतीं ताम् ॥ १ ॥ इति ध्यायेत् ॥ जपपूजादिकं सर्वं पूर्ववत् ॥ तथा च–जपपूजादिकं सर्वमस्याः पूर्ववदीरितम् ॥ विशेषाज्जयदा वादे विधेयं साधिता नृणाम् ॥ १ ॥ इति नीलसरस्वतीपंचदशाक्षरमंत्रप्रयोगः ॥

॥ अथ ताराभेदेन महाविद्या (विद्याराज्ञी) मंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रमहोदधौ ॥ विद्याराज्ञीमथो वक्ष्ये सुरेंद्रस्यापि दुर्लभाम् ॥ लब्ध्वा यां मानवाः स्वेष्टं साधयंत्यर्चने रताः ॥ महाविद्या समाख्याता सेविता भोगमोक्षदा ॥ १ ॥ मंत्रो यथा–ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं क्लीं ह्रीं ऐं ब्लूं स्त्रीं

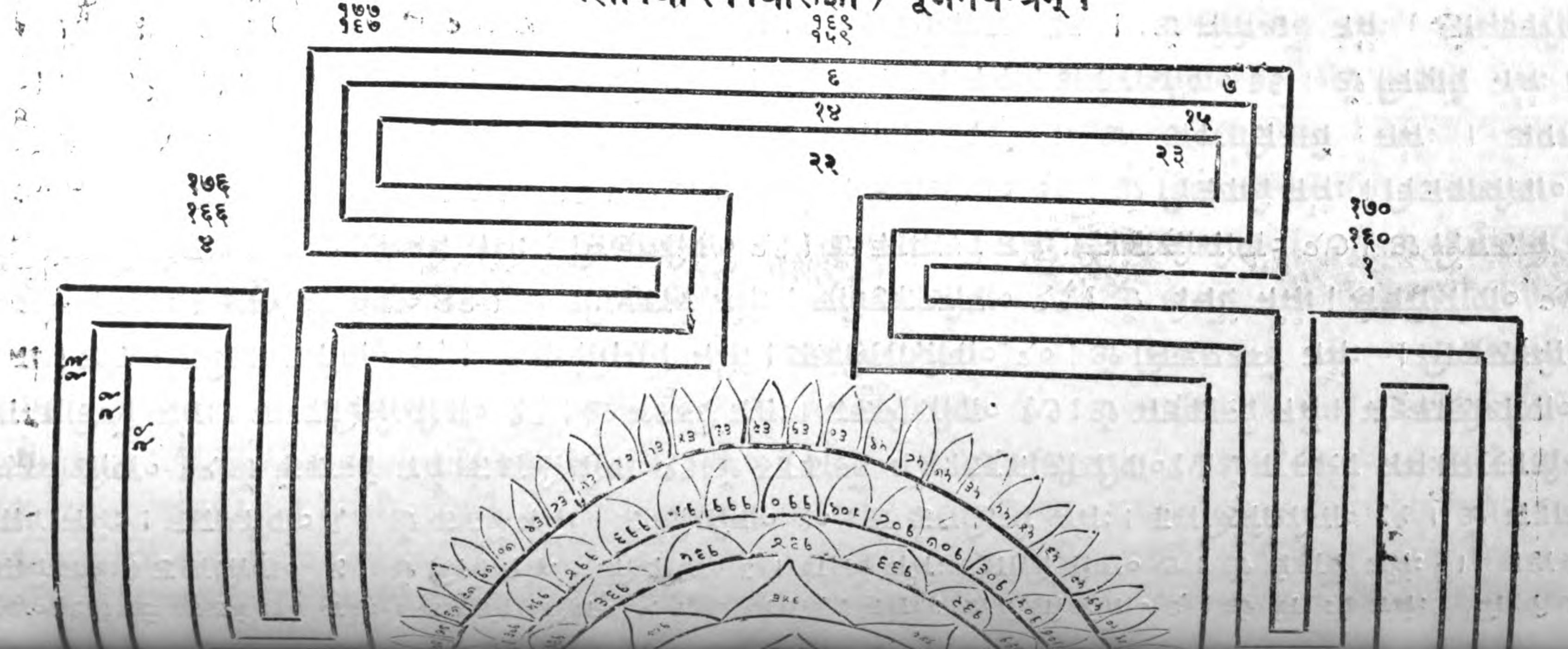
नीलतारे सरस्वति द्राँ द्रीं क्लीं ब्लूं सः ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः सौः ह्रीं स्वाहा। इति द्वात्रिंशदक्षरो मंत्रः। अस्य विधानम्—अस्य महाविद्यामंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। अनुष्टुप्छंदः। सरस्वती देवता। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥ ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि १। अनुष्टुप्छंदसे नमः मुखे २। सरस्वतीदेवतायै नमः हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः॥ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। क्लीं ह्रीं ऐं ब्लूं स्त्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। नीलतारे सरस्वति मध्यमाभ्यां नमः ३। द्राँ द्रीं क्लीं ब्लूं सः अनामिकाभ्यां नमः ४। ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। सौः ह्रीं स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६॥ इति करन्यासः॥ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं हृदयाय नमः १। क्लीं ह्रीं ऐं ब्लूं स्त्रीं शिरसे स्वाहा २। नीलतारे सरस्वति शिखायै वषट् ३। द्राँ द्रीं क्लीं ब्लूं सः कवचाय हुं ४। ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः नेत्रत्रयाय वौषट् ५। सौः ह्रीं स्वाहा अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्। शवासनां सर्वविभूषणाढ्यां कर्त्रीं कपालं चषकं त्रिशूलम्॥ करैर्दधानां नरमुंडमालां त्र्यक्षां भजे नीलसरस्वतीं ताम्॥ इति ध्यायेत्॥पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति पीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्। तथा च—पूर्वादिक्रमेण अष्टसु दिक्षु ॐ मेधायै नमः १। ॐ प्रज्ञायै नमः २। ॐ प्रभायै नमः ३। ॐ विद्यायै नमः ४। ॐ धियै नमः ५। ॐ धृत्यै नमः ६। ॐ स्मृत्यै नमः ७। ॐ बुद्ध्यै नमः ८। मध्ये ॐ विश्वेश्वर्यै नमः ९। इति पूजयेत्। ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रमादौ त्रिकोणषट्कोणाष्टषोडशद्वात्रिंशच्चतुःषष्टिदलं तस्योपरि त्रिरेखात्मकं भूपुरं च निर्माय तत् ताम्रपात्रे धृत्वा घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण प्रोक्ष्य 'ह्रीं सरस्वतीयोगपीठात्मने नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा बाह्यत आरभ्य आवरणपूजां कुर्यात्। तथा च—पुष्पांजलिमादाय संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये॥अनुज्ञां देहि मे

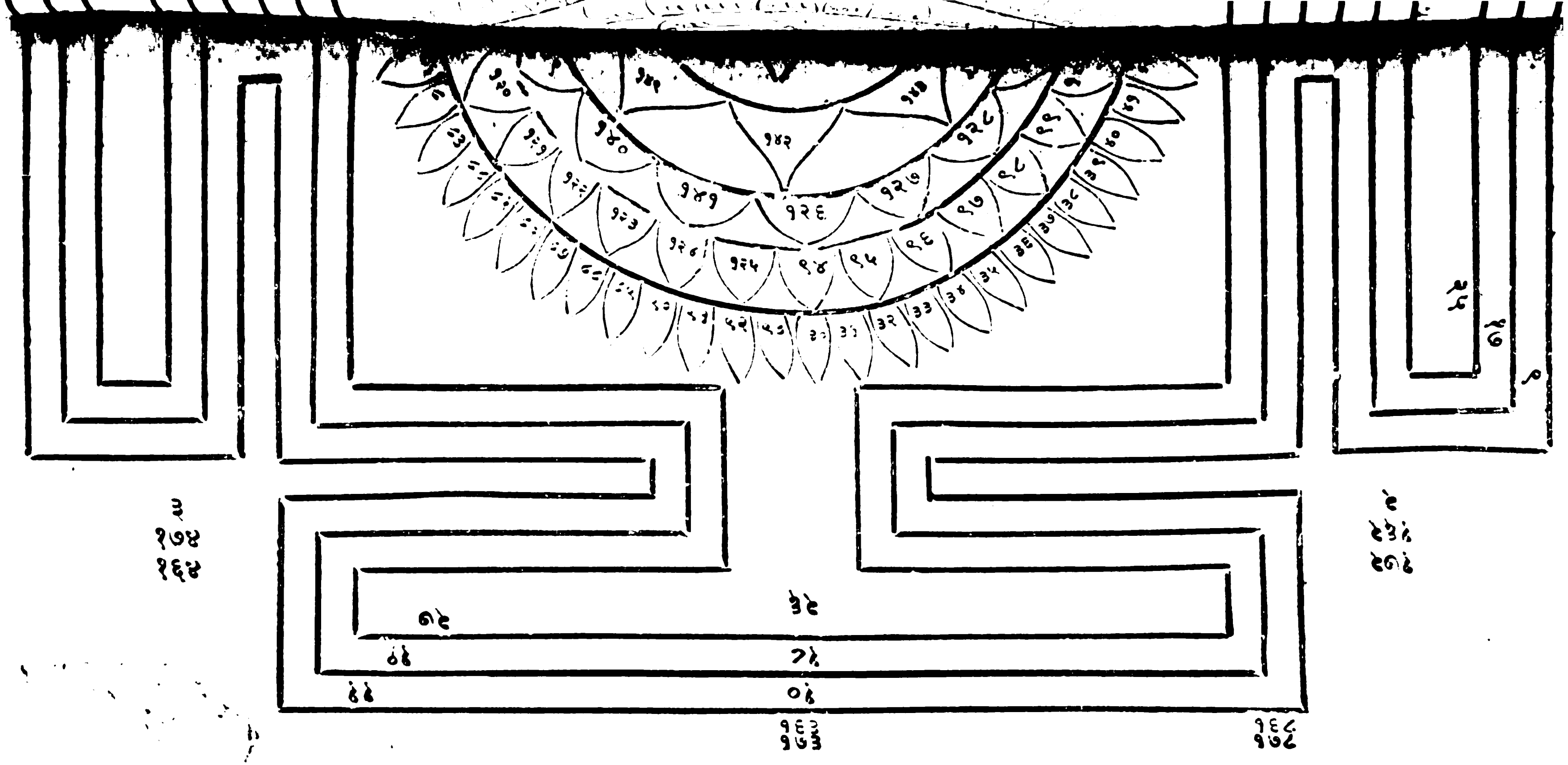
१ आदौ त्रिकोणं षट्कोणमष्टषोडशपत्रकम्॥ द्वात्रिंशत्पत्रमब्जं स्याच्चतुःषष्टिदलं ततः॥ त्रिरेखाढ्यं धरागेहं चतुरस्रमतः परम्॥ एवं यंत्रं समालिख्य बाह्यतः पूजयेत्॥

मातः परिवारार्चनाय मे ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् । इत्याज्ञां गृहीत्वा भूपुराद्बहिः अग्निकोणे ॐ वं विघ्नेशाय नमः । विघ्नेशश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १। इति सर्वत्र । वायुकोणे ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः । क्षेत्रपालश्रीपा० २ । ॐ ईशानकोणे भैरवाय नमः । भैरवश्रीपा० ३। नैर्ऋतिकोणे ॐ यं योगिन्यै नमः । योगिनीश्रीपादुकां पू० ४ । वामभागे ॐ श्रीगुरवे नमः । गुरुश्रीपा० ५ । इति पूजयेत् ॥ ततो भूपुरे प्रथमरेखायां पूर्वादिक्रमेण ॐ अणिमायै नमः । अणिमाश्रीपा० १ । ॐ लघिमायै नमः । लघिमाश्रीपा० २ । ॐ महिमायै नमः । महिमाश्रीपा० ३ । ॐ असितायै नमः । असिताश्रीपा० ४ । ॐ वशितायै नमः । वशिताश्रीपा० ५ । ॐ कामपूरिण्यै नमः । कामपूरणीश्रीपा० ६ । ॐ गरिमायै नमः । गरिमाश्रीपा० ७ । ॐ प्राप्त्यै नमः । प्राप्तिश्रीपा० ८ । इत्यष्टौ सिद्धीः पूजयेत् ॥ ततो भूपुरे द्वितीयरेखायां पूर्वादिक्रमेण ॐ असितांगभैरवाय नमः । असितांगभैरवश्रीपा० १ । ॐ रुरुभैरवाय नमः । रुरुभैरवश्रीपा० २ । ॐ चंडभैरवाय नमः । चंडभैरवश्रीपा० ३ । ॐ क्रोधभैरवाय नमः । क्रोधभैरवश्रीपा० ४ । ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः । उन्मत्तभैरवश्रीपा० ५ । ॐ कपालभैरवाय नमः । कपालभैरवश्रीपा० ६ । ॐ भीषणभैरवाय नमः । भीषणभैरवश्रीपा० ७ । ॐ संहारभैरवाय नमः । संहारभैरवश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ भैरवान् पूजयेत् ॥ ततो भूपुरे तृतीयरेखायां पूर्वादिक्रमेण—ॐ ब्राह्म्यै नमः । ब्राह्मीश्रीपा० १ । ॐ माहेश्वर्यै नमः । माहेश्वरीश्रीपा० २ । ॐ कौमार्यै नमः । कौमारीश्रीपादुकां पूजया० ३ । ॐ वैष्णव्यै नमः । वैष्णवीश्रीपा० ४ । ॐ वाराह्यै नमः । वाराहीश्रीपा० ५ । ॐ इन्द्राण्यै नमः । इन्द्राणीश्रीपा० ६ । ॐ चामुंडायै नमः । चामुंडाश्रीपा० ७ । ॐ महालक्ष्म्यै नमः । महालक्ष्मीश्रीपा० ८ । इत्यष्टौ मातॄः पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य ॥ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदन् योनिमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इति [illegible] ॥ १ ॥ ततः चतुःषष्टिदले पूज्यपूजकयोरंतराले प्राचीं तदनुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ॐ कुलेश्यै नमः ।

कुलेशीश्रीपा० १ । ॐ कुलनंदायै नमः । कुलनंदाश्रीपा० २ । ॐ वागीश्यै नमः । वागीशीश्रीपा० ३ । ॐ भैरव्यै नमः । भैरवीश्रीपा० ४ । ॐ उमायै नमः । उमाश्रीपा० ५ । ॐ श्रियै नमः । श्रीश्रीपा० ६ । शांत्यै नमः । शांतिश्रीपा० ७ । ॐ चंडायै नमः । चंडाश्रीपा० ८ । ॐ धूम्रायै नमः । धूम्राश्रीपा० ९ । ॐ काल्यै नमः । कालीश्रीपा० १० । ॐ करालिन्यै नमः । करालिनीश्रीपा० ११ । ॐ महालक्ष्म्यै नमः।महालक्ष्मीश्रीपा० १२।ॐ कंकाल्यै नमः।कंकालीश्रीपा० १३।ॐ रुद्रकाल्यै नमः।रुद्रकालीश्रीपा०१४।ॐसरस्वत्यै नमः।सरस्वतीश्रीपा० १५ । ॐ वाग्वादिन्यै नमः । वाग्वादिनीश्रीपा० १६ । ॐ नकुल्यै नमः । नकुलीश्रीपा० १७ । ॐ भद्रकाल्यै नमः। भद्रकालीश्रीपा० १८ । ॐ शशिप्रभायै नमः । शशिप्रभाश्रीपा० १९ । ॐ प्रत्यंगिरायै नमः । प्रत्यंगिराश्रीपा० २० । ॐ सिद्धलक्ष्म्यै नमः । सिद्धलक्ष्मीश्रीपा० २१ । ॐ अमृतेश्यै नमः । अमृतेशीश्रीपा० २२ । ॐ चण्डिकायै नमः । चाण्डिकाश्रीपा० २३ । ॐ खेचर्यै नमः । खेचरीश्रीपा० २४ । ॐ भूचर्यै नमः । भूचरीश्रीपा० २५ ॐ सिद्धायै नमः । सिद्धाश्रीपा० २६ । ॐ कामाक्ष्यै नमः। कामाक्षीश्रीपा० २७ । ॐ हिंगुलायै नमः । हिंगुलाश्रीपा० २८ । ॐ बलायै नमः । बलाश्रीपा० २९ । ॐ जयायै नमः । जयाश्रीपा० ३० । ॐ विजयायै नमः । विजयाश्रीपा० ३१ । ॐ अजितायै नमः । अजिताश्रीपा० ३२ । ॐ नित्यायै नमः । नित्याश्रीपा० ३३ । ॐ अपराजितायै नमः । अपराजिता श्रीपा० ३४ । ॐ विलासिन्यै नमः । विलासिनीश्रीपादुकां पू० ३५ । ॐ अघोरायै नमः । अघोराश्रीपा० ३६ । ॐ चित्रायै नमः । चित्रा श्रीपा० ३७ ॐ मुग्धायै नमः । मुग्धाश्रीपा० ३८ । ॐ धनेश्वर्यै नमः । धनेश्वरीश्रीपा० ३९ । ॐ सोमेश्वर्यै नमः । सोमेश्वरीश्रीपा० ४० । ॐ महाचंडायै नमः । महाचंडाश्रीपा० ४१ । ॐ विद्यायै नमः । विद्याश्रीपा०४२ ।ॐ हंस्यै नमः । हंसीश्रीपा० ४३ । ॐ विनायकायै नमः।विनायकाश्रीपा० ४४ । ॐ वेदगर्भायै नमः । वेदगर्भाश्रीपा० ४५ । ॐ भीमायै नमः । भीमाश्रीपा० ४६ । ॐ उग्रायै नमः । उग्राश्रीपा० ४७ । ॐ वेद्यायै नमः । वेद्याश्रीपा० ४८ । ॐ सद्गत्यै नमः । सद्गतिश्रीपा० ४९ । ॐ उग्रेश्वर्यै नमः । उग्रेश्वरीश्रीपा० ५० । ॐ चन्द्रगर्भायै नमः । चन्द्रगर्भाश्रीपा० ५१ । ॐ ज्योत्स्नायै नमः । ज्योत्स्नाश्रीपा० ५२ । ॐ सत्यायै नमः । सत्याश्रीपा० ५३ ।

महाविद्या (विद्याराज्ञी) पूजनयन्त्रम् ।





ॐ यशोवत्यै नमः । यशोवतीश्रीपा० ५४ । ॐ कुलिकायै नमः । कुलिकाश्रीपा० ५५ । ॐ कामिन्यै नमः । कामिनीश्रीपा० ५६ । ॐ काम्यायै नमः । काम्याश्रीपा० ५७ । ॐ ज्ञानवत्यै नमः । ज्ञानवतीश्रीपा० ५८ । ॐ डाकिन्यै नमः । डाकिनीश्रीपा० ५९ । ॐ राकिन्यै नमः । राकिनीश्रीपा० ६० । ॐ लाकिन्यै नमः । लाकिनीश्रीपा० ६१ । ॐ काकिन्यै नमः । काकिनीश्रीपा० ६२ । ॐ शाकिन्यै नमः । शाकिनीश्रीपा० ६३ । ॐ हाकिन्यै नमः । हाकिनीश्रीपा० ६४ ॥ इति चतुःषष्टिशक्तीः पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य्य—अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्वा विशेषार्घ्यबिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदन् खेचरीमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ ततो द्वात्रिंशद्दले प्राचीक्रमेण ॐ किरातायै नमः । किराताश्रीपा० १ । ॐ योगिन्यै नमः । योगिनीश्रीपा० २ । ॐ वीरायै नमः । वीराश्रीपा० ३ । ॐ वेतालायै नमः । वेतालाश्रीपा० ४ । ॐ यक्षिण्यै नमः । यक्षिणीश्रीपा० ५ । ॐ हरायै नमः । हराश्रीपादुकां पू० ६ । ऊर्ध्वकेश्यै नमः । ऊर्ध्वकेशीश्रीपा० ७ । ॐ मातङ्ग्यै नमः । मातंगीश्रीपा० ८ । ॐ मोहिन्यै नमः । मोहिनीश्रीपा० ९ । ॐ वंशवर्द्धिन्यै नमः । वंशवर्द्धिनीश्रीपा० १० । ॐ मालिन्यै नमः । मालिनीश्रीपा० ११ । ॐ ललितायै नमः । ललिताश्रीपा० १२ । ॐ दूत्यै नमः । दूतीश्रीपा० १३ । ॐ मनोजायै नमः । मनोजाश्रीपा० १४ । ॐ पद्मिन्यै नमः । पद्मिनीश्रीपा० १५ । ॐ धरायै नमः । धराश्रीपा० १६ । ॐ वर्वर्यै नमः । वर्वरीश्रीपा० १७ । ॐ क्षत्रहस्तायै नमः । क्षत्रहस्ताश्रीपा० १८ । ॐ रक्तायै नमः । रक्ताश्रीपा० १९ । ॐ नेत्रायै नमः । नेत्राश्रीपा० २० । ॐ विचर्चिकायै नमः । विचर्चिकाश्रीपा० २१ । ॐ मातृकायै नमः । मातृकाश्रीपा० २२ । ॐ दूरदर्श्यै नमः । दूरदर्शीश्रीपा० २३ । ॐ क्षेत्रेश्यै नमः । क्षेत्रेशीश्रीपा० २४ । ॐ रंगिन्यै नमः । रंगिनीश्रीपा० २५ । ॐ नटयै नमः

१ लक्षणं यथा—सव्यं दक्षिणहस्ते तु सव्यहस्ते तु दक्षिणम् ॥ बाहू कृत्वा महादेवि हस्तौ संपरिवर्त्य च ॥ कनिष्ठानामिके देवि युक्ता तेन क्रमेण तु ॥ तर्जनीभ्यां समाक्रांते सर्वोर्ध्वमपि [illegible] ॥ अंगुष्ठौ तु महादेवि सरलावपि कारयेत् ॥ इयं वा खेचरी नाम मुद्रा सर्वोत्तमोत्तमा ॥

[illegible]पा० २६ । ॐ शांत्यै नमः[120]। शांतिश्रीपा० २७ । ॐ दीप्तायै नमः[121] । दीप्ताश्रीपा० २८ । ॐ वज्रहस्तायै नमः[122] वज्रहस्ताश्रीपा० २९ । ॐ धूम्रायै नमः[123] । धूम्राश्रीपा० ३० ॐ श्वेतायै नमः[124] । श्वेताश्रीपा० ३१ । ॐ सुमंगलायै नमः[125] । सुमंगलाश्रीपा० ३२। इति द्वात्रिंशच्छक्तीः पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजालिमादाय मूलमुच्चार्य–अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घ्याद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदन् बीजँमुद्रां[1] प्रदर्शयेत् । इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततः षोडशदले प्राचीक्रमेण ॐ मुग्धायै नमः[126] । मुग्धाश्रीपा० १ । ॐ श्रीकुरुकुल्लायै नमः[127] । श्रीकुरुकुल्लाश्रीपा० २ । ॐ त्रिपुरायै नमः[128] । त्रिपुराश्रीपादुकां पू० । ३ ॐ तोतलायै नमः[129] । तोतलाश्रीपा० ४। ॐ क्रियायै नमः[130] । क्रियाश्रीपा० ५ । ॐ रत्यै नमः[131] । रतिश्रीपा० ६ । ॐ प्रीत्यै नमः[132] । प्रीतिश्रीपा० ७ । ॐ बालायै नमः[133] । बालाश्रीपा० ८ । ॐ सुमुख्यै नमः[134] । सुमुखीश्रीपा० ९ । ॐ श्यामलायै नमः[135] । श्यामलाश्रीपा० १० । ॐ बलायै नमः[136] । बलाश्रीपा० ११ । ॐ पिशाच्यै नमः[137] । पिशाचीश्रीपा० ॥ १२ । ॐ विदार्यै नमः[138] । विदारीश्रीपा० १३ । ॐ शीतलायै नमः[139] । शीतलाश्रीपा० १४ । ॐ वज्रयोगिन्यै नमः[140] । वज्रयोगिनीश्रीपा० १५ । ॐ सर्वेश्वर्यै नमः[141] । सर्वेश्वरीश्रीपा० १६। इति षोडशशक्तीः पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजालिमादाय मूलमुच्चार्य–अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदन् सृष्टिमुद्रां[2] प्रदर्शयेत ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥ ४ ॥ ततोऽष्टदले सरस्वत्यष्टकं स्वस्वमंत्रैः पूजयेत् ॥ तत्र क्रमः प्राचीक्रमेण—ॐ नमः पद्मासने शब्दरूपे ऐं ह्रीं क्लीं वद२ वाग्वादिनि स्वाहा । वाग्वादिनीश्रीपा० १ । ह्रू स् क् ल् ह्रीं वद वद चित्रेश्वरि ऐं स्वाहा । चित्रेश्वरीश्रीपा० २ । ऐं कुलजे ऐं सरस्वति स्वाहा । कुलजाश्रीपा० ३। ऐं ह्रीं श्रीं वद वद कीर्तीश्वरि स्वाहा । कीर्तीश्वरि

---

१ परिवर्त्य करौ स्पृष्टावर्द्धचन्द्राकृती प्रिये ॥ तर्जन्यंगुष्ठयुगलं युगपत्कारयेत्ततः ॥ अधः कनिष्ठावष्टब्धे मध्यमे विनियोजयेत् ॥ तथैव कुटिले [illegible] सर्वाधस्तादनामिके ॥ बीजमुद्रेयमुदिता सर्वसिद्धिप्रदायिनी ॥ २ सृष्टिमुद्रामंकुशमुद्रां दर्शयेत् । सा मुद्रावरंगे उक्ता ॥

श्रीपा० ४ । ऐं ह्रीं अंतरिक्षसरस्वति स्वाहा । अंतरिक्षसरस्वती[१४६]श्रीपा० ५ । ह्स् स्फ्रें ह्सौः स्फ्रीं ऐं ह्रीं श्रीं द्रां ह्रीं क्लीं ब्लूँ सः व्रीं घटसरस्वति घटे वद वद तर तर रुद्राज्ञया ममाभिलाषं कुरु कुरु स्वाहा । घटसरस्वती[१४७]–श्रीपा० ६ । ब्लूं वें वद वद त्रीं हुं फट् नीला[१४८]श्रीपा० ७ । ऐं हैं ह्रीं किणिकिणि विच्चे० । किणि[१४९]–श्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ सरस्वतीः संपूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य– अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं पंचमावरणार्चनम् ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदन् क्षोभमुद्रां[१] प्रदर्शयेत् ॥ इति पंचमावरणम् ॥ ५ ॥ ततः षट्कोणकेसरेषु प्राचीक्रमेण ॐ डाकिन्यै[१५०] नमः । डाकिनीश्रीपा० १ । ॐ राकिन्यै[१५१] नमः । राकिनीश्रीपा० २ । ॐ लाकिन्यै[१५२] नमः । लाकिनीश्रीपा० ३ । ॐ काकिन्यै[१५३] नमः । काकिनीश्रीपा० ४ । ॐ शाकिन्यै[१५४] नमः । शाकिनीश्रीपा० ५ । ॐ हाकिन्यै[१५५] नमः । हाकिनीश्रीपा० ६ । इति षट् पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य–अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठमावरणार्चनम् ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदन् विद्राविणीमुद्रां[२] प्रदर्शयेत् ॥ इति षष्ठावरणम् ॥ ६ ॥ ततस्त्रिकोणे प्राचीक्रमेण ह्रीं परायै[१५६] नमः । पराश्रीपा० १ । ऐं क्लीं सौः बालायै[१५७] नमः । बालाश्रीपा० २ । ह्सैं ह्क्लीं ह्सौः भैरव्यै[१५८] नमः । भैरवीश्री० ३ । इति पूजयेत् । ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य–अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदन् आकर्षिणीमुद्रां[३] प्रदर्शयेत् ॥ इति सप्तमावरणम् ॥७॥ भूपुराद्बहिः इन्द्रादिदश दिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूजयेत् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्यात् । ततोऽर्द्धरात्रे चतुष्पथे

१ मध्यमां मध्यमे कृत्वा कनिष्ठांगुष्ठरोधिके ॥ तर्जन्यौ दंडवत्कृत्वा मध्यमोपर्यनामिके ॥ क्षोभाभिधाना मुद्रेयं सर्वसंक्षोभकारिणी ॥ २ क्षोभमुद्रालक्षणमुक्त्वोक्तम्–एतस्या एव मुद्राया मध्यमे सरले यदा ॥ क्रियते परमेशानि तदा विद्राविणी मता ॥ ३ मध्यमातर्जनीभ्यां वै कनिष्ठानामिके समे ॥ अंकुशाकाररूपाभ्यां मध्यमे परमेश्वरि ॥ इयमाकर्षिणी मुद्रा त्रैलोक्याकर्षणे क्षमा ॥

गणेशक्षेत्रपालयोगिनीभैरवताराभ्यः पंचदेवताभ्यो मांसमाषान्नशाकाज्यपायसापूपकादिद्रव्येण नित्यमेव बलिं दद्यात् । अस्य पुरश्चरणं चतुर्लक्षजपः॥पलाशपुष्पमध्वाज्यैर्दशांशतो होमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि च कुर्य्यात्।एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति। तथा च—चतुर्लक्षं जपेद्विद्यां किंशुकैर्मधुरान्वितैः॥ दशांशं जुहुयाद्वह्नौ श्रद्धापूर्वमतंद्रितः ॥ १ ॥ इत्थं संपूज्य तारेशीं मनोऽभीष्टमवाप्नुयात् ॥ गणेशक्षेत्रपालाभ्यां योगिन्यै भैरवाय च ॥ २ ॥ तारायै चापि वितरेद्बलिं नित्यं चतुष्पथे ॥ मांसमाषान्नशाकाज्यपायसापूपकादिकम् ॥ बलिद्रव्यं समाख्यातं तेनेष्टं सा प्रयच्छति ॥ ३ ॥ एवं सिद्धे मनौ मंत्री गिरा वाचस्पतिर्भवेत् ॥ सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् । तत्र सात्त्विकराजसतामससृष्टिस्थितिसंहाररूपं कार्यभेदेन ध्यात्वा कार्यं साधयेत् । तत्रादौ सात्त्विकध्यानम्—श्वेतांबराढ्यां हंसस्थां मुक्ताभरणभूषिताम् ॥ चतुर्वक्त्रामष्टभुजैर्दधानां कुंडिकांबुजे॥ वराभये पाशशक्ती अक्षस्रक्पुष्पमालिके ॥ शब्दपाथोनिधौ ध्यायेत्सृष्टिध्यानमुदीरितम् ॥ १ ॥ अथ राजसध्यानम्— रक्तांबरां रक्तसिंहासनस्थां हेमभूषिताम् ॥ एकवक्त्रां वेदसंख्यैर्भुजैः संबिभ्रतीं क्रमात् ॥ अक्षमालां पानपात्रमभयं वरमुत्तमम् ॥ श्वेतद्वीपस्थितां ध्यायेत्स्थितिध्यानमिदं स्मृतम् ॥ २ ॥ अथ तामसध्यानम्—कृष्णांबराढ्यां नौसंस्थामस्थ्याभरणभूषिताम् ॥ नववक्त्रां भुजैरष्टादशभिर्दधतीं वरम्॥अभयं परशुं दर्वीं खड्गं पाशुपतं हलम् ॥ भिंदिं शूलं च मुशलं कर्त्रीं शक्तिं त्रिशीर्षकम् ॥ संहारास्त्रं वज्रपाशौ खट्वांगं गदया सह ॥ रक्तांभोधौ स्थितां ध्यायेत्संहारध्यानमीदृशम् ॥ ३ ॥ कर्मसु क्रूरसौम्येषु ध्यायेन्मंत्री यथातथा ॥ अथ प्रयोगः—दूर्वोत्थया तु लेखन्या रोचनारसयुक्तया ॥ बालस्याच्छिन्ननालस्य जिह्वायां विलिखेन्मनुम् ॥ संप्राप्ते चाष्टमे वर्षे सर्वशास्त्रज्ञतामियात् १ ॥ संजप्य मंत्रमयुतं वचां बालस्य कंठतः ॥ बध्नीयात्पूर्वसंप्रोक्तं बलिं दत्त्वा विधानतः ॥ द्वादशे वत्सरे प्राप्ते भक्षिता सा कवित्वकृत् ॥ २ ॥ ज्योतिष्मतीभवं तैलं कर्षमात्रं सुमंत्रितम् ॥ उपरागे जलस्थो योऽश्नीयाद्वाचस्पतिर्भवेत् ॥ ३ ॥ चतुष्पथे श्मशाने वा हित्वा लज्जां भयं तथा ॥ जपेच्छवं समारुह्य विद्या

---

१ मारणे तामसम्। उच्चाटनवश्यादौ राजसं--शांतौ पुष्टौ सात्त्विकं ध्यायेत् ॥

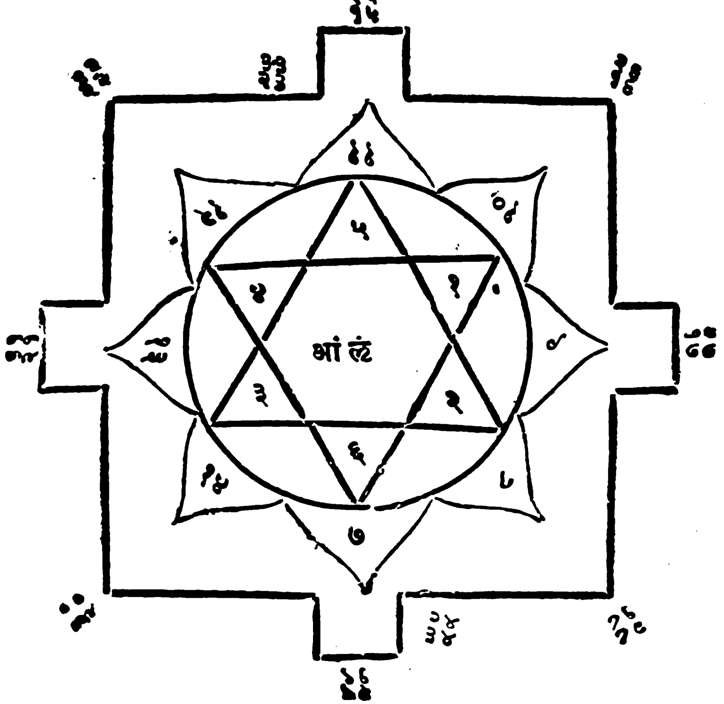
तत्परमानसः ॥ श्रृणोत्यसावमुं शब्दं निशीथे जपतत्परः ॥ पारगो भव विद्यानां सर्वां सिद्धिमवाप्नुहि ॥ ४ ॥ विद्वत्कुलसमुद्भूतमष्टवर्षं शिशुद्वयम् ॥ उपवेश्य तयोर्मूर्ध्नि करौ दत्त्वा जपेन्मनुम् ॥ वेदांतन्यायसंयुक्त्या विवदेते उभावपि ॥ यः कौतुकी स आश्चर्यं विद्यायाः पश्यतु ध्रुवम् ॥ ५ ॥ विधाय वेदिकां रम्यां विजने कदलीवने ॥ तत्रासीनो जपेद्विद्यामर्ककलक्षं विधानतः ॥ दासीचालित दोलायामारूढां सुस्मिताननाम् ॥ पुन्नागचंपकाशोकरंभाविपिनसंस्थिताम् ॥ एवं ध्यायन्भगवतीं बलिं दद्याज्जपांततः ॥ एवं कुर्वन्नरः सर्वमभीष्टं लभतेऽचिरात् ॥ ६ ॥ निर्वासा विशिखैः प्रेतभूमिस्थो यो जपेन्मनुम् ॥ अयुतं कृष्णभूताहे स वाक्सिद्धिमवाप्नुयात् ॥ विद्यां सौख्यं धनं पुष्टिमायुः कीर्तिं बलं श्रियः ॥ रूपं कामयमानेन तारा सेव्या निरंतरम् ॥ इति विद्याराज्ञीद्वात्रिंशदक्षरमंत्रप्रयोगः ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ ताराभेदेन वागीश्वरी—(सरस्वती) महाकल्पः ॥ नारद उवाच ॥ केनोपायेन देवेश विद्योत्पत्तिर्भवेन्नृणाम् ॥ वेदविद्याप्रकाशश्च तन्मे ब्रूहि जगत्प्रभो ॥ १ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ साधु साधु त्वया पृष्टं लोकानां हितकारकम् ॥ एतदेव पुरा पृष्टं कल्पादौ विष्णवे मया ॥ २ ॥ ब्रह्मशब्दस्वरूपेण प्रसन्नेनांतरात्मना ॥ यत्प्रोक्तं तेन मे ब्रह्मंस्तत्ते वक्ष्यामि यत्नतः ॥ ३ ॥ विष्णुरुवाच ॥ शृणु ब्रह्मन्परं गुह्यं कल्पं सारस्वतं महत् ॥ यस्य विज्ञानमात्रेण जाड्यापहरणं भवेत् ॥ ४ ॥ सर्वशास्त्रप्रवक्ता च सर्वज्ञो जायतेऽचिरात् ॥ अभ्यासाच्च भवेत्सिद्धिर्वाचश्चित्रा भवंति हि ॥ ५ ॥ अवापुस्त्रिदशाः स्वर्गं वागीशत्वं बृहस्पतिः ॥ द्वैपायनोऽपि यं ज्ञात्वा वेदव्यासोऽभवन्मुनिः ॥ ६ ॥ मंत्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि सांगावरणपूजनैः ॥ अनंतं बिंदुना युक्तं वामगंडांतभूषितम् ॥ ७ ॥ मंत्रो यथा— ऐं लृं इतिद्व्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—पुरश्चरणात् प्राक् तृतीयदिवसे क्षौरादिकं विधाय ततः प्रायश्चित्तांगतया विष्णुपूजाविष्णुतर्पणविष्णुश्राद्धहोमचांद्रायणादिव्रतं सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कुर्यात् । व्रताशक्तौ गोदानं द्रव्यदानं च कुर्यात् । यदि सर्वकर्मणा

१ उभावपि शिशू नैयायिकवेदांतिनौ भूत्वा विवादं कुर्वाते ॥ २ अर्ककलक्षं द्वादशलक्षम् ॥ ३ निर्वासा नग्नः ॥ ४ विशिखो मुक्तकेशः ॥ ५ कृष्णचतुर्दश्याम् ॥ ६ तंत्रांतरे-ऐं लृं-इति मंत्रः ॥

मशक्तिः ततः प्रायश्चित्तांगभूतपंचगव्यप्राशनं कुर्यात् ।ततः पुरश्चरणात् पूर्वदिने स्वदेहशुद्ध्यर्थं पुरश्चरणाधिकारप्राप्त्यर्थं चायुतगायत्रीजप कुर्यात् ॥ तथा च–देशकालौ संकीर्त्य ज्ञाताज्ञातपापक्षयार्थं करिष्यमाणश्रीसरस्वतीदेवीपुरश्चरणाधिकारार्थममुकमंत्रसिद्ध्यर्थं च गायत्र्ययुतजपमहं करिष्ये। इति संकल्प्य गायत्र्ययुतं जपेत् ॥ ततः चन्द्रतारादिबलान्विते सुमुहूर्ते विविक्ते देशे जपस्थानं प्रकल्प्य कूर्मशोधनं च कृत्वा कुशासने प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य मूलेन शिखां बद्ध्वा आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य श्रीसरस्वतीदेवीप्रीतये अमुकमंत्रसिद्ध्यर्थे अमुकसंख्यात्मकजपरूपपुरश्चरणमहं करिष्ये । इति संकल्प्य ततो भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठांतर्मातृकाबहिर्मातृकासृष्टिस्थितिसंहारमातृकान्यासं च सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कुर्यात् ॥ यदि सर्वन्यासाशक्तस्ततः प्रयोगोक्तन्यासादिकं कुर्यात्॥ तथा च–ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ हृदयाय नमः १ । ॐ शिरसे स्वाहा २ । ॐ शिखायै वषट् ३ । ॐ कवचाय हुं ४ । ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ॐ भ्रुवोः १ । ॐ नाभौ २ । ॐ गुह्ये ३ । ॐ वस्तौ ४ ॥ इति विन्यसेत् ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ ॐ रत्नकांतिनिभां देवीं ज्योत्स्नाजालविकाशिनीम् ॥ मुक्ताहारयुतां शुभ्रां शशिखंडाविभूषिताम् ॥१॥ बिभ्रतीं दशहस्तैश्च व्याख्यां वर्णस्य मालिकाम् ॥ अमृतेन तथा पूर्णं घटं च दिव्यपुस्तकम् ॥ २ ॥ दधतीं वामहस्तेन पीनस्तनभरान्विताम् ॥ मध्ये क्षीणां तथा स्वच्छां नानारत्नविभूषिताम् ॥ ३॥ एवं ध्यात्वा सर्वतोभद्रमंडले'मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति पीठदेवताः संपूज्य नवपीठशक्तीः पूजयेत्। तत्र क्रमः–पूर्वादिक्रमेण ॐ मेधायै नमः १ । ॐ प्रज्ञायै नमः २ । ॐ प्रभायै नमः ३ । ॐ विद्यायै नमः ४ । ॐ ज्ञानायै नमः ५ । ॐ धृत्यै नमः ६ । ॐ स्मृत्यै नमः ७ । ॐ बुद्ध्यै नमः ८ । मध्ये ॐ विद्येश्वर्यै नमः ९ । इति पीठशक्तीः पूजयेत् । ततः

स्वर्णादिपात्रे षट्कोणाष्टदलभूपुरं यंत्रं निर्माय अग्न्युत्तारणं कृत्वा 'ॐ वर्णाब्जपद्मासनाय नमः।' इति मंत्रेणासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पुनर्ध्यात्वा आवाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्॥ तत्र क्रमः—षट्कोणकेसरेषु अग्निकोणे ॐ आं हृदयाय नमः १। निर्ऋति० ॐ आं शिरसे स्वाहा २। वायव्ये ॐ आं शिखायै वषट् ३। ऐशान्ये ॐ आं कवचाय हुं ४ । पूज्यपूजकयोर्मध्ये ॐ आं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । देवीपश्चिमे ॐ आं अस्त्राय फट् ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पाजलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पाजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राची तदनुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च ॐ ब्राह्म्यै नमः १ । ॐ माहेश्वर्यै नमः २ । ॐ कौमार्यै नमः ३ । ॐ वैष्णव्यै नमः ४ । ॐ वाराह्यै नमः ५ । ॐ इन्द्राण्यै नमः ६ । ॐ चामुंडायै नमः ७ । ॐ महालक्ष्म्यै नमः ८ । इत्यष्टौ मातृकाः पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण ॐ लं इन्द्राय नमः १ । ॐ रं अग्नये नमः २ । ॐ मं यमाय नमः ३ । ॐ क्षं निर्ऋतये नमः ४ । ॐ वं वरुणाय नमः ५ । ॐ यं वायवे नमः ६ । ॐ कुं कुबेराय नमः ७ । ॐ हं ईशानाय नमः ८ । ईशानपूर्वयोर्मध्ये ॐ आँ ब्रह्मणे नमः ९ । निर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्ये ॐ ह्रीं अनंताय नमः १० ॥ इति दश दिक्पालान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततो भूपुरे इंद्रादिसमीपे ॐ वं वज्राय नमः १ । ॐ शं शक्तये नमः २ । ॐ दं दंडाय नमः ३ । ॐ खं खड्गाय नमः ४ । ॐ पां पाशाय नमः ५ । ॐ अं अंकुशाय नमः ६ । ॐ गं गदायै नमः ७ । ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ८ । ॐ पं पद्माय नमः ९ । ॐ चं चक्राय नमः १० । इति वज्राद्यायुधानि पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥४॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य स्तोत्रेण

सरस्वतीव्यक्षरमन्त्रपूजनम्।

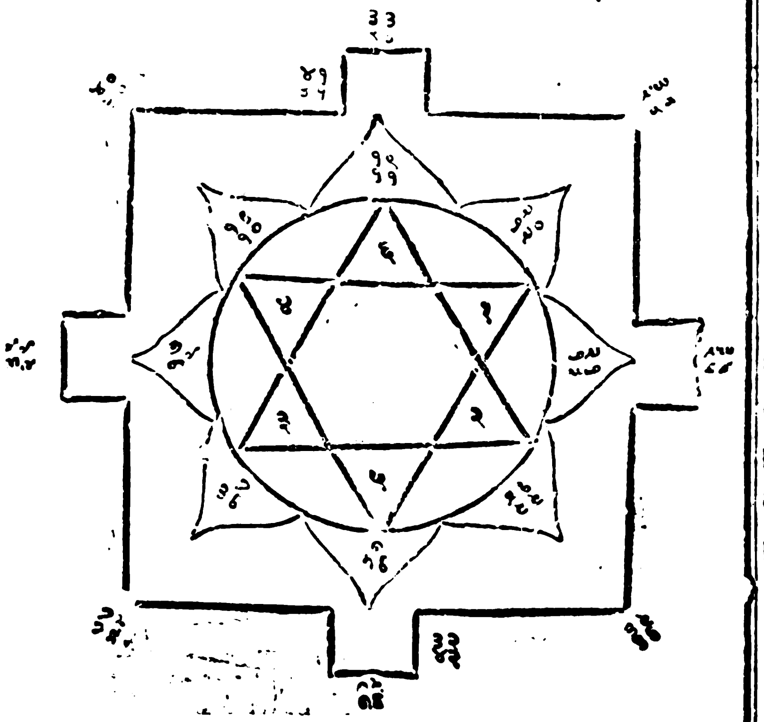


स्तुत्वा जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं द्वादशलक्षजपः । पायसान्नेन दशांशतो होमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि च कुर्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च— जपेद्द्वादशलक्षाणि मूकोऽपि वाक्पतिर्भवेत् ॥ कवित्वं लभते वाग्मी लक्षैर्द्वादशभिर्ध्रुवम् ॥ प्रातर्जप्त्वा सहस्रं तु पिबेद्ब्राह्मीं वचान्विताम् ॥ न विस्मरति मेधावी श्रुतान्वेदागमानपि ॥ इति प्रथमप्रयोगः ॥ १ ॥ कंठमात्रोदके स्थित्वा ध्यायेन्मार्तण्डमंडले ॥ ज्योतिःपुंजनिभां देवीं परिवारसमन्विताम् ॥ वराभययुतां हस्ते मुद्रापुस्तकधारिणीम् ॥ इति ध्यात्वा सहस्रेण षण्मासं विजितेंद्रियः ॥ मीमांसां प्राप्य वाक्सिद्धिं कवीनामग्रणीर्भवेत् ॥ इति द्वितीयप्रयोगः ॥ २ ॥ अथ योगं प्रवक्ष्यामि जाड्यनाशकरं परम् ॥ रात्रिशेषे समुत्थाय शुचिर्भूत्वा समाहितः ॥ शुद्धभावेन चात्मानं द्रव्यं च परिकल्पयेत् ॥ ततः पराशिवे नीत्वा सौधीं च प्रापयेत्ततः ॥ ऊर्द्ध्वग्रंथिं विनिर्भिद्य जिह्वां दीपस्वरूपिणीम् ॥ जीवस्वरूपशक्त्या तु प्रेरयंतीं परात्मिकाम् ॥ शब्दब्रह्मस्वरूपां च तां देवीं चिंतयाम्यहम् ॥ इति ध्यात्वा सहस्रेण जपेत्संवत्सरं यदि ॥ ततः संजायते मंत्री वाचस्पतिरिवापरः ॥ छंदोऽलंकारतर्कादिनानाशास्त्रार्थविद्भवेत् ॥ कवित्वे ज्ञानशक्त्या तु पांडित्यमाधिकं भवेत् ॥ इति तृतीयप्रयोगः ॥ ३ ॥ अथापरं प्रवक्ष्यामि प्रयोगं भुवि दुर्लभम् ॥ नाभिचक्रे स्थितां सौम्यां रक्ताकारां विचिंतयेत् ॥ क्षौमाबद्धनितंबां च रक्ताभरण

भूषिताम् ॥ पाशांकुशधरां दिव्यां वराभययुतां पुनः ॥ दृष्ट्या चामृतवर्षिण्या पूरयंतीं मनोरथान् ॥ एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षं मनुं यो विहितं ततः ॥ होमं कुर्यात्रिमध्वक्तरक्तोत्पलायुतैर्द्विज ॥ ततः संतर्पयेद्देवीं दुग्धयुक्तेन सर्पिषा ॥ पायसेन बलिं दद्याद्दधिपिष्टमधुप्लुतैः ॥ एवं ध्यात्वा विधानं तु साक्षाद्वैश्रवणो भवेत् ॥ सिद्धार्थैर्मधुरोपेतैर्हुत्वाविश्वं वशं नयेत् ॥ पद्महोमेन महतीं प्राप्नुयाच्छ्रियमूर्जिताम् ॥ देवीहृदयविद्याया नास्ति किंचित्सुदुर्ल्लभम् ॥ स्नेहभावेन संप्रोक्तं न देयं यस्य कस्यचित् ॥ एतत्ते कथितं गुह्यं विद्योत्पत्तेश्च कारणम् ॥ विष्णुना दत्तमस्मभ्यं मया तुभ्यं द्विजोत्तम ॥ सिद्धमंत्रो यदा मंत्री बालिशस्यापि मूर्द्धनि ॥ हस्तं दत्त्वा दिशेत्सोऽपि सौधीं वाचमनर्गलाम् ॥ इति स्वायंभुवमातृकामन्त्रे सारस्वतकल्पः समाप्तः ॥ अथ सरस्वतीदशाक्षरमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा—वद वद वाग्वादिनि स्वाहा। इति दशाक्षरो मंत्रः। अस्य मंत्रस्य कण्वऋषिः। विराट्छंदः। वाग्वादिनी देवता। मम सर्वेष्टसिद्ध्ये जपे विनियोगः। ॐ कण्वऋषये नमः शिरसि १। विराट्छंदसे नमः मुखे २। वागीश्वर्य्यै देवतायै नमः हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ वं नमः शिरसि १। ॐ दं नमः दक्षश्रवणे २। ॐ वं नमः वामश्रवणे ३। ॐ दं नमः दक्षनेत्रे ४। ॐ वां नमः वामनेत्रे ५। ॐ वां नमः दक्षिणनासापुटे ६। ॐ दिं नमः वामनासापुटे ७। ॐ निं नमः वदने ८। ॐ स्वां नमः लिंगे ९। ॐ हाँ नमः गुदे १० ॥ इति मंत्रवर्णन्यासः। ॐ आं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ आं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ आं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ आं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ आं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ आं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः ॥ ॐ आं हृदयाय नमः १। ॐ आं शिरसे स्वाहा २। ॐ आं शिखायै वषट् ३। ॐ आं कवचाय हुं ४। ॐ आं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ आं अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत् ॥ ॐ तरुणशकलमिन्दोर्बिभ्रती शुभ्रकांतिः कुचभरनमितांगी सन्निषण्णा सिताब्जे॥ निजकरकमलोद्यल्लेखनीपुस्तकश्रीः सकलविभवसिद्ध्यै पातु वाग्देवता नः॥१॥ इति ध्यायेत्।ततः सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति

पीठदेवताः संपूज्य नवपीठशक्तीः पूजयेत् । तद्यथा—पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु ॐ मेधायै नमः १। ॐ प्रज्ञायै नमः २ । ॐ प्रभायै नमः ३। ॐ विद्यायै नमः ४। ॐ ज्ञानायै नमः ५। ॐ धृत्यै नमः ६। ॐ स्मृत्यै नमः ७। ॐ बुद्ध्यै नमः ८। पीठमध्ये ॐ विद्येश्वर्यै नमः ९। इति पीठशक्तीः संपूजयेत्। ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रमग्न्युत्तारणपूर्वकम् ‘ ॐ वर्णपद्मासनाय नमः ’ इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं

सरस्वतीदशाक्षरमन्त्रपूजनम् ।



दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पुनर्ध्यानावाहनादि पुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्। तत्र क्रमः—षट्कोण केसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च ॐ आं हृदयाय नमः१। ॐ आं शिरसे स्वाहा २ ॐ आं शिखायै वषट् ३। ॐ आं कवचाय हुंम् ४। ॐ आं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ आं अस्त्राय फट् ६॥ इति षडंगानि पूजयेत्। ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य—ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीं प्रकल्प्य पूर्वादिक्रमेण ॐ योगायै नमः १ । ॐ सत्यायै नमः २। ॐ विमलायै नमः ३ । ॐ ज्ञानायै नमः ४। ॐ बुद्ध्यै नमः ५। ॐ स्मृत्यै नमः ६। ॐ मेधायै नमः ७। ॐ प्रज्ञायै नमः ८। इत्यष्टौ शक्तीः पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततोऽष्ट दलाग्रेषु ॐ ब्राह्म्यै नमः १। ॐ माहेश्वर्यै नमः २। ॐ कौमार्यै

नमः ३। ॐ वैष्णव्यै नमः ४। ॐ वाराह्यै नमः ५। ॐ इन्द्राण्यै नमः ६ । ॐ चामुण्डायै नमः ७। ॐ महालक्ष्म्यै नमः ८ ॥ इत्यष्टौ मातॄः पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥३॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् । इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात् । अस्य पुरश्चरणं दशलक्षजपः ।तद्दशांशेन होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्य्यात् । एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च—दशलक्षं जपेन्मंत्रं दशांशं जुहुयात्ततः ॥ पुंडरीकैः पयोऽभ्यक्तैस्तिलैर्वा मधुराप्लुतैः ॥ १ ॥ ब्रह्मचर्यरतः शुद्धः शुद्धदंतनखादिकः ॥ संस्मरन्सर्ववनिताः सततं देवताधिया ॥ २ ॥ कवित्वं लभते श्रीमान् मासैर्द्वादशभिर्ध्रुवम् ॥ कृत्वा तु मंत्रितं तोयं सहस्रं प्रत्यहं पिबेत् ॥ महाकविर्भवेन्मंत्री वत्सरेण न संशयः ॥ उरोमात्रे जले स्थित्वा ध्यायेन्मार्तंडमंडले ॥ ३ ॥ स्थितां देवीं प्रतिदिनं त्रिसहस्रं जपेन्मनुम् ॥ लभते मंडलात्सिद्धिं वाचामप्रतिमां भुवि ॥ ४ ॥ पलाशबिल्वकुसुमैर्जुहुयान्मधुरोक्षितैः ॥ ५ ॥ समिद्भिर्वा तदुत्थाभिर्यशः प्राप्नोति वाक्पतेः ॥ होमोऽयं सर्वसौभाग्यलक्ष्मीवश्यप्रदो भवेत् ॥६॥ राजवृक्षसमुद्भूतैः प्रसूनैर्मधुराप्लुतैः ॥ तत्समिद्भिश्च जुहुयात्कवित्वमतुलं भवेत् ॥ इत्थं दशाक्षरा प्रोक्ता सिद्ध्यै वाचमिच्छताम् ॥ ७ ॥ इति शारदातिलके सरस्वतीदशाक्षरमंत्रप्रयोगः

॥ अथ एकादशाक्षरसरस्वतीमंत्रप्रयोगः ॥ उक्तं च शारदातिलके ॥ मंत्रो यथा "—ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः" इत्येकादशाक्षरो मंत्रः । ॐ ॐ नमः ब्रह्मरंध्रे १ । ॐ ह्रीं नमः भ्रूमध्ये २ । ॐ ऐं नमः दक्षनेत्रे ३ । ॐ ह्रीं नमः वामनेत्रे ४ । ॐ ॐ नमः दक्षिणनासापुटे ५ । ॐ सं नमः वामनासापुटे ६ । ॐ रं नमः दक्षिणकर्णे ७ । ॐ स्वं नमः वामकर्णे ८ । ॐ त्यैं नमः मुखे ९ । ॐ नं नमः लिंगे १० । ॐ मं नमः गुदे ॥ ११ ॥ इति मंत्राक्षरन्यासः ॥ ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ ऐं तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ ऐं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ ऐं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ ऐं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ॐ ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति

करन्यासः ॥ ॐ ऐं हृदयाय नमः १ । ॐ ऐं शिरसे स्वाहा २ । ॐ ऐं शिखायै वषट् ३ । ॐ ऐं कवचाय हुम् ४ । ॐ ऐं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ ऐं अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत् ॥ ॐ वाणीं पूर्णनिशाकरोज्ज्वलमुखीं कर्पूरकुंदप्रभां चन्द्रार्धांकितमस्तकां निजकरैः संबिभ्रतीमादरात् ॥ वीणामक्षगुणां सुधाढ्यकलशं विद्यां च तुंगस्तनीं दिव्यै राभरणै विंभूषिततनुं हंसाधिरूढां भजे ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा सर्वतोभद्रमंडले पीठपूजां विधाय पूर्वोक्तपीठशक्तीः संपूज्य स्वर्णादिनिर्मितं यंत्र मग्न्युत्तारणपूर्वकमासनमंत्रेणासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पुनर्ध्यानावाहनादिपुष्पांतैरुपचारै संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तत्र क्रमः—देव्या दक्षिणे ॐ संस्कृतायै नमः १ । ॐ वाङ्मय्यै नमः २ । वामे ॐ प्राकृतायै नमः १ । ॐ वाग्मिन्यै नमः २ । इति संपूज्य ततः षट्कोणकेसरेष्वग्न्यादिक्रमेण अग्निकोणे ॐ ऐं हृदयाय नमः १ नैर्ऋत्ये ॐ ऐं शिरसे स्वाहा २ । वायव्ये ॐ ऐं शिखायै वषट् ३। ऐशान्ये ॐ ऐं कवचायहुम् ४ । पूज्यपूजकयोर्मध्ये ॐ ऐं नेत्र त्रयाय वौषट् ५ । देवीपश्चिमे ॐ ऐं अस्त्राय फट् ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य्य—ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची तदनुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ॐ प्रज्ञायै नमः १ । ॐ मेधायै नमः २ । ॐ श्रुत्यै नमः ३ । ॐ शक्त्यै नमः ४ । ॐ स्मृत्यै नमः ५ । ॐ वागीश्वर्य्यै नमः ६ । ॐ मत्यै नमः ७ । ॐ स्वस्त्यै नमः ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततोऽष्टदलाग्रेषु ॐ ब्राह्म्यै नमः १ । ॐ माहेश्वर्य्यै नमः २ । ॐ कौमार्य्यै नमः ३ । ॐ वैष्णव्यै नमः ४ । ॐ वाराह्यै नमः ५ । ॐ इन्द्राण्यै नमः ६ । ॐ चामुंडायै नमः ७ । ॐ महालक्ष्म्यै नमः ८ ॥ इत्यष्टौ मातृः पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादि

क्रमेण इन्द्रादीन्वज्रादींश्च पूर्वोक्तविधिना पूजयेत् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनांतं संपूज्य जपं कुर्यात्॥अस्य पुरश्चरणं द्वादशलक्षजपः। जपशतांशेन सितांबुजैर्नागचंपकपुष्पैर्वा जुहुयात्। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कर्यात्। एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति। सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च–जपेद्द्वादशलक्षाणि तत्सहस्रं सितांबुजैः ॥ नागचंपकपुष्पैर्वा जुहुयात्साधकोत्तमः ॥ १ ॥ इति संपूजयेद्देवीं साक्षाद्वाग्वल्लभो भवेत् ॥ दशाक्षरीसमुक्तानि कर्माण्यत्रापि साधकः ॥ २ ॥ इत्येकादशाक्षरः सरस्वतीमंत्रप्रयोगः ॥ अथैकादशाक्षरद्वितीयसरस्वतीमंत्रप्रयोगः ॥शारदायाम्॥ मंत्रो यथा–"ऐं वाचस्पतेऽमृते प्लवः प्लवः।" इत्येकादशाक्षरो द्वितीयो मंत्रः। ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ वाचस्पते तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ अमृते मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ प्लव अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ प्लवः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। इति करन्यासः ॥ ॐ ऐं हृदयाय नमः १। ॐ वाचस्पते शिरसे स्वाहा २। ॐ अमृते शिखायै वषट् ३। ॐ प्लवः कवचाय हुं ४। ॐ प्लव अस्त्राय फट् ५ ॥ इति नेत्रहीनपंचांगन्यासः[1] ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत्। ॐ आसीना कमले करैर्जपवटीं पद्मद्वयं पुस्तकं बिभ्राणा तरुणेन्दुबद्धमुकुटा मुक्तेन्दुकुंदप्रभा ॥ भालोन्मीलितलोचना कुचभराक्रांता भवद्भूतये भूयाद्वागधिदेवता मुनिगणैरासेव्यमानाऽनिशम् ॥ १ ॥ इति ध्यायेत्। अस्य पूजादिकं सर्वं पूर्ववत्। अस्य पुरश्चरणमेकादशलक्षजपः। तथा च–रुद्रलक्षं जपेन्मंत्रं दशांशं जुहुयाद्घृतैः ॥ पलाशकुसुमैर्हुत्वा परां सिद्धिमवाप्नुयात् ॥ १ ॥ कदंबकुसुमैस्तद्वत्फलैः श्रीवृक्षसंभवैः ॥ अचिराच्छ्रियमाप्नोति वाचां कुंदसमुद्भवैः ॥ २ ॥ नंद्यावर्तप्रसूनैर्वा हुत्वा वाग्वल्लभो भवेत् ॥ ब्राह्मीरसे वचाकल्के कपिलाज्यं पिबेज्जपन् ॥ ३ ॥ पिबेद्दिनादौ तन्नित्यं सर्वशास्त्रार्थविद्भवेत् ॥ अनया विद्यया जप्तब्राह्मीपत्रप्रभक्षणात् ॥ ४ ॥ न विस्मरति मेधावी श्रुत्वा वेदागमान्पुनः ॥ बहुना किमियं विद्या जपतां कामदो मणिः ॥ ५ ॥ इत्येकादशाक्षरद्वितीय

१ पंचांगानि मनोर्यत्र तत्र नेत्रमंत्रं त्यजेत्।

सरस्वतीमंत्रप्रयोगः ॥ अथ सरस्वतीमंत्रः ॥ प्राकृतग्रंथे " ॐ ह्रीं श्रीं ऐं वाग्वादिनि भगवति अर्हन्मुखनिवासिनि सरस्वति ममास्ये प्रकाशं कुरु कुरु स्वाहा ऐं नमः" इति ॥ अस्य प्रयोगः॥ दीपमालिकारात्रौ स्नानं कृत्वा श्वेतवस्त्रं परिधाय उदङ्मुख उपविश्य सरस्वत्याः श्वेतमूर्तिं तंडुलोपरि संस्थाप्य पंचोपचारैः संपूज्य श्वेतस्फटिकमालामादाय द्वादशसहस्रजपं कर्यात् तेन देवी प्रसन्ना भवति जाड्यं नाशयति विद्यां ददातीति ॥ अथ एकाक्षरसरस्वतीमंत्रविधानम् ॥ मंत्रो यथा-(ऐं) इति स्वरूपम् ॥ अस्य विधानम्–सूर्यग्रहे मधुना कुशमूलेन जिह्वायां (ऐं) इति बीजं विलिख्य तदवलिह्य स्पर्शादारभ्य मोक्षपर्यंतं जपं कुर्यात् । पुनः प्रतिदिनमब्दपर्यंतं तदेकादशशतजपात् देवी प्रसन्ना भवति जाड्यं नाशयति विद्यामवश्यमेव ददातीति ॥ अथ विद्याप्रसंगात् कृष्णादेवी (तारिणी) महाकल्पः ॥ तारिणीतंत्रे–ईश्वर उवाच ॥ श्रूयतां शैलतनये जाड्यनाशकरी परा ॥ चतुर्वर्गफला विद्या मंत्रसिद्धिप्रदायिका ॥ १ ॥ नवाक्षरो मनुर्देवि तारिण्याः समुदीरितः ॥ इयमेव महाविद्या स्वर्गे मर्त्ये च दुर्लभा ॥ २ ॥ मंत्रो यथा– क्रीं क्लीं कृष्णादेवि ह्रीं क्रीं ऐं इति नवाक्षरो मंत्रः । "अस्य विधानम्–प्रथमं जलमानीय पादप्रक्षालनं कृत्वा द्विराचम्य मूलेन शिखां बद्ध्वा कुशासने प्राङ्मुख उदङ्मुखो वोपविश्यास्त्रमंत्रेण पुष्पं विशोध्य गुरुं स्मृत्वा भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठांतर्मातृकाबाहिर्मातृकासृष्टिस्थितिसंहारमातृकान्यासांश्च सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कृत्वा मूलेन प्राणायामत्रयं कुर्यात् । ततः ॐ अस्य श्रीतारिणीमंत्रस्य शक्तिर्ऋषिः । बृहती छंदः । तारिणी देवता । ह्रीं बीजम् । ऐं शक्तिः । मम श्रीतारिणीप्रसादतो विद्याप्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः । ॐ शक्तिऋषये नमः शिरसि १ । बृहतीच्छंदसे नमः मुखे २ । तारणीदेवतायै नमः हृदि ३ । ह्रीं बीजाय नमः लिंगे ४ । ऐं शक्तये नमः सर्वांगे ५ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ । ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ह्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ । इति करन्यासः ॥ ॐ ह्रीं हृदयाय नमः १ । ह्रीं शिरसे स्वाहा २ ।

ह्रीं शिखायै वषट् ३। ह्रीं कवचाय हुं ४। ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ह्रीं अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ॐ कल्पवृक्षाय नमः पूर्वे १। ॐ मणिपीठाय नमः उत्तरे २। ॐ शवाय नमः पश्चिमे ३ ॐ कृपालाय नमः दक्षिणे ४ ॥ इति दिङ्न्यासः ॥ ततो हृदि कमले हस्तं दत्त्वा ॐ दुर्गायै नमः १। ॐ जयायै नमः २। ॐ मेधायै नमः ३। ॐ विजयायै नमः ४। ॐ सुप्रभायै नमः ५। ॐ काल्यै नमः ६। ॐ गौर्यै नमः ७। ॐ शिवायै नमः ८ ॥ इत्यष्टौ हृत्पद्माष्टदले न्यसेत्। ततः ॐ योनिर्बीजायै नमः केशांते दक्षिणे भागे १। ॐ योनिविश्वायै नमः केशांते वामभागे २। ॐ योनिरूपायै नमः नासिकामूले ३। ॐ योनिकामायै नमः दक्षिणनेत्रे ४। ॐ योनिहारायै नमः वामनेत्रे ५। ॐ योनिरूपायै नमः ओष्ठयोः ६। ॐ योनिच्छायायै नमः दक्षिणमुखकोणे ७। ॐ योनिकामायै नमः वाममुखकोणे ८। ॐ योनिरूपायै नमः चिबुके ९ ॐ योनिचिंतायै नमः दक्षबाहुमूले १०। ॐ योनिनित्यायै नमः वामबाहुमूले ११। ॐ योनिरूपायै नमः हृदये १२। ॐ योनिसिद्धायै नमः दक्षिणस्तने १३। ॐ योनिबुद्धायै नमः वामस्तने १४ ॥ इति योनिन्यासः ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा स्वदेहे पीठं प्रकल्प्य स्वस्थचित्तेन देवीं ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्—ॐ कृष्णां लम्बोदरीं भीमां नागकुंडलशोभिताम् ॥ रक्तमुखीं ललजिह्वां रक्तांबरधरां कटौ ॥ १ ॥ पीनोन्नतस्तनयुगां महानागेन वेष्टिताम् ॥ शवस्योपरि देवेशीं तस्योपरि कपालके ॥ २ ॥ नासाग्रध्याननिरतां महाघोरां वरप्रदाम् ॥ चतुर्भुजां दीर्घकेशीं दक्षिणेनोर्द्ध्वबाहुना ॥ ३ ॥ बिभ्रतीं नलिनीमेकां वामोर्द्ध्वे पानपात्रकम् ॥ वराभयधरां देवीं मध्यस्थां दक्षवामयोः ॥ ४ ॥ पिबंतीं रौधिरीं धारां पानपात्रे सदा शिवे ॥ सर्वसिद्धिप्रदां देवीं नित्यां गिरिनिवासिनीम् ॥ ५ ॥ लोचनत्रयसंयुक्तां नागयज्ञो[illegible]सिनीम् ॥ दीर्घास्यां दीर्घजंघां तु दीर्घांगीं दीर्घजिह्विकाम् ॥ ६ ॥ चन्द्रसूर्याग्निभेदेन लोचनत्रयसंयुताम् ॥ शत्रुनाशकरीं देवीं [illegible] वरप्रदाम् ॥ ७ ॥ व्याघ्रचर्मशिरोबद्धां जगत्त्रयविभाविनीम् ॥ साधकानां सुखं कर्त्रीं सर्वलोकभयंकरीम् ॥ ८ ॥ [illegible]

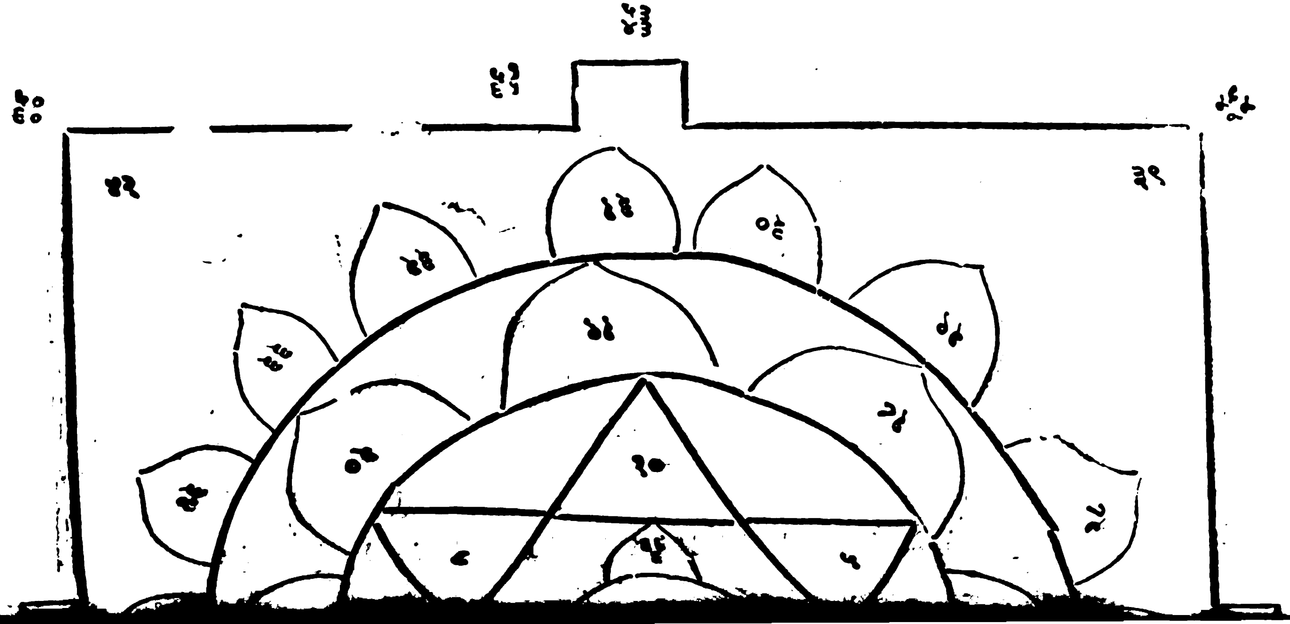
...देवीं तारिणीं प्रणमाम्यहम् ॥ ९ ॥ इति [illegible] ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ ह्रीं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तद्यथा—पूर्वादिक्रमेण ॐ मेधायै नमः १ । ॐ प्रज्ञायै नमः २ । ॐ प्रभायै नमः ३ । ॐ विद्यायै नमः ४ ।ॐ धियै नमः ५ ।ॐ धृत्यै नमः ६ । ॐ स्मृत्यै नमः ७। ॐ बुद्ध्यै नमः ८ । मध्ये ॐ विश्वेश्वर्यै नमः ९ ॥ इति पीठशक्तीः पूजयेत् । ततः ताम्रपत्रे गृहीत्वा घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य तदुपरि रक्तचंदनेन चतुर्दलं विलिख्य तद्बाह्ये षट्कोणाष्टदलं तद्बाह्ये षोडशारं तद्बाह्ये भूपुरं यंत्रं निर्माय 'ह्रीं तारिणीयोगपीठात्मने नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञया आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तथा च—पुष्पांजलिमादाय—ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ॥ तारिण्यनुज्ञां त्वं देहि परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् । आज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां समारभेत । ततः पूज्यपूजकयोरंतराले प्राची । तदनुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण चतुर्दलेषु । ऐं नमः । ऐं श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र १ । क्लीं नमः । क्लीं श्रीपा० २ । ह्रीं नमः । ह्रीं श्रीपा० ३ । क्लीं क्लीं कृष्णादेव्यै नमः । क्लीं क्लीं कृष्णादेवीश्रीपा० ४ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य—ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ ततः षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च ह्रीं हृदयाय नमः । हृदयश्रीपा० १ । ह्रीं शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० २ । ह्रीं शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ३ । ह्रीं कवचाय हुं । कवचश्रीपा० ४ । ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । ह्रीं अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ ॥ इति षडंगानि पूजयित्वा पुष्पांजलिं

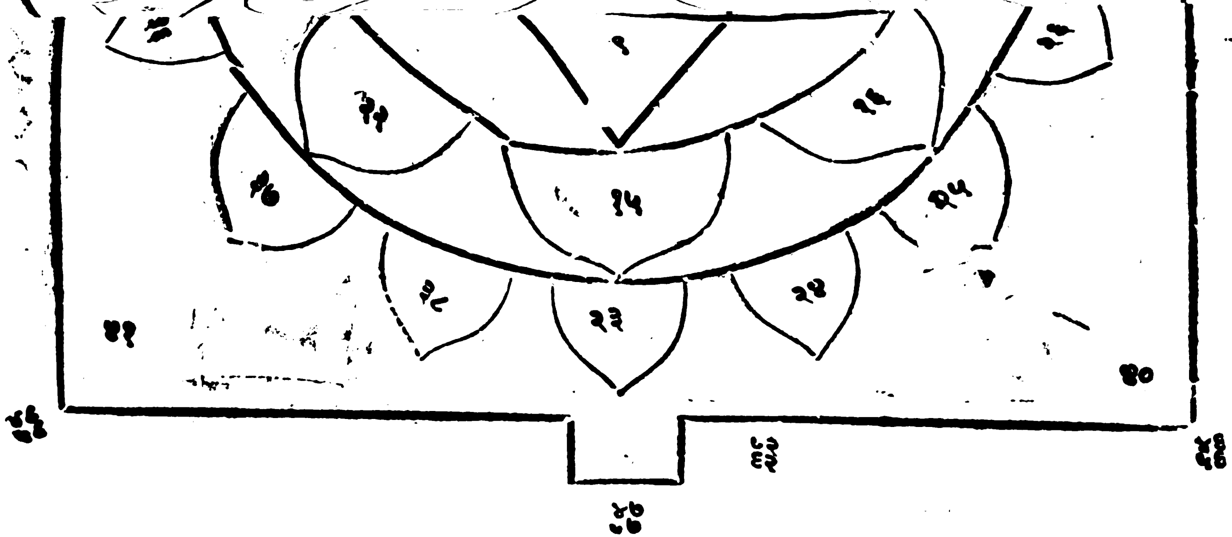
दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततश्चतुर्दलाग्रेषु प्राच्यादिचतुर्दिक्षु ॐ क्षेत्रपालाय नमः । क्षेत्रपालश्रीपा० १ । ॐ भैरवाय नमः । भैरवश्रीपा० २ । ॐ गणपतये नमः । गणपतिश्रीपा० ३ । ॐ सहांबिकायै नमः । सहांबिकाश्रीपा० ४ ॥ इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततोऽष्टदलेषु प्राच्यादिक्रमेण वामावर्तेन च । ॐ अणिमायै नमः । अणिमाश्रीपा० १ । ॐ अनंगायै नमः । अनंगाश्रीपा० २ । ॐ मदनायै नमः । मदनाश्रीपा० ३ । ॐ लघिमायै नमः । लघिमाश्रीपा० ४ । ॐ मदनातुरायै नमः । मदनातुराश्रीपा० ५ । ॐ अनंगकुसुमायै नमः । अनंगकुसुमाश्रीपा० ६ । ॐ अष्टकर्णिकायै नमः । अष्टकर्णिकाश्रीपा० ७ । ॐ कपालिकायै नमः । कपालिकाश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ योगिनीः संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥ ४ ॥ ततः षोडशाब्जे प्राच्यादिवामावर्तेन । ॐ सुतदायै नमः । सुतदाश्रीपा० १ ॐ मोक्षदायै नमः । मोक्षदाश्रीपा० २ । ॐ भक्तिदायै नमः । भक्तिदाश्रीपा० ३ । ॐ भोगदायै नमः । भोगदाश्रीपा० ४ । ॐ मुक्तिदायै नमः । मुक्तिदाश्रीपा० ५ । ॐ सिद्धिदायै नमः । सिद्धिदाश्रीपा० ६ । ॐ कामदायै नमः । कामदाश्रीपा० ७ । ॐ धनदायै नमः । धनदाश्रीपा० ८ । ॐ क्षेमदायै नमः । क्षेमदाश्रीपा० ९ । ॐ शिवदायै नमः शिवदाश्रीपा० १० । ॐ परदायै नमः । परदाश्रीपा० ११ । ॐ आत्मदायै नमः । आत्मदाश्रीपा० १२ । ॐ योगदायै नमः । योगदाश्रीपा० १३ । ॐ भाग्यदायै नमः । भाग्यदाश्रीपा० १४ । ॐ भुक्तिदायै नमः । भुक्तिदाश्रीपा० १५ । ॐ सर्वसिद्धिदायै नमः । सर्वसिद्धिदाश्रीपा० १६ । इति परिचारिकाः पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति पंचमावरणम् ॥ ५ ॥ ततो भुपुराभ्यंतरे पूर्वादिचतुर्दिक्षु ॐ अणिमाद्यष्टसिद्धिभ्यो नमः १ । ॐ अग्निदशकलायै नमः २ । ॐ षोडशचन्द्रकलायै नमः ३ । ॐ द्वादशसूर्यकलायै नमः । ४ इति संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति षष्ठावरणम् ॥ ६ ॥ ततो भूपुराद्बहिः इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा देव्युपरि पुष्पांजलिं च

...। ॐ शिवदायै नमः । शिवदा... १० । ॐ परदायै नमः । परदाश्रीपा० ११ । ॐ आत्मदायै नमः । आत्मदा
श्रीपा० १२ । ॐ योगदायै नमः । योगदा... १३ । ॐ भाग्यदायै नमः । भाग्यदाश्रीपा० १४ । ॐ भुक्तिदायै नमः ।
भुक्तिदाश्रीपा० १५ । ॐ सर्वसिद्धिदायै न... सर्वसिद्धिदाश्रीपा० १६ । इति परिवारिकाः पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥
इति पंचमावरणम् ॥ ५ ॥ ततो भूपुरान्तर्गते... चतुर्दिक्षु ॐ अणिमासिद्धिभ्यो नमः १ । ...

दत्त्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्यात् । अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपः । तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् । एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च—पुष्पैर्बहुविधैश्चैव रक्तचंदनचर्चितैः ॥ रक्तपुष्पे महादेवि नानागंधसमन्वितैः ॥ १ ॥ बिल्वपत्रैस्तथा गंधैर्जपापुष्पैर्विशेषतः ॥ श्वेतरक्तपरागैश्च करवीरैर्मरुबकैः ॥ २ ॥ बिल्वपुष्पैः कुंदपुष्पैर्लवंगैश्च सुशोभनैः ॥ अपराजितपुष्पैश्च चंपकैः केशरैस्तथा ॥ ३ ॥ एभिः पुष्पैर्महादेवि पजयेन्नित्यतारिणीम् ॥ मालतीबकपुष्पैश्च सदूर्वैश्चार्चयेत्तथा ॥ ४ ॥ कदंबैः श्वेतकुसुमैर्बकुलैः कांचनैस्तथा ॥ एवं संपूजयित्वा तु एभिर्द्रव्यैर्महेश्वरीम् ॥ ५ ॥ लक्षमेकं जपेन्मंत्रं हविष्याशी दिवा शुचिः ॥ ततः सिद्धे मनौ काम्यान्प्रयोगान्साधयेन्निजान् ॥ ६ ॥ अष्टसिद्धिप्रदा देवी चतुर्वर्गफलप्रदा ॥ अनया सदृशी विद्या अनेन सदृशो मनुः ॥ ७ ॥ अनया सदृशी सिद्धिर्न भूता न भविष्यति ॥ यो विद्यां लभते देवि किमु तस्य न जायते ॥ ८ ॥ अचिराल्लभते वर्णी गद्यपद्यप्रमोदिनीम् ॥ ज्ञानमात्रेण विद्यायाः क्षिप्रं स च कविर्भवेत् ॥ ९ ॥ विना छंदो विना शिक्षां विनाभ्यासेन पार्वति ॥ विना ज्ञानं विना यत्नं विनालापं कवेरपि ॥ १० ॥ जिह्वायां जायते तस्य कवित्वं रसनिर्मितम् ॥ ११ इति तारिणीमहाकल्पः ॥

कृष्णदेवी (तारणी) पूजनयन्त्रम् ।





अथ कात्यायनीमहाकल्पः ॥ तंत्रसारे—भगवानुवाच ॥ इति गुह्यतमं मंत्रं पृष्टवानसि पार्वति ॥ भक्तिभावेन ते देवि कथयामि शुचिस्मिते ॥ १ ॥ प्रसन्नतां यदा याति देवी कात्यायनी तथा ॥ कवितामतुलैश्वर्यं ददाति पदमुत्तमम् ॥ २ ॥ स्त्रीणामाकर्षणं चैव मारणोच्चाटने रिपोः ॥ नृपाणां वश्यता चैव जायते च तथा प्रिये ॥ ३ ॥ चिंतामणिरिति ख्यातो मया चापि विचिंत्यते ॥ क्षात्त्रियेषु यथा रामो देवेषु च पुरंदरः ॥ ४ ॥ पतंगेषु यथा तार्क्ष्यः क्रूरकार्ये यथा शनिः ॥ शकुंतेषु यथा श्येनो मंत्रज्ञो बलवांस्तथा ॥ इति ते परमं गुह्यं संक्षेपात्कथितं मया ॥ ५ ॥ मंत्रो यथा—'ॐ ह्रीं कात्यायनि स्वाहा' इत्यष्टाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अस्य कात्यायनीमंत्रस्य कपिलो मुनिः। गायत्री छंदः। चंडिका कात्यायनी देवता। ह्रीं श्रीं बीजम्। स्वाहा शक्तिः। मम सर्वेष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥ ॐ कपिलमुनये नमः शिरसि १ ॥ गायत्रीच्छंदसे नमः मुखे २ ॥ चण्डिकाकात्यायनीदेवतायै नमः हृदि ३ ॥ ह्रीं श्रीं बीजाय नमः गुह्ये ४ ॥ स्वाहाशक्तये नमः पादयोः ५ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ एवमेव हृदयादिषडंगन्यासं कुर्यात् ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ ॐ सव्यपादसरोजेनालंकृतोरुमृगाधिपाम् ॥ वामपादाग्रदलितमहिषासुरनिर्भराम् ॥ ६ ॥ सुप्रसन्नां सुवदनां चारुनेत्रत्रयान्विताम् ॥ हारनूपुरकेयूरजटामुकुटमंडिताम् ॥ ७ ॥ विचित्रपट्टवसनामर्द्धचन्द्रविभूषिताम् ॥ खड्गखेटकवज्राणि शूलं च विशिखं तथा ॥ ८ ॥ धारयंतीं धनुः पाशं शंखघंटे सरोरुहम् ॥ बाहुभिर्ललितैर्देवि कोटिचन्द्रसमप्रभाम् ॥ ९ ॥ समाहृतैर्दिविषदैर्वैराकाशसंस्थितैः ॥ स्तूयमानां मोदमानैर्लोकपालादिभिः सदा ॥ १० ॥ इति ध्यायेत् ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति पीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तद्यथा—पूर्वादिक्रमेण ॥ ॐ प्रभायै नमः १ ॥ ॐ मायायै नमः २ ॥ ॐ जयायै नमः ३ ॥ ॐ सूक्ष्मायै नमः ४ ॥ ॐ विशुद्धायै

नमः ५ ॥ ॐ नांदिन्यै नमः ६ ॥ ॐ सुप्रभायै नमः ७ ॐ विजयायै नमः ८ ॥ मध्ये ॥ ॐ सर्वसिद्धिदायै नमः ९ ॥ इति नव पीठशक्तीः संपूज्य ततस्ताम्रादिपात्रे रक्तचन्दनेन यंत्रं विलिख्य 'ॐ आधारशक्तिकात्यायन्यै नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्यावाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तत्र क्रमः—षट्कोणकेसरेषु ॥ अग्निकोणे ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः १ ॥ निर्ऋति० ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा २ ॥ वायु० ह्रीं श्रीं शिखायै वषट् ३ ॥ ईशान० ह्रीं श्रीं कवचाय हुं ४ ॥ देवीपूजकयोर्मध्ये ह्रीं श्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ ॥ देवीपश्चिमे ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट् ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततो भूपुराभ्यंतरे पूयपूजकयोर्मध्ये प्राचीं प्रकल्प्य प्राच्यादिचतुर्दिक्षु वामावर्तेन च ॐ डाकिन्यै नमः १ ॥ ॐ योगिन्यै नमः २ ॥ ॐ खेचर्यै नमः ३ ॥ ॐ शाकिन्यै नमः ४ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततो भूपुराद्बहिः इन्द्रादिदशदिग्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयेत् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनांतं संपूज्य जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः । तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च—लक्षमेकं जपेन्मंत्रं दशांशं जुहुयात्ततः ॥ मंत्रोऽयं चिंतितो देवि सभायां पुरतो यदि ॥ ११ ॥ कोटिसूर्यप्रतीकाशो दृश्यते वादिभिस्तथा ॥ पलायंते महादेवि साध्वसेन क्षणात्ततः ॥ १२ ॥ कार्तिकस्य सिते पक्षे नवम्यामारभेज्जपम् ॥ सहस्रं प्रत्यहं कृत्वा संप्राप्य नवमीं सिताम् ॥ १३ ॥ विजयं खड्गमादाय पूजयित्वा यथाविधि ॥ अर्द्धरात्रे बलिं दत्वा प्रातर्यात्रां समाचरेत् ॥ १४ ॥ रणभूमिं समासाद्य सहस्रं प्रजपेन्मनुम् ॥ तं दृष्ट्वा पुरुषं देवि हृत्क्षोभो जायते रिपोः ॥ १५ ॥ सदूतं यममायांतं मन्यमाना नराधिपाः ॥ पलायंते महादेवि नात्र कार्या विचारणा ॥ १६ ॥ शुक्लांबरधरो मौनी ब्रह्मचारिव्रते स्थितः ॥ शुक्लवर्णां महादेवीं ध्यात्वा शुक्लविभूषणाम् ॥ १७ ॥ सहस्रं मासमेकं तु जपेन्नित्यं यथाविधि ॥ मालतीबकुलैः कुंदैर्मंत्री मधुरसंप्लुतैः ॥ ॥ १८ ॥ सहस्रत्रितयं हुत्वा वागीशो जायतेऽचिरात् ॥ हेलया कवितां देवि विशदां कुरुते द्रुतम् ॥ १९ ॥ जपं या करुते नित्यं

शतशो वत्सरावधि ॥ वंध्यापि लभते पुत्रं कार्तिकेयमिवापरम् ॥ २० ॥ दुर्भगा च भवेत्पत्युः सुभगाऽतिमनोरमा ॥ रूपं विचिंत्य पूर्वोक्तं लक्षं जप्त्वायुतं ततः ॥ नीलोत्पलैः सरोजैर्वा हुत्वा वैश्रवणायते ॥ २१ ॥ अन्यच्च–व्याघ्रचर्मपरीधानां मुंडमालाविभूषिताम् ॥ रक्तवर्तुलभीमाक्षीं जिह्वया लीलयासुरान् ॥ २२ ॥ चर्वयंतीं महाकालीं कालरात्रिमिवापराम् ॥ क्षोभयतीं जगत्सर्वं ससुरासुरपर्वतम् ॥ २३ ॥ एवं ध्यत्वा जपेद्देवि श्मशाने वा चतुष्पथे ॥ सप्ताहं विशसं कृत्वा व्रतस्थः स्थिरमानसः ॥ २४ ॥ जपेद्यो नियतं देवि स रिपून्नाशयेद्ध्रुवम् ॥ अनेनैव विधानेन बलिं दद्याच्चतुष्पथे ॥ २५ ॥ दग्धं मत्स्यं च सक्त्वन्नं पिंडं कृत्वा समाहितः ॥ आममांसं हारिद्राक्तं यं विचिंत्य प्रदापयेत् ॥ २६ ॥ सप्ताहाल्लभते शत्रुर्यमसद्म न संशयः ॥ हरिर्वा शंकरो वापि न शक्तो रक्षितुं क्वचित् ॥ २७ ॥ बलिमंत्रो यथा–"ह्रीं ह्रीं चौं चौं कालिके खादय २ वशीकुरु २ शत्रुं मारय २ स्वाहा" इति ॥ अंगारकदिने चैव निंदितासु तिथिष्वपि ॥ पूजितं खड्गमादाय निशीथे बलिमाहरेत् ॥ २८ ॥ प्रहारशोणितं चास्य दद्याद्देव्यै यथाविधि ॥ अच्छेद्याभेदकायः स्याद्रिपूणां नात्र संशयः ॥ २९ ॥ इति कात्यायनीमहाकल्पः ॥ तारापटलं समाप्तम् ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ ताराकवचप्रारंभः ॥ ईश्वर उवाच ॥ कोटितंत्रेषु गोप्या हि विद्यातिभयमोचिनी ॥ दिव्यं हि कवचं तस्याः शृणुष्व सर्वकामदम् ॥ १ ॥ अस्य ताराकवचस्य अक्षोभ्य ऋषिः । त्रिष्टुप् छंदः । भगवती तारा देवता । सर्वमंत्रसिद्धिसमृद्धये जपे विनियोगः॥ प्रणवो मे शिरः पातु ब्रह्मरूपा महेश्वरी ॥ ललाटे पातु ह्रींकारो बीजरूपा महेश्वरी ॥२ ॥ स्त्रींकारो वदने नित्यं लज्जारूपा महेश्वरी ॥ हूँकारः पातु हृदये भवानीरूपशक्तिधृक् ॥ ३ ॥ फट्कारः पातु सर्वांगे सर्वसिद्धिफलप्रदा ॥ खर्वा मां पातु देवेशी गंडयुग्मे भयापहा ॥ ४ ॥ निम्नोदरी सदा स्कंधयुग्मे पातु महेश्वरी ॥ व्याघ्रचर्मावृता कट्यां पातु देवी शिवप्रिया ॥ ५ ॥ पीनोन्नतस्तनी पातु पार्श्वयुग्मे महेश्वरी ॥ रक्तवर्तुलनेत्रा च कटिदेशे सदाऽवतु ॥ ६ ॥ ललजिह्वा सदा पातु नाभौ मां भुवनेश्वरी ॥ करालास्या सदा पातु लिंगे देवी हरप्रिया ॥ ७ ॥ पिंगोग्रैकजटा पातु जंघायां विघ्ननाशिनी ॥ प्रेतखर्परभृद्देवी जानुचक्रे महेश्वरी ॥

॥ ८ ॥ नीलवर्णा सदा पातु जानुनी सर्वदा मम ॥ नागकुंडलधर्त्री च पातु पादयुगे ततः ॥ ९ ॥ नागहारधरा देवी सर्वांगं पातु सर्वदा ॥ नागकंकधरा देवी पातु प्रांतरदेशतः ॥ १० ॥ चतुर्भुजा सदा पातु गमने शत्रुनाशिनी ॥ खड्गहस्ता महादेवी श्रवणे पातु सर्वदा ॥ ११ ॥ नीलांबरधरा देवी पातु मां विघ्ननाशिनी ॥ कर्त्रिहस्ता सदा पातु विवादे शत्रुमध्यतः ॥ १२ ॥ ब्रह्मरूपधरा देवी संग्रामे पातु सर्वदा ॥ नागकंकणधर्त्री च भोजने पातु सर्वदा ॥ १३ ॥ शवकर्णा महादेवी शयने पातु सर्वदा ॥ वीरासनधरा देवी निद्रायां पातु सर्वदा ॥ १४ ॥ धनुर्बाणधरा देवी पातु मां विघ्नसंकुले ॥ नागांचितकटी पातु देवी मां सर्वकर्मसु ॥ १५ ॥ छिन्नमुण्डधरा देवी कानने पातु सर्वदा ॥ चितामध्यस्थिता देवी मारणे पातु सर्वदा ॥ १६ ॥ द्वीपिचर्मधरा देवी पुत्रदारधनादिषु ॥ अलंकारान्विता देवी पातु मां हरवल्लभा ॥ १७ ॥ रक्ष रक्ष नदीकुंजे हूंहूंफट्सुसमन्विते ॥ बीजरूपा महादेवी पर्वते पातु सर्वदा ॥ ॥ १८ ॥ मणिभृद्वज्रिणी देवी महाप्रतिसरे तथा ॥ रक्ष रक्ष सदा हूं हूं ॐ ह्रीं स्वाहा महेश्वरी ॥ १९ ॥ पुष्पकेतुरजार्हेति कानने पातु सर्वदा ॥ ॐ ह्रीं वज्रपुष्पं हुं फट् प्रांतरे सर्वकामदा ॥ २० ॥ ॐ पुष्पे पुष्पे महापुष्पे पातु पुत्रान्महेश्वरी ॥ हूं स्वाहा शक्तिसंयुक्ता दारान् रक्षतु सर्वदा ॥ २१ ॥ ॐ आं हूं स्वाहा महेशानी पातु द्यूते हरप्रिया ॥ ॐ ह्रीं सर्वविघ्नोत्सारिणी देवी विघ्नान्मां सदाऽवतु ॥ २२ ॥ ॐ पवित्रवज्रभूमे हुंफट्स्वाहासमन्विता ॥ पूरिका पातु मां देवी सर्वविघ्नविनाशिनी ॥ २३ ॥ ॐ आः सुरेखे वज्ररेखे हुंफट्स्वाहासमन्विता ॥ पाताले पातु सा देवी लाकिनी नामसंज्ञिका ॥ २४ ॥ ह्रींकारी पातु मां पूर्वे शक्तिरूपा महेश्वरी ॥ स्त्रींकारी पातु देवेशी वधूरूपा महेश्वरी ॥ २५ ॥ हूंस्वरूपा महादेवी पातु मां क्रोधरूपिणी ॥ फट्स्वरूपा महामाया उत्तरे पातु सर्वदा ॥ २६ ॥ पश्चिमे पातु मां देवी फट्स्वरूपा हरप्रिया ॥ मध्ये मां पातु देवेशी हूंस्वरूपा नगात्मजा ॥ २७ ॥ नीलवर्णा सदा पातु सर्वतो वाग्भवा सदा ॥ भवानी पातु भवने सर्वैश्वर्यप्रदायिनी ॥ २८ ॥ विद्यादानरता देवी वक्त्रे नीलसरस्वती ॥ शास्त्रे वादे च संग्रामे जले च विषमे गिरौ ॥ २९ ॥ भीमरूपा सदा पातु श्मशाने भयनाशिनी ॥ भूतप्रेतालये घोरे दुर्गमा श्रीघनाऽवतु ॥

॥ ३० ॥ पातु नित्यं महेशानी सर्वत्र शिवदूतिका ॥ कवचस्य च माहात्म्यं नाहं वर्षशतैरपि ॥ ३१ ॥ शक्नोमि गदितुं देवि भवेत्तस्य फलं च यत् ॥ पुत्रदारेषु बंधूनां सर्वदेशे च सर्वदा ॥ ३२ ॥ न विद्यते भयं तस्य नृपपूज्यो भवेच्च सः ॥ शुचिर्भूत्वाऽशुचिर्वापि कवचं सर्वकामदम् ॥ ३३ ॥ प्रपठन् वा स्मरन्मर्त्यो दुःखशोकविवर्जितः ॥ सर्वशास्त्रे महेशानि कविराड् भवति ध्रुवम् ॥ ३४ ॥ सर्ववागीश्वरो मर्त्यो लोकवश्यो धनेश्वरः ॥ रणे द्यूते विवादे च जयस्तत्र भवेद्ध्रुवम् ॥ ३५ ॥ पुत्रपौत्रान्वितो मर्त्यो विलासी सर्वयोषिताम् ॥ शत्रवो दासतां यांति सर्वेषां वल्लभः सदा ॥ ३६ ॥ गर्वी खर्वी भवत्येव वादी स्खलति दर्शनात् ॥ मृत्युश्च वश्यतां याति दासास्तस्यावनीभुजः ॥ ३७ ॥ प्रसंगात्कथितं सर्वं कवचं सर्वकामदम् ॥ प्रपठन्वा स्मरन्मर्त्यः शापानुग्रहणे क्षमः ॥ ३८ ॥ आनंदवृंदसिंधूनामधिपः कविराड् भवेत् ॥ सर्ववागीश्वरो मर्त्यो लोकवश्यः सदा सुखी ॥ ३९ ॥ गुरोः प्रसादमासाद्य विद्यां प्राप्य सुगोपिताम् ॥ तत्रापि कवचं देवि दुर्लभं भुवनत्रये ॥ ४० ॥ गुरुर्देवो हरः साक्षात्तत्पत्नी तु हरप्रिया ॥ अभेदेन भजेद्यस्तु तस्य सिद्धिरदूरतः ॥ ४१ ॥ मंत्राचारा महेशानि कथिताः पूर्ववत्प्रिये ॥ नाभौ ज्योतिस्तथा रक्तं हृदयोपरि चिंतयेत् ॥ ४२ ॥ ऐश्वर्यं सुकवित्वं च महावागीश्वरो नृपः ॥ नित्यं तस्य महेशानि महिलासंगमं चरेत् ॥ ४३ ॥ पंचाचाररतो मर्त्यः सिद्धो भवति नान्यथा ॥ शक्तियुक्तो भवेन्मर्त्यः सिद्धो भवति नान्यथा ॥ ४४ ॥ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ये देवासुरमानुषाः ॥ तं दृष्ट्वा साधकं देवि लज्जायुक्ता भवंति ते ॥ ४५ ॥ स्वर्गे मर्त्ये च पाताले ये देवाः सिद्धिदायकाः ॥ प्रशंसंति सदा देवि तं दृष्ट्वा साधकोत्तमम् ॥ ४६ ॥ विघ्नात्मकाश्च ये देवाः स्वर्गे मर्त्ये रसातले ॥ प्रशंसंति सदा सर्वे तं दृष्ट्वा साधकोत्तमम् ॥ ४७ ॥ इति ते कथितं देवि मया सम्यक्प्रकीर्तितम् ॥ भुक्तिमुक्तिकरं साक्षात्कल्पवृक्षस्वरूपकम् ॥ ४८ ॥ आसाद्याद्यगुरुं प्रसाद्य य इदं कल्पद्रुमालंबनं मोहेनापि मदेन चापि [illegible]ो जाड्येन वा युज्यते ॥ सिद्धोऽसौ भुवि सर्वदुःखविपदां पारं प्रयात्यंतके मित्रं तस्य नृपाश्च देवि विपदो नश्यंति तस्याशु च ॥ [illegible] ४९ ॥ तद्गात्रं प्राप्य शस्त्राणि ब्रह्मास्त्रादीनि वै भुवि ॥ तस्य गेहे स्थिरा लक्ष्मीर्वाणी वक्त्रे वसेद् ध्रुवम् ॥ ५० ॥ इदं कवचमज्ञात्वा

...यं यो भजते नरः ॥ अल्पायुर्निर्द्धनो मूर्खो भवत्येव न संशयः ॥ ५१ ॥ लिखित्वा धारयेद्यस्तु कंठे वा मस्तके भुजे ॥ तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याद्यद्यन्मनसि वर्तते ॥ ५२ ॥ गोरोचनाकुंकुमेन रक्तचन्दनकेन वा ॥ यावकैर्वा महेशानि लिखेन्मंत्रं समाहितः ॥ ॥ ५३ ॥ अष्टम्यां मंगलदिने चतुर्दश्यामथापि वा ॥ संध्यायां देवदेवेशि लिखेद्यंत्रं समाहितः ॥ ५४ ॥ मघायां श्रवणे वापि रेवत्यां वा विशेषतः ॥ सिंहराशौ गते चंद्रे कर्कटस्थे दिवाकरे ॥ ५५ ॥ मीनराशौ गुरौ याते वृश्चिकस्थे शनैश्चरे ॥ लिखित्वा धारयेद्यस्तु उत्तराभिमुखो भवेत् ॥ ५६ ॥ श्मशाने प्रांतरे वापि शून्यागारे विशेषतः ॥ निशायां वा लिखेन्मंत्रं तस्य सिद्धिरचंचला ॥ ५७ ॥ भूर्जपत्रे लिखेन्मंत्रं गुरुणा च महेश्वरि ॥ ध्यानधारणयोगेन धारयेद्यस्तु भक्तितः ॥ ५८ ॥ अचिरात्तस्य सिद्धिः स्यान्नात्र कार्या विचारणा ॥ ५९ ॥ इति श्रीरुद्रयामले तंत्रे उग्रताराकवचं समाप्तम् ॥

॥ अथ तारास्तोत्रप्रारंभः ॥ मातर्नीलसरस्वति प्रणमतां सौभाग्यसंपत्प्रदे प्रत्यालीढपदस्थिते शवहृदि स्मेराननांभोरुहे ॥ फुल्लेन्दीवरलोचने त्रिनयने कर्त्रीकपालोत्पले खड्गं चादधती त्वमेव शरणं त्वामीश्वरीमाश्रये ॥ १ ॥ वाचामीश्वरि भक्तिकल्पलतिके सर्वार्थसिद्धीश्वरि गद्यप्राकृतपद्यजातरचनासर्वार्थसिद्धिप्रदे ॥ नीलेन्दीवरलोचनत्रययुते कारुण्यवारान्निधे सौभाग्यामृतवर्द्धनेन कृपया सिंच त्वमस्मादृशम् ॥ २ ॥ खर्वे गर्वसमूहपूरिततनो सर्पादिवेषोज्ज्वले व्याघ्रत्वक्परिवीतसुंदरकटिव्याधूतघण्टाङ्किते ॥ सद्यःकृत्तगलद्रजःपरिमिलन्मुण्डद्वयीमूर्द्धजग्रंथिश्रेणिनृमुण्डदामललिते भीमे भयं नाशय ॥ ३ ॥ मायानङ्गविकाररूपललनाबिंद्वर्द्धचन्द्राम्बिके हुंफट्कारमयि त्वमेव शरणं मंत्रात्मिके मादृशः॥ मूर्तिस्ते जननि त्रिधामघटिता स्थूलातिसूक्ष्मा परा वेदानां नहि गोचरा कथमपि प्राज्ञैर्नुतामाश्रये ॥ ॥ ४ ॥ त्वत्पादांबुजसेवया सुकृतिनो गच्छंति सायुज्यतां तस्याः श्रीपरमेश्वरत्रिनयनब्रह्मादिसाम्यात्मनः॥ संसाराम्बुधिमज्जने पटुतनुदेवेन्द्रमुख्यान्सुरान् मातस्ते पदसेवने हि विमुखान् किं मंदधीः सेवते ॥ ५ ॥ मातस्त्वत्पदपंकजद्वयरजोमुद्रांककोटीरिणस्ते देवा जयसङ्गरे विजयिनो निःशंकमंके गताः ॥ देवोऽहं भुवने न मे सम इति स्पर्द्धां वहंतः परे तत्तुल्यां नियतं यथा शशिरवी नाशं व्रजंति

स्वयम् ॥ ६ ॥ त्वन्नामस्मरणात्पलायनपरान्द्रष्टुं च शक्ता न ते भूतप्रेतपिशाचराक्षसगणा यक्षाश्च नागाधिपाः ॥ दैत्या दानवपुङ्गवा
श्च खचरा व्याघ्रादिका जंतवो डाकिन्यः कुपितांतकश्च मनुजान् मातः क्षणं भूतले ॥ ७ ॥ लक्ष्मीः सिद्धिगणश्च पादुकमुखाः
सिद्धास्तथा वैरिणां स्तंभश्चापि वराङ्गने गजघटास्तंभस्तथा मोहनम् ॥ मातस्त्वत्पदसेवया खलु नृणां सिध्यंति ते ते गुणाः क्लांतः कांत
मनोभवोऽत्र भवति क्षुद्रोऽपि वाचस्पतिः ॥ ८ ॥ ताराष्टकमिदं पुण्यं भक्तिमान् यः पठेन्नरः ॥ प्रातर्मध्याह्नकाले च सायाह्ने नियतः शुचिः
॥ ९ ॥ लभते कवितां विद्यां सर्वशास्त्रार्थविद्भवेत् ॥ लक्ष्मीमनश्वरां प्राप्य भुक्त्वा भोगान्यथेप्सितान् ॥ कीर्तिं कांतिं च नैरुज्यं
प्राप्यांते मोक्षमाप्नुयात् ॥ १० ॥ इति नीलतंत्रे तारास्तोत्रं समाप्तम् ॥ अथ ताराशतनामस्तोत्रप्रारंभः ॥ श्रीशिव उवाच ॥ तारिणी
तरला तन्वी तारा तरुणवल्लरी ॥ तीररूपा तरी श्यामा तनुक्षीणपयोधरा ॥ १ ॥ तुरीया तरला तीव्रगमना नीलवाहिनी ॥ उग्रतारा
जया चण्डी श्रीमदेकजटाशिराः ॥ २ ॥ तरुणी शांभवी छिन्नभाला च भद्रतारिणी ॥ उग्रा चोग्रप्रभा नीला कृष्णा नीलसरस्वती ॥
॥ ३ ॥ द्वितीया शोभना नित्या नवीना नित्यनूतना ॥ चंडिका विजयाराध्या देवी गगनवाहिनी ॥ ४ ॥ अट्टहास्या करालास्या
चरास्या दितिपूजिता ॥ सगुणा सगुणाराध्या हरीन्द्रदेवपूजिता ॥ ५ ॥ रक्तप्रिया च रक्ताक्षी रुधिरास्यविभूषिता ॥ बलिप्रिया बलि
रता दुर्गा बलवती बला ॥ ६ ॥ बलप्रिया बलरता बलरामप्रपूजिता ॥ अर्द्धकेशेश्वरी केशा केशवासविभूषिता ॥ ७ ॥ पद्ममाला च
पद्माक्षी कामाख्या गिरिनंदिनी ॥ दक्षिणा चैव दक्षा च दक्षजा दक्षिणे रता ॥ ८ ॥ वज्रपुष्पप्रिया रक्तप्रिया कुसुमभूषिता ॥ माहे
श्वरी महादेवप्रिया पंचविभूषिता ॥ ९ ॥ इडा च पिङ्गला चैव सुषुम्ना प्राणरूपिणी ॥ गांधारी पंचमी पंचाननादिपरिपूजिता ॥ १० ॥
तथ्यविद्या तथ्यरूपा तथ्यमार्गानुसारिणी ॥ तत्त्वप्रिया तत्त्वरूपा तत्त्वज्ञानात्मिकानघा ॥ ११ ॥ ताण्डवाचारसंतुष्टा ताण्डवप्रिय
कारिणी ॥ तालदानरता क्रूरतापिनी तरणिप्रभा ॥ १२ ॥ त्रयीयुक्ता त्रयीमुक्ता तर्पिता तृप्तिकारिणी ॥ तारुण्यभावसंतुष्टा शक्तिर्भक्ता
नुरागिणी ॥ १३ ॥ शिवासक्ता शिवरतिः शिवभक्तिपरायणा ॥ ताम्रद्युतिस्ताम्ररागा ताम्रपात्रप्रभोजिनी ॥ १४ ॥ बलभद्रप्रेमरता

[illegible]रूपिणी ॥ रामरूपा रामशक्ती रामरूपानुरागिणी ॥ १५ ॥ इत्येतत्कथितं देवि रहस्यं परमाद्भुतम् ॥ श्रुत्वा मो[illegible]स्याः प्रसादतः ॥ १६ ॥ य इदं पठति स्तोत्रं तारास्तुतिरहस्यकम् ॥ सर्वसिद्धियुतो भूत्वा विहरेत् क्षिति मंडले ॥ १७ ॥ तस्यैव मंत्रसिद्धिः स्यान्मम सिद्धिरनुत्तमा ॥ भवत्येव महामाये सत्यं सत्यं न संशयः ॥ १८ ॥ मन्दे मंगलवारे च यः पठेन्निशि संयतः ॥ तस्यैव मंत्रसिद्धिः स्याद्गाणपत्यं लभेत सः ॥ १९ ॥ श्रद्धयाऽश्रद्धया वापि पठेत्ताराररहस्यकम् ॥ सोऽचिरेणैव कालेन जीवन्मुक्तः शिवो भवेत् ॥ २० ॥ सहस्रावर्त्तनादेवि पुरश्चर्याफलं लभेत् ॥ एवं सततयुक्ता ये ध्यायंत स्त्वामुपासते ॥ ते कृतार्था महेशानि मृत्युसंसारवर्त्मनः ॥ २१ ॥ इति स्वर्णमालातंत्रे तारिणीशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीतारातकारादिसहस्रनामप्रारंभः ॥ वशिष्ठ उवाच ॥ नाम्नां सहस्रं तारायाः मुखांभोजाद्विनिर्गतम् ॥ मंत्रसिद्धिकरं प्रोक्तं तन्मे वद पितामह ॥ १ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ शृणु वत्स प्रवक्ष्यामि रहस्यं सर्वसिद्धिदम् ॥ यस्योपदेशमात्रेण तत्र सिद्धिर्भविष्यति ॥ २ ॥ महाप्रलयकालादौ नष्टे स्थावरजंगमे ॥ महाकारं समाकर्ण्य कृपया संहृतं तनौ ॥ ३ ॥ नाम्ना तेन महातारा ख्याता सा ब्रह्मरूपिणी ॥ महाशूलत्रयं कृत्वा तत्र चैकाकिनी स्थिता ॥ ४ ॥ पुनः सृष्टेश्चिकीर्षाऽभूद्दिव्यसाम्राज्यसंज्ञकम् ॥ नाम्नां सहस्रमस्यास्तु तकाराद्यं मया स्मृतम् ॥ ५ ॥ तत्प्रभावेण ब्रह्माण्डं निर्मितं सुदृढं महत् ॥ आविर्भूता वयं तंत्रयत्नैस्तस्याः पुरा द्विज ॥ ६ ॥ स्वस्वकार्यार्थिन स्तत्र भ्रांता भ्रम्यां यथा वयम् ॥ तयोपदिष्टाः कृपया भवामः सृष्टिकारकाः ॥ ७ ॥ तस्याः प्रसादाद्विप्रेन्द्र त्रयो ब्रह्माण्डनायकाः ॥ अन्ये सुरगणाः सर्वे तस्याः पादप्रसेवकाः ॥ ८ ॥ पठनाद्धारणात्सृष्टेः कर्ताऽहं पालको हरिः ॥ तत्त्वाक्षरोपदेशेन संहर्ता शंकरः स्वयम् ॥ ९ ॥ ऋषिछन्दादिकं ध्यानं मूलवत्परिकीर्तितम् ॥ नियोगमात्रासिद्धौ च पुरुषार्थचतुष्टयम् ॥ १० ॥ तथा च–ॐ अस्य श्रीतारातकारादिसहस्रनामस्तोत्रस्य वासिष्ठ ऋषिःअनुष्टुप् छंदः।तारादेवता। सर्वेष्टसिद्धये पाठे विनियोगः॥ॐ वसिष्ठऋषये नमःशिरसि१। अनुष्टुप्छंदसे नमः मुखे २ । तारादेवतायै नमो हृदि ३ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४॥ इति ऋष्यादिन्यासः॥ ॐ ह्रां हृदयाय

नमः १ । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा २ । ॐ ह्रूं शिखायै वषट् ३ । ॐ ह्रैं कवचाय हुं ४ । ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ६ । इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ॥ ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ । इति करन्यासः ॥ अथ ध्यानम्—

प्रत्यालीढपदार्पितांघ्रिशवहृद्घोराट्टहासा परा खड्गेन्दीवरकर्त्रिखर्परभुजा हुंकारबीजोद्भवा ॥ खर्वा नीलविशालपिङ्गलजटाजूटैकनागैर्युता जाड्यं न्यस्य कपालकर्तृजगतां(?) हंत्युग्रतारा स्वयम् ॥ इति ध्यात्वा स्तोत्रं पठेत् ॥ तारा तारादिपंचार्णा तारान्यात्रेदवीर्यजा ॥ तारा तारहितावर्णा ताराद्या ताररूपिणी ॥ ११ ॥ तारारात्रिसमुत्पन्ना तारारात्रिवरोद्यता ॥ तारारात्रिजपासक्ता तारारात्रिस्वरूपिणी ॥ १२ ॥ ताराराज्ञीस्वसंतुष्टा ताराराज्ञीवरप्रदा ॥ ताराराज्ञीस्वरूपा च ताराराज्ञीप्रसिद्धिदा ॥ १३ ॥ ताराहृत्पङ्कजागारा ताराहृत्पङ्कजापरा ॥ ताराहृत्पङ्कजाधारा ताराहृत्पङ्कजा तथा ॥ १४ ॥ तारेश्वरी च ताराभा तारागणस्वरूपिणी ॥ तारागणसमाकीर्णा तारागणनिषेविता ॥ १५ ॥ तारा तारान्विता तारारत्नान्वितविभूषणा ॥ तारागणरणासन्ना ताराकृत्यप्रपूजिता ॥ १६ ॥ तारागणकृताहारा तारागणकृताश्रया ॥ तारागणकृतागारा तारागणनतत्परा ॥ १७ ॥ तारागुणगुणाकीर्णा तारागुणगणप्रदा ॥ तारागुणगणासक्ता तारागुणगणालया ॥ १८ ॥ तारेश्वरी तारपूज्या ताराजप्या तु तारणा ॥ तारमुख्या तु तारारूया तारदक्षा तु तारिणी ॥ १९ ॥ तारागम्या तु तारस्था तारामृततरंगिणी ॥ तारमध्या तु तारार्णा तारहृद्या तु तारिणी ॥ २० ॥ तारका तारकांतस्था तारकाराशिभूषणा ॥ तारकाहारशोभाढ्या तारकावेष्टितांगणा ॥ २१ ॥ तारकाहंसकाकीर्णा तारकाकृतभूषणा ॥ तारकांगदशोभांगी तारकाञ्चितकंकणा ॥ २२ ॥ तारकांचितकांची च तारकान्वितभक्षगा ॥ तारकाचित्रवसना तारकासनमंडला ॥ २३ ॥ तारकाकीर्णमुकुटा तारकाञ्चितमुकुरा ।१ तारकान्वितताटंकयुग्मगण्डस्थलोज्ज्वला ॥ २४ ॥ तारकाश्रितपादाब्जा तारकावरदायिका ॥ तारकादत्तहृदया

१ "हस्तकपालका विजगताम्" इति पाठः साधुरिति प्रतिभाति ॥

तारकांचितसायका ॥ २५ ॥ तारकान्यासकुशला तारकान्यासविग्रहा ॥ तारकान्याससंतुष्टा तारकान्याससिद्धिदा ॥ २६ ॥ तारका-
न्यासनिलया तारकान्यासपूजिता ॥ तारकान्याससंहृष्टा तारकान्याससिद्धिदा ॥ २७ ॥ तारकान्याससंमग्ना तारकान्यासवासिनी ॥
तारकान्याससम्पूर्णा मंत्रसिद्धिविधायिनी ॥ २८ ॥ तारकोपासकप्राणा तारकोपासकप्रिया ॥ तारकोपासकासाध्या तारकोपासके
ष्टदा ॥ २९ ॥ तारकोपासकासक्ता तारकोपासकार्थिनी ॥ तारकोपासकाराध्या तारकोपासकाश्रया ॥ ३० ॥ तारकासुरसंतुष्टा
तारकासुरपूजिता ॥ तारकासुरनिर्माणकर्त्री तारकवन्दिता ॥ ३१ ॥ तारकासुरसंमान्या तारकासुरमानदा ॥ तारकासुरसंसिद्धा
तारकासुरदेवता ॥ ३२ ॥ तारकासुरदेहस्था तारकासुरस्वर्गदा ॥ तारकासुरसंसृष्टा तारकासुरगर्वदा ॥ ३३ ॥ तारकासुरसंहन्त्री
तारकासुरमर्द्दिनी ॥ तारकासुरसंग्रामनर्तकी तारकापरा ॥ ३४ ॥ तारकासुरसंग्रामतारिणी तारकारिभूः ॥ तारकासुरसंग्रामकबंध
वृन्दवन्दिता ॥ ३५ ॥ तारकारिप्रसूस्तारकारिमाता नुकारिका ॥ तारकारिमनोहारिवस्त्रभूषानुशासिका ॥ ३६ ॥ तारकारिविधात्री
च तारकारिनिषेविता ॥ तारकारिवचस्तुष्टा तारकारिसुशिक्षिता ॥ ३७ ॥ तारकारिसुसंतुष्टा तारकारिविभूषिता ॥ तारकारिकृतो
त्संगा तारकारिप्रहर्षदा ॥ ३८ ॥ तमःसम्पूर्णसर्वांगी तमोलिप्तकलेवरा ॥ तमोव्याप्तस्थलासंगा तमःपटलसन्निभा ॥ ३९ ॥
तमोहंत्री तमःकर्त्री तमःसंचारकारिणी ॥ तमोगात्री तमोदात्री तमःपात्री तमोऽपहा ॥ ४० ॥ तमोराशिस्तमोनाशा तमोराशि
विनाशिनी ॥ तमोराशिकृतध्वंसी तमोराशिभयंकरी ॥ ४१ ॥ तमोगुणप्रसन्नास्या तमोगुणसुसिद्धिदा ॥ तमोगुणोक्तमार्गस्था
तमोगुणविराजिता ॥ ४२ ॥ तमोगुणस्तुतिपरा तमोगुणविवर्द्धिनी ॥ तमोगुणाश्रितपरा तमोगुणविनाशिनी ॥ ४३ ॥
तमोगुणक्षयकरी तमोगुणकलेवरा ॥ तमोगुणध्वंसतुष्टा तमःपारे प्रतिष्ठिता ॥ ४४ ॥ तमोभवभवप्रीता तमोभवभवप्रिया ॥ तमोभवभव
श्रद्धा तमोभवभवाश्रया ॥ ४५ ॥ तमोभवभवप्राणा तमोभवभवार्चिता ॥ तमोभवभवप्रीत्यालीढकुंभस्थलस्थिता ॥ ४६ ॥ तपस्विवृन्द
संतुष्टा तपस्विवृन्दपुष्टिदा ॥ तपस्विवृन्दसंस्तुत्या तपस्विवृन्दवन्दिता ॥ ४७ ॥ तपस्विवृन्दसम्पन्ना तपस्विवृन्दहर्षदा ॥ तपस्विवृन्द

संपूज्या तपस्विवृन्दभूषिता ॥ ४८ ॥ तपस्विचित्ततल्पस्था तपस्विचित्तमध्यगा ॥ तपस्विचित्तचित्ताहा तपस्विचित्तहारिणी ॥ ४९ ॥ तपस्विकल्पवल्ल्याभा तपस्विकल्पपादपा॥ तपस्विकामधेनुश्च तपस्विकामपूर्तिदा ॥५० ॥ तपस्वित्राणनिरता तपस्विगृहसंस्थिता ॥तपस्विगृहराज्यश्रीस्तपस्विराज्यदायिका ॥ ५१ ॥ तपस्विमानसाराध्या तपस्विमानदायिका ॥ तपस्वितापसंहर्त्री तपस्वितापशांतिकृत् ॥ ॥ ५२ ॥ तपस्विसिद्धिविद्या च तपस्विमंत्रसिद्धिकृत् ॥ तपस्विमंत्रतंत्रेशी तपस्विमंत्ररूपिणी ॥ ५३ ॥ तपस्विमंत्रनिपुणा तपस्विकर्मकारिणी ॥ तपस्विकर्मसंभूता तपस्विकर्मसाक्षिणी ॥ ५४ ॥ तपस्लेव्या तपोभव्या तपोभाव्या तपस्विनी ॥ तपोवश्या तपोगम्या तपोगेहनिवासिनी ॥ ५५ ॥ तपोधन्या तपोमान्या तपःकन्या तपोवृता ॥ तपस्तथ्या तपोगोप्या तपोजप्या तपोनुता ॥ ५६ ॥ तपःसाध्या तपोराध्या तपोवंद्या तपोमयी ॥ तपस्संध्या तपोवन्ध्या तपस्सान्निध्यकारिणी ॥ ५७ ॥ तपोध्येया तपोज्ञेया तपस्तता तपोबला ॥ तपोलेया तपोदेया तपस्तत्त्वफलप्रदा ॥ ५८ ॥ तपोविघ्नत्रघ्नी च तपोविघ्नविनाशिनी ॥ तपोविघ्नवधध्वंसी तपोविघ्नभयंकरी । ॥ ५९ ॥ तपोभूमिवरप्राणा तपोभूमिपतिस्तुता ॥ तपोभूमिपतिध्येया तपोभूमिपतीष्टदा ॥ ६० ॥ तपोवनकुरङ्गस्था तपोवनविनाशिनी ॥ तपोवनगतिप्रीता तपोवनविहारिणी ॥ ६१ ॥ तपोवनफलासक्ता तपोवनफलप्रदा ॥ तपोवनसुसाध्या च तपोवनसुसिद्धिदा ॥ ६२ ॥ तपोवनसुसेव्या च तपोवननिवासिनी ॥ तपोधनसुसंसेव्या तपोधनसुसाधिता ॥ ६३ ॥ तपोधनसुसंलीना तपोधनमनोमयी ॥ तपोधननमस्कारा तपोधनविमुक्तिदा ॥ ६४ ॥ तपोधनधनासाध्या तपोधनधनात्मिका ॥ तपोधनधनाराध्या तपोधनफलप्रदा ॥ ६५ ॥ तपोधनधनाढ्या च तपोधनधनेश्वरी ॥ तपोधनधनप्रीता तपोधनधनालया ॥ ६६ ॥ तपोधनजनाकीर्णा तपोधनजनाश्रया ॥ तपोधनजनाराध्या तपोधनजनप्रसूः ॥ ६७ ॥ तपोधनजनप्राणा तपोधनजनेष्टदा ॥ तपोधनजनासाध्या तपोधनजनेश्वरी ॥ ६८ ॥ तरुणासृक्प्रपानार्ता तरुणासृक्प्रतर्पिता ॥ तरुणासृक्समुद्रस्था तरुणासृक्प्रहर्षदा ॥ ६९ ॥ तरुणासृक्सुसंतुष्टा तरुणासृग्विलेपिता ॥ तरुणासृङ्नर्दीप्राणा तरुणासृग्विभूषणा ॥ ७० ॥ तरुणैणबलिप्रीता तरुणैणबलिप्रिया ॥ तरुणैणबलि

प्राणा तरुणीबलीष्टदा ॥७१॥ तरुणाजबलिप्रीता तरुणाजबलिप्रिया ॥ तरुणाजबलिघ्राणा तरुणाजबलिप्रभुक् ॥७२॥ तरुणादित्यसङ्काशा तरुणादित्यविग्रहा ॥ तरुणादित्यरुचिरा तरुणादित्यनिर्मला॥७३॥तरुणादित्यनिलया तरुणादित्यमंडला ॥ तरुणादित्यललिता तरुणादित्य कुण्डला॥७४॥ तरुणार्कसमज्योत्स्ना तरुणार्कसमप्रभा॥तरुणार्कप्रतीकाशा तरुणार्कप्रवर्द्धिता ॥७५॥ तरुणारुणनेत्रा च तरुणारुणलोचना ॥ तरुणारुणगात्रा च तरुणारुणभूषणा ॥ ७६ ॥ तरुणीदत्तसंकेता तरुणीदत्तभूषणा ॥ तरुणीगणसंतुष्टा तरुणी तरुणीमणिः ॥ ७७ ॥ तरुणीमणिसंसेव्या तरुणीमणिवंदिता ॥ तरुणीमणिसंतुष्टा तरुणीमणिपूजिता ॥ ७८ ॥ तरुणीवृन्दसंवंद्या तरुणीवृन्दवन्दिता ॥ तरुणी वृन्दसंस्तुत्या तरुणीवृन्दमानदा ॥ ७९ ॥ तरुणीवृन्दमध्यस्था तरुणीवृन्दवेष्टिता ॥ तरुणीवृन्दसंप्रीता तरुणीवृन्दभूषिता ॥ ८० ॥ तरुणीजयसंसिद्धा तरुणीजयमोक्षदा ॥ तरुणीपूजकासक्ता तरुणीपूजकार्थिनी ॥८१॥ तरुणीपूजकश्रीदा तरुणीपूजकार्तिहा ॥ तरुणीपूजक प्राणा तरुणीनिन्दकार्त्तिदा ॥ ८२ ॥ तरुणीकोटिनिलया तरुणीकोटिविग्रहा ॥ तरुणीकोटिमध्यस्था तरुणीकोटिवेष्टिता ॥ ८३ ॥ तरुणी कोटिदुःसाध्या तरुणीकोटिविग्रहा ॥ तरुणीकोटिरुचिरा तरुणी तरुणीश्वरी ॥ ८४ ॥ तरुणीमणिहाराढ्या तरुणीमणिकुण्डला ॥ तरुणी मणिसंहृष्टा तरुणीमणिमण्डिता ॥ ८५ ॥ तरुणीसरणिप्रीता तरुणीसरणीरता ॥ तरुणीसरणिस्थाना तरुणीसरणीमता ॥ ८६ ॥ तरणी मण्डलश्रीदा तरणीमण्डलेश्वरी ॥ तरणीमण्डलश्रद्धा तरणीमण्डलस्थिता ॥ ८७ ॥ तरणीमण्डलार्घ्याढ्या तरणीमण्डलार्चिता ॥ तरणी मण्डलध्येया तरणीभवसागरा ॥ ८८ ॥ तरणीकरणासक्ता तरणीतक्षकार्चिता ॥ तरणीतक्षकश्रीदा तरणीतक्षकार्थिनी ॥ ८९ ॥ तरीतरण शीला च तरीतरणतारिणी ॥ तरीतरणसंवेद्या तरीतरणकारिणी ॥ ९० ॥ तरुरूपा तरुस्था तरुस्तरुलतामयी ॥ तरुयूपा तरुस्था च तरु मध्यनिवासिनी ॥ ९१ ॥ तप्तकाञ्चनगेहस्था तप्तकाञ्चनभूमिका ॥ तप्तकाञ्चनप्राकारा तप्तकाञ्चनपादुका ॥ ९२ ॥ तप्तकाञ्चनदीप्तांगी तप्तकाञ्चनसन्निभा ॥ तप्तकाञ्चनगौरांगी तप्तकाञ्चनमञ्चगा ॥ ९३ ॥ तप्तकाञ्चनवस्त्राढ्या तप्तकाञ्चनरूपिणी ॥ तप्तकाञ्चनमध्यस्था तप्त काञ्चनकारिणी ॥ ९४ ॥ तप्तकाञ्चनमासाचर्या तप्तकाञ्चनपात्रभुक् ॥ तप्तकाञ्चनशैलस्था तप्तकाञ्चनकुण्डला ॥ ९५ ॥ तप्तकाञ्चनक्षेत्राढ्या

तप्तकाञ्चनदण्डधृक् ॥ तप्तकाञ्चनभूषाढ्या तप्तकाञ्चनदानदा ॥ ९६ ॥ तप्तकाञ्चनदेशेशी तप्तकाञ्चनचापधृक् ॥ तप्तकाञ्चनतूणाढ्या तप्तकाञ्चनबाणभृत् ॥ ९७ ॥ तलातलविधात्री च तलातलविधायिनी॥तलातलस्वरूपेशी तलातलविहारिणी ॥९८॥ तलातलजनासाध्या तलातलजनेश्वरी ॥ तलातलजनाराध्या तलातलजनार्थदा ॥ ९९ ॥ तलातलजयाभाक्षी तलातलजचञ्चला ॥ तलातलजरत्नाढ्या तलातलजदेवता ॥ १०० ॥ तटिनीस्थानरसिका तटिनीतटवासिनी ॥ तटिनी तटिनीतीरगामिनी तटिनीप्रिया ॥१०१॥ तटिनीप्लवनप्रीता तटिनीप्लवनोद्यता॥तटिनीप्लवनश्लाघ्या तटिनीप्लवनार्थदा॥ १०२ ॥तटलास्या तटस्थाना तटेशी तटवासिनी॥तटपूज्या तटाराध्या तटरोमसुखार्थिनी॥१०३॥तटजा तटरूपा च तटस्था तटचञ्चला॥तटसन्निधिगेहस्था सहिता तटशायिनी ॥ १०४ ॥ तरंगिणी तरंगाभा तरंगायतलोचना ॥ तरंगसमदुर्द्धर्षा तरंगसमचञ्चला ॥१०५॥ तरंगसमदीर्घांगी तरंगसमवर्द्धिता ॥ तरंगसमसंवृद्धिस्तरंगसमनिर्मला ॥ १०६ ॥ तडागमध्यनिलया तडागमध्यसंभवा ॥ तडागरचनश्लाघ्या तडागरचनोद्यता ॥ १०७ ॥ तडागकुमुदामोदी तडागेशी तडागिनी ॥ तडागनीरसंस्नाता तडागनीरनिर्मला ॥ १०८ ॥ तडागकमलागारा तडागकमलालया ॥ तडागकमलांतस्था तडागकमलोद्यता॥ ॥ १०९ ॥ तडागकमलांगी च तडागकमलानना ॥ तडागकमलप्राणा तडागकमलेक्षणा ॥ ११० ॥ तडागरक्तपद्मस्था तडागश्वेतपद्मगा ॥ तडागनीलपद्माभा तडागनीलपद्मभृत् ॥ १११ ॥ तनुस्तनुगता तन्वी तन्वंगी तनुधारिणी ॥ तनुरूपा तनुगता तनुधृक्तनुरूपिणी ॥ ११२ ॥ तनुस्था तनुमध्यांगी तनुकृत्तनुमंगला ॥ तनुसेव्या तु तनुजातनुजा तनुसंभवा ॥ ११३ ॥ तनुभृत्तनुसंभूता तनुदा तनुकारिणी ॥ तनुभृत्तनुसंहंत्री तनुसंचारकारिणी ॥ ११४ ॥ तथ्यवाक् तथ्यवचना तनुकृत्तथ्यवादिनी ॥ तथ्यभृत्तथ्यचरिता तथ्यधर्मानुवर्तिनी ॥ ११५ ॥ तथ्यभुक्तथ्यगमना तथ्यभक्तिवरप्रदा ॥ तथ्यनीचेश्वरी तथ्यचित्ताचाराशुसिद्धिदा ॥ ॥ ११६ ॥ तर्क्यातर्क्यस्वभावा च तर्कदा या तु तर्ककृत् ॥ तर्काध्यापनमध्यस्था तर्काध्यापनकारिणी ॥ ११७ ॥ तर्काध्यापनसंतुष्टा तर्काध्यापनरूपिणी ॥ तर्काध्यापनसंशीला तर्कार्थप्रतिपादिता ॥ ११८ ॥ तर्काध्यापनसंतृप्ता तर्कार्थप्रतिपादिका ॥ तर्के

वादाश्रितपदा तर्कवादविवर्द्धिनी ॥ ११९ ॥ तर्कवादैकनिपुणा तर्कवादप्रचारिणी ॥ तमालदलश्यामांगी तमालदलमालिनी ॥
॥ १२० ॥ तमालवनसङ्केता तमालपुष्पपूजिता ॥ तगरी तगराराध्या तगरार्चितपादुका ॥ १२१ ॥ तगरस्रक्कुसुसंतुष्टा
तगरस्राग्विराजिता ॥ तगराहुतिसंतुष्टा तगराहुतिकीर्तिदा ॥ १२२ ॥ तगराहुतिसांसिद्धा तगराहुतिमानदा ॥ तडित्तडि
ल्लताकारा तडिच्चञ्चललोचना ॥ १२३ ॥ तडिल्लता तडित्तन्वी तडिद्दीप्ता तडित्प्रभा ॥ तद्रूपा तत्स्वरूपेशी तन्मयी तत्त्व
रूपिणी ॥ १२४ ॥ तत्स्थानदाननिरता तत्कर्मफलदायिनी ॥ तत्त्वकृत्तत्त्वदा तत्त्वा तत्त्ववित्तत्त्वतर्पिता ॥ १२५ ॥
तत्त्वाचार्या तत्त्वपूज्या च तत्त्वाराध्या तत्त्वरूपिणी ॥ तत्त्वज्ञानप्रदानेशी तत्त्वज्ञानसुमोक्षदा ॥ १२६ ॥ त्वरिता त्वरितप्रीता त्वरितार्त्ति
विनाशिनी ॥ त्वरितासवसंतुष्टा त्वरितासवतर्पिता १२७ ॥ त्वग्वस्त्रा त्वक्परीधाना तरला तरलेक्षणा ॥ तरक्षुचर्मवसना तरक्षु
त्वग्विभूषणा ॥ १२८ ॥ तरक्षुस्तरक्षुप्राणा तरक्षुपृष्ठगामिनी ॥ तरक्षुपृष्ठसंस्थाना तरक्षुपृष्ठवासिनी ॥ १२९ ॥ तर्पितोदेस्तर्पणाशा तर्पणा
सक्तमानसा तर्पणानन्दहृदया तर्पणाधिपतिस्तुतिः ॥ १३० ॥ त्रयीमयी त्रयीसेव्या त्रयीपूज्या त्रयीकथा ॥ त्रयीभव्या त्रयी
भाव्या त्रयीहव्या त्रयीयुता ॥ १३१ ॥ त्र्यक्षरी त्र्यक्षरेशानी त्र्यक्षरीशीघ्रसिद्धिदा ॥ त्र्यक्षरेशी त्र्यक्षरीस्था त्र्यक्षरीपुरुषास्पदा ॥
॥ १३२ ॥ तपता तपनेष्टा च तपस्तपनकन्यका ॥ तपनांशुसमासह्या तपनकोटिकांतिकृत् ॥ १३३ ॥ तपनीया तल्पगता तल्पातल्प
विधायिनी ॥ तल्पकृत्तल्पगा तल्पदात्री तल्पतलाश्रया ॥ १३४ ॥ तपनीयतलारात्रीं तपनीयांशुप्रार्थिनी ॥ तपनीयप्रदा तता तपनीया
द्रिसंस्थिता ॥ १३५ ॥ तल्पेशी तल्पदा तल्पसंस्थिता तल्पवल्लभा ॥ तल्पप्रिया तल्परता तल्पनिर्माणकारिणी ॥ १३६ ॥
तरसापूजनासक्ता तरसावरदायिनी ॥ तरसासिद्धिसंधात्री तरसामोक्षदायिनी ॥ १३७ ॥ तापसी तापसाराध्या तापसार्तिविनाशिनी ॥
तापसार्ता तापसश्रीस्तापसप्रियवादिनी ॥ १३८ ॥ तापसानन्दहृदया तापसानन्ददायिनी ॥ तापसाश्रितपदाब्जा तापसासक्तमानसा ॥
॥ १३९ ॥ तामसी तामसीपूज्या तामसीप्रणयोत्सुका ॥ तामसी तामसीप्रीता तामसीशीघ्रसिद्धिदा ॥ १४० ॥ तालेशी ताल

भुक्तालदात्री तालोपमस्तनी ॥ तालवृक्षस्थिता तालवृक्षजा तालरूपिणी ॥ १४१ ॥ तार्क्ष्या तार्क्ष्यसमारूढा तार्क्ष्येशी तार्क्ष्य पूजिता ॥ तार्क्ष्येश्वरी तार्क्ष्यमाता तार्क्ष्येशीवरदायिनी ॥ १४२ ॥ तापी तु तापिनी तापसंहर्त्री तापनाशिनी ॥ तापदात्री तापकर्त्री तापविध्वंसकारिणी ॥ १४३ ॥ त्रासकर्त्री त्रासदात्री त्रासहर्त्री च त्रासहा ॥ त्रासिता त्रासरहिता त्रासनिर्मूलकारिणी ॥ १४४ ॥ त्राणकृत् त्राणसंशीला तानेशी तानदायिनी ॥ तानगानरता तानकारिणी तानगायिनी ॥ १४५ ॥ तारुण्यामृतसम्पूर्णा तारुण्या मृतवारिधिः ॥ तारुण्यामृतसंतुष्टा तारुण्यामृततर्पिता ॥ १४६ ॥ तारुण्यामृतपूर्णांगी तारुण्यामृतविग्रहा ॥ तारुण्यगुणसम्पन्ना तारुण्योक्तिविशारदा ॥ १४७ ॥ ताम्बूली ताम्बुलेशानी ताम्बूलचर्वणोद्यता ॥ ताम्बूलपूरितास्या च ताम्बूलारुणिताधरा ॥ ॥ १४८ ॥ ताटंकरत्नविख्यातिस्ताटंकरत्नभूषिणी ॥ ताटंकरत्नमध्यस्था ताटंकद्वयभूषिता ॥ १४९ ॥ तिथीशा तिथिसम्पूज्या तिथिस्था तिथिरूपिणी ॥ तिथित्रितयवास्तव्या तिथीशवरदायिनी ॥ १५० ॥ तिलोत्तमादिकाराध्या तिलोत्तमादिकप्रभा ॥ तिलोत्तमा तिलप्रेक्ष्या तिलाराध्या तिलार्चिता ॥ १५१ ॥ तिलभुक् तिलसंदात्री तिलतुष्टा तिलालया ॥ तिलदा तिलसंकाशा तिलतैलविधायिनी ॥ १५२ ॥ तिलतैलोपलिप्तांगी तिलतैलसुगंधिनी ॥ तिलाज्यहोमसंतुष्टा तिलाज्यहोमसिद्धिदा ॥१५३॥ तिलपुष्पाञ्जलिप्रीता तिलपुष्पाञ्जलिप्रिया ॥ तिलपुष्पाञ्जलिश्रेष्ठा तिलपुष्पाघनाशिनी ॥१५४॥ तिलकाश्रितसिंदूरा तिलकांकितचन्दना ॥ तिलकाहृतकस्तूरी तिलकामोदमोहिनी ॥ १५५ ॥ त्रिगुणा त्रिगुणाकारा त्रिगुणान्वितविग्रहा ॥ त्रिगुणाकारविख्याता त्रिमूर्तिस्त्रिगुणात्मिका ॥ १५६ ॥ त्रिशिरा स्त्रिपुरेशानी त्रिपुरा त्रिपुरेश्वरी ॥ त्रिपुरेशी त्रिलोकस्था त्रिपुरी त्रिपुराम्बिका ॥ १५७ ॥ त्रिपुरारिसमाराध्या त्रिपुरा रिवरप्रदा ॥ त्रिपुरारिशिरोभूषा त्रिपुरारिसुखप्रदा ॥ १५८ ॥ त्रिपुरारीष्टसन्दात्री त्रिपुरारीष्टदेवता ॥ त्रिपुरारिकृतार्द्धांगी त्रिपुरारिविलासिनी ॥ १५९ ॥ त्रिपुरासुरसंहर्त्री त्रिपुरासुरमर्दिनी ॥ त्रिपुरासुरसंसेव्या त्रिपुरासुरवर्धपा ॥ १६० ॥ त्रिकूटा त्रिकूटाराध्या त्रिकूटार्चितविग्रहा ॥ त्रिकूटाचलमध्यस्था त्रिकूटाचलवासिनी ॥ १६१ ॥ त्रिकूटाचलसञ्जाता त्रिकूटाचल

निर्गता ॥ त्रिकूटा त्रिजटेशानी त्रिजटावरदायिनी ॥ १६२ ॥ त्रिनेत्रेशी त्रिनेत्रा च त्रिनेत्रवरवर्णिनी ॥ त्रिवली त्रिवलीयुक्ता त्रिशूलवरधारिणी ॥ १६३ ॥ त्रिशूलेशी त्रिशूलीशी त्रिशूलभृत्त्रिशूलिनी ॥ त्रिमनुस्त्रिमनूपास्या त्रिमनूपासकेश्वरी ॥ १६४ ॥ त्रिमनुजपसंतुष्टा त्रिमनोस्तूर्णसिद्धिदा ॥ त्रिमनपजनप्रीता त्रिमनुध्यानमोक्षदा ॥ १६५ ॥ त्रिविधा त्रिविधाभक्तिस्त्रिमता त्रिमतेश्वरी ॥ त्रिभावस्था त्रिभावेशी त्रिभावपरिपूरिता ॥ १६६ ॥ त्रितत्त्वात्मा त्रितत्त्वेशी त्रितत्त्वज्ञा त्रितत्त्वधृक् ॥ त्रितत्त्वाचमनप्रीता त्रितत्त्वाचमनेष्टदा ॥ १६७ ॥ त्रिकोणस्था त्रिकोणेशी त्रिकोणचक्रवासिनी ॥ त्रिकोणचक्रमध्यस्था त्रिकोणबिंदुरूपिणी ॥ ॥ १६८ ॥ त्रिकोणयंत्रसंस्थाना त्रिकोणयंत्ररूपिणी ॥ त्रिकोणयंत्रसंपूज्या त्रिकोणयंत्रसिद्धिदा ॥ १६९ ॥ त्रिवर्णाढ्या त्रिवर्णेशी त्रिवर्णोपास्यरूपिणी ॥ त्रिवर्णस्था त्रिवर्णाढ्या त्रिवर्णावरदायिनी ॥ १७० ॥ त्रिवर्णाघ्या त्रिवर्णार्च्या त्रिवर्गफलदायिनी ॥ त्रिवर्गाढ्या त्रिवर्गेशी त्रिवर्गाद्यफलप्रदा ॥ १७१ ॥ त्रिसंध्यार्च्या त्रिसंध्येशी त्रिसंध्याराधनेष्टदा ॥ त्रिसंध्यार्चनसंतुष्टा त्रिसंध्याजपमोक्षदा ॥ १७२ ॥ ॥ त्रिपदाराधितपदा त्रिपदा त्रिपदेश्वरी ॥ त्रिपदाप्रदिपाद्येशी त्रिपदाप्रतिपादिका ॥ १७३ ॥ त्रिशक्तिश्च त्रिशक्तीशी त्रिशक्तेष्टफलप्रदा ॥ त्रिशक्तेष्टा त्रिशक्तीष्टा त्रिशक्तिपरिवेष्टिता ॥ १७४ ॥ त्रिवेणीच त्रिवेणीस्त्री त्रिवेणी माधवार्चिता ॥ त्रिवेणीजलसंतुष्टा त्रिवेणीस्नानपुण्यदा ॥ १७५ ॥ त्रिवेणीजलसंस्नाता त्रिवेणीजलरूपिणी ॥ त्रिवेणीजलपुतांगी त्रिवेणीजलपूजिता ॥ १७६ ॥ त्रिनाडीस्था त्रिनाडीशी त्रिनाडीमध्यगामिनी ॥ त्रिनाडीसंध्यसञ्ज्ञेया त्रिनाडी च त्रिकोटिनी ॥ ॥ १७७ ॥ त्रिपञ्चाशात्त्रिरेखा च त्रिशक्तिपथगामिनी ॥ त्रिपथस्था त्रिलोकेशी त्रिकोटिकुलमोक्षदा ॥ १७८ ॥ त्रिरामेशी त्रिरामार्च्या त्रिरामवरदायिनी ॥ त्रिदशाश्रितपादाब्जा त्रिदशालयचञ्चला ॥ १७९ ॥ त्रिदशा त्रिदशप्रार्थ्या त्रिदशाधुवरप्रदा ॥ त्रिदशैश्वर्यसम्पन्ना त्रिदशेश्वरसेविता ॥ १८० ॥ त्रियामार्च्या त्रियामेशी त्रियामानंतसिद्धिदा ॥ त्रियामेशाधिकज्योत्स्ना त्रियामेशाधिकानना ॥ १८१ ॥ त्रियामानाथवत्सौम्या त्रियामानाथभूषणा ॥ त्रियामानाथलावण्या रत्नकोटियतानना ॥ १८२ ॥

त्रिकालस्था त्रिकालज्ञा त्रिकालज्ञत्वकारिणी ॥ त्रिकालेशी त्रिकालार्च्या त्रिकालज्ञत्वदायिनी ॥ १८३ ॥ तीरभुक्तीरगा तीरसारिता तारवीर्सना ॥ तीरभुग्देशसंजाता तीरभुग्देशसांस्थिता ॥ १८४ ॥ तिग्मा तिग्मांशुसंकाशा तिग्मांशुक्रोडसंस्थिता ॥ तिग्मांशुकोटि दीप्तांगी तिग्मांशुकोटिविग्रहा ॥ १८५ ॥ तीक्ष्णा तीक्ष्णतरा तीक्ष्णमाहिषासुरमर्दिनी ॥ तीक्ष्णकर्त्रीलसत्पाणिस्तीक्ष्णासिवरधारिणी ॥ ॥ १८६ ॥ तीव्रा तीव्रगतिस्तीव्रासुरसंघविनाशिनी ॥ तीव्राष्टनागाभरणा तीव्रमुण्डविभूषणा ॥ १८७ ॥ तीर्थात्मिका तीर्थमयी तीर्थेशी तीर्थपूजिता ॥ तीर्थराजेश्वरी तीर्थफलदा तीर्थदानदा ॥ १८८ ॥ तुमुली तुमुलप्राज्ञी तुमुलासुरघातिनी ॥ तुमुलक्षतजप्रीता तुमुलांगणनर्तकी ॥ १८९ ॥ तुरगी तुरगारूढा तुरंगपृष्ठगामिनी ॥ तुरंगगमनाह्लादा तुरंगवेगगामिनी ॥ १९० ॥ तुरीया तुलना तुल्या तुल्यवृत्तिस्तु तुल्यकृत् ॥ तुलनेशी तुलाराज्ञी तुलाराज्ञीत्विसूक्ष्मवित् ॥ १९१ ॥ तुम्बिका तुम्बिकापात्रभोजना तुम्बिका र्थिनी ॥ तुलसी तुलसीवर्य्या तुलजा तुलजेश्वरी ॥ १९२ ॥ तुषाग्निव्रतसंतुष्टा तुषाग्निस्तुषराशिकृत् ॥ तुषारकरशीतांगी तुषारकर पूर्तिकृत् ॥ १९३ ॥ तुषाराद्रिस्तुषाराद्रिसुता तुहिनदीधितिः ॥ तुहिनाचलकन्या च तुहिनाचलवासिनी ॥ १९४ ॥ तुर्यवर्गेश्वरी तुर्यवर्गदा तुर्य्यवेददा ॥ तुर्य्यवर्य्यात्मिका तुर्य्यतुर्य्येश्वरस्वरूपिणी ॥ १९५ ॥ तुष्टिदा तुष्टिकृत्तुष्टिस्तूणीरद्वयपृष्ठधृक् ॥ तुम्बुराज्ञान संतुष्टा तुष्टसंसिद्धिदायिनी ॥ १९६ ॥ तूर्णराज्यप्रदा तूर्णगद्यदा तूर्णपद्यदा ॥ तूर्णपाण्डित्यसन्दात्री तूर्णपूर्णबलप्रदा ॥ १९७ ॥ तृतीया च तृतीयेशी तृतीयातिथिपूजिता ॥ तृतीयाचन्द्रचूडेशी तृतीयाचन्द्रभूषणा ॥ १९८ ॥ तृप्तिस्तृप्तिकरी तृप्ता तृष्णा तृष्णा विवर्द्धिनी ॥ तृष्णापूर्णकरी तृष्णानाशिनी तृषिता तृषा ॥ १९९ ॥ त्रेतासंसाधिता त्रेता त्रेतायुगफलप्रदा ॥ त्रैलोक्यपूज्या त्रैलोक्य दात्री त्रैलोक्यसिद्धिदा ॥ २०० ॥ त्रैलोक्येश्वरतादात्री त्रैलोक्यपरमेश्वरी ॥ त्रैलोक्यमोहनेशानी त्रैलोक्यराज्यदायिनी ॥ २०१ ॥ तैत्रिशाखेश्वरी तैत्रिशाखा तैत्रविवेकदा ॥ तोरणान्वितगेहस्था तोरणासक्तमानसा ॥ २०२ ॥ तोलकास्वर्णसंदात्री तोलकास्वर्ण कंकणा ॥ तोमरायुधरूपा च तोमरायुधधारिणी ॥ २०३ ॥ तौर्य्यत्रिकेश्वरी तौर्यत्रिकी तौर्य्यत्रिकोत्सुकी ॥ तंत्रकृत्तंत्रवरसूक्ष्मा तंत्र

मंत्रस्वरूपिणी ॥ २०४ ॥ तंत्रकृत्तंत्रसंपूज्या तंत्रेशी तंत्रसम्मता ॥ तंत्रज्ञा तंत्रवित्तंत्रसाध्या तंत्रस्वरूपिणी ॥ २०५ ॥ तंत्रस्था तंत्रजा तंत्री तंत्रभृत्तंत्रमंत्रदा ॥ तंत्राद्या तंत्रगा तंत्रा तंत्राचर्या तंत्रसिद्धिदा ॥ २०६ ॥ इति ते कथितं दिव्यं क्रतुकोटिफलप्रदम् ॥ नाम्नां सहस्रं तारायास्तकाराद्यं सुगोपितम् ॥ २०७ ॥ दानं यज्ञस्तपस्तीर्थं व्रतं चानशनादिकम् ॥ एकैकनाम संपुण्यं संख्यासु गदितं मया ॥ २०८ ॥ गुरौ देवे तथा मंत्रे यस्य स्यान्निश्चला मतिः ॥ तस्यैव स्तोत्रपाठेऽस्मिन्संभवेदधिकारिता ॥ २०९ ॥ महाचीनक्रमाभिन्नषोढान्यस्तकलेवरः ॥ क्रमदीक्षान्वितो मंत्री पठेदेतन्न चान्यथा ॥ २१० ॥ गंधपुष्पादिभिर्द्रव्यैर्मकारैः पंचाभिर्द्विजः ॥ संपूज्य तारां विधिवत्पठेदेतदनन्यधीः ॥ २११ ॥ अष्टम्यां च चतुर्दश्यां संक्रांतौ रविवासरे ॥ शनिभौमदिने रात्रौ ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः ॥ २१२ ॥ तारारात्रौ कालरात्रौ मोहरात्रौ विशेषतः ॥ पठनान्मंत्रसिद्धिः स्यात्सर्वज्ञत्वं प्रजायते ॥ २१३ ॥ श्मशाने प्रांतरे रम्ये शून्यागारे विशेषतः ॥ देवागारे गिरौ वापि स्तवपारायणं चरेत् ॥ २१४ ॥ ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं स्त्रीगमनादिकम् ॥ गुरुतल्पे तथा चान्यत्पातकं नश्यति ध्रुवम् ॥ २१५ ॥ लतामध्यगतो मंत्री श्रद्धया चार्चयेद्यदि ॥ आकर्षयेत्तदा रम्भां मेनामपि तथोर्वशीम् ॥ २१६ ॥ संग्रामसमये वीरस्तारासाम्राज्यकीर्त्तनात् ॥ चतुरंगचयं जित्वा सर्वसाम्राज्यभाग्भवेत् ॥ २१७ ॥ निशार्द्धे पूजनांते च प्रतिनाम्ना प्रपूजयेत् ॥ एकैकं करवीराद्यैर्मंदारैर्नीलशारिजैः ॥ २१८ ॥ गद्यपद्यमयी वाणी भूभोज्या च प्रवर्तते ॥ पाण्डित्यं सर्वशास्त्रेषु वादी त्रस्यति दर्शनात् ॥ २१९ ॥ वह्निजायांतकैरेतैस्ताराद्यैः प्रतिनामभिः ॥ राजन्यं सर्वराजेषु परकायप्रवेशनम् ॥ २२० ॥ अंतर्धानं खेचरत्वं बहुकायप्रकाशनम् ॥ गुटिका पादुका पद्मावती मधुमती तथा ॥ २२१ ॥ रसं रसायनाः सर्वाः सिद्धयः समुपस्थिताः ॥ कर्पूरागरुकस्तूरीचन्दनैः संयुतैर्जलैः ॥ २२२ ॥ मूलसम्पुटितेनैव प्रतिनाम्ना प्रपूजयेत् ॥ यक्षराक्षसगंधर्वविद्याधरमहोरगाः ॥ २२३ ॥ भूतप्रेतपिशाचाद्या डाकिनीशाकिनीगणाः ॥ दुष्टभैरववेतालाः कूष्माण्डाः किन्नरीगणाः ॥ २२४ ॥ भयभीताः पलायंते तेजसा साधकस्य च ॥ मंत्रज्ञाने समुत्पन्ने प्रतिनाम्ना विचारयेत् ॥ २२५ ॥ मंत्रसम्पुटितेनैव तस्य शांति

भवेद्ध्रुवम् ॥ ललना वशमायांति दासतां यांति पार्थिवाः ॥ २२६ ॥ अग्नयः शीततां यांति जापकस्य च भाषणात् ॥ एकावर्तनमात्रेण राजभीतिनिवारणम् ॥ २२७ ॥ वेलावर्तनमात्रेण पशुवृद्धिः प्रजायते ॥ दशावृत्त्या धनप्राप्तिर्विंशत्या राज्यमाप्नुयात् ॥ २२८ ॥ शतावृत्त्या गृहे तस्य चंचला निश्चला भवेत् ॥ गंगाप्रवाहवद्वाणी प्रलापादपि जायते ॥ २२९ ॥ पुत्रपौत्रान्वितो मंत्री चिरंजीवी तु देववत् ॥ शतद्वयावर्त्तनेन देववत्पूज्यते जनैः ॥ २३० ॥ शतपञ्चकमावर्त्य स भवेद्भैरवोपमः ॥ सहस्रावर्तनेनैव मंत्रस्तस्य स्वसिद्धिदः ॥२३१॥ तस्मिन्प्रवर्त्तते सर्वसिद्धिः सर्वार्थसाधिनी ॥ पादुकांजनवेतालपातालगमनादिकम् ॥२३२॥ विविधा यक्षिणीसिद्धिर्वाक्सिद्धिस्तस्य जायते ॥ शोषणं सागराणां च धरायां भ्रमणं तथा ॥ २३३ ॥ नवीनसृष्टिनिर्माणं सर्वं कर्तुं क्षमो भवेत् ॥ अयुतावर्तनेनैव तारां पश्यति चक्षुषा ॥ २३४ ॥ लक्षावर्तनमात्रेण तारापतिसमो भवेत् ॥ न किंचिद्दुर्लभं तस्य जीवन्मुक्तो हि भूतले ॥ २३५ ॥ कल्पांतेन तु तत्पश्चात्तारासायुज्यमाप्नुयात् ॥ यद्धि तारासमा विद्या नास्ति तारुण्यरूपिणी ॥ २३६ ॥ न चैतत्सदृशं स्तोत्रं भवेद्ब्रह्माण्डमण्डले ॥ वक्त्रकोटिसहस्रैस्तु जिह्वाकोटिशतैरपि ॥ २३७ ॥ न शक्यते फलं वक्तु मया कल्पशतैरपि ॥ चुम्बके निन्दके दुष्टे पिशुने जीवहिंसके ॥ २३८ ॥ सगोप्यं स्तोत्रमेतत्तद्दर्शनेनैव कुत्रचित् ॥ राज्यं देयं धनं देयं शिरो देयमथापि वा ॥ २३९ ॥ न देयं स्तोत्रवर्य्यं तु मंत्रादपि महोद्यतम् ॥ अनुलोमविलोमाभ्यां मूलसंपुटितं त्विदम् ॥ २४० ॥ लिखित्वा भर्जपत्रादौ गंधाष्टकपुरस्सरैः ॥ धारयेद्दक्षिणे बाहौ कण्ठे वामभुजे तथा ॥ २४१ ॥ तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याद्वह्निना नैव दह्यते ॥ तद्गात्रं शस्त्रसंघैश्च भिद्यते न कदाचन ॥ २४२ ॥ स भूमिवलये पुत्र विचरेद्भैरवोपमः ॥ वंध्यापि लभते पुत्रं निर्द्धनो धनमाप्नुयात् ॥ २४३ ॥ निर्विघ्नो लभते विद्यां तर्कव्याकरणादिकाम् ॥ २४४ ॥ इति निगदितमस्यास्तादिनाम्नां सहस्रं वरदमनुनिधानं दिव्यसाम्राज्यसंज्ञम् ॥ विधिहरिगिरिशाद्यै शक्ति[illegible]ं समाविधि पठनीयं कालितारासमज्ञैः ॥ २४५ ॥ इति श्रीब्रह्मयामले तारायास्तकारादिसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीताराहृदयप्रारंभः ॥ श्रीशिव उवाच ॥ शृणु पार्वति भद्रं ते लोकानां हितकारकम् ॥ कथ्यते सर्वदा गोप्यं ताराहृदयमुत्त

मम् ॥ १ ॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥ स्तोत्रं कथं समुत्पन्नं कृतं केन पुरा प्रभो ॥ कथ्यतां सर्वसद्वृत्तं कृपां कृत्वा ममोपरि ॥ २ ॥ श्रीशिव उवाच ॥ रणे देवासुरे पूर्वं कृतमिन्द्रेण सुप्रिये ॥ दुष्टशत्रुविनाशार्थं बलवृद्धियशस्करम् ॥ ३ ॥ ॐ अस्य श्रीमदुग्रताराहृदय स्तोत्रमंत्रस्य श्रीभैरवऋषिरनुष्टुप्छंदः श्रीमदुग्रतारादेवता स्त्रीं बीजं हूं शक्तिः नमः कीलकं सकलशत्रुविनाशार्थे पाठे विनियोगः ॥ ॐ स्त्रीं हृदयाय नमः १ । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा २ । ॐ हूं शिखायै वषट् ३ । ॐ त्रीं कवचाय हुं ४ । ॐ ऐं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ हंसः अस्त्राय फट् ६ ॥ अथ ध्यानम्—ॐ ध्यायेत्कोटिदिवाकरद्युतिनिभां बालेन्दुयुक्छेखरां रक्तांगीं रसनां सुरक्तवसनां पूर्णेन्दुबिंबाननाम् ॥ पाशं कर्त्रिमहांकुशादि दधतीं दोर्भिश्चतुर्भिर्युतां नानाभूषणभूषितां भगवतीं तारां जगत्तारिणीम् ॥ ४ ॥ एवं ध्यात्वा शुभां तारां ततस्तु हृदयं पठेत् ॥ तारिणी तत्त्वनिष्ठानां सर्वतत्त्वप्रकाशिका ॥ ५ ॥ रामाभिन्ना परा शक्तिः शत्रुनाशं करोतु मे ॥ सर्वदा शत्रुसंरंभे तारा मे कुरुतां जयम् ॥ ६ ॥ स्त्रीं त्रीं स्वरूपिणी देवि त्रिषु लोकेषु विश्रुता ॥ तव स्नेहान्मयाख्यातं न पैशुन्यं प्रकाश्यताम् ॥ ७ ॥ शृणु देवि तव स्नेहात्तारानामानि तत्त्वतः ॥ वर्णयिष्यामि गुप्तानि दुर्लभानि जगत्त्रये ॥ ८ ॥ तारिणी तरला तारा त्रिरूपा तरणिप्रभा ॥ सत्त्वरूपा महासाध्वी सर्वसज्जनपालिका ॥ ९ ॥ रमणीया रजोरूपा जगत्सृष्टिकरी परा ॥ तमोरूपा महामाया घोररावा भयानका ॥ १० ॥ कालरूपा कालिकाख्या जगद्विध्वंसकारिका ॥ तत्त्वज्ञानपरानन्दा तत्त्वज्ञानप्रदाऽनघा ॥ ११ ॥ रक्तांगी रक्तवस्त्रा च रक्तमालाप्रशोभिता ॥ सिद्धिलक्ष्मीश्च ब्रह्माणी महाकाली महालया ॥ १२ ॥ नामान्येतानि ये मर्त्याः सर्वदैकाग्रमानसाः ॥ प्रपठंति प्रिये तेषां किंकरत्वं करोम्यहम् ॥ १३ ॥ तारां तारपरां देवीं तारकेश्वरपूजिताम् ॥ तारिणीं भवपाथोधेरुग्रतारां भजाम्यहम् ॥ १४ ॥ ॥ स्त्रींह्रींहूंत्रींफणमंत्रेण जलं जप्त्वाऽभिषेचयेत् ॥ सर्वे रोगाः प्रणश्यंति सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ ॥ १५ ॥ त्रींस्वाहांतैर्महामंत्रैश्चन्दनं साधयेत्ततः ॥ तिलकं कुरुते प्राज्ञो लोको वश्यो भवेत्प्रिये ॥ १६ ॥ स्त्रींह्रींत्रींस्वाहामंत्रेण श्मशानं भस्म मंत्रयेत् ॥ शत्रोर्गृहे तत्प्रक्षेपाच्छत्रोर्मृत्युर्भविष्यति ॥ १७ ॥ ह्रींहूंत्रींफडंतमंत्रैः पुष्पं संशोध्य सप्तधा ॥ उच्चाटनं नय

त्याशु रिपूणां नैव संशयः ॥ १८ ॥ स्त्रींत्रींह्रींमंत्रत्रयेन अक्षताश्चाभिमंत्रिताः ॥ तत्प्रतिक्षेपमात्रेण शीघ्रमायाति मानिनी ॥ १९ ॥
(हंसः ॐ ह्रींस्त्रींहुंहंसः) इति मंत्रेण जप्तेन शोधितं कज्जलं प्रिये ॥ तस्यैव तिलकं कृत्वा जगन्मोहं समाचरेत् ॥ २० ॥ तारायाः
हृदयं देवि सर्वपापप्रणाशनम् ॥ वाजपेयादियज्ञानां कोटिकोटिगुणोत्तरम् ॥ २१ ॥ गंगादिसर्वतीर्थानां फलं कोटिगुणात्स्मृतम् ॥ महा
दुःखे महारोगे संकटे प्राणसंशये ॥ २२ ॥ महाभये महाघोरे पठेत्स्तोत्रं महोत्तमम् ॥ सत्यं सत्यं मयोक्तं ते पार्वति प्राणवल्लभे ॥
॥ २३ ॥ गोपनीयं प्रयत्नेन न प्रकाश्यमिदं क्वचित् ॥ २४ ॥ इति श्रीभैरवीतंत्रे शिवपार्वतीसंवादे श्रीमदुग्रताराहृदयं सम्पूर्णम् ॥
अथ सरस्वतीस्तोत्रप्रारंभः ॥ ॐ अस्य श्रीवाग्वादिनीशारदामंत्रस्य मार्कंडेयाश्वलायनऋषिः ॥ स्रग्धरानुष्टुभौ छंदसी ॥ श्रीसरस्वती
देवता ॥ श्रीसरस्वतीप्रसादसिध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ अथ ध्यानं— शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमाद्यां जगद्व्यापिनीं वीणापुस्तकधारिणी
मभयदां जाड्यांधकारापहाम् ॥ हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां वंदे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदम् ॥
॥ १ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ ह्रींह्रींहृद्यैकबीजे शशिरुचिकमलाकल्पविस्पष्टशोभे भव्ये भव्यानुकूले कुमतिवनदहे विश्ववंद्यांघ्रिपद्मे ॥ पद्मे
पद्मोपविष्टे प्रणतजनमनोमोदसंपादयित्रि प्रोत्फुल्लज्ञानकूटे हरिनिजदयिते देवि संसारसारे ॥ २ ॥ ऐंऐंऐंइष्टमंत्रे कमलभवमुखां
भोजरूपे स्वरूपे रूपारूपप्रकाशे सकलगुणमये निर्गुणे निर्विकारे ॥ न स्थूले नैव सूक्ष्मेऽप्यविदितविषये नापि विज्ञानतत्त्वे विश्वे
विश्वांतराले सुरवरनमिते निष्कले नित्यशुद्धे ॥ ३ ॥ ह्रींह्रींह्रींजापतुष्टे हिमरुचिमुकुटे वल्लकीव्यग्रहस्ते मातर्मातर्नमस्ते दह दह
जडतां देहि बुद्धिं प्रशस्ताम् ॥ विद्ये वेदांतगीते श्रुतिपरिपठिते मोक्षदे मुक्तिमार्गे मार्गातीतप्रभावे भव मम वरदा शारदे शुभ्रहारे ॥४ ॥
धींधींधींधारणाख्ये धृतिमतिनुतिभिर्नामभिः कीर्तनीये नित्ये नित्ये निमित्ते मुनिगणनमिते नूतने वै पुराणे ॥ पुण्ये पुण्यप्रभावे हरिहर
नमिते वर्णशुद्धे सुवर्णे मंत्रे मात्रार्थतत्त्वे मतिमति मतिदे माधवप्रीतिनादे॥५॥ह्रींक्ष्रींधींह्रींस्वरूपे दह दह दुरितं पुस्तकव्यग्रहस्ते संतुष्टा
कारचिते स्मितमुखि सुभगे जंभनि स्तंभविद्ये॥ मोहे मुग्धप्रबोधे मम करु सुमतिं ध्वांतविध्वंसनित्ये गीर्वाग्गौर्भारती त्वं कविवृषरसना

सिद्धिदा सिद्धिसाध्या ॥ ६ ॥ सौंसौंसौंशक्तिवींजे कमलभवमुखांभोजभूतस्वरूपे रूपारूपप्रकाशे सकलगुणमये निर्गुणे निर्विकारे ॥
न स्थूले नैव सूक्ष्मेऽप्यविदितविभवे जाप्यविज्ञानतत्त्वे विश्वे विश्वांतराले सुरगणनमिते निष्कले नित्यशुद्धे ॥ ७ ॥ स्तौमि त्वां
त्वां च वंदे भज मम रसनां मा कदाचित्त्यजेथा मा मे बुद्धिर्विरुद्धा भवतु न च मनो देवि मे जातु पापम् ॥ मा मे दुःखं कदाचिद्विपदि
च समयेऽप्यस्तु मेऽनाकुलत्वं शास्त्रे वादे कवित्वे प्रसरतु मम धीर्मास्तु कुंठा कदाचित् ॥ ८ ॥ इत्येतैः श्लोकमुख्यैः प्रतिदिनमुषसि
स्तौति यो भक्तिनम्रो देवीं वाचस्पतेरप्यतिमतिविभवो वाक्पटुर्नष्टपंकः ॥ स स्यादिष्टार्थलाभः सुतमिव सततं याति तं सा च देवी
सौभाग्यं तस्य लोके प्रसरति कविता विघ्नमस्तं प्रयाति ॥ ९ ॥ ब्रह्मचारी व्रती मौनी त्रयोदश्यां निरामिषः ॥ सारस्वतो नरः पाठात्स
स्यादिष्टार्थलाभवान् ॥ १० ॥ पक्षद्वयेऽपि यो भक्त्या त्रयोदश्येकविंशतिम् ॥ अविच्छेदं पठेद्धीमान्ध्यात्वा देवीं सरस्वतीम् ॥ ११ ॥
शुक्लांबरधरां देवीं शुक्लाभरणभूषिताम् ॥ वांछितं फलमाप्नोति स लोके नात्र संशयः ॥ १२ ॥ इति ब्रह्मा स्वयं प्राह सरस्वत्याः
स्तवं शुभम् ॥ प्रयत्नेन पठेन्नित्यं सोऽमृतत्वं प्रयच्छति ॥ १३ ॥ इति ब्रह्मपुराणे ब्रह्मणा कृतं सरस्वत्याः स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥
इति श्रीमंत्रमहार्णवे मध्यखण्डे तारातंत्रे पञ्चमस्तरङ्गः ॥ ५ ॥ ॥ छ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ छ ॥ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ षोडशी (त्रिसुरसुंदरी) श्रीविद्यातंत्रं प्रारभ्यते ॥ तत्रादौ पटलप्रारंभः ॥ त्रिनेत्रं कमलाकांतं नृसिंहं चन्द्रशेखरम् ॥ नत्वा संक्षेपतो वक्ष्ये श्रीविद्यां मंत्रनायिकाम् ॥ १ ॥ इयं तु सुंदरी विद्या देवानामपि दुर्लभा ॥ गोपनीया प्रयत्नेन सर्व्वसम्पत्करी मता ॥ २ ॥ अपरीक्षितशिष्याय तां न दद्यात्कदाचन ॥ यदुच्चारणमात्रेण पापसंघः प्रलीयते ॥ आत्मा देयः शिरो देयं न देयः षोडशाक्षरः ॥ ३ ॥ मंत्रो यथा मंत्रोमहोदधौ—श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ॥ इति षोडशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अस्य त्रिपुरसुंदरीमंत्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः । पंक्तिश्छंदः । श्रीमत्त्रिपुरसुंदरी देवता । ऐं बीजम् । सौः शक्तिः । क्लीं कीलकम् । ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ दक्षिणामूर्तिऋषये नमः शिरसि १ । पंक्तिच्छंदसे नमः मुखे २ । श्रीमत्त्रिपुरसुंदरी देवतायै नमः हृदि ३ । ऐं बीजाय नमः गुह्ये ४ । सौः शक्तये नमः पादयोः ५ । क्लीं कीलकाय नमः नाभौ ६ । विनियोगाय नमः सर्वांगे ७॥ इति ऋष्यादि न्यासः ॥ ह्रीं श्रीं



षोडशी (त्रिपुसुंदरी) देव्यै नमः ।

अं मध्यमाभ्यां नमः १ । ह्रीं श्रीं आं अनामिकाभ्यां नमः २ । ह्रीं श्रीं सौः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ३ । ह्रीं श्रीं अं अगुष्ठाभ्यां नमः ४ । ह्रीं श्रीं आं तर्जनीभ्यां नमः ५ । ह्रीं श्रीं सौः करतककरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करशुद्धिन्यासः ॥ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं सौः देव्यासनाय नमः

१ तंत्रान्तरेऽपि–ह्रींकएईलह्रीं हसकहल ह्रीं सकलह्रीं इति षोडशाक्षरो मंत्रः । २ आनंदभैरवऋषिः । ३ देवीगायत्रीच्छंदः । ४ नाभौ । ५ स्वाधिष्ठाने । ६ मूलाधारे । ७ पादयोः ।

पादयोः १। ह्रीं श्रीं ह्रैं ह्सक्लीं ह्सौः चक्रासनाय नमः जंघयोः २ । ह्रीं श्रीं ह्सैं ह्सक्लीं ह्सौः सर्वमंत्रासनाय नमः जानुनोः ३ । ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ब्लें साध्यसिद्धासनाय नमो लिंगे ४ ॥ इत्यासनन्यासः ॥ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः हृदयाय नमः १। ॐ ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा २ । कएईलह्रीं शिखायै वषट् ३। हसकहलह्रीं कवचाय हुम् ४। सकलह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ जगद्वशीकरणसंमोहनन्यासौ विस्तरभयान्नोच्येते ॥ ॐ श्रीं नमः पादयोः १। ॐ ह्रीं नमः जंघयोः २ । ॐ क्लीं नमः जानुनोः ३ । ॐ ऐं नमः कट्योः ४ । ॐ सौः नमः लिंगे ५। ॐ ॐ नमः पृष्ठे ६। ॐ ह्रीं नमः नाभौ ७। ॐ श्रीं नमः पार्श्वयोः ८। ॐ कएईलह्रीं नमः स्तनयोः ९ । ॐ हसकहलह्रीं नमः अंसयोः १० । ॐ सकलह्रीं नमः कर्णयोः ११। ॐ सौः नमः ब्रह्मरंध्रे १२। ॐ ऐं नमः वक्त्रे १३। ॐ क्लीं नमः नेत्रयोः १४। ॐ ह्रीं नमः कर्णयोः १५। ॐ श्रीं नमः कर्णशष्कुल्योः १६ ॥ इति वर्णन्यासः ॥ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः ब्लूं वशिनीवाग्देवतायै नमः शिरसि१। कं खं गं घं ङं क्लीं ह्रीं कामेश्वरीवाग्देवतायै नमो ललाटे २ । चं छं जं झं ञं क्लीं मोहिनीवाग्देवतायै नमो भ्रूमध्ये ३। टं ठं डं ढं णं प्लूं विमलावाग्देवतायै नमः कंठे ४ । तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणावाग्देवतायै नमो हृदि ५। पं फं बं भं मं ह्स्ल्व्यूं जयिनीवाग्देवतायै नमो नाभौ ६ । यं रं लं वं झ्म्र्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै नमो मूलाधारे ७। शं षं सं हं ळं क्षं क्ष्म्रीं कौलिनीवाग्देवतायै नमः ऊर्वादिपादांतम् ८ । वाग्देवतायै नमः पादयोः ९ ॥ इति वाग्देवतान्यासः ॥ ॐ श्रीं नमः ब्रह्मरंध्रे १ । ॐ ह्रीं नमः ललाटे २ । ॐ क्लीं नमः नेत्रयोः ३। ॐ ऐं नमः कर्णयोः ४ । ॐ सौः नमः अंसयोः ५। ॐ ॐ नमः गंडयोः ६ । ॐ ह्रीं नमः दंतयोः ७ । ॐ श्रीं नमः ओष्ठयोः ८ । ॐ कएईलह्रीं नमः जिह्वायाम् ९ । ॐ हसकहलह्रीं नमः मुखे १० । ॐ सकलह्रीं नमः पृष्ठे ११ । ॐ सौः नमः सर्वांगे १२ । ॐ ऐं नमः हृदि १३ । ॐ क्लीं नमः स्तनयोः १४ ॐ ह्रीं नमः कुक्षौ १५ । ॐ श्रीं नमः लिंगे १६ । ॥ इति सृष्टिन्यासः ॥ ॐ श्रीं नमः अंगुष्ठयोः १ । ॐ ह्रीं नमः तर्जन्योः २ ।

ॐ क्लीं नमः मध्यमयोः ३ । ॐ ऐं नमः अनामिकयोः ४ । ॐ सौः नमः कनिष्ठिकयोः ५ । ॐ ॐ नमः ब्रह्मरंध्रे ६ । ॐ ह्रीं नमः मुखे ७ । ॐ श्रीं नमः हृदि ८ । ॐ कएईलह्रीं नमः नाभ्यादिपादांतम् ९ । ॐ हसकहलह्रीं नमः कंठादिनाभ्यंतम् १० । ॐ सकलह्रीं नमः ब्रह्मरंध्रात्कंठांतम् ११ । ॐ सौः नमः पदांगुष्ठयोः १२ । ॐ ऐं नमः पदतर्जन्योः १३ । ॐ क्लीं नमः पदमध्यमयोः १४ । ॐ ह्रीं नमः पदानामिकयोः १५ । ॐ श्रीं नमः पदकनिष्ठयोः १६ । इति स्थितिन्यासं कृत्वा पंचावृत्तिन्यासं कुर्य्यात् ॥ तद्यथा–ॐ श्रीं नमः मूर्ध्नि १ ॐ ह्रीं नमः वक्त्रे २ । ॐ क्लीं नमः दक्षनेत्रे ३ । ॐ ऐं नमः वामनेत्रे ४ । ॐ सौः नमः दक्षकर्णे ५ । ॐ ॐ नमः वामकर्णे ६ । ॐ ह्रीं नमः दक्षिणांसे ७ । ॐ श्रीं नमः वामांसे ८ । ॐ कएईलह्रीं नमः दक्षिणगंडे ९ । ॐ हसकहलह्रीं नमः वामगंडे १० । ॐ सकलह्रीं नमः ऊर्ध्वोष्ठे ११ । ॐ सौः नमः अधरोष्ठे १२ । ॐ ऐं नमः वक्त्रमध्ये १३ । ॐ क्लीं नमः ऊर्ध्वदंतपंक्तौ १४ । ॐ ह्रीं नमः अधोदंतपंक्तौ १५ । ॐ श्रीं नमः वदने १६ । इत्येको न्यासः ॥ १ ॥ ॐ श्रीं नमः शिखायाम् १ । ॐ ह्रीं नमः शिरसि २ । ॐ क्लीं नमः ललाटे ३ । ॐ ऐं नमः भ्रुवोः ४ । सौः नमः नासिकयोः ५ । ॐ ॐ नमः वक्त्रे ६ । ॐ ह्रीं नमः दक्षिणहस्तमूले ७ । ॐ श्रीं नमः दक्षिणकूर्परे ८ । ॐ कएईलह्रीं नमः दक्षिणमणिबंधे ९ । ॐ हसकहलह्रीं नमः दक्षहस्तांगुलिमूले १० । ॐ सकलह्रीं नमः दक्षहस्तांगुल्यग्रे ११ । ॐ सौः नमः वामहस्तमूले १२ । ॐ ऐं नमः वामकूर्परे १३ । ॐ क्लीं नमः वाममणिबंधे १४ । ॐ ह्रीं नमः वामहस्तांगुलिमूले १५ । ॐ श्रीं नमः वामहस्तांगुल्यग्रे १६ । इति द्वितीयो न्यासः ॥ २ ॥ ॐ श्रीं नमः शिरसि १ । ॐ ह्रीं नमः ललाटे २ । ॐ क्लीं नमः दक्षनेत्रे ३ । ॐ ऐं नमः वामनेत्रे ४ । सौः नमः मुखे ५ । ॐ ॐ नमः जिह्वायाम् ६ । ॐ ह्रीं नमः दक्षिणपादमूले ७ । ॐ श्रीं नमः दक्षिणजानुनि ८ । ॐ कएईलह्रीं नमः दक्षिणगुल्फे ९ । हसकह

१ मंत्रः यथावृत्तिकृतो येन तद्रूपतां व्रजेत् ।

ह्रीं नमः दक्षपादांगुलिमूले १०। ॐ सकलह्रीं नमः दक्षपादांगुल्यग्रे ११। ॐ सौः नमः वामपादमूले १२ । ॐ ऐं नमः वामजानुनि १३। ॐ क्लीं नमः वामगुल्फे १४। ॐ ह्रीं नमः वामपदांगुलिमूले १५ । ॐ श्रीं नमः वामपदांगुल्यग्रे १६ ॥ इति तृतीयो न्यासः॥ ३ ॥ ॐ श्रीं नमः शिरसि १ । ॐ ह्रीं नमः मुखे २। ॐ क्लीं नमः दक्षनेत्रे ३। ॐ ऐं नमः वामनेत्रे ४ । ॐ सौः नमः दक्षिणकर्णे ५ । ॐ ॐ नमः वामकर्णे ६। ॐ ह्रीं नमः दक्षनासापुटे ७। ॐ श्रीं नमः वामनासापुटे ८। ॐ कएईलह्रीं नमः दक्षकपोले ९ । ॐ हसकहलह्रीं नमः वामकपोले १० । ॐ सकलह्रीं नमः ऊर्ध्वोष्ठे ११ । ॐ सौः नमः अधरोष्ठे १२। ॐ ऐं नमः ऊर्ध्वदंतपंक्तौ १३। ॐ क्लीं नमः अधोदंतपंक्तौ १४। ॐ ह्रीं नमः मूर्ध्नि १५। ॐ श्रीं नमः मुखे १६ ॥ इति चतुर्थो न्यासः ॥ ४ ॥ ॐ श्रीं नमः ललाटे १। ॐ ह्रीं नमः गले २। ॐ क्लीं नमः हृदि ३। ॐ ऐं नमः नाभौ ४ । ॐ सौः नमः मूलाधारे ५ । ॐ ॐ नमः ब्रह्मरंध्रे ६। ॐ ह्रीं नमः मुखे ७। ॐ श्रीं नमः गुदे ८ । ॐ कएईलह्रीं नमः आधारे ९ । ॐ हसकहलह्रीं नमः हृदि १० । ॐ सकलह्रीं नमः ब्रह्मरंध्रे ११ । ॐ सौः नमः दक्षिणहस्ते १२ । ॐ ऐं नमः वामहस्ते १३ । ॐ क्लीं नमः दक्षपादे १४। ॐ ह्रीं नमः वामपादे १५। ॐ श्रीं नमः हृदि १६ ॥ इति पंचमो न्यासः ॥ ५ ॥ इति न्यासपंचकं कृत्वा व्यापकं कुर्य्यात् । तद्यथा—ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं सौं ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ इति सर्वांगे ॥ १ ॥ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ नमः इति हृदये ॥ २ ॥ इति विन्यस्य षोढा न्यासादीन् कुर्य्यात्। षोढान्यासादयो विस्तरभयान्नोक्तास्ते तारापटले अवलोक्य कार्याः। तथा च—षोढान्यासादयो न्यासाः कार्य्याः सौभाग्यवांछया॥ नोच्यंते विस्तरभयान्नैव चावश्यकाश्च ते ॥ १ ॥ अथ तंत्रांतरे न्यासे विशेषः। ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं भगवति महात्रिपुरसुंदरि स्वाहा। इति कुलुकां शिरसि १। ॐ सेतुं हृदि २ । ह्रीं महासेतुं कंठे ३। ह्रीं महासेतुं सहस्रारे ४। ॐ श्रीं अं एं क्लीं सौं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं

सं हं क्षं इति निर्वाणनाभौ ५। क्लीं कामबीजं लिंगे ६। जिह्वायां मूलविद्यां विचिंत्य यथाशक्ति जपेत् ॥ इति कुकुकान्यासः ॥ ॐ अस्य श्रीरहस्यन्यासमंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुस्सामानि च्छन्दांसि चैतन्यशक्तिमहात्रिपुरसुन्दरी देवता कृताकृतन्यासपूर्णतासिद्धये विनियोगः ॥ ब्रह्मविष्णुमहेश्वरऋषिभ्यो नमः शिरसि १ । ऋग्यजुस्सामच्छन्दोभ्यो नमः मुखे २ । चैतन्यशक्तिमहात्रिपुरसुंदरीदेवतायै नमः हृदये ३ । विनियोगाय नमः पादयोः ४ । ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं सदाशिवासनायै महात्रिपुरसुंदर्य्यै नमः मूलाधारे १ । ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं रतिप्रियायै महात्रिपुरसुंदर्य्यै नमः स्वाधिष्ठाने २। ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं ज्ञानरूपायै महात्रिपुरसुंदर्य्यै नमः मणिपूरे ३। ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं ध्यानरूपायै महात्रिपुरसुंदर्य्यै नमः अनाहते ४ । ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं विशुद्धस्वरूपायै महात्रिपुरसुंदर्य्यै नमः विशुद्धौ ५। ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं स्वतंत्रस्वरूपायै महात्रिपुरसुंदर्य्यै नमः आज्ञायाम् ६। ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं आनंदरूपायै महात्रिपुरसुंदर्य्यै नमः सहस्रारे ७ ॥ इति रहस्यन्यासः ॥ ह्रीं कामाय नमः १ । क्लीं मन्मथाय नमः २। ऐं कन्दर्पाय नमः ३ । क्लूं मकरध्वजाय नमः ४। स्त्रीं मीनकेतवे नमः ५। ततः ऐं हृदयाय नमः १ । क्लीं शिरसे स्वाहा २ । सौं शिखायै वषट् ३। ऐं कवचाय हुम् ४ । क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। सौं अस्त्राय फट् ६ ॥ इति कामन्यासः ॥ ऐं रत्यै नमः लिंगे १। क्लीं प्रीत्यै नमः हृदि २ । सौं मनोभवायै नमः भ्रूमध्ये ३ । सौं अमृतास्यायै नमः भ्रूमध्ये ४। क्लीं योगिन्यै नमः हृदि ५ । ऐं विश्वयोन्यै नमः लिंगे ६ ॥ इति रत्यादिन्यासः ॥ स्हौं ईशानाय मनोभवाय नमः शिरसि १ । स्हौं तत्पुरुषाय मकरध्वजाय नमः मुखे २ । स्हुं अघोरकुमाराय कंदर्पाय नमः हृदि ३। स्हीं वामदेवाय मन्मथाय नमः गुह्ये ४। स्हूं सद्योजाताय कामदेवाय नमः पादयोः ५ । स्हौं ईशानाय मनोभवाय नमः ऊर्ध्ववक्त्रे मस्तके १। स्हौं तत्पुरुषाय मकरध्वजाय नमः पूर्ववक्त्रे भाले २। स्हुं अघोरकुमाराय कन्दर्पाय नमः दक्षिणवक्त्रे दक्षकर्णे ३ । स्हीं वामदेवाय मन्मथाय नमः उत्तरवक्त्रे वामकर्णे ४ । स्हूं सद्योजाताय कामदेवाय

नमः पश्चिमवक्त्रे चूडाधः ५। इति मनोभवन्यासः ॥ ह्रीं क्षोभणबाणाय नमः हृदि १। ह्रीं द्रावणबाणाय नमः शिरसि नमः २। क्लीं आकर्षणबाणाय नमः शिखायाम् ३। ब्लूं मोहनबाणाय नमः कवचम् ४। सः उन्मादनबाणाय नमः अस्त्रम् ५। इति बाणन्यासः ॥ ऐं ह्रीं क्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ क्लां श्रीं सौः ऐं तर्जनीभ्यां नमः २। सौं औं ह्रीं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३। ऐं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४। क्लींसकलह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। सौः सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं कएईलह्रीं सर्वज्ञायै महात्रिपुरसुंदर्य्यै हृदयाये नमः १। ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सहकहलह्रीं नित्यतृप्तायै महात्रिपुरसुन्दर्य्यै शिरसे स्वाहा २। ऐं ह्रीं श्रीं सौः सकलह्रीं अनादिबोधायै महात्रिपुरसुन्दर्य्यै शिखायै वषट् ३। ऐं ह्रीं श्रीं ऐं कएईलह्रीं स्वतंत्रायै महात्रिपुरसुंदर्य्यै कवचाय हुं ४। ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हसकहलह्रीं नित्यमलुप्तशक्तये महात्रिपुरसुंदर्य्यै नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ऐं ह्रीं श्रीं सौः सकलह्रीं अनंतायै महात्रिपुरसुंदर्य्यै अस्त्राय फट् ६॥ इति स्वतंत्रन्यासः॥ इति तंत्रांतरोक्तन्यासं कृत्वा संक्षोभद्रावणाकर्षवश्योन्मादमहांकुशखेचरीबीजयोन्याख्येति नव मुद्राः प्रदर्शयेत् ॥ अथ ध्यानम्—बालार्कायुततेजसं त्रिनयनां रक्तांबरोल्लासिनीं नानालंकृतिराजमानवपुषं बालोडुराट्शेखराम् ॥ हस्तैरिक्षुधनुःसृणिं सुमशरं पाशं मुदा बिभ्रतीं श्रीचक्रस्थितसुंदरीं त्रिजगतामाधारभूतां स्मरेत् ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूजयेत् ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति संपूज्य पीठमध्ये ॐ ब्रं ब्रह्मप्रेताय नमः १। ॐ विं विष्णुप्रेताय नमः २। ॐ रुं रुद्रप्रेताय नमः ३। ॐ ईं ईश्वरप्रेताय नमः ४। ॐ सं सदाशिवप्रेताय नमः ५। ॐ सुं सुधार्णवासनाय नमः ६। ॐ प्रें प्रेतांबुजासनाय नमः ७। ॐ दिं दिव्यासनाय नमः ८। ॐ चं चक्रासनाय नमः ९। ॐ सं सर्वमंत्रासनाय नमः १०। ॐ सं साध्यसिद्धासनाय नमः ११ ॥ इति पूजयेत् ॥ इति पीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तद्यथा—पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु ॐ इच्छायै नमः १। ॐ ज्ञानायै नमः २। ॐ क्रियायै नमः ३। ॐ कामिन्यै नमः ४। ॐ कामदायिन्यै नमः ५। ॐ रत्यै नमः ६। ॐ रतिप्रियायै नमः ७। ॐ नंदायै नमः ८।

मध्ये ॐ मनोन्मन्यै नमः ९ ॥ इति नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादियंत्रं ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संप्रोञ्छ्य तदुपरि देव्यष्टगंधेन बिंदुगर्भं त्रिकोणाष्टदलं द्वादशदलं चतुर्दशदलाष्टदलषोडशत्रिकोणरूप दलं च तस्योपरि त्रिरेखात्मकभूपुरं च लिखित्वा 'ऐं परायै अपरायै परापरायै ह्सौः सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनाय नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् । तद्यथा—पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य—ॐ संविन्मये परे देवि परामृत रसप्रिये ॥ अनुज्ञां देहि त्रिपुरे परिवारार्चनाय मे ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इत्याज्ञां गृहीत्वावरणपूजां कुर्यात् । तद्यथा—पूज्य पूजकयोरंतरालं प्राची तदनुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्य अग्न्यादिकोणेषु वामावर्तेन च । ऐं बीजाय नमः । ऐं बीजश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र वदेत् ॥ १ ॥ क्लीं बीजाय नमः । क्लीं बीजश्रीपा० २ । सौः बीजाय नमः । सौः बीजश्रीपा० ३ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य—अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ ह्रीं श्रीं प्रकटगुप्तगुप्ततरसंप्रदायकुलनिगर्भरहस्यपरापररहस्यसंज्ञकश्रीचक्रगतयोगिनीपादुकाभ्यो नमः । इति पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततस्त्रिकोणबाह्ये वामपार्श्वे दक्षहस्तेन पुष्पचंदनाक्षतानि तर्पयामीति वाम हस्तेन जलं चार्पयेत् । जले आर्द्रकं प्रास्यमिति केचित् । ॐ ॐ ऐं क्लीं सौः ॐ कामेश्वर्यै नमः । नमः कामेश्वरि इच्छाकामफल प्रदे सर्वसत्त्ववशंकारि सर्वजगत्क्षोभणकारि हुं हुं हुं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सौं क्लीं ऐं कामेश्वरि नित्याश्रीपा० १ । ॐ अं ऐं भगमालिन्यै नमः । भगभुगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोने भगनिपातिनि सर्वभगवशंकारि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षुभक्षोभय सर्वसत्त्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लूं जं ब्लूं भें ब्लूं मों ब्लूं हें ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं हर ब्लें ह्रीं भगमालिनी नित्याश्रीपा० २ । इं ह्रीं नित्यक्लिन्नायै

नमः। नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा। नित्यक्लिन्ना नित्याश्रीपा० ३ । ईं ॐ क्रौं भ्रौं क्रौं त्रौं छ्रौं ज्रौं ह्लौं भेरुंडायै नमः स्वाहा। भेरुंडा नित्याश्रीपा० ४। ओं ॐ ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः। वह्निवासिनि नित्याश्रीपा० ५ ॥ इति पंच पूजयेत् ॥ ततः दक्षिणपार्श्वे ॐ ह्रीं प्रें सः नित्यक्लिन्ने मदद्रवे महाविद्येश्वरि नमः स्वाहा। महाविद्येश्वरीनित्याश्रीपा० १ ऋं ॐ ह्रीं शिवदूत्यै नमः । शिवदूतीनित्याश्रीपा० २। ॠं ॐ ह्रीं हुं खेचछेक्षः स्त्रीं हें क्षें ह्रीं फट् त्वरितायै नमः। त्वरितानित्याश्रीपा० ३ । ऌं ऐं क्लीं सौः कुलसुंदर्य्यै नमः। कुलसुंदरीनित्याश्रीपा० ४। ॡं ऐं क्लीं सौः ह्स्रौं ह्क्लीं ह्स्रौः सौः क्लीं ऐं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं नित्यायै नमः । नित्याश्रीपा० ५ ॥ इति पंच पूजयेत् ॥ देव्यग्रे एँ ॐ ह्रीं फ्रें स्रूँ ह्रीं क्रौं नित्यमदद्रवे हूँ क्रौं नीलपताकायै नमः । नीलपताकिनी नित्याश्रीपा० १ । ऐं ॐ स्रव्फ्रूं विजयायै नमः। विजयानित्याश्रीपा० २ । ॐ स्वौं सर्वमंगलायै नमः । सर्वमंगलानित्याश्रीपा० ३। ओं ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलंती प्रज्वलंती ज्वल ज्वल प्रज्वल हुं रं रं हुं फट्। ज्वालामालिन्यै नमः। ज्वालामालिनीनित्याश्रीपा० ४। अं क्रौं विचित्रानित्यायै नमः । विचित्रानित्याश्रीपा० ५ ॥ इति पंच पजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततो भूपुराद्बहिः पूर्वद्वारे गं गणपते नमः १। पश्चिमद्वारे बं बटुकाय नमः २ । उत्तरद्वारे ह्रीं दुर्गायै नमः ३। दक्षिणद्वारे क्षं क्षेत्रपालाय नमः ४ ॥ इति द्वारपालान् पूजयेत् ॥ ततो बाह्यचतुरस्रस्य प्रथमरेखायां पश्चिमादि द्वारचतुष्टये अणिमासिद्धि श्रीपा० १। लघिमासिद्धि श्रीपा० २ । महिमासिद्धि श्रीपा० ३ । ईशित्वसिद्धिश्रीपा० ४ । कोणचतुष्टये वशित्वसिद्धि श्रीपा० ५। प्राकाश्यसिद्धि श्रीपा० ६ । भक्तिसिद्धि श्रीपा० ७। इच्छासिद्धि श्रीपा० ८ । वरुणनिर्ऋतिमध्ये प्राप्ति सिद्धि श्रीपा० ९।९। पूर्वेशानयोर्मध्ये सर्वकामसिद्धि श्रीपा० १० ॥ इति पूजयेत् ॥ मध्यरेखायां पश्चिमादिद्वारचतुष्टये ह्रीं श्रीं आं ब्राह्म्यै नमः। ब्राह्मीश्रीपा० १। ईं माहेश्वर्य्यै नमः । माहेश्वरीश्रीपा० २ । ऊं कौमार्य्यै नमः । कौमारीश्रीपा० ३ । ॠं वैष्णव्यै नमः। वैष्णवीश्रीपा० ४। कोणचतुष्टये ह्रीं श्रीं ऌं वाराह्यै नमः। वाराहीश्रीपा० ५ । ह्रीं श्रीं ऐं इन्द्राण्यै नमः । इन्द्राणीश्रीपा०

६। ह्रीं श्रीं औं चामुंडायै नमः। चामुंडाश्रीपा० ७। ह्रीं श्रीं अः महालक्ष्म्यै नमः। महालक्ष्मीश्रीपा० ८। इति पूजयेत्। तृतीयरेखायां पश्चिमादिद्वारचतुष्टये ॐ त्रिखण्डाक्षमुद्रां-श्रीपा० १। ह्रीं सर्वसंक्षोभिणीमुद्रां-श्रीपा० २। ह्रीं सर्वविद्राविणीमुद्रां-श्रीपा० ३। क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्रां-श्रीपा० ४। कोणचतुष्टये ब्लूं सर्ववशंकरीमुद्रां-श्रीपा० ५। ॐ सर्वोन्मादकरीमुद्रां-श्रीपा० ६। क्रों महांकुशमुद्रां-श्रीपा० ७। ह्स्रूं खेचरीमुद्रां-श्रीपा० ८। तत्त्रिवलये बीजमुद्रां-श्रीपा० ९ योनिमुद्रां-श्रीपा० १०। चार्वादर्शनाय नमः ११। इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्। ततो हस्तेनार्घ्यजलं गृहीत्वा अत्र त्रैलोक्यमोहनचतुरस्रचक्रे श्रीमहात्रिपुरसुंदरीसमधिष्ठिते एता ईशित्वाद्याः प्रकटयोगिन्यः समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः संपूजिताः संतु। इति तर्पयेत्॥ इति तृतीयावरणम्॥३॥ ततः षोडशदलेषु पश्चिमदलादारभ्य वामावर्त्तेन च ह्रीं श्रीं अं कर्माकर्षिणीनित्या-कलौं-श्रीपा० १। आं बुद्ध्याकर्षिणीनित्याकलौं-श्रीपा० २। इं अहंकाराकर्षिणीनित्याकलौं-श्रीपा० ३ ईं शब्दाकर्षिणीनित्याकलौं-श्रीपा० ४ उं रूपाकर्षिणीनित्याकलौं-श्रीपा० ५। ऊं स्पर्शाकर्षिणीनित्याकलौं-श्रीपा० ६। ऋं रसाकर्षिणीनित्याकलौं-श्रीपा० ७। ॠं गंधाकर्षिणीनित्याकलौं-श्रीपा० ८। लृं चित्ताकर्षिणीनित्याकलौं-श्रीपा० ९। ॡं धैर्य्याकर्षिणीनित्याकलौं-श्रीपा० १०। एं स्मृत्याकर्षिणीनित्याकलौं-श्रीपा० ११। ऐं नामाकर्षिणीनित्याकलौं-श्रीपा० १२। ओं बीजाकर्षिणीनित्याकलौं-श्रीपा० १३। औं अमृताकर्षिणीनित्याकलौं-श्रीपा० १४। अं शरीराकर्षिणीनित्याकलौं-श्रीपा० १५। अः आत्माकर्षिणीनित्याकलौं-श्रीपा० १६। इति षोडश योगिनीः पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्॥ ततो हस्तेनार्घ्यजलं गृहीत्वा अत्र सर्वाशापरिपूरके षोडशदलचक्रे श्रीमहात्रिपुरसुंदरीसमधिष्ठिते एताः कामाकर्षिण्याद्या गुप्तयोगिन्यः समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः पूजिताः संतु इति वदेत्॥ इति चतुर्थावरणम्॥ ४॥ ततोऽष्टदलचक्रे पूर्वादिक्रमेण ह्रीं श्रीं कँ खँ गँ घँ ङँ अनंगकुसुमादेवी"-श्रीपा० १। ह्रीं श्रीं चँ छँ जँ झँ ञँ अनंगमेखलादेवी"-

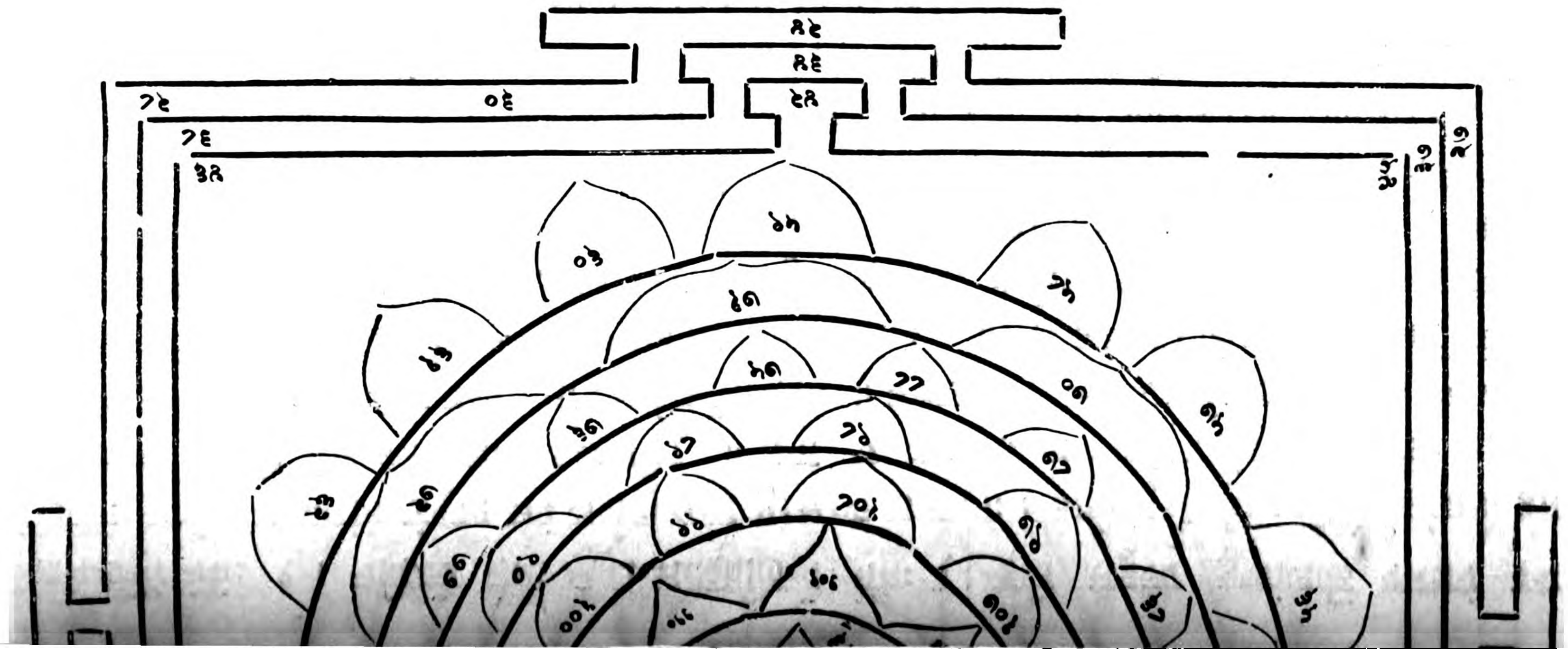
श्रीपा० २। ह्रीं श्रीं टँ ठँ डँ ढँ णँ अनंगमदनादेवी[69]—श्रीपा० ३। ह्रीं श्रीं तँ थँ दँ धँ नँ अनंगमदनातुरादेवी[70]—श्रीपा० ४। ह्रीं श्रीं पँ फँ बँ भँ मँ अनंगरेखादेवी[71]—श्रीपा० ५। ह्रीं श्रीं यँ रँ लँ वँ अनंगयोगिनीदेवी[72]—श्रीपा० ६। ह्रीं श्रीं शँ षँ सँ हँ अनंगकुशादेवी[73]—श्रीपा० ७। ह्रीं श्रीं ळँ क्षँ अनंगमालिनीदेवी[74]—श्रीपा० ८॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्॥ ततो हस्तेनार्घ्यजलं गृहीत्वा अत्र संक्षोभकरेऽष्टदलचक्रे श्रीमहात्रिपुरसुंदरीसमधिष्ठिते एता अनंगकुसुमाद्याः गुप्ततरा योगिन्यः समुद्राः ससिद्धयः सायुधा सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः पूजिताः संतु इति वदेत्॥ इति पंचमावरणम्॥ ५॥ ततश्चतुर्दशारचक्रे पश्चिमादिवामावर्तेन ह्रीं श्रीं सर्वसंक्षोभिणीशक्ति—श्रीपा० १। ह्रीं श्रीं सर्वद्राविणीशक्ति—श्रीपा० २। ह्रीं श्रीं सर्वाकर्षिणीशक्ति—श्रीपा० ३। ह्रीं श्रीं सर्वाह्लादिनीशक्ति—श्रीपा० ४। ह्रीं श्रीं सर्वसंमोहिनीशक्ति—श्रीपा० ५। ह्रीं श्रीं सर्वस्तंभिनीशक्ति—श्रीपा० ६। ह्रीं श्रीं सर्वजृंभिणीशक्ति—श्रीपा० ७। ह्रीं श्रीं सर्ववशंकरीशक्ति—श्रीपा० ८। ह्रीं श्रीं सर्वरंजिनीशक्ति—श्रीपा० ९। ह्रीं श्रीं सर्वोन्मादिनीशक्ति—श्रीपा० १०। ह्रीं श्रीं सर्वार्थसाधिनीशक्ति—श्रीपा० ११। ह्रीं श्रीं सर्वाशापरिपूरिणीशक्ति—श्रीपा० १२। ह्रीं श्रीं सर्वमंत्रमयीशक्ति—श्रीपा० १३। ह्रीं श्रीं सर्वद्वंद्वक्षयकरीशक्ति—श्रीपा० १४॥ इति संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात्। ततो हस्तेनार्घ्यजलं गृहीत्वा अत्र सौभाग्यदायके चतुर्दशचक्रे श्रीमहात्रिपुरसुंदरीसमधिष्ठिते एताः संक्षोभिण्याद्याः शक्तयः संप्रदाययोगिन्यः समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः संपूजिताः संतु इति वदेत्॥ इति षष्ठावरणम्॥ ६॥ ततो दशारचक्रे पश्चिमादिवामावर्तेन च ह्रीं श्रीं सर्वसिद्धिप्रदादेवी—श्रीपा० १। ह्रीं श्रीं सर्वसंपत्प्रदादेवी[80]—श्रीपा० २। ह्रीं श्रीं सर्वप्रियंकरीदेवी[81]—श्रीपा० ३। ह्रीं श्रीं सर्वमंगलकारिणीदेवी[82]—श्रीपा० ४। ह्रीं श्रीं सर्वकामप्रदादेवी[83]—श्रीपा० ५। ह्रीं श्रीं सर्वदुःखविमोचिनीदेवी[84]—श्रीपा० ६। ह्रीं श्रीं सर्वांगसुंदरीदेवी[85]—श्रीपा० ७। ह्रीं श्रीं सर्वमृत्युविनाशिनीदेवी[86]—श्रीपा० ८। ह्रीं श्रीं सर्वविघ्ननिवारिणीदेवी[87]—श्रीपा० ९। ह्रीं श्रीं

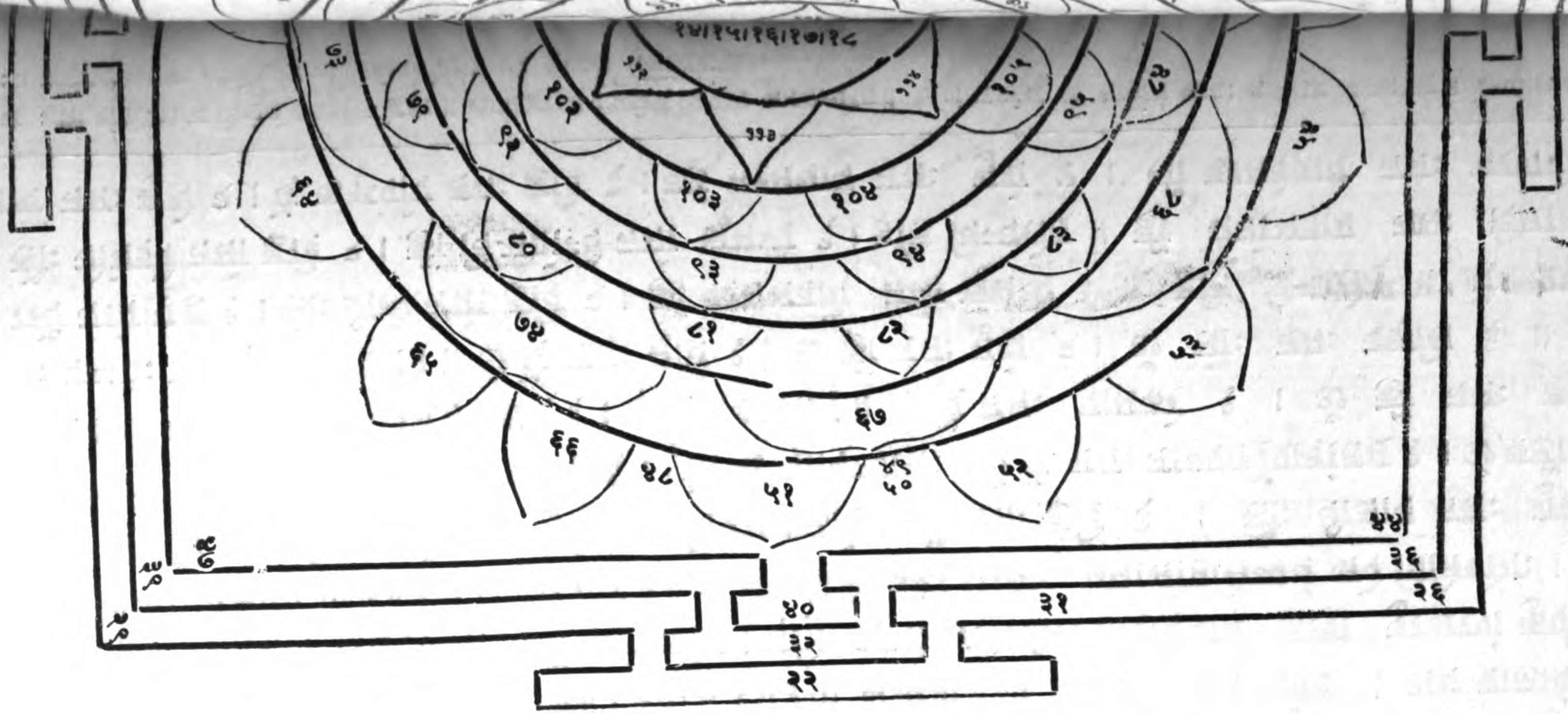
सर्वसौभाग्यदायिनीदेवी[९८]–श्रीपा० १० ॥ इति संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ ततो हस्तेनार्घ्यजलं गृहीत्वा अत्र सर्वाशापरिपूरके दशारचक्रे श्रीमहात्रिपुरसुंदरीसमधिष्ठिते एताः सर्वसिद्धिप्रदाद्या देव्यः कुलकौलिनीयोगिन्यः समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः संपूजिताः संतु इति वदेत् ॥ इति सप्तमावरणम् ॥ ७ ॥ ततः पुनः दशारचक्रे पश्चिमादिवामावर्तेन च ह्रीं श्रीं सर्वज्ञादेवी[९९]–श्रीपा० १ । ह्रीं श्रीं सर्वशक्तिमयीदेवी[१००]–श्रीपा० २ । ह्रीं श्रीं सर्वैश्वर्यप्रदादेवी[१०१]–श्रीपा० ३ । ह्रीं श्रीं सर्वज्ञानमयी देवी[१०२]–श्रीपा० ४ । ह्रीं श्रीं सर्वव्याधिविनाशिनीदेवी[१०३]–श्रीपा० ५ । ह्रीं श्रीं सर्वाधारस्वरूपादेवी[१०४]–श्रीपा० ६ । ह्रीं श्रीं सर्व पापहरादेवी[१०५]–श्रीपा० ७ । ह्रीं श्रीं सर्वानंदमयीदेवी[१०६]–श्रीपा० ८ । ह्रीं श्रीं सर्वरक्षास्वरूपिणीदेवी[१०७]–श्रीपा० ९ । ह्रीं श्रीं सर्वेप्सितफलप्रदादेवी[१०८]–श्रीपा० १० ॥ इति संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ ततो हस्तेनार्घ्यजलं गृहीत्वा अत्र सर्वरक्षाकरे अंतर्दशाचक्रे त्रिपरमालिनीश्रीत्रिपुरसुंदरीदेवीसमधिष्ठिते एताः सर्वज्ञाद्या निर्भययोगिन्यः समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः संपूजिताः संतु इति वदेत् ॥ इत्यष्टमावरणम् ॥ ८ ॥ ततोऽष्टारचक्रे पश्चिमादिवामावर्तेन च ह्रीं श्रीं अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः वशिनीवाग्देवता[१०९]–श्रीपा० १ । ह्रीं श्रीं कँ खँ गँ घँ ङँ कामेश्वरीवाग्देवतां[११०]-श्रीपा० २ । ह्रीं श्रीं चँ छँ जं झँ ञँ मोदिनीवाग्देवतां[१११]—श्रीपा० ३ । ह्रीं श्रीं टँ ठँ डँ ढँ णँ विमलावाग्देवतां[११२]—श्रीपा० ४ । ह्रीं श्रीं तँ थँ दँ धँ नँ अरुणावाग्देवतां[११३]-श्रीपा० ५ । ह्रीं श्रीं पँ फँ बँ भँ मँ जयिनीवाग्देवतां[११४]-श्रीपा० ६ । ह्रीं श्रीं यँ रँ लँ वँ सर्वेश्वरीवाग्देवतां[११५]-श्रीपा० ७ । ह्रीं श्रीं शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ कौलिनीवाग्देवतां[११६]-श्रीपा० ८ ॥ इति संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् । ततो हस्तेनार्घ्यजलं गृहीत्वा अत्र सर्वरोगहरे अष्टारचक्रे श्रीमहात्रिपुरसुंदरीसमधिष्ठिते एता वशिन्याद्या रहस्ययोगिन्यः समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः संपूजिताः संतु इति वदेत् ॥ इति नवमावरणम् ॥ ९ ॥ ततः अभ्यंतरचक्रमध्ये दक्षिणे ॐ उत्तमबाणाय नमः[११७] १ वामे मोहधनुषे नमः २ । तदधः कर्कशाय नमः ३ । ततः पुनः

त्रिकोणे कामेश्वर्यै नमः १। चाक्रिण्यै नमः २। भगशालिन्यै नमः ३। इति संपूज्य पुष्पांजलिं वारत्रयं दद्यात्। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः। करवीरपुष्पैः त्रिमधुरोपेतैर्दशांशतो होमः। एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति। सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत्॥ तथा च—लक्षमेकं जपेन्मंत्रं दशांशं हयमारजैः॥ पुष्पैस्त्रिमधुरोपेतै र्जुहुयात्पूजितेऽनले॥ १॥ अथ प्रयोगा वक्ष्यंते साधकाभीष्टसिद्धिदाः॥ नवलक्षजपेनास्य रुद्ररूपो नरो भवेत्॥ २॥ मल्लिकामालतीपुष्पैर्होमाद्वागीशतामियात्॥ करवीरैर्जपापुष्पैर्होमान्मोहयते जगत्॥ ३॥ चंद्रकुंकुमकस्तूरीहोमात् कामाधिको भवेत्॥ चंपकैः पाटलैर्विश्वं वशमानयतेऽचिरात्॥ ४॥ लाजहोमो राज्यदायी मधुनोपद्रवक्षयः॥ निशि च्छागपलैर्होमो रिपुसैन्यविनाशकृत्॥ ५॥ दध्याज्यदुग्धमधुभिः क्रमाद्धोमादवाप्नुयात्॥ आरोग्यं संपदं ग्रामं धनं शर्करया सुखम्॥ ६॥ कमलैर्धनसंपत्ति र्दाडिमै राजवश्यता॥ क्षत्रिया मातुलिंगैस्तु वैश्या नारंगजैः फलैः॥ ७॥ शूद्राः कूष्मांडसंभूतैर्वश्याः स्युरचिराद्धुतैः॥ पनसानां लक्षहोमाद्वश्याः स्युश्चक्रवर्तिनः॥ ८॥ द्राक्षाफलैरिष्टसिद्धी रंभाभिर्मंत्रिणो वशाः॥ नारिकेलैस्तु संपत्तिरसितलैः सर्वेष्टसिद्धयः॥ ॥ ९॥ गुग्गुलैर्दुःखनाशः स्यात् सर्वेष्टं शर्करागुडैः॥ पायसैर्धनधान्याप्तिर्बंधकैः प्राणिनो वशाः॥ १०॥ पक्वैश्चूतफलैर्होमाल्लक्षमात्राद्धरा वशा॥ लवण राजिकायुक्तैर्होमाद्दुष्टविनाशनम्॥ ११॥ कर्पूरहोमाल्लभते वाक्पतित्वं नरोऽचिरात्॥ करंजफलहोमेन भूतप्रेतादयो वशाः॥ १२॥ बिल्वैः स्यादतुला लक्ष्मीरिक्षुदंडैः सुखाप्तयः॥ घृतहोमादीप्सिताप्तिः शांतिः स्यात्तिलतंडुलैः॥ ॥ १३॥ किंबहूक्तेन देवेशि सर्वेष्टसाधनं नृणाम्॥ मध्ये कूटत्रिके भद्रा वर्णांतरनियोजनात्॥ १४॥ बहवोऽन्ये न गदिता ग्रंथगौरवभीतितः॥ अपरीक्षितशिष्याय न देयेयं कदाचन॥ पुत्राय वा सुशिष्याय देयाभीष्टप्रदायिनी॥ १५॥ इति षोडशाक्षरषोडशीमंत्रप्रयोगः॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीचक्रंषोडशीपूजनयन्त्रम्

१८




२२
३२
४०
३१
२६
३६
५५
५१
५२
४९
५०
६७
६६
६५
७४
९३
१०३
१०४
१११
११२
११३
१०२
१०१

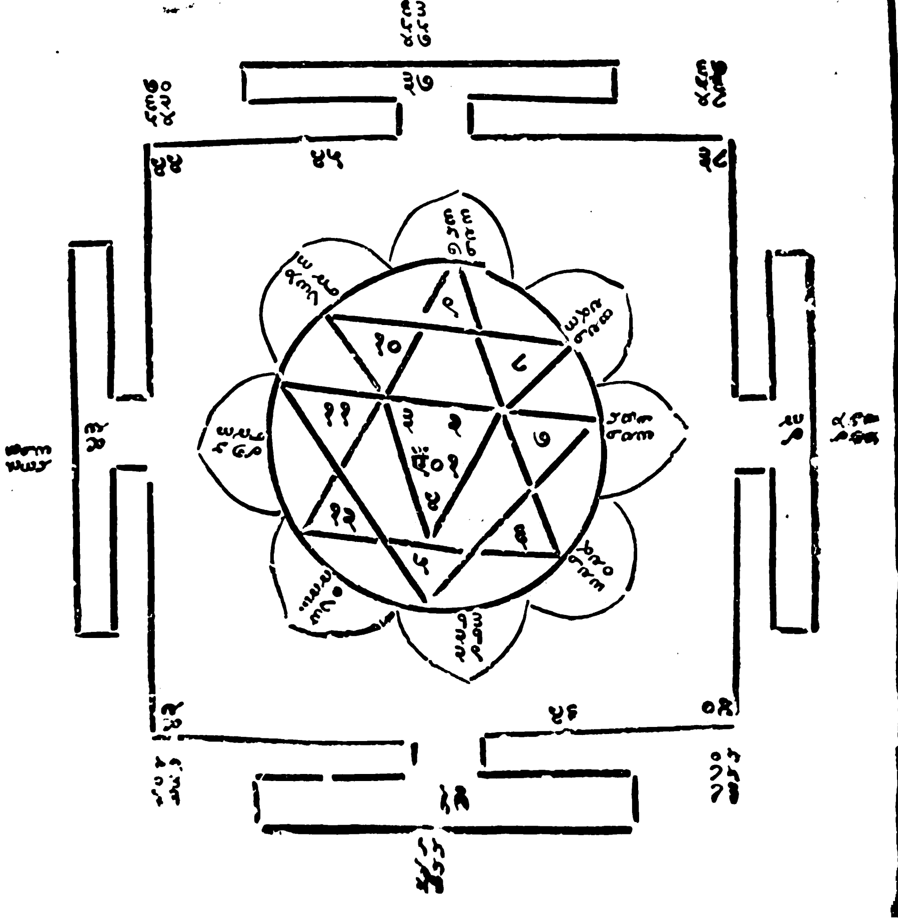
अथ षोडशीभेदेन बालात्रिपुरामंत्रप्रयोगः ॥ अथ बालां प्रवक्ष्यामि मंत्री संसेव्य यां द्रुतम् ॥ बृहस्पतिः कुबेरश्च जायते विद्यया धनैः ॥ १ ॥ मंत्रो यथा मंत्रमहोदधौ—ऐं क्लीं सौः। इति त्र्यक्षरो मंत्रः। अथास्य शापोद्धारः। ऐं ऐं सौः क्लीं क्लीं ऐं सौः क्लीं क्लीं एवं नवार्णः[1] शतं जप्तः शापनिवर्तकः ॥ अथोत्कीलनम्। ॐ क्लीं नमः। अयमप्युत्कीलनकरः शतं जपात् ॥ अथ त्रयाणां बीजानां दीपनीमाह। तत्रादौ वाग्बीजस्य दीपनीविद्यामाह। वद वद वाग्वादिनि ऐं इति शतं जपेत्। इयमाद्यस्य बीजस्य दीपनी[3] ॥ अथ कामबीजस्य दीपनीमाह। क्लिन्ने क्लेदिनि महाक्षोभं कुरु। इत्येकादशवर्णा[2] मध्यबीजस्य दीपनार्थे शतं जपेत्। अथ बालाबीजस्यदीपनीमाह। ॐ मोक्षं कुरु। अंत्यस्य बीजस्य दीपनार्थे शतं जपेत्। इति शापोद्धारोत्कीलनादिविधानं कृत्वा पुरश्चरणं कुर्यात्। अस्य बालामंत्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः पंक्तिश्छंदः त्रिपुराबालादेवता सौः बीजं क्लीं शक्तिः ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ॐ दक्षिणामूर्तिऋषये नमः शिरसि १। पंक्तिच्छंदसे नमः मुखे २। त्रिपुराबालादेवतायै नमः हृदि ३। सौः बीजाय नमः गुह्ये ४। क्लीं शक्तये नमः पादयोः ५। विनियोगाय नमः सर्वांङ्गे ६। इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ऐं नमः नाभ्यादिपादांतम् १। ॐ क्लीं नमः हृदयादिनाभ्यंतम् २। ॐ सौः नमः मूर्द्धादिहृदयांतम् ३। इति विन्यसेत् ॥ ॐ ऐं नमः वामकरे १। ॐ क्लीं नमः दक्षकरे २। ॐ सौः नमः करयोः ३ ॥ इति विन्यसेत् ॥ ॐ ऐं नमः मूर्ध्नि १। ॐ क्लीं नमः गुह्ये २। ॐ सौः नमः वक्षसि ३ ॥ इति विन्यसेत् ॥ ऐं रत्यै नमो गुह्ये १। सौः प्रीत्यै नमो हृदि २। क्लीं कामभवायै नमो भ्रूमध्ये ३ ॥ इति विन्यसेत् ॥ ऐं अमृतेश्यै नमो गुह्ये १। सौः योगेश्वै नमो हृदि २। क्लीं विश्वयोन्यै नमो भ्रूमध्ये ३। इति विन्यसेत् ॥ ह्रीं मनोभवाय नमः शिरसि १। क्लीं मकरध्वजाय नमः मुखे २। ऐं कंदर्प्पाय नमः हृदि ३। ब्लूं मन्मथाय नमः गुह्ये ४। स्त्रीं कामदेवाय नमः चरणयोः ५ ॥ इति

१ देव्या शमा कीलिता च विश्वेयं तत्र सिद्धिदा ॥ शापोद्धारमथोत्कीलं विधाय जपमाचरेत् ॥ २ आद्यमाद्यं च तार्तीयं कामः कामोऽथ वाग्भवम् ॥ अंत्यमंत्यमनंगं च नवार्णः कीर्तितो मनुः ॥ जप्तोऽयं शतधा शापं बालाया विनिवर्तयेत् ॥ ३ दीपनी प्रकाशकर्त्री।

॥ ततो द्रां द्राविण्यै नमः शिरसि १ । द्रीं क्षोभिण्यै नमः पादयोः २ । क्लीं वशीकारिण्यै नमो मुखे ३ । ब्लूं कर्षिण्यै नमः गुह्ये ४ । स्त्रीं संमोहिन्यै नमः हृदि ५ ॥ इति विन्यसेत् ॥ ततः आं सौः क्लीं ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ईं सौः क्लीं ऐं तर्जनीभ्यां नमः २ । ऊँ सौः क्लीं ऐं मध्यमाभ्यां नमः ३ । सौः ऐं क्लीं ऐं अनामिकाभ्यां नमः ४ । औं सौः क्लीं ऐं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । अः सौः क्लीं ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ आँ सौः क्लीं ऐं हृदयाय नमः १ । ईं सौः क्लीं ऐं शिरसे स्वाहा २ । ऊँ सौः क्लीं ऐं शिखायै वषट् ३ । ऐं सौः क्लीं ऐं कवचाय हुं ४ । औं सौः क्लीं ऐं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । अः सौः क्लीं ऐं अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यान—रक्तांबरां चंद्रकलावतंसां समुद्यदादित्यनिभां त्रिनेत्राम् ॥ विद्याक्षमालाभयदानहस्तां ध्यायामि बालामरुणांबुजस्थाम् ॥ १ ॥ एवं ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूजयेत ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति पीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् । पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु ॐ इच्छायै नमः १ । ॐ ज्ञानायै नमः २ । ॐ क्रियायै नमः ३ । ॐ कामिन्यै नमः ४ । ॐ कामदायिन्यै नमः ५ । ॐ रत्यै नमः ६ । ॐ रतिप्रियायै नमः ७ । ॐ नंदायै नमः ८ । मध्ये ॐ मनोन्मन्यै नमः ९ ॥ इति पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रपत्रं ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य तस्योपरि देव्या अष्टगंधेन नवयोन्यात्मकं यंत्रं बहिरष्टदलं च तस्योपरि भूपुरं लिखित्वा 'ह्सौः सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनाय नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य मध्ययोनौ मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तत्र क्रमः । पुष्पांजलिमादाय—संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ॥ अनुज्ञां देहि बालायाः परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् । इत्याज्ञां गृहीत्वा देवीवामकोणे ॐ रत्यै नमः ।

रतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र १ । देवी दक्षिणकोणे ॐ प्रीत्यै नमः । प्रीतिश्रीपा० २ । देव्यग्रे ॐ मनोभवायै नमः । मनोभवाश्रीपा० ३ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य्य—अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ मध्ययोनेर्बहिर्भागे आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु क्रमेण आँ सौः क्लीं ए हृदयाय नमः १ । ईं सौः क्लीं ऐं शिरसे स्वाहा २ । ऊँ सौः क्लीं ऐं शिखायै वषट् ३ । ऐं सौः क्लीं ऐं कवचाय हुं ४ । मध्ये औं सौः क्लीं ऐं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । दिक्षु च अः सौः क्लीं ऐं अस्त्राय फट् ६ ॥ इति षडंगानि पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततो मध्ययोनेर्बहिर्भागे पूर्वादिचतुर्दिक्षु ह्रीं मनोभवाय नमः मनोभवश्रीपा० १ । क्लीं मकरध्वजाय नमः मकरध्वजश्रीपा० २ । ऐं कंदर्पाय नमः कंदर्पश्रीपा० ३ । ब्लूँ मन्मथाय नमः मन्मथश्रीपा० ४ मध्ये स्त्रीं कामदेवाय नमः कामदेवश्रीपा० ५ । इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततो मध्ययोनेर्बहिर्मनोभवाय

बालात्रिपुरापूजनयन्त्रम् ।



समीपे द्रां द्राविण्यै नमः द्राविणीश्रीपा० १। द्रीं क्षोभिण्यै नमः क्षोभिणीश्रीपा० २ । क्लीं वशीकारिण्यै नमः वशीकारिणीश्रीपा० ३ । ब्लूं आकर्षिण्यै नमः आकर्षिणीश्रीपा० ४ । स्रीं संमोहिन्यै नमः संमोहिनीश्रीपा० ५ ॥ इति संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥ ४ ॥ ततोऽष्टयोनेः पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ॐ सुभगायै नमः। सुभगाश्रीपा० १। ॐ भगायै नमः। भगाश्रीपा० २ । ॐ भगसर्पिण्यै नमः। भगसर्पिणीश्रीपा० ३। ॐ भगमाल्यै नमः। भगमालीश्रीपा० ४ । ॐ अनंगनंगायै नमः । अनंगनंगाश्रीपा० ५ । ॐ कुसुमापरायै नमः । कुसुमापराश्रीपा० ६ । ॐ अनंगमेखलायै नमः । अनंगमेखलाश्रीपा० ७। ॐ अनंगदमनायै नमः । अनंगदमनाश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ शक्तीः पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति पंचमावरणम् ॥ ५॥ ततोऽष्टदलमूले प्राचीक्रमेण ॐ आँ ब्राह्म्यै नमः ब्राह्मीश्रीपा० १ । ॐ ईं माहेश्वर्यै नमः। माहेश्वरीश्रीपा० २ । ॐ ऊं कौमार्यै नमः। कौमारीश्रीपा० ३। ॐ ॠं वैष्णव्यै नमः वैष्णवीश्रीपा० ४ । ॐ ॡं वाराह्यै नमः। वाराहीश्रीपा० ५। ॐ ऐं इन्द्राण्यै नमः । इन्द्राणीश्रीपा० ६। ॐ औं चामुंडायै नमः। चामुंडाश्रीपा० ७ । ॐ अः महालक्ष्म्यै नमः महालक्ष्मीश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ मातृः संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति षष्ठावरणम् ॥ ६ ॥ ततोऽष्टदलमध्ये ॐ अं असितांगभैरवाय नमः। असितांगभैरवश्रीपा० १। ॐ इं रुरुभैरवाय नमः। रुरुभैरवश्रीपा० २ । ॐ उं चंडभैरवाय नमः। चंडभैरवश्रीपा० ३। ॐ ॠं क्रोधभैरवाय नमः। क्रोधभैरवश्रीपा० ४। ॐ ॡं उन्मत्तभैरवाय नमः। उन्मत्तभैरवश्रीपा० ५। ॐ एं कपालभैरवाय नमः। कपालभैरवश्रीपा० ६। ॐ ओं भीषणभैरवाय नमः । भीषणभैरवश्रीपा० ७। ॐ अं संहारभैरवाय नमः। संहारभैरवश्रीपा० ८। इत्यष्टौ भैरवान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति सप्तमावरणम् ॥ ७ ॥ ततोऽष्टदलाग्रेषु प्राचीक्रमेण ॐ कामरूपपीठाय नमः। कामरूपपीठश्रीपा० १।ॐ मलयपीठाय नमः। मलयपीठश्रीपा० २। ॐ कोल्लगिरिपीठाय नमः। कोल्लगिरिपीठश्रीपा० ३ । ॐ चौहारापीठाय नमः। चौहारापीठश्रीपा० ४ । ॐ कुलांतकपीठाय नमः । कुलांतकपीठश्री

पा० ५। ॐ जालंधरपीठाय नमः[34]। जालंधरपीठश्रीपा० ६। ॐ उड्यानपीठाय नमः[35]। उड्यानपीठश्रीपा० ७। ॐ कोट्टपीठाय नमः[36]। कोट्टपीठश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ पीठानि पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्यष्टमावरणम् ८ ॥ ततो भूपुराभ्यंतरे पूर्वादिक्रमेण दशदिक्षु ॐ हेतुकाय नमः[37]। हेतुकश्रीपा० १। ॐ त्रिपुरांतकाय नमः[38]। त्रिपुरांतकश्रीपा० २। ॐ वेतालाय नमः[39]। वेतालश्रीपा० ३। ॐ अग्निजिह्वाय नमः[40]। अग्निजिह्वश्रीपा० ४। ॐ कालांतकाय नमः[41]। कालांतकश्रीपा० ५। ॐ कपालाय नमः[42]। कपालश्रीपा० ६। ॐ एकपादाय नमः[43]। एकपादश्रीपा० ७। ॐ भीमरूपाय नमः[44]। भीमरूपश्रीपा० ८। ॐ मलयाय नमः[45]। मलयश्रीपा० ९। ॐ हाटकेश्वराय नमः[46]। हाटकेश्वरश्रीपा० १० ॥ इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति नवमावरणम् ॥ ९ ॥ ततो दशमावरणे भूपुराद्बहिः इन्द्रादीन् अष्टौ[47] दिग्पालान्[54] पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ १० ॥ एकादशे आवरणे इन्द्रादिसमीपे वज्राद्यायुधानि[55] पूजयित्वा[62] पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ ११ ॥ तद्बहिः पूर्वे ॐ बं वटुकाय[63] नमः। बटुकश्रीपा० १। दक्षिणे ॐ यां योगिनीभ्यो नमः[64]। योगिनीश्रीपा० २। पश्चिमे ॐ क्षं क्षेत्रपालाय[65] नमः। क्षेत्रपालश्रीपा० ३। उत्तरे ॐ गं गणपतये नमः[66]। गणपतिश्रीपा० ४। आग्नेय्याम् ॐ वसुभ्यो नमः[67]। वसुश्रीपा० ५। नैर्ऋत्यां ॐ सूर्य्येभ्यो नमः[68] सूर्य्यश्रीपा० ६। वायव्यां ॐ शिवेभ्यो नमः[69]। शिवश्रीपा० ७। ईशान्यां ॐ भूतेभ्यो[70] नमः। भूतश्रीपा० ८॥ इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्॥ इतिद्वादशावरणम् ॥ ॥ १२ ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं त्रिलक्षजपः। किंशुकपुष्पैः करवीरपुष्पैर्वा मधुरान्वितैर्दशांशतो होमः। तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कर्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति। सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च—लक्षत्रयं जपेन्मंत्रं दशांशं किंशुकोद्भवैः ॥ पुष्पैर्हयारिजैर्वापि जुहुयान्मधुरान्वितैः ॥ १ ॥ एवमेवं भजेद्बालामीशः स्याद्धनविद्ययोः ॥ रक्तांभोजैर्हुते नार्य्यो वश्याः स्युः सर्षपैर्नृपाः ॥ २ ॥ नंद्यावर्तै[1] राजवृक्षैः कुन्दैः पाटलचंपकैः ॥

१ नंद्यावर्तस्तगरः।

पुष्पैर्बिल्वफलैर्वापि होमाल्लक्ष्मीः स्थिरा भवेत् ॥ ३ ॥ अपमृत्युं जपेन्मंत्री गुडूच्या दुग्धयुक्तया ॥ पयोक्तदूर्वाहोमात्तु नीरोगायुः समश्नुते ॥ ४ ॥ ज्ञानं कवित्वं लभते चंद्रा[1]गुरुपु[2]रैर्हुतैः ॥ द्विजेन्द्रा वश्यतां यांति कुसुमैरपरा[3]जितैः ॥ ५ ॥ कह्लारैः क्षत्रियाः कर्णिकारजैः क्षितिपांगनाः ॥ कोरंटकुसुमैर्वैश्याः पादजाः पाटलैर्हुतैः ॥ ६ ॥ पलाशपुष्पैर्वाक्सिद्धिरन्नाप्तिरन्नहोमतः ॥ सा[4]रघक्षीरदध्यक्तान् लाजान् हुत्वा रुजो जयेत् ॥ ७ ॥ अथ वशीकरणतिलकः । रक्तचंदनकर्पूरकर्चूरागुरुरोचनाः ॥ चंदनं केसरं मांसी क्रमाद्भागैर्नियोजयेत् ॥ ८ ॥ भूमि[5]चंद्रै[6]कनंदा[8]ब्धि[9]दि[10]क्सप्त[11]निगमो[12]न्मितैः ॥ श्मशा[13]ने कृष्णभूतस्य निशि नीहारपाथसा ॥ ९ ॥ कुमार्या पेषयेत्तानि मंत्रेणाप्यभिमंत्रयेत् ॥ विदधेत्तिलकं तेन दर्शनाद्वशये[14]ज्जनान् ॥ १० ॥ गजसिंहादिभूतानि राक्षसाञ्छाकिनीरपि ॥ प्रयोगेष्वेषु कथ्यंत क्रमाद्ध्यानानि सिद्धये ॥ ११ ॥ अथ कार्यपरत्वेन ध्यानभेदानाह ॥ तत्रादौ लक्ष्मीप्राप्तौ ध्यानं—मातुलिंगपयोजन्महस्तां कनकसन्निभाम् ॥ पद्मासनगतां बालां लक्ष्मीप्राप्तौ विचिंतयेत् ॥ १२ ॥ ज्ञानाप्तये ध्यानं यथा—वरपीयूषकलशपुस्तकाभीतिधारिणीम् । सुधां स्रवंतीं ज्ञानाप्तौ ब्रह्मरंध्रे विचिंतयेत् ॥ १३ ॥ रोगनाशनध्यानं यथा—शुक्लांबरां शशांकाभां रोगनाशे स्मरेच्छिवाम् ॥ अकारादिक्षकारांतवर्णावयवरूपिणीम् ॥ १४ ॥ वशीकरणध्यानं यथा—सृणिपाशधरां देवीं रत्नालंकारभूषिताम् ॥ प्रसन्नामरुणां ध्यायेद्वशीकरणसिद्धये ॥ १५ ॥ अथ प्रत्येकमंत्रस्य जपध्यानविधिं ब्रुवे ॥ तत्रादौ वाग्बीजध्यानं यथा—विद्याक्षमालासुकपालमुद्राराजत्करां कुंदसमानकांतिम् ॥ मुक्ताफलालंकृतिशोभितांगीं बालां स्मरेद्वाङ्मयसिद्धिहेतोः ॥ १६ ॥ अस्य विधानम्—ध्यात्वैवं वाग्भवं लक्षत्रयं शुक्लांबरावृतः ॥ शुक्लचंदनलिप्तांगो मौक्तिकाभरणान्वितः ॥ १७ ॥ जपित्वा तद्दशांशेन पालाशकुसुमैर्नवैः ॥ जुहुयान्मधुराक्तैर्यः स

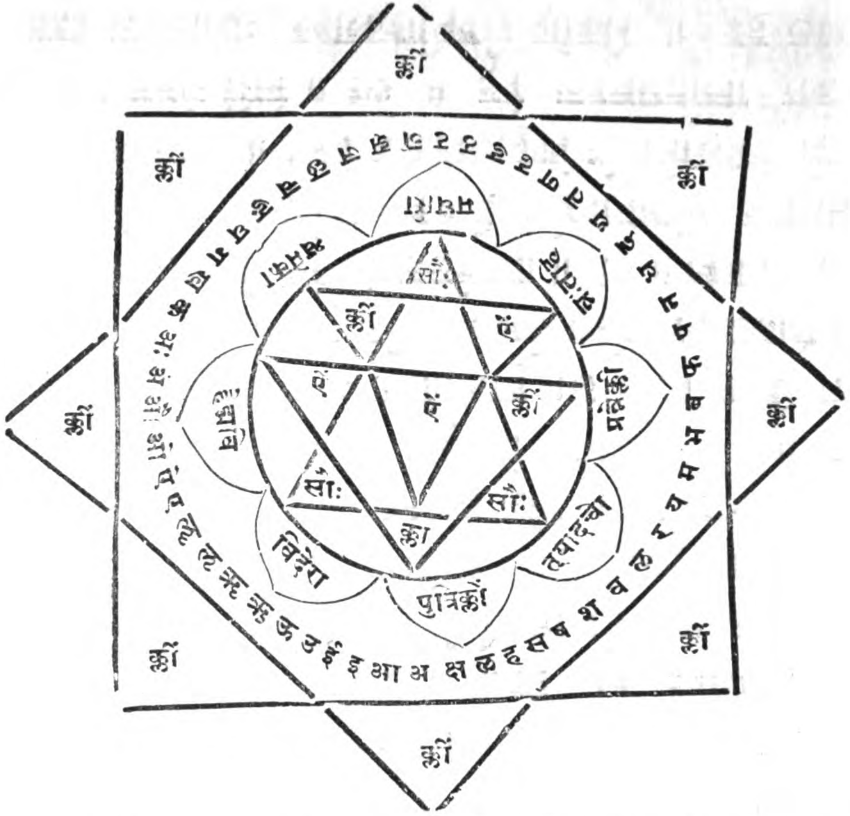
१ चंद्रः कर्पूरः । २ पुरं गुग्गुलु । ३ अपराजिता योन्याकारपुष्पवल्ली तदीयान्यपराजितानि तैः । ४ सारघं मधु । ५ भूमिरेकः । ६ चंद्र एकः । ७ एकः एकभागः । ८ नंदा नव । ९ अब्धयश्चत्वारः । १० दिशो दश । ११ सप्त सप्तभागाः । १२ निगमाश्चत्वारः । १३ रक्तचंदनमेकभागमित्यादि । एतान्येकीकृत्य कृष्णचतुर्दशीरात्रौ कुमार्या संपेष्य मूलेनाभिमंत्र्य तिलकं कुर्यात् । १४ वशयेदिति शाकिन्यानीतानित्यर्थः ।

भवेद्युवतिप्रियः ॥ १८ ॥ अथ कामबीजध्यानं यथा—भजेत्कल्पवृक्षाध उद्दीप्तरत्नासने सन्निषण्णां मदाघूर्णिताक्षीम् ॥ करैर्बीजपूरं कपालेषुचापं सपाशांकुशं रक्तवर्णं दधानाम् ॥ १९ ॥ अस्य विधानम्—ध्यात्वा देवीं जपेल्लक्षत्रयं यो मध्यबीजकम् ॥ रक्तवस्त्रावृतो रक्तभूषणो रक्तलेपनः ॥ २० ॥ दशांशं मालतीपुष्पैश्चंद्रचंदनलोलितैः ॥ जुहुयात्तस्य वश्याः स्युस्त्रिलोकीजनताः क्षणात् ॥ २१ ॥ तृतीयबीजध्यानं यथा—व्याख्यानमुद्रामृतकुंभविद्यामक्षस्रजं संदधतीं कराग्रैः ॥ चिद्रूपिणीं शारदचन्द्रकांतिं बालां स्मरेन्मौक्तिकभूषितांगीम् ॥ २२ ॥ अस्य विधानम्—ध्यात्वैवं चरमं बीजं जपेल्लक्षत्रयं सुधीः ॥ सितवस्त्रानुलेपाढ्यमात्मानं देवतां स्मरेत् ॥ २३ ॥ मालतीकुसुमैर्हुत्वा चंदनार्क्कैर्दशांशतः ॥ लक्ष्मीविद्यासुकीर्तीनामाधारो जायतेऽचिरात् ॥ २४ ॥ इदं रहस्यं नाख्येयं कृतघ्ने कितवे शठे ॥ परीक्षिताय दातव्यमन्यथा दातृदोषदम् ॥ २५ ॥ अथ जपभेदान् कामभेदेनाह—[१]वागंत्यकामान् प्रजपेदरीणां क्षोभहेतवे ॥ [२]कामवागंत्यबीजानि त्रैलोक्यस्य वशीकृतौ ॥ २६ ॥ [३]कामांत्यवाणीबीजानि मुक्तये नियतो जपेत् ॥ पूजाविधौ तु बालायास्त्रिविधानर्चयेद्गुरून् ॥ २७ ॥ अथ बालागायत्रीमंत्रः—"क्लीं त्रिपुरादेवि विद्महे कामेश्वरी धीमहि ॥ क्लिन्ने तन्नः प्रचोदयात्" ॥ गायत्री त्रिपुरा सर्वसिद्धिदा सुरसेविता ॥ अथ बालामंत्रभेदानाह । अथ वक्ष्याभि बालाया भेदानागमगोपितान् ॥ मंत्रो यथा—ह्रीं क्लीं ह्सौः ॥ इति त्र्यक्षरो मंत्रः ॥ ह्रीं क्लीं ह्सौः ह्सौः क्लीं ह्रीं ॥ इति षडक्षरो मंत्रः ॥ श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं क्लीं सौं ह्रीं क्लीं श्रीं ॥ इति नवाक्षरो मंत्रः ॥ ऐं क्लीं सौः बालात्रिपुरे स्वाहा ॥ इति दशाक्षरो मंत्रः ॥ ऐं क्लीं सौं बालात्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः ॥ इति चतुर्दशाक्षरो मंत्रः ॥ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिपुरे भारति कवित्वं देहि स्वाहा ॥ इति षोडशाक्षरो मंत्रः ॥ स्क्लीं क्ष्म्यौं ऐं त्रिपुरे सर्ववांछितं देहि नमः स्वाहा ॥ इति सप्तदशाक्षरो मंत्रः ॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं प्रौढत्रिपुरे आरोग्यमैश्वर्यं च देहि स्वाहा ॥ इत्यष्टादशाक्षरो मंत्रः ॥ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिपुरमर्दने सर्वं शुभं साधय स्वाहा ॥ इत्यष्टादशाक्षरो मंत्रो द्वितीयः ॥ ह्रीं श्रीं क्लीं बालात्रिपुरे मदायत्तां विद्यां कुरु नमः स्वाहा ॥ इति विंशत्यक्षरो

१ ऐं सौं क्लीं इति जपेच्छत्रुविनाशः स्यात् । २ क्लीं ऐं सौरिति वशीकरणे । ३ क्लीं सौः ऐमिति मुक्तये ।

मंत्रः ॥ ह्रीं श्रीं क्लीं परापरे त्रिपुरे सर्वमीप्सितं साधय स्वाहा ॥ इति विंशत्यक्षरो मंत्रो द्वितीयः॥ क्लीं क्लीं श्रीं श्रीं ह्रीं त्रिपुराललिते मदीप्सितां योषितं देहि वांछितं कुरु स्वाहा ॥ इत्यष्टाविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ क्लीं क्लीं क्लीं श्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं त्रिपुरसुंदरि सर्वं जगत् मम वशे कुरुकुरु मह्यं बलं देहि स्वाहा ॥ इति पंचविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ एते चतुर्दश बालामंत्रभेदाः॥एतेषां विधानम्--एतेषां चतुर्दशबालामंत्राणां दक्षिणामूर्तिऋषिः।गायत्रीछंदः।त्रिपुराबाला देवता । ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ अथ ध्यानम्--पाशांकुशौ पुस्तकमक्षसूत्रं करैर्दधाना सकलामरार्च्या ॥ रक्ता त्रिनेत्रा शशिशेखरेयं ध्येयाऽखिलर्द्ध्यै त्रिपुरात्र बाला ॥ इति ध्यात्वा लक्षं जपेत् । करवीरपुष्पैर्दशांशतो होमः । अन्यत् सर्वं पूर्ववत् ॥ तथा च--जपेल्लक्षं दशांशेन होमः पुष्पैर्हयारिजैः ॥ पूजा पूर्वोदिते पीठे गैरत्याद्यैश्च सायकैः ॥ १ ॥ मातृभिर्दिगधीशास्त्रैः प्रयोगाः पूर्ववन्मताः ॥ अथ धारणयंत्रं यथा--यंत्रं त्रैपुरमाख्यातं जतं संपातसाधितम् ॥ बहुना विधृतं दद्याद्धनं कीर्तिं सुखं सुतान् ॥ २ ॥ इति बालात्रिपुरामंत्रप्रयोगः ॥ इति षोडशीपटलं समाप्तम् ॥

बालाधारणयन्त्रम् ।



॥ श्रीगणेशायनमः ॥ अथ त्रिपुरसुंदरी (षोडशी) कवचप्रारंभः ॥ देव्युवाच ॥ भगवन्देवदेवेश लोकानुग्रहकारकं ॥ त्वत्प्रसादान्महादेव श्रुता मंत्रास्त्वनेकधा ॥ १ ॥ साधनं विविधं देव कीलकोद्धरणं तथा ॥ शापादिदूषणोद्धारः श्रुतस्त्वत्तो मया प्रभो ॥ २ ॥ राजराजेश्वरीदेव्याः कवचं संचितं मया ॥ श्रोतुमिच्छामि त्वत्तस्तत्कथयस्व दयानिधे ॥ ३ ॥ ईश्वर उवाच ॥ लक्षवारसहस्राणि वारितासि पुनःपुनः ॥ स्त्रीस्वभावात्पुनर्देवि पृच्छसि त्वं मम प्रिये ॥ ४ ॥ अत्यंतगुह्यं कवचं सर्वकामफलप्रदम् ॥ प्रीतये तव देवेशि कथयामि शृणुष्व तत् ॥ ५ ॥ अस्य षोडशीकवचस्य महादेव ऋषिः प्रस्तारपंक्तिश्छंदो राजराजेश्वरी महात्रिपुरसुंदरी देवता धर्मार्थकाममोक्षसाधने पाठे विनियोगः ॥ पूर्वे मां भैरवी पातु बाला मां पातु दक्षिणे ॥ मालिनी पश्चिमे पातु त्रासिनी तूत्तरेऽवतु ॥६ ॥ ऊर्द्ध्वं पातु महादेवी महात्रिपुरसुंदरी ॥ अधस्तात्पातु देवेशी पातालतलवासिनी ॥ ७ ॥ आधारे वाग्भवः पातु कामराजस्तथा हृदि ॥ डामरः पातु मां नित्यं मस्तके सर्वकामदः ॥ ८ ॥ ब्रह्मरंध्रे सर्वगात्रे छिद्रस्थाने च सर्वदा ॥ महाविद्या भगवती पातु मां परमेश्वरी ॥ ९ ॥ ऐं ह्रीं ललाटे मां पातु क्लीं क्लुं सश्च नेत्रयोः ॥ नासायां मे कर्णयोश्च द्रीं द्रैं द्रां द्रीं चिबुके तथा ॥ १० ॥ सौः पातु गले हृदये सहह्रीं नाभिदेशके ॥ कलह्रीं क्लीं स्त्रीं गुह्यदेशे सह्रीं पादयोस्तथा ॥ ११ ॥ सह्रीं मां सर्वतः पातु सकली पातु संधिषु ॥ जले स्थले तथाऽऽकाशे दिक्षु राजगृहे तथा ॥ १२ ॥ ह्रूं क्षेमा त्वरिता पातु सह्रीं सक्लीं मनोभवा ॥ हंसः पायान्महादेवि परं निष्कलदेवता ॥ १३ ॥ विजया मंगला दूती कल्याणी भगमालिनी ॥ ज्वाला च मालिनी नित्या सर्वदा पातु मां शिवा ॥ १४ ॥ इत्येवं कवचं देवि देवानामपि दुर्लभम् ॥ तव प्रीत्या मयाख्यातं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥ १५ ॥ इदं रहस्यं परमं गुह्याद्गुह्यतरं प्रिये ॥ धन्यं यशस्यमायुष्यं भोगमोक्षप्रदं शिवे ॥ १६ ॥ दुःस्वप्ननाशनं पुण्यं नरनारीवशंकरम् ॥ आकर्षणकरं देवि स्तंभोच्चाटनकं शिवे ॥ १७ ॥ इदं कवचमज्ञात्वा राजराजेश्वरीं पराम् ॥ योऽर्चयेद्योगिनीवृंदैः स भक्ष्यो नात्र संशयः ॥ १८ ॥ न तस्य मंत्रसिद्धिः स्यात्कदाचिदपि शांकरि ॥ इह लोके च दारिद्र्यं रोगदुःखाशुभानि च ॥ १९ ॥ परत्र नरकं गत्वा पशुयोनिमवाप्नुयात् ॥ तस्मादेतत्सदाभ्यासादधिकारी भवे

स्किल ॥ २० ॥ मद्वक्त्रनिर्गतमिदं कवचं सुपुण्यं पूजाविशेषश्च पुरतो विधिना पठेद्यः ॥ सौभाग्यभागललितानि शुभानि भुक्त्वा देव्याः पदं भजति तत्पुनरंतकाले ॥ २१ ॥ इति कुलानंदसंहितायां षोडशीकवचं समाप्तम् ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ त्रिपुट-(त्रिशक्तिरूपा) लक्ष्मीकवचप्रारंभः ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वशास्त्रार्थपारग ॥ त्रिशक्तिरूपा लक्ष्म्याश्च कवचं यत्प्रकाशितम् ॥ १ ॥ सर्वार्थसाधनं नाम कथयस्व कृपांबुधे ॥ ईश्वर उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं परमाद्भुतम् ॥ २ ॥ सर्वार्थसाधनं नाम त्रैलोक्ये चातिदुर्लभम् ॥ सर्वसिद्धिमयं देवि सर्वैश्वर्यप्रदायकम् ॥ ३ ॥ पठनाद्धारणान्मर्त्यस्त्रैलोक्यैश्वर्यभाग्भवेत् ॥ सर्वार्थसाधनस्यास्य कवचस्य ऋषिः शिवः ॥ ४ ॥ छंदो विराट् त्रिशक्तिरूपा जगद्धात्री च देवता ॥ धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ ५ ॥ श्रीबीजं मे शिरः पातु लक्ष्मीरूपा ललाटकम् ॥ ह्रीं पातु दक्षिणं नेत्रं वामनेत्रं सुरेश्वरी ॥ ६ ॥ क्लीं पातु दक्षकर्णं मे वामं कामेश्वरी तथा ॥ लक्ष्मीर्घ्राणं सदा पातु वदनं पातु केशवः ॥ ७ ॥ गौरी तु रसनां पात कंठं पात महेश्वरी ॥ स्कंधदेशं रतिः पातु भजौ तु मकरध्वजः ॥ ८ ॥ शंखनिधिः करौ पातु वक्षः पद्मनिधिः सदा ॥ ब्राह्मी मध्यं सदा पातु नाभिं पातु महेश्वरी ॥ ९ ॥ कुमारी पृष्ठदेशं मे गुह्यं रक्षतु वैष्णवी ॥ वाराही सक्थिनी पातु ऐं ह्रीं पातु पदद्वयम् ॥ १० ॥ भार्यां रक्षतु चामुंडा लक्ष्मी रक्षतु पुत्रकान् ॥ इन्द्रः पूर्वे सदा पातु आग्नेय्यामग्निदेवता ॥ ११ ॥ याम्ये यमः सदा पातु नैर्ऋत्ये निर्ऋतिश्च माम् ॥ पश्चिमे वरुणः पातु वायव्यां वायुदेवता ॥ १२ ॥ सौम्ये सोमः सदा पातु ऐशान्यामीश्वरोऽवतु ॥ ऊर्द्ध्वं प्रजापतिः पातु अधश्चानंतदेवता ॥ १३ ॥ राजद्वारे श्मशाने च अरण्ये प्रांतरे तथा ॥ जले स्थले चांतरिक्षे शत्रूणां विग्रहे तथा ॥ १४ ॥ एताभिः सहिता देवी त्रिबीजात्मा महेश्वरी ॥ त्रिशक्तिश्च महालक्ष्मीः सर्वत्र मां सदाऽवतु ॥ १५ ॥ इति ते कथितं देवि सारात्सारतरं परम् ॥ सर्वार्थसाधनं नाम कवचं परमाद्भुतम् ॥ १६ ॥ अस्यापि पठनात्सद्यः कबेरोऽपि धनेश्वरः ॥ इन्द्राद्याः सकला देवा धारणात्पठनाद्यतः ॥ १७ ॥ सर्वसिद्धीश्वराः संतः सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः ॥ पुष्पांज

ल्यष्टकं दत्त्वा मूलेनैव पठेत्सकृत् ॥ १८ ॥ संवत्सरकृतायास्तु पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥ प्रीतिमन्योन्यतः कृत्वा कमला निश्चला गृहे ॥ १९ ॥ वाणी च निवसेद्वक्त्रे सत्यं सत्यं न संशयः ॥ यो धारयति पुण्यात्मा सर्वार्थसाधनाभिधम् ॥ २० ॥ कवचं परमं पुण्यं सोऽपि पुण्यवतां वरः ॥ सर्वैश्वर्ययुतो भूत्वा त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥ २१ ॥ पुरुषो दक्षिणे बाहौ नारी वामभुजे तथा ॥ बहुपुत्रवती भूत्वा वंध्यापि लभते सुतम् ॥ २२ ॥ ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि नैव कृंतंति तं जनम् ॥ एतत्कवचमज्ञात्वा यो जपेत्परमेश्वरीम् ॥ दारिद्र्यं परमं प्राप्य सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात् ॥ २३ ॥ इति रुद्रयामले त्रिशक्त्याः सर्वार्थनामकं कवचं समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीविद्याकवचप्रारंभः ॥ देव्युवाच ॥ देवदेव महादेव भक्तानां प्रीतिवर्द्धनम् ॥ सूचितं यन्महादेव्याः कवचं कथयस्व मे ॥ १ ॥ महादेव उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं देवदुर्लभम् ॥ न प्रकाश्यं परं गुह्यं साधकाभीष्टसिद्धिदम् ॥ २ ॥ कवचस्य ऋषिर्देवि दक्षिणामूर्तिरव्ययः ॥ छंदः पंक्तिः समुद्दिष्टं देवी त्रिपुरसुंदरी ॥ ३ ॥ धर्मार्थकाममोक्षाणां विनियोगस्तु साधने ॥ वाग्भवः कामराजश्च शक्तिर्बीजं सुरेश्वरि ॥ ४ ॥ (ऐं) वाग्भवः पातु शीर्षे मां (क्लीं कामराजस्तथा हृदि ॥ सौः) शक्तिबीजं सदा पातु नाभौ गुह्ये च पादयोः ॥ ५ ॥ ऐं श्रीं सौः वदने पातु बाला मां सर्वसिद्धये ॥ हसैं हसकलह्रीं हसौः पातु भैरवी कंठदेशतः ॥ ६ ॥ सुंदरी नाभिदेशे च शीर्षे कामकला सदा ॥ भ्रूनासयोरंतराले महात्रिपुरसुंदरी ॥ ७ ॥ ललाटे सुभगा पातु भगा मां कंठदेशतः ॥ भगोदया च हृदये उदरे भगसर्पिणी ॥ ८ ॥ भगमाला नाभिदेशे लिंगे पातु मनोभवा ॥ गुह्ये पातु महादेवी राजराजेश्वरी शिवा ॥ ९ ॥ चैतन्यरूपिणी पातु पादयोर्जगदंबिका ॥ नारायणी सर्वगात्रे सर्वकार्ये शुभंकरी ॥ १० ॥ ब्रह्माणी पातु मां पूर्वे दक्षिणे वैष्णवी तथा ॥ पश्चिमे पातु वाराही उत्तरे तु महेश्वरी ॥ ११ ॥ आग्नेय्यां पातु कौमारी महालक्ष्मीस्तु नैर्ऋते ॥ वायव्यां पातु चामुंडा इंद्राणी पातु ईशके ॥ १२ ॥ जले पातु महामाया पृथिव्यां सर्वमंगला ॥ आकाशे पातु वरदा सर्वत्र भुवनेश्वरी ॥ १३ ॥ इदं तु कवचं देव्या देवानामपि दुर्लभम् ॥ पठेत्प्रातः समुत्थाय शुचिः प्रयतमानसः ॥ १४ ॥ नाधयो व्याधयस्तस्य न भयं च क्वचिद्भवेत् ॥ न च मारी

भयं तथा ॥ १५ ॥ न दारिद्र्यवशं गच्छेत्विघ्नमृत्युवशो न च ॥ गच्छेच्छिवपुरं देवि सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥१६॥ श्रीविद्यां यो जपेत्सदा ॥ स नाप्नोति फलं तस्य प्राप्नुयाच्छस्त्रघातनम् ॥ १७ ॥ इति सिद्धयामले श्रीविद्याकवचं समाप्तम् ॥ अथ षोडशीस्तोत्रप्रारंभः ॥ कल्याणवृष्टिभिरिवामृतपूरिताभिर्लक्ष्मीस्वयंवरणमङ्गलदीपिकाभिः ॥ सेवाभिरम्ब तव पादसरोजमूले नाकारि किं मनसि भक्तिमतां जनानाम् ॥ १ ॥ एतावदेव जननि स्पृहणीयमास्ते त्वद्वन्दनेषु सलिलस्थसरोजनेत्रे ॥ सान्निध्यमुद्यदरुणाम्बुजसोदरस्य त्वद्विग्रहस्य सुधया परयाऽऽप्लुतस्य॥२॥ईषत्प्रभावकलुषाः कति नाम संति ब्रह्मादयः प्रतिदिनं प्रलयाभिभूताः॥ एकः स एव जननि स्थिरसिद्धिरास्ते यः पादयोस्तव सकृत्प्रणतिं करोति ॥ ३ ॥ लब्ध्वा सकृत् त्रिपुरसुंदरि तावकीनं कारुण्यकन्दलतिकातिभरं कटाक्षम् ॥ कन्दर्प्पभावसुभगास्त्वयि भक्तिभाजः सम्मोहयंति तरुणीं भुवनत्रयेऽपि ॥ ४ ॥ ह्रींकारमेव तव नाम गृणंति ये वा मातस्त्रिकोणनिलये त्रिपुरे त्रिनेत्रे ॥ त्वत्संस्मृतौ यमभटाभिभवं विहाय दीव्यंति नन्दनवने सह लोकपालैः ॥ ५ ॥ हंतुः पुरामधिगलं परिपूर्णमानः क्रूरः कथं न भविता गरलस्य वेगः ॥ नाश्वासनाय यदि मातरिदं तवार्द्धदेहस्य शश्वदमृताप्लुतशीतलस्य ॥६॥ सर्वज्ञतां सदसि वाक्पटुतां प्रसूते देवि त्वदंघ्रिसरसीरुहयोः प्रणामः ॥ किं च स्फुरन्मुकुटमुज्ज्वलमातपत्रं द्वे चामरे च महतीं वसुधां ददाति ॥ ७ ॥ कल्पद्रुमैरभिमतप्रतिपादनेषु कारुण्यवारिधिभिरंब भवत्कटाक्षैः ॥ आलोकय त्रिपुरसुन्दरि मामनाथं त्वय्येव भक्तिभरितं त्वयि बद्धदृष्टिम् ॥ ८ ॥ हंतेतरेष्वपि निधाय मनांसि चान्ये भक्तिं वहंति किल सापरदैवतेषु ॥ त्वामेव देवि मनसाऽहमनुस्मरामि त्वामेव नौमि शरणं जननि त्वमेव ॥ ९ ॥ लक्षेषु सत्स्वपि तवाक्षिविलोकनानामालोकय त्रिपुरसुन्दरि मां कथंचित् ॥ नूनं मया च सदृशं करुणैकपात्रं जातो जनिष्यति जनो न च जायते वा ॥१०॥ ह्रींह्रीमिति प्रतिदिनं जपतां तवाख्यां किं नाम दुर्लभमिह त्रिपुराभिधाने ॥ मालाकिरीटमदवारणमाननीयांस्तान्सेवते मधुमती स्वयमेव लक्ष्मीः ॥ ११ ॥ सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि साम्राज्यदानकुशलानि सरोरुहाणि ॥ त्वद्वन्दनानि दुरितोद्धरणोद्यतानि मामेव मातरनिशं कलयंतु नान्यम् ॥ १२ ॥ कल्पोपसंहरणकल्पिततताण्डवस्य

देवस्य खण्डपरशोः परभैरवस्य ॥ पाशांकुशैक्षवशरासनपुष्पबाणा सा साक्षिणी विजयते तव मूर्तिरेका ॥ १३ ॥ लग्नं सदा भवतु मातरिदं त्वदीयं तेजः परं बहुलकुंकुमपङ्कशोणम् ॥ भास्वत्किरीटममृतं कुशलावतंसं रूपं त्रिकोणमुदितं परमामृताक्तम् ॥ १४ ॥ ह्रींकारत्रयसम्पुटेन महता मंत्रेण संदीपितं स्तोत्रं यः प्रतिवासरं तव पुरो मातर्जपेन्मंत्रवित् ॥ तस्य क्षोणिभुजो भवंति वशगा लक्ष्मी श्चिरं स्थायिनी वाणी निर्मलसूक्तिभावभरिता जागर्ति दीर्घं यशः ॥ १५ ॥ इति ब्रह्मविरचितं षोडशीकल्याणीस्तोत्रं समाप्तम् ॥

अथ षोडश्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रप्रारंभः ॥ भृगुरुवाच ॥ चतुर्वक्र जगन्नाथ स्तोत्रं वद मम प्रभो ॥ यस्यानुष्ठानमात्रेण नरो भक्ति मवाप्नुयात् ॥ १ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ सहस्रनाम्नामाकृष्य नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥ गुह्याद्गुह्यतरं गुह्यं सुन्दर्य्याः परिकीर्तितम् ॥ २ ॥ ॐ अस्य श्रीषोडश्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्य शंभुर्ऋषिरनुष्टुप्छंदः श्रीषोडशी देवता धर्म्मार्थकाममोक्षसिद्धये पाठे विनियोगः ॥ ॐ त्रिपुरा षोडशी माता त्र्यक्षरा त्रितया त्रयी ॥ सुंदरी सुमुखी सेव्या सामवेदपरायणा ॥ ३ ॥ शारदा शब्दनिलया सागरा सरिदम्बरा ॥ शुद्धा शुद्धतनुः साध्वी शिवध्यानपरायणा ॥४॥ स्वामिनी शंभुवनिता शांभवी च सरस्वती ॥ समुद्रमथिनी शीघ्रगामिनी शीघ्रसिद्धिदा ॥ ५ ॥ साधुसेव्या साधुगम्या साधुसंतुष्टमानसा ॥ खट्वांगधारिणी खर्वा खड्गखर्परधारिणी ॥ ६ ॥ षड्वर्गभावरहिता षड्वर्मपरिचारिका ॥ षड्वर्गा च षडंगा च षोढा षोडशवार्षिकी ॥ ७ ॥ क्रतुरूपा क्रतुमती ऋभुक्षक्रतुमण्डिता ॥ कवर्गादिपवर्गांता अंतस्था अंतरूपिणी ॥ ८ ॥ अकाराकाररहिता कालमृत्युजरापहा ॥ तन्वी तत्त्वेश्वरी तारा त्रिवर्षा ज्ञानरूपिणी ॥ ९ ॥ काली कराली कामेशी च्छायासंज्ञा प्यरुन्धती ॥ निर्विकल्पा महावेगा महोत्साहा महोदरी ॥ १० ॥ मेधा बलाका विमला विमलज्ञानदायिनी ॥ गौरी वसुन्धरा गोप्त्री गवांपतिनिषेविता ॥ ११ ॥ भगांगा भगरूपा च भक्तिभावपरायणा ॥ छिन्नमस्ता महाधूमा तथा धूम्रविभूषणा ॥ १२ ॥ धर्मकर्मा दिरहिता धर्मकर्मपरायणा ॥ सीता मातंगिनी मेधा मधुदैत्यविनाशिनी ॥ १३ ॥ भैरवी भुवना माताऽभयदा भवसुन्दरी ॥ भावुका बगला कृत्या बाला त्रिपुरसुन्दरी ॥ १४ ॥ रोहिणी रेवती रम्या रम्भा रावणवन्दिता ॥ शतयज्ञमयी सत्वा शतक्रतुवरप्रदा ॥ १५ ॥

देवी सहस्रादित्यसन्निभा ॥ सोमसूर्याग्निनयना व्याघ्रचर्माम्बरावृता ॥ १६ ॥ अर्द्धेन्दुधारिणी मत्ता मदिरा मदिरेक्षणा ॥ इति ते कथितं गोप्यं नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥ १७ ॥ सुन्दर्याः सर्वदं सेव्यं महापातकनाशनम् ॥ गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं कलौ युगे ॥ १८ ॥ सहस्रनामपाठस्य फलं यद्वै प्रकीर्तितम् ॥ तस्मात्कोटिगुणं पुण्यं स्तवस्यास्य प्रकीर्तनात् ॥ १९ ॥ पठेत्सदा भक्तियुतो नरो यो निशीथकालेऽप्यरुणोदये वा ॥ प्रदोषकाले नवमीदिनेऽथवा लभेत भोगान् परमाद्भुतान् प्रियान् ॥ २० ॥ इति ब्रह्मयामले पूर्वखण्डे षोडश्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥ अथ षोडशीसहस्रनामस्तोत्रप्रारंभः ॥ कैलासशिखरे रम्ये नानारत्नोपशोभिते ॥ कल्पपादपमध्यस्थे नानापुष्पोपशोभिते ॥ १ ॥ मणिमण्डपमध्यस्थे मुनिगन्धर्वसेविते ॥ कदाचित्सुखमासीनं भगवंतं जगद्गुरुम् ॥ २ ॥ कपालखट्वांगधरं चन्द्रार्धकृतशेखरम् ॥ हस्तत्रिशूलडमरुं महावृषभवाहनम् ॥ ३॥ जटाजूटधरं देवं कण्ठभूषणवासुकिम् ॥ विभूतिभूषणं देवं नीलकण्ठं त्रिलोचनम्॥४ ॥ द्वीपिचर्म्मपरीधानं शुद्धस्फटिकसन्निभम्॥ सहस्रादित्यसंकाशं गिरिजार्द्धांगभूषणम्॥ ५॥प्रणम्य शिरसा नाथं कारणं विश्वरूपिणम् ॥ कृताञ्जलिपुटो भूत्वा प्राहैनं शिखिवाहनः ॥ ६ ॥ कार्तिकेय उवाच ॥ देवदेव जगन्नाथ सृष्टिस्थितिलयात्मक ॥ त्वमेव परमात्मा च त्वं गतिः सर्वदेहिनाम् ॥ ७ ॥ त्वं गतिः सर्वलोकानां दीनानां च त्वमेव हि ॥ त्वमेव जगदाधारस्त्वमेव विश्वकारणम् ॥ ८ ॥ त्वमेव पूज्यः सर्वेषां त्वदन्यो नास्ति मे गतिः ॥ किं गुह्यं परमं लोके किमेकं सर्वसिद्धिदम् ॥ ९ ॥ किमेकं परमं श्रेष्ठं को योगः स्वर्गमोक्षदः ॥ विना तीर्थेन तपसा विना दानैर्विना मखैः ॥ १० ॥ विना लयेन ध्यानेन नरः सिद्धिमवाप्नुयात् ॥ कस्मादुत्पद्यते सृष्टिः कस्मिंश्च प्रलयो भवेत ॥ ११ ॥ कस्मादुत्तीर्यते देव संसारार्णवसंकटात् ॥ तदहं श्रोतुमिच्छामि कथयस्व महेश्वर ॥ १२ ॥ ईश्वर उवाच ॥ साधु साधु त्वया पृष्टं पार्वतीप्रियनन्दन ॥ अस्ति गुह्यतमं पुत्र कथयिष्याम्यसंशयम् ॥ १३ ॥ सत्त्वं रजस्तमश्चैव ये चान्ये महदादयः ॥ ये चान्ये बहवो भूताः सर्वे प्रकृतिसम्भवाः ॥ १४ ॥ सैव देवी पराशक्तिर्महात्रिपुरसुन्दरी ॥ सैव प्रसूयते विश्वं विश्वं सैव प्रपास्यति ॥ १५ ॥ सैव संहरते विश्वं जगदेतच्चराचरम् ॥ आधारः सर्व

भूतानां सैव रोगार्तिहारिणी ॥ १६ ॥ इच्छाज्ञानक्रियाशक्तिर्ब्रह्मविष्णुशिवात्मिका ॥ त्रिधा शक्तिस्वरूपेण सृष्टिस्थितिविनाशिनी ॥
॥ १७ ॥ सृज्यते ब्रह्मरूपेण विष्णुरूपेण पाल्यते ॥ ह्रियते रुद्ररूपेण जगदेतच्चराचरम् ॥ १८ ॥ यस्या योनौ जगत्सर्वमद्यापि
परिवर्तते ॥ यस्या प्रलीयते चांते यस्यां च जायते पुनः ॥ १९ ॥ यां समाराध्य त्रैलोक्ये संप्राप्यं पदमुत्तमम् ॥ तस्या नामसहस्रं
तु कथयामि शृणुष्व तत् ॥ २० ॥ ॐ अस्य श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीसहस्रनामस्तोत्रमंत्रस्य श्रीभगवान् दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः। जगती च्छंदः ।
समस्तप्रकटगुप्तसंप्रदायकुलकौलोत्तीर्णनिर्गर्भरहस्याचिन्त्यप्रभावती देवता। ॐ बीजं माया शक्तिः कामराजेति कीलकं धर्मार्थकाममोक्षार्थे
जपे विनियोगः ॥ अथ ध्यानम्—ॐ आधारे तरुणार्कबिम्बरुचिरं हेमप्रभं वाग्भवं बीजं मन्मथमिन्द्रगोपसदृशं हृत्पंकजे संस्थितम्
विष्णुब्रह्मपदस्थशक्तिकलितं सोमप्रभाभासुरं ये ध्यायंति पदत्रयं तव शिवे ते यांति सौख्यं पदम्॥२१॥ कल्याणी कमला काली कराली
कामरूपिणी ॥ कामाख्या कामदा काम्या कामना कामचारिणी ॥ २२ ॥ कालरात्रिर्महारात्रिः कपाली कालरूपिणी ॥ कौमारी
करुणा मुक्तिः कलिकल्मषनाशिनी ॥ २३ ॥ कात्यायनी कराधारा कौमुदी कमलप्रिया ॥ कीर्तिदा बुद्धिदा मेधा नीतिज्ञा
नीतिवत्सला ॥ २४ ॥ माहेश्वरी महामाया महातेजा महेश्वरी ॥ महाजिह्वा महाघोरा महादंष्ट्रा महाभुजा ॥ २५ ॥ महामोहांध
कारघ्नी महामोक्षप्रदायिनी ॥ महादारिद्र्यनाशा च महाशत्रुविमर्दिनी ॥ २६ ॥ महामाया महावीर्या महापातकनाशिनी ॥ महा
मखा मंत्रमयी मणिपूरकवासिनी ॥ २७ ॥ मानसी मानदा मान्या मनश्चक्षू रणेचरा ॥ गणमाता च गायत्री गणगंधर्वसेविता ॥
॥ २८ ॥ गिरिजा गिरिशा साध्वी गिरिस्था गिरिवल्लभा ॥ चण्डेश्वरी चण्डरूपा प्रचण्डा चण्डमालिनी ॥ २९ ॥ चर्चिका
चर्चिकाकारा चण्डिका चारुरूपिणी ॥ यज्ञेश्वरी यज्ञरूपा जपयज्ञपरायणा ॥ ३० ॥ यज्ञमाता यज्ञभोक्त्री यज्ञेशी यज्ञसंभवा ॥
सिद्धयज्ञक्रियासिद्धिर्यज्ञाङ्गी यज्ञरक्षिका ॥ ३१ ॥ यज्ञक्रिया यज्ञरूपा यज्ञाङ्गी यज्ञरक्षिका ॥ यज्ञक्रिया च यज्ञा च यज्ञा यज्ञ
[illegible]ल्या ॥ ३२ ॥ जालंधरी जगन्माता जातवेदा जगत्प्रिया ॥ जितेन्द्रिया जितक्रोधा जननी जन्मदायिनी ॥ ३३ ॥ गङ्गा

गोदावरी चैव गोमती च शतद्रुका ॥ घर्घरा वेदगर्भा च रेचिका समवासिनी ॥ ३४ ॥ सिंधुर्मंदाकिनी क्षिप्रा यमुना च सरस्वती ॥
भद्रा रागविपाशा च गण्डकी विंध्यवासिनी॥३५॥नर्मदा सिंधुकावेरी वेत्रवत्या सुकौशिकी॥महेन्द्रतनया चैव अहल्या चर्मकावती ॥३६॥
अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची अवंतिका ॥ पुरी द्वारावती तीर्था महाकिल्बिषनाशिनी ॥ ३७ ॥ पद्मिनी पद्ममध्यस्था पद्म
किंजल्कवासिनी ॥ पद्मवक्त्रा चकोराक्षी पद्मस्था पद्मसंभवा ॥ ३८ ॥ ह्रींकारा कुण्डलाधारा हृत्पद्मस्था सुलोचना ॥ श्रींकारी भूषणा
लक्ष्मीः क्लींकारी क्लेशनाशिनी ॥ ३९ ॥ हरिवक्त्रोद्भवा शांता हरिवक्त्रकृतालया ॥ हरिवक्त्रोद्भवा शांता हरिवक्षस्स्थलस्थिता ॥ ४० ॥
वैष्णवी विष्णुरूपा च विष्णुमातृस्वरूपिणी ॥ विष्णुमाया विशालाक्षी विशालनयनोज्ज्वला ॥ ४१ ॥ विश्वेश्वरी च विश्वात्मा विश्वेशी
विश्वरूपिणी ॥ विश्वेश्वरी शिवाराध्या शिवनाथा शिवप्रिया ॥ ४२ ॥ शिवमाता शिवाख्या च शिवदा शिवरूपिणी ॥ भवेश्वरी
भवाराध्या भवेशी भवनायिका ॥ ४३ ॥ भवमाता भवागम्या भवकण्टकनाशिनी ॥ भवप्रिया भवानन्दा भवानी भवमोहिनी ॥४४॥
गायत्री चैव सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मरूपिणी ॥ ब्रह्मेशी ब्रह्मदा ब्रह्मा ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी ॥ ४५ ॥ दुर्गस्था दुर्गरूपा च दुर्गा दुर्गार्ति
नाशिनी ॥ सुगमा दुर्गमा दांता दयादोग्ध्री दुरापहा ॥ ४६ ॥ दुरितघ्नी दुराध्यक्षा दुरा दुष्कृतनाशिनी ॥ पंचास्या पंचमी पूर्णा पूर्ण
पीठनिवासिनी ॥ ४७ ॥ सत्त्वस्था सत्त्वरूपा च सत्त्वस्था सत्त्वसम्भवा ॥ रजस्था च रजोरूपा रजोगुणसमुद्भवा ॥ ४८ ॥ तमस्था
च तमोरूपा तामसी तामसप्रिया ॥ तमोगुणसमुद्भूता सात्त्विकी राजसी कला ॥ ४९ ॥ काष्ठा मुहूर्ता निमिषा अनिमेषा ततः परम् ॥
अर्द्धमासा च मासा च संवत्सरस्वरूपिणी ॥ ५० ॥ योगस्था योगरूपा च कल्पस्था कल्परूपिणी ॥ नानारत्नविचित्राङ्गी नानाभरण
मण्डिता ॥ ५१ ॥ विश्वात्मिका विश्वमाता विश्वपाशविनाशिनी ॥ विश्वासकारिणी विश्वा विश्वशक्तिर्विचक्षणा ॥ ५२ ॥ जपा
कुसुमसङ्काशा दाडिमीकुसुमोपमा ॥ चतुरंगी चतुर्बाहुश्चतुराचारवासिनी ॥ ५३ ॥ सर्वेशी सर्वदा सर्वा सर्वदा सर्वदायिनी ॥ माहेश्वरी च
सर्वाद्या शर्वाणी सर्वमंगला ॥ ५४ ॥ नलिनी नन्दिनी नन्दा आनन्दानन्दवर्द्धिनी ॥ व्यापिनी सर्वभूतेषु भवभारविनाशिनी ॥ ५५ ॥

सर्वश्रृंगारवेषाढ्या पाशांकुशकरोद्यता ॥ सूर्यकोटिसहस्राभा चन्द्रकोटिनिभानना ॥ ५६ ॥ गणेशकोटिलावण्या विष्णुकोट्यरिमर्दिनी ॥ दावाग्निकोटिदलिनी रुद्रकोट्युग्ररूपिणी ॥ ५७ ॥ समुद्रकोटिगम्भीरा वायुकोटिमहाबला ॥ आकाशकोटिविस्तारा यमकोटिभयंकरी ॥ ॥ ५८ ॥ मेरुकोटिसमुच्छ्राया गणकोटिसमृद्धिदा ॥ निष्कस्तोका निराधारा निर्गुणा गुणवर्जिता ॥ ५९ ॥ अशोका शोकरहिता तापत्रयविवर्जिता ॥ वसिष्ठा विश्वजननी विश्वाख्या विश्ववर्द्धिनी ॥ ६० ॥ चित्रा विचित्रचित्रांगी हेतुगर्भा कुलेश्वरी ॥ इच्छाशक्ति र्ज्ञानशक्तिः क्रियाशक्तिः शुचिस्मिता ॥ ६१ ॥ शुचिः स्मृतिमयी सत्या श्रुतिरूपा श्रुतिप्रिया ॥ महासत्त्वमयी सत्वा पंचतत्त्वोपरि स्थिता ॥ ६२ ॥ पार्वती हिमवत्पुत्री पारस्था पाररूपिणी ॥ जयंती भद्रकाली च अहल्या कुलनायिका ॥ ६३ ॥ भूतधात्री च भूतेशी भूतस्था भूतभावना॥ महाकुण्डलिनी शक्तिर्महाविभववर्द्धिनी ॥ ६४ ॥ हंसाक्षी हंसरूपा च हंसस्था हंसरूपिणी ॥ सोमसूर्याग्नि मध्यस्था मणिमण्डलवासिनी ॥ ६५ ॥ द्वादशारसरोजस्था सूर्यमण्डलवासिनी ॥ अकलंका शशांकाभा षोडशारनिवासिनी ॥ ६६ ॥ डाकिनी राकिनी चैव लाकिनी काकिनी तथा ॥ शाकिनी हाकिनी चैव षट्चक्रेषु निवासिनी ॥ ६७ ॥ सृष्टिस्थितिविनाशाय सृष्टि स्थित्यंतकारिणी ॥ श्रीकण्ठप्रियहृत्कण्ठा नन्दाख्या बिन्दुमालिनी ॥ ६८ ॥ चतुष्षष्टिकलाधारा देहदण्डसमाश्रिता ॥ माया काली धृतिर्मेधा क्षुधा तुष्टिर्महाद्युतिः ॥ ६९ ॥ हिंगुला मंगला सीता सुषुम्ना मध्यगामिनी ॥ परघोरा करालाक्षी विजया जयदायिनी ॥ ॥ ७० ॥ हृत्पद्मनिलया भीमा महाभैरवनादिनी ॥ आकाशलिंगसम्भूता भुवनोद्यानवासिनी ॥ ७१ ॥ महत्सूक्ष्मा च कंकाली भीमरूपा महाबला ॥ मेनकागर्भसम्भूता तप्तकाञ्चनसन्निभा ॥ ७२ ॥ अंतरस्था कूटबीजा त्रिकूटाचलवासिनी ॥ वर्णाख्या वर्णरहिता पञ्चाशद्वर्णभेदिनी ॥ ७३ ॥ विद्याधरी लोकधात्री अप्सरा अप्सरःप्रिया ॥ दीक्षा दाक्षायणी दक्षा दक्षयज्ञविनाशिनी ॥ ७४ ॥ [illegible]पूर्णा यशोदा च यशोदागर्भसम्भवा ॥ देवकी देवमाता च राधिका कृष्णवल्लभा ॥ ७५ ॥ अरुन्धती शचीन्द्राणी गान्धारी गन्ध[illegible] ॥ ध्यानातीता ध्यानगम्या ध्यानज्ञा ध्यानधारिणी ॥ ७६ ॥ लम्बोदरी च लम्बोष्ठी जाम्बवंती जलोदरी ॥ महोदरी मुक्त

॥४६४॥

[illegible]र्थसिद्धिदा ॥ ७७ ॥ तपस्विनी तपोनिष्ठा सुपर्णा धर्मवासिनी ॥ बाणचापधरा धीरा पाञ्चाली पञ्चमप्रिया ॥ ७८ ॥
[illegible]गी च सुभीमा च गुह्यतत्त्वा निरजना ॥ अशरीरा शरीरस्था संसारार्णवतारिणी ॥ ७९ ॥ अमृता निष्कला भद्रा सकला कृष्ण
पिंगला ॥ चक्रप्रिया च चक्राह्वा पंचचक्रादिदारिणी ॥ ८० ॥ पद्मरागप्रतीकाशा निर्मलाकाशसन्निभा ॥ अधःस्था ऊर्द्धरूपा च
उर्द्धपद्मनिवासिनी ॥ ८१ ॥ कार्यकारणकर्तृत्वे शश्वद्रूपेषु संस्थिता ॥ रसज्ञा रसमध्यस्था गन्धस्था गन्धरूपिणी ॥८२॥ परब्रह्मस्वरूपा
च परब्रह्मनिवासिनी ॥ शब्दब्रह्मस्वरूपा च शब्दस्था शब्दवर्जिता ॥ ८३ ॥ सिद्धिबुद्धिः परा बुद्धिः सन्दीप्तिर्मध्यसंस्थिता ॥
स्वगुह्या शाम्भवी शक्तिस्तत्त्वस्था तत्त्वरूपिणी ॥ ८४ ॥ शाश्वती भूतमाता च महाभूताधिपप्रिया ॥ शुचिप्रेता धर्मसिद्धिर्धर्मवृद्धिः
पराजिता ॥ ८५ ॥ कामसंदीपिनी कामा सदाकौतूहलप्रिया ॥ जटाजूटधरा मुक्ता सूक्ष्मा शक्तिविभूषणा ॥ ८६ ॥ द्वीपिचर्म्मपरी
धाना चीरवल्कलधारिणी ॥ त्रिशूलडमरुधरा नरमालाविभूषणा ॥ ८७ ॥ अत्युग्ररूपिणी चोग्रा कल्पांतदहनोपमा ॥ त्रैलोक्य
साधिनी साध्या सिद्धिसाधकवत्सला ॥ ८८ ॥ सर्वविद्यामयी सारा चासुराणां विनाशिनी ॥ दमनी दामनी दांता दयादोग्ध्री दुरापहा ॥
॥ ८९ ॥ अग्निजिह्वोपमा घोरा घोरघोरेतरानना ॥ नारायणी नारसिंही नृसिंहहृदये स्थिता ॥ ९० ॥ योगेश्वरी योगरूपा योग
माता च योगिनी ॥ खेचरी खचरी खेला निर्वाणपदसंश्रया ॥ ९१ ॥ नागिनी नागकन्या च सुवेशा नागनायिका ॥ विषज्वालावती
दीप्ता कलाशतविभूषणा ॥ ९२ ॥ तीव्रवक्त्रा महावक्त्रा नागकोटित्वधारिणी ॥ महासत्त्वा च धर्मज्ञा धर्मातिसुखदायिनी ॥ ९३ ॥
कृष्णमूर्द्धा महामूर्द्धा घोरमूर्द्धा वरानना ॥ सर्वेन्द्रियमनोन्मत्ता सर्वेन्द्रियमनोमयी ॥ ९४ ॥ सर्वसंग्रामजयदा सर्वप्रहरणोद्यता ॥
सर्वपीडोपशमनी सर्वारिष्टनिवारिणी ॥ ९५ ॥ सर्वैश्वर्य्यसमुत्पन्ना सर्वग्रहविनाशिनी ॥ मातंगी मत्तमातंगी मातङ्गीप्रिय
मण्डला ॥ ९६ ॥ अमृतोदधिमध्यस्था कटिसूत्रैरलंकृता ॥ अमृतोदधिमध्यस्था प्रवालवसनाम्बुजा ॥ ९७ ॥ मणि
मण्डलमध्यस्था ईषत्प्रहसितानना ॥ कुमुदा ललिता लोला लाक्षालोहितलोचना ॥ ९८ ॥ दिग्वासा देवदूती च देवदेवाधि

देवता ॥ सिंहोपरि समारूढा हिमाचलनिवासिनी ॥ ९९ ॥ अट्टाट्टहासिनी घोरा घोरदैत्यविनाशिनी ॥ अत्युग्ररक्तवस्त्राभा नाग
केयूरमण्डिता ॥ १०० ॥ मुक्ताहारलतोपेता तुंगपीनपयोधरा ॥ रक्तोत्पलदलाकारा मदाघूर्णितलोचना ॥ १०१ ॥ समस्त
देवतामूर्तिः सुरारिक्षयकारिणी ॥ खड्गिनी शूलहस्ता च चक्रिणी चक्रमालिनी ॥ १०२ ॥ शंखिनी चापिनी बाणा वज्रिणी वज्र
दण्डिनी ॥ आनन्दोदधिमध्यस्था कटिसूत्रैरलंकृता ॥ १०३ ॥ नानाभरणदीप्तांगी नानामणिविभूषिता ॥ जगदानंसंभूता चिंता
मणिगुणान्विता ॥ १०४ ॥ त्रैलोक्यनमिता तुर्य्यचिन्मयानन्दरूपिणी ॥ त्रैलोक्यनन्दिनी देवी दुःखदुस्वप्ननाशिनी ॥ १०५ ॥
घोराग्निदाहशमनी राजदेवार्थसाधिनी ॥ महापराधराशिघ्नी महाचौरभयापहा ॥ १०६ ॥ रागादिदोषरहिता जरामरणवर्जिता ॥
चन्द्रमण्डलमध्यस्था पीयूषार्णवसंभवा ॥ १०७ ॥ सर्वदेवैः स्तुता देवी सर्वसिद्धैर्नमस्कृता ॥ अचिंत्यशक्तिरूपा च मणिमंत्रमहौ
षधिः ॥ १०८ ॥ अस्तिस्वस्तिमयी बाला मलयाचलवासिनी ॥ धात्री विधात्री संहर्त्री रतिज्ञा रतिदायिनी ॥ १०९ ॥
रुद्राणी रुद्ररूपा च रुद्ररौद्रार्तिनाशिनी ॥ सर्वज्ञा चैव धर्मज्ञा रसज्ञा दीनवत्सला ॥ ११० ॥ अनाहता त्रिनयना निर्भारा निर्वृतिः
परा ॥ परा घोरा करालाक्षी सुमतिश्रैष्ठ्यदायिनी ॥ १११ ॥ मंत्रालिका मंत्रगम्या मंत्रमाला सुमंत्रिणी ॥ श्रद्धानन्दा महाभद्रा
निर्द्वन्द्वा निर्गुणात्मिका ॥ ११२ ॥ धरिणी धारिणी पृथ्वी धरा धात्री वसुन्धरा ॥ मेरुमन्दरमध्यस्था स्थितिः शङ्करवल्लभा ॥ ११३ ॥
श्रीमती श्रीमयी श्रेष्ठा श्रीकरी भावभाविनी ॥ श्रीदा श्रीमा श्रीनिवासा श्रीमती श्रीमतां गतिः ॥ ११४ ॥ उमा सारंगिणी कृष्णा
कुटिला कुटिलालका ॥ त्रिलोचना त्रिलोकात्मा पुण्यपुण्या प्रकीर्तिता ॥ ११५ ॥ अमृता सत्यसंकल्पा सा सत्या ग्रंथिभेदिनी ॥
परेशी परमा साध्या परा विद्या परात्परा ॥ ११६ ॥ सुन्दरांगी सुवर्णाभा सुरासुरनमस्कृता ॥ प्रजा प्रजावती धन्या धनधान्यसमृ
द्धिदा ॥ ११७ ॥ ईशानी भुवनेशानी भवानी भुवनेश्वरी ॥ अनंतानंतमहिता जगत्सारा जगद्भवा ॥ ११८ ॥ अचिंत्यात्मा
चिंत्यशक्तिश्चिंता चिंत्यस्वरूपिणी ॥ ज्ञानगम्या ज्ञानमूर्तिर्ज्ञानिनी ज्ञानशालिनी ॥ ११९ ॥ असिता घोररूपा च सुधाधारा सुधावहा ॥

भास्वती भीतिर्भास्वदक्षानुशायिनी ॥ १२० ॥ अनसूया क्षमा लज्जा दुर्लभाभरणात्मिका ॥ विश्वघ्नी विश्ववीरा च विश्वघ्नी
विश्वसंस्थिता ॥ १२१ ॥ शीलस्था शीलरूपा च शीला शीलप्रदायिनी ॥ बोधिनी बोधकुशला रोधिनी बोधिनी तथा ॥ १२२ ॥
विद्योतिनी विचित्रात्मा विद्युत्पटलसन्निभा ॥ विश्वयोनिर्महायोनिः कर्मयोनिः प्रियात्मिका ॥ १२३ ॥ रोहिणी रोगशमनी महा
रोमज्वरापहा ॥ रसदा पुष्टिदा पुष्टिर्मानदा मानवप्रिया ॥ १२४ ॥ कृष्णांगवाहिनी कृष्णा कृष्णा कृष्णसहोदरी ॥ शाम्भवी
शम्भुरूपा च शम्भुस्था शम्भुसम्भवा ॥ १२५ ॥ विश्वोदरी योगमाता योगमुद्राम्रयोगिनी ॥ वागीश्वरी योगनिद्रा योगिनी कोटि
सेविता ॥ १२६ ॥ कौलिका मन्दकन्या च शृंगारपीठवासिनी ॥ क्षेमंकरी सर्वरूपा दिव्यरूपा दिगम्बरा ॥ १२७ ॥
धूम्रवक्त्रा धूम्रनेत्रा धूम्रकेशी च धसरा ॥ पिनाकी रुद्रवेताली महावेतालरूपिणी ॥ १२८ ॥ तपिनी तापिनी दीक्षा विष्णु
विद्यात्मना श्रिता ॥ मंथरा जठरा ताम्रा अग्निजिह्वा भयापहा ॥ १२९ ॥ पशुघ्नी पशुरूपा च पशुहा पशुवाहिनी ॥ पिता माता च
धीरा च पशुपाशविनाशिनी ॥ १३० ॥ चन्द्रमा चन्द्ररेखा चन्द्रकांतिविभूषणा ॥ कुंकुमांकितसर्वांगी सुधासद्गुरुलोचना ॥
॥ १३१ ॥ शुक्लाम्बरधरा देवी वीणापुस्तकधारिणी ॥ ऐरावतपद्मधरा श्वेतपद्मासनस्थिता ॥ १३२ ॥ रक्ताम्बरधरा देवी रक्त
पद्मविलोचनना ॥ दुस्तरा तारिणी तारा तरुणीताररूपिणी ॥ १३३ ॥ सुधाधारा च धर्मज्ञा धर्मसंगोपदेशिनी ॥ भगेश्वरी भगाराध्या
भगिनी भगनायिका ॥ १३४ ॥ भगविम्बा भगक्लिन्ना भगयोनिर्भगप्रदा ॥ भगेश्वरी भगाराध्या भगिनी भगनायिका ॥ १३५ ॥
भगेशी भगरूपा च भगगुह्या भगावहा ॥ भगोदरी भगानन्दा भगस्था भगशालिनी ॥ १३६ ॥ सर्वसंक्षोभिणी शक्तिः सर्वविद्रा
विणी तथा ॥ मालिनी माधवी माध्वी मधुरूपा महोत्कटा ॥ १३७ ॥ भरुण्डचान्द्रिका ज्योत्स्ना विश्वचक्षुस्तमोपहा ॥ सुप्रसन्ना
महादूती यमदूती भयंकरी ॥ १३८ ॥ उन्मादिनी महारूपा दिव्यरूपा सुरार्चिता ॥ चैतन्यरूपिणी नित्या क्लिन्ना काममदोद्धता ॥
॥ १३९ ॥ मदिरानन्दकैवल्या मदिराक्षी मदालसा ॥ सिद्धेश्वरी सिद्धविद्या सिद्धाद्या सिद्धसम्भवा ॥ १४० ॥ सिद्धर्द्धिः

सिद्धमाता च सिद्धिः सर्वार्थसिद्धिदा ॥ मनोमयी गुणातीता परज्योतिःस्वरूपिणी ॥ १४१ ॥ परेशी परगा पारा परा सिद्धिः परा गतिः ॥ विमला मोहिनी चाद्या मधुपानपरायणा ॥ १४२ ॥ वेदवेदांगजननी सर्वशास्त्रविशारदा ॥ सर्वदेवमयी विद्या सर्वशास्त्रमयी तथा ॥ १४३ ॥ सर्वज्ञानमयी देवी सर्वधर्ममयीश्वरी ॥ सर्वयज्ञमयी यज्ञा सर्वमंत्राधिकारिणी ॥ १४४ ॥ सर्वसम्पत्प्रतिष्ठात्री सर्वविद्राविणी परा ॥ सर्वसंक्षोभिणी देवी सर्वमंगलकारिणी ॥ १४५ ॥ त्रैलोक्याकर्षिणी देवी सर्वाह्लादनकारिणी ॥ सर्वसंमोहिनी देवी सर्वस्तंभनकारिणी ॥ १४६ ॥ त्रैलोक्यजृंभिणी देवी तथा सर्ववशंकरी ॥ त्रैलोक्यरंजिनी देवी सर्वसम्पत्तिदायिनी ॥ १४७ ॥ सर्वमंत्रमयी देवी सर्वद्वन्द्वक्षयंकरी ॥ सर्वसिद्धिप्रदा देवी सर्वसम्पत्प्रदायिनी ॥ १४८ ॥ सर्वप्रियंकरी देवी सर्वमंगलकारिणी ॥ सर्वकामप्रदा देवी सर्वदुःखविमोचिनी ॥ १४९ ॥ सर्वमृत्युप्रशमनी सर्वविघ्नविनाशिनी ॥ सर्वांगसुंदरी माता सर्वसौभाग्यदायिनी ॥ १५० ॥ सर्वज्ञा सर्वशक्तिश्च सर्वैश्वर्यफलप्रदा ॥ सर्वज्ञानमयी देवी सर्वव्याधिविनाशिनी ॥ १५१ ॥ सर्वाधारस्वरूपा च सर्वपापहरा तथा ॥ सर्वानन्दमयी देवी सर्वेक्षायाः स्वरूपिणी ॥ १५२ ॥ सर्वलक्ष्मीमयी विद्या सर्वेप्सितफलप्रदा ॥ सर्वारिष्टप्रशमनी परमानन्ददायिनी ॥ १५३ ॥ त्रिकोणनिलया त्रिस्था त्रिमात्रा त्रितनुस्थिता ॥ त्रिवेणी त्रिपथा त्रिस्था त्रिमूर्तिस्त्रिपुरेश्वरी ॥ १५४ ॥ त्रिधाम्नी त्रिदशाध्यक्षा त्रिवित् त्रिपुरवासिनी ॥ त्रयीविद्या च त्रिशिरास्त्रैलोक्या च त्रिपुष्करा ॥ १५५ ॥ त्रिकोटरस्था त्रिविधा त्रिपुरा त्रिपुरात्मिका ॥ त्रिपुरश्रीस्त्रिजननी त्रिपुरा त्रिपुरसुन्दरी ॥ १५६ ॥ इदं त्रिपुरसुन्दर्याः स्तोत्रं नाम सहस्रकम् ॥ गुह्याद्गुह्यतरं पुत्र तव प्रीत्यै प्रकीर्तितम् ॥ १५७ ॥ गोपनीयं प्रयत्नेन पठनीयं प्रयत्नतः ॥ नातः परतरं पुण्यं नातः परतरं तपः ॥ १५८ ॥ नातः परतरं स्तोत्रं नातः परतरा गतिः ॥ स्तोत्रं सहस्रनामाख्यं मम वक्त्राद्विनिर्गतम् ॥ ॥ १५९ ॥ यः पठेत्प्रयतो भक्त्या शृणुयाद्वा समाहितः ॥ मोक्षार्थी लभते मोक्षं स्वर्गार्थी स्वर्गमाप्नुयात् ॥ १६० ॥ कामांश्च प्राप्नुयात्कामी धनार्थी च लभेद्धनम् ॥ विद्यार्थी लभते विद्यां यशोऽर्थी लभते यशः ॥ १६१ ॥ कन्यार्थी लभते

कन्या सुतार्थी लभते सुतम् ॥ गुर्विणी जनयेत्पुत्रं कन्या विन्दति सत्पतिम् ॥ १६२ ॥ मूर्खोऽपि लभते शास्त्रं हीनोऽपि
लभते गतिम् ॥ अर्कामायां हि संक्रांत्यमष्टम्योश्च विशेषतः ॥ १६३ ॥ पौर्णमास्यां चतुर्दश्यां नवम्यां भौमवासरे ॥ पठेद्वा
पाठयेद्वापि शृणुयाद्वा समाहितः ॥ १६४ ॥ स मुक्तः सर्वपापेभ्यः कामेश्वरसमो भवेत् ॥ लक्ष्मीवान्धनवांश्चैव वल्लभः सर्वयोषि
ताम् ॥ १६५ ॥ तस्य वश्यं भवेदाशु त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥ रुद्रं दृष्ट्वा यथा देवा विष्णुं दृष्ट्वा च दानवाः ॥ १६६ ॥ यथाहि
गरुडं दृष्ट्वा सिंहं दृष्ट्वा यथा गजाः ॥ कीटवत्प्रपलायंते तस्य वक्त्रावलोकनात् ॥ १६७ ॥ अग्निचौरभयं तस्य कदाचिन्नैव संभवेत् ॥
पाप्मानो विविधाः शांतिं मेरुपर्वतसन्निभाः ॥ १६८ ॥ यस्मात्तच्छृणुयाद्विघ्नांस्तृणं वह्निहुतं यथा ॥ एकदा पठनादेव सर्वपापक्षयो
भवेत् ॥ १६९ ॥ दशधा पठनादेव वाचां सिद्धिः प्रजायते ॥ शतधा पठनाद्वापि खेचरो जायते नरः ॥ १७० ॥ सहस्रदशसंख्यं
वा यः पठेद्भक्तिमानसः ॥ मातास्य जगतां धात्री प्रत्यक्षा भवति ध्रुवम् ॥ १७१ ॥ लक्षं पूर्णं यथा पुत्र स्तोत्रराजं पठेत्सुधीः ॥ भव
पाशविनिर्मुक्तो मम तुल्यो न संशयः ॥ १७२ ॥ सर्वतीर्थेषु यत्पुण्यं सकृज्जप्त्वा लभेन्नरः ॥ सर्ववेदेषु यत्प्रोक्तं तत्फलं परिकीर्तितम्
॥ १७३ ॥ भूत्वा च बलवान् पुत्रधनवान् सर्वसम्पदः ॥ देहांते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम् ॥ १७४ ॥ स यास्यति न संदेहः
स्तवराजस्य कीर्तनात् ॥ १७५ ॥ इति श्रीवामकेश्वरतंत्रे हरकुमारसंवादे महात्रिपुरसुन्दर्याः षोडश्याः सहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥
अथ षोडशीहृदयप्रारंभः ॥ कैलासे करुणाक्रांता परोपकृतिमानसा ॥ पप्रच्छ करुणासिंधुं सुप्रसन्नं महेश्वरम् ॥ १ ॥ श्रीपार्व
त्युवाच ॥ आगामिनि कलौ ब्रह्मन् धर्मकर्मविवर्जिताः ॥ भविष्यंति जनास्तेषां कथं श्रेयो भविष्यति ॥ २ ॥ श्रीशिव उवाच ॥
शृणु देवि प्रवक्ष्यामि तव स्नेहान्महेश्वरि ॥ दुर्लभं त्रिषु लोकेषु सुंदरीहृदयस्तवम् ॥ ३ ॥ ये नरा दुःखसंतप्ता दारिद्र्यहतमानसाः ॥
अस्यैव पाठमात्रेण तेषां श्रेयो भविष्यति ॥ ४ ॥ ॐ अस्य श्रीमहाषोडशीहृदयस्तोत्रमंत्रस्य आनन्दभैरव ऋषिः । दैवीगायत्री छंदः ।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता । ऐं बीजम् । सौः शक्तिः । क्लीं कीलकम् । धर्मार्थकाममोक्षार्थे पाठे विनियोगः ॥ ॐ आनन्दभैरवऋषये नमः शिरसि

१। देवीगायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे २। श्रीमहात्रिपुरसुंदरीदेवतायै नमः हृदये ३। ऐं बीजाय नमः नाभौ ४। सौः शक्तय नमः स्वाधिष्ठाने ५। क्लीं कीलकाय नमः मूलाधारे ६। विनियोगाय नमः पादयोः ७ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ऐं ह्रीं क्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १। क्लीं श्रीं सौः ऐं तर्जनीभ्यां नमः २। सौः ॐ ह्रीं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३। ऐं कएलह्रीं हसकहलह्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४। क्लीं सकल कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। सौः सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ऐं ह्रीं क्लीं हृदयाय नमः १। क्लीं श्रीं सौः ऐं शिरसे स्वाहा २। सौः ॐ ह्रीं श्रीं शिखायै वषट् ३। ऐं कएल ह्रीं हसकल ह्रीं कवचाय हुं ४। क्लीं सकल नेत्रत्रयाय वौषट् ५। सौः सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ अथ ध्यानम्—बालव्यक्तविभाकरामितनिभां भव्यप्रदां भारतीमीषत्फुल्लमुखाम्बुजस्मितकरैराशाभवान्धापहाम् ॥ पाशं साभयमंकुशं च वरदं संबिभ्रतीं भूतिदां भ्राजंतीं चतुरंबुजाकृतकरैर्भक्त्या भजे षोडशीम् ॥ ५ ॥ सुन्दरी सकलकल्मषापहा कोटिकंजकमनीयकान्तिभृत् ॥ कोटिकल्पकृतपुण्यकर्मणा पूजनीयपदपुण्यपुष्करा ॥ ६ ॥ शर्वरीशसमसुन्दरानना श्रीशशक्तिसुकृताश्रयाश्रिता ॥ सज्जनानुशरणीयसत्पदा संकटे सुरगणैः सुवन्दिता ॥ ७ ॥ या सुरासुररणे जवान्विता संजघान जगदम्बिकाऽजिता ॥ तां भजामि जननीं जगज्जनिं युद्धयुक्तदितिजान्सुदुर्जयान् ॥ ८ ॥ योगिनां हृदयसंगतां शिवां योगयुक्तमनसां यतात्मनाम् ॥ जाग्रतीं जगति यत्नतो द्विजा यां जपंति हृदि तां भजाम्यहम् ॥ ॥ ९ ॥ कल्पकास्तु कलयंति कालिकां यत्कला कलिजनोपकारिका ॥ कौलिकालिकलितांघ्रिपंकजां तां भजामि कलिकल्मषापहाम् ॥ ॥ १० ॥ बालार्कानंतशोचिर्निजतनुकिरणैर्दीपयंतीं दिगंतान् दीप्तैर्दीप्यमानां दनुजदलवनानल्पदावानलाभाम् ॥ दान्तोदंतोग्रचित्तां दलितदितिसुतां दर्शनीयां दुरंतां देवीं दीनार्द्रचित्तां हृदि मुदितमनाः षोडशीं संस्मरामि ॥ ११ ॥ धीरान्धन्यान्धरित्रीधवविधृतशिरोधूतधूल्यब्जपादां धृष्टान्धाराधराधो विनिधृतचपलाचारुचन्द्रप्रभाभाम् ॥ धर्म्यान्धूतोपहारान्धराणिसुरधवोद्धारिणीं ध्येयरूपां धीमद्धन्यातिधन्यान्धनदधनवृतां सुंदरीं चिंतयामि ॥ १२ ॥ जयतु जयतु जल्पा योगिनी योगयुक्ता जयतु जयतु सौम्या सुन्दरी सुन्दरास्या ॥

जयतु जयतु पद्मा पद्मिनी केशवस्य जयतु जयतु काली कालिनी कालकांता ॥ १३ ॥ जयतु जयतु खर्वा षोडशी वेदहस्ता जयतु जयतु धात्री धर्मिणी धातृशांतिः ॥ जयतु जयतु वाणी ब्रह्मणो ब्रह्मवन्द्या जयतु जयतु दुर्गा दारिणी देवशत्रोः ॥ १४ ॥ देवि त्वं सृष्टिकाले कमलभवभृता राजसी रक्तरूपा रक्षाकाले त्वमम्बा हरिहृदयधृता सात्त्विकी श्वेतरूपा॥भूरिक्रोधा भवांते भवभवनगता तामसी कृष्णरूपा एताश्चान्यास्त्वमेव क्षितमनुजमला सुन्दरी केवलाद्या ॥१५॥ सुमलशमनमेतद्देवि गोप्यं गुणज्ञे ग्रहणमननयोग्यं षोडशीयं खलघ्नम्॥सुरतरुसमशीलं संपदे पाठकानां प्रभवति हृदयाख्यं स्तोत्रमत्यंतमान्यम्॥१६॥इदं त्रिपुरसुन्दर्य्याः षोडश्याः परमाद्भुतम्॥यः शृणोति नरः स्तोत्रं स सदा सुखमश्नुते ॥ १७ ॥ न शूद्राय प्रदातव्यं शठाय मलिनात्मने ॥ देयं दान्ताय भक्ताय ब्राह्मणाय विशेषतः ॥ १८ ॥ इति श्रीत्रिपुरसुन्दरीतंत्रे षोडशीहृदयस्तोत्रं समाप्तम् ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे मध्यखण्डे श्रीत्रिपुरसुन्दरीषोडश्यास्तंत्रे षष्ठस्तरंगः ॥ ६ ॥

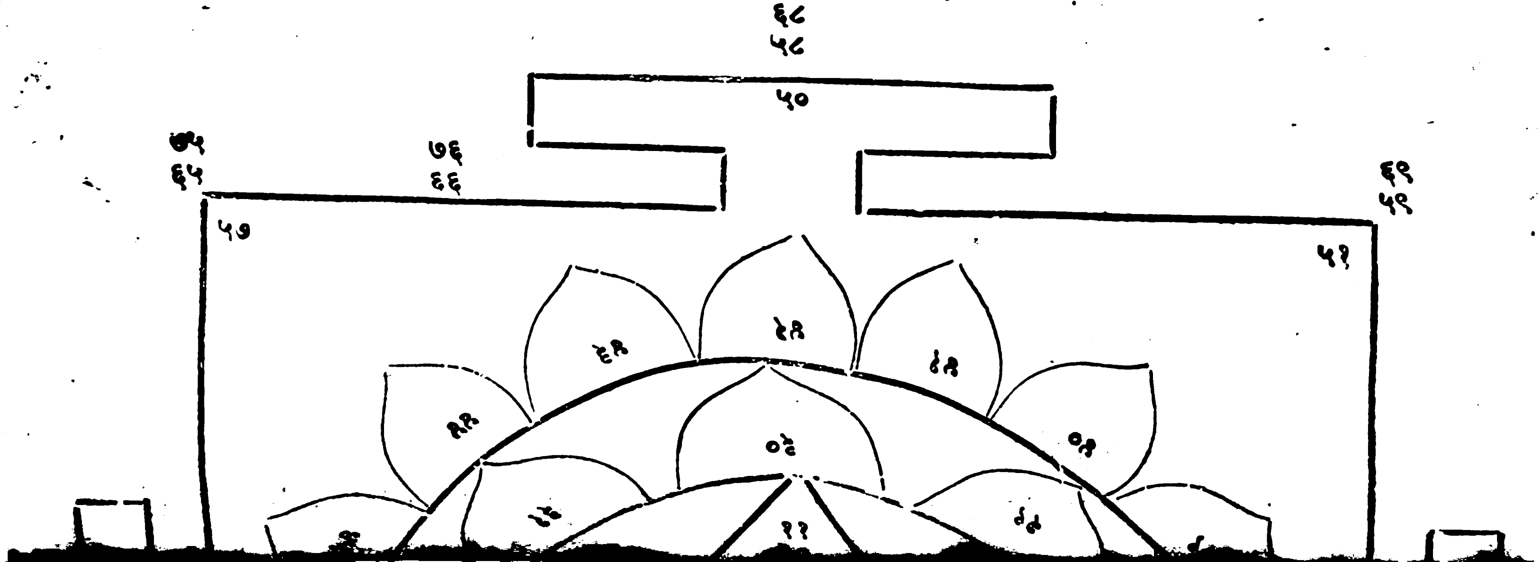
भुवनेश्वर्यै नमः।

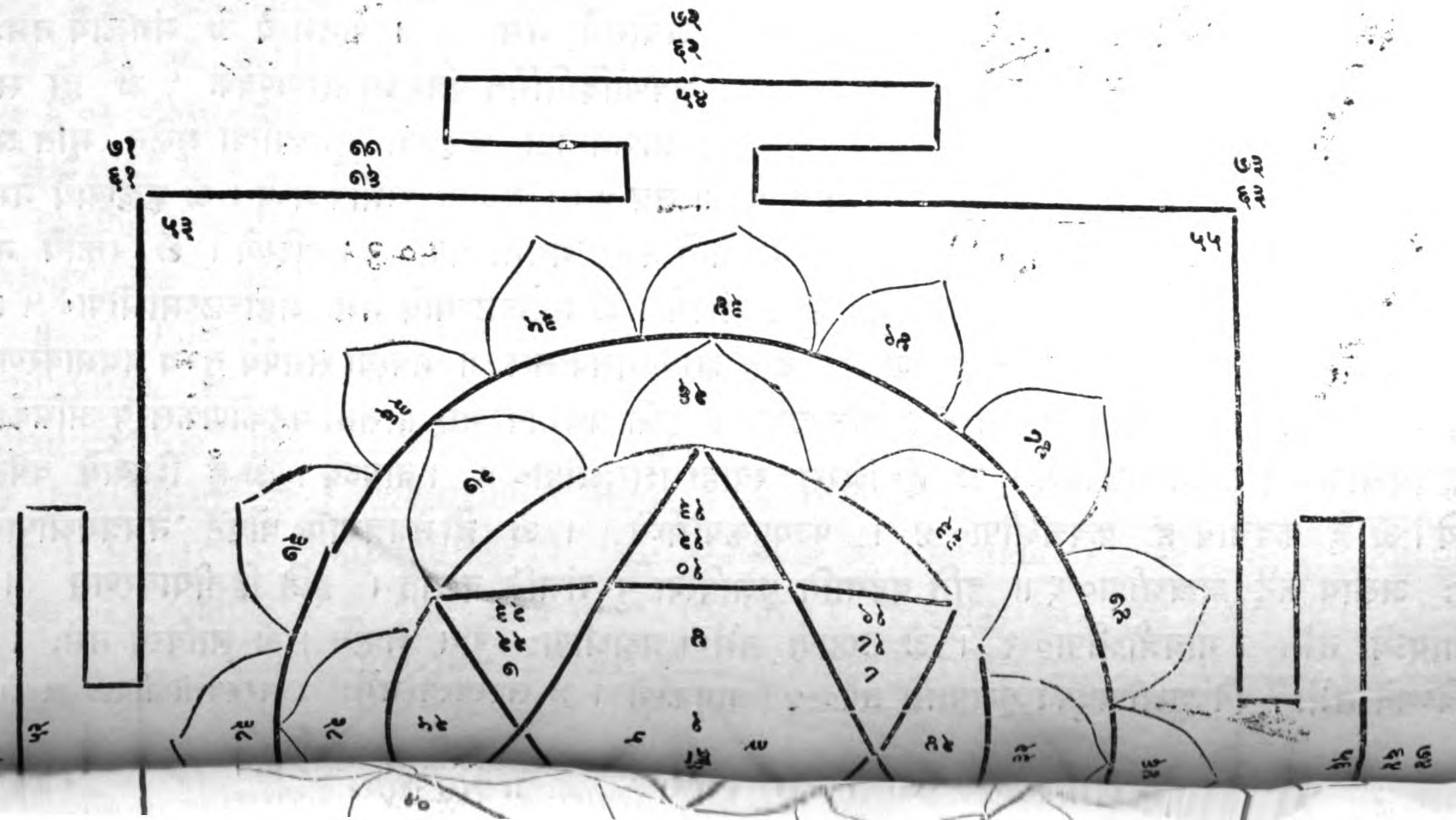


श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ भुवनेश्वरीतंत्रप्रारंभः ॥ अथ वक्ष्ये जगद्धात्रीमधुना भुवनेश्वरीम् ॥ ब्रह्मादयोऽपि यां ज्ञात्वा लेभिरे श्रियमूर्जिताम् ॥ १ ॥ व्योमबीजं महेशानि कैलासादि प्रतिष्ठितम् ॥ वह्निबीजात्सुवर्णादि निष्पन्नं बहुधा प्रिये ॥ ॥ २ ॥ तेनायं वर्तते लोको भूमिमंडलसंस्थितः ॥ तुर्य्यस्वरेण पाताले शेषरूपेण वर्तते ॥ ३ ॥ महाभूमंडलं तस्मात्पातालस्यापि नायिका ॥ अत एव महेशानि भुवनाधीश्वरी प्रिये ॥ ४ ॥ हकारे व्योम तुर्य्येण स्वरेणानिलसंभवः ॥ विकारे सति रेफेण साक्षाद्वह्निस्वरूपिणी ॥ ५ ॥ वह्निबीजं वसु ज्ञेयं तस्माद्रेफश्च सुंदरी ॥ अत एव महेशानि सवायोः समता भवेत् ॥ ६ ॥ बिंदुचक्रामृता देवी प्लावयंती जगत्त्रयम् ॥ द्रवरूपा भवेत्तस्मात्स्रवंती चार्द्धमात्रया॥ अत एव महेशानि भुवनेशीति कथ्यते ॥ ७ ॥ तत्रादौ एकाक्षरबीजमंत्रप्रयोगः शारदा तिलके ॥ मंत्रो यथा—(ह्रीं) इत्येकाक्षरो बीजमंत्रः ॥ अस्य श्रीभुवनेश्वरीमंत्रस्य शक्तिर्ऋषिः। गायत्रीच्छंदः। हकारो बीजम्। ईकारः शक्तिः। रेफः कीलकम्। श्री भुवनेश्वरी देवता। चतुर्वर्गसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥ शक्तिऋषये नमः शिरसि१। गायत्रीच्छंदसे नमः मुखे २। भुवनेश्वर्यै देवतायै नमः हृदि ३। हं बीजाय नमः गुह्ये ४। ईं शक्तये नमः पादयोः ५। रं कीलकाय नमः नाभौ ६। विनियोगाय नमः सर्वांगे ७॥ इति ऋष्यादिन्यासः॥ ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६॥ इति

करन्यासः ॥ ॐ ह्रां हृदयाय नमः १ । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा २ । ॐ ह्रूं शिखायै वषट् ३ । ॐ ह्रैं कवचाय हुं ४ । ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ इति न्यासं कृत्वा सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण सृष्टिस्थिति संहारमातृकान्यासं च कुर्यात् ॥ अशक्तश्चेत् मंत्रवर्णन्यासं कुर्यात् ॥ ॐ हृल्लेखायै नमः शिरसि १ । ॐ एं गगनायै नमः मुखे २ । ॐ उं रक्तायै नमः हृदि ३ । ॐ इं करालिकायै नमः गुह्ये ४ । ॐ अं महोच्छुष्मायै नमः पादयोः ५ ॥ इति मंत्रवर्णन्यासः ॥ ॐ हृल्लेखायै ऊर्ध्ववक्त्राय नमः शिरसि १ । ॐ एं गगनायै पूर्ववक्त्राय नमः मुखे २ । ॐ उं रक्तायै दक्षिणवक्त्राय नमः हृदि ३ । ॐ इं करालिकायै उत्तरवक्त्राय नमः गुह्ये ४ । ॐ अं महोच्छुष्मायै पश्चिमवक्त्राय नमः पादयोः ५ ॥ इति पंचवक्त्रन्यासः ॥ ॐ गायत्रीसहितब्रह्मणे नमः भाले १ । ॐ सावित्रीसहिताविष्णवे नमः दक्षिणकपोले २ । ॐ वागीश्वरीसहितमहेश्वराय नमः वामकपोले ३ । ॐ श्रीसहितधनपतये नमः वामकर्णाग्रे ४ । ॐ रतिसहितस्मराय नमः मुखे ५ । ॐ पुष्टिसहितगणपतये नमः दक्षिणकर्णोपरि ६ । ॐ शंखनिधये नमः दक्षिणगंडकर्णान्तराले ७ । ॐ पद्मनिधये नमः वामगंडकर्णांतराले ८ । ॐ ह्रीं मूलदेवताभुवनेश्वर्य्यै नमः मुखे ९ ॥ इति विन्यसेत् ॥ ततः ॐ गायत्रीसहितब्रह्मणे नमः कंठमूले १ । ॐ सावित्रीसहितविष्णवे नमो दक्षिणस्तने २ । ॐ वागीश्वरीसहितमहेश्वराय नमः वामस्तने ३ । ॐ श्रीसहितधनपतये नमः वामांसे ४ । ॐ रतिसहितस्मराय नमः हृदयकमले ५ । ॐ पुष्टिसहितगणपतये नमः दक्षिणांसे ६ । ॐ शंखनिधये नमः दक्षिणपार्श्वे ७ । ॐ पद्मनिधये नमः वामपार्श्वे ८ । ॐ ह्रीं मूलदेवताभुवनेश्वर्य्यै नमः नाभौ ९ ॥ इति विन्यसेत् ॥ ततः ब्राह्मयै नमः भाले १ । ॐ माहेश्वर्य्यै नमः वामांसे २ । ॐ कौमार्य्यै नमः वामपार्श्वे ३ । ॐ वैष्णव्यै नमः जठरे ४ । ॐ वाराह्यै नमः दक्षिणपार्श्वे ५ । ॐ इन्द्राण्यै नमः दक्षिणांसे ६ । ॐ चामुंडायै नमः गले ७ । ॐ महालक्ष्म्यै नमः हृदि ८ ॥ इति विन्यसेत् ॥ ततो हृदये करं दत्त्वा—ॐ ह्रीं मूलदेवताभुवनेश्वर्य्यै सर्वांगे व्यापकं भव ॥ इति विन्यस्य देवतारूपं भावयन् ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्—उद्यदिनद्युतिमिंदुकिरीटां तुंगकुचां नयन

भुवनेश्वरीपूजनयन्त्रम् ।





त्रययुक्ताम् ॥ स्मेरमुखीं वरदांकुशपाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम् ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा सर्वतोभद्रमंडले पीठदेवतापद्धतिमार्गेण संस्थाप्य अथवा 'मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति पीठदेवताः संपूज्य पूर्वादिक्रमेण पीठशक्तीः पूजयेत्॥ तद्यथा— ॐ जयायै नमः १ । ॐ विजयायै नमः २ । ॐ अजितायै नमः ३ । ॐ अपराजितायै नमः ४ । ॐ नित्यायै नमः ५ । ॐ विलासिन्यै नमः ६ । ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७ । ॐ अघोरायै नमः ८ । पीठमध्ये ॐ मंगलायै नमः ९ ॥ इति नवपीठशक्तीः पूजयेत् ॥ ततः षट्कोणाष्टदलवृत्तषोडशदलभूपुरात्मकं स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रमभ्युत्तारणपूर्वकं 'ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः । इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तत्र क्रमः—देव्याः समीपे मध्ये । ॐ हृल्लेखायै नमः हृल्लेखाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र १ । पूर्वे । ॐ एं गगनायै नमः गगनाश्रीपा० २ । दक्षिणे । ॐ रक्तायै नमः रक्ताश्रीपा० ३ । उत्तरे । ॐ ईं करालिकायै नमः करालिकाश्रीपा० ४ । पश्चिमे । ॐ महोच्छुष्मायै नमः महोच्छुष्माश्रीपा० ५ । इति पूजयेत् । ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य्य—ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ ततः षट्कोणकेसरेषु अग्निकोणे । ॐ ह्रां हृदयाय नमः हृदयश्रीपा० १ । निर्ऋतिकोणे । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा शिरःश्रीपा० २ । वायव्ये । ॐ ह्रूं शिखायै वषट् शिखाश्रीपा० ३ । ईशान्ये । ॐ ह्रैं कवचाय हुं कवचश्रीपा० ४ । पूज्यपूजकयोर्मध्ये । ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । देवीपश्चिमे ॐ ह्रः अस्त्राय फट् अस्त्रश्रीपा० ६ ॥ इति षडंगानि पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् । इति द्वितीयावरणम् ॥ षट्कोणाग्रेषु पूर्वे । ॐ गायत्र्यै नमः । गायत्रीश्रीपा० १ । ॐ ब्रह्मणे नमः । ब्रह्मश्रीपा० २ । नैर्ऋते । ॐ सावित्र्यै नमः । सावित्रीश्रीपा० ३ । ॐ विष्णवे नमः । विष्णुश्रीपादुकां पूजयामि तर्प० ४ । वायुकोणे । ॐ सरस्वत्यै नमः । सरस्वतीश्रीपा० ५ । ॐ रुद्राय नमः ।

रुद्रश्रीपा० ६ । आग्निकोणे । ॐ श्रियै नमः । श्रीश्रीपा० ७ । ॐ धनपतये नमः धनपतिश्रीपा० ८ । पाश्चिमे । ॐ रत्यै नमः । रतिश्रीपा० ९ । ॐ स्मराय नमः । स्मरश्रीपा० १० । ऐशान्याम् । ॐ पुष्ट्यै नमः । पुष्टिश्रीपा० ११ । ॐ गणपतये नमः । गणपतिश्रीपादुकां पू० १२ । षट्कोणदक्षिणे । ॐ शंखनिधये नमः । शंखनिधिश्रीपा० १३ । वामे । ॐ पद्मनिधये नमः । श्रीपा० १४ । ॥ पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ पूर्वाद्यष्टदले । ॐ अनंगकुसुमायै नमः । अनंगकुसुमा श्रीपा० १ । ॐ अनंगकुसुमतुरायै नमः । अनंगकुसुमतुराश्रीपा० २ । ॐ अनंगदमनायै नमः अनंगदमनाश्रीपा० ३ । ॐ अनंग मदनातुरायै नमः । अनंगमदनातुराश्रीपा० ४ । ॐ भुवनपालायै नमः । भुवनपालाश्रीपा० । ॐ गगनवेगायै नमः । गगनवेगा श्रीपा० ६ । ॐ शशिरेखायै नमः । शशिरेखाश्रीपा० ७ । ॐ गगनरेखायै नमः । गगनरेखाश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ शक्तीः पूज यित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥ षोडशदलेषु पूर्वादिक्रमेण । ॐ करात्यै नमः । करालीश्रीपा० १ । ॐ विकरात्यै नमः । विकरालीश्रीपा० २ । ॐ उमायै नमः । उमाश्रीपा० ३ । ॐ सरस्वत्यै नमः । सरस्वतीश्रीपादुकां पू० ४ । ॐ श्रियै नमः श्रीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ५ । ॐ दुर्गायै नमः । दुर्गाश्रीपा० ६ । ॐ उषायै नमः । उषाश्रीपा० ७ । ॐ लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीश्रीपा० ८ । ॐ श्रुत्यै नमः । श्रुतिश्रीपा० ९ । स्मृत्यै नमः । स्मृतिश्रीपा० १० । ॐ धृत्यै नमः । धृति श्रीपा० ११ । ॐ श्रद्धायै नमः । श्रद्धाश्रीपादुकां० १२ । ॐ मेधायै नमः । मेधाश्रीपादुकां पू० १३ । ॐ मत्यै नमः । मति श्रीपादुकां पूजया० १४ । ॐ कांत्यै नमः कांतिश्रीपा० १५ । ॐ आर्य्यायै नमः । आर्य्याश्रीपा० १६ ॥ इति पूजयित्वा पुष्पां जलिं दद्यात् ॥ इति पंचमावरणम् ॥ ततो भूपुराभ्यंतरे पूर्वादिक्रमेण । ॐ अनंगरूपायै नमः । अनंगरूपाश्रीपा० १ । ॐ अनंग मदनायै नमः । अनंगमदनाश्रीपा० २ । ॐ अनंगमदनातुरायै नमः । अनंगमदमातुराश्रीपा० ३ । ॐ भुवनरेखायै नमः । भुवनरेखाश्री पा० ४ । ॐ भुवनपालिकायै नमः । भुवनपालिकाश्रीपा० ५ । ॐ सर्वशिशिरायै नमः । सर्वशिशिराश्रीपा० ६ । अनंगवेदनायै नमः ।

अनंगवेदनाश्रीपादुकांपू० ७। ॐअनंगमेखलायै नमः। अनंगमेखलाश्रीपा० ८। इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति षष्ठावरणम् ॥
ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण। ॐ लं इन्द्राय देवाधिपतये सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय नमः। इन्द्रश्रीपा०। ॐ रं अग्नये तेजोऽधिपतये सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय नमः। अग्निश्रीपा० २। ॐ मां यमाय प्रेताधिपतये सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय नमः। यमश्रीपा० ३। ॐ क्षं निर्ऋतये रक्षोऽधिपतये सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय नमः। निर्ऋतिश्रीपा० ४। ॐ वं वरुणाय जलाधिपतये सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय नमः। वरुणश्रीपा० ५। ॐ यं वायवे प्राणाधिपतये सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय नमः। वायुश्रीपादुकां पू० ६। ॐ सौं सोमाय ताराधिपतये सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय नमः। सोमश्रीपा० ७। ॐ हं ईशानाय गणाधिपतये सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय नमः। ईशानश्रीपा० ८। इन्द्रेशानयोर्मध्ये। ॐ आं ब्रह्मणे प्रजाधिपतये सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय नमः। ब्रह्मश्रीपा० ९। निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये ॐ ह्रीं अनंताय नागाधिपतये सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय नमः। अनंतश्रीपा० १०॥ इति दशदिक्पालान्पूजयेत् ॥ तद्बहिः पूर्वादिक्रमेण। ॐ वं वज्राय नमः १। ॐ शं शक्तये नमः २। ॐ दं दंडाय नमः ३। ॐ खं खड्गाय नमः ४। ॐ पां पाशाय नमः ५। ॐ अं अंकुशाय नमः ६। ॐ गं गदाय नमः ७। ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ८। ॐ पं पद्माय नमः ९। ॐ चं चक्राय नमः १०। इत्यस्त्राणि पूजयेत् ॥ इति सप्तमावरणम् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं द्वात्रिंशल्लक्षजपः ॥ तद्दशांशेन हवनतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्य्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति। सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च–प्रजपेन्मंत्रविन्मंत्रं द्वात्रिंशल्लक्षमानतः ॥ त्रिस्वादूक्तैः प्रजुहुयादष्टद्रव्यैर्दशांशतः ॥ १ ॥ पूज्यते सकलैर्देवैः किंपुनर्मनुजोत्तमैः ॥ मंत्री त्रिमधुरोपेतैर्हुत्वाश्वत्थसमिद्वरैः ॥ २ ॥ ब्राह्मणान्वशयेच्छीघ्रं पार्थिवान्पद्महोमतः ॥ पलाशपुष्पैस्तत्पत्नीर्मंत्रिणं कुमुदैरपि ॥ ३ ॥ पंचविंशतिसंजप्तैर्जलैर्नित्यं दिने दिने ॥

१ ॐ कुं कुबेराय धनाधिपतये सायुधाय० इति मतांतरे। २ घृतमधुशर्कराभिः। ३–अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षन्यग्रोधशमीधस्तिलाः। सिद्धार्थपायसाज्यानि द्रव्याण्यष्टौ विदुर्बुधाः।

आत्मानमभिषिंचेयः सर्वसौभाग्यवान् भवेत् ॥ ४ ॥ पंचविंशतिसंजप्तं जलं प्रातः पिबेन्नरः ॥ अवश्यं महतीं प्रज्ञां कवीनामग्रणी र्भवेत् ॥ ५ ॥ कर्पूरागरुसंयुक्तं कुंकुमं साधु साधितम् ॥ गृहीत्वा तिलकं कुर्याद्राजवश्यमनुत्तमम् ॥ ६ ॥ शालिपिष्टमयीं कृत्वा पुत्तलीं मधुरान्विताम् ॥ जप्तां प्रतिष्ठितप्राणां भक्षयेद्रविवासरे ॥ ७ ॥ वशं नयति राजानं नारीं वा नरमेव वा ॥ कंठमात्रोदके स्थित्वा वीक्ष्य तोयगतं रविम् ॥ ८ ॥ त्रिसहस्रं जपेन्मंत्रमिष्टां कन्यां लभेन्नरः ॥ अन्नं तु मंत्रितं मंत्री भुंजीत श्रीप्रसिद्धये ॥ ९ ॥ लिखितां भस्मनाऽमायां सुसाध्यां फलकादिषु॥ तत्काले दर्शयेद्यंत्रं सुखं सूयेत गर्भिणी ॥१०॥ इत्येकाक्षरो भुवनेश्वरीमंत्रप्रयोगः ॥ १ ॥ अथ त्र्यक्षरमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा-- ऐं ह्रीं श्रीं इति त्र्यक्षरात्मको भुवनेश्वरीमंत्रः । अस्य विधानम्-न्यासादिकं सर्वं पूर्ववत् । षडंगन्यासे तु विशेषः । ऐं ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ऐं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ । ऐं ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ऐं ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ऐं ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ऐं ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ । इति करन्यासः ॥ ॐ ऐं ह्रां हृदयाय नमः १ । ॐ ऐं ह्रीं शिरसे स्वाहा २ । ॐ ऐं ह्रूं शिखायै वषट् ३ । ॐ ऐं ह्रैं कवचाय हुम् ४ । ॐ ऐं ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ ऐं ह्रः अस्त्राय फट् ६॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्—सिंदूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्य मौलिस्फुरत्तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीनवक्षोरुहाम् ॥पाणिभ्यां मणिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं सौम्यां रत्नघटस्थसव्यचरणं ध्यायेत्परामंबिकाम् ॥ इति ध्यायेत्॥ अस्य पुजादिकं सर्वं पूर्ववत् ॥ अस्य पुरश्चरणं द्वादशलक्षजपः ॥ तत्तद्दशांशेन होमतर्पण मार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति ॥ सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथाच—रविलक्षं जपेन्मंत्रं पायसैर्मधुराप्लुतैः ॥ दशांशं जुहुयान्मंत्री पीठे प्रागीरिते यजेत् ॥ १ ॥ देवीप्रागुक्तमार्गेण गंधाद्यैरतिशोभनैः ॥ हुत्वा पलाशकुसुमैर्वाक्श्रियं महतीं व्रजेत् ॥ २ ॥ ब्राह्मीघृतं पिबेज्जप्तं कवित्वं वत्सराद्भवेत् ॥ सिद्धार्थान् लवणोपेतान् हुत्वा मंत्री वशं

१-प्राप्येति शेषः ।

नयेत् ॥ ३ ॥ नरं नारीं नरपतिं नात्र कार्या विचारणा ॥ चतुरंगुलजैः पुष्पैश्चन्दनांभःसमुक्षितैः ॥ ४ ॥ हुत्वा वशीकरोत्याशु त्रैलोक्यमपि साधकः ॥ जुहुयादरुणांभोजैरयुतं मधुराप्लुतैः ॥५॥ राज्यश्रियमवाप्नोति सलिलैस्तण्डुलैस्तथा ॥ प्रागुक्तान्यपि कर्माणि मंत्रेणानेन साधयेत् ॥ ६ ॥ इति त्र्यक्षरबीजात्मकभुवनेश्वरीमंत्रप्रयोगः ॥ २ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ त्रैलोक्यमंगलभुवनेश्वरीकवचम् ॥ देव्युवाच ॥ देवेश भुवनेश्वर्या या या विद्याः प्रकाशिताः ॥ श्रुताश्चाधिगताः सर्वाः श्रोतुमिच्छामि सांप्रतम् ॥ १ ॥ त्रैलोक्यमंगलं नाम कवचं यत्पुरोदितम् ॥ कथयस्व महादेव मम प्रीतिकरं परम् ॥ २॥ ईश्वर उवाच ॥ शृणु पार्वति वक्ष्यामि सावधानावधारय ॥ त्रैलोक्यमंगलं नाम कवचं मंत्रविग्रहम् ॥ ३ ॥ सिद्धविद्यामयं देवि सर्वैश्वर्यसमन्वितम् ॥ पठनाद्धारणान्मर्त्यस्त्रैलोक्यैश्वर्यभाग्भवेत् ॥ ४ ॥ ॐ अस्य श्रीभुवनेश्वरीत्रैलोक्यमंगलकवचस्य शिव ऋषिः । विराट् छंदः । जगद्धात्री भुवनेश्वरी देवता । धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः ॥ शिवऋषये नमः शिरसि १ ॥ विराट्छंदसे नमः मुखे २ ॥ भुवनेश्वरीदेवतायै नमः हृदि ३ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ह्रीं बीजं मे शिरः पातु भुवनेशी ललाटकम् ॥ ऐं पातु दक्षनेत्रं मे ह्रीं पातु वामलोचनम् ॥१॥ श्रीं पातु दक्षकर्णं मे त्रिवर्णात्मा महेश्वरी ॥ वामकर्णं सदा पातु ऐं घ्राणं पातु मे सदा ॥ २ ॥ ह्रीं पातु वदनं देवि ऐं पातु रसनां मम ॥ वाक्पुटा च त्रिवर्णात्मा कंठं पातु परात्मिका ॥ ३ ॥ श्रीं स्कंधौ पातु नियतं ह्रीं भुजौ पातु सर्वदा ॥ क्लीं करौ त्रिपुटा पातु त्रिपुरैश्वर्यदायिनी ॥ ॥ ४ ॥ ॐ पातु हृदयं ह्रीं मे मध्यदेशं सदावतु ॥ क्रौं पातु नाभिदेशं मे त्र्यक्षरी भुवनेश्वरी ॥ ५ ॥ सर्वबीजप्रदा पृष्ठं पातु सर्ववशंकरी ॥ ह्रीं पातु गुह्यदेशं मे नमोभगवती कटिम् ॥ ६ ॥ माहेश्वरी सदा पातु शंखिनी जानुयुग्मकम् ॥ अन्नपूर्णा सदा पातु स्वाहा पातु पदद्वयम् ॥ ७ ॥ सप्तदशाक्षरा पायादन्नपूर्णाखिलं वपुः ॥ तारं माया रमाकामः षोडशार्णा ततः परम् ॥ ८ ॥ शिरःस्था सर्वदा पातु विंशत्यर्णात्मिका परा ॥ तारं दुर्गेयुगं रक्षिणीस्वाहेति दशाक्षरा ॥ ९ ॥ जयदुर्गा घनश्यामा पातु मां सर्वतो मुदा ॥ मायाबीजादिका चैषा दशार्णा च ततः परा ॥१०॥ उत्तप्तकांचनाभासा जयदुर्गाऽऽननेऽवतु ॥ तारं ह्रीं दुं च दुर्गायै नमोऽष्टार्णात्मिका परा ॥ ११ ॥ शंख

चक्रधनुर्बाणधरा मां दक्षिणेऽवतु ॥ महिषामर्दिनी स्वाहा वसुवर्णात्मिका परा ॥ १२ ॥ नैर्ऋत्यां सर्वदा पातु महिषासुरनाशिनी ॥ माया पद्मावती स्वाहा सप्तार्णा परिकीर्तिता ॥ १३ ॥ पद्मावती पद्मसंस्था पश्चिमे मां सदाऽवतु ॥ पाशांकुशपुटा माये हि पर मेश्वरि स्वाहा ॥ १४ ॥ त्रयोदशार्णा ताराद्या अश्वारूढाऽनलेऽवतु ॥ सरस्वति पंचस्वरे नित्यक्लिन्ने मदद्रवे ॥ १५ ॥ स्वाहा वस्वक्षरा विद्या उत्तरे मां सदाऽवतु ॥ तारं माया च कवचं खे रक्षेत्सततं वधूः ॥ १६ ॥ हूं क्षें ह्रीं फट् महाविद्या द्वादशार्णाखिलप्रदा ॥ त्वरिताष्टाहिभिः पायाच्छिवकोणे सदा च माम् ॥ १७ ॥ ऐं क्लीं सौः सततं बाला मूर्द्धदेशे ततोऽवतु ॥ बिंद्वंता भैरवी बाला हस्तौ मां च सदाऽवतु ॥ १८ ॥ इति ते कथितं पुण्यं त्रैलोक्यमंगलं परम् ॥ सारात्सारतरं पुण्यं महाविद्यौघविग्रहम् ॥ १९॥ अस्यापि पठनात्सद्यः कुबेरोऽपि धनेश्वरः॥ इन्द्राद्याः सकला देवा धारणात्पठनाद्यतः ॥२०॥सर्वसिद्धीश्वराः संतः सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः ॥ पुष्पांजल्यष्टकं दद्यान्मूलेनैव पृथक् पृथक् ॥ २१ ॥ संवत्सरकृतायास्तु पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥ प्रीति मन्योऽन्यतः कृत्वा कमला निश्चला गृहे ॥ २२ ॥ वाणी च निवसेद्वक्त्रे सत्यं सत्यं न संशयः ॥ यो धारयति पुण्यात्मा त्रैलोक्यमंगला भिधम् ॥ २३ ॥ कवचं परमं पुण्यं सोऽपि पुण्यवतां वरः ॥ सर्वैश्वर्ययुतो भूत्वा त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥ २४ ॥ पुरुषो दक्षिणे बाहौ नारी वामभुजे तथा ॥ बहुपुत्रवती भूयाद्वंध्यापि लभते सुतम् ॥ २५ ॥ ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि नैव कृंतंति तं जनम् ॥ एत त्कवचमज्ञात्वा यो भजेद्भुवनेश्वरीम् ॥ दारिद्र्यं परमं प्राप्य सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात् ॥ २६ ॥ इति श्रीरुद्रयामले तंत्रे देवीश्वर संवादे त्रैलोक्यमंगलं नाम भुवनेश्वरीकवचं समाप्तम् ॥ अथ भुवनेश्वरीस्तोत्रं लिख्यते॥ अथानंदमयीं साक्षाच्छब्दब्रह्मस्वरूपिणीम् ॥ ईडे सकलसंपत्त्यै जगत्कारणमंबिकाम् ॥ १ ॥ आद्यामशेषजननीमरविंदयोनेर्विष्णोः शिवस्य च वपुःप्रतिपादयित्रीम् ॥ सृष्टिस्थितिक्षय करीं जगतां त्रयाणां स्तुत्वा गिरं विमलयाम्यहमम्बिके त्वाम् ॥ २ ॥ पृथ्व्या जलेन शिखिना मरुतां वरेण होत्रेन्दुना दिनकरेण च मूर्तिभाजः ॥ देवस्य मन्मथरिपोरपि शक्तिमत्ताहेतुस्त्वमेव खलु पर्वतराजपुत्रि॥ ३ ॥ त्रिस्रोतसः सकलदेवसमर्चिताया वैशिष्ट्यकारण

मवैमि तदेव मातः ॥ त्वत्पादपंकजपरागपवित्रितासु शंभोर्जटासु सततं परिवर्तनं यत् ॥ ४ ॥ आनंदयेत्कुमुदिनीमधिपः कलानां नान्या
मिनः कमलिनीमथ नेतरां वा ॥ एकत्र मोदनविधौ परमे क ईष्टे त्वं तु प्रपंचमभिनंदयसि स्वदृष्ट्या ॥ ५ ॥ आद्याप्यशेषजगतां नव
यौवनासि शैलाधिराजतनयाप्यतिकोमलासि ॥ त्रय्याः प्रसूरपि तथा न समीक्षितासि ध्येयासि गौरि मनसो न पथि स्थितासि ॥ ६ ॥
आसाद्य जन्म मनुजेषु चिराद्दुरापं तत्रापि पाटवमवाप्य निजेन्द्रियाणाम् ॥ नाभ्यर्चयंति जगतां जनयित्रि ये त्वां निःश्रेणिकाग्रमधि
रुह्य पुनः पतंति ॥ ७ ॥ कर्पूरचूर्णहिमवारिविलोडितेन ये चंदनेन कुसुमैश्च सुगंधिगंधैः ॥ आराधयंति हि भवानि समुत्सुकास्त्वां ते
खल्वशेषभुवनाधिभुवः प्रथंते ॥ ८ ॥ आविश्य मध्यपदवीं प्रथमे सरोजे सुप्ताहिराजसदृशी विरचय्य विश्वम् ॥ विद्युल्लतावलयविभ्रम
मुद्वहंती पद्मानि पंच विदलय्य समश्नुवाना ॥ ९ ॥ तन्निर्गतामृतरसैः परिषिक्तगात्रमार्गेण तेन निलयं पुनरप्यवाप्ता ॥ येषां हृदि
स्फुरसि जातु न ते भवेयुर्मातर्महेश्वरकुटुंबिनि गर्भभाजः ॥ १० ॥ आलंबिकुंडलभरामभिरामवक्त्रामापीवरस्तनतटीं तनुवृत्तमध्याम् ॥
चिंताक्षसूत्रकलशालिखिताढ्यहस्तामावर्तयामि मनसा तव गौरि मूर्तिम् ॥ ११ ॥ आस्थाय योगमवजित्य च वैरिषट्कमाबद्ध्य
चेंद्रियगणं मनसि प्रसन्ने ॥ पाशांकुशाभयवराढ्यकरां सुवक्त्रामालोकयंति भुवनेश्वरि योगिनस्त्वाम् ॥ १२ ॥ उत्तप्तहाटकनिभा
करिभिश्चतुर्भिरावर्तितामृतघटैरभिषिच्यमाना ॥ हस्तद्वयेन नलिने रुचिरे वहंती पद्मापि साभयवरा भवसि त्वमेव ॥ १३ ॥ अष्टाभिरुग्र
विविधायुधवाहिनीभिर्दोर्वल्लरीभिरधिरुह्य मृगाधिराजम् ॥ दूर्वादलद्युतिरमर्त्यविपक्षपक्षान् न्यक्कुर्वती त्वमसि देवि भवानि दुर्गा ॥ १४ ॥
आविर्निदाघजलशीकरशोभिवक्त्रां गुंजाफलेन परिकल्पितहारयष्टिम् ॥ पीतांशुकामसितकांतिमनंगतंद्रामाद्यां पुलिंदतरुणीमसकृत्स्म
रामि ॥ १५ ॥ हंसैर्गतिक्वणितनूपुरदूरदृष्टे मूर्तैरिवार्थवचनैरनुगम्यमानौ ॥ पद्माविवोर्ध्वमुखरूढसुजातनालौ श्रीकंठपत्नि शिरसा विदधे
तवांघ्री ॥ १६ ॥ द्वाभ्यां समीक्षितुमतृप्तिमतेव दृग्भ्यामुत्पाट्य भालनयनं वृषकेतनेन ॥ सांद्रानुरागतरलेन निरीक्ष्यमाणे जंघे शुभे अपि
भवानि तवानतोऽस्मि ॥ १७ ॥ ऊरू स्मरामि जितहस्तिकरावलेपौ स्थौल्येन मार्दवतया परिभूतरंभौ ॥ श्रेणीभरस्य सहनौ परि

कल्प्य दत्तौ स्तंभाविवांगवयसा तव मध्यमेन ॥ १८ ॥ श्रोण्यौ स्तनौ च युगपत् प्रथयिष्यतोवैर्बाल्यात्परेण वयसा परिहृष्टसारौ ॥
रोमावलीविलसितेन विभाव्य मूर्तिं मध्यं तव स्फुरतु मे हृदयस्य मध्ये ॥ १९ ॥ सख्यः स्मरस्य हरनेत्रहुताशशांत्यै लावण्यवारिभरितं
नवयौवनेन ॥ आपाद्य दत्तमिव पल्लवमप्रविष्टं नाभिं कदापि तव देवि न विस्मरेयम् ॥ २० ॥ ईशोऽपि गेहपिशुनं भसितं दधाने काश्मीर
कर्दममनुस्तनपंकजे ते ॥ स्नातोत्थितस्य करिणः क्षणलक्ष्यफेनौ सिंदूरितौ स्मरयतः समदस्य कुंभौ ॥२१॥ कंठातिरिक्तगलदुज्ज्वलकांति
धाराशोभौ भुजौ निजरिपोर्मकरध्वजेन ॥ कंठग्रहाय रचितौ किल दीर्घपाशौ मातर्मम स्मृतिपथं न विलंघयेताम् ॥ २२ ॥ नात्या
यतं रचितकंबुविलासचौर्यं भूषाभरेण विविधेन विराजमानम् ॥ कंठं मनोहरगुणं गिरिराजकन्ये संचिंत्य तृप्तिमुपयामि कदापि नाहम् ॥
॥ २३ ॥ अत्यायताक्षमभिजातललाटपट्टं मंदस्मितेन दरफुल्लकपोलरेखम् ॥ बिंबाधरं वदनमुन्नतदीर्घनासं यस्ते स्मरत्यसकृदम्ब स
एव जातः ॥ २४ ॥ आविस्तुषारकरलेखमनल्पगंधपुष्पोपरिभ्रमदलिव्रजनिर्विशेषम् ॥ यश्चेतसा कलयते तव केशपाशं तस्य
स्वयं गलति देवि पुराणपाशः ॥ २५ ॥ श्रुतिसुचरितपाकं श्रीमता स्तोत्रमेतत्पठति य इह मर्त्यो नित्यमार्द्रान्तरात्मा ॥ स भवति
पदमुच्चैः संपदां पादनम्रक्षितिपमुकुटलक्ष्मीलक्षणानां चिराय ॥ २६ ॥ इति श्रीरुद्रयामले तंत्रे भुवनेश्वरीस्तोत्रं समाप्तम् ॥
॥ अथ भुवनेश्वर्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रप्रारंभः ॥ कैलासशिखरे रम्ये नानारत्नोपशोभिते ॥ नरनारीहितार्थाय शिवं पप्रच्छ पार्वती ॥
॥ १ ॥ देव्युवाच ॥ भुवनेश्वरीमहाविद्यानाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥ कथयस्व महादेव यद्यहं तव वल्लभा ॥ २ ॥ ईश्वर उवाच ॥ शृणु
देवि महाभागे स्तवराजमिमं शुभम् ॥ सहस्रनाम्नामधिकं सिद्धिदं मोक्षहेतुकम् ॥ ३ ॥ शुचिभिः प्रातरुत्थाय पठितव्यः समाहितैः ॥
त्रिकालं श्रद्धया युक्तैः सर्वकामफलप्रदः ॥ ४ ॥ ॐ अस्य श्रीभुवनेश्वर्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्य शक्तिर्ऋषिः । गायत्री च्छन्दः । भुवनेश्वरी
देवता । चतुर्वर्गसाधने विनियोगः ॥ ॐ महामाया महाविद्या महायोगा महोत्कटा ॥ माहेश्वरी कुमारी च ब्रह्माणी ब्रह्मरूपिणी ॥ ५ ॥
वागीश्वरी योगरूपा योगिनीकोटिसेविता ॥ जया च विजया चैव कौमारी सर्वमंगला ॥ ६ ॥ हिंगुला च विलासी च ज्वालिनी

ज्वालरूपिणी ॥ ईश्वरी क्रूरसंहारी कुलमार्गप्रदायिनी ॥ ७ ॥ वैष्णवी सुभगाकारा सुकुल्या कुलपूजिता ॥ वामाङ्गा वामचारा च वामदेवप्रिया तथा ॥ ८ ॥ डाकिनी योगिनीरूपा भूतेशी भूतनायिका ॥ पद्मावती पद्मनेत्रा प्रबुद्धा च सरस्वती ॥ ९ ॥ भूचरी खेचरी माया मातंगी भुवनेश्वरी ॥ कांता पतिव्रतासाक्षी सुचक्षुः कुण्डवासिनी ॥ १० ॥ उमा कुमारी लोकेशी सुकेशी पद्मरागिणी ॥ इन्द्राणी ब्रह्मचाण्डाली चण्डिका वायुवल्लभा ॥ ११ ॥ सर्वधातुमयी मूर्तिर्जलरूपा जलोदरी ॥ आकाशी रणगा चैव नृकपालविभूषणा ॥ ॥ १२ ॥ नर्मदा मोक्षदा चैव धर्म्मकामार्थदायिनी ॥ गायत्री चाथ सावित्री त्रिसंध्या तीर्थगामिनी ॥ १३ ॥ अष्टमी नवमी चैव दशम्येकादशी तथा ॥ पौर्णमाणी कुहूरूपा तिथिमूर्तिस्वरूपिणी ॥ १४ ॥ सुरारिनाशकारी च उग्ररूपा च वत्सला ॥ अनला चार्द्ध मात्रा च अरुणायतलोचना ॥ १५ ॥ लज्जा सरस्वती विद्या भवानी पापनाशिनी ॥ नागपाशधरा मूर्तिरगाधा धृतकुण्डला ॥ १६ ॥ क्षत्ररूपा क्षयकरी तेजस्विनी शुचिस्मिता ॥ अव्यक्ताव्यक्तलोका च शंभुरूपा मनस्विनी ॥ १७ ॥ मातंगी मत्तमातंगी महादेवप्रिया सदा ॥ दैत्यघ्नी चैव वाराही सर्वशास्त्रमयी शुभा ॥१८॥ य इदं पठते भक्त्या शृणुयाद्वा समाहितः ॥ अपुत्रो लभते पुत्रं निर्द्धनो धनवान् भवेत् ॥ १९ ॥मूर्खोऽपि लभते शास्त्रं चौरोऽपि लभते गतिम् ॥ वेदानां पाठको विप्रः क्षत्रियो विजयी भवेत् ॥ २० ॥ वैशस्तु धनवान्भूयाच्छूद्रस्तु सुखमेधते ॥ अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः ॥ २१ ॥ ये पठंति सदा भक्त्या न ते वै दुःखभागिनः ॥ एककालं द्विकालं वा त्रिकालं वा चतुर्थकम् ॥ २२ ॥ ये पठंति सदा भक्त्या स्वर्गलोके च पूजिताः ॥ रुद्रं दृष्ट्वा यथा देवाः पन्नगा गरुडं यथा ॥ शत्रवः प्रपलायंते तस्य वक्त्रविलोकनात् ॥ २३ ॥ इति श्री रुद्रयामले देवीश्वरसंवादे भुवनेश्वर्य्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम्॥अथ भुवनेश्वरीसहस्रनामस्तोत्रप्रारंभः॥ ॐ अस्य श्रीभुवनेश्वरीसहस्रनामस्तोत्रमंत्रस्य सदाशिव ऋषिः।अनुष्टुप्छंदः। भुवनेश्वरी देवता। लज्जा बीजम्। कमला शक्तिः। वाग्भवं कीलकम्। सर्वार्थसाधने पाठे विनियोगः ॥ॐ भुवनेशी भुवाराध्या भवानी भयनाशिनी ॥ भवरूपा भवानन्दा भवसागरतारिणी ॥ १ ॥ भवोद्भवा भवरता भवभारनिवारिणी ॥ भव्यास्या भव्यनयना भव्यरूपा भवौषधिः ॥

॥ २ ॥ भव्यांगना भव्यकेशी भवपाशविमोचिनी॥ भव्यासना भव्यवस्त्रा भव्याभरणभूषिता ॥ ३ ॥ भगरूपा भगानन्दा भगेशी भगमालिनी ॥ भगविद्या भगवती भगक्लिन्ना भगावहा ॥ ४ ॥ भगांकुरा भगक्रीडा भगाढ्या भगमंगला ॥ भगलीला भगप्रीता भगसम्पद्भगेश्वरी ॥ ५ ॥ भगालया भगोत्साहा भगस्था भगपोषिणी ॥ भगोत्सवा भगविद्या भगमाता भगास्थिता ॥ ६ ॥ भगशक्तिर्भगनिधिर्भगपूजा भगेषणा ॥ भगस्वापा भगाधीशा भगार्च्या भगसुन्दरी ॥ ७ ॥ भगरेखा भगस्नेहा भगस्नेहविवर्धिनी ॥ भगिनी भगबीजस्था भगभोगविलासिनी ॥ ८ ॥ भगाचारा भगाधारा भगाकारा भगाश्रया ॥ भगपुष्पा भगश्रीपा भगपुष्पनिवासिनी ॥ ९ ॥ भव्यरूपधरा भव्या भव्यपुष्पैरलंकृता ॥ भव्यलीला भव्यमाला भव्यांगी भव्यसुन्दरी ॥ १० ॥ भव्यशीला भव्यलीला भव्याक्षी भव्यनाशिनी ॥ भव्यांगिका भव्यवाणी भव्यकांतिर्भगालिनी ॥ ११ ॥ भव्यत्रपा भव्यनदी भव्यभोगविहारिणी ॥ भव्यस्तनी भव्यमुखी भव्यगोष्ठीभयापहा ॥ १२ ॥ भक्तेश्वरी भक्तिकरी भक्तानुग्रहकारिणी ॥ भक्तिदा भक्तिजननी भक्तानन्दविवर्द्धिनी ॥ १३ ॥ भक्तिप्रिया भक्तिरता भक्तिभावविहारिणी ॥ भक्तिशीला भक्तिलीला भक्तेशा भक्तिपालिनी ॥ १४ ॥ भक्तिविद्या भक्तविद्या भक्तिर्भक्तिविनोदिनी ॥ भक्तिरीतिर्भक्तिप्रीतिर्भक्तिसाधनसाधिनी ॥ १५ ॥ भक्तिसाध्या भक्तसाध्या भक्तिराली भवेश्वरी ॥ भटविद्या भटानन्दा भटस्था भटरूपिणी ॥ १६ ॥ भटमान्या भटस्थान्या भटस्थाननिवासिनी ॥ भटिनी भटरूपेशी भटरूपविवर्द्धिनी ॥ १७ ॥ भटवेशी भटेशी च भगभाग्भवसुन्दरी ॥ भटप्रीत्या भटरीत्या भटानुग्रहकारिणी ॥ १८ ॥ भटराध्या भटबोध्या भटबोधविनोदिनी ॥ भटैः सेव्या भटवरा भटार्च्या भटबोधिनी ॥ १९ ॥ भटकीर्त्या भटकला भटपा भटपालिनी ॥ भटैश्वर्य्या भटाधीशा भटेक्षा भटतोषिणी ॥ २० ॥ भटेशी भटजननी भटभाग्यविवर्द्धिनी ॥ भटभुक्तिर्भटयुक्तिर्भटप्रीतिविवर्द्धिनी ॥ २१ ॥ भाग्येशी भाग्यजननी भाग्यस्था भाग्यरूपिणी ॥ भावनाभावकुशला भावदा भाववर्द्धिनी ॥ २२ ॥ भावरूपा भावरसा भवांतरविहारिणी ॥ भवांकुरा भवकला भावस्थाननिवासिनी ॥२३॥ भावातुरा भावधृता भावमध्यव्यवस्थिता ॥ भावऋद्धिर्भावसिद्धिर्भावादिर्भावभाविनी ॥ २४ ॥ भावा

लया भावपरा भावसाधनतत्परा ॥ भावेश्वरी भावगम्या भावस्था भावगर्विता ॥ २५ ॥ भाविनी भावरमणी भारती भारतेश्वरी ॥ भागीरथी भाग्यवती भाग्योदयकरी कला ॥ २६ ॥ भाग्याश्रया भाग्यमयी भाग्या भाग्यफलप्रदा ॥ भाग्याचारा भाग्यसारा भाग्यधारा च भाव्यदा ॥ २७ ॥ भाग्येश्वरी भाग्यनिधिर्भाग्या भाग्यसुमातृका ॥ भाग्येक्षा भाग्यना भाग्यभाग्यदा भाग्यमातृका ॥ २८ ॥ भाग्येक्षा भाग्यमनसा भाग्यादिर्भाग्यमध्यगा ॥ भ्रात्रीश्वरी भ्रातृमती भ्रात्रंबा भ्रातृपालिनी ॥२९॥ भ्रातृस्था भ्रातृकुशला भ्रामरी भ्रमराम्बिका ॥ भिल्लरूपा भिल्लवती भिल्लस्था भिल्लपालिनी ॥ ३० ॥ भिल्लमाता भिल्लधात्री भिल्लिनी भिल्लकेश्वरी ॥ भिल्लकीर्त्ति भिल्लकला भिल्लमन्दरवासिनी ॥ ३१ ॥ भिल्लक्रीडा भिल्ललीला भिल्लार्च्या भिल्लवल्लभा ॥ भिल्लस्नुषा भिल्लपुत्री भिल्लिनी भिल्लपोषिणी ॥ ३२ ॥ भिल्लपौत्री भिल्लगोष्ठी भिल्लाचारनिवासिनी ॥ भिल्लपूज्या भिल्लवाणी भिल्लाणी भिल्लभीतिहा ॥ ३३ ॥ भीतस्था भीतजननी भीतिर्भीतिविनाशिनी ॥ भीतिदा भीतिहा भीत्या भीत्याकारविहारिणी ॥ ३४ ॥ भीतेशी भीतिशमनी भीतस्थाननिवासिनी ॥ भीतिरीत्या भीतिकला भीतीक्षा भीतिहारिणी ॥ ३५ ॥ भीमेशी भीमजनी भीमा भीमनिवासिनी ॥ भीमेश्वरी भीमरता भीमांगी भीमपालिनी ॥ ३६ ॥ भीमनादा भीमतंत्री भीमैश्वर्य्यविवर्द्धिनी ॥ भीमगोष्ठी भीमधात्री भीमविद्याविनोदिनी ॥ ३७ ॥ भीमविक्रमदात्री च भीमविक्रमवासिनी ॥ भीमानन्दकरी देवी भीमानन्दविहारिणी ॥३८॥ भीमोपदेशिनी नित्या भीमभाग्यप्रदायिनी ॥ भीमसिद्धिर्भीमऋद्धि भीमभक्तिविवर्द्धिनी ॥ ३९ ॥ भीमस्था भीमवरदा भीमधर्मोपदेशिनी ॥ भीष्मेश्वरी भीष्मभृतिर्भीष्मबोधप्रबोधिनी ॥ ४० ॥ भीष्मश्रीर्भीष्मजननी भीष्मज्ञानोपदेशिनी ॥ भीष्मस्था भीष्मतपसा भीष्मेशी भीष्मतारिणी ॥ ४१ ॥ भीष्मलीला भीष्मशीला भीष्मरोधोनिवासिनी ॥ भीष्माश्रया भीष्मवरा भीष्महर्षविवर्द्धिनी ॥ ४२ ॥ भुवना भुवनेशानी भुवनानन्दकारिणी ॥ भुविस्था भुविरूपा च भुविभारनिवारिणी ॥ ४३ ॥ भुक्तिस्था भुक्तिदा भुक्तिर्भुक्तेशी भुक्तिरूपिणी ॥ भुक्तेश्वरी भुक्तिदात्री भुक्तिराकाररूपिणी ॥ ४४ ॥ भुजंगस्था भुजंगेशी भुजंगाकाररूपिणी ॥ भुजंगी भुजगावासा भुजंगानन्ददायिनी ॥ ४५ ॥ भूतेशी भूतजननी भूतस्था भूत

रूपिणी ॥ भूतेश्वरी भूतलीला भूतवेषकरी सदा ॥ ४६ ॥ भूतदात्री भूतकेशी भूतधात्री महेश्वरी ॥ भूतरीत्या भूतपत्नी भूतलोक
निवासिनी ॥ ४७ ॥ भूतसिद्धिर्भूतऋद्धिर्भूतानन्दनिवासिनी ॥ भूतकीर्तिर्भूतलक्ष्मीर्भूतभाग्यविवर्द्धिनी ॥ ४८ ॥ भूताच्या भूतरमणी
भूतविद्याविनोदिनी ॥ भूतपौत्री भूतपुत्री भूतभार्य्याविधीश्वरी ॥ ४९ ॥ भूतस्था भूतरमणी भूतेशी भूतपालिनी ॥ भूपमाता भूप
निभा भूपैश्वर्य्यप्रदायिनी ॥ ५० ॥ भूपचेष्टा भूपनेष्टा भूपभावविवर्द्धिनी ॥ भूपस्वसा भूपभूरी भूपपौत्री तथा वधूः ॥ ५१ ॥
भूपकीर्तिर्भूपनीतिर्भूपभाग्यविवर्द्धिनी ॥ भूपक्रिया भूपक्रीडा भूपमन्दरवासिनी ॥ ५२ ॥ भूपाच्या भूपसंराध्या भूपभोगविवर्द्धिनी ॥
भूपाश्रया भूपकला भूपकौतुकदण्डिनी ॥ ५३ ॥ भूषणस्था भूषणेशी भूषा भूषणधारिणी ॥ भूषणाधारधर्मेशी भूषणाकाररूपिणी ॥
॥ ५४ ॥ भूपताचारनिलया भूपताचारभूषिता ॥ भूपताचाररचना भूपताचारमण्डिता ॥ ५५ ॥ भूपताचारधर्मेशी भूपताचार
कारिणी ॥ भूपताचारचरिता भूपताचारवर्जिता ॥ ५६ ॥ भूपताचारवृद्धिस्था भूपताधरवृद्धिदा ॥ भूपताचारकरणा भूपताचारकर्मदा ॥
॥ ५७ ॥ भूपताचारकर्मेशी भूपताचारकर्मदा । भूपताचारदेहस्था भूपताचारकर्मिणी ॥ ५८ ॥ भूपताचारसिद्धिस्था भूपता
चारसिद्धिदा ॥ भूपताचारधर्माणी भूपताचारधारिणी ॥ ५९ ॥ भूपतानन्दलहरी भूपतेश्वररूपिणी ॥ भूपतेर्नीतिनीतिस्था भूपति
स्थानवासिनी ॥ ६० ॥ भूपतिस्थानगीर्वाणा पतेर्वरधारिणी ॥ भेषजानन्दलहरी भेषजानन्दरूपिणी ॥ ६१ ॥ भेषजानन्द
महिषी भेषजानन्दधारिणी ॥ भेषजानन्दकर्मेशी भेषजानन्ददायिनी ॥ ६२ ॥ भेषजी भेषजाकन्दा भेषजस्थानवासिनी ॥ भेषजेश्वर
रूपा च भेषजेश्वरसिद्धिदा ॥ ६३ ॥ भेषजेश्वरधर्मेशी भेषजेश्वरकर्मदा ॥ भेषजेश्वरकर्मेशी भेषजेश्वकर्मिणी ॥ ६४ ॥ भेषजाधीश
जननी भेषजाधीशपालिनी ॥ भेषजाधीशरचना भेषजाधीशमंगला ॥ ६५ ॥ भेषजारण्यमध्यस्था भेषजारण्यरक्षिणी ॥ भैषज्यविद्या
भैषज्या भैषज्येप्सितदायिनी ॥ ६६ ॥ भैषजस्था भैषजेशी भैषज्यानन्दवर्द्धिनी ॥ भैरवी भैरवाचारा भैरवाकाररूपिणी ॥ ६७ ॥
भैरवाचारचतुरा भैरवाचारमण्डिता ॥ भैरवा च भैरवेशी भैरवानन्ददायिनी ॥ ६८ ॥ भैरवानन्दरूपेशी भैरवानन्दरूपिणी ॥ भैरवा

नन्दनिपुणा भैरवानन्दमंदिरा ॥ ६९ ॥ भैरवानन्दतत्त्वज्ञा भैरवानन्दतत्परा ॥ भैरवानन्दकुशला भैरवानन्दनीतिदा ॥ ७० ॥ भैरवानन्दप्रीतिस्था भैरवानन्दप्रीतिदा ॥ भैरवानन्दमहिषी भैरवानन्दमालिनी ॥ ७१ ॥ भैरवानन्दमतिदा भैरवानन्दमातृका ॥ भैरवाधारजननी भैरवाधाररक्षिणी ॥ ७२ ॥ भैरवाधाररूपेशी भैरवाधाररूपिणी ॥ भैरवाधारनिचया भैरवाधारनिश्चया ॥ ७३ ॥ भैरवाधारतत्त्वज्ञा भैरवाधारतत्त्वदा ॥ भैरवाश्रयतंत्रेशी भैरवाश्रयमंत्रिणी ॥ ७४ ॥ भैरवाश्रयरचना भैरवाश्रयरञ्जिता ॥ भैरवाश्रयनिर्धारा भैरवाश्रयनिर्भरा ॥ ७५ ॥ भैरवाश्रयनिर्धारा भैरवाश्रयनिर्धरा ॥ भैरवानन्दबोधेशी भैरवानन्दबोधिनी ॥ ७६ ॥ भैरवानन्दबोधस्था भैरवानन्दबोधदा ॥ भैरव्यैश्वर्य्यवरदा भैरव्यैश्वर्य्यदायिनी ॥ ७७ ॥ भैरव्यैश्वर्य्यरचना भैरव्यैश्वर्य्यवर्द्धिनी ॥ भैरव्यैश्वर्य्यसिद्धिस्था भैरव्यैश्वर्य्यसिद्धिदा ॥ ७८ ॥ भैरव्यैश्वर्य्यसिद्धेशी भैरव्यैश्वर्य्यरूपिणी ॥ भैरव्यैश्वर्य्यसुपथा भैरव्यैश्वर्य्यसुप्रभा ॥ ७९ ॥ भैरव्यैश्वर्य्यवृद्धिस्था भैरव्यैश्वर्य्यवृद्धिदा ॥ भैरव्यैश्वर्य्यकुशला भैरव्यैश्वर्य्यकामदा ॥ ८० ॥ भैरव्यैश्वर्य्यसुलभा भैरव्यैश्वर्य्यसम्प्रदा ॥ भैरव्यैश्वर्य्यविशदा भैरव्यैश्वर्य्यविक्रया ॥ ८१ ॥ भैरव्यैश्वर्य्यविनया भैरव्यैश्वर्य्यवेदिता ॥ भैरव्यैश्वर्य्यमहिमा भैरव्यैश्वर्य्यमानिनी ॥ ८२ ॥ भैरव्यैश्वर्य्यनिरता भैरव्यैश्वर्य्यनिर्मिता ॥ भोगेश्वरी भोगमाता भोगस्था भोगरक्षिणी ॥ ८३ ॥ भोगक्रीडा भोगलीला भोगेशी भोगवर्द्धिनी ॥ भोगांगी भोगरमणी भोगाचारविचारिणी ॥ ८४ ॥ भोगाश्रया भोगवती भोगिनी भोगरूपिणी ॥ भोगांकरा भोगविधा भोगाधारनिवासिनी ॥ ८५ ॥ भोगाम्बिका भोगरता भोगसिद्धिविधायिनी ॥ भोजस्था भोजनिरता भोजनानन्ददायिनी ॥ ८६ ॥ भोजनानन्दलहरी भोजनांतर्विहारिणी ॥ भोजनानन्दमहिमा भोजनानन्दभोग्यदा ॥ ८७ ॥ भोजनानन्दरचना भोजनानन्दहर्षिता ॥ भोजनाचारचतुरा भोजनाचारमण्डिता ॥ ८८ ॥ भोजनाचारचरिता भोजनाचारचर्चिता ॥ भोजनाचारसम्पन्ना भोजनाचारसंयुता ॥ ८९ ॥ भोजनाचारचित्तस्था भोजनाचाररीतिदा ॥ भोजनाचारविभवा भोजनाचारविस्तृता ॥ ९० ॥ भोजनाचाररमणी भोजनाचाररक्षिणी ॥ भोजनाचारहारिणी भोजनाचारभक्षिणी ॥ ९१ ॥

भोजनाचारसुखदा भोजनाचारसुस्पृहा ॥ भोजनाहारसुरसा भोजनाहारसुन्दरी ॥ ९२ ॥ भोजनाहारचरिता भोजना हारचञ्चला ॥
भोजनास्वादविभवा भोजनास्वादवल्लभा ॥ ९३ ॥ भोजनास्वादसंतुष्टा भोजनास्वादसम्प्रदा ॥ भोजनास्वादसुपथा
भोजनास्वादसंश्रया ॥ ९४ ॥ भोजनास्वादनिरता भोजनास्वादनिर्णिता ॥ भौक्षरा भौक्षरेशानी भौकाराक्षररूपिणी ॥ ९५ ॥
भौक्षरस्था भौक्षरादिर्भौक्षरस्थानवासिनी ॥ भङ्कारी भर्मिणी भर्मी भस्मेशी भस्मरूपिणी ॥ ९६ ॥ भंकारा भंचना भस्मा भस्म
स्था भस्मवासिनी ॥ भक्षरी भक्षराकारा भक्षरस्थानवासिनी ॥ ९७ ॥ भक्षराढ्या भक्षरेशी भरूपा भस्वरूपिणी ॥ भूधरस्था
भूधरेशी भूधरी भूधरेश्वरी ॥ ९८ ॥ भूधरानन्दरमणी भूधरानन्दपालिनी ॥ भूधरानन्दजननी भूधरानन्दवासिनी ॥ ९९ ॥
भूधरानन्दरमणी भूधरानन्दरक्षिता ॥ भूधरानन्दमहिमा भूधरानन्दमंदिरा ॥ १०० ॥ भूधरानन्दसर्वेशी भूधरानन्दसर्वसूः ॥ भूधरा
नन्दमहिषी भूधरानन्ददायिनी ॥ १०१ ॥ भूधराधीशधर्मेशी भूधरानन्दधर्मिणी ॥ भूधराधीशधर्म्मेशी भूधराधीशसिद्धिदा ॥
॥ १०२ ॥ भूधराधीशकर्मेशी भूधराधीशकामिनी ॥ भूधराधीशनिरता भूषाराधीशनिर्णिता ॥ १०३ ॥ भूधराधीशनीतिस्था
भूधराधीशनीतिदा ॥ भूधराधीशभाग्येशी भूधराधीशभामिनी ॥ १०४ ॥ भूधराधीशबुद्धिस्था भूधराधीशबुद्धिदा ॥ भूधराधीश
वरदा भूधराधीशवन्दिता ॥ १०५ ॥ भूधराधीशसंराध्या भूधराधीशचार्चिता ॥ भंगेश्वरी भंगमयी भंगस्था भंगरूपिणी ॥
॥ १०६ ॥ भंगाक्षता भंगरता भंगार्च्या भंगरक्षिणी ॥ भंगावती भंगलीला भंगभोगविलासिनी ॥ १०७ ॥ भंगरंगप्रतीकाशा
भंगरंगनिवासिनी ॥ भंगाशिनी भंगमूली भंगभोगविधायिनी ॥ १०८ ॥ भंगाश्रया भंगबीजा भंगबीजांकुरेश्वरी ॥ भंगयंत्रचम
त्कारा भंगयंत्रेश्वरी तथा ॥ १०९ ॥ भंगयंत्रविमोहस्था भंगयंत्रविनोदिनी ॥ भंगयंत्रविचारस्था भंगयंत्रविचारिणी ॥ ११० ॥
भंगयंत्ररसानन्दा भंगयंत्ररसेश्वरी ॥ भंगयंत्ररसस्वादा भंगयंत्ररसस्थिता ॥ १११ ॥ भंगयंत्ररसाधारा भंगयंत्ररसाश्रया ॥ भूधरा
त्मजरूपेशी भूधरात्मजरूपिणी ॥ ११२ ॥ भूधरात्मजयोगेशी भूधरात्मजपालिनी ॥ भूधरात्मजमहिमा भूधरात्मजमालिनी ॥ ११३ ॥

भूधरात्मजभूतेशी भूधरात्मजरूपिणी ॥ भूधरात्मजसिद्धिस्था भूधरात्मजसिद्धिदा ॥ ११४ ॥ भूधरात्मजभावेशी भूधरात्मजभाविनी ॥ भूधरात्मजभोगस्था भूधरात्मजभोग्यदा ॥ ११५ ॥ भूधरात्मजभोगेशी भूधरात्मजभोगिनी ॥ भव्या भव्यतरा भव्यभाविनी भववल्लभा ॥ ११६ ॥ भावातिभावा भावाख्या भातिभा भीतिभांतिका ॥ भासांतिभासा भासस्था भासाभा भास्करोपमा ॥ ११७ ॥ भास्करस्था भास्करेशी भास्करैश्वर्य्यवर्द्धिनी ॥ भास्करानन्दजननी भास्करानन्ददायिनी ॥ ११८ ॥ भास्करानन्दमहिमा भास्करानन्दमातृका ॥ भास्करानन्दैनेश्वर्य्या भास्करानन्दनेश्वरा ॥ ११९ ॥ भास्करानन्दसुपथा भास्करानन्दसुप्रभा ॥ भास्करानन्दनिचया भास्करानन्दनिर्मिता ॥ १२० ॥ भास्करानन्दनीतिस्था भास्करानन्दनीतिदा ॥ भास्करोदयमध्यस्था भास्करोदयमध्यगा ॥ १२१ ॥ भास्करोदयतेजःस्था भास्करोदयतेजसा ॥ भास्कराचारचतुरा भास्कराचारचन्द्रिका ॥ ॥ १२२ ॥ भास्कराचारपरमा भास्कराचारचण्डिका ॥ भास्कराचारपरमा भास्कराचारपारदा ॥ १२३ ॥ भास्कराचारमुक्तिस्था भास्कराचारमुक्तिदा ॥ भास्कराचारसिद्धिस्था भास्कराचारसिद्धिदा ॥ १२४ ॥ भास्कराचरणाधारा भास्कराचरणाश्रिता ॥ भास्कराचारमंत्रेशी भास्कराचारमंत्रिणी ॥ १२५ ॥ भास्कराचारवित्तेशी भास्कराचारचित्रिणी ॥ भास्कराधारधर्म्मेशी भास्कराधारधारिणी ॥ १२६ ॥ भास्कराधाररचना भास्कराधाररक्षिता ॥ भास्कराधारकर्माणी भास्कराधारकर्म्मदा ॥ १२७ ॥ भास्कराधाररूपेशी भास्कराधाररूपिणी ॥ भास्कराधारकाम्येशी भास्कराधारकामिनी ॥ १२८ ॥ भास्कराधारसांशेशी भास्कराधारसांशिनी ॥ भास्कराधारधर्म्मेशी भास्कराधारधामिनी ॥ १२९ ॥ भास्कराधारचक्रस्था भास्कराधारचक्रिणी ॥ भास्करेश्वरक्षेत्रेशी भास्करेश्वरक्षेत्रिणी ॥ १३० ॥ भास्करेश्वरजननी भास्करेश्वरपालिनी ॥ भास्करेश्वरसर्वेशी भास्करेश्वरशर्वरी ॥ १३१ ॥ भास्करेश्वरसद्मीमा भास्करेश्वरसन्निभा ॥ भास्करेश्वरसुपथा भास्करेश्वरसुप्रभा ॥ १३२ ॥ भास्करेश्वरयुवती भास्करेश्वरसुन्दरी ॥ भास्करेश्वरमूर्तेशी भास्करेश्वरमूर्तिनी ॥१३३॥ भास्करेश्वरमित्रेशी भास्करेश्वरमंत्रिणी ॥ भास्करेश्वरसानन्दा भास्करेश्वरसाश्रया ॥१३४॥

भास्करेश्वरचित्रस्था भास्करेश्वराचित्रदा ॥ भास्करेश्वराचित्रेशी भास्करेश्वराचित्रिणी ॥ १३५ ॥ भास्करेश्वरभाग्यस्था भास्करेश्वरभाग्यदा ॥ भास्करेश्वरभाग्येशी भास्करेश्वरभाविनी ॥ १३६ ॥ भास्करेश्वरकीर्तेशी भास्करेश्वरकीर्तिनी ॥ भास्करेश्वरकीर्तिस्था भास्करेश्वरकीर्तिदा ॥ १३७ ॥ भास्करेश्वरकरुणा भास्करेश्वरकारिणी ॥ भास्करेश्वरगीर्वाणी भास्करेश्वरगारुडी ॥ ॥ १३८ ॥ भास्करेश्वरदेहस्था भास्करेश्वरदेहदा ॥ भास्करेश्वरनादस्था भास्करेश्वरनादिनी ॥ १३९ ॥ भास्करेश्वरनादेशी भास्करेश्वरनादिनी ॥ भास्करेश्वरकोशस्था भास्करेश्वरकोशदा ॥ १४० ॥ भास्करेश्वरकोशेशी भास्करेश्वरकोशिनी ॥ भास्करेश्वरशक्तिस्था भास्करेश्वरशक्तिदा ॥ १४१ ॥ भास्करेश्वरतोषेशी भास्करेश्वरतोषिणी ॥ भास्करेश्वरक्षत्रेशी भास्करेश्वरक्षत्रिणी ॥ ॥ १४२ ॥ भास्करेश्वरयागस्था भास्करेश्वरयोगदा ॥ भास्करेश्वरयोगेशी भास्करेश्वरयोगिनी ॥ १४३ ॥ भास्करेश्वरपद्मेशी भास्करेश्वरपद्मिनी ॥ भास्करेश्वरहृद्बीजा भास्करेश्वरहृद्वरा ॥ १४४ ॥ भास्करेश्वरहृद्योनिर्भास्करेश्वरहृद्द्युतिः ॥ भास्करेश्वरबुद्धिस्था भास्करेश्वरसद्विधा ॥ १४५ ॥ भास्करेश्वरसद्वाणी भास्करेश्वरसद्वरा ॥ भास्करेश्वरराज्यस्था भास्करेश्वरराज्यदा ॥ १४६ ॥ भास्करेश्वरराज्येशी भास्करेश्वरपोषिणी ॥ भास्करेश्वरज्ञानस्था भास्करेश्वरज्ञानदा ॥ १४७ ॥ भास्करेश्वरज्ञानेशी भास्करेश्वरगामिनी ॥ भास्करेश्वरलक्षेशी भास्करेश्वरक्षालिता ॥ १४८ ॥ भास्करेश्वरलक्षिता भास्करेश्वररक्षिता ॥ भास्करेश्वरखड्गस्था भास्करेश्वरखड्गदा ॥ १४९ ॥ भास्करेश्वरखड्गेशी भास्करेश्वरखड्गिनी ॥ भास्करेश्वरकार्य्येशी भास्करेश्वरकामिनी ॥ १५० ॥ भास्करेश्वरकायस्था भास्करेश्वरकायदा ॥ भास्करेश्वरचक्षुःस्था भास्करेश्वरचक्षुषा ॥ १५१ ॥ भास्करेश्वरसन्नाभा भास्करेश्वरसाचिता ॥ भ्रूणहत्याप्रशमनी भ्रूणपापविनाशिनी ॥ १५२ ॥ भ्रूणदारिद्रयशमनी भ्रूणरोगविनाशिनी ॥ भ्रूणशोकप्रशमनी भ्रूणदोषनिवारिणी ॥ १५३ ॥ भ्रूणसंतापशमनी भ्रूणविभ्रमनाशिनी ॥ भवाब्धिस्था भवाब्धीशा भवाब्धिभयनाशिनी ॥ १५४ ॥ भवाब्धिपारकरणी भवाब्धिसुखवर्द्धिनी ॥ भवाब्धिकार्य्यकरणी भवाब्धिकरुणानिधिः ॥ १५५ ॥ भवाब्धिकालशमनी भवाब्धिवरदायिनी ॥

भवाब्धिभजनस्थाना भवाब्धिभजनस्थिता ॥ १५६ ॥ भवाब्धिभजनाकारा भवाब्धिजननक्रिया ॥ भवाब्धिभजनाचारा भवाब्धि
भजनांकुरा ॥ १५७ ॥ भवाब्धिभजनानन्दा भवाब्धिभजनाधिपा ॥ भवाब्धिभजनैश्वर्य्या भवाब्धिभजनेश्वरी ॥ १५८ ॥
भवाब्धिभजनासिद्धिर्भवाब्धिभजनारतिः ॥ भवाब्धिभजनानित्या भवाब्धिभजनानिशा ॥ १५९ ॥ भवाब्धिभजनानिम्ना भवाब्धि
भवभीतिहा ॥ भवाब्धिभजनाकाम्या भवाब्धिभजनाकला ॥ १६० ॥ भवाब्धिभजनाकीर्तिर्भवाब्धिभजनाकृता ॥ भवाब्धिशुभदा
नित्या भवाब्धिशुभदायिनी ॥ १६१ ॥ भवाब्धिसकलानन्दा भवाब्धिसकलाकला ॥ भवाब्धिसकलासिद्धिर्भवाब्धिसकलानिधिः॥
॥ १६२ ॥ भवाब्धिसकलासारा भवाब्धिसकलार्थदा ॥ भवाब्धिभवनामूर्तिर्भवाब्धिभवनाकृतिः ॥ १६३ ॥ भवाब्धिभवना
भव्या भवाब्धिभवनांभसा ॥ भवाब्धिमदनारूपा भवाब्धिमदनातुरा ॥ १६४ ॥ भवाब्धिमदनेशानी भवाब्धिमदनेश्वरी ॥ भवाब्धि
भाग्यरचना भवाब्धिभाग्यदा सदा ॥ १६५ ॥ भवाब्धिभाग्यदाकला भवाब्धिभाग्यनिर्भरा ॥ भवाब्धिभाग्यनिरता भवाब्धिभाग्य
भाविता ॥ १६६ ॥ भवाब्धिभाग्यसंचारा भवाब्धिभाग्यसंचिता ॥ भवाब्धिभाग्यसुपथा भवाब्धिभाग्यसुप्रदा ॥ १६७ ॥
भवाब्धिभाग्यरीतिज्ञा भवाब्धिभाग्यनीतिदा ॥ भवाब्धिभाग्यरीतीशी भवाब्धिभाग्यरीतिनी ॥ १६८ ॥ भवाब्धिभोगनिपुणा भवा
ब्धिभोगसम्प्रदा ॥ भवाब्धिभाग्यगहना भवाब्धिभोग्यगुम्फिता ॥ १६९ ॥ भवाब्धिभोगगान्धारी भवाब्धिभोगगुम्फिता ॥ भवा
ब्धिभोगसुरसा भवाब्धिभोगसुस्पृहा ॥ १७० ॥ भवाब्धिभोगग्रंथिनी भवाब्धिभोगयोगिनी ॥ भवाब्धिभोगरसना भवाब्धिभोग
राजिता ॥ १७१ ॥ भवाब्धिभोगविभवा भवाब्धिभोगविस्तृता ॥ भवाब्धिभोगवरदा भवाब्धिभोगवन्दिता ॥ १७२ ॥ भवाब्धिभोग
कुशला भवाब्धिभोगशोभिता ॥ भवाब्धिभेदजननी भवाब्धिभेदपालिनी ॥ १७३ ॥ भवाब्धिभेदरचना भवाब्धिभेदरक्षिता ॥
भवाब्धिभेदानियता भवाब्धिभेदानिस्पृहा ॥ १७४ ॥भवाब्धिभेदरचना भवाब्धिभेदरोपिता ॥ भवाब्धिभेदराशिघ्नी भवाब्धिभेदराशिनी
॥ १७५ ॥ भवाब्धिभेदकर्मेशी भवाब्धिभेदकार्मिणी ॥ भद्रेशी भद्रजननी भद्रा भद्रनिवासिनी ॥ १७६ ॥ भद्रेश्वरी

भद्रवती भद्रस्था भद्रदायिनी ॥ भद्ररूपा भद्रमयी भद्रदा भद्रभाषिणी ॥ १७७ ॥ भद्रकर्णा भद्रवेषा भद्राम्बा भद्रमन्दिरा ॥ भद्र
क्रिया भद्रकला भद्रिका भद्रवर्द्धिनी ॥ १७८ ॥ भद्रक्रीडा भद्रकला भद्रलीलाभिलाषिणी ॥ भद्रांकुरा भद्ररता भद्रांगी भद्रमंत्रिणी
॥ १७९ ॥ भद्रविद्याऽभद्रविद्या भद्रवाग्भद्रवादिनी ॥ भूपमंगलदा भूपा भूलता भूमिवाहिनी ॥ १८० ॥ भूपभोगा भूप
शोभा भूपाशा भूपरूपदा ॥ भपाकृतिर्भूपरतिर्भूपश्रीर्भूपश्रेयसी ॥ १८१ ॥ भूपनीतिर्भूपरीतिर्भूपभीतिर्भयंकरी ॥ भवदानन्दलहरी
भवदानन्दसुन्दरी ॥ १८२ ॥ भवदानन्दकरणी भवदानन्दवर्द्धिनी ॥ भवदानन्दरमणी भवदानन्ददायिनी ॥ भवदानन्दजननी
भवदानन्दरूपिणी ॥ १८३ ॥ य इदं पठते स्तोत्रं प्रत्यहं भक्तिसंयुतः ॥ १८४ ॥ गुरुभक्तियुतो भूत्वा गुरुसेवापरायणः ॥ जितेन्द्रियः
सत्यवादी ताम्बूलपूरिताननः ॥ १८५ ॥ दिवा रात्रौ च संध्यायां स भवेत्परमेश्वरः ॥ स्तवमात्रस्य पाठेन राजा वैश्यो भवेद्ध्रुवम्
॥ १८६ ॥ सर्वागमेषु विज्ञानी सर्वतंत्रे स्वयं हरः ॥ गुरोर्मुखात्समभ्यस्य स्थित्वा च गुरुसन्निधौ ॥ १८७ ॥ शिवस्थानेषु
संध्यायां शून्यागारे चतुष्पथे ॥ यः पठेच्छृणुयाद्वापि स योगी नात्र संशयः ॥ १८८ ॥ सर्वस्वदक्षिणां दद्यात्स्त्रीपुत्रादिकमेव
च ॥ स्वच्छन्दमानसो भूत्वा स्तवमेतं समुद्धरेत् ॥ १८९ ॥ एतत्स्तोत्ररतो देवि हररूपो न संशयः ॥ यः पठेच्छृणुयाद्वापि एक
चित्तेन सर्वदा ॥ १९० ॥ स दीर्घायुः सुखी वाग्मी वाणी तस्य न संशयः ॥ गुरुपादरतो भूत्वा कामिनीनां भवेत्प्रियः ॥ १९१ ॥
धनवान्गुणवान् श्रीमान् धीमानिव गुरुः प्रिये ॥ सर्वेषां तु प्रियो भूत्वा पूजयेत्सर्वदा स्तवम् ॥ १९२ ॥ मंत्रसिद्धिः करस्थैव तस्य
देवि न संशयः ॥ कुबेरत्वं भवेत्तस्य तस्याधीना हि सिद्धयः ॥ १९३ ॥ मृतपुत्रा च या नारी दौर्भाग्यपरिपीडिता ॥ वंध्या वा
काकवंध्या वा मृतवत्सा च यांगना ॥ १९४ ॥ धनधान्यविहीना च रोगशोकाकुला च या ॥ ताभिरेतन्महादेवि भूर्जपत्रे विलि
ख्य वै ॥ १९५ ॥ सव्ये भुजे धारणीयं तेन सौख्यप्रदं भवेत् ॥ एवं पुनः पुनः प्रायाद्दुःखेन परिपीडिता ॥ १९६ ॥
सभायां व्यसने वाणीविवादे शत्रुसंकटे ॥ चतुरंगे तथा युद्धे सर्वत्रापदि पीडने ॥ १९७ ॥ स्मरणादस्य कल्याणि

संज्ञया शांति दूरतः ॥ न देयं परशिष्याय नाभकाय च दुर्जने ॥ १९८ ॥ दांभिकाय कुशीलाय कृपणाय सुरेश्वरि ॥ दद्याच्छिष्याय शांताय विनीताय जितात्मने ॥ १९९ ॥ भक्ताय शांतियुक्ताय रजःपूजारताय च ॥ जन्मांतरसहस्रैस्तु वर्णितुं नैव शक्यते ॥ २०० ॥ स्तवमात्रस्य माहात्म्यं वक्रकोटिशतैरपि ॥ विष्णवे कथितं पूर्वं ब्रह्मणापि प्रियंवदे ॥ २०१ ॥ अधुनापि तव स्नेहात्कथितं परमेश्वरि ॥ गोपितव्यं पशुभ्यश्च सर्वथा न प्रकाशयेत् ॥ २०२ ॥ इति श्रीमहातंत्रार्णवे ईश्वरपार्वतीसंवादे भुवनेश्वरीभकारादिसहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥ अथ भुवनेश्वरीहृदयप्रारंभः ॥ देव्युवाच ॥ भगवन् ब्रूहि तत्स्तोत्रं सर्वकामप्रसाधनम् ॥ यस्य श्रवणमात्रेण नान्यच्छ्रोतव्यमिष्यते ॥ १ ॥ यदि मेऽनुग्रहः कार्यः प्रीतिश्चापि ममोपरि ॥ तदिदं कथय ब्रह्मन् विमलं यन्महीतले ॥ २ ॥ ईश्वर उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि सर्वकामप्रसाधनम् ॥ हृदयं भुवनेश्वर्याः स्तोत्रमस्ति यशोदयम् ॥ ३ ॥ ॐ अस्य श्रीभुवनेश्वरीहृदयस्तोत्रमंत्रस्य शक्तिर्ऋषिः ।गायत्री छन्दः। भुवनेश्वरी देवता । हकारो बीजम् । ईकारः शक्तिः। रेफः कीलकम्॥ सकलमनोवांछिताछितासिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः ॥ ॐ ह्रीं हृदयाय नमः १ । ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा २ । ॐ ऐं शिखायै वषट् ३ । ॐ ह्रीं कवचाय हुं ४ । ॐ श्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ ऐं अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ॥ ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ ऐं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ॐ ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ अथ ध्यानम्—ध्यायेद्ब्रह्मादिकानां कृतजनिजननीं योगिनीं योगयोनिं देवानां जीवनायोज्ज्वलितजयपरज्योतिरुग्राङ्गधात्रीम् ॥ शंखं चक्रं च बाणं धनुरपि दधतीं दोश्चतुष्कांबुजातैर्मायामाद्यां विशिष्टां भवभवभुवनां भूभुवाभारभूमिम् ॥ ४ ॥ यदाज्ञयेदं गगनाद्यशेषं सृजत्यजः श्रीपतिरौरसं वा ॥ ॥ बिभर्ति संहंति भवस्तदंते भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं ताम् ॥ ५ ॥ जगज्जनानन्दकरीं जयाख्यां यशस्विनीं यंत्रसुयज्ञयोनिम् ॥ जितामितामित्रकृतप्रपंचां भजा० ॥ ६ ॥ हरौ प्रसुप्ते भुवनत्रयांते अवातरन्नाभिजपद्मजन्मा ॥ विधिस्ततोऽन्धे विदधार यत्पदं भजा० ॥ ७ ॥ न विद्यते क्वापि तु जन्म यस्या न वा स्थितिः

सान्ततिकीह यस्याः ॥ न वा निरोधेऽखिलकर्म्म यस्या भजा० ॥ ८ ॥ कटाक्षमोक्षाचरणोग्रवित्ता निवेशितार्णा करुणार्द्रचित्ता ॥ सुभक्तये एति समीप्सितं या भजा० ॥ ९ ॥ यतो जगज्जन्म बभूव योनेस्तदेव मध्ये प्रतिपाति या वा ॥ तदत्ति यांतेऽखिलमुग्रकाली भजा० ॥ १० ॥ सुषुप्तिकाले जनमध्ययंत्या यया जनः स्वप्नमवैति किंचित् ॥ प्रबुद्ध्यते जाग्रति जीव एष भजा० ॥ ११ ॥ दयास्फुरत्कोरकटाक्षलाभान्नैकत्र यस्याः प्रलभंति सिद्धाः ॥ कवित्वमीशित्वमपि स्वतंत्रा भजा० ॥ १२ ॥ लसन्मुखाम्भोरुहमुत्स्फुरंतं हृदि प्रणिध्याय दिशि स्फुरंतः ॥ यस्याः कृपार्द्रं प्रविकाशयंति भजा० ॥ १३ ॥ यदानुरागानुगतालिचित्राश्चिरंतनप्रेमपरिप्लुताङ्गाः ॥ सुनिर्भयाः संति प्रमुद्य यस्याः भजा० ॥ १४ ॥ हरिर्विरंचिर्हर ईशितारः पुरोऽवतिष्ठंति प्रपन्नभङ्गाः ॥ यस्याः समिच्छंति सदानुकूल्यं भजा० ॥ १५ ॥ मनुं यदीयं हरमग्निसंस्थं ततश्च वामश्रुतिचन्द्रसक्तम् ॥ जपंति ये स्युर्हि सुवंदितास्ते भजा० ॥ १६ ॥ प्रसीदतु प्रेमरसार्द्रचित्ता सदा हि सा श्रीभुवनेश्वरी मे ॥ कृपाकटाक्षेण कुबेरकल्पा भवंति यस्याः पदभक्तिभाजः ॥ १७ ॥ मुदा सुपाठ्यं भुवनेश्वरीयं सदा सतां स्तोत्रमिदं सुसेव्यम् ॥ सुखप्रदं स्यात्कलिकल्मषघ्नं सुशृण्वतां संपठतां प्रशस्यम् ॥ १८ ॥ एतत्तु हृदयं स्तोत्रं पठेद्यस्तु समाहितः ॥ भवेत्तस्येष्टदा देवी प्रसन्ना भुवनेश्वरी ॥ १९ ॥ ददाति धनमायुष्यं पुण्यं पुण्यमतिं तथा ॥ नैष्ठिकीं देवभक्तिं च गुरुभक्तिं विशेषतः ॥ २० ॥ पूर्णिमायां चतुर्दश्यां कुजवारे विशेषतः ॥ पठनीयमिदं स्तोत्रं देवसद्मनि यत्नतः ॥ २१ ॥ यत्रकुत्रापि पाठेन स्तोत्रस्यास्य फलं भवेत् ॥ सर्वस्थानेषु देवेश्याः पूतदेहः सदा पठेत् ॥ २२॥ इति नीलसरस्वतीतंत्रे भुवनेश्वरीपटले श्रीदेवीश्वरसंवादे श्रीभुवनेश्वरीहृदयस्तोत्रं समाप्तम् ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे मध्यखण्डे भुवनेश्वरीतंत्रे सप्तमस्तरङ्गः ॥ ७ ॥

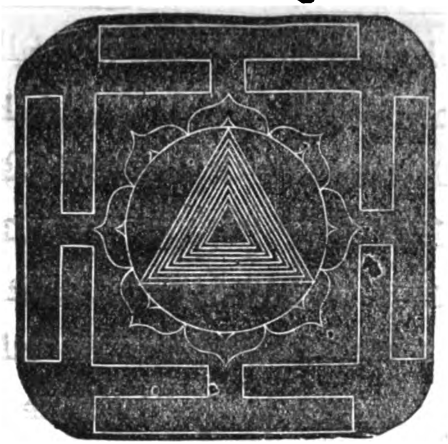
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ त्रिपुरभैरवीतंत्रप्रारंभः ॥ त्रिपुरभैरवीतंत्रे मंत्रो यथा–हसैं हसकरीं हसैं । इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अस्य त्रिपुरभैरवीमंत्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः । पंक्तिश्छंदः। त्रिपुरभैरवी देवता। ऐं बीजम् । ह्रीं शक्तिः । क्लीं कीलकम् । ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः ॥ ॐ दक्षिणामूर्तिऋषये नमः शिरसि १। पंक्तिच्छंदसे नमः मुखे २ । श्रीत्रिपुरभैरवीदेवतायै नमः हृदि ३ । ऐं बीजाय नमः गुह्ये ४। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ५ । क्लीं कीलकाय नमः सर्वांगे ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ हसरां अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । हसरीं तर्जनीभ्यां नमः । हसरूं मध्यमाभ्यां नमः ३ । हसरैं अनामिकाभ्यां नमः ४ । हसरौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । हसरः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ हसरां हृदयाय नमः १ । हसरीं शिरसे स्वाहा २ । हसरूं शिखायै वषट् ३ । हसरैं कवचाय हुं ४ । हसरौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । हसरः अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ इति न्यासं कृत्वा ताराप्रयोगोक्तन्यासादिकं कुर्यात् ॥

श्रीत्रिपुरभैरव्यै नमः ।



अथ ध्यानम्–उद्यद्भानुसहस्रकांतिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां रक्तालिप्तपयोधरां जपपरां विद्यामभीतिं वरम् ॥ हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्दे सुमन्दस्मिताम् ॥ १ ॥ एवं ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य पीठपूजां कुर्यात ॥ तथा च–पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः पद्धति

... ‘ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः’ इति संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् । तथा च—पूर्वाद्यष्टदिक्षु ॐ ...



...नमः १ । ॐ ज्ञानायै नमः २ । ॐ क्रियायै नमः ३ । ॐ कामदायिन्यै नमः ४ । ॐ रत्यै नमः ५ । ॐ रतिप्रियायै नमः । ६ ॐ नन्दायै नमः ७ । ॐ परायै नमः ८ । मध्ये ॐ अपरायै नमः ९ । इति पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रपत्रं ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण प्रोञ्छ्य तदुपरि रेखया अष्टगंधेन नवयोन्यात्मकं यंत्रं तदुपरि अष्टदलं तदुपरि भूपुरं निर्माय ‘ ह्सौं सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनाय नमः ’ इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पुनर्ध्यात्वा ‘ऐं ह्रीं स ह स ष ह क्षे ह्रौं ’ इति मंत्रेण बिन्दुचक्रे मूर्तिं संकल्प्य त्रिखण्डमुद्रया देवीं ध्यात्वा आवाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्य्यात् ॥ तथा च पुष्पाञ्जलिमादाय—ॐ संविन्मये परे देवि परामृतचरुप्रिये ॥ भैरव्यनुज्ञां त्वं देहि परिवारार्चनाय मे ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत । तथा च—केसरेषु अग्न्यादिकोणेषु मध्ये दिक्षु च पूर्वोक्तांगमंत्रेण खड्गं पूजयेत् । ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य्य—ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततः पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य क्रमानुसारेण पूजयेत् ॥ तथा च—उत्तरे द्रां द्राविण्यै नमः द्राविणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र १ ॥ द्रीं क्षोभिण्यै नमः क्षोभिणीश्रीपा० २ । दक्षिणे क्लीं वशीकारिण्यै नमः वशीकरिणीश्रीपा० ३ । ब्लुं लोपाकर्षिण्यै नमः लोपाकर्षिणीश्रीपा० ४ आग्नेय्यां स्रीं सम्मोहिन्यै

नमः सम्मोहिनीश्रीपा० ५ । एवमुत्तरे ह्रीं कामाय नमः कामश्रीपा० १ । क्लीं मन्मथाय नमः मन्मथश्रीपा० २ । दक्षिणे ऐं कन्दर्पाय नमः कंदर्प्पश्रीपा० ३ । प्लुं मकरध्वजाय नमः मकरध्वजश्रीपा० ४ । आग्नेय्यां स्त्रीं मीनकेतवे नमः मीनकेतुश्रीपा० ५ ॥ इति संपूज्य पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततोऽष्टयोनिषु प्राच्यादिक्रमेण ऐं क्लीं स्त्रीं सः सुभगायै नमः सुभगाश्रीपा० १ । ऐं क्लीं स्त्रीं सः भगायै नमः भगाश्रीपा० २ । ऐं क्लीं स्त्रीं सः भगसर्पिण्यै नमः भगसर्पिणीश्रीपा० ३ । ऐं क्लीं स्त्रीं सः भगमालिन्यै नमः भगमालिनीश्रीपा०४ । ऐं क्लीं स्त्रीं सः अनङ्गायै नमः अनंगाश्रीपा० ५ । ऐं क्लीं स्त्रीं सः अनंगकुसुमायै नमः अनंगकुसुमाश्रीपा० ६ । ऐं क्लीं स्त्रीं सः अनंगमेखलायै नमः अनङ्गमेखलाश्रीपा० ७ । ऐं क्लीं स्त्रीं सः अनंगमदनायै नमः अनंगमदनाश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततोऽष्टदलेषु प्राचीक्रमेण ॐ असिताङ्गब्राह्मीभ्यां नमः असितांगब्राह्मीश्रीपा० १ । ॐ रुरुमाहेश्वरीभ्यां नमः रुरुमाहेश्वरीश्रीपा० २ । ॐ चण्डकौमारीभ्यां नमः चण्डकौमारीश्रीपा० ३ । ॐ क्रोधवैष्णवीभ्यां नमः क्रोधवैष्णवीश्रीपा० ४ । ॐ उन्मत्तवाराहीभ्यां नमः उन्मत्तवाराहीश्रीपा० ५ । ॐ कपालीन्द्राणीभ्यां नमः कपालीन्द्राणीश्रीपा० ६ । ॐ भीषणचामुण्डाभ्यां नमः भीषणचामुण्डाश्रीपा० ७ । ॐ संहारमहालक्ष्मीभ्यां नमः संहारमहालक्ष्मीश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥ ४ ॥ ततः पंचमावरणे इन्द्रादिदशदिग्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति पंचमावरणम् ॥ ५ ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य नैवेद्यानंतरं श्रीविद्योक्तबलिचतुष्टयं दत्त्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य देवीं ध्यात्वा जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं चतुर्विंशतिलक्षजपः ॥ द्वादशसहस्रपुष्पैर्होमः ॥ तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति ॥ सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च-दीक्षां प्राप्य जपेन्मंत्रं तत्त्वलक्षं जितेंद्रियः ॥ पुष्पैर्भानुसहस्रैस्तु जुहुयाद्दक्षमक्षजैः ॥ १ ॥ इति भैरवीपटलं समाप्तम् ॥ अथ त्रिपुरभैरवी कवच

१ मतांतरेऽपि तत्त्वलक्षमित्यत्र दशलक्षमिति पाठः।

...रंभः ॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥ देवदेव महादेव सर्वशास्त्रविशारद ॥ कृपां कुरु जगन्नाथ धर्म्मज्ञोऽसि महामते ॥ १ ॥ भैरवी या पुरा प्रोक्ता विद्या त्रिपुरपूर्विका ॥ तस्यास्तु कवचं दिव्यं मह्यं कथय तत्त्वतः ॥ २ ॥ तस्यास्तु वचनं श्रुत्वा जगाद जगदीश्वरः ॥ अद्भुतं कवचं देव्या भैरव्या दिव्यरूपि वै ॥ ३ ॥ ईश्वर उवाच ॥ कथयामि महाविद्याकवचं सर्वदुर्ल्लभम् ॥ शृणुष्व त्वं च विधिना श्रुत्वा गोप्यं तवापि तत् ॥ ४ ॥ यस्याः प्रसादात्सकलं बिभर्मि भुवनत्रयम् ॥ यस्याः सर्वं समुत्पन्नं यस्यामद्यापि तिष्ठति ॥ ५ ॥ माता पिता जगद्धन्या जगद्ब्रह्मस्वरूपिणी ॥ सिद्धिदात्री च सिद्धास्या ह्यसिद्धा दुष्टजंतुषु ॥ ६ ॥ सर्वभूतप्रियकरी सर्वभूतस्वरूपिणी ॥ ककारी पातु मां देवी कामिनी कामदायिनी ॥ ७ ॥ एकारी पातु मां देवी मूलाधारस्वरूपिणी ॥ इकारी पातु मां देवी भूरिसर्वसुखप्रदा ॥ ८ ॥ लकारी पातु मां देवी इन्द्राणीवरवल्लभा ॥ ह्रींकारी पातु मां देवी सर्वदा शंभुसुन्दरी ॥ ९ ॥ एतैर्वर्णैर्महामाया शाम्भवी पातु मस्तकम् ॥ ककारे पातु मां देवी शर्वाणी हरगेहिनी ॥ १० ॥ मकारे पातु मां देवी सर्वपापप्रणाशिनी ॥ ककारे पातु मां देवी कामरूपधरा सदा ॥ ११ ॥ ककारे पातु मां देवी शम्बरारिप्रिया सदा ॥ पकारे पातु मां देवी धरा धरणिरूपधृक् ॥ १२ ॥ ह्रींकारी पातु मां देवी अकारार्द्धशरीरिणी ॥ एतैर्वर्णैर्महामाया कामराहुप्रियाऽवतु ॥ १३ ॥ मकारः पातु मां देवि सावित्री सर्वदायिनी ॥ ककारः पातु सर्वत्र कलाम्बरस्वरूपिणी ॥ १४ ॥ लकारः पातु मां देवी लक्ष्मीः सर्वसुलक्षणा ॥ ह्रीं पातु मां तु सर्वत्र देवी त्रिभुवनेश्वरी ॥ १५ ॥ एतैर्वर्णैर्महामाया पातु शक्तिस्वरूपिणी ॥ वाग्भवं मस्तकं पातु वदनं कामराजिका ॥ १६ ॥ शक्तिस्वरूपिणी पातु हृदयं यंत्रसिद्धिदा ॥ सुन्दरी सर्वदा पातु सुन्दरी परिरक्षतु ॥ १७ ॥ रक्तवर्णा सदा पातु सुन्दरी सर्वदायिनी ॥ नानालंकारसंयुक्ता सुन्दरी पातु सर्वदा ॥ १८ ॥ सर्वांगसुन्दरी पातु सर्वत्र शिवदायिनी ॥ जगदाह्लादजननी शम्भुरूपा च मां सदा ॥ १९ ॥ सर्वमंत्रमयी पातु सर्वसौभाग्यदायिनी ॥ सर्वलक्ष्मीमयी देवी परमानन्ददायिनी ॥ २० ॥ पातु मां सर्वदा देवी नानाशंखनिधिः शिवा ॥ पातु पद्मनिधिर्देवी सर्वदा शिवदायिनी ॥ २१ ॥ मां पातु दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः सर्वत्र मस्तके ॥

पंक्तिच्छंदःस्वरूपा तु मुखे पातु सुरेश्वरी ॥ २२ ॥ गंधाष्टकात्मिका पातु हृदयं शाङ्करी सदा ॥ सर्वसम्मोहिनी पातु पातु संक्षोभिणी सदा ॥ २३ ॥ सर्वसिद्धिप्रदा पातु सर्वाकर्षणकारिणी ॥ क्षोभिणी सर्वदा पातु वशिनी सर्वदावतु ॥ २४ ॥ आकर्षिणी सदा पातु सम्मोहिनी सदावतु ॥ रतिर्देवी सदा पातु भगांगा सर्वदावतु ॥ २५ ॥ माहेश्वरी सदा पातु कौमारी सर्वदावतु ॥ सर्वाह्लादनकारी मां पातु सर्ववशंकरी ॥ २६ ॥ क्षेमंकरी सदा पातु सर्वांगसुन्दरी तथा ॥ सर्वांगयुवतिः सर्वा सर्वसौभाग्यदायिनी ॥ २७ ॥ वाग्देवी सर्वदा पातु वाणिनी सर्वदावतु ॥ वशिनी सर्वदा पातु महासिद्धिप्रदा सदा ॥ २८ ॥ सर्वविद्राविणी पातु गणनाथः सदावतु ॥ दुर्गा देवी सदा पातु वटुकः सर्वदावतु ॥ २९ ॥ क्षेत्रपालः सदा पातु पातु चावीरशांतिका ॥ अनंतः सर्वदा पातु वराहः सर्वदावतु ॥ ३० ॥ पृथिवी सर्वदा पातु स्वर्णसिंहासनं तथा ॥ रक्तामृतं च सततं पातु मां सर्वकालतः ॥ ३१ ॥ सुरार्णवः सदा पातु कल्पवृक्षः सदावतु ॥ श्वेतच्छत्रं सदा पातु रक्तद्वीपः सदावतु ॥ ३२ ॥ सततं नन्दनोद्यानं पातु मां सर्वसिद्धये ॥ दिक्पालाः सर्वदा पांतु द्वन्द्वौघाः सकलास्तथा ॥ ३३ ॥ वाहनानि सदा पांतु अस्त्राणि पांतु सर्वदा ॥ शस्त्राणि सर्वदा पांतु योगिन्यः पांतु सर्वदा ॥ ॥ ३४ ॥ सिद्धाः पांतु सदा देवी सर्वसिद्धिप्रदावतु ॥ सर्वांगसुन्दरी देवी सर्वदा पातु मां तथा ॥ ३५ ॥ आनन्दरूपिणी देवी चित्स्वरूपा चिदात्मिका ॥ सर्वदा सुन्दरी पातु सुन्दरी भवसुन्दरी ॥ ३६ ॥ पृथग्देवालये घोरे संकटे दुर्गमे गिरौ ॥ अरण्ये प्रांतरे वापि पातु मां सुन्दरी सदा ॥ ३७ ॥ इदं कवचमित्युक्तो मंत्रोद्धारश्च पार्वति ॥ यः पठेत्प्रयतो भूत्वा त्रिसंध्यं नियतः शुचिः ॥ ३८ ॥ तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याद्यद्यन्मनसि वर्तते ॥ गोरोचनाकुंकुमेन रक्तचन्दनकेन वा ॥ ३९ ॥ स्वयंभूकुसुमैः [illegible] शनौ सुरे ॥ श्मशाने प्रांतरे वापि शून्यागारे शिवालये ॥ ४० ॥ स्वशक्त्या गुरुणा यंत्रं पूजयित्वा कुमारिकाः ॥ तन्मनुं [illegible] च गुरुपंक्तिं तथैव च ॥ ४१ ॥ देव्यै बलिं निवेद्याथ नरमार्जारसूकरैः ॥ नकुलैर्महिषैर्मेषैः पूजयित्वा विधानतः ॥ ४२ ॥ [illegible] सुवर्णमध्यस्थं कण्ठे वा दक्षिणे भुजे ॥ सुतिथौ शुभनक्षत्रे सूर्य्यस्योदयने तथा ॥ ४३ ॥ धारयित्वा च कवचं सर्वसिद्धिं

लभेन्नरः ॥ कवचस्य च माहात्म्यं नाहं वर्षशतैरपि ॥ ४४ ॥ शक्नोमि तु महेशानि वक्तुं तस्य फलं तु यत् ॥ न दुर्भिक्षफलं तत्र न चापि पीडनं तथा ॥ ४५ ॥ सर्वविघ्नप्रशमनं सर्वव्याधिविनाशनम् ॥ सर्वरक्षाकरं जंतोश्चतुर्वर्गफलप्रदम् ॥ ४६ ॥ मंत्रं प्राप्य विधानेन पूजयेत्सततं सुधीः ॥ तत्रापि दुर्लभं मन्ये कवचं देवरूपकम् ॥ ४७ ॥ गुरोः प्रसादमासाद्य विद्यां प्राप्य सुगोपिताम् ॥ तत्रापि कवचं दिव्यं दुर्लभं भुवनत्रये ॥ ४८ ॥ सर्वं वा श्लोकमेकं वा यः पठेत्प्रयतः शुचिः ॥ तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याच्छंकरेण प्रभाषितम् ॥ ४९ ॥ गुरुर्देवो हरः साक्षात्पत्नी तस्य च पार्वती ॥ अभेदेन भजेद्यस्तु तस्य सिद्धिरदूरतः ॥ ५० ॥ इति श्रीरुद्रयामले भैरवभैरवीसंवादे श्रीत्रिपुरभैरवीकवचं समाप्तम् ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ भैरवीकवचप्रारंभः ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ भैरव्याः सकला विद्याः श्रुताश्चाधिगता मया ॥ सांप्रतं श्रोतुमिच्छामि कवचं यत्पुरोदितम् ॥ १ ॥ त्रैलोक्यविजयं नाम शस्त्रास्त्रविनिवारणम् ॥ त्वत्तः परतरो नाथ कः कृपां कर्तुमर्हति ॥ २ ॥ ईश्वर उवाच ॥ शृणु पार्वति वक्ष्यामि सुंदरि प्राणवल्लभे ॥ त्रैलोक्यविजयं नाम शस्त्रास्त्रविनिवारकम् ॥ ३ ॥ पठित्वा धारयित्वेदं त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥ जघान सकलान्दैत्यान् यद्धृत्वा मधुसूदनः ॥ ४ ॥ ब्रह्मा सृष्टिं वितनुते यद्धृत्वाभीष्टदायकम् ॥ धनाधिपः कुबेरोऽपि वासवस्त्रिदशेश्वरः ॥ ५ ॥ यस्य प्रसादादीशोऽहं त्रैलोक्यविजयी विभुः ॥ न देयं परशिष्येभ्योऽसाधकेभ्यः कदाचन ॥ ६ ॥ पुत्रेभ्यः किमथान्येभ्यो दद्याच्चेन्मृत्युमाप्नुयात् ॥ ऋषिस्तु कवचस्यास्य दक्षिणामूर्तिरेव च ॥ ७ ॥ विराट् छन्दो जगद्धात्री देवता बालभैरवी ॥ धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ ८ ॥ अधरो बिंदुमानाद्यः कामः शक्तिशशीयुतः ॥ भृगुर्मनुस्वरयुतः सर्गो बीजत्रयात्मकः ॥ ९ ॥ बालैषा मे शिरः पातु बिंदुनादयुतापि सा ॥ भालं पातु कुमारीशा सर्गहीना कुमारिका ॥ १० ॥ दृशौ पातु च वाग्बीजं कर्णयुग्मं सदावतु ॥ कामबीजं सदा पातु घ्राणयुग्मं परावतु ॥ ११ ॥ सरस्वतीप्रदा बाला जिह्वां पातु शुचिप्रभा ॥ हस्रैं कंठं हसकलरी स्कंधौ पातु हस्रौ भुजौ ॥ १२ ॥ पंचमी भैरवी पातु करौ हसैं सदावतु ॥ हृदयं हसकलीं वक्षः पातु

हसौ स्तनौ मम ॥ १३ ॥ पातु सा भैरवी देवी चैतन्यरूपिणी मम ॥ हस्त्रैं पातु सदा पार्श्वयुग्मं हसकलरीं सदा ॥ १४ ॥ कुक्षिं
पातु हसौर्मध्ये भैरवी भुवि दुर्लभा ॥ ऐंईओंवं मध्यदेशं बीजविद्या सदावतु ॥ १५ ॥ हस्त्रैं पृष्ठं सदा पातु नाभिं हसकलह्रीं सदा ॥ पातु
हसौं करौ पातु षट्कुटा भैरवी मम ॥ १६ ॥ सहस्त्रैं सक्थिनी पातु सहसकलरीं सदावतु ॥ गुह्यदेशं हस्त्रौ पातु जनुनी भैरवी मम ॥
॥ १७ ॥ संपत्प्रदा सदा पातु हैं जंघे हसक्लीं पदौ ॥ पातु हंसौः सर्वदेहं भैरवी सर्वदावतु ॥ १८ ॥ हसैं मामवतु प्राच्यां हरक्लीं
पावकेऽवतु ॥ हसौं मे दक्षिणे पातु भैरवी चक्रसंस्थिता ॥ १९ ॥ ह्रीं क्लीं ल्वें मां सदा पातु नैर्ऋत्यां चक्रभैरवी ॥ क्रीं क्रीं क्रीं
पातु वायव्ये हूं हूं पातु सदोत्तरे ॥ २० ॥ ह्रीं ह्रीं पातु सदैशान्ये दक्षिणे कालिकावतु ॥ ऊर्द्ध्वं प्रागुक्तबीजानि रक्षंतु मामधःस्थले ॥
॥ २१ ॥ दिग्विदिक्षु स्वाहा पातु कालिका खड्गधारिणी ॥ ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट् सा तारा सर्वत्र मां सदावतु ॥ २२ ॥ संग्रामे
कानने दुर्गे तोये तरंगदुस्तरे ॥ खड्गकर्त्रिधरा सोग्रा सदा मां परिक्षतु ॥ २३ ॥ इति ते कथितं देवि सारात्सारतरं महत् ॥ त्रैलोक्य
विजयं नाम कवचं परमाद्भुतम् ॥ २४ ॥ यः पठेत्प्रयतो भूत्वा पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥ स्पर्द्धामूद्धूय भवने लक्ष्मीर्वाणी वसेत्ततः ॥
॥ २५ ॥ यः शत्रुभीतो रणकातरो वा भीतो वने वा सलिलालये वा ॥ वादे सभायां प्रतिवादिनो वा रक्षःप्रकोपाद् ग्रहसकुलाद्वा ॥२६॥
प्रचंडदंडाक्षमनाच्च भीतो गुरोः प्रकोपादपि कृच्छ्रसाध्यात् ॥ अभ्यर्च्य देवीं प्रपठेत्रिसंध्यं स स्यान्महेशप्रतिमो जयी च ॥ २७ ॥
त्रैलोक्यविजयं नाम कवचं मन्मुखोदितम् ॥ विलिख्य भूर्जगुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद्यदि ॥ २८ ॥ कंठे वा दक्षिणे बाहौ त्रैलोक्य
विजयी भवेत् ॥ तद्गात्रं प्राप्य शस्त्राणि भवंति कुसुमानि च ॥ २९ ॥ लक्ष्मीः सरस्वती तस्य निवसेद्भवने मुखे ॥ एतत्कवचमज्ञात्वा
यो जपेद्भैरवीं पराम् ॥ बालां वा प्रजपेद्विद्वान्दारिद्रो मृत्युमाप्नुयात् ॥ ३० ॥ इति श्रीरुद्रयामले देवीश्वरसंवादे त्रैलोक्यविजयं
नाम भैरवीकवचं समाप्तम् ॥ ॥ अथ त्रिपुरभैरवीसहस्रनामस्तोत्रप्रारंभः ॥ महाकालभैरव उवाच ॥ अथ वक्ष्ये महेशानि देव्या नाम
सहस्रकम् ॥ यत्प्रसादान्महादेवि चतुर्वर्गफलं लभेत् ॥ १ ॥ सर्वरोगप्रशमनं सर्वमृत्युविनाशनम् ॥ सर्वसिद्धिकरं स्तोत्रं नातः पर तरः

स्तवः ॥ २ ॥ नातः परतरा विद्या तीर्थं नातः परं स्मृतम् ॥ यस्यां सर्वं समुत्पन्नं यस्यामद्यापि तिष्ठति ॥ ३ ॥ क्षयमेष्यति तत्सर्वं लयकाले महेश्वरी ॥ नमामि त्रिपुरां देवीं भैरवीं भयमोचिनीम् ॥ सर्वसिद्धिकरीं साक्षान्महापातकनाशिनीम् ॥ ४ ॥ ॐ अस्य श्रीत्रिपुरभैरवीसहस्रनामस्तोत्रस्य भगवानृषिः । पंक्तिश्छंदः । आद्या शक्तिः । भगवतीत्रिपुरभैरवी देवता । सर्वकामार्थसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ त्रिपुरा परमेशानि योगसिद्धिनिवासिनी ॥ सर्वमंत्रमयी देवी सर्वसिद्धिप्रवर्तिनी ॥ १ ॥ सर्वाधारमयी देवी सर्वसम्पत्प्रदा शुभा ॥ योगिनी योगमाता च योगसिद्धिप्रवर्तिनी ॥२॥ योगिध्येया योगमयी योगियोगनिवासिनी ॥ हेला लीला तथा क्रीडा कालरूपप्रवर्तिनी ॥ ३ ॥ कालमाता कालरात्रिः काली कमलवासिनी ॥ कमला कांतिरूपा च कामराजेश्वरी क्रिया ॥ ४ ॥ कटुः कपटकेशा च कपटा कुटिलाकृतिः ॥ कुमुदा चर्चिका कांतिः कालरात्रिप्रिया सदा ॥ ५ ॥ घोराकारा घोरतरा धर्म्माधर्म्मप्रदा मतिः ॥ घण्टाघर्घरदा घण्टा घण्टानादप्रिया सदा ॥ ६ ॥ सूक्ष्मा सूक्ष्मतरा स्थूला अतिस्थूला सदामतिः ॥ अतिसत्या सत्यवती सत्यसङ्केतवासिनी ॥ ७ ॥ क्षमा भीमा तथाऽभीमा भीमनादप्रवर्तिनी ॥ भ्रमरूपा भयहरा भयदा भयनाशिनी ॥ ८ ॥ श्मशानवासिनी देवी श्मशानालयवासिनी ॥ शवासना शवाहारा शवदेहा शिवाऽशिवा ॥ ९ ॥ कंठदेशशवाहारा शवकंकणधारिणी ॥ दंतुरा सुदती सत्या सत्यसंकेतवासिनी ॥ १० ॥ सत्यदेहा सत्यहारा सत्यवादनिवासिनी ॥ सत्यालया सत्यसंगा सत्यसंगरकारिणी ॥ ११ ॥ असंगसंगरहिता सुसंगासंगमोहिनी ॥ माया मतिर्महामाया महामखविलासिनी ॥ १२ ॥ गलद्रुधिरधारा च मुखद्वयनिवासिनी ॥ सत्यायासा सत्यसंगा सत्यसंगतिकारिणी ॥ १३ ॥ असंगा संगनिरता सुसंगा संगवासिनी ॥ सदासत्या महासत्या मांसपाशा सुमांसका ॥ १४ ॥ मांसाहारा मांसधरा मांसाशी मांसभक्षका ॥ रक्तपाना रक्तरुचिरारक्ता रक्तवल्लभा ॥ १५ ॥ रक्ताहारा रक्तप्रिया रक्तानिन्दकनाशिनी ॥ रक्तपानप्रिया बाला रक्तदेशा सुरक्तिका ॥ १६ ॥ स्वयंभूकुसुमस्था च स्वयंभूकुसुमोत्सुका ॥ स्वयंभूकुसुमाहारा स्वयंभूनिन्दकासना ॥१७॥ स्वयंभूपुष्पकप्रीता स्वयंभूपुष्पसम्भवा ॥ स्वयंभूपुष्पहाराढ्या स्वयंभूनिन्दकांतका ॥ १८ ॥ कुण्डगोल

विलासी च कुण्डगोलसदामतिः ॥ कुण्डगोलप्रियकरी कुण्डगोलसमुद्भवा ॥ १९ ॥ शुक्रात्मिका शुक्रकरा सुशुक्रा च सुशुक्तिका ॥ शुक्रपूजकपूज्या च शुक्रनिन्दकनिन्दका ॥ २० ॥ रक्तमाल्या रक्तपुष्पा रक्तपुष्पकपुष्पका ॥ रक्तचन्दनसिक्तांगी रक्तचन्दननिन्दका ॥ २१ ॥ मत्स्या मत्स्यप्रिया मान्या मत्स्यभक्षा महोदया ॥ मत्स्याहारा मत्स्यकामा मत्स्यनिन्दकनाशिनी ॥ २२ ॥ केकराक्षी तथा क्रूरा क्रूरसैन्यविनाशिनी ॥ क्रूरांगी कुलिशांगी च चक्रांगी चक्रसम्भवा ॥ २३ ॥ चक्रदेहा चक्रहारा चक्रकंकालवासिनी ॥ निम्ननाभिर्भीतिहरा भयदा भयहारिका ॥ २४ ॥ भयप्रदा भया भीता अभीमा भीमनादिनी ॥ सुन्दरी शोभना सत्या क्षेम्या क्षेमकरी तथा ॥ २५ ॥ सिंदूराञ्चितसिन्दूरा सिन्दूरसदृशाकृतिः ॥ रक्तारंजितनासा च सुनासा निम्ननासिका ॥ २६ ॥ खर्वा लम्बोदरी दीर्घा दीर्घघोणा महाकुचा ॥ कुटिला चञ्चला चण्डी चण्डनादप्रचण्डिका ॥ २७ ॥ अतिचण्डा महाचण्डा श्रीचण्डा चण्डवेगिनी ॥ चाण्डाली चण्डिका चण्डशब्दरूपा च चञ्चला ॥ २८ ॥ चम्पा चम्पावती चोस्ता तीक्ष्णतीक्ष्णा प्रिया क्षतिः ॥ जलदा जयदा योगा जगदानन्दकारिणी ॥ २९ ॥ जगद्वन्द्या जगन्माता जगती जगतः क्षमा ॥ जन्या जयजनेत्री च जयिनी जयदा तथा ॥ ३० ॥ जननी च जगद्धात्री जयाख्या जयरूपिणी ॥ जगन्माता जगन्मान्या जयश्रीर्जयकारिणी ॥ ३१ ॥ जयिनी जयमाला च जया च विजया तथा ॥ खड्गिनी खड्गरूपा च सुसंगा खड्गधारिणी ॥ ३२ ॥ खड्गरूपा खड्गकरा खड्गिनी खड्गवल्लभा ॥ खड्गदा खड्गभावा च खड्गदेहसमुद्भवा ॥ ३३ ॥ खड्गा खड्गधरा खेला खड्गिनी खड्गमण्डिनी ॥ शंखिनी चापिनी देवी वज्रिणी शूलिनी मतिः ॥ ३४ ॥ बलिनी भिन्दिपाली च पाशिनी चांकुशी शरी ॥ धनुषी चटकी चर्म्मा दंती च कर्णनालिकी ॥ ३५ ॥ मुसली हलरूपा च तूणीरगणनासिनी ॥ तूणालया तूणहरा तूणसंभवरूपिणी ॥ ३६ ॥ सुतूणी तूणखेदा च तूणांगी तूणवल्लभा ॥ नानास्त्रधारिणी देवी नानाशस्त्रसमुद्भवा ॥ ३७ ॥ लाक्षा लक्षहरा लाभा सुलाभा लाभनाशिनी ॥ लाभहारा लाभकरा लाभिनी लाभरूपिणी ॥ ३८ ॥ धरित्री धनदा धान्या धान्यरूपा धरा धनुः ॥ धुरशब्दा धुरा मान्या धरांगी

धननाशिनी ॥ ३९ ॥ धनहा धनलाभा च धनलभ्या महाधनुः ॥ अशांता शांतिरूपा च श्वासमार्गनिवासिनी ॥ ४० ॥
गगणा गणसेव्या च गणांगा वागवल्लभा ॥ गणदा गणहा गम्या गमनागमसुन्दरी ॥ ४१ ॥ गम्यदा गणनाशी च गदहा गद
वर्द्धिनी ॥ स्थैर्य्या च स्थैर्य्यनाशा च स्थैर्य्यांतकारिणी कुला ॥ ४२ ॥ दात्री कर्त्रीप्रिया प्रेमा प्रियदा प्रियवर्द्धिनी ॥ प्रियहा प्रिय
भव्या च प्रियप्रेमांघ्रिपा तनुः ॥ ४३ ॥ प्रियजा प्रियभव्या च प्रियस्था भवनस्थिता ॥ सुस्थिरा स्थिररूपा च स्थिरदा स्थैर्य्यबर्हिणी ॥
॥ ४४ ॥ चञ्चला चपला चोला चपलांगनिवासिनी ॥ गौरी काली तथा च्छिन्ना माया मायाहरप्रिया ॥ ४५ ॥ सुन्दरी त्रिपुरा
भव्या त्रिपुरेश्वरवासिनी ॥ त्रिपुरनाशिनी देवी त्रिपुरप्राणहारिणी ॥ ४६ ॥ भैरवी भैरवस्था च भैरवस्य प्रिया तनुः ॥ भवांगी भैरवा
कारी भैरवप्रियवल्लभा ॥ ४७ ॥ कालदा कालरात्रिश्च कामा कात्यायनी क्रिया ॥ क्रियदा क्रियहा क्लैब्या प्रियप्राणक्रिया तथा ॥
॥ ४८ ॥ क्रींकारी कमला लक्ष्मीः शक्तिः स्वाहा विभुः प्रभुः ॥ प्रकृतिः पुरुषश्चैव पुरुषा पुरुषाकृतिः ॥ ४९ ॥ परमः पुरुष
श्चैव माया नारायणी मतिः ॥ ब्राह्मी महेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा ॥ ५० ॥ वाराही चैव चामुण्डा इन्द्राणी हरवल्लभा ॥
भार्गी माहेश्वरी कृष्णा कात्यायन्यपि पूतना ॥ ५१ ॥ राक्षसी डाकिनी चित्रा विचित्रा विभ्रमा तथा ॥ हाकिनी राकिनी भीता
गंधर्वा गंधवाहिनी ॥ ५२ ॥ केकरी कोटराक्षी च निर्मांसा लूकमांसिका ॥ ललजिह्वा सुजिह्वा च बालदा बालदायिनी ॥ ५३ ॥
चन्द्रा चन्द्रप्रभा चान्द्री चन्द्रकांतिसुतत्परा ॥ अमृता मानदा पूषा तुष्टिः पुष्टी रतिर्धृतिः ॥ ५४ ॥ शशिनी चन्द्रिका कांतिर्ज्योत्स्ना
श्रीः प्रीतिरंगदा ॥ पूर्णा पूर्णामृता कल्पलतिका कल्पदानदा ॥ ५५ ॥ सुकल्पा कल्पहस्ता च कल्पवृक्षकरी हनुः ॥ कल्पाख्या
कल्पभव्या च कल्पानन्दकवन्दिता ॥ ५६ ॥ सूचीमुखी प्रेतमुखी उल्कामुखी महामुखी ॥ उग्रमुखी च सुमुखी काकास्या
विकटानना ॥ ५७ ॥ कृकलास्या च संध्यास्या मुकुलीशा रमाकृतिः ॥ नानामुखी च नानास्था नानारूपप्रधारिणी ॥ ५८ ॥
विश्वार्च्या विश्वमाता च विश्वाख्या विश्वभाविनी ॥ सूर्य्या सूर्य्यप्रभा शोभा सूर्य्यमण्डलसंस्थिता ॥ ५९ ॥ सूर्य्यकांतिः सूर्य्यकरा

सूर्य्याख्या सूर्य्यभावना ॥ तपिनी तापिनी धूम्रा मरीचिर्ज्वालिनी रुचिः ॥ ६० ॥ सुरदा भोगदा विश्वा बोधिनी धारिणी क्षमा ॥ युगदा योगहा योग्या योग्यहा योगवर्द्धिनी ॥ ६१ ॥ वह्निमण्डलसंस्था च वह्निमण्डलमध्यगा ॥ वह्निमण्डलरूपा च वह्निमण्डल संज्ञका ॥ ६२ ॥ वह्नितेजा वह्निरागा वह्निदा वह्निनाशिनी ॥ वह्निक्रिया वह्निभुजा कला वह्निस्थिता सदा ॥ ६३ ॥ धूम्रार्चिषा चोज्ज्वलिनी तथा वै विस्फलिंगिनी ॥ शूलिनी वै स्वरूपा च कपिला हव्यवाहिनी ॥ ६४ ॥ नानातेजस्विनी देवी परब्रह्मकुटु म्बिनी ॥ ज्योतिर्ब्रह्ममयी देवी परब्रह्मस्वरूपिणी ॥ ६५ ॥ परमात्मा परा पुण्या पुण्यदा पुण्यवर्द्धिनी ॥ पुण्यदा पुण्यनाम्नी च पुण्यगंधा प्रिया तनुः ॥ ६६ ॥ पुण्यदेहा पुण्यकरा पुण्यनिन्दकनिन्दका ॥ पुण्यकालकरा पुण्या सुपुण्या पुण्यमालिका ॥ ६७ ॥ पुण्यखेला पुण्यकेली पुण्यनामसमा पुरा ॥ पुण्यसेव्या पुण्यखेल्या पुराणपुण्यवल्लभा ॥ ६८ ॥ पुरुषा पुरुषप्राणा पुरुषात्मस्वरू पिणी ॥ पुरुषांगी च पुरुषी पुरुषस्य कला सदा ॥ ६९ ॥ सुपुष्पा पुष्पकप्राणा पुष्पहा पुष्पवल्लभा ॥ पुष्पप्रिया पुष्पहारा पुष्प वन्दकवन्दका ॥ ७० ॥ पुष्पहा पुष्पमाला च पुष्पनिन्दकनाशिनी ॥ नक्षत्रप्राणहंत्री च नक्षत्रालक्ष्यवन्दका ॥ ७१ ॥ लक्षमाल्यां लक्षहारा लक्ष्यालक्ष्यस्वरूपिणी ॥ नक्षत्राणी सुनक्षत्रा नक्षत्राहा महोदया ॥ ७२ ॥ महामाल्या महामान्या महती मातृपूजिता ॥ महामहाकनीया च महाकालेश्वरी महा ॥ ७३ ॥ महास्या वन्दनीया च महाशब्दनिवासिनी ॥ महाशंखेश्वरी मीना मत्स्यगंधा महो दरी ॥ ७४ ॥ लम्बोदरी च लम्बोष्ठी लम्बनिम्नतनूदरी ॥ लम्बोष्ठी लम्बनासा च लम्बघोणा ललत्सुका ॥ ७५ ॥ अति लम्बा महालम्बा सुलम्बा लम्बवाहिनी ॥ लम्बार्हा लम्बशक्तिश्च लम्बस्था लम्बपूर्विका ॥ ७६ ॥ चतुर्घण्टा महाघण्टा घण्टानाद प्रिया सदा ॥ वाद्यप्रिया वाद्यरता सुवाद्या वाद्यनाशिनी ॥ ७७ ॥ रमा रामा सुबाला च रमणीयस्वभाविनी ॥ सुरम्या रम्यदा रम्भा रम्भोरू रामवल्लभा ॥ ७८ ॥ कामप्रिया कामकरा कामांगी रमणी रतिः ॥ रतिप्रिया रतिरती रतिसेव्या रतिप्रिया ॥ ७९ ॥ सुरभिः सुरभीशोभा दिक्शोभाऽशुभनाशिनी ॥ सुशोभा च महाशोभाऽतिशोभा प्रेततापिनी ॥ ८० ॥ लोभिनी च महालोभा सुलोभा

लोभवर्द्धिनी ॥ लोभांगी लोभवंद्या च लोभाढ्ढी लोभवासका ॥ ८१ ॥ लोभप्रिया महालोभा लोभनिन्दकनिन्दका ॥ लोभांग
वासिनी गंधा विगंधा गंधनाशिनी ॥८२ ॥ गंधाङ्गी गंधपुष्टा च सुगंधा प्रेमगंधिका ॥ दुर्गंधा पूतिगंधा च विगंधा चातिगंधिका ॥ ८३ ॥
पद्मांतिका पद्मवहा पद्मप्रियप्रियंकरी ॥ पद्मनिन्दकनिन्दा च पद्मसंतोषवाहना ॥ ८४ ॥ रक्तोत्पलवरा देवी रक्तोत्पलप्रिया
सदा ॥ रक्तोत्पलसुगंधा च रक्तोत्पलनिवासिनी ॥ ८५ ॥ रक्तोत्पलमहामाला रक्तोत्पलमनोहरा ॥ रक्तोत्पलसुनेत्रा च रक्तोत्पल
स्वरूपधृक् ॥ ८६ ॥ वैष्णवी विष्णुपूज्या च वैष्णवांगनिवासिनी ॥ विष्णुपूजकपूज्या च वैष्णवे संस्थिता तनुः ॥ ८७ ॥
नारायणस्य देहस्था नारायणमनोहरा ॥ नारायणस्वरूपा च नारायणमनःस्थिता ॥ ८८ ॥ नारायणांगसंभूता नारायणप्रिया तनुः ॥
नारी नारायणी गण्या नारायणगृहप्रिया ॥ ८९ ॥ हरपूज्या हरश्रेष्ठा हरस्य वल्लभा क्षमा ॥ संहारी हरदेहस्था हरपूजनतत्परा ॥
॥ ९० ॥ हरदेहसमुद्भूता हरांगवासिनी कुहूः ॥ हरपूजकपूज्या च हरवन्दकतत्परा ॥ ९१ ॥ हरदेहसमुत्पन्ना हरक्रीडासदागतिः ॥
सुगणा संगरहिता असंगा संगनाशिनी ॥ ९२ ॥ निर्जना विजना दुर्गा दुर्गक्लेशनिवारिणी ॥ दुर्गदेहांतका दुर्गारूपिणी दुर्गतस्थिता ॥
॥ ९३ ॥ प्रेतप्रिया प्रेतकरा प्रेतदेहसमुद्भवा ॥ प्रेतांगवासिनी प्रेता प्रेतदेहविमर्द्दिका ॥ ९४ ॥ डाकिनी योगिनी कालरात्रिः
कालप्रिया सदा ॥ कालरात्रिहरा काली कृष्णदेहा महातनुः ॥ ९५ ॥ कृष्णांगी कुटिलांगी च वज्रांगी वज्ररूपधृक् ॥ नाना
देहधरा धन्या षट्चक्रक्रमवासिनी ॥ ९६ ॥ मूलाधारनिवासा च मूलाधारस्थिता सदा ॥ वायुरूपा महारूपा वायुमार्गनिवा
सिनी ॥ ९७ ॥ वायुयुक्ता वायुकरा वायुपूरकपूरका ॥ वायुरूपधरा देवी सुषुम्नामार्गगामिनी ॥ ९८ ॥ देहस्था देहरूपा च
देहध्येया सुदेहिका ॥ नाडीरूपा महीरूपा नाडीस्थाननिवासिनी ॥ ९९ ॥ इडा च पिंगला चैव सुषुम्नामध्यवासिनी ॥ सदाशिव
प्रियकरी मूलप्रकृतिरूपधृक् ॥ १०० ॥ अमृतेशी महाशाली शृंगारांगनिवासिनी ॥ उत्पत्तिस्थितिसंहारप्रलया पदवासिनी ॥
॥ १०१ ॥ महाप्रलययुक्ता च सृष्टिसंहारकारिणी ॥ स्वधा स्वाहा हव्यवाहा हव्या हव्यप्रिया सदा ॥ १०२ ॥ हव्यस्था हव्य

भक्षा च हव्यदेहसमुद्भवा ॥ हव्यक्रीडा कामधेनुस्वरूपा रूपसम्भवा ॥ १०३ ॥ सुरभिर्नन्दिनी पुण्या यज्ञांगी यज्ञसम्भवा । यज्ञस्था यज्ञदेहा च योनिजा योनिवासिनी ॥ १०४ ॥ अयोनिजा सती सत्या असती कुटिला तनुः ॥ अहल्या गौतमी गम्या विदेहा देहनाशिनी ॥ १०५ ॥ गांधारी द्रौपदी दूती शिवप्रिया त्रयोदशी ॥ पौर्णमासी पञ्चदशी पञ्चमी च चतुर्दशी ॥ १०६ ॥ षष्ठी च नवमी चैव अष्टमी दशमी तथा ॥ एकादशी द्वादशी च द्वाररूपाऽभयप्रदा ॥ १०७ ॥ संक्रांतिः सामरूपा च कुलीना कुलनाशिनी ॥ कुलकांता कृशा कुम्भा कुम्भदेहविवर्द्धिनी ॥ १०८ ॥ विनीता कुलवत्यर्था अंतरी चानुगाप्युषा ॥ नदीसागरदा शांतिः शांतिरूपा सुशांतिका ॥ १०९ ॥ आशा तृष्णा क्षुधा क्षोभ्या क्षोभरूपनिवासिनी ॥ गङ्गासागरगा कांतिः श्रुतिः स्मृतिर्धृतिर्मही ॥ ॥ ११० ॥ दिवा रात्रिः पंचभूतदेहा चैव सुदेहिका ॥ तण्डुला च्छिन्नमस्ता च नागयज्ञोपवीतिनी ॥ १११ ॥ वर्णिनी डाकिनी शक्तिः कुरुकुल्ला सुकुल्लका ॥ प्रत्यंगिराऽपरा देवी अजिता जयदायिनी ॥ ११२ ॥ जया च विजया चैव महिषासुरघातिनी ॥ मधुकैटभहंत्री च चण्डमुण्डविनाशिनी ॥ ११३ ॥ निशुंभशुंभहननी रक्तबीजक्षयंकरी ॥ काशी काशीनिवासा च मधुरा पार्वती परा ॥ ११४ ॥ अपर्णा चण्डिका देवी मृडानी चाम्बिका कला ॥ शुक्ला कृष्णा वर्ण्यवर्णा शरदिन्दुकलाकृतिः ॥ ११५ ॥ रुक्मिणी राधिका चैव भैरव्याः परिकीर्तितम् ॥ अष्टाधिकसहस्रं तु देवीनामानुकीर्त्तनात् ॥ ११६ ॥ महापातकयुक्तोऽपि मुच्यते नात्र संशयः ॥ ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वङ्गनागमः ॥ ११७ ॥ महापातककोटयस्तु तथा चैवोपपातकम् ॥ स्तोत्रेण भैरवोक्तेन सर्वं नश्यति तत्क्षणात् ॥ ११८ ॥ सर्वं वा श्लोकमेकं वा पठनात्स्मरणादपि ॥ पठेद्वा पाठयेद्वापि सद्यो मुच्येत बन्धनात् ॥ ११९ ॥ राजद्वारे रणे दुर्गे संकटे गिरिदुर्गमे ॥ प्रांतरे पर्वते वापि नौकायां वा महेश्वरि ॥ १२० ॥ वह्निदुर्गभये प्राप्ते सिंहव्याघ्रभयाकुले ॥ पठनात् स्मरणान्मर्त्यो मुच्यते सर्वसंकटात् ॥ १२१ ॥ अपुत्रो लभते पुत्रं दरिद्रो धनवान्भवेत् ॥ सर्वशास्त्रपरो विप्रः सर्वयज्ञफलं लभेत् ॥ १२२ ॥ अग्निवायुजलस्तंभं गतिस्तंभं विवस्वतः ॥ मारणे द्वेषणे चैव तथोच्चाटे महेश्वरि ॥ १२३ ॥ गोरोचनाकुंकुमेन

लिखेत्स्तोत्रमनन्यधीः ॥ गुरुणा वैष्णवैर्वापि सर्वयज्ञफलं लभेत् ॥ १२४ ॥ वशीकरणमंत्रैर्वा जायंते सर्वसिद्धयः ॥ प्रातःकाले शुचि भूत्वा मध्याह्ने च निशामुखे ॥ १२५ ॥ पठेद्वा पाठयेद्वापि सर्वयज्ञफलं लभेत् ॥ वादी मूको भवेद्दुष्टो राजा च सेवको यथा ॥ १२६ ॥ आदित्यमंगलदिने गुरौ वापि महेश्वरि ॥ गोरोचनाकुंकुमेन लिखेत्स्तोत्रमनन्यधीः ॥ १२७ ॥ धृत्वा सुवर्णमध्यस्थं सर्वान् कामानवाप्नुयात् ॥ स्त्रीभिर्वामकरे धार्य्यं पुंभिर्दक्षकरे तथा ॥ १२८ ॥ आदित्यमंगलदिने गुरौ वापि महेश्वरि ॥ शनैश्चरे लिखेद्वापि सर्वसिद्धिं लभेद्ध्रुवम् ॥ १२९ ॥ प्रांतरे वा श्मशाने वा निशायामर्द्धरात्रके ॥ शून्यागारे च देवेशि लिखेद्यत्नेन साधकः ॥ ॥ १३० ॥ सिंहराशौ गुरुगते कर्कटस्थे दिवाकरे ॥ मीनराशौ गुरुगते लिखेद्यत्नेन साधकः ॥ १३१ ॥ रजस्वलाभगं दृष्ट्वा तत्रस्थो विलिखेत्सदा ॥ सुगंधिकुसुमैः शुक्लैः सुगन्धिगंधचन्दनैः ॥ १३२ ॥ मृगनाभिमृगमदैर्विलिखेद्यत्नपूर्वकम् ॥ लिखित्वा च पठित्वा च धारयेच्चाप्यनन्यधीः ॥ १३३ ॥ कुमारीं पूजयित्वा च नारीश्चापि प्रपूजयेत् ॥ पूजयित्वा च कुसुमैर्गंधचन्दनवस्त्रकैः ॥ ॥ १३४ ॥ सिंदूररक्तकुसुमैः पूजयेद्भक्तियोगतः ॥ अथवा पूजयेद्देवि कुमारीर्दश नान्यधीः ॥ १३५ ॥ सर्वाभीष्टफलं तत्र लभते तत्क्षणादपि ॥ नात्र सिद्ध्याद्यपेक्षास्ति न वा मित्रारिदूषणम् ॥ १३६ ॥ न विचार्य्यं च देवेशि जपमात्रेण सिद्धिदम् ॥ सर्वदा सर्वकालेषु षट्साहस्रप्रमाणतः ॥ १३७ ॥ बालिं दत्त्वा विधानेन प्रत्यहं पूजयेच्छिवाम् ॥ स्वयंभूकुसुमैः पुष्पैर्बलिदानं दिवानिशम् ॥ ॥ १३८ ॥ पूजयेत्पार्वतीं देवीं भैरवीं त्रिपुरात्मिकाम् ॥ ब्राह्मणान्भोजयेन्नित्यं दश वा द्वादशं तथा ॥ १३९ ॥ अनेन विधिना देवि बालां नित्यं प्रपूजयेत् ॥ मासमेकं पठेद्यस्तु त्रिसंध्यं विधिनाऽमुना ॥ १४० ॥ अपुत्रो लभते पुत्रं निर्द्धनो धनवान्भवेत् ॥ सदा चानेन विधिना तथा मासत्रयेण च ॥ १४१ ॥ कृतकार्यो भवेद्देवि तथा मासचतुष्टये ॥ दीर्घरोगात्प्रमुच्येत पञ्चमे कविराड् भवेत् ॥ ॥ १४२ ॥ सर्वैश्वर्य्यं लभेद्देवि मासषट्के तथैव च ॥ सप्तमे खेचरत्वं च अष्टमे च बृहद्द्युतिः ॥ १४३ ॥ नवमे सर्वसिद्धिः स्याद्दशमे लोकपूजितः ॥ एकादशे राजवश्यो द्वादशे तु पुरन्दरः ॥ १४४ ॥ वारमेकं पठेद्यस्तु प्राप्नुयात् पूजने फलम् ॥ समग्रं श्लोकमेकं

८२

वा यः पठेत्प्रयतः शुचिः ॥ १४५ ॥ स पूजाफलमाप्नोति भैरवेण च भाषितम् ॥ आयुष्मत्प्रीतियोगे च ब्राह्मैन्द्रे च विशेषतः ॥ १४६ ॥ पंचम्यां च तथा षष्ठ्यां यत्र कुत्रापि तिष्ठति ॥ शंका न विद्यते तत्र न च मायादिदूषणम् ॥ १४७ ॥ वारमेकं पठेन्मर्त्यो मुच्यते सर्वसंकटात् ॥ किमन्यद्बहुना देवि सर्वाभीष्टफलं भवेत् ॥१४८॥ इति श्रीविश्वसारे महाकालविरचितं श्रीमत्त्रिपुरभैरवीसहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम्॥

अथ भैरवीस्तवराजप्रारंभः ॥ ब्रह्मादयः स्तुतिशतैरपि सूक्ष्मरूपं जानंति नैव जगदादिमनादिमूर्तिम् ॥ तस्माद्वयं कुचनतां नवकुंकुमाभां स्थूलां स्तुमः सकलवाङ्मयमातृभूताम् ॥ १ ॥ सद्यः समुद्यतसहस्रदिवाकराभां विद्याक्षसूत्रवरदाभयचिह्नहस्ताम् ॥ नेत्रोत्पलैस्त्रिभिरलंकृतवक्त्रपद्मां त्वां तारहाररुचिरां त्रिपुरे भजामः ॥ २ ॥ सिंदूरपूररुचिरं कुचभारनम्रं जन्मांतरेषु कृतपुण्यफलैकगम्यम् ॥ अन्योन्यभेदकलहाकुलमानसास्ते जानंति किं जडधियस्तवरूपमंब ॥ ३ ॥ स्थूलां वदंति मुनयः श्रुतयो गृणंति सूक्ष्मां वदंति वचसामधिवासमन्ये ॥ त्वां मूलमाहुरपरे जगतां भवानि मन्यामहे वयमपारकृपांबुराशिम् ॥ ४ ॥ चन्द्रावतंसकलितां शरदिंदुशुभ्रां पंचाशदक्षरमयीं हृदि भावयंतीम् ॥ त्वां पुस्तकं जपवटीममृताम्बुकुंभं व्याख्यां च हस्तकमलैर्दधतीं त्रिनेत्राम् ॥ ५ ॥ शंभुस्त्वमद्रितनयाकलितार्द्धभागो विष्णुस्त्वमंब कमलापरिरब्धदेहः ॥ पद्मोद्भवस्त्वमपि वागधिवासभूमिस्तेषां क्रियाश्च जगति त्रिपुरे त्वमेव ॥ ६ ॥ आश्रित्य वाग्भवभवांश्चतुरः परादीन् भावान्पदेषु विहितान्समुदीरयंतीम् ॥ कंठादिभिश्च करणैः परदेवतां त्वां संविन्मयीं हृदि कदापि न विस्मरामि ॥ ७ ॥ आकुंच्य वायुमवजित्य च वैरिषट्कमालोक्य निश्चलधिया निजनासिकाग्रम् ॥ ध्यायंति मूर्ध्नि कलितेंदुकलावसंतं त्वद्रूपमंब कृतिनस्तरुणार्कमित्रम् ॥ ८ ॥ त्वं प्राप्य मन्मथरिपोर्वपुरर्द्धभागं सृष्टिं करोषि जगतामिति वेदवादः ॥ सत्यं तदद्रितनये जगदेकमातर्नो चेदशेषजगतः स्थितिरेव न स्यात् ॥ ९ ॥ पूजां विधाय कुसुमैः सुरपादपानां पीठे तवाम्ब कनकाचलगह्वरेषु ॥ गायंति सिद्धवनिताः सह किंनरीभिरास्वादितासवरसारुणनेत्रपद्माः ॥ १० ॥ विद्युद्विलासवपुषः श्रियमुद्वहंतीं यांतीं स्ववासभवनाच्छिवराजधानीम् ॥ सौषुम्नवर्त्मकमलानि विकासयंतीं देवीं भजे हृदि परामृतसिक्तगात्राम् ॥ ११ ॥ आनंदजन्मभवनं भवनं श्रुतीनां

चैतन्यमात्रतनुमंब तवाश्रयामि ॥ ब्रह्मेशविष्णुभिरुपासितपादपद्मां सौभाग्यजन्मवसतिं त्रिपुरे यथावत् ॥ १२ ॥ शब्दार्थभावि भवनं सृजतीन्दुरूपा या तद्बिभर्ति पुनरर्कतनुः स्वशक्त्या ॥ ब्रह्मात्मिका हरति तत्सकलं युगांते तां शारदां मनसि जातु न विस्मरामि ॥१३॥ नारायणीति नरकार्णवतारिणीति गौरीति खेदशमनीति सरस्वतीति ॥ ज्ञानप्रदेति नयनत्रयभूषितेति त्वामद्रिराजतनये बहुधा वदंति ॥ ॥ १४ ॥ ये स्तुवंति जगन्मातः श्लोकैर्द्वादशभिः क्रमात् ॥ त्वामनुप्राप्य वाक्सिद्धिं प्राप्नुयुस्ते नराः श्रियम् ॥ १५ ॥ इति रुद्रयामले भैरवीस्तोत्रं समाप्तम् ॥ अथ भैरव्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रप्रारंभः ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ कैलासवासिन्भगवन्प्राणेश्वर कृपानिधे ॥ भक्तवत्सल भैरव्या नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥ १ ॥ न श्रुतं देवदेवेश वद मां दीनवत्सल ॥ श्रीशिव उवाच ॥ शृणु प्रिये महागोप्यं नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥ २ ॥ भैरव्याः शुभदं सेव्यं सर्वसम्पत्प्रदायकम् ॥ यस्यानुष्ठानमात्रेण किं न सिद्ध्यति भूतले ॥ ३ ॥ ॐ भैरवी भैरवाराध्या भूतिदा भूतभावना ॥ कार्य्या ब्राह्मी कामधेनुः सर्वसम्पत्प्रदायिनी ॥ ४ ॥ त्रैलोक्यवन्दिता देवी महिषासुरमर्दिनी ॥ मोहघ्नी मालतीमाला महापातकनाशिनी ॥ ५ ॥ क्रोधिनी क्रोधनिलया क्रोधरक्तेक्षणा कुहूः ॥ त्रिपुरा त्रिपुराधारा त्रिनेत्रा भीमभैरवी ॥ ६ ॥ देवकी देवमाता च देवदुष्टविनाशिनी ॥ दामोदरप्रिया दीर्घा दुर्गा दुर्गतिनाशिनी ॥ ॥ ७ ॥ लम्बोदरी लम्बकर्णा प्रलम्बितपयोधरा ॥ प्रत्यंगिरा प्रतिपदा प्रणतक्लेशनाशिनी ॥ ८ ॥ प्रभावती गुणवती गणमाता गुहेश्वरी ॥ क्षीराब्धितनया क्षेम्या जगत्त्राणविधायिनी ॥ ९ ॥ महामारी महामोहा महाक्रोधा महानदी ॥ महापातकसंहर्त्री महामोहप्रदायिनी ॥ १० ॥ विकराला महाकाला कालरूपा कलावती ॥ कपालखट्वांगधरा खड्गखर्परधारिणी ॥ ॥ ११ ॥ कुमारी कुंकुमप्रीता कुंकुमारुणरंजिता ॥ कौमोदकी कुमुदिनी कीर्त्या कीर्तिप्रदायिनी ॥ १२ ॥ नवीना नीरदा नित्या नन्दिकेश्वरपालिनी ॥ घर्घरा घर्घरारावा घोरा घोरस्वरूपिणी ॥ १३ ॥ कलिघ्नी कलिधर्मघ्नी कलिकौतुकनाशिनी ॥ किशोरी केशवप्रीता क्लेशसंघनिवारिणी ॥ १४ ॥ महोत्तमा महामत्ता महाविद्या महीमयी ॥ महायज्ञा महावाणी महामन्दरधारिणी ॥ १५ ॥

मोक्षदा मोहदा मोहा भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी ॥ अट्टाट्टहासनिरता क्वणन्नूपुरधारिणी ॥ १६ ॥ दीर्घदंष्ट्रा दीर्घमुखी दीर्घघोणा च दीर्घिका ॥ दनुजांतकरी दुष्टा दुःखदारिद्र्यभंजिनी ॥ १७ ॥ दुराचारा च दोषघ्नी दमपत्नी दयापरा ॥ मनोभवा मनुमयी मनुवंशप्रवर्द्धिनी ॥ १८ ॥ श्यामा श्यामतनुः शोभा सौम्या शम्भुविलासिनी ॥ इति ते कथितं दिव्यं नाम्नामष्टोत्तर शतम् ॥ १९ ॥ भैरव्या देवदेवेश्यास्तव प्रीत्यै सुरेश्वरि ॥ अप्रकाश्यमिदं गोप्यं पठनीयं प्रयत्नतः ॥ २० ॥ देवीं ध्यात्वा सुरां पीत्वा मकारपञ्चकैः प्रिये ॥ पूजयेत्सततं भक्त्या पठेत्स्तोत्रमिदं शुभम् ॥ २१ ॥ षण्मासाभ्यंतरे सोऽपि गणनाथसमो भवेत् ॥ किमत्र बहुनोक्तेन त्वदग्रे प्राणवल्लभे ॥ २२ ॥ सर्वं जानासि सर्वज्ञे पुनर्मां परिपृच्छसि ॥ न देयं पराशिष्येभ्यो निन्दकेभ्यो विशेषतः ॥ २३ ॥ इति श्रीभैरव्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे मध्यखण्डे त्रिपुरभैरवीतंत्रेऽष्टमस्तरंगः ॥ ८ ॥

|| श्रीगणेशाय नमः || अथ छिन्नमस्तातंत्रप्रारंभः || तत्रादौ सप्तदशाक्षरमंत्र प्रयोगः || मंत्रो यथा मंत्रमहोदधौ–ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा || इति सप्तदशाक्षरो मंत्रः। अस्य विधानम्–अस्य शिरश्छिन्नामंत्रस्य भैरवऋषिः। सम्राट् छंदः। छिन्नमस्ता देवता। ह्रींकारद्वयं बीजम्। स्वाहाशक्तिः। अभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः। ॐ भैरवऋषये नमः शिरसि १। सम्राट्छंदसे नमः मुखे २। छिन्नमस्तादेवतायै नमः हृदये ३। ह्रींह्रींबीजाय नमो गुह्ये ४। स्वाहाशक्तये नमः पादयोः ५। विनियोगाय नमः सर्वांगे ६ || इति ऋष्यादि न्यासः || ॐ आं खड्गाय स्वाहा अंगुष्ठयोः १। ॐ ईं सुखड्गाय स्वाहा तर्जन्योः २। ॐ ऊं वज्राय स्वाहा मध्यमयोः ३। ॐ ऐं पाशाय स्वाहा अनामिकयोः ४। ॐ औं अंकुशाय स्वाहा कनिष्ठयोः ५। ॐ अः सुरक्षरक्ष ह्रीं ह्रीं स्वाहा करतलकरयोः ६ || इति करन्यासः || ॐ आं खड्गाय हृदयाय नमः स्वाहा १। ॐ ईं सुखड्गाय शिरसे स्वाहा २। ॐ ऊं वज्राय शिखायै वषट् स्वाहा ३। ॐ ऐं पाशाय कवचाय हुं स्वाहा ४।


छिन्नमस्तादेव्यै नमः।

ॐ औं अंकुशाय नेत्रत्रयाय वौषट् स्वाहा ५। ॐ अः सुरक्षरक्ष ह्रीं ह्रीं अस्त्राय फट् स्वाहा ६|| इति हृदयादिषडंगन्यासः ||ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं ऐं

१ तंत्रांतरेऽपि–लक्ष्मीः प्रथमबीजेऽस्ति लज्जाबीजे मनोभवः || तृतीयेऽस्मिन् सदा देवी महापातकनाशिनी || १|| चतुर्थे तु गुणातीता मुक्तिविद्याप्रदायिका || नकारे वरुणः साक्षाज्जकारे तु सुराधिपः || २ || रेफे हुताशनो देवो वकारे वसुधाधिपः || ऐकारे त्रिपुरा देवी रेफे त्रिपुरसुन्दरी||३||त्रैलोक्यविजया देवी सदैवोकारसंस्थिता || चकारे चन्द्रमा देवो नकारे हि विनायकः || ४ ईकारे कमला साक्षाद्यकारे च सरस्वती || मायायुग्मे सदा देवी प्रकृत्या सह संगता ||५|| वैखरी चैव फट्कारे स्वाकारे कुसुमायुधः || हाकारे च रतिस्तिष्ठेदेवं मंत्रसमुच्चये || ६ || २ मंत्रमहोदधौ क्लींबीजाभावः || ३ अस्याः संन्यसनात्सर्वे वज्रदेहा भवंति हि || सर्वैश्वर्ययुतास्ते हि जीवन्मुक्ता दशान्ततः || १ ||

वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा मस्तकादिपादपर्यंतम् १। ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा पादादिमस्तकांतम् २ ॥ इति त्रिवारं न्यसेत् ॥ अथ ध्यानम्—ॐ भास्वन्मण्डलमध्यगां निजशिरश्छिन्नं विकीर्णालकं स्फारास्यं प्रपिबद्गलात्स्वरुधिरं वामे करे बिभ्रतीम् ॥ याभासक्तरतिस्मरोपरिगतां सख्यौ निजे डाकिनीवर्णिन्यौ परिदृश्य मोदकलितां श्रीछिन्नमस्तां भजे ॥ १ ॥ तंत्रांतरेऽपि—प्रत्यालीढपदां सदैव दधतीं छिन्नं शिरः कर्त्रिकां दिग्वस्त्रां स्वकबंधशोणितसुधाधारां पिबंतीं मुदा ॥ नागाबद्धशिरोमणिं त्रिनयनां हृद्युत्पलालंकृतां रत्यासक्तमनोभवोपरि दृढां ध्यायेज्जवासन्निभाम् ॥ १ ॥ दक्षे चातिसिता विमुक्तचिकुरा कर्त्री तथा खर्परं हस्ताभ्यां दधती रजोगुणभवा नाम्नापि सा वर्णिनी ॥ देव्याश्छिन्नकबंधतः पतदसृग्धारां पिबंती मुदा नागाबद्धशिरोमणिर्मनुविदा ध्येयः सदा सा सुरैः ॥ ॥ २ ॥ प्रत्यालीढपदा कबंधविगलद्रक्तं पिबंती मुदा सैषा या प्रलये समस्तभुवनं भोक्तुं क्षमा तामसी ॥ शक्तिः सापि परात्परा भगवती नाम्ना परा डाकिनी ध्येया ध्यानपरैः सदा सविनयं भक्तेष्टभूतिप्रदा ॥ ३ ॥ अन्यत्रापि—स्वनाभौ नीरजं ध्यायेदर्द्धं विकसितं सितम् ॥ तत्पद्मकोशमध्ये तु मण्डलं चण्डरोचिषः ॥ १ ॥ जपाकुसुमसंकाशं रक्तबन्धूकसन्निभम् ॥ रजःसत्त्वतमोरेखायोनिमण्डलमण्डितम् ॥ ॥ २ ॥ मध्ये तु तां महादेवीं सूर्य्यकोटिसमप्रभाम् ॥ छिन्नमस्तां करे वामे धारयंतीं स्वमस्तकम् ॥ ३ ॥ प्रसारितमुखीं देवीं लेलिहानाग्रजिह्विकाम् ॥ पिबंतीं रौधिरीं धारां निजकण्ठविनिर्गताम् ॥ ४ ॥ विकीर्णकेशपाशां च नानापुष्पसमन्विताम् ॥ दक्षिणे च करे कर्त्रीं मुण्डमालाविभूषिताम् ॥ ५ ॥ दिगम्बरां महाघोरां प्रत्यालीढपदे स्थिताम् ॥ अस्थिमालाधरां देवीं नागयज्ञोपवीतिनीम् ॥ ॥ ६ ॥ रतिकामोपरिष्ठां च सदा ध्यायंति मंत्रिणः ॥ सदा षोडशवर्षीयां पीनोन्नतपयोधराम् ॥ ७ ॥ विपरीतरतासक्तौ ध्यायेद्रतिमनोभवौ ॥ डाकिनीवर्णिनीयुक्तां वामदक्षिणयोगतः ॥ ८ ॥ देवीगलोच्छलद्रक्तधारापानं प्रकुर्वतीम् ॥ वर्णिनीं लोहितां सौम्यां मुक्तकेशीं दिगम्बराम् ॥ ९ ॥ कपालकर्त्रिकाहस्तां वामदक्षिणयोगतः ॥ नागयज्ञोपवीताढ्यां ज्वलत्तेजोमयीमिव ॥ १० ॥ प्रत्यालीढपदां दिव्यां नानालंकारभूषिताम् ॥ सदा द्वादशवर्षीयामस्थिमालाविभूषिताम् ॥ ११ ॥ डाकिनी वामपार्श्वे तु कल्पसूर्य्यानलो-

पमाम् ॥ विद्युज्जटां त्रिनयनां दंतपंक्तिबलाकिनीम् ॥ १२ ॥ दंष्ट्राकरालवदनां पीनोन्नतपयोधराम् ॥ महादेवीं महाघोरां मुक्तकेशीं दिगम्बराम् ॥ १३ ॥ लेलिहानमहाजिह्वां मुण्डमालाविभूषिताम् ॥ कपालकर्त्रिकाहस्तां वामदक्षिणयोगतः ॥ १४ ॥ देवीं गलोच्छलद्रक्तधारापानं प्रकुर्वतीम् ॥ करस्थितकपालेन भीषणेनातिभीषणाम् ॥ आभ्यां निषेवमाणां तां ध्यायेद्देवीं विचक्षणः ॥ ॥ १५ ॥ इति ध्यायेत्[1] ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले आधारशक्त्यादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य ' ॐ आं आधारशक्त्यादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति संपूज्याथवा पद्धतिमार्गेण स्वस्वनामभिः पूजयित्वा नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु ॐ जयायै नमः १ । ॐ विजयायै नमः २ । ॐ अजितायै नमः ३ । ॐ अपराजितायै नमः ४ । ॐ नित्यायै नमः ५ । ॐ विलासिन्यै नमः ६ । दोग्ध्र्यै नमः ७ । ॐ अघोरायै नमः ८ । मध्ये ॐ मंगलायै नमः ९ ॥ इति पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संप्रोञ्छ्य 'ॐ सर्वबुद्धिप्रदे वर्णनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकिनीये ॐ वज्रवैरोचनीये एह्येहि नमः ' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा' ॐ सर्वसिद्धिवर्णनीये सर्वसिद्धिडाकिनीये वज्रवैरोचनीये इहागच्छागच्छ पुनः मंत्रमुच्चार्य इह तिष्ठ इह संन्निधेहि इह सान्निरुध्यस्व' इत्यनेनावाह्य हूंकारबीजेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा प्रतिलोमक्रमेण[2] आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तथा च पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य–ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ॥ अनुज्ञां छिन्नके देहि परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत ॥ तथा च–भूपुराद्बहिः पूर्वादिक्रमेण ॐ वं वज्राय नमः १ । ॐ शं शक्तये नमः २ । ॐ दं दंडाय नमः ३ । ॐ खं खड्गाय नमः ४ । ॐ पां पाशाय नमः ५ ।

---

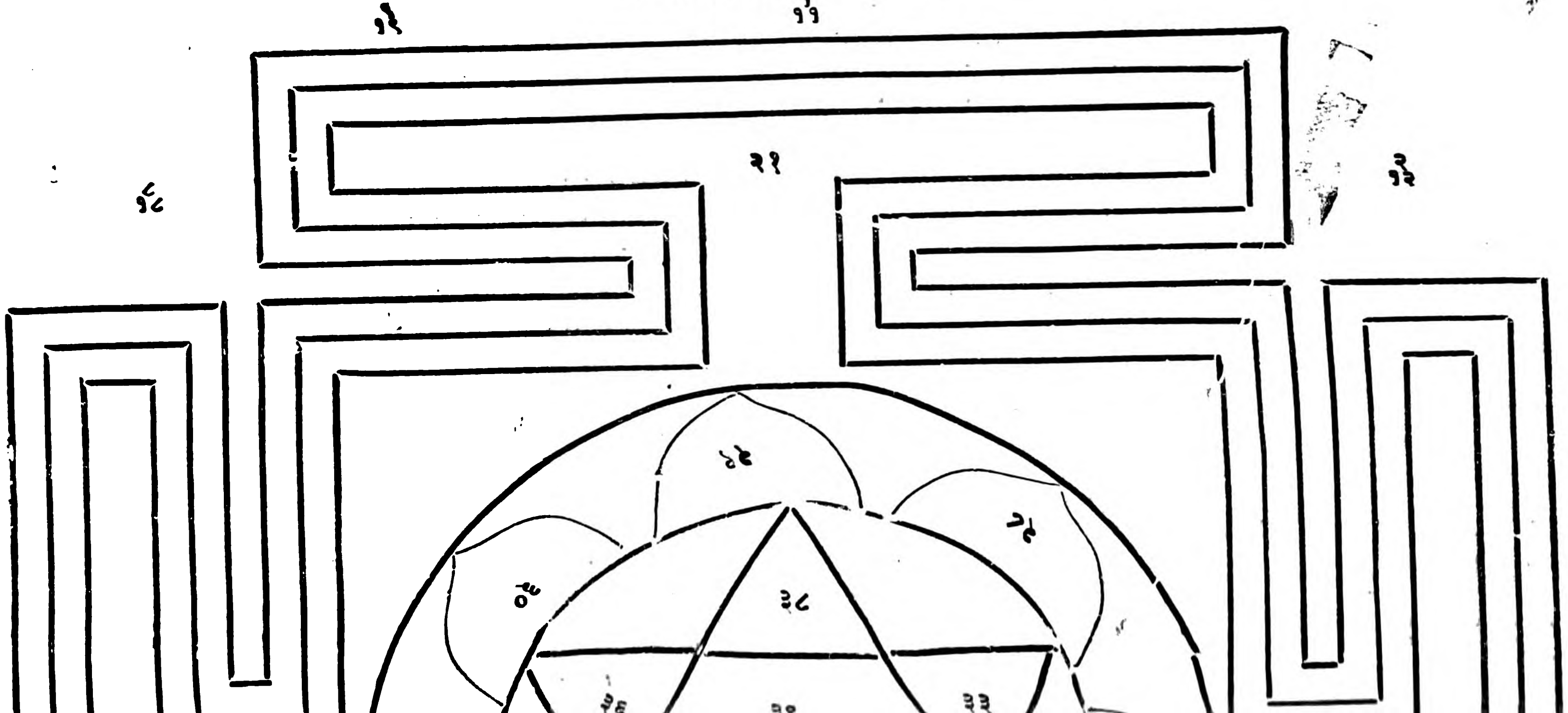
१ ध्यानस्यावश्यकत्वमाह–प्रचण्डचण्डिकामेवमध्यात्वा यस्तु पूजयेत् ॥ स्वयंस्तस्य शिरश्छित्वा देवी पिबति शोणितम् ॥ १ ॥ २–"बाह्यावरणमारभ्य पूजयेत्प्रतिलोमतः" इति मन्त्रमहोदधौ ॥

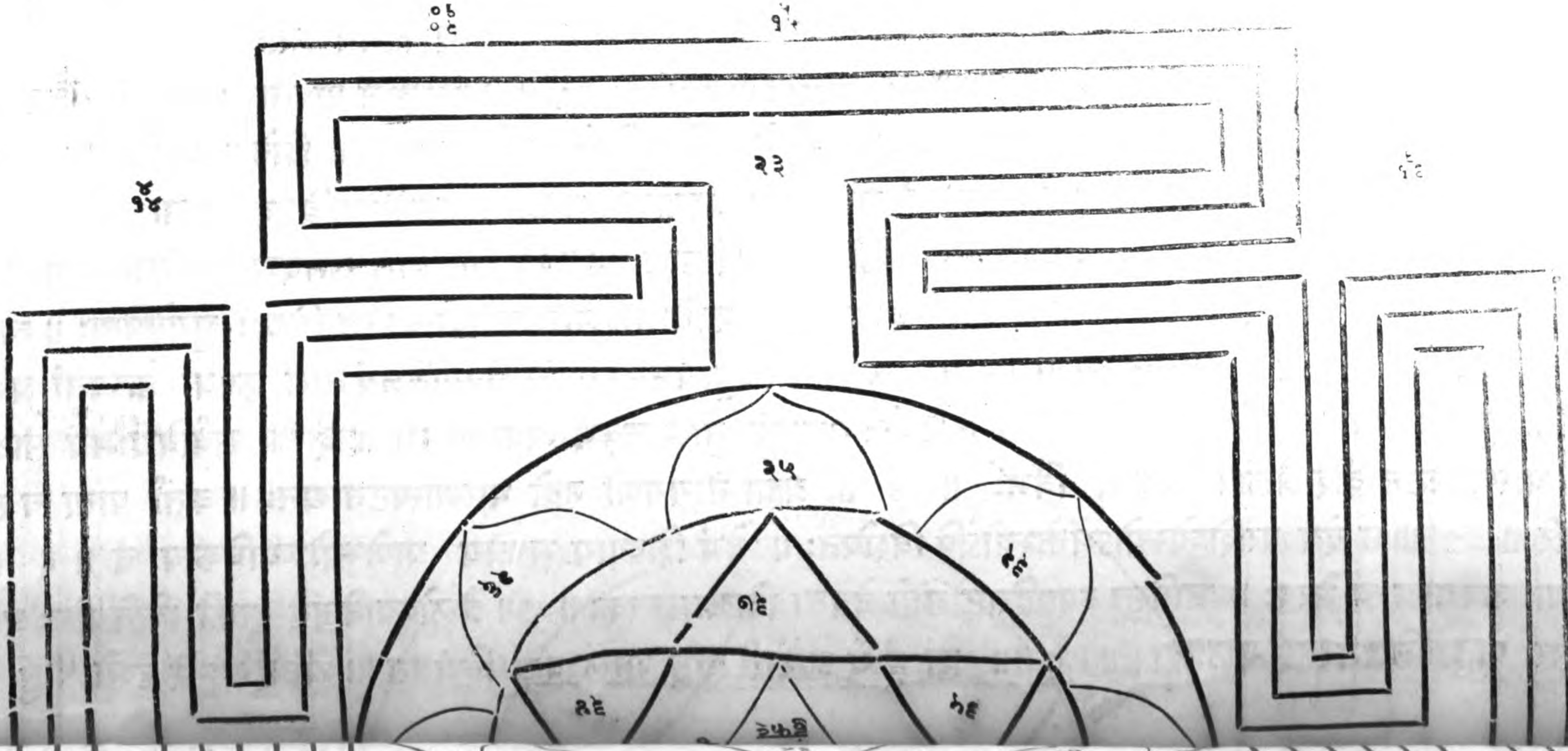
ॐ अं अंकुशाय नमः ६। ॐ गं गदायै नमः ७। ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ८। इन्द्रेशानयोर्मध्ये ॐ पं पद्माय नमः ९। वरुणनिर्ऋति मध्ये ॐ चं चक्राय नमः १०॥ इत्यस्त्राणि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य—ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥ १॥ इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा विशेषार्घ्याद्बिन्दुं निक्षिप्य पूजिता स्तर्पिताः संतु इति वदेत्॥ इति प्रथमावरणम्॥ १॥ तत्समीपे ॐ लं इन्द्राय नमः १। ॐ रं अग्नये नमः २। ॐ मं यमाय नमः ३। ॐ क्षं निर्ऋतये नमः ४। ॐ वं वरुणाय नमः ५। ॐ यं वायवे नमः ६। ॐ कुं कुबेराय नमः ७। ॐ हं ईशानाय नमः ८। ॐ आं ब्रह्मणे नमः ९। ॐ ह्रीं अनंताय नमः १०॥ इति दश दिग्पालान् पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्॥ इति द्वितीयावरणम्॥ ॥ २॥ ततो भूपुराभ्यंतरे चतुर्दिक्षु पूर्वादिक्रमेण ॐ करालाय नमः। करालश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र १। ॐ विकरालाय नमः। विकरालश्रीपा० २। ॐ अतिकरालाय नमः। अतिकरालश्रीपा० ३। ॐ महाकालाय नमः। महाकाल श्रीपा० ४॥ इति द्वारपालान् संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात्॥ इति तृतीयावरणम्॥ ३॥ ततोऽष्टदलेषु पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची तद नुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ॐ एकलिंगायै नमः। एकलिंगाश्रीपा० १। ॐ योगिन्यै नमः। योगिनी श्रीपा० २। ॐ डाकिन्यै नमः। डाकिनीश्रीपा० ३। भैरव्यै नमः। भैरवीश्रीपा० ४। ॐ महाभैरव्यै नमः। महाभैरवी श्रीपा० ५। ॐ इन्द्राक्ष्यै नमः। इन्द्राक्षीश्रीपा० ६। ॐ असितांग्यै नमः। असितांगीश्रीपा० ७। ॐ संहारिण्यै नमः। संहारिणीश्रीपा० ८॥ इत्यष्टौ शक्तीः पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्॥ इति चतुर्थावरणम्॥ ४॥ ततः षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च ॐ आं खड्गाय हृदयाय नमः स्वाहा हृदयश्रीपा० १। ॐ ईं सुखड्गाय शिरसे स्वाहौं शिरःश्रीपा० २। ॐ ऊं वज्राय शिखायै वषट् स्वाहौं शिखाश्रीपा० ३। ॐ ऐं पाशाय कवचाय हुं स्वाहौं कवचश्रीपा० ४। ॐ औं अंकशाय नेत्रत्रयाय वौषट् स्वाहौं नेत्रत्रयश्रीपा० ५। ॐ अः वसु रक्ष रक्ष ह्रीं ह्रीं अस्त्राय फट् स्वाहौं अस्त्रश्रीपा० ६॥

इति हृदयादिषडंगानि संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति पंचमावरणम् ॥ ५ ॥ ततस्त्रिकोणेषु ॐ ऐं छिन्नमस्तायै नमः छिन्नमस्ताश्रीपा० १ । देवीदक्षिणतः ॐ ऐं डाकिन्यै नमः । डाकिनीश्रीपा० २ । देवीवामे ॐ ऐं वर्णिन्यै नमः । वर्णिनीश्रीपा० ३ ॥ इति पूजयेत् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य "ॐ सर्वसिद्धिप्रदे वर्णिनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकिनीये वज्रवैरोचनीये एह्येहि इमं बलिं गृह्ण २ मम सिद्धिं देहि ह्रीं फट् स्वाहा" इति मंत्रेण मत्स्यमांसादिकैस्तु बलिं दत्त्वा अर्द्धरात्रे बलिं निवेद्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं चतुर्लक्षजपः । पलाशबिल्वपुष्पैः फलैर्वा दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्य्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च–ध्यात्वैवं प्रजपेल्लक्षचतुष्कं तद्दशांशतः ॥ पलाशैर्बिल्वजैर्वापि जुहुयात्कुसुमैः फलैः ॥ १ ॥ एवं पूजादिभिः सिद्धे मंत्रे मंत्री मनोरथान् ॥ प्राप्नुयान्निखिलान्सद्यो दुर्लभांस्तत्प्रसादतः ॥ २ ॥ श्रीपुष्पैर्लभते लक्ष्मीं तत्फलैः स्वसमीहितम् ॥ वाक्सिद्धिं मालतीपुष्पैश्चंपकैर्हवनात्सुखम् ॥ ३ ॥ घृताक्तं छागमांसं यो जुहुयात् प्रत्यहं शतम् ॥ मासमेकं तु वशगास्तस्य स्युः सर्वपार्थिवाः ॥ ४ ॥ करवीरस्य कुसुमैः श्वेतैर्लक्षं जुहोति यः ॥ रोगजालं पराभूय सुखी जीवेच्छतं समाः ॥ ५ ॥ रक्तैस्तत्संख्यया हुत्वा वशयेन्मंत्रिणो नृपान् ॥ फलैर्हुत्वाप्नुयाल्लक्ष्मीमुदुंबरपलाशजैः ॥ ६ ॥ गोमायुमांसैस्तामेव कवितां पायसांधसा ॥ बंधूककुसुमैर्भाग्यं कर्णिकारैः समीहितम् ॥ ७ ॥ तिलतंडुलहोमेन वशयेन्निखिलाञ्जनान् ॥ नारीरजोभिराकृष्टिर्मृगमांसैः समीहितम् ॥ ८ ॥ स्तंभनं माहिषैर्मांसैः पंकजैः सघृतैरपि ॥ चिताग्नौ परभृत्पक्षैर्जुहुयादरिमृत्यवे ॥ ९ ॥ उन्मत्तकाष्ठदीप्ताग्नौ तत्फलं वायसच्छदैः ॥ द्यूते वने नृपद्वारे समरे वैरिसंकटे ॥ १० ॥ विजयं लभते मंत्री ध्यायन्देवीं जपन्मनुम् ॥ भुक्तौ मुक्तौ सितां ध्यायेदुच्चारे नीलरोचिषम् ॥ ११ ॥ रक्तां वश्ये मृतौ धूम्रां स्तंभने कनक

१ रात्रौ बलिः प्रदातव्यो मत्स्यमांससुरादिभिः ॥ अथवा मधुपानार्थमधुरावभवक्रमः ॥ २ परभृत्कोकिलः । ३ उन्मत्तो धत्तूरः तत्काष्ठज्वलितेऽग्नौ काकपक्षैर्होमात्फलमरिमृत्युरेव स्यात् ।

छिन्नमस्तापूजनयन्त्रम् ।





प्रभाम् ॥ निशि दद्याद्बलिं तस्यै सिद्धये मदिरादिना ॥ १२ ॥ गोपनीयः प्रयोगोऽथ प्रोच्यते सर्वसिद्धिदः ॥ भूताहे कृष्णपक्षस्य मध्य रात्रे तमोघने ॥ १३ ॥ स्नात्वा रक्तांबरधरो रक्तमाल्यानुलेपनः ॥ आनीय पूजयेन्नारीं छिन्नमस्तास्वरूपिणीम् ॥ १४ ॥ सुंदरीं यौव नाक्रांतां नरपंचकगामिनीम् ॥ सस्मितां मुक्तकबरीं भूषादानप्रतोषिताम् ॥ १५ ॥ विवस्त्रां पूजयित्वैनामयुतं प्रजपेन्मनुम् ॥ बलिं दत्त्वा निशां नीत्वा संप्रेष्य धनतोषिताम् ॥ १६ ॥ भोजयेद्विविधैरन्नैर्ब्राह्मणान्देवताधिया ॥ अनेन विधिना लक्ष्मीं पुत्रान्पौत्रान्यशः सुखम् ॥ १७ ॥ नारीमायुश्चिरं धर्म्ममिष्टमन्यदवाप्नुयात् ॥ तस्यां रात्रौ व्रतं कार्य्यं विद्याकामेन मंत्रिणा ॥ १८ ॥ मनोरथेषु चान्येषु गच्छेत्तां प्रजपन्मनुम् ॥ किं बहूक्तेन विद्याया अस्या विज्ञानमात्रतः ॥ १९ ॥ शास्त्रज्ञानं पापनाशः सर्वसौख्यं भवेद् ध्रुवम् ॥ उषस्युत्थाय शय्यायामुपविष्टो जपेच्छतम् ॥ २० ॥ षण्मासाभ्यंतरे मंत्री कवित्वेन जयेत् कविम् ॥ शिवेन कीलिता विद्या तदुत्की लनमुच्यते ॥ २१ ॥ मायां तारपुटां मंत्री जप्यादष्टोत्तरं शतम् ॥ मंत्रस्यादौ तथैवांते भवेत्सिद्धिप्रदा तु सा ॥ २२ ॥ एष नूनं विधिर्गोप्यः सिद्धिकामेन मंत्रिणा ॥ उदिता छिन्नमस्तेयं कलौ शीघ्रमभीष्टदा ॥ २३ ॥ इति सप्तदशाक्षरीछिन्नमस्तामंत्रप्रयोगः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ छिन्नमस्ताकवचप्रारंभः ॥ देव्युवाच ॥ कथिताश्छिन्नमस्ताया या या विद्याः सुगोपिताः ॥ त्वया नाथेन जीवेश श्रुताश्चाधिगता मया ॥ १ ॥ इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं सर्वसूचितम् ॥ त्रैलोक्यविजयं नाम कृपया कथ्यतां प्रभो ॥ २ ॥ भैरव उवाच ॥ शृणु वक्ष्यामि देवेशि सर्वदेवनमस्कृते ॥ त्रैलोक्यविजयं नाम कवचं सर्वमोहनम् ॥ ३ ॥ सर्वविद्यामयं साक्षात्सुरासुर जयप्रदम् ॥ धारणात्पठनादीशस्त्रैलोक्यविजयी विभुः ॥ ४ ॥ ब्रह्मा नारायणो रुद्रो धारणात्पठनाद्यतः ॥ कर्ता पाता च संहर्ता भुव नानां सुरेश्वरि ॥ ५ ॥ न देयं परशिष्येभ्योऽभक्तेभ्योऽपि विशेषतः ॥ देयं शिष्याय भक्ताय प्राणेभ्योऽप्यधिकाय च ॥ ६ ॥ देव्याश्च च्छिन्नमस्तायाः कवचस्य च भैरवः ॥ ऋषिस्तु स्याद्विराट् छंदो देवता च्छिन्नमस्तका ॥ ७॥ त्रैलोक्यविजये मुक्तौ विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ हुंकारो मे शिरः पातु छिन्नमस्ता बलप्रदा ॥ ८ ॥ ह्रां ह्रूं ऐं त्र्यक्षरी पातु भालं वक्रं दिगंबरा ॥ श्रीं ह्रीं ह्रूं ऐं दृशौ पातु मुंडं कर्त्रि

धरापि सा ॥ ९ ॥ सा विद्या प्रणवाद्यंता श्रुतियुग्मं सदाऽवतु ॥ वज्रवैरोचनीये हुं फट् स्वाहा च ध्रुवादिका ॥ १० ॥ प्राणं पातु छिन्न
मस्ता मुंडकर्त्रिविधारिणी ॥ श्रीमायाकूर्चवाग्बीजैर्वज्रवैरोचनीयहूं ॥ ११ ॥ हूं फट्स्वाहा महाविद्या षोडशी ब्रह्मरूपिणी ॥ स्वपार्श्वे
वर्णिनी चासृग्धारां पाययती मुदा ॥ १२ ॥ वदनं सर्वदा पातु छिन्नमस्ता स्वशक्तिका ॥ मुंडकर्त्रिधरा रक्ता साधकाभीष्टदायिनी ॥
॥ १३ ॥ वर्णिनी डाकिनीयुक्ता सापि मामभितोऽवतु ॥ रमाद्या पातु जिह्वां च लज्जाद्या पातु कंठकम् ॥ १४ ॥ कूर्चाद्या हृदयं
पातु वागाद्या स्तनयुग्मकम् ॥ रमया पुटिता विद्या पार्श्वौ पातु सुरेश्वरी ॥ १५ ॥ मायया पुटिता पातु नाभिदेशे दिगंबरा ॥ कूर्चेण
पुटिता देवी पृष्ठदेशे सदावतु ॥ १६ ॥ वाग्बीजपुटिता चैषा मध्यं पातु सशक्तिका ॥ ईश्वरी कूर्चवाग्बीजैर्वज्रवैरोचनीयहूं ॥ १७ ॥
हूंफट्स्वाहा महाविद्या कोटिसूर्य्यसमप्रभा ॥ छिन्नमस्ता सदा पायादुरुयुग्मं सशक्तिका ॥ १८ ॥ ह्रींह्रूंवर्णिनी जानुं श्रीं ह्रीं च
डाकिनी पदम् ॥ सर्वविद्यास्थिता नित्या सर्वांगं मे सदावतु ॥ १९ ॥ प्राच्यां पायादेकलिंगा योगिनी पावकेऽवतु ॥ डाकिनी दक्षिणे
पातु श्रीमहाभैरवी च माम् ॥ २० ॥ नैर्ऋत्यां सततं पातु भैरवी पश्चिमेऽवतु ॥ इन्द्राक्षी पातु वायव्येऽसितांगो पातु चोत्तरे ॥ २१ ॥
संहारिणी सदा पातु शिवकोणे सकर्त्रिका ॥ इत्यष्ट शक्तयः पांतु दिग्विदिक्षु सकर्त्रिकाः ॥ २२ ॥ क्रीं क्रीं क्रीं पातु सा पूर्वं ह्रीं ह्रीं
मां पातु पावके ॥ हूं हूं मां दक्षिणे पातु दक्षिणे कालिकावतु ॥ २३ ॥ क्रीं क्रीं क्रीं चैव नैर्ऋत्यां ह्रीं ह्रीं च पश्चिमेऽवतु ॥ हूं हूं पातु
मरुत्कोणे स्वाहा पातु सदोत्तरे ॥ २४ ॥ महाकाली खड्गहस्ता रक्षःकोणे सदावतु ॥ तारो माया वधूः कूर्चं फट्कारोऽयं महामनुः ॥
॥ २५ ॥ खड्गकर्त्रिधरा तारा चोर्द्ध्वदेशं सदावतु ॥ ह्रीं स्त्रीं हूं फट् च पाताले मां पातु चैकजटा सती ॥ तारा तु सहिता खेऽव्यान्महा
नीलसरस्वती ॥ २६ ॥ इति ते कथितं देव्याः कवचं मंत्रविग्रहम् ॥ यद्धृत्वा पठनाद्भीमः क्रोधाख्यो भैरवः स्मृतः ॥ २७ ॥ सुरासुर
मुनींद्राणां कर्ता हर्ता भवेत्स्वयम् ॥ यस्याज्ञया मधुमती याति सा साधकालयम् ॥ २८ ॥ भूतिन्याद्याश्च डाकिन्यो यक्षिण्याद्याश्च
खेचराः ॥ आज्ञां गृह्णंति तास्तस्य कवचस्य प्रसादतः ॥ २९ ॥ एतदेव परं ब्रह्मकवचं मन्मुखोदितम् ॥ देवीमभ्यर्च्य गंधाद्यैर्मूले

नैव पठेत्सकृत् ॥ ३० ॥ संवत्सरकृतायास्तु पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥ भूर्जे विलिखितं चैतद्गुटिकां कांचनस्थिताम् ॥ ३१ ॥ धारयेद्दक्षिणे बाहौ कंठे वा यदि वान्यतः ॥ सर्वैश्वर्ययुतो भूत्वा त्रैलोक्यं वशमानयेत् ॥ ३२ ॥ तस्य गेहे वसेल्लक्ष्मीर्वाणी च वदनांबुजे ॥ ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि तद्गात्रे यांति सौम्यताम् ॥ ३३ ॥ इदं कवचमज्ञात्वा यो भजेच्छिन्नमस्तकाम् ॥ सोऽपि शस्त्रप्रहारेण मृत्युमाप्नोति सत्वरम् ॥ ३४ ॥ इति भैरवतंत्रे भैरवभैरवीसंवादे त्रैलोक्यविजयं नाम छिन्नमस्ताकवचं समाप्तम् ॥ अथ छिन्नमस्तास्तोत्रप्रारंभः ॥ (नाभौ शुभ्रारविन्दं तदुपरि विलसन्मण्डलं चण्डरश्मेः संसारस्यैकसारां त्रिभुवनजननीं धर्म्मकर्म्मार्थदात्रीम् ॥ तस्मिन्मध्ये त्रिभागे त्रितयतनुधरां छिन्नमस्तां प्रशस्तां तां वन्दे छिन्नमस्तां शमनभयहरां योगिनीं योगमुद्राम् ॥ १ ॥) नाभौ शुभ्रसरोजवक्त्रविलसद्बंधूकपुष्पारुणं भास्वद्भास्करमंडलं तदुदरे तद्योनिचक्रं महत् ॥ तन्मध्ये विपरीतमैथुनरतप्रद्युम्नसत्कामिनीपृष्ठस्थां तरुणार्ककोटिविलसत्तेजःस्वरूपां शिवाम् ॥ १ ॥ वामे च्छिन्नशिरोधरां तदितरे पाणौ महत्कर्त्रिकां प्रत्यालीढपदां दिगंतवसनामुन्मुक्तकेशव्रजाम् ॥ छिन्नात्मीयशिरःसमुच्छलदसृग्धारां पिबंतीं परां बालादित्यसमप्रकाशविलसन्नेत्रत्रयोद्भासिनीम् ॥ २ ॥ वामादन्यत्र नालं बहुगहनगलद्रक्तधाराभिरुच्चैः पायंतीमस्थिभूषां करकमललसत्कर्त्रिकामुग्ररूपाम् ॥ रक्ताभां रक्तकेशीमपगतवसनां वर्णिनीमात्मशक्तिं प्रत्यालीढोरुपादामरुणितनयनां योगिनीं योनिमुद्राम् ॥ ३ ॥ दिग्वस्त्रां मुक्तकेशीं प्रलयघनघटाघोररूपां प्रचण्डां दंष्ट्रादुष्प्रेक्ष्यवक्त्रोदरविवरलसल्लोलजिह्वाग्रभासाम् ॥ विद्युल्लोलाक्षियुग्मां हृदयतटलसद्योगिनीमात्ममूर्तिं सद्यश्छिन्नात्मकंठप्रगलितरुधिरैर्डाकिनीं वर्द्धयंतीम् ॥ ४ ॥ ब्रह्मेशानाच्युताद्यैः शिरसि विनिहितां मंदपादारविंदैराज्ञैर्योगीन्द्रमुख्यैः प्रतिपदमनिशं चिंतितां चिंत्यरूपाम् ॥ संसारे सारभूतां त्रिभुवनजननीं छिन्नमस्तां प्रशस्तामिष्टां तामिष्टदात्रीं कलिकलुषहरां चेतसा चिंतयामि ॥ ५ ॥ उत्पत्तिस्थितिसंहृतीर्घटयितुं धत्ते त्रिरूपां तनुं त्रैगुण्याज्जगतो यदीयविकृतिर्ब्रह्माच्युतः शूलभृत् ॥ तामाद्यां प्रकृतिं स्मरामि मनसा सर्वार्थसंसिद्धये यस्याः स्मेरपदारविंदयुगले लाभं भजंतेऽमराः ॥ ६ ॥ अभिलषितपरस्त्रीयोगपूजापरोऽहं बहुविधजनभावारंभसंभावितोऽहम् ॥

पशुजनविमुखोऽहं भैरवीसंयुतोऽहं गुरुचरणपरोऽहं भैरवोऽहं शिवोऽहम् ॥ ७ ॥ इदं स्तोत्रं महापुण्यं ब्रह्मणा भाषितं पुरा ॥
सिद्धिप्रदं साक्षान्महापातकनाशनम् ॥ ८ ॥ यः पठेत्प्रातरुत्थाय देव्याः सन्निहितो भवेत् ॥ तस्य सिद्धिर्भवेद्देवि वांछितार्थप्रदा
यिनी ॥ ९ ॥ धनं धान्यं सुतान् जायां हयं हस्तिनमेव च ॥ वसुंधरां महाविद्यामष्टसिद्धीर्लभेद्ध्रुवम् ॥ १० ॥ वैयाघ्राजिन
रंजितस्य जघने रम्ये प्रलंबोदरे खर्वानिर्वचनीयसर्वसुभगे मुंडावलीमंडिते ॥ कर्त्रीं कुंदरुचिं विचित्रकलितां ज्ञाने दधाने पदे
मातर्भक्तजनानुकंपिनि महामायेऽस्तु तुभ्यं नमः ॥ ११ ॥ इति श्रीब्रह्मविरचितं प्रचंडचंडिकास्तोत्रं समाप्तम् ॥ अथ प्रचंड
चंडिका-(छिन्नमस्ता) स्तोत्रप्रारंभः ॥ आनंदयित्रि परमेश्वरि वेदगर्भे मातः पुरंदरपुरांतरलब्धनेत्रे ॥ लक्ष्मीमशेषजगतां
परिभावयंतः सन्तो भजंति भवतीं धनदेशलब्ध्यै ॥ १ ॥ लज्जानुगां विमलविद्रुमकांतिकान्तां कान्तानुरागरसिकाः परमेश्वरि त्वाम् ॥
ये भावयन्ति मनसा मनुजास्त एते सीमन्तिनीभिरनिशं परिभाव्यमानाः ॥ २ ॥ मायामयीं निखिलपातककोटिकूटविद्राविणीं भृश
मसंशयिनो भजन्ति ॥ त्वां पद्मसुंदरतनुं तरुणारुणास्यां पाशांकुशाभयवराद्यकरां वरास्त्रैः ॥ ३ ॥ ते तर्ककर्कशधियः श्रुतिशास्त्र
शिल्पैश्छंदोऽभिशोभितमुखाः सकलागमज्ञाः॥ सर्वज्ञलब्धविभवाः कुमुदेन्दुवर्णां ये वाग्भवे च भवतीं परिभावयंति ॥४॥ वज्रप्रणुन्नहृदया
समयद्रुहस्ते वैरोचने मदनमंदिरगास्यमातः ॥ मायाद्वयानुगतविग्रहभूषितासि दिव्यास्त्रवह्निवनितानुगताऽसि धन्ये ॥ ५ ॥ वृत्तत्रयाष्ट
दलवह्निपुरःसरस्य मार्तण्डमंडलगतां परिभावयन्ति ॥ ये वह्निकूटसदृशीं मणिपूरकान्तस्ते कालकंटकविडंबनचंचवः स्युः ॥ ६ ॥
कालागुरुभ्रमरचंदनकुंडगोलखंडैरनंगमदनोद्भवमादनीभिः ॥ सिंदूरकुंकुमपटीरहिमैर्विधाय सन्मंडलं तदुपरीह यजेन्मृडानीम् ॥ ७ ॥
चंचत्तडिन्मिहिरकोटिकरां विचेलामुद्यत्कबंधरुधिरां द्विभुजां त्रिनेत्राम् ॥ वामे विकीर्णकचशीर्षकरे परे तामीडे परं परमकर्त्रिकया समेताम् ॥
॥ ८ ॥ कामेश्वरांगनिलयां कलया सुधांशोर्विभ्राजमानहृदयामपरे स्मरंति ॥ सुप्ताहिराजसदृशीं परमेश्वरस्थां त्वामाद्रिराजतनये च
समानमानाः ॥ ९ ॥ लिंगत्रयोपरिगतामपि वह्निचक्रपीठानुगां सरसिजासनसन्निविष्टाम् ॥ सुप्तां प्रबोध्य भवतीं मनुजा गुरूक्तहूंकार

वायुवशिभिर्मनसा भजन्ति ॥ १० ॥ शुभ्रासि शान्तिककथासु तथैव पीता स्तम्भे रिपोरथ च शुभ्रतरासि मातः ॥ उच्चाटनेऽप्यसितकर्म सुकर्म्मणि त्वं संसेव्यसे स्फटिककांतिरनन्तचारे ॥ ११ ॥ त्वामुत्पलैर्मधुयुतैर्मधुनोपनीतैर्गव्यैः पयोविलुलितैः शतमेव कुंडे ॥ साज्यैश्च तोषयति यः पुरुषस्त्रिसंध्यं षण्मासतो भवति शक्रसमो हि भूमौ ॥ १२ ॥ जाग्रत्स्वपन्नपि शिवे तव मंत्रराजमेवं विचिंतयति यो मनसा विधिज्ञः ॥ संसारसागरसमुद्धरणे वहित्रं चित्रं न भूतजननेऽपि जगत्सु पुंसः ॥ १३ ॥ इयं विद्या वंद्या हरिहरविरंचिप्रभृतिभिः पुराराते रन्तःपुरमिदमगम्यं पशुजनैः ॥ सुधामंदानंदैः पशुपतिसमानव्यसनिभिः सुधासेव्यैः सद्भिर्गुरुचरणसंसारचतुरैः ॥ १४ ॥ कुंडे वा मंडले वा शुचिरथ मनुना भावयत्येव मंत्री संस्थाप्योच्चैर्जुहोति प्रसवसुफलदैः पद्मपालाशकानाम् ॥ हैमं क्षीरैस्तिलैर्वा समधुककुसुमैर्मालतीबंधुजातीश्वेतैरब्धसंकानामपि वरसमिधा संपदे सर्वसिद्ध्यै ॥ १५ ॥ अंधः साज्यं समांसं दधियुतमथवा योऽन्वहं यामिनीनां मध्ये देव्यै ददाति प्रभवति गृहगा श्रीरमुष्यावखंडा ॥ आज्यं मांसं सरक्तं तिलयुतमथवा तंडुलं पायसं वा हुत्वा मांसं त्रिसंध्यं स भवति मनुजो भूतिभिर्भूतनाथः ॥ १६ ॥ इदं देव्याः स्तोत्रं पठति मनुजो यस्त्रिसमयं शुचिर्भूत्वा विश्वे भवति धनदो वासवसमः ॥ वशा भूपाः कांता निखिलरिपुहन्तुः सुरगणा भवंत्युच्चैर्वाचो यदिह ननु मासैस्त्रिभिरपि ॥ १७ ॥ इति श्रीशंकराचार्यविरचितः प्रचंडचंडिकास्तवराजः समाप्तः ॥ अथ छिन्नमस्ताष्टोत्तरशतनामस्तोत्रप्रारंभः ॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥ नाम्नां सहस्रं परमं छिन्नमस्ताप्रियं शुभम् ॥ कथितं भवता शंभो सद्यः शत्रुनिकृन्तनम् ॥१॥ पुनः पृच्छाम्यहं देव कृपां कुरु ममोपरि ॥ सहस्रनामपठने ह्यशक्तो यः पुमान् भवेत् ॥२॥ तेन किं पठ्यते नाथ तन्मे ब्रूहि कृपामय ॥ श्रीसदाशिव उवाच ॥ अष्टोत्तरशतं नाम्नां पठ्यते तेन सर्वदा ॥३॥ सहस्रनामपाठस्य फलं प्राप्नोति निश्चितम् ॥ॐ अस्य श्रीच्छिन्नमस्ताष्टोत्तरशतनामस्तोत्रमंस्य सदाशिव ऋषिःअनुष्टुप्छंदः श्रीच्छिन्नमस्ता देवता । मम सकल सिद्धिप्राप्तये पाठे विनियोगः ॥ ॐ छिन्नमस्ता महाविद्या महाभीमा महोदरी ॥ चण्डेश्वरी चण्डमाता चण्डमुण्डप्रभंजिनी ॥ ४ ॥

१ त्रिनयोऽयं पाठः ।

महाचण्डा चण्डरूपा चण्डिका चण्डखण्डिनी ॥ क्रोधिनी क्रोधजननी क्रोधरूपा कुहूः कला ॥ ५ ॥ कोपातुरा कोपयुता कोप
संहारकारिणी ॥ वज्रवैरोचनी वज्रा वज्रकल्पा च डाकिनी ॥ ६ ॥ डाकिनीकर्मनिरता डाकिनीकर्मपूजिता ॥ डाकिनीसङ्गनिरता
डाकिनीप्रेमपूरिता ॥ ७ ॥ खट्वाङ्गधारिणी खर्वा खड्गखर्परधारिणी ॥ प्रेतासना प्रेतयुता प्रेतसङ्गविहारिणी ॥ ८ ॥ छिन्नमुण्ड
धरा छिन्नचण्डविद्या च चित्रिणी ॥ घोररूपा घोरदृष्टिर्घोररावा घनोदरी ॥ ९ ॥ योगिनी योगनिरता जपयज्ञपरायणा ॥ योनिचक्र
मयी योनिर्योनिचक्रप्रवर्तिनी ॥ १० ॥ योनिमुद्रा योनिगम्या योनियंत्रनिवासिनी ॥ यंत्ररूपा यंत्रमयी यंत्रेशी यंत्रपूजिता ॥
॥ ११ ॥ कीर्त्या कपर्दिनी काली कङ्काली कलविकारणी ॥ आरक्ता रक्तनयना रक्तपानपरायणा ॥ १२ ॥ भवानी भूतिदा भूति
र्भूतिदात्री च भैरवी ॥ भैरवाचारनिरता भूतभैरवसेविता ॥ १३ ॥ भीमा भीमेश्वरी देवी भीमनादपरायणा ॥ भवाराध्या भवनुता
भवसागरतारिणी ॥ १४ ॥ भद्रकाली भद्रतनर्भद्ररूपा च भद्रिका ॥ भद्ररूपा महाभद्रा सुभद्रा भद्रपालिनी ॥ १५ ॥ सुभव्या
भव्यवदना सुमुखी सिद्धसेविता ॥ सिद्धिदा सिद्धिनिवहा सिद्धा सिद्धनिषेविता ॥ १६ ॥ शुद्धदा सुभगा शुद्धा शुद्धसत्वा शुभावहा ॥
श्रेष्ठा दृष्टिमयी देवी दृष्टिसंहारकारिणी ॥ १७ ॥ शर्वाणी सर्वगा सर्वा सर्वमङ्गलकारिणी ॥ शिवा शांता शांतिरूपा मृडानी मदना
तुरा ॥ १८ ॥ इति ते कथितं देवि स्तोत्रं परमदुर्लभम् ॥ 'गुह्याद्गुह्यतरं गोप्यं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥ १९ ॥ किमत्र बहुनोक्तेन
त्वदग्रे प्राणवल्लभे ॥ मारणं मोहनं देवि ह्युच्चाटनमतः परम् ॥२० ॥ स्तंभनादिककर्माणि ऋद्धयः सिद्धयोऽपि च ॥ त्रिकालपठनादस्य
सर्वे सिद्ध्यंत्यसंशयम् ॥ २१ ॥ महोत्तमं स्तोत्रमिदं वरानने मयेरितं नित्यमनन्यबुद्धयः ॥ पठंति ये भक्तियुता नरोत्तमा भवेन्न तेषां
रिपुभिः पराजयः ॥ २२ ॥ इति श्रीच्छिन्नमस्ताष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥ अथ छिन्नामस्तासहस्रनामस्तोत्रप्रारंभः।
श्रीदेव्युवाच ॥ देवदेव महादेव सर्वशास्त्रविदांवर ॥ कृपां कुरु जगन्नाथ कथयस्व मम प्रभो ॥ १ ॥ प्रचण्डचण्डिका देवी सर्वलोके
हितैषिणी ॥ तस्याश्च कथितं सर्वं स्तवं च कवचादिकम् ॥ २ ॥ इदानीं छिन्नमस्ताया नाम्नां साहस्रकं शुभम् ॥ त्वं प्रकाशय मे देव

कृपया भक्तवत्सल ॥ ३ ॥ श्रीशिव उवाच ॥ श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि च्छिन्नायाः सुमनोहरम् ॥ गोपनीयं प्रयत्नेन यदीच्छेदात्मनो हितम् ॥ ४ ॥ न वक्तव्यं च कुत्रापि प्राणैः कण्ठगतैरपि ॥ तच्छृणुष्व महेशानि सर्वं तत्कथयामि ते ॥ ५ ॥ विना पूजां विना ध्यानं विना जाप्येन सिद्ध्यति ॥ विना ध्यानं तथा देवि विना भूतादिशोधनम् ॥ ६ ॥ पठनादेव सिद्धिः स्यात्सत्यं सत्यं वरानने ॥ पुरा कैलासशिखरे सर्वदेवसभालये ॥ ७ ॥ परिपप्रच्छ कथितं तथा श्रृणु वरानने ॥ ८ ॥ ॐ अस्य श्रीप्रचण्डचण्डिकासहस्र नामस्तोत्रस्य भैरव ऋषिः सम्राट् छंदः प्रचचण्डाण्डिका देवता । धर्म्मार्थकाममोक्षार्थे पाठे विनियोगः॥ॐ प्रचण्डचण्डिका चण्डा चण्ड दैत्यविनाशिनी ॥ चामुण्डा च सुचण्डा च चपला चारुदेहिनी ॥ ९ ॥ ललजिह्वा चलद्रक्ता चारुचन्द्रनिभानना ॥ चकोराक्षी चण्डनादा चञ्चला च मनोन्मदा ॥ १० ॥ चेतना चितिसंस्था च चित्कला ज्ञानरूपिणी ॥ महाभयंकरी देवी वरदाभयधारिणी ॥ ११ ॥ भवाढ्या भवरूपा च भवबंधविमोचिनी ॥ भवानी भुवनेशी च भवसंसारतारिणी ॥ १२ ॥ भवाब्धिर्भवमोक्षा च भवबंधविघातिनी ॥ भागीरथी भगस्था च भाग्यभोग्यप्रदायिनी ॥ १३ ॥ कमला कामदा दुर्गा दुर्गबंधविमोचिनी ॥ दुर्द्दर्शना दुर्गरूपा दुर्ज्ञेया दुर्गनाशिनी ॥ १४ ॥ दीनदुःखहरा नित्या नित्यशोकविनाशिनी ॥ नित्यानन्दमया देवी नित्यं कल्याणकारिणी ॥ १५ ॥ सर्वार्थसाधनकरी सर्वसिद्धिस्वरूपिणी ॥ सर्वक्षोभणशक्तिश्च सर्वविद्राविणी परा ॥ १६ ॥ सर्वरञ्जनशक्तिश्च सर्वोन्मादस्वरूपिणी ॥ सर्वज्ञा सिद्धिदात्री च सिद्धविद्यास्वरूपिणी ॥ १७ ॥ सकला निष्कला सिद्धा कलातीता कलामयी ॥ कुलज्ञा कुलरूपा च चक्षुरानन्ददायिनी ॥ १८ ॥ कुलीना सामरूपा च कामरूपा मनोहरा ॥ कमलस्था कञ्जमुखी कुञ्जरेश्वर गामिनी ॥ १९ ॥ कुलरूपा कोटराक्षी कमलैश्वर्य्यदायिनी ॥ कुंती ककुद्मिनी कुल्ला कुरुकुल्ला करालिका ॥ २० ॥ कामेश्वरी काममाता कामतापविमोचिनी ॥ कामरूपा कामसत्त्वा कामकौतुककारिणी ॥ २१ ॥ कारुण्यहृदया क्रींक्रींमंत्ररूपा च कोटरा ॥ कौमोदकी कुमुदिनी कैवल्या कुलवासिनी ॥ २२ ॥ केशवी केशवाराध्या केशिदैत्यनिषूदिनी ॥ क्लेशहा क्लेशरहिता क्लेशसंघविना

शिनी ॥ २३ ॥ कराली च करालास्या करालासुरनाशिनी ॥ करालचर्मासिधरा करालकलनाशिनी ॥ २४ ॥ कंकिनी कंकनिरता
कपालवरधारिणी ॥ खड्गहस्ता त्रिनेत्रा च खण्डमुण्डासिधारिणी ॥ २५ ॥ खलहा खलहंत्री च क्षरंती खगता सदा ॥ गङ्गा
गौतमपूज्या च गौरी गंधर्ववासिनी ॥ २६ ॥ गंधर्वा गगणाराध्या गणा गंधर्वसेविता ॥ गणत्कारगणा देवी निर्गुणा च गुणात्मिका ॥
॥ २७ ॥ गुणता गुणदात्री च गुणगौरवदायिनी ॥ गणेशमाता गम्भीरा गगणा ज्योतिकारिणी ॥ २८ ॥ गौराङ्गी च गया गम्य।
गौतमस्थानवासिनी ॥ गदाधरप्रिया ज्ञेया ज्ञानगम्या गुहेश्वरी ॥ २९ ॥ गायत्री च गुणवती गुणातीता गुणेश्वरी ॥ गणेशजननी
देवी गणेशवरदायिनी ॥ ३० ॥ गणाध्यक्षनुता नित्या गणाध्यक्षप्रपूजिता ॥ गिरीशरमणी देवी गिरीशपरिवन्दिता ॥ ३१ ॥ गतिदा
गतिहा गीता गौतमी गुरुसेविता ॥ गुरुपूज्या गुरुयुता गुरुसेवनतत्परा ॥ ३२ ॥ गंधद्वारा च गंधाढ्या गंधात्मा गंधकारिणी ॥
गीर्वाणपतिसम्पूज्या गीर्वाणपतितुष्टिदा ॥ ३३ ॥ गीर्वाणाधीशरमणी गीर्वाणाधीशवन्दिता ॥ गीर्वाणाधीशसंसेव्या गीर्वाणाधीशहर्षदा ॥ ३४ ॥ गानशक्तिर्गानगम्या गानशक्तिप्रदायिनी ॥ गानविद्या गानसिद्धा गानसंतुष्टमानसा ॥ ३५ ॥ गानातीता गान
गीता गानहर्षप्रपूरिता ॥ गंधर्वपतिसंहृष्टा गंधर्वगुणमण्डिता ॥ ३६ ॥ गंधर्वगणसंसेव्या गंधर्वगणमध्यगा ॥ गंधर्वगणकुशला गंधर्व
गणपूजिता ॥ ३७ ॥ गंधर्वगणनिरता गंधर्वगणभूषिता ॥ घर्घरा घोररूपा च घोरघुर्घुरनादिनी ॥ ३८ ॥ घर्मबिन्दुसमुद्भूता घर्म
बिन्दुस्वरूपिणी ॥ घंटारवा घनरवा घनरूपा घनोदरी ॥ ३९ ॥ घोरसत्त्वा च घनदा घण्टानादविनोदनी ॥ घोरचाण्डालिनी घोरा
घोरचण्डविनाशिनी ॥ ४० ॥ घोरदानवदमनी घोरदानवनाशिनी ॥ घोरकर्मादिरहिता घोरकर्मनिषेविता ॥ ४१ ॥ घोर
तत्त्वमयी देवी घोरतत्त्वविमोचनी ॥ घोरकर्मादिरहिता घोरकर्मादिपूरिता ॥ ४२ ॥ घोरकर्मादिनिरता घोरकर्मप्रवर्द्धिनी ॥
घोरभूतप्रमथिनी घोरवेतालनाशिनी ॥ ४३ ॥ घोरदावाग्निदमनी घोरशत्रुनिषूदिनी ॥ घोरमंत्रयुता चैव घोरमंत्रप्रपूजिता ॥ ४४ ॥
घोरमंत्रमनोभिज्ञा घोरमंत्रफलप्रदा ॥ घोरमंत्रनिधिश्चैव घोरमंत्रकृतास्पदा ॥ ४५ ॥ घोरमंत्रेश्वरी देवी घोरमंत्रार्थमानसा ॥ घोर

मंत्रार्थतत्त्वज्ञा घोरमंत्रार्थपारगा ॥ ४६ ॥ घोरमंत्रार्थविभवा घोरमंत्रार्थबोधिनी ॥ घोरमंत्रार्थनिचया घोरमंत्रार्थजन्मभूः ॥ ॥ ४७ ॥ घोरमंत्रजपरता घोरमंत्रजपोद्यता ॥ ङकारवर्णनिलया ङकाराक्षरमण्डिता ॥ ४८ ॥ ङकारापररूपा च ङकाराक्षररूपिणी ॥ चित्ररूपा चित्रनाडी चारुकेशी चयप्रभा ॥ ४९ ॥ चञ्चला चञ्चलाकारा चारुरूपा च चण्डिका ॥ चतुर्वेदमयी चण्डा चण्डालगणमण्डिता ॥ ५० ॥ चाण्डालच्छेदिनी चण्डतपोनिर्मूलकारिणी ॥ चतुर्भुजा चण्डरूपा चण्डमुण्डविनाशिनी ॥ ५१ ॥ चन्द्रिका चन्द्रकीर्तिश्च चन्द्रकांतिस्तथैव च ॥ चन्द्रास्या चन्द्ररूपा च चन्द्रमौलिस्वरूपिणी ॥ ५२ ॥ चन्द्रमौलिप्रिया चन्द्रमौलिसंतुष्टमानसा ॥ चकोरबंधुरमणी चकोरबंधुपूजिता ॥ ५३ ॥ चक्ररूपा चक्रमयी चक्राकारस्वरूपिणी ॥ चक्रपाणिप्रिया चक्रपाणिप्रीतिप्रदायिनी ॥ ५४ ॥ चक्रपाणिरसाभिज्ञा चक्रपाणिवरप्रदा ॥ चक्रपाणिवरोन्मत्ता चक्रपाणिस्वरूपिणी ॥ ५५ ॥ चक्रपाणीश्वरी नित्यं चक्रपाणिनमस्कृता ॥ चक्रपाणिसमुद्भूता चक्रपाणिगुणास्पदा ॥ ५६ ॥ चन्द्रावली चन्द्रवती चन्द्रकोटिसमप्रभा ॥ चन्दनार्चितपादाब्जा चन्दनान्वितमस्तका ॥ ५७ ॥ चारुकीर्तिश्चारुनेत्रा चारुचन्द्रविभूषणा ॥ चारुभूषा चारुवेषा चारुवेषप्रदायिनी ॥ ५८ ॥ चारुभूषाभूषिताङ्गी चतुर्वक्त्रवरप्रदा ॥ चतुर्वक्त्रसमाराध्या चतुर्वक्त्रसमाश्रिता ॥ ५९ ॥ चतुर्वक्त्रचतुर्वाहा चतुर्थी च चतुर्दशी ॥ चित्रा चर्मण्वती चैत्री चन्द्रभागा च चम्पका ॥ ६० ॥ चतुर्दशयमाकारा चतुर्दशयमानुगा ॥ चतुर्दशयमप्रीता चतुर्दशयमप्रिया ॥ ६१ ॥ छलस्था च्छिद्ररूपा च च्छद्मदा च्छद्मराजिका ॥ छिन्नमस्ता तथा च्छिन्ना च्छिन्नमुण्डविधारिणी ॥ ६२ ॥ जयदा जयरूपा च जयंती जयमोहिनी ॥ जया जीवनसंस्था च जालंधरनिवासिनी ॥ ६३ ॥ ज्वालामुखी ज्वालदात्री जाज्वल्यदहनोपमा ॥ जगद्वंद्या जगत्पूज्या जगत्त्राणपरायणा ॥ ६४ ॥ जगती जगदाधारा जन्ममृत्युजरापहा ॥ जननी जन्मभूमिश्च जन्मदा जयशालिनी ॥ ६५ ॥ ज्वररोगहरा ज्वाला ज्वालामालाप्रपूरिता ॥ जंभारातीश्वरी जंभारातिवैभवकारिणी ॥ ॥ ६६ ॥ जंभारातिस्तुता जंभारातिशत्रुनिषूदिनी ॥ जयदुर्गा जयाराध्या जयकाली जयेश्वरी ॥ ६७ ॥ जयतारा जयातीता जयशङ्कर

जलधित्रासकारिणी ॥ ६८ ॥ जलधिव्याधिदमनी जलधिज्वरनाशिनी ॥ जंगमेशी जाड्यहरा
जाड्यग्रस्तजनातीता जाड्यरोगनिवारिणी ॥ जन्मदात्री जन्महर्त्री जयघोषसमन्विता ॥ ७० ॥ जप
योगसमायुक्ता जपयोगविनोदिनी ॥ जपयोगप्रिया जाप्या जपातीता जयस्वना ॥ ७१ ॥ जायाभावस्थिता जाया जायाभावप्रपूरणी ॥
जपाकुसुमसंकाशा जपाकुसुमपूजिता ॥ ७२ ॥ जपाकुसुमसम्प्रीता जपाकुसुमण्डिता ॥ जपाकुसुमवद्भासा जपाकुसुमरूपिणी ॥
॥ ७३ ॥ जमदग्निस्वरूपा च जानकी जनकात्मजा ॥ झंझावातप्रमुक्ताङ्गी झोरझंकारवासिनी ॥ ७४ ॥ झंकारकारिणी झंझावात
रूपा च झंकरी ॥ अञकाराणुस्वरूपा च टनटंकारनादिनी ॥ ७५ ॥ टंकारी टकुवाणी च ठकाराक्षररूपिणी ॥ डिण्डिमा च तथा
डिम्भा डिण्डुडिण्डिमनादिनी ॥ ७६ ॥ ढक्कामयो ढिलमयी नृत्यशब्दा विलासिनी ॥ ढक्का ढक्केश्वरी ढक्काशब्दरूपा तथैव ॥ ७७ ॥
ढक्कानादप्रिया ढक्कानादसंतुष्टमानसा ॥ णकारा णाक्षरमयी णाक्षरादिस्वरूपिणी ॥ ७८ ॥ त्रिपुरा त्रिपुरमयी त्रिशक्तिस्त्रिगुणात्मिका ॥
तामसी च त्रिलोकेशी त्रिपुरा च त्रयीश्वरी ॥ ७९ ॥ त्रिविद्या च त्रिरूपा च त्रिनेत्रा च त्रिरूपिणी ॥ तारिणी तरला तारा तार
कारिप्रपूजिता ॥ ८० ॥ तारकारिसमाराध्या तारकारिवरप्रदा ॥ तारकारिप्रसूस्तन्वी तरुणी तरलप्रभा ॥ ८१ ॥ त्रिरूपा च
त्रिपुरगा त्रिशूलवरधारिणी ॥ त्रिशूलिनी तंत्रमयी तंत्रशास्त्रविशारदा ॥ ८२ ॥ तंत्ररूपा तपोमूर्तिस्तंत्रमंत्रस्वरूपिणी ॥ तडित्तडि
ल्लताकारा तत्त्वज्ञानप्रदायिनी ॥ ८३ ॥ तत्त्वज्ञानेश्वरी देवी तत्त्वज्ञानप्रमोदिनी ॥ त्रयीमयी त्रयीसेव्या त्र्यक्षरी त्र्यक्षरेश्वरी ॥ ८४ ॥
तापविध्वंसिनी तापसंघनिर्मूलकारिणी ॥ त्रासकर्त्री त्रासहर्त्री त्रासदात्री च त्रासहा ॥ ८५ ॥ तिथीशा तिथिरूपा च तिथिस्था
तिथिपूजिता ॥ तिलोत्तमा च तिलदा तिलप्रीता तिलेश्वरी ॥ ८६ ॥ त्रिगुणा त्रिगुणाकारा त्रिपुरी त्रिपुरात्मिका ॥ त्रिकुटा त्रिकुटा
कारा त्रिकूटाचलमध्यगा ॥ ८७ ॥ त्रिजटा च त्रिनेत्रा च त्रिनेत्रवरसुन्दरी ॥ तृतीया च त्रिवर्षा च त्रिविधा त्रिमतेश्वरी
॥ ८८ ॥ त्रिकोणस्था त्रिकोणेशी त्रिकोणयंत्रमध्यगा ॥ त्रिसंध्या च त्रिसंध्यार्च्या त्रिपदा त्रिपदास्पदा ॥ ८९ ॥

स्थानस्थिता स्थलस्था च धन्यस्थलनिवासिनी ॥ थकाराक्षररूपा च स्थूलरूपा तथैव च ॥ ९० ॥ स्थूलहस्ता तथा स्थूला स्थैर्य्यरूपप्रकाशिनी ॥ दुर्गा दुर्गार्तिहंत्री च दुर्गबंधविमोचिनी ॥ ९१ ॥ देवी दानवसंहंत्री दनुजेष्टनिषूदिनी ॥ दारापत्यप्रदा नित्या शंकरार्द्धाङ्गधारिणी ॥ ९२ ॥ दिव्याङ्गी देवमाता च देवदुष्टविनाशिनी ॥ दीनदुःखहरा दीनताप निर्मूलकारिणी ॥ ९३ ॥ दीनमाता दीनसेव्या दीनदंभविनाशिनी ॥ दनुजध्वंसिनी देवी देवकी देववल्लभा ॥ ९४ ॥ दानवारिप्रिया दीर्घा दानवारिप्रपूजिता ॥ दीर्घस्वरा दीर्घतनुर्दीर्घदुर्गतिनाशिनी ॥ ९५ ॥ दीर्घनेत्रा दीर्घचक्षुर्दीर्घकेशी दिगम्बरा ॥ दिगम्बरप्रिया दांता दिगम्बरस्वरूपिणी ॥ ९६ ॥ दुःखहीना दुःखहरा दुःखसागरतारिणी ॥ दुःखदारिद्र्यशमनी दुःखदारिद्र्यकारिणी ॥ ९७ ॥ दुःखदा दुस्सहा दुष्टखण्डनैकस्वरूपिणी ॥ देववामा देवसेव्या देवशक्तिप्रदायिनी ॥ ९८ ॥ दामिनी दामिनीप्रीता दामिनीशतसुन्दरी ॥ दामिनीशतसंसेव्या दामिनीदामभूषिता ॥ ९९ ॥ देवताभावसंतुष्टा देवताशतमध्यगा ॥ दयार्द्रा च दयारूपा दयादानपरायणा ॥१००॥ दयाशीला दयासारा दयासागरसंस्थिता ॥ दशविद्यात्मिका देवी दशविद्यास्वरूपिणी ॥ १०१ ॥ धरणी धनदा धात्री धन्या धन्यपरा शिवा ॥ धर्म्मरूपा धनिष्ठा च धेया च धीरगोचरा ॥ १०२ ॥ धर्म्मराजेश्वरी धर्म्मकर्म्मरूपा धनेश्वरी ॥ धनुर्विद्या धनुर्गम्या धनुर्द्धरवरप्रदा ॥ १०३ ॥ धर्म्मशीला धर्म्मलीला धर्म्मकर्म्मविवर्जिता ॥ धर्म्मदा धर्म्मनिरता धर्म्मपाखण्डखण्डिनी ॥ १०४ ॥ धर्म्मेशी धर्म्मरूपा च धर्म्मराजवरप्रदा ॥ धर्म्मिणी धर्म्मगेहस्था धर्म्माधर्म्मस्वरूपिणी ॥ १०५ ॥ धनदा धनदप्रीता धनधान्यसमृद्धिदा ॥ धनधान्यसमृद्धिस्था धनधान्यविनाशिनी ॥ १०६ ॥ धर्म्मनिष्ठा धर्म्मधीरा धर्म्ममार्गरता सदा ॥ धर्म्मबीजकृतस्थाना धर्म्मबीजसुरक्षिणी ॥ १०७ ॥ धर्म्मबीजेश्वरी धर्म्मबीजरूपा च धर्म्मगा ॥ धर्म्मबीजसमुद्भूता धर्म्मबीजसमाश्रिता ॥ १०८ ॥ धराधरपतिप्राणा धरा [illegible] ॥ धराधरेन्द्रतनुजा धराधरेन्द्रवन्दिता ॥ १०९ ॥ धराधरेन्द्रगेहस्था धराधरेन्द्रपालिनी ॥ धराधरेन्द्रसर्वार्तिनाशिनी [illegible] ११० ॥ नवीना निर्म्मला नित्या नागराजप्रपूजिता ॥ नागेश्वरी नागमाता नागकन्या च नग्निका ॥ १११ ॥

निर्लेपा निर्विकल्पा च निर्लोमा निरुपद्रवा ॥ निराहारा निराकारा निरञ्जनस्वरूपिणी ॥ ११२ ॥ नागिनी नागविभवा नागराजपरि
स्तुता ॥ नागराजगुणज्ञा च नागराजसुखप्रदा ॥ ११३ ॥ नागलोकगता नित्यं नागलोकनिवासिनी ॥ नागलोकेश्वरी नागभागिनी
नागपूजिता ॥ ११४ ॥ नागमध्यस्थिता नागमोहसंक्षोभदायिनी ॥ नृत्यप्रिया नृत्यवती नृत्यगीतपरायणा ॥ ११५ ॥ नृत्येश्वरी
नर्तकी च नृत्यरूपा निराश्रया ॥ नारायणी नरेन्द्रस्था नरमुण्डास्थिमालिनी ॥ ११६ ॥ नरमांसप्रिया नित्या नररक्तप्रिया सदा ॥
नरराजेश्वरी नारीरूपा नारीस्वरूपिणी ॥ ११७ ॥ नारीगणार्चिता नारीमध्यगा नूतनाम्बरा ॥ नर्मदा च नदीरूपा नदीसंगम
संस्थिता ॥ ११८ ॥ नर्मदेश्वरसम्प्रीता नर्मदेश्वररूपिणी ॥ पद्मावती पद्ममुखी पद्मकिञ्जल्कवासिनी ॥ ११९ ॥ पट्टवस्त्रपरीधाना पद्म
रागविभूषिता ॥ परमा प्रीतिदा नित्यं प्रेतासननिवासिनी ॥ १२० ॥ परिपूर्णरसोन्मत्ता प्रेमविह्वलवल्लभा ॥ पवित्रासवनिष्पूता प्रेयसी
परमात्मिका ॥ १२१ ॥ प्रियव्रतपरा नित्यं परमप्रेमदायिनी ॥ पुष्पप्रिया पद्मकोशा पद्मधर्मनिवासिनी ॥ १२२ ॥ फेत्कारिणी
तंत्ररूपा फेरुफेरवनादिनी ॥ वंशिनी वंशरूपा च बगला वामरूपिणी ॥ १२३ ॥ वाङ्मयी वसुधा धृष्या वाग्भवाख्या वरा नरा ॥
बुद्धिदा बुद्धिरूपा च विद्या वादस्वरूपिणी ॥ १२४ ॥ बाला वृद्धमयीरूपा वाणी वाक्यनिवासिनी ॥ वरुणा वाग्वती वीरा वीरभूषण
भूषिता ॥ १२५ ॥ वीरभद्रार्चितपदा वीरभद्रप्रसूरपि ॥ वेदमार्गरता वेदमंत्ररूपा वषट्प्रिया ॥ १२६ ॥ वीणावाद्यसमायुक्ता वीणा
वाद्यपरायणा ॥ वीणारवा तथा वीणाशब्दरूपा च वैष्णवी ॥ १२७ ॥ वैष्णवाचारनिरता वैष्णवाचारतत्परा ॥ विष्णुसेव्या विष्णुपत्नी
विष्णुरूपा वरानना ॥ १२८ ॥ विश्वेश्वरी विश्वमाता विश्वनिर्माणकारिणी ॥ विश्वरूपा च विश्वेशी विश्वसंहारकारिणी ॥ १२९ ॥
भैरवी भैरवाराध्या भूतभैरवसेविता ॥ भैरवेशी तथा भीमा भैरवेश्वरतुष्टिदा ॥ १३० ॥ भैरवाधीशरमणी भैरवाधीशपालिनी ॥ भीमे
श्वरी भीममाता भीमशब्दपरायणा ॥ १३१ ॥ भीमरूपा च भीमेशी भीमा भीमवरप्रदा ॥ भीमपूजितपादाब्जा भीमभैरवपालिनी
॥ १३२ ॥ भीमासुरध्वंसकरी भीमदुष्टविनाशिनी ॥ भुवना भुवनाराध्या भवानी भूतिदा सदा ॥ १३३ ॥ भयदा भयहंत्री च अभया

ऽभयरूपिणी ॥ भीमनादा विह्वला च भयभीतिविनाशिनी ॥ १३४ ॥ मत्ता प्रमत्तरूपा च मन्दोन्मत्तस्वरूपिणी ॥ मान्या मनोज्ञा
माना च मंगला च मनोहरा ॥ १३५ ॥ माननीया महापूज्या महामहिषमर्द्दिनी ॥ महिषासुरहंत्री च मातंगी मयवासिनी ॥
॥ १३६ ॥ माध्वी मधुमयी मुद्रा मुद्रिका मंत्ररूपिणी ॥ महाविश्वेश्वरी दूती मौलिचन्द्रप्रकाशिनी ॥ १३७ ॥ यशःस्वरूपिणी देवी
योगमार्गप्रदायिनी ॥ योगिनी योगगम्या च याम्येशी योगरूपिणी ॥ १३८ ॥ यज्ञांगी च योगमयी जपरूपा जपात्मिका ॥ युगाख्या
च युगांता च योनिमण्डलवासिनी ॥ १३९ ॥ अयोनिजा योगनिद्रा योगानन्दप्रदायिनी ॥ रमा रतिप्रिया नित्यं रतिरागविवर्द्धिनी ॥
॥ १४० ॥ रमणी राससम्भूता रम्या रासप्रिया रसा ॥ रणोत्कण्ठा रणस्था च वरा रंगप्रदायिनी ॥ १४१ ॥ रेवती रणजैत्री च
रसोद्भूता रणोत्सवा ॥ लता लावण्यरूपा च लवणाब्धिस्वरूपिणी ॥ १४२ ॥ लवंगकुसुमाराध्या लोलजिह्वा च लेलिहा ॥ वशिनी
वनसंस्था च वनपुष्पप्रिया वरा ॥ १४३ ॥ प्राणेश्वरी बुद्धिरूपा बुद्धिदात्री बुधात्मिका ॥ शमनी श्वेतवर्णा च शाङ्करी शिवभाषिणी
॥ १४४ ॥ शाम्यरूपा शक्तिरूपा शक्तिबिन्दुनिवासिनी ॥ सर्वेश्वरी सर्वदात्री सर्वमाता च शर्वरी ॥ १४५ ॥ शांभवी सिद्धिदा
सिद्धा सुषुम्ना सुरभासिनी ॥ सहस्रदलमध्यस्था सहस्रदलवर्त्तिनी ॥ १४६ ॥ हरप्रिया हरध्येया हूँकारबीजरूपिणी ॥ लंकेश्वरी च
तरला लोममांसप्रपूजिता ॥ १४७ ॥ क्षेम्या क्षेमकरी क्षामा क्षीरबिन्दुस्वरूपिणी ॥ क्षिप्तचित्तप्रदा नित्यं क्षौमवस्त्रविलासिनी ॥ १४८ ॥
छिन्ना च छिन्नरूपा च क्षुधा क्षौत्काररूपिणी ॥ सर्ववर्णमयी देवी सर्वसम्पत्प्रदायिनी ॥ १४९ ॥ सर्वसम्पत्प्रदात्री च सम्पदापद्वि
भूषिता ॥ सत्त्वरूपा च सर्वार्था सर्वदेवप्रपूजिता ॥ १५० ॥ सर्वेश्वरी सर्वमाता सर्वज्ञा सुरसात्मिका ॥ सिन्धुर्मंदाकिनी गंगा नदी
सागररूपिणी ॥ १५१ ॥ सुकेशी मुक्तकेशी च डाकिनी वरवर्णिनी ॥ ज्ञानदा ज्ञानगगना सोममण्डलवासिनी ॥ १५२ ॥ आकाश
निलया नित्या परमाकाशरूपिणी ॥ अन्नपूर्णा महानित्या महादेवरसोद्भवा ॥ १५३ ॥ मंगला कालिका चण्डा चण्डनादाति
भीषणा ॥ चण्डासुरस्य मथिनी चामुण्डा चपलात्मिका ॥ १५४ ॥ चण्डी चामरकेशी च चलत्कुण्डलधारिणी ॥ मुण्डमालाधर

नित्या खण्डमुण्डविलासिनी ॥ १५५ ॥ खड्गहस्ता मुण्डहस्ता वरहस्ता वरप्रदा ॥ असिचर्मधरा नित्या पाशांकुशधरा परा ॥ १५६ ॥
शूलहस्ता शिवहस्ता घण्टानादविलासिनी ॥ धनुर्बाणधराऽऽदित्या नागहस्ता नगात्मजा ॥ १५७ ॥ महिषासुरहंत्री च रक्तबीजविना
शिनी ॥ रक्तरूपा रक्तगा च रक्तहस्ता भयप्रदा ॥ १५८ ॥ असिता च धर्म्मधरा पाशांकुशधरा परा ॥ धनुर्बाणधरा
नित्या धूम्रलोचननाशिनी १५९ ॥ परस्था देवतामूर्तिः शर्वाणी शारदा परा ॥ नानावर्णविभूषांगी नानारागसमा
पिनी ॥ १६० ॥ पशुवस्त्रपरीधाना पुष्पायुधधरा परा ॥ मुक्तरंजितमालाढ्या मुक्ताहारविलासिनी ॥ १६१ ॥ स्वर्ण
कुण्डलभूषा च स्वर्णसिंहासनस्थिता ॥ सुन्दरांगी सुवर्णाभा शांभवी शकटात्मिका ॥ १६२ ॥ सर्वलोकेशविद्या च मोह
सम्मोहकारिणी ॥ श्रेयसी सृष्टिरूपा च च्छिन्नच्छद्ममयी च्छला ॥ १६३ ॥ छिन्नमुण्डधरा नित्या नित्यानन्दविधायिनी ॥
नन्दा पूर्णा च रिक्ता च तिथयः पूर्णषोडशी ॥ १६४ ॥ कुहूः संक्रांतिरूपा च पञ्चपर्वविलासिनी ॥ पञ्चबाणधरा नित्या पञ्चम
प्रीतिदा परा ॥ १६५ ॥ पञ्चपत्राभिलाषा च पञ्चामृतविलासिनी ॥ पञ्चाली पञ्चमी देवी पञ्चरक्तप्रसारिणी ॥ १६६ ॥ पञ्च
बाणधरा नित्या नित्यदात्री दयापरा ॥ पललादिप्रिया नित्याऽपशुगम्या परेशिता ॥ १६७ ॥ परा पररहस्या च परमप्रेमविह्वला ॥
कुलीना केशिमार्गस्था कलमार्गप्रकाशिनी ॥ १६८ ॥ कुलाकुलस्वरूपा च कुलार्णवमयी कुला ॥ रुक्मा च कालरूपा च काल
कम्पनकारिणी ॥ १६९ ॥ विलासरूपिणी भद्रा कुलाकुलनमस्कृता ॥ कुबेरवित्तधात्री च कुमारजननी परा ॥ १७० ॥
कुमारीरूपसंस्था च कुमारीपूजनाम्बिका ॥ कुरंगनयना देवी दिनेशास्याऽपराजिता ॥ १७१ ॥ कुण्डली कदली सेना कुमार्ग
रहिता वरा ॥ अनंतरूपाऽनंतस्था आनन्दसिंधुवासिनी ॥ १७२ ॥ इलास्वरूपिणी देवी इईभेदभयंकरी ॥ इडा च पिंगला नाडी
इकाराक्षररूपिणी ॥ १७३ ॥ उमा चोत्पत्तिरूपा च उच्चभावविनाशिनी ॥ ऋग्वेदा च निराराध्या यजुर्वेदप्रपूजिता ॥ १७४ ॥
सामवेदेन संगीता अथर्ववेदभाषिणी ॥ ऋकाररूपिणी ऋक्षा निरक्षरस्वरूपिणी ॥ १७५ ॥ अहिदुर्गासमाचारा इकारार्णस्वरूपिणी ॥

ओंकारा प्रणवस्था च ओंकारादिस्वरूपिणी ॥ १७६ ॥ अनुलोमविलोमस्था थकारवर्णसम्भवा ॥ पञ्चाशद्वर्णबीजाढ्या पञ्चाशन्मुण्ड मालिका ॥ १७७ ॥ प्रत्येका दशसंख्या च षोडशी च्छिन्नमस्तका ॥ षडंगयुवतीपूज्या षडंगरूपवर्जिता ॥ १७८ ॥ षड्चक्रसंश्रिता नित्या विश्वेशी खड्गदालया ॥ मालामंत्रमयी मंत्रजपमाता मदालसा ॥ १७९ ॥ सर्वविश्वेश्वरी शक्तिः सर्वानन्दप्रदायिनी ॥ इति श्रीच्छिन्न मस्ताया नामसाहस्रमुत्तमम् ॥ १८० ॥ पजाक्रमेण कथितं साधकानां सुखावहम् ॥ गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं न संशयः ॥ १८१ ॥ अर्द्धरात्रे मुक्तकेशो भक्तियुक्तो भवेन्नरः ॥ जपित्वा पूजयित्वा च पठेन्नामसहस्रकम् ॥ १८२ ॥ विद्यासिद्धिर्भवेत्तस्य षण्मासाभ्यास योगतः ॥ येन केन प्रकारेण देवीभक्तिपरो भवेत् ॥ १८३ ॥ अखिलान्स्तंभयेल्लोकान्राज्ञोऽपि मोहयेत्सदा ॥ आकर्षयेद्देवशक्तिं मार येद्देवि विद्विषम् ॥ १८४ ॥ शत्रवो दासतां यांति यांति पापानि संक्षयम् ॥ मृत्युश्च क्षयतां याति पठनाद्भाषणात्प्रिये ॥ १८५ ॥ प्रशस्तायाः प्रसादेन किं न सिद्ध्यति भूतले ॥ इदं रहस्यं परमं परं स्वस्त्ययनं महत् ॥ १८६ ॥ धृत्वा बाहौ महासिद्धिः प्राप्यते नात्र संशयः ॥ अनया सदृशी विद्या विद्यते न महेश्वरि ॥ १८७ ॥ वारमेकं तु योऽधीते सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥ कुलवारे कुलाष्टम्यां कुहू संक्रांतिपर्वसु ॥ १८८ ॥ यश्चेमां पठते विद्यां तस्य सम्यक्फलं शृणु ॥ अष्टोत्तरशतं जप्त्वा पठेन्नामसहस्रकम् ॥ १८९ ॥ भक्त्या स्तुत्वा महादेवि सर्वपापात्प्रमुच्यते ॥ सर्वपापैर्विनिर्मुक्तः सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥ १९० ॥ अष्टम्यां वा निशीथे च चतुष्पथगतो नरः ॥ माषभक्तबलिं दत्त्वा पठेन्नामसहस्रकम् ॥ १९१ ॥ सुदर्शवामवेद्यां तु मासत्रयविधानतः ॥ दुर्जयः कामरूपश्च महाबलपराक्रमः ॥ ॥ १९२ ॥ कुमारीपूजनं नाम मंत्रमात्रं पठेन्नरः ॥ एतन्मंत्रस्य पठनात्सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥ १९३ ॥ इति ते कथितं देवि सर्व सिद्धिपरं नरः ॥ जप्त्वा स्तुत्वा महादेवीं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ १९४ ॥ न प्रकाश्यमिदं देवि सर्वदेवनमस्कृतम् ॥ इदं रहस्यं परमं गोप्तव्यं पशुसंकटे ॥ १९५ ॥ इति सकलविभूतेर्हेतुभूतं प्रशस्तं पठति य इह मर्त्यश्छिन्नमस्तास्तवं च ॥ धनद इव धनाढ्यो माननीयो नृपाणां स भवति च जनानामाश्रयः सिद्धिवेत्ता ॥ १९६ ॥ इति श्रीविश्वसारतंत्रे शिवपार्वतीसंवादे श्रीच्छिन्नमस्तासहस्रनामस्तोत्रं

॥ अथ च्छिन्नमस्ताहृदयस्तोत्रप्रारंभः ॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥ श्रुतं पूजादिकं सम्यग्भवद्वक्त्राब्जनिःसृतम् ॥ हृदयं छिन्नमस्तायाः
श्रोतुमिच्छामि साम्प्रतम् ॥ १ ॥ ॐ महादेव उवाच ॥ नाद्यावधि मया प्रोक्तं कस्यापि प्राणवल्लभे ॥ यत्त्वया परिपृष्टोऽहं वक्ष्ये प्रीत्यै
तव प्रिये ॥ २॥ ॐ अस्य श्रीच्छिन्नमस्ताहृदयस्तोत्रमंत्रस्य भैरव ऋषिः । सम्राट् छंदः । छिन्नमस्ता देवता । हूं बीजम् । ॐ शक्तिः । ह्रीं
कीलकम् । शत्रुक्षयकरणार्थे पाठे विनियोगः ॥ ॐ भैरवऋषये नमः शिरसि १ । सम्राट्छंदसे नमो मुखे २ । छिन्नमस्तादेवतायै नमो
हृदि ३ । हूं बीजाय नमो गुह्ये ४ । ॐ शक्तये नमः पादयोः ५ । ह्रीं कीलकाय नमो नाभौ ६ । विनियोगाय नमः सर्वांगे ७ ॥
इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ हूं तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ ऐं अनामिकाभ्यां
नमः ४ । ॐ क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ॐ हूं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ॐ हृदयाय नमः १ । ॐ हूं
शिरसे स्वाहा २ । ॐ ह्रीं शिखायै वषट् ३ । ॐ ऐं कवचाय हुम् ४ । ॐ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ हूं अस्त्राय फट् ६ ॥ इति
हृदयादिषडंगन्यासः॥अथ ध्यानम्—रक्ताभां रक्तकेशीं करकमललसत्कर्त्रिकां कालकांतिं विच्छिन्नात्मीयमुण्डासृगरुणबहुलोदग्रधारां पिबं
तीम् ॥ विघ्नाभ्रौघप्रचण्डश्वसनसमनिभां सेवितां सिद्धसंघैः पद्माक्षीं छिन्नमस्तां छलकरदितिजच्छेदिनीं संस्मरामि ॥ १ ॥ वन्देऽहं
छिन्नमस्तां तां छिन्नमुडधरां पराम् ॥ छिन्नग्रीवोच्छटाच्छन्नां क्षौमवस्त्रपरिच्छदाम् ॥ २ ॥ सर्वदा सुरसंघेन सेवितांघ्रिसरोरुहाम् ॥ सेवे
सकलसम्पत्त्यै छिन्नमस्तां शुभप्रदाम् ॥ ३ ॥ यज्ञानां योगयज्ञाय या तु जाता युगे युगे ॥ दानवांतकरीं देवीं छिन्नमस्तां भजामि ताम् ॥
॥ ४ ॥ वैराचनीं वरारोहां वामदेवविवर्द्धिताम् ॥ कोटिसूर्य्यप्रभां वंदे विद्युद्वर्णाक्षिमण्डिताम् ॥ ५ ॥ निजकण्ठोच्छलद्रक्तधारया
या मुहुर्मुहुः ॥ योगिनीस्तर्पयन्त्युग्रा तस्याश्चरणमाश्रये ॥ ६ ॥ हूमित्येकाक्षरं मंत्रं यदीयं युक्तमानसः ॥ यो जपेत्तस्य विद्वेषी
भस्मतां याति तां भजे ॥ ७ ॥ हूं स्वाहेति मनुं सम्यग्यः स्मरत्यर्तिमान्नरः ॥ छिनत्ति च्छिन्नमस्ता या तस्य बाधां नमामि ताम् ॥८॥
यस्याः कटाक्षमात्रेण क्रूरभूतादयो द्रुतम् ॥ दूरतः सम्पलायंते च्छिन्नमस्तां भजामि ताम् ॥ ९ ॥ क्षितितलपरिरक्षाक्षांतरोषा सुदक्षा

छलयुतखलकक्षाच्छेदने क्षांतिलक्ष्या ॥ क्षितिदितिजसुपक्षा क्षोणिपाक्षय्यशिक्षा जयतु जयतु चाक्षा च्छिन्नमस्तारिभक्षा ॥ १० ॥ कलिकलुषकलानां कर्त्तने कर्त्रिहस्ता सुरकुवलयकाशा मन्दभानुप्रकाशा ॥ असुरकुलकलापत्रासिकाऽम्लानमूर्तिर्जयतु जयतु काली च्छिन्नमस्ता कराली ॥ ११ ॥ भुवनभरणभूरिभ्राजमानानुभावा भवभवविभवानां भारणोद्धातभूतिः ॥ द्विजकुलकमलानां भासिनी भानुमूर्तिर्भवतु भवतु वाणी च्छिन्नमस्ता भवानी ॥ १२ ॥ मम रिपुगणमाशु च्छेत्तुमुग्रं कृपाणं सपदि जननि तीक्ष्णं छिन्नमुण्डं गृहाण ॥ भवतु तव यशोऽलं छिंधि शत्रून्खलान्मे मम च परिदिशेष्टं छिन्नमस्ते क्षमस्व ॥ १३ ॥ छिन्नग्रीवा छिन्नमस्ता छिन्नमुण्ड धराऽक्षता ॥ क्षोदक्षेमकरी स्वक्षा क्षोणीशाच्छादनक्षमा ॥ १४ ॥ वैरोचनी वरारोहा बलिदानप्रहर्षिता ॥ बलिपूजितपादाब्जा वासुदेवप्रपूजिता ॥ १५ ॥ इति द्वादशनामानि च्छिन्नमस्ताप्रियाणि यः ॥ स्मरेत्प्रातः समुत्थाय तस्य नश्यंति शत्रवः ॥ १६ ॥ यां स्मृत्वा संति सद्यः सकलसुरगणाः सर्वदा सम्पदाढ्याः शत्रूणां संघमाहत्य विशदवदनाः स्वस्थचित्ताः श्रयंति ॥ तस्याः संकल्पवंतः सरसिजचरणं संततं संश्रयंति साऽऽद्या श्रीशादिसेव्या सुफलतु सुतरां छिन्नमस्ता प्रशस्ता ॥ १७ ॥ इदं हृदयमज्ञात्वा हंतुमिच्छति यो द्विषम् ॥ कथं तस्याचिरं शत्रुर्नाशमेष्यति पार्वति ॥ १८ ॥ यदीच्छेन्नाशनं शत्रोः शीघ्रमेतत्पठेन्नरः ॥ छिन्नमस्ता प्रसन्ना हि ददाति फलमीप्सितम् ॥ १९ ॥ शत्रुप्रशमनं पुण्यं समीप्सितफलप्रदम् ॥ आयुरारोग्यदं चैव पठतां पुण्यसाधनम् ॥ २० ॥ इति श्रीनंद्यावर्ते महादेवपार्वतीसंवादे श्रीच्छिन्नमस्ताहृदयस्तोत्रं समाप्तम् ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे मध्यखण्डे च्छिन्नमस्तातंत्रे नवमस्तरंगः ॥ ९ ॥

धूमावत्यैनमः।



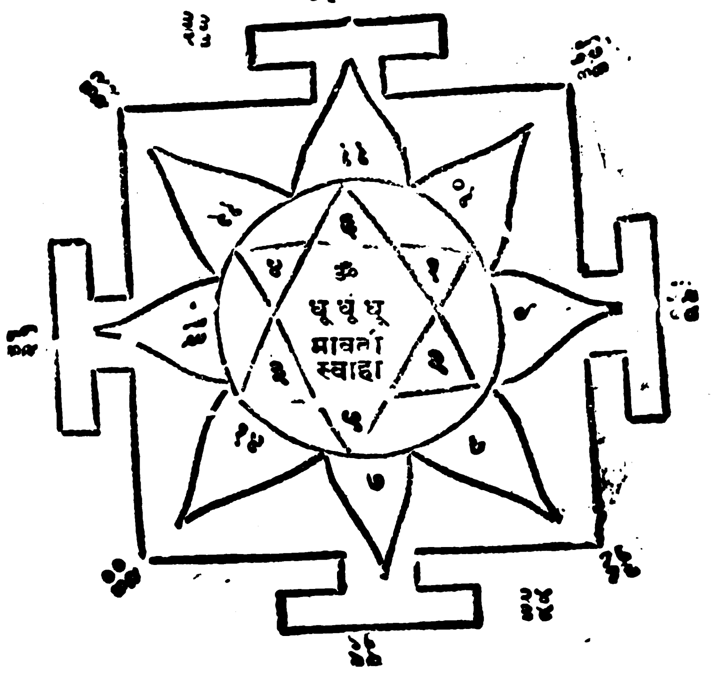
अथ धूमावतीतंत्रप्रारंभः ॥ मंत्रो यथा मंत्रमहोदधौ–धूंधूं धूमावति स्वाहा ॥ इत्य ष्टाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अस्य धूमावतीमंत्रस्य पिप्पलाद ऋषिः । निवृच्छंदः । ज्येष्ठा[3] देवता। [3]धूं बीजम्। स्वाहा शक्तिः । धूमावती कीलकम्।मम[4]भीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनि योगः ॥ ॐ पिप्पलादऋषये नमः शिरसि १ । निवृच्छंदसे नमः मुखे २ । ज्येष्ठादेवतायै नमः हृदि ३ । धूं बीजाय नमः गुह्ये ४ । स्वाहाशक्तये नमः पादयोः ५ । धूमावतीकीलकाय नमः नाभौ ६ । विनियोगाय नमः सर्वांगे ७ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ धूं धूं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ धूं तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ मां मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ वं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ तिं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति कर[5]न्यासः ॥ ॐ धूं धूं हृदयाय नमः १ । ॐ धूं शिरसे स्वाहा २ । ॐ मां शिखायै वषट् ३ । ॐ वं कवचाय हुम् ४ । ॐ तिं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् । अथ ध्यानम्–अत्युच्चा मलिनां बराखिलजनोद्वेगावहा दुर्मना रूक्षाक्षित्रितया विशालदशना सूर्य्योदरी चंचला॥प्रस्वेदाम्बु चिताक्षुधाकुलतनुः कृष्णातिरूक्षाप्रभा ध्येया मुक्तकचा सदाप्रियकलिर्धूमावती मंत्रिणा ॥१ ॥ तंत्रांतरेऽपि ध्यानं यथा–विवर्णा चंचला

---

१ तंत्रांतरेऽपि–धूं धूं धूमावति ठः ठः । इति मंत्रः ॥ २ तंत्रांतरे धूमावती देवता ॥ ३ इति बीजादिकं मतांतरेऽपि ज्ञेयम् ॥ ४ शत्रुहनने जपे विनियोगः ॥ ५ तंत्रांतरेऽपि–धां धीं धूं धैं धौं धः । इति षड्बीजैः षडंगं कुर्य्यात् ॥

दुष्टा दीर्घा च मलिनांबरा ॥ विमुक्तकुंतला रूक्षा विधवा विरलद्विजा ॥ काकध्वजरथारूढा विलंबितपयोधरा ॥ शूर्पहस्तातिरक्ताक्षी धृतहस्ता वरान्विता ॥ प्रवृद्धघोणा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा ॥ क्षुत्पिपासार्दिता नित्यं भयदा कलहास्पदा ॥ २ ॥ इति ध्यायेत् । ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति पीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तद्यथा—पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु ॐ कामदायै नमः १ । ॐ मानदायै नमः २ । ॐ नक्तायै नमः ३ ॥ ॐ मधुरायै नमः ४ । ॐ मधुराननायै नमः ५ । ॐ नर्मदायै नमः ६ । ॐ भोगदायै नमः ७ । ॐ नंदायै नमः ८ । मध्ये ॐ प्राणदायै नमः ९ ॥ इति पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण प्रोञ्छ्य 'ॐ धूमावती योगपीठाय नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां

धूमावतीपूजनयन्त्रम् ।



गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्य्यात् । तद्यथा पुष्पांजलिमादाय—संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ॥ अनुज्ञां देहि मातस्त्वं परिवारार्चनाय मे ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च षडंगानि पूजयेत् ॥ ॥ तद्यथा—ॐ धूं धूं हृदयाय नमः । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र १ । ॐ धूं शिरसे स्वाहा शिरःश्रीपा० २ ।

ॐ मां शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ३ । ॐ वं नमः कवचायै हुं । कवचश्रीपा० ४ । ॐ तिं नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततःपुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य— अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततोऽष्टदले पज्यपूजकयोरंतरालं प्राची तदनुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ॐ क्षुधायै नमः । क्षुधाश्रीपा० १ । ॐ तृष्णायै नमः । तृष्णाश्रीपा० २ । ॐ रत्यै नमः । रतिश्रीपा० ३ । ॐ निद्रायै नमः । निद्राश्रीपा० ४ । ॐ निर्ऋत्यै नमः । निर्ऋतिश्रीपा० ५ । ॐ दुर्गत्यै नमः । दुर्गतिश्रीपा० ६ । ॐ रुषायै नमः । रुषाश्रीपा० ७ । ॐ अक्षमायै नमः । अक्षमाश्रीपा० ८ । इत्यष्टौ शक्तीः पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादि नमस्कारांतं संपूज्य श्मशाने दिगंबरो भूत्वा जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपः । तिलमिश्रितघृतेन दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्य्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च— एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षं श्मशाने विगतांबरः ॥ निशाभोजी दशांशेन तिलैर्हवनमाचरेत् ॥ १ ॥ एवं ज्येष्ठां समाराध्य सिद्धो मंत्रः प्रजायते ॥ प्रयोगो यथा—उपोष्य कृष्णभूताहे नग्नो मुक्तशिरोरुहः ॥ २ ॥ शून्यागारे श्मशाने वा कांतारे भूधरेऽथवा ॥ प्रत्यहं प्रजपेन्निर्भीर्ध्यायन् देवीं शवासनः ॥ ३ ॥ एवं लक्षं जपेन्मंत्री नाशयेदचिरादरीन् ॥ जुहुयाल्लवणोपेतराजिकां निशि तत्फलम् ॥ ४ ॥ फेत्कारिणीतंत्रे प्रयोगविशेषः—अस्थ्युपरि लिखेन्मंत्रं तस्मिन् स्थाप्य शिवं यजेत् ॥ अवष्टभ्य शिवं शत्रुनाम्ना वै प्रजपेन्मनुम् ॥ ५ ॥ सहस्रार्धमतः शत्रुर्ज्वरेण परिगृह्यते ॥ पंचगव्येन शांतिः स्याज्ज्वरस्य पयसापि वा ॥ ६ ॥ कृत्वा मंत्रे रिपोराख्यामरण्ययामिनी

१ फेत्कारिणीतंत्रे—जपेत्कृष्णचतुर्दश्यां पुरश्चरणसिद्धये। उपवासरतो मंत्री शून्यागारे दिवानिशम् ॥ श्मशाने विपिने वापि जपेल्लक्षं तु वाग्यतः । सोऽमोघः साद्यवाराध्य पुरश्चरणकर्मणि ॥

दले ॥ उत्साहो जायते शत्रोर्मनोरयुतजापतः ॥ ७ ॥ दग्ध्वा काकं श्मशानाग्नौ तद्भस्मादाय मंत्रितम् ॥ शीर्षे विरोधिनः क्षिप्त्वा उच्चाटो जायते क्षणात् ॥ ८ ॥ श्मशानभस्मना कृत्वा शिवं तस्योपरि न्यसेत् ॥ विरोधिनामसंरुद्धं कृष्णपक्षे समर्चयेत् ॥ महिषीरूपमासाद्य स्वप्ने शत्रुं विनाशयेत् ॥ ९ ॥ मंत्रेणानेन निखनेत्तद्भस्म रिपुमंदिरे ॥ शत्रुमुच्चाटयेन्नूनं नात्र कार्या विचारणा ॥ १० ॥ श्मशानभस्मना लिंगं कृत्वा पुष्पादिनार्चयेत् ॥ भगवान्निति संभाव्य मनसा कर्म चिंतयन् ॥ ११ ॥ निंबकाकच्छदावेकीकृत्य चाष्टशतं जपेत्[1] ॥ दद्याद्धूपं साध्यनाम्ना सद्यो विद्वेषयेदरीन्[2] ॥ १२ ॥ चितिकाष्ठानले क्षीरहोमाच्छांतिः सदा भवेत् ॥ रजोधूमप्रदानेन गृध्ररूपेण कालिका ॥ १३ ॥ मारयत्यरिमागत्य शांतिर्निर्माल्यधूपतः ॥ वाराहकर्णधूपेन हन्याच्छूकररूपिणी ॥ १४ ॥ अश्वत्थपत्रधूपेन शांतिर्भवति नान्यथा ॥ शांतिः सर्वापि चावश्यं पंचगव्येन जायते ॥ क्षीरेण चापि देवेशि मधरत्रितयेन वा ॥ १५ ॥ इत्यष्टाक्षरी धूमावतीमंत्रप्रयोगः ॥ अथ धूमावतीकवचप्रारंभः ॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥ धूमावत्यर्चनं शंभो श्रुत विस्तरतो मया ॥ कवचं श्रोतुमिच्छामि तस्या देव वदस्व मे ॥१॥ श्रीभैरव उवाच ॥ शृणु देवि परं गुह्यं न प्रकाश्यं कलौ युगे ॥ कवचं श्रीधूमवत्याः शत्रुनिग्रहकारकम् ॥ २ ॥ ब्रह्माद्या देवि सततं यद्वशादरिघातिनः ॥ योगिनो भवंति शत्रुघ्ना यस्या ध्यानप्रभावतः ॥ ३ ॥ ॐ अस्य श्रीधूमावतीकवचस्य पिप्पलाद ऋषिः । अनुष्टुप्छंदः । श्रीधूमावती देवता । धूं बीजम् । स्वाहा शक्तिः । धूमावती कीलकम् । शत्रुहनने पाठे विनियोगः ॥ ॐ धूं बीजं मे शिरः पातु धूं ललाटं सदावतु ॥ धूमा नेत्रयुगं पातु वती कर्णौ सदावतु ॥४॥ दीर्घा तूदरमध्ये तु नाभिं मे मलिनाम्बरा ॥ शूर्पहस्ता पातु गुह्यं रूक्षा रक्षतु जानुनी ॥ ५ ॥ मुखं मे पातु भीमाख्या स्वाहा रक्षतु नासिकाम् ॥ सर्वाविद्याऽवतु कण्ठं विवर्णा बाहुयुग्मकम् ॥ ॥ ६ ॥ चञ्चला हृदयं पातु धृष्टा पार्श्वे सदाऽवतु ॥ धूमहस्ता सदा पातु पादौ पातु भयावहा ॥ ७ ॥ प्रवृद्धरोमा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा ॥ क्षुत्पिपासार्दिता देवी भयदा कलहप्रिया ॥ ८ ॥ सर्वांगं पातु मे देवी सर्वशत्रुविनाशिनी ॥ इति ते कथितं

१ अष्टोत्तरशतेनाभिमंत्रयेत् । २ अमुकं विद्वेषयेति मूलेन धूपं दद्यात् ।

पुण्यं कवचं भुवि दुर्लभम् ॥ ९ ॥ न प्रकाश्यं न प्रकाश्यं न प्रकाश्यं कलौ युगे ॥ पठनीयं महादेवि त्रिसंध्यं ध्यानतत्परः ॥ १० ॥ दुष्टाभिचारो देवेशि तद्गात्रं नैव संस्पृशेत् ॥ ११ ॥ इति भैरवीभैरवसंवादे धूमावतीतत्त्वे धूमावतीकवचं सम्पूर्णम् ॥

अथ धूमावतीस्तोत्रप्रारंभः ॥ प्रातर्या स्यात्कुमारी कुसुमकलिकया जापमालां जपंती मध्याह्ने प्रौढरूपा विकसितवदना चारुनेत्रा निशायाम् ॥ संध्यायां वृद्धरूपा गलितकुचयुगा मुण्डमालां वहंती सा देवी देवदेवी त्रिभुवनजननी कालिका पातु युष्मान् ॥ १ ॥ बद्ध्वा खट्वांगखेटौ कपिलवरजटामंडलं पद्मयोनेः कृत्वा दैत्योत्तमांगैः स्रजमुरसि शिरःशेखरं तार्क्ष्यपक्षैः ॥ पूर्णं रक्तैः सुराणां यम महिषमहाशृङ्गमादाय पाणौ पायाद्वो वंद्यमानः प्रलयमुदितया भैरवः कालरात्र्याम् ॥ २ ॥ चर्वन्तीमस्थिखण्डं प्रकटकटकटाशब्दसंघात मुग्रं कुर्वाणा प्रेतमध्ये कहहकहकहाहास्यमुग्रं कृशांगी ॥ नित्यं नित्यप्रसक्ता डमरुडिमडिमान् स्फारयंती मुखाब्जं पायान्नश्चण्डिकेयं झझमझमझमाजल्पमाना भ्रमंती ॥ ३ ॥ टंटंटंटंटटंटाप्रकरटमटमानादघंटां वहंती स्फेंस्फेंस्फेंस्फारकारा टकटकितहसा नादसंघट्टभीमा ॥ लोलन्मुण्डाग्रमाला ललहलहलहालोललोलाग्रवाचं चर्वंती चण्डमुण्डं मटमटमटितैश्चर्वयंती पुनातु ॥ ४ ॥ वामे कर्णे मृगांकं प्रलय परिगतं दक्षिणे सूर्य्यबिंबं कण्ठे नक्षत्रहारं वरविकटजटाजूटके मुण्डमालाम् ॥ स्कंधे कृत्वोरगेन्द्रध्वजनिकरयुतं ब्रह्मकंकालभारं संहारे धारयंती मम हरतु भयं भद्रदा भद्रकाली ॥ ५ ॥ तैलाभ्यक्तैकवेणी त्रपुमयविलसत्कर्णिकाक्रांतकर्णा लौहेनैकेन कृत्वा चरणनलिन कामात्मनः पादशोभाम् ॥ दिग्वासा रासभेन ग्रसति जगदिदं या यवाकर्णपरा वर्षिण्यातिप्रवृद्धा ध्वजविततभुजा सासि देवि त्वमेव ॥ ६ ॥ संग्रामे हेतिकृत्तैः सरुधिरदशनैर्यद्भटानां शिरोभिर्मालामाबद्ध्य मूर्ध्नि ध्वजविततभजा त्वं श्मशाने प्रविष्टा ॥ दृष्टा भूतप्रभूतैः पृथुतर जघनाबद्धनागेन्द्रकाञ्ची शूलाग्रव्यग्रहस्ता मधुरुधिरसदाताम्रनेत्री निशायाम् ॥ ७ ॥ दंष्ट्रारौद्रे मुखेऽस्मिंस्तव विशति जगद्देवि सर्वं क्षणा र्द्धात् संसारस्यांतकाले नररुधिरवशासम्प्लवे धूमधूम्रे ॥ काली कापालिकी सा शवशयनरता योगिनी योगमुद्रा रक्ता ऋद्धिः सभास्था मरणभयहरा त्वं शिवा चण्डघण्टा ॥ ८ ॥ धूमावत्यष्टकं पुण्यं सर्वापद्विनिवारकम् ॥ यः पठेत्साधको भक्त्या सिद्धिं विंदति वांछि

ताम् ॥ ९ ॥ महापदि महाघोरे महारोगे महारणे ॥ शत्रूच्चाटे मारणादौ जंतूनां मोहने तथा ॥ १० ॥ पठेत्स्तोत्रमिदं देवि सर्वत्र सिद्धिभाग्भवेत् ॥ देवदानवगंधर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः ॥ ११ ॥ सिंहव्याघ्रादिकाः सर्वे स्तोत्रस्मरणमात्रतः ॥ दूराद्दूरतरं यांति किं पुनर्मानुषादयः ॥ १२ ॥ स्तोत्रेणानेन देवेशि किं न सिद्ध्यति भूतले ॥ सर्वशांतिर्भवेद्देवि अंते निर्वाणतां व्रजेत् ॥ १३ ॥ इत्यूर्ध्वाम्नाये धूमावतीस्तोत्रं समाप्तम् ॥ अथ धूमावत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रप्रारंभः ॥ ईश्वर उवाच ॥ ॐ धूमावती धम्रवर्णा धूम्रपानपरायणा ॥ धूम्राक्षमथिनी धन्या धन्यस्थाननिवासिनी ॥ १ ॥ अघोराचारसंतुष्टा अघोराचारमण्डिता ॥ अघोरमंत्रसम्प्रीता अघोरमंत्रपूजिता ॥ २ ॥ अट्टाट्टहासनिरता मलिनाम्बरधारिणी ॥ वृद्धा विरूपा विधवा विद्या च विरलद्विजा ॥ ३ ॥ प्रवृद्धघोणा कुमुखी कुटिला कुटिलेक्षणा ॥ कराली च करालास्या कंकाली शूर्पधारिणी ॥ ४ ॥ काकध्वजरथारूढा केवला कठिना कुहूः ॥ क्षुत्पिपासार्दिता नित्या ललज्जिह्वा दिगम्बरा ॥ ५ ॥ दीर्घोदरी दीर्घरवा दीर्घांगी दीर्घमस्तका ॥ विमुक्तकुंतला कीर्त्या कैलासस्थानवासिनी ॥ ६ ॥ क्रूरा कालस्वरूपा च कालचक्रप्रवर्तिनी ॥ विवर्णा चञ्चला दुष्टा दुष्टविध्वंसकारिणी ॥ ७ ॥ चण्डी चण्डस्वरूपा च चामुण्डा चण्डनिःस्वना ॥ चण्डवेगा चण्डगतिश्चंडमुण्डविनाशिनी ॥ ८ ॥ चाण्डालिनी चित्ररेखा चित्रांगी चित्ररूपिणी ॥ कृष्णा कपर्दिनी कुल्ला कृष्णरूपा क्रियावती ॥ ९ ॥ कुम्भस्तनी महोन्मत्ता मदिरापानविह्वला ॥ चतुर्भुजा ललज्जिह्वा शत्रुसंहारकारिणी ॥ १० ॥ शवारूढा शवगता श्मशानस्थानवासिनी ॥ दुराराध्या दुराचारा दुर्ज्जनप्रीतिदायिनी ॥ ११ ॥ निर्मांसा च निराकारा धूमहस्ता वरान्विता ॥ कलहा च कलिप्रीता कलिकल्मषनाशिनी ॥ १२ ॥ महाकालस्वरूपा च महाकालप्रपूजिता ॥ महादेवप्रिया मेधा महासंकटनाशिनी ॥ १३ ॥ भक्तप्रिया भक्तगतिर्भक्तशत्रुविनाशिनी ॥ भैरवी भुवना भीमा भारती भुवनात्मिका ॥ १४ ॥ भरुण्डा भीमनयना त्रिनेत्रा बहुरूपिणी ॥ त्रिलोकेशी त्रिकालज्ञा त्रिस्वरूपा त्रयीतनुः ॥ १५ ॥ त्रिमातश्च तथा तन्वी त्रिशक्तिश्च त्रिशूलिनी ॥ इति धूमामहत्स्तोत्रं नाम्नमष्टशतात्मकम् ॥ १६ ॥ मया ते कथितं देवि शत्रुसंघविनाशनम् ॥ कारागारे रिपुग्रस्ते महोत्पाते महाभये ॥ १७ ॥ इदं स्तोत्रं पठे

न्मत्यों मुच्यते सर्वसंकटैः ॥ गुह्याद्गुह्यतरं गुह्यं गोपनीयं प्रयत्नतः॥ चतुष्पदार्थदं नृणां सर्वसम्पत्प्रदायकम् ॥ १८ ॥ इति धूमावत्यष्टोत्तर
शतनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥ अथ धूमावतीसहस्रनामस्तोत्रप्रारंभः ॥ श्रीभैरव्युवाच ॥ धूमावत्या धर्म्मरात्र्याः कथयस्व महेश्वर ॥ सहस्र
नामस्तोत्रं मे सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥ १ ॥ श्रीभैरव उवाच ॥ शृणु देवि महामाये प्रिये प्राणस्वरूपिणि ॥ सहस्रनामस्तोत्रं मे भवशत्रु
विनाशनम् ॥२॥ ॐ अस्य श्रीधूमावतीसहस्रनामस्तोत्रस्य पिप्पलाद ऋषिः । पंक्तिश्छंदः । धूमावती देवता । शत्रुविनिग्रहे पाठे विनि
योगः ॥ धूमा धूमवती धूमा धूमपानपरायणा ॥ धौता धौतगिरा धाम्नी धूमेश्वरनिवासिनी ॥ ३ ॥ अनंताऽनंतरूपा च अकाराकार
रूपिणी ॥ आद्या आनन्ददा नंदा इकारा इन्द्ररूपिणी ॥४ ॥ धनधान्यार्थवाणीदा यशोधर्म्मप्रियेष्टदा ॥ भाग्यसौभाग्यभक्तिस्था गृहपर्वत
वासिनी ॥ ५ ॥ रामरावणसुग्रीवमोहदा हनुमत्प्रिया ॥ वेदशास्त्रपुराणज्ञा ज्योतिश्छंदःस्वरूपिणी ॥ ६ ॥ चातुर्य्यचारुरुचिरा रंजनप्रेम
तोषदा ॥ कमलास्या सुधावक्त्रा चन्द्रहासा स्मितानना ॥ ७ ॥ चतुरा चारुकेशी च चतुर्वर्गप्रदा मुदा ॥ कला कलाधरा धीरा धारिणी
वसुनीरदा ॥ ८ ॥ हीरा हीरकवर्णाभा हरिणायतलोचना ॥ दंभमोहक्रोधलोभस्नेहद्वेषहरा परा ॥ ९ ॥ नरदेवकरी रामा रामानन्द
मनोहरा ॥ योगभोगक्रोधलोभहरा हरनमस्कृता ॥ १० ॥ दानमानज्ञानमानपानगानसुखप्रदा ॥ गजगोऽश्वपदा गंजा भूतिदा भूत
नाशिनी ॥ ११ ॥ भवभावा तथा बाला वरदा हरवल्लभा ॥ भगभंगभया माला मालतीमालना ह्रदा ॥ १२ ॥ जालवालहालकाल
कपालप्रियवादिनी ॥ करंजशीलगुंजाढ्या चूतांकुरनिवासिनी ॥ १३ ॥ पनसस्था पानसक्ता पनशेशकुटुम्बिनी॥ पावनी पावनाधारा
पूर्णा पूर्णमनोरथा ॥ १४ ॥ पूता पूतकला पौरा पुराणसुरसुन्दरी ॥ परेशी परदा पारा परमात्मा प्रमोहिनी ॥ १५ ॥ जगन्माया
जगत्कर्त्री जगत्कीर्तिर्जगन्मयी ॥ जननी जयिनी जायाजिता जिनजयप्रदा ॥ १६ ॥ कीर्तिज्ञानध्यानमानदायिनी दानवेश्वरी ॥
काव्यव्याकरणज्ञा कामज्ञा प्रज्ञानदायिनी ॥ १७ ॥ विज्ञाज्ञा विज्ञजयदा विज्ञा विज्ञप्रपूजिता ॥ परावरेज्या वरदा पारदा शारदा
दरा ॥ १८ ॥ दारिणी देवदूती च दमना दमनामदा ॥ परमज्ञानगम्या च परेशी परगा परा ॥ १९ ॥ यज्ञा यज्ञप्रदा यज्ञज्ञान

कार्य्यकरी शुभा ॥ शोभिनी शुम्भमथिनी निशुंभासुरमर्दिनी ॥ २० ॥ शांभवी शंभुपत्नी च शंभुजाया शुभानना ॥ शांकरी शंकराराध्या संध्यासंध्यासुधर्मिणी ॥ २१ ॥ शत्रुघ्नी शत्रुहा शत्रुप्रदा शात्रवनाशिनी ॥ शैवी शिवलया शैला शैलराजप्रिया सदा ॥ २२ ॥ शर्वरी शर्वरी शंभुः सुधाढ्या सौधवासिनी ॥ सगुणा गुणरूपा च गौरवी भैरवारवा ॥ २३ ॥ गौरांगी गौरदेहा च गौरी गुरुमती गुरुः ॥ गौर्गौर्गव्यस्वरूपा च गुणानन्दस्वरूपिणी ॥ २४ ॥ गणेशगणदा गुण्या गुणा गौरववांछिता ॥ गणमाता गणाराध्या गणकोटिविनाशिनी ॥ २५ ॥ दुर्गा दुर्जनहंत्री च दुर्जनप्रीतिदायिनी ॥ स्वर्गापवर्गदा दात्री दीना दीनदयावती ॥ २६ ॥ दुर्निरीक्ष्या दुरा दुःस्था दौःस्थ्यभंजनकारिणी ॥ श्वेतपाण्डुरकृष्णाभा कालदा कालनाशिनी ॥ २७ ॥ कर्मनर्मकरी नर्मा धर्माधर्मविनाशिनी ॥ गौरी गौरवदा गोदा गणदा गायनप्रिया ॥ २८ ॥ गङ्गा भागीरथी भंगा भगा भाग्यविवर्द्धिनी ॥ भवानी भवहंत्री च भैरवी भैरवासना ॥ २९ ॥ भीमा भीमरवा भैमी भीमानन्दप्रदायिनी ॥ शरण्या शरणा शम्या शशिनी शंखनाशिनी ॥ ३० ॥ गुणा गुणकरी गौणी प्रिया प्रीतिप्रदायिनी ॥ जनमोहनकर्त्री च जगदानन्ददायिनी ॥ ३१ ॥ जिता जाया च विजयाविजया जयदायिनी ॥ कामा काली करालास्या खर्वा खञ्जा खरागदा ॥ ३२ ॥ गर्वा गरुत्मती घर्मा घर्घरा घोरनादिनी ॥ चराचरी चराराध्या च्छिन्ना छिन्नमनोरथा ॥ ३३ ॥ छिन्नमस्ता जया जाप्या जगज्जाया च झर्झरी ॥ झकारा झीष्कृतिष्टीका टंका टंकारनादिनी ॥ ३४ ॥ ठीका ठक्कुरठक्कांगी ठठठांकारढुण्ढुरा ॥ ढुण्ढीता राजतीर्णा च तालस्था भ्रमनाशिनी ॥ ३५ ॥ थकारा थकरादात्री दीपा दीपविनाशिनी ॥ धन्या धना धनवती नर्मदा नर्ममोदिनी ॥ ३६ ॥ पद्मा पद्मावती पीता स्फीता फूत्कारकारिणी ॥ फुल्ला ब्रह्ममयी ब्राह्मी ब्रह्मानन्दप्रदायिनी ॥ ३७ ॥ भवाराध्या भवाध्यक्षा भगाली मन्दगामिनी ॥ मदिरा मदिरेक्षा च यशोदा यमपूजिता ॥ ३८ ॥ याम्या राम्या रामरूपा रमणी ललिता लता ॥ लंकेशी वाक्प्रदा वाच्या सदाश्रमनिवासिनी ॥ ३९ ॥ श्रांता शकाररूपा च षकारा खरवाहना ॥ सह्याद्रिरूपा सानन्दा हरिणी हरिरूपिणी ॥ ४० ॥ हराराध्या बालवा च लवंगप्रेमतोषिता ॥ क्षपा क्षयप्रदा क्षीरा अकारादिस्वरूपिणी ॥ ४१ ॥ कालिक

[illegible]र्तिश्च कलहा कलहप्रिया ॥ शिवा शंदायिनी सौम्या शत्रुनिग्रहकारिणी ॥ ४२ ॥ भवानी भवमूर्तिश्च शर्वाणी सर्वमंगला ॥ शत्रुविद्राविणी शैवी शुंभासुरविनाशिनी ॥ ४३ ॥ धकारमंत्ररूपा च धूंबीजपरितोषिता ॥ धनाध्यक्षसुता धीरा धरारूपा धरावती ॥ ॥ ४४ ॥ चर्विणी चन्द्रपूज्या च च्छन्दोरूपा छटावती ॥ छाया छायावती स्वच्छा छेदिनी भेदिनी क्षमा ॥ ४५ ॥ वल्गिनी वर्द्धिनी वंद्या वेदमाता बुधस्तुता ॥ धारा धारावती धन्या धर्मदानपरायणा ॥ ४६ ॥ गर्भिणी गुरुपूज्या च ज्ञानदात्री गुणान्विता ॥ धर्मिणी धर्मरूपा च घण्टानादपरायणा ॥ ४७ ॥ घण्टानिनादिनी घूर्णा घूर्णिता घोररूपिणी ॥ कलिघ्नी कलिदूती च कलिपूज्या कलिप्रिया ॥ ४८ ॥ कालनिर्णाशिनी काल्या काव्यदा कालरूपिणी ॥ वर्षिणी वृष्टिदा वृष्टिर्महावृष्टिनिवारिणी ॥ ४९ ॥ घातिनी घाटिनी घोण्टा घातकी घनरूपिणी ॥ धूंबीजा धूंजपा नन्दा धूंबीजजपतोषिता ॥ ५० ॥ धूंधूंबीजजपासक्ता धूंधूंबीजपरायणा ॥ धूंकारहर्षिणी धूमा धनदा धनगर्विता ॥ ५१ ॥ पद्मावती पद्ममाला पद्मयोनिप्रपूजिता ॥ अपारा पर्णपूर्णा तु पूर्णिमापरिवन्दिता ॥ ॥ ५२ ॥ फलदा फलभोक्त्री च फलिनी फलदायिनी ॥ फूत्कारिणी फलावाप्त्री फलभोक्त्री फलान्विता ॥ ५३ ॥ वारिणी वारणप्रीता वारिपाथोधिपारगा ॥ विवर्णा धूम्रनयना धूम्राक्षी धूम्ररूपिणी ॥ ५४ ॥ नीतिर्नीतिस्वरूपा च नीतिज्ञा नयकोविदा ॥ तारिणीताररूपा च तत्त्वज्ञानपरायणा ॥ ५५ ॥ स्थूला स्थूलाधरा स्थात्री उत्तमस्थानवासिनी ॥ स्थूला पद्मपदस्थाना स्थानभ्रष्टा स्थलस्थिता ॥ ५६ ॥ शोषिणी शोभिनी शीता शीतपानीयपायिनी ॥ शारिणी शांखिनी शुद्धा शंखासुरविनाशिनी ॥ ५७ ॥ शर्वरी शर्वरीपूज्या शर्वरीशप्रपूजिता ॥ शर्वरीजागृता योग्या योगिनी योगिवंदिता ॥ ५८ ॥ योगिनीगणसंसेव्या योगिनीयोगभाविता ॥ योगमार्गरता युक्ता योगमार्गानुसारिणी ॥ ५९ ॥ योगभावा योगयुक्ता यमिनीपतिवन्दिता ॥ अयोग्या योधिनी योद्धी युद्धकर्मविशारदा ॥ ६० ॥ युद्धमार्गरतानंता युद्धस्थाननिवासिनी ॥ सिद्धा सिद्धेश्वरी सिद्धिः सिद्धिगेहनिवासिनी ॥ ॥ ६१ ॥ सिद्धरीतिः सिद्धप्रीतिः सिद्धा सिद्धांतकारिणी ॥ सिद्धगम्या सिद्धपूज्या सिद्धवंद्या सुसिद्धिदा ॥ ६२ ॥ साधिनी

साधनप्रीता साध्या साधनकारिणी ॥ साधनीया साध्यसाध्या साध्यसंघसुशोभिनी ॥ ६३ ॥ साध्वी साधुस्वभावा सा साधुसंतति दायिनी ॥ साधुपूज्या साधुवंद्या साधुसंदर्शनोद्यता ॥ ६४ ॥ साधुदृष्टा साधुपृष्टा साधुपोषणतत्परा ॥ सात्त्विकी सत्त्वसंसिद्धा सत्त्वसेव्या सुखोदया ॥ ६५ ॥ सत्त्ववृद्धिकरी शांता सत्त्वसंहर्षमानसा ॥ सत्त्वज्ञाना सत्त्वविद्या सत्त्वसिद्धांतकारिणी ॥ ६६ ॥ सत्त्ववृद्धिः सत्त्व सिद्धिः सत्त्वसम्पन्नमानसा ॥ चारुरूपा चारुदेहा चारुचञ्चललोचना ॥ ६७ ॥ छद्मिनी छद्मसंकल्पा छद्मवार्ता क्षमाप्रिया ॥ हाठिनी हठसम्प्रीतिर्हठवार्त्ता हठोद्यमा ॥ ६८ ॥ हठकार्य्या हठधर्म्मा हठकर्मपरायणा ॥ हठसम्भोगनिरता हठात्काररतिप्रिया ॥ ॥ ६९ ॥ हठसंभेदिनी हृद्या हृद्यवार्ता हरिप्रिया ॥ हरिणी हरिणीदृष्टिर्हरिणीमांसभक्षणा ॥ ७० ॥ हरिणाक्षी हरिणपा हरिणीगण हर्षदा ॥ हरिणीगणसंहंत्री हरिणीपरिपोषिका ॥ ७१ ॥ हरिणीमृगयासक्ता हरिणीमानपुरःसरा ॥ दीना दीनकृतिर्दूना द्राविणी द्रविण प्रदा ॥ ७२ ॥ द्रविणाचलसंवासा द्रविता द्रव्यसंयुता ॥ दीर्घा दीर्घपदा दृश्या दर्शनीया दृढाकृतिः ॥ ७३ ॥ दृढा दुष्टमतिर्दुष्टा द्वेषिणी द्वेषिभंजिनी ॥ दोषिणी दोषसंयुक्ता दुष्टशत्रुविनाशिनी ॥ ७४ ॥ देवतार्तिहरा दुष्टदैत्यसंघविदारिणी ॥ दुष्टदानवहंत्री च दुष्टदैत्य निषूदिनी ॥ ७५ ॥ देवताप्राणदा देवी देवदुर्गतिनाशिनी ॥ नटनायकसंसेव्या नर्त्तकी नर्त्तकप्रिया ॥ ७६ ॥ नाट्यविद्या नाट्य कर्त्री नादिनी नादकारिणी ॥ नवीना नूतना नव्या नवीनवस्त्रधारिणी ॥ ७७ ॥ नव्यभूषा नव्यमाल्या नव्यालंकारशोभिता ॥ नकार वादिनी नम्या नवभूषणभूषिता ॥ ७८ ॥ नीचमार्गा नीचभूमिर्नीचमार्गगतिर्गतिः ॥ नाथसेव्या नाथभक्ता नाथानंदप्रदायिनी ॥ ॥ ७९ ॥ नम्रा नम्रगतिर्नेत्री निदानवाक्यवादिनी ॥ नारीमध्यस्थिता नारी नारीमध्यगताऽनघा ॥ ८० ॥ नारीप्रीतिर्नराराध्या नर नामप्रकाशिनी ॥ रती रतिप्रिया रम्या रतिप्रेमा रतिप्रदा ॥ ८१ ॥ रतिस्थानस्थिताऽऽराध्या रतिहर्षप्रदायिनी ॥ रतिरूपा रति ध्याना रतिरीतिसुधारिणी ॥ ८२ ॥ रतिरासमहोल्लासा रतिरासविहारिणी ॥ रतिकांतस्तुता राशी राशिरक्षणकारिणी ॥ ८३ ॥ अरूपा शुद्धरूपा च सुरूपा रूपगर्विता ॥ रूपयौवनसम्पन्ना रूपराशी रमावती ॥ ८४ ॥ रोधिनी रोषिणी रुष्टा रोषिरुद्धा रसप्रदा ॥

मादिनी मदनप्रीता मधुमत्ता मधुप्रदा ॥ ८५ ॥ मद्यपा मद्यपध्येया मद्यपप्राणरक्षिणी ॥ मद्यपानन्ददात्री च मद्यपप्रेमतोषिता ॥ ८६ ॥
मद्यपानरता मत्ता मद्यपानविहारिणी ॥ मदिरा मदिरारक्ता मदिरापानहर्षिणी ॥ ८७ ॥ मदिरापानसंतुष्टा मदिरापानमोहिनी ॥
मदिरामानसा मुग्धा माध्वीपा मदिराप्रदा ॥ ८८ ॥ माध्वीदानसदानन्दा माध्वीपानरता सदा ॥ मोदिनी मोदसंदात्री मुदिता मोद
मानसा ॥ ८९ ॥ मोदकर्त्री मोददात्री मोदमङ्गलकारिणी ॥ मोदकादानसंतुष्टा मोदकग्रहणक्षमा ॥ ९० । मोदकालब्धिसंक्रुद्धा
मोदकप्राप्तितोषिणी ॥ मांसादा मांससंभक्षा मांसभक्षणहर्षिणी ॥ ९१ ॥ मांसपाकपरप्रेमा मांसपाकालयस्थिता ॥ मत्स्यमांसकृतास्वादा
मकारपञ्चकाचिता ॥ ९२ ॥ मुद्रा मुद्रान्विता माता महामोहा मनस्विनी ॥ मुद्रिका मुद्रिकायुक्ता मुद्रिकाकृतलक्षणा ॥ ९३ ॥ मुद्रिका
लंकृता माद्री मन्दराचलवासिनी ॥ मन्दराचलसंसेव्या मन्दराचलवासिनी ॥ ९४ ॥ मन्दरध्येयपादाब्जा मन्दरारण्यवासिनी ॥ मन्दुरा
वासिनी मन्दा मारिणी मारिका मिता ॥ ९५ ॥ महामारी महामारीशमिनी शवसंस्थिता ॥ शवमांसकृताहारा श्मशानालयवासिनी ॥ ९६ ॥
श्मशानसिद्धिसंहृष्टा श्मशानभवनस्थिता ॥ श्मशानशयनागारा श्मशानभस्मलेपिता ॥ ९७ ॥ श्मशानभस्मभीमाङ्गी श्मशा
नावासकारिणी ॥ शामिनी शमनाराध्या शमनस्तुतिवन्दिता ॥ ९८ ॥ शमनाचारसंतुष्टा शमनागारवासिनी ॥ शमनस्वामिनी शांतिः
शांतसज्जनपूजिता ॥ ९९ ॥ शांतपूजापरा शांता शांतागारप्रभोजिनी ॥ शांतपूज्या शांतवंद्या शांतग्रहसुधारिणी ॥ १०० ॥ शांत
रूपा शांतियुक्ता शांतचन्द्रप्रभाऽमला ॥ अमला विमलाऽम्लाना मालतीकुंजवासिनी ॥ १०१ ॥ मालतीपुष्पसंप्रीता मालतीपुष्प
पूजिता ॥ महोग्रा महती मध्या मध्यदेशनिवासिनी ॥ १०२ ॥ मध्यमध्वनिसंप्रीता मध्यमध्वनिकारिणी ॥ मध्यमा मध्यमप्रीति
मध्यमप्रेमपूरिता ॥ १०३ ॥ मध्याङ्गचित्रवसना मध्याखिन्ना महोद्धता ॥ महेन्द्रसुरसम्पूज्या महेन्द्रपरिवन्दिता ॥ १०४ ॥
महेन्द्रजालसंयुक्ता महेन्द्रजालकारिणी ॥ महेन्द्रमानिता मान्या मानिनीगणमध्यगा ॥ १०५ ॥ मानिनीमानसंप्रीता गानविध्वंस
कारिणी ॥ मानिन्याकर्षिणी मुक्तिर्मुक्तिदात्री सुमुक्तिदा ॥ १०६ ॥ मुक्तिद्वेषकरी मूल्यकारिणी मूल्यहारिणी ॥ निर्मूला मूल

संयुक्ता मूलिनी मूलमंत्रिणी ॥ १०७ ॥ मूलमंत्रकृताह्लाद्या मूलमंत्रार्घहर्षिणी ॥ मूलमंत्रप्रतिष्ठात्री मूलमंत्रप्रहर्षिणी ॥ १०८ ॥ मूलमंत्रप्रसन्नास्या मूलमंत्रप्रपूजिता ॥ मूलमंत्रप्रणेत्री च मूलमंत्रकृतार्चना ॥ १०९ ॥ मूलमंत्रप्रहृष्टात्मा मूलविद्या मलापहा ॥ विद्याऽविद्या वटस्था च वटवृक्षनिवासिनी ॥ ११० ॥ वटवृक्षकृतस्थाना वटपूजापरायणा ॥ वटपूजापरिप्रीता वटदर्शनलालसा ॥ ॥ १११ ॥ वटपूजाकृताह्लादा वटपूजाविवर्द्धिनी ॥ वशिनी विवशाराध्या वशीकरणमंत्रिणी ॥ ११२ ॥ वशीकरणसम्प्रीता वशीकारकसिद्धिदा ॥ बटुका बटुकाराध्या बटुकाहारदायिनी ॥ ११३ ॥ बटुकार्चापरा पूज्या बटुकार्चाविवर्द्धिनी ॥ बटुकानन्दकर्त्री च बटुकप्राणरक्षिणी ॥ ११४ ॥ बटुकेज्याप्रदाऽपारा पारिणी पार्वतीप्रिया ॥ पर्वताग्रकृतावासा पर्वतेन्द्रप्रपूजिता ॥ ११५ ॥ पार्वतीपतिपूज्या च पार्वतीपतिहर्षदा ॥ पार्वतीपतिबुद्धिस्था पार्वतीपतिमोहिनी ॥ ११६ ॥ पार्वतीयद्विजाराध्या पर्वतस्था प्रतारिणी ॥ पद्मला पद्मिनी पद्मा पद्ममालाविभूषिता ॥ ११७ ॥ पद्मजाढ्यपदा पद्ममालालंकृतमस्तका ॥ पद्मार्चितपदद्वंद्वा पद्महस्ता पयोधिजा ॥ ११८ ॥ पयोधिपारगंत्री च पयोधिपरिकीर्त्तिता ॥ पाथोधिपारगा पूता पल्वलांबुप्रतर्पिता ॥ ११९ ॥ पल्वलांतःपयोमग्ना पवमानगतिर्गतिः ॥ पयःपाना पयोदात्री पानीयपरिकांक्षिणी ॥ १२० ॥ पयोजमालाभरणा मुण्डमालाविभूषणा ॥ मुण्डिनी मुण्डहंत्री च मुण्डिता मुण्डशोभिता ॥ १२१ ॥ मणिभूषा मणिग्रीवा मणिमालाविराजिता ॥ महामोहा महाशौर्या महामाया महाहवा ॥ १२२ ॥ मानवी मानवीपूज्या मनुवंशविवर्द्धिनी ॥ मठिनी मठसंहंत्री मठसम्पत्तिहारिणी ॥ १२३ ॥ महाक्रोधवती मढा मूढशत्रुविनाशिनी ॥ पाठीनभोजिनी पूर्णा पूर्णहारविहारिणी ॥ १२४ ॥ प्रलयानलतुल्याभा प्रलयानलरूपिणी ॥ प्रलयार्णवसंमग्ना प्रलयाब्धिविहारिणी ॥ १२५ ॥ महाप्रलयसंभूता महाप्रलयकारिणी ॥ महाप्रलयसंप्रीता महाप्रलयसाधिनी ॥ १२६ ॥ महाप्रलयसंपूज्या महाप्रलयमोदिनी ॥ छेदिनी च्छिन्नमुण्डोग्रा छिन्ना छिन्नरुहार्थिनी ॥ १२७ ॥ शत्रुसंछेदिनी छन्ना क्षोदिनी [illegible]रिणी ॥ लक्षिणी लक्षसंपूज्या लक्षिता लक्षणान्विता ॥ १२८ ॥ लक्षशस्त्रसमायुक्ता लक्षबाणप्रमोचिनी ॥ लक्षपूजापरा

लक्ष्या लक्षकोदण्डखण्डिनी ॥ १२९ ॥ लक्षकोदण्डसंयुक्ता लक्षकोदण्डधारिणी ॥ लक्षलीलालया लभ्या लक्षागारनिवासिनी ॥ ॥ १३० ॥ लक्षलोभपरा लोला लक्षभक्तप्रपूजिता ॥ लोकिनी लोकसंपूज्या लोकरक्षणकारिणी ॥ १३१ ॥ लोकवन्दित पादाब्जा लोकमोहनकारिणी ॥ ललिता लालिता लीना लोकसंहारकारिणी ॥ १३२ ॥ लोकलीलाकरी लोक्या लोकसंभव कारिणी ॥ भूतशुद्धिकरी भूतरक्षिणी भूतपोषिणी ॥ १३३ ॥ भूतवेतालसंयुक्ता भूतसेनासमावृता ॥ भूतप्रेतपिशाचादिस्वामिनी भूत पूजिता ॥ १३४ ॥ डाकिनी शाकिनी डेया डिण्डिमारावकारिणी ॥ डमरुवाद्यसंतुष्टा डमरुवाद्यकारिणी ॥ १३५ ॥ हूंकारकारिणी होत्री हविनी हवनार्थिनी ॥ हासिनी ह्रासिनी हास्यहर्षिणी हठवादिनी ॥ १३६ ॥ अट्टाट्टहासिनी टीका टीकानिर्माणकारिणी ॥ टंकिनी टंकिता टंका टंकामात्रसुवर्णदा ॥ १३७ ॥ टंकारिणी टकाराढ्या शत्रुत्रोटनकारिणी ॥ त्रुटिता त्रुटिरूपा च त्रुटिसंदेहकारिणी ॥ ॥ १३८ ॥ तर्षिणी तृट्परिक्रांता क्षुत्क्षामा क्षुत्परिप्लुता ॥ अक्षिणी तक्षिणी भिक्षाप्रार्थिनी शत्रुभक्षिणी ॥ १३९ ॥ कांक्षिणी कुट्टिनी क्रूरा कुट्टिनीवेश्मवासिनी ॥ कुट्टिनीकोटिसंपूज्या कुट्टिनीकुलमार्गिणी ॥ १४० ॥ कुट्टिनीकुलसंरक्षा कुट्टिनीकुलरक्षिणी ॥ कालपाशावृता कन्या कमारीपूजनप्रिया ॥ १४१ ॥ कौमुदी कौमुदीहृष्टा करुणादृष्टिसंयुता ॥ कौतुकाचारनिपुणा कौतुकागार वासिनी ॥ १४२ ॥ काकपक्षधरा काकरक्षिणी काकसंवृता ॥ काकांकरथसंस्थाना काकांकस्यन्दनस्थिता ॥ १४३ ॥ काकिनी काकदृष्टिश्च काकभक्षणदायिनी ॥ काकमाता काकयोनिः काकमण्डलमण्डिता ॥ १४४ ॥ काकदर्शनसंशीला काकसंकीर्णमन्दिरा ॥ काकध्यानस्थदेहादिध्यानगम्याऽधमावृता ॥ १४५ ॥ धनिनी धनिसंसेव्या धनच्छेदनकारिणी ॥ धुंधुरा धुंधुराकारा धूम्रलोचन घातिनी ॥ १४६ ॥ धूंकारिणी च धूंमंत्रपूजिताधर्मनाशिनी ॥ धूम्रवर्णा च धूम्राक्षी धूम्राक्षासुरघातिनी ॥ १४७ ॥ धूंबीजजप संतुष्टा धूंबीजजपमानसा ॥ धूंबीजजपपूजार्हा धूंबीजजपकारिणी ॥ १४८ ॥ धूंबीजकर्षिता धृष्या धर्षिणी धृष्टमानसा ॥ धूलि प्रक्षेपिणी धूलिव्यासधम्मिल्लधारिणी ॥ १४९ ॥ धूंबीजजपमालाढ्या धूंबीजानिन्दकांतका ॥ धर्मविद्वेषिणी धर्मरक्षिणी धर्मतोषिता ॥

॥ १५० ॥ धारास्तंभकरी धूर्ता धारावारिविलासिनी ॥ धांधींधूंधैंमंत्रवर्णा धौंधःस्वाहास्वरूपिणी ॥ १५१ ॥ धारित्रीपूजिता धूर्वा धान्यच्छेदनकारिणी ॥ धिक्कारिणी सुधीपूज्या धामोद्यानिवासिनी ॥ १५२ ॥ धामोद्यानपयोदात्री धामधूलिप्रधूलिता ॥ महाध्वनिमती धूप्या धूपामोदप्रहर्षिणी ॥ १५३ ॥ धूपादानमतिप्रीता धूपदानविनोदिनी ॥ धीवरीगणसंपूज्या धीवरीवरदायिनी ॥ १५४ ॥ धीवरीगणमध्यस्था धीवरीधामवासिनी ॥ धीवरीगणगोप्त्री च धीवरीगणतोषिता ॥ १५५ ॥ धीवरीधनधात्री च धीवरीप्राणरक्षिणी ॥ धात्रीशा धातृसंपूज्या धात्रीवृक्षसमाश्रया ॥ १५६ ॥ धात्रीपूजनकर्त्री च धात्रीरोपणकारिणी ॥ धूम्रपानरतासक्ता धूम्रपानरतेष्टदा ॥ १५७ ॥ धूम्रपानकरानन्दा धूम्रवर्षणकारिणी ॥ धन्यशब्दश्रुतिप्रीता धुंधुकारिजनच्छिदा ॥ १५८ ॥ धुंधुकारीष्टसंदात्री धुंधुकारिसुमुक्तिदा ॥ धुंधुकार्य्याराध्यरूपा धुंधुकारिमनःस्थिता ॥ १५९ ॥ धुंधुकारिहिताकांक्षी धुंधुकारिहितैषिणी ॥ धिंधिमारारविणी ध्यात्री ध्यानगम्या धनार्थिनी ॥ १६० ॥ धोरिणी धोरणप्रीता घोरिणी घोररूपिणी ॥ धरित्रीरक्षिणी देवी धराप्रलयकारिणी ॥ १६१ ॥ धराधरसुताऽशेषधाराधरसमद्युतिः ॥ धनाध्यक्षा धनप्राप्तिर्द्धनधान्यविवर्द्धिनी ॥ १६२ ॥ धनाकर्षणकर्त्री च धनाहरणकारिणी ॥ धनच्छेदनकर्त्री च धनहीना धनप्रिया ॥ १६३ ॥ धनसंवृद्धिसंपन्ना धनदानपरायणा ॥ धनहृष्टा धनपुष्टा दानाध्ययनकारिणी ॥ १६४ ॥ धनरक्षा धनप्राणा धनानंदकरी सदा ॥ शत्रुहंत्री शवारूढा शत्रुसंहारकारिणी ॥ १६५ ॥ शत्रुपक्षक्षतिप्रीता शत्रुपक्षनिषूदिनी ॥ शत्रुग्रीवाच्छिदा छाया शत्रुपद्धतिखण्डिनी ॥ १६६ ॥ शत्रुप्राणहरा हार्य्या शत्रून्मूलनकारिणी ॥ शत्रुकार्य्यविहंत्री च सांगशत्रुविनाशिनी ॥ १६७ ॥ सांगशत्रुकुलच्छेत्री शत्रुसद्मप्रदाहिनी ॥ सांगसायुधसर्वारिसर्वसम्पत्तिनाशिनी ॥ १६८ ॥ सांगसायुधसर्वारिदेहगेहप्रदाहिनी ॥ इतीदं धूमरूपिण्याः स्तोत्रं नामसहस्रकम् ॥ १६९ ॥ यः पठेच्छून्यभवने संध्यांते यतमानसः ॥ मदिरामोदयुक्तो वै देवीध्यानपरायणः ॥ १७० ॥ तस्य शत्रुः क्षयं याति यदि शक्रसमोऽपि वै ॥ भवपाशहरं पुण्यं धूमावत्याः प्रियं महत् ॥ १७१ ॥ स्तोत्रं सहस्रनामाख्यं मम वक्त्राद्विनिर्गतम् ॥ पठेद्वा शृणुया

न देयं परशिष्यायाऽभक्ताय प्राणवल्लभे ॥ देयं शिष्याय भक्ताय देवीभक्तपराय
द्धापि शत्रुघातकरो भवेत् ॥ १७२ ॥ १७३ ॥ इति श्रीभैरवीतंत्रे भैरवीभैरवसंवादे धूमावतीसहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥
च ॥ इदं रहस्यं परमं दुर्लभं दुष्टचेतसाम् ॥ अस्य श्रीधूमावतीहृदयस्तोत्रमंत्रस्य पिप्पलाद ऋषिः । अनुष्टुप्छंदः । श्रीधूमावती देवता । धूं बीजम् । ह्रीं
॥ अथ धूमावतीहृदयप्रारंभः॥ॐ विनियोगः ॥ ॐ धां हृदयाय नमः १ । ॐ धीं शिरसे स्वाहा २ । ॐ धूं शिखायै वषट् ३ ।
शक्तिः । क्लीं कीलकम् । सर्वशत्रुसंहरणे पाठे वौषट् ५ । ॐ धः अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं
ॐ धैं कवचाय हुम् ४ । ॐ धौं नेत्रत्रयाय प्रकटितदशनां मुक्तवालांबराढ्यां काकांकस्यन्दनस्थां धवलकरयुगां शूर्पहस्तातिरूक्षाम् ॥
कुर्यात् ॥ अथ ध्यानम्–ॐ धूम्राभां धूम्रवस्त्रां ध्यायेद्धूमावतीं वामनयनयुगलां भीतिदां भीषणास्याम् ॥ १ ॥ कल्पादौ या
नित्यं क्षुत्क्षामदेहां मुहुरतिकुटिलां वारिवांछाविचित्रां त्रिजगत्सर्वं धूमावतीं भजामि ताम् ॥ २ ॥ गुणागाराऽगम्यगुणा या गुणागुणवर्द्धिनी ॥
कालिकाद्याऽचीकलन्मधुकैटभौ ॥ कल्पांते ॥ खट्वांगधारिणी खर्वा खण्डिनीखलरक्षसाम् ॥ धारिणी खेटकस्यापि धूमावतीं
गीतावेदार्थतत्त्वज्ञैर्धूमावतीं भजामि ताम् ॥ ३ ॥ घूर्णिताक्षी घनस्वना ॥ घातिनी घातकानां या धूमावतीं भजामि ताम् ॥ ५ ॥ चर्वंती
भजामि ताम् ॥ ४ ॥ घूर्णा घूर्णकरा घोरा ॥ चण्डाट्टहासिनीं देवीं भजे धूमावतीमहम् ॥ ६ ॥ छिन्नग्रीवां क्षताच्छन्नां छिन्नमस्तस्वरू
मस्थिखण्डानां चण्डमुण्डविदारिणीम् ॥ ७ ॥ जाता या याचिता देवैरसुराणां विघातिनी ॥ जल्पंती बहु गर्जंती भजे तां
पिणीम् ॥ छेदिनीं दुष्टसंघानां भजे धूमावतीमहम् ॥ झटित्याकर्षिणीं देवीं भजे धूमावतीमहम् ॥ ९ ॥ टीपटंकार
धूम्ररूपिणीम् ॥ ८ ॥ झंकारकारिणीं झंझां झंझमाझमवादिनीम् ॥ १० ॥ ठंठंठंठंमनुप्रीतिं ठःठःमंत्रस्वरूपिणीम् ॥ ठमकाह्वगति
संयुक्तां धनुष्टंकारकारिणीम् ॥ घोरां घनघटाटोपां वंदे धूमावतीमहम् ॥ डाकिनीभोगसंतुष्टां भजे धूमावतीमहम् ॥ १२ ॥
प्रीतां भजे धूमावतीमहम् ॥ ११ ॥ डमरूडिंडिमारावां डाकिनीगणमण्डिताम् ॥ १३ ॥ तत्त्ववार्त्ताप्रियप्राणां भवपाथोधितारि
ढक्कानादेन संतुष्टां ढक्कावादकसिद्धिदाम् ॥ ढक्कावादचलाच्चित्तां भजे धूमावतीमहम् ॥ थैंथैंथंथः स्वरूपिणीम् ॥ थकारवर्णसर्वस्वां भजे धूमा
णीम् ॥ तारस्वरूपिणीं तारां भजे धूमावतीमहम् ॥ १४ ॥ थांथींथूंथेंमंत्ररूपां

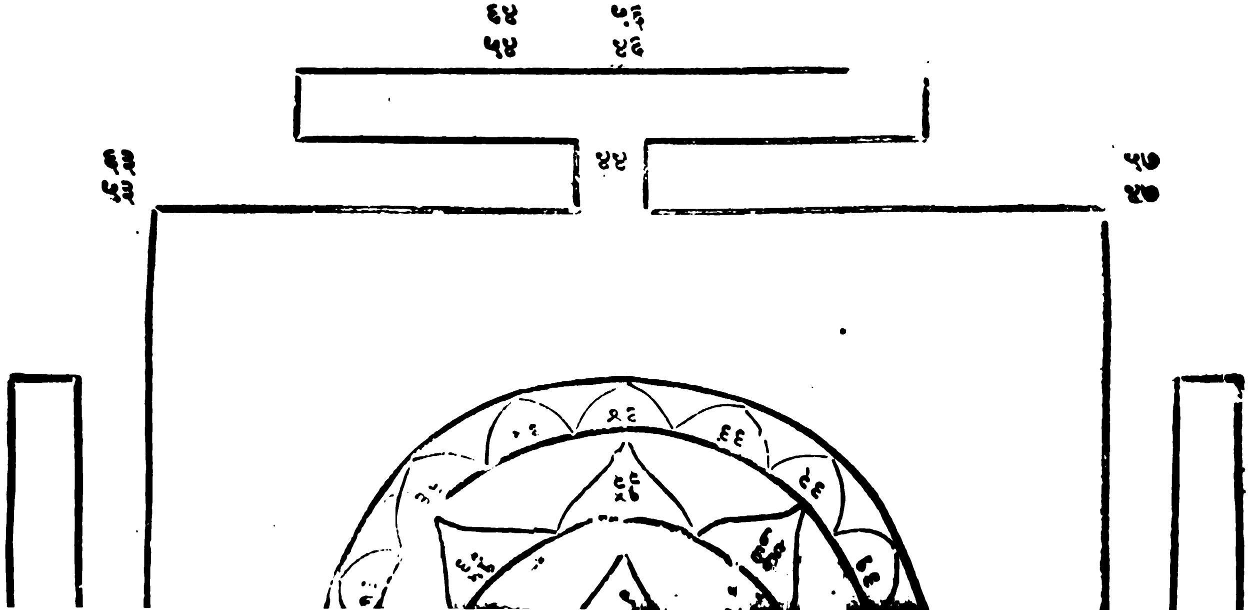
वतीमहम् ॥ १५ ॥ दुर्गास्वरूपिणीं देवीं दुष्टदानवदारिणीम् ॥ देवदैत्यकृतध्वंसां वंदे धूमावतीमहम् ॥ १६ ॥ ध्वांताकारांधकध्वंसां मुक्तधम्मिल्लधारिणीम् ॥ धूमधाराप्रभां धीरां भजे धूमावतीमहम् ॥ १७ ॥ नर्तकीनटनप्रीतां नाट्यकर्म्मविवर्द्धिनीम् ॥ नारसिंहीं नराराध्यां नौमि धूमावतीमहम् ॥ १८ ॥ पार्वतीपतिसंपूज्यां पर्वतोपरिवासिनीम् ॥ पद्मारूपां पद्मपूजां नौमि धूमावतीमहम् ॥ १९ ॥ फूत्कारसहितश्वासां फट्मंत्रफलदायिनीम् ॥ फेत्कारिगणसंसेव्यां सेवे धूमावतीमहम् ॥ २० ॥ बलिपूज्यां बलाराध्यां बगलारूपिणीं वराम् ॥ ब्रह्मादिवंदितां विद्यां वंदे धूमावतीमहम् ॥ २१ ॥ भव्यरूपां भवाराध्यां भुवनेशीस्वरूपिणीम् ॥ भक्तभव्यप्रदां देवीं भजे धूमावतीमहम् ॥ २२ ॥ मायां मधुमतीं मान्यां मकरध्वजमानिताम् ॥ मत्स्यमांसमहास्वादां मन्ये धूमावतीमहम् ॥ २३ ॥ योगयज्ञप्रसन्नास्यां योगिनीपरिसेविताम् ॥ यशोदां यज्ञफलदां यजे धूमावतीमहम् ॥ २४ ॥ रामाराध्यपदद्वंद्वां रावणध्वंसकारिणीम् ॥ रमेशरमणीं पूज्यामहं धूमावतीं श्रये ॥ २५ ॥ लक्षलीलाकलालक्ष्यां लोकवंद्यपदांबुजाम् ॥ लंबितां बीजकोशाढ्यां वंदे धूमावतीमहम् ॥ २६ ॥ बकपूज्यपदांभोजां बकध्यानपरायणाम् ॥ बालां बकारिसंध्येयां वदे धूमावतीमहम् ॥ २७ ॥ शांकरीं शंकरप्राणां संकटध्वंसकारिणीम् ॥ शत्रुसंहारिणीं शुद्धां श्रये धमावतीमहम् ॥ २८ ॥ षडाननारिसंहर्त्रीं षोडशीरूपधारिणीम् ॥ षड्रसास्वादिनीं सौम्यां सेवे धूमावतीमहम् ॥ २९ ॥ सुरसेवितपादाब्जां सुरसौख्यप्रदायिनीम् ॥ सुन्दरीगणसंसेव्यां सेवे धूमावतीमहम् ॥ ३० ॥ हेरंबजननीं योग्यां हास्यलास्यविहारिणीम् ॥ हारिणीं शत्रुसंघानां सेवे धूमावतीमहम् ॥ ३१ ॥ क्षीरोदतीरसंवासां क्षीरपानप्रहर्षिताम् ॥ क्षणदेशेज्यपादाब्जां सेवे धूमावतीमहम् ॥ ३२ ॥ चतुस्त्रिंशद्वर्णकानां प्रतिवर्णादिनामभिः ॥ कृतं तु हृदयं स्तोत्रं धूमावत्याः सुसिद्धिदम् ॥ ३३ ॥ य इदं पठति स्तोत्रं पवित्रं पापनाशनम् ॥ स प्राप्नोति परां सिद्धिं धूमावत्याः प्रसादतः ॥ ३४ ॥ पठन्नेकाग्रचित्तो यो यद्यदिच्छति मानवः ॥ तत्सर्वं समवाप्नोति सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ ३५ ॥ इति धूमावतीहृदयं समाप्तम् ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे मध्यखण्डे धूमावतीतंत्रे दशमस्तरङ्गः ॥ १० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

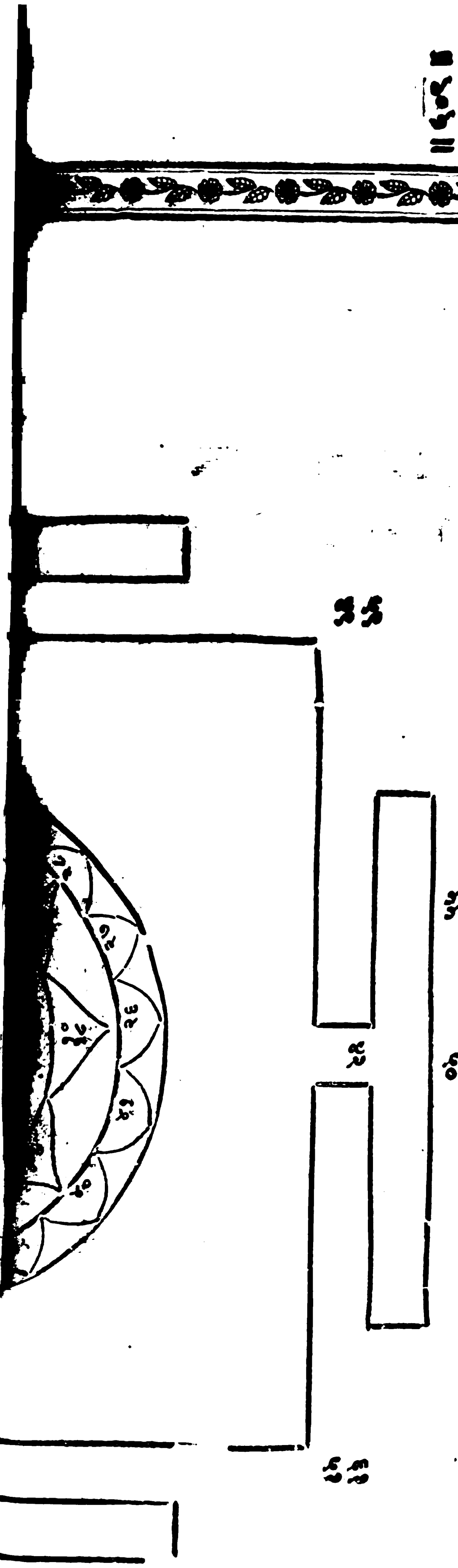
बगलामुख्यै नमः ।



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ बगलामुखीतंत्रप्रारंभः ॥ तत्रादौ पटलप्रारंभः ॥ अथ प्रवक्ष्ये शत्रूणां स्तंभिनीं बगलामुखीम् ॥ साधकानां हितार्थाय स्तंभनाय च वैरिणाम् ॥ १ ॥ तंत्रांतरेऽपि । ब्रह्मास्त्रं च प्रवक्ष्यामि सद्यः प्रत्ययकारणम् ॥ यस्य स्मरणमात्रेण पवनोऽपि स्थिरायते ॥ २ ॥ मंत्रो यथा मंत्रमहोदधौ—ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ॥ इति षट्त्रिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य मम श्रीबगलामुख्यमुकमंत्रसिद्ध्यर्थे श्रीबगलामुखीप्रसादार्थममुकसंख्यापरिमितजपं तत्तद्दशांशेन हवनतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनरूपपुरश्चरणम् (अमुकसंख्यापरिमितजपरूपपुरश्चरणं वा) अहं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य । ॐ अस्य श्रीबगलामुखीमंत्रस्य नारदऋषिः । बृहती च्छंदः । बगलामुखी देवता । ह्लीं बीजम् । स्वाहा शक्तिः । ममाखिलावाप्तये जपे विनियोगः ॥ इति जलं क्षिपेत् ॥ ॐ नारदऋषये नमः शिरसि १ । बृहतीच्छंदसे नमः मुखे २ । बगलादेवतायै नमः हृदि ३ । ह्लीं बीजाय नमः गुह्ये ४। स्वाहाशक्तये नमः पादयोः ५ । विनियोगाय नमः सर्वांगे ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । बगलामुखि तर्जनीभ्यां नमः २ । सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां नमः ३ । वाचं मुखं पदं स्तंभय अनामिकाभ्यां नमः ४ । जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ह्लीं हृदयाय नमः १

बगलामुखीपूजनयन्त्रम् ।





बगलामुखि शिरसे स्वाहा २। सर्वदुष्टानां शिखायै वषट् ३। वाचं मुखं पदं स्तंभय कवचाय हुम् ४। जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट् ५। बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ६॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः॥ (तंत्रांतरेऽपि न्यासे विशेषः) मूलं पठित्वा आत्मतत्त्वव्यापिनीं श्रीबगलामुखीपादुकां पूजयामि इति मूलाधारे १। मूलं पठित्वा विद्यातत्त्वव्यापिनीं श्रीबगलामुखीश्रीपादुकां पूजयामीति हृदये २। मूलं पठित्वा शिवतत्त्वव्यापिनीं श्रीबगलामुखीश्रीपादुकां पूजयामि इति शिरसि ३। मूलं पठित्वा सर्वतत्त्वव्यापिनीं श्रीबगलामुखीश्रीपादुकां पूजयामि इति सर्वांगे ४ ∴ इति न्यासं कृत्वा ध्यायेत्॥ अथ ध्यानम्—ॐ सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं हेमाभांगरुचिं शशांकमुकुटां सच्चंपकस्रग्युताम्॥ हस्तैर्मुद्गरपाशवज्ररशनाः संबिभ्रतीं भूषणैर्व्याप्तांगीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तंभिनीं चिंतयेत्॥ १॥ तंत्रांतरेऽपि—मध्येसुधाब्धि मणिमंडपरत्नवेदीसिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम्॥ पीतांबराभरणमाल्यविभूषितांगीं देवीं नमामि धृतमुद्गरवैरिजिह्वाम्॥ २॥ जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रुं परिपीडयंतीम्॥ गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीतांबराढ्यां द्विभुजां नमामि॥ ३॥ एवं ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य पीठपूजां कुर्यात्॥ तद्यथा—पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्॥ तद्यथा—पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु ॐ जयायै नमः १। ॐ विजयायै नमः २। ॐ अजितायै नमः ३। ॐ अपराजितायै नमः ४। ॐ नित्यायै नमः ४। ॐ विलासिन्यै नमः ६। ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७। ॐ अघोरायै नमः ८। मध्ये। ॐ मंगलायै नमः ९॥ इति पीठशक्तीः पूजयेत्। ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संप्रोञ्छ्य तदुपरि चन्दनागुरुकर्पूरेण पूजनार्थं यंत्रं विलिख्य 'ॐ ह्लीं बगलामुखीयोगपीठाय नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्य्यात्॥ तद्यथा—ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये॥ अनुज्ञां देहि बगले परिवारार्चनाय मे॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्॥ आज्ञां गृहीत्वा

आवरणपूजामारभेत । तत्र त्रिकोणमध्ये ऐशान्यादिक्रमेण ॐ सत्त्वाय नमः । सत्त्वश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र १ । ॐ रजसे नमः । रजःश्रीपा० २ । ॐ तमसे नमः । तमःश्रीपा० ३ । इति त्रिगुणान् पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य— ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घ्यबिंदुं निःक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततः षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्विदिक्षु मध्ये दिक्षु च ॐ ह्लीं हृदयाय नमः । हृदयश्रीपा० १ । बगलामुखि शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० २ । सर्वदुष्टानां शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ३ । वाचं पदं मुखं स्तंभय कवचाय हुम् । कवचश्रीपा० ४ । जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ ॥ इति षडंगानि पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची तदनुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ॐ ब्राह्म्यै नमः । ब्राह्मीश्रीपा० १ । माहेश्वर्यै नमः । माहेश्वरीश्रीपा० २ । ॐ कौमार्य्यै नमः । कौमारीश्रीपा० ३ । ॐ वैष्णव्यै नमः । वैष्णवीश्रीपा० ४ । ॐ वाराह्यै नमः । वाराहीश्रीपा० ५ । ॐ इन्द्राण्यै नमः । इन्द्राणीश्रीपा० ६ । ॐ चामुंडायै नमः । चामुंडाश्रीपा० ७ । ॐ महालक्ष्म्यै नमः । महालक्ष्मीश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ मातरः संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ तस्योपरि ब्राह्म्यादिसमीपे ॐ असितांगभैरवाय नमः । असितांगभैरवश्रीपा० १ । ॐ रुरुभैरवाय नमः । रुरुभैरवश्रीपा० २ । ॐ चंडभैरवाय नमः । चंडभैरवश्रीपा० ३ । ॐ क्रोधभैरवाय नमः । क्रोधभैरवश्रीपा० ४ । ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः । उन्मत्तभैरवश्रीपा० ५ । ॐ कपालभैरवाय नमः । कपालभैरवश्रीपा० ६ । ॐ भीषणभैरवाय नमः । भीषणभैरवश्रीपा० ७ । ॐ संहारभैरवाय नमः । संहारभैरवश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ भैरवान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥ ४ ॥ ततः षोडशदलेषु प्राचीक्रमेण ॐ मंगलायै नमः । मंगलाश्रीपा० १ । ॐ स्तंभिन्यै नमः । स्तंभिनीश्रीपा० २ । ॐ जृंभिण्यै नमः । जृंभिणीश्रीपा० ३ । ॐ मोहिन्यै नमः ।

मोहिनीश्रीपादुकां पूजयामि ४। ॐ वश्यायै नमः[३०] । वश्याश्रीपा० ५ ॐ बलायै नमः[३१] । बलाश्रीपा० ६ । ॐ अचलायै नमः[३२]। अचलाश्रीपा० ७ । ॐ भूधरायै नमः[३३] । भूधराश्रीपा० ८ । ॐ कल्मषायै नमः[३४] । कल्मषाश्रीपादु० ९ । ॐ धात्र्यै नमः[३५] । धात्रीश्रीपा० १० । ॐ कलनायै नमः[३६] । कलनाश्रीपा० ११ । ॐ कालाकर्षिण्यै नमः[३७] । कालाकर्षिणीश्रीपा० १२ । ॐ भ्रामिकायै नमः[३८] । भ्रामिकाश्रीपा० १३ । ॐ मंदगमनायै नमः[३९] । मंदगमनाश्रीपा० १४ । ॐ भोगस्थायै नमः[४०] । भोगस्थाश्रीपादु० १५। ॐ भाविकायै नमः[४१] । भाविकाश्रीपा० १६ ॥ इति षोडश शक्तीः संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति पंचमावरणम् ॥ ५ ॥ ततो भूपुराभ्यंतरे पूर्वादिचतुर्दिक्षु ॐ गणपतये नमः[४२] । गणपतिश्रीपा० १ । ॐ बटुकाय नमः[४३] । बटुकश्रीपा० २ । ॐ योगिनीभ्यो नमः[४४] । योगिनीश्रीपा० ३ । ॐ क्षेत्रपालाय नमः[४५] । क्षेत्रपालश्रीपा० ४ । इति द्वारपालान् पजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति षष्ठावरणम् ॥ ६ ॥ ततो भूपुराद्बहिः पूर्वे ॐ लं इन्द्राय नमः[४६] । इन्द्रश्रीपा० १ । अग्निकोणे ॐ रं अग्नये नमः[४७] । अग्निश्रीपा० २ । दक्षिणे ॐ मं यमाय नमः[४८] । यमश्रीपा० ३ । निर्ऋतिकोणे ॐ क्षं निर्ऋतये नमः[४९] । निर्ऋतिश्रीपा० ४ । पश्चिमे ॐ वं वरुणाय नमः[५०] । वरुणश्रीपा० ५ । वायुकोणे ॐ यं वायवे नमः[५१] । वायुश्रीपा० ६ । उत्तरे ॐ कुं कुबेराय नमः[५२] । कुबेरश्रीपा० ७ । ईशानकोणे ॐ हं ईशानाय नमः[५३] । ईशानश्रीपा० ८ ॥ इन्द्रेशानयोर्मध्ये ॐ आं ब्रह्मणे नमः[५४] । ब्रह्मश्रीपा० ९ । वरुणनिर्ऋत्योर्मध्ये ॐ ह्रीं अनंताय नमः[५५] । अनंतश्रीपा० १० । इति दशदिग्पालान् पजयेत् । तत इन्द्रादिसमीपे ॐ वं वज्राय नमः[५६] । वज्रश्रीपा० १ । ॐ शं शक्तये नमः[५७] । शक्तिश्रीपा० २ । ॐ दं दंडाय नमः[५८] । दंडश्रीपा० ३ । ॐ खं खड्गाय नमः[५९] । खड्गश्रीपा० ४ । ॐ पं पाशाय नमः[६०] । पाशश्रीपा० ५ । ॐ अं अंकुशाय नमः[६१] । अंकुशश्रीपा० ६ । ॐ गं गदायै नमः[६२] । गदाश्रीपा० ७ । ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः[६३] । त्रिशूलश्रीपा० ८ । ॐ पं पद्माय नमः[६४] । पद्मश्रीपा० ९ । ॐ चं चक्राय नमः[६५] । चक्रश्रीपा० १० ॥ इत्यस्त्राणि संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति सप्तमावरणम् ॥ ७ ॥

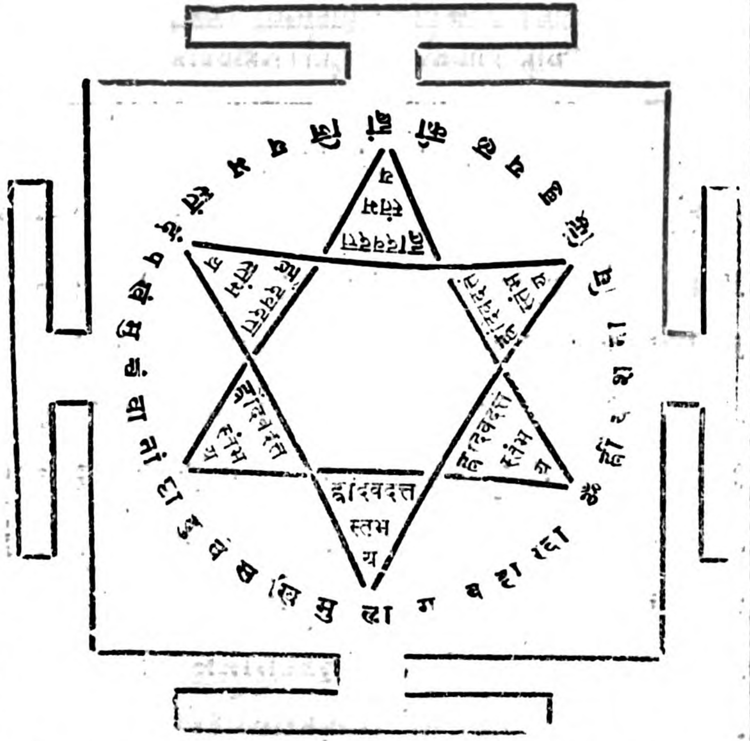
इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः । चंपककुसुमैर्दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पण मार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्य्यात् । एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् । तथाच—एवं ध्यात्वा जपेल्लक्ष मयुतं चंपकोद्भवैः ॥ कुसुमैर्जुहुयात्पीठे पूर्वोक्ते पजयेदिमाम् ॥ १ ॥ इत्थं सिद्धमनुर्मंत्री स्तंभयेद्देवतादिकान् ॥ पीतवस्त्रस्तदासीनः पतिमाल्यानुलेपनः ॥ २ ॥ पीतपुष्पैर्यजेद्देवीं हरिद्रोत्थस्रजा जपन् ॥ पीतां ध्यायन् भगवतीं प्रयोगेष्वयुतं जपेत् ॥ ३ ॥ त्रिमध्व[2] क्ततिलैर्होमो नृणां वश्यकरो मतः ॥ मधुरत्रितयाक्तैः स्यादाकर्षो लवणैर्ध्रुवम् ॥ ४ ॥ तैलाभ्यक्तैर्निंबपत्रैर्होमो विद्वेषकारकः ॥ताललोणहरिद्राभिर्द्विषां संस्तंभनं भवेत् ॥ ५ ॥ अगारधूमं राजीश्च माहिषं गुग्गुलं निशि ॥ श्मशानपावके हुत्वा नाशयेदचिरा दरीन् ॥ ६ ॥ गरुतो[3] गृध्रकाकानां कटुतैलं बिभीतकम् ॥ गृहधूमं चितावह्नौ हुत्वा प्रोच्चाटयेद्रिपून् ॥ ७ ॥ दूर्वागुडूचीलाजान्यो मधुर त्रितयान्वितान् ॥ जुहोति सोऽखिलान्रोगान् शमयेद्दर्शनादपि ॥ ८ ॥ पर्वताग्रे महारण्ये नदीसंगे शिवालये ॥ ब्रह्मचर्य्यरतो लक्षं जपेदखिलसिद्धये ॥ ९ ॥ एकवर्णगवीदुग्धं शर्करामधुसंयुतम् ॥ त्रिशतं मंत्रितं पीतं हन्याद्विषपराभवम् ॥ १० ॥ श्वेतपालाशकाष्ठेन रचिते रम्यपादुके ॥ अलक्तरंजिते लक्षं मंत्रयेन्मनुनामुना ॥ ११ ॥ तदारूढः पुमान् गच्छेत्क्षणेन शतयोजनम् ॥ पारदं च शिलां तालपिष्टं मधुसमान्वितम् ॥ १२ ॥ मनुना मंत्रयेल्लक्षं लिंपेत्तेनाखिलां तनुम् ॥ अदृश्यः स्यान्नृणामेष आश्चर्यं दृश्यतामिदम् ॥ १३ ॥ षट्कोणे विलिखेद्बीजं साध्यनामान्वितं मनोः ॥ हरिताल ना णै[4]रुन्मत्तरससंयुतैः ॥ १४ ॥ शेषाक्षरैः समावीतं धरागेहविराजितम् ॥

---

१ तन्त्रांतरेऽपि—पीतांबरधरो भूत्वा पूर्वाशाभिमुखं स्थितः । लक्षमेकं जपेन्मन्त्री हरिद्राग्रंथिमालया ॥ ब्रह्मचर्यरतो नित्यं प्रयतो ध्यानतत्परः । प्रियंग्वाश्च रक्तेनापि पीतपुष्पैश्च होमयेत् ॥ जपमन्त्रप्रयोगेण मन्त्रं चाप्ययुतं जपेत् ॥ २त्रिमध्वक्तम्—मधुघृतशर्कराक्तम् । ३ गरुतः पक्षान् । ४ धत्तूररसाक्तहरिद्राचूर्णेन षट्कोणेष्वमुकं स्तम्भयेति वर्णयुतं ह्लीं इति बीजं विलिख्य मन्त्र शेषार्णैः स्ववष्ट्योपरि चतुरस्रेण वेष्टितं पीतसूत्रवीतं कृत्वा भ्रमत्कुम्भकारचक्रस्थमृदा रचितवृषोदरे प्रक्षिप्य हरितालेन संलिप्य वृषं प्रत्यहं पूजयेत् । स्तम्भनं फलम् ॥

तद्यंत्र स्थापितं प्राणपीतसूत्रेण वेष्टयेत् ॥ १५ ॥ भ्राम्यत्कुलालचक्रस्थां
गृहीत्वा मृत्तिकां तया ॥ रचयेद्वृषभं रम्यं यंत्रं तन्मध्यतः क्षिपेत् ॥ १६ ॥
हरितालेन संलिप्य वृषं प्रत्यहमर्चयेत् ॥ स्तंभयेद्विद्विषां वाचं गतिं कार्य्य
परंपराम् ॥ १७ ॥ आदाय वामहस्तेन प्रेतभूमिस्थखर्परम् ॥ अंगारेण
चितास्थेन तत्र यंत्रं समालिखेत् ॥ १८ ॥ मंत्रितं निहितं भूमौ रिपूणां
स्तंभयेद्गतिम् ॥ प्रेतवस्त्रे लिखेद्यंत्रमंगारेणैव तत्पुनः ॥ १९ ॥ मंडूकवदने
न्यस्य पीतवस्त्रेण वेष्टितम् ॥ पूजितं पीतपुष्पैस्तद्वाचं संस्तंभयेद्द्विषाम् ॥
॥ २० ॥ यद्द्रुमो भविता दिव्यं तत्र यंत्रं समालिखेत् ॥ मार्जितं तद्वृषा
पत्रैर्दिव्यस्तंभनकृद्भवेत् ॥ २१ ॥ इन्द्रवारुणिकामलं सप्तशो मनुमंत्रितम् ॥
क्षिप्तं जले दिव्यकृतं जलस्तंभनकारकम् ॥ २२ ॥ किं भुरिणा साधकेन
मंत्रः सम्यगुपासितः ॥ शत्रूणां गतिबुद्ध्यादेः स्तंभनो नात्र संशयः ॥
॥ २३ ॥ इति श्रीबगलामुखीषट्त्रिंशदक्षरमंत्रप्रयोगः ॥ अथ बगला
मुखीकवचप्रारंभः ॥ ॐ कैलासाचलमध्यगं पुरहरं शांतं त्रिनेत्रं शिवं

बगलामुखीस्तंभनयंत्रम्।



वामस्था कवचं प्रणम्य गिरिजा भूतिप्रदं पृच्छति॥देवी श्रीबगलामुखी रिपुकुलारण्याग्निरूपा च या तस्याः शापविमुक्तमंत्रसहितं प्रीत्या
ऽधुना ब्रूहि माम् ॥१॥ श्रीशंकर उवाच॥देवि श्रीभववल्लभे शृणु महामंत्रं विभूतिप्रदं देव्या वर्मयुतं समस्तसुखदं साम्राज्यदं मुक्तिदम् ॥

[illegible] विष्णुप्रिये कामयुक् कांते श्रीबगलानने मम रिपून्नाशाय युग्मं त्विति ॥ २ ॥ ऐश्वर्य्याणि पदं च देहियुगलं शीघ्रं मनोवांछितं कार्य्यं साधय युग्मयुक् शिववधूवह्निप्रियांतो मनुः ॥ कंसारेस्तनयं च बीजमपराशक्तिं च वाणीं तथा कीलं श्रीमति भैरवर्षिसहितं छन्दोविराट्संयुतम् ॥ ३ ॥ स्वेष्टार्थस्य परस्य चापि नितरां कार्य्यस्य संप्राप्तये नानासाध्यमहागदस्य नियतं नाशाय वीर्य्याप्तये॥ ध्यात्वा श्रीबगलाननां मनुवरं जप्त्वा सहस्राख्यकं दीर्घैः षट्कयुतैश्च रुद्रमहिलाबीजैर्विनश्यांगके ॥ ४ ॥ ॐ अस्य श्रीबगलामुखीब्रह्मास्त्रमंत्रकवचस्य भैरवऋषिः ॥ विराट् छंदः । श्रीबगलामुखी देवता । क्लीं बीजम् । ऐं शक्तिः । श्रीं कीलकम् । मम परस्य च मनोभिलषितेष्टकार्य्यसिद्धये जपे विनियोगः ॥ ॐ भैरवऋषये नमः शिरसि १ । विराट् छंदसे नमः मुखे २ । बगलामुखीदेवतायै नमः हृदि ३ । क्लीं बीजाय नमः गुह्ये ४ । ऐं शक्तये नमः पादयोः ५ । श्रीं कीलकाय नमः सर्वांगे ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ह्रां हृदयाय नमः १ । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा २ । ॐ ह्रूं शिखायै वषट् ३ । ॐ ह्रैं कवचाय हुम् ॥ ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ अथ ध्यानम्–ॐ सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं हेमाभांगरुचिं शशांकमुकुटां स्रक्चम्पकस्रग्युताम् ॥ हस्तैर्मुद्गरपाशबद्धरसनां संबिभ्रतीं भूषणव्याप्तांगीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तंभिनीं चिंतये ॥ ५ ॥ शिरो मे पातु ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं पातु ललाटकम् ॥ सम्बोधनपदं पातु नेत्रे श्रीबगलानने ॥ ६ ॥ श्रुतौ मम रिपुं पातु नासिकां नाशयद्वयम् ॥ पातु गण्डौ सदा मामैश्वर्य्याण्यंतं तु मस्तकम् ॥ ७ ॥ देहिद्वंद्वं सदा जिह्वां पातु शीघ्रं वचो मम ॥ कंठदेशं स नः पातु वांछितं बाहुमूलकम् ॥ ८ ॥ कार्य्यं साधयद्वंद्वं तु करौ पातु सदा मम ॥ मायायुक्ता तथा स्वाहा हृदयं पातु सर्वदा ॥ ९ ॥ अष्टाधिकचत्वारिंशद्दण्डाढ्या बगलामुखी ॥ रक्षां करोतु सर्वत्र गृहेऽरण्ये सदा

१ मन्त्रोद्धारो यथा–ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं श्रीबगलानने मम रिपून्नाशय नाशय मामैश्वर्याणि देहि देहि शीघ्रं मनोवाञ्छितकार्य्यं साधय साधय ह्रीं स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥

मम ॥ १० ॥ ब्रह्मास्त्राख्यो मनुः पातु सर्वांगं सर्वसंधिषु ॥ मंत्रराजः सदा रक्षां करोतु मम सर्वदा ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं पातु नाभि देशं कटिं मे बगलाऽवतु ॥ मुखी वर्णद्वयं पातु लिंगं मेऽमुष्युग्मकम् ॥ १२ ॥ जानुनीं सर्वदुष्टानां पातु मे वर्णपश्चकम् ॥ वाचं मुखं तथा पादौ षडर्णा परमेश्वरी ॥ १३ ॥ जंघायुग्मे सदा पातु बगला रिपुमोहिनी ॥ स्तंभयेति पदं पृष्ठं पातु वर्णत्रयं मम ॥ ॥ १४ ॥ जिह्वां वर्णद्वयं पातु गुल्फौ मे कीलयेति च ॥ पादोर्द्ध्वं सर्वदा पातु बुद्धिं पादतले मम ॥ १५ ॥ विनाशयपदं पातु पादांगुल्योर्नखानि मे॥ ह्रीं बीजं सर्वदा पातु बुद्धीन्द्रियवचांसि मे ॥ १६ ॥ सर्वांगं प्रणवः पातु स्वाहा रोमाणि मेऽवतु ॥ ब्राह्मी पूर्वदले पात चाग्नेय्यां विष्णुवल्लभा ॥ १७ ॥ माहेशी दक्षिणे पातु चामुण्डा राक्षसेऽवतु ॥ कौमारी पश्चिमे पातु वायव्ये चापराजिता ॥ ॥ १८ ॥ वाराही चोत्तरे पातु नारसिंही शिवेऽवतु ॥ ऊर्द्ध्वं पातु महालक्ष्मीः पाताले शारदाऽवतु ॥ १९ ॥ इत्यष्टौ शक्तयः पांतु सायुधा श्च सवाहनाः ॥ राजद्वारे महादुर्गे पातु मां गणनायकः ॥ २० ॥ श्मशाने जलमध्ये च भैरवश्च सदाऽवतु ॥ द्विभुजा रक्तवसनाः सर्वा भरणभूषिताः ॥ २१ ॥ योगिन्यः सर्वदा पांतु महारण्ये सदा मम ॥ इति ते कथितं देवि कवचं परमाद्भुतम् ॥ २२ ॥ श्रीविश्व विजयं नाम कीर्तिश्रीविजयप्रदम् ॥ अपुत्रो लभते पुत्रं धीरं शूरं शतायुषम् ॥ २३ ॥ निर्द्धनो धनमाप्नोति कवचस्यास्य पाठतः ॥ जपित्वा मंत्रराजं तु ध्यात्वा श्रीबगलामुखीम् ॥ २४ ॥ पठेदिदं हि कवचं निशायां नियमात्तु यः ॥ यं यं कामयते कामं साध्या साध्यं महीतले ॥ २५ ॥ तं तं काममवाप्नोति सप्तरात्रेण शांकरि ॥ गुरुं ध्यात्वा सुरां पीत्वारात्रौ शक्तिसमन्वितः ॥ २६ ॥ कवचं यः पठेद्देवि तस्यासाध्यं न किञ्चन ॥ यं ध्यात्वा प्रजपेन्मंत्रं सहस्रं कवचं पठेत् ॥ २७ ॥ त्रिरात्रेण वशं याति तस्य तन्नात्र संशयः ॥ लिखित्वा प्रतिमां शत्रोः सतालेन हारिद्रया ॥ २८ ॥ लिखित्वा हृदि तन्नाम तं ध्यात्वा प्रजपेन्मनुम् ॥ एकविंश दिनं यावत्प्रत्यहं च सहस्रकम् ॥ २९ ॥ जप्त्वा पठेत्तु कवचं चतुर्विंशतिवारकम् ॥ संस्तंभो जायते शत्रोर्नात्र कार्य्या विचा रणा ॥ ३० ॥ विवादे विजयस्तस्य संग्रामे जयमाप्नुयात् ॥ श्मशाने च भयं नास्ति कवचस्य प्रभावतः ॥ ३१ ॥ नवनीतं

चाभिमंत्र्य स्त्रीणां दद्यान्महेश्वरि ॥ वंध्यायां जायते पुत्रो विद्याबलसमन्वितः ॥ ३२ ॥ श्मशानांगारमादाय भौमे रात्रौ शनावथ ॥ पादोदकेन स्पृष्ट्वा च लिखेल्लोहशलाकया ॥ ३३ ॥ भूमौ शत्रोः स्वरूपञ्च हृदि नाम समालिखेत् ॥ हस्तं तद्धृदये दत्त्वा कवचं तिथिवारकम् ॥ ३४ ॥ ध्यात्वा जपेन्मंत्रराजं नवरात्रं प्रयत्नतः ॥ म्रियते ज्वरदाहेन दशमेऽह्नि न संशयः ॥ ३५ ॥ भूर्जपत्रे ष्विदं स्तोत्रमष्टगंधेन संलिखेत् ॥ धारयेद्दक्षिणे बाहौ नारी वामभुजे तथा ॥ ३६ ॥ संग्रामे जयमाप्नोति नारी पुत्रवती भवेत् ॥ ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि नैव कृंतंति तं जनम् ॥ ३७ ॥ संपूज्य कवचं नित्यं पूजायाः फलमालभेत् ॥ बृहस्पतिसमो वापि विभवे धनदोपमः ॥ ३८ ॥ कामतुल्यश्च नारीणां शत्रूणां च यमोपमः ॥ कवितालहरी तस्य भवेद्गंगाप्रवाहवत् ॥ ३९ ॥ गद्यपद्यमयी वाणी भवेद्देवीप्रसादतः ॥ एकादशशतं यावत्पुरश्चरणमुच्यते ॥ ४० ॥ पुरश्चर्याविहीनं तु न चेदं फलदायकम् ॥ न देयं परशिष्येभ्यो दुष्टेभ्यश्च विशेषतः ॥ ४१ ॥ देयं शिष्याय भक्ताय पंचत्वं चान्यथाऽऽप्नुयात् ॥ इदं कवचमज्ञात्वा भजेद्यो बगलामुखीम् ॥ ४२ ॥ शतकोटिं जपित्वा तु तस्य सिद्धिर्न जायते ॥ ४३ ॥ दाराढ्यो मनुजोऽस्य लक्षजपतः प्राप्नोति सिद्धिं परां विद्यां श्रीविजयं तथा सुनियतं धीराश्च वीरा वराः ॥ ब्रह्मास्त्राख्यमनुं विलिख्य नितरां भूर्जेऽष्टगंधेन वै धृत्वा राजपुरं व्रजंति खलु ये दासोऽस्ति तेषां नृपः॥४४॥ इति विश्वसारोद्धारतंत्रे पार्वतीश्वरसंवादे बगलामुखीकवचं समाप्तम् ॥ अथ बगलामुखीसहस्रनामस्तोत्रप्रारंभः ॥ सुरालयप्रधाने तु देवदेवं महेश्वरम् ॥ शैलाधिराजतनया संग्रहे तमुवाच ह ॥ १ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ परमेष्ठिन् परं धाम प्रधानपरमेश्वर ॥ नाम्नां सहस्रं बगलामुख्यास्त्वं ब्रूहि वल्लभ ॥ २ ॥ ईश्वर उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि नामधेयसहस्रकम् ॥ परब्रह्मास्त्रविद्यायाश्चतुर्वर्गफलप्रदम् ॥ ३ ॥ गुह्याद् गुह्यतरं देवि सर्वसिद्धैकवन्दितम् ॥ अतिगुप्ततरं सर्वविद्यातंत्रेषु गोपितम् ॥ ४ ॥ विशेषतः कलियुगे महासिद्ध्योघदायि तत् ॥ गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥ ५ ॥ अप्रकाश्यमिदं सत्यं स्वयोनिरिव सुव्रते ॥ रोधिनी विघ्नसंघानां मोहिनी परयोषिताम् ॥ ६ ॥ स्तंभिनी राजसैन्यानां वादिनी परवादिनाम् ॥ पुरा चैकार्णवे घोरे काले परमभैरवः ॥ ७ ॥

सुन्दरीसहितो देवः केशवः क्लेशनाशनः ॥ उरगासनमासीनो योगनिद्रामुपागमत् ॥ ८ ॥ निद्राकाले च ते काले मया प्रोक्तः सनातनः ॥ महास्तंभकरं देवीस्तोत्रं वा शतनामकम् ॥ ९ ॥ सहस्रनाम परमं वद देवस्य कस्यचित् ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ शृणु शंकर देवेश परमातिरहस्यकम् ॥ १० ॥ अजोऽहं यत्प्रसादेन विष्णुः सर्वेश्वरेश्वरः ॥ गोपनीयं प्रयत्नेन प्रकाशात्सिद्धिहानिकृत् ॥ ११ ॥ ॐ अस्य श्रीपीताम्बरासहस्रनामस्तोत्रमंत्रस्य भगवान् सदाशिव ऋषिः । अनुष्टप्छन्दः श्रीजगद्वश्यकरी पीताम्बरा देवता । सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः ॥ अथ ध्यानम्—पीताम्बरपरीधानां पीनोन्नतपयोधराम् ॥ जटामुकुटशोभाढ्यां पीतभूमिसुखासनाम् ॥ १२ ॥ शत्रोर्जिह्वां मुद्गरं च बिभ्रतीं परमां कलाम् ॥ सर्वागमपुराणेषु विख्यातां भुवनत्रये ॥ १३ ॥ जगद्विध्वंसिनीं देवीमजरामरकारिणीम् ॥ तां नमामि महामायां महदैश्वर्य्यदायिनीम् ॥ १४ ॥ सृष्टिस्थितिविनाशानामादिभूतां महेश्वरीम् ॥ गोप्यां सर्वप्रयत्नेन शृणु तां कथयामि ते ॥ १५ ॥ प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य स्थिरमायां ततो वदेत् ॥ बगलामुखि सर्वेति दुष्टानां वाचमेव च ॥ १६ ॥ मुखं पदं स्तंभयेति जिह्वां कीलय बुद्धिमत् ॥ विनाशयेति तारं च स्थिरमायां ततो वदेत् ॥ १७ ॥ वह्निप्रेयां ततो मंत्रश्चतुर्वर्गफलप्रदः ॥ ब्रह्मास्त्रं ब्रह्मविद्या च ब्रह्ममाता सनातनी ॥ १८ ॥ माहेशी ब्रह्मकैवल्यं बगला ब्रह्मचारिणी ॥ नित्यानन्दा । नित्यसिद्धा नित्यरूपा निरामया ॥ ॥ १९ ॥ संधारिणी महामाया कटाक्षक्षेमकारिणी ॥ कमला विमला लीला रत्नकांतिगुणाश्रिता ॥ २० ॥ कामप्रिया कामरता कामा कामस्वरूपिणी ॥ मङ्गला विजया जाया सर्वमङ्गलकारिणी ॥ २१ ॥ कामिनी कामिनी काम्या कामुका कामचारिणी ॥ कामप्रिया कामरता कामा कामस्वरूपिणी ॥ २२ ॥ कामाख्या कामबीजस्था कामपीठनिवासिनी ॥ कामदा कामहा काली कपाली च करालिका ॥ २३ ॥ कंसारिः कमला कामा कैलासेश्वरवल्लभा ॥ कात्यायनी केशवा च करुणा कामकेलिभुक् ॥ २४ ॥ क्रिया कीर्तिः कृत्तिका च काशिका मथुरा शिवा ॥ कालाक्षी कालिका काली धवलाननसुन्दरी ॥ २५ ॥ खेचरी च खमूर्तिश्च क्षुद्रा क्षुद्रक्षुधावरा ॥ खड्गहस्ता खड्गरता खड्गिनी खर्परप्रिया ॥ २६ ॥ गङ्गा गौरी गामिनी च गीता गोत्रविवर्द्धिनी ॥ गोधरा

[illegible]ोधा गंधर्वपुरवासिनी ॥ २७ ॥ गंधर्वा गंधर्वकला गोपती गरुडासना ॥ गोविंदभावा गोविन्दा गांधारी गंधमादिनी
[illegible] गौरांगी गोपिकामूर्तिर्गोपीगोष्ठनिवासिनी ॥ गंधा गजेन्द्रगा मान्या गदाधरप्रिया ग्रहा ॥ २९ ॥ घोरघोरा घोररूपा
[illegible]णी घनप्रभा ॥ दैत्येन्द्रप्रबला घण्टावादिनी घोरनिःस्वना ॥ ३० ॥ डाकिन्युमा उपेन्द्रा च उर्वशी उरगासना ॥ उत्तमा उन्नता
उन्ना उत्तमस्थानवासिनी ॥ ३१ ॥ चामुण्डा मुण्डिका,चण्डी चण्डदर्पहरेति च ॥ उग्रचण्डा चण्डचण्डा चण्डदैत्यविनाशिनी ॥
॥ ३२ ॥ चण्डरूपा प्रचण्डा च चण्डा चण्डशरीरिणी ॥ चतुर्भुजा प्रचण्डा च चराचरनिवासिनी ॥ ३३ ॥ क्षत्रप्रायशिरोवाहा
छला छलतरा छली ॥ क्षत्ररूपा क्षत्रधरा क्षत्रियक्षयकारिणी ॥ ३४ ॥ जया च जयदुर्गा च जयंती जयदा परा ॥ जायिनी
जयिनी ज्योत्स्ना जटाधरप्रिया जिता ॥ ३५ ॥ जितेन्द्रिया जितक्रोधा जयमाना जनेश्वरी ॥ जितमृत्युर्जरातीता जाह्नवी जनका
त्मजा ॥ ३६ ॥ झंकारा झंझरी झण्टा झंकारी झकशोभिनी ॥ झखा झमेशा झंकारी योनिकल्याणदायिनी ॥ ३७ ॥ झर्झरा झमुरी
झारा झरा झरतरा परा ॥ झंझाझमेता झंकारी.झणा कल्याणदायिनी ॥ ३८ ॥ ईमनामानसीचिन्त्या ईमुना शंकरप्रिया ॥ टंकारी
टिटिका टीका टंकिनी च टवर्गगा ॥ ३९ ॥ टापाटोपा टटपतिष्टमनी टमनाप्रिया ॥ ठकारधारिणी ठीका ठंकरी ठिकरप्रिया ॥ ४० ॥
ठेकठासा ठकरती ठामिनी ठमनप्रिया ॥ डारहा डाकिनी डारा डामरा डामरप्रिया ॥ ४१ ॥ डखिनी डडयुक्ता च डमरूकरवल्लभा ॥
ढक्का ढक्की ढक्कनादा ढोलशब्दप्रबोधिनी ॥ ४२ ॥ ढामिनी ढामनप्रीता ढगतंत्रप्रकाशिनी ॥ अनेकरूपिणी अम्बा ॥ अणिमासिद्धिदा
यिनी ॥ ४३ ॥ अमंत्रिणी अणुकरी अणुमन्त्रानुसंस्थिता ॥ तारा तंत्रावती तंत्रा तत्त्वरूपा तपस्विनी ॥ ४४ ॥ तरंगिणी तत्त्व
परा तंत्रिका तंत्रविग्रहा ॥ तपोरूपा तत्त्वदात्री तपःप्रीतिप्रधर्षिणी ॥ ४५ ॥ तंत्रा यंत्रार्चनपरा तलातलनिवासिनी ॥ तल्पदा त्वल्पदा
काम्या स्थिरा स्थिरतरा स्थितिः ॥ ४६ ॥ स्थाणुप्रिया स्थलपरा स्थिता स्थानप्रदायिनी ॥ दिगम्बरा दयारूपा दावाग्नि
दमनी दमा ॥ ४७ ॥ दुर्गा दुर्गपरा देवी दुष्टदैत्यविनाशिनी ॥ दमनप्रमदा दैत्यदयादानपरायणा ॥ ४८ ॥ दुर्गार्तिनाशिनी दांता

दंभिनी दंभवर्जिता ॥ दिगम्बरप्रिया दंभा दैत्यदंभविदारिणी ॥ ४९ ॥ दमना दंतसौन्दर्य्या दानवेन्द्रविनाशिनी ॥ दयाधरा च दमनी दर्भपत्रविलासिनी ॥ ५० ॥ धरिणी धारिणी धात्री धराधरधरप्रिया ॥ धराधरसुता देवी सुधर्म्मा धर्म्मचारिणी ॥ ५१ ॥ धर्म्मज्ञा धवला धूला धनदा धनवर्द्धिनी ॥ धीराऽधीरा धरितरा धीरसिद्धिप्रदायिनी ॥ ५२ ॥ धन्वंतरिधरा धीरा ध्येया ध्यानस्वरूपिणी ॥ नारायणी नारसिंही नित्यानन्दा नरोत्तमा ॥ ५३ ॥ नक्ता नक्तवती नित्या नीलजीमूतसन्निभा ॥ नीलांगी नीलवस्त्रा च नीलपर्वतवासिनी ॥ ५४ ॥ सुनीलपुष्पखचिता नीलजंबुसमप्रभा ॥ नित्याख्या षोडशी विद्या नित्या नित्यसुखावहा ॥ ५५ ॥ नर्मदानन्दनाऽऽनन्दा नन्दानन्दविवर्द्धिनी ॥ यशोदानन्दतनया नन्दनोद्यानवासिनी ॥ ५६ ॥ नागांतका नागवृद्धा नागपत्नी च नागिनी ॥ नमिताशेषजनता नमस्कारवती नमः ॥ ५७ ॥ पीताम्बरा पार्वती च पीताम्बरविभूषिता ॥ पीतमाल्याम्बरधरा पीताभा पिंगमूर्द्धजा ॥ ५८ ॥ पीतपुष्पार्चनरता पीतपुष्पसमर्चिता ॥ परप्रभा पितृपतिः परसैन्यविनाशिनी ॥ ५९ ॥ परमा परतंत्रा च परमंत्रा परात्परा ॥ परा विद्या परा सिद्धिः परस्थानप्रदायिनी ॥ ६० ॥ पुष्पा पुष्पवती नित्या पुष्पमालाविभूषिता ॥ पुरातना पूर्वपरा परसिद्धिप्रदायिनी ॥ ६१ ॥ पीता नितम्बिनी पीता पीनोन्नतपयःस्तनी ॥ प्रेमा प्रमध्यमा शेषा पद्मपत्रविलासिनी ॥ ६२ ॥ पद्मावती पद्मनेत्रा पद्मा पद्ममुखी परा ॥ पद्मासना पद्मप्रिया पद्मरागस्वरूपिणी ॥ ६३ ॥ पावनी पालिका पात्री परदा वरदा शिवा ॥ प्रेतसंस्था परानन्दा परब्रह्मस्वरूपिणी ॥ ६४ ॥ जिनेश्वरप्रिया देवी पशुरक्तरतिप्रिया ॥ पशुमांसप्रियाऽपर्णा परामृतपरायणा ॥ ६५ ॥ पाशिनी पाशिका चापि पशुघ्नी पशुभाषिणी ॥ फुल्लारविन्दवदना फुल्लोत्पलशरीरिणी ॥ ६६ ॥ परानन्दप्रदा वीणा पशुपाशविनाशिनी ॥ फूत्कारा फूत्परा फेनी फुल्लेन्दीवरलोचना ॥ ६७ ॥ फट्मंत्रा स्फटिका स्वाहा स्फोटा च फट्स्वरूपिणी ॥ स्फाटिका घुटिका घोरा स्फटिकाद्रिस्वरूपिणी ॥ ६८ ॥ वरांगना वरधरा वाराही वासुकी वरा ॥ बिन्दुस्था बिन्दुनी वाणी बिन्दुचक्रनिवासिनी ॥ ६९ ॥ विद्याधरी विशालाक्षी काशीवासिजनप्रिया ॥ वेदविद्या विरूपाक्षी विश्वयुग्बहुरूपिणी ॥ ७० ॥ ब्रह्मशक्तिर्विष्णुशक्तिः पञ्च

वैकुण्ठवासिनी देवी वैकुण्ठपददायिनी ॥७१॥ ब्रह्मरूपा विष्णुरूपा परब्रह्ममहेश्वरी ॥ भवप्रिया भवोद्भावा भवरूपा
वक्रा शिवप्रिया ॥ भवापारा भवाधारा भाग्यवत्प्रियकारिणी ॥ भद्रा सुभद्रा भवदा शुंभदैत्यविनाशिनी ॥ ७३ ॥ भवानी भैरवी भीमा
भवोत्तमा ॥ ७२ ॥ भगिनी भगरूपा च भगमाना भगोत्तमा ॥७४॥ भगप्रिया भगवती भगवासा भगाकरा ॥ भगसृष्टा भाग्यवती
भद्रकाली सुभद्रिका ॥ भगलिङ्गप्रिया देवी भगलिङ्गपरायणा॥भगलिंगस्वरूपा च भगलिंगविनोदिनी॥७६॥भगलिंगरता देवी भगलिंग
भगरूपा भगासिनी॥७५॥ निवासिनी॥भगमाला भगकला भगाधारा भगाम्बरा ॥७७॥ भगवेगा भगभूषा भगेन्द्रा भाग्यरूपिणी॥भगलिंगांगसम्भोगा भगलिं
गासवावहा ॥७८॥ भगलिंगसमाधुर्या भगलिंगानिवेशिता ॥ भगलिंगसुपूज्या च भगलिंगसमन्विता ॥ ७९ ॥ भगलिंगविरक्ता च भग
लिंगसमावृता ॥ माधवी माधवीमान्या मधुरा मधुमानिनी ॥ ८० ॥ मन्दहासा महामाया मोहिनी महदुत्तमा ॥ महामोहा महाविद्या
महाघोरा महास्मृतिः ॥ ८१ ॥ मनस्विनी मानवती मोदिनी मधुरानना ॥ मेनका मानिनी मान्या मणिरत्नविभूषणा ॥ ८२ ॥
मल्लिका मौलिका माला मालाधरमदोत्तमा ॥ मदना सुन्दरी मेधा मधुमत्ता मधुप्रिया ॥ ८३ ॥ मत्तहंसा समोन्नासा मत्तसिंहमहासना ॥
महेन्द्रवल्लभा भीमा मौल्यं च मिथुनात्मजा ॥ ८४ ॥ महाकाला महाकाली महाबुद्धिर्महोत्कटा ॥ माहेश्वरी महामाया माहिषासुर
घातिनी ॥ ८५ ॥ मधुरा कीर्तिमत्ता च मत्ता मातंगगामिनी ॥ मदप्रिया मांसरता मत्तयुक् कामकारिणी ॥ ८६ ॥ मैथुन्य
वल्लभा देवी महानन्दा महोत्सवा ॥ मरीचिर्मारतिर्माया मनोबुद्धिप्रदायिनी ॥ ८७ ॥ मोहा मोक्षा महालक्ष्मीर्महत्पदप्रदायिनी ॥
यमरूपा च यमुना जयंती च जयप्रदा ॥ ८८ ॥ याम्या यमवती युद्धा यदोः कुलविवर्द्धिनी ॥ रमा रामा रामपत्नी रत्नमाला
रतिप्रिया ॥ ८९ ॥ रत्नसिंहासनस्था च रत्नाभरणमण्डिता ॥ रमणी रमणीया च रत्या रसपरायणा ॥ ९० ॥ रसानन्दा
रसवती रघूणां कुलवर्द्धिनी ॥ रमणारिपरिभ्राज्या रैधा राधिकरत्नजा ॥ ९१ ॥ रावी रसस्वरूपा च रात्रिराजसुखावहा ॥ ऋतुजा
ऋतुदा ऋद्धा ऋतुरूपा ऋतुप्रिया ॥ ९२ ॥ रक्तप्रिया रक्तवती रंगिणी रक्तदंतिका ॥ लक्ष्मीर्लज्जा च लतिका लीला लग्नानिता

क्षिणी ॥ ९३ ॥ लीला लीलावती लोमा हर्षाह्लादनपट्टिका ॥ ब्रह्मस्थिता ब्रह्मरूपा ब्रह्माणी वेदवंदिता ॥ ९४ ॥ ब्रह्मोद्भवा ब्रह्मकला ब्रह्माणी ब्रह्मबोधिनी ॥ वेदांगना वेदरूपा वनिता विनतावसा ॥ ९५ ॥ बाला च युवती वृद्धा ब्रह्मकर्मपरायणा ॥ विंध्यस्था विंध्यवासी च बिन्दुयुक् बिन्दुभूषणा ॥ ९६ ॥ विद्यावती वेदधारी व्यापिका बर्हिणी कळा ॥ वामाचारप्रिया व ह्विर्वामाचार परायणा ॥ ९७ ॥ वामाचाररता देवी वामदेवप्रियोत्तमा ॥ बुद्धेन्द्रिया विबुद्धा च बुद्धाचरणमालिनी ॥ ९८ ॥ बंधमोचनकर्त्री च वारुणा वरुणालया ॥ शिवा शिवप्रिया शुद्धा शुद्धांगी शुक्लवर्णिका ॥ ९९ ॥ शुक्लपुष्पप्रिया शुक्ला शिवधर्म्मपरायणा ॥ शुक्रस्था शुक्लिनी शुक्लरूपा शुक्लपशुप्रिया ॥ १०० ॥ शुक्रस्था शुक्रिणी शुक्रा शुक्ररूपा च शुक्रिका ॥ षण्मुखी च षडंगा च षट्चक्र विनिवासिनी ॥ १०१ ॥ षट्ग्रंथियुक्ता षोढा च षण्माता च षडात्मिका ॥ षडङ्गयुवती देवी षडंगप्रकृतिर्वशी ॥ १०२ ॥ षडा नना षड्रसा च षष्ठी षष्ठेश्वरी प्रिया ॥ षड्जवादा षोडशी च षोढान्यासस्वरूपिणी ॥ १०३ ॥ षट्चक्रभेदनकरी षट्चक्रस्थस्वरू पिणी ॥ षोडशस्वररूपा च षण्मुखी षट्पदान्विता ॥ १०४ ॥ सनकादिस्वरूपा च शिवधर्म्मपरायणा ॥ सिद्धा सिद्धेश्वरी शुद्धा सुरमाता स्वरोत्तमा ॥ १०५ ॥ सिद्धविद्या सिद्धमाता सिद्धा सिद्धस्वरूपिणी ॥ हरा हरिप्रिया हारा हरिणी हारयुक् तथा ॥ १०६ ॥ हरिरूपा हरिधरा हरिणाक्षी हरिप्रिया ॥ हेतुप्रिया हेतुरता हिताहितस्वरूपिणी ॥ १०७ ॥ क्षमा क्षमावती क्षीता क्षुद्रघण्टाविभू षणा ॥ क्षयंकरी क्षितीशा च क्षीणमध्यसुशोभना ॥ १०८ ॥ अजाऽनंता अपर्णा च अहल्या शेषशायिनी ॥ स्वांतर्गता च साधूना मंतरानंतरूपिणी ॥ १०९ ॥ अरूपा अमला चार्द्धा अनंतगुणशालिनी ॥ स्वविद्या विद्यका विद्याविद्या चार्विन्दुलोचना ॥ ॥ ११० ॥ अपराजिता जातवेदा अजपा अमरावती ॥ अल्पा स्वल्पा अनल्पाऽऽद्या अणिमासिद्धिदायिनी ॥ १११ ॥ अष्ट सिद्धिप्रदा देवी रूपलक्षणसंयुता ॥ अरविन्दमुखा देवी भोगसौख्यप्रदायिनी ॥ ११२ ॥ आदिविद्या आदिभूता आदिसिद्धिप्रदा यिनी ॥ सीत्काररूपिणी देवी सर्वासनविभूषिता ॥ ११३ ॥ इन्द्रप्रिया च इन्द्राणी इन्द्रप्रस्थनिवासिनी ॥ इन्द्राक्षी इन्द्रवज्रा च

इन्द्रमयोक्षिणी तथा ॥ ११४ ॥ इला कामनिवासा च ईश्वरीश्वरवल्लभा ॥ जननी चेश्वरी दीना भेदा चेश्वरकर्म्मकृत् ॥ ११५ ॥ उमा कात्यायनी ऊर्द्धा मीना चोत्तरवासिनी ॥ उमापतिप्रिया देवी शिवा चोङ्काररूपिणी ॥ ११६ ॥ उरगेन्द्रशिरोरत्ना उरगोरग वल्लभा ॥ उद्यानवासिनी माला प्रशस्तमणिभूषणा ॥ ११७ ॥ ऊर्द्धदंतोत्तमांगी च उत्तमा चोर्ध्वकेशिनी ॥ उमा सिद्धिप्रदा या च उरगासनसंस्थिता ॥ ११८ ॥ ऋषिपुत्री ऋषिच्छन्दा ऋषिसिद्धिप्रदायिनी ॥ उत्सवोत्सवसीमंता कामिका च गुणान्विता ॥ ११९ ॥ एला एकारविद्या च एणी विद्याधरा तथा ॥ ॐकारवलयोपेता ॐकारपरमा कला ॥ १२० ॥ ॐ वद वद वाणी च ॐकाराक्षरमण्डिता ॥ ऐन्द्री कुलिशहस्ता च ॐलोकपरवासिनी ॥ १२१ ॥ ॐकारमध्यबीजा च ॐनमोरूपधारिणी ॥ परब्रह्मस्वरूपा च अंशुकांशुकवल्लभा ॥ १२२ ॥ ॐकारा अःफड्मंत्रा च अक्षाक्षरविभूषिता ॥ अमंत्रा मंत्ररूपा च पदशोभासमन्विता ॥ १२३ ॥ प्रणवोङ्काररूपा च प्रणवोच्चारभाक् पुनः ॥ ह्रींकाररूपा ह्रींकारी वाग्बीजाक्षरभूषणा ॥ १२४ ॥ हृल्लेखा सिद्धियोगा च हृत्पद्मासनसंस्थिता ॥ बीजाख्या नेत्रहृदया ह्रींबीजा भुवनेश्वरी ॥ १२५ ॥ क्लींकामराजा क्लिन्ना च चतुर्वर्गफल प्रदा ॥ क्लीं क्लीं क्लींरूपिका देवी क्रीं क्रीं क्रींनामधारिणी ॥ १२६ ॥ कमला शक्तिबीजा च पाशांकुशविभूषिता ॥ श्रीं श्रींकारा महाविद्या श्रद्धा श्रद्धावती तथा ॥ १२७ ॥ ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं परा च क्लींकारी परमाकला ॥ ह्रीं क्लीं श्रींकाररूपा च सर्वकर्मफल प्रदा ॥ १२८ ॥ सर्वाढ्या सर्वदेवी च सर्वसिद्धिप्रदा तथा ॥ सर्वज्ञा सर्वशक्तिश्च वाग्विभूतिप्रदायिनी ॥ १२९ ॥ सर्वमोक्षप्रदा देवी सर्वभोगप्रदायिनी ॥ गुणेन्द्रवल्लभा वामा सर्वशक्तिप्रदायिनी ॥ १३० ॥ सर्वानन्दमयी चैव सर्वसिद्धिप्रदायिनी ॥ सर्वचक्रेश्वरी देवी सर्वसिद्धेश्वरी तथा ॥ १३१ ॥ सर्वप्रियंकरी चैव सर्वसौख्यप्रदायिनी ॥ सर्वानन्दप्रदा देवी ब्रह्मानन्दप्रदायिनी ॥ १३२ ॥ मनोवाञ्छितदात्री च मनोबुद्धिसमन्विता ॥ अकारादिक्षकारांता दुर्गा दुर्गार्तिनाशिमी ॥ १३३ ॥ पद्मनेत्रा सुनेत्रा च स्वधा स्वाहा वषट्करी ॥ स्ववर्गा देववर्गा च तवर्गा च समन्विता ॥ १३४ ॥ अंतःस्था वेश्मरूपा च नवदुर्गा नरोत्तमा ॥ तत्त्वसिद्धिप्रदा नीता तथ

नीलपताकिनी ॥ १३५ ॥ नित्यरूपा निशाकारी स्तंभिनी मोहिनीति च ॥ वशंकरी तथोच्चाटी उन्माद्याकर्षिणीति च ॥ १३६ ॥ मातंगी मधुमत्ता च अणिमा लघिमा तथा ॥ सिद्धा मोक्षप्रदा नित्या नित्यानन्दप्रदायिनी ॥ १३७ ॥ रक्तांगी रक्तनेत्रा च रक्तचन्दन भूषिता ॥ स्वल्पसिद्धिः सुकल्पा च दिव्यचारणशुक्रभा ॥ १३८ ॥ संक्रांतिः सर्वविद्या च सप्तवासरभूषिता ॥ प्रथमा च द्वितीया च तृतीया च चतुर्थिका ॥ १३९ ॥ पञ्चमी चैव षष्ठी च विशुद्धा सप्तमी तथा ॥ अष्टमी नवमी चैव दशम्येका दशी तथा ॥ १४० ॥ द्वादशी त्रयोदशी च चतुर्दश्यथ पूर्णिमा ॥ अमावस्या तथा पूर्वा उत्तरा परिपूर्णिमा ॥ १४१ ॥ खड्गिनी चक्रिणी घोरा गदिनी शूलिनी तथा ॥ भुशुण्डी चापिनी बाणा सर्वायुधविभूषणा ॥ १४२ ॥ कुलेश्वरी कुलवती कुलाचारपरायणा ॥ कुलकर्मसुरक्ता च कुलाचारप्रवर्द्धिनी ॥ १४३ ॥ कीर्तिः श्रीश्च रमा रामा धर्म्मायै सततं नमः ॥ क्षमा धृतिः स्मृतिर्मेधा कल्पवृक्षनिवासिनी ॥ १४४ ॥ उग्रा उग्रप्रभा गौरी वेदविद्याविबोधिनी ॥ साध्या सिद्धा सुसिद्धा च विप्ररूपा तथैव च ॥ १४५ ॥ काली कराली काल्या च कालदैत्यविनाशिनी कौलिनी कालिका चैव कचटतपवर्णिका ॥ १४६ ॥ जयिनी जययुक्ता च जयदा जृम्भिणी तथा ॥ स्राविणी द्राविणी देवी भरुण्डा विंध्यवासिनी ॥ १४७ ॥ ज्योतिर्भूता च जयदा ज्वाला मालासमाकुला ॥ भिन्ना भिन्नप्रकाशा च विभिन्ना भिन्नरूपिणी ॥१४८॥ अश्विनी भरणी चैव नक्षत्रसंभवान्विता ॥ काश्यपी विनता ख्याता दितिजा दितिरेव च ॥ १४९ ॥ कीर्तिः कामप्रिया देवी कीर्त्या कीर्तिविवर्द्धिनी ॥ सद्योमांससमालब्धा सद्यश्छिन्नासि शंकरा ॥ ॥ १५० ॥ दक्षिणा चोत्तरा पूर्वा पश्चिमा दिक्तथैव च ॥ अग्निनैर्ऋतिवायव्या ऐशान्य दिक्तथा स्मृता ॥ १५१ ॥ ऊर्ध्वांगाधा गता श्वेता कृष्णा रक्ता च पीतका ॥ चतुर्वर्गा चतुर्वर्णा चतुर्मात्रात्मिकाक्षरा ॥ १५२ ॥ चतुर्मुखी चतुर्वेदा चतुर्विद्या चतुर्मुखा ॥ चतुर्गणा चतुर्माता चतुर्वर्गफलप्रदा ॥ १५३ ॥ धात्री विधात्री मिथुना नारी नायकवासिनी ॥ सुरामुदा मोदवती मोदिनी मेनकात्मजा ॥ १५४ ॥ ऊर्द्ध्वकाली सिद्धिकाली दक्षिणा कालिका शिवा ॥ नील्या सरस्वती सत्त्वा बगला छिन्नमस्तका ॥ १५५ ॥ सर्वे

श्वरी सिद्धविद्या परा परमदेवता ॥ हिंगुली हिंगुलांगी च हिंगुलाधरवासिनी ॥ १५६ ॥ हिंगुलोत्तमवर्णाभा हिंगुलावरणा च सा ॥
जाग्रती च जगन्माता जगदीश्वरवल्लभा ॥ १५७ ॥ जनार्दनप्रिया देवी जययुक्ता जयप्रदा ॥ जगदानन्दकारी च जगदाह्लादकारिणी ॥
॥ १५८ ॥ ज्ञानदानकरी यज्ञा जानकी जनकप्रिया ॥ जयंती जयदा नित्या ज्वलदग्निसमप्रभा ॥ १५९ ॥ बिम्बाधरा च
बिम्बोष्ठी कैलासाचलवासिनी ॥ विभवा वडवाग्निश्च ह्यग्निहोत्रफलप्रदा ॥ १६० ॥ मंत्ररूपा परा देवी तथैव गुरुरूपिणी ॥ गया
गंगा गोमती च प्रभासा पुष्करापि च ॥ १६१ ॥ विंध्याचलरता देवी विंध्याचलनिवासिनी ॥ बहुर्बहुसुन्दरी च कंसासुरविना
शिनी ॥ १६२ ॥ शूलिनी शूलहस्ता च वज्रा वज्रधरापि च ॥ दुर्गा शिवा शांतिकरी ब्रह्माणी ब्राह्मणप्रिया ॥ १६३ ॥ सर्वलोक
प्रणेत्री च सर्वरोगहरापि च ॥ मंगला शोभना शुद्धा निष्कला परमा कला ॥ १६४ ॥ विश्वेश्वरी विश्वमाता ललिता वासितानना ॥
सदाशिवा उमा क्षेमा चण्डिका चण्डविक्रमा ॥ १६५ ॥ सर्वदेवमयी देवी सर्वागमभयापहा ॥ ब्रह्मेशविष्णुनमिता सर्वकल्याण
कारिणी ॥ १६६ ॥ योगिनी योगमाता च योगीन्द्रहृदयस्थिता ॥ योगिजाया योगवती योगीन्द्रानन्दयोगिनी ॥ १६७ ॥ इन्द्रादि
नमिता देवी ईश्वरी चेश्वरप्रिया ॥ विशुद्धिदा भयहरा भक्तद्वेषिभयंकरी ॥ १६८ ॥ भगवेषा कामिनी च भरुण्डा भयकारिणी ॥ बल
भद्रप्रियाकारा संसारार्णवतारिणी ॥ १६९ ॥ पञ्चभूता सर्वभूता विभूतिर्भूतिधारिणी ॥ सिंहवाहा महामोहा मोहपाशविनाशिनी ॥
॥ १७० ॥ मन्दुरा मदिरा मुद्रा मुद्रामुद्गरधारिणी ॥ सावित्री च महादेवी परप्रियविनायका ॥ १७१ ॥ यमदूती च पिंगाक्षी वैष्णवी
शंकरी तथा ॥ चन्द्रप्रिया चन्द्ररता चन्दनारण्यवासिनी ॥ १७२ ॥ चन्द्रनेत्रसमायुक्ता चण्डदैत्यविनाशिनी ॥ सर्वेश्वरी यक्षिणी
च किराती राक्षसी तथा ॥ १७३ ॥ महाभोगवती देवी महामोक्षप्रदायिनी ॥ विश्वहंत्री विश्वरूपा विश्वसंहारकारिणी ॥ १७४ ॥
धात्री च सर्वलोकानां हितकारणकामिनी ॥ कमला सूक्ष्मदा देवी धात्री विनाशिनी ॥ १७५ ॥ सुरेन्द्रपूजिता सिद्धा महातेजोवतीति
च ॥ परा रूपवती देवी त्रैलोक्याकर्षकारिणी ॥ १७६ ॥ इति ते कथितं देवि पीतानामसहस्रकम् ॥ पठेद्वा पाठयेद्वापि सर्व

सिद्धिर्भवेत्प्रिये ॥ १७७ ॥ इति मे विष्णुना प्रोक्तं महास्तंभकरं परम् ॥ प्रातःकाले च मध्याह्ने संध्याकाले च पार्वति ॥ १७८ ॥ एकचित्तः पठेदेतत्सर्वसिद्धिर्भविष्यति ॥ एकवारं पठेद्यस्तु सर्वपापक्षयो भवेत् ॥ १७९ ॥ द्विवारं प्रपठेद्यस्तु विघ्नेश्वरसमो भवेत् ॥ त्रिवारं पठनाद्देवि सर्वं सिद्ध्यति सर्वथा ॥ १८० ॥ स्तवस्यास्य प्रभावेण साक्षाद्भवति सुव्रते ॥ मोक्षार्थी लभते मोक्षं धनार्थी लभते धनम् ॥ १८१ ॥ विद्यार्थी लभते विद्यां तर्कव्याकरणान्विताम् ॥ महित्वं वत्सरान्ताच्च शत्रुहानिः प्रजायते ॥ १८२ ॥ क्षोणीपति वंशस्तस्य स्मरेण सदृशो नवत् ॥ यः पठेत्सर्वदा भक्त्या श्रेयस्तु भवति प्रिये ॥ १८३ ॥ गणाध्यक्षप्रतिनिधिः कविः काव्यपरो वरः ॥ गोपनीयं प्रयत्नेन जननीजारवत्सदा ॥ १८४ ॥ हेतुयुक्तो भवेन्नित्यं शक्तियुक्तः सदा भवेत् ॥ य इदं पठते नित्यं शिवेन सदृशो भवेत् ॥ १८५ ॥ जीवन्धर्म्मार्थभोगी स्यान्मृतो मोक्षपतिर्भवेत् ॥ सत्यं सत्यं महादेवि सत्यं सत्यं न संशयः ॥ १८६ ॥ स्तवस्यास्यप्रभावेण देवेन सह मोदते ॥ सुचित्ताश्च सुराः सर्वे स्तवराजस्य कीर्त्तनात् ॥ १८७ ॥ पीताम्बरपरीधाना पीतगंधानुलेपना ॥ परमोदयकीर्तिः स्यात्परतः सुरसुन्दरी ॥ १८८ ॥ इति श्रीउत्कटशम्बरे नागेन्द्रप्रयाणतंत्रे षोडशसाहस्रे विष्णुशंकरसंवादे पीताम्बरासहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ बगलामुखीस्तोत्रप्रारंभः ॥ चलत्कनककुंडलोल्लसितचारुगण्डस्थलीं लसत्कनकचंपकद्युतिमर्दिदुबिंबाननाम् ॥ गदाहतविपक्षकां कलितलोलजिह्वांचलां स्मरामि बगलामुखीं विमुखवाङ्मनस्स्तंभिनीम् ॥१॥ पीयूषोदधिमध्यचारुविलद्रक्तोत्पले मंडपे सत्सिंहासनमौलिपातितरिपुं प्रेतासनाध्यासिनीम् ॥ स्वर्णाभां करपीडितारिरसनां भ्राम्यद्गदां बिभ्रतीमित्थं ध्यायति यांति तस्य सहसा सद्योऽथ सर्वापदः ॥ २ ॥ देवि त्वच्चरणांबुजार्चनकृते यः पीतपुष्पांजलीन्भक्त्या वामकरे निधाय च मनं मंत्री मनोज्ञाक्षरम् ॥ पीठध्यानपरोऽथ कुंभकवशाद्बीजं स्मरेत्पार्थिवं तस्यामित्रमुखस्य वाचि हृदये जाड्यं भवेत्तत्क्षणात् ॥ ३ ॥ वादी मूकति रंकति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति क्रोधी शाम्यति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खंजति ॥ गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति त्वन्मंत्रिणा यंत्रितः श्रीर्नित्ये बगलामुखि प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः ॥ ४ ॥ मंत्रस्तावदलं विपक्षदलने स्तोत्रं पवित्रं च ते यंत्रं वादि

नियंत्रणं त्रिजगतां जैत्रं च चित्रं च ते ॥ मातः श्रीबगलेति नाम ललितं यस्यास्ति जंतोर्मुखे त्वन्नामग्रहणेन संसदि मुखे स्तंभो भवेद्वादिनाम् ॥ ५ ॥ दुष्टस्तंभनमुग्रविघ्नशमनं दारिद्र्यविद्रावणं भूभृत्संदमनं चलन्मृगदृशां चेतःसमाकर्षणम् ॥ सौभाग्यैकनिकेतनं समदृशः कारुण्यपूर्णेक्षणं मृत्योर्मारणमाविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः ॥ ६ ॥ मातर्भंजय मद्विपक्षवदनं जिह्वां च संकीलय ब्राह्मीं मुद्रय दैत्यदेवधिषणामुग्रां गतिं स्तंभय ॥ शत्रूंश्चूर्णय देवि तीक्ष्णगदया गौरांगि पीतांबरे विघ्नौघं बगले हर प्रणमतां कारुण्यपूर्णेक्षणे ॥ ७ ॥ मातर्भैरवि भद्रकालि विजये वाराहि विश्वाश्रये श्रीविद्ये समये महेशि बगले कामेशि वामे रमे ॥ मातंगि त्रिपुरे परात्परतरे स्वर्गापवर्गप्रदे दासोऽहं शरणागतः करुणया विश्वेश्वरि त्राहि माम् ॥ ८ ॥ संरंभे चौरसंघे प्रहरणसमये बंधने व्याधिमध्ये विद्यावादे विवादे प्रकुपितनृपतौ दिव्यकाले निशायाम् ॥ वश्ये वा स्तंभने वा रिपुवधसमये निर्जने वा वने वा गच्छंस्तिष्ठंस्त्रिकालं यदि पठति शिवं प्राप्नुयादाशु धीरः ॥ ९ ॥ त्वं विद्या परमा त्रिलोकजननी विघ्नौघसंछेदिनी योषित्कर्षणकारिणी जनमनःसम्मोहसंदायिनी ॥ स्तंभोत्सारणकारिणी पशुमनःसंमोहसंदायिनी जिह्वाकीलनभैरवी विजयते ब्रह्मादिमंत्रो यथा ॥ १० ॥ विद्या लक्ष्मीर्नित्यसौभाग्यमायुः पुत्रैः पौत्रैः सर्वसाम्राज्यसिद्धिः ॥ मानो भोगो वश्यमारोग्यसौख्यं प्राप्तं तत्तद्भूतलेऽस्मिन्नरेण ॥ ११ ॥ त्वत्कृते जपसन्नाहं गदितं परमेश्वरि ॥ दुष्टानां निग्रहार्थाय तद्गृहाण नमोऽस्तु ते ॥ १२ ॥ पीताम्बरां च द्विभुजां त्रिनेत्रां गात्रकोमलाम् ॥ शिलामुद्गरहस्तां च स्मरे तां बगलामुखीम् ॥ १३ ॥ ब्रह्मास्त्रमिति विख्यातं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ॥ गुरुभक्ताय दातव्यं न देयं यस्य कस्य चित् ॥ १४ ॥ नित्यं स्तोत्रमिदं पवित्रमिह यो देव्याः पठत्यादराद्धृत्वा यंत्रमिदं तथैव समरे बाहौ करे वा गले ॥ राजानोऽप्यरयो मदान्धकरिणः सर्पा मृगेन्द्रादिकास्ते वै यांति विमोहिता रिपुगणा लक्ष्मीः स्थिरा सिद्धयः ॥ १५ ॥ इति श्रीरुद्रयामले तंत्रे श्रीबगलामुखीस्तोत्रं समाप्तम् ॥ अथ बगलामुखीशतनामस्तोत्रप्रारंभः ॥ नारद उवाच ॥ भगवन्देवदेवेश सृष्टिस्थितिलयात्मक ॥ शतमष्टोत्तरं नाम्नां बगलाया वदाधुना ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ शृणु वत्स प्रवक्ष्यामि नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥ पीतांबर्य्या महादेव्याः स्तोत्रं पापप्रणाशनम् ॥ २ ॥ यस्य प्रपठनात्सद्यो वादी मूको भवेत्क्षणात् ॥ रिपूणां स्तंभनं याति सत्यं सत्यं वदाम्य

हम् ॥ ३ ॥ ॐ अस्य श्रीपीताम्बराष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्य सदाशिव ऋषिः । अनुष्टुप्छंदः । श्रीपीताम्बरा देवता । श्रीपीताम्बराप्रीतये पाठे विनियोगः ॥ ॐ बगला विष्णुवनिता विष्णुशंकरभामिनी ॥ बहुला वेदमाता च महाविष्णुप्रसूरपि ॥ १ ॥ महामत्स्या महा कूर्म्मा महावाराहरूपिणी ॥ नारसिंहप्रिया रम्या वामना बटुरूपिणी ॥ २ ॥ जामदग्न्यस्वरूपा च रामा रामप्रपूजिता ॥ कृष्णा कपर्दिनी कृत्या कलहा कलकारिणी ॥ ३ ॥ बुद्धिरूपा बुद्धभार्य्या बौद्धपाखण्डखण्डिनी ॥ कल्किरूपा कलिहरा कलिदुर्गति नाशिनी ॥ ४ ॥ कोटिसूर्य्यप्रतीकाशा कोटिकन्दर्पमोहिनी ॥ केवला कठिना काली कला कैवल्यदायिनी ॥ ५ ॥ केशवी केशवाराध्या किशोरी केशवस्तुता ॥ रुद्ररूपा रुद्रमूर्त्ती रुद्राणी रुद्रदेवता ॥ ६ ॥ नक्षत्ररूपा नक्षत्रा नक्षत्रेशप्रपूजिता ॥ नक्ष त्रेशप्रिया नित्या नक्षत्रपतिवन्दिता ॥ ७ ॥ नागिनी नागजननी नागराजप्रवंदिता ॥ नागेश्वरी नागकन्या नागरी च नगात्मजा ॥ ८ ॥ नगाधिराजतनया नगराजप्रपूजिता ॥ नवीना नीरदा पीता श्यामा सौन्दर्य्यकारिणी ॥ ९ ॥ रक्ता नीला घना शुभ्रा श्वेता सौभाग्यदायिनी ॥ सुन्दरी सौभगा सौम्या स्वर्णाभा स्वर्गतिप्रदा ॥ १० ॥ रिपुत्रासकरी रेखा शत्रुसंहारकारिणी ॥ भामिनी च तथा माया स्तंभिनी मोहिनी शुभा ॥ ११ ॥ रागद्वेषकरी रात्री रौरवध्वंसकारिणी ॥ यक्षिणी सिद्धनिवहा सिद्धेशा सिद्धि रूपिणी ॥ १२ ॥ लंकापतिध्वंसकरी लंकेशी रिपुवंदिता ॥ लंकानाथकुलहरा महारावणहारिणी ॥ १३ ॥ देवदानवसिद्धौघपूजिता परमेश्वरी ॥ पराणुरूपा परमा परतंत्रविनाशिनी ॥ १४ ॥ वरदा वरदाराध्या वरदानपरायणा ॥ वरदेशप्रिया वीरा वीरभूषण भूषिता ॥ १५ ॥ वसुदा बहुदा वाणी ब्रह्मरूपा वरानना ॥ बलदा पीतवसना पीतभूषणभूषिता ॥ १६ ॥ पीतपुष्पप्रिया पीत हारा पीतस्वरूपिणी ॥ इति ते कथितं विप्र नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥ १७ ॥ यः पठेत्पाठयेद्वापि शृणुयाद्वा समाहितः ॥ तस्य शत्रुः क्षयं सद्यो याति नैवात्र संशयः ॥ १८ ॥ प्रभातकाले प्रयतो मनुष्यः पठेत्सुभक्त्या परिचिन्त्य पीताम् ॥ द्रुतं भवेत्तस्य समस्तबुद्धि विनाशमायाति च तस्य शत्रुः ॥ ११ ॥ इति श्रीविष्णुयामले नारदविष्णुसंवादे श्रीबगलाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥ इति श्रीमंत्र महार्णवे मध्यखण्डे बगलातंत्रे एकादशस्तरंगः ॥ ११ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीमातङ्ग्यै नमः ।

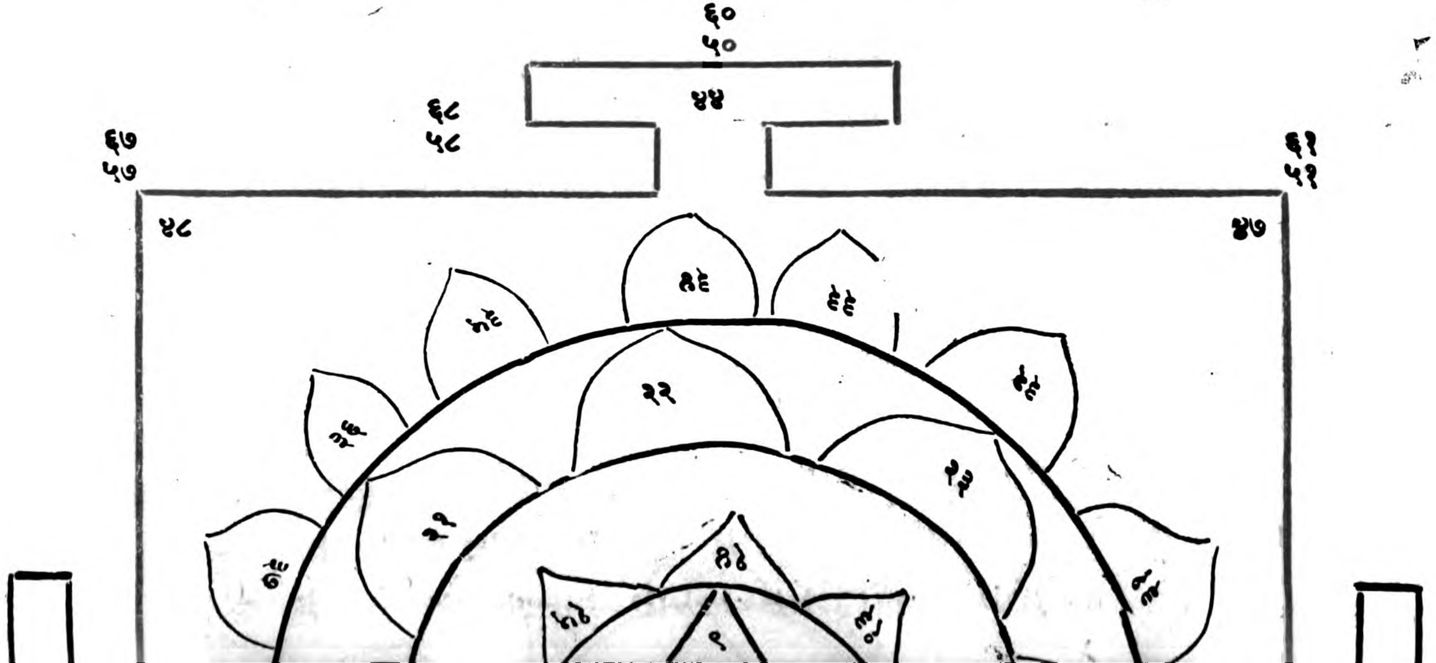


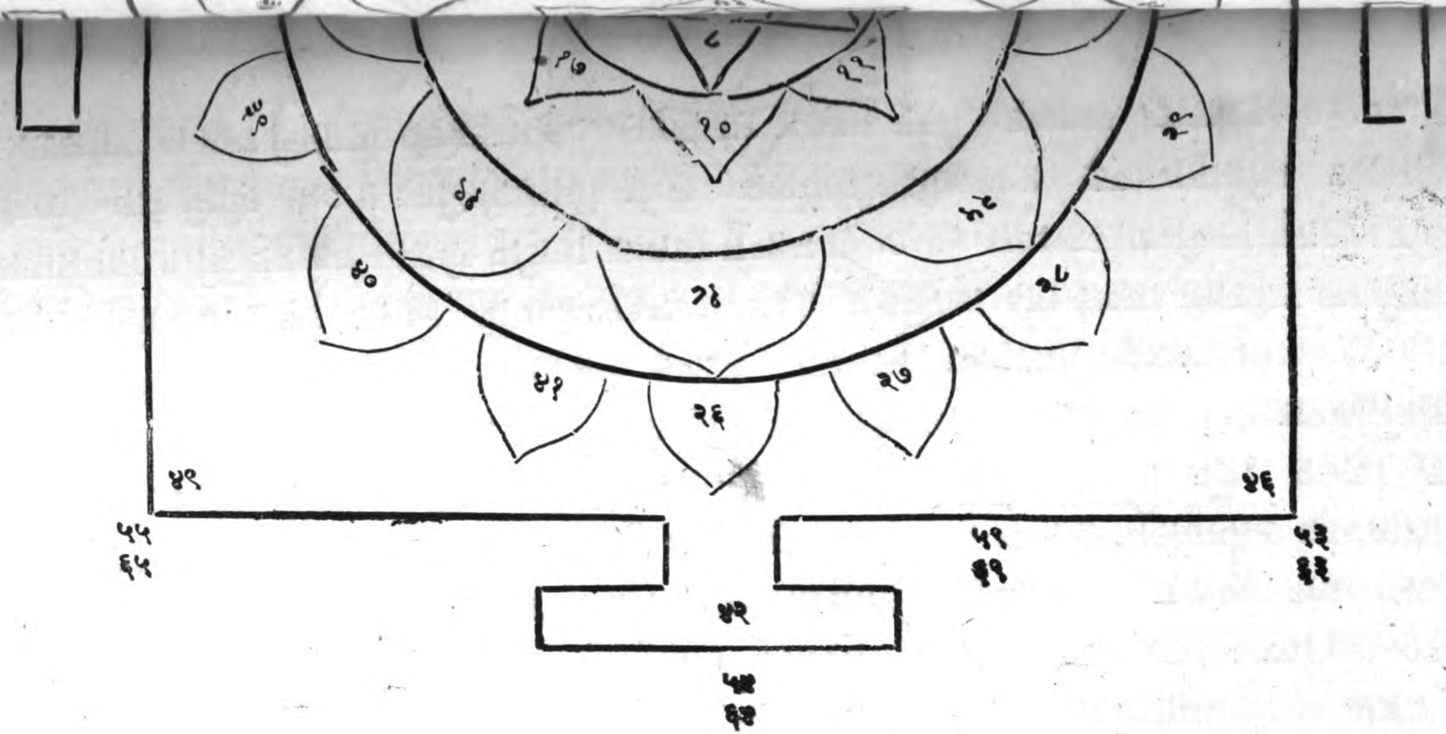
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ मातंगीतंत्रप्रारंभः ॥ तत्रादौ पटलप्रारंभः ॥ अथ वक्ष्ये महादेवीं मातंगीं सर्वसिद्धिदाम् ॥ अस्याः पूजनमात्रेण वाक्सिद्धिं लभते ध्रुवम् ॥ १ ॥ अथ द्वात्रिंशदक्षरो मातंगीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रमहोदधौ मंत्रो यथा–ॐ ह्रीं ए श्रीं नमो भगवति उच्छिष्टचांडालि श्रीमातंगेश्वरि सर्वजनवशंकारि स्वाहा॥इति द्वात्रिंशदक्षरो मंत्रः॥अस्य विधानम्–अस्य मंत्रस्य मतंग ऋषिः । अनुष्टुप्छंदः । मागंती देवता । ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥ॐ मतंगऋषये नमः शिरसि १ । अनुष्टुप्छंदसे नमः मुखे २ । मातंगीदेवतायै नमो हृदि ३ । विनियोगाय नमः सर्वांगे ४॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ह्रीं ऐं श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । नमो भगवति तर्जनीभ्यां नमः २ । उच्छिष्टचांडालि मध्यमाभ्यां नमः । श्रीमातंगेश्वरि अनामिकाभ्यां नमः ४ । सर्वजनवशंकारि कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ह्रीं ऐं श्रीं हृदयाय नमः १ । नमो भगवति शिरसे स्वाहा २ । उच्छिष्टचांडालि शिखायै वषट् ३ । श्रीमातंगेश्वरि कवचाय हुम् ४ । सर्वजनवशंकारि नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । स्वाहा अस्त्राय फट् ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्–ॐ घनश्यामलांगीं स्थितां रत्नपीठे शुकस्योदितं शृण्वतीं रक्तवस्त्राम् ॥ सुरापानमत्तां सरोजस्थितां श्रीं भजे वल्लकीं वादयंतीं मतंगीम् ॥ १ ॥ इति ध्यायेत् ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति मंत्रेण पीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तीः

पूजयेत् । तद्यथा पूर्वादिक्रमेण अष्टसु दिक्षु ॐ विभूत्यै मातंग्यै नमः १ । ॐ उन्नत्यै मातंग्यै नमः २ । ॐ कांत्यै मातंग्यै नमः ३ । ॐ सृष्ट्यै मातंग्यै नमः ४ । ॐ कीर्त्यै मातंग्यै नमः ५ । ॐ सन्नत्यै मातंग्यै नमः ६ । ॐ व्युष्ट्यै मातंग्यै नमः ७ । ॐ उत्कृष्टय मातंग्यै नमः ८ । मध्ये ॐ ऋद्ध्यै मातंग्यै नमः ९ ॥ इति पीठशक्तीः संपूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण प्रोञ्छ्य 'ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तद्यथा—पुष्पांजलिमादाय—ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ॥ अनुज्ञां देहि मातंगि परिवारार्चनाय मे ॥ ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं निक्षिप्य पजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तत्र त्रिकोणे ॐ ह्रीं ऐं श्रीं रत्यै मातंग्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं ऐं श्रीं प्रीत्यै मातंग्यै नमः । प्रीतिश्रीपा० २ । ॐ ३ ह्रीं ऐं श्रीं मनोभवायै मातंग्यै नमः । मनोभवाश्रीपा० ३ । इति पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य—अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदन् पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततः षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च ॐ ह्रीं ऐं श्रीं हृदयाय नमः । हृदयश्रीपा० १ । नमो भगवति शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० २ । उच्छिष्टचांडालि शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ३ । श्रीमातंगेश्वरि कवचाय हुम् । कवचश्रीपा० ४ । सर्वजनवशंकरि नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । स्वाहाऽस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ ॥ इति षडंगानि पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततोऽष्टदलेषु पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची तदनुसारेणान्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ॐ ह्रीं ऐं श्रीं ब्राह्म्यै मातंग्यै नमः । ब्राह्मीश्रीपा० १ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं माहेश्वर्यै मातंग्यै

नमः । माहेश्वरीश्रीपा० २ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं कौमार्यै मातंग्यै नमः । कौमारीश्रीपा० ३ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं वैष्णव्यै मातंग्यै नमः । वैष्णवीश्रीपा० ४ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं वाराह्यै मातंग्यै नमः । वाराहीश्रीपा० ५ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं इन्द्राण्यै मातंग्यै नमः । इन्द्राणी श्रीपा० ६ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं चामुंडायै मातंग्यै नमः । चामुंडाश्रीपा० ७ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं महालक्ष्म्यै मातंग्यै नमः । महालक्ष्मीश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ शक्तीः पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततोऽष्टदलेषु द्वितीयेषु प्राचीक्रमेण ॐ ह्रीं ऐं श्रीं असितांगभैरवाय मातंग्यै नमः । असितांगभैरवश्रीपा० १ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं रुरुभैरवाय मातंग्यै नमः । रुरुभैरवश्रीपा० २ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं चंडभैरवाय मातंग्यै नमः । चंडभैरवश्रीपा० ३ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्रोधभैरवाय मातंग्यै नमः । क्रोधभैरवश्रीपा० ४ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं उन्मत्तभैरवाय मातंग्यै नमः । उन्मत्तभैरवश्रीपा० ५ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं कपालभैरवाय मातंग्यै नमः । कपालभैरवश्रीपा० ६ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं भीषणभैरवाय मातंग्यै नमः । भीषणभैरवश्रीपा० ७ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं संहारभैरवाय मातंग्यै नमः । संहारभैरवश्रीपा० ॥८॥ इत्यष्टौ भैरवान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥ ४ ॥ ततः षोडशदलेषु प्राचीक्रमेण—ॐ ह्रीं ऐं श्रीं वामायै मातंग्यै नमः । वामाश्रीपा० १ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं ज्येष्ठायै मातंग्यै नमः । ज्येष्ठाश्रीपा० २ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं रौद्र्यै मातंग्यै नमः । रौद्रीश्रीपा० ३ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं शांत्यै मातंग्यै नमः । शांतिश्रीपा० ४ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं श्रद्धायै मातंग्यै नमः । श्रद्धाश्रीपा० ५ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं माहेश्वर्यै मातंग्य नमः । माहेश्वरीपा० ६ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्रियायै मातंग्यै नमः । क्रियाश्रीपा० ७ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं लक्ष्म्यै मातंग्यै नमः । लक्ष्मीश्रीपा० ८ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं सृष्ट्यै मातंग्यै नमः । सृष्टिश्रीपा० ९ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं मोहिन्यै मातंग्यै नमः । मोहिनीश्रीपा० १० । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं प्रमथायै मातंग्यै नमः । प्रमथाश्रीपा० ११ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं श्वासिन्यै मातंग्यै नमः । श्वासिनी श्रीपा० १२ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं विद्युल्लतायै मातंग्यै नमः । विद्युल्लताश्रीपा० १३ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं सुंदर्यै मातंग्यै नमः । सुंदरी श्रीपा० १४ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं नंदायै मातंग्यै नमः । नंदाश्रीपा० १५ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं नंदबुद्ध्यै मातंग्यै नमः । नंदबुद्धिश्रीपा० १६ ।

मातङ्गीद्वात्रिंशदक्षरमन्त्रयन्त्रम् ।

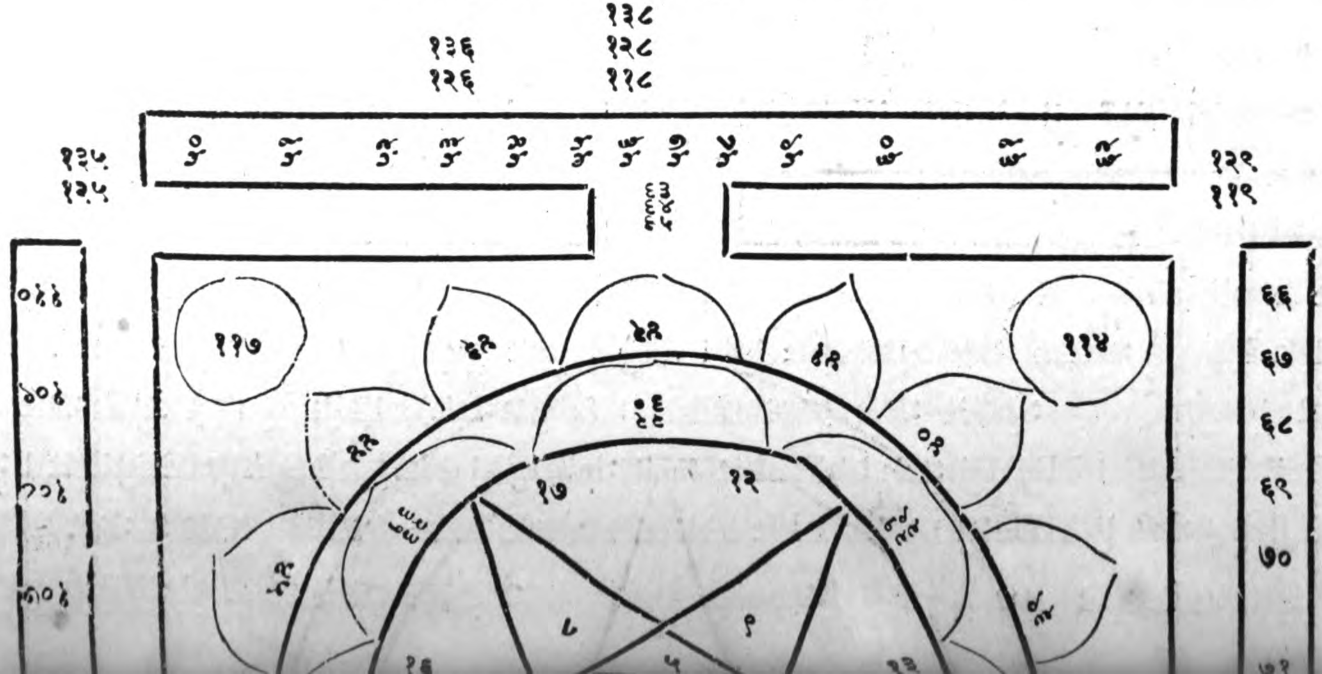


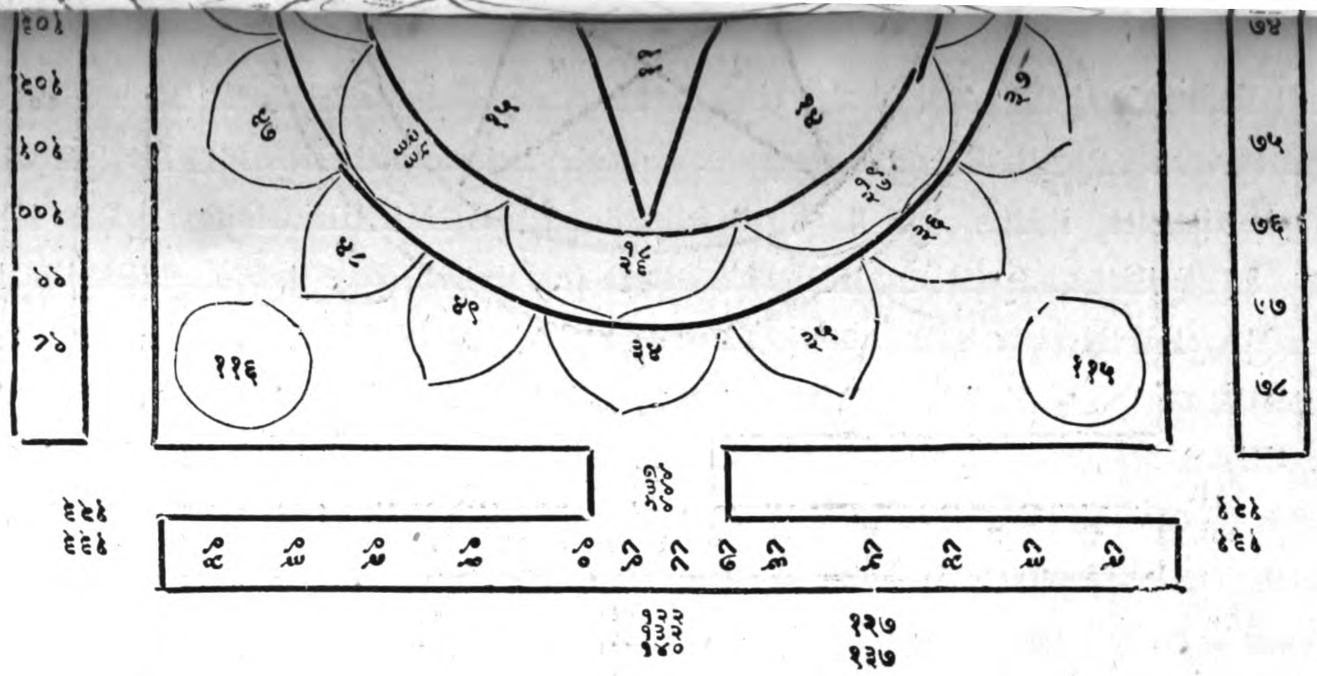


इति षोडश पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति पंचमावरणम् ॥ ५ ॥ ततो भूपुराभ्यंतरे चतुर्दिक्षु प्राचीक्रमेण ॐ ह्रीं ऐं श्रीं मातंग्यै मातंग्यै नमः । मातंगीश्रीपा० १ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं महामातंग्यै मातंग्यै नमः । महामातंगीश्रीपा० २ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं महालक्ष्म्यै मातंग्यै नमः । महालक्ष्मीश्रीपा० ३ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं सिद्ध्यै मातंग्यै नमः । सिद्धिश्रीपा० ४ । आग्नेय्यादिविदिक्षु च ॐ ह्रीं ऐं श्रीं विघ्नेशाय मातंग्यै नमः । विघ्नेशश्रीपा० १ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं दुर्गायै मातंग्यै नमः । दुर्गाश्रीपा० २ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं बटुकाय मातंग्यै नमः । बटुकश्रीपा० ३ । ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्षेत्रपालाय मातंग्यै नमः । क्षेत्रपालश्रीपा० ४ ॥ इत्यष्टौ द्वारपालान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति षष्ठावरणम् ॥ ६ ॥ ततो भूपुराद्बहिः पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च एवमेव संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति सप्तमावरणम् ॥ ७ ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणमयुत जपः । मध्वक्तैर्मधुपुष्पैर्दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च—जपोऽयुतं सहस्रं तु होमः पुष्पैर्मधूकजैः ॥ मध्वक्तैः पूजयेत्पीठं वक्ष्यमाणविधानतः ॥ १ ॥ एवं यः पूजयेत्तस्य सिद्धिरित्थं मनोर्भवेत् ॥ मल्लिकाकुसुमैर्होमाद्भोगो राज्यं च बिल्वजैः ॥ २ ॥ पत्रैः फलैर्वा वश्या स्याज्जनता ब्रह्मवृक्षजः ॥ रोगनाशोऽमृताखंडैर्निंबैः श्रीस्तंडुलैरपि ॥ ३ ॥ आकृष्टिं लवणैर्विद्यात्तगरैर्वेतसैर्जलम् ॥ लवणैर्निंबतैलाक्तैः शत्रुनाशोऽन्धसोऽशनम् ॥ ४ ॥ निशाचूर्णयुतैर्लोणैर्होमात्स्यात्स्तंभनं नृणाम् ॥ रक्तचंदनकर्पूरमांसीकुंकुमरोचनैः ॥ ५ ॥ चंदनागुरुकर्पूरैर्गंधाष्टकमुदीरितम् ॥ एतद्धोमाज्जगद्वश्यं जायते मंत्रिणो ध्रुवम् ॥ ६ ॥ एतत्पिष्ट्वा शतं जप्त्वा तिलकेन जगत्प्रियः ॥ कदलीफल होमेन सर्वेष्टं समवाप्नुयात् ॥ किं बहूक्तेन मातंगी पूजिता कामदा नृणाम् ॥ ७ ॥ मध्वक्तलोणरचितां पुत्तलीं दक्षिणांघ्रितः ॥ हुत्वा दष्टोत्तरशतं खादिराग्नौ वशं निशि ॥ ८ ॥ शालिपिष्टमयीं तां तु भक्षयेत्स्त्रीवशीकृतौ ॥ कृष्णभूतनिशि ध्वांक्षोदरे क्षिप्त्वा समुद्रजम् ॥ ९ ॥ नीलसूत्रेण संवेष्ट्य चिताग्नौ प्रदहेदमुम् ॥ सहस्रजप्तं तद्भस्म यस्मै दद्यात्स दासवत् ॥ १० ॥ इति द्वात्रिंशदक्षर

मातंगीमंत्रप्रयोगः ॥ अथ मातंगीभेदे लघुश्यामामंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रमहार्णवे मंत्रो यथा—ऐं नम उच्छिष्टचांडालि मातंगि सर्ववशंकरि स्वाहा ॥ इति विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अस्य लघुश्यामामंत्रस्य मदन ऋषिः। निचृद्गायत्री छंदः। देवी लघुश्यामा देवता। ऐं बीजम्। स्वाहा शक्तिः। ममाखिलाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ मदनऋषये नमः शिरसि १। निचृद्गायत्रीच्छंदसे नमः मुखे २। देवीलघुश्यामादेवतायै नमः हृदि ३। ऐं बीजाय नमः गुह्ये ४। स्वाहाशक्तये नमः पादयोः ५। विनियोगाय नमः सर्वांगे ६॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ऐं रत्यै नमः मूर्ध्नि १। ह्रीं प्रीत्यै नमो हृदि २। क्लीं मनोभवायै नमः पादयोः ३। ऐं इच्छाशक्त्यै नमो मुखे ४। ह्रीं ज्ञानशक्त्यै नमः कंठे ५। क्लीं क्रियाशक्त्यै नमो लिंगे ६॥ इति विन्यसेत् ॥ ततो द्रां द्रावणबाणाय नमः शिरसि १। द्रीं शोषणबाणाय नमो मुखे २। क्लीं तापनबाणाय नमो हृदि ३। ब्लूं मोहनबाणाय नमो गुह्ये ४। सः उन्मादनबाणाय नमः पादयोः ५॥ इति बाणन्यासः ॥ ऐं नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः १। उच्छिष्ट तर्जनीभ्यां नमः २। चांडालि मध्यमाभ्यां नमः ३। मातंग्यनामिकाभ्यां नमः ४। सर्ववशंकारि कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ऐं नमः हृदयाय नमः १। उच्छिष्ट शिरसे स्वाहा २। चांडालि शिखायै वषट् ३। मातंगि कवचाय हुम् ४। सर्ववशंकारि नेत्रत्रयाय वौषट् ५। स्वाहा अस्त्राय फट् ६॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ आं क्षां ब्राह्मीकन्यकायै नमो मूर्ध्नि १। ईं लां माहेश्वरीकन्यकायै नमो वामांसे २। ऊं हां कौमारीकन्यकायै नमो वामपार्श्वे ३। ऋं सां वैष्णवीकन्यकायै नमः नाभौ ४। ऌं षां वाराहीकन्यकायै नमो दक्षपार्श्वे ५। ऐं शां इन्द्राणीकन्यकायै नमः दक्षांसे ६। औं वां चामुंडाकन्यकायै नमः ककुदि ७। अः लां महालक्ष्मीकन्यकायै नमो हृदि ८॥ इति मातृकान्यासः ॥ ॐ ऐं अणिमासिद्धिकन्यकायै नमो ललाटे १। ॐ ऐं महिमासिद्धिकन्यकायै नमः भ्रूमध्ये २। ॐ ऐं लघिमासिद्धिकन्यकायै नमः कंठे ३। ॐ ऐं गरिमासिद्धिकन्यकायै नमो हृदि ४। ॐ ऐं असितासिद्धिकन्यकायै नमः नाभौ ५। ॐ ऐं वशितासिद्धिकन्यकायै नमः आधारे ६। ॐ ऐं प्राकाम्यसिद्धिकन्यकायै नमो लिंगे ७। ॐ ऐं प्राप्तिसिद्धिकन्यकायै नमो

मातंगीविंशत्यक्षरीमन्त्रपूजनयन्त्रम् ।




११६
११५
१२७
१३७

मूर्ध्नि ८ ॥ इति सिद्धिन्यासः ॥ ॐ क्लीं उर्वश्यप्सरःकन्यकायै नमो मूर्ध्नि १ । ॐ क्लीं मेनकाप्सरःकन्यकायै नमो ललाटे २ । ॐ क्लीं रंभाप्सरःकन्यकायै नमो दक्षनेत्रे ३ । ॐ क्लीं घृताच्यप्सरःकन्यकायै नमो वामनेत्रे ४ । ॐ क्लीं पुंजिकस्थल्यप्सरःकन्यकायै नमो वक्रे ५ । ॐ क्लीं सुकेश्यप्सरःकन्यकायै नमो दक्षकर्णे ६ । ॐ क्लीं मंजुघोषाप्सरःकन्यकायै नमो वामकर्णे ७ । ॐ क्लीं महारंगवत्यप्सरःकन्यकायै नमः ककुदि ८ ॥ इत्यप्सरोन्यासः ॥ ॐ क्लीं यक्षकन्यकायै नमो दक्षांसे १ । क्लीं गंधर्वकन्यकायै नमो वामांसे २ । क्लीं सिद्धकन्यकायै नमो हृदि ३ । क्लीं नरकन्यकायै नमो दक्षस्तने ४ । क्लीं नागकन्यकायै नमो वामस्तने ५ । क्लीं विद्याधरकन्यकायै नमो जठरे ६ । क्लीं किंपुरुषकन्यकायै नमो गुह्ये ७ । क्लीं पिशाचकन्यकायै नमः आधारे ८ ॥ इत्यष्टकन्यान्यासः ॥ ॐ ॐ नमः दक्षिणबाहुमूले १ । ॐ नं नमः दक्षिणकूर्परे २ । ॐ मं नमः दक्षिणमणिबंधे ३ । ॐ उं नमः दक्षहस्तांगुलिमूले ४ । ॐ च्छिं नमः दक्षहस्तांगुल्यग्रे ५ । ॐ ष्टं नमः वामबाहुमूले ६ । ॐ चां नमः वामकूर्परे ७ । ॐ डां नमः वाममणिबंधे ८ । ॐ लिं नमः वामहस्तांगुलिमले ९ । ॐ मां नमः वामहस्तांगुल्यग्रे १० । ॐ तं नमः दक्षपादमूले ११ । ॐ गिं नमः दक्षजानुनि १२ । ॐ सं नमः दक्षगुल्फे १३ । ॐ व नमः दक्षपादांगलिमले १४ । ॐ वं नमः दक्षपादांगुल्यग्रे १५ । ॐ शं नमः वामपादमूले १६ । ॐ कं नमः वामजानुनि १७ । ॐ रिं नमः वामगुल्फे १८ । ॐ स्वां नमः वामपादांगुलिमूले १९ । ॐ हां नमः वामपादांगुल्यग्रे २० । इति मंत्रवर्णन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा सुवर्णवर्णांतरीपं द्वीपं तत्र यद्रत्नमंदिरं तन्मध्यगे सिंहासने स्थितां ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्—ॐ माणिक्याभरणान्वितां स्मितमुखीं नीलोत्पलाभां वरां रम्यालक्तकलितपादकमलां नेत्रत्रयोल्लासिनीम् ॥ वीणावादनतत्परां सुरनतां कीरच्छदश्यामलां मातंगीं शशिशेखरामनुभजेत्तांबूलपूर्णाननाम् ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूजयेत् ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति पीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् । तद्यथा—पूर्वाद्यष्टदिक्षु ॐ भूत्यै लघुश्यामायै नमः १ । ॐ उन्नत्यै लघुश्यामायै नमः २ । ॐ कांत्यै

लघुश्यामायै नमः ३ । ॐ सृष्टयै लघुश्यामायै नमः ४ । ॐ कीर्त्यै लघुश्यामायै नमः ५ । ॐ सन्नत्यै लघुश्यामायै नमः ६ । ॐ [illegible] लघुश्यामायै नमः ७ । ॐ उत्कृष्टयै लघुश्यामायै नमः ८ । मध्ये ॐ ऋद्धयै लघुश्यामायै नमः ९ ॥ इति पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिपत्रे त्रिकोणपंचकोणाष्टदलषोडशपत्रे भूपुरं लिखित्वा तत्ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संप्रोञ्छ्य 'ॐ ह्रीं' सर्वशक्तिकमलासनाय नमः इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य । ऐं शुकप्रियायै विद्महे क्लीं कामेश्वरि धीमहि । तन्नः श्यामा प्रचोदयात् ॥ इति गायत्रीमंत्रेण[1] यागवस्तूनि संप्रोक्ष्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्य्यात् । तद्यथा–पुष्पांजलिमादाय ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ॥ अनुज्ञां देहि देवेशि परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् । इत्याज्ञां गृहीत्वा त्रिकोणे देव्यग्रे ॐ ऐं रत्यै नमः । रतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र १ । देवीदक्षिणतः । ॐ ह्रीं प्रीत्यै नमः । प्रीतिश्रीपा० २ । देवीवामे । ॐ क्लीं मनोभवायै नमः । मनोभवाश्रीपा० ३ । इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ तस्योपरि त्रिकोणे देव्यग्रे ॐ । ऐं इच्छाशक्त्यै नमः । इच्छाशक्तिश्रीपा० १ । देवीदक्षिणतः ॐ ह्रीं ज्ञानशक्त्यै नमः । ज्ञानशक्तिश्रीपा० २ । देवीवामे ॐ क्लीं क्रियाशक्त्यै नमः । क्रियाशक्तिश्रीपा० ३ ॥ इति पूजयेत् । ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य्य अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततः पंचकोणेषु आग्नेय्यादिक्रमेण ॐ द्रावणबाणाय नमः । द्रावणबाणश्रीपा० १ । द्रीं शोषणबाणाय नमः । शोषणबाणश्रीपा० २ । क्लीं तापनबाणाय नमः । तापनबाणश्रीपा० ३ । ब्लूं मोहनबाणाय नमः । मोहनबाणश्रीपा० ४ । सः उन्मादनबाणाय नमः । उन्मादनबाणश्रीपा० ५ । इति बाणान् संपूज्य पुष्पां

[1] एषोदिता तु मातंगीगायत्री सर्वार्थसिद्धिदा ॥ अनया यागवस्तूनि प्रोक्षेदस्याः समर्चने ॥

जालिं दद्यात्॥ इति तृतीयावरणम् ॥३॥ ततः पंचकोणाग्रे आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च । ऐं नमः हृदयाय नमः । हृदयश्रीपा० १ । उच्छिष्ट शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० २ । चांडायिशी लाखौ वषट् । शिखाश्रीपा० ३ । मातंगि कवचाये हुम् । कवचश्रीपा० ४ । सर्ववशंकारि नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । स्वाहास्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ ॥ इति षडंगानि पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥ ४ ॥ ततोऽष्टदल पूज्यपजकयोरंतरालं प्राची तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण । आं क्षां ब्राह्मी कन्यकायै नमः । ब्राह्मीकन्यकाश्रीपा० १ । ईं लां माहेश्वरीकन्यकायै नमः । माहेश्वरीकन्यकाश्रीपा० २ । ऊं हां कौमारीकन्यकायै नमः । कौमारीकन्यकाश्रीपा० ३ । ऋं सां वैष्णविकन्यकायै नमः । वैष्णवीकन्यकाश्रीपा० ४ । लृं षां वाराहीकन्यकायै नमः । वाराहीकन्यकाश्रीपा० ५ । ऐं शां इन्द्राणीकन्यकायै नमः । इन्द्राणीकन्यकाश्रीपा० ६ । औं वां चामुंडाकन्यकायै नमः । चामुंडा कन्यकाश्रीपा० ७ । अः लां महालक्ष्मीकन्यकायै नमः । महालक्ष्मीकन्यकाश्रीपा० ८ ॥ इति संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् । इति पंचमावरणम् ॥ ५ ॥ ततोऽष्टदलाग्रेषु तत्तत्समीपे । ॐ ऐं अणिमासिद्धिकन्यकायै नमः । अणिमासिद्धिकन्यकाश्रीपा० १ । ॐ ऐं महिमासिद्धिकन्यकायै नमः । महिमासिद्धिकन्यकाश्रीपा० २ । ॐ ऐं लघिमासिद्धिकन्यकायै नमः । लघिमासिद्धिकन्यकाश्रीपा० ३ । ॐ ऐं गरिमासिद्धिकन्यकायै नमः । गरिमासिद्धिकन्यकाश्रीपा० ४ । ॐ ऐं ईशितासिद्धिकन्यकायै नमः । ईशितासिद्धिकन्यकाश्रीपा० ५ । ॐ ऐं वशितासिद्धिकन्यकाय नमः । वशितासिद्धिकन्यकाश्रीपा० ६ । ॐ ऐं प्राकाम्यसिद्धिकन्यकायै नमः । प्रकाम्यसिद्धिकन्यकाश्रीपा० ७ । ॐ ऐं प्राप्तिसिद्धिकन्यकायै नमः । प्राप्तिसिद्धिकन्यकाश्रीपा० ८ ॥ इति संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति षष्ठावरणम् ॥ ६ ॥ ततः षोडशदलेषु प्राचीक्रमेण । ॐ क्लीं उर्वश्यप्सरःकन्यकायै नमः । उर्वश्यप्सरःकन्यकाश्रीपा० १ । ॐ क्लीं मेनकाप्सरःकन्यकायै नमः । मेनकाप्सरःकन्यकाश्रीपा० २ । ॐ क्लीं रंभाप्सरःकन्यकायै नमः । रंभाप्सरःकन्यकाश्रीपा० ३ । ॐ क्लीं घृताच्यप्सरःकन्यकायै नमः । घृताच्यप्सरःकन्यकाश्रीपा० ४ । ॐ क्लीं पुंजिकस्थल्यप्सरःकन्यकायै नमः । पुंजिकस्थल

प्सरःकन्यकाश्रीपा० ५ । ॐ क्लीं सुकेश्यप्सरःकन्यकायै नमः । सुकेश्यप्सरःकन्यकाश्रीपा० ६ । ॐ क्लीं मंजुघोषाप्सरःकन्यकायै नमः । मंजुघोषाप्सरःकन्यकाश्रीपा० । ७ । ॐ क्लीं महारंगवत्यप्सरःकन्यकायै नमः । महारंगवत्यप्सरःकन्यकाश्रीपा० ८ । ॐ क्लीं यक्षकन्यकायै नमः । यक्षकन्यकाश्रीपा० ९ । ॐ क्लीं गंधर्वकन्यकाय नमः । गंधर्वकन्यकाश्रीपा० १० । ॐ क्लीं सिद्धकन्यकायै नमः । सिद्धकन्यकाश्रीपा० ११ । ॐ क्लीं नरकन्यकायै नमः । नरकान्यकाश्रीपा० १२ । ॐ क्लीं नागकन्यकायै नमः।नागकन्यकाश्रीपा० १३ । ॐ क्लीं विद्याधरकन्यकायै नमः । विद्याधरकन्यकाश्रीपा० १४ । ॐ क्लीं किंपुरुषकन्यकायै नमः । किंपुरुषकन्यकाश्रीपा० १५ । ॐ क्लीं पिशाचकन्यकायै नमः । पिशाचकन्यकाश्रीपा० १६ । इति संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति सप्तमावरणम् ॥ ७ ॥

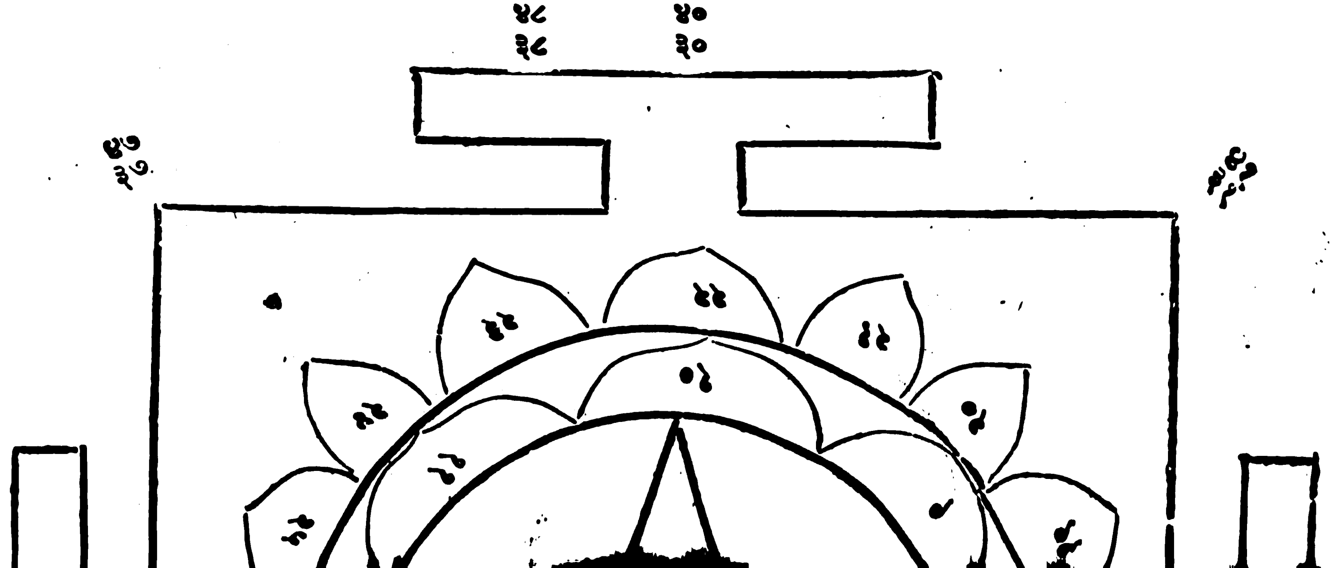
ततो भूपुराभ्यंतरे प्राच्यां दिशि । ॐ गजाननायै योगिन्यै नमः । गजाननायोगिनीश्रीपा० १ । ॐ सिंहमुख्यै योगिन्यै नमः । सिंहमुखीयोगिनीश्रीपा० २ । ॐ गृध्रास्यायै योगिन्यै नमः । गृध्रास्यायोगिनीश्रीपा० ३ । ॐ काकतुंडिकायै योगिन्यै नमः । काकतुंडिकायोगिनीश्रीपा० ४ । ॐ उष्ट्रग्रीवायै योगिन्यै नमः । उष्ट्रग्रीवायोगिनीश्रीपा० ५ । ॐ हयग्रीवायै योगिन्यै नमः । हयग्रीवायोगिनीश्रीपा० ६ । ॐ वाराह्यै योगिन्यै नमः । वाराहायीोगिनेश्रीपी० ७ । ॐ शरभाननायै योगिन्यै नमः । शरभाननायोगिनीश्रीपा० ८ । ॐ उलूकिकाय योगिन्यै नमः । उलूकिकायोगिनीश्रीपा० ९ । ॐ शिवारावायै योगिन्यै नमः । शिवारावायोगिनीश्रीपा० १० । ॐ मयूर्य्यै योगिन्यै नमः । मयुरीयोगिनीश्रीपा० ११ । विकटाननायै योगिन्यै नमः । विकटाननायोगिनीश्रीपा० १२ । ॐ अष्टवक्रायै योगिन्यै नमः । अष्टवक्रायोगिनीश्रीपा० १३ । ॐ कोटराक्ष्यै योगिन्यै नमः । कोटराक्षीयोगिनीश्रीपा० १४ । ॐ कुब्जिकायै योगिन्य नमः । कुब्जिकायोगिनीश्रीपा० १५ । ॐ विकटलोचनायै योगिन्यै नमः । विकटलोचनायोगिनीश्रीपा० १६ ॥ इति षोडशयोगिनीः पूजयेत् ॥ ततो दक्षिणे । ॐ शुष्कोदर्य्यै योगिन्यै नमः । शुष्कोदरीयोगिनीश्रीपा० १ । ॐ ललजिह्वायै योगिन्यै नमः । ललजिह्वायोगिनीश्रीपा० २ । ॐ अश्वदंष्ट्रायोगिन्यै नमः । अश्वदंष्ट्रायोगिनीश्रीपा० ३ । ॐ वानराननायै योगिन्यै नमः ।

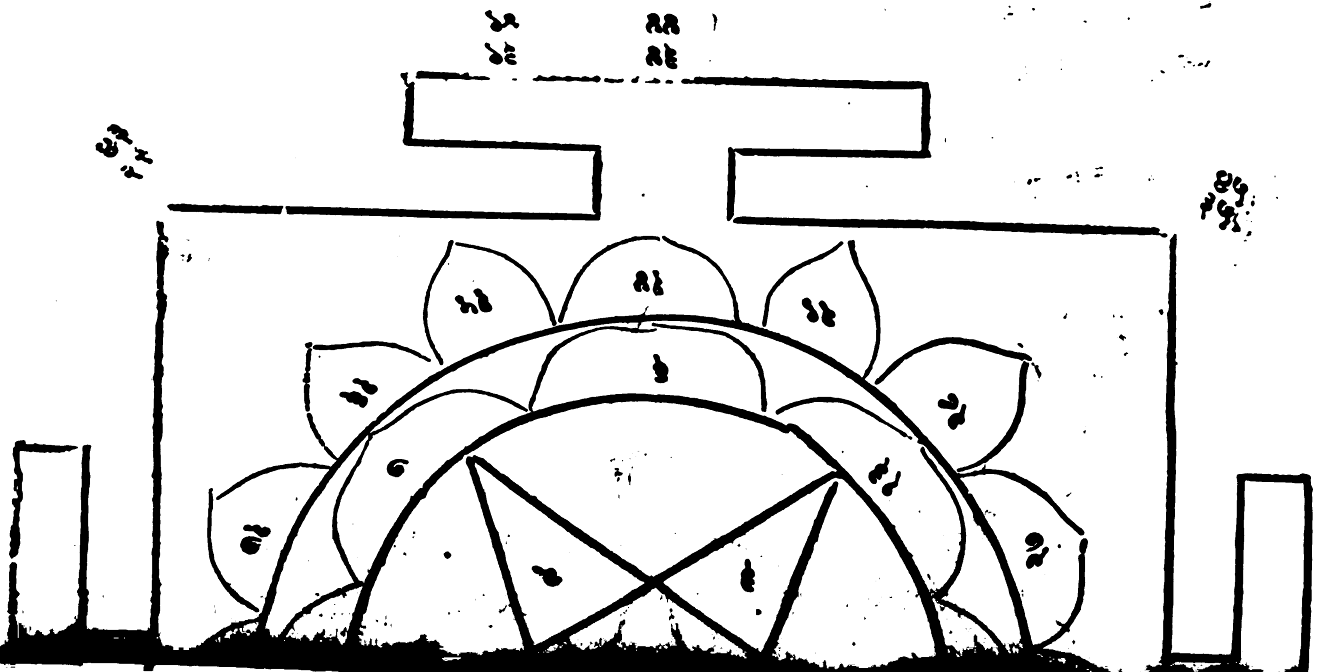
वानराननायोगिनीश्रीपा० ४ । ॐ ऋक्षाक्ष्यै योगिन्यै नमः । ऋक्षाक्षीयोगिनीश्रीपा० ५ । ॐ केकराक्ष्यै योगिन्यै नमः । केकराक्षी योगिनीश्रीपा० ६ । ॐ बृहत्तुंडायै योगिन्यै नमः । बृहत्तुंडायोगिनीश्रीपा० ७ । ॐ सुराप्रियायै योगिन्यै नमः । सुराप्रियायोगिनी श्रीपा० ८ । ॐ कपालहस्तायै योगिन्यै नमः । कपालहस्तायोगिनीश्रीपा० ९ । ॐ रक्ताक्ष्यै योगिन्यै नमः । रक्ताक्षीयोगिनीश्रीपा० १० । ॐ शुक्यै योगिन्यै नमः । शुकीयोगिनीश्रीपा० ११ । ॐ श्येन्यै योगिन्यै नमः । श्येनीयोगिनीश्रीपा० १२ । ॐ कपोतिकायै योगिन्यै नमः । कपोतिकायोगिनीश्रीपा० १३ । ॐ पाशहस्तायै योगिन्यै नमः । पाशहस्तायोगिनीश्रीपा० १४ । ॐ दंडहस्तायै योगिन्यै नमः । दंडहस्तायोगिनीश्रीपा० १५ । ॐ प्रचंडायै योगिन्यै नमः । प्रचंडायोगिनीश्रीपा० १६ ॥ इति षोडश योगिनीः पूजयेत् ॥ ततः पश्चिमद्वारे ॐ चंडविक्रमायै योगिन्यै नमः । चंडविक्रमायोगिनीश्रीपा० १ । ॐ शिशुघ्न्यै योगिन्यै नमः । शिशुघ्नीयोगिनीश्रीपा० २ । ॐ पापहंत्र्यै योगिन्यै नमः । पापहंत्रीयोगिनीश्रीपा० ३ । ॐ काल्यै योगिन्यै नमः । कालीयोगिनी श्रीपा० ४ । ॐ रुधिरपायिन्यै योगिन्यै नमः । रुधिरपायिनीयोगिनीश्रीपा० ५ । ॐ वसाधयायै योगिन्यै नमः । वसाधयायोगिनीश्रीपा० ६ । ॐ गर्भभक्षाय योगिन्यै नमः । गर्भभक्षायोगिनीश्रीपा० ७ । ॐ शवहस्तायै योगिन्यै नमः । शवहस्तायोगिनीश्रीपा० ८ । ॐ अंत्रमालिन्यै योगिन्यै नमः । अंत्रमालिनीयोगिनीश्रीपा० ९ । स्थूलकेशिन्यै योगिन्यै नमः । स्थूलकेशिनीयोगिनीश्रीपा० १० । ॐ बृहत्कुक्ष्यै योगिन्यै नमः । बृहत्कुक्षियोगिनीश्रीपा० ११ । ॐ सर्पास्यायै योगिन्यै नमः । सर्पास्यायोगिनीश्रीपा० १२ । ॐ प्रेतवाहनायै योगिन्यै नमः । प्रेतवाहनायोगिनीश्रीपा० १३ । ॐ दंदशूककरायै योगिन्यै नमः । दंदशूककरायोगिनीश्रीपा० १४ । ॐ क्रौंच्यै योगिन्यै नमः । क्रौंचीयोगिनीश्रीपा० १५ । ॐ मृगशीर्षायै योगिन्यै नमः । मृगशीर्षायोगिनीश्रीपा० १६ ॥ इति षोडश योगिनीः पूजयेत् ॥ ततः उत्तरद्वारे । ॐ वृषाननायै योगिन्यै नमः । वृषाननायोगिनीश्रीपा० १ । ॐ वृत्तास्यायै योगिन्यै नमः । वृत्तास्यायोगिनीश्रीपा० २ । ॐ धूम्रनिःश्वासायै योगिन्यै नमः । धूम्रनिःश्वासायोगिनीश्रीपा० ३ । ॐ व्योमैकचरणायै योगिन्यै नमः

...वरणायोगिनीश्रीपा० ४। ॐ ऊर्ध्वदृशे योगिन्यै नमः[१०२]। ऊर्ध्वदृग्योगिनीश्रीपा० ५। ॐ तापिन्यै योगिन्यै नमः[१०३]। तापिनीयोगिनीश्रीपा० ६ । ॐ शोषिण्यै योगिन्यै नमः[१०४] । शोषिणीयोगिनीश्रीपा० ७ । ॐ दृष्ट्यै योगिन्यै नमः[१०५] । दृष्टियोगिनीश्रीपा० ८। ॐ कोटरायै योगिन्यै नमः[१०६]। कोटरायोगिनीश्रीपा० ९ । ॐ स्थूलनासिकायै योगिन्यै नमः[१०७]। स्थूलनासिकायोगिनीश्रीपा० १० । ॐ विद्युत्प्रभायै योगिन्यै नमः[१०८] । विद्युत्प्रभायोगिनीश्रीपा० ११ । ॐ बलाकास्यायै योगिन्यै नमः[१०९] । बलाकास्यायोगिनीश्रीपा० १२ । ॐ मार्ज्जार्य्यै योगिन्यै नमः[११०] । मार्ज्जारीयोगिनीश्रीपादुकां पूजया० १३ । ॐ कटपूतनायै योगिन्यै नमः[१११] । कटपूतनायोगिनीश्रीपा० १४ । ॐ अट्टाट्टहासायै योगिन्यै नमः[११२] । अट्टाट्टहासायोगिनीश्रीपा० १५ । ॐ कामाक्ष्यै योगिन्यै नमः[११३] । कामाक्षीयोगिनीश्रीपा० १६ । इति षोडश योगिनीः पूजयेत् ॥ इति चतुःषष्टियोगिनीः पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्यष्टमावरणम् ॥ ८ ॥ ततो भूपुराभ्यंतरे अग्निकोणे ॐ बं बटुकाय नमः[११४] । बटुकश्रीपा० १ । नैर्ऋत्यकोणे ॐ गं गणपतये नमः[११५]। गणपतिश्रीपा० २ । वायुकोणे ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः[११६] । क्षेत्रपालश्रीपा० ३ । ईशानकोणे ॐ दुं दुर्गायै नमः[११७]। दुर्गाश्रीपा० ४ । इति पजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति नवमावरणम् ९ ॥ ॥ ततो दशमावरणे भूपुराद्बहिः पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान्[११८][११९] पजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ १० ॥ एकादशावरणे इन्द्रादिसमीपे वज्राद्यस्त्राणि[१२०][१२१] पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥११॥ तद्बहिः पूर्वादिचतुर्दिक्षु । ॐ तत्तत्संज्ञवाद्येभ्यो नमः[१२२]। तत्तत्संज्ञवाद्यश्रीपा० १ । ॐ विततवाद्याय नमः[१२३]। विततवाद्यश्रीपा० २ । ॐ घनवाद्याय[१२४] नमः । घनवाद्यश्रीपा० ३ । ॐ सुषिराभिधवाद्याय नमः[१२५]। सुषिराभिधवाद्यश्रीपा० ४ ॥ इति चतुर्वाद्यानि पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वादशावरणम् ॥ १२ ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांत संपूज्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपः । मधूकपुष्पैः समिद्भिर्वा दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्य्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो

१ नश्यंति भूतशाकिन्य आसां नामश्रुतेरपि ॥

सुमुखीपूजनयन्त्रम् ।





भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री मातंगीमंत्रोक्तप्रयोगान् साधयेत् ॥ तथाच—लक्षं जपेन्मधूकोत्थैर्जुहुयादयुतं शुभैः ॥ द्वादशावरणैरेवं लघुश्यामां यजेत्तु यः ॥ सर्वासां संपदां पात्रमचिराज्जायते स ना ॥ १ ॥ राजानो राजपुत्राश्च सुदृशो मदमंथराः ॥ दासा मनोवचःकायैर्भवंत्यस्या उपासितुः ॥ २ ॥ शाकिनीप्रेतभूताश्च धर्षितुं तन्न शक्नुयुः ॥ भूरिणा किमिहोक्तेन देवीयमखिलेष्टदा ॥ ३ ॥ यन्मंत्रस्मरणादेव नरो देवोपमो भवेत् ॥ देव्या उपासकैः पुंभिः स्त्रियो निंद्या न जातुचित् ॥ ४ ॥ देवीवन्माननीयास्ता मनोऽभीष्टमभीप्सुभिः ॥ मातंगीमंत्रसंप्रोक्ताः प्रयोगा अत्र कीर्तिताः ॥ ५ ॥ इति विंशत्यक्षरलघुश्यामामंत्रप्रयोगः ॥ अथ मातङ्गीदशाक्षरमंत्रप्रयोगः ॥ तंत्रसारे मंत्रो यथा—ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा ॥ इति दशाक्षरो मंत्रः॥अस्य विधानम् । अस्य मंत्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः । विराट् छन्दः । मातङ्गी देवता । ह्रीं बीजम् । हूं शक्तिः । क्लीं कीलकम् । सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः ॥ ॐ दक्षिणामूर्तिऋषये नमः शिरसि १ । विराट्छंदसे नमः मुखे २ । मातङ्गीदेवतायै नमो हृदि ३ । ह्रींबीजाय नमो गुह्ये ४ । हूंशक्तये नमः पादयोः ५ । क्लीं कीलकाय नमः नाभौ ६ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ एवमेव हृदयादिषडंगन्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ श्यामाङ्गी शशिशेखरं त्रिनयनां वेदैः करैर्बिभ्रतीं पाशं खेटमथांकुशं दृढमसिं नाशाय भक्तद्विषाम्॥रत्नालंकरणप्रभोज्ज्वलतनुं भास्वत्किरीटां शुभां मातङ्गीं मनसा स्मरामि सदयां सर्वार्थसिद्धिप्रदाम् ॥ १ ॥ इति ध्यायेत् ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडल मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति संपूज्य पत्रोक्तनवपीठशक्तीः पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रमग्न्युत्तारणपूर्वकम् 'ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पुनर्ध्यात्वा आवाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य आवरणपूजां कुर्यात् । तद्यथा—अष्टदलेषु प्राचीक्रमेण । ॐ रत्यै नमः १ । ॐ प्रीत्यै नमः २ । ॐ मनोभवायै नमः ३ । ॐ क्रियायै नमः ४ । ॐ शुद्धायै

नमः ५ । ॐ अनंगकुसुमायै नमः ६ । ॐ अनंगमदनायै नमः ७ । ॐ मदनालसायै नमः ८ । इत्यष्टौ शक्तीः पूजयेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततो भूपुरे इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूजयेत् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य पायसशर्करानैवेद्यं च दत्त्वा जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं प्रतिदिनं षट्सहस्रं जपेत् ॥ तथा च–पुरश्चरणकाले तु षट्सहस्रं मनुं जपेत् ॥ तद्दशांशं हुनेदाज्यैः शर्करामधुभिः सह ॥ १ ॥ ब्रह्मवृक्षोद्भवैः काष्ठैः साधकः शक्तिभिः सह ॥ एवं पुरस्क्रियां कृत्वा प्रयोगविधिमाचरेत् ॥ २ ॥ चतुष्पथे श्मशाने वा कलामध्ये च मान्त्रिकः ॥ मत्स्यं मांसं पायसं च दद्याद्धूपं च गुग्गुलम् ॥ ३ ॥ रात्रियोगेन कर्तव्यं सदा पूर्णश्च साधकः ॥ एवं प्रयागमात्रेण कविता जायते ध्रुवम् ॥ ४ ॥ अग्निस्तंभं जलस्तंभं वाक्स्तंभं कारयेद्ध्रुवम् ॥ मंत्री जयति शत्रूंश्च तार्क्ष्यो भोगिकुलं यथा ॥ ५ ॥ शास्त्रे वादे कवित्वे च बृहस्पतिरिवापरः ॥ अनेनैव विधानेन मातङ्गी सिद्धिदायिनी ॥ ॥ ६ ॥ नूनं तद्गृहमागत्य कुबेरैर्दीयते वसु ॥ विना मत्स्यैर्विनामांसैर्नार्चयेत्परदेवताम् ॥ ७ ॥ इति मातङ्गीदशाक्षरमंत्रप्रयोगः ॥

अथ मातङ्गीभेदेन सुमुखीमंत्रप्रयोगः[1] ॥ मंत्रमहोदधौ ॥ अथ वक्ष्ये परां विद्यां सुमुखीमतिगोपिताम् ॥ यां लब्ध्वा देशिको विद्वान्न शोचति कृताकृते ॥ १ ॥ मंत्रो यथा–उच्छिष्टचांडालिनि सुमुखि देवि महापिशाचिनि ह्रीं ठः ठः ठः ॥ इति द्वाविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम् । अस्य सुमुखीमंत्रस्य भैरव ऋषिः । गायत्री छंदः । सुमुखी देवता । ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ भैरवऋषये नमः शिरसि १ । गायत्रीच्छंदसे नमो मुखे २ । सुमुखीदेवतायै नमो हृदि ३ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ उच्छिष्टचांडालिनि अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । सुमुखि तर्जनीभ्यां नमः २ । देवि मध्यमाभ्यां नमः ३ । महापिशाचिनि अनामिकाभ्यां नमः ४ । ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ठः ठः ठः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ उच्छिष्टचांडालिनि हृदयाय नमः १ । सुमुखि शिरसे स्वाहा २ । देवि शिखायै वषट् ३ । महापिशाचिनि कवचाय हुम् ४ । ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ ।

१ अस्य सुमुखीप्रयोगस्य सुमुखीपूजनयंत्रं पूर्वपृष्ठे (५२७) द्रष्टव्यम् ।

ठः ठः ठः अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषगडंन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्—ॐ गुंजानिर्मितहारभूषितकुचां सद्यौवनोल्लासिनीं हस्ताभ्यां नृकपालखड्गलतिके रम्ये मुदा बिभ्रतीम् ॥ रक्तालंकृतिवस्त्रलेपनलसद्देहप्रभां ध्यायतां नृणां श्रीसुमुखीं शवासनगतां स्युः सर्वदा संपदः ॥ १ ॥ फेत्कारिणीतंत्रोक्तध्यानं यथा—शवोपरि समासीनां रक्ताम्बरपरिच्छदाम् ॥ रक्तालंकारसंयुक्तां गुंजाहारविभूषिताम् ॥ षोडशाब्दां च युवतीं पीनोन्नतपयोधराम् ॥ कपालकर्त्रिकाहस्तां परं ज्योतिःस्वरूपिणीम् ॥ २ ॥ इति ध्यायेत् ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति पीठदेवताः संपूज्य पीठशक्तीः पूजयेत्। तत्र क्रमः। पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु ॐ जयायै नमः १। ॐ विजयायै नमः २। ॐ अजितायै नमः ३। ॐ अपराजितायै नमः ४। ॐ नित्यायै नमः ५। ॐ विलासिन्यै नमः ६। ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७। ॐ अघोरायै नमः ८। पीठमध्ये ॐ मंगलायै नमः ९ ॥ इति नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण प्रोञ्छ्य 'ॐ ह्रीं सुमुखीयोगपीठात्मने नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पद्धतिमार्गेण प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्। तत्र क्रमः—पुष्पांजलिमादाय—ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ॥ अनुज्ञां देहि सुमुखि परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत ॥ ततः पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण पंचकोणेषु। ॐ चन्द्रायै नमः। चन्द्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १। इति सर्वत्र ॥ ॐ चन्द्राननायै नमः। चन्द्राननाश्रीपा० २। ॐ चारुमुख्यै नमः। चारुमुखीश्रीपा० ३। चामीकरप्रभायै नमः। चामीकरप्रभाश्रीपा० ४। ॐ चतुरायै नमः। चतुराश्रीपा० ५। इति पंचांगदेवताः पूजयेत्। ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य—अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं निक्षिप्य पूजिता

र्पितास्ताः संतु इति वदेत् । इति प्रथमावरणम् ॥१॥ ततोऽष्टदलेषु प्राचीक्रमेण ॐ ब्राह्म्यै नमः । ब्राह्मीश्रीपा० १ । ॐ माहेश्वर्य्यै नमः । माहेश्वरीश्रीपा० २ । ॐ कौमार्य्यै नमः । कौमारीश्रीपा० ३ । ॐ वैष्णव्ये नमः । वैष्णवीश्रीपा० ४ । ॐ वाराह्यै नमः । वाराहीश्रीपा० ५ । ॐ इन्द्राण्यै नमः । इन्द्राणीश्रीपा० ६ । ॐचामुंडायै नमः । चामुंडाश्रीपा० ७ । ॐमहालक्ष्म्यै नमः । महालक्ष्मीश्रीपा०८ । इत्यष्टौ संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् । इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततः षोडशदलेषु प्राचीक्रमेण । ॐ कलायै नमः । कलाश्रीपा० १ । ॐ कलानिधये नमः । कलानिधिश्रीपा० २ । ॐ काल्यै नमः । कालीश्रीपा० ३ । ॐ कमलायै नमः । कमलाश्रीपा० ४ । ॐ क्रियायै नमः । क्रियाश्रीपा० ५ । ॐ कृपायै नमः । कृपाश्रीपा० ६ । ॐ कुलायै नमः । कुलाश्रीपा० ७ । ॐ कुलीनायै नमः । कुलीनाश्रीपा० ८ । ॐ कल्याण्य नमः । कल्याणीश्रीपा० ९ । ॐ कुमार्यै नमः । कुमारीश्रीपा० १० । ॐ कलभाषिण्यै नमः । कलभाषिणीश्रीपा० ११ । ॐ करालाख्यायै नमः । करालाख्याश्रीपा० १२ । ॐ किशोर्य्यै नमः । किशोरीश्रीपा० १३ । ॐ कोमलायै नमः । कोमलाश्रीपा० १४ । ॐ कुलभूषणायै नमः । कलभूषणाश्रीपा० १५ । ॐ कल्पदायै नमः । कल्पदाश्रीपा० १६ ॥ इति षोडशदेवताः संपूज्य पुष्पांजलिं च दत्त्वा देव्यर्पणं कुर्य्यात् । 'इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततो भूपुरे इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूजयेत् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः । किंशुकपुष्पैः समिद्भिर्वा दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्य्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च—लक्षमेकं जपेन्मंत्रं दशांशं किंशुकोद्भवैः ॥ पुष्पैः समिद्भिर्वापि जुहुयान्मंत्रसिद्धये ॥ १ ॥ इत्थं जपादिभिः सिद्धे मनो काम्यानि साधयेत् ॥ भुक्त्वौदनमनाचम्य जपेन्मंत्रमनन्यधीः ॥ २ ॥ उच्छिष्टोऽयुतमेकं यः स भवेत्संपदां पदम् ॥ उच्छिष्टेनैव भक्तेन बलिं दद्या न्निरंतरम् ॥ ३ ॥ दध्नाभ्यक्तैः प्रजुहुयाल्लक्षं सिद्धार्थतंडुलैः ॥ राजानो मंत्रिणस्तस्य भवंति वशगाः क्षणात् ॥ ४ ॥ शस्त्राणि वशगानि स्युर्हुतान्मार्जारमांसतः ॥ धनर्द्धिश्छागमांसेन विद्याप्राप्तिस्तु पायसैः ॥ ५ ॥ मधुपायससंयुक्तस्त्रीरजोयुक्तवाससा ॥ होममाचरतः पुंसो

जनता वशवर्तिनी ॥ ६ ॥ मधुसर्पिर्युतैर्नागवल्लीपत्रैर्महाश्रियः ॥ सद्योनिहतमार्जारमांसेन मधुसर्पिषा ॥ ७ ॥ युक्तेनांत्यजकेशाद्यैर्हुते राकर्षति स्त्रियः ॥ मध्वक्तशशमांसेन तत्फलं विद्यया सह ॥८॥ उन्मत्ततरुभिर्दीप्ते चिताग्नौ जुहुयाच्छदैः ॥ कोकिलाकाकयोर्मंत्री मारयेदचिरादरीन् ॥ ९ ॥ वायसोलूकयोः पत्रैर्होमाद्विद्वेषयेदरीन् ॥ गर्भपातः सगर्भाणामुलूकच्छदनैर्भवेत ॥ १० ॥ आज्यार्क्तैर्बिल्वपत्रैर्यो मासमेकं सहस्रकम् ॥ प्रत्यहं जुहुयात्तेन वंध्यापि लभते सुतम् ॥ ११ ॥ सौभाग्यार्थं दुर्भगाया बंधूककुसुमैर्नवैः ॥ मधुनाक्तैः प्रजुहुयात्स्त्रीणामाकृष्टयेऽपि तैः ॥ १२ ॥ निर्जने सदनेऽरण्ये प्रेतावासे चतुष्पथे ॥ बलिं दत्त्वा प्रजपतः सहस्रं चाष्टसंयुतम् ॥ १३ ॥ उच्छिष्टस्य च सा देवी प्रत्यक्षा जायतेऽचिरात् ॥ यत्र नोक्ता होमसंख्याऽयुतं तत्र विनिर्दिशेत् ॥ १४॥ वाममार्गेण सुमुखी शीघ्रं कामविधायिनी ॥ भोजनांते तथोच्छिष्टैर्जप्या सा स्वेष्टसिद्धये ॥ १५ ॥ न शीघ्रफलदा देवी सुमुखीसदृशी परा ॥ तस्या मंत्रजपादेव प्रसिध्यंति मनोरथाः ॥१६॥ इति सुमुखीमंत्रप्रयोगः॥अथ मातङ्गीसुमुखीकवचप्रारंभः॥श्रीपार्वत्युवाच ॥देवदेव महादेव सृष्टिसंहारकारक॥ मातंग्याः कवचं ब्रूहि यदि स्नेहोऽस्ति ते मयि ॥ १ ॥ शिव उवाच ॥ अत्यंतगोपनं गुह्यं कवचं सर्वकामदम् ॥ तव प्रीत्या मयाऽऽख्यातं नान्येषु कथ्यते शुभे ॥ २ ॥ शपथं कुरु मे देवि यदि किंचित्प्रकाशसे ॥ अनया सदृशी विद्या न भूता न भविष्यति ॥ ३ ॥ शवासनां रक्तवस्त्रां युवतीं सर्वसिद्धिदाम् ॥ एवं ध्यात्वा महादेवीं पठेत्कवचमुत्तमम् ॥ ४ ॥ उच्छिष्टं रक्षतु शिरः शिखां चण्डालिनी ततः ॥ सुमुखी कवचं रक्षेद्देवी रक्षतु चक्षुषी ॥ ५ ॥ महापिशाचिनी पायान्नासिकां ह्रीं सदाऽवतु ॥ठः पातु कंठदेशं मे ठः पातु हृदयं तथा ॥ ६ ॥ ठो भुजौ बाहुमूले च सदा रक्षतु चण्डिका ॥ ऐं च रक्षतु पादौ मे सौः कुक्षिं सर्वतः शिवा ॥ ७ ॥ ऐं ह्रीं कटिदेशं च आं ह्रीं संधिषु सर्वदा ॥ ज्येष्ठमातंग्यंगुलीर्मे अंगुल्यग्रे नमामि च ॥ ८ ॥ उच्छिष्टचांडालि मां पातु त्रैलोक्यस्य वशंकरी ॥ शिवे स्वाहा शरीरं मे सर्वसौभाग्यदायिनी ॥९॥ उच्छिष्टचांडालि मातांगि सर्ववशंकारि नमः॥स्वाहा स्तनद्वयं पातु सर्वशत्रुविनाशिनी ॥ १० ॥ अत्यंतगोप्यं देवि देवैरपि सुदुर्लभम् ॥ भ्रष्टेभ्यः साधकेभ्योऽपि द्रष्टव्यं न कदाचन॥११॥दत्तेन सिद्धिहानिः स्यात्सर्वथा न प्रकाश्यताम्॥

उच्छिष्टेन बलिं दत्त्वा शनौ वा मंगले निशि॥१२॥रजस्वलाभगं स्पृष्ट्वा जपेन्मंत्रं च साधकः॥ रजस्वलाया वस्त्रेण होमं कुर्यात्सदा सुधीः॥१३॥ सिद्धविद्या इतो नास्ति नियमो नास्ति कश्चन ॥ अष्टसहस्रं जपेन्मंत्रं दशांशं हवनादिकम् ॥ १४ ॥ भूर्जपत्रे लिखित्वा च रक्तसूत्रेण वेष्टयेत् ॥ प्राणप्रतिष्ठामंत्रेण जीवन्यासं समाचरेत् ॥ १५ ॥ स्वर्णमध्ये तु संस्थाप्य धारयेद्दक्षिणे करे ॥ सर्वसिद्धिर्भवेत्तस्य अचिरात्पुत्रवान्भवेत् ॥ १६ ॥ स्त्रीभिर्वामकरे धार्य्यं बहुपुत्रा भवेत्तदा ॥ वंध्या वा काकवंध्या वा मृतवत्सा च सांगना ॥ १७ ॥ जीवद्वत्सा भवेत्सापि समृद्धिर्भवति ध्रुवम् ॥ शक्तिपूजां सदा कुर्याच्छिवाबलिं प्रदापयेत् ॥ १८ ॥ इदं कवचमज्ञात्वा मातंगीं यो जपेत्सदा ॥ तस्य सिद्धिर्न भवति पुरश्चरणलक्षतः ॥ १९ ॥ इति श्रीरुद्रयामले तंत्रे मातंगीसुमुखीकवचं समाप्तम् ॥ अथ मातंगीकवचं द्वितीयम् ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ साधु साधु महादेव कथयस्व सुरेश्वर ॥ मातंगीकवचं दिव्यं सर्वसिद्धिकरं नृणाम् ॥ १ ॥ श्रीश्वर उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि मातंगीकवचं शुभम् ॥ गोपनीयं महादेवि मौनी जापं समाचरेत् ॥ २ ॥ अस्य श्रीमातंगीकवचस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः। विराट् छन्दः। मातंगी देवता। चतुर्वर्गसिद्धये पाठे विनियोगः ॥ ॐ शिरो मातंगिनी पातु भुवनेशी तु चक्षुषी॥ तोडला कर्णयुगलं त्रिपुरा वदनं मम ॥ ३ ॥ पातु कण्ठे महामाया हृदि माहेश्वरी तथा ॥ त्रिपुष्पा पार्श्वयोः पातु गुदे कामेश्वरी मम ॥ ४ ॥ ऊरुद्वये तथा चण्डी जंघयोश्च हरप्रिया ॥ महामाया पादयुग्मे सर्वांगेषु कुलेश्वरी ॥ ५ ॥ अंगं प्रत्यंगकं चैव सदा रक्षतु वैष्णवी ॥ ब्रह्मरंध्रे सदा रक्षेन्मातंगीनामसंस्थिता ॥ ६ ॥ रक्षेन्नित्यं ललाटे सा महापिशाचिनीति च ॥ नेत्रयोः सुमुखी रक्षेद्देवी रक्षतु नासिकाम् ॥ ७ ॥ महापिशाचिनी पायान्मुखे रक्षतु सर्वदा ॥ लज्जा रक्षतु मां दंताश्चौष्ठौ संमार्जनीकरा ॥ ८ ॥ चिबुके कण्ठदेशे च ठकारत्रितयं पुनः ॥ सविसर्गं महादेवि हृदयं पातु सर्वदा ॥ ९ ॥ नाभिं रक्षतु मां लोला कालिकावतु लोचने ॥ उदरे पातु चामुण्डा लिंगे कात्यायनी तथा ॥ १० ॥ उग्रतारा गुदे पातु पादौ रक्षतु चाम्बिका ॥ भुजौ रक्षतु शर्वाणी हृदयं चण्डभूषणा ॥ ११ ॥ जिह्वायां मातृका रक्षेत्पूर्वे रक्षतु पुष्टिका ॥ विजया दक्षिणे पातु मेधा रक्षतु वारुणे ॥ १२ ॥ नैर्ऋत्यां सुदया रक्षेद्वायव्यां पातु लक्ष्मणा ॥ ऐशान्यां रक्षेन्मां

देवी मातंगी शभकारिणी ॥ १३ ॥ रक्षेत्सुरेशी चाग्नेय्यां बगला पातु चोत्तरे ॥ ऊर्द्ध्वं पातु महादेवी देवानां हितकारिणी ॥ १४ ॥ पाताले पातु मां नित्यं वशिनी विश्वरूपिणी ॥ प्रणवं च तमोमाया कामबीजं च कूर्चकम् ॥ १५ ॥ मातंगिनी ङेयुतास्त्रं वह्निजाया वधिर्मनुः ॥ सार्द्धैकादशवर्णा सा सर्वत्र पातु मां सदा ॥ १६ ॥ इति ते कथितं देवि गुह्याद्गुह्यतरं परम् ॥ त्रैलोक्यमंगलं नाम कवचं देवदुर्लभम् ॥ १७ ॥ य इदं प्रपठेन्नित्यं जायते संपदालयम् ॥ परमैश्वर्यमतुलं प्राप्नुयान्नात्र संशयः ॥ १८ ॥ गुरुमभ्यर्च्य विधिवत कवचं प्रपठेद्यदि ॥ ऐश्वर्यं सुकवित्वं च वाक्सिद्धिं लभते ध्रुवम् ॥ १९ ॥ नित्यं तस्य तु मातंगी महिला मंगलं चरेत् ॥ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ये देवाः सुरसत्तमाः ॥ २० ॥ ब्रह्मराक्षसवेताला ग्रहाद्या भूतजातयः ॥ तं दृष्ट्वा साधकं देवि लज्जायुक्ता भवंति ते ॥ २१ ॥ कवचं धारयेद्यस्तु सर्वांसिद्धिं लभेद्ध्रुवम् ॥ राजानोऽपि च दासाः स्युः षट्कर्माणि च साधयेत् ॥ २२ ॥ सिद्धो भवति सर्वत्र किमन्यैर्बहुभाषितैः ॥ इदं कवचमज्ञात्वा मातंगीं यो भजेन्नरः ॥ २३ ॥ अल्पायुर्निर्द्धनो मूर्खो भवत्येव न संशयः ॥ गुरौ भक्तिः सदा कार्या कवचे च दृढा मतिः ॥ २४ ॥ तस्मै मातंगिनी देवी सर्वसिद्धिं प्रयच्छति ॥ २५ ॥ इति नन्द्यावर्ते उत्तरखण्डे त्वरितफलदायिनीमातंगिनीकवचं समाप्तम् ॥ अथ मातंगीस्तोत्रप्रारंभः ॥ ईश्वर उवाच ॥ आराध्य मातश्चरणाम्बुजे ते ब्रह्मादयो विस्तृतकीर्तिमापुः ॥ अन्ये परं वा विभवं मुनीन्द्राः परां श्रियं भक्तिभरेण चान्ये ॥ १ ॥ नमामि देवीं नवचन्द्रमौलेर्मातंगिनीं चन्द्रकलावतंसाम् ॥ आम्नायप्राप्तिप्रतिपादितार्थं प्रबोधयंतीं प्रियमादरेण ॥ २ ॥ विनम्रदेवासुरमौलिरत्नैर्नीराजितं ते चरणारविंदम् ॥ भजंति ये देवि महीपतीनां व्रजंति ते संपदमादरेण ॥ ३ ॥ कृतार्थयंतीं पदवीं पदाभ्यामास्फालयंतीं कृतवल्लकीं ताम् ॥ मातंगिनीं सद्धृदयां धिनोमि लीलांशुकां शुद्धनितम्बबिंबाम् ॥ ४ ॥ तालीदलेनार्पितकर्णभूषां माध्वीमदोद्घूर्णितनेत्रपद्माम् ॥ घनस्तनीं शंभुवधूं नमामि तडिल्लताकांतिमनर्घ्यभूषाम् ॥ ५ ॥ चिरेण लक्ष्यं नवलोमराज्या स्मरामि भक्त्या जगतामधीशे ॥ वलित्रयाढ्यं तव मध्यमम्ब नीलोत्पलांशुश्रियमावहंत्याः ॥ ६ ॥ कांत्या कटाक्षैः कमलाकराणां कदम्बमालाञ्चितकेशपाशाम् ॥ मातङ्गकन्यां हृदि भावयामि ध्यायेयमारक्तकपोल

बिंबाम् ॥ ७ ॥ बिम्बाधरन्यस्तललामवश्यमालीललीलालकमायताक्षम् ॥ मन्दास्मितं ते वदनं महेशि स्तुत्यानया शंकरधर्मपत्नीम् ॥ ८ ॥ मातंगिनीं वागधिदेवतां तां स्तुवंति ये भक्तियुता मनुष्याः ॥ परां श्रियं नित्यमुपाश्रयंति परत्र कैलासतले वसन्ति ॥ ९ ॥ उद्यद्भानुमरीचिवीचिविलसद्वासो वसाना परां गौरीं संगतिपानकर्परकरामानन्दकन्दोद्भवाम् ॥ गुंजाहारचलद्विहारहृदयामापीनतुंगस्तनीं मत्तस्मेरमुखीं नमामि सुमुखीं शावासनासेदुषीम् ॥ १० ॥ इति रुद्रयामले मातंगीस्तोत्रं समाप्तम् ॥ अथ मातंगीशतनामस्तोत्रप्रारंभः ॥ श्रीभैरव्युवाच ॥ भगवञ्छ्रोतुमिच्छामि मातंग्याः शतनामकम् ॥ यद्गुह्यं सर्वतंत्रेषु न कस्यापि प्रकाशितम् ॥ १ ॥ श्रीभैरव उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि रहस्यातिरहस्यकम् ॥ नाख्येयं यत्र कुत्रापि पठनीयं परात्परम् ॥ २ ॥ यस्यैकवारपठनात्सर्वे विघ्ना उपद्रवाः ॥ नश्यंति तत्क्षणाद्देवि वह्निना तूलराशिवत् ॥ ३ ॥ प्रसन्ना जायते देवि मातंगी चास्य पाठतः ॥ सहस्रनामपठने यत्फलं परिकीर्तितम् ॥ तत्कोटिगुणितं देवि नामाष्टशतकं शुभम् ॥ ४ ॥ ॐ अस्य श्रीमातंगीशतनामस्तोत्रस्य भगवान्मतंग ऋषिः । अनुष्टुप्छंदः मातंगी देवता । मातंगीप्रीतये पाठे विनियोगः ॥ महामत्तमातंगिनी सिद्धिरूपा तथा योगिनी भद्रकाली रमा च ॥ भवानी भयप्रीतिदा भूतियुक्ता भवाराधिता भूतिसम्पत्करी च ॥ १ ॥ धनाधीशमाता धनागारदृष्टिर्धनेशार्चिता धीरवापी वरांगी ॥ प्रकृष्टा प्रभारूपिणी कामरूपा प्रहृष्टा महाकीर्तिदा कर्णनाली ॥ २ ॥ काराली भगा घोररूपा भगांगी भगाह्वा भगप्रीतिदा भीमरूपा ॥ भवानी महाकौशिकी कोशपूर्णा किशोरी किशोरप्रिया नन्दईहा ॥ ३ ॥ महाकारणा कारणा कर्मशीला कपाली प्रसिद्धा महासिद्धखण्डा ॥ मकारप्रिया मानरूपा महेशी मलोल्लासिनी लास्यलीलालयांगी ॥ ४ ॥ क्षमा क्षेमशीला क्षपाकारिणी चाक्षयप्रीतिदा भूतियुक्ता भवानी ॥ भवाराधिता भूतिसत्यात्मिका च प्रभोद्भासिता भानुभास्वत्करा च ॥ ५ ॥ धराधीशमाता धनागारदृष्टिर्धनेशार्चिता धीवरा धीवरांगी ॥ प्रकृष्टप्रभारूपिणी प्राणरूपा प्रकृष्टस्वरूपा स्वरूपप्रिया च ॥ ६ ॥ चलत्कुंडला कामिनी कांतयुक्ता कपाला चला कालकोद्धारिणी च ॥ कदम्बप्रिया कोटरी कोटदेहा क्रमा कीर्तिदा कर्णरूपा च काक्ष्मी ॥ ७ ॥ क्षमांगी क्षय

प्रेमरूपा क्षया च क्षयाक्षा क्षयाह्वा क्षयप्रांतरा च ॥ क्षवत्कामिनी क्षारिणी क्षीरपूर्णा शिवांगी च शाकंभरी शाकदेहा ॥ ८ ॥
महाशाकयज्ञा फलप्राशका च शकाह्वा शकाह्वाशकाख्या शका च ॥ शकाक्षांतरोषा सुरोषा सुरेखा महाशेषयज्ञोपवीतप्रिया च ॥ ९ ॥
जयंती जया जाग्रती योग्यरूपा जयांगा जपध्यानसंतुष्टसंज्ञा ॥ जयप्राणरूपा जयस्वर्णदेहा जयज्वालिनी यामिनी याम्यरूपा ॥ १० ॥
जगन्मातृरूपा जगद्रक्षणा च स्वधावौषडंता विलम्बाविलम्बा ॥ षडङ्गा महालंबरूपासिहस्ता पदाहारिणीहारिणी हारिणी च ॥ ११ ॥
महामंगला मंगलप्रेमकीर्तिर्निशुंभाच्छिदा शुम्भदर्पत्वहा च ॥ तथाऽनन्दबीजादिमुक्तिस्वरूपा तथा चण्डमुण्डापदा मुख्यचण्डा ॥ १२ ॥
प्रचण्डाऽप्रचण्डा महाचण्डवेगा चलच्चामरा चामरा चन्द्रकीर्तिः ॥ सुचामीकरा चित्रभूषोज्ज्वलाङ्गी सुसंगीतगीतश्च पायादपायात् ॥ १३॥
इति ते कथितं देवि नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥ गोप्यं च सर्वतंत्रेषु गोपनीयं च सर्वदा ॥ १४ ॥ एतस्य सतताभ्यासात्साक्षाद्देवो महे
श्वरः ॥ त्रिसंध्यं च महाभक्त्या पठनीयं सुखोदयम् ॥ १५ ॥ न तस्य दुष्करं किंचिज्जायते स्पर्शतः क्षणात् ॥ सुकृतं यत्तदे
वास्त तस्मादावर्त्तयेत्सदा ॥ १६ ॥ सदैव सान्निधौ तस्य देवी वसति सादरम् ॥ अयोगा ये त एवाग्रे सुयोगाश्च भवंति वै ॥ त एव मित्र
भूताश्च भवंति तत्प्रसादतः ॥ १७ ॥ विषाणि नोपसर्प्पंति व्याधयो न स्पृशंति तान् ॥ लूताविस्फोटकाः सर्वे शमं यांति च तत्क्षणात्
॥ १८ ॥ जरापलितनिर्मुक्तः कल्पजीवी भवेन्नरः ॥ अपि किं बहुनोक्तेन सान्निध्यं फलमाप्नुयात् ॥ १९ ॥ यावन्मया पुरा प्रोक्तं
फलं साहस्रनामकम् ॥ तत्सर्वं लभते मर्त्यो महामायाप्रसादतः ॥ २० ॥ इति श्रीरुद्रयामले मातंगीशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥ अथ
मातंगीसहस्रनामस्तोत्रप्रारंभः ॥ ईश्वर उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि साम्प्रतं तत्त्वतः परम् ॥ नाम्नां सहस्रं परमं सुमुख्याः सिद्धये
हितम् ॥ १ ॥ सहस्रनामपाठी यः सर्वत्र विजयी भवेत् ॥ पराभवो न तस्यास्ति सभायां वा महारणे ॥ २ ॥ यथा तुष्टा भवेद्देवी
सुमुखी चास्य पाठतः ॥ तथा भवति देवेशि साधकः शिव एव सः ॥ ३ ॥ अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयस्य कोटयः ॥ सकृत्पाठेन
जायंते प्रसन्ना सुमुखी भवेत् ॥ ४ ॥ मातंगोऽस्य ऋषिश्छंदोऽनुष्टुप् देवी समीरिता ॥ सुमुखी विनियोगः स्यात्सर्वसंपत्तिहेतवे ॥ ५ ॥

एवं ध्यात्वा पठेदेतद्यदीच्छेत्सिद्धिमात्मनः ॥ ६ ॥ अथ ध्यानम्—देवीं षोडशवार्षिकीं शवगतां माध्वीरसाघूर्णितां श्यामांगीमरुणाम्बरां पृथुकुचां गुंजावलीशोभिताम् ॥ हस्ताभ्यां दधतीं कपालममलं तीक्ष्णं तथा कर्त्रिकां ध्यायेन्मानसपङ्कजे भगवतीमुच्छिष्टचाण्डालिनीम् ॥ १ ॥ ॐ सुमुखी शेमुषी सेव्या सुरसा शशिशेखरा ॥ समानास्या साधनी च समस्तसुरसम्मुखी ॥ २ ॥ सर्वसम्पत्तिजननी सम्पदा सिंधुसेविनी ॥ शम्भुसीमंतिनी सौम्या समाराध्या सुधारसा ॥ ३ ॥ सारंगासवलीवेला लावण्यवनमालिनी ॥ वनजाक्षी वनचरी वनी वनविनोदिनी ॥ ४ ॥ वेगिनी वेगदा वेगा बगलस्था बलाधिका ॥ काली कालप्रिया केली कामला कालकामिनी ॥ ५ ॥ कमला कमलस्था च कमलस्था कलावती ॥ कुलीना कुटिला कांता कोकिला कलभाषिणी ॥ ६ ॥ कीरा केलिकरा काली कपालिन्यपि कालिका ॥ केशिनी च कशावर्ता कौशाम्भी केशवप्रिया ॥ ७ ॥ काली काशी महाकालसङ्काशा केशदायिनी ॥ कुण्डला च कुलस्था च कुण्डलाङ्गदमंडिता ॥ ८ ॥ कुण्डपद्मा कुमुदिनी कुमुदप्रीतिवर्द्धिनी ॥ कुण्डप्रिया कुण्डरुचिः कुरंगनयनाकुला ॥ ९ ॥ कुन्दबिम्बालिनदिनी कुसुंभकुसुमाकरा ॥ काञ्चीकनकशोभाढ्या क्वणत्किंकिणिकाकटिः ॥ १० ॥ कठोरकरणा काष्ठा कौमुदी कण्ठवत्यपि ॥ कपर्दिनी कपटिनी कठिनी कलकण्डिनी ॥ ११ ॥ कीरहस्ता कुमारी च कुरूढकुसुमप्रिया ॥ कुंजरस्था कुंजरता कुंभी कुंभस्तनी कला ॥ १२ ॥ कुम्भिकांगा करभोरूः कदलीकुशशायिनी ॥ कुपिता कोटरस्था च कङ्कोला कन्दलालया ॥ १३ ॥ कपालवासिनी केशी कम्पमानशिरोरुहा ॥ कादम्बरी कदम्बस्था कुंकुमप्रेमधारिणी ॥ १४ ॥ कुटुम्बिनी कृपायुक्ता क्रतुः क्रतुकरप्रिया ॥ कात्यायनी कृत्तिका च कार्तिकी कुशवर्तिनी ॥१५॥ कामपत्नी कामदात्री कामेशी कामवन्दिता ॥ कामरूपा कामरतिः कामाख्या ज्ञानमोहिनी ॥ १६ ॥ खड्गिनी खेचरी खञ्जा खञ्जरीटेक्षणा खगा ॥ खरगा खरनादा च खरस्था खेलनप्रिया ॥ १७ ॥ खरांशुः खेलिनी खट्वा खरा खट्वांगधारिणी ॥ खरखण्डिन्यपि ख्यातिः खण्डिता खण्डनप्रिया ॥ १८ ॥ खण्डप्रिया खण्डखाद्या खण्डसिंधुश्च खण्डिनी ॥ गंगा गोदावरी गौरी गौतम्यपि च गोमती ॥ १९ ॥ गंगा गया गगनगा गारुडी गरुडध्वजा ॥ गीता गीतप्रिया गेया गुणप्रीतिर्गुरुर्गिरी ॥ २० ॥

गोगौरी गण्डसदना गोकुला गोप्रतारिणी ॥ गोप्ता गोविन्दिनी गूढा गूढविग्रस्तगुञ्जिनी ॥ २१ ॥ गजमा गोपिनी गोपी गोक्षा जय
प्रिया गणा ॥ गिरिभूपालदुहिता गोगा गोकुलवासिनी ॥ २२ ॥ घनस्तनी घनरुचिर्घनोरुर्घननिस्स्वना ॥ घुङ्कारिणी घुक्षकरी घूघूक
परिवारिता ॥ २३ ॥ घण्टानादप्रिया घण्टा घोटा घोटकवाहिनी ॥ घोररूपा च घोरा च घृतप्रीतिर्घृताञ्जनी ॥ २४ ॥ घृताची
घृतवृष्टिश्च घण्टाघटघटावृता ॥ घटस्था घटना घातकरी घातनिवारिणी ॥ २५ ॥ चंचरीकी चकोरी च चामुण्डा चीरधारिणी ॥
चातुरी चपला चञ्चुश्चिता चिंतामणिस्थिता ॥ २६ ॥ चातुर्वर्ण्यमयी चंचुश्चोराचार्य्या चमत्कृतिः ॥ चक्रवर्तिवधूश्चित्रा चक्रांगी
चक्रमोदिनी ॥ २७ ॥ चेतश्चरी चित्तवृत्तिश्चेतना चेतनप्रिया ॥ चापिनी चम्पकप्रीतिश्चण्डा चण्डालवासिनी ॥ २८ ॥ चिरं
जीविनी तच्चित्ता चिंचामूलनिवासिनी ॥ छुरिका छत्रमध्यस्था छिन्दा छिन्दकरी छिदा ॥ २९ ॥ छुच्छुन्दरी छलप्रीतिश्छुच्छुन्दरि
निभस्वना ॥ छलिनी छत्रदा छिन्ना छिण्टिच्छेदकरी छटा ॥ ३० ॥ छद्मिनी छान्दसी छाया छरुच्छन्दकरीत्यपि ॥ जयदाजयदा
जाती जायिनी जामला जतुः ॥ ३१ ॥ जम्बूप्रिया जीवनस्था जंगमा जंगमप्रिया ॥ जपापुष्पप्रिया जप्या जगज्जीवा जगज्जनिः ॥
॥ ३२ ॥ जगज्जंतुप्रधाना च जगज्जीवपरा जवा ॥ जातिप्रिया जीवनस्था जीमूतसदृशीरुचिः ॥ ३३ ॥ जन्या जनहिता जाया
जन्मभूर्जंभसी जभूः ॥ ३४ ॥ जयदा जगदावासा जायिनी ज्वरकृच्छ्रजित् ॥ जपा च जपती जप्या जपार्हा जायिनी जना ॥ ३५ ॥
जालन्धरमयी जानुर्जालौका जाप्यभूषणा ॥ जगज्जीवमयी जीवा जरत्कारुर्जनप्रिया ॥ ३६ ॥ जगतीजननिरता जगच्छोभाकरी जवा ॥
जगतीत्राणकृज्जङ्घा जातीफलविनोदिनी ॥३७॥ जातीपुष्पप्रिया ज्वाला जातिहा जातिरूपिणी ॥ जीमूतवाहनरुचिर्जीमूता जीर्णवस्त्रकृत्
॥ ३८ ॥ जीर्णवस्त्रधरा जीर्णा ज्वलती जालनाशिनी ॥ जगत्क्षोभकरी जातिर्जगत्क्षोभविनाशिनी ॥ ३९ ॥ जनापवादा जीवा च जननी
गृहवासिनी ॥ जनानुरागा जानुस्था जलवासा जलार्तिकृत्॥४०॥ जलजा जलवेला च जलचक्रनिवासिनी॥ जलमुक्ता जलारोहा जलसा
जलजेक्षणा ॥ ४१ ॥ जलप्रिया जलौका च जलशोभावती तथा ॥ जलविस्फूर्जितवपुर्ज्वलत्पावकशोभिनी ॥ ४२ ॥ झिञ्झा झिल्लमयी

झिञ्झाझणत्कारकरी जया ॥ झंझी झंपकरी झंपा झंपत्रासनिवारिणी ॥ ४३ ॥ टंकारस्था टंककरी टंकारकरणांहसा ॥ टंकारोट्टकृतष्ठीवा डिण्डीरवसनावृता ॥ ४४ ॥ डाकिनी डामरी चैव डिण्डिमध्वनिनादिनी ॥ डकारनिस्स्वनरुचिस्तपिनी तापिनी तथा ॥ ४५ ॥ तरुणी तुन्दिला तुन्दा तामसी च तमःप्रिया ॥ ताम्रा तामवती तंतुस्तुन्दिलातुलसंभवा ॥ ४६ ॥ तुलाकोटिसुवेगा च तुल्यकामा तुलाश्रया ॥ तुदनी तुननी तुम्बी तुलाकाला तुलाश्रवा ॥ ४७ ॥ तुमुला तुलजा तुल्या तुलादानकरी तथा ॥ तुल्यवेगा तुल्यगतिस्तुलाकोटिनिनादिनी ॥ ४८ ॥ ताम्रोष्ठा ताम्रपर्णी च तमःसंक्षोभकारिणी ॥ त्वरिता ज्वरहा तीरा तारकेशी तमालिनी ॥ ४९ ॥ तमोदानवती ताम्रतालस्थानवती तमी ॥ तामसी च तमिस्रा च तीव्रा तीव्रपराक्रमा ॥ ५० ॥ तटस्था तिलतैलाक्ता तरुणी तपनद्युतिः ॥ तिलोत्तमा च तिलकृत्तारकाधीशशेखरा ॥ ५१ ॥ तिलपुष्पप्रिया तारा तारकेशी कुटुम्बिनी ॥ स्थाणुपत्नी स्थिरकरी स्थूलसम्पद्विवर्द्धिनी ॥ ५२ ॥ स्थितिः स्थैर्यस्थविष्ठा च स्थपतिः स्थूलविग्रहा ॥ स्थूलस्थलवती स्थाली स्थलसंगविवर्द्धिनी ॥ ५३ ॥ दण्डिनी दंतिनी दामा दरिद्रा दीनवत्सला॥देवी देववधूर्दैत्या दामिनी देवभूषणा॥ दयादमवती दीनवत्सला दाडिमस्तनी ॥ ५४ ॥ देवमूर्तिकरा दैत्या दारिणी देवतानता ॥ दोलाक्रीडा दयालुश्च दम्पती देवतामयी ॥ दशादीपस्थिता दोषा दोषहा दोषकारिणी ॥ ५५ ॥ दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गम्या दुर्गवासिनी ॥ दुर्गंधनाशिनी दुःस्था दुःखप्रशमकारिणी ॥ ५६ ॥ दुर्गंधा दुन्दुभिध्वांता दूरस्था दूरवासिनी ॥ दरदा दरदात्री च दुर्व्याधदयिता दमी ॥ ५७ ॥ धुरंधरा धुरीणा च धौरेयी धनदायिनी ॥ धीरारवा धरित्री च धर्मदा धीरमानसा ॥ ५८ ॥ धनुर्द्धरा च धमनी धमनीधूर्तविग्रहा ॥ धूम्रवर्णा धूम्रपाना धूमला धूममोदिनी ॥ ५९ ॥ नन्दिनीनन्दिनी नन्दानन्दिनी नन्दबालिका ॥ नवीना नर्मदा नर्मनेमिर्नियमनिस्स्वना ॥ ६० ॥ निर्मला निगमाधारा निम्नगा नग्नकामिनी ॥ नीला निरत्ना निर्वाणा निर्लोभा निर्गुणा नतिः ॥ ६१ ॥ नीलग्रीवा निरीहा च निरञ्जनजनानवा ॥ निर्गुण्डिका च निर्गुण्डा निर्नासा नासिकाभिधा ॥ ६२ ॥ पताकिनी पताका च पत्रप्रीतिः पयस्विनी ॥ पीना पीनस्तनी पत्नी पवनाशा निशामयी ॥ ६३ ॥ परा परपरा काली

पारकृत्यभुजप्रिया ॥ पवनस्था च पवना पवनप्रीतिवर्द्धिनी ॥ ६४ ॥ पशुवृद्धिकरी पुष्पपोषिका पुष्टिवर्द्धिनी ॥ पुष्पिणी पुस्तककरा पूर्णिमाऽतलवासिनी ॥ ६५ ॥ पेशी पाशकरी पाशा पांशुहा पांशुला पशुः ॥ पटुः पराशा परशुधारिणी पाशिनी तथा ॥ ६६ ॥ पापघ्नी पतिपत्नी च पतिता पतितापनी ॥ पिशाची च पिशाचघ्नी पिशिताशनतोषिणी ॥ ६७ ॥ पानदा पानपात्री च पानदानकरोद्यता ॥ पेया प्रसिद्धा पीयूषा पूर्णा पूर्णमनोरथा ॥ ६८ ॥ पतंगाभा पतंगा च पौनःपुन्यमिवापरा ॥ पङ्किला पंकमग्ना च पानीया पञ्जरस्थिता ॥ ॥ ६९ ॥ पञ्चमी पञ्चयज्ञा च पञ्चता पञ्चमप्रिया ॥ पिचुमन्दा पुण्डरीका पिकी पिंगललोचना ॥ ७० ॥ प्रियंगुमञ्जरी पिण्डी पण्डिता पाण्डुरप्रभा ॥ प्रेतासना प्रियालस्था पाण्डुघ्नी पीनसापहा ॥ ७१ ॥ फलिनी फलदात्री च फलश्रीः फलभूषणा ॥ फूत्कारकारिणी स्फारी फुल्ला फुल्लाम्बुजानना ॥ ७२ ॥ स्फुलिंगहा स्फीतमतिः स्फीतकीर्तिकरी तथा ॥ बलमाया बलारातिर्बलिनी बलवर्द्धिनी ॥ ७३ ॥ वेणुवाद्या वनचरी विरञ्चिजनयित्र्यपि ॥ विद्याप्रदा महाविद्या बोधिनी बोधदायिनी ॥ ७४ ॥ बुद्धमाता च बुद्धा च वनमालावती वरा ॥ वरदा वारुणी वीणा वीणावादनतत्परा ॥ ७५ ॥ विनोदिनी विनोदस्था वैष्णवी विष्णुवल्लभा ॥ वैद्या वैद्यचिकित्सा च विवशा विश्व विश्रुता ॥ ७६ ॥ विद्यौघविह्वला वेला वित्तदा विगतज्वरा ॥ विरावा विवरीकारा बिम्बोष्ठी बिम्बवत्सला ॥ ७७ ॥ विंध्यस्था वरवंद्या च वीरस्थानवरा च वित् ॥ वेदांतवेद्या विजया विजया विजयप्रदा ॥ ७८ ॥ विरोगिवन्दिनी वंध्या वंध्यबधनिवारिणी ॥ भगिनी भगमाला च भवानी भवनाशिनी ॥ ७९ ॥ भीमा भीमाननाभीमा भंगुरा भीमदर्शना ॥ भिल्ली भिल्लधरा भीरुर्भेरुण्डा भी भयावहा ॥ ८० ॥ भगसर्पिण्यपि भगा भगरूपा भगालया ॥ भगासना भगाभोगा भेरीझङ्काररञ्जिता ॥ ८१ ॥ भीषणा भीषणारावा भगवत्यहिभूषणा ॥ भारद्वाजा भोगदात्री भूतिघ्नी भूतिभूषणा ॥ ८२ ॥ भूमिदा भूमिदात्री च भूपतिर्भरदायिनी ॥ भ्रमरी भ्रामरी भाला भूपालकुलसंस्थिता ॥ ८३ ॥ माता मनोहरा माया मानिनी मोहिनी मही ॥ महालक्ष्मीर्मदक्षीबा मदिरा मदिरालया ॥ ८४ ॥ मद्योत्कटा मतंगस्था माधवी मधुमर्दिनी ॥ मोदा मोदकरी मेधा मेध्या मध्याधिपस्थिता ॥ ८५ ॥ मद्यपा मांसलोमस्था मोदिनी मैथुनो

यता ॥ मूर्द्धावती महामाया मायामहिममन्दिरा ॥ ८६ ॥ महामाला महाविद्या महामारी महेश्वरी ॥ महादेववधूर्मान्या मथुरा मेरु मण्डिता ॥ ८७ ॥ मेदस्विनी मिलिन्दाक्षी महिषासुरमर्दिनी ॥ मण्डलस्था भगस्था च मदिरारागगर्विता ॥ ८८ ॥ मोक्षदा मुण्ड माला च माला मालविलासिनी ॥ मातंगिनी च मातंगी मातंगतनयापि च ॥ ८९ ॥ मधुस्रवा मधुरसा बंधूककुसुमप्रिया ॥ यामिनी यामिनीनाथभूषा यावकरञ्जिता ॥ ९० ॥ यवांकुरप्रिया यामा यवनी यवनार्द्दिनी ॥ यमघ्नी यमकल्पा च यजमानस्वरूपिणी ॥ ९१ ॥ यज्ञा यज्ञयजुर्यक्षी यशोनिष्कंपकारिणी ॥ यक्षिणी यक्षजननी यशोदायासधारिणी ॥ ९२ ॥ यशस्सूत्रपदा यामा यज्ञकर्मकरी त्यपि ॥ यशस्विनी यकारस्था यूपस्तंभनिवासिनी ॥ ९३ ॥ रंजिता राजपत्नी च रमा रेखा रवीरणा ॥ रजोवती रजश्चित्रा रंजनी रजनीपतिः ॥ ९४ ॥ रोगिणी रजनी राज्ञो राज्यदा राज्यवर्द्धिनी ॥ राजन्वती राजनीतिस्तथा रजतवासिनी ॥ ९५ ॥ रमणी रमणीया च रामा रामावती रतिः ॥ रेतोरती रतोत्साहा रोगघ्नी रोगकारिणी ॥ ९६ ॥ रंगा रंगवती रागा रागज्ञा रागकृद्दया ॥ रामिका रजकी रेवा रजनी रंगलोचना ॥ ९७ ॥ रक्तचर्मधरा रंगी रंगस्था रंगवाहिनी ॥ रमा रंभाफलप्रीती रंभोरू राघवप्रिया ॥ ॥ ९८ ॥ रंगा रंगांगमधुरा रोदसी च महारवा ॥ रोगकृद्रोगहंत्री च रोगभृद्रोगस्राविणी ॥ ९९ ॥ बन्दी बन्दिस्तुता बन्धुर्बन्धूक कुसुमाधरा ॥ वंदिता वंद्यमाना च वैद्रावी वेदविद्विधा ॥ १०० ॥ विकोपा विकपाला च विकस्था विङ्कवत्सला ॥ वेदिर्विलग्नलग्ना च विधिविङ्ककरी विधा ॥ १०१ ॥ शङ्खिनी शङ्खवलया शंखमालावती शमी ॥ शंखपात्राशिनी शंखस्वना शंखगला शशी ॥ ॥ १०२ ॥ शबरी शांबरी शंभुः शंभुकेशा शरासिनी ॥ शवा श्येनवती श्यामा श्यामांगी श्यामलोचना ॥ १०३ ॥ श्मशानस्था श्मशाना च श्मशानस्थानभूषणा ॥ शमदा शमहंत्री च शंखिनी शंखरोषणा ॥ १०४ ॥ शांतिः शांतिप्रदा शेषा शेषाख्या शेष शायिनी ॥ शेमुषी शोषिणी शेषा शौर्य्या शौर्य्यशरा शरी ॥ १०५ ॥ शापदा शापहा शापा शापपंथाः सदाशिवा ॥ शृंगिणी शृंगिपलभुक् शङ्करी शांकरी शिवा ॥ १०६ ॥ शवस्था शवभुक् शांता शवकर्णा शवोदरी ॥ शाविनी शवशिंशा

श्रीः शवा च शवशायिनी ॥ १०७ ॥ शवकुण्डलिनी शैवा शीकरा शिशिराशना ॥ शवकाञ्ची शवश्रीका शवमाला
शवाकृतिः ॥ १०८ ॥ स्रवंती सङ्चा शक्तिः शंतनुः शवदायिनी ॥ सिंधुः सरस्वती सिंधुः सुंदरी सुन्दरानना ॥ १०९ ॥
साधुः सिद्धिप्रदात्री च सिद्धा सिद्धसरस्वती ॥ संततिः सम्पदा संविच्छंकिसम्पत्तिदायिनी ॥ ११० ॥ सपत्नी सरसा सारा सारस्वत
करी सुधा ॥ सुरा समांसाशना च समाराध्या समस्तदा ॥ १११ ॥ समधीः सामदा सीमा संमोहा समदर्शना ॥ सामतिः सामदा सीमा
सावित्री सविधा सती ॥ ११२ ॥ सवना सवनासारा सवरा सावरा समी ॥ सिमरा सतता साध्वी सध्रीची ससहायिनी ॥ ११३ ॥
हंसी हंसगतिर्हंसी हंसोज्ज्वलनिचोलयुक् ॥ हलिनी हालिनी हाला हलश्रीर्हरवल्लभा ॥ ११४ ॥ हला हलवती ह्येषा हेला हर्षविव
र्द्धिनी ॥ हंतिर्हंता हया हाहाहताऽहंतातिकारिणी ॥ ११५ ॥ हंकारी हंकृतिर्हंका हीहीहाहाहिता हिता ॥ हीतिर्हेमप्रदा हारा राविणी
हरिसम्मता ॥ ११६ ॥ होरा होत्री होलिका च होमा होमहर्विर्हविः ॥ हारिणी हारिणीनेत्रा हिमाचलनिवासिनी ॥ ११७ ॥
लम्बोदरी लम्बकर्णा लम्बिका लम्बविग्रहा ॥ लीला लीलावती लोला ललना ललिता लता ॥ ११८ ॥ ललामलोचना लोम्या लोलाक्षी
सत्कुलालया ॥ लपत्नी लपती लम्या लोपामुद्रा ललंतिका ॥ ११९ ॥ लतिका लंघिनी लंघा लालिमा लघुमध्यमा ॥ लघीयसी
लघूदर्य्या लूता लूताविनाशिनी ॥ १२० ॥ लोमशा लोमलम्बी च ललंती च लुलुम्पती ॥ लुलायस्था च लहरी लङ्कापुरपुरंदरा ॥
॥ १२१ ॥ लक्ष्मीर्लक्ष्मीप्रदाऽलभ्या लाक्षाक्षी लुलितप्रभा ॥ क्षणा क्षणक्षुः क्षुत्क्षीणी क्षमा क्षांतिः क्षमावती ॥ १२२ ॥ क्षमा क्षामो
दरी क्षेम्या क्षोभभृत्क्षात्रियांगना ॥ क्षया क्षयकरी क्षीरा क्षीरदा क्षीरसागरा ॥ १२३ ॥ क्षेमंकरी क्षयकरी क्षयकृत्क्षयदा क्षतिः ॥
क्षुद्रिकाऽक्षुद्रिका क्षुद्रा क्षुत्क्षामा क्षीणपातका ॥ १२४ ॥ मातुः सहस्रनामेदं सुमुख्याः सिद्धिदायकम् ॥ यः पठेत्प्रयतो नित्यं स एव
स्यान्महेश्वरः ॥ १२५ ॥ अनाचारात्पठेन्नित्यं दरिद्रो धनवान्भवेत् ॥ मूकः स्याद्वाक्पतिर्देवि रोगी नीरोगतां व्रजेत् ॥ १२६ ॥
पुत्रार्थी पुत्रमाप्नोति त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ॥ वंध्यापि सूते सत्पुत्रं विदुषः सदृशं गुरोः ॥ १२७ ॥ सत्यं च बहुधा भूयाद्गावश्च बहु

दुग्धदाः ॥ राजानः पादनम्राः स्युस्तस्य हासा इव स्फुटाः ॥ १२८ ॥ अरयः संक्षयं यांति मनसा संस्मृता अपि ॥ दर्शनादेव जायंते
नरा नार्य्योऽपि तद्वशाः ॥ १२९ ॥ कर्ता हर्ता स्वयं वीरो जायते नात्र संशयः ॥ यं यं कामयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ॥
॥ १३० ॥ दुरितं न च तस्यास्ति नास्ति शोकः कथंचन ॥ चतुष्पथेऽर्द्धरात्रे च यः पठेत्साधकोत्तमः ॥ १३१ ॥ एकाकी निर्भयो
वीरो दशवारं स्तवोत्तमम् ॥ मनसा चिंतितं कार्यं तस्य सिद्ध्येन्न संशयः ॥ १३२ ॥ विना सहस्रनाम्नां यो जपेन्मंत्रं कदाचन ॥
न सिद्धिर्जायते तस्य कल्पकोटिशतैरपि ॥ १३३ ॥ कुजवारे श्मशाने वा मध्याह्ने यो जपेत्सदा ॥ कृतकृत्यः स जायेत कर्ता हर्ता
नृणामिह ॥ १३४ ॥ रोगार्तोऽर्द्धनिशायां यः पठेदासनसंस्थितः ॥ सद्यो नीरोगतामेति यदि स्यान्निर्भयस्तदा ॥ १३५ ॥ अर्द्ध
रात्रे श्मशाने वा शनिवारे जपेन्मनुम् ॥ अष्टोत्तरसहस्रं तु दशवारं जपेत्ततः ॥ १३६ ॥ सहस्रनाम चैतद्धि तदा याति स्वयं शिवा ॥
महापवनरूपेण घोरगोमायुनादिनी ॥ १३७ ॥ ततो यदि न भीतिः स्यात्तदा देहीति वाग्भवेत् ॥ तदा पशुबलिं दद्यात्स्वयं गृह्णाति
चण्डिका ॥ १३८ ॥ यथेष्टं च वरं दत्त्वा प्रयाति सुमुखी शिवा ॥ रोचनागुरुकस्तूरीकर्पूरैश्च सचन्दनैः ॥ १३९ ॥ कुंकुमेन दिने
श्रेष्ठे लिखित्वा भूर्जपत्रके ॥ शुभनक्षत्रयोगे च कृतमारुतसत्क्रियः ॥ १४० ॥ कृत्वा सम्पातनविधिं धारयेद्दक्षिणे करे ॥ सहस्रनाम
स्वर्णस्थं कण्ठे वा विजितेन्द्रियः ॥ १४१ ॥ तदा यं प्रणमेन्मंत्री क्रुद्धः स म्रियते नरः ॥ दुष्टश्वापदजंतूनां न भीः कुत्रापि जायते
॥ १४२ ॥ बालकानामियं रक्षा गर्भिणीनामपि प्रिये ॥ मोहनस्तंभनाकर्षमारणोच्चाटनानि च ॥ १४३ ॥ यंत्रधारणतो नूनं जायंते
साधकस्य तु ॥ नीलवस्त्रे विलिख्यैतत्तद्ध्वजे स्थापयेद्यदि ॥ १४४ ॥ तदा नष्टा भवत्येव प्रचण्डाप्यरिवाहिनी ॥ एतज्जप्तं महाभस्म
ललाटे यदि धारयेत् ॥ १४५ ॥ तद्विलोकन एव स्युः प्राणिनस्तस्य किंकराः ॥ राजपत्न्योऽपि विवशाः किमन्याः पुरयोषितः ॥
॥ १४६ ॥ एतज्जप्तं पिबेत्तोयं मासेन स्यान्महाकविः ॥ पण्डितश्च महावादी जायते नात्र संशयः ॥ १४७ ॥ अयुतं च पठेत्स्तोत्रं
पुरश्चरणसिद्धये ॥ दशांशं कमलैर्हुत्वा त्रिमध्वक्तैर्विधानतः ॥ १४८ ॥ स्वयमायाति कमला वाण्या सह तदालये ॥ मंत्रो निष्कील

तामात सुमुखी सुमुखी भवेत् ॥ १४९ ॥ अनंतं च भवेत्पुण्यमपुण्यं च क्षयं वज्रेत् ॥ पुष्करादिषु तीर्थेषु स्नानतो यत्फलं भवेत् ॥ ॥ १५० ॥ तत्फलं लभते जंतुः सुमुख्याः स्तोत्रपाठतः ॥ एतदुक्तं रहस्यं ते स्वसर्वस्वं वरानने ॥ १५१ ॥ न प्रकाश्यं त्वया देवि यदि सिद्धिं त्वमिच्छसि ॥ प्रकाशनादसिद्धिः स्यात्कुपिता सुमुखी भवेत् ॥ १५२ ॥ नातः परतरं लोके सिद्धिदं प्राणिनामिह ॥ ॥ १५३ ॥ वन्दे श्रीसुमुखीं प्रसन्नवदनां पूर्णेन्दुबिम्बाननां सिन्दूरांकितमस्तकां मधुमदोल्लोलोच्चमुक्तावलीम् ॥ श्यामां कज्जलिकाकरां करगतं चाध्यापयंतीं शुकं गुंजापुंजविभूषणां सकरुणामामुक्तवेणीलताम् ॥ १५४ ॥ इति श्रीनन्द्यावर्ततंत्रे उत्तरखण्डे मातंगीसहस्रनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥ अथ मातंगीहृदयप्रारंभः ॥ एकदा कौतुकाविष्टा भैरवं भूतसेवितम् ॥ भैरवी परिपप्रच्छ सर्वभूतहिते रता ॥ १ ॥ श्रीभैरव्युवाच ॥ भगवन्सर्वधर्मज्ञ भूतवात्सल्यभावन ॥ अहं तु वेत्तुमिच्छामि सर्वभूतोपकारकम् ॥ २ ॥ केन मंत्रेण जप्तेन स्तोत्रेण पठितेन च ॥ सर्वथा श्रेयसां प्राप्तिर्भूतानां भूतिमिच्छताम् ॥३॥ श्रीभैरव उवाच ॥ शृणु देवि तव स्नेहात्प्रायो गोप्यमपि प्रिये ॥ कथयिष्यामि तत्सर्वं सुखसम्पत्करं शुभम् ॥ ४ ॥ पठतां शृण्वतां नित्यं सर्वसम्पत्तिदायकम् ॥ विद्यैश्वर्यसुखावाप्तिमंगलप्रदमुत्तमम् ॥ ५ ॥ मातंग्या हृदयं स्तोत्रं दुःखदारिद्र्यभञ्जनम् ॥ मंगलं मंगलानां च ह्यस्ति सर्वसुखप्रदम् ॥ ६ ॥ ॐ अस्य श्रीमातंगीहृदयस्तोत्रमंत्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः । विराट् छन्दः । मातंगी देवता । ह्रीं बीजम् । हूं शक्तिः । क्लीं कीलकम् । सर्ववांछितार्थसिद्धये पाठे विनियोगः ॥ ॐ दक्षिणामूर्तिऋषये नमः शिरसि १ । विराट्छंदसे नमो मुखे २ । मातंगीदेवतायै नमः हृदि ३ । ह्रीं बीजाय नमो गुह्ये ४ । हूं शक्तये नमः पादयोः ५ । क्लीं कीलकाय नमो नाभौ ६ । विनियोगाय नमोः सर्वांगे ७ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ह्रीं हृदयाय नमः १ । ॐ क्लीं शिरसे स्वाहा २ । ॐ हूं शिखायै वषट् ३ । ॐ ह्रीं कवचाय हुम् ४ । ॐ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ हूं अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ हूं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां ममः ५ । ॐ हूं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ अथ

ध्यानम् । ॐ श्यामां शुभ्रांशुभालां त्रिकमलनयनां रत्नसिंहासनस्थां भक्ताभीष्टप्रदात्रीं सुरनिकरकरासेव्यकंजांघ्रियुग्माम् ॥ नीलांभोजां शुकांतिं निशिचरनिकरारण्यदावाग्निरूपां पाशं खङ्गं चतुर्भिर्वरकमलकरैः खेटकं चाङ्कुशं च॥(मातंगीमावहंतीमभिमतफलदां मोदिनीं चिंतयामि) ॥७॥ नमस्ते मातंग्यै मृदुमुदिततन्वै तनुमतां परश्रेयोदायै कमलचरणध्यानमनसाम् ॥ सदा संसेव्यायै सदसि विबुधैर्दिव्य धिषणैर्दयार्द्रायै देव्यै दुरितदलनोद्दण्डमनसे ॥ ८ ॥ परं मातस्ते यो जपति मनुमव्यग्रहृदयः कवित्वं कल्पानां कलयति सुकल्पः प्रतिपदम् ॥ अपि प्रायो रम्यामृतमयपदा तस्य ललिता नटींमन्या वाणी नटति रसनायां चपलिता ॥ ९ ॥ तव ध्यायंतो ये वपुरनुजपंति प्रवलितं सदा मंत्रं मातर्नहि भवति तेषां परिभवः ॥ कदम्बानां मालाः शिरसि तव युंजंति सदये भवंति प्रायस्ते युवतिजनयूथस्य वशगाः ॥१०॥ सरोजैः साहस्रैः सरसिजपदद्वन्द्वमपि ये सहस्रं नामोक्त्वा तदपि तव ङेऽन्तं मनुमितम् ॥ पृथङ्नाम्ना तेनायुतकलितमर्चंति खलु ते सदा देवव्रातप्रणमितपदांभोजयुगलाः ॥११॥ तव प्रीत्यै मातर्ददति बलिमाधाय बलिना समत्स्यं मांसं वा सुरुचिरसितं राजरुचितम् ॥ सुपुण्या ये स्वांतस्तवचरणमोदैकरसिका अहो भाग्यं तेषां त्रिभुवनमलं वश्यमखिलम् ॥ १२ ॥ लसल्लोलश्रोत्राभरणकिरण क्रांतिकलितं मितस्मित्यापन्नप्रतिभितममन्नं विकरितम्॥मुखांभोजं मातस्तव परिलुठद्भ्रूमधुकरं रमा ये ध्यायंति त्यजति नहि तेषां सुभवनम् ॥ १३ ॥ परः श्रीमातंग्या जयति हृदयाख्यः सुमनसामयं सेव्यः सद्योऽभिमतफलदश्चातिलालितः ॥ नरा ये शृण्वंति स्तवमपि पठंतीममानिशं न तेषां दुःप्राप्यं जगति यदलभ्यं दिविषदाम् ॥ १४ ॥ धनार्थी धनमाप्नोति दारार्थी सुन्दरीं प्रियाम् ॥ सुतार्थी लभते पुत्रं स्तवस्यास्य प्रकीर्त्तनात् ॥ १५ ॥ विद्यार्थी लभते विद्यां विविधां विभवप्रदाम् ॥ जयार्थी पठनादस्य जयं प्राप्नोति निश्चितम् ॥ १६ ॥ नष्टराज्यो लभेद्राज्यं सर्वसम्पत्समाश्रितम् ॥ कुबेरसमसम्पत्तिः स भवेद्धृदयं पठन् ॥ १७ ॥ किमत्र बहुनोक्तेन यद्यदिच्छति मानवः॥ मातंगीहृदयस्तोत्रपाठात्तत्सर्वमाप्नुयात् ॥ १८ ॥ इति श्रीदक्षिणामूर्तिसंहितायां श्रीमातंगीहृदयस्तोत्रं समाप्तम् ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे मध्यखण्डे मातंगीतंत्रे द्वादशस्तरंगः ॥ १२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

कमलात्मिकायै नमः ।

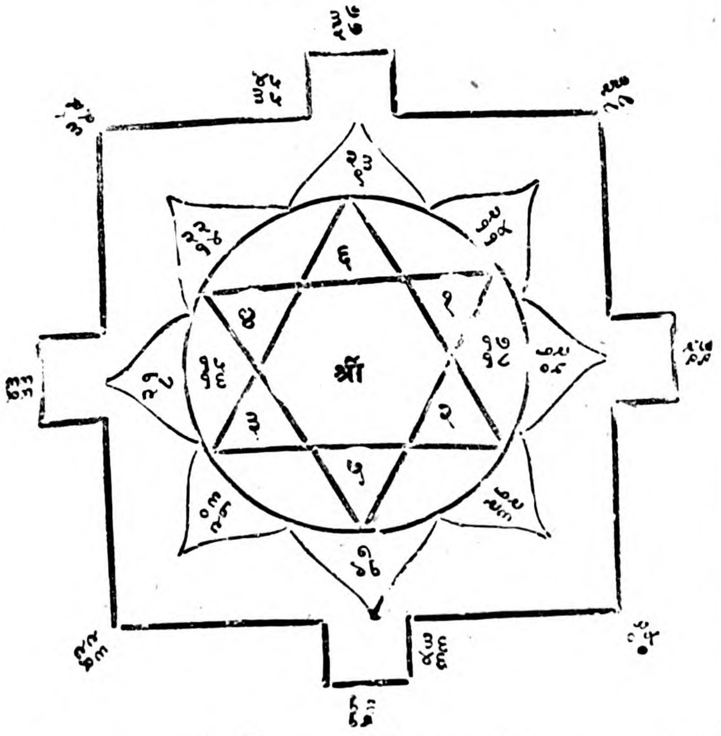


॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ कमलात्मिका (लक्ष्मी) तंत्रप्रारंभः ॥ तत्रादौ पटल प्रारंभः ॥ अथ वक्ष्ये श्रियो मंत्रान् श्रीसौभाग्यफलप्रदान् ॥ यस्याः कटाक्षमात्रेण त्रैलोक्यमतिवर्तते ॥ १ ॥ अथ लक्ष्म्या एकाक्षरबीजमंत्रप्रयोगः ॥ शारदा तिलके मंत्रो यथा-(श्रीं) इत्येकाक्षरबीजमंत्रः ॥ अस्य मंत्रस्य भृगुर्ऋषिः । निवृच्छंदः । श्रीलक्ष्मीर्देवता । मम धनाप्तये जपे विनियोगः । भृगुऋषये नमः शिरसि १ । निवृच्छंदसे नमो मुखे २ । श्रीलक्ष्मीदेवतायै नमो हृदि ३ । विनियोगाय नमः सर्वांगे ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ श्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ श्रूं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ श्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ॐ श्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ श्रां हृदयाय नमः १ । ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा २ । ॐ श्रूं शिखायै वषट् ३ ॥ ॐ श्रैं कवचाय हुम् ४ । ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ श्रः अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत् । अथ ध्यानम् । ॐ कांत्या कांचनसन्निभां हिमगिरिप्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैर्हस्तोत्क्षिप्तहिरण्मयामृतघटैरासिच्यमाना श्रियम् । बिभ्राणां वरमब्जयुग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलां क्षौमाबद्धनितंबबिंबलसितां वंदेऽरविन्दस्थिताम् ॥ १ ॥ एवं ध्यात्वा सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति पीठदेवताः संपूज्य । ततः पूर्वाद्यष्टसु विक्षु नवपीठशक्तीः पूजयेत् । तथा च-ॐ विभूत्यै नमः १ । ॐ उन्नत्यै नमः २ । ॐ कांत्यै नमः ३ । ॐ सृष्ट्यै नमः ४ ।

ॐ कीर्त्यै नमः ५। ॐ सन्नत्यै नमः ६ । ॐ पुष्ट्यै नमः ७ । ॐ उत्कृष्ट्यै नमः ८ । पीठमध्ये । ॐ ऋद्ध्यै नमः ९ । इति पीठशक्तीः संपूजयेत् । ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रमग्न्युत्तारणपूर्वकं 'श्रीं कमलासनाय नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् । तद्यथा— षट्कोणकेसरेषु । आग्निकोणे। ॐ श्रां हृदयाय नमः १। नैर्ऋत्ये । ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा २ । वायव्ये । ॐ श्रूं शिखायै वषट् ३ । ऐशान्याम् । ॐ श्रैं कवचाय हुम् ४ । पूज्यपूजकयोर्मध्ये। ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। देवीपश्चिमे। ॐ श्रः अस्त्राय फट् ६ । इति षडंगानि पूजयेत् । ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् । इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची तदनुसारेणान्या दिशः प्रकल्प्य प्राच्यादिचतुर्दिक्षु विदिक्षु च । पूर्वे । ॐ वासुदेवाय नमः वासुदेवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ । इति सर्वत्र । दक्षिणे । ॐ संकर्षणाय नमः संकर्षणश्रीपा० २ । पश्चिमे । ॐ प्रद्युम्नाय नमः प्रद्युम्नश्रीपा० ३ । उत्तरे । ॐ अनिरुद्धाय नमः अनिरुद्धश्रीपा० ४ । अग्निकोणे । ॐ दमकाय नमः दमकश्रीपा० ५ । निर्ऋतिकोणे । ॐ सलिलाय नमः सलिलश्रीपा० ६ । वायव्ये । ॐ गुग्गुलाय नमः गुग्गुलश्रीपा० ७ । ऐशान्याम् ॐ कुरुंटकाय नमः कुरुंटकश्रीपा० ८ । देव्या दक्षिणे । ॐ शंखनिधये नमः शंखनिधिश्रीपा० ९ । ॐ वसुधायै नमः वसुधाश्रीपा० १० । वामे । ॐ पद्मनिधये नमः पद्मनिधिश्रीपा० ११ । ॐ वसुमत्यै नमः वसुमतीश्रीपा० १२ ॥ इति द्वादशदेवतानि पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् । इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततः पत्राग्रेषु पूर्वादिक्रमेण । ॐ बलाक्यै नमः बलाकीश्रीपा० १ । ॐ विमलायै नमः विमलाश्रीपा० २ । ॐ कमलायै नमः कमलाश्रीपा० ३ । ॐ वनमालिकायै नमः वनमालिकाश्रीपा० ४ । ॐ विभीषिकायै नमः विभीषिकाश्रीपा० ५ । ॐ मालिकायै नमः मालिकाश्रीपा० ६ । ॐ शांकर्यै नमः शांकरीश्रीपा० ७ । ॐ वसुमालिकायै नमः वसुमालिकाश्रीपा० ८ । इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ।

इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण । ॐ लं इन्द्राय नमः[27] १ । ॐ रं अग्नये नमः[28] २ । ॐ मं यमाय नमः[29] ३ । ॐ क्षं निर्ऋतये नमः[30] ४ । ॐ वं वरुणाय नमः[31] ५ । ॐ यं वायवे नमः[32] ६ । ॐ कुं कुबेराय नमः[33] ७ । ॐ हं ईशानाय नमः[34] ८ । ईशानपूर्वयोर्मध्ये । ॐ आं ब्रह्मणे नमः[35] ९ । निर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्ये । ॐ ह्रीं अनंताय नमः[36] १० ॥ इति दशदिक्पालान् पूजयेत् ॥ तद्बाह्ये ॐ वं वज्राय नमः[37] १ । ॐ शं शक्तये नमः[38] २ । ॐ दं दंडाय नमः[39] ३ । ॐ खं खड्गाय नमः[40] ४ । ॐ पां पाशाय नमः[41] ५ । ॐ अं अङ्कुशाय नमः[42] ६ । ॐ गं गदायै नमः[43] ७ । ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः[44] ८ । ॐ पं पद्माय नमः[45] ९ । ॐ चं चक्राय नमः[46] १० । इत्यस्त्राणि पूजयेत् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनांतं संपूज्य जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं द्वादशलक्षजपः । द्वादशसहस्रकमलपुष्पहोमः।तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि च कुर्यात्॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति॥सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत्॥तथा च—भानुलक्षं जपेन्मंत्रं दीक्षितो विजितेन्द्रियः ॥ तत्सहस्रं प्रजुहुयात्कमलैर्मधुरोक्षितैः ॥ १ ॥

लक्ष्म्येकाक्षरबीजमन्त्रपूजनम् ।

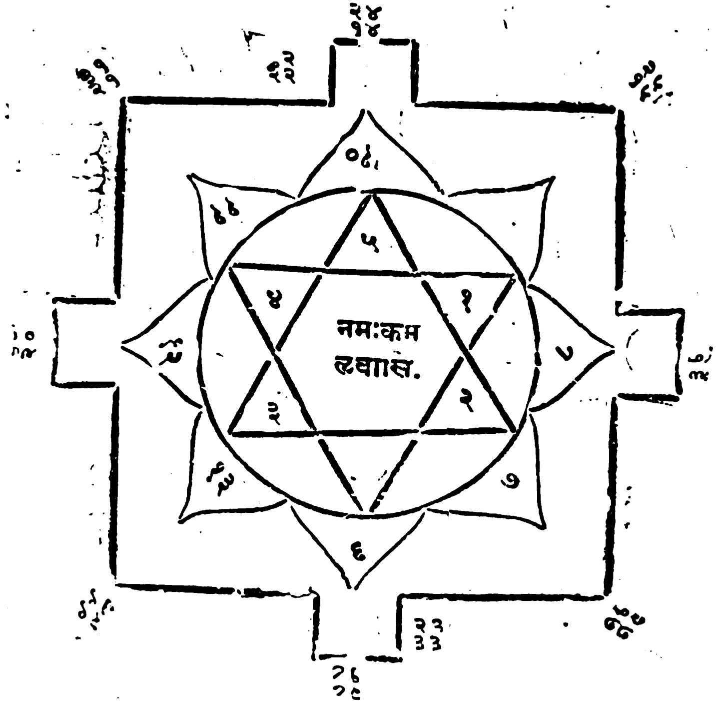


जपांते जुहुयान्मंत्री तिलैर्वा मधुराप्लुतैः ॥ बैल्वैः फलैर्वा जुहुयात्त्रिभिर्वा साधकोत्तमः ॥ २ ॥ इत्थं यो भजते देवीं विधिना साधकोत्तमः ॥ धनधान्यसमृद्धिः स्याच्छ्रियमाप्नोत्यनिंदिताम् ॥ ३ ॥ वक्षःप्रमाणे सलिले स्थित्वा मंत्रमिमं जपेत् ॥ त्रिलक्षं प्रजपेन्मंत्रं वांछितं लभते धनम् ॥ ४ ॥ अशोकवह्नौ जुहुयात्तंडुलराज्यलोलितैः ॥ वशयत्यचिरादेव त्रैलोक्यमपि मंत्रवित् ॥ ५ ॥ जुहुया

...ले: शुद्धैरर्काग्नौ नियुतं वशी ॥ राज्यश्रियमवाप्नोति राजपुत्रो महीयसीम् ॥ ६ ॥ जुहुयात्स्वादिरे वह्नौ तंडुलैर्मधुरोक्षितैः ॥ राजा वश्यो
भवेच्छीघ्रं महालक्ष्मीश्च वर्द्धते ॥ ७ ॥ बिल्वच्छायामधिवसन् बिल्वमिश्रहविष्यभुक् ॥ संवत्सरद्वयं हुत्वा तत्फलैरथवांबुजैः ॥ ८ ॥
साधकेन्द्रो महालक्ष्मीं चक्षुषा पश्यति ध्रुवम् ॥ हविषा घृतसिक्तेन पायसेन ससर्पिषा ॥ ९ ॥ हुत्वा श्रियमवाप्नोति नियुतं मंत्रवित्तमः ॥
मधुराक्तारुणांभोजैर्जुहुयाल्लक्षमादरात् ॥ न मुंचति रमा तस्य वंशमाभूतसंप्लवम् ॥ १० ॥ इत्येकाक्षरलक्ष्मीबीजमंत्रप्रयोगः ॥ अथ चतु
रक्षरलक्ष्मीबीजमंत्रप्रयोगः ॥ शारदातिलके मंत्रो यथा–'ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं'। इति चतुरक्षरो लक्ष्मीबीजात्मको मंत्रः ॥ ॐ श्रीं अंगुष्ठाभ्यां
नमः १ । ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ श्रूं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ श्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ।
ॐ श्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ श्रीं हृदयाय नमः १ । ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा २ । ॐ श्रूं शिखायै वषट् ३ ।
ॐ श्रैं कवचाय हुम् ४ । ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ श्रः अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा
ध्यायेत् ॥ ॐ माणिक्यप्रतिमप्रभां हिमनिभैस्तुंगैश्चतुर्भिर्गजैर्हस्ताग्राहितरत्नकुंभसलिलैरासिच्यमानां मुदा ॥ हस्ताब्जैर्वरदानमंबुजयुगा
भीतीर्दधानां हरेः कांतां कांक्षितपारिजातलतिकां वंदे सरोजासनाम् ॥ १ ॥ इति ध्यायेत् ॥ अस्य पूजादिकं सर्वं पूर्ववत् ॥ अस्य पुरश्च
रणं द्वादशलक्षजपः ॥ तथाच–भानुलक्षं हविष्याशी जपेदंते सरोरुहैः ॥ जुहुयादरुणैः फुल्लैस्तत्सहस्रं जितेन्द्रियः ॥ १ ॥ कुर्यात्प्रयोगां
स्तत्रस्थान्मनुना तेन साधकः ॥ निधिभिः सेव्यते नित्यं मूर्तिमद्भिरुपासितैः ॥ २ ॥ इति चतुरक्षरलक्ष्मीबीजात्मकमंत्रप्रयोगः ॥
अथ दशाक्षरलक्ष्मीमंत्रप्रयोगः ॥ शारदातिलके मंत्रो यथा–'ॐ नमः कमलवासिन्यै स्वाहा' ॥ इति दशाक्षरमंत्रः ॥ अस्य मंत्रस्य दक्ष
ऋषिः । विराट् छंदः। श्रीलक्ष्मीर्देवता।सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः॥ दक्षऋषये नमः शिरसि १ । विराट्छंदसे नमः मुखे २ । श्रियै देव
तायै नमः हृदि ३ । विनियोगाय नमः सर्वांगे ४ । इति ऋष्यादिन्यासः॥ ॐ देव्यै नमोऽगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ पद्मिन्यै नमस्तर्जनीभ्यां
नमः २ । ॐ विष्णुपत्न्यै नमो मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ वरदायै नमोऽनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ कमलायै नमः कनिष्ठिकाभ्यां

नमः ५॥ इति करन्यासः ॥ ॐ देव्यै नमो हृदयाय नमः १ । ॐ पद्मिन्यै नमः शिरसे स्वाहा २ । ॐ विष्णुपत्न्यै नमः शिखायै वषट् ३ । ॐ वरदायै नमः कवचाय हुम् ४ । ॐ कमलायै नमः अस्त्राय फट् ५ ॥ इति नेत्रहीनपंचांगन्यासः ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत् ॥ ॐ आसीना सरसीरुहे स्मितमुखी हस्तांबुजैर्बिभ्रती दानं पद्मयुगाभये च वपुषा सौदामिनीसन्निभा ॥ मुक्ताहारविराजमानपृथुलोत्तुंगस्तनोद्भासिनी पायाद्वः कमला कटाक्षविभवरानंदयंती हरिम् ॥ १ ॥ एवं ध्यात्वा पूर्वोक्तपीठशक्तिभिः सह पीठपूजां विधाय ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रम् आसनमंत्रेणासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्यावाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तत्र क्रमः ॥ षट्कोणकेसरेषु । अग्निकोणे । ॐ देव्यै नमो हृदयाय नमः ॥ १ ॥ निर्ऋतिकोणे । ॐ पद्मिन्यै नमः शिरसे स्वाहा २ । वायव्ये । ॐ विष्णपत्न्य नमः शिखायै वषट् ३ । ऐशान्याम् । ॐ वरदाय नमः कवचाय हुम् ४ ।

लक्ष्मीदशाक्षरमंत्रयन्त्रम्.



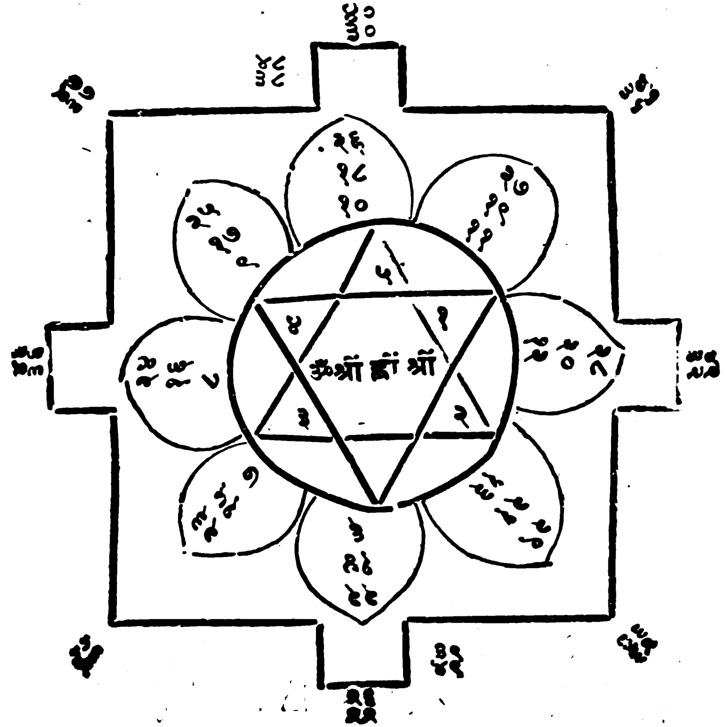
देवीपश्चिमे । ॐ कमलरूपायै नमोऽस्त्राय फट् ५ । इति पंचांगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य—ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्वा विशेषार्घाद्बिंदुं निक्षिप्य पूजिता

१ पंचांगानि मनोर्यत्र तत्र नेत्रमतु त्यजेत

स्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥१॥ ततः पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची । तदनुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्याष्टदलेषु प्राची क्रमेण । ॐ बलाक्यै नमः १ । ॐ विमलायै नमः २ । ॐ कमलायै नमः ३ । ॐ वनमालिकायै नमः ४ । ॐ विभीषिकायै नमः ५ । ॐ मालिकायै नमः ६ । ॐ शांकर्यै नमः ७ । ॐ वसुमालिकायै नमः ८ । इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादीन् वज्रादींश्च पूजयेत् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनांतं संपूज्य जपांश्च कुर्यात् । अस्य पुरश्चरणं दशलक्षजपः । जपदशांशेन होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कर्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथाच–दशलक्षं जपेन्मंत्रं मंत्रविद्विजितेन्द्रियः ॥ दशांशं जुहुयान्मंत्री मधुराक्तैः सरोरुहैः ॥ १ ॥ इति संपूजयेद्देवीं संपदामालयं भवेत् ॥ समुद्रगायां सरिति कंठमात्रे जले स्थितः ॥ २ ॥ त्रिलक्षं प्रजपेन्मंत्री साक्षाद्वैश्रवणो भवेत् ॥ आराध्योत्तरनक्षत्रे देवीं स्रक्चंदनादिभिः ॥ ३ ॥ नंद्यावर्तभवैः पुष्पैः सहस्रं जुहुयात्ततः ॥ पूर्णमास्यां फलैर्बैल्वैर्जुहुयान्मधुराप्लुतैः ॥ ४ ॥ पंचम्यां विशदांभोजैः शुक्रवारे सुगंधिभिः ॥ अन्यैर्वा विशदैः पुष्पैः प्रतिमासं विशालधीः ॥ स भवेदब्दमात्रेण सर्वदा संपदां निधिः ॥ ५ ॥ इति दशाक्षरलक्ष्मीमंत्रप्रयोगः ॥ अथ सप्तविंशत्यक्षरमहालक्ष्मीमंत्रप्रयोगः ॥ शारदायां मंत्रो यथा–ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः ॥ इति सप्तविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अस्य मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । गायत्रीच्छंदः । श्रीमहालक्ष्मीर्देवता । श्रीं बीजम् । नमः शक्तिः । सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः ॥ ॐब्रह्मऋषये नमः शिरसि १ । ॐगायत्रीच्छंदसे नमः मुखे २ । ॐमहालक्ष्मीदेवतायै नमः हृदि ३ । ॐ श्रीं बीजाय नमः गुह्ये ४ । ॐ नमःशक्तये नमः पादयोः ५ । ॐविनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले श्रीं ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये श्रीं ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै श्रीं ह्रीं श्रीं

कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले श्रीं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः १ । ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये श्रीं ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा २ । ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं शिखायै वषट् ३ । ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं कवचाय हुम् ४ । ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै श्रीं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट् ५ ॥ इति नेत्रहीनपंचांगन्यासः ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत् ॥ ॐ सिंदूरारुणकांतिमब्जवसतिं सौंदर्यवारांनिधिं कोटीरांगदहारकुंडलकटीसूत्रादिभिर्भूषिताम् ॥ हस्ताब्जैर्वसुपत्रमब्जयुगलादर्शौ वहंतीं परामावीतां परिचारिकाभिरनिशं ध्यायेत्प्रियां शार्ङ्गिणः ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा पूर्ववत् पीठपूजां विधाय स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रम् अग्न्युत्तारणपूर्वकमासनमंत्रेणासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्यावाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तथाच–षट्कोणकेसरेषु अग्निकोणे ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले श्रीं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः १ । निर्ऋतिकोणे ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये श्रीं ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा २ । वायव्ये ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं शिखायै वषट्[१] ३ । ऐशान्याम् ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं कवचाय हुम् ४ । देवीपश्चिमे ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै श्रीं ह्रीं श्रीं अस्त्रायफट् ५ ॥ इति पंचांगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य–ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत

लक्ष्मीचत्वारिंशत्यक्षरमन्त्रपूजनम्.



१ पंचांगानि मनोर्यंत्र तत्र नेत्रमंत्रं त्यजेत् ॥

वत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीं प्रकल्प्य ततोऽष्टदलेषु पूर्वादिक्रमेण । ॐ श्रीधराय नमः श्रीधरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ । इति सर्वत्र । ॐ हृषीकेशाय नमः हृषीकेशश्रीपा० २ । ॐ वैकुंठाय नमः वैकुंठश्रीपा० ३ । ॐ विश्वरूपाय नमः विश्वरूपश्रीपा० ४ । ॐ वासुदेवाय नमः वासुदेवश्रीपा० ५ । ॐ संकर्षणाय नमः संकर्षणश्रीपा० ६ । ॐ प्रद्युम्नाय नमः प्रद्युम्नश्रीपा० ७ । ॐ अनिरुद्धाय नमः अनिरुद्धश्रीपा० ८ । इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ ततोऽष्टदलमध्येषु पूर्वादिक्रमेण । ॐ भारत्यै नमः भारतीश्रीपा० १ । ॐ पार्वत्यै नमः पार्वतीश्रीपा० २ । ॐ चान्द्र्यै नमः चान्द्रीश्रीपा० ३ । ॐ शच्यै नमः शचीश्रीपा० ४ । ॐ दमकायै नमः दमकाश्रीपा० ५ । ॐ सलिलाय नमः सलिलश्रीपा० ६ । ॐ गुग्गुलवे नमः गुग्गुलुश्रीपा० ७ । कुरुण्टकाय नमः कुरुण्टकश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ततोऽष्टदलाग्रेषु । ॐ अनुरागाय महालक्ष्मीबाणाय नमः १ । ॐ संवादाय महालक्ष्मीबाणाय नमः २ । ॐ विजयाय महालक्ष्मीबाणाय नमः ३ । ॐ वल्लभाय महालक्ष्मीबाणाय नमः ४ । ॐ मदाय महालक्ष्मीबाणाय नमः ५ । ॐ हर्षाय महालक्ष्मीबाणाय नमः ६ । ॐ बलाय महालक्ष्मीबाणाय नमः ७ । ॐ तेजसे महालक्ष्मीबाणाय नमः ८ ॥ इत्यष्टौ बाणान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादीन् वज्रादींश्च पूजयेत् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनांतं संपूज्य जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः । तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति ॥ सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथाच—लक्षं जपेत्फलैर्बैल्वैर्जुहुयान्मधुरोक्षितैः ॥ दशांशसंस्कृते वह्नौ प्राक्प्रोक्तेनैव वर्त्मना ॥ १ ॥ अनेन विधिना देवीं महालक्ष्मीमुपासते ॥ ये तेषु निवसेल्लक्ष्मीरस्मरंती निजालयम् ॥ २ ॥ उत्पलैर्जुहुयल्लक्षं चंदनांभासि लोलितैः ॥ शत्रूणां लभते राज्यं विना युद्धेन पार्थिवः ॥ ३ ॥ जपन्राजसभां गच्छेत्संभाव्येत तथा नरः ॥

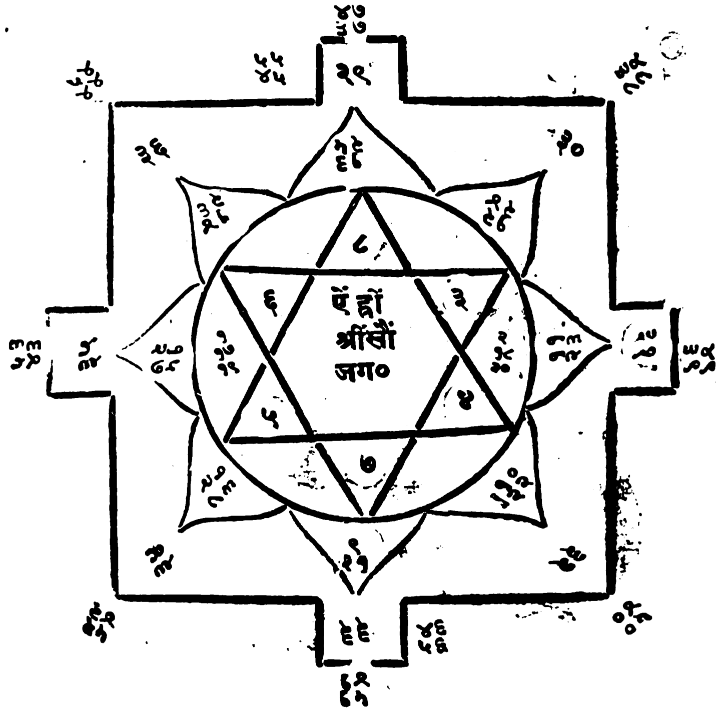
दूर्वा देवी महालक्ष्मीर्विष्णुक्रांता मधुव्रता ॥ ४ ॥ मुशली शत्रुवल्ली च सदाभद्रांजलिप्रिया ॥ हरिचंदनकर्पूरचंदनाकोलरोचनाः ॥ ५ ॥ मालूरकेसरो कुष्ठं सर्वं पिष्ट्वा निशारसैः ॥ अष्टोत्तरसहस्रं तु जपित्वा तिलकक्रियाम् ॥ ६ ॥ कुर्वतो मंत्रिणः सर्वे वशे तिष्ठंत्यहर्निशम् ॥ श्रियो मंत्रं भजेन्मंत्री श्रीसूक्तान्यपि संजपेत् ॥ ७ ॥ भूयसीं श्रियमाकांक्षन् सत्यवादी भवेत्सदा ॥ प्रत्यगाशामुखोऽश्नीयास्थितः पूर्वं प्रियं वदेत् ॥ ८ ॥ पूजयेद्गंधपुष्पाद्यैरात्मानं नियतः शुचिः ॥ शयीत शुद्धशय्यायां तरुण्या सह नान्यथा ॥ ९ ॥ नग्नो नावतरेदंभस्तैलाभ्यक्तो न भक्षयेत् ॥ हरिद्रां न मुखे लिंपेन्न स्वपेदशुचिः क्वचित् ॥ १० ॥ न वृथा विलिखेद्भूमिं न बिल्वं द्रोणमंबुजम् ॥ धारयेन्मूर्ध्नि नैवाद्याल्लोणं तैलं च केवलम् ॥११॥ मलिनो न भवेज्जातु कुत्सितान्नं न भक्षयेत् ॥ द्रोणपंकजबिल्वानि पत्न्रयां जातु न लंघयेत् ॥ १२ ॥ सहदेवीमिंद्रवल्लीं श्रीवल्लीं विष्णुवल्लभाम् ॥ कन्यांबुजप्रवालं च धारयेन्मूर्ध्नि सर्वदा ॥ १३ ॥ इत्याचारपरो नित्यं विष्णुभक्तो दृढव्रतः ॥ श्रियमाप्नोति महतीं देवानामपि दुर्लभाम् ॥ १४ ॥ इति सप्तविंशत्यक्षरमहालक्ष्मीमंत्रप्रयोगः ॥ अथ द्वादशाक्षरमहालक्ष्मीमंत्रप्रयोगः॥शारदातिलके मंत्रो यथा—'ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं जगत्प्रसूत्यै नमः' ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः । अस्य विधानम्—अस्य मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः।गायत्री च्छंदः।श्रीजगन्माता महालक्ष्मीर्देवता।श्रींबीजम्।सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः॥ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि १। गायत्रीच्छंदसे नमः मुखे २ । श्रीजगन्मातृमहालक्ष्म्यै नमः हृदि ३ । श्रीं बीजाय नमः गुह्ये ४। विनियोगाय नमः सर्वांगे ५ । इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ततो मूलेन करौ संशोध्य । ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ सौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ॐ जगत्प्रसूत्यै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ततः 'ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं जगत्प्रसूत्यै नमः' इति मस्तकादिचरणान्तं व्यापकं न्यसेत् ॥ इति विन्यस्य मंत्रवर्णन्यासं कुर्यात् ॥तद्यथा—ॐ ऐं नमः मूर्ध्नि १ । ॐ ह्रीं नमः मुखे २ । ॐ श्रीं नमः हृदये ३ । ॐ क्लीं नमः गुह्ये ४ । ॐ सौं नमः पादयोः ५ ॥ इति विन्यस्य हृदये करं दत्त्वा सप्तवर्णान् न्यसेत् ॥ तत्र क्रमः—ॐ जं नमः त्वचि ६ । ॐ गत् नमः रक्ते ७ । ॐ प्रं नमः मांसे ८ । ॐ

नमः मेदसि ९। ॐ स्थैं नमः अस्थिन १०। ॐ नं नमः मज्जायाम् ११ । ॐ मं नमः शुक्रे १२ ॥ इति विन्यसेत् ॥ इति मंत्र वर्णन्यासः ॥ ॐ ऐं ज्ञानाय अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ह्रीं ऐश्वर्य्याय तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ श्रीं शक्तये मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ क्लीं बलाय अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ सौं वीर्याय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ जगत्प्रसूत्यै नमस्तेजसे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ऐं ज्ञानाय हृदयाय नमः १। ॐ ह्रीं ऐश्वर्याय शिरसे स्वाहा २। ॐ श्रीं शक्तये शिखायै वषट् ३। ॐ क्लीं बलाय कवचाय हुम् ४। ॐ सौं वीर्याय नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ जगत्प्रसूत्यै नमस्तेजसे अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंग न्यासः ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वोद्यानस्मरणं कुर्यात् तथाच—चंपकाशोकपुन्नागपाटलैरुपशोभितम् ॥ लवंगमालतीबिल्वदेवदारुनमेरुभिः ॥ १ ॥ मंदारपारिजाताद्यैः कल्पवृक्षैः सुपुष्पितैः ॥ चंदनैः कर्णिकारैश्च मातुलिंगैश्च वंजुलैः ॥ २ ॥ दाडिमीलकुचांकोलैः पूगैः कुरवकैरपि ॥ कदलीकुंदमंदारनालिकेरैरलंकृतैः ॥ ३ ॥ अन्यैः सुगंधिपुष्पाद्यैर्वृक्षसंघैश्च मंडितम् ॥ मालतीमल्लिकाजातीकेतकीशतपत्रकैः ॥ ४ ॥ पारंतीतुलसीनंद्यावर्तैर्दमनकैरपि ॥ सर्वर्तुकुसुमोपेतैर्नमद्भिरुपशोभितम् ॥ ५ ॥ मंदमारुतसंभिन्नकुसुमामोदिदिङ्मुखम् ॥ तस्य मध्ये सदोत्फुल्लैः कुमुदोत्पलपंकजैः ॥ ६ ॥ सौगंधिकैश्च कह्लारैर्नवैः कुवलयैरपि ॥ हंससारसकारंडैर्भ्रमरैश्चक्रनामभिः ॥ ७ ॥ अन्यैः कलकलारावैर्विहंगैरुपशोभितम् ॥ महासरसि तन्मध्ये पुलिनेऽतिमनोहरे ॥ ८ ॥ परितः पारिजाताद्यं मंडपं मणिकुट्टिमम् ॥ उद्यदादित्यसंकाशं भास्वरं शशिशीतलम् ॥ ९ ॥ चतुर्द्वारसमायुक्तं हेमप्राकारशोभितम् ॥ रत्नोपक्लृतिसंशोभिकपाटाष्टकसंयुतम् ॥ १० ॥ नवरत्नसमाक्लृप्तं तुंगगोपुरतोरणम् ॥ हेमदंडसमालंबिध्वजावलिपरिष्कृतम् ॥ ११ ॥ नवरत्नसमाबद्धस्तंभराजिविराजितम् ॥ सहस्रदीपसंयुक्तदीपं दंडविराजितम् ॥ १२ ॥ तप्तहाटकसंक्लृप्तवातायनमनोहरम् ॥ नानावर्णांशुकोद्बद्धसुवर्णशतकोटिभिः ॥ १३ ॥ किंकिणीमल्लिकायुक्तपताकाभिरलंकृतम् ॥ जातरूपमयै रत्नविचित्रैरतिविस्तृतैः ॥ १४ ॥ माणिक्यरत्नवैदूर्य्यस्वर्णमालावलीयुतैः ॥ अंतरांतरसंबद्धरत्नैर्दृष्टिमनोहरैः ॥ १५ ॥ विचित्रै

श्चित्रवर्णैश्च वितानैरुपशोभितम् ॥ सवर्रत्नसमायुक्तं हेमकुट्टिममुज्ज्वलम् ॥ १६ ॥ केतकीमालतीजातीचंपकोत्पलकेसरैः ॥ मल्लिका तुलसीजातीनंद्यावर्तकदंबकैः ॥ १७ ॥ एतैरन्यैश्च कुसुमैरलंकृतमहीतलम् ॥ अंबुकाश्मीरकस्तूरीमृगनाभितमालकैः ॥ १८ ॥ चंदनागुरुकर्पूरैरामोदितदिगंतरम् ॥ एवं संचिंत्य मनसा मंडपं सुमनोहरम् ॥ १९ ॥ तन्मध्ये भावयेन्मंत्री पारिजातं मनोहरम् ॥ तस्याधस्तात्स्मरेन्मंत्री रत्नसिंहासनं शुभम् ॥ तस्मिन्संचिंतयेद्देवीं महालक्ष्मीं मनोरमाम् ॥ २० ॥ इत्युद्यानस्मरणं कृत्वा महालक्ष्मीं ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्—बालार्कद्युतिमिंदुखंडविलसत्कोटीरहारोज्ज्वलां रत्नाकल्पविभूषितां कुचनतां शालैः करैर्मंजरीम् ॥ पद्मं कौस्तुभ रत्नमप्यविरतं संबिभ्रतीं सस्मितां फुल्लांभोजविलोचनत्रययुतां ध्यायेत्परां देवताम् ॥ १ ॥ सिंजन्मंजीरसंशोभिपदांभोजविराजिताम् ॥ नवरत्नगणाकीर्णकांचीदामविभूषिताम् ॥ २ ॥ मुक्तामाणिक्यवैदूर्यसंबद्धोदरबंधनाम् ॥ विभ्राजमानां मध्येन वलित्रितयशोभिताम् ॥ ३ ॥ जाह्नवीसरिदावर्तशोभिनाभिविभूषिताम् ॥ पाटीरपंककर्पूरकुंकुमालंकृतस्तनीम् ॥ ४ ॥ वारिवाहविनिर्मुक्तमुक्तादामगरीयसीम् ॥ वहंतीमुत्तरासंगं दुकुलपरिकल्पिताम् ॥ ५ ॥ तप्तकांचनसन्नद्धवैदूर्यांगदभूषणाम् ॥ पद्मरागस्फुरद्वर्णकंकणाढ्यकरांबुजाम् ॥ ६ ॥ माणिक्यशकलाबद्धमुद्रिकाभिरलंकृताम् ॥ तप्तहाटकसंक्लृप्तमालाग्रैवेयशोभिताम् ॥ ७ ॥ विचित्रविविधाकल्पकंबुसंकाशकंधराम् ॥ उद्यद्दिनकराकारमणिताटंकमंडिताम् ॥ ८ ॥ रत्नांकितलसत्स्वर्णकर्णपूरोपशोभिताम् ॥ जयाविद्रुमलावण्यललिताधरपल्लवाम् ॥ ९ ॥ दाडिमीफलवीजाभदंतपंक्तिविभूषिताम् ॥ कलंककार्श्यनिर्मुक्तशरच्चंद्रनिभाननाम् ॥ १० ॥ पुंडरीकदलाकारनयनत्रयसुंदरीम् ॥ भ्रूलताजितकंदर्पकरकार्मुकविभ्रमाम् ॥ ११ ॥ विलसत्तिलपुष्पश्रीविजयोद्यतनासिकाम् ॥ ललाटकांतिविभवविजितार्द्धसुधाकराम् ॥ १२ ॥ सांद्रसौरभसंपन्नकस्तूरीतिलकांकिताम् ॥ मत्तालिमालाविलसदलकाढ्यमुखांबुजाम् ॥ १३ ॥ पारिजातप्रसूनश्रीवाहिधम्मिल्लबंधनाम् ॥ अनर्घ्यरत्नघटितमुकुटांकितमस्तकाम् ॥ १४ ॥ सर्वलावण्यवसतिं भवनं विभ्रमाश्रियः ॥ तेजसां जन्मभूमिं तां महालक्ष्मीं मनोहराम् ॥ १५ ॥ इति ध्यात्वा सर्वतोभद्रमंडले पूर्ववत् पीठपूजां विधाय स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रममग्न्युत्तारणपूर्वक

आसनमंत्रेणासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्यावाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्य्यात् ॥ तत्र क्रमः—देव्या दक्षिणे ॐ शंकरनंदनाय नमः । शंकरनंदनश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ । एवं सर्वत्र ॥ देव्या वामे ॐ पुष्पधन्वने नमः । पुष्पधन्वश्रीपा० २ । इति पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य—ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततः षट्कोणकेसरेषु अग्निकोणे ॐ ऐं ज्ञानाय हृदयाय नमः । हृदयश्रीपा० १ । निर्ऋतिकोणे ॐ ह्रीं ऐश्वर्याय शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० २ । वायव्ये ॐ श्रीं शक्तये शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ३ । ऐशान्याम् ॐ क्लीं बलाय कवचाय हुम् । कवचश्रीपा० ४ । पूज्यपूजकयोर्मध्ये ॐ सौं वीर्याय नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ५। देव्याः पश्चिमे ॐ जगत्प्रसूत्यै नमस्तेजसे अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ । इति षडंगानि पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततोऽष्टदलेषु पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राची । तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य पूर्वादिक्रमेण । ॐ उमायै नमः । उमाश्रीपा० १ । ॐ श्रियै नमः । श्रीश्रीपा० २ ।

द्वादशाक्षरमहालक्ष्मीमन्त्रयन्त्रम् ।



१–श्रीपदं पूर्वमुच्चार्य पादुकापदमुद्धरेत् ॥ पूजयामि नमः पश्चात्पूजयेद्गदेवताः ॥ १ ॥

ॐ सरस्वत्यै नमः । सरस्वतीश्रीपा० ३ । ॐ दुर्गायै नमः । दुर्गाश्रीपादुकां पू० ४ । ॐ धरण्यै नमः धरणिश्रीपा० ५ । ॐ गायत्र्यै नमः । गायत्रीश्रीपा० ६ । ॐ देव्यै नमः । देवीश्रीपा० ७ । ॐ उषायै नमः । उषाश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ शक्तीः पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततो देव्या दक्षिणे ॐ जह्नुसुतायै नमः । जह्नुसुताश्रीपा० १ । देव्या वामे ॐ सूर्य्यसुतायै नमः । सूर्य्यसुताश्रीपा० २ । ततः पुनर्देव्या दक्षिणे ॐ शंखनिधये नमः । शंखनिधिश्रीपा० ३ । पुनर्देव्या वामे ॐ पद्मनिधये नमः । पद्मनिधिश्रीपा० ४ । पश्चिमे धृतातपत्रं वरुणं पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥ ४ ॥ ततोऽष्टदलाग्रेषु पूर्वादिक्रमेण ॐ सूर्य्याय नमः । सूर्य्यश्रीपा० १ । ॐ सोमाय नमः । सोमश्रीपा० २ । ॐ भौमाय नमः । भौमश्रीपा० ३ । ॐ बुधाय नमः । बुधश्रीपा० ४ । ॐ बृहस्पतये नमः । बृहस्पतिश्रीपा० ५ । ॐ शुक्राय नमः । शुक्रश्रीपा० ६ । ॐ शनैश्चराय नमः । शनैश्चरश्रीपा० ७ । ॐ राहवे केतवे नमः । राहुकेतुश्रीपा० ८ । इति नवग्रहान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति पंचमावरणम् ॥ ५ ॥ ततो भूपुराभ्यंतरे ॐ ऐरावताय नमः । ऐरावतश्रीपा० १ । ॐ पुंडरीकाय नमः । पुंडरीकश्रीपा० २ । ॐ वामनाय नमः । वामनश्रीपा० ३ । ॐ कुमुदाय नमः । कुमुदश्रीपा० ४ । ॐ अंजनाय नमः । अंजनश्रीपा० ५ । ॐ पुष्पदंताय नमः । पष्पदंतश्रीपा० ६ । ॐ सार्वभौमाय नमः सार्वभौमश्रीपा० ७ । ॐ सुप्रतीकाय नमः । सुप्रतीकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ इत्यष्टौ दिग्गजान्पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति षष्ठावरणम् ॥ ६ ॥ ततो भूपुरे इन्द्रादीन् वज्रादींश्च पूजयेत् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनांतं संपूज्य पुनर्ध्यात्वा जपं कुर्य्यात् । अस्य पुरश्चरणं द्वादशलक्षजपः । जपदशांशतो घृतहोमः । पुनः श्रीफलैः पद्मैः प्रत्येकमयुतं होमः । ततोऽयुतद्वयमितं तर्पणं कुर्य्यात् । एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथाच--भानुलक्षं जपेन्मंत्रं दशांशं जुहुयाद्घृतैः ॥ जुहुयाच्छ्रीफलैः पद्मैः प्रत्येकमयुतं ततः ॥ १ ॥ तर्पयेत्सातिलैः शुद्धैः सुगंधैरयुतद्वयम् ॥ आगमोक्तेन विधिना सुगन्धैः सुमनोहरैः ॥ पूजयेद्गंधपुष्पाद्यैर्देवीमन्वह

मादरात् ॥ २ ॥ दूर्वाभिराज्यसिक्ताभिर्जुहुयादायुषे नरः ॥ दशरात्रं समिद्धेऽग्नावष्टोत्तरसहस्रकम् ॥ ३ ॥ गुडूचीमाज्यसंयुक्तां जुहुयात्सप्तवासरम् ॥ अष्टोत्तरसहस्रं यः स जीवेच्छरदां शतम् ॥ ४ ॥ हुत्वा तिलान् घृताभ्यक्तान्दीर्घमायुरवाप्नुयात् ॥ आरभ्यार्कदिनं मंत्री दशरात्रं दिने दिने ॥ ५ ॥ आज्याक्तार्कसमिद्धोमादारोग्यं लभते ध्रुवम् ॥ कंठमात्रोदके स्थित्वा ध्यात्वा देवीं दिवाकरे॥ ६ ॥ ऊर्ध्वबाहुर्दशशतमष्टोत्तरामिमं हुनेत् ॥ आरोग्यं लभते सद्यो वांछितान्यपि मंत्रवित् ॥ ७ ॥ शालीभिर्जुह्वतो नित्यमष्टोत्तरसहस्रकम् ॥ अचिरादेव महती लक्ष्मीः संजायते ध्रुवम् ॥ ८ ॥ प्रसनैर्जुहुयान्मंत्री लक्ष्मीवल्लीसमुद्भवैः ॥ नंद्यावर्तसमुत्थैश्च सिद्धार्थैश्च घृताप्लुतैः ॥ महतीं श्रियमाप्नोति मान्यते सर्वजंतुभिः ॥ ९ ॥ मरीचजीरकोन्मिश्रैर्नारिकेलरजःप्लुतैः ॥ सगुडैराज्यसंपक्वैरपूपैराज्यलोलितैः॥जुहुयात्पायसाहारो मंत्रविद्विजितेंद्रियः ॥ १० ॥ अष्टोत्तरशतं नित्यं मंडलाद्धनदो भवेत् ॥ हविषा गुडमिश्रेण जुहुयादर्थवान्भवेत् ॥ ११ ॥ जपापुष्पाणि जुहुयादष्टोत्तरसहस्रकम् ॥ गृहीत्वा प्रजपेद्भस्म नागवल्लीसमन्वितम् ॥ १२ ॥ तिलकं तनुयात्तेन सर्ववश्यकरो भवेत् ॥ ब्रह्मवृक्षसमित्पुष्पैर्ब्राह्मणान्वशयेद्वशी ॥ १३ ॥ जातीपुष्पैश्च राजानं वैश्यान् रक्तोत्पलैः शुभैः ॥ शूद्रान्नीलोत्पलैर्हुत्वा वशयेन्मंत्रविन्नरः ॥ १४ ॥ पुष्पैर्मधूकजैर्हुत्वा वशमानयति स्त्रियः ॥ कृत्वा नवपदात्मानं मंडलं यंत्रभूषितम् ॥ १५ ॥ अभिषेकं प्रकुर्वीत विधिना सर्वसिद्धये ॥ कलशान्स्थापयेत्तेषु पदेषु शुभलक्षणान् ॥ १६ ॥ चंदनालिप्तसर्वांगान् दूर्वाक्षतसमन्वितान् ॥ दुकूलवेष्टितानेतान्पूरयेत्तीर्थवारिणा ॥ १७ ॥ नवरत्नसमाबद्धं कर्षकांचनकल्पितम् ॥ मध्यकुंभे क्षिपेत्पद्मं यंत्राढ्यं देशिकोत्तमः ॥ १८ ॥ चंदनोशीरकर्पूरजातीकंकोलकुंकुमम् ॥ कुष्ठागरुतमालैलायुतं संपिष्य भागतः ॥ १९ ॥ विलोड्य सर्वकुंभेषु रत्नान्यपि विनिक्षिपेत् ॥ लक्ष्मीदूर्वासदाभद्रासहदेवीमधुव्रताः ॥ २० ॥ मुशलीं शक्रवल्लीं च क्रांतापामार्गपत्रकान् ॥ प्रियंगुमुद्गगोधूमव्रीहींश्च सतिलान्यवान् ॥ २१ ॥ शालितंडुलमाषांश्च प्रक्षाल्यैतेषु निक्षिपेत् ॥ धात्रीलकुचबिल्वानां कदलीनालिकेरयोः ॥ २२ ॥ फलान्यपि विनिक्षिप्य पुष्पाण्येतानि निक्षिपेत् ॥ पद्मं सौगंधिकं जातिं मल्लिकां बकुलं तथा॥२३॥ चंपकाशोकपुन्नागतुलसीकेतकोद्भवान् ॥ पल्लवांश्च वटाश्वत्थ

प्लक्षोदुंबरशाखिनाम् ॥ २४ ॥ ब्रह्मकूर्चं विनिक्षिप्य चंपकैः सफलान्वितैः ॥ पिधाय कुंभवक्त्राणि क्षौमैराच्छदयेत्ततः ॥ २५ ॥ आवाह्य मध्यकलशे महालक्ष्मीं प्रपूजयेत् ॥ यजेदुमाद्याः शिष्टेषु कलशेष्वष्टसु क्रमात् ॥ २६ ॥ गंधैर्मनोहरैः पुष्पैर्धूपदीपसमन्वितैः ॥ निवेद्य भक्ष्यभोज्यानि तान्स्पृष्ट्वा प्रजपेन्मनुम् ॥ २७ ॥ त्रिसहस्रं जपस्यांते साध्यमानीय संयतम् ॥ संस्थाप्य स्थंडिले पीठं तस्मिंस्तं विनिवेशयेत् ॥ २८ ॥ रम्यैराभरणैर्वस्त्रैरलंकृत्य तमादरात् ॥ सुमंगलाभिर्नारीभिः क्षिप्तपुष्पाक्षतान्वितम् ॥ २९ ॥ अर्चितानां द्विजातीनामाशीर्वादपुरःसरम् ॥ नदत्सु पंचवाद्येषु मुहूर्ते शोभने सधीः ॥ ३० ॥ मध्यस्थं कुंभमुत्सृज्य महालक्ष्मीमनुस्मरन् ॥ अभिषिंचेत्क्रमादन्यैः कलशैरपि देशिकः ॥ ३१ ॥ करेणास्य शिरः स्पृष्ट्वा प्रयुंजीताशिषं गुरुः ॥ "भद्रमस्तु शिवं चास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु ॥ ३२ ॥ रक्षंतु त्वां सदा देवाः संपदः संतु सर्वदा ॥" अथोत्थायाभिषिक्तः सन् वाससी परिधाय च ॥ ३३ ॥ यथाविधि समाचम्य दंडवत्प्रणमेद्गुरुम् ॥ वस्त्रैराभरणैर्धान्यैर्धनैर्गोमहिषादिभिः ॥ ३४ ॥ दासीदासैश्च विधिवत्तोषयेद्देवताधिया ॥ ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चाद्दीनांधकृपणैः सह ॥ ३५ ॥ महान्तमुत्सवं कुर्य्याद्भवने बंधुभिः सह ॥ तदा कृतार्थमात्मानं मन्यते मनुजोत्तमः ॥ ३६ ॥ अभिषिक्तो नरपतिः परान् विजयतेऽचिरात् ॥ पदेच्छुः पदमाप्नोति राजपुत्रो न संशयः ॥ ३७ ॥ अभिषिक्ता सती वंध्या सूते पुत्रं महामतिम् ॥ महारोगेषु जातेषु कृत्याद्रोहेषु देशिकः ॥ ३८ ॥ भूतेषु दुर्निमित्तादौ विदध्यादभिषेचनम् ॥ सर्वसम्पत्करं पुंसां सर्वसौभाग्यसिद्धिदम् ॥ ३९ ॥ सर्वरोगप्रशमनं सर्वापद्विनिवारणम् ॥ गर्भरक्षाकरं स्त्रीणां दीर्घायुर्जनकं परम् ॥ ४० ॥ प्रसूतानामपि स्त्रीणां सूतिकागाररक्षकम् ॥ प्रनष्टपुष्पगर्भाणां पुष्पगर्भाभिरक्षणम् ॥ ४१ ॥ आसन्नशत्रुभीतानां नाशनं च महीभृताम् ॥ अभिषेकमिमं प्राहुरागमार्थविशारदाः ॥ ४२ ॥ इति द्वादशाक्षरलक्ष्मीमंत्रप्रयोगः ॥ अथ त्रयोविंशत्यक्षरलक्ष्मीमंत्रप्रयोगः ॥ प्राकृतग्रंथे मंत्रो यथा—'ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मंदिरे तिष्ठतिष्ठ स्वाहा ॥' इति त्रयोविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम् । अष्टोत्तरशतं प्रतिदिनं

जपेत्॥लक्ष्मीः प्रसन्ना भवति द्रव्यं च ददाति॥ इति त्रयोविंशत्यक्षरमहालक्ष्मीमंत्रप्रयोगः॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ सिद्धलक्ष्म्येकादशाक्षरमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा–'ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै नमः॥' इति मंत्रः॥अस्य विधानम्–ॐ अस्य श्रीसिद्धलक्ष्मीमंत्रस्य हिरण्यगर्भ ऋषिः । अनुष्टुप् छंदः।श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीसरस्वत्यो देवताः । श्रीं बीजम् ।ह्रीं शक्तिः।क्लीं कीलकम्।मम सर्वक्लेशपीडापरिहारार्थं सर्वदुःखदारिद्र्यनाशनार्थं सर्वकार्यसिद्ध्यर्थं च श्रीसिद्धलक्ष्मीमंत्रजपे विनियोगः ॥ ॐ हिरण्यगर्भऋषये नमः शिरसि १ । अनुष्टुप् छंदसे नमः मुखे२।श्रीमहाकालीमहालक्ष्मिमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः हृदि ३ । श्रीं बीजाय नमः लिंगे ४। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ५। क्लीं कीलकाय नमः नाभा ६। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७। इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ श्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ सिद्धलक्ष्म्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ श्रीं हृदयाय नमः १। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ क्लीं शिखायै वषट् ३ । ॐ श्रीं कवचाय हुम् ४। ॐ सिद्धलक्ष्म्यै नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ नमः अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः॥ अथ ध्यानम्–ब्राह्मीं च वैष्णवीं भद्रां षड्भुजां च चतुर्मुखीम्॥ त्रिनेत्रां खड्गशूलाभीपद्मचक्रगदाधराम् ॥ १ ॥ पीताम्बरधरां देवीं नानालंकारभूषिताम् ॥ तेजःपुंजधरां श्रेष्ठां ध्यायेद्बालकुमारिकाम् ॥ २ ॥ इति ध्यात्वा पूर्वोक्तपीठपूजां विधाय ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संप्रोञ्छ्य 'ॐ सिद्धलक्ष्मीपद्मपीठाय नमः' इत्यासनमंत्रेणासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पुनर्ध्यात्वा मूलेनावाहनादिपंचोपचारैः सम्पूज्य देवीं ध्यात्वा मूलमंत्रं जपेत् ॥ अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपः । तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् । एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत्।तथा च रौप्यदीपमादाय गोघृतेनापूर्य्य एकादशतंतुभिः पुष्पवर्तिकां निक्षिप्य मूलेन दीपं समर्पयामि इति प्रज्वाल्य

पूर्वाभिमुखः स्थित्वा शर्करया नैवेद्यं निवेद्य स्फटिकमालामादाय हृदये धारयन् देवीं ध्यात्वा मंत्रार्थं स्मरन् त्रिसंध्यं मूलमंत्रमष्टोत्तर शतं प्रतिदिनं जपेत् ॥ जपादौ जपांते च स्तोत्रं पठेत् ॥ अथ सिद्धलक्ष्मीस्तोत्रप्रारंभः ॥ ॐ अस्य श्रीसिद्धलक्ष्मीस्तोत्रमंत्रस्य हिरण्य गर्भ ऋषिः । अनुष्टुप् छंदः । श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः । श्रीं बीजम् । ह्रीं शक्तिः । क्लीं कीलकम् । मम सर्वक्लेशपीडापरि हारार्थं सर्वदुःखदारिद्र्यनाशनार्थं सर्वकार्यसिद्ध्यर्थं च श्रीसिद्धलक्ष्मीस्तोत्रपाठे विनियोगः॥ ॐ हिरण्यगर्भऋषये नमः शिरसि १ । अनुष्टुप् छंदसे नमो मुखे २ । श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमो हृदि ३ । श्रीं बीजाय नमो गुह्ये ४ । ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ५ । क्लीं कीलकाय नमो नाभौ ६ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ७ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ ह्रीं विष्णुतेजसे तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ क्लीं अमृतानंदायै मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ श्रीं दैत्यमालिन्यै अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ ह्रीं तेजःप्रकाशिन्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ॐ क्लीं ब्राह्म्यै वैष्णव्यै रुद्राण्यै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति कर न्यासः ॥ ॐ श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै हृदयाय नमः १ । ॐ ह्रीं विष्णुतेजसे शिरसे स्वाहा २ । ॐ क्लीं अमृतानंदायै शिखायै वषट् ३ । ॐ श्रीं दैत्यमालिन्यै कवचाय हुम् ४ । ॐ ह्रीं तेजःप्रकाशिन्यै नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ क्लीं ब्राह्म्यै वैष्णव्यै रुद्राण्यै अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ॥ 'ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै नमः' इति मंत्रेण तालत्रयं दिग्बंधनं च कुर्यात् ॥ अथ ध्यानम् । ब्राह्मीं च वैष्णवीं भद्रां षड्भुजां च चतुर्मुखीम् ॥ त्रिनेत्रां खड्गत्रिशूलपद्मचक्रगदाधराम् ॥ १ ॥ पीताम्बरधरां देवीं नानालंकार भूषिताम् ॥ तेजःपुञ्जधरीं श्रेष्ठां ध्यायेद्बालकुमारिकाम् ॥ २ ॥ इति ध्यात्वा स्तोत्रं पठेत् ॥ तथाच–ॐकारं लक्ष्मीरूपं तु विष्णुं हृदय मव्ययम् ॥ विष्णुमानंदमव्यक्तं ह्रींकारं बीजरूपिणीम् ॥ १ ॥ क्लीं अमृतानंदिनीं भद्रां सदात्यानंददायिनीम् ॥ श्रीं दैत्यशमनीं शक्तिं मालिनीं शत्रुमर्दिनीम् ॥ २ ॥ तेजःप्रकाशिनीं देवीं वरदां शुभकारिणीम् ॥ ब्राह्मीं च वैष्णवीं रौद्रीं कालिकारूपशोभिनीम् ॥ ३ ॥ अकारे

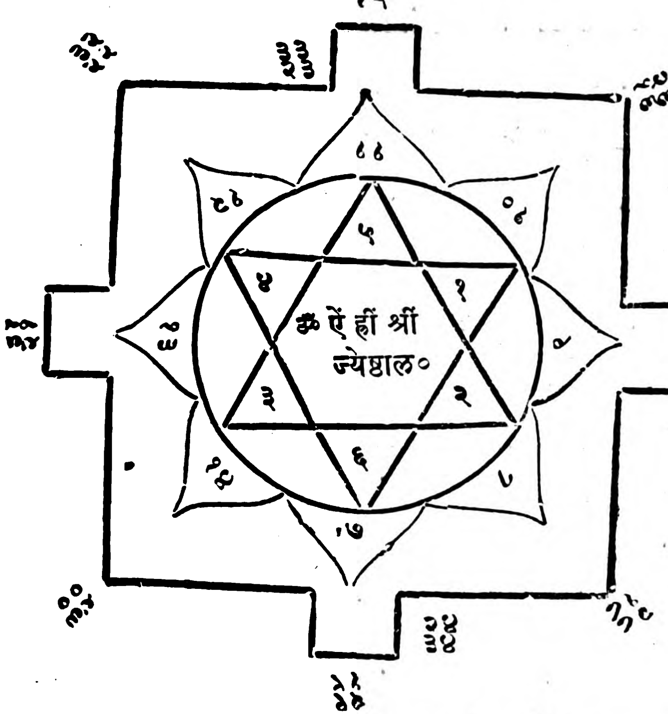
लक्ष्मीरूपं तु उकारे विष्णुमव्ययम् ॥ (ध्यायेदिति शेषः) मकारः पुरुषोऽव्यक्तो देवी प्रणव उच्यते ॥ ४ ॥ सूर्य्यकोटिप्रतीकाशं चन्द्रकोटिसमप्रभम् ॥ तन्मध्ये निकरं सूक्ष्मं ब्रह्मरूपं व्यवस्थितम् ॥ ५ ॥ ॐकारं परमानंदं सदैव सुखसुन्दरीम् ॥ सिद्धलक्ष्मि मोक्षलक्ष्मि आद्यलक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥ ६ ॥ सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ॥ शरण्ये त्र्यंबके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ प्रथमं त्र्यंबका गौरी द्वितीयं वैष्णवी तथा ॥ ७ ॥ तृतीयं कमला प्रोक्ता चतुर्थं सुन्दरी तथा ॥ पंचमं विष्णुशक्तिश्च षष्ठं कात्यायनी तथा ॥ ८ ॥ वाराही सप्तमं चैव ह्यष्टमं हरिवल्लभा ॥ नवमं खड्गिनी प्रोक्ता दशमं चैव देविका ॥ ९ ॥ एकादशं सिद्धलक्ष्मी द्वादशं हंसवाहिनी ॥ एतत्स्तोत्रवरं देव्या ये पठंति सदा नरः ॥ १० ॥ सर्वापद्भ्यो विमुच्यंते नात्र कार्या विचारणा ॥ एकमासं द्विमासं च त्रिमासं माश्चतुष्टयम् ॥ ११ ॥ पंचमासं च षण्मासं त्रिकालं यः सदा पठेत् ॥ ब्राह्मणः क्लेशितो दुःखी दारिद्र्यामयपीडितः ॥ १२ ॥ जन्मांतरसहस्त्रोत्थैर्मुच्यते सर्वकिल्बिषैः ॥ दरिद्रो लभते लक्ष्मीमपुत्रः पुत्रवान्भवेत् ॥ १३ ॥ धन्यो यशस्वी शत्रुघ्नो वह्निचौरभयेषु च ॥ शाकिनीभूतवेतालसर्पव्याघ्रनिपातने ॥ १४ ॥ राजद्वारे सभास्थाने कारागृहनिबंधने ॥ ईश्वरेण कृतं स्तोत्रं प्राणिनां हितकारकम् ॥ १५ ॥ स्तुवंतु ब्राह्मणा नित्यं दारिद्र्यं न च बाधते ॥ सर्वपापहरा लक्ष्मीः सर्वसिद्धिप्रदायिनी ॥ १६ ॥ इति श्रीब्रह्मपुराणे ईश्वरविष्णुसंवादे श्रीसिद्धलक्ष्मीमंत्रस्तोत्रविधानं समाप्तम् ॥

अथ ज्येष्ठालक्ष्मीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रमहोदधौ—ज्येष्ठालक्ष्मीमहामंत्रः प्राच्यत धनवृद्धिदः ॥ मंत्रो यथा—ऐं ह्रीं श्रीं ज्येष्ठालक्ष्मि स्वयंभुवे ह्रीं ज्येष्ठायै नमः ॥ इति सप्तदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम् । अस्य ज्येष्ठालक्ष्मीमंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । अष्टिश्छंदः । ज्येष्ठालक्ष्मीर्देवता ह्रीं बीजम् । श्रीं शक्तिः । ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि १ । अष्टिच्छंदसे नमो मुखे २ । ज्येष्ठालक्ष्मीदेवतायै नमः हृदि ३ । ह्रीं बीजाय नमः लिंगे ४ । श्रीं शक्तये नमः पादयोः ५ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६ ॥

इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ऐं ह्रीं श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ज्येष्ठालक्ष्मि तर्जनीभ्यां नमः २ । स्वयंभुव मध्यमाभ्यां नमः ३ । ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ज्येष्ठायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ऐं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः १ । ज्येष्ठालक्ष्मि शिरसे स्वाहा २ । स्वयंभुवे शिखायै वषट् ३ । ह्रीं कवचाय हुम् ४ । ज्येष्ठायै नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । नमः अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ॐ ऐं नमः शिरसि १ । ॐ ह्रीं नमो भ्रूमध्ये २ । ॐ श्रीं नमो मुखे ३ । ॐ ज्येष्ठालक्ष्म्यै नमः हृदि ४ । ॐ स्वयंभुवे नमः नाभौ ५ । ॐ ह्रीं नमः आधारे ६ । ॐ ज्येष्ठायै नमः जानुनि ७ । ॐ नमो नमः पादयोः ८ ॥ इति मंत्रवर्णन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् -ॐ उद्यद्भास्करसन्निभा स्मितमुखी रक्ताम्बरा लेपना सत्कुंभं धनभाजनं सृणिमथो पाशं करैर्बिभ्रती ॥ पद्मस्था कमलेक्षणा दृढकुचा सौंदर्य्यवारांनिधिर्ध्यातव्या सकलाभिलाषफलदा श्रीज्येष्ठलक्ष्मीरियम् ॥ १ ॥ इति ध्यायेत् ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति पीठदेवताः संपूज्य नवपीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तद्यथा–पूर्वाद्यष्टदिक्षु ॐ लोहिताक्ष्यै नमः १ । ॐ विरूपायै नमः २ । ॐ करात्यै नमः ३ । ॐ नीललोहितायै नमः ४ । ॐ समदायै नमः ५ । ॐ वारुण्यै नमः ६ । ॐ पुष्ट्यै नमः ७ । ॐ अमोघायै नमः ८ । मध्ये ॐ विश्वमोहिन्यै नमः ९ ॥ इति पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संप्रोञ्छ्य 'ॐ रक्तज्येष्ठायै विद्महे नीलज्येष्ठायै धीमहि।तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्॥' इति गायत्रीमंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादि पुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्य्यात्॥ तद्यथा-पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य--ॐ संविन्मये परे देवि परामृत रसप्रिये ॥ अनुज्ञां देहि ज्येष्ठायै परिवारार्चनाय मे ॥१॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादि

चतुर्षु दिक्षु मध्ये दिक्षु च । ऐं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ । इति सर्वत्र ॥ ज्येष्ठालक्ष्मि शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा०२ । स्वयंभुवे शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ३ । ह्रीं कवचाय हुम् । कवचश्रीपा० ४ । ज्येष्ठायै नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । नमः अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूल मुच्चार्य—अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततोऽष्टदलेषु पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ॐ ब्राह्म्यै नमः । ब्राह्मीश्रीपा० १ । ॐ माहेश्वर्य्यै नमः । माहेश्वरीश्रीपा० २ । ॐ कौमार्य्यै नमः । कौमारीश्रीपा० ३ । ॐ वैष्णव्यै नमः । वैष्णवीश्रीपा० ४ । ॐ वाराह्यै नमः । वाराहीश्रीपा० ५ । ॐ इन्द्राण्यै नमः । इन्द्राणीश्रीपा० ६ । ॐ चामुंडायै नमः । चामुंडाश्रीपा० ७ । ॐ महालक्ष्म्यै नमः । महालक्ष्मीश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ मातृः संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥२॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेणेन्द्रादिदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः । आज्याक्तमिश्रितपायसेन दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्य्यात् ॥ एवं कृते

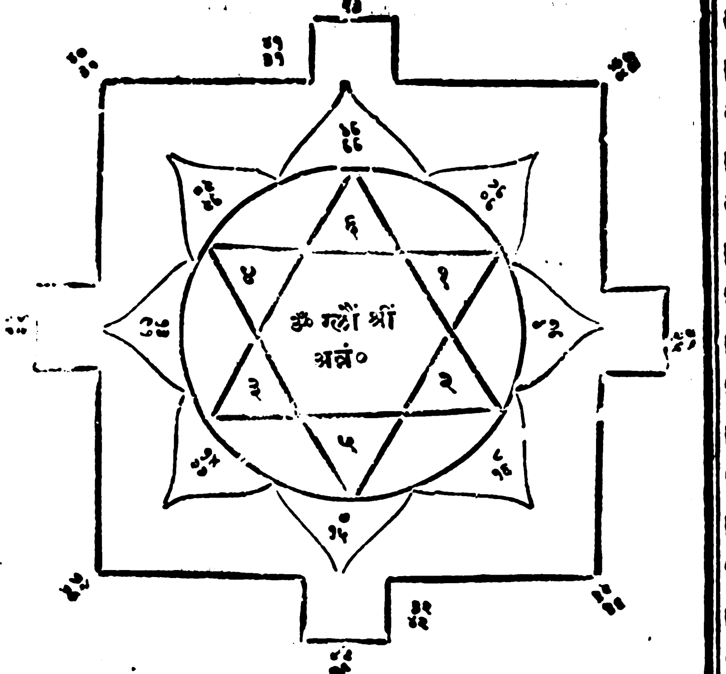
ज्येष्ठालक्ष्मीमन्त्रपूजनयन्त्रम् ।



मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च–लक्षं जपेत्पायसन जुहुयात्तद्दशांशतः ॥ आज्याक्तेन यजेत्पीठे वक्ष्यमाणे महाश्रियम् ॥ १ ॥ इत्थं जपादिभिः सिद्धो मनुर्दद्यादभीप्सितम् ॥ इति सप्तदशाक्षरज्येष्ठालक्ष्मीमंत्रप्रयोगः ॥ ॥ अथ वसुधालक्ष्मीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा-- 'ॐ ग्लौं श्रीं अन्नं मह्यन्नं मे देह्यन्नाधिपतये ममान्नं प्रदापय स्वाहा श्रीं ग्लौं ॐ ॥' इत्यष्टाविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्।अस्य वसुधासंज्ञकज्येष्ठालक्ष्मीमंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । निचृद्गायत्री च्छंदः।वसुधाश्री देवता।ग्लौं बीजम् । श्रीं शक्तिः । ममाभीष्टप्राप्त्यै जपे विनियोगः ॥ ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि १ । निचृद्गायत्रीच्छंदसे नमो मुखे २ । वसुधाश्रीदेवतायै नमो हृदि ३ । ग्लौं बीजाय नमो लिंगे ४ । श्रीं शक्तये नमः पादयोः ५ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ अन्नं महि ग्लां श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ अन्नं मे देहि ग्लीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ अन्नाधिपतये ग्लूं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ ममान्नं प्रदापय ग्लैं श्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ स्वाहा ग्लौं श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ अन्नं महि ग्लां श्रीं हृदयाय नमः १ । ॐ अन्नं मे देहि ग्लीं श्रीं शिरसे स्वाहा २ । ॐ अन्नाधिपतये ग्लूं श्रीं शिखायै वषट् ३ । ॐ ममान्नं प्रदापय ग्लैं श्रीं कवचाय हुम् ४ । ॐ स्वाहा ग्लौं श्रीं अस्त्राय फट् ५ ॥ इति पंचांगन्यासः ॥ इति न्यासं कृत्वा स्वर्णदीपे देवीं ध्यायेत् । अथ ध्यानम्--ॐ कल्पद्रुमाधो मणिवेदिकायां समास्थिते वस्त्रविभूषणाढ्ये ॥ भूमिश्रियौ वांछितवामदक्ष संचिंतये देवमुनीन्द्रवंद्ये ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपठिदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति संपूज्य नवपीठशक्तीः पूजयेत ॥ तद्यथा–पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु ॐ विमलायै नमः १ । ॐ उत्कर्षिण्यै नमः २ । ॐ ज्ञानायै नमः ३ । ॐ क्रियायै नमः ४ । ॐ योगायै नमः ५ । ॐ प्रह्वायै नमः ६ । ॐ सत्यायै नमः ७ । ॐ ईशानायै नमः ८ । मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ९ ॥ इति पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संप्रोञ्छ्य 'ॐ नमो भगवते विष्णवे सर्वभूतात्मसंयोगपद्मपीठात्मने नमः'इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं

दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्। तद्यथा—पुष्पांजलिमादाय। ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ॥ अनुज्ञां देहि वसुधे परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्॥इत्याज्ञां गृहीत्वा षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च। ॐ अन्नं महि ग्लां श्रीं हृदयाय नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १। इति सर्वत्र। ॐ अन्नं मे देहि ग्लीं श्रीं शिरसे स्वाहा। शिरःश्रीपा० २। ॐ अन्नाधिपतये ग्लूं श्रीं शिखायै वषट्। शिखाश्रीपा० ३। ॐ ममान्नं प्रदापय ग्लैं श्रीं कवचाय हुम्। कवचश्रीपा० ४। ॐ स्वाहा ग्लौं श्रीं अस्त्राय फट्। अस्त्रश्रीपा० ५। इति पंचांगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य्य—अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततः पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेणाष्टदलेषु चतुर्दिक्षु ॐ पृथिव्यै नमः। पृथिवी

वसुधालक्ष्मीपूजनयंत्रम्।



श्रीपा० १। ॐ अग्नये नमः। अग्निश्रीपा० २। ॐ जलाय नमः। जलश्रीपा० ३। ॐ मारुताय नमः। मारुतश्रीपा० ४। आग्नेय्यादिविदिक्षु च ॐ निवृत्त्यै नमः। निवृत्तिश्रीपा० ५। ॐ प्रतिष्ठायै नमः। प्रतिष्ठाश्रीपा० ६। ॐ विद्यायै नमः। विद्याश्रीपा० ७। ॐ शांत्यै नमः। शांतिश्रीपा० ८। इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततोऽष्टदलाग्रेषु

प्राचीक्रमेण ॐ बलाकायै नमः । बलाकाश्रीपा० १ । ॐ विमलायै नमः । विमलाश्रीपा० २ । ॐ कमलायै नमः । कमलाश्रीपा० ३ । ॐ वनमालायै नमः । वनमालाश्रीपा० ४ । ॐ विभीषायै नमः । विभीषाश्रीपा० ५ । ॐ मालिकायै नमः । मालिकाश्रीपा० ६ । ॐ शांकर्यै नमः । शांकरीश्रीपा० ७ । ॐ वसुमालिकायै नमः । वसुमालिकाश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ शक्तीः पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः । घृताक्तेन दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्य्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथाच—लक्षमेकं जपेन्मंत्रं तद्दशांशं घृताप्लुतैः ॥ अन्नैर्हुत्वा यजेत्पीठे वैष्णवे वसुधाश्रियौ ॥ १ ॥ इत्थं सपरिवारे यो धरालक्ष्म्यौ जपादिभिः ॥ आराधयेत्स लभते महतीमन्नसंपदम् ॥ २ ॥ आज्याक्तैश्च तिलैर्बिल्वसमिद्भिर्जुहुयाच्छ्रिये ॥ साज्येन पायसेनापि फलैः पत्रैश्च बिल्वजैः ॥३॥ जपतामुं महामंत्रं होमः कार्य्यो दिने दिने ॥ दशसंख्यैः कुबेरस्य मनुनेध्मैर्वटोद्भवैः ॥ ४ ॥ होमकाले कुबेरं तु चिंतयेदग्निमध्यगम् ॥ कुबेरध्यानं यथा—धनपूर्णं स्वर्णकुंभं तथा रत्नकरंडकम् ॥ ५ ॥ हस्ताभ्यां विभ्रतं खर्वकरपादं च तुंदिलम् ॥ वटाधस्ताद्रत्नपीठोपविष्टं सुस्मिताननम् ॥ एवं कृतहुतो मंत्री लक्ष्म्या जयति वित्तपम् ॥ ६ ॥ इति वसुधालक्ष्म्यष्टाविंशत्यक्षरमंत्रप्रयोगः ॥ अथ लक्ष्मीकवचप्रारंभः ॥ अथ वक्ष्ये महेशानि कवचं सर्वकामदम् ॥ यस्य विज्ञानमात्रेण भवेत्साक्षात्सदाशिवः ॥ १ ॥ नार्चनं तस्य देवेशि मंत्रमात्रं जपेन्नरः ॥ स भवेत्पार्वतीपुत्रः सर्वशास्त्रपुरस्कृतः ॥ २ ॥ विद्यार्थिनां सदा सेव्या धनदात्री विशेषतः ॥ धनार्थिभिः सदा सेव्या कमला विष्णुवल्लभा ॥ ३ ॥ ॐ अस्याश्चतुरक्षराविष्णुवनितायाः कवचस्य श्रीभगवान् शिव [illegible] देवता । वाग्भवं बीजम् । लज्जा शक्तिः । रमा कीलकम् । कामबीजात्मकं कवचम् । मम सुकवित्वपांडित्यसमृद्धि

१ [illegible] यथा-ॐ [illegible] स्वाहा ॥ २ इध्मैः समिद्भिः ॥

सिद्धये पाठे विनियोगः ॥ ऐंकारो मस्तके पातु वाग्भवा सर्वसिद्धिदा ॥ ह्रीं पातु चक्षुषोर्मध्ये चक्षुर्युग्मे च शांकरी ॥ ४ ॥ जिह्वायां मुखवृत्ते च कर्णयोर्दन्तयोर्नसि ॥ ओष्ठाधारे दंतपंक्तौ तालुमूले हनौ पुनः ॥ ५ ॥ पातु मां विष्णुवनिता लक्ष्मीः श्रीवर्णरूपिणी ॥ कर्णयुग्मे भुजद्वंद्वे स्तनद्वंद्वे च पार्वती ॥ ६ ॥ हृदये मणिबंधे च ग्रीवायां पार्श्वयोर्द्वयोः ॥ पृष्ठदेशे तथा गुह्ये वामे च दक्षिणे तथा ॥ ७ ॥ उपस्थे च नितंबे च नाभौ जंघाद्वये पुनः ॥ जानुचक्रे पदद्वंद्वे घुटिकेंऽगुलिमूलके ॥८॥ स्वधा तु प्राणशक्त्यां वा सीमन्यां मस्तके तथा ॥ सर्वांगे पातु कामेशी महादेवी समुन्नतिः ॥ ९ ॥ पुष्टिः पातु महामाया उत्कृष्टिः सर्वदाऽवतु ॥ ऋद्धिः पातु सदा देवी सर्वत्र शंभुवल्लभा ॥१०॥ वाग्भवा सर्वदा पातु पातु मां हरगेहिनी ॥ रमा पातु महादेवी पातु माया स्वराट् स्वयम् ॥ ११ ॥ सर्वांगे पातु मां लक्ष्मीर्विष्णुमाया सुरेश्वरी ॥ विजया पातु भवने जया पातु सदा मम ॥ १२ ॥ शिवदूती सदा पातु सुंदरी पातु सर्वदा ॥ भैरवी पातु सर्वत्र भेरुंडा सर्वदाऽवतु ॥ १३ ॥ त्वरिता पातु मां नित्यमुग्रतारा सदाऽवतु ॥ पातु मां कालिका नित्यं कालरात्रिः सदाऽवतु ॥ १४ ॥ नवदुर्गाः सदा पांतु कामाख्या सर्वदाऽवतु ॥ योगिन्यः सर्वदा पांतु मुद्राः पांतु सदा मम ॥ १५ ॥ मात्राः पांतु सदा देव्यश्चक्रस्था योगिनीगणाः ॥ सर्वत्र सर्वकार्येषु सर्वकर्मसु सर्वदा ॥ १६ ॥ पातु मां देवदेवी च लक्ष्मीः सर्वसमृद्धिदा ॥ इति ते कथितं दिव्यं कवचं सर्वसिद्धये ॥ १७ ॥ यत्र तत्र न वक्तव्यं यदीच्छेदात्मनो हितम् ॥ शठाय भक्तिहीनाय निंदकाय महेश्वरि ॥ १८ ॥ न्यूनांगे ह्यतिरिक्तांगे दर्शयेन्न कदाचन ॥ न स्तवं दर्शयेद्दिव्यं दर्शनाच्छिवहा भवेत् ॥ १९ ॥ कुलीनाय महेशाय दुर्गाभक्तिपराय च ॥ वैष्णवाय विशुद्धाय दद्यात्कवचमुत्तमम् ॥ २० ॥ निजशिष्याय शांताय धनिने कुलिने तथा ॥ दद्यात्कवचमित्युक्तं सर्वतंत्रसमन्वितम् ॥ २१ ॥ शनौ मंगलवारे च रक्तचंदनकैस्तथा ॥ यावकेन लिखेन्मंत्रं सर्वचक्रसमन्वितम् ॥ २२ ॥ विलिखेत्कवचं दिव्यं स्वयंभूकुसुमैः शुभैः ॥ स्वशुक्रैः परशुक्रैश्च नानागंधसमन्वितैः ॥ २३ ॥ गोरोचनाकुंकुमेन रक्तचंदनकेन वा ॥ सुतिथौ शुभयोगे वा श्रवणायां रवेर्दिने ॥ २४ ॥ अश्विन्यां कृत्तिकायां वा फाल्गुन्यां वा मघासु च ॥ पूर्वाभाद्रपदायोगे स्वात्यां मंगलवासरे ॥ २५ ॥

विलिखेत्प्रपठेत्स्तोत्रं शुभयोगे सुरालये ॥ आयुष्मत्प्रीतियोगे च ब्रह्मयोगे विशेषतः ॥ २६ ॥ इन्द्रयोगे शुभे योगे शुक्लयोगे तथैव च ॥ कौलवे बालवे चैव वणिजे चैव सत्तमः ॥ २७ ॥ शून्यागारे श्मशाने वा विजने च विशेषतः ॥ कुमारीं पूजयित्वा च यजेद्देवीं सनातनीम् ॥ २८ ॥ मत्स्यैर्मांसैः शाकमूलैः पूजयेत्परदेवताम् ॥ घृताद्यैः सोमकरणैः पुष्पधूपैर्विशेषतः ॥ २९ ॥ ब्राह्मणान्भोजयित्वा च पूजयेत्परमेश्वरीम् ॥ आखेटकमुपाख्यानं तत्र कुर्याद्दिनत्रयम् ॥ ३० ॥ तदा कुर्यान्महारक्षां शंकरेण प्रभाषिताम् ॥ मारणद्वेषणादीनि लभते नात्र संशयः ॥ स भवेत्पार्वतीपुत्रः सर्वशास्त्रपुरस्कृतः ॥ ३१ ॥ गुरुर्देवो हरः साक्षात्पत्नी तस्य हरप्रिया ॥ अभेदेन यजेद्यस्तु तस्य सिद्धिरदूरतः ॥ ३२ ॥ पठति य इह मर्त्यो नित्यमार्द्रांतरात्मा जपफलमनुमेयं लक्ष्यते सद्विशेषम् ॥ स भवति पदमुच्चैः संपदां पादनम्रक्षितिपमुकुटलक्ष्मीलक्षणानां चिराय ॥ ३३ ॥ इति विश्वसारतंत्रे लक्ष्मीकवचं समाप्तम् ॥ अथ लक्ष्मीस्तोत्रप्रारंभः ॥ त्रैलोक्यपूजिते देवि कमले विष्णुवल्लभे ॥ यथा त्वमचला कृष्णे तथा भव मयि स्थिरा ॥ १ ॥ कमला चंचला लक्ष्मीश्चला भूतिर्हरिप्रिया ॥ पद्मा पद्मालया सम्यगुच्चैः श्रीपद्मधारिणी ॥ २ ॥ द्वादशैतानि नामानि लक्ष्मीं संपूज्य यः पठेत् ॥ स्थिरा लक्ष्मीर्भवेत्तस्य पुत्रदारादिभिः सह ॥ ३ ॥ इति विश्वसारतंत्रे लक्ष्मीस्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ अथ कमलाया अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रप्रारंभः ॥ श्रीशिव उवाच ॥ शतमष्टोत्तरं नाम्नां कमलाया वरानने ॥ प्रवक्ष्याम्यतिगुह्यं हि न कदापि प्रकाशयेत् ॥ १ ॥ महामाया महालक्ष्मीर्महावाणी महेश्वरी ॥ महादेवी महारात्रिर्महिषासुरमर्दिनी ॥ २ ॥ कालरात्रिः कुहूः पूर्णा नन्दाऽऽद्या भद्रिका निशा ॥ जया रिक्ता महाशक्तिर्देवमाता कृशोदरी ॥ ३ ॥ शचीन्द्राणी शक्रनुता शङ्करप्रियवल्लभा ॥ महावराहजननी मदनोन्मथिनी मही ॥ ४ ॥ वैकुण्ठनाथरमणी विष्णुवक्षःस्थलस्थिता ॥ विश्वेश्वरी विश्वमाता वरदाऽभयदा शिवा ॥ ५ ॥ शूलिनी चक्रिणी मा च पाशिनी शंखधारिणी ॥ गदिनी मुंडमाला च कमला करुणालया ॥ ६ ॥ पद्माक्षधारिणी ह्यम्बा महाविष्णुप्रियङ्करी ॥ गोलोकनाथरमणी गोलोकेश्वरपूजिता ॥ ७ ॥ गया गङ्गा च यमुना गोमती गरुडासना ॥ गण्डकी सरयूस्तापी रेवा

चैव पयस्विनी ॥ ८ ॥ नर्मदा चैव कावेरी केदारस्थलवासिनी ॥ किशोरी केशवनुता महेन्द्रपरिवन्दिता ॥ ९ ॥ ब्रह्मादिदेवनिर्माण
कारिणी देवपूजिता ॥ कोटिब्रह्माण्डमध्यस्था कोटिब्रह्माण्डकारिणी ॥ १० ॥ श्रुतिरूपा श्रुतिकरी श्रुतिस्मृतिपरायणा ॥ इन्दिरा
सिंधुतनया मातंगी लोकमातृका ॥ ११ ॥ त्रिलोकजननी तंत्रा तंत्रमंत्रस्वरूपिणी ॥ तरुणी च तमोहंत्री मंगला मंगलायना ॥ १२ ॥
मधुकैटभमथिनी शुम्भासुरविनाशिनी ॥ निशुम्भादिहरा माता हरिशङ्करपूजिता ॥ १३ ॥ सर्वदेवमयी सर्वा शरणागतपालिनी ॥
शरण्या शम्भुवनिता सिंधुतीरनिवासिनी ॥ १४ ॥ गंधर्वगानरसिका गीता गोविन्दवल्लभा ॥ त्रैलोक्यपालिनी तत्त्वरूपा तारुण्यपूरिता
॥ १५ ॥ चन्द्रावली चन्द्रमुखी चन्द्रिका चन्द्रपूजिता ॥ चन्द्रा शशाङ्कभगिनी गीतवाद्यपरायणा ॥ १६ ॥ सृष्टिरूपा सृष्टिकरी
सृष्टिसंहारकारिणी ॥ इति ते कथितं देवि रमानामशताष्टकम् ॥ १७ ॥ त्रिसंध्यं प्रयतो भूत्वा पठेदेतत्समाहितः ॥ यं यं कामयते
कामं तं तं प्राप्नोत्यसंशयम् ॥ १८ ॥ इमं स्तवं यः पठतीह मर्त्यो वैकुण्ठपत्न्याः परमादरेण ॥ धनाधिपाद्यैः परिवन्दितः स्यात् प्रया
स्यति श्रीपदमंतकाले ॥ १९ ॥ इति कमलाया अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥ अथ लक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्रप्रारंभः ॥ ॐ तामाह्व
यामि सुभगां लक्ष्मीं त्रैलोक्यपूजिताम् ॥ एह्येहि देवि पद्माक्षि पद्माकरकृतालये ॥ १ ॥ आगच्छागच्छ वरदे पश्य मां स्वेन चक्षुषा ॥
आयाह्यायाहि धर्मार्थकाममोक्षमये शुभे ॥ २ ॥ एवंविधैः स्तुतिपदैः सत्यैः सत्यार्थसंस्तुता ॥ कनीयसी महाभागा चन्द्रेण परमा
त्मना ॥ ३ ॥ निशाकरश्च सा देवी भ्रातरौ द्वौ पयोनिधेः ॥ उत्पन्नमात्रौ तवास्तां शिवकेशवसंश्रितौ ॥ ४ ॥ सनत्कुमारस्तमृषिं
समाभाष्य पुरातनम् ॥ प्रोक्तवानितिहासं तु लक्ष्म्याः स्तोत्रमनुत्तमम् ॥ ५ ॥ अथेदशान्महाघोराद्दारिद्र्यान्नरकात्कथम् ॥ मुक्ति
र्भवति लोकेऽस्मिन् दारिद्र्यं याति भस्मताम् ॥ ६ ॥ सनत्कुमार उवाच ॥ पूर्वं कृतयुगे ब्रह्मा भगवान् सर्वलोककृत् ॥ सृष्टिं नानाविधां
कृत्वा पश्चाच्चिंतामुपेयिवान् ॥ ७ ॥ किमाहाराः प्रजास्त्वेताः सम्भविष्यंति भूतले ॥ तथैव चासां दारिद्र्यात्कथमुत्तरणं भवेत् ॥ ८ ॥
दारिद्र्यान्मरणं श्रेयस्त्विति संचिन्त्य चेतसि ॥ क्षीरोदस्योत्तरे कूले जगाम कमलोद्भवः ॥ ९ ॥ तत्र तीव्रं तपस्तप्त्वा कदाचित्परमेश्व

रम् ॥ ददर्श पुण्डरीकाक्षं वासुदेवं जगद्गुरुम् ॥ १० ॥ सर्वज्ञं सर्वशक्तीनां सर्वावासं सनातनम् ॥ सर्वेश्वरं वासुदेवं विष्णुं लक्ष्मीपतिं प्रभुम् ॥ ११ ॥ सोमकोटिप्रतीकाशं क्षीरोदाविमले जले ॥ अनंतभोगशयनं विश्रांतं श्रीनिकेतनम् ॥ १२ ॥ कोटिसूर्य्यप्रतीकाशं महायोगेश्वरेश्वरम् ॥ योगनिद्रारतं श्रीशं सर्वावासं सुरेश्वरम् ॥ १३ ॥ जगदुत्पत्तिसंहारस्थितिकारणकारणम् ॥ लक्ष्म्यादिशक्तिकरणं जातमण्डलमंडितम् ॥ १४ ॥ आयुधैर्देहवद्भिश्च चक्राद्यैः परिवारितम् ॥ दुर्निरीक्ष्यं सुरै । सिद्धैर्महायोनिशतैरपि ॥ १५ ॥ आधारं सर्वशक्तीनां परं तेजः सुदुस्सहम् ॥ प्रबुद्धं देवमीशानं दृष्ट्वा कमलसम्भवः ॥ १६ ॥ शिरस्यंजलिमाधाय स्तोत्रं पूर्वमुवाच ह ॥ मनोवांछितसिद्धिं त्वं पूरयस्व महेश्वर ॥ १७ ॥ जितं ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन ॥ नमस्तेऽस्तु हृषीकेश महापुरुषपूर्वज ॥ १८ ॥ सर्वेश्वर जयानन्द सर्वावास परात्पर ॥ प्रसीद मम भक्तस्य छिंधि सन्देहजं तमः ॥ १९ ॥ एवं स्तुतः स भगवान् ब्रह्मणाऽव्यक्तजन्मना ॥ प्रसादाभिमुखः प्राह हरिर्विश्रांतलोचनः ॥ २० ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ हिरण्यगर्भ तुष्टोऽस्मि ब्रूहि यत्तेऽभिवांछितम् ॥ तद्वक्ष्यामि न सन्देहो भक्तोऽसि मम सुव्रत ॥ २१ ॥ केशवाद्वचनं श्रुत्वा करुणाविष्टचेतनः ॥ प्रत्युवाच महाबुद्धिर्भगवंतं जनार्द्दनम् ॥ २२ ॥ चतुर्विधं भवस्यास्य भूतसर्गस्य केशव ॥ परित्राणाय मे ब्रूहि रहस्यं परमाद्भुतम् ॥ २३ ॥ दारिद्र्यशमनं धन्यं मनोज्ञं पावनं परम् ॥ सर्वेश्वर महाबुद्धे स्वरूपं भैरवं महत् ॥ २४ ॥ श्रियः सर्वातिशायिन्यास्तथा ज्ञानं च शाश्वतम् ॥ नामानि चैव मुख्यानि यानि गौणानि चाच्युत ॥ २५ ॥ त्वद्वक्त्रकमलोत्थानि श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ॥ इति तस्य वचः श्रुत्वा प्रतिवाक्यमुवाच सः ॥ २६ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ महाविभूतिसंयुक्ता षाड्गुण्यवपुषः प्रभोः ॥ भगवद्वासुदेवस्य नित्यं चैषाऽनपायिनी ॥ २७ ॥ एकैव वर्त्ततेऽभिन्ना ज्योत्स्नेव हिमदीधितेः ॥ सर्वशक्त्यात्मिका चैव विश्वं व्याप्य व्यवस्थिता ॥ २८ ॥ सर्वैश्वर्यगुणोपेता नित्यशुद्धस्वरूपिणी ॥ प्राणशक्तिः परा ह्येषा सर्वेषां प्राणिनां भुवि ॥ २९ ॥ शक्तीनां चैव सर्वासां योनिभूता परा कला ॥ अहं तस्याः परं नाम्नां [illegible]मम ॥ ३० ॥ शृणुष्वावहितो भूत्वा परमैश्वर्य्यभूतिदम् ॥ देव्याख्यास्मृतिमात्रेण दारिद्र्यं याति भस्मताम् ॥ ३१ ॥

श्रीः पद्मा प्रकृतिः सत्वा शांता चिच्छक्तिरव्यया ॥ केवला निष्कला शुद्धा व्यापिनी व्योमविग्रहा ॥ ३२ ॥ व्योमपद्मकृताधारा परा व्योम्नि मतोद्भवा ॥ निर्व्योमा व्योममध्यस्था पञ्चव्योमपदाश्रिता ॥ ३३ ॥ अच्युता व्योमनिलया परमानन्दरूपिणी ॥ नित्यशुद्धा नित्यतृप्ता निर्विकारा निरीक्षणा ॥ ३४ ॥ ज्ञानशक्तिः कर्तृशक्तिर्भोक्तृशक्तिः शिखावहा ॥ स्नेहाभासा निरानन्दा विभूतिर्विमलाचला ॥ ३५ ॥ अनंता वैष्णवी व्यक्ता विश्वानन्दा विकाशिनी ॥ शक्तिर्विभिन्नसर्वार्तिः समुद्रपरितोषिणी ॥ ३६ ॥ मूर्तिः सनातनी हार्दी निस्तरङ्गा निरामया ॥ ज्ञानज्ञेया ज्ञानगम्या ज्ञानज्ञेयविकासिनी ॥ ३७ ॥ स्वच्छन्दशक्तिर्गहना निष्कंपाऽर्चिः सुनिर्मला ॥ स्वरूपा सर्वगाऽपारा बृंहिणी सुगुणोर्जिता ॥ ३८ ॥ अकलङ्का निराधारा निस्सङ्कल्पा निराश्रया ॥ असङ्कीर्णा सुशांता च शाश्वती भासुरी स्थिरा ॥ ३९ ॥ अनौपम्या निर्विकल्पा निर्यंत्रा यंत्रवाहिनी ॥ अभेद्या भेदिनी भिन्ना भारती वैखरी खगा ॥ ४० ॥ अग्राह्या ग्राहिका गूढा गम्भीरा विश्वगोपिनी ॥ अनिर्देश्याऽप्रतिहता निर्बीजा पावनी परा ॥ ४१ ॥ अप्रतर्क्याऽपरिमिता भवभ्रांतिविनाशिनी ॥ एका द्विरूपा त्रिविधा असंख्याता सुरेश्वरी ॥ ४२ ॥ सुप्रतिष्ठा महाधात्री स्थितिर्वृद्धिर्ध्रुवा गतिः ॥ ईश्वरी महिमा ऋद्धिः प्रमोदा उज्ज्वलोद्यमा ॥ ४३ ॥ अक्षया वर्द्धमाना च सुप्रकाशा विहङ्गमा ॥ नीरजा जननी नित्या जया रोचिष्मती शुभा ॥ ४४ ॥ तपोनुदा च ज्वाला च सुदीप्तिश्चांशुमालिनी ॥ अप्रमेया त्रिधा सूक्ष्मा परा निर्माणदायिनी ॥ ४५ ॥ अवदाता सुशुद्धा च अमोघाख्या परंपरा ॥ संधानकी शुद्धविद्या सर्वभूतमहेश्वरी ॥ ४६ ॥ लक्ष्मीस्तुष्टिर्महाधीरा शांतिरापूरणेन वा ॥ अनुग्रहाशक्तिराद्या जगज्ज्येष्ठा जगद्विधिः ॥ ४७ ॥ सत्या प्रह्वा क्रियायोग्या ह्यपर्णाह्लादिनी शिवा ॥ सम्पूर्णाह्लादिनी शुद्धा ज्योतिष्मत्यमतावहा ॥ ४८ ॥ रजोवत्यर्कप्रतिभाऽऽकर्षिणी कर्षिणी रसा ॥ परा वसुमती देवी कांतिः शांतिर्मतिः कला ॥ ४९ ॥ कला कलंकरहिता विशालोद्दीपनी रतिः ॥ सम्बोधिनी हारिणी च प्रभावा भवभूतिदा ॥ ५० ॥ अमृतस्यंदिनी जीवा जननी खण्डिका स्थिरा ॥ धूमा कलावती पूर्णा भासुरा सुमती रसा ॥ ५१ ॥ शुद्धा ध्वनिः सृतिः सृष्टिर्विकृतिः कृष्टिरेव च ॥ प्रापणी प्राणदा प्रह्वा विश्वा पाण्डुर

वासिनी ॥ ५२ ॥ अवनिर्वज्रनालिका चित्रा ब्रह्माण्डवासिनी ॥ अनंतरूपाऽनंतात्माऽनंतस्थाऽनंतसम्भवा ॥ ५३ ॥ महाशक्तिः प्राणशक्तिः प्राणदात्री रतिम्भरा ॥ महासमूहा निखिला इच्छाधारा सुखावहा ॥ ५४ ॥ प्रत्यक्षलक्ष्मीर्निष्कम्पा प्ररोहाबुद्धिगोचरा ॥ नानादेहा महावर्ता बहुदेहविकासिनी ॥ ५५ ॥ सहस्राणी प्रधाना च न्यायवस्तुप्रकाशिका ॥ सर्वाभिलाषपूर्णेच्छा सर्वा सर्वार्थभाषिणी ॥ ५६ ॥ नानास्वरूपचिद्धात्री शब्दपूर्वा पुरातना ॥ व्यक्ताऽव्यक्ता जविकेशा सर्वेच्छापरिपूरिता ॥ ५७ ॥ सङ्कल्पसिद्धा सांख्येया तत्त्वगर्भा धरावहा ॥ भूतरूपा चित्स्वरूपा त्रिगुणा गुणगर्विता ॥ ५८ ॥ प्रजापतीश्वरी रौद्री सर्वाधारा सुखावहा ॥ कल्याणवाहिका कल्या कलिकल्मषनाशिनी ॥ ५९ ॥ नीरूपोद्भिन्नसंताना सुयंत्रा त्रिगुणालया ॥ महामाया योगमाया महायोगेश्वरी प्रिया ॥ ६० ॥ महाश्री विमला कीर्तिर्जया लक्ष्मीर्निरञ्जना ॥ प्रकृतिर्भगवन्माया शक्तिर्निद्रा यशस्करी ॥ ६१ ॥ चिंता बुद्धिर्यशः प्रज्ञा शांतिराप्तातिवर्द्धिनी ॥ प्रद्युम्नमाता साध्वी च सुखसौभाग्यसिद्धिदा ॥ ६२ ॥ काष्ठा निष्ठा प्रतिष्ठा च ज्येष्ठा श्रेष्ठा जयावहा ॥ सर्वातिशायिनी प्रीतिर्विश्वशक्तिर्महाबला ॥ ६३ ॥ वरिष्ठा विजया वीरा जयंती विजयप्रदा ॥ हृद्गृहा गोपिनी गुह्या गणगंधर्वसेविता ॥ ६४ ॥ योगीश्वरी योगमाया योगिनी योगसिद्धिदा ॥ महायोगेश्वरवृता योगा योगेश्वरप्रिया ॥ ६५ ॥ ब्रह्मेन्द्ररुद्रनमिता सुरासुरवरप्रदा ॥ त्रिवर्त्मगा त्रिलोकस्था त्रिविक्रमपदोद्भवा ॥ ६६ ॥ सुतारा तारिणी तारा दुर्गा संतारिणी परा ॥ सुतारिणी तारयंती भूरितारेश्वरप्रभा ॥ ६७ ॥ गुह्यविद्या यज्ञविद्या महाविद्या सुशोभिता ॥ अध्यात्मविद्या विघ्नेशी पद्मस्था परमेष्ठिनी ॥ ॥ ६८ ॥ आन्वीक्षिकी त्रयी वार्त्ता दण्डनीतिर्नयात्मिका ॥ गौरी वागीश्वरी गोप्त्री गायत्री कमलोद्भवा ॥ ६९ ॥ विश्वम्भरा विश्वरूपा विश्वमाता वसुप्रदा ॥ सिद्धिः स्वाहा स्वधा स्वस्ति सुधा सर्वार्थसाधिनी ॥ ७० ॥ इच्छा सृष्टिर्द्युतिर्भूतिः कीर्तिः श्रद्धा [illegible] मतिः ॥ श्रुतिर्मेधा धृतिर्ह्रीः श्रीर्विद्या विबुधवन्दिता ॥ ७१ ॥ अनसूया घृणा नीतिर्निर्वृतिः कामधुक्करा ॥ प्रतिज्ञा संततिर्भूतिर्द्यौः [illegible] विश्वमानिनी ॥ ७२ ॥ स्मृतिर्वाग्विश्वजननी पश्यंती मध्यमा समा ॥ संध्या मेधा प्रभा भीमा सर्वाकारा सरस्वती ॥ ७३ ॥

[illegible] माया महामाया मोहिनी माधवप्रिया ॥ सौम्याभोगा महाभोगा भोगिनी भोगदायिनी ॥ ७४ ॥ सुधौतकनकप्रख्या सुवर्णकम
[illegible]सना ॥ हिरण्यगर्भा सुश्रोणी हारिणी रमणी रमा ॥ ७५ ॥ चन्द्रा हिरण्मयी ज्योत्स्ना रम्या शोभा शुभावहा ॥ त्रैलोक्यमण्डना
नारी नरेश्वरवरार्चिता ॥ ७६ ॥ त्रैलोक्यसुंदरी रामा महाविभववाहिनी ॥ पद्मस्था पद्मनिलया पद्ममालाविभूषिता ॥ ७७ ॥ पद्म
युग्मधरा कांता दिव्याभरणभूषिता ॥ विचित्ररत्नमुकुटा विचित्राम्बरभूषणा ॥ ७८ ॥ विचित्रमाल्यगंधाढ्या विचित्रायुधवाहना ॥
महानारायणी देवी वैष्णवी वीरवंदिता ॥ ७९ ॥ कालसंकर्षिणी घोरा तत्त्वसंकर्षिणी कला ॥ जगत्सम्पूरणी विश्वा महाविभवभूषणा ॥
॥ ८० ॥ वारुणी वरदा व्याख्या घण्टाकर्णविराजिता ॥ नृसिंही भैरवी ब्राह्मी भास्करी व्योमचारिणी ॥ ८१ ॥ ऐन्द्री कामधनुः
सृष्टिः कामयोनिर्महाप्रभा ॥ दृष्टा काम्या विश्वशक्तिर्बीजगत्यात्मदर्शना ॥ ८२ ॥ गरुडारूढहृदया चान्द्री श्रीर्मधुरानना ॥ महोग्र
रूपा वाराही नारसिंही हतासुरा ॥ ८३ ॥ युगांतहुतभुग्ज्वाला कराला पिंगला कला ॥ त्रैलोक्यभूषणा भीमा श्यामा त्रैलोक्य
मोहिनी ॥ ८४ ॥ महोत्कटा महारक्ता महाचण्डा महासना ॥ शंखिनी लेखिनी स्वस्था लिखिता खेचरेश्वरी ॥ ८५ ॥ भद्रकाली
चैकवीरा कौमारी भवमालिनी ॥ कल्याणी कामधुग्ज्वालामुखी चोत्पलमालिका ॥ ८६ ॥ बालिका धनदा सूर्या हृदयो
त्पलमालिका ॥ अजिता वर्षिणी रीतिर्भरुण्डा गरुडासना ॥ ८७ ॥ वैश्वानरी महामाया महाकाली विभीषणा ॥ महा
मंदारविभवा शिवानन्दा रतिप्रिया ॥ ८८ ॥ उद्रीतिः पद्ममाला च धर्मवेगा विभावनी ॥ सत्क्रिया देवसेना च हिरण्यरज
ताश्रया ॥ ८९ ॥ सहसावर्तमाना च हस्तिवादप्रबोधिनी ॥ हिरण्यपद्मवर्णा च हरिभद्रा सुदुर्द्धरा ॥ ९० ॥ सूर्या हिरण्य
प्रकटसदृशी हेममालिनी ॥ पद्मानना नित्यपुष्टा देवमाताऽमृतोद्भवा ॥ ९१ ॥ महाधना च या शृङ्गी कार्दमी कम्बुकंधरा ॥ आदित्य
वर्णा चन्द्राभा गंधद्वारा दुरासदा ॥ ९२ ॥ वरार्चिता वरारोहा वरेण्या विष्णुवल्लभा ॥ कल्याणी वरदा वामा वामेशी विन्ध्यवासिनी
॥ ९३ ॥ योगनिद्रा योगरता देवकी कामरूपिणी ॥ कंसविद्राविणी दुर्गा कौमारी कौशिकी क्षमा ॥ ९४ ॥

कात्यायनी कालरात्रिर्निशितृप्ता सुदुर्जया ॥ विरूपाक्षी विशालाक्षी भक्तानां परिरक्षिणी ॥ ९५ ॥ बहुरूपा स्वरूपा च विरूपा रूपवर्जिता ॥ घण्टानिनादबहुला जीमूतध्वनिनिःस्वना ॥ ९६ ॥ महादेवेन्द्रमथिनी भ्रुकुटीकुटिलानना ॥ सत्योपयाचिता चका कौबेरी ब्रह्मचारिणी ॥ ९७ ॥ आर्या यशोदासुतदा धर्मकामार्थमोक्षदा ॥ दारिद्र्यदुःखशमनी घोरदुर्गार्तिनाशिनी ॥ ९८ ॥ भक्तार्तिशमनी भव्या भवभर्गापहारिणी ॥ क्षीराब्धितनया पद्मा कमला धरणीधरा ॥ ९९ ॥ रुक्मिणी रोहिणी सीता सत्यभामा यशस्विनी ॥ प्रज्ञाधाराऽमितप्रज्ञा वेदमाता यशोवती ॥ १०० ॥ समाधिर्भावना मैत्री करुणा भक्तवत्सला ॥ अंतर्वेदी दक्षिणा च ब्रह्मचर्य्यपरा गतिः ॥ ॥ १०१ ॥ दीक्षा वीक्षा परीक्षा च समीक्षा वीरवत्सला ॥ अम्बिका सुरभिः सिद्धा सिद्धविद्याधरार्चिता ॥ १०२ ॥ सुदीप्ता लोलिहाना च कराला विश्वपूरका ॥ विश्वसंहारिणी दीप्तिस्तापनी ताण्डवप्रिया ॥ १०३ ॥ उद्भवा विरजा राज्ञी तापनी बिन्दुमालिनी ॥ क्षीरधारासुप्रभावा लोकमाता सुवर्चसा ॥ १०४ ॥ हव्यगर्भा चाज्यगर्भा जुह्वतो यज्ञसम्भवा ॥ आप्यायनी पावनी च दहनी दहनाश्रया ॥ १०५ ॥ मातृका माधवी मुच्या मोक्षलक्ष्मीर्महर्द्धिदा ॥ सर्वकामप्रदा भद्रा सुभद्रा सर्वमंगला ॥ १०६ ॥ श्वेता सुशुक्लवसना शुक्लमाल्यानुलेपना ॥ हंसा हीनकरी हंसी हृद्या हृत्कमलालया ॥ १०७ ॥ सितातपत्रा सुश्रोणी पद्मपत्रायतेक्षणा ॥ सावित्री सत्यसङ्कल्पा कामदा कामकामिनी ॥ १०८ ॥ दर्शनीया दृशा दृश्या स्पृश्या सेव्या वराङ्गना ॥ भोगप्रिया भोगवती भोगीन्द्रशयनासना ॥ १०९ ॥ आर्द्रा पुष्करिणी पुण्या पावनी पापसूदनी ॥ श्रीमती च शुभाकारा परमैश्वर्यभूतिदा ॥ ११० ॥ अचिंत्यानंतविभवा भवभावविभावनी ॥ निश्रेणिः सर्वदेहस्था सर्वभूतनमस्कृता ॥ १११ ॥ बला बलाधिका देवी गौतमी गोकुलालया ॥ तोषिणी पूर्णचन्द्राभा एकानन्दा शतानना ॥ ११२ ॥ उद्याननगरद्वारहर्म्योपवनवासिनी ॥ कूष्माण्डी दारुणा चण्डा किराती नन्दनालया ॥ ११३ ॥ कालायना कालगम्या भयदा भयनाशिनी ॥ सौदामिनी मेघरवा दैत्यदानवमर्दिनी ॥ ११४ ॥ जगन्माताभयकरी भूतधात्री सुदुर्लभा ॥ काश्यपी शुभदाना च वनमाला शुभा वरा ॥ ११५ ॥ धन्या धन्ये

धन्या रत्नदा वसुवर्द्धिनी ॥ गांधर्वी रेवती गङ्गा शकुनी विमलानना ॥ ११६ ॥ इडा शांतिकरी चैव तामसी कमलालया ॥
आज्यपा वज्रकौमारी सोमपा कुसुमाश्रया ॥११७॥ जगत्प्रिया च सरथा दुर्जया खगवाहना ॥ मनोभवा कामचारा सिद्धचारणसेविता
॥ ११८ ॥ व्योमलक्ष्मीर्महालक्ष्मीस्तेजोलक्ष्मीः सुजाज्वला ॥ रसलक्ष्मीर्जगद्योनिर्गंधलक्ष्मीर्वनाश्रया ॥ ११९ ॥ श्रवणा श्रावणा
नेत्रा रसनाप्राणचारिणी ॥ विरिञ्चिमाता विभवा वरवारिजवाहना ॥ १२० ॥ वीर्य्या वीरेश्वरी वंद्या विशोका वसुवर्द्धिनी ॥ अनाहता
कुण्डलिनी नलिनी वनवासिनी ॥ १२१ ॥ गांधारिणीन्द्रनमिता सुरेन्द्रनमिता सती ॥ सर्वमंगलमांगल्या सर्वकामसमृद्धिदा ॥ १२२ ॥
सर्वानन्दा महानन्दा सत्कीर्तिः सिद्धसेविता ॥ सिनीवाली कुहू राका अमा चानुमतिर्द्युतिः ॥ १२३ ॥ अरुंधती वसुमती भार्गवी वास्तु
देवता ॥ मयूरी वज्रवेताली वज्रहस्ता वरानना ॥ १२४ ॥ अनघा धरणिर्धीरा धमनी मणिभूषणा ॥ राजश्रीरूपसहिता ब्रह्मश्री
र्ब्रह्मवन्दिता ॥ १२५ ॥ जयश्रीर्जयदा ज्ञेया सर्गश्रीः स्वर्गतिः सताम् ॥ सुपुष्पा पुष्पनिलया फलश्रीर्निष्कलप्रिया ॥ १२६ ॥ धनु
र्लक्ष्मीस्त्वमिलिता परक्रोधनिवारिणी ॥ कद्रूर्द्धनायुः कपिला सुरसा सुरमोहिनी ॥ १२७ ॥ महाश्वेता महानीला महामूर्तिर्विषापहा ॥
सुप्रभा ज्वालिनी दीप्तिस्तृप्तिर्व्याभिप्रभाकरी ॥१२८॥ तेजोवती पद्मबोधा मदलेखारुणावती ॥ रत्ना रत्नावली भूता शतधामा शतापहा॥
॥ १२९ ॥ त्रिगुणा घोषिणी रक्ष्या नर्दिनी घोषवर्जिता ॥ साध्याऽदितिर्दितिर्देवी मृगवाहा मृगांकगा ॥ १३० ॥ चित्रनीलोत्पल
गता वृषरत्नाकराश्रया ॥ हिरण्यरजतद्वन्द्वा शंखभद्रासनस्थिता ॥ १३१ ॥ गोमूत्रगोमयक्षीरदधिसर्पिर्जलाश्रया ॥ मरीचिश्चीर
वसना पूर्णा चन्द्रार्कविष्टरा ॥ १३२ ॥ सुसूक्ष्मा निर्वृतिः स्थूला निवृत्तारातिरेव च ॥ मरीचिज्वालिनी धूम्रा हव्यवाहा हिरण्यदा ॥
॥ १३३ ॥ दायिनी कालिनी सिद्धिः शोषिणी संप्रबोधिनी ॥ भास्वरा संहतिस्तीक्ष्णा प्रचण्डज्वलनोज्ज्वला ॥ १३४ ॥ सांगा
प्रचण्डा दीप्ता च वैद्युतिः सुमहाद्युतिः ॥ कपिला नीररक्ता च सुषुम्ना विस्फुलिङ्गिनी ॥ १३५ ॥ आर्चिष्मती रिपुहरा दीर्घा धूमा
वली जरा ॥ सम्पूर्णमण्डला पूषा स्रंसिनी सुमनोहरा ॥ १३६ ॥ जया पुष्टिकरी च्छाया मानसा हृदयोज्ज्वला ॥ सुवर्णकारिणी श्रेष्ठा

मृतसंजीवनी रणे ॥ १३७ ॥ विशल्यकरणी शुभ्रा संधिनी परमौषधिः ॥ ब्रह्मिष्ठा ब्रह्मसहिता ऐन्दवी रत्नसम्भवा ॥ १३८ ॥ विद्युत्प्रभा बिन्दुमती त्रिस्वभावगुणाम्बिका ॥ नित्योदिता नित्यहृष्टा नित्यकामकरीषिणी ॥ १३९ ॥ पद्मांका वज्रचिह्ना च वक्रदण्डाविभासिनी ॥ विदेहपूजिता कन्या माया विजयवाहिनी ॥ १४० ॥ मानिनी मंगला मान्या मानिनी मानदायिनी ॥ विश्वेश्वरी गणवती मण्डला मण्डलेश्वरी ॥ १४१ ॥ हरिप्रिया भौमसुता मनोज्ञा मतिदायिनी ॥ प्रत्यंगिरा सोमगुप्ता मनोभिज्ञा वदन्मतिः ॥ ॥ १४२ ॥ यशोधरा रत्नमाला कृष्णा त्रैलोक्यबंधिनी ॥ अमृता धारिणी हर्षा विनता वल्लकी शची ॥ १४३ ॥ संकला आमिनी मिश्रा कादम्बर्यमृता प्रभा ॥ आगता निर्गता वज्रा सुहिता सहिताऽक्षता ॥ १४४ ॥ सर्वार्थसाधनकरी धातुर्द्धारणिकामला ॥ करुणाधारसम्भूता कमलाक्षी शशिप्रिया ॥ १४५ ॥ सौम्यरूपा महादीप्ता महाज्वाला विकासिनी ॥ माला कांचनमाला च सद्वज्रा कनकप्रभा ॥ १४६ ॥ प्रक्रियापरमा योक्त्री क्षोभिका च सुखोदया ॥ विजृम्भणा च वज्राख्या शृंखला कमलेक्षणा ॥ १४७ ॥ जयंकरी मधुमती हरिता शशिनी शिवा ॥ मूलप्रकृतिरीशानी योगमाता मनोजवा ॥ १४८ ॥ धर्मोदया भानुमती सर्वाभासा सुखावहा ॥ धुरंधरा च बाला च धर्मसेव्यां तथागता ॥ १४९ ॥ सुकुमारा सौम्यमुखी सौम्यसम्बोधनोत्तमा ॥ सुमुखी सर्वतोभद्रा गुह्यशक्तिर्गुहालया ॥ १५० ॥ हलायुधा च कावीरा सर्वशास्त्रसुधारिणी ॥ व्योमशक्तिर्महादेहा व्योमगा मधुमन्मयी ॥ १५१ ॥ गंगा वितस्ता यमुना चन्द्रभागा सरस्वती ॥ तिलोत्तमोर्वशी रम्भा स्वामिनी सुरसुन्दरी ॥ १५२ ॥ बाणप्रहरणा बाला बिम्बोष्ठी चारुहासिनी ॥ ककुद्मिनी चारुपृष्ठा दृष्टादृष्टफलप्रदा ॥ १५३ ॥ काम्याचरी च काम्या च कामाचारविहारिणी ॥ हिमशैलेन्द्रसंकाशा गजेन्द्रवरवाहना ॥ १५४ ॥ अशेषसुखसौभाग्यसम्पदां योनिरुत्तमा ॥ सर्वोत्कृष्टा सर्वमयी सर्वा सर्वेश्वरप्रिया ॥ १५५ ॥ सर्वाङ्गयोनिः साऽव्यक्ता सम्प्रधानेश्वरेश्वरी ॥ विष्णुवक्षःस्थलगता किमतः परमुच्यते ॥ १५६ ॥ परा निर्महिमा देवी हरिवक्षःस्थलाश्रया ॥ सा देवी पापहंत्री च सान्निध्यं कुरुतान्मम ॥ १५७ ॥ इति नाम्नां सहस्रं तु लक्ष्म्याः प्रोक्तं शुभावहम् ॥ परावरेण भेदेन

मुख्यगौणेन भागतः ॥ १५८ ॥ यश्चैतत्कीर्तयेन्नित्यं शृणुयाद्वापि पद्मज ॥ शुचिः समाहितो भूत्वा भक्तिश्रद्धासमन्वितः ॥ १५९ ॥
श्रीनिवासं समभ्यर्च्य पुष्पधूपानुलेपनैः ॥ भोगैश्च मधपर्काद्यैर्यथाशक्ति जगद्गुरुम् ॥ १६० ॥ तत्पार्श्वस्थां श्रियं देवीं संपूज्य श्रीधर
प्रियाम् ॥ ततो नामसहस्रेण तोषयेत्परमेश्वरीम् ॥ १६१ ॥ नानारत्नावलीस्तोत्रमिदं यः सततं पठेत् ॥ प्रसादाभिमुखी लक्ष्मीः सर्वं तस्मै
प्रयच्छति ॥ १६२ ॥ यस्या लक्ष्म्याश्च सम्भूताः शक्तयो विश्वगाः सदा ॥ कारणत्वं न तिष्ठंति जगत्यस्मिंश्चराचरे ॥ १६३ ॥
तस्मात्प्रीता जगन्माता श्रीर्यस्याच्युतवल्लभा ॥ सुप्रीताः शक्तयस्तस्य सिद्धिमिष्टां दिशंति हि ॥ १६४ ॥ एक एव जगत्स्वामी शक्ति
मानच्युतः प्रभुः ॥ तदंशशक्तिमंतोऽन्ये ब्रह्मेशानादयो यथा ॥ १६५ ॥ तथैवैका परा शक्तिः श्रीस्तस्य करुणाश्रया ॥ ज्ञानादिषाड्गुण्य
मयी या प्रोक्ता प्रकृतिः परा ॥ १६६ ॥ एकैकशक्तिः श्रीस्तस्या द्वितीयात्मनि वर्त्तते ॥ परा परेशी सर्वेशी सर्वाकारा सनातनी
॥ १६७ ॥ अनंतनामधेया च शक्तिचक्रस्य नायिका ॥ जगच्चराचरमिदं सर्वं व्याप्य व्यवस्थिता ॥ १६८ ॥ तस्मादेकैव परमा
श्रीर्ज्ञेया विश्वरूपिणी ॥ सौम्या सौम्येन रूपेण संस्थिता नटजीववत् ॥ १६९ ॥ यो यो जगति पुंभावः स विष्णुरिति निश्चयः ॥ या या तु
नारीभावस्था तत्र लक्ष्मीर्व्यवस्थिता ॥ १७० ॥ प्रकृतेः पुरुषाच्चान्यस्तृतीयो नैव विद्यते ॥ अथ किं बहुनोक्तेन नरनारीमयो हरिः
॥ १७१ ॥ अनेकभेदभिन्नस्तु क्रियते परमेश्वरः ॥ महाविभूतिं दयितां ये स्तुवंत्यच्युतप्रियाम् ॥ १७२ ॥ ते प्राप्नुवंति परमां लक्ष्मीं
संशुद्धचेतसः ॥ पद्मयोनिरिदं प्राप्य पठन्स्तोत्रमिदं क्रमात् ॥ १७३ ॥ दिव्यमष्टगुणैश्वर्यं तत्प्रसादाच्च लब्धवान् ॥ सकामानांच फलदा
मकामानांच मोक्षदाम् ॥१७४॥ पुस्तकाख्यां भयत्रात्रीं सितवस्त्रां त्रिलोचनाम् ॥ महापद्मनिषण्णां तां लक्ष्मीमजरतां नमः ॥ १७५ ॥
करयुगलगृहीतं पूर्णकुंभं दधाना क्वचिदमलगतस्था शंखपद्माक्षपाणिः ॥ क्वचिदपि दयिताङ्के चामरव्यग्रहस्ता क्वचिदपि सृणिपाशं
बिभ्रती हेमकांतिः ॥ १७६ ॥ इति पद्मपुराणे काश्मीरवर्णने हिरण्यगर्भहृदये सर्वकामप्रदायकं पुरुषोत्तमप्रोक्तं लक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्रं
समाप्तम् ॥ अथ लक्ष्मीहृदयस्तोत्रप्रारंभः ॥ आद्यादिश्रीमहालक्ष्मीहृदयमालामंत्रस्य भार्गव ऋषिः। आद्यादिश्रीमहालक्ष्मीर्देवता । अनुष्टु

वादीनि नानाछन्दांसि। श्रीं बीजम्। ह्रीं शक्तिः। ऐं कीलकम्। आद्यादिमहालक्ष्मीप्रसादसिद्ध्यर्थं पाठे विनियोगः॥ ॐ भार्गवऋषये नमः शिरसि १। ॐ अनुष्टुबादिनानाच्छन्दोभ्यो नमो मुखे २। ॐ आद्यादिश्रीमहालक्ष्म्यै देवतायै नमो हृदये ३। ॐ श्रीं बीजाय नमो गुह्ये ४। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ५। ॐ ऐं कीलकाय नमो नाभौ ६। ॐ विनियोगाय नमः सर्वांगे ७ ॥ इति ऋष्यादि न्यासः॥ ॐ श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ ऐं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ श्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः६॥ इति करन्यासः॥ ॐ श्रीं हृदयाय नमः १। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ ऐं शिखायै वषट् ३। श्रीं कवचाय हुम् ४। ॐ ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ ऐं अस्त्राय फट् ६। ॐ श्रीं ह्रीं ऐं इति दिग्बन्धः ॥ इति हृदयादि न्यासः॥ अथ ध्यानम्—हस्तद्वयेन कमले धारयंतीं स्वलीलया ॥ हारनूपुरसंयुक्तां लक्ष्मीं देवीं विचिंतये॥१॥ इति ध्यात्वा संपूज्य—ॐ शंख चक्रगदाहस्ते शुभ्रवर्णे सुवासिनि ॥ मम देहि वरं लक्ष्मि सर्वसिद्धिप्रदायिनि ॥ २ ॥ इति संप्रार्थ्य। 'ॐ श्रीं ह्रीं ऐं महालक्ष्म्यै कमल धारिण्यै सिंहवाहिन्यै स्वाहा ॥' इति मंत्रं जपित्वा पुनः पूर्ववद्धृदयादिषडंगन्यासं कृत्वा स्तोत्रं पठेत्। तथाच—वन्दे लक्ष्मीं परशिवमयीं शुद्धजाम्बूनदाभां तेजोरूपां कनकवसनां सर्वभूषोज्ज्वलांगीम्॥ बीजापूरं कनककलशं हेमपद्मं दधानामाद्यां शक्तिं सकलजननीं विष्णु वामांकसंस्थाम् ॥ १ ॥ श्रीमत्सौभाग्यजननीं स्तौमि लक्ष्मीं सनातनीम् ॥ सर्वकामफलावाप्तिसाधनैकसुखावहाम् ॥ २ ॥ स्मरामि नित्यं देवेशि त्वया प्रेरितमानसः ॥ त्वदाज्ञां शिरसा धृत्वा भजामि परमेश्वरीम् ॥ ३ ॥ समस्तसंपत्सुखदां महाश्रियं समस्तसौभाग्य करीं महाश्रियम् ॥ समस्तकल्याणकरीं महाश्रियं भजाम्यहं ज्ञानकरीं महाश्रियम् ॥ ४ ॥ विज्ञानसम्पत्सुखदां सनातनीं विचित्र वाग्भूतिकरीं मनोहराम्॥ अनंतसामोदसुखप्रदायिनीं नमाम्यहं भूतिकरीं हरिप्रियाम् ॥ ५ ॥ समस्तभूतांतरसंस्थिता त्वं समस्तभोक्त्री श्वरि विश्वरूपे ॥ तन्नास्ति यत्त्वद्व्यतिरिक्तवस्तु त्वत्पादपद्मं प्रणमाम्यहं श्रीः ॥ ६ ॥ दारिद्र्यदुःखौघतमोपहंत्री त्वत्पादपद्मं मयि सन्नि धत्स्व ॥ दीनार्तिविच्छेदनहेतुभूतैः कृपाकटाक्षैरभिषिञ्च मां श्रीः ॥ ७ ॥ अम्ब प्रसीद करुणासुधयार्द्रदृष्ट्या मां त्वत्कृपाद्रविणगेहमिमं

कुरुष्व ॥ आलोकय प्रणतहृद्गतशोकहंत्री त्वत्पादपद्मयुगलं प्रणमाम्यहं श्रीः ॥ ८ ॥ शांत्यै नमोऽस्तु शरणागतरक्षणायै कांत्यै नमोऽस्तु कमनीयगुणाश्रयायै ॥ क्षांत्यै नमोऽस्तु दुरितक्षयकारणायै दात्र्यै नमोऽस्तु धनधान्यसमृद्धिदायै ॥ ९ ॥ शक्त्यै नमोऽस्तु शशिशेखरसंस्तुतायै रत्यै नमोऽस्तु रजनीकरसोदरायै ॥ भक्त्यै नमोऽस्तु भवसागरतारकायै मत्यै नमोऽस्तु मधुसूदनवल्लभायै ॥ १० ॥ लक्ष्म्यै नमोऽस्तु शुभलक्षणलाक्षितायै सिद्ध्यै नमोऽस्तु शिवसिद्धसुपूजितायै ॥ धृत्यै नमोऽस्त्वमितदुर्गतिभञ्जनायै गत्यै नमोऽस्तु वरसद्गतिदायिकायै ॥ ११ ॥ देव्यै नमोऽस्तु दिवि देवगणार्चितायै भूत्यै नमोऽस्तु भवनार्तिविनाशनायै ॥ धात्र्यै नमोऽस्तु धरणीधरवल्लभायै पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै ॥ १२ ॥ सुतीव्रदारिद्र्यविदुःखहंत्र्यै नमोऽस्तु ते सर्वभयापहंत्र्यै ॥ श्रीविष्णुवक्षःस्थलसंस्थितायै नमो नमः सर्वविभूतिदायै ॥ १३ ॥ जयतु जयतु लक्ष्मीर्लक्षणालंकृतांगी जयतु जयतु पद्मा पद्मसद्माभिवन्द्या॥ जयतु जयतु विद्या विष्णुवामांकसंस्था जयतु जयतु सम्यक् सर्वसम्पत्करी श्रीः॥१४॥जयतु जयतु देवी देवसंघाभिपूज्या जयतु जयतु भद्रा भार्गवी भाग्यरूपा॥ जयतु जयतु नित्या निर्मलज्ञानवेद्या जयतु जयतु सत्या सर्वभूतांतरस्था॥१५॥ जयतु जयतु रम्या रत्नगर्भांतरस्था जयतु जयतु शुद्धा शुद्धजाम्बूनदाभा ॥ जयतु जयतु कांता कांतिमद्भासितांगी जयतु जयतु शांता शीघ्रमागच्छ सौम्ये ॥ १६ ॥ यस्याः कलायाः कमलोद्भवाद्या रुद्राश्च शक्रप्रमुखाश्च देवाः ॥ जीवंति सर्वा अपि शक्तयस्ताः प्रभुत्वमाप्ताः परमायुषस्ते ॥ १७ ॥ लिलेख निटिले विधिर्मम लिपिं विसृज्यांतरं त्वया विलिखितव्यमेतदिति तत्फलप्राप्तये ॥ तदंतरफले स्फुटं कमलवासिनिश्रीरमां समर्पय समुद्रिकां सकलभाग्यसंसूचिकाम् ॥ १८ ॥ कलया ते यथा देवि जीवंति सचराचराः ॥ तथा सम्पत्करे लक्ष्मि सर्वदा सम्प्रसीद मे ॥ १९ ॥ यथा विष्णुर्ध्रुवे नित्यं स्वकलां संन्यवेशयत् ॥ तथैव स्वकलां लक्ष्मि मयि सम्यक् समर्पय ॥ २० ॥ सर्वसौख्यप्रदे देवि भक्तानामभयप्रदे ॥ अचलां कुरु यत्नेन कलां मयि निवेशिताम् ॥ २१ ॥ मुदास्तां मद्भाले परमपदलक्ष्मीः स्फुटकला सदा वैकुण्ठश्रीर्निवसतु कला मे नयनयोः ॥ वसेत्सत्ये लोके मम वचसि लक्ष्मीवरकला श्रियः श्वेतद्वीपे निवसतु कला मे स्वकरयोः ॥ २२ ॥ तावन्नित्यं ममांगेषु

क्षीराब्धौ श्रीकला वसेत् ॥ सूर्याचन्द्रमसौ यावद्यावल्लक्ष्मीपतिः श्रियाः ॥ २३ ॥ सर्वमंगलसम्पूर्णा सर्वैश्वर्य्यसमन्विता ॥ आद्यादिश्री महालक्ष्मि त्वत्कला मयि तिष्ठतु ॥ २४ ॥ अज्ञानतिमिरं हंतुं शुद्धज्ञानप्रकाशिका ॥ सर्वैश्वर्यप्रदा मेऽस्तु त्वत्कला मयि संस्थिता ॥ २५ ॥ अलक्ष्मीं हरतु क्षिप्रं तमः सूर्यप्रभा यथा ॥ वितनोतु मम श्रेयस्त्वत्कला मयि संस्थिता ॥ २६ ॥ ऐश्वर्यमंगलोत्पत्तिस्त्वत्कलायां निधीयते ॥ मयि तस्मात्कृतार्थोऽस्मि पात्रमस्मि स्थितेस्तव ॥ २७ ॥ भवदावेशभाग्यार्हो भाग्यवानस्मि भार्गवि ॥ त्वत्प्रसादात्पवित्रोऽहं लोकमातर्नमोऽस्तु ते ॥ २८ ॥ पुनासि मां त्वं कलयैव यस्मादतः समागच्छ ममाग्रतस्त्वम् ॥ परं पदं श्रीर्भव सुप्रसन्ना मय्यच्युतेन प्रविशादिलक्ष्मि ॥ २९ ॥ श्रीवैकुण्ठस्थिते लक्ष्मि समागच्छ ममाग्रतः ॥ नारायणेन सह मां कृपादृष्ट्याऽवलोकय ॥ ३० ॥ सत्यलोकस्थिते लक्ष्मि त्वं ममागच्छ सन्निधिम् ॥ वासुदेवेन सहिता प्रसीद वरदा भव ॥ ३१ ॥ श्वेतद्वीपस्थिते लक्ष्मि शीघ्रमागच्छ सुव्रते ॥ विष्णुना सहिते देवि जगन्मातः प्रसीद मे ॥ ३२ ॥ क्षीराम्बुधिस्थिते लक्ष्मि समागच्छ समाधवा ॥ त्वत्कृपादृष्टिसुधया सततं मां विलोकय ॥ ३३ ॥ रत्नगर्भस्थिते लक्ष्मि परिपूर्णे हिरण्मये ॥ समागच्छ समागच्छ स्थित्वाऽऽशु पुरतो मम ॥ ३४ ॥ स्थिरा भव महालक्ष्मि निश्चला भव निर्मले ॥ प्रसन्ने कमले देवि प्रसन्नहृदया भव ॥ ३५ ॥ श्रीधरे श्रीमहाभूते त्वदंतःस्थं महानिधिम् ॥ शीघ्रमुद्धृत्य परतः प्रदर्शय समर्पय ॥ ३६ ॥वसुंधरे श्रीवसुधे वसुदोग्ध्रि कृपामये ॥ त्वत्कुक्षिगतसर्वस्वं शीघ्रं मे संप्रदर्शय ॥ ॥ ६७ ॥ विष्णुप्रिये रत्नगर्भे समस्तफलदे शिवे ॥ त्वद्गर्भगतहेमादीन् संप्रदर्शय दर्शय ॥ ३८ ॥ रसातलगते लक्ष्मि शीघ्रमागच्छ मे पुरः ॥ न जाने परमं रूपं मातर्मे संप्रदर्शय ॥ ३९ ॥ आविर्भव मनोवेगाच्छीघ्रमागच्छ मे पुरः ॥ मा वत्स भैरिहेत्युक्त्वा कामं गौरिव रक्ष माम् ॥ ४० ॥ देवि शीघ्रं समागच्छ धरणीगर्भसंस्थिते ॥ मातस्त्वद्भृत्यभृत्योऽहं मृगये त्वां कुतूहलात् ॥ ४१ ॥ उत्तिष्ठ जागृहि त्वं मे समुत्तिष्ठ सुजागृहि ॥ अक्षयान्हेमकलशान् सुवर्णेन सुपूरितान् ॥ ४२ ॥ निक्षेपान्मे समाकृष्य समुद्धृत्य ममाग्रतः ॥ समुन्नताननना भूत्वा समाधेहि धरांतरात् ॥ ४३ ॥ मत्सन्निधिं समागच्छ मदाहितकृपारसात् ॥ प्रसीद श्रेयसां दोग्ध्रि लक्ष्मि मे नयना

ग्रतः ॥ ४४ ॥ अत्रोपविश लक्ष्मि त्वं स्थिरा भव हिरण्मये ॥ सुस्थिरा भव संप्रीत्या प्रसीद वरदा भव ॥ ४५ ॥ आनीय त्वं तथा देवि निर्धन्मे सम्प्रदर्शय ॥ अद्य क्षणेन सहसा दत्त्वा संरक्ष मां सदा ॥ ४६ ॥ मयि तिष्ठ तथा नित्यं यथेन्द्रादिषु तिष्ठसि ॥ अभयं कुरु मे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥ ४७ ॥ समागच्छ महालक्ष्मि शुद्धजाम्बूनदप्रभे ॥ प्रसीद पुरतः स्थित्वा प्रणतं मां विलोकय ॥ ४८ ॥ भुवं गता भासि लक्ष्मि यत्र यत्र हिरण्मयी ॥ तत्र तत्र स्थिता त्वं मे तव रूपं प्रदर्शय ॥ ४९ ॥ क्रीडते बहुधा भूमौ परिपूर्णहिरण्मये ॥ मम मूर्द्धनि ते हस्तमविलम्बितमर्पय ॥ ५० ॥ फलद्भाग्योदये लक्ष्मि समस्तपुरवासिनि ॥ प्रसीद मे महालक्ष्मि परिपूर्णमनोरथे ॥ ५१ ॥ अयोध्यादिषु सर्वेषु नगरेषु समास्थिते ॥ वैभवैर्विविधैर्युक्ता समागच्छ बलान्विते ॥ ५२ ॥ समागच्छ समागच्छ ममाग्रे भव सुस्थिरा ॥ करुणारसनिष्पन्दनेत्रद्वयविलासिनी ॥ ५३ ॥ सन्निधत्स्व महालक्ष्मि त्वत्पाणिं मम मस्तके ॥ करुणासुधया मां त्वमभिषिञ्च स्थिरीकुरु ॥ ५४ ॥ सर्वराजगृहे लक्ष्मि समागच्छ मुदान्विते ॥ स्थित्वाशु पुरतो मेऽद्य प्रसादेनाभयं कुरु ॥ ५५ ॥ सादरं मस्तके हस्तं मम त्वं कृपयार्पय ॥ सर्वराजगृहे लक्ष्मि त्वत्कला मयि तिष्ठतु ॥ ५६ ॥ आद्यादिश्रीमहालक्ष्मि विष्णुवामांकसंस्थिते ॥ प्रत्यक्षं कुरु मे रूपं रक्ष मां शरणागतम् ॥ ५७ ॥ प्रसीद मे महालक्ष्मि सुप्रसीद महाशिवे ॥ अचला भव संप्रीत्या सुस्थिरा भव मद्गृहे ॥ ५८ ॥ यावत्तिष्ठंति देवाश्च यावत्त्वन्नाम तिष्ठति ॥ यावद्विष्णुश्च यावत्त्वं तावत्कुरु कृपां मयि ॥ ५९ ॥ चान्द्री कला यथा शुक्ले वर्द्धते सा दिने दिने ॥ तथा दया ते मय्येव वर्द्धतामभिवर्द्धताम् ॥ ६० ॥ यथा वैकुण्ठनगरे यथा वै क्षीरसागरे ॥ तथा मद्भवने तिष्ठ स्थिरा श्रीविष्णुना सह ॥ ६१ ॥ योगिनां हृदये नित्यं यथा तिष्ठसि विष्णुना ॥ तथा मद्भवने तिष्ठ स्थिरा श्रीविष्णुना सह ॥ ६२ ॥ नारायणस्य हृदये भवती यथास्ते नारायणोऽपि तव हृत्कमले यथाऽऽस्ते ॥ नारायणस्त्वमपि नित्यमुभौ तथैव तौ तिष्ठतां हृदि ममापि दयावति श्रीः ॥ ६३ ॥ विज्ञानवृद्धिं हृदये कुरु श्रीः सौभाग्यवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः ॥ दयासुवृद्धिं कुरुतां मयि श्रीः सुवर्णवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः ॥ ६४ ॥ न मां त्यजेथाः श्रितकल्पवल्लि सद्भक्तचिंतामणिकामधेनो ॥ विश्वस्य मातर्भव

सुप्रसन्ना गृहे कलत्रेषु च पुत्रवर्गे ॥ ६५ ॥ आद्यादिमाये त्वमजाण्डबीज त्वमेव साकारनिराकृतिस्त्वम् ॥ त्वया धृताश्चाब्जभवाण्ड सङ्घाश्चित्रं चरित्रं तव देवि विष्णोः ॥ ६६ ॥ ब्रह्मरुद्रादयो देवा वेदाश्चापि न शक्नुयुः ॥ महिमानं तव स्तोतुं मन्दोऽहं शक्नुयां कथम् ॥ ६७ ॥ अम्ब त्वद्वत्सवाक्यानि सूक्तासूक्तानि यानि च ॥ तानि स्वीकुरु सर्वज्ञे दयालुत्वेन सादरम् ॥ ६८ ॥ भवतीं शरणं गत्वा कृतार्थाः स्युः पुरातनाः ॥ इति सञ्चिन्त्य मनसा त्वामहं शरणं व्रजे ॥ ६९ ॥ अनंता नित्यसुखिनस्त्वद्भक्तास्त्वत्परायणाः ॥ इति वेदप्रमाणाद्धि देवि त्वां शरणं व्रजे ॥ ७० ॥ तव प्रतिज्ञा मद्भक्ता न नश्यंतीत्यपि क्वचित् ॥ इति संचिन्त्य संचिन्त्य प्राणान्सं धारयाम्यम् ॥ ७१ ॥ त्वदधीनस्त्वहं मातस्त्वत्कृपा मयि विद्यते ॥ यावत्सम्पूर्णकामः स्यात्तावद्देहि दयानिधे ॥ ७२ ॥ क्षणमात्रं न शक्नोमि जीवितुं त्वत्कृपां विना ॥ न जीवंतीह जलजा जलं त्यक्त्वा जलग्रहाः ॥ ७३ ॥ यथा हि पुत्रवात्सल्याज्जननी प्रस्नुत स्तनी ॥ वत्सं त्वरितमागत्य संप्रीणयति वत्सला ॥ ७४ ॥ यदि स्यां तव पुत्रोऽहं माता त्वं यदि मामकी ॥ दयापयोधरस्तन्यसुधाभि रभिषिञ्च माम् ॥ ७५ ॥ मृग्यो न गुणलेशोऽपि मयि दोषैकमन्दिरे ॥ पांसूनां वृष्टिबिन्दूनां दोषाणां च न मे मितिः ॥ ७६ ॥ पापिनामहमेवाग्र्यो दयालूनां त्वमग्रणीः ॥ दयनीयो मदन्योऽस्ति तव कोऽत्र जगत्त्रये ॥ ७७ ॥ विधिनाहं न सृष्टश्चेन्न स्यात्तव दयालुता ॥ आमयो वा न सृष्टश्चेदौषधस्य वृथोदयः ॥ ७८ ॥ कृपा मदग्रजा किं ते अहं किं वा तदग्रजः ॥ विचार्य्य देहि मे वित्तं तव देवि दयानिधे ॥ ७९ ॥ माता पिता त्वं गुरुसद्गतिः श्रीस्त्वमेव संजीवनहेतुभूता ॥ अन्यन्न मन्ये जगदेकनाथे त्वमेव सर्वं मम देवि सत्ये ॥ ८० ॥ आद्यादिलक्ष्मीर्भव सुप्रसन्ना विशुद्धविज्ञानसुखैकदोग्ध्री ॥ अज्ञान हंत्री त्रिगुणातिरिक्ता प्रज्ञाननेत्री भव सुप्रसन्ना ॥ ८१ ॥ अशेषवाग्जाड्यमलापहंत्री नवं नवं स्पष्टसुवाक्प्रदायिनी ॥ ममेह जिह्वाग्रसुरङ्गनर्त्तकी भव प्रसन्ना वदने च मे श्रीः ॥ ८२ ॥ समस्तसम्पत्सुविराजमाना समस्ततेजश्चयभासमाना ॥ विष्णुप्रिये त्वं भव दीप्यमाना वाग्देवता मे नयने प्रसन्ना ॥ ८३ ॥ सर्वप्रदर्शे सकलार्थदे त्वं प्रभासुलावण्यदयाप्रदोग्ध्री ॥ सुवर्णदे त्वं सुमुखी भव श्री

हिरण्मयी मे नयने प्रसन्ना ॥ ८४ ॥ सर्वार्थदा सर्वजगत्प्रसूतिः सर्वेश्वरी सर्वभयापहंत्री ॥ सर्वोन्नता त्वं सुमुखी भव श्रीर्हिरण्मयी मे नयने प्रसन्ना ॥८५॥ समस्तविघ्नौघविनाशकारिणी समस्तभक्तोद्धरणे विचक्षणा ॥ अनंतसौभाग्यसुखप्रदायिनी हिरण्मयी मे नयने प्रसन्ना ॥ ८६ ॥ देवि प्रसीद दयनीयतमाय मह्यं देवाधिनाथभवदेवगणाधिवन्द्ये ॥ मातस्तथैव भव सन्निहिता दृशोर्मे पत्या समं मम मुखे भव सुप्रसन्ना ॥ ८७ ॥ मा वत्स भैरभयदानकरोऽर्पितस्ते मौलौ ममेति मम दीनदयानुकम्पे ॥ मातः समर्पय मुदा करुणा कटाक्षं मांगल्यबीजमिह नः सृज जन्म मातः ॥ ८८ ॥ कटाक्ष इह कामधुक्तव मनस्तु चिंतामणिः करः सुरतरुः सदा नवनिधि स्त्वमेवेन्दिरे ॥ भवे तव दयारसो मम रसायनं चान्वहं मुखं तव कलानिधिर्विविधवाञ्छितार्थप्रदम् ॥ ८९ ॥ यथा रसस्पर्शनतोऽयसोऽपि सुवर्णता स्यात्कमले तथा ते ॥ कटाक्षसंस्पर्शनतो जनानाममंगलानामपि मंगलत्वम् ॥ ९० ॥ देहीति नास्तीति वचःप्रवेशाद्भीतो रमे त्वां शरणं प्रपद्ये ॥ अतः सदाऽस्मिन्नभयप्रदा त्वं सहैव पत्या मयि सन्निधेहि ॥ ९१ ॥ कल्पद्रुमेण मणिना सहिता सुरम्या श्रीस्ते कला मयि रसेन रसायनेन ॥ आस्तां यतो मम शिरःकरदृष्टिपादस्पृष्टाः सुवर्णवपुषः स्थिरजंगमाः स्युः ॥ ९२ ॥ आद्यादिविष्णोः स्थिरधर्मपत्नी त्वमेव पत्या मयि सन्निधेहि ॥ आद्यादिलक्ष्मि त्वदनुग्रहेण पदे पदे मे निधिदर्शनं स्यात् ॥ ९३ ॥ आद्यादिलक्ष्मी हृदयं पठेद्यः स राज्यलक्ष्मीमचलां तनोति ॥ महादरिद्रोऽपि भवेद्धनाढ्यस्तदन्वये श्रीः स्थिरतां प्रयाति ॥ ९४ ॥ अस्य स्मरणमात्रेण तुष्टा स्याद्विष्णुवल्लभा ॥ तस्याभीष्टं ददात्याशु तं पालयति पुत्रवत् ॥ ९५ ॥ इदं रहस्यं हृदयं सर्वकामफलप्रदम् ॥ जपः पञ्चसहस्रं तु पुरश्चरणमुच्यते ॥ ९६ ॥ त्रिकालमेककालं वा नरो भक्तिसमन्वितः ॥ यः पठेच्छृणुयाद्वापि स याति परमां श्रियम् ॥ ९७ ॥ महा लक्ष्मीं समुद्दिश्य निशि भार्गववासरे ॥ इदं श्रीहृदयं जप्त्वा पंचवारं धनी भवेत् ॥ ९८ ॥ अनेन हृदयेनान्नं गर्भिण्या अभिमंत्रितम् ॥ ददाति तत्कुले पुत्रो जायते श्रीपतिः स्वयम् ॥ ९९ ॥ नरेण वाऽथवा नार्या लक्ष्मीहृदयमंत्रिते ॥ जले पीते च तद्वंशे मन्दभाग्यो न

जायते ॥ १०० ॥ य आश्विने मासि च शुक्लपक्षे रमोत्सवे सन्निहिते सुभक्त्या ॥ पठेत्तथैकोत्तरवारवृद्ध्या लभेत्स सौवर्णमयीं सुवृ ष्टिम् ॥ १०१ ॥ य एकभक्तोऽन्वहमेकवर्षं विशुद्धधीः सप्ततिवारजापी ॥ स मन्दभाग्योऽपि रमाकटाक्षाद्भवेत्सहस्राक्षशताधिकश्रीः ॥ ॥ १०२ ॥ श्रीशांघ्रिभक्तिं हरिदासदास्यं प्रसन्नमंत्रार्थदृढैकनिष्ठाम् ॥ गुरोः स्मृतिं निर्मलबोधबुद्धिं प्रदेहि मातः परमं पदं श्रियम् ॥१०३॥ पृथ्वीपतित्वं पुरुषोत्तमत्वं विभूतिवासं विविधार्थसिद्धिम् ॥ सम्पूर्णकीर्तिं बहुवर्षभोगं प्रदेहि मे लक्ष्मि पुनः पुनस्त्वम् ॥ १०४ ॥ वादा र्थसिद्धिं जनवश्यतां च वयःस्थिरत्वं ललनासुभोगम् ॥ पौत्रादिलब्धिं सकलार्थसिद्धिं भवे भवे भार्गवि मे प्रयच्छ ॥ १०५ ॥ अथ शिरोबीजम् ॥ ॐ यँहँकँलँप्रँश्रीम् ॥ १०६ ॥ ध्यायेल्लक्ष्मीं प्रहसितमुखीं कोटिबालार्कभासं विद्युद्वर्णाम्बरवरधरां भूषणाढ्यां सुशोभाम् ॥ बीजापूरं सरसिजयुगं बिभ्रतीं स्वर्णपात्रं भर्त्रा युक्तां मुहुरभयदा मह्यमप्यच्युतश्रीः ॥ १०७ ॥ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्मयि स्थिरा ॥ १०८ ॥ इति श्रीअथर्वणरहस्ये लक्ष्मीहृदयस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥ अथ लक्ष्मी सूक्तप्रारंभः ॥ ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् । चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥ १ ॥ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पूरुषानहम् ॥ २ ॥ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम् । श्रियंदेवी मुप ह्वये श्रीर्म्मा देवी जुषताम् ॥ ३ ॥ कांसोस्मि तां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलंतीं तृप्तां तर्पयंतीम् । पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ४ ॥ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलंतीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् । तां पद्मनेमिं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणो मि ॥ ५ ॥ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः । तस्य फलानि तपसा नुदंतु मायांतरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ ६ ॥ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह । प्रादुर्भूतः सुराष्ट्रेऽस्मिन्कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥ ७ ॥ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठा अल क्ष्मीर्नाशयाम्यहम् । अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात् ॥ ८ ॥ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ९ ॥ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि । पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥ १० ॥ कर्द

मेन प्रजा भूता मयि सम्भ्रम कर्दम । श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥ ११ ॥ आपः सृजंतु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। निच देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥ १२ ॥ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् । सूर्य्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥ १३ ॥ आर्द्रां यःकरिणीं यष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम् । चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥ १४ ॥ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ॥ १५ ॥ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् । श्रियः पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥ १६ ॥ इति श्रीसूक्तम् ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे मध्यखण्डे लक्ष्मीतंत्रे त्रयोदशस्तरंगः ॥ १३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ कुमीरांतत्रप्रारंभः ॥ रुद्रयामलोत्तरखण्डीयषष्ठपटले ॥ अथ वर्षभेदेन कुमारीभेदः। एकवर्षा भवेत्संध्या द्विवर्षा च सरस्वती ॥ त्रिवर्षा च त्रिधामूर्तिश्चतुर्वर्षा च कालिका ॥ १ ॥ सुभगा पंचवर्षा तु षड्वर्षा च भवेदुमा ॥ सप्तभिर्मालिनी साक्षादष्टवर्षा तु कुब्जिका ॥ २ ॥ नवभिः कालसंदर्भा दशभिश्चापराजिता ॥ एकादशे तु रुद्राणी द्वादशाब्दे तु भैरवी ॥ ३ ॥ त्रयोदशे महालक्ष्मीर्द्विसप्ता पीठनायिका ॥ क्षेत्रज्ञा पंचदशभिः षोडशे चाम्बिका मता ॥ ४ ॥ एवं क्रमेण संगृह्य यावत्पुष्पं न जायते ॥ प्रतिपदादिपूर्णांतं वृद्धिभेदेन पूजयेत् ॥ ५ ॥ विश्वसारे तु—अष्टवर्षा तु सा कन्या भवेद्गौरी वरानने ॥ नववर्षा रोहिणी सा दश वर्षा तु कन्यका ॥ ६ ॥ अत ऊर्द्ध्वं महामाया भवेत्सैव रजस्वला ॥ आरभ्य द्वादशाब्दाच्च यावद्विंशतिसंख्यकम् ॥ ७ ॥ सुकुमारी च सा प्रोक्ता सर्वतंत्रसमन्विता ॥ यानपाषाणधातूनां तेजोरूपेण संस्थिता ॥ ८ ॥ जीवजंतुषु देवेशि किं वक्तव्यमतः परम् ॥ यत्र नास्ति महामाया तत्र किंचिन्न विद्यते ॥ ९ ॥ कुब्जिकातंत्रे सप्तपटले तु विशेषः—पञ्चमाब्दात्समारभ्य याद्द्वादशवार्षिकी ॥ कुमारी सा भवेद्देवी निजरूपप्रकाशिनी ॥ १० ॥ षड्वर्षां च समारभ्य यावच्च नववार्षिकी ॥ तावच्चैव महेशानि साधकाभीष्टसिद्धये ॥ ११ ॥ अष्टवर्षां समारभ्य यावत्त्रयोदशाब्दिकी ॥ कुलजां तां विजानीयात्तत्र पूजां समाचरेत् ॥ १२ ॥ दशवर्षां समारभ्य यावत्षोडशवार्षिकी ॥ युवतीं तां विजानीयाद्देवतां तां विचिंतयेत् ॥ १३ ॥ यामले तु विशेषः—द्वितीयवत्सराद्ध्र्वं यावत्स्यादष्टमाब्दकम् ॥ तावज्जप्त्वा पूजयित्वा कन्यां सुन्दरमोहिनीम् ॥ १४ ॥ अथ कुमारीणां वर्णभेदो यथा रुद्रयामले उत्तरखण्डे सप्तमपटले—नटीकन्यां हीनकन्यां तथा कापालिकन्यकाम् ॥ रजकस्यापि कन्यां च तथा नापितकन्यकाम् ॥ १५ ॥ गोपालकन्यकां चैव ब्राह्मणस्यापि कन्यकाम् ॥ शूद्रकन्यां वैद्यकन्यां तथा वैश्यस्य कन्यकाम् ॥ १६ ॥ चण्डालकन्यकां वापि यत्र कुत्राश्रमे स्थिताम् ॥ सुहृद्वर्गस्य कन्यां च समानीय प्रयत्नतः ॥ १७ ॥ योगिनीतंत्रे—तस्मात्तां पूजयेद्बालां सर्वजातिसमुद्भवाम् ॥ जातिभेदो न कर्तव्यः कुमारीपूजने शिवे ॥ १८ ॥

१ बृहन्नीलतंत्रेऽपि—एकवर्षेत्यादि सर्वमेवमेव केवलं 'द्विसप्ता नायिका स्मृता' इति भेदः ॥

जातिभेदान्महेशानि नरकान्तर्निवर्तते ॥ विचिकित्सापरो मंत्री ध्रुवं स पातकी भवेत् ॥ १९ ॥ देवीबुद्ध्या महाभक्तस्तस्मात्तां परिपूजयेत् ॥ सर्वविद्यास्वरूपा हि कुमारी नात्र संशयः ॥ २० ॥ यदि भाग्यवशाद्देवि वेश्याकुलसमुद्भवाम् ॥ कुमारीं लभते कांते सर्वस्वेनापि साधकः ॥ २१ ॥ यत्नतः पूजयेत्तां तु स्वर्णरौप्यादिभिर्मुदा ॥ तदा तस्य महासिद्धिर्जायते नात्र संशयः ॥ २२ ॥ अथ कुमारीदानक्रमफलम् ॥ विवाहयेत्स्वयं कन्यां ब्रह्महत्या विनश्यति ॥ यो यश्च पुण्यकाले तु कन्यादानं समापयेत् ॥ २३ ॥ भुक्तिमुक्तिफलं तस्य सौभाग्यं सर्वसम्पदः ॥ रुद्रलोके वसेन्नित्यं त्रिनेत्रो भगवान्हरः ॥ २४ ॥ तीर्थकोटिसहस्राणि अश्वमेधशतानि च ॥ तत्फलं लभते मर्त्यो यस्तु कन्यां विवाहयेत् ॥ २५ ॥ वालुकाः सागरे ज्ञेयास्तावदब्दसहस्रकम् ॥ एकैकं कुलमुद्धृत्य रुद्रलोके महीयते ॥ २६ ॥ तत्तदिष्टदेवतायाः प्रीतये तुष्टये सुधीः ॥ कन्यादानं समाहृत्य मुक्तिमाप्नोति भैरव ॥ २७ ॥ तत्तज्जातीयकन्यायास्तत्तद्बुद्ध्या च साधकः ॥ विभाव्य शिवरूपत्वं संप्रदानीयकन्यके ॥ २८ ॥ पूर्णरूपं शिवं ध्यात्वा वरं सर्वाङ्गसुन्दरम् ॥ तेजोमयं यशःकांतं कालभैरवरूपिणम् ॥ २९ ॥ बटुकेशं महादेवं वरयेत्साधकाग्रणीः ॥ बालारूपां च त्रैलोक्यसुन्दरीं वरवर्णिनीम् ॥ ३० ॥ नानालंकारनम्राङ्गीं भद्रविद्याप्रकाशिनीम् ॥ चारुहास्यां महानन्दहृदयां शुभदां शुभाम् ॥ ३१ ॥ ध्यात्वा द्वादशपत्राब्जे पूर्णचन्द्रनिभाननाम् ॥ संप्रदानं समानीय तत्तन्मंत्रेण दापयेत् ॥ ३२ ॥ ॥ अथ कुमारीपूजाप्रयोगः ॥ पूजादिनात्पूर्वदिने गंधपुष्पाक्षतादिभिर्मूलेन 'भगवति कुमारि पूजार्थं त्वं मया निमंत्रिताऽसि मां कृतार्थय' इति निमंत्र्य प्रातराहूय प्रदक्षिणीकृत्योद्वर्तनाद्यैः स्नापयित्वा गंधतैलेन शरीरं संस्कुर्यात् ॥ केशान् परिष्कृत्य ललाटे सिंदूरं नयनयोः कज्जलं सर्वाङ्गे चन्दनं दत्त्वा वस्त्रालंकारैराभूष्य पादौ प्रक्षाल्य अष्टदलपीठोपरि समावेश्य तांबूलेन मुखं संशोध्य देशकालौ स्मृत्वाऽमुकफलप्राप्तयेऽमुककर्मण्यमुकदेव्याः प्रीतये कुमारीणां पूजनं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य न्यासान् कुर्यात् ॥ तथा च—ॐ क्रां कुलकुमारिके हृदयाय नमः १ । ॐ क्रीं कुलकुमारिके शिरसे स्वाहा २ । ॐ क्लूं कुलकुमारिके शिखायै वषट् ३ । ॐ क्रैं कुलकुमारिके कवचाय

हुम् ४ । ॐ क्लौं कुलकुमारिके नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ क्लः कुलकुमारिके अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव करन्यासं कुर्यात् ॥ इति न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्—ॐ शंखकुन्देन्दुधवलां द्विभुजां वरदाभयाम् ॥ चन्द्रमध्यमहांभोज हावभावविराजिताम् ॥ १ ॥ बालरूपां च त्रैलोक्यसुन्दरीं वरवर्णिनीम् ॥ नानालंकारनम्रांगीं भद्रविद्याप्रकाशिनीम् ॥ २ ॥ चारुहास्यां महानन्दहृदयां शुभदां शुभाम् ॥ ३ ॥ एवं ध्यात्वाऽऽत्मशिरसि करं दत्त्वा मानसोपचारैः संपूज्य गंधादिपूजनं कुर्यात् ॥ तथा च—ऐं ह्रीं श्रीं हूं ह्लौः संध्यायै कुमार्य्यै नमः ॥ एवं पूर्वबीजान्युच्चार्य्य सरस्वत्यै कुमार्य्यै नम इत्यादिवत्सरानुक्रमेण चतुर्थ्यंतेन नाम्ना आसनादिभिः षोडशभिरुपचारैः संपूजयेत् ॥ ऐं ह्रीं श्रीं हूं ह्लौः कुलकुमारिकायै नमः । जलं समर्पयामि ॥ १ ॥ इदं पाद्यमेवमिदमर्घ्यमिदमाचमनीयमिदमनुलेपनमेतेऽक्षता एतानि पुष्पाणि एष धूप एष दीप इदं नैवेद्यमिदं ताबूलमिति पूजयित्वा षडंगन्यासविधिना षडंगानि पूजयेत् ॥ तथा च तत्र क्रमस्तु कुमार्य्या हृदयं दक्षिणहस्तेन धृत्वा महातेजोमयं शुक्लवर्णं विभाव्य—ऐं ह्रीं श्रीं हूं ह्लौः कुलकुमारिके हृदयाय नमः । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि । इति सर्वत्र १ । शिरः शुक्लवर्णं सर्वमयं विभाव्य—हैं ह्रीं श्रीं ऐं कुलकुमारिके शिरसे स्वाहा । शिरः श्रीपा० २ । शिखां नीलाञ्जनप्रभां विभाव्य—श्रीं कुलकुमारिके शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ३ । कवचं प्रथमारुणसंकाशं सुतेजस्कं विभाव्य—ऐं कुलकुमारिके कवचाय हुं । कवचश्रीपा० ४ । ततो नेत्रत्रयं सर्वबीजमयं महाप्रभं रक्तवर्णं कोटिजपापुष्पोज्ज्वलं विभाव्य—ऐं कुलकुमारिके नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । ह्रीं कुलकुमारिके अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ । ॥ इति षडंगानि पूजयित्वा षोडशनामाभिः षोडशवारं पूजयेत् ॥ तथा च— ॐ ऐं संध्यायै नमः १ । ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः २ । ॐ ऐं त्रिमूर्त्यै नमः ३ । ॐ ऐं कालिकायै नमः ४ । ॐ ऐं सुभगायै नमः ५ । ॐ ऐं उमायै नमः ६ । ॐ ऐं मालिन्यै नमः ७ । ॐ ऐं कुब्जिकायै नमः ८ । ॐ ऐं कालसंकर्षिण्यै नमः ९ । ॐ ऐं अपराजितायै नमः १० । ॐ ऐं रुद्राण्यै नमः ११ । ॐ ऐं भैरव्यै नमः १२ । ॐ ऐं महालक्ष्म्यै नमः १३ । ॐ ऐं पीठनायिकायै नमः १४ । ॐ ऐं क्षेत्रज्ञायै नमः १५ । ॐ ऐं चर्चिकायै

नमः १६ ॥ इति संपूज्य नवनामभिः पूजयेत् ॥ तथाच–ॐ ह्रीं कौमार्य्यै नमः १। ॐ ह्रीं त्रिपुरायै नमः २। ॐ ह्रीं कल्याण्यै नमः ३। ॐ ह्रीं रोहिण्यै नमः ४। ॐ ह्रीं कामिन्यै नमः ५ । ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः ६ । ॐ ह्रीं शांकर्य्यै नमः ७। ॐ ह्रीं दुर्गायै नमः ८ । ॐ ह्रीं सुभद्रायै नमः ९। इति नामभिः संपूज्य 'ॐ ह्रीं हंसः कुलकुमारिकायै नमः पुष्पांजलिं समर्पयामि' इति पुष्पांजलित्रयं दत्त्वा तत्रांगे स्वेष्टदेवीमावाह्य संपूज्य प्रदक्षिणीकृत्य प्रणमेत् ॥ तथा च–ॐ जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ॥ पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥ त्रिपुरां त्रिगुणां धात्रीं ज्ञानमार्गस्वरूपिणीम् ॥ त्रैलोक्यवंदितां देवीं त्रिमूर्त्त पूजयाम्यहम् ॥ २ ॥ कालात्मिकां कालभीतां कारुण्यहृदयां शिवाम् ॥ कारुण्यजननीं नित्यां कल्याणीं पूजयाम्यहम् ॥ ३ ॥ अणिमादिगुणोपेतामकारादिस्वरात्मिकाम् ॥ शक्तिभेदात्मिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पजयाम्यहम् ॥ ४ ॥ कलाधारां कलारूपां कालचण्डस्वरूपिणीम् ॥ कामदां करुणाधारां कामिनीं पूजयाम्यहम् ॥ ५ ॥ चण्डधारां चण्डमायां चण्डमुण्डविनाशिनीम् ॥ प्रणमामि च देवेशीं चण्डिकां पूजयाम्यहम् ॥ ६ ॥ सुखानंदकरीं शांतां सर्वदेवनमस्कृताम् ॥ सर्वभूतात्मिकां देवीं शांकरीं पूजयाम्यहम् ॥ ७ ॥ दुर्गमे दुस्तरे चैव दुःखत्रयविनाशिनीम् ॥ पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गे नमाम्यहम् ॥ ८ ॥ सुंदरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम् ॥ सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां प्रणमाम्यहम् ॥ ९ ॥ इति प्रणम्य ततस्तस्याः कुण्डविले सपरिवारं बालभैरवं ध्यात्वा 'ॐ कुलकुमारिके सपरिवारबालभैरवाय नमः' इति गंधपुष्पाभ्यां संपूजयेत् ॥ ततः 'ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हूँ ह्सौः कुलकुमारिके नमः स्वाहा' इति कुमारीमूलमंत्रं स्वीयमंत्रं वा यथाशक्ति जपित्वा प्राणायामं कृत्वा जपं समर्प्य स्तवकवचादिकं पठित्वाष्टांगं पञ्चांगं वा प्रणम्य दक्षिणां दद्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः । तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् ॥ तथा च–अथ वक्ष्ये महादेव्याः कुमार्या जपहोमगम् ॥ लक्षसंख्याजपं कृत्वा मायां वा वाग्भवं मनुम् ॥ १ ॥ कालीबीजं वापि नाथ अथवा कामबीजकम् ॥ सदाशिवेन पुटितं बिन्दुचन्द्रविभूषितम् ॥ २ ॥ अथवा प्रणवेनापि पुटितं त्रिदशेश्वरम् ॥ तद्दशांशेन जुहुयाद्घृताक्तैर्बिल्वपत्रकैः ॥ ३ ॥

अथवा श्वेतपुष्पैश्च कुन्दपुष्पैर्महाफलम् ॥ एवं क्रमेण जुहुयात्करवीरप्रसूनकैः ॥ ४ ॥ घृताक्तैः केवलैर्वापि चन्दनागुरुमिश्रितैः ॥ हविष्याशी दिवा भागे रात्रौ पूजापरो भवेत् ॥ ५ ॥ निजपूजामशेषैस्तु कुलद्रव्यैः प्रपूजयेत् ॥ रविसंख्यं जपेत्तत्र परमानंदरूपधृक् ॥ ६ ॥ जपांते जुहुयान्मंत्री मदुक्तद्रव्यसंयुतैः ॥ ततः प्राणात्मकं वायुं शोधयित्वा पुनः पुनः ॥ ७ ॥ प्राणायामत्रयं कृत्वा चाष्टाङ्गैः प्रणमेन्मुदा ॥ प्रणामसमये नाथ स्तोत्रमेतत्पठेद्यदि ॥ ८ ॥ कवचं च तथा पठ्यं कुमारीणामथापि वा ॥ निजदेव्या महास्तोत्रं पीठांगं कवचं ततः ॥ ९ ॥ कुमारीणां महादेव सहस्रं नाम साष्टकम् ॥ पठित्वा सिद्धिमाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ॥ १० ॥ तद शक्तौ स्वदेव्यास्तु सहस्रनाम मंगलम् ॥ अष्टोत्तरं पठेन्नाथ सिद्ध्याकांक्षी न संशयः ॥ ११ ॥ तासां स्तोत्रं शुभं नाथ शृण सर्वत्र मंगलम् ॥ अकस्मात्सिद्धिमाप्नोति पठित्वा साधकोत्तमः ॥ १२ ॥ अग्रे संस्थाप्य ताः सर्वा रत्नकोटिसुशीतलाः ॥ ततः स्तोत्रं पठेद्धीमान् समाहितमना वशी ॥ १३ ॥ महादिव्याचाररतो वीरभावोल्बणोऽपि वा ॥ एवं क्रमेण प्रपठेद्भक्तिभावपरायणः ॥ १४ ॥ महाविद्यामहासेवाभक्तिश्रद्धाप्लुतार्पितः । महाज्ञानी भवेत्क्षिप्रं वांछासिद्धिमवाप्नुयात् ॥ १५ ॥ कुब्जिकातंत्रे—अन्नं वस्त्रं तथा नीरं कुमार्यै यो ददाति हि ॥ अन्नं मेरुसमं देव जलं च सागरोपमम् ॥ १६ ॥ वस्त्रैः कोटिसहस्राब्दशिवलोके महीयते ॥ पूजोपकरणानीह कुमार्यै यो ददाति हि ॥ संतुष्टा देवता तस्य पुत्रत्वे सानुकल्पते ॥ १७ ॥ योगिनीतंत्रे पूर्वखण्डे सप्तदशपटले—कुमारीपूजनफलं वक्तुं नाहांमि सुन्दरि ॥ जिह्वाकोटिसहस्रैस्तु वक्त्रकोटिशतैरपि ॥ १८ ॥ यामलेऽपि—कुमारी पूज्यते यत्र स देशः क्षितिपावनः ॥ महापुण्यतमो भूयात्समंतात्क्रोशपंचकम् ॥ १९ ॥ महापर्वसु सर्वेषु विशेषाच्च पवित्रके ॥ महानवम्यां देवेशि कुमारीं च प्रपूजयेत् ॥ २० ॥ तस्मात्षोडशपर्यंतं युवतीति प्रचक्षते ॥ तत्र भावप्रकाशः स्यात्स भावः परमो युतः ॥ २१ ॥ रक्षितव्याः प्रयत्नेन अक्षतास्ताः प्रकाशयेत् ॥ महापूजादिकं कृत्वा वस्त्रालंकारभोजनैः ॥ २२ ॥ पूजयेन्मंदभाग्योऽपि लभते जयमंगलम् ॥ अन्येषां कथने नाथ प्रयोजनमहाफलम् ॥ २३ ॥ विधिना पूजयेद्यस्तु दिव्यवीरपशुस्थितः ॥ भावत्रये महासौख्यं दिव्यकर्म्मणि सत्फलम् ॥ २४ ॥

दिव्यभावस्थितः साक्षात्तंत्रमंत्रफलं लभेत् ॥ कुमारीपूजनादेव कुमारीभोजनादिभिः ॥ २५ ॥ एकद्वित्र्यादिबीजानां फलदा नात्र संशयः ॥ ताभ्यः पुष्पं फलं दत्त्वा अनुलेपादिकं तथा ॥ २६ ॥ बालप्रियं च नैवेद्यं दत्त्वा तद्भावभावितः ॥ मृदा तदंगमात्मानं बालभावविचेष्टितम् ॥ २७ ॥ अतिप्रियकथालापक्रीडाकौतूहलान्वितः ॥ यथार्थं तत्प्रियं तंत्रे कृत्वा सिद्धीश्वरो भवेत् ॥ २८ ॥ कन्या सर्वसमृद्धिः स्यात्कन्या सर्वं परं तपः ॥ होमो मंत्रार्चनं नित्यक्रिया कौलिकसत्क्रिया ॥ २९ ॥ नानाफलमहाधर्म्मः कुमारी पूजनं विना ॥ तत्तत्कर्म्मफलं नाथ प्राप्नोति साधकोत्तमः ॥ ३० ॥ फलं कोटिगुणं वीरः कुमारीपूजया लभेत् ॥ कुसुमाञ्जलिपूर्णं च कन्यायै कुलपण्डितः ॥ ३१ ॥ ददाति यदि तत्पुष्पं कोटिमेरुहिरण्यवत् ॥ तद्दानजं महापुण्यं क्षणादेव समालभेत् ॥ ३२ ॥ कुमारी भोजिता येन त्रैलोक्यं तेन भोजितम् ॥ कुमारीपूजनं कुर्यात्सर्वकर्मफलाप्तये ॥ ३३ ॥ पूजयेत्परमानन्दैरात्मध्यानपरायणः ॥ मम पूजां यः करोति प्रत्यहं शुद्धभक्तितः ॥ ३४ ॥ तस्य वश्यं कुमारीणां पूजनं भोजनं रवेः ॥ तेजोरूपं विधोश्चाग्नेः सर्वभावैः प्रकाशते ॥ ३५ ॥ तत्पूजनात्तदालापाद्भोजनादपि तच्छुभात् ॥ मम प्रीतिर्भवेत्साक्षाद्देवता गुप्तसंस्थिता ॥ ३६ ॥ बालभैरवदेवस्य कामिनी वटुकस्य च ॥ पुत्रस्य सर्वलोकैस्तु पूजितस्य महौजसः ॥ ३७ ॥ पूजाभिर्विविधैर्द्रव्यैः कुमारी देवपूजिता ॥ कुमारी देवता प्रोक्ता सर्वतो जगदीश्वरी ॥ ३८ ॥ पूजार्थं सर्वलोकस्य समानीय सुरेश्वरीम् ॥ पूजयंति महादेवीं गुप्तभावनिवासिनीम् ॥ ३९ ॥ सदा भोजनवाञ्छाढ्या मान्या संतुष्टहासिनी ॥ वृथा न रौति सा देवी कुमारी देवनायिका ॥ ४० ॥ सरस्वतीस्वरूपा सा पूज्यते सर्वनायकैः ॥ शिवभक्तैर्विष्णुभक्तैस्तथान्यदेवपूजिताः ॥ ४१ ॥ सर्वलोकैः पूजिता सा चावश्यं पूज्यते बुधैः ॥ पूजया लभते पुत्रान्पूजया लभते श्रियम् ॥ ४२ ॥ पूजया धनमाप्नोति पूजया लभते महीम् ॥ पूजया लभते लक्ष्मीं सरस्वतीं महौजसम् ॥ ४३ ॥ महाविद्याः प्रसीदंति सर्वे देवा न संशयः ॥ कालभैरवब्रह्मेन्द्रब्राह्मणा ब्रह्मवेदिनः ॥ ४४ ॥ रुद्रश्च देववर्गाश्च वैष्णवा ब्रह्मरूपिणः ॥ अवताराश्च द्विभुजा वैष्णवा मनुशोभिताः ॥ ४५ ॥ अन्ये दिक्पालदेवाश्च चराचरगुरुस्तथा ॥ नानाविद्याश्रिताः सर्वे दानवाः कूटशालिनः ॥ ४६ ॥ उप

सर्गस्थिता ये ये ते ते तुष्टा न संशयः ॥ यद्यहं शुद्धरूपा हि अन्यलोके च का कथा ॥ ४७ ॥ कुमारीपूजनं कृत्वा त्रैलोक्यं वशमानयेत् ॥ महाकांतिर्भवेत्क्षिप्रं सर्वपुण्यफलप्रदम् ॥ ४८ ॥ तत्तन्मंत्रसमुल्लेखात्क्षणात्पुण्यायुतं लभेत् ॥ मंत्रेण पुटितं कृत्वा जप्त्वा सिद्धीश्वरो भवेत् ॥ ४९ ॥ यद्यत्प्रकारमुद्दिश्य वदामि सुरसुन्दरि ॥ तत्तत्कार्यमवश्यं च भिन्नबुद्धिं न कारयेत् ॥ ५० ॥ बृहन्नीलतंत्रे–महाभयातिदुर्भिक्षाद्युत्पातास्तु कुलेश्वरि ॥ दुःस्वप्नभयमृत्युश्च ये चान्ये च समुद्भवाः ॥ ५१ ॥ कुमारीपूजनादेव न ते च प्रभवंति हि ॥ नित्यं क्रमेण देवेशि पूजयेद्विधिपूर्वकम् ॥ ५२ ॥ शांति विघ्नान्पूजिताश्च भयं शत्रून्महोत्कटान् ॥ ग्रहा रोगाः क्षयं यांति भूतवेतालपन्नगाः ॥ ५३ ॥ तंत्रांतरेऽपि–शृणुनाथ कुलार्थं मे कुमारीपूजने मनुम् ॥ महाविद्यामहामंत्रं सिद्धमंत्रं न संशयः ॥ ५४ ॥ एतन्मंत्रप्रभावेण जीवन्मुक्तो भवेत्सुधीः ॥ अन्ते देवीपदं याति सत्यमानन्दभैरव ॥ ५५ ॥ ऐहिका सुखसंपत्तिर्मधुमत्याः प्रसादतः ॥ अवश्यं प्राप्नुयान्मर्त्यो विश्रामं कुरु शंकर ॥ ५६ ॥ वाग्भवेन वपुःक्षोभं मायाबीजे गुणाष्टकम् ॥ श्रियो बीजे श्रियो लाभो मायाबीजे रिपुक्षयः ॥ ५७ ॥ भैरवेण तु बीजेन खेचरत्वं सुरादिभिः ॥ कुमारिका ह्यहं नाथ सदा त्वं हि कुमारकः ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरं वापि एकां वा परिपूजयेत् ॥ पूजिताः परिपूज्यंते ह्यविघ्नंत्यवमानिताः ॥ ५९ ॥ कुमारी योगिनी साक्षात्कुमारी परदेवता ॥ असुरा दुष्टनागाश्च ये ये दुष्टग्रहा अपि ॥ ६० ॥ भूतवेतालगंधर्वा डाकिनीयक्षराक्षसाः ॥ याश्चान्या देवताः सर्वा भूर्भुवः स्वश्च भैरवाः ॥ ६१ ॥ पृथिव्यादीनि सर्वाणि ब्रह्माण्डं सचराचरम् ॥ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः ॥ ६२ ॥ संतुष्टाः सर्वतुष्टाश्च यस्तु कन्यां प्रपूजयेत् ॥ विधियुक्तां कुमारीं तु भोजयेच्चैव भैरव ॥ ६३ ॥ पाद्यार्घ्यं च तथा धूपं कुंकुमं चंदनं शुभम् ॥ भक्तिभावेन संपूज्य कुमारीभ्यो निवेदयेत् ॥ ६४ ॥ इति कुमारीपटलं समाप्तम् ॥ अथ कुमारीकवचप्रारंभः ॥ अथातः संप्रक्ष्यामि कुमारीकवचं शुभम् ॥ त्रैलोक्यमंगलं नाम महापातकनाशनम् ॥ १ ॥ पठनाद्धारणाल्लोका महासिद्धाः प्रभाकरः ॥ शक्रो देवाधिपः श्रीमान्देवाचार्यो बृहस्पतिः ॥ २ ॥ सम्यक्तेजोमयो वह्निर्धर्मराजो भयानकः ॥ वरुणो देवपूज्यो हि जलानामधिपः स्वयम् ॥

॥ ३ ॥ सर्वहर्ता महावायुः कुमारः कुञ्जरेश्वरः ॥ धनाधिपः प्रियः शंभोः सर्वे देवा दिगीश्वराः ॥ ४ ॥ स एकः प्रभुरेकात्मा सर्वेशो निर्मलोदयः ॥ एतत्कवचपाठेन सर्वे भूपा धनाधिपाः ॥ ५ ॥ प्रणवो मे शिरः पातु माया संध्यात्मिका सती ॥ ललाटोर्ध्वं महामाया पातुमे श्रीसरस्वती ॥ ६ ॥ कामाख्या बटुकेशानी त्रिमूर्तिर्भालमेव तु ॥ चामुण्डा बीजरूपा च वदनं कालिका मम ॥ ७ ॥ पातु मां सूर्य्यगा नित्यं तथा नेत्रद्वयं मम ॥ कर्णयुग्मं कामबीजस्वरूपोमा तपस्विनी ॥ ८ ॥ रसनाग्रं तथा पातु वाग्देवी मालिनी मम ॥ तमोवस्था कामरूपा दंताग्रं कुब्जिका मम ॥ ९ ॥ देवी प्रणवरूपा सा पातु नित्यं शिरो मम ॥ ओष्ठाधरौ शक्तिबीजात्मिका स्वाहास्वरूपिणी ॥ १० ॥ गलदेशं महारौद्री पातु मे चापराजिता ॥ क्षौं बीजं मे सदा कण्ठं रुद्राणी स्वाहयान्विता ॥ ११ ॥ हृदयं षोडशी विद्या पातु षोडशसुस्वरा ॥ द्वौ बाहू पातु सर्वत्र महालक्ष्मीः प्रधानिका ॥ १२ ॥ सर्वमंत्रस्वरूपा मे चोदरं पीठ नायिका ॥ पार्श्वयुग्मं तथा पातु ह्रद्देवी वाग्भवात्मिका ॥ १३ ॥ केशोरी कटिदेशं मे मायाबीजस्वरूपिणी ॥ जंघायुग्मं जयंती मे योगिनी कुल्लुकावृता ॥ १४ ॥ सर्वाङ्गमम्बिका देवी पातु मंत्रार्थगामिनी ॥ केशाग्रं कमला देवी नासाग्रं नरमोहिनी ॥ १५ ॥ चुबुकं चण्डिका देवी कुमारी पातु मे सदा ॥ हृदयं ललिता देवी पृष्ठं पर्वतवासिनी ॥ १६ ॥ त्रिशक्तिः षोडशी देवी लिंगं गुह्यं सदावतु ॥ श्मशाने चाम्बिका देवी गंगा गर्भे च भैरवी ॥ १७ ॥ शून्यागारं पंचमुद्रा मंत्रयंत्रप्रकाशिनी ॥ चतुष्पथे सदा पातु मामेव वज्रधारिणी ॥ १८ ॥ शवासनगता चण्डा मुण्डमालाविभूषिता ॥ पातु मामेव लिंगे च ईश्वरी शक्तिरूपिणी ॥ १९ ॥ वने पातु महाबाला महारण्ये रणप्रिया ॥ महाजले तडागे च शत्रुमध्ये सरस्वती ॥ २० ॥ महाकाशपथे पृथ्वी पातु मां शीतला सदा॥ रणमध्ये राजलक्ष्मीः कुमारी कुलकामिनी ॥ २१ ॥ अर्द्धनारीश्वरी पातु मम पादतलं मही ॥ नवलक्षमहाविद्या कुमारीरूपधारिणी ॥ २२ ॥ कोटिसूर्यप्रतीकाशा चन्द्रकोटिसुशीतला ॥ पातु मां वरदा वाणी बटुकेश्वरकामिनी ॥ २३ ॥ इति ते कथितं नाथ कवचं परमाद्भुतम् ॥ कुमार्याः कुलदायिन्याः पंचतत्त्वार्थपारगम् ॥ २४ ॥ यो जपेत्पंचतत्त्वेन स्तोत्रेण कवचेन

च ॥ आकाशगामिनी सिद्धिर्भवेत्तस्य न संशयः ॥ २५ ॥ वज्रदेहो भवेत्क्षिप्रं कवचस्य प्रसादतः ॥ सर्वसिद्धीश्वरो योगी ज्ञानी भवति यः पठेत् ॥ २६ ॥ विवादे व्यवहारे च संग्रामे कुलमण्डले ॥ महापथे श्मशाने च योग सिद्धयुद्भवेषु च ॥ २७ ॥ पठित्वा फलमाप्नोति सत्यं सत्यं कुलेश्वर ॥ वशीकरणमेतद्धि सर्वत्र जयदं शुभम् ॥ २८ ॥ पुण्यव्रती पठेन्नित्यं यतिः श्रीमान्भवेद्ध्रुवम् ॥ सिद्धविद्याकुमारी च ददाति सिद्धिमुत्तमाम् ॥ २९ ॥ पठेद्यः शृणुयाद्वापि स भवेत्कल्प पादपः ॥ भुक्तिं मुक्तिं तुष्टिपुष्टी राजलक्ष्मीं सुसंपदम् ॥ ३० ॥ प्राप्नोति साधकश्रेष्ठो धारयित्वा भवेज्जयी ॥ असाध्यं साधये द्विद्वान्पठित्वा कवचं शुभम् ॥ ३१ ॥ कुलीनानां महासौख्यं धर्मार्थकाममोक्षदम् ॥ योगिनां दिवसे नित्यं कुमारीं पूजये न्निशि ॥ ३२ ॥ उपचारविशेषेण त्रैलोक्यं वशमानयेत् ॥ पललेनाशनेनापि मत्स्येन मुद्रया सह ॥ ३३ ॥ नानाभक्ष्येण भोज्येन गंधद्रव्येण साधकः ॥ माल्येन स्वर्णरजतालंकारेण सुचेलकैः ॥ ३४ ॥ पूजयित्वा जपित्वा च तर्पयित्वा वराननाम् ॥ यज्ञदानतप स्याभिः प्रयोगेण महेश्वर ॥ ३५ ॥ स्तुत्वा कुमारीकवचं यः पठेदेव भावतः ॥ तस्य सिद्धिर्भवेत्क्षिप्रं राजराजेश्वरो भवेत् ॥ ३६ ॥ वांछाफलमवाप्नोति यद्यन्मनसि वर्त्तते ॥ भूर्जपत्रे लिखित्वा यः कवचं धारयेद्यदि ॥ ३७ ॥ शनिमङ्गलवारे च नवम्यामष्टमीदिने ॥ चतुर्दश्यां पौर्णमास्यां कृष्णपक्षे विशेषतः ॥ ३८ ॥ लिखित्वा धारयेद्विद्वानुत्तराभिमुखो भवेत् ॥ महापातकयुक्तोऽपि मुक्तः स्यात्सर्व पातकैः ॥ ३९ ॥ योषिद्वामभुजे धृत्वा सर्वकल्याणमालभेत् ॥ बहुपुत्रान्विता कांता सर्वसम्पत्तिसंयुता ॥ ४० ॥ तथैव पुरुषश्रेष्ठो दक्षिणे धारयेद्भुजे ॥ इहैव दिव्यदेहः स्यात्पंचाननसमप्रभः ॥ ४१ ॥ शिवलोके परं याति वायुवेगो निरामयः ॥ सूर्यमण्डलमाभेद्य परं मोक्षमवाप्नुयात् ॥ ४२ ॥ लोकानामतिसौख्यदं भयहरं श्रीपादभक्तिप्रदं मोक्षार्थं कवचं शुभं प्रपठतामानन्दसिंधूद्भवम् ॥ पंथानं कलिकालघोरकलुषध्वंसैकहेतुं जयं ये लोकाः प्रपठंति धर्ममतुलं मोक्षं व्रजंति क्षणात् ॥ ४३ ॥ इति रुद्रयामले उत्तरतंत्रे महातंत्रो द्दीपने कुमार्युपचर्याविन्यासे कुमारीकवचोल्लासे सिद्धमंत्रप्रकरणे भावनिर्णयकुमारीकवचं समाप्तम् ॥ अथ कुमारीस्तोत्रप्रारंभः ॥

भैरव उवाच ॥ देवेन्द्रादय इन्दुकोटिकिरणां वाराणसीवासिनीं विद्यां वाग्भवकामिनीं त्रिनयनां सूक्ष्मत्रियागामिनीम् ॥ चण्डोद्वेगनिकृं
तनीं त्रिजगतां धात्रीं कुमारीं वरां मूलांभोरुहवासिनीं शशिमुखीं संपजयंति श्रियम् ॥ १ ॥ भाव्यां देवगणैः शिवेन्द्रयतिभिर्मोक्षार्थिभि
र्बालिकां संध्यां नित्यगुणोदयां द्विजगणश्रेष्ठोदयांशारुहाम् ॥ शुक्लाभां परमेश्वरीं शुभकरीं भद्रां विशालाननां गायत्रीं गणमातरं दिन
पतिं कृष्णां च वृद्धां भजे ॥ २ ॥ बालां बालकपूजितां गुणयुतां विद्यावतां मोक्षदां धात्रीं शुक्लसरस्वतीं नरवरां वाग्वादिनीं चण्डि
काम् ॥ स्वाधिष्ठानहरप्रियां प्रियकरीं वेदांतविद्याप्रदां नित्यं मोक्षहिताय योगवपुषां चैतन्यरूपां भजे ॥ ३ ॥ नानारत्नसमूहनिर्मित
गृहे पूज्यां सुरैर्बालिकां वन्दे नन्दनकानने मनसि सिद्धांतैकबीजानने ॥ अर्थं देहि निरर्थकाय वपुषे हित्वा कुमारीं कलां मह्यं मातृ
कुमारिके त्रिविधया मूर्त्या च तेजोमयी ॥ ४ ॥ हालाहालकरालिकां कुलपथोल्लासैः कराञ्जोद्वहां नासामोदकरालिनीं हि भजतां
कामातिरिक्तप्रदाम् ॥ बालोऽहं बटुकेश्वरस्य चरणांभोजाश्रितोऽहं सदा हि त्वां बालकुमारिके शिरसि शुक्लांभोरुहे संभजे ॥ ५ ॥
सूर्याह्लादबलाकिनीं कलिमहापापार्दितापापहां तेजोगां भुवि सूर्यगां भयहरां तेजोमयीं कालिकाम् ॥ वन्दे हृत्कमले सदा रविदले
बालेन्द्रविद्यां सतीं साक्षात्सिद्धिकरीं कुमारि विमले त्वामाद्यरूपेश्वरीम् ॥ ६ ॥ नित्यं श्रीकुलकामिनीं कुलवतीं कौलामुनामम्बिकां
नानायोगविलासिनीं सुरमणीं नित्यां तपस्यान्विताम् ॥ वेदान्तार्थविशेषदेशवसना भाषाविशेषस्थितां वंदे पर्वतराजराजतनयां काल
प्रिये त्वामहम् ॥ ७ ॥ कौमारीं कुलमालिनीं रिपुगणक्षोभाग्निसंदायिनीं रक्ताभानयनां शुभां परममार्गां मुक्तिसंज्ञाप्रदाम् ॥ भार्यां
भोगवतीं पतिं त्रिभुवनेष्वामोदपञ्चाननां पञ्चास्यप्रियकामिनीं भयहरां सर्पादिहारां भजे ॥ ८ ॥ चन्द्रास्यां चरणद्वयां भुजमहाशोभा
विनोदीं नदीं मोहादिक्षयकारिणीं वरकरां श्रीकुब्जिकां सुन्दरीम् ॥ ये नित्यं परिपूजयंति सहसा राजेन्द्रचूडामणिं संपत्तिं धनमायुषं त्रिजगतां
व्याप्येश्वरत्वं जगुः ॥ ९ ॥ योगीशं भुवनेश्वरं प्रियकरं श्रीकालसंदर्भया शोभासागरगामिनं सुरतरुं वांछाफलोद्दीपनम् ॥ लोकाना
मघनाशनाय शिवया श्रीसंज्ञया विद्यया धर्म्मप्राणसदैवतं प्रणमतां कल्पद्रुमं भावये ॥ १० ॥ विद्यान्तामपराजितां मदनगामामोदमत्ता

ननां हृत्पद्मस्थितपादुकां कुलकलां कात्यायनीं भैरवीम् ॥ ये ये पुण्यधियो भजंति परमानन्दाब्धिमध्ये मुदा सर्वाच्छादिततेजसाऽभयकरीं
मोक्षाय सत्कीर्तये ॥ ११ ॥ रुद्राणीं प्रणमामि पद्मवदनां कोटयर्कतेजोमयीं नानालंकृतभूषणां कुलभुजामानन्दसंदायिनीम् ॥ श्री
मायां कमलान्वितां हृदि गतां संतानबीजक्रियां वन्देवाग्भवरूपिणींकुलवधूं हूंकारबीजोद्भवाम् ॥ १२ ॥ नमामि वरभैरवीं क्षितितलाघ
कालानलां मृणालकुसुमारुणां भुवनदोषसंशोधिनीम्॥ जगत्त्रयहरां परां हरति या च योगेश्वरीममापदमहर्निशं सकलभोगदां तामहम्
॥ १३ ॥ साम्राज्यं प्रददाति या भगवती विद्या महालक्षणा साक्षादष्टसमृद्धिदा भुवि महालक्ष्मीः कुलक्षोभहा ॥ स्वाधिष्ठानसुपङ्कजे
विलसितां विष्णोरनंतश्रियं वन्दे राजपदप्रदां शुभकरीं कौलेश्वरीं सर्वदा ॥ १४ ॥ पीठानामधिपाधिपामसुरहां विद्यां शुभां नायिकां
सर्वालंकरणान्वितां त्रिजगतां क्षोभापहां वारुणीम् ॥ वन्दे पीठगनायिकां त्रिभुवनच्छायाभिराच्छादितां सर्वेषां हितकारिणीं जयवतामा
नन्दरूपेश्वरीम् ॥ १५ ॥ क्षेत्रज्ञां मदविह्वलां कुलवतीं सिद्धप्रियां प्रेयसीं शंभोः श्रीबटुकेश्वरस्य महतामानन्दसंचारिणीम् ॥ साक्षादा
त्मपरोद्गमां निजमनःक्षोभापहां शाकिनीं वाक्यार्थप्रकटामहं रजतभां वन्दे महाभैरवीम् ॥ १६ ॥ सुपूर्णविधुवन्मुखीं कमलमध्यसंभा
विनीं शिरोदशशते दलेऽमृतमहाब्धिधाराधराम् ॥ प्रणामफलदायिनीं सकलराजवश्यां गुणां नमामि परमाम्बिकां विषयपाशसंहारि
णीम् ॥ १७ ॥ साक्षादहं त्रिभुवनेऽमृतपूर्णदेहां संध्यादिदेविकललः कुलपण्डितेन्द्राम् ॥ तन्नो भजे सुरवरे वरकालिके त्वां सिद्धानले
प्रतिदिनं प्रणमामि भक्त्या ॥ भक्तिं धनं जयपदं यदि देहि दास्यं तस्मिन्महामधुमतीलघुगेहभार्य्याम् ॥ १८ ॥ एतत्स्तोत्रप्रसादेन
कवितावाक्पतिर्भवेत् ॥ महासिद्धीश्वरो दिव्यो वीरभावपरायणः ॥ १९ ॥ सर्वत्र जयमाप्नोति स हि स्याद्धरवल्लभः ॥ वाचामीशो
भवेत्क्षिप्रं कामरूपी भवेन्नरः ॥ २० ॥ पशुरेव महावीरो दिव्यो भवति निश्चितम् ॥ क्रमशोऽप्यष्टसिद्धिः स्याद्वाग्मी भवति निश्चितम्
॥ २१ ॥ सर्वविद्याः प्रसीदंति तष्टाः सर्वदिगीश्वराः ॥ वह्निः शीतलतां याति जलस्तंभं स कारयेत् ॥ २२ ॥ धनवान्पुत्रवान्राजा
इहलोके भवेन्नरः ॥ स संचरति वैकुण्ठे कलासे शिवसन्निधौ ॥ २३ ॥ मुक्त एव महादेव यो नित्यं सर्वदा पठेत् ॥ महाविद्यापदां

भोजं स हि पश्यति निश्चितम् ॥ २४ ॥ इति कुमारीस्तोत्रं समाप्तम् ॥ अथ कुमारीसहस्रनामस्तोत्रप्रारंभः ॥ आनंदभैरव उवाच ॥ अस्याः श्रीकुमार्याः सहस्रनामस्तोत्रस्य बटुकभैरव ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः । कुमारी देवता । सर्वमंत्रसिद्धिसमृद्धये विनियोगः॥ॐ कुमारी कौशिकी काली कुरुकुल्ला कुलेश्वरी ॥ कनकाभा काञ्चनाभा कमला कालकामिनी ॥ १ ॥ कपालिनी कालरूपा कौमारी कुलबालिका ॥ कांता कुमारकांता च कारणा करिगामिनी ॥ २ ॥ कंधकांता कौलकांता कृतकर्मफलप्रदा ॥ कार्याकार्य्यप्रवक्री च कंसहंत्री कुरुक्षया ॥ ३ ॥ कृष्णकांता कालरात्रिः कर्णेषुधारशीकरा ॥ कामहा कपिला काला कालिका कुरुकामिनी ॥ ४ ॥ कुरुक्षेत्रप्रिया कोला कुंती कामातुरातुरा ॥ कलंजभक्षा कैकेयी काकपुच्छध्वजा कला ॥ ५ ॥ कमला कामलक्ष्मीश्च कमलाननकामिनी ॥ कामधेनुस्वरूपा च कामहा कामवर्द्धिनी ॥ ६ ॥ कामदा कामपूज्या च कामातीता कलावती ॥ कौमारी कारणाढ्या च कैशोरी कुशलाकुला ॥ ७ ॥ कम्बुग्रीवा कृष्णनिभा कालराजप्रिया कृतिः ॥ कङ्कणालंकृता कङ्काकेवला काकिनी करा ॥ ८ ॥ किरातिनी काकभक्षा करालवदना कुशा ॥ केशिनी केशिहा केशा केशीष्टा च कविप्रिया ॥ ९ ॥ कविनाथस्वरूपा च कटुवाणी कटुस्थिता । कोटरा कोटराक्षी च करनाटकवासिनी ॥ १० ॥ कटकस्था काष्ठसंस्था कंदर्पा केतकीप्रिया ॥ केलिप्रिया कंबलस्था कालदैत्यविनाशिनी ॥ ११ ॥ केतकीपुष्पशोभाढ्या कर्पूरपूर्णजिह्विका ॥ कर्पूरकरका काल्ला कैलासगिरिवासिनी ॥ १२ ॥ कुशासनस्था कादम्बा कुंजरेशी कुलानना ॥ खर्वा खड्गधरा खड्गाखिलहाखिलवृद्धिदा ॥ १३ ॥ खंजना खररूपा च खाराम्लतिक्तमध्यगा ॥ खेलना खेटककरा खरवाक्या खरोत्कटा ॥ १४ ॥ खद्योतचञ्चला खेला खद्योता खगवाहिनी ॥ खेटकस्था खला खस्था खेचरी खेचरप्रिया ॥ १५ ॥ खचरा खचरप्रेमा खलाढ्या खचरानना ॥ खेचरेशी खरोग्रा च खेचरप्रियभाषिणी ॥ १६ ॥ खर्जूरासवसंवर्ता खर्जूरफलभोगिनी ॥ खातमध्यस्थिता खाता खाताम्बुपरिपूजिनी ॥ १७ ॥ खातिः खातजलानंदा खलना खञ्जनागतिः॥ खल्वा खरतरा खारी खारोद्वेगनिकृंतनी ॥ १८ ॥ गगनस्था च गीता च गंभीरनादिनी गया ॥ गंगा गभीरा गौरी

च गणनाथप्रिया गतिः ॥ १९ ॥ गुरुभक्ता ग्लानिहीना गेहिवी गोपिनी गिरा ॥ गोगणस्था गाणपत्या गिरिजा गिरिपूजिता ॥ २० ॥ गिरिकांता गणस्था च गिरिकन्या गणेश्वरी ॥ गाधिराजसुता ग्रीवा गुर्वी गुरुश्च शाङ्करी ॥ २१ ॥ गन्धर्वयामिनीगीता गायत्री गुणदा गुणा ॥ गुग्गलस्था गुरोः पूज्या गीतानंदप्रकाशिनी ॥ २२ ॥ गयासुरप्रिया गेहा गवाक्षजालमध्यगा ॥ गुरुकन्या गुरोः पत्नी गहना गुरुनादिनी ॥ २३ ॥ गुल्फवायुस्थिता गुल्फगर्दभा गर्दभप्रिया ॥ गुह्या गुह्यगणस्था च गरिमा गैरिका गुदा ॥ २४ ॥ गुदोर्द्धस्था च गलिता गणिका गोलका गणा ॥ गान्धर्वी गाननगरी गन्धर्वगणपूजिता ॥ २५ ॥ घोरनादा घोरमुखी घोरा घर्मनिवारिणी ॥ घनदा घनवर्णा च घनवाहनवाहना ॥ २६ ॥ घर्घरध्वनिचपला घोटा घटपटी घटी ॥ घटिता घटना घोणा घनरूपा घनेश्वरी ॥ २७ ॥ घुष्यातीता घर्घरा च घोराननविमोहिनी ॥ घोरनेत्रा घनरुचा घोरभैरवकन्यका ॥ २८ ॥ घाता घातकरा घात्या घ्राणा घ्राणगवासिनी ॥ घोरान्धकारसंस्था च घसना घस्वरा घरा ॥ २९ ॥ घोटकस्था घोटका च घोटकेश्वरवाहना ॥ घननीलमणिश्यामा घर्घरेश्वरकामिनी ॥ ३० ॥ ङकारकूटसम्पन्ना ङकारचक्रगामिनी ॥ ङकारी ङसशा चैव ङीयनीता ङकारिणी ॥ ३१ ॥ चन्द्रमण्डलमध्यस्था चतुरा चारुहासिनी ॥ चारुचन्द्रमुखी चैव चलाङ्गसुगतिप्रिया ॥ ३२ ॥ चंचला चपला चण्डी चेकिताना चरुस्थिता ॥ चलिता चालना चार्वी चारुभ्रमरनादिनी ॥ ३३ ॥ चोरहा चन्द्रनिलया चान्द्री चक्रपुरस्थिता ॥ चक्रकीला चक्ररूपा चक्रस्था चक्रसिद्धिदा ॥ ३४ ॥ चक्रिणी चक्रहस्ता च चक्रनाथकुलप्रिया ॥ चक्राभेद्या चक्रकुला चक्रमण्डलशोभिता ॥ ३५ ॥ चक्रेश्वरप्रिया चैला चैलाजिनकुशोत्तरा ॥ चतुर्वेदस्थिता चण्डा चन्द्रकोटिसुशीतला ॥ ३६ ॥ चतुर्गुणा चन्द्रवर्णा चातुरी चतुरप्रिया ॥ चक्षुष्या चक्षुर्वसतिश्चलका चलनप्रिया ॥ ३७ ॥ चार्वंगी चन्द्रनिलया चलदम्बुजलोचना ॥ चर्वरीशा चारुमुखी चारुदंता चरस्थिता ॥ ३८ ॥ चषकस्थासवा चेता चेतःस्था चैत्रपूजिता ॥ चाक्षुषी चन्द्रमालिनी चन्द्रहासमणिप्रभा ॥ ३९ ॥ छत्रस्था छत्ररूपा च छत्रच्छायावनस्थिता ॥ छलज्ञा छेश्वरी छाया छायाछिन्नशवा छला ॥ ४० ॥ छत्राचरणशोभाढ्या छत्रिणां छत्रधारिणी ॥

छिन्नातीता छिन्नमस्ता छिन्नकेशा छलोद्भवा ॥ ४१ ॥ छलहा छलदा छाला छिन्ना छन्नजनप्रिया ॥ छलाछला छंभवती
छंभसम्भनिवासिनी ॥ ४२ ॥ छद्मगन्धा छदा छन्ना छद्मकेशा छकारिका ॥ छागलारक्तभक्षा च छागलामोदरक्तपा ॥ ४३ ।
छगलण्डेशकन्या च छगलण्डकुमारिका ॥ छविका छुरिकाकारा छुरिकारिविनाशिनी ॥ ४४ ॥ छिन्ननासा छिन्नहासा छोललोला
छलोदरी ॥ छलोद्वेगा छागरीजमाला छागवरप्रदा ॥ ४५ ॥ जटिला जठरश्रीदा जरा यज्ञप्रिया जया ॥ यंत्रस्था जीवजा जीवा
जयदा जीवयोगदा ॥ ४६ ॥ जयिनी जमलस्था च जामलोद्भवनायिका ॥ जामलप्रियकन्या च जामलेशी जवप्रिया ॥ ४७ ॥
जवाकोटिसमप्रख्या जपापुष्पप्रिया जना ॥ जलस्था जागरिमया जरातीता जलस्थिता ॥ ४८ ॥ जीवहा जीवकन्या च जनार्दनकुमा
रिका ॥ जातुका जलपूज्या च जगन्नाथादिकामिनी ॥ ४९ ॥ जीर्णांगी जीर्णहीना च जीमूतात्यंतशोभिता ॥ जामदा जमदा
जृंभा जृंभणांतादिधारिणी ॥ ५० ॥ जयिनी जारजप्रीता जगदानन्दवर्द्धिनी ॥ यमलार्जुनदर्पघ्नी यमलार्जुनभञ्जिनी ॥ ५१ ॥ जय
त्रिजगदानन्दा ज्ञामलोल्लाससिद्धिदा ॥ जयमाला जापसिद्धिर्जपयज्ञप्रकाशिनी ॥ ५२ ॥ जाम्बुवती जाम्बुवतः कन्यका जलजा
जया ॥ जवहंत्री जगद्बुद्धिर्जगत्कर्त्री जगद्गतिः ॥ ५३ ॥ जीवनी जीवनी जाया जगन्माता जनेश्वरी ॥ झंझना झंकमध्यस्था झण
त्कारस्वरूपिणी ॥ ५४ ॥ झणज्झणद्वह्रिरूपा झनना झल्लरीश्वरी ॥ झटिताक्षा झरा झंझा झर्झराधरकन्यका ॥ ५५ ॥ झणत्कारी
झना झन्ता झंकारमालया वृता ॥ झंकारी झर्झरी झिल्ली झल्लेश्वरनिवासिनी ॥ ५६ ॥ ञकारी ञकिराती च ञकारबीजमालिनी ॥
ञनमोऽन्ता ञकारान्ता . ञलारपरमेश्वरी ॥ ५७ ॥ ञान्तबीजपुत्रकरा ञेकनेत्रैककामिनी ॥ ञेकनेत्रा ञस्वरूपा ञजहा ञहरी
तकी ॥ ५८ ॥ टुण्टुनी टंकहस्ता च टान्तवर्गा टलावती ॥ टपला टालवालाख्या टङ्कारध्वनिरूपिणी ॥ ५९ ॥ टलाती टाक्षरा
तीता टित्कारादिकुमारिका ॥ टांकास्त्रधारिणी टाना टामोटार्णलभाषिणी ॥ ६० ॥ टंकारीविधना टाका टका टकविमोहिनी ॥
टंकारधरनामाहा टिवी खेचरनादिनी ॥ ६१ ॥ ठठंकारी ठाठरूपा ठकारबीजकारणा ॥ डमरुप्रियवाद्या च डामरस्था डरीजिका ॥

॥ ६२ ॥ डान्तवर्गा डमरुका डरस्था डोरडामरा ॥ डगरार्द्धा डलातीता डदारुकेश्वरी डुता ॥ ६३ ॥ ढार्द्धनारीश्वरा ढामा ढक्कारी ढलना ढला ॥ ढकस्था ढेश्वरसुता ढेमनाभावढोनना ॥ ६४ ॥ णोमाकांतेश्वरी णांतवर्गस्था णतुनावती ॥ णनोमालंककल्याणी णाक्षवी णाक्षबीजिका ॥ ६५ ॥ तुलसीतंतुसूक्ष्माख्या तारल्या तैलगंधिका ॥ तपस्या तापससुता तारिणी तरुणी तला ॥ ६६ ॥ तंत्रस्था तारकब्रह्मस्वरूपा तंतुमध्यगा ॥ तालभक्षा त्रिधामूर्तिस्तारका तैलभक्षिका ॥ ६७ ॥ तारोभ्राता तमाला च तकारा तिंतिडीप्रिया ॥ तपस्या तालसंदर्भा तजंयंती कुमारिका ॥ ६८ ॥ तोकाचारा तलोद्वेगा तक्षका तक्षकप्रिया ॥ तक्षकालंकृता तोषा तावद्रूपा तलप्रिया ॥ ६९ ॥ तलास्त्रधारिणी तापा तपसां फलदायिनी ॥ तल्वलत्रप्रहारालीता तलारिगणनाशिनी ॥ ७० ॥ तुला तौलीतोलका च तलस्था तलपालिका ॥ तरुणा तत्तबुद्धिस्था तत्ताप्रधारिणी तपा ॥ ७१ ॥ तंत्रप्रकाशकरणी तंत्रार्थदायिनी तथा ॥ तुषारकिरणाङ्गी च चतुर्धावासत्रप्रभा ॥ ७२ ॥ तैलमार्गाभिसूता च तंत्रासिद्धिफलप्रदा ॥ ताम्रवर्णा ताम्रकेशा ताम्रपात्रप्रिया तमा ॥ ७३ ॥ तमोगुणप्रिया तोला तक्षकारिनिवारिणी ॥ तोषयुक्ता तमायाची तमषोडेश्वरप्रिया ॥ ७४ ॥ तुलना तुल्यरुचिरा तुल्यबुद्धिस्त्रिधामतिः ॥ तक्षभक्षा तालसिद्धिस्त्रस्तस्था त्रस्तगामिनी ॥ ७५ ॥ तलया तैलभा ताली तंत्रगोपनतत्परा ॥ तंत्रमंत्रप्रकाशा च त्रसरेणुस्वरूपिणी ॥ ७६ ॥ त्रिंशदर्शप्रिया तुष्टा तुष्टिस्तुष्टजनप्रिया ॥ थाकारकूटदण्डीशा थदण्डीशप्रियाथत्रा ॥ ७७ ॥ थकाराक्षररूढाङ्गी थांतवर्गार्थकारिका ॥ थांता थमीश्वरी थाका थकारबीजमालिनी ॥ ७८ ॥ दक्षदामप्रिया दोषा दोषजालवनाश्रिता ॥ दशा दशनघोरा च देवी दासप्रिया दया ॥ ७९ ॥ दैत्यहंत्री परा दैत्या दैत्यानां मर्दिनी दिशा ॥ दांता दांतप्रिया दामा दामंता दीर्घकेशिका ॥ ८० ॥ दशना रक्तवर्णा च दरीगृहनिवासिनी ॥ देवमाता दुर्लभा च दीर्घाङ्गी दासकन्यका ॥ ८१ ॥ दशनश्रीर्दीर्घनेत्रा दीर्घनासा च दोषहा ॥ दमयंती दलस्था च द्वेषहंत्री दशास्थिता ॥ ८२ ॥ देशेषिका दिशिगता दशनास्त्रविनाशिनी ॥ दारिद्र्यहा दारिद्रस्था दरिद्रधनदायिनी ॥ ८३ ॥ दंतुरा देशभाषा च दशस्था देशनायिका ॥ द्वेषरूपा द्वेषहंत्री द्वेषारिगणमोहिनी

॥ ८४ ॥ दामोदरस्थाननादा दलानां बलदायिनी ॥ दिग्दर्शनस्थानदर्शदर्शनप्रियवादिनी ॥ ८५ ॥ दामोदरप्रिया दांता दामोदर कलेवरा ॥ द्रविणी द्राविणी दाशा दक्षकन्या दला दृढा ॥ ८६ ॥ दृढासना दासशक्तिर्द्वन्द्वयुद्धप्रकाशिनी ॥ दधिप्रिया दधिस्था च दधिमंगलकारिणी ॥ ८७ ॥ दर्पहा दर्पदा दर्पा दर्भपुण्यप्रिया दधिः ॥ दर्भस्था द्रुपदसुता द्रौपदी द्रुपदप्रिया ॥ ८८ ॥ धर्मचिंता धनाध्यक्षा धनेश्वरवरप्रदा ॥ धनहा धनदा धन्वी धनुर्हस्ता धनुःप्रिया ॥ ८९ ॥ धरणिर्वीर्य्यरूपा च धनस्था धनमोहिनी ॥ धीरा धीरप्रियाधारा धराधरणतत्परा ॥ ९० ॥ धान्यदा धान्यबीजा च धर्माधर्मस्वरूपिणी ॥ धाराधरस्था धन्या च धर्मपुञ्जनिवासिनी ॥ ९१ ॥ धनाढ्यप्रियकन्या च धन्यलोकैश्च सेविता ॥ धर्मार्थकाममोक्षाङ्गी धर्मार्थकाममोक्षदा ॥ ९२ ॥ धराधरा धुरीणा च धवला धवलामुखी ॥ धरा च धामरूपा च ध्रुवा ध्रौव्या ध्रुवप्रिया ॥ ९३ ॥ धनेशी धारणाख्या च धर्मनिन्दाविनाशिनी ॥ धर्म तेजोमयी धर्म्या धैर्याग्रगर्भमोहिनी ॥ ९४ ॥ धारणा धौतवसना धत्तूरफलभोगिनी ॥ नारायणी नरेन्द्रस्था नारायणकलेवरा ॥ ९५ ॥ नरनारायणप्रीता धर्मनिन्दाविमोहिता ॥ नित्या नापितकन्या च नयनस्था नरप्रिया ॥ ९६ ॥ नाम्नी नामाप्रिया नारा नारायणसुता नरा ॥ नवीननायकप्रीता नव्या नवफलप्रिया ॥ ९७ ॥ नवीनकुसुमप्रीता नवीनानां ध्वजानुता ॥ नारी निम्नस्थिता निन्दा नान्दिनी नन्दकारिका ॥ ९८ ॥ नवपुष्पमहाप्रीता नवपुष्पसुगंधिका ॥ नन्दनस्था नन्दकन्या नन्दमोक्षप्रदायिनी ॥ ९९ ॥ नमिता नमभेदा च नाम्नार्तवनमोहिनी ॥ नवबुद्धिप्रियानेका नाकस्था नागकन्यका ॥ १०० ॥ निन्दाहीना नवोल्लासा नाकस्थान प्रदायिनी ॥ निंबचक्षुस्थिता निंबा नानक्षेक्षनिवासिनी ॥ १०१ ॥ नाड्यातीता नीलवर्णा नीलपर्णा सरस्वती ॥ नभस्था नायकप्रीता नायकप्रियकामिनी ॥ २०२ ॥ नववर्णा निराहारा निरीहाणां रजःप्रिया ॥ निम्ननाभिप्रभाकारा नरेन्द्रहस्तपूजिता ॥ १०३ ॥ नलस्थिता नलप्रीता नलराजकुमारिका ॥ परेश्वरी परानन्दा परापरविभेदिका ॥ १०४ ॥ परमा परचक्रस्था पार्वती पर्वतप्रिया ॥ पारमेशी पर्व नानापुष्पमाल्यप्रियापरा ॥ १०५ ॥ परा प्रिया प्रीतिदात्री प्रीता प्रथमकामिनी ॥ प्रथमा प्रथमप्रीता पुष्पगंध

प्रिया परा ॥ १०६ ॥ पैष्टीपानरता पीना पीनस्तनसुशोभना ॥ परमानरता पुंसां पाशहस्ता पशुप्रिया ॥ १०७ ॥ पललानन्द रसिका पलालधूमरूपिणी ॥ पलाशपुष्पसङ्काशा पलाशपुष्पमालिनी ॥ १०८ ॥ प्रेमभूता पद्ममुखी पद्मरागसुमानिनी ॥ पद्म माला पापहरा पतिप्रेमाविलासिनी ॥ १०९ ॥ पञ्चाननमनोहारी पञ्चवक्त्रप्रकाशिनी ॥ फलमूलाशना फाली फलदा फाल्गुन प्रिया ॥ ११० ॥ फलनाथप्रिया फल्वी फल्वकन्या फलोन्मुखी ॥ फेत्कारीतंत्रमुख्या च फेत्कारगणपूजिता ॥ १११ ॥ फेरवी फेरवसुता फलभोगोद्भवा फला ॥ फलप्रिया फलाशक्ता फाल्गुनानन्ददायिनी ॥ ११२ ॥ फालभोगोत्तरा फेला फाल्लम्भोज निवासिनी ॥ वासुदेवग्रहस्था च वासवी वीरपूजिता ॥ ११३ ॥ विषभक्षा बुधसुधा ब्लुंकारी ब्लुवरप्रदा ॥ बृही बृहस्पतिर्वाचा वाचस्पतिवरप्रदा ॥ ११४ ॥ वेदाचारी वेद्यपरा वसुवक्त्रास्थिता विभा ॥ बोधज्ञा वौषडाख्या च वंशीवदनपूजिता ॥ ११५ ॥ वज्र कांता वक्रगातिर्बदरीवंशवर्द्धिनी ॥ भारती भवरश्रीदा भवपत्नी भवात्मजा ॥ ११६ ॥ भवानी भाविनी भीमा भिषक्भाठ्यातुरि स्थिता ॥ भुर्भुवःस्वःस्वरूपा च भूशार्ता भेकनादिनी ॥ ११७ ॥ भीतिर्भङ्गप्रिया भंगा भंगहा भंगहारिणी॥ भर्त्ता भगवती भाग्या भगी रथनमस्कृता ॥ ११८ ॥ भगमाला भूतनाथेश्वरी भार्गवपूजिता ॥ भृगुवंशा भीतिहरा भूमिर्भुजगहारिणी ॥ ११९ ॥ भालचन्द्रा भल्वबाला भवभूतिविभूतिदा ॥ भवरस्था मत्तगतिर्मदमत्ता मदप्रिया ॥ १२० ॥ मदिराष्टादशभुजा मदिरामत्तगामिनी ॥ मदिरा सिद्धिदा मध्या मदान्तगतिसिद्धिदा ॥ १२१ ॥ मीनभक्षा मीनरूपा मुद्रा मुद्गप्रिया गतिः ॥ मुशला मुक्तिदा मूर्ता मूकीकरणतत्परा ॥ १२२ ॥ मूषार्ता मृगतृष्णा च मेषभक्षणतत्परा ॥ मैथुनानन्दसिद्धिश्च मैथुनानलसिद्धिदा ॥ १२३ ॥ महालक्ष्मीर्भैरवी च महे न्द्रपीठनायिका ॥ मनःस्था माधवी मुख्या महादेवमनोरमा ॥ १२४ ॥ यशोदा याचना यास्या यमराजप्रिया यमा ॥ यशोराशिविभू षांगी यतिप्रेमकलावती ॥ २२५ ॥ रमणी रामपत्नी च रिपुहा रीतिमध्यगा ॥ रुद्राणी रूपदा रूपा रूपसुन्दरधारिणी ॥ १२६ ॥ रेतःस्था रेतसंप्रीता रेतःस्थाननिवासिनी ॥ रैन्द्रा देवसुतारेदा रिपुवर्गांतकप्रिया ॥ १२७ ॥ रोमावलीन्द्रजननी रोमकूपजगत्पतिः ॥

रौप्यवर्णा रौद्रवर्णा रौप्यालङ्कारभूषणा ॥ १२८ ॥ रंगणा रंगरागस्था रणवह्निकुलेश्वरी ॥ लक्ष्मीर्लांगललीला च लांगली कुलकामिनी ॥ १२९ ॥ लिपिरूपा लीढपादा लतातंतुस्वरूपिणी ॥ लिम्पती लेलिहा लोला लोमराप्रियसिद्धिदा ॥ १३० ॥ लौकिकी लोकसिद्धिर्हि लंकानाथकुमारिका ॥ लक्ष्मीहीना लक्षणा च लप्रिया लार्णमध्यगा ॥ १३१ ॥ विवसा वसनावेशा विवस्वत्कुल कन्यका ॥ वातस्था वातरूपा च वेत्रमध्यानिवासिनी ॥ १३२ ॥ श्मशानभूमिमध्यस्था श्मशानसाधनाप्रिया ॥ शवस्था परसिद्धार्था शववक्षसि शोभिता ॥ १३३ ॥ शरणागतपाल्या च शिवकन्या शिवप्रिया ॥ षट्चक्रभेदिनी षोढान्यासजालदृढानना ॥ १३४ ॥ संध्या सरस्वती सुन्धा सूर्यगा शारदा सती ॥ हरिप्रिया हरा हाला लावण्यस्था क्षमा क्षुधा ॥ १३५ ॥ क्षेत्रज्ञा सिद्धिदात्री च अम्बिका चापराजिता ॥ आद्या इन्द्रप्रिया ईशा उमा ऊढा ऋतुप्रिया ॥ १३६ ॥ सुतुण्डा स्वरबीजांता हरिवेशादिसिद्धिदा ॥ एकादशीव्रतस्था च ह्यैन्द्री ह्यौषधिसिद्धिदा ॥ १३७ ॥ औपकारी अंशरूपा अस्त्रबीजप्रकाशिनी ॥ इत्येतत्कामुकीनाथ कुमारीणां सुमंगलम् ॥ १३८ ॥ त्रैलोक्यफलदं नित्यमष्टोत्तरसहस्रकम् ॥ महास्तोत्रं धर्मसारं धनधान्यसुतप्रदम् ॥ १३९ ॥ सर्वं विद्याफलोल्लासं भक्तिमान् यः पठेत्सुधीः ॥ स सर्वदा दिवारात्रौ संभवेन्मुक्तिमार्गगः ॥ १४० ॥ सर्वत्र जयमाप्नोति वीराणां वल्लभो भवेत् ॥ सर्वे देवा वशं यांति वशीभूताश्च मानवाः ॥ १४१ ॥ ब्रह्माण्डं ये च शंसंति ते तुष्टा नात्र संशयः ॥ ये वसंति च भूलोके देवतुल्यपराक्रमाः ॥ १४२ ॥ ते सर्वे भृत्यतुल्याश्च सत्यं सत्यं कुलेश्वर ॥ अकस्मात्सिद्धिमाप्नोति होमेन यजनेन च ॥ १४३ ॥ जाप्येन कवचाद्येन महास्तोत्रार्थपाठतः ॥ विना यज्ञैर्विना दानैर्विना जप्यैर्लभेत्फलम् ॥ १४४ ॥ यः पठेत्स्तोत्रकं नाम चाष्टोत्तरसहस्रकम् ॥ तस्य शांतिर्भवेत्क्षिप्रं कन्यास्तोत्रं पठेत्ततः ॥ १४५ ॥ वारत्रयप्रपाठेन राजानं वशमानयेत् ॥ एकवारं पठेन्मंत्री धर्मकामार्थमोक्षभाक् ॥ १४६ ॥ त्रिदिनं प्रपठेद्विद्वान्यदि पुत्रं समिच्छति ॥ वारत्रयक्रमेणैव वारैकक्रमतोऽपि वा ॥ १४७ ॥ पठित्वा धनरत्नानामधिपः सर्ववित्तमः ॥ त्रिजगन्मोहयेन्मंत्री वत्सरार्द्धप्रपाठतः ॥ १४८ ॥ वत्सरं व्याप्य यदि वा भक्तिभावेन यः

पठेत् ॥ चिरजीवी खेचरत्वं प्राप्य योगी भवेन्नरः ॥ १४९ ॥ महाहवस्थितं वर्णं पश्यति स्थिरमानसः ॥ महिलामण्डले स्थित्वा
शक्तियुक्तः पठेत्सुधीः ॥ १५० ॥ स भवेत्साधकश्रेष्ठः क्षीरी कल्पद्रुमो भवेत् ॥ सर्वदा यः पठेन्नाथ भावोद्गतकलेवरः ॥ १५१ ॥
दर्शनात्स्तंभनं कर्तुं क्षमो भवति साधकः ॥ जलादिस्तंभने शक्तो वह्निस्तंभादिसिद्धिभाक् ॥ १५२ ॥ वायुवेगी महावाग्मी वेदज्ञो
भवति ध्रुवम् ॥ कविनाथो महाविद्यो बंधकः पण्डितो भवेत् ॥ १५३ ॥ सर्वदेशाधिपो भूत्वा देवपुत्रः स्वयं भवेत् ॥ कांतिं
श्रियं यशो बुद्धिं प्राप्नोति बलवान् पतिः ॥ १५४ ॥ अष्टसिद्धियुतो नाथ यः पठेदर्थसिद्धये ॥ उटजेऽरण्यमध्ये च पर्वते घोरकानने
॥ १५५ ॥ वने वा प्रेतभूमौ च शरोपरि महारणे ॥ ग्रामभंगे गृहे वाऽपि शून्यागारे नदीतटे ॥ १५६ ॥ गंगागर्भे महापीठे योनि
पीठे गुरोर्गृहे ॥ धर्मक्षेत्रे देवगृहे कन्यागारे कुलालये ॥ १५७ ॥ प्रांतरे गोष्ठमध्ये वा राजादिभयहीनके ॥ निर्भयादिस्वदेशेषु शिव
लिङ्गालयेऽथवा ॥ १५८ ॥ भूगते चैकलिंगे वा ग्राम्यदेशे शिवाकुले ॥ अश्वत्थमूले बिल्वे वा कुलवृक्षसमीपतः ॥ १५९ ॥
अन्येषु सिद्धिदेशेषु कुलरूपश्च साधकः ॥ दिव्यो वा वीरभावस्थः पृष्ट्वा कन्याः कुलाकुलौ ॥ १६० ॥ कुलद्रव्यैश्च विविधैः सिद्धि
द्रव्यैश्च साधकः ॥ मांसीरसेन जुहुयान्मदाक्तकरसेन च ॥ १६१ ॥ हुतशेषं कुलद्रव्यं ताभ्यो दद्यात्सुसिद्धये ॥ तासामुच्छिष्टमानीय
जुहुयाद्वक्त्रपङ्कजे ॥ १६२ ॥ घृणालज्जाविनिर्मुक्तः साधकः स्थिरमानसः ॥ पिबेन्मांसरसं मंत्री सदानन्दो महाबली ॥ १६३ ॥
महामांसाष्टकं ताभ्यो मदिराकुंभपूरितम् ॥ तारमायारमावह्निजायामंत्रं पठेत्सुधीः ॥ १६४ ॥ नैवेद्यविधिदानेन पठित्वा स्तोत्रमंग
लम् ॥ स्वयं प्रसादं भुक्त्वा हि सर्वविद्याधिपो भवेत् ॥ १६५ ॥ सूकरस्योष्ठमांसेन पीनमीनेन मुद्रया ॥ महाशवघटेनापि दत्त्वा पठति
यो नरः ॥ १६६ ॥ ध्रुवं स सर्वगामी स्याद्विना होमेन पूजया ॥ रुद्ररूपी भवेन्नित्यं महाकालात्मको भवेत् ॥ १६७ ॥
सर्वपुण्यफलं नाथ कुलात्प्राप्नोति साधकः ॥ क्षीराब्धिरत्नकोशेशो त्रिपद्गामी च योगिराट् ॥ १६८ ॥ भक्त्या नाथ दयासिंधु
निष्कामत्वं लभेद्ध्रुवम् ॥ महाशत्रुपातने च महाशत्रुभये तथा ॥ १६९ ॥ वारैकपाठमात्रेण शत्रूणां वधमानयेत् ॥

शत्रून् संहरते क्षिप्रमंधकारं यथा रविः ॥ १७० ॥ उच्चाटने मारणे च भवेद् घोरतरे नये ॥ पठनाद्धारणान्मर्त्यो देवा वा राक्षसादयः ॥ १७१ ॥ प्राप्नुवंत्यंजसा शांतिं कुमारीनामपाठतः ॥ पुरुषो दक्षिणे बाहौ नारी वामकरे तथा ॥ १७२ ॥ धृत्वा पुत्रादिसंपत्तिं लभते नात्र संशयः ॥ न पूजा न जपः स्नानं पुरश्चर्याविधिश्च न ॥ १७३ ॥ अकस्मात्सिद्धिमाप्नोति सहस्रनामपाठतः ॥ सर्वयज्ञफलं नाथ प्राप्नोति साधकः क्षणात् ॥ १७४ ॥ मंत्रार्थं मंत्रचैतन्यं योनिमुद्रास्वरूपकम् ॥ कोटिवर्षशतेनापि फलं वक्तुं न शक्यते ॥ १७५ ॥ ममाज्ञया मोक्षमुपैति साधको गजांतकं नाथ सहस्रनाम ॥ पठेन्मनुष्यो यदि भक्तिभावतस्तदादि सर्वत्र फलोदयं लभेत् ॥ १७६ ॥ मोक्षं सत्फलभोगिनां स्तववरं सारं परानन्ददं ये नित्यं हि मुदा पठंति सफलं सार्थं च चिंताकुलाः ॥ तेषां वै प्रभवेद्धि कीर्तिकमला श्रीरामतुल्यो जयी कंदर्पायुततुल्यरूपगुणवान् क्रोधे तु रुद्रोपमः ॥ १७७ ॥ इति श्रीरुद्रयामले उत्तरतंत्रे महातंत्रोद्दीपने कुमारीसहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ अथ कुमारीतर्पणात्मकस्तोत्रप्रारंभः ॥ श्रृणु नाथ प्रवक्ष्यामि कुमारीतर्पणादिकम् ॥ यासां तर्पणमात्रेण कुलसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ १ ॥ कुलबालां मूलपद्मस्थितां कामविहारिणीम् ॥ शतधा मूलमंत्रेण तर्पयामि सुतुष्टये ॥ २ ॥ मूलपंकजयोगांगीं कुमारीं श्रीसरस्वतीम् ॥ तर्पयामि कुलद्रव्यैस्तत्र सन्तोषहेतवे ॥ ३ ॥ चारुमूलाधारपद्मे षड्दलांतःप्रकाशिनीम् ॥ श्रीबीजेन तर्पयामि भोगमोक्षाय केवलम् ॥ ४ ॥ स्वाधिष्ठानकुलोल्लासविष्णुसंकेतगामिनीम् ॥ कालिकां निजबीजेन तर्पयामि कुलामृतैः ॥ ५ ॥ स्वाधिष्ठानाख्यपद्मस्थां महातेजोमयीं शिवाम् ॥ सूर्याणां शीर्षमधुना तर्पयामि कुलेश्वरीम् ॥ ६ ॥ मणिपूराब्जमध्येषु मनोहरकलेवराम् ॥ उमादेवीं तर्पयामि मायाबीजेन पार्वतीम् ॥ ७ ॥ मणिपूरांभोजमध्ये त्रैलोक्यपरिपूजिताम् ॥ मानिनीं मलचित्तस्य सद्बुद्ध्यै तर्पयाम्यहम् ॥ ८ ॥ मणिपूरस्थितां रौद्रीं परमानंदवर्द्धिनीम् ॥ आकाशगामिनीं देवीं कुब्जिकां तर्पयाम्यहम् ॥ ९ ॥ तर्पयामि महादेवीं मंत्रसाधनतत्पराम् ॥ योगिनीं कालसंदर्भां तर्पयामि कुलाननाम् ॥ १० ॥ शक्तिमंत्रप्रदां रौद्रीं लोलजिह्वासमाकुलाम् ॥ अपराजितां महादेवीं तर्प

यामि कुलेश्वरीम् ॥ ११ ॥ महाकौलप्रियां सिद्धां रुद्रलोकसुखप्रदाम् ॥ रुद्राणीं रुद्रकिरणां तर्पयामि मधुप्रियाम् ॥ १२ ॥ षोडश स्वरसंसिद्धिं महारौरवनाशिनीम् ॥ महामद्यपानाचित्तां भैरवीं प्रणमाम्यहम् ॥ १३ ॥ त्रैलोक्यवरदां देवीं श्रीबीजमालया वृताम् ॥ महलक्ष्मीं भवैश्वर्यां तर्पयाम्यहमम्बिके ॥ १४ ॥ लोकानां हितकर्त्रीं च हिताहितजनप्रियाम् ॥ तर्पयामि रमाबीजपीठाद्यां पीठ नायिकाम् ॥ १५ ॥ जयंतीं वेदवेदांगमातरं सूर्यमातरम् ॥ तर्पयामि सुधाभिश्च क्षेत्रज्ञां मायया वृताम् ॥ १६ ॥ तर्पयामि कुलानन्दपारगां परमाननाम् ॥ तर्पयाम्याम्बिकां देवीं मायालक्ष्मीं हृदि स्थिताम् ॥ १७ ॥ सर्वासां चरणद्वयाम्बुजतलं चैतन्य विद्यावतां सौख्यार्थं शुभषोडशस्वरयुतां श्रीषोडशीं मङ्गलाम्॥आनन्दार्णवपद्मरागखचिते सिंहासने शोभितां त्वां नित्यं परितर्पयामि सकले श्वेताब्जमध्यासने॥१८॥ ये नित्यं परिनिष्ठितं च सकलस्तोत्राङ्गसंतर्पणं विद्यादाननिदानमोक्षपरमं मायामयं यांति ते ॥ नो संति क्षिति मण्डलेश्वरि गणाः सर्वे विपत्कारका राजानं वशयंति योगसकलं नित्या भवंति क्षणात् ॥१९॥ तर्पणात्मकमोक्षाख्यं पठते यदि मानुषः ॥ अष्टैश्वर्ययुतो भूत्वा वत्सरान्मां प्रपश्यति ॥ २० ॥ महायोगी भवेन्नाथ मासादभ्यासतः प्रभो ॥ त्रैलोक्यं क्षोभयेत्क्षिप्रं वाञ्छाफलमवाप्नुयात् ॥ २१ ॥ यः पठेदेकभावेन स तर्पणफलं लभेत् ॥ पूजाफलमवाप्नोति कुमारीस्तोत्रपाठतः ॥ २२ ॥ यो न कुर्यात्कुमार्यर्चां स्तोत्रं च नित्यमंगलम् ॥ स भवेत्पशुकल्पोऽत्र मृत्युस्तस्य पदे पदे॥२३॥ इति रुद्रयामले उत्तरखण्डे महातंत्रोद्दीपने कुमार्युपचर्याविन्यासे सिद्धमंत्र प्रकरणे दिव्यभावनिर्णये भैरवीसंवादे कुमारीतर्पणात्मकस्तोत्रं समाप्तम्॥इति श्रीमंत्रमहार्णवे मध्यखण्डे कुमारीतंत्रे चतुर्दशस्तरंगः॥१४॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ कालिन्दीतंत्रप्रारंभः ॥ गर्गाचार्यसंहितायां माधुर्यखण्डे—श्रीनारद उवाच ॥ व्रजेशो हि पुराधीशो गोपो नन्दो धनी महान्॥तद्गृहं मंगलो गत्वा कुटुंबभरणाक्षमः ॥ अदात्सहस्रशस्तस्मै पोषणार्थं स्वकन्यकाः ॥१॥ जाता मत्स्यवरात्तास्तु समुद्रे गोपकन्यकाः॥ तथाऽन्याश्च त्रिवाचापि पृथिव्या दोहनान्नृप ॥ २ ॥ बर्हिष्मतीपुरंध्र्यो या जाता जातिस्मराः पराः ॥ तथान्याप्सरसोऽभूव न्वराम्नारायणस्य च ॥ ३ ॥ तथा सुतलवासिन्यो वामनस्य वरात्स्त्रियः ॥ तथा नागेन्द्रकन्याश्च जाताः शेषवरात्परात् ॥ ४॥ ताभ्यो दुर्वा

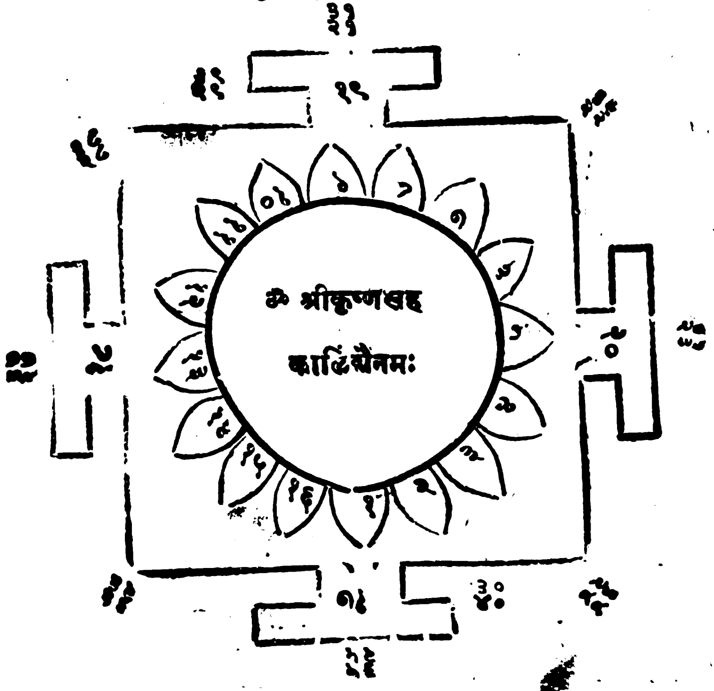
ससा दत्तं कृष्णापंचांगमद्भुतम्॥ तेन सम्पूज्य यमुनां वव्रिरे श्रीपतिं वरम् ॥५॥ एकदा श्रीहरिस्ताभिर्वृन्दारण्ये मनोहरे ॥ यमुनानिकटे दिव्ये पुंस्कोकिलमधुव्रते ॥ ६ ॥ मधुपध्वनिसंयुक्ते कजत्कोकिलसागरे ॥ मधुमासे मन्दवायौ वसंतलतिकावृते ॥७॥ दोलोत्सवं समारेभे हरिर्मदनमोहनः ॥ कदम्बवृक्षे रहसि कल्पवृक्षमनोहरे ॥ ८ ॥ कालिन्दीजलकल्लोलकोलाहलसमाकुले ॥ सदोलाखेलनं चक्रुस्ता गोप्यः प्रेमविह्वलाः ॥ ९ ॥ राधया कीर्तिसुधया चंद्रकोटिप्रकाशया ॥ रेजे वृन्दावने कृष्णो यथा रत्या रतीश्वरः ॥ १० ॥ एवं प्राप्ताश्च याः सर्वाः श्रीकृष्णं नन्दनन्दनम् ॥ परिपूर्णतमं साक्षात्तासां किं वर्ण्यते तपः ॥११॥ नागेन्द्रकन्यकाः सर्वाश्चैत्रमासे मनोहरे ॥ बलभद्रं हरिं प्राप्ताः कृष्णातीरे तु ताः शुभाः ॥ १२ ॥ इदं मया ते कथितं गोपीनां चरितं शुभम् ॥ सर्वपापहरं पुण्यं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ॥ १३ ॥ बहुलाश्व उवाच ॥ यमुनायाश्च पंचांगं दत्तं दुर्वाससा मुने ॥ गोपीभ्यो येन गोविन्दः प्राप्तस्तद् ब्रूहि मां प्रभो ॥ १४ ॥ श्रीनारद उवाच ॥ अत्रैवोदाहरंतीममितिहासं पुरातनम् ॥ यस्य श्रवणमात्रेण पापहानिः परा भवेत् ॥ १५ ॥ अयोध्याधिपतिः श्रीमान्मान्धाता राजसत्तमः ॥ मृगयां विचरन् प्राप्तः सौभरेराश्रमं शुभम् ॥ १६ ॥ वृन्दावने स्थितं साक्षात्कृष्णातीरे मनोहरे ॥ नत्वा जामातरं राजा सौभरिं प्राह मानदः ॥ १७ ॥ मान्धातोवाच ॥ भगवन्सर्वविरसाक्षात्त्वं परावरवित्तमः ॥ लोकानां तमसांधानां दिव्यसूर्य्य इवापरः ॥ १८ ॥ इह लोके भवेद्राज्यं सर्वसिद्धिसमन्वितम् ॥ अमुत्र कृष्णसारूप्यं येन स्यात्तद्वदाशु मे ॥ १९ ॥ सौभरिरुवाच ॥ यमुनायाश्च पंचांगं वदिष्यामि तवाग्रतः॥सर्वसिद्धिकरं शश्वत्कृष्णसारूप्यकारणम् ॥ २० ॥ यावत्सूर्य्य उदेति स्म यावच्च प्रतितिष्ठति ॥ तावद्राज्यप्रदं चात्र श्रीकृष्णवशकारकम् ॥ २१ ॥ कवचं च स्तवं नाम्नः सहस्रं पटलं तथा ॥ पद्धतिं सूर्यवंशन्द्रे पंचांगानि विदुर्बुधाः ॥ २२ ॥ तत्रादौ यमुनापटलप्रारंभः ॥ मान्धातोवाच ॥ कृष्णायाः पटलं पुण्यं कामदं पद्धतिं तथा ॥ वद मां मुनिशार्दूल त्वं साक्षाज्ज्ञानशेवधिः ॥ १ ॥ सौभरिरुवाच ॥ पटलं पद्धतिं वक्ष्ये यमुनाया महामते ॥ कृत्वा श्रुत्वाऽथ जप्त्वा वा जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ॥ २ ॥ मंत्रो यथा—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कालिन्दीदेव्यै नमः ॥ इत्येकादशाक्षरो मंत्रः । अस्य विधानम्—ॐ अस्य श्रीकालिन्दीमंत्रस्य सौभरि

ऋषिः । अनुष्टुप्छंदः । श्रीयमना देवता । ह्रीं बीजम् । श्रीं शक्तिः । क्लीं कीलकम् । श्रीकालिन्दनन्दिनीप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥ ॐ सौभरि ऋषये नमः शिरसि १ । अनुष्टुप्छंदसे नमो मुखे २ । श्रीयमुनादेवतायै नमो हृदि ३ । ह्रींबीजाय नमो गुह्ये ४ । श्रीं शक्तये नमः पादयोः ५ । क्लीं कीलकाय नमो नाभौ ६ । विनियोगाय नमः सर्वांगे ७ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ । श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३ । क्लीं अनामिकाभ्यां नमः ४ । कालिन्दीदेव्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ हृदयाय नमः १ । ह्रीं शिरसे स्वाहा २ । श्रीं शिखायै वषट् ३ । क्लीं कवचाय हुम् ४ । कालिन्दीदेव्यै नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । नमः अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्—

ॐ श्यामामंभोजनेत्रां सघनघनरुचिं रत्नमञ्जीरकूजत्कांचीकेयूरयुक्तां कनकमणिमये बिभ्रतीं कुण्डले द्वे ॥ भ्राजच्छ्रीनीलवस्त्रां स्फुरदमलचलद्धारभारां मनोज्ञां ध्याये मार्तण्डपुत्रीं तनुकिरणचयोद्दीप्तदीपाभिरामाम् ॥१॥ इति ध्यायेत् ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति पीठदेवताः संपूज्य मध्ये देवीसिंहासनं स्थापयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रपत्रं ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां चाग्न्युत्तारणमंत्रोच्चारपूर्वकं दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संप्रोञ्छ्य देव्यष्टगंधेन कर्णिकाषोडशदलभूपुरात्मकं यंत्रं लिखित्वा 'ॐ नमो भगवत्यै कलिंदनंदिन्यै सूर्यकन्यकायै यमभगिन्यै श्रीकृष्णप्रियायै यूथीभूतायै पद्मपीठायै नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा सिंहासनोपरि संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कुर्यात्। ततः कर्णिकामध्ये श्रीकृष्णेन सह कालिंदीं ध्यात्वा 'ॐ नमो भगवत्यै कलिंदनंदिन्यै सूर्यकन्यकायै यमभगिन्यै श्रीकृष्णप्रियायै यूथीभूतायै स्वाहा' इति मंत्रेणावाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तथा च—पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य्य—ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ॥ अनुज्ञां देहि यमुने परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा [illegible] ॥ तथा च—पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची । तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण षोडशदलेषु । ॐ जाह्नव्यै

नमः। जाह्नवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १। इति सर्वत्र। ॐ विरजायै नमः। विरजाश्रीपा० २। ॐ कृष्णायै नमः। कृष्णाश्रीपा० ३। ॐ चन्द्रभागायै नमः। चन्द्रभागाश्रीपा० ४। ॐ सरस्वत्यै नमः। सरस्वतीश्रीपा० ५। ॐ गोमत्यै नमः। गोमतीश्रीपा० ६। ॐ कौशिक्यै नमः। कौशिकीश्रीपा० ७। ॐ वेण्यै नमः। वेणीश्रीपा० ८। ॐ सिंधवे नमः। सिंधुश्रीपा० ९। ॐ गोदावर्य्यै नमः। गोदावरीश्रीपा० १०। ॐ वेदस्मृत्यै नमः। वेदस्मृतिश्रीपा० ११। ॐ वेत्रवत्यै नमः। वेत्रवतीश्रीपा० १२। ॐ शतद्रै नमः। शतद्रुश्रीपा० १३। ॐ सरय्वै नमः। सरयूश्रीपा० १४। ॐ ऋषिकुल्यायै नमः। ऋषिकुल्याश्रीपा० १५। ॐ ककुद्मत्यै नमः। ककुद्मतीश्रीपा० १६ ॥ इति षोडशदेवताः पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य—ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घ्याद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततः भूपुराभ्यंतरे चतुर्दिक्षु पूर्वादिक्रमेण ॐ वृन्दावनाय नमः। वृंदावनश्रीपा० १। ॐ गोवर्द्धनाय नमः। गोवर्द्धनश्रीपा० २। ॐ वृन्दायै नमः। वृन्दाश्रीपा० ३। ॐ तुलस्यै नमः। तुलसीश्रीपा० ४। इति चतुरः पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥

यमुनापूजनयन्त्रम्।



ततो भूपुराद्बहिः पूर्वादिक्रमेण ॐ लं इन्द्राय नमः १। ॐ रं अग्नये नमः २। ॐ मं यमाय नमः ३। ॐ क्षं निर्ऋतये नमः ४। ॐ वं वरुणाय नमः ५। ॐ यं वायवे नमः ६। ॐ कुं कुबेराय नमः ७। ॐ हं ईशानाय नमः ८। इन्द्रेशानयोर्मध्ये ॐ आं ब्रह्मणे नमः ९। वरुणनिर्ऋतिमध्ये ॐ ह्रीं अनंताय नमः १० ॥ इतिः दशादिक्पालान् पूजयेत् ॥ तत्तत्समीपे ॐ वं वज्राय नमः १। ॐ शं शक्तये नमः २। ॐ दं दंडाय नमः ३। ॐ खं खड्गाय नमः ४। ॐ पां पाशाय नमः ५। ॐ अं अंकुशाय नमः ६। ॐ गं गदायै नमः ७। ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ८। ७ पं पद्माय नमः ९। ॐ चं चक्राय नमः १० ॥ इत्यस्त्राणि पूजयेत् ॥ इत्यावरणपूजां धूपादिनमस्कारांतं सम्पूज्य जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणमेकादशलक्षजपः । तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मण भोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति। मनस ईप्सितं ददाति। तथाच—जप्त्वैकादशलक्षाणि मंत्रसिद्धिर्भवेद्भुवि। जनैः प्रार्थ्याश्च ये कामाः सर्वे प्राप्याः स्वतश्च ते ॥ १ ॥ यावत्सम्पूर्णतां याति पुरश्चरणमेव हि ॥ तावद्भवेद्ब्रह्मचारी जपेन्मौनव्रती द्विजः ॥ २ ॥ यवभोजी भूमिशायी पत्रभुग्जितमानसः ॥ कामं क्रोधं तथा लोभं मोहं द्वेषं विसृज्य सः ॥ ३ ॥ भक्त्या परमया राजन् वर्तमानस्तु देशिकः ॥ ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय ध्यात्वा देवीं कलिंदजाम् ॥ ४ ॥ अरुणोदयवेलायां नद्यां स्नानं समाचरेत् ॥ मध्यह्ने चापि संध्यायां संध्यावन्दनतत्परः ॥ ५ ॥ समाप्ते नियमे राजन् कालिंदीतीरमास्थितः ॥ दशलक्षं ब्राह्मणानां सपुत्राणां महात्मनाम् ॥ ६ ॥ पूजयित्वा गंधपुष्पैर्दत्त्वा तेभ्यः सुभोजनम् ॥ वस्त्रभूषणसौवर्णपात्राणि प्रस्फुरंति च ॥ ७ ॥ दक्षिणाश्च शुभा दद्यात्ततः सिद्धिर्भवेत्खलु ॥ कुरु त्वं नियमं सर्वं किं भूयः श्रोतुमिच्छति ॥ ८ ॥ इत्येकादशाक्षरयमुनामंत्रपटलं समाप्तम् ॥ अथ यमुनाकवचप्रारंभः ॥ मान्धातोवाच ॥ यमुनायाः कृष्णराज्ञाः कवचं सर्वतोऽमलम् ॥ देहि मह्यं महाभाग धारयिष्याम्यहं सदा ॥ १ ॥ सौभरिरुवाच ॥ यमुनायाश्च कवचं सर्वरक्षाकरं नृणाम् ॥ चतुष्पदार्थदं साक्षाच्छृणु राजन्महामते ॥ २ ॥ कृष्णां चतुर्भुजां श्यामां पुण्डरीकदलेक्षणाम् ॥ रथस्थां सुन्दरीं ध्यात्वा धारयेत्कवचं ततः ॥ ३ ॥ स्नातः पूर्वमुखो मौनी कृतसंध्यः कुशासने ॥ कुशैर्बद्धशिखो विप्रः

पठेद्द स्वस्तिकासनः ॥ ४ ॥ यमना मे शिरः पातु कृष्णा नेत्रद्वयं सदा ॥ श्यामा भ्रूभंगदेशं च नासिकां नाकवासिनी ॥ ५ ॥ कपोलौ पातु मे साक्षात्परमानन्दरूपिणी ॥ कृष्णवामांससंभूता पातु कर्णद्वयं मम ॥ ६ ॥ अधरौ पातु कालिन्दी चिबुकं सूर्यकन्यका ॥ यमस्वसा कंधरां च हृदयं मे महानदी ॥ ७ ॥ कृष्णप्रिया पातु पृष्ठं तटिनी मे भुजद्वयम् ॥ श्रोणीतटं च सुश्रोणी कटिं मे चारुदर्शना ॥ ८ ॥ ऊरुद्वयं तु रंभोरूर्जानुनी अधिमेदिनी ॥ गुल्फौ रासेश्वरी पातु पादौ पापपहारिणी ॥ ९ ॥ अंतर्बहिरधश्चोर्ध्वं दिशासु विदिशासु च ॥ समंतात्पातु जगतः परिपूर्णतमाप्रिया ॥ १० ॥ इदं श्रीयमुनायाश्च कवचं परमाद्भुतम् ॥ दशवारं पठेद्भक्त्या निर्धनो धनवान् भवेत् ॥ ११ ॥ त्रिभिर्मासैः पठेद्धीमान् ब्रह्मचारी मिताशनः ॥ सर्वराज्याधिपत्यं च प्राप्नोति नात्र संशयः ॥ १२ ॥ दशोत्तरशतं नित्यं त्रिमासावधि भक्तितः ॥ यः पठेत्प्रयतो भूत्वा तस्य किं किं न जायते ॥ १३ ॥ यः पठेत्प्रातरुत्थाय सर्वतीर्थफलं लभेत् ॥ अंते व्रजेत्परं धाम गोलोकं योगिदुर्लभम् ॥ १४ ॥ इति श्रीमद्गर्गाचार्यसंहितायां श्रीमाधुर्यखण्डे श्रीसौभरिमान्धातृसंवादे श्रीयमुनाकवचं समाप्तम् ॥ अथ यमुनास्तवप्रारंभः ॥ मान्धातोवाच ॥ यमुनायाः स्तवं दिव्यं सर्वसिद्धिकरं परम् ॥ सौभरे मुनि शार्दूल वद मां कृपयात्वरन् ॥ १ ॥ श्रीसौभरिरुवाच ॥ मार्तण्डकन्यकायास्तु स्तवं शृणु महामते ॥ सर्वसिद्धिकरं भूमौ चातुर्वर्ग्यफल प्रदम् ॥ २ ॥ ॐ कृष्णवामांसभूतायै कृष्णायै सततं नमः ॥ नमः श्रीकृष्णरूपिण्यै कृष्णे तुभ्यं नमो नमः ॥ ३ ॥ यः पापपंकांबु कलंककुत्सितः कामी कुधीः सत्सु कलिं करोति हि ॥ वृन्दावनं धाम ददाति तस्मै नदन्मिलिन्दारिकलिन्दनन्दिनी ॥ ४ ॥ कृष्णे साक्षात्कृष्णरूपा त्वमेव वेगावर्ते वर्तते मत्स्यरूपी ॥ ऊर्मावूर्मौ कूर्मरूपी सदा ते बिंदौबिंदौ भाति गोविंददेवः ॥ ५ ॥ वन्दे लीलावतीं त्वां सघनघननिभां कृष्णवामांसभूतां वेगं वै वैरजाख्यं सकलजलचयं खण्डयंतीं बलात्स्वात् ॥ छित्त्वा ब्रह्माण्ड मारात्सुरनगरनगान् गंडशैलादिदुर्गान् भित्त्वा भूखण्डमध्ये तटिनि वृतवतीमूर्मिमालां प्रयांतीम् ॥ ६ ॥ दिव्यं को नामधेयं श्रुतमथ यमुने दंडयत्यद्रितुल्यं पापव्यूहं त्वखंडं वसतु मम गिरां मंडलेऽनुक्षणं तत् ॥ दंडयांश्चाकार्यदण्डयान्सकृदपि वचसा

खंडितं यद्गृहीतं भ्रातुर्मार्तण्डसूनोररतिपरिदृढस्ते प्रचण्डोऽतिदंडः ॥ ७ ॥ रज्जुर्वा त्रिषयांधकूपतरणे पापाखुदर्वीकरीवेण्यु
ष्णिक् च विराजमूर्तिशिरसो मालास्ति वा सुन्दरी ॥ धन्यं भाग्यमतःपरं भुवि नृणां यात्रादिकृद्दुर्लभा गोलोकेऽपि तिदुर्लभाति
सुभगा भात्यद्वितीया नदी ॥ ८ ॥ गोपीगोकुलगोपकेलिकलिते कालिन्दि कृष्णप्रभे त्वत्कूले जललोलगोलविचलत्कल्लोलकोला
हलः ॥ त्वत्कांतारकुतूहलालिकुलकृज्झंकारकेकाकुलः कूजत्कोकिलसंकुलो व्रजलतालंकारभृत्पातु माम् ॥ ९ ॥ भवंति जिह्वास्तनु
रोमतुल्या गिरो यदा भूसिकता इव स्युः ॥ तदप्यलं यांति न ते गुणांतं संतो महांतः किल शेषतुल्याः ॥ १० ॥ कलिन्दगिरिनन्दिनी
स्तव उषस्यथं वा परः श्रुतंच यदि पाठितो भुवि तनोति सन्मंगलम् ॥ जनोऽपि यदि धारयेत्किल पठेच्च यो नित्यशः स याति परमं पदं
निजनिकुंजलीलावृतम् ॥ ११ ॥ इति श्रीमद्गर्गाचार्य्यसंहितायां श्रीमाधुर्यखण्डे श्रीसौभरिमान्धातृसंवादे श्रीयमुनास्तवराजः समाप्तः ॥
॥ अथ यमुनासहस्रनामस्तोत्रप्रारंभः ॥ मान्धातोवाच ॥ नाम्नां सहस्रं कृष्णायाः सर्वसिद्धिकरं परम् ॥ वद मां मुनिशार्दूल त्वं सर्वज्ञो
निरामयः ॥ १ ॥ सौभरिरुवाच ॥ नाम्नां सहस्रं कालिन्द्या मान्धातस्ते वदाम्यहम् ॥ सर्वसिद्धिकरं दिव्यं श्रीकृष्णवशकारकम् ॥ २ ॥ ॐ
अस्य श्रीकालिन्दीसहस्रनामस्तोत्रमंत्रस्य सौभरिर्ऋषिः। श्रीयमुना देवता। अनुष्टप्छंदः। मायाबीजमिति कीलकम्। रमाबीजमिति शक्तिः।
श्रीकलिन्दनन्दिनीप्रसादसिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः ॥ अथ ध्यानम्—ॐ श्यामामंभोजनेत्रां सघनघनरुचिं रत्नमंजीरकूजत्कांचीकेयूर
युक्तां कनकमणिमये बिभ्रतीं कुण्डले द्वे ॥ भ्राजच्छ्रीनीलवस्त्रां स्फुरदमलचलद्धारभारां मनोज्ञां ध्यायेन्मार्तण्डपुत्रीं तनुकिरणचयोद्दीप्त
दीपाभिरामाम् ॥३॥ ॐ कालिन्दी यमुना कृष्णा कृष्णरूपा सनातनी ॥ कृष्णवामांससंभूता परमानन्दरूपिणी ॥ ४ ॥ गोलोकवासिनी श्यामा
वृन्दावनविनोदिनी ॥ राधासखी रासलीला रासमण्डलमण्डिता ॥ ५ ॥ निकुंजमाधवी वल्ली रङ्गवल्लीमनोहरा ॥ श्रीरासमण्डली भूता
यूथीभूता हरिप्रिया ॥ ६ ॥ गोलोकतटिनी दिव्या निकुंजतलवासिनी ॥ दीर्घोर्मिवेगगंभीरा पुष्पपल्लववासिनी ॥ ७ ॥ घनश्यामा
मेघमाला बलाका पद्ममालिनी ॥ परिपूर्णतमा पूर्णा पूर्णब्रह्मप्रिया परा ॥ ८ ॥ महावेगवती साक्षान्निकुंजद्वारनिर्गता ॥ महानदी

मन्दगतिर्विरजा वेगभेदिनी ॥ ९ ॥ अनेकब्रह्माण्डगता ब्रह्मद्रवसमाकुला ॥ गङ्गा मिश्रा निर्मलाभा निर्जला सरितां वरा ॥ १० ॥
रत्नबद्धोभयतटा हंसपद्मादिसंकुला ॥ नदी निर्मलपानीया सर्वब्रह्माण्डपावनी ॥ ११ ॥ वैकुण्ठपरिखीभूता परिखा पापहारिणी ॥
ब्रह्मलोकागता ब्राह्मी स्वर्गा स्वर्गनिवासिनी ॥ १२ ॥ उल्लसंती प्रोत्पतंती मेरुमालामहोज्ज्वला ॥ श्रीगंगांभःशिखरिणी
गण्डशैलविभेदिनी ॥ १३ ॥ देशान्पुनंती गच्छंती महती भूमिमध्यगा ॥ मार्तण्डतनुजा पुण्या कलिन्दगिरिनन्दिनी ॥ १४ ॥ यमस्वसा
मन्दहासा सुद्विजा रचिताम्बरा॥ नीलाम्बरा पद्ममुखी चरंती चारुदर्शना ॥ १५ ॥ रम्भोरूः पद्मनयना माधवी प्रमदोत्तमा ॥ तपश्चरंती
सुश्रोणी कूजन्नूपुरमेखला॥१६॥ जलस्थिता श्यामलांगी खाण्डवाभा विहारिणी॥ गाण्डीविभाषिणी वन्या श्रीकृष्णाम्बरमिच्छती ॥१७॥
द्वारकागमना राज्ञी पट्टराज्ञी परंगता ॥ महाराज्ञी रत्नभूषा गोमतीतीरचारिणी ॥ १८ ॥ स्वकीया स्वसुखा स्वार्था स्वीयकार्यार्थ
साधिनी ॥ नवलांगाऽबला मुग्धा वरांगा वामलोचना ॥ १९ ॥ अज्ञातयौवनाऽदीना प्रभा कांतिर्द्युतिश्छविः ॥ सोमाभा परमा कीर्तिः
कुशला ज्ञातयौवना ॥ २० ॥ नवोढा मध्यगा मध्या प्रौढिः प्रौढा प्रगल्भका ॥ धीराऽधीरा धैर्य्यधरा ज्येष्ठा श्रेष्ठा कुलांगना
॥ २१ ॥ क्षणप्रभा चंचलार्चा विद्युत्सौदामिनी तडित् ॥ स्वाधीनपतिका लक्ष्मीः पुष्टा स्वाधीनभर्तृका ॥ २२ ॥ कलहांतरिता भीरुरिच्छा
प्रोत्कंठिताकुला ॥ कशिपुस्था दिव्यशय्या गोविन्दहृतमानसा ॥ २३ ॥ खण्डिताखण्डशोभाढ्या विप्रलब्धाभिसारिका ॥ विरहार्ता
विरहिणी नारी प्रोषितभर्तृका ॥ २४ ॥ मानिनी मानदा प्राज्ञा मन्दारवनवासिनी ॥ झङ्कारिणी झणत्कारी रणन्मंजीरनूपुरा ॥ २५ ॥
मेखला मेखलाकांची श्रीकांची कांचनामयी ॥ कंचुकी कंचुकमणिः श्रीकंठाढ्या महामणिः ॥ २६ ॥ श्रीहारिणी पद्महरा मुक्ता मुक्ता
फलार्चिता ॥ रत्नकंकणकेयूरा स्फुरदंगुलिभूषणा ॥ २७ ॥ दर्पणा दर्पणीभूता दुष्टदर्पविनाशिनी ॥ कंबुग्रीवा कंबुधरा ग्रैवेयकविरा
जिता ॥ २८ ॥ ताटंकिनी दंतधरा हेमकुण्डलमण्डिता ॥ शिखाभूषा भालपुष्पा नासामौक्तिकशोभिता ॥ २९ ॥ मणिभूमिगता
देवी रैवताद्रिविहारिणी ॥ वृन्दावनगता वृन्दा वृन्दारण्यनिवासिनी ॥ ३० ॥ वृन्दावनलता माध्वी वृन्दारण्यविभूषणा ॥ सौन्दर्य

लहरी लक्ष्मीर्मधुरातीर्थवासिनी ॥ ३१ ॥ विश्रांतवासिनी काम्या रम्या गोकुलवासिनी ॥ रमणस्थलशोभाढ्या महावनमहानदी ॥ ३२ ॥ प्रणता प्रोन्नता पुष्टा भारती भारतार्चिता ॥ तीर्थराजगतिर्गोत्रा गंगासागरसंगमा ॥ ३३ ॥ सप्ताब्धिभेदिनी लोला सप्तद्वीपगता बलात् ॥ लुठंती शैलभिद्यंती स्फुरंती वेगवत्तरा ॥ ३४ ॥ कांचनी कांचनीभूमिः कांचनीभूमिभाविता ॥ लोकदृष्टिर्लोकलीला लोकालोकाचलार्चिता ॥ ३५ ॥ शैलोद्गता स्वर्गगता स्वर्गार्च्या स्वर्गपूजिता ॥ वृन्दावनवनाध्यक्षा रक्षा कक्षा तटी पटी ॥ ३६ ॥ असिकुण्डगता कच्छा स्वच्छन्दोच्छलिताद्रिजा ॥ कुहरस्था रयप्रस्था प्रस्था शांतेतरातुरा ॥ ३७ ॥ अंबुच्छटासीकराभा दर्दुरा दर्दुरीधरा ॥ पापांकुशा पापसिंही पापद्रुमकुठारिणी ॥ ३८ ॥ पुण्यसंधा पुण्यकीर्तिः पुण्यदा पुण्यवर्द्धिनी ॥ मधोर्वननदीमुख्या तुला तालवनस्थिता ॥ ३९ ॥ कुमुद्वननदी कुब्जा कुमुदांभोजवर्द्धिनी ॥ प्लवरूपा वेगवती सिंहसर्वादिवाहिनी ॥ ४० ॥ बहुली बहुदा बह्वी बहुला वनवन्दिता ॥ राधा कुण्डकुलाराध्या कृष्णा कुण्डजलाश्रिता ॥ ४१ ॥ ललिता कुण्डगा घंटा विशाखा कुण्डमण्डिता ॥ गोविन्दकुण्डनिलया गोपकुंडतरंगिणी ॥ ४२ ॥ श्रीगंगा मानसी गंगा कुसुमांबरभाविनी ॥ गोवर्धिनी गोधनाढ्या मयूरी वरवर्णिनी ॥ ४३ ॥ सारसी नीलकंठाभा कूजत्कोकिलपोतकी ॥ गिरिराजप्रभूर्भूरिरातपत्रातपत्रिणी ॥ ४४ ॥ गोवर्द्धनांका गोदंती दिव्यौषधिनिधिः श्रुतिः ॥ पारदी पारदमयी नारदी शारदी भृतिः ॥ ४५ ॥ श्रीकृष्णचरणांकस्था कामा कामवनांचिता ॥ कामाटवी नन्दिनी च नन्दग्राममहीधरा ॥ ४६ ॥ बृहत्सानुद्युतिः प्रोता नन्दीश्वरसमन्विता ॥ काकली कोकिलमयी भांडारकुशकौशला ॥ ॥ ४७ ॥ लोहार्गलप्रदाकारा काश्मीरवसनावृता ॥ बर्हिषदी शोणपुरी शूरक्षेत्रपुराधिका ॥ ४८ ॥ नानाभरणशोभाढ्या नानावर्णसमन्विता ॥ नानानारीकदम्बाढ्या नानावस्त्रविराजिता ॥ ४९ ॥ नानालोकगता वीचिर्नानाजलसमन्विता ॥ स्त्रीरत्नं रत्ननिलया ललनारत्नरंजिनी ॥ ५० ॥ रंगिणी रंगभूमाढ्या रंगा रंगमहीरुहा ॥ राजविद्या राजगुह्या जगत्कीर्तिर्घनापहा ॥ ५१ ॥ बिलोलघंटाकृष्णांगी कृष्णदेहसमुद्भवा ॥ नीलपंकजवर्णाभा नीलपंकजहारिणी ॥ ५२ ॥ नीलाभानीलपद्माढ्या नीलांभोरुहवासिनी ॥

नागवल्ली नागपुरी नागवल्लीदलार्चिता ॥ ५३ ॥ ताम्बूलचर्चिता चर्चा मकरन्दमनोहरा ॥ सकेसरा केसरिणी केशपाशाभिशोभिता ॥ ५४ ॥ कज्जलाभा कज्जलाक्ता कज्जलीकलितांजना ॥ अलक्तचरणा ताम्रा लालाताम्रकृतांबरा ॥ ५५ ॥ सिन्दूरिता लिप्तवाणी सुश्रीः श्रीखण्डमंडिता ॥ पाटीरपंकवसना जटामांसीरुचाम्बरा ॥ ५६ ॥ आगर्य्यगुरुगंधाक्ता तगराश्रितमारुता ॥ सुगंधितैलरुचिरा कुंतलालिः सुकुंतला ॥ ५७ ॥ शकुंतलाऽपांसुला च पातिव्रत्यपरायणा ॥ सूर्यकोटिप्रभा सर्यकन्या सूर्यसमुद्भवा ॥ ५८ ॥ कोटिसूर्यप्रतीकाशा सूर्यजा सूर्यनन्दिनी ॥ संज्ञा संज्ञासुता स्वेच्छा संज्ञामोदप्रदायिनी ॥ ५९ ॥ संज्ञापुत्री स्फुरच्छाया तपंती तापकारिणी ॥ सावर्ण्यानुभवा वेदी वडवा सौख्यदायिनी ॥ ६० ॥ शनैश्चरानुजा कीला चन्द्रवंशविवर्धिनी । चन्द्रवंशवधूश्चन्द्रा चन्द्रावलिसहायिनी ॥ ६१ ॥ चन्द्रावती चन्द्रलेखा चन्द्रकांतानुगांशुका ॥ भैरवी पिंगलाशंकी लीला वत्यागरीमयी ॥ ६२ ॥ धनश्रीदेवगांधारी स्वर्मणिर्गुणवर्द्धिनी ॥ व्रजमल्लार्यंधकरी विचित्रा जयकारिणी ॥ ६३ ॥ गांधारी मंजरी टोडी गुर्जर्य्यासावरी जया ॥ कर्णाटी रागिणी गौडी वैराटी गारवाटिका ॥ ६४ ॥ चतुश्चन्द्रकला हेरी तैलंगी विजयावती ॥ ताली तालस्वरा गानक्रिया मात्राप्रकाशिनी ॥ ६५ ॥ वैशाखी चंचला चारुर्माचारी घुंघटी घटा ॥ वैरागरी सोरठी सा कैदारी जलधारिका ॥ ६६ ॥ कामाकरश्रीकल्याणी गौडकल्याणमिश्रिता ॥ रामसंजीवनी हेला मन्दारी कामरूपिणी ॥ ६७ ॥ सारंगी मारुती होढा सागरी कामवादिनी ॥ वैभासी मंगला चान्द्री रासमंडलमंडना ॥ ६८ ॥ कामधेनुः कामलता कामदा कमनीयका ॥ कल्पवृक्षस्थली स्थूला क्षुधा सौधनिवासिनी ॥ ६९ ॥ गोलोकवासिनी सुभ्रूर्यष्टिभृद्द्वारपालिका ॥ शृंगारप्रकरा शृंगा स्वच्छाक्षय्योपकारिका ॥ ७० ॥ पार्षदा सुमुखी सेव्या श्रीवृन्दावनपालिका ॥ निकुंजभृत्कुंजपुंजा गुंजाभरणभूषिता ॥ ७१ ॥ निकुंजवासिनी प्रेष्या गोवर्द्धनतटीभवा ॥ विशाखा ललितारामा नीरुजा मधुमाधवी ॥ ७२ ॥ एकानेकसखी शुक्ला सखीमध्या महामनाः ॥ श्रुतिरूपा ऋषिरूपा मैथिलाः कौशलाः स्त्रियः ॥ ७३ ॥ अयोध्यापुरवासिन्यो यज्ञसीताः पुलिंदकाः ॥ रमा वैकुण्ठवासिन्यः श्वेतद्वीप

सखीजनाः ॥ ७४ ॥ उर्ध्ववैकुण्ठवासिन्यो दिव्याजितपदाश्रिताः ॥ श्रीलोकाचलवासिन्यः श्रीसख्यः सागरोद्भवाः ॥ ७५ ॥
दिव्या अदिव्या दिव्यांगा व्याप्तास्त्रिगुणवृत्तयः ॥ भूमिगोप्यो देवनार्य्यो लता ओषधिवीरुधः ॥ ७६ ॥ जालंधर्य्यः सिंधुसुताः पृथु
बर्हिष्मतीभवाः ॥ दिव्यांबरा अप्सरसः सौतला नागकन्यकाः ॥ ७७ ॥ परं धाम परं ब्रह्म पौरुषा प्रकृतिः परा ॥ तटस्था गुणभूर्गीता
गुणागुणमयी गुणा ॥ ७८ ॥ चिद्घना सदसन्माला दृष्टिर्दृश्या गुणाकरा ॥ महत्तत्त्वमहंकारो मनो बुद्धिः प्रचेतना ॥ ७९ ॥ चेतो
वृत्तिः स्वांतरात्मा चतुर्द्धा चतुरक्षरा ॥ चतुर्व्यूहश्चतुर्मूर्तिर्व्योमवायुरदो जलम् ॥ ८० ॥ मही शब्दो रसो गंधः स्पर्शो रूपमनेकधा ॥
कर्मेन्द्रियं कर्ममयी ज्ञानं ज्ञानेन्द्रियं द्विधा ॥ ८१ ॥ त्रिधाधिभूतमध्यात्ममधिदैवमधिस्थितम् ॥ ज्ञानशक्तिः क्रियाशक्तिः सर्वदेवाधि
देवता ॥ ८२ ॥ तत्त्वसंघा विराण्मूर्तिर्धारणा धारणामयी ॥ श्रुतिः स्मृतिर्वेदमूर्तिः संहिता गर्गसंहिता ॥ ८३ ॥ पाराशरी सैव सृष्टिः
पारहंसी विधातृका ॥ याज्ञवल्की भागवती श्रीमद्भागवतार्चिता ॥ ८४ ॥ रामायणमयी रम्या पुराणपुरुषप्रिया ॥ पुराणमूर्तिः पुण्यांगी
शास्त्रमूर्तिर्महोन्नता ॥ ८५ ॥ मनीषा धिषणा बुद्धिर्वाणी धीः शेमुषी मतिः ॥ गायत्री वेदसावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मलक्षणा ॥ ८६ ॥
दुर्गापर्णा सती सत्या पार्वती चंडिकांबिका ॥ आर्या दाक्षायणी दाक्षी दक्षयज्ञविघातिनी ॥ ८७ ॥ पुलोमजा शचीन्द्राणी वेदी देव
वरार्पिता ॥ वायुना धारिणी धन्या वायवी वायुवेगगा ॥ ८८ ॥ यमानुजा संयमनी संज्ञाच्छाया स्फुरद्द्युतिः ॥ रत्नदेवी रत्नवृन्दा
तारा तरणिमण्डला ॥८९॥ रुचिः शांतिः क्षमा शोभा दया दक्षा द्युतिस्त्रपा ॥ तलतुष्टिर्विभा पुष्टिः संतुष्टिः पुष्टभावना ॥ ९० ॥ चतुर्भुजा
चारुनेत्रा द्विभुजाष्टभुजा बला ॥ शंखहस्ता पद्महस्ता चक्रहस्ता गदाधरा ॥ ९१ ॥ निषंगधारिणी चर्मखड्गपाणिर्धनुर्धरा ॥ धनुष्टं
कारिणी योद्ध्री दैत्योद्भटविनाशिनी ॥ ९२ ॥ रथस्था गरुडारूढा श्रीकृष्णहृदयस्थिता ॥ वंशीधरा कृष्णवेषा स्रग्विणी वनमालिनी
॥ ९३ ॥ किरीटधारिणी याना मन्दा मन्दगतिर्गतिः ॥ चन्द्रकोटिप्रतीकाशा तन्वी कोमलविग्रहा ॥ ९४ ॥ भैष्मी भीष्मसुता भीमा
रुक्मिणी रुक्मरूपिणी ॥ सत्यभामा जांबवती सत्या भद्रा सुदक्षिणा ॥ ९५ ॥ मित्रवृन्दा सखीवृन्दा वृन्दारण्यध्वजोर्ध्वगा ॥ श्रृंगारका

रिणी शृंगा शृंगभूः शृंगदाशुगा ॥ ९६ ॥ तितिक्षेक्षा स्मृतिः स्पर्धा स्पृहा श्रद्धा स्वनिर्वृतिः ॥ ईशा तृष्णाभिधा प्रीतिर्हिता याञ्चा क्षमा कृषिः ॥ ९७ ॥ आशा निद्रा योगनिद्रा योगिनी योगदायुगा ॥ निष्ठा प्रतिष्ठा समितिः सत्त्वप्रकृतिरुत्तमा ॥ ९८ ॥ तमःप्रकृतिर्दुर्मर्षा रजःप्रकृतिरानतिः ॥ क्रियाऽक्रियाकृतिर्ग्लानिः सात्त्विक्याध्यात्मिकी वृषा ॥ ९९ ॥ सेवा शिखामणिर्वृद्धिराहूतिः सुमतिर्द्युभूः ॥ राज्जुर्द्विदाम्नी षड्वर्गा संहिता सौख्यदायिनी ॥ १०० ॥ मुक्तिः प्रोक्तिर्देशभाषा प्रकृतिः पिंगलोद्भवा ॥ नागभावा नागभूषा नागरी नगरी नगा ॥ १ ॥ नौर्नौका भवनौर्भाव्या भवसागरसेतुका ॥ मनोमयी दारुमयी सैकती सिकतामयी ॥ २ ॥ लेख्या लेप्या मणिमयी प्रतिमा हेमनिर्मिता ॥ शैली शैलभवा शीला शीकारामा चलाचला ॥ ३ ॥ अस्थिता स्वस्थिता तूली वैदिकी तांत्रिकी विधिः ॥ संध्या संध्याभ्रवसना वेदसंधिः सुधामयी ॥ ४ ॥ सायंतनी शिखावेध्या सूक्ष्मा जीवकला कृतिः ॥ आत्मभूता भाविताऽणी प्रह्वा कमलकर्णिका ॥ ५ ॥ नीराजनी महाविद्या कंदली कार्यसाधिनी ॥ पूजा प्रतिष्ठा विपुला पुनंती पारलौकिकी ॥ ६ ॥ शुक्लशुक्तिर्मौक्तिका च प्रतीतिः परमेश्वरी ॥ विराजोष्णिग् विराड् वेणी वेणुका वेणुनादिनी ॥ ७ ॥ आवर्तिनी वार्तिकदा वार्त्ता वृत्तिर्विमानगा ॥ सासाढ्यरासिनी सासी रासमण्डलमंडली ॥ ८ ॥ गोपगोपीश्वरी गोपी गोपीगोपालवंदिता ॥ गोचारिणी गोपनदी गोपानन्दप्रदायिनी ॥ ९ ॥ पशव्यदा गोपसेव्या कोटिशो गोगणावृता ॥ गोपानुगा गोपवती गोविंदपदपादुका ॥ ११० ॥ वृषभानुसुता राधा श्रीकृष्णवशकारिणी ॥ कृष्णप्राणाधिका शश्वद्रसिका रसिकेश्वरी ॥ ११ ॥ अवटोदा ताम्रपर्णी कृतमाला विहायसी ॥ कृष्णा वेणी भीमरथी तापी रेवा महापगा ॥ १२ ॥ वैयासकी च कावेरी तुंगभद्रा सरस्वती ॥ चन्द्रभागा वेत्रवती गोविंदपदपादुका ॥ १३ ॥ गोमती कौशिकी सिंधुर्बाणगंगातिसिद्धिदा ॥ गोदावरी रत्नमाला गंगा मंदाकिनी बला ॥ १४ ॥ स्वर्णदी जाह्नवी वेला वैष्णवी मंगलालया ॥ बाला विष्णुप्रदीपोक्ता सिंधुसागरसंगता ॥ १५ ॥ गंगासागरशोभाढ्या सामुद्री रत्नदा धुनी ॥ भागीरथी स्वर्धुनी भूः श्रीवामनपदच्युता ॥ १६ ॥ लक्ष्मी रमा रामणीया भार्गवी विष्णुवल्लभा ॥

सीतार्चिर्जानकी माता कलंकरहिता कला ॥ १ ॥ कृष्णपादाब्जसंभूता सर्वा त्रिपथगामिनी ॥ धरा विश्वंभराऽनंता
भूमिर्धात्री क्षमामयी ॥ १८ ॥ स्थिरा धारित्री धरणिरुर्वी शेषफणास्थिता ॥ अयोध्या राघवपुरी कौशिकी रघुवंशजा ॥ १९ ॥
मथुरा माथुरी पंथा यादवी ध्रुवपूजिता ॥ माया पूर्बिल्वनीला द्वार्गंगाद्वारविनिर्गता ॥ १२० ॥ कुशावर्तमयी ध्रौव्या ध्रुवमण्डलमध्यगा ॥
॥ काशी शिवपुरी शेषा विंध्या वाराणसी शिवा ॥ २१ ॥ अवंतिका देवपुरी प्रोज्ज्वलोज्जयिनी जिता ॥ द्वारावती द्वारकामा
कुशभूता कुशस्थली ॥ २२ ॥ महापुरी सप्तपुरी नन्दिग्रामस्थलस्थिता ॥ शास्त्रग्रामशिलादित्या शंभलग्राममध्यगा ॥ २३ ॥
वंशगोपालिनी क्षिप्रा हरिमन्दिरवर्त्तिनी ॥ बर्हिष्मती हस्तिपुरी शक्रप्रस्थनिवासिनी ॥ २४ ॥ दाडिमी सैंधवी जंबुः पौष्करी पुष्कर
प्रसूः ॥ उत्पलावर्तगमना नैमिषी नैमिषावृता ॥ २५ ॥ कुरुजांगलभूः काली हैमवत्यर्बुदी बुधा ॥ शूकरक्षेत्रविदिता श्वेतवाराह
धारिता ॥ २६ ॥ सर्वतीर्थमयी तीर्था तीर्थानां कीर्तिकारिणी ॥ हारिणी सर्वदोषाणां दायिनी सर्वसम्पदाम् ॥ २७ ॥ वर्द्धिनी
तेजसां साक्षाद्गर्भवासनिकृंतनी ॥ गोलोकधामधनिनी निकुंजनिजमंजरी ॥ २८ ॥ सर्वोत्तमा सर्वपुण्या सर्वसौंदर्यशृंखला ॥ सर्वतीर्थो
परिगता सर्वतीर्थाधिदेवता ॥ २९ ॥ नाम्नां सहस्रं कालिन्द्याः कीर्तिदं कामदं परम् ॥ महापापहरं पुण्यमायुर्वर्द्धनमुत्तमम् ॥ १३० ॥
एकवारं पठेद्रात्रौ चोरेभ्यो न भयं भवेत् ॥ द्विवारं प्रपठेन्मार्गे दस्युभ्यो न भयं क्वचित् ॥ ३१ ॥ द्वितीयां तु समारभ्य पठेत्पूर्णावधि
द्विजः ॥ दशवारमिदं भक्त्या ध्यात्वा देवीं कलिन्दजाम् ॥ ३२ ॥ रोगी रोगात्प्रमुच्येत बद्धो मुच्येत बंधनात् ॥ गुर्विणी जनयेत्पुत्रं
विद्यार्थी पंडितो भवेत् ॥ ३३ ॥ मोहनं स्तंभनं शश्वद्वशीकरणमेव च॥ उच्चाटनं घातनं च शोषणं दीपनं तथा ॥ ३४ ॥ उन्मादनं तापनं
च निधिदर्शनमेव च ॥ यद्यद्वांछति चित्तेन तत्तत्प्राप्नोति मानवः ॥ ३५ ॥ ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चस्वी राजन्यो जगती पतिः ॥ वैश्यो निधिपति
र्भूयाच्छूद्रः श्रुत्वा तु निर्मलः ॥ ३६ ॥ पूजाकाले तु यो नित्यं पठते भक्तिभावतः ॥ लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवांभसा ॥ ३७ ॥
शतवारं पठेन्नित्यं वर्षावधिमतः परम् ॥ पटलं पद्धतिं कृत्वा स्तवं च कवचं तथा ॥ ३८ ॥ सप्तद्वीपमहीराज्यं प्राप्नुयान्नात्र संशयः ॥ निष्का

रणं पठेद्यस्तु यमुनाभक्तिसंयुतः ॥ ३९ ॥ त्रैवर्ग्यमेत्य सुकृती जीवन्मुक्तो भवेदिह ॥१४०॥ निकुंजलीलाललितं मनोहरं कलिन्दजाकूल लताकदम्बकम् ॥ वृन्दावनोन्मत्तमिलिन्दशब्दितं व्रजेत्स गोलोकमिदं पठेच्च यः ॥१४१॥ इति श्रीमद्गर्गाचार्यसंहितायां श्रीमाधुर्य्यखण्डे श्रीसौभरिमान्धातृसंवादे श्रीयमुनासहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे मध्यखण्डे यमुनातंत्रे पञ्चदशस्तरंगः ॥ १५ ॥

॥ अथासुरीमहाकल्पप्रयोगः ॥ मंत्रमहोदधौ—वक्ष्याम्यथर्ववेदोक्तमासुरीविधिमुत्तमम् ॥ तारादिरासुरीमंत्रो दशोत्तरशताक्षरः ॥ १ ॥ मंत्रो यथा—ॐ कटुके कटुकपत्रे सुभगे आसुरि रक्ते रक्तवाससे अथर्वणस्य दुहिते अघोरे अघोरकर्मकारिके अमुकस्य गतिं दह दह उपविष्टस्य गुदं दह दह सुप्तस्य मनो दह दह प्रबुद्धस्य हृदयं दह दह हन हन पच पच तावद्दह तावत्पच यावन्मे वशमायाति हुँफट्स्वाहा॥ इति दशोत्तरशताक्षरो मंत्रः। अस्य विधानम्—अस्य आसुरीमंत्रस्य अंगिरा ऋषिः। विराट् छंदः। आसुरी देवता। ॐबीजम्। स्वाहा शक्तिः। हुं कीलकम्। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ अंगिरऋषये नमः शिरसि १। विराट्छंदसे नमो मुखे २। आसुरीदेवतायै नमो हृदि ३। ॐ बीजाय नमो लिंगे ४। स्वाहाशक्तये नमः पादयोः ५। हुं कीलकाय नमो नाभौ ६। विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ कटुके कटुकपत्रे हुँफट्स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः १। सुभगे आसुरि हुंफट्स्वाहा तर्जनीभ्यां नमः २। रक्ते रक्तवाससे हुंफट्स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः ३। अथर्वणस्य दुहिते हुंफट्स्वाहा अनामिकाभ्यां नमः ४। अघोरे अघोरकर्मकारिके हुंफट्स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। अमकस्य गतिं दह २ उपविष्टस्य गुदं दह २ सुप्तस्य मनो दह २ प्रबुद्धस्य हृदयं दह २ हन २ पच २ तावद्दह तावत्पच यावन्मे वशमायाति हुंफट्स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ कटुके कटुकपत्रे हुँफट्स्वाहा हृदयाय नमः १। सुभगे आसुरि हुँफट्स्वाहा शिरसे स्वाहा २। रक्ते रक्तवाससे हुंफट्स्वाहा शिखायै वषट् ३। अथर्वणस्य दुहिते हुँफट्स्वाहा कवचाय हुं ४। अघोरे अघोरकर्मकारिके हुँफट्स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट् ५। अमुकस्य गतिं दह २ उपविष्टस्य गदं दह २ सुप्तस्य मनो दह २ प्रबुद्धस्य हृदयं दह २ हन २ पच २ तावद्दह तावत्पच यावन्मे वशमायाति हुँफट्स्वाहा

अत्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ इति न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्–ॐ शरच्चंद्रकांतिर्वराभीतिशूलं सृणिं हस्तपद्मै र्दधानांबुजस्था ॥ त्रिभूषांबराढ्याहियज्ञोपवीता मुदेऽथर्वपुत्री करोत्वासुरी नः ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणमयुतजपः । घृताक्तराजिकया दशांशतो होमः । एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथाच–अयुतं प्रजपेन्मंत्रं जुहुयात्तद्दशांशतः ॥ घृताक्तराजिकां वह्नौ ततः सिद्धो भवेन्मनुः ॥ सिद्धे मंत्रे प्रकुर्वीत प्रयोगानिष्टसिद्धये ॥ १ ॥ पंचांगामासुरीं[1] मंत्री गृहीत्वा मंत्रयेच्छतम् ॥ तया धूपितमात्मानं यो जिघ्रेत्स वशो भवेत् ॥ मध्वक्तामासुरीं[2][3] हुत्वा सहस्रं वशयेज्जगत् ॥ २ ॥ अन्यः कल्पः–राजिकाप्रतिमां कृत्वा दक्षांघ्रेर्मस्तकावधि ॥ अष्टोत्तरशतं खंडान् जुहुयादसिना कृतान् ॥ ३ ॥ नार्याः प्रतिकृतेर्वामपादादिहवनं चरेत् ॥ एवं कुर्यात्स सप्ताहं राजींधनचितेऽनले[4] ॥ ४ ॥ स सपत्नोऽपि[5] मृत्यंतं दासो जायेत मंत्रिणः ॥ स्त्रीलिंगोहः[6] प्रकर्तव्यो मंत्रे नारीवशीकृतौ ॥ ५ ॥ अन्यः कल्पः–कटुतैलान्वितां राजीं निंबपत्रयुतां रिपोः ॥ नामयुङ्मनुना हुत्वा ज्वारिणं कुरुते रिपुम् ॥ ६ ॥ एवं राजीं सलवणां हुत्वा स्फोटो भवेद्रिपोः ॥ अर्कदुग्धाक्ततद्धोमान्नेत्रे नाशयते रिपोः ॥ ७ ॥ अन्यः कल्पः–साधको राजिकां हुत्वा ब्राह्मणं वशयेद्ध्रुवम् ॥ क्षत्रियं तु गुडाभ्यक्तां[7] वैश्यं दधियुतां च ताम् ॥ ८ ॥ शूद्रं लवणसंयुक्तां हुत्वा तां साष्टकं शतम् ॥ आसुरीसमिधं हुत्वा मध्वक्तां लभते निधिम् ॥ ९ ॥ अन्यः कल्पः–तोयपूर्णे घटे मंत्री राजिकापल्लवान्विते ॥ आवाह्य तां पूजयित्वा शतं मूलेन मंत्रयेत् ॥ १० ॥ तेनाभिषिक्तं मनुजेनालक्ष्मीराधयो रुजः ॥ उपसर्गाः[8] पलायंते परित्यज्यातिदूरतः ॥ ११ ॥ अन्यः कल्पः–असुरीकुसुमं शीतं[9] प्रियंगु नागकेसरम् ॥ मनःशिला च तगरमेतत्सर्वं

१-पंचांगां-मूलशाखापत्रपुष्पफलान्विताम्। २ आसुरीं-राजिकाम्। ३–मध्वक्तां–खण्डघृतक्षौद्रयुताम्। ४-राजिकाकाष्ठदीप्ते चिताग्नौ। ५-सपत्नोऽपि शत्रुरपि देहांतपर्यंतं दासः स्यात् किमुतान्यः। ६-स्त्रीलिंगोहः नार्या वशीकरणे प्रतिमाहेमादौ मन्त्रे स्थितानाममुकस्येति स्थाने देवदत्तस्योपविष्टस्येत्यादीनां षष्ठ्यन्तानां पदानां उपविष्टायाः सुमायाः इत्यूहो विधेयः। ७-गुडयुतां राजीं हुत्वा क्षत्रियं वशयेत्। दध्यक्तां हुत्वा वैश्यम्। होममानमष्टोत्तरशतं सर्वत्र। ८-उपसर्गा उपद्रवाः। ९-शीतं चंदनम्।

विचूर्णितम् ॥ १२ ॥ शताभिमंत्रितं साध्यमूर्ध्नि क्षिप्तं वशंवदम्[1] ॥ १३ ॥ अन्यः कल्पः—निंबकाष्ठसमिद्भिऽस्माबासुरीं सर्षपान्वितान् ॥ अष्टोत्तरशतं हुत्वा सप्ताहं दक्षिणामुखः ॥ १४ ॥ विदध्यादचिराच्छत्रुं सूर्यसूनुगृहातिथिम्[2] ॥ १५ ॥ किं कुर्य्यान्नृपतिः क्रुद्धः किं कुर्य्युं रिपवोऽखिलाः ॥ क्रुद्धः कालोऽपि किं कुर्य्यादासुरी चेदुपासिता ॥ १६ ॥ ग्रंथाननेकानालोक्य मंत्रा गुप्ततमा मया ॥ हिताय सुधियां ख्याता विस्तरादुपरम्यते ॥ १७ ॥ इत्यासुरीमहाकल्पः ॥ अथ कालरात्रीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रमहोदधौ मंत्रो यथा— ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं काह्लेश्वरि सर्वजनमनोहरे सर्वमुखस्तंभिनि सर्वराजवशंकारि सर्वदुष्टनिर्दलिनि सर्वस्त्रीपुरुषाकर्षिणि बंदिशृंखलास्त्रोटय २ सर्वशत्रून् भंजय २ द्वेष्टृन् निर्दलय २ सर्वं स्तंभय २ मोहनास्त्रेण द्वेषिण उच्चाटय २ सर्वं वशं कुरु २ स्वाहा देहि २ सर्वं कालरात्रि कामिनि गणेश्वरि नमः ॥ इति त्रयस्त्रिंशदुत्तरशताक्षरो मंत्रः ॥ अस्यविधानम्-अस्य कालरात्रिमंत्रस्य दक्ष ऋषिः।जगती च्छंदः।अलर्कनिवासिनी कालरात्रिर्देवता । क्रीं बीजम् । मायाराज्ञीति शक्तिः । ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ दक्षऋषये नमः शिरसि १ । जगतीच्छंदसे नमो मुखे २ । अलर्कनिवासिनीकालरात्रिदेवतायै नमो हृदि ३ । क्रींबीजाय नमो लिंगे ४ । मायाराज्ञीतिशक्तये नमः पादयोः ५ । विनियोगाय नमः सर्वांगे ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ऐं तर्जनीभ्यां नमः २ । ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३ । क्लीं अनामिकाभ्यां नमः ४ । श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ॥ इति पंचांगुलीषु करांगन्यासः ॥ ॐ ऐंह्रींक्लींश्रीं काह्लेश्वरि सर्वजनमनोहरे सर्वमुखस्तंभिनि हृदयाय नमः १ । सर्वराजवशंकारि सर्वदुष्टनिर्दलिनि सर्वस्त्रीपुरुषाकर्षिणि शिरसे स्वाहा २ । बंदिशृंखलास्त्रोटय २ सर्वशत्रून् भंजय २ शिखायै वषट् ३ । द्वेष्टृन् निर्दलय २ सर्वं स्तंभय २ कवचाय हुं ४ । मोहनास्त्रेण द्वेषिण उच्चाटय २ सर्वं वशं कुरु २ स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । देहि २ सर्वं कालरात्रि कामिनि गणेश्वरि नमः अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः । एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्—ॐ उद्यन्मार्तंड

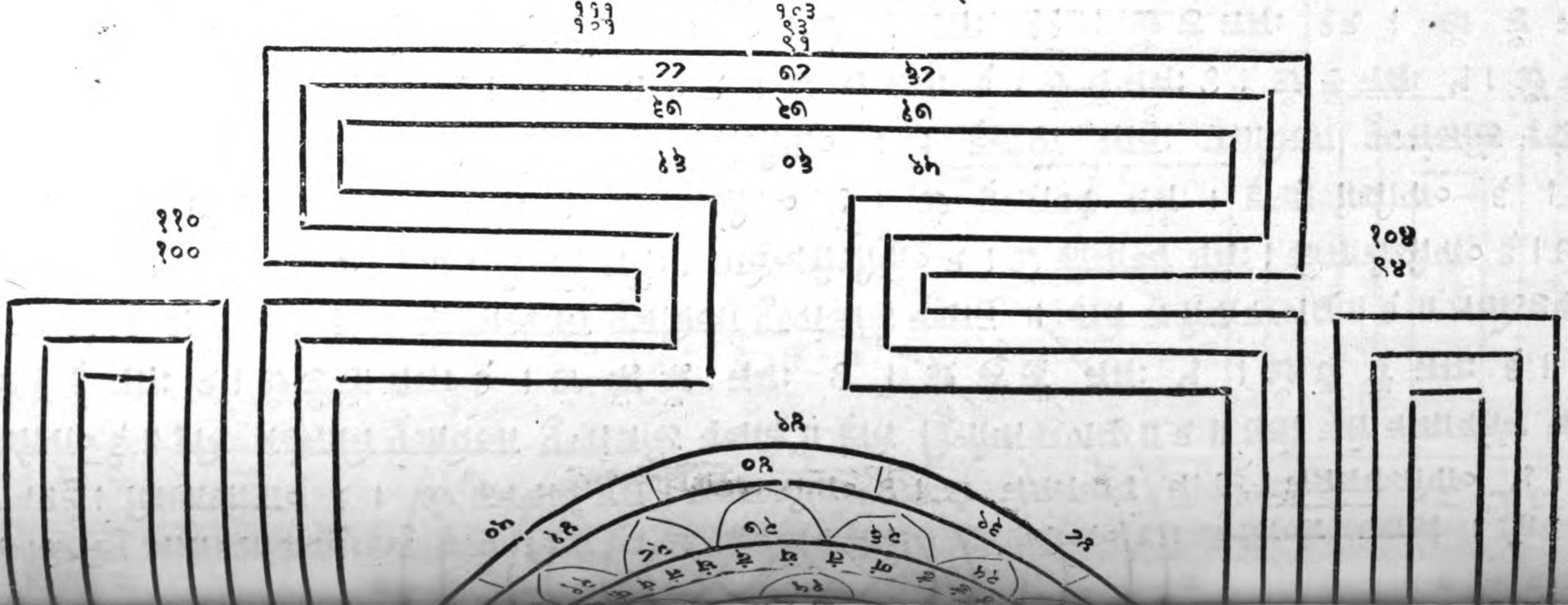
१-वशंवदं वशकृतम् । २-सूर्यसूनुगृहातिथिं यमातिथिं मृतमित्यर्थः ।

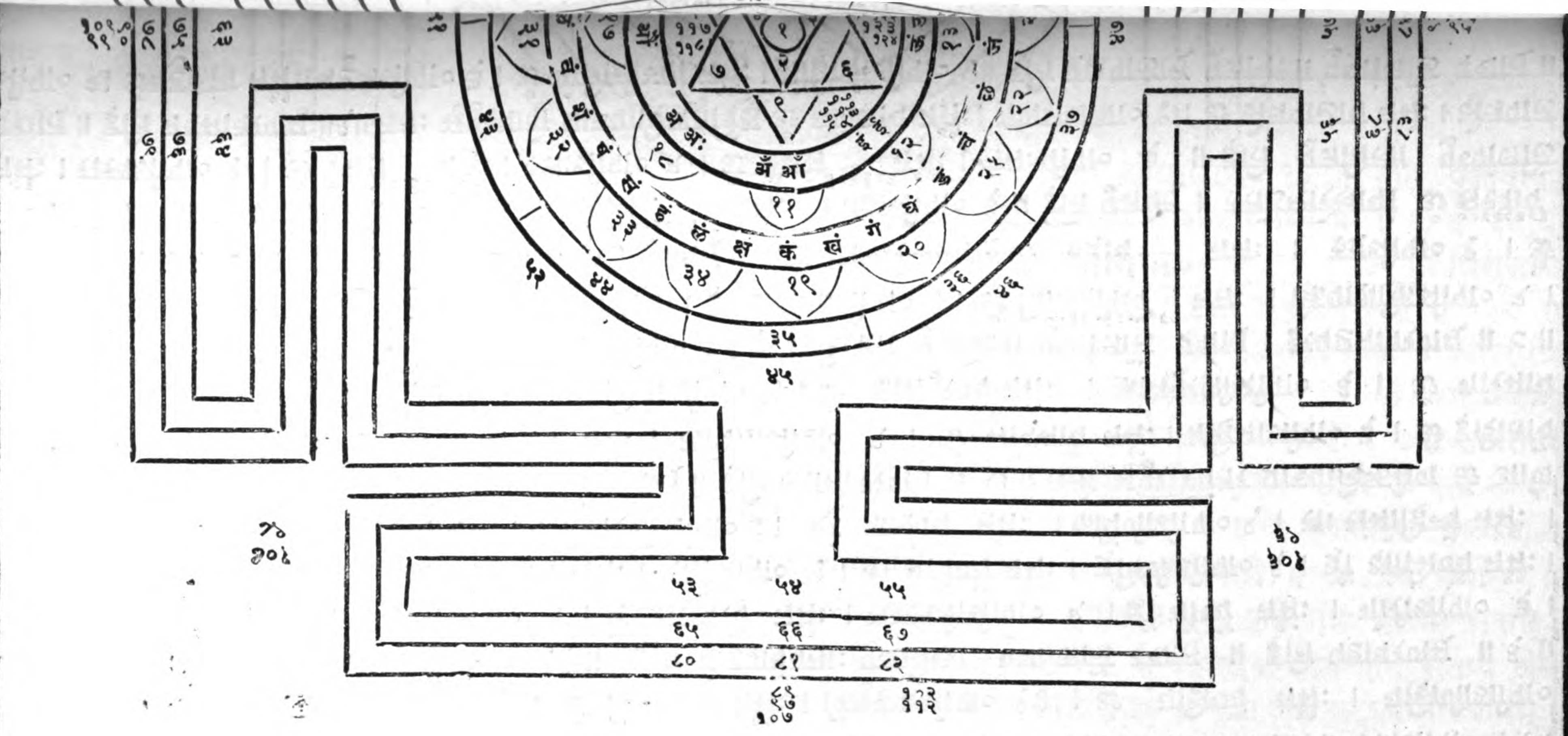
कांतिं विगलितकबरीं कृष्णवस्त्रावृतांगीं दंडं[1] लिंगं कराब्जैर्वरमथ भुवनं संधधानां त्रिनेत्राम्॥ नाना[2]कल्पैर्विभासं स्मितमुखकमलां सेवितां देवसंघैर्मायाराज्ञीं मनो[3]भूशरविकलतनूमाश्रये कालरात्रिम् ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूजयेत् ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्। पूर्वादिक्रमेण ॐ जयायै नमः १ । ॐ विजयायै नमः २ । ॐ अजितायै नमः ३ । ॐ अपराजितायै नमः ४ । ॐ नित्यायै नमः ५ । ॐ विलासिन्यै नमः ६ । ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७ । ॐ अघोरायै नमः ८ । मध्ये ॐ मंगलायै नमः ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततो भूर्जपत्रे बिंदुत्रिकोणषट्कोणवृत्ताष्टदलवृत्तषोडशदलवृत्तं च कार्यपरत्वे[4]र्न लेखन्यादिद्वारा लिखित्वा तस्योपरि त्रिरेखात्मकभूपुरं विनिर्माय 'ॐ कालरात्रियोगपीठात्मने नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा बिंदौ मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तद्यथा—पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य—ॐ संविमन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ॥ देह्यनुज्ञां कालरात्रि परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत । तद्यथा—तत्र त्रिकोणे पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च । ॐ संमोहिन्यै नमः । संमोहिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ ॥ इति सर्वत्र । ॐ मोहिन्यै नमः । मोहिनीश्रीपा० २ । ॐ विमोहिन्यै नमः । विमोहिनीश्रीपा० ३ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य—ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥

१ दंडवरे दक्षयोः लिङ्गभुवने वामयोः भुवनं ब्रह्माण्डम् । २ नानाकल्पैर्विभासं विविधाभरणसमूहशोभिताम् । ३ मनोभूशरविकलतनूं कामबाणव्याकुलशरीराम् । ४ तद्यंत्रं [illegible]र्जे क्षीरद्रोः फलकेऽपि वा । शांतये स्वष्टगंधेन लेखन्या चंपकोत्थया ॥ कर्पूरागुरुकर्पूररोचनारक्तचंदनम् । कुंकुमं चंदनं वापि कस्तूरीत्यष्टगंधकम् ॥ शिरद्रहिंगुलाभ्यां च [illegible] विलिखेत्सुधीः।वारणोद्भवलेखन्या स्तंभने कोकिलच्छदैः ॥ हरितालहरिद्राभ्यां मारणे वायसच्छदैः / धत्तूरभानुनिर्गुंडीखराश्वमहिषासृजा॥एवं विलिखिते यंत्रे कुर्यादावरणार्चनम् ॥

ततः षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च ॐ हृदयाय नमः । हृदयश्रीपा० १ । ॐ शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० २ । ॐ शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ३ । ॐ कवचाय हुम् । कवचश्रीपा० ४ । ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । ॐ अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ ॥ इति षडंगानि पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततो वृत्ते वामावर्तेन च ॐ अं आं नमः १ । ॐ इँ ईँ नमः २ । ॐ उँ ऊँ नमः ३ । ॐ ऋँ ॠँ नमः ४ । ॐ ऌँ ॡँ नमः ५ । ॐ एँ ऐं नमः ६ । ॐ ओं औं नमः ७ । ॐ अं अः नमः ८ ॥ इति षोडशस्वरान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततोऽष्टदलेषु वामावर्तेन ॐ ब्राह्म्यै नमः । ब्राह्मीश्रीपा० १ । ॐ माहेश्वर्यै नमः । माहेश्वरीश्रीपा० २ । ॐ कौमार्य्यै नमः । कौमारीश्रीपा० ३ । ॐ वैष्णव्यै नमः । वैष्णवीश्रीपा० ४ । ॐ वाराह्यै नमः । वाराहीश्रीपा० ५ । ॐ इन्द्राण्यै नमः । इन्द्राणीश्रीपा० ६ । ॐ चामुंडायै नमः । चामुंडाश्री० ७ । ॐ महालक्ष्म्यै नमः । महालक्ष्मीश्रीपा० ८ । इत्यष्टौ मातॄः पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥ ४ ॥ पुनर्वृत्ते ॐ कँ नमः १ । ॐ खँ नमः २ । ॐ गँ नमः ३ । ॐ घँ नमः ४ । ॐ ङँ नमः ५ । ॐ चँ नमः ६ । ॐ छँ नमः ७ । ॐ जँ नमः ८ । ॐ झँ नमः ९ । ञँ नमः १० । ॐ टँ नमः ११ । ॐ ठँ नमः १२ । ॐ डँ नमः १३ । ॐ ढँ नमः १४ । ॐ णँ नमः १५ । ॐ तँ नमः १६ । ॐ थँ नमः १७ । ॐ दँ नमः १८ । ॐ धँ नमः १९ । ॐ नँ नमः २० । ॐ पँ नमः २१ । ॐ फँ नमः २२ । ॐ बँ नमः २३ । ॐ भँ नमः २४ । ॐ मँ नमः २५ । ॐ यँ नमः २६ । ॐ रँ नमः २७ । ॐ लँ नमः २८ । ॐ वँ नमः २९ । ॐ शँ नमः ३० । ॐ षँ नमः ३१ । ॐ सँ नमः ३२ । ॐ हँ नमः ३३ । ॐ ळँ नमः ३४ । ॐ क्षँ नमः ३५ । इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति पंचमावरणम् ॥ ५ ॥ ततः षोडशदलेषु वामावर्तेन च ॐ उर्वश्यै नमः । उर्वशी श्रीपा० १ । ॐ मेनकायै नमः । मेनकाश्रीपा० २ । ॐ रंभायै नमः । रंभाश्रीपा० ३ । ॐ घृताच्यै नमः घृताची श्रीपादुकां पूजया० ४ । ॐ मंजुघोषायै नमः । मंजुघोषाश्रीपा० ५ । ॐ सहजन्यायै नमः । सहजन्याश्रीपा० ६ । ॐ सुकेश्यै

अथ कालरात्रिपूजनयन्त्रम् ।



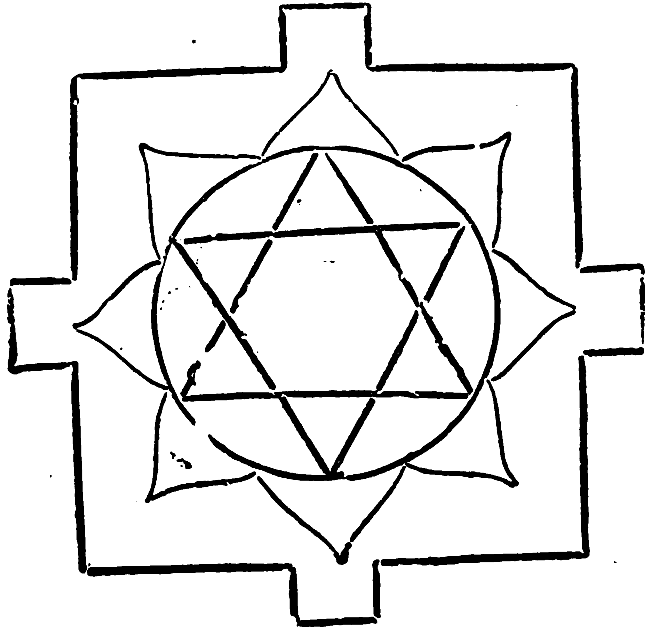

ॐ आँ
अ अः
लं क्ष कं खं गं घं
११
३४
३५
४५
५२ ५४ ५५
६५ ६६ ६७
८० ८१ ८२
१०७
१०८

नमः । सुकेशीश्रीपा० ७ । ॐ तिलोत्तमायै नमः । तिलोत्तमाश्रीपा० ८ । ॐ गांधर्व्यै नमः । गांधर्वीश्रीपा० ९ । ॐ सिद्धकन्यायै नमः । सिद्धकन्याश्रीपा० १० । ॐ किन्नर्यै नमः । किन्नरीश्रीपा० ११ । ॐ नागकन्यकायै नमः । नागकन्यकाश्रीपा० १२ । ॐ विद्याधर्यै नमः । विद्याधरीश्रीपा० १३ । ॐ किंपुरुषायै नमः । किंपुरुषाश्रीपा० १४ । ॐ यक्षिण्यै नमः । यक्षिणीश्रीपा० १५ । ॐ पिशाच्यै नमः । पिशाचीश्रीपा० १६ ॥ इति षोडशदेवताः पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति षष्ठावरणम् ॥ ६ ॥ पुनर्वृत्ते ॐ परमात्मने नमः । परमात्मश्रीपा० १ । ऐं सरस्वत्यै नमः । सरस्वतीश्रीपा० २ । ह्रीं गौर्य्यै नमः । गौरीश्रीपा० ३ । क्लीं कामायै नमः । कामाश्रीपा० ४ । श्रीं रमायै नमः । रमाश्रीपा० ५ । द्रां द्राविण्यै नमः । द्राविणीश्रीपा० ६ । द्रीं क्षोभिण्यै नमः । क्षोभिणीश्रीपा० ७ । क्लीं वशीकारिण्यै नमः । वशीकारिणीश्रीपा० ८ । ब्लूं कर्षिण्यै नमः । कर्षिणीश्रीपा० ९ । सः संमोहिन्यै नमः । संमोहिनीश्रीपा० १० । इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति सप्तमावरणम् ॥ ७ ॥ ततो भूपुराभ्यंतरे प्राच्यादिक्रमेण ॐ अणिमायै नमः । अणिमाश्रीपा० १ । ॐ लघिमायै नमः । लघिमाश्रीपा० २ । ॐ महिमायै नमः । महिमाश्रीपा० ३ । ॐ ईशितायै नमः । ईशिताश्रीपा० ४ । ॐ वशितायै नमः । वशिताश्रीपा० ५ । ॐ कामपूरण्यै नमः । कामपूरणीश्रीपा० ६ । ॐ गरिमायै नमः । गरिमाश्रीपा० ७ । ॐ प्राप्त्यै नमः । प्राप्तिश्रीपा० ८ । इत्यष्टसिद्धीः पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् । इत्यष्टमावरणम् ॥ ८ ॥ ततो भूगृहस्य प्रथमरेखायां चतुर्दिक्षु ॐ इच्छाशक्त्यै नमः । इच्छाशक्तिश्रीपा० १ । ॐ क्रियाशक्त्यै नमः । क्रियाशक्तिश्रीपा० २ । ॐ ज्ञानशक्त्यै नमः । ज्ञानशक्तिश्रीपा० ३ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततो मध्यरेखायाम् ॐ रुद्राय नमः । रुद्रश्रीपा० १ । ॐ विष्णवे नमः । विष्णुश्रीपा० २ । ॐ ब्रह्मणे नमः । ब्रह्मश्रीपा० ३ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततोऽन्तरेखायां ॐ सत्त्वाय नमः । सत्त्वश्रीपा० १ । ॐ रजसे नमः । रजःश्रीपा० २ । ॐ तमसे नमः । तमःश्रीपा० ३ ॥ इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति नवमावरणम् ॥९॥ ततः भूपुरबाह्ये प्राच्यादिचतुर्दिक्षु ॐ गणेशाय नमः । गणेशश्रीपा० १ । ॐ क्षेत्रपालाय नमः । क्षेत्रपालश्रीपा० २ । ॐ बटुकाय नमः । बटुकश्रीपा० ३ । ॐ योगिनीभ्यो नमः । योगिनीश्रीपा० ४ ॥ इति द्वारपालान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥

...॥ १० ॥ ततो भूपुराद्वहिः पूर्वादिक्रमेण ॐ लं इन्द्राय नमः । इन्द्रश्रीपा० १ । ॐ रं अग्नये नमः । ...
पा० २ । ॐ मं यमाय नमः । यमश्रीपा० ३ । ॐ क्षं निर्ऋतये नमः । निर्ऋतिश्रीपा० ४ । ॐ वं वरुणाय नमः । वरुणश्रीपा० ५ । ॐ शं वायवे नमः । वायुश्रीपा० ६ । ॐ कुं कुबेराय नमः । कुबेरश्रीपा० ७ । ॐ हं ईशानाय नमः । ईशानश्रीपा० ८ । पूर्वेशानयोर्मध्ये ॐ ॐ ब्रह्मणे नमः । ब्रह्मश्रीपा० ९ । वरुणनिर्ऋतिमध्ये ॐ ह्रीं अनंताय नमः । अनंतश्रीपा० १० ॥ इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्येकादशावरणम् ॥ ११ ॥ तत इन्द्रादिसमीपे ॐ वं वज्राय नमः १ । ॐ शं शक्तये नमः २ । ॐ दं दंडाय नमः ३ । ॐ खं खड्गाय नमः ४ । ॐ पां पाशाय नमः ५ । ॐ अं अंकुशाय नमः ६ । ॐ गं गदायै नमः ७ । ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ८ । ॐ पं पद्माय नमः ९ । ॐ चं चक्राय नमः ॥ इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वादशावरणम् ॥ १२ ॥ इति बाह्यार्चनं कृत्वा पुनः देवीपार्श्वे प्राच्यादिचतुर्दिक्षु प्राच्याम् ॐ मायायै नमः । मायाश्रीपा० १ । ॐ कालरात्र्यै नमः । कालरात्रिश्रीपा० २ । ॐ वटवासिन्यै नमः । वटवासिनीश्रीपा० ३ । दक्षिणे ॐ गणेश्वर्यै नमः । गणेश्वरीश्रीपा० १ । ॐ काह्वाल्यायै नमः । काह्वाल्याश्रीपा० २ । ॐ व्यापिकायै नमः । व्यापिकाश्रीपा० ३ । पश्चिमे ॐ अलर्कवासिन्यै नमः । अलर्कवासिनीश्रीपा० १ । ॐ मायाराज्ञ्यै नमः । मायाराज्ञीश्रीपा० २ । ॐ मदनप्रियायै नमः । मदनप्रियाश्रीपा० ३ । उत्तरे ॐ रत्यै नमः । रतिश्रीपा० १ । ॐ लक्ष्म्यै नमः । लक्ष्मीश्रीपा० २ । ॐ काह्वेश्वर्यै नमः । काह्वेश्वरीश्रीपा० ३ ॥ इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति त्रयोदशावरणम् ॥ १३ ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य मूलेन मद्यादिबालिं दत्त्वा जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणमयुतजपः । तद्दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री षट् प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च—अयुतं प्रजपेन्मंत्रं दशांशं जुहुयात्तिलैः ॥ पयोरुहैर्वा विप्रेन्द्रान् संतर्प्य श्रेय आप्नुयात् ॥ १ ॥ एवं संपूजिता स्वेष्टं कालरात्रिः प्रयच्छति । सिद्धे मंत्री प्रकुर्वीत प्रयोगानिष्टसिद्धये ॥ २ ॥ अथ षट्प्रयोगविधानम् । तत्रादौ वशीकरणप्रयोगः ॥ साधकः शनिवासरे संध्याकाले तडागं गत्वा 'ॐ नमो जलौकायै जलौकायै सर्वजनं वशं कुरु कुरु हुम्'

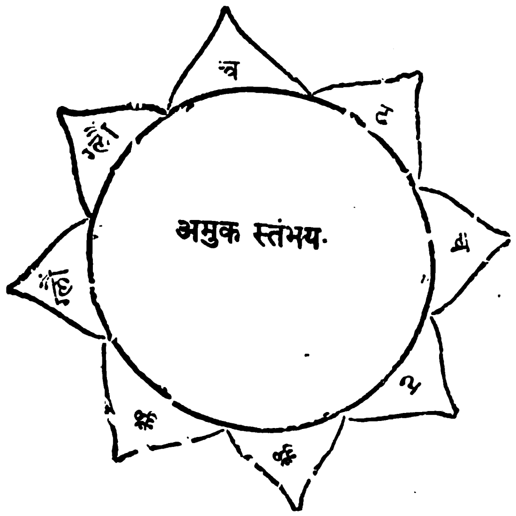
इति मंत्रेण हरिद्राक्ताक्षतपुष्पैर्जलं संपूज्य गृहं गत्वा देवीं स्मरन्निशि भूमौ शयीत ॥ प्रातस्तस्मात्सरसो जलौकाद्वयमादाय छायाशुष्कं कृत्वा संचूर्ण्य तच्चूर्णयुक्तेन कृष्णकार्पाससूत्रेण वर्तिं कृत्वा कुलालचक्रानीतमृन्निर्मिते पात्रे तां निधाय भ्रमतस्तैल यंत्रात्तिलतैलमादाय तत्र निक्षिप्य वेश्यागृहादग्निमानीय कुचिलाप्रसिद्धतरोः काष्ठैस्तां प्रज्वाल्य तेन तत्पात्रे दीपं कृत्वा हरिद्रारसकृते त्रिकोणषट्कोणचतुरस्रके यंत्रे मध्ये लाजान् प्रक्षिप्य तदुपरि दीपपात्रं स्थापयित्वा दीपे कालरात्रिमावाह्य सावरणां संपूज्य नवीनखर्परं दीपोपरि धृत्वा कज्जलं पातयेत् । तत्कज्जलमादाय पश्चिमाभिमुखः 'ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ग्लौं ब्लूँ ह्लौं नमः काहेश्वरि सर्वान्मोहय २ कृष्णे कृष्णवर्णे कृष्णांबरसमन्विते सर्वानाकर्षय २ शीघ्रं वशं कुरु २ हुं ऐं क्लीं श्रीं' इति मंत्रेण शतत्रयवारमभिमंत्रयेत् ॥ ततो दीपाद्देवीमात्मनि संयोज्य तत्कज्जलं भौमवारे नवनीतमर्दितं पात्रे संस्थाप्य तदग्रे वह्निं संस्थाप्य संस्कृत्य मधूकपुष्पैरष्टो त्तरशतं मूलेन हुत्वा कुमारीबटुकांस्त्रियो मधुरभोजनेन भोजयेत् ॥ तदंजनकृत तिलको जगद्वशयेदित्यादिफलं स्पष्टम् ॥ तथा च—तेनांजनेन रचिततिलको मंत्रिसत्तमः ॥ दर्शनादेव वशयेन्नरनारीनरेश्वरान् ॥ दुग्धेनादौ प्रदत्तं तन्नराणां वशकारकम् ॥ तेन स्पृष्टो नरो नूनं दासः स्पर्शयितुर्भवेत् ॥ वशीकरणमा

वशीकरणयंत्रम् ।



ख्यातं स्तंभनं प्रोच्यतेऽधुना ॥ १ ॥ अथ स्तंभनप्रयोगः ॥ रवौ हरिद्रारोचनाकुष्ठतगरैर्गोमूत्रपिष्टैर्मसिं कृत्वा हरिद्रारंजिते वस्त्रेऽष्टदलं कृत्वाऽमुकं स्तंभयेति मध्ये ॐ ॐ ग्लौं ग्लौं चटचटेति वर्णान् दलेषु लिखेत् । तद्वस्त्रं पीतसूत्रेण संवेष्ट्य कोकिलतरोः सप्त कीलकान्कृत्वा

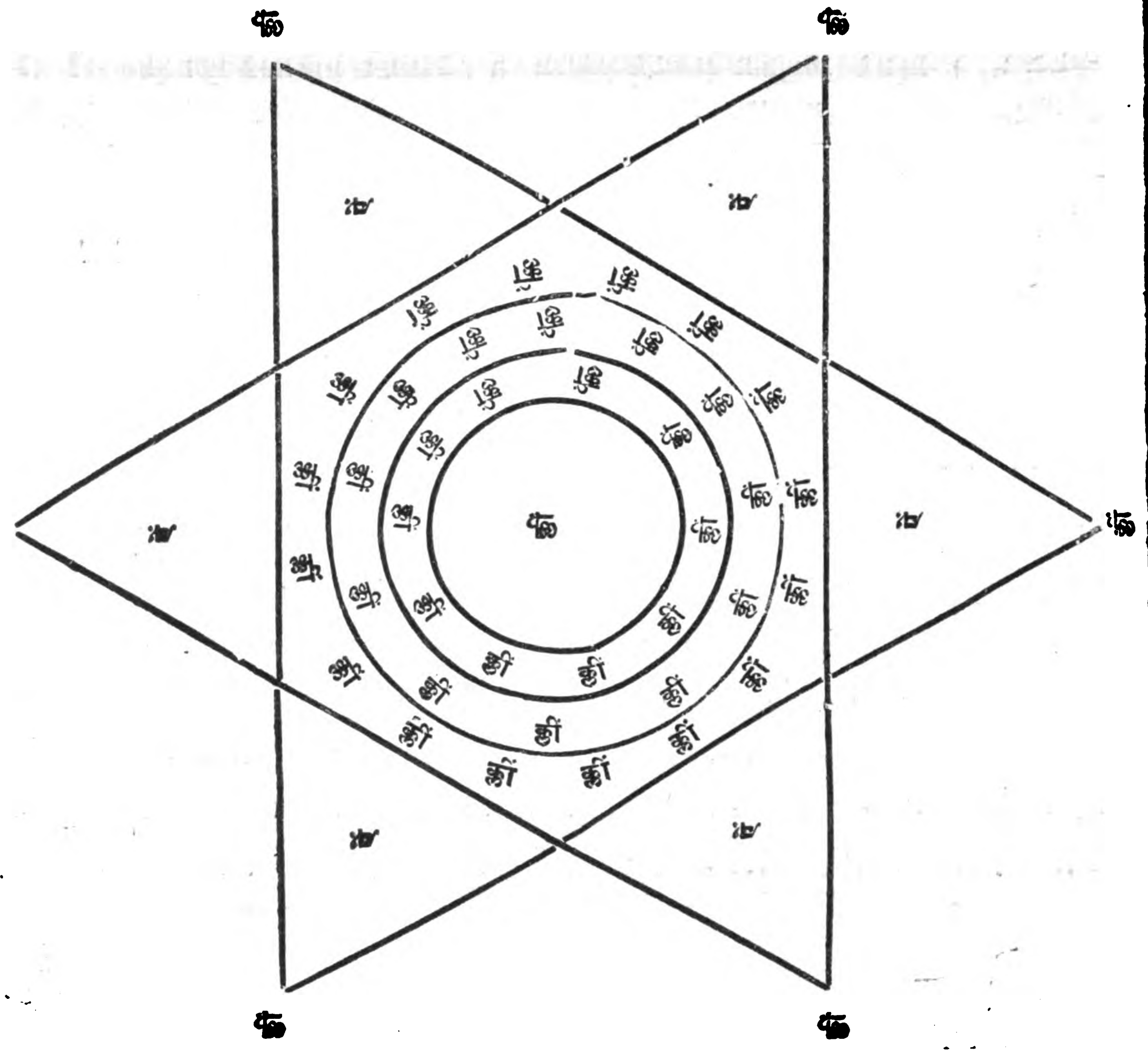
स्तंभनयन्त्रम् ।



तैर्विद्धार्कपत्रैः संवेष्ट्य वल्मीकरंध्रे प्राक्षिप्य मेषमूत्रमुपरि सिक्त्वा रंध्रोपरि शिलां संस्थाप्य तत्र स्थितो हरिद्रामणिभिर्मालामादाय नैर्ऋत्याभिमुखः 'ॐ ह्रां ह्रीं ह्लूं कामाक्षि मायारूपिणि सर्वमनोहारिणि स्तंभय २ रोधय २ मोहय २ क्लां क्लीं क्लूं कामाक्षि कालेश्वरि हुँ हुँ हुँ' इति मंत्र सहस्रं जपेत् । एवं कृते रिपुस्तंभः ॥ २ ॥

१ दीमकरंध्रे । २ मेषमूत्रेण परिपूरयेत् ।

मोहनकरयन्त्रम् ।



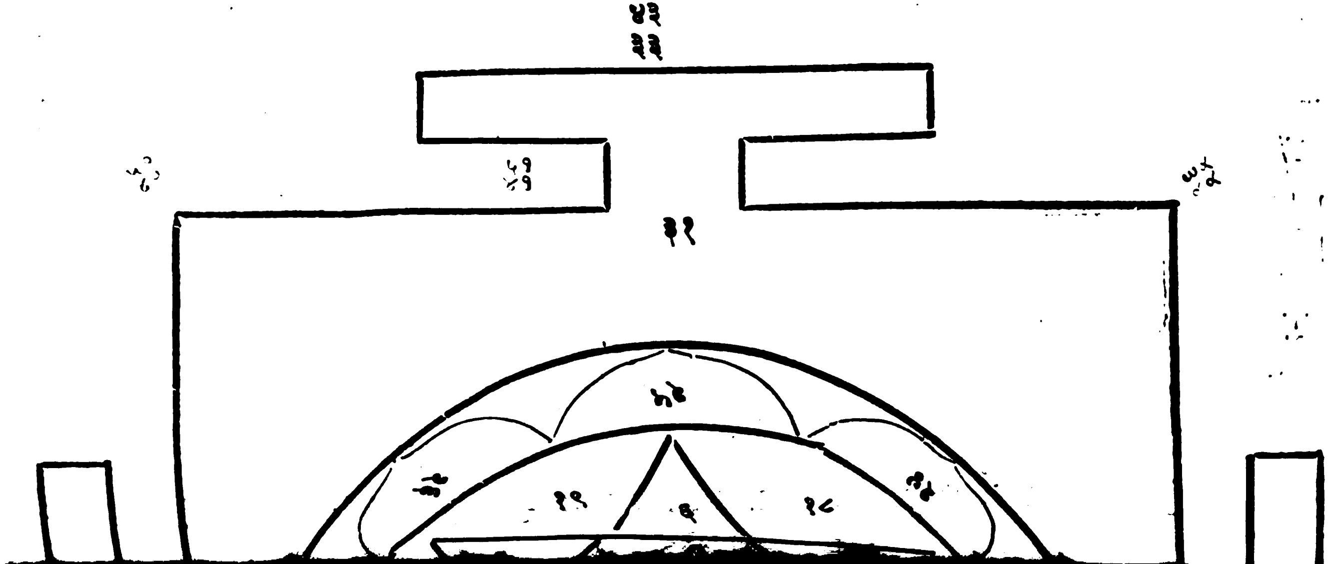
अथ मोहनप्रयोगः ॥ रविवारे हरिद्रां नारीदुग्धेन पिष्ट्वा तद्रसेन भूर्जपत्रे मध्यकामबीजयुतं वृत्तं कृत्वा दशकामबीजैः संवेष्ट्य पुनर्वृत्तं कृत्वा द्वादशकामबीजैः संवेष्ट्य पुनर्वृत्तं कृत्वा षोडशकामबीजैः संवेष्ट्योपरिबीजयुजं षट्कोणं कृत्वा सर्वं वाग्बीजं मध्यस्थं कुर्यात् ॥ तद्यंत्रोपरि स्थित्वा पंचदिनं प्रत्यहं क्रुद्धमानसः सहस्रं दशाक्षरं जपेत् ॥ मंत्रो यथा—'ॐ क्लीं कामाय क्लीं कामिन्यै क्लीम्' इति ॥ जपदशांशेन तिलैस्तैलेनैव जुहुयात् ॥ होमोत्थभस्मना तिलकेन तद्यंत्रधारणेन च विश्वं मोहयेत् ॥ तथाच—होमोत्थभस्मना कुर्वन् तिलकं नरसत्तमः ॥ मोहयेदखिलं विश्वं तद्यंत्रस्यापि धारणात् ॥ उक्तं मोहनमाकर्षं वक्ष्ये साधकसत्तम ॥ ३ ॥ अथाकर्षणप्रयोगः ॥ कृष्णाष्टम्यां कृष्णचतुर्दश्यां कुजरव्यन्यतरयुक्तायां प्रातर्नाभिमात्रं जले स्थित्वा मूलमेकादशशतं प्रजप्य गृहमागत्य शरीरं तैलेनाभ्यज्य पीठेऽञ्जनैर्नराकारं योषिदाकारं वा विलिख्य लज्जावतीपत्रैस्तं संपूज्य लज्जावतीमूलरसेन संप्रोक्ष्य तदग्रेऽमुं मंत्रं षष्ट्याधिकशतं जपेत् ॥ मंत्रो यथा—ॐ नमः कालिकायै सर्वाकर्षिण्यै अमुकीमाकर्षयाकर्षय शीघ्रमानयानय आं ह्रीं क्रां भद्रकाल्यै नमः ॥ ततः पंचाशत्करवीरपुष्पैः अं अमुकीमाकर्षयाकर्षय नमः ॥ आं अमुकीमित्यादि पंचाशद्वर्णपूर्वकपंचाशन्मन्त्रैरेकैकमंत्रद्वारा वा प्रतिपुष्पस्तंमाकारं पूजयेत् ॥ ततो धूपदीपनैवेद्यानि कृत्वा तदग्रेऽग्निं प्रतिष्ठाप्य तत्राज्याक्तचणकैः शतं मधुनोक्तमनुना हुत्वा कुमारीकर्तितेन कृष्णकार्पाससूत्रेणाष्टाविंशतितंतुनिर्मितं स्वदेहमितं दोरकं कृत्वाऽऽकर्षमंत्रेणाष्टोत्तरशतं ग्रंथीन् दत्त्वा तद्धारणान्नरं नारीं चाकर्षतीति ॥ तथा च—कृष्णकार्पाससूत्रस्य कुमारीनिर्मितस्य च ॥ गुणं देहमितं कृत्वा अष्टाविंशतितंतुभिः ॥ आकर्षमनुना दद्याद्ग्रंथीनष्टोत्तरं शतम् ॥ तद्दोरके धृते शीघ्रमायाति स्त्री नरोऽपि वा ॥ त्रिरात्राद्ग्राममध्यस्थोऽन्य

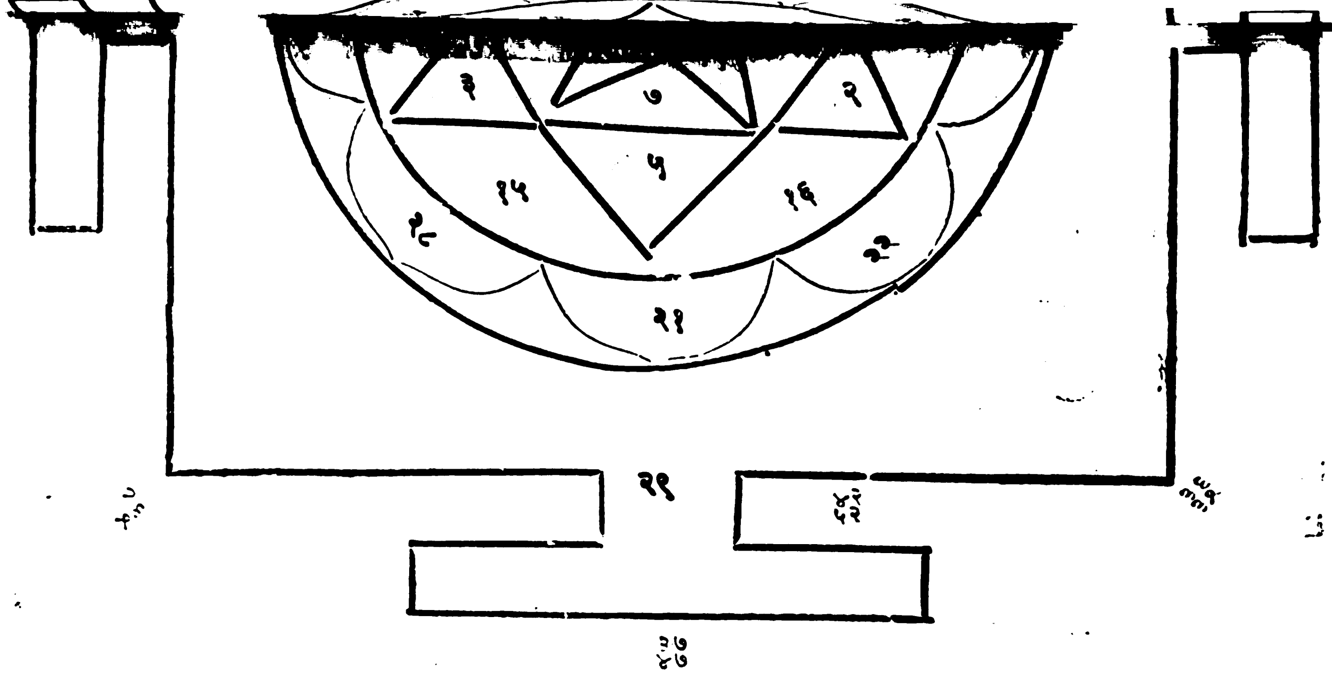
१ तिलाश्यैर्वा जुहुयात् । २ लज्जावती लज्जालुः स्पर्शमात्रेण यत्पत्राणि संकुचंति सा लज्जालुः । ३ शत षष्ट्यधिकं जप्त्वा लोहितैः करवीरजैः॥ पंचाशत्प्रतिमैर्मंत्री पूजयेल्लिखिताकृतिम्॥ मातृकावर्णमेकंके तन्नामाकर्षयद्वयम् ॥ नम इत्यभिसंजप्य पुष्पमेकैकमर्पयेत्॥ धूपदीपनैवेद्यानि कृत्वा होमं समाचरेत ॥ ४ नराकारं स्त्र्याकारं तत्प्रतिमां पूजयेत् । ५ चणकैराज्यसंमिश्रैराकर्षणमुदाहृतम् ।

वश्यो नवरात्रतः ॥ उक्तमाकर्षणमिदमुच्चाटनमथोच्यते ॥ ४ ॥ अथ उच्चाटनप्रयोगः ॥ कृष्णचतुर्दश्यां शून्यगृहे नीलवस्त्रावृतो मुक्तकचो मुक्तशिखो दक्षिणाभिमुखः कुक्कुटासने चोपविश्य ग्रंथियुक्तया मुञ्जरज्ज्वा मालया निशि सहस्रद्वयममुं मंत्रं जपेत् ॥ मंत्रो यथा--'ॐ ल्वूं स्लूं म्लूं क्ष्लूं कालरात्रि महाध्वांक्षि अमकमाशूच्चाटयोच्चाटय छिंधि भिंधि स्वाहा ह्रौं कामाक्षि क्रौं' इति जपेत् ॥ ततः शतद्वयमनेनैव मंत्रेण सर्षपैर्हुत्वा तैलोदकयुतेन सर्षपपिण्याकेन तेन मनुना बलिं दद्यात् ॥ एवं सप्ताहं कृते उच्चाटनसिद्धिः ॥ तथा च—एवं कृते सप्तरात्रं देशाद्दूरं व्रजेदरिः ॥ ५ ॥ अथ विद्वेषणप्रयोगः ॥ प्रीतिमतोर्द्वयोर्जन्मवृक्षोत्थं फलकद्वयं विधाय तत्र रासभीक्षीरमर्दितेन विषाष्टकेनोपरि नामयुक्तमकारद्वयं विलिख्य तत्पृष्ठा निशि सहस्रममुं मंत्रं जपेत् ॥ मंत्रो यथा—'ॐ ह्रौं ग्लौं ह्लौं श्रौं भगवति दंडधारिणि अमकममुकं शीघ्रं विद्वेषय २ रोधय २ भंजय २ श्रीं मायाराइयै ॐ हुं हुं हुं' इति जपेत् ॥ ततः खरमहिषाश्वपुच्छरोमकृतया रज्ज्वा तत्फलकद्वयं मिथो बद्ध्वा वल्मीकरंध्रे निखाय पुनर्मंत्रं सहस्रं जपेत् ॥ एवं विद्वेषणसिद्धिः ॥ तथा च—वल्मीकरंध्रे निखनेत् पुनस्तावज्जपेन्नरः ॥ सप्ताहाज्जायते वैरं तयोः प्रीतिमतोरपि ॥ ६ ॥ अथ मारणप्रयोगः ॥ कुजवारयुतायां कृष्णचतुर्दश्यां दिने गोशालाचतुष्पथश्मशानान्यतरस्मान्मृदमानीय विडंगकरवीरार्कपुष्पयुतां कृत्वा श्मशाने निर्जनालये वा उपविश्य विशिखो नीलवस्त्रधरो भूत्वा नीलवस्त्रोपरि निशि तया मृदा पुत्तलीं कृत्वा हृदि वैरिनाम लिखित्वा प्राणान्प्रतिष्ठाप्य श्मशानवस्त्रेणाच्छाद्य तैलेनाभ्यज्य खराश्वमहिषरुधिरेण संस्नाप्य रक्तचंदनेन विलिप्य धत्तूरपुष्पैः संपूज्य तदग्रे श्मशानाग्निं संस्थाप्य तदग्नौ वचासर्षपभल्लातकधत्तूरबीजमिश्रितैरष्टोत्तरशतं जुहुयात् ॥ मंत्रो यथा—'ॐ म्रां म्रीं म्रूं मृतीश्वरि क्रं कृत्ये अमुकं शीघ्रं मारय २ क्रौं' इति मंत्रेण सर्वं कुर्यात् ॥ ततः पुत्तलीशिरश्छित्वाऽग्नौ हुत्वा पूर्णाहुतिं कुर्यात् । एवमेकविंशतिरात्र्यंते रिपुर्म्रियते । ततः प्रायश्चित्तं कुर्यात् । तथा च—कर्मस्वेवंविधेष्वादौ भैरवाय बलिं दिशेत् ॥ माषान्नपलमद्याद्यैरेवं सिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ ७ ॥ इति कालरात्रिमंत्रप्रयोगः ॥

१ जन्मनक्षत्रतरुजम् २ । फलकद्वयं कृत्वा । ३ मुक्तशिखः ।

अथ वर्तालीपूजनयन्त्रम् ।



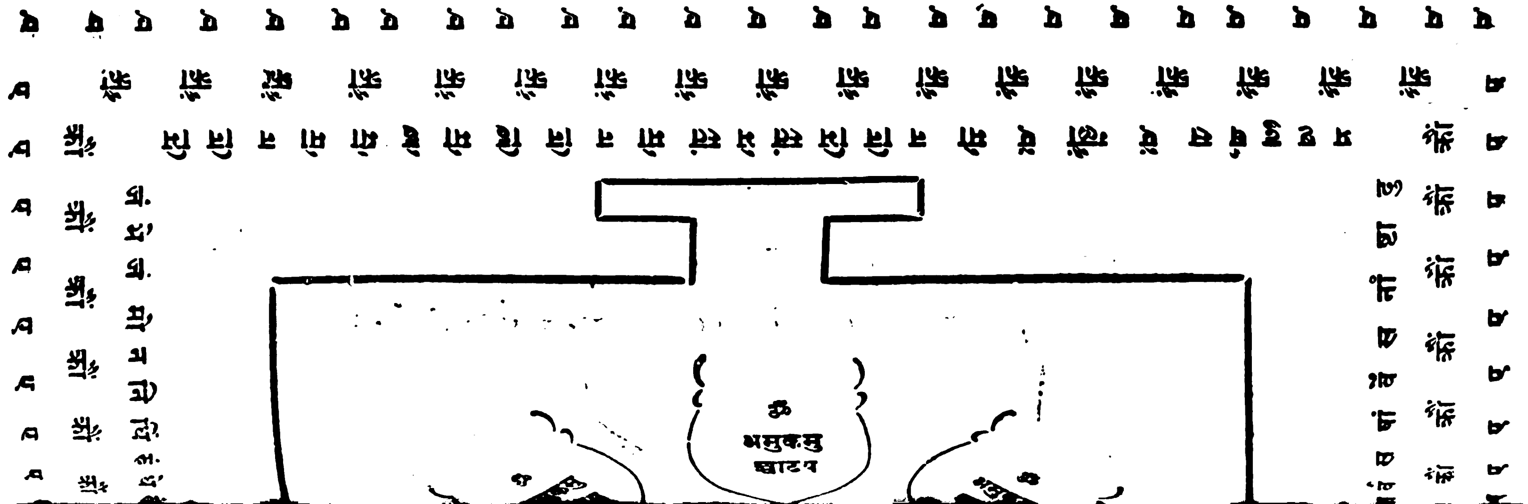

३
७
२
५
१४
१६
१८
२२
२१
२९

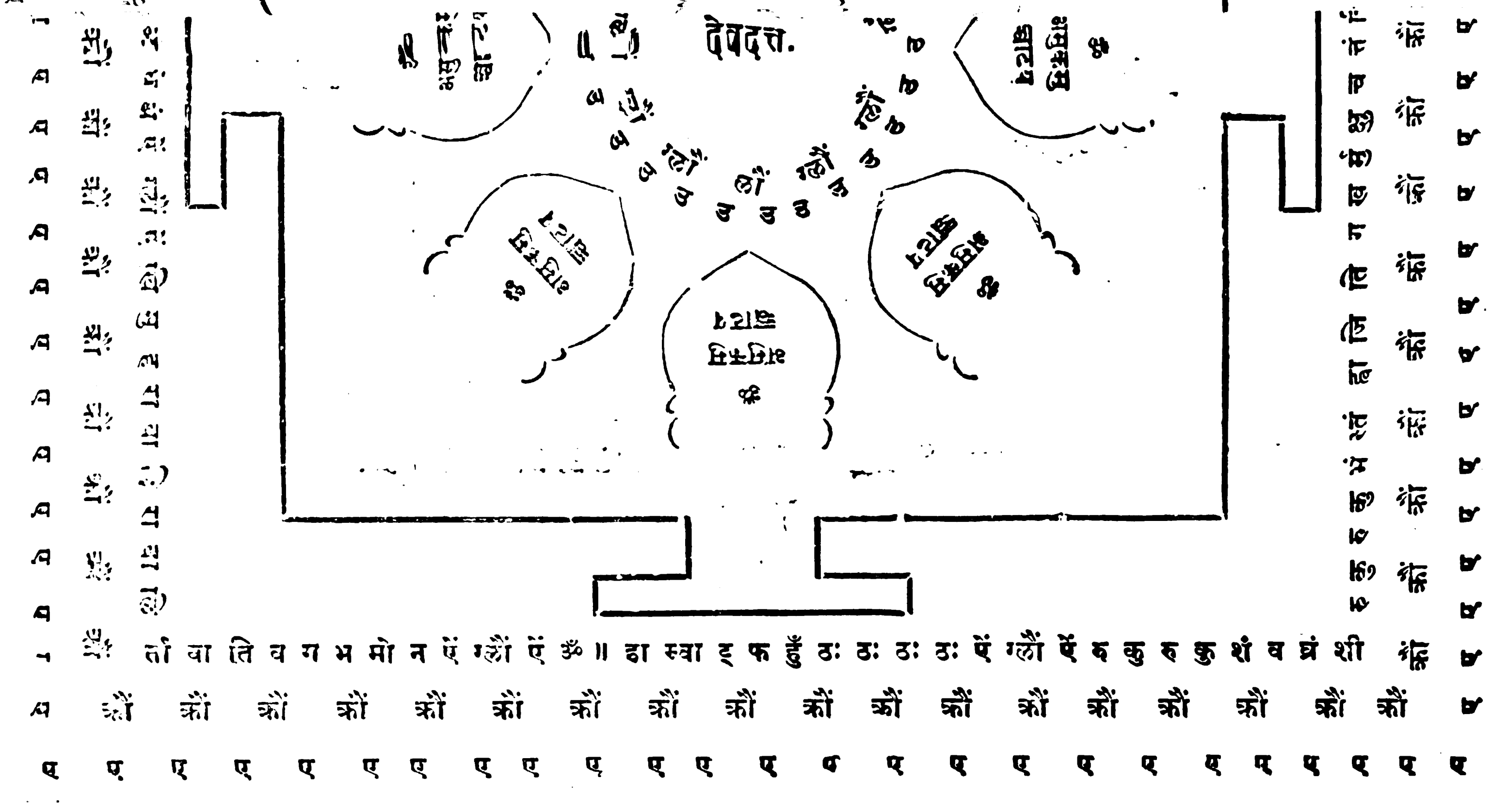
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ वार्तालीमंत्रप्रयोगः । मंत्रमहोदधौ—ॐ ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्तालि वाराहि वाराहमुखि ऐं ग्लौं ऐं अंधे अंधिनि नमो रुंधे रुंधिनि नमो जंभे जंभिनि नमो मोहे मोहिनि नमः स्तंभे स्तंभिनि नमः ऐं ग्लौं ऐं सर्वदुष्टप्रदुष्टानां सर्वेषां सर्ववाक्पदचित्तचक्षुर्मुखगतिजिह्वास्तंभं कुरु कुरु शीघ्रं वशं कुरु कुरु ऐं ग्लौं ऐं ठः ठः ठः ठः हुँ फट् स्वाहा ॥ इति चतुर्दशोत्तरशताक्षरो मंत्रः । अस्य विधानम्—अस्य श्रीवार्तालीमंत्रस्य शिव ऋषिः । जगती छंदः । वार्ताली देवता । (मतांतरे) ग्लौं बीजम् । स्वाहा शक्तिः । ममाखिला वाप्तये जपे विनियोगः ॥ शिवऋषये नमः शिरसि १ । जगतीच्छंदसे नमो मुखे २ । वार्तालीदेवतायै नमो हृदि ३ । ग्लौं बीजाय नमो लिंगे ४ । स्वाहाशक्तये नमः पादयोः ५ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ वार्तालि अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ वाराहि तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ वाराहमुखि मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ अंधे अंधिनि अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ रुंधे रुंधिनि कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ॐ जंभे जंभिनि करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ वार्तालि हृदयाय नमः १ । ॐ वाराहि शिरसे स्वाहा २ । ॐ वाराहमुखि शिखायै वषट् ३ । ॐ अंधे अंधिनि कवचाय हुँ ४ । ॐ रुंधे रुंधिनि नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ जंभे जंभिनि अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ ॐ रक्तांभोरुहकर्णिकोपरिगते शावासने संस्थितां मुंडस्रक्परिराजमानहृदयां नीलाश्मसद्रोचिषम् ॥ हस्ताब्जैर्मुशलं हलाभयवरान् संबिभ्रतीं सत्कुचां वार्तालीमरुणांबरां त्रिनयनां वंदे वराहाननाम् ॥ १ ॥ एवं ध्यायेत् ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति पीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तद्यथा—पूर्वादिक्रमेण ॐ जयायै नमः १ । ॐ विजयायै नमः २ । ॐ जितायै नमः ३ । ॐ अपराजितायै नमः ४ । ॐ नित्यायै नमः ५ । ॐ विलासिन्यै नमः ६ । दोग्ध्र्यै नमः ७ । ॐ अघोरायै नमः ८ । मध्ये ॐ मंगलायै नमः ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रपत्रं ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण प्रोञ्छ्य तस्योपरि

गोरोचनहरिद्राचंदनागुरुकुंकुमेन त्रिकोणपंचास्रषट्कोणाष्टदलशतदलं सहस्रदलं च विनिर्माय तस्योपरि भूपुरं लिखित्वा 'ॐ ग्लौं वार्ताल्यै कैलासाचलमध्यस्थितायै नमः'[1] इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पुनर्ध्यात्वा त्रिकोणांतरे मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्य्यात् ॥ तद्यथा पुष्पांजलिमादाय—संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ॥ अनुज्ञां देहि वार्तालि परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च ॐ वार्तालि हृदयाय नमः । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ ॥ इति सर्वत्र । ॐ वाराहि शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० २ । ॐ वराहमुखि शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ३ । ॐ अंधे अंधिनि कवचाय हुं । कवचश्रीपा० ४ । ॐ रुंधे रुंधिनि नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । ॐ जंभे जंभिनि अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततस्त्रिकोणे ऐशान्यादिक्रमेण ॐ वार्ताल्यै नमः वार्तालीश्रीपा० १ । ॐ वाराह्यै नमः वाराहीश्रीपा० २ । ॐ वराहमुख्यै नमः । वराहमुखीश्रीपा० ३ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य—अभीष्टसिद्धिं देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणाम् ॥ १ ॥ ततः पंचास्रेऽग्न्यादिक्रमेण ॐ अंधिन्यै नमः अंधिनीश्रीपा० १ । ॐ रुंधिन्यै नमः रुंधिनीश्रीपा० २ । ॐ जंभिन्यै नमः जंभिनीश्रीपा० ३ । ॐ मोहिन्यै नमः मोहिनीश्रीपा० ४ । ॐ स्तंभिन्यै नमः स्तंभिनीश्रीपा० ५ ॥ इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततः पुनः षट्कोणोपरि आग्नेय्यादिक्रमेण ॐ डाकिन्यै नमः डाकिनीश्रीपादुकां पूज० १ । ॐ राकिन्यै नमः राकिनीश्रीपा० २ । ॐ लाकिन्यै नमः लाकिनीश्रीपा० ३ । ॐ काकिन्यै नमः काकिनीश्रीपा० ४ । ॐ शाकिन्यै नमः शाकिनीश्रीपा० ५ । ॐ हाकिन्यै नमः हाकिनीश्रीपा० ६ ॥ इति पूजयेत् । ततः षट्कोणे दक्षिणे पार्श्वे

१ स्वर्णे रूप्ये तथा ताम्रे भूर्जपत्रेऽथ दारुणि । लिखेद्गोरोचनारात्रिचन्दनागुरुकुंकुमैः ॥ यानि पंचाष्टषट्कोणाष्टपत्रशतपत्रकम् । सहस्रदलभूबिंबं वीतद्वारसंयुतम् ॥ कैलासाचलमध्यस्थं पीठमेतद्विचिंतयेत् ॥

वार्तालीस्तंभनयन्त्रम्।




देवदत्त.
ॐ अमुकमु च्चाटय
ता वा ति व ग भ मो न ऐं ग्लौं ऐं ॐ ॥ हा स्वा इ फ हुँ ठः ठः ठः ठः ऐं ग्लौं ऐं क कु रु कु शं व घ्रं शी

ॐ स्तंभिन्यै दक्षहस्तेन वरधरायै वामकरेण मुशलधरायै नमः स्तंभिनीश्रीपा० १। इति स्तंभिनीं पूजयेत् । ततः षट्कोणे वामपार्श्वे ॐ क्रोधिन्यै दक्षहस्तेन कपालधारिण्यै नमः क्रोधिनीश्रीपा० २। इति पूजयित्वा षट्कोणाग्रे देवीसुतं चंडं पूजयेत् ॥ तद्यथा—शूलं नागं च डमरुं कपालं दधतं करैः ॥ इन्द्रनीलनिभं नग्नं जटाभारविराजितम् ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा 'ॐ देवीसुताय चंडोच्चंडाय नमः' इति पूजयेत् ३ । इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततः पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ॐ वार्तालयै नमः वार्तालीश्रीपा० १ । ॐ वाराह्यै नमः वाराहीश्रीपा० २ । ॐ वराहमुख्यै नमः वराहमुखीश्रीपा० ३ । ॐ अंधिन्यै नमः अंधिनीश्रीपा० ४। ॐ रुंधिन्यै नमः रुंधिनीश्रीपा० ५ । ॐ जंभिन्यै नमः जंभिनीश्रीपा० ६ । ॐ मोहिन्यै नमः मोहिनीश्रीपा० ७। ॐ स्तंभिन्यै नमः। स्तंभिनीश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥ ४ ॥ ततः शतपत्रे प्राचीक्रमेण रुद्रा[1] एकादश वीरभद्रादयः। अर्का द्वादश धात्रादयः। वसवोऽष्टौ धरादयः । अश्विनौ नासत्यदस्रौ। इति त्रयस्त्रिंशद्देवा एकैकपत्रे त्रिके पूज्याः । शेषैकपत्रे ॐ जंभिनीस्तंभिनीभ्यां नमः जंभिनीस्तंभिनीश्रीपा०। ॐ सिंहाय नमः १। ॐ महिषाय नमः २ । इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति पंचमावरणम् ॥ ५ ॥ ततः सहस्रपत्रे 'क्रौं वाराह्यै नमः' इति मंत्रेण सहस्रवारं वाराहीमेव पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति षष्ठावरणम् ॥ ६ ॥ ततो भूपुराभ्यंतरे प्राचीद्वारदेशे ॐ वं वटुकाय नमः १ । दक्षिणे ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः २। पश्चिमे ॐ यां योगिनीभ्यो नमः ३ उत्तरे ॐ गं गणपतये नमः ४ ॥ इति गणेशं पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति सप्तमावरणम् ॥ ७ ॥ ततो भूपुराद्बहिः इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादि नमस्कारांतं संपूज्य पूजांते बटुकादिभ्यो बलिमंत्रेण बलिं दद्यात् ॥ तद्यथा'—ॐ एह्येहि देवीपुत्र बटुकनाथ कपिलजटाभारभासुर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वोपचारसहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा' इति मंत्रेण बटवे बलिं दत्त्वा अंगुष्ठतर्जनीलग्नमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ १ ॥ 'ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं

१ शतपत्रेषु संपूज्या रुद्रार्कौ वसवोऽश्विनौ। त्रिकैकांत्यपत्रेषु जंभिनी स्तंभिनीयुता ॥

क्षः हुं स्थाने क्षेत्रपालेश सर्वकामं पूरय स्वाहा' इति मंत्रेण क्षेत्रपालाय बलिं दत्त्वा वामहस्तांगुष्ठानामिकालग्नक्षेत्रपालबलिमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ २ ॥ उर्द्धं ब्रह्मांडतो वा दिवि गगनतले भूतले निष्कले वा पाताले वाऽनले वा सलिलपवनयोर्यत्र कुत्र स्थिता वा ॥ क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृतपदा धूपदीपादिकेन प्रीता देव्यः सदा नः शुभबलिविधिना पांतु वीरेन्द्रवंद्याः ॥ 'यां योगिनीभ्यः स्वाहा ' इति मंत्रेण योगिनीभ्यो बलिं दत्त्वा अनामामध्यमांगुष्ठलग्नयोगिनीबलिमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ ३ ॥ 'ॐ गां गीं गँ गँ गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय सर्वोपचारसहितं बलिं गृह्णगृह्ण स्वाहा ' इति मंत्रेण गणेशाय बलिं दत्त्वा किंचिद्वक्रीकृतमध्यां गणनाथबलिमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ ४ ॥ इति बलिं दत्त्वा हस्तौ प्रक्षाल्याचामेत् ॥ ततः पुनर्देवीं ध्यात्वा जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं सप्तदशसहस्रजपः । तिलैर्बंधूककुसुमैर्मधुरान्वितैर्दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्य्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च--सप्तदशसहस्राणि प्रजपेत्तद्दशांशतः ॥ तिलैर्बंधूककुसुमैर्जुहुयान्मधुरान्वितैः ॥ ॥ १ ॥ एवं संपूज्य संस्तुत्य नत्वात्मन्युपसंहरेत् ॥ सिद्धमंत्रः प्रकुर्वीत प्रयोगाञ्छिवभाषितान् ॥ २ ॥ हरिद्रया चन्दनेन लाक्षया गुरुणापि च ॥ पुरेण विविधैर्मांसैर्जुहुयादिष्टसिद्धये ॥ ३ ॥ हारिद्रमालया कुर्य्याज्जपं स्तंभनकर्मणि ॥ स्फाटिकैः पद्मबीजैश्च रुद्राक्षैः शुभकर्मणि ॥ ४ ॥ स्वर्णादिपत्रैः सुरया बंधूककुसुमैस्तिलैः ॥ वाराहीं तर्पयेत्सम्यक् कामसंपूर्तये नरः ॥ ५ ॥ चतुःशतं तु तापिच्छे[1] जुहुयात्स्तंभनेच्छया ॥ लाजचूर्णतिलैः कुर्य्यात्खरमेषासृजाऽन्वितैः ॥ ६ ॥ पिंडं मनोहरं तं तु पूजयेत्तर्पयेदपि ॥ सपत्नसदनं[2] सांगमेतस्मै विनिवेदयेत् ॥ ७ ॥ कुंडे पिंडं निधायामुं जुहुयात्तत्र चायुतम् ॥ एकविंशतिरात्रीषु लाजैः रक्तसमन्वितैः ॥ ८ ॥ एवं कृते वैरिवृंदं भक्ष्यते योगिनीगणैः ॥ देवीयंत्रं समालिख्य नूत्ने कौलालखर्परे ॥ ९ ॥ वज्रमध्ये साध्यनाम लिखेत्कर्मसमन्वितम्[3] ॥ कृष्णपुष्पैः समभ्यर्च्य निक्षिपेरिवेश्मनि ॥ १० ॥ रिपुमुच्चाटयेच्छीघ्रं स्थितं वर्षशतान्यपि ॥ वादित्रे यंत्रमालिख्य वादये

१ तापिच्छं नाम तमालपत्रम् । २ सपत्नसदनं शत्रुगृहमेतस्मै पिंडाय । ३ अमुकमुच्चाटयेतिक्रिया युतम् ।

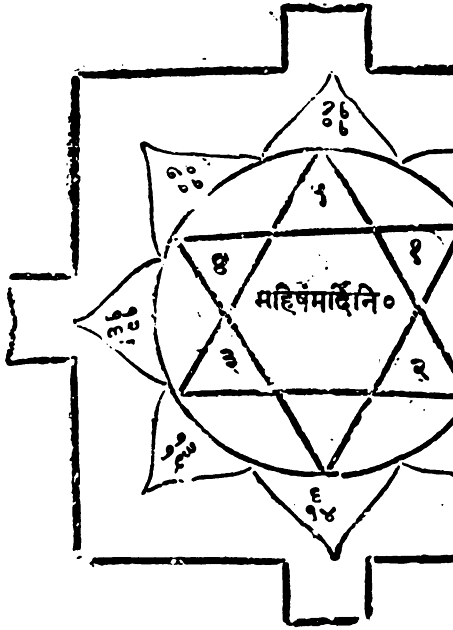
त्समरांतरे ॥ ११ ॥ श्रुत्वा तद्रवसंत्रस्ताः पलायंते विरोधिनः ॥ पाषाणे लिखितं रात्र्यां पीतपुष्पेषु निःक्षिपेत् ॥ १२ ॥ संपूजितमधोवक्त्रं वार्त्तं संस्तंभयेद्द्विषाम् ॥ तापकार्येग्निनिक्षिप्तं जले दोषप्रदं भवेत् ॥ १३ ॥ साध्यर्क्षतरुगर्भस्थं शत्रूणां दुःखदायकम् ॥ किं बहूक्तेन सर्वेष्टं साधयेत्साधितं नृणाम् ॥ १४ ॥ इति चतुर्दशोत्तरशताक्षरीवार्तालीमंत्रप्रयोगः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ मिश्रतरङ्गप्रारंभः ॥ तत्रादौ महिषमर्दिनीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा शारदातिलके–महिषमर्दिनि स्वाहा ॥ इत्यष्टाक्षरमंत्रः। अस्य विधानम्--ॐअस्य श्रीमहिषमर्दिनीमंत्रस्य नारद ऋषिः। गायत्री छंदः। महिषमर्दिनी देवता। सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः ॥ ॐ नारदऋषये नमः शिरसि १ । गायत्रीच्छंदसे नमो मुखे २। महिषमर्दिनीदेवतायै नमो हृदि ३ । विनियोगाय नमः सर्वांगे ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ महिषाहिंसिके हुंफट् अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । महिषश (त्रो) त्त्रीशाङ्कि हुंफट् तर्जनीभ्यां नमः २ । महिषं भीषय भीषय हुंफट् मध्यमाभ्यां नमः ३ । महिषं हन हन देवि हुंफट् अनामिकाभ्यां नमः ४ । महिषसूदिनि हुंफट् कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ॥ इति करन्यासः ॥ महिषाहिंसिके हुंफट् हृदयाय नमः १ । महिषश (त्रो) त्त्रीशाङ्कि हुंफट् शिरसे स्वाहा २ । महिषं भीषय भीषय हुंफट् शिखायै वषट् ३ । महिषं हन हन देवि हुंफट् कवचाय हुम् ४ । महिषसूदिनि हुंफट् अस्त्राय फट् ५ ॥ इति पंचांगन्यासः ॥ इति न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ गारुडोपलसन्निभां मणिमौलिकुंडलमंडितां नौमि भालविलोचनां महिषोत्तमांगनिषेदुषीम् ॥ चक्रशंखकृपाणखेटकबाणकार्मुकशूलकांस्तर्जनीमपि बिभ्रतीं निजबाहुभिः शशिशेखराम् ॥ १ ॥ एवं ध्यात्वा सर्वतोभद्रमंडले 'मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति पीठदेवताः संपूज्य पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तद्यथा पूर्वादिक्रमेण–

१–राज्या हरिद्रया। २ पाषाणे लिखित्वाऽग्नौ निक्षिप्तं तापकरि । ३ साध्यस्य यज्जन्मनक्षत्रं तद्वृक्षमध्ये क्षिप्तं तेषां दुःखदं तच्च निर्णयप्रकरणे ज्ञेयम् । ४ विश्वसारतंत्रे प्रणवाद्यां जपेद्विद्यां मायाद्यां वा जपेत्सुधीः ॥ वधूबीजादिकां वापि कवचाद्यां जपेत्तथा ॥ सर्वकालेषु सर्वत्र कामाद्यां प्रजपेत्सुधीः ॥ वाग्भवाद्यां जपेत्तां तु देवीं वाक्यविशुद्धये ॥ इति नवाक्षरो मंत्रः॥ विनाबीजैर्महाविद्या निर्वीर्या परिकीर्तिता ॥ पुटिता बीजयुग्मेन मुखे युग्मकदेशके ॥ दशाक्षरीसमा नास्ति विद्या त्रिभुवनेश्वरी । प्रणवं च तथा माया भवेद्विद्या पुनर्दश ॥ कामं प्रणवमित्युक्ता भवेद्विद्या पुनर्दश ॥ इति विशेषः। ५ पंचांगानि मनोर्वत्र तत्र नेत्रमनु त्यजेत् ।

ॐ जयायै नमः १ । ॐ विजयायै नमः २ । ॐ अजितायै नमः ३ । ॐ अपराजितायै नमः ४ । ॐ नित्यायै नमः ५ । ॐ विलासिन्यै नमः ६ । ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७ । ॐ अघोरायै नमः ८ । मध्ये ॐ मंगलायै नमः ९ ॥ इति पीठशक्तीः संपूज्य स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रमग्न्युत्तारणपर्वकं 'ह्रीं आधारशक्तये नमः' इति पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य तत्र प्राणप्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तत्र क्रमः--षट्कोणकेसरेषु अग्निकोणे—महिषहिंसिके हुं फट् हृदयाय नमः १। निर्ऋतिकोणे—माहिषश (त्रो) त्रीशाङ्कि हुं फट् शिरसे स्वाहा२ । वायुकोणे—महिषं भीषय भीषय हुं फट् शिखायै वषट् ३ । ईशानकोणे—महिषं हन हन देवि हुंफट् कवचायै हुम् ४। देवीपश्चिमे—महिषसूदिनि हुंफट् अस्त्राय फट् ५ ॥ इति पंचांगानि पूजयेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततोऽष्टदलेषु पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीं प्रकल्प्य पूर्वादिक्रमेण-ॐ आं दुर्गायै नमः । दुर्गाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ ॥ इति सर्वत्र ॥ ॐ ईं वरवर्णिन्यै नमः । वरवर्णिनीश्रीपा० २ । ॐ ऊं आर्य्यायै नमः । आर्य्याश्रीपा० ३ । ॐ ऋं कनकप्रभायै नमः । कनकप्रभाश्रीपा० ४। ॐ लृं कृत्तिकायै नमः । कृत्तिकाश्रीपादु० ५ । ॐ ऐं अभयप्रदायै नमः । अभयप्रदाश्रीपा० ६ । ॐ औं कन्यायै नमः । कन्याश्रीपा० ७ । ॐ अः सरूपायै नमः । सुरूपाश्रीपा० ८ ॥

महिषमर्दिनीपूजनयन्त्रम् ।



इत्यष्टौ शक्तीः पूजयेत् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ पत्राग्रेषु पूर्वादिक्रमेण । यं चक्राय नमः १ । रं शंखाय नमः २ । लं खड्गाय नमः ३ । वं खेटकाय नमः ४ । शं बाणाय नमः ५ । षं धनुषे नमः ६ । सं शूलाय नमः ७ । हं कपालाय नमः ८ ॥ इत्यस्त्राणि पूजयेत् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततो भूपुरे इन्द्रादीन् वज्रादींश्च पूजयेत् । इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणमष्टलक्षजपः ॥ तत्सहस्रं होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् । एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथाच–अष्टलक्षं जपेन्मंत्रं तत्सहस्रं तिलैः शुभैः ॥ वशयेत्तिल होमेन नरान्नरपतीनपि ॥ १ ॥ सिद्धार्थैर्जुहुयान्मंत्री रोगान्मुच्येत तत्क्षणात् ॥ पद्मैर्हुत्वा जयेच्छत्रून्दूर्वाभिः शांतिमाप्नुयात् ॥ २ ॥ पलाशकुसुमैर्वृष्टिर्धान्यैर्धान्यश्रियं व्रजेत् ॥ काकपक्षैः कृतो होमो द्वेषं वितनुते नृणाम् ॥ ३ ॥ मरीच होमान्मरणं रिपुराप्नोति सर्वथा ॥ क्षुद्रादिचोरभूताद्यान्ध्यात्वा देवीं विनाशयेत् ॥ ४ ॥ इति महिषमर्दिनीमंत्रप्रयोगः ॥

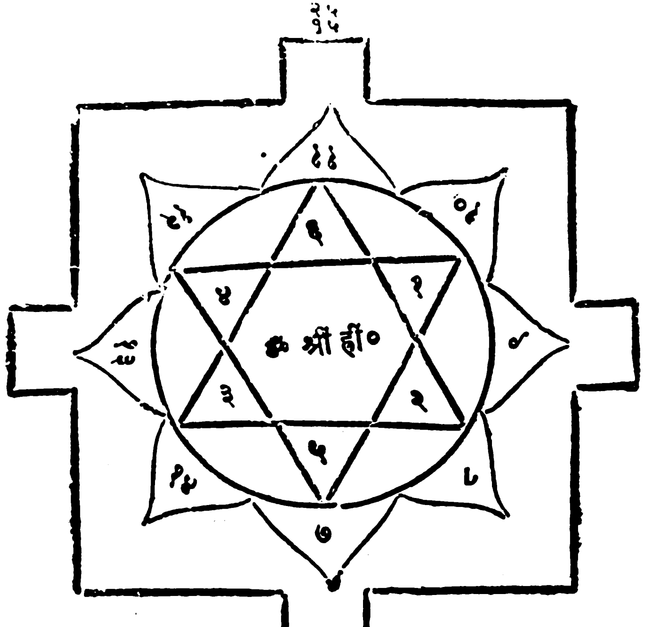
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ महिषमर्दिनीकवचप्रारंभः ॥ अथ वक्ष्ये महादेवीकवचं सर्वकामदम् ॥ यस्य प्रसादमासाद्य भवेत्साक्षात्सदाशिवः ॥ १ ॥ ॐ कारं पूर्वमुच्चार्य मंत्री मंत्रस्य सिद्धये ॥ प्रपठेत्कवचं नित्यं मंत्रवर्णस्य सिद्धये ॥ २ ॥ ॐ महिषमर्दिन्याः कवचस्य भगवान्महाकाल ऋषिः । अनुष्टुप्छंदः । आद्या शक्तिः । महिषमर्दिनी देवता । चतुर्वर्गफलप्राप्तये जपे विनियोगः ॥ ३ ॥ क्लीं पातु मस्तके देवी कामिनी कामदायिनी ॥ मकारे पातु मां देवी चक्षुर्युग्मं महेश्वरी ॥ ४ ॥ हिकारे पातु वदने हिंगुलासुरनायिका ॥ षकारे पातु मां श्वेता जिह्वायां स्वपराजिता ॥ ५ ॥ मकारे पातु मां देवी मर्दिनी सुरनायिका ॥ दिकारे पातु मां देवी सावित्री कालनाशिनी ॥ ६ ॥ निकारे पातु मां नित्या हृदये वामपार्श्वयोः ॥ नाभौ लिंगे गुदे कंठे कर्णयोः पार्श्वयोस्तथा ॥ ७ ॥ शिखायां कवचे पादे मुखजंघायुगे तथा ॥ सर्वांगे पातु मां स्वाहा सर्वशक्तिसमन्विता ॥ ८ ॥ कामाद्या पातु मां स्वाहा सर्वांगे पातु मर्दिनी ॥ दशाक्षरा महाविद्या सर्वांगे पातु मर्दिनी ॥ ९ ॥ मर्दिनी पातु सततं मर्दिनी रक्षयेत्सदा ॥ राजस्थाने तथा दुर्गे सिंहव्याघ्र

...दिषु ॥ १० ॥ श्मशाने प्रांतरे दुर्गे नौकायां वह्निमध्यतः ॥ दुर्गा पातु सदा देवी आर्या पातु सदाशिवा ॥ ११ ॥ प्रभा पातु महेशानी गगने पातु सर्वदा ॥ कृत्तिका पातु सततमभया सर्वदाऽवतु ॥ १२ ॥ प्रभा पांतु महामाया मायां पातु सदा मम ॥ नंदिनी पातु सततं सुप्रभा सर्वदाऽवतु ॥ १३ ॥ विजया पातु सर्वत्र वेश्यंगे नव शक्तयः ॥ शक्तयः पातु सततं मुद्राः पांतु सदा मम ॥ १४ ॥ जया पातु सदा सूक्ष्मा विशुद्धा पातु सर्वदा ॥ डाकिन्यः पांतु सततं सिद्धाः पांतु सदा मम ॥ १५ ॥ सर्वत्र सर्वदा पातु देवी महिषमर्दिनी ॥ इति ते कथितं दिव्यं कवचं सर्वकामदम् ॥ १६ ॥ यत्र तत्र न वक्तव्यं गोपितव्यं प्रयत्नतः ॥ गोपितं सर्वतंत्रेषु विश्वसारे प्रकाशितम् ॥ १७ ॥ सर्वत्र सुलभा विद्या कवचं दुर्लभं महत् ॥ शठाय भक्तिहीनाय निंदकाय महेश्वरि ॥ १८ ॥ न्यूनांगे ह्यतिरिक्तांगे क्रूरे मिथ्यातिभाषिणि ॥ न स्तवं दर्शयेद्दिव्यं कवचं सुरदुर्लभम् ॥ १९ ॥ यत्र तत्र न न वक्तव्यं शंकरेण च भाषितम् ॥ दत्त्वा तेभ्यो महेशानि नश्यंति सिद्धयः क्रमात् ॥ २० ॥ मंत्राः पराङ्मुखा यांति शापं दत्त्वा सुदारुणम् ॥ अशुभं च भवेत्तस्य तस्माद्यत्नेन गोपयेत् ॥ २१ ॥ गोरोचनाकुंकुमेन भूर्जपत्रे महेश्वरि ॥ लिखित्वा शुभयोगेन ब्राह्मेंद्रे वैधृतौ तथा ॥ २२ ॥ आयुष्मत्सिद्धियोगे च बालवे कौलवेऽपि वा ॥ वणिजे श्रवणायां च रेवत्यां वा पुनर्वसौ ॥ २३ ॥ उत्तरात्रययोगेषु तथा पूर्वात्रयेषु च ॥ अश्विन्यां वाऽथ रोहिण्यां तृतीयानवमीतिथौ ॥ २४ ॥ अष्टम्यां वा चतुर्दश्यां षष्ठ्यां वा पंचमीतिथौ ॥ अमायां वा पूर्णिमायां निशायां प्रांतरे तथा ॥ २५ ॥ एकालिंगे श्मशाने च शून्यागारे शिवालये ॥ गुरुणा वैष्णवैर्वापि स्वयंभूकुसुमैस्तथा ॥ २६ ॥ शुक्रैर्वा रक्तकुसुमैश्चंदनै रक्तसंयुतैः ॥ शवांगारचितावस्त्रे लिखित्वा धारयेत्पुनः ॥ २७ ॥ तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याच्छंकरेणैव भाषितम् ॥ कुमारीं पूजयित्वा च देवीसूक्तं निवेद्य च ॥ २८ ॥ पठित्वा पूजयेद्विप्रान्धनवान्वेदपारगान् ॥ आखेटकमुपाल्यानं कुमार्यैव दिनत्रयम् ॥ २९ ॥ तदा धरेन्महारक्षां कवचं सर्वकामदम् ॥ नाधयो व्याधयस्तस्य दुःखशोकैर्भयं क्वचित् ॥ ३० ॥ वादी मूको भवेद्दृष्ट्वा नृपतिः सेवकायते ॥ मासमेकं पठेद्यस्तु प्रत्यहं नियतः शुचिः ॥ ३१ ॥ दिवा भवेद्धविष्याशी

रात्रौ शक्तिपरायणः ॥ षट्सहस्रप्रमाणेन प्रत्यहं प्रजपेत्सदा ॥ ३२ ॥ षण्मासैर्वा त्रिभिर्मासैर्विद्वरो भवति ध्रुवम् ॥ अपुत्रो लभते पुत्रं निर्धनो धनमाप्नुयात् ॥ ३३ ॥ अरोगी बलवांश्चैव नृपतिर्दासतामियात् ॥ रजस्वलाभगे नित्यं जपेद्विद्यां समाहितः ॥ एवं यः कुरुते धीमान्स एव श्रीसदाशिवः ॥ ३४ ॥ इति विश्वसारतंत्रे महिषमर्दिन्याः कवचं समाप्तम् ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ रेणुकाशबरीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रमहोदधौ मंत्रो यथा—ॐ श्रीं ह्रीं क्रों ऐं ॥ इति पंचाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अस्य रेणुकाशबरी मंत्रस्य भैरव ऋषिः। पंक्तिश्छंदः। रेणुकाशबरी देवता। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥ ॐ भैरवऋषये नमः शिरसि १। पंक्तिच्छंदसे नमो मुखे २। रेणुकाशबरीदेवतायै नमो हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः १। श्रींनमस्तर्जनीभ्यां नमः २। ह्रीं नमो मध्यमाभ्यां नमः ३। क्रों नमः अनामिकाभ्यां नमः ४। ऐं नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ श्रीं ह्रीं क्रों ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ नमो हृदयाय नमः १। श्रीं नमः शिरसे स्वाहा २। ह्रीं नमः शिखायै वषट् ३। क्रों नमः कवचाय हुं ४। ऐं नमः नेत्रत्रयाय वाषट् ५। ॐ श्रीं ह्रीं क्रों ऐं अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादि षडंगन्यासः ॥ ॐ हेमाद्रिसानावुद्याने नानाद्रुममनोहरे ॥ रत्नमंडपमध्यस्थवेदिकायां स्थितां स्मरेत् ॥ इत्युद्यानं स्मृत्वा तत्र ध्यायेत् ॥ ॐ गुंजाफलाकल्पितहाररम्यां श्रुत्योः शिखंडं शिखिनो वहंतीम्। कोदंडबाणौ दधतीं कराभ्यां कटिस्थवल्कां शबरीं स्मरामि ॥ १ ॥ इति ध्यायेत्। ततः सर्वतोभद्रमंडले आधारशक्त्यादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ आं आधारशक्त्यादिपरतत्त्वांतपीठ देवताभ्यो नमः' इति पीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तथा च पर्वादिक्रमेण ॐ जयायै नमः १। ॐ विजयायै नमः २। ॐ अजितायै नमः ३। ॐ अपराजितायै नमः ४। ॐ नित्यायै नमः ५। ॐ विलासिन्यै नमः ६। ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७। ॐ अघोरायै नमः ८। मध्ये ॐ मंगलायै नमः ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण प्रोञ्छ्य 'ॐ सर्वबुद्धिप्रदे वर्णनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकिनीये ॐ रेणुकाशबरि एह्येहि नमः'

इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रातिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्॥तद्यथा—पुष्पांजलिमादाय—ॐसंविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये॥अनुज्ञां देहि मे मातः परिवारार्चनाय ते॥

रेणुकाशबरीपूजनयन्त्रम् ।



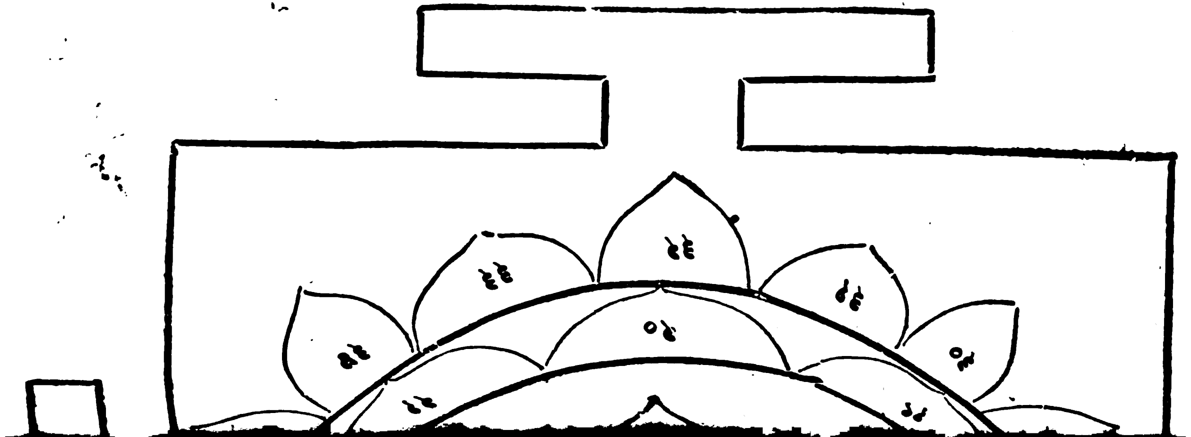
इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् । ततः षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च ॐ हृदयाय नमः । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ । इति सर्वत्र॥ श्रीं शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० २ । ह्रीं शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ३ । क्रों कवचाय हुंम् । कवचश्रीपा० ४ । ऐं नेत्रत्राय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । ॐ श्रींह्रींक्रोंऐं अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ । इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य्य-ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततोऽष्टदलेषु पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ॐ हुंकार्य्यै नमः । हुंकारीश्रीपा० १ । ॐ खेचर्य्यै नमः । खेचरीश्रीपा० २ । ॐ चंडास्यायै नमः । चंडास्याश्रीपा० ३ । ॐ छेदिन्यै नमः । छादनीश्रीपा० ४ । ॐ क्षेपणायै नमः । क्षेपणाश्रीपा० ५ । ॐ स्त्रियै नमः । स्त्रीश्रीपा० ६ । ॐ हुंकार्य्यै नमः । हुंकारीश्रीपा० ७ । ॐ क्षेमकार्य्यै नमः । क्षेमकारीश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ शक्तीः संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादि

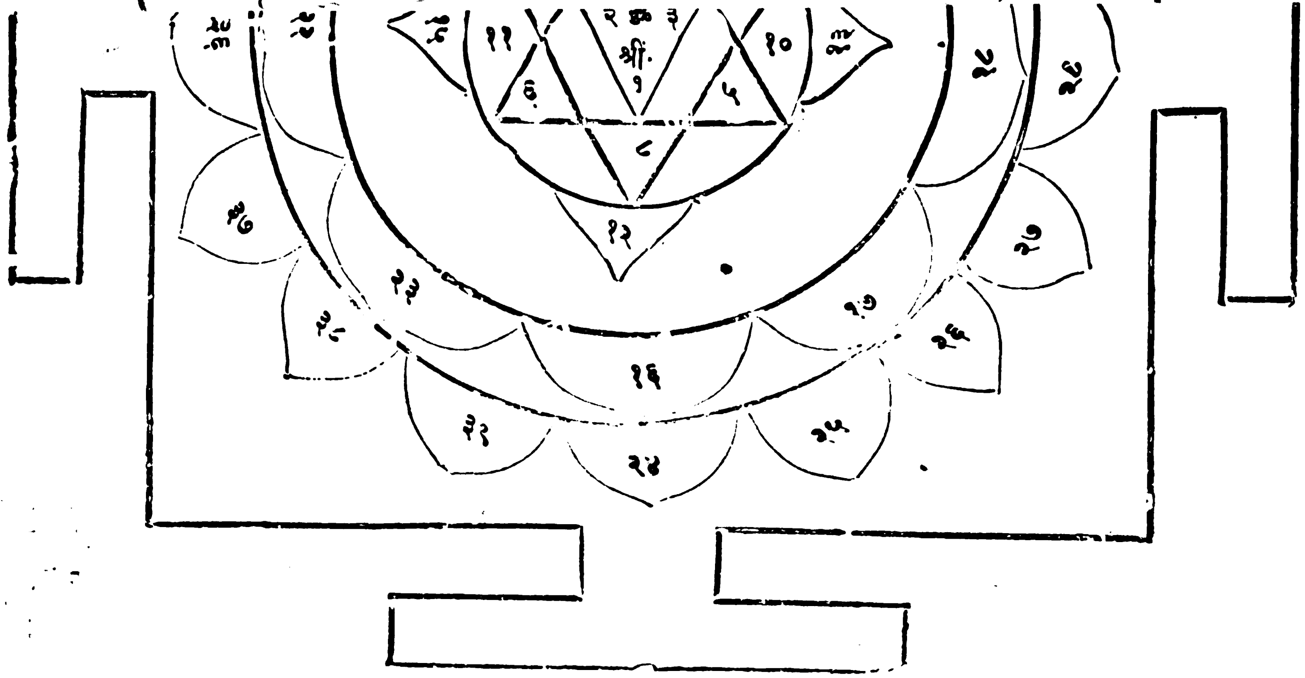
क्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् [११।२४] वज्राद्यायुधानि [३९३४] च पूजयेत् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं पंचलक्षजपः । बिल्वकाष्ठदीप्ताग्नौ बिल्वफलैर्दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्य्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च-ध्यात्वैवं प्रजपेल्लक्षपंचकं तद्दशांशतः ॥ फलैर्बैल्वैः प्रजुहुयात्तत्काष्ठैरेधितेऽनले ॥ १ ॥ एवं सिद्धं मनुं सम्यक्कृत्वा कर्माणि योजयेत् ॥ मल्लीपुष्पैर्जना वश्या इक्षुदंडैर्धनाप्तयः ॥ २ ॥ पंचगव्यैर्धेनवः स्युरशोककुसुमैः सुताः ॥ इन्दीवरैः कृते होमे नृपपत्नी वशंवदा ॥ ३ ॥ अन्नाप्तिरन्नैः सकलं मधूकैर्वांछितं भवेत् ॥ प्रोदिता शाबरी विद्या कलौ त्वरितसिद्धिदा ॥ ४ ॥ इति रेणुकाशाबरीपंचाक्षरमंत्रप्रयोगः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ अथान्नपूर्णामंत्रप्रयोगो मंत्रमहोदधौ-अन्नपूर्णेश्वरीमंत्रं वक्ष्येऽभीष्टप्रदायकम् ॥ कुबेरो यामुपास्याशु लब्धवान्निधिनाथताम् ॥ शंभोः सख्यं दिगीशत्वं कैलासाधीशतामपि ॥ १ ॥ मंत्रो यथा-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा ॥ इति विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-अस्यान्नपूर्णामंत्रस्य द्रुहिण ऋषिः । कृतिश्छंदः । अन्नपूर्णेशी देवता । ममाखिलसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः॥ ॐ द्रुहिणऋषये नमः शिरसि १ । कृतिच्छंदसे नमः मुखे २ । अन्नपूर्णादेवतायै नमो हृदि३ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ह्रां हृदयाय नमः १ । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा २ । ॐ ह्रूं शिखायै वषट् ३ । ॐ ह्रैं कवचाय हुं ४ । ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ ॥ ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ॐ नमो मुखे १ । ह्रीं नमो दक्षनासापुटे २ । श्रीं नमो वामनासापुटे ३ । क्लीं [illegible] ४ । नमो नमो वामनेत्रे ५ । भगवति नमो दक्षिणकर्णे ६ । माहेश्वरि नमो वामकर्णे ७ । अन्नपूर्णे नमो लिंगे ८ ।

स्वाहा नमो गुदे ९ ॥ इति वर्णन्यासः ॥ इति न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ ततस्वर्णनिभा शशांकमुकुटा रत्नप्रभाभासुरा नानावस्त्रविराजिता त्रिनयना भूमीरमाभ्यां युता ॥ दर्वीं हाटकभाजनं च दधती रम्योच्चपीनस्तनी नित्यं तं शिवमाकलय्य मुदिता ध्येयान्नपूर्णेश्वरी ॥ ॥ १ ॥ इति ध्यायेत् ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति पीठदेवताः संपूज्य नवपीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तद्यथा पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु--ॐ जयायै नमः १ । ॐ विजयायै नमः २ । ॐ अजितायै नमः ३ । ॐ अपराजितायै नमः ४ । ॐ नित्यायै नमः ५ । ॐ विलासिन्यै नमः ६ । ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७ । ॐ अघोरायै नमः ८ । मध्ये ॐ मंगलायै नमः ९ ॥ इति पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितपत्रे त्रिकोणं विलिख्य तदुपरि षट्कोणचतुर्दलाष्टदलं च तदुपरि षोडशदलं तदुपरि भूपुरेण युतं यंत्रं कृत्वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण प्रोञ्छ्य 'ॐ ह्रीं अन्नपूर्णे पद्मासनाय नमः ॥' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्य्यात् ॥ तद्यथा पुष्पांजलिमादाय--संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ॥ अनुज्ञां देहि देवेशि परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा त्रिकोणे आग्नेय्यादिक्रमेण अग्निकोणे ॐ ह्रौं नमः शिवाय । शिवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ । इति मंत्रेण शिवं पूजयेत् ॥ वायुकोणे ॐ नमो भगवते वराहरूपाय भूर्भुवःस्वःपतये भूपतित्वं मे देहि दापय स्वाहा । वराहश्रीपा० २ । इति मंत्रेण वराहं पूजयेत् ॥ ईशानकोणे ॐ नमो नारायणाय । नारायणश्रीपा० ३ । इति मंत्रेण नारायणं पूजयेत् ॥ इति संपूज्य पुष्पांजलिं गृहीत्वा--अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततः षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च--ॐ ह्रां हृदयाय नमः । हृदयश्रीपा० १ । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० २ । ह्रूं शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ३ । ॐ ह्रैं कवचाय हुम् ।

अन्नपूर्णापूजनयन्त्रम् ।




श्री

कवचश्रीपा० ४ । ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । ॐ ह्रः अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥
देवीवामभागे ॐ ग्लौं अन्नं मह्यन्नं मे देह्यन्नाधिपतये ममान्नं प्रदापय स्वाहा । ग्लौं पृथिव्यै नमः । पृथिवीश्रीपा० ७ । इति मंत्रेण
भूमिं पूजयेत् ॥ देवीदक्षिणतः ॐ श्रीं अन्नं मह्यन्नं मे देह्यन्नाधिपतये ममान्नं प्रदापय स्वाहा । श्रीं श्रीलक्ष्म्यै नमः ।
लक्ष्मीश्रीपा० ८ । इति मंत्रेण लक्ष्मीं संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततश्चतुर्दले पूज्य
पूजकयोरंतरालं प्राची तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण चतुर्दिक्षु ॐ अपरायै नमः । अपराश्रीपा०
१ । ह्रीं भुवनेश्वर्य्यै नमः । भुवनेश्वरीश्रीपादुकां० २ । श्रीं कमलायै नमः । कमलाश्रीपा० ३ । क्लीं सुभगायै नमः ।
सुभगाश्रीपा० ४ ॥ इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततोऽष्टदले प्राचीक्रमेण ॐ ब्राह्म्यै नमः ।
ब्राह्मीश्रीपा० १ । ॐ माहेश्वर्य्यै नमः । माहेश्वरीश्रीपा० २ । ॐ कौमार्य्यै नमः । कौमारीश्रीपा० ३ । ॐ वैष्णव्यै नमः ।
वैष्णवीश्रीपा० ४ । ॐ वाराह्यै नमः । वाराहीश्रीपा० ५ । ॐ इन्द्राण्यै नमः । इन्द्राणीश्रीपा० ६ । ॐ चामुंडायै नमः । चामुं
डाश्रीपा० ७ । ॐ महालक्ष्म्यै नमः । महालक्ष्मीश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टदेवीः पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥ ४ ॥
ततः षोडशदले प्राचीक्रमेण ॐ अं अमृतायै नमः । अमृताश्रीपा० १ । ॐ मां मानदायै नमः। मानदाश्रीपा० २ । ॐ तुं तुष्ट्यै नमः ।
तुष्टिश्रीपा० ३ । ॐ पुं पुष्ट्यै नमः । पुष्टिश्रीपा० ४ । ॐ प्रीं प्रीत्यै नमः । प्रीतिश्रीपा० ५ । ॐ रं रत्यै नमः । रतिश्रीपा० ६ । ॐ ह्रीं ह्रियै
नमः । ह्रीश्रीपा० ७ । ॐ श्रीं श्रियै नमः । श्रीश्रीपा० ८ । ॐ स्वां स्वधायै नमः । स्वधाश्रीपा० ९ । ॐ स्वां स्वाहायै नमः । स्वाहाश्रीपा० ।
१० । ॐ ज्यों ज्योत्स्नायै नमः । ज्योत्स्नाश्रीपा० ११ । ॐ हं हेमवत्यै नमः । हेमवतीश्रीपा० १२ । ॐ छां छायायै नमः । छायाश्रीपा०
१३ । ॐ पूं पूर्णिमायै नमः । पूर्णिमाश्रीपा० १४ । ॐ निं नित्यायै नमः । नित्याश्रीपा० १५ । ॐ अं अमावस्यायै नमः ।
अमावस्याश्रीपा० १६ ॥ इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति पंचमावरणम् ॥ ५ ॥ ततो भूपुराद्बहिः पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदश

दिक्पालन् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादि नमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः । घृतमिश्रितचरुणा दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च–लक्षं जपोऽयुतं होमो घृतयुक्तस्य वै चरोः ॥ जयादिनवशक्त्याढ्ये पीठे पूजा समीरिता ॥ १ ॥ इत्थं जपादिभिः सिद्धे मंत्रेऽस्मिन्धनसंचयैः ॥ कुबेरसदृशो मंत्री जायते जनवंदितः ॥ २ ॥ इति विंशत्यक्षरान्नपूर्णामंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रांतरं मंत्रमहोदधौ । मंत्रो यथा–ॐ ह्रीं नमो भगवति माहेश्वर्यन्नपूर्णे स्वाहा ॥ इत्यष्टादशाक्षरो मंत्रः ॥ द्वि नेत्रवेदवेदाब्धिनेत्रार्णैरंगमीरितम् ॥ इति प्रथमो मंत्रः ॥ अन्यः–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि ममाभिमतमन्नं देहि देह्यन्नपूर्णे स्वाहा ॥ इत्येकत्रिंशदक्षरो मंत्रः ॥ युगागवेदसप्ताब्धिषडर्णैरंगकल्पना ॥ इति द्वितीयो मंत्रः ॥ अन्यः--ॐ श्रीं ह्रीं नमो भगवति प्रसन्नपारिजातेश्वर्यन्नपूर्णे स्वाहा ॥ इति चतुर्विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ रामाक्षिवेदनिधिभिर्वेदद्व्यर्णैः षडंगकम् ॥ इति तृतीयो मंत्रः ॥ अन्यश्च–ॐ श्रीं ह्रीं नमो भगवति माहेश्वरि प्रसन्नवरदेऽन्नपूर्णे स्वाहा ॥ इति पंचविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ स्याद्रामषड्युगषड्वेदनेत्रार्णैस्तत्षडंगकम् ॥ इति चतुर्थो मंत्रः ॥ एषां चतुर्णां मंत्राणामन्यत्सर्वं तु पूर्ववत् ॥ इत्यन्नपूर्णामंत्रभेदाः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथान्नपूर्णाकवचप्रारंभः ॥ देव्युवाच ॥ भवता त्वन्नपूर्णाया या या विद्याः सुदुर्लभाः ॥ कृपया कथिताः सर्वाः श्रुताश्चाधिगता मया ॥ १ ॥ सांप्रतं श्रोतुमिच्छामि कवचं मंत्रविग्रहम् ॥ ईश्वर उवाच ॥ शृणु पार्वति वक्ष्यामि सावधानावधारय ॥ २ ॥ ब्रह्मविद्यास्वरूपं च महदैश्वर्यदायकम् ॥ पठनाद्धारणान्मर्त्यस्त्रैलोक्यैश्वर्यभाग्भवेत् ॥ ३ ॥ त्रैलोक्यरक्षणस्यास्य कवचस्य ऋषिः शिवः ॥ छंदो विराट् देवता स्यादन्नपूर्णा समृद्धिदा ॥ ४ ॥ धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ ह्रीं नमो भगवत्यंते माहेश्वरिपदं ततः ॥ ५ ॥ अन्नपूर्णे ततः स्वाहा चैषा सप्तदशाक्षरी ॥ पातु मामन्नपूर्णा सा या ख्याता भुवनत्रये ॥ ६ ॥ विमाया प्रणवाद्यैषा तथा सप्तदशाक्षरी ॥ पात्वन्नपूर्णा सर्वांगे रत्नकुंभान्नपात्रदा ॥ ७ ॥ श्रीबीजाद्या तथैवैषा द्विरंध्रार्णा तथा मुखम् ॥ प्रण

वाद्या भ्रुवौ पातु कंठं वाग्बीजपूर्विका ॥ ८ ॥ कामबीजादिका चैषा हृदयं तु महेश्वरी ॥ ऐं श्रीं ह्रीं च नमोऽते तु भगवतीपदं ततः ॥ ॥ ९ ॥ माहेश्वरी पदं चान्नपूर्णे स्वाहेति पातु मे ॥ नाभिमेकार्णविंशार्णा पायान्माहेश्वरी सदा ॥ १० ॥ तारं माया रमा कामः षोडशार्णा ततः परम् ॥ शिरःस्था सर्वदा पातु विंशत्यर्णात्मिका परा ॥ ११ ॥ अन्नपूर्णा महाविद्या ह्रीं पातु भुवनेश्वरी ॥ शिरः श्रीं ह्रीं तथा क्लीं च त्रिपुटा पातु मे गुदम् ॥ १२ ॥ षड्दीर्घभाजा बीजेन षडंगानि पुनंतु माम् ॥ इन्द्रो मां पातु पूर्वे च वह्निकोणेऽनलोऽवतु ॥ १३ ॥ यमो मां दक्षिणे पातु नैर्ऋत्यां निर्ऋतिश्च माम् ॥ पश्चिमे वरुणः पातु वायव्यां पवनोऽवतु ॥ १४ ॥ कुबेरश्चोत्तरे पातु चैशान्यां शंकरोऽवतु ॥ ऊर्द्ध्वाधः पातु सततं ब्रह्मानंतो यथाक्रमात् ॥ १५ ॥ पांतु वज्राद्यायुधानि दशदिक्षु यथाक्रमम् ॥ इति ते कथितं पुण्यं त्रैलोक्यरक्षणं परम् ॥ १६ ॥ यद्धृत्वा पठनाद्देवाः सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः ॥ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च धारणात्पठनाद्यतः ॥ १७ ॥ सृजत्यवति हंत्येव कल्पे कल्पे पृथक् पृथक् ॥ पुष्पांजल्यष्टकं देव्यै मूलेनैव समर्पयेत् ॥ १८ ॥ कवचस्यास्य पठनात्पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥ वाणी वक्त्रे वसेत्तस्य सत्यं सत्यं न संशयः ॥ १९ ॥ अष्टोत्तरशतं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः ॥ भूर्जे विलिख्य गुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद्यदि ॥ २० ॥ कंठे वा दक्षिणे बाहौ सोऽपि पुण्यवतां वरः ॥ सर्वाण्यस्त्राणि शस्त्राणि तद्गात्रं प्राप्य पार्वति ॥ माल्यानि कुसुमानीव सुखदानि भवंति हि ॥ २१ ॥ इति भैरवतंत्रेऽन्नपूर्णाकवचं समाप्तम् ॥ अथान्नपूर्णास्तोत्रप्रारंभः ॥ ॐ नमः कल्याणदे देवि नमः शंकरवल्लभे ॥ नमो मुक्तिप्रदे देवि ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥ नमो मायागृहीतांगि नमः शंकरवल्लभे ॥ माहेश्वरि नमस्तुभ्यमन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥ अन्नपूर्णे हव्यवाहपत्नीरूपे हरप्रिये ॥ कलाकाष्ठास्वरूपे च ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥ उद्यद्भानुसहस्राभे नयनत्रयभूषिते ॥ चन्द्रचूडे महादेवि ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥ ४ ॥ विचित्रवसने देवि त्वन्नदानरतेऽनघे ॥ शिवनृत्यकृतामोदे ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥ ५ ॥ षट्कोणपद्ममध्यस्थे षडंगयुवतीमये ॥ ब्राह्म्यादिमातृरूपे च ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥ ६ ॥ देवि चन्द्रकलापीठे सर्वसाम्राज्यदायिनि ॥ सर्वानंदकरे देवि ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥ ७ ॥ साधकाभीष्टदे देवि

भवदुःखविनाशिनि ॥ कुचभारनते देवि ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥ ८ ॥ इन्द्राद्यर्चितपादाब्जे रुद्रादिरूपधारिणे ॥ सर्वसंपत्प्रदे देवि ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥ ९ ॥ पजाकाले पठेद्यस्तु स्तोत्रमेतत्समाहितः ॥ तस्य गेहे स्थिरा लक्ष्मीर्जायते नात्र संशयः ॥ १० ॥ प्रातःकाले पठेद्यस्तु मंत्रजापपुरःसरम् ॥ तद्गृहेऽन्नसमृद्धिः स्याद्वर्द्धमाना दिने दिने ॥ ११ ॥ यस्मै कस्मै न दातव्यं न प्रकाश्यं कदाचन ॥ प्रकाशात्सिद्धिहानिस्तद्गोपायेद्यत्नतः सुधीः ॥ १२ ॥ इति श्रीभैरवतंत्रेऽन्नपूर्णास्तोत्रं समाप्तम् ॥

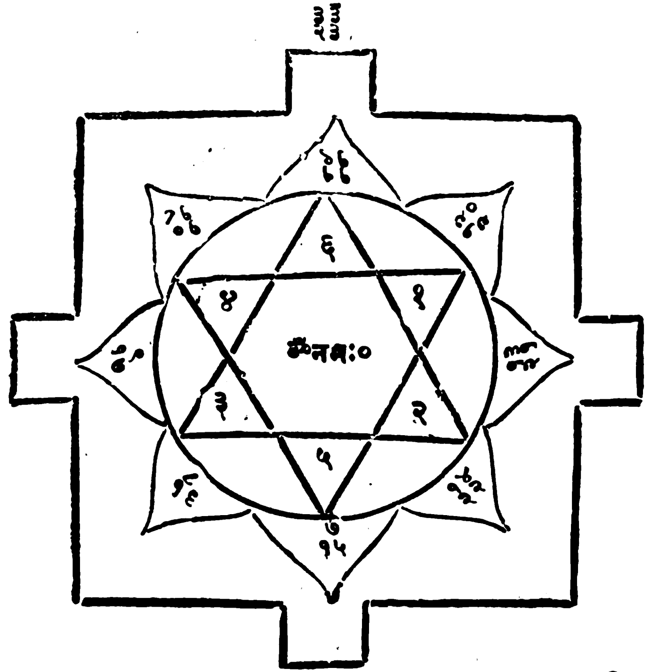
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ पृथ्वीमंत्रप्रयोगः ॥ शारदातिलके मंत्रो यथा—'ॐ नमो भगवत्यै धरण्यै धरणिधरे धरे स्वाहा ॥' इत्येकोनविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य मंत्रस्य वराहऋषिः। निवृच्छंदः। वसुधा देवता। सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः ॥ ॐ वराहऋषये नमः शिरसि १। निवृच्छंदसे नमो मुखे २। वसुधादेवतायै नमो हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वांगे ४। इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ नमोऽगुष्ठाभ्यां नमः १। भगवत्यै तर्जनीभ्यां नमः २। धरण्यै मध्यमाभ्यां नमः ३। धरणिधरे अनामिकाभ्यां नमः ४। धरे कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ नमो हृदयाय नमः १। भगवत्यै शिरसे स्वाहा २। धरण्यै शिखायै वषट् ३। धरणिधरे कवचाय हुम् ४। धरे नेत्रत्रयाय वौषट् ५। स्वाहा अस्त्राय फट् ६ ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत्॥श्यामां विचित्रांशुकरत्नभूषणां पद्मासनां तुंगपयोधरानताम्॥ इन्दीवरे द्वे नवशालिमंजरीं शुकं दधानां वसुधां भजामहे ॥ १ ॥ एवं ध्यात्वा सर्वतोभद्रमंडले 'मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति पीठदेवताः संपूज्य पीठशक्तिं पजयेत्॥तत्र क्रमः—पूर्वादिक्रमेण ॐ विमलायै नमः १। ॐ उत्कर्षिण्यै नमः २। ॐ ज्ञानायै नमः ३। ॐ क्रियायै नमः ४। ॐ योगायै नमः ५। ॐ प्रह्वायै नमः। ॐ सत्यायै नमः ७। ॐ ईशानायै नमः ८। मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ९ ॥ इति नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रमग्न्युत्तारणपूर्वकम् 'ॐ नमो भगवत्यै धरण्यै सर्वात्मसंयोगपद्मपीठायै नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरण

पूजां कुर्यात् ॥ तत्र क्रमः—षट्कोणसरेषु अग्निकोणे ॐ नमो हृदयाय नमः १। निर्ऋतिकोणे भगवत्यै शिरसे स्वाहा २ । वायव्य धरण्यै शिखायै वषट् ३। ऐशाने धरणिधरे कवचाय हुम् ४। पूज्यपूजकयोर्मध्ये धरे नेत्रत्रयाय वौषट् ५। देवीपश्चिमे स्वाहा अस्त्राय फट् ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततोऽष्टदले पूर्वे ॐ आकाशाय नमः १ । दक्षिणे ॐ अग्नये नमः २ । पश्चिमे ॐ जलाय नमः ३ । उत्तरे ॐ वायवे नमः ४ । अग्निकोणे ॐ आकाशकलायै नमः ५ । निर्ऋतिकोणे ॐ अग्निकलायै नमः ६ । पश्चिमे ॐ जलकलायै नमः ७ । उत्तरे ॐ वायुकलायै नमः ८ । इत्यष्टदेवताः पूजयेत् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण ॐ लं इन्द्राय नमः १ । ॐ रं अग्नये नमः २ । ॐ मं यमाय नमः ३ । ॐ क्षं निर्ऋतये नमः ४ । ॐ वं वरुणाय नमः ५ । ॐ यं वायवे नमः ६ । ॐ कुं कुबेराय नमः ७ । ॐ हं ईशानाय नमः ८ ॥ इति पूजयेत् ॥ तद्बाह्ये ॐ वं वज्राय नमः १ । ॐ शं शक्तये नमः २ । ॐ दं दंडाय नमः ३ । ॐ खं खड्गाय नमः ४ । ॐ पं पाशाय नमः ५ । ॐ अं अंकुशाय नमः६ । ॐ गं गदायै नमः ७ । ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ८ । ॐ पं पद्माय नमः ९ । ॐ चं चक्राय नमः १० ॥ इति पूजयेत् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनांतं संपूज्य जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं लक्षात्मको जपः । तत्तद्दशांशेन होमतर्पण मार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च—लक्षमेकं जपेन्मंत्री धराहृदयमादरात् ॥ ससर्पिषा पायसेन जुहुयात्तद्दशांशतः ॥ १ ॥ एवं सिद्धमनुर्मंत्री साधयेत्स्वमनोरथान् ॥ मधुत्रितयसंयुक्तैर्जुहुयादरुणोत्पलैः ॥ २ ॥ सहस्रशो भूसमृद्धिस्तथा नीलोत्पलैर्भवेत् ॥ प्रियंगुपुष्पैर्मध्वक्तैर्धनधान्यमहाश्रियः ॥ ३ ॥ मंजरीं शालिसंभूतां मधुरत्रयलोलिताम् ॥ जुहुयात्साधिते वह्नौ मंडलात्स्याद्धरापतिः ॥ ४ ॥ शुक्रवारे दिनमुखे गृहीत्वा साध्यभूमृदम् ॥ तामंभसि विनिक्षिप्य शोधितेऽत्र चरुं पचेत् ॥ ५ ॥ पयोघृताभ्यां सहितं जहुयात्तं हुताशने ॥ षण्मासं शुक्रवारेषु हुत्वैवं प्राप्नुयाद्धराम् ॥ ६ ॥ धरामेवं जपेन्मंत्री पशुरत्नधनादिभिः ॥ धराया वल्लभः स स्यान्नात्र कार्या विचारणा ॥ ७ ॥ इति पृथ्वीमंत्रप्रयोगः समाप्तः ॥

॥ अथ गंगामंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रमहोदधौ मंत्रो यथा—ॐ नमः शिवायै नारायण्यै दशहरायै गंगायै स्वाहा ॥ इति विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥
अस्य विधानम्—अस्य मंत्रस्य वेदव्यास ऋषिः। कृतिश्छंदः। गंगा देवता। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥ ॐ वेदव्यासऋषये नमः
शिरसि १। कृतिच्छंदसे नमो मुखे २। गंगादेवतायै नमो हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥
ॐ नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः १। शिवायै तर्जनीभ्यां नमः २। नारायण्यै मध्यमाभ्यां नमः ३। दशहरायै अनामिकाभ्यां नमः ४।
गंगायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः॥ ॐ नमो हृदयाय नमः १। शिवायै शिरसे
स्वाहा २। नारायण्यै शिखायै वषट् ३। दशहरायै कवचाय हुम् ४। गंगायै नेत्रत्रयाय वौषट् ५। स्वाहा अस्त्राय फट् ६ ॥ इति
हृदयादिषडंगन्यासः॥ इति न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्—उत्फुल्लामलपुंडरीकरुचिरा कृष्णेशविंध्यात्मिका कुंभेष्टाभयतोय
जानि दधती श्वेतांबरालंकृता॥ हृष्टास्या शशिशेखराऽखिलनदीशोणादिभिः सेविता ध्येया पापविनाशिनी मकरगा भागीरथी साधकैः
॥ १ ॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः पूजयेत् ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं
मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति पीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तद्यथा—पूर्वादिक्रमेण ॐ जयायै नमः १।
ॐ विजयायै नमः २। ॐ अजितायै नमः ३। ॐ अपराजितायै नमः ४। ॐ नित्यायै नमः ५। ॐ विलासिन्यै नमः ६। ॐ
दोग्ध्र्यै नमः ७। ॐ अघोरायै नमः ८। मध्ये ॐ मंगलायै नमः ९॥ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे
निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण प्रोञ्छ्य 'ॐ गंगायै पुष्पासनायै नमः' इति पुष्पाद्यासनं दत्त्वा
पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञया आवरणपूजां
कुर्यात् ॥ तद्यथा पुष्पांजलिमादाय—ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ॥ अनुज्ञां देहि गंगे त्वं परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥ इति
पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत ॥ तद्यथा—षट्कोणकेसरेषु आग्ने

ण्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च ॐ नमः हृदयाय नमः । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ ॥ इति सर्वत्र ॥ ॐ शिवाय शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० २ । ॐ नारायण्यै शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ३ । ॐ दशहरायै कवचाय हुम् । कवचश्रीपा० ४ । ॐ गंगायै नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय--ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची । तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ॐ रुद्राय नमः । रुद्रश्रीपा० १ । ॐ विष्णवे नमः । विष्णुश्रीपा० २ । ॐ ब्रह्मणे नमः । ब्रह्मश्रीपा० ३ । ॐ सूर्याय नमः । सूर्यश्रीपा० ४ । ॐ हिमाचलाय नमः । हिमाचलश्रीपा० ५ । ॐ मैनाकाय नमः । मैनाकश्रीपा० ६ । ॐ भगीरथाय नमः । भगीरथश्रीपा० ७ । ॐ उमापतये नमः । उमापतिश्रीपा० ८ ॥

गणाऽऽवरणपूजनयन्त्रम् ।



इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततोऽष्टदलाग्रेषु रुद्रादिसमीपे ॐ मीनाय नमः १ । ॐ कूर्माय नमः २ । ॐ मंडूकाय नमः ३ । ॐ मकराय नमः ४ । ॐ हंसाय नमः ५ । ॐ चक्रवाकाय नमः ६ । ॐ बकाय नमः ७ ।

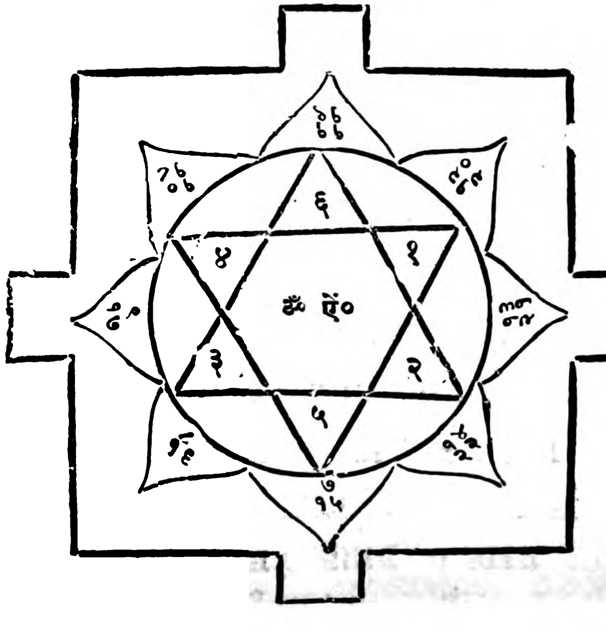
१ प्रयजेत्केशरेष्वग्रं दले रुद्रं हरिं विधिम् ॥ सूर्यं हिमाचलं मेनां भगीरथमथापतिम् ॥ दलाग्रेषु मीनकूर्ममंडूकान्मकरानपि । हंसान् कारंडवांश्चक्रवाकान् सारसकान् यजेत ॥

ॐ सारसाय नमः ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदश दिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः । तिलाज्येन दशांशतो होमः । एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च—लक्षं जपेद्दशांशेन जुहुयात्सघृतैस्तिलैः । एवं संसाधितो मंत्रोऽभीष्टं यच्छति मंत्रिणाम् ॥ १ ॥ ज्येष्ठशुक्लदशम्यां तां विशेषेण भजेद्बुधः ॥ दद्याद्दशभ्यो विप्रेभ्यो दशप्रस्थमितांस्तिलान् ॥ २ ॥ जप्त्वा सहस्रं हुत्वा चोपोष्य तत्र विकल्मषः ॥ सर्वभोगसमायुक्तो जायते मानवो भुवि ॥३॥ इति विंशत्यक्षरगंगामंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रभेदो यथा मंत्रमहोदधौ—ॐ नमो भगवति ऐं हिलिहिलि मिलिमिलि गंगे मां पावय पावय स्वाहा ॥ इति सप्तविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ ॐ नमो हृदयाय नमः १ । भगवति शिरसे स्वाहा २ । ऐं हिलि २ मिलि २ । शिखायै वषट् ३ । गंगे मां पावय २ कवचाय हुम् ४ । स्वाहा अस्त्राय फट् ५ । इति पंचांगेषु न्यसेत् ॥ १ ॥ अन्यः—ऐं हिलि २ मिलि २ गंगे मां पावय २ स्वाहा ॥ इति विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ ऐं हिलि २ हृदयाय नमः १ । मिलि २ शिरसे स्वाहा २ गंगे मां शिखायै वषट् ३ । पावय कवचाय हुम् ४ । पावय नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । स्वाहा अस्त्राय फट् ६ ॥ इति षडंगेषु न्यसेत् ॥ २ ॥ अन्यः—ॐ हिलि २ मिलि २ गंगे देवि नमः ॥ इति पञ्चदशाक्षरो मंत्रः ॥ ॐ हिलि हृदयाय नमः १ । ॐ हिलि शिरसे स्वाहा २ । ॐ मिलि २ शिखायै वषट् ३ । ॐ गंगे कवचाय हुम् ४ । ॐ देवि नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ नमः अस्त्राय फट् ६ ॥ इति न्यसेत् ॥ अन्यः—ॐ ह्रीं श्रीं नमो भगवति गंगे दयिते नमो हुंफट् ॥ इत्यष्टादशाक्षरो मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः १ । नमः शिरसे स्वाहा २ । भगवति शिखायै वषट् ३ । गंगे दयिते कवचाय हुम् ४ । नमो नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । हुंफट् अस्त्राय फट् ६ ॥ इति न्यसेत् ॥ ४ ॥ ध्यानपूजादिकं सर्वं पूर्ववत् ॥ 'एषां चतुर्णां मंत्राणामुपास्तिः पूर्ववन्मता' इति वचनात् ॥ इति गंगामंत्रप्रयोगः ॥

॥ अथ मणिकर्णिकामंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रमहोदधौ मंत्रो यथा—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ मणिकर्णिके नमः ॐ ॥ इति चतुर्दशाक्षरो मंत्रः ॥

अस्य विधानम्—अस्य मंत्रस्य वेदव्यास ऋषिः । शक्करी छंदः । श्रीमणिकर्णिका देवता । ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ वेदव्यासऋषये नमः शिरसि १ । शक्करीच्छंदसे नमो मुखे २ मणिकर्णिकादेवतायै नमो हृदि ३ । विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ हृदयाय नमः १ । ऐं ह्रीं शिरसे स्वाहा २ । श्रीं क्लीं शिखायै वषट् ३ । ॐ कवचाय हुम् ४ । मणिकर्णिके नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । नमः ॐ अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्—फुल्लेंदीवरनिर्मितां करतले मालामसव्ये करे बीजापूरफलं सितां बुजमयीं मालां दधाना हृदि ॥ श्वेतक्षौमवृता शरद्विधुनिभा त्र्यक्षा निबद्धांजलिर्ध्यातव्या मणिकर्णिका रविसमा तोयेशकाष्ठामुखी ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूजयेत् ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् । तथा च--पूर्वादि क्रमेण ॐ जयायै नमः १ । ॐ विजयायै नमः २ । ॐ अजितायै नमः ३ । ॐ अपराजितायै नमः ४ । ॐ नित्यायै नमः ५ । ॐ विलासिन्यै नमः ६ । ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७ । ॐ अघोरायै नमः ८ । मध्ये ॐ मंगलायै नमः ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संप्रोञ्छ्य पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्यावाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य आवरणपूजां कुर्यात् । तद्यथा—षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च । ॐ हृदयाय नमः हृदयश्रीपादुकां

मणिकर्णिकापूजनयन्त्रम् ।



पूजयामि तर्पयामि नमः १ ॥ इति सर्वत्र ॥ ऐं ह्रीं शिरसे स्वाहा । शिरः श्रीपा०२ । श्रीं क्लीं शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ३ । ॐ कवचाय हुम् कवचश्रीपा० ४ । मणिकर्णिके नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा०५ । नमः अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य--ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत्। इति प्रथमावरणम्॥१॥ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची तदनुसारेणान्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ॐ रुद्राय नमः । रुद्रश्रीपा० १ । ॐ विष्णवे नमः । विष्णुश्रीपा० २ । ॐ ब्रह्मणे नमः । ब्रह्म श्रीपा० ३ । ॐ सूर्याय नमः । सूर्यश्रीपा० ४ । ॐ हिमाचलाय नमः । हिमाचलश्रीपा० ५ । ॐ मैनाकाय नमः । मैनाक श्रीपा० ६ । ॐ भगीरथाय नमः । भगीरथश्रीपा० ७ । ॐ उमापतये नमः । उमापतिश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ देवताः पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततोऽष्टदलाग्रेषु रुद्रादिसमीपे ॐ मीनाय नमः १ । ॐ कूर्माय नमः २ । ॐ मंडूकाय नमः ३ । ॐ मकराय नमः ४ । ॐ हंसाय नमः ५ । ॐ चक्रवाकाय नमः ६ । ॐ बकाय नमः ७ । ॐ सारसाय नमः ८ ॥ इत्यष्टौ देवताः पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं त्रिलक्षजपः । तद्दशांशतो होमः । एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च–लक्षत्रयं जपेन्मंत्रं जुहुयात्तद्दशांशतः ॥ पुंडरीकैस्त्रिमध्वक्तैर्यजेत्तां गंगया समम् ॥ १ ॥ अयं मनुर्जनैर्जप्तो मोक्षलक्ष्मीं प्रयच्छति ॥ सुखं समस्तं संतानं सौभाग्यं धनसंचयम् ॥ २ ॥ विधायोपासनां सर्वां मणिकर्ण्या उपासकः ॥ कुदेशेऽपि मृतो याति ब्रह्मैवामलमव्ययम् ॥ ३ ॥ मंत्रान्तरं यथा–ॐ मं मणिकर्णिके प्रणवात्मिके नमः ॥ अन्यत् सर्वं पूर्ववत् ॥ इति मणिकर्णिकामंत्रप्रयोगः ॥

॥ अथ शीतलामंत्रप्रयोगः॥ मंत्रमहोदधौ मंत्रो यथा–ॐ ह्रीं श्रीं शीतलायै नमः ॥ इति नवाक्षरो मंत्रः॥अस्य विधानम्–अस्य शीतला

मंत्रस्य उपमन्युर्ऋषिः । बृहती छंदः । शीतला देवता । ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ उपमन्युऋषये नमः शिरसि १ । बृहती च्छंदसे नमो मुखे २ । शीतलादेवतायै नमो हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वांगे॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ ह्रीं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ ह्रीं श्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ ह्रीं श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः५ । ॐ ह्रीं श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ एवमेव हृदयादिषडंगन्यासं कुर्यात् ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् । अथ ध्यानम्–ॐ दिग्वाससं मार्जनिकां च शूर्पं करद्वये संदधतीं घनाभाम् ॥ श्रीशीतलां सर्वरुजार्तिहंत्रीं रक्तांगरागस्रजमर्चयामि ॥ १ ॥ इति ध्यायेत् । ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तथा च पूर्वादिक्रमेण–ॐ जयायै नमः १ । ॐ विजयायै नमः २ । ॐ अजितायै नमः ३ । ॐ अपराजितायै नमः ४ । ॐ नित्यायै नमः ५ । ॐ विलासिन्यै नमः ६ । ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७ । ॐ अघोरायै नमः ८ । मध्ये ॐ मंगलायै नमः ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितां प्रतिमां ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य 'ॐ शीतलाया योगपीठाय नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुन र्ध्यात्वा आवाहनादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणमयुतजपः । पायसान्नेन दशांशतो होमः । तथा च–अयुतं प्रजपेन्मंत्रं पायसेन सहस्रकम् ॥ जुहुयात्पूर्ववत्पीठे स्फोटानां नाशिनी त्वियम् ॥ १ ॥ नाभिमात्रे जले स्थित्वा यः सहस्रं जपेन्मनुम् ॥ तेन संमार्जितास्तीव्राः स्फोटा नश्यंति तत्क्षणात् ॥ २ ॥ इति नवाक्षरशीतलामंत्रप्रयोगः ॥ अथ ज्वालामुखीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा प्राकृतग्रंथे–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिंहेश्वरि ज्वालामुखि जृंभिणि स्तंभिनि मोहिनि वशीकारिणि परधनमोहिनि सर्वारिष्टनिवारिणि शत्रुगणसंहारिणि सुबुद्धिदायिनि ओं आं क्रौं ह्रीं त्राहि त्राहि क्षोभय क्षोभय अमुकं मे वशं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति त्र्यशीत्यधिकशताक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–इस मन्त्रको दीपमालिकाकी रात्रिसे प्रतिदिन ११०० जपे–चमेलीका पुष्प चढावे–बरफी और हिंगुला

इत्यादिका नैवेद्य धरे–तो इक्कीस दिनमें मनोवाञ्छित प्राप्त होवे ॥ इति ज्वालामुखमिंत्रप्रयोगः ॥ अथ इन्द्राक्षीस्तोत्रप्रारंभः ॥ अथ ध्यानम्–इन्द्राक्षीं द्विभुजां देवीं पीतवस्त्रसमन्विताम् ॥ वामहस्ते वज्रधरां दक्षिणे च वरप्रदाम् ॥ १ ॥ इन्द्राक्षीं नाम सज्योतिर्नानारत्नविभूषिताम् ॥ प्रसन्नवदनांभोजामप्सरोगणसेविताम् ॥ २ ॥ इन्द्र उवाच ॥ इन्द्राक्षी नाम सा देवी दैवतैः समुदाहृता ॥ गौरी शाकंभरी देवी दुर्गानाम्नाऽतिविश्रुता ॥ ३ ॥ कात्यायनी महादेवी चन्द्रघण्टा महातपा ॥ गायत्री सा च सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी ॥ ॥ ४ ॥ नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिंगला ॥ अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी ॥ ५ ॥ मेघश्यामा सहस्राक्षी विष्णुमाया जलोदरी ॥ महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ॥६॥ अच्युता भद्रदा नंदा रोगहंत्री शिवप्रिया ॥ शिवदूती कराली च प्रत्यक्ष परमेश्वरी ॥ ७ ॥ महिषासुरहंत्री च चामुंडा सप्तमातरः ॥ इन्द्राणी चेन्द्ररूपा च रुद्रशक्तिः परायणा ॥ ८ ॥ शिवा च शिवरूपा च शिवशक्तिपरायणा ॥ सदा संमोहिनी देवी सुन्दरी भुवनेश्वरी ॥ ९ ॥ आर्या दाक्षायणी चैव गिरिजा मेनकात्मजा ॥ वाराही नारसिंही च भीमा भैरवनादिनी ॥ १० ॥ श्रुतिः स्मृतिर्धृतिर्मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती ॥ अनंता विजया पूर्णा मानस्तोकापराजिता ॥ ११ ॥ भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यंबिका शिवा ॥ शिवा भवानी रुद्राणी शंकरार्द्धशरीरिणी ॥ १२ ॥ मृत्युंजया महामाया सर्वरोगप्रणाशिनी ॥ ऐरावतगजारूढा भूषिता कंकणप्रभा ॥१३॥ एतैर्नामपदैर्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता ॥ शतमावर्तते यस्तु मुच्यते व्याधिबंधनात् ॥१४॥ आवर्तयेत्सहस्रं यो लभते वांछितं फलम् ॥ इन्द्रेण कथितं स्तोत्रं सत्यमेव न संशयः ॥ १५ ॥ इति श्रीइन्द्राक्षीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

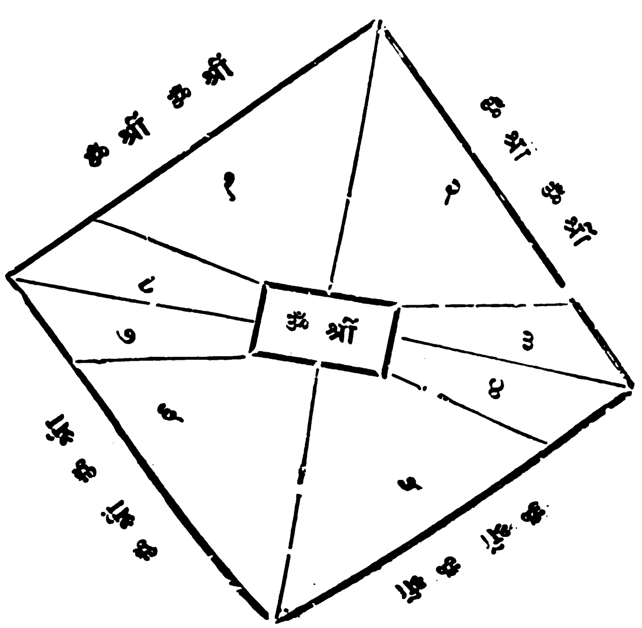
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ जैनमते पद्मावतीस्तोत्रतंत्रम् ॥ ॐ श्रीमद्गीर्वाणचक्रस्फुटमुकुटतटीदिव्यमाणिक्यमालाज्योतिर्ज्वालाकरालास्फुरितमकरिकाघृष्टपादारविंदे ॥ व्याघ्रोरुल्कासहस्रज्वलदनलशिखालोलपाशांकुशाढ्ये आंक्रोंह्रींमंत्ररूपे क्षपितकलिमले रक्ष मां देवि पद्मे ॥ १ ॥ भित्त्वा पातालमूलं चलचलिचलितं व्याललीलाकराले विद्युद्दंडप्रचंडप्रहरणसहिते सद्भुजैस्तर्जयंति ॥ दैत्येन्द्रक्रूरदंष्ट्राकटकटघटिते स्पष्टभीमाट्टहास्ये मायाजीमूतमालाकुहरितगगने रक्ष मां देवि पद्मे ॥ २ ॥ कूजत्कोदंडकांडोड्डमरविधुरताक्रूरघोरोपसर्गं दिव्यं वज्रातपत्रं प्रगुणमणिरणत्किंकिणीक्वाणरम्यम् ॥ भास्वद्वैडूर्यदंडं मदनविजयिनं भूतिदं पार्श्वनाथं सा देवी पद्महस्ता विघट

यतु महाडामरं मामकीनम् ॥ ३ ॥ भृंगीकालीकरालीपरिजनसहिते चंडचामुंडनित्ये क्षांक्षींक्षूंक्षंःक्षणार्द्धे क्षितरिपुनिवहे ह्रींमहामंत्रवश्ये॥ भ्रांभ्रींभ्रूंभ्रः प्रसंगभ्रुकुटिपुटतटीत्रासितोद्दामदैत्ये ड्रां ड्रीं ड्रं ड्रः प्रचंडे स्तुतितवमुखरे रक्ष मां देवि पद्मे ॥ ४ ॥ चंचत्कांचीकलापे स्तनतटविलसत्तारहारावलीके प्रोत्फुल्लोत्पारिजातद्रुमकुसुममहामंजरीपूज्यपादे ॥ ह्रां ह्रीं क्लीं क्लीं समेते भुवनवशकरि क्षोभिणि द्राविणि त्वं आं क्रों ऐं(ॐ)पद्महस्ते कुरुकुरुघटने रक्ष मां देवि पद्मे ॥५॥ लीलाव्यालोल नीलोत्पलदलनयने प्रज्वलद्वाडवाग्निप्रुटयज्ज्वालास्फुलिंगस्फुरदरुणकरोदग्रवज्रा ग्रहस्ते ॥ ह्रांह्रींह्रूंहः हरंती हरहरहहहुं कारभीमैकनादे पद्मे पद्मासनस्थे व्यपनय दुरितं देवदेवेन्द्रवंद्ये ॥ ६ ॥ प्रातर्बालार्करश्मिच्छुरितघनमहासांद्रसिंदूरधूली संध्यारागारुणांगि त्रिदशवरवधूवंद्यपादारविंदे॥ चंचचंडासिधारा हरति रिपुकुलं कुंडलोद्घृष्टगंडे स्त्रां स्त्रीं स्त्रूं स्त्रः स्मरंती मदगजगमने रक्ष मां देवि पद्मे ॥ ७ ॥ गर्जन्नीरदगर्भनिर्गततडिज्ज्वालासहस्रस्फुरत्सद्वज्रां कुशपाश पंकजकरा भक्त्यामरैरर्चिता ॥ सद्यःपुष्पितपारिजातरुचिरं दिव्यं वपुर्बिभ्रती सा मां पातु सदा प्रसन्नवदना पद्मावती देवता ॥ ८ ॥

अथ कूटरहस्यमंत्रोद्धारः कार्यपरत्वेन प्रतिश्लोकपुरश्चरणं च लिख्यते ॥

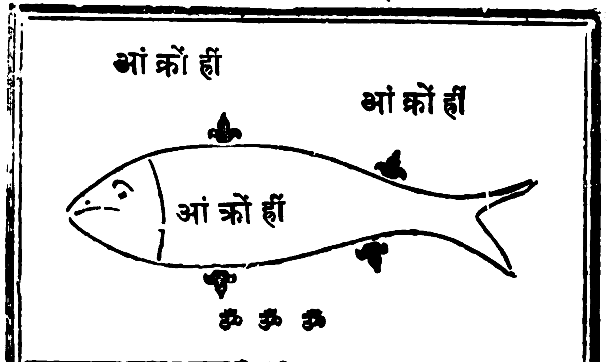
भाषा–श्रीपद्मावती माता कैसी शोभायमान है–देवतोंका समूह जिनके मुकुटोंकी कर्णिका जिसमें मनोहर मणि माणिक उनकी ज्योतिकी ज्वाला उनसे विकराल जो देदीप्यमान मच्छी उनसे घृष्टमान है पादारविंद जिसका–व वह

गीर्वाणच०



ईश्वरी कैसी है–चपल नागफांसी और अंकुशसे विराजमान है–फिर माता भवानी कैसी है--व्याघ्रके समान निकली अग्नि रूप जिह्वा जिसकी तद्वत्स्वरूप है–और अग्निकांति दृष्टि है--'आं क्रों ह्रीं' मंत्ररूपसे दूर किया है कलिका मैल जिसने ऐसी है--पद्मावती ! आप मेरी रक्षा करो । इस 'श्रीमदाद्रि' पहले श्लोकका छः मासतक नित्य एक हजार एकांतमें जप करे--तो श्रीनाम देवीका निस्संदेह दर्शन हो। मंत्रोद्धारः--'आं क्रों ह्रीं--'यह मंत्र हत्या दूर करे, शरीरकी पापनिवृत्ति करे, कुष्ठादि रोग दूर करे–इस मंत्रको प्रतिदिन रुद्राक्षकी मालासे १२१ वार जपे–मच्छीका ध्यान करे तो वालहत्या, स्त्रीहत्या, राजहत्या, योगिहत्या, कुटुंबहत्या सब दूर हो–इस मच्छी यंत्रको चंदनसे लिखकर मंत्रका जप करे तो सर्व कार्य सिद्ध हो; क्योंकि यह मंत्र पार्श्वनाथजीके स्मरणमें है--पार्श्वनाथजी इसका ही स्मरण सदैव करते हैं--यह मंत्र स्वर्गदाता--और इस गीर्वाणचक्रनाम यंत्रको मुकुटमें राखे तो दैत्य, राक्षस, किन्नर, भूत, प्रेत, पिशाच, मुद्गल, गंधर्व इनका सर्वोपद्रव दूर होवे--इस मंत्रोद्धार अथवा श्लोकको मासके दूसरे शनिवारसे प्रारंभ करे--अथवा तीसरे शनिवारसे प्रारंभ करे और तिथि वारमें आरंभ करे नहीं--इति प्रथमश्लोकविधानम्॥ १ ॥ हे माता ! आप समीचीन भुजाओंकरके दैत्योंका तिरस्कार करती हो–फिर माता! आप कैसी हो–पाताल भेद कर चपल चालसे चलती हो–फिर माता! आप कैसी हो–सर्पकी जो लीला तद्वत् विकराल हो–ऐसा स्वरूप बनाकर बाहर कोप धारती हो–माता!आपका हाथ कैसा है–बिजलीका जो दंड उसका जो उद्द्योत उसके बराबर प्रहार करता है–फिर माता ! आप कैसी हो–क्रूर जो दांत उसको कटकटाती हुई भीमाट्टहास शब्दसे युक्त दैत्योंको मारनेके वास्ते भयानक हास धारण करनेवाली–फिर माता ! आप कैसी हो–सत्यरूप जो मेघ उनकी पंक्तियोंसे शब्दायमान हो–

मच्छीयन्त्रम् ।



आकाशमें विचरनेवाली हो--यह 'भित्वा पातालादि' दूसरे श्लोकसे जलको अभिमंत्रित करके छींटा मारनेसे भूत प्रेत पिशाच किन्नर यक्ष उपद्रव करता हो तो दूर होवे--अग्नि, अस्थि, जल, पवन इसकी वर्षा हो तो मिटे ॥ इति द्वितीयश्लोकविधानम् ॥ २ ॥ कवल है जिसके हाथमें ऐसी पद्मावती देवी है सो हमारे महाउपसर्गको नाश करो--कैसी देवी है--श्रीपार्श्वनाथजीने मस्तकपर विराजमान की है--श्रीपार्श्वनाथजी कैसे हैं--शब्दायमान जो धनुष उसकी जो प्रचंडता उससे दूर किया है बडे उपसर्गोंको जिन्होंने--फिर पार्श्वनाथजी कैसे हैं--मनोहर वज्रमणिका है आतपत्र जिनका--श्रीपार्श्वनाथजीके ऊपर छत्र कैसा है--अच्छी आभासहित मणियोंकी बँधी है बंदनवार जिसमें और छोटे छोटे घंटोंके शब्दसे मनोहर हो रहा है--फिर पार्श्वनाथजी कैसे हैं--कामदेवको जीतनेवाले हैं--कामदेव कैसा है--हाथमें है देदीप्यमान वैडूर्यमणिका दंड जिसके--इस 'कूजत्कोदण्डकाण्डे' तीसरे श्लोकसे प्रभात ही शिखामें तीन गांठ देवे तो मुष्टि आदि उपसर्ग मिटैं--इति तृतीयश्लोकविधानम्॥ ३ ॥ हे देवि पद्मावति ! आप हमारी रक्षा करो--कैसे रूपसे करो--भृंगीनामा देवी--कालीनामा देवी--करालीनामा देवी--यह तीन रूप देवी चंडी तथा चामुंडा नित्यानंदी इस परिवारसे युक्त--क्षणमात्रमें क्षणमात्रके आधेभागमें चतुरक्षरी मंत्रसे हमारे शत्रुओंका नाश करो--हे माता ! आप कैसी हो महामंत्रके वशीभूतहो-भृंगीनामा देवीको इसप्रकार स्मरण करना चाहिये-दूसरी कालीनामा देवी है सो चार अक्षरोंसे दैत्योंके समूहके उपसर्गसे भृकुटीके चमत्कारद्वारा हमारी रक्षा करो--तीसरी कराली नामा सरस्वती है सो इन चार अक्षरोंके मंत्रयुक्त हमारे मुखमें सदैव विराजमान रहो, इत्यर्थः ॥ 'भृंगी काली कराली' इस चौथे श्लोकके स्मरण करनेसे संग्राममें राजकुलमें व महाकष्टमें सहायता होती है--यह जो तीन प्रकारकी देवियें हैं उनका मंत्रोद्धार पृथक् १ इस प्रकार करना चाहिये--जैसे आदिकी जो भृंगीनामा देवी उसकी चंडीनामा सखीने मंत्रस्वरूप धारण किया सो इस प्रकार है। मंत्रो यथा--'ॐ ह्रीं भृंगी क्षां ॐ ह्रीं भृंगी क्षीं ॐ ह्रीं भृंगी क्षूं ॐ ह्रीं भृंगी क्षः' इति चतुरक्षरो मंत्रः । अस्य विधानम्--अमावास्याशनिदिवसे अथवा ग्रहणे पद्मासनसे बैठकर रुद्राक्षकी मालासे जप करे तो साक्षात

वैरियोंका नाश हो। अथवा गधेके दांतोंकी माला बनाकर तानै दिनमें दश हजार मंत्र जपे तों वैरीका सकुटुंब नाश हो। दूसरी कालीनामा देवीने चामुंडा सखीसे युक्त चतुरक्षरी मंत्ररूप धारण किया। तत्र मंत्रः—'ॐ ह्रीं कालीं श्रां ॐ ह्रीं कालीं श्रीं ॐ ह्रीं कालीं श्रूं ॐ ह्रींकालीं श्रः' इति चतुरक्षरो मंत्रः। अस्य विधानम्—इस मंत्रको बालोंकी मालासे छः मासतक स्मरण करे तो दैत्य प्रसन्न हो। इक्कीस बार अर्द्धरात्रिमें स्मरण करे तो साक्षात् स्वप्नदर्शन होवे। तीसरी करालीनामा देवीने नित्यानंदसखीसे युक्त चतुरक्षर मंत्ररूप धारण किया। तत्र मंत्रः—'ॐ ह्रीं करालीं ड्रां ॐ ह्रीं करालीं ड्रीं ॐ ह्रीं करालीं ड्रूं ॐ ह्रीं करालीं ड्रः' इति चतुरक्षरो मंत्रः। अस्य विधानम्—इस मंत्रको मूंगेकी मालासे इक्कीसहजार तीन रात्रिदिवस पद्मासन बैठकर स्मरण करें—निश्चल ध्यान राखे—तो करालीनामा देवी सरस्वती प्रचंड वाग्वादिनीरूप धार मुखमें प्रवेश करे। इति चतुर्थश्लोकविधानम्॥ ४॥ हे देवी! हे माता! तुम हमारी रक्षा करो—हे माता! आप कैसी हो--शब्दायमान है कटिमें कांची जिसके, फिर हे माता! आप कैसी हो--स्तनोंके मध्य देदीप्यमान जो मनो हर हार उसकी पंक्तिसे युक्त हो--फिर माता! कैसी हो—पुष्ला जो पारिजातका वृक्ष उसकी मंजरीकर पूजनीय है चरणकमल जिसका—फिर माता! आप कैसी हो--तीन भुवनके वश करनेको चतुरक्षरी मंत्र युक्त हो, आश्चर्ययुक्त हो, द्राविणी हो, चतुरक्षरी मंत्रके मिलापसे तीन भुवनका इन्द्र जो धरणेन्द्र चक्रवर्ती उसका आवाहन करती हो। 'चंचत्कांची' इस पांचवें श्लोकका जप करनेसे वशीकरण होवे। मंत्रोद्धार इस श्लोकका इस प्रकार है। तत्र मंत्रः—'ॐ ह्रीं आँ द्राँ--ॐ ह्रीं क्रों द्रीं--ॐ ह्रीं ऐं क्लीं--ॐ ह्रीं ॐ ब्लीं' इति बीजमंत्रः। इति पंचम श्लोकविधानम्॥ ५॥ हे पद्मावती! कमलके आसनपर विराजमान हो देवताओंकी वंदनासे हमारे पापोंको दूर करो। फिर माता! आप कैसी हो--लीलाकरके चपल जो कमल उसके पत्रके समान नेत्र हैं। फिर माता! आप कैसी हो-बलतीहुई अग्निकी टूटी जो ज्वाला उसका जो कण उसके समान लाल उत्कट वज्र हाथमें धारे हो। फिर माता! आप कैसी हो--चतुरक्षरी बीजमंत्रसे दूर किया है भयानक उपसर्ग जगत्का। हे माता! आप हुंकार हर हर ऐसे शब्दसे जगत्का भय मेटनेवाली हो--'लीलाव्यालो' इस

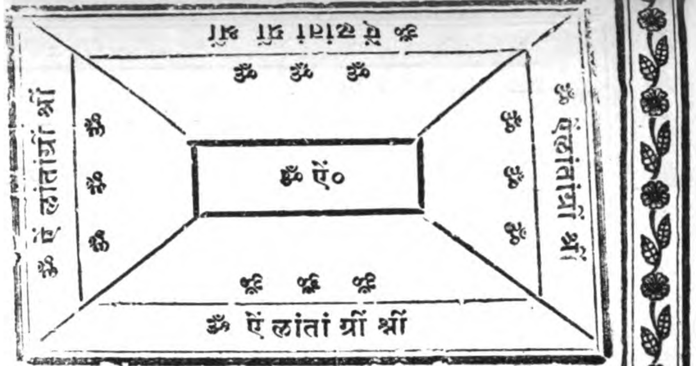
श्लोकके पाठसे सब अपराध हत्यादि दूर हों। मंत्रोद्धारः--'ॐ ह्रौं ह्रीं ह्रूँ ह्रः हरहरहहः ठः ठः' इति मंत्रः एकाग्रचित्तेन स्मरणीयः। इति षष्ठश्लोकाविधानम् ॥ ६ ॥ हे देवी पद्मावती ! हे मदोन्मत्त हस्तीकी चाल चलनेवाली! हे चतुरक्षरी विद्याका स्मरण करनेवाली! हमारी रक्षा करो। हे माता ! आप कैसी हो-प्रातःकालका जो सूर्य उसकी जो किरण उससे छूटा सघन जो सिंदूर उसके समान रूप धारे हो। फिर माता। आप कैसी हो संध्या समयका जो लाल रंग तिसके समान शरीर है जिसका। देवताओंकी जो श्रेष्ठ अप्सरा उनसे वंदनीय है चरणकमल जिसका। फिर माता! आप कैसी हो--देदीप्यमान प्रचंड जो खड्ग उससे रिपुकुलका विनाश क[illegible]ी हो फिर माता! आप कैसी हो-कुंडलोंसे घर्षमान हो रहा है गण्डस्थल जिसका 'स्रां स्रीं स्रूं स्रः' यह चतुरक्षरी मंत्रयुक्त हो-ऐसी पद्मावती हमारी रक्षा करो ॥ 'प्रातर्बालार्क' इस श्लोकसे ईश्वरीका सदैव ध्यान करे। मंत्रोद्धारः—'ॐ स्रां ॐ स्रीं ॐ स्रूँ ॐ स्रः' इस मंत्रके संध्यासमय छः मास स्मरण करे और बिसगच्छाका पुष्प२१ वार अभिमंत्रित करके वैरीकी शय्यापर डाले तो वैरीके शरीरमें आघात हो विना संदेह। इति सप्तमश्लोकविधानम् ॥ ७ ॥ हर्षायमान है मुखारविंद जिसका ऐसी पद्मावती देवी हमारी त्रिकालमें रक्षा करो। कैसी है—गर्जता जो मेघ उससे निकली जो बिजलीकी ज्वाला उसके समान रूप है जिसका। फिर माता ! आप कैसी हो—समीचीन वज्र अंकुश नागफांसी युक्त हो, चतुर्भुजा धारे हो, देवपूज्य हो, तत्कालका फूला जो कमल उसके समान रूप धारे हो, ऐसी हे मातः! हमारी सदैव रक्षा करो। 'गर्जन्नीरद' इस आठवें श्लोकसे दुर्भिक्षमें ध्यान करे तो मेघमाला होवे, दर्शन देवे, भक्तजनोंकी रक्षा करे, अमोघ मेघ बरसें। इस श्लोकको उलटा पढे तो शांति हो। इत्यष्टमश्लोकविधानम् ॥ ८ ॥ मू०—विस्तीर्णे पद्मपीठे कमलदलनिभासोचिते कामगुप्ते लां तां श्रीं श्रीं समेते प्रहासितवदने नित्यहस्ते प्रहस्ते ॥ रक्तेरक्तोज्वलांगि प्रतिवहासि सदा वाग्भवे कामराजे हंसारूढे सुनेत्रे भगवति वरदे रक्ष मां देवि पद्मे ॥९॥ जिह्वाग्रे नासिकांते हृदि मनसि दृशि श्रोत्रयोर्नाभिपद्मे स्कंधे कंठे ललाटे शिरसि च भुजयोः पृष्ठपार्श्वप्रदेशे ॥ सर्वाङ्गोपाङ्गशुद्धाप्यतिशयभुवने दिव्यरूपं स्वरूपं ध्यायामः सर्वकालं प्रणवबल

... ॥ १० ॥ खड्गैः कोदंडकांडैर्मुशलहलकणैर्वह्निनाराचचक्रैः शंपाशल्यात्रिशूलैर्वरपनसफलैर्मुद्गरैर्मुष्टिदंडैः ॥ पाशैः पाषाणवृक्षैर्वरगिरिसहितैरिष्टः...रमात्यैर्दुष्टानां दारयंती वरभुजललिते रक्ष मां देवि पद्मे ॥ ११ ॥ ब्रह्माणी कालरात्री भगवति वरदे चंडि चामुंडि नित्ये मातगंधा...र गौरी धृतम...ति विजये कीर्तिह्रीस्तुत्यपादे ॥ संग्रामे शत्रुमध्ये जय ज्वलनजले वेष्टितेऽन्यैः सुरास्त्रैः क्षां क्षीं क्षूं क्षः क्षणार्द्धे क्षतरिपुनिवहे रक्ष मां देवि पद्मे ॥ १२ ॥ भूविश्वेकणचन्द्राबिंबपृथिवीयुग्मैकसंख्याक्रमाच्चंद्रांभोनिधि बाणरूपवसुदिग्दिक्खेचरेशादिषु ॥ ऐश्वर्यं रिपुमारिविश्वभयह...क्षोभंतरा या विषा लक्ष्मीलक्षणभारती गुरुमुखान्मंत्रानिमान् देवते ॥ १३ ॥ यस्या देवैर्नरेन्द्रैरमरपतिगणैः किन्नरैर्दानवेन्द्रैः सिद्धैर्नागेन्द्रयक्षैर्नरमुकुटतटीघृष्टपादारविंदे ॥ सौम्ये सौभाग्यलक्ष्मी दलित कलिमले पद्मकल्याणमाले अंबे काले समाधिं प्रकटय परमं रक्ष मां देवि पद्मे ॥ १४ ॥ धूपैश्चंदनतंडुलैः शुभमहागंधैः सुमंत्रालिकैर्नानावर्णफलैर्विचित्रकुसुमैर्दिव्यैर्मनोहारिभिः ॥ दीपैर्नैवेद्यवस्त्रैरनुभुवनकरैर्भक्तियुक्तं प्रदाय राज्यं हेतुर्गृहाण भगवति वरदे रक्ष मां देवि पद्मे ॥ १५ ॥ तारा त्वं सुगतागमे भगवती गौरीति शैलागमे वज्रा कौलिकशासने जिनमते पद्मावती विश्रुता ॥ गायत्री श्रुतिशालिनां प्रकृतिरित्युक्तासि सांख्यायने मातर्भारति किं प्रभूतभणितैर्व्याप्तं समस्तं त्वया ॥ १६ ॥ संजप्ता करवीररक्तकुसुमैः पुष्पैश्चिरं संचितैः संमिश्रैर्घृतगुग्गुलैघमधुभिः कुंडे त्रिकोणे कृते ॥ होमार्थं कृतषोडशाङ्गुलिसमं वह्नौ दशांशं जपेन्मां वाचा वद सिंहदेवि सहसा पद्मावती विश्रुता ॥ १७ ॥ ह्रींकारे चन्द्रमध्ये पुनरपि वलये षोडशावर्तपूर्णे बाह्ये कंठी रवेष्टे कमलदलयुते मूलमंत्रे प्रयुक्ते ॥ साक्षात्त्रैलोक्यवश्यं पुरुषवशकृतं मंत्रराजेन राजमेतत्तत्वं स्वरूपं ...थमपदमिदं पातु मां पार्श्वनाथ ॥ १८ ॥ पातालाधिपतिः प्रियप्रणयिनी चिंतामणिःप्राणिनां क्षुद्रोपद्रवरोगशोकहरणा दारिद्र्यविद्राविणी व्यालव्याघ्रहरा फणित्रयधरा देहप्रभाभासुरा॥ श्रीमत्पार्श्वजिनेशशासनसुरी पद्मावती देवता ॥ १९ ॥ भक्तानां देहि सिद्धिं मम सकलमलं देवि दूरीकुरु त्वं सर्वेषां धार्मिकाणां सतत नियमितं वांछितं पूरयस्व॥संसाराब्धौ निमग्नं प्रगुणगुणयुतं जीवराशिं च पाहि श्रीमज्जैनेन्द्रधर्मं प्रकटय विमलं देवि पद्मावति त्वम्॥२०॥

पाताले कृशताविषं विषधरा घूर्णंति ब्रह्माण्डजाः स्वर्भूमीपतिदेवदानवगणाः सूर्येंदुज्योतिर्गणाः ॥ कल्पेन्द्राः स्तुतपादपंकजनुता मुक्ता मणीचुंबिता सा त्रैलोक्यनुता मतिस्त्रिभुवनैस्तुल्या स्तुता सर्वदा ॥ २१ ॥ दिव्यं स्तोत्रं पवित्रं पटुतरपटुताभक्तिपूर्वं त्रिसंध्यं लक्ष्मीसौभाग्यरूपं दलितकलिमलं मंगलं मंगलानाम् ॥ पूज्यं कल्याणमालां जनयति सततं पार्श्वनाथप्रसादाद्देवी पद्मावती नः प्रहसित वदना या स्तुस्ता दानवेन्द्रैः ॥ २२ ॥ मातः पद्मिनि पद्मरागरुचिरैः पद्मप्रसूनानने पद्मे पद्मवनस्थिते परिलसत्पद्माक्षि पद्मालये ॥ पद्मा मोहिनि पद्मरागरुचिरे पद्मप्रसूनार्चिते पद्मोल्लासिनि पद्मनाभिनिलये पद्मालये पाहि माम् ॥ २३ ॥ कोपंज्रंशंषहंसंकुवलयकलितोद्दामली लाप्रबंधे ज्रां ज्रीं ज्रूं ज्रः पवित्रे शशिकरधवले प्रक्षरत्क्षीरगौरे ॥ व्यालव्याबद्धजूटे प्रबलबलमहाकालकूटं हरंती हाहाहुंकारनादे करयुग कमले रक्ष मां देवि पद्मे ॥२४॥ षट्कोणे चक्रमध्ये प्रणववरयुते वाग्भवे कामराजे हंसारूढे सबिंदु विकसितकमले कर्णिकाग्रे निधाय ॥ नित्यं क्लिन्ने मदद्रे द्रवयासि सततं सांकुशे पाशहस्ते ध्यानात्संक्षोभकारी त्रिभुवनवशकृद्रक्ष मां देवि पद्मे ॥ २५ ॥ आं क्रों ह्रीं पंचवर्णै र्लिखितरसदले चक्रमध्ये सह क्लीं क्रों क्रीं पत्रांतराले स्वरपरिकलिते वायुना वेष्टितांगी॥ह्रीं वेष्टारक्तपुष्पैर्जपितदलमहाक्षोभिणी द्राविणी त्वं त्रैलोक्यं चालयंती सपदि जनहिते रक्ष मां देवि पद्मे ॥ २६ ॥ पुत्रार्थी लभते पत्रं धनार्थी लभते धनम् ॥ आत्मार्थी लभते मोक्षं देवि हे त्वत्प्रसादतः ॥ २७ ॥ इति पद्मावतीस्तोत्रम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

—हे सरस्वती ! हे वरकी दाता ! हे देवी पद्मावती ! हमारी रक्षा करो--हे माता ! आप कैसी हो-बडा जो कमलोंका सिंहासन उसके ऊपर विराजमान हो--फिर कामनासे युक्त हो--चतुरक्षरी विद्यासे युक्त हो--हर्षायमान है वदन जिसका--रजोगुणकी धारनेवाली लालरंग उज्ज्वल वस्त्र धारण किये हो--मुखारविंदमें सरस्वती बास करती है--कामराजमंत्रयुक्त हो--हंसारूढ हो--तीन नेत्र धारणकरने वाली--ऐसे रूप धारती ! वर देकर हमारी रक्षा करो--'विस्तीर्णे' इस नवें श्लोकका पाठ करे तो हंसारूढ भवानीका दर्शन हो. इस मंत्रको अष्टगंधसे हल्दीकी कलमसे ग्रहणकी रात्रिमें लिखकर मुकुटमें राखे तो मनोभिलषित प्राप्त

होवे न संदेह । इति नवमश्लोकविधानम् ॥ ९ ॥ मनोहर है रूप जिसका--महास्वरूप ॐकारके कणसे युक्त पार्श्वनाथ तेईसवां तीर्थंकर प्रगट उसको हम भक्तजन सदा ही ध्यान करते हैं । इतनी जगह रक्षा करो--जिह्वाके अग्रभागादिमें सर्व शरीरको सांगोपांग महाआनंदमें शुद्ध अतिशय करके हे मात ! रक्षा करो । 'जिह्वाग्रे, इस दशमें श्लोकका नित्य ही ध्यान करे तो ॐकारशब्द निराकाररूप निरंजन पद देवे । इस मंत्रसे झाडा देवे तो सर्व दोष मिटें । इस मंत्रसे अपनी रक्षा करनी चाहे तो मंत्रपढ कर शिखामें गांठ लगावे--यह मंत्र सदैव पाठ करनेसे शुभगतीको देती है-इति दशमश्लोकविधानम् ॥१०॥ हे माता ! भक्तजनोंकी रक्षा करो-वीसभुजाधारी दुष्टजनोंको विदीर्ण करो, काहेसे करो, तरवार धनुष कांड मुसल हल अंकुश अग्नि नाराचनामा बाण चक्र बिजली बरछी त्रिशूल बडा बडा गोफिया मुद्गर मुष्टि फांसी पाषाणोंकी वर्षा वृक्ष पर्वत गदा फरसी इन शस्त्रोंसे दुष्टजनोंको विदीर्ण करो--इन अस्त्रोंको धार कर हमारी रक्षा करो । 'खड्गैः' इस ग्यारहवें श्लोकके पठनसे ईश्वरी अनंत भुज धार कर भक्तजनोंके शत्रुओंका नाश करे । इत्येकादशश्लोकविधानम् ॥ ११ ॥ हे माता ! चतुरक्षरी मन्त्रसे क्षणमात्रमें शत्रुओंके समूहके विषे हमारी रक्षा करो । हे माता ! आप कैसी हो--सावित्री गायत्री कालरात्रि सरस्वती चंडी चामुंडा गांधारी गौरी धृति मति विजया कीर्ति--ह्रींकारसे वंदनीय है चरणारविंद जिसका--हे माता ! आप कैसी कैसी जगह रक्षा करो हो--संग्राममें जयकी दाता हो--अग्निमें जलकी दाता हो--दुर्जनके विषे शस्त्ररूप हो--ऐसी हे माता ! हमारी रक्षा करो । 'ब्रह्माणी' इस बारहवें श्लोकके



चतुर्मुखयन्त्रम्.

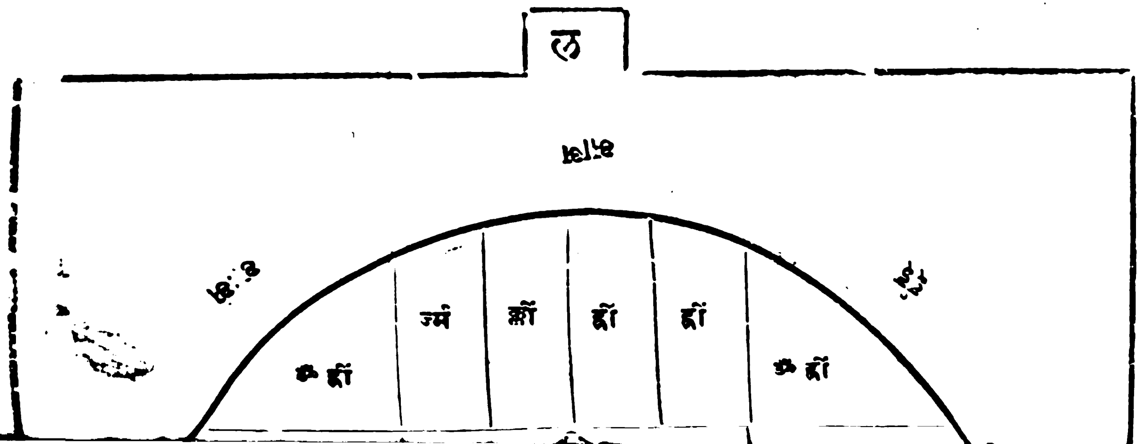
	ह्रीं		श्रीं	
ॐ	१	५	४	पद्म ॐ
रणे	८	६	५	व ह्रीं
निवा	१०	८	६	नी ह्रीं
दोष	६	१०	९	वर ह्रीं
	सर्व		दा	

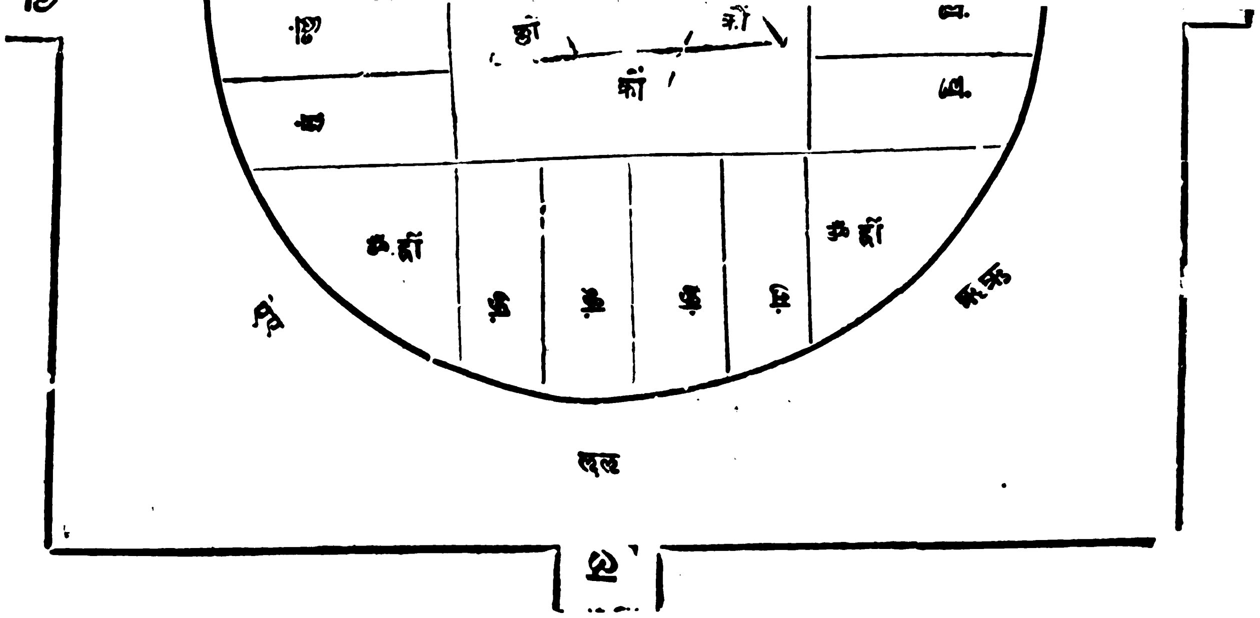
पाठसे अनन्त उपसर्गोंसे रक्षा करे । मन्त्रोद्धारः—ॐ क्षां ॐ क्षीं ॐ क्षूं ॐ क्षः स्वाहा—इस मन्त्रको पढ वैरियोंके समूहमें जावे तो मित्रके समान दीखे—न सन्देह । इति द्वादशश्लोकाविधानम् ॥ १२ ॥ हे लक्ष्मी ! भला भला लक्षणयुक्त सरस्वती ! इस प्रमाण मन्त्रयुक्त हे देवी! गुरुमुखात् मुखसे प्रकाश करो ।'भूविश्वे'इस तेरहवें श्लोकके पठनसे साक्षात् दर्शन होवे । मन्त्रोद्धार—चतुर्मुख यन्त्रको कटिमें बांधे तो भगंदर, प्लीहा, गोला, कठोदर, शोफोदर, जलोदर, वायशूल, सर्वशूल, पक्षाघात, चतुरशीति बातरोग दूर हो—इस श्लोकद्वारा नीमकी छालसे झाडा देवे तो इतना दोष मिटे। जीवमें सुख होवे । अथवा चतुर्मुखयन्त्रको गूगलके रससे भोजपत्रपर अथवा जलभांगराके रससे शिला या पीपलके पत्रऊपर लिख बांधे तो और श्लोकसे झाडा देवे तो सर्पादिविष दूर होवे। इसमें संदेह नहीं । अगर पद्मावती स्थापन यंत्रको दीपमालिकाकी पहिली रात्रिको अष्टगंधसे सुवर्णपत्रपर लिख इसके ऊपर पद्मावतीजीकी स्थापना करे। 'ब्रह्माणी कालरात्रि' इस मन्त्रका रात्रिभर जप करे, सोवे नहीं । पीछे दीपमालिकाकी रात्रिको पूजन कर मन्त्र जपे तो आकाशवाणी हो । पीछे यन्त्रको मस्तक भुजामें धारण करे तो अनेक कार्य सिद्ध हों। 'नान्यथा गुरुमुखात्' । इति त्रयोदशश्लोकविधानम ॥ १३ ॥ हे अंबिका! हे देवी ! हे पद्मावती ! हे कालिका! उत्कृष्ट हमारे सुखको प्रगट करो—हमारी रक्षा करो—हे माता ! आप कैसी हो—देवता राजा

पद्मावतीस्थापनयन्त्रम्.

	रं	रं	रं	रं	रं	रं	रं	रं	
रं	भू	एक	चन्द्र	भू	एक	बिंब	पृथ्वी	एक	रं
रं	ईक्षण	विश्व	युग्म	विश्व	युग्म	एक	युग्म	युग्म	रं
रं	पृथ्वी	बिंब	इक्षण	ईक्षण	पृथ्वी	पृथ्वी	चन्द्र	विश्व	रं
रं	भू	विश्व	ईशण	चन्द्र	बिंब	पृथ्वी	युग्म	एक	रं
रं	एक	युग्म	पृथ्वी	बिंब	चन्द्र	ईक्षण	विश्व	भू	रं
रं	चन्द्र	एक	ईक्षण	पृथ्वी	पृथ्वी	पृथ्वी	ईक्षण	बिंब	रं
रं	ईक्षण	विश्व	युग्म	युग्म	बिंब	एक	युग्म	युग्म	रं
रं	भू	पृथ्वी	बिंब	एक	भू	विश्व	ईक्षण	एक	रं
	रं	रं	रं	रं	रं	रं	रं	रं	

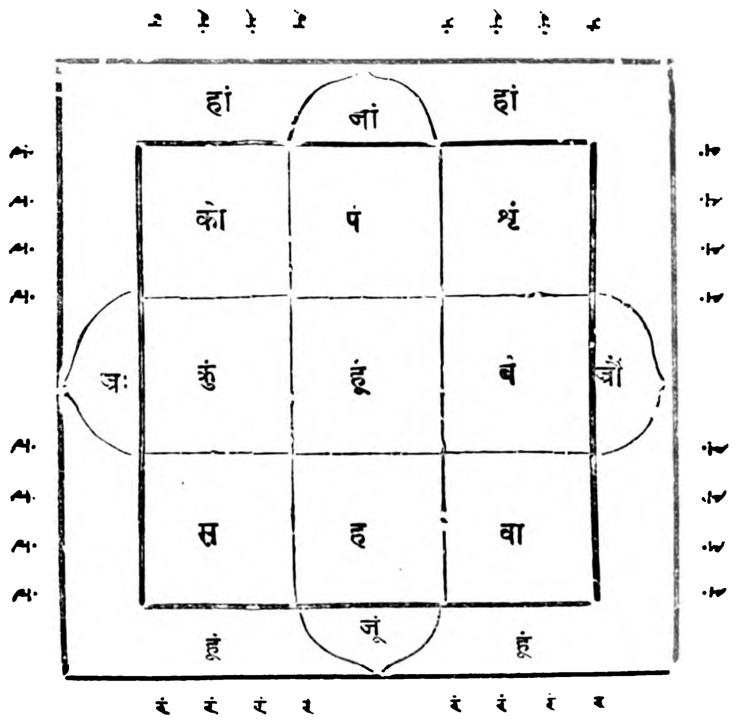
इन्द्रोंका समूह चक्रवर्ती किन्नर दानव दैत्य सिद्ध यक्ष देवता धरणीन्द्र मनुष्यादिकके मुकुटसे घिसगया है चरणारविंद जिसका-फिर माता ! आप कैसी हो सौम्यवंत हो लक्ष्मीवान् हो ऐसी हे माता ! आप मेरी रक्षा करो--इस श्लोकके पाठसे शरीरके अनंत रोग दूर होते हैं॥ इति चतुर्दशश्लोकविधानम् ॥ १४ ॥ हे माता ! हे पद्मावती! हे सरस्वती ! हे वरकी दाता ! हे देवी ! राज्यके अर्थ यह पूजा अंगीकार करो। धूप चंदन अक्षत मनोहर पुष्प भ्रमरयुक्त नानाजातिके फल पुष्प युक्त थालभरा दिव्य मनका हरनेवाला नैवेद्य इस लोकमें पुष्टिदाता ऐसे द्रव्यसे भक्तियुक्त हे माता ! पूजा अंगीकार करो । इस मंत्रसे भावपूजा द्रव्यपूजा अंगीकार करो । 'धूपैश्चंदन' इस श्लोकके पढनेसे राज्यके अर्थ माताकी सेवा अर्चा करे ॥ इति पंचदशश्लोकविधानम् ॥ १५ ॥ हे माता ! हे सरस्वती ! आपकी प्रभुता कहांतक वर्णन करूं- वहां देखो तहां सर्वस्थानोंमें आपही आप व्याप रही हो। हे माता ! आपको बौद्धमती तो तारा कहकर पूजते हैं। हे सरस्वती ! शैव पार्वती कहकर पूजते हैं--जैनी पद्मावती कहकर पूजते हैं-विख्यात वेदांती गायत्री कहकर पूजते हैं. हे कात्यायनी ! सांख्यमतविषे प्रकृति कहकर पूजते हैं--हे माता ! तुम्हारी महिमा कहांतक कहूं । 'तारां त्वां' इस सोलवें श्लोकके पाठसे सर्वत्र ईश्वरी षट्दर्शनमें व्यापरही है ॥ १६ ॥ नाहरके रूपको धरनेवाली हे देवी ! सिद्धरूपसे प्रगट होकर मुझको वचन देकर बोलो—हे पद्मावती देवी ! तत्काल दर्शन दो—किससे दो, इस मंत्रसे साक्षात् दर्शन देवे न संदेह । अस्य विधानम्—'धूपैश्चंदन' इस श्लोकसे पूजा करे। रक्त कनैलका पुष्प, गूगल, घृत, दशजातिकी बसा इनको मिलाकर त्रिकोणकुंडमें 'ॐ भूविश्वेक्षरणद्धें' इस मंत्रके आदि अंतमें 'ॐ मौं जें मैं' इन बीजोंको लगाकर इस मंत्रके द्वारा होम करे । दीपमालिका या होली अथवा ग्रहणसे प्रारंभ करके एकांत स्थानमें ३ दिन करे—बलि देवे दर्शन हो जब बलि देवे तो आवाज हो न संदेह ॥ इति सप्तदशश्लोकविधानम् ॥ १७ ॥ यह मंत्र ह्रींकार तत्त्वका स्वरूप प्रथमपदमें कहा श्रीपार्श्वनाथजीको कहा—बीज अक्षर हमारी रक्षा करो—कैसा मंत्र है—ह्रींकारयुक्त--चंद्रमा युक्त-कंकणाकार-सोलह कोठासे युक्त जिसके ऊपर आठकमलकी किरणोंसे यह मंत्रोद्धार त्रैलोक्यका वशीकरण पुरुषका वशी


ल
ॐ ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ॐ ह्रीं

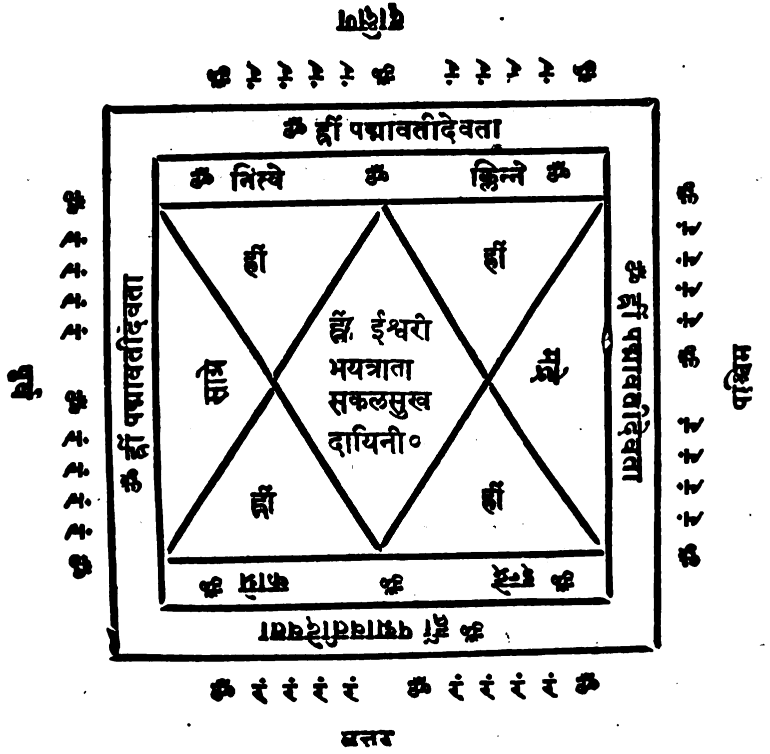

ॐ ह्रीं
ॐ ह्रीं
लल

करण—सर्वमंत्रोंका राजा गतिमुक्तिका दाता ऐसा मंत्रोद्धार आठ बार सदैव त्रिकाल जपे तो सर्वजन वशीकरण होवे—'ह्रीं कारे' इस श्लोकके जपसे 'त्रैलोक्यमोहनं ज्ञेयम्' ॥ इत्यष्टादशश्लोकाविधानम् ॥ १८ ॥ 'क्षुद्रोपद्रव' इस श्लोककें जपसें खोटा उपसर्ग दूर होवें—दारिद्र्यका विनाश होवें ॥ इत्येकोनविंशश्लोकाविधानम् ॥ १९ ॥ 'भक्तानां देहि सिद्धिं'—इस श्लोकसे ईश्वरी साक्षात् दर्शन देवे—मनमें धारे सो कहे ॥ इति विंशश्लोकाविधानम् ॥ २० ॥

हे माता ! तीन भुवनमें आप ही विचरी हो—तीन भुवनका इन्द्र धरणेन्द्र चक्रवर्ती आपको ही पूजता है—पातालमें तो धरणेन्द्रने पद्मावतीका रूप धारण किया पातालमेंसे निकले पीछे सर्पसर्पिणीका रूप धारण किया—उस रूपसे तीन लोक रचे। स्वर्ग लोकके विषे इन्द्र इन्द्राणी रूप आपने ही धारण किया—देव दैत्य सूर्य चन्द्रमासे पूजनीय हो—स्वर्ग लोकके देवतोंसे स्तवने योग्य है चरणारविंद जिसका—देवताओंके मुकुटोंके मोती मणियों करके पूजनीय हो। हे माता ! आप ही तीनों लोकोंमें सद्रूप हो—यह मंत्र रक्षारूप है। इस मंत्रसे शिखामें गांठ देवें तो सर्वत्र रक्षा होवें ॥ इत्येकविंशश्लोकाविधानम् ॥ २१ ॥ 'दिव्यस्तोत्रं पवित्रं' इस बाईसवें श्लोकको पढे तो अनंत ऋद्धि वृद्धि सौभाग्य पुत्र कुटुंब आरोग्य सब ही पावे ॥ इति द्वाविंशश्लोकाविधानम् ॥ २२ ॥ 'मातः सद्म' इस तेईसवें श्लोकसे पद्मद्वारा भवानीकी सेवा करे तो ईश्वरीका कमलरूप दर्शन होवे। इति त्रयोविंशश्लोकविधानम् ॥ २३ ॥ हाथके



विषे कमल है जिसके ऐसी हे देवी पद्मावती ! हमारी रक्षा करो-अष्टाक्षरी विद्यारूपी जो कमल उससे युक्त हो, उत्कट लीलाके प्रबंधसे युक्त हो-'ज्रों ज्रीं ज्रूं ज्रः' इस चतुरक्षरी मंत्रसे पवित्र हो-यह मंत्र कैसा है-चन्द्राकिरणसा उज्ज्वल है-फिर आपका रुधिर दूधके समान है-आपसे ही दूध झिरता है-फिर माता आप कैसी हो-सर्पसे केशोंका जूटा बांधा है जिसने-अनंत जो बल उससे कालकूट विषको दूर करती है-अकालमृत्युको दूर करती है फिर कैसी है अंबिका हाहाहुंकार ऐसे शब्दको धारण किया है--ऐसी हे मातः ! रजोगुण तमोगुण धारे हमारी रक्षा करो । यह यंत्रोद्धार-तांबा सुवर्ण किंवा पीपलके पत्र ऊपर दूधसे मंत्र रोज लिखे-यह श्लोक छः मासतक नित्य पढे-यंत्र बीस वार नित्य लिखचुके तब घोलकर पीजाय । इस प्रकार छः मास एकांतमें करे-- गुप्त राखे, दूध चावल भोजन करे--कुशोंकी शय्यापर सोवे--ब्रह्मचर्य पाले--कठिनता राखे--तो यह मंत्रोद्धार जो इच्छा करे सोही देवै न संदेह ॥ इति चतुर्विंशश्लोकविधानम् ॥ २४ ॥ हे मातः ! ध्यानके विषे आश्चर्यको करने



वाली त्रिभुवनवशीकरणी हे पद्मावती ! तुम हमारी रक्षा करो-हे माता ! आप कैसी हो-षट्कोणमें विराजमान हो, चक्रके मध्य हो-ॐकारसे युक्त हो, सरस्वती आप ही हो, कामनाका राजा आप ही हो-हंसपर सवार हो-मस्तकपर बिंदु धारण किये हो-फूला जो कमल उसकी किरणसे विराजमान हो-नित्य हो-संसारमें लिप्त हो, दो भुजा धारे हो, नागफांसी अंकुश धारे हो--जैसे

विकटरूप मंत्रोद्धारसे युक्त साक्षाच्चिदानंद ईश्वरी मंत्ररूप सर्व जीवोंकी सहायकर्त्ता ऐसी हे माता ! तुम ही जगत्में रक्षक हो—यंत्र यंत्रोद्धार अष्टगंधसे दीपमालिकाकी रात्रिको लिखिये, भुजामें धारण करिये तथा मस्तकमें धारण करिये । सकल लोको वश्यो भवति न संदेहः॥ इति पंचाविंशश्लोकविधानम् ॥ २५ ॥ हे देवी ! हे मनुष्योंकी हितकर्ता ! तत्काल हमारीउपसर्गमें रक्षा करो—आप कैसी हो, मंत्ररूप हो, आकार क्रौंकार ह्रींकार शब्दयुक्त षट्कोठासे विराजमान हो—त्रिकोणचक्र क्लीं सहित नीचले कोठाके विषे १४ स्वरोंसे युक्त हो—कंडीरकालका पुष्प वा अगथियाका जो पुष्प उससे २१००० प्रयोग करे, मंत्र जपे छः मासतक तो साक्षात्कार दर्शन होवे । कैसे रूपसे दर्शन होवे । त्रैलोक्यको कंपायमान करती, ऐश्वर्य करती, विकराल रूप धरण करके दर्शन देवे । तमोगुण धरके भक्तजनोंको समृद्धि देती ऐसी पद्मावतीका ध्यान करे । इस यंत्रको अष्टगंधसे लिख इस मंत्रको जपे 'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं पद्मावती सकल चराचर त्रैलोक्य व्यापी ह्रीं क्लीं प्लूं ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रों ह्रौं ह्रौं ह्रों ह्रः ऋद्धिवृद्धि कुरु कुरु स्वाहा' इस मंत्रको २१००००जप करे तो सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त हो ॥ २६ ॥ इति षड्विंशश्लोकविधानम् ॥ इति सम्पूर्णम् ॥

इति श्रीमंमहार्णवे मध्यखण्डे मिश्रतन्त्रे षोडशस्तंरगः ॥ १६ ॥ इति मध्यखण्डं समाप्तम् ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथोत्तरखण्डप्रारंभः ॥ तत्रादौ स्वप्नसिद्धितंत्रप्रारंभः ॥ तत्र स्वप्नवाराहीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा मंत्रमहोदधौ–ॐ ह्रीं नमो वाराहि घोरे स्वप्नं ठः ठः स्वाहा[1] ॥ इति पंचदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अस्य स्वप्नवाराहीमंत्रस्य ईश्वर ऋषिः । जगती छंदः । स्वप्नवाराही देवता । ॐबीजम् । ह्रीं शक्तिः । ठःठः कीलकम् । ममाभीष्टस्वप्नकथनार्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ ईश्वरऋषये नमः शिरसि १ । जगतीच्छंदसे नमो मुखे २ । वाराहीदेवतायै नमो हृदि ३ । ॐ बीजाय नमो गुह्ये ४ । ह्रींशक्तये नमः पादयोः ५ । ठःठः कीलकाय नमो नाभौ ६ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । नमो वाराहि तर्जनीभ्यां गमः २ । घोरे मध्यमाभ्यां नमः ३ । स्वप्नम् अनामिकाभ्यां नमः ४ । ठःठः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ह्रीं हृदयाय नमः १ । नमो वाराहि शिरसे स्वाहा २ । घोरे शिखायै वषट् ३ । स्वप्नं कवचाय हुं ४ । ठःठः नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । स्वाहा अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ॐ ॐ नमो दक्षिण पादे १ । ॐ ह्रीं नमो वामपादे २ । ॐ नं ममः लिंगे ३ । ॐ मों नमो दक्षिणकट्याम् ४ । ॐ वां नमो वामकट्याम् ५ । ॐ रां नमः कण्ठे ६ । ॐ हिं नमो दक्षगंडे ७ । ॐ घों नमः वामगंडे ८ । ॐ रें नमो दक्षनेत्रे ९ । ॐ स्वं नमो वामनेत्रे १० । ॐ प्नं नमो दक्षकर्णे ११ । ॐ ठं नमो वामकर्णे १२ । ॐ ठं नमो दक्षनासापुटे १३ । ॐ स्वां नमो वामनासापुटे १४ । ॐ हां नमो मूर्ध्नि १५ ॥ इति मन्त्रवर्णन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्–ॐ मेघश्यामरुचिं मनोहरकुचां नेत्रत्रयोद्भासितां कोलास्यां शशिशेखरामचलया दंष्ट्रातले शोभिताम् ॥ बिभ्राणां स्वकराम्बुजैरसिलतां चर्मासि पाशं सृणिं वाराहीमनुचिंतयेद्धयवरारूढां शुभालंकृतिम् ॥ १ ॥ इति ध्यायेत् ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडूकादिपर

---

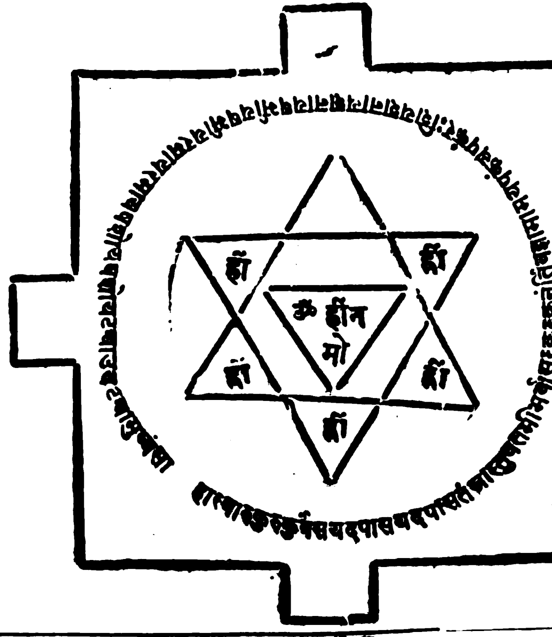
१ तंत्रांतरेऽपि–ॐ ह्रीं नमो वाराहि अघोरे स्वप्नं दर्शय ठः ठः स्वाहा ॥ इति मंत्रः प्रसिद्धः ॥ इसको खाटपर ही ग्यारहसौ जप कर सोनेसे ग्यरह दिनके भीतर ही प्रश्नका उत्तर अवश्य मिलता है इसमें संदेह नहीं जानना ।

तत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तथा च पूर्वादिक्रमेण ॐ जयायै नमः १ । ॐ विजयायै नमः २ । ॐ अजितायै नमः ३ । ॐ अपराजितायै नमः ४ । ॐ नित्यायै नमः ५ । ॐ विलासिन्यै नमः ६ । ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७ । ॐ अघोरायै नमः ८ । मध्ये ॐ मंगलायै नमः ९ । इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य' ॐ ह्रीं वाराहीयोगपीठायै नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा त्रिकोणमध्ये मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तथाच पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य्य–ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ॥ अनुज्ञां देहि वाराहि परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत ॥ तथाच षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च ॐ ह्रीं हृदयाय नमः । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ ॥ इति सर्वत्र ॥ नमो वाराहि शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० २ । घोरे शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ३ । स्वप्नं कवचाय हुम् । कवचश्रीपा० ४ । ठःठः नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । स्वाहा अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य–ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणगतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततः षोडशदले पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची । तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च ॐ उच्चाटिन्यै नमः । उच्चाटिनीश्रीपा० १ । ॐ उच्चाटिनीश्वर्यै नमः । उच्चाटिनीश्वरीश्रीपा० २ । ॐ शोषिण्यै नमः । शोषिणीश्रीपा० ३ । ॐ शोषिणीश्वर्यै नमः । शोषिणीश्वरीश्रीपा० ४ । ॐ मारिण्यै नमः । मारिणीश्रीपा० ५ । ॐ मारिणीश्वर्यै नमः । मारिणीश्वरीश्रीपा० ६ । ॐ भीषण्यै नमः । भीषणीश्रीपा० ७ । ॐ भीषणीश्वर्यै नमः । भीषणीश्वरीपा० ८ । ॐ त्रासिन्यै नमः । त्रासिनीश्रीपा० ९ । ॐ त्रासिनीश्वर्यै नमः त्रासिनीश्वरीश्रीपा० १० । ॐ कंपिन्यै नमः । कंपिनीश्रीपा०

११ । ॐ कंपिनीश्वर्य्यै नमः । कंपिनीश्वरीश्रीपा० १२ । ॐ आज्ञाविवर्तिन्यै नमः । आज्ञाविवर्तिनीश्रीपा० १३ । ॐ आज्ञाविवर्तिनीश्वर्य्यै नमः । आज्ञाविवर्तिनीश्वरीश्रीपा० १४ । ॐ वस्तुजातेश्वर्य्यै नमः । वस्तुजातेश्वरीश्रीपा० १५ । ॐ सर्वसंपादिन्यै नमः । सर्वसंपादिनीश्रीपा० १६ ॥ इति षोडशशक्तीः संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततोऽष्टदले प्राचक्रिमेण वामावर्तेन च ॐ ब्राह्म्यै नमः । ब्राह्मीश्रीपा० १ । ॐ माहेश्वर्य्यै नमः । माहेश्वरीश्रीपा० २ । ॐ कौमार्यै नमः । कौमारीश्रीपा० ३ । ॐ वैष्णव्यै नमः । वैष्णवीश्रीपा० ४ । ॐ वाराह्यै नमः । वाराहीश्रीपा० ५ । ॐ इन्द्राण्यै नमः । इन्द्राणीश्रीपा० ६ । ॐ चामुंडायै नमः । चामुंडाश्रीपा० ७ । ॐ महालक्ष्म्यै नमः । महालक्ष्मीश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ देवताः संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततोऽष्टदलाग्रेषु प्राचीक्रमेण दक्षिणावर्तेन च ॐ असितांगभैरवाय नमः । असितांगभैरवश्रीपा० १ । ॐ रुरुभैरवाय नमः । रुरुभैरवश्रीपादुकां० २ । ॐ चंडभैरवाय नमः । चंडभैरवश्रीपा० ३ । ॐ क्रोधभैरवाय नमः । क्रोधभैरवश्रीपा० ४ । ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः । उन्मत्तभैरवश्रीपा० ५ । ॐ कपालभैरवाय नमः । कपालभैरवश्रीपा० ६ । ॐ भीषणभैरवाय नमः । भीषणभैरवश्रीपा० ७ । ॐ संहारभैरवाय नमः । संहारभैरवश्रीपा० ८ । इत्यष्टौ भैरवान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥ ४ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण ॐ लं इन्द्राय नमः १ । ॐ रं अग्नये नमः २ । ॐ मं यमाय नमः ३ । ॐ क्षं निर्ऋतये नमः ४ । ॐ वं वरुणाय नमः ५ । ॐ यं वायवे नमः ६ । ॐ कुं कुबेराय नमः ७ । ॐ हं ईशानाय नमः ८ । इन्द्रेशानयोर्मध्ये ॐ आं ब्रह्मणे नमः ९ । वरुणनिर्ऋतिमध्ये ॐ ह्रीं अनंताय नमः १० ॥ इति दशदिक्पालान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति पंचमावरणम् ॥ ५ ॥ तद्बाह्ये इन्द्रादिसमीपे ॐ वं वज्राय नमः १ । ॐ शं शक्तये नमः २ । ॐ दं दंडाय नमः ३ । ॐ खं खड्गाय नमः ४ । ॐ पां पाशाय नमः ५ । ॐ अं अंकुशाय नमः ६ । ॐ गं गदायै नमः ७ । ॐ त्रि त्रिशूलाय नमः ८ । ॐ पं पद्माय नमः ९ । ॐ चं चक्राय नमः १० ॥ इत्यस्त्राणि संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति षष्ठावरणम् ॥ ६ ॥ इत्यात्र

रणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपः । तिलमिश्रितनीलपद्मेन दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च—लक्षं जपेद्दशांशेन नीलपद्मैस्तिलैः शुभैः ॥ जुहुयात्पूर्वसंप्रोक्ते पीठे संपूजयेदिमाम् ॥ १ ॥ एवं सिद्धे मनुं मंत्री काम्यकर्मणि योजयेत् ॥ तर्पयेन्नारिकेलोत्थैर्जलैस्तीर्थोद्भवैरपि ॥ २ ॥ मानयेत्तरुणीवर्गान् सर्वकामार्थसिद्धये ॥ कृष्णपक्षेऽष्टमीघस्रे भूताहे वा कृतव्रतः ॥ ३ ॥ चतुष्पथान्नदीकूलद्वयात्कौलालवेश्मनः ॥ मृदमानीय धत्तूररससंयुक्तया तया ॥ ४ ॥ रचयेत्पुत्तलीं रम्यां मध्यास्य स्थापनान्विताम् ॥ ततः प्रोक्ताम्बरे यंत्रं नृकाकाजासृजा लिखेत् ॥ ५ ॥ चितांगारयुतां योनिं षट्कोणं भूपुरान्वितम् ॥ तदंते मंत्रमालिख्य वेष्टयेन्मनुनाऽमुना ॥ वेष्टनमंत्रो यथा—साध्यमुच्चाटय २ शोषय २ मारय २ भीषय २ नाशय २ शिरः कंपय २ ममाज्ञावर्तिनं कुरु २ सर्वाभिमतवस्तुजातं संपादय २ सर्वं कुरु २ स्वाहा ॥ अनेन वेष्टितं कृत्वा कृतं देवीप्रतिष्ठितम् ॥ ६ ॥ पुत्तल्या हृदि विन्यस्य यजेत्तामुक्तमार्गतः ॥ तदग्रे प्रजपेन्मंत्रं रात्रावेकांतमाश्रितः ॥ ७ ॥ सहस्रं साष्टकं भूयः पूजयेत्तां समाहितः ॥ एवं कृते नरा नार्यो राजानो राजवल्लभाः ॥ ८ ॥ सिंहा गजा मृगाः क्रूरा भवेयुर्वशगा ध्रुवम् ॥ ९ ॥ अन्यः प्रयोगः—चित्ते ध्यात्वा निजं कार्यं शयीत विजने व्रती ॥ यथा

वाराहीवशीकरणयंत्रम् ।



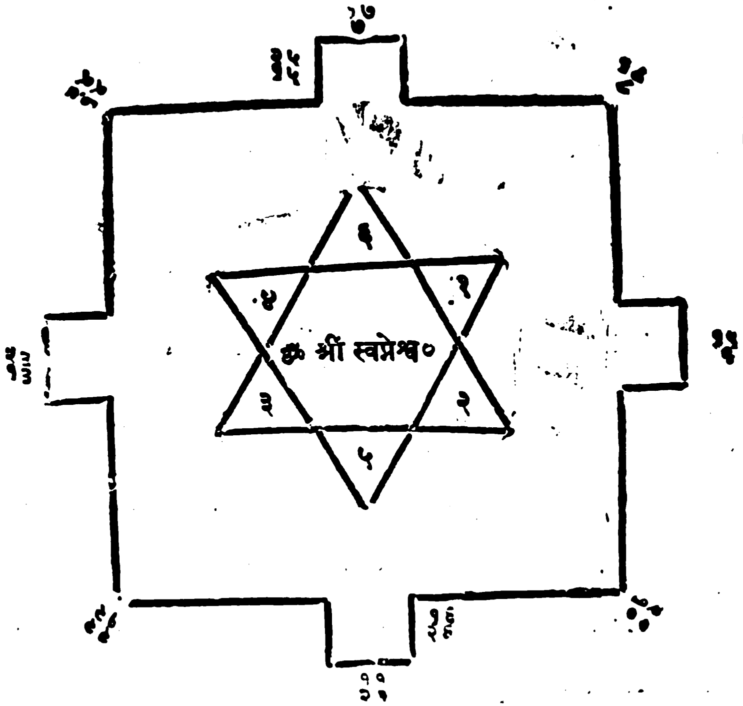
१ कृष्णपक्ष [illegible] ॥ २ नृकाका[illegible] ॥ ३ [illegible] ॥

भावि तथा देवी स्वप्ने वदति मंत्रिणे ॥ बहुना किमिहोक्तेन वाराहीष्टं प्रयच्छति ॥ १० ॥ इति पंचदशाक्षरवाराहीमंत्रप्रयोगः ॥ १ ॥

॥ अथ स्वप्नेश्वरीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा मंत्रमहोदधौ—ॐ श्रीं स्वप्नेश्वरि कार्यं मे वद स्वाहा ॥ इति त्रयोदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अस्य स्वप्नेश्वरीमंत्रस्य उपन्युर्ऋषिः। बृहती छंदः। स्वप्नेश्वरी देवता। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ उपमन्यु ऋषये नमः शिरसि १। बृहतीच्छंदसे नमो मुखे २। स्वप्नेश्वरीदेवतायै नमो हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वांङ्गे ४ ॥ इति ऋष्यादि न्यासः ॥ ॐ श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। स्वप्नेश्वरि तर्जनीभ्यां नमः २। कार्यं मध्यमाभ्यां नमः ३। मे अनामिकाभ्यां नमः ४। वद कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ श्रीं हृदयाय नमः १। स्वप्नेश्वरि शिरसे स्वाहा २। कार्यं शिखायै वषट् ३। मे कवचाय हुम् ४। वद नेत्रत्रयाय वौषट् ५। स्वाहा अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्—ॐ वराभये पद्मयुगं दधानां करैश्चतुर्भिः कनकासनस्थाम् ॥ सितांबरां शारदचन्द्रकांतिं स्वप्नेश्वरीं नौमि विभूषणाढ्याम् ॥ १ ॥ इति ध्यायेत् ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति संपूज्य नवपीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तथा च पूर्वादिक्रमेण—ॐ जयायै नमः १। ॐ विजयायै नमः २। ॐ अजितायै नमः ३। ॐ अपराजितायै नमः ४। ॐ नित्यायै नमः ५। ॐ विलासिन्यै नमः ६। ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७। ॐ अघोरायै नमः ८। मध्ये ॐ मंगलायै नमः ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य 'ॐ स्वप्नेश्वरीयोगपीठात्मने नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तथाच षट्कोणकेसरेषु आग्नेयादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च—ॐ श्रीं हृदयाय नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ ॥ इति सर्वत्र ॥ स्वप्नेश्वरि शिरसे स्वाहा। शिरःश्रीपा० २। कार्यं शिखायै वषट्। शिखाश्रीपा०

३ । मे कवचार्थे हुम् । कवचश्रीपा० ४ । वद नेत्रत्रयाय वौषट्[1] । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । स्वाहा अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य--ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य रात्रौ लक्षं जपेत् ॥ जपदशांशेन बिल्वपत्रैर्होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च--लक्षं जपेद्बिल्वपत्रैर्जुहुयात्तद्दशांशतः ॥ रात्रौ संपूज्य देवेशीमयुतं पुरतो जपेत् ॥ १ ॥ शयीत ब्रह्मचर्य्येण भूमौ दर्भोत्तराजिने ॥ देव्यै निवेद्य स्वं हार्दं सा स्वप्ने वदति ध्रुवम् ॥ २ ॥ इति त्रयोदशाक्षरस्वप्नेश्वरीमंत्रप्रयोगः ॥ २ ॥ तंत्रांतरेऽपि--ॐ ह्रीं

स्वप्नेश्वरीपूजनयन्त्रम् ।



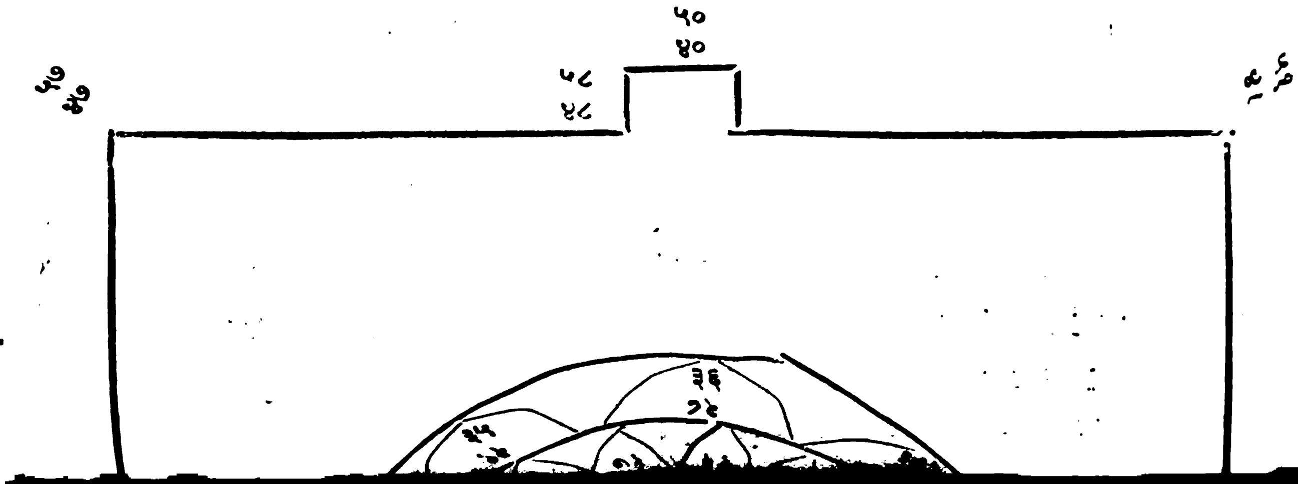
मानसे स्वप्नेश्वरि विचार्य विद्ये वेद वद स्वाहा ॥ इति विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--शुचिर्भूत्वा हविष्यान्नं भुक्त्वायुतं जपेत् ॥ संध्याकाले पूजां कुर्यात् । स्वप्ने त्रैकालिकं शुभाशुभं तस्मै देवी कथयति वर्तमानं स जानाति ॥ इति विंशत्यक्षरमंत्रप्रयोगः ॥ ३ ॥

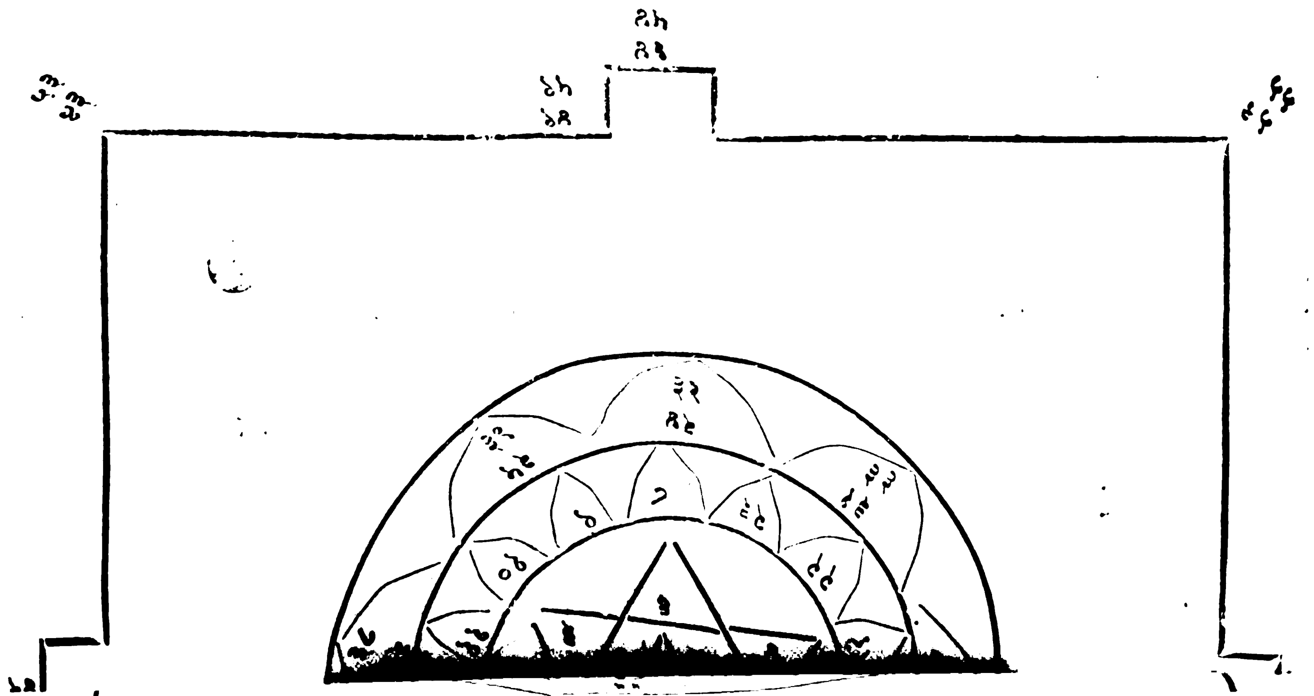
[1] तंत्रांतरेऽपि वषट् इति पाठः ।

अन्यः ॥ मंत्रो यथा–ॐ नमः स्वप्नचक्रेश्वरि स्वप्ने अवतर अवतर गतं वर्तमानं कथय कथय स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–चौका दे दीपक बतासा धरे। भोग कुमारी कन्याको बांट देवे तो इक्कीस हजार जप करनेसे स्वप्नमें प्रश्नका उत्तर देती हैं। एकलाख जप करनसे स्त्रीरूप प्रत्यक्ष आकर वर देती है इसमें संदेह नहीं। यह बडा चमत्कारी मंत्र एक महात्माका उपदेश कियाहुआ है ॥ ३ ॥

॥ अथ हनूमन्मंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा--ॐ नमो हनुमंताय आवेशय आवेशय स्वाहा ॥ इत्यष्टादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--पवित्र हो रक्त वस्त्र धारणकर रक्त आसनके ऊपर बैठ हनुमानजीकी रक्तचन्दनकी प्रतिमा स्थापन करके, उस मूर्तिकी प्राणप्रतिष्ठा करके पंचोपचार पूजन करे, सिंदूर चढावे, गुडके चूरमेका नैवेद्य लगावे। उस नैवेद्यको आठ पहर मूर्तिके सामने धरा रहने दे। जब दूसरे दिन नैवेद्य लगावे, उस समय पहले दिनके नैवेद्यको उठाकर किसी पात्रमें इकट्ठा करता जावे। अनुष्ठान पूरा होनेके पीछे किसी गरीब ब्राह्मणको देदेवे, अथवा पृथ्वीमें गाड देवे। घृतका दीपक बाले, निर्जनस्थानमें रात्रिके समय ग्यारहसो ११०० मंत्र जपे, पीछे किसीसे बोले नहीं। उसी पूजनके स्थानमें रक्त वस्त्रके ऊपर सोजावे। ऐसा करनेसे ग्यारह ११ दिनके भीतर श्रीहनुमानजी महाराज रात्रिके समय ब्रह्मचारीका स्वरूप हो स्वप्नमें साधकको दर्शन देते हैं और साधकके प्रश्नका यथोचित उत्तर दते हैं और साधकको अभिलषित वार्ता बताते हैं इसमें संदेह नहीं। यह हमारा कईवार अनुभव कियाहुआ सिद्ध प्रयोग एक महात्मासे मिला था। यह दुष्ट पुरुषोंको देना योग्य नहीं है ॥ इत्यष्टादशाक्षरहनुमन्मंत्रप्रयोगः ॥ ४ ॥ अथ योजनगंध योगिनीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा–जोजनगंधा जोगिनी। ऋद्धसिद्धमें भरपूर ॥ मैं आयो तोय जाचणे। करजो कारज जरूर ॥ इति चतुस्त्रिंशदक्षरो दोहारूपमंत्रः ॥ अस्य विधानम्–गेहूंका आटा सवासेर १। घृत अढाई पाव, चीनी अढाई पाव, इन्होंका कसार भूनकर तैयार कर ले। पीछे शनिवारको सूर्य्योदयसे पहले जंगलमें जाकर कीडीनगरा अर्थात् चींटा चींटीके बिलोंमें थोडा थोडा कसार गेरता जावे और मंत्र बोलताजावे। जंगलमें खूब फिरे; जब थक जावे किसी वृक्षके नीचे विश्राम

स्वप्नवाराहीपूजनयन्त्रम् ।





ले। उसी समय निद्रावस्था प्राप्त होनेसे एकाकी पुरुष वा स्त्री आकर सामने खडा होजावैगा और साधकके मनोप्सित कार्यको अच्छे स्पष्ट वचनोंसे बतावेगा।उसकी बात सब साधकको अच्छीतरह सुनाई पडेगी। यह ४ पहरका प्रयोग निराहार व्रत करके करना योग्य है। यह पहले ही दिन प्रश्नका उत्तर देदेता है इसमें कुछ संदेह नहीं। कईदिनोंतक करनेसे तो मनोवांछित फल प्राप्त होता है। रात्रिको घरमें आकर भोजन करना चाहिये। यह भी हमारा अनुभव करा सिद्ध प्रयोग है॥ इति चतुर्स्त्रिंशदक्षरयोजनगंधायोगिनीमंत्रप्रयोगः ॥५ ॥ ॥ अथ चंद्रयोगिनीमंत्रप्रयागेः ॥ मंत्रो यथा शिवार्चनचन्द्रिकायाम्--ॐ ह्रीं श्रीं सः नमः श्मशानवासिनि चंडयोगिनि स्वाहा ॥ इत्यष्टादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--पूर्वमेवायुतं जप्त्वा कृत्वा होमं दशांशतः ॥ घृताक्तै रक्तपुष्पैश्च पूर्णांते च पुनर्जपेत् ॥ १ ॥ आपादांतं लिपेद्गात्रं रात्रौ मंत्रं समुच्चरेत् ॥ यावन्निद्रावशं याति स्वप्नं दत्ते च सागता ॥ वांछितं यच्छुभं किंचित्स्यात्सिद्धं वा न सिद्ध्यति ॥ २ ॥ इति चंडयोगिनीमंत्रप्रयोगः ॥ ६ ॥ अथ मणिभद्रमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा–ॐ नमो मणिभद्राय चेटकाय सर्वकार्यसिद्धये मम स्वप्नदर्शनानि कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति त्रयस्त्रिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-रात्रिके समय तेलका दीपक बाले, उस दीपकमें फूटी कौडी गेरे, उसके सम्मुख ग्यारहसौ ११०० मंत्र जपे, जप करनेके पीछे लाल कनेरके फूलोंको १०८ वार मंत्रद्वारा अभिमंत्रित करके उन पुष्पोंको ताम्रकी डब्बीमें बंद कर शिरके नीचे देकर सो जावे। एक वखत भोजन करे।ऐसा करनेसे ग्यारह११दिनके भीतर शुभाशुभ या जैसा होनेवाला हो स्वप्नद्वारा अवश्य कहता है इसमें संदेह नहीं ॥ इति मणिभद्रमंत्रप्रयोगः ॥ ७ ॥ अथ स्वप्नमातङ्गीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा–ॐ नमः स्वप्नमातंगिनि सत्यभाषिणि स्वप्नं दर्शय दर्शय स्वाहा ॥ इति चतुर्विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–दिनमें निर्जल व्रत करके रात्रिके समय १०८ वार मंत्रको जपकर भूखा ही सोजावे तो पहिली ही रात्रिमें स्वप्न हो जाता है। कई दिनोंतक करनेकी आवश्यकता नहीं पडती ॥ इति स्वप्नमातङ्गीमंत्रप्रयोगः ॥ ८ ॥ अथ यक्षिणीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा–ॐ ह्रींश्रींवालीलंवाहुलीक्षांक्षींक्षंक्षेंक्षः स्वाहा ॥ इति षोडशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–पूर्वमुखोऽयुतं

जपेत् । एकभुक्तव्रतं कुर्यात् । जपांते कुशशय्यायां सुप्तः तदा शुभाशुभं स्वप्ने पश्येत् ॥ इति यक्षिणीमंत्रप्रयोगः ॥ ९ ॥ ॥ अथ घंटाकर्णीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा—ॐ यक्षिणि आकर्षिणि घंटाकर्णे घंटाकर्णे विशाले मम स्वप्नं दर्शय दर्शय स्वाहा ॥ इति त्रिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—रात्रौ सहस्रं जपेत् ॥ एकादशदिनांतरे स्वप्ने वदति न संदेहः ॥ १० ॥ अथ कर्णपिशाचिनीमंत्र प्रयोगः ॥ मंत्रो यथा—ॐ नमः कर्णपिशाचिनि अमोघसत्यवादिनि मम कर्णे अवतरावतर अतीतानागतवर्तमानानि दर्शय दर्शय मम भविष्यं कथय कथय ह्रीं कर्णपिशाचिनि स्वाहा॥इति पंचाधिकषष्ट्यक्षरो मंत्रः॥ अस्य विधानम्—त्रिशूलका पूजन कर दिनमें घृतका दीपक बाल ग्यारहसो मंत्र जपे। पीछे रात्रिमें इसीतरह त्रिशूलका पूजन कर घृत तेल दोनोंका दीपक बाल ग्याहरसौ ११०० मंत्र जपे। ऐसा करनेसे ग्यारह ११ दिनके भीतर प्रश्नका उत्तर स्वप्नद्वारा अवश्य देती है इसमें संदेह नहीं ॥ इति पंचषष्ट्यक्षरकर्णपिशाचिनी मंत्रप्रयोगः ॥ ११ ॥ तंत्रांतरेऽपि मंत्रो यथा—ॐ नमः कर्णपिशाचिनि मत्तकारिणि प्रवेषे अतीतानागतवर्तमानानि सत्यं कथय मे स्वहा॥ इति षट्त्रिंशदक्षरो मंत्रः॥ अस्य विधानम्—इस मंत्रको आम्रके पट्टेपर गुलाल बिछा अनारकी कलमसे रात्रिके समय एकसौ आठ मंत्र लिखकर मिटाता जावे लिखते समय मंत्रका उच्चारण भी करता जावे ॥ अंतवाले मंत्रका पंचोपचार पूजन करके ग्यारह सौ ११०० मंत्रका जप करे। पीछे उस मंत्र लिखे हुए पट्टेको सिरहाने देकर सोजावे। ऐसा करनेसे इक्कीस २१ दिनके भीतर साधकके प्रश्नका उत्तर यथोचित ठीक ठीक स्पष्ट वचनोंसे स्वप्नमें देती है,इसमें कुछ संदेह नहीं। यह हमारा कई बार अनुभव किया हुआ सिद्ध प्रयोग है,इसमें संदेह नहीं जानना। अगर इसको होली या दिवाली या ग्रहण.से प्रारंभ करके खट्वाके ऊपर ही पांचसो मंत्र जपकर सोया करे तो अवश्यही साधकके प्रश्नका उत्तर देती है। कई तरहकी बातोंसे सूचित करती है,परीक्षा कर देखो॥ इति षट्त्रिंशदक्षरकर्ण पिशाचिनीमंत्रप्रयोगः ॥ १२ ॥ कामरत्नतंत्रे मंत्रो यथा—ॐ [1]ह्रीं सः नमो भगवति कर्णपिशाचिनि चंडवेगिनि वद वद स्वाहा

[1] तन्त्रांतरेऽपि—ॐ क्रीं सनामशक्तिभगवति कर्णपिशाचिनि चंडरोपिणि वद वद स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥

इति षड्विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-पूर्वसेवायुतं जप्त्वा कृष्णकन्याभिमंत्रितः ॥ हस्तपादप्रलेपेन सुप्तो वक्ति शुभाशुभम् ॥ त्रैलोक्ये यादृशी वार्ता तादृशं कथयेत्फलम् ॥ इति षड्विंशत्यक्षरकर्णपिशाचिनीमंत्रप्रयोगः ॥ १३ ॥ तंत्रांतरेऽपि मंत्रो यथा-- ॐ हंसोहंसः नमो भगवति कर्णपिशाचिनि चंडवेगिनि स्वाहा ॥ इति चतुर्विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--पूर्वसेवायुतं जप्त्वा कुष्ठकल्काभिमंत्रितम् ॥ हस्तपादप्रलेपेन स्वप्ने वक्ति शुभाशुभम् ॥ त्रैलोक्ये यादृशी वार्ता तादृशं कथयेत्फलम् ॥ १ ॥ इति चतुर्विंशत्यक्षरकर्णपिशाचिनीमंत्रप्रयोगः ॥ १४ ॥ तंत्रांतरेऽपि मंत्रो यथा--ॐ भगवति चंडकर्णपिशाचिनि स्वाहा ॥ इति सप्तदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--पूर्वसेवायुतं जप्त्वा कृत्वा होमं दशांशतः ॥ घृताक्तै रक्तकुष्ठैश्च पूर्णांते च पुनर्जपेत् ॥ १ ॥ आपादांतं लिपेद्गात्रं रात्रौ मंत्रं समुच्चरेत् ॥ यावन्निद्रावशं याति स्वप्ने दत्ते च सा गता ॥ वांछितं यच्छुभं किंचित्स्यात्सिद्धं वा न सिद्ध्यति ॥ २ ॥ इति सप्तदशाक्षरकर्णपिशाचिनीमंत्रप्रयोगः ॥ १५ ॥ अथ चिंचिनीपिशाचिनीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा--ॐ ह्रीं चीं चिंचिनि पिशाचिनि स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--पूर्वसेवायुतं जप्त्वा होमं कुर्यात्प्रयत्नतः ॥ सिद्धे मंत्रे प्रकुर्वीत प्रयोगानिष्टसिद्धये ॥ १ ॥ रोचनाकुंकुमक्षीरैः पद्ममष्टदलं लिखेत् ॥ विरजस्के भूर्जपत्रे मायाबीजं दले दले ॥ २ ॥ लिखित्वा धारयेन्मूर्ध्नि इमं मंत्रायुतं जपेत् ॥ अतीतानागतं सर्वं स्वप्ने वदति देवता ॥ ३ ॥ इति द्वादशाक्षरचिंचिनीपिशाचिनीमंत्रप्रयोगः ॥ १६ ॥

॥ अथ चामुंडामंत्रप्रयोगः ॥ ॐ ह्रीं[2] आगच्छागच्छ चामुंडे श्रीं स्वाहा ॥ इति त्रयोदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--मृद्गोमयैर्लिपेद्भूमिं कुशांस्तत्र समास्तरेत् ॥ पंचोपचारनैवेद्यैर्देवदेवीं प्रपूजयेत् ॥ १ ॥ साक्षसूत्रे करे धृत्वा पूर्वं सेवायुतं जपेत् ॥ सूर्यकोटिसमां

१प्रथम दश हजार जप करे, पीछे कृष्णकन्या अर्थात् कालेग्वारपाठेको अभिमन्त्रित कर हाथ पावोंमें लेप करके सोवे तो त्रैलोक्यकी शुभाशुभ वार्ता कहै ॥ २ तंत्रांतरेऽपि मंत्रो यथा-ॐ ह्रीं आगच्छागच्छ चामुण्डे श्रीं स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ ३ मट्टी और गौके गोबरसे पृथ्वी लीपकर बहुतसे कुश बिछावे-पंचोपचारसे देवदेवीका पूजन करे-रुद्राक्षकी मालासे प्रथम दश हजार जप करे-कोटिसूर्यके समान प्रकाशवालीका ध्यान करे-पीछे रात्रिको जप करके सोवे तो आधी रातको देवी आकर स्वप्नद्वारा शुभाशुभ कहती है ॥

ध्यात्वा रात्रौ पाणितलं जपेत् ॥ २ ॥ अर्द्धरात्रे गते देवी वार्तां वक्ति शुभाशुभाम् ॥ ३ ॥ इति त्रयोदशाक्षरचामुंडामंत्रप्रयोगः ॥ १७ ॥ ॥ अथ रुद्रमंत्रः ॥ मंत्रो यथा—ॐ नमो भगवते रुद्राय श्मशानवासिने चंडयोगिने स्वाहा ॥ इति त्रिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—करंजवृक्षमारुह्य जपेदष्टसहस्रकम् ॥ ततं चांगेर्घृताक्तैश्च दशांशं होममाचरेत् ॥ १ ॥ ततं चांगेन कल्केन आपादांतं विलेपयेत् ॥ जपांते पूर्ववत्स्वप्ने कथयेत्सा शुभाशुभम् ॥ २ ॥ इति त्रिंशदक्षररुद्रप्रयोगः ॥ १८ ॥ तंत्रांतरेऽपि मंत्रो यथा—ॐ नमो भगवते रुद्राय कर्णपिशाचाय स्वाहा ॥ इत्यष्टादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अलाबुमूलिकां पुष्ये तथा सर्पाक्षिमूलिकाम् ॥ संप्राह्य मंत्रितां यत्नाद्रक्तसूत्रेण वेष्टयेत् ॥ मंत्रेण मूर्ध्नि बध्नीयाद्वदत्येव शुभाशुभम् ॥ १ ॥ इत्यष्टादशाक्षररुद्रमंत्रप्रयोगः ॥ १९ ॥ तंत्रांतरेऽपि मंत्रो यथा—ॐ भगवन्देवदेवेश शूलभृद्वृषवाहन ॥ इष्टानिष्टे समाचक्ष्व मम सुप्तस्य शाश्वते ॥ १ ॥ ॐ नमोऽजाय त्रिनेत्राय पिंगलाय महात्मने ॥ वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः ॥ २ ॥ स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषतः ॥ क्रियासिद्धिं विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ ३ ॥ इति श्लोकत्रयात्मको मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—स्नानादिकं कृत्वा हरिपादांबुजं स्मृत्वा कुशासनादिशय्यायां यथासुखं स्थित्वा मंत्रेण अष्टोत्तरशतवारं शिवं संप्रार्थ्य निद्रां कुर्यात् ॥ ततः स्वप्नं दृष्टं निशि प्रातर्गुरवे विनिवेदयेत् ॥ अथवा स्वयं स्वप्नं विचारयेत्[1] ॥ २० ॥ अथ मुसलमानीमंत्रः ॥ बिस्मिल्लाहुर्रहेमानुर्रहीम—अल्लाहोरबीमहम्मदरसूलरब्बाजेकीतस्वीरकुलआलमहजूरभेजेंगेमवक्कलल्यावेंगेजरूर ॥ इत्येकोनचत्वारिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—प्रथम अमलमें करनेके वास्ते सवालाख

---

१ लिंगचन्द्रार्कयोर्बिंबं भारतीं जान्हवीं गुरुम् । रक्ताब्धितरणं युद्धे जयनेलक्ष्मर्चनम् ।शिखिदं सरथां गाढये रथे स्थानं च मोहनम्—आरोहणं खारसस्य धराला‌भश्च निम्नगाम् । प्रासादः स्यंदनः पद्म छत्रं कन्याद्रुमः फली ॥ नागो दीपो हयः पुष्पं वृषभोऽश्वश्च पर्वतः—सुराघटं प्रहास्तारा नारी सूर्योदयोऽप्सराः—हर्म्यशैल विमानानामारोहो गगने गमः—मद्यमांसदनं विष्ठालेपो रुधिरसेचनम् । दध्योदनादनं राज्याभिषेको गोवृषध्वजाः । सिंहं सिंहासनं शंखानादितं रोचनादिभिः चंदनं तर्पणश्चर्षा स्वप्ने दर्शनं शुभम् तैलाभ्यक्तः कृष्णवर्णो नग्नो,नाग र्दवायसो—शुष्कं कंटकिवृक्षश्च चांडाली दीर्घकंधरः—प्रासादस्तलहीनश्च नैते स्वप्ने शुभावहाः—इति स्वयं स्वप्नं विचारयेत ×

१२५००० जपे, बृहस्पतिवारसे प्रारंभ करे, पश्चिम मुख बैठे। इस प्रकार करनेसे मंत्र अमलमें आजाता है। पीछे ग्यारहसै मंत्रसे लेकर ग्याराहजार मंत्र तक जितना होसके नित्य जपे तो इक्कीस दिनके भीतर स्वप्नद्वारा प्रश्नका उत्तर अवश्य मिल जायगा इसमें कुछ संदेह नहीं परंतु पेशाब करनेके पीछे इस्तिंजा करे अर्थात् इन्द्रीको मट्टीसे पोंछ डाला करे और बृहस्पतिवारके दिन कबरपर जाकर रकाबी फूल अतर चढावे, मिठाई चढावे, धूप लोहबानकी देवे, फकीरोंको जिमावे। इन सब कामोंके करनेसे मुसलमानी मंत्र जल्दी ही फलीभूत होते हैं और सम्पूर्ण मुसलमानी मंत्रोंमें उलटी माला फेरनी पडती है, इस मंत्रके द्वारा और भी प्रयोजन सिद्ध होजाता है ॥ २१ ॥ अन्यः—बिस्मिल्लाहुर्रहेमानुर्रहीम् शमशैरतवरैलशलैआदमहजरतमहबूबसुभानीहाजर ॥ इति सप्तविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—इस मंत्रको दशहजार नित्य जपे तो इक्कीस दिनके भीतर होनहार स्वप्नद्वारा कहे। इस्तिंजादि करना योग्य है ॥ २२ ॥ अन्यः—याबासितो ॥ इति चतुरक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—पश्चिममुख हो चौमुखा दीपक बालके उलटी माला ३३० तीनसो तीस अर्थात् तेतीस हजार मंत्र नित्य जपे तो ४१ दिनमें सिद्ध हो। पीछे नित्य दशहजार पढकर सोया करे तो साधकके प्रश्नका उत्तर ठीक ठीक देता रहेगा। बहुतसी बातें बतावेगा। यह बडा चमत्कारी अनुभव किया हुआ मंत्र है॥२३॥अथ नीलामके वास्ते पीरका कलमा॥ मंत्रो यथा—याजरऽवाजखिज्रमैतेराइलियास—लिल्लामकादिलचित्तमेरेपास ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—कूपेके ढाणेपर रात्रिके समय एकांतस्थानमें लोहबानकी धूप देता हुआ १०८ वार उलटी मालाद्वारा पढे तो २१ दिनके भीतर प्रत्यक्ष आकर उत्तर देता है इसमें संदेह नहीं॥२४॥अथानेकमंत्राः ॥ ॐ नमः पद्मासने शब्दरूपे ऐं ह्रीं क्लीं वद वद वाग्वादिनि स्वाहा॥ इति वागीश्वरी मंत्रः॥ २५ ॥ क्लीं वद वद चित्रेश्वरि ऐं स्वाहा ॥ इति चित्रेश्वरीमंत्रः ॥ २६ ॥ सैं कुलजे ऐं सरस्वति स्वाहा ॥ इति कुलज्ञामंत्रः ॥ २७ ॥ ऐं ह्रीं श्रीं वद २ कीर्तीश्वरि स्वाहा ॥ इति कीर्तीश्वरीमंत्रः ॥ २८ ॥ ऐं ह्रीं अंतरिक्षसरस्वति स्वाहा ॥ इत्यंतरिक्षसरस्वतीमंत्रः ॥ २९ ॥

ब्लूं वें वद २ त्रीं हुंफट् ॥ इति नीलामंत्रः ॥ ३० ॥ ऐं हैं हीं किणि किणि विच्चे ॥ इति किणीमंत्रः ॥ ३१ ॥ ह्सफ्रूं ह्सौः ष्फ्रीं ऐं हीं श्रीं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः घटसरस्वति घटे वद २ तर २ रुद्राज्ञया ममाभिलाषं कुरु २ स्वाहा ॥ इति घटसरस्वतीमंत्रः ॥ ३२ ॥ इत्यष्टौ मंत्रान् स्वप्नार्थं जपेत् ॥ ततः स्वप्नं दत्त्वा कार्यं कथयति ॥ इति सरस्वत्यष्टकम् ॥ स्वप्नसिद्धितंत्रे प्राकृतग्रंथे--वनमें कहीं वृक्षपै, [1]रूपारेल जु होय। ताके भांवरसातले लकडी लावे सोय ॥ लकडी लाय धूप देताको दीजे आग लगाई। धरासिरहानेको लाताके कर विचार सोजाई ॥ जैसी हो होतव्यता तैसी, दीखै आय। जो जो सांची होय सो, सुपनेमें दरसाय ॥ ३३ ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे उत्तर खण्डे स्वप्नसिद्धितंत्रे प्रथमस्तरङ्गः ॥ १ ॥

॥ ॥ ॥

---

१ अमरवेल।

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ यक्षिण्यादितंत्रप्रारंभः ॥ देव्युवाच ॥ श्रुतं च साधनं सर्वं यक्षिणीनां सुखप्रदम् ॥ कस्मिन्काले प्रकर्तव्यं विधिना केन वा प्रभो ॥ १ ॥ अत्राधिकारिणः के वा समासेन वदस्व मे ॥ ईश्वर उवाच ॥ वसंते साधयेद्धीमान् हविष्याशी जितें द्रियः ॥ २ ॥ सदा ध्यानपरो भूत्वा तद्दर्शनमहोत्सवः ॥ उज्जटे प्रांतरे वापि कामरूपे विशेषतः ॥ ३ ॥ स्थानेष्वेकतमं प्राप्य साधयेत्सुसमाहितः ॥ अनेन विधिना साक्षाद्भवत्येव न संशयः ॥ ४ ॥ देव्यास्तु सेवकाः सर्वे परं चात्राधिकारिणः ॥ तारकब्रह्मणो भृत्यं विना ह्यत्राधिकारिणः ॥ ५ ॥ अग्निहोत्री विशेषेण साधयेद्यक्षिणीः शुभाः ॥ सर्वासां यक्षिणीनां तु ध्यानं कुर्यात्समाहितः ॥ भगिनी मातृपुत्रीस्त्रीरूपतुल्या यथेप्सिताः ॥ ६ ॥ तत्रादौ षट्त्रिंशद्यक्षिणीनामानि किंकिणीतंत्रे ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि यक्षिणीनां सुसाधनम् ॥ यस्मिन्सिद्धे मनुष्याणां सर्वे सिध्यंति ह्यच्छयाः ॥ ७ ॥ षट्त्रिंशद्यक्षिणीनां तु नामानि प्रवदाम्यथ ॥ विचित्रा विभ्रमा हंसी भिक्षिणी जनरंजिका ॥ ८ ॥ विशाला मदना घंटा कालकर्णी महाभया ॥ माहेन्द्री शंखिनी चांद्री श्मशानी वटयक्षिणी ॥ ९ ॥ मेखला विकला लक्ष्मी कामिनी शतपत्रिका ॥ सुलोचना सुशोभाढथा कपाली च विलासिनी ॥ १० ॥ नटी कामेश्वरी चैव स्वर्णरेखा सुसुंदरी ॥ मनोहरा प्रमोदा तु रागिणी नखकेशिका ॥ ११ ॥ नेमिनी पद्मिनी स्वर्णवती देवी रतिप्रिया ॥ इमाः षट्त्रिंशदाख्याता यक्षिण्यश्च सुसिद्धिदाः ॥ १२ ॥ किंकिणीनाम्नि तंत्रेऽस्मिञ्छंभुना वै सुभाषिताः ॥ १३ ॥ षट्त्रिंशद्यक्षिणीसाधने सूचनामाह ॥ यदि षट्त्रिंशद्यक्षिणी समये न तिष्ठति तदा क्रोधमंत्रं पठित्वा क्रोधमुद्रयाऽऽकर्षयेत् । तदा शीघ्रमागच्छति । यदि नागच्छति अक्षिण मूर्ध्नि वा स्फुटति ॥ तत्क्षणान्म्रियते महानरके पतति ॥ क्रोधमंत्रो यथा—ॐ जूँ कट्टकट्ट अमुकयक्षिणि ह्रीं यः यः हुँ फट् ॥ अनेन क्रोधमंत्रेण सहस्रमेकं जपेत् ॥ १ ॥ क्रोधमुद्रा यथा—मुष्टिं कृत्वा कनिष्ठाद्वयं वेष्टयेत् । तर्जनीं प्रसार्याकुंचयेत् ॥ एषा प्रतिहतक्रोधांकुशमुद्रा [illegible] त्रैलोक्यमप्याकर्षयेत् ॥ अथ षट्त्रिंशद्यक्षिणीसाधने मुद्रादयः ॥ समकरतलपाणिं कृत्वा मध्यमांगुल्यौ विपरीते अनामिका [illegible]तः संस्थाप्य तर्जन्याभिनिविष्टकनिष्ठागर्भसंस्थिता सर्वयक्षिणीनां परममुद्रा । अनया बद्धमात्रया सर्वयक्षिण्य आगच्छंति ॥

अस्या एव मुद्राया वामांगुष्ठेनावाहनम् ॥ तत्र मंत्रः—ॐ ह्रीं आगच्छ अमुकयक्षिणि स्वाहा ॥ १ ॥ अस्या एव मुद्राया वामांगुष्ठं विसर्जयेत् ॥ तत्र मंत्रः—ॐ ह्रीं गच्छामुकयक्षिणि शीघ्रं पुनरागमनाय स्वाहा ॥ २ ॥ मुष्टिं तर्जनीं मध्यमांगुलिं प्रसारयेत् । सर्वयक्षिण्यभिमुखीकरणमुद्रा ॥ तत्र मंत्रः—ॐ महायक्षिणि मैथुनप्रिये स्वाहा ॥ ३ ॥ मुष्टिं कृत्वा प्रसार्याकुंचयेत् । सर्वयक्षिणीसान्निध्यकरणमुद्रा ॥ तत्र मन्त्रः—ॐ कामेश्वरि स्वाहा ॥ ४ ॥ हस्तं घटाकारेण संस्थाप्य सर्वयक्षिणीहृदयमुद्रा ॥ तत्र मन्त्रः—ह्रीं ॥ ५ ॥ मुष्टिं कृत्वा तर्जनीं मध्यमां प्रसारयेत् ॥ सर्वयक्षिणीगंधपुष्पधूपदीपमुद्रा ॥ तत्र मन्त्रः—ॐ सर्वमनोहारिणि स्वाहा ॥ ६ ॥ इति ज्ञात्वा यक्षिणीं साधयेत् ॥ तत्रादौ विचित्रासाधनम् ॥ मंत्रो यथा शिवार्चनचन्द्रिकोक्तः—ॐ विचित्रे चित्ररूपिणि सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति सप्तदशाक्षरो मन्त्रः ॥ किंकिणीतन्त्रे—ॐ विचित्ररूपे सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति चतुर्दशाक्षरो मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्—लक्षमेकं जपेन्मंत्रं वटवृक्षतले शुचिः ॥ बंधूककुसुमैश्चैव मध्वाज्यक्षीरमिश्रितैः ॥ दशांशं योनिकुंडे तु हुत्वा देवी प्रसीदति ॥ विचित्रा साधकस्याथ प्रयच्छति समीहितम् ॥ इति विचित्रायक्षिणीमन्त्रप्रयोगः ॥ १ ॥ अथ विभ्रमासाधनं शिवार्चनचन्द्रिकायाम् ॥ मंत्रो यथा—ॐ ह्रीं विभ्रमरूपे विभ्रमं कुरु कुरु एह्येहि भगवति स्वाहा ॥ इति त्र्यधिकविंशत्यक्षरो मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्—जपेल्लक्षद्वयं मंत्री श्मशाने निर्भयो मनुम् ॥ दशांशं जुहुयात्साज्यं हुत्वा तुष्यति विभ्रमा ॥ पञ्चाशन्मानुषाणां च दत्ते सा भोजनं सदा ॥ किंकिणीतंत्रोक्तविधानं यथा—घृताक्तगुग्गुलैर्होमे दशांशेन कृते सति ॥ विभ्रमा तोषमायाति पंचाशन्मानुषैः सह ॥ ददाति भोजनं दिव्यं प्रत्यहं शंकरोऽब्रवीत् ॥ इति विभ्रमासाधनम् ॥ २ ॥ अथ हंसीसाधनं किंकिणीतंत्रे ॥ मंत्रो यथा—हंसीहंसहांनेंहींस्वाहा ॥ इति नवाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—प्रवेशे नग्नगः स्थास्नुर्लक्षसंख्यं जपेच्छुचिः ॥ पद्मपत्रघृतोपेतमंते होमं दशांशतः ॥ प्रयच्छत्यंजनं हंसी येन पश्यति भूनिधिम् ॥ शुद्धश्चेत्तं च गृह्णाति न विघ्नैः परिभूयते ॥ इति हंसीसाधनम् ॥ ३ ॥ अथ भिक्षिणीसाधनं किंकिणीतंत्रे ॥ मंत्रो यथा—ॐ ऐं महानादे भिक्षिणि

१ मतांतरे—ॐ ह्रीं महानन्दे भीषणे ह्रीं हु स्वाहा इति मंत्रः ।

हाँ ह्रीं स्वाहा ॥ इति त्रयोदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–त्रिपथस्थो जपेन्मंत्रं लक्षसंख्यं दशांशतः ॥ घृतांकगुग्गुलैर्होमो भिक्षिणी चिंतितप्रदा ॥ शिवार्चनचन्द्रिकोक्तमंत्रः–ऐं महामदे भीषणे ह्रां हूँ स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानं पूर्ववत् ॥ इति भिक्षिणीसाधनम् ॥ ४ ॥ अथ जनरंजिनीसाधनम् ॥ किंकिणीतंत्रे मंत्रो यथा–ॐ क्लें जनरंजिनि स्वाहा ॥ इति नवाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–कदंबाधो जपेन्मंत्रं लक्षद्वयं च साधकः ॥ घृतांकगुग्गुलैर्होमं देवी सर्वार्थदा भवेत् ॥ इति जनरंजिनीसाधनम् ॥ ५ ॥ अथ विशालासाधनं मंत्रमहोदधौ–ॐ ऐं विशाले ह्रीं श्रीं क्लीं स्वाहा ॥ इति दशाक्षरो मंत्रः ॥ किंकिणीतंत्रोक्तमंत्रः–ॐ ऐं विशाले ह्रां ह्रीं क्लीं स्वाहा ॥ अस्य विधानम्–चिंचांतरोरधः स्थित्वा शुचिर्लक्षं जपेन्मनुम् ॥ शतपत्रैर्दशांशेन जुहुयात्तोषिता ततः ॥ रसं ददाति येनासौ नीरोगायुरवाप्नुयात् ॥ शिवार्चनचन्द्रिकोक्तमंत्रः–ॐ ह्रीं विशाले ह्राँ ह्रूँ क्लीं एह्येहि स्वाहा ॥ अस्य विधानम्–चिंचावृक्षतले मंत्रैर्लक्षमावर्तयेच्छुचिः ॥ विशाला वितरेत्तुष्टा रसं दिव्यं रसायनम् ॥ इति विशालासाधनम् ॥ ६ ॥ अथ मदनासाधनं किंकिणीतंत्रे ॥ मंत्रो यथा–ॐ मदने मदने देवि मामालिंगय संगं देहि देहि श्रीः स्वाहा ॥ इति द्वाविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–लक्षसंख्यं जपेन्मंत्रं राजद्वारे शुचिः स्मृता ॥ सक्षीरमालतीपुष्पैः कृते होमे दशांशतः ॥ मदनायक्षिणी सिद्धा गुटिकां तं प्रयच्छति ॥ तया मुखस्थया दृश्योऽप्यदृश्यः स्याच्चिरं नरः ॥ इति मदनासाधनम् ॥ ७ ॥ अथ घंटायक्षिणीसाधनं किंकिणीतंत्रे–ॐ ऐं पुरं क्षोभय क्षोभय भगवति गंभीरस्वरे क्लें स्वाहा ॥ इति द्वाविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–सुघंटां वादयेन्मंत्री जपेन्मंत्रायुतद्वयम् ॥ ततः क्षोभयते लोकान् दर्शनादेव साधकः ॥ इति घंटायक्षिणीसाधनम् ॥ ८ ॥ अथ कालकर्णीसाधनं किंकिणीतंत्रे ॥ मंत्रो यथा–ॐ ल्वें कालकर्णिके टः टः स्वाहा ॥ इत्येकादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–लक्षसंख्यमनुं जप्त्वा पलाशैमरुजैर्घनैः ॥ मधून्मत्तैः कृतो होमः कालकर्णी प्रसीदति ॥ सौम्यधरास्यवदनभोगस्तंभकरी भवेत् ॥ सततं तां स्मरेद्वियां विविधाश्चर्यकारिणीम् ॥

१ [illegible]ऽ। २ अमलीवृक्षस्य । ३ पलाशकाष्ठ होमः ।

इति कालकर्णीसाधनम् ॥ ९ ॥ अथ महाभयासाधनं प्राकृतग्रंथे ॥ मंत्रो यथा–ॐ ह्रीं महाभये हुं फट् स्वाहा ॥ इति दशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–नरास्थिनिर्मितां मालां गले पाणौ च कर्णयोः ॥ धारयेज्जपमालां च तादृशीं तु श्मशानतः ॥ लक्षमेकं जपेन्मंत्रं साधयेन्निर्भयः सुधीः ॥ ततो महाभया सिद्धा ददात्येव रसायनम् ॥ तेन भक्षितमात्रेण पर्वतानपि चालयेत् ॥ वलीपलितनिर्मुक्तश्चिरजीवी भवेन्नरः ॥ किंकिणीतंत्रे–अस्थिमालाधरो लक्षं श्मशाने प्रजपेन्मनुम् ॥ ततो महाभया सिद्धा यच्छत्यस्मै रसायनम् ॥ तेन भक्षितमात्रेण पर्वतानपि चालयेत् ॥ वलिभिः पलितैर्मुक्तो नरश्चारोग्यमाप्नुयात् ॥ इति महाभयासाधनम् ॥ १० ॥ अथ माहेन्द्रीसाधनं प्राकृतग्रंथे–ऐं क्लीं ऐन्द्रि माहेन्द्रि कुलुकुलुचुलुचुलु हंसः स्वाहा ॥ इत्येकोनविंशत्यक्षरो मन्त्रः ॥ किंकिणीतंत्रे–ॐ माहेंद्रि कुलुकुलु हंसः स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्–शक्रचापोदये लक्षं निर्गुंडीतलमध्यगः ॥ जपेन्मंत्रं ततस्तुष्टा देवी पातालसिद्धिदा ॥ इति माहेन्द्रीसाधनम् ॥ ११ ॥ अथ शंखिनीसाधनं किंकिणीतंत्रे ॥ मंत्रो यथा–ॐ शंखधारिणि शंखाभरणे ह्राँ ह्रीं क्लीं क्लीं श्रीः स्वाहा ॥ इत्यष्टादशाक्षरो मन्त्रः ॥ प्राकृतग्रंथे यथा–ॐ ह्रीं शंखधारिणि शंखाभरणे ह्राँ ह्रीं क्लीं ऐं आं स्वाहा ॥ इत्येकोनविंशत्यक्षरो मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्–मन्त्रायुतं जपेन्मंत्री प्रातः सूर्योदये सति ॥ मासमेकं जपेदेवं पूजां कुर्य्याद्दिनेदिने ॥ शुद्धसंलिप्तपट्टे तु शुभ्रपुष्पैः सपायसैः ॥ दशांशं होमयेत्साज्यैरिन्धनैः करवीरकैः ॥ ददाति शंखिनी तुष्टा नित्यं रूप्यकपंचकम् ॥ इति शंखिनीसाधनम् ॥ १२ ॥ अथ चांद्री (चन्द्रिका) यक्षिणीसाधनं प्राकृतग्रंथे ॥ मंत्रो यथा–ॐ ह्रीं चन्द्रिके हंसः स्वाहा ॥ इति नवाक्षरो मंत्रः ॥ मतांतरे–ॐ ह्रीं चन्द्रिके हंसः क्लीं स्वाहा ॥ इति दशाक्षरो मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्–शुक्लपक्षे जपेत्तावद्यावद्दृश्येत चन्द्रमाः ॥ प्रतिपत्पूर्वपूर्णांतं तावल्लक्षमिमं जपेत् ॥ अमृतं चन्द्रिका दत्ते पीत्वा यदमरो

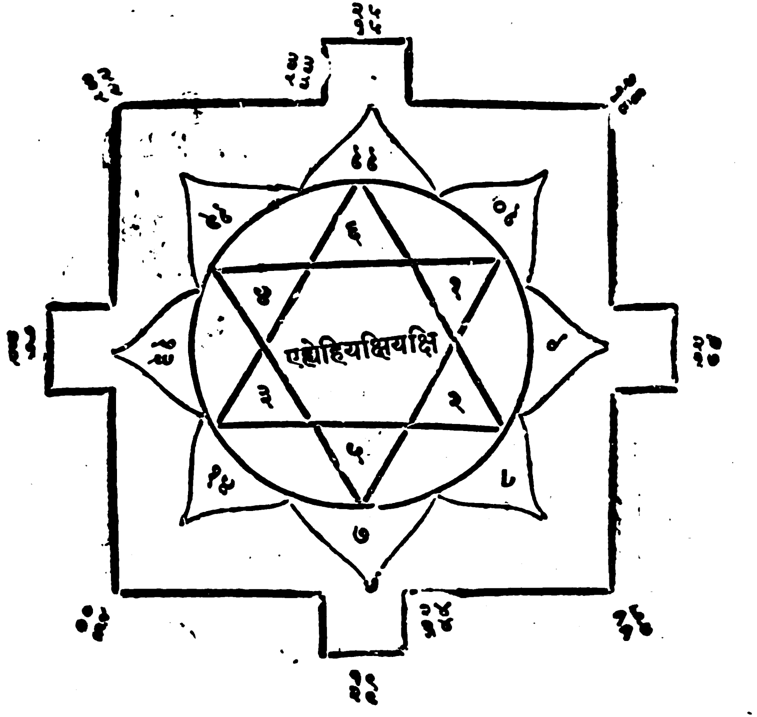
१ मतांतरे क्लीं । २ मनुष्यके गले, कान और हाथके अस्थिकी मालासे । ३ मनुष्यके अस्थिकी मालासे । ४ इन्द्रधनुषके उदयकालमें । ५ पातालसे सिद्धि लाकर देती है । ६ शुद्ध पट्टेपर मूर्ति बनाकर नित्य पूजन करे । ७ सफेद पुष्प । ८ खीर इनसे पूजन करे । ९ कनेरकी लकडी और घृतका दशांश हवन करे । १० तो शंखिनी प्रसन्न होकर नित्य पांच रुपया देती है ।

भवेत् । इति चन्द्रिकासाधनम् ॥ १३ ॥ अथ श्मशानीसाधनं किंकिणीतन्त्रे-ॐ हूं ह्रीं स्फूं श्मशानवासिनि श्मशाने स्वाहा ॥ इति पंचदशाक्षरो मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्-चतुर्लक्षमितं मंत्रं श्मशाने प्रजपेच्छुचिः ॥ नग्नो यत्तस्तदा तुष्टा पटं यच्छति यक्षिणी ॥ तेनोद्धृतो नरो देवि विचरेद्वसुधातले ॥ निश्चयेनानुगृह्णाति न विघ्नैः परिभूयते ॥ इति श्मशानीसाधनम् ॥ १४ ॥ अथ वटयक्षिणीसाधनं मंत्रमहोदधौ ॥ मंत्रो यथा-एह्येहि यक्षि यक्षि महायक्षि वटवृक्षनिवासिनि शीघ्रं मे सर्वसौख्यं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति द्वात्रिंशदक्षरो मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्-अस्य यक्षिणीमन्त्रस्य विश्रवा ऋषिः । अनुष्टुप्छंदः । यक्षिणी देवता । ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ विश्रवऋषये नमः शिरसि १ ॥ अनुष्टुप्छंदसे नमः मुखे २ ॥ यक्षिणीदेवतायै नमः हृदि ३ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ एह्येहि अंगुष्ठाभ्यां नमः १ ॥ यक्षि यक्षि तर्जनीभ्यां नमः २ ॥ महायक्षि मध्यमाभ्यां नमः ३ ॥ वटवृक्षनिवासिनि अनामिकाभ्यां नमः ॥ शीघ्रं मे सर्वसौख्यं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ॥ कुरु कुरु स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ एह्येहि हृदयाय नमः १ ॥ यक्षि यक्षि शिरसे स्वाहा २ ॥ महायक्षि शिखायै वषट् ३ ॥ वटवृक्षनिवासिनि कवचाय हुम् ४ ॥ शीघ्रं मे सर्वसौख्यं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ ॥ कुरु कुरु स्वाहाऽस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ॐ ऍं नमः मस्तके १ ॥ ॐ ह्यं नमः दक्षिणनेत्रे २ ॥ ॐ हिं नमः वामनेत्रे ३ ॥ ॐ यं नमः वक्त्रे ४ ॥ ॐ क्षिं नमः दक्षिणनासापुटे ५ ॥ ॐ यं नमः वामनासापुटे ६ ॥ ॐ क्षिं नमः दक्षकर्णे ७ ॥ ॐ मं नमः वामकर्णे ८ ॥ ॐ हां नमः दक्षस्तने ९ ॥ ॐ यं नमः वामस्तने १० ॐ क्षिं नम :वक्षस्थले ११ ॥ ॐ वं नमः दक्षिणपार्श्वे १२ ॥ ॐ टं नमः वामपार्श्वे १३ ॥ ॐ वृं नमः हृदि १४ ॥ ॐ क्षं नम उदरे १५ ॥ ॐ निं नमः नाभौ १६ ॥ ॐ वां नमः ललाटे नमः १७ ॥ ॐ सिं नमः भ्रुवोः १८ ॥ ॐ निं नमः दक्षकटयाम् १९ ॥ ॐ शीं नमः वामकटयाम् २० ॥ ॐ घ्रं नमः दक्षोरौ २१ ॥ ॐ में नमः वामोरौ २२ ॥ ॐ सं नमः नाभौ २३ ॥ ॐ वँ नमः

१ नग्न होकर । २ मतांतरे-प्रसन्न होकर वस्त्र देती है जिसको धारण करनेसे अदृश्य होता है ॥

दक्षिणजंघायाम् २४ ॥ ॐ सौं नमः वामजंघायाम् २५ ॥ ॐ ख्यं नमः दक्षजानुनि २६ ॥ ॐ कुं नमः वामजानुनि २७ ॥ ॐ रुं नमः दक्षमणिबंधे २८ ॥ ॐ कुं नमः वाममणिबंधे २९ ॥ ॐ रुं नमः दक्षिणकरे ३० ॥ ॐ स्वां नमः वामकरे ३१ ॥ ॐ हां नमः मूर्ध्नि ३२ ॥ इति मंत्रवर्णन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ ॐ अरुणचंदनवस्त्रविभूषितां सजलतोयदतुल्यतनूरुहाम् ॥ स्मरकुरंगदृशं वटयक्षिणीं क्रमुकनागलतादलपुष्कराम् ॥ १ ॥ एवं ध्यात्वा सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरस्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति पीठदेवताः संपूज्य पूर्वादिक्रमेण नव पीठशक्तीः पूजयेत्॥ तद्यथा–ॐ कामदायै नमः१॥ ॐ मानदायै नमः२॥ ॐ नक्तायै नमः ३ ॥ ॐ मधुरायै नमः ४ ॥ ॐ मधुराननायै नमः ५ ॥ ॐ नर्मदायै नमः ६ ॥ ॐ भोगदायै नमः ७ ॥ ॐ नंदायै नमः ८ ॥ मध्ये ॐ प्राणदायै नमः ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रमग्न्युत्तारणपूर्वकम् 'ॐ मनोहरायक्षिणीयोगपीठाय नमः'इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्य्यात् ॥ तद्यथा–षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिक्रमेण अग्निकोणे एह्येहि हृदयाय नमः हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ ॥ इति सर्वत्र ॥ निर्ऋति० यक्षियक्षि शिरसे स्वाहा शिरःश्रीपा० २ । वायव्ये महायक्षि शिखायै वषट्

वटयक्षिणीपूजनयन्त्रम् ।



शिखाश्रीपा० ३ । ऐं शान्ये वटवृक्षनिवासिनिकवचायैं हुं कवचश्रीपा० ४ । पश्चिमे शीघ्रं मे सर्वसौख्यं नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । पूर्वे कुरु कुरु स्वाहा अस्त्राय फट् अस्त्रश्रीपा० ६ ॥ इति षडङ्गानि पूजयेत् ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीं प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च ॐ सुनंदायै नमः। सुनंदाश्रीपा० १। ॐ चन्द्रिकायै नमः। चंद्रिकाश्रीपा० २। ॐ हासायै नमः। हासाश्रीपा० ३। ॐ सुलापायै नमः। सुलापाश्रीपा० ४। ॐ मदविह्वलायै नमः। मदविह्वलाश्रीपा० ५। ॐ आमोदायै नमः। आमोदाश्रीपा० ६। ॐ प्रमोदायै नमः प्रमोदा० ७। ॐ वसुदायै नमः। वसुदाश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ शक्तीः पूजयेत् ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण ॐ लं इन्द्राय नमः १। ॐ रं अग्नये नमः २। ॐ मं यमाय नमः ३। ॐ क्षं निर्ऋतये नमः ४। ॐ वं वरुणाय नमः ५। ॐ यं वायवे नमः ६। ॐ कुं कुबेराय नमः ७। ॐ हं ईशानाय नमः ८। इन्द्रेशानयोर्मध्ये ॐ आं ब्रह्मणे नमः ९। वरुणनिर्ऋत्योर्मध्ये ॐ ह्रीं अनंताय नमः १०॥ इति दशदिक्पालान् पूजयेत् ॥ तद्बाह्ये तत्तत्समीपे ॐ वं वज्राय नमः १। ॐ शं शक्तये नमः २। ॐ दं दंडाय नमः ३। ॐ खं खड्गाय नमः ४। ॐ पां पाशाय नमः ५। ॐ अं अंकुशाय नमः ६। ॐ गं गदायै नमः ७। ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ८। ॐ पं पद्माय नमः ९। ॐ चं चक्राय नमः १० ॥ इत्यस्त्राणि पूजयेत् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं द्विलक्षजपः ॥ बंधूकपुष्पैर्दशांशतो होमः ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति ॥ सिद्धे मंत्रे मंत्री वटाधः प्रतिदिनं सहस्रं जपेत् ॥ तदा सप्तदिनांतरे सिद्धा भवति। मनोवांछितं ददाति ॥ तथा च—लक्षद्वयं जपेन्मंत्रं बंधूकैस्तद्दशांशतः ॥ एवमाराधितो मंत्रः प्रयोगेषु क्षमो भवेत् ॥ निर्मनुष्ये वने गत्वा न्यग्रोधाधस्तले जपेत् ॥ प्रतिघस्रं तमस्विन्यां सहस्रं नियतेंद्रियः ॥ सप्तमे दिवसे प्राप्ते कृत्वा चंदनमंडलम् ॥ तत्राज्यदीपं कृत्वाऽस्मिन् पूजयेद्वटयाक्षिणीम् ॥ तदग्रे प्रजपेन्मंत्रं मनसीत्थं समाहितः ॥ शृणोति नूपुरारावं मंत्री गीतध्वनिं ततः॥ श्रुत्वैव प्रजपेन्मंत्रं वीतत्रासश्च तां स्मरेत्॥ ततः प्रत्यक्षतो देवीमीक्षते सुरतार्थिनीम् ॥ तत्कामपूरणात्सा तु ददातीष्टानि मंत्रिणे ॥ किं बहुक्तेन सर्वेष्टपूरणी वटयाक्षिणी ॥ अन्यः

शिवार्चनचन्द्रिकोक्तमंत्रः—ॐ ह्रीं श्रीं वटवासिनि यक्षकुलप्रसूते वटयक्षिणि एह्येहि स्वाहा ॥ किंकिणीतंत्रोक्तमंत्रः—ॐ वटवासिनि यक्षकुलप्रसूते वटयक्षिणि एह्येहि स्वाहा ॥ अस्य विधानम्—त्रिपथस्थो वटाधःस्थो रात्रौ मंत्रं जपेत्सदा ॥ लक्षत्रयं तदा सिद्धा स्याद्देवी वटयक्षिणी ॥ वस्त्रालंकरणे दिव्ये सिद्धिं रसरसायनम् ॥ दिव्यांजनं च सा तुष्टा साधकाय प्रयच्छति ॥ इति वटयक्षिणीसाधनम् ॥१५॥ अथ मेखलासाधनं मंत्रमहोदधौ—ॐ क्रौं मदनमेखले नमः स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य पूजादिकं सर्वं वटयक्षिणीवज्ज्ञेयम् ॥ अस्य विधानम्—चतुर्दशाहपर्य्यंतं मधूकाधस्तले[1] शुभे ॥ प्रजपेदयुतं नित्यं सहस्रं हवनं चरेत् ॥ मधूकपुष्पैर्मध्वक्तैस्तत्काष्ठैश्च हुताशने ॥ संतुष्टैवं कृते देवी प्रयच्छेदंजनं शुभम् ॥ येनाक्तनेत्रो मंत्री वै निधिं पश्येद्धरागतम् ॥ किंकिणीतंत्रोक्तमंत्रः—ॐ ह्रूं मदनमेखले नमः स्वाहा ॥ अस्य विधानम्—मधुवृक्षतले मंत्रं चतुर्दशदिनावधि ॥ प्रजपेन्मेखला तुष्टा ददात्यंजनमुत्तमम् ॥ इति मेखलासाधनम् ॥१६॥ अथ विकलासाधनं प्राकृतग्रंथे—ॐ विकले ऐं ह्रीं श्रीं क्लैं स्वाहा ॥ इति दशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--निजगृहे त्रिमासमध्ये लक्षं जपेत् करवीरपुष्पैर्दशांशतो होमः । अथवा सुराधान्यतो होमः सिद्धिं ददाति ॥ किंकिणीतंत्रे--ॐ विकले ऐं द्रीं श्रीं क्लैं स्वाहा ॥ इति दशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--मासत्रयमध्ये लक्षं जपेत् सिद्धा भवति मनोवांछितं च ददाति ॥ इति विकलासाधनम् ॥ १७ ॥ अथ लक्ष्मीसाधनं दत्तात्रेयतंत्रे-ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः ॥ इति दशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--वटवृक्षसमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ॥ महालक्ष्मीर्यक्षिणी च स्थिरा लक्ष्मीश्च जायते ॥ अयुतजपेन सिद्धिः ॥ मतांतरे ॐ ऐं लक्ष्मीं वं श्रीं कमलधारिणि हंसः स्वाहा ॥ इति षोडशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—लक्षं जपेत् करवीरपुष्पदशांशतो होमः । तदा प्रसन्ना भवति रसायनं ददाति ॥ इति लक्ष्मीसाधनम् ॥ १८ ॥ अथ मानिनीसाधनं किंकिणीतंत्रे—ॐ ऐं मानिनि ह्रीं एह्येहि सुन्दरि हसहसमिह संगमहः स्वाहा ॥ इति चतुर्विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—चतुष्पथे स्थितो लक्षं सपादं प्रजपेद्गणु ॥ उंवाहुकुसुमैरक्तैर्होमयेद्धृतमिश्रितैः ॥

[1] महुवाके नीचे। [2] रक्तकमल।

मानिनी जायते सिद्धा दिव्यखड्गं प्रयच्छति ॥ तत्प्रभावेन लोकेऽस्मिन्नखंडं राज्यमाप्नुयात् ॥ इति मानिनीसाधनम् ॥ १९ ॥ ॥ अथ शतपत्रिकासाधनं किंकिणीतंत्रे–ॐ ह्रां शतपत्रिके ह्रां ह्रीं श्रीं स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–शतपत्रवनांतस्थो लक्षसंख्यं जपेन्मनुम् ॥ क्षीराज्यं होमयेद्यस्तु रससिद्धिं च भूनिधिम् ॥मतांतरे–कमलवने सेवंतीवने वा लक्षं जपेत् । यवघृतदशांशतो होमेन सिद्धा भवति दिव्यरसायनं च ददाति ॥ इति शतपत्रिकासाधनम् ॥ २० ॥ अथ सुलोचनासाधनं किंकिणीतंत्रे–ॐ क्लौं सुलोचनादिदेवि स्वाहा ॥ इत्येकादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–नदीतीरे स्थितो लक्षत्रयं मंत्रं जपेदनु ॥ घृतहोमे दशांशेन हुते देवी प्रसीदति ॥ ददाति पादुकायुग्मं यदारूढो भुवस्तलम् ॥ मनःपवनवेगेन याति चायाति वेगवत्[1] ॥ ॥ इति सुलोचनासाधनम् ॥ २१ ॥ अथ सुशोभनासाधनं किंकिणीतंत्रे–ॐ अशोकपल्लवाकारकरतले शोभने देवि श्रीं क्षः स्वाहा ॥ इति द्वाविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–रक्तमाल्यांबरो मंत्री चतुर्दशदिनं जपेत् ॥ ततः सिद्धिर्भवेद्देवि शोभना भोगदायिनी ॥ इति शोभनासाधनम् ॥ २२ ॥ अथ कपालिनीसाधनं किंकिणीतंत्रे–ॐ ऐं कपालिनि ह्रां ह्रीं क्लीं क्लें क्लौं हससकल ह्रीं फट् स्वाहा ॥ इत्येकविंशशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–महाव्रतधरो नित्यं कपालौदनभोजनः ॥ लक्षद्वयजपस्यांते कपालं लभते मुनिः ॥ आकाशगमनं दूराच्छ्रवणं रूपवर्तनम् ॥ दूरदर्शनमित्यादि साधकस्य प्रजायते ॥ मतांतरे[2]–ॐ ह्रूं ह्रां कालि करालिनि ह्रौं क्षां क्षीं क्षौं फट् ॥ अस्य विधानम्–श्मशाने प्रतिदिनमष्टोत्तरशतं जपेत् ॥ अजामांसरक्तपुष्पेण बलिं दद्यात् । एवं कृते सप्तदिनांतरे कपालिनी सिद्धा भवति मनोवांछितपदार्थं च ददाति । अग्निगुरुब्राह्मणेषु व्ययमकृत्वा यदि पृथिव्यां निखनेत् तदा रुष्टा भवति कदापि न ददाति ॥ इति कपालिनीसाधनम् ॥ २३ ॥ अथ विलासिनीसाधनं किंकिणीतंत्रे–ॐ विरूपाक्ष विलासिनि आगच्छागच्छ ह्रीं प्रिया मे भव प्रिया मे भव क्लें स्वाहा ॥ इत्यष्टविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–सर

१ मनोवेगसे गमन कर सकता है । २–मतांतरे है ।

तीरे जपेन्मंत्रमर्द्धलक्षप्रमाणतः ॥ घृतगुग्गुलुहोमेन देवी सौभाग्यदायिनी ॥ इति विलासिनीसाधनम् ॥ २४ ॥ अथ नटीसाधनं भूतडामरतंत्रे–ॐ ह्रीं नटिनि स्वाहा ॥ इति सप्ताक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–ततो वक्ष्ये महाविद्यां विश्वामित्रेण धीमता ॥ ज्ञाता या साधिता विद्या बला चातिबला प्रिये॥अशोकतलं गत्वा चंदनेन सुमंडलं कृत्वा मध्ये मूलं विलिख्य मूलेन देवीं समभ्यर्च्य धूपं च दत्त्वा ध्यायेत् ॥ ॐ त्रैलोक्यमोहिनीं गौरीं विचित्रांबरधारिणीम् ॥ विचित्रालंकृतां रम्यां नर्तकीवेषधारिणीम् ॥ एवं ध्यात्वा जपेन्मंत्रं सहस्रं च दिने दिने ॥ मासांते दिवसं प्राप्य कुर्य्यात्तस्याश्च पूजनम् ॥ अर्द्धरात्रे भयं दत्त्वा किंचित्साधकसत्तमे ॥ सुदृढं साधकं ज्ञात्वा याति सा साधकालयम् ॥ विद्याभिः सकलाभिश्च किंचित्स्मेरमुखी ततः ॥ वरं वरय शीघ्रं त्वं यत्ते मनसि वर्तते ॥ तच्छ्रुत्वा साधकश्रेष्ठो भावयेन्मनसा धिया ॥ मातरं भगिनीं वापि भार्यां वा प्रीतिभावतः ॥ कृत्वा संतोषयेद्भक्त्या नटिनी तत्करोत्यलम् ॥ माता स्याद्यदि सा देवी पुत्रवत्पालयेन्मुदा ॥ सिद्धिद्रव्यं स्वर्णशतं सा ददाति दिने दिने ॥ अतीतानागतां वार्तां सर्वां जानाति साधकः ॥ भार्या स्याद्यदि सा देवी ददाति विपुलं धनम् ॥ अन्नाद्यैरुपहारैश्च ददाति कामभोजनम् ॥ सदा स्वर्णशतं तस्मै सा ददाति ध्रुवं प्रिये ॥ यद्यद्वांछति सर्वं च ददाति नात्र संशयः ॥ अन्यः किंकिणीतंत्रोक्तमंत्रः–ॐ ह्रीं नटि महानटि स्वरूपवति स्वाहा ॥ इति पंचदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–पूर्णाशोकतले[1] गत्वा चन्दनेन सुमंडलम् ॥ कृत्वा देवीं समभ्यर्च्य धूपं दत्त्वा सहस्रकम् ॥ मंत्रमावर्तयेन्मासं निशायां भोजनं ततः ॥ रात्रौ पूजा शुभा कार्या जपेन्मंत्रं निशार्द्धके[2] ॥ नटी देवी समागत्य निधानं रसमंजनम्[3] ॥ ददाति मंत्रिणे मंत्रदिव्ययोगेन निश्चितम् ॥ अन्यो मंत्रः सिद्धभाण्डागारे–ॐ ह्रीं आगच्छ नटि स्वाहा ॥ इति नवाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–कुंकुमेन भूर्जपत्रे मंडलं कृत्वा तन्मध्ये मूलमंत्रं विलिख्य गंधाक्षतपुष्पधूपदीपविधिना संपूज्य त्रिसंध्यं त्रिसहस्रं जपेत् मासमेकं यावत् । ततः पौर्णमास्यां विधिवत् पूजा कर्तव्या घृतदीपं प्रज्वालयेत् सकलरात्रिपर्यंतं जपेत् । प्रभाते नियतसमये

---

१ पूर्णिमाको अशोकके तले चन्दनसे मंडल बनाकर। २ चंदनकी मालासे जप करे। ३ निधिरस अंजन देती है।

आगच्छति । सुंदरमाभूषणं ददाति नृत्यं करोति ॥ इति नटीसाधनम् ॥ २५ ॥ अथ कामेश्वरीसाधनं भूतडामरतंत्रे–'ॐ आगच्छ कामेश्वरि स्वाहा ॥' इति दशाक्षरो मंत्रः ॥ अथ ध्यानम्–कामेश्वरीं शशांकास्यां खेलत्खंजनलोचनाम् ॥ मदालोलगतिं कांतां कुसुमास्त्रशिलीमुखाम् ॥ एवं ध्यात्वा भूर्जपत्रे गोरोचनया प्रतिमां विलिख्य तां देवीं पूजयेत् । घृतदीपं दत्त्वा शय्यामारुह्य एकाकी सहस्रं जपेत् ॥ मासांते वा पूजयेत् । ततोऽर्द्धरात्रे नियतमागच्छति । आज्ञां देहीति भाषते । साधकस्य भार्या भवति । प्रतिदिनं शयने दिव्यालंकारं परित्यज्य गच्छति । परस्त्री परिवर्जनीया ॥ किंकिणीतंत्रे–ॐ ह्रीं आगच्छागच्छ कामेश्वरि स्वाहा ॥ इति त्रयोदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–एकासने शुचौ देशे त्रिसंध्यं त्रिसहस्रकम् ॥ मासमेकं जपेन्मंत्रं तदंतेऽर्चां समाचरेत् ॥ पुष्पैर्धूपैश्च नैवेद्यैः प्रदीपैर्घृतपूरितैः ॥ रात्र्यामभ्यर्च्य तं मंत्रं जपेन्मंत्री प्रसन्नधीः ॥ अर्द्धरात्रे गते देवी समागत्य प्रयच्छति ॥ रसं रसायनं वित्तं वस्त्रालंकरणानि च ॥ स्त्रीभावे च यदा तस्यै दद्यात्पाद्यादिकं ततः ॥ सुप्रसन्ना तदा देवी साधकं तोषयेत्सदा ॥ अन्नाद्यै रतिभोगेन पतिवत्पालयेत्सदा ॥ नीत्वा रात्रिं सुखैश्वर्य्यै दद्याच्च विपुलं धनम् ॥ दत्त्वाऽलंकरणं दिव्यं प्रभाते याति निश्चितम् ॥ एवं प्रतिदिनं तस्य सिद्धिः स्यात्कामरूपिणः ॥ इति कामेश्वरीसाधनम् ॥ २६ ॥ अथ स्वर्णरेखासाधनम् ॥ उड्डीशतंत्रे मंत्रो यथा–ॐ वर्कशाल्मले सुवर्णरेखे स्वाहा इति त्रयोदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–एकलिंगं समभ्यर्च्य खंडकेनातिभाविता ॥ पूर्वसंध्यां समारभ्य कृष्णादि सुमतिर्जपेत् ॥ सहस्राष्टमितं मासं तदंते निशि भोजनम् ॥ जपन्तं च पुनर्मंत्रमर्द्धरात्रे प्रयच्छति ॥ दिव्यालंकरणं देवि निधानं निजमुत्तमम् ॥ षण्मासं पूजिता दिव्यदेहं तस्य करोति सा ॥ इति स्वर्णरेखासाधनम् ॥ २७ ॥ अथ सुरसुंदरीसाधनं भूतडामरतंत्रे–उन्मत्तभैरव उवाच ॥ अथातः सम्प्रवक्ष्यामि यक्षिणीसाधनोत्तमम् ॥ सर्वार्थसाधनं नाम देहिनां सर्वसिद्धिदम् ॥ अतिगुह्यं महाविद्या देवानामपि दुर्लभा ॥ मासमभ्यर्चनं कृत्वा यक्षेशो भूधनाधिपः ॥ तामासाद्य प्रवक्ष्यामि सुराणां सुंदरि प्रिये ॥ अस्या अभ्यर्च्चने चैव राजत्वं लभते नरः ॥ मंत्रो यथा–

१ एकलिंग महादेवके समीप पूजन करके कृष्णपक्षकी प्रतिपदासे प्रातःकाल आठ हजार नित्य जपे, रात्रिमें भोजन करे फिर अर्द्धरात्रिमें जपे, मास एक पीछे पुनः दिन पंदरह आधीरातको जपे तो देवी प्रसन्न होकर अर्द्धरात्रिमें आवेगी, द्रव्य अलंकारादि प्रदान करेगी और छः मास पूजन करनेसे दिव्य देह कर देती है ॥

ॐ आगच्छ सुरसुन्दरि स्वाहा ॥ इत्येकादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—प्रातः समुत्थाय स्नानादिकं समाप्य आचम्य 'ॐ सहस्रार हुं फट्' इति दिग्बंधनं कृत्वा मूलमंत्रेण प्राणायामत्रयं कृत्वा मंत्रेण षडंगं कुर्य्यात् ॥ तत्र क्रमः—ॐ हृदयाय नमः १ ॥ आगच्छ शिरसे स्वाहा २ ॥ सुर शिखायै वषट् ३ ॥ सुंदरि कवचाय हुं ४ ॥ स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट् ५ ॥ ॐ आगच्छ सुरसुंदरि स्वाहा अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्--पूर्णचन्द्राननां गौरीं विचित्रांबरधारिणीम् ॥ पीनोन्नतकुचारामां सर्वज्ञामभयप्रदाम् ॥ इति ध्यात्वा मूलेन पाद्यादिकं शुभं दद्यात्॥ पुनर्धूपं तथा दीपं नैवेद्यं मूलमंत्रतः ॥ गंधचंदन तांबूलं कर्पूररसशोभितम् ॥ यत्नतः पूजयेन्मंत्रं त्रिसंध्यं च दिने दिने ॥ सहस्रैकप्रमाणेन ध्यायेद्देवीं सदा बुधः ॥ मासांते दिवसं प्राप्य बलिपूजां सुशोभनाम् ॥ कृत्वा च प्रजपेन्नित्यं निशीथे याति सुंदरी ॥ सुदृढं साधकं मत्वाऽऽयाति सा साधकालये ॥ सुप्रसन्ना साधकाग्रे सदा स्मेरमुखी ततः ॥ दृष्ट्वा देवीं साधकेन्द्रो दद्यात्पाद्यादिकं शुभम् ॥ सचंदनं सुमनसो दत्त्वाभिलषितं वदेत् ॥ मातरं भगिनीं वापि भार्य्यां वा भक्तिभावतः ॥ यदि माता तदा वित्तं द्रव्यं च सुमनोहरम् ॥ भूपतित्वं प्रार्थितं यत्तद्ददाति दिने दिने ॥ पुत्रवत्पालितं लोके सत्यं सत्यं सुनिश्चितम् ॥ स्वसा ददाति वित्तं च दिव्यं वस्तु तथैव च ॥ दिव्यकन्यां समानीय नागकन्यां दिने दिने ॥ भ्रातृवत्पालितं लोके नामभिस्तु मनोगतैः ॥ भार्या स्याद्यदि सा देवी साधकस्य मनोहरा ॥ राजेन्द्रं सर्वराज्ञां तु विदध्यात्साधकोत्तमम् ॥ स्वर्गलोके च पाताले गतिर्भवति नान्यथा ॥ यद्यद्ददाति सा देवि कथितुं नैव शक्यते ॥ तया सार्द्धं च संभोगं यदि दैवात्करोति सः ॥ अन्यस्त्रीगमनं त्याज्यमन्यथा नश्यति ध्रुवम् ॥ अन्यः किंकिणीतंत्रे—ॐ आगच्छागच्छ सुरसुंदरि स्वाहा ॥ इति त्रयोदशाक्षरो मन्त्रः॥ अथ मंत्रसिद्धभाण्डागारोक्तमंत्रः—ॐ ह्रीं आगच्छ सुरसुंदरि स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः॥ प्राकृतग्रंथोक्तमन्त्रः—ॐ नमो आगच्छ सुरसुंदरि स्वाहा ॥ इति त्रयोदशाक्षरो मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्—मूलमंत्रेण न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ ॐ पूर्णचन्द्राननां गौरीं विचित्रांबरधारिणीम् ॥ पीनोन्नतकुचारामां सर्वज्ञामभयप्रदाम् ॥ इति ध्यात्वा एकलिंगसमीपे पूजनं कृत्वा

१ मतांतरे पवित्रगृहं गाथा ।

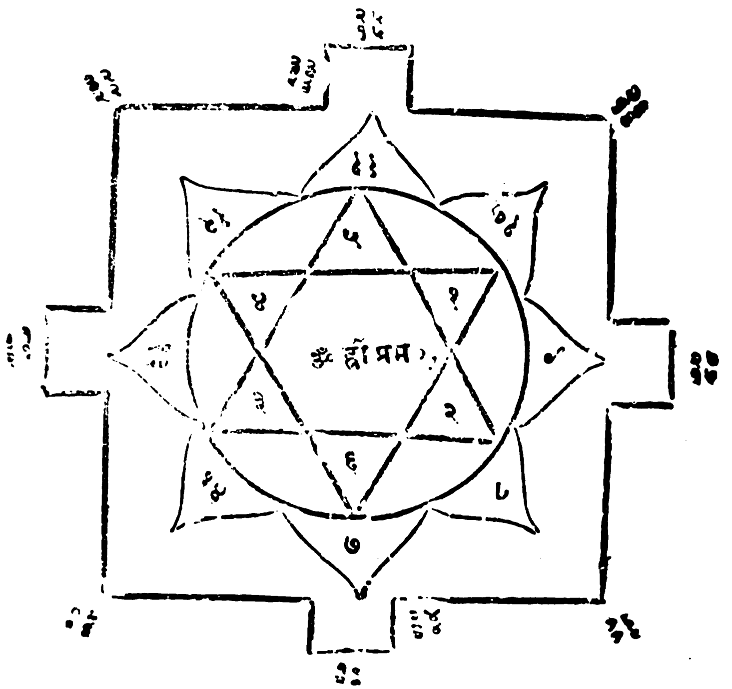
शर्कराज्यगुग्गुलोर्दशांशतो होमः ॥ त्रिसंध्यं पूजयेत् त्रिसहस्रं प्रतिदिनं जपेत् ॥ मासाभ्यंतरे आगतायै चन्दनोदकेनार्घो देयः । मातृभगिनीभार्य्याकृत्यं करोति यदा माता भवति सिद्धद्रव्यं ददाति यदि भगिनी भवति तदा देवकन्यादिकां भार्यामानीय ददाति यदि भार्य्या भवति तर्हि सर्वैश्वर्य्यं सर्वेषां परिपूरयेत् ॥ वर्जयेदन्यस्त्रिया सह शयनम् अन्यथा विनश्यति ॥ तथा च किंकिणी तंत्रे–एकलिंगं महादेवीमिष्ट्वा गुग्गुलुना घृतम् ॥ जपेन्मंत्रं त्रिसंध्यं च नित्यं च त्रिसहस्रकम् ॥ मासमेकं समाख्यातं यक्षिणी सुरसुंदरी ॥ दत्त्वार्घं प्रणवं मंत्री कृते सा त्वं किमिच्छसि ॥ देवि दारिद्र्यदग्धोऽस्मि तन्मे नाशय नाशय ॥ तस्मै ददाति सा तुष्टा निधानं चिरजीवितम् ॥ मंत्रकोशे लक्षजपः पंचामृतदशांशतो होमः। अष्टमीतिथौ कुमारीपूजनं भूशय्या एकान्नं क्षाराम्लादि वर्ज्यं चिंतितार्थं ददाति इति विशेषः ॥ इति सुरसुंदरीसाधनम् ॥ २८ ॥ अथ मनोहरासाधनं भूतडामरतंत्रे–ततोऽन्यसाधनं वक्ष्ये निर्मितं ब्रह्मणा पुरा ॥ मंत्रो यथा–ॐ ह्रीं आगच्छ मनोहरे स्वाहा ॥ इत्येकादशाक्षरो मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्–नदीतीरं समासाद्य कुर्यात्स्नानादिकं ततः ॥ पूर्ववत्सकलं कार्यं चन्दने मंडलं लिखेत् ॥ स्वमंत्रं तत्र संलिख्यावाह्य ध्यायेन्मनोहराम् ॥ अथ ध्यानम्–कुरंगनेत्रां शरदिन्दुवक्त्रां बिंबाधरां चन्दनगंधमाल्याम् ॥ चीनांशुकां पीनकुचां मनोज्ञां श्यामां सदा कामकरां नमामि ॥ १ ॥ एवं ध्यात्वा यजेद्देवीमगरुधूपदीपकैः ॥ गंधपुष्परसैश्चैव तांबूलाद्यैश्च मद्यतः ॥ दत्त्वायुतं प्रतिदिनं जपेन्मंत्रं प्रसन्नधीः ॥ मासांते दिवसं प्राप्य कुर्यात्स जपमुत्तमम् ॥ आनिशीथं जपेन्मंत्रं ज्ञात्वा साधकनिश्चयम् ॥ गत्वा च साधकाभ्याशे सुप्रसन्ना मनोहरा ॥ वरं वरय शीघ्रं त्वं यस्ते मनसि वर्तते ॥ साधकेन्द्रोऽपि तां भक्त्या पाद्याद्यैरुपचारकैः ॥ धूपं दीपं च नैवेद्यं योगिन्या अर्पयेन्मुदा ॥ चन्दनोदकपुष्पेण फलेन च मनोहरा ॥ ततोऽर्चिता प्रसन्ना स्यात्पुष्णाति प्रार्थितं च यत् ॥ स्वर्णभारं साधकाय सा ददाति दिने दिने ॥ सावशेषं व्ययं कुर्यात्स्थिते सा तु न दास्यति ॥ अन्यस्त्रीगमनं कृत्वा महापातकवान्भवेत् ॥ सत्यं सत्यं पुनः सत्यं तवाग्रे सत्यमीरितम् ॥ अन्या

१ मतांतरे गुग्गुलुधूपं दत्त्वा ॥

हतगतिस्तस्य भवतीति न संशयः ॥ इति ते कथिता विद्या सगोप्या या सुरासुरैः ॥ तव स्नेहेन भक्त्या च वक्ष्येऽन्यत्परमेश्वरि ॥ ॥ अन्यो भूतडामरतंत्रे मंत्रो यथा–ॐ आगच्छ मनोहरे स्वाहा ॥ इति दशाक्षरो मंत्रः ॥ अथ शिवार्चनचन्द्रिकायाम्–ॐ ह्रीं सर्वकामदे मनोहरे स्वाहा ॥ इति त्रयोदशाक्षरो मंत्रः ॥ अथ ध्यानम्--कुरंगनेत्रां शरदिन्दुवक्त्रां बिंबाधरां चंदनगन्धमाल्याम् ॥ चीनांशुकां पीनकुचां मनोज्ञां श्यामां सदा कामकरां नमामि ॥ १ ॥ अस्य विधानं भूतडामरतंत्रे--नदीसंगमे गत्वा चन्दनेन मंडलं कृत्वा अगरुधूपं दत्त्वा एकमासोपरि आगतां तदा पूजयेत्। चन्दनेनार्घ्यो देयः। पुष्पफलैरेकचित्तेनार्चनं कर्तव्यम्। अर्धरात्रे नियतमागच्छति। आगतायां सत्यामाज्ञां देहि इति वदति। सुवर्णशतं च प्रतिदिनं ददाति॥ तदुक्तं शिवार्चनचान्द्रेकायाम्-नदीतीरे शुभे देशे चन्दनेन सुमंडलम् ॥ विधिना पूजयेद्देवीं ततो मंत्रायुतं जपेत् ॥ त्रिसप्ताहं जपेदेवं प्रसादाद्विरमेत् खलु ॥ दीनाराणां सहस्रैकं व्ययं कुर्य्याद्दिनेदिने ॥ विना व्ययेन सा क्रुद्धा न ददाति कदाचन ॥ किंकिणीतंत्रे -आदौ षट्कोणरक्तेन लेखनीयं श्वेतवस्त्रं परिधेयं श्वेतासनं च ॥ सप्तादिनैः प्रसन्ना भवति शतं दीनाराणां प्रतिदिनं ददाति ॥ इति मनोहरासाधनम् ॥ २९ ॥ अथ प्रमदासाधनं मंत्रमहोदधौ-ॐ ह्रीं प्रमदे स्वाहा ॥ इति सप्ताक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अस्य प्रमदामंत्रस्य मनुर्ऋषिः। गायत्री छंदः। प्रमदा देवता। ह्रीं शक्तिः। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ मनुऋषये नमः शिरसि १। गायत्रीच्छंदसे नमः मुखे २। प्रमदादेवतायै नमः हृदि ३। ह्रींशक्तये नमः पादयोः ४। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ५ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ह्रां ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ह्रीं प्रं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ ह्रूं मं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ ह्रैं दें अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ ह्रौं स्वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ ह्रः हां करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ह्रां ह्रीं नमः हृदयाय नमः १। ॐ ह्रीं प्रं नमः शिरसे स्वाहा २। ॐ ह्रूं मं नमः शिखायै वषट् ३। ॐ ह्रैं दें नमः कवचाय हुं ४। ॐ ह्रौं स्वां नमः नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ ह्रः हां नमः अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ ॐ केयूरमख्याभरणाभिरामां वराभये संदधतीं करा

भ्याम् ॥ संक्रंदनाद्यामरसव्यपादां सत्कांचनाभां प्रमदां भजामि ॥ १ ॥ एवं ध्यात्वा सर्वतोभद्रमडले आधारशक्त्यादिपरतत्त्वांतपीठ देवताः संस्थाप्य ' ॐ आधारशक्त्यादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः ' इति संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ पूर्वादिक्रमेण ॐ जयायै नमः १ । ॐ विजयायै नमः २ । ॐ अजितायै नमः ३ । ॐ अपराजितायै नमः ४ । ॐ नित्यायै नमः ५ । ॐ विलासिन्यै नमः ६ । ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७ । ॐ अघोरायै नमः ८ । मध्ये । ॐ मंगलायै नमः ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च कृत्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य 'ॐ सर्वबुद्धिप्रदे वर्णनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकिनीये प्रमदे एह्येहि नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्यावाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तथाच षट्कोणसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च–ॐ ह्रां ह्रीं हृदयाय नमः । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ ॥ इति सर्वत्र ॥ ॐ ह्रीं प्रं शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० २ । ॐ ह्रूं मं शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ३ । ॐ ह्रैं दें कवचाय हुं । कवचश्रीपा० ४ । ॐ ह्रौं स्वां नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । ॐ ह्रः ह्रां अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य–ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये

प्रमदायक्षिणीपूजनयन्त्रम् ।



तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राची । तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च ॐ सुनंदायै नमः । सुनंदाश्रीपा० १ । ॐ चन्द्रिकायै नमः । चान्द्रिकाश्रीपा० २ । ॐ हासायै नमः । हासाश्रीपा० ३ । ॐ सुलापायै नमः । सुलापाश्रीपा० ४ । ॐ मदविह्वलायै नमः । मदविह्वलाश्रीपा० ५ । ॐ आमोदायै नमः । आमोदाश्रीपा० ६ । ॐ प्रमोदायै नमः । प्रमोदाश्रीपा० ७ । ॐ वसुदैन्यकायै नमः । वसुदैन्यकाश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदश दिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपज्य जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं षट्लक्षजपः ॥ जपदशांशतो घृतहोमः ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति ॥ सिद्धे मंत्रे मंत्री पुनर्निर्जने कानने रात्रौ प्रतिदिनमयुतं जपेत् ॥ पायसेन प्रतिदिनं दशांशतो होमः ॥ तदा त्रिसप्तदिवसे आगत्येष्टं ददाति ॥ तथाच—रसलक्षं जपेन्मंत्रं दशांशं जुहुयाद्धृतैः ॥ निर्जने कानने रात्रावयुतं नियतं जपेत् ॥ सहस्रं पायसान्नेन हुत्वा शयनमाचरेत् ॥ त्रिसप्तदिवसं यावदेवमाचरतो निशि ॥ देवी दृग्गोचरा भूयाद्दद्यादिष्टानि मंत्रिणे ॥ प्रमदाभेदेन प्रमोदासाधनं मंत्रमहोदधौ—ह्रीं प्रमोदे स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—न्यासादिकं सर्वं उपर्युक्तं ज्ञेयम् ॥ सरितो निर्जने तीरे मंडले चन्दनैः कृते ॥ जपहोमौ विधायोक्तौ प्रमोदां पश्यति ध्रुवम् ॥ किंकिणीतंत्रोक्तमंत्रः—ॐ ह्रीं प्रमोदायै स्वाहा ॥ इत्यष्टाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अर्द्धरात्रे समुत्थाय सहस्रैकं जपेन्मनुम् ॥ मासमेकं ततो देवी निधिं दर्शयति ध्रुवम् ॥ इति प्रमदासाधनम् ॥ ३० ॥ अथानुरागिणीसाधनं भूतडामरतंत्रे—महाविद्यां प्रवक्ष्यामि सावधानावधारय ॥ मंत्रो यथा—ॐ ह्रीं आगच्छानुरागिणि मैथुनप्रिये स्वाहा ॥ इति षोडशाक्षरो मंत्रः ॥ मतांतरे—ॐ ह्रीं अनुरागिणि मैथुनप्रिये स्वाहा ॥ इति चतुर्दशाक्षरो मंत्रः ॥ मंत्रसिद्धभाण्डागारे—ॐ ह्रीं आगच्छ अनुरागिणि स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—कुंकु

मेन भूर्जपत्रे देवीप्रतिमां विलिख्य तस्या उदरेऽष्टदलमालिख्य तन्मध्ये मंत्रं विलिख्य प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा ध्यायेत् ॥ ॐ शुद्धस्फटिकसंकाशां नानारत्नविभूषिताम् ॥ मंजीरहारकेयूररत्नकुंडलमंडिताम् ॥ एवं ध्यात्वा मूलमंत्रेण त्रिसंध्यमभ्यर्चयेत् ॥ तथाच–कुंकुमेन समालिख्य भूर्जे देवीं सलक्षणाम् ॥ प्रतिपद्दिनमारभ्य पूजयेत्कुसुमादिभिः ॥ धूपदीपविधानैश्च त्रिसंध्यं पूजयेन्मुदा ॥ पूजनांते सहस्राणि त्रिसंध्यं परिवर्तयेत् ॥ पूर्णिमां प्राप्य गंधाद्यैः पूजयेत्साधकोत्तमः ॥ घृतदीपं ततो धूपं नैवेद्यं च मनोहरम् ॥ रात्रौ च दिवसे जाप्यं कुर्य्याच्च सुसमाहितः ॥ [1]प्रभातसमये याति साधकस्यांतिकं मुदा ॥ प्रसन्नवदनो भूत्वा तोषयेदतिभोजनैः ॥ देवदानवगंधर्वविद्याधृग्यक्षरक्षसाम् ॥ कन्याभी रत्नभूषाभिः साधकेंद्रे मुहुर्मुहुः ॥ चर्व्यचोष्यादिकं द्रव्यं सा ददाति सदा ध्रुवम् ॥ स्वर्गे मर्त्ये च पाताले यद्वस्तु विद्यते प्रिये ॥ समर्पयति साऽऽनीय साधकाज्ञानुरूपतः ॥ सदा.[2]स्वर्णशतं तस्मै प्रयच्छति दिने दिने ॥ साधकाय वरं दत्त्वा याति सा निजमंदिरम् ॥ तस्या वरप्रसादेन चिरंजीवी निरामयः ॥ सर्वज्ञः सुंदरः श्रीमान्सर्वेशो भवति ध्रुवम् ॥ सार्द्धमासत्रयाद्देवि साधकेन्द्रो दिने दिने ॥ गुह्याद्गुह्यतरा विद्या तव स्नेहात्प्रकीर्तिता ॥ इत्यनुरागिणीसाधनम् ॥ ३१ ॥

अथ नखकेशिकासाधनं किंकिणीतंत्रे–ॐ ह्रीं नखकेशिके कनकावति स्वाहा ॥ इति त्रयोदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–[3]गत्वा यक्षगृहे मंत्री नकाशी प्रजपेन्मनुम् ॥ एकविंशे दिने जाते कुर्यात्पूजां यथाविधि ॥ आवर्तयेत्ततो मंत्रमेकचित्तोऽतिसंयतः ॥ निशार्द्धे वांछितं कामं देवी तस्य प्रयच्छति ॥ इति नखकेशिनीसाधनम् ॥ ३२ ॥ अथ नेमिनी (भामिनी) प्रियासाधनं प्राकृतग्रंथे–ॐ ह्रीं महायक्षिणि भामिनि प्रिये स्वाहा ॥ इति चतुर्दशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–दिनैत्रयं[4] निराहारः सति सोमग्रहे जपेत् ॥ यावन्मुक्ति ततो जप्त्वा लभेदिच्छितमुत्तमम् ॥ इति नेमिनीसाधनम् ॥ ३३ ॥ अथ पद्मिनीसाधनं भूतडामरतंत्रे–ॐ ह्रीं आगच्छ पद्मिनि वल्लभे स्वाहा ॥ इति त्रयोदशाक्षरो मंत्रः ॥ ॥ मंत्रासिद्धभाण्डागारे–ॐ आगच्छ पद्मिनि

१ मतांतरे–'अर्द्धरात्रे गते देवी समागत्य प्रयच्छति' इति पाठः । २ पाठांतरे–'दीनाराणिसहस्राणि प्रत्यहं परितोषिता' इति पाठः । ३ गंधर्वगृहे अथवा अपामार्गसमीपे । ४ प्रथम तीन दिन निराहार व्रत करे । चन्द्रग्रहणे मोक्षपर्यंतं जपेत् मनोवांछितं ददाति ।

स्वाहा ॥ इति नवाक्षरो मंत्रः ॥ किंकिणीतंत्रे—ॐ ह्रीं पद्मिनि स्वाहा॥इति सप्ताक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—भूतडामरतंत्रे मंत्रासिद्ध भाण्डागारे वा—कुंकुमेन भूर्जपत्रे प्रतिमां विलिख्य तस्य वक्षस्थले मूलमंत्रं लिखित्वा ध्यायेत् ॥ पद्मांगनां श्यामवर्णां पीनोन्नतपयोधराम् ॥ कोमलांगीं स्मेरमुखीं रक्तोत्पलदलेक्षणाम् ॥१॥ एवं ध्यात्वा गंधाक्षतपुष्पधूपदीपैर्विधिना संपूज्य त्रिसंध्यं त्रिसहस्रं जपेन्मासमेकं यावत् ॥ ततः पूर्णिमायां विधिवत् पूजा कर्तव्या घृतदीपं प्रज्वालयेत् ॥ सकलरात्रिपर्यंतं जपेत् ॥ प्रभाते नियतसमये आगच्छति साधकस्य भार्या भवति॥ तथाच—भूत्वा भार्य्या साधकं हि तोषयेद्विविधैः सुखैः ॥ भोग्यैर्द्रव्यैर्भूषणाद्यैः पद्मिनी सा दिने दिने ॥ पतिवत्पालितं लोके नित्यं स्वर्गे च सर्वदा ॥ त्यक्त्वा भार्य्यां भजेत्तां च साधकश्च सदा प्रिये ॥ अथ किंकिणीतंत्रोक्तविधानम्--एकलिंगगृहस्थाने चन्दनेन सुमंडलम्॥ कृत्वा हस्तप्रमाणेन पूजयेदत्र पद्मिनीम्॥ धूपं च गुग्गुलं कृत्वा जपेन्मंत्रसहस्रकम् ॥ मासमेकं ततः पूजां कृत्वा रात्रौ पुनर्जपेत् ॥ अर्द्धरात्रे गते देवी दत्ते दिव्यांजनं शुभम् ॥ पद्मिनीभेदेन पद्मावतीसाधनं प्राकृतग्रंथे--ॐ पद्मावति स्वाहा ॥ इति सप्ताक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--अस्य पुरश्चरणं द्वादशलक्षजपः ॥ पञ्चमे वा दशांशतो होमः । तदा अष्टमहासिद्धी ददाति ॥ मतांतरे—नानाचरणपद्मावति स्वाहा ॥ इत्येकादशाक्षरो मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्--दशलक्षजपः घृतगुग्गुलुयुत सेवंतीपुष्पेण दशांशतो होमः तदा प्रसन्ना भवति । अष्टभोगान् प्रतिदिनं ददाति ॥ तंडुलमाषान्नकलशमापूर्य तदग्रे जपं कुर्यात् ॥ यद्दिने कलशेऽन्नं न दृश्यते तदा प्रसन्ना भूत्वा सिद्धिं ददाति ॥ मतांतरे--ॐ नमो धरणीन्द्रे पद्मावति आगच्छागच्छ कार्यं कुरु कुरु (जहां भेजूं वहां जावो जो मंगाऊँ सो आन देवो न आन देवो तो श्रीपार्श्वनाथकी आन) सत्यमेव कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति त्र्यधिक षष्ट्यक्षरो मंत्रः॥ अस्य विधानम्—पर्वाग्निकोणे मुखं वा कार्यम् ॥ कार्तिककृष्णत्रयोदशीमारभ्य कार्तिकशुक्ला प्रतिपदा यावत् दिनत्रयं प्रतिदिनं सहस्रं जपेत् तदा सिद्धा भवति मनसेप्सितं पदार्थं समानीय साधकाय ददाति॥इन्द्रजाले—ॐ पद्मावति पद्मकोशे वज्रवज्रांकुशे प्रत्यक्षा भवति भवति ॥ इत्येकविंशत्यक्षरो मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्—अर्द्धरात्रे मृत्तिकामालया अष्टोत्तरसहस्रं जपेत् । मृत्तिकापात्रे

घृतदीपं प्रज्वाल्य यवोपरि संस्थाप्य तदग्रे जपेत् । एवं कृते एकविंशतितमे दिने दर्शनं ददाति ॥ इति पद्मिनीसाधनम् ॥ ३४ ॥ अथ स्वर्णावती (कनकावती) मंत्रसाधनम् ॥ मंत्रसिद्धभाण्डागारे मंत्रो यथा—ॐ कनकावति मैथुनप्रिये स्वाहा ॥ इति त्रयोदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—वटवृक्षतलं गत्वा मद्यं मांसं च दत्त्वा सहस्रं जपेत् । एवं सप्तदिनं कुर्य्यात्।अष्टमरात्रौ सा सर्वालंकारसंयुता आगच्छति साधकस्य भार्य्या भवति । द्वादशजनानां वस्त्रालंकारभोजनानि ददाति ॥ किंकिणीतंत्रोक्तमंत्रः—ॐ ह्रीं आगच्छ कनकावति स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--बिल्ववृक्षतले कुर्य्याच्चन्दनेन सुमंडलम् ॥ यक्षिणीं पूजयेत्तत्र नैवेद्यमुपकल्पयेत् ॥ शशमांसं ततस्तस्मिन्मंत्रमावर्तयेद् बुधः ॥ सहस्रं प्रजपेन्नित्यं यावत्सप्तदिनं भवेत्॥ अथागत्य ददात्यस्मै मंत्रं चांजनमुत्तमम्॥ तत्प्रभावान्नरः पश्येन्निधानमविशंकितम् ॥ अन्यो भूतडामरतंत्रे--ॐ ह्रीं रक्तवर्मिणि आगच्छ कनकावति स्वाहा ॥ इति सप्तदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--ततो वक्ष्ये महाविद्यां शृणुष्वैकमनाः प्रिये ॥ गत्वा वटतटं देवीं पूजयेत्साधकोत्तमः ॥ प्राणायामं षडंगं च मायथाथ समाचरेत् ॥ ध्यानं तस्याः प्रवक्ष्यामि सावधानावधारय ॥ अथ ध्यानम्--ॐ प्रचंडवदनां गौरीं पद्मबिंबाधरां प्रियाम् ॥ रक्ताम्बरधरां रामां सर्वकामफलप्रदाम् ॥ एवं ध्यात्वा जपेन्मंत्रमयुतं साधकोत्तमः ॥ सप्ताहं तु समभ्यर्च्य अष्टमे विधिमाचरेत् ॥ सद्यो मांसबलिं दत्त्वा पूजयेत्तां समाहितः ॥ अर्घ्यमुच्छिष्टरक्तेन दद्यात्तस्यै दिने दिने ॥ कायेन मनसा वाचा प्रजपेच्च दिने दिने ॥ आनिशीथं जपेन्मंत्रं बलिं दत्त्वा मनोहरम् ॥ साधकेन्द्रं दृढं ज्ञात्वा याति सा साधकालये ॥ साधकोऽपि च तां दृष्ट्वा दद्यादर्घ्यादिकं ततः ॥ ततः सपरिवारेण भार्या स्यात्कामभोजनैः ॥ वस्त्रभूषादिकं त्यक्त्वा याति सा निजमंदिरम् ॥ एवं भार्या भवेन्नित्यं साधकाज्ञानुरूपतः ॥ आत्मभार्य्यां परित्यज्य स्वीकुर्यात्तां विचक्षणः ॥ मतांतरे अन्यो मंत्रः—ॐ कनकावति करवीरके स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—कृष्णपक्षाष्टमीमारभ्य अमावस्यापर्यंत प्रतिदिनं त्रिसहस्रं जपेत्। निंबसमिदाज्यैर्दशांशतो होमः। एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । तदा होमभस्मनाभिमंत्रितेन तिलकं कुर्य्यात् ।

१ शशमांसेन बलिं दद्यात् । २ मायया ह्रीं इति षडंगादिकं कुर्यात् ।

अदृश्यो भवति ॥ इति कनकावतीसाधनम् ॥ ३५ ॥ अथ रतिप्रियासाधनं भूतडामरतंत्रे ॥ ॐ ह्रीं आगच्छ रतिसुंदरि स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ मंत्रसिद्धभाण्डागारोक्तमंत्रः—ॐ आगच्छ रतिकारि स्वाहा ॥ इति दशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—श्वेतपटे चित्ररूपिणीं लिखित्वा कनकवस्त्रसर्वालंकारभूषितामुत्पलहस्तां कुमारीं ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्—ॐ सुवर्णवर्णां गौरांगीं सर्वालंकारभूषिताम् ॥ नूपुरांगदहाराढ्यां भजेऽहं पुष्करेक्षणाम् ॥ एवं ध्यात्वा गंधाक्षततांबूलजातीफलैः सह कुमारीं मूलमंत्रेण पूजयेत् ॥ ॥ तथाच—एवं ध्यात्वा जपेन्मंत्रं दद्यान्मूलेन साधकः ॥ घृतदीपं तथा गंधं पुष्पं तांबूलमेव च ॥ मासांते दिवसं प्राप्य कुर्य्यात्पूजादिकं शुभम् ॥ तावन्मंत्रं जपेद्विद्वान् यावदायाति सुंदरी ॥ ज्ञात्वा दृढं साधकेन्द्रं निशीथे याति निश्चितम् ॥ साधकाज्ञानुरूपेण सा प्रयाति दिने दिने ॥ निर्जने प्रांतरे देशे सिद्धा स्यान्नात्र संशयः ॥ त्यक्त्वा भार्य्यां भजेत्तां तु अन्यथा च विनश्यति ॥ मंत्रसिद्धभाण्डागारे विशेषः ॥ यदि भगिनी भवति तदा योजनमात्रात्स्त्रियमानीय समर्पयति वस्त्रालंकारभोजनानि च ददाति ॥ किंकिणीतंत्रोक्तमंत्रः—ॐ ह्रीं रतिप्रिये स्वाहा ॥ इत्यष्टाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—शंखलिखे पटे देवीं गौरवर्णां धृतोत्पलाम् ॥ सर्वालंकारिणीं दिव्यां समालिख्यार्चयेत्पुनः ॥ जातीपुष्पैः सोपचारैः सहस्रं तु ततो जपेत् ॥ सप्ताहं मंत्रवाँस्तस्याः कुर्यादर्चां सुभाषिताम् ॥ अर्द्धरात्रे गते देवी समागत्य प्रयच्छति ॥ पंचविंशतिदीनारान् प्रत्यहं सा प्रयच्छति ॥ ३६ ॥ इति षट्त्रिंशद्यक्षिणीसाधनं समाप्तम् ॥ ॥ अथ यक्षिणीप्रसंगान्नानारूपयक्षिणीसाधनप्रारंभः ॥ तत्रादौ धनदारतिप्रियायक्षिणीपश्चाङ्गप्रारंभः ॥ रुद्रयामले—प्रणम्य शिरसा गौरी प्रोवाच शशिशेखरम् ॥ येन कल्पेन दारिद्र्यं विनश्येत च तद्वद ॥ १ ॥ श्रुत्वा गौरीवचः शंभुः स्मितचारुशुभाननः ॥ शृणु त्वं देवदेवेशि दारिद्र्यस्य विनाशकम् ॥ २ ॥ पुरा विश्वसृजा प्रोक्ता कुबेराय महात्मने ॥ विद्या दारिद्र्यसंहंत्री यक्षिणी पापखण्डिनी ॥ ॥ ३ ॥ तेन सा तु समाख्याता यक्षिणी सुरसुंदरी ॥ ततो निधिवराणां तु नायको निश्चितं भवेत् ॥ ४ ॥ निर्धनो वा महीपो वा

१ श्वेतवस्त्रपर देवीका चित्र लिख सुनहरे वस्त्रालंकारादिसे भूषित करके कमल हाथमें लिये ऐसी कुमारीका ध्यान करे।

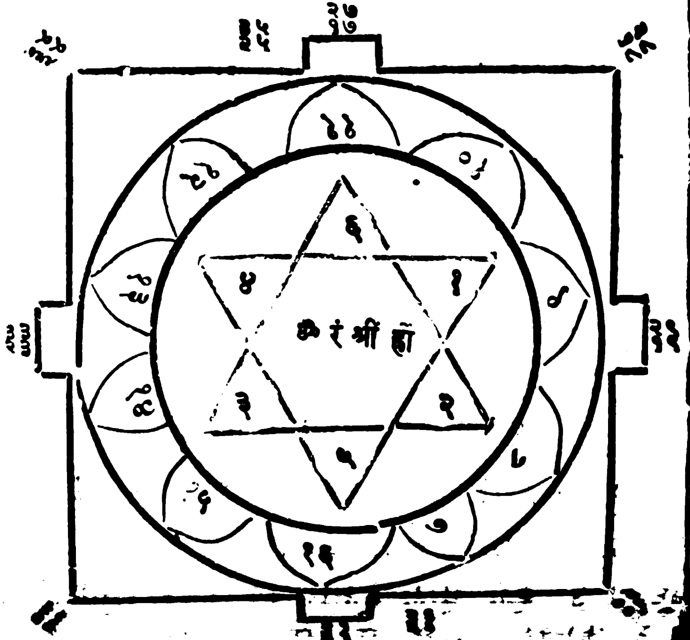
विद्यां तां ब्रह्मणो मुखात् ॥ श्रुत्वा कुबेरवक्त्रेण स भवेत् परमो धनी ॥ ५ ॥ तच्छुत्वा गिरिजा देवी पुनः प्राह शिवं प्रति ॥ कृपा ते विद्यते कांत तदा त्वं मां प्रबोधय ॥ ६ ॥ श्रुत्वा पुनश्च पार्वत्या वाक्यमेवं प्रहस्य च ॥ शंभुः प्राह न जानासि पार्वत्या मूर्तिरेव सा ॥ ७ ॥ यां श्रुत्वा याति रंकोऽपि भूपालत्वं न संशयः ॥ विद्याधरत्वमाप्नोति किं पुनर्बहुभाषितैः ॥ ८ ॥ याति लक्षेश्वरत्वं च त्वद्भक्तो देवि सर्वदा ॥ वर्षेणापि स्मरन्मंत्रं भवेद्बहुधनो नरः ॥ ९ ॥ नो संस्पृशति दारिद्र्यं तार्क्ष्यं भोगिकुलं यथा ॥ अस्य मंत्रस्य चोद्धारं प्रवक्ष्ये शृणु पार्वति ॥ १० ॥ नांगन्यासः करन्यासो न च्छन्दो ऋषिदैवतम् ॥ कुबेरस्य मतो नास्याः पूजापि क्रियते तथा ॥ विधिमस्याः प्रवक्ष्यामि शृणु त्वं शैलसंभवे ॥ ११ ॥ मंत्रो यथा—ॐ रं श्रीं ह्रीं धं धनदे रतिप्रिये स्वाहा ॥ इति चतुर्दशाक्षरो मंत्रः॥ अस्य विधानम्—ॐ अस्य श्रीधनदेश्वरीमंत्रस्य कुबेर ऋषिः। पंक्तिश्छंदः। श्रीधनदेश्वरी देवता। धं बीजम्। स्वाहा शक्तिः। श्रीं कीलकम्। श्रीधनदेश्वरीप्रसादसिद्ध्यर्थे समस्तदारिद्र्यनाशाय श्रीधनदेश्वरीमंत्रजपे विनियोगः॥ ॐ कुबेरऋषये नमः शिरसि १। पंक्तिच्छंदसे नमो मुखे २। धनदेश्वरीदेवतायै नमो हृदि ३। धं बीजाय नमो गुह्ये ४। स्वाहाशक्तये नमः पादयोः ५। श्रीं कीलकाय नमो नाभौ ६। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ श्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ श्रूं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ श्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ श्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ ॥ इति करन्यासः॥ ॐ श्रां हृदयाय नमः १। ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ श्रूं शिखायै वषट् ३। ॐ श्रैं कवचाय हुं ४। ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ श्रः अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ॐ ॐ नमः शिरसि १। ॐ रं नमः मुखे २। ॐ श्रीं नमो दक्षिणनेत्रे ३। ॐ ह्रीं नमो वामनेत्रे ४। ॐ धं नमो दक्षिणकर्णे ५। ॐ धं नमो वामकर्णे ६। ॐ नं नमो दक्षनासापुटे ७। ॐ दें नमो वामनासापुटे ८। ॐ रं नमो हृदये ९। ॐ तिं नमो दक्षिणस्तने १०। ॐ प्रिं नमो वामस्तने ११।

१ तंत्रांतरेऽपि—ॐ ह्रीं श्रीं मां देहि धनदे रतिप्रिये स्वाहा। इति पंचदशाक्षरो मंत्रः। ॐ धं श्रीं ह्रीं रतिप्रिये स्वाहा। इति दशाक्षरो मंत्रः। ॐ रं ह्रीं श्रीं रतिप्रिये स्वाहा। इति दशाक्षरो मंत्रः। ॐ श्रीं श्रीं यक्षिणि ह्रं ह्रं ह्रं स्वाहा। इत्येकादशाक्षरो मंत्रः। ॐ ह्रीं ॐ मां मोचय २ स्वाहा। इति द्वादशाक्षरो मंत्रः। इत्यनेककल्पो मंत्रो ज्ञेयः।

ॐ यें नमो नाभौ १२ । ॐ स्वां नमो गुह्ये १३ । ॐ हां नमः पादयोः १४ ॥ इति मंत्रवर्णन्यासः ॥ ॐ ॐ नमो मस्तके १ ।
ॐ रं नमो मुखे २ । ॐ श्रीं नमो हृदये ३ । ॐ ह्रीं नमः कट्याम् ४ । ॐ धं नमो हस्तयोः ५ । ॐ धनदे नमो गुदे ६ । ॐ
रतिप्रिये नमो लिंगे ७ । ॐ स्वाहा नमः पादयोः ८ ॥ इति पदन्यासः ॥ ॐ धनदायै नमः शिरसि १ । ॐ मंगलायै नमो ललाटे २ ।
ॐ दुर्गायै नमो भ्रुवोर्मध्ये ३ । ॐ त्रिनेत्रायै नमो दक्षिणनेत्रे ४ । ॐ चंचलाय नमो वामनेत्रे ५ । ॐ त्वरितायै नमो दक्षिणकर्णे ६ ।
ॐ मंजुघोषायै नमो वामकर्णे ७ । ॐ सुगंधायै नमो दक्षिणनासापुटे ८ । ॐ पद्मायै नमो वामनासापुटे ९ । ॐ वाराह्यै नम ऊर्ध्वोष्ठे
१० । ॐ महामायायै नमः अधरोष्ठे ११ । ॐ करालभैरव्यै नमो मुखे १२ । ॐ सुंदर्य्यै नमो दंतजाले १३ । ॐ सरस्वत्यै नमो
जिह्वायाम् १४ । ॐ रुद्राण्यै नमश्चिबुके १५ । ॐ चामर्यै नमः कंठजाले १६ । ॐ वज्रायै नमः कंठपृष्ठे १७ । ॐ हरिप्रियायै
नमो दक्षस्कन्धे १८ । ॐ कमलायै नमो वामस्कंधे १९ । ॐ वरदायै नमो दक्षिणहस्ते २० । ॐ अभयदायै नमो वामहस्ते २१ ।
ॐ सुपट्टिकाय नमो दक्षांगुलीषु २२ । ॐ उमायै नमो वामांगुलीषु २३ । ॐ महालक्ष्म्यै नमो हृदये २४ । ॐ कामदायै नमः
स्तनयोः २५ । ॐ क्षुधायै नम उदरे २६ । ॐ महाबलायै नमः कट्याम् २७ । ॐ धनुर्धरायै नमः पृष्ठे २८ । ॐ कामप्रियायै
नमो लिंगे २९ । ॐ गुह्येश्वर्य्यै नमो गुदे ३० । ॐ चपलायै नम ऊर्वोः ३१ । ॐ लीलायै नमो जानुनोः ३२ । ॐ सत्त्वशक्त्यै
नमो जंघयोः ३३ । ॐ भ्रामर्य्यै नमः पादयोः ३४ । ॐ सर्वेश्वर्य्यै नमः सर्वांगे ३५ ॥ इति कवचन्यासः ॥ ॐ ब्राह्म्यै नमः पूर्वे १ ।
ॐ माहेश्वर्य्यै नमो दक्षिणे २ । ॐ कौमार्य्यै नमः पश्चिमे ३ । ॐ वैष्णव्यै नम उत्तरे ४ । ॐ वाराह्यै नम ईशान्याम् ५ । ॐ चामुं
डायै नम आग्नेय्याम् ६ । ॐ कौबेर्य्यै नमः नैर्ऋत्याम् ७ । ॐ वारुण्यै नमः वायव्याम् ८ । ॐ ब्राह्म्यै नम ऊर्ध्वम् ९ । ॐ अनंतायै
नमः अधः १० ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्—ॐ हेमप्राकारमध्ये सुरविटपितटे रक्तपीठाधिरूढां ध्यायेत्तां यक्षिणीं वै परि
मलकुसुमोद्भासिधम्मिल्लभाराम् ॥ पीनोत्तुंगस्तनाढ्यां कुवलयनयनां रत्नकांचीं कराभ्यां भ्राम्यद्रक्तोत्पलाभ्यां नवरविवसनां रक्तभूषांग

रागाम् ॥ १ ॥ इति ध्यायेत् ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले 'ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै नमः' इत्याधारशक्तिं संपूज्य अर्घ स्थापनं कृत्वा स्वर्णादिपात्रे चंदनेन यंत्रं विलिख्य 'ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥

रतिप्रियाधनदायक्षिणीपूजनयन्त्रम्.



तथा च पुष्पांजलिमादाय–ॐसंविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये॥अनुज्ञां देहि धनदे परिवारार्चनाय मे ॥१॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत्॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत॥ ततः षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च ॐ श्रां हृदयाय नमः । हृदयश्रीपादुकां पजयामि तर्पयामि नमः १ ॥ इति सर्वत्र ॥ ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० २ । ॐ श्रूं शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ३ । ॐ श्रैं कवचाय हुं । कवचश्रीपा० ४ । ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । ॐ श्रः अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य–ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततो दशदले पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची । तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण वामावार्तेन च ॐ महालक्ष्म्यै नमः । महालक्ष्मीश्रीपा० १ । ॐ पद्मायै नमः । पद्मा

श्रीपा० २ । ॐ श्रियै नमः । श्रीश्रीपा० ३ । ॐ हरिप्रियायै नमः । हरिप्रियाश्रीपा० ४ । ॐ हरायै नमः । हराश्रीपा० ५ । ॐ पद्मप्रियायै नमः । पद्मप्रियाश्रीपा० ६ । ॐ कमलायै नमः । कमलाश्रीपा० ७ । ॐ अब्जायै नमः । अब्जाश्रीपा० ८ । ॐ चंचलायै नमः । चंचलाश्रीपा० ९ । ॐ लोलायै नमः । लोलाश्रीपा० १० ॥ इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततो भूपुरे इन्द्रादिदश[1][2] दिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य प्रवालमालामादाय हृदये धारयन् एकाग्रचित्तो मंत्रार्थं स्मरन् जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः ॥ तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथाच–इति ध्यानं विधातव्यं चंदनेनानुलेपितम् ॥ ताम्रपात्रे विधातव्यं मंडलं सुमनोहरम् ॥ १ ॥ तत्र पूजा विधातव्या दिव्यैव हि मनीषिणा ॥ भुक्ते वाप्यथवा भुक्ते पायसान्नं निवेदयेत् ॥ २ ॥ रक्तप्रवालमाला तु कार्या साधकसत्तमैः ॥ रक्तवस्त्रपरी धानो जपं कुर्यात्प्रयत्नतः ॥ ३ ॥ लक्षं जपेन्मंत्रसिद्धिः पुरश्चर्यां समाचरेत् ॥ घृताक्तेनेक्षुदंडेन मधुना च दशांशतः ॥ ४ ॥ होमोऽपि च विधातव्यः क्षणाद्दारिद्र्यशांतये ॥ एवं सिद्धे मनौ मंत्री प्रयोगान्कर्तुमर्हति ॥ ५ ॥ विनियोगं तथा कुर्यात्साधकः सुमनो रथान् ॥ रात्रौ च जप्यते साष्टसहस्रं सप्तवासरान् ॥ ६ ॥ एतेनापि च सिद्धिः स्यात्पुरश्चर्याधिका प्रिये ॥ किमस्ति दुर्लभं देवि साधयेद्यदि मानवः ॥ ७ ॥ दशकृत्वोऽथवा शौचं कृत्वा वापि कुचैलताम् ॥ यत्स्मरेद्देवि विद्यां तां दारिद्र्येणाभिभूयते ॥ ८ ॥ काम देवं जपेत्पार्श्वे देव्याः प्रत्यहमादरात् ॥ तेन देव्या महाप्रीतिर्वांछितार्थं ददाति सा ॥ ९ ॥ पूजांते च समायाति रात्रौ देवी धनेश्वरी ॥ सर्वालंकारमुत्सृज्य दत्त्वा याति निजालये ॥ १० ॥ धनं च विपुलं दत्त्वा साधकस्य मनोरथान् ॥ पूजयित्वा महेशानि चंदनेनाव लेपनम् ॥ ११ ॥ दातव्यं सर्वदा तस्यै नित्यं दारिद्र्यशांतये ॥ यक्षिणी स्वयमाहेति यो मां स्मरति नित्यशः ॥ १२ ॥ तस्य दारिद्र्यशमनं

१ घृतशब्दोपलक्षिता घृतमधुशर्करा बोध्याः ।

दासीवच्च करोम्यहम् ॥ कुतो दारिद्र्यशंकास्य स हि कोटीश्वरो नरः ॥ १३ ॥ किंकिणीतंत्रे यथा–बहु किं कथ्यते देवि शिलायां जप्यते सदा ॥ शतं वा दशकृत्वो वा सकृद्वापि च किं पुनः ॥ १४ ॥ न भवेत्तस्य दारिद्र्यमिति जानीहि पार्वति ॥ चन्द्रसूर्यग्रहे वापि जप्यं दारिद्र्यमुक्तये ॥ १५ ॥ वित्तं दृष्ट्वाऽन्यलोकस्य जपेदष्टशतं मनुम् ॥ तांस्तान् कामान्ददात्येव सदैव यदि जप्यते ॥ १६ ॥ यद्ययं जप्यते मंत्रस्ततस्तुष्टा तमर्चयेत् ॥ दरिद्राय स्वयं दत्ते गृहमायुश्च हेम च ॥ १७ ॥ येनासौ जप्यते मंत्रः सदा भक्तिपुरःसरम् ॥ तस्य पुत्राश्च पौत्राश्च प्रपौत्राश्चापि तत्सुताः ॥ दरिद्र्याभिभवं यांति न कदाचिन्निसंशयः ॥ १८ ॥ इति रुद्रयामले पार्वतीश्वरसंवादे रतिप्रियाधनदायक्षिणीपटलं समाप्तम् ॥ अथ धनदारतिप्रियायक्षिणीपद्धतिप्रारंभः ॥ तत्रादौ पूर्वकृत्यम् ॥ पुरश्चरणात् प्राक् तृतीय दिवसे क्षौरादिकं विधाय ततः प्रायश्चित्तांगतया विष्णुपूजाविष्णुतर्पणाविष्णुश्राद्धं होमं चांद्रयणादिव्रतं च कुर्यात् । व्रताशक्तौ गोदानं द्रव्यदान च कुर्यात् ॥ सर्वकर्माशक्तश्चेत्प्रायश्चित्तांगपंचगव्यप्राशनं कुर्यात् ॥ तत्र मंत्रः–ॐ यत्त्वगस्थिगत पापं देहे तिष्ठति कामके ॥ प्राशनात्पंचगव्यस्य दहत्यग्निरिवेंधनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा–प्रणवेन पंचगव्यं पिबेत् ॥ तद्दिने उपवासम् अशक्तश्चेत् पयःपानं हविष्यान्नं एकभक्तव्रतं वा कुर्यात् ॥ पुरश्चरणात्पूर्वदिने स्वदेहशुद्ध्यर्थं पुरश्चरणाधिकारप्राप्त्यर्थं चायुतगायत्रीजपं कुर्यात् ॥ तद्यथा–देशकालौ संकीर्त्य ज्ञाताज्ञातपापक्षयार्थं करिष्यमाणश्रीधनदेश्वरीपुरश्चरणाधिकारार्थममुकमंत्रसिद्ध्यर्थं च गायत्र्ययुतजपमहं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य गायत्र्ययुतं जपेत् ॥ ततः ॐ गायत्र्याचार्यमृषिं विश्वामित्रं तर्पयामि ॥ १ ॥ गायत्रीं छंदस्तर्पयामि ॥ २ ॥ सवितारं देवं तर्पयामि ॥ ३ ॥ इति तर्पणं कृत्वा तस्यां रात्रौ देवतोपास्ति शुभाशुभस्वप्नं विचारयेत् ॥ तद्यथा--स्नानादिकं कृत्वा हरिपादांबुजं स्मृत्वा कुशासनादिशय्यायां यथासुखं स्थित्वा वृषभध्वजं प्रार्थयेत् ॥ तत्र मंत्रः–ॐ भगवन्देवदेवेश शूलभृद्वृषवाहन ॥ इष्टानिष्टे समाचक्ष्व मम सुप्तस्य शाश्वतः ॥ १ ॥ ॐ नमोऽजाय त्रिनेत्राय पिंगलाय महात्मने ॥ वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः ॥ २ ॥ [illegible] कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषतः ॥ क्रियासिद्धिं विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ ३ ॥ इति मंत्रेणाष्टोत्तरशतवारं शिवं संप्रार्थ्य

निद्रां कुर्यात् ॥ ततो निशि स्वप्नं दृष्टं प्रातर्गुरवे विनिवेदयेत् स्वयं वा विचारयेत् ॥ इति पूर्वकृत्यम् ॥ ततश्चन्द्रताराबलान्वित सुमुहूर्ते विविक्ते देशे जपस्थानं प्रकल्प्य पुरश्चरणदिवसे ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय प्रातःस्मरणं कृत्वा मूलमंत्रादिशौचक्रियादंतधावनादिकं च कृत्वा स्नानं कुर्यात्॥तद्यथा--तात्कालिकोद्धृतोदकमुष्णोदकं वा न तु पर्युषितशीतोदकं ताम्रादिबृहत्पात्रे गृहीत्वा तीर्थान्यावाहयेत्। तत्र मंत्रः—ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ॥ नर्मदे सिंधु कावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु ॥ १ ॥ इत्यावाह्य 'ऋतं च सत्यं०' इति मंत्रेणाभिमंत्र्य स्नायात्। एवं स्नानं कृत्वा शुष्कं शुभं कार्पासोत्पन्नरक्तवस्त्रं परिधाय सूर्यायार्घ्यं दद्यात् ॥ तत्र मन्त्रः-एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते ॥ अनुकंपय मां देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥ इत्यर्घ्यं दत्त्वा स्नानार्द्रवस्त्रं परिपीड्य आचम्य पंचत्रिपुंड्रं कृत्वा रक्तप्रवालमालां धारयेत्। जपस्थाने गत्वा अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षान्यतमवितस्तिमात्रान् दश कीलान् 'ॐ नमः सुदर्शनायास्त्राय फट्' इति मंत्रेणाष्टोत्तरशतमभिमंत्रयेत् ॥ ॐ ये चात्र विघ्नकर्तारो भुवि दिव्यंतरिक्षगाः ॥ विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मंत्रस्य सिद्धिषु ॥ १ ॥ मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः ॥ अपसर्पंतु ते सर्वे निर्विघ्ना सिद्धिरस्तु मे ॥ २ ॥ इति मंत्रद्वयेन दशदिक्षु दश कीलान् निखनेत् ॥ ततस्तेषु 'ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्' इति मंत्रेण प्रत्येककीलं संपूज्य तद्बाह्ये भूतबलिं दद्यात् ॥ तत्र मंत्रः—ॐ ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः ॥ मातरोऽप्युग्ररूपाश्च गणाधिपतयश्च ये ॥ १ ॥ विघ्नभूताश्च ये चान्ये दिग्विदिक्षु समाश्रिताः ॥ ते सर्वे प्रीतमनसः प्रतिगृह्णंत्विमं बलिम् ॥ २ ॥ इति मंत्रद्वयेन दशदिक्षु बाह्ये माषभक्तबलिं दद्यात् ॥ इति भूतेभ्यो बलिं दत्त्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचामेत् ॥ ततः—ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ॥ यः स्मरेत् पुंडरीकाक्षं सबाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥ २ ॥ इति मंत्रेण मंडपांतरं प्रोक्ष्य तत्र तावत् कूर्ममुखे उपविश्य जपं तत्रैव दीपस्थानं च कुर्यात् ॥ तत्र आसनाधो जलादिना त्रिकोणं कृत्वा—तत्र 'ॐ कूर्माय नमः ॥ ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः २ ॥ ॐ पृथिव्यै नमः ३ ॥' इति गंधाक्षतपुष्पैः संपूज्य ॥ तदुपरि कुशासनं तदुपरि मृगाजिनं तदुपरि रक्तवर्णासनमास्तीर्य स्थापितानां त्रयाणामासनानामुपरि क्रमेण ॐ अनंतासनाय नमः १ । 'ॐ विमलासनाय नमः २ । ॐ पद्मास

नाय नमः ३ ।' इति मंत्रत्रयेण त्रीन् दर्भान् प्रत्येकं निदध्यात् ॥ एवमासनं संस्थाप्य उदङ्मुख उपविश्य आसनशोधनं कुर्यात् ॥ तत्र मंत्रः—ॐ पृथ्वीतिमंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः । कूर्मो देवता । सुतलं छंदः । आसने विनियोगः ॥ ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ॥ त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥ इतिमंत्रेणासनं प्रोक्ष्य मूलमंत्रेण शिखां बद्ध्वा आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य श्रीधनदेश्वरीप्रीतये लक्षसंख्यात्मकजपपुरश्चरणमहं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य ततो भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठान्त मातृकाबहिर्मातृकान्यासं च सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कृत्वा प्रयोगोक्तन्यासादिकं विधाय ध्यानं कुर्यात् ॥ अथ ध्यानम्—ॐ कुंकुमोदरगर्भाभां किंचिद्यौवनशालिनीम् ॥ मृणालकोमलभुजां केयूरांगदभूषिताम् ॥ १ ॥ नीलोत्पलदृशं किंचिदुद्यत्कुचविराजिताम् ॥ कराभ्यां भ्राम्य कमलं वराभयसमन्विताम् ॥ २ ॥ रक्तवस्त्रपरीधानां तांबूलाधरपल्लवाम् ॥ हेमप्राकारमध्यस्थां रत्नसिंहासनोपरि ॥ ३ ॥ ध्यायेत्कल्पतरोर्मूले देवीं तां धनदादिकाम् ॥ रत्नपात्रद्वयं चाग्रे दायिनीं निधिवर्षिणीम् ॥ ४ ॥ अन्नपूर्णावराहाभ्यां श्रीभूमिसहितां जपेत् ॥ अन्यहस्तगतं छत्रं कुबेरश्चामरद्वयम् ॥ ५ ॥ इति ध्यायेत् ॥ अथ अर्घस्थापनम्—मूलेन फट् इति प्रक्षाल्य मूलेन नमः इत्यापूर्य प्रणवेन गंधपुष्पे निक्षिप्य—ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ॥ नर्मदे सिंधु कावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु ॥ १ ॥ इति तीर्थान्यावाह्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य तदुपरि किंचिन्मूलं जप्त्वा तज्जलं किंचित्प्रोक्षणीयपात्रे संस्थाप्य तेनोदकेनात्मानं जपोपकरणं च मूलेन त्रिवारमभ्युक्ष्य पीठे यंत्रं संस्थाप्य प्रतिष्ठां कुर्यात् ॥ अथ प्राणप्रतिष्ठाप्रयोगः ॥ आचम्य देशकालौ संकीर्त्य श्रीधनेश्वरीनूतन यंत्रे प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये ॥ इति संकल्प्य 'अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः । ऋग्यजुःसामानि च्छंदांसि । क्रियामयं वपुः । प्राणाख्या देवता । आं बीजम् । ह्रीं शक्तिः । क्रौं कीलकम् । अस्मिन्नूतनयंत्रे प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः॥ इति जलं निक्षिपेत् ॥ करेणाच्छाद्य ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रं लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः सोहँ श्रीधनदेश्वरीयंत्रस्य प्राणा इह प्राणाः ॥ पुनः ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रं लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः सोहँ श्रीधनदेश्वरीयंत्रस्य जीव इह स्थितः ॥ पुनः ॐ आं ह्रीं क्रौं यँ रं लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः सोहँ श्रीधनदेश्वरीयंत्रस्य सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि ॥ पुनः ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रं लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः सोहँ श्रीधनदेश्वरीयंत्रस्य वाङ्

मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा ॥' इति प्राणान् प्रतिष्ठाप्य संस्कारसिद्धये पंचदश प्रणवावृत्तिं कृत्वा अनेन श्रीधनदेश्वरीयंत्रस्य गर्भाधानादिपंचदशसंस्कारान्संपादयामि इति वदेत् ॥ एवं प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा तद्देशे मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनं कुर्यात् ॥ तद्यथा—अक्षतानादाय—देवेशि भक्तिसुलभे परिवारसमन्विते ॥ यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावद्देवि इहावस ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा श्रीधनदेश्वरि इहागच्छेह तिष्ठेत्यावाह्य प्रार्थयेत्॥ स्वागतं देवदेवेशि मद्भाग्यात्त्वमिहागता॥ प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत्परिपालय ॥ इति प्रार्थयित्वा' ॐ पद्मायै नमः ' इति मंत्रेण मध्ये संपूज्य गंधादिपूजनं कुर्यात् ॥ तद्यथा—लं पृथिव्यात्मकं गंधं समर्पयामि १। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि २। यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि ३। रं अग्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि ४। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि ५। सं सर्वात्मकं नमस्कारं समर्पयामि ६ ॥ इति संपूज्य योनिमुद्रां प्रदर्श्य प्रवालमालामादाय जपं कुर्यात् ॥ जपांते—ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा मम॥ शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च देहि मे ॥ ॐ ह्रीं सिद्ध्यै नमः ॥ इति मालां शिरसि निधाय गोमुखीं रहसि स्थापयेत् । नाशुचिः स्पर्शयेत् । नान्यस्मै दद्यात् । अशुचिस्थाने न निधापयेत् । स्वयोनिवद्गुप्तां कुर्यात् ॥ ततः कवचस्तोत्रसहस्रनामादिकं पठित्वा पुनः ऋष्यादिन्यासादिकं च कृत्वा पंचोपचारैः संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात्तत्र मंत्रः ॐ नानासुगंधपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च ॥ पुष्पांजलिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि ॥ इति मूलं पठित्वा धनदेश्वरीरतिप्रियायै नमः पुष्पांजलिं समर्पयामि ॥ इति पुष्पांजलिं दत्त्वा बद्धांजलिपूर्वकं क्षमापनं पठेत् ॥ ॐ ज्ञानतोऽज्ञानतो वाऽथ यन्मया क्रियते शिवे। मम कृत्यमिदं सर्वमिति देवि क्षमस्व मे ॥ १ अपराधसहस्राणि क्रियंतेऽहर्निशं मया ॥ दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥ ॥ २ ॥ अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे ॥ कोऽपरः सहतां लोके केवलं स्वामिनं विना ॥ ३ ॥ यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ॥ तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ ४ ॥ मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तहीनं सुरेश्वरि ॥ यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ ५ ॥ इति बद्धांजलिपूर्वकं क्षमाप्य अर्घोदकेन चुलुकमादाय—ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु

मे देवि त्वत्प्रसादात् त्वयि स्थितिः ॥ ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्म्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुर्य्यावस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं श्रीधनदेश्वरीरतिप्रियायै समर्पयामि ॥ इति जपसमर्पणं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः ॥ अथ कुबेरमंत्रः—ॐ यक्षाय कुबेराय धनधान्याधिपतये धनधान्यसमृद्धिं मे देहि दापय स्वाहा ॥ अस्य पुरश्चरणं द्वादशसहस्रजपः ॥ नक्तभोजनं क्षीरोदनेन ॥ इति रतिप्रियाधनदायक्षिणीपद्धतिः समाप्ता ॥ २ ॥ अथ श्रीधनदारतिप्रिया यक्षिणीकवचप्रारंभः ॥ रुद्रयामले—देव्युवाच ॥ कथयस्व महादेव धनदाकवचं शुभम् ॥ यच्छ्रुत्वा कवचं दुग कबेर इव भैरव ॥ १ ॥ भैरव उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं धनदाप्रियम् ॥ दारिद्र्यखंडनं नाम सर्वसौभग्यदायकम् ॥ २ ॥ ॐ अस्य श्रीधनदायाक्षिणी कवचमंत्रस्य कुबेर ऋषिः। पंक्तिश्छंदः। श्रीधनदा देवता। रं बीजम्। श्रीं शक्तिः। ह्रीं कीलकम्।श्रीधनदेश्वरीप्रसादसिद्ध्यर्थे मे दारिद्र्यनाशाय श्रीधनदाकवचपाठे विनियोगः ॥ ॐ ह्रां कुबेरऋषये नमः शिरसि ॥ ॐ ह्रीं पंक्तिच्छंदसे नमः मुखे ॥ ॐ ह्रूं श्रीधनदादेवतायै नमः हृदि ॥ ॐ ह्रैं रं बीजाय नमः गुह्ये ॥ ॐ ह्रौं श्रीं शक्तये नमः पादयोः ॥ ॐ ह्रः ह्रीं कीलकाय नमः नाभौ ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ह्रां हृदयाय नमः ॥ ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा ॥ ॐ ह्रूं शिखायै वषट् ॥ ॐ ह्रैं कवचाय हुं ॥ ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ अथ ध्यानम्—ॐ कुंकुमोदरगभाभां किंचिद्यौवनशालिनीम् ॥ मृणालकोमलभुजां केयरांगदभूषिताम् ॥ १ ॥ नीलोत्पलदृशं किंचिदुद्यत्कुचविराजिताम् ॥ भजेऽहं श्राम्यकमलवराभयसमन्विताम् ॥ २ ॥ रक्तवस्त्रपरीधानां तांबूलाधरपल्लवाम् ॥ हेमप्राकारमध्यस्थां रत्नसिंहासनोपरि ॥ इति ध्यात्वा कवचं पठेत् ॥ ३ ॥ ॐ तत्तुर्यं रक्षयेत्सर्वशरीरं देवि सर्वतः ॥ माया चक्षुर्भुजौ पातु पादौ रक्षेद्रतिप्रिया ॥ १ ॥ वह्निजाया पातु लिंगं मत्र सर्वत्र रक्षतु ॥ धनदा सर्वदा रक्षेत्पथि दुर्गे यमा

॥ २ ॥ मंजुघोषा सदा पातु पृष्ठजानुयुगे बलम् ॥ सुदरी दंतजालं च कंठजालं च चामरी ॥ ३ ॥ भ्रामरी भ्रमणं रक्षेद्दश दिक्षु सुपाठिका ॥ करालभैरवी पातु वदनं श्रुतिनेत्रयोः ॥ ४ ॥ त्रिनेत्रा त्वरिता पातु मदंगं सर्वसंकटे ॥ ओष्ठाधरौ महामाया रसनां चोरुदंडयोः ॥ ५ ॥ अंगलीषु तथा शक्तिर्जघनं चैव चंडिका ॥ इंद्राणी पातु मे पूर्वे माहेश्वरी तु दक्षिणे ॥ ६ ॥ कौमारी पश्चिमे पातु वैष्णवी चोत्तरेऽवतु ॥ ऐशान्ये पातु वाराही चामुंडा वह्निकोणके ॥ ७ ॥ कौबेरी नैर्ऋते पातु वायव्यां दुःखहारिणी ॥ ऊर्ध्वं ब्राह्मी सदा पातु अधो दुर्गा सदावतु ॥ ८ ॥ ज्ञात्वा तु कवचं दिव्यं सुखेन सर्वसिद्धिकृत् ॥ ध्यायेत्कल्पतरोर्मूले देवि त्वां धनदायिकाम् ॥ ॥ ९ ॥ रत्नपात्रद्वयं चाग्रे दायिनीं निधिवर्षिणीम् ॥ अन्नपूर्णावराहाभ्यां श्रीभर्मिं सहितां जपेत् ॥ १० ॥ अन्यहस्तं गतं छत्रं कुबेरश्चामरद्वयम् ॥ भविष्यति महादेव्या मंत्रैः सर्वैः समृद्धिमान् ॥ ११ ॥ कदाचिद्यः पठेद्धीमान्न वै रोगो भवेद्ध्रुवम् ॥ अपुत्रो लभते पुत्रं सर्वविद्यासुशोभनम् ॥ १२ ॥ इति श्रीरुद्रयामलोक्तधनदायक्षिणीकवचं सम्पूर्णम् ॥ अथ धनदायक्षिणीस्तोत्रं लिख्यते ॥ रुद्रयामले–देवी देवमुपागम्य नीलकंठं सदाशिवम् ॥ कृपया पार्वती प्राह शंकरं करुणाकरम् ॥ १ ॥ देव्युवाच ॥ ब्रूहि वल्लभ साधूनां दरिद्राणां कुटुंबिनाम् ॥ दारिद्र्यदलनोपायमंजसैव धनप्रदम् ॥ २ ॥ पूजयन् पार्वतीवाक्यमिदमाह महेश्वरः ॥ उचितं जगदंबासि तव प्रीत्याऽनुकंपया ॥ ३ ॥ अत्यन्तं सानुजं रामं सांजनेयमथानुगम् ॥ प्रणम्य परमानंदं वक्ष्येऽहं स्तोत्रमुत्तमम् ॥ ४ ॥ धनदाश्रद्दधानानां सद्यः सुलभसाधनम् ॥ योगक्षेमकरं प्रोक्तं सत्यं मे वचनं यथा ॥ ५ ॥ पठेत्तस्याग्रतो वापि ब्राह्मणो रसिकोत्तमः ॥ धनलाभो भवेदाशु नाशयेत्तस्य निःस्वताम् ॥ ६ ॥ ॐ अस्य श्रीधनदास्तोत्रमंत्रस्य कुबेर ऋषिः । पांक्तिश्छंदः । श्रीधनदेश्वरी देवता । धं बीजम् । स्वाहा शक्तिः । श्रीं कलिकम् । श्रीधनदेश्वरीप्रसादसिद्ध्यर्थ दारिद्र्यनाशाय स्तोत्रमंत्रजपे विनियोगः ॥ ॐ कुबेरऋषये नमः शिरसि । पंक्तिच्छंदसे नमः मुखे । धनदादेवतायै नमः हृदि । धं बीजाय नमः गुह्ये । स्वाहाशक्तये नमः पादयोः । श्रीं कीलकाय नमः करसम्पुटे । दारिद्र्यनाशाय विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ इति ऋष्यादि

न्यासः ॥ ॐ श्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ श्रूं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ श्रैं अनामिकाभ्यां नमः । ॐ श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ श्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ श्रां हृदयाय नमः । ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ श्रूं शिखायै वषट् । ॐ श्रैं कवचाय हुं । ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ श्रः अस्त्राय फट् ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ अथ ध्यानम्—ॐ हेमप्राकारमध्ये सुरविटपितले रत्नपीठाधिरूढां यक्षीं बालां स्मरामः परिमलकुसुमोद्भासिधम्मिल्लभाराम् ॥ पीनोत्तुंगस्तनाढ्यां कुवलयनयनां रत्नकांचीकराभ्यां भ्राम्यद्रक्तोत्पलाभ्यां नवरविवसनां रक्तभूषांगरागाम् ॥ ७ ॥ एवं ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य स्तोत्रं पठेत् ॥ ॐ भूभवां संभवां भूत्यै पंक्तिकल्पलतां शुभाम् ॥ प्रार्थयेत्तांस्तथा कामान् कामधेनुस्वरूपिणीम् ॥ ८ ॥ धरामरप्रिये पुण्ये धन्ये धनदपूजिते ॥ सुधनं धार्मिकं देहि यजनाय सुसत्वरम् ॥ ९ ॥ धर्मदे धनदे देवि दानदे तु दयाकरे ॥ त्वं प्रसीद महेशानि यदर्थं प्रार्थयाम्यहम् ॥१०॥ रम्ये रुद्रप्रिये रूपे रमारूपे रविप्रिये॥ शशिप्रभमनोमूर्त्ते प्रसीद प्रणते मयि ॥११॥ आरक्तचरणांभोजे सिद्धसर्वांगभूषिते ॥ दिव्यांबरधर दिव्ये दिव्यमाल्योपशोभिते ॥ १२ ॥ समस्तगुणसंपन्ने सर्वलक्षणलक्षिते ॥ जातरूपमणीन्द्रादिभूषिते भूमिभूषिते ॥ १३ ॥ शरच्चंद्रमुखे नीले नीरनीरजलोचने ॥ चंचरीकं च भ्रूवासं श्रीहारि कुटिलालके ॥ १४ ॥ मत्ते भगवति मातः कलकंठरवामृते ॥ हासावलोकनैर्दिव्यैर्भक्तचिंतापहारिके ॥ १५ ॥ रूपलावण्यतारुण्ये कारुण्यामृतभाजने ॥ क्वणत्कंकणमंजीरलसल्लीलाकरांबुजे ॥ १६ ॥ रुद्रप्रकाशिते सत्त्वे धर्माधारे दयालये ॥ प्रयच्छ यजनायैव धनं धर्मैकशोधनम् ॥ १७ ॥ मातरं वा विलंबेन दिशस्व जगदंबिके ॥ कृपया करुणासारे प्रार्थितं परयाशु मे ॥ १८ ॥ वसुधे वसुधारूपे वासुवासववंदिते ॥ धनदे यजनायैव वरदे वरदा भव ॥ १९ ॥ ब्रह्मण्ये ब्राह्मणे पूज्ये पार्वतीशिवशंकरे ॥ श्रीकरे शंकरे श्रीदे प्रसीद मयि किंकरे ॥ २० ॥ स्तोत्रं दारिद्र्यदावार्तिशमनं च धनप्रदम् ॥ पार्वतीशप्रसादेन सुरेशशंकरेरितम् ॥२१॥ श्रद्धया ये पठिष्यंति पाठयिष्यंति भक्तितः ॥ सहस्रमयुतं लक्षं धनलाभो भवेद्ध्रुवम् ॥ २२ ॥ इति श्रीरुद्रयामले धनदारतिप्रियायक्षिणीस्तोत्रं समाप्तम् ॥ १ ॥ अथ बिल्वयक्षिणीमंत्रप्रयोगः ॥

ईश्वर उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि यक्षिणीनां सुसाधनम् ॥ यस्य सिद्धो मनुष्याणां सर्वे सिध्यंति इच्छयाः ॥ मंत्रो यथा—ॐ क्लीं ह्रीं ऐं ओं श्रीं महायक्षिण्यै सर्वैश्वर्यप्रदात्र्यै नमः श्रीं क्लीं ऐं ओं स्वाहा ॥ इति सप्तविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—आषाढपूर्णिमायां तु कृत्वा क्षौरादिकाः क्रियाः ॥ सितेऽर्यवारेऽभ्युदये तु साधयेद्यक्षिणीं नरः ॥ प्रतिपद्दिनमारभ्य श्रावणेन्दुबलान्विते ॥ मासमात्रप्रयोगस्य निर्विघ्नेन विधिं चरेत् ॥ निर्जने बिल्ववृक्षस्य मूले कुर्याच्छिवार्चनम् ॥ उपचारैः षोडशभी रुद्रपाठसमन्वितम् ॥ त्र्यंबकेत्यस्य मंत्रस्य जपं पंचसहस्रकम् ॥ दिवसे दिवसे कृत्वा कुबेरस्य च पूजनम् ॥'यक्षराज नमस्तुभ्यं शंकरप्रियबांधव ॥ एकां मे वशगां नित्यं यक्षिणीं कुरु ते नमः ॥' इति मंत्रं कुबेरस्य जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥ ब्रह्मचर्येण मौनेन हविष्याशी भवेद्दिवा ॥ रात्रेस्तु मध्यमे यामे विनिद्रो मितभोजनः ॥ बिल्ववृक्षं समारुह्य जपेन्मंत्रमिमं सदा ॥ मूलमंत्रस्य च जपं सहस्रत्रयसंमितम् ॥ कुर्याद्बिल्वसमारूढो मासमात्रमतंद्रितः ॥ मध्वामिषबलिं तत्र कल्पयेत्संस्कृतं पुरः ॥ यक्षिणी बहुरूपा तु क्वचित्तत्रागमिष्यति ॥ तां दृष्ट्वा न भयं कुर्याज्जपसंसक्तमानसः ॥ यस्मिन्दिने बलिं भुक्त्वा वरं दातुं समर्थयेत् ॥ तदा वरान् वै वृणुयात्तांस्तान्वै मनसेप्सितान् ॥ धनमानयितुं ब्रूयादथवा कर्णवार्तिकाम् ॥ भोगार्थमथवा ब्रूयान्नृत्यं कर्तुमथापि वा ॥ भूतानानयितुं वापि स्त्रियमानयितुं तथा ॥ राजानं वा वशीकर्तुमायुर्विद्यायशोबलम् ॥ एतदन्यद्यदिप्सेत साधकस्तत्तु याचयेत् ॥ चेत्प्रसन्ना यक्षिणी स्यात्सर्वं दत्ते न संशयः ॥

---

१ गुरुशुक्रके उदयमें मनुष्य यक्षिणीका साधन करे। २ श्रावणकृष्णपक्षकी प्रतिपदासे चन्द्रबल देखकर। ३ ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ इस मन्त्रको दिनमें बेलवृक्षके नीचे पांच हजार जप करे। ४ दिनमें मौन धारण करना और हविष्यान्नभोजन करना। ५ पीछे अर्द्धरात्रिमें निद्रारहित थोडा भोजन करके। ६ बेलवृक्षके ऊपर बैठकर एक मासपर्यन्त नित्य मूलमन्त्रका तीन हजार जप करे। ७ मद्य मांस बलिदानके वास्ते नित्यही पास रख लेवे कारण कि अनेक रूपधारण करके कौनसे कालमें कौनसे दिन यक्षिणी आजायगी। ८ जिस दिन यक्षिणी बलिको ग्रहण करके वर देनेको समर्थ हो। ९ उस समय मनमें इच्छा हो सो वर मांगले। १० अथवा किसी पुरुष या स्त्रीके लानेके वास्ते मांग ले। ११ उपरोक्त कहेहुए मांगे अथवा और जो कुछ इच्छा हो सो मांग ले। १२ जो यक्षिणी प्रसन्न होगई हो तो मांगेहुए वर देगी इसमें सन्देह नहीं।

अशक्तस्तु द्विजैः कुर्यात्प्रयोगं सुरपूजितम् ॥ सहायानथवाऽऽदाय ब्राह्मणान्साधयेद्व्रतम् ॥ तिस्रः कुमारिका भोज्याः परमान्नेन नित्यशः ॥ सिद्धे धनादिकेनैव सदा सत्कर्म चाचरेत् ॥ कुकर्मणि व्ययश्चेत्स्यात्सिद्धिर्गच्छति नान्यथा ॥ गुप्तेन विधिना कार्यं प्रकाशं नैव कारयेत् ॥ प्रकाशे बहुविघ्नानि जायंते नात्र संशयः ॥ प्रयोगश्चानुभूतोऽयं तस्माद्यत्नवदाचरेत् ॥ निर्विघ्नेन विधानेन भवेत्सिद्धिरनुत्तमा ॥ गोप्यं चेदं महत्तंत्रं यस्मै कस्मै न दापयेत् ॥ दुर्जनस्पर्शनाद् विद्या भवत्यल्पफला यतः ॥ २ ॥ अथ चन्द्रद्रवावटयक्षिणी मंत्रप्रयोगः शिवार्चनचन्द्रिकायाम्–ॐ ह्रीं नमश्चन्द्रद्रवे कर्णाकर्णकारणे स्वाहा ॥ इति सप्तदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–वटवृक्षं समारुह्य लक्षमेकं जपेन्मनुम् ॥ मन्त्रिते सप्तभिर्मन्त्री कांजिके क्षालयेन्मुखम् ॥ यामर्द्धं यं जपेद्रात्रौ वरं यच्छति यक्षिणी ॥ रसं रसायनं दिव्यं क्षुद्रकर्माण्यनेकधा ॥ सिद्धानि सर्वकार्याणि नान्यथा शंकरोदितम् ॥ २ ॥ मतांतरे–ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रयोगिने स्वाहा ॥ इति सप्तदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः । अन्यत्सर्वं पूर्ववत् ॥ २ ॥ अथ धनदा पिप्पलयक्षिणीमंत्रप्रयोगो दत्तात्रेयतंत्रे–ॐ ऐं क्लीं धनं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इत्येकादशाक्षरो मंत्रः ॥ मतांतरे–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धनं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अश्वत्थवृक्षमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ॥ धनदां यक्षिणीं चैव धनं प्राप्नोति मानवः ॥ अयुतं जपेत्सिद्धिः ॥ मतांतरे–ॐ ह्रां ह्रीं श्रीं क्लीं नमः ॥ इति सप्ताक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अश्वत्थाधो द्वात्रिंशत्सहस्रं जपेत् ॥ दधि दुग्धं च नैवेद्यं दत्त्वा सिद्धो भवति । ततो भूतप्रेतपिशाचादयो वश्या भवंति सेवां कुर्वंते यक्षिण्याधिपति र्भवति ॥ ३ ॥ अथ पुत्रदाआम्रयक्षिणीमंत्रप्रयोगो दत्तात्रेयतंत्रे–ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–चूतवृक्षसमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ॥ अपुत्रो लभते पुत्रं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ अयुतं जपेत् ॥

१ आप करनेको अशक्त हो तो ब्राह्मणोंसे करा लेवं, यह प्रयोग सुरपूजित है। २ अथवा ब्राह्मणोंको संग लेकर व्रतको धारण करे। ३ और परमान्न (खीर) करके नित्य तीन कन्याओंको भोजन करावे। ४ रात्रिमें दो महर पर्यंत जप करे।

॥ ४ ॥ अथ अशुभक्षयकरीधात्रीयक्षिणीमंत्रप्रयोगो दत्तात्रेयतंत्रे–ॐ ए क्लीं नमः ॥ इति चतुरक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–धात्रीमूलसमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ॥ अशुभक्षयकारिण्या यक्षिण्या मनुमुत्तमम् ॥ अयुतं जपेत् ॥ ५ ॥ अथ विद्यादात्र्युदुंबरयक्षिणीमंत्रप्रयोगो दत्तात्रेयतंत्रे–ॐ ह्रीं श्रीं शारदायै नमः ॥ इति नवाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–औदुंबरसमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ॥ लभेत्पुस्तकसांसिद्धिं सर्वविद्याश्चतुर्दश ॥ अयुतं जपेत् ॥ ६ ॥ अथ विद्यादात्रीनिर्गुंडीयक्षिणीमंत्रप्रयोगो दत्तात्रेयतंत्रे–ॐ सरस्वत्यै नमः ॥ इति सप्ताक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–निर्गुंडीमूलमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ॥ विद्याप्राप्तिर्भवेन्नित्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ अयुतं जपेत् ॥ ७ ॥ अथ जयार्कयक्षिणीमंत्रप्रयोगो मंत्रसिद्धभाण्डागारे–ॐ ऐं महायक्षिण्यै सर्वकार्यसाधनं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ दत्तात्रेयतंत्रे–जयं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति नवाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--अर्कमूलसमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ॥ यक्षिणीं च जयां नाम सर्वकार्यकरीं सदा ॥ अयुतं जपेत् ॥ ८ ॥ अथ संतोषाश्वेतगुंजायक्षिणीमंत्रप्रयोगो दत्तात्रेयतंत्रे--ॐ जगन्मात्रे नमः ॥ इति सप्ताक्षरा मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--श्वेतगुंजासमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ॥ संतोषाख्या यक्षिणी तु ददाति वांछितं फलम् ॥ ९ ॥ अथ राज्यदातुलसीयक्षिणीमंत्रप्रयोगो दत्तात्रेयतंत्रे–ॐ क्लीं क्लीं नमः ॥ इति पंचाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–तुलसीमूलमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ॥ अकस्माद्राज्यमाप्नोति नान्यथा शंकरोदितम् ॥ अयुतं जपेत् ॥ १० ॥ अथ राज्यदांकोलयाक्षिणीमंत्रप्रयोगो दत्तात्रेयतंत्रे–ॐ ह्रौं नमः ॥ इति चतुरक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अंकोलवृक्षमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ॥ राजाधिराजो भवति नान्यथा शंकरोदितम् ॥ अयुतं जपेत् ॥ ११ ॥ अथ कुशयक्षिणीमंत्रप्रयोगो दत्तात्रेयतंत्रे–ॐ वाङ्मयायै नमः ॥ इति सप्ताक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–कुशमूलसमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ॥ सर्वकार्याणि सिद्ध्यंति नान्यथा शंकरोदितम् ॥ अयुतं जपेत् ॥ १२ ॥ अथ अपामार्गयक्षिणीमंत्रप्रयोगो दत्तात्रेयतंत्रे–ॐ ह्रीं भारत्यै नमः ॥ इति सप्ताक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--अपामार्गसमारूढो

जपेदेकाग्रमानसः ॥ वाचां सिद्धिर्भवेत्सत्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ अयुतं जपेत् ॥ १३ ॥ अथ क्षीरार्णवायक्षिणीसाधनं प्राकृतग्रंथे-ॐ नमो ज्वालामाणिक्यभूषणायै नमः ॥ इति चतुर्दशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-निजगृहे द्वारवेदिकायां स्थित्वा रात्रौ पंचदशशतं जपेत्। दशदिनांतरे प्रसन्ना भवति घृतक्षीरदधिकदलीफलानि ददाति ॥ १४ ॥ अथ उच्छिष्टयक्षिणीसाधनं प्राकृत ग्रंथे-ॐ जगत्त्रयमातृके पद्मनिभे स्वाहा ॥ इति चतुर्दशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-अनेन मंत्रेण सर्वावस्थायां पंच विंशतिसहस्रं प्रतिदिनं जपेत् । प्रसन्ना भवति अन्नवस्त्रेण परिपूर्णं करोति ॥ १५ ॥ अथ चन्द्रामृतयक्षिणीसाधनं प्राकृतग्रंथे-ॐ गुलुगुलुचन्द्रामृतमायिअवजालितं हुलुहुलुचन्द्रनीरे स्वाहा ॥ इति षड्विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-गृहे वाऽरण्ये एकान्ते लक्षमेकं जपेन्मनुम् ॥ पुष्पधूपादिभिः पूजां नित्यं कुर्य्यात्प्रयत्नतः ॥ पंचामृतैर्दशांशेन हुते देवी प्रसीदति ॥ दीनाराणां सहस्रैस्तु प्रत्यहं तोषयेत्सती ॥ १६ ॥ अथ स्वामीश्वरीसाधनं प्राकृतग्रंथे-ॐ ह्रीं आगच्छ स्वामीश्वरि स्वाहा ॥ इत्येकादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-एकांते तु शुचौ देशे त्रिसंध्यं त्रिसहस्रकम् ॥ मासमेकं जपेन्मंत्रं ततः पूजां समारभेत् ॥ पुष्पधूपादिनैवेद्यैः प्रदीपै घृतपूरितैः ॥ रात्रावभ्यर्चयेत्सम्यक्सुस्थिरः सुमनाः सुधीः ॥ अर्द्धरात्रे गते देवी समागत्य प्रयच्छति ॥ रसं रसायनं दिव्यं वस्त्रालंकारभूषणम् ॥ १७ ॥ अथ महामायाभोगयक्षिणीसाधनं प्राकृतग्रंथे-ॐ नमो महामायामहाभोगदायिनी हुं स्वाहा ॥ इति सप्तदशारो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-पंचसहस्रं प्रतिदिनं जपेत् मिष्टान्नं भुक्त्वा पंचमे वा घृतं च तेन दशांशतो होमः । ततो देवी प्रसन्ना भवति वरं ददाति सर्वस्त्रियः स्वस्त्री वा वश्या भवति राजमान्यो वश्यो भवति नृपतिश्च पंचमुद्राः प्रतिदिनं ददाति ॥ १८ ॥ अथ त्यागासाधनं शिवार्चनचन्द्रिकायाम्-अहो त्यागी महात्यागी अर्थं देहि मे वित्तं वीरसेवितं ह्रीं स्वाहा॥ इति त्रयोविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥

१ मतांतरे-जगत्त्रयमातृके पद्मनिभे स्वाहा । इति त्रयोदशाक्षरो मंत्रः । २ न्हाकर या विना न्हाये पवित्र या अपवित्रावस्थामें बैठते लेटते चलते फिरते उच्छिष्ट अवस्थामें । मतां-तरे- पंचमेवाका दशांश हवन भी करे। करना योग्य है ।

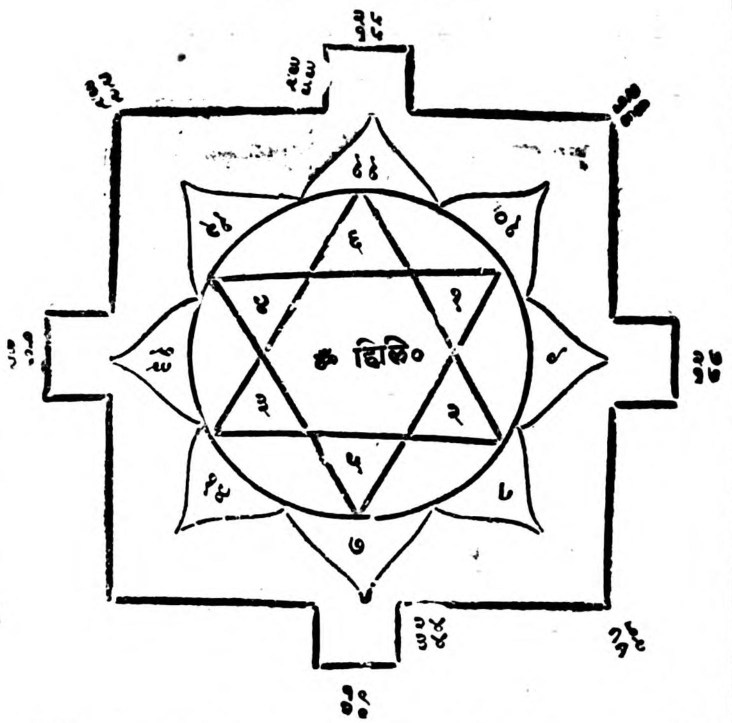
मतांतरे–ॐ अहो त्यागि मम त्यागार्थं देहि मे वित्तं वीरसेवितं स्वाहा ॥ इति द्वाविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–चतुर्लक्षमिमं मंत्रं जपेत्त्यागा प्रसीदति ॥ ददाति चिंतितानर्थांस्तस्मै भोगांश्च मंत्रिणे ॥ १९ ॥ अथ सर्वांगसुलोचनासाधनं शिवार्चनचन्द्रिकायाम् ॐ कुवलये हिलि हिलि कुरु कुरु सिद्धिं सिद्धेश्वरि ह्रीं स्वाहा ॥ इति द्वाविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–लक्षत्रयं जपे मन्त्रं दशांशं गुग्गुलुं हुनेत् ॥ लाक्षामुत्पलकं वाथ ध्यात्वा सर्वाङ्गलोचनम् ॥ पट्टीपट्टे वा संलिख्य होमांते चिंतिता सदा ॥ २० ॥ ॥ अथ भूतलोचनासाधनं प्राकृतग्रंथे–ॐ भूते सुलोचनेत्वम् ॥ इत्यष्टाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–लक्षमुत्पलशाकोत्थं हुत्वा मंत्रमिमं जपेत् ॥ लक्षैकादशमावर्त्य हुत्वा मध्ये शशिग्रहे ॥ अथवा मालतीपुष्पैर्हुत्वा भानुसहस्रकम् ॥ भानुभुक्ते भवेद्यावत्पूर्णांते सिध्यति ध्रुवम् ॥ सहस्रं तु जपाद्यंते सहस्राणां तु भोजनम् ॥ २१ ॥ अथ जलपाणिसाधनं प्राकृतग्रंथे–ॐ ह्रीं जलपाणिनि ज्वलज्वल हुं ल्वुं स्वाहा ॥ इति पंचदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–शाकयूषपयःसक्तुभक्षः श्वेततमासने ॥ देवतां पूजयेन्नित्यं जपेल्लक्षत्रयो दशम् ॥ पायसं होमयेत्पश्चात्सहस्रेणैव सिध्यति ॥ नित्यं लोकसहस्रस्य भोजनं सा प्रयच्छति ॥ लक्षायुर्दिव्यवस्त्राणि दत्ते सा शङ्करो दिता ॥ २२ ॥ अथ मातंगेश्वरीसाधनं प्राकृतग्रंथे–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं मातंगेश्वर्यै नमो नमः ॥ इति त्रयोदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–घृतदीपसंमुखे लक्षं जपेत् । तद्दशांशतो होमः । प्रसन्ना भवति स्त्रीभावे स्त्रीराजलक्ष्मीमहिषीत्याद्यभीष्टजातं ददाति ॥ २३ ॥ ॥ अथ विद्यायक्षिणीसाधनं प्राकृतग्रंथे–ॐ ह्रीं वेदमातृभ्यः स्वाहा ॥ इति नवाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–पञ्चविंशतिसहस्रं जपेत् । पंचमे वा दशांशतो होमस्तदा विद्या प्राप्ता भवति ॥ २४ ॥ अथ हटेलेकुमारीसाधनं प्राकृतग्रंथे–ॐ नमो हटेलेकुमारि स्वाहा ॥ इत्येकादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–द्विसहस्रं प्रतिदिनं जपेत् । ततः सप्तदिनांतरे बंधमुक्तो भवति । दुग्धाज्येन दशांशतो होमं

---

१ एक लाख कमलका हवन करके मंत्रका ग्यारह लाख जप करे, चन्द्रग्रहणमें हवन करे अथवा मालती पुष्पका बारा हजार होम करे। सूर्यग्रहणमें हवन करे जब सूर्य ग्रहणसे मुक्त हो तबतक मंत्र सिद्ध होता है फिर सहस्रवार जपनेसे सहस्र मनुष्योंको भोजन प्राप्त होता है। २ मतांतरे–ॐ ह्रीं ॐ क्लीं नमो मातंगेश्वरि नमः। ३ मतांतरे लक्षं जपेत् तद्दशांशतो होमः। एवंकृते अन्नं ददाति।

कुमारीभोजनं च कुर्यात् । तदा प्रसन्ना भवति ॥ २५ ॥ अथ बंदीसाधनं मंत्रमहोदधौ ॥ मंत्रो यथा--ॐ हिलिहिलि बंदीदेव्यै स्वाहा ॥ ॐ अस्य श्रीबंदीमंत्रस्य भरव ऋषिः । त्रिष्टुप् छंदः । बंदी देवता । ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ भैरवऋषये नमः शिरसि १ । त्रिष्टुप्छंदसे नमः मुखे २ । बंदीदेवतायै नमः हृदि ३ । विनियोगाय नमः सर्वांगे४॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । हिलि तर्जनीभ्यां नमः २ । हिलि मध्यमाभ्यां नमः ३ । बंदी अनामिकाभ्यां नमः ४ । देव्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ एवमेव हृदयादिषडंगन्यासं कुर्य्यात् ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ सतोय पाथोदसमानकांतिमंभोजपीयूषकरीरहस्ताम् ॥ सुरांगनासेवितपादपद्मां भजामि बंदीं भवबंधमुक्त्यै ॥ १ ॥ एवं ध्यात्वा सर्वतोभद्रमंडले 'आधारशक्त्यादिपरत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति पीठदेवताः संपूज्य जयादिनवपीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तत्र क्रमः ॥ पूर्वादिक्रमेण--ॐ जयायै नमः १ । विजयायै नमः २ । ॐ आजितायै नमः ३ । ॐ अपराजितायै नमः ४ । ॐ नित्यायै नमः ५ । ॐ विलासिन्यै नमः ६ । ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७ । ॐ अघोरायै नमः ८ ॥ मध्ये । ॐ मंगलायै नमः ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपारि दुग्धधारां जलधारां चदत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य 'ॐ सर्वबुद्धिप्रदे वर्णनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकिनीये बंधे एह्येहि नमः' इति मंत्रेणासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पुनर्ध्यात्वा पाद्यादि पुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपजां कुर्य्यात् ॥ तत्र क्रमः ॥ षट्कोणकेसरेषु अग्न्यादिक्रमेण मध्ये दिक्षु च ॥ ॐ हृदयाय नमः १ । हिलि शिरसे स्वाहा २ । हिलि शिखायै वषट् ३ । बंदी कवचाय हुं ४ । देव्यै नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । स्वाहाऽस्त्राय फट् ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीं प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च--ॐ काल्यै नमः १ । ॐ [illegible]यै नमः २ । ॐ भगवत्यै नमः ३ । ॐ कुब्जायै नमः ४ । ॐ शीतलायै नमः ५ । ॐ त्रिपुरायै नमः ६ । ॐ [illegible]कायै नमः ७ । ॐ लक्ष्म्यै नमः ८ ॥ इत्यष्टौ मातृकाः पूजयेत् ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पा

बंदीपूजनयन्त्रम् ।



लान् वज्राद्यायुधानि च पूजयेत् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं द्विलक्षजपः । पायसान्नेन दशांशतो होमं तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि च कुर्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च—लक्षयुग्मं जपेन्मंत्री पायसान्नैर्दशांशतः ॥ एवमाराधिता बंदी प्रयच्छेदीप्सितं वरम् ॥ एकविंशति घस्रांतमयुतं प्रत्यहं जपेत् ॥ ब्रह्मचर्यरतो मंत्री गणेशार्चनपूर्वकम् ॥ कारागृहनिबद्धस्य मोक्ष एवं कृते भवेत् ॥ प्रकारांतरम् —अपूपोपरि घृतेन चतुरस्रांतर्वर्तिठकारं विलिख्य तत्रामुकं मोचयेति लिखेत् दिक्षु मायाबीजं च । अष्टादशार्णमंत्रेण तं वेष्टयित्वा तत्र देवीमावाह्याभ्यर्च्य कारागृहस्थायापूपं दद्यात् । स च तज्जग्ध्वा बंधनान्मुच्यते ॥ अष्टादशार्णमंत्रो यथा—ऐं ह्रीं श्रीं वंदि अमुष्य बंधमोक्षं कुरु २ स्वाहा ॥ इति ॥ एवं सा वंदिता मंत्रस्मरणाद्बंधमुक्तिदा ॥ इति ॥ अथाष्टाप्सरोदेवकन्यासाधनम् ॥ तत्रादौ वाहनादिमुद्रादि प्रदर्श्यते ॥ द्विमुष्टिसंयुक्तौ उभौ हस्तौ कमलावर्त्तयोगेन मध्यमांगुल्या सूचिता अष्टाप्सरआवाहनमुद्रा ॥ १ ॥ उभाभ्यां षट्ककरा सर्वाप्सरोवशंकरी सान्निध्ये अग्निमुखमुद्रा सर्वत्र कामसाधिनी ॥ २ ॥ उभाभ्यां हस्ताभ्यां कमलावर्तयोगेन सर्वाप्सरोमोहिनी अनया मुद्रया बद्धमात्रया दासी भवति ॥ ३ ॥ अष्टाप्सरसामावाहनादिमंत्रो यथा—तत्क्षणात्सर्वाप्सरस आगच्छागच्छ हूं यः यः ॥ अनेन अप्सरसामावाहनम् ॥ १ ॥ ॐ सर्वसिद्धि

भोगेश्वरि स्वाहा ॥ अनेन सान्निध्यकरणम् ॥ २ ॥ ॐ कामप्रियायै स्वाहा ॥ अनेनाभिमुखीकरणम् ॥ ३ ॥ यद्यप्सरसो न सिध्यंति तदा क्रोधसहितः क्रोधमंत्रं जपेत् ॥ क्रोधमंत्रो यथा—ॐ ह्रीं आकट्टः कट्टः ह्रूं वः फट् ॥ एतज्जपमात्रेण शिरः स्फुटति। शतखण्डं विशीर्यति तदागच्छति ॥ ४ ॥ ॐ सबंधसबंधस्तनू हुं फट् ॥ अनेन मंत्रेण वेष्टयेत् ॥ ५ ॥ ॐ चल चल वशमानय हुं फट्। अनेन सर्वाप्सरसो वशमानयेत् ॥ ६ ॥ अथ शशिदेव्यप्सरोमंत्रप्रयोगो भूतडामरतंत्रे—ॐ श्रीं शशिदेव्यागच्छागच्छ स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—पर्वतशिखरमारुह्य लक्षं जपेत् । सिद्धो भवति । पौर्णमास्यां यथाविभवतः पूजां कृत्वा घृतदीपं प्रज्वाल्य सकलरात्रिं जपेत्। प्रभाते नियतमागच्छति । स्वयं देव्यै आगतायै चंदनेनार्घो देयः। वाचा भाषते । साधकेनैवं वक्तव्यं मम भार्या भवेति। सिद्धद्रव्यं रसरसायन ददाति । वर्षसहस्रं जीवति ॥ इति शशिदेव्यप्सरःसाधनं प्रथमम् ॥ १ ॥ अथ तिलोत्तमाप्सरोमंत्रप्रयोगः—ॐ श्रीतिलोत्तमे आगच्छगच्छ स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम—चंदनक्षीराहारेणायुतं जपेत् दिवसानि सप्त । दिवसे सप्तमे उदारपूजां कृत्वा शुक्लाष्टम्यां पर्वतमूर्ध्नि उत्थाय सकलां रात्रिं जपेत् प्रभाते नियतमागच्छति । ईषद्धासितरागेण पुरस्तिष्ठति ॥ आलिंगनं चुंबनं च तया सह कर्तव्यं तूष्णींभावेन कामयेत्। एवं सिद्धा भवति ॥ यमिच्छति कामं तं ददाति । पृष्ठमारोप्य स्वर्गमपि नयति पुनरपि राज्यं ददाति ॥ इति तिलोत्तमाप्सरःसाधनं द्वितीयम् ॥ २ ॥ अथ कांचनमालाप्सरो मंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे—ॐ श्रीं कांचनमाले आगच्छागच्छ स्वाहा ॥ इति त्रयोदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—नदी संगमे गत्वाऽष्टसहस्रं जपेत् दिवसानि सप्त। सप्तमे दिवसे उदारपूजां कृत्वा गुग्गुलुधूपं दत्त्वा सकलां रात्रिं जपेत् । प्रभाते नियतमागच्छति सा च सर्वाशां पूरयति ॥ इति कांचनमालाप्सरःसाधनं तृतीयम् ॥ ३ ॥ अथ कुंडलाहारिण्यप्सरोमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे—ॐ श्रीं ह्रीं कुंडलाहारिणि आगच्छागच्छ स्वाहा ॥ इति षोडशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—न तिथिर्न च नक्षत्रं [illegible]सो विधिर्न तु ॥ पर्वतमूर्ध्नि गत्वा अयुतं जपेत् ॥ ततोऽर्द्धरात्रे नियतमागच्छति अर्घो देयः भार्या भवति दीनारलक्षं प्रतिदिनं

ददाते । पृष्ठमारोप्य सर्वतो भ्रामयति रसरसायनं सिद्धद्रव्यं च ददाति ॥ इति कुंडलाहारिण्यप्सरःसाधनं चतुर्थम् ॥ ४ ॥ अथ रत्नमालाप्सरोमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे—ॐ ह्रूं रत्नमाले आगच्छागच्छ स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—देवतायतने गत्वा अष्टसहस्रं जपेन्मासमेकं ततो मासांते पौर्णमास्यां पूजां कृत्वा पुनर्जपेत् । तावज्जपेत् यावदर्धरात्रे महानूपुरशब्देनागच्छति आगतायै पुष्पासनं दद्यात् ॥ स्वागतं देव्या इति वक्तव्यं स्वामिन् किमाज्ञापयसि तदा साधकेन वक्तव्यं मम भार्या भवेति वर्षसहस्रं जीवति ॥ इति रत्नमालाप्सरःसाधनं पंचमम् ॥ ५ ॥ अथ रंभाप्सरोमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे ॐः सः रंभे आगच्छागच्छ स्वाहा ॥ इत्येकादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--प्रतिपदमारभ्य पूजां कृत्वा चंदनेन मंडलं कृत्वा गुग्गुलुधूप दत्त्वाष्टसहस्रं जपेत्।त्रिसंध्यम् ततः पौर्णमास्यां महतीं पूजां कृत्वा सकलां रात्रिं जपेत्।प्रभाते शीघ्रमागच्छति । यदि शीघ्रं नागच्छति तदा म्रियते आगता सा भार्या भवेति यथेष्टं कामयितव्या दशवर्षसहस्राणि जीवति। सर्वाशां पूरयति।मृतो राजकुलेषु जायते॥इति रंभाप्सरःसाधनं षष्ठम् ॥ ६ ॥ अथ उर्वश्यप्सरोमंत्रप्रयोगः॥ मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे--ॐ श्रीं उर्वशि आगच्छागच्छ स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--प्रतिपदमारभ्य पूजां कृत्वा चंदनेन मंडलं कृत्वा गुग्गुलुधूपं दत्त्वा अष्टसहस्रं जपेत् त्रिसंध्यम्।ततः पौर्णमास्यां महतीं पूजां कृत्वा सकलां रात्रिं जपेत् प्रभाते शीघ्रमागच्छति कुसुमासनं दद्यात् स्वागतमिति वक्तव्यं भो भो साधक किमाज्ञापयसि तदा साधकेन वक्तव्यं भार्या भवेति रसरसायनसिद्धद्रव्याणि ददाति परस्त्र्याभिगमनं न कर्तव्यं पंचवर्षसहस्राणि जीवति ॥ इति उर्वश्यप्सरःसाधनं सप्तमम् ॥ ७ ॥ अथ श्रीभूषण्यप्सरोमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे—ॐ वाः श्रीं वाः श्रीभूषणि आगच्छागच्छ स्वाहा॥ इति पंचदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—कुंकुमेन भूर्जपत्रे श्रीभूषणीप्रतिमां विलिख्य रात्रावेकाकी शुचिः प्रतिदिनमष्टसहस्रं जपेत् मासमेकं यावत् । मासांते उदारपूजां कृत्वा तावज्जपेत् यावदर्धरात्रं नियतमागच्छति आगता सा शीघ्रं कामयितव्या ॥ तुष्टा भवति सुवर्णमुक्तादीनि ददाति दिने दिने कामिकभोजनं ददाति रसरसायनं ददाति ॥ इति श्रीभूषण्यप्सरःसाधनमष्टमम् ॥ ८ ॥ इत्यष्टाप्सरःसाधनं समाप्तम् ॥

॥ अथाष्टकिन्नरीसाधनम् ॥ तत्रादौ सूचना--यद्यष्ट किंनर्यो न सिद्ध्यंति तदा क्रोधसहितः क्रोधमंत्रं जपेत् ॥ क्रोधमंत्रो यथा--ॐ ह्रीं आकृद्दः कट्टः हूँ वः फट् ॥ अस्य जपमात्रेण शिरः स्फुटति शतखंडं विशीर्यति तदागच्छंति ॥ अथ मंजुघोषाकिन्नरीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे-ॐ श्रीं मंजुघोषे आगच्छागच्छ स्वाहा ॥ इति त्रयोदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-प्रतिपदमारभ्य पूजां कृत्वा चंदनेन मंडलं कृत्वा गुग्गुलधूपं दत्त्वाष्टसहस्रं जपेत् त्रिसंध्यम् ॥ ततः पौर्णमास्यां महतीं पजां कृत्वा सकलां रात्रिं जपेत् ॥ प्रभाते शीघ्रमागच्छति कुसुमासनं दद्यात् स्वागतमिति वक्तव्यं भो भो साधक किमाज्ञापयसि तदा साधकेन वक्तव्यं भार्या भवेति॥ रस रसायनसिद्धद्रव्याणि ददाति परस्त्र्यभिगमनं न कर्तव्यं पंचवर्षसहस्राणि जीवति ॥ इति मंजुघोषाकिन्नरीसाधनं प्रथमम् ॥ १ ॥ अथ मनोहारीकिन्नरीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे-ॐ मनोहार्यै स्वाहा ॥ इति सप्ताक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-पर्वतमूर्ध्नि समारूढो ऽष्टसहस्रं जपेत् ॥ अष्टकिन्नरीणां जपे समाप्ते महतीं पूजां कृत्वा गोमांसगुग्गुलुसमन्वितो धूपो देयः । तावज्जपेत् यावदर्धरात्रं किन्नरी नियतमागच्छति तस्या न भेतव्यं भो भो साधक किमाज्ञापयासि साधकेन वक्तव्यं भद्रेऽस्मद्भार्या भवेति । स्कंधे आरोप्य देवलोकमपि नयति दिव्यकामिकभोजनं ददाति अष्टोत्तरसाधनं भवति ॥ इति मनोहारीकिन्नरीसाधनं द्वितीयम् ॥२॥ अथ सुभगामंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे-ॐ सुभगे स्वाहा ॥ इति षडक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-पर्वतमूर्ध्नि विहारे वाऽयुतं जपेत् ॥ दिव्यकोमलहस्तेन पादमुपचारयति ॥ शीघ्रं कामयितव्या भार्या भवति दिने दिने पंचदीनारान् ददाति ॥ इति सुभगाकिन्नरीमंत्रप्रयोगस्तृतीयः ॥ ॥ ३ ॥ अथ विशालनेत्राकिन्नरीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे-ॐ विशालनेत्रे स्वाहा ॥ इत्यष्टाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--नदीकूले गत्वाऽयुतं जपेत् ॥ पुनर्मासांते सकलां रात्रिं जपेत् ॥ प्रभाते नियतमागच्छति ॥ आगता सा भार्या भवति ॥ दिने दिने पंच दीनारान् ददाति ॥ इति विशालनेत्राकिन्नरीमंत्रप्रयोगश्चतुर्थः ॥ ४ ॥ अथ सुरतिप्रियाकिन्नरीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे--ॐ सुरतिप्रिये स्वाहा ॥ इत्यष्टाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-रात्रौ नदीसंगमे गत्वाऽष्टसहस्रं जपेत् जपांते नियत

मागच्छति ॥ प्रथमदिवसे दर्शनं ददाति ॥ द्वितीयदिवसे पुरतस्तिष्ठति वाचा भाषते तृतीयदिवसे कामयितव्या नियतं तिष्ठति भार्या भवति सर्वकर्माणि करोति अष्टौ दीनारान् वस्त्रयुगलं च ददाति ॥ इति सुरतिप्रियाकिन्नरीमंत्रप्रयोगः पंचमः ॥ ५ ॥ अथाश्वमुखी किन्नरीमंत्रप्रयोगः॥मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे—ॐ अश्वमुखि स्वाहा ॥ इति सप्ताक्षरो मंत्रः। अस्य विधानम्—पर्वतमूर्ध्नि गत्वायुतं जपेत् ॥ तदा शीघ्रमागच्छति रसरूपेण पुरस्तिष्ठति आलिंग्य चुंबेत् तूष्णींभावेन कामयितव्या भार्या भवति ॥ अष्टौ दीनारान् प्रयच्छति दिव्यकामिकभोजनं ददाति ॥ इत्यश्वमुखीकिन्नरीमंत्रप्रयोगः षष्ठः ॥ ६ ॥ अथ दिवाकीरमुखीकिन्नरीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे—ॐ दिवाकीरमुखि स्वाहा॥ इति नवाक्षरो मंत्रः॥ अस्य विधानम्—पर्वतमूर्ध्नि गत्वायुतं जपेत्॥ नियतसमये समागच्छति भार्या भवति अष्टौ दीनारान् प्रयच्छति॥ इति दिवाकीरमुखीकिन्नरीमंत्रप्रयोगः सप्तमः ॥ ७ ॥ अथैककिन्नरीमंत्रादेरभावः ॥ इत्यष्टकिन्नरीसाधनं समाप्तम् ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथाष्टभूतकात्यायनीसाधनम् ॥ द्वौ करौ मुष्टिं कृत्वा कनिष्ठाद्वयं वेष्टयेत् । प्रसार्य तर्जनीं कुर्यात् त्रैलोक्यस्याकर्षिणी मुद्रा साधकाय ब्रह्मसाधनं करोति किं पुनः क्षुद्रसाधनमेतन्मुद्रावलोकनेन कात्यायनी शीघ्रमागच्छति ॥ कात्यायनीविद्यापठनमात्रेण सिध्यति ॥ तत्रादौ सुभगकात्यायनीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे—ॐ सुरताप्रिये दिव्यलोचने कामेश्वरि जगन्मोहने सुभगे कांचनमालाविभूषणनूपुरशब्देनाविशाविश पूरय साधकप्रियं स्वाहा ॥ इत्येकपंचाशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—रात्रौ राजगृहे गत्वाऽष्टसहस्रं जपेत् । करवीरकाष्ठैरग्निं प्रज्वाल्य मालतीपुष्पैर्दधिमधुघृताक्तैरष्टशतं जुहुयात् । तदा पंचदिनांतरे महाभूतेश्वरी भतराज्ञी महाकात्यायनी पंचशतपरिवारेण महानूपुरशब्देनागच्छति॥ आगतायै कुसुमेनार्घ्यं दत्त्वा वक्तव्यं माता भगिनी भार्या वा भवेति॥यदि माता भवति न चित्तं दूषयितव्यं दिव्यकामिकभोजनं ददाति सुवर्णालंकारं वा ददाति॥ यदि भगिनी भवति तदा राज्यं ददाति योजनशतादपि स्त्रियमानीय ददाति॥ यदि भार्या भवति तदा दिव्यस्त्रीसदृशं भोगं ददाति॥ सर्वाशां परिपूरयति। दशवर्षसहस्राणि जीवति मृतो राजकुले जायते ॥ इति सुभगकात्यायनीमंत्रप्रयोगः प्रथमः ॥ १ ॥ अथ कुंडलकात्यायनीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा भूतडामर

तंत्रे–ॐ यामिनि कृतिनि अकालमृत्युनिवारिणि खड्गत्रिशूलहस्ते शीघ्रं सिद्धिं ददाति हि तां साधक आज्ञापयति ह्रीं स्वाहा ॥ इति द्वाचत्वारिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–रात्रौ उद्यानं गत्वाष्टसहस्रं जपेत् । दिनानि त्रीणि नूपुरशब्दः श्रूयते । चतुर्थे दिवसेऽष्टमे दिवसे वा शिरःस्थाने मंडलं कृत्वा गुग्गुलुधूपं दत्त्वाष्टसहस्रं जपेत् । दिव्यभूतिनी कन्या कुंडलकात्यायनी स्वगृहमागच्छति आगता च कामयितव्या भार्या भवति दिव्यमुक्ताहारं शयने परित्यज्य प्रभाते गच्छति ॥ इति कुंडलकात्यायनीमंत्रप्रयोगो द्वितीयः ॥ २ ॥ अथ चंडकात्यायनीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे–ॐ ऐं क्रं रुद्रभयंकरि अट्टाट्टहासिनि साधकप्रिये महाविचित्ररूपे रत्नाकरि सुवर्ण हस्ते यमनिकृंतनि सर्वदुःखप्रशमनि उँउँउँउँहूँहूँहूँहूँ शीघ्रं सिद्धिं प्रयच्छ ह्रीं जः स्वाहा ॥ इत्यष्टाधिकषष्ट्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–रात्रावेकलिंगे गत्वा सहस्रं जपेदेकस्मिन्दिवसे नूपुरशब्दः श्रूयते । द्वितीये दिवसे दिव्यस्त्री पुरतस्तिष्ठति न दूषयति न भाषते । तृतीय दिवसे चाभाषते भोः साधक किमाज्ञापयसि साधकेन वक्तव्यं भो देवि उपस्थापिका भवेति यावज्जीवति तावदुपस्थानं करोति पृष्ठमारोप्य मेरुसागरादीन्नयति पुनरपि वैश्रवणगृहे गत्वा द्रव्यमानीय ददाति जंबद्वीपपादके उत्तमरूपकन्यामानीय ददाति जीवति वर्षशतानि पश्चान्मृतः सामंतकुलेषु जायते ॥ इति चंडकात्यायनीमंत्रप्रयोगस्तृतीयः ॥ ३ ॥ अथ रुद्रकात्यायनीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे–ॐ ह्रीं ह्रीं हूँ हूँ हे हे फट् स्वाहा ॥ इति दशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–श्मशाने गत्वा सहस्रं जपेद्दिवसानि त्रीणि तदा सर्वभूतिनी रुद्रकात्यायनी शीघ्रमागच्छति आगतायाः कपाले कंठे च पूर्णाभं देयं तुष्टा भवति वदति च किं मया कर्तव्यमिति साधकेन वक्तव्यं मातेव भवेति मातृवत्प्रतिपालयति राज्यं ददाति सर्वाशां पूरयति महाधनपतिर्भवति पंचवर्षशतानि जीवति मृतो राजकुले जायते ॥ इति रुद्रकात्यायनीमंत्रप्रयोगश्चतुर्थः ॥ ४ ॥ अथ महाकात्यायनीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे–ॐ भूहूलह्रं फट् ॥ इति सप्ताक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–रात्रौ नदीसंगमे गत्वाष्टसहस्रं जपेत् तदा दिव्यस्त्री भूतिनी महाकात्यायनी सह परिवारेण गच्छति आगता च मंत्रयितव्या तूष्णींभावेन कामयेत् ॥ दिने दिने पंच दीनारान् वस्त्रयुगलं च ददाति ॥ इति महाकात्यायनीमंत्रप्रयोगः

पंचमः ॥ ५ ॥ अथ सुरकात्यायनीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा—भूतडामरतंत्रे—ॐ श्रूँ हूँ फट् ॥ इति चतुरक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—शून्ये देवालये गत्वाष्टसहस्रं जपेत् तदा स्वयमेव सुरकात्यायनी महाट्टभासं कृत्वाष्टशतपरिवारेण नियतमागच्छति आगतायै चंदनोदकेन अर्घो देयः तुष्टा भवति रसरसायनं प्रयच्छत्यष्टशतपरिवारस्य वस्त्रालंकारभोजनादीनि ददाति पंचवर्षसहस्राणि जीवति मृतो राजकुले जायते ॥ इति सुरकात्यायनीमंत्रप्रयोगः षष्ठः ॥ ६ ॥ जयसुखकात्यायनी सर्वभूतकात्यायनीति द्वयोर्मन्त्रादेरभावः ॥ इत्यष्टकात्यायनीमंत्रप्रयोगः ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे उत्तरखण्डे यक्षिण्यादितंत्रे द्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ कर्णपिशाचिन्यादितंत्रप्रारंभः । तत्रादौ षोडशाक्षरमंत्रोत्पत्तिः ॥ कर्णे ते क्षणलोहितोरकगतोऽनन्तश्चकारो वदातीतानागतशब्दयुक्तभुवने श्रीवह्निजायान्विता ॥ ताराद्यो मनुरेकलक्षजपितो व्यासेन संसेवितः सुज्ञत्वं लभतेऽचिरेण नियतं पैशाचिकीभक्तितः ॥ १ ॥ मंत्रो यथा—ॐ कर्णपिशाचि वदातीतानागतं ह्रीं स्वाहा ॥ इति षोडशाक्षरो मंत्रः ॥ अथ ध्यानम् ॥ कृष्णां रक्तविलोचनां त्रिनयनां खर्वां च लम्बोदरीं बन्धूकारुणजिह्विकां वरवराभीतीकरामुन्मुखाम् ॥ धूम्रार्चिर्जटिलां कपालविलसत्पाणिद्वयां चञ्चलां सर्वज्ञां शवहृत्कृताधिवसतिं पैशाचिकीं तां नुमः ॥ २ ॥ अस्य विधानम्—अर्धरात्रे स्वहृदये देवीं ध्यात्वा मलं रक्तचन्दनेन लिखित्वा रक्तचन्दनबन्धूकजपापुष्पादिना पूजाद्रव्याणि 'ॐ अमृतं कुरु कुरु स्वाहा' इति मंत्रेण संप्रोक्ष्य यंत्रोपरि इष्टदेवतां संपूज्य 'ॐ कर्णपिशाचि दग्धमीनबलिं गृह्ण गृह्ण मम सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ॥' मंत्रेण इति दग्धमीनबलिं च दत्त्वार्धरात्रे मंत्रं जपेत् ॥ पूर्वाह्णे किंचिज्जपित्वा मध्याह्ने चैकभक्तनिरामिषं भुक्त्वा रात्रावपि तत्तत्संख्यं जपेत् ॥ अन्यत् किंचिन्न भोक्तव्यं तांबूलादिकं विना जपदशांशेन प्रतिदिनं तर्पणं कुर्यात्॥तत्र मन्त्रः—ॐ कर्णपिशाचि तर्पयामि स्वाहा॥अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः दशांशेन होमः होमाशक्तौ पुनर्दशांशतर्पणं कृत्वा वरं प्रार्थयेत् ॥ सिद्धिलक्षणं गगने हुंकारादिश्रवणदीर्घाग्निशिखारूपसन्दर्शनात् सिद्धिर्भविष्यतीति ज्ञात्वा तथा विधिमाचरेत् ॥ इति षोडशाक्षरकर्णपिशाचिनीमंत्रप्रयोगः ॥ १ ॥ तंत्रांतरेऽपि—कहकह कालिके गृह्ण गृह्ण पिंडं पिशाचिके स्वाहा ॥ इति विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः ॥ अन्यत् सर्वं पूर्ववत् ॥ २ ॥ तंत्रांतरेऽपि—ॐ ह्रीं चः चः कम्बलिके गृह्ण पिण्डं पिशाचिके स्वाहा ॥ इत्यष्टादशाक्षरो मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्—एकविंशत्यहं यावदुदयास्तमयं जपेत् ॥ नित्यं सायं समाहारपिंडं

---

१ इस मन्त्रका एक लाख जप करके व्यासजीने शीघ्र सर्वज्ञता प्राप्त करी थी । २ कर्णपिशाचिनी देवीका शरीर कृष्णवर्ण है । तीनों नेत्रोंकी आभा अरुणवर्ण है, आकार खर्व अर्थात् छोटा है, और पेट बडा है, जिह्वा बन्धूकपुष्पके समान अरुणवर्णकी है । देवीजीके एक हाथमें वरमुद्रा, दूसरे हाथमें अभयमुद्रा अन्य दोनो हाथोंमें दो मनुष्यके कपाल हैं, शरीरमें धूम्रवर्ण ज्वाला निकलती है। देवीका मुख ऊपरको उठा हुआ है । शिरपर ज्वाला विराजमान और चंचल प्रकृति है। कर्णपिशाचिनी देवी सर्व विषयोंको जाननेवाली है और शवके हृदयमें निवास करती है । इस प्रकारकी आकृतिवाली देवीको नमस्कार करता हूं। ३ उदयास्तके समय जप करे । ४ अपने आहारमेंसे एक पिंड कन्याको करके ऊपर उसपर फेक दिया करे ।

हर्म्योपरि क्षिपेत् ॥ त्रिसप्ताहे तु सा तुष्टा शशांगा तु पिशाचिका ॥ पंचविंशतिदीनारान् ददाति प्रतिवासरम् ॥ कर्णे कथयति क्षिप्रं यद्यत्पृच्छत्यसौ क्रमात् ॥ इत्यष्टादशाक्षरमंत्रप्रयोगः ॥ ३ ॥ तंत्रांतरेऽपि–ॐ ह्रीं कर्णपिशाचि मे कर्णे कथय हुं फट् स्वाहा ॥ इत्यष्टादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–[1]प्रदीपतैलं पादयोर्दत्त्वा रात्रौ लक्षं जपेत् ॥ ततः सर्वज्ञो भवति नास्य पूजाध्यानम् ॥ ४ ॥ मंत्रमहोदधौ–ॐ ह्रीं कर्णपिशाचिनि कर्णे मे कथय स्वाहा ॥ इति षोडशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अस्य कर्णपिशाचिनीमंत्रस्य पिप्पलाद ऋषिः । नीवृच्छंदः । कर्णपिशाचिनी देवता । ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ पिप्पलादऋषये नमः शिरसि १ । नीवृच्छंदसे नमो मुखे २ । कर्णपिशाचिनीदेवतायै नमो हृदि ३ । विनियोगाय नमः सर्वांगे ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ । कर्णपिशाचिनि मध्यमाभ्यां नमः ३ । कर्णे मे अनामिकाभ्यां नमः ४ । कथय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ हृदयाय नमः १ । ह्रीं शिरसे स्वाहा २ । कर्णपिशाचिनि शिखायै वषट् ३ । कर्णे मे कवचाय हुं ४ । कथय नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । स्वाहा अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ ॐ चितासनस्थां नरमुंडमालाविभूषितामस्थिमणीन् कराब्जैः ॥ प्रेतान्नरांत्रैर्दधतीं कवस्त्रां भजामहे कर्णपिशाचिनीं ताम् ॥ पठिपजादिकं षड्यक्षिणीवज्ज्ञेयम् ॥ श्मशानस्थः शवस्थो वा लक्षं जपेत् ॥ विभीतकसमिद्भिर्दशांशतो होमः ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति सिद्धे मंत्रे अशुचिर्भूत्वा बदरीतरौ पुनर्लक्षं जपेत् ॥ तदा पिशाचिनी प्रसन्ना भवति परचित्तस्थितां वार्तां कर्णे कथयति ॥ तथा च–श्मशानस्थः शवस्थो वा जपेल्लक्षं समाहितः ॥ दशांशं जुहुयाद्वह्नौ विभीतकसमिद्वरैः ॥ सिद्धे मंत्रे जपं कुर्यादधस्ताद्बदरीतरौ ॥ अशुचिर्लक्षसंख्यातं तेन तुष्टा पिशाचिनी ॥ परचित्तस्थितां वार्तां भाविनीं च वदेच्छ्रुतौ ॥ ग्रंथांतरेऽपि–ॐ ऐं ह्रीं ऐं क्लीं ह्रीं ग्लौं ॐ नमः कर्णाग्रौ कर्णपिशाचिकादेवि अतीतानागतवर्तमानवार्तां कथय मम कर्णे कथय कथय तथ्यं मुद्रावार्तां कथय

[1] रात्रिके समय दीपकका तेल पैरोंमें मलके मन्त्रका एक लाख जप करै ।

कथय आगच्छागच्छ सत्यं सत्यं वद वद वाग्देवि स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—मूलं रक्तचंदनेन लिखित्वा पंचामृतेन स्नपयित्वा लक्षं जपेत्। दशांशतो होमः । मंत्रः सिद्धो भवति । वार्तां कथयति ॥ ६ ॥ मतांतरेऽपि—ॐ नमः कर्णपिशाचिनि मत्तकर्णि[1] प्रविश अतीतानागतवर्तमानं सत्यं सत्यं कथय मे स्वाहा॥इति षट्त्रिंशदक्षरो मंत्रः॥अस्य विधानम्—लक्षं जपेत् सिद्धिः।पुनः आम्रपट्टोपरि अष्टोत्तरशतवारं मंत्रं लिखित्वा प्रत्येकं च पूजयित्वा तं मंत्रं शिरोऽधो धृत्वा शयनं कार्यम्। स्वप्ने वदति सत्यमेव। यदि साधको लक्षत्रयं जपेत्तदा सा प्रत्यक्षा भवति ॥ भूतभविष्यद्वर्तमानवार्ताः सर्वाः कर्णे कथयति ॥ ७ ॥ तंत्रांतरेऽपि—ॐ कर्णपिशाचिनि पिंगललोचने स्वाहा ॥ इति पंचदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः तद्दशांशतो होमः। तिलं भुक्त्वा एकभुक्तिव्रतं कार्यम् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति। देवी कर्णपिशाचिनी प्रसन्ना भवति। त्रैलोक्यवार्तां कथयति ॥ ८ ॥ मतांतरेऽपि—ॐ अरविंदे स्वाहा ॥ इति षडक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अमुमयुतं जपेदेकविंशतिदिनं यावत् कर्णपिशाचिनी सिद्धा भवति । भूतभविष्यद्वर्तमानवार्ताः सर्वाः कर्णे कथयति ॥ ९ ॥ मतांतरेऽपि—ॐ क्लीं जयादेवि स्वाहा ॥ इत्यष्टाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अस्यापि ऋष्यादिन्यासादेरभावः ॥ एवं लक्षं जपित्वा गृहगोधिकां निपात्य तदुपरि जयादेवीं यथाशक्ति संपूज्य तावज्जपेत् यावत्सा जीवति ततः सिद्ध्यति सिद्धिस्तु[2] मनसा प्रश्ने कृते सा अतति तस्याः पृष्ठे सर्वं भूतभविष्यादिकं पश्यति ॥ १० ॥ मतांतरेऽपि— ॐ विश्वरूपे पिशाचि वद वद ह्रीं स्वाहा ॥ इति पंचदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—लक्षं जपेत् दशांशतो होमः। एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति ॥ सिद्धे मंत्रे प्रतिदिनं त्रिसहस्रं जपेत् एकविंशतिदिनं यावत् ॥ तदा त्रैलोक्यवार्तां सर्वां कर्णे कथयति ॥ ११ ॥ ॥ तंत्रांतरेऽपि—ॐ नमः कर्णपिशाचिन्यमोघसत्यवादिनि मम कर्णे अवतरावतरातीतानागतवर्तमानानि दर्शय दर्शय मम भविष्यं कथय कथय ह्रीं कर्णपिशाचि स्वाहा ॥ इति पंचषष्ट्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—प्रातःकाल घृतका और रात्रिमें घृत तेल

१ पाठांतरे मम कर्णे प्रविश। २ इस मंत्रकी सिद्धि होजानेपर साधक जब अपने मनमें किसी प्रश्नको करता है उसी समय देवी साक्षात् आकर उस प्रश्नका यथार्थ उत्तर देती है तथा साधक उसके पृष्ठमें सम्पूर्ण भूत और भविष्य विषय लिखा हुआ देखता है।

दोनोंका दीपक जलाकर त्रिशूलकी पूजा करे ॥ इस प्रकार मन्त्रका सवा लक्ष जप करनेसे मंत्र सिद्ध हो जाता है पीछे अशुचि हो बेरवृक्षके नीचे बैठकर रात्रिके समय सवा लाख जप करनेसे कानमें शब्द आने लग जाता है, फिर जिस वक्त साधक किसी बातके जाननेकी इच्छा करता है उस वक्त कर्णपिशाचिनी देवी साधकके कानमें उसके प्रश्नका उत्तर दे देती है ॥ १२ ॥ अथ कर्णपिशाचिनीवार्तालीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नृं ठं ठं नमो देवपुत्रि स्वर्गनिवासिनि सर्वनरनारीमुखवार्तालि वार्तां कथय सप्तसमुद्रान्दर्शय दर्शय ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नीं ठं ठं हुं फट् स्वाहा ॥ इति सप्तपंचाशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-शेहका शूल दो २ जंगली वराहका दंत १ लेकर उसके ऊपर एक लाख बत्तीस हजार १३२००० जप करे तो सिद्ध हो। पीछे नित्य ही जप करता रहे तो साधकके प्रश्नका उत्तर कानमें कहती है, रोलीका तिलक करे नहीं रोलीका तिलक करनेसे सिद्धि नष्ट होजाती है। यह मंत्र एक महात्माकी कृपासे मिला था, उस महात्माको इस मंत्रकी पूर्णसिद्धि थी, इसीके प्रभावसे भूत भविष्य वर्ततमान तीनों कालकी वार्ता बहुत अच्छी तरह कह देते थे ॥ १३ ॥ अथ कर्णपिशाचिनीमंत्रप्रयोगः ॥ वीरभद्रोड्डीशतंत्रे मंत्रो यथा—ॐ कं ह्रीं प्राणकर्षणमालोकितेन विश्वरूपी पिशाची वद वद ईं ह्रीं स्वाहा ॥ इत्यष्टाविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—पक्षैकं दशसाहस्रं जपित्वा पिंडदानेन सिद्ध्यति भूतभविष्यवर्तमानवार्ता कथयति ॥ १४ ॥ अन्यत्र मंत्रो यथा—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुं हुं फट् कनकवज्रवैडूर्यमुक्तालंकृतभूषणे एहि २ आगच्छ २ मम कर्णे प्रविश्य भूतभविष्यवर्तमानकालज्ञानदूरदृष्टिदूरश्रवणं ब्रूहि ब्रूहि अग्निस्तंभनं शत्रुस्तंभनं शत्रुमुखस्तंभनं शत्रुगतिस्तंभनं शत्रुमतिस्तंभनं परेषां गतिं मतिं सर्वशत्रूणां वाग्जृंभणस्तंभनं कुरु २ शत्रुकार्यहानिकरि मम कार्यसिद्धि करि शत्रूणामुद्योगविध्वंसकारि वीरचामुंडिनि हाटकधारिणि नगरीपुरीपट्टणस्थानसंमोहिनि असाध्यसाधिनि ॐ श्रीं ह्रीं ऐं ॐ देवि हन २ हुं फट् स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—इमं मंत्रमयुतं जपेत् सिद्धिः ॥ सर्वं कर्णे कथयति शत्रून्नाशयति सर्वकार्याणि सिद्ध्यंति ॥ १५ ॥

॥ अथ विप्रचांडालिनीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा प्राकृतग्रंथे—ॐ नमश्चामुंडे प्रचंडे इन्द्राय ॐ नमो विप्रचांडालिनि शोभिनि प्रकर्षिणि

आकर्षय आकर्षय द्रव्यमानय प्रबलमानय हूँ फट् स्वाहा ॥ इत्येकपंचाशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–प्रथम दिन उपवास करे शील तासे रहे धरतीपर सोवे मीठा भोजन जीमे जीमते जीमते छोड दे अपवित्रस्थानमें मंत्र जपे तो इक्कीस दिनमें सिद्ध हो पीछे सात दिन पृथ्वीपर सोवे तो आश्चर्य दीखे तीसरे दिन स्वप्न दीखे उसमें रौद्रादिरूप दीखता है यदि स्वप्नमें न दीखे तो पुनः इक्कीस दिन जपे तो स्त्रीरूप प्रत्यक्ष दीखे छल करे अभक्ष्य वस्तु लाकर दे अनाचार करे मनको भय दे जो शंका न करे तो सिद्ध हो लक्ष्मी प्रत्यक्ष हो ॥ इति विप्रचांडालिनीमंत्रप्रयोगः ॥ १ ॥ अथ क्षोभिणीमंत्रप्रागः ॥ मन्त्रो यथा प्राकृतग्रंथे–ॐ नम उच्छिष्टचांडालिनि क्षोभिणि दह दह द्रव द्रव आनपूरीश्रीभास्करि नमः स्वाहा ॥ इति त्रयस्त्रिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–बाईस हजार एकसो तेईस मंत्र जपे तो सिद्ध हो ॥ २ ॥ अथ वेतालसाधनं प्राकृतग्रंथे ॥ मंत्रो यथा–ॐ क्षाँ क्षाँ ह्रीं ह्रीं फट् ॥ इति षडक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–श्मशाने लक्षं जपेत् वेतालसिद्धिः ॥ ३ ॥ अथ श्मशानोत्थापनप्रयोगः ॥ प्राकृतग्रंथे मंत्रो यथा––ॐ नमो आठकाठकी लाकडी मंजबानी बान ॥ मुवा मुरदा बोले नहीं तो माया महावीरकी आन । शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति चतुंष्पचाशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–मद्य सेर १ जातीपुष्प लोबानकी धूप बालछड छडीला कपूरकचरी अगर लेकर मसाणमें जावे मुरदेको देखकर दारूकी धार दे धूप खेवे फल बिखेर दे सुगंध द्रव्य चढावे पीछे दूर आकर मंत्र पढे मद्यकी धार दे मसाण जागे हाहाकार मचे सिद्ध हो सही ॥ ४ ॥ अथ प्रेतसाधनम् । मंत्रो यथा–ॐ श्रीं वं वं भुं भूतेश्वरि मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इत्येकोनविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–शौचका बचा हुआ जल मूलनक्षत्रसे प्रारंभ करके बबूलके वृक्षमें डाला करे उस वृक्षके नीचे बैठकर अष्टोत्तरशत मंत्र प्रतिदिन जपे इस प्रकार छः मासतक करे पीछे एक दिन केवल मंत्र जपे और जल नहीं डाले तो प्रत सम्मुख आकर पानीको मांगेगा उस वक्त तीन बचन लेवे कि याद किये पर आकर जो काम पडे सो करे पीछे जल देवे तो भूत सेवामें रहे सत्यमेव ॥ ५ ॥ अन्यो मंत्रो यथा–सूनसान सोखता मसान जागे भत नाचे शैतान ॥ इत्येकोनविंशत्य

क्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–श्मशानसे मनुष्यका हाड लावे पीछे एकांतस्थानमें शिवजीके मंदिरके भीतर बैठ उस हाडको आसनके नीचे दे अर्द्धरात्रिमें मंत्रका पांच हजार जप करे तो पांच सात दिनमें ही चरित्र दीखने लगेगा मद्यमांसादिक बलिके वास्ते सदैव पास रख लिया करे नहीं मालूम किस दिन आकर मांग बैठे जब चालीस दिनमें प्रेत सम्मुख आवे और बलि मांगे तब तीन वचन लेकर बुलानेपर हाजिर हूंगा अथवा उसकी शिखा लेकर मद्य मांसकी बलि देवे तो सदैव पास रहे जो काम हो सब करे ॥ इस मंत्रकी सिद्धि एक ब्राह्मणको थी उसके बडे बडे आश्चर्यकारक काम देखे गये उसने कृपापूर्वक प्रदान किया है ॥ ६ ॥

॥ अथ भूतयक्षिणीप्रसन्नताकारकं यंत्रम् ॥ इस यंत्रको सिरसपेडके नीचे बैठकर एक लक्ष लिखनेसे भूत प्रेत देवी यक्षादि अत्यंत प्रसन्न होते हैं इसमें संदेह नहीं ॥ ७ ॥ अथ स्वप्ने भूतदर्शकं यंत्रम् ॥ ८ ॥ इस यंत्रको गिलोयके रससे भोजपत्र अथवा कागजपर लिखके गूगलकी धूप देवे पीछे सिरहाने धरकर सो जावे तो

भूतप्रसन्नतायंत्रम् ॥

तं	तं	तं	तं
पं	पं	पं	पं
इं	इं	इं	इं
लं	लं	लं	ल

अथ स्वप्न भूतदर्शकयंत्रम् ॥

७	१४	२	८
७	३	११	१०
१३	८	९	१
४	६	९	१२

देवीप्रसन्नयन्त्रम्.

॥।	=	॥।	≣
॥॥	≣	।॥।	॥
≡	॥	१	।
॥।	=	–	=

स्वप्नमें भूतही भूत दीखेंगे इसमें संदेह नहीं॥८॥अथ दे०प्र०यं०इस यंत्रको आम्रवृक्षके नीचे सवा लक्ष लिखे तो देवी प्रसन्न हो दर्शन देवे मनचिंतित कार्य करे॥९॥ अथ पीरविरहनामंत्रप्रयोगः॥मंत्रो यथा प्राकृतग्रंथे–पीरविरहना फूलविरहनौ धुंधुंकारै–सवासेरका तोसा खाय अस्सीकोसका धावा करे सातसै कुतक आगे चले सातसै कुतक पाछे चले छप्पनसे छूरी चलें बावनसै वीर चलें जिसमें गढ गजनाका पीर चले औरकी ध्वजा उखाडता चले अपनी ध्वजा टेकता चले सोतेको जगावता चले बैठेको उठाता चले हांथोंमें हथकडी गेरे पैरोंमें पैरकडी गेरे हलालमाहीं दीठ करे मुरदारमांहीं पीठ करे कलवाननवीकूं याद करे ॐ ॐ ॐ नमः ठः ठः स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥

अस्य विधानम्–ग्रहणकी रात्रिसे प्रारंभ करके नित्य १०८ मंत्र जपे चमेली पुष्प चढावे सवा सेर हलवेका भोग धरे तो चालीस दिनमें परिविरहना हाजिर होगा उस वक्त डरे नहीं तो जो काम कहोगे सो करेगा सदा पासमें हाजिर रहेगा ॥ ॥ अथ महम्मदापीरसाधनम् ॥ मंत्रो यथा–विस्मिल्लाहेररहेमानिर्रहीम पांच घूघरा कोट जंजीर जिसपर खेळे मुहम्मदा पीर सवा मनका तीर जिसपर खेलता आवे मुहम्मदावीर मारमार करता आवे बांधबांध करता आवे डाकिनीको बांध पलीतको बांध नौ नर सिंहको बांध बावन भैरो बांध जातका मसाण बांध गूंगिया पीतिया धौलिया कालिया मसाण बांध बांध कुत्ता बावडी लावो सोती को लावो पीसतीको लावो पकातीको लावो जल्द जावो हजरत इमाम हुसेनकी जांघसे निकालकर ल्यावो बीबीफातमाके दामनसूं खोलकर ल्यावो नहीं लावे तो माताका चूखा दूध हराम कहे लावे शब्द सांचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः ॥ इस मंत्रको नौचंदी जुमरातकी संध्यासे प्रारंभ करके प्रतिदिन दसदफे पढे लोहवानकी धूप देताजावे तो इक्कीस जुमेरातोंमें हाजिर होगा जो काम कहोगे सो करेगा किसी रोगीके ऊपर पढकर फेक देवे तो आराम हो जायगा ॥ अथ डाकिनीसाधनम्– ॐ नमो चढौ चढौ सूरवीर धरती चढथा पाताल चढ पग पाली चढथा कुणकुण वीर हनुमंतवीर चढथा धरती चढ पगपानचढी एडी चढी मुरचै चढी मुरचै चढी पिंडी चढी पिंडी चढी गोंडा चढी गोडां चढी जांघ चढी जांघ चढी कटि चढी कटि चढी पेट चढी पेटसूं धरणी चढी धरणीसूं पांसली चढी पांसलीसूं हिये चढी हियासूं छाती चढी छातीसूं खबा चढी खबासूं कंठ चढी कंठसूं मुख चढी मुखसूं जिह्वा चढी जिह्वासूं कान चढी कानसूं आंख चढी आंखसूं ललाट चढी ललाटसूं सीस चढी सीससूं कपाल चढी कपालसूं चोटी चढी हनुमान नारसिंह चले वीर समदवीर दीठ वीर आज्ञावीर सोसंतावीर ये वीर चढे ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–ग्रहणकी रात्रिको चौका लगा घृतका दीपक बाल एक पैरसे खडा होकर एकसो आठ मंत्र पढे तो डाकिनी आवे उसको देखकर डरे नहीं तो सम्मुख बात करे पीछे जो जो काम कहोगे सो करेगी ॥ अथ प्रेतदर्शकतन्त्रम् ॥ प्राकृतग्रंथे–त्रागलको

लाकर उसको पारा प्यावे जब विष्ठाके साथ पारा बाहेर आजावे तब उसको बराबर शीशा मिला काजल करके नेत्रमें आंजनेसे भूत प्रेतोंका दर्शन होता है वह प्रेतादिक उसके कहेहुए कामको करेंगे और सौ कोसतककी बात पूंछोगे सो सची सची बतावेंगे ॥ अन्यत्—सुरमां राखे योनिमें, एक दिवस रजमाहि ॥ ताको होमे अग्निमें, भूत दृष्टिमें आहि ॥ अन्यत्—चिरमीरस आंखनमें आंजे। दीखे भूत भयंकर साजे ॥ पितृदर्शकतंत्रम्—रविदिन गधेका मूत्र लावे पृथ्वीमें पडने देवे नहीं उसको गूगलकी धूप देकर रात्रिके समय नेत्रोंमें अंजन करे तो पितृदेव दिखाई पडेंगे ॥ अन्यत्—बेलपत्ररस पीसिये, गुंजामूल मंगाय ॥ आँज आंखमें देखिये, आवे भूत लखाय ॥ अन्यत्—अंकोलस्य तु तैलेन दीपं प्रज्वालयेन्नरः ॥ दृश्यंते निशि भूतानि खेचराणि महीतले ॥ अथ देवीदेवता दर्शकतंत्रम् ॥ प्राकृतग्रंथे—अंकोलके फलका तेल निकालके तगरके फलका चूर्ण मिलावे, पीछे नेत्रोंमें आंजनेसे जहां दृष्टि पडेगी वहां ही देवी देवता दीखेंगे। पश्चात् केवल तगरके तेलका अंजन करनेसे पुनः मानुषी दृष्टिको प्राप्त होजाता है॥ अथ भैरवदर्शकतंत्रम्—अमावस्याकी रात्रिको अपना वीर्य निकालकर सुखावे सूखनेसे पीसकर रख लेवे जब दूसरी अमावस्या आवे उस दिन संध्यासमय जहां भेड बकरियां आती हों वहां जाकर अंजन करे तो भैरव बकरेपर सवार हुआ दीखेगा। तब उसी वक्त उसकी कुलह उतारा लेनेसे भैरव पास आकर अपनी कुलहको मांगता है इस वास्ते उस कुलहको छिपा लेवे और देवे नहीं, जबतक वह टोपी साधकके पास रहेगी वह वशीभूत होकर साधकके पास रहेगा जो काम कहोगे तुरत कर लावेगा अगर तीन बचन देवे कि याद करते ही आऊंगा तब टोपीको देदेवे ॥ अन्यत्—रवि शनि वारको जब तारा टूटे उस वक्त पगडीमें गांठ दे इसी तरह सात तारा टूटनेतक सात गांठ देवे पीछे गूगलकी धूप दे कुएपर जावे जब पनहारी घडा लेकर चले तब एक गांठ खोलनेसे उस पनहारीकी मटकी फूट जायगी इसी तरह करता रहे जो मटकी न फटे अथवा जिसका गिरगिना फटनेसे बाकी रह जावे उसको लाकर संध्याके समय

जहां भेड बकरीयां आती हों वहां जाकर उस घडेके गिरगिनेके भीतरसे दृष्टि करके देखे तो भैरव बकरेपर सवार नजर पडेगा उस वक्त गिरगिनेके भीतर हाथ डालकर उसकी टोपी उतार ले और गिरगिनेको फोडदे भैरव टोपी मांगे तो न देवे सदा पास रहेगा जो काम कहोगे सो करेगा ऐसा तीन वचन देनेसे टोपी दे देवे तो कोई हरज नहीं ॥ पूर्वजन्मदर्शकतंत्रम्–अंकोलबीजके तलमें घृत मिलाकर पुष्य नक्षत्रमें काजल पाडे इस काजलको नेत्रोंमें लगाकर ध्यान करनेसे पूर्वजन्म दीखता है ॥ ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे उत्तरखण्डे कर्णपिशाचिन्यादिसाधनवर्णनं नाम तृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ चेटकतंत्रप्रारंभः ॥ तत्रादौ वटयक्षिणीचेटकः कामरत्नतंत्रे—ॐ सुमुखे विद्युज्जिह्वे ॐ हूं चेटक जय जय स्वाहा ॥ इत्येकोनविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ शिवार्चनचन्द्रिकायाम्—ॐकारमुखे विद्युज्जिह्वे ॐ हु चेटके जय जय स्वाहा ॥ इति विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अष्टोत्तरशतं जप्त्वा यत्किंचित्स्वादु भोजनम् ॥ स बलिर्दीयते तस्यै वटाधो मासमेकतः ॥ ततो देवी समागत्य हस्ताद्गृह्णाति भोजनम् ॥ तदैव सा वरं दत्त्वा सान्निध्यं कुरुते सदा ॥ अतीतानागतं कर्म स्वस्थास्वस्थं ब्रवीति सा ॥ पर्वतप्रतिमान्सर्वांश्चालयत्येव तत्क्षणात् ॥ १ ॥ अथ कर्णवर्तश्मशानयाक्षिणीचेटकः प्राकृतग्रंथे—ॐ क्रीं भगवतीभ्यो नमः ॥ इति नवाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—श्मशाने नग्नो भूत्वा पंचाशत्सहस्रं जपेत् मद्यभांडे भोजनेन देवी प्रसन्ना भवति त्रैकालिकीं वार्तां सर्वां कर्णे कथयति पुष्पफलादिकं ददाति ॥ २ ॥ अथ करालिनीचेटकः प्राकृतग्रंथे—ॐ हूं करिकरालिनी क्षं क्षां फट् ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—एकपदेन अष्टोत्तरशतं जपेत् अजामांसबलिं च दद्यात् रक्तपुष्पेण पूजयेत् एवं कृते षण्मासाभ्यंतरे वरं ददाति ॥ ३ ॥ अथ कालिकाचेटकः प्राकृतग्रंथे—ॐ कालिकादेव्यै स्वाहा ॥ इत्यष्टाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—गोशालायां द्विलक्षं जपेत् तद्दशांशतो होमः । एवं कृते मध्यरात्रे वरं ददाति ॥ ४ ॥ अथ भैरवचेटकः प्राकृतग्रंथे—ॐ नमो भैरवाय स्वाहा ॥ इति नवाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—चत्वारिंशत्सहस्रं जपेत् गोधूमस्य दशांशतो होमः । एवं कृते प्रतिदिनमष्टादशधान्यानि प्रयच्छति ॥ ५ ॥ अथ लिंगचेटकः शिवार्चनचन्द्रिकायाम्—ॐ नमो लिंगोद्भव रुद्र देहि मे वाचां सिद्धिं वित्तानां पार्वतीपते ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ॥ इति त्रिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—लिंगमूर्ध्नि करं दत्त्वा वामं लक्षं जपेन्मनुम् ॥ वाक्सिद्धिं मंत्रिणो लिंगी चेटकस्तु प्रयच्छति ॥ ६ ॥ अथ विरूचेटकः प्राकृतग्रंथे ॥ मंत्रो यथा—ॐ श्रीं काककमलवर्द्धने सर्वकार्यसर्वार्थान्देहि देहि सर्वकार्यं कुरु कुरु परिवर्य्यसर्वसिद्धिपादुकायां हं क्षं श्रीं

---

१ तंत्रांतरेऽपि मंत्रो यथा—ॐ नमो लिंगोद्भव रुद्र देहि मे वाचां सिद्धिं वित्त पर्वतगते ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ॥ अस्य विधानम्—स्वस्य मूर्ध्नि करं वामं दत्त्वा लक्षं जपेन्मनुम् ॥ वाक्सिद्धिं मंत्रिणो लिंगचेटकस्तु प्रयच्छति ॥

द्वादशानन्ददायिने सर्वसिद्धिप्रदाय स्वाहा ॥ इत्येकषष्ठ्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—लक्षं जपेत् गोधूमचणकस्य दशांशतो होमः । विरूचेटकः प्रसन्नो भवति सहस्रधेनुं ददाति स्वर्गवस्तु समानीय ददाति सप्तद्वीपांतरान्नं वस्त्रं च ददाति । चिंतितः शीघ्रमायाति वस्तु ददाति ॥ ७ ॥ अथ नानासिद्धिचेटकः प्राकृतग्रंथे—ॐ नमो भूतनाथाय नमः मम सर्वसिद्धीर्देहि देहि श्रीं क्लीं स्वाहा ॥ इति चतुर्विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अश्वत्थवृक्षस्याधः उपविश्य पंचलक्षं जपेत् तद्दशांशं पलाशसमिद्भिः शुद्धघृतं जुहुयात् दशकपालिभ्यस्तृप्तिपूर्वकमन्नं देयम् । ततो विरूचेटकः प्रसन्नो भूत्वा प्रार्थितं ददाति खर्जूरचणकनारिकेलद्राक्षाफलान्यन्नेकानि ददाति ॥ ८ ॥ अथ नृसिंहचेटकः प्राकृतग्रंथे—ॐ नमः श्रीनारसिंहाय मणिभद्राय शोषय वीर पहरे चीर क्षीर नाव पन वेग आव पाटवी पुजाय ठः ठः स्वाहा ॥ इति चतुश्चत्वारिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—कार्तिककृष्णचतुर्दश्यां दीपमालिकायां वा अर्द्धरात्रे येन येन वस्तुना होमयेत् तत्तद्वस्तु समानीय ददाति ॥ अथवा नवरात्रे कुर्य्यात् । द्वादशसहस्राहुतिं तीर्थे दद्यात् । नारिकेलोत्थबलिं दद्यात् । सिद्धो भवति ॥ ९ ॥ अथ सागरचेटकः शिवार्चनचन्द्रिकायाम्—ॐ नमो भगवते समुद्राय देहि रत्नानि जलराशे त्रीणि नमोऽस्तु ते स्वाहा ॥ इत्यष्टाविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ मतांतरे—ॐ नमो भगवन्समुद्र देहि रत्नानि जलराशे नमोऽस्तु ते स्वाहा ॥ इति त्रयोविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—रात्रौ रात्रौ जपेन्मंत्रं सागरस्य तटे शुचिः । लक्षजापे कृते सिद्धे दत्ते सागरचेटकः ॥ रत्नत्रयं तदा मूल्यं तेन मंत्री सुखी भवेत् ॥ १० ॥ अथ हंसबद्धचेटकः प्राकृतग्रंथे—ॐ हंसः सर्वलोकलोचनानि बन्धय बन्धय देवी आज्ञापयति स्वाहा ॥ इति षड्विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—हृदि ध्यात्वा जपेद्रात्रौ हंसबद्धं स चेटकः ॥ योगं ददाति संतुष्टो जरामृत्युविनाशनम् ॥ ११ ॥ अथ मणिभद्रचेटकः प्राकृतग्रंथे—ॐ नमो मणिभद्राय नमः पूर्णाय नमो महायक्षसेनाधिपतये मोटमोटधराय स्वाहा ॥ इति चतुस्त्रिंशदक्षरो मंत्रः ॥ शिवार्चनचन्द्रिकायाम्—ॐ मणिभद्राय नमो नमः पूर्णभद्राय नमो नमः महायक्षसेनाधिपतये मोटमोटधराय स्वाहा ॥ इत्यष्टात्रिंशदक्षरो मंत्रः॥ मतांतरे—ॐ नमो

मणिभद्राय नमः पूर्णभद्राय नमः पूर्णभद्राय नमो महायक्षाय सेनाधिपतये मोटमोटधराय स्वाहा ॥ इति चतुश्चत्वारिंशद क्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्- मन्त्रोऽयमष्टसाहस्रं जप्यः सप्तदिनावधि ॥ प्रत्यहं मणिभद्राख्यः प्रयच्छत्येकरूपकम् ॥ १२ ॥ अथ भूतेश्वरचेटको भूतडामरतंत्रे-ॐ ह्रूयः आः भूतेश्वरः आगच्छागच्छ स्वाहा ॥ इति पंचदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्- एकलिंगे गत्वा रात्रौ एकाकी रक्तमत्स्यमांसबलिं दद्यात् ॥ महामांसगुग्गुलुलवणेन सह धूपयेदष्टसहस्रं जपेत् । प्रथमे दिवसे स्वप्नं पश्यति द्वितीये दिवसे स्वयमेव पश्यति ॥ तृतीये दिवसे शीघ्रमागच्छति पुरस्तिष्ठति स एवमाह किं मया कर्तव्यम् । साधकेन वक्तव्यं किंकरो भवेति । नित्यानुबद्धो भवति स्वर्गं गत्वा अक्षयनिधानानि आनीय ददाति अतीतानागतवर्तमानं कथयति वस्त्रालंकार कामिकभोजनं च ददाति द्विवर्षसहस्रं जीवति ॥ अस्य मुद्रा-अंगुलिं वेष्टयित्वा मध्यमांगुलिं प्रसार्य सूच्याकारेण धारयेदपराजितमहा भूतराजस्य अंगुष्ठौ पार्श्वतो भतेश्वरस्य मुद्रा ॥ इति भूतेश्वरचेटकः ॥ १३ ॥ अथ किंकरयमस्य चेटको भूतडामरतंत्रे-ॐ अजः किंकरोत्तम आगच्छागच्छ स्वाहा ॥ इति पंचदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-वज्रधरस्य गृहं गत्वा कृष्णचतुर्दश्यामारभ्यायुतं जपेत् दिवसान्सप्त पूर्वं सेवा भवति ततः साधनमारभेत ॥ चंदनेन मंडलं कृत्वा गुग्गुलधूपं दत्वा श्वेतभक्तघृतपायसपिंडक्षेपवेष्टन घृतप्रदीपं प्रज्वाल्य तावज्जपेद्यावदर्द्धरात्रे स्वयं किंकरोत्तमतां याति । आगताय चन्दनेनार्घो देयः । भो साधक किं मया कर्तव्यमिति यदा पृच्छति तदा साधकेन वक्तव्यमस्माकं किंकरो भवेति । दिव्यकामिकभोजनं ददाति रसरसायनं निधानं च ददाति । पृष्ठमारोप्य स्वर्गमपि नयति । पुनरपि राज्यं ददाति । पंचवर्षसहस्राणि जीवति । तस्य मुद्राः संपुटं कृत्वा तर्जनीद्वयं कुंचयित्वा किंकरोत्तमस्य मुद्राः ॥ इति किंकरयमस्य चेटकः ॥ १४ ॥ अथ कालीचेटकः वीरभद्रोड्डीशतंत्रे-ॐ कंकाली महाकाली केलिकलाभ्यां स्वाहा ॥ इति पचदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-अनेन मंत्रेण सहस्रमत्स्याञ्जुहुयात् काली वरदा भवति स्वर्णपलचतुष्कं प्रतिदिनं ददाति ॥

इति कालीचेटकः ॥ १५ ॥ अथ मंत्रवादे कालीचेटकः ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि मंत्रवादं सुदुर्लभम् ॥ येन विज्ञातमात्रेण सर्वसिद्धिः प्रजायते । ॐ काली कंकाली किलकिले स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अनेन मंत्रेण मल्लिकापुष्पसहस्रं जुहुयात् तदा कंकाली वरदा भवति। सुवर्णमाषचतुष्टयं प्रतिदिनं ददाति॥इति मंत्रवादे कालीचेटकः॥१६॥अथ रक्तकंबलाचेटकः—ॐ ह्रीं रक्तकंबले महादेवि मृतकमुत्थापय प्रतिमां चालय पर्वतान्कंपय नीलय विलस हुंहुं ॥ इत्यष्टत्रिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—जप्यं मासत्रयं रक्तकंबला सा प्रसीदति ॥ मृतकोत्थापनं कुर्यात्प्रतिमां चालयेत्तथा ॥ इति रक्तकंबलाचेटकः ॥ १७ ॥ आकाशगामिचेटकः—ॐ ह्रीं ॐ हुँहुँहुँ ॐ इति सप्ताक्षरो मंत्रः ॥ त्रिलक्षं जपेत् । तदा दूरदृष्टिर्भवति सर्वपापरहितो भूत्वा आकाशचारी भवति ॥ १८ ॥ अन्यत्--ॐ नमः॥इति त्र्यक्षरो मंत्रः॥ अस्य विधानम्—एतं मंत्रं वरारोहे जपेत्तु दशलक्षकम् ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तो जायते खेचरः पुमान् ॥१९॥ अथ देवांगनाप्राप्तिचेटकः--ॐ ह्रीं नमः ॥ इति चतुरक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—मंत्रेणानेन देवेशि सप्ताहं जपमाचरेत् ॥ रक्तांबरधरो नित्यं तथा कुंकुममालिकः ॥ सप्ताहं जपमात्रेण ह्यानयेदमराङ्गनाम् ॥ २० ॥ अथ ज्वालामालिनीचेटकः—ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि गृध्रगण परिवृते स्वाहा ॥ इति द्वाविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--ॐ नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः १ ॐ भगवति तर्जनीभ्यां नमः २ ॐ ज्वालामालिनि मध्यमाभ्यां नमः ३ ॐ गृध्रगणपरिवृते अनामिकाभ्यां नमः ४ ॐ स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ॥ इति करन्यासः ॥ एवमेव नेत्रहीनं पंचांगन्यासं कृत्वा जपं कुर्यात् ॥ अभुक्तनियतश्चैव जपेन्मंत्रं जपाज्जयी ॥ दीपतैलाक्तपादोऽथ वारे गुरुदिने ततः ॥ १ ॥ जपेदष्टसहस्रं तु त्रयोविंशतिवासरान् ॥ प्रत्यहं सा सुवर्णं च ददातीति न संशयः ॥ स्मृतिमात्रेण वै मंत्री रिपून्सर्वान्विनाशयेत् ॥२१॥ ॥ अथ फेत्कारिणीचेटकः—ॐ नमो अश्मकर्णेश्वरि दुर्बले आर्द्रकेशीजटाकलापे ढक्कणफेत्कारिणी स्वाहा ॥ इति त्रिंशदक्षरो

१ भाषानुवादः—दुर्लभ मन्त्रवादको शिवजी वर्णन करते हैं जिसके जाननेमात्रसे सर्वसिद्धि प्राप्त होती है । २ इस मन्त्रसे एक हजार चमेलीके फूलोंका घृत मिलाकर एक हजार होम करै तो काली वर देनेवाली होती है, चारमासे सुवर्ण नित्य देती है । ३ पुरुष सप्ताहजप करै लाल पुष्प और कुंकुमकी रंगीन माला धारणकरे तो सात दिनमें ही देवांगना प्राप्त हो।

मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--कृष्णपक्षचतुर्दशीकी रात्रिमें कलहारीकी जड लावे सफेद बकरीके दूधमें पीसकर तिलक करे तो जो देखे सोही वश हो । अथवा अजमोदकी जडको घोडीके दूधमें हरतालके साथ घिसे पीछे मुखमें रख लेवे पीछे जिस किसीसे जो वस्तु मांगे वही देदेगा ॥ अथ यक्षचेटकः--ॐ नमो महायक्षसेनाधिपतये मणिभद्राय अप्रार्थितमन्नं देहि मे देहि स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--बडके पेडपर इस मंत्रको सात बार पढके उसकी लकडी ले आवे उस लकडीपर इक्कीस मंत्र पढके दहिने कानपर लगा लेवे तो विना मांगे अन्न प्राप्त हो ॥ अथ उच्छिष्टचांडालिनीचेटकः--ॐ नम उच्छिष्टचांडालिनि वाग्वादिनि राजमोहिनि प्रजामोहिनिं स्त्रीमोहिनि आन आन येवे वायु वायु उच्छिष्टचाण्डालि सत्यवादिनीकी शक्ति फुरे स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--भोजन करके जूठे मुख इस मंत्रको एक लाख जपे पीछे जहां कहीं एकांतमें बैठकर इस मंत्रका स्मरण करे वहीं भोजन आकर अपने आप उपस्थित होगा ॥ अथ रतिराजचेटकः--ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ विटपाय स्वाहा ॥ इति दशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--प्रथमं चेटकस्य नाम गृहीत्वा ततो गृहमध्ये उपविश्य पंचशतसहस्रं पञ्चलक्षं जपेत् । ततः सिद्धि र्भवति । बालारमणसमये ह्यष्टाविंशतिवारं जपेत् कामोद्दीपनं भवति स्त्री द्रवति वशीभवति ॥ ॥ अथ सूर्यदर्शकचेटको दत्तात्रेय तंत्रे--मातुलुंगस्य बीजेन तैलं ग्राह्यं प्रयत्नतः ॥ लेपयेत्ताम्रपात्रेण मध्याह्ने च विलोकयेत् ॥ रथेन सह साकारो दृश्यते भास्करो ध्रुवम् ॥ विना मंत्रेण सिद्धिः स्यात्सिद्धयोग उदाहृतः ॥ ॥ अथ ग्रहणदर्शकचेटकः--कृकलासस्य रक्तेन दर्पणार्द्धं तु लेपयेत् ॥ धारयेच्च शिरोमूर्ध्नि ग्रहणं दृश्यते जनैः ॥ ॥ अथ दिने नक्षत्रदर्शकचेटकः--अगस्त फूलको तेल, जो कोइ आंजे नेत्रमें । दिनमें तारे देख, होय अचंभो अतिघनो ॥ अन्यत्--सुरमा श्वेत जु लेयके, अगस्तपुष्प रस भेय ॥ दिना सातलौं ताहि पुनि छाया सूख, करेह ॥ घोट आंखमें आंजिये, ऊपर देखे जाय ॥ दिनमें तारे दीखहीं, ऐसो सहज उपाय ॥ अन्यत्--काठ धतूरा लेय मँगाई, कोदोका भुस ताहि मिलाई ॥ दुहुन मिलाय करै एक ढेरी, भर कपडा बत्ती कर फेरी ॥ ताको दीपक लेहु जलाय, काजल आंखिन

लेहु लगाय। दिनमें तारे दीखें भाई, सबहीसे यह सहज उपाई ॥ अथ रात्रिसमये दिनवद्दृश्यचेटकः--उलूकव्याघ्रमहिषीघोषगृध्र विलोचनैः। स्रोतोंजनं युतं चांज्यं दिवावत्पश्यते निशि ॥ अन्यत्--हदहरुधिर नैनमें, जो कोइ आंजे लाय। विना चिरागके रात्रिमें, पुस्तक सबहि पढाय ॥ अन्यत्--रविदिन मेंढक मेंढकी, रति करता जो होय। अथवा मेंढक पीलिया, मेंढकही पर जोय ॥ लावै मार सुखायकर, जारे अग्नीमांहि। सुरमे कासा पीसके, आंजे नैनोंमाहि ॥ रात अंधेरी होय जब, करिये जो मनभाय। दीखे सगरी वस्तु यों, ज्यों दिनमें दृष्टि आय ॥ अन्यत्--घृतको दीपक बालिये, उल्लूखोपडी मांहि। तामें काजर पाडिये, प्यालो खोपडी काहि ॥ ताहि आंजिये नेत्रमें, रात्रिमें दिन होय। जो चाहे सो बांचिये, दृष्टि चौगुनी होय ॥ ॥ अथ शतयोजनदृष्टिचेटकः--कृष्णपक्ष चौदश दिना, शीस गीधको लाय। भर मांटी गाडै कहीं, लहसन बीज बुवाय ॥ पुष्यनक्षत्र आवे जबहीं, फल अरु फूल लायके तबहीं। काजल संग ताहि पिसवावे, घृत मिलाय आंखनमें लावे। सौ योजनतक धरती चमके, पुनिः दिनमें ताराहू दमके ॥ ॥ ॥ अथ अनाहारचेटको दत्तात्रेयतंत्रे-अंत्राणि कृकलासस्य मज्जाकारंजबीजकम् ॥ पिष्ट्वा तु वटिकां कृत्वा त्रिलोहेन[1] तु वेष्टिताम्। तां वक्रे धारयेद्यस्तं क्षुत्पिपासा न बाधते ॥ यस्मै कस्मै न दातव्या नान्यथा शंकरोदितम् ॥ तत्र मंत्रः--ॐ नमः सिद्धिरूपाय मम शरीरे अमृतं कुरु कुरु स्वाहा ॥ अष्टोत्तरशतं जपेत्सिद्धिः ॥ अथ आहारकरणचेटको दत्तात्रेयतंत्रे--संध्यायां शुष्कवृक्षस्य कर्तव्यम भिमंत्रणम् ॥ प्रातः पुष्पाणि संग्राह्य मालां शिरसि धारयेत् ॥ कौपीनं संपरित्यज्य भोजनं भीमसेनवत् ॥ यस्मै कस्मै न दातव्यः सिद्ध योग उदाहृतः ॥ अन्यत्--गृहीत्वा मंत्रितान्मंत्री विभीततरुपल्लवान् ॥ धारयेद्दक्षिणे हस्ते विंशत्याहारभुग्भवेत् ॥ अन्यत्--अधरं कृकलासस्य शिखास्थाने निबंधयेत् ॥ वायुपुत्र इवाश्चर्यं स तु भुंक्तेऽन्नपर्वतम् ॥ तत्र मंत्रः--ॐ नमः सर्वभूताधिपतये ग्रस ग्रस शोषय शोषय भैरवी आज्ञापयति स्वाहा ॥ इति सर्वयोगेष्वयमेव मंत्रः ॥ अष्टोत्तरशतं जपेत्सिद्धिः ॥ अन्यत् प्राकृतग्रंथे--जो वरणके वृक्षको,

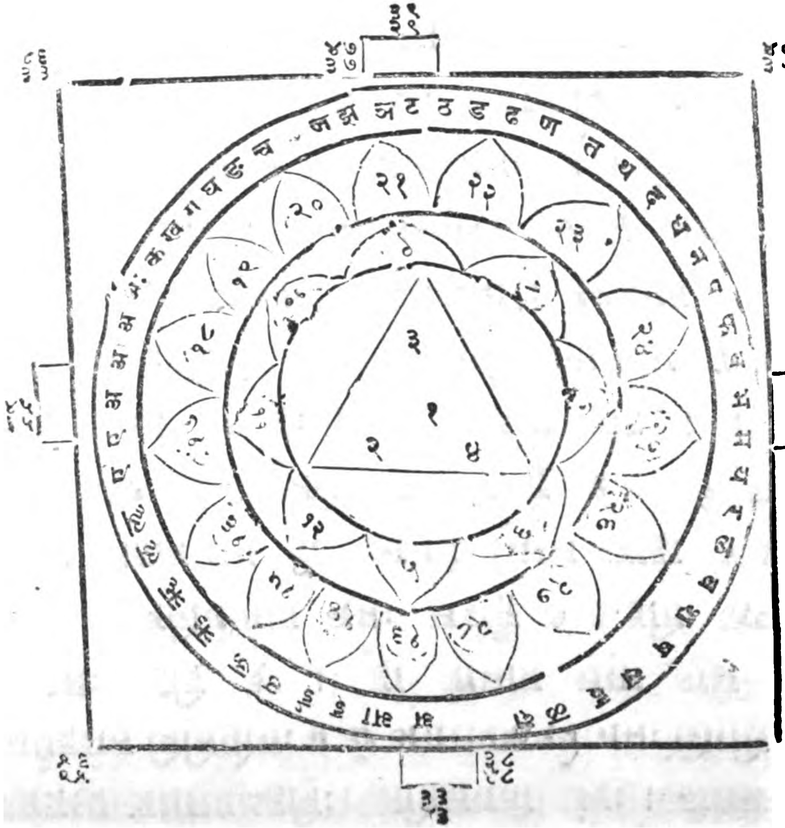
[1] त्रिलोहो यथा--" दश हेम द्विपट् ताम्रं षोडशं रौप्यभागकम् ॥ एवं संख्या त्रिलोहस्य ज्ञातव्या सर्वकर्मणि ॥ "

संध्या न्यौते जाय । प्रातहि पत्र जु लायके, पगके तले दबाय ॥ भोजन करते ना थके, बीस तीसको एक । साधकही भोजन करे, कसर नहीं लौलेस ॥ अथ हाजरातचेटकः ॥ तत्रादौ ख्वाजामंत्रप्रयोगः–ख्वाजा खिज्र जिन्द पीर मैदर मादर दस्तगीर मदत मेरा पीरान् पीर करो घोडेपर भीड चढो हजरत पीर हाजर सो हाजर ॥ इति मन्त्रः । अस्य विधानम्–प्रतिदिन उलटी मालासे १०८ एकसो आठ जप करे–लौंग, इलायची और लोहबानकी धूप देवे तो २१ दिनमें सिद्ध हो–पीछे जब चढाना हो आठ बजे दिनसे पहिले लडकेको पवित्र करके बैठावे--लडकेके नखमें स्याही लगादे और मुख देखनेको कहे आप आगे बैठकर मन्त्र पढकर धूप देता रहे–पहिले मैदान दीखेगा उस वक्त लडका कहे कि मुख दीखनेसे बंद होकर चौगान होजावो--तो चौगान होजायगा–पीछे लडका कहे कि दो जने आवो जब दो आ जावें तब कहे दो और आवो दो और भी आ जावें उस वक्त कहे कि दो और भी आवो इसी तरह ४ चार दफे कहे जब आठ आदमी आजावें--उस वक्त कहे कि झाडूवालेको बुलाकर झाडू लगवावो--झाडू लग जानेके बाद कहे कि भिश्तीको बुलाकर छिडकाव करावो, छिडकाव होजानेके पीछे कहे कि फर्श बिछावो–फर्श होजाने पर कहे कि दो कुरसी और तख्त मंगावो--तख्त आनेपर कहे कि तख्तपर गद्दी बिछावो–गद्दीके बिछ जानेपर कहे कि--पीरान् पीर साहबसे जाकर हमारी अर्ज गुजरावो कि आपका अमुक भक्त आपको याद करता है सो मुन्शी साहबको संग लेकर कृपा कर पधारो--जब आदमी जावे और पीर साहब पधारें--उस वक्त मुन्शीसे कहे कि भोग पीरान् पीर साहबकी नजर करे--भोम इलायची--अतर सब देवे--पीछे मुन्शीसे कहे कि पीरान् पीर साहबसे हमारी अर्ज करो कि अमक भक्त आपका फलाना काम पूछता है--उत्तर मिलेगा--यदि लडका उत्तरको समझ जावे तो ठीक कहे, नहीं समझे तो मुन्शीसे कहे कि मैं नहीं समझा अमुक भाषामें मुझको लिखकर दिखावो--तो मुन्शी लिखकर दिखावेगा--इसी प्रकार जो कुछ पूछना हो पूछ लेवे--इति ॥ महंमदपीरमंत्रो यथा--बिस्मिल्लाहेर्रहेमानि रेहीम महम्मदा ताइयासिलारनवलखताजीका असवार यहां चलंता कौनकौन चल्या अजैगिरपर पर्वत चले हाजी चले गाजी चले

ढोल बाजंत भेरी बाजंत अहेमदा चलंत महेमदा चलंत राजा हठीली चलंत सत्तर सिला चलंत बहत्तर बल्लम चलंत एक लाख अस्सी हजार पीर पैगम्बर चलंत बावन वीर चलंत चौसठ जोगनी चलंत नौ नारसिंह चलंत बारह रावण चलंत चौसठ मसा चले सुलेमान पैगम्बरका तखत चलंत ईसा पैगंबरका तखत चलंत बहत्तर खान वज्राईल पैगम्बरका तखत चलंत लाल परी चली सुपेद परी चली जरद परी चली स्याम परी चली सबज परी चली हूर परी चली जर परी चली अलोल परी चली आसमान परी चली सुपेद परी चली अकाशसे उतरी वराय खुदा मेरे कामकूं सिताबी उतार ल्यावणा एक चलंता एकसौ चल्या दोय चलंता दोयसौ चल्या तीन चलंता तीनसौ चल्या बडे वेगसूं चल्या उडा कुडा देव चल्या मंदाऊ कालेश्वरी चली लंकापै रावण चल्या हनुमंत चले घूमन गरसूं देवी घूमा चली नदी नालेसूं चली मंदोदरी रावनपुरीसुं चली उलटी पाखर सुलटी लागी जो कोई कहे हमारी बुरी उलटी सोमरली देखू ते तालमंत्र तेरी शक्ति बेरिमल्लाहेर्रहेमानिर्रहीम उत्तरका बाजा बजा उत्तरका बादशाह आया पश्चिमका बाजा बजा पश्चिमका बादशाह आया पूरवका बाजा वजा पूरवका बादशाह आया कालेकालेके असबार अपनी अपनी जमात सिताबी लेकर आवणा जहां हकालूं जहां हाजिर रहेना देखुदा महम्मदाकी सुबीर पीर नीरनीर लीला घोडा नीलाजीन जिसपर चढिआया महम्मदा पीर रोजा करे निवाज गुजारे अन्नपानीके कने न आवे खाजखाय अखजपर हरे सो मुसलमान विहिस्तमें जाय सत्रामन लोहेको जंजीर तोडतो जाई तोडतो आव हाथ कुदाडी गले जंजीर ऐसी कही सुनो महम्मदापीर सुनो महम्मदापीर अपनी मुदारा पेशकरी पराई मुद्रा तोड डाल हमारी हकार तुम्हारी पुकार किले नारसिंह किलेकी असवारी ठः ठः स्वाहा इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—सफेद कपडा हाथ सवा गूगल और लोनकी धुप दीजे पीछे ऊपर सवासेर चावलकी महेजित बनावे थाली पानीसे भरकर धरे मह जितके ऊपर चौमुखा दीपक वाले कुवांरी कन्याको स्नान करा नवीन वस्त्र पहरकर सम्मुख बैठावे गुडकी गोली १४ मंत्रसे कन्या

को खवावे कन्या दीपकपर निगाह करे पीछे पूछे तो सत्य सत्य कहेगी ॥ २८ ॥ अथ हनुमन्मंत्रप्रयोगः—ॐ नमो भगवते रुद्रावताराय महाबलाय आंजनेयाय वायुपुत्राय कौशलेन्द्रानुचराय सांप्रतं स्वात्मानं दर्शय २ सत्यं वद २ स्वाहा हां हां ॐ ॥ इति षष्ट्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—ॐ अस्य श्रीविश्वलोचनचक्राजहनुमन्मंत्रस्य अगस्त्य ऋषिः। अतिजगती छंदः । कौशलेन्द्रानुचरो महेश्वरो हनुमान् देवता । हां बीजम् । स्वाहा शक्तिः । नमः कीलकम् । कार्यदर्शने विनियोगः ॥ ॐ अगस्त्यऋषये नमः शिरसि १ । अतिजगतीच्छंदसे नमः मुखे २ । कौशलेन्द्रानुचरमहेश्वरहनुमद्देवतायै नमः हृदि ३ । हां बीजाय नमो गुह्ये ४ । स्वाहा शक्तये नमः पादयोः ५ । नमः कीलकाय नमो नाभौ ६ । कार्यदर्शनविनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ नमो भगवते हां हनुमते हृदयाय नमः १ । ॐ रुद्रावताराय महाबलाय ह्रीं हनुमते शिरसे स्वाहा २ । ॐ आंजनेयाय वायुपुत्राय हूं हनुमते शिखायै वषट् ३ । ॐ कौशलेन्द्रानचराय हैं हनुमते कवचाय हुं ४ । ॐ सांप्रतं स्वात्मानं दर्शय दर्शय ह्रौं हनुमते नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । सत्यं वद वद स्वाहा हां हां ॐ हः हनुमते अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव कराङ्गन्यासं कृत्वा ध्यायेत् । अथ ध्यानम्—ॐ मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ॥ वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूजयेत् ॥ ततः सर्वतोभद्रमण्डले लिंगतोभद्रमण्डले वा विष्णुपीठे रुद्रपीठे वा मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडुकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति संपूज्य नवपीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तथा च—पूर्वादिक्रमेण ॐ विमलायै नमः १ । ॐ उत्कर्षिण्यै नमः २ । ॐ ज्ञानायै नमः ३ । ॐ क्रियायै नमः ४ । ॐ योगायै नमः ५ । ॐ प्रह्वायै नमः ६ । ॐ सत्यायै नमः ७ । ॐ ईशानायै नमः ८ । मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य

तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य 'ॐ नमो भगवते रुद्राय सर्वभूतात्मने हनुमंताय सर्वात्मसंयोगपद्मपीठात्मने नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य मूलेन पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तथा च पुष्पांजलिमादाय—ॐ संविन्मयः परो देव परामृतरसप्रिय ॥ अनुज्ञां हनुमन्देहि परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत ॥ तथा च त्रिकोणमध्ये—ॐ रां रामाय नमः । रामश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ ॥ इति सर्वत्र ॥ पर्वे ॐ हां हनुमंताय नमः । हनुमंतश्रीपा० १ । ऐशान्ये ॐ सं सुग्रीवाय नमः । सुग्रीवश्रीपा० ३ । अग्निकोणे ॐ लं लक्ष्मणाय नमः । लक्ष्मणश्रीपा० ४ । इति पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय—ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥



ततोऽष्टदले—पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची । तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च—ॐ अणिमायै नमः । अणिमाश्रीपा० १ । ॐ महिमायै नमः । महिमाश्रीपा० २ । ॐ गरिमायै नमः । गरिमाश्रीपा० ३ । ॐ लघिमायै नमः ।

लघिमाश्रीपा० ४ । ॐ प्राप्त्यै नमः । प्राप्तिश्रीपा० ५ । ॐ प्राकाम्यायै नमः । प्राकाम्याश्रीपा० ६ । ॐ ईशितायै नमः । ईशिताश्रीपा० ७ । ॐ वशितायै नमः । वशिताश्रीपा० ८ । इत्यष्टौ सिद्धीः संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततः षोडशदले दक्षिणावर्तेन च–ॐ विजयध्वजाय नमः १ । ॐ सिंहध्वजाय नमः २ । ॐ हलध्वजाय नमः ३ । ॐ सुषेणाय नमः ४ । ॐ भद्रसेनाय नमः ५ । ॐ जयसेनाय नमः ६ । ॐ विजयसेनाय नमः ७ । ॐ गोमुखाय नमः ८ । ॐ दधिमुखाय नमः ९ । ॐ जडलांगूलाय नमः १० । ॐ महीलांगूलाय नमः ११ । ॐ कालाय नमः १२ । ॐ महाकालाय नमः १३ । ॐ वज्रसाराय नमः १४ । ॐ महासाराय नमः १५ । ॐ मकरध्वजाय नमः १६ ॥ इति षोडश पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततो मंडले अकारादिक्षकारांतमातृका भूपुरे इंद्रादिदिक्षु दिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य स्तोत्रादिकेन स्तुत्वा संस्कृतां मालामादाय हृदये धारयन् मौनी एकचित्तो मूलमंत्रं जपेत् । अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपः । बदरघृतैः दशांशतो होमं तद्दशांशेन त्रिमधुभिस्तर्पणं तद्दशांशेन गंधवारिभिः मार्जनं तद्दशांशेन मोदकैः पायसेन वा ब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । मंत्रे सिद्धे मंत्री प्रयोगान्साधयेत् ॥ तद्यथा–शुक्रशनिभौमवासरे घृतदीपं स्वर्णादिपात्रे सुगंधवर्त्या संयोज्य 'ॐ हनुमद्दीपाय नमः' इति संपूज्य प्रज्वाल्य स्वर्णादिपात्रे कज्जलं पातयित्वा 'ॐ सिद्धाञ्जनाय नमः' इति कज्जलं संपूज्य ततो विशाले शोभने पात्रे द्व्यंगुलं वर्तुलं तदुपरि चतुरंगुलं चक्रवालमलक्तकेन वा विधाय तत्राद्यमण्डले स्नेहेन सुगंधेन कज्जलं संयोज्य तदुपरि मण्डलं कुंकुमेन संलिप्य भर्जपत्रे मूलमंत्रं लिखित्वा मंत्रांतरे च पत्रांतरयोः स्वप्ननिरूपकतगरादीनगरकुंकुमकर्पूरकल्केन निरूपयेत् । तदग्रे यंत्रं लिखित्वा- ॐ जयत्यतिबलो रामो लक्ष्मणश्च महाबलः ॥ राजा जयति सुग्रीवो हनुमान्कार्यसाधकः ॥१॥ इति मंत्रेण मूलमंत्रेण वा षोडशोपचारैः संपूजयेत् । ततः स्नातं शुद्धमखंडितब्रह्मचर्यमदूषितं बटुं संस्थाप्य मंत्रं श्रावयेत् पूजां च कुर्यात् । ततः गोघृतेन तैलेन वा दीपं प्रज्वाल्य शुचिर्मौनी अष्टोत्तरशतं मूलमंत्रं जपेत् । ततो बालः समुत्थाय दीपकं स्पृष्ट्वा

मेचकमण्डले नेत्रं दत्त्वा दीपं पश्येत् । तत्र मंत्रत्रयं जपेत् हुं इति प्रजपन् बालं पृच्छेत् किं पश्यासि एवं पुनः पुनः कुर्यात्--बालकः पूर्वं तेजोमण्डलं पश्यति-तत उत्तरम्-तत उपवेशनम्--ततः प्रभाम्--ततः सभयदेवताः--ततः सिंहासनम्-ततो हनुमंतम्-ततः सुग्रीवम्-ततो लक्ष्मणम्--ततः श्रीरामं पश्यन् वदति--ततो यजमानः स्वचिंतितं कार्यं बालाय श्रावयेत्-बालः कृतांजलिर्वदेत्--भगवन् हनुमन्--मया निवेदितं कार्यं कृपया वद--इति । तद्भाषितं श्रुत्वा गुरवे निवेदयेत् । तेन कार्यसिद्ध्यसिद्धी जानीयात् । यदा तु किमपि न पश्यति अन्यथा पश्यति गिरिसमुद्रनागयक्षराक्षसनरनारीपशुपक्षिगणं पश्यति तदपि तदा शुभाशुभं तद्रूपेण जानीयात् । अनिष्टं पश्यति चेत् मंत्रयंत्रं वटुशिरसि निधाय मंत्र जपित्वा पुनः पृच्छेत् ततः इष्टं पश्यति तत्र प्रश्ने एकवारं द्विवारं त्रिवारं वा कार्यं पृच्छेत् । चौरजारनारी द्यूतादीनां प्रश्नं न कुर्यात्--यदि कुर्यात्--लक्षमंत्रं जपेत् । शांतौ श्वेतवस्त्रमाल्यनैवेद्योपचारैस्तुष्टिं कुर्यात्। इतरे रक्तानि वस्त्राणि धारयेयुः। सिद्धं कार्यं भवति । प्रश्नवेलार्धरात्रिरेव ॥ इत्यगस्त्यसंहितायां सुतीक्ष्णागस्त्यसंवादे विश्वलोचनचक्रपूजाविधानं समाप्तम् ॥ कामाख्या मंत्रो यथा--ॐ नमः कामाख्यायै सर्वसिद्धिदायै अमुककर्म कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--अस्य मंत्रस्य वह्निक ऋषिः । जगती छंदः । कामाख्या देवता । प्रणवः शक्तिः । अव्यक्तं कीलकम् । अमुककर्मणि जपे विनियोगः । ॐ वह्निकऋषये नमः शिरसि १ । जगतीछंदसे नमः मुखे २ । कामाख्यादेवतायै नमः हृदि ३ । प्रणवशक्तये नमः पादयोः ४ । अव्यक्तकीलकाय नमः नाभौ ५ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ नमो अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । कामाख्यायै तर्जनीभ्यां नमः २ । सर्वसिद्धिदायै मध्यमाभ्यां नमः ३ । अमुककर्म अनामिकाभ्यां नमः ४ । कुरु कुरु कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति कर न्यासः ॥ १ । ॐ नमो हृदयाय नमः १। कामाख्यायै शिरसे स्वाहा २। सर्वसिद्धिदायै शिखायै वषट् ३। अमुककर्म कवचाय हुम् ४। कुरु कुरु नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । स्वाहा अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्--ॐ योनिमात्र शरीरा या कंगुवासिनि कामदा ॥ रजस्वला महातेजा कामाक्षी ध्यायतां सदा ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा मंत्रं जपेत् ॥ अस्य पुरश्च

रणमिहायुतजपः ॥ गुडहलपुष्पेण दशांशतो होमं तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कर्यात् । एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान्साधयेत् । तथा च–पीछे इस यंत्रको लिखकर इसमें मेढककी राख लपेटके रुईके साथ बत्ती बनावे उसको तेलमें जलावे उस दीपकके सम्मुख आठ दस वर्षकी कन्या अथवा पुत्र उच्चवर्ण देवतागण हो नहवाकर बैठावे उसके हाथोंमें मेढककी राख तेलमें सानकर लगादेवे आप मंत्र पढने लगे और बालकको दीपककी लौपर दृष्टि बांधकर देखनेको कहे तो बालकको जैसा दीखेगा सत्यसत्य बतावेगा इसमे संदेह नहीं ॥ २८ ॥ अन्यत्–तैलमातङ्गीमंत्रः–ॐ ऐं तैलमातङ्गि नूनखमध्ये आगच्छ ततः कर्म कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति पंचविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–रविवारकी रात्रिसे काले कम्बलपर बैठकर नग्न हो प्रतिदिन अष्टोत्तरशत १०८ वार मंत्र जपे तो इक्कीस २१ दिनमें सिद्ध हो पीछे प्रयोग इस प्रकारसे करे–शनिवारकी रात्रिको तिलका तेल तोला एक १ कांसीकी कटोरीमें डाल दूर्वाकी प्रोक्षणीद्वारा एकसो आठवार उस तेलको अभिमंत्रित करके रख छोडे–पुनः रविवारको प्रातः काल चौका लगा धूप दे फूलमाला चढा–एक लडका वर्ष ९ तथा १० तकका उसे स्नान कराके सुगंध द्रव्य लगा स्वच्छ वस्त्र पहराकर बैठादेवे–पीछे पहले दिनका अभिमंत्रित किया हुआ तेल लडकेके हाथवाले अंगूठेके नाखूनमें लगाकर लडकेको एक टक देखनेके वास्ते कहे और आप सामने बैठकर मंत्र पढ पढ कर लडकेके ऊपर फूंक मारता रहे धूप भी देता रहे–थोडी देर पीछे लडकेसे पूंछे तुझको कुछ दीखता है–पहले मुख दीखेगा–जब लडकेसे कहलावे कि–हे मातेश्वरी ! तुम्हारा अमुक भक्त याद करता है सो जल्द आकर दर्शन दो ऐसा कहनेपर जब–सिंहपर चढी देवी या लटा बिखरेहुए भैरव दीखे–तब लडकेके हाथमें–पेडा देकर–लडकेसे कहलावे कि–भोग लो–पीछे–इलायची दे–पीछे सुगंधद्रव्य देवे–यदि लेतीहुई दीखे जब लेचुके उस वक्त लडका हाथ जोड कर पूंछे–आपका अमुक भक्त अमुक कार्य पूछता है सो कृपापूर्वक बतावो–ऐसा कहनेसे बतादेगी–जबतक प्रश्न करे धूप देता रहे ॥ अन्यो मंत्रो यथा–बिस्मिल्लाहुर्रहेमानुर्रहीम खुदाई बडा तू बडा जैनुद्दीन पैगम्बर दुनी तेरा सादात फुरो वादना मुरादी बेबुनि

यादी तुर्कमापरि तायियासिलार देखूं तेरी शक्ति बेगि बांधिल्याव नौ नारसिंह चौरासी कलवा बारा ब्रह्मा अठारहसो शाकिनी कामनदुरामन छल छिद्र भूत प्रेत चोर चाखर अगिया बैताल बेगि बांधिलाव जो न बांधि लावे तो दुहाई सुलेमान पैगम्बरकी ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--शुक्रके शुक्र तेल अतर लौंग धूप मिठाईसे पूजन करके एकसौ आठ दफे मंत्र पढे तो चालीस दिनमें सिद्ध होजायगा पीछे जब हाजिर करना होवे तब मट्टीसे चौका लगा उसपर चावलोंकी मसजिद बनावे पीछे पट्टापर त्रिशूल लिख कन्याको नहलाकर स्वच्छ वस्त्र पहरावे और उस पट्टेपर बैठा देवे उसके सम्मुख दीपक जोडकर धरे आप मंत्र पढ पढ कर कन्याके मस्तकपर चावलोंको मारे तो वह कन्या जो कुछ पूंछोगे दीपकमें देखकर बतावेगी । सत्यमेव न संदेहः ॥ २९ ॥ अन्यत्— पुष्यनक्षत्रमें सूर्योदयके पहले नग्न होकर लाल ओंगाकी जड साबित खोदकर निकाल लावे उसके तांतूमें रुई लपेट दीपक बालकर दिखानेसे सत्य सत्य विना मंत्रके ही दीखने लगेगा । सत्यमेव न संदेहः ॥ ३० ॥ अथ मंडूकयुग्मचेटको दत्तात्रेयतंत्रे--मंडूकद्वितयं ग्राह्यमेका नारी परो नरः । द्वितीया मुखमध्ये च मुद्रा स्वर्णस्य दीयते ॥ १ ॥ श्मशाने गर्तकुंडे तु निखनेद्भूतले ध्रुवम् ॥ नार्याः कार्या चिता वामे पुरुषस्य च दक्षिणे ॥ एकादशदिनं यावद्गंधकं धूपमादिशेत् ॥ तद्दिने संगृहीत्वा तु मुद्रिकां ग्राह्य यत्नतः ॥ नारीसंज्ञां मुद्रिकां च त्रिलोहे[1] वेष्टितां कुरु ॥ दक्षिणे बाहुमूले च कंठस्थाने विशेषतः ॥ धारयेच्च नरः सत्यं सिद्धयोग उदाहृतः ॥ पुरुषाख्या मुद्रिकेयं संसारे दीयते तथा ॥ व्यापारं तस्य कृत्वा तु यथेच्छं सुखमाप्नुयात् ॥ क्षणमात्रे हस्तमध्ये आगच्छति न संशयः ॥ यावजीवं नरः सत्यं यावत्कौतुककौतुकम् ॥ युग्मसंज्ञस्त्वयं सत्यं सिद्धयोग उदाहृतः ॥ ॥ अथ वस्त्वाकर्षणचेटकः प्राकृतग्रंथे— पारा विष अरु बीज अंडके, मांस नागको लीजे । बीज ककोडा मांस छिपकली, बंदर हाडजु लीजे ॥ लेपकरे जल पीस हथेली, जहां हाथ वह लागे । बिन बल किये वस्तु वह आपुहि, संगहि संग जु लागे ॥ यंत्रभंजनचेटकः—रविदिन दोपहरी समै, नंगा होकर ल्याय ।

१ त्रिलोहो यथा-"दश हेम द्विषट ताम्रं षोडशं रौप्यभागकम् । एवं संख्या त्रिलोहस्य ज्ञातव्या सर्वकर्मणि ॥"

चील कागका घोसला, लाइ धूप दे ताय ॥ बहुरि जरावे अग्निमें, ल्यावे अग्नि उठाय । मुँदे कलफपर मारिये, कुंजी बिन खुल जाय ॥ अन्यत्—भादों भौमवारको जोई, चन्द्रग्रहण कहि ता दिन होई । नंगा होय जतन यह कीजे, जड ओंगाकी खोद धरीजे ॥ जीभ नाक दांत अरु काना, इनका मल सब लेंय समाना । पांचों पीस धरे निजपासा, यहविध करिये चेटक जासा ॥ एक हाथमें गुटिका रखिये, 'द्राविण द्राविण स्वाहा'जपिये।ऐसे जपत छुवत ही ताला,बिन तालीहिखुले ततकाला॥ अथ निगडभंजनचेटकः—दत्तात्रेयतंत्रे—ॐ नमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय बहुरूपाय नानारूपधराय हसहस नृत्य २ तद २ नानाकौतुकेन्द्रजालदर्शकाय ठः ठः स्वाहा ॥ इति मंत्रः॥ हस्तनक्षत्रमें सिंदुवारकी उस जडको लावे जो उत्तरकी तरफ गई हो पीछे मंत्र पढकरबेडीके लगावे तो तत्काल खुल पडे॥ प्राकृतग्रंथे—लाल कमल जटामांसी लावे, लाय तुल्य किरकिटे खवावे । ताको मल बेडीके लावे, तुरत बंद बेडी खुल जावे ॥ अथ द्वारभंजन चेटकः--दं हुं ॐ आयआय चिंचिटिचिटिहांलां वज्रनांदिके कालिके स्वाहा॥इति मंत्रः॥ इस मंत्रसे अभिमंत्रित करी हुई सफेद सरसोंको किवाडों पर मारै तो तत्काल ही बंदीगृहके किवाड खुल जाँयगे ॥ अथ राश्युत्थापनचेटकः—ॐ नमो हुंकालूं चौंसठ योगिनी हुंकालूं बावनवीर कार्तिक अर्जुन वीर बुलाऊं आगे चौंसठ वीर जलबंध बलबंध आकाशबंध पौनबंध दीनदेशकी दिशाबंध उत्तरे तो अर्जुन राजा दक्षिणे तो कार्तवीर्यराजा आसमानमें बावन वीर गाजें नीचे तो चौंसठयोगिनी विराजें पीर तो राशि चलावै छपन्यां भैरूं राशि उडावै एक बंध आसमानमें लगाया दूजा बंध राशि धरमें ल्याया शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा सत्य नाम आदेश गुरूको ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--दिवालीकी रात्रिको वनमें जाकर खुरसा (बकरा) की मैंगनी लावे अभिमंत्रित करके अन्नकी राशिके ऊपर धरे तो सब राशि उसके घर आजायगी ॥ २२ ॥ अथ तस्करग्रहणचेटकः--उद्दमुद्दजल्लज लाल पकड चोंटी धर पछाड भेज कुद्दा लाव मुद्दा याकहु हारो या कहु हारो ॥ इति मंत्रः॥अस्य विधानम्--इस मंत्रकों नदीके किनारे अथवा कुएपर एकसौ इक्कीस दफे पढकरसो रहेतो सातही दिनमें सारा भेद मालूम होजायगा जो कोई चुरा ले गया होगा और जहां

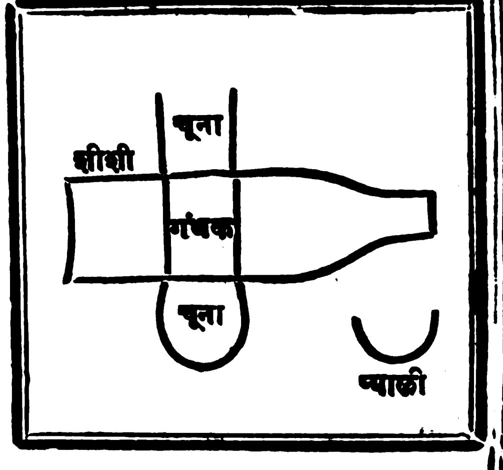
माल धरा होगा सब स्वप्नद्वारा मालूम होजायगा ॥२३॥ अन्यः–ॐ नमः किकिष्किधापर्वतपर कदलीवन तिस्के फल तोडनवाला चोर तेरे कुंजनको देनी पकड दे इतनी आज्ञा फुरो ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--जिनपर संदेह हो उनका नाम लिखकर आटेमें गोली बनावे प्रति गोली इक्कीस मंत्र पढकर जलमें डालनेसे चोरका नाम तैरने लग जाता है ॥२४॥ अन्यः–ॐइन्द्राग्निबंधबंध ॐ स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--रवि या शनिको लोगोंका नाम भोजपत्रपर लिखके प्रतिनाम एकसो आठ दफे मंत्रसे अभिमंत्रित कर अग्निमें डालनेसे चोरका नाम नहीं जलेगा ॥ अगर इसी मंत्रको लिखकर सफेद मुरगेके गलेमें बांध देवे और उस मुरगेको टोकरेके नीचे बंद करके लोगोंका हाथ धरावे तो चोरके हाथ धरते ही मुरग बोलने लगेगा ॥ अन्यः–रास्तीमुजुव्वेरजायेखुदाय कश्म दीदमगल कशुदमुजरात ॥ इति मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्–लोगोंका नाम लिखके चमारकी सुतारीको उल्टी जूतीमें गाडकर दो अंगुलियोंपर उठावे चोरका नाम धरके मन्त्र पढे तो चोरका नाम धरते ही जूती चक्कर देने लगेगी । अनुभूतमेतत् ॥ अन्यत्–ॐ ह्रां चक्रेश्वरि चक्रधारिणि चक्रे वेगि काटि भ्रामिभ्रामि चोरग्रहाणि स्वाहा ॥ इति मन्त्रः ॥ अन्यत्–ॐ नारसिंहवीर हरे कपडे ॐ नारसिंह वीर चावल चुपडे सरसोंके फक फक करै शाहको छोडै चोरको पकडै आदेस गुरूको ॥ इति मंत्रः ॥ अन्यत्–ॐ नमो नारसिंह वीर ज्यूं ज्यूं तूं चाले पवन चाले पानी चाले चोरका चित्त चाले चोरके मुखमें लोही चाले काया थांभै माया परे करै जो चोरके मुखमें लोही न चलावे तो गोरखनाथकी आज्ञा मेटै नौनाथ चौरासी सिद्धकी आज्ञा मेटै ॥ इति मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्–चावल सवा पाव तीन दफे पानीसे धोकर गोमूत्रमें भिगोवे पीछे सुखाकर धर ले शनिवारके दिन प्रातःकाल धरती लीप कपडा बिछाकर चावलोंको उसके ऊपर धरे और चावलोंपर कोईसा एक मन्त्र पढ़कर एकसोआठ दफे फूंके पीछे चार यारी चौखुंटारूप या जिसमें सुलाख न हो लेकर दूधसे [illegible]कर चावल तोलकर सबको चबावे तो चोरके मुखसे लोही निकलेगा ॥ अथ मार्गवेटकः–ॐ ह्रीं आधारेश्वरि नित्यं यंयंवां ॥ इति मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्–त्रिंशद्वारं जपित्वा शताभिमंत्रितेन सूत्रेण द्वौ पादौ बद्ध्वा तदा पंचविंशतियोजनं गच्छेत् ॥

अन्यत्-श्वेतककोडा काकजंघा, सरफोंकाहू लेय । जड तीनोंकी सहतसंग, जाहि पिया कर देय ॥ अरु तीनोंकी पोटली, कटिसों देय बंधाय । मारगमें हारै नहीं, उडयो पवनसो जाय ॥ अन्यत्-काले तीतलको तीनदिन, भूखा राखे कोय । चौथे दिन पुनि ताहिको, पारा प्यावे जोय ॥ दुग्धभेय चावल तबहि, तीतलही खवावे । विष्ठा ताके गुटिका निकले, मुखधर हार न आवे ॥ ॥ अथ योज़नवार्ताश्रवणचेटकः प्राकृतग्रंथे-बींट गीधकी लायके, तासम पीपर डारी । मालकांगनी छाल जु नींबू, पीस छानकर त्यारी ॥ धरके ताहि पतालयंत्रमें, खेंच अरक पुनि लीजे । गेर कानमें योजनभरकी, तत्क्षण बात सुनीजे ॥ ॥ अथ गुप्तवार्ता लक्षचेटकः प्राकृतग्रंथे--रविदिन जहांजु घुग्घू पावे, ताको काढ कलेजो लावे । ताको धूप दीप दे राखे, सोवत नरके हिरदे नाखे ॥ गुप्त बात मनमें जो होई, ज्योंकी त्यों सबही कह देई ॥ ॥ अथ जललोपकरणचेटकः प्राकृतग्रंथे-रविदिन मावस होय जब, चोंच हंसकी लाय । रेखा तासो खैंचिये, जहँ पनघटकी वाट । घटभर पनघटसों चलै, लांघ जाय वह रेख । खाली घट दीखन लगै, विना नीरको पेष ॥ जो चाले फिर उलटिके, लांघे नहीं लकीर । भऱ्यो घडो दीखन लगै, जब आवे जिय धीर ॥ ॥ अथ स्त्रीवीर्यपातनचेटको दत्तात्रेयतंत्रे-चटकमैथुनं पश्येद्यावद्दारं करोति च । तावद्गृह्य सूत्रेण दीयंते कौतुकं महत् ॥ कृकलासस्य रक्तेन लेपितं ग्रंथिसूत्रकम् ॥ आगच्छति महारूपा वनिता स्वच्छंदचारिणी ॥ मध्यग्रंथि विसृष्टा चेद्योषिद्वीर्यं सृजत्यलम् । विना मंत्रेण सिद्धिः स्यात्सिद्धयोग उदाहृतः ॥ ॥ अथ जलविहारचेटकः प्राकृत ग्रंथे--होय सर्प जो दोमुह, ताको लोही लाय । तामें वस्त्र भिगोयके, धरिये धूप सुकाय ॥ फिर ताको गोला करे, मुखमें राखे मेल । दरियामें घुसके करे, जलभीतरकी सैल ॥ विद्या चेटक अति भलो, काऊ करके देख । गुरू विना नहि पाइये, गुप्त बातको भेद ॥ ॥ ॥ अथ रसायनचेटको दत्तात्रेयतंत्रे--गोमूत्रं हरितालं च गंधकं च मनःशिला ॥ समं समं गृहीत्वा तु यावच्छुष्यति पेषयेत् ॥ १ ॥ एकादशदिनं यावद्यत्नेनैव च रक्षयेत् ॥ मंत्रेण धूपदीपादिनैवेद्यैर्धूपसंयुतैः ॥ २ ॥ तत्र मंत्रः-ॐ नमो नमो हरिहराय रसायनसिद्धिं कुरु

कुरु स्वाहा ॥ पेषणसमये अयुतं जपेत् सिद्धिः । तं च मंत्र धूपादिकर्मणि योजयेत् । ततः–स वर्टी गोलकं कृत्वाऽऽवेष्टय वस्त्राणि यत्नतः॥
मृत्तिकां लेपयेत्तस्य च्छायाशुष्कं तु कारयेत् ॥ ३ ॥ गर्तकुंडे विनिक्षिप्ते पलाशकाष्ठवह्निना । अष्टप्रहरपर्यंतं नान्यथा शंक
रोदितम् ॥ ४ ॥ तद्भस्म जायते सिद्धं सिद्धसिद्धीति नामकम् ॥ ताम्रपात्रे अग्निमध्ये बिंदुमात्रं विनिक्षिपेत् ॥ ५ ॥ तत्क्षणाज्जायते
स्वर्णं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ देयोऽयं गुरुभक्ताय न दद्याद्दुष्टमानसे ॥ ६ ॥ सिद्धिपीठे भवेत्सिद्धिर्गायत्रीलक्षजापकैः ॥ यस्मै
कस्मै न दातव्यं दातव्यं शिवभक्तके ॥ ७ ॥ अग्निर्मुखं द्विजातीनां याचकानां विशेषतः ॥ गोप्यं गोप्यं महागोप्यं देवानामपि दुर्ल
भम् ॥ ८ ॥ वर्षं प्रति कृपां कृत्वा गोप्यं नैव प्रकाशयेत् ॥ वनितापुत्रमित्रादौ गोप्यं सिद्धिप्रदायकम् ॥ ९॥ अन्यत्–अथातः संप्रवक्ष्यामि
ब्रह्मवृक्षस्य कल्पनम् ॥ शृणु वत्स विधिं तस्य ब्रह्मवृक्षस्य यत्फलम् ॥ १० ॥ दारिद्र्यदुःखनिर्णाशो नराणां बुद्धिवर्द्धनम् ॥ तस्य पुष्पाणि
संगृह्य सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत् ॥ ११ ॥ अजाक्षीरेण तद्भाव्यं त्रिवारं हि पुनः पुनः ॥ वंगस्य षोडशांशेन प्रतितापं तु कारयेत् ॥ १२ ॥
तद्वंगं शोध्य नागेन पुनस्तैरवधार्यते ॥ जायते शोभनं तारं शंखकुंदसमप्रभम् ॥ १३ ॥ तस्य वृक्षस्य पुष्पाणि तद्रसे भाव्य तारकम् ॥
त्रिंशांशं वेधयेद्वंगं तेन तारं च नान्यथा ॥ १४ ॥ हिमकुंदेन्दुसदृशमष्टदोषविवर्जितम् ॥ जायते नान्यथा वत्स भक्तियुक्तस्य तद्भवेत् ॥
॥ १५ ॥ ब्रह्मवृक्षफलं दृष्ट्वा गंधकं भाव्य यत्नतः ॥ शुक्लपत्रप्रलेपेन पुटेनैकेन कांचनम् ॥ १६ ॥ तस्य वृक्षस्य तैलेन भावयेद्रसगंध
कम् ॥ नागं हेमं भवत्याशु द्वात्रिंशेन तु वेधयेत् ॥ १ ॥ शून्यभवनमध्ये तु कर्तव्यं तु यथोचितम् ॥ तस्य फलरसेनैव हेमं भवति
निश्चितम् ॥ २ ॥ अन्यत्–पारा टंक ३ जस्त टंक ९ मट्टीके खपरेमें धर सागपत्ररस बंद २ दीजे तो भस्म होय । ततः–ॐ ऐं
क्लीं क्लीं क्लीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं सः वं आपदुद्धरणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय मम दारिद्र्यविद्वेषणाय श्रीमहाभैरवाय
नमः ॥ इति मंत्रेण सिद्धिद्वारा रौप्यपत्रपर लेपन करे अथवा रौप्य गलाकर डाले तो स्वर्णसिद्धिः ॥ ३ ॥ अन्यत्–पारेको तुलसी
पत्रके रसमें घोटे जब दाना दाना होजाय उस वक्त चमगीदड नरके कमरमें कन्याका काता सूत इस मंत्रसे बांधे । कारण इस मंत्रके

प्रभावसे पारा अग्निमें उडेगा नहीं । तत्र मंत्रः—ॐ मोहनपारा अनतदुवारा काज करै हमारा जो अग्नि ऊपरथी जाय तो श्रीगुरुगोरख नाथकी आन ॥ इति मंत्रः ॥ पीछे पारेको चमगीदडके मुखमें डालकर कंठतक पहुँचाय देवे तब मुख सी कपडमट्टी लगाकर खूब सुखावे और शरावसंपुटमें मुद्रा कर गजपुटमें फंक देवे जिसमें चमगीदडका हाड भी सबजलकर भस्म होजावे यह बात चारपांचोदन तक अग्निमें रहनेसे होगी जब अग्नि बुझनेलगे उस वक्त और छान देदिया करे स्वांग शीतल होनेपर पारेकी भस्म निकाल लव पीछे ताम्र गलाकर थोडीसी भस्म डाले तो सुवर्ण होवे रांगमें डाले तो सायत कोई वस्तु होजायगी यह चिकित्साचक्रवर्तीमें लिखा है ॥ ४ ॥ अन्यत्—सफेद हिंगुल अर्थात् रसकपूर तोला१ बिजौरे नींबके बीचमें रख कपडमट्टी करे और छाना सेर एकमें फूंक दे पीछे तांबेम डाले तो पानी सोखन होवे यह भावनाथजतीका प्रयोग है॥५॥ अन्यत्—हरताल तोला एक १ इन्द्रायणके फलमें धरके ४ कपडमट्टी करे और छाना सवासेरमें फूंके इसीतरह इकीस इन्द्रायणमें फूंके तो पानी सोखनेवाली भस्म बने ॥ ५ ॥

ताम्रपात्र ।



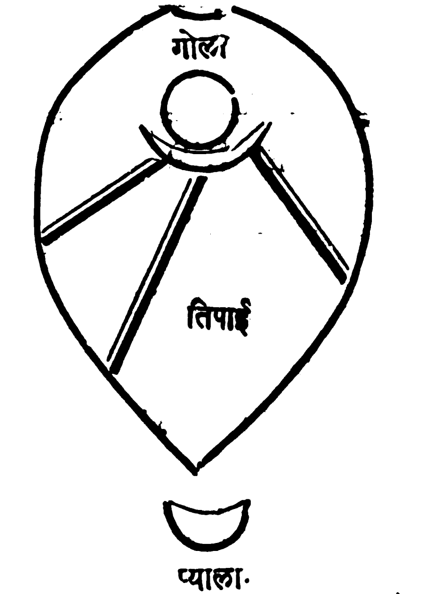
अन्यत्—संभलखार हलदिया तोला तीन ३ ढाककी कोपल सेर १ के रसमें खरल कर उसीकी लुगदीमें धर कपडमट्टी करके फूंक दे पीछे रांग तोला तीन ३ में चावल चार ४ डाले तो सर्व काम बने सिद्ध हो यह विधान भी जतीलोगोंसे मिला है ॥ ६ ॥ अन्यत्—तबकिया हरताल हलदिया जहर पारा प्रत्येक डेढ तोला १॥ ग्वारपाठेके रसमें खरल घडी ४ पीछे टिकडी कर शरावसंपुटमें धर सीपके चूना तोला १० से मुख बंदकर कपडमट्टी दे छाना सेर २॥ म फूक ठंढा करके निकाले पीछे तांबापत्र तपा जरासा बुरकावे तो चक्कर खाकर सुवर्ण हो ॥ ७ ॥ अन्यत्—जंगली सअरके खवेका मांस डेढसेर १॥ तबकिया हरताल आधसेर ॥ कपडछान करके मिलावे मुखमुद्रा कर घूरेमें गाडे दिन ४० पीछे निकालकर उसमें जो पीत मुखके कीडे पडें

उनको शीशीमें भर खिचडी सीझते हुए बटलोहेमें धरे तो उन कीडोंका पानी होजायगा । वह पानी लेकर ताम्रपत्रपर लगावे और अग्निमें तपावे तो सुवर्ण हो अगर सुअरमांसके बदले गऊ जो पहले पहले ब्यावे उसके पहले या दूसरे दिनका खीस काममें लावे तोभी ठीक है कोई २ हरतालके बदलेमें आमलासार गंधक डालनेके वास्ते कहते हैं ॥ ८ ॥

॥ अन्यत्–एक महात्माने गंधकके तेल बनानेकी रीत इस प्रकार बताई है जैसे--एक ताम्रका बडा पात्र लेकर उसके दोनों बगलोंमें इतना बडा छेद करे जिसमें शीशी आजावे जिसका यंत्र इस चित्रमें देखो इस रीतिसे बना उसमें पत्थरका चूना तुर्तका फूंका हुआ भरो, पीछे शीशीमें गंधक भरके उस पात्रमें कुछ तिरछा अटकावो संधियोंको गेहूंके आटेसे खूब बंद करके सुखालो शीशीके ऊपर भी चूना ढक दो और पात्रका मुख खुला रक्खो, पीछे उस पात्रमें पानी डालनेसे जब चूना खदबदावेगा तो उसकी गरमीसे गंधकका तेल निकालकर बाहर पडने लगेगा उसको एक चीनीके प्यालेमें लेलो इस तेलकी सींक ताम्रपत्रपर लगाके अग्निमें तपानेसे सुवर्ण होजाता है । दूसरे महात्माने कहा है कि गंधक हरे वर्णकी होनी चाहिये उसको गूंदली अर्थात् प्याजपत्रके रसमें गोली बनाकर शीशीमें डालना चाहिये और ऐसा करनेसे पाताली यंत्रद्वारा अग्नियोगसे भी तेल निकाल आवेगा क्योंकि हरी गंधक अग्निमें विशेष गलती नहीं ॥ ९ ॥ अन्यत्–एक महात्मा बंगालीने गंधकके तेल निकालनेकी विधि इस प्रकारसे बताई है जैसे–आमलासार गंधकको जामुनकी छालके रसमें ४ पहर घोट गोला बनावे और एक तांबेका नारियल जिसके नीचे छिद्र हो उस नारियलमें तांबेकी

अग्नि.

ताम्रका नारियल.



तिपाई धरके उसके ऊपर गंधकका गोला धरे पीछे ताम्रके नारियलका मुख ताम्रपात्रसे ही बंद करके मुद्रा करे इसके ऊपर अग्नि बालनेसे तेल टपक आवेगा पीछे इस तेलको ताम्रपत्रपर लगाकर अग्निमें देनेसे सुवर्ण होता है। कोई कोई बिजौरे नींबूके रसमें गंधक घोटनेके वास्ते कहता है॥१०॥ अन्यत्–रुद्रवंतीलक्षणम्–पत्ता चनेके पत्रसम, चपटा छत्ता गोल। जैसे मोटी रोटी होतीहै, याविध मोटा तोल॥ पृथ्वी नीचे चिक्कनी, जाबिच चींटी लाग॥ ताका पत्र जिह्वा धरे, तीक्षणता अतिभाग॥ निपजत हैं सबही जगह, मिलै भाग्यविन नाहिं॥ ताम्रपत्र बुंद एक दे, तब सुवर्ण होजाहि॥११॥ अन्यत्–संखियेकी डलीको दोलायंत्र द्वारा कडुवे तेलमें औटावे जब सींक घुसने लगे उसवक्त नकछिकनीके रस सहित कुल्हडेमें डालकर थोडासा शोराभी डाले और आंचपर धरे जब बोलनेसे बंद होजाय तब उतार ले पीछे तांबा मासा ६ सुहागेसे गलावे जब चक्कर खानेलगे तब संखिया रती १ गेरे तो तांबा सफेद होजायगा पीछे चांदी मासा ६ डाले जब चांदी भी चक्कर खानेलगे तब थोडासा शोरा डालकर धमावे पीछे रती १ संखिया और डाले तो अति चोखी चांदी बने॥ १२॥ अन्यत्–पारा तोला चार ४ संखिया तोला चार ४ दोनोंको दिन ७ नींबूके रसमें खरल करे जब गाढा होजाय सब चांदी तोला ४ के संपुटमें धर अत्यंत दृढ कपडमट्टी करे पीछे सुखाके एकांतमें तीस आरने उपलोंकी आंच दे तो आधी डिबिया समेत सब चीजोंकी चांदी होजायगी पीछे तांबा तोला दो २ गलाकर इस डिबियाकी चांदी रती ५ डाले तो वह तांबा शंखकुंद चन्द्रमाके समान सफेद होजायगा पीछे सफेद तांबेकी बराबर चांदी मिलावे और खूब धमावे तो सब चांदी होजायगी यह अनुभव कियाहुवा है मिथ्या नहीं ऐसा रसराजसुन्दरमें लिखा है॥ १३॥ अन्यत्–पीत धतूरापुष्परस, सीसा तोले आठ। लांगलीको लाय रस, और लेय रस पाठ॥ मर्दन करके खरलमें, गोला लेहु बनाय। गजपुटकी धर आगमें, फूंक सुवर्ण बनाय॥ अन्यत्–मधु घृत गुड अरु तांबो लाय, सोनामाखी पारामाहि। कीजे खरल इन्हे मिलवाय, दीजे तीव्र अग्नि जलवाय॥ मुसमांही रखकर मुखबंद, जासे रहे न पावे संध। दीजे अग्नि न बीच धराय, ऐसे चांदी सहज बनाय॥

वस्तुवोंके मंदी तेजी देखनेकी सारणी.

वस्तु नाम	ध्रुवांक	वस्तु नाम	ध्रुवां.	वस्तु नाम	ध्रुवां.	संक्रांति	ध्रुवांक	बार नक्षत्र	ध्रुवांक	नक्षत्र	ध्रुवांक
सुवर्ण	९६	अफीम	११२	तूर	७२	मेष	३७	शुक्र	२४	विशाखा	३२०
चांदी	८१	तिल	५३	मूंग	५१	वृष.	८४	शनि	१४	अनुराधा	४९३
पीतल	५६	सरसों	८८	चणा	५६	मिथुन	६६	अश्वि.	१०	ज्येष्ठा	५५९
लोहा	५४	राई	७७	जुवार	१००	कर्क	१०९	भरणी	१०	मूल	५५२
शीसा	६०	कपूर	१०२	हींग	६२	सिंह	१२५	कृत्ति.	९६	पू. षा.	१४२
कांसी	१२७	अश्व	७७०	कथीर	६७	कन्या	१०२	रोहि.	५६	उ. षा.	४२०
तांबा	१०	हांथी	६४	कुंकुम	२५	तुला	१४०	मृग.	२०	श्र०	५५०
मोती	६५	भैंस	६२	हरडे	७३	वृश्चि.	१४४	आर्द्रा	८६	ध०	७३६
कपास	१२७	गाय	७७	जीरा	७०	धन	१४४	पुनर्व.	२१	शतभि	५७६
सूत	६४	बैल	८७	कुल.	६२	मकर	१९८	पुष्य	६४	पू. भा.	२७५
कपडा	१००	बकरी	६०	कांगनी	२०	कुंभ	१९०	श्लेषा	१३५	उ. भा.	१२६
घृत	५०	ऊंट	८५	साल	१९५	मीन	१८०	मघा	१५०	रेवती	२५६
तैल	१०	चावल	१७	सुपारी	२०४	वार रवि	४०	पू. फा.	२२०	तिथि एकम	१८
लूण	५६	चवला	८७	गिरी	८३	चंद्र	५०	उ. फा.	७२	द्विता.	२०
शक्कर	१०२	जव	५७	सूंठ	१००	मंगल	५७	हस्त	३३४	तृती.	२२
मिश्री	१०३	गेहूं	१४	मंजीठ	१४४	बुध	७२	चित्रा	२१	चौथ	२४
गुड़	४०	उड़द	८०	नारिल	७८	बृहस्पति	६९	स्वाति	२१०	पंचमी	२६
रीति-मेषादिसंक्रांति जिस दिन बैठे उस दिनके सब ध्रुवांक जैसे संक्रांतिका तिथिका वारका नक्षत्रका इन सबोंके ध्रुवांकको जोडकर पीछे अभीष्ट वस्तुका ध्रुवांक मिलाकर ३ का भाग दे शेष १ बचै ता सस्ती २ बचै ता सम ० बचै ता अवश्य महंगी होवै।				छुहारा	१४४	षष्ठी	२५	दशमी	१७	चौदस	६
						सप्तमी	२३	एकादशी.	१५	पौर्णमासी	१६
						अष्टमी	२१	द्वाद.	१३	अमावस्या.	७
						नौमी	१९	त्रयोदशी.	११		

अथ समय ज्ञानचेटकः—ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—कई वस्तुओंको तोलकर इस मंत्रद्वारा गांठ बांध धरे प्रभातसमय तोले जो घटे वह महँगी होगी जो बढे वह सस्ती जानना ॥ अन्यत्—पूर्वलिखित चक्रके द्वारा सर्व वस्तुओंकी तेजी मंदीका ज्ञान हो जाता है ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे उत्तरखण्डे चेटकतंत्रे चतुर्थस्तरङ्गः॥४॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ निधिग्रहणाञ्जनतंत्रप्रारंभः ॥ तत्रादौ निधिस्थानलक्षणं कौतुकचिंतामणौ—पद्मगंधा भवेद्यत्र मृत्तिका तत्र जायते ॥ निधिः शाबरमंत्रेण बलिना साधयेद्धनम् ॥ १ ॥ श्येनकाकबकाद्याश्च तथान्ये बहुपक्षिणः ॥ सततं यत्र तिष्ठंति निधिस्तत्र न संशयः ॥ २ ॥ यस्मिन्स्थाने प्रकुर्वंति काका मैथुनमादरात् ॥ सिंहस्थितिर्भवेद्यत्र निधिस्तत्र न संशयः ॥ ३ ॥ बहूनां यत्र वृक्षाणामेकस्मिन्सकलाः खगाः ॥ वसंति सकले काले निधानं तत्र लभ्यते ॥ ४ ॥ जीर्णोद्यानतडागेषु शून्यग्रामवनेषु च ॥ मातरो यत्र तिष्ठंति तत्र वित्तं न संशयः ॥ ५ ॥ कोमलः शाड्वलो रम्यो दृश्यते तृणसंचयः ॥ गोकुलैर्बहुधा लुब्धैः खाद्यमानोऽपि नित्यशः ॥ ६ ॥ पुनश्च तादृशो भूयो निधानं तत्र दृश्यते ॥ ७ ॥ शरद्धेमंतवर्षासु पवित्राः पत्रसंयुताः ॥ भवंति भूरुहा ग्रीष्मे तत्र स्थाने ध्रुवं निधिः ॥ ८ ॥ एकशीर्षेषु वृक्षेषु यदि शाखाद्वयं भवेत् ॥ तत्र वित्तं भवत्येव नासत्यं शाबरं वचः ॥ ९ ॥ विपरीतफलोपेता दृश्यंते यत्र भूरुहाः ॥ अवश्यं तत्र वित्तं स्यात्साधयेद्बलिना बुधः ॥ १० ॥ करिहस्तसमाकारः प्ररोहो दृश्यते वटे ॥ रक्तं स्रवति भिन्नश्च तत्र वित्तं न संशयः ॥ ११ ॥ ध्वजमनिसमाकारः प्ररोहो दृश्यते वटे ॥ शतसाहस्रकं वित्तं तदधो लभते ध्रुवम् ॥ ॥ १२ ॥ अनारोहेषु वृक्षेषु यथाधारो हि दृश्यते ॥ निधानं लक्षयेत्तत्र लभ्यं भाग्यवतां नृणाम् ॥ १३ ॥ ग्रीष्मसूर्यांशुभिर्दग्धा शोषं नायाति या मही ॥ दवानलेन दग्धा वा तोयसंपर्कवर्जिता ॥ प्रदेशः कुत्रचित्तस्याः पन्नगैः सेवितो यदि ॥ १४ ॥ इति निधिस्थाननिरीक्षणं कृत्वा लेपादिद्वारा निश्चयं कुर्यात् ॥ तथा च—गोमूत्रैर्घटमापूर्य निखनेच्छंकितस्थले ॥ सप्तरात्रे व्यतिक्रांते यदि जीर्यंति वै घटः ॥ तत्र तत्र धनं ज्ञेयं कुशलेनाथ भाषितम् ॥ १५ ॥ गोक्षीरेण तु संपेष्य तिलकोद्रवराजिकाः ॥ शणबीजं च

संपेष्य निशायां च निधिस्थलम् ॥ भ्रष्टलेपो भवेद्यत्र प्रातस्तत्र निधिं दिशेत् ॥ १६ ॥ अर्जुनस्य कदंबस्य वटस्य खदिरस्य च ॥ ब्रह्मवृक्षस्य पत्राणि कांजिकेनैव पेषयेत् ॥ निशायां लेपयद्भूमिं कल्कं मंत्रेण मंत्रयेत्॥प्रातर्लेपो न यत्रास्ति तत्र वित्तं न संशयः ॥ १७ ॥ अर्जुनस्य करंजस्य नारिकेलस्य पल्लवान् ॥ पेषयित्वारनालेन तेन भूमिं प्रलेपयेत् ॥ प्रातर्लेपो न यत्रास्ति तत्रैव निधिमादिशेत् ॥ ॥ १८ ॥ बिल्वमक्षतमादाय कांजिकेनैव पेषयेत् ॥ संध्ययोर्लेपयेद्भूमिं विवर्णे धनमादिशेत् ॥ १९ ॥ उमादिमातृकायुक्तं किरातं तत्र पूजयेत् ॥ अत्र होमः प्रकर्तव्यो निशायां घृतगुग्गुलैः ॥ प्रभाते तद्विवर्णे चेन्निधिस्तत्र विनिश्चितम् ॥ २० ॥ तत्र मंत्रः– ॐ नमो भगवते रुद्राय कल्कलेपांजनं दर्शय दर्शय स्वाहा ठः ठः ॥ अनेन मंत्रेण कल्कलेपांजनमभिमंत्र्य लेपं कुर्यात् ॥ इति लेपांजन द्वारा निश्चयं कृत्वा नयनांजनेन निरीक्षयेत् ॥ अथ निधिग्रहणांजनं कक्षपुटौ–अंजनानां तु सर्वेषां मंत्रं साध्यमघोरकम् ॥ विना ऽघोरेण विघ्नाश्च नाशयंति पदे पदे ॥ २१ ॥ दक्षिणामूर्तिमासाद्य जपेदष्टसहस्रकम् ॥ ततः सर्वनिधानानि सुखसाध्यानि चाहरेत् ॥ २२ ॥ प्रार्थनामंत्रः–ॐ विश्वरूपं विरूपाक्षं विद्याधारं महेश्वरम् ॥ जपाम्यहं महादेवं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥ इति संप्रार्थ्य मंत्रं जपेत्--ॐ रुद्राय नमो रुद्ररूपाय नमो बहुरूपाय नमो विश्वाय नमो विश्वरूपाय नमस्तत्पुरुषाय नमो यक्षाय नमो यक्षरूपाय नम एकाय नम एकयक्षाय नम एकनाथाय नम एकरोमाय नम एकेक्षणाय नमो वरदाय नमस्त्र्यक्षाय नमो नुंद[1] नुद स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–सोपवासो जितेन्द्रियो भूत्वा महेश्वरपूजां कृत्वा इमं मंत्रं जपेत् सिद्धिर्भवति ॥ अथ कज्जलपात्रं यथा– दीपकज्जलयोः पात्रं कर्तव्यं नरमुंडजम् ॥ सर्वेषां कज्जलानां तु सत्यं स्याच्छिवभाषितम् ॥ अथ कज्जलार्थे अग्निग्रहणमंत्रः--कज्जलानां पातनार्थं ग्राह्यो यत्नेन पावकः ॥ दीक्षितस्य गृहे श्रेष्ठश्चितायां तु विशेषतः ॥ रजकस्य गृहाद्वापि तक्षकस्य[2] गृहाच्च यः ॥ तत्र मंत्रः--ॐ ज्वलितविद्युति देहाय स्वाहा ॥ इति मंत्रेणाग्निं संगृह्य अग्निरक्षां कुर्यात् ॥ तत्र मंत्रः--ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

---

१ पाठांतरं नुदनुदेति । २ पाठांतरं तस्करस्येति ।

षर २ बंध २ धीपते कुलपर्वते वसुमते स्वाहा ॥ अनेन मंत्रेण आर्द्रं रक्षयेत् ॥ अथ वर्तिमंत्रः--वर्तिबंधे दिशां बंधे पातालं बंध मंडलं बंधय स्वाहा ॥ अनेन मंत्रेण वर्तिमभिमंत्रयेत् ॥ अथ दीपमंत्रः--ॐ नमो भगवते सिद्धशावराय ज्वल २ पातय२ बंध २ संहर २ दर्शय २ निधिं नमः स्वाहा ॥ अनेन मंत्रेण दीपं ज्वालयेत् ॥ अथ कज्जलग्रहणमंत्रः--ॐ ऐं सर्वसिद्धिभ्यो नमः विच्चे स्वाहा॥ अनेन मंत्रेण कज्जलं संग्राह्यम्॥ततः ॐ कालि कालि महाकालि रक्ष २ यदंजनं नमो विच्चे स्वाहा॥ इति मंत्रेण यत्किंचिदंजनद्रव्यमभिमंत्रयेत् ॥ ततः--ॐ ह्रीं सर्वे सर्वहिते श्रीं क्लीं सर्वहिते सर्वौषधिप्राणहिते निरते नमोनमः स्वाहा ॥ तंत्रांतरेऽपि--ॐ सर्वे सर्वहिते श्रीं क्लीं क्षीं सर्वौषधिप्राणहिते निरते नमो विच्चे स्वाहा ॥ तंत्रातरेऽपि--ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ नन्ननन्नमिहेन्नवि हेन्न २ मिहेन्न २ हरहररक्ष २ पूजिते यक्षकुमारि सुलोचने स्वाहा ॥ एतदन्यतमेन मंत्रेणांजनयोग्यमूलिकामभिमंत्रयेत् ॥ ततः केवलहेमशलाकया नेत्रे अंजयित्वा तया शलाकयांजनद्रव्यमभिमंत्र्यांजनं कुर्यात् ॥ २३ ॥ अंजयित्वांजनं पश्चात्सप्ताश्वत्थदलानि वै ॥ बंधयेत्प्रतिनेत्रं तु ह्यच्छिद्राधोमु रानि च ॥ पर्णोपरि सितं वस्त्रं पट्टजं वाथ बंधयेत् ॥ नांज्यादधिकहीनांगं श्वदष्टं चाग्निदग्धकम् ॥ सम्पूर्णांगं शुचिं स्नातं द्विदिनं नक्तभोजिनम् ॥ क्षीरशाल्यन्नभोक्तारं द्विदिनांते ततोंऽजयेत् ॥ अंजितस्य शिखाबंध कर्तव्ये मंत्र उच्यते ॥ २४ ॥ अथ शिखाबंधनमंत्रः--ॐ नमो भगवते रुद्राय रुद्ररूपाय ॐ नमो लमहे ॐ लमहे--लुंडविविदुलु--ऽसुदुलु २ हर २ यक्षरक्षःपूजिते तक्षकमारि सुलोचने स्वाहा ॥ तंत्रांतरेऽपि--ॐ नमो भगवते रुद्राय तुलु २ महेश्वरमाहेश्वल--विज्व लु २ मिज्वलु २ हर २ यक्षरक्षःपूजिते यक्षकुमारि सुलोचने स्वाहा ॥ तंत्रांतरेऽपि--ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ नन्न २ मिहेन्न--विहेन्न २ मिहेन्न २ हर २ यक्षरक्षःपूजिते यक्षकुमारि सुलोचने स्वाहा ॥ एतदन्यतमेन मंत्रेण शिखां बध्नीयात् ॥ अस्य विधानम्--दक्षिणामूर्तिमाश्रित्य उदयास्तमयं जपेत्॥ सर्व एव समाख्यातः शिखाबंधः शिवोदितः ॥२५॥ अथ सर्वांजनविधिः--रोचनं कुंकुमं शंखं वालमोदा तु चंदनम् ॥ राजावर्तकुमारी च सौवीरांजनपारदम् ॥ कट्फलं कांगनी चैव सितपद्मककेसरम् ॥ पावकं च घृतं क्षीरं समभागं च पेषयेत् ॥ श्मशान

तैलमादाय पूर्वपिष्टेन लेपयेत् ॥ तद्वर्तिघृतसंयुक्तं प्रज्वाल्य कज्जलं हरेत् ॥ सर्वांजनमिदं ख्यातं पातालनिधिदर्शने ॥२६॥ अन्यत्—सप्तधा पद्मसूत्राणि भावयेदिक्षुजै रसैः ॥ तद्वर्त्या ज्वालयेद्दीपमंकुलीतैलसंयुतम् ॥ ग्राह्यं कृष्णचतुर्दश्यां कज्जलं निधिदर्शकम् ॥ सर्वांजनमिदं सिद्धं शंभुदेवेन भाषितम् ॥ २७ ॥ नवनीतं कृष्णकाकभोजनार्थं तु दापयेत् ॥ तद्विष्ठावर्तिकां कृत्वा कज्जलं पातयेद् बुधः ॥ सिद्धं सर्वांजनं प्रोक्तमंजनं निधिदर्शनम् ॥ रक्तपुच्छस्य ब्राह्मण्या रक्तं मैनशिलायुतम् ॥ पेषयित्वांजयेच्चक्षुर्निधिं पश्यति भूमिगम् ॥ मासेन कृष्णरंगा वै सा श्यामां कुक्कुटीं नयेत् ॥ तद्रसां चांजयेन्नेत्रं निधिं पश्यति भूमिगम् ॥ श्वेतगुंजारसैः सूत्रं दिनमेकं तु भावयेत्॥ वराह दंष्ट्राचूर्णं च सूत्रमध्ये विनिक्षिपेत् ॥ दीपमंकुलतैलेन तद्वर्त्योद्धृतकज्जलम् ॥ सिद्धं सर्वांजनं प्रोक्तमंजनान्निधिदर्शनम् ॥ २८ ॥ शरत्काले तु संग्राह्य भूलतां रक्तवर्णिकाम् ॥ सिंदूरपूरितां कृत्वा रवितूलेन वेष्टयेत् ॥ अतिकृष्णतिलात्तैलं ग्राहयेद्रक्षयेत्सुधीः ॥ तैल वर्त्योः प्रयोगेण कज्जलं चोत्तरायणे ॥ ग्राहयित्वांजयेच्चक्षुर्निधिं पश्यति पूर्ववत् ॥ २९ ॥ अतिकृष्णस्य काकस्य जिह्वामांसं समाहरेत् ॥ वेष्टयेद्रवितूलेन वर्तिं तेनैव कारयेत् ॥ अजाघृतेन दीपं च प्रज्वाल्यादाय कज्जलम् ॥ अंजिताक्षो नरस्तेन निधिं पश्यति पूर्ववत् ॥ ३० ॥ नकुलस्य च मेषस्य लोचनानि समाहरेत् ॥ स्रोतोंजनसमायुक्तं मेषीतैलेन पेषयेत् ॥ अंजिताक्षो नरस्तेन निधिं पश्यति पूर्ववत् ॥ ३१ ॥ शृगालस्याक्षिचूर्णेन नेत्रयुग्मे तु रंजितः ॥ भूतं पश्यत्यभीतस्तु दर्शयेच्च महानिधिम् ॥ ३२ ॥ उलूकचक्षुरादाय कुंकुमं रोचनं शशी ॥ समांशं मधुना पिष्ट्वा एतत्सर्वांजनं परम् ॥ ३३ ॥ अतिकृष्णस्य काकस्य जिह्वाहृन्मांससंयुतम् ॥ घृतपक्वं तु तच्चूर्णं तद्दीपोद्धृतकज्जले ॥ अंजिताक्षो नरस्तेन निधिं पश्यति साधकः ॥ ३४ रक्तेन कृकलासस्य भावयित्वा मनःशिलाम् ॥ तेन चांजितनेत्रस्तु निधिं पश्यति भूमिगम् ॥ ३५ ॥ सद्योहतमनुष्यस्य पित्तमादाय पूरयेत् ॥ शशिना रोचनेनैव मधुपाकेन शोषयेत् ॥ अष्टाहांते जले घृष्टमंजनं निधिदर्शकम् ॥ ३६ ॥ सूतं दारुनिशां चैव समभागानि पेषयेत् ॥ दिव्यांजनमिदं [illegible] सर्वभूतवशंकरम् ॥ ३७ ॥ देवदालिरसैश्चक्षुरंजयित्वा तु तत्फलम् ॥ ३८ ॥ पुष्यार्के श्वेतगुंजाया विधिना मूलमाहरेत् ॥

उलूकाक्षेण मधुना सर्वांजनमिदं भवेत् ॥ ३९ ॥ रक्तागस्त्यस्य तैलेन धात्रीमूलं सुपेषितम् ॥ कर्पूरेण युतं चाज्यं सिद्धं सर्वांजनं परम् ॥ ४० ॥ अन्यत्–पुष्यार्के मनिवृक्षस्य मूलमुद्धृत्य वारिणा ॥ संघृष्य मधुना सार्द्धमंजयेल्लोचनद्वयम् ॥ ४१ ॥ राजावर्तं च कर्पूरं रक्तचंदनमूलिकम् ॥ रोचनं मधुसंयुक्तं भवेत्सर्वांजनं परम् ॥ ४२ ॥ पारदं मधु कर्पूरं काकमाचीफलं तथा ॥ समं पिष्ट्वा भवेत्सिद्धं दिव्यं सर्वांजनं परम् ॥ ४३ ॥ स्रोतोंजनमुलूकांडे तस्य जिह्वान्वितं क्षिपेत् ॥ सप्ताहांते समुद्धृत्य अंजनाद्दीक्षते निधिम् ॥ ४४ ॥ आश्लेषायां तु कृष्णाहेरंतर्धूमेन कंचुकम् ॥ दग्धं स्रोतोंजनोन्मिश्रमंजनं निधिदर्शकम् ॥ ४५ ॥ स्रोतोंजनं सखद्योतमुलूकांडे विनिक्षिपेत् ॥ सप्ताहांते समुद्धृत्य पातालमधुनांजयेत्॥ दिवा नक्षत्रयुक्तानि दूरस्थानि च पश्यति ॥ ४६ ॥ हरितालं वचा लोध्रं रेणुका चांजनं तथा ॥ कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां चूर्णीकृत्य विनिक्षिपेत् ॥ सम्पुटे ताम्रजे तत्र अघोरेणाथ मंत्रयेत् ॥ अंजिताक्षो नरः पश्येन्निधीन्नाना विधान्भुवि ॥ ४७ ॥ कुंकुमं रोचनं श्वेतकांचनस्यैव पल्लवाः ॥ सुश्वेतं च जयापुष्पं नंद्यावर्तसमं मधु ॥ सर्वांजनमिदं ख्यातं पातालनिधिदर्शनम् ॥ ४८ ॥ हंसपादी जटामांसी कर्पूरं च मनःशिला ॥ तेन चांजितनेत्रस्तु निधिं पश्यति भूमिगम् ॥ ४९ ॥ कृष्णाजपित्तं च मयूरपित्तमशोकमलं गतमुत्तराशाम् ॥ शशांकगोरोचनमाक्षिकं च सर्वांजनं नाम शिवोपदिष्टम् ॥ ५० ॥ एते सर्वांजनाः ख्याताः प्रसिद्धाः शिवभाषिताः ॥ अथ कुमारांजनं कक्षपुटौ–पुष्यनक्षत्रयोगेन पिंडीत्वगरुमूलिकाम् ॥ षडंगुलमितां कुर्याच्छलाकां रक्षयेत्ततः ॥ स्नापयेच्च शिलापृष्ठे कुमारं वा कुमारिकाम् ॥ तच्छिलास्नानतोयेन रोचनं हैमगैरिकम् ॥ निघृष्टमंजयेन्नेत्रं मंत्रयुक्तं च पूर्ववत् ॥ रक्षिता या शलाका वै तयैवांज्य निधिं लभेत् ॥१॥ पुष्यार्केऽगस्त्यवृक्षस्य मूलमुद्धृत्य वारिणा ॥ पिष्टं पातालमधुना संयुक्तं निधिदर्शकम् ॥ २ ॥ पिंडीतगरजं मूलमुदीच्यां गतमुद्धरेत् ॥ चन्द्रसूर्योपरागेषु पातालमधुसंयुतम् ॥ पेषयित्वांजयेन्नेत्रे सम्यक्पश्यति भूनिधिम् ॥ ३ ॥ अथ पादजातांजनम्–तुलसीमूलिकां पुष्ये शनिवारे समुद्धरेत् ॥ निघृष्टं कांजिकेनाथ मधुना युतमंजयेत् ॥ पादजातं कुमारं वा कन्यकां वा यतो निधिः ॥ दृश्यते नात्र संदेहः पातालांतर्गतं तथा ॥ १ ॥ सुश्वेतकरवीरस्य पुष्यार्के मुलमुद्धरेत् ॥ पातालमधुना युक्तं

पादजातांजनं भवेत् ॥ २ ॥ पार्श्वपिप्पलजं मूलं पुष्यार्के विधिनोद्धृतम् ॥ पातालमधुना युक्तं पादजातांजनं भवेत् ॥ ३ ॥ ५० ॥ अथ पादुकायोगः--आगस्त्यवृक्षजां कृत्वा पादुकां निधिदर्शिकाम् ॥ पादुकांजनयोगेन सिद्धयोगा भवंति हि ॥ पादुकामंत्रो यथा--ॐ नमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय शिलि २ श्रमणेनामवैतालिनि स्वाहा ॥ अनेन पादुकामभिमंत्रयेत् ॥ ५१ ॥ इति निधानं निरीक्ष्य ततः उद्धरेत् ॥ तत्रादौ निधिखननमुहूर्तः कौतुकचिंतामणौ--अथ नक्षत्रवाराणि मूलमंत्रैर्यथोचितम् ॥ कथयामि विभागेन शिवेन कथितं यथा ॥ ५२ ॥ मणिनिधिलाभो वित्तमार्द्रायां नैव लभ्यते ॥ पुष्ये हस्ते चाविध्वंसो ध्रुवं सिद्धिः पुनर्वसौ ॥ ५३ ॥ आश्लेषायां भवेन्मृत्युर्विग्रहो वायभेदनम् ॥ फाल्गुन्यामर्थलाभः स्यान्मघायां मरणं ध्रुवम् ॥ ५४ ॥ चित्रायां कलहो भेद उत्तरा सिद्धिकृत्स्मृता ॥ विवादो जायते स्वात्यां विशाखा मृत्युदायिनी ॥ ५५ ॥ अनुराधाधना प्रोक्ता धनिष्ठा सिद्धिरुत्तमा ॥ पूर्वाषाढा शुभा प्रोक्ता मूले शोणितदर्शनम् ॥५६॥ ज्येष्ठायां च महाक्लेशः श्रवणे सिद्धिरुत्तमा ॥ पूर्वाभाद्रा ध्रुवं क्षेमं भरण्यां मरणं तथा ॥५७॥ अश्विनी रेवती पुष्टिः कृत्तिका कार्यनाशिनी ॥ रोहिण्यां सिद्धिमाप्नोति शावरस्य वचो यथा ॥ ५८ ॥ क्रूरवारास्त्रयो वर्ज्या भौमादित्यशनैश्चराः ॥ व्यतीपाते त्र्यहं वर्ज्यं विष्टयां च प्रहरद्वयम् ॥ ५९ ॥ आषाढे नैव नक्षत्रे यावत्स्वपिति नो हरिः ॥ तावदंतरमाषाढे खन्यं कुर्वीत मंत्रवित् ॥ ६० ॥ मार्गशीर्षे शुभे मासे नक्षत्रे चंद्रदैवते ॥ खन्यं सर्वेषु कुर्वीत यावदाषाढमाहितम् ॥ ६१ ॥ कुर्याच्चोक्तेषु वै खन्यं नान्यथा सिद्धिभाग्भवेत् ॥ उच्यते मैत्रनक्षत्रमनुराधा शिवागमे ॥ ६२ ॥ मार्गशीर्षे च पौषे च प्रशस्तं खन्यकर्मसु ॥ सहायाः शोभनाः कार्याः सप्त पंच त्रयोऽपि वा ॥ असहायेन कर्तव्यं मंत्रेण निधिसाधनम् ॥ ६३ ॥ अथ ज्ञातनिधानस्य ग्रहणोपायः ॥ ब्रह्मचारिसहस्रेण शिलाशूलशतेन च ॥ रुद्राणां च सहस्रेण शिखाबंधो विधीयते ॥ ६४ ॥ तत्र मंत्रः--ॐ रक्ष रक्ष विघ्ने स्वाहा ॥ अनेन मंत्रेण सर्वसहायानां शिखाबंधनं कृत्वा मंत्री शाबररूपं धारयेत् । तथा च--शाबरं धारयेद्रूपं मंत्री सर्वार्थसिद्धये ॥ गुर्विणी या मृता नारी तत्केशैरुपवीतकम् ॥ ६५ ॥ कृत्वा तद्धारयेत्तस्या भस्मनोद्धूलयेत्तनुम् ॥ नरमुंडधरो नग्नः शिखिपुच्छैः सुभूषणः ॥ इत्येवंरूपधृग्वीरः पूजां

कुर्यान्निधिस्थले ॥ ६६ ॥ तस्य प्रयोगः–चतुरस्रं चतुर्द्वारं तन्मध्येऽष्टदशांगुलम् ॥ कृत्वैव मंडलं मंत्री कुंकुमागुरुचंदनैः ॥ ६७ ॥ तन्मध्ये पूजयेच्छंभुं जलकुंभे शिवान्वितम् ॥ ६८ ॥ तत्र मंत्रः--ॐ नमो भगवते ईशानाय श्वाधिपतये आगच्छागच्छ बलिं गृहाण २ नमो विच्चे स्वाहा ॥ ६९ ॥ अनेन मंत्रेणार्चयेत् । ततोऽष्टदले प्राचीक्रमेण–ॐ नमो ब्राह्म्यै आगच्छागच्छ बलिं गृहाण २ नमो विच्चे स्वाहा इति मंत्रेण इति ब्राह्मीं संपूज्य माहेश्वरी२ कौमारी३ वैष्णवी४ वाराही५ इन्द्राणी ६ नारसिंही ७ चामुंडा ८ इत्यष्टौ मातृकास्तत्तन्नाम मंत्रोच्चारणेन पजयेत् । ततः भपुरे पूर्वादिक्रमेण–ॐ शक्राय आगच्छागच्छ बलिं गृहाण गृहाण नमो विच्चे स्वाहा ॥ एवं दशलोकपालान्व त्राद्यायुधानि च संपजयेत् । ततो भूपुराद्बहिः पूर्वादिक्रमेण ॐ नंदिने आगच्छागच्छ बलिं गृहाण २ नमो विच्चे स्वाहा ॥ ७० ॥ एवं सर्वे द्वारपालाः पूज्याः । ते च यथा–नंदिनं च श्रियं पूर्वद्वारदेशे प्रपूजयेत् ॥ कीर्तिं चैव महाकालं दक्षिणे पश्चिमे ुनः ॥ सगणेशं कुमारं च उत्तरे दण्डिभृंगिनौ ॥ ७१ ॥ इत्येवं पजनं कृत्वा अलिश्चत्युपचारकैः ॥ बलिं प्रदर्शयेन्मंत्री सहायांश्चाभिषेचयेत् ॥ ७२ ॥ बलिमंत्रो यथा--ॐ बलिं सुबलिं तृप्यंतु सिद्धिं मां दिशंतु ॐ नमो विच्चे स्वाहा ॥ अनेन मंत्रेण बलिं दद्यात् ॥ ७३ ॥ बलिं प्रदर्शयेन्मंत्री सहायाय समर्चितम् ॥ शिवकुंभांभसा सर्वान्मंत्रेणैवाभिषेचयेत ॥ तत्र मंत्रः--ॐ नमो भगवते आरंभरे पिंगले २ लोहं धर २ विधर २ पापानि नाशय २ पच २ दुराचारान्हन २ अभिषेचितान्रक्ष २ अभिषेकपदमुपधारय २ कुरु २ समय २ भीषणे नमो विच्चे वौषट् ॥ ग्रंथांतरे अन्यमन्त्रः--ॐ नमो भगवते अभेटे पिंगलोदराय पापं नाशय २ दुराचारं हन २ अभिषिक्तान्रक्ष २ अभिषेकपदमुपधारय २ कुरु २ समर २ भीषगे नमो विच्चे वौषट् ॥ इति अभिषेकमन्त्रः ॥ ७४ ॥ अथ भूमिखननोपायः–निधेः खननकाले तु जपंस्तिष्ठेदघोरकम् ॥ ध्यायेच्च शाबरं रूपं सर्वभूतभयावहम् ॥ ७५ ॥ मयूरपिच्छसंछन्नं गुञ्जाजालेन भूषितम् ॥ दंतुरोर्द्धमतिश्याम रक्तोत्पलनिभेक्षणम् ॥ किरातमीश्वरं ध्यात्वा सर्वसिद्धिफलप्रदम् ॥ अथ अघोरमन्त्रः--ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं अघोरअघोरतरतरप्रस्फुर २ प्रकट २ कह २ शम २ जात २ दह २ पातय २ ॐ ह्रीं ह्रौं ह्रूं अघोरास्त्राय फट् ॥७६॥ इममघोरमंत्रं

जपेत्। पूर्वं सेवायुतं दशांशेन होमः गुग्गुलुमधुघृतैः सिद्धो भवति नान्यथा ॥ ७७ ॥ खन्यमाने निधौ सर्पा निःसंरति भयानकाः ॥ औषधेन विना तेभ्यो भयं स्यान्मंत्रिणामपि॥ तस्मादौषधयोगेन पादलेपेन तान्क्षिपेत् ॥ ७८ ॥ अर्कस्य करवीरस्य पनसस्य तु मूलिकाः॥ पिष्ट्वा पादप्रलेपेन दूरं गच्छंति पन्नगाः ॥ ७९ ॥ मल्लिका गिरिपर्णी च श्वेतार्कः कंटकारिका ॥ वचा च मूलिकां चैव पिष्ट्वा पादौ प्रलेपयेत् ॥ सर्पा यक्षगणाः क्रूरा ये चान्ये विघ्नकारिणः ॥ पलायंते निधिं त्यक्त्वा यथा युद्धेषु कातराः ॥ ८० ॥ वह्निः कोशातकी वज्री श्वेतार्की गिरिकर्णिका ॥ वचा पाठा च निर्गुंडी कटुतुंब्याश्च मूलकम् ॥ निंबकेशरबीजानि गोमूत्रैः पेषयेत्समम् ॥ अनेन पादलेपेन विघ्ना यांति दिशो दश ॥ एतन्नाराचयोगेन अपि पातालगं धनम् ॥ गृह्णाति नात्र संदेहः स्वयं प्रोक्तं पिनाकिना ॥ ८१ ॥ कूष्मांडैरंडधत्तूरबीजानि पनसस्य च ॥ जातिदाडिममूलानि गोमूत्रैः पेषयेत्समम् ॥ अनेन पादलेपेन सर्पा यक्षाः पिशाचकाः ॥ पलायंते न संदेहो निधिं संग्राहयेद्ध्रुवम् ॥ ८२ ॥ अथ धूपो दत्तात्रेयपटले—ईश्वर उवाच ॥ शिरीषवृक्षपंचांगं कटुतैलेन पाचितम् ॥ विषं चैव समायुक्तं धत्तूरबीजसंयुतम् ॥ पंचांगं करवीरस्य श्वेतगुंजासमन्वितम् ॥ उलूकविष्ठासंयुक्तं गंधकं च मनःशिलाम् ॥ धूपं दत्त्वा जपेन्मंत्रं निधिस्थाने विशेषतः ॥ पलायंते निधिं त्यक्त्वा यथा युद्धेषु कातराः ॥ राक्षसा भूतवेताला देवदानवपन्नगाः ॥ निधिं सुखेन गृह्णाति न विघ्नैः परिभूयते ॥ धपमंत्रः—ॐ नमो विघ्ननाशाय निधिग्रहणं कुरु २ स्वाहा ॥ इति मन्त्रस्य पूर्वमयुतं पुरश्चरणं कृत्वा अष्टोत्तरशतमंत्रेण कार्यं साधयेत् ॥ ८३ ॥ अथ दृष्टे निधौ मंत्री कीलकैः कीलयेद् द्रुतम् ॥ प्लक्षपालाशलोध्रोत्थपद्मनिंबकदंबजैः ॥ शम्युदुंबरकाश्वत्थजैः कीलैः पत्रसंयुतैः ॥ कीलनमंत्रः—पुनंतु मां दवजनाः पुनंतु वसवो धिया ॥ पुनंतु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि माम् ॥ अनेन मंत्रेण निधिं कीलयेत् ॥ ८४ ॥ अथ भूतबलिमंत्रः—ॐ सर्वभूताधिपतये नमः ॥ अनेन मंत्रेण मद्यमांसाभ्यां भूतबलिं दद्यात् ॥ ८५ ॥ पुष्पार्पणमंत्रः—ॐ ह्रीं हूं फट् ॥ अनेन मंत्रेण निधानस्यासनपुष्पाणि दद्यात्॥ ८६ ॥ अथ निधिग्रहणमंत्रः—ॐ नमो भगवति केतुमालिनि गरुडे शुभे ॐ ह्रीं कपालिनि उद्धारय २ गृहाण निधिं स्वाहा ॥ अनेन केतुमालिनीमंत्रेण निधिमुद्धरेत् ॥ ८७ ॥ चत्वारो निधयस्तत्र शंभुदेवेन भाषिताः ॥

कच्छपो मकरः शंखः पद्म इत्यभिधानतः ॥ ८८ ॥ कच्छपो मकरः श्रेष्ठः स्थिरचित्ता स्वभावतः ॥ सुखसिद्ध्या यथापूर्वं निधानेन समाहरेत् ॥ ८९ ॥ शब्देन तु मनुष्याणां शंखपद्मौ रसातलम् ॥ गच्छतो न तु दृश्येते तत्र मंत्रद्वयं स्मरेत् ॥ शैवं च वैष्णवं चैव ततः सिद्धो भवेद्ध्रुवम् ॥ प्रथममंत्रः—ॐ नमो भगवते रुद्राय निधिमत्तिष्ठमाणं चालय स्वाहा ॥ द्वितीयमंत्रः—ॐ नमो भगवते वासुदेवाय धर २ बंध २ श्रीपर्वते कुलपर्वते वसुमते निधानमुद्धर २ स्वाहा ॥ इति मंत्रद्वयं जपेत् ॥ ९० ॥ अथ पद्मसंज्ञकनिधिग्रहणोपयोगी मंत्रः—ॐ नमो भगवते शाबररूपाय ॐ हूं फट् स्वाहा ॥ तंत्रांतरेऽपि—ॐ नमो भगवते शाबररूपाय महाकिराताय कंकालरूपधराय हूं फट् स्वाहा ॥ अनेन सिद्धशाबरमंत्रेण साध्यनिधिं साधयेत् ॥ ९० ॥ अथ द्रव्यशुद्धिकरणम्—मृत्काष्ठलोहभाण्डे त स्थितं द्रव्यं तु कालिकम् ॥ शैवालं वा समाश्रित्य तिष्ठेत्तं च विशोधयेत् ॥ ९२ ॥ कांजिकैर्लवणं पिष्ट्वा तस्मिन्द्रव्यं विनिक्षिपेत् ॥ यावल्लवणसंतुल्यं पाचयेन्मृदुवह्निना ॥ स्वर्णं च सर्वरत्नानि निर्मलानि भवंति वै ॥ करंजस्य विभीतस्य चित्रकस्य च पल्लवान् ॥ पिष्ट्वा लवणसंतुल्यानारनालेन लोलयेत् ॥ तल्लिप्तद्रविणाद्यग्नौ तापयेन्मलशांतये ॥ ९३ ॥ अथ समयदर्शनम्—केषां केषां प्रदातव्यं समयं शिक्षयेदमुम् ॥ यत्र क्वापि निधिं लब्ध्वा गुरवे तन्निवेदयेत् ॥ ९४ ॥ यद्ददाति गुरुस्तुष्टो गृह्णीयात्तत्समं समम् ॥ लब्धे न वचनं कार्यं यदि साक्षान्महानृपः ॥ गुरवे वा सहायेभ्यो यः कदाचिन्न यच्छति ॥ मंत्रो मंत्रांजनात्सिद्धिः क्रुद्ध्यंति किल देवताः ॥ ९५ ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे उत्तरखण्डे निधिग्रहणाञ्जनतंत्रे पञ्चमस्तरङ्गः ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथादृश्यविद्यातंत्रप्रारंभः ॥ तत्रादावासुरीकल्पे मंत्रो यथा—ॐ ह्रीं क्लीं ऐं आसुरीरक्तवाससे अघोर अघोर कर्मकारिके अदृश्यं कुरु कुरु ह्रीं ऐं ॐ ॥ इति त्रयस्त्रिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—पुष्यार्के द्विमुखं सर्पं संगृह्य मंत्रसंयुतम् ॥ अरण्येऽथ श्मशाने वा शून्यागारे सुरालये ॥ १ ॥ ततो भूमिं विशोध्याथ भूरसीति च मंत्रवित् ॥ ततस्त्रिकोणं षट्कोणं भूरियंत्रं विलेपयेत् ॥ २ ॥ पूजयेन्मूलमंत्रेण ध्यानन्यासेन संयुतम् ॥ स्थापयेच्च शुभं कुंभं विधिवच्च ततो जपेत् ॥ ३ ॥ आजिघ्र कलशे मंत्रं विधिवत्कुंभपूजनम् ॥ महीद्यौरिति मंत्रेण मृत्तिकां निक्षिपेत्पुनः ॥ ४ ॥ नमो अस्तु सर्पेति तृचैः कुंभं प्रपूजयेत् ॥ पश्चात्संपुटये त्कुंभं यंत्रं तस्योपरि लिखेत् ॥ ५ ॥ पाताले निक्षिपेत्कुंभं हस्तत्रयप्रमाणतः ॥ स्थंडिलं चतुरस्रं च स्थापयेत्तदुपर्यथ ॥ ६ ॥ तत्रैव यंत्रमालेख्य भुजंगाकारशोभितम् ॥ एवं विलिख्य तद्यंत्रं तन्मध्ये मूलमुच्चरेत् ॥ ७ ॥ मूलमंत्रं लिखित्वाथ पूजयेद्विधिपूर्वकम् ॥ द्वितीये सप्तके वत्स पूजनं कथयाम्यहम् ॥ ८ ॥ आगमोक्तेन कर्तव्यं मूलमंत्रेण चिंतयेत् ॥ साधकश्चैकभक्ताशी ह्येकविंशदिनानि च ॥ ९ ॥ भूमिशाय्यर्चयेन्मंत्रं ब्रह्मचर्ययुतः शुचिः ॥ दंतजिह्वाविशुद्धश्च प्रातःस्नानं सुरार्चनम् ॥ १० ॥ जपं कृत्वायुतं त्रीणि त्रिकालं यंत्रपूजनम् ॥ रक्तचन्दनगंधाद्यैर्धूपदीपैस्तथोत्तमैः ॥ ११ ॥ नैवेद्यं विधिना कृत्वा अलिना पिशितैः सह ॥ नमोऽस्तु रुद्रेति ऋचा मंत्रैः शंभुं प्रपूजयेत् ॥ १२ ॥ अंबेंऽबिकेति मंत्रेण ततो गौरीं प्रपूजयेत् ॥ एवंविधां कृतां पूजां सप्ताहे च द्वितीयके ॥ १३ ॥ तृतीये सप्तके बाले शृण्वेकाग्रमनाः शुचिः ॥ समयाचारयोगेन पूजनीयं सदा बुधैः ॥ १४ ॥ महादेवं तु संपूज्य कृष्णाजिनधरः स्वयम् ॥ अश्वस्तु परितो मंत्रैः पूजयित्वा महेश्वरम् ॥ १५ ॥ विधिना चागमोक्तेन एकविंशतिमे दिने ॥ मातङ्गीं पूजयेत्प श्चाल्लज्जाबीजेन संयुतः ॥ १६ ॥ पपिकावटिकाक्षीरा बलिना पिशितैरपि ॥ विधिवन्मूलमंत्रेण मूर्ध्न्यष्टकमथार्चयेत् ॥ १७ ॥ पुनः कुंभं प्रपूज्याथ पर्वोक्तैरेव मंत्रकैः ॥ पश्चादासुरिमाराध्य ततो गृह्णीत सर्पकम् ॥ १८ ॥ तद्भुजंगास्थि संगृह्य पंचगव्येन क्षालयेत् ॥ अंजयेन्मूलमंत्रेण अदृश्यो भवति ध्रुवम् ॥ १९ ॥ अंजनं त्रिविधं प्रोक्तं देवदानवमानवम् ॥ देवा वा दानवा येन नालं द्रष्टुं च मानवाः ॥

॥ २० ॥ कर्तव्योऽयं द्वितीयश्च योगोऽदृश्यत्वकारकः ॥ प्रथमं शाल्मलीमूलं मंत्रिभिर्मंत्रवत्फलम् ॥ २१ ॥ पद्मिनीतनुसंयुक्तं कार्पासमस्थिवर्जितम् ॥ कृत्वैकत्र च तत्सर्वं वर्तिं यत्नेन कारयेत् ॥ २२ ॥ शिवलिंगोपरि स्थाप्य कपाले दीपकं ज्वलेत् ॥ तद्दीपे कज्जलं गृह्य ह्यंजयेल्लोचनद्वयम् ॥ २३ ॥ मूलमंत्रेण कर्तव्यमदृश्यो भवति ध्रुवम् ॥ कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां रविवारेण प्राप्यते ॥ काष्ठशूलसमारूढो म्रियते वापि तस्करः ॥ २४ ॥ वितर्द्धि (?) च भवेत्साधु एकाकी दृढचित्तवान् ॥ मध्यरात्रे शुचिर्देहे तत्तत्स्था नेऽपि जायते ॥ २५ ॥ यतो यतेतिमंत्रेण तत्तत्स्थानं प्रपूजयेत् ॥ आगमोक्तेन पजायां मांसेन सुरया सह ॥ २६ ॥ क्षीरखण्डादि नैवेद्यैर्विशाले खर्परे कृते ॥ वामे खर्परमुद्धृत्य पूजयेन्मंत्रसंयुतम् ॥ २७ ॥ मंत्रजाप्ये ततो जप्त्वा यावत्कर्म समाप्यते ॥ वर्तिं कुर्या त्प्रयत्नेन तारमष्टोत्तरं शतम् ॥ २८ ॥ जप्त्वा कुर्यात्ततो मंत्री धृते नरकपालवत् ॥ वामे करे च तत्पात्रं दक्षिणे दपिधारणम् ॥ २९ ॥ आसुरीपदमागत्य तमोरेस्यसार्त्तितः ॥ नैवेद्यं भक्षणार्थाय साधकस्य हितार्थकम् ॥ ३० ॥ तच्चोरदक्षिणे पादे तलकज्जलमुच्यते ॥ संगृह्य कज्जलं वेगात्पुनः पूजां प्रकारयेत् ॥ ३१ ॥ नमस्कारं प्रकुर्वीत तन्मुद्रां च प्रदर्शयेत् ॥ स्फोटयेत्खर्परं तत्र पश्चाद्दृष्टिं न कारयेत् ॥ ॥ ३२ ॥ अंजयेन्मलमंत्रेण अदृश्यो भवति ध्रुवम् ॥ नेत्रं प्रक्षाल्य गोमुत्रैः प्रत्यक्षो भवति क्षणात् ॥ ३३ ॥ इति आसुरीकल्पे अदृश्य योगः ॥ कक्षपुटौ मंत्रो यथा—ॐ नमो निशाचर महामाहेश्वर मम पर्यटतः सर्वलोकलोचनानि बंध बंध देव्याज्ञापयति स्वाहा ॥ इत्येको नचत्वारिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—निशाचरं निशि ध्यात्वा जप्त्वा वामेन पाणिना ॥ अदृश्यकारिणी विद्या लक्षजप्ये प्रय च्छति ॥ ३४ ॥ रात्रौ कृष्णचतुर्दश्यां श्मशानस्य शिवालये ॥ अलिबल्युपहारेण कुर्यादर्चनमुत्तमम् ॥ ३५ ॥ ततो दीपांकु लीतैलैर्वर्तिः स्यात्प्रेततंतुभिः ॥ प्रज्वाल्य नृकपाले तु तत्पात्रोद्भूतकज्जलम् ॥ ३६ ॥ अंजयेन्नेत्रयुगलं देवैरपि न दृश्यते ॥ महाश्च र्यकरी विद्या सिद्धयोग उदाहृतः ॥ ३७ ॥ अन्यत्—ॐ ह्रीं फट् फट् स्वाहा कालि कालि महाकाले मांसशोणित

१ अंकोलतैलमंकोलतंत्रमवलोक्य तैलं पातयेत्।

भोजने रक्तकृष्णमुखे देवि मां मा पश्यंतु मानुष इति हु फट् स्वाहा॥ इति त्रिचत्वारिंशदक्षरो मंत्रः॥ अस्य विधानम्—अयुतं जपेत् सिद्धिः। सिद्धे मंत्रे मंत्री अष्टोत्तरशतमभिमंत्र्य प्रयोगान्कुर्यात्। ततः सिद्धो भवति। प्रयोगो यथा—अर्कशालमालिकार्पासपद्मसूत्रप्रतंतुभिः ॥ पंचभिर्नृकपालैश्च वर्तिकाभिश्च पंचभिः ॥ नरतैलेन दीपाः स्युः कज्जलं नृकपालकैः ॥ ग्राहयेत्पंचभिर्यत्नात्पूर्ववच्च शिवालये ॥ ३८ ॥ पंचस्थानेषु तज्जालमेकीकृत्य च तत्पुनः ॥ मंत्रयित्वांजयेन्नेत्रे देवैरपि न दृश्यते ॥ ३९ ॥ अंकुलीतैलसंसिक्तावचा सप्तादिनावधि ॥ त्रिलोहवेष्टिता सा तु गुटिकां कारयेत्ततः ॥ ४० ॥ अदृश्यकारिणी ख्याता मुखस्था नात्र संशयः ॥ तत्तैलैः सर्षपाः श्वेतास्त्रिलोहेन च वेष्टिताः ॥ ४१ ॥ गुटिका मुखमध्यस्था ख्याताऽदृश्यत्वकारिणी ॥ पद्मचूर्णकपत्राणां सुरभिपत्रसंयुतम् ॥ ४२ ॥ धत्तूरस्य रसे पिष्ट्वा गुटिकां कारयेद्दृढाम् ॥ सा लिप्तांकुलतैलेन मुखस्थाऽदृश्यकारिणी ॥ ४३ ॥ काकोलूकस्य पक्षाश्च आत्मकेशास्तथैव च ॥ अंतर्धूमगतं दग्धं सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत् ॥ ४४ ॥ अंकोलतैलाद्गुटिकां कृत्वा शिरसि धारयेत् ॥ अदृश्यो जायते क्षिप्रं देवैरपि न दृश्यते ॥ ४५ ॥ तालकं कृष्णमहिषीक्षीरमंकोलतैलकम् ॥ तल्लिप्तांगो नरोऽदृश्यो जायते शंकरोदितम् ॥ ॥ ४६ ॥ अंकोलतैलसंसिक्तं मलं पारावतोद्भवम् ॥ ललाटे तिलकं तेन कृत्वाऽदृश्यो भवेन्नरः ॥ ४८ ॥ रात्रौ कृष्णचतुर्दश्यां चतुर्भिः सह साधकैः ॥ एकांते वा श्मशाने वा खड्गहस्तैर्महाबलैः ॥ ४८ ॥ अर्चयेत्कृष्णमार्जारं गंधपुष्पाक्षतादिभिः ॥ बलिं कृष्णमजं दद्यात्तस्य मेदः समाहरेत् ॥ ४९ ॥ उपोषिताय तस्मै तन्मेदो देयं त भक्षणे ॥ तृप्यते तन्तु मार्जारं गृहीत्वा पश्चिमौ पदौ ॥ ॥ ५० ॥ चालनाद्भ्रामयेन्द्भाण्डे जलपूर्णे समार्चिते ॥ तद्भ्रामं तापयेदग्नौ दीपं तेनैव दीपयेत् ॥ ५१ ॥ वर्तीनां विंशतिं कृत्वा ज्वालयेन्नृकपालके ॥ तत्पात्रे कज्जलं ग्राह्यं रात्रौ देवीं च पूजयेत् ॥ ५२ ॥ परस्पराश्लिष्टकराश्चत्वारः खड्गपाणयः ॥ दीपमातृस्य रक्षेयुः पंचमस्तु जपेत्सुधीः ॥ ५३ ॥ महाकालीयमंत्रोऽयं सर्वयोग उदाहृतः ॥ तत्रत्यं कज्जलं यत्नात्पंचभिर्ग्राहयेत्समम् ॥ ५४ ॥

१ पाठांतरे नारकतैलकम्। २ त्रिलोहो यथा—"दश हेम द्विषट् तार्क्ष रौप्यं षोडशभागिकम्। तथा संख्या त्रिलोहस्य सा ज्ञेया सर्वकर्मसु॥

अदृश्यकारकं चांज्यं सिद्धयोग उदाहृतः ॥ अन्यत्—शुनकस्यातिकृष्णस्य गले सत्रं निबंधयेत् ॥ ततः—ॐ नमः आकाशे कांतिं परम कांतिं कटुयति कटुकारीं मे नेत्रे ॐ नमः ॥ अनेन मंत्रेण कृष्णशुनो दक्षिणाधोदंष्ट्रमूलमांसं संग्राह्य पंचोपचारैः पूजयित्वा घृत मध्ये क्षिपेत् । तस्माद्दिनत्रयादुद्धृत्य पूर्वमंत्रेण अष्टाधिकशतजाप्येनाभिमंत्रयेत् । पुनः पाटलीपुष्पैरावेष्ट्य सवितुः कराशौ भौमवारे क्षिपेत् । अपरभौमवारे समुद्धरेत् । ततः पूर्वमंत्रेणाष्टोत्तरशतेनाभिमंत्रयेत् । ततो निर्गुंडीपत्रैर्वेष्टयित्वा दक्षिणहस्ते धारयेत् । असा वदृश्यो भवति न संदेहः ॥ ५५ ॥ इति सिद्धयोगः ॥ अन्यत्—अमावास्याथवा पूर्णा पंचमी वा त्रयोदशी ॥ श्वेतपुष्पैर्गंधधूपैर्बलिदीपोपहा रकैः ॥ ५६ ॥ रात्रौ पूज्या ततो ग्राह्या देवदाली सुमंत्रिता ॥ तत्र मंत्रः—ॐ अमृतगणपरिवृते रुद्रगणाय ॐ नमः स्वाहा ॥ इति मंत्रेण पूजयित्वाभिमंत्रयेत् । ततः—ॐ नमो भगवते रुद्राय फट् ठः ठः ठः ॥ अनेन मंत्रेण ग्राहयत् ॥ तद्रसैः पारदं मर्द्यं दिनमेकं ततोऽञ्जयेत् ॥ अदृश्यो जायते जंतुः स्वयं प्रोक्तं पिनाकिना ॥ ५७ ॥ तद्रसं देवदाल्युत्थं केतकीसूतसंयुतम् ॥ अंजयेन्नेत्रयुगलमंतर्धानकरं परम् ॥५८॥ अन्यत्—ॐ अश्वले अश्वकर्णे अरिदुर्बले अर्द्धकेशे दंष्ट्राकराले ढक्कारवे भेरुंडे चांडालिनि स्वाहा ॥ इति पंचत्रिंश दक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अजमोदस्य मूलं त तुरगीगर्भजारया ॥ सह तालकसंपिष्टं तिलकोऽदृश्यकारकः ॥ ५९ ॥ रात्रौ कृष्णचतुर्दश्यां लांगलीमूलमुद्धरेत् ॥ श्वेतच्छाग।।लकागर्भशय्यायां नरतैलकम् ॥ ६० ॥ एकीकृत्यांजयन्नेत्रे अदृश्यः खेचरो भवेत् ॥ ॥ ६१ ॥ अन्यत्—ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय नमो रुद्राय हिलि २ चिलि २ व्याघ्रचर्मपरिधानाय मरुल २ कुरु २ चंडप्रचंड किलि २ स्वाहा ॥ इति सप्तपंचाशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—खंजरीटं सजीवं तु गृहीत्वा फाल्गुने क्षिपेत् ॥ पंजरे रक्षये त्तावद्यावज्ज्राद्रपदं लभेत् ॥ तदा स पंजरेऽदृश्यो जायते नात्र संशयः ॥ खंजरीटशिखा ग्राह्या हस्तस्थाऽदृश्यकारिणी ॥ ६२ ॥ आदाय तच्छिखां हस्ते त्रिलोहे वेष्टितां कुरु ॥ गुटिकायां मुखस्थायामदृश्यो भवति ध्रुवम् ॥ ६३ ॥ अदृश्यो जायते सत्यं शक्रेणापि न दृश्यते ॥ यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ६४ ॥ श्वेतापराजितामूलं ग्राह्यं चन्द्रग्रहे सति ॥ बलाक्षौद्रेण संयुक्तां

गुटिकां मूर्ध्नि धारयेत् ॥ ६५ ॥ वक्त्रे हस्ते च संग्राह्य देवैरपि न दृश्यते ॥ पुत्रजीवोत्थितं तैलं वर्तिं कृत्वा प्रतंतुभिः ॥ रोचनासह
दर्वीभ्यां नरमुंडं प्रलेपयेत् ॥ दीपं प्रज्वाल्य चैकस्मिन्परिग्राह्यं च कज्जलम् ॥ ६६ ॥ तदंजनांजितो मर्त्यो विश्वेनापि न दृश्यते ॥
जरायुं श्वेतमार्जार्याः कृष्णाया वाथ चूर्णयेत् ॥६७॥ त्रिलोहे वेष्टित कृत्वा वक्त्रस्थादृश्यकारिणी ॥ पर्वस्यां ग्रहणे भानोर्नंद्यावर्तप्रमूलकम् ॥
॥ ६८ ॥ गृहीत्वा तत्स्त्रियाः स्तन्यैर्घृष्ट्वा त वटिका कृता ॥ त्रिलोहे वेष्टिता नूनं वक्त्रस्थाऽदृश्यकारिणी ॥ ६९ ॥ भोजयेत्कृष्ण
काकं तु महिषीनवनीतकम् ॥ तद्विष्ठा रवितलेन वेष्टिता वर्तिका कृता ॥ ७० ॥ दीपमंकुलतैलेन नृकपाले च पूर्ववत् ॥ श्मशाने
कज्जलं ग्राह्यं तद्वत्स्यात्फलमुत्तमम् ॥ ७१ ॥ पारावतस्य कुक्षिस्थं पक्षं स्रोतोंऽजनान्वितम् ॥ कृष्णमार्जाररक्तेन भावितं रक्ततंतुभिः ॥
॥ ७२ ॥ वर्तिस्तत्कपिलाज्येन नृकपाले च पूर्ववत् ॥ ग्राहयेत्कज्जलं दिव्यमदृश्यकरणं स्मृतम् ॥ ७३ ॥ दरदो देवदारश्च चितामांसं
नरस्य च ॥ स्रोतोंऽजनयुतं कुर्यादंजनं दृष्टिबंधनम् ॥ ७४ ॥ उलूकस्य शृगालस्य सूकरस्याक्षिरक्तकम् ॥ नीलांजनयुतं पिष्ट्वा रुद्ध्वा
श्रावपुटे दहेत् ॥ तेनांजितो नरोऽदृश्यो जायते नात्र संशयः ॥ ७५ ॥ अन्यत्—ॐ इडापिंगलायै स्वाहा ॥ इति
नवाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—कृष्णमृत्पूरिते वाप्यं कृष्णगुंजां नृमुंडके ॥ रात्रौ कृष्णचतुर्दश्यां बलिधूपोपहारकैः ॥ ७६ ॥
नित्यं कुर्याद्बलिं पूजां जलैः सिंच्यात्सदा निशि ॥ पश्चात्फलति सा गुंजा ततः कृष्णमजं बलिम् ॥ ७७ ॥ कृत्वा योगीश्वरान्पंच
भोजयेद्बलिपूर्वकम् ॥ ततश्चाष्टोत्तरशतं ग्राह्यं गुंजाफलं क्रमात् ॥ ७८ ॥ सूच्या तु प्रोतयेत्सूत्रे सा मालाऽदृश्यकारिणी ॥ धारयेन्मूर्ध्नि
कंठे वा तद्युतश्च न दृश्यते ॥ ७९ ॥ उपवासत्रयं कृत्वा ततः पुष्ये निवापयेत् ॥ नृकपाले यवान्कृष्णान्कृष्णमृत्पूरिते निशि ॥ ८० ॥
निशायां सेचयेन्नित्यं सुपक्कान्ग्राहयेन्निशि ॥ तैर्बीजैस्तु कृता माला शिरःस्थाऽदृश्यकारिणी ॥ ८१ ॥ भजेदृतुमतीं कन्यां श्मशाने
मैथुनेन तु ॥ तच्छुक्रशोणितं ग्राह्यं शिलातालकमिश्रितम् ॥ ८२ ॥ ललाटे तिलकं तेन कृत्वाऽदृश्यो भवेन्नरः ॥ संग्रामे षष्ठे
मासि यदि गर्भः पतेत्स्त्रियः ॥ ८३ ॥ तस्य नेत्रे च कर्णौ च जिह्वाहृन्मांसनासिकम् ॥ गुदमेढ्रं च पादांश्च संध्यायां तत्र पेषयेत् ॥

॥ ८४ ॥ चन्द्रे वाथ ग्रहे सूर्य्ये गुटिकां चाभिमंत्रयेत् ॥ महाकालीयमंत्रेण यावन्मोक्षो भवेद्ग्रहे ॥ ८५ ॥ गुटिकां धारयेद्यस्तु अदृश्यो जायते नरः ॥ नृकपाले तु या लग्ना शीर्षकोद्भवमृत्तिका ॥ ८६ ॥ चांडालीस्तन्यसंमिश्रा हस्तस्थाऽदृश्यकारिणी ॥ वापयेत्तुलसीबीजं कृष्णकाकस्य पृष्ठतः ॥ ८७ ॥ रात्रौ कृष्णचतुर्दश्यामन्यानि परितो वसेत् ॥ तुलसी काकपृष्ठे या दृश्यते सा न केनचित् ॥ ॥ ८८ ॥ तदर्थं वापिता बाह्ये तुलसी जायते यदा ॥ तदा काकोद्भवा ग्राह्या बलिं दद्याच्च कुक्कुटम् ॥ ८९ ॥ सुपक्कं सप्तधान्यं च वटपत्रे बलिं दिशेत् ॥ समूलां तुलसीमंज्यादृश्यो जायते नरः ॥ ९० ॥ कृष्णाषाढे चतर्दश्यां कृष्णधत्तूरबीजकम् ॥ वापयेन्नरमुंडे तु नासारंध्रे समांसके ॥ ९१ ॥ निखनेत्कृष्णभूम्यां तु स्वोच्छिष्टैः सेचयेत्सदा ॥ संक्रांतिदर्शपर्णासु दीपं दद्याद्घृतेन तु ॥ ९२ ॥ वर्तिश्च रक्तसूत्रस्य यावत्तस्य फलोदयः ॥ कृष्णाष्टम्यां फलं ग्राह्यं बलिं दत्वा तु कुक्कुटम् ॥ ९३ ॥ तद्बीजैर्गुटिका कार्या मुखस्थाऽदृश्यकारिणी ॥ शरेण निहते मर्त्ये दग्धे तल्लोहमाहरेत् ॥ ९४ ॥ काकोलूकस्य नीलस्य ग्राह्ये वै तस्य लोचने ॥ तल्लोहेनांजयेच्चक्षुरदृश्यो भवति ध्रुवम् ॥ ९५ ॥ मयूरवानरास्थीनि पाचयेन्महिषीघृते ॥ पिष्ट्वा तदंजयेन्नेत्रे अदृश्यो जायते नरः ॥ ९६ ॥ अश्विन्यां कुशबुध्नं तु पूजां कृत्वा समाहरेत् ॥ त्रिलोहे वेष्टितं कृत्वा वक्त्रस्थं चेददृश्यकृत् ॥ ९७ ॥ हृदयं कृकलासस्य ग्राहयेद्विधिपूर्वकम् ॥ गोरोचनासमं पिष्टं तारयंत्रेण वेष्टयेत् ॥ ९८ ॥ समंत्रा गुटिका सा च मुखस्थाऽदृश्यकारिणी ॥ कौतकार्चितामणौ—कंकनेत्रं समादाय ततो नेत्रेऽजनं चरेत् ॥ अदृश्यो भवति क्षिप्रं देवैरपि न दृश्यते ॥ ९९ ॥ कृष्णोत्वस्थि समादाय नृकपाले विनिक्षिपेत् ॥ तद्रंधलेपनं कुर्याल्ललाटे दर्पणे धृते ॥ १०० ॥ प्रतिबिंबं न पश्येत आत्मनो वदनं ततः ॥ तदा मार्गेण गंतव्यं देवैरपि न दृश्यते ॥ १०१ ॥ यावच्च तिलकं भाले सर्वदैव हि साधकः ॥ १०२ ॥ मयूरं च शिलातालं भोजयेद्दिनसप्तकम् ॥ तद्विष्ठालिप्तहस्तस्थं द्रव्यं शक्रो न पश्यति ॥ १०३ ॥ कृष्णमार्जारांतरस्थं रक्तं संगृह्य भावयेत् ॥ नक्तमालस्य[1] तैलेन तत्र श्वेतार्कसूत्रजाम् ॥ १०४ ॥ वर्तिं प्रज्वाल्य

---

१ नक्तमाल=करंज।

वज्रस्य दले संगृह्य कज्जलम् ॥ तेनांजनेन मनुजस्त्वदृश्यो भवति ध्रुवम् ॥ १०५ ॥ सुकृष्णं चैव मार्जारं मारयित्वा चतुष्पथे ॥ प्रोक्षणं कारयित्वा तु दिनानि पंचविंशतिः ॥ १०६ ॥ तत्संगृह्य प्रयत्नेन क्षालयेच्छीतवारिणा ॥ यदस्थि श्रोत्रभेदि स्याद् ग्राह्यं वै यत्नतोऽथ च ॥ १०७ ॥ पूजयित्वा महाकालीं गोरोचनसमन्विताम् ॥ नकुलस्य तु पित्तेन भावयित्वा प्रपेषयेत् ॥ १०८ ॥ तद्वर्ति तिलकं कृत्वा नरोऽदृश्यो भवेद्ध्रुवम् ॥ नृमांसं च शिवामांसं यत्नतो ग्राहयेद्बुधः ॥ १०९ ॥ आदौ रजस्वलायाश्च रुधिरेण वर्ती कुरु ॥ त्रिलोहे वेष्टिता सा तु मुखस्थाऽदृश्यकारिणी ॥ ११० ॥ कृष्णमार्जारमुंडे तु कृष्णगुंजां प्रवापयेत् ॥ तत्फलं वदनस्थं हि भवेत्साक्षाददृश्यकृत् ॥ १११ ॥ कोकिलानयनं वामं त्रिलोहेन प्रवेष्टयेत् ॥ सा वटी मुखमध्यस्था ह्यदृश्यं कुरुते ध्रुवम् ॥ ११२ ॥ दिवाभीतस्य नयनं त्रिलोहेन प्रवेष्टितम् ॥ मुखस्थं कुरुतेऽदृश्यं यथेच्छं विचरेन्महीम् ॥ ११३ ॥ चिताग्निः खंजरीटस्य विष्ठा फेनो हयस्य च ॥ सोभांजनमयं नेत्रे नर एतेन धूपितः ॥ ११४ ॥ अदृश्यस्त्रिदशैः सर्वैः किं पुनर्मनुजैः प्रिये ॥ अथ तुल्यदृष्टिकरणम्—मार्जारमीनपित्तं च तैलं मषकाविद् तथा ॥ रजस्वलाया वस्त्रेण मार्जनं त्रिश्च कारयेत् ॥ ११५ ॥ मूषिकामलतैलेन यत्नेन परिमर्दयेत् ॥ अंजयेन्मूलमंत्रेण तुल्यदृष्टिप्रदं भवेत् ॥ ११६ ॥ रजस्वलाया वस्त्रस्य मषीं कुर्यात्प्रयत्नतः ॥ अंजनं गोघृतयुतं तुल्यदृष्टिप्रदायकम् ॥ ११७ ॥ प्राकृतग्रंथे—दांत दाहिनी ओर, चखं ले बाजू बांधे । काहू दीखे नांहि, फिरे घर गठडी कांधे ॥ ११८ ॥

इति श्रीमंत्रमहार्णवे उत्तरखण्डेऽदृश्यविद्यातंत्रे षष्ठस्तरङ्गः ॥ ६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

१ वज्र-थूहर । २ शिवा-शृगालः । ३ दिवाभीत उलूकः । ४ सहंजनेका बीज ।

॥ अथ षट्कर्मतंत्रप्रारंभः॥तत्रादौ षट्कर्मलक्षणानि॥षट्कर्माणि यथा शारदातिलके–अथो विधास्ये तंत्रेऽस्मिन् सम्यक् षट्कर्मलक्षणम्॥ सर्वतंत्रानुसारेण प्रयोगफलसिद्धिदम् ॥१॥ शांतिवश्यस्तंभनानि विद्वेषोच्चाटने ततः ॥ मारणं तानि शंसंति षट् कर्माणि मनीषिणः ॥२॥ रोगकृत्यग्रहादीनां निवासः शांतिरीरिता॥ वश्यं जनानां सर्वेषां विधेयत्वमुदीरितम्॥३॥ प्रवृत्तिरोधः सर्वेषां स्तंभनं तदुदाहृतम्॥स्निग्धानां द्वेषजननं मिथो विद्वेषणं मतम् ॥ ४ ॥ उच्चाटनं स्वदेशादेर्भ्रंशनं परिकीर्तितम् ॥ प्राणिनां प्राणहरणं मारणं तदुदीरितम् ॥ ५ ॥

(षट्कर्मोपयोगिनिर्णयचक्रे द्वितीयकोष्ठके ऋतुशब्दोपरिस्था टिप्पणी)

१ अगर किसी ऋतुमें किसी कर्मकी अत्यंत आवश्यकता हो तो ऋषियोंने एक दिनकी दश दश घडी बांट कर छः ऋतु बनायीं हैं जैसे दिनके पहले भागमें वसंत, मध्याह्नमें ग्रीष्म, तीसरे पहरमें वर्षा, संध्यामें शिशिर, रात्रिमें शरद् और प्रातःकालमें हेमन्त इस प्रकार जानना।

॥ अथ षट्कर्मयोगिनिर्णयचक्रम् ॥

नामानि	ऋतु १	पक्ष २	तिथि ३	वार ४	स्थान ५	आसन ६	दिग् ७	मालापदार्थ ८	मालामणि संख्या. ९	अंगुली १०	यंत्रलेखन पत्रं ११	यंत्रलेखनद्रव्याणि १२	लेखनीयं १३
शांति कर्म० १	हेमंते	शुक्लपक्षे	२-७-५-३-	बु. बृ.	काली०वा दुर्गामंदिरे	गोचर्म	पश्चिमे उत्तरे वा	शंखः	५४-२७-१०-	मध्यमास्थितां मालामंगुष्ठेनभ्रामयेत्	भूर्जपत्रं	चंदनं	हैमं-रौप्यं-जाती-
वशी करणे २	वसंते	शुक्ल पक्षे	४-९-६-१३-	बृ. चं.	शिवालये आ.नि.ना	खड्ग चर्म	पश्चिमेवा	पद्मबीजं	५४-२७-१०-	मध्यमास्थितां अंगुष्ठेन भ्रामयेत्	भूर्जपत्रं	रोचनंरक्तचंदनंवा	दूर्वा-राज वृक्षोवा
स्तंभने ३	शिशिरे	कृष्ण पक्षे	-८-१५	र. मं. श	नियमोनास्ति	गज चर्म	पूर्वे	निंबबीजं	१५-	अनामिकांगुष्ठ-योगेन	द्वीपिचर्म	हरिद्रा	अर्गास्तवृक्ष
विद्वेषणे ४	ग्रीष्मे	शुक्ल पक्षे	८-९-१०-११	श. शु.	श्मशाने	शृगाल चर्म	नैर्ऋत्ये	निंबफलं	१५-	तर्जन्यंगुष्ठ-योगेन	खरचर्म	गृहधूमः	करंजवृक्ष
उच्चा टने ५	वर्षासु	कृष्ण पक्षे	१४-८-	र. श.	शून्यदेवालये	मेषचर्म	वायुकोणे अग्निकोणेवा	फेनिस्त-त्फलजा	१५-	तर्जन्यंगुष्ठ योगेन	ध्वजवासः	चितांगारः	बिभीतकः
मारणे ६	शरदि	कृष्ण पक्षे	८-१५	र. मं. श	श्म.का.क्षे. प्रेतारू.वा.	माहिष चर्म	दक्षिणे	बाहेर नि-[illegible] अश्वदंत	१५-	कनिष्ठिकांगुष्ठ योगेन	नरास्थिप्रेत वस्त्रंवा	त्रिकटु-३श्येनविष्ठा४चित्रकं ५ [illegible] [illegible]रसः अर्कात धत्तूररसः ७ लवणं- इत्याद्य विष्ठाभिर्लिखेत्	नरास्थि[illegible]कं लौहंवा

नामानि	कुंडप्रमाणं १४	कार्यपरत्वेनहोमपदार्थाः	स्रुवा	होमसंख्या	काष्ठं	अग्निः
शांतिकर्मणि १	वृत्तकुंडं पश्चिमायां	दूर्वासमिधौ घृतंच	सुवर्णयज्ञवृक्षोवा	दशांशतः	बिल्व-अर्क-पालाश-क्षीरवृक्षावा	लौकिकाग्नौ
वशीकरणे २	पद्माकारं उत्तरे	दाडिमसमिधो अजाघृतंच	सुवर्णयज्ञवृक्षोवा	दशांशतः	बिल्व-अर्क-पलाश-क्षीरवृक्षावा	लौकिकाग्नौ
स्तंभने ३	चतुष्कोणं पूर्वे	राजवृक्षसमिधो मेषीघृतंच	यज्ञवृक्षः	दशांशतः	कुचिला-निंब धत्तूरावा	वटकाष्ठोत्थाग्नौ
विद्वेषणे ४	त्रिकोणंनैर्ऋत्ये	धत्तूरसमिधो अलसीतैलंच	यज्ञवृक्षः	दशांशतः	कुचिला-निंब-धत्तूरावा	बिभीतकजाताग्नौ
उच्चाटने ५	षट्कोणं वायव्ये	आम्रसमिधः सर्षपतैलंच	यज्ञवृक्षः	दशांशतः	कुचिला-निंब-धत्तूरावा	श्मशानाग्नौ
मारणे ६	अर्द्धचन्द्राकारं दक्षिणे	खदिरसमिधः कटुतैलंच.	लौहमयः	दशांशतः	कुचिला-निंब-धत्तूरावा	श्मशानाग्नौ

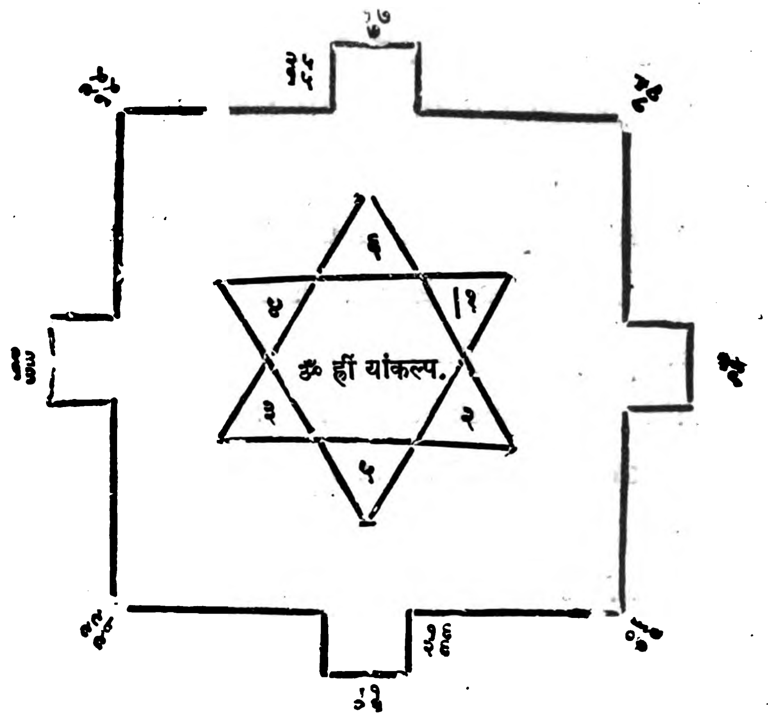
नामानि	तर्पणेद्रव्याणि	तर्पणेपात्रं	तर्पणेआसनं	तर्पणाभिमुख्यं	मार्जनं
शांतिकर्मणि१	हरिद्राजलं	सुवर्णपात्रंताम्रपात्रंवा	मृदासनं	ईशानाभिमुखः	तर्पणदशांशतः
वशीकणे २	हरिद्राजलं	सुवर्णपात्रं	मृदासनं	उत्तराभिमुखः	एवम्
स्तंभने ३	मरिचाद्यंकवोष्णं	मृत्तिकापात्रं	जानुभ्यामुत्थितः	पूर्वाभिमुखः	एवम्
विद्वेषणे ४	मेषरक्तयुतंतोयं	खदिरकाष्ठनिर्मितंपात्रं	एकपादस्थितः	नैर्ऋत्याभिमुखः	एवम्
उच्चाटने ५	मेषरक्तयुतं तोयं	लोहपात्रं	एकपादस्थितः	वायुकोणाभिमुखः	एवम्
मारणे ६	मरिचाद्यंकवोष्णं	कुक्कुटांडपात्रं	एकपादस्थितः	अग्निकोणाभिमुखः	एवम्

नामानि	ब्राह्मणभोजनार्थमन्यथा	ब्राह्मणभोजनेसंख्याउत्तमा	ब्राह्मणभोजनेसंख्यामध्यमा	ब्राह्मणभोजनेसंख्याधमा
शान्तिकर्मणि १	होमदशांशतः	होमदशांशतः	होमात् पंचविंशांशेन	होमशतांशतः
वश्ये २	होमदशांशतः	होमदशांशतः	होमात् पंचविंशांशेन	होमशतांशतः
स्तंभने ३		होमपंचांशतः	होमात् द्वादशांशेन	होमात् पंचशतांशेन
विद्वेषणे ४		होमपंचांशतः	होमात् अष्टमांशेन	होमात् एकत्रिंशदंशेन
उच्चाटने ५		होमपंचांशतः	होमात् अष्टमांशेन	होमात् एकत्रिंशदंशेन
मारणे ६		होमसंख्यायामशक्तश्चेत् पंचांशतो वा भोजयेत्	होमार्थमशक्तश्चेद्दशांशतो वा भोजयेत्	होमात् पंचांशेन अशक्तश्चेत् विंशांशेन वा भोजयेत्

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ शांतितंत्रप्रारंभः ॥ तत्रादौ प्रत्यंगिरामंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रमहोदधौ–अथ प्रत्यंगिरां वक्ष्ये परकृत्याविमर्दिनीम्। मंत्रो यथा–ॐ ह्रीं यां कल्पयति नोऽरयः क्रूरां कृत्यां वधूमिव ह्रां ब्रह्मणा अपनिर्णुद्मः प्रत्यक्कर्तारमृच्छतु ह्रीं ओं ॥ इति सप्तत्रिंशदक्षरो मंत्रः॥अस्य विधानम्-अस्य प्रत्यंगिरामंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। अनुष्टुप् छंदः। देवी प्रत्यंगिरा देवता। ॐ बीजम्। ह्रीं शक्तिः। ममाखिलावाप्तये जपे विनियोगः॥ ॐ ब्रह्मर्षये नमः शिरसि १ अनुष्टुप्छंदसे नमः मुखे २ देवीप्रत्यंगिरादेवतायै नमः हृदि ३ ॐ बीजाय नमः लिंगे ४ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ५। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ह्रीं यां कल्पयंति नोऽरयः अंगुष्ठाभ्यां नमः १ ॐ ह्रीं क्रूरां कृत्यां तर्जनीभ्यां नमः २ ॐ ह्रीं वधूमिव मध्यमाभ्यां नमः ३ ॐ ह्रीं ह्रां ब्रह्मणा अनामिकाभ्यां नमः ४ ॐ ह्रीं अपनिर्णुद्मः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ॐ ह्रीं प्रत्यक्कर्तारमृच्छतु करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ह्रीं यां कल्पयंति नोऽरयः हृदयाय नमः १ ॐ ह्रीं क्रूरां कृत्यां शिरसे स्वाहा २ ॐ ह्रीं वधूमिव शिखायै वषट् ३ ॐ ह्रीं ह्रां ब्रह्मणा कवचाय हुं ४ ॐ ह्रीं अपनिर्णुद्मः नेत्रत्रयाय वौषट् ५ ॐ ह्रीं प्रत्यक्कर्तारमृच्छतु अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ॐ ह्रीं यां ह्रीं शिरसि १ ॐ ह्रीं कल्पयंति ह्रीं भ्रूमध्ये २ ॐ ह्रीं नो ह्रीं मुखे ३ ॐ ह्रीं अरयः ह्रीं कंठे ४ ॐ ह्रीं क्रूरां ह्रीं दक्षहस्ते ५ ॐ ह्रीं कृत्यां ह्रीं वामहस्ते ६ ॐ ह्रीं वधू ह्रीं हृदि ७ ॐ ह्रीं मिव ह्रीं नाभौ ८ ॐ ह्रीं ह्रां ह्रीं दक्षिणोरौ ९ ॐ ह्रीं ब्रह्मणा ह्रीं वामोरौ १० ह्रीं अपनिर्णुद्मः ह्रीं दक्षजानुनि ११ ॐ ह्रीं प्रत्यक् ह्रीं वामजानुनि १२ ॐ ह्रीं कर्तार ह्रीं दक्षपादे १३ ॐ ह्रीं मृच्छतु ह्रीं वामपादे १४ ॥ इति मंत्रवर्णन्यासः॥ ॥ इति न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ ॐ आशांबरा मुक्तकचा घनच्छविर्ध्येया सचर्मासिकराहिभूषणा ॥ दंष्ट्रोग्रवक्त्रा ग्रसिताहितान्वया प्रत्यंगिरा शंकरतेजसेरिता॥१॥इति ध्यात्वा सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति संपूज्य नवपीठशक्तीः पूजयेत्॥तथा च पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु ॐ जयायै नमः१–ॐ विजयायै नमः २ ॐ अजितायै नमः३ ॐ अपराजितायै नमः४ ॐ नित्यायै नमः५ ॐ विलासिन्यै नमः६ ॐ दोग्ध्र्यै नमः७ ॐ अघोरायै नमः८ मध्ये ॐ मंगलायै नमः९ इति पूजयेत्॥

ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य 'ॐ ह्रीं प्रत्यंगिरे पद्मासनाय नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तद्यथा–पुष्पांजलिमादाय–ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ॥ अनज्ञां देहि मे मातः परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्विदिक्षु मध्ये दिक्षु च–ॐ ह्रीं यां कल्पयंति नोऽरयः हृदयाय नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ इति सवत्र । ॐ ह्रीं क्रूरां कृत्यां शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० २ ॐ ह्रीं वधूमिव शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ३ ॐ ह्रीं ह्रीं ब्रह्मणा कवचाय हुं कवचश्रीपा० ४ ॐ ह्रीं अपनिर्णुद्मः नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ ॐ ह्रीं प्रत्यक्कर्तारमृच्छतु अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ । इति षडंगानि पजयेत् ।

प्रत्यंगिरापूजनयन्त्रम् ।



ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य्य–ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततो भूपुरे पर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधांनि च संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात् । इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्का

रांतं संपूज्य इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यः स्वस्वमंत्रद्वारा दशदिक्षु च माषभक्तबलिं दद्यात् । अथ इन्द्रादिदशदिक्पालबलिमंत्रमाह—ॐ यो मे पूर्वगतः पाप्मा पापकेनेह कर्मणा ॥ इन्द्रस्त्वं देवराजो भञ्जयतु अंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कालिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शांतिः स्वस्त्ययनं चास्तु ॥ अनेन इन्द्राय प्राच्यां दिशि बलिं दद्यात् ॥१॥ ॐ यो मे ह्यग्निगतः पाप्मा पापकेनेह कर्मणा ॥ अग्निस्त्वं तेजोराजो भञ्जयतु अंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कालिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शांतिः स्वस्त्ययनं चास्तु ॥ अनेनाग्नये अग्निकोणे बलिं दद्यात् ॥ २ ॥ ॐ यो मे दक्षिणगतः पाप्मा पापकेनेह कर्मणा । यमस्त्वं प्रेतराजो भञ्जयतु अंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कालिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शांतिः स्वस्त्यनं चास्तु ॥ इति यमाय दक्षिणदिशि बलिं दद्यात् ॥ ३ ॥ ॐ यो मे नैर्ऋत्यगतः पाप्मा पापकेनेह कर्मणा ॥ निर्ऋतिस्त्वं रक्षोराजो भञ्जयतु अंजयतु मोहयतु नाशयत मारयतु कालिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शांतिः स्वस्त्यनं चास्तु ॥ अनेन निर्ऋतये नैर्ऋत्ये कोणे बलिं दद्यात् ॥ ४ ॥ ॐ यो मे पश्चिमगतः पाप्मा पापकेनेह कर्मणा । वरुणस्त्वं जलराजो भंजयतु अंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कालिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शांतिः स्वस्त्ययनं चास्तु ॥ अनेन वरुणाय पश्चिमदिशि बलिं दद्यात् ॥ ५ ॥ ॐ यो मे वायुगतः पाप्मा पापकेनेह कर्मणा । वायुस्त्वं भुवनराजो भञ्जयतु अंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कालिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शांतिः स्वस्त्ययनं चास्तु ॥ अनेन वायवे वायुकोणे बलिं दद्यात् ॥ ६ ॥ ॐ यो मे उदग्गतः पाप्मा पापकेनेह कर्मणा । कुबेरस्त्वं यक्षराजो भञ्जयतु अंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कालिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शांतिः स्वस्त्ययनं चास्तु ॥ अनेन कुबेरायोत्तरदिशि बलिं दद्यात् ॥ ७ ॥ ॐ यो मे ईशानगतः पाप्मा पापकेनेह कर्मणा । ईशानस्त्वं विद्याराजो भञ्जयतु अंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कालिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शांतिः स्वस्त्ययनं चास्तु ॥ अनेन ईशानाय ईशानकोणे बलिं दद्यात् ॥ ८ ॥ ॐ यो मे इन्द्रेशानमध्यगतः पाप्मा पापकेनेह कर्मणा । ब्रह्मा त्वं ब्रह्माण्डराजो भंजयतु अंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कालिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शांतिः स्वस्त्य

यनं चास्तु ॥ अनेन इन्द्रेशानयोर्मध्ये ब्रह्मणे बलिं दद्यात् ॥ ९ ॥ ॐ यो मे वरुणनिर्ऋतिमध्यगतः पाप्मा पापकेनेह कर्मणा । अनंतस्तं नागराजो भञ्जयतु अंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शांतिः स्वस्त्ययनं चास्तु॥ अनेन अनंताय वरुणनिर्ऋतिमध्ये बलिं दद्यात् ॥ १० ॥ इति बलिं दत्त्वा जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणमयुतजपः ॥ अपामार्गसमिदाज्यहविर्भिर्दशांशतो होमः । एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान्साधयेत् ॥ तथा च–ध्यायन्नेवं जपेन्मंत्रमयुतं तद्दशांशतः ॥ अपामार्गेध्मराज्याज्यहविर्भिर्जुहुयात्ततः ॥ १ ॥ एवं सिद्धं मनुं मन्त्री प्रयोगेषु शतं जपेत् ॥ जुहुयाच्च शतं दिक्षु दशमंत्रैर्हरेद्वलिम् ॥ २ ॥ इत्थं कृते शत्रुकृता कृत्या क्षिप्रं विनश्यति ॥ ३ ॥ इति प्रत्यंगिरासप्तत्रिंदशक्षरमंत्रप्रयोगः ॥ १ ॥ अन्यत् अथ प्रत्यंगिरामालामंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रमहोदधौ मंत्रो यथा–ॐ ह्रीं नमः कृष्णवाससे शतसहस्रहिंसिनि सहस्रवदने महाबले अपराजिते प्रत्यंगिरे परसैन्यपरकर्मविध्वंसिनि परमंत्रोत्सादिनि सर्वभूतदमने सर्वदेवान् बंध बंध सर्वविद्याश्छिंधि छिंधि क्षोभय क्षोभय परयंत्राणि स्फोटय स्फोटय सर्वशृंखलास्त्रोटय त्रोटय ज्वलज्ज्वालाजिह्वे करालवदने प्रत्यंगिरे ह्रीं नमः॥ इति पञ्चविंशत्यधिकशताक्षरो मंत्रः॥ अस्य विधानम्–अस्य प्रत्यंगिरामालामंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । अनुष्टुप् छंदः । देवी प्रत्यंगिरा देवता । ॐ बीजम् । ह्रीं शक्तिः । ममाखिलावातये जपे विनियोगः ॥ ॐ ब्रह्मर्षये नमः शिरसि १ । अनुष्टुप्छंदसे नमः मुखे २ । देवीप्रत्यंगिरादेवतायै नमः हृदि ३ । ॐ बीजाय नमो लिंगे ४ । ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ५ । विनियोगाय नमः सर्वांगे ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ॐ ह्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ एवमेव हृदयादिषडंगन्यासं कुर्य्यात् ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ ॐ सिंहारूढातिकृष्णा त्रिभुवनभयकृद्रूपमुग्रं वहंती ज्वालावक्त्रा वसाना नववसनयुगं नीलमण्याभकांतिः ॥ शूलं खड्गं वहंती निजकरयुगले भक्तरक्षैकदक्षा सेयं प्रत्यंगिरा संक्षपयतु रिपुभिर्निर्मिताञ्शोऽभिचारान् ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा पूर्वोक्तं संपूज्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणमयुत

जपः। तिलराजिकाभिर्दशांशतो होमः। एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति। सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च—अयुतं प्रजपेन्मंत्रं सहस्रं तिलराजिकाः ॥ हुत्वा सिद्धममुं मंत्रं प्रयोगेषु शतं जपेत् ॥ १ ॥ ग्रहभूतादिकाविष्टं सिंचेन्मंत्रं जपञ्जलैः ॥ विनाशयेत्परकृतं यंत्र मंत्रादिकर्मजम् ॥ २ ॥ इति प्रत्यंगिरापञ्चविंशत्याधिकशताक्षरमालामंत्रप्रयोगः ॥ १ ॥ अथ नारायणास्त्रम्—हरिः ॐ नमो भगवते श्रीनारायणाय नमो नारायणाय विश्वमूर्तये नमः श्रीपुरुषोत्तमाय पुष्पदृष्टिं प्रत्यक्षं वा परोक्षं वा अजीर्णं पंचविषूचिकां हन हन ऐकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं ज्वरं नाशय नाशय चतुरशीतिवातानष्टादशकुष्ठान् अष्टादशक्षयरोगान् हन २ सर्वदोषान् भंजय २ तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ शत्रून् मारय २ उच्चाटयोच्चाटय विद्वेषय २ स्तंभय २ निवारय २ विघ्नैर्हन २ दह २ मथ २ विध्वंसय २ चक्रं गृहीत्वा शीघ्रमागच्छागच्छ चक्रेण हत्वा परविद्यां छेदय २ भेदय २ चतुःशीतानि विस्फोटय २ अर्शवातशूलदृष्टिसर्पसिंहव्याघ्रद्विपदचतुष्पदपदबाह्यान्दिवि भुव्यन्तरिक्षे अन्येऽपि केचित् तान्द्वेषकान्सर्वान् हन २ विद्युन्मेघनदीपर्वताटवीसर्वस्थानरात्रिदिनपथचौरान् वशं कुरु कुरु हरिः ॐ नमो भगवते ह्रीं हुं फट् स्वाहा ठः ठं ठं ठः नमः ॥ इति नारायणास्त्रमंत्रः॥अस्य विधानम्—एषा विद्या महानाम्नी पुरा दत्ता मरुत्वते ॥ असुराञ्जितवान्सर्वाञ्छक्रस्तु बलदानवान् ॥ १ ॥ यः पुमान्पठते भक्त्या वैष्णवो नियतात्मना ॥ तस्य सर्वाणि सिद्ध्यन्ति यच्च दृष्टिगतं विषम् ॥ २ ॥ अन्यदेहविषं चैव न देहे संक्रमेद्ध्रुवम् ॥ संग्रामे धारयत्यङ्गे शत्रून्वै जयते क्षणात् ॥ ३ ॥ अतः सद्यो जयस्तस्य विघ्नस्तस्य न जायते ॥ किमत्र बहुनोक्तेन सर्वसौभाग्यसंपदः ॥ ४ ॥ लभते नात्र संदेहो नान्यथा तु भवेदिति ॥ गृहं नो यदि वा येन बलिना विविधैरपि ॥ ५ ॥ शतिं समुष्णतां याति चोष्णं शीतलतां व्रजेत् ॥ अन्यथा न भवेद्विद्यां यः पठेत्कथितां मया ॥ ६ ॥ भूर्जपत्रे लिखेन्मंत्रं गोरोचनजलेन च ॥ इमां विद्यां स्वके बद्ध्वा सर्वरक्षां करोतु मे ॥ ७ ॥ पुरुषस्याथवा स्त्रीणां हस्ते बद्ध्वा विचक्षणः ॥ विद्रवंति च विघ्नानि न भवंति कदाचन ॥ ८ ॥ न भयं तस्य कुर्वंति गगने भास्करादयः ॥ भूतप्रेतपिशाचाश्च ग्रामग्राही तु डाकिनी ॥ ९ ॥ शाकिनीषु महाघोरा वेतालाश्च महाबलाः ॥ राक्षसाश्च महारौद्रा दानवा

बलिनो हि ये ॥ १० ॥ असुराश्च सुराश्चैव अष्टयोनिश्च देवता ॥ सर्वत्र स्तम्भिता तिष्ठेन्मंत्रोच्चारणमात्रतः ॥ ११ ॥ सर्वहत्याः प्रणश्यंति सर्वं फलति नित्यशः ॥ सर्वे रोगा विनश्यंति विघ्नस्तस्य न बाधते ॥ १२ ॥ उच्चाटनेऽपराह्णे तु संध्यायां मारणे तथा ॥ शांतिके चार्धरात्रे तु ततोऽर्थः सर्वकामिकः ॥ १३ ॥ इदं मंत्ररहस्यं च नारायणास्त्रमेव च ॥ त्रिकालं जपते नित्यं जयं प्राप्नोति मानवः ॥ १४ ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यं ज्ञानं विद्यां पराक्रमम् ॥ चिंतितार्थं सुखप्राप्तिं लभते नात्र संशयः ॥ १५ ॥ इति नारायणास्त्रम् ॥

अथ चोरनिवारणम्-जले रक्षतु वाराहः स्थले रक्षतु वामनः ॥ अटव्यां नारसिंहश्च सर्वतः पातुः केशवः ॥ १ ॥ जले रक्षतु नन्दीशः स्थले रक्षतु भैरवः ॥ अटव्यां वीरभद्रश्च सर्वतः पातु शंकरः ॥ २ ॥ अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः किरीटी श्वेतवाहनः ॥ बीभत्सुर्विजयः कृष्णः सव्यसाची धनंजयः ॥ ३ ॥ तिस्रो भार्याः कफल्लस्य दाहिनी मोहिनी सती ॥ तासां स्मरणमात्रेण चोरो गच्छति निष्फलः ॥ ४ ॥ कफल्लकः कफल्लकः कफल्लकः ॥ इति पठित्वा शयनं कार्यं तेन चोरो निष्फलो गच्छेत् ॥ ॥ अथ ग्रहनाशनभूतेश्वरमंत्रः-ॐ नमो भगवते भूतेश्वराय कलिकलिनखाय रौद्रदंष्ट्राकरालवक्त्राय त्रिनयनाय धगधगितपिशंगललाटनेत्राय तीव्रकोपानलामिततेजसे पाशशूलखट्वाङ्गडमरुकधनुर्बाणमुद्गराभयदण्डत्रासमुद्राव्ययदसंयदाइदण्डमंडिताय कपिलजटाजूटार्द्धचन्द्रधारिणे भस्मरागरंजितविग्रहाय उग्रफणिकालकटाटोपमण्डितकण्ठदेशाय जय जय भूतनाथामरात्मन् रूपं दर्शय दर्शय नृत्यनृत्य चलचल पाशेन बंधबंध-हुंकारेण त्रासयत्रासय-वज्रदंडेन हनहन-निशितखड्गेन छिंधिछिंधि शूलाग्रेण भिंधिभिंधि-मुद्गरेण चूर्णयचूर्णय सर्वग्रहानावेशयावेशय-स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-गुग्गुलं मधुनाक्तेन घृतेन सह धपयेत् ॥ मंत्रेण तेन हारीत तर्जयेद्ग्रहपीडितम् ॥१॥ ग्रहाविष्टेन चेत्तस्मै दीयते बलिरुत्तमः ॥ मुक्तो भवति तस्माच्च संशयो नास्ति तत्र च ॥ २ ॥ इति ॥ अथ भूतोपद्रवनाशका उड्डीशमंत्राः॥ॐनमो भगवते नारसिंहाय घोररौद्रमहिषासुररूपाय त्रैलोक्याडंबराय रौद्रक्षेत्रपालाय ह्रौं ह्रौं क्रीं क्रीं क्रीमिति ताडय २ मोहय२ द्रंभि २ क्षोभय २ आभि २ साधय २ ह्रीं हृदये आं शक्तये प्रीति ललाटे बंधय २ ह्रीं हृदये स्तंभय २ किलि २ ईं ह्रीं डाकिनि प्रच्छादय

प्रच्छादय शाकिनीं प्रच्छादय २ भूतं प्रच्छादय २ प्रभूतं प्रच्छादय २ स्वाहा राक्षसं प्रच्छादय २ ब्रह्मराक्षसं प्रच्छादय २ सिंहिनीपुत्रं प्रच्छादय २ डाकिनीग्रहं साधय २ शाकिनीग्रहं साधय २ अनेन मंत्रेण डाकिनीशाकिनीभूतप्रेतपिशाचाद्यैकाहिकद्वयाहिकत्र्याहिकचातुर्थिकपंचवातिकपैत्तिकश्लैष्मिकसान्निपातकेसरिडाकिनीग्रहादीन्मुंच मुंच स्वाहा ॥ गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—लोहेकी सेलसे २१ बार झाड दे अथवा छप्परके तीलेसे झाड दे तो उन्मादादिक भूतबाधा दूर हो ॥

॥ अथ डाकिनीसे बालक छुडानेका मंत्र—ॐ काला भैरव कपिली जटा रात दिन खेले चौपटा काला भैरव भस्म मुसाण जेहि मांगूं सो पकडी आन । डंकिनी संखिनी पटसिहारी जरख चढंती गोरखमारी छोडिछोडिरे पापिनी बालक पराया गोरखनाथका परवाना आया ॥ इति मंत्रः ॥ विधानम्—तीरसे झाड दे और पानी अभिमंत्रित करके पिलावे तो बालक डाकिनीसे छूटे ॥ अथ प्रेतादि रोगादि झाडनेका उत्तम मंत्र—ॐ नमो आदेश गुरुको घोरघोर इन घोर काजीकी किताब घोर मुल्लाकी बांग घोर रैगरकी कुंड घोर धोबीका कुंड घोर पीपलका पान घोर देवकी दिवाल घोर आपकी घोर बिखेरता चल परकी घोर बैठता चल वज्रका किवाड तोडता चल सारका किंवाड तोडता चल कुनकुनसो बंद करता चल भूतको पलीतको देवको दानवको दुष्टको मुष्टको चोटको फेटको मेलेको घेरेलेको उलकेको बुलकेको हिडकेको भिडकेको ओपरीको पराईको भूतनीकोपलीतनीको डंकिनीको स्यारीको भूचरीको खेचरीको कलुएको मलवेको उनको मथवायके तापको तिजारीको माथाकी मथवायको मगरांकीपीडाकोपेटकी पीडाकोसांसको कांसको मरेकोमुसाणकोकुणकुणसा मुसाण कचिया मुसाण भुकिया मुसाण कीटिया मुसाण चीडी चौपटाका मुसाण नुहा मुसाण इन्होंको बंदकरि एडीकी एडी बंध करि पीडाकी पीडी बंध करि जांघकी जाडी बंधकरि कटयांकी कडी बंधकरि पेटकी पीडा बंधकरि छातीकी शूल बंधकरि सारिकी सीस बंधकरि चोटीकी चोटी बंध करि नौनाडी बहत्तर कोठा रोमरोममें घर पिंडमें दखलकर देश बंगालाका मनसारा मसेबडा आकर मेरा कारज सिद्ध न करै तो गुरू उस्तादसे लाजे शब्द साचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा॥इति मंत्रः॥ अस्य विधानम्—मद्य मांस छडछरीला आक

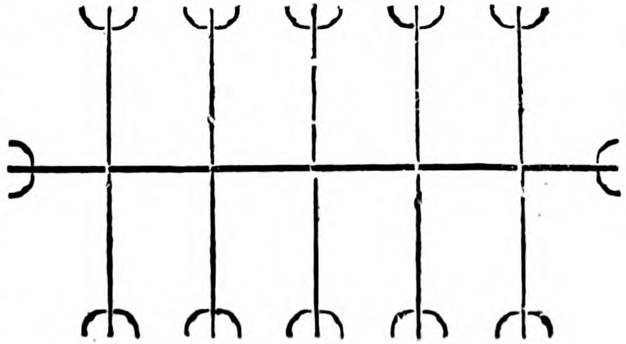
तेलदीपक प्रत्येक रविवारको भांग सुलफा चोडना सिद्ध हो पीछे मंत्र सात बार पढकर झाड दे तो सर्वोपद्रव दूर हो कर सुखी हो इसमें संदेह नहीं ॥ ३ ॥ नजर झाडनेका मंत्र–ॐ नमो सत्य नाम आदेश गुरूको ॐ नमो नजर जहां परपीर न जानी बोले छलसों अमृतवानी कहो नजर कहांते आई यहांकी ठौर तोहि कौन बताई कौन जात तेरो कहा ठाम किसकी बेटी कहा तेरो नाम कहांसे उडी कहांको जाया अबही बसकर ले तेरी माया मेरी जात सुनो चित लाय जैसी होय सुनाऊं आय तेलन तमोलन चूहडी चमारी कायथनी खतरानी कुम्हारी महतरानी राजाकी रानी जाको दोष ताहीके शिर पडे जाहर पीर नजरसे रक्षा करे मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–इस मंत्रद्वारा मोरपंखसे झाड दे तो आराम हो ॥ अन्यत्–इस यंत्रको कागजपर लिख पलीता सुलगाकर सुँघावे तो प्रेत बकुरे बात करे जो पूछे उसका जवाब दे ॥

पलीतायन्त्रम्.

द	मू	सि	ज	ऊं	त्र	ॅ	०	०
अ	च	जा	पै.	नि.	स्थै	०	०	०

डाकिनीके चोट मारनेका मंत्र–ॐ नमो महाकाली जोगनी जोगनी पारशाकिनी कल्पवृक्षीयदृष्टि जोगनी सिद्धरुद्राय कालदंडेन साधय२ मारय २ चूरय २ अपहर शाकिनी सपरिवारं नमः ॐ ह्रूँ ह्रूँ ह्रैं ह्रौं फट् स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–इस मन्त्रसे सात दफे गूगलको पढकर ओखलीमें डाल मूसलसे कूटे तो वह मूसलकी चोट डाकिनीको लगेगी, अगर इस मन्त्रसे अपना घोंटू मूंडे तो डाकिनीका सिर मुंड जायगा, किसी चीजपर मन्त्र पढकर जिसके घरमें डाले उसके घरमें जाके डाकिनी बोलैगी । इस मन्त्रको पढकर आखोंमें जल मारे तो खेल उठे ॥ अथ डाकनभक्षितका मंत्र–ॐ डाकन शाकन और सिहारी भैरो यतीके चक्र मारी अन्नपान खाय पराया तके तिस पापनका भंडारा फूटे नरसा टूटे पाप न छूटे गुरूकी शक्ति चेलेकी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–सात बार झाड दे तो डाकनके खाये हुएको आराम हो ॥ अथ डाकिनी दूर करनेका मन्त्र–ॐ नमो आदेश गुरूका डाकिनी सिहारी किन्ने मारी जती हनुमंतने मारी कहां जाय दबकी किन देखी जती हनुमंतने देखी सातवें पाताल गई

सातवें पातालसे कौन पकड लाया जती हनमंत पकड लाया एक ताल दे एक कोठा तोडा दो ताल दे दो कोठा तोडा तीन ताल दे तीन कोठा तोडा चार ताल दे चार कोठा तोडा पांच ताल दे पांच कोठा तोडा छः ताले दे छः कोठा तोडा सात ताल दे सातवां कोठा खोल देखै तो कौन खडी है डाकिनी सिहारी भूतप्रेत चले जती हनुमंतसेरे झाडे सूं चले ॐ नमो आदेश गुरूका गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मन्त्रः ॥ मोरपंख अथवा लोहेसूं झाड दे तो सर्वोपद्रव दूर हो ॥ अन्यत्–ॐ नमो आदेश गुरूका गिरह बाज नटनीका जाया चलती बेर कबूतर खाया पीवे दारू खाय जो मांस रोगदोषको लावे फांस कहां कहांसे लावेगा गुदगुदमें सुवावेगा बोटी बोटीमेंसे लावेगा चामचाममेंसे लावेगा नौनाडी बहत्तरकोठामेंसे लावेगा मारमार बंदी करकर लावेगा न लावेगा तो अपनी माताकी सेजपर पग धरेगा मेरा भाई मेरा दिखा दिखलाय तो मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मन्त्रः॥ मोरकी पंखसे झाडे तो भूत प्रेत डाकिनी शाकिनी सब भाग जायँ ॥ अथ डाकिनी के बकुरानेका मन्त्र–'ॐ नमो आदेश गुरूका ॐ नमो जय नरसिंह तीन लोक चौदह भुवनमें हाथ चाबी और होठ चाबी नयन लाल लाल सर्व वैरी पछाड मार भगतनको प्राण राखि आदेश आदि पुरुषको॥' इति मंत्रः ॥ इस मन्त्रसे पानी पढकर पिलावे पीछे पूछे तो डाकिनी शाकिनी बोले सही ॥ इस यंत्रको कागजपर लिख लोबानकी धूप देकर ओखलीमें धरे और मूसलसे कूटे तो डाकिनीका माथा फूटे और बकुरे सही ॥



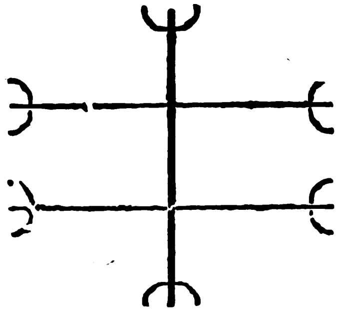
॥ प्रेतादि झाडनेका मंत्र–ॐ नमो नारसिंहाय हिरण्यकशिपुवक्षःस्थलविदारणाय त्रिभुवनव्यापकाय भूतप्रेतपिशाचडाकिनीकुलोन्मूलाय स्तंभोद्भवाय समस्तदोषान् हर २ विसर २ पच २ हन२ कंपय २ मथ २ ह्रीं ३ फट् २ ठः ठः एहि २ रुद्र आज्ञापयाति

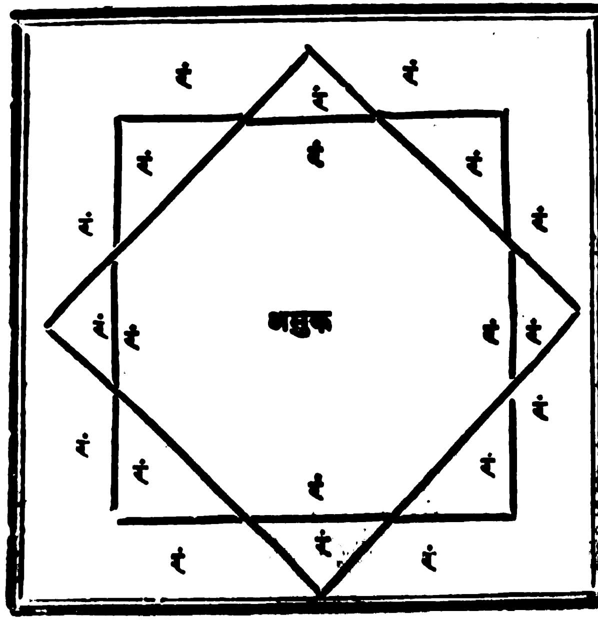
स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ इस मंत्रसे सरसों पढ पढकर मारे तो सर्व दोष दूर हो ॥ कर्तव्य उलटा फिरानेका मंत्र–एक ठोसरसों सोला राई मोरो पटवलको रोजाई खाय खाय पडे भार जे करे ते मरे उलट विद्या ताहीपर परे शब्द साचा पिंड काचा तो हनूमानका मंत्र साचा फूरो मंत्र ईश्वरी वाचा॥ इति मंत्रः ॥ इस मंत्रसे राई लोन उतारकर अग्निमें डाले तो की हुई विद्या करनेवाले पर उल्टी जाय पडे ॥ अथ सर्वज्वरे बलिदानविधानं भावप्रकाशपरिशिष्टे–नौ ९ मुट्ठी चावलोंका भात करके उसका पुतला बनावे उसको खसकी चटाईपर बिठाकर पुतलेके सम्पूर्ण शरीरमें हल्दीका लेप कर देवे पीछे उसके चारों तरफ पीले रंगकी चार ४ पताका गाड चंदन पुष्प चढा धूपदीपसे पूजनकर पीपलके पत्तोंकी चार पुडिया जिसमें हल्दी भरी हो पुतलेके चारों कोनोंमें स्थापन करे पीछे–देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रोत्पन्नोऽहममुकशर्म्माहं मम (अथवा मम यजमानस्य) ज्वरनिवृत्त्यर्थं बलिदानमहं करिष्ये ॥ इस प्रकार संकल्प करके पीछे"ॐ ज्वरस्त्रिपादस्त्रिशिराः षड्भुजो नवलोचनः ॥ भस्मप्रहरणो रुद्रः कालांतकयमोपमः ॥ १ ॥" इस मंत्रसे ज्वरका ध्यान करके–"ॐ अमुकज्वर इहागच्छ इहातिष्ठ ॥" इस प्रकार आवाहन कर और नौ ९ फूटी कौडी उसके आगे धरके गंधादि पंचोपचारसे पूजन करे पीछे संध्याके समय रोगीके घरसे दक्षिणकी तरफ श्मशानमें अथवा श्मशानवृक्षके नीचे या चौराहेमें उस पुतलेको लेकर जावे और ज्वरवाले रोगीको उसके आगे खडा करके–"ॐ नमो भगवते गरुडासनाय त्र्यंबकाय स्वस्त्यस्तु वस्तुतः स्वाहा ॥ ॥ १ ॥ ॐ कं टं पं शं वैनतेयाय नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं क्षः क्षेत्रपालाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं ठः ठः भो भो ज्वर शृणु शृणु हल हल गर्ज गर्ज एकाहिक द्व्याहिक त्र्याहिक चातुर्थिक अर्धमासिक मासिक नैमिषिक मौहूर्तिक फट् फट् हुं फट फट् हल हल मुंच मुंच भूम्यां गच्छ गच्छ स्वाहा॥" इस मंत्रसे बलिदान करके विसर्जन कर देवे। इस प्रकार तीन दिन करे तो सर्व प्रकारका महादुष्ट ज्वर भी शांत हो जाता है इसमें संदेह नहीं. हमारा अनुभव किया हुआ प्रयोग है॥अन्यमंत्रः–"ॐ ह्रां ह्रीं श्रीं सुग्रीवाय महाबलपराक्रमाय सूर्यपुत्राय अमिततेजसे ऐकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं दृष्टिज्वरं सान्निपातिकं संततज्वरं तत्क्षणं षाण्मासिकं सांवत्सरिकं सर्वान् छिंधि छिंधि। भिंधि भिंधि

किरि किरि सर्वान् ज्वरान् ग्रस ग्रस पिब पिब ब्रह्मज्वरं भीषय भीषय विष्णुज्वरं त्रासय त्रासय माहेश्वरज्वरं निघातय भूतज्वरप्रेतज्वरापस्मरादिमहाव्याधीन्नाशय नाशय सर्वान् दोषान् घातय घातय महावीरवानर ज्वरान् बंध बंध ॐ ह्रां ह्रीं हुं हुं फट् स्वाहा॥इति मंत्रः॥इस मंत्रसे इक्कीस बार झाड दे तो सर्व जातिका ज्वर दूर हो ॥ अन्यत्-ॐ नमो भगवते छिंधि २ अमुकस्य ज्वरस्य शिरः प्रज्वलितपरशुपाणये पुरुषाय फट् ॥ इति मंत्रः ॥ इस मंत्रको लिखकर धारण करनेसे सर्व जातिका ज्वर शांत हो जाता है ॥ अन्यत्-ॐ विघ्नदानन हुं फट् स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ इस मंत्रको चूने कत्थेसे पानपर लिखकर खावे तो तीन दिनमें ज्वर शांत हो ॥ अन्यत्-

इस यंत्रको श्मशानके ठीकेरपर धतूरेके रससे लिखे कृष्णपक्षकी अष्टमी या चतुर्दशीको पूजन करके श्मशानमें गाडे और पूजन करे तो बालकोंका ज्वर तत्काल शांत हो जाता है ॥ इस त्रिशूली अथवा नवकोष्ठके यंत्रको कागज पर श्याहीसे लिखकर कंठ अथवा भुजामें बांधे तो ज्वर दूर हो ॥ अथ मंथरज्वरनिवारणतंत्रम्-

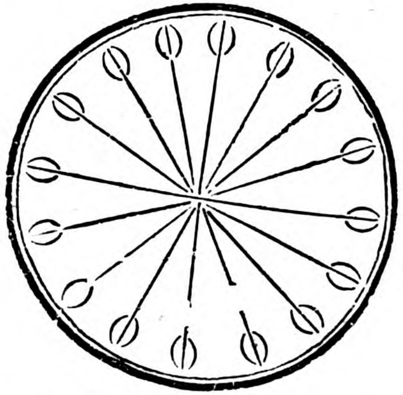
६	१४	५३
६	११६	१
४१	४५	८





ॐ नमो अंजनीपूत ब्रह्मचारी वाचा अविचलस्वामी उन काज सारिवां क्षां क्षः मगधदेशराय वडस्थान कितिहां मुसलीकंद ब्राह्मण तिणे मधुरो कियो ॥ इति मंत्रः ॥ करवा समेत गागर तीन ३ पानीसे भरे उसमें चंदन घिसकर डाले अगरकी धूप दे सफेद फूल [illegible] पीछे मंत्रको एकसो आठ वके पढे इस प्रकार सात दिन करे रोगीको हनुमानजीके

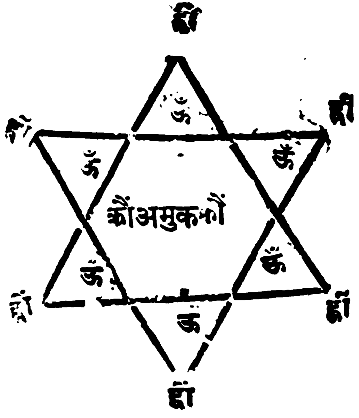
प्रसादकी भागी दाल खवोव तो आराम हो ॥ अथ संततज्वरतंत्रम्–कुत्तेके मतमें मट्टीकी गोली बनाकर घाममें सुखावे। इस गोलीको गलेमें बांधनेसे ज्वर उतर कर दुबारा नहीं चढता और तंत्रांतरोंमें लिखा है कि मकडीके जालेको गलेमें लटकानसे बुखार छूट जाता है ॥ ॥ अथ शीतज्वरतंत्रम्–सफेद कनैलकी जडको दाहिने हाथमें बांधनेसे शीतज्वर छूट जाता है ॥ अन्य शुष्कज्वरानिवारणतंत्रम्–ॐ वज्रहस्तो महाकायो वज्रपाणिर्महेश्वरः ॥ ताडितो वज्रदण्डेन भूम्यां गच्छ महाज्वर ॥ इति मत्रः ॥ इस मंत्रसे पानके बीडेको एकसो आठ बार अभिमंत्रित करके खवावे तो एकही दिनमें एकांतर ज्वर जाता रहेगा ॥ अन्यत्–ॐ गंगाया उत्तरे तीरे अपुत्रस्तापसो मृतः ॥ तस्मै तिलोदकं दद्यान्मुंचत्वैकाहिको ज्वरः ॥ इति मंत्रः ॥ इस मंत्रसे हाथमें पीपलका पत्ता लेकर उसमें तिल डालकर जलसे तर्पण करे तो ऐकाहिक ज्वर छोड देवे ॥ ॥ अन्यत्–ॐ बाणबुद्धे महा घोरे द्वादशार्कसमप्रभे ॥ जातोऽसौ सुमहावीर्यो मुंचत्वैकाहिको ज्वरः ॥ इति मंत्रः ॥ इस मंत्रको पीपलके पत्तपर लिखकर धारण करनेसे ऐकाहिक ज्वर छोड देता है ॥ ॥ तंत्रम्–औलकं दक्षिणं पक्षं सितसूत्रेण वेष्टयेत् ॥ बध्नाति वामकर्णे तु हरत्यैकाहिकज्वरम् ॥ इति ॥ अन्यत्–कर्कटस्य[1] बिलोद्भूतमृदा तत्तिलकं कृतम् ॥ ऐकाहिकज्वरं हंति नात्र कार्या विचारणा ॥ यंत्रम्–इस सोलह त्रिशूलवाल यंत्रको शनिवारके दिन डंडी[2] सुधा नीचे पडे हुए पीपलके पत्तेपर स्याहीसे लिखकर तीन तारके लाल सूतसे गलेमें बांधे तो एकांतर ज्वर छोड देता है इसमें संदेह नहीं हमारा सहस्रों बार परीक्षा किया हुआ है॥ ॥ अन्यत्–इस षट्कोण यंत्रको हल्दीद्वारा पानपर बबूलके कांटेसे लिखे



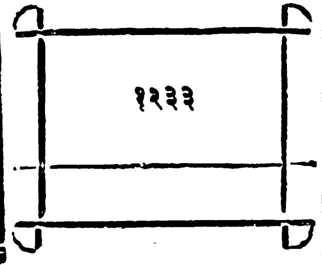
पजन करक रोगीको खवावे तो एकांतर दूर हो जायगा ॥ ॥ तृतीयज्वरनिवारणम्–अपामार्ग जटा कटयां लोहितैः सततन्तुभः ॥

१ कर्कटस्य–केकडा जंतु। २ जड।

वद्धा वारे रवेस्तूर्णं ज्वरं हंति तृतीयकम् ॥ यन्त्र—इस यन्त्रको लिखकर गलेमें बांधनेसे तिजारी दूर होजाती है॥ इस नवकोष्ठके यन्त्रको लिखकर बांधे तो तिजारी दूर हो ॥ चातुर्थिकज्वर निवारणतन्त्रम्—सहदेईकी जड नग्न होकर लावे इसको कानमें बांधनेसे चौथिया ज्वर दूर होजाता है ॥ रात्रिज्वरनिवारणतंत्रम्—काकमाचीभव मूलं कर्णे बद्धं निशिज्वरम् ॥ निहंति नात्र संदेहो यथा सूर्योदयस्तमः ॥ १ ॥ अथवा भांगरेकी जड डोरेसहित कानमें बांध तो रात्रिज्वर दूर हो ॥ २॥ अथ अर्शोनिवारणतंत्रम्—



६	१४	५२
६	॥६	१
४१	४५	८



ॐ काकाकता क्रोरीकर्ताॐकरतासे होय य रसना दशहूंस प्रकटे खूनी बादी बवासीर न होय।मन्त्र जानके न बतावे द्वादश ब्रह्महत्याका पाप होय लाख जप करे तो उसके वंशमें न होय शब्द सांचा पिंड काचा तो हनूमानका मन्त्र साचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा॥ इति मंत्रः॥ इस मन्त्रसे बासी पानीका इक्कीस बार अभिमंत्रित करके आबदस्त ले तो बवासीरकी पीडा दूर होकर कभी नहीं होगी और जो कोई इस मन्त्रका एक लाख जप करता है उसक वंशमें कभी बवासीरका रोग नहीं होता । और मन्त्र जानकर अर्शरोगीको जल पढा लेजानेक वास्ते नहीं कहता, उस मंत्रीको बारह ब्राह्मण मारनेकी हत्या लगती है । इसवास्ते जल पढा लेजानेकी सूचना अवश्य कर देनी चाहिये । कहेपर नहीं पढाकर लेजावे तो मंत्री दोषभागी नहीं होता । यह मन्त्र हमारा कई बार अनुभव किया हुआ है ॥ ॥ अन्यत्—ॐ उमती उमती चल चल स्वाहा ॥ इति मन्त्रः ॥ इस मन्त्रको २१ दफे पढकर लाल सूतमें

१ मकोय।

गांठ दव इसीतरह तीन गांठ देकर दहिने पैरके अँगूठेमें बांधे तो खूनी बवासीरकी पीडा दूर होजायगी । अनुभूतमेतत् ॥ डाढके कीडा झाडनेका मन्त्र–ॐ नमो आदेश गुरूको वनमें ब्याई अंजनी, जिन जाया हनुमंत । कीडा मकडा माकडा, ए तीनो भसमत । गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्–दिवालीकी रातसे एक लक्ष जपे तो सिद्ध हो पीछ पीछे नीमकी डालीसे झाड दे तो दर्दको तत्काल दूर करे । अगर इस मन्त्रसे कटाईके बीजोंका धूंवा डाढोंमें पहुँचावे तो सब कीडे पानीमें जा पडेंगे ॥ अन्यत्–ॐ नमो कीडरे तू कुंडकुंडाला,लालपूंछ तेरामुख काला, मैं तोहि पूंछूं कहां ते आया,तोड मांस सबको क्यों खाया,अब तू जाय भस्म होजाय, गोरखनाथके लागूं पाय,शब्द सांचा ।पिंड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मन्त्रः ॥ नीमकी डालीसे सात बार झाड दे तो सर्व जातिका कीडा मेर ॥ ॥ धरण ठिकाने आवे ॥ मंत्रो यथा–ऊंची नीची धरणी श्रीमहादेव की सरनी टली धरन आनूं ठौर सतसत भाखे श्रीगोरखराव ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–झाड कर सवा तीन मासाकी मुंदडी पहरावे तो धरन ठिकाने आवे ॥ अन्यत्–ॐ नमो नाडीनाडी नौसे नाडी बहत्तरसो कोठा चले अगाडी डिगे न कोठा चले न नाडी रक्षा करे जती हनुमंतकी आन मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः ॥ नौ गांठ सूतमें लगाकर छल्लेके माफिक बना ले उसको नाभिपर रखके मंत्र पढे उसके भीतर फूंक मारे तो थोडी देरमें धरन ठिकाने आ जायगी ॥ अन्यत्–वनमें संखाहूली फूले उसको हल्दीरंगे चांवलोंसे शनिवारको न्योता दे आवे, रविदिन प्रातःकाल जाकर सात प्रदक्षिणा करे हाथ जोडे शिर नवावे स्तुति करे सूर्यकी तर्फ मुख करके पीछे उसकी जडमें दूध डाले, पीछे खोद लावे इसको कमरमें बांधते ही धरण ठिकाने आ जाती है इसमें संदेह नहीं ॥ हूकका मंत्र–ॐ नमो सारकी छूरी धारका बान हूक न चले रे महम्मदा उवानकी आन शब्दसाचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–इकीस बार पढता जाय पैनी छूरीसे पृथ्वीपर लकीर निकालता जाय तो हूक बंद हो ॥ अथ प्लीहनिवारणमंत्रः–ॐ नमो हुताश पर्वत जहां सुरह गाय सुरहगायके पेटमें बच्छा बच्छाके पेटमें तिल्ली दबा दबा कर तिल्ली कटे

सरकंडा बढे फीहा कटे हरो फुरो ॥ इति मंत्रः ॥ छूरीसे पृथ्वीमें लकीर करकर काटता जावे मंत्र पढता जावे तो तिल्ली कटे ॥ कखलाईनिवारणार्थ मंत्र—ॐ नमो कखलाई भरी तलाई जहां बैठा हनुमंता आई पके न फूटे चले न पीडों रक्षा करे हनुमंत वीर, दुहाई गुरू गोरखनाथकी शब्द साचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा, सत्य नाम आदेश गुरूको ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—नीमकी डालीसे २१ दफे झाड कर पृथ्वीकी मट्टी उसपर लगा दे तो तीन ही दिनमें बैठ जायगी ॥ ॥ मंत्र रींघनबायका—ॐ नमो आदेश गुरुको ॐ नमो कामरूदेश कामाक्षा देवी जहां बसे इसमायल जोगी इसमायल जोगीके पुत्री तीन एक तोडे एक पिछोडे एक रींघनबाय तोडे शब्द साचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः ॥ मंगल और शनिवारको मनिहारीकी मोगरीसे झाड दे आराम हो सही ॥ ॥ सुखप्रसवमंत्रो यथा—ॐ मुक्ताः पाशा विमुक्ताशा मुक्ताः सूर्येण रश्मयः ॥ मुक्ताः सर्वभयाद्गर्भ एहि माचिर माचिर स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—इस मंत्रसे आठ बार जलको अभिमंत्रित करके गर्भिणी स्त्रीको पिलावे तो सुखसे बालक पैदा होजायगा ॥ अन्यत्—इस चक्रव्यूहयंत्रका कांसीकी थालीमें लिख धोकर पिलावे तो कष्टित स्त्री खलास हो ॥ ॥ इसे तीसके यंत्रको लिखकर स्त्रीको दिखानेसे तत्काल बालक उत्पन्न हो जाता है ॥ अन्यत्—ऐं ह्रीं भगवति भगमालिनि चल चल भ्रामय पुष्पं विकासय विकासय स्वाहा ॥ अन्यत्—ॐ नमो भगवते मकरकेतवे पुष्पधन्वने प्रतिचालितसकलसुरासुरचित्ताय युवतीभगवासिने ह्रीं गर्भं चालय चालय स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ इन दोनों मंत्रोंमेंसे किसी के द्वारा दूधको अभिमंत्रित करके स्त्रीको पिलावे तो बालकका जन्म सुखपूर्वक हो ॥ नेत्रपीडानिवारणमंत्रः—ॐ नमो श्रीरामकी धनुही बाण आंख दर्द करे तो लक्ष्मण कुमारकी आन ॥ इति मंत्रः ॥ नीमकी डालीसे इक्कीसबार झाड दे तो तीन दिनमें आंखकी

तीसायंत्र

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

चक्रव्यूह

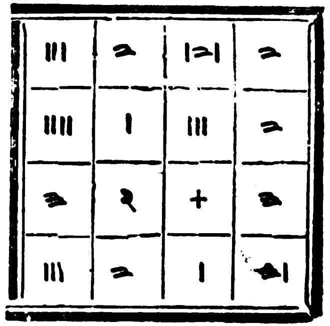


पीडा दूर होजायगी इसमें संदेह नहीं, अनुभूतमेतत्॥ अन्यत्–ॐ नमो झलमलजहरभरी तलाई अस्ताचल पर्वतसे आई जहां बैठा हनुमंता जाई फूटे न पाके करै न पीडा जती हनुमंत हरे पीडा मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा सत्य नाम आदेश गुरुको ॥ इति मंत्रः ॥ यह मंत्र पढ नीमकी डालीसे झाड दे तो दर्द मिटे ॥ मंत्र कंठबेलका–ॐ नमो कंठबेल त द्रुमद्रुमाली सिरपर जकडी वज्रकी ताली गोरखनाथ जागता आया बढती बेलको तुरत घटाया जो कुछ बची ताहि मुरझाया घट गई बेल बढन नाहिं पावे बैठी तहां उठन नहिं पावे फूटे और पीडा करे तो गुरू गोरखनाथकी दुहाई सत्य नाम आदेश गुरूको मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः ॥ सात दिन चाककी नोकसे झाडे २१ बार धरतीपर लकीर निकाले तो कंठबेल मिटे ॥ अदीठमंत्रः–ॐ नमो सिर कटा नख कटा विष कटा अस्थिमेदमज्जागत फोडा फुनसी अदीठदुंबल दूखना रैत्यावरोगगींघणबायजाय चौंसठ जोगनी बावन वीर छप्पन भैरू रक्षा कीजे आय शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा सत्य नाम आदेश गुरूको ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–मोरपंखसे पृथ्वी साफ करके सात बार मंत्र पढे और चुटकी१धूलकी उठाकर फोडेके चारोंतरफ लगादेवे ऐसेसातदिन करे तो अदीठ जाय॥ ॥ बिच्छू झाडनेका मंत्र–ॐ नमो आदेश गुरूको कालो बिच्छ कांकरवालो उत्तर बिच्छू न कर टालो उतरै तो उतारूं चढे तो मारूं गरुडमोरपंख हकालूं शब्द साचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इस मंत्रसे झाड दे तो बिच्छूका विष उतरे ॥ ॥ अन्यत्–काला बिच्छू कंकरवाला हरी पूंछ भैंराला सोनाका गाडू रूपेका पतनाला आठ गांठ नौ कोर नीचे बिच्छू ऊपर मोर कौन मोरा रेतो भकभकार बिच्छू रेतो बावन वीर नीड निकोरके कौन वेद मातुषपर गया खाते जाते लागी बार उतर रे बिच्छू तुझे ख्वाजममंदीनचिरागतृष्टीकी आन ॥ इति मंत्रः॥ अस्य विधानम्–जहांतक विष चढा हो वहां पकडकर बुहारीसे झाड दे जैसे जैसे उतरे आप भी नीचे पकडता रहे जगहपर आवे तब झाडना बंद करके डंकके ऊपर तेलिया मोहरा पानीमें घिसकर लगावे तो डंक भी अच्छा होवे ॥ ॥ सर्प झाडनेका मंत्र–खं खः ॥ इति द्व्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–जो कोई सर्प काटनेकी खबर दे

तो पानीको एकसो आठ बार अभिमंत्रित करके खबर देनेवाले मनुष्यको देकर कह दे कि जाकर पिलादे इस पानीके पीनेसे सर्पका जहर उतर जाता है ॥ अन्यत्--ॐ नमो भगवति वज्रमये हन हन ॐ भक्ष भक्ष ॐ खादय खादय ॐ अरिरक्तं पिब कपालेन रक्ताक्षि रक्तपटे भस्माङ्गि भस्मलिप्तशरीरे वज्रायुधे वज्रकरांचिते पूर्वां दिशं बंध बंध ॐ दक्षिणां दिशं बंध बंध ॐ पश्चिमां दिशं बंध बंध ॐ उत्तरां दिशं बंध बंध ॐ नागान् बंध बंध ॐ नागपत्नीं बंध बंध ॐ असुरान् बंध बंध ॐ यक्षराक्षसपिशाचान् बंध बंध ॐ प्रेतभूतगंधर्वादयो ये केचिदुपद्रवास्तेभ्यो रक्ष रक्ष ॐ ऊर्ध्वं रक्ष रक्ष ॐ अधो रक्ष रक्ष ॐ क्षुरिके बंध बंध ॐ ज्वल महाबले घट घट ॐ मोटि मोटि सटावलि वज्राग्नि वज्रप्रकारे हुं फट् ह्रीं ह्रीं श्रीं फट् ह्रीं हः फूं फें फः सर्वग्रहेभ्यः सर्वव्याधिभ्यः सर्वदुष्टोपद्रवेभ्यो ह्रीं अशेषेभ्यो रक्ष रक्ष विषं नाशय अमुकस्य सर्वाङ्गानि रक्ष रक्ष हु फट् स्वाहा ॥ इति मंत्रः॥ अस्य विधानम्--जलको तीन बार अभिमंत्रित करके पिलावे तो विष उतरे सही ॥ अन्यत्--ॐ ह्रुं सं ॐ नालकांतिदंष्ट्रिणि भीमलोचने उग्ररूपे उग्रतारिणि छिलि किलि रक्तलोचने किलि किलि घोरनिःस्वने कुलु कुलु ॐ तडिज्जिह्वे निर्मांसे जटामुंडे कट कट हन हन महोज्ज्वले चिलि चिलि मुंडमालाधारिणि स्फोटय स्फोटय मारय मारय स्थावरं विषं जंगमं विषं नाशय नाशय ॐ महारौद्रि पाषाणमयि विषनाशिनि वनवासीनि पर्वतविचारिणि कहकह ॐ हसहस नमनम दहदह क्रुधक्रुध ॐ नीलजीमूतवर्णे विस्फुरविस्फुर ॐ घंटानादिनि ललजिह्वे महाकाये क्षुं हुं आकर्ष२ विषं धनधन हेहर यं ज्वालामुखि वज्रिणि महाकाये अमुकस्य स्थावरजंगमविषं छिन्धि २ किटि२ सर्वविषनिवारिणि हुंफट् ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--पहाड़के पत्थरका एक नीलवर्ण टुकडा अभिमंत्रित करके सर्पके डंकपर चिपका देवे और मंत्रको पढता रहे तो जबतक विष रहेगा तबतक पत्थर वहांहीं चिपका रहेगा । विष निःशेष होनेपर आपही आप पत्थर अलग होजायगा इसमें संदेह नहीं ॥ अन्यत्--इस मंत्रको कागजपर स्याहीसे लिखकर धोवे और सर्प काटे हुए मनुष्यको पिलावे तो सर्पका विष तत्काल उतर जायगा, चढेगा नहीं ॥ सर्पकीलनमंत्रः--ॐ नमो सर्पा रे तू थूलमथूला मुख तेरा बना कमलका फूला सर्पा रे सर्पा बांधुं तेरी दाढीभुवा जिनने तोकूं गोद खिलाया

सर्प रे सर्प बांधूं तेरा रतन कटोरा जामें तोकूं दूध पिलाया सर्प रे सर्प बीज कीलनी बीजपान मेरा कीला करै जो घाव तेरी डाढ भस्म होजाय गुरु गोरख भी जाय जलाय ॐ नमो आदेश गुरूको मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः ॥ इस मंत्रको शिवरात्रिसे प्रारंभ करके वर्ष दिनपर्यंत सवा प्रहर तक असंख्य जपे तो सिद्ध हो ॥ पीछे आरनेकी भस्म सातबार मंत्रसे सर्पपर डाले तो सर्पकी डाढ बंद होजायगी पीछे खिलौनेके माफिक उठा लेवे ॥ सर्पकीलनमंत्रः–बजरी बजरी बजरकिवाड बजरी कीलूं आस पास मरे सांप होय खाख मेरा कीला पत्थर कीले पत्थर फूटे न मेरा कीला छटे मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः॥इस मंत्रसे सांपके एक कांकरी मारे तो सांप कील जाय ॥ ॥ सांप

सर्पविषनाशकयन्त्रम्.



खोलनेका मंत्र--कीलन भई कुकीलनि, वाचा भया कुवाच । जाहु सर्प घर आपने, चुग फिर चारों मास ॥ इति मंत्रः ॥ अन्यत्–पहरे भगवे कपडे कर मरदाना भेस बंधीबंधी पन छुटगई फिरिआ चारो देश मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः ॥ इस मंत्रको पढ कांकरी मारे तो कीला हुआ सांप छूट जाय ॥ सर्पोंको भगानका मंत्र--ॐ ह्रः सपकुलाय स्वाहा अशेषकुलसर्पकुलाय स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ इस मंत्रसे सात बार मृत्तिकाको अभिमंत्रित करके घरमें डाले तो सर्प भाग जायँगे ॥ बावले कुत्तेका मंत्र--ॐ कामरू देश कामाक्षा देवी जहां बसै इसमायल जोगी इसमायलजोगीका झामरा कुत्ता सोनाकी डाढ रूपा का कूंडा बंदर नाचे रीछ बजावे सीता बैठी औषध बांटे कूकरका विष भाजे शब्द साचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः ॥ इस मंत्रसे झाड दे तो बावले कुत्तेका विष उतर जायगा पीछे किसी तरहकी पीडा नहीं होगी ॥ ॥ तंत्रांतरेऽपि–ॐ नमो आदेश गुरूको आदेश कामरू देशकाझबरा कुत्ता हुकनबुके सुषपसुसे शब्द साचा पिण्ड काचा फुरो मंन्त्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–मोरपंखसे १०९ बार झाड दे और शनिदिन तोले ३ चावल भिगोवे रविको पीसकर दो गोली

बनाव पीछे लीपकर रोगीको बिठावे और सूर्यकी तरफ मुख करके गोली फेरे मंत्र पढता रहे तो कुत्तेके दंशके बाल गोली में निकलेंगे—पीछे मंत्र पढ दूसरी गोली फेरे तो उसमें भी निकलेंगे—इसी प्रकार रविवारसे ३ दिन झाड देवे—वर्ष दिन पर्यन्त दर्पण न देखे—उडद तेलकी वस्तु—खटाई—अचार न खाय--पानीमें मुख न देखे—इति ॥ ॥ आधासीसीका मंत्र—ॐ नमो वनमें ब्याई वानरी, उछल वृक्षपै जाय ॥ कुद कुद शाखातपै, कच्चे वनफल खाय ॥ आधा तोडे आधा फोडे, आधा देय गिराय ॥ हुंकारत हनुमानजी, आधाशीसी जाय ॥ इति मंत्रः ॥ वनमें ब्याई अंजनी, कच्चे वनफल खाय ॥ हांक मारी हनुमंतने, इस पिंडसे आधासीसी उतर जाय ॥ इति मंत्रः ॥ विभूतिसे झाड दे तो आधासीसीसे सिर दुखना अच्छा हो ॥ इस नवकोष्ठके यंत्रको लिखकर सिरमें बांधे तो आधासीसी दूर हो ॥ इस चार कोठे वाले यंत्रको स्याहीसे कागजपर लिखके माथेमें बांधे तो निश्चयपूर्वक अधासीसी नष्ट हो जाती है। यह यंत्र गुप्त था ॥ कमल झाडनेका मंत्र—ॐ नमो वीरवैताल असराल नार सिंहदेव खादी तुषादी पीलियाकूं भिदाती कारे झारे पीलिया रहै न नेकनिशान जो कहीं रह जाय तो हनुमंतकी आन मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः ॥ रोगीके सिरपर काँसेकी कटोरीमें तेल भरकर धरे मंत्र पढकर कुशासे चलाता जावे तेल पीला होजाय तब उतार लेवे तो सब पीलिया तीन दिनमें उतर आवेगा ॥ ॥ अथ दर्द और थनयलका मंत्र—ॐ वनमें जाई वानरी, जिन जाया हनुमंत ॥ सजा खधा ठाकिया, होगया भस्मीभूत ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—छानेकी राखसे स्त्रीका दाहिना स्तन दुखे तो अपना बायां अगर स्त्रीका बायां स्तन दुखे तो अपना दाहिना स्तन झाड ७ बार झाडे तो उस स्त्रीका स्तन आराम हो जायगा ॥ जमोगाका मंत्र—सुन रे जमोगे मतिकर अभिमान, तेरा नहीं दुनियामें [illegible], बालक दिया है श्रीभगवान। बचोगे नहीं तू जिमी आसमान, दुहाई ओघडकी छू खेदके मारता हूं ॥ इति मंत्रः॥ रामसरकी

५६	१	४४
२०	३८	४९
२८	६२	१४

५३	४२६
३११	७०

तीर कमान बनावे और मंत्र पढके तीर बालकके मारे तो जंभुवेकी पीडासे छूट जाय। अनुभूतमेतत् ॥ मंत्र डब्बा पसली झाडनेका—सत्य नाम आदेश गुरूका उंखंखारी खंखारा कहां गया सवालाख पर्वतो गया सवालाख पर्वतों जाय कहा करेगा सवा भार कोइला करेगा सवाभार कोइला कर कहा करगा हनुमंत वीर नव चन्द्रहासखड्ग गढेगा नव चन्द्रहास खड्ग गढ कहा करेगा जानवा डौरू पांसलीबाय काटकूट खारी समुद्र नाखेगा जगद्गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः ॥ तिलका तेल और सिंदूरसे झाड दे तो आराम होवे ॥ अथ द्यूते विजयकरणं दत्तात्रेयतंत्रे—गृहीत्वा पुष्यनक्षत्रे श्वेतगुंजां च मूलकम् ॥ धारयेद्दक्षिण हस्ते द्यूतकार्ये जयो भवेत् ॥ अन्यत्—धत्तूरं करवीरं च अपामार्गस्य मूलकम् ॥ हरितालसमायुक्तं तिलकं सदिने कृतम् ॥ अजाक्षीरेण संपेष्य क्षणे राजकुले जयी ॥ विरोधे द्यूतकार्ये च नान्यथा शंकरोदितम् ॥ अन्यत्—हस्तनक्षत्र होय रवि, ता दिन ऐसा करै उपाय ॥ न्यौतै पेड पवाडका, दिन पहले ही जाय ॥ रविदिन ताको लायके, बांध दाहिनी बांह ॥ खेले जूवा जो कोई, जीतै संशय नाहि ॥ ॥ अन्यत्—इस यंत्रको अरंडके पत्तेपर कौवेके परसे स्याहीद्वारा रात्रिके समय शुद्ध होकर लिखे इस चौंसठ कोठेके यंत्रको 'मेखैरकंदयेरूपाकजिजनंदनीचनः छदावींयमंत्रंतेषहेष्ठिवामोक्षिणपात्रम् ॥' इस बत्तीस अक्षरके मंत्रको अनुलोम और विलोम रीतिसे लिखके भुजामें धारण करे पीछे जुवा खेले तो जीतेही

द्यूतविजयकरणयन्त्रम् ।

मे	खै	र	कं	द	ये	रू	पा
क	जि	ज	नं	द	नी	च	तः
छ	दा	वीं	य	मं	त्रं	ते	ष
हे	ष्ठि	वा	मो	क्षि	ण	पा	त्रं
त्रं	पा	ण	क्षि	मो	वा	ष्ठि	हे
य	ते	त्रं	मं	य	वीं	दा	छ
तः	च	नी	द	तं	ज	जि	क
पा	रू	ये	द	कं	र	खै	मे

जीतेगा ॥ इस सोलह कोठेके यंत्रको अष्टगंधसे भोजपत्रपर लिख धूप देकर भुजामें बांधे पीछे जुवा खेले तो कभी हारे नहीं जीतेही जीते ॥ अथ विक्रयवर्धनोपायः—भँवरवीर तू चेला मेरा खोल दुकान कहा कर मेरा उठे जो डंडी बिके जो माल भँवरवीर सोखे नहि जाय ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—रविवारके दिन काला उडद लेकर उसपर इक्कीस बार मंत्र पढक दुकानमें डाल देवे तो तीन रविवारोंमें बिक्री चौगुनी होजायगी । अनुभूतमेतत् ॥ अन्यत्—याअववाविर्रिज्कुल्फतहदुकानअमुकस्यवसतनअमुकस्यजारीगईवहकथाफताहोयावासितो॥इति मंत्रः । अस्य विधानम्॥ शुक्लपक्षकी पहिली बृस्पतिको सात यंत्र लिखे पंचोपचार पूजन करे लोबान देवे मंत्रको एकसो आठदफे पढे पीछे प्रतिदिन एक यंत्रकी बत्ती बनाकर मीठे तेलके साथ दुकानपर जलावे तो सात ही दिनमें बंद हुई बिक्री जारी होजायगी इसमें संदेह नहीं ॥ अथ गोमहिषीणां दुग्धवर्धनोपायो वीरभद्रोड्डीशतंत्रे—ॐ ह्रीं करालिनि पुरुषसुखं मुखं ठं ठः ॥ इति पंचदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अनेन मंत्रेण तृणादिकं अष्टोत्तरशतमभिमंत्र्य गोमहिष्यादीनां दातव्यं अतिक्षीरदास्ता भवंति ॥ अथास्य यंत्रम्—इस यंत्रको केसर अथवा गोरोचन अथवा कुंकुमसे भोजपत्रपर लिखकर गौके गलेमें और भैंसके सींगमें गूगलकी धूप देकर बांधे तो वह बच्छा लगाने लगेगी और दूध बहुत देवेगी ॥ अथ फलवृद्धियंत्रम्—इस यंत्रको जंभीरी नींबूके रससे भोजपत्रपर या कागजपर लिखकर अनारके पेडमें बांधे तो उसमें अनार बहुत लगेंगे और भी जिस वृक्षमें बांध दोगे उस वृक्षमें फल बहुत आवेंगे ॥ कन्यायाः पतिगृहे वासोपायः—ॐ नमो भोगराज भयंकर परिभूय उत उधरइं जोइ जोइ देखे

विक्रीयवर्द्धकयन्त्रम् ।

८२४	८२७	८३०	८१६
८२९	८१७	८२३	८२८
८१८	८२३	८२५	८२२
८२६	८२१	८१९	८३१

धूतेविजयकरणयन्त्रम् ।

१	२५।	२३।	२३।
३२।।।	२७।।	३५।।	३६।।
१।।	९।।	२४।।	१९।।
२६।	९।।।	५।।।	४।।।

दुग्धवर्धकयन्त्रम् ।

२८	३५	२	७
६	३	३२	३१
३४	२९	८	१
४	५	३०	३१

मारकर तासो सो बीखे पाव परंता ॐ नमो ठः ठः स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—सांभरलोनकी एकसो आठ कांकरी मंत्रित करके खिलावे तो लडकी सासुरेमें रहे रूठकर आवे नहीं ॥ अथ कलहनाशनं दत्तात्रेयतंत्रे—तालकं तक्रपिष्टेन मृत्तिकायुक्तपुत्तलीम् ॥ निखनेयद्गृहे भूमौ कलहो नाशमाप्नुयात् ॥ अथ अनावृष्टिकाले वृष्टिकरणं वीरभद्रोड्डीशतंत्रे—ॐ काली काली स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अननाश्वत्थसमिधं घृताक्तां जुहुयात् सहस्राहुतिहोमेन महावृष्टिर्भवति ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे उत्तरखण्डे षट्कर्मतंत्रे शान्त्याख्यः सप्तमस्तरंगः ॥७॥

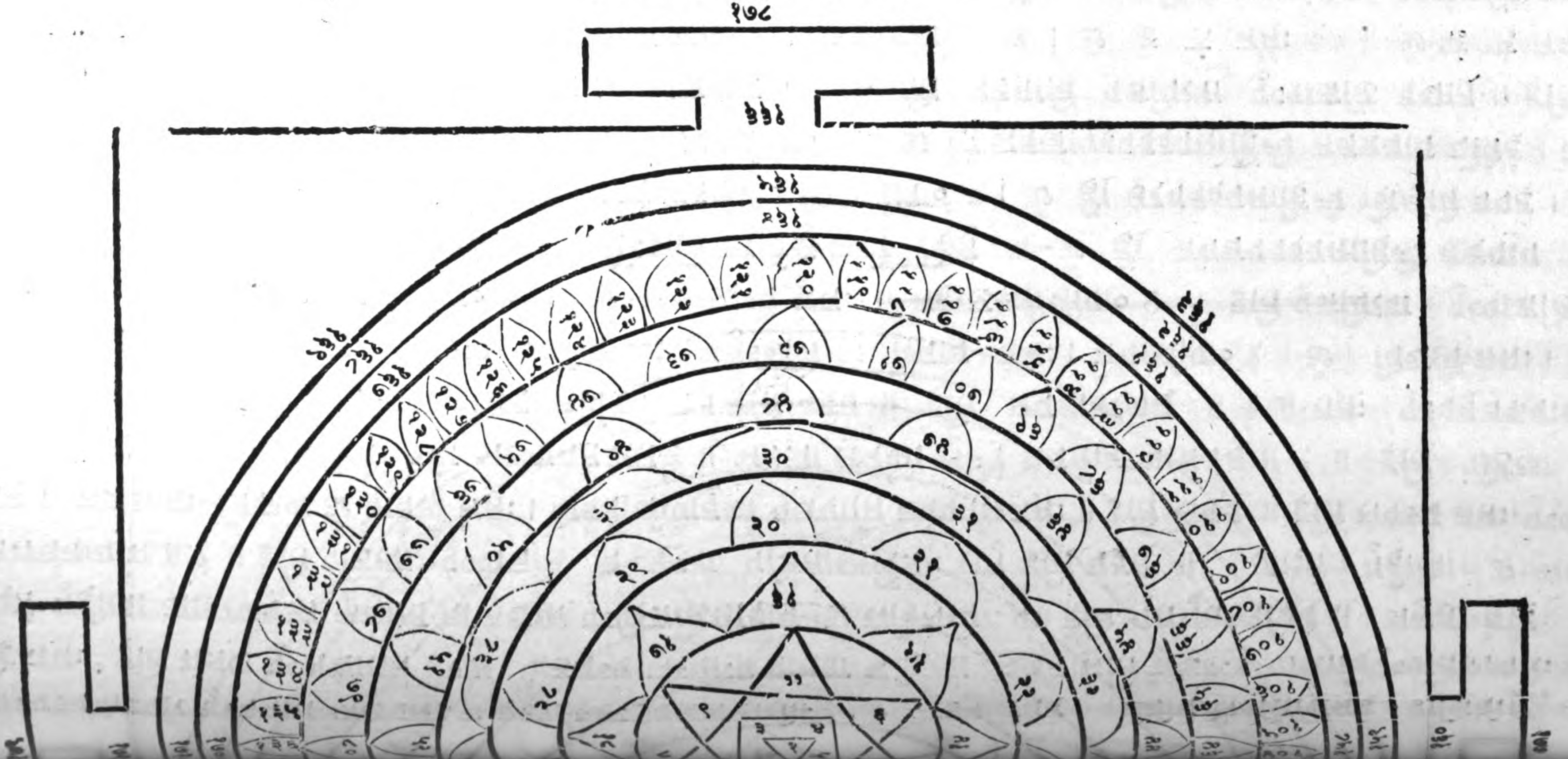
कलहच्छिदं

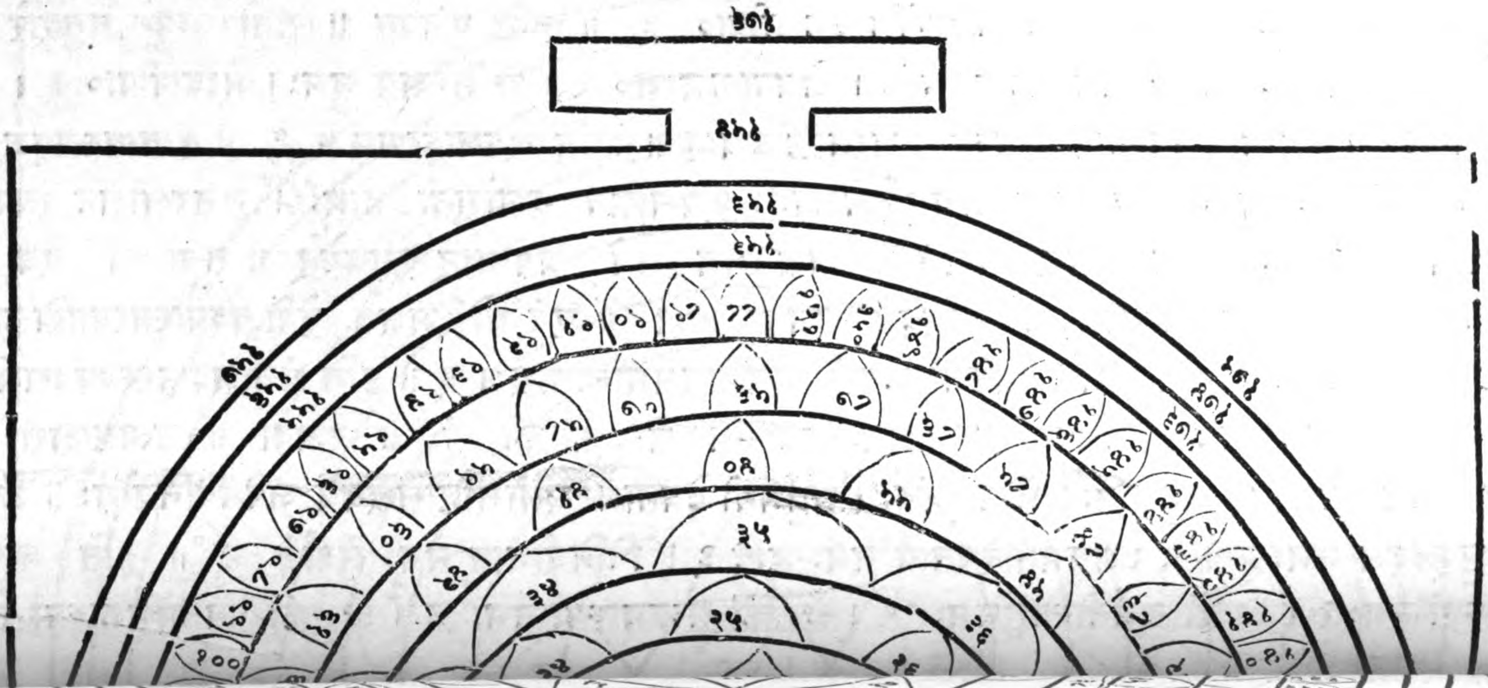
८७	१४	२	८
७	३	११	११
१३	८८	१०	१
४	६	८६	१२

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ वशीकरणादितंत्रप्रारंभः ॥ तत्रादौ स्वयंवरकलामंत्रप्रयोगो मंत्रमहोदधौ–अथोच्यते विवाहाप्त्यै स्वयंवर कला शिवा ॥ मंत्रा यथा–ॐ ह्रीं योगिनिरयोगेश्वरि २ योगभयंकरि सकलस्थावरजंगमस्य मुखं हृदयं मम वशमाकर्षयाकर्षय स्वाहा ॥ इति पंचाशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अस्य स्वयंवरकलामंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। जगती छंदः। देवी गिरिपुत्री स्वयंवरा देवता। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि १। जगतीच्छंदसे नमः मुखे २। देवीगिरिपुत्रीस्वयंवरादेवतायै नमः हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वांङ्गे ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ह्रीं जगत्रयवश्यमोहिन्यै अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ह्रीं त्रैलोक्यवश्यमोहिन्यै तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ ह्रीं उरगवश्यमोहिन्यै मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ ह्रीं सर्वसज्जनवश्यमोहिन्यै अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ ह्रीं शवस्त्रीपुरुषवश्यमोहिन्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ ह्रीं सर्ववश्यमोहिन्यै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ह्रीं जगत्रयवश्यमोहिन्य हृदयाय नमः १। ॐ ह्रीं त्रैलोक्यवश्यमोहिन्यै शिरसे स्वाहा २। ॐ ह्रीं उरगवश्यमोहिन्यै शिखायै वषट् ३। ॐ ह्रीं सर्वराजवश्यमोहिन्यै कवचाय हुं ४। ॐ ह्रीं शवस्त्रीपुरुषवश्यमोहिन्यै नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ ह्रीं सर्ववश्यमोहिन्यै अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ इति विन्यस्य मूलमंत्रेण पादादिमूर्द्धांतं व्यापकं कुर्यात् ॥ इति न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ ॐ शंभुं जगन्मोहनरूपपूर्णं विलोक्य लज्जाकुलितां स्मिताढ्यम् ॥ मधूकमालां स्वसखीकराभ्यां संबिभ्रतीमद्रिसुतां भजेयम् ॥ १ ॥ इति ध्यायेत् ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले आधारशक्त्यादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ आं आधारशक्त्यादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति पीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तद्यथा पूर्वादिक्रमेण अष्टसु दिक्षु–ॐ जयायै नमः १। ॐ विजयायै नमः २। ॐ अजितायै नमः ३। ॐ अपराजितायै नमः ४। ॐ नित्यायै नमः ५। ॐ विलासिन्यै नमः ६। ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७। ॐ अघोरायै नमः ८। मध्ये ॐ मंगलायै नमः ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततस्त्रिकोणचतुरस्रषट्[illegible]दलं षोडशदलं द्वात्रिंशच्चतुःषष्टिदलं च तद्बाह्ये वृत्तत्रयं त्रिरेखात्मकं भूपुरं च स्वर्णादिपत्रे यंत्रं निर्माय ताम्रपात्रे संस्थाप्य

घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य 'ॐ सर्वबुद्धिप्रदे वर्णनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकिनीये स्वयंवरे एह्येहि नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्य्यात् ॥ तद्यथा पुष्पांजलिमादाय—ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ॥ अनुज्ञां देहि देवेशि परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्य्यात् ॥ तत्र क्रमः—त्रिकोणे ॐ पार्वत्यै नमः । पार्वतीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ इति सर्वत्र ॥ इति संपूज्य ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य—अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घ्याद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततः पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची । तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमण चतुष्कोणे ॐ मेधायै नमः । मेधाश्रीपा० १ । ॐ विद्यायै नमः । विद्याश्रीपा० २ । ॐ लक्ष्म्यै नमः । लक्ष्मीश्रीपा० ३ । ॐ महालक्ष्म्यै नमः । महालक्ष्मीश्रीपा० ४ । इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यादिति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततः षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च—ॐ ह्रीं जगत्त्रयवश्यमोहिन्यै हृदयाय नमः । हृदयश्रीपा० १ । ॐ ह्रीं त्रैलोक्यवश्यमोहिन्यै शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० २ । ॐ ह्रीं उरगवश्यमोहिन्यै शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ३ । ॐ ह्रीं सर्वराजवश्यमोहिन्यै कवचाय हुं । कवचश्रीपा० ४ । ॐ ह्रीं शत्रुस्त्रीपुरुषवश्यमोहिन्यै नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । ॐ ह्रीं सर्ववश्यमोहिन्यै अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ ॥ इति षडंगानि पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततोऽष्टदले प्राचीक्रमेण—ॐ अं आं नमः १ । ॐ इं ईं नमः २ । ॐ उं ऊं नमः ३ । ॐ ऋं ॠं नमः ४ । ॐ लृं ॡं नमः ५ । ॐ एं ऐं नमः ६ । ॐ ओं औं नमः ७ । ॐ अं अः नमः ८ ॥ इति स्वरान्संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥ ४ ॥ ततः प्रथमदिग्दले इन्द्रादिदश दिक्पालान् द्वितीयदिग्दले वज्राद्यायुधानि च पूजयित्वा पुष्पांजलिं

स्वयंवरकला-पूजनयन्त्रम् ।





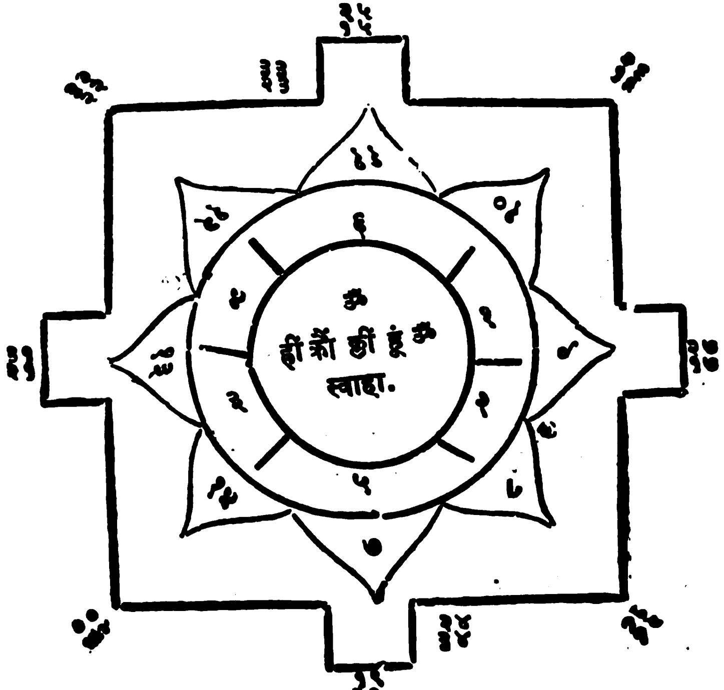
दद्यात् ॥ इति पंचमावरणम् ॥ ५ ॥ ततः षोडशदले ॐ श्रीं रमायै नमः । रमाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ इति मंत्रेण षोडशदले रमां पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति षष्ठावरणम् ॥ ६ ॥ ततो द्वात्रिंशद्दले ॐ ह्रीं क्रौं शिवायै नमः । शिवाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ इति द्वात्रिंशद्दले शिवां पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति सप्तमावरणम् ॥ ७ ॥ ततश्चतुःषष्टिदले श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिपुरायै नमः । त्रिपुराश्रीपा० ॥ इति मंत्रेण चतुःषष्टिदले त्रिपुरां पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्यष्टमावरणम् ॥ ८ ॥ ततो वृत्तत्रये प्रथमवृत्ते ॐ महालक्ष्म्यै नमः । महालक्ष्मीश्रीपा० १ ॥ द्वितीयवृत्ते ॐ भवान्यै नमः । भवानीश्रीपा० २ ॥ तृतीयवृत्ते ॐ पुष्पसायकायै नमः । पुष्पसायकाश्रीपा० ३ ॥ इति पूजयेत ॥ ततो भूपुरे चतुर्द्वारे पूर्वादिक्रमेण ॐ विघ्नेशाय नमः । विघ्नेशश्रीपा० १ । ॐ क्षेत्रपालाय नमः । क्षेत्रपालश्रीपा० २ । ॐ भैरवाय नमः । भैरवश्रीपा० ३ । ॐ योगिन्यै नमः ॥ योगिनीश्रीपा० ४ ॥ इति द्वारपालान् संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति नवमावरणम् ॥ ९ ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादि नमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं चतुर्लक्षजपः । पायसान्नेन दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्य्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षचतुष्कं तद्दशांशतः ॥ पायसान्नेन जुहुयात्पीठे पूर्वोदिते यजेत् ॥ १ ॥ एवं यो भजते देवीं वश्यास्तस्याखिला जनाः ॥ लाजैस्त्रिमधुरोपेतैर्जुहुयादयुतं तु यः ॥ २ ॥ लभते वांछितां कन्यां धनमानसमन्विताम् ॥ ३ ॥ इति पंचाशदक्षरस्वयंवरामंत्रप्रयोगः ॥ १ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ मधुमतीमंत्रप्रयोगो मंत्रमहोदधौ—आं ह्रीं क्रौं क्लीं हुं ॐ स्वाहा ॥ इत्यष्टाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अस्य मधुमतीमंत्रस्य मधुऋषिः । त्रिष्टुप् छंदः । मधुमती देवता । ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ मधुऋषये नमः शिरसि १ । त्रिष्टुप्छंदसे नमः मुखे २ । मधुमतीदेवतायै नमः हृदि ३ । विनियोगाय नमः सर्वांगे ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ आं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ क्रौं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ हुं

कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६॥ इति करन्यासः ॥ ॐ आं हृदयाय नमः १। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ क्रों शिखायै वषट् ३। ॐ क्रीं कवचाय हुं ४। ॐ हं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ ॐ अहिलतादलनीलसरोजयुक्करयुगां माणिकांचनपीठगाम् ॥ अमरनागवधगणसेवितां मधुमतीमखिलार्थकरीं भजे ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले आधारशक्त्यादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य ' ॐ आधारशक्त्यादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति पीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तीः पजयेत् ॥ तद्यथा पूर्वादिक्रमेण अष्टसु दिक्षु—ॐ जयायै नमः १। ॐ विजयायै नमः २ । ॐ अजितायै नमः ३। ॐ अपराजितायै नमः ४। ॐ नित्यायै नमः ५। ॐ विलासिन्यै नमः ६। ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७। ॐ अघोरायै नमः ८। मध्ये ॐ मंगलायै नमः ९॥ इति नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य' ॐ सर्वबुद्धिप्रदे वर्णनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकिनीये मधुमत्येह्येहि नमः ' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्य्यात् ॥ तद्यथा पुष्पांजलिमादाय—संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ॥ अनुज्ञां देहि मे मातः परिवारार्चनाय ते ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्य्यात् ॥ ततः षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च—ॐ आं हृदयाय नमः । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १॥ इति सर्वत्र ॥ ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० २। ॐ क्रों शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ३। ॐ क्रीं कवचाय हुं । कवचश्रीपा० ४। ॐ हूं नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ५। हौं अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य्य—अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पां

जलिं च दत्त्वा पजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची । तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण—ॐ निद्रायै नमः । निद्राश्रीपादुकां० १ । ॐ छायायै नमः । छायाश्रीपा० २ । ॐ क्षमाय नमः । क्षमाश्रीपा० ३ । ॐ तृष्णायै नमः । तृष्णाश्रीपा० ४ । ॐ कांत्यै नमः । कांतिश्रीपा० ५ । ॐ आर्य्यायै नमः । आर्य्याश्रीपा० ६ । ॐ श्रुत्यै नमः । श्रुतिश्रीपा० ७ । ॐ स्मृत्यै नमः । स्मृतिश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ शक्तीः पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ ततो भूपुरे इंद्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपज्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणमष्टलक्षजपः । बिल्वपत्रैर्दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्य्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति ॥ सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च—प्रजप्य वसुलक्षं तद्दशांशं जुहुयाद्दलैः ॥ बिल्वोत्थैः पजयेत्पीठे जयादिनवशक्तिके ॥ १ ॥ य इत्थं सेवते देवीं स समृद्धेः पदं लभेत् ॥ रक्तांभोजैर्हुतैर्मंत्री भूपतिं वश्यतां

मधुमतीपूजनयन्त्रम् ।

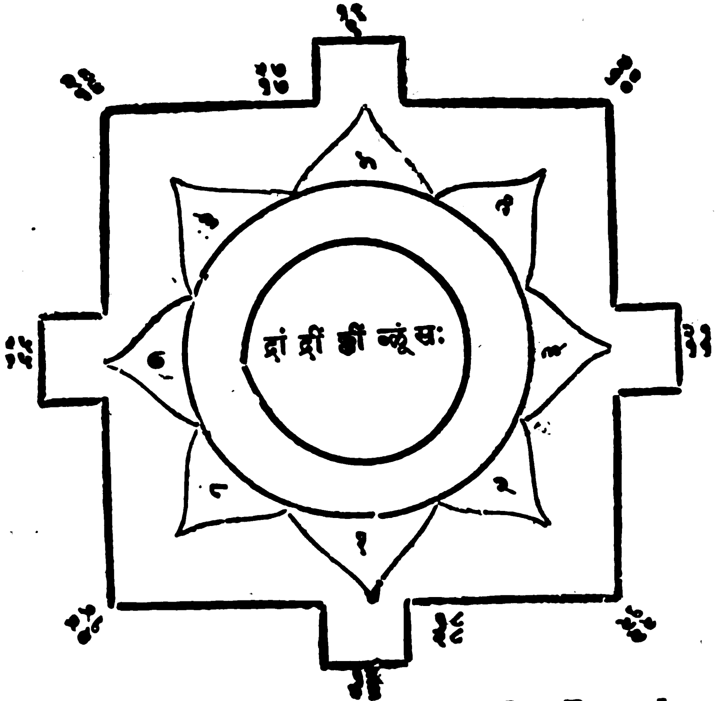


नयेत् ॥ नानाभोगान्पायसेन तांबूलैर्वामलोचनाम् ॥ २ ॥ इत्यष्टाक्षरमधुमतीमंत्रप्रयोगः ॥ अन्यः—पें ॥ इत्येकाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य पूजनं सर्वं पूर्ववत् ॥ तथा च—पूर्ववद्यजनं चास्य ध्यायेद्देवीं कुमारिकाम् ॥ कोटयर्द्धं तु जपं कुर्वन्विद्यापारंगमो भवेत् ॥ मधुमत्या

सभा नान्या नानाभोगसुखप्रदा ॥ इत्येकाक्षरमधुमतीमंत्रप्रयोगः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ बाणेशीमंत्रप्रयोगो मंत्रमहोदधौ– द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः ॥ इति पंचाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अस्य बाणेशीमंत्रस्य संमोहन ऋषिः । गायत्री छंदः । बाणेशी देवता । ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ संमोहनऋषये नमः शिरसि १ । गायत्रीच्छंदसे नमो मुखे २ । बाणेशीदेवतायै नमो हृदि ३ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ द्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । द्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ । क्लीं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ब्लूं अनामिकाभ्यां नमः ४ । सः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ द्रां हृदयाय नमः १ । द्रीं शिरसे स्वाहा २ । क्लीं शिखायै वषट् ३ । ब्लूं कवचाय हुं ४ । सः नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादि षडंगन्यासः ॥ द्रां द्राविण्यै नमो मूर्ध्नि १ । द्रीं क्षोभिण्यै नमः पादयोः २ । क्लीं वशीकरिण्यै नमः मुखे ३ । ब्लूं कर्षिण्यै नमो गुह्ये ४ । सः मोहिन्यै नमो हृदि ५ ॥ इति पंचदेवतान्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ उद्यद्भास्वरसंनिभा रक्तवस्त्रा नानारत्नालंकृतांगी वहंती ॥ हस्तैः पाशं चांकुशं चापबाणौ बाणेशी नः कामपूर्तिं विधत्ताम् ॥ १ ॥ इति ध्यायेत् ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मंमंडकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति पीठ देवताः संपूज्य पीठशक्तीः पजयेत् ॥ तद्यथा पूर्वादिक्रमेण अष्टसु दिक्षु–ॐ मोहिन्यै नमः १ । ॐ क्षोभिण्यै नमः २ । ॐ त्रास्यै नमः ३ । ॐ स्तंभिन्यै नमः ४ । ॐ कर्षिण्यै नमः ५ । ॐ द्राविण्यै नमः ६ । ॐ ह्लादिन्यै नमः ७ । ॐ क्लिन्नायै नमः ८ । मध्ये ॐ क्लेदिन्यै नमः ९ ॥ इति नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य 'द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः बाणेशीयोगपीठाय नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पुनर्ध्यात्वा पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तद्यथा पुष्पांजलिमादाय–ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ॥ अनुज्ञां देहि बाणेशि परिवारार्चनाय मे ॥ इति पठित्वा

पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वाऽऽवरणपूजां कुर्य्यात् ॥ तद्यथा देव्यंगे आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च–द्रां हृदयाय नमः । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः :१ ॥ इति सर्वत्र ॥ द्रीं शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० २ । क्लीं शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ३ । ब्लूं कवचाय हुं । कवचश्रीपा० ४ । सः नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ दिक्ष्वग्रे च ॐ द्राविणीमुख्यै नमः । द्राविणीमुखीश्रीपा० ७ ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मलमुच्चार्य्य–अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्विंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥१॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची । तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ॐ अनंगरूपायै नमः । अनंगरूपाश्रीपा० १ । अनंगमदनायै नमः । अनंगमदना श्रीपा० २ । ॐ अनंगमन्मथायै नमः । अनंगमन्मथाश्रीपा० ३ । ॐ

वागेश्वरीपूजनयन्त्रम् ।



अनंगकुसुमायै नमः । अनंगकुसुमाश्रीपा० ४ । ॐ अनंगमदनपरायै नमः । अनंगमदनपराश्रीपा० ५ । ॐ अनंगशिशिरायै नमः । अनंगशिशिराश्रीपा० ६ । ॐ अनंगमेखलायै नमः । अनंगमेखलाश्रीपा० ७ । ॐ अनंगदीपिकायै नमः । अनंगदीपिकाश्रीपा० ८ । इत्यष्टौ संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च

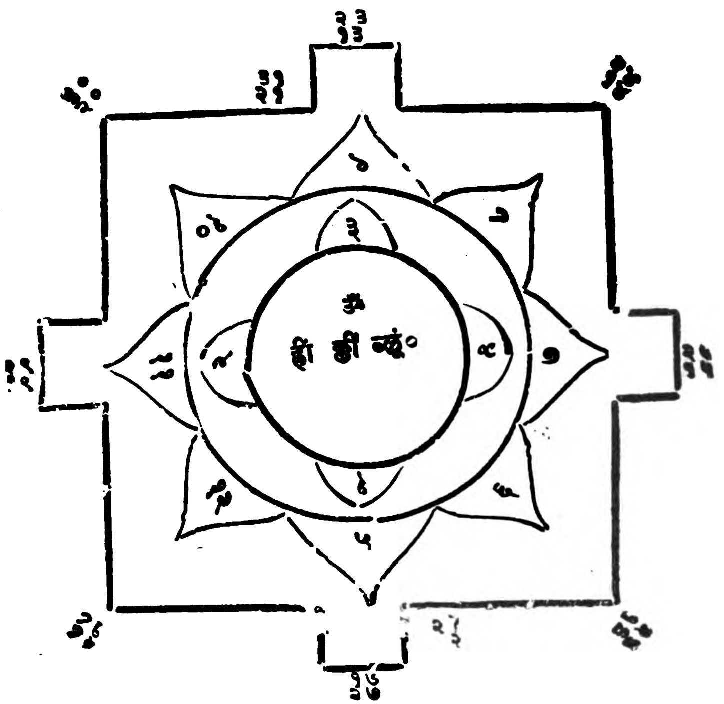
संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात्॥इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्यात् ॥अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपः। पंचकं दशांशतो होमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति। सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च—एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षं पंचकं तद्दशांशतः ॥ हुत्वा बाणेश्वरीं देवीं पजयेद्विधिपूर्वकम् ॥ १ ॥ एवं सिद्धं मनुं मंत्री काम्येषु विनियोजयेत्॥ दधियुक्तैरशोकस्य पुष्पैर्यो दिवसत्रयम् ॥ सहस्रं जुहुयात्तस्य वश्याः स्युः प्राणिनोऽखिलाः ॥ २ ॥ लाजैर्दधियुतैर्होमान्मंत्री कन्यामवाप्नुयात् ॥ कन्यापि वरमाप्नोति मासाद्वितयमध्यतः ॥ ३ ॥ गव्याज्येन ससंपातं हुत्वा साष्टशतं नरः ॥ आज्यं संपातितं दद्यात् स्त्रियै विश्राणितश्रियै ॥ ४ ॥ सा तदाज्यं निजं कांतं भोजयित्वा वशं नयेत् ॥ सुगंधकुसुमैर्हुत्वा धनमाप्नोति वांछितम् ॥ ५ ॥ इति बाणेशीपंचाक्षरीमंत्रप्रयोगः ॥ ३ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ कामेशीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रमहोदधौ मंत्रो यथा—ह्रीं क्लीं ऐं ब्लं स्त्रीं ॥ इति पंचाक्षरो मंत्रः॥ अस्य कामेशीमंत्रस्य संमोहन ऋषिः। गायत्री च्छंदः। कामेशी देवता।ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥ ॐ संमोहनऋषये नमः शिरसि १। गायत्रीच्छंदसे नमो मुखे २। कामेशीदेवतायै नमः हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वांङ्गे ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। क्लीं तर्जनीभ्यां नमः २। ए मध्यमाभ्यां नमः ३। ब्लूं अनामिकाभ्यां नमः ४। स्त्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ह्रीं हृदयाय नमः १। क्लीं शिरसे स्वाहा २। ऐं शिखायै वषट् ३। ब्लूं कवचाय हुं ४। स्त्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ पाशांकुशाविक्षुशरासबाणौ करैर्वहंतीमरुणांशुकाढ्याम् ॥ उद्यत्पतंगाभिरुचिं मनोज्ञां कामेश्वरीं रत्नचितां प्रणौमि ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा सर्वतोभद्रमंले मंडकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तद्यथा पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु—ॐ

१ संपातम्— आहुतिशेषस्य पात्रांतरे प्रक्षपः संपातः तद्युतं हुत्वा संपाताज्यं स्त्रियै दद्यात् ॥ किंभूतायै–विश्राणितश्रियै दत्तदक्षिणायै–दक्षिणामादावादाय पश्चादाज्यं दद्यादित्यर्थः। अन्यथा फलाभावः।

मोहिन्यै नमः १। ॐ क्षोभिण्यै नमः २। ॐ त्रास्यै नमः ३। ॐ स्तंभिन्यै नमः ४। ॐ कर्षिण्यै नमः ५। ॐ द्राविण्यै नमः ६। ॐ ह्लादिन्यै नमः ७। ॐ क्लिन्नायै नमः ८। मध्ये ॐ क्लेदिन्यै नमः ९॥ इति पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य 'ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं कामेशीयोगपीठाय नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्य्यात् ॥ तद्यथा पुष्पांजलिमादाय—ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ॥ अनुज्ञां देहि कामेशि परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा देव्यंगे आग्नेयादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च—ह्रीं हृदयाय नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ ॥ इति सर्वत्र ॥ क्लीं शिरसे स्वाहा। शिरःश्रीपा० २। ऐं शिखायै वषट्। शिखाश्रीपा० ३। ब्लूं कवचाय हुं। कवचश्रीपा० ४। स्त्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रत्रयश्रीपा० ५। ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं अस्त्राय फट्। अस्त्रश्रीपा० ६॥ इति षडंगानि पजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य—ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततः पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची। तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण चतुर्षु दिक्षु—ॐ मकरध्वजाय नमः। मकरध्वजश्रीपा० १। ॐ कंदर्पाय नमः। कंदर्पश्रीपा० २। ॐ मन्मथाय नमः मन्मथश्रीपा० ३। ॐ कामदेवाय नमः। कामदेवश्रीपा० ४ ॥ इति मनोभवान् संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततोऽष्टदले प्राचीक्रमेण ॐ अनंगरूपायै नमः। अनंगरूपाश्रीपा० १। ॐ अनंगमदनायै नमः। अनंगमदनाश्रीपा० २। ॐ अनंगमन्मथायै नमः। अनंगमन्मथाश्रीपा० ३। ॐ अनंगकुसुमायै नमः। अनंगकुसुमाश्रीपा० ४। ॐ अनंगमदनपरायै नमः। अनंगमदनपराश्रीपा० ५। ॐ अनंगशिशिरायै [illegible]शिराश्रीपा० ६। ॐ अनंगमेखलायै नमः। अनंगमेखलाश्रीपा० ७। ॐ अनंगदीपिकायै नमः। अनंगदीपिकाश्रीपा० ८॥

इति संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततो भूपुरे इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं पंचलक्षजपः । पालाशकुसुमैर्दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्य्यात् । एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च—भूतलक्षं जपित्वैनामर्द्धलक्षं पलाशजैः॥कुसुमैर्जुहुयात्पीठे पूर्वोक्ते पूजयेदिमाम् ॥ एवं सिद्धमनुर्मंत्री पूर्वोक्तं योगमाचरेत् ॥ १ ॥ दधियुक्तैरशोकस्य पुष्पैर्यो दिवसत्रयम् ॥ सहस्रं जुहुयात्तस्य वश्याः स्युः प्राणिनोऽखिलाः ॥ २ ॥ लाजैर्दधियुतैर्होमान्मंत्री कन्यामवाप्नुयात् ॥ कन्यापि वरमाप्नोति मासद्वितयमध्यतः ॥ ३ ॥ गव्याज्येन [1]ससंपातं हुत्वा साष्ट शतं नरः ॥ आज्यं संपातितं दद्यात् स्त्रियै विश्राणितश्रिये ॥ ४ ॥ सा तदाज्यं निजं कांतं भोजयित्वा वशं नयेत् ॥ सुगंधकुसुमैर्हुत्वा धनमाप्नोति वांछितम् ॥ ५ ॥ इति कामेशीपंचाक्षरमंत्रप्रयोगः ॥ ४ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

कामेशीपूजनयन्त्रम् ।

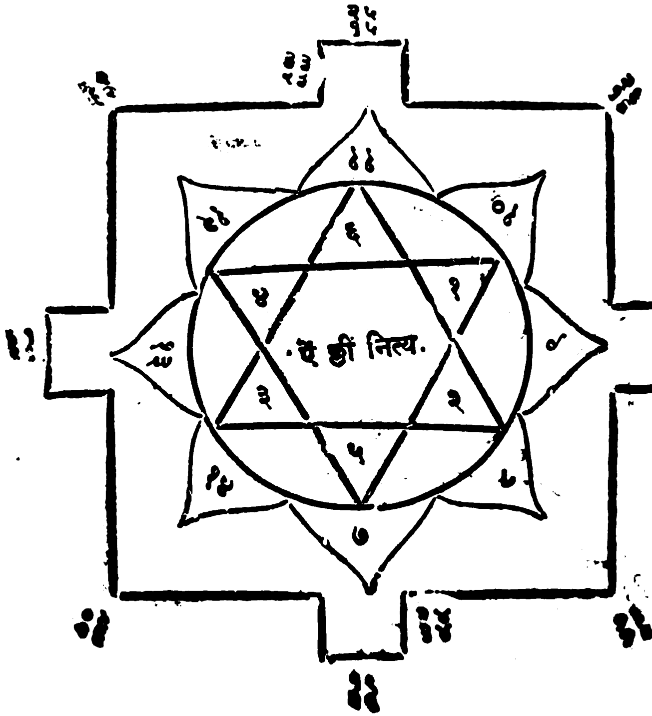


अथ नित्यामंत्रप्रयोगः शारदातिलके—ऐं क्लीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अस्य मंत्रस्य सम्मोहन ऋषिः । निवृत्तिश्छंदः । नित्या देवता । स्त्र्याकर्षणे विनियोगः ॥ ॐ सम्मोहनऋषये नमः शिरसि १ । निवृत्तिच्छं

१ ससंपातम्—आहुतिशेषस्य पात्रांतरे प्रक्षेपः संपातः—तद्युतं हुत्वा संपाताज्यं स्त्रियै दद्यात् ॥ किं भूतायै—विश्राणितश्रियै दत्तदक्षिणायै दक्षिणामादावादाय पश्चादाज्यं दद्यादित्यर्थः । अन्यथा फलाभावः ।

दसे नमः मुखे २ । नित्यादेवतायै नमः हृदि ३ । विनियोगाय नमः सर्वांगे ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ऐं तर्जनीभ्यां नमः २ । ऐं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ऐं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ऐं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ऐं करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ऐं हृदयाय नमः १ । ऐं शिरसे स्वाहा २ । ऐं शिखायै वषट् ३ । ऐं कवचाय हुं ४ । ऐं नेत्र त्रयाय वौषट् ५ । ऐं अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत् ॥ ॐ अर्द्धेन्दुमौलिमरुणाममराभिवन्द्यामंभोज पाशसृणिपूर्णकपालहस्ताम् ॥ रक्तांगरागवसनाभरणां त्रिनेत्रां ध्यायेच्छिवस्य वनितां मदविह्वलांगीम् ॥१॥ इति ध्यात्वा सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वां तपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तद्यथा पूर्वादिक्रमेण—ॐ जयायै नमः १ । ॐ विजयायै नमः २ । ॐ अजितायै नमः ३ । ॐ अपराजितायै नमः ४ । ॐ नित्यायै नमः ५ । ॐ विलासिन्यै नमः ६ । ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७ । ॐ अघोरायै नमः ८ । पीठमध्ये ॐ मंगलायै नमः ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रमग्न्युत्तारणपूर्वकम् 'ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तद्यथा—षट्कोणकेसरेषु अग्नि

नित्यापूजनयन्त्रम् ।



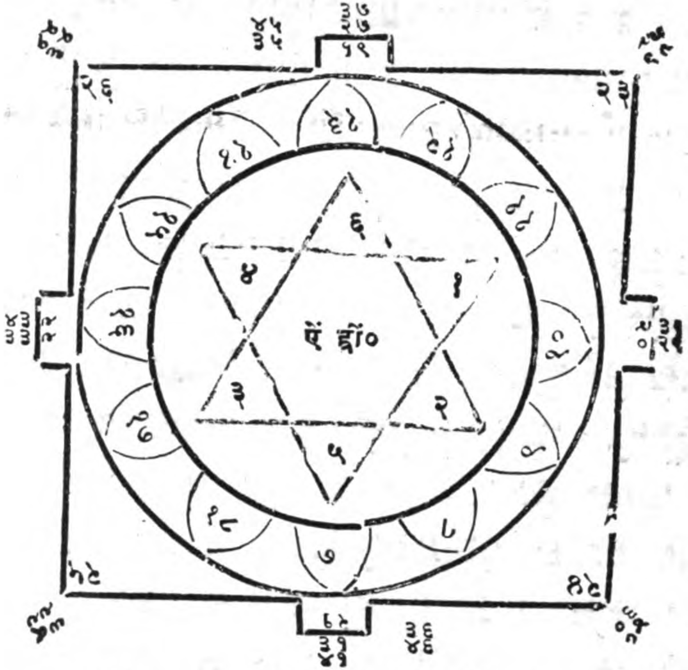
कोणे ॐ ऐं हृदयाय नमः हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ ॥ इति सर्वत्र ॥ निर्ऋतिकोणे ॐ ऐं शिरसे स्वाहा शिरः श्रीपा० २। वायुकोणे ॐ ऐं शिखायै वषट् शिखाश्रीपा० ३। ईशानको० ॐ ऐं कवचायै हुं कवचश्रीपा० ४। पूज्यपूजकयोर्मध्ये ॐ ऐं नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रत्रयश्रीपा० ५। देवीपश्चिमे ॐ ऐं अस्त्राय फट् अस्त्रश्रीपा० ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य–ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची । तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च–ॐ नित्यायै नमः। नित्याश्रीपा० १। ॐ निरंजनायै नमः। निरंजनाश्रीपा० २। ॐ क्लिन्नायै नमः। क्लिन्नाश्रीपा० ३। ॐ क्लेदिन्यै नमः। क्लेदिनीश्रीपा० ४। ॐ मदनातुरायै नमः। मदनातुराश्रीपा० ५। ॐ मदद्रवायै नमः। मदद्रवाश्रीपा० ६। ॐ द्राविण्यै नमः। द्राविणीश्रीपा० ७। ॐ आकर्षिण्यै नमः। आकर्षिणीश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ देवताः पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥२॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण ॐ लं इन्द्राय नमः १। ॐ रं अग्नये नमः २। ॐ मं यमाय नमः ३। ॐ क्षं निर्ऋतये नमः ४। ॐ वं वरुणाय नमः ५। ॐ यं वायवे नमः ६। ॐ कुं कुबेराय नमः ७। ॐ हं ईशानाय नमः ८। इन्द्रेशानयोर्मध्ये ॐ आं ब्रह्मणे नमः ९। वरुणनिर्ऋत्योर्मध्ये ॐ ह्रीं अनंताय नमः १० ॥ इति दिक्पालान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥३॥ तद्बाह्ये ॐ वं वज्राय नमः १। ॐ शं शक्तये नमः २। ॐ दं दंडाय नमः ३। ॐ खं खड्गाय नमः ४। ॐ पां पाशाय नमः ५। ॐ अं अंकुशाय नमः ६। ॐ गं गदायै नमः ७। ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ८। ॐ पं पद्माय नमः ९। ॐ चं चक्राय नमः १० ॥ इत्यस्त्राणि पूजयेत् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनांतं जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं चतुर्लक्षजपः ॥ मध्वक्तैर्मधूककुसुमैरयुतहोमः ॥ तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति ॥ सिद्धे मंत्रे मंत्री

१ मध्विति मधुघृतशर्कराणामुपलक्षणम् । २ महुवापुष्प ।

प्रयोगान् साधयेत् तथा च– चतुर्लक्षं जपित्वांते मधुराक्तैर्मधूकजैः ॥ कुसुमैरयुतं हुत्वा तोषयेद्गुरुमात्मनः ॥ १ ॥ सिद्धमंत्रं जपेन्मंत्री सहस्रं शयनस्थितः ॥ यां चिंतयेत्स्त्रियं रात्रौ सा समायाति तत्क्षणात् ॥ २ ॥ इति द्वादशाक्षरानित्यामंत्रप्रयोगः ॥

॥ अथ वज्रप्रस्तारिणीमंत्रप्रयोगः–ऐं ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--अस्य मंत्रस्य अंगिरा ऋषिः । त्रिष्टुप् छंदः । वज्रप्रस्तारिणी देवता । सर्वजनवशीकरणे विनियोगः ॥ ॐ अंगिरर्षये नमः शिरसि १ । त्रिष्टुप्छंदसे नमः मुखे २ । वज्रप्रस्तारिणीदेवतायै नमः हृदि ३ । विनियोगाय नमः सर्वांगे ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ ऐं तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ ऐं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ ऐं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ ऐं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ॐ ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ऐं हृदयाय नमः १ । ॐ ऐं शिरसे स्वाहा २ । ॐ ऐं शिखायै वषट् ३ । ॐ ऐं कवचाय हुं ४ । ॐ ऐं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ ऐं अस्त्राय फट् ६ । इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्--ॐ रक्ताब्धौ रक्तपोते रविदलकमलाभ्यंतरे सन्निषण्णां रक्तांगीं रक्तमौलिस्फुरितशशिकलां स्मेरवक्त्रां त्रिनेत्राम् ॥ बीजापूरेषुपाशांकुशदमनधनुःसत्कपालानि हस्तैर्बिभ्राणामानतांगीं स्तनयुगलभरादंबिकामाश्रयामः ॥ १ ॥ इति ध्यायेत् ॥ ततः सर्वभद्रतोमंडले 'ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति पीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तथा च पूर्वादिक्रमेण–ॐ जयायै नमः १ । ॐ विजयायै नमः २ । ॐ अजितायै नमः ३ । ॐ अपराजितायै नमः ४ । ॐ नित्यायै नमः ५ । ॐ विलासिन्यै नमः ६ । ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७ । ॐ अघोरायै नमः ८ । पीठमध्ये ॐ मंगलायै नमः ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रमग्न्युत्तारणपूर्वकम् 'ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ क्रमः–षट्कोणकेसरेषु अग्निकोणे ॐ ऐं हृदयाय नमः १ । निर्ऋतिकोणे ॐ ऐं शिरसे स्वाहा २ । वायुकोणे ॐ ऐं शिखायै

वज्रप्रस्तारिणीपूजनयन्त्रम्.



वषट् ३ । ऐशान्ये ॐ ऐं कवचायैं हुं ४। पूज्यपूजकयोर्मध्ये ॐ ऐं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । देव्याः पश्चिमे ॐ ऐं अस्त्राय फट् ६ । इति षडंगानि पूजयेत् ॥ इति प्रथमावरणम्॥१॥ ततो द्वादशदले प्राच्यादिक्रमेण ॐ हृल्लेखायै नमः । हृल्लेखाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ ॥ एवं सर्वत्र ॥ ॐ क्लेदिन्यै नमः । क्लेदिनीश्रीपा० २ । ॐ क्लिन्नायै नमः । क्लिन्नाश्रीपा० ३ । ॐ क्षोभिण्यै नमः । क्षोभिणीश्रीपा० ४ । ॐ मदनातुरायै नमः । मदनातुराश्रीपा० ५ । ॐ निरंजनायै नमः । निरंजनाश्रीपा० ६ । ॐ रागवत्यै नमः । रागवतीश्रीपा० ७ । ॐ मदनावत्यै नमः । मदनावतीश्रीपा० ८ । ॐ मेखलायै नमः । मेखलाश्रीपा० ९ । ॐ द्राविण्यै नमः । द्राविणीश्रीपा० १० । ॐ वेगवत्यै नमः । ॐ वेगवतीश्रीपा० ११ । ॐ स्मरायै नमः । स्मराश्रीपा० १२ ॥ इति शक्तीः पूजयेत् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततो भूपुराभ्यंतरे दिग्विदिक्षु च पूर्वे ॐ ब्राह्म्यै नमः । ब्राह्मीश्रीपा० १ । दक्षिणे ॐ माहेश्वर्य्यै नमः । माहेश्वरीश्रीपा० २ । पश्चिमे ॐ कौमार्यै नमः । कौमारीश्रीपा० ३ । उत्तरे ॐ वैष्णव्यै नमः । वैष्णवीश्रीपा० ४ । अग्निकोणे ॐ वाराह्यै नमः । वाराहीश्रीपा० ५ । निर्ऋतिकोणे ॐ इंद्राण्य नमः । इंद्राणीश्रीपा० ६ । वायुकोणे ॐ चामुंडायै नमः । चामुंडाश्रीपा० ७ । ईशानकोणे ॐ महालक्ष्म्यै नमः । महालक्ष्मीश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ मातृकाः पूजयेत् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण ॐ लं इन्द्राय नमः । इन्द्रश्रीपा० १ । ॐ रं

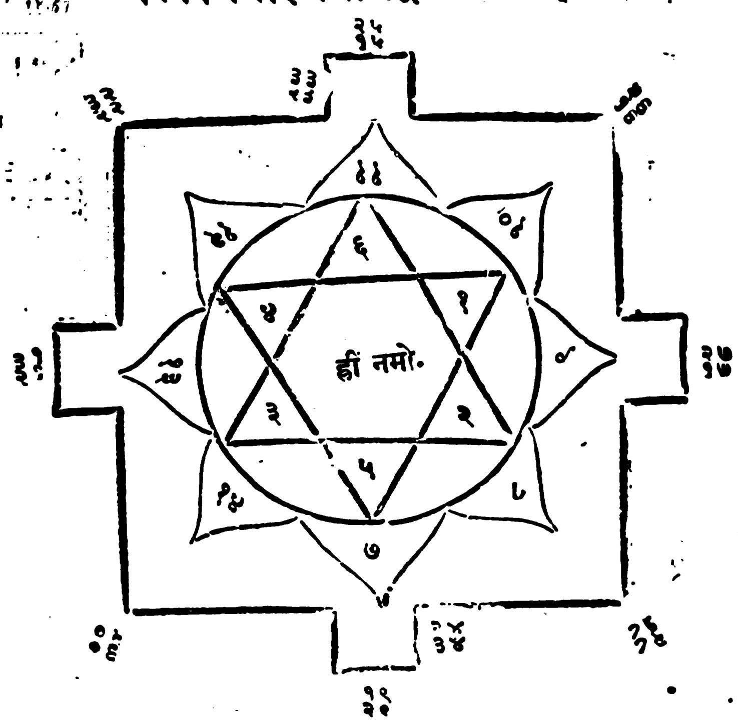
अग्नये नमः । अग्निश्रीपा० २ । ॐ मं यमाय नमः । यमश्रीपा० ३ । ॐ क्षं निर्ऋतये नमः । निर्ऋतिश्रीपा० ४ । ॐ वं वरुणाय नमः । वरुणश्रीपा० ५ । ॐ यं वायवे नमः । वायुश्रीपा० ६ । ॐ कुं कुबेराय नमः । कुबेरश्रीपा० ७ । ॐ हं ईशानाय नमः । ईशानश्रीपा० ८ । इन्द्रेशानयोर्मध्ये ॐ आं ब्रह्मणे नमः । ब्रह्मश्रीपा० ९ । निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः । अनन्तश्रीपा० १० ॥ इति दश दिक्पालान् पूजयेत् ॥ तद्बाह्ये ॐ वं वज्राय नमः १ । ॐ शं शक्तये नमः २ । ॐ दं दंडाय नमः ३ । ॐ खं खड्गाय नमः ४ । ॐ पां पाशाय नमः ५ । ॐ अं अंकुशाय नमः ६ । ॐ गं गदायै नमः ७ । ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ८ । ॐ पं पद्माय नमः ९ । ॐ चं चक्राय नमः १० ॥ इत्यस्त्राणि पूजयेत् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनांतं संपूज्य जप कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः । तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति ॥ सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च–मंत्री मंत्रं जपेल्लक्षं जपांते जुहुयात्ततः ॥ अयुतं राजवृक्षोत्थैर्घृतसिक्तैः समिद्वरैः ॥ १ ॥ भजेन्मंत्री मनुं नित्यमर्चनादिभिरादरात् ॥ दारिद्र्यरोगनिर्मुक्तः स जीवेच्छरदां शतम् ॥ २ ॥ अस्मिन्मंत्रे रतो मंत्री वशयेदखिलं जगत् ॥ नित्यं मंत्रैर्बुधः कुर्यान्मुखलालनमन्वहम् ॥ ३ ॥ अंजनं तिलकं पुष्पं धारयेन्मांत्रितं सुधीः ॥ तांबूलं मंत्रितं भक्षेन्मंत्री स स्याज्जगत्प्रियः ॥ ४ ॥ इति वज्रप्रस्तारिणीद्वादशाक्षरमंत्रप्रयोगः ॥ ५ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ त्रैलोक्यमोहनगौरीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रमहोदधौ–त्रैलोक्यमोहने गौरीमंत्रः संकीर्त्यतेऽधुना ॥ मंत्रो यथा–ह्रीं नमो ब्रह्मश्रीराजिते राजपूजिते जय विजये गौरि गांधारि त्रिभुवनवशंकारि सर्वलोकवशंकारि सर्वस्त्रीपुरुषवशंकारि सुसुदुदुघेघेवावा ह्रीं स्वाहा ॥ इत्येकषष्ठ्यर्णो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अस्य मंत्रस्य अज ऋषिः । निचृद्गायत्री छंदः । गौरी त्रैलोक्यमोहिनी देवता । ह्रीं बीजम् । स्वाहा शक्तिः । ममाखिलाप्तये जपे विनियोगः ॥ ॐ अजर्षये नमः शिरसि १ । निचृद्गायत्रीच्छंदसे नमः मुखे २ । गौरीत्रैलोक्यमोहिनीदेवतायै नमः हृदि ३ । ह्रीं बीजाय नमः लिंगे ४ । स्वाहाशक्तये नमः पादयोः ५ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ह्रीं नमो ब्रह्मश्री

राजिते राजपजिते अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ह्रीं जय विजये गौरि गांधारि तर्जनीभ्यां नमः २। ह्रीं त्रिभुवनवशंकरि मध्यमाभ्यां नमः ३। ह्रीं सर्वलोकवशंकरि अनामिकाभ्यां नमः ४। ह्रीं सर्वस्त्रीपुरुषवशंकरि कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ह्रीं सुसुदुदुघेघेवावा ह्रीं स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ एवमेव हृदयादिषडंगन्यासं कृत्वा मूलेन व्यापकं कुर्यात् ॥ इति न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ ॐ गीर्वाणसंघार्चितपादपंकजारुणप्रभा बालशशांकशेखरा ॥ रक्तांबरालेपनपुष्पयुङ्मुदे सृणिं सपाशं दधती शिवास्तु वः ॥ १ ॥ इति ध्यायेत् ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति पीठदेवताः संपज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तद्यथा पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु–ॐ जयायै नमः १ । ॐ विजयायै नमः २ । ॐ अजितायै नमः ३ । ॐ अपराजितायै नमः ४ । ॐ नित्यायै नमः ५ । ॐ विलासिन्यै नमः ६ । ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७ । ॐ अघोरायै नमः ८ । मध्ये ॐ मंगलायै नमः ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य 'ॐ ह्रीं गौरीत्रैलोक्यमोहिनीपद्मासनाय नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्॥ पुष्पांजलिमादाय–संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ॥ अनुज्ञां देहि देवेशि परिवारार्चनाय मे ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपजामारभेत ॥ तद्यथा–षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च–ह्रीं नमो ब्रह्मश्रीराजिते राजपूजिते हृदयाय नमः । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ ॥ इति सर्वत्र ॥ ह्रीं जय विजये गौरि गांधारि शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० २ । ह्रीं त्रिभुवनवशंकरि शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ३ । ह्रीं सर्वलोकवशंकरि कवचाय हुं । कवच

१ मतांतरे–अविकलशशिराजन्मौलिराबद्धपाशांकुशरुचिरकराब्जा बंधुजीवारुणांगी ॥ अमरनिकरवंद्या त्रीक्षणा शोणलेपांशुककुसुमयुता सर्वदे पार्वती वः ॥ इति ध्यायेत् ॥

श्रीपा० ४ । ह्रीं सर्वस्त्रीपुरुषवशंकारि नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । ह्रीं सुसुदुदुघेघेवावा ह्रीं स्वाहा अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य–ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततोऽष्टदले पज्यपूजकयोरंतरालं प्राची । तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ॐ ब्राह्म्यै नमः । ब्राह्मीश्रीपा० १ । ॐ माहेश्वर्यै नमः । माहेश्वरीश्रीपा० २ । ॐ कौमार्यै नमः । कौमारीश्रीपा० ३ । ॐ वैष्णव्यै नमः । वैष्णवीश्रीपा० ४ । ॐ वाराह्यै नमः । वाराहीश्रीपा० ५ । ॐ इन्द्राण्यै नमः । इन्द्राणीश्रीपा० ६ । ॐ चामुंडायै नमः । चामुंडाश्रीपा० ७ । ॐ महालक्ष्म्यै नमः । महालक्ष्मीश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ देवताः संपज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदश दिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादि नमस्कारांतं संपूज्य जपं [illegible] ॥ अस्य पुरश्चरणमयुतजपः । घृतमिश्रितपायसेन दशांशतो होमः ॥

त्रैलोक्यमोहनगौरीपूजनयन्त्रम् ।



तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्य्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति ॥ सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथाच– [illegible] प्रजपेन्मंत्रं सहस्रं घृतसंयुतैः ॥ पायसैर्जुहुयात्पीठे प्रागुक्ते गिरिजां यजेत् ॥ इत्थमाराधिता देवी प्रयच्छेत्सुखसंपदः ॥ १ ॥

तंडुलैस्तिलसंमिश्रैर्लवणैर्मधुरान्वितैः ॥ फलै रम्यै रक्तपद्मैर्जुहुयाद्यो दिनत्रयम् ॥ २ ॥ तस्य विप्रादयो वर्णा वश्याः स्युर्मासमध्यतः ॥ रविमंडलमध्यस्थां देवीं ध्यायञ्जपेन्मनुम् ॥ अष्टोत्तरशतं तावद्धुत्वाग्नौ वशयेज्जगत् ॥ ३ ॥ तंत्रांतरे—फलं तु पुष्पांजनमभ्युक्ष्य चन्दनादिकं मूलमंत्राभिमंत्रितं यस्मै यस्मै दीयते स स वश्यो भवति ॥ ४ ॥ अन्यत्—रात्रौ हरिद्रया वामोरुमध्ये स्त्रिग्धस्त्री नामाभिलिख्य वामकरे निधाय शतं सहस्रं वा जपन्निष्टां प्रियामाकर्षयति ॥ ५ ॥ इत्येकषष्ठ्यर्णत्रैलोक्यमोहनगौरीमंत्रप्रयोगः ॥ अन्यमंत्रो मन्त्रमहोदधौ—ह्स्त्रैंब्यूँ राजमुखि राजाधिमुखि वश्यमुखि ह्रीं श्रीं देवि देवि महादेवि देवाधिदेवि सर्वजनस्य मुखं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इत्यष्टचत्वारिंशदर्णो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—ऋष्यादिकं सर्वं पूर्ववत् ॥ ह्स्त्रैंब्यूँ राजमुखि राजाधिमुखि अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । वश्यमुखि ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ । देवि देवि मध्यमाभ्यां नमः ३ । महादेवि अनामिकाभ्यां नमः ४ । देवाधिदेवि कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । सर्वजनस्य मुखं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ एवमेव हृदयादिषडंगन्यासं कृत्वा ध्यानपूजादिकं सर्वं पूर्ववत्कुर्यात् ॥ सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथाच—एवं सिद्धमनुर्मंत्री प्रयोगान् कर्तुमर्हति ॥ कुर्यात्सर्वजनस्थाने मनोः साध्याभिधानकम्[1] ॥ १ ॥ जपे होमे तर्पणे च वशीकरणकर्मणि ॥ २ ॥ ससंपातं[2] घृतं हुत्वा सहस्रं सप्तवासरम् ॥ संपाताज्यं तु साध्यस्य प्राशितं वश्यकारकम् ॥ ३ ॥ साध्यनक्षत्र[3]वृक्षेण कुर्यात्साध्याकृतिं शुभाम् ॥ तस्यामसून् प्रतिष्ठाप्य प्रांगणे निखनेच्च ताम् ॥ ४ ॥ तत्रानलं समाधाय रक्तचंदनसंयुतैः ॥

---

१ मनोर्मन्त्रस्य सर्वजनस्थाने सर्वजनस्येति पदस्थाने साध्याभिधानकं साध्यनामोच्चरेद्। देवदत्तस्य मुखमित्यादि ॥ २ संपात आहुतिशेषस्य पात्रांतरे प्रक्षेपः तेन सहितम् ॥ ३ साध्यस्य यन्नक्षत्रं जन्मनक्षत्रं तत्सम्बन्धी यो वृक्षस्तेन साध्यप्रकृतिं साध्यप्रतिमां कुर्यात् ।'तत्र प्राणान् प्रतिष्ठाप्य तामंगणे खात्वा तदुपर्यग्निं निधाय रक्तचन्दनाक्तैर्जपा पुष्पैः सहस्रं हुत्वा तां निष्कास्य नदीतटे निखनेत् स दासः स्यात् । नक्षत्रवृक्षाः यथा शारदातिलके—कारस्करोऽथ धात्री स्यादुदुंबरतरुः पुनः । जंबूः खदिरकृष्णाख्यौ वंशपिप्पलसंज्ञकौ । नागरोहिणनामानौ पलाशप्लक्षसंज्ञकौ । अंबष्ठबिल्वार्जुनाख्यविकंकतमहीरुहाः ॥ बकुलः सरलः सर्जो वंजुलः पनसार्ककौ । शमीकदंबनिंबाम्रमधूका ऋक्षशाखिनः ॥

जपापुष्पैर्निशीथिन्यां जुहुयात्सप्तवासरम् ॥ ५ ॥ सहस्रं प्रत्यहं पश्चात्तां निष्कास्य सरित्तटे ॥ निखनेत्साधकस्तस्य साध्यो दासो भवद्ध्रुवम् ॥ ६ ॥ इति त्रैलोक्यमोहनगौर्यष्टचत्वारिंशदक्षरमंत्रप्रयोगः ॥ अथ कामदेवमंत्रप्रयोगः—ॐ नमो भगवते कामदेवाय इन्द्राय वसाबाणाय इन्द्रसंदीपनबाणाय क्लीं क्लीं संमोहनबाणाय ब्लूँ ब्लूँ संतापनबाणाय सः सः वशीकरणबाणाय कंपितकंपित हुं फट् स्वाहा ॥ इति षट्षष्ट्यक्षरो मंत्रः ॥ तंत्रांतरेऽपि—क्लीं नमो भगवते कामदेवाय श्रीं सर्वजनप्रियाय सर्वजनसंमोहनाय ज्वल २ प्रज्वल २ हन हन वद वद तप तप संमोहय संमोहय सर्वजनं २ मे वशं कुरु २ स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—एकविंशतिसहस्रजपात् सिद्धो मनुर्भवति ॥ सिद्धे मंत्रे मंत्री पत्रं पुष्पं फलं वाभिमंत्रितं यस्मै ददाति स वश्यो भवति ॥ तथाच—पत्रं पुष्पं फलं दद्यात् स्त्रियै वा पुरुषाय वा ॥ अवश्यं वश इत्याहुरात्मना च धनेन च ॥ १ ॥ महाविद्यावतां पुंसां मनःक्षोभं करोति यः ॥ सप्तरात्रौ व्यतीतायां स च शत्रुर्विनश्यति ॥ दृष्टा जनैर्दुष्टजनाः सर्वे मोहवशंगताः ॥ २ ॥ इति कामदेवमंत्रप्रयोगः ॥ ७ ॥ अन्यमंत्रो यथा—ॐ आं ह्रीं सौः ऐं क्लीं हूं सौः ग्लौं श्रीं क्रौं एहि २ भ्रमरांबा हि सकलजगन्मोहनाय मोहनाय सकलअंडजपिंडजान् भ्रामय २ राजप्रजावशंकारि संमोहय २ महामाये अष्टादशपीठरूपिणि अमलवरयूं स्फुर २ प्रस्फुर २ कोटिसूर्यप्रभाभासुरि चन्द्रजटी मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् भस्मीकुरु २ विश्वमोहिनि हुं क्लीं हुं हुं फट् स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—लक्षं जपेत् ॥ सर्वे वश्या भवंति शत्रवो नंक्ष्यंति ॥ अथ काममेखलामंत्रप्रयोगो वीरभद्रोड्डीशतंत्रे—ॐ ह्रीं कामातुरे काममेखले विघोषिणी नीललोचने अमुकं वश्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः ॥ इति द्वात्रिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अनेन मंत्रेण स्वयं भक्ष्यद्रव्यं सप्ताभिमंत्रितं भुंजीत सप्तमे द्वादशे वा दिवसे स्त्री पुरुषो वा वश्यो भवति ॥ इति काममेखलामंत्रप्रयोगः ॥ ८ ॥ अथ सूर्यमंत्रप्रयोगः—ॐ नमो भगवते श्रीसूर्याय ह्रीं सहस्रकिरणाय ऐं अतुलबलपराक्रमाय नवग्रहदशदिक्पाललक्ष्मीदैवताय धर्मकर्मसहिताय अमुकनाम नाथय नाथय मोहय २ आकर्षय २ दासानुदासं कुरु २ वशं कुरु २ स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अष्टोत्तरशतं प्रतिदिनं जपेत् स वश्यो भवति ॥

इति सूर्य्यमंत्रप्रयोगः ॥ ९ ॥ अथ घोररूपिणीमंत्रप्रयोगः-ॐ ममः कटाविकटघोररूपिणि स्वाहा ॥ इति पंचदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-अनेन मंत्रेण सप्ताभिमंत्रितं भोज्यपिंडं यस्य नाम्ना सप्ताहं खादेत् स ध्रुवमेव वश्यो भवति ॥ १० ॥ अथ दुर्गामंत्रप्रयोगो वीरभद्रोड्डीशतंत्रे-ॐ ह्रां ह्रीं ह्रीं ठं ठः इति षडक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-अनेन मंत्रेण श्वेत धत्तूरकाष्ठमयं कीलकं नवांगुलं सहस्रेणाभिमंत्रितं यस्य नाम्ना स्वगृहे निखनेत् स वश्यो भवति ॥ ११ ॥ अथ मातंगीमंत्र प्रयोगः ॥ मंत्रो यथा-ॐ मातंगिनि ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ इति नवाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-अनेन मंत्रेण राजिकालवण मिश्रितं घृतं होतव्यम् ॥ स्त्रियं पुरुषमपि वा आकर्षयति ॥ अवश्यं वश्यो भवति ॥ इति मातङ्गीमंत्रप्रयोगः ॥ १२ ॥ ॥ अथ माहेश्वरीमंत्रप्रयोगः ॥ वीरभद्रोड्डीशतंत्रे मंत्रो यथा-ॐ माहेश्वर्य्यै नमः ॥ इति सप्ताक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-अनेन मंत्रेण बदरीकाष्ठकीलकं चतुरंगुलं सहस्रेणाभिमंत्रितं यस्य गृहे निखनेत् स सपरिवारो वश्यो भवति ॥ इति माहेश्वरीमंत्रप्रयोगः ॥ ॥ १३ ॥ अथ वश्यमुखीमंत्रप्रयोगः-ॐ वश्यमुखि राजमुखि स्वाहा ॥ इत्येकादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-अनेन सप्ताहं मुखप्रक्षालनात् सर्वे वश्या भवंति ॥ १४ ॥ अन्यः-ॐ राजमुखि वश्यमुखि स्वाहा ॥ इत्येकादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-वामहस्ते तैलं संस्थाप्य अनामिकया त्रिधा आमंत्र्य पुनर्मूलमंत्रं त्रिधा पठित्वा मुखकेशादौ विलेपयेत् प्रातःकाले शय्यायां स्थित्वा तदा सर्वाञ्जनान्वश्यान्करोति व्याघ्रोऽपि न खादति ॥ १५ ॥ अथ क्षोभिणीमंत्रप्रयोगः-एरण्डं क्षोभय भगवति त्वं स्वाहा ॥ इति त्रयोदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-अयुतद्वयं जपेत् सिद्धिः ॥ अपामार्गस्य मूलं तु पेषये द्रोचनेन च ॥ ललाटे तिलकं कुर्याद्वशीकुर्याज्जगत्रयम् ॥ १६ ॥ अथ चामुंडामंत्रप्रयोगः ॐ चामुण्डे जय २ स्तंभय २ भंजय २ मोहय २ सर्वसत्त्वे नमः स्वाहा ॥ इति चतुस्त्रिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-अनेन पुष्पमभिमंत्रितं यस्मै दीयते स वश्यो भवति ॥

१ भावार्थ-इस मंत्रसे सात बार अभिमंत्रित करके भोजनपिंडको जिसका नाम ले सात दिनतक खावे वह निश्चय करके वशमें हो जाता है ।

एकचित्तः स्थितो मंत्री मंत्रं जप्त्वाऽयुतत्रयम् ॥ ततः क्षोभयते लोकान् दर्शनादेव साधकः ॥ १७ ॥ अथ स्त्रीवशीकरणप्रकरणम् ॥ तत्रादौ भगमालिनीमंत्रप्रयोगः—ॐ ऐं भगभुगे भगनि भगोदरि भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोने भगनिपातिनि सर्व भगवशंकरि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वभगानि म ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षोभय क्षोभय सर्वसत्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लूँ जँ ब्लूँ में ब्लूँ मौं ब्लूँ हें ब्लूँ हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीहरल्वें ह्रीं भगमालिनि स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अष्टोत्तरशतं प्रतिदिनं जपेत् स्त्री वश्या भवति न संदेहः ॥ १८ ॥ स्त्रीवशीकरणे शैतानी मंत्रः—इन्नाचात्वेना शैताना मेरी शिकल बन अमुकीके पास जाना उसे मेरे पास लाना न लावे तो तेरी बहन भानजी पर तीनसो तीन तलाक ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—खाटके पांयतेमें नंगा बैठकर गुडको मंत्रद्वारा एकसौ इक्कीस १२१ बार अभिमंत्रित कर खाटके नीचे धरके सोजावे प्रातःकाल बालकोंको बांट दे ऐसा करनेसे वह स्त्री एक सप्ताहमें हाजिर होती है ॥ १९ ॥ ॥ अन्यः—बड पीपलका थान जहां बैठा अजाजील शैतान मेरी सबीह मेरीसी सूरत बन अमुकीको जारा न रानै तो अपनी बहन भानजीके सिर जान पग चलता अमीरान् जो न रानै तो धोबीकी नाद चमारकी खाल कलालकी भाठी पड जो राजा चाहे राजाको मैं चहूं अपने काजको मेरा काम न होगा तो आनसीमें तेरा दामनगीर रहूंगा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—शनिसे १२ दिनतक अर्द्धरात्रिके समय नंगा हो बारह राईको हाथमें ले प्रत्येक राईके ऊपर १२ मंत्र पढकर अग्निमें डाले वह स्त्री साधकके प्रेममें वशीभूत हो हाजिर हो जायगी ॥ २० ॥ अन्यः—अलफ गुरू गुफतार रहेमान जाग जाग रे अलहादीन शैतान सात बार अमुकीको जारा न जो न रानै तो तेरी माकी तलाक बहनकी तीन तलाक ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—बेसनका चौमुखा दीपक बनाकर उस दीपकके चारो कोणोंमें चींटेका लोही और अपनी दाहिनी अनामिका उंगलीका लोही लगाकर चार बत्ती धरे और तेल डालकर जलावे पीछे नंगा हो दक्षिणमुख बैठ लोबानकी धूप दे चने जौ भुने हुए भोगमें धरे पीछे मंत्रको एकसो आठ बार

पढके नंगाही उसी जगा सोजावे जिस स्त्रीके नामसे मंत्र पढा जायगा उस स्त्रीके साथ स्वप्नमें रात्रके समय सात दफे भोग करता है वह स्त्री व्याकुल होकर हाजिर होगी ॥ २१ ॥ अथ कामपिशाचीमंत्रप्रयोगः–ऐं पिं स्थां क्लीं कामपिशाचिनी शीघ्रं अमुकीं ग्राहय २ कामेन मम रूपेण नखैर्विदारय २ द्रावय द्रावय स्नेहेन बंधय २ श्रीं फट् ॥ इति षट्पंचाशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–इस मंत्रको प्रथम बीस हजार २०००० जपे तो सिद्ध हो पीछे कामयुक्त चित्त हो रात्रिके समय बारह या पंद्रह दिनतक नित्य जिस स्त्रीका नाम ले ग्यारहसो ११०० मंत्र जप तो वह अवश्य ही अपने स्वाधीन कर लेता है ॥ २२ ॥ अथ चामुंडामंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा–ॐ नमो भगवते रुद्राय चामुंडे अमुकीं वशमायन स्वाहा ॥ इति द्वात्रिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–पुष्ये पुष्पं च संग्राह्य भरण्यां तु फलं तथा ॥ शाखां चैव विशाखायां हस्ते पत्रं तथैव च ॥ १ ॥ मूले मूलं समुद्धृत्य कृष्णोन्मत्तस्य तत्क्रमात् ॥ पिष्ट्वा कर्पूरसंयुक्तं कुंकुमं रोचनासमम् ॥ २ ॥ तिलकात्स्त्री वशं याति यदि साक्षादरुंधती ॥ काकजंघा वचा कुष्ठं शुक्रशोणितमिश्रितम् ॥ ॥ ३ ॥ तैर्दत्ते भोजने बाला श्मशाने रोदिति ध्रुवम् ॥ प्रातर्मुखं तु प्रक्षाल्य सप्तवाराभिमंत्रितम् ॥ यस्या नाम्ना पिबेत्तोयं सा स्त्री वश्या भवेद्ध्रुवम् ॥ ४ ॥ २३ ॥ अथ अतरमोहिनीमंत्रप्रयोग–अलहम्दोगवानीवो मेरेपर हो दिवानी जो न हो दिवानी तो सयद कादरअब्दुलं जलानी चुट्टा पकडकर करो दिवानी ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–बढिया अतर शीशीमें डालकर एकसो आठ दफे मंत्र पढे और शीशीके भीतर फूंक मारे इसी तरह माला पूरी होनेके पीछे फूंक मारता रहे जब एक हजार मंत्र पढ चुके और शीशीमें दश फूंक लग चुकें तो शीशीको किसी स्वच्छ स्थानमें धर दे. इस प्रकार इक्कीस २१दिनतक करनेसे शीशीवाला अतर चक्कर देने लगेगा, जब अतर चक्कर देने लगे तब जान ले कि सिद्ध होगया अगर २१ दिनमें न फिरे तो ४० दिनतक जपे, पीछे जिस स्त्रीके निमित्त किया हो उस स्त्रीको यह अतर सुँघानेसे वशमें होजाती है यह बडा चमत्कारी अनुभव किया हुआ मंत्र है, मिथ्या नहीं जानना॥२४॥अथ लवण

१ तंत्रांतरेऽपि–ॐ ग्लहवल्लीं वल्लीं करवल्लीं कामपिशाचि अमुकीं कामं ग्राहय स्वाप्नेन मम रूपेण नखैर्विदारय द्रावय स्वेदेन बन्धय श्रीं फट्॥ इति मंत्रः ॥ २ कृष्णधत्तर।

मोहिनीमंत्रप्रयोग—ॐ नमो हय लूण सुहावय लूण अईसा लूण मसाणां हमां पाया अमुकादिद अमुक खाय तरुवा चाटत जन्म जाय ॥ इति मंत्रः॥अस्य विधानम्—इस मंत्रसे लवण (लोन)को २१ बार अभिमंत्रित कर खिलावे तो वश हो॥२५॥अथ सुपारीमोहिनीमंत्रप्रयोग—पीर मैं नाथ पीर तू नाथ जिसको खिलाऊं तिसको वश करना फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—ग्रहणके समय नाभिसमान जलमें खडा हो सुपारी १ सात बार अभिमंत्रित करके निगल जावे जब निकले तब जलसे धोकर दूधमें धोवे पीछे अष्टोत्तरशत मंत्र पढकर गूगलकी धूनी देवे पीछे जिसको १ फांक खवावे क्या स्त्री क्या पुरुष वशमें होजायगा ॥ २६ ॥ अथ इलायचीमोहिनीमंत्रप्रयोग—ॐ नमा काला कलुवा काली रात निसकी पुतली मांझी रात काला कलुवा बाट वाट सोतीको जगाय लाव बैठीको उठाय लाव खडीको चलाय लाव वेगी धर लाव मोहिनी जोहिनी चल राजाकी ठाव अमुकीके तनमें चटपटी लगाव जियाले तोड जो कोई खाय हमारी इलायची कभी न छोडे हमारा साथ घरको तजे बाहरको तजे घरके सांईको तजे हमे तज और कने जाय तो छाती फाड तूरत मर जाय सत्य गुरू आदेश गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र इश्वरीवाचा इश्वर महादेवकी वाचासे टरे तो कुंभी नरकमें पड ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम—दिन २१ में सिद्ध कर ले पीछे इलायची अभिमंत्रित करके खिलावे तो वशमें होवे सत्य ॥ २७ ॥ अथ लौंगमोहिनी मंत्रप्रयोग—सत्य नाम आदेश गुरूको लौंग लौंग मेरा भाई इन्हीं लौंगने शक्ति चलाई पहली लौंग राती माती दूजी लौंग जोबनमाती तीजी लाग अंग मरोडे चौथी लौंग दोऊ कर जोडे चारों लौंग जो मेरी खाय फलाने के पाससे फलानेकने आ जाय गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्- शनिसे प्रारंभ करके रात्रिके समय पूजन करे और अष्टोतरशत मंत्र नित्य जप करे तो २१ इक्कीस दिनमें सिद्ध हो पीछे चार ४ लौंग अभिमंत्रित करके खिलावे तो हाजिर हो। सत्यम् ॥ २८ ॥ अथ वेश्यावशीकरणमंत्रप्रयोगः—ॐ द्राविणी स्वाहा ॥ ॐ हामिले स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—ऊँगाकी कील सात अंगुलकी सात मंत्रोंसे अभिमंत्रित करके वेश्याके घरमें डाले तो वेश्या वश्य हो ॥

॥ २९ ॥ अथ राजवशीकरणमंत्रप्रयोग–हथेलीमें हनुमंत बसे, भैरू बसे कपाल । नारसिंहकी मोहिनी, मोहा सब संसार ॥ मोहन रे मोहंता वीर, सब वीरनमें तेरा सीर, सबकी दृष्टि बांधिदे तोहि, तेल सिंदूर चढाऊ तोहि, तेल सिंदूर कहांसे आया, कैलास पर्वतसे आया, कौन लाया अंजनीका हनुमंत गौरीका गणेश लाया, काला गोरा तोतला, तीने बसै कपाल। बिंदा तेल सिंदूरका, दुश्मन गया पताल। दुहाई कामियां सिंदूरकी हमें देख शीतल होजाय मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा सत्य नाम आदेश गुरूको॥ इति मंत्रः॥ अस्य विधानम्–रविवारको नृसिंहका पूजन कर १२१ बार मन्त्रको पढे. इसीप्रकार सात रविवारतक करे तेलका दीपक जोडे लोहबान देवे लड्डू चढावे तो सिद्ध हो पीछे सिंदूरको अभिमंत्रित करक मस्तकपर बिंदी लगा जावे तो राजाका क्रोध शांत हो प्रसन्न हो॥३०॥अन्यत्–ॐ नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुकं महीपतिं मे वश्यं कुरु २ स्वाहा॥इति मंत्रः॥ अस्य विधानम्–ऊंगाका पुष्प रविवारको लाकर मन्त्रसे अभिमंत्रित कर राजाको खिलावे तो वशमें हो जायगा ॥ ३१ ॥ अथ मंत्रिवशीकरणमंत्र प्रयोग–बिस्मिल्ला हदाना कुलू अल्ला हयगाना दिल है सख तुम हो दाना हमारे बीच फलानेको करो दिवाना ॥ इति मंत्रः ॥ बिनौले २१ लेकर हरएक बिनौलेपर इक्कीस मंत्र पढकर अग्निमें होमे तो इक्कीस दिनमें सिद्ध हो, पीछे ४१ बिनौले लेकर हर एक बिनौलेपर ४१ मंत्र पढकर अर्द्धरात्रिमें होमे तो तीनही दिनमें राजाका कामदार वश हो जाता है ॥ ३२ ॥ अथ सभामोहिनीमंत्रप्रयोगः–काली मुख धोये करू सलाम मेरी आंखोंमें सुरमा बसै जो देखै सो पायन परै दुहाई गौ सुल आदम दस्तगीरकी छ ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--सवा लाख गेहूंपर मन्त्र पढे पीछे आटा पिसाकर घृत शक्कर मिला हलुवा तैयार करै गौसुल आदम दस्तगीरकी नियाज दिलावे पीछे उस हलवेको आप खावे सिद्ध हो पीछे जब दरबारमें जानेका काम पडे सुरमेको अभिमंत्रित करके नेत्रोंमें लगा जावे तो सारी सभा वश हो हांजी हांजी करे ॥ ३३ ॥ अथ नग्नमोहिनीमंत्रप्रयोग--पद्मनी अंजन मेरा नाम इस नगरीमें पैसके मोहे सगरा गाम राज करंता राजा मोहूं फरस बैठा पंच मोहूं पनघटकी पनिहार मोहूं इस नगरीमें पसके छत्तीस पवना मोहूं जो कोई मार मार

करंता आवे ताहि नारसिंह बांये पगके अंगुठा तरे घेरघेर लावे मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा सत्य नाम आदेश गुरूको ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—रवि शनिकी रात्रिको धूप दीप चंदन पुष्प रोली चावल गूगल पान सुपारी लौंगसे नारसिंहका पूजन करे और एकसौ आठ बार मंत्रका जप करे प्रत्येक मंत्रसे पान सुपारी शक्कर घृत गगलका हवन करे सिद्ध हो पीछे नादनवन कपासकी रुइमें औंगाकी जड लपेटकर बत्ती बनावे और तेलके साथ काजल पाड उस काजलको सात बार अभिमंत्रित करके नेत्रोंमें लगावे तो सम्पूर्ण स्त्री पुरुष बालक वृद्ध तरुण वश्य हों जिस ग्राममें सब ग्रामवासी सेवामें रहें पंडितोंके वास्ते श्रेष्ठ है ॥ ३४ ॥

॥अथ शत्रुमोहिनीमंत्रप्रयोगः॥मंत्रो यथा—ॐनमो उच्छिष्टचांडालिनिकंकालमालाधारिणि साधुसाधु त्रैलोक्यमोहिनि प्रकांडक्षोभिणि शत्रून् क्षोभय २ हुं फट् स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—यह मंत्र क्षोभिणी देवीका है इसका जप तथा हवन करनेसे शत्रुओंका क्षोभ होता है अगर वट और शमीवृक्षकी समिधा घृतसहित नित्य एक हजार हवन करे तो स्त्री वशीभूत होती है इसमें कुछ संदेह नहीं ॥ ॥ ३५ ॥ अथाकर्षणमंत्रप्रकरणम् ॥ आकर्षणविधिं वक्ष्ये शृणु सिद्धि प्रयत्नतः ॥ राज्ञां प्रजानां सर्वेषां सत्यमाकर्षणं भवेत् ॥ १ ॥

तत्रादौ विश्वावसुनामकगंधर्वमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा—ॐ विश्वावसुर्नाम गंधर्वः कन्यानामधिपतिः सुरूपां सालंकारां कन्यां देहि नमस्तस्मै विश्वावसवे स्वाहा ॥ इत्येकोनचत्वारिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—कन्यागृहे शालकाष्ठं क्षिपेदेकादशांगुलम् ॥ ऋक्षे तु पूर्वाफाल्गुन्यां स्वयं कन्या प्रयच्छति ॥ १ ॥ ३६ ॥ अथ मूलीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा—ॐ मूली मूली महामली सर्व संक्षोभय२ उपद्रवेभ्यः स्वाहा ॥ इति पंचविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अंजलीमें जल लेकर इस विद्याका जप करे तो एक महीनेमें वस्त्र आभूषणोंसहित सुंदर स्त्री प्राप्त होती है ॥ ३७ ॥ अथ बीजमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा—ह्रं ह्रां ह्रां ह्रें ह्रैं ॥ इति पंचाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—इस मंत्रको प्रतिदिन पांच हजार जपनेसे इक्कीस दिनमें सिद्ध हो जाता है पीछे भक्ष्य द्रव्यको अपने हाथमें लेकर

१ भावार्थः-पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रके दिन ग्यारह अंगुलका शालकाष्ठ अभिमंत्रित करके कन्याके घरमें डाल दे तो कन्या उसे अवश्य ही वरेगी ।

मंत्रद्वारा अभिमंत्रित करके जिसको भक्षण करावे वह प्राणी जहां लेजावो वहां ही जायगा ॥ ३८ ॥ अथादिरूपमंत्रः ॥ मंत्रो यथा—ॐ नम आदिरूपाय अमुकस्याकर्षणं कुरु २ स्वाहा ॥ इत्येकाविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—इस मंत्रको गोरोचन और केसरसे मनुष्यकी खोपडीपर लिखके प्रातःकाल मध्याह्न और सायंकाल इन तीनों समय खैरके अंगारमें तपावे तो स्त्री वा पुरुष वा पशुका आकर्षण होता है अर्थात् वह आजाता है ॥ ३९ ॥ अथ रुद्रमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा—ॐ ह्रीं ठः ठः स्वाहा ॥ इति षडक्षरो मंत्रः प्रथमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय रादष्टिलंपिनाहरः स्वाहा दुहाई कंसासुरकी जूटजूट फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इत्येकचत्वारिंशदक्षरो मंत्रो द्वितीयः ॥ अस्य विधानम्—मंगलवारसे प्रारंभ कर पहले षडक्षर मंत्रको प्रतिदिन एक हजार दूसरे मंत्रको इक्कीस बार जपे तो दशादिनमें सिद्ध होता है, ग्यारहवें दिन होम तर्पण मार्जन व ब्राह्मणभोजन करानेके अनंतर मंत्र सिद्ध हो जानेकी परीक्षा इस रीतिसे करे—अर्थात् एक सरकंडेको बीचसे चीरकर दोनों तरफसे दो मनुष्य पकडें और साधक चूहेके बिलकी मिट्टी, सरसों, बिनौले इन तीनों चीजोंको मंत्रद्वारा अभिमंत्रित करके सरकंडेपर मारे तो दोनों टूक मिल जायँगे तब इस मंत्रको सिद्ध हुआ जानकर जिसका आकर्षण करना हो उसके वस्त्रपर उक्त तीनों चीजोंको अभिमंत्रित करके मारे तो वह स्त्री वा पुरुष जितने दिनोंके मार्गपर होगा उतने ही दिनोंमें आजायगा इसमें संदेह नहीं ॥ ४० ॥ इति वशीकरणादिमंत्रप्रकरणम् ॥

॥ अथ मोहनतंत्रप्रारंभः ॥ दत्तात्रेयतंत्रे मंत्रो यथा—ॐ नमः सर्वलोकमोहनं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति षोडशाक्षरो मंत्रः ॥ इति मंत्रेण अष्टोत्तरशतमभिमंत्र्य सर्वयोगान् कुर्यात् ॥ ईश्वर उवाच ॥ तुलसीबीजचूर्णस्य सहदेवीरसैः सह ॥ तिलकं यो रवौ कुर्यात्स जगन्मोहको भवेत् ॥ ४१ ॥ हरितालाश्वगंधा तु कदलीरसपेषिता ॥ गोरोचनयुता तस्यास्तिलको लोकमोहनः ॥ ४२ ॥ शृंगिचंदनसंयुक्त वचाकुष्ठेन धूपयत् ॥ देहं तथा स्ववस्त्रं च मुखं वै साधकस्ततः ॥ पशुपक्षिप्रजाभूपमोहदो दर्शनाद्भवेत् ॥ ४३ ॥ गृहीतमूलतांबूल तिलको लोकमोहनः ॥ ४४ ॥ मनःशिला च कर्पूरं कदलीरसपेषितम् ॥ अनेनैव तु तंत्रेण तिलको लोकमोहनः ॥ ४५ ॥ सिंदूरं च

वचा श्वेता तांबूलरसपोषिता ॥ अनेनैव त तंत्रेण तिलको लोकमोहनः ॥ ४६ ॥ अपामार्गभृंगराजलज्जालुसहदेविकाः ॥ एभिस्तु तिलकं कृत्वा त्रैलोक्यं मोहयन्नरः ॥ ४७ ॥ गृहीत्वादुंबरं पुष्पं वर्तिं कृत्वा विचक्षणः ॥ नवनीतेन प्रज्वाल्य कज्जलं पातयेन्निशि ॥ कज्जलेनांजयेन्नेत्रं मोहनं जगतस्त्विदम् ॥ यस्मै कस्मै न दातव्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥ ४८ ॥ श्वेतगुंजारसे पिष्ट्वा ब्रह्मदण्डीं च मूलकम् ॥ लेपं शरीरे यः कुर्यात्स जगन्मोहनो भवेत् ॥ ४९ ॥ श्वेतदूर्वां शुभां मंत्री हरितालं च पेषयेत् ॥ अनेन तिलकं कृत्वा त्रैलोक्यमपि मोहयेत् ॥ ५० ॥ बिल्वपत्रं गृहीत्वा तु च्छायाशुष्कं च कारयेत् ॥ कपिलापयसार्द्धेन वटीं कृत्वा तु धारयेत् ॥ तिलकं यस्तु तं दृष्ट्वा साधकं सकलं जगत् ॥ क्षणेन मोहनं याति प्राणैरपि धनैरपि ॥ ५१ ॥ श्वेतार्कमलमादाय श्वेतचंदनसंयुतम् ॥ अनेन तिलकं भाले कुर्याद्यो मोहयेज्जगत् ॥५२॥ सिंदूरं कुंकुमं चैव गोरोचनसमन्वितम् ॥ धात्रीरसेन संयुक्तं तिलकोऽयं नृमोहनः ॥ ५३ ॥ विजयापत्रमादाय श्वेतसर्षपसंयुतम् ॥ अनेन लेपयद्देहं यः स विश्वविमोहनः ॥ ५४ ॥ गृहीत्वा तुलसीपत्रं छायाशुष्कं तु कारयेत् ॥ अश्वगंधासमायुक्तं विजयाबीजसंयुतम् ॥ कपिलाशुद्धपयसा वटिका टंकमानतः ॥ भक्षिता प्रातरुत्थाय मोहयेत्सर्वतो जगत् ॥ ५५ ॥ पंचांगं दाडिमं पिष्ट्वा श्वेतगुंजासमन्वितम् ॥ अनेन तिलकं कृत्वा मोहयेत्सर्वतो जगत् ॥ ५६ ॥ कटुतुंबीबीजतैले ज्वालयेत्पटवार्तिकाम् ॥ तत्कज्जलं नेत्रगतं मोहयेत्सकलं जगत् ॥ ५७ ॥ अथ वशीकरणतंत्रम् ॥ दत्तात्रेयतंत्रे मंत्रो यथा—ॐ नमः सर्वलोकवशंकराय कुरु २ स्वाहा ॥ इत्यष्टादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अष्टोत्तरशतजपात्सिद्धिः ॥ सिद्धे मंत्र मंत्री सर्वप्रयोगान् साधयेत् ॥ तथाच—ईश्वर उवाच ॥ नृकपाले रविदिने तंडुलैः पायसं कृतम् ॥ छायाशुष्कं तु तच्चूर्णं खाद्ये पाने च दीयते ॥ यावज्जीवं वशी याति नारी वा पुरुषोऽपि वा॥ अदासो दासतां याति प्राणैरपि धनैरपि ॥ अन्यत्—पल्लीपुच्छं गहीत्वा तु वर्तिमृतुमतीस्त्रिया ॥ ज्वालितां यं रवौ वारे दर्शयेत्स वशो भवेत् ॥ ब्रह्मदंडीवचाकुष्ठचूर्णं तांबूलमिश्रितम् ॥ रवौ वारे कृतं चेत्स सर्वलोकवशंकरः ॥ ५८ ॥ गृहीत्वा वटमूलं च जलेन सह घर्षयेत् ॥ विभूत्या संयुतं तस्य तिलको लोकवश्यकृत् ॥ ५९ ॥ पुष्ये पुनर्नवामूलं करे सप्ताभि

मंत्रितम् ॥ यस्यास्ते स भवेत्पूज्यो वधूभिः सर्वमोहकः ॥ ६० ॥ अपामार्गस्य मूलं तु कपिलाक्षीरपेषितम् ॥ ललाटे तिलकस्तस्य वशीकुर्य्याज्जगत्रयम् ॥ ६१ ॥ गृहीत्वा सहदेवीं वै च्छायाशुष्कां तु कारयेत् ॥ तांबूले निहितं तस्याश्चूर्णं लोकवशंकरम् ॥६२॥ रोचना सहदेवीभ्यां तिलको लोकवश्यकृत् ॥ ६३ ॥ गृहीत्वोदुंबरं मूलं ललाटे तिलकः कृतः ॥ प्रियो भवति सर्वेषां दृष्टिमात्रान्न संशयः ॥ तांबूले वा प्रदातव्यं सर्वलोकवशंकरम् ॥ ६४ ॥ देवदालीं च सिद्धार्थगुटिकां कारयेद् बुधः ॥ मुखनिक्षेपमात्रेण सर्वलोकवशंकरः ॥ ॥ ६५ ॥ कुंकुमं तगरं कुष्ठं हरितालं मनःशिला ॥ अनामिकाया रक्तेन तिलकः सर्ववश्यकृत् ॥ ६६ ॥ गोरोचनं पद्मपत्रं प्रियंगु रक्तचन्दनम् ॥ एकीकृत्य जपेन्मंत्रं सर्वलोकवशंकरम् ॥ ६७ ॥ गृहीत्वा श्वेतगुंजायाश्छायाशुष्कं तु कारयेत् ॥ कपिलापयसार्द्धेन तिलको लोकवश्यकृत् ॥ ६८ ॥ तन्मूलं पत्रतांबूलं सर्वलोकवशंकरम् ॥ तन्मूलाल्लेपयेद्देहं सर्वलोकवशंकरः ॥ ६९ ॥ श्वेतदूर्वां गृहीत्वा तु कपिलाक्षीरपेषिताम् ॥ तल्लेपनाद्भवेन्मन्त्री सर्वलोकवशंकरः ॥ ७० ॥ श्वेतार्कं वै गृहीत्वा तु छायाशुष्कं तु कारयेत् ॥ कपिलापयसार्द्धेन तिलकः सर्ववश्यकृत् ॥ ७१ ॥ बिल्वपत्राणि संगृह्य मातुलिंगं तथैव च ॥ अजादुग्धेन संपेष्य तिलको लोकवश्यकृत् ॥७२॥ कौमारीकंदमादाय विजयाबीजसंयुतम् ॥ तिलकं धारयेद्भाले सर्वलोकवशंकरम् ॥ ७३ ॥ हरितालं चाश्वगंधा सिंदूरं कदलीरसम् ॥ तिलकः क्रियतेऽनेन सर्वलोकवशंकरः ॥ ७४ ॥ अपामार्गस्य बीजानि छागीदुग्धेन पेषयेत् ॥ तल्लेपनाद्भवेन्मंत्री सर्वलोकवशंकरः ॥७५॥ हरितालं च तुलसी कपिलादुग्धपेषिता ॥ अनेन तिलको भाले सर्वलोकवशंकरः ॥ ७६ ॥ धात्रीफलरसे भाव्यमष्टगंधं मनःशिला ॥ अनेन तिलको भाले सर्वलोकवशंकरः ॥ ७७ ॥ प्राकृतग्रंथे दोहा—लाय मनुष्यकी खोपडी,बीज धतूरो मेल। शहत कपूर मिलायके, करै तिलकका खेल ॥ चौ० पुरुष होय चाहे हो नारी, देखत तिलक होय वश भारी। यह कापालिक योग अनोखो, कह्यो वशिष्ठ होय नहिं धोखो ॥ ७८ ॥ अथ राजवशीकरणतंत्रम् ॥ दत्तात्रेयतंत्रे मंत्रो यथा—ॐ नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुकं महीपतिं मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इत्यष्टाविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अष्टोत्तरशतजपात् सिद्धिः ॥ एतस्मिन्सिद्धे मंत्रे मंत्री तंत्राणि कुर्यात् ॥

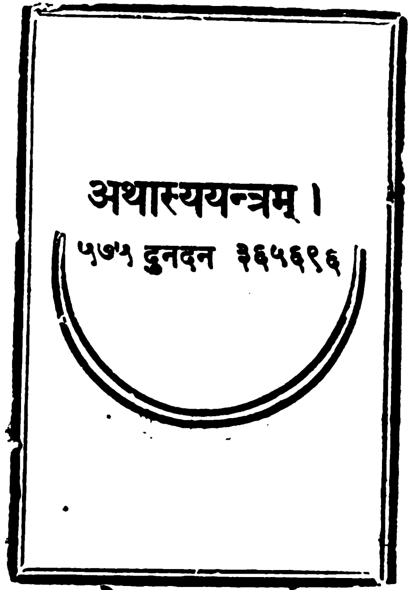
तथाच–ईश्वर उवाच ॥ कुंकुमं चंदनं चैव कर्पूरं तुलसीदलम् ॥ गोक्षीरघर्षितं तस्य तिलको राजमोहनः ॥ ७९ ॥ करे सुदर्शनामूलं बद्ध्वा राजप्रियो भवेत् ॥ ८० ॥ सिंहीमूलं हरेत् पुष्ये कटिं बद्ध्वा नृपप्रियः ॥ हरितालं चाश्वगंधा कर्पूरं च मनःशिला ॥ अजाक्षीरेण तिलको राजवश्यकरः परः ॥ ८१ ॥ गृहीत्वा सुदर्शनामूलं पुष्यनक्षत्रवासरे ॥ कर्पूरं तुलसीपत्रं पेषयेल्लिप्तवस्त्रके ॥ विष्णुक्रांताया बीजानां तैलं प्रज्वाल्य दीपके ॥ कज्जलं पातयेद्रात्रौ शुचिः पूर्वं समाहितः ॥ कज्जलं चांजयेन्नेत्रे राजवश्यकरो भवेत् ॥ चक्रवर्ती भवेद्वश्यो ह्यन्यलोकस्य का कथा ॥ ८२ ॥ अपामार्गस्य बीजानि गृहीत्वा पुष्यभास्करे ॥ खाद्ये पाने प्रदेयानि राजवश्यकराणि हि ॥ ८३ ॥ अथ पतिवशीकरणतंत्रम् ॥ मंत्रो यथा दत्तात्रेयतंत्रे–ॐ नमो महायक्षिणि पतिं मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इत्येकोनविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अष्टोत्तरशतजपात् सिद्धिः ॥ एतस्मिन्सिद्धे मंत्रे मंत्री तंत्राणि कुर्यात् ॥ तथा च–ईश्वर उवाच ॥ गोरोचनं योनिरक्तं कदली रससंयुतम् ॥ एभिस्तु तिलकं कृत्वा स्वपतिं वशमानयेत् ॥ ८४ ॥ पंचांगदाडिमीं पिष्ट्वा श्वेतसर्षपसंयुताम् ॥ योनिलेपात्पतिं दासं करोत्यपि च दुर्भगा ॥ ८५ ॥ मालतीपुष्पसंयुक्तं कटुतैलेषु पाचितम् ॥ एतल्लिप्तभगा नारी रतौ वै मोहयेत्पतिम् ॥ ८६ ॥ भौमे पूगीफलं भुक्त्वा प्रातर्विष्ठां समाहरेत् ॥ जलप्रक्षालितं खंडं तांबूले पतिवश्यकृत् ॥ ८७ ॥ जिह्वामलं लवंगं च खाद्ये पाने प्रदापयेत् ॥ पतिवश्यकरं देव पतिर्दासस्तु जायते ॥ ८८ ॥ प्राकृतग्रंथे–स्त्री अपने आर्तवमें गोरोचनको भिगोकर मस्तकपर तिलक करे पीछे जिस जिसको देखेगी वह वह निश्चय करके वशमें हो जायगा ॥ ८९ ॥ स्त्री रविवारको अपने बायें पैरकी जूतीके बराबर आटा तोलके उसकी रोटी बना पतिको खिलावे तो वह पति स्त्रीके समान होकर उस स्त्रीके आधीन रहेगा ॥ ९० ॥ अथ स्त्रीवशीकरणतंत्रम् ॥ दत्तात्रेयतंत्रे मंत्रो यथा–ॐ नमः कामाक्षीदेवि अमुकीं मे वश्यां कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अष्टोत्तरशतजपात् सिद्धिः ॥ एतस्मिन्सिद्धे मंत्रे मंत्री तंत्राणि साधयेत् ॥ तथा च–रविवारे गृहीत्वा तु कृष्णधत्तूरपुष्पकम् ॥ शाखालतां गृहीत्वा तु पत्रं मूलं तथैव च ॥ पिष्ट्वा कर्पूरसंयुक्तं कुंकुमं रोचनं समम् ॥ तिलकेन वशे

कुर्यात्पवि साक्षादरुंधती ॥ ९१ ॥ काकजंघा वचा कुष्ठं शुक्रशोणितमिश्रितम् ॥ दत्तं तु भोजने बाला श्मशाने सा तु रोदिति ॥ ९२ ॥ चिताभस्म वचा कुष्ठं कुंकुमं च समं समम् ॥ चूर्णं स्त्रीशिरसि क्षिप्तं वशीकरणमद्भुतम् ॥ ९३ ॥ जिह्वामलं दंतमलं नासाकर्णमलं तथा ॥ तांबूले तु प्रदद्याद्वै वशीकरणमद्भुतम् ॥ ९४ ॥ भौमवारे लवंगं च लिंगच्छिद्रे निशि क्षिपेत् ॥ बुधवारे समुद्धृत्य खाद्ये पाने वशा भवेत् ॥ ९५ ॥ करपादनखानां च कृत्वा भस्म विशेषतः ॥ खाद्ये पाने प्रदातव्यं वशीकरणमद्भुतम् ॥ ९६ ॥ शनिवारे गृहीत्वा तु वनितावामपादगम् ॥ पांसुं पुत्तलिकां कृत्वा तत्केशसंयुतां कृताम् ॥ नीलवस्त्रेण संवेष्ट्य स्ववीर्यसंयुतं भगम् ॥ सिंदूरलेपितं कृत्वा निखनेद्द्वारवामके ॥ लंघयित्वा वशं याति प्राणैरपि धनैरपि ॥ यस्मै कस्मै न दातव्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥ ९७ ॥ ब्रह्मदंडी चिताभस्म यदंगे निक्षिपेन्नरः ॥ वशा भवति सा नारी नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ९८ ॥ पूगीफलं गृहीत्वा तु चन्द्रवारे मृगान्विते ॥ खंडकं वीर्यसंयुक्तं तांबले वश्यकारकम् ॥ ९९ ॥ तांबूलरसमध्ये च पिष्ट्वा तालं मनःशिलाम् ॥ भौमे तु तिलकं कुर्यात्कामिनी वशकारकम् ॥ १०० ॥ सिंदूरं कदलीकंदं पेषयेद्भूमिवासरे ॥ अनेन तिलकं कृत्वा सत्यं नारी वशा भवेत् ॥ १०१ ॥ गोदंतं वरदंतं च पिष्ट्वा तैलेन लेपयेत् ॥ एभिस्तु तिलकं कृत्वा कांतावश्यकरो भवेत् ॥ उलूकमांसं कामिन्यै खाद्ये पाने प्रदापयेत् ॥ सिद्ध योगः परं पथ्यो विना मंत्रेण सिद्ध्यति ॥ १०२ ॥ लिंगमलं गृहीत्वा तु खाद्ये पाने प्रदापयेत् ॥ वशा भवति सा नारी विना मंत्रेण सिद्ध्यति॥१०३॥स्वमूत्रसंयुतं कुष्ठं तांबूले वश्यकृद्भवेत् ॥१०४॥ जिह्वामलं जातिफलं तांबूले वश्यकारकम् ॥ यवचूर्णं हरिद्रा च गोमूत्रं घृतसंयुता ॥ तांबूलरससंयुक्ताऽनया संमर्दयेत्सुधीः ॥ मुखं भवति पद्माभं पादौ पद्मदलोपमौ॥ प्रियो भवति सर्वेषां स्त्रीषु राजकुलेषु च ॥ १०५॥ गोरोचनं पद्मपत्रं पेषयेत्तिलकः कृतः ॥ शनिवारेऽनेन शुभः कामिनीवशकारकः ॥ १०६ ॥ गृहीत्वा मालतीपुष्पं पट्टसूत्रेण वर्तिकाम् ॥ भृगौ वै नृकपाले चैरंडतैलस्य कज्जलम् ॥ अनेन चांजयेन्नेत्रं दृष्टिमात्रेण मोहयेत् ॥ विना मंत्रेण सिद्धिः स्यान्नान्यथा शंकरोदितम् ॥ १०७ ॥ प्राकृतग्रंथे—काली कुतियाके बच्चा पीतसमय दूध निकालकर उसमें लौंग भिगोवे तीन दिन पीछे निकालकर सुखावे

पीछे अपने वीर्यमें भिगोकर सुखावे तो तंत्र सिद्ध हो पीछे इस लौंगको जिस स्त्री या पुरुषको खिलावे वह वशमें होजायगा। इस तंत्रको करके तमाशा देखो ॥ १०८ ॥ अन्यत्–रविवारकी रात्रिमें मर्घटकी भस्म लाकर अपने थूक और वीर्यमें साने तंत्र सिद्ध हो, पीछे जिस स्त्रीको खिलावे वह आशिक हो जायगी। परीक्षा किया हुआ है ॥ १०९ ॥ अन्यत्–प्रथम शनिवारको अपने बीसो नाखून कतर कर जलावे १ पीछे रविवारको काले कौवेकी जीभ लाकर जलावे २ और श्मशानकी भस्म लाकर तीनों चीजोंको इकट्ठी करे३ उसमें अपना वीर्य ४ थूक ५ जीभका मैल ६ नाकका मैल ७ कानका मैल ८ नेत्रका मैल ९ दांतका मैल १० कनिष्ठिका अंगुलीका रुधिर ११ इन सब ग्यारह चीजोंको मिलाकर चनेके बराबर गोली बनावे पीछे इसमेंसे एक गोली शुभ दिनमें स्त्रीको खिलादे तो इस कदर फरेफ्ता होके ग़ज़ब गुजरे ॥ ११० ॥ अन्यत्–पुष्यनक्षत्रमें नदीके किनारे जाकर झाऊकी जड नीचेसे निकाल लावे उस जडको पीसकर कुडाकी छाल मिलावे पीछे इस चूर्णको लेकर श्मशानमें जावे और श्मशानकी भस्म चुटकी भरके इस चूर्ण में मिलादे पीछे इस चूर्णको जिस स्त्री वा पुरुषके शिरपर डालेगा वह साथ चली आवेगी ॥ १११ ॥ अन्यत् ॥ जो बैल रविवार को मरा हो उसका सींग मँगाकर उसमें स्त्रीके बायें पगतलेकी मिट्टी भरकर अपने घरमें गाडे तो वह स्त्री अवश्य वशमें हो जायगी इसमें संदेह नहीं ॥ ११२ ॥ अन्यत्–सफेद आककी जड १ कुटकी २ मोथा ३ जीरा ४ चारोंको रुधिरमें पीसकर तिलक लगावे जो स्त्री टीका देखेगी बस वशमें हो जायगी ॥ ११३ ॥ अन्यत्–बुधवारको एक जोक लाकर सुखावे पीछे कुवाँरी कन्याका काता सूत उसपर लपेटकर सफेद तिलोंके तेलसे काजल पाडे उस काजलको आंखोंमें डालकर जिस स्त्रीसे नजर मिलावेगा वह साथ हो लेगी इसमें संदेह नहीं ॥ ११४ ॥ अन्यत्–प्रथम रजस्वला हुई स्त्रीका रक्तवस्त्र लाकर बत्ती बनावे अरंडके तेलसे काजल पाडे इस काजलकी जिस स्त्रीको रेखा लगावोगे वह स्त्री दिवानी होकर आप ही आ जायगी ॥ ११५ ॥ अन्यत्–होली या दिवालीकी रात्रिको लाल अरंडका पेड एक झटकेसे तोड लावे उसका काजल कर इक्कीस बार मंत्रसे जिस स्त्रीको लगावे बस

वशमें हो जायगी ॥ तत्र मंत्रः–ॐ नमो कालभैरव काली रात काला चाला आधी रात काला रे तू मेरा वीर परनारीसे राखे सीर वेगी जा छाती धर लाव सूती हो तो जगाय लाव शब्द साचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ ११६ ॥ अन्यत्–ॐ द्वार देवतायै ह्रीं स्वाहा ॥ इति दशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–इस मंत्रको नदीके किनारे छब्बीस हजार २६००० जपके गूगल घृतका दशांश होम करे तो वशीकरणयक्षिणी प्रसन्न हो पीछे उस होमकी भस्मको जिस स्त्रीको लगावे वह वशमें हो जायगी ॥ ११७ ॥ अन्यत्–जो कोई रविवारको मरा हो उसकी तीन मुट्ठी भस्म लावे पीछे शनिवारसे उस राखके ऊपर दीपक धरके एकसो चवालीस १४४ मंत्र नित्य जपे धूप दीप नैवेद्यसे उस दीपकका पूजन करे तो सात ७ दिनमें सिद्ध हो पीछे उस राखमें से थोडीसी लेकर इक्कीस बार अभिमंत्रित करके जिस स्त्रीके ऊपर डाले साथ चली आवेगी परीक्षा भैंसपर कर ले ॥ तत्र मंत्रः–धूली धूलेश्वरी धूली माता परमेश्वरी धूली च चली जय जय कार इन रनचोप भरै अमुकी छाती छार छार लेन हटै दे तज घरबार मरै तो मसान लोटै जीवै तो पांव पलोटै वाचा बांध सूती होय तो जगाय लाव माता धूलेश्वरी तेरी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ठः ठः ठः स्वाहा ॥ ११८ ॥ अन्यत्–धोई गजी सवा हाथ भभूलेमें डाले जब भभूला गजीको आकाशमें उडा लेजावे जब उसके पीछे चला जावे जब वह कपडा धरतीमें गिरे मट्टीसहित उठाकर धोबीकी सिलापर जावे पीछा फिरके देखे नहीं रजकासिलापर मट्टीको अलग करके उस कपडेको जलावे पीछे वह मट्टी और कपडेकी राख दोनोंको लेकर गूगलकी धूनी दे पीछे घरमें लेआवे कपडेकी राख लगानेसे स्त्री आवेगी और धल लगानेसे चली जायगी। इस तंत्रके बराबर स्त्रीके वश करनेका दूसरा उपाय नहीं है ॥११९॥ ॥ अन्यत्–जिस गायका सींग मिला हो उस सींगका छिलका लेकर सपेद गुंजासहित पीसकर जिसके मस्तकपर डाले वह निश्चय वश्य हो ॥ १२० ॥ अन्यत्–आककी जड १ धतूरेकी जड २ कबूतरकी बीट ३ चौराहेकी धूल ४ गौके बाल ५ श्मशानकी राख ६ इन छः चीजोंको मिलाकर जिसके मस्तकपर डाले वह अवश्य ही वशीभत हो जाती है ॥ १२१ ॥ अथाकर्षणतंत्रम् ॥ मंत्रो

यथा-दत्तात्रेयतंत्रे-ॐ नम आदिरूपाय असुकस्याकर्षणं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इत्येकविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-अष्टोत्तरशतं जपेत् । सिद्धिर्भवति ॥ एतस्मिन्सिद्धे मंत्रे मंत्री तंत्राणि कुर्यात् ॥ तथा च-ईश्वर उवाच ॥ आकर्षणविधिं वक्ष्ये शृणु सिद्धिं प्रयत्नतः ॥ राज्ञां प्रजानां सर्वेषां सत्यमाकर्षणं भवेत् ॥ कृष्णधत्तरपत्रस्य सरोचनरसेन तु ॥ श्वेतकर्वीरलेखन्या भर्जपत्रे लिखेन्मनुम् ॥ यस्य नाम लिखेन्मध्ये खादिरांगारतापितम् ॥ शतयोजनमायाति नान्यथा शंकरोदितम् ॥ १२२ ॥ अनामिकाया रक्तेन लिखेन्मंत्रं तु भूर्जके ॥ मध्ये लिखित्वा यन्नाम मधुमध्ये च निक्षिपेत् ॥ आकर्षितः स चायाति सिद्धयोग उदाहृतः ॥ यस्मै कस्मै न दातव्यो देवानामपि दुर्लभः ॥ १२३ ॥ नकपाले लिखेन्मंत्रं गवां रोचनया च तम् ॥ तापयेत्खादिरांगारे त्रिसंध्यं तु प्रयत्नतः ॥ उर्वश्यपि समायाति नान्यथा शंकरोदितम् ॥ यस्मै कस्मै न दातव्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥ १२४ ॥



इस यंत्रको घोडेके खुरके नीचे लिख कर अग्निमें तपावे तो सात दिनमें ही परदेश गया हुआ घरमें आजाय ॥ १२५ ॥

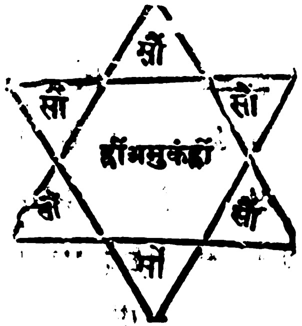
पक्ष्याकर्पणयन्त्रम्.

६१	६८	२	७
६	३	६२	६४
६७	६२	८	१
४	५	६२	६६

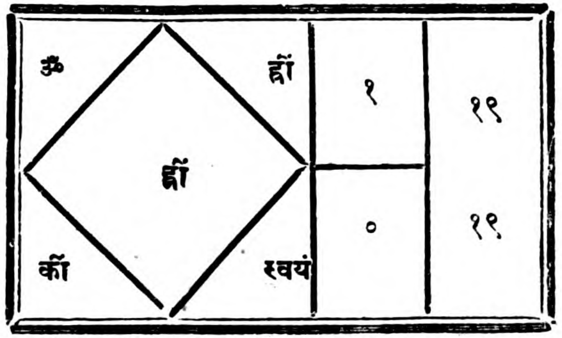
इस यंत्रको काठके पट्टेपर लिखके आसनपर धरे तो अकस्मात् सब पक्षी वहां ही आ जायंगे ॥ १२६ ॥



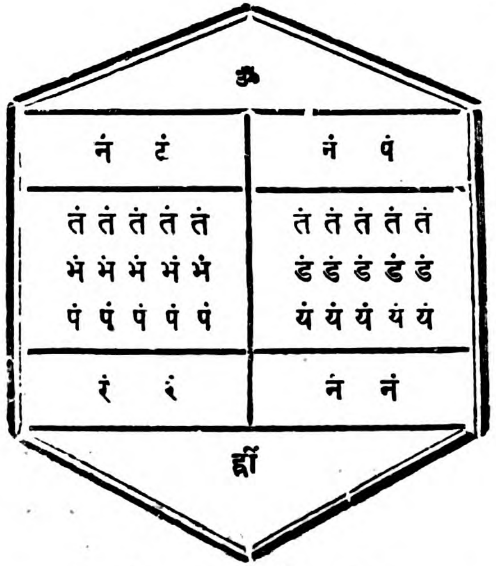
इस यंत्रको गोरोचन कुंकुमसे भोजपत्रपर लिख शरावसंपुटमें धर पंचोपचारसहित पूजन करे दूसरे दिन शिखामें बांधे तो यंत्रराजकी कृपासे मौन होकर फलकी चिंता करनेसे वही फल प्राप्त होता है ॥ १२७ ॥



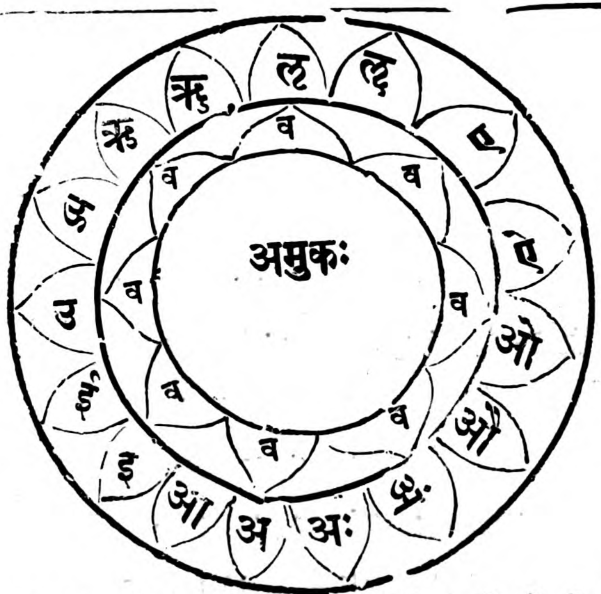
इस षट्कोण यंत्रको गोरोचनसे भोजपत्रपर लिखकर पंचोपचार करके घृतके कलशमें स्थापन करे और नित्य पूजन करता रहे और इस मंत्रसे महादेवीकी प्रार्थना करे तो शीघ्रही आकर्षण होता है ॥ तत्र मंत्रः ॥ आकर्षय महादेवि देवदत्तं मम प्रियम् ॥ ऐं त्रिपुरे देवदेवे तभ्यं दास्यामि याचितम् ॥ १२८ ॥



इस यंत्रको गेहूंकी रोटी पर लिखके काली कुतियाको खिलावे तो उसकी सास वश में हो जाय काले कुत्तेको खिलावे तो ससुर वशमें होजाय ॥ १२९ ॥



इस यंत्रको अष्टगंधसे भोजपत्रपर लिखके विधिवत् पजन करे पीछे सोनेमें मढाकर भुजामें बांधे तो जो कोई देखेगा वश हो जायगा ॥ १३० ॥



इस यंत्रको कांसीके पात्रमें चमेलीकी कलमसे गोरोचन चंदनद्वारा लिखे चमेली इत्यादि सफेद फूलोंसे पूजन करे सुंगधित द्रव्य चढावे पीछे एक सफेद वस्त्र उढादे पीछे इस

मोहननामवाले यन्त्रको सोने या चांदीमें मढाकर शिर, भुजा अथवा गलेमें बांधे तो जिस स्त्री वा पुरुषके वश करनेका मनोरथ होगा वह दासवत् वशीभूत हो जायगा ॥ १३१ ॥ अथ कालानलयंत्रम् ॥ यह यंत्र इस तरह लिखा जाता है कि तीन रेखाओंसे आवृत चतुष्कोणमें उतनी ही 'ह्रीं' लिखे जितने साध्यके नामके अक्षर हों नामके हरएक अक्षरको 'ह्रीं' के गर्भमें रख देवे अंतमें एक ईकार लिख देवे इस प्रकार गोराचनसे भोजपत्रपर लिखके एक चांदीकी प्रतिमाको हृदयमें रखकर उस मूर्तिका नित्य पूजन करे और चौदसकी रात्रिको चूहेके बिलमें इसको गाड देवे बकरेका रुधिर भात और आका बलिदान करे और इस मन्त्रको पढे "ॐ महाकालाय स्वाहा" ॥ पीछे इसी मंत्रसे १०८ आहुति देवे तो कैसा ही हठी क्रूर और दुराग्रही स्वामी क्यों न हो वशीभूत हो जायगा इस यन्त्रका नाम कालानल है ॥ ॥ १३२ ॥ इति श्रीमन्त्रमहार्णवे उत्तरखण्डे षट्कर्मतंत्रे वशीकरणाख्योऽष्टमस्तरङ्गः ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

कालानलयंत्रम्

ह्रिदीं ह्रवीं ह्रिदीं ह्रत्तीं

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथोच्चाटनादिशत्रुपीडाकारकतन्त्रम् ॥ हृतं येन गृहं क्षेत्रं कलत्रं धनपुत्रकाः ॥ उच्चाटनं वधं कुर्याद्दुष्टदंडो विधीयते ॥ १ ॥ तत्रादौ उच्चाटनम् ॥ वीरभद्रतंत्रे मन्त्रो यथा--ॐ अंग्निअंग्नि स्वाहा ॥ इति सप्ताक्षरो मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्--पूर्वाभाद्रपदायुतार्किवारे पिप्पलमूलस्य कीलकं कृत्वा सप्तवारमभिमंत्र्य यस्य द्वारे निखनेत्तस्य उच्चाटनं भवति ॥ १ ॥ अन्यत् ॥ मंत्रो यथा--ॐ ह्रीं दण्डिन् दण्डिन् महादण्डिन् नमोऽस्तु ते ठः ठः ॥ इति षोडशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--नरास्थिकीलकं चतुरंगुलं गृहीत्वा मन्त्रेणाभिमंत्र्य यस्य द्वारे निखनेत् अवश्यं तस्योच्चाटनं भवति ॥ २ ॥ दत्तात्रेयतंत्रे मंत्रो यथा--ॐ नमो भगवते रुद्राय दंष्ट्राकरालाय अमुकं सपुत्रं बांधवैः सह हन हन दह दह पच पच शीघ्रमुच्चाटय उच्चाटय हुं फट् स्वाहा ठः ठः ॥ इति पंचाधिकपंचाशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--अष्टोत्तरशतजपात्सिद्धिः ॥ एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मंत्री तंत्राणि कुर्यात् ॥ तथा च--ब्रह्मदंडी चिताभस्म शिवलिंगं प्रलेपितम् ॥ सिद्धार्थं चैव संयुक्तं शनिवारे क्षिपेद्गृहे ॥ उच्चाटनं भवेत्तस्य स्त्रीपुत्रपशुबांधवैः ॥ विना मंत्रेण सिद्धिश्च सिद्धयोग उदाहृतः ॥ ३ ॥ खरस्य वामपादाधःस्थितां संगृह्य धूलिकाम् ॥ मध्याह्ने भौमवारे च यद्गेहे निक्षिपेन्नरः ॥ उच्चाटनं भवेत्तस्य नरस्य मरणांतिकम् ॥ विना मंत्रेण सिद्धिश्च सिद्धयोग उदाहृतः ॥ ४ ॥ सिद्धार्थं शिवनिर्माल्यं यद्गृहे निखनेन्नरः ॥ उच्चाटनं भवेत्तस्य तद्गुद्धारे पुनः सुखी ॥ ५ ॥ काकपक्षं रवौ वारे यद्गृहे निखनेन्नरः ॥ उच्चाटनं भवेत्तस्य नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ६ ॥ घूकपक्षं कुजे वारे यद्गृहे निखनेन्नरः ॥ उच्चाटनं भवेत्तस्य विना मन्त्रेण निश्चितम् ॥ ७ ॥ घूकविष्ठां गृहीत्वा तु सिद्धार्थसहसंयुताम् ॥ यस्याङ्गे निक्षिपेच्चूर्णं सद्य उच्चाटनं भवेत् ॥ ८ ॥ गृहीत्वौदुंबरं कीलं मन्त्रेण चतुरंगुलम् ॥ तं यस्य निखनेद्गेहे ह्यवश्योच्चाटनं भवेत् ॥ ९ ॥ उलूककाकयोः पक्षान्हुत्वा ज्येष्ठाधिकं शतम् ॥ यन्नाम्ना मंत्रयोगोऽस्ति तस्योच्चाटनमादिशेत् ॥ १० ॥ नरास्थिजातं कीलं वै निखन्याच्चतुरंगुलम् ॥ [illegible]मरिद्वारे तस्य ह्युच्चाटनं भवेत् ॥ ११ ॥ अथ शत्रुपीडाकारकमंत्रः ॥ तत्रादौ चौकीस्थापनम् ॥ मंत्रो यथा--ॐ [illegible] समुद्रका सोखा नीर अमुकाके ऊपर चौकी चढ हियो फोड चोटी चढ सांस न आवे पडयो रहे कायामाहि जीव

रहै लाललंगोट तेल सिंदूर पूजा मांगो महावीर अंतर कपडापर तेलसिंदूर हजरतवीरकी चौकी रहे हजरतवीरकी चौकी रहे ॥ इति मंत्रः प्रथमः ॥ अन्यः—ॐ वीरवीर महावीर महीकील २ बुबुगोल किलकार चुचुकार न चुचुकारे तो न कील करै तो आपका खाया पीया हराम करै ॥ इति मंत्रो द्वितीयः ॥ अस्य मंत्रद्वयस्यैकं विधानम्—मंगलवारके दिन अर्द्धरात्रिमें तेल सिंदूर रक्तवस्त्र मंत्रद्वारा हनूमानको चढावे चणेकी दाल भिगोकर नैवेद्य धरे पीछे दूसरे कपडेमें तेल सिंदूर लगाकर मंत्रद्वारा रिपुके नामसहित सात सुई उस कपडेमें चुभोवे पीछे उस कपडेको मट्टीकी कुल्हडीमें डालकर मुख बंद करे परिहीडा अथवा जाजरूमें गाडे तो शत्रुकी काया सीतल होवे चौकी चढे सही जब अच्छा करना चाहे तब कपडेको निकालके सुइयोंको निकाल लेवे और कपडेको धोडाले तो अच्छा होजायगा ॥ १२ ॥ अथ प्रेतावेशकरणम् ॥ मंत्रो यथा—ॐ नमो भगवते भूताधिपतये विरूपाक्षाय घोर दंष्ट्रिणे विकरालिने ग्रहयक्षभूतेनानेन शंकर अमुकं हनहन दहदह पचपच गृह्णगृह्ण हुँ फट् स्वाहा ॥ इति त्र्यधिकषष्ठ्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—निंबकाष्ठं समादाय चतुरंगुलमानतः ॥ शत्रुकेशान्समालिप्य ततो नाम समालिखेत् ॥ १ ॥ चितांगारकृतं नाम धूपं दद्यात्सुरेश्वरि ॥ त्रिरात्रं सप्तरात्रं वा यस्य नाम उदाहृतम् ॥ २ ॥ कृष्णाष्टम्यां चतुर्दश्यां चाष्टोत्तरशतं जपेत् ॥ प्रेतो गृह्णाति तं शीघ्रं प्राहुर्मन्त्रविदास्त्विदम् ॥ ३ ॥ भाषानुवादः—नीमकी लकडीकी कील चार अंगुलकी लेकर उसके ऊपर शत्रुकी चोटीके बालोंको लपेटे और उस कीलद्वारा चिताके कोयलेसे शत्रुका नाम लिखकर धूप दे मंत्रका जप करे कृष्णपक्षकी अष्टमीसे दूसरे महीनेकी चतुर्दशीतक नित्य ऐसा ही करनेसे उस शत्रुको प्रेत ग्रहण कर लेते हैं ऐसा मंत्रज्ञाताओंका वचन है ॥ १३ ॥

॥ अथ दुर्गाऽऽवेशकरणम् ॥ मंत्रो यथा—ॐ नमः सिद्धि गुरुआज्ञा अं कं चं टं तं पं यं शं दुर्गे देवि श्रीमति श्रीश्रीश्रीभगवति देवि फट्टाकरस्यांतं दुरयस्य स्वाहा ॥ इति पंचचत्वारिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—चतुष्पथस्थितखर्परोपरि सप्तवारं मंत्रं लिखित्वा

१ पहले मन्त्रको चौराहेके ठीकरेपर सात वार लिखे पीछे उस ठीकरेको दूसरा मन्त्र पढकर शत्रुके वस्त्रोंमें धर दे तो निश्चय करके उसको आवेश हो जाता है जिसके कारण शत्रु अत्यंत पीडाको प्राप्त होता है।

पुनः ॐ आवेशत्वभयसत्त्वरधचारय हुं फट् ॥ इत्यष्टादशाक्षरमंत्रद्वारा शत्रुवस्त्रे निधापयेत् ॥ अवश्यमावेशयाति अत्यंतं पीडयति च ॥ १ ॥ अथ भूतवादः--भूतवादं प्रवक्ष्यामि यथा रावणभाषितम् ॥ एतस्य ज्ञानमात्रेण शत्रवो यांति वश्यताम् ॥ १ ॥ निर्यासं शाल्मली चैव बीजानि कनकानि च ॥ भावयेत्सप्तरात्रेण भक्ष्ये पाने च दापयेत् ॥ ततो भक्षणमात्रेण ग्रहैः संगृह्यते नरः ॥ शर्करादुग्धपानेन सुस्थो भवति नान्यथा ॥ २ ॥ अथ भूतकरणम् ॥ अथ भूतकरं वक्ष्ये तच्छृणुष्व समासतः ॥ भल्लातकरसे गुंजाविषचित्रकमेव च ॥ कपिकच्छुकरोम्णां हि चूर्णं कृत्वा प्रयत्नतः ॥ प्रदानात्तस्य नियतं भूताकरणमुत्तमम् ॥ ३ ॥ ॥ अथ विक्षिप्तकरणम् ॥ घूकविष्ठां गृहीत्वा त्वेरंडतैलेन पेषयेत् ॥ यस्यांगे निक्षिपेद्बिंदुं विक्षिप्तो जायते नरः ॥ ४ ॥ अन्यत् ॥ मंत्रो यथा—ॐ नमो भगवते शत्रूणां बुद्धिस्तंभनं कुरुकुरु स्वाहा ॥ इत्येकविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—ऊंटकी लीदको छायामें सुखाकर एक १ रत्ती अष्टोत्तरशतमंत्रद्वारा अभिमंत्रित करके पानमें खिलानेसे शत्रु बावला हो जाता है ॥ ५ ॥ अथ ज्वरकरणम् ॥ भूतडामरतंत्रे मंत्रो यथा—ॐ रांरोंह्रींस्वरेहुंक्षीं ॥ इत्यष्टाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अनेन मंत्रेण गोरोचनमरहठीराजिकापिप्पली निंबपत्रमधुघृततैलेन समभागमेकीकृत्य मषीं कृत्वा शत्रुनक्षत्रकाष्ठलौहयोर्वा लेखनीद्वारा निंबकाष्ठविनायकपृष्ठोपरि साध्यनाम लिखित्वा उपर्युक्तधूपं दत्त्वा तस्याग्रे मंत्रं जपेत् ॥ सद्यो ज्वरेण गृह्यते विलुप्ते शांतिः ॥ ६ ॥ अन्यत् ॥ मंत्रो यथा—ॐ क्षः हूं अमुकं ठं ठः ॥ इत्यष्टाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अनेन मंत्रेण चिंचाकाष्ठमयकीलकं अष्टादशांगुलं सहस्रेणाभिमंत्र्य यस्य नाम्ना भूमौ निखनेत् स ज्वरेण गृह्यते उद्धृते शांतिः ॥ ७ ॥ अन्यत् ॥ मंत्रो यथा—ॐ कटुके कटुकपत्रे पीलपादिनि कुरु कुरु ज्वरं कुरु ॥

१ अब भूतवाद कहते हैं जो शिवजीके वाणीसे निकलारावण करके वर्णन किया जाता है, जिसके जानने मात्रसे सब शत्रु वश हो जाते हैं, सेमलके बीजका काढा करके धतूरबीजके उसमें सात दिनपर्यंत भावना दे पीछे उन बीजोंको खानपानमें दे तो भक्षणमात्रसे ही उसप्राणीको ग्रह ग्रहण कर लेते हैं और शक्कर दूध पीनेसे आरोग्य हो जाता है। २ अब भूतकरण कहा जाता है भिलावांके रसमें गुंजा, विष, चित्रके, केवाचके रोम इनको महीन पीसकर देनेसे उसको भूत पकड लेते हैं और खस, चन्दन, कांगनी, तगर, रक्तचन्दन, कूट इसके लेपसे सुखी होता है। ३ उल्लूकी विष्ठाको अरंडके तेलमें भिगोकर जिसके अंगपर एक बिंदु छिडके वह विक्षिप्त हो जाता।

इति द्वाविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–राजिकालवणेन प्रतिदिनं सहस्रं जुहुयात् तदा ज्वरेण गृह्यते न संदेहः ॥ ८ ॥ अन्यत्–मंत्रो यथा वीरभद्रोड्डीशतंत्रे–ह्रींनंनांनिंनींनुंनूंनेंनैंनोंनौंनंनः हुंहुंठंठः॥ इति सप्तदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अनेन चतुर्दशांगुलमर्कं कीलकं गृहीत्वा सहस्रमभिमंत्र्य यस्य गृहे निखनेत् स सकुटुम्बो ज्वरेण गृह्यते उद्धृते शांतिः ॥ ९ ॥ अन्यत्–रविवार पुष्य नक्षत्रके दिन इन्द्रायणकी जडको लेकर उसमें सोंठ मिर्च पीपल मिलावे और बकरीके दूधमें पीसकर गोली बना लेवे पीछे उस गोलीको धूप देकर जिस शत्रुके मस्तकपर डाले उसको ज्वर ग्रहण कर लेता है, कांजीसे स्नान करानेपर शांति होजाती है ॥ अन्यत् ॥ मंत्रो यथा–ॐ चामुंडे हनहन दहदह पचपच अमुकं गृहाणगृहाण स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ इस मंत्रद्वारा कडुवा तेल और नीमके पत्तोंका होम करनेसे शत्रुको ज्वर ग्रहण कर लेता है॥अन्यत्॥मंत्रो यथा–ॐ डंडांडिंडींडुंडूंडेंडैंडोंडौंडंडः अमुकं गृहाण गृहाण हुंहुंठःठः॥ इति मंत्रः ॥ इस मंत्रसे मनुष्यके हाडकी कीलको एक हजार वार अभिमंत्रित करके चितामें डाल दे तो शत्रु ज्वरसे पीडित होकर नष्ट हो जाता है॥

॥ १० ॥ अथ पदच्छेदनम् ॥ मंत्रो यथा–ॐ नमो गण्डिया भैरव गलत हाथ माथे गघरी मसकदारू जहां भेजूं तहां जाय अमुकाकी गांड मार गांडमें लोही चलाव न चलावे तो लोनाचमारीकी कुंडमें जाय फुरो मंत्र फट् स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–मद्य सवा सेर, काला उडद सवा पाव, तिल दो पैसेभर भैरवजीकी भेंट देकर सर्पके हाडकी मालासे नित्य पांचसौ मंत्र जपे तो वैरीकी गुदासे रुधिर पडने लगेगा ॥ ११ ॥ अन्यत्–ॐ सूर्यवरण निर्मल तारा साहीका काटा नींबू मारा अकाससे तारा टूटा अमुकिया तेरा पैर छूटा ॥ यह अडतीस अक्षरका मंत्र है इसको इस प्रकारसे करना चाहिये कि रवि शनि या मंगलवारको अर्धरात्रिके समय कूपमें पैर लटकाकर नंगा बैठजावे मुख उस स्त्रीके घरकी तरफ रक्खे नींबू १ हाथमें लेकर दहने हाथमें सेहनरका कांटा लेकर आकाशकी तरफ देखे और मंत्र पढता रहे जब तारा टूटनेके वास्ते हले और टूटनेलगे उस वक्त मंत्रद्वारा वह कांटा नींबूके भीतर चुभोदेवे कि जिसमें कांटा आधे नींबूमें चुभ जावे पार होवे नहीं पार होजानेसे प्राणोंके नाश होनेका संदेह हो जाता है ऐसा करनेसे उसी

समय स्त्रीका पैर अवश्य करके जारी हो जावेगा इसमें संदेह नहीं पीछे उस नींबको लाकर जलके समीप ठंडी जगहमें धरनेसे रुधिर पडता रहता है परंतु शरीरसे क्षीण नहीं होती अगर इस नींबूको घाममें धरे तो शरीर भी सूखने लग जाती है और इसीतरह तारा टूटने पर कील बाहर निकालकर नींबूका छिद्र किसी वस्तुसे बन्द करनेसे रुधिरका पडना बन्द होकर आराम हो जाता है ॥ १२ ॥ अन्यत्–उलटा पुलटा नारा चले, अर्जुन मारा बान। अमुकिया तेरा गर्भ चले, कंसासुरकी आन ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–सफेद फूल वाले हुलहुलके १२१ बीजोंको १२१ मंत्रद्वारा अभिमंत्रित करके पानमें धरे इस बीडीको चबाकर पीक थूके जो स्त्री उलंघ जावेगी उसका पैर जारी होजावेगा पीछे उस बीडीका कीट खिलानेसे बन्द होजायगा। सत्य है ॥ १३ ॥ अन्यत् ॥ मंत्रो यथा–ॐ हकालूं चौंसठ योगिनी हकालूं बावन वीर घस घट लोही झिरे नेर झिरे बानी मरे रे रक्तिया वीर हियो धरे ना धीर रक्तियो २ रंगकी झडी रक्तियो मांगे मासकी बडी जाव चना चलावे पीड मसानकी माटी भौंराके बिलमें लपेटी जिसके ऊपर कहूं सही की झरती दीखे शब्द साचा पिंड काचा चलो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–मसानकी कंकरी सात ७ लेकर कूवाके ढाणा ऊपर इक्कीस बार अभिमंत्रित करे धूप दे स्त्रीके मारे तो पैर चले। सत्य है ॥ अन्यत्–ॐ नमो आदेश गुरूको काला कलुवा तू अवधूत हकालूंगा दडाव लाऊं भूत हाट काट चटपटी लगाव छाती छोल पैर चलाव हिये बैठि हूल चलाव चलाव रे काला भैरव कालिकाके पूत चलावेगी हुकम साथ न चलावे तो माता चामुंडाका तीर चूके ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–रविवारके दिन काला चिडा पकडे रेसमका डोरा हाथ सवादो २। सूतका डोरा हाथ २ का बनावे दीवा दो बाले एक घृतका एक तेलका अढाई पाव तेल सवा पाव घृत दीपकमें डाले उडद सवा पैसाभर घृतके दीपकमें डाले सवा पैसाभर उडद और सतका डोरा तेलके दीवामें डाले मंत्र पढे रेशमके डोरेकी चिडाके फांसी लगावे गला काट डाले लोही पडे सो तेलके दीवेमें डाले चारों पहरोंमें सात सात बार मंत्र पढे गुगलकी धूप देता जावे सोसि जब रात्रि बीत कर दिन निकल आवे तब सिद्ध हुआ जान ले पीछे तेलके दीवेका उडद १ सात बार

अभिमंत्रित कर जिस स्त्रीके मारे और रेशमका डोरा जिसके लगावे उसका पेर जारी होजायगा घृतके दीवेका उदव देनेसे थँभेगा ॥ अन्यत्–सत्यानासीका बीज मासा २ चीनी मासा ४ खवावे तो खाये पहले ही पेर जारी होजायगा इसमें संदेह नहीं, यह सिद्ध प्रयोग है ॥ १ अन्यत्–षट्मलमें दो गुण हैं भारी, सुनो कानधर नर अरु नारी। करै भाग दो तर ऊपरके, तिनकी विधि यह जाने करके ॥ भाग तलेको खाय जो नारी, लोही रुका तुरत हो जारी। भाग ऊपरला खाय कामिनी, लोही बहेताके भामिनी ॥ ॥ १४ ॥ अन्यत्–कागकी चोंचसे रविवारको मार्गमें लकीर खींचदे स्त्रीके उलंघनेसे पैर जारी हो जायगा उस चोंचको धोकर पिलानेसे बन्द होगा ॥ १५ ॥ अथ शत्रूणां मूत्रावरोधः ॥ भौमवारे गृहीत्वा तु मृत्तिकां रिपुमूत्रतः ॥ कृकलाया मुखे क्षिप्त्वा कंर्के वृक्षं च बन्धयेत् ॥ १ ॥ मूत्रबन्धो भवेत्तस्य उद्धृते तु पुनः सुखी ॥ विना मंत्रेण सिद्धिः स्यात्सिद्धयोग उदाहृतः ॥ १६ ॥ अन्यत् ॥ दत्तात्रेतंत्रे–बुधे वा शनिवारे वा कृकलां गृह्य यत्नतः ॥ शत्रुर्मूत्रयते यत्र कृकलां तत्र निक्षिपेत् ॥ निखनेद्भूमिमध्ये च उद्धृत च पुनः सुखी ॥ नपुंसको भवेत्सत्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ १ ॥ प्राकृतग्रंथे–रविदिन मरीहुई छछूंदरकी खालमें वैरीके मूत्रकी मृत्तिका भरकर ऊंचे स्थानमें लटकानेसे मूत्र बंद हो जाता है, गूंगा बावला हो जाता है, खाली कर देनेसे सुखी हो जाता है और शत्रुके मूत्रमें बिच्छूका डंक गाडनेसे भी शत्रुको अत्यंत पीडा प्राप्त होती है, निकालनेसे शांति होती है ॥ १७ ॥ अथ शत्रुशिरसि पादुकाहननम् ॥ मंत्रो यथा–याकहहारो ॥ इति चतुरक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–इस मंत्रको प्रतिदिन दस हजार जपे और दशांश लोहबानका होम करे तो इक्कीस दिनमें सिद्ध हो जाता है ॥ पीछे इस यंत्रको निकृष्ट मासके अन्तमें मंगलवारको फौलादकी छुरीसे कच्ची ईंटपर लिखकर दूसरीतरफ वैरीका नाम लिखे अर्द्धरात्रिके समय घृतका दीपक फल मिठाई अतर चढाकर एक वार "बिस्मिल्ला हेर्रहेमानिर्रहीम"--ऐसा पढकर--अल्लहुम्मसल्लअलामुहम्मादिवआला आलमुहम्मादिन ववारकवसल्लम"--इस दारूदको इकतालीस वार

१ कृकला गिरगिट। २ कर्कवृक्ष–धतूरवृक्ष।

पढे पीछे "याकह्हारो या इतराइलो या दौराइलो या अमवाकिलो अमुकेकी समस्त देह और मुहको मेरी जूतीकी चोटसे घायल करो वहकयाकह्कारो" इस जूती मारनेवाले मंत्रको एक हजार दफे पढे परंतु दशमंत्रके पीछे उस ईंटके ऊपर एक एक जूता मारता रहे, सैकडे पीछे पांच जूती मारा करे, पीछे इकतालीसवार दारूदको फिर पढे, ऐसा करनेसे अवश्य ही शत्रुके ऊपर जूतियोंकी मार पडती है ॥ १८ ॥ अन्यत्–मन्त्रो यथा–अल्लाहरखजलकीमौजकुतुवकासीरमहम्मद कागजवखुदाईकापाकहरयाजवरमारेमारे फलानेके सिर पैजार ॥ इति मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्–इस मन्त्रको जूतीके तलेमें लिखकर पीछे शत्रुकी मूरत बना उसका नाम ले मूरतपर जूती मारे तो निश्चय करके शत्रुपर मार पडे ॥ १९ ॥ अन्यत्–शनिवारको जलाया हुआ मुरदा तेली या ठाकुरकी कमरतलेसे एक अंगार लेकर उसपर मद्यका कुरला करे, बुझ जानेपर उठा लावे, पीछा फिरकर देखे नहीं, उस कोयलेको गूगलकी धूनी देकर एक बतासा अग्निपर धरके फूल

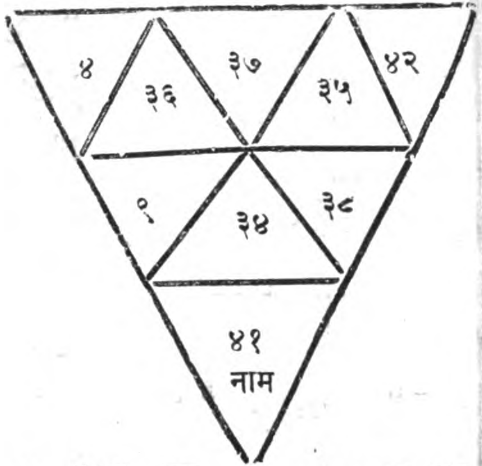
द	स	म	न	म	ल	व	ह	अ
ह	द	य	ज	य	फ	[illegible]	च	ह
ल	अ	त	ल	अ	म	ह	ह	त
अ	र	म	अ	द	व	ह	ल	त
अ	द	अ	र	अ	म	य	ल	ख
य	स	व	स	क	अ	म	व	ह
ल	अ	म	ह	न	अ नाम	य	न	ग
अ	अ	ग	व	त	व	व	ह	ल
य	व	अ	अ	द	य	त	व	त

चढावे तो भूत प्रसन्न होता है पीछे उस कोयलेमें हरताल मिलाकर पुराना कपडे या कफनके कपडेपर इस यन्त्रको लिखे नीचेकी तरफ शत्रुका नाम लिखे पीछे इस यन्त्रपर जूता मारे तो निश्चय करके सब जूते वैरीकी देहमें लगेंगे इसमें संदेह नहीं ॥ २० ॥ अन्यत ॥ मन्त्रो यथा–ॐ नमो हनुमंत बलवंत माता अंजनी पुत्र हलहलंत आवो चढंत आवो गढकिला तोडंत आवो लंका

जालि वालि भस्मकारि आवो ले लंका लंगूरते लपटाय सुमेरते पटकावो चंद्री चन्द्रावली भवानी ।मिल गावो मंगलचार जीते राम लक्ष्मण हनूमानजी आवोजी तुम आवो सात पानका बीडा चावत मस्तक सिंदूर चढाओ आवो मंदोदरीके सिंहासन डुलंता आवो यहां आवो हनुमान माया जागते नृसिंह माया आगे भैरव किलकिलाय ऊपर हनुमंत गाजै दुर्जनको डार दुष्टको मार संहार राजा हमारे सतगरू हम सतगुरुके बालका गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा॥ इति मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्--प्रथम सिद्धयर्थ दिन २१ या ४१ में दसहजार जपे तो सिद्ध होता है सात पानका बीडा और लड्डूका भोग लगावे, धूप दीप नैवेद्यद्वारा हनूमानजीका पूजन करे, सिंदूर चढावे सुगंधित पुष्प चढावे, पीछे पृथ्वीपर शत्रुकी प्रतिमा बनाकर यथोचित बीजोंको लिखे, छातीपर शत्रुका नाम लिखके उसपर मन्त्रद्वारा दो जूते मारे या शिरपर मारे तो वैरीका शिर फूटे रोवे हँसे बावला होवे बुद्धि बिगड जावे । सत्यमेव न संदेहः ॥ २१ ॥ अथ शत्रु पीडनम् ॥ मन्त्रो यथा–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिपुरभैरव त्रिपुरवीर मम शत्रोरमुकस्य पीडां कुरुकुरु स्वाहा ॥ इति मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्–वृश्चिकके चन्द्रमामें गधेकी खालपर इस यन्त्रको लिखे. यन्त्रके नीचे शत्रुका नाम उसकी मातासहित लिखे. उस यंत्रको गूगलकी धूप देकर एकसौ आठ १०८ वार मन्त्र पढके शत्रुकी चौखटतले या आंगनमें अथवा मार्गमें गाड देवे जिसमें वैरी इस यन्त्रको उल्लंघन करता है ऐसा करनेसे वैरीको अत्यंत पीडा प्राप्त होती है अथवा वैरीके पगतलेकी मृत्तिकाको सात करेलोंमें भरकर प्रत्येक करेलाके ऊपर सात दफे मन्त्र पढ कर चरखेके ताकुएमें पिरोवे पीछे उनको अग्निमें तपानेसे वैरीको अवश्यमेव अत्यंत कष्ट प्राप्त होता है ॥ २२ ॥

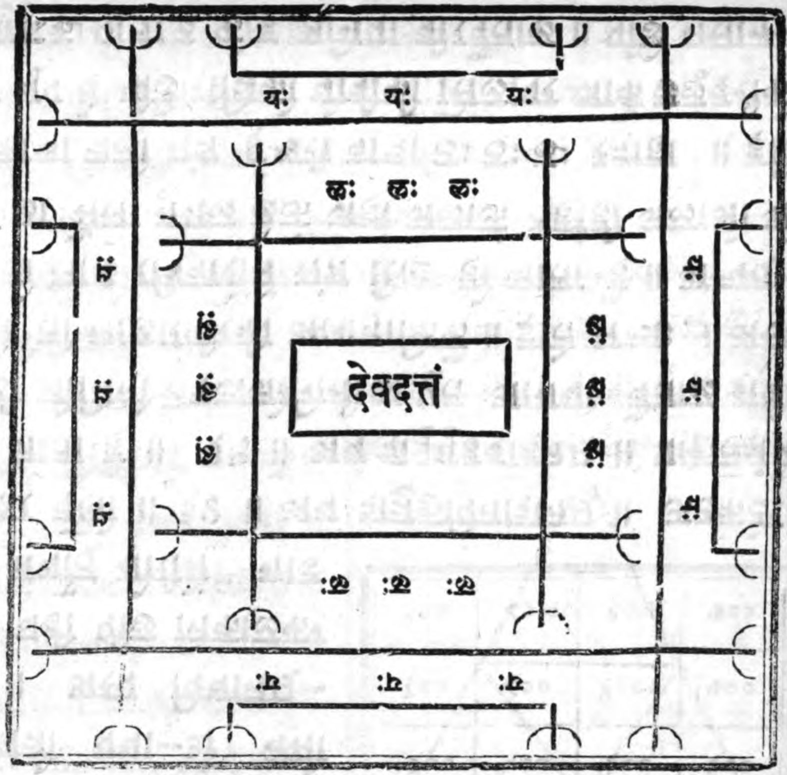
५३	६०	२	७
६	३	५७	५६
५९	५४	८	१
४	५	५५	५८





॥ अन्यत् ॥ मन्त्रो यथा– ॐ कालाभैरव झंकाठका तीर मार तोड दुश्मनकी छाती घोर हाथ कलेजा काढ बत्तीस दांत तोड यह शब्द न चलै तो खडी योगिनीका तीर छूटे गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरा मन्त्र ईश्वरीवाचा सत्यनाम आदेश गुरूका ॥ इति मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्– कनैरके पुष्प २१ गगलकी गोली २१ करड अथवा सरसोंके तेलसहित मन्त्र पढपढकर होमे तो ग्यारह दिन अथवा इक्कीस दिनमें शत्रुको पीडा प्राप्त हो ॥ २३ ॥ अन्यत् ॥ मन्त्रो यथा– ॐ नमो आदेश गुरूको लाल पलंग औरंगी छाया काढ कलेजा तूही चख ॥ इति मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्–चौका देकर दीपक जलावे, तीन वार कहे कि आवो महावीर पहलवान हनुमानजी पीछ तीन वार कहे आवो कलुवा वीर रणधीर ऐसा कहनेके पीछे गूगलकी धप देकर नैवेद्य चढावे पीछे नित्य एक हजार मन्त्र पढे घृत लौंग सुपारी जायफल गगल मिश्रीको एकसौ पचीस १२५ वार होमे तो ग्यारह दिनमें सिद्ध हो पीछे ब्राह्मणभोजन कराकर दिन इक्कीसतक प्रतिदिन एक हजार जप करे तो शत्रुका नाश होता है ॥ २४ ॥ अन्यत् ॥ मंत्रो यथा–ॐ अमुकस्य हन हन स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–सोम या मंगलको श्मशानकी भस्म लाकर उसमें राई मिलावे पीछे आककी लकडियोंमें बीस आहुति शत्रुके नित्य देवे तो शत्रुको अत्यंत पीडा प्राप्त होगी अर्थात् बहुत दुःख पावेगा ॥ २५ ॥ अन्यत्--शनि या रविवारको शत्रुकी औंधीहुई जूतीको लेकर पानीके साथ गर्म करे तो शत्रु बीमार होकर अत्यंत दुःख पावेगा ॥ २६ ॥ अन्यत्--रविदिन श्मशानमें जा मुरदेकी चितासे एक कोयला निकालकर उसपर मद्यका कुरला करे, ठंढा होनेसे धूप देकर उसको हरतालसहित घिसकर स्याही बनाव पीछ इस स्याही द्वारा लोहेकी कलमसे कागजपर यह यंत्र लिखे गूगलकी धूप देकर श्मशान अथवा चौराहेमें गाडे तो तीन मासम ही शत्रुका नाश होजाता है ॥ २७ ॥ अन्यत ॥

प्रथम लीलकी डलीको हरिणके मत्रमें भिगोकर प्रातःकाल उसीसे एक कपडा रँग लेवे पीछे उस कपडेको लेकर श्मशानमें जावे और श्मशानके कोयलेसे उस वस्त्रपर शत्रुकी मूर्ति लिखे पीछे उसके भीतर सात नग सुइयोंको चुभोकर पडीके माफिक लपेट देवे पीछे उसको शत्रुके घरके पीछे गाडे तो शत्रुका घर उजड जायगा ॥ २८ ॥ अन्यत्–हस्त नक्षत्रमें सेंधेलोनसे गणेशकी प्रतिमा बनावे जो शत्रुका नाम हो वही नाम उस प्रतिमाका रक्खे पाछे प्राण स्थापन करके उस मूर्तिको जलमें स्थापन करे ज्यों ज्यों वह मूर्ति छीजैगी त्यों त्यों शत्रुका नाश होगा ॥ २९ ॥ अथ संततिनाशनम् ॥ मंत्रा यथा–ॐ खुरेश्वराय स्वाहा ॥ इत्यष्टाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–सर्पके आस्थिकी कील एक अंगुलमात्र लेकर आश्लेषा नक्षत्रमें अष्टोत्तरशत मंत्रोंसे अभिमंत्रित कर शत्रुके घरमें रख देनेसे शत्रुकी संततिका नाश होता है ॥ ३० ॥ अथ कलनाशनम् ॥ मंत्रो यथा–हुं हु फट् स्वाहा ॥ इति पंचाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–घाडेके हाडकी कील चार अंगुलकी बनाकर मंत्रसे अभिमंत्रित करके आश्विनी नक्षत्रके दिन



शत्रुके घरमें गाडे तो शत्रुके कुलका नाश होजाता है ॥३१॥ अथ शत्रुगृहे कलहकरणम् ॥ नव वा पंच चोद्धृत्य शल्लकीवृक्षकंटकान् ॥ शनौ दिने खनेद्द्वारे कलहोऽहर्निशं भवेत् ॥ १ ॥ अन्यत्–रविपंचमीको श्मशानकी भस्म ला गूगलकी धूप दे वैरीके घरमें गाडे तो वैरीके घरमें अत्यंत कलह हो। अथवा दोपहरीके समय रविवारको गधालोटनकी धल या भैंसालोटनकी धूल अटोकरेतीसे लाकर गगलकी धूप देवे

पीछे उसको जिसके शिरपर डालोगे निश्चयकरके रात्रदिन उसके घरमें कलह होगा, परीक्षा कर देखो. अथवा शत्रुके घरमें शेहका शूल धर दे तो कहल होने लगेगा ॥ ३२ ॥ अथ शत्रोः सर्पदर्शनम् ॥ इस यंत्रको इन्द्रायणीके रससे कागजपर लिखे, निचे शत्रुका नाम लिखे और शत्रुका नामोच्चारण करके सर्पकी बांबीमें डाल आवे तो वह शत्रु सर्पोंद्वारा भयभीत होगा ॥ ३३ ॥ अथ शत्रुगृहेऽश्मवर्षणम् ॥ मंत्रो यथा--ॐ नमो उच्छिष्टचांडालिनि देवि महापिशाचिनि क्लीं ठः ठः स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-- शनिको मुरदा जले उसकी चितामें सात कांकरी मंत्रद्वारा डाल आवे तीन घडी पीछे निकालकर सिंदूर चढा दे पीछे इन कंकरोंको जिसके घरमें अथवा घरके पीछे या नाले अर्थात् मोरीमें गाड

४००	५००	११००	६००
१२००	५००	३००	६००
१००	८००	१०००	७००
९००	८००	२००	७००

दोगे उसी दिनसे उसके घरमें पत्थर बरसने लगेंगे इसमें संदेह नहीं, परीक्षा कर देखो ॥ ३४ ॥ अथ शत्रुकृषिनाशनम् ॥ ऊटकटेरा और गंधक दोनोंको पीसकर खेतमें कई जगहोंपर डाल देनेसे वह खेत सूख जाता है ॥ ३५ ॥ अथ शत्रुगृहदाहनम् ॥ प्राकृतग्रंथे मन्त्रो यथा--ॐ नमो आदेश गुरुका नमो अवधूत वज्रशिला वज्रशिलापर बैठी जोगिनी वज्रजोगिनीका पूत आगया वैताल मढी माल मंडल जालो गांव जालो फौज जालो पक्को जालो पराया जालो न जाले तो सालारपीरकी आगनाफिफै ॥ इति मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्--रविवारको गूगल और हरतालकी धूप देकर एकसो आठ बार पढे तो सात रविवारोंमें मंत्र सिद्ध हो जाता है ॥ अन्यत्-- ॐ नमो आदेश गुरुको अगिया वीरवैताला फोडो पताला निकासो इसमें झाला भैंसा गूगल लेऊं जहां जलाऊं तहांही जलाओ जो हमारा मंत्र पीछा फिरै तो माई हिंगलाजकी सेजपर पग धरै शब्द साचा पिंड काचा चलो मंत्र ईश्वरी वाचा ठः ठः ठः स्वाहा ॥ इति मंत्रः॥ अस्य विधानम्--रविवारके दिन छछूंदरी पकडके मंत्र पढ पढ कर गूगलकी धूप दे पीछे रात्रिको धोबीकी सिलापर जाके छछूंदरीको पछाड देवे मंत्र सातवार पढे ॥ तत्र मंत्रः--आई ज्वाला माई ॐ नमो आदेश गुरूका पाताल फोड अगिया वीरवैताल ॥ पीछे मसानमें

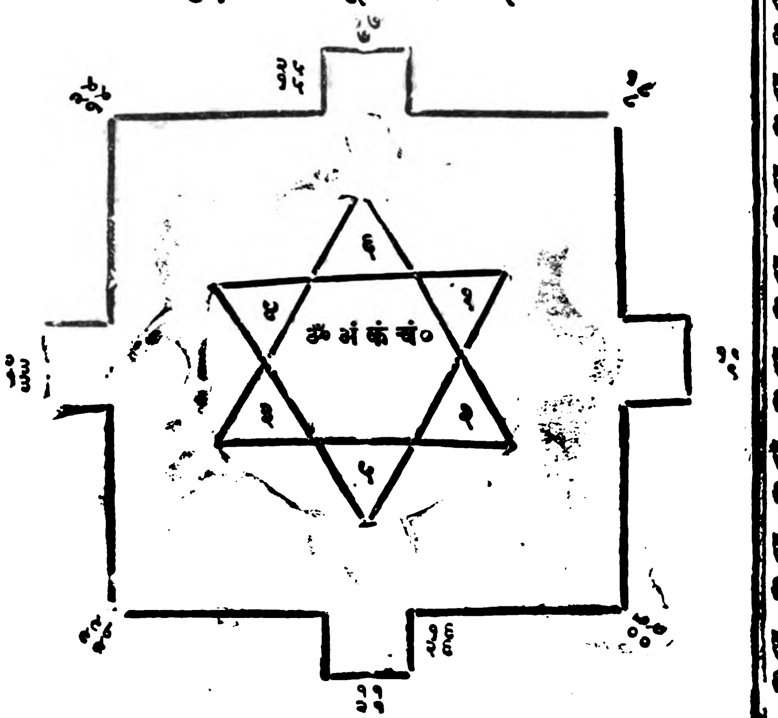
जाकर छछूंदरीको जलावे अपने हाथमें नंगी तरवार राखे मंत्रको एकसौ आठ वार पढे, धूप देवे उस छछूंदरीकी राख अपने घर ले आवे पीछे जिस दिन अगिया चलाना हो इक्कीस वार मंत्र पढके एक चुटकी छछूंदरीकी राख डाले तो बल उठेगा । सत्यमेव ॥३६॥ अन्यत्–ॐ नमो अगिया वैताल पैठ सातवें जाहु पाताल लावो अग्निकी जलती झाल बैठ जाओ ब्रह्माके कपाल पहेरो लाल फूलकी माल चढो ठोकके अपनी ताल चलो चलो जलावो आग न जलावो तो माता कालिकाकी आन॥इति मंत्रः॥अस्य विधानम्–होलीसे प्रारंभ करके एक लाख मंत्र जपे, मछलीका नैवेद्य लगावे, गंधककी धूप दे तो सिद्ध हो पीछे जहां आग प्रगट करनी हो तहां मंत्र पढकर फूक मारे तो अग्नि प्रगट हो ॥ अथ शत्रुतैलनाशनम्–मधूककाष्ठकीलं तु चित्रायां चतुरंगुलम् ॥ निखनेत्तैलशालायां तैलं तत्र विनश्यति ॥ १ ॥ तत्र मंत्रः–ॐ दह ॐ दह स्वाहा ॥ ३७ ॥ अथ दुग्धनाशनम्–निक्षिपेदनुराधायां जंबूकाष्ठस्य कीलकम् ॥ अष्टांगुलं गोशालायां गोदुग्धं प्रविनश्यति ॥ ३८ ॥ अथ फलनाशनम् ॥ मंत्रो यथा–ॐ नमो मेरुपर्वत वानरवाडा आये हनुमंत दे गये झाडा फूल मुडे फल कीडा पडे न पडे तो हनुमानकी आन ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–यह मंत्र सात वार पढ सात कांकरी बागमें डाले तो फूल फल सभी बिगड जायँगे ॥३९॥ अथाश्वनाशनम् ॥ दत्तात्रेयतंत्रे–अश्वास्थिकीलमाश्विन्यां कर्यात्सप्तांगलं ततः ॥ निखनेदश्वशालायां मारयत्येव घोटकान् ॥ कृष्णजीरकचूर्णेन ह्यंजितोऽश्वो विनश्यति ॥ तक्रेण क्षालयेच्चक्षुः स्वस्थो भवति घोटकः ॥ ४० ॥ अथ शत्रूणां बधिरीकरणम् ॥ मंत्रो यथा–ॐ अमुकं हनहन स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ इस मंत्रसे कडुवे तेलमें त्रिकुटा मिलाकर हवन करे तो शत्रु बहेरा होवे ॥ ४१ ॥ अथ मंदाग्निकरणम् ॥ प्राकृतग्रंथे– अमलीकी एक कील ले, अंगुल पांचप्रमाण । मृगसिररिपुके घर धरे, अग्नि मंद पडजाय ॥ ४२ ॥ अथ वस्त्रनाशनम् ॥ होय शतभिषा जब रविवार, शीशा तोला लावे चार । एक कटोरी लेय बनाय,

कं	एं	श्रीं	ह्रीं	ह्वां	ह्नां
लों	रं	भं	क्षे	कुं	मं
मं	क्षं	ङंयं	चं	म्रों	कुं
क्षं	तैं	भं	त्रं	दं	क्षं
पं	वं	लं	टं	रं	क्षं
ङंपं	द्रं	पीं	रं	ळं	त्वं

खांड बाजरो चून भराय ॥ ताक गाडे धरतीमाहीं, दिना तीन पीछे ले आहीं । गाडे घर बजाजके जाय, कपडा बुगचा सब गलजाय ॥ ४३ ॥ इस यंत्रको गधेके कानके रुधिरसे नरघटकी ईंटपर लिखे पीछे शत्रुके घरमें डाल देवे तो उसके घरमें दुःख होय और शत्रुका नाश होजावे ॥ ४४ ॥ अथ विक्रयरोधनम् ॥ मंत्रो यथा–भवर वीर तूं चेला मेरा, बांध दुकान कहाकर मेरा । उठे न डंडी विके न माल, न भवरवीरसो खेकर जाय ॥ इति मंत्रः ॥ इस मंत्रसे काले उडदोंको अभिमंत्रित करके रविवारको शत्रुकी दूकानमें डाले तो तीन २विवारोंमें शत्रुके दूकानकी विक्री बंद हो जायगी ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ मारणम् ॥ माहेश्वरीतंत्रे–अथातः कथयिष्यामि प्रयोगं मारणाभिधम् ॥ सद्यः सिद्धिकरं नृणां शृणुष्वावहितो मुने ॥ १ ॥ मारणं न वृथा कार्य्यं यस्य कस्य कदाचन ॥ प्राणांतसंकटे जाते कर्तव्यं भूतिमिच्छता ॥ २ ॥ ब्रह्मात्मानं तु विनतं दृष्ट्वा विज्ञानचक्षुषा ॥ सर्वत्र मारणं कार्य्यमन्यथा दोषभाग्भवेत् ॥ ३ ॥ मूर्खेण तु कृतं तंत्र स्वस्मिन्नेव समापतेत् ॥ तस्माद्रक्ष्यः सदात्मा वै मारणं न कचिच्चरेत् ॥ ॥ ४ ॥ तत्रादौ शत्रुदमनमंत्रः ॥ मंत्रमहोदधौ ॥ मंत्रो यथा–ॐ अं कं चं टं तं पं हं लों ह्रीं हुं सः हुं फट् स्वाहा ॥ इति षोडशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अस्य मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । अष्टिश्छंदः । महापर्वतमहाब्धिमहाग्निमहावायुमहाधरामहाकाशानि षट् देवताः।हुं बीजम् ह्रीं शक्तिः।ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ ब्रह्मर्षये नमः शिरसि १ । अष्टिच्छंदसे नमः मुखे २ । महापर्वतमहाब्धिमहाग्निमहावायुमहाधरामहाकाशषट्देवताभ्यो नमः हृदि ३ । हुंबीजाय नमः गुह्ये ४ । ह्रींशक्तये नमः पादयोः ५ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ॐ ह्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ह्रीं हृदयाय नमः १ । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा २ । ॐ ह्रीं शिखायै वषट् ३ । ॐ ह्रीं कवचाय हुं ४ । ॐ ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ ह्रीं [illegible] फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ ॐ नानारत्नार्चिराक्रांतं वृक्षांभस्सर्वगैर्युतम् ॥ व्याघ्रादि

पशुभिर्व्याप्तं सानुयुक्तं गिरिं स्मरेत् ॥१॥ मत्स्यकूर्मादिबीजाढ्यं नवरत्नसमन्वितम् ॥ घनच्छायं सकल्लोलमकूपारं विचिंतयेत् ॥२॥ज्वालावतीसमाक्रांतजगन्त्रितयमद्भुतम्॥ पीतवर्णं महावाह्निं संस्मरेच्छत्रुशांतये॥३॥धरासमुत्थरेणवोघमालिनं रुद्धभूदिवम्॥ पवनं संस्मरेद्विश्वजीवनं प्राणरूपतः॥४॥नदीपर्वतवृक्षादिकलिता ग्रामसंकुला॥आधारभूता जगतो ध्येया पृथ्वीह मंत्रिणा॥५॥सूर्यादिग्रहनक्षत्रकालचक्रसमन्वितम्॥

शत्रुदमनार्णवपूजनयन्त्रम् ।



निर्मलं गगनं ध्यायेत्प्राणिनामाश्रयप्रदम् ॥६॥ इति षट्देवता ध्यायेत् ॥ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य'ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तद्यथा पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु—ॐ जयायै नमः १ । ॐ विजयायै नमः २ । ॐ अजितायै नमः ३ । ॐ अपराजितायै नमः ४ । ॐ नित्यायै नमः ५ । ॐ विलासिन्यै नमः ६ । ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७ । ॐ अघोरायै नमः ८ । मध्ये ॐ मंगलायै नमः ९ ॥ इति पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य 'ॐ ह्रीं सर्वशक्तिपद्मासनाय नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्य्यात् ॥ तद्यथा पुष्पांजलिमादाय—संविन्मय परो देव परामृत रसप्रिय ॥ अनुज्ञां देहि मे देव परिवारार्चनाय ते ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्य्यात् ॥ षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादि

चतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च ॥ ॐ ह्रीं हृदयाय नमः । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ ॥ इति सर्वत्र ॥ ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० २ । ॐ ह्रीं शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ३ । ॐ ह्रीं कवचाय हुं । कवचश्रीपा० ४ । ॐ ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । ॐ ह्रीं अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मलमुच्चार्य्य ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घ्याद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं षोडशसहस्रजपः ॥ षट्द्रव्यैर्दशांशतो होमः ॥ तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्य्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति ॥ एतस्मिन्सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथाच–एवं षट्देवता ध्यात्वा सहस्राणि तु षोडश ॥ जपेन्मंत्रं दशांशेन षड्द्रव्यैर्होममाचरेत् ॥१॥ षड्द्रव्याणि यथा–व्रीहयस्तंडुला आज्यं सर्षपाश्च यवास्तिलाः ॥ एतैर्हुत्वा यथाभागं पीठे पूर्वोदिते यजेत् ॥ २ ॥ अङ्गदिक्पालवज्राद्यैरेवं सिद्धो भवेन्मनुः ॥ शत्रूपद्रवमापन्नो युंज्यात्तन्मृन्मये मनुम् ॥ ३ ॥ अथ प्रयोगमाह–तत्रादौ प्राणायामेन सह वर्णध्यानम् ॥ अकारं पर्वताकारं धावंतं शत्रुसम्मुखम् ॥ पतनोन्मुखमत्युग्रं प्राच्यां दिशि विचिंतयेत ॥ १ ॥ इति पूर्वे अं ध्यायेत् ॥ ककारं क्षुब्धकल्लोलं प्लाविताखिलभूतलम् ॥ समुद्ररूपिणं भीमं प्रतीच्यां दिशि संस्मरेत् ॥ ॥ २ ॥ इति पश्चिमे कं स्मरेत ॥ वर्णं तदग्निमं ज्वालासंघव्याप्तनभस्तलम् ॥ याम्ये रब्धजगद्दाहं स्मरेत्प्रलयपावकम् ॥ ३ ॥ इति दक्षिणे चं विचिंतयेत् ॥ तृतीयवर्गप्रथमं प्रकंपितजगत्त्रयम् ॥युगांतपवनाकारमुत्तरस्यां दिशि स्मरेत् ॥४॥ इति उत्तरे टं स्मरेत्॥तुरीयपं

१ यथाक्रमं सप्तपञ्चाधिकं शतद्वयं प्रत्येकम् । २ तदग्रिमं चकारं याम्ये दक्षिणस्याम् । ३ रब्ध आरब्धो जगद्दाहो येन कंकृतेति वा पाठः। ४ तृतीयेवि टम् । ५ तुरीयेति चतुर्थपंच ... ... तु पम् ।

चमाद्यर्णौ पृथ्वीगगनरूपिणौ॥शत्रुवर्गं बाधमानौ चिंतयेन्नियतात्मवान् ॥ ५ ॥ इति तं पं वर्णौ विचिंतयेत् ॥ तद[1]ग्रिमं वर्णयुगं शत्रोर्निः श्वासपद्धतिम् ॥ निरुंधानं स्मरेन्मंत्री विदधद्रिपुमाकुलम् ॥६॥ इति हं लं विचिंतयेत्॥मा[2]यादिवर्णत्रितयं शत्रोर्नेत्रश्रुती मुखम्॥प्रत्येकं तु निरुंधानं चिंतयेत्साधकोत्तमः ॥७॥ इति ह्रीं हुं सः विचिंतयेत्॥व[3]र्मसंक्षोभितं त्वस्त्रं रिपोराधारदेशतः ॥ उत्थाप्य वह्निं तद्देहं प्रदहं समनु स्मरेत्॥ इति हुंफट् स्मरेत्॥ इति वर्णान् विचिंतयेत्॥एवं वर्णान्स्मरन्मंत्रं जपेन्मंत्री सहस्रकम्॥मं[4]डलत्रितयाद्र्वाङ्मारयत्येव विद्विषम्॥८॥ ए[5]वं यः कुरुते कर्म प्राणायामजपादिभिः ॥ संशोधयित्वा स्वात्मानं स्वरक्षायै हरिं स्मरेत् ॥ इति शत्रुदमनार्थे षोडशाक्षरीमंत्रप्रयोगः ॥

अथार्द्रपटीविद्या रावणोड्डीशतंत्रे ॥ मंत्रो यथा—क्रीं नमो भगवति आर्द्रपटेश्वरि हरितनीलपटे कालि आर्द्रजिह्वे चांडालिनि रुद्राणि कपालिनि ज्वालामुखि सप्तजिह्वे सहस्रनयने एहि एहि अमुकं ते पशुं ददामि अमुकस्य जीवं निकृन्तय एहि तज्जीवितापहारिणि हुं फट् भूर्भुवः स्वः फट् रुधिरार्द्रवसाखादिनि मम शत्रून् छेदय छेदय शोणितं पिब पिब हुंफट् स्वाहा ॥ इत्येकविंशोत्तरशताक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—ॐ अस्य श्रीआर्द्रपटीमहाविद्यामंत्रस्य दुर्वासा ऋषिः।गायत्री छंदः।आर्द्रपटेश्वरी कालिका देवता।हुं बीजम्। स्वाहा शक्तिः। ममामुकशत्रुनिग्रहकाम्यार्थे जपे विनियोगः ॥ केवलं जपमात्रेण मासांते शत्रुमारणम् ॥ कृष्णपक्षाष्टमतिस्तु यावत्कृष्णा चतुर्दशी ॥१॥ शत्रुनामसमायुक्तं तावत्कालं जपेन्मनुम् ॥ मृदा पुत्तलिकां कर्याद्रिपुपादतलस्थया ॥ २ ॥ अजापुत्रं बलिं दत्त्वा तद्रक्तेन वस्त्रं संलिपेत् तद्वस्त्रं गृहीत्वा पुत्तलिकोपरि निदध्यात्। मत्रं जपेत्। यावद्वस्त्रं शुष्यति तावच्छत्रुर्यमालये व्रजति ॥ तथा च—मंत्रराजप्रभावेण नात्र कार्या विचारणा ॥ यमालये व्रजेच्छत्रुर्मुकुन्दसदृशोऽपि वा ॥ भाषार्थः—इस मंत्रका केवल जपमात्र करनेसे ही एक महीनेमें शत्रुका मरण होता है अर्थात् एक मासपर्यंत प्रतिदिन अष्टोत्तरशत १०८ मंत्रको जपे ॥ अथवा कृष्णपक्षकी अष्टमीसे लेकर कृष्ण

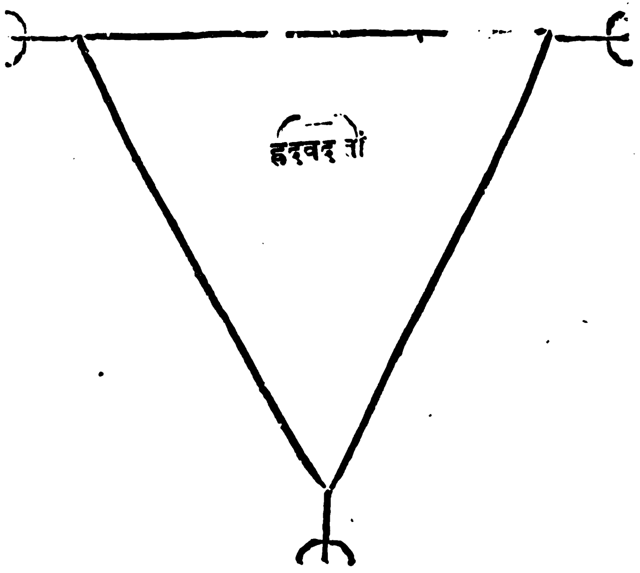
१ तदग्रिमवर्णयुगद्वयं हंलमिति । २ मायादिवर्णत्रितयं ह्रीं हुं सः इति । ३ वर्मणा हुंकारेण क्षोभितमस्त्रं फट्कारं रिपोराधारादग्निमुत्थाप्य रिपुदेहं दहंतं स्मरेत्। ४ मंडलमेकोनपंचाशद्दिनानि । ५ मारणंकुर्वतः प्रायश्चित्तमाह-एवमिति ।

पक्षकी चतुर्दशीपर्यंत शत्रुके नामसहित प्रतिदिन सावधानमन होकर एकसो आठ मंत्र जपे अंतके दिवसमें ऐसा करना चाहिये कि शत्रुके पावतलेकी मृत्तिका लाकर शत्रुकी पुतली बनावे नीलवस्त्रसे लपेट मंत्रपूर्वक प्राणप्रतिष्ठा करके कालीका पूजन करे बकरेका बलिदान देकर उसके रक्तमें वस्त्रको भिगोकर उस वस्त्रको पुतलीके ऊपर उढादेवे और मंत्रका जप करने लगे जबतक वह वस्त्र सूखेगा तबतक शत्रुका प्राण यमपुरको गमन करेगा इस आर्द्रपटेश्वरीविद्याके प्रभावसे मुकुंद अर्थात् कृष्णके समान भी शत्रु हो तो यमपुरको जाता है इसमें संदेह नहीं । यह विद्या शिवजीने पार्वतीसे वर्णन करी है इसको सत्य जानना ॥ २ ॥ अथ भैरवमंत्रप्रयोगो माहेश्वरीतंत्रे– कर्तव्यं मारणं चेत्स्यात्तदा कृत्यं समाचरेत् ॥ शत्रुपादतलात्पांसुं गृह्णीयाद्भौमवासरे ॥ १ ॥ गोमूत्रेण च सिंचित्वा प्रतिमां कारयेद् द्विषः ॥ निर्जने च नदीतीरे स्थापयेत्स्थंडिलोपरि ॥ २ ॥ लोहशूलं च निखनेत्तद्वक्षसि सुदारुणम् ॥ तद्वामे भैरवं कृष्णं बलिभिः प्रत्यहं यजेत् ॥ ३ ॥ एकादश बटूंस्तत्र परमान्नेन भोजयेत् ॥ अखण्डदीपं तस्याग्रे कटुतैलेन ज्वालयेत् ॥ ४ ॥ व्याघ्रचर्मासनं कृत्वा निवसेत्तस्य दक्षिणे ॥ दक्षिणाभिमुखो रात्रौ जपेन्मंत्रमतंद्रितः ॥ ५ ॥ मंत्रो यथा–ॐ नमो भगवते महाकालभैरवाय कालाग्नितेजसे अमुकं मे शत्रुं मारय मारय पोथय पोथय हुंफट् स्वाहा ॥ अयुतं प्रजपेदेनं मंत्रं निशि समाहितः ॥ एकोनत्रिंशद्दिवसैर्मारणं जायते ध्रुवम् ॥ इत्येवं मारणं तंत्रं सद्यः सिद्धिकरं नृणाम् ॥ ६ ॥ भाषार्थः–जब मारण करना चाहे तब इस कृत्यको करे ॥ शत्रुने जहां पाव रक्खा हो उसके पावकी धूली मंगलवारको लावे ॥ १ ॥ पीछे उसको गोमूत्रमें भिगोकर शत्रुकी प्रतिमा बनावे ॥ निर्जन वनमें नदीके किनारे वेदी बना उसके ऊपर उस मूर्तिको स्थापित करे अर्थात् सीधी सुल दे ॥ २ ॥ पीछे अतिदारुण लोहका त्रिशूल बनाकर प्रतिमाकी छातीमें गाड दे ॥ और उसके बाईं तरफ वेदीपर कालभैरवको स्थापित करके प्रतिदिन यथोक्त विधिपूर्वक बलिदान और पजन करे ॥ ३ ॥ ग्यारह बालक ब्राह्मणोंको वहांपर क्षीराम्नद्वारा भोजन करावे और भैरवके अग्रभागमें अखण्ड दीपक सरसोंके तेलका जलावे ॥ ४ ॥ शत्रुकी प्रतिमाके दक्षिणभागमें व्याघ्राम्बर आसनके ऊपर आप बैठे ॥ दक्षिणमुख करके

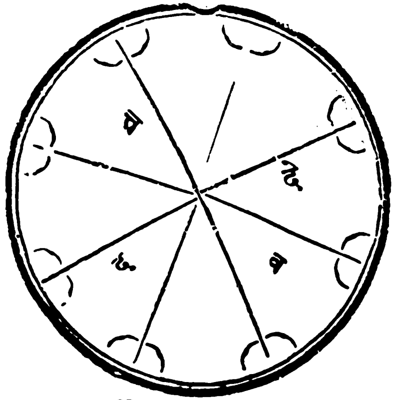
रात्रिमें आलसरहित उपरोक्त मंत्रका जप करे ॥ ५ ॥ प्रातिदिन इस मंत्रका १०००० दश हजार जप रात्रिमें सावधान होकर करे तो २९ उनतीस दिनमें मारण निश्चय करके सिद्ध होगा ॥ इस प्रकार मारणतंत्र शीघ्र ही सिद्धिका करनेवाला है ॥ ६ ॥ इति मारणार्थे भैरवमंत्रप्रयोगः ॥ ३ ॥ अथ प्रत्यंगिरामंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा—ॐ गृध्रकर्णि विरूपाक्षि लम्बस्तनि महोदरि ॥ हन शत्रूं त्रिशूलेन कुद्धाऽस्य पिब शोणितम् ॥ शोषय मारय स्वाहा ॥ इत्येकचत्वारिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--कृष्णप्रतिपदमाभ्य द्वितीयमासचतुर्दशीपर्यंतं प्रतिदिनं सहस्रं जपेत् ॥ तदा महाव्याधितो मरणं न संदेहः ॥ ३ ॥ वीरभद्रोड्डीशतंत्रे मंत्रो यथा--ॐ ह्रूं क्षैं ह्रीं अमुकं ठं ठः ॥ इति नवाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अनेन मंत्रेण लोहत्रिशूलं कृत्वा विषरुधिरालिप्तमयुतेनाभिमंत्रितं यस्य नाम्ना भूमौ निखनेत् तस्य मृत्युर्भवति ॥ ४ ॥ अन्यो मंत्रो यथा—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं महाकाल करालवदन गृह्ण २ भिंधि २ त्रिशूलेन हन २ ठं ठः ॥ इति द्वात्रिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अनेन मंत्रण विभीतकाष्ठमयं कीलकं एकविंशत्यंगुलं सहस्रेणाभिमंत्रितं यस्य नाम्ना स्वगृहे निखनेत् तस्य सद्यो निपातः ॥ ५ ॥ अन्यः—ॐ ह्रीं अमुकस्य हन हन स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—कनेरके फूल दशहजार अथवा कई लेकर सिरसूंके तेलमें भिगोकर होमे तो शत्रुकी मृत्यु होती है ॥ ६ ॥ दत्तात्रेयतंत्रे मंत्रो यथा—ॐ नमः कालरूपाय अमुकं भस्म कुरुकुरु स्वाहा ॥ इत्येकोनविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अष्टोत्तरशतं जपेत्सिद्धिः ॥ एतस्मिन्सिद्धे मंत्रे मंत्री अष्टोत्तरशतमभिमंत्र्य तंत्राणि साधयेत् ॥ तथाच—ईश्वर उवाच ॥ विषयुक्तं चिताभस्म धत्तूरचूर्णसंयुतम् ॥ यस्यांगे निक्षिपेद्भौमे सद्यो याति यमालयम् ॥ ७ ॥ भल्लातकोद्भवं तैलं कृष्णसर्पस्य दंतकम् ॥ विषं धत्तूरसंयुक्तं यस्यांगे निक्षिपेन्मृतिः ॥ ८ ॥ नरास्थिचूर्णं तांबूले भुक्तं मृत्युकरं ध्रुवम् ॥ ९ ॥ सर्पास्थिचूर्णं यस्यांगे निक्षिपेन्मृत्युमाप्नुयात् ॥ १० ॥ चिताकाष्ठं गृहीत्वा तु भौमे च भरणीयुते ॥ निखनेच्च गृहद्वारे मासे मृत्युर्भविष्यति ॥ ११ ॥ कृष्णसर्पवसार्द्रां त्वक्तद्वार्तिं ज्वालयेन्निशि ॥ धत्तूरबीजतैलेन कज्जलं नृकपालके ॥ चिताभस्मसमायुक्तं क्षारपंचकसंयुतम् ॥ यस्याङ्गे निक्षिपेच्चूर्णं

सद्यो याति यमालयम् ॥ १२ ॥ गृहीत्वा वृश्चिकं मांसं कंटकं चूर्णसंयुतम् ॥ यस्यांगे निक्षिपेच्चूर्णं नरो मृत्युं गमिष्यति ॥ ॥ १३ ॥ पंचदश्यां लिखेद्यंत्रं चिताभूत्या विलोमतः ॥ श्मशानाग्नौ क्षिपेद्यंत्रं भौमे च म्रियते रिपुः ॥ १४ ॥ घूकविष्ठां गृहीत्वा तु विषचूर्णसमन्विताम् ॥ यस्यांगे निक्षिपेच्चूर्णं सद्यो याति यमालयम् ॥ १५ ॥ खरविष्ठां गृहीत्वा तु विषचूर्णसमन्विताम् ॥ यस्यांगे निक्षिपेच्चूर्णं सद्यो याति यमालयम् ॥ १६ ॥ रिपुविष्ठां गृहीत्वा तु नृकपाले हि धारयेत् ॥ उद्याने निखनेद्भूमौ यस्य नाम लिखित्सति ॥ यावच्छुष्यति सा विष्ठा तावच्छत्रुर्मृतो भवेत् ॥ यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ १७ ॥ कृकलासवसातैलं यस्यांगे बिंदुमात्रतः ॥ निक्षिपेन्म्रियते शत्रुर्यदि रक्षति शंकरः ॥ १८ ॥ गृहे दीपं तु निक्षिप्य लवणं विजयायुतम् ॥ यस्य नाम्ना मासतश्च तस्य मृत्युर्न संशयः ॥ १९ ॥ मूठचालनमंत्रः ॥ मंत्रो यथा—ॐ नमो कालभैरों मसाणवासा चौसठ जोगनी करे तमासा उडदकी मुट्ठी रक्तावाण चल रे भैरों कचियामसाण मैं कहूं तोसों समझाय सवापहेरमें धुवा दिखाय मूवा मुरदा मरघटवास माता छोडे पुत्रकी आस जलती लकडी धिके मसाण भैरों मेरा वैरी तेरा खान सेलीसिंगी रुद्रबाण मेरे वैरीको नहीं मारे तो राजारामचन्द्रलक्ष्मण जतीकी आन शब्द साचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः ॥ किसी मरे हुए मुरदेको देखकर मसाणमें जावे मुरदेकी हड्डी लेकर चितामें खूब लाल करे पीछे उसमें एक मुट्ठी उडद डाल दे उनमेंसे जो जलजाय उन्हें अलग कर ले जो खिल जाय उन्हें अलग कर ले जले उडदोंपर इक्कीस बार मंत्र पढकर प्रातःकाल विना मुंह धोये शत्रुको मारे तो शत्रु यमपुरीको चला जायगा ॥ मारणार्थे भैरवमंत्रप्रयोगः॥ ॐ काली कंकाली महाकालीके पुत्र कंकालभैरू हुकम हाजिर रहे मेरा भेजा काल करे मेरा भेजा रक्षा करे आन बांधूं वान बांधूं चलते फिरतेके औसान बांधूं दसों सुर बांधूं नौ नाडी बहत्तर कोठा बांधूं फलमें भेजूं फूलमें जाय कोठे जो पडे थर थर कांपे हलहल हले गिरगिर पडे उठउठ भागे बकबक बके मेरा भेजा सवा घडी सवा पहेर सवा दिन सवा मास सवा बरसकूं बावला न करे तो माता कालीकी शय्यापर पग धरे वाचा चूके तो ऊभा सूखे वाचा छोड कुवाचा करे तो धोबीकी नाद

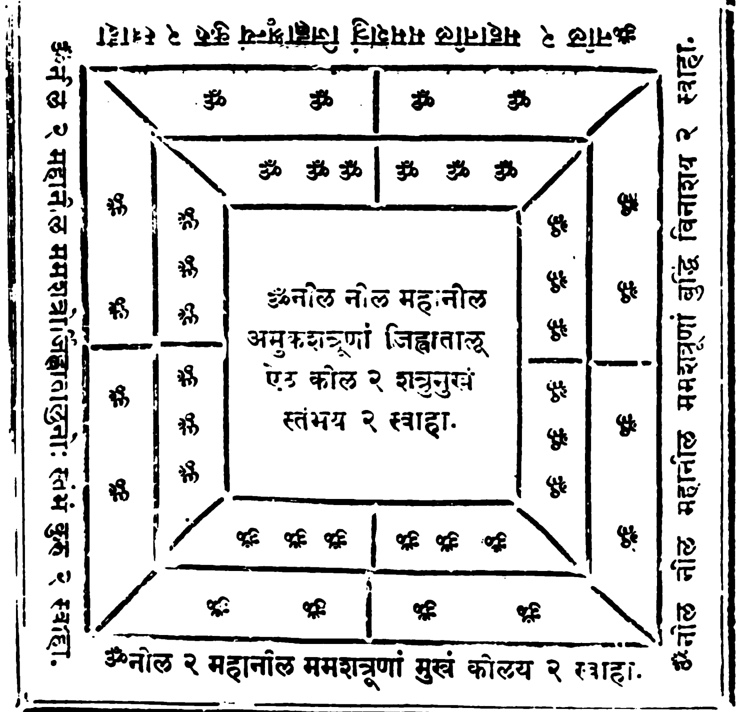
चमारके कुंडेमें पडे मेरा भेजा बावला न करे तो रुद्रके नेत्रसे अग्निकी ज्वाला कढे सिरकी लटा टूटि भूमिमें गिरे माता पार्वतीके चीरपर चोट पडे विना हुकुम नहीं मारना हो कालीके पुत्र कंकालभैरूं फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा सत्य नाम आदेश गुरूका ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–कालरात्रि अथवा ग्रहणकी रात्रिको तिखूंटा चौका लगाकर दक्षिणाभिमुख बैठे लाल कनेरके फूल लड्डू सिंदूर लौंगका जोडा चौमुखा दीपक धरके इस मंत्रका एक हजार जप करे पीछे दशांश हवन करे जब भयंकर स्त्र रूपमें भैरव सम्मुख आवे तब डरे नहीं तत्काल फलोंकी माला गलेमें गेर दे और लड्डू अर्पण करे तो प्रसन्न हो जायँगे पीछे जो काम कहोगे सो तत्काल करदेंगे ॥ यंत्रम् ॥ इस यंत्रको कौवेकी पंखद्वारा विष और हरतालसे भोजपत्रपर लिखकर श्मशानमें गाड देवे तो अकस्मात् शत्रुकी मृत्यु हो जायगी ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे उत्तरखण्डे षट्कर्मतंत्रे उच्चाटनादिर्नवमस्तरङ्गः ॥ ९ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥



॥ अथ स्तंभनप्रारंभः ॥ तत्रादौ मुखस्तंभनम् ॥



इस यंत्रको रविवारके दिन नीमका रस और हल्दीसे पत्थरके ऊपर लिखे इस यंत्रके देखनेसे ही शत्रुका मुखस्तंभन हो जाता है॥१॥ इस वर्तुल यंत्रको अपने घरकी भींतपर खडिया मट्टीसे लिखे बीचमें शत्रुका नाम लिखे पीछे सपेद फूल फलसे पूजन करता रहे सफेद वस्त्र उढावे तो शत्रुके मुखका स्तंभन होता है ॥ अन्यत् ॥ मंत्रो यथा—ॐ नमो भगवति दुर्वचने किलिकिलि वाचोभंजिनि मुखस्तंभिनि स्वाहा ॥ इति सप्तविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अस्य जपमात्रेण सर्वमुखस्तंभनं भवति ॥ २ ॥ अन्यत्—ॐ नमो याचली याचली उसका चश्मा कुलफ उसका बाजू कुलफ दुश्मनको जेर कर हमको सेर ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—हनुमानजीका पूजन विधिपूर्वक करके मंत्रका एक हजार जप करे एक हजार



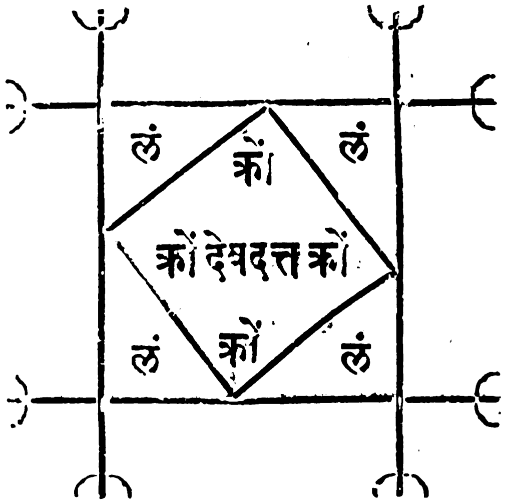
गूगलकी गोली होमे तो सिद्ध हो पीछे सात वार पढकर दुश्मनके तरफ फूंके तो बडबडाने नहीं पावेगा ॥ ३ ॥ अन्यत् ॥ मंत्रो यथा—ॐ अलफ ३ दुसमनके मुहुमें कुलफ मेरे हाथ कुंजी रूपा तेरे कर दुश्मन जेर कर ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—शनिकी रात्रिमें घृतका दीपक जला फूल बतासा चढा गूगलकी एक हजार आहुती देवे तो सात दिनमें सिद्ध हो पीछे हाकिमके साम्हने एकसौ आठ वार

पढके वैरीकी तरफ फूंक मारे पीछे बात करे तो वैरी नहीं बोलसकेगा अगर अर्जीके ऊपर एकसौ आठवार पढके लोबानकी धूप देकर वह अर्जी हाकिमके हाथमें देवे तो मनोरथ सिद्ध हो जायगा इसमें संदेह नहीं ॥ ४॥ अन्यत् ॥ मंत्रो यथा—ॐ ह्रीं श्रीं खेतलवीर चौसठयोगिनी प्रतिहार मम शत्रु अमुकस्य मुखबंधनं कुरु २ स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—घृत शहद मद्यकी आहुती एक हजार देकर लोहकी मेख चार अंगुलकी मसानमें गाडे तो शत्रुका मुखस्तंभन हो जाता है ॥ ५ ॥ अथ दृष्टिस्तंभनम्—वाराहींक्रांतिकामूलं सिद्धार्थस्नेहलेपितम् ॥ मुखे प्रक्षिप्य लोकानां दृष्टिबंधं करोत्यलम् ॥ १ ॥ भाषार्थ—विलाईकंद और कटेलीकी जडको सरसोंके तेलमें घोटे पीछे जिसके मुखपर छिडके उसकी दृष्टि बंद हो जायगी ॥ ६ ॥ अथ बुद्धिस्तंभनम्—उलूकस्य कपेर्वापि तांबले यस्य दापयेत् ॥ विष्ठां प्रयत्नतस्तस्य बुद्धिस्तंभः प्रजायते ॥ १ ॥ भाषार्थ—उल्लू अथवा बंदरकी विष्ठाको पानमें धरकर खिलानेसे उसकी बुद्धि जडके समान हो जाती है ॥७ ॥ भृंगराजरसे भाव्यं सिद्धार्थं श्वेतनामकम् ॥ एभिस्तु तिलकं कृत्वा बुद्धिस्तंभं करोति न ॥ अन्यत्—सहदेवीमपामार्गं लोहपात्रे च निक्षिपेत् ॥ तिलकः सर्वभूतानां बुद्धिस्तंभकरो भवेत् ॥ अथास्य मंत्रः—ॐ नमो भगवते शत्रूणां बुद्धिस्तंभनं कुरुकुरु स्वाहा ॥ इति मंत्रेण अष्टोत्तरशतमभिमंत्र्य योगं कुर्यात् ॥ ८ ॥ अथ मेघस्तंभनम् ॥ वीरभद्रोडीशतंत्रे मत्रो यथा—ॐ हूं ह्रीं क्षं क्षां क्षिं क्षीं क्षुं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः ह्रं फट् ठः ठः ॥ इत्येकोनविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—पर्वाभिमुखो भूत्वा लक्षं जपेत् ॥ वैश्वानरसमीपे वेतससमिधा घृताक्तयाऽयुतं जुहुयात् ॥ सिद्धो भवति ॥ पुनः मंत्र पठित्वा मेघावलोकनेन सर्वे मेघाः प्रणश्यंति ॥ वासवो न वर्षति ॥ नदीं समुद्रगां शोषयति ॥ मेघशब्दो न भवति ॥ उदकमध्ये स्थित्वा जपेत् ॥ अनावृष्टिकाले वृष्टिर्भवति ॥ ९ ॥ अन्यत् ॥ मंत्रो यथा—ॐ मेघानां स्तंभनं कुरु २ स्वाहा ॥ इति त्रयोदशाक्षरो मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्—इष्टकाद्वयमादाय संपुटं कारयेन्नरः ॥ श्मशानांगारसंलेखाद्भूस्थं स्तभ्नाति वारिदम् ॥ १ ॥ भाषार्थ—दो ईंटोंको लेकर श्मशानके कोयलेसे मेघ लिखकर संपुट बना पृथ्वीमें गाडदे और मंत्रका जप करे तो मेघोंका स्तंभन

होवे ॥ १० ॥ अथ शत्रुस्तंभनम् ॥ दत्तात्रेयतंत्रे मंत्रो यथा—ॐ अहो कुंभकर्ण राक्षस नैकषागर्भसंभूत परसैन्यस्तंभन महाभगवान रुद्रस्तापयति स्वाहा ॥ इत्येकोनचत्वारिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अष्टोत्तरशतं जपेत् सिद्धिः ॥ सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् कुर्यात् ॥ ११ ॥ तथा च--ईश्वर उवाच ॥ पुष्यार्के तु समुद्धृत्य विष्णक्रांतासुमूलकम् ॥ स्वके शिरसि तद्धार्यं शस्त्रसंहरणं नृणाम् ॥ १२ ॥ वंध्यांवुव्याघ्रभूपालचौरशत्रुभयं जयेत् ॥ १३ ॥ जातीमूलं मुखे क्षिप्तं शस्त्रस्तंभनमुत्तमम् ॥१४॥ करे सुदर्शनामूलंस्तंभं शस्त्रस्य कारयेत् ॥१५ ॥ केतकी मस्तके नेत्रे ताडमूलं मुखे स्थितम् ॥ खर्जूरं चरणे हस्ते खड्गस्तंभं करोत्यपि ॥ १६ ॥ एतानि त्रीणि मूलानि चूर्णितानि घृते पिबेत् ॥ अहोरात्रं ततः शस्त्रैर्यावज्जीवं न बाध्यते ॥ आयातं चैकशस्त्रं च समहं वा निवारयेत् ॥ १७ ॥ गृहीत्वा पुष्यनक्षत्रे अपामार्गस्य मूलकम् ॥ तल्लिप्त स्वशरीरे च सर्वशस्त्रनिवारणम् ॥ १८ ॥ खर्जूरी मुखमध्यस्था कटिबद्धा च केतकी ॥ भुजदण्डस्थितश्चार्कः सर्वे शस्त्रनिवारणाः ॥ १९ ॥ पुष्यार्के श्वेतगुंजाया मूलमुद्धृत्य धारयेत् ॥ हस्ते कांडभयं नास्ति संग्रामे तु कदाचन ॥ २० ॥ गृहीत्वा रविवारे तु बिल्वपत्राणि कोमले ॥ पिष्ट्वा विषसमं सार्धं शस्त्रस्तंभनलेपनम् ॥ २१ ॥ अथ शस्त्रे लेपः ॥ दत्तात्रेयतंत्रे मंत्रो यथा--ॐ नमो विकरालरूपाय महाबलपराक्रमाय अमुकस्य भुजबलं बंधय २ दृष्टिं स्तंभय महीतले हुं ॥ इति त्रिचत्वारिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-अष्टोत्तरशतं जपेत् सिद्धिः ॥ सिद्धे मंत्री शस्त्राणि लेपयेत् ॥ तथा च—ईश्वर उवाच ॥ विष्णुक्रांतासुबीजानि मंत्रभावेन ग्राहयेत् ॥ तत्तैलं ग्राहयेद्यंत्रे विषेण च समन्वितम् ॥ भल्लातकस्य तैलं तु ह्यहिफेनेन संयुतम् ॥ खरमूत्रेण संयुक्तं धत्तूरबीजचूर्णकम् ॥ तालकं चैव संयुक्तं गंधकं च मनःशिला ॥ गंधकं चैव संयुक्ता वटिका क्रियते नरः ॥ पंचटंकप्रमाणा सा तया शस्त्रं तु लेपयेत् ॥ रणे दारुणशस्त्रौघः खण्डं खण्डं प्रजायते ॥ शस्त्रं दृष्ट्वा पलायंते यथा ... ॥ वर्षा भवति शस्त्रस्य न भयं विद्यते क्वचित् ॥ २२ ॥ अथ सेनास्तंभनम् ॥ मंत्रो यथा--ॐ नमः कालरात्रि ... मम शत्रुसैन्यस्तंभनं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इत्यष्टाविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अष्टोत्तरशतजपात्सिद्धिः ॥ सिद्धे मंत्रे

मंत्री तंत्राणि कुर्यात् ॥ तथा च—ईश्वर उवाच ॥ मंत्रभावेन गृह्णीयाच्छ्वेतगुंजाविधानकम् ॥ निखनेच्च श्मशाने वै पाषाणे तानि धापयेत् ॥ योगिन्योऽष्टौ तु संपूज्या ऐन्द्री माहेश्वरी तथा ॥ वाराही नारसिंही च वैष्णवी च कुमारिका ॥ लक्ष्मीर्ब्राह्मी च संपूज्या गणपो बटुकस्तथा ॥ क्षेत्रपालास्तदा पूज्याः सेनास्तंभो भविष्यति ॥ पृथक् पृथक् बलिं दत्त्वा दशानामपि भागतः ॥ मांसं मद्यं तथा पुष्पं धूपं दीपं बलिक्रियाम् ॥ यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ २३ ॥ श्मशानभस्मनाऽऽलिख्य मृत्तिकापात्रमध्यतः ॥ रिपुनामसमायुक्तं नीलसूत्रेण बंधयेत् ॥ गर्तकुंडे विनिक्षिप्य पाषाणोपरि दीयते ॥ स्तंभं करोति सैन्यस्य सिद्धियोग उदाहृतः ॥ २४ ॥ ॥ अथ सेनापलायनम् ॥ दत्तात्रेयतंत्रे मंत्रो यथा—ॐ नमो भयंकराय खड्गधारिणे मम शत्रुसैन्यं पलायनं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इत्येकोनत्रिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अष्टोत्तरशतजपात्सिद्धिः ॥ सिद्धे मंत्रे मंत्री तंत्राणि कुर्यात् ॥ तथा च—ईश्वर उवाच ॥ भौमवारे गृहीत्वा तु काकोलूकसुपक्षकौ ॥ भूर्जपत्रे लिखेन्मंत्रं तस्य नामसमान्वितम् ॥ गोरोचनं गले बद्ध्वा काकोलूकसुपक्षकौ ॥ सेनानीसंमुखं गच्छेन्नान्यथा शंकरोदितम् ॥ शब्दमात्रे सैन्यमध्ये पलायंते तु निश्चितम् ॥ राजा प्रजा गजादिश्च नान्यथा शंकरोदितम् ॥ २५ ॥ अथ मनुष्यस्तंभनम् ॥ दत्तात्रेयतंत्रे—गृहीत्वा रजस्वलावस्त्रं गोरोचनसमन्वितम् ॥ यस्य नाम्ना क्षिपेत्कुंभे सद्यःस्तंभनकारकम् ॥ २६ ॥ अथ निद्रास्तंभनम् ॥ दत्तात्रेयतंत्रे—मूलं बृहत्या मधुकं पिष्ट्वा नस्यं समाचरेत् ॥ निद्रास्तंभनमेतद्धि मूलं देवेन भाषितम् ॥ २७ ॥ अथ नौकास्तंभनम् ॥ दत्तात्रेयतंत्रे—भरण्यां क्षीरकाष्ठस्य कीलं पंचांगुलिं क्षिपेत् ॥ नौकास्तंभनमेतद्धि मूलं देवेन भाषितम् ॥ २८ ॥ अथ जलस्तंभनम् ॥ मंत्रो यथा—दत्तात्रेयतंत्रे—ॐ नमो भगवते रुद्राय जलं स्तंभय २ ठः ठः ॥ इति विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अष्टोत्तरशतजपात् सिद्धिः ॥ सिद्धे मंत्रे मंत्री तंत्राणि कुर्यात् ॥ तथा च—ईश्वर उवाच ॥ पद्मकं नाम यद्द्रव्यं तस्य चूर्णं तु कारयेत् ॥ वापीकूपतडागादौ निक्षिप्तं बंधयेज्जलम् ॥ २९ ॥ अथाग्निस्तंभनम् ॥

इस यंत्रको भोजपत्रपर पीतद्रव्यसे लिखकर पूजन करे पीछे पृथ्वीमें गाडकर पानीकी धार डालता रहे तो उसके घरमें अग्नि लगनेका भय कभी नहीं होता ॥ दत्तात्रेयतंत्रे मंत्रो यथा—ॐ नमोऽग्निरूपाय मम शरीरे स्तंभनं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इत्येकविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अष्टोत्तरशतजपात् सिद्धिः ॥ सिद्ध मंत्रे मंत्री तंत्राणि कुर्यात् ॥ तथा च—ईश्वर उवाच ॥ वसां गृहीत्वा मांडूकीं कौमारीरसपेषिताम् ॥ लेपयेन्निजगात्राणि वह्निस्तंभः प्रजायते ॥ ३० ॥ अर्कदुग्धं गृहीत्वा तु कौमारीरसपेषितम् ॥ लेपयेत्सर्वगात्राणि वह्निस्तंभः प्रजायते ॥ ३१ ॥ कदलीरसमादाय कुमारीरसपेषितम् ॥ लेपनात्तु शरीरस्य वह्निस्तंभः प्रजायते ॥ ३२ ॥ मंडुकस्य वसा ग्राह्या कर्पूरेणैव संयुता ॥ लेपात्तस्य तु गात्राणां वह्निस्तंभः प्रजायते ॥ ३३ ॥ कमारीकंदमादाय कदलीकंदसंयुतम् ॥ लेपनात्तस्य गात्राणामग्निस्तंभः प्रजायते ॥ ३४ ॥ पिप्पली मरिचं



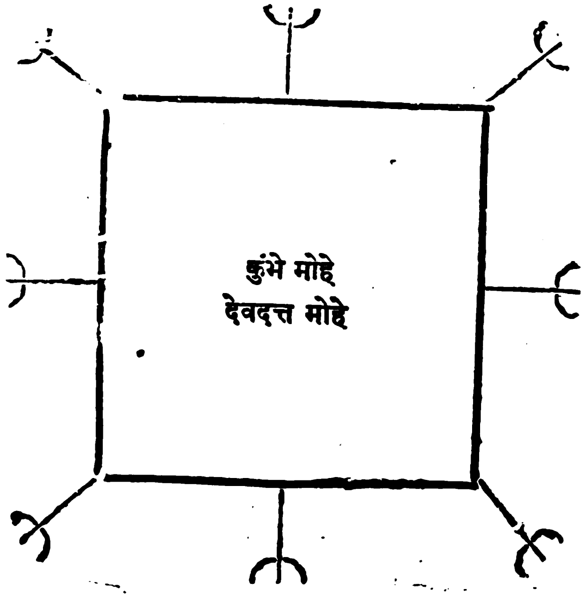
शुंठीं चर्वयित्वा ततः पुनः ॥ दीप्तांगारान्नरो भुंक्ते न वक्त्रं दह्यते क्वचित् ॥ ३५ ॥ कौमारीचूर्णसंयुक्तालिप्तदेहो न दह्यते ॥ आज्यशर्करया पीत्वा चर्वंचनदारं तथा ॥ तप्तलोहं लिहेत्पश्चात् न वक्त्रं दह्यते क्वचित् ॥ अग्निस्तंभनयोगोऽयं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ३६ ॥ गृहीत्वा रविवारेण श्वेतकर्वीरमूलकम् ॥ धारयेद्दक्षिणे हस्ते अग्निबाधाभयं नहि ॥ अन्यत्—मंत्रो यथा—उत्तरस्मिंश्च दिग्भागे मरीचो नाम राक्षसः ॥ तस्य मूत्रपुरीषाभ्यां हुतस्तंभः प्रजायते ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अनेन मंत्रेण सप्तांजलीन् जलस्याग्निमध्ये निक्षिपेत् वृष्टिः शाम्यति ॥ अथा सनस्तंभनम् ॥ मंत्रो यथा—ॐ नमो दिगंबराय अमुकस्यासनस्तंभनं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति त्रयोविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अष्टोत्तरशतजपात्सिद्धिः ॥ एतस्मिन्सिद्धे मंत्रे मंत्री तंत्राणि कुर्यात् ॥ तथा च दत्तात्रेयतंत्रे—ईश्वर उवाच ॥ [illegible] कुंडोत्थमलो ग्राह्यस्तथा रजः ॥ चांडालीरुधिरं तद्वच्चांगे च विनिक्षिपेत् ॥ तस्य स्थाने भवेत्स्तंभः सिद्धियोग उक्त

हृतः ॥ यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ३७ ॥ श्वेतगुंजाफलं क्षिप्त्वा नृकपाले समृत्तिके ॥ बालिं दत्त्वा तु दुग्धस्य तस्य वृक्षो भवेत्तथा ॥ तस्य शाखालतां छित्वा यस्याग्रे तु विनिक्षिपेत् ॥ तस्य स्थाने भवेत्स्तंभः सिद्धियोग उदाहृतः ॥ ३८ ॥ श्मशानाग्निं गृहीत्वा तु जुहुयाल्लवणेन च ॥ यस्य नाम्ना भवेत्स्तंभः सिद्धियोग उदाहृतः ॥ ३९ ॥ अथ गर्भस्तंभनम् ॥ मंत्रो यथा दत्तात्रेयतंत्रे– ॐ नमो गर्भं स्तंभय ॥ अस्यष्टाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--अष्टोत्तरशतजपात्सिद्धिः ॥ एतस्मिन्सिद्धे मंत्रे मंत्री तंत्राणि कुर्यात ॥ तथाच–ईश्वर उवाच ॥ एरंडबीजमृत्वंते भुक्तं गर्भस्य स्तंभनम् ॥ ४० ॥ धत्तूरमूलं कटिबद्धं गर्भस्तंभनकं परम् ॥ ४१ ॥ सिद्धार्थमूलं शिरसि बद्धा कांता रमेत्तु या ॥ न गर्भं धारयेत्सा स्त्री भुक्ते तु लभते पुनः ॥ ४२ ॥ धत्तूरमूलचूर्णं तु योनिस्थं गर्भस्तंभनम् ॥ तंडुलीमूलतोयेन देयं तंडुलवारिणा ॥ धूपस्तु योनिरंध्रेषु निंबकाष्ठेन युक्तितः ॥ ऋतौ तु दीयते सा स्त्री गर्भदुःखविवर्जिता ॥ ४३ ॥ अन्यत् ॥ मंत्रो यथा प्राकृतग्रंथे–ॐ वज्रयोगिनी वज्रकिवाड, वजरी बांधूदसूं दुवार । झाडो झडै न लिंगी कोर, तो वज्रजोगिनीका वाचा फुरै ॥ अन्यमंत्रः–ॐ नमो आदेश गुरूका चार घाटी चार वटी रक्त चुवे चोरासी घाटी रक्त चुवे भील धीर थांभ थांभ हनुमंत वीर लंकासा कोट समुद सी खाई इस नारीके रक्त चुवे तो सोषिया वीरकी दुहाइ लूणा चमारीकी दुहाई अजैपाल जोगीकी दुहाई ॥ इति मंत्रः ॥ मंत्रद्वयस्यैकविधानम्–कुवारी कन्याका काता हुआ सूत अढाई २॥ पूणी लेकर डोरा कर मंत्रद्वारा सात गांठ दे पीछे कमरमें बांधे तो गर्भ पडता हुआ थंभे पैर थंभे । सत्यमेव ॥ ४४ ॥ अथ पदस्तंभनम् ॥ मंत्रो यथा–ॐ नमो आदेश गुरूका चार आंटी चार वाटी नीर चढै चौरासी घाटी आवे नीर भीजे चीर बांध गया सोखता वीर सोखता वीर लंका वसै सोला कुंडा रक्तका भषै शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–आधी रातको मंत्र पढे लोबान वार २१ दिन २१ दे तो सिद्ध होय पीछे कुवारी कन्याके सूतका डोरा कर कटिमें बांधे तो पेर थंभे सत्य है ॥ ४५ ॥ भीतस्तंभनयंत्रम् ॥ इसको लिखकर दीवारके बीचमें चिपकावे जबतक चिपारहेगा

हरगिज न गिरेगी पीछे कुछ शीरनी बांटे ॥ यंत्रं यथा—(वहक्कशाहदमाहफकरखीवमानंदशालहादीवारतरक्की) अथ पशुस्तंभनम्—उष्ट्रास्थीनि चतुर्दिक्षु निखनेद्भूतले ध्रुवम् ॥ गोमहिष्यादिसंस्तंभे सिद्धयोग उदाहृतः ॥ ॥ अन्यत्—उष्ट्ररोम गृहीत्वा तु पशूपरि विनिक्षिपेत् ॥ पशूनां हि भवेत्स्तंभः सिद्धयोग उदाहृतः ॥ ॥ अन्यत्—रविवारे गृहीत्वा त मृत्तिकाभांडं खरमुखम् ॥ तस्य मध्ये स्थितं कृत्वा ह्यर्ककीलं नवांगुलम् ॥ श्वेतदूर्वासमायुक्ता अश्वगंधा मनःशिला ॥ तांबूलसंयुतं कृत्वा तुलसीपत्रं तथैव च ॥ अपामार्गेण संयुक्तं धात्रीपत्रं तथैव च ॥ वटपत्रं तु तन्मध्ये घृतं मिष्टान्नदुग्धकम् ॥ मुखे वस्त्रेण संवेष्ट्य निखनेत्तस्यमस्तके ॥ तस्योपरि भूर्जपत्रे पंचदर्शी लिखेच्छशि ॥ शलभामृगयामषाश्रृगालाकीलकं तथा ॥ पशुपक्षिनरे चारकलिनं जायते तदा॥ वसुंधरा सस्यपर्णा न विघ्नैः परिभूयते ॥ यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ॥ अन्यत्—गंधकं हरितालं च गोमूत्रं च विषं तथा ॥ सूक्ष्मचूर्णमयं कृत्वा किंचित्तर्हि विनिक्षिपेत् ॥ विघ्नाः सर्वे पलायंते यथा युद्धेषु कातराः ॥ विना मंत्रेण सिद्धिः स्यात्सिद्धयोग उदाहृतः ॥ अन्यत्—मुरगाके शिर तेल लगावे, मुरगा बांगदेन नहिं पावे । मुर्गाके गल, बांधिये, एक डामलेरांग । कंठमुर्गाका जाय रुक । देन न पावे बांग ॥ ॥ अन्यत्—घृत अरु तेल मिलाकर भाई, गर्दभ चूतड देहु लगाई । जब तक लगा रहे यह तापै, रेंकन गधा नेक नहिं पावे ॥ ॥ अन्यत्—खटमलके रुधिरमें तागा भिगोकर पावमें बांधनेसे अथवा दौनाकी पत्ती पलंगपर रखनेसे सब खटमल भाग जाते हैं ॥ ॥ अन्यत्—रात्रिके समय एक पीतलके बर्तनमें पानी भरकर एक बूंद सरसोंका तेल और एक बूंद मट्टीका तेल डालकर खाटके नीचे रख दो प्रातःकाल हजारों पिसू मरे हुए उसमें मिलेंगे ॥ ॥ अन्यत्—रविदिन होय अमावस जबहीं, बंदरहाड लाइये तबहीं ॥ कोरे खपरामांहि धरीजे, धुनी अगर ताहि पुनि दीजे ॥ सींदुरको एक टीको काढे,

१ ऊंट हाड़की कील बनावे, चारि दिशामें तिन्हें गडावे । जोछु वाके भीतर जावे, सो वह रजिक खन न छिपावे ॥ २ ऊटवार जेहि पशुपर डार, टरै नहिं कितना ही टारे ॥

तेलभरयो एक दीपक वारे। गामसीमपर दीजे गाड, टीडी घुसे न भीतर हाड ॥ ॥ अन्यत्—मंत्रो यथा—फरीद चले परदेसको, कुत्तक जीके भाव । सांपा चोरां नांहरा, तीनों दांत बंधान ॥ इति मंत्रः ॥ जहां सोवे या बैठे वहां पर मंत्रद्वारा तीन दफे ताली बजावे तो सर्प चोर सिंह तीनोंका भय होवे नहीं ॥ ॥ अथ पाषाणस्तंभनम् ॥ मंत्रो यथा—शेषफरीदकी कांमली अरु अंधियारी निशि तीनों चीज बराइय आगओला पानी विष ॥ इति मंत्रः ॥ तीन वार पढकर ताल देवे तो जहांको फेरेमा वहां ही सब बोले जाकर पडेंगे साधकपर आवेंगे नहीं ॥ अथ नाकास्तंभनम्—पक्का फल मंगाय वेलका, और मैनफल आने। पीसे दूध डराय गायका, इह विध गोली साने ॥ पीलासींग मंगाय गायका, भूमिपरा जो लीजे। जमुनबडी बराबर गोली, बांध छाह सुखकीजे ॥ सींगमाहि भर राखे गोली, सात दिवस जब बीते। ऐसा जतन करे जो कोई, राज सभामें जीते ॥ वहेती नाव जाय पानीमें, तहां खेल यह देखे कारिये, छिद्रनावके पेंदे तहां, सो गोली धारिये ॥ वहेके चले नखे वा माने, रहे हार मल्लाह बिचारा। लीजे काढ छिद्रसे गोली, चले स्वयं विन खेवन हारा ॥ इस यंत्रको शिलासंपुटपर गोरोचन हरताल हल्दी मनसिल कुंकुमसे लिखे और पीले फूलोंसे पूजन कर धूपादिक देवे पीछे पृथ्वीमें गाड दे तो उस मनुष्यकी यात्रा बंद हो जायगी ॥ अथ विद्वेषणतंत्रप्रारंभः ॥ तवाग्रे कथयिष्यामि योगं विद्वेषणाभिधम् ॥ महाकौतुकरूपं च श्रृणु पार्वति यत्नतः ॥ १ ॥ विद्वेषं नरनारीणां विद्वेषं राजमंत्रिणोः ॥ महाकौतुकाविद्वेषं श्रृणु सिद्धि प्रयत्नतः ॥ २ ॥ वीरभद्रोड्डीशतंत्रे मंत्रो यथा—ॐ नम आदित्याय गजसिंहवदमुकस्य अमुकेन सह विद्वेषं कुरु २ स्वाहा ॥ इत्येकत्रिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—गृहीत्वा गजकेशं च तथा व्याघ्र



कचं पुनः ॥ रिपुपादमृदा कृत्वा पोटलीं निखनेद्भुवि ॥ आग्निं तदुपरि स्थाप्य जुहुयान्मालतीसुमैः ॥ विद्वेषं कुरुते यस्य भवेत्तस्य हि नान्यथा ॥ १ ॥ दत्तात्रेयतंत्रे मंत्रो यथा—ॐ नमो नारायणाय अमुकममुकेन सह विद्विष्टं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति षड्विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अष्टोत्तरशतजपात्सिद्धिः ॥ एतस्मिन्सिद्धे मंत्रे मंत्री तंत्राणि कुर्यात् ॥ तथाच—ईश्वर उवाच ॥ एकहस्ते काकपक्षं घूकपक्षं परे करे ॥ मंत्रयित्वा मिलेद्द्वंद्वं कृष्णसूत्रेण बंधयेत् ॥ जलाञ्जलीन्प्रदद्यैवं तर्पयेद्धस्तवक्षसि ॥१॥ एवं सप्तदिनं कुर्यादष्टोत्तरशतं जपेत् ॥ विद्वेषं कुरुते यस्य भवेत्तस्य हि नान्यथा ॥ २ ॥ मार्जारविष्टामादाय विष्टामादाय मौषकीम् ॥ पादाधोमृत्तिकायुक्तां कुर्यात्पुत्तलिकां नरः ॥ नीलवस्त्रेण संवेष्ट्य मंत्रयित्वा शतेन च ॥ विद्वेषस्तत्क्षणाच्चैव भ्रात्रोर्वै तातपुत्रयोः ॥ ३ ॥ गृहीत्वा सर्पदंतं हि गृहीत्वा बभ्रुरोमकम् ॥ चिताभस्मसमायुक्तां गुटिकां कारयेन्नरः ॥ उद्याने निखनेद्भूमौ मंत्रयित्वा सनामकम् ॥ विद्वेषस्तत्क्षणाच्चैव नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ४ ॥ बभ्रोः कंचुकरोम्णां हि सभायां धूपदानतः ॥ विद्वेषो जायते सत्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ५ ॥ गृहीत्वा श्वानरोमाणि मार्जारस्य तथा नखम् ॥ सभायां दीपयेद्धूपं विद्वेषो जायते तदा ॥ ६ ॥ सर्पदंतं मयूरस्य विष्टायां पेषयेन्नरः ॥ ललाटे तिलकं कृत्वा विद्वेषो जायते क्षणात् ॥ ७ ॥ गृहीत्वा गजदंतं च गृहीत्वा सिंहदंतकम् ॥ पेषयेन्नवनीतेन तिलको द्वेषकारकः ॥ ८ ॥ अश्वकेशं गृहीत्वा च माहिषं केशमेव तु ॥ सभायां दीपयेद्धूपं विद्वेषो जायते क्षणात् ॥ ९ ॥ गृहीत्वा सिंहिकंटं तु निखनेद्द्वार भूतले ॥ कलहो जायते नित्यं विद्वेषो जायते तदा ॥ यस्य यस्य भवेद्वैरं जीवोऽजीवो भवेत्तदा ॥ १० ॥ तत्पादमृत्तिकायास्तु रिपुपादस्थसन्मृदा ॥ कृत्वा पुत्तलिकां सम्यक् श्मशाने निखनेद्भुवि ॥ विद्वेषो जायते सत्यं सिद्धयोग उदाहृतः ॥ ११ ॥ प्राकृतग्रंथे मंत्रो यथा—ॐ बारा सरसो तेरा राई यारकी मारी मसाणकी छाई पढके मारू कर दलवार अमुका कढे न देखे अमुकीका द्वार मेरी भाक्त गुरुकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा सत्य नाम आदेश गुरूका ॥ इति मन्त्रः॥ अस्य विधानम्—सरसो राई श्मशानकी भस्म इन [illegible] दिन आकके लकडियोंकी अग्निमें एकसो आठवार होमे और इस होमकी भस्मको जहां स्त्री पुरुष हो उसके दर

वाजेके आगे डाल दे तो दोनोंमें वैरभाव अवश्य करके हो जायगा ॥ १२ ॥ अन्यत्-मंत्रो यथा-सत्य नाम आदेश गुरूका आकढाक दोनों वन राई अमुका अमुकी ऐसी करे जैसे कूकर और विलाई ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-शनिवारसे प्रारंभ करके ७ दिन इस मंत्रको आकके पत्तोंपर लिख अर्द्धरात्रिके समय हरएक पत्तेको सात मंत्रोंसे अभिमंत्रित करके ढाकके अंगारोंमें जलावे तो निश्चयकरके उन दोनोंमें वैरभाव हो जाता है ॥ १३ ॥ अन्यत्-वस्त्र पुर्षसिरवालमें, हरिया मंगलके दिन जारे। तेहिकी राख खवावे, उनको वैर बँधै या मारे ॥ १४ ॥ गधामूत्र लेवे शनिरविदिन, धरतीपडन न पावे। तामें राई रखे तीन दिन, फिर ले ताहि सुखावे ॥ रविदिन धूनी दे लेजावे,जहां मित्र दो पावे। उनके मध्य डारकर आवे, वैरभाव होजावे ॥१५॥ अन्यत्-मंत्रो यथा-ॐ नमो भगवति श्मशान कालिके अमुकममुकेन सह विद्वेषय विद्वेषय हन हन पच पच मथ मथ हुं फट् स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ ॥ अस्य विधानम्-इस मंत्रसे कडवे तेलमें नीमके पत्ते तिल चावल मिलाकर खैरकी लकडीको श्मशानकी अग्निसे बालकर दशहजार आहुति देनेसे तत्काल दोनोंमें वैरभाव हो जाता है ॥ १६ ॥ इति श्रीमन्त्रमहार्णवे उत्तरखण्डे षट्कर्मतन्त्रे स्तंभनादिर्दशमस्तरङ्गः ॥ १० ॥ ॥ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ यंत्रप्रकरणप्रारंभः ॥ तत्रादौ विंशांकयंत्रविधानम् ॥ विश्वलोकतंत्रे–पार्वत्युवाच ॥ नमस्ते देवदेवेश सर्वशास्त्रविशारद ॥ विंशांकस्य विधिं ब्रूहि भक्तानां हितकारक ॥ १ ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि सुदरीयंत्रमुत्तमम् ॥ विंशांकस्य महादिव्यं ब्रह्मविष्णुशिवात्मकम् ॥ २ ॥ अद्यप्रभृति कस्यापि न चोक्तो यंत्रराजकः ॥ तव स्नेहान्मयाऽऽख्यातो गोप्यः सर्वत्र सर्वदा ॥ ३ ॥ एतां राजवतीविद्यां पिता पुत्रेऽपि नार्पयेत् ॥ तस्माद्गोप्यं वरारोहे मम वाक्यं न संशयः ॥ ४ ॥ मोहनं स्तंभनाकर्षं वशीकरणमुत्तमम् ॥ विद्वेषोच्चाटनकरं मारणं प्राणदायकम् ॥ ५ ॥ सर्वार्थजनकं चैव वैरिचित्तस्य शोषणम् ॥ समस्तयंत्रफलदं महारक्षाकरं सदा ॥ ६ ॥ महाभाग्यैकलभ्यं तु महदैश्वर्यदायकम् ॥ सर्वकल्याणनिलयं दुर्लभं भुवनत्रये ॥ ७ ॥ इन्द्राद्याकर्षणं देवि योषिदाकर्षणं परम् ॥ आकर्षणकरं देवि गंधर्वोरगरक्षसाम् ॥ ८ ॥ करुणामृतकल्लोलं वाक्कवित्वप्रकाशकम् ॥ भूगतानां निधीनां च सद्य आकृष्टिकारकम् ॥ ९ ॥ कालसंहारपापघ्नं महामोक्षप्रदायकम् ॥ वश्यकामेन देवेशि सदोपास्यं प्रयत्नतः ॥ १० ॥ मातंगा वशगास्तस्य सर्वे तस्य वशंगताः ॥ देवकन्याकृष्टिकरं कल्पद्रुममिवापरम् ॥ ११ ॥ योगीशैः पूजितं नित्यं ज्ञानवैराग्यभाजनम् ॥ धनधान्यप्रदं लोके सुतराजवशंकरम् ॥ १२ ॥ रसायनकरं स्वर्णसिद्धिदायकमुत्तमम् ॥ जगतां सर्वपापघ्नं सर्वरोगनिवारणम् ॥ १३ ॥ गत्युत्थानास्त्रवाग्वह्निस्तंभभूतवशंकरम् ॥ अमराणां मृत्युकरमुच्चाटनं मरुतामपि ॥१४॥ परसैन्यस्तंभनं तद्विवादविजयावहम् ॥ दुर्भिक्षे वृष्टिजनकं कृषिवृष्टिकरं परम् ॥ १५ ॥ रत्नवृद्धिकरं सर्वमनोरथसमृद्धिदम् ॥ पुत्रपौत्रप्रदं देहबलवृद्धिप्रदायकम् ॥ १६ ॥ शत्रवस्तस्य नश्यंति येनेदं साध्यते भुवि ॥ व्याधयो निलयं यांति विनौषधिनिषेवणैः ॥ १७ ॥ राज्यदं भ्रष्टराज्यस्य निर्धनस्य धनप्रदम् ॥ मुक्तिदं सन्मुमुक्षूणामगतीनां गतिप्रदम् ॥ १८ ॥ अणिमा महिमा चैव गरिमा लघिमा तथा॥ प्राप्तिः प्राकाम्यमीशित्वं वशित्वं प्राप्यतेऽचिरात् ॥१९॥ ग्रहेभ्यो न भयं तस्य राजचोरभयं नहि॥न शस्त्रादिभयं तस्य न भयं देवदानवात्॥२०॥चमत्कारकरी विद्या धनधान्यसमृद्धिदा॥पुत्रपौत्रप्रदा विद्या चांते मुक्तिप्रदायिनी ॥ २१ ॥ सर्वेषां यंत्रराजानां शिरोमुकुटवत्स्थितम् ॥ स्थित्वा पालयते लोकान् सृष्ट्या सूते जगत्त्रयम् ॥ २२ ॥ संहृत्या

संहरेदेतद्यंत्रं त्रैलोक्यसुंदरि ॥ यथा ज्ञाने ज्ञानतत्त्वे ज्ञानं परिसमाप्यते ॥ २३ ॥ ततोऽस्मिन् यंत्रराजे तु नान्यदन्वेषितं भवेत् ॥ बहुना किमिहोक्तेन सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥ २४ ॥ तस्योद्धारं प्रवक्ष्यामि समाहितमनाः शृणु ॥ त्वया कुत्रापि नो वाच्यं गोप्या द्गोप्यतरं महत् ॥ २५ ॥ हृदये मम सर्वस्वं मद्भाग्यं मम प्राणवत् ॥ प्राणादपि प्रियतमं न प्रकाश्यं त्वया क्वचित् ॥ २६ ॥ किं यागैः किं मखैस्तीर्थैः किं तपोभिः प्रयासकैः ॥ किं दानैः किं जपैः स्तोत्रैः किं पूजायागविस्तरैः ॥ २७ ॥ किमन्यैरसदालापैः किं वान्यैर्देवसंस्तवैः ॥ किं तस्य योगसिद्ध्या वा कायक्लेशादिभिश्च किम् ॥ २८ ॥ नास्य ध्यानं न वा पूजा न न्यासो नास्य भावना ॥ जपादस्य भवेत्सिद्धो यंत्रराजास्त्रिवर्गकः ॥ २९ ॥ पूर्वपश्चिमभागे च कृत्वा रेखाचतुष्टयम् ॥ उत्तरे दक्षिणे रेखां चतुष्कोणे तु कारयेत् ॥ ३० ॥ वसुनंदहुताशननेत्रमुनिप्रमथाधिपवेदरसैः क्रमतः ॥ रचितं किल विंशतियंत्रमिदं धनधान्ययशोदयसिद्धिकरम् ॥ ३१ ॥ नवकोष्ठांकितं यंत्रं स्वर्गपातालसिद्धिदम् ॥ एकाधिकोणविंशत्या षष्टिरंकाः प्रकीर्तिताः ॥ ३२ ॥ आदौ कुर्यात्पुरश्चर्यां साधकः सिद्धिहेतवे ॥ पुरश्चरणहीनस्य यंत्रसिद्धिर्न जायते ॥ ३३ ॥ लेखने यंत्रराजस्य भूरि विघ्ना भवंति हि ॥ क्वचिच्चटचटाशब्दस्तालशब्दः क्वचिद्भवेत् ॥ ३४ ॥ गानं गंधर्वपत्नीनां नृत्यमप्सरसामपि ॥ मातुः पितुर्वा पुत्रस्य दर्शनं श्रीगुरोरपि ॥ ३५ ॥ नानासर्पमृगव्यालसिंहव्याघ्रादिदर्शनम् ॥ गात्रस्फुटनमाध्मानं गात्रगौरवमेव च ॥ ३६ ॥ रोदनं दुःखितानां च महावातो महाभयः ॥ पर्वतोत्पतनं वृक्षभंगो विद्युल्लतागमः ॥ ३७ ॥ क्वचिन्मेघायते भूमिः समुद्रः प्लावयेन्महीम् ॥ क्वचिद्विमानं पतति क्वचिदावर्तते पुनः ॥ ३८ ॥ क्वचिच्च विकृताकारा यान्ति वै भूतनायकाः ॥ एवं नानाविधा विघ्ना जायंते जगदीश्वरि ॥ ३९ ॥ निवार्य दुस्तरांस्तांस्तु समाधाय मनः स्थिरम् ॥ विघ्नान्न गणयेत्तावत्सिद्धिं नैव प्रकाशयेत् ॥ ४० ॥ गात्ररोगान्न गणयेत्पुनर्जन्म न चिंतयेत् ॥ एवं कृतपुरश्चर्यः साक्षाद्ब्रह्ममयो भवेत् ॥ ४१ ॥ किं तस्य योगसिद्ध्या वा कायक्लेशादिभिश्च किम् ॥ यस्य प्रसन्नो भगवान् यंत्रराजो जनार्दनः ॥ ४२ ॥

॥ विंशाङ्कयंत्रम् ॥

८	९	३
२	७	११
१०	४	६

तस्य किं दुर्लभं लोके स्वर्भूपातालमंडले ॥ विषं निर्विषतां याति पानीयममृतं भवेत् ॥ ४३ ॥ परसैन्यस्तंभनं स्यात्परकायप्रवेशनम् ॥ यंत्रराजे वशीभूते किं न सिद्ध्यति भूतले ॥ ४४ ॥ खेचरीमेलनं तस्य भचरीमेलनं भवेत् ॥ श्मशानेऽपि मृतो याति मोक्षमार्गं सनातनम् ॥ ४५ ॥ अथास्य साधनं वक्ष्ये तदिहैकमनाः शृणु ॥ यंत्रराजेन सिद्ध्यंति नात्र कार्या विचारणा ॥ ४६ ॥ अथास्य प्रयोगः— तत्रादौ चन्द्रतारादिबलान्विते सुमुहूर्ते सिद्धतीर्थे पर्वते वने वा जपस्थानं प्रकल्प्य नद्यादौ स्नात्वा नित्यनैमित्तिकं विधाय एकाकी कुशासने प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य विश्वरूपं यंत्रराजं स्वहृदये विचिंतयेत् ॥ तथा च—मायाबीजांतरीभूतमज्ञानेन्धनदाहकम् ॥ भावनावशमापन्नः साक्षाद्यंत्रमयो भवत् ॥ १ ॥ इति संचिंत्य एकचित्तः स्थिरासनो मौनी—ॐ गुरवे नमः ॥ १ ॥ ॐ गणपतये नमः ॥ २ ॥ इति नत्वा प्रजापतिं प्रार्थयेत् ॥ तथाच--ॐ प्रजानाथ नमस्तेऽस्तु प्रजापालनतत्पर ॥ प्रसन्नो भव मे देव यंत्रसिद्धिं प्रयच्छ मे ॥ १ ॥ ये केचित्प्रेतकूष्मांडा भैरवा भूतनायकाः ॥ ते सर्वे विलयं यांतु प्रजानाथ नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥ प्रयच्छ सिद्धिमतुलां यंत्रराजात्सुदुर्लभाम् ॥ त्वत्प्रसादादहं नाथ कृतकृत्यो व्रजे परम् ॥ ३ ॥ इति गिरिशं संप्रार्थ्य प्रसन्नचित्तो मौनी यंत्रं लिखेत् ॥ तथाच—चंदनागुरुकस्तुरीरक्तचंदनकर्पूरकुंकुमदेवदारुकुष्ठैरष्टगंधाभिधैर्जातीलेखन्या भूर्जपत्रे प्रसिद्धयंत्रे वा 'ॐ ह्रीं ॐ' इत्युच्चारणपूर्वकं नवकोष्ठांकितं कृत्वा प्रथममष्टौ नव तृतीयं पुनः द्वितयैकादशं पुनः दशवतःषष्ठाः इत्यंकान् 'ॐ ह्रीं ॐ' इत्युच्चारणपूर्वकं लिखेत् ॥ एवमेव विधिनाष्टोत्तरशतं यंत्राणि लिखित्वा नानापुष्पैः संपूज्य कृष्णागुरुधूपं च दत्त्वा पुष्पवासिततैलेन दीपं दद्यात् ॥ एवं यंत्रं संपूज्य पुनरपि दीपं प्रज्वाल्य पश्चिमाभिमुखं संस्थाप्य—ॐ भो भो जलेशवसन सर्वकार्यप्रसाधक ॥ निर्विघ्नं कुरु मे कार्यं हर विघ्नान् नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥ इति वरुणं संप्रार्थ्य इमं दीपं वरुण तुभ्यमहं प्रददे ॥ इति दीपं दत्त्वा नानापुष्पैः संपूज्य यंत्राग्रे मूलमंत्रं जपेत् ॥ तथाच मंत्रो यथा—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं मम सर्ववांछितं देहि देहि स्वाहा ॥ इति सप्तदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विंशाकस्य यंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । अनुष्टुप्छंदः । विंशांका भवानी देवता । ॐ बीजम् । ह्रीं शक्तिः । श्रीं कीलक । चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥

ॐ ब्रह्मर्षये नमः शिरसि १ । अनुष्टुप्छंदसे नमः मुखे २ । विंशांकाभवानीदेवतायै नमः हृदि ३ । ॐ बीजाय नमः गुह्ये ४ । ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ५ । श्रीं कीलकाय नमः नाभौ ६ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७ ॥ इति विन्यस्य सहस्रसंख्यकं मंत्रं जपेत् ॥ तद्दशांशेन क्षीरखण्डाज्यमधुना पंचामृतेनाक्तं पंचखाद्यं हुत्वा तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं अष्टाशीतिदिनं यावत् ॥ संख्यासमाप्तिदिवसे पृथक्पृथग्यंत्रं गोधूमान्नेन वटिं कृत्वा जले क्षिपेत् ॥ मत्स्यस्य वटिकाभक्षणाद्वरुणस्तुष्यति रात्रौ वरं ददाति ॥ एवं कृते यंत्रं सिद्धं भवति ॥ एतस्मिन्सिद्धे यंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथाच-सिद्धतीर्थे गुरौ रम्ये सुसमे भूतले पुनः ॥ नित्यं नैमित्तिकं कृत्वा सर्वसंगविवर्जितः ॥ ४७ ॥ कुशासने समासीन एकचित्तः स्थिरासनः ॥ ध्यानादिसंयतो मौनी नमस्कृत्य गुरुं हृदि ॥ ४८ ॥ गणेशानं नमस्कृत्य प्रार्थयित्वा प्रजापतिम् ॥ प्रसन्नचित्तो विलिखेल्लेखन्या जातिजातया ॥ ४९ ॥ आदौ भूर्जे सिते पत्रे विलिखेदष्टगंधकैः ॥ प्रणवं पूर्वमुच्चार्य मायाबीजं तु मध्यतः ॥ ५० ॥ विलिख्य यंत्रराजं तं पुनरंकांकितं चरेत् ॥ धूपं दत्त्वा महेशानि कृष्णागुरुसमुद्भवम् ॥ ५१ ॥ पुष्पवासिततैलेन दीपं दद्यात्प्रयत्नतः ॥ पश्चिमाभिमुखं दीपं जलेशाय निवेदयेत् ॥ ५२ ॥ नानापुष्पैः प्रपूज्याथ यंत्रमष्टोत्तरं शतम् ॥ जप्यं सहस्रमेकं च हवनं तद्दशांशतः ॥ ५३ ॥ क्षीरखण्डाज्यमधुना तथा पंचामृतेन च ॥ पंचखाद्येन जुहुयादर्धरात्रे तु पार्वति ॥ ५४ ॥ संपूर्णतर्पणं चात्र कृत्वा रात्रौ वरप्रदम् ॥ नास्य ध्यानं न वा पूजा न न्यासो नास्य भावना ॥ ५५ ॥ जपादस्य भवेत्सिद्धो यंत्रराजस्त्रिवर्गदः ॥ तावल्लिखेद्यंत्रराजं यावत्संख्या समाप्यते ॥ ५६ ॥ अष्टाशीतिदिने देवीं पूजयित्वा विसर्जयेत् ॥ पुनर्गोधूमचूर्णेन वेष्टयित्वा जले क्षिपेत् ॥ ५७ ॥ मत्स्यैस्तु भक्षणादस्य वरुणस्तेन तुष्यति ॥ मौनं च ब्रह्मचर्यं च भूशय्यां तावदाचरेत् ॥ ५८ ॥ गोधूमचूर्णघटितं तैलपक्वं प्रभक्षयेत् ॥ न घृतं भक्षयेत्तावद्यावद्यंत्रं समाप्यते ॥ ५९ ॥ एवं कृतपुरश्चर्यः साक्षाद्ब्रह्ममयो भवेत् ॥ वशीभूते यंत्रराजे प्रयोगे कुशलो भवेत्

१ तंत्रांतरेऽपि-विलिखेद्यंत्रराजं तं भूर्जे वा कागदेऽथवा । वामादिक्रममारभ्य नवकोष्ठानि पूरयेत् ॥ २ तंत्रांतरेऽपि-विलिखेद्यंत्रराजं तं त्रिसहस्रं समांशतः ॥ अनया संख्यया देवि चत्वारिंशद्दिनं लिखेत् ॥

॥ ६० ॥ अथ प्रयोगो यथा–आसने तु पवित्रे च नित्यं संध्यात्रयेषु च ॥ पंचशतं च यंत्राणि कृत्वा वारि विसर्जयेत् ॥ ॥ ६१ ॥ अतिमत्स्यं समादाय रक्षणीयं स्वनामतः ॥ सर्वसिद्धिकरः साक्षाद्राजते नात्र संशयः ॥ ६२ ॥ अन्यत्–लिखित्वा यंत्रराजं तु नूत्ने कुलालखर्परे ॥ आक्रम्य वामपादेन कृत्वा तं चाप्यधोमुखम् ॥ ६३ ॥ प्रजपेन्मंत्रराजं तमष्टोत्तरशतं सुधीः ॥ ॥ तत्र मंत्रः–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अमुकमाकर्षय २ स्वाहा ॥ चक्रवर्तिनमप्याशु मुहूर्तेन स्वमालयम् ॥ ६४ ॥ आनयेत्प्रहरार्धेन भूचरान्यक्षराक्षसान् ॥ यामेनैकेन देवेशि पाकशासनमासनात् ॥ ६५ ॥ चालयेन्नात्र संदेहो वरुणं धननायकम् ॥ दिक्पालान् विदिशापालान् यामेनैकेन सुव्रते ॥ ६६ ॥ देवकन्या यक्षकन्या अप्सरोमंडलानि च ॥ ध्रवमाकर्षयेद्देवि यक्षराक्षसपन्नगान् ॥ ६७ ॥ यावद्धनं लिखेद्यंत्रे तावदाकर्षणं भवेत् ॥ नगरग्रामभवापीकपपर्वतसागरान् ॥ ६८ ॥ वनानि देवदेवेशि सद्य आकर्षयन्नरः ॥ किमन्यज्जगदाधारे लोकत्रयमिदं पुनः ॥ ६९ ॥ विपरीतं कर्तुकामो दिनेनैकेन साधयेत् ॥ धनधान्यगजाश्वांग सेनाद्याकर्षणं भवेत् ॥ ७० ॥ आकर्षणे वशीकार एक एव विधिर्मतः ॥ असाधितमपि ह्येतल्लिखेत्तु नित्यदा निशि ॥ ७१ ॥ अष्टोत्तरशतं देवि वशयेदखिलं जगत् ॥ वश्यकामस्तु देवेशि क्षीरेण सह भक्षयेत् ॥ ७२ ॥ यस्य नाम्ना यंत्रराजं स वश्यो जायते क्षणात् ॥ नृपो नृपेन्द्रो गंधर्वो देवो देवांगनापि वा ॥ ७३ ॥ वशीभूतो वशंत्याशु साधकस्य हि किंकराः ॥ बहुना किमिहोक्तेन मां विष्णुं वा वशं नयेत् ॥ ७४ ॥ अन्यत्–लिखित्वा यंत्रराजं तु शत्रुनाम ततो लिखेत् ॥ मनुना वेष्टितं देवि शत्रुनाम जपेत्सुधीः ॥ ७५ ॥ अग्नौ प्रतापिते रागो दाहो लूतादिसंभवः ॥ दग्धे यंत्रे महेशानि सद्यो मृत्युमवाप्नुयात् ॥ ७६ ॥ इन्द्रोऽपि किमुतान्यो वा मलमूत्रधरो नरः ॥ ७७ ॥ अन्यत्–उच्चाटनं महादेवि शृणुष्वावहितानघे ॥ उच्चाटने मरुद्वक्रो विद्वेषे राक्षसाननः ॥ ॥ ७८ ॥ प्रागाननोऽपि वृद्धौ स्यादन्येष्टीशानदिङ्मुखः ॥ धत्तूररससंमिश्रमषीभिः क्रोधमुद्वहन् ॥ ७९ ॥ वात्यायां निक्षिपेद्यंत्रं [illegible] गहने वने ॥ विभीततरुशाखायामथवा बंधयेच्छिवे ॥ ८० ॥ सद्य उच्चाटयेत्स्थानादिन्द्रेणापि सुरक्षितम् ॥ ८१ ॥ अन्यत्–

स्तंभनं संप्रवक्ष्यामि शृणुष्वैकाग्रचेतसा ॥ हरिद्रारससंमिश्रैर्लवणैर्भूर्जपत्रके ॥ ८२ ॥ लिखित्वा निखनेद्गर्ते सपल्लवमनुं स्मरन् ॥ उपर्यधः शिलां दत्त्वा यदा संताडथ संस्थितः ॥ ८३ ॥ यस्य नाम्ना जपेन्मंत्रं तं तं स्तंभयति क्षणात् ॥ खेगतिं स्तंभयति स्तंभयत्येव मारुतम् ॥ ८४ ॥ नदीं च वर्षाकालीनां मेघं सिंधुं हुताशनम् ॥ नक्षत्रगतिसंचारान् विमानं द्युसदामपि ॥ ८५ ॥ वाणीस्तंभं गतिस्तंभमुत्पातस्तंभनं तथा ॥ शत्रुसेनास्तंभनं च शक्तिस्तंभं दिवौकसाम् ॥ ८६ ॥ प्रकुर्यात्प्राणनिलये मनसः स्तंभनादिकम् ॥ बहुना किमिहोक्तेन त्रैलोक्यं स्तंभयेत्क्षणात् ॥ ८७ ॥ अन्यत्—अथातः संप्रवक्ष्यामि विद्वेषं प्राणवच्छृणु ॥ उलूकपक्षलेखन्या श्मशानकर्पटे लिखेत् ॥ ८८ ॥ यंत्रं कमलपत्राक्षि सपल्लवमनुं जपेत् ॥ आक्रम्य वामपादेन यंत्रयुग्मं विनायकम् ॥ ८९ ॥ इन्द्राग्नि नैर्ऋतयमवरुणादिकृतामपि ॥ मैत्रीं विनाशयेत्क्षिप्रं किमुतान्यमहीभुजाम् ॥ ९० ॥ लोपामुद्रागस्त्ययोश्च अरुंधतिवसिष्ठयोः ॥ वाणीविधात्रोरपि वै मैत्री सापि क्षयं व्रजेत् ॥ ९१ ॥ यक्षराक्षसवेतालगंधर्वोरगरक्षसाम् ॥ द्वेषः स्यान्नात्र संदेहः स्वर्भूपातालवासिनाम् ॥ ॥ ९२ ॥ अन्यत्—शांतिकर्म क्षमाधारे प्रवक्ष्ये जगदीश्वरि ॥ शांतिकामो लिखित्वाऽमुं यंत्रराजं त्रिवर्गदम् ॥ ९३ ॥ तत्पल्लवयुतं मंत्रं प्रजपेत्त्रिसहस्रकम् ॥ एवं कृते रोगशांतिः कृत्याद्रोहादिशांतिकम् ॥ ९४ ॥ मनःशांतिर्मोहशांतिः कामक्रोधादिशांतिकम् ॥ कारागारादिमोक्षश्च दुर्भिक्षादिनिवारणम् ॥ ९५ ॥ भवेदेव न संदेहस्त्रैलोक्यशांतिकामनाः ॥ प्रोक्तं प्रयोगषट्कं ते सुंदरि प्राणवल्लभे ॥ ९६ ॥ कल्पनादेव जायंते सिद्धयो नात्र संशयः । त्यक्त्वा सर्वफलासंगं लभेन्मुक्तिं चतुर्विधाम् ॥ ९७ ॥ नास्य मोहं प्रजनयेद्विभूतिः सर्वसंपदाम् ॥ अणिमाद्यष्टसिद्धीनां नास्य मोहः प्रजायते ॥ ९८ ॥ न तस्य तृट्कामममोहक्रोधाहंकारसंभवः ॥ देवरपि स सेव्यः स्यात्किमुतान्यैर्नराधिपैः ॥ ९९ ॥ दद्यादसाधितोऽप्येष लेखनाच्छिवमूर्जितम् ॥ अनेकजन्मपुण्येन यंत्रमेतच्छुचिस्मिते ॥ ॥ १०० ॥ सम्प्राप्य साधयेद्यत्नाज्जीवन्मुक्तिमभीप्सुकः ॥ चिंतामणिर्यथा भूमौ कल्पवृक्षो यथा दिवि ॥ १०१ ॥ रसातले निधिर्यद्वत्तथा यंत्रमपीश्वरि ॥ अनेन यंत्रराजेन यदसाध्यं सुरेश्वरि ॥ १०२ ॥ तन्नास्ति जगदीशानि स्वर्भूपातालमंडले ॥ मनसा

भावयेन्मंत्री यंत्रराजं त्रिवर्गदम् ॥ १०३ ॥ भावनादेव सिद्धिः स्यान्नात्र कार्या विचारणा ॥ इति ते गदितो देवि जीवन्मुक्तिफलक्रमः ॥ १०४ ॥ कामनां प्राप्य निष्कामो मोक्षलक्ष्मीं स गच्छति ॥ १०५ ॥ इति विश्वलोकतंत्रे नवकोष्ठांकितविंशांकयंत्रविधानं समाप्तम् ॥ अथ विंशांकयंत्राणामनेकरूपाणि ॥

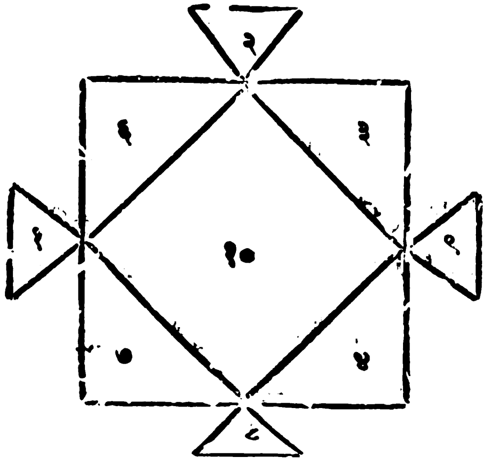
८	२	१०
९	७	४
३	११	६

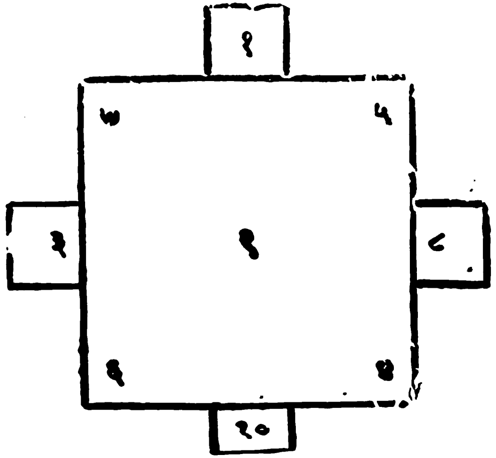
२	९	२	७
६	३	६	५
८	३	८	१
४	५	४	७

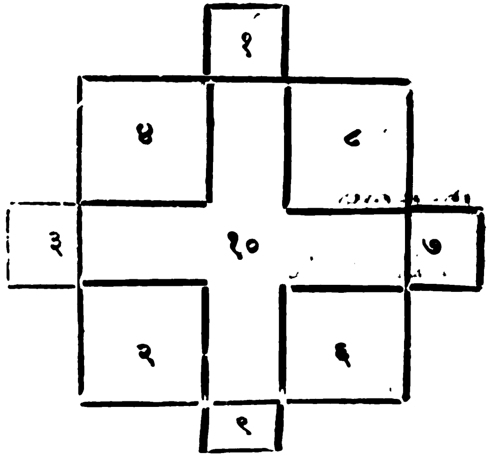
६	८	२	४
४	२	८	६
८	६	४	२
२	४	६	८

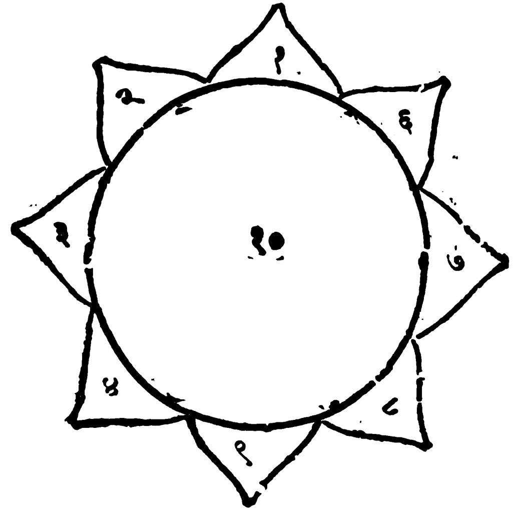
१	८	३	८
५	६	३	६
७	२	९	२
७	४	५	४

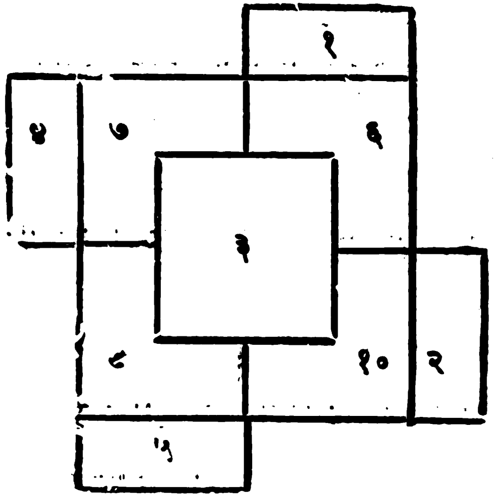
४	२	८	६
६	८	२	४
२	४	६	८
८	६	४	२

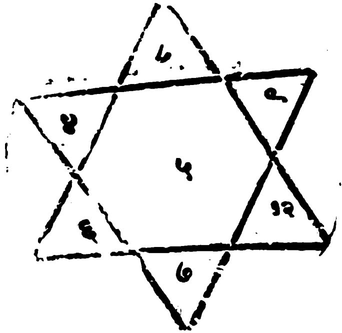












॥ अथ पंचदशीविधानप्रारंभः ॥ कैलासशिखरासीनं गौरी पृच्छति शंकरम् ॥ पंचदशविधिं कृत्वा भक्तानां हितकारकम् ॥ १ ॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥ स्वामिन्भो देवदेवेश लोकनाथ जगत्प्रभो ॥ यत्किंचित्स्मर्यते सद्यस्तत्सर्वं वद शंकर ॥ २ ॥ कलौ नरा भविष्यंति मंदभाग्या दरिद्रिणः ॥ तेषां भोगादिसंसिद्धिर्भवेद्येन वदस्व तत् ॥ ३ ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥ साधु पृष्टं महादेवि हिताय जगतां त्वया ॥ प्रायः प्रश्नो हि साधनां नराणां सुखदो भवेत् ॥ ४ ॥ शृणु भद्रे शुभां वार्तां कौतुकीं विधिसंभवाम् ॥ योगा नानाविधाः सन्ति तन्मध्ये यंत्रसंभवः ॥ ५ ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि सुंदरीयंत्रमुत्तमम् ॥ यस्य विज्ञानमात्रेण त्रैलोक्ये विजयी भवेत् ॥ ६ ॥ धर्मेण लभते देवि न क्रयेण कदाचन ॥ दक्षिणावर्तशंखश्च तथा रुद्राक्ष एव च ॥ ७ ॥ रामलक्ष्मणनिष्ठा तु तथैवं सुयशो भवेत् ॥ तादृग्विधमिदं यंत्रं चतूरेखात्मकं शुभम् ॥ ८ ॥ यस्य तुष्टा भवेद्देवि वरा लक्ष्मीर्वरात्मिका ॥ तेनैव लभ्यते देवि सत्यं सत्यं वचो

मम ॥ ९ ॥ गुह्याद्गुह्यतरं देवि न देयं यस्य कस्यचित् ॥ तस्य संग्रहमात्रेण सर्वसिद्धिर्वरानने ॥ १० ॥ न जपो न तपो मंत्रो न च यज्ञो न पूजनम् ॥ तस्मात्सिद्धिकरं ज्ञेयं लिखित्वा शुचिमानसः ॥ ११ ॥ सर्वाभीष्टफलं कुर्यात्पूर्यधाम लिखेत्सुधीः ॥ नवग्रहात्मकं यंत्रं योगिनीनवनाथयोः ॥ १२ ॥ नवखण्डग्रहे ज्ञेयं विषमांक शिरोदितम् ॥ नवखण्डमयी पृथ्वी प्रोच्यते मुनिपुंगवैः ॥ तस्माच्च नवकोष्ठेषु यंत्रं चैव प्रजायते ॥ १३ ॥ मया संकीलिताश्चान्ये यंत्रमंत्रा न सिद्धिदाः ॥ इदं सङ्गोपितं सुभ्रु यंत्रं मे करुणात्मना ॥ १४ ॥ नैतत्तुल्यं जगत्स्वम्ब यंत्रं मंत्रः स्वसिद्धिदः ॥ स्वगुह्यमिव संगोप्यं कथनीयं न कस्यचित् ॥ १५ ॥ तवातिस्नेहवाहुल्यात्कथयिष्ये तवाग्रतः ॥ नाभक्ताय त्वया देयं कृतघ्नाय कदाचन ॥ १६ ॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥ यथा कथयसे देव करिष्येऽहं तथा शिव ॥ आज्ञामज्ञानतिमिरच्छिदुष्णकर सत्पते ॥ १७ ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥ सर्वसिद्धिकरं चैव यंत्रोद्धारं शृणु प्रिये ॥ यंत्रवर्यमिदं भद्रे पूर्वपुण्येन लभ्यते ॥ १८ ॥ तुर्यरेखाः प्रकतव्यास्तिर्यगूर्ध्वं च संख्यया ॥ नवधा कामसंकेतो नवकोष्ठात्मके प्रिये ॥ १९ ॥ तत्रांकगतियोगेन ह्यमारभ्य पार्वति ॥ गतिमार्गक्रमेणैव नव यन्त्राणि कारयेत् ॥ २० ॥ एकादिरंध्रपर्यंतं तत्रांकांस्तु प्रवेशयेत् ॥ एतस्य सकलं वाक्यं शृणु यत्नेन साम्प्रतम् ॥ २१ ॥ अन्यत्रापि—सूर्येन्दुभौमैर्बुधदेवपज्य शुक्रैः शनौ राहुशिखिक्रमेण ॥ अश्वैर्गजैर्मंत्रिगतैश्च वामैः पुनश्च रोगैर्गत अश्वभौमे (?) ॥ २२ ॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥ त्वदीयमद्भुतं वाक्यं श्रुतं देवेश शर्मदम् ॥ यंत्रस्य देवतां ब्रूहि कथं कविवरो भवेत् ॥ २३ ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥ पुरा रामायणे रामो रावणं दशकंधरम् ॥ हंतुं जगाम जलधेस्तीरेऽतिष्ठत्सवानरः ॥ २४ ॥ जलधेस्तरणे यत्नं चिंतयामास सर्वदृक् ॥ तदा न कोऽपि चायातो यत्नो मनसि पार्वति ॥ २५ ॥ भूयः समाधिना चित्तं संनियम्य रघूत्तमः ॥ दध्यौ चिरं स्मृतं तस्माद्यंत्रमेकं शृणुष्व तत् ॥ २६ ॥ यन्मया गोपितं कांते यंत्रं पंचदशाख्यकम् ॥ सर्वापत्तारकं सुभ्रु सर्वसिद्धिविधायकम् ॥ २७ ॥ यावंतोऽकाश्च लोकेऽस्मिन् यंत्रेषु परमेश्वरि ॥ तावंतोऽस्मिन्महायंत्रे सर्व एव वसंति हि ॥ २८ ॥ सङ्गोपितं स विज्ञाय यंत्रं ध्यानेन राघवः ॥ यत्साधनाद्वहं

जातौ विश्वसंहरणक्षमः ॥ २९ ॥ वायुपुत्रं तदा रामः प्रेषयामास सत्वरम् ॥ ममांते स समागत्य मनोजव उदारधीः ॥ ३० ॥ प्रार्थयामास रामस्य पाथोधितरणाय वै ॥ तदालिख्य मया यंत्रं दत्तं वै वायुसूनवे ॥ ३१ ॥ सत्वरं स ददौ यंत्रं रामाय नररूपिणे ॥ रामस्तदनुभावेन सिंधौ सेतुं बबंध ह ॥ ३२ ॥ सेतुबंधे शिवं तत्र स्थापयामास राघवः ॥ वर्तते स शिवोऽद्यापि तत्र सर्वाघनाशनः ॥ ३३ ॥ यंत्रं भूमौ विलिख्याथ वायुसूनुकरे ददौ ॥ स यत्नात्स्थाप्य जलधौ तारयामास पावनिः ॥ ३४ ॥ निस्तीर्य सेतुना तेन सागरं मकरालयम् ॥ परं पारं जगामाथ लंकेशमहनत्सुधीः ॥ ३५ ॥ एतस्माद्धनुमान्देवो जातो यन्त्रस्य पार्वति ॥ रामेणापि वरो दत्तो यंत्रेशस्त्वं भविष्यसि ॥ ३६ ॥ तदा ह्येतस्य यन्त्रस्य ख्यातिर्लोके मनोरमे ॥ विधिं केऽपि न जानंति शृणु तस्माच्छिवप्रिये ॥ ३७ ॥ आदौ कुर्यात्पुरश्चर्य्यां साधकः सिद्धिहेतवे ॥ पुरश्चरणहीनस्य यंत्रसिद्धिर्न जायते ॥ ३८ ॥ जीवहीनो यथा देही सर्वकर्मसु न क्षमः ॥ पुरश्चरणहीनो हि तथा यंत्रे प्रकीर्तितः ॥ ३९ ॥ पुरश्चर्याविधिः प्रोक्तस्ते पुरैव सुमध्यमे ॥ प्रयोगांस्तु शृणुष्वाथ यंत्रविद्याविधानतः ॥ ४० ॥ अथास्य प्रयोगः—हस्तार्कपुष्यार्कमूलार्कश्रवणयुक्ते स्वकीयवारे सुमुहूर्ते विविक्ते देशे सिद्धपीठादिभूमिं प्रकल्प्य कुशासनोपरि रक्तासनमास्तीर्य रक्तवस्त्रं रक्तमालां च परिधाय प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य भूतशुद्ध्यादिकं च कृत्वा आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य मम पंचदशांकयंत्रलेखनार्थं सर्वविघ्ननिवारणार्थं च भूतलिपिमंत्रजपं करिष्ये इति संकल्प्याष्टोत्तरशतवारं भूतलिपिं जपेत् ॥ तत्र मंत्रः—ॐ अं आं इं ईं उं ऊँ ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं ॥ इति भूतलिपिं जप्त्वा पश्चादौदुंबरवृक्षस्य पर्णांगुललेखन्या वा ज्ञानवृक्षस्य जासवंदस्य जातिसंज्ञकस्य पलाशस्य वा लेखन्याष्टांगुलप्रमाणया क्षीरवृक्षपट्टोपरि कुंकुमेन नवकोष्ठांकितं कृत्वा अंकं पूरयेत् ॥ तथा च—

१ तंत्रांतरेऽपि—शुभे चन्द्रे सुनक्षत्रे निजवारे विचक्षणः। आदावारंभणं कुर्यात्स्वजनस्य समाश्रयात् ॥ २ तत्रांकगतियोगेन द्वयमारभ्य पार्वति । गतिमार्गक्रमेणैव नव यन्त्राणि कारयेत्॥ एकादिरंध्रपर्यन्तं तत्रांकांस्तु प्रवेशयेत्। एतस्य सकलं वाक्यं शृणु यत्नेन साम्प्रतम् ॥ तंत्रांतरेऽपि—सूर्येन्दुभौमैर्बुधदेवपूज्यशुक्रैः शनौ राहुशिखिक्रमेण। अश्वैर्गजैर्मत्रिगतैश्च वामः पुनश्च रोगैर्गत अश्वभौमे ॥ सर्वत्र यंत्रकी चाल एकसे लेकर नवतक है परन्तु एक महापुरुषका ऐसा कथन है कि पहले १ पीछे ५ पीछे ९ तदनंतर ८—३—४ तदनंतर २—७—६ इस प्रकार भरना चाहिये ॥

	पूर्व		
ईशान	८	१	६	आग्नेय
उत्तर	३	५	७	दक्षिण
वायव्य	४	९	२	नैर्ऋत्य
	वरुण		

पूर्वे १ नैर्ऋत्ये २ सौम्ये ३ वायव्ये ४ मध्ये ५ आग्नेये ६ याम्ये ७ शैवे ८ वारुणे ९ इति क्रमेण ह्येकमारभ्य पूरयेत् ॥ ततः"ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरयर पूरय स्वाहा॥"इति भद्रेश्वरमंत्रेणावाहनादिषोडशोपचारैः संपूज्य तदग्रेऽष्टोत्तरशतवारं भद्रेश्वरमंत्रं जपेत् ॥ तथाच–अस्य भद्रेश्वरमंत्रस्य स्वर्णाकर्षण भैरव ऋषिः। विराट् छंदः। भद्रेश्वरो देवता। ह्रीं बीजम्। भद्रं शक्तिः। पूरयेति कीलकम्। भद्रेश्वरप्रीतये जपे विनियोगः ॥ ॐ स्वर्णाकर्षणभैरवाये नमः शिरसि १। विराट्छंदसे नमः मुखे २। भद्रेश्वरदेवतायै नमः हृदि ३। ह्रीं बीजाय नमो गुह्ये ४। भद्रं शक्तये नमः पादयोः ५। पूरयेति कीलकाय नमः नाभौ ६। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ भद्रेश्वर अंगुष्ठाभ्यां नमः १। भद्रं तर्जनीभ्यां नमः २। परय मध्यमाभ्यां नमः ३। भद्रेश्वर अनामिकाभ्यां नमः ४। भद्रं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। परय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ भद्रेश्वर हृदयाय नमः १। भद्रं शिरसे स्वाहा २। पूरय शिखायै वषट् ३। भद्रेश्वर कवचाय हुँ ४। भद्रं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। पूरय अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा भद्रेश्वरं ध्यात्वा "ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरय स्वाहा". इति मंत्रमष्टोत्तरशतवारं जपेत् ॥ इति जपं कृत्वा एकाद्यंकक्रमेण नवदुर्गा नवग्रहान् इन्द्रादीन् वज्रादींश्च संपजयेत् ॥ तथाच–प्रथमाङ्के ॐ शैलपुत्र्यै नमः १। द्वितीयांके ॐ ब्रह्मचारिण्यै नमः २। तृतीयांके ॐ चन्द्रघंटायै नमः ३। चतुर्थांके ॐ कूष्माण्डायै नमः ४। पंचमांके ॐ स्कंदमात्रे नमः ५। षष्ठांके ॐ कात्यायन्यै नमः ६। सप्तमांके ॐ कालरात्र्यै नमः ७। अष्टमांके ॐ महागौर्यै नमः ८। नवमांके ॐ सिद्धिदात्र्यै नमः ९ ॥ एवम् ॐ आदित्याय नमः १। ॐ चन्द्रमसे नमः २। ॐ भौमाय नमः ३। ॐ बुधाय नमः ४। ॐ जीवाय नमः ५। ॐ शुक्राय नमः ६। ॐ शनैश्चराय नमः ७। ॐ राहवे नमः ८। ॐ केतवे नमः ९ ॥ पुनः ॐ इन्द्राय नमः १। ॐ अग्नये नमः २। ॐ यमाय नमः ३। ॐ निर्ऋतये नमः ४। ॐ वरुणाय नमः ५।

ॐ वायवे नमः ६ । ॐ कुबेराय ननः ७ । ॐ ईशानाय नमः ८ । नवमांके ॐ ब्रह्मणे नमः ९ । ॐ अनंताय नमः १० ॥ पुनः ॐ वज्राय नमः १ । ॐ शक्तये नमः २ । ॐ दंडाय नमः ३ । ॐ खड्गाय नमः ४ । ॐ पाशाय नमः ५ । ॐ अंकुशाय नमः ६ । ॐ गदायै नमः ७ । ॐ त्रिशूलाय नमः ८ । नवमांके ॐ पद्माय नमः ९ । ॐ चक्राय नमः १० ॥ इति पजयेत् ॥ ततः "ॐ भद्रेश्वराय नमः ॥" इति भद्रेश्वरं संपूज्य कृष्णागुरुधूपं दत्त्वा सुगंधतेलेन घृतेन वा दीपं प्रज्वाल्य गुडान्नेन नैवेद्यं समर्प्य नमस्कारं कृत्वा विलिखेत् ॥ पुनः द्वितीये तदेव लेखनीयं पुनरपि भद्रेश्वरमंत्रमष्टोत्तरशतं जपेत् ॥ पुनरपि नियमेन लेखनीयमेवं पंचदशसहस्रात्सिद्धि र्भवति ॥ एतस्मिन्सिद्धे यंत्रे कागदे भूर्जपत्रे वा लिखित्वा तदग्रे भद्रेश्वरमूलमंत्रं पंचदशसहस्रं जपेत् ॥ तद्दशांशेन करवीरपुष्पहोमः ॥ तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् ॥ पश्चाद्यंत्रं त्रिलोहमृदंगे क्षिप्त्वा कंठे वा दक्षिणे करे धारयित्वा ततः प्रयोगान् मनोऽभीप्सितान् कुर्यात् ॥ तथाच शिवरहस्ये—हस्तार्कपुष्यमूले तु शुचिर्भूत्वा समाहितः ॥ चंपकस्य च लेखन्या शुद्धयंत्रं लिखेत्सुधीः ॥ ॥ १ ॥ पंचदशहसहस्राणि क्षीरवृक्षस्य पट्टके ॥ ततः सिद्धं भवेद्यंत्रं धारयेत्साधकोत्तमः ॥ २ ॥ कंठे वा दक्षिणे बाहौ प्रयोगानाचरेत्ततः ॥ ततो यथोक्तं लभते फलं यंत्रस्य निश्चितम् ॥ ३ ॥ पुरश्चर्यां विना चाथ यः कश्चित्सिद्धिमिच्छति ॥ स चक्षुषा विना रूपं दर्पणे द्रष्टुमिच्छति ॥ पुरश्चरणसंपन्नः प्रयोगानथ कारयेत् ॥ ४ ॥ अथ प्रयोगः ॥ तत्रादौ वर्णभेदेन वारभदः—गुरौ शुक्रे तु विप्राणां कुजार्कौ क्षत्रियस्य च ॥ बुधो हि शूद्रवर्णस्य सोमो वैश्यस्य कीर्तितः ॥ ५ ॥ म्लेच्छस्य शनिवारः स्याल्लिखित्वा दीयते यदि ॥ तदा शुभफलं तस्य जायते नात्र संशयः ॥ ६ ॥ राजा हि रविवारे स्याद्धस्तपुष्यसमान्विते ॥ श्रवणे मूलसंयुक्ते व्यतीपातादिवर्जिते ॥ ७ ॥ अथ कार्यपरत्वेन दीपमाह—राजवश्ये धनार्तौ च स्थापयेदुत्तरामुखम् ॥ उच्चाटने च मरणे दीपं दक्षिणसम्मुखम् ॥ ८ ॥ कर्तव्यं विधिवत्पुंसां प्रयोगाणां च सिद्धये ॥ धनार्तौ वश्यकार्ये च गोघृतं दीपके न्यसेत् ॥ उच्चाटने मारणे च

१ तंत्रांतरेऽपि-पूर्वविद्यां पंचदशीं लक्षमात्रं जपेद्यदि ॥ ततो यंत्रं प्रकुर्वीत फलभागी ततो भवेत् ॥ अन्यत्रापि-सपादं लक्षमेकं वै पुरश्चरणमुच्यते ॥

सार्षपं राजिकाभवम् ॥ ९ ॥ अथ वर्णभेदेन पत्रभेदः—ब्राह्मणो विलिखेद्भूर्जे ताडपत्रे तु भूमिभृ ॥ वैश्यस्तु विलिखेद्देवि कागदे सर्वसिद्धये ॥ १० ॥ शूद्रो हि विलिखेद्देवि भूमिभागे प्रयत्नतः ॥ यवनस्यापि कथितः कागदस्तु मया तव ॥ ११ ॥ अथ कार्यपरत्वेन लेखनीमाह—अश्वत्थया लिखेच्छांतौ वैश्ये जातिभवा मता ॥ स्वर्णया विलिखेद्यत्नान्मोहनार्थं स्वसिद्धये ॥ १२ ॥ रौप्यया विलिखेद्यत्नात्सर्वाकर्षणसिद्धये ॥ काकपक्षस्य लेखन्या मोहनार्थं लिखेद्विधौ ॥ १३ ॥ स्तंभनार्थं तु विलिखेल्लेखन्या तु हरिद्रया ॥ विपाशया तु लेखन्या ताम्रया वा विधीयते ॥ १४ ॥ उच्चाटने द्वेषणादौ लौहया संलिखेत्सदा ॥ लेखन्या लक्षणं देवि प्रोक्तमष्टांगुलं यतः ॥ पंचतत्त्वक्रमेणैव पंच कार्याणि साधयेत् ॥ १५ ॥ अथ कार्यपरत्वेन गंधमाह—आरक्तेनैव विलिखेद्वशीकरणसिद्धये ॥ कस्तूर्या विलिखेद्देवि स्वर्णाकर्षणसिद्धये ॥ १६ ॥ हरिद्रया तु विलिखेत्सर्वस्तंभनकर्मणि ॥ केसरेण लिखेद्देवि देवतादर्शनाय वै ॥ १७ ॥ धत्तूरस्य रसेनैव मारणार्थं लिखेत्तु वै ॥ प्रेतांगारेण विलिखेच्छत्रोरुच्चाटने सदा ॥ १८ ॥ विद्वेषणे तु विलिखेद्बिभीतकरसेन वै ॥ चंदनेन लिखेच्छांतौ विशेषः कथ्यते शृणु ॥ १९ ॥ अथ कार्यपरत्वेनांकमाह—एकेनांकेन यंत्रस्य भरणं सौख्यकं परम् ॥ ददाति हनुमानद्धा दर्शनं सुखदायकम् ॥ २० ॥ युग्मेनांकेन भो देवि राजा वश्यो भवेन्नृणाम् ॥ तृतीयांकेन भरणे यंत्रं व्यापारलाभदम् ॥ २१ ॥ वेदांकेन भरेद्यस्तु शून्यं तच्छत्रुमंदिरम् ॥ पंचांकभरणं प्रोक्तं शत्रूच्चाटनकारकम् ॥ २२ ॥ वसुनंदरसैश्चैकनेत्रवेदाग्निबाणकैः ॥ मुन्यश्वाभ्यां क्रमाद्धाम मारणे दुर्जने कृते ॥ २३ ॥ इन्दुश्च भौमो बुधजीवशुक्राः शनिश्च राहुः शिखिसूर्यकौ च ॥ एतांस्तु गत्वा क्रमतो लिखित्वा यंत्रं नृपालं वशगं करोति ॥ २४ ॥ भौ मेन्दुराहून् गुरुसौम्यकेतूंश्चार्कश्च शुक्रश्च शनिं क्रमेण ॥ विलिख्य यंत्रे युवतिश्च वंध्या अश्वैर्गजैर्मैत्रिगतैस्तु चाश्विः ॥ २५ ॥ लिखित्वा यन्त्रवर्यं तं कण्ठे कटयां च धारयेत् ॥ वंध्या लभते पुत्रं मृतवत्सा चिरायुषम् ॥ २६ ॥ वेदाग्निवसुभिश्चैव चन्द्रबाणग्रहैस्तथा ॥ नेत्रर्षिभी रसेश्चैव यंत्रं निगडभंजनम् ॥ २७ ॥ [illegible] ग्रहैस्तद्युगैस्तथा ॥ वह्निवसुखरूपैश्च ह्यकष्टेन धनं लभेत् ॥ २८ ॥ अं गश्च संतद्दिनवीर्डिभिश्च वेश्वा

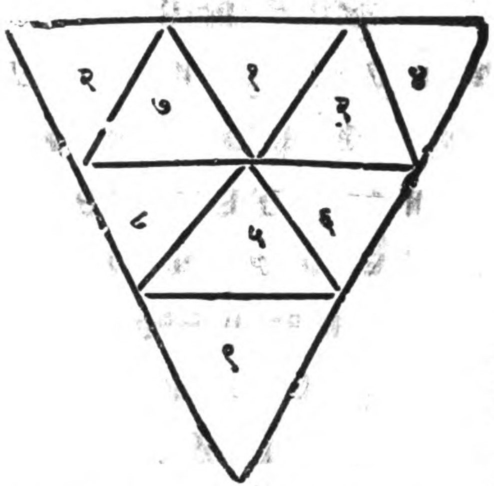
नरैनागंसुधांशुबाणैः ॥ यन्मंत्रिगेभूपतिखेलधामेराकर्षणं मित्रारिपुप्रभूणाम् ॥ २९ ॥ शनिश्च राहुः शिखिचेन्दुजौ च गुरुश्च शुक्रो रविचन्द्रभौमाः ॥ अश्वैर्गतैर्मंत्रिगतैस्तथाश्वैरुच्चाटनं सर्वजनादिकानाम् ॥ ३० ॥ अथ कार्यपरत्वेन संख्यामाह ॥ दशवारं तु विन्यस्य लोकसंमोहनं भवेत् ॥ विंशत्यावर्त्य चैतद्धि सर्वाकर्षणकृद्भवेत् ॥ ३१ ॥ त्रिंशद्वारं तु कृत्वेदं पृथिव्यां जयमाप्नुयात् ॥ चत्वारिंशत्समारभ्य शतांतं परमेश्वरि ॥ ३२ ॥ यः करोति महेशानि पुरश्चर्यायुतो नरः ॥ ३३ ॥ अयुतं विलिखेद्देवि बंदिमोचनकर्मणि ॥ अयुतद्वितयं कृत्वा गतराज्यमवाप्नुयात् ॥ ३४ ॥ अयुतत्रितयं कृत्वा विजयी भुवि जायते ॥ शापानुग्रहसामर्थ्यं भवेद्वेदायुते शिवे ॥ ३५ ॥ बाणायुतप्रयोगेण वाक्सिद्धिर्भवति ध्रुवम् ॥ रसायुतं लिखित्वा च जलमध्ये विनिक्षिपेत् ॥ ३६ ॥ जलक्षेपणमार्गेण पृथ्वीशं तु वशं नयेत् ॥ सप्तायुतं लिखेद्देवि साक्षाल्लक्ष्मीपतिर्भवेत् ॥ ३७ ॥ अष्टायुतं लिखेद्देवि सिद्धकर्म समाप्नुयात् ॥ नंदायुतं लिखेद्देवि नवनाथसमो भवेत् ॥ ३८ ॥ लक्षमेकं लिखेद्यो हि शिवतुल्यो भवेत्स तु ॥ प्रत्यहं विलिखेद्यो हि शतं वा तत्तदर्धकम् ॥ ३९ ॥ एवं क्रमेण कथिता पुरश्चर्या प्रिये मया ॥ एवं यः कुरुते मर्त्यस्तस्य सिद्धिर्भविष्यति ॥ ४० ॥ इति संक्षेपतः प्रोक्तं किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ॥४१॥ अथ कार्यपरत्वेन प्रयोगमाह—अथातः संप्रवक्ष्यामि विधिं यन्त्रस्य सिद्धिदम् ॥ लक्षं यंत्रं समालिख्य सिद्धपीठे शुभे दिने ॥४२॥ भूमिमध्ये शुद्धचित्तो भूमिशायी जितेन्द्रियः ॥ हवनादि प्रकर्तव्यं सर्पिर्घृततंडुलैः ॥ ४३ ॥ शर्कराभिर्मिश्रितैश्चैव वाक्सिद्धिः संप्रजायते ॥ देवरूपो भवेन्मर्त्यः सर्वकामार्थसिद्धिदः ॥४४॥ दुःखदारिद्र्यरहितः सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ सर्वं चराचरं पश्येच्छतजीवी भवेन्नरः ॥४५॥ भूर्जपत्रे लिखेद्यंत्रं रोचनागुरुकुंकुमैः ॥ समर्प्य पुष्पधूपादि जलमध्ये विनिक्षिपेत् ॥ ४६ ॥ रात्र्यंते लभते स्वप्ने वरं देवीसमीरितत् ॥ जीवन्मुक्तश्च भोगी च सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥४७॥ देवदत्तं महावीर्यं पंचदशीययन्त्रकम् ॥ वीरप्रीतिकरं चैव लक्षजाप्ये कृते सति ॥ ४८ ॥ सबुग्धमाषं सतिलं शर्करामृतसंयुतम् ॥ कृष्णपक्षे तु चाष्टम्यां बालिं दत्त्वा सुवारके ॥ ४९ ॥ वशे भवंति ते वीराः प्राणैरपि धनैरपि ॥ सर्वकर्माणि सिद्धानि भवंति नात्र

संशयः ॥५०॥ एकयंत्रसमालेखाद्यस्य कस्यापि कर्मणः ॥ क्षणमात्राद्भवेत्सिद्धिः सत्यं सत्यं न संशयः॥५१॥ पुनस्तावन्मितं लेख्यं वाह्नेबाज न होमयेत् ॥ देश्या जानपदा ग्राम्या दृष्टिमात्रेण किंकराः ॥५२॥ पुनस्तावन्मितं लेख्यं गर्ते शुद्धभुवि क्षिपेत् ॥ बीजं जपंस्तु तत्सर्वं पूरयेच्छुद्ध मृत्स्नया ॥ ५३ ॥ तदा सर्वमहीराज्यकर्ता हर्ता स्वयं प्रभुः ॥ अष्टौ महासिद्धयश्च तस्य हस्ततले स्थिताः ॥ ५४ ॥ बंधयेद्दक्षहस्ते तु लिखे द्रजासि पट्टके ॥ ततस्तं वामहस्तेन लुंयेबीजं च संस्मरन् ॥ ५५ ॥ पाशैश्च निगडैः सर्वैः सद्य एव विमुच्यते ॥ ५६ ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि प्रयोगं च महाद्भुतम् ॥ रवौ वारेऽर्कदुग्धेन स्मशानभस्मना लिखेत् ॥ ५७ ॥ यस्य वर्णस्य नामानि चितामध्ये विनिक्षिपेत् ॥ विक्षिप्तो जायते मर्त्यश्चाष्टोत्तरशतं जपेत् ॥ ५८ ॥ पंचदशं विलोमं च संध्याकाले विशेषतः ॥ यंत्रं च लिखितं सम्यग्बाहौ कंठे च धारयेत् ॥ ५९ ॥ राजापि वशमाप्नोति चान्यलोकस्य का कथा ॥ ६० ॥ चन्द्रवारे गृहीत्वा तु नागकेसररोचनम् ॥ सर्षपाणां तु तैलेन लिखेद्यंत्रं महोत्तमम् ॥ ६१ ॥ वर्तिका क्रियते यस्य चालयेन्मंत्रभावतः ॥ नृकपाले कज्जलं तु स्वंजनं मोहनं भवेत् ॥ ६२ ॥ गुरुवारे हरिद्राभ्यां सार्पिस्तगरुरोचनैः ॥ यंत्रराजं समालिख्य तस्य नाम च मध्यतः ॥ ६३ ॥ आसने निखनेच्चैव सर्वमाकर्षणं भवेत् ॥ ६४ ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि प्रयोगं महदद्भुतम् ॥ भृगुवारे सकर्पूरं वचाकुष्ठेन संलिखेत् ॥ ६५ ॥ लिखितं यंत्रराजं तु भूर्जपत्रे सुशोभनम् ॥ दृष्ट्वा स्त्री वशमाप्नोति प्राणैरपि धनैरपि ॥ ६६ ॥ शनिवारे चिताकाष्ठात्पंचदशे विलोमके ॥ लिखिते रिपुनाम्ना तु श्मशाने निखने द्भुवि ॥ ६७ ॥ कुक्कुटस्याक्षिरक्तेन म्रियते नात्र संशयः ॥ ६८ ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि यंत्रराजविधिं तव ॥ यस्मै कस्मै न दातव्यं गोपितं न प्रकाशयेत् ॥ ६९ ॥ वटवृक्षतले यंत्रं भूमिमध्ये ततो लिखेत् ॥ वटद्रुशाखालेखन्या कृष्णपक्षे चतुर्दशी ॥ ७० ॥ तत्रारंभं प्रकुर्वीत नरोऽत्यंतं समाहितः ॥ कृतेऽयुते धर्मकाममोक्षार्थान्प्राप्नुयाद्ध्रुवम् ॥ ७१ ॥ दाडिमीवृक्षलेखन्या भूमौ यंत्रसहस्रकम् ॥

१ बन्हिबीजं रं ।

लिखितं बंधमोक्षादिकरं स्वामिवशंकरम् ॥ ७२ ॥ ब्रह्मवृक्षस्य लखन्यो यंत्रं पंचशतं लिखेत् ॥ भूमिमध्ये त दारिद्र्यनाशनं भवति ध्रुवम् ॥ ७३ ॥ मनःशिला च गोमूत्रं कर्पूरं तगरं तथा ॥ भूर्जे लिखेत्सहस्रं तदश्वत्थवृक्षमूलतः ॥ ७४ ॥ यं यं चिंतयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ॥ प्राप्नोति विपुलान्भोगानिंद्रतुल्यो नरो भवेत् ॥ ७५ ॥ मनः शिलाबिल्वरसे हारितालेन यंत्रकम् ॥ विल्वशाखासु लेखन्या सहस्रद्वितयं लिखेत् ॥ ७६ ॥ एकांते च शुभस्थाने भूमिमध्ये तथैव च ॥ वाक्सिद्धिर्जायते तस्य नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ॥ ७७ ॥ अर्कपत्ररसेनैव अर्कपत्रे समालिखेत् ॥ अष्टोत्तरसहस्रं तु रिपुनामसमन्वितम् ॥ ७८ ॥ किंकरीवृक्षबंधेन ज्वरादिर्देहशूलकः ॥ जायते नात्र संदहो यदि शक्रसमो रिपुः ॥ ७९ ॥ हरिद्रालिखितं यंत्रं जलेनैव तु घर्षयेत् ॥ अष्टोत्तरशतं चैव मध्यपाषाण स्तंभनम् ॥ ८० ॥ रिपुद्वारे खनेद्भूमौ सिंहीकण्ठे तु यंत्रकम् ॥ कलहो जायते नित्यं भ्रातृपुत्रादिबंधनात् ॥ ८१ ॥ अपामार्गरसेनैव लिखेद्यंत्रं तु भूर्जके ॥ एकाह्निकस्तृतीयाख्यश्चतुर्थज्वरनाशनम् ॥ ८२ ॥ भृंगराजरसेनैव लिखेद्यंत्रं सुभूर्जके ॥ धारयेद्धृदये बाहा विवादे विजयो भवेत् ॥ ८३ ॥ अथ विषमांकपंचदशीविधानम्—दक्षिणामूर्तिरुवाच ॥ शृणुष्वावहिता भूत्वा गिरिजे प्राणवल्लभे ॥ अकथ्यं परमार्थेन तथापि कथयाम्यहम् ॥ ८४ ॥ विषमान्येकयंत्राणि कथ्यंते परमं शृणु ॥ नवकोष्ठात्मके यंत्रे द्वितीये सप्तमे तथा ॥ ५ ॥ रससंज्ञेऽथ नवमे पंचमे प्रथमे तथा ॥ चतुर्थे च ततीये च वसुसंज्ञे लिखेद्बुधः ॥ ८६ ॥ तिथ्यंकसंख्या जायेत षट्कर्माण्यत्र साधयेत ॥ सुदिने त्वष्टगंधेन होमपूजापुरःसरम् ॥ ८७ ॥ प्रारंभे नियताहारः कार्यगौरवलाघवात् ॥ लिखेत्सहस्रदशकं न्यूने त्वर्धार्धमानकम् ॥ ॥ ८८ ॥ त्रिसप्तदिनमध्ये तु कार्यसिद्धिर्न संशयः ॥ ८९ ॥ षष्ठाद्वा ह्यष्टमाद्वापि चतुर्थाद्वा लिखेत्सुधीः ॥ त्रिगुणं त्रिविभक्तं च नवकोष्ठेषु संलिखेत् ॥ ९० ॥ भूर्जे वा स्वर्णमुद्रायां लिखित्वा देहसंगतम् ॥ एतद्दर्शनमात्रेण नश्यंति यमकिंकराः ॥ ९१ ॥ बहुना किमिहोक्तेन प्रत्ययो ह्यस्य सूचकः ॥ लिखेत्सहस्रसंख्याकं जलेन तु विलेपयेत् ॥ बंदिमोक्षस्तदा देवि नात्र कार्या विचारणा ॥ ९२ ॥

त्रिकोणयन्त्रम्.



ग्रहशांतियन्त्रम्.

८	१ ह्रीं रवये.	६
३	५	७
४	९	२

८	१	६	६	१	८
३	५	७	७	५	३
४	९	२	२	९	४

इदं त्रिकोणयंत्रं प्रथमं २–७–१–२–४–८–५–६–९–इति क्रमण पंचदशसहस्रं लेखनीयम् । तदा गोधूमपिष्टेन सह मत्स्येभ्यो दीयते चेत्सर्वसिद्धिः ॥ तथाच– लिखेत्प्राग्वजले क्षेपात्सहस्रातिथिसंमितात ॥ अभीष्टसिद्ध्यस्तस्य श्रीर्हस्ततलगोचरा ॥ ९३ ॥ अथ नवग्रहशांतियंत्रम्–रवौ दुष्टे प्रथमात् १ । सोमे दुष्टे द्वितीयात् २ । भौमे दुष्टे तृतीयात् ३ । बुधे दुष्टे चतुर्थात् ४ । गुरौ दुष्टे पंचमात् ५ । शुक्रे दुष्टे षष्ठात् ६ । शनौ दुष्टे सप्तमात् ७ । राहौ दुष्टेऽष्टमात् ८ । केतौ दुष्टे नवमात् ९ ॥ एतत् क्रमपूर्वकं लेखनीयम् ॥ ह्रीं आदित्याय नमः ॥ इत्यादि सर्वेषां मध्ये ह्रींकारो लेखनीयः ॥ पिप्पलपत्रे वा सप्तपत्रपत्रे लिखित्वा पिप्पलमूले स्थापनीयम् ॥ एवमष्टाविंशतिदिनपर्यंतं कृते ग्रहाः प्रसन्ना भवंति पीडां न कुर्वंति ॥ ९४ ॥ अथ यंत्राणां वर्णभेदः–प्राच्यामारभ्य च पुनः पश्चिमायां समाप्यते ॥ सत्त्वयंत्रं तु विज्ञेयं विपरीतं तु तैजसम् ॥ ९५ ॥ दक्षिणस्यां समारभ्य सौम्यायां च समाप्यते ॥ वायवीयं भवेद्यंत्रं विपरीतं तु पार्थिवम् ॥ ९६ ॥ अनुलोमविलोमाभ्यां चत्वारोऽपि द्विधा द्विधा ॥ अष्ट भेदा भवंति स्म चतुर्वर्णा द्विभेदतः ॥ आद्ययंत्रं शिवमयं ह्यस्यास्ति महिमाऽद्भुतः ॥ ९७ ॥ इति पंचदशीविधानं समाप्तम् ॥ २ ॥

२	९	४	४	९	२
७	५	३	३	५	७
६	१	८	८	१	६

४	३	८	८	३	४
९	५	१	१	५	९
२	७	६	६	७	२

६	७	२	२	७	६
१	५	९	९	५	१
८	३	४	४	३	८

६	४८	१८
३६	२४	१२
३०		४२

अथ बहत्तरके यंत्रकी विधि ॥ प्राकृतग्रंथे-आम्रके पट्टेपर रोली बिछाके अनारकी कलमसे नव कोष्ठ बनावे उसमें अंक भरनेकी चाल इस प्रकार है-पहले ६-१२-१८-पुनः २४-३०-३६-पुनः ४२-४८-इस प्रकार अंकोंको भरे और एक कोठेको खाली छाड दे और प्रतिकोठेमें अंक भरनेके समय इस मंत्रका उच्चार करे ॥ मंत्रो यथा-ॐ पार्श्वनाथाय नमः ॥ इस प्रकार यंत्रको लिख पंचोपचार पूजन करके यंत्रके सम्मुख इस मंत्रको बहत्तर दफे जपे ॥ मंत्रो यथा-ॐ नमः कामदेवाय महाप्रभावाय ह्रीं कामेश्वरि स्वाहा ॥ पीछे यंत्रको मिटादे ॥ इस प्रकार चौवीस यंत्र नित्य लिखे चौवीसवे यंत्रके सम्मुख 'ॐ नमः कामदेवाय महाप्रभावाय ह्रीं कामेश्वर स्वाहा ॥' इस मंत्रको इक्कीससौ जपे ॥ इस प्रकारसे बहत्तर दिन करे जौकी राटी बथुवाका अलुना साग भोजन करे पृथ्वीमें सोवे ब्रह्मचर्यसे रहे झूठ न बोले बहत्तर दिनके पीछे दशांश होम तर्पण मार्जन ब्राह्मणभोजन करावे तो यह यंत्र सिद्ध होजायगा ॥ पीछे इस सिद्ध यंत्रको कागजपर लिखकर उसके पाछे लिखे कि बहत्तर टके चलन बाजार दू पीछे आसनके नीचे रखकर कामेश्वरीका मंत्र बहत्तरदफे जपे तो बहत्तर टके चलन

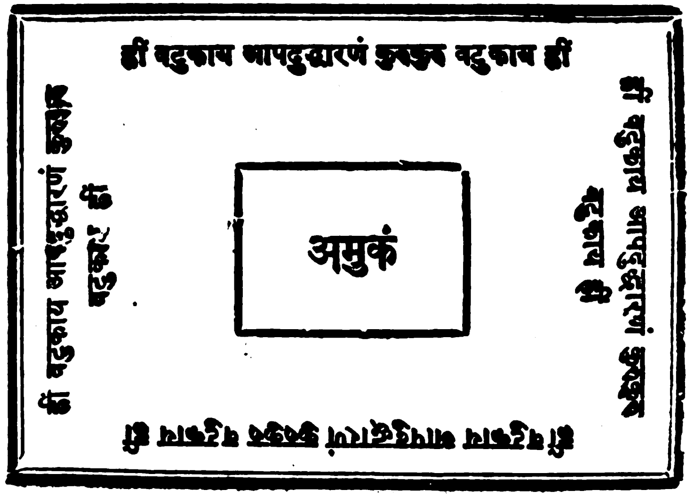
बाजार मिलेंगे वह किसीसे न बतावे क्योंकि कहनेसे टके मिलना बंद होजायगा टके आनेके बाद यंत्रको उठाकर पागमें धरले दूसरे दिन गेहूंका आटा घृत खांडके साथ गोली बनाकर नदीमें बहावे ॥ यह विधि एक महात्मा जिसको इस यंत्रकी पूर्ण सिद्धि थी वह किसीसे कुछ नहीं लेते थे और खर्चका रुपया दो नित्य लगाते थे उन्होंका वचन है कि इस यंत्रके प्रतापसे ही हमारा निर्वाह होता है उन्होंने कृपा करके हमको प्रदान किया सो प्रकाश करता हूं ॥ और एक मुसलमान फकीरने इस यंत्रकी विधि इस तरहपर बताई कि मासके पहले बृहस्पतिसे प्रारंभ करके सूर्योदयपहेले कागजपर स्याहीसे बहत्तर यंत्र लिखे और आटा घृत खांडके साथ गोली बनालेवे और सूर्योदय होनेपर उन गोलियोंको लेकर नदीमें बहावे पीछे नाभिसमान जलमें खडा होकर पहले एकदफे 'बिस्मिल्लाहेर्रहे मानिर्रहेमानिर्रहीम' पढकर बहत्तरदफे 'अल्लहुम्मसल्लअलामुहम्मदिनवअलाआलमुहम्मदिनववारकवसल्लम' इस दारूदको पढे क्योंकि दारूदके पढनेसे पैगम्बर साहबकी मदत पहुँचती है पीछे पश्चिमाभिमुख खडा होकर चारहजार चारसौ चवाली४४४४ अथवा तीनहजार तीनसौ तेतीस ३३३३ बार 'याजिवोयाजिब्राईलवहकयावासितो' इस मंत्रको पढे अंतमें पुनः बहत्तरदफे दारूदको पढकर घरको चला आवे इस प्रकार बहत्तर दिनतक करनेसे यह यंत्र सिद्ध होजाता है ॥ पीछे इस सिद्ध हुए यंत्रको कागजपर लिखके बहत्तरदफे मंत्र पढे और तागेमें पिरोकर अपने दरवाजेपर टांगादियाकरे उसको दूसरे दिन उतारकर गोली बना नदीमें बहावे ऐसा नित्य करनेसे १८ दिनमें ही खर्चके माफिक कहींसे आता रहेगा बहत्तर दिनपीछे बहत्तर टके चलनबाजार आसनके नीचे आया करेंगे ॥

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

इति ॥ ३ ॥ अथ द्वात्रिंशांकयंत्रविधानम् ॥ इस यंत्रको हल्दीसे कागजपर लिखके नीचेके तरफ अपना मनोरथ लिखद पीछे इस यंत्रको रूईके साथ बत्ती बनाकर रविवारको दीपकमें जलावे और हल्दीकी मालासे इस मंत्रको ग्यारहसौ जप ॥ तत्र मंत्रः—ॐ ह्रीं हंसः ॥ इस प्रकार सात रविवार करनेवाला मनुष्य सर्वदुःखोंसे मुक्त होकर अत्यंत सुखोंको भोगता है। इस यंत्रका दूसरा विधान इस प्रकार है कि रविवारको प्रातःकाल स्नान करके हल्दीसे थालीमें लिखे

उसके ऊपर फूल बत्तीका चौमुखा दीपक स्थापन करके पंचोपचार पूजन करे हाथमें थालीको उठाले और सूर्यके सम्मुख खडा होकर 'ॐ ह्रीं हंसः ॥' इस मंत्रको जपे जैसे जैसे सूर्य फिरे उसी तरह आप भी फिरता जावे सूर्यके अस्त हो जानेपर अर्घ देकर मिष्टान्न भोजन करे पृथ्वीमें सोवे ब्रह्मचर्य पाले इसी प्रकार सात रविवार करनेसे ऐसा पृथ्वीमें कौनसा कार्य है जो सिद्ध नहीं हो सकता अर्थात् सूर्य नारायणकी कृपासे साधकके सम्पूर्ण कार्य्योंकी सिद्धि अवश्य होती है इसमें संदेह नहीं जानना । मैंने एक अत्यंत कठिन कार्यके वास्ते किया था सो चार ही रविवारोंमें वह कार्य सुगमतापूर्वक सिद्ध होगया ॥ ४ ॥ अथापदुद्धारबटुक यन्त्रविधानम् ॥ श्रीपार्वत्युवाच–अधुना ब्रूहि मे नाथ आपदुद्धारनामकम् ॥ यंत्रं यन्त्रविदां श्रेष्ठ श्रोतुं मे लालसा बाढा॥ १ ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥ समाधिध्यान योगेन परमेण महेश्वरि ॥ इदं वै यन्त्रकं दिव्यं प्रादुर्भावितमुत्तमम् ॥ २ ॥ स्वर्णे वा रजते न्यस्य धारयत् कण्ठदेशतः ॥ दक्षिणे वा तथा बाहावापत्तस्य हि नश्यति ॥ ३ ॥ भाषार्थ–श्रीपार्वतीजी प्रश्न करती है कि हे नाथ ! अब आप आपदुद्धारनामक यन्त्र कीर्तन करो मैं सुननेकी बडी इच्छा करती हूं आप यन्त्रोंके सागर हो ॥ १ ॥ श्रीमहादेवजी बोले हे परमप्रिये महेश्वरी ! हमने यह यन्त्र बडे समाधि और ध्यानके योगसे उत्पन्न करा है ॥ २ ॥ जो मनुष्य इस

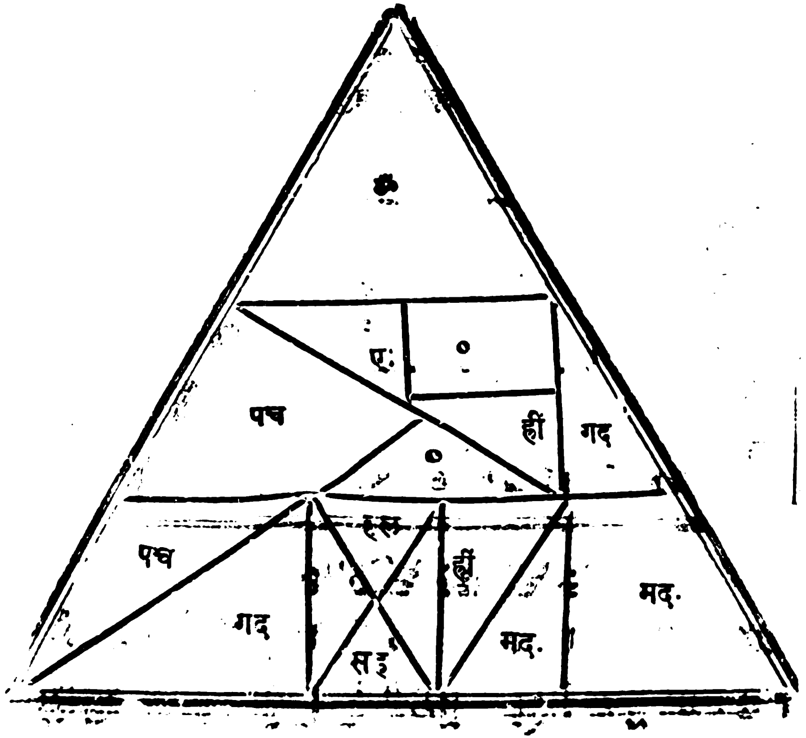
आपदुद्धारबटुकयन्त्रम्.



यन्त्रको भोजपत्रके ऊपर लिखके सोना या चांदी या तांबेमें मढाय कर गले अथवा दाहिनी भुजामें बांधता है वह पुरुष सम्पूर्ण आपत्तियोंसे छटकर आनंद भोगता है ॥ ३ ॥ अथ हनुमान यंत्रविधानम् ॥ इस यन्त्रको कागज अथवा भोजपत्रपर सवा लाख लिखे तो उस लिखनेवालेपर हनुमान देव शीघ्र ही प्रसन्न होजाते हैं इसमें संदेह नहीं ॥ ॥ अथ सर्वकार्यसिद्धि कारकयन्त्रम् ॥ इस यन्त्रको भोजपत्रपर अष्टगंधसे लिख धूप दीप नैवेद्यसहित पूजन कर सोना चांदी अथवा तांबेमें मढाकर गले या दाक्षिण भुजामें बांधे तो सर्व कार्य सिद्ध होता है ॥ इस यन्त्रको शिवजी महाराजने पार्वतीजीसे कैलासपर्वतकी चोटीपर बैठे हुए प्रकाश करा है और परीक्षा किया हुआ है ॥ ॥

हनुमानयन्त्रम्.

नं०	छं०	जं०	चं०
दं०	दं०	चं०	चं०
जं०	छं०	बं०	वं०
छं०	नं०	बं०	हं०



वचनसिद्धियं.

६६	९३	२	८
७	३	९०	८९
९१	८६	९	१
४	६	८७	९८

पक्षिआकर्षणयं.

६१	६८	२	७
६	३	६२	६४
६७	६२	८	१
४	५	६२	६६

फलवृद्धियन्त्रम् ।

८७	९४	२	८
७	३	९१	९१
९३	८८	९०	१
४	६	८९	९२

दुष्टस्वप्ननाशकयं.

गं	छं	जं	चं
छं	नं	जं	ठं
ठं	जं	ठं	चं
नं	छं	जं	टं

बिच्छूसर्पोदिनाशकयं.

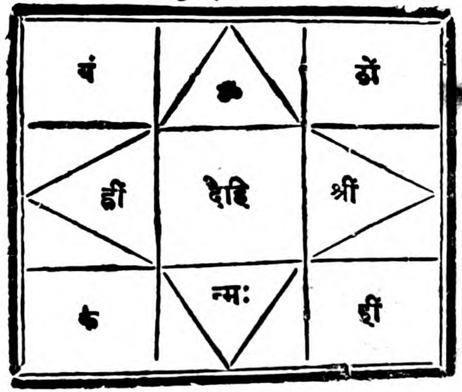
३०	३७	२	८
७	३	३४	३३
३६	३१	९	१
४	५	३२	३४

इस वचनसिद्धियंत्रको कुलींजनसे भोजपत्रपर लिख मढाके कंठमें पहेरे तो शिवजीके प्रसादसे वचन सिद्ध हो ॥ ॥ इस पक्षिआकर्षणयंत्रको काष्ठके पट्टापर लिखे पीछे आसनपर रखे तो सब पक्षी अकस्मात् वहां आजावेंगे ॥ ॥ इस फलवृद्धियंत्रको जंभीरीके रससे कागज या भोजपत्रपर लिखके अनारके पेडमें बांधे तो फल बहोत आवेंगे और भी जिस वृक्षमें बांधोगे फल बहोत होंगे ॥ ॥ जिस स्त्री वा पुरुषको स्वप्नमें जंजाल दिखाई पडता हो वह दुष्टस्वप्ननाशकयंत्रको अष्टगंधसे भोजपत्रपर लिखके गूगलकी धूप देवे और कण्ठमें धारण करे तो निश्चय करके दुष्टस्वप्नका नाश होता है ॥ ॥ इस बिच्छूसर्पादिनाशक यंत्रको मालकांगनीके रससे भोजपत्रपर लिखके घरमें शुद्ध जगेमें धरदेवे तो सम्पूर्ण सर्प और बिच्छू उस घरको छोडकर भाग जायँगे ॥

इच्छाप्राप्तिकरकयं.

वं	वं	वं	वं
पं	पं	पं	पं
दं	दं	दं	दं
लं	लं	लं	लं

वृद्धियन्त्रम्.

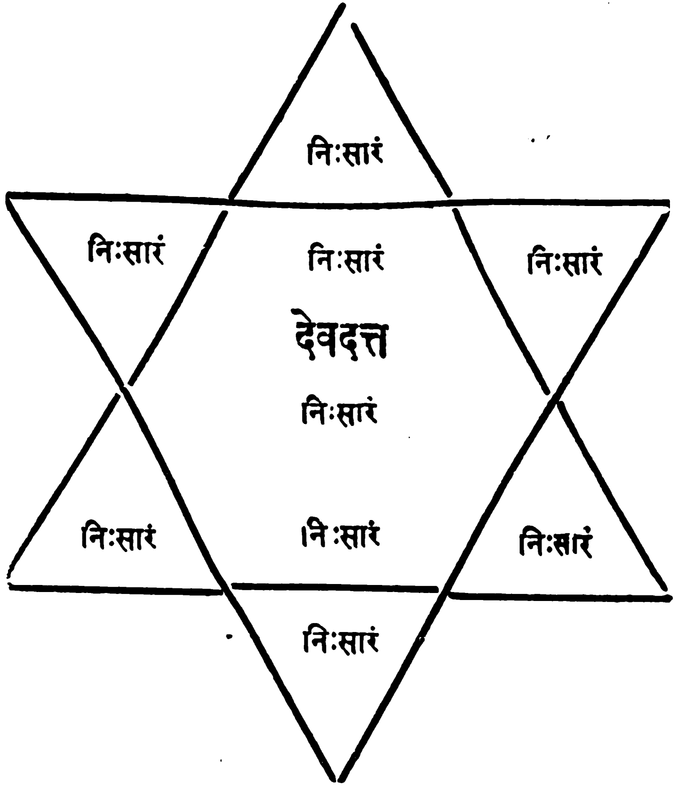


राज्यकोपनिवारणयं०

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	देवदत्त.		ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

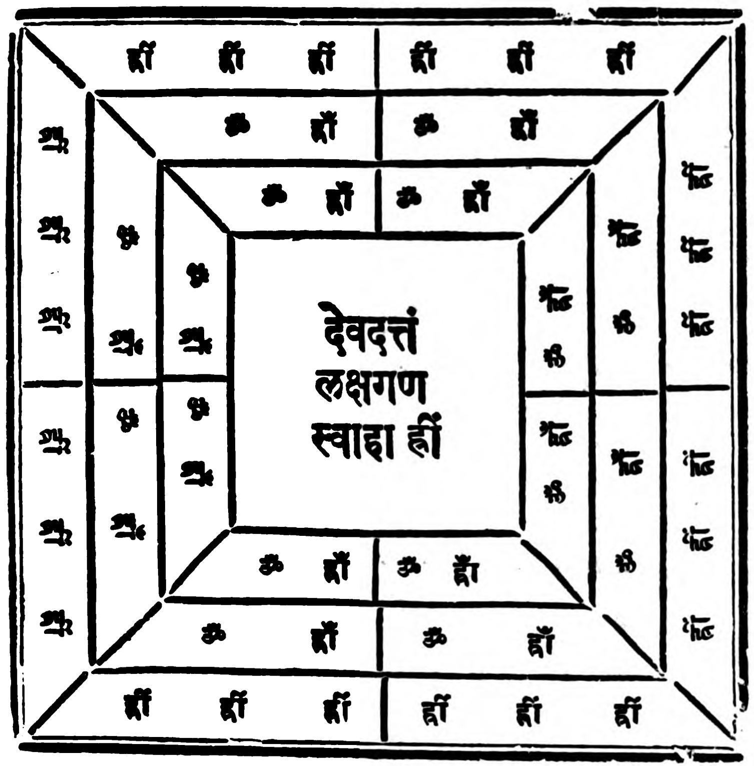
इस इच्छाप्रातिकारकयंत्रको रक्तचंदनसे बेलपत्रपर १०८ लिखकर श्रावणमें दिन ३० शिवके लिंगपर चढावे तो शिवजी प्रसन्न होकर धनसम्पात्ति सहित सर्व भोगोंका अधिकारी बनादेते हैं ॥ ॥ इस वृद्धियंत्रको दिवालीकी रात्रिको लिख द्रव्य अथवा अन्नमें धरे तो वृद्धि होय ॥ ॥ इस राज्यकोपनिवारण यंत्रको भोजपत्रपर गोरोचन केसर चंदन अनामिकाका रुधिर मिलाकर लिखे पछि अनेक प्रकारके पुष्प मिष्टान्न और मांस द्वारा पजन करके यथाशक्ति कन्या और ब्राह्मगोंको भोजन करावे पीछे योगनीयोंको नमस्कार करके इस यंत्रको मुट्ठीमें दाबले और राजसभामें जावे तो तत्काल ही राजका क्रोध शांत होकर राजा वशीभूत होजायगा ॥

वैराग्योत्पत्तिकरंयन्त्रम् १



इस वैराग्यापोत्तिकर यंत्रको गोरोचन और चन्दनसे भोजपत्रपर लिखके लोहेके यंत्रमें बंद करके सिरपर रखे तो धीरे धीरे चित्तमें वैराग्य उत्पन्न होगा पुत्र मित्र धन स्त्रीसे मोह छुटकर योगीरूपमें इच्छा पूर्वक विचरेगा ॥ इस सेनापलायन यंत्रको शंखाहुली सूर्यमुखीगुल दोनें के रससे नगाडेके ऊपर लिखे और डंकेकी चोट देवे तो सम्पूर्ण सेना भागजायगी ॥

सेनापलायनयन्त्रम् ।

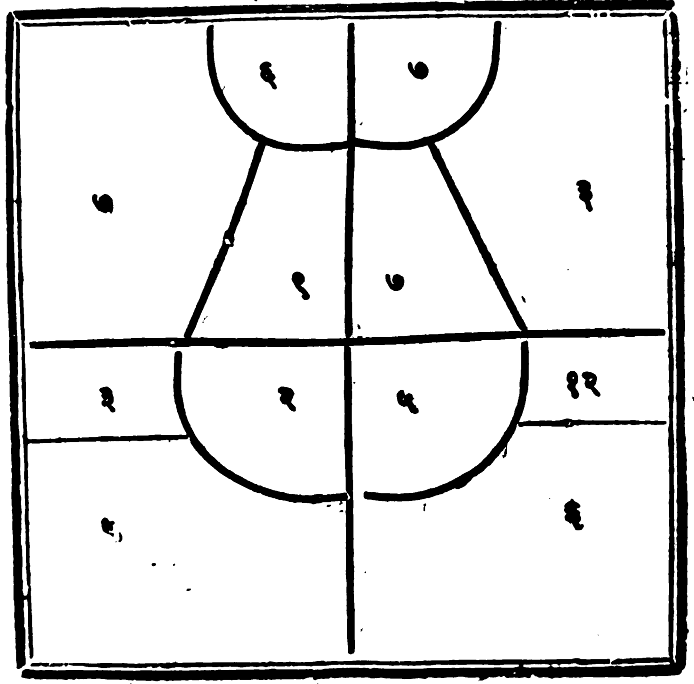


शीतलायन्त्रम्.

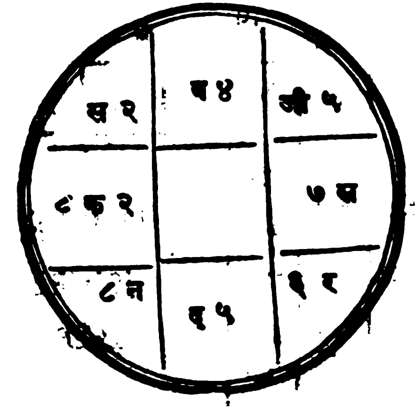
४२०००	४८०००	२०००	७०००
६०००	३०००	४६०००	४५०००
४०८०	५॥०००	४४०००	५॥०००
१००१	७१	१६	६०८

इस शीतलायन्त्रको अष्टगंधसे भोजपत्रपर लिखके सिरहाने धरे तो माताकी पीडा दूर होय ॥ होलीकी रात्रिमें नग्न होकर धतूरसे यह मूँठउद्धारयंत्र भोजपत्रपर लिखे पीछे माथे बांधे तो मूठ लगे नहीं ॥

मूँठउद्धारयन्त्र.



मूठोद्धारयन्त्रम्.



इस मूठोद्धारयन्त्रको मस्तकमें धारणकरे तो मूठ लगे नहीं।

नपुंसकयन्त्रम्.

४	५	७४	७७
७९	७२	८	१
६	३	७६	९५
७२	३८	२	७

गर्भस्तंभनयन्त्रम्.

१००	९१	२	७
६	३	८४	१०३
८००	११००	८	१०
४	५	१०२	८८

सौभाग्यवृद्धियन्त्रम्.

५	६	३	६
४	४	७	५
६	६	३	५
[illegible]	४	७	४

धरणियंत्रम् ।

६२३	१स	८६
७सी	५पू	३७
२म	९८	४स

पुत्रोत्पत्तियंत्रम् ।

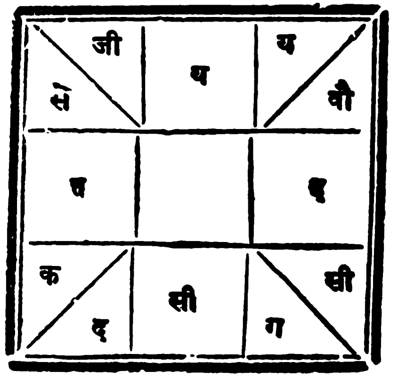
१०	१	१२
८	१५	३
२	२	५

इस नपुंसकयंत्रको नामरद लिखके कटिमें बांधे तो मरद होवे ॥ ॥ इस गर्भस्तंभनयंत्रको कमरमें बांधे तो गर्भ थंभे ॥ ॥ इस सुहाग वृद्धि यंत्रको माथेमें राखे तो सुहाग बधे ॥ ॥ इस धरणियंत्रको कमरमें बांधे तो धरणि ठिकाने आवे ॥ ॥ वंध्या स्त्री इस पुत्रोत्पत्तियंत्रको कमरमें बांधे तो पुत्रप्राप्ति होय ॥

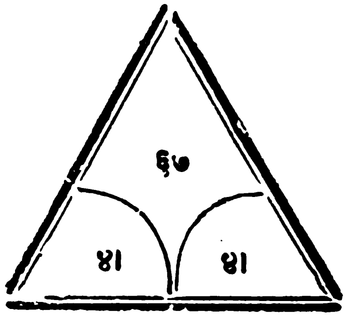
रोजीप्राप्तियंत्रम्.

६	७	२
१	५	९
८	३	४

पुरुषवश्ययन्त्रम्.



श्वानविषयन्त्रम्.



डाकिनीयंत्रम्.

छत	छत
छत	छत

इस रोजीप्राप्तियंत्रको शुक्लपक्षमें कांस्यपात्रपर लिखकर पास राखे तो रोजगार मिले ॥ ॥ इस पुरुषवश्य यंत्रको स्त्री गलेमें राखे तो पुरुष वश्य होय ॥ ॥ इस श्वानविषयंत्रको माथेमें राखे तो हडकाये कुत्तेका जहर दूर होय ॥ ॥ इस डाकिनी यंत्रको पास राखे तो डाकिनीका भय होवे नहीं ॥

कामलायन्त्र.



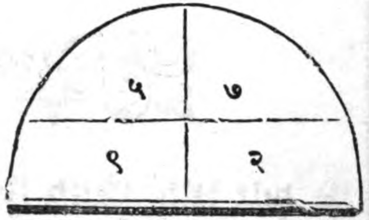
अश्वकष्टनि०यंत्रम्.

६	७	२
१	५	९
८	३	४

आकर्षणयंत्रम्

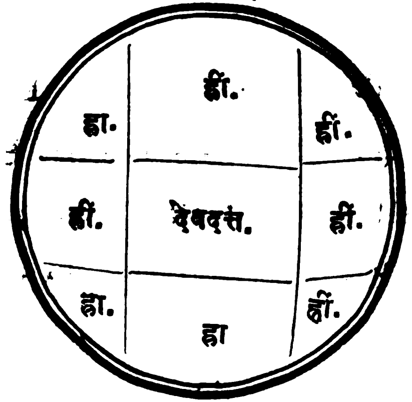
१९	२६	३	८
७	३	३३	३२
२५	२०	९	१
४	६	२१	२४

वायगोलायन्त्र ।



इस कामलायंत्रको अष्टगंधसे भोजपत्रपर लिख माथे बांधे तो पीलियो दूर होवे ॥ ॥ घोडका पेशाब बंद हो जाय पेटमें दर्द चले तो इस अश्वकष्टनिवारणयंत्रको लिखकर घोडेके गलेमें बांधदे तो सर्व कष्ट दूर होय । शतानुभतम् ॥ ॥ इस आकर्षण यंत्रको सेहकी शूलसे नित्य एकसौ आठ लिखे तो परदेश गया घर आवे ॥ ॥ इस वायुगोला यंत्रको कागजपर लिखके रविवारके दिन सर्यके सम्मुख पानीमें धोकर पीवे तो तत्क्षणात् वायगोला जाता रहे ॥

दृष्टियंत्रम्.



कर्णपीडायंत्रम्.

भ	ज	व
क	ग	जः
छः	छः	दः

आधाशीशीयंत्रम्.

५३	४२
३११	७०

इस दृष्टियंत्रको कागजपर अष्टगंधद्वारा लिखके गलेमें बांधे तो नजर दूर होय पीछे कभी नहीं लगे इस दृष्टियंत्रका बडा विलक्षण प्रभाव है ॥ ॥ कागजपर स्याहीसे लिख यह कर्णपीडायंत्र कानमें बांध तो निश्चय पूर्वक कानकी व्याधी झटपट दूर हो जायगी यह यंत्र कर्णपीडाके वास्ते रामबाण है ॥ ॥ इस आधाशीशी यंत्रको कागजपर स्याहीसे लिखकर मस्तकमें बांधे तो निश्चयपर्वक आधाशीशी नष्ट हो जाय यह यंत्र गुप्त था ॥

इति श्रीमंत्रमहार्णवे उत्तरखण्डे यंत्रप्रकरणे एकादशस्तरङ्गः ॥ ११ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ मिश्रतंत्रप्रारंभः ॥ तत्रादौ अंकोलतंत्रम् ॥ दत्तात्रेयतंत्रे–गृहीत्वांकोलबीजानि रविवारे सुनिश्चितम् ॥ शृणु सिद्धिं महायोगिन् बीजानां कल्पमुत्तमम् ॥ १ ॥ अंकोलबीजं निक्षिप्तं गुरौ गजमुखे शुभम् ॥ मंत्रेण[1] सिंचेन्नित्यं हि यावद्बीजफलोद्भवः ॥ २ ॥ त्रिलोह[2]वेष्टितं कृत्वा एकबीजं मुखे स्थितम् ॥ मत्तमातंगवीर्यस्तु वायुतुल्यपराक्रमः ॥ ३ ॥ हयमखे च तद्बीजं रविवारे सुनिक्षिपेत् ॥ जायंते सफला वृक्षास्तद्बीजं ग्राहयेत्पुनः ॥ ४ ॥ त्रिलोहे वेष्टितं कृत्वा मुखमध्ये च धारितम् ॥ महाबलो महातेजाः प्रतीक्ष्यश्च तुरंगमः ॥ ५ ॥ वृषमुखे तु तद्बीजं निक्षिपेद्भुवि निश्चितम् ॥ तद्बीजं मुखमध्यस्थं त्रिलोहवेष्टितं कुरु ॥ ६ ॥ महद्बलं महत्तेजो जायते वृषभस्य च ॥ मृगमुखे च तद्बीजं निक्षिपेद्भूतले ध्रुवम् ॥ ७ ॥ त्रिलोहवेष्टितं बीजं मृगराजसमो भवेत् ॥ तद्बीजं सिंहवदने निक्षिप्तं च महीतले ॥ ८ ॥ त्रिलोहवेष्टितं बीजं मुखमध्ये च धारितम् ॥ महाबलो महातेजा जायते सिंहरूपकः ॥ ९ ॥ शुनो मुखे तु तद्बीजं निक्षिपेद्भूतले ध्रुवम् ॥ त्रिलोहवेष्टितं कृत्वा मुखे क्षिप्त्वा तु श्वानकम् ॥ १० ॥ मयूरमुखमध्यस्थं तद्बीजं भुवि निक्षिपेत् ॥ त्रिलोहवेष्टितं कृत्वा मयूरो दृश्यते जनैः ॥ ११ ॥ यानि कानि च बीजानि जंगमस्थलमेव च ॥ अंकोलबीजं निक्षिप्तं मुखे भूमितले ध्रुवम् ॥ १२ ॥ तद्बीजं मुखमध्यस्थं त्रिलोहवेष्टितं कुरु ॥ तद्रूपश्च भवेत्सत्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ १३ ॥ अंकोलस्य तु बीजानि तत्तैलं ग्राहयेत्पुनः[3]॥ धूपं दत्त्वा तु तत्तैलं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥ १४ ॥ पद्मबीजे लिपेत्तैलं निक्षिपेच्च तडागके ॥ तत्क्षणाज्जायते चित्रं तत्क्षणात्कमलोद्भवः ॥ १५ ॥ तत्तैलं चूतबीजे तु निक्षिपेद्बिंदुमात्रतः ॥ जायंते सफला वृक्षा नान्यथा शंकरोदितम् ॥ १६ ॥ यानि कानि च बीजान्यंकोलतैलेन लेपयेत् ॥ जायंते सफला वृक्षाः सिद्धयोग उदाहृतः ॥ १७ ॥ शवानने बिंदुमात्रं तत्तैलं निक्षिपन्नरः ॥

---

१ मंत्रो यथा–ॐ नमो नारायणाय विश्वंभराय इन्द्रजालकौतुकानि दर्शयदर्शय सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति मंत्रेण सर्वं कुर्यात् ॥ २ ॥ त्रिलोहं यथा–दश हेम द्विषट् ताम्रं षोडशं रौप्यभागकम् ॥ एवं संख्या त्रिलोहस्य ज्ञातव्या सर्वकर्मणि ॥ ३ तैलपातनम्–बीजोंको चूर्ण करके आकके कच्चे पत्तोंके रसकी सात भावना देवे पीछे धूपमें धरनेसे निःसंदेह तेल निकलता है–इसीप्रकार इन्द्रायणकाथकी पुट देनेसे भी निकल आता है ॥ अन्यत्–निस्तुष अंकोलके बीजोंका मुख किंचित् घसकर कांसीके पात्रमें धरे और उन्होंपर चनेके चूनका लेप करके उसके मुखपर कुछ कुछ सुहागेका लेप करे पीछे उन्होंको घाममें धरनेसे सुखपूर्वक तेल निकल आता है ॥

एकयामं सजीवः स्यान्नान्यथा शंकरोदितम् ॥ १८ ॥ पत्रं तु श्वेतगुंजायाः प्रथमं भक्षयेन्नरः ॥ अंकोलतैललितांगो दृश्यते राक्षसाकृतिः ॥ १९ ॥ पलायंते नराः सर्वे पशुपक्षिमृगादयः ॥ अंकोलस्य तु तैलेन दीपं प्रज्वालयेन्नरः ॥ २० ॥ रात्रौ पश्यति भूतानि खेचराणि महीतले ॥ अंकोलतैललिप्तं च शस्त्रं यानि च कानि च ॥ २१ ॥ भवंति मूर्च्छिता दृष्ट्वा तत्रव च महीतले ॥ रणे दारुणशस्त्रौघं दृष्ट्वैव हि पलायते ॥ २२ ॥ नरादिजीवजातं वै नान्यथा शंकरोदितम् ॥ २३ ॥ अंकुलीतैलसंसिक्ता वचा सप्तदिनावधि ॥ त्रिलोहे वेष्टिता तस्या गुटिकां कारयेत्ततः ॥ २४ ॥ अदृश्यकारिणी ख्याता मुखस्था नात्र संशयः ॥ तत्तैलैः सर्षपाञ्छ्वेतांस्त्रिलोहेन च वेष्टितान् ॥ २५ ॥ गुटिका मुखमध्यस्था ख्याताऽदृश्यत्वकारिणी ॥ चूर्णपद्मकपत्राणां सुरभीपत्रसंयुताम् ॥ २६ ॥ धत्तूरस्वरसे पिष्ट्वा गुटिकां कारयेद्दृढाम् ॥ सा लिप्तांकुलोतैलेन मुखस्थाऽदृश्यकारिणी ॥ २७ ॥ काकोलूकस्य पक्षांश्च निजकेशांस्तथैव च ॥ अंतर्धूमगतं दग्ध्वा सूक्ष्मचर्णं तु कारयेत् ॥ २८ ॥ अंकोलतैलाद्गुटिकां कृत्वा शिरसि धारयेत् ॥ अदृश्या जायते क्षिप्रं देवैरपि न दृश्यत ॥ २९ ॥ तालकं कृष्णमहिषीक्षीरमंकोलतैलकम् ॥ तल्लिप्तांगो नरोऽदृश्यो जायते शंकरोदितम् ॥ ३० ॥ अंकोलतैलसंसिक्तं मलं पारावतोद्भवम् ॥ ललाटे तिलकं तेन कृत्वाऽदृश्यो भवेन्नरः ॥३१॥ अथ ब्रह्मवृक्षश्वेतपालाशतंत्रम्—अथातः संप्रवक्ष्यामि ब्रह्मवृक्षस्य कल्पनम् ॥ शृणु वत्स विधिं तस्य ब्रह्मवृक्षस्य यत्फलम् ॥ १ ॥ दारिद्र्यदुःखनिर्यासे नराणां बुद्धिवर्द्धनम् ॥ तस्य पुष्पाणि संगृह्य सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत् ॥ २ ॥ अजाक्षीरेण तद्भाव्यं त्रिवारं च पुनः पुनः ॥ वंगस्य षोडशांशेन प्रतितापं तु कारयेत् ॥ ३ ॥ तद्वंगं शोध्य नागेन पुनस्तेनव धार्यते ॥ जायते शोभनं तारं शंखकुंदसमप्रभम् ॥ ४ ॥ तस्य वृक्षस्य पुष्पाणि तद्रसे भाव्य तारकम् ॥ त्रिंशांशं वेधयेद्वंगं तेन तारं च नान्यथा ॥ ॥ ५ ॥ हिमकुंदेंदुसदृशमष्टदोषविवर्जितम् ॥ जायते नान्यथा वत्स भक्तियुक्तस्य तच्च त ॥ ६ ॥ ब्रह्मवृक्षफलं दृष्ट्वा गंधकं भाव्य यत्नतः ॥ शुक्लपत्रप्रलेपेन पुटेनैकेन कांचनम् ॥ ७ ॥ तस्य वृक्षस्य तैलेन भावयेद्रसगंधकम् ॥ नाम हेम भवत्याशु द्वात्रिंशान तु वेधयेत् ॥ ८ ॥ शाल्यभवनमध्ये तु कर्तव्यं त यथोचितम् ॥ तत्फलस्य रसेनैव स्वर्गं भवति निश्चितम् ॥ ९ ॥

पत्रमेकं पलाशस्य गर्भिणीपयसान्वितम् ॥ ऋतवंते तानि पीतानि वंध्या भवति गर्भिणी ॥ १० ॥ अथ रक्तगुंजातंत्रप्रारंभः ॥ प्राकृतग्रंथे-शिव उवाच ॥ गुंजाकल्पं प्रवक्ष्यामि गिरिजे शृणु यत्नतः ॥ कल्पानां सारभूतोऽयं नाना कौतुकरूपवान् ॥ ॥ १ ॥ भूतप्रेतपिशाचादिशाकिनीडाकिनीगणः ॥ यक्षभैरववेताला गुंजाकल्पे निगद्यते ॥ २ ॥ कथयामि चरित्रं ते कल्पानां समुदायिकम् ॥ क्रियते साधकैर्यद्वत् तत्तत्सिद्धं भवेद्ध्रुवम् ॥ ३ ॥ शिवानंदकरी विद्या रक्तगुंजातिगुप्ततः ॥ गुरुणा भेदं संग्राह्य साधयेत्कल्पमुत्तमम् ॥ ४ ॥ उपदेशं प्रवक्ष्यामि यथा साधनकर्मणि ॥ क्वचिन्न चोनं भवति तदा सिद्ध्यति नान्यथा ॥ ५ ॥ रवौ पुष्ये कुजे शुक्रे अनकले ग्रहे सति ॥ कृष्णाष्टम्यां हस्तऋक्षे चतुर्दश्यां तु स्वातिभे ॥ ६ ॥ पूर्णा शतभिषा युक्ता निशीथे मूलमुद्धरेत् ॥ गहीत्वा गृहमागत्य निस्संदेहमनाः सुधीः ॥ ७ ॥ दुग्धेन स्नापयेत्पश्चाद् धूपदीपादिकं ततः ॥ सिद्धं भवति तन्मूलं काम्यकर्माणि योजयेत् ॥ ८ ॥ नारीनराणां सर्पादिविषभंजनकारणम् ॥ पीत्वा सुखतरं यांति नात्र कार्या विचारणा ॥ ९ ॥ तेनैव घर्षितं भाले तिलकं यः समाचरेत् ॥ सभायां मानमाप्नोति बहुमानो भवेत्तदा ॥ १० ॥ मन्यंते तद्वचः सत्यं सभायां संस्थिता नराः ॥ गुंजाकल्पप्रभावेन नरं नारीं च नर्तयेत् ॥ ११ ॥ कज्जलेन समं पिष्ट्वा नरेण क्रियतेंऽजनम् ॥ जगन्मोहनमायाति दृष्ट्वा साधकमुत्तमम् ॥ ॥ १२ ॥ गालिं दत्वाऽनु तस्यैव न त्यजंति नराः क्वचित् ॥ यस्मै कस्मै न दातव्यं सिद्धयोग उदाहृतः ॥ १३ ॥ बिल्वपत्ररसे घृष्ट्वा नयने तेन चांजयेत् ॥ दृष्टिं प्रसारयेद्यत्र तत्र भूतं च पश्यति ॥ १४ ॥ बिल्वार्कैर्यस्तु तिलकं कुर्यात्साधकसत्तमः ॥ भूतप्रेतपिशाचादि ध्रुवं नश्यति दर्शनात् ॥ १५ ॥ शिवलिंगीरसे पिष्ट्वा लेपं कुर्यात्तु यो नरः ॥ भूतप्रेतपिशाचादि दृष्ट्वा रूपं पलायते ॥ १६ ॥ अजामूत्रेण पिष्ट्वा वै करलेपं तु कारयेत् ॥ दूरवार्तां वदेत्तस्य यक्षिणी सहचारिणी ॥ १७ ॥ मधुना योंऽजनं कुर्याद्वेतालं पश्यति ध्रुवम् ॥ यं यं प्रार्थयते कामं वेतालोऽस्मै प्रयच्छति ॥ १८ ॥ दुग्धसंगेन घृष्ट्वा च लेपनं कुरुते बुधः ॥ भूतप्रेतपिशाचाश्च यक्षाश्च योगिनीगणाः ॥

१ कजो रोहिणी।

॥ १९ ॥ त्यजंति नैव तत्संगं न तत्सांसर्गिको भवेत् ॥ साधकाज्ञां पालयंति यावज्जीवं न संशयः ॥ २० ॥ शर्करासहितां पिष्ट्वा लिप्त्वा पादतले नरः ॥ नेत्रोन्मीलनमात्रेण सहस्रं क्रोशगो भवेत् ॥ २१ ॥ स्थलकमलेन यः पिष्ट्वा नाभिं लेपयते नरः ॥ चतुष्कलामृतो यश्च जीवो जागृततामियात् ॥ २२ ॥ अपामार्गस्य तैलेन पिष्ट्वा नेत्रांजनं चरेत् ॥ आपातालधनं तस्य दृष्टिगं दिव्यचक्षुषः ॥ २३ ॥ कस्तूर्योषसि नेत्रे यो ह्यंजनं कुरुते नरः ॥ नृत्यं पश्यति विश्वस्य कालरूपी भवेत्तदा ॥ २४ ॥ गंगाजलेन घृष्ट्वा च ह्यंजनं कुरुते नरः ॥ पुष्पवर्षं दर्शयति आश्चर्यं जायते नृणाम् ॥ निजरक्तेन सहसा घृष्ट्वा नेत्रे तु चांजयेत् ॥ २५ ॥ तेन पश्यति त्रैलोक्यं निजनेत्रेण मानवः ॥ ऋतुमत्याः शोणितेन अंजनं कुरुते नरः ॥ पलायंते नराः सर्वे दृष्ट्वा रूपं भयानकम् ॥ २६ ॥ तिलतैलेन यः पिष्ट्वा मर्दयेच्च शरीरकम् ॥ स दर्शयति सर्वेषां वीर्यं धैर्यं नृणां वरः ॥ २७ ॥ सिंहिनीदुग्धयुक्तं वै शरीरे लेपयन्नरः ॥ शस्त्रबाधा न जायंते साहसेन जयेद्रणम् ॥ २८ ॥ गोरोचनलवंगेन यस्य नाम लिखेन्नरः ॥ वैरिणः स्तंभनं भूयात्तत्र नायाति निश्चितम् ॥ २९ ॥ पिष्ट्वा कार्पासवार्ति तु कृत्वा तैलेन दीपकम् ॥ आश्चर्यं जायते तत्र मूर्च्छिता वै सभा भवेत् ॥ ३० ॥ मानं पूजां नुतिं स्तुत्या सर्वे कुर्वंति ते नराः ॥ दीपशांतिः प्रकर्तव्या सर्वाश्चर्यं विनश्यति ॥ ३१ ॥ कटर्यां बध्वा ताम्रयंत्रे नारी पुत्रमवाप्नुयात् ॥ वंध्यायोगाः पलायंते गुंजामूलप्रभावतः ॥ ३२ ॥ घृतेन सह पिष्ट्वा वै लिंगलेपं तु कारयेत् ॥ न मुंचति ततो वीर्यमेकरात्रौ न संशयः ॥ ३३ ॥ मुखस्य लालया पिष्ट्वा ह्यंजनं क्रियते नरैः ॥ बंधमोक्षो भवेत्तेषां विना यत्नेन गद्यते ॥ ३४ ॥ अलस्या तैलयुक्तेन मधुकूटेन लेपयेत् ॥ स्वर्णवर्णा तनुस्तस्य कुष्ठरोगो विनश्यति ॥ ३५ ॥ निंब गर्भेण तां पिष्ट्वा भक्षयेद्यः प्रयत्नतः ॥ तस्य कुष्ठं विनश्येत्तु नात्र कार्या विचारणा ॥ ३६ ॥ कुक्कुटस्य च विष्ठायामंजनं क्रियते नरैः ॥ सप्तरात्रेणांधदृष्टिस्तस्माच्चतुर्यगुणी भवेत् ॥ ३७ ॥ गंधकेन युतं पिष्ट्वा लेपयेन्नखविंशतिम् ॥ कुमार्ग्यपि च तं दृष्ट्वा सद्यः [illegible]ति वश्यताम् ॥ ३८ ॥ स्वसूत्रेणांजनं कृत्वा स्वरो मधुरतामियात ॥ गानविद्याप्रवीणश्च भवत्येव न संशयः ॥

॥ ३९ ॥ अनेन विधिना वामे नरो मानवतां वरः ॥ गुंजाकल्पप्रभावेन सर्वे सिद्ध्यंति हृच्छयाः ॥ ४० ॥ गुंजाकल्पमिदं गोप्यं तवाग्रे कथितं मया ॥ त्वया कुत्रापि नो वाच्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥ ४१ ॥ इति रक्तगुंजातंत्रं समाप्तम् ॥

॥ अथ श्वेतगुंजातंत्रप्रारंभः ॥ मंत्रो यथा—ॐ श्वेतवर्णे सितपर्वतवासिनि अप्रतिहते मम कार्यं कुरु कुरु ठः ठः स्वाहा ॥ इस मंत्रद्वारा कृष्णपक्षकी अष्टमी अथवा चौदसके दिन सफेद गुंजाके फल मट्टीसहित लाकर उसी दिन स्वच्छ स्थानमें उपरोक्त मंत्रद्वारा पृथ्वीमें बीज डाल देवे, पीछे—ॐ श्वेतवर्णे सितवर्णे श्वेतपर्वतवासिनि सर्वकार्याणि कुरु कुरु अप्रतिहते नमोनमः ॥ इस मंत्रद्वारा नितही जल डाला करे जब वृक्ष तैयार होजावे उस वक्तत उसके नीचे बैठकर इस प्रकार मंत्रका दस हजार जप करे ॥ तथाच—ॐ श्वेतवर्णे हृदयाय नमः १ । ॐ पद्ममुखे शिरसे स्वाहा २ । ॐ सर्वज्ञानमये शिखायै वषट् ३ । ॐ सर्वशक्तिमति कवचाय हुं ४ । सितपर्वतवासिनि नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । भगवति ह्रीं मम कार्यं कुरु कुरु ठः ठः नमः स्वाहा इत्यस्त्राय फट् ६ ॥ इस प्रकार न्यास करके उस वृक्षकी पंचोपचार पूजा करे पीछे 'ॐ श्वेतवर्णे पद्ममुखे सर्वज्ञानमये सर्वशक्तिमति सितपर्वतवासिनि भगवति ह्रीं मम कार्यं कुरु कुरु ठः ठः नमः स्वाहा' ॥ इस मंत्रका दस हजार जप करके पुष्यनक्षत्रके दिन मंत्रद्वारा जडसमेत उखाड लावे और छायाशुष्क करके रख छोडे पीछे सफेद चंदनसहित घिसकर 'ॐ नमः श्वेतगात्रे सर्वलोकवशंकारि दुष्टान् वशं कुरु कुरु अमुकं मे वशमानय स्वाहा ॥' इस मंत्रसे अभिमंत्रित करके मस्तकपर तिलक लगावे तो साध्यकी नजर पडते ही वशीभूत हो जायगा इसमें संदेह नहीं। अथवा सफेद सरसों और प्रियंगुके साथ पीसकर ऊपरवाले मंत्रद्वारा अभिमंत्रित करके जिसके मस्तकपर डाल देगे वह साथसाथ चला आवेगा जीवनपर्यंत दासके समान होकर रहेगा इसमें संदेह नहीं। यह श्वेतगुंजाका विधान एक महात्मासे हमको आबूराजके पर्वतमें प्राप्त हुआ था ॥ इति श्वेतगुंजातंत्रं समाप्तम् ॥

॥ अथ तिलतंत्रप्रारंभः ॥ पारावतशीर्षमादाय कृष्णमृत्तिकायां पूरयित्वा तिलबीजानि वापयेत् क्षीरोदकेन सिंचेद्यदा पुष्पिता भवति तदा मुखे संस्थाप्य अदृश्यो भवति ॥ १ ॥ तेषां फलानां चूर्णं कृत्वा तेन चूर्णेन यं स्पृशति स किंकरो भवति

सर्वस्वं ददाति ॥ २॥ तान् तिलान् संगृह्य नेत्रांजनेन सह पिष्ट्वा कपिलादुग्धेन गुटिकां कारयेत् सप्तरात्रं पाचयेत् तां गुटिकां मुखे निक्षिप्य अदृश्यो भवति देवैरपि न दृश्यते मनुष्याणां का कथा उद्गीर्णे पुरुषो दृश्यो भवति जीवेद्वर्षशतं स्त्रियः सर्वे जनाश्च वश्या भवंति ॥ ३ ॥ इति तिलतंत्रं समाप्तम् ॥ अथ सर्ववृक्षाणां मूलतंत्रम् ॥ तत्रादौ श्वेतार्कमूलतंत्रम्-श्वेतार्कमूलमादाय श्वेतचंदनसंयुतम् ॥ अनेन तिलकं भाले कृत्वा मोहं नयेज्जगत् ॥ १ ॥ पुष्यार्के च गृहीत्वा तु श्वेतार्कस्य हि मलकम् ॥ धारयेद्दक्षिणे हस्ते सिंहबाधाभयं नहि ॥ २ ॥ अथ पुनर्नवामलतंत्रम्-पुष्ये पुनर्नवामूलं करे सप्ताभिमंत्रितम् ॥ बद्ध्वा सर्वत्र पूज्यः स्यान्मंत्रैस्तत्त्वैः प्रजायते ॥ ३ ॥ अथ अपामार्गमूलतंत्रम्-गृहीत्वा पुष्यनक्षत्रे अपामार्गस्य मूलकम् ॥ लेपमात्राच्छरीराणां सर्वशस्त्रनिवारणम् ॥ ॥ ४ ॥ अपामार्गस्य मलं तु कपिलादुग्धपेषितम् ॥ ललाटे तिलकं कृत्वा वशीकुर्याज्जगत्त्रयम् ॥ ५ ॥ गृहीत्वा शुभनक्षत्रे अपामार्गस्य मूलकम् ॥ धारयेद्दक्षिणे कर्णे न वृश्चिकभयं भवेत् ॥ ६ ॥ रक्तापामार्गमूल तु सोमवारेऽभिमंत्रितम् ॥ भौमे प्रातः समुद्धृत्य कट्यां बद्धं तु वीर्यधृक् ॥ ७ ॥ अथ गुंजामूलतंत्रम् ॥ पुष्यार्के श्वेतगुंजाया मूलमुद्धृत्य धारयेत् ॥ हस्ते कांडभयं नास्ति संग्रामे तु कदाचन ॥ ८ ॥ गृहीत्वा श्वेतगुंजायाश्छायाशुष्कं तु कारयेत् ॥ कपिलापयसा कृत्वा तिलकं मोहयेज्जगत् ॥ ९ ॥ गृहीत्वा पुष्यनक्षत्रे श्वेतगुंजासुमूलकम् ॥ धारयेद्दक्षिणे हस्ते द्यूतकार्ये जयो भवेत् ॥ १० ॥ अथ श्वेतकरवीरमूलतंत्रम्-गृहीत्वा रविवारे तु श्वेतकरवीरमूलकम् ॥ धारयेद्दक्षिणे हस्ते अग्निबाधाभयं नहि ॥ ११ ॥ अथ धत्तूरमूलतंत्रम्-गृहीत्वा शुभनक्षत्रे धत्तूरमूलकं तथा ॥ धारयेद्दक्षिणे बाहौ व्याघ्रबाधाभयं नहि ॥ १२ ॥ धत्तूरमूलं कटिबद्धं गर्भस्तंभनकारकम् ॥ धत्तूरमूलचूर्णं तु योनिस्थं गर्भस्तंभनम् ॥ १३ ॥ अथ अमृतामूलतंत्रम्-नरो हि पुष्यनक्षत्रे अमृतामलकं हरेत् ॥ तन्मालां धारयेत्कंठ सर्पबाधाभयं नहि ॥ १४ ॥ अथ विष्णुक्रांतामूलतंत्रम् ॥ पुष्यार्के तु समुद्धृत्य विष्णुक्रांतासमूलकम् ॥ वक्त्र शिरसि धार्यं वै शस्त्रसंहारणं नृणाम् ॥ १५ ॥

१ तंत्रांतरेऽपि सर्वलोकवशंकरेति पाठः ।

वंध्यांबुव्याघ्रभूपालचौरशत्रुभयं जयेत् ॥ १६ ॥ अन्यत्–विष्णुक्रांतासुमूलं तु पिष्ट्वा माहिषदुग्धके ॥ माहिषीनवनीतेन ऋतुकाले तु भोजयेत् ॥ एवं सप्तदिनं कुर्यात्पुनर्गर्भं समाप्नुयात् ॥ अथ सुदर्शनामूलतंत्रम्–करे सुदर्शनामूलं वैरिस्तंभकरं परम् ॥ करे सुदर्शनामूलं बद्ध्वा राजप्रियो भवेत् ॥ १७ ॥ बृहतीमूलतंत्रम्–मूलं बृहत्या मधुकं पिष्ट्वा नस्यं समाचरेत् ॥ निद्रास्तंभनमेतद्धि मूलं देवेन भाषितम् ॥ सिंहीमूलं हरेत्पुष्ये कट्यां बद्ध्वा नृपाप्रियः ॥ १८ ॥ अथ सिद्धार्थमूलतंत्रम्–सिद्धार्थमूलं बद्ध्वा के[1] कांतेन रमते तु या ॥ न गर्भं धारयेत्सा स्त्री मुक्ते तु लभते पुनः ॥ १९ ॥ अथ वटमूलतंत्रम्–गृहीत्वा वटमूलं च जलेन सह घर्षयेत् ॥ विभूत्या संयुतं भाले कृत्वा लोकान्वशं नयेत् ॥ २० ॥ अथौदुंबरमूलतंत्रम् ॥ गृहीत्वौदुंबरं मूलं ललाटे तिलके कृते ॥ प्रियो भवति सर्वेषां दृष्टिमात्रान्न संशयः ॥ २१ ॥ तांबूलेन प्रदातव्यं सर्वलोकवशंकरम् ॥ २२ ॥ अथ सहदेवीमूलतंत्रम्–गृहीत्वा सहदेव्याश्च छाया शुष्कं तु कारयेत् ॥ तांबूले दंततश्चूर्णं सर्वलोकवशंकरम् ॥ २३ ॥ अथ कौमारीमूलतंत्रम्–कौमारीकंदमादाय विजयाबीजसंयुतम् ॥ तिलकं कुरुते भालेऽनेन लोकवशंकरः ॥ २४ ॥ अथ कदलीमूलतंत्रम्–सिंदूरं कदलीकंदं पेषयेद्भौमवासरे ॥ अनेन तिलकं कृत्वा सत्यं नारी वशा भवेत् ॥ २५ ॥ अथ तांबूलवल्लीजातिमूलतंत्रम्–कृतस्तु मूलात्तांबूल्यास्तिलको लोकमोहनः ॥ जातीमूलं मुखे क्षिप्तं शस्त्रस्तंभकरं परम् ॥ २६ ॥ अथाम्रमूलतंत्रम्–अनुराधायुक्तार्किवारे आम्रवृक्षमूलं गृहीत्वा स्वनिकटे स्थापयेत् गत वस्तुलाभः ॥ २७ ॥ विशाखायुक्तार्किवारे आम्रवृक्षमलं गृहीत्वा धान्यराशौ स्थापयेत् धान्यवृद्धिः ॥ २८ ॥ अथ पालाशमूलतंत्रम्–हस्तार्किवारे पलाशमूलं गृहीत्वा निकटे स्थापयेत् अदृश्यो भवति ॥ २९ ॥ अथैरंडमूलतंत्रम्–धनिष्ठार्किवारे[2] एरंडमूलं गृहीत्वा हस्ते बध्नीयाच्चिंतितकार्यसिद्धिः ॥ ३० ॥ अथ भृंगराजमूलतंत्रम्–अश्विन्यार्किवारे भृंगराजमलं गृहीत्वा हस्ते बध्नीयात्सर्वजना वश्या भवेयुः ॥ ॥ अथ बंधकचमत्कारतंत्रम् ॥ तत्रादौ बंधकलक्षणम् ॥ बंधकं नाम वृक्षोपारि अन्यवृक्षशाखा उत्पद्यते तस्य बन्धकमिति संज्ञा ॥ अथ

१ मस्तके। २ शनिवारे।

पिप्पलबंधकतंत्रम्—अश्विन्यार्किवारे पिप्पलबंधकं गृहीत्वा गोमूत्रेण संघृष्य वंध्या पानं करोति तस्याः पुत्रो भवेत् । भरण्यार्किवारे पिप्पल बंधकं गृहीत्वा धान्यराशौ स्थापितं चेद्धान्यवृद्धिर्भवति कर्णे बांधितं चेत्पीडानाशः हस्ते बंधितं चेन्नेत्ररोगो नश्यति भूतबाधाः नश्यंति रेवत्यार्किवारे पिप्पलबंधकं गृहीत्वा स्त्रियः हस्ते बध्नीयात्पुत्रो भवति ॥१॥ अथ वटबंधकतंत्रम्—अश्विन्यार्किवारे वटबंधकं गृहीत्वा मस्तके स्थापितं चेददृश्यो भवति। मघार्किवारे वटबंधकमानीय गृहे स्थापितं चेदष्टमा सिद्धिर्भवति ॥ २ ॥ अथ निंबबंधकतंत्रम्—श्रवणार्किवारे निंबबंधकं गृहीत्वा स्वनिकटे स्थापयेत् तस्योपरि कस्यापि न चलति ॥ ३ ॥ अथ आम्रबंधकतंत्रम्—रोहिण्यार्किवारे आम्रबंधकं गृहीत्वा हस्ते बद्धा सर्वकार्यसिद्धिः ॥ ४ ॥ अथ जंबुबंधकतंत्रम्—श्रवणार्किवारे जंबुवृक्षस्य बंधकं गृहीत्वा हस्ते लेपं कृत्वा स्त्रिया हस्ते धृते वश्या भवति ॥ ५ ॥ अथ शिरसबंधकतंत्रम्—उत्तरात्रयार्किवारे शिरसवृक्षबंधकं गृहीत्वा दरिद्रस्य हस्ते बध्नीयाद्धनवान् भवेत् ॥ ६ ॥ अथ बिल्वबंधकतंत्रम्—मूलार्किवारे बिल्ववृक्षबंधकं गृहीत्वा हस्ते बद्धा वैरी वश्यो भवति ॥ ७ ॥ अथ बदरीबंधकतंत्रम्—अनुराधार्किवारे बदरीबंधकं गृहीत्वा हस्ते बद्धा जगद्वश्यं भवति॥ स्वात्यार्किवारे बदरीबंधकं गृहीत्वा हस्ते बद्धा सर्वकामनासिद्धि भर्वति ॥ ॥ ८ ॥ अथ शालबंधकतंत्रम्—चित्रार्किवारे शालवृक्षबंधकं गृहीत्वा निकटे स्थापितं चेददृश्यो भवति ॥ ९ ॥ अन्यत्—शाखोटस्य च बंधकं नक्षत्रे मृगशीर्षके॥ गृहीत्वा पानमात्रेण अदृश्यो जायते नरः॥ अथ करंजबंधकतन्त्रम्—चित्रार्किवारे करंजबधकं गृहीत्वा मस्तके बद्धा अदृश्यो भवति ॥ १० ॥ अथ भल्लातकबंधकतंत्रम्—अश्विन्यार्किवारे भल्लातकबंधकं गृहीत्वा दिनत्रयं सेवनं क्रियते बहुकुष्ठ पामा नश्यंति ॥ ११ ॥ अथ महाराष्ट्रभाषोक्तकचोराबंधकतंत्रम्—विशाखार्किवारे महाराष्ट्रभाषोक्तकचोराबंधकं गृहीत्वा धान्यमध्ये स्थापितं चेद्धान्यवृद्धिर्भवेत् तदेव गोतक्रेण संघृष्य हस्ते संलिप्य स्त्रियो हस्ते धृते द्रावणं भवति ॥ १२ ॥ अथ महाराष्ट्रभाषोक्त धमोडाबंधकतंत्रम्—अश्विन्यार्किवारे महाराष्ट्रभाषोक्तधमोडाबंधकं गृहीत्वा चूर्णं कृत्वा अजादुग्धेन पानं कुर्यात्पुष्टिर्भवति ॥ १३ ॥ अथ थूहरबंधकतंत्रम्—कृत्तिकायां स्नुहीवृक्षबंधकं धारयेत्करे ॥ वाक्यसिद्धिर्भवेत्तस्य महाश्चर्यमिदं जगत् ॥ १४ ॥ अथ कपित्थबंध

कतंत्रम् ॥ कृत्तिका होय नक्षत्र जब, लाय कथबधक ।ताहि शस्त्र लागे नहीं, जो मुखमें ले राख ॥ १५ ॥ कुशबंधकतंत्रम्–अश्विन्यां कुशबंधं तु पूजां कृत्वा समाहरेत् ॥ त्रिलोहे वेष्टितं कृत्वा वक्त्रस्थोऽदृश्यकारकः ॥ १६ ॥ अथ रोहितकबंधकतंत्रम्–अक्षे चैवानुराधायां वंधं राक्षसवृक्षजम् ॥ मुखे प्रक्षिप्य च नरोऽदृश्यः स्यान्नात्र संशयः ॥ १७ ॥ अथ कार्पासबंधकतंत्रम् ॥ भरण्यां तु समागृह्य वंधं कार्पास संभवम् ॥ हस्ते बद्ध्वा ह्यदृश्यः स्यात् स्वात्यां वा निंबवृक्षजम् ॥१८॥ पिवेदुत्तरषाढायामशोकवृक्षसंभवम् ॥ वंधं तदा अदृश्यः स्यादश्विन्यां बिल्ववृक्षजम् ॥ १९ ॥ बंधकं वा करे धृत्वा अदृश्यो जायते नरः ॥ अथ मार्जारीनालतंत्रम् ॥ दत्तात्रेयतंत्रे–रविवारे गृहीत्वा तु मार्जारीनालमादरात् ॥ निक्षिपेद्यत्र तद्वस्तु वर्धमानं भवेत्सदा ॥ १ ॥ श्वेतमार्जार्याः जरायुं प्रसूतिजं गृहीत्वा निकटे स्थापनीयम् । ततः कृष्णचतुर्दश्यां सुवर्णरौप्यताम्राणामन्यतमधातुजमुद्रिकामध्ये जरायुं संस्थाप्य हस्ते धारणीयमदृश्यो भवति॥२॥इति मार्जारीनालतंत्रम् ॥ अथ बालकनालतंत्रम्–वंध्या नारी गृहीत्वा तु बालनालं प्रयत्नतः ॥ भक्षयेत्तेन तस्यास्तु पुत्रो भवति निश्चितम् ॥ १ ॥ इति बालकनालतंत्रम् ॥ अथ बालकदंततंत्रम्–बालकस्य तु दंतानां प्रथमं खंडितो भवेत् ॥ वसुंधरामसंस्पृष्टस्तं लब्ध्वा तु वशा वधूः ॥१॥ तद्रक्षणात्प्रयत्नेन पुत्रं विंदति निश्चितम् ॥ बालदंतप्रभावेण मनीषा पूर्यते स्त्रियः ॥ २ ॥ गर्भेच्छा न भवेद्यस्याः सा दंतं कटिभागके ॥ बद्ध्वा गर्भं न लभते नान्यथा परिकीर्तितम् ॥ ३ ॥ राजकार्यकरो धीरो धृतबालकदर्शनः ॥ सर्वकार्याणि तस्यैव सिद्धिमेष्यंति निश्चयात् ॥ ४ ॥ शत्रूणां मुखबंधादिस्वच्छा वार्ता प्रवर्तते ॥ सभायां स्थिरतां याति श्रेयोभाक् स नरः सदा ॥ ५ ॥ इति बालकदंततंत्रम् ॥ अथ स्यालनाभितंत्रम्–सुगोला पुष्पवद्धारा घासोत्पात्तिवनेषु च ॥ करीरमूलदेशे तु क्वचित् कंटः समीपतः ॥ ॥ १ ॥ स्यालनाभीतिविख्याता केचित्काकगुदां जगुः ॥ विधिं तस्याः प्रवक्ष्यामि सत्यं वै श्रूयतां वरम् ॥ २ ॥ कुडवार्द्धे घृते पक्त्वा नाभीमेकां प्रयत्नतः ॥ भस्मीभवति सा नाभी आयसेन तु घर्षयेत् ॥ ३ ॥ एकजीवस्तु कर्तव्यस्ततः सिद्धो भविष्यति ॥ घृतेनानेन संग्राह्य काम्यकर्माणि योजयेत् ॥४॥ यद्दंष्ट्राः कृमिभिर्व्याप्तास्तत्कर्णे बिंदुमात्रतः ॥ द्विघटयांते द्वितीये च कर्णे बिंदुं क्षिपेद् बुधः ॥ ५ ॥

कीटदुःखं लयं याति म्रियंते कृमिजातयः ॥ अवश्यं नात्र संदेहः सर्वकृमिविनाशकृत् ॥ ६ ॥ नाभिं तेनैव संघृष्य कर्त्रितं पत्रं कारयेत् ॥ गुटिकाचतुष्टयं कृत्वा गुडयोगेन वै पुनः ॥ ७ ॥ भक्षयेद्गुटिकामेकामुष्णवार्यनुपानतः ॥ यदि शूलं न नश्येत घाटिकाद्वयतः परम् ॥ ८ ॥ द्वितीयां गुटिकां दद्यात्क्रम एष पुनार्दिशेत् ॥ सर्वे शूला विनश्यंति महाघोरतरा अपि ॥ ९ ॥ इति स्यालनाभितंत्रम् ॥

॥ अथ वराटकीतंत्रप्रारंभः—हंसी वराटकी ख्याता लघुभारा श्वेतरंगिणी ॥ उज्ज्वला कोमला ज्ञेया जलोत्तीर्णा तु सा शुभा ॥ १ ॥ हंसपद्या रसे पिष्ट्वा ताम्रपारेण संयुता ॥ अनेन पूरयेद्धंसीं मुखमुद्रां तु कारयेत् ॥ २ ॥ स्वे मुखे करणे तस्याः सर्वसिद्ध्यागमस्ततः ॥ रोगो न जायते तस्य सर्वबाधा विनश्यति ॥ ३ ॥ सर्पदंशादपि विषं वर्द्धते तस्य न क्वचित् ॥ हंस्या गुटीप्रभावेण काचिद्धानिर्न जायते ॥ ४ ॥ अन्यत्—शिरःपृष्ठमुखे पीता मृगी सा वै वराटिका ॥ उरःपीतसमायुक्ता तद्विधानं वदामि ते ॥ ५ ॥ मृगमूत्रमृदा ग्राह्या रसयुक्ता मृगर्क्षके ॥ मृगी पूरयितानेन मुखे कृत्वा तु वै नरः ॥ ६ ॥ राजादिर्वश्यतां याति सभायां प्राप्यते यदि ॥ नारीसंगमकाले वै बहुकामं प्रपद्यते ॥ ७ ॥ अन्यत्—धूम्रवर्णा व्याघ्रिनाम्नी व्याघ्रं कुर्यात्तु सा नरम् ॥ विधिं तस्याः प्रवक्ष्यामि शृणु यत्नेन वै पुनः ॥ ८ ॥ व्याघ्रौषध्या रसे पिष्ट्वा पारदं सुप्रयत्नतः ॥ व्याघ्रीं पूरयते तेन मुखमुद्रां त कारयेत् ॥ ९ ॥ गुग्गुलुं धूपयेत्तस्या मुखे धृत्वा तु यो नरः ॥ व्याघ्रवज्जायते रूपं तं दृष्ट्वान्यः पलायते ॥ १० ॥ अन्यत्—सिंहिनीलक्षणं वक्ष्ये स्वर्णवर्णा तु सा भवेत् ॥ तामानयेत्प्रयत्नेन तस्याः कल्पं नरश्चरेत् ॥ ११ ॥ सिंहीरसरसैर्युक्तां सिंहिनीं पूरयेत्ततः ॥ माक्षिकेण मुखं तस्य रुद्ध्वा गुग्गलधूपितम् ॥ १२ ॥ मुखे धृत्वा तु तां यो वै युद्धे हि जयमाप्नुयात् ॥ सिंहरूपं भवेत्तस्य नरो दृष्ट्वा पलायते ॥ १३ ॥ करे बद्ध्वा तु यो धीरो द्यूतं कुर्याज्जयस्ततः ॥ राजमानो यशःप्राप्तिः सिंहीकल्पेन लभ्यते ॥ १४ ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे उत्तरखण्डे मिश्रिततंत्रे द्वादशस्तरङ्गः ॥ १२

अथेन्द्रजालकौतुकतन्त्र प्रारंभः ॥ तत्रादौ सर्वोपरि मंत्रः ॥ मंत्रो यथा—ॐ परब्रह्मपरमात्मने नमः उत्पत्तिस्थितिप्रलयकराय ब्रह्महरिहराय त्रिगुणात्मने सर्वकौतुकानि दर्शय दर्शय दत्तात्रेय नमः तंत्राणि सिद्धानि कुरु कुरु स्वाहा ॥ अष्टोत्तरशतजपात् सिद्धिः ॥ ईश्वर उवाच ॥ इन्द्रजालं विना रक्षां न कुर्यादिति निश्चितम् ॥ रक्षामंत्रोमहामंत्रः सर्वसिद्धिप्रदायकः ॥ रक्षामंत्रो यथा—ॐ परब्रह्म परमात्मन् मम शरीरं पाहि पाहि रक्षां कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति मंत्रेण रक्षां कुर्यात् ॥ अथेन्द्रजालकौतुककरणोपयोगी मंत्रः ॥ ॐ नमो नारायणाय विश्वंभराय इन्द्रजालकौतुकानि दर्शय दर्शय सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ अष्टोत्तरशतजपात् सिद्धिः ॥ एतस्मिन्सिद्धे मंत्रे मंत्री सर्वकौतुकानि कुर्यात् ॥ अथ दृष्टिस्तंभनम्—घृणातालकपंचांगं वेष्टितं कनके तथा ॥ दृष्टिमात्र दृष्टिबंधे नान्यथा शंकरोदितम् ॥ १ ॥ वाराहक्रांतिकामूलं सिद्धार्थं स्नेहलोहितम् ॥ मुखे प्रक्षिप्य लोकानां दृष्टिबंधं करोत्यलम् ॥२॥ कूर्मभुक्तं हरीतालं सप्ताहं भोजयेद्ध्रुवम् ॥ तद्विष्ठाकरलेपन नरा नृत्यंति कौतुकात् ॥ ३ ॥ मयूरं च शिलातालं भोजयेद्दिनसप्तकम् ॥ तद्विष्ठां लेपयेद्धस्ते अदृश्यो भवति ध्रुवम् ॥ अथ नानारूपधारणकौतुकम् दत्तात्रेयतंत्रे ॥ भौमवारे सर्पमुखे क्षिप्त्वा कार्पासबीजकम् ॥ उद्भवं बीजकार्पासं ज्वालयेरंडतैलके ॥१॥ तद्वर्तिं ज्वालयेद्रात्रौ सर्पवद्दृश्यते ध्रुवम् ॥ २ ॥ एरंडतैलजं दीपं सर्पपुच्छादिकंचुकम् ॥ मंडूकवसया दीपे सर्वैर्दृश्यो हि सर्पवत् ॥ वृश्चिकमुखमध्यस्थं कार्पासं बीजं निक्षिपेत् ॥ तद्वर्तिं ज्वालयेद्रात्रौ वृश्चिको भवति ध्रुवम् ॥ वर्तिं तु शीतलां कृत्वा महाकौतुकनाशनम् ॥ ४ ॥ कार्पासानि च बीजानि नकुलस्य मुखे क्षिपेत् ॥ रवौ वारे कृते योगे नान्यथा शंकरोदितम् ॥ तद्वर्तिं ज्वालयेत्संध्यां नकुलो दृश्यते ध्रुवम् ॥ ५ ॥ चन्द्रवारे विनिक्षिप्य मार्जारस्य मुखे खलु ॥ जायते बीजमैरंडे मुखे धृत्वा बिडालकः ॥ ॥ ६ ॥ गृहीत्वांकोलबीजानि रविवारे सुनिश्चितम् ॥ शृणु सिद्धिं महायोगी बीजानां कल्पमुत्तमम् ॥ अंकोलबीजं निक्षिप्य गुरौ गजमुखे नरः ॥ मंत्रेण सिंचेन्नित्यं तु यावद्बीजफलोद्भवः ॥ त्रिंलोहवेष्टितं कृत्वा एकबीजं मुखे स्थितम् ॥ मत्तमातंगवीर्यस्तु वायुतुल्यपराक्रमः ॥ ७ ॥ हयमुखे च तद्बीजं रविवारे तु निक्षिपेत् ॥ जायंते सफला वृक्षास्तद्बीजं ग्राहयेत्पुनः ॥ त्रिलोहे वेष्टितं कृत्वा मुख

१ त्रिलोहं यथा दत्तात्रेयतंत्रे—दश हेम द्विषट् ताम्रं षोडशं रौप्यभागकम् ॥ एवं संख्या त्रिलोहस्य ज्ञातव्या सर्वकर्मणि ॥

मध्येऽवधारितम् ॥ महाबलो महातेजा जायते च तुरंगमः ॥ ८ ॥ वृषमुखे तु तद्बीजं निक्षिपेद्भुवि निश्चितम् ॥ तद्बीजं मुखमध्यस्थं
त्रिलोहे वेष्टितं कुरु ॥ महाबलो महातेजा जायते वृषभः स च ॥ ९ ॥ मृगमुखे च तद्बीजं निक्षिपेद्भूतले ध्रुवम् ॥ त्रिलोहे वेष्टितं बीजं
मृगराजसमुद्भवम् ॥ १० ॥ तद्बीजं सिंहमुखे च निक्षिप्तं तु महीतले ॥ त्रिलोहे वेष्टितं बीजं मुखमध्ये च धारितम् ॥ महाबलो महा
तेजास्तेन सिंहसमो भवेत् ॥ ११ ॥ शुनो मुखे तु तद्बीजं निक्षिपेद्भूतले ध्रुवम् ॥ त्रिलोहे वेष्टितं कृत्वा मुखे क्षिप्त्वा शुना समः ॥
॥ १२ ॥ मयूरमुखमध्यस्थं तद्बीजं भुवि निक्षिपेत् ॥ त्रिलोहे वेष्टितं कृत्वा मयूरो दृश्यते जनैः ॥ १३ ॥ यानि कानि च बीजानि
जंगमस्थलमेव च ॥ अंकोलबीजे निक्षिप्ते मुखे भूमितले ध्रुवम् ॥ तद्बीजं मुखमध्यस्थं त्रिलोहे वेष्टितं कुरु ॥ तद्रूपश्च भवेत्सत्यं नान्यथा
शंकरोदितम् ॥ १४ ॥ वर्षाकाले मयूरस्य दापयेत्कीटभोजनम् ॥ तद्विष्ठां गोमययुतां मृत्तिकासंयुतां तथा ॥ गृहीत्वा लेपयेद्देहं
खण्डखण्डं प्रदृश्यते ॥ लोके भवति चाश्चर्य्यं महाकौतुककौतुकम् ॥ १५ ॥ शिवबीजोत्थितं तैलं पारावतपुरीषकम् ॥ वराहस्य
वसायुक्तं गृहीत्वा च समं समम् ॥ गर्दभस्य वसायुक्तं हरितालं मनःशिलाम् ॥ एभिस्तु तिलकं कृत्वा यथा लंकेश्वरो नृपः ॥
बिल्वपत्रं गृहीत्वा तु कृष्णसर्पवसासमम् ॥ वृषकेशं गृहीत्वा तु गंधकं च मनःशिलाम् ॥ एभिस्तु तिलकं कृत्वा यथा साक्षात्सदा
शिवः ॥ यस्मै कस्मै न दातव्यं गोपितं न प्रकाशयेत् ॥ १६ ॥ विषवृक्षस्य पुष्पं तु श्वेतं ग्राह्यं प्रयत्नतः ॥ पेषयेन्नवनीतेन चाश्व
गंधां मनःशिलाम् ॥ एभिस्तु तिलकं कृत्वा यथा साक्षात् पितामहः ॥ १७ ॥ पयस्विनीमृतो बालो यत्र तन्निखनेन्नरः ॥ हरिद्रा
ग्रंथिसंयुक्तमजादुग्धेन सेचयेत् ॥ यावद्वृक्षस्तु सफलस्तं हरिद्रासमं हरेत् ॥ श्वेतदूर्वारनालैश्च हारिद्रातः प्रदापयेत् ॥ तल्लिप्तदेहः पुरुषः
पंचधा दृश्यते नरः ॥ १८ ॥ यस्य नामांकितं तत्र नृकपाले लिखेत्सति ॥ भौमे चितायां निक्षिप्ते पिशाचो दृश्यते नरः ॥ १९ ॥
सिंदूरं गंधकं तालं समं पिष्ट्वा मनःशिलाम् ॥ तल्लिप्तवक्त्रः शिरसि अग्निवद्दृश्यते ध्रुवम् ॥ २० ॥ पत्रं तु श्वेतगुंजायाः प्रथमं यस्तु
[illegible] ॥ अंकोलतैलालिप्ताङ्गो दृश्यते राक्षसाकृतिः ॥ पलायंते नराः सर्वे पशुपक्षिमृगादयः ॥ २१ ॥ अंकोलस्य तु तैलेन दीपं

[illegible] समवक्रोध्य तैलं पातयेत् ॥

प्रज्वालयेन्नरः ॥ रात्रौ पश्यति भूतानि खेचराणि महीतले ॥ २२ ॥ प्राकृतग्रंथे–कडुवी तुंबीतेल ले, बींट कबूतर लाय। हड्डी गधा मँगायके, सबको ले पिसवाय ॥ माथेपर याको तिलक, जो कोई लेय लगाय। रावणसो दीखन लगे, यामें संशय नाहि ॥ ॥ २३ ॥ तेल सहेजने बीजको, बीट कबूतर लाय। सूअर चरबी शिखीजड, सब समभाग मँगाय ॥ जो काढे सिरपै तिलक, सो दीखे मुख पांच। इन्द्रजालको खेल यह, बात सभी है सांच ॥ २४ ॥ घुग्घूको सिर काट मंगावे, तामें बीज धतूरा बोवे। जब असाढ वदि चौदस आवे, धूप दीप कर भैरों ध्यावे ॥ सिरको गाड भूमिमें देवे, जूंठा पानी उसमें देवे। दिनप्रति दीपक देय जलाई, बत्ती सूत घीवको भाई। उगे पेड जब करै उपाई, जड फल फूल छाल मँगवाई। पीस तिलक माथेपै दीजे, सहस्रआंखको रूप धरीजे ॥२५॥ लाय मनुजकी खोपडी, लाल चिरमठी बोय। फल उसके मुख धारिये, नारीरूप जु होय॥२६॥ उगे आंवरे वृक्षपै, करिये नीम तलास। लाय फूल फल मूल अरु, कर चूरण रख पास। बत्तीमाहिं लपेटके, तेल नीमको डार ॥ जेहिपर चांदनी दीपकी, सो हो कानेराय॥२७॥ ॥ अथान्यकौतुकम् ॥ दत्तात्रेयतंत्रे–सिंदूरं गंधकं तालं समं पिष्ट्वा मनःशिलाम् ॥ तल्लिप्तवस्त्रं धृत्वासौ रात्रौ दृश्योऽग्निवद्भवेत् ॥ ॥ १ ॥ त्रिदिनं भोजनं कृत्वा तिलसर्षपसंयुतम् ॥ तन्मूत्रज्वालितादीपान्महाकौतुककौतुकम् ॥ २ ॥ प्राकृतग्रंथे–सिरका स्वच्छ मँगायके भरिये शीशीमांही ॥ डारतही हरताल तबकिया होय चांदनो जाही ॥ २ ॥ शीशीमें स्प्रिट भरदीजे, गंधक तनिक ताहिमें दीजे ॥ धरिये ताहि अँधेरेमाहीं, अग्निभरा शीशा दिखलाहीं ॥ ३ ॥ लोहेके प्यालेमें गंधक लगाकर उसमें ताम्रका चूर्ण बुरका देवे तो यह गंधक अँधेरेमें दीपकसा चमकेगा ॥ ४ ॥ बीस मासे स्प्रिट लाकर एक पात्रमें रखे पीछे एक मासा स्कारेट और पोटास मिलादे पीछे अट्ठाईस मासा सल्फूरिक एसिड डालते ही बहुतसी छोटी छोटी नीले रंगकी गोल बत्तियां बाहर अग्निकी लौंके समान निकलने लगेंगी ॥ ५ ॥ फासफरसको रात्रिके समय अँधेरेमें धरनेसे दीपकके माफिक प्रकाश हो जाता है ॥ ६ ॥ एक साफ बोतलमें फासफरस धरके पानी भर देवे पीछे उस शीशीको दीपककी लौपर गरम करनेसे उसमें आग जलती मालूम पडेगी ॥

॥ ७ ॥ चूना विना बुझा ही लावे, फासफोरस उसमें मिलवावे । फिर उसको कपडेमें नाखे, पीतलके बर्तनपर राखे ॥ तापर छिडके थोडा पानी, आग जलेगी विना जलानी ॥ ८ ॥ नोनी गंधक अरु नौसादर, बांध पोटली लावे । जलकी बूंद डारकर मसले, अग्नि बलै दृष्टि आवे ॥ ९ ॥ ऊंटकी मीगनेको सिलगावे, जब निर्धूम अंगार होजावे उस वक्त शहदमें बुझाकर डब्बीमें धर लेवे तमाशा दिखानेके समय इसको फोरकर धरनेसे पवन लगते ही अग्नि प्रगट हो जायगी ॥ १० ॥ खैरकोयला लायकर, ताको खूब पिसाय । गंधक शोरा राल सम, चारहु देय मिलाय ॥ टंक चार गुटिका करे, तामधि छिद्र कराय । फूल मलेठी चावकर, मुखमें ताहि धराय ॥ गुटिका मुखके छिद्रपर, दीजे अग्नि लगाय । तापै उलटी फूंक दे, निकले अग्नि भभकाय ॥ ११ ॥ राल तोला दश १० लोहचूर्ण तो० २ गंधक तो० १ कपूर मा० ६ महीन पिसाकर कपडेमें पोटली बांधे पीछे उस पोटलीको पीपलके वृक्षपर लटका कर अग्नि लगा देवे तो पीपलके पत्रपत्रपर दीपककी रोशनी हो जायगी ॥ १२ ॥ कपडो लेकर ताहिको, दीजे मद्य भिगोय । ईंढीकर सिरपर धरे, तामें अग्नी जोय॥ आला वस्त्र जलतो रहे, सूखे अग्नि बुझ जाय । आंच न आवे तनिकहू, यह कौतुक अतिभाय ॥ ॥ १३ ॥ ज्वारमांहि अंकोलको, दीजे तेल लगाय । धूप दिखाय हलाइये, फूला सब हो जाय ॥ १४ ॥ पहले ज्वारहि तीन दिन, भेवे पानीमांहि । आक रु थोहरदूधमें, एक एक दिन ताहि॥छाया सूख कराइये, करे तमासो कोय। घडी एक मूठी दवे, सब ही फूला होय ॥ १५ ॥ थोहरदूधमें ज्वार जो भेवै, छाया ताहि सुखायके लेवे । पुनि बस्तरपर घामहि मेले, गर्म होय जब हाथन ठेले । भुने जोंधरी फूला होवे, यह अचरज सब कोई जोवे ॥ १६ ॥ विना बुझा चूना एक हांडी, मेलें चावल चूना सांधी । पानी गेरे फदकन लागे, भात रँधे सबके ही आगे ॥ १७ ॥ मद्यफूल जो लाइये, तामे बस्तर भेय । पीछे आग लगाइये, जलै न बस्तर केह ॥ १८ ॥ इस्प्रिटमांहि कपर मिलावे, तामें कपडा भेय सुखावे । पुनि कपडेमें आग लगावे, जले नहीं वैसा ही पावे ॥ १९ ॥ [..]य सपेदी अंडेकी, अरु फिटकवडीचर । मल कपडेको धोइये, लोनके पानीमें खूब ॥२०॥ तब अग्नीमें नाखिये, जले नहीं त जान ।

इन्द्रजालके खेल यह, सबही सांचे जान ॥ २१ ॥ जिह्वापर पहले अच्छी तरहसे लिकिडष्ट्रोरेकस लगावो और बेखटके मुखसे गर्म लोहा छूलो कभी नहीं मुह जलने पावेगा ॥ २२ ॥ नोटको बढिया सिरकेमें भिगोकर जलावे भीगा रहेगा जलता रहेगा सूख जाने पर अग्नि बुझ जायगी नोट ज्योंका त्यों रहेगा ॥ २३ ॥ पहले नमकके पानीमें सूतको भिगोकर सुखाले पीछे उसमें अँगूठी लटका कर सूतको जला देवे तो सूतके जलनेपर भी अँगूठी नहीं जलेगी, कोई कोई इसके भीतर लोहेका तार लपेट देते हैं परंतु कुछ आवश्यकता नहीं ॥ २४ ॥ पहले सूतके एक सिरेमें जरासा गड लगाकर अँगारेपर धरे तो वह गुड पिघल कर बल जावेगा और कच्चे सूतका डोरा उस अंगारेमें चिपका रहेगा पीछे चाहे जहां लटका दो देखनेवालोंको कच्चे सूतमें अग्नि बँधी हुई लटकती दीखेगी ॥ २५ ॥ संखिया पांच तोले पारा अढाई तोले कपर सवा तोले अलग अलग पीसकर मिलावे और अंगुलीपर लगाके गले हुए गर्म शीशेमें अंगुली डुबानेसे जलेगी नहीं ॥ २६ ॥ अकलकरा और सीतलमिर्चको चबाकर छोटी छोटी अग्निकी चिनगारियोंको मुखमें डाल लो, मुख नहीं जलेगा ॥२७॥ एक सूतकी रस्सीको तेलमें भिगोकर लटकावो और नीचेके सिरेको जलादो जब उसमेंसे गरम गरम बलती हुई तेलकी बूंदें टपकने लगें उस वक्त पिसा लोन पानीके साथ हाथोंमें खूब चुपड कर उन तेलकी बूंदोंको हाथमें पडने दो और हाथोंको उलट पुलट कर खूब मलते रहो जिसमें हाथ ढंढा होता रहे तो उन तेलकी बूंदोंद्वारा हाथसे अग्निकी लौसी निकलती दिखाई पडेगी ॥ २८ ॥ सुम घोडेका बेंतजड, दोनों भट्टी डाल। अग्नि जले ना तनिक हूँ, निकले धूवां काल ॥ २९ ॥ तुलसी और सालकाष्ठको जलाकर गधामूत्रमें बुझा ले, इसको चूल्हेमें डालनेसे कढाई नहीं तपती ॥ ३० ॥ जाकर प्रात मसानमें, जहँ जहँ ढेरी होय। मदिरा राल बखेरिये, जान न पावे कोय ॥ पहर रातको जाइये, सात पांच ले साथ। अग्नि लगावे तासम, होन लगे उत्पात ॥ जगे मसान अति ही घनो, थर थर कांपैं लोग। भागें कछु न सँभाल हीं, मिटे मनुजका खोज ॥ ३१ ॥ सूत हाथ दस लीजिये, तामें दारू लाय। सिरा एक दीपकतले, तामें गंधक लगवाय ॥ बत्ती पास लगायके, सिरा दूसरा बार। दृष्टि बचा सब मनु

दुग्ध पुट सात दे, सरसों सूखी लाय। छायाशुष्क कराइये,नहीं सूर्यको ताव ॥ भरिये मूठी रेतसों, सरसों जाके माहि। जल सींचे ऊंचो बँधै, यामें संशय नाहि ॥ ६ ॥ सरसों कुतियादूधमें, देय भावना सात। छाया ताहि सुखाइये, पुनि मट्टी जलसाथ ॥ बोये से घडी चारमें,लगे वृक्ष यह जान। कर देखे निश्चय यदी, होवे अचरज मान ॥ ७ ॥ कुसुमबीजके तेलमें, तुलसीआदि सुजान। छोटे वृक्षके बीज ले,बडे वृक्षके नाहि ॥ भेवे मृत्तिकापात्रमें, दिना एक तू जान। पीछे पृथ्वीमें तिन्हे, गाडे जल विन मान ॥ दिना आठ पीछे उन्हें, लीजे तुरत निकाल। तेहि बोये घडी चारमें, होय वृक्ष तत्काल ॥ ८ ॥ नमक मिले पानीविषे, फूल डुबोवे कोय। बहुत दिनातक फूल वह, कबहुँ न सखे सोय ॥ ९ ॥ बना फूल गुलदस्ता लेवे, कार्बोनेट आफ सोडा जल भेवे। तेहि पानी गुलदस्ता नितही, छिडकत रहै न सखा कितही ॥ बहुत दिनातक वैसाही देखो, सखे नहीं सत्य यह पेखो ॥ १० ॥ आम्र लेयकर शहतमें, राखे ताहि डुबोय। सो कबहू बिगडे नहीं, विना फसल फल जोय ॥ ११ ॥ ककरझिल्ली लायके, छायामाहिं सुखाय। सोंठ मिरच पीपलसाहित, चारों खूब पिसाय ॥ मेंहदी सम पुनि घोल नीरमें, बायें हाथ लगावे ॥ ताही हाथसे छुवे वृक्षको, तब यह खेल दिखावे ॥ फल अरु फूल पात अरु कोंपल, सब झड पडहिं जो धरणी। धन्य विधाता कौतुक तेरे, धन्य गुरूकी करणी ॥ १२ ॥

॥ अथ अक्षरोत्पत्तिकौतुकम्–स्प्रिट औफ एमोनिया और तूतिया दोनो समान भाग लेकर इन दोनोंसे कागजपर लिखे तो अक्षर नहीं दीखेंगे परंतु अग्निमें तपानेसे पीछे अक्षर दीखने लगेंगे और कागजके ठंढे होते ही फिर गायब हो जायँगे ॥ १ ॥ स्प्रिट औफ कौबाल्टमें बराबरका पानी मिलाकर कागजपर लिखोगे तो अक्षर नहीं दीखेंगे परंतु अग्निमें तपानेसे हरे अक्षर दीखने लगेंगे और कागजके ठंढा होनेपर फिर गायब हो जायँगे ॥ २ ॥ जवाखार एसिड एक्साइड औफ कौबाल्ट इन तीनोंको बराबर मिलाकर कागज पर लिखनेसे अक्षर नहीं दीखते परन्तु अग्निमें तपानेसे गुलाबी अक्षर प्रगट हो जायँगे ॥ ३ ॥ लिखिये प्याजके अर्कसे, अक्षर प्रगट न होय। अग्नि तपाये दीखहीं, पीतवर्ण सो होय ॥ ४ ॥ अर्कवृक्षसे मांडिये, कागजऊपर अंक। विया तपाये दीखही, यह

जानो निःशंक ॥ अथवा गंधकधूनी दियां, सबी प्रगट होजाय । कर देखे जब खेल तू, साचो देहि लखाय ॥ ५ ॥ नौसादर अरु दूधसे, अक्षर लिखिये कोय । अग्नि तपाये दीखहीं, पीतवर्ण सब होय ॥ ६ ॥ मलमलके एक कपडेपर नाइट्रेट औफ सिलवरसे कुछ अक्षर लिख लो, सूर्यके प्रकाशमें अथवा अंधेरेमें भी देखनेसे कुछ नहींदिखाई देंगेपरन्तु ज्योंही लैंपकी तेज रोशनीमें देखोगे तो काले अक्षर दीखने लगेंगे ॥७॥ दर्पणपर फरासीसीखडियासे कुछ लिख दो पीछे रूमालसे पोंछ डालो तो लिखा हुआ कुछ भी दिखाई न देगा अगर मुहकी भाफ दर्पणपर फंकोगे तो अक्षर दीखने लगेंगे, भाफके सूखनेपर फिर गायब हो जायँगे, फूंकनेपर फिर दिखाई देने लगेंगे इसीतरह चाहे जबतक करते रहो ॥ ८ ॥ अर्कदूधसे मांडिये, कछू हथेलीमाहि । राख हथेलीमे धरे, अक्षर प्रगट कराहिं ॥ ॥ ९ ॥ चूनेसे अक्षर लिखे, दीजे ताहि सुखाय । जलमें गेरे श्वेत रँग, अक्षर सबहि पढाय ॥ १० ॥ अर्कदूधसों वस्त्रपर, लिखिये अक्षर कोय । जलमें डाले श्वेत रँग, सब ही परगट होय ॥११॥ सिरसपुष्परस काढिये, अथवा चूना जान । अथवा नींबू फिटकडी, इनके अक्षर मांड॥ जलमें डाले प्रगट हो, अजब तमासो होय । जो कर देखे सांचही, सांच सांच सच होय ॥ १२ ॥ जड बूईकी लायकर, ताको रस कढवाय। तेहिके अक्षर तीन दिन, पढे कभी ना जायँ ॥ चौथे दिन सब आपही, प्रगटदिखाई देत । श्याम रंग अति सूथरे, यह कौतुक कर देख ॥ १३ ॥ अथ नानारंगकौतुकम् ॥ प्राकृतग्रंथे–लाल फूल ले दीजिये, गंधक धूवो ताहि सबके । देखतदेखत हीं, श्वेत रंग होजाय ॥ जब ठंढ जलमें पडे, लाल रंग पुनि होय । देख अचंभो करे सब, यामें फरक न कोय॥१॥ नौसादर अरु चूना पानी, फूल लगाकर देख । आश्चर्यरूपसे फूलका, कई रंग त देख ॥ २ ॥ संखिया और गुड इन दोनोंको भूरे पेठेके रसमें पीस कर घोडेके लाल और काले बालोंपर लगानेसे सब बाल सफेद होकर घोडेका रंग सफेद दिखलाई पडने लग जाता है ॥ ३ ॥ पतंगकी लकडी पीस कर पानीमें भिगोनेसे लाल रंग होता है अगर सिरका लगे गिलासमें डाला जाय तो पीला हो जायगा, फिटकडीके पानीमें डाला जाय तो काला रंग बन जायगा पुनः यदि लोहेका टुकडा सिरकेमें भिगो कर इस ग्लासमें डाला जाय तो फिर लाल रंग

होकर असली सूरतपर आजायगा ॥ ४ ॥ पांच ग्लास मँगा कर नम्बरवार रख दो, पहले ग्लासमें सोल्यूशन औफ आयोडाइन औफ पुटैसियम भर दो, दूसरे ग्लासमें सोल्यूशन औफ कौरोसिवस बलाईमेंट अर्थात रसकपूरका अर्क भर दो, तीसरे ग्लासमें आयोडाइड औफ पुटैसियमके तेज अर्कमें औक्सेलेट औफ एमोनिया डाल कर भर दो, चौथे ग्लासमें म्यूरियेट औफ लाइमका अर्क भर दो, पांचवें ग्लासमें हाइडोसलफेट औफ एमोनिया तो पांचों ग्लास स्वच्छ पानीसे भरे हुए दिखलाई पडेंगे पीछे इनका रंग इस तरह पर बदल कर दिखावो जैसे पहले ग्लासको दूसरे ग्लासमें डालनेसे पहले जरद फिर तत्काल ही किरमजी लाल रंग हो जायगा, पीछे दूसरे ग्लासको तीसरे ग्लासमें डालनेसे फिर साफ और स्वच्छ हो जायगा, तीसरे ग्लासको चौथे ग्लासमें डालनेसे दूधसा सफेद रंग हो जायगा, चौथे ग्लासको पांचवें ग्लासमें डालनेसे गहरा काला रंग हो जायगा, इस तरह करनेसे स्वच्छ साफ रंग पांच रीतिसे पलटेगा ॥५॥ एक पानीभरे कांचके ग्लासमें प्रूशियेट और पोटासकी थोडीसी बूंदें डाल दो दूसरे पानीभरे ग्लासमें सलफेट औफ आयरनका हलका अर्क डालदो इन दोनों ग्लासोंमें निर्मल विना रंगका पानी दीखेगा फिर इन दोनो ग्लासोंके जलको किसी तीसरे बर्तनमें मिलावोगे तो चमकीला गहरा नीला रंग हो जायगा ॥ ६ ॥ चुकंदरकी जडका अर्क जो बहुत लाल होता है उसमें थोडासा चूनेका पानी डालते ही जलकासा रंग हो जायगा, उसमें एक सफेद कपडा रंगकर तत्काल सखा लो तो सूखते ही कपडा लाल हो जायगा ॥ ७ ॥ अथ मिष्टकौतुकम्–पात चिरमठी श्वेत मँगावे, अँधियारेमें ताहि सुखावे। नजर छिपाकर चावे ताही, माटी खाय स्वाद गुड आही ॥ १ ॥ अजवायनको चावके, पत्ती नीम जु खाय। तो कडुई लागे नहीं, कैसी सहज उपाय ॥ २ ॥ नाइट्रेट औफ सिलफर और हाईपोलसफेट औफ सोडा यह दोनो चीज अलग अलग चाखनेसे बहुत ही कडुई होती हैं परंतु इन दोनोंको मिला देनेसे निहायत ही मीठापन हो जाता है। ॥ ३ ॥ अथ काचकुप्पीकौतुकम्–बोतलके टुकडे आगमें लाल करके अदरखके रसमें बुझा देवे पीछे इन टुकडोंको चबानेसे [illegible]

किसी प्रकारकी बाधा नहीं होती ॥१॥ अदरखका चौखुंटा टुकडा लेकर उसके एक तरफ पारेकी कलई करो पीछे उसपर कागज चिपका कर बोतलके भीतर उतार दो तो बोतलके भीतर शीशा देखकर लोग आश्चर्य मानेंगे ॥ २ ॥ एक बोतलमें कई रंगतदार कांचके छोटे छोटे टुकडे चार पांच अंगुलतक भर दो उसके ऊपर नीले रंगका पानी उसके ऊपर मट्टीका तेल उसके ऊपर गंधकका नीला तेजाब डाल दो उनके चारों रंग अलग अलग चमकेंगे, नीचेवाले कांचके टुकडे पृथ्वीके समान, नीला पानी समुद्रके समान, मट्टीका तेल हवाके समान और तेजाब आकाशके समान चमकेगा, देखनेवालोंको पांचो तत्व बोतलके दीखेंगे ॥ ३ ॥ एक बोतलमें पावभर पानी भरके उसमें तीस दाने फासफरसके डालदो पीछे उसको दीपककी लौपर गर्म करो तो पानीमेंसे आगकी गेंदसी निकल कर अत्यंत चमकेगी और बोतलमें गेंद दीखेंगी ॥ ४ ॥ एक अंडेको सिरकेमें भिगोवो जब नरम होजाय तब बोतलमें उतार दो पीछे ठंढा पानी भरनेसे अंडा कड़ा होकर असली सूरतपर आजायगा, देखनेवाले आश्चर्य करेंगे ॥ ५ ॥ एक शीशीमें नींबूका रस भरके पीली कौडीकी भस्म डाल कर काग बंद कर दो तो शीशी हाथसे छूट कर आकाशको उड जायगी ॥ ६ ॥ ॥ अथ बंदूककौतुकम्— शीसेकी गोलीको भीतरसे पोली करके चांदीकी बारूद भर दो और लकडीकी डाट लगा दो पीछे इस गोलीको बंदूकमें भरकर चलावो तो एक आवाज मामूली होगी दूसरी आवाज गोलीके निशानेपर लगनेके पीछे होगी इस प्रकार एक फैरसे दो आवाज आवेंगी ॥ १ ॥ बंदूकमें गोलीकी जगह पारा भरके कपडेकी ओटमें निशाना लगावो तो पक्षी मर जायगा और कपडेपर दाग न आवेगा ॥ २ ॥ एक भोडलकी तह देकर सांचेमें गोली ढाल लो पीछे इस गोलीको बंदूकमें भर दो और निशानेके सामने एक छडी खडी करके गोली चलावो तो गोलीके दो टूक हो जायँगे देखनेवालोंको मालम होगा कि छरीसे गोलीके दो टूक हो गये; छुरी भी भोडलकी होनेसे पडदा छिपा रहता है ॥ ३ ॥ लोहेका तार दो हाथ लेकर उसके दोनो सिरोंमें गोली चिपका कर पिंडीसी करके बंदूकमें भर दो और सुईके ऊपर चावल धरके निशाना लगाओ तो चावल नीचे जा पडेगा ॥ ४ ॥ अथ युद्धकौतु

कम्–एक मुरगाकी आंखमें, चुंबुक पीस अँजाय । दूजे कुक्कुट आंखमें, लोहचून लगवाय ॥ जब छोडे मैदानमें, करें लडाई घोर । नहीं हटायेसे हटें, हटें घटेपे जोर ॥ १ ॥ रवि या मंगलके दिन काले कुत्तेके दो दांत और काली बिल्लीके दो दांत चारोंपर सिंदूर लगाकर एक प्यालेमें धरके बीचमें धर देवे उसके ऊपर कोई दूसरा पात्र ढक दे पीछे दो दांत भेंडक लेकर सिंदूर लगावे और एक पात्रमें धरके चार दांतोंवाले प्यालेके दक्षिणकी तरफ धर दे पीछ दो दांत बकरेके लेकर एक पात्रमें धरे और चार दांतवाले प्याले के उत्तरकी तरफ धर दे उत्तरदक्षिणवाले पात्रोंको चमडेकी धूनी देनेसे दोनों पात्र हट हट कर एक दूसरेसे टक्कर लगावेंगे और बीच वाला चार दांतका पात्र दोनोंमे बीच बचाव करावेगा ॥ २ ॥ अथ चित्रकौतुकम्–देखे सींग गायके सिरपर, एक नीचा एक ऊंचा । लावे काट दोऊ अंगुलभर, छोडे सींग समूचा ॥ नींचा सींग घिसे पानीमें, कुच तिरियाके लावे । लागत ही यह अंग तिरियाके कुच अलोप होजावे ॥ ऊंचा सींग जबहि घस पानी, तन कामिनिके लावे । लागतही कामिनिके अस्तन, जैसा ही होजावे ॥ १ ॥ लज्जावंती-पत्र ले, हाथनमें मल लेय । हाथ दिखाकर नारिको, मुट्ठी बंद करेह ॥ कुच नारीके दोनहू, गायबसे हो जायँ । फिर मुट्ठीके खोलत हि, प्रगट होयँ समभाय ॥ २ ॥ जलमें बडी गोह जो होय, ताकी चरबी लावे कोय । सो चरबी हाथनमें लावे, हाथ लगा चित्रहि दिखरावे । मूठी बांधे सुनिये भाई, ततक्षण चित्रलोप होजाई ॥ ३ ॥ तमाशा करनेके कमरेमें आधेमें एक परदा लगावो उसके बाहर तमाशा देखनेवालोंको बैठादो पीछे तमाशा करनेवाला एक दीपक बालकर कुछ दूरपर अपने पीछे रख दे तो उस बाजीगरकी छाया उस परदेपर पडेगी वह सबको दिखाई देगी बाजीगर जब हटता हुआ पीछेको जायगा तो उसकी परछाहीं बढती जायगी जब दीपकके ऊपर खडा होकर जलदी जलदी उठे बैठेगा तो देखनेवालोंको मालूम होगा मानो कोई चढता और गिरता है अगर बाजीगर तरह तरह हाथ मुंह चलावेगा तो लोगोंको बडा कौतुक जान पडेगा काठकी तुतलियोंसे भी यह छाया बाजी होसकती है ॥ ४ ॥ जनै गर्भिणी बालक जबहीं, इतना छल जा कीज । झिल्ली जो बालकके ऊपर, सो मँगाय कर लीजे ॥

धरे सुखाय कोऊ नहिं जाने, चित्रशालमें जावे। सूरत लिखी चित्रशालामें, ताही धनी दीजे ॥ झिल्ली जेरे धुवां जब लागे, दृष्टि सबनकी आवे। रोवें चित्र जहां लग जेते, आंसूं नैन बहावें ॥ ५ ॥ बीरबहूटी गंधक साने, धर अग्नीपर खेल दिखावे। अथवा बाती बना जरावे, हँसें पतरी जिय भरमावे ॥ ६ ॥ डुपटो ले दो हाथको, तामें चित्र मँडाय। दोऊ रुख इकसारिसो, स्त्रीरूप हि बन जाय ॥ ले पट बांधे द्वारमें, भीतर दीवा दोय। मोमबत्तीको कीजिये, यह विधि बनी सो होय ॥ प्रथम बत्तीमें मोम ले, दस तोला परमान। सिंगरफ तोला दोय ले, मासा दो हरताल ॥ दूजी बत्तीमें सुनो, दश तोला ले मोम। दश तोला हरताल हू, इस विधि बत्ती दोम ॥ पुनि बाहरही बालिये, दीवा बत्ती दोय। इह विध ताहि बनाइये, फरक पडे नहिं कोय ॥ दसतोला ले मोमको, दो तोला जंगाल। मासा चार सिंदूरहू, छः मासा ले राल ॥ बाती एक इनकी करे, दूजी इस विध जान। मोह लेय दशतोलका, आल तीन भर मान ॥ इस विधि दीवो चार सब, बाहर भीतर जोय। नचै पूतली चित्रकी, अजब तमासो होय ॥ सबहीको सांचो जचे, यह बत्तीको खेल। थरथर काँपे लोग सब, भागें बस्तर मेल ॥ ७ ॥ अथ जीवोत्पत्तिकौतुकम्—एक घडेमें गधेका मूत भरके भैंसका गोबर डाल दो, थोडासा दही और बूरा भी डालकर मुख बंद कर दो, इसको पृथ्वीमें गाडनेसे दो दिनमें ही लाखों बिच्छू पैदा हो जायँगे ॥ १ ॥ भादोंमें रविवारको, पीला मेढक लाय। उसके माथे दहीका, दीजे तिलक कढाय ॥ धूनी गगल ताहि द, हँडियामें भरवाय। रखिये अपने पासमें, सूखे पै पिसवाय ॥ बरसा ऋतु आवे जबै, बरसन लागे नीर। थोडीसी वह राख ले, गेरो जलके तीर ॥ दो घंटाके बीचमें, अद्भुत दीखे खेल। लाखन डोलें मेंडका, मचे रेल अरु पेल ॥ २ ॥ भल्लाततैलं मत्स्यस्य गात्रे सर्वत्र लेपयेत् ॥ निक्षिप्य जलमध्ये तु मीनो जीवति तत्क्षणात् ॥ ३ ॥ अथाण्डकौतुकम्—कृकलांडं समादाय छिद्रेण पारदं क्षिपेत् ॥ भास्कराभिमुखं कृत्वा आकाशं गच्छति ध्रुवम् ॥ १ ॥ अंडेमें पारा भरके गर्म कर लो और एक गर्मकी हुई कांचकी रकाबीमें धरो तो अंडा उछलने लगेगा ॥ २ ॥ नमकके तेजाबमें अंडा डालते ही पहले तो डूब जायगा परंतु फिर तैरने लगेगा और फिर डूबता और तैरता रहेगा ॥ ३ ॥

अंडेके नीचे एक छिद्र करके खूब हिलावो पीछे कांचके ऊपर खडा कर दो तो ठीक खडा रहेगा ॥ ४ ॥ अंडेका रेत छेद कर निकाल डालो पीछे खाली अंडेको नलके चलते हुए जलपर अधर छोड दो तो अंडा अधरमें नांचता रहेगा और नीचे न गिरेगा. यह खेल ऐसी जगह करना चाहिये जहां हवा न होवे ॥ ५ ॥ अथ नृत्यकौतुकम्–पीतलकी खोखली उंगली बनावो उसमें पारा भरके बंद कर दो थोडी देर गर्म करनेसे नाच उठेगी ॥ १ ॥ तृण मूंजको लीजिये, ताके बाल लगवाय। तृण गाडीजे भूमिपर, कौडी दे अटकाय ॥ जल सिर डाले तासुके, प्रगट तमासो होय। जब देखे कौडी फिरे, तृणको फिरता सोय ॥ २ ॥ चिडी बनावे काठकी, जल ऊपर धरि ताहि। ताके पगमें सूक्ष्म अति, लोह तारको बांध ॥ अथवा बार ले अश्वको, बांधे कोना एक। प्यालेमें पुनि छिद्र करि, तार पिरोवै फेर ॥ सिरा दूसरा तारका, खंजडीमाहिं बँधाय। खंजडी जबहि बजावहीं, चिडिया नृत्य कराय ॥ ३ ॥ सूक्ष्म तार मँगाय, हाथ पांचको लीजिये। ताको सिरो बंधाय, ईट जो सम्मखमें लिये ॥ सिरो दूसरो लेय, खंजडीमाहि बंधाइये। रातहि करिये खेल, खडे जो देखें लोग सब ॥ कागजपुतली पीठ, पहले मोम लगाइये। तारमाहिं दे चीप, खंजडी तबहि बजाइये ॥ नाचे पुतली खूब, सुखी होय सब देखिके। झरको दीजे खूब, न्यारी होकर जा पडे ॥ इसविधि कौडी चूड, सबही नाच नचाइये। तेहि ऊपर धरतूर, एक एक सब जोडिके ॥ तार उठावे खूब, बंगलो देखि लुभाइये। हिचलमिचलकर खूब, झटके सेती जा पडे ॥ ४ ॥

॥ अथ नानाकौतुकानि ॥ तत्रादौ–बदामके भीतरकी गिरी फोडना ॥ ले बदाम अतिवाजना, तापर वस्त्र लपेट। पृथ्वीमें जब पटकना, ताकी लगे चपेट ॥ फट जाय बादामकी, गुली न ऊपर घाव। होय अचंभो अति भलो, काहू नहीं लखाव ॥ १ ॥ मट्टीका भैंसा बोले–भैंसो कीजे गारिको, पोलो पेट बनाय। गरम लगे उस पेटमें, शब्द होय अकुलाय ॥ २ ॥ पीरका हुक्का–हुक्को रीतो लेयकर, तामे चूनो मेल ॥ जल डाले वह बोलही, अजब दिखायो खेल ॥ ३ ॥ चित्रकी पुतली हँसे–बीरबहूटी लाइये, गंधक माहिं मिलाय ॥ नाचे पुतली चित्रकी, धूनी दे अकुलाय ॥ ४ ॥ हनुमानके पसेव आवे–सोरो टंक ले चार, जलमें ताहि

पिसाइये । नान्हो खूब कराय, अंगलेप हनुमानके ॥ स्वेद चले बहुताय, वर्षामें जो कीजिये । वीर युद्धके माय, अबै आप ठाढे भये ॥ ५ ॥ हनुमानके मुखसे फूल झरे—कर तलास कछु लाइये, वनमाही भूफोड । ताको जलमें भेइये, खुल जावे सब जोड ॥ पुनि तामें भर दीजिये, चंबेलीके फूल । छायामाहिं सुखाइये, पडे नहीं कछु भूल ॥ लेकर पुनि हनुमानके, मुखसे देय बँधाय । ताऊपर जल छांडिये, रेखा सब फटि जाय ॥ फूल झडे हनुमानके, देख अचंभो होय । मन मोहित हो सबहिका, ऐसो अचरज जोय ॥ ६ ॥ नारियलमें बदाम छुहारा निकले—गंधक अर्क मँगायके, नारेललीक कढाय । होय टक न्यारा भये, गोलो लेय कढाय ॥ पुनि तामें वस्त भरे, पींदो दे चिपकाय । ताको जलमें राखिये, ज्योंको त्यों बँध जाय ॥ ताही फोड दिखाइये, निकलै सारी चीज । ऐसो अचरज देखके, खुसी होय सब जीव ॥ ७ ॥ छुहारेके भीतरसें लौंग इलायची निकालना—पुष्ट छुहारो लेय कर, ताको राखि भिजोय । प्रात फूल मोटो भयो, ताको बीज कढाय ॥ तामें लौंग इलायची, धरके सांधि मिलाय । जबै छुहारा सूखही, ज्योंका त्यों दिखलाय ॥ ८ ॥ चासनी बिगडे—बंदरविष्ठा नाखिये, भरी कढाईमाहि । बिगड जाय सब चासनी, कोऊ खावे नाहिं ॥ ९ ॥ धान सीझे नहीं—धानोंको थोहर अथवा आकके दूधसे चुपक कर कितनी पकावो परन्तु नहीं पकेंगे ॥ १० ॥ मालीकी डलियामेंसे फूल फल बाहर निकल पडे—रविवारके दिन मरे हुए मेंढकको लाकर गूगल खेवे और चिकनी मट्टी उसके मुहमें झरे पीछे मूंगोंका पजन करके मेंढकके मुँहमे डाल दे और ऐसी जगह गाडे जहाँ किसीका पैर पडने पावे नहीं जल सींचता रहे जब पेंड होकर उसमे फल आवे उसके पहले फलको लेकर धूप देवे उसमेंसे एक दाना मूंगका जिस मालीकी डलियामें डाल दोगे उस डलियाके फूल फल उछलने लगेंगे और डलियासे बाहर जा जाकर पडेंगे देखने वालोंको अचंभा होगा ॥ १७ ॥ घरमें सर्प दीखें—सर्पकांचली लीजिये, बत्ती करिये चार । ताम्रपात्रमें ताहिके, दीपक बार जलाय ॥ दीपकमुख चारिहु दिसा, जो कोइ चांदने जाय । होय सर्प सो जानिये, देखनवालेके भाय ॥ १८ ॥ विना खूंटीकी खडाऊंपर चलना—अति ही हलके काठकी,

कोर खडाऊं कोय । श्वेत चिरमिटी लेपकरि, ताहि सुखावे जोय ॥ पैर धोयकर तासुपर, चिपकावे सुधि राखि । बडी जुगतसे चालिये, भरे खिलाडी साखि ॥ इन विध बडके दूधसे, करिये खेल जरूर । बहेलियाके लाससे, खल होय भरपूर ॥ १९ ॥ तेलका घृत बने–अंडीतेल मँगाइये, तामें जल ले डार । हाथ लगाकर मसलिये, बने घीव नहिं बार ॥ २० ॥ पैसेको रुपिया बनाना– दो पैसे लेकर उनमें दो पैसे चिपका ले दिखानेके वक्त एक रुपयेकी तरफ दूसरा पैसेकी तरफसे दोनो हांथोंमें धर ले पीछे दिखा कर मुट्ठी बंद करके पलट दे तो रुपयेके हाथमें पैसा और पैसेके हाथमें रुपया हो जायगा इसीतरह फिर मुट्ठी बंद करके उलट दो तो अपने अपने हाथमें आ जायँगे कोई बाजीगर हाथकी हथेलीमें दबाकर चालाकीसे दिखाते हैं यह अभ्यास करनेसे हो जाता है ॥२१॥ ॥ जीमता हँसे–रवीवारको लाइये, खरलोटनकी धूल । थाली नीचे ताहि धर, हँसे जीमतो खूब ॥ २२ ॥ जीमतो वमन करे–बगुलाकी विष्ठाको जो नर, मस्तक तिलक करे । जीमत नर जो वाको देखे, देखत वमन करे ॥ होंठ सफेद करना–गंधक धरके पानमें, जो कोई नर खाय । हो सफेद तत्काल ही, होंठ कोढ दरसाय ॥ जब आछो करनो हुवे, कांजी कुरला कीन ॥ इन विध आछो होइ है, वचन कह्यो परवीन ॥ २३ ॥ धुवां निकले ॥ धवां घरमें ना रहे, तिसका यही उपाय । घडे चार ऊंधे धरे, धुवां उन्हींमें जाय ॥ ११ ॥ पक्षी पकडना–हींगके जलमें गेहूं भेवे, सो पक्षीको लेय चुगावे । बेसुध होवे पक्षी जब हीं, पकड लेय पुनि जाकर तब हीं ॥ सहतमाहिं गुण ऐसोइ गावे, थोहरदूध पक्षी पकडावे ॥ जल बँधे खुले–फलचूरण लेहे सेवा, जल नाखे बँध जाय । डाले सेंधा लोन जब, तुरतहि जल दरसाय ॥ १२ ॥ निजरूप कुरूप दीखे–सूअर छेरी ऊंट पुनि, अश्व बंदर हु जान । खुर पांचोंके लीजिये, सब ही एक समान ॥ हंडीमें धर मोचरस, तापर खुर धरवाय । तापर चूरन सोंठको, मुखमुद्रा कर वाय ॥ बाले अग्नी ताहि जब, मेढकचरबी लेय । ताकी राख मिलाइये, दरपनलेप करोय ॥ तेहि दरपनमे वायकर, जो देखे मुख कोय । होय कुरूप सुरूप वह, मनमे चिंता होय ॥ १३ ॥ सभाके लोग दरयाकी सैर करते दीखें–कछुवेकी चरबी विषे, लोन पावडी

घाल । लेप कीजिये वस्त्रपर, बत्ती करे सँभाल ॥ दीपक नयो मँगाइकै, ताबिच पारो मेल । धर वाती दीपक करे, तब दीखे यह खेल । जो बैठे जा चांदने, उसको सब यह जान । नाव चढे दरियावकी, सैर करतही मान ॥ १४ ॥ अंगमें सुई छेदना-मंत्रो यथा--ॐ नमो आदेश गुरूको कामरूदेश कामाक्षा देवी जहां बसे इसमाइल जोगीके चार सुई लोहाकी सारकी तांबाकी सींसाकीसे लोही आवे तो गुरू गोरखनाथकी आन ॥ इति मंत्रः ॥ अन्यत्-ॐ नमो सारकी सुई सबदका धागा प्रेमकी सुई को लोहू न लागा दुहाई हनुमानकी ॥ इति मंत्रो द्वितीयः ॥ अन्यत्-ॐ धारधार महाधार धार बांधूं सात वार अनी बांधूं तीन वार पके न फूटे करे न पीडा रक्षा करे हनुमंता वीरा ॥ इति मंत्रस्तृतीयः ॥ एषामेकं विधानम्-सात वार पढ साख लगावे पीछे चुटकीसे पकड मास ऊंचा उठाकर छेद देवे तो लोही निकले नहीं पीडा अधिक हो नहीं निकालनेसे जगह बराबर हो जाती है । सत्य मेव न संदेहः ॥ १५ ॥ चरित्र दीखे-मूल चिर्मिठी रुईसँग, बाती देय जलाय । काली गौके घृत सहित, चौकेपर धर जाय ॥ गूगल खेवे ताहिको, अरु सिंदर चढाय । पीछे दृष्टिसे देखिये, कछु चारित्र दरसाय ॥ १६ ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे उत्तरखण्डे इन्द्रजालकौतुकतंत्रे त्रयोदशस्तरंगः ॥ १३ ॥ उत्तरखण्डं समाप्तम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

(राजपूताना) बिसाहूनगर-निवासि पं० वैजनाथजीद्वारकाप्रसादमिश्र-तच्छिष्यमाधवरायवैद्यसंगृहीतो मंत्रमहार्णवः समाप्तः ।

इदं पुस्तकं मुम्बय्यां श्रीकृष्णदासात्मजक्षेमराजश्रेष्ठिना
स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम) मुद्रणालये मुद्रितम्।
सवत् १९८१, शके १८४६.

इस पुस्तकको खेमराज श्रीकृष्णदासने बम्बई खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लेन निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें अपने लिये छापकर यहीं प्रकाशित किया.

॥*॥ इति मन्त्रमहार्णवः समाप्तः ॥ * ॥